मानक हिन्दी कोश

•

रामचन्द्र वर्म्मा

मानक हिन्दी कोश

●

दूसरा खण्ड

●

रामचन्द्र वर्मा

पचीस रुपया

साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या ३.१
पुस्तक संख्या 2II
आगत पञ्जिका संख्या 69,128

पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

४३,१२८
१६-२-६५

दिनांक १२-३-१९८५

शब्द-संख्या—२११२७

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

R1.1/2II
41154

दूसरा खंड

[ख—त]

Stock Verification-2024

CHECKED 1973

प्रधान सम्पादक
रामचन्द्र वर्म्मा
सहायक सम्पादक
बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच. डी.

Stock Verification

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रथम संस्करण

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक .. १.१ / २II
आगम ..
संख्या. ६१,१५४
गुरुकुल ग्रन्थालय काँगड़ी

मूल्य
पच्चीस रुपये

मुद्रक
रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी के प्रेमियों और सेवियों के सामने मानक हिन्दी कोश का यह द्वितीय खण्ड प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष प्रसन्नता है। इसके प्रथम खण्ड के प्रकाशकीय वक्तव्य तथा सम्पादक के "आरम्भिक निवेदन" में इस कोश के उद्देश्य तथा प्रयोजन के विषय में सब बातें यथासम्भव विस्तार से कह दी गयी हैं। हिन्दी जैसी जीवित और विकास की ओर गतिशील भाषा के कोश का प्रणयन कभी सर्वथा सर्वांगपूर्ण नहीं हो सकता। राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुए हिन्दी को अभी थोड़ा ही समय हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में तीव्र गति से हिन्दी में नये शब्द आये हैं। पिछली कुछ सदियों से जिन कतिपय विदेशी भाषाओं का सम्पर्क हिन्दी से रहा है उनसे कहीं अधिक विदेशी भाषाओं से हिन्दी का सम्पर्क अब होने लगा है। अपने देश की सहोदरा भाषाओं से भी हिन्दी का सम्पर्क अब बढ़ने लगा है। जब हम यह चाहते हैं कि कम से कम समस्त भारत के लोग अन्तरप्रादेशिक विचार-विनिमय और भावाभिव्यक्ति के लिए हिन्दी का माध्यम अपनावें, तब इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है कि हम हिन्दी के क्षेत्र को कितना व्यापक बना रहे हैं। हिन्दी की उप-भाषाओं के बहुसंख्यक सेवक भी अपनी रचनाओं से हिन्दी के शब्द-भण्डार की अभिवृद्धि कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में हिन्दी के सर्वांगपूर्ण कोश के प्रणयन का यह कार्य सूत्रपात्र मात्र कहा जायगा।

हमें खेद है कि प्रथम खण्ड के प्रकाशित होने के तुरन्त बाद द्वितीय खण्ड प्रकाशित न हो सका। इस बीच कुछ समय बीत गया। मानक हिन्दी कोश को पाँच खण्डों में प्रकाशित करने का विचार है। हम प्रयास कर रहे हैं कि आगे के सब खण्ड शीघ्र प्रकाशित हो जायँ।

प्रथम खण्ड के प्रति हिन्दी के मनीषी विद्वानों तथा अन्यान्य हिन्दी-प्रेमियों ने जो सद्भाव प्रकट किये हैं उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

हम इस कोश के प्रधान सम्पादक, उनके सहयोगी तथा अन्य ऐसे सभी लोगों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इसके मुद्रण और प्रकाशन में विशेष योगदान किया है। सम्मेलन मुद्रणालय के प्रबन्धक और कर्मचारी अपने ही हैं फिर भी उन्हें साधुवाद देना आवश्यक है क्योंकि कठिन परिस्थिति में विशेष सतर्कता के साथ उन्होंने इसके मुद्रण का कार्य सम्पन्न किया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव, प्रथम शासन निकाय

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक में) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अ० य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोंक०—कोंकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थ-शास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावा-द्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोल मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखें
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपुं०—नपुसंक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पंजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पं०—पुंलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिन्दी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रां०—फ्रांसीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बुं० खं०—बुंदेलखंडी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवां-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात हिंदुस्तानी जहाजियों की बोली
लैं०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास।
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास।
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास।
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास।
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष०त० —षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनों पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दों की भाँति, 'निपातन' (विना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दों की सिद्धि। जिन शब्दों की सिद्धि पाणिनीय सूत्रों से संभव नहीं होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन विधियों से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

मानक हिन्दी कोश

दूसरा खण्ड

ख

ख—देवनागरी लिपि में क वर्ग का दूसरा अक्षर जो अघोष, स्पृष्ट तथा महाप्राण है और कंठ से उच्चरित होता है।

ख—पुं०[सं०√खन् (खोदना)+ड] १. गड्ढा। २. शून्य स्थान। ३. आकाश। ४. निकलने का मार्ग। निकास। ५. छेद। सूराख। ६. बिल। विवर। ७. ज्ञानेन्द्रिय। ८. कूँआ। ९. तीर से लगा हुआ घाव। १०. नगर। शहर। ११. सुख। १२. गले की वह नाली जिससे प्राणवायु आती-जाती है। श्वासनलिका। १३. गाड़ी के पहिये की नाभि का छेद जिसमें धुरा रहता है। आखा। १४. जन्म-कुंडली में लग्न से दसवाँ स्थान। १५. विंदु। सिफर। १६. सूर्य। १७. शब्द। १८. क्षेत्र। १९. कर्म। काम। २०. अभ्रक।

खंक†—वि० [सं० कंकाल] दुर्बल। बलहीन।

वि० दे० 'खुक्ख'।

खंकर—पुं० [सं०√खन् (खोदना)+क्विप्,√कृ (विखेरना)+अप्, खन्–कर कर्म० स०] बालों की लट। अलक।

खंख—वि० [सं० कंक] १. छूछा। खाली। रिक्त। २. उजाड़। ३. सुनसान। ४. दरिद्र। निर्धन।

खंखणा—स्त्री० [सं०] घंटी, घुंघरू आदि के बोलने का शब्द।

खंखर*—पुं० =खंकर।

वि०=खंख।

खँखरा†—पुं० [देश०] १. तांबे का बड़ा देग। २. बाँस का बड़ा टोकरा।

वि०=खाँखर (खोखला)।

खँखार—पुं०=खखार।

खँखारना—अ०=खखारना।

खंग—पुं० [सं० खड्ग] १. तलवार। २. गैंडा।

खंगड़ा†—वि० [?] १. उजड्ड। २. उद्दंड।

पुं० दे० 'अंगड़-खंगड़'।

खँगना†—अ० [सं० क्षय] कम होना। घटना। छीजना।

खंगर—पुं० [देश०] १. एक साथ चिपकी और पकी हुई कई ईंटें या उनके टुकड़े।

वि० १. सूखा। शुष्क। २. दुबला-पतला। क्षीण।

मुहा०—खंगर लगना=सूखा नामक रोग होना, जिससे शरीर दिन पर दिन दुबला होता जाता है।

खँगवा—पुं० [देश०] पशुओं के खुर पकने का एक रोग।

खँगहा—वि० [हिं० खाँग+हा (प्रत्य)] (पशु) जिसे खाँग हो या निकला हो।

पुं० १. गैंडा। २. सूअर। ३. मुर्गा।

खँगारना—स०=खँगालना।

खँगालना—स० [सं० क्षालन; गु० खंखाड़वूं; मरा० खंगड़णें] १. किसी पात्र के अंदर पानी डालकर उसे हिला-डुलाकर थोड़ा धोना। २. पानी से भरे हुए बरतन में कोई चीज डुबाकर उसे हलका या थोड़ा धोना। ३. ऐसा काम करना कि किसी के घर की चीजें निकलकर इधर-उधर हो जायँ। चालाकी से सब कुछ ले लेना या नष्ट कर देना। ४. अंदर की चीज हिला-डुलाकर बाहर निकालना।

खँगी—स्त्री० [हिं० खँगना] खँगने अर्थात् कम होने या छीजने की अवस्था, क्रिया या भाव। कमी। छीज।

खँगैल—वि० [हिं० खाँग] १. (पशु) जो खाँग या लंबे दाँतों से युक्त हो। जैसे—गैंडा, हाथी आदि। २. (पशु) जो खँगवा रोग से पीड़ित हो।

खँगौरिया†—स्त्री०=हँसली (गहना)।

खँघारना†—स०=खँगालना।

खँचना†—अ० [हिं० खाँचना] १. खाँचा जाना। २. अंकित या चिह्नित होना।

अ० [हिं० खाँची] पूरी तरह से भरा हुआ होना।

†अ०=खिंचना।

खँचाना—स० [हिं० खाँचना] १. किसी से खाँचने (अंकित करने) का काम कराना।

मुहा०—अपनी खँचाना=अपने मतलब या स्वार्थ की बात कहते चलना; दूसरे की न सुनना।

२. दे० 'खाँचना'।

खँचिया†—स्त्री०=खाँची (टोकरी)।

खँचुला†—पुं०=खाँचा (बड़ा टोकरा)।

खँचैया†—वि० [हिं० खाँचना] खाँचनेवाला।

खंज—पुं० [सं०√खञ्ज् (लँगड़ाना)+अच्] पैर और जाँघ की नसों को जकड़ लेनेवाला एक वात-रोग, जिससे रोगी उठने-बैठने या चलने में असमर्थ हो जाता है।

वि० १. जिसे उक्त रोग हुआ हो। २. पंगु। लँगड़ा।

†पुं०=खंजन (पक्षी)।

खंजक—वि० [सं० खञ्ज+कन्] १. जो खंज रोग से पीड़ित हो। जिसे खंज रोग हुआ हो। २. पंगु। लँगड़ा।

पुं० [?] एक प्रकार का नृक्ष जिसमें से रूमीमस्तगी की तरह का गोंद निकलता है।

खंजकारि—पुं० [खंजक-आरि ष० त०] खेसारी।

खंजखेट—पुं० [सं० खंज√खिट् (गति)+अच्]=खंजन (पक्षी)।

खँजड़ी—स्त्री०=खंजरी।

खंजन—पुं० [सं०√खञ्ज्+ल्यु—अन] १. काले या मटमैले रंग की और लंबी पूँछवाली एक प्रसिद्ध चिड़िया जो बहुत ही चंचल होती और बराबर इधर-उधर बैठती-उठती रहती है।

विशेष—इसी चंचलता के कारण कविगण इसकी उपमा चंचल नेत्रों से देते हैं।

२. उक्त पक्षी के रंग का घोड़ा। ३. गंगोदक नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम।

खंजनक—वि० [सं० खंजन+कन्] १. जिसे खंज रोग हुआ हो। २. लँगड़ा।

खंजन-रति—पुं० [उपमित स०] (खंजन पक्षी की तरह का) ऐसा गुप्त संभोग जिसका जल्दी किसी को पता न चले।

खंजना—स्त्री० [सं० खंजन+क्यच्+क्विप्—टाप्] =खंजनिका।

खंजनासन—पुं० [सं० खंजन-आसन, उपमित स०] उपासना के लिए एक प्रकार का आसन। (तंत्र)

खंजनिका—स्त्री० [सं० खंजन+ठन्—इक, टाप्] दलदल में रहनेवाली खंजन की जाति की एक चिड़िया। सर्षपी।

ख़ंजर—पुं० [फा०] [स्त्री० अल्पा० खंजरी] एक प्रकार की छोटी तलवार। कटार।

खँजरी—स्त्री० [सं० खंजरीट=एक ताल] एक प्रकार की छोटी डफली।

खंजरी—स्त्री० [फा० खंजर] १. एक प्रकार का छोटा खंजर। कटार। २. एक प्रकार का कपड़ा जिस पर उक्त के आकार की धारियाँ होती हैं।

खंजरीट—पुं० [सं० खञ्ज√ऋ (गति)+कीटन्] १. खंजन या खँडरिच नामक पक्षी। २. संगीत में एक प्रकार का ताल।

खंजा—स्त्री० [सं० √खञ्ज्+अच्—टाप्] एक अर्द्धसम वर्णिक छंद जिसके विषम चरणों में ३० लघु और एक गुरु तथा सम चरणों में २८ लघु और एक गुरु होता है।

खंड—पुं० [सं०√खंड् (टुकड़ा करना)+घञ्] १. किसी टूटी या फूटी हुई वस्तु का कोई अंश। टुकड़ा। २. किसी संपूर्ण वस्तु का कोई विशिष्ट भाग या विभाग। जैसे—रामायण का तृतीय खंड। ३. किसी इमारत या भवन का कोई तल्ला या मंजिल। (स्टोरी) ४. किसी धारा या उपधारा का कोई स्वतंत्र अंश। ५. कुछ विशेष कार्यों के लिए व्यवस्थित रूप से किया हुआ विभाग। ६. पुराणों के अनुसार पृथ्वी के नौ मुख्य विभाग जो इस प्रकार हैं:—भरत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रमा और कुश। ७. उक्त के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द। ८. किसी राज्य का कोई प्रदेश या प्रांत। ९. कच्ची चीनी। खाँड़।

पुं० [सं० खड्ग] खाँड़ा नाम का शस्त्र। उदा०—किक्क सरण रह पाइ किक्क खल खंडणि खंडै।—चंदवरदाई।

वि० [खंड+अच्] १. खंडित। अपूर्ण। विकलांग। विभक्त। २. लघु या छोटा।

खंड-कंद—पुं० [कर्म० स०] शकरकंद।

खंडक—वि० [सं०√खंड्+ण्वुल्—अक] १. खंड या विभाग करनेवाला। २. खंडन करनेवाला।

पुं० [खंड+क] १. खाँड़ या मिसरी। २. नाखूनोंवाला प्राणी।

खंड-कथा—स्त्री० [कर्म० स०] १. कोई अधूरी या छोटी कहानी। कथा या कहानी का टुकड़ा या भाग। २. प्राचीन भारतीय साहित्य में, करुण रस-प्रधान एक प्रकार की कथा या कहानी जिसमें ब्राह्मण या मंत्री नायक होता था और जिसमें प्रायः विरह का वर्णन होता था। ३. परवर्त्ती काल में और आज-कल भी उपन्यास का वह प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक खंड या भाग में अलग-अलग छोटी कहानियाँ होती हैं।

खंड-काव्य—पुं० [कर्म० स०] ऐसी पद्यबद्ध रचना जिसमें किसी महापुरुष या विशिष्ट व्यक्ति के जीवन की किसी एक या कुछ महान् घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन होता है। जैसे—मेघदूत, सिद्धराज।

खंड-ग्रहण—पुं० [कर्म० स०] वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चंद्रमा के सारे बिंब पर छाया न पड़े, कुछ ही अंश पर छाया पड़े। 'खग्रास' का विरुद्धार्थक। (पार्शल इक्लिप्स)

खँडचिला—पुं० [देश०] धान की एक जाति। उदा०—औ संसार तिलक खँडचिला।—जायसी।

खंडज—पुं० [सं० खंड√जन् (उत्पन्न होना)+ड] एक प्रकार की शक्कर या गुड़।

खंडत†—वि० खंडित।

खंड-ताल—पुं० [कर्म० स०] संगीत में, एक प्रकार का ताल।

खंड-धारा—स्त्री० [ब० स०] कैंची। कतरनी।

खंडन—पुं० [सं०√खंड्+ल्युट्—अन] १. खंड-खंड अथवा टुकड़े-टुकड़े करने की क्रिया या भाव। २. विभक्त या विभाजित करना। हिस्सों में बाँटना। ३. कही हुई कोई बात अथवा प्रतिपादित किये हुए सिद्धांत के दोष दिखलाकर उसे अमान्य या गलत ठहराना। (कन्ट्राडिक्शन) ४. अपने संबंध में किसी द्वारा लगाये गये आरोप या अभियोग का निराकरण करते हुए उसे झूठा सिद्ध करना। (रेफ्यूटेशन) ५. नृत्य में, मुँह या होंठ इस प्रकार चलाना जिससे खाने, पढ़ने, बड़बड़ाने आदि का भाव प्रकट होता हो। ६. कार्य की सिद्धि में होनेवाली बाधा अथवा इससे उत्पन्न निराशा। ७. विद्रोह या विरोध।

वि० खंड या टुकड़े करनेवाला।

खंडनक—वि० [सं० खंडक] १. खंड या टुकड़े करनेवाला। २. खंडित करनेवाला। ३. जिससे कोई तर्क या बात खंडित होती है। ४. कोई ऐसी परस्पर विरोधी बात जिससे अपने ही पक्ष का खंडन होता हो। (कन्ट्रैडिक्टरी)

खंडन-मंडन—पुं० [द्व० स०] किसी बात या सिद्धांत के पक्ष तथा विपक्ष अथवा उसकी अच्छाई तथा बुराई दोनों के संबंध में दोनों पक्षों का कुछ कहना।

खंडना*—स० [सं० खंडन] १. खंड या टुकड़े करना। तोड़ना। २. हिस्से लगाना। ३. मत, सिद्धांत आदि का खंडन करना और उसे अयुक्त सिद्ध करना।

खंडनी—स्त्री० [सं० खंड] १. मध्ययुग में, वह कर जो राज्य बड़े ज़मींदारों और राजाओं से लेता था। २. किस्त। ३. खंडी।

खंडनीय—वि० [सं०√ खंड्+अनीयर] १. जो तोड़े-फोड़े जाने के योग्य हो। २. (मत या सिद्धान्त) जिसका खंडन होना आवश्यक और उपयुक्त हो।

खंड-पति—पुं०[ष० त०] राजा।

खंड-परशु—पुं०[ब० स०] १. महादेव। शिव। २. विष्णु।३. परशुराम। ४. राहु। ५. टूटे हुए दाँतोंवाला हाथी।

खंडपाल—पुं० [सं०खंड√पाल् (**बचाना**)+णिच्+अण्] हलवाई।

खँड्पूरी—स्त्री०[हिं० खाँड+पूरी] एक प्रकार की मीठी पूरी जिसमें मेवे आदि भरे रहते हैं।

खंड-प्रलय—पुं०[ष० त०] वह प्रलय जिसमें पृथ्वी को छोड़कर सृष्टि का और कोई पदार्थ बाकी नहीं रह जाता और जो एक चतुर्युगी अथवा ब्रह्मा का एक दिन बीत जाने पर होता है।

खंड-प्रस्तार—पुं०[ब० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

खंड-फण—पुं०[ब० स०] साँप की एक जाति।

खँडबरा—पुं०[हिं० खाँड़+बरा] १. एक प्रकार का पकवान। मीठा बड़ा। २. मिसरी का लड्डू। खँडौरा।

खंड-मेरु—पुं०[ब० स०] छंद शास्त्र में प्रस्तार के अंतर्गत मेरु नामक प्रक्रिया या रीति का एक अंग या विभाग।

खंड-मोदक—पुं०[मध्य० स०] गुड़।

खंडर† —पुं०=खँडहर।

खँडरना *—स०[सं० खंडन] १. खंड-खंड या टुकड़े-टुकड़े करना। उदा०—ताहि सियपुत्र तिल-तूल सम खंडरै।—केशव। २.=खंडना (खंडन करना)।

खँडरा—पुं०[सं० खंड+हिं० बरा] १. एक प्रकार का मीठा बड़ा। २. वेसन का बना हुआ बड़ा।

खंडरिच—पुं०=खंजन (पक्षी)।

खंडल—पुं०[सं० खंड√ला (लेना)+क] खंड धारण करनेवाला। †पुं०=खंड। (डिं०)

खंडल छोर†—पूं०[हिं० खाँड+छोरना=खोलना] बुंदेलखंड में होली के दिनों में होनेवाली एक प्रकार की प्रतियोगिता जिसमें बाँस के ऊपरी सिरे पर बँधा हुआ गुड़ और रुपया खोल लाने का प्रयत्न किया जाता है।

खंड-लवण—पुं०[कर्म० स०] काला नमक।

खंडला—पुं०[सं० खंड] छोटा खंड या टुकड़ा। कतला। †पुं०=खँडरा।

खंडवारा—पुं०=खँडरा (बड़ा)।

खंड-वर्षा—स्त्री०[कर्म० स०] ऐसी वर्षा जो रह-रह अथवा रुक-रुककर हो अथवा नगर के किसी एक भाग में तो हो और दूसरे भाग में न हो।

खँडवानी—स्त्री० [हिं० खाँड+पानी] १. पानी में खाँड़ आदि घोलकर बनाया हुआ शर्बत। २. बरातियों के पास भेजा जानेवाला जलपान और शर्बत।

खंड-विकार—पुं०[ष० त०] खाँड़ से बनी हुई चीनी या सफेद शक्कर।

खंड विला—पुं०[?] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

खंड-वृष्टि—स्त्री०=खंड वर्षा।

खंड-व्यायाम—पुं०[ब० स०] ऐसा नृत्य जिसमें केवल कमर और पैरों को गति देते हैं।

खंडशः (स्)—अ० य० [सं० खंड+शस्] खंडों के रूप में। खंड-खंड करके।

खंड-शर्करा—स्त्री०[उपमित स०] १. खंडसारी। चीनी। २. मिसरी।

खंड-शीला—स्त्री०[ब० स०, टाप्] १. वह युवती जिसका कौमार्य खंडित हो चुका हो। २. दुश्चरित्रा स्त्री। ३. वेश्या।

खंडसर—पूं०[सं० खंड+सृ (गति)+अच्] चीनी।

खँड़सार—स्त्री०[सं० खंड+शाला] वह कारखाना जहाँ पुराने देशी ढंग से चीनी बनती है।

खँड़सारी—स्त्री० [देश०] खँडसार में बनी हुई अर्थात् देशी चीनी।

खँड़साल—पुं०=खँड़सार।

खँडहर—पुं०[सं० खंड+हिं० घर] १. वह स्थान जिस पर बनी हुई इमारत या भवन खंड-खंड होकर गिरा पड़ा हो। गिरे या टूटे हुए मकान का बचा हुआ अंश। २. चित्रकला में, किसी चित्र में का वह स्थान जो भूल से खाली छूट गया हो और जिसमें सौंदर्य के विचार से कुछ अंकित होना आवश्यक तथा उचित हो।

खंडा†—पुं०[सं० खंड] चावल का छोटा टुकड़ा। किनकी। †पुं०=खाँडा (शस्त्र)।

खंडाभ्र—पुं०[सं० खंड-अभ्र कर्म० स०] १. दाँतों का एक रोग। २. बिखरे हुए बादल।

खंडाली—स्त्री०[सं० खंड-आ√ला (लेना)+क—ङीष्] १. तेल नापने का एक परिमाण। २. वह स्त्री जिसका पति धर्मद्रोही हो। ३. छोटा तालाब। ताल।

खंडिक—पुं०[सं० खंड+ठन्—इक] १. वह विद्यार्थी जो किसी ग्रन्थ के विभिन्न विभागों का अलग-अलग अध्ययन करता हो। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. काँख।

खंडिका—स्त्री०[सं० खंडिक+टाप्] १. दे० 'खंडिक'। २. किसी देय राशि का वह अंश जो किसी एक निश्चित समय पर दिया जाय अथवा दिया जाने को हो। किस्त। (इन्स्टालमेन्ट)

खंडित—वि०[सं० √खंड्+क्त] १. (वस्तु) जिसका कोई अंश या भाग उससे कट या टूटकर अलग हो गया हो। जैसे—खंडित भारत, खंडित मूर्ति। २. (कुमारी) जिसका कौमार्य नष्ट हो चुका हो। ३. जो पूरा न हो। अपूर्ण। ४. (विचार या सिद्धान्त) जिसकी त्रुटियाँ या दोष दिखलाकर खंडन किया गया हो और उसे गलत ठहराया गया हो।

खंडित-विग्रह—वि० [ब० स०] विकलांग।

खंडित-व्यक्तित्व—पुं० [सं० ब० स०] मनोविज्ञान में, प्रबल मानसिक संघर्ष के कारण उत्पन्न होनेवाली ऐसी मानसिक स्थिति जिसमें मनुष्य का अपनी चेतना-शक्ति पर पूरा-पूरा अधिकार नहीं रह जाता। (स्प्लिट पर्सनैलिटी)

खंडिता—स्त्री०[सं० खंडित+टाप्] साहित्य में वह नायिका जो रात भर अन्यत्र पर-स्त्री गमन करनेवाले अपने प्रिय को प्रातः पर-स्त्री-संसर्ग के चिह्नों से युक्त देखकर दुःखी होती हो। इसके कई भेद हैं—मुग्धा खंडिता, मध्या खंडिता, प्रौढ़ा खंडिता, आदि आदि।

खंडिनी—स्त्री०[सं० खंड+इनि—ङीप्] पृथिवी।

खँडिया—पुं०[सं० खंड+हिं० इया (प्रत्य०)] वह जो कोल्हू में पेरने के लिए गन्नों के खंड-खंड करता या गँड़ेरियाँ बनाता हो।

†पुं० =खँड (टुकड़ा)।

खंडी†—स्त्री०[सं० खंड] १. गाँव के आस-पास के वृक्षों का समूह। २. राज-कर। ३. चौथ नामक कर जो मराठे वसूल करते थे। ४. लगान या किराये की खंडिका। किस्त।

मुहा०—**खंडी करना**—=किस्त बाँधना।

खँडुआ†— पुं०[हिं० खंड]१. कुआँ जिसकी बँधाई पत्थर के ढोकों से हुई हो। २. दे० 'कंदुआ'।

खंडेश्वर—पुं०[सं० खंड-ईश्वर,ष० त] एक खंड(देश) का स्वामी। राजा।

खँडौरा† —पुं०[हिं० खाड़ +औरा (प्रत्य०)] १ मिसरी का लड्डू। २. ओला।

खँडौरी† —स्त्री०[सं० खंड] कूटे हुए चावल के टूटे कण।

खंतरा—पुं०[सं० अन्तर] १. दरार। खोडरा। २. अंतराल । कोना।

खंता† —पुं०[सं० खनित्र] [स्त्री० अल्पा० खंती] १. जमीन खोदने का उपकरण। जैसे—कुदाल, फावड़ा आदि। २. वह गड्ढा जिसमें से कुम्हार बर्तन बनाने के लिए मिट्टी निकालते हैं। ३. गड्ढा। गर्त्त।

खंति—स्त्री०[डिं०] १. इच्छा। उदा०—जब दैहों तब पूजिहैं, जो मन मझ्झह खंति।—चन्दबरदाई। २. चतुरता। ३. चसका। उदा०—खंति लागौ त्रिभुवनपति खेड़ै।—प्रिथीराज।

स्त्री० [हिं० खंता] एक जाति जो जमीन खोदने का काम करती है।

खंदक—पुं०[अ०] १. किसी गढ़, भवन या महल के चारों ओर रक्षा के लिए बनाई हुई चौड़ी तथा गहरी नाली । खाईं। २. बहुत बड़ा तथा गहरा गड्ढा। ३. दो बातों या मतों के बीच का बहुत बड़ा अन्तर।

खंदना †—स० =खोदना।

खंदा †—पुं०=खंता।

खँदाना†—स० =खुदवाना।

खंदोली—स्त्री०[हिं० खटोली] बच्चे का बिछौना।

खँघवाना—स० [हिं० खाली] =खंदाना (खुदवाना)।

स० [?] खाली कराना।

खंघा—पुं०[सं० स्कंघक] आर्यागीति नामक छंद।

†पुं० १. =खंडिका। २. =कंघा।

खंघार—पुं०[सं० खंडाघीश] १ राजा। २. मालिक। स्वामी। उदा०—षंड षंड का सील्या खंघार।—नरपति नाल्ह। ३. छावनी। शिविर।

२.=स्कंघावार(छावनी)। उदा०—उहाँ त लूसौं कटक खँधारू।—जायसी।

†पुं०१. =गांघार।

खंघारी†—वि० =कंघारी।

खंघासाहिनी—स्त्री० =खंघा (छंद)।

खँधियाना †—स०[?] (पदार्थ को पात्र में से) बाहर गिराना या निकालना। खाली करना।

खंबायची, खंबायती—स्त्री० =खम्माच।

खंभ—पुं०[सं० स्कंघ, प्रा० खंभ] १. स्तंभ। खंभा। २. किसी चीज को पकड़े या रोके रहनेवाला सहारा।

खंभा–पुं०[सं० स्कंभ]१. ईंट, पत्थर, लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई गोल या चौकोर रचना जिस पर छत आदि टिकी रहती है। २. ऐसा आधार जो अपने ऊपर कोई बड़ी या भारी चीज लिये या सँभाले हुए हो।

खंभात—पुं० [सं० स्कंभावती] गुजरात का वह पश्चिमी प्रांत या भाग जो इसी नाम की खाड़ी के किनारे है।

खंभायची कान्हड़ा—पुं०=खम्माच कान्हड़ा।

खँभार†—पुं०[सं० क्षोभ, प्रा० खोभ] १. क्षोभ। २. घबराहट। बेचैनी। ३. भय या उसके कारण होनेवाली चिंता। आशंका। ४. खेद, रंज या शोक।

†पुं०=गंभारी (वृक्ष)।

खंभारी—स्त्री०[सं० काश्मरी, प्रा० कम्हरी] =गंभारी।

खंभावती—स्त्री०[सं० स्कंभावती] ओड़व संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो रात के दूसरे पहर में गाई जाती है।

खँभिया†—स्त्री० [हिं० खंभा] १. खंभा का अल्पार्थक रूप। छोटा या पतला खंभा। २. खूंटा।

खंभेली†—स्त्री०=खँभिया।

खँवँ—स्त्री० [सं० खं] जमीन में खोदा हुआ वह गड्ढा जिसमें अनाज भरकर रखा जाता है। खत्ता।

खँवँड़ा†—पुं०[हिं० खँवँ] बहुत बड़ा खत्ता।

खँसना†—अ०=खिसकना।

खई†—स्त्री० [सं० क्षयी] १. क्षयकारिणी क्रिया। २. युद्ध। ३. लड़ाई-झगड़ा। उदा०—खई मिटि जायगी। अरुसे ही के रस मैं।—सेनापति।

ख-कक्षा—स्त्री०[ष० त०] आकाश की परिधि। (ज्योतिष)

ख-कुंतल—पुं०[ब० स०] शिव।

खक्खट—वि०[सं० √खक्ख् (हँसना)+अटन्] १. कर्कश। २. कठिन । ३. कठोर।

†पुं०=खड़िया।

खक्खर—पुं०[सं० √खक्ख्+अरन्] भिखारी की छड़ी।

खक्खा—पुं० [अ० क़हक़हा] जोर की हँसी। अट्टहास। कहकहा।

पुं० [हिं० ख (वर्ण)] १. खत्री। २. पंजाबी सिपाही। ३. अनुभवी और चतुर पुरुष। ४. बड़ा हाथी।

खखड़ा—वि०=खोखला।(पूरब)

खखरा—वि०=खँखरा।

खखरिया†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की पतली अलोनी खस्ता पूरी।

खखसा—पुं०=खेखसा।

खखार—पुं०[अनु०] खखारने पर मुँह के रास्ते निकलनेवाली बलगम।

खखारना—अ०[सं० क्षरण] १. पेट की वायु को इस प्रकार मुँह के रास्ते निकालना कि वह गले में से निकलते समय शब्द करे तथा अपने साथ कफ या बलगम भी लेती आवे। २. उक्त प्रक्रिया से मुँह में आई हुई बलगम को थूकना।

खखेटना*—स०[हिं० खदेड़ना] १. भगाना। २. पीछा करना। ३. दबाना। ४. घायल करना।

खखेटा*—पुं० [हिं० खखेटना] १. भगदड़। २. दाब। ३. चोट। ४. शंका। ५. छेद।

खखेरा—पुं०[हिं० खखारना] कलंक। उदा०—मनहु विद्यापति सुनवर यौवति कहइते होये खखेरा।—विद्यापति।

खखोडर†—पुं०[सं० ख और कोटर] पेड़ के कोटर में बना हुआ किसी पक्षी का घोंसला।

खखोरना†—स० [देश०] १. किसी वस्तु को खोजना। २. चारों तरफ खोजते फिरना।

ख-गंगा—स्त्री० [ष० त०] आकाश गंगा।

खग—पुं०[सं० ख√गम्(गति)+ड] १. वह जो आकाश या हवा में उड़ता हो। जैसे—ग्रह, नक्षत्र, किन्नर, गंधर्व, देवता, मेघ आदि। २. हवा में पंखों के सहारे उड़नेवाले जीव। पक्षी। ३. वायुयान। ४. तीर। वाण। ५. वायु। हवा।

†पुं०=खड्ग।

खग-केतु—पुं०[ष० त०] गरुड़।

खगना†*—अ०[हिं० खाँग=काँटा] १. गड़ना। २. चित्त में जमना या बैठना। ३. लीन होना। ४. अंकित या चिह्नित होना। ५. खड़ा होना। उदा०—सखि सूधे सभाय लख्यो भज जात सो टेढ़ो ह्वै मारग बीच खग्यौ।—घनानन्द। ६. अड़ना। ७. उलझना। फँसना। उदा०— न्हात रहीं जल मैं सब तरुनी, तब तुव नैना कहाँ खगे।— सूर। ८. कसा जाना।

स० १. कसना। २. बाँधना। ३. लीन करना।

अ० [सं० क्षीण] १. क्षीण होना। २. कम होना। घटना।

खग-नाथ—पुं०[ष० त०] गरुड़।

खग-पति—पुं०[ष० त०] १. गरुड़। २. सूर्य।

खगवार—पुं०[सं० खड्गवान् ?]गले का हँसुली नामक आभूषण। उदा०—पन्ना सौं जटित मानौं हेम खगवारो है।—सेनापति।

खगहा—वि० दे० 'खँगहा'।

खगांतक—पुं०[खग-अंतक, ष० त०] बाज पक्षी।

खगासन—पुं०[खग-आसन, ब० स०] १. विष्णु। २. उदयगिरि।

खगि†—स्त्री०= खड्ग।

ख-गुण—वि० [ब० स०] (राशि) जिसका गुणक शून्य हो। (गणित)

खगेंद्र—पुं०[खग-इंद्र, ष० त०] गरुड़।

खगेश—पुं०[खग-ईश, ष० त०] पक्षियों के राजा, गरुड़।

ख-गोल—पुं०[ष० त०] १. आकाश-मंडल। २. ग्रह। ३. दे० 'खगोल विद्या'।

खगोलक—पुं०[सं० खगोल+कन्] = खगोल।

खगोल मिति—स्त्री० [ष० त०] गणित ज्योतिष का वह अंग या शाखा जिसमें तारों, नक्षत्रों आदि की नाप-जोख, दृश्य स्थितियों, गतियों आदि का विचार होता है। (एस्ट्रोमेट्री)

खगोल-विद्या—स्त्री०[ष० त०] आकाश के ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति-विधि का विवेचन करनेवाली विद्या। ज्योतिष। (एस्ट्रानोमी)

खग्ग—स्त्री०=खड्ग।

ख-ग्रास—पुं०[ब० स०] वह ग्रहण जिसमें चंद्र या सूर्य का पूरा बिंब ढक जाय। (टोटल इक्लिप्स)

खचन—पुं०[सं० √खच् (बाँधना, जड़ना) +ल्युट्—अन] १. कोई चीज जड़ने या बाँधने की क्रिया या भाव। २. अंकित करना।

खचना—अ०[सं० खचन] १. जड़ा जाना। २. अंकित होना। ३. अच्छी तरह से भरा जाना। ४. अटकना। फँसना।

स० १ जड़ना। २ अंकित करना।

खचमस—पुं० [सं० ख√चम् (खाना) +असच्] चंद्रमा।

खचर—पुं० [सं० ख√चर् (गति)+ट] १. आकाश में चलनेवाले पदार्थ, प्राणी आदि। जैसे—ग्रह, नक्षत्र, देवता, मेघ, वायु आदि। २. पक्षी। चिड़िया। ३. तीर। वाण। ४. राक्षस। ५. संगीत में रूपक ताल का एक नाम। ६. कसीस।

खचरा—वि० [हिं० खच्चर] १. दोगला या वर्ण-संकर। २. दुष्ट। पाजी। ३. जो कोई बात जानते हुए भी बतलाता न हो। मचला।

खचाखच—वि० [अनु०] (स्थान) जिसमें आवश्यकता से अधिक व्यक्ति सट-सट कर भरे हों अथवा जिसमें बहुत अधिक सामान रखा गया हो। जैसे—गाड़ी का डिब्बा यात्रियों से या आलमारी पुस्तकों से खचाखच भरी थी।

खचाना—अ० [हिं० खचाखच] खचाखच भरा जाना या भरा होना।

स० दे० 'खँचाना'।

खचारी (रिन्)—वि०, पुं० [सं० ख√चर्+णिनि] खचर।

खचावट—स्त्री० [हिं० खाँचाना] खचने या खचाने की क्रिया या भाव। खचन।

खचित—वि० [सं०√खच्+क्त] १. जड़ा हुआ। जड़ित। जैसे—मणि खचित। २. अंकित या चित्रित किया हुआ। उदा०—कुसुम खचित, मारुत सुरभित खग कुल कूजित...।—पंत। ३. युक्त। ४. अच्छी तरह से भरा हुआ। खचाखच।

पुं० ऐसा दुशाला जिसमें बहुत से बेल-बूटे हों। (कौटिल्य)

ख-चित्र—पुं० [स० त०] १. वैसी ही अनहोनी, असंभव या बे-सिर पैर की बात जैसी आकाश पर चित्र अंकित करना है। २. ऐसी वस्तु जो अस्तित्व में न हो।

खचिया†—स्त्री० दे० 'खाँची'।

खचीना†—पुं० [हिं० खँचाना] १. रेखा। लकीर। २. चिह्न। निशान।

खचेरना—स० [हिं० खदेरना] दबाकर वश में करना। उदा०—कैसे, कहौं, सुनौं जस तेरे औरै आनि खचेरे।—सूर।

खच्चर—पुं० [देश०] १. एक प्रसिद्ध पशु जो गधे और घोड़ी या घोड़े और गधी के संयोग से उत्पन्न होता है। अश्वतर। २. दोगला अथवा वर्णसंकर व्यक्ति।

खज—वि० [सं० प्रा० खज्जखाद्य] (वह) जो खाया जाने को हो अथवा खाये जाने के योग्य हो।

खजक—पुं० [सं०√खज् (मथना)+अच्+कन्] मथानी।

खजप—पुं० [सं० खज्+कपन्] घी।

खजमज—वि० [अनु०] साधारण से गिरा हुआ। कुछ खराब। जैसे—आज तबीयत कुछ खजमज है।

खजमजाना—अ० [अनु०] (तबीयत) कुछ भारी लगना। अस्वस्थता सी जान पड़ना।

ख-जल—पुं० [मध्य० स०] ओस।

खजला—पुं०=खाजा (मिठाई)।

खजलिया—पुं०[देश०] अंगूर का एक रोग जिसमें उसके पत्ते सड़ने लगते हैं।

खजहजा—पुं० [सं० खाद्याद्य<प्रा० खज्जज्ज< खजहज्ज, खजहजा] १. खाने योग्य उत्तम फल या मेवा। खाजा। उदा०—और खजहजा आव न नाऊँ।—जायसी। २. खाजा नामक पकवान।

खजा—स्त्री० [सं० √खज्+अप्+टाप्] १. मथानी। २. प्रतियोगिता। ३. युद्ध।

खजानची—पुं० [फा०] १. वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति, सभा, समिति आदि के कोष या खजाने का प्रधान अधिकारी हो। कोषाध्यक्ष। (ट्रेजरर) २. वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ या आय-व्यय का हिसाव रहता है। रोकड़िया। (कैशियर)

खजाना—पुं० [अ० खजानः] १. किसी व्यक्ति, संस्था आदि की संचित धनराशि। (ट्रेजर) २. वह स्थान जहाँ पर संचित की गई धनराशि रखी जाती है। (ट्रेजरी) ३. वह भवन या स्थान जहाँ किसी राज्य या संस्था की आय का धन रहता है और जहाँ से व्यय के लिए धन निकलता है। (ट्रेजरी) ४. कर या राजस्व जो खजाने में जमा करना पड़ता है। ५. वह स्थान जहाँ कोई चीज़ बहुत अधिकता से पाई जाती अथवा होती हो। भांडार।

मुहा०—खुले खजाने=सबके सामने या देखते हुए। खुलेआम। खुलकर।

६. किसी उपकरण या उपयोग में आनेवाली वस्तु का वह विशिष्ट अंश या विभाग जिसमें उसकी आवश्यक सामग्री भरकर रखी जाती है। जैसे—(क) बन्दूक का खजाना अर्थात् वह जगह जिसमें बारूद भरी जाती है। (ख) लालटेन का खजाना, जिसमें तेल भरा जाता है।

खजित्—पुं० [सं० ख√जि (जीतना)+क्विप्] एक प्रकार के शून्यवादी बौद्ध।

खजिल—वि० [फ़ा] लज्जित। शरमिंदा।

खजीना—पुं०=खजाना। भांडार। उदा०—पीया को प्रभु परचो दीन्हो दियारे खजीना पूर। —मीराँ।

खजुआ—पुं० १=खाजा (पकवान)। २. दे० 'भरवाँस' (अन्न)।

खजुरहट—स्त्री० [हिं० खजूर] नैपाल की तराई में होनेवाला एक प्रकार का छोटा खजूर जिसकी पत्तियाँ चटाई बनाने के काम आती हैं, पर फल किसी काम का नहीं होता।

†स्त्री०=खुजली।

खजुरा†—पुं०=खजूरा।

खजुराही†—स्त्री० [हिं० खजूर] वह प्रदेश या स्थान जहाँ खजूरों के बहुत से पेड़ हों।

खजुरिया†—स्त्री० [सं० खर्जूरिका] १. छोटे फलोंवाली खजूर। २. खजूर नाम की मिठाई। ३. एक प्रकार की ईख।

वि० खजूर संबंधी। खजूरी।

खजुलाना†—सं०=खुजलाना।

खजुली—स्त्री० १.=खुजली। २.=खजूरी।

खजुवा—पुं०=खाजा (पकवान)।

खजूर—स्त्री० [सं० खर्जूर, प्रा० खज्जूर, पा० खज्जूरी, व० खाजूर, उ० खजुरी, सि० खजूरी] १. ताड़ की तरह का एक पेड़ जो प्रायः रेगिस्तान में होता है और जिसमें बेर के आकार के लंबोतरे मीठे फल लगते हैं। २. उक्त पेड़ का मीठा फल जो खाया जाता है। ३. आटे, घी, शक्कर आदि के संयोग से बननेवाली एक प्रकार की मिठाई।

खजूर छड़ी—स्त्री० [हिं० खजूर+छड़ी] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर खजूर की पत्तियों की तरह की धारी या बेल बनी होती है।

खजूरा†—पुं० [हिं० खजूर] १. फूस से छाई हुई छत की बँड़ेर जो प्रायः खजूर की होती है। मँगरा। २. कई लड़ों का बटा हुआ वह डोरा जिससे स्त्रियाँ चोटी गूँथती हैं। चोटी। ३. दे० 'कन-खजूरा'।

खजूरी—वि० [हिं० खजूर] १. खजूर संबंधी। खजूर का। २. आकार-प्रकार के विचार से खजूर की तरह का। ३. तीन लड़ों में गूँथा हुआ। जैसे—खजूरी चोटी (स्त्रियों की)।

खजेहजा†—पुं०=खजहजा।

खजोहरा—पुं० [सं० खर्जु, हिं० खाज] एक तरह का रोएँदार छोटा कीड़ा जिसके स्पर्श से खुजली होने लगती है।

ख-ज्योति(तिस्) पुं० [व० स०] खद्योत। जुगनूँ।

खटंगा—पुं० [खट्वांग] जबलपुर के पास का प्रदेश। कटंग।

खट— पुं० [अनु०] दो वस्तुओं के टकराने अथवा एक वस्तु को दूसरी वस्तु से मारने पर होनेवाला शब्द।

पद–खट से—(क) खट शब्द करते हुए। (ख) तत्काल। तुरन्त।

पुं० [सं० खट् (चाहना)+अच्] १. कफ। बलगम। २. वह पुराना और टूटा-फूटा कूआँ जिसमें जल न रह गया हो।:अंधा कूआँ। ३. घूँसा। मुक्का। ४. एक प्रकार की घास जो छप्पर या छाजन बनाने के काम आती है। ५. कुल्हाड़ी। ६. हल।

पुं० [सं० षट्] सवेरे के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का षाड़व राग।

खटक—स्त्री० [हिं०] १. खटकने की क्रिया या भाव। २. खटकनेवाला तत्त्व या बात। ३. आशंका। खटका।

पुं० [सं० √खट्+वुन्—अक] १. घटक। २. आधी खुली मुट्ठी। ३. मुष्टिका। मुट्ठी।

खटकना—अ० [अनु०] १. दो वस्तुओं के परस्पर टकराने से शब्द उत्पन्न होना। २. (कोई बात मन में) प्रशस्त या भली न जान पड़ने के कारण कुछ कष्टदायक जान पड़ना। खलना। ३. अनिष्ट की आशंका होना। ४. रह-रहकर हलकी पीड़ा होना। ५. आपस में अनवन होना। ६. उचटना।

खटकरम—पुं० [सं० षट्कर्म्म] तरह-तरह के व्यर्थ के और झंझटों से भरे हुए काम। खटराग।

खटकरमी—वि० [हिं० खटकरम] इधर-उधर के और व्यर्थ के काम करनेवाला।

खटका—पुं० [हिं० खट] १. खट से होनेवाला शब्द। २. इस प्रकार का कोई शब्द या संकेत होने पर अथवा कोई अनिष्टकारक घटना होने पर मन में होनेवाली आशंका और दुश्चिता। ३. चिंता। फिक्र। ४. वह कमानी, पेंच अथवा ऐसा ही कोई टुकड़ा जिसके घुमाने, दवाने आदि से 'खट' शब्द करते हुए कोई काम होता है। (स्विच) जैसे—बन्दूक का खटका, बिजली की बत्ती का खटका। ५. किवाड़े की सिटकनी। ६. पेड़ में बँधा हुआ वह बाँस जिसे खड़खड़ाकर चिड़ियाँ उड़ाते हैं। ७. संगीत में, किसी स्वर के उच्चारण के बाद उससे कुछ ही नीचे

के स्वर पर होते हुए फिर ऊँचे स्वर की ओर का बढ़ाव जो बहुत कलापूर्ण और सुन्दर होता है।

खटकाना—स० [हिं० खटकना] १. एक वस्तु से दूसरी वस्तु पर इस प्रकार आघात करना कि वह खटखट शब्द करने लगे। खटखट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—दरवाजा खटकाना। २. किसी के मन में खटका उत्पन्न करना। ३. परस्पर अनबन कराना।

खटकामुख—पुं० [सं० खटक-आमुख, ष० त०] १. नृत्य में, हाथों की एक विशिष्ट मुद्रा। २. बैठकर तीर चलाने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

खटकीड़ा (कीरा)—पुं० [हिं० खाट+कीड़ा] खटमल।

खटखट—स्त्री० [अनु०] १. दो वस्तुओं के बराबर टकराते रहने से होनेवाला शब्द जो प्रायः कर्णकटु हो। २. झंझट। झमेला। ३. आपस में होनेवाली कहा-सुनी और लड़ाई-झगड़ा।

खटखटा—पुं० [अनु०] खेतों में बाँधा हुआ वह बाँस जो पक्षियों को उड़ाने के लिए दूसरे छोटे बाँस से खटखटाया जाता है। खटका।

खटखटाना—स० [अनु०] किसी प्रकार का आघात करके खटखट शब्द उत्पन्न करना।

खटखुटिया—स्त्री० [खट खट से अनु०] वह खड़ाऊँ, जिसमें खूँटी के स्थान पर रस्सी या फीता आदि लगा रहता है और जिसे पहनकर चलने में खटखट शब्द होता है।

खट-खादक—पुं० [ष० त०] १. कौआ। २. गीदड़।

खटना—स० [?] धन उपार्जन करना या कमाना। (पश्चिम)

अ० [?] अधिक तथा कठोर परिश्रम करना। (पूरब)

खटपट—स्त्री० [अनु०] १. दो कड़ी वस्तुओं के आपस में टकराने का शब्द। २. दो पक्षों में होनेवाली सामान्य अनबन या वैर-विरोध। ३. आपस में होनेवाली फूट।

खटपटिया—वि० [हिं० खटपट] १. लोगों से खटपट करने या लड़ने-झगड़नेवाला। जिसकी दूसरों से न बनती हो। २. दो पक्षों में फूट डालनेवाला।

पुं० काठ की चट्टी। खटखटिया।

खटपद—पुं०=षट्पद।

खटपदी—स्त्री०=षट्पदी।

खटपाटी—स्त्री० [हिं० खाट+पाटी] खाट या पलंग की पाटी।

मुहा०—**खटपाटी लेना या लगना**=रूठकर काम-धन्धा छोड़ देना और चुपचाप कहीं बैठ या लेट जाना। उदा०—मैं तोहिं लागि लेब खटपाटी।—जायसी।

खटपापड़ी—स्त्री० [देश०] अमली या करमई नाम का पेड़।

खटपूरा—पुं० [हिं० खड्ड+पूरा] खेत की मिट्टी समतल करने की मुँगरी।

खटबारी—स्त्री०=खटपाटी।

खटबुना—पुं० [हिं० खाट+बुनना] वह जो खाट बुनने का काम करता हो।

खटभिलावाँ—पुं० [देश०] चिरौंजी का पेड़। पयाल।

खटभेभल—पुं० [देश०] छोटे कद तथा छोटी-छोटी पत्तियोंवाला एक पेड़ जिसमें पीले फूल तथा दानेदार छोटी फलियाँ लगती हैं।

खटमल—पुं० [हिं० खाट+मल या मल्ल] खाट, चौकी आदि में रहनेवाला मटमैले उन्नाबी रंग का एक प्रसिद्ध कीड़ा जो मनुष्य के शरीर का रक्त अपने डंक द्वारा चूसता है। उड़स।

खटमली—वि० [हिं० खटमल] खटमल के रंग का। गहरे या मटमैले उन्नाबी रंग का।

पुं० उक्त आकार का रंग।

खट-मिट्ठा—वि०=खट-मीठा।

खट-मीठा—वि० [हिं० खट्टा+मीठा] जो खाने में कुछ खट्टा, पर साथ ही मीठा भी लगता हो। जैसे—खट-मीठा फालसा।

खटमुख—पुं०=षट्मुख।

खटमुत्ता—वि० [हिं० खाट+मूत(=मूत्र)] (बच्चा) जिसे खाट पर ही मूतने की आदत पड़ गई हो।

खटरस—वि० पुं०=षट्रस।

खटराग—पुं० [सं० षट्राग] १. लड़ाई-झगड़ा। २. झंझट। बखेड़ा। ३. कूड़ा-करकट।

खटरिया—पुं० [देश०] एक प्रकार का कीड़ा।

खटलर—पुं० [देश०] सान धरनेवालों का लकड़ी का एक उपकरण या औजार।

खटला—पुं० [देश०] कान के निचले भाग में किया जानेवाला वह छेद जिसमें आभूषण आदि पहने जाते हैं।

पुं० [सं० कलत्र] स्त्री और बाल-बच्चे। परिवार। (महाराष्ट्र)

खटवाटी—स्त्री०=खटपाटी।

खटाई—स्त्री० [हिं० खट्टा] १. खट्टे होने की अवस्था, गुण या भाव। २. कोई खट्टी वस्तु। जैसे—कच्चा आम, इमली, किसी तरह का अचार आदि।

मुहा०—**खटाई में डालना**=ऐसी युक्ति या बहाना करना जिससे किसी का काम कुछ दिनों तक बिना पूरा हुए यों ही पड़ा रह जाय। काम लटकाये रखना, उसे खतम न करना।

विशेष—सुनार लोग गहना बना लेने पर उसे साफ करने के लिए कुछ समय तक खटाई में छोड़ देते हैं जिससे उसकी मैल कट जाय। और इसी बहाने से वे ग्राहक को प्रायः दौड़ाया और लौटाया करते हैं। इसीसे यह मुहावरा बना है।

खटाक—पुं० [अनु०] किसी ऊँचे स्थान पर से काँच, मिट्टी आदि की चीज़ों के जमीन पर गिरकर टूटने का शब्द।

खटाखट—पुं० [अनु०] 'खटखट' का शब्द।

अव्य० १. खट-खट शब्द के साथ। २. निरंतर या लगातार शब्द करते हुए। ३. चटपट। तुरंत।

खटाना—अ० [हिं० खट्टा] किसी वस्तु में खट्टापन आना। खट्टा होना।

अ० [हिं० खटना=परिश्रम करना] १. किसी स्थान पर गुजारा या निर्वाह होना। निभना। १. परीक्षा आदि में ठीक या पूरा उतरना।

स० किसी को खटने अर्थात् विशेष परिश्रम करने में प्रवृत्त करना। खूब मेहनत कराना।

खटापट—स्त्री०=खटपट।

खटापटी—स्त्री०=खटपट।

खटाल†—पुं० [बँ० कटाल] पूर्णिमा के दिन उठनेवाली समुद्र की ऊँची लहर। ज्वार।

खटाव—पुं०[हिं० खटाना] १. खटने या खटाने की क्रिया या भाव। २. गुजर, निबाह। निर्वाह। ३. नाव बाँधने का खूंटा।

खटास—पुं०[सं० खट्टाश] मुश्क बिलाव। गंध बिलाव।

स्त्री०[हिं० खट्टा] १. वह तत्त्व जिसके कारण कोई चीज खट्टी होती है। २. खट्टे होने का गुण या भाव। खट्टापन।

खटिक–पुं०[सं० खट्टिक] [स्त्री० खटकिन] एक प्रसिद्ध जाति जो तरकारियाँ, फल आदि बेचने का व्यवसाय करती है।

खटिका—स्त्री०[सं० खट+कन्—टाप्, इत्व] १. खड़िया मिट्टी। २. कान का छेद।

खटिनी—स्त्री०[सं० खट+इनि—ङीष्] खड़िया मिट्टी।

खटिया—स्त्री०[सं० खट्वा] छोटी खाट। चारपाई।

खटी—स्त्री०[सं० √खट्+अच्—ङीष्] =खटिनी।

खटीक—पुं०=खटिक।

खटुली†—स्त्री० =खटोली।

खटेटी†—स्त्री०[हिं० खाट +पीठ ?] ऐसी खाली खाट जिसपर बिस्तर न बिछा हो।

खटोल—पुं०[देश०] =खटोला।

खटोलना—पुं० =खटोला।

खटोला—पुं०[हिं० खाट+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट या चारपाई।

पुं०[?] बुंदेलखंड के उस भाग का नाम जिसमें आज-कल दमोह, सागर आदि जिले हैं और जहाँ किसी समय भीलों की वस्ती थी।

खट्ट—वि०[सं० √खट्ट (छिपाना)+अच्] खट्टा।

पुं०[?] एक प्रकार का पीला संगमरमर।

खट्टा—वि०[सं० खट्ट, प्रा०, खट्ट, बँ० खाटा, उ० खटा, सिं० खटो, गु० खाटू] आम, इमली आदि के से स्वादवाला।

मुहा०—**(जी या मन) खट्टा होना**=अप्रसन्न और उदासीन होना। नाराज होना। **(किसी से) खट्टा खाना**= अप्रसन्न रहना। मुंह फुलाना। **खट्टी छाछ से भी जाना**=थोड़े लाभ से भी वंचित होना।

पुं० एक प्रकार का बड़ा नीबू।

पुं० =खाट (चारपाई)।

खट्टा-मीठा—वि० =खट-मीठा।

पुं० संसार का ऊँच-नीच या दुःख-सुख। जैसे—आप तो सब खट्टा-मीठा चख या देख के बैठे हैं।

खट्टाश(स)—पुं०[सं० खट्ट √अश् (व्याप्ति) +अच्] [स्त्री० खट्टाशी (सी)] बिल्ली की तरह का एक प्रकार का जंगली जंतु जिसका मुँह चूहे की तरह निकला हुआ होता है। (सिवेट-कैट)

खट्टि—स्त्री०[सं० √खट्ट्+इन्] अरथी।

खट्टिक—वि०[सं० खट्ट +ठन्—इक] वध या हिंसा करनेवाला।

पुं० १. बहेलिया। २. कसाई।

खट्टिका—स्त्री० [सं० खट्ट + कन्+टाप्, इत्व] १. छोटी खाट। २. अरथी।

खट्टी—स्त्री०[सं० ?] १. खट्टी नारंगी या नीबू। २. गलगल।

स्त्री०[हिं० खटना] आय। कमाई।

खट्टी-मीठी—स्त्री०. [हिं० खट्टी+मीठी] एक प्रकार की लता।

खट्टू* पुं० [पं० खटनी =रूपया पैदा करना] कमानेवाला। कमाऊ (विपर्याय–निखट्टू)।

खट्वांग—पुं०[सं० खट्वा-अंग, ष० त०] १. चारपाई के अंग; जैसे—पाटी, पावा आदि। २. शिव का एक अस्त्र। ३. प्रायश्चित्त के दिनों में भिक्षा माँगने का एक प्रकार का पात्र। ४. तन्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा जिससे देवता बहुत प्रसन्न होते हैं। ५. साधुओं की वह लकड़ी जिस पर हाथ रखकर वे बैठते हैं। अधारी। टेकनी। ६ राजा दिलीप का एक नाम।

खट्वांग-धर—पुं [ष० त०] शिव।

खट्वांगी (गिन्)—पुं०[खट्वांग इनि] शिव।

खट्वा—स्त्री०[सं०√खट् (चाहना) +क्वन्, टाप्] खाट जिसपर सोते हैं। चारपाई।

खट्वाका—स्त्री० [सं० खट्वा +कन्+टाप्] छोटी खाट। खटिया।

खट्विका—स्त्री० [सं० खट्वा+कन्—टाप्, इत्व] छोटी खाट। खटिया।

खडंजा—पुं० [हिं० खड़ा+अंग]१. ऊँचाई के बल में बैठाई हुई ईंट। २. उक्त रूप में ईंटों की होनेवाली जुड़ाई या उससे बननेवाला फर्श।

*पुं० दे० 'झाँवाँ'। (क्व०)

खड—पुं०[सं० खड् (काटना)+अप्] १. धान की पेड़ी। पयाल। २. धान। ३. श्योनाक। सोनापाढ़ा। ४. चाँदी, सोने का वह चूर्ण जिससे चीज़ों पर गिलट चढ़ाते हैं।

पुं० खर (घास)।

खड़क—स्त्री०=खटक।

खड़कना—अ० [अनु०] [भाव० खड़खड़ाहट] 'खड़खड़' शब्द होना। खटकना।

खड़का†—पुं० १.=खटका। २.=खरका।

खड़काना—स०=खटकाना।

खड़क्की—स्त्री०[सं० खड़क्√कृ (करना) +ड—ङीप्] खिड़की।

खड़खड़ा—पुं० [अनु०] १.=खटखटा। २.=खड़खड़िया।

खड़खड़ाना—अ० [हिं० खड़खड़] खड़खड़ शब्द होना।

स० खड़खड़ (खटखट) शब्द करना।

खड़खड़ाहट—स्त्री० [हिं० खड़खड़ाना] खड़खड़ शब्द होने की क्रिया, भाव या शब्द।

खड़खड़िया—स्त्री०[हिं० खड़खड़ाना] १. पालकी जिसे चार कहार उठाते हैं। पीनस। २. काठ का वह ढाँचा जिसमें जोतकर गाड़ी खींचने के लिए घोड़े सुधारे जाते हैं।

खड़ग—पुं०=खड्ग।

खड़गी—वि० [सं० खड्गिन्] जो खड्ग लिये हो। खड्गधारी।

पुं० गैंडा।

खड़जी—पुं०=खड़गी।

खड़बड़—स्त्री०[अनु०]१. वस्तुओं को उलटने-पलटने से होनेवाला शब्द। २. परस्पर होनेवाली अनबन या झगड़ा। खटपट। ३. अव्यवस्थित करनेवाला बड़ा परिवर्तन। उलट-फेर। ४. हलचल।

खड़बड़ाना—अ०[अनु०]१. खड़बड़ शब्द होना। २. खड़बड़ या घबराहट में पड़ना। ३. व्यक्ति या व्यक्तियों का ऐसी स्थिति में

होना कि वे दृढ़, शान्त या स्थिर न रह सकें। विचलित होना। ४. पदार्थों का क्रम-रहित या तितर-बितर होना।

स० १. खड़बड़ शब्द उत्पन्न करना। २. व्यक्ति या व्यक्तियों को ऐसी स्थिति में करना कि वे दृढ़, शान्त या स्थिर न रह सकें। विचलित करना। ३. चीजें अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

खड़बड़ाहट—स्त्री०[हिं० खड़बड़ाना] खड़बड़ करने या होने की अवस्था या भाव।

खड़बड़ी—स्त्री० [हिं० खड़बड़ाना] १. खड़बड़ करने या होने की अवस्था या भाव। खड़बड़ाहट। २. अस्त-व्यस्तता। व्यतिक्रम। ३. दे० 'खलबली'।

खड़बिड़ा—वि०=खड़बीहड़।

खड़बीहड़†—वि०[हिं० खड्ड+बीहड़] १. (प्रदेश या प्रान्त) जो समतल न हो। ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़। २. बेढंगा। ३ विकट।

खड़मंडल—वि०[सं० खंड-मंडल] १ अव्यवस्थित रूप से उलटा-पलटा हुआ। अस्त-व्यस्त। तितर-बितर। २. (वर्ग या समाज) जो क्रमबद्ध या व्यवस्थित न रह गया हो।

खड़सान—पुं०=खरसान।

खड़ा—वि०[स० स्थात्, व्रज० ठाढ़ा, ठड़ा] [स्त्री० खड़ी] १. जो धरातल से सीधा ऊपर की ओर उठा हुआ हो। ऊँचाई के बल में ऊपर की ओर गया हुआ। जैसे—खड़ी फसल। खड़ा मकान। २. (जीव या पशु-पक्षी) जो अपने पैरों के सहारे शरीर सीधा करके ऊपर उठा हो। जो झुका, बैठा या लेटा न हो। जैसे—नौकर सामने खड़ा था।

पद—**खड़े खड़े**=इतनी जल्दी की बैठने तक का अवकाश न हो। जैसे—वे आये और खड़े-खड़े अपना काम निकालकर चल दिये। **खड़ी सवारी**=किसी के आने-जाने के संबंध में, आदर या व्यंग्य के लिए, चटपट, तुरन्त। जैसे—खड़ी सवारी आई और चली गई।

३. कोई काम करने के लिए उद्यत, तत्पर या कटिबद्ध। जैसे—आप खड़े हो जायँ तो विवाह के सब काम सहज में निपट जायँगे। ४. निर्वाचन में चुने जाने के लिए उम्मेदवार के रूप में प्रस्तुत होनेवाला। जैसे—इस क्षेत्र से दस उम्मेदवार खड़े हैं। ५. जो चलते-चलते कहीं पहुँचकर ठहर या रुक गया हो। जैसे—मोटर या गाड़ी खड़ी कर दो। ६. एक स्थान पर जमा या रुका रहनेवाला। जैसे—खड़ा पानी। ७. (अन्न या दाना) जो गला, टूटा या पिसा न हो। पूरा। समूचा। जैसे—खड़े चावल। ८. ठीक, पूरा या भरपूर। जैसे—खड़ा जवाब (देखें)। ९. जो नये रूप में बनकर या यों ही घटनाक्रम अथवा संयोग से उपस्थित या प्राप्त हुआ हो। जैसे— (क) झगड़ा या प्रश्न खड़ा करना। (ख) कोई चीज बेचकर रुपए खड़े करना। १०. जो किसी प्रकार तैयार करके काम में आने के योग्य बनाया गया हो। जैसे—खेमा खड़ा करना। ११. (ढाँचा) प्रस्तुत करना। बनाना। जैसे—चित्र खड़ा करना, योजना खड़ी करना। १२. बिना बीच में विश्राम किये तत्काल या तुरंत पूरा किया जानेवाला। जैसे—खड़ा हुकुम।

पद—**खड़े घाट**=(कपड़ों की धुलाई के संबंध में) धोबी से कराई जानेवाली ऐसी धुलाई जो तुरंत या एकाध दिन के अन्दर ही करा ली जाय। **खड़े पाँव**=बिना बीच में रुके या बैठे। जैसे—(क) विदेश से आकर खड़े पाँव स्थानीय देवता के दर्शन करने जाना। (ख) कहीं जाना और खड़े पाँव लौट आना।

खड़ाऊँ—स्त्री० [सं० काष्ठपादुका, पा० कट्ठपादुका, प्रा० खड़ामुआ, खड़ाउआ, उ० खराउ, बं० खरम, का० खराव, कन्न० कुड़ाव, मरा० खड़ावा] काठ की बनी हुई एक प्रकार की प्रसिद्ध पादुका जिसमें आगे की ओर पैर का अंगूठा और उँगली फँसाने के लिए खूँटी लगी रहती है।

खड़ाका—पुं० [अनु०] खड़खड़ शब्द। खटका।

क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

खड़ा जवाब—पुं० [हिं० खड़ा+जवाब] कोई ऐसी बात जिसमें स्पष्ट शब्दों में (क) किसी को करारा उत्तर दिया गया हो। अथवा (ख) उसके अनुरोध की रक्षा न कर सकने की अपनी असमर्थता बतलाई गई हो।

खड़ा दसरंग—पुं०[देश०] कुश्ती का एक पेंच जिसे हनुमंत बंध भी कहते हैं।

खड़ानन*—पुं०=षडानन।

खड़ा पठान—पुं० [देश०] जहाज के पिछले भाग का मस्तूल। (लश०)

खड़िका—स्त्री०[सं० खड+ङीष्+कन्—टाप्, इत्व] खड़िया मिट्टी।

खड़िया—स्त्री०[सं० खटिका]१. एक प्रकार की चिकनी, मुलायम और सफेद मिट्टी। २. उक्त मिट्टी की बनाई हुई डली या बत्ती जिससे तख्ती आदि पर लिखा जाता है।

पद—**खड़िया में कोयला**=अच्छे के साथ बुरे की मिलावट।

स्त्री० [सं० कांड या हिं० खड़ा] अरहर के पेड़ से फलियाँ और पत्तियाँ पीटकर झाड़ लेने के बाद बचा हुआ डंठल। रहठा। खाड़ी।

खड़ी—स्त्री०[हिं० खड़िया] खड़िया (मिट्टी)।

स्त्री० [हिं० खड़ा] छोटा पहाड़। पहाड़ी।

स्त्री०=बारह-खड़ी।

वि०[हिं० खड़ा का स्त्रीलिंग रूप] दे० 'खड़ा'।

खड़ी चढ़ाई—स्त्री०[हिं० खड़ी+चढ़ाई] वह भूमि जो थोड़ी ढालुआ होने पर भी बहुत-कुछ सीधी ऊपर की ओर गई हो।

खड़ी डंकी—स्त्री०[देश०] मालखंभ की एक कसरत।

खड़ी तैराकी—स्त्री०[हिं० खड़ी तैराकी] जल में सीधे खड़े होकर पैरों के द्वारा तैरने की क्रिया या भाव।

खड़ी पाई—स्त्री० [हिं०] १. खड़े बल में सीधी छोटी रेखा। २. इस प्रकार (।) खींची जानेवाली वह रेखा जो लिखते समय किसी वाक्य के समाप्त होने पर लगाई जाती है। पूर्ण विराम।

खड़ी फसल—स्त्री०[हिं०] खेत की वह उपज या पैदावार जो तैयार तो हो गई हो परन्तु अभी काटी न गई हो। (स्टैंडिंग क्राप)

खड़ी बोली—स्त्री० [हिं० खड़ी+बोली] १. मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, अम्बाला, पटियाला के पूर्वी भागों तथा रामपुर, मुरादाबाद आदि प्रदेशों के आसपास की बोली। २. उक्त बोली का परिष्कृत, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक रूप जिसे आजकल हिंदी कहा जाता है। ३. नागरी अक्षरों में लिखी हुई उक्त भाषा।

खड़ी मसकली— स्त्री०[हिं० खड़ा+अ० मसकला=रेती] सिकलीगरी करनेवालों का एक औजार जिससे बरतनों आदि को खुरचकर जिला करते हैं।

खड़ी सवारी—पद दे० 'खड़ा' के अन्तर्गत।

खड़ी हुंडी—स्त्री० [हिं० खड़ी+हुंडी] ऐसी हुंडी जिसके रुपयों का अभी तक भुगतान न हुआ हो।

खड़आं†—पुं० [हिं० कड़ा] एक प्रकार का कड़ा। (आभूषण)

खड़ेघाट—पद दे० 'खड़ा' के अन्तर्गत।

खड़ेपाँव—पद दे० 'खड़ा' के अन्तर्गत।

खड्ग—पुं० [सं०√खड्+गन्] १. एक प्रकार की चौड़ी, छोटी तलवार। खाँडा। २. गैंडा नामक जंतु। ३. एक बुद्ध का नाम।

खड्ग-कोश—पुं० [ष० त०] म्यान।

खड्गधर—पुं० [ष० त०]=खड्गधारी।

खड्गधार—पुं० [सं० खड्ग√ धृ (धारण)+अण्] बद्रिकाश्रम के पास का एक पर्वत।

खड्ग-धारा—स्त्री० [ष० त०] १. तलवार की धार या फल। २. ऐसा विकट काम जो खड्ग या तलवार पर चलने के समान हो।

खड्गधारी (रिन्)—पुं० [सं० खड्ग√धृ+णिनि] वह जो हाथ में खड्ग या तलवार लिये हुए हो।

खड्ग-पुत्र—पुं० [ष० त०] [स्त्री० अल्पा० खड्गपुत्रिका] एक प्रकार की कटार।

खड्ग-बंध—पुं० [व० स०] चित्र-काव्य का एक भेद जिसमें किसी पद्य के शब्द इस ढंग से रखे जाते हैं कि वे खड्ग के चित्र में ठीक से बैठ सकें।

खड्ग-लेखा—स्त्री० [ष० त०] तलवारों की पंक्ति या रेखा।

खड्ग-हस्त—वि० [ब० स०] १. जो हाथ में खड्ग लेकर लड़ने के लिए तैयार हो। २. हरदम विकट रूप में लड़ने के लिए उद्यत।

खड्गाधार—पुं० [खड्ग-आधार, ष० त०] खड्गकोश।

खड्गारीट—पुं० [सं० खड्ग-अरि, ष० त० खड्गारि √ इट् (जाना) +क] १. चमड़े की ढाल। २. तलवार की धार। ३. वह जिसने असिधारा का व्रत लिया हो।

खड्गिक—पुं० [सं० खड्ग+ठन्—इक] १. खड्गधारी। २. शिकारी। ३. कसाई। ४. भैंस के दूध का फेन।

खड्गी (ड्गिन्)—पुं० [सं० खड्ग+इनि] १. खड्गधारी। २. गैंडा।

खड्ड—पुं० [सं० खात, प्रा० खड्डो, सिं० खडा, गु० खाड, पं० खड्ड, म० खड्डा] १. प्राकृतिक रूप से बना हुआ बहुत गहरा गड्ढा। जैसे—पहाड़ या मैदान का खड्ड। २. खोदा हुआ बड़ा गड्ढा।

खड्ढा—पुं० १. =खड्ड। २. =गड्ढा।

खणक—वि० [सं० खनक] खोदनेवाला।

पुं० चूहा। (डिं०)

खणनाड़िका—स्त्री० [सं० क्षण-नाडिका] घर्मघड़ी। (डिं०)

खतंग†—पुं० [फा० खडंग] १. एक विशिष्ट प्रकार का तीर। २. तरकश। तूणीर। उदा०—तरकस पंच किरयं, तीर प्रति खतंग तीन सय।— चन्दवरदाई। ३. दे० 'खदंग'।

पुं० [?] एक प्रकार का कबूतर।

खत—पुं० [अ० खत] १. रेखा। लकीर। २. अक्षर लिखने का ढंग। लिखावट। ३. वह जो कुछ लिखा जाय। लेख। ४. चिट्ठी। पत्र। ५. वह पत्र जिस पर कुछ हिसाब-किताब, लेन-देन आदि लिखा हो। उदा०—जनम जनम के खत जु पुराने, नामहिं लेत फटै रे।—मीराँ। ६. कनपटी और दाढ़ी पर के बाल।

मुहा०—**खत आना या निकलना**—कनपटी और गाल पर बाल उगने लगना अर्थात यौवनकाल आरम्भ होना। **खत बनाना**=(क) दाढ़ी के बाल उस्तरे से साफ करना। (ख) हजामत बनाना।

पुं० [सं० क्षत] घाव। जखम। उदा०— सूखन देत न सरसई, खोंटि खोंटि खत खोंट। —बिहारी।

†स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी। (डिं०)

खत-कश—पुं० [अ० खत +फा० कश] बढ़इयों का लकड़ी पर रेखा खींचने का एक उपकरण या औजार।

खतकशी—स्त्री० [अ० +फा०] १. चित्रकला में चित्र बनाने के लिए रेखाएँ खींचना। २. खूब बना-बनाकर लिखने का काम या ढंग।

खत-किताबत—स्त्री० [अ०] १. चिट्ठी-पत्री। पत्र-व्यवहार। पत्रालाप। २. लिखा-पढ़ी।

खतखोट†—स्त्री० [सं० क्षत+हिं० खुड्ड] क्षत या घाव के सूखने पर जमनेवाली झिल्ली। खुरंड।

खतना—पुं० [अ० खतनः] मुसलमानों की एक रस्म, जिसमें बच्चों के लिंग के अगले भाग का ऊपरी चमड़ा काट दिया जाता है। सुन्नत। मुसलमानी।

†स० काटना। काटकर अलग करना।

अ० [हिं० खाता] खाते में चढ़ाया या लिखा जाना।

खतम—वि० [अ० खत्म] १. (काम या बात) जो पूरा या पूर्ण हो चुकी हो। जिसमें और कुछ करने को बाकी न रह गया हो। २. जिसका अंत हो चुका हो। जो अस्तित्व में न रह गया हो।

मुहा०—**(किसी को) खतम करना**—मार डालना।

खतमा*—पुं० [अ० खुतबः] १. प्रशंसा। तारीफ। २. दे० 'खुतबा'।

खतमी—स्त्री० [अ०] गुलखैरू की जाति का एक पौधा, जिसकी पत्तियों और फूलों का उपयोग, हकीमी दवाओं में होता है।

खतर—पुं०=खतरा।

खतरनाक—वि० [अ०] १. (काम) जो खतरे से भरा हो। जोखिम का। २. जो किसी प्रकार के खतरे का कारण बन सकता हो। जैसे—खतरनाक आदमी, खतरनाक बीमारी।

खतरम्मा—पुं० [हिं० खत्री] १. खत्रियों का समाज। २. वह मुहल्ला जिसमें खत्री लोग रहते हों।

खतरा—पुं० [अ० खतरः] १. अनिष्ट, संकट आदि की आशंका या संभावना से युक्त स्थिति। २. डर। भय।

खतरेटा—पुं० [हिं० खत्री+एटा (प्रत्य०)] खत्री। (उपेक्षासूचक शब्द)

खता—पुं० [अ०] [वि० खतावार] १. अपराध। कसूर। २. चूक। भूल। ३. धोखा।

मुहा०—**खता खाना**= धोखे में पड़कर हानि उठाना। **खता खिलाना**=धोखा देकर किसी की हानि करना। उदा०—तीनि बार रुँधे एक दिन में, कबहुँक खता खवाई।—कबीर।

पुं० [सं० क्षत] घाव। जखम।

†स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी। (डिं०)

खताई—पुं० [अ०] उत्तरी चीन के खता नामक स्थान का बना हुआ कागज जिस पर मध्ययुग में चित्र अंकित होते थे।

स्त्री० दे० 'नान खताई'।

खताकार—पुं०=खतावार।

खतावार—वि०[अ० खता+फा० वार] जिसने कोई भूल, दोष या अपराध किया हो। अपराधी। दोषी।

खतिया†—स्त्री०=खाती।

खतियाना—स०[हिं० खाता] १. खाते में लिखना या चढ़ाना। २. विभिन्न मदों को विभिन्न खातों में चढ़ाना।

खतियौनी—स्त्री०[हिं० खतियाना] १. वह बही जिसमें विभिन्न मदों के अलग-अलग खाते हों। २. इन अलग-अलग खातों में विभिन्न मदों के विवरण भरने का काम। ३. पटवारी की वह पंजी, जिसमें यह लिखा जाता है कि कौन-सा खेत किसकी जोत में है। उस पर कितना लगान है और कितनी वसूली हुई है।

ख-तिलक—पुं०[ष० त०] सूर्य।

खतीब—पुं०[अ०] १. किसी बादशाह के सिंहासन पर बैठने के समय खुतबा पढ़नेवाला व्यक्ति। २. इस्लाम अर्थात् मुसलमानी धर्म का उपदेशक।

खतौनी—स्त्री० दे० 'खतियौनी'।

खत्ता—पुं०[सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १. जमीन में किसी कार्य के लिए खोदा हुआ गड्ढा। जैसे—नील या शोरा बनाने का खत्ता। २. गड्ढा। ३. कोठा या बड़ा पात्र जिसमें अन्न या गल्ला रखा जाता हो।

खत्म—वि०=खतम।

खत्र†—पुं०=क्षत्रिय। (डिं०)

खत्रवट—स्त्री०[हिं० खत्री+वट (प्रत्य०)] १. खत्री (क्षत्री) होने का भाव।उदा०—खत्र वेचिया अनेक खत्रियाँ, खत्रवट थिर राखी खुंम्माण। —पृथ्वीराज। २. क्षत्रियधर्म। बहादुरी। वीरता।

खत्रवाट—स्त्री०=खत्रवट।

खत्रिय—पुं०=क्षत्रिय। (डिं०)

खत्री—पुं०[सं० क्षत्रिय, प्रा० खत्तिय] [स्त्री० खतरानी, भाव० खत्रीपन] १. पंजाब में रहनेवाले क्षत्रियों की संज्ञा। ये लोग प्रायः व्यापार करते हैं। २. क्षत्री।

खत्रीवाट†—स्त्री०=खत्रवट।

खदंग—पुं०[फा०] १. एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी के तीर बनाये जाते थे। २. तीर। बाण।

खदंगी*—स्त्री०[फा० खदंग] एक प्रकार का छोटा तीर।

खद*—पुं०[सं० क्षत=कटा हुआ] मुसलमान। (डिं०)

*वि०=खाद्य।

खदखदाना—अ०=खदबदाना।

खदबदाना—अ०[अनु०] किसी तरल पदार्थ का उबलते समय खद-खद शब्द करना।

खदरा†—वि० [सं० क्षुद्र] तुच्छ। निकम्मा।

पुं० जोतने आदि के लिए निकाला जानेवाला बछड़ा।

पुं० दे० 'खत्ता'।

खदशा—पुं०[अ० खदशः] १. आशंका। भय। २. शक। संदेह।

खदान—स्त्री०[हिं० खोदना या खान] १. जमीन या पहाड़ खोदने पर बननेवाला गड्ढा। २. दे० 'खान'।

खदिका—स्त्री० [सं० ख√दा (देना)+क—टाप्+कन्, इत्व] लावा।

खदिर—पुं० [सं० √खद् (स्थिर रहना) +किरच्] १. खैर का पेड़। २. कत्था। खैर। ३. इन्द्र। ४. चन्द्रमा। ५. एक प्राचीन ऋषि।

खदिरपत्री—स्त्री०[ब० स०, ङीष्] लाजवंती या लजाधुर नाम की लता।

खदिर-सार—पुं० [ष० त०] कत्था। खैर।

खदिरी—स्त्री०[सं० खदिर+ङीष्] १. वराहक्रांता। २. लज्जावंती नामक लता। छुई-मुई।

खदी—स्त्री०[देश०] तालों आदि में होनेवाली एक प्रकार की घास।

खदीजा—स्त्री०[अ० खदीजः] मुहम्मद साहब की पहली पत्नी, जिसने स्त्रियों में सबसे पहले इस्लाम धर्म ग्रहण किया था।

खदीव—पुं०[फा०] मिस्र के पुराने बादशाहों की उपाधि।

खदुका—पुं०[सं० खादक=अधमर्ण] १. किसी से कर्ज लेकर व्यवसाय करनेवाला व्यवसायी। २. ऋणी। कर्जदार।

खदुहा†—पुं०=खदुका।

खदूरवासिनी—स्त्री० [सं० ख-दूर√वस् (बसना) + णिनि—ङीप्] बौद्धों की एक देवी या शक्ति का नाम।

खदेड़ना—स० [हिं० खनना] बलपूर्वक अथवा डरा-धमका कर कहीं से भगाना या हटाना।

खदेरना†—स०=खदेड़ना।

खद्दड़ (र)—पुं० [हिं० खड्डी=करघा] १ आज-कल सीमित अर्थ में, हाथ से काते हुए सूत का हाथ ही से बुना हुआ कपड़ा। २. व्यापक अर्थ में किसी चीज (जैसे—ऊन, रेशम आदि) का हाथ से काते हुए सूत का हाथ से बुना हुआ कपड़ा।

खद्धा†—पुं०=गड्ढा।

खद्योत—पुं० [सं० ख√द्युत् (चमकना)+अच्] १. जुगनूं। २. सूर्य।

खद्योतक—पुं० [सं० खद्योत√कै (चमकना)+क] १. सूर्य्य। २. जुगनूं। ३. एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फल बहुत जहरीले होते हैं।

खद्योतन—पुं० [सं० ख√द्युत्+णिच्+ल्यु—अन] सूर्य।

खन†—पुं० [सं० क्षण] १. समय का बहुत छोटा भाग। क्षण। २. वक्त। समय।

अ०य० क्षण भर में। उसी समय। तत्काल। तुरन्त। उदा०—चेरी धाय सुनत खन धाई।—जायसी।

†पुं० [?] एक प्रकार का वृक्ष।

†पुं० दे० 'खंड'।

खनक—वि० [सं० खन् (खोदना)+वुन्—अक] कोई चीज विशेषतः जमीन खोदनेवाला।

पुं० १. चूहा। २. वह व्यक्ति जो जमीन खोदने का काम करता हो। ३. खान खोदनेवाला मजदूर। ४. सेंध लगाकर चोरी करनेवाला चोर।

स्त्री० [अनु०] धातु-खंडों के आपस में टकराने से होनेवाला शब्द।

खनकना—अ० [हिं० खनक] धातु-खंडों का आपस में टकराकर खन-खन शब्द करना।

खनकाना—स० [अनु०] धातुखंडों को इस प्रकार टकराना या हिलाना कि वे खन-खन शब्द करने लगें।

खनकार—स्त्री० [अनु०] खन-खन शब्द करने या होने की अवस्था या भाव।

खनखजूरा—पुं०=कनखजूरा।

खनखना—वि० [अनु०] जिससे 'खन खन' शब्द उत्पन्न हो।
पुं० एक प्रकार का झुनझुना।

खनखनाना—अ० खन-खन शब्द होना। जैसे—हथियारों का खनखनाना।
स० खन-खन शब्द उत्पन्न करना। जैसे—हथियार खनखनाना।

खनखाव—पुं० [?] घोड़ों का एक प्रकार का ऐब या दोष।

खनन—पुं० [सं०√खन्+ल्युट्—अन] जमीन आदि खोदने की क्रिया या भाव।

खनना†—स० [सं० खनन] गड्ढा करने के लिए जमीन खोदकर उसमें से मिट्टी निकालना। खोदना।

खनयित्री—स्त्री० [सं०√खन्+णिच्+तृच्+ङीप्] जमीन खोदने का एक उपकरण। खंती।

खनवाना—स० [हिं० खनना] खनने या खोदने का काम किसी से कराना।

खनहन†—वि० [सं० क्षीण और हीन] १. दुबला-पतला। कमजोर। २. कोमल, सुन्दर और सुडौल। ३. अच्छा और ठीक तरह से काम देनेवाला।

खना—प्रत्य० [हिं० खाना का संक्षिप्त] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर 'आघात करनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे—कट-खना, मर-खना आदि।

खनाई—स्त्री० [हिं० खनना] खनने का काम, भाव या मजदूरी। खोदाई।

खनिक—पुं० [सं०√खन्+इ+कन्] १. जमीन में सुरंग बनाकर छत्ता लगानेवाली मधुमक्खियों की एक जाति। २. गड्ढा खोदनेवाला व्यक्ति। ३. खान (खदान) का मालिक।

खनिज—वि० [सं० खनि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] खान से खोदकर निकाला हुआ। (मिनरल)
पुं०=खनिज-पदार्थ।

खनिज-पदार्थ—पुं० [कर्म० स०] १. वे वस्तुएँ जो खान में से खोदकर निकाली जाती हों। २. धातुओं का वह मूल रूप जिसमें वह खान से निकलती हैं।

खनिज-विज्ञान—पुं० [कर्म० स०] वह विज्ञान जिसमें खानों का पता लगाने, उनमें से खनिज पदार्थ निकालने तथा उन पदार्थों के स्वरूप आदि का विवेचन होता है। (मिनरॉलॉजी)

खनित्र—पुं० [सं०√खन्+इत्र] जमीन खोदने का एक उपकरण। खंता।

खनियाना*—स० [हिं० खान] १. खान खोदना। २. खाली करना।

खनि-वसति—स्त्री० [मध्य०स०] खान में काम करनेवाले मजदूरों की वस्ती।

खनी—वि० [सं० खनिक] १. खोदनेवाला। २. खान में काम करनेवाला। ३. खान में से निकलनेवाला। खनिज।

खनोना†—स० [हिं० खनना] खनना। खोदना।

खन्ना†—पुं० [सं० खनन=काटना से] वह स्थान जहाँ वैठकर पशुओं के लिए चारा काटा जाता है।

खपची—स्त्री० [तु० कमची] १. बाँस की पतली तीली, जो प्रायः चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनाने के काम आती है। २. बाँस की पतली परन्तु अधिक चौड़ी पट्टी जिसे प्रायः डाक्टर लोग किसी टूटी हुई हड्डी को सीधी जोड़ने के लिए किसी अंग में बाँधते हैं। (स्प्लिन्ट) ३. कबाब भूनने की लोहे की सींक।

खपटा†—पुं० [स्त्री० अल्पा० खपटी]=खपड़ा।

खपड़झार†—पुं० [हिं० खपड़ा+झारना] किसी ऋतु में पहली बार ऊख पेरने के समय की एक रसम।

खपड़ा—पुं० [सं० खर्पट प्रा० खप्पट] [स्त्री० खपड़ी] १ कुछ विशिष्ट आकार के पकाये हुए मिट्टी के वे खंड जो प्रायः छप्पर पर इस दृष्टि से बिछाये जाते हैं कि वर्षा का पानी छप्पर में से नीचे न चूए।
विशेष—ये दो प्रकार के होते हैं—(क) खपुआ और (ख) नरिया। (देखें)
२. मिट्टी के घड़े का निचला भाग, गोल आधा भाग। ३. ठीकरा। ४. खप्पर। ५. कछुए की पीठ पर का कड़ा आवरण।
पुं० [देश०] गेहूँ में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
पुं० [सं० क्षुरपत्र] चौड़े फलवाला तीर।

खपड़ी—स्त्री० [सं० खर्पर] १. छोटी नाँद के आकार का भड़भूंजे का दाना भूंजने का अर्द्ध गोलाकार पात्र। २. उक्त आकार का एक छोटा मिट्टी का वरतन।
†स्त्री०=खोपड़ी।

खपड़ैल—स्त्री० [हिं० खपड़ा] वह छाजन जिस पर खपड़ा बिछा हुआ हो। खपड़े से छाई हुई छाजन।

खपत—स्त्री० [हिं० खपना] १. खपने या खपाने की क्रिया या भाव। २. माल की वह बिक्री जो उसे कहीं खपाने के लिए होती है। बिक कर माल समाप्त होना। ३. अन्त, नाश या समाप्ति। उदा०—रक्खै जु साँइ मिट्टै कवन, निमरव माँहि उतपति खपति।—चन्दबरदाई।

खपती—स्त्री० [हिं० खपना]=खपत।

खपना—अ० [सं० क्षय, प्रा० खय] [संज्ञा खपत] १. (अनावश्यक, खराब अथवा फालतू वस्तुओं का) उपयोग या व्यवहार में आना। काम में आना। जैसे—(क) ईंटों के टुकड़े भी दीवार में खप गये। (ख) इन रुपयों में यह खोटा रुपया भी खप जायगा। २. चीजों का बिक कर समाप्त होना। जैसे—दिसावर में माल खपना। ३. गुजर होना। निभना। ४. नष्ट होना। उदा०—उपजै, खपै, जोनि फिर आवे।—कबीर। ५. अस्त्र-शस्त्र आदि से काटा या मारा जाना। हत होना। जैसे—लड़ाई में सिपाहियों का खपना। ६. कोई काम करने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करते हुए तंग या परेशान होना। जैसे—दिन भर खपने पर अब यह काम पूरा हुआ है।

खपरट—पुं० [हिं० खपड़ा] खपड़े का टूटा हुआ अंश या टुकड़ा। ठीकरा।

खपरा—पुं०=खपड़ा।

ख-पराग—पुं० [ष० त०] अंधकार। अँधेरा।

खपरिया—स्त्री० [सं० खर्परी] १. भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ या उप-धातु जिसे वैद्यक में क्षय, ज्वर, विष, कुष्ठ आदि का नाशक माना गया है। २. चने की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

खपरैल—स्त्री० [हिं० खपड़ा+ऐल (प्रत्य०)] खपड़े से छाई हुई छाजन। खपड़ैल ।

खपली—पुं० [हिं० खपड़ा] पश्चिमी और दक्षिणी भारत में होनेवाला एक प्रकार का गेहूँ, जिसे गोधी या कफली भी कहते हैं ।

खपवा†—स्त्री० [हिं० खपाना?] पुरानी चाल की एक प्रकार की कटार ।

खपाच—स्त्री० [हिं० खपची] १. रेशम फेरनेवालों का एक औजार जो बाँस की दो खपचियों को बाँधकर बनाया जाता है। २. दे० 'खपची'।

खपाची†—स्त्री०=खपची ।

खपाट—पुं० [हिं० खपची] भाथी के मुँह पर लगी हुई वे खपचियाँ जिन्हें खोलने और बंद करने पर चूल्हे या भट्ठी में हवा जाती है ।

खपाना—स० [हिं० खपना का स०] १. (कोई वस्तु) इस प्रकार उपयोग या व्यवहार में लाना कि वह समाप्त हो जाय । जैसे—इमारत के काम में लकड़ी खपाना । २. माल आदि बेच डालना । ३. अवकाश या गुंजाइश निकालना । जैसे—इस विभाग में दो-तीन आदमी खपाये जा सकते हैं। ४. तंग या परेशान करना । किसी काम या बात के लिए व्यर्थ दिक करना। ५. किसी काम में बहुत अधिक परिश्रम करके अपनी शक्ति का व्यय या ह्रास करना। जैसे—किसी काम में सिर खपाना। ६. नष्ट करना। ७. मार डालना । जैसे—डाकुओं ने यात्रियों को जंगल में ही कहीं खपा दिया ।

खपुआ†—वि० [हिं० खपना=नष्ट होना] कायर । डरपोक । भगोड़ा । पुं० चूल या छेद में कोई चीज कसकर बैठाने के लिए उसके इधर-उधर ठोंका जानेवाला लकड़ी का टुकड़ा या पच्चड़ ।

पुं० [हिं० खपड़ा] छप्पर छाने का वह खपड़ा जो चिपटा और चौकोर होता है।

खपुर—पुं० [सं० मध्य० स०] १. कभी-कभी आकाश में भ्रमवश दिखाई देनेवाला एक गन्धर्व-मंडल, जो कई प्रकार के शुभ और अशुभ फलों का सूचक माना जाता है। २. पुराणानुसार एक आकाशस्थ नगर जो पुलोमा और कालका नाम की दैत्य-कन्याओं के प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने बनाया था। गन्धर्वनगर। ३. राजा हरिश्चन्द्र की पुरी जो आकाश में स्थित मानी जाती है। ४. [ख √पृ (पूर्ण करना) + क] सुपारी का पेड़। ५. भद्र-मुस्तक। ६. बघनखा नामक वनस्पति।

ख-पुष्प—पुं०[ष० त०] १. आकाश-कुसुम। २. उक्त की तरह की अनहोनी या असंभव बात।

खप्पड़†—पुं० १. =खप्पर। २. =खपड़ा।

खप्पर—पुं०[सं० खर्पर, प्रा० पं० खप्पर; गु० खापरी, मरा० खापर, उ० खपरा, बँ० खावरा] १. वह पात्र जो काली की मूर्ति के हाथ में रहता है और जिसके सम्बन्ध में यह कल्पना है कि वह इसी में भरकर शत्रुओं का रक्त पीती थीं। २. दरियाई नारियल का वह आधा भाग या उसके आकार का कोई पात्र जिसमें कुछ विशिष्ट प्रकार के साधु भिक्षा लेते हैं। ३. खोपड़ी।

खफकान—पुं०[अ०] १. हृदय की धड़कन का रोग। २. पागलपन।

खफकानी—वि० [अ०] १. खफकान रोग से पीड़ित। २. पागल। ३. खब्ती।

खफगी—स्त्री०[फा०] खफा होने की अवस्था या भाव। अप्रसन्नता। नाराजगी।

खफा—वि० [अ०] १. किसी से अप्रसन्न या असन्तुष्ट। नाराज। २. जिसे गुस्सा चढ़ा हो। क्रुद्ध।

खफीफ—वि०[अ०] १. मात्रा, मान आदि के विचार से अल्प, थोड़ा या हल्का। जैसे—खफीफ चोट आना। २. बहुत ही साधारण या तुच्छ और फलतः लज्जित। (व्यक्ति के सम्बन्ध में, किसी विशिष्ट प्रसंग में) जैसे—किसी को चार आदमियों के सामने खफीफ करना।

खफीफा—पुं०[अ० खफीफः] वह दीवानी अदालत जिसमें लेन-देन के छोटे-छोटे मुकदमों पर विचार होता है।

खफ्फा—पुं० [देश०] कुश्ती का एक पेंच।

खबर—स्त्री० [अ०] १. वृत्तान्त। हाल। जैसे—वहाँ पहुँचते ही वहाँ की खबर देना। २. इस प्रकार कहीं भेजा जानेवाला हाल। पैगाम। संदेश। ३. किसी नई घटना या बात की मिलनेवाली सूचना।

मुहा०—खबर उड़ना=किसी अनोखी या नई बात की जगह-जगह चर्चा होना।

४. नई घटनाएँ या ताजी बातें जो समाचार-पत्रों में छपती हैं अथवा रेडियो द्वारा प्रसारित की जाती हैं। ५. जानकारी। ज्ञान। जैसे—हमें भी इस बात की खबर है। ६. सुध। होश। जैसे—उसे किसी बात की खबर नहीं रहती। ७. किसी की दशा की ओर जानेवाला ध्यान।

मुहा०—(किसी की) खबर लेना—(क) असहाय, दीन या दुःखी व्यक्ति की ओर (उसका कष्ट दूर करने के लिए) ध्यान देना। (ख) अच्छी तरह दंड देना। (परिहास और व्यंग्य)

खबरगीर—वि० [अ०+फा०] १. खबर भेजनेवाला। २. देख-रेख करनेवाला।

पुं० १. गुप्तचर। जासूस। २. चौकीदार। पहरेदार।

खबरगीरी—स्त्री०[फा०] १. किसी की खबर लेते रहने अर्थात् उसकी देख-रेख करते रहने का काम या भाव। २. खबरगीर का काम या पद।

खबरदार—वि० [फा०][भाव० खबरदारी] १ जाननेवाला। परिचित। २. चौकन्ना और सजग। सावधान।

खबरदारी—स्त्री० [फा०] खबरदार अर्थात् चौकन्ने या सजग रहने की अवस्था या भाव। सावधानी।

खबरि†—स्त्री०=खबर।

खबरिया*—स्त्री०=खबर।

खबरी—पुं०[फा०] खबर या संदेश भेजने या लानेवाला। दूत। (डिं०)

ख-त्राष्प—पुं० [ष० त०] ओस।

खबीस—पुं० [अ०] [भाव० खबासत, खबीसी] १. दुष्ट, निकृष्ट या बुरे कर्म करनेवाला व्यक्ति। २. कंजूस। कृपण।

पुं० [सं० कपिश] रंगीन मिट्टी। (बुंदेल०)

खबीसी—स्त्री० [अ०] खबीस होने की अवस्था या भाव।

खब्त—पुं०[अ०] [वि० खब्ती] १. किसी बात की झक या सनक। जैसे—आज तुम पर यह नया खब्त चढ़ा (या सवार हुआ) है। २. पागलपन।

खब्ती—वि०[अ०] १. जिसे किसी बात का खब्त या झक हो। झक्की। सनकी। २. पागल।

खब्बर—पुं० [देश०] दूब नाम की घास।

खब्बा—वि०[पं०] १. बायाँ। दाहिने का उलटा। २. (व्यक्ति) जो बाएँ हाथ से काम-काज करता हो। ३. उलटे रास्ते पर चलनेवाला।

खब्भड़†—वि० [हिं० खाभड़] १. बुड्ढा और दुर्बल। २. दुबला-पतला।

खभड़ना—स०=खभरना।

खभरना†—स० [हिं० भरना] १. मिलाना। मिश्रित करना। २. उथल-पुथल करना या मचाना।

खभरुआ—पुं०[हिं० खभरना=मिलना] कुलटा या पुंश्चली स्त्री का पुत्र।

खभार—पुं०=खँभार।

खम—पुं०[अ०] १. टेढ़ापन। वक्रता। २. घुमाव या झुकाव।

मुहा०—**खम खाना**=(क) झुक या दबकर टेढ़ा होना, दबना या मुड़ना। (ख) किसी के सामने झुकना या दबना। हारना। **खम ठोंकना**=लड़ने के लिए ताल ठोंकना।

पद—**खम ठोंककर**=(क) लड़ने या सामना करने के लिए ताल ठोंककर। (ख) दृढ़ता या निश्चयपूर्वक।

३. गाने के समय लय में लोच या सौन्दर्य लाने के लिए उसके मोड़ पर क्षण भर के लिए रुकना।

वि० झुका हुआ या टेढ़ा।

खमकना—अ० [अनु०] खम खम शब्द होना।

खमकाना—स० [अनु०] खम खम शब्द उत्पन्न करना।

ख-मणि—पुं० [स० त०] सूर्य।

खमणी—वि० =क्षम (समर्थ)।

खमदम—पुं० [अ० खम+दम] शक्ति और साहस का सूचक पुरुषार्थ या क्षमता।

खमदार—वि०[फा०] १. झुका हुआ। टेढ़ा। २. घुंघराला (बाल)।

ख-मध्य—पुं० [ष० त०] १. आकाश का ठीक मध्य भाग या विन्दु। २. सिर के ऊपर का विन्दु।

खमसना†—अ०[?] किसी में मिल जाना। मिश्रित होना।

स० मिश्रित करना। मिलाना।

खमसा—पुं० [अ० खमसः =पाँच संबंधी] १. एक प्रकार की गजल, जिसके प्रत्येक पद्यांश या बंद में पाँच-पाँच चरण होते हैं। २. संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते हैं।

खमा*—स्त्री०=क्षमा।

खमाल†—पुं०[देश०] जंगली खजूर के हरे फल, जो चौपायों को खिलाये जाते हैं।

पुं० [अ० हम्माल] जहाज पर माल लादने का काम। लड़ाई।

खमियाजा—पुं० [फा० खमयाजः] १. अँगड़ाई। २. प्राचीन काल का वह दंड, जो अपराधी को शिकंजे में कसकर दिया जाता था। ३. दंड के रूप में होनेवाला बुरे कामों अथवा भूल-चूक का फलभोग।

मुहा०—**खमियाजा उठाना**=भूल-चूक का दंड या फल पाना।

खमीदा—वि०[फा० खमीदः] खम खाया हुआ। झुका हुआ। टेढ़ा।

खमीर—पुं०[अ०] १. गूंधकर कुछ समय तक रखे हुए (गेहूँ, चावल, दाल आदि) आटे की वह स्थिति जब उसमें सड़न के कारण कुछ खट्टापन आना आरम्भ होता है। (ऐसे आटे की रोटी में एक विशिष्ट प्रकार का स्वाद आ जाता है।)

मुहा०—**खमीर बिगड़ना**=गूँधे हुए आटे का अधिक सड़ने के कारण बहुत खट्टा हो जाना।

२. उक्त प्रकार से थोड़ा सड़ाकर तैयार किया हुआ आटा। ३. कटहल, अनन्नास आदि को सड़ाकर तैयार किया हुआ वह पाँस जो पीने का तम्बाकू बनाते समय सुगंधि के लिए उसमें मिलाया जाता है। ४. किसी पदार्थ या व्यक्ति की मूल प्रकृति। जैसे—पाजीपन तो आपके खमीर में ही है।

खमीरा—वि० [अ० खमीरः] [स्त्री० खमीरी] १. (वस्तु) जिसका या जिसमें खमीर उठाया गया हो। जैसे—खमीरा आटा। २. इस प्रकार उठाये हुए खमीर से बननेवाला (पदार्थ)। जैसे—खमीरी रोटी। ३. जिसमें किसी प्रकार का खमीर मिलाया गया हो। जैसा—खमीरा तमाकू।

पुं० चीनी या शीरे में पकाकर बनाया हुआ ओषधियों का अवलेह। जैसे—बनफशे का खमीरा।

खमीरी—वि० दे० 'खमीरा'।

ख-मीलन—पुं० [सं० ष० त०] तंद्रा।

ख-मूर्ति—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

खमो—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा सदाबहार पेड़।

खमोश—वि० [भाव० खमोशी] =खामोश।

खम्माच—स्त्री०[हिं० खंबावती] मालकोस राग की एक रागिनी।

खम्माच कान्हड़ा—पुं० [हिं० खम्माच+कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

खम्माच टोरी—स्त्री० [हिं० खंभावती+टोरी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो खंभावती और टोरी के मेल से बनती है।

खम्माची—स्त्री०=खम्माच।

खयंग—पुं०=खंग।

खय†—पुं०=क्षय।

खयना†—अ० [सं० क्षय] १. क्षीण होना। २. खिसक कर नीचे आना।

उदा०—कच समेटिकर भूज उलटि, खये सीस-पट डारि।—बिहारी।

खया*—पुं०=खवा (भुज-मूल)।

खयानत—स्त्री० [अ०] १. अमानत या धरोहर को अनधिकारपूर्वक या अनुचित रूप से अपने काम में लाना। २. अमानत या धरोहर में से कुछ अंश निकाल या बदल देना। ३. बेईमानी।

खयाल—पुं०[अ०] १. किसी पुरानी अथवा भूली हुई बात की स्मृति। याद। जैसे—न जाने क्यों मुझे आज कई वर्षों बाद अपने मित्र का खयाल आया है। २. मन में उपजने अथवा होनेवाली कोई नई बात। विचार। जैसे—नया खयाल। ३. आदरपूर्ण ध्यान। जैसे—वे उनका बहुत खयाल रखते हैं। ४. मन में होनेवाली किसी प्रकार की धारणा या विचार। जैसे—इस बारे में आपका क्या खयाल है।

मुहा०—**(किसी को) खयाल में लाना**=महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—आप तो किसी को खयाल में ही नहीं लाते।

५. उदारता या कृपा की दृष्टि। जैसे—इस अनाथ बालक का भी

खयाल रखिएगा। ६. किसी राग या रागिनी का वह रूप जो एक विशिष्ट प्राचीन शैली में गाया जाता है। जैसे—केदारे या देश का खयाल।

विशेष—(क) यह गायन की गति के विचार से प्रायः दो प्रकार (बिलंबित और द्रुत) का होता है। (ख) इस रूप या शैली का प्रचलन ई० १५ वीं शताब्दी के अंत में जौनपुर के सुलतान हुसैन शर्की ने ध्रुपद के अनुकरण पर और उसके विकसित रूप में किया था। (ग) उसका मुख्य विषय ईश्वर या राग-रागिनी के स्वरूप का चिंतन या ध्यान होता है, और इसी लिए इसका नाम 'खयाल' पड़ा है। ७. लावनी गाने का एक ढंग या प्रकार। ८. एक प्रकार का लोक-नाट्य जो नौटंकी से बहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है। इसमें पात्र प्रायः पद्यबद्ध रचनाओं को गाते हुए वार्तालाप करते हैं।

खयाली—वि० [फा०] १. खयाल संबंधी। २. केवल खयाल या विचार में रहने या होनेवाला। ३. कल्पित।

मुहा०—**खयाली पुलाव पकाना**=केवल कल्पना के आधार पर या निराधार मन्सूबे बाँधना।

खरंजा—पुं०=खडंजा।

खर—पुं०[सं० ख+र] १. गधा। २. खच्चर। ३. कौआ। ४. बगला नामक जल-पक्षी। ५. तृण। तिनका। ६. यज्ञपात्र रखने की वेदी। ७. सफेद चील। कंक। ८. कुरर पक्षी। ९. सूर्य का एक पार्श्वचर। १०. साठ संवत्सरों में से पचीसवाँ संवत्सर। ११. छप्पय छंद का एक भेद। १२. रावण का भाई एक राक्षस जो पंचवटी में रामचंद्र के हाथों मारा गया था।

वि० १. कठोर। कड़ा। सख्त। २. तीक्ष्ण। तेज। ३. घन और स्थूल। भारी और मोटा। ४. अमांगलिक। अशुभ। जैसे—खरमास। ५. तेज धारवाला। ६. तिरछा। ७. कठोर-हृदय। निष्ठुर। ८. करारा। कुरकुरा।

मुहा०—(घी) **खर करना**=गरम करके इस प्रकार तपाना कि उसमें का मठा जल जाय।

†पुं०=खराई।

†पुं०=खड़।

पुं० [अ०] गधा। जैसे—खर-दिमाग=गधे का-सा मस्तिष्क रखनेवाला अर्थात् कूढ़ या मूढ़।

खरक—पुं०[सं० खड़क=स्थाणु] १. चौपायों आदि को बंद करके रखने का घेरा। बाड़ा। २. पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।

†स्त्री० १.=खटक। २.=खड़क।

खरकत्ता—पुं० [देश०] लटोरे की तरह का एक पक्षी।

खरकना—अ० १.=खटकना। २.=खड़खड़ाना। ३.=खड़कना (चुपचाप खिसक जाना)।

खरकर—पुं०[ब० स०] सूर्य।

खरकवट—स्त्री०[देश०] वह पटरी जो करघे में दो खूँटियों पर आड़ी रखी जाती है और जिस पर ताना फैलाकर बुनाई होती है।

खरका—पुं०[हिं० खर=तिनका] बाँस आदि के टुकड़े काट और छीलकर बनाया हुआ कड़ा पतला तिनका जो पान आदि में खोंसने के काम आता है।

मुहा०—**खरका करना**—भोजन के उपरान्त दाँतों में फँसे हुए अन्न आदि के कण तिनके से खोदकर बाहर निकालना।

†पुं०=खरक।

खर-कुटी—स्त्री० [कर्म० स०] नाई की दूकान।

खरकोण—पुं० [सं० खर√कुण् (शब्द) +अण्] तीतर नामक पक्षी। (डिं०)

खर-कोमल—पुं० [च० त०] जेठ का महीना।

खरखरा†—वि० =खुरखुरा।

खरखशा—पुं० [फा० खर्खशः] १. व्यर्थ अथवा बिना मौके का झगड़ा या बखेड़ा। २. किसी काम या बात के बीच में पड़नेवाली बाधा।

खरखौकी*—स्त्री०[हिं० खर+खौकी=खानेवाली] आग जो खर, तृण आदि खा जाती अर्थात् नष्ट कर डालती है।

खरग†—पुं०=खड्ग।

खरगोश—पुं०[फा०] चूहे की तरह का पर उससे कुछ बड़ा एक प्रसिद्ध जंतु, जिसके कान लंबे, मुँह गोल तथा त्वचा नरम और रोएँदार होती है। खरहा। चौगड़ा।

खरच—पुं०[अ० खर्च] १. धन, वस्तु, शक्ति आदि का होनेवाला उपभोग। जैसे—(क) शहर में रोज हजार मन नमक का खरच है। (ख) इस काम में दो घंटे खरच हुए। २. धन की वह राशि, जो किसी वस्तु (या वस्तुओं) को क्रय करने में अथवा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय की जाती है। व्यय। जैसे—(क) उनका महीने का खरच ५००) है। (ख) इस पुस्तक पर १०) खरच पड़ा है।

मुहा०—**खरच उठाना**=विवश होकर व्यय का भार सहना। जैसे—उसका सारा खरच हमें उठाना पड़ता है। **खरच चलाना**—आवश्यक व्यय के लिए धन देते रहना। जैसे—घर का सारा खरच वही चलाते हैं। **(किसी को) खरच में डालना**=किसी को ऐसी स्थिति में लाना कि उसे विवश होकर खरच करना पड़े। जैसे—तुमने हमें व्यर्थ के खरच में डाल दिया। **(रकम का) खरच में पड़ना**=व्यय की मद में लिखा जाना।

३. किसी वस्तु को निर्मित अथवा प्रस्तुत करने में होनेवाला व्यय। लागत। जैसे—इस पुस्तक को प्रकाशित करने में १०००) खरच बैठेगा।

खरचना—स० [फा० खर्च] १. धन का खरच या व्यय करना। २. किसी वस्तु को उपयोग या काम में लाना। बरतना। (क्व०)

खरचा—पुं०[फा० खर्च] १. खाने-पहनने, खरचने आदि के लिए मिलनेवाला धन या वृत्ति। २. दे० 'खरच'।

खरची—स्त्री० [हिं० खरच] १. खरच या व्यय में लगनेवाला धन। २. वह धन जो दुश्चरित्रा स्त्रियों को कुकर्म कराने के बदले में (अपना खरच चलाने के लिए) मिलता है।

मुहा०—**खरची कमाना**=अपने निर्वाह या धनोपार्जन के लिए (स्त्रियों का) कुकर्म कराते फिरना। **खरची पर चलना या जाना**=धन कमाने के लिए (स्त्रियों का) प्रसंग या संभोग कराना।

खरचीला—वि०[हिं० खरच+ईला (प्रत्य०)] जो आवश्यक से अधिक अथवा व्यर्थ के कामों में बहुत सा रुपया खरच करता हो। जी खोलकर या बहुत खरच करनेवाला।

खरज—पुं० दे० 'षड़ज'।

खरज़ूर—पुं०=खजूर।

खरत(द)नी—स्त्री० [हिं० खराद] खरादने का औजार या उपकरण।

खरतर—वि० [सं० खर+तरप्] अपेक्षया अधिक उग्र, कठोर या तेज। उदा०—असि की धारा से खरतर है ओजों का वहू जो अभिमान।

खरतरगच्छ—पुं० [सं० खरतर√गम् (जाना) +श] जैनियों की एक शाखा या संप्रदाय।

खरतल†—वि० [हिं० खर-तर] १. जो कोई बात साफ और स्पष्ट शब्दों में दूसरे से कह दे। २. उग्र। तीव्र। प्रचंड।

खरतुआ—पुं० [हिं० खर+बत्थुआ] बथुए की जाति की एक घास जो आप से आप खेतों में उग आती है।

खर-दंड—पुं० [ब० स०] कमल।

खरदनी—स्त्री०=खराद।

खरदा—पुं० [देश०] अंगूर के पौधों में होनेवाला एक रोग।

खर-दिमाग—वि० [फा०] [भाव० खरदिमागी] गधों की तरह का दिमाग रखनेवाला। बहुत बड़ा मूर्ख।

खरदुक*—पुं० [?] एक प्रकार का पुराना पहनावा।

खर-दूषण—पुं० [द्व० स०] १. खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे। २. [ब० स०] धतूरा।

वि० जिसमें बहुत अधिक दोष या बुराइयाँ हों।

खरधार—वि० [ब० स०] (अस्त्र) जिसकी धार बहुत तेज हो।

खरध्वंसी (सिन्)—पुं० [सं० खर√ध्वंस् (नष्ट करना)+णिच्+णिनि] १. खर राक्षस का नाश करनेवाले श्रीरामचन्द्र। २. श्रीकृष्ण।

खरना—स० [हिं० खरा] १. साफ या स्वच्छ करना। २. ऊन को पानी में उबालकर साफ करना।

खर-नाद—पुं० [ष० त०] गधे के रेंकने का शब्द।

खरनादिनी—स्त्री० [सं० खर √नद् (शब्द) +णिनि—ङीप्] रेणुका नाम का गंध द्रव्य।

खरनादी (दिन्)—वि० [सं० खर√नद्+णिनि] जिसकी आवाज या स्वर गधे की तरह का हो।

खर-नाल—पुं० [ब० स०] कमल।

खरपत—पुं० [देश०] घोगर नामक वृक्ष।

खरपा—पुं० [सं० खर्व] चौबगला।

खरब—पुं० [सं० खर्व] १. संख्या का बारहवाँ स्थान। सौ अरब। २. उक्त स्थान पर पड़नेवाली संख्या। उदा०—अरब खरब लौं दरब है, उदय अस्त लौं राज।—तुलसी।

खरबानक—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। उदा०—कै खरबान कसै पिय लागा। जौं घर आवै अबहूँ कागा।—जायसी।

खरबूजा—पुं० [फा० खर्पजः] १. ककड़ी की जाति की एक बेल। २. इस बेल के फल जो गोल, बड़े, मीठे और सुगंधित होते हैं।

कहा०—खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है=एक की देखा-देखी दूसरा भी वैसा ही हो जाता है।

खरबूजी—वि० [हिं० खरबूजा] खरबूजे के रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

खरबोजना—पुं० [हिं० खार+बोझना] रंगरेजों का वह घड़ा जिस पर रंग का माट रखकर रंग टपकाते हैं।

खरब्बा†—वि० [हिं० ख़राब] खराब या बुरे चलनवाला। बदचलन।

खरभर†—पुं० [अनु०] १. वस्तुओं के हिलने-डुलने अथवा आपस में टकराने से होनेवाला शब्द। खड़बड़। २. शोर। रौला। ३. खलबली।

खरभरना—अ० [हिं० खरभर] १. क्षुब्ध होना। २. घबराना।

स० १. क्षुब्ध करना। २. घबराहट में डालना।

खरभराना—स० [हिं० खरभर] १. खरभर शब्द करना। २. व्यर्थ शोर या हल्ला करना।

अ०, स०=खड़बड़ाना।

खरभरी†—स्त्री०=खलबली।

खर-मस्त—वि० [फा०] १. गधों की तरह सदा मस्त या प्रसन्न रहनेवाला। २. गधों की तरह बिना समझे-बूझे दुष्टता या पाजीपन करनेवाला।

खर-मस्ती—स्त्री० [फा०] १. खरमस्त होने की अवस्था या भाव। २. हँसी में किया जानेवाला पाजीपन।

खर-मास—पुं० [कर्म० स०] पूस और चैत के महीने; जिनमें हिंदू कोई शुभ काम नहीं करते हैं।

खरमिटाव†—पुं० [हिं० खराई+मिटाना] जलपान। कलेवा।

खर-मुख—पुं० [ब० स०] एक राक्षस जिसे केकय देश में भरत जी ने मारा था।

वि० १. गधे के-से मुखवाला। २. कुरूप। बदसूरत।

खरल—पुं० [सं० खल] पत्थर, लोहे आदि का वह पात्र जिसमें कोई वस्तु रखकर पत्थर, लकड़ी या लोहे के डंडे से कूटी या महीन की जाती है।

मुहा०—खरल करना=ओषधि आदि को खरल में डालकर महीन चूर्ण के रूप में लाना।

खरली†—स्त्री० दे० 'खली'।

खरवट—स्त्री० [देश०] काठ के दो टुकड़ों का बना हुआ एक तिकोना उपकरण जिसमें कोई वस्तु रखकर रेती जाती हैं।

खर-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] आकाश-बेल।

खरवाँस—पुं०=खर-मास।

खर-वार—पुं० [कर्म० स०] अशुभ या बुरा दिन अथवा वार।

खर-वारि—पुं० [कर्म० स०] १. वर्षा का जल। २. ओस। ३. कोहरा।

खर-विद्या—स्त्री० [कर्म० स०] ज्योतिष-विद्या।

खरशिला—पुं० [कर्म० स०] मंदिर आदि की कुरसी का वह ऊपरी भाग जिस पर सारी इमारत खड़ी रहती है।

खर-श्वास—पुं० [कर्म० स०] वायु।

खरस—पुं० [फा० खिर्स] भालू। रीछ। (कलंदरों की बोली)

खरसा†—पुं० [सं० षड्स] एक प्रकार का पकवान।

पुं० [देश०] १. गरमी के दिन। ग्रीष्म ऋतु। २. अकाल।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

†पुं० [फा० खारिश] खुजली।

खरसान—स्त्री० [हिं० खर+सान] एक प्रकार की बढ़िया सान जिस पर हथियार रगड़ने से बहुत अधिक तेज और चमकीले हो जाते हैं।

खर-सिंधु—पुं० [ब० स०] चंद्रमा।

खरसुमा—वि० [फा० खर+सुम] (घोड़ा) जिसके सुम अर्थात् खुर गधे के खुरों जैसे बिलकुल खड़े हों।

खरसैला—वि० [फा० खारिश, हिं० खरसा=खाज] जो खुजली रोग से पीड़ित हो।

खर-स्तनी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] पृथिवी।

खरस्वर—वि० [ब० स०] [स्त्री० खरस्वरी] कठोर या कर्कश स्वरवाला।

खर-स्वस्तिक—पुं० [कर्म० स०] शीर्ष विंदु।

खर-हर—वि० [ब० स०] (राशि) जिसका हर शून्य हो। (गणित)

पुं० [देश०] बलूत की जाति का एक पेड़।

खरहरना†—अ० [हिं० खर (तिनका)+हरना] झाड़ देना। झाड़ना।

स० [हिं० खरहरा] घोड़े के शरीर पर खरहरा करना।

खरहरा—पुं० [हिं० खरहरना] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर, रहठे आदि की डंठलों का बना हुआ झाड़ू। झंखरा। २. एक प्रकार का ब्रुश जिसके दाँते प्रायः धातु के होते हैं, तथा जिससे रगड़कर घोड़े के बदन पर की धूल निकाली जाती है।

खरहरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मेवा (कदाचित् खजूर)।

खरहा—पुं० [हिं० खर=घास+हा (प्रत्य)] [स्त्री० खरही] खरगोश।

खरही†—स्त्री० [हिं० खर] (घास या अन्न आदि का) ढेर। राशि।

खरांडक—पुं० [सं० खर-अंड, ब० स०, कप्] शिव के एक अनुचर का नाम।

खरांशु—पुं० [सं० खर-अंशु, ब० स०] सूर्य।

खरा—वि० [सं० खर=तीक्ष्ण] [स्त्री० खरी] १. जिसमें किसी प्रकार का खोट या मेल न हो। विशुद्ध। 'खोटा' का विपर्याय। जैसे—खरा दूध, खरा सोना। २. लेन-देन व्यवहार आदि में ईमानदार, सच्चा और शुद्ध हृदयवाला। जैसे—खरा असामी। ३. सदा सब बातें सच और साफ कहनेवाला। जैसे—खरा आदमी।

मुहा०—**(किसी को) खरी खरी सुनाना**=सच्ची और साफ बात दृढ़तापूर्वक कहना। **(किसी को) खरी खोटी सुनाना**=ठीक या सच्ची बात बतलाते हुए किसी अनुचित आचरण या व्यवहार के लिए फटकारना।

४. जिसमें किसी प्रकार का छल-कपट न हो। जैसे—खरी बात, खरा व्यवहार। ५. बिलकुल ठीक और पूरा। उचित तथा उपयुक्त। जैसे—खरा काम, खरी मजदूरी। ६. (प्राप्य धन) जो मिल गया हो या जिसके मिलने में कोई संदेह न रह गया हो।

मुहा०—**रुपये खरे होना**=प्राप्य धन मिल जाना या उसके मिलने का निश्चय होना। जैसे—अब हमारे रुपए खरे हो गये।

७. (पदार्थ) जो झुकाने या मोड़ने से टूट जाय। ८. (पकवान) जो तलकर अच्छी तरह सेंक लिया गया हो। करारा। जैसे—खरी पूरी, खरा समोसा।

अव्य० १. वस्तुतः। सचमुच। उदा०—ऊधौ! खरिए जरी हरि के सूलन की।—सूर। २. निश्चित रूप से। ठीक या पूरी तरह से।

*पुं० [सं० खर] तृण। तिनका। (क्व०)

मुहा०*—**खरा-सा**=तिनका भर। बहुत थोड़ा या जरा-सा। उदा०—चले मुदित मन डरु न खरोसो।—तुलसी।

खराई—स्त्री० [देश०] सबेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन न मिलने के कारण होनेवाले साधारण शारीरिक विकार। जैसे—जुकाम होना, गला बैठना आदि।

मुहा०—**खराई मारना**=इस उद्देश्य से जलपान करना कि उक्त प्रकार के शारीरिक विकार न होने पावें।

†स्त्री० =खरापन।

खराऊँ—स्त्री०=खड़ाऊँ।

खराज—पुं०=खिराज।

खराद—पुं० [अ० खर्रात से फा० खर्राद] एक प्रकार का यंत्र जो लकड़ी अथवा धातु की बनी हुई वस्तुओं के बेडौल अंग छीलकर उन्हें सुडौल तथा चिकना बनाता है।

मुहा०—**खराद पर उतारना**=कोई चीज उक्त यंत्र पर रखकर सुडौल और सुंदर बनाना। **खराद पर चढ़ाना**=(क) किसी पदार्थ का हर तरह से ठीक, सुंदर और सुडौल होना। (ख) संसार के ऊँच-नीच देखकर अनुभवी और व्यवहार-कुशल होना।

स्त्री० १. खरादने की क्रिया या भाव। २. वह रूप जो किसी चीज को खरादने पर बनता है। ३. बनावट का ढंग। गढ़न।

खरादना—स० [हिं० खराद] १. कोई चीज खराद पर चढ़ाकर उसे सुन्दर और सुडौल बनाना। २. काट-छाँटकर ठीक और दुरुस्त करना।

खरादी—पुं० [हिं० खराद] वह व्यक्ति जो खरादने का काम करता हो। खरादनेवाला।

खरापन—पुं० [हिं० खरा+पन] १. खरे अर्थात् निर्मल, शुद्ध अथवा निश्छल या स्पष्टवादी होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सत्यता।

खराब—वि० [अ०] [भाव० खराबी] १. (वस्तु) किसी प्रकार का विकार होने के कारण जिसका कुछ अंश गल या सड़ गया हो। जैसे—ये फल खराब हो गये हैं। २. (बात या व्यवहार) जो अनुचित अथवा अशिष्ट हो। ३. (व्यक्ति) जिसका चाल-चलन अच्छा न हो। पतित। मर्यादाभ्रष्ट।

मुहा०—**(किसी को) खराब करना**=किसी का कौमार्य खंडित करना।

४. दुर्दशा-ग्रस्त। जैसे—मुकदमा लड़कर वे खराब हो गये। ५. जो मांगलिक अथवा शुभ न हो। बुरा। जैसे—खराब दिन।

खराबी—स्त्री० [फा०] १. खराब होने की अवस्था या भाव। २. दोष। ३. दुरवस्था। दुर्दशा। जैसे—तुम्हारा साथ देने के कारण हमें भी खराबी में पड़ना पड़ा।

खरारि—वि० [सं० खर-अरि, ष० त०] खरों अर्थात् राक्षसों आदि को नष्ट करनेवाला।

पुं० १. विष्णु। २. रामचंद्र। ३. श्रीकृष्ण। ४. बलराम (धेनुक नामक असुर को मारने के कारण) ४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

खरारी—पुं०दे० 'खरारि'।

खरालिक—पुं० [सं० खर-आ√ला (लेना)+णिनि+कन्] १. नाई। २. तकिया। ३. लोहे का तीर।

खराश—स्त्री० [फा०] कोई अंग छिलने अथवा छीले जाने पर अथवा रगड़ खाने पर होनेवाला छोटा या हलका घाव। खरोंच। छिलन।

खरिक—पुं० [देश०] वह ऊख जो खरीफ की फसल के बाद बोया जाय।

†पुं०=खरक।

खरिच—पुं०=खरच।

खरिया—स्त्री० [हिं० खर+इया (प्रत्य०)] १. रस्सी आदि की बनी हुई जाली जिसमें घास, भूसा आदि बाँधा जाता है। २. झोली।

स्त्री० [देश०] १. वह लकड़ी जिसकी सहायता से नाँद में नील कसकर भरते या दबाते हैं। २. मम्नभूम, राँची आदि में रहनेवाली एक जंगली जाति।

स्त्री० [हिं० खार=राख] कंडे की राख।

स्त्री० दे० 'खड़िया'।

खरियान†—पुं०=खलियान।

खरियाना†—स० [हिं० खरिया] झोली में भरना।

स०=खलियाना।

खरिहट†—स्त्री० [हिं० खर] लकड़ी का टुकड़ा जिसमें वह डोरा बँधा रहता है जिससे कुम्हार लोग चाक पर से तैयार की हुई चीज काटकर अलग करते हैं।

खरिहान–पुं०=खलियान।

खरी—स्त्री० [सं० खर+ङीष्] गधी।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का ऊख।

स्त्री०=खली।

खरीक*—पुं० [सं० खर] तिनका।

खरी-जंघ—पुं० [ब० स०] शिव।

खरीता—पुं० [अ० खरीतः] [स्त्री० अल्पा० खरीती] १. थैली। २. जेब। खीसा। ३. बड़ा लिफाफा; विशेषतः वह लिफाफा जिसमें राजाओं के आदेश-पत्र आदि भरकर भेजे जाते थे।

खरीतिया†—पुं० [अ० खरीता] मुसलमानी शासन काल का एक प्रकार का कर जो अकबर ने उठा दिया था।

खरीद—स्त्री० [फा०] १. खरीदने की क्रिया या भाव। क्रय। २. वह जो कुछ खरीदा जाय। जैसे—यह सौ रुपए की खरीद है। ३. वह मूल्य जिस पर कोई वस्तु खरीदी जाय। जैसे—दस रुपए तो इसकी खरीद है।

खरीददार—पुं० [फा०] १. जो कोई वस्तु खरीदता हो। ग्राहक। २. गुणग्राहक। चाहनेवाला।

खरीदना—स० [फा० खरीदन] मोल लेना। क्रय करना।

खरीदार—पुं०=खरीददार।

खरीदारी—स्त्री० [फा०] कोई वस्तु खरीदने की क्रिया या भाव। खरीदने का काम।

खरीफ—स्त्री० [अ० खरीफ़] १. वह फसल जो आषाढ़ से आधे अगहन के बीच में तैयार होती है। जैसे—धान, मकई, बाजरा, उर्द, मोठ, मूँग आदि। २. आषाढ़ से आधे अगहन तक की अवधि या भोगकाल।

खरीम—स्त्री० [देश०] मुरगे की तरह की एक चिड़िया जो प्रायः पानी के किनारे रहती है।

खरील—पुं० [देश०] सिर पर पहनने की एक प्रकार की बेंदी (गहना)।

खरी-विषाण—पुं० [सं० ष० त०] ऐसी वस्तु जिसका उसी प्रकार अस्तित्व न हो जिस प्रकार गधी या गधे के सिर पर सींग नहीं होता है।

खरु—वि० [सं०√खन् (खोदना)+कु, न्=र्] १. सफेद। २. मूर्ख। ३. निष्ठुर।

खरे—अव्य० [हिं० खरा] अच्छी तरह। उदा०—केहिनर केहि सर राखियो, खरे बढ़े पर पार।—बिहारी।

पुं० [हिं० खरा] एक आने प्रति रुपए की दलाली जो साधारणतः उचित और चलित मानी जाती है। (दलाल)

खरेई—अव्य० [हिं० खरा+ई=ही] १. वस्तुतः। सचमुच। उदा०—सूरदास अब धाम देहरी चढ़ि न सकत खरेई अमान।—सूर। २. बहुत अधिक।

खरेठ—पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

खरेडुआ†—पुं०=खरोरी।

खरेरा—पुं०=खरहरा।

खरोंच—स्त्री० [सं० क्षरण] १. नख अथवा अन्य किसी नुकीली वस्तु से छिलने से पड़ा हुआ दाग या चिह्न। खराश। २. कुछ विशिष्ट पत्तों को बेसन में लपेट कर तैयार किया हुआ पकौड़ा। पतौड़।

खरोंचना—स० [सं० क्षुरण] किसी नुकीली वस्तु से किसी वस्तु को खुरचना या छीलना।

खरोंट—स्त्री०=खरोंच।

खरोई†—अव्य० दे० 'खरेई'।

खरोच—स्त्री०=खरोंच।

खरोचना—स०=खरोंचना।

खरोट—स्त्री०=खरोंच।

खरोटना—स०=खरोंचना।

खरोरा†—पुं०=खँडौरा।

खरोरी—स्त्री० [हिं० खड़ा] छकड़े, बैलगाड़ी आदि में दोनों ओर के वे दो-दो खूंटे जिन पर रोक के लिए बाँस बँधे रहते हैं।

खरोश—पुं० [फा०] १. जोर की आवाज। २. कोलाहल। शोर। ३. आवेग या आवेश। जैसे—जोश-खरोश।

खरोष्ट्री, खरोष्ठी—स्त्री० [सं० खर–उष्ट्र, मयू० स०, खरोष्ट्र+ङीप्] [खर-ओष्ठ, मयू० स०, खरोष्ठ+ङीष्] भारत की पश्चिमोत्तर सीमा की अशोककालीन एक लिपि जो दाहिनी ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी। गांधार लिपि।

खरौंट†—स्त्री०=खरोंच।

खरौंटना†—स०=खरोंचना।

खरौहाँ†—वि० [हिं० खारा+औहाँ] जो स्वाद में कुछ-कुछ खारा हो।

खर्खोद—पुं० [सं०] एक प्रकार का इंद्रजाल।

खर्ग*—पुं०=खड्ग।

खर्च—पुं० दे० 'खरच'।

खर्चना—स०=खरचना।

खर्चा—पुं०=खरचा।

खर्ची—स्त्री०=खरची।

खर्चीला—वि०=खरचीला।

खर्जन—पुं० [सं०√खर्ज् (खुजलाना)+ल्युट्–अन] १. खुजलाना। २. खुजली।

खर्जरा—स्त्री० [सं० √ खर्ज्+घञ्, खर्ज√रा (देना) +क–टाप्] सज्जी मिट्टी।

खर्जिका—स्त्री० [सं०√खर्ज+ण्वुल्–अक, टाप्, इत्व] उपदंश या गरमी नाम का रोग।

खर्जु—स्त्री० [सं०√खर्ज्+उन्] १. खुजली। २. ज़ंगली खजूर। ३. एक प्रकार का कीड़ा।

खर्जुघ्न—पुं० [सं० खर्जु√हन् (नष्ट करना)+टक्] १. धतूरा। २. आक। ३. चक्रमर्द। चकवँड।

खर्जुर—पुं० [सं०√खर्ज्+उरच्] १. एक प्रकार की खजूर। २. चाँदी।

खर्जू—स्त्री० [सं०√खर्ज्+ऊ] १. खुजली। २. एक प्रकार का कीड़ा।

खर्जूर—पुं० [सं०√खर्ज्+ऊरच्] १. खजूर नामक वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल। ३. चाँदी। ४. हरताल। ५. विच्छू।

खर्जूरक—पुं० [सं० खर्जूर+कन्] विच्छू।

खर्जूर-वेध—पुं० [ष० त०] ज्योतिष में एकार्गल नामक योग जिसमें विवाह कर्म वर्जित है।

खर्जूरी—स्त्री० [सं० खर्जूर+ङीष्] खजूर।

खर्पर—पुं० [सं०=कर्पर, पृषो० खत्व] १. खप्पर नामक पात्र। २. काली देवी का रुधिर पीने का पात्र। ३. हड्डियों की राख से बननेवाली वह छिद्रिल घरिया जिसमें चाँदी-सोना गलाने पर उसमें मिला हुआ खोट रसकर बाहर निकल जाता है। (क्यूपेल) ४. खोपड़ा।

खर्परी—स्त्री० [सं० खर्पर+ङीष्] खपरिया।

खर्ब—वि० [सं०√खर्ब् (गति)+अच्] १. जिसका कोई अंग कटा या टूटा हो। विकलांग। २. छोटा। लघु। ३. बौना।

पुं० [सं०] १. संख्या का बारहवाँ स्थान। सौ अरब। खरब। २. बारहवें स्थान पर पड़नेवाली संख्या।

वि०, पुं०=खर्व।

खर्बट—पुं० [सं०√खर्ब्+अटन्] पहाड़ पर बसा हुआ गाँव। पहाड़ी बस्ती।

खर्राट—वि०=खुर्राट।

खर्रा—पुं० [खर खर से अनु०] १. वह बहुत लंबा पर बहुत कम चौड़ा कागज जिसमें कोई बड़ा हिसाब या विवरण लिखा हो और जो प्रायः मुट्ठे की तरह लपेटकर रखा जाता है। (रोल) २. एक प्रकार का रोग जिसमें पीठ पर फुंसियाँ होती हैं और चमड़ा कड़ा पड़ जाता है।

खर्राच—वि० [अ०] बहुत खरच करनेवाला। खरचीला।

खर्राटा—पुं० [अनु० खर खर] सोते समय मुँह के रास्ते जोर से साँस लेने पर होनेवाला खर-खर शब्द।

विशेषः—प्रायः गले या नाक में भरी हुई बलगम से हवा के टकराने पर ऐसा शब्द होता है।

मुहा०—खर्राटा भरना, मारना या लेना=पूरी नींद में और बेसुध होकर सोना।

खर्व—वि० [सं०√खर्व्+अच्] १. खंडित या भग्न अंगवाला। विकलांग। २. छोटा। लघु। ३. नाटा। बौना। ४. तुच्छ। नगण्य। ५. नीच।

पुं० १. सौ अरब की अर्थात् बारहवें स्थान की संख्या। २. कुबेर की एक निधि। ३. कूजा नामक वृक्ष। ४. ठिगने कद का व्यक्ति। बौना।

खर्विता—स्त्री० [सं०√खर्व्+क्त+टाप्] १. चतुर्दशी से युक्त अमावास्या जो बहुत कम होती है। २. ऐसी तिथि जिसका काल-मान बीती हुई तिथि के काल-मान से कुछ कम हो।

खर्वीकरण—पुं० [सं० खर्व+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] कम या छोटा करने की क्रिया या भाव।

खल—वि० [सं०√खल् (चलना, गिरना)+अच्] [भाव० खलता] १. क्रूर और दुष्ट स्वभाववाला। दुर्जन। पाजी। लुच्चा। २. अधम। नीच। ३. निर्लज्ज। ४. धोखेबाज। ५. चुगुलखोर। पिशुन।

पुं० [सं०] १. सूर्य। २. पृथ्वी। ३. जगह। स्थान। ४. खलिहान। ५. तलछट। ६. धतूरा। ७. तमाल वृक्ष। ८. खरल। ९. पत्थर का टुकड़ा या ढोंका। १०. सुनारों का किटकिना नाम का ठप्पा।

†पुं०=खरल।

खलई—स्त्री०=खलता।

खलक—पुं० [सं० ख√ला (लेना)+क+कन्] घड़ा।

पुं० [अ० खल्क] १. जगत् या सृष्टि के प्राणी। २. जगत्। संसार। सृष्टि।

खलकत—स्त्री० [अ०] १. जगत् या संसार के सब लोग। २. जन-समूह। भीड़।

खलखल—स्त्री० [अनु०] १. तरल पदार्थ उँड़ेलने अथवा उबालने पर होनेवाला शब्द। २. हँसने आदि में होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द।

खलखलाना—अ० [अनु०] १. खल खल शब्द होना। २. खौलना।

स० १. खल खल शब्द उत्पन्न करना। २. उबालना। खौलाना।

खलड़ी—स्त्री० [हिं० खाल+डी (प्रत्य०)] खाल। त्वचा।

खलता—स्त्री० [सं० खल+तल्–टाप्] खल होने की अवस्था या भाव। दुष्टता।

पुं० [हिं० खरीता] एक प्रकार का बड़ा थैला।

खलत्व—पुं० [सं० खल+त्व] खलता (दे०)।

खलधान—पुं० [सं०√धा (धारण करना)+ल्युट्–अन्, खल-धान, ष० त०] खलियान।

खलना—अ० [सं० खर=तीक्ष्ण] १. अनुचित, अप्रिय या कष्टदायक प्रतीत होना। दूषित या बुरा जान पड़ना। अखरना। २. नेत्रों को भला प्रतीत न होना। ठीक प्रकार से न जँचना या न फबना। खटकना।

स० किसी धातु को इस प्रकार खाली अर्थात् पोला करना कि वह झुक या मुड़ सके। (सोनार)

खलनी—स्त्री० [फा० खाली] सोनारों का एक औजार जिस पर रख कर घुंड़ी आदि बनाई जाती है।

खलबल—स्त्री० [अनु०] १. शोर। हल्ला। २. कुलबुलाहट। ३. दे० 'खलबली'।

खलबलाना—अ० [हिं० खलबल] १. खलबल शब्द करना। २. उबलना। खौलना। ३. कीड़े-मकोड़ों का हिलना-डोलना। कुलबुलाना। ४. दे० 'खड़बड़ाना'।

स० १. खलबल शब्द करना। २. खलबली या हलचल उत्पन्न करना।

खलबली—स्त्री० [हिं० खलबल] १. खलबल करने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—पेट में खलबली होना। २. घबराहट, भय आदि के कारण भीड़ या जन-समूह में मचनेवाली हलचल। ३. क्षोभ।

खलभलाना—अ०, स०=खलबलाना।

खल-मूर्ति—पुं० [ब० स०] पारा।

खल-यज्ञ—पुं० [मध्य० स०] प्राचीन काल में खलियान में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

खलल—पुं० [अ०] १. किसी चलते हुए काम में पड़नेवाली बाधा या विघ्न। अड़चन।

पद—**खलल-दिमाग**—मस्तिष्क में होनेवाली विकृति। पागलपन।

खलसा—स्त्री० [सं० खालिश] एक प्रकार की बड़ी मछली।

खलहल†—पुं०=खलल।

स्त्री०=खलबल।

खलाइत—स्त्री० [हिं० खाल+इत (प्रत्य०)] धौंकनी। भाथी।

खलाई—स्त्री०=खलता।

खलाना*†—स० [हिं० खाली] १. पात्र आदि में भरी हुई चीज बाहर निकालना। खाली करना। २. किसी को कहीं से बाहर निकालना। ३. घुंडी बनाने के लिए पत्तर की कटोरी इस प्रकार बनाना कि उसका भीतरी भाग खाली रहे। (सुनार)

स० [हिं० खाल=गड्ढा] १. जमीन खोदकर गड्ढा बनाना। २. भरी हुई जमीन खोदकर खाली करना। जैसे—कूआँ खलाना। ३. नीचे की ओर इस प्रकार दबाना कि वह खाली जान पड़े।

मुहा०—**पेट खलाना**=पेट पचकाकर यह सूचित करना कि हम बहुत भूखे हैं, हमें कुछ मिलना चाहिए।

स० [हिं० खाल] मरे या मारे हुए पशु की खाल उतारना। जैसे—बकरी या शेर खलाना।

खलार†—वि० [हिं० खाली] नीचा। गहरा। जैसे—खलार भूमि।

पुं० आस-पास के तल से नीचा स्थान।

खलाल—पुं० [अ०] धातु का वह लंबा, नुकीला, छोटा टुकड़ा जिससे दाँतों में फँसा हुआ अन्न आदि खोदकर निकालते हैं।

वि० [हि० खलास] (ताश के खेल में) जो पूरी बाजी हार चुका हो।

पुं० उक्त प्रकार की हार।

खलास—वि० [अ०] १. किसी प्रकार के बंधन से छूटा हुआ। मुक्त। २. जिसके पास या साथ कुछ रह न गया हो। गरीब। दरिद्र। ३. खतम। समाप्त। ४. संभोग के समय जिसका वीर्य-पात हो चुका हो।

खलासी—स्त्री० [हिं० खलास] छुटकारा। मुक्ति।

पुं० जहाज पर या रेलों में छोटे-मोटे काम करनेवाला मजदूर।

खलि—स्त्री० [सं० √खल् (गति) +इन्] खली।

खलित*—वि० [सं० स्खलित] १. चलायमान। चंचल। डिगा हुआ। २. अपने स्थान से गिरा या हटा हुआ। ३. जिसका वीर्यपात हो चुका हो। ४. अस्पष्ट या अर्थरहित (बात)।

वि० [सं० √खल्+क्त] अधम। नीच। पतित।

खलिन—पुं० [सं० ख-लीन, स० त०, पृषो० ह्रस्व] १. घोड़े की लगाम। २. लोहे का वह उपकरण जिसके दोनों ओर लगाम बँधी रहती है।

खलियान—पुं० [सं० खल और स्थान] १. वह समतल भूमि या मैदान जहाँ फसल काटकर रखी, माँडी तथा बरसाई जाती है। २. अव्यवस्थित रूप से लगाया हुआ ढेर।

खलियाना†—स०=खलाना (सब अर्थों में)।

खलिवर्द्धन—पुं० [ष० त०] मसूड़ों का एक रोग जिसमें उनकी जड़ का मांस बढ़ जाता और पीड़ा होती है।

खलिश—पुं० [सं० ख√लिशु (गति या मिलना)+क] खलसा नाम की मछली।

स्त्री० [फा०] १. कोई खटकने, गड़ने या चुभनेवाली चीज। काँटा। २. उक्त प्रकार की चीज गड़ने या चुभने से होनेवाली कसक, टीस या पीड़ा। खटक।

खलिहान†—पुं०=खलियान।

खली (लिन्)— वि० [सं० खल+इनि] जिसमें तलछट हो।

पुं० १. शिव। २. एक प्रकार के दानव जिन्हें वशिष्ठ देव ने मारा था।

स्त्री० तेलहन का वह अंश जो उसे पेरकर तेल निकालने पर बच रहता और गौओं-भैंसों आदि को भूसे में मिलाकर खिलाया जाता है।

वि० [हिं० खलना] खलने या खटकनेवाला। अनुचित और अप्रिय।

खलीज—स्त्री० [अ०] खाड़ी। (भूगोल)

खलीता—पुं०=खरीता।

खलीफा—पुं० [अ०] १. उत्तराधिकारी। २. मुसलिम राष्ट्र में एक सर्वोच्च पद जिस पर मुहम्मद साहब का उत्तराधिकारी नियुक्त होता था और संसार भर के मुसलमानों का नेता माना जाता था। (कैलिफ) ३. प्रधान अधिकारी। ४. बड़ा, बुड्ढा और मान्य व्यक्ति। ५. मुसलमान नाइयों, दरजियों आदि का उपनाम। ६. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त। खुर्राट।

खलील—पुं० [अ०] सच्चा दोस्त।

खलु—क्रि० वि० [सं० √खल+उन्] निश्चयवाचक शब्द। निश्चित रूप से। अवश्य।

खलूरिका—स्त्री० [सं० अव्युत्पन्न] १. वह मैदान जहाँ सैनिक शिक्षा दी जाती हो अथवा जहाँ सैनिक व्यायाम आदि करते हों। २. चाँदमारी का स्थान।

खलेरा—वि० [अ० खालः=मौसी] जो खाला (मौसी) के संबंध से कुछ लगता हो। मौसेरा। जैसे—खलेरा भाई।

खलेल—पुं० [हिं० खली+तेल] खली आदि का वह अंश जो फुलेल में रह जाता है और निथारने या छानने पर निकलता है।

वि०, पुं०=खलाल।

खल्क—स्त्री० दे० 'खलक'।

खल्कत—स्त्री०=खलकत।

खल्ल—पुं० [सं० √खल्+क्विप्, खल्√ला (लेना) +क] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का कपड़ा। २. चमड़ा। ३. चमड़े की बनी हुई मशक। ४. चातक पक्षी। ५. औषध को खरल में डालकर घोंटने या पीसने की क्रिया।

खल्लड़—पुं० [सं० खल्ल, हिं खाल] १. मृत पशु की उतारी हुई खाल। २. चमड़े की मशक या थैला। ३. औषध, मसाले आदि कूटने का खरल।

खल्ला—पुं० [हिं० खाली] १. नृत्य में यह दिखलाने की क्रिया कि हमारा पेट खाली है। २. बिना साफ की हुई खाल से बनाया हुआ जूता।

२.१ / २III ५१,१२८

†पुं०=खलियान।

खल्लासर--पुं०[सं० ?] ज्योतिष में एक प्रकार का योग।

खल्लिका--स्त्री० [सं० खल्ल+कन्--टाप्, इत्व] कड़ाही।

खल्ली--पुं० [सं० खल्ल+ङीष्] एक प्रकार का वात रोग जिसमें हाथ पाँव मुड़ जाते हैं।

†स्त्री० =खली (तेलहन की)।

खल्लीट--पुं० वि०=खल्वाट।

खल्वं--पुं०[सं० √खल्+क्विप्, खल्√वा+क] १. सिर के बाल झड़ जाने का रोग। गंज। २. एक प्रकार का धान। ३. चना।

खल्वाट--पुं०[सं० खल्√वट् (लपेटना)+अण्] वह रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं। गंज नामक रोग।

वि० जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंजा।

ख-वल्ली--स्त्री० [स० त०] आकाशवल्ली (बौंर)।

खवा--पुं० [सं० स्कन्ध] कंधा। भुजमूल।

मुहा०--खवे से खवा छिलना=इतनी अधिक भीड़ होना कि सबको धक्के लगते हों।

खवाई--स्त्री० [हिं० खाना] १. खाने या खिलाने की क्रिया, भाव या पारितोषिक।

स्त्री० [?] नाव में का वह गड्ढा जिसमें मस्तूल खड़ा किया जाता है।

खवाना†--स०=खिलाना (भोजन कराना)।

खवार--वि०=ख्वार।

खवास--पुं० [अ०] १. वह खास नौकर जो अंग-रक्षक का भी काम करता हो। २. राजपूताने में, राजाओं की विशिष्ट प्रकार की निजी सेवाएँ करनेवाले सेवकों की जाति या वर्ग। ३. उक्त जाति या वर्ग का कोई व्यक्ति।

खवासी--स्त्री०[हिं० खवास+ई (प्रत्य०)] १. खवास का काम, पद या भाव। २. चाकरी। नौकरी। ३. हाथी के हौदे, गाड़ी आदि में पीछे की ओर का वह स्थान जहाँ खवास बैठता है। ४. अँगिया में बगल की तरफ लगनेवाला जोड़।

ख-विद्या--स्त्री०[सं० ष० त०] ज्योतिष विद्या।

खवी--स्त्री० [फा० खवीद=हरी घास या फसल] एक प्रकार की घास।

खवैया--पुं०[हिं० खाना+ऐया (प्रत्य०)] बहुत खानेवाला।

वि० [हिं० खवाना=खिलाना+ऐया (प्रत्य०)] खिलाने या भोजन करानेवाला।

खश†--पुं०=खस।

खशखाश--पुं०[फा०] पोस्ते का पौधा और उसका बीज। खसखस।

खशी (शिन्)--वि० [सं० खश+इनि] पोस्ते के फूल के रंग का। हलका आसमानी।

पुं० हलका आसमानी रंग।

खश्म--पुं०[अ० मि० सं० खष्प] कोप। क्रोध। रोष।

ख-श्वास--पुं०[ष० त०] वायु।

खष्प--पुं०[सं०√खन् (खोदना)+प, न=ष] १. हिंसा। २. क्रोध।

खस--पुं०[सं० ख√सो (नष्ट करना) +क] १. वर्त्तमान गढ़वाल और उसके उत्तरी प्रदेश का पुराना नाम। २. इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति।

स्त्री० [फा०] गाँडर नामक घास की जड़ें जो सुगंधित होती हैं और जिसकी टट्टियाँ बनाई जाती हैं।

पद--खस की टट्टी=खस नामक घास की जड़ों की बनाई जानेवाली एक प्रकार की टट्टी या परदा जिसे गरमी के दिनों में दरवाजों पर कमरे ठंढे रखने के लिए लगाते हैं।

खसकंता--स्त्री०[हिं० खसकना+अंत (प्रत्य०)] चुपके से खिसक या भाग जाने अथवा कहीं से उठकर चल देने की क्रिया या भाव।

खसकना--अ०[अनु०] १. पाँव तथा चूतड़ के बल बैठे-बैठे धीरे-धीरे किसी ओर बढ़ना या हटना। २. चुपचाप कहीं से चले जाना या हट जाना। ३. किसी वस्तु का अपने स्थान से कुछ हट जाना। जैसे--खंभा या दीवार खसकना।

खसकवाना--स० [खसकाना का प्रे०] १. खसकाने का काम कराना। २. किसी को कोई चीज धीरे से उठा लाने में प्रवृत्त करना।

खसकाना--स०[हिं० खसकना] १. किसी वस्तु को धीरे-धीरे हटाते हुए उसके स्थान से इधर-उधर करना। २. धीरे से किसी की कोई वस्तु उड़ाकर चलते बनना।

खसखस--स्त्री०[सं० खस्खस?] पोस्ते का दाना या बीज।

खसखसा--वि० [हिं० खसखस] खसखस के दानों की तरह का; अर्थात् बहुत छोटा। जैसे--खसखसी दाढ़ी।

वि० [अनु०] भुरभुरा।

खसखसी--वि० [हिं० खसखस] खसखस या पोस्ते के दानों के रंग का। कुछ मटमैला सफेद। मोतिया।

पुं० उक्त प्रकार का रंग। (पर्ल)

खस-खाना--पुं० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ कमरा या घर जिसमें बड़े आदमी गरमियों के दिनों में दोपहर के समय रहते हैं।

खस-खास--स्त्री०=खसखस।

खसतिल--पुं० [सं० खस√तिल् (चिकना होना)+क] पोस्ता।

खसना†--अ० [प्रा० कसई=गिरना] १. अपनी जगह से धीरे-धीरे हटना। खिसकना। २. नीचे की ओर आना। गिरना।

†स० [अ० खसी=बकरी का बच्चा] १. काट या तोड़कर अलग करना। २. नष्ट करना। उदा०--इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि।--कबीर।

खसनीब--पुं० [?] एक प्रकार का गंधा बिरोजा।

खसबो*--स्त्री०=खुशबू।

खसम--पुं० [अ०] १. स्त्री का पति। खाविंद।

मुहा०--खसम करना=किसी पर-पुरुष से पति-संबंध स्थापित करना। २. मालिक। स्वामी। ३. रहस्य संप्रदाय में, (क) जीव या जीवात्मा। (ख) परमात्मा।

वि० [सं० ख=आकाश+सम=समान] आकाश या शून्य के समान सब प्रकार के भावों या विचारों से रहित। (रहस्य संप्रदाय) जैसे--खसम स्वभाव।

खसरा--पुं०[अ० खसरः] १. पटवारी या लेखपाल का वह कागज जिसमें

प्रत्येक खेत का क्षेत्रफल या नाप-जोख आदि लिखी रहती है। २. हिसाव का कच्चा चिट्ठा।

पुं०[फ़ा० ख़ारिश] एक प्रकार का संक्रामक रोग जिसमें शरीर पर बहुत से छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं और बहुत कष्ट होता है। मसूरिका।

ख-सर्प—पुं० [सं० ब० स०] गौतम बुद्ध।

खसलत—स्त्री०[अ०] आदत। स्वभाव।

खसाना—स० [हिं० खसना] नीचे की ओर ढकेलना या फेंकना। नीचे गिराना।

खसारा—पुं० [अ० ख़सारः] १. नुकसान। हानि। २. घाटा। टोटा।

ख़सासत—स्त्री० [अ०] १. खसीस होने की अवस्था या भाव। कंजूसी। २. क्षुद्रता। नीचता।

ख-सिंधु—पुं०[सं० ष० त०] चंद्रमा।

खसिया—वि० [अ० खस्सी] १. (पशु) जिसके अंडकोश निकाल लिए गये हों। वधिया। २. नपुंसक।

पुं०=खस्सी (वकरा)।

खसियाना†—स० [हिं० खसिया] नर पशुओं के अंडकोश निकाल या कूटकर पुंसत्व हीन करना। खसी या बधिया करना।

खसी—पुं०=खस्सी।

वि०=खसिया।

खसीस—वि० [अ०] कंजूस। सूम।

खसोट—स्त्री० [हिं० खसोटना] खसोटने की क्रिया या भाव।

वि० खसोटनेवाला। (यौ० के अंत में) जैसे— कफन खसोटना।

खसोटना—स० [सं० कृष्ट] १. झटके से अथवा बलपूर्वक उखाड़ना। नोचना। जैसे—(क) बाल खसोटना। (ख) पत्ते खसोटना। २. बलपूर्वक किसी की चीज छीनना।

खसोटा—पुं०[हिं० खसोटना] [स्त्री० खसोटी] १. नोच-खसोट करनेवाला व्यक्ति। २. लुटेरा। ३. कुश्ती का एक पेंच।

खसोटी—स्त्री०[हिं० खसोटना] खसोटने की क्रिया या भाव। खसोट। उदा०—कफन-खसोटी को करम सबही एक समान।—भारतेंदु।

ख-स्तनी—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीष्] पृथिवी।

खस्ता—वि० [फा० ख़स्तः] १. बहुत थोड़ी दाब से टूट जानेवाला। भुरभुरा। २. जो खाने में मुलायम तथा कुरकुरा हो। जैसे—खस्ता कचौड़ी, खस्ता पापड़। ३. टूटा-फूटा। भग्न। ४. दुर्दशा-ग्रस्त।

ख-स्वस्तिक—पुं०[उपमि० स०] वह कल्पित विंदु जो सिर के ठीक ऊपर आकाश में माना जाता है। शीर्षविंदु। पाद-बिंदु, का विपर्याय। (जेनिथ)

खस्सी—पुं०[अ०] १. वकरा। २. वधिया किया हुआ पशु। ३. नपुंसक। हिजड़ा।

वि० वधिया किया हुआ।

खह—पुं० [सं० खं] आकाश।

†स्त्री०=खेह।

ख-हर—पुं० [ब० स०] गणित में वह राशि जिसका हर शून्य हो।

खाँ—त्रि० [फा० ख़्वाँ] उच्चारण करने, पढ़ने या बोलनेवाला।

पुं० दे० 'खान'।

खाँई†—स्त्री०=खाई।

खांख†—स्त्री० [सं० खं] छेद। सूराख।

खाँखर†—वि० दे० 'खँखरा।'

खाँग†—पुं०[सं० खङ्ग, प्रा० खग्ग] १. काँटा। कंटक। २. कुछ पक्षियों के पैरों में निकलनेवाला काँटा। जैसे—तीतर या मुरगे का काँटा। ३. कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक पर आगे की ओर सींग की तरह का निकला हुआ अंग। जैसे—गैंडे या जंगली सूअर का खाँग। ४. खुरवाले पशुओं का एक रोग जिसमें उनके खुरों में घाव हो जाता है। खुरपका।

स्त्री० [हिं० खाँचना] १. घिसने, छीजने आदि के कारण होनेवाली कमी। छीजन। २. कसर। त्रुटि। उदा०—राखौं देह नाथ केहि खाँगौ।—तुलसी।

खाँगड़, खाँगड़ा—वि० [हिं० खाँग+ड़ (प्रत्य०)] १. जिसके पैर में खाँग रोग हो। २. जिसके मस्तक या मुँह पर खाँग हो। ३. जिसके पास अस्त्र-शस्त्र हों। हथियारबंद। ४. बलिष्ठ या हृष्ट-पुष्ट।

खाँगना†—अ० [हिं० खाँग] पैर में खाँग (देखे) निकलने के कारण ठीक तरह से चलने में असमर्थ होना। उदा०—कहहु सो पीर काह बिनु खाँगा।—जायसी।

खाँगी†—स्त्री० [हिं० खँगना] १. कमी। त्रुटि। २. घाटा।

खाँघी—स्त्री०=खाँगी।

खाँच†—स्त्री०[हिं० खाँचना] १. खाँचने की क्रिया या भाव। २. खाँचने के कारण बननेवाला चिह्न या निशान। ३. दो वस्तुओं के बीच का जोड़। संधि। ४. दे० 'खचन।'

†पुं०=खाँचा।

खाँचना†—स० [सं० खचन] [वि० खँचैया] १. अंकित करना। चिह्न बनाना। खींचना। २. जल्दी-जल्दी घसीटकर और भद्दी तरह से लिखना। ३. चिह्न या निशान लगाना। ४. खचित या अच्छी तरह से युक्त करना। उदा०—सूरदास राधिका सयानी रूप-रासि-रस खाँची।—सूर। ५. दृढ़तापूर्वक कोई प्रतिज्ञा करना या बात कहना। उदा०—जानहुँ नहिं कि पैज पिय खाँचो।—जायसी।

खाँचा—पुं० [हिं० खाँचना] [स्त्री० अल्पा० खँचिया, खाँची] १. किसी चीज में खोदकर बनाया हुआ कुछ गहरा और लंबा निशान। २. पतली टहनी आदि का बना हुआ बड़ा टोकरा। झावा। ३. बड़ा पिंजरा।

खाँची—स्त्री०[हिं० खाँचा] छोटा खाँचा। खँचिया।

खाँड़—स्त्री० [सं० खंड] ऐसी चीनी जो कम साफ होने के कारण बहुत सफेद न हो, बल्कि कुछ लाल रंग की हो। कच्ची चीनी या शक्कर।

†पुं०=खाँडा। उदा०—जाति सूर और खाँडइ सूरा।—जायसी।

खाँड़ना†—स० [सं० खंड] १. खंड खंड करना। २. खंड खंड कर अथवा कुचल-कुचलकर खाना। चवाना। ३. दाँतों से काटना। उदा०—मेरे इनके बीच परै जनि अधर दसन खाँड़ौंगी।—सूर।

खाँडर*—पुं० [सं० खंड] छोटा टुकड़ा।

खांडव—पुं०[सं० खंड+अण्, खांड√वा (गति) +क] १. दिल्ली के आसपास का एक पुराना वन जिसे अर्जुन ने जलाकर मनुष्यों के बसने

योग्य बनाया था। २. खाँड़ की बनी हुई खाने की चीज। मिठाई।

खांडव-प्रस्थ—पुं०[ष० त०] एक गाँव जो पांडवों को धृतराष्ट्र की ओर से मिला था। यहीं पर पांडवों ने इन्द्रप्रस्थ बसाया।

खांडविक—पुं०[सं० खांडव+ठञ्—इक] मिठाई बनानेवाला। हलवाई।

खाँडा—पुं० [सं० खड्ग; खण्डक; प्रा० खण्डइ; बँ० खाँरा, खांड, मरा० खांडा; पं० खण्डा; गु० खांडु] चौड़े और तिरछे फलवाली एक प्रकार की छोटी तलवार। खड्ग।

†पुं० [सं० खंड] टुकड़ा। भाग।

खांडिक—पुं०=खांडविक (हलवाई)।

खाँड़ो—पुं० दे० 'षाड़व'।

खाँदना—†स० [सं० स्कंदन] १. दबाना। २. खोदना।

खाँधना*—स० [सं० खादन] १. खाना। उदा०— नैन नासिका मुख नहीं चोरि दधि कौने खाँधौ।—सूर। २. दे० 'खाँदना'।

खाँधा†—वि० [?] टेढ़ा। तिरछा। (राज०) उदा०—खाँधी बाँधे पाघड़ी मधरी चाले चाल।

खाँप—स्त्री० १. =फाँक। २. =टुकड़ा।

स्त्री० [हिं० खाँपना] खाँपने की क्रिया या भाव।

खाँपना†—स० [सं० क्षेपन, प्रा० खेपन] १. खोंसना। २. अच्छी तरह बैठाकर लगाना। जड़ना। ३. चारपाई बुनने के समय किसी चीज से ठोंककर उसकी बुनावट कसना और घनी करना।

खाँभ*—पुं०=खंभा।

†पुं०=खाम (लिफाफा)।

खाँभना—स० [हिं० खाम] लिफाफे में बंद करना।

खाँवाँ—पुं०[सं० स्कंधक] १. गहरी और चौड़ी खाईं। २. मिट्टी की चहारदीवारी।

पुं० [?] सफेद फूलोंवाला एक प्रकार का पौधा।

खाँसना—अ० [सं० कासन, प्रा० खाँसन] गले में रुका हुआ कफ या और कोई अटकी हुई चीज निकालने या केवल शब्द करने के लिए झटके से वायु कंठ के बाहर निकालना। खाँसी आने या होने का-सा शब्द करना।

खाँसी—स्त्री० [सं० कास] १. एक शारीरिक व्यापार जिसमें फेफड़ों से निकलनेवाली हवा श्वास नाली में रुकने पर सहसा वेगपूर्वक मुँह के रास्ते बाहर निकलने का प्रयत्न करती है। २. इस प्रकार खाँसने से होनेवाला शब्द। ३. एक रोग जिसमें मनुष्य या पशु बराबर खाँसता रहता है। (कफ, उक्त सभी अर्थों में)

खाई—स्त्री० [सं० खात; पा० खातो; दे प्रा० खाइआ; पा० खाअ, खाइआ; बं० उ० खाइ; सिं० खाही; गु० मरा० खाई] १. वह छोटी नहर जो किले आदि के चारों ओर रक्षा के लिए खोदी जाती थी। २. युद्ध क्षेत्र में खोदे जानेवाले वे लंबे गड्ढे जिनमें छिपकर सैनिक शत्रुओं पर गोले-गोलियाँ चलाते हैं। (ट्रेंच)

खाऊ—वि० [हिं० खा+ऊ (प्रत्य०)] १. बहुत खानेवाला। पेटू। २. अनुचित रूप से दूसरों का धन लेनेवाला।

पद—**खाऊ बीर**=दूसरों का माल हड़प जानेवाला।

खाक—स्त्री०[फा०] १. धूल। मिट्टी।

पद—**खाक का पुतला**=मिट्टी से बना हुआ प्राणी अर्थात् मनुष्य। **खाक-पत्थर**=नगण्य अथवा व्यर्थ का सामान।

मुहा०—(**किसी की**) **खाक उड़ना**=कुख्याति या बदनामी होना। (**कहीं पर**) **खाक उड़ना**=पूर्ण विनाश हो जाने पर उसके चिह्न दिखाई देना। **खाक उड़ाना**=(क) व्यर्थ का काम या परिश्रम करना। (ख) व्यर्थ इधर-उधर मारे मारे फिरना। **खाक छानना**=कुछ ढूँढ़ने के लिए व्यर्थ दूर दूर के चक्कर लगाना। जैसे—नौकरी के लिए उसने सारे शहर की खाक छान डाली है। (**किसी चीज पर**) **खाक डालना**=सदा के लिए किसी वस्तु को उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर छोड़ देना अथवा बात को भुला देना। **खाक में मिलना**=(क) नष्ट या बरबाद होना। (ख) ढह जाना। **खाक हो जाना**=मिट्टी में मिलकर मिट्टी का रूप धारण कर लेना।

२. भस्म। राख।

मुहा०—**खाक करना**=(क) बिलकुल जला डालना। (ख) नष्ट करना।

३. परम तुच्छ या हीन वस्तु।

वि० बहुत ही तुच्छ या हेय।

अव्य० कुछ भी नहीं। नाम को भी नहीं। जैसे— पढ़ना-लिखना तो तुम खाक जानते हो।

खाकरोब—पुं० [फा०] झाड़ू देनेवाला। चमार या मेहतर।

खाकसार—वि० [फा०] १. खाक, धूल या मिट्टी में मिला हुआ। २. अपने सम्बन्ध में दीनता या नम्रता दिखाते हुए, यह सेवक। अकिंचन। जैसे—खाकसार हाजिर है।

पुं० १. मुसलमानों का एक आधुनिक संगठन जो लोक-सेवा के लिए बना था। २. उक्त संघठन का सदस्य।

खाकसारी—स्त्री० [फा०] खाकसार होने की अवस्था या भाव।

खाकसीर—स्त्री० [फा० खाकशीर] खूबकलाँ नामक ओषधि (एक प्रकार की घास के बीज)।

खाका—पुं० [फा० खाकः] १. रेखाओं आदि द्वारा बनाया हुआ किसी आकृति या चित्र का आरंभिक रूप जिसमें रंग आदि भरे जाने को हों। ढाँचा। २. वह कागज जिस पर उक्त प्रकार का, रेखाओं का ढाँचा बना हो। नक्शा। मानचित्र। जैसे—एशिया या हिंदुस्तान का खाका।

मुहा०—(**किसी बात या व्यक्ति का**) **खाका उड़ाना**=उपहास करना। दिल्लगी उड़ाना। (**किसी चीज का**) **खाका उतारना**=किसी चीज की सूरत का नक्शा कागज पर खींचना। कच्चा नक्शा बनाना। **खाका झाड़ना**=चित्रकला में एक विशेष प्रक्रिया से किसी चित्र की मुख्य रूप-रेखाएँ किसी दूसरे कागज पर ले आना।

३. रेखाओं का ऐसा अंकन जो समय-समय पर होनेवाले उतार-चढ़ावों, परिवर्तनों आदि का सूचक होता है। (ग्राफ) जैसे—बुखार का खाका। ४. किसी पत्र, लेख, विधान आदि का वह आरंभिक रूप जिसमें अभी कई बातें घटाने-बढ़ाने को होती हैं। मसौदा। (ड्राफ्ट) ५. वह कागज जिसमें किसी काम के खर्च का अनुमान से ब्योरा लिखा हो। चिट्ठा। तखमीना।

खाकान—पुं०[तु०] १. सम्राट्। २. चीन के पुराने सम्राटों की उपाधि।

खाकी—वि० [फा०] १. मिट्टी से सम्बन्ध रखनेवाला। मिट्टी का।

२. खाक अर्थात् मिट्टी के रंग का। भूरा। जैसे—खाकी कपड़ा।

पद—खाकी अंडा=(क) ऐसा अंडा जो अन्दर से सड़ गया हो और जिसमें से बच्चा न निकले। गंदा अंडा। बयंडा। (ख) वर्ण-संकर। दोगला।

३. (भूमि) जिसमें सिंचाई न हुई हो या न होती हो।

पुं० १. एक प्रकार के साधु, जो सारे शरीर में राख लगाये रहते हैं। २. मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय जो खाकी शाह नामक पीर ने चलाया था। ३. खाकी या भूरे रंग के कपड़ों की वर्दी जैसी पुलिस और सेना के सिपाही पहनते हैं।

खाख†—स्त्री०=खाक।

खाखरा*—पुं० [?] एक तरह का पुराना बाजा।

खाखस†—पुं०=खसखस।

खाग†—पुं० [सं० खड्ग] तलवार। उदा०—वैरी बाड़े बासड़ौ सदा खणंकै खाग।—कविराजा सूर्यमल।

†पुं० दे० 'खाँग'।

खागना—अ० [हिं० खाँग=काँटा] १. चुभना। गड़ना। २. दे० 'खाँगना'।

अ० [?] साथ लगना। सटना।

स० [?] साथ लगाना। सटाना।

खागीना—पुं० [फा० खाग] १. अंडों की बनी हुई तरकारी या सालन। २. अंडा।

खाज—स्त्री० [सं० खर्जु] १. मनुष्यों को होनेवाला खुजली नामक रोग। २. पशुओं विशेषतः कुत्तों को होनेवाला एक संक्रामक रोग जिसमें उनका सारा शरीर खुजलाते-खुजलाते सड़ जाता है और बाल झड़ जाते हैं।

पद—कोढ़ की खाज=पहले के कष्ट में आकर मिलनेवाला दूसरा बड़ा कष्ट।

खाजा—पुं० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] १. पक्षियों आदि का खाद्य पदार्थ। जैसे—बुलबुल का खाजा। २. मनुष्यों का उत्तम खाद्य पदार्थ। ३. एक प्रकार की मिठाई। ४. एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फलों की गिनती सूखे मेवों में होती है। ५. उक्त वृक्ष का फल।

खाजी*—स्त्री० दे० 'खाजा'।

खाट—स्त्री० [सं० खट्वा; प्रा० खट्टा; सिं० खटोलो, खत; पं० खट्ट; बं० खाटूली; गु० मरा० खाट, खाटला] [स्त्री० अल्पा० खटिया, खटोला] पावों, पाटियों आदि का बना हुआ तथा रस्सियों आदि से बुना हुआ एक प्रसिद्ध चौकोर उपकरण जिस पर लोग बिछौना बिछाकर सोते हैं। चारपाई।

मुहा०—(किसी की) खाट कटना=इतना बीमार पड़ना कि उसके मल-मूत्र त्याग के लिए चारपाई की बुनावट काटनी पड़े। **खाट पर पड़ना या खाट से लगना**=इस प्रकार बीमार पड़ना कि खाट से उठने योग्य न रह जाय। **खाट से उतारना**=मरणासन्न व्यक्ति को भूमि पर लेटाना।

खाटा*—वि०=खट्टा।

खाटिका*—स्त्री० [सं०√खट् (चाहना)+इञ्,खाटि+कन्—टाप्] अरथी।

खाटिन†—पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है।

खाटी—स्त्री०=खाटिका।

खाटो†—वि०=खट्टा।

खाड़*—पुं० [सं० खात] गड्ढा। गर्त।

खाड़व—वि०, पुं० =षाड़व।

खाड़ी—स्त्री० [सं० खात् या हिं० खाड़] १. खड्ड। गड्ढा। गर्त। २. समुद्र का वह अंश या भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। उपसागर। (बे)

स्त्री० [हिं० खोंह] अरहर का सूखा और बिना फल-पत्ते का पेड़।

स्त्री० [हिं० काढ़ना] किसी चीज में से आखिरी बार निकाला हुआ रंग। (रंगसाज)

खाड़ू—पुं० [हिं० खंड या खड़ा] वे लंबी लकड़ियाँ जो दो दीवारों आदि के ऊपर रखी जाती हैं और जिनके ऊपर खपड़े छाये जाते हैं।

खाढर†—पुं०=खादर।

खात—पुं० [सं०√खन् (खोदना)+क्त] १. खोदने का काम। खोदाई। २. खोदी हुई जमीन। गड्ढा। ३. वह गडढा, जिसमें भरकर खाद तैयार की जाती है। ४. तालाब। ५. कूआँ।

स्त्री० [?] १. मद्य बनाने के लिए रखा हुआ महुए का ढेर। २. वह स्थान जहाँ मद्य बनाने के लिए उक्त प्रकार से महुआ रखकर सड़ाते हैं।

†वि० गंदा या मैला।

†स्त्री०=खाद।

खातक—वि० [सं०√खन्+ण्वुल्—अक] खोदनेवाला।

पुं० १. छोटा तालाब। २. खाई। ३. अधमर्ण। ऋणी। कर्जदार।

खातमा—पुं० [फा० खात्मः] १. 'खत्म' होने की अवस्था या भाव। अंत। समाप्ति। २. मृत्यु।

खात-व्यवहार—पुं० [ष० त०] गणित का वह विभाग जिसमें गडढे, तालाब आदि के क्षेत्रफल निकालने की क्रियाएँ होती हैं।

खाता—पुं० [हिं० खत या सं० क्षत्र=शासन?] १ किसी कार्य, विभाग, व्यक्ति आदि के आय-व्यय या लेन-देन का लेखा। २. वह बही जिसमें विभिन्न व्यक्तियों आदि से होनेवाले लेन-देन का ब्यौरेवार हिसाब लिखा जाता है

मुहा०—खाता खोलना=बही में किसी का नाम चढ़वाकर उसके साथ होनेवाले लेन-देन का हिसाब शुरू करना।

पद—खाते बाकी=वह रकम जो खाते में किसी के नाम बाकी निकलती हो।

३. मद। विभाग। जैसे-खर्च-खाता, धर्म-खाता, माल-खाता।

पुं० [सं० खात] अन्न रखने का गड्ढा। बखार।

खाता-बही—स्त्री० [हिं० खाता+बही] वह बही जिसमें विभिन्न मदों या व्यक्तियों के अलग-अलग खाते बने या हिसाब लिखे होते हैं। (लेजर)

खाति—स्त्री० [सं० √खन्+क्तिन्] खोदाई।

खातिब—पुं० [हिं० खाना, फा० रातिब का अनु०] उतना भोजन जितना कोई एक बार में खाता हो।

खातिर—स्त्री० [अ०] १. आव-भगत। सत्कार। २. आदर। सम्मान।

अव्य० वास्ते। लिए।

खातिरखाह—वि० [फा०] जितना या जैसा चाहिए, उतना या वैसा। यथेष्ट।

क्रि० वि० मनोनुकूल। संतोषजनक रूप में।

खातिरजमा—स्त्री० [अ०] तसल्ली। संतोष।

क्रि० प्र०—रखना।

खातिरदारी—स्त्री० [फा०] खातिर अर्थात् आदर-सम्मान करने की क्रिया या भाव।

खातिरी—स्त्री० [फा० खातिर] १. खातिरदारी। आव-भगत। २. इतमीनान। तसल्ली।

†स्त्री० [हिं० खाद] हाथ से सींचकर और खाद की सहायता से उपजाई जानेवाली फसल।

खाती—स्त्री० [सं० खात] १. खोदी हुई भूमि। गड्ढा। २. छोटा तालाब।

पुं० १. जमीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर। २. बढ़ई।

स्त्री० [सं० घात] वैर। शत्रुता। उदा०—कान्ह कै वल मो सों करी खाती।—नन्ददास।

खातून—स्त्री० [तु०] तुर्की भाषा में भले घर की स्त्रियों का संबोधन। बीबी। श्रीमती।

खातेदार—पुं० [हिं० खाता+फा० दार] वह खेतिहर जिसके नाम पटवारी के खाते में कोई जमीन जोतने-बोने के लिए चढ़ी हो। (टेन्योर होल्डर)

खात्मा—पुं०=खातमा।

खाद—पुं० [सं०√खाद् (खाना)+घञ्] खाना। भक्षण।

स्त्री० [सं० खात, खात्र या खाद्य] १. सड़ाया हुआ गोबर, पत्ते आदि जो खेत को उपजाऊ बनाने के लिए उसमें डाले जाते हैं। २. रासायनिक प्रक्रिया से तैयार की हुई और खेतों में छोड़ी जानेवाली कोई ऐसी चीज जो उसकी उपज बढ़ावे। (मैन्योर)

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

वि० [सं० खाद्य] (पदार्थ) जो खाने के योग्य हो।

खादक—वि० [सं०√खाद्+ण्वुल्—अक] १. खानेवाला। भक्षक। २. ऋणी।

पुं० किसी धातु का वह भस्म जो खाया जाता हो (वैद्यक)।

खादन—पुं० [सं०√खाद्+ल्युट्—अन] [वि० खादित, खाद्य] १. खाने की क्रिया या भाव। भक्षण। २. दाँत।

खादनीय—वि० [सं०√खाद्+अनीयर्] जो खाया जाने को हो अथवा खाने के योग्य हो। खाद्य।

खादर—पुं० [हिं० खाड़] १. नदी के पास की वह नीची भूमि जो बाढ़ आने पर डूब जाती है। कछार। तराई। २. गढ़ा। ३. चरागाह।

मुहा०—**खादर लगना**=पशुओं के चरने के लिए खेत में घास उगना।

खादि—पुं० [सं०√खाद्+इन्] १. भक्ष्य। खाद्य। २. कवच। ३. दस्ताना।

स्त्री० १. उँगलियों में पहनी जानेवाली अँगूठी। २. हाथों में पहना जानेवाला कड़ा। कंगन।

स्त्री० [सं० छिद्र] दोष। ऐब।

खादित—भू० कृ० [सं०√खाद्+क्त] खाया हुआ। भक्षित।

खादिम—पुं० [अ०] १. वह जो खिदमत या सेवा करता हो। सेवक। २. मुसलमानों में दरगाह का अधिकारी और रक्षक।

खादिर—पुं० [सं० खदिर+अण्] कत्था। खैर।

खादिरसार—पुं०=खादिर।

खादी (दिन्)—वि० [सं०√खाद्+णिनि] १. खानेवाला। भक्षक। २. रक्षक। ३. कँटीला।

†वि० [हिं० खादि=दोष] १. दोष निकालनेवाला। छिद्रान्वेषी। २. दोषों से भरा हुआ।

स्त्री० दे० 'खद्दड़'।

खादुक—वि० [सं०√खाद्+उकञ्] किसी को कष्ट देने अथवा हानि पहुँचानेवाला। हिंसक।

खाद्य—वि० [सं०√खाद्+ण्यत्] जो खाया जाने को हो अथवा खाये जाने के योग्य हो। भक्ष्य। भोज्य। (एडिबुल)

पुं० १. खाये जानेवाले पदार्थ। जैसे—अन्न, फल आदि। २. भोजन।

खाद्य-अनुभाजन—पुं० [ष० त०] खाने की चीजों विशेषतः अनाज आदि से संबंध रखनेवाला अनुभाजन। (फूड रैशनिंग)

खाद्यान्न—पुं० [सं० खाद्य-अन्न, कर्म० स०] वे अन्न जो खाने के काम आते हों। जैसे—गेहूँ, चना, जौ, मटर आदि। (फूडग्रेन्स)

खाद्र—पुं० [सं० खात] गड्ढा।

खाद्य*—वि० =खाद्य।

†स्त्री०=खाद।

खाधु*—पुं० [सं० खाद्य] १. खाद्य पदार्थ। २. खाद्यान्न।

खाधुक—वि० [सं० खादुक<खाधुक] खानेवाला। उदा०—कहेसि पंखि खाधुक मानवा।—जायसी।

पुं०=खाधु (खाद्यान्न)।

खाधू—वि०, पुं०=खाधुक।

खान—स्त्री० [सं० खानिः; प्रा० खाणी; बं० खानी; सिं० खाणी; का० खाण; गु० मरा० खाण] १. जमीन के अंदर खोदा हुआ वह बहुत बड़ा तथा गहरा गड्ढा, जिसमें से कोयला, चाँदी, ताँबा, सोना आदि खनिज पदार्थ निकाले जाते हैं। आकर। खदान। (माइन) २. वह स्थान, जहाँ कोई वस्तु अधिकता से होती है। किसी चीज या बात का बहुत बड़ा आगार। जैसे—यह पुस्तक अनेक ज्ञातव्य विषयों की खान है। ३. खजाना। भंडार।

पुं० [हिं० खाना] १. खाने की क्रिया या भाव। जैसे—खान-पान। २. खाद्य-सामग्री। भोजन।

पुं० [तु० खान] [स्त्री० खानम] १. तुर्की के पुराने राजाओं या सरदारों की उपाधि। स्वामी। २. सरदार। ३. मालिक।

स्त्री० [फा० खाना] कोल्हू का वह छेद जिसमें ऊख की गँड़ेरियाँ या तेलहन भरकर पेरते हैं। खौं। घर।

खानक—पुं० [सं० खन् (खोदना)+ण्वुल्—अक] १. खान, जमीन या मिट्टी खोदनेवाला मजदूर। २. मकान बनानेवाला कारीगर या मिस्त्री। राज।

खानकाह—स्त्री० [अ०] मुसलमान फकीरों, साधुओं, अथवा धर्म-प्रचारकों के ठहरने या रहने का स्थान। दरगाह। मठ।

खानखानाँ—पुं० [फा० खानखानान] सरदारों का सरदार। बहुत बड़ा सरदार।

खानखाह—क्रि० वि० दे० 'खाहमखाह'।

खानगाह—स्त्री०=खानकाह।

खानगी—वि० [फा०] १. अपने घर या गृहस्थी से सम्बन्ध रखनेवाला। घरू। घरेलू। २. आपस का। निजी।

स्त्री० केवल व्यभिचार के द्वारा धन कमानेवाली वेश्या। कसबी।

खानजादा—पुं [फा०] [स्त्री० खानजादी] १. बहुत बड़े खान या सरदार का लड़का। २. एक प्रकार के क्षत्रिय, जिनके पूर्वज मुसलमान हो गये थे।

खानदान—पुं० [फा०] [वि० खानदानी] कुल। घराना। वंश।

खानदानी—वि० [फा०] १. अच्छे और ऊँचे खानदान अर्थात् कुल या वंश का (व्यक्ति)। २. (काम या पेशा) जो किसी खानदान या कुल में बहुत दिनों से होता आया हो। पुश्तैनी। पैतृक। ३. (धन-सम्पत्ति) जो पूर्वजों के समय से अधिकार में हो। जैसे—खानदानी मकान।

खानदेश—पुं० [खांद=जंगली जाति+देश] बंबई राज्य का एक प्रदेश, जो सतपुड़ा की पर्वतमाला के दक्षिण में पड़ता है।

खान-पान—पुं० [हिं० खाना+पीना] १. खाने और पीने की क्रिया, भाव या प्रकार। २. खाने-पीने का ढंग या रीति-रवाज।

खानम—स्त्री० [तु० खान का स्त्री०] १. खान या सरदार की पत्नी। २. ऊँचे कुल की महिला।

खानसामा—पुं० [फा०] वह नौकर जो खाने की सामग्री का प्रबंध करता हो। खाना बनानेवाला, रसोइया (मुसल०)।

खाना—स० [सं० खादन, प्रा० खाअन, खान] [प्रे० खिलाना] १. पेट भरने के लिए मुँह में कोई खाद्य वस्तु रखकर उसे चबाना और निगल जाना। भोजन करना। जैसे—रोटी खाना।

पद—**खाना-कमाना**=काम-धंधा करके जीवनयापन या निर्वाह करना।

मुहा०—**खा-पका जाना या खा डालना**=धन या पूँजी खर्च कर डालना। **(किसी को) खाना न पचना**=आराम या चैन न पड़ना। जैसे—बिना मन की बात कहे इस लड़के का खाना नहीं पचता।

२. हिंसक जंतुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना। जैसे—उस बकरी को शेर खा गया।

मुहा०—**खा जाना या कच्चा खा जाना**=मार डालना। प्राण ले लेना। जैसे—जी चाहता है कि इसे कच्चा खा जाऊँ। **खाने दौड़ना**=बहुत अधिक क्रुद्ध होकर ऐसी मुद्रा बनाना कि मानो खा जाने को तैयार हो।

३. विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४. लाक्षणिक अर्थ में (क) किसी से रिश्वत लेना। जैसे—आजकल दफ्तरों के बाबू खूब खाते हैं। (ख) किसी का धन या पूँजी हड़प जाना। जैसे—यारों ने बुढ़िया को खा डाला है। ५. न रहने देना। नष्ट या बरबाद करना। ६ तंग या परेशान करना। जैसे—कान, दिमाग या सिर खाना। ७. अपने आप में अन्तर्भुक्त करना। जैसे—लोटा पाँच सेर घी खा गया। ८. आघात, प्रहार, वेग आदि सहन करना। जैसे—गम, गाली, धक्का या मार खाना।

मुहा०—**मुँह की खाना**=ऐसा आघात सहना कि मुँह सामने करने के योग्य न रह जाय।

पुं० १. वह जो कुछ खाया जाय। खाद्य पदार्थ। २. भोजन।

पुं० [फा० खानः] १. घर। मकान। जैसे—गरीबखाना, यतीमखाना। २. दीवार, अलमारी, मेज आदि में बना हुआ वह अंश या विभाग जिसमें वस्तुएँ आदि रखी जाती हैं। ३. छोटा बक्स या डिब्बा। जैसे—घड़ी या चश्मे का खाना। ४. रेलगाड़ी का डिब्बा।

खाना खराब—वि० [फा०] [संज्ञा खानाखराबी] १. जिसका घर-बार सब नष्ट हो गया हो। जिसके रहने आदि का कहीं ठिकाना न रह गया हो। २. जो दूसरों का घर नष्ट करने या बिगाड़नेवाला हो।

खानाजंगी—स्त्री० [फा०] १. आपस अर्थात् घर के लोगों की लड़ाई। २. किसी देश में होनेवाला आन्तरिक विग्रह।

खानाजाद—वि० [फा०] १. (दास) जो घर में रखी हुई दासी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। २. जो बाल्यावस्था से ही घर में रखकर पाला-पोसा गया हो।

पुं० १. गुलाम। दास। २. तुच्छ सेवक।

खानातलाशी—स्त्री० [फा०] चुरा-छिपाकर रखी हुई चीज के लिए किसी के घर की होनेवाली तलाशी। घर की तलाशी।

खाना-दाना—पुं० [हिं०] भोजन की सामग्री।

खानादारी—स्त्री० [फा०] घर-गृहस्थी के सब काम करने या सँभालने की क्रिया या भाव।

खाना-पीना—पुं० [हिं० खाना+पीना] १. खाने-पीने का व्यवहार या संबंध। खान-पान। २. बहुत से लोगों के साथ बैठकर खाने-पीने की क्रिया या भाव। ३. खाने-पीने के लिए तैयार की हुई चीजें।

खानापुरी—स्त्री० [हिं० खाना+पूरना] चक्र, सारणी आदि के कोठों में यथास्थान अभिप्रेत या उद्दिष्ट शब्द, संख्याएँ आदि भरना या लिखना।

खानाबदोश—वि० [फा०] जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो और इसी लिए जो अपनी गृहस्थी की सब चीजें अपने कन्धे पर लाद कर जगह-जगह घूमता फिरे। यायावर। (नोनेड)

खानाशुमारी—स्त्री० [फा०] किसी गाँव, नगर, बस्ती आदि में बने और बसे हुए घरों या मकानों की गिनती करना।

खानि—स्त्री० [सं० खनि] १. खान, जिसमें से धातुएँ आदि खोदकर निकाली जाती हैं। २. ऐसा स्थान जहाँ कोई चीज बहुत अधिकता से उत्पन्न होती अथवा पाई जाती हो। ३. बहुत सी चीजों या बातों के इकट्ठे रहने या होने का स्थान। ४. ओर। तरफ। दिशा। ५. ढंग। तरह। प्रकार।

खानिक†—स्त्री०=खान या खानि।

वि० [हिं० खान] खान से निकलनेवाला। खनिज।

खानिल—पुं० [सं० √खन्+घञ्, खान+इलच्] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला चोर।

खानोदक—पुं० [सं० खान-उदक, ब० स०] नारियल का पेड़।

खाप—स्त्री० [?] आघात। वार। उदा०—हलकी सी खाप कर गया। —वृंदावनलाल वर्मा।

खापगा—स्त्री० [सं० ख-आपगा, ष० त०] आकाश गंगा।

खापट—स्त्री० [?] वह भूमि जिसमें लोहे का अंश अधिक हो।

खापड़=खप्पर।

खापर†—पुं० १.=खपड़ा। २.=खापट।

खाब†—पुं० [फा० ख्वाब] स्वप्न।

खाबड़-खूबड़ †—वि०=ऊबड़-खाबड़।

खाभा—पुं० [?] कोल्हू के नीचे के बरतन में से तेल निकलाने का मिट्टी का छोटा पात्र।

खाम—पुं० [सं० स्कम्भ, पा० प्रा० खंभ; बँ० खाँवा, उ० खंब; गु० मरा० खाँब] १. खंभा। स्तम्भ। २. जहाज या नाव का मस्तूल।

पुं० [हिं० खामना] १. चिट्ठी रखने का लिफाफा। २. संधि। जोड़। ३. जोड़ या संधि पर लगाया जानेवाला टाँका।

†वि० [सं० क्षाम] १. कटा-फटा या टूटा-फूटा हुआ। २. क्षीण।

वि० [फा०] १. कच्चा। २. जो दृढ़ या पुष्ट न हो। ३. जिसे अनुभव न हो। ४. अनुचित और निराधार। जैसे—खाम खयाली।

खामखयाली—स्त्री० [फा०] ऐसी अनुचित धारणा या विचार, जिसका कोई पुष्ट आधार न हो। अकारण या व्यर्थ की धारणा।

खामखाह, खामखाही—क्रि० वि०=खाहमखाह।

खामना—स० [सं० स्कंभन=मूँदना, रोकना, प्रा० खंभन] १. गीली मिट्टी आदि से किसी पात्र का मुँह बंद करना। २. गोंद लगाकर लिफाफे का मुँह बंद करना।

खामी—स्त्री० [फा०] १. खाम या कच्चे होने की अवस्था या भाव। कच्चापन। २. अच्छी तरह पक्व या पुष्ट न होने की अवस्था या भाव। ३. अनुभव, ज्ञान आदि की अपूर्णता। नादानी। ४. कमी। त्रुटि।

खामुशी—स्त्री०=खामोशी।

खामोश—वि० [फा०] १. जो कुछ बोल न रहा हो। चुप। मौन। २. शांत।

खामोशी—स्त्री० [फा०] खामोश होने की अवस्था या भाव। मौन। चुप्पी।

खाया—पुं० [फा० खाय:] १. अंडकोष। २. पक्षियों आदि का अंडा।

खाया-बरदार—पुं० [अ०+फा०] [भाव० खायाबरदारी] अनावश्यक रूप में और हर समय खुशामद या चापलूसी तथा छोटी-मोटी सेवाएँ करता रहनेवाला व्यक्ति।

खार—पुं० [सं० क्षार, प्रा० खार] १. कुछ विशिष्ट वनस्पतियों आदि को जलाकर अथवा रासायनिक प्रक्रिया से निकाला जानेवाला खारा पदार्थ जो ओषधियों तथा औद्योगिक कार्यों में प्रयुक्त होता है। क्षार। २. सज्जी। ३. नोनी मिट्टी। कल्लर। रेह। ४. धूल। मिट्टी। ५. भस्म। राख। ६. एक प्रकार की झाड़ी जिसके अंगों को जलाने से खार नामक पदार्थ निकलता है।

पुं० [फा० ख़ार] १. काँटा। कंटक। २. कुछ पक्षियों के पैरों में निकलनेवाला काँटा। खाँग। ३. दूसरों की अभिवृद्धि, उन्नति, ऐश्वर्य आदि देखकर मन में होनेवाला दुःख। ४. मन में दबा रहनेवाला और काँटे की तरह चुभनेवाला गहरा द्वेष।

मुहा०—(किसी से) **खार खाना**=किसी के प्रति मन में दुर्भाव या द्वेष रखना और फलतः उसे हानि पहुँचाने की ताक में रहना। **खार गुजरना**=मन में बुरा लगना। खटकना। **खार निकालना**=मन में छिपे हुए द्वेष के कारण किसी को कष्ट पहुँचाकर अथवा उसकी हानि करके सन्तुष्ट या सुखी होना।

*पुं० [हिं० खाल=नीचा स्थान] १. बरसाती नाला। खाल। उदा०—दई न जात खार उतराई, चाहत चढ़न जहाजा।—सूर। २. पानी का छोटा गड्ढा। डाबर।

†वि० [सं० क्षर] १. खरा। २. वास्तविक।

†वि० [सं० खर] खराब। बुरा।

खारक†—पुं० [सं० क्षारक, पा० खारक] छुहारा।

खारदार—वि० [फा०] काँटों से युक्त। कँटीला।

पुं० एक प्रकार का सलमा।

खखारवा†—पुं० [देश०] जहाज पर काम करनेवाला मजदूर। खलासी।

पुं०=खाका।

खारा—वि० [सं० क्षार] [स्त्री० खारी] १. (पदार्थ) जिसमें क्षार का अंश या गुण हो। २. (जल) जिसमें क्षार मिला या घुला हो। जो स्वाद में कुछ नमकीन हो। ३. अप्रिय या अरुचिकर।

पुं० [सं० क्षारिक या खारना] १. घास-फूस आदि बाँधने की जाली। २. वह जाली जिसमें भरकर तोड़े हुए आम या दूसरे फल नीचे गिराये जाते हैं। ३. बड़ा और चौखूँटा दौरा। खाँचा। झावा। ४. बाँस का बड़ा पिंजड़ा। ५. सरकंडे आदि का बना हुआ एक प्रकार का गोल या चौकोर ऊँचा आसन जिस पर पश्चिम में विवाह के समय वर और कन्या को बैठाते हैं।

पुं० [फा० खार] १. कड़ा और भारी पत्थर। २. एक प्रकार का कपड़ा।

खारि—स्त्री० [सं० ख-आ√रा (देना)+क—ङीष्, ह्रस्व] १६द्रोण की एक पुरानी तौल।

खारिक†—पुं० [सं० क्षारक] छुहारा।

खारिज—वि० [अ०] १. जो किसी स्थान, सीमा आदि से बाहर कर दिया अथवा हटा दिया गया हो। निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. (प्रार्थना-पत्र आदि) जो अस्वीकृत कर दिया गया हो।

मुहा०—**खारिज करना**=विचार के अयोग्य मानना। नामंजूर करना। (डिस्मिस) (नालिश, दरख्वास्त आदि)।

खारिजा—वि० [अ०] १. खारिज किया या बाहर निकाला हुआ। २. बाहरी। बाह्य। ३. दूसरे राष्ट्रों या विदेशों से सम्बन्ध रखनेवाला।

खारिजी—वि० [अ०] १. बाहरी। बाह्य। २. परराष्ट्र संबंधी।

पुं० १. इस्लाम का एक संप्रदाय जो अली की खिलाफत को न्यायसंगत नहीं मानता और इसी लिए इसके अनुयायी बहिष्कृत समझे जाते हैं। २. सुन्नी मुसलमानों के लिए उपेक्षासूचक शब्द।

खारिश—स्त्री० [फा०] खुजली (देखें)।

खारी—स्त्री० [सं० ख-आ√रा+क—ङीष्] चार अथवा सोलह द्रोण की एक पुरानी तौल।

स्त्री० [हिं० खाला] लोना मिट्टी में से निकाला जानेवाला नमक। खारा नमक।

वि० क्षार या खार से युक्त। खारा।

खारीमाट—पुं० [हिं० खारी+मा=मटका] नील का रंग तैयार करने का एक ढंग।

खारुआँ—पुं० [सं० क्षारक] आल के रंग में रंगा हुआ एक प्रकार का मोटा लाल कपड़ा जिसकी थैलियाँ आदि बनती थीं।

खारेजा—पुं० [फा० खारिजा] एक प्रकार का जंगली कुसुम या वरें। वनवरें। बनकुसुम।

खारो—वि० दे० 'खारा'।

खार्जूर—वि० [सं०खर्जूर+अण्] १. खजूर सम्बन्धी। खजूरी। २. खजूर का बना हुआ।

पुं० प्राचीन काल में खजूर के रस से बननेवाली मदिरा या शराब।

खार्वा—स्त्री० [सं० खर्व+अण्—टाप्] त्रेतायुग।

खाल—स्त्री० [सं० क्षाल, प्रा० खाल] १. पशुओं आदि के शरीर पर से खींच कर उतारी हुई त्वचा जिस पर बाल या रोएँ होते हैं। जैसे–वकरी या शेर की खाल।

मुहा०—**(किसी की) खाल उधेड़ना या खींचना**=(क) किसी के शरीर पर की खाल खींच कर उतारना। (ख) बेंतों आदि से बहुत अधिक मारना। **अपनी खाल में मस्त रहना**=अपने पास जो कुछ हो उसी से प्रसन्न और सन्तुष्ट रहना।

२. चरसा। मोट। ३. धौंकनी। भाथी। ४. मृत शरीर। ५. आवरण।

स्त्री० [सं० खात या अ० खाली] १. नदी आदि के किनारे की नीची भूमि। गहराई या नीचाई। ३. समुद्र की खाड़ी। ४. खाली स्थान। अवकाश। ५. पशुओं आदि के चरने का ऐसा स्थान जिसके बीच में छोटा ताल भी हो। (कुमाऊँ) कश्मीर में इसे मर्ग कहते हैं।

खालफूंका—पुं० [हिं० खाल+फूंकना] धौंकनी या भाथी चलानेवाला।

खालसा—वि० [अ० खालिस=शुद्ध जिसमें किसी प्रकार का मेल न हो] १. जिस पर केवल एक का अधिकार हो किसी दूसरे का साझा न हो। २. (भूमि या सम्पत्ति) जिस पर राज्य या सरकार ने अधिकार कर लिया हो। जैसे–अंगरेजों ने झाँसी का राज्य खालसा कर लिया था।

मुहा०—**खालसा या खालसे लगना**=राज्य या शासन के अधिकार में चला जाना।

पुं० १. सिक्खों का एक संप्रदाय। २. सिक्ख।

वि० [अ० खलास] १. छूटा हुआ। २. मुक्त। मोक्ष-प्राप्त। उदा०–कहें कवीर ने भये खालसे राम भगति जिन जानी—कवीर।

खाला—वि० [हिं० खाल या खाली] [स्त्री० खाली] नीचा। निम्न (स्थान)।

पद—**ऊँचा-खाला**=(क) ऊबड़-खावड़ (स्थल)। (ख) ऊँच-नीच। भला-बुरा।

स्त्री० [अ० खालः] माता की बहन। मौसी।

मुहा०—**(किसी काम या बात को) खाला जी का घर समझना**=बहुत सहज या सुगम समझना।

खालिक—पुं० [अ०] सृष्टि की रचना करनेवाला। ईश्वर। स्रष्टा।

खालिस—वि० [अ०] १. (द्रव्य या पदार्थ) जिसमें कोई दूसरी चीज मिलाई न गई हो। विशुद्ध। जैसे—खालिस दूध, खालिस सोना। २. जिसमें किसी प्रकार का खोट या दोष न हो। जैसे—खालिस लेन-देन का बरताव

खाली—वि० [अ० मि सं० खल्ल] १. (पात्र) जिसके अन्दर कोई चीज न हो। रीता। जैसे खाली लोटा, खाली वक्स। २. जिस पर अथवा जिसके ऊपर कुछ या कोई स्थित न हो। जैसे—खाली कुरसी, खाली जगह, खाली मकान। ३. जिसमें आवश्यक या उपयुक्त पदार्थ या वस्तु न हों। जैसे–खाली पेट=जिसमें पचाने के लिए अन्न न पड़ा हो या न रह गया हो। खाली हाथ=जिसमें (क) गहना या जेवर (ख) धन या सम्पत्ति (ग) हथियार न हो।

पद—**खाली दिन**=(क) ऐसा दिन जिसमें कोई विशिष्ट कार्य न हो अथवा न हुआ हो। जैसे—रविवार बहुत से लोगों के लिए खाली दिन होता है। (ख) ऐसा दिन जिसमें कुछ भी आय अथवा कार्य न हुआ हो। जैसे–आज का सारा दिन खाली गया।

४. (व्यक्ति) जिसके हाथ में कोई काम-धंधा या रोजगार न हो। जैसे—इधर महीनों से वह खाली बैठा है। ५. (व्यक्ति) जो प्रस्तुत समय में कोई काम न कर रहा हो या काम पूरा कर के छुट्टी पा चुका हो। जैसे–कल सवेरे जब हम खाली रहें तब आना। ६. जो इस समय उपयोग में न आ रहा हो। जैसे–यदि चाकू खाली हो तो हमें देना। ७. जो निष्फल या व्यर्थ सिद्ध हुआ हो। जैसे—वार खाली जाना।

मुहा०—**खाली देना**=ऐसा कौशल या क्रिया करना जिससे किसी का किया हुआ आघात, प्रहार या वार निष्फल हो जाय। साफ बच निकलना। जैसे–वह शत्रुओं के सब वार खाली देता गया।

८. जिसमें या जिससे किसी प्रकार के उद्देश्य या प्रयोजन की सिद्धि न होती हो। जैसे—खाली बातें करने से कुछ नहीं होता। ९. किसी चीज या बात से बिलकुल रहित या विहीन। जैसे–(क) अब तो यह जंगल हिंसक पशुओं से खाली हो गया है। (ख) उनकी कोई बात मतलब से खाली नहीं होती।

अव्य० बिना किसी को साथ लिये हुए, अकेले। जैसे—(क) खाली तुम्हीं आना और किसी को अपने साथ मत लाना। (ख) यह काम खाली तुम्हीं कर सकते हो।

पुं० ताल देनेवाले बाजों (ढोलक, तबला, मृदंग आदि) में बीच में पड़नेवाला वह ताल जो बिना बाएँ हाथ का आघात किये इसलिए खाली छोड़ दिया जाता है कि उसके आगे और पीछे के तालों की गिनती ठीक रहे। जैसे—(क) रुद्र ताल १६ तालों का होता है जिसमें ११ आघात और ५ खाली होते हैं। (ख) लक्ष्मी ताल १८ तालों का होता है जिसमें १५ आघात और ३ खाली होते हैं।

खालू—पुं० [फा०] खाला अर्थात् मौसी का पति। मौसा।

खाले—क्रि० वि० [हिं० खाला] नीचे की ओर। उदा०—सीस नाइ खाले कहँ ढरईं।—जायसी।

खावा—स्त्री० [सं० खं] १. खाली जगह। अवकाश। २. जहाज में माल रखने का स्थान। (लश०)

खावाँ—पुं०=खाँवाँ।

खावास†—पुं०=खवास।

खाविंद—पुं० [फा०] १. स्त्री का पति। खसम। शौहर। २. मालिक। स्वामी।

खाविंदी—स्त्री० [फ़ा०] १. पति या स्वामी होने की अवस्था या भाव। २. प्रभु या स्वामी की ओर से होनेवाला अनुग्रह या कृपा।

खास—वि० [अ०] १. किसी विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति से संबंध रखने-

वाला। 'आम' का विपर्याय। २. जो साधारण से भिन्न हो। विशेष। **पद--खासकर**=विशेष रूप से।

३. किसी के पक्ष में, व्यक्तिगत रूप से होनेवाला। निज का। आत्मीय। जैसे—यह घर खास हमारा है। ४. ठेठ। विशुद्ध।

स्त्री० [अ० क़ीसो] १. मोटे कपड़े की बनी हुई थैली। २. बोरा।

खास कलम--पुं० [अ०] निजी पत्र-व्यवहार करने के लिए रखा हुआ मुंशी।

खासगी—वि० [अ० खास+गी (प्रत्य०)] १. राजा या मालिक आदि का। २. निज का। निजी।

खासदान--पुं० [उर्दू] पान, कत्था आदि रखने का डिब्बा। पानदान।

खास नवीस--पुं०=खास कलम।

खास बरदार—पुं० [फा०] वह नौकर या सिपाही जो राजा की सवारी के ठीक आगे आगे चलता था।

खास बाजार—पुं० [फा०] वह बाजार जो राजा के महल के सामने विशेष रूप से इसलिए लगता था कि राजा वहाँ से अपने लिए आवश्यक वस्तुएँ मोल ले।

खासा—पुं० [अ० खासः] १. राजाओं, रईसों आदि के लिए विशिष्ट रूप से और अलग बननेवाला भोजन। २. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी।

मुहा०--खासा चुनना=बादशाही दस्तरखान पर अनेक प्रकार के बढ़िया भोज्य पदार्थ लाकर रखना।

३. एक प्रकार का पतला सूती कपड़ा। ४. एक प्रकार का मोयनदार पकवान।

वि० [स्त्री० खासी] १. जितना आवश्यक हो उतना। यथेष्ट। जैसे–इधर खासा गरम है। २. अच्छा। भला। ३. सुंदर। सुडौल। ४. भरपूर। पूरा।

खासियत--स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु या व्यक्ति में होनेवाला कोई विशिष्ट गुण। विशेषता। २. प्रकृति। स्वभाव। ३. प्रभाव। असर।

खासिया--स्त्री० [सं० खस] १. असम देश की एक पहाड़ी। २. उक्त पहाड़ी में बसनेवाली एक जंगली जाति जो 'खस' भी कहलाती है।

खासियाना--पुं० [हिं० खासिया पहाड़ी] एक प्रकार की मँजीठ।

खासी—स्त्री० [अ०] खासे राजा के बाँधने की तलवार, ढाल या बंदूक।

खासीयत--स्त्री०=खासियत।

खास्तई—पुं० [फा०] १. कबूतर का एक रंग। २. इस रंग का कबूतर।

खास्सा--पुं० [अ० खास्सः] १. किसी में होनेवाला कोई विशेष गुण। २. स्वभाव। ३. आदत। बान।

खाह—अव्य० [फा० ख्वाह] जो इच्छित हो। चाहे। या।

खाहमखाह—क्रि० वि० [फा० ख्वाहम ख्वाह] १. चाहे आवश्यकता अथवा इच्छा हो चाहे न हो। बिना आवश्यकता के और प्रायः व्यर्थ। जैसे–तुम खाहमखाह दूसरों के झगड़े में क्यों पड़ते हो?

खाहां—वि० [फा० ख्वाहाँ] चाह रखने या चाहनेवाला, इच्छुक।

खाहिश—स्त्री० [फा० ख्वाहिश] इच्छा। चाह।

खाहिशमंद--वि० [फा०] इच्छुक।

खाहीनखाही†— क्रि० वि० दे० 'खाह-मखाह'।

खिखिर--पुं० [सं० खिम्√कृ (करना)+क, पृषो० सिद्धि] १. चारपाई का पाया। २. एक प्रकार का गंध द्रव्य।

खिंग—पुं० [फा०] बिलकुल सफेद रंग का घोड़ा। नुकरा।

खिंगरी—स्त्री० [देश०] मैदे आदि का बना हुआ पूरी की तरह का एक सूखा पकवान।

खिंचना—अ० [हिं० खींचना] १. किसी की ओर बलपूर्वक लाया जाना। खींचा जाना। २. किसी के प्रयत्न से किसी ओर जाना या बढ़ना। ३. किसी वस्तु या स्थान में से बाहर निकाला जाना। ४. किसी आकर्षण अथवा शक्ति के कारण उसकी ओर जाना या बढ़ना। जैसे—चुंबक की तरफ़ लोहा खिंचना। ५. किसी के गुण, रूप, सौंदर्य आदि के कारण उसकी ओर आकृष्ट होना। ६. प्रलोभन, स्वार्थ आदि के कारण एक पक्ष से दूसरे पक्ष की ओर चलना या जाना। ७. किसी वस्तु के गुण, तत्त्व, सार आदि निकलना या निकाला जाना। ८. भभके आदि से अर्क, शराब आदि तैयार होना। ९. अंकित होना या लिखा जाना। जैसे—लकीर खिंचना। १०. उतरना या बनना। जैसे—चित्र या फोटो खिंचना। ११. तनना। १२. माल की खपत होना। खपना। जैसे–माल खिंचना।

खिंचवा—वि० [हिं० खींचना] खींचनेवाला।

खिंचवाना--स० [हिं० खींचना] खींचने का काम किसी से कराना। किसी को कोई चीज खींचने में प्रवृत्त करना। जैसे—चित्र या फोटो खिंचवाना।

खिंचाई—स्त्री० [हिं० खींचना] १. खींचने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० 'खींच'।

खिंचाना—स०=खिंचवाना।

खिंचाव—पुं० [हिं० खिंचना] खींचे जाने अथवा खिंचे हुए होने की अवस्था या भाव।

खिंचावट—स्त्री० [हिं० खिंचना] १. खींचने की क्रिया। २. खींचने या खिंचे हुए होने की अवस्था या भाव।

खिंचाहट--स्त्री०=खिंचावट।

खिंचिया†—वि०=खिंचवा।

खिंडाना†—स० [सं० क्षिप्त] दानेदार वस्तु को छितराना या बिखेरना। जैसे—चावल या चीनी खिंडाना।

खिंखिद—पुं० [सं०] ऊबड़-खाबड़ या बीहड़ भूमि।

पुं०=किष्किंधा।

खिचड़वार--पुं० [हिं० खिचड़ी+वार] मकर संक्रांति। (इस दिन खिचड़ी दान की जाती है)

खिचड़ा—पुं० [हिं० खिचड़ी] कई दालों को मिलाकर बनाई जानेवाली खिचड़ी।

खिचड़ी—स्त्री० [सं० कृसर, प्रा० खिच्च, बं० खिचरी, उ० खिचुरा, गु० खिच] १. दाल और चावल को एक में मिलाकर उबालने से बनने वाला भोज्य पदार्थ।

मुहा०—खिचड़ी पकाना=आपस में मिलकर चोरी-चोरी कोई परामर्श या सलाह करना। **ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना**=सबकी सम्मति के विपरीत अपनी ही बात की पुष्टि करना अथवा अपने विचार के अनुसार काम करना। **खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना**--बहुत अधिक कोमल या नाजुक होना। (परिहास और व्यंग्य)

२. विवाह की एक रसम जिसमें दामाद को पहले-पहल घर बुलाकर खिचड़ी खिलाई जाती है। ३. एक ही में मिली हुई कई तरह की या बहुत सी वस्तुएँ। जैसे—खिचड़ी भाषा। ४. मकर संक्रांति । ५. बेरी का फूल। ६. भाँड़, वेश्या आदि को नाच, गाने आदि में भाग लेने के लिये दिया जानेवाला पेशगी धन। बयाना। साई।

वि० [सं० कृसर] १. आपस में मिला-जुला। २. जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व खो चुका हो।

खिचना—अ०=खिंचना।

खिचवाना—स०=खिंचवाना।

खिचाव—पुं०=खिंचाव।

खिजना—अ० दे० 'खीझना'।

खिजमत†—स्त्री०=खिदमत।

खिजलाना—अ० [हिं० खीजना] कोई चीज न मिलने पर या काम न होने पर आतुरतापूर्वक खिन्न और व्याकुल होना। खीजना।

स० किसी को खीजने में प्रवृत्त करना। दिक या विकल करना।

ख़िजाँ—स्त्री० [फा०] १. पतझड़ की ऋतु। फाल्गुन और चैत के दिन। २. अवनति या उतार के दिन।

खिजाना—स०=खिजलाना।

ख़िजाब—पुं० [अ०] सफेद बालों को काला या रंगीन करने की औषधि। केश-कल्प। औषध के रूप में प्रस्तुत किया हुआ वह लेप जिसे सिर पर लगाने से सफेद वाल काले हो जाते हैं।

खिजाबी—वि० [अ०] १. खिजाब संबंधी। २. (बाल) जिस पर खिजाब लगा हो।

पुं० वह जो सिर पर खिजाब लगाता हो।

खिजालत—स्त्री० [अ०] लाज। लज्जा। शरमिन्दगी।

खिज्र—पुं० [अ०] १. मुसलमानों के विश्वासानुसार एक पैगम्बर जो अमृत पीकर अमर हो गये थे और जो अब भूले-भटके यात्रियों को ठीक रास्ते पर लगानेवाले माने जाते हैं। २. पथ-प्रदर्शक।

खिझ†—स्त्री०=खीझ।

खिझना—अ०=खीझना।

खिझाना—स०=खिजलाना।

खिझुवर†—वि० [हिं० खीझना] जो जरा सी बात पर खिजला या खीज उठता हो। खीजनेवाला।

खिझौना—वि० [हिं० खीजना] १. खिजानेवाला। दिक करनेवाला। २. जल्दी खीजनेवाला।

खिड़कना—अ० [हिं० खिसकना] चुपचाप कहीं से टल या हट जाना।

खिड़काना—स० [हिं० खिसकना] १. किसी उद्देश्य से किसी को कहीं से टालना या हटाना। २. आधे-तीहे मूल्य पर चुपचाप बेच डालना।

खिड़की—स्त्री० [सं० खट्टाक्किका, प्रा० खड्डकी, खडक्किआ; दे०प्रा० खड्क्की, उ०बं०खिरकी] १. घर, गाड़ी, जहाज आदि की दीवारों में वना हुआ वह बड़ा झरोखा जिसमें से धूप और रोशनी अन्दर आती है, तथा जिसमें से झाँक कर वाहर का दृश्य देखा जाता है। २. उक्त झरोखे में लकड़ी, लोहे आदि का वना हुआ दरवाजा जिसके द्वारा झरोखा खुलता तथा बन्द होता है। ३. किले या नगर का चोर दरवाजा। ४. खिड़की की तरह खुला हुआ कोई स्थान। जैसे—खिड़कीदार अंगरखा या पगड़ी।

खिड़की बंद—वि० [हिं०+फा०] (मकान) जो पूरा किराय पर लिया गया हो और जिसमें कोई दूसरा किरायेदार न रहता हो।

खिण—पुं०=क्षण। (डिंगल)

खित—स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी। (डिं०)

खिताब—पुं० [अ०] १. उपाधि। २. पदवी।

खिताबी—वि० [अ०] खिताब-संबंधी। खिताब का।

खित्त—पुं० [सं० क्षेत्र] १. क्षेत्र। २. खेत। ३. रणस्थल। उदा०—तौंअर राऊ पहारि, खित्त अनभंग मोट मन—चन्दबरदाई।

खित्ता—पुं० [अ० खित्तः] १. भूभाग। प्रदेश। २. प्रांत।

खित्रिय—पुं०=क्षत्रिय।

खिदमत—स्त्री० [फा०] टहल। सेवा।

खिदमतगार—पुं० [फा०] किसी की छोटी-छोटी और वैयक्तिक सेवाएँ करनेवाला नौकर। टहलुआ।

खिदमतगारी—स्त्री० [फा०] १. खिदमतगार का काम या पद। २. टहल। सेवा।

खिदमती—वि० [फा० खिदमत] १. अच्छी तरह खिदमत या सेवा-टहल करनेवाला। २. अच्छी तरह की जानेवाली खिदमत से संबंध रखने या उसके पुरस्कार में मिलने या होनेवाला। जैसे—खिदमती जागीर।

खिदिर—पुं० [सं० √खिद्(दैन्य)+किरच्] १. चंद्रमा। २. तपस्वी।

खिद्र—पुं० [सं०√खिद्+रक्] १. रोग। बीमारी। २. गरीबी। दरिद्रता।

खिन—पुं०=क्षण।

वि०=खिन्न।

खिनक*—अव्य० [सं० क्षण—एक] क्षण भर। बहुत थोड़ी देर तक।

खिन्न—वि० [सं०√खिद्+क्त] १. (व्यक्ति) जो चिंता, थकावट आदि के कारण कुछ उदास तथा कुछ विकल हो। २. अप्रसन्न। असंतुष्ट। ३. असहाय। दीन-हीन।

खिपना†—अ० [सं० क्षिप्त] १. खपना। २. तल्लीन होना।

खिपाना†—स०=खपाना।

खिभिरना†—स०=खदेड़ना। उ०—खोलि खग्ग खिभिरे बली, जनु पाइक खुंतार—चन्दबरदाई।

खियानत—स्त्री०=खयानत।

खियाना—अ० [सं० क्षीण, पा० खिय, प्रा० खिज्ज, सिं० खिजन्, म० शिज (णें)] १. रगड़ खाते रहने अथवा घिसते रहने के कारण किसी वस्तु का क्षीण होना। २. कमजोर या दुर्बल होना।

स० [हिं० खाना] खाना खिलाना। भोजन कराना।

खियाल†—पुं०=खयाल।

खियावना†—स०=खिलाना।

खिर—स्त्री० [देश०] करघे की ढरकी।

खिरका—पुं० [अ० खिरकः] कंथा। गुदड़ी।

खिरकी—स्त्री० =खिड़की।

खिरक्की†—स्त्री०=खिड़की।

खिरचा†—पुं०=खरका ।

ख़िरद—स्त्री० [फ़ा०] अक्ल । बुद्धि ।

ख़िरदमंद—वि० [फ़ा०] बुद्धिमान् ।

खिरनी—स्त्री० [सं० क्षीरिणी] १. एक प्रकार का ऊँचा छतनार और सदाबहार पेड़। २. उक्त वृक्ष का छोटा, पीला, मीठा फल ।

ख़िरमन—पुं० [फ़ा०] १. खलियान। २. काट कर रखी हुई फसल ।

ख़िराज—पुं० [अ०] १. राज्य द्वारा लिया जानेवाला कर। राजस्व । २. वह धन जो मध्य युग में बड़े राजा अपने अधीनस्थ मांडलिकों या छोटे राज्यों से लेते थे ।

ख़िराम—पुं० [फ़ा०] आनन्दपूर्वक धीरे-धीरे चलने या टहलने की क्रिया या भाव ।

ख़िरामाँ—वि० [फ़ा०] जो सुखपूर्वक, मस्ती से धीरे धीरे चल रहा हो।

खिरिदना—स० [सं० कीर्णन] १. सूप में अनाज रखकर उसे इस प्रकार हिलाना कि खराब दाने नीचे गिर जायँ। २. खुरचना ।

खिरिसा—पुं० [?] एक प्रकार की मिठाई । उदा०—सोंठि लाइकै खिरिसा धरा।—जायसी ।

खिरैंटी—स्त्री० [सं० खरयष्टिका] बरियारा या बीजबंद नामक पौधा। बला ।

खिरौरा—पुं० [हिं० खिरौरी] बड़ी खिरौरी ।

खिरौरी†—स्त्री० [सं० खदिरवाटिका] कत्थे को उबाल या पकाकर तैयार की हुई गोल टिकिया ।

पुं० [हिं० खांड़+बड़ा] खाँड़ का लड्डू ।

खिलंदरा—वि०=खिलवाड़ी ।

ख़िलअत—स्त्री० [अ०] पहनने के वे वस्त्र जो बड़े राजा या बादशाह की ओर से किसी को सम्मानित करने के लिए दिये जाते थे ।

ख़िलक़त—स्त्री० [अ० खल्कत] १. सृष्टि। २. जन-समूह। भीड़-भाड़।

खिलकौरी†—स्त्री०=खिलवाड़ ।

खिलखिलाना—अ० [अनु०] बहुत प्रसन्न होने पर जोर से हँसना । (खिलखिलाते समय मुँह से खिल खिल शब्द होता है।)

खिलखिलाहट—स्त्री० [हिं० खिलखिलाना] १. खिलखिलाने की क्रिया या भाव । २. खिलखिलाने से मुँह से होनेवाला शब्द ।

ख़िलजी—पुं० [अ० ख़िल्ज] अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पर रहनेवाली पठानों की एक जाति ।

ख़िलत—स्त्री०=ख़िलअत ।

खिलना—अ० [सं० स्खल] १. कली या फूल का पंखुड़ियाँ खोलना । २. कोई सुखद कार्य या बात होने पर आनंदित या प्रसन्न होना । ३. ऐसी आकृति बनाना जिससे प्रसन्नता प्रकट हो। प्रफुल्लित होना। ४. ठीक बैठना। सुन्दर लगना। फबना। जैसे—साड़ी पर गोट खिल रही है। ५. किसी चीज के सब अंगों का फूल की पत्तियों की तरह अलग-अलग हो जाना। जैसे—चावल खिलना। ६. बीच से फटना। दरार पड़ना। जैसे—पानी भरने से दीवार खिलना । ७. टुकड़े टुकड़े होना। फूटना। जैसे—पानी पड़ने से चूना या मिट्टी खिलना।

ख़िलवत—पुं० [अ०] १. ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो। निर्जन या शून्य स्थल । २. ऐसा स्थान जहाँ आपस के या एक दो इष्ट व्यक्तियों के सिवा और कोई न हो। एकान्त स्थल ।

ख़िलवत खाना—पुं० [फ़ा०] ऐसा कमरा या घर जिसमें आपस के थोड़े से व्यक्तियों के सिवा और कोई न आता-जाता हो।

खिलवाड़—पुं० [हिं० खेल] १. मन बहलाने या समय बिताने के लिए यों ही किया जानेवाला ऐसा काम जो बच्चों के खेल की तरह का हो।

मुहा०—(किसी काम को) खिलवाड़ समझना—बहुत ही सहज या सुगम समझना ।

२. मनबहलाव। दिल्लगी। ३. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत ही साधारण रूप से किया हुआ काम ।

खिलवाड़ी—वि० [हिं० खेलाड़ी] जिसका मन खिलवाड़ में ही अधिक रमता या लगता हो ।

खिलवाना—स० [हिं० खिलाना का प्रे०] खिलाने या भोजन कराने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को खिलाने में प्रवृत्त करना।

स० [हिं० खिलाना=प्रफुल्लित करना] खिलने या खिलाने में प्रवृत्त करना। प्रफुल्लित कराना ।

स० [हिं० 'खीलना' का प्रे०] खीलें या तिनके लगाने का काम किसी से कराना। खीलने में प्रवृत्त करना।

स० दे० 'खेलवाना'।

खिलवार*—पुं० १.=खिलवाड़ । २.=खिलाड़ी ।

खिलाई—स्त्री० [हिं० खाना] १. खाने अथवा खिलाने की क्रिया या भाव ।

पद—खिलाई-पिलाई=खाने-पीने और खिलाने-पिलाने की क्रिया या भाव ।

२. खाने या खिलाने का पारिश्रमिक ।

स्त्री० [हिं० खेलाना] १. बच्चों को खेलाने का काम। २. वह दाई जो बच्चों को खेलाने के लिए नियुक्त की गई हो। धाय।

स्त्री० [हिं० खिलना=प्रफुल्लित होना] खिलने या खिलाने (प्रफुल्लित होने या करने) की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक ।

खिलाड़—वि०=खिलाड़ी ।

खिलाड़ी—पुं० [हिं० खेल+आड़ी (प्रत्य०)] १. वह जो खेल खेलता हो। खेलाड़ी । २. खिलवाड़ी । ३. तरह-तरह के खेल या तमाशे दिखानेवाला व्यक्ति । जैसे—जादूगर, पहलवान, सँपेरा आदि ।

†पुं० [?] एक प्रकार का बैल।

खिलाना—स० [हिं० खाना] १. किसी को कोई चीज खाने में प्रवृत्त करना। जैसे—मिठाई खिलाना, जहर खिलाना। २. किसी को भोजन कराना। जेंवाना। जैसे—ब्राह्मण खिलाना ।

स० [हिं० खिलाना] किसी को खिलने अर्थात् प्रफुल्लित या विकसित होने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कुछ या कोई खिले।

स०=खेलाना । (असिद्ध रूप)

ख़िलाफ़—वि० [अ०] १. (व्यक्ति) जो किसी मत, विचार, व्यक्ति आदि का विरोध करता हो। २. (बात) जो किसी बात, वस्तु या सिद्धांत से मेल न खाती हो। विपरीत। ३. उलटा। ४. अन्यथा।

अव्य० १. तुलना में। २. मुकाबले में। सामने।

ख़िलाफ़त—स्त्री० [अ०] १. किसी की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी बनना। २. मुसलमानों में पैगंबर के उत्तराधिकार का पद या स्वत्व। ३. खिलाफ होने अर्थात् विरोध करने की क्रिया या भाव।

खिलायक—स्त्री० [अ० खल्कत] जन-समूह। भीड़। उदा०—धाय नहीं घर, दायँ परी जुरि आई खिलायक, आँख बहाऊँ।—केशव।

खिलाल—स्त्री० [हिं० खेल] (ताश आदि के खेल में) पूरी बाजी की हार।

खिलौना—पुं० [हिं० खेल+औना (प्रत्य०)] १. बच्चों के खेलने के लिए बनाई हुई धातु, मिट्टी आदि की आकृति, चीज या सामग्री। २. बहुत ही साधारण या महत्वहीन वस्तु। ३. किसी के मन बहलाने का साधन या सामग्री।

पद—(किसी के) हाथ का खिलौना=(क) किसी की आज्ञा, संकेत आदि पर ही सब काम करनेवाला व्यक्ति। (ख) ऐसा व्यक्ति जिसका उपयोग केवल दूसरों के मनोविनोद के लिए ही होता हो।

खिलौरी—स्त्री० [हिं० खील=भुना हुआ दाना] खरबूजे, धनिये आदि के भुने हुए बीज जो भोजनोपरांत मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाये जाते हैं।

खिल्ली—स्त्री० [हिं० खिलना=मुस्कराना या हँसना] हँसने-हँसाने के लिए किसी को तुच्छ सिद्ध करते हुए कही जानेवाली हास्यास्पद बात।

मुहा०—(किसी की) **खिल्ली उड़ाना**—दूसरों को हँसने-हँसाने के लिए किसी के संबंध में कोई ऐसी बात कहना जिससे वह कुछ तुच्छ या हेय सिद्ध होता हो।

स्त्री० [हिं० खील=तिनका] १. पान का बीड़ा जो खील या सींक से खोंसा हुआ हो। २. लगे हुए पान का बीड़ा।

†स्त्री०=खील (बड़ा काँटा या कील)।

खिल्लीबाज—वि० [हिं० खिल्ली+फा० बाज] [भाव० खिल्लीबाजी] दूसरों की खिल्ली या दिल्लगी उड़ानेवाला।

खिल्लो—वि० [हिं० खिलना=प्रसन्न होना] बहुत अधिक या प्रायः हँसती रहनेवाली स्त्री के लिए उपहास या व्यंग्य का सूचक विशेषण।

खिवना†—अ० [सं० क्षिप्] चमकना। (राज०) उदा०—मारु दीठी अउझकइ, जाँणि खिवी घण संझ।—ढोला मारू।

खिवाई—स्त्री०=खेवाई।

खिवाही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की ईख।

खिसकना—अ० [सं० कृष्; प्रा० खिसइ; सिं० खिसनु; गु० खिसवूँ, खसवूं; मरा० खिसषें] १. चुपके अथवा धीरे से दूसरों की दृष्टि बचाते हुए कहीं से उठकर चल देना। २. चूतड़ के बल बैठे-बैठे किसी ओर थोड़ा-सा बढ़ना या हटना। खसकना।

खिसकाना—स० [हिं० खिसकना] १. चुपके अथवा धीरे से किसी की कोई वस्तु उठाकर चल देना। २. किसी वस्तु को खींचकर किसी ओर कुछ हटाना-बढ़ाना।

खिसना†—अ०=खसना।

खिसलना—अ०=फिसलना।

खिसलाना—स० 'खिसलना' का प्रे० रूप।

खिसलाव†—पुं० [हिं० खिसलना या फिसलना] १. खिसलने या फिसलने की क्रिया या भाव। २. ऐसा चिकना स्थान जिस पर पैर फिसलता हो।

खिसलाहट—स्त्री० [हिं० खिसलना या फिसलना] फिसलने या खिसलने की क्रिया या भाव।

खिसाना*—अ०=खिसियाना।

खिसारा—पुं० [अ० खिसारः] १. घाटा। टोटा। २. नुकसान। हानि।

†वि० [हिं० खिसाना या खीस] १. खिसियाया हुआ। २. जल्दी नाराज हो जानेवाला।

खिसारी—स्त्री०=खेसारी।

खिसिआनपन—पुं० [हिं० खिसिआना+पन] खिसियाने की क्रिया या भाव।

खिसिआना—वि० [हिं० खीस हिं० खिसियाना] [स्त्री० खिसिआनी] १. क्रुद्ध। २. अप्रसन्न। रुष्ट। ३. लज्जित।

अ०=खिसियाना।

खिसिआहट—स्त्री०=खिसिआनपन।

खिसियाना—अ० [हिं० खीस=दाँत] १. लज्जित होकर दाँत निकाल देना या सिर झुका लेना। २. किसी पर अप्रसन्न या रुष्ट होकर बिगड़ना। नाराज होना।

खिसी†—स्त्री० [हिं० खिसियाना] १. क्रोध। २. अप्रसन्नता। ३. लज्जा। ४. ढिठाई। धृष्टता।

खींच—स्त्री० [हिं० खींचना] १. खींचने अथवा खिंचे हुए होने की अवस्था या भाव। २. खींच-तान (दे०)। उदा०—अति सोक सोच संकोच के खींच-बीच नरपति परे।—रत्ना०।

खींच-तान—स्त्री० [हिं० खींचना+तानना] १. किसी वस्तु को विभिन्न दिशाओं की ओर विभिन्न पक्षों द्वारा एक साथ खींचकर ले जाने की क्रिया या प्रयास। २. व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध किया जानेवाला उद्योग या प्रयत्न। ३. किसी बात या वाक्य के अर्थ या आशय का बलपूर्वक किसी एक ओर खींचा या ताना जाना। शब्द या वाक्य का जबरदस्ती साधारण से भिन्न कोई दूसरा अर्थ लगाया जाना।

खींचना—स० [सं० कृष्, प्रा० खंच, बं० खेंचा, पं० खैंच, गु० खेंचवूँ, का० खंझून, मरा० खेचणें] १. किसी वस्तु को बलपूर्वक अपनी ओर लाना। जैसे—हवा में से पतंग या कुएँ में से बाल्टी खींचना। २. किसी को अपने साथ लेते हुए आगे बढ़ना। जैसे—घोड़ा गाड़ी खींचता है। ३. किसी वस्तु या स्थान में स्थित कोई दूसरी वस्तु बलपूर्वक बाहर निकालना। जैसे—म्यान से तलवार खींचना। ४. किसी को दूसरे पक्ष में से अपने पक्ष में मिलाना। ५. किसी वस्तु में का तत्त्व, सार या सुगंध निकालना। जैसे—इत्र खींचना। ६. भभके से अर्क, शराब आदि चुआना। ७. चूसना। सोखना। जैसे—मक्की की रोटी बहुत घी खींचती है। ८. किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना। अपनी ओर उन्मुख करना। जैसे—इस पुस्तक ने विद्वानों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। ९. कलम, पेंसिल आदि से अंकित या चित्रित करना। जैसे—लकीर खींचना। १०. अनुकृति आदि के रूप में उतारना या बनाना। जैसे—फोटो या चित्र खींचना। ११. कौशलपूर्वक किसी के अधिकार से कोई चीज निकालकर अपने हाथ में करना। जैसे—किसी से रुपए खींचना। १२. व्यापारिक क्षेत्र में, खपत या बिक्री का माल अधिक मात्रा या मान में मँगाना या अपने अधिकार में करना। जैसे—दूसरे महायुद्ध में अमेरिका ने संसार का सारा सोना खींच लिया था।

खींचाखींची—स्त्री०=खींच-तान।

खींचातान—स्त्री०=खींच-तान।

खींचातानी--स्त्री०=खींच-तान।

खीखर--पुं० [देश०] एक प्रकार का वन-विलाव। कटारन।

खीच†--स्त्री०=खिचड़ी। उदा०--करमाबाई को खीच अरोग्यो होइ परसण पावंद।--मीराँ।

खीज--स्त्री०=खीझ।

खीजना--अ० = खीझना।

खीझ--स्त्री० [हिं० खीझना] १. खीझने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. ऐसी बात, जिससे कोई खीझे। चिढ़ानेवाली बात।

मुहा०--**(किसी की) खीझ निकालना**=किसी को खूब चिढ़ानेवाली कोई बात ढूँढ़ निकालना या पैदा करना।

खीझना--अ० [सं० खिद्यते, प्रा० खिज्जइ] किसी अप्रिय या अरुचिकर कार्य, बात, व्यवहार आदि का प्रतिकार न कर सकने पर उससे खिन्न होकर झुँझलाना।

खीण†--वि० = क्षीण।

खीधा†--स्त्री०=कंथा।

खीन*--वि०=क्षीण।

खीनता*†--स्त्री० = क्षीणता।

खीनताई*--स्त्री०=क्षीणता।

खीप--पुं० [देश०] १. एक प्रकार का घना सीधा पेड़। २. लज्जालु नाम का पौधा। लजाधुर। ३. गंध-प्रसारिणी नाम की लता। गँधैली।

खीमा†--पुं० = खेमा।

खीर--स्त्री० [सं० क्षीर] दूध में चावल उबालने तथा चीनी मिलाने से बननेवाला एक प्रसिद्ध भोज्य पदार्थ।

मुहा०--**खीर चटाना**=पहले-पहल बच्चे को अन्न खिलाना आरम्भ करने के लिए उसके मुँह में खीर डालना। अन्न-प्राशन करना।

†पुं०=क्षीर।

खीर-चटाई--स्त्री० [हिं० खीर+चटाई] बच्चे को पहले-पहल अन्न खिलाने के समय खीर चटाने की रसम। अन्न-प्राशन।

खीरमोहन--पुं० [हिं० खीर+मोहन] गुलाब जामुन के आकार की एक प्रसिद्ध बँगला मिठाई।

खीरा--पुं० [सं० क्षीरक] ककड़ी की जाति का एक प्रकार का फल। मुहा०--**(किसी को) खीरा-ककड़ी समझना**=बहुत ही तुच्छ या हेय समझना।

खीरी--स्त्री० [सं० क्षीर] गाय, भैंस आदि मादा चौपायों का वह भाग जिसमें दूध बनता तथा रहता है तथा जिसके निचले भाग में थन होते हैं।

खीरोदक--पुं० [सं० क्षीरोदक] एक प्रकार का पेड़।

खील--स्त्री० [सं० पा० प्रा० बँ० खील; गु० खिलो; उ० कीड़ा; मरा० खिड़, खिड़ा] १. खिला या भुना हुआ चावल। लावा। २. चावल को भूनकर तथा चाशनी में पकाकर जमाई हुई कतली। ३. किसी चीज़ का बहुत छोटा टुकड़ा। जैसे--शीशे का गिलास गिरते ही खील-खील हो गया।

†स्त्री० [हिं० कील] १. कील। मेख। (दे० 'कील') २. बाँस आदि की पतली सींक जो पत्रों आदि को जोड़कर दोना बनाने के काम आती है। ३. मांस-कील।

स्त्री० [सं० खिल] वह भूमि जो जोती जाने से पहले बहुत दिन परती छोड़ी गई हो।

खीलना--स० [हिं० खील] १. पत्रों में खील लगाकर दोना, पत्तल आदि बनाना। खील लगाना। २. दे० 'कीलना'।

खीला†--पुं० [हिं० कील] [स्त्री० खीली] १. बाँस आदि की पतली छोटी सींक। २. बड़ी और मोटी कील। ३. खूँटा।

खीली--स्त्री०=खिल्ली (पान का बीड़ा)।

खीवन--स्त्री० [सं० क्षावन] मतवालापन। मत्तता।

खीवर*--वि० [सं० क्षावन] १ मतवाला। २. वीर। शूर। (डिं०)

खीस--स्त्री० [?] १. पशुओं के लंबे तथा नुकीले दाँत। खाँग। जैसे--सूअर की खीस। २. खुले हुए और बाहर से दिखाई देनेवाले दाँत।

मुहा०*--**खीस या खीसें काढ़ना या निकालना**=कोई भूल हो जाने पर निर्लज्जतापूर्वक हँसना या दाँत निकालना।

३. लज्जा। शरम।

स्त्री० [देश०] १. नई ब्याई हुई गाय, भैंस आदि का १०-१२ दिनों का वह दूध जो पीने योग्य नहीं होता। पेउस। २. उक्त पशुओं के स्तन के अन्दर की मांस-कील।

मुहा०--**खीस निकालना**=नई ब्याई हुई गाय, भैंस आदि के थनों में से मांस-कील निकालना।

विशेष--ये मांस-कीलें गर्भकाल में थनों में दूध रुके रहने से बन जाती हैं।

†वि० [सं० किष्क=वध] नष्ट। बरवाद। उदा०--लगे करन मरव-खीसा--तुलसी।

क्रि० वि० निरर्थक। व्यर्थ। उदा०--निठुरा आगे रोइबो आँसु गारिबो-खीस--रहीम।

स्त्री० [हिं० खीज] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. क्रोध। गुस्सा।

स्त्री० [फा० खिसारा] १. नुकसान। हानि। २. घाटा। टोटा। ३. कमी। न्यूनता।

खीसना*--अ० [हिं० खीस] नष्ट या बरवाद होना। उदा०--तुम्हरे दास जाहिं अघ खीसा। --तुलसी।

स० नष्ट या बरवाद करना।

खीसा--पुं० [फा० कीसः] [स्त्री० अल्पा० खीसी] १. छोटा थैला। थैली। २. खलीता। जेब। ३. कपड़े की वह थैली जिससे नहाने के समय बदन मलकर साफ करते हैं।

† पुं०=खीस।

खीह*--स्त्री०=खीझ।

खीहना†--अ०=खीझना। उदा०--तुही तुही कह गुडुरु खीहा।--जायसी।

खुंखणी--स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वीणा।

खुंगाह--पुं० [सं०] काले रंग का घोड़ा।

खुंटकढ़वा--पुं० [हिं० खूंट+काढ़ना] कान की मैल निकालनेवाला व्यक्ति। कनमैलिया।

खुंटाना†--स० [हिं० खूंटना] खूंटने का काम किसी से कराना।

अ० खूंटा या तोड़ा जाना।

खुंटिला--पुं० [देश०] कान में पहनने का कर्णफूल। उदा०--मनि कुंडल खुंटिला औ खूंटी।--जायसी।

खुंड—पुं० [देश०] १. एक प्रकार की मोटी घास। २. पहाड़ी टट्टुओं की एक जाति।

खुंडला—पुं० [सं० खंडल] १. टूटा-फूटा मकान। २. छोटा झोपड़ा।

खुंदकार—पुं० [फा० ख्वान्दगार] सेवक। नौकर।

खुंदवाना—स०=खुंदाना।

खुंदाना—स० [हिं० खूंदना] १. खूंदने में प्रवृत्त करना। २. (घोड़ा) कुदाना या कुदाते हुए चलाना।

खुंदिन†—स्त्री०=खूंद।

खुंदी†—स्त्री०=खूंद।

खुंबी†—स्त्री०=खुंभी।

खुंभी†—स्त्री० [सं० कुंभ] १. कान में पहनने का एक गहना। २. दे० 'खुमी'।

स्त्री० [सं० स्कंभ] खंभे के नीचे का वह भाग जो ऊपर के भाग से कुछ बाहर निकला रहता है। उदा०—खुंभी पनाँ प्रवाली खंभ।—प्रिथीराज।

खुआर†—वि० दे० 'ख्वार'।

खुआरी*†—स्त्री० दे० 'ख्वारी'।

खुक्ख—वि० [सं० शुष्क] १. जिसके पास कुछ भी धन-सम्पत्ति न हो। परम दरिद्र या निर्धन। २. जिसमें तत्त्व या सार न रह गया हो। खोखला। निस्सार। ३. जो ताश के खेल में पूरी बाजी हार गया हो।

खुखंड—पुं० [देश०] एक प्रकार की राई।

खुखड़ा†—पुं० [हिं० खुक्ख] पेड़ जिसे घुन लगा हो अथवा जिसका गूदा सड़ गया हो।

पुं० [नेपा० खुकुरा] [स्त्री० अल्पा० खुखड़ी] कटार की तरह का एक प्रकार का बड़ा छुरा जो प्रायः नेपाली लोग रखते हैं।

खुखड़ी—स्त्री० [देश०] १. तकुए पर लपेट कर सूत आदि का बनाया जानेवाला पिंड। कुकड़ी। २. छोटा खुखड़ा।

खुखला†—वि०=खोखला।

खुखुड़ा†—पुं०=खुखड़ा।

खुगीर—पुं० दे० 'खूगीर'।

खुचर—स्त्री० [सं० कुचर=पराये दोष निकालनेवाला] किसी अच्छी बात में भी झूठ-मूठ का निकाला जानेवाला दोष या की जानेवाली आपत्ति। छिद्रान्वेषण।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—लगाना।

खुचुर†—स्त्री०=खुचर।

खुजलाना—स० [सं० खर्जु, खर्जन] [संज्ञा खुजलाहट, खुजली] शरीर के किसी अंग में खुजली होने पर उस स्थान को नाखूनों अथवा उँगलियों से बार बार मलना या रगड़ना।

†अ० खुजली होना।

खुजलाहट—स्त्री० [हिं० खुजलाना] खुजली होने की अवस्था या भाव।

खुजली—स्त्री० [हिं० खुजलाना] १. शरीर के किसी अंग में रक्त का संचार रुक जाने के कारण होनेवाली सुरसुरी। २. एक चर्मरोग जिसमें शरीर पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं और बहुत अधिक खुजलाहट होती है।

खुजवाना—स० [हिं० खोजना] किसी खोई हुई वस्तु को खोजने में किसी को प्रवृत्त करना। खोज कराना। खोजवाना।

खुजाई—स्त्री० [हिं० खोजना+आई (प्रत्य०)] खोजने या ढूँढ़ने की क्रिया या भाव।

खुजाना†—अ०, स०=खुजलाना।

स०=खुजवाना।

खुज्झा†—पुं०=खूझा।

खुझड़ा—पुं०=खूझा।

खुझरा—पुं० [सं० कु+हिं० जड़] १. जमीन पर उभरने अथवा फैलनेवाले पेड़ों की जड़ें। २. एक में गुथे हुए किसी चीज के बहुत से तंतु या रेशे। जैसे-नारियल की जटा या रेशम का खुझरा।

खुटक*†—स्त्री०=खुटका।

खुटकना—स० [सं० खुड् वा खुंड] किसी वस्तु का ऊपरी अंश या भाग दाँत या नाखूनों से नोचना या तोड़ना।

खुटका†—पुं० [हिं० खटका] ऐसी बात जो मन में खटक या चिंता उत्पन्न करती हो। खटका।

खुटचाल—स्त्री० [हिं० खोटी+चाल] १. दुष्ट उद्देश्य से किया जानेवाला काम या कही जानेवाली बात अथवा किसी को चिढ़ाने या कष्ट पहुँचाने के लिए चली जानेवाली बुरी चाल। खोटा या बुरा चाल-चलन। दुराचार।

खुटचाली*—पुं० [हिं० खुटचाल+ई (प्रत्य०)] १. खुटचाल चलनेवाला दुष्ट व्यक्ति। २. बुरी चाल चलनेवाला व्यक्ति। दुराचारी।

खुटना†—अ० [सं० खुड् या खोट] १. समाप्त होना। खतम होना। २. कम पड़ना। घटना। ३. टूट कर अलग होना।

†अ०=खुलना। उदा०—निपट बिकट जौलौं जुटे, खुटहिं न कपट कपाट।—बिहारी।

खुटपन—पुं० [हिं० खोटा+पन, पना (प्रत्य०)] खोटे या दुष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव।

खुटला—पुं० [देश०] कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

खुटाई—स्त्री०=खोटाई।

खुटाना*—अ० [हिं० खुटना] समाप्त होना।

खुटिला—पुं० [देश०] कान का एक प्रकार का आभूषण।

खुटेरा†—पुं० [सं० खदिर] खैर का पेड़।

खुट्टी†—स्त्री० [खुट से अनु०] तिल और गुड़ (या चीनी) से बननेवाली एक प्रकार की मिठाई। रेवड़ी।

स्त्री०=कुट्टी।

खुठमेरा†—पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा धान।

खुड़ला—पुं० [देश०] वह खानेदार अलमारी या दरबा जिसमें मुर्गे-मुर्गियाँ बन्द की जाती हैं।

खुड़ुआ—पुं० [देश०] वर्षा या जाड़े आदि से बचाव के लिए सिर पर डाला जानेवाला कंबल या कोई कपड़ा। घोघी।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

खुड्डी—स्त्री० [पं० खुड्ड=विवर] १. वह गड्ढा जिसमें देहाती लोग मल-त्याग करते हैं। २. पाखाने में पैर रखने के पावदान।

खुड्ढी†—स्त्री०=खुड्डी।

खुतका—पुं०=कुतका।

खुतबा—पुं० [अ० खुत्बः] १. तारीफ। प्रशंसा। २. प्रशंसात्मक

लेख या कविता। ३. मुसलमानी राज्यों में नये राजा के सिंहासन पर बैठने की घोषणा।

मुहा०—(किसी के नाम का) खुतबा पढ़ा जाना=किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना।

खुत्थ—पुं०=खुत्थी।

खुत्थी†—स्त्री० [?] पौधों का वह भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी के ऊपर बचा रह जाता है। खूंटी।

स्त्री० [?] १. गुत्थी। थैली। २. धन-सम्पत्ति। ३. किसी पदार्थ का सार भाग। सत्त।

खुथी—स्त्री०=खुत्थी।

खुद—अव्य०[फा०] स्वयं। आप।

पद—खुद-ब-खुद (देखें)।

खुदका—पुं०=कुतका।

खुदकाश्त—स्त्री० [फा०] ऐसी जमीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोतता-बोता हो।

खुदकुशी—स्त्री० [फा०] आत्महत्या।

खुदगरज—वि०[फा०] [भाव० खुदगरजी] अपना ही काम या मतलब देखनेवाला। स्वार्थी।

खुदगरजी—स्त्री०[फा०] खुदगरज होने की अवस्था या भाव। स्वार्थ-परायणता।

खुदना—अ० [हिं० खोदना का अ०] १. जमीन आदि का खोदा जाना। जैसे—खान या नहर खुदना। २. खुदने के रूप में अंकित या चिह्नित होना। जैसे—बरतन पर नाम खुदना।

खुद-परस्त—वि० [फा०] [भाव० खुद-परस्ती] वह जो अपने आप को ही सबसे बढ़कर समझता हो।

खुद-ब-खुद—अव्य० [फा०] आप से आप। अपनी ही इच्छा से। स्वतः (बिना किसी की प्रेरणा आदि के)।

खुद-मुख्तार—वि० [फा०] [—भाव० खुद-मुख्तारी] जिस पर किसी दूसरे का प्रभुत्व या शासन न हो। स्वतन्त्र।

खुद-मुख्तारी—स्त्री [फा०] खुदमुख्तार होने की अवस्था या भाव। स्वतन्त्रता।

खुदरा—पुं०[फा० खुर्दा, सं० क्षुद्र] १. छोटी और साधारण वस्तु। फुटकर चीज। २. किसी पूरी चीज में के छोटे-छोटे अंश, खंड या टुकड़े। जैसे—दस रुपए के नोट का खुदरा। ३. चीजों की बिक्री का वह प्रकार जिसमें वे इकट्ठी या पूरी नहीं, बल्कि टुकड़े-टुकड़े या थोड़ी-थोड़ी करके बेची जाती हैं। 'थोक' का विपर्याय। जैसे—थोक के व्यापारी खुदरा माल नहीं बेचते।

†वि० १. जो छोटे-छोटे अंशों या टुकड़ों के रूप में हो। जैसे—खुदरा नोट, खुदरा सौदा। २. थोड़ा-थोड़ा करके बिकनेवाला। (रिटेल)

†वि०=खुरदुरा।

खुदराई—स्त्री० [फा०] खुदराय होने की अवस्था या भाव।

खुदराय—वि० [फा०] १. अपनी ही राय या विचार के अनुसार सब काम करनेवाला। दूसरों की राय न मानने या न सुननेवाला। २. स्वेच्छा-चारी। निरंकुश।

खुदवाई—स्त्री० [हिं० खुदवाना] १. खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुदवाना—स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम दूसरे से कराना।

खुदा—पुं० [फा०] १. परमात्मा। परमेश्वर।

मुहा०—खुदा-खुदा करके=बहुत कठिनता से। बड़ी मुश्किल से। **खुदा लगती कहना**=ऐसी ठीक और सच्ची बात कहना, जिससे ईश्वर प्रसन्न हो।

पद=खुदा का घर—मसजिद। जिसमें ईश्वर का निवास माना जाता और उपासना की जाती है। **खुदा की मार**=दैवी प्रकोप। **खुदा-न-ख्वास्ता**=ईश्वर न करे कि ऐसा हो। '(अशुभ बातों के प्रसंग में) जैसे—खुदा-न-ख्वास्ता अगर आप बीमार पड़ जायँ तो ?

खुदाई—स्त्री०=खोदाई।

वि० [फा० खुदाई] खुदा या ईश्वर की ओर से आने या होनेवाला। ईश्वरीय।

पद—खुदाई रात—ऐसी रात जिसमें बराबर जागते रहकर ईश्वर का ध्यान किया जाय।

स्त्री० १,. खुदा होने की अवस्था, पद या भाव। ईश्वरता। २. ईश्वर की रची हुई सारी सृष्टि। ३. सृष्टि में रहनेवाले सभी प्राणी या लोग।

खुदा-परस्त—वि० [फा०] [भाव० खुदापरस्ती] ईश्वर को मानने तथा उसकी उपासना करनेवाला। आस्तिक।

खुदावंद—पुं० [फा०] १. ईश्वर। २. मालिक। स्वामी।

अव्य० जी हजूर। हाँ, सरकार। (बड़ों से बातचीत करने अथवा उन्हें सम्बोधित करने के समय।)

खुदाव—पुं० [हिं० खोदना] १. किसी चीज के ऊपर किया हुआ खुदाई का काम। २. किसी चीज के ऊपर आकृति, रूप आदि खुदे होने का ढंग।

खुदा-हाफिज—पद [फा०] ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। (विदाई आदि के समय)

खुदी—पुं० [फा०] १. 'खुद' का भाव। अहंभाव। २. अभिमान। घमंड। ३. शेखी।

खुद्दी—स्त्री० [सं० क्षुद्र] १. चावल, दाल आदि के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े। किनकी। २. तरल पदार्थ के नीचे की तलछट।

खुनकी—स्त्री० [फा०] हलकी सरदी। ठंढक।

खुनखुना—पुं० [अनु०] घुनघुना या झुनझुना नाम का खिलौना।

खुनस—स्त्री० [सं० खिन्नमनस्] [वि० खुनसी] क्रोध। गुस्सा।

खुनसाना—अ० [हिं० खुनस] गुस्से या नाराज होकर कुछ कहना या बिगड़ना।

खुनसी—वि० [हिं० खुनसाना] गुस्सा करनेवाला। क्रोधी।

खुनिस†—स्त्री०=खुनस।

खुफिया—वि० [फा०] छिपकर रहनेवाला अथवा छिपकर काम करनेवाला। गुप्त।

क्रि० वि० गुप्त रूप से। छिपकर। जैसे—खुफिया जाँच करना।

खुफियाखाना—पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ दुश्चरित्रा स्त्रियाँ धन लेकर व्यभिचार करती हों।

खुफिया पुलिस—स्त्री० [फा० खुफिया+अं० पुलिस] १. पुलिस का वह

विभाग जो गुप्त रूप से अपराधों आदि की जाँच करता है तथा अपराधियों का पता लगाता है। २. उक्त विभाग का कर्मचारी।

खुभना—अ० [सं० क्षुभ्] गड़ना। चुभना।

खुभराना*†—अ० [सं० क्षुब्ध] उपद्रव या उत्पात करने के लिए इधर-उधर घूमना।

खुभिया†—स्त्री० = खुभी।

खुभी—स्त्री०[हिं० खुभना] कान में पहनने का फूल।

खुम—पुं० [फा०] शराब रखने का घड़ा या मटका।

खुमखाना—पुं० [फा०] शराबखाना। मदिरालय।

खुमरा—पुं०[अ० कुंबूर=हजरत अली का एक गुलाम] [भाव० खुमरी] एक प्रकार के मुसलमान फकीर।

पुं० [अ० खुमराह] छोटी चटाई।

खुमरी—स्त्री०=कुमरी (पंडुक पक्षी)।

खुमा—स्त्री०=खुमारी।

खुमान*—वि० [सं० आयुष्मान्] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी।

पुं० शिवाजी महाराज की एक उपाधि।

खुमार—पुं० [फा०] १. खुमारी (दे०)। २. आध्यात्मिक या ईश्वरीय प्रेम का नशा या मद।

खुमारी—स्त्री० [अ० ख़ुमार] १. भाँग, शराब आदि का नशा उतरते समय अथवा उतर जाने के बाद की वह स्थिति जिसमें शरीर आलस्य से भरा होता है, आँखें चढ़ी होती हैं, गला सूखा रहता है और तबीयत कुछ-कुछ बेचैन सी रहती है। २. रात भर जागते रहने से अथवा बहुत अधिक थके रहने के कारण होनेवाली सुस्ती।

खुमी—स्त्री० [अ० कुमा] १. बहुत ही छोटे छोटे उद्भिज्जों या वनस्पतियों का एक वर्ग जिसमें फूल, पत्ते आदि बिलकुल नहीं होते, केवल एक छोटे डंठल के सिरे पर सफेद या मटमैले रंग का छाता-सा होता है। गुच्छी, कुकुरमुत्ता आदि वनस्पतियाँ इसी वर्ग के अंतर्गत हैं। (मशरूम) २. दाँतों में लगवाई जानेवाली सोने की कील या पत्तर। ३. कानों में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. हाथी के दाँतों पर चढ़ाया जानेवाला छल्ला।

खुम्हारि*—स्त्री०=खुमारी।

खुरंट—पुं०=खुरंड।

खुरंड—पुं० [सं० क्षुर=खरोचना+अंड] घाव के सूखने पर उसके ऊपर जमनेवाली झिल्ली या पपड़ी।

खुर—पुं०[सं० √खुर् (काटना) +क; पा० प्रा० खुर, छुर; बँ०, उ० पं० गु० खुर; मरा० खूर] १. सींगवाले पशुओं के पैरों का अगला सिरा जो प्रायः गोल तथा बीच में से फटा हुआ होता है। टाप। सुम। २. चारपाई या चौकी के पाये का निचला छोर जो पृथ्वी पर रहता है। ३. नख नामक गंध-द्रव्य।

खुरक—स्त्री० [हिं० खुटका] १. खटका। अंदेशा। उदा०—सुआ न रहै खुरुक जिअ, अबहि काल सो आउ।—जायसी। २. चिंता। सोच।

†स्त्री०=खुजली।

पुं० [सं० खुर√ कै (चमकना) +क] १. तिल का पेड़। २. एक प्रकार का नृत्य।

खुरक राँगा—पुं०[हिं खुरक+ राँगा] एक प्रकार का नरम और सफेद राँगा जो जल्दी गल जानेवाला होता है। हिरनखुरी राँगा।

विशेष—वैद्यक में यह भस्म बनाने के लिए अच्छा माना जाता है।

खुरका—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास।

खुरखुर—पुं०[अनु०] वह शब्द जो गले या नाक में बलगम आदि अटकी या फँसी रहने के कारण साँस लेते समय होता है। घरघर शब्द।

खुरखुरा—वि० [सं० क्षुर=खरोचना] जिसके ऊपरी तल पर ऐसे कण या रवे हों जो छूने या हाथ फेरने से गड़ें। 'चिकना' का विपर्याय। खुरदुरा।

खुरखुराना—अ० [हिं० खुरखुर अनु०] १. खुरखुर शब्द होना। जैसे—गला खुरखुराना। २. छूने में खुरखुरा या ऊबड़-खाबड़ लगना।

स० खुरखुर शब्द उत्पन्न करना।

खुरखुराहट—स्त्री० [हिं० खुरखुर] १. खुरखुराने की क्रिया या भाव। खुरखुरे होने की अवस्था या भाव। खुरदरापन। ३. साँस लेने के समय गले में से कफ के कारण होनेवाला खुरखुर शब्द।

खुरचन—स्त्री० [हिं० खुरचना] १. खुरचने की क्रिया या भाव। २. कड़ाही, तसले आदि में से पकी या बनी हुई वस्तु निकाल लेने के बाद उसमें बचा तथा चिपका हुआ उस वस्तु का वह अंश जो खुरचकर निकाला जाता है। ३. एक विशेष प्रकार से बनाई हुई रबड़ी जो कड़ाही में से खुरचकर निकाली जाती है। ४. किसी वस्तु का बचा-खुचा या अन्तिम अंश। जैसे—स्त्रियाँ अपनी अंतिम सन्तान को पेट की खुरचन कहती हैं। ५. वह उपकरण जिससे कड़ाही, तसले आदि में से कोई चीज खुरचकर निकाली जाती है। खुरचनी।

खुरचना—स० [सं० क्षुरण] १. कड़ाही, तसले आदि में चिपका तथा लगा हुआ किसी वस्तु का अंश किसी उपकरण अथवा चम्मच आदि से रगड़कर निकालना। २. किसी नुकीली वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार रगड़ना कि वह दूसरी वस्तु कुछ छिल जाय। जैसे—नाखून से मांस खुरचना, कील से लकड़ी खुरचना।

खुरचनी—स्त्री० [हिं० खुरचना] कोई चीज खुरचने का उपकरण या औजार। जैसे—कसेरों या चमारों की खुरचनी।

खुरचाल—स्त्री०[हिं० खोटी+चाल] १. किसी को चिढ़ाने या कष्ट पहुँचाने के लिए चली जानेवाली दुष्टतापूर्ण चाल। २. किसी काम में व्यर्थ की की जानेवाली आपत्ति या डाली जानेवाली बाधा। ३. दुष्टता। पाजीपन।

खुरचाली—वि०[हिं० खुरचाल] १. जो जान-बूझकर दूसरों को चिढ़ाता अथवा परेशान करता हो। खुरचाल करनेवाला। २. पाजी। दुष्ट।

खुरजी—स्त्री०[फा०] गधे, घोड़े, बैल आदि की पीठ पर रखा जानेवाला एक प्रकार का बड़ा झोला या थैला जिसमें सामान आदि भरा जाता है।

खुरट—पुं०[हिं० खुर] एक रोग जिसमें पशुओं के खुर पक जाते हैं। खुर पकने का रोग।

†पुं०= खुरंड।

खुरतार—स्त्री०[हिं० खुर+तार (प्रत्य०)] खुरवाले पशुओं के चलने से होनेवाला शब्द। खुरों या टापों की ध्वनि। उदा०—बज्जहि हय खुरतार, गाल वज्जहि सु उंट भव।—चंदबरदाई।

खुरथी†—स्त्री० दे० 'कुलथी'। (कदन्न)

खुरदरा—वि० [हिं० खुर+दर अनु०] जिसकी सतह रुक्ष अथवा दानेदार हो। जैसे—खुरदरा कपड़ा। 'चिकना' का विपर्याय।

खुरदा†—वि०=खुदरा।

खुरदायँ†—पुं० [हिं० खुर+ दाना] कटी हुई फसल में से भूसा और अन्न के दाने अलग अलग करने के लिए बैलों से उसे कुचलवाने या रौंदवाने का काम। खुरों के द्वारा होनेवाली दँवाई।

खुंरदारी—पुं० [फा० खुर+दाद] भालू का जुलाव। (कलंदरों की बोली)

खुरपका—पुं० [हिं० खुर+पकना] गाय, भैंसों आदि के खुर पकने का रोग।

खुरपा—पुं० [सं० क्षुरप्र, प्रा० खुप्प] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] १. लोहे का मुठियादार एक छोटा उपकरण जिससे जमीन खोदी तथा गोड़ी जाती है। २. उक्त आकार-प्रकार का घास छीलने का एक छोटा उपकरण।

पद—खुरपा-जाली=घास छीलने और उसका गट्ठर बाँधने के उपकरण।

३. चमारों या मोचियों का वह उपकरण जिससे वे चमड़ा छीलकर साफ करते हैं।

खुरफ—पुं० [फा० खुरफ़ा] कुलफा नामक साग।

खुरबंदी—स्त्री० [फा०] घोड़े, बैल आदि के खुरों में नाल जड़ने का काम।

खुरमा—पुं० [अ० खुर्मः] १. छुहारा नामक सूखा फल। २. एक प्रकार का पकवान जो मीठा भी वनता है और नमकीन भी।

खुरयाऊ—पुं० [देश०] एक प्रकार का फाग जो बुंदेलखंड में गाया जाता है।

खुरली—स्त्री० [सं० खुर√ ला(लेना)+क+ङीष्] १. सेना का युद्धाभ्यास। २. अभ्यास करने का स्थल।

स्त्री० [पं०] वह नाँद जिसमें पशुओं को चारा खिलाया जाता है।

खुरसीटा†—पुं०=खुरपका (रोग)।

खुरहर†—पुं० [हिं० खुर+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खुरहरी] १. जमीन पर पड़ा हुआ गौओं, घोड़ों आदि के खुरों का चिह्न या निशान। खुर की छाप। २. उक्त प्रकार के चिह्नों से बना हुआ वह जंगली मार्ग जिस पर पशु चलते हैं। ३. पगडंडी।

खुरहरा†—वि० [हिं० खुरखुर से अनु०] [स्त्री० खुरहरी] १. जो ऊपर से चिकना न हो। खुरदरा। २. (खाट या पलंग) जिस पर बिस्तर न बिछा हो और इसी लिए जिस पर रस्सी या सुतली शरीर में गड़ती या चुभती हो।

खुरहा—पुं०=खुरपका (पशुओं का रोग)।

खुरहुर†—पुं०=खुरहर।

खुरहुरी—[सं० क्षुद्रफली > खुद्दहुली > खुरहरी] १. एक प्रकार का फलदार वृक्ष जिसे खेनन घूईं आदि भी कहते हैं। उदा०—नरियर फरेफरी खुरहुरी।— जायसी। २. उक्त वृक्ष का फल।

खुरा—पुं० [हिं० खुर] १. खुरपका (दे०)। २. लोहे का वह काँटा जो हल के फाल में जड़ा रहता है। ३. वह पक्की चौकोर जमीन जो नालियों या मोरियों के ऊपरी भाग पर पानी आदि गिराने के लिए होती है। (पश्चिम)

खुराई—स्त्री० [हिं० खुर] वह रस्सी जिससे पशुओं के अगले या पिछले दोनों पैर इसलिए वाँध दिये जाते हैं कि वह भागने न पावें।

खुराक—पुं० [फा० खूराक] १. वह जो कुछ खाया जाय। खाद्य पदार्थ। भोजन। जैसे—आदमियों की खुराक अलग होती है, जानवरों की अलग। २. भोजन की उतनी मात्रा जितनी एक वार अथवा एक दिन में खाई जाय। ३. किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक वार में लेनी उचित या उपयुक्त हो। जैसे—दवा की खुराक।

खुराकी—स्त्री० [फा०] १. भोजन आदि की सामग्री। २. भोजन करने अथवा भोजन आदि की सामग्री लेने के लिए दिया जानेवाला धन।

वि० जिसकी खुराक वहुत अधिक हो।

खुरांघात—पुं० [सं० खुर-आघात, तृ० त०] खुर से किया हुआ आघात या प्रहार।

खुराफात—स्त्री० [अ० खुराफ़ात का वहुवचन] १. वहुत ही भद्दी वातें। २. गाली-गलौज।

मुहा०—खुराफात बकना=गंदी या वेहूदी वातें कहना।

३. ऐसा काम या वात जिससे किसी दूसरे के काम में वाधा पड़ती हो, किसी की परेशानी वढ़ती हो या कोई उपद्रव खड़ा होता हो।

खुराफाती—वि० [हिं० खुराफात] १. खुराफात-संवंधी। २. खुराफात के रूप में होनेवाला।

पुं० वह जो प्रायः कुछ न कुछ खुराफात करता रहता हो।

खुरायला—पुं० [हिं० खुर+आयल] ऐसा जोता हुआ खेत जिसमें अभी बीज न बोये गये हों।

खुरालिक—पुं० [सं० खुर-आलि, ष०त०, खुरालि √कै (प्रतीत होना) +क] १. लोहे का तीर। २. तकिया। ३. उस्तरा, कैंची आदि रखने की नाइयों की थैली। किसवत।

खुरासान—पुं० [फा०] [वि० खुरासानी] फारस देश का एक प्रदेश या भूभाग।

खुरासानी—वि० [फा०] १. खुरासान-संवंधी। २. खुरासान प्रदेश में रहने अथवा होनेवाला।

पुं० खुरासान का निवासी।

स्त्री० खुरासान की बोली या भाषा।

खुराही—स्त्री० [हिं० खुर+ फा० राह] १. जमीन पर पड़े हुए गौओं, घोड़ों आदि के खुरों के चिह्नों से वना हुआ मार्ग। २. रास्ते का ऊँचा-नीचापन सूचित करनेवाला एक शब्द। (कहारों की भाषा)

खुरिया—स्त्री० [फा० (आब) खोरा] १. कटोरी। छोटी प्याली। २. घुटने पर की गोल हड्डी। चक्की।

खुरी—स्त्री० [हिं० खुर] १. खुर या टाप का चिह्न या छाप। सुम का निशान।

मुहा०—खुरी करना=(क) चलने के लिए आतुर होने पर घोड़े, बैल आदि सुमवाले पशुओं का पैर से जमीन खोदना। (ख) जल्दी मचाना। (व्यंग्य)

२. उपद्रव। ३. दुष्टता। पाजीपन।

†स्त्री० [?] बहते हुए पानी की वह जबरदस्त धार जिसके विपरीत नाव न चल सके। (मल्लाह)

खुरुक—स्त्री० दे० 'खुरक'।

खुरुचना—अ०=खुरचना।

खुरुचनी—स्त्री०=खुरचनी।

खुरुहरा—वि०=खुरहरा।

खुरुहुरी—स्त्री० दे० 'खुरहुरी'।

खुरू—पुं० दे० 'खुरी'।

खुरूक—स्त्री० [देश०] नारियल में की गरी। (बुंदेल०)

खुरैरा†—वि० [स्त्री० खुरैरी]=खुरहरा।

खुर्द—वि० [फा०] छोटा। लघु। "कलाँ" का उल्टा।

खुर्दनी—वि० [फा०] खाने योग्य (वस्तु)।
स्त्री० खाई जानेवाली वस्तु। खाद्य पदार्थ।

खुर्दबीन—स्त्री०[फा०] वह यंत्र जिसके द्वारा देखने पर छोटी चीजें बड़ी दिखाई पड़ती हैं। सूक्ष्मदर्शक यंत्र। (माइक्रोस्कोप)

खुर्दबुर्द—क्रि० वि० [फा०] जो खा-पकाकर समाप्त या बहुत बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया हो।

खुर्दा—भू० कृ० [फा० खुर्दः] खाया हुआ। भक्षित।
पुं० छोटी-मोटी चीज। साधारण या तुच्छ वस्तु।
वि० दे० 'खुदरा'।

खुर्रम—वि० [फा०] १. ताजा। २. प्रसन्नचित्त। खुश।

खुर्रमगाह—स्त्री० [अ०+फा०] राजाओं आदि का शयनागार।

खुर्राट—वि० [देश०] १. बड़ा-बूढ़ा। वृद्ध। २. बहुत अनुभवी। ३. चालाक तथा चालबाज। धूर्त्त। काइयाँ।

खुर्राटा—पुं० दे० 'खर्राटा'।

खुर्संद—वि०[फा०] १. जो कोई बात मानने के लिए तैयार हो गया हो। राजी। २. प्रसन्न।

खुलता—वि० [हिं० खुलना] १. जो आगे से खुला हुआ हो। जिसके आगे कोई आड़ न हो। जैसे—खुलता मकान। २. (रंग) जो हलका तेज हो और देखने में भला जान पड़ता हो।

खुलती—स्त्री०=कुलथी।

खुलना—अ० [सं० क्षुर (कटना या खुदना, प्रा० खुल्ल, मरा० खुलणें] हिन्दी 'खोलना' का अकर्मक रूप जो भौतिक या मूर्त्त और अभौतिक या अमूर्त्त रूपों में नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है—

भौतिक या मूर्त्त रूपों में—

१. बँधी या बाँधी हुई चीज का बंधन इस प्रकार हट जाना कि वह बँधी न रह जाय। जैसे—(क) गाँठ या रस्सी खुलना। (ख) बेड़ी या हथकड़ी खुलना। २. चारों ओर लिपटी या लपेटी हुई चीज का अपने स्थान से अलग किया जाना या होना। जैसे—धोती या पगड़ी खुलना। ३. शरीर पर धारण की हुई चीज का उतरना या उतारा जाना। जैसे—कमीज या कोट खुलना। ४. जो चीज किसी प्रकार के आवरण आदि के कारण आँखों से ओझल हो, उसके आगे का आवरण इस प्रकार हट जाना कि वह चीज सामने आ जाय। अनावृत होना। जैसे—रंग-मंच पर का परदा खुलना, संदूक या उसका ढक्कन खुलना। ५. किसी घिरे, छाये या बन्द स्थान के आगे लगे हुए किवाड़ों या पल्लों का हटकर या हटाये जाने पर इस प्रकार इधर या उधर हो जाना कि बीच में आने-जाने का मार्ग हो जाय। जैसे—(क) किले का फाटक खुलना। (ख) कोठरी या मकान का दरवाजा खुलना। ६. अवरोध, बाधा आदि हटने के फलस्वरूप किसी चीज का सार्वजनिक उपयोग या व्यवहार के लिए सुगम होना। जैसे—प्रदर्शनी खुलना। ७. मोड़ी, लपेटी या तह की हुई चीज का इस प्रकार विस्तृत किया जाना या होना कि उसके सिरे यथासाध्य दूर तक फैल जायँ। जैसे—पढ़ाई के समय पुस्तक खुलना। ८. टाँके, सिलाई आदि के द्वारा जुड़ी या जोड़ी हुई चीज का जोड़, टाँका या सिलाई टूट या हट जाने के कारण संयोजक अंगों का अलग अलग होना। जैसे—(क) चूड़ी या हार का टाँका खुलना। (ख) जूते की सीअन खुलना। ९. यांत्रिक क्रिया या साधन से बंद की हुई चीज में विपरीत क्रिया के फलस्वरूप ऐसी स्थिति होना कि वह बंद न रह जाय। जैसे—खबरों, गीतों या भाषणों के सुने जाने के लिए रेडियो खुलना। १०. मरम्मत आदि के लिए यंत्रों के कल-पुरजे या कील-काँटों का अलग अलग होना या अपने स्थान से हटाया जाना। जैसे—घड़ी खुलने पर ही इसके भीतरी दोषों का पता लगेगा। ११. ठहरे या रुके हुए यानों आदि का उद्दिष्ट या गंतव्य स्थान की ओर चलने या जाने के लिए प्रस्थित होना। जैसे—ठीक समय पर नाव या रेल खुलना। १२. जिसका अगला भाग या मुँह बन्द हो या बन्द किया गया हो, उसका बन्द न रह जाना। जैसे—(क) बोतल का काग खुलना। (ख) खरच करने के लिए रुपयों की थैली खुलना। १३. शरीर के अंग या तल में किसी प्रकार का अवकाश या विवर हो जाना। जैसे—(क) दवा या पुलटिस से फोड़े का मुँह खुलना। (ख) लाठी की चोट से किसी का सिर खुलना। १४. रुपए-पैसे आदि के संबंध में, अनावश्यक रूप से व्यय होना अथवा पास से निकल जाना। जैसे—बात की बात में हमारे तो सौ रुपए खुल गए। १५. अवकाश या वातावरण के संबंध में, उस पर छाये हुए बादलों का छिन्न-भिन्न होकर दूर हट जाना। जैसे—चार दिन की बरसात के बाद आज आसमान खुला है। १६. किसी कार्य या किसी विशिष्ट रूप में फिर से या नये सिरे से आरम्भ होना या चलना। जैसे—आपस का लेन-देन या व्यवहार खुलना। १७. किसी प्रकार की संस्था का किसी विशिष्ट क्षेत्र में नया काम करने के लिए परिचालित या स्थापित होना। जैसे—(क) अछूतों या लड़कियों के लिए पाठशाला खुलना। १८. नियत समय पर कार्यालयों आदि की ऐसी स्थिति होना कि वहाँ सब लोग आकर अपना अपना काम कर सकें। जैसे—दफ्तर या दूकान खुलना। १९. शरीर के किसी अंग का अपने कार्य के लिए उपयुक्त बनना या प्रस्तुत होना। जैसे—खाने के लिए मुँह, अच्छी तरह देखने के लिए आँखें या सुनने के लिए कान खुलना। २०. शरीर के किसी अंग का कोई अनुचित काम करने के लिए स्वच्छन्द होकर अभ्यस्त होना। जैसे—गालियाँ बकने के लिए जबान या मारने-पीटने के लिए हाथ खुलना।

अभौतिक या अमूर्त्त रूपों में—

१. अज्ञेय, अस्पष्ट या दुर्बोध बात का ऐसे रूप में सामने आना या होना कि वह लोगों की समझ में आ जाय। जैसे—(क) किसी घटना का रहस्य या श्लोक का अर्थ खुलना। २. बातचीत में किसी के सामने ऐसे रूप में उपस्थित होना कि कुछ भी छिपा या दबा न रह जाय। जैसे—(क) अफसर के डाँट बताते ही उचक्का उसके सामने खुल गया। (ख) चलो, अच्छा हुआ, अब सब बातें खुल गईं। ३. जो क्रम, परम्परा

या परिपाटी किसी प्रकार बंद कर दी गई हो या समाप्त हो चुकी हो, उसका फिर से आरम्भ होना । जैसे—(क) बिरादरी में हुक्का-पानी खुलना। (ख) माफी माँगने पर वेतन या वृत्ति खुलना । ४. भाग्य के संबंध में, कष्ट या विपत्ति के दिन दूर होने पर सुख-सौभाग्य आदि के दिन दिखाई देना । जैसे—यह नई नौकरी उन्हें क्या मिली है कि उनकी तकदीर खुल गई है। ५. किसी प्रकार के अवरोध या बंधन से मुक्त और स्वच्छन्द होना ।

पद—खुलकर=बिना किसी बाधा के। अच्छी तरह। जैसे—खुलकर भूख लगना या पाखाना होना ।

मुहा०—खुलकर खेलना=कलंक, लज्जा आदि का ध्यान या विचार छोड़कर स्वच्छन्दतापूर्वक सब प्रकार के अनुचित काम करने लगना । ६. देखने में भला या सुहावना लगना। सुशोभित होना । खिलना। जैसे—इस साड़ी पर काली गोट खूब खिलेगी ।

खुलवा†—पुं० [देश०] धातु को गलाकर साँचों में ढालनेवाला व्यक्ति ।

खुलवाना—स० [हिं० खोलना] दूसरे को कोई चीज खोलने में प्रवृत्त करना। खोलने का काम दूसरे से कराना ।

खुला—वि० [हिं० खोलना] [स्त्री० खुली] १. जो बंद या भेड़ा हुआ न हो। जैसे—खुला दरवाजा। २. जो बँधा न हो। जो बंधन से कसा या जकड़ा न हो। जैसे—खुला कुत्ता या खुली गाय । ३. जिसमें किसी प्रकार की आड़, बाधा या रोक न हो। जैसे—खुली सड़क, खुली हवा। ४. जो सँकरा न हो। लंबा-चौड़ा। विस्तृत । जैसे—खुला कमरा, खुला मैदान। ५. जो बंद या चिपका न हो। जिसकी तह न लगी हो।जैसे—खुली पुस्तक। ६. (मशीन यंत्र आदि) जिसका कोई पेंच इस प्रकार घुमा दिया गया हो कि वह काम करने लगे । जैसे—खुला रेडियो। ७. जो किसी चीज से ढका या छाया हुआ न हो । जैसे— खुली छत या बरामदा। ८. जो गुप्त या छिपा न हो। साफ। स्पष्ट।

मुहा०—खुले खजाने=सबके सामने। स्पष्ट रूप से। **खुले दिल से**=(क) उदारतापूर्वक। (ख) शुद्ध हृदय से। **खुले बंदों**=(क) =खुले खजाने। (ख) निःशंक होकर। बेधड़क। **खुले मैदान**=सबके सामने। खुले खजाने। **खुली हवा**=वह हवा जिसकी गति का अवरोध न होता हो।

खुलाई—स्त्री० [हिं० खोलना] १. खुलने, खुलवाने या खोलने की क्रिया या भाव। २. खुलवाने या खोलने का पारिश्रमिक या मजदूरी। ३. चित्रकला में, चित्र तैयार हो जाने पर मंद पड़ जानेवाली आकार-रेखाओं पर फिर से रंग चढ़ा कर उन्हें चमकाना। उन्मीलन। तहरीर।

खुला पल्ला—पुं०[हिं० खुला+पल्ला] ढोलक, तबला, मृदंग आदि बजाने में दोनों हाथों से एक साथ या केवल बाएँ हाथ से खुली थाप देकर बजाना आरम्भ करना। (संगीत)

खुलासा—वि० [अ० खुलासः] १. खुला हुआ। २. विस्तीर्ण। विस्तृत। ३. जिसके आगे कोई अवरोध या रुकावट न हो। ४. (कथन) साफ। स्पष्ट।

पुं० संक्षिप्त कथन या विवरण। सारांश।

खुलासी—स्त्री० दे० 'खलासी'।

खुलित*—वि० [हिं० खुलना] खुला हुआ। उन्मीलित। उदा०—खलित वचन, अध-खुलित दृग, ललित स्वेद, कन जोति।—बिहारी।

खुलेआम—क्रि० वि० [हिं० खुलना + फा० आम] खुलकर और सबके सामने। प्रत्यक्ष रूप से।

खुल्ल—वि० [सं०] १. छोटा। लघु। जैसे—खुल्लतात=पिता का छोटा भाई, अर्थात् चाचा।

खुल्लम-खुल्ला—क्रि० वि०[हिं० खुलना] १. बिना किसी से छिपाये हुए। खुलकर और सबके सामने। २. सर्वसाधारण को सूचित करते हुए।

खुवार†—वि०=ख्वार।

खुवारी†—स्त्री०=ख्वारी।

खुश—वि० [फा०] १. जो अपनी स्थिति तथा परिस्थितियों से पूर्णतया संतुष्ट हो। प्रसन्न। २. जो अपने अथवा किसी के द्वारा किये हुए कार्य से संतोष तथा सुख अनुभव कर रहा हो। आनंदित। ३. जो प्रिय, रुचिकर या शुभ हो। सुंदर। जैसे—खुशबू, खुशखबरी। ४. अच्छा। उत्तम। जैसे—खुशखत, खुशनवीस।

खुशकिस्मत—वि०[फा०] अच्छी किस्मतवाला। भाग्यवान्।

खुशकिस्मती—स्त्री०[फा०] अच्छी किस्मत। सौभाग्य।

खुशकी—स्त्री०=खुश्की।

खुशखत—वि० [फा०] १. सुन्दर तथा स्पष्ट अक्षरों में लिखा हुआ। २.सुंदर तथा स्पष्ट अक्षर लिखनेवाला।

खुशखबरी—स्त्री० [फा०] प्रसन्न करनेवाला और शुभ समाचार। अच्छी खबर।

खुशदिल—वि० [फा०] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २. सदा हँसता रहनेवाला।

खुशनवीस—वि० [फा०] (व्यक्ति) जो अच्छे अक्षर खूब बना बनाकर लिखता हो। जिसकी लिखावट सुन्दर तथा स्पष्ट हो।

खुशनवीसी—स्त्री०[फा०] सुन्दर अक्षर लिखने की कला, गुण या भाव।

खुशनसीब—वि० [फा०] [भाव० खुशनसीबी] जिसका नसीब अर्थात् भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

खुशनसीबी—स्त्री० [फा०] खुशनसीब होने को अवस्था या भाव। सौभाग्य।

खुशनुमा—वि० [फा०] जो देखने में बहुत अच्छा हो। नयनाभिराम। सुन्दर।

खुशबयान—वि० [फा०] [भाव० खुशबयानी] अच्छे ढंग से किसी घटना, बात आदि का वर्णन करनेवाला।

खुशबू—स्त्री०[फा०] १. अच्छी गंध। सुगंध। २. सुगंध देनेवाला पदार्थ। सुगंधि।

खुशबूदार—वि० [फा०] जिसमें से खुशबू आती या निकलती हो। सुगंधित।

खुश-मिजाज—वि० [फा०] १. अच्छे मिजाज या स्वभाववाला। २. सदा हँसता रहनेवाला। प्रसन्न-चित्त। हँसमुख।

खुशरंग—वि० [फा०] अच्छे या बढ़िया रंगवाला।

पुं० अच्छा और बढ़िया रंग।

खुशहाल—वि० [फा०] [भाव० खुशहाली] घर-गृहस्थी, रहन-सहन आदि के विचार से अच्छी स्थिति में और सुखी।

खुशहाली—स्त्री० [फा०] खुशहाल होने की अवस्था या भाव।

खुशाब—पुं० [फा०] धान के खेत में उगी हुई घास आदि निराने का एक कश्मीरी ढंग।

खुशामद--स्त्री० [फा०] अपना काम निकालने अथवा यों ही किसी को प्रसन्न करने के लिए किसी की की जानेवाली अतिरिक्त या झूठी प्रशंसा। चापलूसी।

खुशामदी—वि० [फा० खुशामद+ई (प्रत्य०)] १. खुशामद करनेवाला। चापलूस। २. हलुआ नामक व्यंजन। (बुंदे०)

खुशामदी टट्टू—पुं० [हिं० खुशामदी+टट्टू] वह जो सदा किसी की खुशामद में लगा रहता हो।

खुशियाली†—स्त्री० [फा० खुशहाली] १. प्रसन्न तथा सुखी होने की अवस्था। २. कुशलक्षेम।

खुशी—स्त्री० [फा०] १. मन में होनेवाली सुखद अनुभूति। प्रसन्नता। २. ठगों की भाषा में उनका कुल्हाड़ा और झंडा जो उनके गिरोह के आगे चलता था।

खुश्क—वि० [सं० शुष्क से फा० खुश्क] १. (पदार्थ) जिसमें से जल का अंश सूखकर बिलकुल निकल गया हो। सूखा। जैसे—खुश्क जमीन, खुश्क जलवायु। २. जो चिकना न हो अथवा जिसमें चिकनाहट न लगी हो। जैसे—खुश्क रोटी। ३. (वेतन) जो केवल रुपयों के रूप में मिलता हो और जिसके साथ भोजन आदि न मिलता हो। ४. (व्यक्ति) जिसके हृदय में कोमलता, रसिकता आदि का अभाव हो। रूखे स्वभाववाला।

खुश्क-साली—स्त्री० [फा०] ऐसी स्थिति जिसमें ठीक ऋतु में या समय पर पानी बिलकुल न बरसा हो। अनावृष्टि का वर्ष। सूखा।

खुश्का—पुं० [फा० खुश्क से] पानी में उबालकर पकाया हुआ चावल जिसमें घी आदि का अंश न हो। भात।

खुश्की—स्त्री० [फा०] १. खुश्क या सूखे होने की अवस्था या भाव। सूखापन। शुष्कता। २. नीरसता। ३. वृष्टि का अभांव। अवर्षा। सूखा। ४. ऐसी जमीन जो जल से परे या दूर हो। स्थल। ५. पूरी, रोटी आदि बेलने के समय उसकी लोई में लगाया जानेवाला सूखा आटा। पलेथन। ६. शरीर के अन्दर या बाहर की वह स्थिति जिसमें तरी या स्निग्धता बिलकुल न रह गई हो।

खुसरा—पुं०=खुसिया।

पुं० [पं०] नपुंसक। हिजड़ा।

खुसाल—वि० [फा० खुशहाल] प्रसन्न। आनंदित।

क्रि० वि० खुशी से। प्रसन्नतापूर्वक।

खुसियाँ—पुं० [अ० खुसियः] अंडकोश। फोता।

खुसिया-बरदार—वि० [अ०+फा०] [भाव० खुसिया-बरदारी] किसी को प्रसन्न करने के लिए उसकी छोटी-मोटी सभी प्रकार की सेवाएँ करनेवाला।

खुसिल्लिया†—स्त्री०=खुशियाली।

खुसुरफुसुर—स्त्री० [अनु०] १. कान के पास मुँह ले जाकर बहुत धीमी आवाज में की जानेवाली बातें। कानाफूसी। २. इस प्रकार दो पक्षों में होनेवाली बातचीत।

क्रि० वि० उक्त प्रकार की बहुत धीमी आवाज से।

खुसूसन्—क्रि० वि० [अ०] खास तौर पर। विशेष रूप से। विशेषतः।

खुसूसियत—स्त्री० [अ०] खास खूबी, गुण या विशेषता।

खुस्याल†—वि० क्रि०, वि० दे० 'खुसाल'।

खुही—स्त्री० [सं० खोलक] धूप, सरदी आदि से शरीर को बचाने के लिए सिर तथा शरीर पर विशेष ढंग से लपेटी हुई चादर। घुग्घी।

खूँ—पुं० [फा०] खून। रक्त।

खूँखार—वि० [फा० खूंख्वार] [भाव० खूँखारी] १. खून-पीने या पान करनेवाला। हिंसक। २. बहुत बड़ा क्रूर या निर्दय।

खूँट—पुं० [सं० खंड] १. कपड़े आदि का छोर या सिरा। २. किसी ओर का भाग या सिरा। प्रांत। ३. ओर। तरफ। दिशा। ४. खंड। भाग। ५. भारी, चौकोर या गोल पत्थर जो मकान की मजबूती के लिए कोनों पर लगाया जाता है। ६. देवी-देवताओं को चढ़ाने के लिए बनाई हुई छोटी पूरी। ७. लकड़ी पर लगनेवाला महसूल।

पुं० [देश०] १. घी आदि तौलने की आठ सेर की एक तौल। २: कान में पहनने का गहना।

स्त्री० [हिं० खोट] कान की मैल।

स्त्री० [हिं० खुटना=समाप्त होना] कोई ऐसी कमी या त्रुटि जिसकी पूर्ति करना आवश्यक हो।

खूँटना--स० [सं० खुंड=तोड़ना] १. अलग करने के लिए तोड़ना। खोंटना। जैसे—फूल या मेंहदी खूँटना। २. दबी हुई चीज या बात ऊपर या सामने लाने के लिए प्रयत्न करना। ३. चिढ़ाने या तंग करने के लिए छेड़-छाड़ करना। उदा०—उनको अधिक खूँटा जाता था।—वृंदावनलाल।

अ० [सं०] खतम या समाप्त होना। खुटना। उदा०—खरोई खिसाने खैंचि बसन न खूँटो है।--केशव।

खूँटा—पुं० [सं० क्षोड़] [स्त्री० अल्पा० खूँटी] १. पत्थर, लकड़ी, लोहे आदि का वह टुकड़ा जो जमीन में खड़ा गाड़ा गया हो और जिसमें गाय, भैंस अथवा खेमों, नावों आदि की रस्सी बाँधी जाती हो।

मुहा०—खूँटा गाड़ना=(क) केंद्र निश्चित या निर्धारित करना। (ख) सीमा या हद बाँधना।

२. रहस्य सम्प्रदाय में मन, जिससे वृत्तियाँ बँधी रहती हैं।

खूँटी—स्त्री० [हिं० खूँटा का स्त्री० अल्पा०] १. जमीन आदि में गाड़ा जानेवाला छोटा खूँटा। जैसे—खेमे की खूँटी, खड़ाऊँ की खूँटी। २. खेतों में खूँटों की भाँति निकले हुए (फसल के) वे डंठल जो फसल काट लेने पर बचे रहते हैं। ३. दीवार में कोई चीज टाँगने, बाँधने, लटकाने आदि के लिए गाड़ी जानेवाली कील आदि। ४. दाढ़ी पर के बालों के वे छोटे छोटे अंश या अंकुर जो उस्तरे से दाढ़ी बनाने पर भी बचे रहते हैं।

मुहा०—खूँटी निकालना वा लेना=इस प्रकार मूँड़ना कि बाल त्वचा के बाहर निकला हुआ न रह जाय।

५. नील की फसल एक बार कट जाने पर उसी जगह आप से आप उगनेवाली उसकी दूसरी फसल। दोरेजी। ६. किसी चीज के विस्तार का अंतिम अंश या भाग। सीमा। हद।

खूँटी उखाड़—पुं० [हिं० खूँटी+उखाड़ना] घोड़े की एक भौंरी। (कहते

हैं कि जिस घोड़े के शरीर पर यह भौंरी होती है, वह खूँटे से बँधे रहने पर बहुत उपद्रव करता है।)

खूँटीगाड़—पुं० [हिं० खूँटी+गाड़ना] घोड़े की एक भौंरी। (कहते हैं कि जिस घोड़े के शरीर पर यह भौंरी होती है, वह सदा खूँटे से बँधा रहना ही पसंद करता है।)

खूँड़ा—पुं० [सं० क्षोड़=खूँटा] जुलाहों का लोहे का वह पतला छड़ जिसमें वे नारा लगा कर ताना तानते हैं।

†वि० दे० 'खोंड़ा'।

खूँड़ी—स्त्री० [हिं० खूँड़ा] वह पतली लकड़ी जिसकी सहायता से जुलाहे ताना कसते हैं।

खूँद—स्त्री० [हिं० खूँदना] खड़े हुए घोड़े के खूँदने अर्थात् जमीन पर बार बार पैर पटकने की क्रिया या भाव।

खूँदना—अ० [सं० खंडन=तोड़ना] [भाव० खूँद] १. चंचल या तेज घोड़ों का खड़े रहने की दशा में पैर उठा-उठाकर जमीन पर पटकना। २. जमीन पर पैर इस प्रकार पटकना कि उसका कुछ अंश खुद या कट जाय। उदा०—आजु नराएन फिर जग खूँदा।—जायसी। ३. पैरों से कुचलना या रौंदना। ४. अव्यवस्थित या तितर-बितर करना।

†अ०=कूदना। उदा०—चढ़ै तो जाइ बारवह खूँदी।—जायसी।

खूँभी†—स्त्री०=खुत्थी।

खूँ-रेजी—स्त्री० [फा०] रक्तपात (दे०)।

खू—स्त्री० [फा०] १. आदत। २. स्वभाव।

खूखी—स्त्री० [देश०] गेरुई नाम का छोटा कीड़ा जो रबी की फसल को नुकसान पहुँचाता है। कूकी।

खूखू†—पुं० [फा० खूक] सूअर।

खूगीर—पुं० [फा०] १. घोड़े की जीन के नीचे बिछाया जानेवाला ऊनी कपड़ा। नमदा। २. चारजामा। जीन। ३. रद्दी या व्यर्थ की चीजें या सामान।

मुहा०—**खूगीर की भरती**=अनावश्यक और व्यर्थ की चीजों या व्यक्तियों का वर्ग या समूह।

खूच—स्त्री० [देश०] जल-डमरू मध्य। (लश०)

खूझा—पुं० [सं० गुह्य, प्रा० गुज्झ] १. किसी फल, तरकारी आदि का वह रेशेदार अंश जो खाये जाने के योग्य न समझकर फेंक दिया जाता है। २. सूत, रेशम आदि के तंतुओं या धागों का उलझा हुआ पिंड जो जल्दी काम में न आ सकता हो।

खूटना†—अ० [सं० खुंडन] १. अवरुद्ध होना। रुकना २. बंद होना। ३. समाप्त होना। न रह जाना।

स० १. रोकना या रोक-टोक करना। २. बंद करना। ३. अंत या समाप्ति करना। ४. छेड़ना।

खूटा—वि० [हिं० खोट] १. जिसमें किसी प्रकार की न्यूनता या कमी हो। २. दे० 'खोटा'।

खूद†—पुं० [सं० क्षुद्र] वह रद्दी अथवा बेकार अंश जो किसी वस्तु को छानने अथवा साफ करने पर बच रहता है।

खूदड़ (दर)—पुं०=खूद।

खून—पुं० [फा०] १. लाल रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो मनुष्यों, पशुओं आदि के शरीर में नाड़ियों, शिराओं आदि में से होकर चक्कर लगाता रहता है। रक्त। रुधिर। लहू।

मुहा०—(आँखों में) **खून उतरना**=अत्यन्त क्रोध के कारण आँखें लाल हो जाना। **खून उबलना या खौलना**=आवेश में लानेवाला क्रोध उत्पन्न होना। **(किसी के) खून का प्यासा होना**=किसी की हत्या करने के लिए विकल होकर अवसर ढूँढ़ते रहना। **(किसी के सामने) खून खुश्क होना या सूखना**=किसी से बहुत अधिक डर लगना। **(किसी का) खून पीना**=किसी को बहुत अधिक तंग या परेशान करना। बहुत दुःखी करना या सताना। **(किसी का) खून बहाना**=किसी का वध या हत्या करना। **(अपना) खून बहाना**=किसी के लिए प्राण दे देना या देने पर उतारू होना। **खून बिगड़ना**=रक्त का ऐसा विकार होना कि किसी प्रकार का त्वचा संबंधी रोग हो जाय। **खून सफेद हो जाना**=मनुष्यत्व, सौजन्य, स्नेह आदि से बिलकुल रहित हो जाना।

पद—**खून का जोश**=रक्त संबंध के कारण होनेवाला मानसिक आवेग। जैसे—लड़के के लिए माता-पिता में या भाई के लिए भाई में होता है। २. किसी व्यक्ति की इस प्रकार की जानेवाली हत्या कि उसका शरीर लहू-लुहान हो जाय।

मुहा०—**खून सिर पर चढ़ना या सवार होना**=किसी को मार डालने अथवा कोई अनिष्ट या भीषण कार्य करने पर उतारू होना।

पद—**खून खराबा, खून खराबी**=मार-काट। रक्तपात।

खून-खराबा—पुं० [हिं० खून+खराबी] १. लकड़ियों आदि पर की जानेवाली एक प्रकार की वार्निश। २. दे० 'खून-खराबी'।

खून-खराबी—स्त्री० [हिं० खून+खराबी] ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें शरीर से खून बहने लगे। मार-काट।

खूनी—वि० [फा०] १. खून संबंधी। खून का। जैसे—खूनी बवासीर। २. जिसमें से खून झलकता या टपकता हो। खून से भरा हुआ। जैसे—खूनी आँखें। ३. खून के रंग जैसा गहरा लाल। जैसे—खूनी रंग। ४. (व्यक्ति) जिसने किसी का खून किया हो। हत्यारा। ५. (व्यक्ति) जो हरदम खून-खराबा या मार-काट करने के लिए तैयार रहता हो। बहुत बड़ा उपद्रवी और दुष्ट। ६. घातक। मारक। जैसे—खूनी वार।

पुं० खून की तरह का गहरा लाल रंग।

खूब—वि० [फा०] सब प्रकार से अच्छा और उत्तम। बढ़िया।

अ०य० अच्छी तरह से। भली भाँति। जैसे—खूब बकना, खूब मारना।

खूब कलाँ—पुं० [फा०] फारस देश की एक प्रकार की घास जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

खूबड़खाबड़—वि०=ऊबड़-खाबड़।

खूबसूरत—वि० [फा०] [भाव० खूबसूरती] जिसकी सूरत अर्थात् आकृति अच्छी हो। जो देखने में बहुत भला लगता हो। सुन्दर।

खूबसूरती—स्त्री० [फा०] खूबसूरत होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। सौन्दर्य।

खूबानी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बढ़िया फल। जरदालू।

खूबी—स्त्री० [फा०] १. खूब होने की अवस्था या भाव। अच्छाई। अच्छापन। भलाई। २. गुण। विशेषता।

खूरन—स्त्री० [सं० क्षुर हिं० खुर] हाथी के पैरों के नाखूनों में होनेवाला एक रोग।

खूसट—पुं० [सं० कौशिक] उल्लू।

वि० १. बहुत बड़ा मूर्ख। २. जो रसिक न हो। शुष्कहृदय।

खूसर—वि०=खूसट।

खृष्टीय—वि० दे० 'मसीही'।

खेई—स्त्री० [देश०] १. झड़बैरी की सूखी झाड़ी। २. झाड़-झंखाड़।

खेऊ—पुं० [देश०] एक प्रकार की जंगली पेड़।

खेखसा—पुं० [देश०] परवल की जाति का एक फल जिसकी तरकारी बनती है।

खेचर—वि० [सं० खे√चर् (गति)+ट, अलुक्-समास] आकाश में चलने या उड़नेवाला। आकाशचारी।

पुं० १. सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह और नक्षत्र जो आकाश में चलते रहते हैं। २. देवता। ३. वायु। हवा। ४. आकाशयान। विमान। ५. चिड़िया। पक्षी। ६. बादल। मेघ। ७. भूत-प्रेत, राक्षस, विद्याधर, वेताल आदि देव-योनियाँ। ८. शिव। ९. पारा। १०. कसीस।

खेचरान्न—पुं० [सं० खेचर-अन्न, कर्म० स०] खिचड़ी।

खेचरी—स्त्री० [सं० खेचर+ङीप्] १. आकाश में उड़ने की शक्ति जो एक सिद्धि मानी जाती है। २. हठयोग की एक मुद्रा जिसमें जबान उलट कर तालू से और दृष्टि दोनों भौहों के बीच ललाट पर लगाई जाती है। इसे प्रतीकात्मक पद्धति में 'गोमांस भक्षण' भी कहते हैं। ३. तंत्र में उँगलियों की एक मुद्रा।

खेचरी गुटिका—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] तंत्र के अनुसार एक प्रकार की गोली जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि इसे मुँह में रखने पर आदमी आकाश में उड़ सकता है।

खेचरी मुद्रा—स्त्री० [सं० व्यस्तपद] १. योग साधन की एक मुद्रा जिसके साधन से मनुष्य को कोई रोग नहीं होता। २. एक प्रकार की मुद्रा जिसमें दोनों हाथों को एक दूसरे पर लपेट लेते हैं। (तंत्र)

खेजड़ी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

खेट—पुं० [सं०√खिट् (डरना)+अच्] १. किसानों की बस्ती। २. छोटा गाँव। ३. घास। ४. तिनका। तृण। ५. घोड़ा। ६. ढाल। ७. छड़ी। लाठी। ८. शरीर की खाल या चमड़ा। ९. कफ। १०. एक प्रकार का अस्त्र। ११. आखेट। शिकार।

पुं० [खे√अट् (गति)+अच्, पररूप] ग्रह, नक्षत्र आदि।

खेटक—पुं० [सं० खेट्+कन्] १. किसानों की बस्ती। २. छोटा गाँव। ३. ढाल। ४. बलदेव जी की गदा का नाम। ५. आखेट। शिकार।

खेटकी (किन्)—पुं० [सं० खेटक+इनि) १. वह ब्राह्मण जो भविष्य संबंधी बातें बतलाता हो। भड्डर। २. शिकारी। ३. वधिक।

खेटी (टिन्)—वि० [सं०√खिट् +णिनि] १. गाँव में रहनेवाला (व्यक्ति)। २. कामुक।

खेड़—पुं०=खेट (गाँव)।

खेड़ना—स० [सं० खेटन] १. चलाना। उदा०—खेँति लागै त्रिभुवन पति खेड़ै।—प्रिथीराज। २. 'खदेड़ना'।

खेड़ा—पुं० [सं० खेट] १. किसानों की बस्ती। छोटा गाँव। २. कच्चा मकान।

पद—**खेड़े की दूब**=तुच्छ या रद्दी वस्तु।

पुं० [देश०] कबूतरों, चिड़ियों आदि को खिलाया जानेवाला रद्दी अन्न।

खेड़ापति—पुं० [हिं० खेड़ा+सं० पति] गाँव का पुरोहित या मुखिया।

खेड़ी—स्त्री० [देश०] १. वह मांसखंड जो जरायुज जीवों, (जैसे—मनुष्य गाय, भैंस आदि) के नवजात शिशुओं या बच्चों की नाल के दूसरे सिरों में लगा रहता है। २. मूल धातुओं को गलाने पर उनमें से निकलनेवाली मैल। धातुमैल। (स्लैग) ३. एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

खेढ़ा—पुं० [फा० खैल, हिं० खेड़ा] समूह।

खेढ़ी—स्त्री०=खेड़ी।

खेत—पुं० [सं० क्षेत्र] १. वह भू-खंड जो फसल उपजाने के लिए जोता-बोया जाता है।

मुहा०—**खेत कमाना**=खेत में खाद आदि डालकर उसे उपजाऊ बनाना। **खेत करना**=जोतने-बोने के लिए भूमि को समतल करना।

२. खेत में खड़ी हुई फसल।

मुहा०—**खेत काटना**=खेत में उपजी हुई फसल काटना।

३. वह प्रदेश जहाँ कोई चीज उत्पन्न होती हो। जैसे—अच्छे खेत का घोड़ा। ४. युद्ध क्षेत्र। समर भूमि।

मुहा०—**खेत आना**= युद्ध में मारा जाना। **(किसी से) खेत करना**= लड़ना। युद्ध करना। उदा०—जंभुक करै केहरि सों खेतू।—कबीर। **खेत माँडना**= युद्ध का आयोजन करना। **खेत देखना**=युद्ध में जीतना। विजयी होना। **खेत रहना**=युद्ध में मारा जाना।

५. तलवार का फल। ६. रहस्य संप्रदाय में, शरीर।

खेत बँट—स्त्री० [हिं० खेत+बाँटना] खेतों के बँटवारे का वह प्रकार जिसमें हर खेत टुकड़े-टुकड़े करके बाँटा जाता है। 'चकबंद' का उलटा।

खेतिया—पुं०=खेतिहर (किसान)।

खेतिहर—पुं० [सं० क्षेत्रधर या हिं० खेती+हर] जमीन को जोत-बोकर उसमें फसल उपजानेवाला व्यक्ति। किसान। कृषक।

खेती—स्त्री० [हिं० खेत+ई० (प्रत्य०)] १. खेत को जोतने-बोने तथा फसल उपजाने की कला तथा काम। २. खेत में बोई हुई फसल।

खेती पथारी—स्त्री० दे० 'खेतीबारी'।

खेतीबारी—स्त्री० [हिं० खेती+बारी=बाग-बगीचा] खेत बोने-जोतने और उससे अन्न उपजाने का काम। कृषिकर्म।

खेती-भूमि—स्त्री० [हिं० खेती+सं० भूमि] ऐसी भूमि जिस पर खेती होती हो या हो सकती हो। (कलचरेबुल लैंड)

खेत्र—पुं०=क्षेत्र।

खेद—पुं० [सं०√खिद् (दुःखी होना)+घञ्] १. किसी व्यक्ति द्वारा कोई अपेक्षित काम न करने अथवा कोई काम या बात ठीक तरह से न होने पर मन में होनेवाला दुःख। जैसे—खेद है कि बार-बार लिखने पर भी आप पत्र का उत्तर नहीं देते। (रिग्रेट) २. परिश्रम आदि के कारण होनेवाली शरीर की शिथिलता। थकावट।

खेदना—स०=खदेड़ना।

खेदा—पुं० [हिं० खेदना] १. जंगली हाथियों के झुंड पकड़ने की वह क्रिया या ढंग जिसमें वे चारों ओर से खेद या खदेड़कर लट्ठों के बनाये हुए एक घेरे के अन्दर लाकर फँसाये या बन्द किये जाते हैं। २. चीते, शेर आदि हिंसक पशुओं का शिकार करने के लिए उनको उक्त प्रकार

से खदेड़ और घेर कर किसी निश्चित स्थान पर लाने की क्रिया या ढंग। ३. आखेट। शिकार। (क्व०)

खेदाई—स्त्री०[हिं० खेदना] खेदने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खेदित—वि० [सं० खेद+इतच्] १. जिसे खेद हुआ हो या पहुँचाया गया हो। खिन्न या दुःखी। २. थका हुआ। शिथिल।

खेदी (दिन्)—वि० [सं०√खिद्+णिनि] १. खेद उत्पन्न करनेवाला। २. थका हुआ। शिथिल।

खेना—स० [सं० क्षेपण, प्रा० खेवण] १. डाँड़ों की सहायता से नाव को चलाने के लिए गति देना। २. जैसे-तैसे या कष्टपूर्वक दिन बिताना। जैसे—रँड़ापा खेना।

खेप—स्त्री०[सं० क्षेप] १. बहुत सी चीजें या आदमी किसी प्रकार हर बार ढो या लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। लदान। जैसे—जब चलते चलते रस्ते में यह खेप तेरी ढल जावेगी।—नजीर। २. उतनी चीजें या उतने आदमी जितने एक बार उक्त प्रकार की ढुलाई में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जायँ। लदान। जैसे—चार खेप में सब चीजें वहाँ पहुँच जायँगी।

मुहा०—खेप भरना=कहीं ले जाने के लिए माल इकट्ठा करके लादना। **खेप हारना**=(क) उक्त प्रकार से ढोया जानेवाला माल गँवाना या नष्ट करना। (ख) एक बार किया हुआ परिश्रम व्यर्थ जाना।

स्त्री० [सं० आक्षेप] १. ऐब। दोष। २. खोटा सिक्का।

खेपड़ी—स्त्री० [सं० क्षेपणी] नाव खेने का डाँड़। (डिं०)

खेपना—स० [हिं० खेप] १. कष्टपूर्वक दिन बिताना। २. बरदाश्त करना। सहना।

खेम—पुं०=क्षेम।

खेम कल्यानी—स्त्री०=क्षेमकरी।

खेमटा—पुं० [देश०] १. संगीत में बारह मात्राओं का एक ताल। २. उक्त ताल पर गाया जानेवाला गीत। ३. उक्त ताल पर होनेवाला एक प्रकार का नाच।

खेमा—पुं०[अ० खीमः] १. मोटे कपड़े का बना हुआ वह तंबू जो बाँसों आदि की सहायता से जमीन पर खड़ा किया जाता है।

मुहा०—खेमा गाड़ना=अभियान, यात्रा आदि के समय खेमा खड़ा करके पड़ाव डालना।

२. इस प्रकार खड़ा करके बनाया हुआ स्थायी घर।

खेय—वि० [सं० खन् (खोदना)+क्यप्, इत्व] जो खोदा जा सके। पुं० १. खाई। २. पुल।

खेर मुतिया—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा शिकारी पक्षी।

खेरवा—पुं०[हिं० खेना] समुद्री मल्लाह।

खेरा—पुं०=खेड़ा (गाँव)।

खेरापति—पुं०=खेड़ापति (गाँव का मुखिया)।

खेरी—स्त्री०[देश०] १. एक प्रकार की घास। २. एक प्रकार का गेहूँ। ३. एक प्रकार का जल-पक्षी।

स्त्री० दे० 'खेड़ी'।

खेरौरा—पुं०दे० 'खिरौरा'।

खेल—पुं० [सं० केलि] १. समय बिताने तथा मन बहलाने के लिए किया जानेवाला कोई काम।

विशेष—खेल कई दृष्टियों से खेले जाते हैं। कुछ मनोविनोद के लिए, जैसे—ताश या शतरंज का खेल; कुछ व्यायाम के लिए, जैसे—कबड्डी, गेंद, तैराई आदि; कुछ दूसरों का मनोविनोद करके धन उपार्जन करने के लिए, जैसे—कठपुतली या जादू का खेल; आदि आदि।

मुहा०—(किसी को) खेल खेलाना=व्यर्थ की बातों में फँसाकर तंग करना। **खेल बिगाड़ना**= (क) किसी का बना हुआ काम खराब करना। (ख) रंग-भंग करना।

२. बहुत साधारण या तुच्छ काम। ३. कोई अद्भुत या विचित्र काम। जैसे—कुदरत या भाग्य के खेल।

पुं०[?] वह छोटा कुंड जिसमें चौपाये पानी पीते हैं।

खेलक—पुं०[हिं० खेलना] खिलाड़ी।

खेलना—अ० [सं० खेलन; प्रा० खेलई; अप० खेड़ण; पं० खेड़ना; मरा० खेड़णें, उ० खेलिवा; बं० खेला] १. मन बहलाने या समय बिताने के लिए फुरती से उछलना-कूदना, दौड़ना-धूपना, हँसना-बोलना और इसी प्रकार की दूसरी हल्की शारीरिक क्रियाएँ करना। जैसे—बच्चों को खेलने के लिए भी कुछ समय मिलना चाहिए।

पद—खेलना-खाना=अच्छी तरह खाना-पीना और निश्चिन्त होकर आनन्द तथा सुख-भोग करना। जैसे—लड़कपन की उमर खेलने-खाने के लिए होती है।

२. कोई ऐसा आचरण करना जिसमें कौशल, धूर्तता, फुरती, साहस आदि की आवश्यकता हो। जैसे—किसी के साथ चालाकी खेलना। ३. किसी चीज को तुच्छ या साधारण समझकर अनुचित रूप से अथवा मर्यादा का उल्लंघन करते हुए इस प्रकार उसका उपयोग करना अथवा उसके प्रति आचरण करना कि वह दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता या हानिकारक सिद्ध हो सकता हो। खेलवाड़ या मजाक समझकर और परिणामों का ध्यान छोड़कर कोई काम करना। जैसे—आग या पानी से खेलना, जंगली जानवरों से खेलना, किसी के मनोभावों से खेलना। उदा०—स्वर्ग जो हाथों को है दूर खेलता उससे भी मन लुब्ध।—दिनकर।

मुहा०—जान या जी पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमें जान जाने की आशंका या संभावना हो। जान जोखिम का काम करना। **मुहा०—सिर पर मौत खेलना**=मृत्यु का इतना समीप होना कि जीवित बचने की बहुत ही थोड़ी संभावना रहे।

४. किसी के साथ ऐसा कौशलपूर्ण आचरण या व्यवहार करना कि वह थककर परास्त या शिथिल हो जाय। जैसे—बिल्ली का चूहे के साथ खेलना अर्थात् बार बार पंजे मारकर उसे इधर-उधर दौड़ाना और परेशान करना। ५. तृप्ति या सुख प्राप्त करने के लिए सहज और स्वाभाविक रूप से इधर-उधर संचार करना या हटते-बढ़ते रहना। क्रीड़ा करना। जैसे—उसके चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही थी। उदा०—उसके चेहरे पर लाज की लाली उसके सहज गौर वर्ण से खेलती रही।—अमृतलाल नागर। ६. किसी के साथ संभोग करना। (बाजारू)

पद—खेला-खाया (देखें)।

स० १. मन बहलाने या समय बिताने के लिए किसी खेल या खेलवाड़ में सम्मिलित होना। जैसे—कबड्डी, गेंद, ताश, या शतरंज खेलना। २. कौशल दिखाने के लिए कोई अस्त्र या शस्त्र हाथ में लेकर चालाकी

और फुर्तीसे उसका संचालन करना अथवा प्रयोग या व्यवहार दिखलाना। जैसे—तलवार, पट्टा, बनेठी या लाठी खेलना। ३. नाटक आदि में योग देते हुए अभिनय करना। जैसे—महाराज प्रताप या सत्य हरिश्चन्द्र खेलना। ४. धन लगाकर हार-जीत की बाजी में सम्मिलित होना। जैसे—जूआ या सट्टा खेलना।

विशेष—खेलने के उद्देश्य, प्रकार आदि जानने के लिए देखें 'खेल' के अन्तर्गत उसका 'विशेष'।

खेलनि—स्त्री०=खेल।

खेलनी—पुं०[सं०√खेल (खेलना)+ल्युट्+अन+ङीप] शतरंज का खिलाड़ी।

स्त्री० वे चीजें जिनसे कोई खेल खेला जाता हो।

खेलवना—पुं०[हिं० खेलना] १. पुत्र के जन्म के समय गाये जानेवाले उन गीतों की संज्ञा जिनमें शिशु के रोदन, माता, पिता और परिवार के अन्य लोगों के आनन्दमंगल और इस आनन्दमंगल के उपलक्ष्य में किये जानेवाले कार्यों का वर्णन होता है। 'सोहर' से भिन्न।

†२. सोहर।

खेलवाड़—पुं० [हिं० खेल+वाड़ (प्रत्य०)] १. केवल खेल या क्रीड़ा के रूप में बच्चों की तरह किया जानेवाला काम। २. वहुत ही तुच्छ या सामान्य काम।

खेलवाड़ी—वि०[हिं० खेल+वार (प्रत्य०)] १. प्रायः या सदा खेलवाड़ में लगा रहनेवाला। २. दे० 'खिलाड़ी'।

खेलवाना—स० [हिं० खेलना] १. किसी को खेलाने में प्रवृत्त करना। २. अपने साथ किसी को खेलने देना।

खेलवार—पुं०[हिं०खेल+वाला] १. खेलनेवाला। खेलाड़ी। २. शिकारी। उदा०—मानो खेलवार खोली सीस ताज बाज की।—तुलसी।

पुं० दे० 'खेलवाड़'।

खेला—स्त्री०[सं०√खेल्+अ-टाप्] १. खेल। २. जादू।

खेलाई—स्त्री०[हिं० खेल] १. खेलने अथवा खेलाने की क्रिया या भाव। जैसे—आज कल वहाँ शतरंज की खूब खेलाई हो रही है। २. खेलने या खेलाने के वदले में दिया जानेवाला पारिश्रमिक।

स्त्री० दे० 'खिलाई'।

खेला-खाया—वि० [हिं० खेलना+खाना] [स्त्री० खेली-खाई] जिसने किसी के साथ विलासिता या संभोग के सुख का अनुभव और ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

खेलाड़ी—वि० [हिं० खेल+वार (प्रत्य०)] १. प्रायः या बराबर खेलता रहनेवाला। खेलवाड़ी। जैसे—खेलाड़ी लड़का। २. दुश्चरित्रा या पुंश्चली (स्त्री)।

पुं० १. खेल में किसी पक्ष से सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के खेल-तमाशे करने या दिखानेवाला व्यक्ति। जैसे—महुअर या साँप का खेलाड़ी, गेंद का खेलाड़ी।

खेलाना—स० [हिं० खेलना का प्रे०] १. किसी को खेलने में प्रवृत्त करना। २. अपने साथ खेल या खेलने में सम्मिलित करना। ३. तरह-तरह की बातें करके इधर-उधर दौड़ाते रहना अथवा किसी काम या बात की झूठी आशा में फँसाये रखना। ४. किसी को त्रस्त, दुःखी या परास्त करने के लिए उसके साथ ऐसा आचरण या व्यवहार करना कि वह बिलकुल विवश और शिथिल हो जाय। जैसे—बिल्ली का चूहे को खेलाना।

मुहा०—**खेला-खेलाकर मारना**=दौड़ा-दौड़ाकर बहुत तंग, दुःखी या परेशान करना। उदा०—हतिहौं तोहिं खेलाई खेलाई।—तुलसी।

खेलार—पुं०=खेलवार (खिलाड़ी)।

खेलि—स्त्री०[सं० खे√अल्(गति)+इन्] खेल। क्रीड़ा।

पुं० १. पशु-पक्षी आदि जीव-जन्तु। २. सूर्य। ३. तीर। वाण। ४. गीत।

खेलुआ—पुं०[हिं० खिलना या खिलाना] चमड़ा रंगनेवालों का एक औजार जो थाली की तरह का होता है।

खेलौना—पुं०=खिलौना।

खव—पुं०[देश०] एक प्रकार की घास।

खेवइया—पुं० दे० 'खेवैया'।

खेवक—वि० [हिं० खेना+क (प्रत्य०)] खेनेवाला। उदा०—जेहि रे नाव करिया औ खेवक बेग पाव सो तीर।—जायसी।

पुं० केवट। मल्लाह।

खेवट—पुं०[हिं० खेत+वट (प्रत्य०)] पटवारियों या लेखपालों का वह लेखा जिसमें यह लिखा रहता है कि किस खेत का कौन-कौन मालिक या पट्टीदार है, उसे कौन जोतता-बोता है और मालगुजारी कितनी है।

पुं०—[सं० केवट] मल्लाह। माँझी।

खेवटदार—पुं०[हिं०+फा०] खेत में का पट्टीदार या हिस्सेदार।

खेवटिया—पुं०=केवट (मल्लाह)।

खेवड़ा—पुं०=खेवरा।

खेवड़ा—पुं०[सं० क्षपणक, प्रा० खवणअ, हिं० खवड़ा] १. बौद्ध भिक्षु। २. एक प्रकार के तांत्रिक साधु।

खेवणी—स्त्री०[सं० क्षेपणी] नाव का डाँड़। (डिं०)

खेवनहार—वि० [हिं० खेना+हार(प्रत्य०)] १. नाव खेनेवाला। २. खेकर या और किसी प्रकार संकट आदि से पार लगानेवाला।

पुं० केवट। मल्लाह।

खेवना—स०=खेना।

खेवनाव—पुं०[देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

खेवरना—स०[हिं० खौर] १. खौर अर्थात् चंदन का टीका लगाना। २. स्त्रियों का चंदन, केसर आदि से मुँह चित्रित करना।

खेवरा—पुं० [सं० क्षपणक प्रा० खवड़ा] क्षपणक जैन साधु।

पुं० दे० 'खेवड़ा'।

खेवरिया—वि० [हिं० खेना] खेनेवाला। खेवक।

खेवरियाना—स० [देश०] एकत्र या जमा करना।

खेवा—पुं०[हिं० खेना] १. लदी हुई नाव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर खेकर ले जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. उक्त के आधार पर ढो अथवा लादकर कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। खेप। ३. उतनी सामग्री जितनी एक बार में ढोकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाई जाती हो। ४. कोई काम या उसका कोई अंश एक बार में पूरा करने का अवकाश या समय। जैसे—इस खेवे में सारा झगड़ा निपट जायगा। ५. किसी परम्परागत कार्य के विचार से उसके पूर्वकालीन अथवा उत्तरकालीन विभागों में से कोई एक विभाग। जैसे—पिछले खेवे के शृंगारी कवियों ने तो हद कर दी थी।

पुं० नाव का डाँड़। उदा०—चलै उताइल जिन्ह कर खेवा।—जायसी।

खेवाई—स्त्री०[हिं० खेना] १. नाव खेने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. वह रस्सी जिसमें डाँड़ नाव से बँधा रहता है।

खेवैया—पुं० [हिं० खेना] १. नाव खेकर पार ले जानेवाला व्यक्ति। केवट। मल्लाह। २. किसी प्रकार के संकट से पार लगानेवाला व्यक्ति। जैसे—डगमग डगमग डोले नैया, पार करो तो जानूँ खैवेया।—गीत।

खेस—पुं० [फा० खिस] करघे पर बुना हुआ एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो चारपाई आदि पर विछाया अथवा जाड़े में ओढ़ा जाता है।

खेसर—पुं० [सं० खे√सृ (गति)+ट अलुक् स०] खच्चर।

खेसारी—स्त्री० [सं० कृसर या खंजकारि] एक प्रकार का कदन्न। लतरी। दुबिया मटर।

खेह—स्त्री० [सं० क्षार, पं० खेह] १. धूल-मिट्टी। उदा०—सँतब खेंह उड़ावन झोली।—जायसी।

मुहा० खेह खाना=(क) व्यर्थ समय खोना। (ख) इधर-उधर की ठोकरें खाना। कष्ट भोगना।

२. भस्म। राख।

खेहँति*—स्त्री० दे० 'खेह'।

खेहर—स्त्री०=खेवह।

खेहा—पुं० [?] वटेर की तरह का एक पक्षी।

खैंग—पुं० [फा० खिंग] घोड़ा। (डिं०)

खैंचना—स०=खींचना।

खैंचनी†—स्त्री० [हिं० खींचना] लकड़ी की वह तख्ती जिस पर तेल लगाकर सिकली किये हुए अस्त्र आदि साफ किये जाते हैं।

खैंचा-खैंची—स्त्री०=खींचतान।

खैंचातान—स्त्री०=खींचतान।

खैंचातानी—स्त्री०=खींचतान।

खैकारा—वि० [सं० क्षयकारी] नष्ट या बरबाद करनेवाला। उदा०—अब कुछ ताको सहज सिंगारा। बरनों जग पातक खैकारा।—नंददास।

खैनी—स्त्री० [हिं० खाना] सुरती के पत्ते का चूरा जो चूना मिलाकर खाया जाता है।

खैबर—पुं० [देश०] भारत और अफगानिस्तान के बीच की एक घाटी या दर्रा।

खैमा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जल-पक्षी।

खैयाम—पुं० [अ०] १. खेमा सीनेवाला व्यक्ति। २. फारसी का एक प्रसिद्ध कवि उमर खैयाम।

खैर—पुं० [सं० खदिर] १. एक प्रकार का बबूल। कथ कीकर। सोनकीकर। २. उक्त वृक्ष की लकड़ियों के टुकड़ों को उबालकर निकाला हुआ सार पदार्थ जो पान पर लगाया जाता है। कत्था। ३. भूरे रंग का एक प्रकार का पक्षी।

स्त्री० [फ़ा० खैर] कुशल। क्षेम।

अव्य० [फ़ा०] १. ऐसा ही सही। अस्तु। अच्छा। २. कोई चिन्ता नहीं। देखा जायगा। (उपेक्षा सूचक)

खैर-आफियत—स्त्री० [फ़ा०] कुशल-मंगल। कुशल-क्षेम।

खैरखाह—वि० [फ़ा०] [भाव० खैरखाही] भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

खैरखाही—स्त्री० [फ़ा०] शुभचिंतन। शुभकामना।

खैरबाद—पद [फ़ा०] किसी से विछुड़ते समय कहा जानेवाला पद जिसका अर्थ है—कुशलपूर्वक रहो।

खैर भैर—पुं० [उत्पत्ति द] १. हल्ला। २. चहल-पहल। रौनक। उदा०—खैर भैर चहुँ ओर मच्यो अति आनंद पूरन समाई।—रघुराज।

खैरवाल—पुं० [देश०] कोलियार का वृक्ष।

खैरसल्ला—स्त्री० [अ० खैर+सलाह] कुशल-क्षेम। कुशल-मंगल।

खैरसार—पुं० [सं० खदिर-सार] कत्था। खैर।

खैरा—वि० [हिं० खैर] खैर या कत्थे के रंग का। कत्थई।

पुं० १. उक्त प्रकार का रंग। २. कत्थई रंग के खुरोंवाला बैल। ३. खैरे रंग का कोई पक्षी या पशु। ४. धान की फसल का एक रोग।

पुं० [देश०] १. तबला बजाने में एक ताले (ताल) की दून। २. एक प्रकार की मछली।

खैरात—स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] १. दरिद्रों, भिखमंगों आदि को दान रूप में दिया जानेवाला धन या पदार्थ। २. दान।

खैरात खाना—पुं० [अ०+फा०] वह स्थान जहाँ से लोगों को खैरात मिलती हो अथवा मुफ्त में सबको भोजन-वस्त्र आदि बाँटे जाते हों।

या होनेवाला। जैसे—खैराती दवाखाना।

खैराती—वि० [फा०] खैरात के रूप में अथवा खैरात के धन से चलने

खैराद—पुं०=खराद।

खैरियत—स्त्री० [फा०] १. कुशल-क्षेम। राजी-खुशी। २. कल्याण। भलाई।

खैलर—स्त्री० [सं० क्ष्वेल] मथानी।

खैला—पुं० [सं० क्ष्वेड] जवान बछड़ा जिसे अभी हल आदि में जोता न गया हो।

स्त्री० [फा० खैलः] फूहड़ स्त्री।

खोंइचा—पुं० [हिं० खूंट] १. धोती या साड़ी का अंचल। किनारा।

मुहा०—खोंइचा देना या भरना=शकुन के रूप में किसी स्त्री के आँचल में चावल, गुड़ आदि देना।

२. वह धन जो लड़की को विदाई के समय माँ-बाप देते हैं।

खोंखना—अ० [खों खों से अनु०] खाँसना।

खोंखला—वि०=खोखला।

खोंखी—स्त्री०=खाँसी (कास)।

खोंखों—पुं० [अनु०] खाँसने का शब्द।

खोंगा—पुं० [देश०] रुकावट। बाधा।

पुं०=खोंगाह।

खोंगाह—पुं० [सं०] सफेद और भूरे रंग का घोड़ा।

खोंगी—स्त्री० [हिं० खोंसना का देश०] १. खोंसी हुई वस्तु। २. लगे हुए पानों का बँधा हुआ चौघड़ा।

खोंच—स्त्री० [सं० कुंच] १. किसी नुकीली चीज़ से कपड़े का थोड़ा-सा फटा हुआ अंश। २. दे० 'खरोंच'।

स्त्री० [देश०] झोली। उदा०—चातिक चित्त कृपा घनानंद चोंच की खोंच सु क्यों कीर धार्‌यो।—घनानंद।

†स्त्री० १. मुट्ठी। २. मुट्ठी भर चीज।

†पुं० [सं० क्रौंच] एक प्रकार का बगला।

खोंचन†—स्त्री० [सं० कुंचन] १. खोंचने अर्थात् गड़ाने या चुभाने की क्रिया या भाव। २. गड़ने या चुभनेवाली चीज ३. खटकने या चुभनेवाली बात। तीखी बात।उदा०—धिक वै मातु पिता धिक भ्राता देत रहत यों ही खोंचन।—सूर।

खोंचा—पुं० [हिं० खोंचन] १. वह बाँस जिसपर पक्षियों को फँसाने के लिए बहेलिये लासा लगाते हैं। २. वह लकड़ी जिससे वृक्षों के फल तोड़े जाते हैं। लग्घी। ३. दे० 'खोंच'। ४. दे० 'खोंचन'।

खोंचिया†—पुं० [हिं० खोंची] १. खोंची लेनेवाला। (दे० खोंची) २. भिखमंगा। भिक्षुक।

पुं० [हिं० खोंचा] १. खोंचा लगाकर फल तोड़नेवाला। २. खोंचा लगाकर चिड़ियाँ फँसानेवाला, बहेलिया।

खोंची—स्त्री० [हिं० खोंचा] १. सेवकों अथवा भिखारियों को दिया जानेवाला अन्न। २. जमीन या मकान का किसी ओर निकला या बढ़ा हुआ कुछ अंश या भाग।

खोंट—स्त्री० [हिं० खोंटना] खोंटने का काम।

पुं० वह जो खोंटा गया हो।

पुं०=खरोंट।

खोंटना—स० [सं० खड़] १. पौधों आदि का ऊपरी भाग चुटकी से दबाकर तोड़ना। २. टुकड़े-टुकड़े करना।

खोंटा—वि०=खोटा।

खोंड़र—पुं० [सं० कोटर] पेड़ का भीतरी खोखला भाग, जिसमें पशु-पक्षी अपने घर या घोंसले बनाते हैं।

खोंड़हा—वि०=खोंड़ा।

खोंड़ा—वि० [सं० खंड से] जिसका कोई अंग टूटा हुआ हो अथवा न हो।

पुं० [स्त्री० अल्पा० खोंडिया] अन्न रखने का बड़ा बरतन। कोठिला। (बुन्देल०) उदा०—अब की साल खोंडिया और बंड़े भर दूंगा अन्न से—। वृन्दावनलाल वर्मा।

खोंतल†—पुं०=खोता (चिड़ियों का घोंसला)।

खोंता—पुं०=खोता (घोंसला)।

खोंथा—पुं०=खोता (घोंसला)।

खोंप(न)—स्त्री० [हिं० खोंपना] १. खोंपने या चुभने के कारण फटा हुआ अंश। चीर। दरार। २. सिलाई में दूर-दूर पर लगे हुए टाँकें। शिलंगा। ३. दे० 'खरोंच'।

*स्त्री०=कोंपल।

खोंपना†—स० [अनु०] कोई नुकीली चीज किसी में गड़ाना या धँसाना। घोपना।

खोंपा—पुं० [हिं० खोंपना] [स्त्री० खोंपिया, खोंपी] १. हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। २. छाजन आदि का कोना। ३. भूसा रखने का छप्पर से छाया हुआ गोलाकार स्थान। ४. स्त्रियों के बालों का बँधा हुआ एक प्रकार का जूड़ा।

खोंसना—स० [सं० कोश+हिं० ना प्रत्य०; गु० खोसवूं; मरा० खोसणें; उ० खोसिबा] एक वस्तु का कुछ अंश दूसरी वस्तु में इस प्रकार डालना, रखना या लगाना कि वह उसमें अटक या फँस जाय। जैसे—(क) कमर में धोती की लाँग खोंसना। (ख) टोपी में कलगी खोंसना।

खोआ†—पुं० [सं०क्षोद, आ० ख़ोद] दूध का गाढ़ा किया हुआ वह रूप जिसमें चीनी आदि मिलाकर बरफी, पेड़े और दूसरी मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। खोया। मावा।

खोइड़ार—पुं० [हिं० खोई+आर (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ रस पेरने के बाद गन्ने की खोई जमा की जाती है।

खोइया†—पुं० [देश०] व्रज में होनेवाला एक प्रकार का नाट्य जो घर से बरात चली जाने पर वर-पक्ष की स्त्रियाँ रात के समय करती हैं। इसमें वे दूल्हा और दुलहिन बनकर विवाह का नाट्य तथा राम और कृष्ण की लीलाएँ आदि करती हैं।

स्त्री० दे० 'खोई'।

खोइलर†—स्त्री० [सं० क्ष्वेल] वह लकड़ी जिससे कोल्हू में पड़े हुए गन्ने के टुकड़े उलटते-पलटते हैं।

खोइहा†—पुं० [हिं० खोई+हा (प्रत्य०)] वह मजदूर जो गन्ने की खोई उठाकर फेंकता है।

खोई—स्त्री० [सं० क्षुद्र] १. कोल्हू में पेरे हुए गन्नों का बचा हुआ रसविहीन अंश। सीठी। २. भाड़ में भुने हुए चावल या धान। लाँई। लावा। ३. रामदाने की जाति का एक अन्न। ४. सिर पर लबादे की तरह लपेटा हुआ कंबल या चादर।

खोकंद—पुं० [फा०] तुर्किस्तान या तुर्की का एक प्रसिद्ध नगर।

खोखर†—वि०=खोखला।

पुं० [?] सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का राग।

खोखरा—पुं० [हिं० खुक्ख या खोखला] टूटा हुआ जहाज। (लश०)

वि०=खोखला।

खोखल†—वि०=खोखला।

खोखला—वि० [हिं० खुक्ख+ला, गु० खोख, मरा० खोंक] १. ऐसी वस्तु जिसका भीतरी अंश या भाग निकल गया हो या न रह गया हो। जैसे— खोखला पेड़। २. जिसमें तत्त्व या सार न हो। थोथा। निस्सार।

पुं० १. खाली और पोली जगह। २. बड़ा छेद। विवर।

खोखा—पुं० [बँ० खोका] [स्त्री० खोखी] बालक। लड़का।

पुं० [हिं० खोखला] १. ऐसी हुंडी जिसका रुपया चुकता हो चुका हो। २. वह कागज जिस पर हुंडी लिखी जाती है।

खोगीर—पुं०=खूगीर।

खोचकिल†—पुं० [देश०] चिड़ियों का घोंसला।

खोज—स्त्री० [हिं० खोजना] १. किसी खोई या छिपी हुई वस्तु को ढूँढ़ने का काम। २. कोई नई बात, तथ्य आदि का पता लगाने का काम। शोध। ३.किसी व्यक्ति या पशु के चलने से ज़मीन या मिट्टी पर बननेवाला चिह्न या निशान।

मुहा०—खोज मिटाना=वे चिह्न या लक्षण नष्ट करना जिनसे किसी बात या घटना का पता चल सकता हो।

४. उक्त चिह्नों के आधार पर इस बात का पता लगाने का काम कि कोई किस ओर गया है। ५. गाड़ी के पहिये की लीक।

खोजक*—वि०=खोजी।

खोजड़ा--पुं० [हिं० खोज] १. किसी के चलने से जमीन पर बननेवाला चिह्न। २. दे० 'खोज'।

खोजना--स० [सं० खुज=चोराना] १. किसी खोई, छिपी अथवा इधर-उधर रखी हुई वस्तु के पता लगाने का प्रयत्न करना। ढूँढ़ना। २. अनुसंधान या शोध करना।

खोज-मिटा--वि० [हिं० खोज+मिटना] [स्त्री० खोजमिटी] १. जिसके ऐसे चिह्न मिट चुके हों जिनके द्वारा किसी का पता लगाया जा सकता हो। २. एक प्रकार का अभिशाप या गाली। (स्त्रियाँ)

खोजवाना--स० [हिं० खोजना] खोजने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को कुछ खोजने में प्रवृत्त करना।

खोजा--पुं० [फा० ख्वाजः] १. प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति। २. मुसलमान राजाओं के अन्तःपुरों में रहनेवाला नपुंसक सेवक। ३. नौकर। सेवक। ४. बम्बई राज्य में मुसलमानों का एक सम्प्रदाय।

खोजाना†--स०=खोजवाना।

खोजी *†--वि० [हिं० खोज+ई (प्रत्य)०] खोजनेवाला। ढूँढनेवाला। (क्व०)

पुं० वह व्यक्ति जो पैरों के चिह्न देखकर चोरों, डाकुओं, पशुओं आदि का पता लगाता हो।

खोजू--वि० पुं०=खोजी।

खोट--पुं० [सं० कूट] १. वह दूषित या निकृष्ट पदार्थ जो किसी दूसरे अच्छे पदार्थ में लोगों को ठगने के उद्देश्य से मिलाया जाय। जैसे--सुनार ने इस गहने में कुछ खोट मिलाया है। २. किसी चीज में या बात में होनेवाला ऐब या दोष। खोटापन। जैसे--तुम में यही तो खोट है कि सच बात जल्दी नहीं बताते। ३ किसी व्यक्ति अथवा कार्य के प्रति मन में होनेवाली कपट-पूर्ण या दुष्ट धारणा अथवा भाव। मन में होनेवाली बुरी भावना। जैसे--उस (व्यक्ति) में अब भी खोट है।

खोटता*--स्त्री०=खोटाई (खोटापन)।

खोटपन--पुं०=खोटापन।

खोटा--वि० [सं० कूट, प्रा० मरा० गु० कूड़; सि० कूरु; सिंह० कुलु] [स्त्री० खोटी] १. (वस्तु) जो अपने वास्तविक या शुद्ध रूप में न हो। जिसमें किसी प्रकार की मिलावट हुई हो। जैसे--खोटा सोना। २. झूठा। नकली। बनावटी। जैसे--खोटा सिक्का। ३. (व्यक्ति) जो जान-बूझकर किसी को कष्ट पहुँचाता या किसी की हानि करता हो। अथवा जिसके मन में किसी के प्रति वैर हो। जो शुद्ध हृदयवाला न हो। 'खरा' का विपर्याय, उक्त सभी अर्थों में। ४. खोट से भरा हुआ। खोट युक्त। अनुचित और बुरा। जैसे--खोटी बात।

पद--खोटा खरा=भला-बुरा। उत्तम और निकृष्ट। जैसे--किसी को खोटी-खरी बातें सुनाना= फटकारते हुए अच्छा रास्ता बतलाना।

मुहा०--खोटा खाना=(क) अनिन्दनीय या बुरे उपायों से कमाकर खाना। (ख) अनुचित और बुरा आचरण या व्यवहार करना। **(किसी के साथ) खोटी करना**= खोटापन या दुष्टता करना।

खोटाई--स्त्री० [हिं० खोटा+ई (प्रत्य०)] १. खोटे होने की अवस्था या भाव। खोटापन। २. कपट। छल। धोखेबाजी। ३. ऐब। दोष।

खोटाना--अ० दे० 'खुटना' (समाप्त होना)।

खोटापन--पुं० [हिं० खोटा+पन (प्रत्य०)] खोटे होने की अवस्था, गुण या भाव। खोटाई।

खोटि--स्त्री० [सं०√खोट् (खाना)+इन्) दुश्चरित्रा। व्यभिचारिणी।

खोड़--स्त्री० [हिं० खोट] १. किसी प्रकार का ऐब, दोष या हीनता। जैसे-कष्ट, रोग आदि। २. देवता, पितर, भूत-प्रेत आदि का कोप या बाधा। दैव कोप। ऊपरी फेर। ३. कमी। न्यूनता। उदा०--नाल्ह कहहि जिणि आवइ हो खोड़ि।--नरपति नाल्ह।

†वि० = खोंड़ा।

खोड़र(ा)--पुं० [सं० कोटर] पुराने पेड़ का खोखला भाग।

खोड़िया †--स्त्री० दे० 'खोरिया'।

खोद†--पुं० [हिं० खोदना] १. खोदने की क्रिया या भाव। २. खोद-खोदकर बातें पूछने की क्रिया या भाव। ३. जाँच-पड़ताल।

पद--खोद-विनोद।

पुं० [फा० खोद] लड़ाई के समय सिर पर पहना जानेवाला लोहे का टोप। शिरस्त्राण।

खोदई--स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़।

खोदना-स० [स०क्षुद्; प्रा०खुद मरा०खोदणें; गुज० खोदवूं; उ०खोदिवा; बँ०खोदा] १. कुदाल आदि से जमीन पर आघात करके गड्ढा बनाना। जैसे--कब्र, कूआँ या नहर खोदना। २. उक्त प्रकार के आघात से कोई चीज तोड़ना। जैसे-दीवार या मकान खोदना। ३. उक्त प्रकार की क्रिया करके किसी चीज पर जमी, लगी अथवा अंदर पड़ी हुई वस्तु बाहर निकालना। जैसे-- खेत में के पौधे अथवा खान में के खनिज पदार्थ खोदना। ४. किसी वस्तु पर जमी अथवा लगी हुई मैल निकालना। जैसे--कान या दाँत खोदना। ५. धातु, पत्थर, लकड़ी आदि पर किसी औजार या उपकरण से कुछ लिखना या बेल-बूटे बनाना। जैसे--बरतनों पर नाम खोदना। ६. किसी के अंग में उँगली, छड़ी आदि गड़ाना या उससे दबाना। ७. कोई बात जानने के लिए किसी से तरह-तरह के प्रश्न करना।

मुहा०--खोद-खोदकर पूछना=हर बात पर शंका करके बार-बार कुछ और पूछना।

८. उत्तेजित करने या उसकाने का प्रयत्न करना।

खोदनी--स्त्री० [हिं० खोदना] खोदने का छोटा औजार। जैसे--कन-खोदनी, दँत-खोदनी।

खोद-बिनोद†--पुं० [हिं० खोद+बिनोद] १. बहुत छोटी-छोटी बातें तक पूछने का काम। २. छेड़-छाड़।

खोदवाना--स० [खोदना का प्रे० रूप] किसी को खोदने में प्रवृत्त करना। खोदने का काम दूसरे से कराना।

खोदाई--स्त्री० [हिं० खोदना] १. खोदने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. भूगर्भ-स्थित वस्तुओं को बाहर निकालने के लिए जमीन खोदने की क्रिया या भाव। (एक्स्केवेशन) ३. पत्थर, लकड़ी लोहे आदि पर किसी नुकीली चीज से बेल-बूटे बनाने का काम।

खोना--स० [सं० क्षेपन] १. कोई वस्तु अनजान में या भूल से कहीं इस प्रकार छोड़ या गिरा देना कि वह खोजने पर जल्दी न मिले। किसी वस्तु से वंचित होना। गँवाना। जैसे--ताली, पुस्तक या रुपये खोना। २. असावधानी, दुर्घटना, मृत्यु आदि के कारण बहुत बड़ी क्षति से

ग्रस्त होना। जैसे—आँखें खोना, जान खोना, मान खोना आदि। ३. असावधानता, प्रमाद आदि के कारण हाथ से यों ही निकल जाने देना। सदुपयोग न कर पाना। जैसे—सुयोग खोना। ४. खराब या बरबाद करना। जैसे—घर की दौलत खोना।

अ० अन्यमनस्क हो जाना। प्रकृतिस्थ न रह जाना। जैसे—हमारा प्रश्न सुनते ही वह तो खो गये।

पद—खोया-सा=(क) अन्यमनस्क, उदास या खिन्न। (ख) घबराया हुआ।

मुहा०—खोया जाना=चकपका जाना। सिटपिटा जाना। हक्का-बक्का होना।

†पुं०=दोना (पत्तों का)।

खोन्चा—पुं० [फा० ख्वान्चा] फेरी लगाकर सौदा बेचनेवालों का वह थाल जिसमें वे फल, मिठाइयाँ आदि रखते हैं।

मुहा०—खोन्चा लगाना=खोन्चे में रखकर गली-गली घूमते हुए सौदा बेचना।

खोपड़ा—पुं० [सं० खर्पर; प्रा० खप्पर; पं० खोप्पा; सिं० खोपो; गु० खोपरूँ; मरा० खोबरें] १. हड्डियों का वह ढाँचा जिसके अन्दर मस्तिष्क सुरक्षित रहता है। (स्कल्) २. मस्तिष्क। ३. सिर। ४. नारियल। ५. नारियल के अन्दर की गरी। ६. भिक्षुओं का दरियाई नारियल का बना हुआ खप्पर।

खोपड़ी—स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।

मुहा०—(किसी की) खोपड़ी खाना या चाटना=बहुत सी बातें कह या पूछकर तंग करना। दिक या परेशान करना। **खोपड़ी खुजलाना**=ऐसा अनुचित या दुष्टतापूर्ण कार्य करना, जिससे मार खाने की नौबत आवे। **(किसी की) खोपड़ी गंजी करना**=सिर पर बहुत प्रहार करना। खूब मारना। **(किसी की) खोपड़ी गढ़ना**=जबरदस्ती या चालाकी से किसी से धन वसूल करना। **खोंपड़ी चटकना**=गरमी, पीड़ा, प्यास आदि के कारण जी व्याकुल होना।

३. गोलाकार और बहुत बड़ा ऊपरी आवरण। जैसे—कछुए की खोपड़ी, नारियल की खोपड़ी।

खोपरा†—पुं०=खोपड़ा।

खोपा—पुं० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. मकान का बाहरी कोना। ३. स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकोनी बनावट। ४. गरी का गोला।

खोबा—पुं० [देश०] गच या पलस्तर पीटने की थापी।

खोभ—स्त्री० [हिं० खोभना] खोभने की क्रिया या भाव।

*पुं०=क्षोभ।

खोभना—स० [सं० क्षुभ्] किसी नरम या मुलायम वस्तु में कोई कड़ी तथा नुकीली चीज धँसाना, गड़ाना या चुभाना।

खोभरना—अ० [?] बीच में आकर आड़ा या तिरछा पड़ना।

स०=खोभना।

खोभरा*—पुं० [हिं० खुभना] १. रास्ते में पड़नेवाली वह उभरी हुई चीज जो चुभती हो या जिससे ठोकर लगती हो। उदा०—जैसे कोई पाँवनि पै जार कूँ चढ़ाई लेत ताकूँ तौ न कोऊ काँटे खोभरे को दुःख है।—सुन्दर। २. कूड़ा-करकट।

खोभराना—अ०=खुभराना।

खोभार—पुं० [?] जमीन में खोदा हुआ वह गड्ढा जिसमें कूड़ा-करकट फेंका जाता है।

खोम—पुं० [अ० कौम] १. जाति। २. झुंड। समूह।

पुं० [सं० क्षोभ] किले का बुर्ज।

खोय—स्त्री० [फा० खू] १. आदत। बान। २. प्रकृति। स्वभाव।

खोया—पुं०=खोआ।

खोर—स्त्री० [हिं० खुर] १. बस्तियों की तंग या सँकरी गली। कूचा। २. वह नाँद जिसमें चारा डालकर पशुओं को खिलाया जाता है।

स्त्री० [हिं० खोरना] नहाना। स्नान।

वि० [हिं० खोड़ा] जिसका कोई अंग टूट गया हो। उदा०—धनुष-बान सिरान केधौं गरुड़ बाहन खोर।—सूर।

वि० [फा०] एक विशेषण जो शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर खानेवाले का अर्थ देता है। जैसे—आदमखोर, नशाखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर आदि।

पुं० [देश०] बबूल की जाति का एक ऊँचा पेड़।

खोरड़ा†—वि० [?] [स्त्री० खोरड़ी] सफेद केशवाला। उदा०—अब जण होई खोरड़ी, जाए कहा करेस।—ढोला मारू।

खोरना†—अ० [सं० क्षालन] स्नान करना। नहाना।

खोरनी—स्त्री० [हिं० खोरना] वह लकड़ी जिससे भट्ठी या भाड़ में ईंधन झोंका जाता है।

खोरा—पुं० [सं० खुल्ल या खोलक, फा० आबखोरा] [स्त्री० अल्पा० खोरिया] १. छोटा कटोरा या प्याला। २. एक प्रकार का गिलास।

†वि० दे० 'खोंड़ा'।

खोराक—स्त्री०=खूराक।

खोराकी—वि० स्त्री०= खूराकी।

खोरि—स्त्री० [हिं० खुर] १. तंग या सँकरी गली। २. छोटी कोठरी। उदा०—खोरिन्ह महँ देखिअ छिटिआने।—जायसी।

स्त्री० [हिं० खोट] १. दोष के रूप में मानी जानेवाली अनुचित और लज्जाजनक बात। २. बुरा काम करने के समय होनेवाला भय या संकोच। उदा०—कत सकुचत निधरक फिरौ रति यौ खोरि तुम्हें न।—बिहारी।

खोरिया†—स्त्री० [?] वह आनन्दोत्सव जो वर पक्ष की स्त्रियाँ बरात घर से चल चुकने पर नाच-गाकर मनाती हैं।

†स्त्री० [हिं० खोरा] १. छोटी कटोरी या गिलास। २. वे बुंदे या सितारे जो स्त्रियाँ अपने मुँह पर शोभा के लिए लगाती हैं।

खोरी—स्त्री० [फा० खूट से हिं० खोर+ई प्रत्य०] खाने की क्रिया या भाव। जैसे—रिश्वतखोरी, हरामखोरी, हवाखोरी आदि।

*स्त्री०=कटोरी।

स्त्री०=खोर (सँकरी गली)।

खोल—पुं० [सं० खोलक] [स्त्री० अल्पा० खोली] १. किसी चीज का ऊपरी आवरण। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का वह ऊपरी प्राकृतिक आवरण जिसके अंदर वे रहते हैं। जैसे—घोंघे, सीपी आदि का खोल। ३. कपड़े का सिला हुआ झोले या थैले-जैसा आवरण जिसमें कोई चीज धूल, मिट्टी, मैल आदि से सुरक्षित रखने के लिए

रखी जाती है। गिलाफ। जैसे—तकिये या लिहाफ का खोल, सारंगी या सितार का खोल। ४. मोटे कपड़े की बनी हुई दोहरी चादर।

पुं० छोटे मृदंग की तरह का एक प्रकार का बाजा।

वि० [सं०√खोड् (लँगड़ाना) +अच्, ड=ल] जिसका कोई अंग टूटा-फूटा या विकृत हो। विकलांग।

पुं० शिरस्त्राण। खोद।

खोलना—स० [सं० क्षुर् (काटना या खोदना); प्रा० खुल्ल; मरा० खोलणें; सिं० खोलणु; उ० खोलिबा; बँ० खोल।] हिन्दी 'खुलना' का सकर्मक रूप जो भौतिक या मूर्त्त और अभौतिक या अमूर्त्त रूपों में नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है।

भौतिक या मूर्त्त रूपों में—१. किसी को जकड़ने या बाँधनेवाला उपकरण, चीज या तत्त्व इस प्रकार हटाना कि वह बँधा न रह जाय। बंधन से मुक्त या रहित करना। जैसे—(क) खूँटे में बँधी हुई गौ, घोड़ा या बकरी खोलना। (ख) गठरी या रस्सी की गाँठ खोलना। २. जकड़ी या लपेटी हुई चीज इस प्रकार अलग या ढीली करना कि वह निकल कर दूर हो जाय। जैसे—कमरबंद, पगड़ी या हथियार खोलना। ३. जड़ी, जमाई या बैठाई हुई चीज निकाल या हटाकर अलग या दूर करना। जैसे—(क) दरवाजे का पेच खोलना। (ख) बोतल का काग या डाट खोलना। ४. जिसका मुँह बंद किया गया हो, उसके मुँह पर का बंधन हटाकर उसमें चीजों के आने-जाने का रास्ता करना। जैसे—(क) चिट्ठी निकालने के लिए लिफाफा खोलना। (ख) रुपए निकालने या रखने के लिए तोड़ा, थैली या बटुआ खोलना। ५. जो प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से बिलकुल बंद हो, उसे आघात आदि से काट, चीर या तोड़कर खंडित करना। जैसे—(क) नश्तर से घाव या फोड़े का मुँह खोलना। (ख) पत्थर या लाठी मारकर किसी का सिर खोलना। ६. बंद किया या भेड़ा हुआ जंगला या दरवाजा इस प्रकार खींचना या ढकेलना कि बीच में आने-जाने का मार्ग हो जाय। जैसे—खिड़की या फाटक खोलना। ७. आगे, ऊपर या सामने पड़ा हुआ आवरण, ढक्कन या परदा इस उद्देश्य से हटाना कि अन्दर, उस पार या नीचे की चीजें अथवा भाग सामने आ जायँ। जैसे—(क) पेटी या संदूक खोलना। (ख) मंदिर का पट खोलना। (ग) दवा पिलाने या दाँत उखाड़ने के लिए किसी का मुँह खोलना। ८. मोड़ी, लपेटी या तह की हुई चीज के सिरे आमने-सामने की दिशाओं में इस प्रकार फैलाना कि उसका अधिकतर भाग ऊपर या सामने हो जाय। विस्तृत करना। जैसे—(क) पढ़ने के लिए अखबार या किताब खोलना। (ख) बिछाने के लिए चादर या बिस्तर खोलना। ९. टँकी या सिली हुई चीज के टाँके या सिलाई अलग करना, तोड़ना या हटाना। जैसे—(क) साड़ी पर टँकी हुई गोट या फीता खोलना। (ख) लिहाफ का अस्तर या पल्ले खोलना। १०. शरीर पर धारण की या पहनी हुई चीज उतार या निकाल कर अलग या दूर करना। जैसे—कमीज, कुरता या जूता खोलना। ११. यांत्रिक साधन से बंद होनेवाली चीज पर ऐसी क्रिया करना कि वह बंद न रह जाय। जैसे—(क) ताला या हथकड़ी खोलना। (ख) पानी निकालने के लिए टंकी की टोंटी खोलना। १२. यंत्रों आदि की मरम्मत या सफाई करने के लिए कल-पुरजे या कील-काँटे निकालकर उसके कुछ या सब अंग अलग-अलग करना या बाहर निकालना। जैसे—घड़ी या बाजा खोलना। १३. ठहराये या रोके हुए यान अथवा सवारी को उद्दिष्ट या गंतव्य स्थान की ओर ले जाने के लिए आगे बढ़ाना या चलाना। जैसे—नाव या मोटर खोलना। १४. अवरोध, बाधा या रुकावट हटाकर या उसके संबंध का कोई कृत्य अथवा घोषणा करके सार्विक उपयोग या व्यवहार के लिए सुगमता या सुभीता करना। जैसे—(क) जन-साधारण के लिए नहर, मंदिर या सड़क खोलना। (ख) चराई या शिकार के लिए जंगल खोलना। (ग) शरीर का विकृत रक्त निकालने के लिए किसी की फसद खोलना। (घ) रोजा खोलना (अर्थात् उपवास या व्रत का अंत करके खाना-पीना आरंभ करना)। १५. उद्योग, कला, व्यापार, शिक्षा आदि के संबंध का कोई नया कार्य आरंभ करना या संस्था खड़ी करना। जैसे—कारखाना, कोठी या पाठशाला खोलना। १६. नित्य नियत समय पर नैमित्तिक रूप से बंद की जानेवाली संस्था या स्थान का कार्य फिर से आरंभ करने के लिए वहाँ पहुँचना और काम शुरू करना। जैसे—ठीक समय पर दफ्तर या दूकान खोलना। १७. किसी विशिष्ट क्रिया या प्रकार से कोई कार्य आरंभ करना या चलाना। जैसे—(क) खबरें या भाषण सुनने के लिए रेडियो खोलना। (ख) लेन-देन के लिए खाता या हिसाब खोलना। १८. शरीर के कुछ विशिष्ट अंगों का कार्य आरंभ करने के लिए उन्हें उचित या सजग स्थिति में लाना। जैसे—(क) अच्छी तरह देखने या सुनने के लिए आँखें या कान खोलना। (ख) खाने के लिए मुँह या बोलने के लिए जबान खोलना।

अभौतिक या अमूर्त्त रूपों में—१. अज्ञेय, अस्पष्ट या दुर्बोध को ज्ञेय, स्पष्ट या सुबोध करना। जैसे—(क) किसी वाक्य या श्लोक का अर्थ या आशय खोलना। (ख) किसी की पोल या भेद खोलना। २. जानकारी के लिए स्पष्ट रूप से सामने रखना। परिचित या विदित कराना। जैसे—किसी के आगे अपना उद्देश्य, विचार या हृदय खोलना।

पद—जी खोलकर=(क) निष्कपट भाव या शुद्ध हृदय से। जैसे—जी खोलकर किसी से बातें करना। (ख) संकीर्णता आदि का भाव या विचार छोड़कर। जैसे—जी खोलकर खरचना, गाना या पढ़ाना।

खोलि—स्त्री० [सं०√खोल् (गतिहीनता) + इन्] तरकश। तूणीर।

खोलिया—स्त्री० [देश०] बढ़इयों का एक उपकरण जिससे वे लकड़ी पर बेल-बूटे आदि खोदते हैं।

खोली—स्त्री० [हिं० खोल का स्त्री० रूप] १. तकिये आदि का गिलाफ। २. रहने की छोटी कोठरी। (महा०)

खोवा—पुं०=खोआ।

खोसड़ा—पुं० [पं०] जूता, विशेषतः फटा-पुराना जूता।

खोसना*—स० १. दे० 'छीनना'। २. दे० 'खोंसना'।

खोह—स्त्री० [सं० गोह] १. कंदरा। गुफा। २. गहरा गड्ढा। ३. दो पहाड़ों के बीच का गड्ढा अथवा तंग रास्ता। दर्रा। ४. खाई। (पश्चिम)

पुं० दे० 'खोडर'।

खोही—स्त्री० [सं० खोलक] १. पत्तों की छतरी। २. घोघी।

खौं—स्त्री० [सं० खन्] १. खात। गड्ढा। २. वह गहरा गड्ढा, जिसमें किसान अन्न संचित करते हैं।

खौंचा—पुं० [फा० ख्वान्चा] १. खाने-पीने की चीजें रखने की लकड़ी की पेटी या संदूक। २. दे० 'खोन्चा'।

खौंट—स्त्री० [हिं० खोंटना] १. खोंटने की क्रिया। खरोंच। २. दे० 'खरोंट'।

पुं० खुरंड।

खौंडा†—पुं० [सं० खम वा खात] १. अनाज रखने का गड्ढा। २. गड्ढा।

खौंदना†—स० १. दे० 'खूंदना'। २. दे० 'खुरचना'।

खौका†—वि० [हिं० खाना] [स्त्री० खौकी] बहुत अधिक खानेवाला।

खौज—पुं० [अ०] गंभीर चिंतन। मनन।

खौड़—पुं०=खौर।

खौफ—पुं० [अ०] [वि० खौफनाक] १. दूरस्थ या संभावित भय। भीति। २. डर। भय। ३ आशंका। खटका।

खौफनाक—वि० [अ०] १ भीति उत्पन्न करनेवाला। २. डरावना। भयानक।

खौर—पुं० [सं० क्षौर] १. मस्तक पर लगाया जानेवाला चंदन का आड़ा धनुषाकार और लहरियेदार तिलक। २. पीतल का वह टुकड़ा जिससे उक्त प्रकार के तिलक में लहरिया वनाया जाता है। ३. माथे पर पहनने की स्त्रियों का एक गहना। ४. मछली फँसाने का एक प्रकार का जाल।

खौरना—स० [हिं० खौर] १. चंदन का टीका या तिलक लगाकर उस पर लहरिया बनाना। २. खौर (तिलक) लगाना।

खौरहा—वि० [हिं०खौरा+हा(प्रत्य०)][हिं०खौरही] १.जिसके सिर के वाल झड़ गये हों। २. जिसे खौरा नामक रोग हुआ हो।

खौरा—पुं० [सं० क्षौर] १. सिर के वाल झड़ने का रोग। गंज। २. कुत्ते, बिल्ली आदि को होनेवाली एक प्रकार की खुजली, जिसमें उनके शरीर के वाल झड़ जाते हैं।

वि० (पशु) जिसे उक्त रोग हुआ हो।

खौरि†—स्त्री०=खौर।

†—स्त्री०=खोरि (तंग गली)।

खौरी—स्त्री० [देश०] सुनारों की वोली में, राख।

मुहा०—**खौरी करना**=चाँदी या सोना भस्म करके उसकी राख वनाना।

†स्त्री०=खोरि।

†स्त्री०=खोपड़ी।

खौरु†—पुं० [अनु०] वैल या साँड़ के डकारने का शब्द।

खौलना—अ०[सं० क्ष्वेल] आग पर रखे हुए तरल पदार्थ का अधिक गरम होने पर उसमें उवाल आना या वुलवुले उठने लगना।

मुहा०—(**किसी का**) **मिजाज खौलना**=आवेश या क्रोध में होना। जैसे—उनकी वातें सुनते ही हमारा मिजाज खौल गया।

खौलाना—स०[हिं० खौलना] १. तरल पदार्थ को इतना अधिक गरम करना कि उसमें उवाल आने लगें। २. (अनुचित या कड़ी वात कह कर) किसी को उत्तप्त और क्रुद्ध करना।

खौहड†—वि० दे० 'खौहा'।

खौहा—वि० [हिं० खाना] १. वहुत अधिक खानेवाला। पेटू और भुक्खड़। २. दूसरों की कमाई से दिन बितानेवाला।

ख्यात—वि० [सं०√ख्या (वर्णन करना)+क्त] जिसकी जगत् या समाज में ख्याति हो। प्रसिद्ध। मशहूर।

†स्त्री० [सं० ख्याति] वह काव्य-ग्रन्थ जिसमें किसी वीर पुरुष की कृतियों का वर्णन हो।

ख्याति—स्त्री० [सं०√ख्या+क्तिन्] १. प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध या मान्य होने पर जगत् या समाज में होनेवाला नाम। शोहरत। २. अच्छा काम करने पर होनेवाली प्रसिद्धि या बड़ाई। कीर्ति। यश।

ख्यापक—वि० [सं०√ख्या+णिच्+ण्वुल्—अक] १. घोषणा करनेवाला। २. कोई वात विशेषतः अपराध या भूल स्वीकार करनेवाला।

ख्यापन—पुं० [सं०√ख्या+णिच्+ल्युट्—अन] १. घोषणा करना। २. कोई वात विशेषतः भूल या अपराध स्वीकार करना।

ख्याल†—पुं० [अ० खयाल=ध्यान] [वि० ख्याली] १. दे० 'खयाल'। २.केवल खयाल या ध्यान में आ जाने पर मनमाने ढंग से और कौतुक या परिहास के रूप में किसी को खिझाने या चिढ़ाने के लिए किया जानेवाला कोई अनुचित काम। तंग या परेशान करने के लिए किया जानेवाला मजाक। उदा०—(क) यह सुनि रुक्मिनि भई बेहाल। जानि पर्‌यौ नहिं हरि कौं ख्याल।—सूर। (ख) मोकों जनि बरजौ जुवती कोउ, देखौ हरि के ख्याल।

मुहा०—(**किसी के**) **ख्याल पड़ना**=किसी को चिढ़ाने और तंग करने के लिए उतारू होना या पीछे पड़ना। उदा०—(क) ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरै मुख लपटायो।—सूर। (ख) ये सब मेरे ख्याल परी हैं, अब हीं वातन लै निरुआरति।—सूर।

†पुं०=खेल (क्रीड़ा)।

ख्यालिया—पुं० [हिं० ख्याल (गीत)] वह गवैया जो ख्याल गाने में निपुण हो।

ख्याली—पुं० [हिं० ख्याल] १. खब्ती। झक्की। सनकी। २. खेलवाड़ी।

वि०=खयाली।

ख्रिष्टान—पुं० [हिं० ख्रीष्ट] ईसा मसीह के चलाये हुए संप्रदाय का अनुयायी। मसीही।

ख्रिष्टीय—वि० [अं० क्राइष्ट] ईसा मसीह या उनके चलाये हुए धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं० ईसा मसीह के मत का अनुयायी। ईसाई। मसीही।

ख्रीष्ट—पुं० [अं० क्राइष्ट] [वि० ख्रिष्टीय] ईसा मसीह।

ख्वाँ—वि० [फा०] १. पढ़नेवाला। २. कहने या गानेवाला (यौगिक शब्दों के अंत में) जैसे—किस्सा-ख्वाँ, गजल-ख्वाँ।

ख्वाँदा—वि० [फा० ख्वाँदः] पढ़ा-लिखा। शिक्षित।

ख्वाजा—पुं० [फा० ख्वाज़ः] १. घर का मालिक। स्वामी। २. नेता सरदार या हाकिम। ३. बहुत बड़ा त्यागी और पहुँचा हुआ फकीर। महात्मा। ४. दे० 'खोजा'।

ख्वाजासरा—पुं० दे० 'खोजा'।

ख्वान—पुं० [फा०] थाल। परात।

ख्वानपोश—पुं० [फा०] वह कपड़ा जिससे पकवान, मिठाई आदि से भरे थाल ढकते हैं।

ख्वाना†--स० [हिं० खाना का प्रे०] खिलाना। उदा०—ख्वाय विष, गृह लाय दीन्हौ तउन पाए जरन।—सूर।

ख्वान्चा--पुं० दे० 'खोन्चा'।

ख्वाब--पुं० [फा०] १. सोने की अवस्था। नींद। २. वह जो कुछ नींद में दिखाई पड़े। स्वप्न।

ख्वाबगाह--स्त्री० [फा०] सोने का कमरा या स्थान। शयनागार।

ख्वार--वि० [फा०] [भाव० ख्वारी] (व्यक्ति) जो बहुत ही बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट और तिरस्कृत हो चुका हो।

ख्वारी--स्त्री० [फा०] ख्वार होने की अवस्था या भाव। दुर्गत। दुर्दशा।

ख्वास्तगार--वि० [फा०] [भाव० ख्वास्तगारी] चाहने या इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

ख्वास्ता--वि० [फा० ख्वास्तः] चाहा हुआ। इच्छित।

ख्वाह--अव्य० [फा०] १. या। अथवा। २. या तो। चाहे।

पद--**ख्वाह-म-ख्वाह**=(क) चाहे कोई चाहे या न चाहे। जबरदस्ती। (ख) निश्चित रूप से। अवश्य।

ख्वाहाँ--वि० [फा०] १. इच्छा रखनेवाला। इच्छुक। २. चाहनेवाला। प्रेमी।

ख्वाहिश--स्त्री० [फा०] [वि० ख्वाहिशमंद] अभिलाषा। इच्छा। चाह।

ख्वाहिशमंद--वि० [फा०] ख्वाहिश रखनेवाला। आकांक्षी। इच्छुक।

ख्वैंतर†--पुं० [देश०] गोफना। ढेलवाँस। (लश०)

ख्वैना†--स० दे० 'खोना'।

ग

ग

ग--देवनागरी वर्णमाला में कवर्ग का तीसरा व्यंजन जो कंठ्य स्पर्शी, अल्प-प्राण तथा सघोष है।

प्रत्य० कुछ शब्दों के अंत में प्रत्यय रूप में लगकर यह निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) गानेवाला; जैसे—सामग। (ख) चलने या जानेवाला; जैसे—उरग, निम्नग, सर्वग आदि।

पुं० [सं०√गै (गाना)+क] १. संगीत में 'गांधार' स्वर का संक्षिप्त रूप और सूचक वर्ण। २. छंद शास्त्र में गुरु मात्रा या उससे युक्त वर्ण का सूचक वर्ण। जैसे—यह दो जगण और ग, ल (अर्थात् गुरु और लघु मात्रा) का छंद है। ३. गीत। ४. गणेश। ५. गंधर्व।

गंग--पुं० [सं० गङ्गा] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ९ मात्राएँ और अंत में दो गुरु होते हैं।

स्त्री०=गंगा (नदी)।

गंगई--स्त्री० [अनु० गें गें से] मैना की तरह की भूरे रंग की एक चिड़िया। गलगलिया। सुतभइया।

गंगका--स्त्री० [सं० गंगा+कन्-टाप्, अत्व]=गंगा।

गंगकुरिया--स्त्री० [सं० गङ्गा-कूल] एक प्रकार की हल्दी। (उड़ीसा)

गंगतिरिया--स्त्री० [हिं० गंगा+तीर] दलदलों में होनेवाला एक प्रकार का पौधा।

गंगन*--पुं०=गगन।

गंगबरार--पुं० [हिं०गंगा+फा० बरार=बाहर या ऊपर लाया हुआ] किसी नदी की धारा के पीछे हटने से निकल आनेवाली जमीन।

गँगरी--स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कपास।

गंगला--पुं० [?] १. एक प्रकार का शलजम। २. एक प्रकार का वृक्ष।

गंगशिकस्त--पुं० [हिं० गंगा+फा० शिकस्त=तोड़ा हुआ] वह भूमि जो नदी की धारा के आगे बढ़ने के कारण जल-मग्न हो गई हो। वह भूमि जिसे बरसात में नदी काट ले गई हो।

गंगांबु--पुं० [सं० गंगा-अंबु ष० त०] १. गंगाजल। २. पवित्र तथा शुद्ध जल। ३. वर्षा का जल।

गंगा--स्त्री० [सं० √गम् (जाना)+गन्—टाप्] १. भारतवर्ष की एक प्रधान और पवित्र नदी जो हरिद्वार के ऊपर से निकलकर कलकत्ते के पास बंगाल की खाड़ी में गिरती है। जाह्नवी। भागीरथी।

मुहा०—**गंगा नहाना**=किसी कर्त्तव्य का पालन करके उससे छुट्टी पाना या निश्चित होना।

२. हठ-योग में, इड़ा (नाड़ी) का दूसरा नाम। ३. रहस्य संप्रदाय में, मन को शुद्ध करनेवाली पवित्र वाणी।

गंगा-गति--स्त्री० [स० त०] १. मृत्यु। २. मृत्यु के उपरांत होनेवाली मुक्ति। मोक्ष।

गंगा-चिल्ली--स्त्री० [मध्य० स०] जल-कुक्कुटी। (पक्षी)

गंगा-जमनी--वि० [हिं० गंगा+जमुना] १. गंगा और यमुना के मेल की तरह दो तरह का या दो रंगों का। जैसे—गंगा-जमुनी दाल=(केवटी दाल); गंगा-जमुनी साड़ी। २. सोने और चाँदी अथवा ताँबे और पीतल के मेल से बना हुआ; जैसे—गंगा-जमुनी कुरसी या लोटा। ३. सफेद और काला मिला हुआ। ४. अबलक। चितकबरा।

स्त्री० कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गंगा-जल--पुं० [ष० त०] १. गंगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना जाता है। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का बढ़िया सूती कपड़ा जिसकी पगड़ियाँ बनती थीं।

गंगाजली--स्त्री० [सं० गंगाजल] शीशे या धातु की सुराहीनुमा लुटिया जिसमें यात्री तीर्थों से पवित्र जल लाते हैं।

मुहा०—**गंगाजली उठाना**=हाथ में गंगाजली लेकर शपथपूर्वक कोई बात कहना।

पुं० भूरे रंग का एक प्रकार का गेहूँ।

गंगा जाल--पुं० [हिं० गंगा+जाल] रीहा घास का बना हुआ मछुओं का जाल। (बंगाल)

गंगा-दत्त--पुं० [तृ० त०] भीष्म पितामह का एक नाम।

गंगादह--पुं०=गंगाजली।

गंगा-द्वार--पुं० [ष० त०] हरिद्वार।

गंगा-धर—पुं॰ [ष॰ त॰] १. महादेव। शिव। २. समुद्र। ३. वैद्यक में एक प्रकार का रस। ४. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। इसे खंजन और गंगोदक भी कहते हैं।

गंगाधार—पुं॰ [गंगा√धृ (धारण करना)+अण्] समुद्र।

गंगा-पथ—पुं॰ [ष॰ त॰] आकाश। (डिं॰)

गंगा-पाट—पुं॰ [हिं॰ गंगा+पाट] घोड़े की एक भौंरी जो पेट के नीचे होती है।

गंगा-पुजैया—स्त्री॰=गंगा-पूजा।

गंगा-पुत्र—पुं॰ [ष॰ त॰] १. भीष्म। २. पुराणानुसार लेट पिता और तीवरी माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ३. ब्राह्मणों की एक जाति जो पवित्र नदियों के किनारे घाटों पर बैठकर अथवा तीर्थस्थानों में रहकर दान लेती है। ४. उक्त जाति का व्यक्ति।

गंगा-पूजा—स्त्री॰ [षं॰ त॰] विवाह के बाद की एक रीति जिसमें वर और वधू को किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाकर उनसे पूजा कराई जाती है।

गंगा-यात्रा—स्त्री॰ [मध्य॰ स॰] १. मरणासन्न व्यक्ति को मरने के लिए गंगा-तट पर या किसी पवित्र जलाशय के किनारे ले जाने की पुरानी प्रथा। २. मृत्यु। स्वर्गवास।

गंगाराम—पुं॰ [हिं॰ गंगा+राम] तोते को संबोधित करने का एक नाम।

गंगाल—पुं॰ [हिं॰ गंगा+आलय] पानी रखने का एक प्रकार का बड़ा पात्र। कंडाल।

गंगाला—पुं॰ [हिं॰ गंगा+आलय] वह भूमि जहाँ तक गंगा के चढ़ाव का पानी पहुँचता है। कछार।

गंगा-लाभ—पुं॰ [ष॰ त॰] मृत्यु। स्वर्गवास।

गंगावतरण—पुं॰ [गंगा-अवतरण, ष॰ त॰] वह अवस्था जिसमें गंगा जी स्वर्ग से उतरकर धरती पर आई थीं। गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।

गंगावतार—पुं॰ [गंगा-अवतार, ष॰ त॰]=गंगावतरण।

गंगावासी (सिन्)—वि॰ [सं॰ गंगा√वस् (बसना)+णिनि] गंगा के तट पर रहनेवाला।

गंगा-सागर—पुं॰ [मध्य॰ स॰] १. कलकत्ते के पास का वह स्थान जहाँ गंगा नदी समुद्र में मिलती है और जो एक तीर्थ माना जाता है। २. एक प्रकार की बड़ी झारी। ३. खद्दर की छपी हुई आठ-नौ हाथ लंबी जनानी धोती।

गंगा-सुत—पुं॰ [ष॰ त॰]=गंगा-पुत्र।

गंगिका—स्त्री॰ [सं॰ गंगा+कन्+टाप्, इत्व] गंगा नदी।

गँगेऊ†—पुं॰ [सं॰ गांगेय] १, भीष्म। २. कार्तिकेय।

गँगेटी—स्त्री॰ [सं॰ गंगाटी] दवा के काम आनेवाली एक प्रकार की जड़ी या बूटी।

गंगेय*—वि॰, पुं॰=गांगेय।

गँगेरन—स्त्री॰ [सं॰ गांगेरुकी] नागवला नाम का पौधा।

गँगेरुआ—पुं॰ [सं॰ गांगेरुक] एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।

गंगेरू—स्त्री॰=गँगेरन।

गंगेश—पुं॰ [गंगा-ईश, ष॰ त॰] महादेव। शिव।

गंगोझ*—पुं॰=गंगोदक।

गंगोत्तरी—स्त्री॰ [सं॰ गंगावतार] उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ गंगा नदी ऊँचे पहाड़ों से निकलती है।

गंगोदक—पुं॰ [गंगा-उदक, ष॰ त॰] १. गंगा नदी का जल जो बहुत पवित्र माना जाता है। २. गंगा-धर वर्ण-वृत्त का दूसरा नाम। दे॰ 'गंगा-धर'।

गंगोल—पुं॰ [सं॰] गोमेदक मणि।

गंगौटी—स्त्री॰ [हिं॰ गंगा+मिट्टी] गंगा के किनारे की मिट्टी या बालू।

गँगौलिया—पुं॰ [हिं॰ गंगाल] एक प्रकार का खट्टा नीबू।

गंज—पुं॰ [सं॰ कंज या खंज] १. एक रोग जिसमें सिर के बाल सदा के लिए झड़ जाते हैं। खल्वाट। (बाल्डनेस) २. सिर में निकलनेवाली एक प्रकार की फुंसियाँ।

पुं॰ [फा॰] १. खजाना। कोश। २. ढेर। राशि। ३. झुंड। समूह। ४. अनाज रखने का कोठा या खत्ता। ५. पालतू कबूतरों के रहने की अलमारी। दरबा। ६. मद्य-पात्र। ७. मद्य-शाला। ८. एक प्रकार की लता। ९. अवज्ञा। तिरस्कार। १०. ऐसी चीज जिसके अंदर या साथ बहुत-सी चीजें लगी हुई हों। जैसे—गंज-बाल्टी, गंज-चाकू। ११. कुछ नामों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर ऐसी बस्तियों या बाजारों का वाचक शब्द जहाँ बनिये रहते हों अथवा व्यापार करते हों। जैसे—दारागंज, भारतगंज, पहाड़गंज, महाराजगंज, विश्वेश्वर गंज आदि।

गंज-गुठारा*—पुं॰=गंजगोला।

गंजगोला—पुं॰ [हिं॰ गंज+गोला] तोप का वह गोला जिसके अंदर छोटी-छोटी बहुत सी गोलियाँ भरी रहती हैं। (लश॰)

गंज-चाकू—[हिं॰ गंज+फा॰ चाकू] वह चाकू जिसमें फल के अतिरिक्त कैंची, मोचना आदि कई उपकरण एक साथ लगे रहते हैं।

गंजन—पुं॰ [सं॰√गंज् (शब्द)+ल्युट्—अन] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. दुर्गत। दुर्दशा। ३. नष्ट, पददलित, परास्त आदि करने की क्रिया या भाव। ४. संगीत में ताल के आठ मुख्य भेदों में से एक।

वि॰ [√गंज+णिच्+ल्यु—अन] १. अवज्ञा या तिरस्कार करनेवाला। २. नष्ट करनेवाला।

गँजना—अ॰ [हिं॰ गाँज] १. गाँज या ढेर लगना। २. पूरित होना। भरा जाना।

गंजना—स॰ [सं॰ गंजन] १. गंजन अर्थात् अपमान या तिरस्कार करना। २. पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट करना। ३. परास्त करना। हराना।

गंजनी—स्त्री॰ [?] एक प्रकार की घास।

गंजफ़ा—पुं॰=गंजीफ़ा।

गंज-बाल्टी—स्त्री॰ [फा॰+हिं॰] वह बड़ी बाल्टी जिसके अंदर और साथ कटोरे, कड़ाही, गिलास, थालियाँ आदि भी रहती हैं।

गंजा—पुं॰ [हिं॰ गंज] वह जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंज रोग का रोगी।

गंजाई—स्त्री॰ [हिं॰ गँजना] गाँज (ढेर या राशि) लगाने की क्रिया या भाव। (डम्पिग)

गंजाना—स॰ [हिं॰ गंजना] गाँजने का काम दूसरे से कराना। अच्छी या पूरी तरह से ढेर या राशि लगवाना।

†अ॰=गँजना।

गंजिका—स्त्री॰ [सं॰√गंज्+अ—टाप्+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] मदिरालय।

गँजिया—स्त्री॰ [सं॰ गंजिका] १. सूत की जालीदार थैली जिसमें रुपया-

पैसा रखते हैं। २. घास बाँधने का जाल। ३. मिट्टी का एक प्रकार का छोटा बरतन।

गंजी—स्त्री० [हिं० गंज] १. ढेर। राशि। जैसे—अनाज की गंजी। २. शकर-कंद।

स्त्री० [गर्नसी (स्थान-नाम)] कमीज या कुरते के नीचे पहनी जानेवाली एक प्रकार की छोटी कुरती। बनियाइन।

वि० [हिं० गाँजा] गाँजा पीनेवाला। जैसे—गंजी यार किसके, दम लगाया, खिसके।—कहा०।

गंजीना—पुं० [फा० गंजीनः] खजाना। कोश।

गंजीफा—पुं० [फा० गंजफः] १. ताश की तरह के एक पुराने खेल का उपकरण जिसमें ८ रंगों के ९६ पत्ते होते थे। ये पत्ते प्रायः लाख और कागज के योग से बनते थे और इन पर ताश के पत्तों की तरह बूटियाँ और तसवीरें होती थीं। ताश के पत्ते संभवतः इसी के अनुकरण पर बने थे। २. उक्त उपकरण से खेला जानेवाला खेल। ३. ताश की गड्डी और उससे खेला जानेवाला खेल।

गँजेड़ी—वि० [हिं० गाँजा+एड़ी (प्रत्य०)] प्रायः या बहुत गाँजा पीनेवाला। गंजी।

गंटम—पुं० [?] ताड़-पत्र पर लिखने की लोहे की कलम।

गंट्ठिय—वि० [सं० ग्रंथित] जिसमें गाँठ पड़ी हुई हो। बाँधा हुआ।

गँठ—स्त्री० [हिं० गाँठ] गाँठ का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गँठ-जोड़ा, गँठ-बंधन आदि।

†स्त्री०=गाँठ।

गँठकटा—पुं० [हिं० गाँठ+काटना] वह व्यक्ति जो दूसरे की गाँठ में बँधे हुए रुपए-पैसे चोरी से खोल या काटकर निकाल लेता हो। गिरहकट।

गँठ-छोरा—पुं० [हिं० गाँठ+छोरना=छीनना] १. गठरी छीनकर ले भागनेवाला। उचक्का। २. दे० 'गँठ-कटा'।

गँठ-जोड़ा—पुं० हिं० गाँठ+जोड़ना] गँठ-बंधन (दे०)।

गँठ-बंधन—पुं० [हिं० गाँठ+बंधन] १. विवाह के समय वर के दुपट्टे के एक छोर को कन्या की चादर के एक छोर से गाँठ लगाकर बाँधने की रीति। २. कोई धार्मिक कृत्य करते समय उक्त प्रकार से पति-पत्नी के पल्लों में गाँठ लगाने की रीति। ३. लाक्षणिक अर्थ में दो चीजों, बातों या व्यक्तियों में होनेवाला घनिष्ठ संग-साथ या संपर्क। ४. गुप्त संधि। साँठ-गाँठ।

गँठिवन—स्त्री०=गठिवन।

गँठुआ—पुं० [हिं० गाँठ] कपड़ा बुनते समय टूटे हुए तागों को अथवा नई पाई के तागों को पुराने उतरे हुए कपड़े के तागों से जोड़ने का काम।

गंड—पुं० [सं० √गंड् (मुख का एक भाग होना)+अच्] १. गाल। कपोल। २. कनपटी। ३. गले में पहनने का काला धागा। गंडा। ४. फोड़ा। ५. चिह्न। निशान। ६. दाग। ७. गाँठ। ८. गैंडा। ९. मंडलाकार चिह्न या लकीर। गराड़ी। १०. नाटक का एक अंग जिसमें सहसा प्रश्नोत्तर होने लगते हैं। ११. ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती के अंत के पाँच दंड और मूल, मघा, तथा अश्विनी के आरंभ के तीन दंड। (ज्योतिष)

वि० बहुत बड़ा या भारी। जैसे—गंड मूर्ख, गंड शिला आदि।

गंडक—पुं० [सं० गण्ड+कन्] १. गले में पहनने का गंडा या जंतर। २. गाँठ। ३. गैंडा। ४. चिह्न। निशान। ५. वह प्रदेश जिसमें से होकर गंडकी नदी बहती है। ६. उक्त प्रदेश का निवासी। ७. गंडमाला नामक रोग।

स्त्री०=गंडकी (नदी)।

गंडका—स्त्री० [सं० गण्डक+टाप्] बीस वर्णों का एक वर्णवृत्त।

गंडकी—स्त्री० [सं० गण्डक+ङीष्] १. मादा गैंडा। २. उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो पटने के पास गंगा में मिलती है।

पुं० सत्रह मात्राओं का एक ताल। (संगीत)

गंडकी-शिला—स्त्री० [ष० त०] भगवान् विष्णु की गोल पत्थर की बनी हुई एक प्रकार की मूर्ति। शालग्राम की बटिया।

गंड-गोपालिका—स्त्री० [मध्य० स०] ग्वालिन नाम का कीड़ा।

गँड़तरा†—पुं० [हिं० गाँड़+तर=नीचे] छोटे बच्चों के नीचे का वह कपड़ा जो इसलिए बिछाया जाता है कि उनका मल-मूत्र बिछावन पर न लगे। गँतरा।

गँडदार—पुं० [सं० गंड या हिं० गंडासा+फा० दार] १. महावत। हाथीवान। २. दे० 'गड़दार'।

गंड-दूर्वा—स्त्री० [कर्म० स०] १. गाँड़र नामक घास जिसकी जड़ खस कहलाती है। २. दूब नाम की घास।

गंड-देश—पुं० [ष० त०]=गंड-मंडल।

गंडनी—स्त्री० [सं० गंडाली] सरकंडे की जाति की एक वनस्पति। सरपोका। सर्पाक्षी। सरहटी।

गंड-मंडल—पुं० [ष० त०] कनपटी। गंड-स्थल।

गंड-मालक—पुं० [ब० स०] कंठमाला नामक रोग।

गंड-माला—स्त्री० [ब० स०] कंठमाला नामक रोग।

गंड-मालिका—स्त्री० [ब० स०] लज्जालु लता। लाजवंती।

गंड-माली(लिन्)—वि० [सं० गंडमाला+इनि] जिसके गले में कंठ-माला नामक रोग की गिल्टियाँ निकली हुई हों।

गँडरा—पुं० [सं० गंडाली] [स्त्री० गँडरी] १. मूँज की जाति की एक घास। २. एक प्रकार का धान।

गंडल*—पुं०=गंड-स्थल (कनपटी)।

गंडली—स्त्री० [सं० गण्ड√ली (लीन होना)+क्विप्-ङीष्] छोटी पहाड़ी।

पुं० शिव।

गंड-सूचि—स्त्री० [ष० त०] नृत्य में भाव बतलाने की एक मुद्रा।

गंड-स्थल—पुं० [ष० त०] [स्त्री० गंडस्थली] कनपटी।

गंडांत—पुं० [सं० गंड-अंत, ष० त०] ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती के अंत के पाँच या तीन दंड तथा मूल, मघा और अश्विनी के अंत के तीन दंड। (ज्योतिष)

गंडा—पुं० [सं० गंडक=गाँठ] १. तागे, रस्सी आदि में लगाई जानेवाली गाँठ। २. दैविक उपद्रवों, बाधाओं आदि से रक्षित रहने के लिए कलाई या गरदन में लपेटकर बाँधा जानेवाला मंत्र-पूत डोरा या सूत। ३. पशुओं के गले में बाँधा जानेवाला पट्टा।

पुं० [सं० गंड=चिह्न] आड़ी, गोल या गोलाकार धारी या रेखा। जैसे—कनखजूरे की पीठ पर का गंडा, तोते के गले का गंड।

पुं० [?]. चीजें गिनने में चार का समूह। जैसे—दो गंडे पैसे या चार गंडे आम।

गंडारि—स्त्री० [गंड-अरि, ष० त०] कचनार।

गंडाली—स्त्री० [सं० गंड√अल् (भूषित करना)+अण्-ङीप्] गाँडर घास।

गँडासा— पुं० [हिं० गंड+आसा (प्रत्य०)] हँसिये की तरह का घास काटने का एक औजार।

गंडिनी—स्त्री० [सं० गंड+इनि—ङीप्] दुर्गा।

गँड़िया†—पुं०=गाँड़ू।

गंडीर—पुं० [सं०√गंड्+ईरन्] १. पोई नाम की लता। २. थूहर। सेंहुड़।

गंडीरी—स्त्री० [सं० गंडीर+ङीष] =गंडीर।

गंडु—पुं० [सं०√गंड्+उन्] १. गाँठ। २. तकिया।

गंडुक*—पुं०=गंडूष।

गंडु-पद—पुं० [ब० स०] फीलपाँव नामक रोग।

गंडू—पुं०=गाँड़ू।

गंडूक—पुं० =गंडूष।

गंडू-पद—पुं० [गंडु+ऊङ्, गंडू-पद, ब० स०] केंचुआ।

गंडूल—वि० [सं० गंडू√ला (लेना)+क] १. जिसमें गाँठें हों। गाँठदार। २. झुका हुआ। टेढ़ा।

गंडूष—पुं० [सं०√गंड्+ऊषन्] [स्त्री० गंडूषा] १. हथेली का गड्ढा। चुल्लू। २. पानी से किया जानेवाला कुल्ला। ३. हाथी के सूँड़ की नोक।

गँडेरी—स्त्री० [सं० गण्ड] १. ईख या गन्ने के छोटे टुकड़े जो कोल्हू में पेरने के लिए काटे जाते हैं। २. चूसने के लिए ईख या गन्ने को छीलकर काटे हुए छोटे टुकड़े। ३. किसी चीज के छोटे लंबोतरे टुकड़े।

गंडोपधान—पुं० [गंड-उपधान ष० त०] गल-तकिया।

गँडोरा—पुं० [सं० गंडोल=ईख] हरी कच्ची खजूर।

गंडोल—पुं० [सं०√गंड्+ओलच्] १. गुड़। २. कच्ची या लाल शक्कर। ३. ईख या गन्ना। ४. कौर। ग्रास।

गंतव्य—वि० [सं०√गम् (जाना)+तव्यत्] १. (स्थान) जहाँ किसी को जाना या पहुँचना हो अथवा जहाँ कोई जाने को हो। २. गम्य।

गंता (तृ)—पुं० [सं०√गम्+तृच्] [स्त्री० गंत्री] वह जो किसी स्थान की ओर जा रहा हो। जानेवाला।

गंतु—पुं० [सं०√गम्+तुन्] १. पथिक। यात्री। २. पथ। मार्ग।

गंत्रिका—स्त्री० [सं० गंत्री+कन्-टाप्, ह्रस्व] बैलगाड़ी।

गंत्री—स्त्री० [सं०√गम्+ष्ट्रन—ङीष्] १. गाड़ी। २. बैलगाड़ी।

गंद—पुं० [सं० गंध से फा० गन्दः] १. बुरी चीज। २. बुरी बात।

मुहा०—गंद बकना=गंदी बातें कहना या गालियाँ देना।

३. दे० 'गंदगी'।

गंदगी—स्त्री० [फा०] १. गंदे होने की अवस्था या भाव। मैलापन। २. खराब, मैली और सड़ी-गली चीजें। ३. गुह। मल। ४. बहुत ही निकृष्ट बातें, विचार या व्यवहार। जैसे—समाज या साहित्य में गंदगी फैलाना बहुत बुरा है। ५. अपवित्रता। अशुद्धता।

गंदना—पुं० [सं० गंधन] १. लहसुन और प्याज की तरह का एक प्रकार का कंद जो तरकारी आदि में डाला जाता है। २. एक प्रकार की घास।

गंदम—पुं० [देश०], [स्त्री० गंदमी] एक प्रकार की चिड़िया।

पुं० [फा० गंदुम] गेहूँ।

गँदला—वि० [हिं० गंदा+ला (प्रत्य०)] १. (जल) जो स्वच्छ या निर्मल न हो। जिसमें धूल-मिट्टी आदि मिली हो। २. मलिन। मैला।

गंदा—वि० [सं० गन्ध से फा० गन्दः] [स्त्री० गंदी] १. धूल, मिट्टी, मैल आदि से युक्त। जैसे—गंदा कपड़ा, गंदा कमरा। २. दूषित या बुरा। निंदनीय। जैसे—गंदा आचरण, गंदे विचार।

गंदापानी—पुं० [फा० गंदा+हिं० पानी] १. मद्य। शराब। २. पुरुष का वीर्य। ३. स्त्री का रज।

गँदीला—पुं० [सं० गंध] एक प्रकार की घास।

गंदुम—पुं० [सं० गोधूम से फा०] [वि० गंदुमी] गेहूँ।

गंदुमी—वि० [फा० गंदुम] १. गेहूँ के रंग का। गेहुँआ। जैसे—गंदुमी कपड़ा। २. गेहूँ या उसके आटे का बना हुआ। जैसे—गंदुमी रोटी।

गंदोलना—स० [फा० गंदा] कोई चीज, विशेषतः पानी गंदा करना।

गंध—स्त्री० [सं०√गंध् (गति)+अच्] १. कुछ विशिष्ट पदार्थों के सूक्ष्म कणों का वायु के साथ मिलकर होनेवाला वह प्रसार जिसका अनुभव या ज्ञान नाक से होता है। वास। (ओडर)

विशेष—हमारे यहाँ गंध को पृथ्वी का गुण माना गया है।

२. सुगंध। ३. वह सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है। ४. बहुत ही हलके रूप में लगनेवाला किसी बात का पता। जैसे—देखो, इस बात की किसी को गंध न लगने पावे। ५. बहुत ही थोड़ा या नाम मात्र का अंश। जैसे—उसमें सौजन्य की गंध भी नहीं है।

गंध-कंदक—पुं० [ब० स०; कप्] कसेरू।

गंधक—स्त्री० [सं० गंध+अच्+कन्] [वि० गंधकी] पीले रंग का और कुछ अप्रिय तथा उग्र गंधवाला एक प्रसिद्ध दह्य खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग रसायन और वैद्यक में होता है।

गंधकवटी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार की गोली या वटी जो पाचक कही गई है।

गंधकारिता—स्त्री० [सं० गंध√कृ (करना)+णिनि√तल्—टाप्, इत्व] वस्त्रों, शरीर आदि में लगाने के लिए सुगंधित द्रव्य तैयार करने की कला या विद्या। (परफ्यूमरी)

गंधकाश्म (न्)—पुं० [सं० गंधक-अश्मन्, कर्म० स०] अपने मूल रूप में खनिज गंधक, (अपनी ज्वलनशीलता के विचार से)। (ब्रिम स्टोन)

गंध-काष्ठ—पुं० [ब० स०] अगर नामक सुगंधित द्रव्य। अगरु।

गंधकी—वि० [गंधक से] १. गंधक के रंग का। हलका पीला। २. गंधक से बना हुआ। जैसे-गंधकी तेजाब।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

गंध-कुटी—स्त्री० [ष० त०] मंदिर में का वह कमरा या दालान जिसमें बहुत-सी देवमूर्तियाँ रखी हों।

गंध-केलिका—स्त्री० [सं० गंध√केल् (चालन)+ण्वुल्-टाप्, इत्व] कस्तूरी।

गंध-कोकिल—पुं० [मध्य० स०] सुगंध कोकिल नामक गंध द्रव्य।

गंध-गज—पुं० [मध्य० स०] बहुत बड़ा और मस्त हाथी।

गंध-गात—पुं० [सं० गंधगात्र] चंदन। (डिं०)

गंध-जल—पुं० [मध्य० स०] सुगंधित जल या पानी। जैसे—केवड़ा जल, गुलाब जल आदि।

गंध-जात—पुं० [बं० स०] तेज-पत्ता।

गंधज्ञा—स्त्री० [सं० गंध√ज्ञा (जानना)+क–टाप्] नासिका। नाक।

गंध-तूर्य—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार की तुरही। (बाजा)।

गंध-तैल—पुं० [मध्य० स०] वह तेल जिसमें किसी पदार्थ के कुछ ऐसे तत्त्व मिले हों जो उस पदार्थ की गंध देते हों। गंध से युक्त किया हुआ तेल। सुगंधित तेल।

गंधद—पुं० [सं० गंध√दा (देना)+क] चंदन।

वि० गंध देनेवाला। जिसमें गंध हो।

गंध-दला—स्त्री० [ब० स०] अजमोदा।

गंध-दारु—पुं० [मध्य० स०] अगरु। अगर।

गंध-द्रव्य—पुं० [मध्य० स०] दवाओं में डालने, शरीर में लगाने या औषधों में मिलाने का कोई सुगंधित पदार्थ।

गंध-धूलि—स्त्री० [ब० स०] कस्तूरी।

गंधन—पुं० [सं०√गंध्+ल्युट्—अन] १. उत्साह। २. प्रकाश। ३. वध। ४. सूचना। ५. सोना। उदा०—गंधन मूल उपाधि बहु भूखन तन गन जान। —तुलसी।

गंध-नाकुली—स्त्री० [मध्य० स०] रास्ना।

गंध-नाड़ी—स्त्री० [मध्य० स०] नाक। नासिका।

गंध-नाल— पुं० [ष० त०] १. नासिका। नाक। २. नाक का छेद। नथुना।

गंध-नालिका—स्त्री० [ष० त०] गंधनाल।

गंध-नाश—पुं० [ब० स०] एक रोग जिसमें सुगंध, दुर्गंध आदि का अनुभव करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। (एनोस्मिआ)

गंधप—पुं० [सं० गंध√पा (पीना)+क] पितरों का एक वर्ग।

गंध-पत्र—पुं० [ब० स०] १. सफेद तुलसी। २. बेल। विल्व। ३. मरुआ।

गंधपत्रा—स्त्री० [सं० गन्धपत्र+टाप्] कपूर कचरी।

गंधपत्री—स्त्री० [सं० गन्धपत्र+ङीष्] अजमोदा।

गंध-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] सप्तपर्णी।

गंध-पलाशी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] हल्दी।

गंधपसार, गंधपसारी—स्त्री०=गंधप्रसारिणी।

गंध-पाषाण—पुं० [मध्य० स०] गंधक।

गंध-पिशाचिका—स्त्री० [तृ० त०] सुगंधित द्रव्य जलाने पर निकलनेवाला धूआँ।

गंध-पुष्प—पुं० [मध्य० स०] १. केवड़ा। २. बेंत।

गंध-प्रत्यय—पुं० [ब० स०] नासिका। नाक।

गंध-प्रसारिणी—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का पौधा जिसके दुर्गंधयुक्त पत्ते दवा के काम आते हैं।

गंध-फल—पुं० [ब० स०] कपित्थ। कैथ।

गंध-फला—स्त्री० [सं० गन्धफल+टाप्] प्रियंगु।

गंधफली—स्त्री० [सं० गंधफल+ङीष्] १. प्रियंगु। २. चंपा।

गंधबंधु—पुं० [सं० गंध्√बंध (बाँधना)+उण्] आम का वृक्ष और उसका फल।

गंधबबूल—पुं० [सं० गंध+हिं० बबूल] बबूल की जाति का एक छोटा पेड़।

गंधबिलाव—पुं० [सं० गंध+हिं० विलाव=विल्ली] विल्ली की तरह का एक जंगली जंतु जिसके अंडकोश से एक प्रकार का सुगंधित तरल पदार्थ निकलता है। गंध-मार्जार।

गंधबेन—पुं० [सं० गंधवेणु] रूसा या रोहिष नामक सुगंधित घास।

गंध-माता (तृ)—स्त्री० [सं० ष० त०] पृथ्वी।

गंध-माद—पुं० [ब० स०] भौंरा। भ्रमर।

गंधमादन—पुं० [सं० गंध√मद (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्यु-अन] १. पुराणानुसार एक पर्वत जो इलावृत और भद्राश्व खंड के बीच में कहा गया है और अपने सुगंधित वनों के लिए प्रसिद्ध था। २. एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ३. भौंरा। ४. गंधक। ५. रावण का एक नाम।

गंधमादनी—स्त्री० [सं० गंधमादन+ङीप्] १. मद्य। शराब। २. लाक्षा। लाख।

गंधमादिनी—स्त्री० [सं० गंध√मद्+णिच्+णिनि–ङीप्] लाक्षा। लाख।

गंध-मार्जार—पुं० [मध्य० स०] गंधबिलाव। (देखें)

गंध-मालती—स्त्री० [तृ० त०] एक प्रकार का गंध-द्रव्य।

गंध-मासी—स्त्री० [मध्य० स०] जटामासी।

गंध-मुंड—पुं० [सं० गंध√मुंड् (निवारण करना)+णिच्+अच्] एक प्रकार की लता।

गंध-मूल—पुं० [ब० स०] पान की जड़। कुलंजन।

गंधमूली—स्त्री० [सं० गंधमूल+ङीष्] कपूर कचरी।

गंध-मूषिका—स्त्री० [मध्य० स०] छछूंदर।

गंध-मृग—पुं० [मध्य स०] वह मृग जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है। कस्तूरी मृग।

गंधरब*—पुं०=गंधर्व।

गंध-रस—पुं० [ब० स०] सुगंधसार नामक गंध-द्रव्य।

गंध-राज—पुं० [ष० त०] १. चंदन। २. नख नामक गंध-द्रव्य। ३. वेले की जाति का एक पौधा और उसका फूल। मोगरा वेला।

गंधराज-गुग्गुल—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का गुग्गुल जिसे जलाने पर वातावरण सुगंधित हो जाता है।

गंधराजी—स्त्री० [सं० गन्धराज+ङीष्] नख नामक गंध-द्रव्य।

गंधरी†—स्त्री० [सं० गंधर्व] गंधर्व जाति की कन्या या स्त्री।

गंधर्व—पुं० [सं० गंध √अर्व् (मारना)+अच्, पररूप] [सं० स्त्री० गंधर्वी, हिं० स्त्री० गंधर्विन] १. पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जो स्वर्ग में गाने-बजाने का काम करते हैं।

विशेष—यह लोग सोम के रक्षक, रोगों के चिकित्सक, सूर्य के अश्वों के वाहक, स्वर्गीय ज्ञान के प्रकाशक, यम और यमी के जनक आर्य माने जाते हैं। इनका स्वामी वरुण है।

२. एक आधुनिक जाति जिसकी लड़कियाँ गाने-नाचने का काम और वेश्या-वृत्ति करती हैं। ३. बालिकाओं की वह अवस्था जब उनका यौवन आरम्भ होता और उनके स्वर में माधुर्य आता है। ४. मृग। हिरन। ५. घोड़ा। ६. एक शरीर से दूसरे शरीर में गई हुई आत्मा। ७. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का मानसिक रोग। ८. संगीत में एक प्रकार का ताल। ९. विधवा स्त्री का दूसरा पति।

गंधर्व-तैल—पुं० [मध्य० स०] रेंड़ी का तेल।

गंधर्व-नगर—पुं० [ष० त०] १. नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास

जो कुछ विशिष्ट प्रकार की प्राकृतिक अवस्थाओं में सूर्य की किरणें पड़ने पर आकाश में या स्थल पर भ्रम से दिखाई पड़ता है। २. वेदान्त में, उक्त के आधार पर किसी प्रकार का मिथ्या भ्रम। ३. चंद्रमा के चारों ओर का घेरा या मंडल। ४. संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-विरंगे वादलों में फैली हुई लाली। ५. महाभारत के अनुसार मानसरोवर के पास का एक नगर।

गंधर्व-पुर—पुं०[ष० त०] गंधर्व-नगर।

गंधर्व-रोग—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

गंधर्व-लोक—पुं० [ष० त०] वह जगत् या संसार जिसमें गंधर्व रहते हैं।

गंधर्व-वधू—स्त्री०[ष० त०] एक प्रकार का गंध-द्रव्य जिसे चीड़ा भी कहते हैं।

गंधर्व-विद्या—स्त्री० [ष० त०] गान विद्या। संगीत।

गंधर्व-विवाह—पुं० [मध्य० स०] हिन्दू धर्म-शास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर तथा कन्या अपनी इच्छा से एक दूसरे का वरण करते हैं। (कलियुग में ऐसा विवाह वर्जित है।)

गंधर्व-वेद—पुं० [ष० त०] चार उपवेदों में से एक जिसमें संगीतशास्त्र का विवेचन है।

गंधर्व-संगीत्—पुं० [ष० त०]वैदिक युग के मध्य के वे लोक-गीत जिनसे देशी संगीत (आधुनिक लोकगीत) का विकास हुआ है।

गंधर्वा—स्त्री० [सं० गंधर्व+टाप्] दुर्गा का एक नाम।

गंधर्वास्त्र—पुं० [गंधर्व-अस्त्र, मध्य०स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

गंधर्वी—स्त्री० [सं० गंधर्व+ङीप्] १. गंधर्व जाति की स्त्री। २. पुराणानुसार घोड़ों की आदि माता जो सुरभी की पुत्री थी।

वि० गंधर्व-संबंधी। गंधर्वों का। जैसे—गंधर्वी माया या रूप।

गंधर्वोन्माद—पुं० [गंधर्व-उन्माद, मध्य० स०] एक प्रकार का उन्माद।

गंधवती—स्त्री० [सं० गंध+मतुप्, वत्व, ङीष्] १. पृथ्वी। २. मदिरा। ३. वनमल्लिका। ४. मुरा नामक गंध द्रव्य। ५. वरुण की पुरी का नाम। ६. व्यासदेव की माता का एक नाम।

गंधवह—वि० [सं० गंध √वह् (ले जाना)+अच्] १. गंध ले जाने या पहुँचानेवाला। २. सुगंधित।

पुं० १. वायु। हवा। २. नाक, जिससे गंध का ज्ञान होता है। (डिं०)

गंधवाह—पुं०[सं० गंध √वह्+अण्] वायु। हवा।

गंध-सफेदा—पुं०[सं० गंव+हिं० सफेद] १. सफेद छालवाला एक प्रकार का लंवा वृक्ष। (यूक्लिप्टस) २. उक्त वृक्ष के फूलों में से निकलनेवाला एक प्रकार का सुगंधित तेल।

गंध-सार—पुं०[ब० स०] १. चंदन। २. गंधराज नामक वेला। मोगरा। ३. कपूर।

गंवहर—पुं०[सं० गंध√हृ (हरण करना) +अच्] नाक। (डिं०)

गंध-हस्ती—पुं० [मध्य० स०] ऐसा हाथी जिसके कुंभ से मद वहता हो। मदोन्मत्त हाथी।

गंवा—वि० स्त्री०[सं० √गंव+णिच्+अच्—टाप्] गंध से युक्त। (यौ० शब्दों के अंत में) जैसे—रजनी-गंधा, मत्स्य गंवा।

गंवाजीव—पुं० [सं० गंध-आ √जीव् (जीना) +अच्] इत्र, तेल आदि बनाने और वेचनेवाला, गंधी।

गंधाज्ञ—वि० [सं० गंध-अज्ञ, ष० त०] [भाव० गंधाज्ञता] १. (व्यक्ति) जिसे गंध का अनुभव न होता हो। २. (व्यक्ति) जो गंधों के प्रकार या स्वरूप न जानता हो। जो यह न बतला सकता हो कि यह गंध किस चीज की या किस प्रकार की है।

गंधाज्ञता—स्त्री० [सं० गंधाज्ञ+तल्—टाप्] =गंध-नाश (दे०)।

गंधाढ्य—वि० [गंध-आढ्य, तृ० त०] जिसमें बहुत अधिक खुशबू या सुगंध हो।

पुं० १. चंदन। २. नारंगी का वृक्ष। ३. एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ४. कई प्रकार के पौधों की संज्ञा।

गंधाना—पुं० [हिं० गंधन] रोला छंद का एक नाम।

अ० [हिं० गंध] किसी पदार्थ में से गंध या महक का फैलना। गंध छोड़ना या देना।

स० गंध या महक फैलाना।

गंधानुवासन—पुं० [गंध-अनुवासन, तृ० त०] किसी चीज को सुगंधि से युक्त करना। सुवासित करना।

गंधाबिरोजा—पुं० [हिं० गंध+बिरोजा] चीड़ या साल नामक वृक्ष का गोंद या निर्यास जो प्रायः फोड़े-फुंसियों पर लगाया जाता है। चंद्रस।

गंधाम्ला—स्त्री० [गंध-अम्ल, ब० स०] जंगली नीबू।

गंधार—पुं० [सं० गंध√ऋ (गति)+अण्] १. भारत के उस पश्चिमोत्तर प्रदेश का पुराना नाम जो तक्षशिला में कुनड़ या चित्राल नदी तक था। २. दे० 'गांधार'।

गंधारी—स्त्री०=गांधारी।

गंधालिका—स्त्री० [सं०] उड़ने तथा डंक मारनेवाले उन छोटे-छोटे कीड़ों का वर्ग जिसमें बरैं, भौंरे, मधुमक्खियाँ आदि सम्मिलित हैं। (वास्प)

गंधाली—स्त्री० [सं० गंध-आली, ब० स०] गंधप्रसारिणी लता।

गंधालु—वि० [सं० √गंध्+आलुच्] १. खुशबूदार। २. सुवासित।

गंधाशन—पुं० [गंध-अशन, ब० स०] वायु। हवा।

गंधाश्मा (श्मन्)—पुं० [मध्य० स०] गंधक।

गंधाष्टक—पुं० [गंध-अष्टक, ष० त०] आठ प्रकार के गंधों के मेल से बना हुआ गंध। अष्ट-गंध।

गंधिक—वि० [सं० गंध+ठन्—इक] गंधवाला।

पुं० १. गंधक। २. गंधी।

गंधिनी—स्त्री० [सं० गंध+इनि—ङीष्] मदिरा। शराब।

गँधिया—पुं० [हिं० गंध] १. एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा, जिससे बहुत दुर्गन्ध निकलती है। २. हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा जो धान आदि की फसल में लगता है।

स्त्री० १. गाँधी नाम की बरसाती घास। २. गंध-प्रसारिणी नामक लता।

गंधी—पुं० [सं० गांधिक; प्रा० गांधिअ; गु० पं० बँ० गाँधी; मरा० गंधे] १. वह जो सुगंधित तेल, इत्र आदि बनाता और बेचता हो। अत्तार। २. गँधिया घास।

स्त्री० १. गँधिया घास। २. गँधिया कीड़ा।

गंधी पतंग—पुं० [सं० व्यस्तपद] धान की बालों में लगनेवाला गँधिया नाम का कीड़ा।

गँधीला*—वि० [हिं० गंध] १. जिसमें किसी प्रकार की गंध हो। २. अप्रिय या बुरी गंधवाला। बदबूदार।

†वि०=गँदला।

गंधेंद्रिय—स्त्री० [सं० गंध-इंद्रिय, मध्य० स०] सूँघने की इंद्रिय। नासिका। नाक।

गंधेज—स्त्री० [सं० गंध] अगिया नाम की घास।

गंधेल—पुं० [सं० गंध] एक प्रकार का छोटा वृक्ष या झाड़।

गंधैला—पुं० [हिं० गंध] [स्त्री० अल्पा० गंधैली] १. एक प्रकार की चिड़िया। २. गंध-प्रसारिणी लता।

वि० जिसमें से दुर्गंध आती हो। बदबूदार।

गंधोच्छल—वि० [सं० गंध-उच्छल, तृ० त०] गंध से भरा हुआ। जिसमें से खूब गंध निकल रही हो। उदा०—वह शोधशक्ति जो गंधोच्छल। —निराला।

गंधोत्कट—पुं० [गंध-उत्कट, तृ० त०] दौना। दमनक। (पौधा)

वि० उत्कट गंधवाला।

गंधोत्तमा—स्त्री० [गंध-उत्तमा, तृ,० त०] अंगूरी शराब।

गंधोपजीवी (विन्)—पुं० [सं० गंध-उप√जीव् (जीना) +णिनि] इत्रफरोश। गंधी।

गंधोपल—पुं० [सं० गंध-उपल, मध्य० स०] गंधक।

गंधौली†—स्त्री०[सं० गंध से] कपूर कचरी।

गंध्य—वि० [सं० गंध+यत्] १. गंध-संबंधी। २. जिसमें गंध हो। गंध-युक्त।

गंध्रप*—पुं०=गंधर्व।

गंभारी—स्त्री० [सं०√गम्+भृ (धारण करना)+अण्—ङीप्] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

गंभीर—वि० [सं० गम्+ईरन्, नि० भकार] १. जिसकी गहराई की थाह जल्दी न मिले। गहरा। जैसे—गंभीर नद या समुद्र। २. घना। सघन। ३. भारी या विकट। घोर। जैसे—गंभीर नाद। ४. (कथन या विषय) जिसे समझने के लिए बहुत सोच-विचार करना पड़े। गूढ़। जटिल। दुरूह। जैसे—गंभीर समस्या। ५. चिंतित या भयभीत करनेवाला। चिंताजनक। जैसे—गंभीर स्थिति। ६. (व्यक्ति) जो किसी बात की गहराई तक जाता हो, जल्दी विचलित न होता हो और अपने मन के भाव जल्दी दूसरों पर प्रकट न होने देता हो। शांत। धीर।

पुं० १. जंबीरी नीबू। २. कमल। ३. महादेव। शिव। ४. एक प्रकार का राग। (संगीत)

गंभीरक—वि० [सं० गम्भीर+कन] गहरा। गंभीर।

गंभीरवेदी (दिन्)—पुं० [सं० गम्भीर√विद् (जानना)+णिनि] ऐसा मस्त हाथी जो साधारण अंकुश की चोट की परवा न करे।

गंभीरिका—स्त्री० [सं० गंभीर+कन्—टाप्, इत्व] एक प्रकार की ढोलक।

गँमार†— वि०, पुं०=गँवार।

गंमित*—वि० [सं० गम] १. जिसके पास तक गम या पहुँच हुई हो। २. किसी जानकार द्वारा बतलाया हुआ। जैसे—गुरु गंमित ज्ञान।

गँवँ—स्त्री० दे० 'गौं'।

गँवई—स्त्री० [हिं० गाँव] [वि० गँवइयाँ] १. छोटा गाँव। जैसे—गाँव-गँवई के लोग। २. गाँव।

वि० १. गाँव का। गाँव में रहनेवाला। २. गँवार।

पुं० देहाती।

गँवनना*—अ० [सं० गमन] गमन करना। जाना।

स०=गँवाना।

गँवना†—अ०=गमन करना।

गँवरदल—वि० [हिं० गँवार+दल] गँवारों की तरह का। गँवार के समान। गँवारू।

पुं० गँवारों का दल या समूह।

गँवरमसला—पुं० [हिं० गँवार+अ० मसल] ग्रामीणों या देहातियों में प्रचलित उक्ति या उनकी कहावत।

गँवहियाँ†—पुं० [सं० गोघ्न=अतिथि] १. गँवार। देहाती। २. अतिथि। मेहमान।

गँवाऊ—वि० [हिं० गँवाना] धन-संपत्ति गँवाने या नष्ट करनेवाला। 'कमाऊ' का विपर्याय।

गँवाना—स० [सं० गम] १. कोई चीज असावधानी, उपेक्षा, प्रमाद आदि के कारण व्यर्थ अपने पास से निकल जाने देना। भूल, मूर्खता आदि के कारण किसी उपयोगी या मूल्यवान् वस्तु से वंचित होना। खोना। जैसे—(क) जूए या सट्टे में धन गँवाना। (ख) मेले में कपड़ा या छड़ी गँवाना। २. समय के सम्बन्ध में, व्यर्थ नष्ट करना या बिताना। जैसे—लड़कों का खेल-कूद में समय गँवाना। ३. दूर करना। निकालना। हटाना। उदा०—कहहिं गँवाइअ छिनकु स्रम, गँवनब अबहिं कि प्रात।—तुलसी।

गँवार—वि० [हिं० गाँव+आर (प्रत्य०)] [वि० गँवारी, गँवारू, स्त्री० गँवारिन] १. गाँव में रहनेवाला (व्यक्ति)। देहाती। २. उक्त कारण से जो शिष्ट, सभ्य तथा सुशिक्षित न हो। असभ्य।* ३. अनजान। अनाड़ी। जैसे— हम तो इन सब बातों में गँवार ठहरे।

गँवारता*—स्त्री०=गँवारपन।

गँवारपन—पुं० [हिं० गँवार+पन (प्रत्य०)] गँवार होने की अवस्था या भाव। देहातीपन।

गँवारी—वि० [हिं० गँवार] १. गँवारों की तरह का। ग्राम्य। जैसे—गँवारी पहनावा या बोली। २. दे० 'गँवारू'।

स्त्री० १. गँवारपन। देहातीपन। २. गँवारों की-सी मूर्खता। ३. गाँव की रहनेवाली या गँवार की स्त्री।

गँवारू—वि० [हिं० गँवार+ऊ (प्रत्य०)] १. गाँव अथवा गाँव में रहनेवालों से संबंध रखनेवाला अथवा उनके जैसा। जैसे—गँवारू पहनावा, गँवारू चाल आदि। २. शिष्टता, सभ्यता, आदि से रहित।

गँवेली*—स्त्री०=गँवारी (गँवार स्त्री)।

गंस*—पुं० [सं० ग्रंथि] १. मन में खटकनेवाली बात। २. मन में छिपा हुआ द्वेष या वैर। ३. दे० 'गाँसी'। (तीर की)

गँसना*—स० [सं० ग्रंथन] १. अच्छी तरह कसकर जकड़ना, बाँधना या लगाना। गाँठना। २.कपड़े की बुनावट में बाने को कसना या दबाना जिसमें बुनावट गफ या घनी हो। ३. कस या ठूँसकर भरना।

अ० १. कसकर जकड़ा या बांधा जाना। २. बुनावट में सूतों का खूब पास पास होना। ३. कसकर या ठसाठस भरा जाना।

गँसीला—वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] गाँस या गाँसी की तरह नुकीला और चुभने या खटकनेवाला।

†वि० दे० 'गसीला'।

गँह—स० [सं० ग्रहण] ग्रहण करना। पकड़ना। उदा०—एकै आस एकै बिसवास प्राण गँहवास।—घनानन्द।

गइंद*—पुं० =गयंद (हाथी)।

गइनाही*—स्त्री० [सं० गहन] १. गहनता। गंभीरता। २. किसी बात या विषय की पूरी जानकारी। गहन ज्ञान।

गइयर—पुं०, स्त्री०=गैयर।

गई—वि० स्त्री० [हिं० गया का स्त्री० रूप] १. जो बीत चुकी हो। बीती हुई। जैसे—गई रात। २. पुरानी। जैसे—गई बात।

मुहा०—**गई करना या कर जाना**=किसी अनुचित बात के संबंध में यह समझकर चुप हो जाना कि जाने दो, ध्यान मत दो।

गईबहोर—वि० [हिं० गया+बहुरि] १. बिगड़ा हुआ काम या बात बनानेवाला। २. खोई हुई चीज ला देनेवाला।

गउमुख—स्त्री०, पुं०=गोमुख।

गउर†—पुं०=गौर (विचार)।

वि०=गौर (गोरा)।

गउरव*—पुं०=गौरव।

गउव—पुं० [सं० गवय] १. नील गाय। २. गौ। गाय। उदा०—गउव सिंघ रेंगहिं एक बाटा।—जायसी।

गऊ—स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

गऊघाट—पुं० [हिं०] गाय-बैलों आदि के पानी पीने के लिए बनाया हुआ ढालुआँ और बिना सीढ़ियों का घाट।

गकरिया—स्त्री०=गाकरी (लिट्टी)।

गक्खर—पुं० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार।

गगन—पुं० [सं० √गम (जाना+युच—अन, ग आदेश] १. आकाश। आसमान।

मुहा०—**गगन खेलना**=नदी आदि के बहते हुए पानी का रह-रहकर उछलना। **(किसी चीज का) गगन होना**=उड़ते-उड़ते बहुत ऊपर आकाश में चले जाना। जैसे—कबूतर या पतंग का गगन होना।

२. आकाशस्थ ईश्वर या दैव। उदा०—गगन कटोरहिं जगत बँधाएउ।—जायसी। ३. शून्य स्थान। ४. छप्पय नामक छंद का एक भेद। ५. अबरक। ६. रहस्य संप्रदाय में (क) अंतःकरण या हृदय (ख) ब्रह्म के रहने का स्थान या हृदय रूपी कमल।

गगन-कुसुम—पुं० [मध्य० स०] आकाश-कुसुम। कोई अलौकिक या अवास्तविक वस्तु।

गगनगढ़*—पुं० [सं०+हिं०] बहुत ऊँचा किला या महल।

गगन-गति—वि० [ब० स०] आकाश में चलनेवाला। आकाशचारी।

पुं० १. चन्द्रमा, सूर्य आदि ग्रह। २. देवता। ३. वायु। हवा। ४. पक्षी।

गगन-गिरा—स्त्री० [मध्य० स०] आकाशवाणी।

गगनचर—वि० [सं० गगन√चर (गति)+ट] आकाश में उड़ने या चलनेवाला। आकाशचारी।

पुं० १. ग्रह, नक्षत्र आदि। २. देवता। ३. पक्षी।

गगनचुंबी (बिन्)—वि० [सं० गगन√चुंब् (चूमना)+णिनि] इतना अधिक ऊँचा कि आकाश को चूमता हुआ जान पड़े। बहुत ऊँचा। अभ्रंकष। (स्काई स्क्रैपर)

गगन-धूलि—पुं० [सं० ष० त०] १. कुकुरमुत्ते का एक भेद। २. केतकी या केवड़े पर की सुगंधित धूल।

गगन-ध्वज—पुं० [ष० त०] १. सूर्य। २. बादल। मेघ।

गगन-पति—पुं० [ष० त०] इन्द्र।

गगन-भेड़—स्त्री० [हिं० गगन+भेड़] कराँकुल या कूंज नामक जल-पक्षी।

गगनभेदी (दिन्)—वि० [सं० गगन √ भिद (फाड़ना)+णिनि] १. आकाश को भेदने या फाड़नेवाला (शब्द या स्वर)। आकाशभेदी। २. बहुत अधिक ऊँचा।

गगन-मंडल—पुं० [ष० त०] १. पृथ्वी के ऊपर का आकाश रूपी घेरा या मंडल। २. हठ-योग की परिभाषा में, ब्रह्माण्ड (सिर में ऊपर की ओर का भीतरी भाग) और ब्रह्म-रंध्र।

गगन-रोमंथ—पुं० [ष० त०] अनहोनी या असंभव बात।

गगनवटी*—पुं० [सं० गगनवर्त्ती] सूर्य। (डिं०)

गगन-वाटिका—स्त्री० [स० त०] वैसी ही असंभव बात जैसी आकाश में वाटिका या बाग-बगीचे के होने की होती है। आकाश-कुसुम।

गगन-वाणी—स्त्री०=आकाशवाणी।

गगन-विहारी (रिन्)—[सं० गगन-वि०√हृ (हरण करना)+णिनि] आकाशचारी। गगनचर।

पुं० १. सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह। २. देवता।

गगन-सिंधु—स्त्री० [ष० त०] आकाश-गंगा।

गगन-स्पर्शन—पुं० [ष० त०] १. वायु। हवा। २. आठ मरुतों में से एक मरुत् का नाम।

गगन-स्पर्शी (शिन्)—वि० [सं० गगन√स्पृश् (छूना)+णिनि] आकाश को स्पर्श करनेवाला। बहुत अधिक ऊँचा।

गगन-स्पृक्(श्)—वि० [सं० गगन√स्पृश्+क्विप्] गगनस्पर्शी।

गगनांगना—स्त्री० [गगन-अंगना, मध्य० स०] अप्सरा।

गगनांबु—पुं० [गगन-अंबु, मध्य० स०] आकाश से गिरा हुआ अर्थात् वर्षा का जल। बरसाती पानी।

गगनाध्वग—वि०, पुं० [गगन-अध्वग, ष० त०] =गगनचर।

गगनानंग—पुं० [गगन-अनंग, स० त०] एक प्रकार का मांत्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पचीस मात्राएँ होती हैं।

गगनापगा—स्त्री० [गगन-आपगा, ष० त०] आकाश-गंगा।

गगनेचर—पुं० [अलुक् स०] १. ग्रह, नक्षत्र आदि। २. देवता। ३. चिड़िया। पक्षी।

वि० आकाश में उड़ने या चलनेवाला।

गगनोल्मुक—पुं० [गगन-उल्मुक, स० त०] मंगलग्रह।

गगरा—पुं० [सं० गर्गर=दही मथने का बर्तन] [स्त्री० अल्पा० गगरी] ताँबे, पीतल आदि का बना हुआ पानी रखने का बड़ा घड़ा। कलसा। गागर।

गगरिया*—स्त्री०=गगरी।

गगरी—स्त्री० [हिं० गगरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा गगरा।

मुहा०——गगरी फोड़ना=मृतक के दाहकर्म की समाप्ति करना। उदा०——अंत की बार गगरिआ फोरी। ——कबीर।

गगल——पुं० [सं० गरल] साँप का जहर। सर्प-विष।

गगली——पुं० [देश०] एक प्रकार का अगर या अगरु।

गगोरी——पुं० [सं० गर्ग] एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

गच——स्त्री० [अनु०] किसी नरम या मुलायम चीज में किसी कड़ी, नुकीली या पैनी चीज के धँसने अथवा धँसाने से होनेवाला शब्द। जैसे——कलेजे, तरबूज या लौकी में गच से छुरी धँसना या धँसाना।

स्त्री० [चीनी कचु, तुर्की गज] १. चूने-सुर्खी का मसाला। २. चूने-सुर्खी से कूटकर बनाई हुई पक्की और साफ-सुथरी जमीन या फर्श। ३. चूने, सुर्खी आदि से दीवारों पर किया हुआ पलस्तर या लेप। ४. साफ-सुथरा तल या सतह। ५. संगजराहत या सिलखड़ी को फूँककर तैयार किया हुआ चूना। (प्लास्टर ऑफ पेरिस)

वि० बहुत ही चमकीले और साफ तलवाला। उदा०——ज्यौं गच काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।—— तुलसी।

गचकारी——स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] १. चूने, सुर्खी आदि को मिलाकर तैयार किए हुए मसाले से दीवारों का पलस्तर, जमीन का फर्श आदि बनाने का काम। २. उक्त प्रकार की बनावट के लिए गच पीटने का काम।

गचगर——पुं० [हिं० गच +फा० गर=बनानेवाला] वह कारीगर या राज जो गच बनाता हो। गच पीटने और बनानेवाला मिस्तरी।

गचगीरी——स्त्री०=गचकारी।

गचना——स० [अनु० गच] १. बहुत अधिक कस या ठूसकर भरना।

†स० दे० 'गाँसना'।

गचपच——वि०=गिचपिच।

गचाका——पुं० [हिं० गच से अनु०] गच से गिरने या बोलने का शब्द।

क्रि० वि० १. एकदम से। सहसा। २. पूरी तरह से। भरपूर। (बाजारू)

गच्चा†——पुं० [अनु०] १. गड्ढा। गर्त्त। २. जोखिम, हानि आदि की संभावना या उसका स्थल। ३. ऐसा धोखा या भ्रम जिससे भारी हानि हो।

मुहा०——गच्चा खाना=धोखे में आकर अपनी हानि कर बैठना।

गच्छ——पुं० [सं० √गम् (जाना)+क्विप्, तुक्, गत्√ छो (काटना)+क] १. पेड़। गाछ। २. जैन साधुओं के रहने का मठ। ३. जैन साधु का गुरु-भाई।

गछना*——अ० [सं० गच्छ=जाना] चलना। जाना।

स० १. देन, निर्वाह, व्यवहार आदि के लिए अपने ऊपर या जिम्मे लेना। २.चलाना। निभाना।

गजंद (दा)*——पुं० [सं० गजै] हाथी।

गज——पुं० [सं० √गज् (मत्त होना)+अच्] [स्त्री० गजी] १. हाथी। २. दिग्गज। ३. आठ की संख्या। ४. दीवार के नीचे का पुश्ता। ५. महिषासुर का एक पुत्र। ६. राम की सेना का एक बंदर। ७. रहस्य संप्रदाय में, मन जो हाथी की तरह बलवान् होता है और जल्दी वश में नहीं आता।

पुं० [फा० गज़] १. लंबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह, तीन फूट अथवा छत्तीस इंच के बराबर होती है। (लकड़ी नापने का गज अपवाद रूप से दो फुट या चौबीस इंच का माना जाता है।) २.उक्त माप का वह उपकरण या साधन जो कपड़े, लकड़ी, लोहे आदि का बना होता है। ३. लोहे का वह छड़ जिससे पुरानी चाल की बंदूकों में बारूद भरते थे। ४. सारंगी बजाने की कमानी। ५. पुरानी चाल का एक प्रकार का तीर। ६. वह पतली लकड़ी जो बैलगाड़ी के पहिये में मूँड़ी से पुट्ठी तक लगाई जाती है। ७. इमारत में लकड़ी की वह पटरी जो घोड़िया के ऊपर रखी जाती है।

गजअसन*——पुं०=गजाशन।

गजइलाही——पुं० [फा० गज+इलाही] अकबरी गज जो ४१ अंगुल का होता और इमारत के काम में आता है।

गज-कंद——पुं० [ब० स०] हस्तिकंद।

गजक——पुं० [फा० कज़क] १. नशीली वस्तु (जैसे——अफीम, भाँग, शराब आदि का सेवन करने के समय मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जानेवाली कोई चटपटी या स्वादिष्ठ चीज। जैसे——कबाब, पापड़, समोसा आदि। २. गुड़ या चीनी का पाग बनाकर और उसमें अन्न के दाने, सूखे मेवे आदि डालकर जमाई जानेवाली एक प्रकार की पपड़ी। ३. तिल पपड़ी। ४. जलपान।

विशेष——पूरब में यह शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में बोला जाता है।

गजकरनआलू——पुं० [सं० गजक-र्णालु] अरुआ नामकी लता जिसमें लंबा कंद होता है।

गज-कुंभ——पुं० [ष० त०] हाथी के माथे पर दोनों ओर उठे या उभरे हुए अंश।

गज-कुसुम——पुं० [ब० स०] नागकेसर।

गज-केसर——पुं० [ब० स०] एक प्रकार का बढ़िया धान।

गज-गति——स्त्री० [ष० त०] १. हाथी की चाल। २. हाथी की-सी मंद और मस्त चाल। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त। ४. रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा में शुक्र की स्थिति वा गति।

वि० हाथी की-सी मस्त चाल चलनेवाला। झूम-झूमकर चलनेवाला।

गज-गती——स्त्री० [फा० गज (नाप)+हिं० गति] कपड़ों की वह फुटकर बिक्री जो गज के हिसाब से नापकर होती हो। (पूरे थान या थोक की बिक्री से भिन्न)

गज-गमन——पुं० [ष० त०] हाथी की-सी मंद और मस्त चाल।

गजगा——पुं० [सं० गज से] हाथियों का एक प्रकार का गहना।

गजगामी (मिन्)——वि० [सं० गज√गम्+णिनि] [स्त्री० गजगामिनी] हाथी की तरह झूम-झूमकर मस्ती से चलनेवाला।

गजगाह——पुं० [सं० गज-ग्राह से] हाथी या घोड़े पर डाली जानेवाली झूल। पाखर।

गजगौन*——पुं०=गजगमन।

गजगौनी——वि० स्त्री०=गजगामिनी। (गजगामी का स्त्री० रूप)

गजगौहर——पुं० [हिं० गज+फा० गौहर] गजमोती। गजमुक्ता।

गज-घाव——पुं० [सं० गज+हिं० घाव] एक प्रकार का हथियार जिससे युद्धक्षेत्र में हाथियों पर वार किया जाता था।

गज-चर्म (र्मन्)——पुं० [ष० त०] १. हाथी का चमड़ा। २. एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें शरीर का चमड़ा हाथी के चमड़े की तरह कड़ा और खुरदरा हो जाता है।

गज-चिर्भिटा—स्त्री० [मध्य० स०] इंद्रायन।

गज-च्छाया—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग।

गजट—पुं० [अं० गजेट] वह राजकीय सामयिक पत्र जिसमें शासन-संबंधी सूचनाएँ प्रकाशित होती हैं। वार्त्तायिन (दे०)।

गज-ढक्का—स्त्री० [मध्य० स०] हाथी पर रखकर बजाया जानेवाला वड़ा धौंसा।

गजता—स्त्री० [सं० गज+तल्—टाप्] १. हाथी होने की अवस्था या भाव। २. हाथियों का झुंड या समूह।

गज-दंत—पुं० [ष० त०] १. हाथी का दाँत। २. एक दाँत के ऊपर निकलनेवाला दूसरा दाँत। ३. वह पत्थर जो छज्जे का भार संभालने के लिए उसके नीचे लगाया जाता है। ४. दीवार में लगी हुई कपड़े टाँगने की खूँटी। ५. एक प्रकार का घोड़ा। ६. नृत्य में एक प्रकार का भाव प्रकट करने की मुद्रा।

गजदंती—वि० [सं० गजदंत+हिं० ई (प्रत्य०)] हाथी-दाँत का बना हुआ। जैसे—गजदंती चूड़ा या चूड़ियाँ।

गज-दान—पुं० [ष० त०] १. किसी को हाथी दान करके देना। २. हाथी के मस्तक से बहनेवाला दान या मद।

गजधर—पुं० [फा० गज+हिं० घर] मकान बनानेवाला मिस्त्री। राज। मेमार।

गज-नक्र—पुं० [मध्य० स०] गैंडा।

गजनफ़र—पुं० [अ०] शेर। सिंह।

गजनवी—वि० [फा०] १. गजनी नगर का रहनेवाला। जैसे—महमूद गजनवी। २. गजनी नगर से संबंध रखनेवाला।

गजना*—अ० [सं० गर्जन] =गाजना (गरजना)।

गज-नाल—स्त्री० [ब० स०] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप जो हाथी पर रखकर चलाई जाती थी। २. वह बड़ी तोप जिसे हाथी खींचकर ले चलते थे।

गज-नासा—स्त्री० [ष० त०] हाथी की नाक अर्थात् सूँड।

गज-निमीलिका—स्त्री० [ष० त०] कोई चीज या बात देखते हुए भी यह प्रकट करना कि हम नहीं देख रहे हैं। जान-बूझकर अनजान बनना।

गज़नी—पुं० [फा० मि० सं० गञ्जन] [स्त्री० गजनवी] अफगानिस्तान के एक नगर का नाम जो महमूद की राजधानी थी।

†स्त्री० एक प्रकार की चिकनी मिट्टी। गाजनी।

गज-पति—पुं० [ष० त०] १. बहुत बड़ा हाथी। २. वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों। ३. कलिंग देश के पुराने राजाओं की उपाधि।

गजपाँव—पुं० [हिं० गज+पाँव] एक प्रकार का जलपक्षी।

गजपाय*—पुं० =गजपाल।

गजपाल—पुं० [सं० गज् √पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] महावत। हाथीवान।

गज-पिप्पली—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पौधा जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं। गजपीपल।

गजपीपल—पुं० =गज-पिप्पली।

गज-पुट—पुं० [मध्य० स०] धातुओं के फूँकने की एक रीति। (वैद्यक)

गज-पुर—[ष० त०] हस्तिनापुर।

गज-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] नाग-पुष्पी नामक पौधा।

गज-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] शल्लकी या सलई (वृक्ष और उसकी लकड़ी)।

गज-बंध—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी छंद में अक्षरों की योजना इस प्रकार होती है कि वे हाथी के चित्र में बैठाये जा सकते हैं।

गज-बंधन—पुं० [ष० त०] १. हाथी बाँधने का खूँटा। २. हाथी बाँधने का सिक्कड़।

गजब—पुं० [अ० ग़ज़ब] १. भीषण क्रोध। बहुत तेज गुस्सा। कोप। प्रकोप।

पद—ग़ज़ब इलाही=ईश्वर का या दैवी कोप।

२. उक्त प्रकार के कोप के कारण पड़नेवाली बहुत बड़ी विपत्ति या संकट।

मुहा०—(किसी पर) गजब गुजारना=ऐसा काम करना जिससे किसी पर बहुत अधिक विपत्ति पड़े। उदा०—गजब गुजारत गरीबन की धार पै। —पद्माकर **(किसी पर) गजब ढाना**=किसी के लिए भीषण विपत्ति या संकट उत्पन्न करना।

३. बहुत बड़ा अनिष्ट। अनर्थ। ४. अन्याय। जुल्म।

मुहा०—गजब ढाना=अन्याय या जुल्म करना। जैसे—ये आँखें गजब ढाती हैं।

५. बहुत ही अद्‌भुत या विलक्षण काम या चीज।

पद—गजब का=जो गुण, मात्रा आदि के विचार से बहुत बढ़-चढ़कर हो। बहुत अधिक और असाधारण। जैसे—गजब की शोखी।

गज-बाँक—पुं० =गज-बाग।

गज-बाग—पुं० [सं० गज+फा० बाग=लगाम] हाथी को चलाने का अंकुश।

गजबीला—वि० [हिं० गजब] [स्त्री० गजबीली] गजब करने या ढानेवाला।

गजबेली—स्त्री० [सं० गज+वल्ली] कांति-सार लोहा।

गज-भक्षक—पुं० [ब० स०] पीपल।

गज-मणि—उभय० [मध्य० स०] गज-मुक्ता।

गज-मद—पुं० [ष० त०] मत्त हाथी के मस्तक से बहनेवाला दान या मद।

गजमनि—स्त्री० =गज-मणि (गजमुक्ता)।

गज-मुक्ता—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जो हाथी के मस्तक में स्थित माना जाता है। गज-मणि।

गज-मुख—पुं० [ब० स०] वह जिसका मुख हाथी के समान हो, अर्थात् गणेश जी।

गज-मोचन—पुं० [ष० त०] विष्णु का वह रूप जिसे धारण करके उन्होंने ग्राह से एक हाथी का उद्धार किया था।

गजमोती—पुं० [सं० गजमौक्तिक, प्रा० गजमोत्तिअ] गज-मुक्ता।

गज-मौक्तिक—पुं० [मध्य० स०] गज-मुक्ता।

गजर—पुं० [सं० गर्ज० हिं० गरज से वर्ण-विपर्यय] १. प्राचीन काल में, एक एक पहर पर समय-सूचक घंटा या घड़ियाल बजने का शब्द। पारा। २. बहुत तड़के या प्रभात के समय बजनेवाले घंटे या घड़ियाल का शब्द। उदा०—सुबह हुई, गजर बजा, फूल खिले हवा चली।—कोई शायर।

मुहा०—गजरदम या गजरबजे=बहुत तड़के या सबेरे।

३. आज-कल चार, आठ और बारह बजने पर उतनी बार घंटा बज चुकने के बाद फिर उतनी ही बार परंतु जल्दी जल्दी फिर उतने ही घंटे बजने का

शब्द। ४. आज कल की घड़ियों में कुछ विशिष्ट यांत्रिक क्रिया से जगाने आदि के लिए घंटी के जल्दी जल्दी और गन-गन करके बजने का शब्द।

पुं० [हिं० गजर बजर=मिला-जुला] लाल और सफेद मिला हुआ गेहूँ।

गज-रथ—पुं० [मध्य० स०] वह रथ जिसे हाथी खींचते हों।

गजर-दम—क्रि० वि० [हिं० गजर+फा० दम] प्रभात के समय। बहुत सबेरे। तड़के।

गजर प्रबंध—पुं० [हिं० गजर+सं० प्रबंध] नाच-गाना आरंभ करने से पहले गाने और बजानेवालों का अपना स्वर और बाजे ठीक करना या मिलाना।

गजर बजर—वि० [अनु०] बिना समझे-बूझे यों ही एक दूसरे के साथ मिलाया या रखा हुआ।

पु० बेमेल चीजों की एक दूसरी में मिलावट।

गजर-भत्ता†—पुं०=गजर भात।

गजरभात—पुं० [हिं० गाजर+भात] गाजर और चावल उबालकर बनाया जानेवाला मीठा भात।

गजरा—पुं० [हिं० गंज=समूह] १. फूलों की घनी गुँथी हुई बड़ी माला। हार। २. उक्त प्रकार की वह छोटी माला जो कलाई पर गहने के रूप में पहनी जाती है। ३. मशरू नामका रेशमी कपड़ा।

पुं० [हिं० गाजर] गाजर के पत्ते जो चौपायों को खिलाये जाते हैं।

गजराज—पुं० [ष० त०] बहुत बड़ा हाथी।

गजरी—स्त्री० [हिं० गजरा] एक गहना जो स्त्रियाँ कलाई में पहनती हैं।

स्त्री० [हिं० गाजर] एक प्रकार की छोटी गाजर।

गजरौट—स्त्री० [हिं० गाजर+औट (प्रत्य०)] गाजर की पत्ती। गजरा।

गजल—स्त्री० [फा० गजल] १. वह कविता जिसमें नायिका के सौंदर्य और उसके प्रति प्रेम का वर्णन हो। २. फारसी और उर्दू में एक प्रकार का पद्य जिसमें दो-दो कड़ियों का एक-एक चरण होता है तथा प्रत्येक दूसरी कड़ी में अनुप्रास होता है।

विशेष—(क) इसके गाने की पद्धति दिल्ली से चली थी। (ख) यह कई प्रकार के हलके रागों और धुनों में गाई जाती है। (ग) एक गजल के विभिन्न चरणों में एक-एक स्वतंत्र भाव होता है।

गजलील—पुं० [ब० स०] ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

गज-वदन—पुं० [ब० स०] गणेश जी।

गजवान†—पुं०=हाथीवान (महावत)।

गज-विलसिता—स्त्री० [ब० स०] एक प्रकार का छंद या वृत्त।

गज-वीथी—स्त्री० [ष० त०] १. हाथियों की पंक्ति। २. शुक्र की गति के विचार से रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रों का वर्ग जिसके बीच से होकर शुक्र चलता है।

गज-व्रज—पुं० [सं० गज√व्रज (गति)+अच्, उप० स०] हाथियों पर चलनेवाली सेना।

वि० हाथी की-सी चालवाला।

गज-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ हाथी बाँधे जाते हों। फीलखाना।

गज-स्नान—पुं० [ष० त०] हाथियों की तरह किया जानेवाला स्नान जिसमें वे नहा चुकने के बाद फिर ढेर सी धूल और मिट्टी उड़ाकर अपना सारा शरीर गंदा कर लेते हैं। फलतः ऐसा काम जो कर चुकने के बाद न करने के समान कर दिया जाय।

गजही—स्त्री० [हिं० गाज=फेन] वह मथानी जिससे कच्चा दूध मथकर मक्खन निकाला जाता है।

गजा*—पुं० [?] वह डंडा जिससे बड़ा ढोल या नगाड़ा बजाया जाता है।

गजाजीव—पुं० [सं० गज-आ√जीव् (जीना)+अप्] वह जिसकी जीविका हाथी पालने अथवा हाथी चलाने से चलती हो।

गजाधर—पुं०=गदाधर।

गजानन—पुं० [गज-आनन, ब० स०] गणेश जी, जिनका मुँह हाथी के समान है।

गजायुर्वेद—पुं० [गज-आयुर्वेद, ष० त०] वह शास्त्र जिसमें हाथियों के रोगों और उनके निदान का विवेचन होता है।

गजारि—पुं० [गज-अरि, ष० त०] १. हाथी का शत्रु अर्थात् शेर। सिंह। २. एक प्रकार का साल वृक्ष।

गजारी*—पुं०=गजारि।

गजारोह—पुं० [सं० गज-आ√रुह (चढ़ना)+अण्] १. हाथी पर चढ़ना। २. महावत।

गजाल—पुं० [देश०] १. एक प्रकार की मछली। २. खूँटा या खूँटी।

गजाशन—पुं० [गज-अशन, ष० त०] पीपल का पेड़।

गजासुर—पुं० [गज-असुर, मध्य० स०] एक दैत्य जिसका वध शिवजी ने किया था।

गजास्य—पुं० [गज-आस्य, ब० स०] गणेश जी।

गजिया—स्त्री० [हिं० गज] तारकशों और विटाई करनेवालों का एक औजार।

गजी—पुं० [फा० गज] एक प्रकार का देशी मोटा सस्ता कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम। जैसे—गजी-गाढ़ा पहनना। (अर्थात् देशी, मोटा और सस्ता कपड़ा पहनना)

वि०, पुं० [सं० गज+इनि] गजारोही।

स्त्री० [सं० गज+ ङीष्] हाथी की मादा। हथिनी।

गजेंद्र—पुं० [गज-इंद्र, ष० त०] १. हाथियों का राजा, ऐरावत। २. बहुत बड़ा हाथी। गजराज। ३. पुराणानुसार वह हाथी जिसे जल में ग्राह (घड़ियाल) ने पकड़ लिया था और जिसे भगवान् कृष्ण ने आकर छुड़ाया था।

गजेंद्र-गुरु—पुं० [ष० त०] रुद्रताल का एक भेद। (संगीत)

गज्ज—स्त्री०=गरज (गर्जन)।

गज्जन—पुं० दे० 'गजनी'।

गज्जना*—अ०=गरजना।

गज्जर†—पुं० [अनु०] ऐसी भूमि जिसमें कीचड़ होने के कारण पैर धँसते हों। दलदल।

गज्जल—पुं० [?] अंजीर।

गज्जूह*—पुं० [सं० गज+यूथ] हाथियों का झुंड या दल।

गज्झा†—पुं० [सं० गज्ज=शब्द] तरल पदार्थ में होनेवाले बहुत से छोटे-छोटे बुलबुलों का समूह। गाज। फेन।

मुहा०—गज्झा छोड़ना देना या मारना=मछली का पानी के अंदर से बुलबुले फेंकना।

पुं० [सं० गंज, फा० गंज] १. ढेर। राशि। २. कोश। खजाना। ३. धन-संपत्ति। दौलत।

मुहा०—गज्झा मारना=अनुचित रूप से और एक साथ बहुत-सा धन प्राप्त करना।

४. फायदा। मुनाफा। लाभ। (बाजारू)

गंझिन†—वि० [हिं० गंजना] १. घना। सघन। २. गाढ़ा और मोटा (कपड़ा या उसकी बुनावट)।

गट—पुं० [अनु०] किसी तरल पदार्थ को पीते समय गले से होनेवाला शब्द।

पद—गट से=एक दम से। एक बारगी।

पुं० [सं० गण] १. ढेर। राशि। समूह। २. जत्था। झुंड।

गटई†—स्त्री० [सं० कण्ठ या हिं० गट] गरदन। गला।

†स्त्री० १. =गिट्टी। २. =गोटी।

गटकना—अ० [सं० कण्ठ या हिं० गट] कोई चीज इस प्रकार खाना या पीना कि गले से गट शब्द हो।

स० १. कोई चीज खाना, पीना या निगलना। २. हड़पना।

गटकीला—वि० [हिं० गटक+ईला (प्रत्य०)] १. जो गटका जा सके। गटके जाने के योग्य। २. जिसे गटकने को स्वभावतः जी चाहे। उदा०—घर घर माखन गटकीले।—नारायण स्वामी।

गटगट—पुं० [अनु०] तरल पदार्थ को निगलने या पीने के समय गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० गले से उक्त प्रकार का शब्द करते हुए, जल्दी जल्दी और तेजी से। जैसे-गटगट सारी बोतल पी जाना।

गटना†—स० [सं० ग्रन्थन, प्रा० गंठन] १. अच्छी तरह या कस कर पकड़ना। उदा०—अपनी रुचि जितही तित खैंचति इंद्रिय ग्राम गटी।—सूर। २. किसी से युक्त या संबद्ध करना। मिलाना या लगाना। ३. गाँठ-बाँधना या लगाना।

अ० किसी से बँधा, मिला या लगा होना। युक्त होना।

गटपट—स्त्री० [अनु०] १. दो व्यक्तियों में होनेवाली घनिष्ठता। २. संभोग। सहवास। ३. विभिन्न वस्तुओं में होनेवाला मेल। मिलावट।

गटर—वि० [?] १. बड़ा। २. अधिक।

गटरमाला—स्त्री० [हिं० गटर+माला] बड़े दानोंवाली माला।

गटा†—पुं०=गट्टा।

गटागट—क्रि० वि०=गटगट।

गटापारचा—पुं० [मलाया देश०] १. एक प्रकार का गोंद। २. उक्त गोंद का वह रूप जो उसे रासायनिक क्रियाओं से स्वच्छ तथा कड़ी करने पर होता है तथा जिससे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

गटी—स्त्री० [सं० ग्रन्थि, पा० गंठि] गाँठ।

स्त्री०=गट (समूह)।

क्रि० वि० [हिं० गट=समूह] बहुत अधिक।

गट्ट—पुं०=गट।

गट्टा—पुं० [सं० ग्रन्थ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ] १. गाँठ । २. हथेली और पँहुचे के बीच का जोड़। कलाई। ३. पैर की नली और तलवे के बीच की गाँठ। ४. नैचे के नीचे की वह गाँठ जहाँ दोनों नयें मिलती हैं और जो फरशी या हुक्के के मुँह पर रहती है। ५. किसी चीज का मोटा और कड़ा बीज। जैसे—कमल-गट्टा। ६. एक प्रकार की देहाती मिठाई।

गट्टी—स्त्री० [देश०] १. जहाज या नाव में पाल बाँधने के खंभे के नीचे की चूल। (लश०) २. नदी का किनारा।

गट्टू†—पुं० [हिं० गट्टा] दस्ता। मुठिया।

गट्ठर—पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठरी] १. बड़े कपड़े में रख, लपेट तथा गाँठ लगाकर बाँधा हुआ रूप। जैसे—धोबी के कपड़ों का गट्ठर। २. रस्सियों आदि से बँधा हुआ सामान। जैसे—घास या लकड़ियों का गट्ठर।

मुहा०—गट्ठर साधना=घुटनों को छाती से लगाकर और ऊपर से हाथ बाँधकर अर्थात् सारे शरीर को गट्ठर का रूप देकर ऊँचाई पर से पानी में कूदना।

गट्ठा—पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. गट्ठर (दे) २. प्याज, लहसुन आदि की गाँठ। ३. जरीब का बीसवाँ भाग जो तीन गज का होता है। कट्ठा।

गट्ठी—स्त्री० १. =गठरी। २. =गाँठ।

गठकटा—वि०=गँठ-कटा।

गठजोड़ा (जोरा)—पुं०=गँठ-जोड़ा (गँठबंधन)।

गठडंड—पुं० [हिं० गड्ढा+डंड] एक प्रकार का डंड। (व्यायाम)

गठन—स्त्री० [सं० घटन] १. गठे हुए होने की अवस्था या भाव। २. वह अवस्था या स्थिति जिसमें किसी वस्तु के विभिन्न अंग या अवयव किसी खास ढंग से बने हुए दिखाई पड़ते हों। बनावट। रचना।

गठना—अ० [हिं० गाँठना] १. दो वस्तुओं का परस्पर मिल कर एक होना। जुड़ना। सटना।

पद—गठा-बदन=हृष्ट-पुष्ट शरीर।

२. मोटी सिलाई होना। बड़े-बड़े टाँके लगना। जैसे—जूता गठना। ३. कपड़ों आदि की बुनावट। ४. गुप्त परामर्श, विचार, षड़यंत्र आदि में सम्मिलित होकर उसके निश्चय से सहमत होना। ५. अच्छी तरह निर्मित होना या बनना। ६. आपस में खूब मेल-मिलाप और साहचर्य होना। ७. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का संभोग होना।

गठबंधन—पुं०=गँठबंधन।

गठरी—स्त्री० [हिं० गट्ठर का स्त्री० और अल्पा०] १. किसी वस्तु अथवा वस्तुओं को कपड़े से चारों ओर से लपेटकर गाँठ बाँधने पर बननेवाला रूप। छोटा गट्ठर।

मुहा०—गठरी बाँधना=(असबाब बाँधकर) यात्रा की तैयारी करना। **(किसी को) गठरी कर देना**=मार-पीटकर या बाँधकर बेकाम कर देना।

२. लाक्षणिक अर्थ में, कमाई या पूँजी। धन। जैसे—घबराओ मत, उस बुढ़िया की गठरी तुम्हीं को मिलेगी।

गठरेवाँ—पुं० [हिं० गाँठ] चौपायों का एक रोग।

गठवाँसी—स्त्री० [हिं० गट्ठा+अंश] कट्ठे वा बिस्वे का बीसवाँ अंश। बिस्वांसी।

गठवाई—स्त्री० [हिं० गाठना] (जूता) गठवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गठवाना—स० [हिं० गाठना] १. गठने या गाँठने का काम दूसरे से कराना। २. बड़ी और मोटी गाँठें लगवाना। जैसे—जूता गठवाना। ३. जोड़ लगवाना। ४. प्रसंग या संभोग कराना।

गठा†—पुं०=गट्ठा।

गठाना—स०=गठवाना।

पुं० [हिं० घुटना] नदी का वह भाग जहाँ घुटने भर जल हो। कम गहरा स्थान। (माँझी)

स०=गठवाना।

गठानी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पुराना देहाती कर।

गठाव—पुं० [हिं० गठना] गठे होने का भाव। गठन।

गठिआ—स्त्री०=गठिया।

गठित—वि० [हिं० गठा] गठा हुआ। (असिद्धरूप)

गठिबंध—पुं०=गँठबंधन।

गठिया—स्त्री० [हिं० गाँठ] १. टाट का वह थैला या बोरा जिसमें घोड़ों, बैलों आदि पर लादने के लिए अनाज भरा जाता है। खुरजी। २. कोरे कपड़ों आदि की वह बड़ी गठरी जो बाहर भेजने के लिए बाँधी जाती है। ३. शरीर के अंगों की गाँठों या जोड़ों में होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमें पीड़ा और सूजन होती है। (रियुमेटिज्म) ४. पौधों या वृक्षों में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

गठियाना†—स० [हिं० गाँठ] १. किसी वस्तु के दो छोरों अथवा दो विभिन्न वस्तुओं के दो छोरों को जोड़ने या बाँधने के लिए उनमें गाँठ लगाना। जैसे—टूटे हुए धागे को गठियाना। २. कोई चीज बाँधकर ऊपर से गाँठ लगाना। जैसे—धोती के पल्ले में पैसे गठियाना।

गठिवन—पुं० [सं० ग्रंथिपर्ण] मँझोले आकार का एक पहाड़ी पेड़ जिसकी पत्तियों में जगह-जगह गाँठें होती हैं। इसकी कलियाँ औषध के काम आती हैं।

गठीला—वि० [हिं० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमें बहुत-सी गाँठें-पड़ी हों। गाँठोंवाला।

वि० [हिं० गठन] १. जिसकी गठन या बनावट अच्छी और सुंदर हो। गठा हुआ। । २. हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

गठुआ—पुं० [हिं० गाँठ] १. कपड़े का वह टुकड़ा जिससे जुलाहे ताने के ताँगों को गठकर ठस करते हैं।

गठुवा—पुं०=गठुआ।

गठौंद†—स्त्री० [हिं० गाँठ+बध] १. गाँठ बाँधने की क्रिया या भाव। २. थाती। धरोहर।

गठौत—स्त्री० [हिं० गठना] १ गँठ-बंधन। २. मेल-मिलाप या संग-साथ। ३. आपस में अच्छी तरह सोच-समझकर तै की हुई गुप्त बात। ४. किसी काम या बात की उपयुक्तता।

गठौती—स्त्री०=गठौत।

गडंग—पुं० [हिं० गढ़+अंग] अस्त्र-शस्त्र, बारूद आदि रखने का स्थान।

पुं० [सं० गर्व] १. घमंड। शेखी। २. आत्म-श्लाघा।

गडंगिया†—वि० [हिं० गडंग] १. डींग मारनेवाला। शेखीबाज। २. बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला।

गड़ंत—स्त्री० [हिं० गाड़ना] १. अभिचार या टोटके के लिए, मंत्र आदि पढ़कर कोई चीज कहीं गाड़ने की क्रिया। २. उक्त प्रकार से गाड़ी जानेवाली चीज।

गड—पुं० [सं० √गड् (सींचना)+अच्] १. ओट। आड़ २. घेरा। मंडल। ३. चार-दीवारी। प्राचीर। ४. गड्ढा। ५. खाई।

गडक—पुं० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गड़कना—अ० [अनु०] गड़-गड़ शब्द होना।

अ० [अ० गर्क] १. डूबना। २. नष्ट होना।

अ०=गरजना।

गड़काना—स० [अनु० गड+क] गड़-गड़ शब्द उत्पन्न करना। गड़गड़ाना।

स०=गरकाना (गरक करना या डुबाना)।

गडक्क†—पुं० [अ० गर्क] १. डूबने या डुबाने से होनेवाला शब्द। २. पानी की उतनी गहराई जितने में आदमी डूब सके।

गड़गज—पुं०=गरगज।

गड़गड़ा—पुं० [गड़ गड़ शब्द से अनु०] लंबी नली या सटकवाला बड़ा हुक्का।

गड़गड़ाना—अ० [हिं० गड़गड़] १. गड़गड़ होना। जैसे—हुक्का गड़गड़ाना। २. गरजना।

स० गड़-गड़ शब्द उत्पन्न करना।

गड़गड़ाहट—स्त्री० [हिं० गड़गड़ाना] गड़गड़ रूप में होने या गड़गड़ाने का शब्द। जैसे—गाड़ी या बादलों की गड़गड़ाहट।

गड़गड़ी—स्त्री० [हिं० गड़गड़] एक प्रकार की बड़ी डुग्गी या छोटा नगाड़ा।

गड़गूदड़—पुं० [हिं० गूदड़] चिथड़ा। लत्ता।

गड़च्चा†—पुं० 'दे०' 'गच्चा'।

गड़दार—पुं० [हिं० गँड़ासा+फा० दार] १. वह व्यक्ति जो मतवाले हाथी को सँभालने के लिए हाथ में भाला लेकर उसके साथ साथ चलता है।* २. महावत।

गड़ना—अ० [सं० गर्त्त, प्रा० गड्ड=गड्ढा] १. हिन्दी 'गड़ना' का अकर्मक रूप। २. जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्ढे में गाड़ा जाना। जैसे—तार का खंभा गड़ना, कब्र में मुरदा या लाश गड़ना।

मुहा०—गड़े मुरदे उखाड़ना=पुरानी या बीती हुई बातें फिर से उठाकर उनके सम्बन्ध में झगड़ना या तर्क-वितर्क और वाद-विवाद करना।

३. ऊपर से किसी प्रकार का दबाव पड़ने पर नीचेवाले तल में धँसना या प्रविष्ट होना।

मुहा०—(लज्जा के मारे) जमीन में गड़ना=लज्जा के कारण ऐसी स्थिति में होना कि मुँह दिखाने या सिर उठाने का साहस न होता हो। जैसे—मैं तो उनकी बातें सुनकर लज्जा के मारे जमीन में गड़ गया। ४. किसी चीज का कुछ अंश जमीन के अन्दर इस प्रकार जमना या स्थापित होना कि वह चीज वहाँ स्थित हो जाय। जैसे—किले पर झंडा गड़ना। ५. उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में कहीं प्रविष्ट होकर स्थापित या स्थित होना। उदा०—उर में माखन-चोर गड़े। ६. किसी कड़ी और नुकीली चीज का शरीर के किसी अंग में कुछ छेद करते हुए उसके अन्दर धँसना या पहुँचना। चुभना। जैसे—पैर में काँटा या हाथ में सूई गड़ना। ७. किसी परकीय या बाह्य पदार्थ के शरीर में आने या होने के कारण उसके दबाव से किसी अंग में पीड़ा या कष्ट होना। जैसे—भोजन न पचने के कारण पेट गड़ना; धूल का कण पड़ने के कारण

आँख गड़ना। ८. लाक्षणिक रूप में किसी अनुचित, अनुपयुक्त या अशोभन बात का मन में कुछ कसक या खटक उत्पन्न करना। खटकना। जैसे—इतने सुन्दर चित्रों के बीच में वह भद्दा चित्र हमें तो गड़ रहा था। ९. आँख या ध्यान के सम्बन्ध में, किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी चीज या बात पर स्थित या स्थिर होना। जमना। जैसे—(क) मेरी आँखें उसके चेहरे पर गड़ी थीं। (ख) सबका ध्यान उसकी बातों पर गड़ा था।

गड़पंख—पुं० [सं० गरुड़+हिं० पंख] १. एक प्रकार की बड़ी चिड़िया। २. लड़कों का एक प्रकार का खेल, जिसमें वे किसी को तंग करने के लिए पक्षी की तरह बनाकर बैठाते हैं।

गड़प—स्त्री० [अनु०] १. पानी, कीचड़ आदि में किसी चीज के सहसा गिरने या डूबने का शब्द। २. किसी वस्तु को बिना चबाये निगल जाने की क्रिया या भाव।

पद—गड़प से=चटपट। तुरन्त।

गड़पना—स० [अनु० गड़प] १. किसी वस्तु को बिना चबाये निगल जाना। जल्दी में खा या निगल लेना। २. किसी की चीज लेकर पचा जाना। अनुचित रूप से दबा बैठना। हड़पना।

गड़प्पा—पुं० [हिं० गाड़] १. बड़ा गड्ढा। २. पशुओं को फँसाने के लिए बनाया हुआ गड्ढा। ३. बहुत बड़े धोखे की जगह।

गड़बड़—वि० [अनु०] १. जिसमें ठीक क्रम, परम्परा, व्यवस्था आदि का अभाव हो। विश्रृंखल। जैसे—तुम्हारा यह लेखा बहुत गड़बड़ है। २. बिना किसी क्रम, नियम या व्यवस्था के अथवा खराब या भद्दी तरह से आपस में मिला या मिलाया हुआ। जैसे—तुमने अलमारी की सब पुस्तकें गड़बड़ कर दीं। ३. बे-ठिकाने या बे-सिर-पैर का। अंड-बंड। ऊट-पटाँग। जैसे—तुम्हारी इस तरह की गड़बड़ कार्रवाई यहाँ नहीं चलने पायेगी।

पुं० [स्त्री० गड़बड़ी, वि० गड़बड़िया] १. ऐसी अवस्था जिसमें क्रम, नियमितता, व्यवस्था आदि का बहुत अधिक और खटकनेवाला अभाव हो। जैसे—तुम जहाँ पहुँचते हो, वहीं कुछ न कुछ गड़बड़ करते हो। २. असावधानता, भूल, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ कर देने की क्रिया या भाव। ३. उत्पात। उपद्रव।

गड़बड़-घोटाला—पुं० दे० 'गड़बड़ झाला'।

गड़बड़-झाला†—पुं० [अनु०] ऐसा काम, बात या स्थिति जिससे बहुत अधिक गड़बड़ी हो।

गड़बड़ा†—पुं०=गड़प्पा।

गड़बड़ाध्याय—पुं० दे० 'गड़बड़ा-झाला'।

गड़बड़ाना—अ० [हिं० गड़बड़] १. गड़बड़ी, चक्कर या धोखे में पड़ना। २. क्रम आदि लगाने के समय भूल करना। भ्रम में पड़ना। ३. अस्त-व्यस्त या तितर-बितर होना।

स० १. गड़बड़ी, चक्कर या धोखे में डालना। २. भ्रम में डालना। ३. क्रम आदि के विचार से आगे-पीछे या इधर-उधर करना। ४. अस्त-व्यस्त या तितर-बितर करना।

गड़बड़िया—वि० [हिं० गड़बड़] १. जो कोई काम ठीक-ठिकाने अथवा व्यवस्थित रूप से न करता हो। क्रम, व्यवस्था आदि बिगाड़नेवाला। गड़बड़ करनेवाला। २. उपद्रव या दंगा करनेवाला। अशांति फैलानेवाला।

गड़बड़ी—स्त्री०=गड़बड़।

गड़रातवा—पुं० [देश० गड़रा=गाढ़ा+हिं० तवा] एक प्रकार का लोहा जो किसी समय मध्यभारत की खानों से निकलता था।

गड़रिया—पुं० दे० 'गड़ेरिया'।

गड़री—पुं०=गड़ेरिया।

गड़रू—पुं० दे० 'गुड़रू'।

गड़-लवण—पुं० [सं० गर्तलवण वा गडलवण] साँभर नमक।

गड़वाँत—स्त्री० [हिं० गाड़ी+वाट] कच्ची सड़क पर बना हुआ गाड़ी के पहियों का चिह्न। लीक।

गड़वा†—पुं० १. =गाड़ा। २.=गड़ुआ।

गड़वात—स्त्री० [हिं० गाड़ना] १. कोई चीज जमीन में गाड़ने की क्रिया। २. गड्ढा खोदने का काम। ३. जमीन पर पड़ा हुआ गाड़ियों के पहियों का निशान।

गड़वाना—स० [हिं० गाड़ना का प्रे० रूप] गाड़ने का काम किसी से कराना। गाड़ने में लगाना।

स० [हिं० गड़ाना] गड़ाने का काम दूसरे से कराना।

गड़हन—पुं० [हिं० जड़हन का अनु० ?] एक प्रकार का धान। उदा०—गड़हन, जड़हन, बड़हन मिला। —जायसी।

गड़हा—पुं० [स्त्री० अल्पा० गड़ही]=गड्ढा।

गड़ा—पुं० [हिं० गड़] कटी हुई फसल के डंठलों का ढेर। गाँज। खरही।

पुं० [गण=समूह] ढेर। राशि।

पद—गड़ा-बँटाई। (देखें)

गड़ाकू—स्त्री० [सं० गल] एक प्रकार की मछली।

गड़ाना—स० [हिं० गड़ना] हिं० गड़ना का स० रूप। चुभाना। कोई नुकीली तथा कड़ी चीज किसी के अंदर धँसाना।

स० दे० 'गड़वाना'।

गड़ाप—पुं० [अनु०] जल में कोई भारी वस्तु गिरने या फेंकने से होनेवाला शब्द।

गड़ापा—पुं०=गड़प्पा।

गड़ा-बँटाई—स्त्री० [हिं० गड़ा=गाँज+बँटाई] फसल की वह बँटाई जिसमें वह दाएँ जाने के पहले डंठलों आदि के सहित बाँटी जाती है। काटकर रखी हुई फसल की बँटाई।

गड़ायत—वि० [हिं० गड़ना] गड़ने, चुभने या धँसनेवाला।

गड़ारी—स्त्री० [सं० गंड=चिह्न] १. मंडलाकार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २. घेरा। मंडल। जैसे—गड़ारीदार पाजामा। ३. वृत्ताकार चिह्न या धारी। आड़ी-तिरछी रेखाएँ। जैसे—रुपए की आँवठ पर की गड़ारियाँ। ४. वह छोटा गोल पहिया जो लोहे के छड़ के चारों ओर घूमता है और जिस पर मोटी रस्सी लगाकर नीचे से भारी चीजें उठाई या ऊपर खींची जाती हैं। घिरनी। (पुली) जैसे—कूएँ की गड़ारी। ५. उक्त के दोनों किनारों के बीच की दबी हुई जगह जिसमें रस्सी रखी जाती है। ६. एक प्रकार की घास।

गड़ारीदार—वि० [हिं० गड़ारी+फा० दार] १. जिस पर गड़ारियाँ अर्थात् गंडे या धारियाँ पड़ी हों। जैसे—गड़ारीदार रुपया, गड़ारीदार कसीदा। २. जिसमें छोटे-छोटे घेरे हों या पड़ते हों। जैसे—गड़ारीदार पाजामा=चौड़ी मोहरी का पाजामा।

गड़ावन—पुं०[सं० गड-लवण] एक प्रकार का नमक।

गड़ासा—पुं०=गँड़ासा।

गडि—पुं० [सं० √गड् (मुख का एक देश होना)+इन्] १. वच्चा। बछड़ा। २. जल्दी न चलनेवाला या मट्ठर बैल।

गड़ियार—वि०=गरियार।

गड़िवारा—पुं० [स्त्री० गड़िवारिन]=गाड़ीवान।

गड़ु—पुं० [सं० √गड्+उन्] १. रोग के रूप में शरीर के किसी अंग में उठी हुई गाँठ। जैसे—कूबड़, वतौरी आदि। २. गंड-माला नामक रोग।

†वि० [हिं० गड़ना] गड़ने या चुभनेवाला।

†वि०=गुरु (भारी)।

गडुआ—पुं० [सं० गडु] [स्त्री० अल्पा० गड़ई वा गडुई] एक प्रकार का टोंटीदार लोटा।

गडुई—स्त्री० [हिं० गडुआ का स्त्री० अल्पा० रूप] पानी रखने का छोटा गडुआ। झारी।

गडुक—पुं० [सं० गडु√कै (प्रतीत होना)+क] टोंटीदार लोटा। गडुआ।

गडुर†—पुं० दे० 'गडुल'।

——†पुं०=गरुड़।

गडुल—पुं०[सं० गडु+ल] वह व्यक्ति जिसका कूवड़ निकला हो।

वि० कुबड़ा। कुब्ज।

गडुलना—पुं०=गड़ोलना।

गडुवा†—पुं० दे० 'गडुआ'।

गडेर—पुं० [सं० √गड्+एरक्] वादल। मेघ।

गड़ेरिया—पुं० [सं० गड्डरिक, प्रा० गड्डरिअ] [स्त्री० गड़ेरिन] १. भेड़ें पालनेवाली एक प्रसिद्ध जाति।

पद—गड़ेरिया पुराण=गड़ेरियों की-सी या गँवारू बात-चीत और कथा-कहानियाँ।

२. उक्त जाति का पुरुष। वह जो भेड़ें चराता या पालता हो। ३. रहस्य संप्रदाय में, ज्ञान जो मनुष्य को परमात्मा की ओर ले जाता है।

गड़ेरुआ—पुं० [सं० गण्डोल=ग्रास] चौपायों का एक रोग।

गड़ैता—पुं० [देश०] खैरें रंग का एक प्रकार का लंवा साँप जिसकी पीठ पर गड़ारियाँ होती हैं।

गड़ोना†—पुं० [?] एक प्रकार का पान। गड़ौना।

†स०=गड़ाना (चुभाना)।

गडोल—पुं० [सं० √गड्+ओलच्] १. ग्रास। कौर। २. गुड़।

गडोलना†—पुं० [हिं० गाड़ी+ओला, ओलना (प्रत्य०)] बच्चों के खेलने की छोटी गाड़ी।

गड़ौना—पुं० [हिं० गाड़ना] एक प्रकार का पान जिसे पकाने के लिए जमीन में गाड़कर रखा जाता है।

†पुं० [हिं० गड़ना] गड़ने या चुभनेवाली चीज। जैसे—काँटा।

गड्ड—पुं० [सं० गण] [स्त्री० गड्डी] १. एक ही तरह या आकार-प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं का एक के ऊपर एक रखा हुआ समूह। गंज। थाक। जैसे—कागजों या पुस्तकों का गड्ड। २. मूल्य, लागत आदि के विचार से एक साथ रहनेवाली छोटी-बड़ी या कई तरह की चीजों का समूह।

पद—गड्ड में=छोटी-वड़ी, महँगी-सस्ती या सव तरह की चीजें एक साथ और एक भाव से लेने पर।

पुं०=गड्ढा।

गड्डना†—स०=गाड़ना। उदा०—को गड्डैं खोवेत्तिको, को विलसै करि भेव।—चन्दवरदाई।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—वि० [हिं० गड्ड] १. अव्यवस्थित रूप से एक दूसरे में मिलाया हुआ। २. अंड-बंड या वेमेल।

गड्डर—पुं० [सं० √गड्+डर] [स्त्री० गड्डरी, वि० गड्डरिक] १ भेड़ा। मेष। २. भेड़।

गड्डरिक—पुं०[सं० गड्डर+ठन्—इक] गड़ेरिया।

वि० भेड़-संवंधी। भेड़ का।

गड्डरि (लि) का—स्त्री०[सं० गड्डरिक+टाप्] भेड़ों की पाँत।

गड्डलिका-प्रवाह—पुं० [ष० त०] भेड़िया-धसान। (दे०)

गड्डरी—पुं०=गड़ेरिया।

गड्डा—पुं० [हिं० गड्ड] १. किसी चीज की बड़ी गड्डी। गड्ड। २. आतिशवाजी में चरखियों आदि में लगाया जानेवाला पटाखा जो आतिशवाजी छूटने के समय बहुत जोर का शव्द करता है।

†पुं० [देश०] बड़ी वैलगाड़ी।

†पुं० =गड्ढा।

गड्डाम—वि०[अं० गॉड+डेम इट] [स्त्री० गड्डामी] १. पाजी। लुच्चा। २. नीच।

गड्डी—स्त्री० [हिं० गड्ड का स्त्री०] १. प्रायः एक ही आकार तथा प्रकार की वस्तुओं का क्रमशः ऊपर-तले रखा हुआ समूह। गंज। जैसे—नये नोटों की गड्डी, ताश की गड्डी, पान की गड्डी आदि। २. ढेर। समूह। गाँज। जैसे—आमों की गड्डी।

गड्डुक, गड्डूक—पुं० [सं० गडुक, पृषो० सिद्धि] गडुआ (पात्र)।

गड्ढा—पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड] १. वह जमीन जो प्राकृतिक क्रिया या रूप से आस-पास या चारों ओर की जमीन से बहुत-कुछ गहरी या नीची हो। जमीन में वह खाली स्थान जिसमें लम्वाई, चौड़ाई और गहराई हो। जैसे—मिट्टी धँसने के कारण जमीन में जगह-जगह गड्ढे पड़ गये थे। २. उक्त प्रकार की वह जमीन जो खोदकर आस-पास की जमीन से गहरी और नीची की गई हो। जैसे—पानी जमा करने के लिए गड्ढा खोदना। ३. किसी तल में वह अंश जो आस-पास के तल से कुछ गहरा या नीचा हो। जैसे—आँखों में या गालों पर गड्ढे पड़ना। ४. ऐसी अवस्था या स्थिति जो किसी दृष्टि से विपत्ति लाने, संकट में डालने या हानि करनेवाली हो। जैसे—अभी क्या है! आगे चलकर इस काम में और भी बड़े-वड़े गड्ढे मिलेंगे।

मुहा०—(किसी के लिए) गड्ढा खोदना=ऐसी स्थिति उत्पन्न करना, जिसमें कोई विपत्ति में पड़े या किसी को संकट का सामना करना पड़े। जैसे—जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वह आप गड्ढे में पड़ता है।

गड्ढा पाटना या भरना=विपत्ति या संकट की जो स्थिति उत्पन्न हुई हो उसे दूर करके फिर पहलेवाली और ठीक स्थिति लाना।

५. लाक्षणिक रूप में उदर। पेट। जैसे—किसी न किसी तरह सवको अपना गड्ढा तो भरना ही पड़ता है।

गढ़ंत—स्त्री० [हिं० गढ़ना] १. कोई चीज गढ़कर तैयार करने या वनाने

की क्रिया या भाव। गढ़न। (देखें) २. अपने मन से गढ़कर कही जानेवाली बात। कपोल-कल्पित बात। जैसे—समय पर इनकी अनोखी गढंत ने हमें बचा लिया। ३. कुश्ती लड़ने के तीन प्रकारों में से एक, जिसमें लड़नेवाले पहलवान आपस में अच्छी तरह गठ या गुथ जाते हैं। वि॰ (कथन या विचार) जो वास्तविक न हो, बल्कि यों ही अपने मन से गढ़कर तैयार किया या बनाया गया हो। कपोल-कल्पित। जैसे—इनकी सब बातें इसी तरह की गढ़ंत होतीं हैं।

गढ़—पुं॰ [सं॰ गड़=खाई] [स्त्री॰ अल्पा॰ गढ़ी] १. ऐसा किला जिसके चारों ओर खन्दक या खाई खुदी हो। २. किला। कोट। दुर्ग।

मुहा॰—गढ़ जीतना या तोड़ना=(क) युद्ध में किसी किले पर अधिकार प्राप्त करना। (ख) कोई बहुत बड़ा या विकट काम संपन्न करना। ३. काठ का बड़ा सन्दूक जिसका उपयोग प्राचीन काल में युद्ध में होता था। ४. किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य अथवा व्यक्तियों का केन्द्र अथवा प्रसिद्ध और मुख्य स्थान। बहुत बड़ा अड्डा। जैसे—(क) यह मुहल्ला तो गुंडों या बदमाशों का गढ़ है। (ख) कलकत्ता और बम्बई पूँजीपतियों के गढ़ हैं।

गढ़कप्तान—पुं॰ [हिं॰ गढ़+अं॰ कैप्टेन] गढ़ या किले का प्रधान अधिकारी।

गढ़त—स्त्री॰ १. =गढ़न। २. =गढंत।

गढ़न—स्त्री॰ [हिं॰ गढ़ना] १. गढ़ने या गढ़े जाने की क्रिया, ढंग या भाव। २. बनावट। रचना।

गढ़ना—स॰ [सं॰ घटन, प्रा॰ घड़न, पश्चिमी हिं॰ घड़ना] १. कोई नई चीज बनाने के लिए किसी स्थूल पदार्थ को काट, छील या तराशकर तैयार या दुरुस्त करना। कारीगरी से निर्मित करना या बनाना। जैसे—पत्थर की मूर्ति या चाँदी-सोने के गहने गढ़ना। २. किसी चीज को काट-छाँट या छील-तराशकर सुन्दर और सुडौल रूप में लाना। जैसे—दरवाजे का पल्ला गढ़ना। ३. परिश्रम या मनोयोग से अच्छी तरह और सुन्दर रूप में कोई काम करना। जैसे—गढ़-गढ़कर लिखना। ४. अपने मन से कोई कल्पित बात बनाकर अथवा कोई बात नमक-मिर्च लगाकर सुन्दर रूप में उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—गढ़-गढ़कर बातें करना। ५. किसी को ठीक रास्ते पर लाने के लिए खूब मारना पीटना। जैसे—मैं किसी दिन तुम्हे गढ़कर ठीक करूँगा।

मुहा॰—(किसी को) हड्डी-पसली गढ़ना=खूब मारना या पीटना।

गढ़पति—पुं॰ [हिं॰ गढ़+पति] १. गढ़ का मालिक या स्वामी। राजा। २. गढ़ का प्रधान अधिकारी।

गढ़वाना—स॰ [हिं॰ गढ़ना का प्रे॰] गढ़ने का काम किसी से कराना।

गढ़वारै—पुं॰=गढ़वाल।

गढ़वाल—पुं॰ [हिं॰ गढ़ + वाला] १. गढ़ का स्वामी अथवा प्रधान अधिकारी। २. उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग का एक पहाड़ी भू-खंड।

गढ़वै—पुं॰ [सं॰ गढ़पति] गढ़ का प्रधान अधिकारी या रक्षक। किलेदार। उदा॰—हठ दृढ़ गढ़ गढ़वै सुचलि लीजै सुरँग लगाय।—विहारी। वि॰ [हिं॰ गढ़+वर्त्ती] आश्रय पाने के लिए सुरक्षित स्थान में छिपा या पहुँचा हुआ। उदा॰—गरम भाजि गढ़वै भई, तिय-कुच अचल मवासु।—विहारी।

गढ़ा—पुं॰ [स्त्री॰ गढ़ी] दे॰ 'गड्ढा'।

गढ़ाई—स्त्री॰ [हिं॰ गढ़ना] गढ़ने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।

गढ़ाना—स॰ [हिं॰ गढ़ना का प्रे॰ रूप] गढ़ने का काम किसी से कराना। गढ़वाना।

अ॰ [हिं॰ गाढ़=संकट] अप्रिय, कष्टकर या भारी जान पड़ना। खलना। गड़ना। जैसे—तुम्हारी ऐसी ही कृतें तो सबको गढ़ाती हैं।

गढ़ाव—पुं॰ [हिं॰ गढ़ना] गढ़ने या गढ़ाने का काम, प्रकार या रूप। गढ़न।

गढ़िया—पुं॰ [हिं॰ गढ़ना] वह जो वस्तुओं को गढ़कर उन्हें सुडौल रूप देता हो।

†स्त्री॰=छोटा गड्ढा।

गढ़ी—स्त्री॰ [हिं॰ गढ़] १. छोटा गढ़ या किला। २. ऊँचाई पर बनी हुई बड़ी और मजबूत इमारत। ३. छोटा गड्ढा।

गढ़ीस*—पुं॰=गढ़पति।

गढ़ैया—पुं॰=गढ़िया (गढ़नेवाला)।

स्त्री॰=गड़ही (छोटा गड्ढा)।

गढोई*—पुं॰=गढ़पति।

गण—पुं॰ [सं॰ √गण् (गिनना) +अच्] १. जत्था। झुंड। समूह। २. कोटि। वर्ग। श्रेणी। ३. किसी के आस-पास रहनेवाले व्यक्तियों का वर्ग या समूह। अनुचरों या परिचारकों का वर्ग। ४. शिव के परिषद। प्रमथ। ५. चर। दूत। ६. नौकर। सेवक। ७. ऐसे पदार्थों, प्राणियों, व्यक्तियों आदि का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। कोटि। वर्ग। जैसे—किसी आचार्य के अनुयायियों या शिष्यों का गण। ८. ऐसे आचार्य का निवास-स्थान जो अपने यहाँ शिष्यों को शिक्षा देता हो। ९. प्राचीन सैनिक-विभाजन में तीन गुल्मों का वर्ग या समूह। १०. नक्षत्रों की तीन कोटियों में से एक। ११. छन्दशास्त्र में तीन वर्णों का वर्ग या समूह। जैसे—जगण, तगण, नगण, भगण, यगण, सगण आदि। १२. व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें एक ही तरह से लोप, आगम, वर्ण-विकार आदि बातें होती हों। १३. चोआ नामक गंध-द्रव्य। १४. दे॰ 'गणराज्य'।

गणक—वि॰ [सं॰ √गण्+णिच्+ण्वुल्—अक] गिनने या गिनती करनेवाला। गणना करनेवाला।

पुं॰ [स्त्री॰ गणकी] १. गणितज्ञ। २. ज्योतिषी।

गणक-केतु—पुं॰ [सं॰ मध्य॰ स॰] एक प्रकार का धूमकेतु।

गण-कर्णिका—स्त्री॰ [सं॰ गण-कर्ण, ब॰ स॰, कप्, टाप्, इत्व] इंद्रवारुणी लता।

गणकार—वि॰ [सं॰ गण√कृ (करना)+अण्] १. गणों का संकलन करनेवाला। २. गणों में बाँटने अथवा वर्गीकरण करनेवाला।

गणकी—स्त्री॰ [सं॰ गणक+ङीष्] ज्योतिषी की पत्नी।

गण-तंत्र—पुं॰ [ष॰ त॰] वह राज्य या राष्ट्र जिसकी सत्ता जन-साधारण (विशेषतः मतदाताओं या निर्वाचकों) में निहित होती है। (रिपब्लिक)

विशेष—गणतंत्र की सरकार जन-साधारण द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की बनी होती है जो निर्वाचकों या मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी होती है।

गण-तंत्री (त्रिन्)—वि॰ [सं॰ गणतंत्र +इनि] १. गणतंत्र-संबंधी।

२. गणतंत्र के सिद्धान्तों को मानने तथा उनमें विश्वास रखनेवाला। (रिपब्लिकन) ३. (देश) जिसमें गणतंत्र हो।

गणदीक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं० गण √दीक्ष् (यज्ञ करना)+णिनि] १. वह पुरोहित जो बहुत-से लोगों की ओर से यज्ञ करता हो। २. वह जिसने गणेश या शिव की दीक्षा ग्रहण की हो।

गण-देवता—पुं० [ष० त०] १. समूहचारी देवता। २. वे देवता जो गणों में विभक्त हैं अथवा जिनके गण बने हैं। जैसे—आदित्य, जिनकी संख्या १२ है और इसी लिए जिनका स्वतन्त्र गण है। इसी प्रकार मरुत्, रुद्र आदि भी गण-देवता कहे जाते हैं।

गण-द्रव्य—पुं० [ष० त०] वह संपत्ति जिस पर किसी वर्ग या समुदाय का सामूहिक अधिकार हो।

गण-धर—पुं० [ष० त०] जैनों में एक प्रकार के आचार्य।

गणन—पुं० [सं० √गण्+ल्युट्—अन] [वि० गणनीय, गणित, गण्य] १. गिनने या गिनती करने की क्रिया या भाव। गिनना। (काउंटिंग) २. गिनती।

गणना—स्त्री० [सं०√गण्+णिच्+युच्—अन] १. गिनती करने की क्रिया या भाव। गणन। जैसे—आपकी गणना नगर के अच्छे वैद्यों में होती है। २. किसी प्रदेश, भूभाग या राज्य के जीवों, मनुष्यों आदि की होनेवाली गिनती। (सेन्सस) जैसे—मनुष्य-गणना, पशु-गणना आदि। ३. गिनती। संख्या। ४. केशव के अनुसार एक अलंकार जिसमें एक-एक संख्या लेकर उससे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थों का उल्लेख होता है। जैसे—गंगा-मग, गंगेश-दृग, ग्रीव-रेख, गुण-लेखि। पावक, काल, त्रिशूल, बलि, संध्या तीनि बिसेखि। —केशव। (इसमें वही चीजें गिनाई गई हैं; जो तीन-तीन होती हैं।)

गण-नाथ—पुं० [ष० त०] १. गणों का नाथ या स्वामी। २. गणेश। ३. शिव।

गण-नायक—पुं० [ष० त०] १. गणेश। २. शिव।

गण-नायिका—स्त्री० [ष० त०] दुर्गा।

गणनीय—वि०[सं०√गण्+अनीयर्]१. गिनने में आने के योग्य। गिने जा सकने के लायक। २. जो गिनी जाने को हो। ३. प्रतिष्ठित या मान्य वर्ग में आ सकने के योग्य।

गणप—पुं० [सं० गण √पा (रक्षा करना)+क] गणेश।

गण-पति—पुं० [ष० त०] १. गण का स्वामी। २. गणेश। ३. शिव।

गण-पर्वत—पुं० [ष० त०] शिव के गणों के रहने का पर्वत अर्थात् कैलास।

गण-पाठ—पुं० [ष० त०] व्याकरण में एक ही नियम के अधीन रहनेवाले शब्दों का वर्ग।

गण-पुंगव—पुं० [स० त०] किसी गण या वर्ग का प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

गण-पूर्त्ति—स्त्री० [ष० त०] किसी सभा, समिति आदि की बैठक के कार्य-संचालन के लिए आवश्यक मानी जानेवाली निर्धारित अल्पतम सदस्यों की उपस्थिति। इयत्ता। (कोरम)

गण-भोजन—पुं० [ष० त०] बहुत-से लोगों को एक साथ बैठाकर कराया जानेवाला भोजन। सहभोज।

गण-मुख्य—पुं० [ष० त०] गण का प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

गण-राज्य—पुं० [ष० त०] १. प्राचीन भारत में एक प्रकार के राज्य, जिनमें किसी राजा का नहीं, बल्कि प्रजा के चुने हुए लोगों का शासन होता था। २. दे० 'गण-तन्त्र'।

गण-संख्या—स्त्री० [ष० त०] गणना या गिनती की सूचक संख्या। (कार्डिनल नम्बर) जैसे—एक, दो, तीन, चार आदि।

गणहास—पुं० [सं० गण√हस् (हँसना)+णिच्+ अण्] एक प्रकार का गंध-द्रव्य।

गणाग्रणी—पुं० [सं० गण-अग्रणी, ष० त०] १. गण का अगुआ या मुखिया। २. गणेश।

गणाचल—पुं० [सं० अण-अचल, ष० त०] कैलास, जहाँ शिव के गण रहते हैं। गण-पर्वत।

गणाधिप—पुं० [सं० गण-अधिप, ष० त०] १. गण या गणों का अधिपति या स्वामी। २. गणेश। ३. जैनी साधुओं का प्रधान या मुखिया।

गणाध्यक्ष—पुं० [सं० गण-अध्यक्ष, ष० त] १. गणों का अध्यक्ष या स्वामी। २. गणेश। ३. शिव।

गणान्न—पुं०[सं० गण-अन्न, ष० त०] बहुत-से लोगों के लिए एक साथ बनाया जानेवाला भोजन।

गणि—स्त्री०[सं० √गण्√इन्] गणना।

गणिका—स्त्री० [सं० गण+ठन्—इक, टाप्] १. रंडी। वेश्या। २. साहित्य में, वह नायिका जो केवल धन के लोभ से लोगों का मनोरंजन करती हो। वेश्या नायिका। ३. पुराणानुसार जीवंती नाम की एक परम दुराचारिणी वेश्या जो केवल अपने तोते को राम-राम पढ़ाते समय मरने के कारण मोक्ष की अधिकारिणी हुई थी। ४. रहस्य-संप्रदाय में, माया जो मनुष्यों को अपने जाल में फँसाये रखती है। ५. गनियारी नामक वृक्ष।

गणि-कारिका—स्त्री० [ष० त०] गनियार का पेड़।

गणिकारी—स्त्री० [सं० गणि√कृ +अण्—ङीप्] गनियार का पेड़।

गणित—पुं० [सं०√गण्+क्त] वह शास्त्र जिसमें परिमाण, मात्रा, संख्या आदि निश्चित करने की रीतियों का विवेचन होता है। हिसाब। पाटीगणित, बीजगणित और रेखागणित ये तीनों इसी के प्रकार या भेद हैं। (मैथेमेटिक्स)

गणितज्ञ—वि० [सं० गणित√ज्ञा (जानना)+क] १. गणित शास्त्र का ज्ञाता या पंडित। २. ज्योतिषी।

गणेरु—पुं० [सं० √गण्+एरु] कर्णिकार वृक्ष।
स्त्री० १. वेश्या। २. हथिनी।

गणेरुका—स्त्री० [सं० गणेरु√कै (शब्द करना)+क—टाप्] १. वेश्या। २. कुटनी। ३. हथिनी।

गणेश—वि० [सं० गण-ईश, ष० त०] गणों का मालिक या स्वामी। गणों में प्रधान।

पुं० हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो विद्या के अधिष्ठाता और विघ्नों के विनाशक माने गये हैं। गणपति। विनायक।

विशेष—इनका मुँह और सिर बिल्कुल हाथी का माना गया है, इसी लिए इन्हें गजानन भी कहते हैं।

गणेश-कुसुम—पुं० [उप० मि० स०] लाल कनेर।

गणेश-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] हठ-योग की एक क्रिया, जिससे गुदा के अन्दर का मल साफ करके निकाला जाता है।

गणेश-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] भादों और माघ की शुक्ला चतुर्थियाँ, जिनमें गणेश का पूजन और व्रत होता है।

गणेश चौथ—स्त्री०=गणेश-चतुर्थी।

गणेश-पुराण—पुं० [मध्य० स०] एक उपपुराण, जिसमें गणेश का माहात्म्य वर्णित है।

गणेशभूषण—पुं० [सं० गणेश√भूष् (अलंकृत करना)+णिच्+ल्यु—अन] सिंदूर।

गण्य—वि० [सं० √गण् (गिनना)+यत्] १. गण-संबंधी। २. जो गिना जाने को हो या गिना जा सकता हो। ३. जो महत्त्व, योग्यता आदि के विचार से मान्य हो सकता हो। प्रतिष्ठित। जैसे—नगर के सभी गण्यमान्य विद्वान् वहाँ उपस्थित थे।

पद—गण्य-मान्य =प्रतिष्ठित।

गतंड†—पुं० [सं० गताण्ड] [स्त्री० गतंडी] हिजड़ा। नपुंसक।

वि० वधिया। (राज०)

गत—भू० कृ० [सं० √गम् (जाना) +क्त] १ जो सामने से होता हुआ पीछे चला गया हो। गया या बीता हुआ। जैसे—गत जीवन, गत दिवस। २. जो नष्ट या लुप्त हो चुका हो। जैसे—गत वैभव, गत यौवन। ३. रहित। हीन। जैसे—गत चेतना, गत ज्ञाति, गत नासिका। ४. जो इस लोक से चला गया हो। मृत। स्वर्गीय। जैसे—गतात्मा।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ देता है—(क) संबंध रखनेवाला। जैसे—जातिगत, जीवनगत, व्यक्तिगत आदि। और (ख) आया, मिला या लगा हुआ। जैसे—अंतर्गत, बहिर्गत आदि।

स्त्री० [सं० गति] १. अवस्था। दशा। २. दुर्दशा।

मुहा०—**(किसी की) गत बनाना**=दुर्दशा करना।

३. रूप। वेष। ४. उपयोग। प्रयोग। ५. विशिष्ट ताल और लय में बँधे हुए बाजों की धुन या बोल। ६. नाच में एक विशेष प्रकार की गति अथवा ऐसी गति से युक्त नाच का कोई टुकड़ा।

मुहा०—**गत लेना**=नाच में विशेष प्रकार की गति प्रदर्शित करना।

७. मृतक का क्रिया-कर्म।

गतक—पुं० [सं० गत+कन्] गति।

गतका—पुं० [सं० गदा या गदक] १. एक प्रकार का डंडा जो हाथ में लेकर पटा-बनेठी की तरह खेला जाता है। २. उक्त डंडा हाथ में लेकर खेला जानेवाला खेल जिसमें वार करने और रोकने के ढंग सिखाये जाते हैं।

गतकाल—पुं० [कर्म० स०] बीता हुआ समय। भूत।

गत-कुल—पुं० [ब० स०] वह संपत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो। लावारिस जायदाद या माल।

गत-चेतन—वि० [ब० स०] जिसमें चेतना न रह गई हो। अचेतन।

गत-जीव—वि० [न० स०] मरा हुआ। मृत।

गत-प्रत्यागता—स्त्री० [कर्म० स०] वह स्त्री जो अपने पति का घर पहले तो अपनी इच्छा से छोड़कर चली गई हो और फिर आप से आप कुछ दिनों बाद लौट आई हो। (धर्मशास्त्र)

गत-प्राण—वि० [ब० स०] मरा हुआ। मृत।

गत-प्राय—वि० [सुप्सुपा स०] जो करीब करीब जा या बीत चुका हो। अन्त या समाप्ति के बहुत पास पहुँचा हुआ। जैसे—गत-प्राय रजनी।

गत-भर्तृका—स्त्री० [ब० स०] १. विधवा स्त्री। २. स्त्री, जिसका पति विदेश गया हुआ हो।

गतर—पुं० [सं० गति] १. अंग। २. शारीरिक बल या शक्ति। पौरुष। जैसे—अब हमारा गतर नहीं चलता। ३. रक्षा या शरण का स्थान।

गत-वय (स्), वयस्क—वि० [ब० स०] जिसका वय बहुत कुछ बीत चुका हो अर्थात् बुड्ढा। वृद्ध।

गत-संग—वि० [ब० स०] उदासीन। विरक्त।

गत-सत्त्व—वि० [ब० स०] १. सारहीन। निःसत्त्व। २. मृत।

गतांक—वि० [गत-अंक, ब० स०] (व्यक्ति) जो गया-बीता या निकम्मा हो।

पुं० [कर्म० स०] सामयिक पत्र का पिछला अर्थात् वर्त्तमान से पहले का अंक।

गतांत—वि० [गत-अंत ब० स०] जिसका अंत पास आ गया हो।

गताक्ष—वि० [गत-अक्षि, ब० स०] जिसकी आँखें न रह गई हों अर्थात् अंधा।

गतागत—वि० [गत-आगत, द्व० स०] १. गत और आगत। गया और आया हुआ। २. आत्मा का आवागमन अर्थात् जन्म और मरण। ३. साहित्य में एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें पदों या चरणों की रचना इस प्रकार की जाती है कि उन्हें सीधी तरह पढ़ने से जो अर्थ निकलता है, उलटकर पढ़ने से भी वही अर्थ निकलता है। जैसे—माल बनी बल केशवदास सदा वश केल बनी बलमा।—केशव।

गतागति—स्त्री० [गत-आगति, द्व० स०] १. आना और जाना। २. मरना और फिर जन्म लेना।

गतानुगत—पुं० [गत-अनुगत ष० त०] प्रथा का अनुसरण।

गतानुगतिक—वि० [सं० गतानुगत+ठक्—इक] १. आँख मूँदकर दूसरों का अनुसरण करनेवाला। अंधानुयायी। २. पुरातन आदर्श देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला।

गतायात—पुं० [सं० गत-आयात, द्व० स०] जाना और आना। यातायात।

गतायु (स्)—वि० [सं० गत-आयुस्, ब० स०] १. जिसकी आयु समाप्त हो चली हो। २. वृद्ध।

गतार†—स्त्री० [सं० गंत्री] १. बैल के जुए में वे दोनों लकड़ियाँ जो उपरौंछी और तरौंछी के बीच समानान्तर लगी रहती हैं। २. वह रस्सी जो जूए में बँधे हुए बैल के गले के नीचे ले जाकर बाँधी जाती है। ३. बोझ बाँधने की रस्सी।

गतार्त्तवा—वि० स्त्री० [सं० गत-आर्त्तव, ब० स०] १. (स्त्री०) जिसका रजोदर्शन बन्द हो चुका हो। २. बाँझ। वंध्या।

गतार्थ—वि० [सं० गत-अर्थ ब० स०] १. (पद या शब्द) जिसका कुछ अर्थ न रह गया हो। २. (पदार्थ) जो काम के योग्य न रह गया हो। ३. (व्यक्ति) जिसके हाथ से अर्थ या धन निकल गया हो। जो अपनी पूँजी गँवाकर निर्धन हो गया हो।

गति—स्त्री० [सं०√गम् (जाना)+क्तिन्] १. किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा उसके किसी अंग या अवयव के स्पंदित या हिलते-डुलते रहने की अवस्था या भाव। (मोशन) २. चलने अथवा चलते हुए अपना काम करते रहने की अवस्था या भाव। जैसे—गाड़ी या घड़ी की मन्द गति। ३. अवस्था। दशा। ४. बाना। वेश। ५. पहुँच। पैठ। ६. प्रयत्न

की सीमा। अंतिम उपाय। ७. एक-मात्र सहारा या अवलंब। उदा०--जाके गति है हनुमान की।--तुलसी। ८. चेष्टा। प्रयत्न। ९. ढंग। रीति। १०. मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा का दूसरे शरीर में होनेवाला गमन जैसे--धर्मात्माओं को उत्तम गति प्राप्त होना। ११. मुक्ति। मोक्ष। १२. दे० 'गत' (नृत्य और संगीत की)।

गतिक--पुं० [सं० गति+कन्] १. चलने की क्रिया या भाव। चाल। २. मार्ग। रास्ता। ३. आश्रय।

वि० १. गति-संबंधी। २. भौतिक गति या चाल से संबंध रखनेवाला। (डायनामिक)

गति-भंग--पुं० [ष० त०] कविता-पाठ, संगीत आदि की गति या लय का बीच में भंग या विकृत होना।

गति-भेद--पुं० [ष० त०]=गतिभंग।

गति-मंडल--पुं० [ष० त०] नृत्य में शरीर के विभिन्न अंगों की एक प्रकार की मुद्रा।

गतिमान् (मत्)--वि० [सं० गति+मतुप्] १. जिसमें गति हो। जो चल अथवा हिल-डुल रहा हो। चलता हुआ। २. जो अपना कार्य ठीक प्रकार से निरंतर कर रहा हो।

गतिया†--पुं० [हिं० गत+इया (प्रत्य०)] संगीत में गत या लय ठीक रखनेवाला; अर्थात् ढोलक, तबला या मृदंग बजानेवाला।

गति-रोध--पुं० [सं० ष० त०] १. बीच में कठिनाई या बाधा आ पड़ने के कारण किसी चलते हुए काम या बात का रुक जाना। २. किसी प्रकार के झगड़े या बात-चीत के समय बीच में उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्ष अपनी-अपनी बातों पर अड़ जाते हैं और समझौते का कोई रास्ता निकलता हुआ दिखाई नहीं देता। (डेडलॉक)

गति-विज्ञान--पुं० [ष० त०] विज्ञान का वह अंग जिसमें द्रव्यों की गति और उन्हें परिचालित करनेवाली शक्तियों का विवेचन होता है। (डायनामिक्स)

गति-विद्या--स्त्री० [ष० त०]=गति विज्ञान।

गति-विधि--स्त्री० [ष० त०] आचरण-व्यवहार आदि करने अथवा रहने-सहने का रंग-ढंग। जैसे--सेना की गति-विधि का निरीक्षण करना।

गति-शास्त्र--पुं० [ष० त०] =गति-विज्ञान।

गतिशील--वि० [ब० स०] १. चलनेवाला या चलता हुआ। २. आगे की ओर बढ़नेवाला। उन्नतिशील। ३. जो स्वयं चलकर दूसरों को भी चलाता हो।

गति-हीन--वि० [पं० त०] १. जिसमें गति न हो। २. ठहरा या रुका हुआ। ३. जिसके लिए कोई गति या उपाय न हो। असहाय और दीन।

गत्त†--स्त्री०=गति।

गत्ता--पुं० [सं० गात्रक] [स्त्री० गत्ती] कागज के कई तावों या परतों को एक दूसरी पर चिपका कर बनाई हुई दफ्ती।

गत्तालखाता--पुं० [सं० गर्त्त, प्रा० गत्त+हिं० खाता] १. डूबी हुई या गई बीती रकम का खाता या लेखा। बट्टाखाता। २. वह अवस्था जिसमें कोई चीज नष्ट या समाप्त मान ली जाती है और उसके संबंध में आदमी निराश हो जाता है।

गत्थ--स्त्री० दे० 'गथ' (पूंजी)।

गत्यवरोध--पुं० [सं० गति-अवरोध, ष० त०]=गतिरोध।

गत्वर--वि० [सं० √गम्+क्वरप्, मलोप, तुक्] [स्त्री० गत्वरी] १. गति में रहने या होनेवाला। चलनेवाला या चलता हुआ। गमनशील। २. नष्ट हो जानेवाला। नश्वर।

गत्वरा--स्त्री० [सं० गत्वर+टाप्] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव।

गथ--पुं० [सं० ग्रन्थ, प्रा० गत्थ] १. पास का धन। जमा। २. किसी कार्य या व्यापार में लगाया जानेवाला धन। पूंजी। ३. धन-सम्पत्ति। माल। ४. गरोह। झुंड। ५. समूह।

गथना--स० [सं० ग्रंथन] १. एक साथ मिलाना। जोड़ना। २. बातें बनाना।

अ० १. एक साथ मिलाया जाना। मिलकर इकट्ठा या एक होना। २. घुसना। पैठना। ३. दे० 'गुथना'।

गद--पुं० [सं० √गद् (बोलना)+अच्] १. एक प्रकार का विष या जहर। २. बीमारी। रोग। ३. श्रीकृष्ण के छोटे भाई का नाम। ४. राम की सेना का एक बन्दर। ५. एक असुर का नाम।

पुं० [अनु०] किसी मुलायम वस्तु पर किसी कड़ी वस्तु के आघात से होनेवाला शब्द।

गदका--पुं०=गतका।

गदकारा--वि० [अनु० गद+कार (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] १. गुदगुदा और मुलायम। २. मांसल।

गदकारी--स्त्री० [फा०] चित्रकला में चित्र अंकित करने से पहले स्थान-स्थान पर रंग भरने की क्रिया या भाव। रंगामेजी।

गदगद--वि०=गद्गद।

गदगदा--पुं० [देश०] रत्ती नामक पौधा।

गदचाम--पुं० [सं० गदचर्म] हाथी का एक रोग।

गदन--पुं० [सं० √गद्+ल्युट्-अन्] १. कथन। २. वर्णन।

गदना--स० [सं० गदन] १. कहना। बोलना। २. वर्णन करना।

गदबदा--वि० [अनु०] भरे हुए अथवा दोहरे शरीरवाला। उदा०--नंगेतन, गदबदे साँवले, सहज छबीले।--पंत।

गदम--पुं० [देश०] वह लकड़ी जो नाव को एक बल पर खड़ी करने के लिए उसके पेंदे के नीचे लगाई जाती है। आड़। थाम।

गदर--पुं० [अ०] शासन को उलटने के लिए होनेवाला सैनिक विद्रोह।

पुं० [हिं० गदराना] गदराने की क्रिया या भाव।

वि० यथेष्ट मात्रा में सब जगह मिलनेवाला।

पुं० [हिं० गदकारा] पुष्टि मार्ग के अनुसार एक प्रकार की रूईदार बगलबंदी जो जाड़े में ठाकुर जी को पहनाते हैं।

गदरा--वि०=गद्दर।

गदराना--अ० [अनु०] १. जवानी में शरीर के अंगों का भरकर सुन्दर और सुडौल होना। जैसे--गदराया हुआ बदन। २. फलों आदि का पकने पर होना। ३. आँख का कीचड़ से भरना। ४. बहुत या अधिक मात्रा में होना या पाया जाना।

गदला--वि०=गँदला।

गदलाना--स० [हिं० गदला] गँदला करना।

अ० गँदला होना।

गदह--पुं०=गधा।

गदह पचीसी--स्त्री० दे० 'गधा-पचीसी'।

गदहरा—पुं० १. =गधा। २. =गद्दा।

गदहला—पुं०=गदहिला।

गदहलोह—स्त्री० [हिं० गदहा=गधा+लोटना] १. गधों की तरह जमीन पर इधर-उधर लोटने की क्रिया या भाव। २. कुश्ती का एक दाँव या पेंच। ३. दे० 'गधा लोटन'।

गदह हेंचू—पुं० दे० 'गधा हेंचू'।

गदहा—वि० [सं० गद√हा (त्याग)+क्विप्] गद अर्थात् रोग हरनेवाला।

पुं० चिकित्सक। वैद्य।

पुं० दे० 'गधा'।

गदहिया—स्त्री०=गधी।

गदहिला—पुं० [सं० गर्दभी, पा० गद्रभी प्रा० गद्दही] [स्त्री० गदहिली] १. वह गधा जिस पर ईंट, मिट्टी आदि ढोई जाती है। २. एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

गदांतक—पुं० [सं० गद-अंतक, ष० त०] अश्विनीकुमार।

गदांबर—पुं० [सं० गद-अंवर, मध्य० स०] मेघ।

गदा—स्त्री० [सं० गद+टाप्] १. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसमें लंबे डंडे के आगे मोटा गोला लगा होता था। २. उक्त आकार की वह चीज जो कसरत या व्यायाम करने के लिए हाथों से उठाकर शरीर के इधर-उधर घुमाई जाती है। लोढ़।

पुं० [फा०] १. भिक्षुक। भिखमंगा। २. फकीर।

गदाई—वि० [फा० गदा=फकीर +ई० (प्रत्य)] १. तुच्छ। नीच। क्षुद्र। २. रद्दी। वाहियात।

स्त्री० भिखमंगा होने की अवस्था या भाव। भिखमंगापन।

गदाका—पुं० [अनु०] किसी को उठाकर जमीन पर इस प्रकार पटकने की क्रिया जिसमें गद शब्द हो।

वि० गदराये हुए सुडौल शरीरवाला।

गदागद—पुं० [सं० गद्-आ√गम् (गाना) +ड, गदाग√दैप् (शोध करना)+क] अश्विनी कुमार।

अ०य० [अनु०] १. गद गद शब्द करते हुए। २. एक के वाद एक। लगातार। (मुख्यतः आघात या प्रहार के लिए) जैसे—गदागद घूँसे लगना।

गदाग्रज—पुं० [सं० गद-अग्रज, ष० त०] गद के बड़े भाई, श्रीकृष्ण।

गदाग्रणी—पुं० [सं० गद-अग्रणी, स० त०] क्षय या यक्ष्मा नामक रोग।

गदाधर—वि०[सं० गदा√धृ (धारण करना)+अच्] गदा धारण करनेवाला।

पुं० विष्णु जिनके हाथ में गदा रहती है।

गदाराति—पुं० [सं० गद-अराति, ष० त०] औषध। दवा।

गदाला—पुं० [हिं० गद्दा] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला गद्दा।

गदावारण—पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन वाजा जिसमें वजाने के लिए तार लगे रहते थे।

गदि—स्त्री० [सं०√गद् (वोलना)+इन्] उक्ति। कथन।

गदित—भू० कृ० [सं० गद्+क्त] कहा हुआ। उक्त। कथित।

गदी (दिन्)—वि० [सं० गद+इनि] [स्त्री० गदिनी] १. रोगी। वीमार। २. [गदा+इनि] जो गदा लिये हुए हो। गदाधारी।

गदेल—पुं०=गदेला।

गदेला—पुं० [हिं० गद्दा] [स्त्री० अल्पा० गदेली] १. रूई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा गद्दा। २. टाट का वह मोटा गद्दा जो हाथी की पीठ पर बिछाया जाता है।

पुं० [?] छोटा लड़का। बालक।

गदेली—स्त्री०=गदोरी (हथेली)।

गदोरी†—स्त्री० [हिं० गद्दी] हथेली।

गद्गद—वि० [सं० √गद्गद् (स्पष्ट न वोलना)+अच्] १. बहुत अधिक प्रेम, श्रद्धा, हर्ष आदि के आवेग से इतना भरा हुआ कि अपने आपको भूल जाय और स्पष्ट वोल न सके। २. (कंठ या वाणी) जो उक्त आवेग के कारण अवरुद्ध हो। ३. बहुत अधिक प्रसन्न या हर्षित।

पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी शब्दों का स्पष्ट उच्चारण नहीं कर सकता अथवा एक एक अक्षर का रुक-रुककर और कई बार में उच्चारण करता है। हकलाने का रोग।

गद्गदिका—स्त्री० [सं० गद्गद+कन्—टाप्, इत्व] हकलाने की क्रिया, भाव या रोग। हकलाहट।

गद्द—पुं० [अनु०] १. मुलायम चीज या जगह पर भारी चीज के मारने से होनेवाला शब्द।

मुहा०—**(किसी को) गद्द मारना**=टोटका या टोना करके किसी पर ऐसा आघात करना कि वह वश में हो जाय।

२. अधिक भोजन करने अथवा गरिष्ठ वस्तुएँ खाने पर होनेवाला पेट का भारीपन।

मुहा०—**(किसी चीज का) गद्द करना**=कोई ऐसी वस्तु खा लेना जो जल्दी पच न सकती हो और जिसके फलस्वरूप पेट भारी हो जाता हो।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

गद्दम—पुं० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

गद्दर—वि० [अनु० गद्द से] १. जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २. गदराया हुआ।

पुं० १.=गदा। २.=गद्दार।

गद्दा—पुं० [हिं० गद्द से अनु०] १. बिछाने की मोटी रुईदार भारी तोशक। २. वह बिछावन जो हाथी की पीठ पर हौदा कसने से पहले रखकर बाँधा जाता है। ३. घास, रुई आदि मुलायम वस्तुओं का बोझ। ४. किसी मुलायम चीज की मार या ठोकर।

गद्दार—वि० [अ०] जो अपने धर्म, राज्य, शासन, संस्था आदि के विरुद्ध होकर उसे हानि पहुँचाता अथवा पहुँचाना चाहता हो। गदर करनेवाला। वागी। विद्रोही।

गद्दारी—स्त्री० [अ०] गद्दार होने की अवस्था या भाव।

गद्दी—स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० अल्पा० रूप] १. वह छोटा गद्दा जो ऊँट, घोड़े आदि की पीठ पर जीन के नीचे बिछाया जाता है। २. वह छोटा गद्दा जिस पर बैठते या लेटते हैं। ३. वह स्थान जहाँ पर गद्दी आदि बिछाकर बैठकर कोई काम या व्यवसाय किया जाय। जैसे—कोठीवाल या महाजन की गद्दी। ४. किसी स्थान पर बैठने अथवा किसी पद को सुशोभित करने की अवस्था या भाव। जैसे—(क) राजा की गद्दी। (ख) बाप-दादा की गद्दी। ५. किसी राजवंश की पीढ़ी या

आचार्य की शिष्य-परम्परा। जैसे—(क) चार गद्दी के बाद इस वंश में कोई न रहेगा। (ख) यह अमुक गुरु की चौथी गद्दी है। ६. कपड़े आदि की कई परतों की वह मुलायम तह जो किसी चीज के ऊपर या नीचे उसे आघात, झटके आदि से बचाने के लिए रखी जाती है। ७. हाथ या पैर की हथेली।

मुहा०—गद्दी लगाना=घोड़े को हथेली या कुहनी से मलना।

८. एक प्रकार का मिट्टी का गोल बर्तन जिसमें छीपी रंग रखकर छपाई का काम करते हैं।

पुं० [सं० गब्दिक] १. चंबा के पास का एक पहाड़ी प्रदेश। २. उक्त प्रदेश के निवासी जो प्रायः भेड़-बकरियाँ पालकर जीविका चलाते हैं। ३. गड़ेरिया।

गद्दीनशीन—वि० [हिं० गद्दी+फा० नशीन] [भाव० गद्दीनशीनी] १. जो राजगद्दी पर बैठा हो। २. जो किसी की गद्दी पर आकर बैठा हो अर्थात् उत्तराधिकारी।

गद्य—पुं० [सं०√गद् (बोलना)+यत्] १. बोल चाल की भाषा में लिखने का वह लेखन प्रकार जिसमें अलंकार, मात्रा, वर्ण, लय आदि के बन्धन का विचार नहीं होता। वचनिका। 'पद्य' का विपर्याय। (प्रोज) २. ऐसी सीधी-सादी बोली या भाषा जिसमें किसी प्रकार की बनावट न हो।

गद्य-काव्य—पुं० [कर्म० स०] वह गद्य जिसमें कुछ भाव या भावनाएँ ऐसी कवित्वपूर्ण सुन्दरता से व्यक्त की गई हों कि उसमें काव्य की-सी संवेदनशीलता तथा सरसता आ जाय।

गद्याणक—पुं० [सं० गद्याण+कन्] कलिंग देश का एक प्राचीन मान।

गद्यात्मक—वि० [सं० गद्य-आत्मन्, ब० स०, कप्] [स्त्री० गद्यात्मिका] १. गद्य के रूप में लिखा हुआ। २. गद्य-संबंधी।

गधा—पुं० [सं० गर्दभ, प्रा० गद्दह] [स्त्री० गधी] १. घोड़े की तरह का पर उससे बहुत छोटा एक प्रसिद्ध चौपाया जिस पर कुम्हार, धोबी आदि बोझ ढोते हैं। गदहा।

मुहा०—(किसी स्थान पर) गधे से हल चलवाना=पूरी तरह से उजाड़ना या नष्ट करना। **(किसी को) गधे पर चढ़ाना**=बहुत अधिक अपमानित करना। बदनाम और बेइज्जत करना।

२. गधे की तरह निरा बुद्धिहीन। बहुत बड़ा बेवकूफ या मूर्ख।

गधागधी—स्त्री० दे० 'गधाहेंचू'।

गधापचीसी—[हिं० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें प्रायः कुछ विशेष ज्ञान नहीं होता और जिसमें ऊल-जलूल काम किये जाते हैं।

गधापन—पुं० [हिं० गदहा+पन (प्रत्य०)] १. गधे होने की अवस्था या भाव। २. मूर्खता। बेवकूफी।

गधालोटन—पुं० [हिं० गधा+लोटना] १. थकावट मिटाने के लिए या मस्त होकर गधे का जमीन पर इधर-उधर लोटना। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार गधा लोटा हो। (कहते हैं कि ऐसे स्थान पर पैर रखने से आदमी में थकावट आ जाती है।)

गधा हेंचू—पुं० [हिं० गधा+हेंचू (गधे की बोली)] लड़कों का एक प्रकार का खेल।

गधीला—पुं० [देश०] [स्त्री० गधीली] एक जंगली जाति।

गधूल—पुं० [?] एक प्रकार का फूल।

गधेरा—पुं० [हिं० गधा+एरा] गधे का मालिक। जैसे—कुम्हार, धोबी आदि। उदा०—उसी समय गली की मोड़ से गधेरा आया।—वृंदावन लाल।

गन*—पुं०=गण।

स्त्री० [अं०] बन्दूक।

गनक*—पुं० [सं० गणक] ज्योतिषी।

गनकेरुआ—पुं० [सं० गणकर्णिका] एक प्रकार की घास।

गनगनाना—अ० [अनु० गनगन] १. (शरीर) सरदी के कारण थरथर काँपना। २. शरीर के रोओं का सरदी आदि के कारण खड़े होना। रोमांच होना।

गनगौर—स्त्री० [सं० गण-गौरी] राजस्थान का एक पर्व जो चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक होता है और जिसमें कन्याएँ तथा स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनती†—स्त्री०=गिनती।

गनना—स्त्री०=गणना।

स०=गिनना।

गननाना—अ० [अनु० गनगन] १. किसी स्थान का गनगन शब्द से भर जाना। गूँजना। २. चक्कर लगाना। घूमना।

स० कोई स्थान गनगन शब्द से पूर्ण या युक्त करना।

गननायक—पुं० =गणनायक।

गनप—पुं० १. =गणप। २. =गणपति।

गनपति—पुं०=गणपति।

गनराय—पुं० [सं० गणराज] गणेश।

गनवर—स्त्री० [?] नरकट नामक घास।

गनाना†—अ० [हिं० गिनना] १. गिना जाना। २. गिनती में आना।

स०=गिनाना।

गनाल—स्त्री० [सं०घननाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की बड़ी तोप।

गनिक—पुं० [सं० गणक] ज्योतिषी। उदा०—गनिक होइ जब देखैं; कहै न भेद।—जायसी।

गनिका†—स्त्री०=गणिका।

गनिबी*—अ० [हिं० गिनना का भविष्यत् कालिक व्रज रूप] गिना जायगा। गिनती होगी। उदा०—मूढ़नि में गनिबी कि तू हूठ्यो दै इठिलाहि।—बिहारी।

गनियारी—स्त्री० [सं० गणिकारी] रूमी की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।

गनी—वि० [अ० गनी] १. धनवान्। संपन्न। २. बहुत बड़ा दाता। उदार।

*स्त्री० [हिं० गिनना] गिनती। उदा०—इंद्र समान हैं जाके सेवक वर वापुरे की कहा गनी।—सूर।

स्त्री० [अं०] टाट जिसके बोरे बनते हैं।

गनीम—पुं० [अ०] १. दूसरों का माल लूटनेवाला व्यक्ति। लुटेरा। डाकू। २. दुश्मन। वैरी। शत्रु।

गनीमत—स्त्री० [अ०] १. डाके या लूट का माल। २. मुफ्त में या बिना प्रयास मिलनेवाला धन। ३. बिलकुल प्रतिकूल या विपरीत स्थिति में भी होनेवाली कोई थोड़ी-सी संतोषजनक या समाधानकारक बात। जैसे—वह सही सलामत घर लौट आया यही गनीमत है।

मुहा०—**किसी का दम गनीमत होना**=किसी का अस्तित्व विपरीत परिस्थितियों में भी किसी प्रकार समाधानकारक होना। जैसे—बाबू साहब का भी दम गनीमत।

गनैल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

गनेश*—पुं०=गणेश।

*वि० मंगलमय। शुभ। उदा०—भा यह समय गनेसू।—तुलसी।

गनौरी—स्त्री० [सं० गुन्ना] नागरमोथा।

गन्ना—पुं०[सं० काण्ड] सरकंडे की जाति का एक प्रसिद्ध गाँठदार लंबा पौधा जिसके मीठे रस से गुड़, चीनी आदि बनाई जाती है। ईख। ऊख।

गन्नी—पुं० [अं० गनी] १. पटसन, पाट आदि का बना हुआ टाट जिसके बोरे आदि बनते हैं। २. सन का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

गप—स्त्री० [सं० गल्प०, प्रा० गप्प बँ० गप्प, गुज० मरा० और पं० गप] [वि० गप्पी] १. केवल मन बहलाने के लिए की जानेवाली इधर-उधर की बातें। मनोविनोद के लिए की जानेवाली व्यर्थ की बातचीत।

मुहा०—**गप लड़ाना**=आपस में इधर-उधर और प्रायः व्यर्थ की बातें करना।

पद—**गप-शप**=इधर-उधर की बातें। बहुत ही साधारण कोटि का या व्यर्थ का वार्त्तालाप।

२. बिलकुल कपोल-कल्पित और झूठी बात, अथवा ऐसी बात जिसका कुछ भी ठीक-ठिकाना न हो।

मुहा०—**गप उड़ाना**=झूठी और व्यर्थ की बात का लोगों में प्रचार या प्रसार करना।

३. ऐसी अतिरंजित बात जिसमें सत्य का अंश बहुत ही कम या नाम मात्र का हो।

क्रि० प्र०—हाँकना।

४. अपना बड़प्पन प्रकट करने के लिए कही जानेवाली बहुत-कुछ अतिरंजित या मिथ्या सी बात। डींग।

क्रि० प्र०—मारना।

पुं० [अनु०] १. कोई चीज झट से खाने अथवा निगलने की क्रिया अथवा इस क्रिया से होनेवाला शब्द। जैसे—वह गप से लड्डू निगल गया। २. खाने की क्रिया या भाव। जैसे—मीठा-मीठा गप, कड़ुआ-कड़ुआ थू। ३. कोई नुकीली चीज किसी मुलायम वस्तु में जल्दी या झटके से घँसाने की क्रिया अथवा इस क्रिया से उत्पन्न होनेवाला शब्द। जैसे—डाक्टर ने गप से बाँह में सूई चुभा दी।

गपकना—स० [अनु० गप+हिं० करना] १. जल्दी-जल्दी खा या निगल जाना। २. हजम करना। हड़पना।

गपछैया—स्त्री० [?] रेगमाही।

गपड़ चौथ—पुं० [हिं० गपोड़=बातचीत+चौथ] आपस में होनेवाली इधर-उधर की या व्यर्थ की बातचीत।

वि० अंड-बंड। ऊट-पटांग।

गपना—स० [हिं० गप] १. मन बहलाने अथवा समय बिताने के लिए इधर-उधर की बातचीत करना। गप करना। २. झूठमूठ की अथवा मन-गढ़ंत बातें कहना अथवा ऐसी बातों का प्रचार करना।

गपशप—पुं० [हिं० गप+शप अनु०] इधर-उधर की अथवा व्यर्थ की बातें।

गपागप—क्रि० वि० [हिं० गप=निगलने का शब्द] १. गप गप शब्द करते हुए। जैसे—वह सारी मिठाई गपागप खा गया। २. बहुत जल्दी-जल्दी या चटपट। ३. बहुत अधिक मात्रा या मान में।

गपिया—वि० [हिं० गप]=गप्पी।

गपिहा†—वि०=गप्पी।

गपोड़—पुं०=गपोड़ा।

वि०=गप्पी।

गपोड़ा—पुं० [हिं० गप+ओड़ा (प्रत्य०)] १. बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात। २. बिलकुल कपोल-कल्पित और मिथ्या बात। बहुत बड़ी गप।

गपोड़िया—वि० [हिं० गपोड़ा] बहुत बढ़ा-चढ़ाकर मन-गढ़ंत बातें कहनेवाला। गप्पी।

गपोड़ेबाज—वि०=गप्पी।

गपोड़ेबाजी—स्त्री० [हिं० गपोड़ा+फा० बाजी] १. झूठ-मूठ की या व्यर्थ की बातों में समय बिताने की क्रिया या भाव। २. बकवाद।

गप्प—स्त्री०=गप।

गप्पी—वि० [हिं० गप] बहुत अधिक गप हाँकने और व्यर्थ की कपोल-कल्पित बातें कहनेवाला। गपोड़िया।

गप्फा—पुं० [अनु० गप] १. बहुत बड़ा कौर या ग्रास। २. सहज में होनेवाला बहुत बड़ा आर्थिक लाभ।

गफ—वि० [सं० ग्रप्स=गुच्छा] (कपड़ा) जिसकी बुनावट बहुत ठस हो।

गफलत—स्त्री० [अ०] १. प्रमाद के कारण होनेवाली असावधानी या बेपरवाही। २. अचेत या बेसुध होने की अवस्था या भाव।

गफिलाई—स्त्री०=गफलत।

गफूर—वि० [अ०] १. क्षमा या माफ करनेवाला। दयालु।

गफ्फार—वि० [अ०] बहुत बड़ा उदार तथा दयालु (ईश्वर या व्यक्ति)।

गबड़ी†—स्त्री०=कबड्डी।

गबड्डी†—स्त्री० =कबड्डी।

गबदी—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़।

गबद्द—वि० [हिं० गाबदी] जड़। मूर्ख।

गबन—पुं० [अ०] किसी अधिकारी अथवा सेवक द्वारा शासन अथवा स्वामी का धन अपने काम में लाने के लिए अनुचित रूप से तथा चोरी से निकाल या ले लेना।

गबर—पुं० [अं० स्क्रेपर] जहाज में सब पालों के ऊपर रहनेवाला पाल। (लश०)

गबरगंड—वि०[हिं० गोबर+सं० गंड=मूर्ख] बहुत बड़ा मूर्ख। जड़।

गबरहा—वि० दे० 'गोबरहा'।

गबरा†—वि०=गब्बर (घमंडी)।

गबरू— वि० [फा० खूबरू] १. जवान। युवा। २. भोला-भाला।

पुं० दूल्हा। पति।

गबरून—पुं० [फा० गम्बरून] एक प्रकार का मोटा धारीदार कपड़ा।

गबीना†—पुं० [देश०] कतीरा (गोंद)।

गबेजा—पुं० दे० 'गवेजा'।

गब्बर—वि० [सं० गर्व, पा० गब्ब] १. अभिमानी। घमंडी। २. ढीठ। हठी। ३. अड़ियल। ४. कीमती। बहुमूल्य। ५. धनी। मालदार।

गब्बी†—वि०=गब्बर।

गब्बू†—पुं०=गबरू।

गब्र—पुं० [फा०] पारस देश का अग्निपूजक मूल निवासी।

गभ—पुं० [सं०=भग पृषो० सिद्धि] भग।

गभरू—पुं०=गबरू।

गभस्ति—पुं० [सं०√गम् (जाना)+ड, ग√भस् (प्रकाशित करना)+क्तिच्] १. किरण। रश्मि। २. सूर्य। ३. बाँह। बाहु।
स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा।

गभस्ति-पाणि—पुं० [ब० स०] सूर्य।

गभस्तिमान्—पुं० [सं० गभस्ति-मतुप्] १. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। २. एक पाताल का नाम।

गभस्ति-हस्त—पुं० [ब० स०] सूर्य।

गभार†—वि० [सं० गंभीर] गहरा।

गभीर—वि० [सं० गम् (जाना)+ईरन्, भ आदेश] =गंभीर।

गभीरिका—स्त्री० [सं० गभीर+टाप् +कन्, ह्रस्व, इत्व] बड़ा ढोल।

गभुआर†—वि० [सं० गर्भ+हिं आर (प्रत्य०)] १. गर्भ या जन्म के समय का (बच्चे के सिर के बाल)। २. (बालक) जिसके सिर के गर्भ या जन्म के बाल कटे न हों। जिसका मुंडन न हुआ हो। ३. अनजान। नासमझ।

गभुराना—अ० [सं० गह्वर] मान, रोष आदि के कारण धीरे-धीरे होंठों में ही कुछ कहना। बड़बड़ाना। बुड़बुड़ाना।

गभुवार—वि०=गभुआर।

गम—पुं० [सं०√गम्+अप्] १. चलना या जाना। गमन। २. मार्ग। रास्ता। ३. गति। चाल। ४. पहुँच। पैठ।
पुं० [अ० गम] १. मन में होनेवाला गहरा या भारी दुःख।
मुहा०—गम खाना=अपमानित, उत्तेजित, दुःखित अथवा पीड़ित होने पर भी प्रतिकार न करना और शांत रहना।
२. शोक। ३. चिंता। परवाह। फिक्र।

गमक—वि० [सं०√गम्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. गमन करनेवाला। २. जानेवाला। गंता। ३. बतलाने या सूचित करनेवाला। सूचक।
स्त्री० [अनु० गमगम से] १. महक। सुगंध। २. संगीत में किसी स्वर को अधिक रंजक तथा श्रुति मधुर बनाने के लिए उसमें उत्पन्न किया जानेवाला एक विशिष्ट प्रकार का कंपन।
विशेष:—कभी कभी किसी स्वर को उसके ठीक ऊपर या नीचेवाले स्वर के साथ मिलाकर वेगपूर्वक उच्चारण करने से भी गमक उत्पन्न होती है। संगीतशास्त्र में इसके ये १५ भेद कहे गये हैं—तिरिप, स्फुरित, कम्पित, लोच, आन्दोलित, वलि, त्रिभिन्न, कुरुल, आहत, उल्लासित, प्लावित, गुम्फित, मुद्रित, नमित, और मिश्रित।
३. तबले की गंभीर परन्तु मधुर आवाज।

गमकना—अ० [हिं० गमक] गमक या महक देना। महकना।

गमकीला†—[हिं० गमक] १. गमक से युक्त। २. सुगंधित।

गमखोर—वि० [फा० ग़मख्वार] [भाव० गमखोरी] दूसरों द्वारा किये गये अत्याचार, अन्याय आदि को चुपचाप सहनेवाला। गम खानेवाला।

गमखोरी—स्त्री० [फा० ग़मख्वारी] गमखोर होने की अवस्था, गुण या भाव। अत्याचार, अन्याय आदि चुपचाप सहने की प्रवृत्ति।

गमगीन—वि० [अ० +फा०] १. दुःखी। २. संतप्त।

गमछा—पुं०=अँगोछा।

गमत—पुं० [सं० गमन या गमथ=पथिक] १. रास्ता। मार्ग। २. २. पेशा। व्यवसाय।

गमतखाना—पुं० [?] नाव में का वह नीचेवाला भाग जहाँ नदी का पानी रस कर इकट्ठा होता है। बँधाल। (लश०)

गमतरी—स्त्री०=गमतखाना।

गमथ—पुं० [सं०√गम्+अयच्] १. मार्ग। राह। २. पथिक। ३. व्यवसाय। व्यापार। ४. आमोद-प्रमोद।

गमन—पुं० [सं० √गम्+ल्युट्—अन] [वि० गम्य] १. चलना या जाना। २. प्रस्थान या यात्रा करना। ३. मार्ग। रास्ता। ४. यान। सवारी। ५. स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग। जैसे—वेश्या-गमन। ६. वैशेषिक दर्शन के अनुसार किसी वस्तु के क्रमशः एक स्थान से दूसरे स्थान को प्राप्त होने का कर्म (पाँच कर्मों में से एक)।

गमनना—अ० [सं० गमन] गमन करना। जाना।

गमन-पत्र—पुं० [ष० त०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने अथवा ले जाने का अधिकार मिलता हो। चालान। रवन्ना।

गमना—अ० [सं० गमन] १. गमन करना। जाना। २. खोना। हाथ से निकल जाना। ३. नाव में पानी रसना। (लश०)

गमनाक—वि० [फा०] १. गम अर्थात् दुःख या शोक उत्पन्न करनेवाला। २. गम या दुःख से पीड़ित।

गमनागमन—पुं० [सं० गमन-आगमन द्व० स०] १. जाना और आना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने की क्रिया या भाव। यातायात।

गमनीय—वि० [सं० +गम्√गम्+अनीयर्] [स्त्री० गमनीया] गमन करने योग्य। गम्य।

गमला—पुं० [पुर्त० से] १. नाँद के आकार का मिट्टी, धातु या लकड़ी का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमें फूल-पत्तियाँ, पौधे आदि लगाये या रखे जाते हैं। २. चीनी मिट्टी का वह बर्तन जिसमें पाखाना फिरते हैं। (कमोड)

गमागम—पुं० [सं० गम-आगम, द्व० स०] आना-जाना। गमनागमन।

गमाना—स०=गँवाना।

गमार†—वि० [स्त्री० गमारी]=गँवार।

गमी—स्त्री० [अ० ग़म] १. घर या परिवार के किसी आदमी की शोकजनक मृत्यु। २. ऐसी मृत्यु के उपरान्त उसका होनेवाला शोक।

गम्मत†—स्त्री० [सं० गमथ] १. हँसी। दिल्लगी। परिहास। विनोद। २. मजेदार घटना या बात। ३. आनन्द, बहार या मौज की स्थिति।

गम्य—वि० [सं०√गम् +यत्] [स्त्री० गम्या] १. जिस तक या जिसमें गमन हो सके। जिस तक पहुँचा जा सके। २. जिसके अंदर जा या पहुँच सकें। जिसके अंदर पैठ या प्रवेश हो सके। जैसे—बुद्धि-गम्य। ३. जो पाया या प्राप्त किया जा सके। योग्य। ४. जिसका साधन हो सके। साध्य। ५. जिसके साथ गमन या संभोग किया जा सके।

गम्यता—स्त्री० [सं० गम्य+तल्—टाप्] गम्य होने की अवस्था या भाव।

गयंद—पुं० [सं० गजेंद्र, प्रा० गयिंद, गरंद] १. बड़ा हाथी। २. दोहे का एक प्रकार या भेद। ३. रहस्य-संप्रदाय में, ज्ञान।

गय—पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. आकाश। ३. धन। ४. प्राण। ५. पुत्र। बेटा। ६. औलाद। सन्तान। ७. एक असुर, जिसके नाम पर गया नामक तीर्थ बना है। ८. गया नामक तीर्थ। ९. राम की सेना का एक बन्दर।

†पुं०=गज (हाथी)।

†स्त्री०=गति।

गय-गमणि*—वि० स्त्री० [सं० गजगामिनी] हाथी के समान झूमकर चलनेवाली।

गयण—पुं० [सं० गगन, प्रा० गयण] आकाश। गगन। उदा०—पंखी कवण गयण लगि पहुँचै।—प्रिथीराज।

गयनंग—पुं० [सं० गगन] आकाश। उदा०—गनन गनन गयनंग, छलन छक्किय उछरग्गिय।—चंदबरदाई।

गयनाल—स्त्री० [हिं० गय+नाल=नली] हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की तोप। गजनाल।

गयल—अ० [हिं० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक पूर्वी रूप] गया।

†स्त्री०=[illegible] (गली)।

गयवली—पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़।

गयवा—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

गय-शिर—पुं० [ष० त०] १. आकाश। २. एक पर्वत जो गया में है। ३. गया तीर्थ।

गया—अ० [सं० गत; प्रा० गअ; अप० गअल; गु० गओ; मरा० गेला; पं० गिआ; मैं० गेल; बँ० गेलो; सिंह० गिय] [स्त्री० गयी] हिं० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक एक वचन का रूप।

पद—गया गुजरा या गया बीता=(क) जो बहुत ही बुरी हालत में हो। दुर्दशा-ग्रस्त। (ख) तुच्छ। हीन।

मुहा०—गयी करना=(क) बीती हुई बात पर ध्यान न देना। (ख) छोड़ देना। जाने देना।

स्त्री० [सं० गय+अच्—टाप्] आधुनिक बिहार राज्य का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान, जहाँ पिंडदान आदि करने का माहात्म्य है।

मुहा०—गया करना=गया में जाकर पिंडदान, श्राद्ध आदि करना।

गयापुर—पुं०=गया (बिहार राज्य का एक नगर)।

गयारी—स्त्री० [देश०] किसी काश्तकार के मरने पर लावारिस छोड़ी हुई जोत।

गयाल†—स्त्री० [देश०] किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी छोड़ी हुई ऐसी संपत्ति जिसका उत्तराधिकारी कोई न हो।

पुं० आसाम में पाया जानेवाला एक पशु जिसका मांस खाया जाता और जिसकी मादा का दूध पिया जाता है।

गयावाल—वि० [हिं० गया+वाल] गया में रहने या होनेवाला।

पुं० गया तीर्थ का पंडा या पुरोहित।

गयास—स्त्री० [अ०] १. सहायता। २. मुक्ति। छुटकारा।

गरँऊँ—पुं० [देश०] चक्की के चारों ओर बना हुआ मिट्टी का घेरा जिसमें पिसा हुआ आटा आदि गिरता है। उदा०— गरँऊँ चून बिन सागर रीता, वाहु कहे पीसत दिन बीता।—ग्राम्यगीत।

गर—पुं० [सं० √गॄ (लीलना)+अच्] १. प्राचीन भारत में एक प्रकार का कड़ुआ और मादक पेय पदार्थ। २. एक प्रकार का रोग। ३. रोग। बीमारी। ४. विष। ५. वत्सनाभ। बछनाग। ६. ज्योतिष में ग्यारह करणों में से पाँचवाँ करण।

वि० रोगी।

†पुं० [हिं० गला] गरदन। गला।

प्रत्य० [सं० कर (कर्त्ता) से फा०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ देता है—(क) कोई काम करनेवाला अथवा कोई चीज बनानेवाला। जैसे—कारीगर, सिकलीगर, सौदागर आदि। और (ख) किसी से युक्त होने के भाव का सूचक होता है। उदा० —जोई गर, बँसगर, बुझगर भाई।—घाघ।

अव्य० [फा० अगर का संक्षिप्त रूप] अगर। यदि।

गरई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

गरक—वि० [अ० ग़र्क़] १. डूबा हुआ। निमग्न। २. जो नदी आदि में डूबकर मर गया हो। ३. नष्ट। बरबाद। ४. मग्न। लीन।

ग़रक़ाब—पुं० [फा०] डूबने की क्रिया या भाव। डुबाव।

वि० १. डूबा हुआ। जलमग्न। २. बहुत अधिक लीन या निमग्न।

ग़रक़ी—स्त्री० [अ०] १. डूबने की क्रिया या भाव। डूबना। डुबाव।

मुहा०—किसी को ग़रक़ी देना=बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना।

२. इतना अधिक पानी बरसना या बाढ़ आना जिससे फसल डूबकर नष्ट हो जाय। बूड़ा। अतिवृष्टि। ३. पानी में डूबी हुई जमीन। ४. वह नीची भूमि जो बाढ़ में प्रायः डूब जाती हो। ५. कौपीन। लँगोटी। ६. गराड़ी।

गरगज—पुं० [हिं० गढ़+गजग] १. वास्तु में, वह चौड़ा और बड़ा ढालुआ रास्ता जिस पर हाथी आ-जा सकते हों। २. किले का बुर्ज। ३. वह ऊँची भूमि या टीला जहाँ से शत्रु का पता लगाया जाता है। ४. नाव की छत। ५. फाँसी की टिकठी।

वि० बड़ा तथा शक्तिशाली। जैसे—गरगज घोड़ा।

गरगरा†—पुं० [अनु०] गराड़ी। घिरनी। (लश०)

गरगवा—पुं० [देश०] १. नर गौरैया। चिड़ा। २. एक प्रकार की घास।

गरगाब†—पुं० वि०=गरकाब।

गर-चे—अव्य० [फा० अगरचे] यद्यपि।

गरज—स्त्री० [सं० गर्जन] १. गरजने की क्रिया या भाव। २. बहुत गंभीर या घोर शब्द। जैसे—बादल या सिंह की गरज।

स्त्री० [अ०] १. किसी उद्देश्य अथवा प्रयोजन की सिद्धि के लिए मन में होनेवाली स्वार्थजन्य इच्छा।

मुहा०—(अपनी) गरज गाँठना=अपना स्वार्थ सिद्ध करना।

पद—गरज का बावला=स्वार्थांध।

२. आवश्यकता। जरूरत।

अ०य० १. इतना होने पर। आखिरकार। २. तात्पर्य यह है कि।

गरजन*—पुं० [सं० गर्जन] गरजने की क्रिया या भाव। गरज।

गरजना—अ० [सं० गर्ज्; प्रा० गज्ज; सिं० गाज; गु० गाजवूं; पं० गज्जणा; मरा० गाज (णें)] १. गंभीर तथा घोर शब्द करना। जैसे—बादल

या सिंह का गरजना। २. (किसी वस्तु का) चटकना, तड़कना या फूटना। जैसे—मोती गरजना।

गरज-मंद—वि० [फा०] [भाव० गरजमंदी] १. जिसे गरज या आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. अपना काम या मतलब निकालनेवाला। स्वार्थी।

गरजी—वि०=गरजमंद।

गरजुआ—पुं० [हिं० गरजना] एक प्रकार की खुमी।

गरजू†—वि०=गरजमंद।

गरट—पुं० [सं० ग्रंथ] झुंड। समूह। उदा०—गजनि गज्जि गंजे गरट, रहे रोहि रण रंग।—चंदवरदाई।

गरटना—अ० [हिं० गरट] (पशुओं का) झुंड बनाकर चलना।

गरट्ट†—पुं०=गरट।

गरट्टना†—अ०=गरटना।

गरण—पुं० [सं० √गॄ+ल्युट्–अन्] निगलने की क्रिया या भाव।

गरथ—स्त्री०=गथ (धन या पूंजी)।

गरथिना—स०=गूँथना। उदा०—इह करि रुक्रंन कुंडलि करहि गरथि माल पुहपै घनिय।—चंदवरदाई।

गरद—वि० [सं० गर √दा (देना) + क] जहर या विष देनेवाला।

पुं० जहर। विष।

स्त्री० [फा० गर्द] १. धूल। राख। २. मटमैले रंग का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गरदन—स्त्री० [फा०] १. जीवों, प्राणियों आदि के धड़ और सिर के बीच का अंग। ग्रीवा। गला।

मुहा०—**गरदन उठाना**=विरोध करना। **(तलवार से) गरदन उड़ाना**=सिर काटना। **गरदन उतारना या काटना**=(क) सिर काटना। (ख) बहुत बड़ी हानि करना। **(किसी की) गरदन झुकना**=(क) बे-सुध या बेहोश होना। (ख) मर जाना। **(किसी के आगे) गरदन झुकना**=(क) अधीन होना। (ख) लज्जित होना। **(किसी के आगे) गरदन झुकाना**=(क) आत्म-समर्पण करना। (ख) लज्जित होकर सिर नीचा करना। **गरदन ढलकना या ढलना**=मरने के बहुत समीप होना या मर जाना। **(किसी का) गरदन न उठाना**=बीमारी के कारण बिलकुल चुपचाप या बे-सुध पड़े रहना। **(किसी की) गरदन नापना**=गरदन से पकड़कर किसी को धक्का देते हुए बाहर निकालना। **(अपनी) गरदन पर खून लेना**=हत्या का अपराधी या दोषी बनना। **(अपनी) गरदन पर जूआ रखना**=मुसीबत मोल लेना। **गरदन फँसना**=संकट में पड़ना। **गरदन मरोड़ना**=गला दबाकर किसी को मार डालना। **गरदन मारना**=सिर काटना। **गरदन में हाथ देना या डालना**=कहीं से निकाल बाहर करने के लिए गरदन पकड़ना। गरदनियाँ देना।

२. वह आड़ी लंबी लकड़ी जो जुलाहों की लपेट के दोनों सिरों पर आड़ी साली जाती है। साल। ३. गगरा, लोटा आदि बरतनों का गरदन के आकार का ऊपरी गोल भाग।

गरदन-घुमाव—पुं० [हिं० गरदन+घुमाना] कुश्ती का एक पेंच।

गरदन-तोड़—पुं० [हिं० गरदन+तोड़ना] कुश्ती का एक दाँव।

गरदन-तोड़ बुखार—पुं० [हिं०+फा०] एक प्रकार का संक्रामक और सांघातिक ज्वर।

गरदन-बन्द—पुं०=गुलूबंद।

गरदन-बाँध—पुं० [हिं० गरदन+बाँधना] कुश्ती का एक पेंच।

गरदना—पुं० [हिं० गरदन] १. मोटी गरदन। २. गरदन पर किया जानेवाला आघात। २. गरदन पर का मांस। (कसाई)

गरदनियाँ—स्त्री० [हिं० गरदन+इया (प्रत्य०)] किसी की गरदन को हाथ से पकड़कर उसे धक्का देते हुए कहीं से तिरस्कारपूर्वक बाहर निकालना।

गरदनी—स्त्री० [हिं० गरदन] १. सिले हुए कपड़े का वह अंश जो गले के चारों ओर पड़ता है। गरेबान। २. गले में पहनने की हँसली (गहना)। ३. घोड़े की पीठ पर डाला जानेवाला कपड़ा जो एक ओर उसकी गरदन में बँधा रहता है। ४. कुश्ती में कोहनी और पहुँचे के बीचवाले अंश से विपक्षी की गरदन पर किया जानेवाला आघात। कुंदा। घस्सा। रद्दा। ५. कुश्ती का एक पेंच। ६. दीवार के ऊपर की कंगनी। कारनिस। ७. दे० 'गरदनियाँ'।

गर-दर्प—पुं० [ब० स०] भुजंग। साँप।

गरदा—पुं० [फा० गर्द] हवा के साथ उड़नेवाली धू[illegible]।मट्टा।

गरदान—वि० [फा०] १. घूम-फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला। २. एक ही विन्दु या स्थान के चारों ओर घूमनेवाला।

पुं० १. शब्दों का रूप साधन। २. वह कबूतर जो घूम-फिर कर पुनः अपने स्थान पर आ जाता है। ३. चक्कर। फेर।

गरदानना—स० [फा० गरदान] १. व्याकरण में किसी शब्द के भिन्न भिन्न विकारी रूप बनाना या बतलाना। २. विस्तारपूर्वक और कई बार समझाकर कोई बात कहना। उद्धरणी करना। ३. ध्यान देना या महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—हम तुम्हें क्या गरदानते हैं!

गरदी—वि० [हिं० गरद] गरद नाम के कपड़े की तरह का मटमैला या पीला। टसरी।

पुं० उक्त प्रकार का रंग। टसरी। (ड्रैब)

गरदुआ—पुं० [हिं० गरदन] पशुओं को होनेवाला एक प्रकार का ज्वर।

गरधरन—पुं० [सं० गरलधर] विष को धारण करनेवाला, शिव।

गर-ध्वज—पुं० [ब० स०] अभ्रक।

गरना*—अ० [हिं० 'गारना' का अ०] १. गारा या निचोड़ा जाना। निचुड़ना। २. किसी चीज के निकल जाने पर उससे रहित या हीन होना।

†अ० १.=गड़ना। २.=गलना। उदा०—रकत न रहा विरह-तन गरा।—जायसी।

गरनाल—स्त्री० [हिं० गर+नली] चौड़े मुँह की एक प्रकार की तोप। घननाल।

गर-प्रिय—पुं० [ब० स०] शिव।

गरब†—पुं० १.=गर्व (अभिमान)। २.=गर्भ।

गरबई*—स्त्री०=गर्व।

गरब-गहेला—वि० [सं० गर्व=अभिमान+सं० गृहीत, प्रा० गहिल्ल] [स्त्री० गरब-गहेली] बहुत गर्व करनेवाला। अभिमानी। घमंडी।

गरबना*—अ० [सं० गर्व] गर्व करना। इतराना। उदा०—कबीर कहा गरबियौ काल गहै रे केस।—कबीर।

गरबा—पुं० [देश०] [गुज० गरबा=घड़ा] एक प्रकार का गुजराती लोक-नृत्य जिसमें बहुत सी स्त्रियाँ कमर या सिर पर घड़ा रखकर तथा घेरा बनाकर नाचती हैं।

गरबाना†—अ० [सं० गर्व] घमंड में आना। अभिमान करना। शेखी करना।

गरबित*—वि०=गर्वित।

गरबीला—वि० [सं० गर्व] जिसे गर्व हो। अभिमानी। घमंडी।

गरभ—पुं० १.=गर्भ। २.=गर्व।

गरभदान*—पुं० १.=गर्भ। २.=गर्भाधान।

गरभाना—अ० [हिं० गर्भ] १. गर्भ धारण करना। २. गर्भवती होना। ३. गेहूँ, जौ, धान आदि के पौधों में बाल लगना।

स० गर्भ धारण कराना।

गरभी*—वि० [सं० गर्वी] अभिमानी। घमंडी।

गरम—वि० [सं० घर्म से फा० गर्म] [क्रि० गरमाना; भाव० गरमाहट, गरमी] १. (पदार्थ) जिसका ताप-मान जीवों या प्राणियों के सहज और स्वाभाविक ताप-मान से कुछ अधिक हो। जैसे—नहाने का गरम पानी; दोपहर की गरम हवा। २. (प्राणी या शरीर) जिसका ताप-मान सहज या स्वाभाविक से कुछ अधिक या ऊपर हो। उस प्रकार का जैसा ज्वर या बुखार में होता है। जैसे—रोज संध्या को इसका बदन गरम हो जाता है। ३. (शरीर) जिसमें सहज और स्वाभाविक ताप-मान वर्तमान हो। प्रसम ताप-मानवाला। जैसे—शरीर का गरम रहना जीवन का लक्षण है। ४. (पदार्थ) जो अग्नि, धूप आदि के संयोग से जल या तप रहा हो। जिसे छूने से शरीर में जलन होती हो। जैसे—कड़ाही (या तवा) गरम है; इसे मत छूना। ५. (पदार्थ) जिसमें विद्युत् की घनात्मक या सहिक धारा प्रवाहित हो रही हो। जैसे—बिजली का गरम तार छूना प्राणियों के लिए घातक होता है। ६. (प्रदेश या भू-भाग) जो विषुवत् रेखा पर या उसके आस-पास स्थित हो और इसी लिए जहाँ गरमी अपेक्षया अधिक पड़ती हो। जैसे—अरब, चीन, भारत आदि गरम देश हैं। ७. (औषध या खाद्य पदार्थ) जो शरीर के अंदर पहुँचकर उष्णता या ताप उत्पन्न करता हो। जिसकी तासीर या प्रभाव तापकारक हो। जैसे—जायफल, मिर्च, लौंग, आदि मसाले गरम होते हैं। ८. (पदार्थ) जो शरीर के ऊपरी भाग पर से शीत का प्रभाव कम करके उसमें हलकी उष्णता या ताप लाता हो। जैसे—जाड़े में सब लोग गरम कपड़े पहनते हैं। ९. (प्रकृति या स्वभाव) जिसमें उग्रता, क्रोध, द्वेष आदि तीव्र बातें अधिक प्रधान तथा प्रबल रहती हों। जैसे—वे गरम मिजाज के आदमी हैं।

मुहा०—(किसी से) गरम पड़ना या होना=आवेश या क्रोध में आकर किसी से लड़ने-झगड़ने पर उतारू होना।

१०. जो किसी रूप में उग्र, उत्कट या तीव्र हो अथवा जो किसी कारण से ऐसा हो गया हो। जैसे—तुम्हारी ऐसी ही बातों से हमारा मिजाज गरम हो जाता है। ११. (मादा पशु) जो काम-वासना के वश में होकर गर्भ धारण करने के लिए उत्सुक या उपयुक्त हों। जैसे—कुतिया या गौ का गरम होना। १२. जिसमें आवेश, उत्साह, तीव्रता आदि बातें यथेष्ट मात्रा में हों। जिसमें अभी तक किसी प्रकार की मंदता, शिथिलता, ह्रास आदि के लक्षण न दिखाई देते हों। जैसे—(क) अभी तुम्हारा खून गरम है; जब बड़े होगे, तब तुममें सहनशीलता आवेगी। (ख) अभी यह मामला (या विवाद) इतना गरम है कि इसका निपटारा हो ही नहीं सकता। १३. (चर्चा या बात) जिसका यथेष्ट प्रचलन हो। जैसे—आज शहर में एक नई खबर गरम है। १४. बिलकुल तुरंत या हाल का। बहुत ही ताजा। जैसे—अभी तो चोट गरम है; कुछ देर बाद दरद बढ़ेगा। १५. (बात-चीत) जिसके प्रसंग में कुछ उग्रता, उत्तेजना या कटुता आ गई हो। जैसे—संसद में इस विषय पर खूब गरम बहस हुई थी। १६. (बाजार या भाव) जिसमें खूब चहल-पहल या तेजी हो। जो चलता हुआ या बढ़ती पर हो। जैसे—आज सोने का बाजार गरम है।

मुहा०—(किसी चीज या बात का) बाजार गरम होना=बहुत अधिकता, तीव्रता या प्रबलता होना। जैसे—(क) आज-कल हैज़े का बाजार गरम है। (ख) शहरों में चोरियों का बाजार गरम है।

गरम कपड़ा—पुं० [हिं०] शरीर गरम रखनेवाला और जाड़े में पहनने का कपड़ा। ऊनी अथवा रूईदार कपड़ा।

गरम पानी—पुं० [हिं०] १. वीर्य। शुक्र। (बाज़ारू) २. मदिरा। शराब।

गरम मसाला—पुं० [हिं०] भोजन में मिलाई जानेवाली ऐसी चीजें जो उसे चरपरा, पाचक और सुस्वादु बनाती हैं। जैसे—दालचीनी, धनियाँ, मिर्च, लौंग आदि।

गरमाहट—स्त्री० [हिं० गरम+आहट (प्रत्य०)] १. गरम होने की अवस्था या भाव। २. कुछ हलकी गरमी। जैसे—कमरे में अब गरमाहट आई है।

गरमाई†—स्त्री० [फा० गरम से पंजाबी] १. गरमी। २. ऐसी वस्तु जिसके उपयोग या सेवन से शरीरिक शक्ति बढ़ती हो। जैसे—जच्चा को गरमाई खिलाओ; तभी वह जल्दी स्वस्थ होगी।

गरमागरम—वि० [हिं० गरम+गरम] १. ऐसा गरम जिसमें अभी ठंढक बिलकुल न आने पाई हो। काफी गरम। जैसे—गरमागरम चाय या दूध। २. बिलकुल ताजा या तुरंत का। जैसे—गरमागरम खबर। ३. उत्तेजना से युक्त। जैसे—गरमागरम बहस।

गरमागरमी—स्त्री० [हिं० गरमा+गरम] १. किसी काम में जल्दी से निबटाने या समाप्त करने में होनेवाली तेजी। तत्परता। मुस्तैदी। २. अनबन या झगड़ा होने की स्थिति या भाव। ३. आवेशपूर्ण कहा-सुनी।

गरमाना—स० [फा० गर्म, हिं० गरम+आना (प्रत्य०)] १. कोई चीज आग पर रखकर उसे साधारण या हलका गरम करना। जैसे—पीने के लिए दूध या खाने के लिए ठंडी रोटी गरमाना। २. साधारण उष्णता या ताप से युक्त करना। जैसे—आग तापकर या धूप सेंककर हाथ-पैर गरमाना; रजाई ओढ़कर शरीर गरमाना। ३. ऐसा काम करना या ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे किसी में कुछ गरमी (आवेश, उत्तेजना, उत्साह, तीव्रता, प्रसन्नता आदि) उत्पन्न हो। जैसे—(क) कोई तीखी बात कहकर किसी आदमी को गरमाना। (ख) शराब पिलाकर भैंसे को गरमाना। (ग) कुछ दूर दौड़ाकर घोड़े को गरमाना। (घ) गवैये का आरम्भ में धीरे-धीरे कुछ समय तक गाकर अपना गला

गरमाना। ४. किसी के जेब, हाथ आदि के संबंध में, उसमें कुछ धन रखकर उसे प्रसन्न या संतुष्ट करना । जैसे—उसने थानेदार (या पेशकार) का जेब (या हाथ) गरमाकर उसे अपने अनुकूल कर लिया।

अ० १. साधारण या हलकी उष्णता अथवा ताप से युक्त होना। गरम होना। जैसे—(क) थोड़ी देर आँच पर रहने से दूध या पानी का गरमाना। (ख) आग तापने या कंबल ओढ़ने से शरीर का गरमाना। २. आवेश, उत्तेजना आदि उग्र अथवा तीव्र मनोभावों से युक्त होना। जैसे—जरा सी बात पर इस तरह गरमाना अच्छा नहीं होता। ३. किसी आरम्भिक या औपचारिक क्रिया के प्रभाव से किसी प्राणी या उसके किसी अंग का तेजी पर आना और ठीक तरह से अपना काम करने के योग्य होना। जैसे—(क) कुछ दूर दौड़ने से घोड़े का गरमाना। (ख) कुछ देर तक धीरे-धीरे गा लेने पर गवैये का गला गरमाना। ४. स्वाभाविक रूप से पशुओं आदि का उमंग में आना और काम-वासना से युक्त होना। जैसे—गौ या घोड़े का गरमाना। ५. जेब, हाथ आदि के संबंध में, रुपये पैसे की उत्साह-वर्धक या सुखद प्राप्ति होना। जैसे—आज कई दिन बाद इनका जेव (या हाथ) गरमाया है।

गरमी—स्त्री० [फा०] १. गरम होने की अवस्था, गुण या भाव। जैसे—आग या धूप की गरमी । २. वर्षा से पहले और वसंत के बाद की ऋतु। ग्रीष्म काल। जेठ-असाढ़ के दिन। जैसे—इस साल गरमी में पहाड़ पर जाने का विचार है। ३. किसी प्रकार का मानसिक आवेग या उमंग। जोश।

मुहा०—(अपनी) गरमी निकालना=मैथुन या संभोग करना। (बाजारू)। **(किसी की) गरमी निकालना**=ऐसा कार्य करना जिससे किसी का आवेग या क्रोध सदा के लिए अथवा कुछ दिनों के लिए दूर होकर मंद या शांत पड़ जाय।

५. दुष्ट मैथुन से जननेंद्रिय में होने वाला एक भीषण रोग । आतशक या फिरंग रोग। (सिफलिस) ६. घोड़ों और हाथियों को होनेवाला एक प्रकार का रोग। ७. दे० 'ताप'।

गरमीदाना—पुं० [हिं० गरमी+दाना] अधिक गरमी पड़ने के कारण शरीर पर निकलनेवाले छोटे-छोटे लाल दाने। अँभौरी। पित्ती।

गररा*—पुं० [हिं० गर्रा] घोड़ों की एक जाति।

गरराना*—अ० [अनु०] घोर या भीषण ध्वनि करना। गरजना।

गररी†—स्त्री० [देश०] किलँहटी या सिरोही नामकी चिड़िया।

गरल—पुं० [सं०√गॄ (निगलना)+अलच्] १. जहर। विष। २. विच्छू, साँप आदि विषैले कीड़ों का जहर। ३. घास का बँधा हुआ पूला।

गरल-धर—वि० [ष० त०] विष धारण करनेवाला।

पुं० १. महादेव। शिव। २. साँप।

गरलारि—पुं० [गरल-अरि, ष० त०] मरकत मणि। पन्ना।

गरवा*—पुं० [सं० गुरु] १. भारी। २. महान्।

पुं० दे० 'गला'।

गर-व्रत—पुं० [ब० स०] मयूर। मोर।

गरसना—स०=ग्रसना।

गरह†—पुं०=ग्रह।

गरहन—पुं० [सं० गर√हन् (नष्ट करना)+क] काली तुलसी। बबरी।

†पुं०=ग्रहण।

गरहर—पुं० [हिं० गर=गल+हर] वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँधकर लटकाया जाता है। कुंदा। ठेकुर।

गरहेड़ुवा—पुं० [सं० गवेडुका] कसेई। कौड़िल्ला। (पक्षी)

गराँ—वि० [फा०] १. भारी। वजनी। २. कठिन। ३. अप्रिय। नागवार। ४. महँगा।

गरांडील—वि० [फा० गरा या अं० ग्रांड ?] १. जो लंब-तड़ंग तथा मोटा-ताजा हो। २. बहुत बड़ा या भारी।

गराँव—स्त्री० [हिं० गर=गला] पशुओं के गले में बाँधी जानेवाली बटी हुई दोहरी रस्सी जिसके एक सिरे पर मुद्धी और दूसरे सिरे पर गाँठ होती है।

गरा†—पुं०=गला।

गराऊ†—पुं० [सं० गुरु, पु० हिं० गुरु गरुअ] पुराना अथवा बूढ़ा भेड़ा। (गँड़ेरियों की बोली)

गराज—पुं० [अं० गैरेज] मोटर गाड़ी या इसी तरह की और कोई सवारी रखने या रहने का घिरा हुआ स्थान। गिराज।

†स्त्री०=गरज (गर्जन)।

गराड़ी—स्त्री०=गड़ारी।

गराना—स० १. दे० 'गलाना'। २. दे० 'गारना'।

गरानी—स्त्री० [फा०] १. भारीपन। गुरुता। २. महँगी। ३. भोजन न पचने के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

†स्त्री०=ग्लानि।

गरामी—वि० [फा०] १. बुजुर्ग। वृद्ध। २. प्रसिद्ध। ३. सम्मानित।

गरारा—वि० [सं० गर्व, पु० हिं० गारो+आर(प्रत्य०)] १. अभिमानी। घमंडी। २. प्रबल। बलवान्। ३. तेज। प्रचंड।

पुं० [हिं० घेरा] १. पायजामे की ढीली मोहरी। जैसे—गरारेदार पायजामा। २. ढीली मोहरी का पायजामा। ३. खेमा, तंबू आदि भरने का बड़ा थैला।

पुं० [अ० गरार, अनु०] १. मुँह में पानी भरकर गर गर शब्द करके कुल्ली करना। २. चौपायों का एक रोग जिसमें उनके गले में घुर-घुर शब्द होता है।

गरारी—स्त्री० दे० 'गड़ारी।'

गराव—पुं० [देश०] मध्य युग की एक प्रकार की बड़ी नाव।

गरावन†—पुं०=गड़ावन।

गरावना†—स० =१. =गड़ाना। २. =गलाना।

गरावा†—पुं० [देश०] ऐसी भूमि जो अधिक उर्वर न हो। कम उपजाऊ जमीन।

गरास—पुं०=ग्रास।

गरासना*—स० [सं० ग्रास] १. निगलना। २. दे० 'ग्रासना' या 'ग्रसना'।

गरिका—स्त्री० [सं० गुरु+णिच्, गर् आदेश गरि+कन्—टाप्] नारियल की गरी।

गरित—वि० [सं० +इतच्] १. जहर या विष से युक्त। २. जिसमें विष मिलाया गया हो।

गरिमता*—स्त्री० दे० 'गरिमा'। उदा०—उरजनि नहिन गरिमता तैसी।
—नंददास।

गरिमा (मन्)—स्त्री० [सं० गुरु+इमनिच्, गर् आदेश] १. गुरुत्व। भारीपन। २. महत्त्व। महिमा। ३. अहंकार। घमंड। ४. आत्म-श्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक, जिसके फल-स्वरूप मनुष्य अपने शरीर का भार जितना चाहे, उतना बढ़ा सकता है।

गरिया—पुं० [देश०] दक्षिण और मध्यभारत में होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

गरियाना†—अ० [हिं० गारी=गाली] गालियाँ देना। दुर्वचन कहना।

गरियार—वि० [सं० गुरु=भारी] १. (पशु) जो कहीं बैठ जाने पर जल्दी अपनी जगह से न हिले। फलतः मट्ठर या सुस्त। जैसे—गरियार बैल। *२. काम-धंधा करने में सुस्त। आलसी। उदा०—ढीह पतोहु धिया गरियार।—घाघ।

गरियारा—पुं०=गलियारा।

वि०=गरियार।

गरियालू—पुं० [हिं० करिया से करियालू] एक प्रकार का काला-नीला रंग जो ऊन रंगने के काम आता है।

वि० उक्त प्रकार के रंग का। काला-नीला।

गरि[illegible] [सं० गुरु+इष्ठन्, गर् आदेश] १. बहुत भारी। २. (खाद्य पदार्थ) जो बहुत कठिनता से या देर में पचता हो। ३. महत्त्वपूर्ण।

पुं० १. एक प्राचीन तीर्थ। २. एक दानव का नाम।

गरी—स्त्री० [सं०√गॄ (लीलना)+अच्+ङीप्] देवताड़।

स्त्री० [सं० गुलिका, प्रा० गुड़िया] १. नारियल के अंदर का वह सफेद मुलायम गूदा जो खाया जाता है। २. किसी कड़े बीज के अंदर का मुलायम और जमा हुआ गूदा।

गरीब—वि० [अ० ग़रीब] [स्त्री० गरीबिन गरीबिनी, (क्व०), भाव० गरीबी] १. दीन और नम्र। २. दरिद्र। निर्धन। ३. निरुपाय। बेचारा।

पुं० ईरानी संगीत में एक प्रकार का राग।

गरीबखाना—पुं० [फा०] (अपनी नम्रता दिखलाने के लिए) इस गरीब (अर्थात् मुझ अकिंचन) के रहने का स्थान। मेरा घर।

गरीबनिवाज—वि० [फा० गरीब+नेवाज़] दीनों पर दया करने और दुःखियों का दुःख दूर करनेवाला। दयालु।

गरीबपरवर—वि० [फा०] गरीबों की परवरिश करनेवाला। गरीबों को पालनेवाला। दीन-पालक।

गरीबी—स्त्री० [अ० गरीब] १. गरीब होने की अवस्था या भाव। २. २. दीनता। नम्रता। ३. दरिद्रता। निर्धनता।

गरीयस्—वि० [सं० गुरु+ईयसुन्, गर् आदेश] [स्त्री० गरीयसी] १. बहुत अधिक भारी। २. बहुत प्रबल और महान्। ३. महत्त्वपूर्ण।

गरु*—वि० [सं० गुरु] १. भारी। वजनदार। २. गौरवशाली। ३. जिसका स्वभाव गंभीर या शांत हो। धीर।

गरुअत्त—वि० [सं० गुरु] बड़ा। महान्।

गरुआ†—वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई] १. भारी। वजनी। २. अभिमानी। घमंडी।

†पुं०=गड़ुआ।

गरुआई—स्त्री० [हिं० गरुआ] गुरुता। भारीपन।

गरुआना*—अ० [सं० गुरु] भारी या वजनदार होना।

स० भारी करना या बनाना।

गरुड़—पुं० [सं० गरुत्√डी (उड़ना)+ड, पृषो० तलोप] १. गिद्ध की जाति का एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जो पुराणों में विष्णु का वाहन कहा गया है। २. सफेद रंग का एक प्रकार का जल-पक्षी जिसे पड़वा ढेक भी कहते हैं। ३. प्राचीन भारत की एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ४. गरुड़ पक्षी के आकार का एक प्रकार का प्रासाद। ५. पुराणानुसार चौदहवें कल्प का नाम। ६. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७. छप्पय छंद का एक प्रकार या भेद। ८. नृत्य में, एक प्रकार की मुद्रा।

गरुड़गामी (मिन्)—पुं० [सं० गरुड़√गम् (जाना)+णिनि] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

गरुड़-घंटा—पुं० [ष० त०] ठाकुर जी की पूजा में बजाया जानेवाला वह घंटा जिसके ऊपर गरुड़ की आकृति बनी रहती है।

गरुड़-ध्वज—पुं० [ब० स०] १. विष्णु। २. प्राचीनकाल के बने हुए ऐसे स्तंभ जिनपर गरुड़ की आकृति होती थी।

गरुड़-पक्ष—पुं० [ष० त०] नृत्य में दोनों हाथ कमर पर रखने की एक मुद्रा।

गरुड़-पाश—पुं० [मध्य० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का फंदा जो शत्रु को फँसाने के लिए उसके ऊपर फेंका जाता था।

गरुड़-पुराण—पुं० [मध्य० स०] अठारह पुराणों में से एक जिसमें यमपुर तथा अनेक प्रकार के नरकों का वर्णन है। प्रेत-कर्म का विधान भी इसी में है।

विशेष—हिन्दुओं में किसी के मर जाने पर दस दिन तक इसकी कथा सुनने का माहात्म्य है।

गरुड़-प्लुत—पुं० [ष० त०] नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

गरुड़-भक्त—पुं० [ष० त०] प्राचीन भारत का एक संप्रदाय जो गरुड़ की उपासना करता था।

गरुड़-यान—पुं० [ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

गरुड़-रुत—पुं० [ष० त०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण, तगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

गरुड़-व्यूह—पुं० [उपमि० स०] प्राचीन भारत में सैनिक व्यूह-रचना का एक प्रकार जिसमें सेना का मध्य भाग अपेक्षया अधिक विस्तृत रखा जाता था।

गरुड़-सिंह—पुं० [उपमि० स०] प्राचीन भारतीय वास्तु में, वह कल्पित सिंह जिसका अगला भाग गरुड़ के समान तथा पिछला सिंह के समान होता था।

गरुड़ांक—पुं० [गरुड़-अंक] ब० स०] विष्णु।

गरुड़ांकित—पुं० [गरुड़-अंकित, उपमि० स०] दे० 'गरुड़ाश्मा'।

गरुड़ाग्रज—पुं० [गरुड़-अग्रज, ष० त०] अरुण, जो गरुड़ का बड़ा भाई कहा गया है।

गरुड़ाश्मा (श्मन्)—पुं० [गरुड़-अश्मन्, उपमि० स०] पन्ना नामक रत्न।

गरुत्—पुं० [सं०√गॄ (शब्द)+उति] पंख। पर।

गरुता†—स्त्री०=गुरुता।

गरुत्मान् (मत्)—पुं० [सं० गरुत्+मतुप्] १. गरुड़। २. पक्षी। ३. अग्नि।

गरुल—पुं० [सं० गरुड़] गरुड़। उदा०—कंत गरुल होतहिं निरदयी।—जायसी।

गरुवाई†—स्त्री०=गुरुता।

गरुहर†—वि०=गुरु (भारी)।

गरू*—वि०=गुरु।

गरूर—पुं० [अ० ग़रूर] अभिमान। घमंड।

ग़रूरत—स्त्री० =गरूर।

गरूरताई*—स्त्री० =ग़रूर।

गरूरा*—वि० [फा० ग़रूर] [स्त्री० गरूरी] १. अभिमानी २. घमंडी।
पुं०=गरूर।

गरेठना†—स०=गरेरना (घेरना)।

गरेठा—वि०=टेढ़ा।

गरेबान—पुं० [फा०] किसी सिले हुए कपड़े का वह अंश जो गले के चारों ओर पड़ता है।

गरेरना—स०=घेरना (छेकना या रोकना)।

गरेलना†—स०=गरेरना।

गरेरा*—पुं०=घेरा।

वि० [स्त्री० गरेरी] (वास्तु रचना) जिसमें घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।

†पुं०=गदेला (छोटा लड़का)।

गरेरी—स्त्री०=गड़ारी।

गरेहुआ†—वि० [सं० गुरु] १. भारी। २. भीषण। विकट।

गरैयाँ—स्त्री०=गराँव (पशुओं के गले में बाँधने की रस्सी)।

गरोह—पुं० [फा०] झुंड। जत्था।

ग़र्क़—वि० [अ०] १. डूबा हुआ। २. तल्लीन। विचारमग्न।

गर्ग—पुं० [सं० √गॄ (स्तुति करना)+ग] १. एक वैदिक ऋषि जो आंगिरस भरद्वाज के वंशज और ऋग्वेद के एक सूक्त के मंत्र-द्रष्टा थे। २ ज्योतिष शास्त्र के एक प्राचीन आचार्य। ३. धर्मशास्त्र के प्रवर्त्तक एक प्राचीन ऋषि। ४. बैल। ५. साँड़। ६. गगोरी नाम का छोटा कीड़ा। ७. बिच्छू। ८. केंचुआ। ९. एक पर्वत का पुराना नाम। १०. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जिनकी सृष्टि गया में यज्ञ के लिए हुई थी। ११. संगीत में, एक प्रकार का ताल।

गर्गर—पुं० [सं० गर्ग√रा (देना)+क] १. भँवर। २. एक प्रकार का पुराना बाजा। ३. गगरा। गागर। ४. एक प्रकार की मछली।

गर्गरी—स्त्री० [सं० गर्गर+ङीष्] १. दही जमाने की मटकी। दहेंड़ी। २. मथानी। ३. गगरी। कलसी।

गर्ज—स्त्री०=गरज।

गर्जक—पुं० [सं०√गर्ज (गरजना)+ण्वुल्–अक] एक प्रकार की मछली।
वि० गरजनेवाला।

गर्जन—पुं० [सं० √गर्ज्+ल्युट्–अन] १. घोर ध्वनि या भीषण शब्द करने या होने की क्रिया या भाव। गरज।

पद—**गर्जन-तर्जन**=क्रोध में आकर जोर-जोर से बोलना और डाँटना-डपटना।

२. शाल की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।

गर्जना—स्त्री० [सं०] गर्जन (दे०)।
अ०=गरजना।

गर्जा—स्त्री० [सं०√गर्ज्+अङ्—टाप्] बादलों की गरज।

गर्जित—भू० कृ० [सं० √गर्ज्+क्त] गरजा हुआ।

गर्डर—पुं० [अं०] लोहे का ढला हुआ वह मोटा और लंबा छड़ जो बड़ी छतें आदि पाटने में शहतीर की जगह लगाया जाता है।

गर्त्त—पुं० [सं०√गॄ (लीलना)+तन्] १. गड्ढा। गड़हा। २. छेद। ३. दरार। ४. घर। ५. रथ। ६. जलाशय। ७. एक नरक का नाम। ८. एक शब्द जो स्थान-वाचक कुछ नामों में उत्तर-पद के रूप में लगता है। जैसे—चक्रगर्त्त, त्रिगर्त्त आदि।

गर्तकी—स्त्री० [सं० गर्त+कन्—ङीप्] वह स्थान जहाँ कपड़े बुने जाते हैं।

गर्ता—स्त्री० [सं० गर्त+टाप्] १. बिल। २. गुफा।

गर्ताश्रय—पुं० [गर्त-आश्रय, ब० स०] बिल में रहनेवाले जंतु। जैसे—चूहा, खरगोश आदि।

गर्तिका—स्त्री० [सं० गर्त+ठन्—इक, टाप्] =गर्तकी।

गर्द—स्त्री० [फा०] गरदा। धूल।

मुहा० के लिए देखें 'धूल' के मुहा०।

गर्दखोर—वि० [फा०] (कपड़ा या उसका रंग) जो गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न होता हो। जैसे—खाकी रंग।
पुं० पैर पोंछने का टाट आदि।

गर्दखोरा†—वि०=गर्दखोर।

गर्द-गुबार—पुं० [फा०] धूल और मिट्टी जो हवा के साथ उड़कर इधर-उधर गिरती है।

गर्दन—स्त्री०=गरदन।

गर्दना—पुं० दे० 'गरदना'।

गर्दभंग—पुं० [हिं० गर्द+भंग] एक प्रकार का गाँजा जिसे चूरू चरस भी कहते हैं।

गर्दभ—पुं० [सं० √गर्द् (शब्द करना)+अभच्] १. गधा। गदहा। २. सफेद कुमुदनी या कोईं। ३. विडंग। ४. गदहिला नाम का कीड़ा।

गर्दभक—पुं० [सं० गर्दभ+कन्] १. गुबरैला नाम का कीड़ा। २. एक प्रकार का चर्मरोग।

गर्दभ-याग—पुं० [तृ० त०] अवकीर्ण याग।

गर्दभांड—पुं० [सं० गर्दभ√अम् (जाना)+ड] पलखा या पाकर नामक वृक्ष।

गर्दभा—स्त्री० [सं० गर्दभ+टाप्] सफेद कंटकारी।

गर्दभिका—स्त्री० [सं० गर्दभ+ङीष्+कन्–टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार का रोग जिसमें लाल फुँसियाँ निकलती हैं। गदहिला।

गर्दभी—स्त्री० [सं० गर्दभ+ङीष्] १. गर्दभ की मादा। गधी। २. एक प्रकार का कीड़ा। ३. अपराजिता लता। ४. सफेद कंटकारी। ५. गर्दभिका या गदहिला नामक रोग।

गर्दाबाद—वि० [फा० गर्द+आबाद] १. गर्द या धूल से भरा हुआ। २. टूटा-फूटा। ध्वस्त। ३. उजाड़। वीरान। ४. बेसुध। बेहोश।

गर्दालू—पुं० [फा० गर्द+आलू] आलूबुखारा।

गर्दिश—स्त्री० [फा०] १. चारों ओर घमने की क्रिया या भाव।

चक्कर। २. विपत्ति या संकट में डालनेवाला दिनों (या भाग्य) का फेर।

गर्दुआ—पुं०=गरदुआ।

गर्दूं—पुं० [फा०] १. आकाश। २. गाड़ी। रथ।

गर्द्ध—पुं० [सं० गृध् (चाहना)+घञ्] [वि० गर्द्धी, गर्द्धित] १. लालच। लोभ। २. गर्दभांड। पाकरं।

गर्द्धित—वि० [सं० गर्द्ध+इतच्] लोभ से युक्त। लुब्ध।

गर्द्धी (द्धिन्)—वि० [सं० √गृध्+णिनि] [स्त्री० गर्द्धिनी] १. लोभी। २. लुब्ध।

गर्नाल—स्त्री०=गरनाल।

गर्ब—पुं०=गर्व।

गर्बा—पुं० [?] १. मिट्टी का वह पात्र जो कुछ देवी-देवताओं की पूजा के लिए मंगल कलश के रूप में सजाकर प्रस्थापित किया जाता है। २. वह गीत जो उक्त पात्र को प्रस्थापित करते समय गाया जाता है। (गुजरात)

गर्बीला—वि०=गर्वीला।

गर्भंड—पुं० [गर्भ-अंड, ष० त०, पररूप] बहुत बड़ी या उभरी हुई नाभि।

गर्भ—पुं० [सं०√गॄ (सींचना)+भन्] १. पेट के अन्दर का भाग। उदर। २. स्तनपायी (मादा) प्राणियों के शरीर का वह भीतरी भाग जिसमें शुक्र और रज के संयोग से नये प्राणी उत्पन्न होते, बढ़ते, पनपते और अंत में जन्म लेते हैं। गर्भाशय। ३. उक्त के आधार पर मादा स्तनपायी प्राणियों के गर्भवती होने की अवस्था या काल।

मुहा०—**गर्भ गिरना**=गर्भपात होना। **गर्भ रहना**=पेट में बच्चा आना।

४. लाक्षणिक अर्थ में, किसी वस्तु का वह भीतरी भाग जिसमें कोई चीज छिपी या दबी रहती अथवा पनपती, बढ़ती या स्थित रहती है। जैसे—यह बात तो अभी भविष्य के गर्भ में ही है। ५. गर्भ में आनेवाला नया जीव। (क्व०) ६. फलित ज्योतिष में नये मेघों की उत्पत्ति जिससे वृष्टि का आगम होता है।

गर्भक—पुं० [सं० गर्भ√कै (शब्द)+क] १. पुत्रजीव वृक्ष। पतजिव। २. फूलों का गुच्छा जो बालों में खोंसा जाता है। [गर्भ+कन्] दो रातों और उनके बीच के दिन की अवधि।

गर्भकार—वि० [सं० गर्भ√कृ (करना)+अण्] (व्यक्ति) जिसके संपर्क से स्त्री ने गर्भ धारण किया हो।

पुं० सामगान का एक प्रकार का भेद।

गर्भ-काल—पुं० [ष० त०] १. गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल। ऋतुकाल। २. वह सारा समथ जब तक स्त्रियों को गर्भ रहता हो। गर्भ-धारण से प्रसव तक का समय।

गर्भ-केसर—पुं० [ष० त०] फूल के बीच में के वे केसर या सींकें जो उसके स्त्रीलिंग अंग के रूप में होते हैं। उसी के साथ पराग केशर का संपर्क होने पर फल और बीज उत्पन्न होते हैं। (कार्पेल, पिस्टिल)

गर्भ-कोष—पुं० [ष० त०] गर्भाशय।

गर्भ-गृह—पुं० [उपमि० स०] १. मकान के मध्य की कोठरी। बीच का घर। २. मन्दिर के बीच की वह कोठरी जिसमें प्रतिमा या मूर्ति रहती है। ३. वह कोठरी जिसमें गर्भवती स्त्री सन्तान प्रसव करती है। सौरी। ४. आँगन।

गर्भघाती (तिन्)—वि० [सं० गर्भ√हन् (नष्ट करना)+णिनि] [स्त्री० गर्भघातिनी] गर्भ गिराने या नष्ट करनेवाला।

गर्भ-चलन—पुं० [ष० त०] गर्भाशय में बच्चे का इधर-उधर हिलना-डोलना।

गर्भ-च्युति—स्त्री० [ष० त०] १. प्रसव। २. गर्भपात।

गर्भज—वि० [सं० गर्भ√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १. जो गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। (अंडज, स्वेदज आदि से भिन्न) २. दे० 'जन्म-जात'।

गर्भ-जात—वि० [षं० त०]=गर्भज।

गर्भदंश—पुं०=संदंश।

गर्भद—वि० [सं० वृर्भ√दा (देना)+क] गर्भकार।

पुं० पुत्रजीव वृक्ष।

गर्भदा—स्त्री० [सं० गर्भद+टाप्] सफेद भटकटैया।

गर्भ-दात्री—स्त्री० [ष० त०] =गर्भदा।

गर्भ-दास—पुं० [पं० त०] [स्त्री० गर्भदासी] दासी का पुत्र; अर्थात् जन्मजात दास। गोला।

गर्भ-दिवस—पुं० [च० त०] १. गर्भकाल। २. कार्तिकी पूर्णिमा से लेकर लगभग १९५ दिनों का समय जब कि मेघों के गर्भ में आने अर्थात् आकाश में बनने का समय होता है। (बृहत्संहिता)

गर्भ-द्रुत—पुं० [ष० त०] वैद्यक में पारे की शुद्धि के लिए किए जानेवाले संस्कारों में से तेरहवाँ संस्कार।

गर्भ-द्रुह्—वि० [सं० गर्भ√द्रुह् (बुराई सोचना)+क्विप्] [स्त्री० गर्भ-द्रुहा] गर्भ का द्रोही; अर्थात् गर्भ न चाहने या उसे नष्ट करनेवाला।

गर्भ-धरा—वि० [ष० त०] गर्भ धारण करनेवाली। गर्भवती।

गर्भ-धारण—पुं० [ष० त०] गर्भ में नया जीव धारण करना। गर्भवती होना।

गर्भ-नाड़ी—स्त्री० [ष० त०] वह नाड़ी जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है।

गर्भ-नाल—स्त्री० [ष० त०] १. फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ केसर होता है। २. दे० 'गर्भ-नाड़ी'।

गर्भ-निस्रव—पुं० [ष० त०] वह झिल्ली जो बच्चे के जन्म लेने पर गर्भ से निकलती है। आँवल। खेड़ी।

गर्भ-पत्र—पुं० [ष० त०] १. कोंपल। गाभा। २. दे० 'गर्भनाल'।

गर्भपाकी (किन्)—पुं० [सं० गर्भ-पाक, ष० त०, +इनि] साठी धान।

गर्भ-पात—पुं० [ष० त०] १. गर्भ का गिरना। पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले गर्भ से निकलकर गिर पड़ना और व्यर्थ हो जाना। (गर्भ-स्राव से भिन्न; दे० 'गर्भ-स्राव)

गर्भ-पातक—वि० [ष० त०] (औषध या पदार्थ) जिसके प्रयोग या व्यवहार से गर्भपात हो जाय। गर्भ गिरानेवाला।

पुं० लाल सहिजन।

गर्भ-पातन—पुं० [सं० ष० त०] जान-बूझकर पेट या गर्भ का गिराना, जिससे गर्भस्थ जीव मर जाता है। (यह विधिक दृष्टि से अपराध भी है और नैतिक तथा धार्मिक दृष्टि से पाप भी)।

गर्भ-पातिनी—स्त्री० [सं० गर्भपातिन्+ङीप्] १. कलिहारी। २. विशल्या नामक ओषधि।

गर्भपाती (तिन्)—वि० [सं० गर्भ √पत् (गिरना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० गर्भपातिनी] गर्भपात करने या गिरानेवाला।

गर्भ-भवन—पुं० [ष० त०] १. वह कोठ़री जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सौरी। २. दे० 'गर्भ-गृह'।

गर्भ-मंडप—पुं० [ष० त०] १. गर्भ-गृह। २. पति और पत्नी का शयनागार।

गर्भ-मास—पुं० [ष० त०] वह महीना जिसमें स्त्री ने गर्भ धारण किया हो।

गर्भ-मोक्ष—पुं० [ष० त०] प्रसव।

गर्भरा—स्त्री० [सं० गर्भ√रा (देना)+क–टाप्] प्राचीन काल की एक प्रकार की बड़ी नाव।

गर्भवती—स्त्री० [सं० गर्भ+मतुप्–वत्व, ङीप्] स्त्री, जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी।

गर्भ-वास—पुं० [स० त०] १. बच्चे का गर्भाशय में रहना। २. गर्भाशय।

गर्भ-विज्ञान—पुं० [ष० त०] वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि गर्भ में कलल किस प्रकार बनता है, उसमें जीवन का संचार कैसे होता है और उसकी वृद्धि या विकास किस प्रकार होता है। (एम्ब्रायॉलोजी)

गर्भ-व्याकरण—पुं० [ष० त०] आयुर्वेद का वह अंग जिसमें बालक के गर्भ में आने, बढ़ने, जन्म लेने आदि की बातों का विवेचन होता है।

गर्भ-व्यूह—पुं० [उपमि० स०] युद्ध में सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सेना अपने सेनापति या रक्षणीय वस्तु को चारों ओर से घेरकर खड़ी होती और लड़ती थी।

गर्भ-शंकु—पुं० [ष० त०] वह सँड़सी जिससे मरा हुआ बच्चा गर्भ में से निकाला जाता था। (फर्सेप्स)

गर्भ-शय्या—स्त्री० [ष० त०] पेट के अंदर का वह स्थान जिस पर गर्भ स्थित रहता है।

गर्भ-संधि—स्त्री० [मध्य० स०] नाट्य शास्त्र में एक प्रकार की संधि। जिस संधि में उपाय कहीं दब जाय और खोज करने पर बीज का और भी विकास हो उसे गर्भ-संधि कहते हैं।—पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र।

गर्भस्थ—वि० [सं० गर्भ√स्था (ठहरना)+क] गर्भ में आया या ठहरा हुआ (बच्चा)।

गर्भ-स्थली—स्त्री० [मयू० स०] गर्भाशय।

गर्भ-स्थापन—पुं० [ष० त०] गर्भाशय में वीर्य पहुँचाकर गर्भ-धारण कराना। (सेमिनेशन)

गर्भ-स्राव—पुं० [ष० त०] गर्भ के गिरने या नष्ट होने की वह अवस्था जब कि वह पिंड बनने से पहले बहुत-कुछ तरल रूप में रहता है। (एबोर्शन)

विशेष—साधारणतः तीन-चार महीने तक गर्भ तरल रूप में रहता है और गर्भ-स्राव होने पर वह रक्त के रूप में बहकर निकल जाता है। पर इससे अधिक बड़े होने पर जब वह पिंड का रूप धारण करके निकलता है, तब उसे गर्भपात कहते हैं।

गर्भस्रावी (विन्)—वि० [सं० गर्भ√स्रु (बहना) + णिच्+णिनि] [स्त्री० गर्भ-स्राविनी] गर्भ-स्राव करने या करानेवाला।

पुं० हिंताल नामक वृक्ष।

गर्भ-हत्या—स्त्री० [ष० त०] गर्भ में आये हुए जीव या प्राणी को किसी प्रकार नष्ट कर देना या मार डालना।

गर्भांक—पुं० [सं० गर्भ-अंक, उपमि० स०] १. नाटक के अंक का एक अंश जिसमें केवल एक घटना का दृश्य होता है। २. एक नाटक में दिखलाया जानेवाला कोई दूसरा नाटक या उसका दृश्य।

गर्भागार—पुं० [सं० गर्भ-आगार, उपमि० स०] १. गर्भ-गृह। २. आँगन। ३. गर्भाशय।

गर्भाधान—पुं० [सं० गर्भ-आधान, ष० त०] १. स्त्री के गर्भ या पेट में पुरुष के वीर्य से जीव या प्राणी की सृष्टि का सूत्रपात। संभोग करके वीर्य गर्भाशय में स्थित करना या होना। २. गृहसूत्र के अनुसार मनुष्य के सोलहों संस्कारों में से पहला संस्कार जो उस समय होता है जब स्त्री ऋतुमती होने के उपरान्त शुद्ध होती है।

गर्भारि—पुं० [सं० गर्भ-अरि, ष० त०] छोटी इलायची।

गर्भाशय—पुं० [सं० गर्भ-आशय, ष० त०] स्त्रियों या मादा पशुओं के पेट में वह स्थान जिसमें वीर्य के पहुँचने पर जीव या प्राणी की सृष्टि का सूत्रपात होता है। बच्चेदानी। (यूट्रस)

गर्भिणी—वि० [सं० गर्भ+इनि-ङीप्] स्त्री या मादा प्राणी जिसे गर्भ हो। गर्भवती। (प्रेगनैन्ट)

स्त्री० १. खिरनी का पेड़। २. प्राचीन भारत में एक प्रकार की बड़ी नाव जो समुद्रों में चलती थी।

गर्भित—वि० [सं० गर्भ+इतच्] १. जिसने गर्भ धारण किया हो। गर्भ से युक्त। २. जिसके गर्भ अर्थात् भीतरी भाग में कुछ हो या छिपा हो। जैसे—सारगर्भित कथन। ३. भरा हुआ। पूरित। ४. साहित्यिक रचना का एक दोष जो किसी एक भाव के सूचक वाक्य के अन्तर्गत किसी दूसरे भाव का सूचक कोई और वाक्य भी सम्मिलित किये जाने पर होता है।

गर्भी (भिन्)—वि० [सं० गर्भ+इनि] १. गर्भवाला। २. गर्भित।

गर्भीला—वि० [सं० गर्भ+हिं० ईला (प्रत्य०)] १. जिसके गर्भ अथवा भीतरी भाग में कोई चीज स्थित हो। २. (रत्न) जिसके अन्दर से आभा निकलती हो।

गर्भोदक—पुं० [सं० गर्भ-उदक, ब० स०] पुराणानुसार एक समुद्र जिसमें श्रीकृष्ण को शेषशायी महाविष्णु के दर्शन हुए थे।

गर्भोपघात—पुं० [सं० गर्भ-उपघात, ष० त०] गर्भ-हत्या।

गर्भोपनिषद्—पुं० [सं० गर्भ-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेद सम्बन्धी एक उपनिषद् जिसमें गर्भ की सृष्टि, अभिवृद्धि, प्रसव आदि का वर्णन है।

गर्म—वि० [फा०] दे० 'गरम'।

गर्रा—वि० [देश०] लाख के रंग जैसा। लाखी।

पुं० १. लाखी रंग। २. लाखी रंग का घोड़ा। ३. लाखी रंग का कबूतर।

पुं० [अ० गर्रः] १. अभिमान। घमंड। २. कोई ऐसा उग्र कार्य जो, अपने अभिमान और बल के प्रदर्शन के लिए किया गया हो। ३. सतलज नदी का एक नाम जो उसे बहावलपुर के आस-पास प्राप्त है।

स्त्री०=गराड़ी। (बुन्देल०) उदा०—गर्रा पै डोरी डार गुइँयाँ अरी डार गुइयाँरी।—लोकगीत।

गरौं—स्त्री० [हिं० गरेरना] १. खलिहान में लगाई हुई डंठल की गाँज। २. तागा लपेटने का एक औजार।

गर्व—पुं० [सं० √गर्व् (अहंकार करना)+घञ्] [वि० गर्वित, गर्ववान] १. अपने किसी श्रेष्ठ कार्य, बात, वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध में होनेवाली न्यायोचित अहंभावना। जैसे—हमें अपने देश, धर्म तथा संस्कृति पर गर्व है। २. अपनी शक्ति, समर्थता आदि की दृष्टि से मन में होनेवाली अयुक्तिपूर्ण अहंभावना। जैसे—उन्हें अपनी डंडेबाजी पर गर्व है। ३. अभिमान। घमंड। ४. साहित्य में वह अवस्था जब मनुष्य अपने किसी गुण या विशेषता के विचार से दूसरों की अपेक्षा अपने को बहुत बढ़ा-चढ़ा समझता है तथा अपने आचरण या व्यवहार से अपनी श्रेष्ठता प्रकट करता है और कभी-कभी अपने उत्कर्ष की भावना से दूसरों की अवज्ञा भी करता है। (इसकी गणना संचारी भावों में होती है)

गर्वर—वि० [सं० √गॄ (लीलना)+वरच्] जिसे गर्व हो।

गर्वरी—स्त्री० [सं० गर्वर+ङीष्] दुर्गा।

गर्ववंत—वि० [सं० गर्ववान्] (व्यक्ति) जिसे अपने अथवा अपनी किसी चीज, बात या व्यवहार पर गर्व हो। अभिमानी। घमंडी।

गर्वाना—अ० [सं० गर्व] स्वयं गर्व करना।
स० किसी को गर्वित करना या कराना।

गर्विणी—वि० स्त्री० [सं० गर्व+इनि—ङीप्] १. गर्व करनेवाली (स्त्री०)। २. मान करने या रूठनेवाली। मानिनी।

गर्वित—वि० [सं०√गर्ब् +क्त] [स्त्री० गर्विता] १. गर्व से युक्त। २. गर्व या अभिमान करनेवाला।

गर्विता—स्त्री० [सं० गर्वित+टाप्] साहित्य में वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण आदि का अथवा अपने पति या प्रेमी के परम अनुराग का गर्व या घमंड होता है।

गर्विष्ठ—वि० [सं० गर्व+इष्ठन्] १. जिसे गर्व हो। गर्वीला। २. अभिमानी। घमंडी।

गर्वी (विन्)—वि० [सं० गर्व+इनि] अभिमानी। घमंडी।

गर्वीला—वि० [सं० गर्व+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] १. गर्व करनेवाला। गर्व से युक्त। २. अभिमानी।

गर्हण—पुं० [सं०√गर्ह् (निंदा करना)+ल्युट्—अन] [वि० गर्हणीय, गर्हित] किसी को बहुत बुरा समझकर की जानेवाली उसकी निन्दा। भर्त्सना।

गर्हणा—स्त्री० [सं०√गर्ह्+णिच्+युच्—अन्, टाप्] =गर्हण।

गर्हणीय—वि० [सं० √गर्ह्+अनीयर्] जिसका गर्हण या निन्दा करना उचित हो। गर्हण का पात्र (अर्थात् निंदनीय या बुरा)।

गर्हा—स्त्री० [सं० गर्ह्+अ—टाप्] गर्हणा। निंदा।

गर्हित—भू० कृ० [सं० √गर्ह्+क्त] १. जिसकी गर्हणा या निन्दा की गई हो। २. इतना दूषित या बुरा कि उसे देखने पर मन में घृणा उत्पन्न होती हो।

गर्ह्य—वि० [सं०√गर्ह्+ण्यत्]=गर्हणीय।

गलंती, गलंतीका—स्त्री० [सं०√गल् (क्षरण होना)+शतृ—ङीप्+कन्—टाप्] [√गल्+शतृ—ङीप्] १. छोटी कलसी। २. छेददार घड़ा जिसमें से शिवलिंग पर पानी चूता रहता है।

गलंश—पुं० दे० 'गलतंस'।

गल—पुं० [सं०√गल् (खाना)+अप्] १. गला। कंठ। गरदन। २. एक प्रकार का पुराना बाजा। ३. गड़ाकू मछली। ४. दाल।
पुं० हिं० 'गला' का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गलफाँसी, गलबहियाँ आदि।

गलई—स्त्री० =गलही।

गल-कंबल—पुं० [सं० स० त०] गाय के गले के नीचे का वह भाग जो लटकता रहता है। झालर। लहर।

गलक—पुं० [सं० गल+कन्] १. गला। २. गड़ाकू मछली। ३. मोती। उदा०—गुहे गलक कुंतल मँह कैसे।—जायसी।

गलका—पुं० [हिं० गलना] १. हाथ की उँगलियों के अगले सिरे पर होनेवाला जहरीला फोड़ा जिससे हाथ में टपक पड़ती है। इसकी गिनती चेचक या माता में होती है। २. एक प्रकार की चाबुक।

गलकोड़ा, गलखोड़ा—पुं० [हिं० गला+कोड़ा] १. कुश्ती का एक पेंच। २. मालखंभ की एक कसरत। ३. एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक।

गलगंजन—पुं० [हिं० गल+गाँजना] १. शोर-गुल। २. डींग।

गलगंजना—स० [हिं० गलगंजन] १. जोर जोर से चिल्लाना। शोर-गुल करना। २. डींग हाँकना।

गल-गंड—पुं० [स० त०] एक प्रकार का रोग जिसमें गले की अवटुका नामक ग्रन्थियों में सूजन होती है और जो बड़ी गाँठ के रूप में बाहर निकल आती है। घेघा। (गायटर)

गलगल—स्त्री० [देश०] १. मैना की जाति की एक चिड़िया जो कुछ सुर्खी लिये काले रंग की होती है। गिरगोटी। गलगलिया। २. एक प्रकार का बड़ा खट्टा नीबू जिसका अचार पड़ता है। ३. चरबी की बत्ती का वह टुकड़ा जो चलते हुए जहाजों की सीसे की उस नली में लगा रहता है जिससे समुद्र की गहराई नापी जाती है। (लश०) ४. एक प्रकार का मसाला जो लकड़ियों को जोड़ने अथवा उनके छेद बंद करने के काम आता है।

गलगला—वि० [हिं० गलना या गीला] [स्त्री० गलगली] १. भीगा हुआ। आर्द्र। तर। २. आँसुओं से भरा हुआ (नेत्र)। ३. बहुत ही कोमल या मुलायम।

गलगलाना—अ० [हिं० गलना] १. गीला या तर होना। भींगना। २. कठोर पदार्थ का बहुत कोमल हो जाना। ३. (हृदय का) आर्द्र या दयालु होना। मन का कोमल भावों से युक्त होना। ४. हर्षित होना।

गलगाजना—अ० [हिं० गाल+गाजना] १. खुशी से गाल बजाना। २. शोर-गुल करना। ३. डींग मारना।

गलगुच्छा—पुं०=गलमुच्छा।

गलगुथना—वि० [हिं० गाल] जिसका शरीर खूब भरा हुआ और गाल फूले हों। जैसे—गलगुथना बच्चा।

गल-ग्रह—पुं० [ष० त०] १. गले में पड़ा हुआ कष्टदायक बंधन। २. इस रूप में होनेवाली विपत्ति अथवा संकट। ३. आई हुई वह आपत्ति जो कठिनता से टले। ४. मछली फँसाने का काँटा। ५. गले में कफ अटकने या रुकने के कारण होनेवाला एक रोग। ६. ज्योतिष के अनुसार कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, अमावस्या और प्रतिपदा।

गलघोंटू—वि० [हिं० गला+घोंटना] गला घोंटने या दबानेवाला।

पुं० १. ऐसा काम या बात जो गला घोंटनेवाली हो। २. व्यर्थ का और कष्टदायक भार।

गलचा—स्त्री० [?] कंबोज देश और उसके आस-पास बोली जानेवाली कुछ बोलियों का वर्ग या समूह।

गलछट—स्त्री०=गलफड़ा।

गलजँदड़ा—पुं० [सं० गल+यंत्र, पं० जंदरा] १. वह जो सदा पीछे या साथ लगा रहे। गले का हार। २. गले में लटकाई जानेवाली कपड़े की वह पट्टी जो चोट खाये हुए हाथ को सहारा देने के लिए बाँधी जाती है और जिसकी लपेट में हाथ या कलाई रहती है।

गलजोड़—पुं०=गलजोत।

गलजोत—स्त्री० [हिं० गला+जोत] १. वह रस्सी जिससे एक बैल का गला दूसरे बैल के गले से बाँधा जाता है। गलजोड़। २. गले में पड़ा हुआ किसी प्रकार का कष्टदायक बंधन। ३. दे० 'गलजँदड़ा'।

गलझंप—पुं० [हिं० गला+झाँपना] हाथी के गले में बाँधी जानेवाली लोहे की जंजीर।

गलतंग—वि० [सं० गलित+अंग] बेसुध। बेखबर। बेहोश।

गलतंस—पुं० [सं० गलित+वंश] १. ऐसी सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न रह गया हो। लावारिस जायदाद। २. ऐसा व्यक्ति जिसकी सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न रह गया हो।

गलत—वि० [अ०] १. (मौखिक या लिखित प्रश्नोत्तर या हिसाब-किताब) जिसमें कलन या गणन संबंधी कोई भूल हो अथवा जो नियम या सिद्धान्त की दृष्टि से ठीक न हो। २. (लेख) जो अक्षरी, व्याकरण आदि की दृष्टि से शुद्ध न हो। जिसमें किसी प्रकार की भूल या भूलें हों। ३. जो तथ्य के अनुरूप न हो। जो असत्य या झूठ हो। जैसे—तुम गलत कहते हो, मैंने कभी ऐसा नहीं कहा था। ४. जो उचित या विहित न हो। दूषित या बुरा। जैसे—उन्होंने गलत रास्ता अपनाया है।

गल-तकिया—पुं० [हिं० गाल+तकिया] गाल के नीचे रखा जानेवाला एक प्रकार का गोल छोटा तकिया।

गलतनामा—पुं०=शुद्धिपत्र।

गलतनी—स्त्री० [हिं० गला+तनना] बैल के गेराँव में बाँधी जानेवाली रस्सी। पगहा।

गलत-फहमी—स्त्री० [अ० +फा०] किसी की कही हुई बात का अर्थ या आशय कुछ का कुछ समझना। कोई बात समझने में कुछ धोखा खाना।

गलताँ—वि०=गलतान।

गलता—पुं० [फ़ा० गलतान] १. एक प्रकार का बहुत चमकीला, मोटा कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना सूत का होता है। २. दीवार में बनी हुई कँगनी या छज्जी। कारनिस।

गलताड़—पुं० [सं० ष० त०] जूए या जुआठे की वह खूंटी जो अन्दर की ओर होती है।

गलतान—वि० [फा०] १. लड़खड़ाता या लुढ़कता हुआ। २. घूमता या चक्कर खाता हुआ।

पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गलती—स्त्री० [अ० गलत+ई फा०] १. कलन या गणना संबंधी भूल। २. नियम, रीति, व्याकरण, सिद्धान्त, आदि की दृष्टि से होनेवाली कोई भूल। अशुद्धि। ३. ठीक प्रकार से कोई काम न करने, न देखने या न समझने की अवस्था या भाव।

पुं० [हिं० गलना] अभिषेक-घट जिसमें छिद्र होता है। उदा०—पुन गलती पुजारा, गाड़ुवा नैंव ढालंती।

गलथना—पुं० [सं० गलस्तन, पा० गलत्थन, गलथन] कुछ बकरियों के गले में लटकता हुआ लंबोतरा मांस-पिंड।.

गलथैली—स्त्री० [हिं० गाल़+थैली] पशुओं विशेषतः बंदरों के गले के अन्दर थैली के आकार का वह अंग जिसमें वे खाने की वस्तु पहले भर लेते हैं और तब बाद में धीरे-धीरे निकालकर खाते हैं।

गलदश्रु—वि० [सं० गलत्-अश्रु, ब० स०] जिसके आँसू बह रहे हों। रोता हुआ।

गलन—पुं० [सं० √गल्+ल्युट्—अन्] १. गलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी तरल पदार्थ का किसी पात्र में से चूना या रिसना।

गलनहाँ—पुं० [हिं० गलना+नहँ=नाखून] १. हाथियों का एक रोग जिसमें उनके नाखून गलगलकर निकलने लगते हैं। २. वह हाथी जिसे उक्त रोग हो।

गलना—अ० [सं०गलन] १. ताप की अधिकता के कारण किसी घन पदार्थ का तरल होना। जैसे—बरफ, मक्खन या सोना गलना। २. किसी तरल पदार्थ में डाले हुए कड़े या घन पदार्थ का कोमल होकर उसमें घुल कर मिल जाना। जैसे—दूध या पानी में चीनी गलना। ३. आग पर रखकर उबाले या पकाये जाने पर किसी कड़ी वस्तु का इतना नरम हो जाना कि धीरे से उँगली से दबाने पर वह टूट-फूट या दब जाय। जैसे—तरकारी या दाल गलना।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना=कौशल, प्रयत्न आदि में सफलता होना। (प्रायः नहिक रूप में प्रयुक्त) जैसे—यहाँ आपकी दाल नहीं गलेगी, अर्थात् प्रयत्न सफल न होगा।

४. उक्त के आधार पर किसी वस्तु का इतना नरम, (क्षीण या जीर्ण) हो जाना कि छूने भर से फट जाय। जैसे—रखे-रखे कपड़ा या कागज गलना। ५. शरीर का क्रमशः क्षीण होते-होते बहुत ही दुर्बल और निस्सार होना। जैसे—चिन्ता करते करते उनका शरीर गलकर आधा रह गया है। ६. रोग आदि के कारण शरीर के किसी अंग का धीरे-धीरे कटकर नष्ट होना। जैसे—कोढ़ से पैर या हाथ की उँगलियाँ गलना। ७. बहुत अधिक सरदी के कारण ऐसा जान पड़ना कि पैर या हाथ की उँगलियाँ तरल होकर गिर या बह जायँगी। जैसे—पूस-माघ में तो यहाँ हाथ-पैर गलने लगते हैं। ८. इच्छा न होने पर भी व्यर्थ व्यय होना। जैसे—सौ रुपए गल गए। ९. निष्फल अथवा व्यर्थ हो जाना। जैसे—जूए में दाँव या चौपड़ के खेल में मोहरा गलना। १०. गड्ढे आदि में बनाई या रखी हुई चीज का धीरे-धीरे नीचे धँसना या बैठना। जैसे—कूएँ की बनावट में जमवट गलना। ११. (किसी नक्षत्र का) वर्षा करना? पानी बरसाना। जैसे—गली रेवती जल को नासै।—भड्डरी। १२. समय से पहले स्राव या पतन होना। जैसे—गर्भ गलना।

गलफड़ा—पुं० [फेफड़ा का अनु०] १. जल में रहनेवाले जीवों का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। (यह स्थल में रहनेवाले प्राणियों के फेफड़े का ही आरंभिक रूप है)। २. गाल का चमड़ा।

गलफरा—पुं०=गलफड़ा।

गलफाँस—स्त्री०=गलफाँसी।

गलफाँसी—स्त्री०[हिं० गला+फाँसी] १. गले में पड़ी हुई फाँसी या उसका फंदा। २. ऐसा बहुत बड़ा संकट जिससे छुटकारा मिलना बहुत कठिन हो। ३. मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

गलफूट—स्त्री० [हिं० गाल+फूटना] (क) अंड-बंड बकने या (ख) नींद में बड़-बड़ाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

गलफूला—वि० [हिं० गाल-फूलना] [स्त्री० गलफूली] जिसके गाल फूले हुए हों।

पुं० गले के फूलने या सूजने का एक रोग।

गलफेड़—पुं० [सं० गल-पिंड] गले के आस-पास की गिलटियाँ।

गलबंदनी—स्त्री०=गुलूबंद(आभूषण)।

गलबदरी—स्त्री० [हिं० गलना+बदरी=बादल] शीतकाल की वदली जिसमें हाथ-पाँव गलने लगते हैं।

गलबली†—पुं० [अनु०] १. कोलाहल। २. गड़बड़।

गलबहियाँ (बाहीं)—स्त्री० [हिं० गला+बाँह] दो व्यक्तियों के परस्पर गले में हाथ डालकर आलिगन करने की अवस्था या भाव।

गलबा—पुं० [अ० गल्बः] अभिभूत करनेवाली प्रवलता। जैसे—नींद का गलबा।

पुं०=बलवा (विद्रोह)।

गलमँदरी—स्त्री० [हिं० गाल+मुद्रा] १. व्यर्थ की बकवाद। २. दे० 'गल-मुद्रा'।

गलमुच्छा—पुं० [हिं० गाल+मूछ] गालों पर के वे बाल जो बीच में ठोढ़ी पर के बाल मूँड दिए जाने पर भी बचाकर रखे और बढ़ाये जाते हैं।

गलमुद्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] शिव के पूजन के समय उन्हें प्रसन्न करने के लिए गाल बजाने(अर्थात् गालों की सहायता से विशिष्ट प्रकार का स्वर निकालने) की क्रिया या भाव। गलमँदरी।

गलवाना—स० [हिं० 'गलाना' का प्रे० रूप] किसी वस्तु को गलाने का काम दूसरे से कराना। किसी को गलाने में प्रवृत्त करना।

गल-शुंडी—स्त्री० [स० त०] जीभ की जड़ के पास की छोटी घंटी। कौआ। जीभी।

गल-शोथ—पुं० [ष० त०] कुछ रोगों (जैसे—जुकाम, तुंदिका, शोथ आदि) के कारण गले के भीतरी भाग में होनेवाली सूजन और पीड़ा। (सोर थ्रोट)

गलसिरी—स्त्री० [सं० गल-श्री] गले में पहनने का कंठ-श्री नामक गहना।

गलसुआ—पुं० [हिं० गाल+सूजन] एक रोग जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज जाता और उससे पीड़ा होती है। कनपेड़ा।

गलसुई—स्त्री० १. दे० 'गल तकिया'। २. दे० 'गलसुआ'।

गल-स्तन—पुं० [स० त०] [वि० गलस्तनी] कुछ बकरियों के गले में लटकनेवाला मांस-पिंड। गलथना।

गल-स्वर—पुं० [व० स०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

गल-हँड†—पुं०=गलगंड (रोग)।

गलही—स्त्री० [सं० गल+हिं० ही (प्रत्य०)] नाव का वह अगला कोना जो गोलाकार और कुछ ऊपर उठा हुआ होता है।

गलांकुर—पुं० [सं० गल-अंकुर, मध्य० स०] एक रोग जिसमें गले के अन्दर का कौआ या घंटी सूज जाती है। (टान्सिल)

गला—पुं० [सं० गल, प्रा० गल, पा० गलो, द्र० गार्, गरोर्, उ० पं० बं० गला, गु० गलु०, मरा० गंठा, सिं० गरो] १. शरीर का वह गोलाकार लंबोतर अंग जो धड़ के ऊपर और सिर के नीचे होता है और जिसके अन्दर साँस लेने, स्वरों का उच्चारण करने और खाने-पीने की चीजें पेट तक पहुँचानेवाली नलिकाएँ होती हैं। गरदन। ग्रीवा।

मुहा०—(अपना या दूसरे का) गला काटना=छुरी, तलवार या किसी धारदार औजार से काटकर सिर को धड़ से अलग करना और इस प्रकार मृत्यु का कारण बनना। गरदन काटकर हत्या करना। जैसे—चोरों ने चलते-चलाते बुढ़िया का गला भी काट डाला। **(किसी का) गला काटना**=किसी का सब-कुछ छीन लेना अथवा इसी प्रकार की और कोई बहुत बड़ी हानि करना। जैसे—दूसरों का गला काट-काटकर ही तो वे बड़े आदमी बने हैं। **(किसी का) गला घोंटना**=गला दबाना (दे० आगे)। **(किसी बात या व्यक्ति से) गला छूटना**=कष्ट, संकट आदि (अथवा त्रस्त करनेवाले व्यक्ति) से पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। जान बचना। पिंड छूटना। जैसे—चलो, इनके आ जाने से हमारा गला छूट गया। **(किसी का) गला जकड़ना**=कोई बंधन लगाकर या बाधा खड़ी करके किसी को बोलने से बलपूर्वक रोकना। **(किसी से) गला जोड़ना**=मैत्री या घनिष्ठ संबंध स्थापित करना। गहरा मेल-मिलाप पैदा करना। **(किसी का) गला टीपना या दबाना**=(क) हाथ या हाथों से गला इस प्रकार चारों ओर से दबाना कि उसका दम घुट जाय या साँस रुक जाय और वह मर जाय या मरने को हो जाय। (ख) कोई काम करने या स्वार्थ साधने के लिए जबरदस्ती किसी को विवश करना। अनुचित रूप से बहुत अधिक दवाव डालना। **(किसी का) गला पकड़ना**=किसी को किसी बात के लिए उत्तरदायी ठहराना। जैसे—यदि इस युक्ति से हमारा काम न हुआ तो हम तुम्हारा गला पकड़ेंगे। **गला फँसना**=किसी प्रकार के कष्टदायक बंधन में पड़ना। जैसे—तुम्हारे ही कारण अब इसमें हमारा भी गला फँस गया है। **(किसी का)गला रेतना**=किसी को क्रमशः और निर्दयतापूर्वक बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर अथवा उसकी बहुत अधिक हानि करके अपना मतलब निकालना। जैसे—इस तरह दूसरों का गला रेतकर अपना काम निकालना ठीक नहीं है। **(कोई बात) गले तक आना**=किसी कार्य, बात या व्यापार की इतनी अधिकता होना कि उसका निर्वाह या सहन करना बहुत अधिक कठिन हो जाय। जैसे—जब बात गले तक आ गई, तब मैं भी बिगड़ खड़ा हुआ।

विशेष—जब नदी या बाढ़ का पानी बढ़ता-बढ़ता आदमी के गले तक पहुँच जाता है, तब वह असह्य भी हो जाता है और आदमी अपने जीवन से निराश भी हो जाता है। लाक्षणिक रूप में यह मुहावरा ऐसी ही स्थिति का सूचक है।

(कोई चीज या बात) गले पड़ना=इच्छा न होते हुए भी जबरदस्ती या भार रूप में आकर प्राप्त होना। जैसे—यह व्यर्थ का झगड़ा आकर हमारे गले पड़ा है। उदा०—"'गरे परि कौ लागि प्यारी कहैये।

(अपने) गले बाँधना=जान-बूझकर या इच्छापूर्वक अपने साथ या पीछे लगाना। उदा०—लोभ पास जेहि गर न बँधाया। —तुलसी। **(किसी के) गले बाँधना, मढ़ना या लगाना**=किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे कोई चीज देना अथवा कोई भार सौंपना। **(किसी को) गले लगाना**=(क) आलिंगन करना। (ख) अपराध, दोष आदि का विचार छोड़कर अपना बनाना। जैसे—उच्च वर्णों के लोगों को चाहिए कि वे हरिजनों को गले लगावें।

पद—गले का ढोलना या हार=ऐसी वस्तु या व्यक्ति जो सदा साथ रखा जाय अथवा रहे। जिसका या जिससे जल्दी साथ न छूटे।

२. शरीर के उक्त अंग का वह भीतरी भाग जिसमें खाने, पीने, बोलने, साँस लेने आदि की नालियाँ रहती हैं। मुँह के अन्दर का वह विवर जिसका संबंध पेट, फेफड़ों आदि से होता है।

मुहा०—गला आना या पड़ना=गले की घंटी में पीड़ा या सूजन होना। गलांकुर रोग होना। **गला उठाना या करना**=गले की घंटी बढ़ जाने पर उसे उँगली से दवाकर और उस पर कोई दवा लगाकर उसे ऊपर उठाना। घंटी बैठाना। **(किसी चीज का) गला काटना**=चरपरी या तीखी चीज खाने पर उसका गले के भीतरी भाग में हल्की खुजली, चुनचुनाहट या जलन पैदा करना। जैसे—जमींकंद या सूरन यदि ठीक तरह से न बनाया जाय तो गला काटता है। **गला घुटना**=प्राकृतिक कारणों अथवा अस्वस्थता, रोग आदि के फल-स्वरूप साँस आने-जाने में बाधा होना। दम घुटना। **गला जकड़ना**=गले की ऐसी अवस्था होना कि सहज में कुछ खाया-पिया या बोला न जा सके। **(किसी चीज का) गला पकड़ना**=कसैली या खट्टी चीज खाने पर गले में ऐसा विकार या हलकी सूजन होना कि खाने-पीने, बोलने आदि में कष्ट हो। जैसे—ज्यादा खटाई खाओगे तो गला पकड़ लेगी। **गला फँसना**=गले के अन्दर किसी चीज का पहुँचकर इस प्रकार अटक फँस, या रुक जाना कि खाने-पीने, बोलने साँस लेने आदि में कष्ट होने लगे। जैसे—सुपारी खाने से गला फँस गया है। जरा-सा पानी पी लें तो ठीक हो जाय। **(किसी चीज का) गले के नीचे उतरना**=बहुत ही कष्ट से या लाचारी हालत में किसी चीज का खाया जाना। जैसे—अब तो पानी भी कठिनाई से गले के नीचे उतरता है। **(किसी बात का) गले के नीचे उतरना**=(क) ठीक प्रकार से समझ में आना। (ख) ग्राह्य, मान्य या स्वीकृत होना। जैसे—उनका उपदेश तुम्हारे गले के नीचे उतरा या नहीं?

३. शरीर के उक्त अंग का वह अंश जिससे बोलने के समय शब्दों आदि का और गाने के समय स्वरों आदि का उच्चारण होता है। स्वर-नाली। जैसे—जब तक गवैये का गला अच्छा न हो तब तक उसके गाने में रस नहीं आता।

मुहा०—गला खुलना=गले का इस योग्य होना कि उसमें से अच्छी तरह या ठीक तरह से स्वर निकल सके। **गला गरमाना**=गाने, भाषण देने आदि के समय आरंभ में कुछ देर तक धीरे-धीरे गाने या बोलने के बाद कंठ-स्वर का तीव्र या प्रबल होकर पूरी तरह से काम करने के योग्य होना। **गला फटना**=बहुत चिल्लाने, बोलने आदि से अथवा स्वर-नाली में कोई रोग होने के कारण कंठ-स्वर का इस प्रकार विकृत हो जाना कि उससे ठीक, सुरीला और स्पष्ट उच्चारण न हो सके। जैसे—चिल्लाते-चिल्लाते गला फट गया पर तुमने जवाव न दिया। **गला फाड़ना**=बहुत जोर से चिल्ला-चिल्लाकर बोलना और फलतः अपना कंठ-स्वर कर्णकटु तथा विकृत करना। जैसे—तुम लाख गला फाड़ा करो, पर वहाँ तुम्हारी सुनता कौन है? **गला फिरना**=गाने के समय स्वरों और उनकी श्रुतियों पर बहुत ही सहज में और सुन्दरतापूर्वक अथवा सुरीलेपन से कंठ-स्वर का उच्चरित होना अथवा ऊपर और नीचे के स्वरों पर सरलतापूर्वक आना-जाना। जैसे—हर गिटकिरी, तान, पलटे और फंदे पर उसका गला इस तरह फिरता था कि तबीयत खुश हो जाती थी। **गला बैठना**=बहुत अधिक गाने, चिल्लाने, बोलने आदि से अथवा कुछ प्रकृत कारणों या विकारों से कंठ-स्वर का इतना धीमा या मंद पड़ना कि कंठ से होनेवाला शब्दों का उच्चारण सहज में दूसरों को सुनाई न पड़े।

४. कमीज, कुरते, कोट आदि पहनने के कपड़ों का वह अंश जो गरदन पर और उसके चारों ओर रहता है। गेरवान। ५. घड़े, लोटे, सुराही आदि पात्रों का वह ऊपरी गोलाकार तंग और लंबोतरा भाग जो उनके पेट और मुँह के बीच में पड़ता है और जिससे होकर उन पात्रों में चीजें आती-जाती (अर्थात् निकलती या भरी जाती) हैं। जैसे—गगरे का गला टूट गया है।

गलाऊ—वि० [हिं० गलाना] गलानेवाला।

वि० [हिं० गलना] जो गल सकता हो। गलनशील।

गलाना—स० [हिं० गलना का प्रे० रूप] १. किसी घन या ठोस पदार्थ को इतना अधिक गरम करना या तपाना कि वह तरल हो जाय। जैसे—मक्खन या सोना गलाना। २. कड़े और कच्चे अन्नों, तरकारियों आदि को उवाल या पकाकर नरम या मुलायम और खाये जाने के योग्य करना। जैसे-आलू या दाल गलाना। ३. तरल पदार्थ में किसी क्रिया से कोई विलेय वस्तु घुलाना। जैसे—तेजाव में चाँदी गलाना। ४. बहुत अधिक चिंता या श्रम करके अपने शरीर को क्षीण और दुर्बल बनाना। जैसे—देश की सेवा में तन या शरीर गलाना। ५. किसी प्रकार नष्ट या बरबाद करना। ६. ठंढक या सरदी का अपनी तीव्रता से हाथ-पैर इतना सुन्न करना कि वे गल कर अलग होते हुए जान पड़ें। जैसे—हाथ-पैर गलानेवाली सरदी पड़ना। ७. वास्तु-शास्त्र में, किसी खड़ी रचना पर इतना दवाव या बोझ डालना कि वह धीरे-धीरे नीचे धँस कर अदृश्य हो जाय। जैसे—पुल बनाने के लिए कोठी या खंभा गलाना।

गलानि—स्त्री०=ग्लानि।

पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

गलार—वि० [हिं० गाल] १. बहुत गाल बजानेवाला अर्थात् बकवादी। २. झगड़ालू।

स्त्री० [?] मैना (पक्षी)।

पुं० [?] एक प्रकार का वृक्ष।

गलारी—स्त्री० [सं० गल्प, प्रा० गल्ल] गिलगिलिया नाम की चिड़िया। गल-गलिया।

गलावट—स्त्री० [हिं० गलाना] १. गलने की क्रिया या भाव। २. गलने के कारण घटने या नष्ट होनेवाला अंश। ३. ऐसी वस्तु जो दूसरी वस्तुओं को गलाने में सहायक होती हो।

गलि—पुं० [सं० गंडि ड को ल] १. वछड़ा। २. सुस्त वैल।

गलित—वि० [सं० √गल्+क्त] १. (पदार्थ) जो पुराना या बासी होने के कारण गल या सड़ गया हो। गला हुआ। २. (तत्त्व या शरीर) जो पुराना होने के कारण रस, सार आदि से रहित हो गया हो। जैसे—गलित अंग, गलित यौवन। ३. पुराने होने के कारण जो खंडित और जीर्ण-शीर्ण हो चुका हो। नष्ट-भ्रष्ट। ४. जिसमें गलने-गलाने आदि की प्रवृत्ति हो। जैसे—गलित कुष्ठ। ५. चुआ या चुआया हुआ। ६. जो आवेग, उमंग आदि की अधिकता के कारण मत्त होकर अ-वश या आपे से बाहर हो गया हो। उदा०—अति मद-गलित ताल पुल तें गुरु युगल उरोज उतंगनि कौ।—सूर।

गलितक—पुं० [सं० गलित√कै (प्रतीत होना)+क] नृत्य में एक प्रकार की अंग-भंगी या मुद्रा।

गलित-कुष्ठ—पुं० [कर्म० स] आठ प्रकार के कुष्ठों में से एक जिसमें रोगी के अंग गल-गलकर गिरने लगते हैं।

गलित-यौवना—वि० स्त्री० [ब० स०] (स्त्री०) जिसका यौवन बीत जाने के कारण बहुत-कुछ नष्ट हो चुका हो।

गलिया—स्त्री० [हिं० गली] चक्की के ऊपर के पाट में का वह छेद जिसमें दलने या पीसने के लिए अनाज डाला जाता है।

वि० [सं० गलित] (पशु) जो बहुत ही मट्ठर या सुस्त हो।

गलियारा—पुं० [हिं० गली+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री अल्पा० गलियारी] १. गली की तरह का लंबा, सीधा रास्ता। २. किसी देश में से होकर जानेवाला वह स्थल-मार्ग जिस पर एकाधिकार किसी दूसरे देश का होता है। (कारिडोर)

गलियारी—पुं० [हिं० गलियारा] छोटी या तंग गली।

गली—स्त्री० [सं० गल] १. वह सँकरा मार्ग जिसके दोनों ओर घर आदि बने होते हैं तथा जिस पर चलकर लोग प्रायः घरों को जाते हैं। (लेन)

पद—**गली-कूचा**। (दे०)

मुहा०—**गली कमाना**=गली में झाड़ देकर या उसकी नालियों, मोरियों आदि साफ करके जीविका उपार्जित करना। **गली गली मारे फिरना**=(क) व्यर्थ इधर-उधर घूमना। (ख) जीविका के लिए इधर से उधर भटकना। (ग) किसी पदार्थ का चारों ओर अधिकता से मिलना।

२. किसी गली के आस-पास के घरों का समूह, मुहल्लों के नामवाचक रूप में। जैसे—कचौरी गली, गणेश गली आदि।

गलीचा—पुं० [फा० गालीचः (कालीन चा=तु० काली या कालीन से)] १. ऊन की बुनी हुई एक प्रकार की मोटी चादर जिस पर लोग बैठते हैं। २. कँकरीली जमीन। (कहार)

गलीज—वि० [अ०] १. गँदला। मैला। २. अपवित्र। नापाक।

स्त्री० १. कूड़ा-कर्कट। गंदगी। २. मल-मूत्र आदि।

गलीत—वि० [सं० गलित] १. गंदा या मैला। २. अनुचित या बुरा। ३. दे० 'गलित'।

गलीम*—पुं०=गनीम।

गलू—पुं० [सं०] एक प्रकार का पत्थर जिससे प्राचीन काल में मद्यपात्र आदि बनते थे।

गलेफ†—पुं०=गिलाफ।

गलेबाज—वि० [हिं० गला+बाज] [भाव० गलेबाजी] १. जिसका गला बहुत अधिक या तेज चलता हो। बहुत अधिक, जोर से या बढ़-बढ़ कर बातें करनेवाला। २. बहुत सी तानें और पलटे लेनेवाला और गले का काम अच्छी तरह दिखलानेवाला (गवैया)।

गलेबाजी—स्त्री० [हिं० गला+बाजी] १. बहुत जोर से या बढ़-बढ़ कर बातें करने की क्रिया या भाव। २. गाते समय बहुत अधिक तानें और पलटे लेना।

गलैचा†—पुं०=गलीचा।

गलोना—पुं० [देश०] एक प्रकार का कंधारी या काबुली सुरमा।

गलौ*—पुं० [सं० ग्लौ] चंद्रमा।

गलौआ—पुं० [हिं० गाल] बंदरों के गालों के अंदर की थैली जिसमें वे जल्दी-जल्दी खाने की वस्तुएँ भर लेते हैं और बाद में फिर से उसमें से निकालकर चबा-चबा कर खाते हैं।

वि० [हिं० गलाना] १. जो गलाकर फिर से नया बनाया गया हो। २. जो गलाया जाने को हो।

गलौघ—पुं० [स० त०] एक प्रकार का रोग जिसमें गले के अंदर सूजन हो जाती है और साँस लेने में कठिनता होती है।

गल्प—स्त्री० [सं० जल्प वा कल्प] १. मिथ्या प्रलाप। गप्प। २. डींग। शेखी। ३. भावपूर्ण या विचार-प्रधान कोई छोटी घटनात्मक कहानी। ४. मृदंग के बारह प्रबंधों में से एक।

गल्यारा—पुं० दे० 'गलियारा'।

गल्ल—पुं० [सं०√गल्+ल] गाल। कपोल।

†स्त्री० [सं० गल्प] १. बात। (पंजाब) २. शोर। हल्ला।

गल्लई—स्त्री० [अ० गुल, हिं० गुल्ला] शोर-गुल।

वि० [हिं० गल्ला=अनाज] अनाज या गल्ले के रूप में होने अथवा दिया-लिया जानेवाला। जैसे—खेत की पैदावार का गल्लई बँटवारा।

गल्लक—पुं० [सं०√गल्+क्विप्, गल्√ला (लेना)+क] १. मद्य पीने का पात्र। २. एक प्रकार का राल।

गल्लह—पुं० [सं० गल्ल] ख्याति। प्रसिद्धि। उदा०—वात विनोद वसंतरै, सुनी दाहिमी गल्लह।—चंदवरदाई।

गल्ला—पुं० [फा० गल्लः] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओं का झुंड। दल। जैसे—बकरियों या भेड़ों का गल्ला। २. वह थैली या संदूक जिसमें दूकानदार रोज की बिक्री से आनेवाला धन रखते हैं। गुल्लक। जैसे—बोहनी न बट्टा, गल्ले में हाथ। (कहा०)

पुं० [अ० गल्लः] १. अनाज। अन्न। २. उतना अन्न जितना चक्की में पीसने के लिए एक बार डाला जाता है। ३. पेड़-पौधों आदि की उपज या पैदावार।

पुं० [?] एक प्रकार का बेंत जिसे मोला भी कहते हैं।

गल्लाफरोश—पुं० [फा०] अनाज बेचनेवाला व्यापारी।

गल्ली—स्त्री०=गली।

गल्वर्क—पुं० [सं०√गल्+उन्, गलु-अर्क ब० स०] प्राचीन भारत में गलू नामक पत्थर का बननेवाला मद्य-पात्र। गलू पत्थर का बना हुआ प्याला।

गल्ह—वि० [सं० गल्भ] धृष्ट। ढीठ।

†स्त्री० [सं० गल्प] बात।

गल्हाना—स० [हिं० गल्ह] १. बातें करना। २. बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग हाँकना।

गवँ—स्त्री० दे० 'गौ'।

गव—पुं० [सं० गवय] रामचंद्र जी की सेना का एक बन्दर।

गवईस†—पुं०=गौरीश (शिव)।

गवख्ख†—पुं०=गवाक्ष।

गवन—पुं० [सं० गमन] १. गमन। जाना। २. गति। चाल। उदा०—छाँड़ि सुख-धाम अरु गरुड़ तजि साँवरो पवन के गवन तैं अधिक धायो।—सूर। ३. दे० 'गौना'।

गवनचार—पुं० [हिं० गवन+चार] विवाह के बाद वधू का पहले-पहल वर के घर जाना। गौना।

गवनना*—अ० [अ० गमन] गमन करना। जाना।

गवना—पुं०=गौना।

*अ०=गवनना (जाना)।

गवय—पुं० [सं०√गु (शब्द करना)+अप्, गव√या (जाना)+क] [स्त्री० गवयी] १. नीलगाय। २. राम की सेना का एक बंदर। ३. एक प्रकार का छंद जिसके प्रथम चरण में १९ मात्राएँ होती हैं और ११ मात्राओं पर विराम होता है। इसका दूसरा चरण आधा दोहा होता है। ४. तिमिंगिल वर्ग का एक स्तनपायी बड़ा जल-जंतु। (ड्यूगांग)

गवरल†—स्त्री०=गौरी।

गवरि—स्त्री०=गौरी।

गवर्नमेंट—स्त्री० [अं०] १. राज्य का शासन करनेवाली सत्ता। शासन। सरकार। २. उन व्यक्तियों का वर्ग या समूह जो देश का शासन और उसके कार्यों का संचालन करते हैं।

गवर्नर—पुं० [अं०] १. शासन करनेवाला व्यक्ति। शासक। हाकिम। २. किसी प्रदेश या प्रांत का वह सबसे बड़ा अधिकारी जो सम्राट् अथवा केंद्रीय शासन की ओर से नियुक्त हुआ हो। आज-कल का राज्यपाल।

गवर्नर-जनरल—पुं० [अं०] वह प्रधान शासक जिसके अधीन किसी देश के विभिन्न प्रांतों के गवर्नर काम करते हैं।

गवर्नरी—स्त्री० [अं० गवर्नर+हिं० ई (प्रत्य०)] गर्वनर का काम, पद या शासन।

वि० गवर्नर संबंधी। गवनर्र का।

गवर्मेंट—स्त्री०=गवर्नमेंट।

गवल—पुं० [सं० गव√ला (लेना)+क।] जंगली भैंसा। अरना।

गवष†—पुं०=गवाक्ष।

गवहियाँ†—पुं० [सं० गोघ्न=अतिथि] अतिथि। मेहमान।

वि०, पुं०=गँवार।

गवाक्ष—पुं० [सं० गो-अक्षि, ष० त०] १. दीवारों में बना हुआ छोटा झरोखा। छोटी खिड़की। २. रामचंद्र की सेना का एक बंदर।

गवाक्षित—वि० [सं० गवाक्ष+इतच्] १. (दीवार) जिसमें गवाक्ष बने हों। २. खिड़कीदार (मकान)।

गवाक्षी—स्त्री० [सं० गवाक्ष+ङीष्] १. इंद्रवारुणी। २. अपराजिता।

गवाख*—पुं०=गवाक्ष।

गवाची—स्त्री० [सं० गो√अञ्च् (गति)+क्विन्—ङीप्] मछलियों की एक जाति का वर्ग।

गवाछ†—पुं० =गवाक्ष।

गवादन—पुं० [सं० गो-अदन, ष० त०] गौओं, बैलों, भैंसों आदि के खाने की घास या चारा।

गवाधिका—स्त्री० [सं० गो-अधि√ कै (प्रतीत होना)+क—टाप्] लाक्षा। लाख।

गवामयन—पुं० [सं० गवाम्-अयन, अलुक् सं०] दस या बारह महीने में पूरा होनेवाला एक वैदिक यज्ञ।

गवार—वि० [फा०] 'गवारा' का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के अंत में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—खुशगवार, नागवार आदि।

†स्त्री० दे० 'ग्वार'।

गवारा—वि० [फा०] १. जो अंगीकृत या गृहीत करने के योग्य हो। २. पचने या हजम होनेवाला। अनुकूल। रुचिकर। ३. बरदाश्त करने या सहने योग्य। सह्य।

गवारिश—स्त्री० [फा०] ओषधियों का चूर्ण। (इसी का अरबी रूप जवारिश है।)

गवालीक—पुं० [सं० गो-अलीक, च० त०] वह मिथ्या भाषण जो गौ आदि चौपायों के संबंध में हो। (जैन)

गवाश—वि०, पुं० [सं० गो√अश् (खाना)+अण्] =गवाशन।

गवाशन—वि० [सं० गो√अश्+ल्यु—अन] गौ का मांस खानेवाला। गो-भक्षी।

पुं० १. चमार। २. चांडाल।

गवास—वि० [सं० गवाशन] गौ की हत्या करनेवाला।

पुं० कसाई।

स्त्री० [हिं० गाना] गाने की क्षणिक प्रवृत्ति या शौक। जैसे—कभी कभी आपको भी गवास लगती है।

गवाह—पुं० [फा०] १. ऐसा व्यक्ति जिसने कोई घटना स्वयं देखी हो अथवा जिसे किसी घटना, तथ्य, बात आदि की ठीक और पूरी जानकारी हो। साक्षी। जैसे—बहुत से लोग इस घटना के गवाह हैं। २. वह व्यक्ति जो न्यायालय में अथवा किसी न्यायकर्त्ता के समक्ष अपनी जानकारी बतलावे अथवा तथ्य का सत्यापन या समर्थन करे। साक्षी। ३. वह जो दो पक्षों में होनेवाले लेन-देन, व्यवहार, समझौते आदि के सचमुच घटित होने के प्रमाण किसी लेख्य पर हस्ताक्षर करे अथवा आवश्यकता होने पर उक्त घटना का सत्यापन या समर्थन करे। (विटनेस; उक्त तीनों अर्थों में)

गवाही—स्त्री० [फा०] किसी घटना के संबंध में गवाह की कही हुई बात या दिया हुआ बयान। गवाह का कथन। साक्ष्य। (एविडेन्स)

मुहा०—गवाही देना=किसी साक्षी का किसी ओर से समर्थन करना या उसे ठीक बतलाना **(किसी काम या बात में) मन गवाही देना**=मन या अंतःकरण का यह कहना कि यह बात ठीक है अथवा ऐसा होना चाहिए या होगा। जैसे—हमारा मन तो गवाही देता है कि वे अवश्य यहाँ आवेंगे।

गविआ†—स्त्री०=गौ। उदा०—बदल बिआएल गविआ बाँझे।—कबीर।

गविष्टि—स्त्री० [सं० गवेष्टि] १. इच्छा या कामना। २. लड़ने-झगड़ने की इच्छा या प्रवृत्ति।

वि० [ब० स०] जो गौ या गौएँ लेना-चाहता हो।

गविष्ठ—पुं० [सं० गवि√स्था (ठहरना)+क] सूर्य।

गवीधुक—पुं० [सं०√गवेधुक, पृषो, सिद्धि] कौड़िल्ला नामक पक्षी।

गवीश—पुं० [सं० गो-ईश, ष० त०] १. गोस्वामी। २. विष्णु। ३. साँड़।

गवेंसी*—वि० [सं० गवेषण से] गवेषणा या खोज करनेवाला। उदा०—को बर बाँधि गवेंसी होई—जायसी।

गवेजा†—स्त्री० [सं० गवेषण?] १. बातचीत। २. वाद-विवाद। बहस।

गवेधु—पुं० [सं० गवे√धा (धारण करना)+कु, अलुक् स०] कसेई या कौड़िल्ला नामक पक्षी।

गवेधुक—पुं० [सं० गवेधु+कन्] =गवेधु।

गवेरुक—पुं० [सं० गो√ईर् (गति)+उकञ्] गेरू।

गवेल†—वि० [हिं० गाँव] [स्त्री० गवेली] १. गाँव या देहात-संबंधी। २. गँवार। देहाती।

गवेश—पुं० = गवीश।

गवेष—पुं० [सं० √गवेष् (ढूंढ़ना)+घञ्] =गवेषण।

गवेषक—वि० [सं० √गवेष्+ण्वुल्–अक] गवेषणा करनेवाला।

गवेषण—पुं० [सं०√गवेष्+ल्युट्—अन] १. खोई हुई गाय को ढूंढ़ने का काम। खोजना। २. चाहना। ३. दे० 'गवेषणा'।

गवेषणा—स्त्री० [सं०√गवेष्+णिच्+युच्–अन, टाप्] १. गौ पाने की इच्छा ~~करना।~~ २. खोई हुई गौ ढूंढ़ने निकलना। ३. कोई चीज खोजने या ढूंढ़ने का काम। ४. किसी बात या विषय का मूल रूप या वास्तविक स्थिति जानने के लिए उस बात या विषय का किया जानेवाला परिश्रम-पूर्वक अध्ययन और अनुसंधान। (रिसर्च)

गवेषित—भू० कृ० [सं०√गवेष्+क्त] १. (विषय) जिसके संबंध में गवेषणा हुई हो। २. (कोई नई बात या तथ्य) जिसका अध्ययन, अनुशीलन आदि से पता चला हो।

गवेषी (षिन्)—वि० [सं० √गवेष्+णिनि] गवेषण करनेवाला। गवेषक।

गवेसना*—स० [सं० गवेषणा] खोजना। ढूंढ़ना।

स्त्री०=गवेषणा।

गवेसी—वि०=गवेषी।

गवैंहाँ—वि० [हिं० गाँव+ऐंहा (प्रत्य०)] १. ग्रामीण। देहाती। २. गँवारों की तरह का। देहाती।

गवैया—पुं० [हिं० गाना] वह जो संगीत-शास्त्र का ज्ञाता हो और उसके अनुसार अच्छा गाता हो। गायक। (म्यूजीशियन)

गव्य—वि० [सं० गो+यत्] गो से उत्पन्न या प्राप्त। जैसे—दूध, दही, घी गोबर, गोमूत्र आदि।

पद—पंच-गव्य। (देखें)

पुं० १. गौओं का झुंड। २. दे० 'पंच-गव्य'।

गव्या—स्त्री० [सं० गव्य+टाप्] १. गौओं का झुंड। २. दो कोस की दूरी या नाप। ३. ज्या। ४. गोरोचन।

गव्यूत—पुं०=गव्यूति।

गव्यूति—स्त्री० [सं० गो-यूति, ष० त०, अव् आदेश] दो कोस या दो हजार धनुष की दूरी की एक प्राचीन नाप।

गश—पुं० [अ० ग़शी से फा०] किसी प्राणी के संज्ञाहीन होने की अवस्था। बेहोशी। मूर्च्छा।

गश्त—पुं० [फा०] सुरक्षा बनाये रखने और अनियंत्रित बातों का पता लगाने तथा उन्हें रोकने के लिए समय-समय पर किसी अधिकारी का किसी क्षेत्र में अथवा उसके चारों ओर घूमना।

क्रि० प्र०—लगाना।

गश्तसलामी—स्त्री० [फा० गश्त+अ० सलाम] वह भेंट या नजर जो दौरे पर आनेवाले हाकिमों को दी जाती थी।

गश्ती—वि० [फा०] १. चारों ओर गश्त लगानेवाला। जगह-जगह घूमता-फिरता रहनेवाला। जैसे—गश्ती पुलिस। २. जो चारों ओर सभी संबद्ध व्यक्तियों के पास भेजा जाता हो। जैसे—गश्ती चिट्ठी, गश्ती हुक्म।

स्त्री० १. आवारों की तरह चारों ओर चक्कर लगानेवाली स्त्री। २. कुलटा। व्यभिचारिणी।

गस†—स्त्री०=गाँस।

गसना—स० [सं० कषण=कसना] १. कस या जकड़कर बाँधना। गोथना। २. बुनावट में वाने के तागों को आपस में अच्छी तरह मिलाकर बैठाना। ३. दे० 'गसना'।

†स० =ग्रसना।

गसीला—वि० [हिं० गसना] [स्त्री० गसीली] १. जकड़ा या बँधा हुआ। २. गठा हुआ। गठीला। ३. (कपड़ा) जिसके सूत खूब सटे या मिले हों। गफ।

गस्त†—स्त्री०=गश्त।

गस्सा†—पुं० [सं० ग्रास, प्रा० गास, गस्स] भोजन का कौर। ग्रास।

मुहा०—गस्सा मारना=जल्दी जल्दी कौर या ग्रास मुँह में रखना।

गहँडिल†—वि० [हिं० गड्ढा] गड्ढे में का अर्थात् गँदला (पानी)।

गहक†—स्त्री० [हिं० गहकना] गहकने की क्रिया या भाव।

गहकना—अ० [सं० गद्गद] १. प्रबल चाह या लालसा से युक्त होना। ललकना। २. आवेश या उमंग में आना।

गहकोड़ा†—पुं० =गाहक (दलाल)।

गहक्कना—अ०=गहकना।

गहगच—पुं० [अनु०] १. दलदल। २. जंजाल। झंझट।

गहगड्ड—वि० [सं० गह=गहरा+गड्ड=ढेर] १. गहरा या घोर (नशा)। २. इकट्ठा और बहुत अधिक। जैसे—गहगड्ड माल मारना।

गहगह*—वि० =गहगहा।

गहगहा—वि० [सं० गद्गद्] १. परम प्रसन्न। प्रफुल्लित। २. उमंग से भरा हुआ। ३. धूम-धामवाला। (बाजा)

गहगहाना—अ० [हिं० गहगहा] १. बहुत प्रसन्न होना। आनंद से फूलना। २. फसल या हरियाली का लहलहाना।

स० बहुत अधिक प्रसन्न या प्रफुल्लित करना।

गहगहे—क्रि० वि० [हिं० गहगहा] १. बहुत प्रफुल्लता से। प्रसन्नतापूर्वक। बहुत अच्छी तरह। उदा०—ते बहुरे बोलत गहगहे। २. जोरों से। ३. धूम-धाम से।

गहगौर†—वि० [हिं० गहगहा+गौर=गोरा] [स्त्री० गहगौरी] बहुत अधिक प्रसन्नता के कारण जिसका गौर वर्ण खूब खिला हो। उदा०—पूरन जोवन है गहगौरी।—नंददास।

गहडोरना—स० [देश०] (पानी) गंदा करना।

गहथा†—वि० [सं० ग्रस्त] (चंद्रमा या सूर्य) जिसे ग्रहण लगा हो। उदा०—गहथा आथा गहथा ऊगे।—भड्डरी।

गहन—वि० [सं० गाह (बिलोना) +ल्युट्, ह्रस्व] १. (जलाशय) इतना या ऐसा गहरा जिसकी थाह जल्दी न मिले। जैसे—गहन ताल या दह। २. (स्थान) जिसमें प्रवेश करना बहुत ही कठिन हो। दुर्गम। ३. (बात या विषय) जो जल्दी सबकी समझ में न आ सके। दुरूह। जैसे—गहन विषय। ४. घना। निबिड़। जैसे—गहन वन।

पुं० १. गहराई। गहरापन। २. अभेद्य या दुर्गम स्थान। ३. चारों ओर से घिरा या छिपा हुआ स्थान। ४. गुफा। ५. जंगल। ६. कष्ट। दुःख। ७. जल। पानी। ८. कलंक।

पुं० [सं० ग्रहण, प्रा० गहण, ग्रहण] [स्त्री० हिं० गहना] १. गहने या पकड़ने की क्रिया या भाव। २. धारण करने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ३. जिद। टेक। हठ। ४. गहना नामक उपकरण या औजार। ५. पानी बरसने पर धान के खेतों में की जानेवाली हलकी जोताई।

*वि० (यौ० के अंत में) पकड़नेवाला।

†पुं० [हिं० गहना] कोई चीज बंधक या रेहन रखने की क्रिया या भाव।

†पुं० =ग्रहण।

गहनता—स्त्री० [सं० गहन+तल्–टाप्] १. गहन होने की अवस्था या भाव। २. दुर्गमता। ३. गंभीरता। गहराई।

गहना—स० [वै० सं० गृभायति, गृह्णाति, सं० ग्रह, प्रा० गिण्हजु, सिं० गिन्हणु, उ० धेनू, सिंह० गन्नवा, मरा० घेणें] १. हाथ से कसकर या अच्छी तरह से पकड़ना। जैसे—चरण गहना।

मुहा०*—गह डारना=पकड़कर गिरा या दबा देना। उदा०—तन निरबैर भया सब हिन कै, काम क्रोध गहि डारा।—कबीर।

२. धारण करना। जैसे—शस्त्र गहना। ३. ग्रहण करना। जैसे—हठ गहना।

पुं० [सं० ग्रहण=धारण करना] १. शरीर पर पहनने के अलंकार या आभूषण। जेवर।

मुहा०—(कोई चीज) गहने रखना=किसी के पास बंधक या रेहन रखना।

२. कुम्हारों का एक औजार जिसका उपयोग घड़े आदि बनाने में होता है। ३. एक प्रकार का उपकरण जिससे खेतों की घास निकाली जाती है।

†स० =गाहना।

गहनि—स्त्री० [हिं० गहना (क्रि०)] १. गहने अर्थात् धारण करने या पकड़ने की क्रिया या भाव। २. जिद। टेक। हठ।

गहनी—स्त्री० [?] १. मसालों से नाव के छेद आदि बंद करने की क्रिया। २. चौपायों का एक रोग जिसमें उनके दाँत हिलने लगते हैं। ३. गहना नामक उपकरण या औजार।

गहनु*—वि०=गहन।

पुं०=ग्रहण।

गहने†—क्रि० वि० [हिं० गहना=बंधक] बंधक या रेहन के रूप में।

वि० बंधक या रेहन रखा हुआ।

गहबर—वि० [सं० गह्वर] १. गंभीर। गहरा। २. दुर्गम। विकट। ३. घबराया हुआ। उद्विग्न। व्याकुल। ४. बेचैन। विकल। ५. किसी के ध्यान में इतना मग्न या लीन होना कि आस-पास की बातों की कुछ भी खबर न हो। ६. चटकीला। चमकदार। उदा०—गंगा गहबरि पिअरि चढ़उवै, होरिल जब होइहैं हो।—लोकगीत। ७. घना। निबिड़। उदा०—जँह आवे तम पुंज कुंज गहबर तरु छाहीं।—नंददास।

गहबरन—स्त्री० [हिं० गहबरना] व्याकुलता। घबराहट।

गहबरना*—अ० [हिं० गहबर] १. घबराना। २. बेचैन या विकल होना। ३. करुणा आदि से जी भर आना।

गहबराना—स० [हिं० गहबरना] घबड़ा देना।

अ०=गहबरना।

गहभरना—स० [हिं० भरना] अच्छी तरह भरना।

गहमह—स्त्री० [अनु०] १. चहल-पहल। रौनक। २. जगमगाहट। उदा०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह—प्रिथीराज।

गहमहना—अ० [हिं० गहगहाना] बहुत प्रसन्न होना।

गहमागहम—स्त्री० [हिं० गहमना] चहल-पहल। रौनक।

गहम्मह—वि० [सं० गहन] गहरा। उदा०—घटिय सेस दिन रह्यौ सबै भर भीर गहम्मह।—चंदबरदाई।

गहर—स्त्री० [?] देर। उदा०—कीजै नगहर बेग मेरौ दुख हर मेरे।—सेनापति।

पुं० [सं० गह्वर] १. दुर्गम। २. गूढ़।

*वि०=गहरा।

*स्त्री० =गहराई।

गहरगूल—वि० [हिं० गहरा] अत्यन्त गहरा।

गहरना—अ० [हिं० गहर=देर] देर लगाना। विलंब करना।

अ० [अ० कट्टर] १. झगड़ना। २. कुढ़ना। ३. क्रोध करना।

गहरवार–पुं० [गहरिदेव=एक राजा] क्षत्रियों की एक जाति।

गहरा—वि० [सं० गंभीर, पा० गामीरो, प्रा० गहीर, उ० गहिर, पं० गैरा, सिं० गहरो, गु० घेरु, ने० गैरो, मरा० गहिरा] [वि० स्त्री० गहरी] [भाव० गहराई, गहरापन] १. जिसका तल चारों ओर के स्तर या विस्तार से नीचे की ओर अधिक दूरी तक हो। जैसे—गहरा कूआँ, गहरा बरतन, गहरी नदी। २. (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो। गंभीर 'उथला' या 'छिछला' का विपर्याय। ३. लाक्षणिक अर्थ में (विषय या व्यक्ति) जिसकी थाह न मिलती या न लगती हो। गूढ़। रहस्यमय। 'ओछा' का विपर्याय।

पद—गहरा पेट=ऐसा हृदय जिसमें छिपी हुई बातों का जल्दी औरों को पता न चले।

मुहा०—गहरे में चलना=ऐसा आचरण या व्यवहार करना जिसका भेद सहज में सबको न मालूम हो सके।

४. जो अंदर या भीतर की ओर अधिक दूरी तक चला गया हो। जैसे—गहरा मकान। ५. (रंग) जो बहुत अधिक चटकीला हो। 'हलका' का विपर्याय। ६. (आँख) जिसमें नींद भरी हो। ७. साधारण की अपेक्षा बहुत अधिक। जैसे—गहरी दोस्ती।

पद–गहरा असामी=धनी या मालदार व्यक्ति। **गहरा हाथ**=(क) भारी आघात। (ख) भारी रकम। **गहरे लोग**=चतुर या सयाने लोग।

मुहा०—गहरी घुटना=(क) घनिष्ठता होना। (ख) गहरी भाँग छनना। **गहरी छनना**=गहरी घुटना।

८. जिसका परिणाम या फल बहुत उग्र या तीव्र हो। जैसे—गहरा नशा, गहरी चोट। ९. विकट।

गहराई—स्त्री० [हिं० गहरा+ई० (प्रत्य०)] १. गहरे होने की अवस्था या भाव। गहरापन। २. (विषय आदि की) गंभीरता या गहनता। ३. घनता। निबिड़ता।

गहराना†—अ० [हिं० ग्रहण] गहरा होना। उदा०—संध्या का गहराया झुटपुट। भीलों का-सा धरे सिर मुकुट।—पंत।

स० गहरा करना। जैसे—कूआँ गहराना।

अ० [सं० गह्वर, पुं० हिं० गभुराना] १. जिद या हठ करना। अड़ना। २. मान, रोष आदि के कारण होंठों में बुड़बुड़ाना। गभुराना। उदा०—दोऊ अधिकाई भरे, एकै गौं गहराइ।—बिहारी।

गहराव†—पुं०=गहराई।

गहरू*—स्त्री०=गहर (देर या विलंब)।

गहरे†—क्रि० वि० [हिं० गहरा] १. अच्छी तरह। २. यथेष्ट।

गहरेबाज—वि० [हिं० गहरा+बाज] [भाव० गहरेबाजी] गहरे में अर्थात् तेजी से चलने या चलानेवाला (एक्का और उसका घोड़ा)।

गहरेबाजी†—स्त्री० [हिं० गहरा+बाजी] एक्के के घोड़े की खूब तेज कदम चाल।

गहलौत—पुं० [?] राजपूताने के क्षत्रियों का एक वंश।

गहवर—पुं० [सं० गह्वर] १. कंदरा। गुफा। २. देवालय। मंदिर।

गहवरिया—वि० [सं० गह्वर] १. गहरा। २. सघन। उदा०—तरु गहवरिया थिय तरुण।—प्रिथीराज।

गहवा†—पुं० [हिं० गहना=पकड़ना] सँड़सी।

गहवाना—स० [हिं० गहना का प्रे०] किसी से पकड़ने का काम कराना। पकड़वाना। गहाना।

गहवारा—पुं० [फा०] १. झूला। २. पालना।

गहव्वर—वि० दे० 'गह्वर'।

गहाई†—स्त्री० [हिं० गहना] गहने या गहाने अर्थात् पकड़ने या पकड़वाने की क्रिया या भाव। पकड़।

गहागड्ड—वि०=गहगड्ड।

गहागह—वि०=गहगहा।

गहाना—स० [हिं० गहना] १. किसी को कुछ गहने या धारण करने में प्रवृत्त करना। पकड़ाना। २. (कष्ट, विपत्ति आदि से) ग्रस्त या युक्त कराना।

गहासना*—स०=ग्रसना। उदा०—जौ चंदहिं पुनि राहु गहासा।—जायसी।

गहिरदेव—पुं० [हिं० गहिर+देव] काशी के एक राजकुमार जिसे गहरवार लोग अपना आदि पुरुष मानते हैं।

गहिरा†—वि०=गहरा।

गहिराई†—स्त्री०=गहराई।

गहिराव†—पुं०=गहराव।

गहिरो*—वि०=गहरा।

गहिला†—वि० [हिं० गहेला] [स्त्री० गहिली] उन्मत्त। पागल।

गहिलाना—स० [सं० गाहन से] १. प्रवाहित करना। बहाना। २. धोकर दूर करना या हटाना। उदा०—....जल काजल गहिलाइ।—ढोलामारू।

गहिलोत—पुं०=गहलौत।

गहीर*—वि० १.=गहरा। २.=गंभीर।

गहीला—वि० [हिं० गहेला] [स्त्री० गहेली] १. उन्मत्त। पागल। २. अभिमानी। गर्वीला।

गहु†—स्त्री० [सं० गह्वर या गँव] तंग या सँकरा मार्ग। गली।

गहुआ—पुं० [हिं० गहना=पकड़ना] छोटे मुँहवाली एक प्रकार की सँड़सी।

गहूरी—स्त्री० [हिं० गहना] १. किसी चीज को पकड़ने या पकड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. किसी दूसरे के माल को अपने यहाँ हिफाजत से रखने की मजदूरी।

गहेजुआ†—पुं० [देश०] छछूँदर।

गहेलरा†—वि०=गहेला।

गहेला—वि० [हिं० गहना=पकड़ना+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० गहेली] १. कोई चीज ग्रहण या धारण करनेवाला। जैसे—गरब गहेला। २. अभिमानी। गर्वीला। ३. उन्माद रोग से ग्रस्त। पागल। विक्षिप्त। ४. गँवार।

गहैया—वि० [हिं० गहना+ऐया (प्रत्य०)] १. गहने या पकड़नेवाला। २. अंगीकार, स्वीकार या ग्रहण करनेवाला।

गह्वर—पुं० [सं० √गाह् (छिपाना)=वरच् पृषो० सिद्धि] १. ऐसा अंधेरा और गहरा स्थान जिसके अंदर की चीजों या बातों का बाहर से कुछ भी पता न चले। २. दुर्भेद्य और विषम स्थान। ३. छिपने या छिपकर रहने आदि के लिए जमीन में खुदा या खोदा हुआ कोई अंधेरा और गहरा स्थान। जैसे—गुफा, बिल, विवर आदि। ४. झाड़ियों या लताओं से घिरा हुआ स्थान। कुंज। ५. जंगल। वन। ६. बहुत ही गंभीर और गूढ़ बात या विषय। ७. दंभ, पाखंड या इसी प्रकार की और कोई बात। ८. जल। पानी। ९. रुदन। रोना।

वि० १. दुर्गम। विषम। २. छिपा हुआ। गुप्त। ३. गंभीर। गहरा।

गह्वरी—स्त्री० [सं० गह्वर+ङीष्] कंदरा। गुफा।

गाँकर†—स्त्री० दे० 'गाकरी'।

गांग—वि० [सं० गंगा+अण्] गंगा-संबंधी। गंगा का।

पुं० १. गंगा का किनारा या तट। २. भीष्म। ३. कार्त्तिकेय। ४. वर्षा का जल। ५. सोना। स्वर्ण। ६. धतूरा। ७. बड़ा तालाब। ताल। ८. हिलसा मछली।

*स्त्री०=गंगा। उदा०—गाँग जउँन जौ लहिजल तौ लहि अम्मरमाथ।—जायसी।

गांगट—पुं० [सं० गांग√अट् (गति)+अच्] केकड़ा।

गाँगन†—स्त्री० [?] एक प्रकार की फुँसी या छोटा फोड़ा।

गांगायनि—पुं० [सं० गंगा+फिञ्—आयन] १. भीष्म। २. कार्त्तिकेय। ३. एक प्रवरकार ऋषि।

गांगी—स्त्री० [सं० गांग+ङीप्] दूर्गा।

गांगेय—वि० [सं० गंगा+ढक्—एय] १. गंगा-संबंधी। २. गंगा से उत्पन्न।

पुं० १. भीष्म। २. कार्त्तिकेय। ३. सोना। स्वर्ण। ४. धतूरा।

५. कसेरू। ६. हिलसा मछली। ७. दक्षिण भारत के गंगवाड़ी प्रदेश का एक प्राचीन राजवंश।

गांगेयी—स्त्री० [सं० गांगेय+ङीष्] हिलसा मछली।

गांगेरुक--पुं० [सं० गांग√ईर् (गति)+कु+क] गोरख इमली का बीज।

गांगेरुका--स्त्री० [सं० गांगेरुक+टाप्] १. नागवल्ली। २. एक प्रकार •का क्षुद्र अन्न।

गांगेरुकी—स्त्री० [सं० गांगेरुक+ङीष्] गांगेरुका।

गांगेष्ठी--स्त्री० [सं० गांगे√स्था (ठहरना)+क–ङीष्, अलुक् स०] एक प्रकार की लता। कटशर्करा।

गांग्य--वि० [सं० गंगा+व्यञ्] १. गंगा का। २. गंगा में या गंगा से उत्पन्न होनेवाला।

गाँछना†—स०=गूथना।

गाँज—पुं० [हिं० गाँजना] १. गाँजने अर्थात् ढेर लगाने की क्रिया या भाव। २. ढेर। राशि। जैसे—भूसे या लकड़ी का गाँज।

गाँजना—स० [फा० गंज] ढेर या राशि लगाना। एक के ऊपर एक रखना या लगाना। जैसे—भूसा गाँजना, लकड़ी गाँजना।

स० [सं० गंजन] तोड़ना-फोड़ना। नष्ट करना। उदा०—अई चीत गढ़ ओर सूँ तू गाँजियो न जाय।—बाँकीदास।

गाँजा--पुं० [सं० गञ्जा, गृंज; प्रा० उ० गंजा; बं० मरा० गाँजा; सि० गाँज़ी, गु० गाँजे] १. भाँग की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी मादक सूखी कलियाँ या फूल चिलम में रखकर तमाकू की तरह पीये जाते हैं।

गाँठ--स्त्री० [सं० ग्रंथि, पा० गंठि] [वि० गँठीला] १. कपड़े, डोरे, रस्सी आदि के सिरों को घुमाकर और एक दूसरे में फँसाकर कसने या वाँधने से बननेवाला रूप जो आस पास के तलों से कुछ उभरा हुआ, गोलाकार और मोटा होता है। ग्रंथि। गिरह। जैसे—कोई चीज वाँधने के लिए रस्सी में गाँठ लगाना।

मुहा०—गाँठ जोड़ना या बाँधना=(क) विवाह के समय अथवा उसके बाद कोई धार्मिक शुभ कार्य करने के समय वर और वधू के कपड़ों के पल्ले या सिरे आपस में उक्त प्रकार से बाँधना। (ख) परस्पर वहुत ही घनिष्ठ संबंध स्थापित करना।

२. डोरे या रस्सी के किसी अंश के घूमफिरकर फंदा बनाने और उस फंदे में उलझने या फँसने से बननेवाला उक्त प्रकार का रूप। जैसे—इस डोरे या नख में कई जगह गाँठें पड़ गई हैं। ३. कोई चीज बाँधकर अपने पास रखने के लिए कपड़े के पल्लों को आपस में फँसाकर दिया जानेवाला उक्त प्रकार का रूप। ४. उक्त के आधार पर कोई चीज अपने अधिकार में होने की अवस्था या भाव। उदा०—खोटे राम गाँठ लिअ डोलैं महँगी वस्तु मोलावैं।—कबीर।

मुहा०—किसी की गाँठ कतरना या काटना= किसी की गाँठ से बँधा हुआ या किसी के पास का धन चालाकी या चोरी से ले लेना। चुरा या ठग कर ले लेना। **(कोई बात) गाँठ बाँधना**=किसी बात पर इस उद्देश्य से पूरा ध्यान देना कि वह सदा बहुत अच्छी तरह याद रहे। जैसे—हमारी बात गाँठ बाँध रखो, किसी समय बहुत काम आवेगी।

पद—गाँठ का=अपने पास का। पल्ले का। जैसे—बात की बात में गाँठ के दस रुपए खर्च हो गए। **गाँठ का पूरा**=जिसके पास यथेष्ट धन हो। **गाँठ से**=अपने पास से। पल्ले से। जैसे—गाँठ से निकालकर खरच करना पड़े, तब पता चले।

५. किसी चीज की बँधी हुई बड़ी गठरी। गट्ठर। जैसे—कपड़े या रेशम की आज चार गाँठें आई हैं। ६. वानस्पतिक क्षेत्र में वृक्षों के कांडों, टहनियों आदि में बीच-बीच में होनेवाला उभारदार, गोलाकार, मोटा अंश या भाग। पर्व। पोर। (वल्ब) जैसे—ईख या बाँस में होनेवाली गाँठें। ७. उक्त आकार के आधार पर कोई उभारदार, गोलाकार और ठोस चीज या रचना। जैसे—प्याज की गाँठ, हल्दी की गाँठ।

पद—गाँठ-गँठीला (देखें)।

८. शरीर के अंगों में का जोड़ या संधि-स्थान। जैसे—आज तो हमारी गाँठ-गाँठ में दरद हो रहा है। ९. उक्त के आधार पर मन में जमा या बैठा हुआ किसी प्रकार का दुर्भाव, द्वेष या वैर जो पारस्परिक सद्भावना के अभाव का सूचक होता है। उदा०—साधू वही सराहिये जाके हिये न गाँठ।

मुहा०—मन की गाँठ खोलना=मन में छिपा हुआ दुर्भाव स्पष्टरूप से इसलिए कहना कि आगे के लिए सफाई हो जाय। **मन में गाँठ पड़ना**=मन में दुर्भाव, द्वेष या वैर-विरोध का भाव जमना या बैठना। जैसे—मेरे पिया के जिया में पड़ गई गाँठ, कौन जतन से खोलूँ।—स्त्रियों का गीत।

१०. किसी प्रकार की उलझन या झगड़े-वखेड़े [illegible] पेचीदी वात या स्थिति।

मुहा०—गाँठ खुलना=उलझन या झंझट दूर होना। पेचीदी समस्या का निराकरण या समाधान होना।

११. कटोरी के आकार का एक प्रकार का घुँघरूदार गहना जो कोहनी के ऊपर पहना जाता है।

गाँठकट--पुं० [हिं० गाँठ+काटना] गाँठ काटनेवाला व्यक्ति। गिरहकट।

गाँठ गँठीला—वि० [हिं० गाँठ] जिसमें जगह-जगह कई या बहुत-सी गाँठें पड़ी हों। जैसे—टूटे से फिर के जुड़े तो गाँठ-गँठीला होय। (कहा०)

गाँठगोभी—स्त्री० [हिं० गाँठ+गोभी] गोभी की जाति का एक प्रकार का कंद जिसके पत्तों का संपुट गोल और बड़ी गाँठ के रूप में होता है और जिसकी तरकारी बनती है।

गाँठदार—वि० [हिं० गाँठ+दार (प्रत्य०)] जिसमें गाँठ या गाँठें पड़ी हों। जैसे—गाँठदार लकड़ी।

गाँठना—स० [सं० ग्रंथन, पा० गंठन] १. गाँठ देना, बाँधना या लगाना। २. दो चीजें आपस में जोड़ने या मिलाने के लिए डोरी, डोरे आदि से जोड़कर गाँठें लगाना या मोटी सिलाई करना। जैसे—जूता गाँठना। ३. किसी को अपनी ओर मिलाने के लिए उसके साथ स्वार्थपूर्ण संबंध स्थापित करना। जैसे—यदि उन्हें किसी तरह गाँठ सको तो बहुत काम हो। ४. पर-स्त्री को संभोग के लिए तैयार करना और फलतः उसके साथ संभोग करना। ५. अनुचित रूप से कोई काम पूरा या सिद्ध करना। जैसे—अपना मतलब गाँठना। ६. दबोचकर अपने अधिकार या हाथ में करना। जैसे—बिल्ली आज हमारा एक कबूतर गाँठ ले गई। ७. आघात या वार रोककर उसे विफल करना।

गाँठि*—स्त्री०=गाँठ।

गाँठी—स्त्री० [हिं० गाँठ] १. गाँठ। २. कोहनी पर पहनने का एक गहना।

गाँड़—स्त्री० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड या कन्न० गेराडे=पुरुष की जननेंद्रिय ?] १. मल-त्याग करने की इंद्रिय। गुदा। गुह्य।

विशेष—यद्यपि इस शब्द के साथ अनेक मुहावरे हैं पर वे सब अश्लील होने के सिवा अ-साहित्यिक भी हैं, इसलिए वे छोड़ दिये गये हैं।

२. किसी चीज के नीचे का भाग। तल्ला। पेंदी।

गाँडर—स्त्री०[सं० गंडाली] एक प्रसिद्ध घास जिसकी जड़ बहुत सुगंधित होती है और खस कहलाती है। गंडदूर्वा।

गाँडा—पुं० [सं०कांड या खंड] [स्त्री० गेंडी] १. किसी पेड़-पौधे आदि का वह निकम्मा अंश जो उससे काटकर अलग कर दिया गया हो। जैसे—ईख का गाँडा। २. ईख या ऊख की गँडेरी। ३. ईख। गन्ना। ४. चक्की के चारों ओर का घेरा। मेंडरी।

गांडाली—स्त्री० [सं० गाण्ड–आ√ला (लेना)+क–ङीष] गाँडर नामक घास।

गाँडी—स्त्री० [सं० गंड]=गाँडर।

गाँडीर—वि० [सं० गण्डीर+अण्] गंडीर पौधे से प्राप्त या उसका बना हुआ। गंडीर का।

गांडीव—पुं० [सं० गाण्डी=ग्रन्थि+व] १. अर्जुन का वह धनुष जो उसे अग्निदेव से प्राप्त हुआ था। २. धनुष।

गांडीवी (विन्)—पुं० [सं० गाण्डीव+इनि] १. अर्जुन। २. अर्जुन का वृक्ष।

गाँडू—वि०[हिं० गाँड़] १. जिसे गाँड़ मराने की लत हो। गुदा-भंजन करानेवाला। २. कायर और निकम्मा।

गाँती—स्त्री०=गाती।

गांतु—वि० [सं०√गम् (जाना)+तुन्, वृद्धि] गमन करनेवाला । चलने या जानेवाला।

पुं० १. पथिक। बटोही। २. गवैया। गायक।

गांत्री—स्त्री०[सं० गन्त्रीड़+अण्–ङीप्] बैलगाड़ी।

गाँथना*—स० १=गूँथना। उदा०—मालिनि आउ मौर लै गाँथे।—जायसी। २.=गाँठना।

गांदिनी—स्त्री० [सं० गो√दा (देना)+णिनि. पृषो० सिद्धि] १. अक्रूर की माता जो काशिराज की कन्या और श्वफल्क की भार्या थी। २. गंगा।

गांदी—स्त्री०=गांदिनी।

गांधर्व—वि० [सं० गंधर्व+अण्] १. गंधर्व-संबंधी। गंधर्व का २. गंधर्व जाति या देश का। ३. (मंत्र) जिसका देवता गंधर्व हो।

पुं० १. गान विद्या। संगीत-शास्त्र। २. गंधर्व जाति। ३. भारत का एक प्राचीन भाग जिसमें गंधर्व लोग रहते थे। ४. हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो पहले गंधर्व जाति में प्रचलित था और जिसमें वर और वधू आपस में मिलकर स्वेच्छापूर्वक वैवाहिक संबंध स्थापित कर लेते थे। प्राचीन भारत में यह विवाह क्षत्रियों के लिए विहित था, पर कलियुग में वर्जित है। ५. घोड़ा।

गांधर्व-वेद—पुं०[कर्म० स०] सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर, लय आदि का विवेचन है। संगीत-शास्त्र।

गांधर्विक—वि० [सं० गन्धर्व+ठक्–इक] १. गंधर्व-संबंधी। गंधर्व का। २. गंधर्व विद्या अर्थात् संगीत-शास्त्र का ज्ञाता।

गांधर्वी—स्त्री० [सं० गान्धर्व+ङीष्] दुर्गा।

गाँधार—वि० [सं० गान्ध+ऋ (गति)+अण्] १. गंधार देश संबंधी। गंधार का। २. गंधार देश में रहने या होनेवाला।

पुं० १. गंधार नामक प्राचीन देश जो पेशावर से कंधार तक था। २. उक्त देश का निवासी। ३. संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर। ४. एक प्रकार का षाड़व राग जो अद्भुत, करुण और हास्यरस के लिए उपयुक्त कहा गया है। ५. गंधरस नामक सुगंधित द्रव्य।

गांधार—पुं० [कर्म० स०] गांधार नामक राग का दूसरा नाम।

गांधार-भैरव—पुं० [कर्म० स०] प्रातः समय गाया जानेवाला एक प्रकार का संकर राग।

गांधारि—पुं० [सं० गन्ध+अण्, गान्ध√ऋ+इन्] दुर्योधन के मामा शकुनि का एक नाम।

गांधारी—स्त्री० [सं० गान्धार +इञ्—ङीप्] १. गांधार देश की स्त्री। २. धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की माता जो गांधार के राजा सुबल की पुत्री थी। ३. षाडव संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के दूसरे पहर में गाई जाती है। ४. तंत्र तथा हठयोग के अनुसार दाहिनी आँख की एक नाड़ी। ५. जवासा।

पुं० [सं० गांधारिन्] १. जैनों के एक शासन देवता। २. गाँजा।

गांधिक—पुं० [सं० गन्ध+ठक्–इक]१. सुगन्धित द्रव्य बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति। गाँधी। २. गंध द्रव्य। सुगंधित पदार्थ। ३. दे० 'गाँधी'।

गाँधी—पुं० [सं० गंध से] १. वह जो सुगंधित तेल आदि बनाने का काम करता हो। गाँधी। २. गुजराती वैश्यों का एक वर्ग। ३. गँधिया नाम का कीड़ा। ४. गंधिया नाम की घास।

†स्त्री० हींग।

गांधी टोपी—स्त्री० [गांधी (महात्मा)+टोपी] खद्दर की बनी हुई किश्तीनुमा लंबोतरी टोपी।

विशेष—महात्मा गांधी ने पहले पहल इस प्रकार की टोपी पहनना आरम्भ किया था। इसलिए उन्हीं के नाम पर इसका नाम पड़ा।

गांधीवाद—पुं०[हिं० गांधी+सं० वाद]महात्मा गांधी की विचारधाराओं पर स्थित वह वाद जिसमें सत्य और अहिंसा तथा तप और त्यागपूर्वक अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर होने की व्यवस्था है। रामराज्य की स्थापना इस वाद का चरम ध्येय है।

गांभीर्य्य—पुं०[सं० गम्भीर+ष्यञ्] गंभीर होने की अवस्था, गुण या भाव। गंभीरता।

गाँव—पुं० [सं० ग्राम, पा०, प्रा, गु० गाम, अप० गाँअ, बँ०, उ० गाँ, ने० सिं० गाँउँ, मरा० गाँव, गाव] [वि० गँवार, गँवारू] १. खेती-बारी आदि करनेवाले लोगों की छोटी बस्ती जिसमें १०-२० या १००–२०० घर हों। खेड़ा।

मुहा०—**गाँव मारना**=गाँव में पहुँचकर डाका डालना और वहाँ के सब लोगों को लूटना।

२. मनुष्यों की बस्ती। ३. जगह। स्थान। उदा०—एक तुम्हारे ह्वै पिय प्यारे, छाँड़ि और सब गाँव।—भारतेंदु। ४. बस्ती। ५. रहस्य-संप्रदाय में, काया या शरीर।

गाँवटी—वि० [हिं० गाँव] १. गाँव में रहने या होनेवाला। गाँव का।

देहाती। उदा०—गाँवटी और जंगली जानवरों के चरने से।—वृंदावन लाल वर्मा। २. दे० 'गँवार'।

गाँव-पंचायत—स्त्री०=ग्राम पंचायत।

गाँव सभा—स्त्री०=ग्राम पंचायत।

गाँस—स्त्री० [हिं० गासना] १. तीर, बरछी, भाले आदि हथियारों का नुकीला फल। २. उक्त फल का अथवा किसी नुकीली वस्तु (जैसे—काँटा या सूई) का वह टुकड़ा जो टूटकर घाव के अन्दर रह गया हो और बहुत कष्ट देता हो। ३. किसी के प्रति मन में बैठा हुआ द्वेष या वैर जो बदला लेने की प्रेरणा करता हो। मनोमालिन्य।

मुहा०—(मन की) गाँस निकालना=शत्रु से बदला चुकाकर अपना मन शांत करना।

४. मन में खटकने या चुभनेवाली बात। उदा०—प्रीतम के उर बीच भये दुलही को विलास मनोज की गासी।—मतिराम। ५. कष्ट या पीड़ा देनेवाली कोई चीज या बात। ६. किसी प्रकार का बंधन या रुकावट।

मुहा०—(किसी को) गाँस में रखना=अपने अधिकार या वश में रखना।

७. दे० 'गाँठ'।

गाँसना—स० [हिं० गाँस] १. हिन्दी 'गँसना' का सकर्मक रूप। २. छेद करके दो चीजों को एक में मिलाते हुए अच्छी तरह फँसाना, लगाना या सटाना। ३. किसी चीज में गाँसी या नुकीली चीज गड़ाना या धँसाना।

मुहा०—(कोई बात मन में) गाँसकर रखना=कोई अप्रिय या खटकनेवाली बात अच्छी तरह मन में जमा या बैठाकर रखना। उदा०—तुम वह बात गाँसि करि राखी, हम कौ गई भुलाई।—सूर। **गाँस गहना**=गाँसकर रखना।

४. अच्छी तरह बाँधकर या रोककर अपने अधिकार, नियंत्रण या शासन में रखना। ५. किसी चीज में कुछ ठूँस या भरकर रखना। ६. जहाज के पेंदे के छेदों में उन्हें बन्द करने के लिए मसाला भरना। (लश०)

गाँसी—स्त्री०=गाँस।

गाँहक†—पुं०=गाहक।

गाइ (ई)†—स्त्री०=गाय।

गाइन—वि० [हिं० गाना] गानेवाला।

पुं० गवैया। गायक।

गाउन—पुं० [अं०] १. एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा जो प्रायः योरप, अमेरिका आदि देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। २. उक्त प्रकार का वह पहनावा जो कुछ विशिष्ट लोगों (जैसे-डाक्टरों, वकीलों, स्नातकों आदि) को कोई उच्च परीक्षा पारित करने पर उसके चिह्न-स्वरूप मिलता है।

गाऊघप्प—वि० [हिं० खाऊ+गप्प] १. सब कुछ खा-पी जानेवाला। २. दूसरों का माल खा या हड़प जानेवाला।

गाकरी†—स्त्री० [सं० अंगार+कर] आग पर सेंकी हुई बाटी या लिट्टी। अंगाकड़ी।

गागर—स्त्री० [सं० गर्गर] धातु या मिट्टी का बना हुआ ऊँचे गलेवाला एक प्रकार का घड़ा।

मुहा०—गागर में सागर भरना=(क) थोड़े स्थान में बहुत अधिक चीज़ें भरना। (ख) कोई ऐसी पदावली या वाक्य बोलना या लिखना जिसमें बहुत अधिक भाव भरे हों। (साहित्य)

गागरा†—पुं० [स्त्री० गागरी]=गगरा।

गाच—स्त्री० [अं० गाज़] १. झीनी बुनावट का एक प्रकार का पतला कपड़ा। २. फुलवर नाम का रंगीन बूटीदार कपड़ा।

गाछ—पुं० [सं० गच्छ] १. पेड़। वृक्ष। २. उत्तरी बंगाल में होनेवाला एक प्रकार का पान।

†स्त्री०=गाच।

गाछी—स्त्री० [हिं० गाछ] १. छोटा पेड़। २. छोटा बगीचा। ३. खजूर की नरम कोंपल जिसे सुखाकर तरकारी बनाई जाती है।

†स्त्री०=खुरजी।

गाज—स्त्री० [सं० गर्ज, प्रा० गज्ज] १. गूँजने की क्रिया, भाव, या शब्द। गर्जन।

पद—गाजा-बाजा=कई तरह के बाजे।

२. बिजली। वज्र।

मुहा०—गाज पड़ना=बिजली गिरना या वज्रपात होना। **(किसी वस्तु पर) गाज पड़ना**=पूरी तरह से नष्ट या बरबाद होना। **(किसी व्यक्ति पर) गाज पड़ना**=बहुत बड़ी आफत या संकट में पड़ना। **गाज मारना**-गाज पड़ना।

पुं० [अनु० गजगज] पानी आदि का फेन। झाग।

स्त्री० [?] काँच की चूड़ी।

गाजना—अ० [सं० गर्जन, पा० गज्जन] १. गर्जन करना। गरजना। २. शोर मचाना। उदा०—. . . .जूँ अंबर पर इंदर गाजा।—ग्राम्य गीत। ३. खूब प्रसन्न होना।

गाजर—स्त्री० [सं० गृंजन] मूली की जाति का एक प्रसिद्ध मीठा लंबोतरा कंद जिसका अचार, तरकारी, मुरब्बा आदि बनाये जाते हैं।

मुहा०—(किसी को) गाजर-मूली समझना=(क) अशक्त या असमर्थ समझना। (ख) तुच्छ या हेय समझना।

गाजा—पुं० [फा० गाजः] एक प्रकार का चूर्ण या लेप जो स्त्रियाँ सौंदर्य बढ़ाने के लिए मुँह पर मलती हैं।

†पुं०=गाँजा। उदा०—गाजा पिये गुरु ज्ञान मिटे।

गाजाधर—पुं०=गदाधर।

गाजी—पुं० [अ०] १. मुसलमानों में वह वीर या योद्धा जो धर्म के लिए विधर्मियों से युद्ध करता हो। २. उक्त प्रकार के युद्ध में प्राण देनेवाला व्यक्ति। ३. बहुत बड़ा बहादुर या वीर।

गाजीमर्द—पुं० [अ०+फा०] १. बहुत बड़ा योद्धा या वीर। २. घोड़ा।

गाजीमियाँ—पुं० [अ०] महमूद गजनवी का भानजा सालार मसऊद जो बहराइच में श्रावस्ती के जैन राजा सुहृद्देव के हाथों मारा गया था।

गाटर—पुं० [पु० हिं० गटई=गला] जुआठे की वह लकड़ी जिसके इधर उधर बैल जोते जाते हैं।

पुं० [?] खेत का छोटा टुकड़ा। गाटा।

पुं० [अं० गर्डर] लोहे की मोटी और लंबी धरन।

गाटा†—पुं० [हिं० कट्ठा] १. खेत का छोटा टुकड़ा। छोटा खेत। गाटर। २. बैलों की वह दौनी जो पयाल का चूरा कराने के लिए होती है।

गाड़—पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड मिलाओ अ० गार] १. जमीन में खोदा

या बना हुआ गड्ढा।२. वह गड्ढा जो अनाज भरकर रखने के लिए जमीन में खोदा जाता है। ३. वह गडढ़ा जिसमें ईख की खोई का बचा हुआ रस निचुड़कर इकट्ठा होता है। ४. वह गड्ढ़ा जिसमें पानी भरकर नील भिगोते हैं।५. कूएँ का भगाड़(देखा)। ६ खेत की मेंड़।

गाड़ना—स० [प्रा० गड्डा, बँ० गारा, उ० गार, गु० गाडवूं मरा० गाड़णें] १. कोई चीज छिपाने या दबाने के लिए जमीन में खोदे हुए गड्ढे में रखना और तव उस पर इस प्रकार मिट्टी आदि डालना या भरना कि वह ऊपर से दिखाई न दे। जैसे—जमीन में धन गाड़ना। २. उक्त प्रकार से मृत शरीर जमीन के अंदर रखकर मिट्टी आदि से दवाना। दफन करना। दफनाना। जैसे—ईसाइयों और मुसलमानों के मुरदे गाड़े जाते हैं। ३. कोई चीज कहीं दृढ़तापूर्वक खड़ी करने के लिए उसके नीचे का कुछ अंश जमीन में उक्त प्रकार से धँसाना या दवाना। जैसे—खंभा, झंडा या बाँस गाड़ना। ४. (खेमा या तंबू) खड़ा करना। ५. किसी नुकीली चीज की नोक या सिर जमीन या दीवार में इस प्रकार धँसाना या दवाना कि वह जल्दी इधर-उधर न हो सके। जैसे—कील या खूंटी गाड़ना। ६. दूसरों की दृष्टि से वचाने के लिए अथवा और किसी प्रकार चोरी से अधिक मात्रा में कोई चीज इस उद्देश्य से छिपाकर अपने पास रखना कि उपयुक्त अवसर आने पर उससे अनुचित लाभ उठाया जा सके। (होर्डिंग)।

गाडर†—स्त्री० [सं० गड्डरी वा गड्डरिका] भेड़।

स्त्री० दे० 'गाँडर'।

गाड़रू†—पुं०=गारुडी।

गाडव—पुं० [सं० गडु+अण्] वादल। मेघ।

गाड़ा†—पुं० [हिं० गाड़ी] १. बड़ी गाड़ी। २. बड़ी बैलगाड़ी। ३. बड़ा छकड़ा।

पुं० [हिं० गाड़] १. जंगल का वह गड्ढ़ा जिसमें चोर, डाकू आदि छिपकर बैठते थे। २. दे० 'गाड़'।

मुहा०—गाड़े बैठना=(क) किसी की घात में कहीं छिपकर बैठना। (ख) चौकी या पहरे पर बैठना।

पुं० [हिं० गाड़ना] १. हिंदुओं का वह वर्ग जो मुसलमानों के शासन-काल में डर कर अपने मुरदे गाड़ने लगा था। २. मुलसमान जो अपने मुरदे जमीन में गाड़ते हैं।

गाड़ी—स्त्री० [प्रा० गत्तिआ, गाड्डआ, दे०, प्रा० पं० गड्डी, गोडइ, उ०वँ० गारी, सि० गाडो, गु० मरा० गाड़ी] १. पहियों पर जड़ा या बैठाया हुआ लकड़ी-लोहे आदि का वह ढाँचा जिसे घोड़े, बैल आदि खींचते हैं और जिस पर सवारियाँ तथा सामान एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाये जाते हैं। शकट।

क्रि० प्र०—खींचना।—चलाना।—हाँकना।

पद—गाड़ी भर=वहुत अधिक। ढेर-सा।

मुहा०—गाड़ी जोतना=गाड़ी चलाने के लिए उसके आगे घोड़े या बैल जोतना।

२. रेलगाड़ी।

गाड़ीखाना—पुं० [हिं० गाड़ी+खाना] वह कमरा, घर या स्थान जहाँ गाड़ियाँ रखी जाती हों।

गाड़ीवान—पुं० [हिं० गाड़ी+अं० मैन का हिं० रूप वान] गाड़ी चलाने या हाँकनेवाला।

गाढ़—वि० [सं०√गाह् (पैठना)+क्त] १. बहुत अधिक। अतिशय। २. दृढ़। पक्का। मजबूत। ३. गंभीर। गहरा। ४. घना। ५. तेज। प्रबल। ६. कठिन। विकट। ७. दुरूह या दुर्गम।

स्त्री० कष्ट, विपत्ति या संकट का समय या स्थिति।

पुं० [?] जुलाहों का करघा।

गाढ़ता—स्त्री० [सं० गाढ़+तल्–टाप्] १. गाढ़े, गंभीर या गहन होने की अवस्था या भाव। २. कठिनता। दुरूहता।

गाढ़ा—वि० [सं० गाढ़] [स्त्री० गाढ़ी] १. (पदार्थ) जिसमें तरलता अपेक्षया कम हो। जो अधिक तरल या पतला न हो। जैसे—गाढ़ा दूध, गाढ़ी भाँग (या उसका घोल)।

मुहा०—गाढ़ी छनना=गाढ़ी भाँग पीयी जाना जिसमें खूब नशा हो।

२. (रंग) जो अधिक गहरा हो। बहुत हलका न हो। जैसे--गाढ़ा लाल, गाढ़ा हरा। ३. (वस्त्र) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ठस बुनावट-वाला और अपेक्षया मोटा। ४. दृढ़। पक्का। उदा०—गयौ लंक गाढ़ौ गह्यौ--चंदवरददाई। ५. (संबंध) जिसमें आत्मीयता, घनिष्ठता आदि की अधिकता हो। जैसे—गाढ़ी दोस्ती।

मुहा०—(आपस में) गाढ़ी छनना=(क) घनिष्ठ मित्रता होना। (ख) खूब घुल-मिलकर परामर्श या बातें होना।

६. उग्र। प्रचंड। जैसे—गाढ़ी शत्रुता। ७. बहुत ही कठिन या विकट। जैसे—गाढ़े दिन (दे०)। उदा०--तिन्हहि सराप दीन्ह अति-गाढ़ा।—तुलसी। ८. जिसमें बहुत अधिक परिश्रम होता हो या हुआ हो।

पद—गाढ़े की कमाई—बहुत परिश्रम से कमाया हुआ धन।

९. जिसमें कष्ट, संकट आदि की अधिकता हो। जैसे—गर्भवती या प्रसूता के गाढ़े दिन।

पुं० १. कष्ट, विपत्ति या संकट की अवस्था, प्रसंग या समय। जैसे—गाढ़े में जल्दी कोई साथ नहीं देता। २. जुलाहे का बुना हुआ देशी, मोटा सूती कपड़ा। ३. मस्त हाथी।

गाढ़े†—क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १. दृढ़तापूर्वक। २. गहरा रंग लिये हुए। ३. कठिनता या संकट के समय में। उदा०—चोर न लेंहि, घटै नहिं कवहूँ, गाढ़े आवत काम। —काष्ठजिह्वास्वामी।

गाणपत—वि० [सं० गणपति+अण्] गणपति-संबंधी। गणपति का।

पुं० [सं० गणपति] गणेश जी की उपासना तथा पूजा करनेवाला एक प्राचीन संप्रदाय।

गाणेश—पुं० [सं० गणेश+अण्] गणेश का उपासक।

वि० गणेश संबंधी।

गात—पुं० [सं० गात्र, पा० गत्त] १. देह। शरीर। २. स्त्रियों का यौवन-काल।

मुहा०—गात उमगना=यौवन का आगमन या आरंभ होने पर बालिका के स्तन उभरना।

३. पुरुष या स्त्री का गुप्त अंग। ४. गर्भ।

मुहा०—गात से होना=गर्भवती होना।

गातलीन—स्त्री० [अं० गाटलिन] जहाज में वह डोरी जो मस्तूल के ऊपर एक चरखी में लगी रहती और रीगिन उठाने में काम आती है।

गातव्य—वि० [सं०√गै (गाना)+तव्यत्] गाने अथवा गाये जाने के योग्य।

गाता (तृ)—वि० [सं०√गै+तृच्] गानेवाला।

†—पुं०=गत्ता।

गातानुगतिक—वि० [सं० गतानुगत+ठक्—इक] गतानुगति या अंध अनुसरण के रूप में होनेवाला।

गाती—स्त्री० [सं० गात्री] १. बच्चों को सरदी से बचाने के लिए उनके शरीर पर लपेटकर गले में बाँधा जानेवाला छोटा कपड़ा। २. उक्त प्रकार से शरीर के चारों ओर चादर लपेटने का ढंग या प्रकार। ३. कपड़े का वह टुकड़ा जो साधु लोग अपने गुप्त अंग ढकने के लिए कमर में लपेट कर उसके दोनों सिरे गले में बाँधते हैं।

गातु—पुं० [सं०√गै+तुन्] १. गाने की क्रिया या भाव। गाना। २. गानेवाला। गायक। ३. गंधर्व। ४. कोयल। ५. भौंरा। ६. पथिक। बटोही। ७. पृथ्वी।

गात्र—पुं० [सं०√गम् (जाना)+त्रन्, आकार आदेश] १. देह। शरीर। २. हाथी के अगले पैरों का ऊपरी भाग।

गात्रक—पुं० [सं० गात्र+कन्] शरीर।

गात्र-भंगा—स्त्री० [ब० स० टाप्] केवाँच। कौंछ।

गात्र-रुह—पुं० [गात्रे√रुह् (जन्म लेना)+क] शरीर के रोएँ। रोम।

गात्रवत्—वि० [सं० गात्र+तुप्, वत्व] सुंदर शरीरवाला।

गात्र-वर्ण—पुं० [मध्य० स०] स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमें सातों स्वरों में से प्रत्येक का उच्चारण तीन तीन बार किया जाता है। जैसे—सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग आदि।

गात्र-सम्मित—वि० [ब० स०] (गर्भ) जो तीन महीने के ऊपर का होकर शरीर के रूप में आ गया हो।

गात्रानुलेपनी—स्त्री० [गात्र-अनुलेपनी, ष० त०] अंगराग।

गात्रावरण—पुं० [सं० गात्र-आवण, ष० त०] १. शरीर ढकनेवाली कोई चीज। २. युद्ध के समय शरीर को ढकनेवाले कवच, जिरह-बकतर आदि।

गात्रिका—स्त्री० [सं० गात्र+कन्—टाप्, इत्व] शाल की तरह की एक प्रकार की पुरानी चादर।

गाथ—पुं० [सं०√गा (गाना या स्तुति)+थन् १. गाना। गान। २. प्रशंसा। स्तुति। स्तोत्र। ३. कथा। कहानी। ४. विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन।

गाथक—पुं० [सं० √गा+थकन्] गाथा कहने या लिखनेवाला।

गाथना†—स० [हिं० गथना] १. अच्छी तरह पकड़ना। २. कसना। जकड़ना। ३. गूँधना। ४. गूँथना। पिरोना।

गाथा—स्त्री० [सं० गाथ+टाप्] १. गीत, विशेषतः अपनी रमणीयता के कारण सब तरह के लोगों में गाया जानेवाला गीत। २. प्राकृत भाषा का एक छंद जिसमें उक्त प्रकार के गीत लिखे जाते थे।

विशेष—इन गीतों में किसी के किए हुए यज्ञों आदि का प्रशंसात्मक उल्लेख होता था।

३. परवर्ती काल में, आर्या छंद का एक भेद या रूप जिसमें पाली, प्राकृत आदि में ऐसी रचनाएँ होती थीं, जिनमें ताल, स्वर आदि के नियमों का बंधन नहीं होता था। ४. छोटे-छोटे पद्यों में बहुत ही सीधे सादे ढंग से और विस्तारपूर्वक कही हुई वह प्रभावोत्पादक कथा जिसमें प्रायः सच्ची घटनाओं या विशिष्ट तथ्यों का वर्णन होता है। (बैलड) ५. पारसियों तथा बौद्धों के धर्मग्रंथों में की उक्त प्रकार की रचनाएँ। ६. कोई कथा या वृत्तांत। ७. किसी की प्रशंसा या स्तुति।

गाथाकार—पुं० [सं० गाथा√कृ (करना)+अण्] १. गाथाएँ रचनेवाला। २. महाकाव्य का रचयिता। ३. गायक।

गाथिक—पुं० [सं० गाथा+ठक्—इक] [स्त्री० गाथिका]=गाथक।

गाथी (थिन्)—पुं० [सं० गाथा+इनि] सामवेद गानेवाला।

गाद†—स्त्री० [सं० गाध=जल के नीचे का तल] १. तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज। तलछट। २. तेल की कीट। ३. कोई गाढ़ी चीज। जैसे—गोंद।

गादड़†—वि० [सं० कातर या हिं० गीदड़] मट्ठर। सुस्त।

पुं० १. गीदड़। २. कायर। डरपोक। ३. वह बैल जो किसी तरह जल्दी न चलता हो।

स्त्री० [सं० गड्डर] भेड़।

गादर—वि० [हिं० गदराना] गदराया हुआ।

†पुं० दे० 'गादड़'।

†पुं० [हिं० कादर] वह बैल जो चलता-चलता बैठ जाता हो।

गादा—पुं० [सं० गाधा=दलदल] १. खेत में खड़ी फसल जो अभी पकी न हो। २. उक्त फसल के अध-पके अन्न के दाने। ३. महुए का फल जो पेड़ से टपका हो। हरा महुआ।

गादी—स्त्री० [हिं० गद्दी] १. छोटी टिकिया के आकार का एक प्रकार का पकवान। २. दे० 'गद्दी'।

गादुर—पुं०=चमगादड़।

गाध—पुं० [सं०√गाध् (प्रतिष्ठा)+घञ्] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। तल। ३. नदी का प्रवाह। बहाव। ४. लालच। लोभ।

वि० १. (जलाशय) जो इतना छिछला या कम गहरा हो कि चल या हलकर पार किया जा सके। २. अल्प। थोड़ा।

गाधा—स्त्री० [सं० गाध+टाप्] १. गायत्री स्वरूपा महादेवी। २. बहुत अधिक कष्ट या दुःख। उदा०—भव-बाधा गाधा हरन राधा राधा जीय।—सत्यनारायण।

†पुं०=गधा।

गाधि—पुं० [सं०√गाध्+इन्] कुशिक राजा के पुत्र जो विश्वामित्र के पिता थे।

गाधि-पुर—पुं० [ष० त०] कान्यकुब्ज। कन्नौज।

गाधेय—पुं० [सं० गाधि+ढक्—एय] गाधि ऋषि के पुत्र, विश्वामित्र।

गाधेया—स्त्री० [सं० गाधेय+टाप्] गाधि ऋषि की कन्या सरस्वती जिसका विवाह ऋचीक से हुआ था।

गान—पुं० [सं०√गै (गाना)+ल्युट्—अन] वि० गेय, गातव्य] १. गाने की क्रिया या भाव। गाना। २. वह जो गाया जाय। गीत। ३. किसी प्रकार का बखान या वर्णन। जैसे—यशोगान। ४. शब्द। ५. जाना। गमन।

गानगर—पुं० [हिं० गान+फा० गर]=गायक।

गानना*—स०=गाना। उदा०—नर अरु नारि राम गुन गानहिं।—तुलसी।

गाना—स० [सं० गान] १. कविता, गीत आदि के चरणों या पदों का वह क्रमिक, मोहक और सरस उच्चारण जो सुर तालवाले नियमों के अनुसार किसी विशिष्ट लय में होता है। २. पक्षियों आदि का मधुर स्वर में बोलना।

कलरव करना। ३. विस्तारपूर्वक किसी विषय की चर्चा या वर्णन करना। (विशेषतः कविता या छंदों में)।

मुहा०—अपनी ही गाना=अपनी ही बात कहते चलना (और दूसरे की न सुनना)।

४. प्रशंसा या स्तुति करना। ५. आराधना करना। भजना। उदा०—दिन द्वै लेहुँ गोविदहिं गाइ। —सूर।

पुं० १. लय, राग आदि में कविता, पद्य आदि का उच्चारण करने की क्रिया या भाव। २. गाई जानेवाली चीज या रचना। गीत।

गानी (निन्)—वि० [सं० गान+इनि] १. गानेवाला। २. गमन करने या जानेवाला।

गाफ़िल—वि० [अ०] [भाव० गफलत] १. अचेत। बे-सुध। २. असावधान। ३. लापरवाह।

गाब—पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसका निर्यास नाव के पेंदे की लकड़ियों पर उन्हें सड़ने-गलने से बचाने के लिए लगाया जाता है।

गाबलीन—स्त्री० [?] जहाज पर पाल चढ़ाने की एक प्रकार की चरखी या गराड़ी।

गाभ—पुं० [सं० गर्भ, प्रा० पं० गब्भ, सिंह० गब, सिं० गभु, मरा० गाभ] १. गर्भ, विशेषतः मादा पशुओं का गर्भ।

मुहा०—गाभ डालना=(क) मादा पशु का ऐसी क्रिया करना जिससे उसका गर्भ गिर जाय। अपना गर्भ गिराना,=बाहर निकालना या फेंकना। (ख) लाक्षणिक रूप में, बहुत ही डर जाना (व्यंग्य और हास्य)

२. किसी चीज का मध्य भाग। ३. दे० 'गाभा'। ४. बरतन ढालने के लिए वह साँचा जिस पर अभी गोबरी की तह न चढ़ाई गई हो (कसेरे)।

गाभा—पुं० [सं० गर्भ] १. नया कोमल पत्ता। कल्ला।

मुहा०—गाभा आना=बीच में से नया पत्ता निकलना। २. पौधों, वृक्षों आदि के डंठलों या शाखाओं के अंदर का कोमल भाग। ३. लिहाफ, रजाई आदि के फटने पर उनमें से निकलनेवाली रूई। ४. कच्चा अनाज। ५. किसी चीज का भीतरी भाग।

गाभिन—वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] (मादा पशु) जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी।

गाभिनी—वि० स्त्री०=गाभिन।

गाम—पुं० [सं० ग्राम, पा० गाम] गाँव।

गामचा—पुं० [फा० गामचः] घोड़े के टखने और सुम के बीच का भाग।

गामत—स्त्री० [सं० गमन] १. निकलने का मार्ग। निकास। २. छेद। सूराख (लश०)।

गामा—*पुं० [सं० ग्राम] गँवार। ग्रामीण। उदा०—रामते अधिक नाम करतन जेहि, किये नगर-गत गामों।— तुलसी।

गामिनी—स्त्री० [सं०√गम् (जाना)+णिनि-ङीप्] प्राचीन काल की एक प्रकार की बड़ी नाव जो समुद्रों में चलती थी।

वि० स्त्री० सं० 'गामी' का स्त्री०।

गामी (मिन्)—वि० [सं०√गम्+णिनि] [स्त्री० गामिनी] १. गमन करनेवाला। चलने या जानेवाला। जैसे—शीघ्रगामी। २. गमन या संभोग करनेवाला। जैसे—वेश्यागामी।

गामुक—वि० [सं०√गम्+उकञ्] जानेवाला। गामी।

गाय—स्त्री० [सं० गो, प्रा० पा० गावी, बँ० उ० ने० गाइ, पं० गाँ, गु०, मरा० गाय] सींगोंवाला एक प्रसिद्ध मादा चौपाया जिसका दूध अत्यंत पुष्टिकारक और स्वादिष्ट होता और पीने तथा दही, पनीर, मक्खन आदि बनाने के काम आता है। 'साँड़ की मादा।

मुहा०—गाय का बछिया तले और बछिया का गाय तले करना=इधर का उधर और उधर का इधर करना। हेरा-फेरी करना।

२. बहुत सीधा-सादा और निरीह व्यक्ति।

३. संत साहित्य में, (क) आत्मा। (ख) वाणी। (ग) माया।

गायक—पुं० [सं० गै (गाना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० गायिका] १. वह व्यक्ति जो गीत गाता हो। २. वह जो गीत गाकर अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। ३. प्रशंसा या स्तुति करनेवाला व्यक्ति।

गायकवाड़—पुं० [मरा०] बड़ौदा के उन पुराने महाराजाओं की उपाधि जो मराठों के उत्तराधिकारी थे।

गायकी—स्त्री० [सं० गान] १. गान-विद्या। २. गान विद्या के अनुसार ठीक तरह से गाने की क्रिया या भाव। ३. गान विद्या का पूरा ज्ञान और उसके अनुसार होनेवाला गाना।

गायगोठ—स्त्री० [हिं० गाय+गोठ] वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी या रखी जाती हैं। गोशाला।

गायण—*पुं०=गायन।

गायत—वि० [अ०] १. बहुत अधिक। २. हद दरजे का।

स्त्री० १. किसी वस्तु की अधिकता। २. गरज। मतलब।

गायताल—पुं० [हिं० गाय+तल] निकृष्ट या निकम्मा चौपाया।

वि० निकम्मा और निकृष्ट। रद्दी।

गायताल खाता—पुं० [हिं०] खाते या बही का वह अंश जिसमें ऐसी रकमें लिखी जाती हैं जिनके वसूल होने की बहुत ही कम आशा होती है।

गायत्र—पुं० [सं० गायत्√त्रै (रक्षा करना)+क] [स्त्री० गायत्री] गायत्री छंद।

गायत्री—पुं० [सं० गायत्र+ङीप्] १. एक प्रकार का वैदिक छंद। २. उक्त छंद में रचित एक प्रसिद्ध वैदिक मंत्र जो भारतीय आर्यों में परम पवित्र माना जाता है। सावित्री। ३. दुर्गा। ४. गंगा। ५. छः अक्षरों की एक प्रकार की वर्णिक वृत्ति जिसके कई भेद हैं। ६. खैर का पेड़।

गायन—पुं० [सं० √गै+ल्युट्—अन] १. गाने की क्रिया या भाव। २. गाई जानेवाली छन्दात्मक रचना। गीत। गान। ३. गवैया। गायक। ४. कार्त्तिकेय।

गायब—वि० [अ०] जो सहसा अन्तर्धान हो गया अथवा परोक्ष में चला गया हो। जो आँखों से ओझल हो गया हो। लुप्त।

मुहा०—(कोई चीज) गायब करना=चालाकी या चोरी से कोई चीज उठा लेना या हटा लेना।

पद—गायब गुल्ला=जो इस प्रकार अदृश्य या लुप्त हो गया हो कि जल्दी उसका पता न चले।

पुं० चौसर, शतरंज, आदि खेलने का वह विशिष्ट कौतुकपूर्ण प्रकार जिसमें कोई कुशल खेलाड़ी स्वयं तो आड़ में छिपा हुआ बैठा रहता है और दूसरे खेलाड़ी की चाल का रूप या विवरण सुन कर ही उस चाल के उत्तर में अपने पक्ष की चाल चलने का आदेश देता है। बिसात, मोहरे आदि से अलग और दूर रहकर तथा उन्हें बिना देखे खेलने का ढंग या प्रकार।

मुहा०—गायब खेलना=उक्त प्रकार से आड़ में बैठकर चौसर, शतरंज या ऐसा ही कोई खेल (बिना उसके उपकरण देखे) खेलना।

गाय-बगला—पुं० [हिं०] एक प्रकार का बगला (पक्षी) जो प्रायः पशुओं के झुंडों के आस-पास मँडराता रहता और उनके शरीर पर के कीड़े खाता है। सुरखिया बगला।

गायब-बाज—पुं० [अ०+फ़ा०] [भाव० गायब-बाजी] वह खेलाड़ी जो गायब (चौसर, शतरंज आदि) खेलता हो।

गायबाना—क्रि० वि० [अ० गायबानः] १. गुप्त रीति से। छिपे छिपे। २. किसी की चोरी से या पीठ पीछे।

गायरौन—पुं०=गोरोचन।

गायित्री—स्त्री०=गायत्री।

गायिनी—वि० स्त्री० [सं०√गै+णिनि—ङीप्] १. गानेवाली स्त्री। २. वह स्त्री जो गाकर अपनी जीविका का निर्वाह करती हो। ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद।

गार—पुं० [अ० ग़ार] १. नीची जमीन। २. गड्ढा। ३. जंगली जानवरों के रहने की माँद। ४. कंदरा। गुफा।

वि० [फा०] एक विशेषण जो संयुक्त पदों के अंत में अव्यय की तरह लगकर ये अर्थ देता है—(क) करनेवाला, जैसे—खिदमतगार, गुनहगार, सितमगार। (ख) साधन। जैसे—रोजगार (अर्थात् रोज का साधन)।

स्त्री०=गाली। उदा०—सुनहुँ ब्रज बसि स्रवन मैं ब्रज बासिनिन की गार।—नागरीदास।

पुं०†=गारा।

ग़ारत—स्त्री० [अ०] लूट-मार।

वि० ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।

गारद—स्त्री० [अं० गार्ड] १. सिपाहियों अथवा सैनिकों का वह छोटा दल या दस्ता जो किसी स्थान की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया हो। २. पहरा।

मुहा०—गारद में रखना=पहरे में रखना (अपराधियों आदि को)।

गारना—स० [सं० गालन] १. निचोड़ना। २. पानी के साथ घिस या रगड़कर किसी चीज का रस या सार भाग निकालना। जैसे—चंदन गारना। ३. पानी में डालकर किसी चीज को गलाना या घुलाना। ४. गिराना, निकालना या बहाना। जैसे—आँसू गारना। उदा०—तुम कटु गरल न गारो।—मैथिलीशरण। ५. निकाल या हटाकर अलग या दूर करना। ६. त्यागना। ७. खोना। गँवाना। ८. क्षीण या नष्ट करना। जैसे—तपस्या करके शरीर गारना। ९. किसी का अभिमान चूर्ण करना। उदा०—द्रौपदी को चीर बढ़्यौ दुस्सासनै गारी।—सूर।

गारभेली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जंगली फालसे का वृक्ष जो पूर्वी भारत तथा हिमालय की तराई में होता है।

गारा—पुं० [हिं० गारना] १. दीवारों आदि की जुड़ाई करने के लिए मिट्टी को पानी में सीनकर तैयार किया हुआ लसदार घोल। २. उक्त काम के लिए सुर्खी, चूने आदि का तैयार किया हुआ मसाला। ३. मछलियों के खाने का वह चारा जो उन्हें फँसाने के लिए बंसी में लगाया जाता है। उदा०—नेह नीर बंसी नयन, बतरस गारौ लाई।—विक्रम सतसई।

वि० १. गीला। तर। २. उदासीन। खिन्न।

मुहा०*—जी गारा करना=किसी की ओर से उदासीन या खिन्न होना।

पुं० [अ० गार?] वह नीची भूमि जहाँ वर्षा का पानी जमा होता हो।

पुं० [?] दोपहर के समय गाया जानेवाला संकीर्ण जाति का एक राग।

मुहा०—गारा करना=विस्तारपूर्वक और बार-बार कोई बात कहना या सुनाना।

गारा कान्हड़ा—पुं० [देश०] संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो संध्या समय गाया जाता है।

गारि—स्त्री०=गाली।

गारी*—स्त्री०=गाली।

गारु—*वि० [सं० गुरु] भारी।

गारुड़—वि० [सं० गरुड़+अण्] गरुड़-संबंधी। गरुड़ का।

पुं० १. साँप का विष उतारने का एक प्रकार का मंत्र जिसके देवता गरुड़ कहे गये हैं। २. गरुड़ के आकार की एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ३. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४. पन्ना या मरकत नामक रत्न। ५. सोना। स्वर्ण। ६. गरुड़ पुराण।

गारुड़ि—पुं० [सं० गरुड़+इञ्] १. संगीत में आठ प्रकार के तालों में से एक। २. दे० 'गारुड़ी'।

गारुड़िक—पुं०=गारुड़ी।

गारुड़ी (ड़िन्)—पुं० [सं० गारुड़+इनि] १. वह व्यक्ति जो साँप का विष मंत्र-बल से उतार देता हो। २. मंत्र से अथवा और किसी प्रकार साँप पकड़ने अथवा उसे वश में करनेवाला व्यक्ति। ३. सँपेरा।

गारुत्मत—पुं० [सं० गरुत्मत्+अण्] १. मरकत या पन्ना नामक रत्न। २. गरुड़ का अस्त्र।

गारुरी*—पुं०=गारुड़ी। उदा०—जाँवत गुनी गारुरी आये।—जायसी।

गारो (रौ)—पुं० [सं० गर्व] १. अभिमान। गर्व। उदा०—क्षुद्र पतित तुम तारि रमापति अब न करौ जिय गारौ।—सूर। २. गौरव। ३. प्रतिष्ठा। मान।

गार्ग—वि० [सं० गर्ग+अण्] गर्ग संबंधी।

गार्गि—पुं० [सं० गर्ग+इञ्] गर्ग मुनि का पुत्र या वंशज।

गार्गी—स्त्री० [सं० गर्ग+यञ्—ङीप्, यलोप] १. गर्ग गोत्र की एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी विदुषी जिसकी कथा वृहदारण्यक उपनिषद् में है। यह याज्ञवल्क्य की पत्नी थी। २. दुर्गा।

गार्गीय—वि० [सं० गर्ग+छञ्—ईय] [वि० स्त्री० गार्गेयी] १. जिसका जन्म गर्ग गोत्र में हुआ हो। २. गर्ग संबंधी।

गार्ग्य—वि० [सं० गर्ग+यञ्]=गार्गेय।

पुं० एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

गार्जर—पुं० [सं० गर्जर+अण्] गाजर नामक कंद।

गार्ड—पुं० [अं०] १. पहरा देनेवाला व्यक्ति। २. रक्षा करनेवाला व्यक्ति। रक्षक। ३. देख-रेख या निगरानी करनेवाला व्यक्ति। निरीक्षक। ४. रेलवे का वह अधिकारी जो रेलगाड़ी के साथ उसकी देख-रेख और व्यवस्था करने के लिए रहता है।

गार्डन—पुं० [अं०] उद्यान। बगीचा।

गार्डन पार्टी—स्त्री० [अं०] उद्यान-गोष्ठी।

गार्दभ—वि० [सं० गर्दभ+अण्] गर्दभ-सम्वन्धी। गधे का।

गार्द्धर्य—पुं० [सं० गर्द्ध+ष्यञ्] लालच। लोभ।

गार्ध्र—वि० [सं० गृध्र+अण्] गृध्र-संबंधी।

पुं० १. लालच। लोभ। २. तीर। बाण।

गार्भ—वि० [सं० गर्भ+अण्] १. गर्भ-संबंधी। गर्भ का। २. गर्भ से उत्पन्न होनेवाला।

पुं० वे सब काम जो गर्भ के पोषण, रक्षण आदि के लिए किए जाते हों।

गार्हपत—वि० [सं० गृहपति+अण्] गृहपति संबंधी।

पुं० गृहपति का भाव। गृहपतित्व।

गार्हपत्य—वि० [सं० गृहपति+ञ्य] गृहपति-संबंधी।

पुं० १. गृहपति होने की अवस्था, पद या भाव। २. दे० 'गार्हपत्याग्नि'।

गार्हपत्याग्नि—स्त्री० [सं० गार्हपत्य-अग्नि, कर्म० स०] छः प्रकार की अग्नियों में पहली और प्रधान अग्नि जिसका रक्षण गृहपति का कर्तव्य होता था।

गार्हमेध—पुं० [सं० गार्ह, गृह+अण्, गार्ह-मेध, कर्म०स०] गृहस्थ के लिए आवश्यक धार्मिक कृत्य या यज्ञ। पंच महायज्ञ।

गार्हस्थ्य—पुं० [सं० गृहस्थ+ष्यञ्] १. गृहस्थ होने की अवस्था या भाव। २. गृहस्थाश्रम। ३. पंच महायज्ञ।

गार्हस्थ्य-विज्ञान—पुं० [ष० त०] वह विज्ञान जिसमें घर के काम-काज (जैसे खाना-पकाना, सीना-पिरोना, बच्चे पालना आदि) संबंधी बातें बताई जाती हैं। (डोमेस्टिक सायन्स)

गाल—पुं० [सं०, प्रा०, द्र०, पं०, गल्ल, उ०, बं०, मरा० गाल, सिं० गलु]

१. मुख-विवर और नासिका के दोनों ओर कनपटी तक के बाहरी विस्तार जिनसे जबड़े ढके रहते हैं। कनपटी के आस-पास, नीचे और सामने का अंग। कपोल।

मुहा०—गाल फुलाना=(क) गर्व-सूचक आकृति बनाना। अभिमान प्रकट करना। (ख) मौन रहकर अथवा रूठकर रोष प्रकट करना।

२. उक्त अंगों के बीच का वह भाग जो मुँह के अन्दर होता है और जिससे खाने, पीने, बोलने आदि में सहायता मिलती है।

मुहा०—गाल में चावल भरना या भरे होना=ऐसी स्थिति होना कि जान-बूझकर चुप रहना पड़े अथवा बहुत धीरे-धीरे रुक-रुक कर मुँह से बातें निकलें। **(किसी के) गाल में जाना**=किसी का कौर या ग्रास बनना। किसी के द्वारा खाया जाना। जैसे—काल(या शेर) के गाल में जाना। **गाल में भरना**= कोई चीज खाने के लिए मुँह में भरना या रखना।

३. बहुत बढ़-बढ़कर बातें करने की प्रवृत्ति या स्वभाव। मुँहजोरी।

मुहा०—गाल करना=बढ़-बढ़कर या उद्दंडतापूर्वक बातें करना। **गाल फुलाकर कोई काम करना**=अभिमानपूर्वक कोई काम करना। उदा०—बचन कहहिं सब गाल फुलाई।—तुलसी। **गाल बजाना**=(क) बहुत बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बातें करना। (ख) डींग मारना। शेखी हाँकना। (ग) शिव के पूजन के समय मुँह में हवा भरकर दोनों गालों पर इस प्रकार हलका आघात करना कि बम बम या ऐसा ही और कुछ शब्द निकले। **गाल मारना**= गाल बजाना।

४. किसी चीज की उतनी मात्रा, जितनी एक बार में खाने के लिए मुँह में रखी जाय। कौर। ग्रास। जैसे—(क) वह अनमने भाव से चार गाल खाकर चटपट उठ गया। (ख) वह एक-एक पूरी का एक-एक गाल करता था।

मुहा०—गाल मारना=ग्रास मुख में रखना। कौर मुँह में डालना।

५. उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए मुट्ठी से डाला जाता है। झींक। ६. किसी चीज का बीचवाला अंश या भाग।

पुं० [?] एक प्रकार का तमाखू का पत्ता।

स्त्री०=गाली (पं० और राज०)।

गालगूल—पुं० [हिं० गाल+अनु०] इधर-उधर की अनाप-शनाप या व्यर्थ की बातें। गपशप।

गालन—पुं० [सं० √गल् (क्षरित होना)+णिच् +ल्युट्] १. गलाने की क्रिया या भाव। २. किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार एक पात्र में से दूसरे पात्र में पहुँचाना या ले जाना कि उसमें की मैल पहलेवाले पात्र में ही रह जाय। (फिल्टरेशन) ३. निचोड़ना।

गालना†—अ० [हिं० गाल] बातें करना। बोलना।

स० गाल में रखकर खाना।

गालबंद—पुं० [हिं० गाल+बंद] एक प्रकार का बंधन जिसमें चमड़े के तस्मे को किसी काँटी में फँसाकर अँटकाते हैं। (जहाजी)

गालमसूरी—स्त्री० [हिं०] मध्य युग का एक प्रकार का पकवान। उदा० —दूध बरा उत्तम दधि बाटी, गालमसूरी की रुचि न्यारी।—सूर।

गालव—पुं० [सं० √गल् (चुआना या खाना)+घञ्, गाल√वा (गति, गंध)+क] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम जो विश्वामित्र के शिष्य थे। २. पाणिनि से पहले के एक प्राचीन वैयाकरण। ३. एक प्राचीन स्मृतिकार आचार्य। ४. तेंदू का पेड़। ५. लोध का पेड़।

गालव-माता—स्त्री०=गल का (रोग)।

गाला—पुं० [हिं० गाल=ग्रास] १. धुनी हुई रूई का पहल जो चरखे पर सूत कातने के लिए बनाया जाता है। पूनी।

पद—रूई का गाला=बहुत उज्ज्वल। प्रकाशमान।

२. रूई का छोटा टुकड़ा जो बहुत हल्का होता और हवा में इधर-उधर उड़ जाता है।

†पुं० दे० 'गाल'।

गालित—वि० [सं० √गल+णिच्+क्त] १. गलाया हुआ। २. (तरल पदार्थ) जो एक पात्र में से दूसरे पात्र में इस प्रकार ले जाया गया हो कि उसमें की मैल पहलेवाले पात्र में रह गई हो। ३. निचोड़ा हुआ।

गालिनी—स्त्री० [सं०√गल्+णिच्+णिनि-ङीप्] तंत्र की एक मुद्रा।

ग़ालिब—वि० [अ०] १. जो किसी पर छाया हुआ हो। जिसने किसी पर अधिकार जमा लिया अथवा उसे अभिभूत कर लिया हो। २. विजयी। श्रेष्ठ।

ग़ालिबन्—क्रि० वि० [अ०] संभावना है कि। संभवतः।

गालिम—वि० [अ० गालिब] १. जिसने किसी को दबा लिया हो। २. प्रचंड। प्रबल।

गाली—स्त्री०[सं० गालि] १. प्रायः क्रुद्ध होने पर किसी को कही जानेवाली कोई ऐसी अश्लील तथा गर्हणीय बात जिसमें किसी के आचरण, प्रतिष्ठा, स्थिति आदि पर अनुचित आक्षेप या आरोप किया गया हो। दुर्वचन।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—निकालना।—बकना।

२. विवाह आदि शुभ अवसरों पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमें लोगों को परिहास के लिए कलंक-सूचक बातें कही जाती हैं।

गाली-गलौज—स्त्री० [हिं० गाली+गलौज़ अनु०] दोनों पक्षों का एक दूसरे को गालियाँ देना।

गाली-गुफ्ता—पुं०=गाली-गलौज।

गालू—वि० [हिं० गाल०] १. गाल बजानेवाला। बढ़-बढ़कर बातें .करनेवाला। २. बकवादी।

गाल्हना—अ०, स०=गालना।

गाव†—स्त्री०=गाय।

पुं०=बैल।

गावकुशी—स्त्री० [फा०] गोवध। (दे०)

गावकुस—पुं० [सं० ग्रीवा=गला+कुश=फल] (घोड़े आदि की) लगाम। (डिं०)

गाव-कौहान—पुं० [फा०] ऐसा घोड़ा जिसकी पीठ पर बैल की तरह कूबड़ निकला हो।

गाव खुर्द—वि० [फा०] १. गायब। लापता। २. नष्ट-भ्रष्ट।

गाव-गिल—स्त्री० [फा०] प्योड़ी नामक रंग।

गावड़—स्त्री० [सं० ग्रीवा] गला। गर्दन। (डिं०)

गावड़ी†—स्त्री० १.=गाय। २.=गावड़।

गाव-तकिया—पुं० [फा०] एक प्रकार का लंबा, गोल तथा मोटा तकिया जिसके सहारे प्रायः रईस लोग गद्दी पर बैठते हैं। मसनद।

गावदी—वि० [हिं० गाय+सं० धी] १. सीधा-सादा या ना समझ (व्यक्ति)। २. मूर्ख। जड़।

गावदुम—वि० [फा०] १. जो गाय की दुम (पूँछ) की तरह एक ओर मोटा और दूसरी ओर बराबर पतला होता गया हो। २. ढालुवाँ।

गावदुमा—वि०=गावदुम।

गावना—स०=गाना।

गाव-पछाड़—स्त्री० [हिं० गाव=गरदन+पछाड़] कुश्ती का एक पेंच जिसमें विपक्षी को गले से पकड़कर गिरा दिया जाता है।

गावल—पुं० [?] दलाल।

गावलाणि—पुं०=गावल्गणि (संजय)।

गावली†—स्त्री०=दलाली।

गावल्गणि—पुं० [सं० गवल्गण+इञ्] संजय का एक नाम।

गाव-सुम्मा—पुं० [हिं० गाव+सुम=खुर] फटे हुए खुरोंवाला घोड़ा।

गावी—स्त्री० [देश०] बड़ी समुद्री नावों पर का पाल।

गास—पुं० [सं ग्रास] १. विपत्ति। संकट। २. दुःख। कष्ट।

गासिया—पुं० [अ० गाशियः] घोड़े की जीन पर बिछाने का कपड़ा। जीनपोश।

गाह—स्त्री० [सं० गाथा] गाथा (दे०)। उदा०—छंद प्रबंध कवित्त जति साटक गाह दुहत्थ।—चंदवरदाई।

पुं० [सं० √गह् (गहना+घञ्] गहनता। गहराई।

पुं० [सं० ग्राह] १. ग्राहक। २. पकड़। ३. ग्राह। मगर।

स्त्री० [फा०] १. कोई विशिष्ट स्थान। जैसे—बंदरगाह, शिकारगाह। २. कोई विशिष्ट काल।

गाहक—पुं० [सं० √गाह (गोता लगाना)+ण्वुल्-अक] अवगाहन करनेवाला।

†पुं०=ग्राहक।

मुहा०—(किसी के) जी या प्राण का गाहक होना=किसी की जान लेने पर उतारू होना।

गाहकताई—स्त्री० [हिं० ग्राहकता] १. ग्राहक होने की अवस्था या भाव। २. कदरदानी। गुण-ग्राहकता।

गाहकी—स्त्री० [हिं० गाहक] १. गाहक। ग्राहक। २. गाहक के हाथ माल बेचने की क्रिया।

गाहटना—स० [सं० गाह्] १. मथना। विलोड़ना। २. नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—रिण गाहटतें राय खलाँ रिण। —प्रिथीराज।

गाहन—पुं० [सं० ग्रहण] पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण।

पुं० [सं० √गाह्+ल्युट्–अन] पानी में पैठकर गोता लगाना।

गाहना—स० [सं० अवगाहन] १. पानी में पैठना या धँसना। २. पानी में गोता लगाकर थाह लेना। ३. किसी विषय या बात की गहराई की थाह लेना। अवगाहन करना। ४. जल आदि को क्षुब्ध करना। आलोड़न करना। ५. अनाज के डंठलों को डंडे से पीटकर उनके दाने गिराना या झाड़ना। उदा०—चैत काटा और गाहा नहीं कि भाँवर पड़वा दूंगा। —वृन्दावनलाल। ६. खेत में हेंगा या पाटा चलाना। ७. चलते हुए चक्कर लगाना या दूर तक जाना। ८. कुछ ढूंढ़ने के लिए इधर-उधर दौड़ना-धूपना और परेशान होना। ९. जहाज की दरारों में सन आदि भरना। काल-पट्टी करना। (लश०) १० व्यवस्था बिगाड़ना। गड़बड़ा देना।

गाहा—स्त्री० [सं० गाथा, प्रा० गाहा] १. किसी प्रकार का कथात्मक चरित्र-वर्णन। वृत्तान्त। २. आर्या छन्द का दूसरा नाम।

गाहिता (तृ)—वि० [सं० √गाह्+तृच्] १. गोता लगाने या स्नान करनेवाला। २. गाहन करनेवाला।

गाहिनी—स्त्री० [सं० √गाह्+णिनि–ङीप्] एक प्रकार का विषम वृत्त या छंद जिसके चारों चरणों में क्रम से २२, २०, १८ और १२ मात्राएँ होती हैं। यह सिंहनी छंद का बिलकुल उलटा होता है।

गाही—स्त्री० [हिं० गहना=ग्रहण] वस्तुएँ (विशेषतः फल आदि) पाँच-पाँच के समूहों में बाँटकर गिनने का एक मान। जैसे—१० गाही (अर्थात् ५०) आम।

पद—गाही के गाही=बहुत अधिक।

गाहू—स्त्री०=उपगीति (छन्द)।

गाहे-बगाहे—क्रि० वि० [फा०] १. बीच-बीच में कुछ स्थानों पर। इधर-उधर। २. बीच-बीच में। थोड़े थोड़े समय पर। कभी-कभी।

गिँजना—अ० [हिं० गींजना] किसी पदार्थ का हाथ आदि से ठीक प्रकार से व्यवहार या स्पर्श न किये जाने के कारण खराब या कुछ मैला होना। गींजा जाना।

गिँजाई—स्त्री० [हिं० गींजना] गिँजने या गींजे जाने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [सं० गूंजन] एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा। ग्वालिन। घिनौरी।

गिँड़नी—स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसकी छोटी किन्तु लंबोतरी पत्तियों का साग बनता है।

गिँडुरी—स्त्री० दे० 'इँडुआ'।

गिँडुवा—पुं०=तकिया।

गिंदर—पुं० [देश०] फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

गिंदुक—पुं० [सं०=गेन्दुक, पृषो० सिद्धि] छोटा गेंद।

गिंदौड़ा (दौरा)—पुं० [फा० कंद+हिं० औड़ा(प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० गिंदौड़ी] चीनी, मिसरी आदि की जमाई हुई गोलाकार मोटी परत।

गियँ†—स्त्री०=ग्रीवा (गला)। उदा०—कंचन तार बाँधि गियँ पाती। —जायसी।

गिआन†—पुं०=ज्ञान।

गिआस—स्त्री०=गयास।

गिउ†—पुं०=ग्रीवा (गला)।

गिगनार—पुं०=गगन। उदा०—चाँद चढ़चो गिगनार, किरत्याँ ढल रहियाँ जी ढल रहियाँ। —राज० लोकगीत।

गिचपिच—वि० [अनु०] १. (लिखावट या लेख) जो स्पष्ट न हो और सटा-सटाकर लिखा गया हो। २. एक दूसरे में भद्दी तरह से मिला हुआ।

गिचिर-पिचिर—वि०=गिचपिच।

गिजई—स्त्री०[देश०] १. सलमे के काम का एक प्रकार का तार। २. हाथ में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

गिजगिजा—वि० [अनु०] [स्त्री० गिजगिजी] १. (खाद्यवस्तु) जो मुलायम तथा गीली हो, जो करारी अथवा सूखी न हो। जैसे—गिजगिजा आम, गिजगिजी रोटी। २. गुदगुदा या मांसल।

ग़िज़ा—स्त्री० [अ०] १. खाद्यपदार्थ। खूराक। २. पौष्टिक भोजन।

गिटकिरी—स्त्री० [अनु०] तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर कँपाना जो बहुत कर्ण-मधुर होता है। (संगीत)

स्त्री०= गिट्टी।

गिटपिट—स्त्री० [अनु०] किसी के मुँह से निकलनेवाले ऐसे शब्द या बातें जो सहसा श्रोताओं की समझ में न आती हों।

मुहा०—**गिटपिट करना**=ठीक प्रकार से कोई बात न कह पाना। टूटी-फूटी या अशुद्ध भाषा में बातें करना।

गिट्टक—स्त्री० [हिं० गिट्टा] १. चिलम के नीचे रखने का कंकर। चुगल। २. धातु, पत्थर आदि का छोटा टुकड़ा। गिट्टी। ३. फलों की गुठली। जैसे—आम की गिट्टक। ४. गिटकिरी लेने में स्वर का वह सबसे छोटा अंश जो कंठ के एक ही कंप से या एक बार में निकलता है। दाना। (संगीत)

गिट्टा—पुं० [सं० गिरिज, हिं० गेरू+टा(प्रत्य०)] १. चिलम के छेद पर रखा जानेवाला ईंट, पत्थर आदि का छोटा टुकड़ा। २. कंकड़, पत्थर आदि का कोई छोटा टुकड़ा। ३. पैर के तलवे और पिंडली के बीच की मोटी उभरी हुई हड्डी। टखना।

गिट्टी—स्त्री० [हिं० गिट्टा] १. ईंट (या पत्थर) को फोड़कर उसके किये हुए टुकड़ों का सामूहिक नाम। २. मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३. चिलम की गिट्टक। ४. वह फिरकी जिस पर बादले का तार लपेटा जाता है।

गिठुआ—पुं० [देश०] जुलाहे का करघा।

गिठुरा—पुं०=गेठुरा।

गिडंद†—पुं० [सं० गयंद] मतवाला हाथी। उदा०—जंघा कदली खंभ, गिड़ंद गयवर गति डोलैं।—जटमल।

गिड़†—पुं० [?] सूअर। उदा०—जिण वन भूल न जावता, गैंद गिवल गिड़राज। —कविराजा सूर्यमल।

गिड़गिड़ाना—अ०[अनु०] अपनी असहाय अथवा दुःखद स्थिति की दीनतापूर्वक चर्चा करते हुए सहायता की प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट—स्त्री० [हिं० गिड़गिड़ाना] १. गिड़गिड़ाने की क्रिया या भाव। २. बहुत गिड़गिड़ाकर की जानेवाली प्रार्थना।

गिड़राज—पुं० [सं० ग्रहराज] सूर्य। (डिं०)

गिड्डा—वि० [देश०] आकार या कद के विचार से ठिंगना। नाटा।

गिद—पुं०[सं० अव्युत्पन्न शब्द] रथपालक देवता।

स्त्री० [देश०] आँख में का कीचड़।

गिद्दा—पुं० [हिं० गीत] स्त्रियों के गाने के एक प्रकार के गीत। नकटा।

†पुं०=गट्टा।

गिद्ध—पुं० [सं० गृध्र] १. लंबी गरदनवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध मांसाहारी बड़ा पक्षी जो शव आदि खाता है। २. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त। काइयाँ। ३. एक प्रकार का बड़ा कनकौआ या पतंग। ४. छप्पय छंद का एक भेद।

गिद्धराज—पुं० [हिं० गिद्ध+राज] जटायु।

गिधना*—अ० दे० 'गीधना'।

गिनगिनाना—अ०=गनगनाना।

गिन-तारा—पुं० [हिं० गिनना+तार] वह चौखटा जिसमें क्षैतिज या बड़े बल में कई ऐसे तार लगे होते हैं जिनमें छोटी गोलियाँ पिरोई रहती हैं, और जिनके द्वारा छोटे बच्चों को गिनती सिखाई जाती है। (एबेकस)

गिनती—स्त्री० [हिं० गिनना] १. बहुत सी चीज़ों को एक, दो, तीन करते हुए गिनने की क्रिया या भाव। जैसे—पुस्तकों या सिपाहियों की गिनती।

मुहा०—**(किसी को) गिनती में लाना या समझना**=आदर करने या महत्त्व देने के योग्य समझना।

पद—**गिनती के**=संख्या में बहुत थोड़े। जैसे—वर्षा के कारण आज की बैठक में गिनती के ही कुछ लोग आ सके। **गिनती गिनने या गिनाने के लिये**=नाम मात्र को।

२. तादाद। संख्या। ३. उपस्थिति की जाँच। हाजिरी। ४. एक से सौ तक की अंक-माला।

गिनना—स० [सं० गणन] १. संख्यासूचक अंकों का नियमित क्रम से उच्चारण करना। गिनती करना। २. वस्तुओं अथवा उनके समूहों की कुल संख्या जानने के लिए उनकी नियमित क्रम से गणना करना। जैसे—आम या रुपए गिनना।

पद—**गिन-गिनकर**=(क) अच्छी और पूरी तरह से। जैसे—गिन-गिनकर मारना या सुनाना। (ख) एक-एक करके और बहुत कठिनता से। जैसे—गिन-गिनकर दिन बिताना। (ग) बहुत धीरे धीरे और सावधानता से। जैसे—गिन-गिनकर पैर रखना।

३. कुछ महत्त्व का या महत्त्वपूर्ण समझना। जैसे—वह तुम्हें क्या गिनता है। (अर्थात् कुछ नहीं समझता।)

गिनवाना—स० [हिं० गिनना] गिनने का काम दूसरे से कराना।

गिनाना—स० [हिं० गिनना का प्रे०] गिनने का काम दूसरे से कराना। गिनवाना।

†अ० गिनती में आना। गिना जाना।

गिनी—स्त्री० [अं०] १. इंगलैंड में प्रचलित एक प्रकार का सोने का सिक्का। २. एक प्रकार की लंबी विलायती घास जो मैदानों में लगाई जाती है।

गिन्ती—स्त्री०=गिनती।

गिन्नी—स्त्री० [हिं० घिरनी] १. चक्कर। २. घुमाने या चक्कर खिलाने की क्रिया।

स्त्री०=गिनी।

गिम—स्त्री० [सं० ग्रीवा] गरदन। गला। उदा०—गिम सजों लावल मुकुता हारे। —विद्यापति।

गिमटी—स्त्री० [अं० डिमिटी] एक प्रकार का वढ़िया मजवूत सूती कपड़ा।

गिय—पुं०=गिउ (गला)।

गियान*—पुं०=ज्ञान।

गियाह—पुं० [सं० हय] एक प्रकार का घोड़ा। घोड़ों की एक जाति।

गिर्—स्त्री० [सं०√गॄ (शब्द)+क्विप्] दे० 'गिरा'।

गिरंट—पुं० [अं० गार्नेट] १. ग्वारनट नाम का वढ़िया रेशमी कपड़ा। २. एक प्रकार की देशी मलमल।

गिरंथ—पुं०=ग्रंथ।

गिरंदा—वि० [फा० गीर=पकड़नेवाला] १. पकड़ने या पकड़कर रखनेवाला। २. फंदे में फँसानेवाला। उदा०—हँस हँस मन मूसि लिया वे बड़ा गरीब गिरंदा है।—आनन्दघन।

गिरंभ—वि०=भारी। उदा०—तरकस पंच गिरंभ तीर प्रति खतँग तीन सय।—चंदवरदाई।

गिर—पुं० [सं० गिरि से] गिरनार काठियावाड़ के देश का भैंसा।

†पुं०=गिरि।

(गिर के यौ० के लिए दे० गिरि के० यौ०)

*स्त्री०=गिरा (वाणी)।

गिरई—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

गिरगट—पुं०=गिरगिट।

गिरगिट—पुं० [सं० कृकलास या गलगवि] छिपकली की जाति का एक जंतु जो आवश्यकतानुसार अपना रंग बदल लेता है।

सुहा०—**गिरगिट की तरह रंग बदलना**=कभी कुछ और कभी कुछ करना, कहना या मानना। एक बात पर स्थिर न रहना।

गिरगिटान—पुं०=गिरगिट।

गिरगिट्टी—स्त्री० [?] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी छाल खाकी रंग की होती है।

गिरगिरी—स्त्री० [अनु०] चिकारे या सारंगी की तरह का एक प्रकार का खिलौना।

गिरजा—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जो कीड़े-मकोड़े खाता है।

पुं० [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर।

स्त्री०=गिरिजा।

गिरझण†—पुं०=गिद्ध। (राज०) उदा०—कायर केरे मांस को गिरझण कवहुँ न खाइ।—जटमल।

गिरद—अव्य०=गिर्द।

गिरदा—पुं० [फा० गिर्द] १. घेरा। २. चक्कर। ३. तकिया। ४. हलवाइयों आदि का काठ का बड़ा थाल। ५. कपड़े का वह गोल टुकड़ा जो हुक्के के नीचे रखा जाता है। ६. गतके का वार रोकने की ढाल। फरी। ७. खजरी, ढोल आदि का मेंडरा।

गिरदागिरद—क्रि० वि० =गिर्दागिर्द।

गिरदान—पुं० १.=गिरगिट। २.=गरदान।

गिरदाब—पुं० [फा० गिर्दाब] पानी का भँवर।

गिरदाली—स्त्री० [फा० गिर्द] लोहारों का एक उपकरण जिससे वे गलाया हुआ लोहा एक स्थान पर समेटते हैं।

गिरदावर—पुं० [फा०] वह अधिकारी जो किसी क्षेत्र में घूम-घूमकर कामों की जाँच या देख-रेख करता हो।

गिरदावरी—स्त्री० [फा०] गिरदावर का काम या पद।

गिरदीह—क्रि० वि० [फा० गिर्द] आस-पास। इर्द-गिर्द। उदा०—नरनाहाँ वर गढ्ढ, गाह गिरदीह दुअनघर।—चन्दवरदाई।

गिरधर—वि० पुं०=गिरिधर।

गिरधारन—पुं० दे० 'गिरिधर'।

गिरधारी—पुं० दे० 'गिरिधर'।

गिरना—अ० [सं० गलन] १. किसी उच्च स्तर या स्थल पर स्थित वस्तु का अचानक तीव्र वेग से जमीन पर आ पड़ना। जैसे—(क) आकाश से हवाई जहाज या तारा गिरना। (ख) छत पर से लड़के का नीचे गिरना। २. किसी ऊँचे स्थान पर बँधी, लगी या लटकती हुई वस्तु का अपने आधार से छूट या टूटकर नीचे के स्थल पर आ पड़ना। जैसे—(क) पेड़ से पत्ता या फल गिरना। (ख) कूएँ में वाल्टी गिरना। ३. जमीन को आधार बनाकर उस पर खड़ी होने, बैठने अथवा चलनेवाली वस्तु का जमीन पर पड़ या लेट जाना। जैसे—(क) दीवार या छत गिरना। (ख) कुरसी या मेज गिरना। (ग) चलती हुई गाड़ी या दौड़ता हुआ लड़का गिरना।

पद—**गिरता-पड़ता या गिर-पड़कर**=वहुत कठिनाई या मुश्किल से। **गिरा-पड़ा** (देखें)।

४. किसी धारा या प्रवाह का नदी या समुद्र में मिलना। जैसे—गंगा नदी कलकत्ते के पास समुद्र में गिरती है। ५. किसी उच्च विभाग, श्रेणी, स्थिति आदि में होने या रहनेवाली वस्तु का अपेक्षया निम्न विभाग, श्रेणी, स्थिति आदि में आना। नीचे आना। जैसे—तापमान गिरना, पारा गिरना। ६. लाक्षणिक अर्थ में, प्रसम स्तर या मान्य आदेश से किसी चीज का अवनति या घटाव पर होना। जैसे—चरित्र गिरना। ७. कारोबार कम या ठप्प होना। जैसे—वाजार गिरना। ८. किसी वस्तु के मूल्य में उतार या कमी होना। जैसे—चीजों का भाव गिरना। १०. किसी वस्तु को देखने, लेने आदि के लिए वहुत से व्यक्तियों का एक साथ आ पहुँचना। जैसे—राशन की दूकान पर ग्राहकों का गिरना। ११. किसी स्थान पर वहुत अधिक भीड़ जमने पर एक दूसरे को धक्के लगाना। जैसे—आदमीपर आदमी गिरना। १२. किसी ऐसे रोग का होना जिसके विषय में लोगों का विश्वास हो कि उसका वेग ऊपर से नीचे को आता है। जैसे—व्रजला गिरना, फालिज (लकवा) गिरना। -१३. सहसा वहुत अधिक मात्रा में उपस्थित या प्राप्त होना। आ पड़ना। जैसे—(क) सिर पर विपत्ति का पहाड़ गिरना। (ख) दिसावर से आकर वाजार में माल गिरना।

गिरनार—पुं० [सं० गिरि+हिं० नार=नगर] गुजरात में स्थित रैवतक नामक एक पर्वत जो जैनियों का तीर्थ है।

गिरनारी, गिरनाली--वि० [हिं० गिरनार] गिरनार पर्वत का। गिरनार सम्बन्धी।

पुं० गिरनार का निवासी।

गिरफ्त—स्त्री० [फा०] १. कोई चीज़ अच्छी तरह पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २. हथियारों का वह अंग जहाँ से वे पकड़े जाते हैं। ३. अपराध, दोष, भूल आदि का पता लगाने का खास ढंग या हथकंडा।

गिरफ्तार—वि० [फ़ा०] १. जो कोई अपराध या दोष करने के कारण अधिकारियों द्वारा पकड़ा गया हो। २. कष्ट, संकट आदि में ग्रस्त या फँसा हुआ।

गिरफ्तारी—स्त्री० [फा०] १. गिरफ्तार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. कोई अभियोग लगने या अपराध करने पर उसके विचार के लिए राज्य द्वारा पकड़े जाने की क्रिया, अवस्था या भाव। (अरेस्ट)

गिरबान—पुं० [सं० ग्रीवा] गर्दन। गला।

†पुं०=गरेबान।

गिरबूटी—पुं० [सं० गिरि+हिं० बूटी] अंगूर-शेफा (देखें)।

गिरमिट—पुं० [अं० गिमलेट=बड़ा वरमा] लकड़ी, लोहे आदि में छेद करने का वड़ा वरमा।

पुं० [अं० एग्रीमेंट] इकरारनामा। संविदा-पत्र।

गिरमिटिया—पुं० [हिं० गिरमिट] किसी उपनिवेश में गया हुआ शर्तबंद हिन्दुस्तानी मजदूर।

गिरवर—पुं०=गिरिवर।

गिरवान*—पुं०=गीर्वाण।

पुं० [फ़ा० गरेबान] १. कुरते आदि में गले का भाग। २. गरदन। गला।

गिरवाना—स० [हिं० गिराना] १. किसी को कोई चीज गिराने में प्रवृत्त करना। २. किसी से तोड़ने-फोड़ने या गिराने का काम करवाना। जैसे—मकान या दीवार गिरवाना।

गिरवी—वि० [फा०] १. (चीज) जो गिरों या रेहन रखी गई हो। २. रेहन रखे हुए माल से संबंध रखनेवाला। रेहन संबंधी।

†स्त्री० गिरों। वंधक। रेहन।

गिरवीदार—पुं० [फा०] वह व्यक्ति जो दूसरों को रुपए उधार देने के वदले में उनकी वस्तुएँ अपने पास वंधक रखता हो। रेहनदार।

गिरवीनामा—पुं० [फा०] वह लेख्य जिसमें गिरों की शर्तें लिखी हों। रेहननामा।

गिरवीपत्र—पुं० दे० 'गिरवीनामा'।

गिरस्त†—पुं० [सं० गृहस्थ] १. पूर्वी उत्तर प्रदेश के मुसलमान जुलाहे (कदाचित् गृहस्थ साधुओं के वंशज होने के कारण)। २. दे० 'गृहस्थ'।

गिरस्ती—स्त्री०=गृहस्थी।

गिरह—स्त्री० [सं० ग्रह से फा०] १. कपड़े, डोरी आदि के सिरे को एक दूसरे में फँसाकर बाँधी जानेवाली गाँठ। २. किसी कपड़े, धोती आदि के पल्ले में कोई चीज विशेषतः पैसे आदि रखकर तथा लपेटकर लगाई जानेवाली गाँठ जिसे लोग प्रायः कमर में खोंसते थे।

पद—**गिरहकट** (दे०)।

३. खरीता। खीसा। जेब। ४. गाँठ के रूप में उठा हुआ शरीर के दो अंगों का संधि-स्थान। जैसे--जाँघ और टाँग के बीच का घुटने पर का जोड़। ५. गज का सोलहवाँ अंश या भाग। ६. कलाबाजी। कलैया। ७. कुश्ती का एक दाँव।

पुं० गृह। उदा०—गिरह उजाड़ एक सम लेखौं। —कबीर।

गिरहकट—पुं० [फा० गिरह=जेब या गाँठ+हिं० काटना] गिरह या गाँठ में बँधा हुआ धन काटनेवाला व्यक्ति। जेबकतरा।

गिरहथ--पुं०=गृहस्थ।

गिरहदार—वि० [फा० गिरह=जेब या गाँठ] जिसमें गाँठ या गाँठें पड़ी हों। गठीला।

गिरहबाज—पुं० [फा०] एक प्रकार का कबूतर जो आकाश में उड़ते समय कलैया खाता है।

गिरहर—वि० [हिं० गिरना+हर (प्रत्य०)] जो शीघ्र ही गिर पड़ने को हो। गिराऊ।

गिरही—पुं० [सं० गृहिन्] १. गृहस्थ। २. देव-दर्शन के लिए आया हुआ यात्री। (पंडे और भड्डर)

गिराँ--वि० [फा० गरां] १. जिसका दाम अधिक हो। वहुमूल्य। महँगा। २. भारी। ३. अप्रिय या अरुचिकर।

गिरा—स्त्री० [सं $\sqrt{}$गॄ (शब्द)+क्विप्—टाप्] १. वह शक्ति जिसकी सहायता से मनुष्य बातें करता या बोलता है। वाक् शक्ति। २. उक्त शक्ति की देवी, सरस्वती। ३. सरस्वती नदी। ४. जबान। जीभ। ५. कही या बोली हुई बात। ६. बोली या भाषा। जवान। ७. सुन्दर कविता।

गिराज—पुं० [अं० गैरेज] मोटर गाड़ी रखने के लिए बना हुआ कमरा या कोठा।

गिराधव—पुं० [सं०] ब्रह्मा।

गिराधौ—*पुं०=गिराधव।

गिराना—स० [हिं० गिरना] १. किसी उच्च स्तर या स्थान पर स्थित वस्तु को बलपूर्वक नीचे उतारना या लाना। जैसे—परदा गिराना। २. किसी आधार पर खड़ी वस्तु को आघात आदि पहुँचा कर जमीन पर लाना। जैसे—(क) किसी को चबूतरे या कुरसी से नीचे गिराना (ख) रेल की लाइन तोड़ कर गाड़ी गिराना। ३. किसी वस्तु या रचना को तोड़-फोड़ कर उसका नाश या ध्वंस करना। जैसे—दीवार या मकान गिराना। ४. महत्त्व, मूल्य, शक्ति आदि घटाना या कम करना। जैसे–दाम गिराना। ५. धार्मिक, नैतिक आदि दृष्टियों से निम्न स्तर पर लाना। जैसे—अधिकार के पद ने ही उन्हें इतना गिराया है। ६. प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना। जैसे—नाली में मोरी का पानी गिराना। ७. किसी चीज को इस प्रकार हाथ से छोड़ देना कि वह नीचे जा पड़े। जैसे—लोटा या दावात गिराना। ८. किसी पात्र में रखी हुई वस्तु को जमीन पर उँडेलना। जैसे—लोटे में का पानी या दावात में की स्याही गिराना। ९. कोई ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसके विषय में लोगों का यह विश्वास हो कि उसका वेग ऊपर से नीचे की ओर जाता या होता है। जैसे--बहुत अधिक मानसिक चिंता नजला गिराती है। १०. उपस्थित करना। सामने ला रखना। जैसे—मकान बनाने के लिए ईंटें या मसाला गिराना। ११. युद्ध या लड़ाई में बुरी तरह से घायल करना या मार डालना। जैसे--चार सिपाहियों को तो अकेले उसी ने गिराया था।

गिरानी—स्त्री० [फा०] १. वह स्थिति जिसमें चीजें महँगी हो जाती हैं। मँहगी। २. अपच आदि के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

गिरा-पड़ा—वि० [हिं० गिरना+पड़ना] १. जमीन पर गिरकर पड़ा हुआ। २. टूटा-फूटा। जीर्ण-शीर्ण। ३. पतित। ४. जिसका कुछ भी महत्व या मूल्य न हो।

गिरापति—पुं० [सं० ष० त०] ब्रह्मा।

गिरापतु—पुं० [सं० गिरा-पितृ] सरस्वती के पिता। ब्रह्मा।

गिरामी—वि०=गरामी (प्रसिद्ध)।

गिराव—पुं० [अ० ग्रेप] तोप का वह गोला जिसमें छोटी छोटी गोलियाँ और छर्रे भी रहते हैं।

पुं०=गिरावट।

गिरावट—स्त्री० [हिं० गिरना] १. गिरने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. अधःपात। पतन।

गिरावना—स०=गिराना।

गिरास—पुं०=ग्रास।

गिरासना†—स०=ग्रसना।

गिरासी—स्त्री० [देश०] गुजरात में रहनेवाली एक उपद्रवी प्राचीन जाति।

गिराह—पुं० [सं० ग्राह] ग्राह या मगर नामक जलजंतु।

गिरि—पुं० [सं०√गॄ+कि] १. पर्वत। पहाड़। २. दशनामी साधुओं के एक वर्ग की उपाधि। जैसे—स्वामी परमानन्द गिरि। ३. संन्यासियों का एक भेद या वर्ग। ४. पारे का एक दोष जो खानेवाले का शरीर जड़ कर देता है। ५. आँख का एक रोग जिसमें ढेंढ़र या पुतली फट या फूट जाती है।

गिरि-कंटक—पुं० [ष० त०] वज्र।

गिरि-कंदर—पुं० [ष० त०] पहाड़ की गुफा।

गिरिक—वि० [सं० गिरि+कन्] १. गिरि या पर्वत संबंधी। गिरि या पर्वत में होनेवाला। पहाड़ी।

पुं० [सं० गिरि√कै (प्रकाशित होना) +क] महादेव। शिव।

गिरि-कदंब—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का कदंब (वृक्ष)।

गिरि-कदली—स्त्री० [मध्य० स०] पहाड़ी केला।

गिरि-कर्णिका—स्त्री० [गिरि-कर्ण, ब० स० कप्, टाप्, इत्व] १. पृथ्वी। २. अपराजिता लता। ३. अपामार्ग। चिचड़ा।

गिरि-कर्णी—स्त्री० [गिरि-कर्ण, ब० स० ङीष्] १. अपराजिता या कोयल नाम की लता। २. जवासा।

गिरिका—स्त्री० [सं० गिरि+क–टाप्] १. चूहे की मादा। चूही। २. छोटा चूहा। चुहिया।

गिरि-काण—वि० [तृ० त०] जो गिरि नामक नेत्ररोग के कारण काना हो गया हो।

गिरि-कूट—पुं० [ष० त०] पहाड़ की चोटी।

गिरिचर—पुं० [सं० गिरि√चर् (चलना)+ट] पहाड़ पर रहने या विचरण करनेवाला।

गिरिज—वि० [सं० गिरि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] पहाड़ पर, पहाड़ में या पहाड़ से उत्पन्न होनेवाला।

पुं० १. शिलाजीत। २. लोहा। ३. अवरक। अभ्रक। ४. गेरू। ५. एक प्रकार का पहाड़ी महुआ।

गिरिजा—स्त्री० [सं० गिरिज-टाप्] १. हिमालय की पुत्री, पार्वती। गौरी। २. गंगा। ३. पहाड़ी केला। ४. चमेली। ५. चकोतरा।

पुं०=गिरजा (ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर)।

गिरिजा-कुमार—पुं० [ष० त०] कार्तिकेय।

गिरिजा-पति—पुं० [ष० त०] महादेव।

गिरिजा-बीज—पुं० [ष० त०] गंधक।

गिरिजा-मल—पुं० [ष० त०] अभ्रक।

गिरि-जाल—पुं० [ष० त०] पर्वत-माला।

गिरिज्वर—पुं० [सं० गिरि√ज्वर् (रुग्ण होना) +णिच्+अच्] वज्र।

गिरित्र—पुं० [सं० गिरि√त्रै (रक्षा करना)+क] १. महादेव। शिव। २. समुद्र। सागर।

गिरि-दुर्ग—पु० [सं० कर्म० स०] पहाड़ी किला।

गिरि-दुहिता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गिरि-द्वार—पुं० [ष० त०] पहाड़ की घाटी। दर्रा।

गिरिधर—पुं० [ष० त०] गिरि अर्थात् गोवर्धन पर्वत को धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण।

गिरिधरन—पुं०=गिरिधर।

गिरि-धातु—पुं० [ष० त०] गेरू।

गिरिधारन—पुं०=गिरिधर।

गिरिधारी (रिन्)—पुं० [सं० गिरि√धृ (धारण करना)+णिनि] श्रीकृष्ण।

गिरि-ध्वज—पुं० [ब० स०] इंद्र।

गिरि-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] १. पार्वती। २. गंगा। ३. पहाड़ से निकली हुई नदी।

गिरि-नगर—पुं० [सं० मध्य० स०] १. गिरनार पर्वत पर बसा हुआ एक नगर जो जैनियों का एक पवित्र तीर्थ है। २. पुराण के अनुसार रैवतक पर्वत।

गिरि-नाथ—पुं० [ष० त०] १. महादेव। शिव। २. हिमालय। ३. गोवर्धन पर्वत।

गिरि-नितंब—पुं० [ष० त०] पहाड़ की ढाल।

गिरि-पथ—पुं० [मध्य० स०] दो पहाड़ों के बीच का मार्ग। घाटी। दर्रा।

गिरि-पीलु—पुं० [ष० त०] फालसा।

गिरिपुष्पक—पुं० [गिरि-पुष्प ष० त०, गिरिपुष्प√कै (चमकना)+की] १. पथरफोड़ नाम का पौधा। २. शिलाजीत।

गिरि-प्रस्थ—पुं० [ष० त०] पहाड़ के ऊपर का चौरस मैदान।

गिरि-प्रिया—स्त्री० [ब० स०] सुरागाय

गिरि-बांधव—पुं० [ष० त०] शिव।

गिरिभिद्—पुं० [सं० गिरि√भिद् (फाड़ना) +क्विप्] पाषाण भेद।

वि० पहाड़ों को फोड़नेवाला (नद, नदी, झरना आदि)।

गिरिमल्लिका—स्त्री० [गिरि-मल्लि, स० त० + कन्–टाप्] कुटज। कोरैया।

गिरि-मान—पुं० [ब० स०] बहुत बड़ा हाथी।

गिरि-मृत्—स्त्री० [ष० त०] १. पहाड़ी मिट्टी। २. गेरू।

गिरि-राज—पुं० [ष० त०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. गोवर्धन पर्वत। ४. सुमेरु।

गिरि-र्वातका—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पहाड़ी हंस।

गिरि-व्रज—पुं० [ब० स०] १. केकय देश की राजधानी। २. जरासंध की राजधानी, राजगृह।

गिरिश—पुं० [सं० गिरि√शी (सोना)+ड] महादेव। शिव।

गिरिशाल—पुं० [सं० गिरि√शल् (गति)+अण्] एक प्रकार का बाज पक्षी।

गिरिशालिनी—स्त्री० [सं० गिरि√शल्+णिनि-ङीप्] अपराजिता लता।

गिरि-शिखर—पुं० [ष० त०] पहाड़ की चोटी।

गिरि-संभव—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का पहाड़ी चूहा।

गिरि-सार—पुं० [ष० त०] १. लोहा। २. शिलाजीत। ३. राँगा। ४ मैनाक पर्वत। ५. मलय पर्वत।

गिरि-सुत—पुं० [ष० त०] मैनाक पर्वत।

गिरि-सुता—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गिरींद्र—पुं० [गिरि-इंद्र, ष० त०] १. बहुत बड़ा पर्वत या पहाड़। २. हिमालय। ३. शिव। ४. आठ बड़े पर्वतों के आधार पर ८ की संख्या।

गिरी—स्त्री० [हिं० गरी] कुछ विशिष्ट फलों के बीजों के अंदर का मुलायम गूदा जिसकी गिनती सूखे मेवों में होती है। जैसे—खरबूजे के बीजों या बादाम की गिरी।

पुं०=गिरि।

गिरीश—पुं० [गिरि-ईश, ष० त०] १. बहुत बड़ा पर्वत या पर्वतों का राजा। २. हिमालय पर्वत। ३. सुमेरु पर्वत। ४. कैलास पर्वत। ५. गोवर्धन पर्वत। ६. महादेव। शिव।

गिरेबान—पुं०=गरेबान।

गिरेवा—पुं० [सं० गिरि] १. छोटी पहाड़ी। टीला। २. पहाड़ या पहाड़ी पर की ऊँची चढ़ाई।

गिरेश—पुं० [सं० गिरा—ईश, ष० त०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु।

गिरैयाँ—स्त्री० [हिं० गेरना=डालना] बैलों आदि के गले में बाँधी जानेवाली रस्सी। गेराँव। पगहा। उदा०—तिय जानि गिरैयाँ गही बनमाल सुऐंचे लला इँच्यो छावत है।—पद्माकर।

गिरैया†—वि० [हिं० गिराना+ऐया (प्रत्य०)] १. गिरानेवाला। २. गिरनेवाला। ३. पतनोन्मुख।

गिरों—पुं० [फा०] १. कोई चीज किसी के पास जमानत के रूप में रखकर उससे रुपया उधार लेना। रेहन। २. दूसरे की कोई चीज जमानत में रखकर उसके बदले में रुपए उधार देना। रेहन।

पद—गिरों-गट्ठा=दूसरों की चीजें अपने पास रेहन रखने का व्यवसाय।

वि० (वस्तु) जो रेहन रखी गई हो।

गिरोवर—पुं० [सं० गिरिवर] पर्वत।

गिर्गिट—पुं०=गिरगिट।

गिर्जा—पुं० दे० 'गिरजा'।

स्त्री०=गिरिजा।

गिर्जाघर—पुं० दे० 'गिरजा'।

गिर्द—अव्य० [फा०] १. आस-पास। २. चारों ओर।

पद—इर्द-गिर्द (देखें)।

पुं० किसी चीज की गोलाई या उसकी नाप। घेरा।

गिर्दागिर्द—अव्य० [अव्य०] १. आस-पास। इर्द-गिर्द। २. चारों ओर।

गिर्दाब—पुं० [फा०] भँवर।

गिर्दावर—वि० [फा०] चारों ओर घूमनेवाला।

पुं० १. वह अधिकारी जो चारों ओर घूम-घूमकर कामों और कर्मचारियों का निरीक्षण करता हो। २. मालविभाग का एक अधिकारी जो पटवारियों के कामों की जाँच करता है।

गिल—पुं० [सं० गिल् (लीलना)+क] १. मगर नामक जल-जंतु। २. जँबीरी नीबू।

वि० निगलने या खानेवाला।

स्त्री० [फा०] १. मिट्टी। २. गीली मिट्टी। ३. गारा।

गिलकार—पुं० [फा०] गारे और चूने से इमारत का काम करनेवाला कारीगर। मेमार। राज।

गिलकारी—स्त्री० [फा०] गारे और चूने से इमारत बनाने, विशेषतः दीवारों पर पलस्तर लगाने का काम।

गिलकिया—स्त्री० [देश०] नेनुवाँ या घियातोरी नामक तरकारी।

गिलगिल—पुं० [सं० गिल√गिल्+क] नक्र या नाक नामक जलजन्तु।

गिलगिला—वि० [हिं० गीला-गीला] [स्त्री० गिलगिली] १. आर्द्र और कोमल। गीला और नरम। २. करुणा, रोष आदि के कारण रोमांचित। उदा०—कोटरों से गिलगिली घृणा यह झाँकती है।—अज्ञेय।

†पुं० एक प्रकार का पक्षी।

गिलगिलिया—स्त्री० [अनु०] सिरोही नाम की चिड़िया। किलहँटी।

गिलगिली—पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

स्त्री० गिलगिलिया या सिरोही नामक चिड़िया।

गिलजई—पुं० [देश०] अफ़गानिस्तान की एक वीर जाति।

गिलट—पुं० [अं० गिल्ड=सोना चढ़ाना] १ पीतल, लोहे आदि की बनी हुई ऐसी वस्तु जिस पर सोने, चाँदी आदि का पानी चढ़ा हुआ हो। २. उक्त प्रकार से सोने या चाँदी का पानी चढ़ाने की क्रिया या भाव। ३. सफेद रंग की एक घटिया धातु।

गिलटी—स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. शरीर के अन्दर जोड़ों आदि के पास होनेवाली गोल गाँठ जिसमें से कई प्रकार के रस निकलकर शारीरिक व्यापारों में सहायक होते हैं। २. रक्त में विकार होने के कारण शरीर के अन्दर पड़नेवाली छोटी गाँठ। ३. एक रोग जिसमें शरीर के विभिन्न अंगों में गाँठें निकल आती हैं। ४. दे० 'ग्रंथि'।

गिलण*—पुं०=गिलन।

गिलन—पुं० [सं०√गिल्+ल्युट्—अन] [वि० गिलित] निगलने की क्रिया या भाव।

† पुं०=गैलन।

गिलना—स० [सं० गिलन] १. निगलना। २. इस प्रकार छिपा या दबा लेना कि किसी को पता न चले। ३. ग्रसना। उदा०—अद्भुत द्रव्य ससि अहि गिल्यौ, साख सुरंग मनावहीं।—चन्दवरदाई।

गिलबिला—वि० [अनु०] आर्द्र और कोमल। पिलपिला।

गिलबिलाना—अ० [अनु०] अस्पष्ट उच्चारण के कारण बोलने में गड़बड़ाना।

गिलम—स्त्री० [फा० गिलीम=कंबल] १. ऊन का बना हुआ मुलायम और चिकना कालीन। २. बड़ा और मोटा पर मुलायम गद्दा (बिछाने का)।

† वि० कोमल। नरम। मुलायम।

गिलमाँ—पुं० [अ० 'गुलाम' का बहु०] इस्लाम के अनुसार वे सुन्दर बालक जो बहिश्त में धर्मात्माओं की सेवा और भोग-विलास के लिए रहते हैं।

गिलमिल—पुं० [हिं० गिलम=कोमल] मध्य युग का एक प्रकार का बढ़िया मुलायम कपड़ा।

गिलम्मा†—वि० दे० 'गिलम'।

† पुं० दे० 'गिलमाँ'।

गिलहरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का धारीदार, मोटा सूती कपड़ा।

पुं० गिलहरी का नर।

†पुं०=बेलहरा।

गिलहरी—स्त्री० [सं० गिरि=चुहिया] चूहे की तरह का एक प्रसिद्ध छोटा जन्तु जो प्रायः घरों और बगीचों में रहता और पेड़ों पर चढ़ सकता है।

गिल-हिकमत—स्त्री० [फा० +अ०] औषध बनाने की कपड़ौटी नाम की क्रिया। दे० 'कपड़ौटी'।

गिला—पुं० [फा०] १. उपालंभ। उलाहना। २. निंदा। शिकायत।

गिलाई—स्त्री०=गिलहरी।

गिलाजत—स्त्री० [अ० गलीज का भाव०] १. गलीज या गंदे होने की अवस्था या भाव। गंदगी। २. गंदी और बुरी चीज। ३. मल। गुह।

गिलान†—स्त्री० [हिं० गीला] गीलापन।

† स्त्री०=ग्लानि। उदा०—लखि दरिद्र विद्वान को जग-जन करैं गिलान।—दीन०।

गिलाफ—पुं० [अ०] १ कपड़े की वह बड़ी थैली जो तकिये, लिहाफ आदि के ऊपर उनकी रक्षा के लिए चढ़ाई जाती है। खोल। २. तलवार आदि की म्यान। कोष।

† पुं० 'लिहाफ' के स्थान पर भूल से प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

गिलाय—स्त्री०=गिलहरी।

गिलायु—पुं० [सं० गिल+क्यङ्+उ] एक रोग जिसमें गले के अंदर गाँठें बँध जाती हैं। इसमें बहुत पीड़ा होती है।

गिलावा† —पुं० [फा० गिल=मिट्टी+आब=पानी] मिट्टी और पानी का बना हुआ वह गाढ़ा घोल जिससे राज मजदूर दीवारों की चुनाई करते हैं। गारा।

गिलास—पुं० [अं० ग्लास] १. पीतल, लोहे, शीशे आदि का बना हुआ पानी पीने का एक प्रसिद्ध लंबोतरा छोटा बरतन। २. किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी उक्त पात्र में समाती हो। जैसे—मैंने तीन गिलास पानी पीया। ३. आलू-बालू या ओलची नाम का पेड़ जिसका फल बहुत मुलायम और स्वादिष्ट होता है।

गिलित—भू० कृ० [सं०√गिल्+क्त] निगला हुआ।

गिलिम—स्त्री०, वि०=गिलम।

गिली—वि० [फा० गिल=मिट्टी] १. मिट्टी से सम्बन्ध रखनेवाला। २. मिट्टी का बना हुआ।

† स्त्री०=गुल्ली।

गिलेफ† —पुं०=गिलाफ।

गिलोय—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की कड़वी बेल जिसके पत्ते दवा के काम आते हैं। गुरुच। गुडूची।

२—१४

गिलोल†—स्त्री०=गुलेल। उदा०—लोल हैं कलोल ते गिलोल से लसत हैं।—सेनापति।

गिलोला—† पुं० दे० 'गुलेला'।

गिलौदाँ†—पुं०=गुलेंदा।

गिलौरी—स्त्री० [देश ०] लगे हुए पानों का बीड़ा।

पुं० [सं० गल्प] १. ज्ञान की बातें। ज्ञान-चर्चा। २. मन-बहलाव के लिए की जानेवाली बातचीत (बाजारू)।

गिलौरीदान—पुं० [हिं० गिलौरी+दान] पान रखने का डिब्बा। पानदान।

गिल्टी†—स्त्री०=गिलटी।

गिल्यान†—स्त्री०=ग्लानि।

गिल्ला—पुं०=गिला (शिकायत)।

† वि०=गीला।

गिल्ली—स्त्री०=गुल्ली।

गिल्लो†—स्त्री०=गिलहरी।

गिव†—स्त्री० [सं० ग्रीवा] गरदन। गला। उदा०—चूरहिं गिव अभरन औहारू।—जायसी।

गिवन†—पुं० [?] गैंड़ा नामक पशु। (राज०)

गिवल† —पुं० [?] गैंड़ा। उदा०—जिणवन भूलन जावता, गैंद गिवल गिड़राज।—कविराजा सूर्यमल।

गिष्णु—पुं० [सं०√गा (गाना) +इष्णुच्, आकार का लोप] १. मंत्र सस्वर गानेवाला व्यक्ति। २. गवैया। गायक।

गिहथ†—पुं० [सं० गृहस्थ] [स्त्री० गिहथिन] =गृहस्थ।

गींजना—स० [सं० गृंजन] किसी कोमल या चिकनी वस्तु को हाथ से दबा, मरोड़ या मसलकर खराब करना। जैसे—कपड़ा, फल या फूल गींजना।

गींद†—पुं०=गेंद।

गींदवा† —पुं० [सं० गेंडुक] छोटा गोल तकिया। (राज०) उदा०-मुड़ियाँ मिलसी गींदवों बलेन घणरी बाँह।— कविराजा सूर्यमल।

गींदुआ—पुं०=गींदवा।

गींव†—स्त्री० [सं० ग्रीवा] गर्दन। गला।

गी (गिर्)—स्त्री० [सं०√गृ (शब्द करना)+क्विप्] १. बोलने की शक्ति। वाणी। २. सरस्वती।

गीउ—स्त्री०=ग्रीवा (गला)।

गीठम—पुं० [देश०] एक प्रकार का घटिया गलीचा।

गीड़ †—पुं० [हिं० कीट=मैल] आँख से निकलनेवाला कीचड़।

गीत—वि० [सं०√गै (गाना) +क्त] गाने के रूप में आया या लाया हुआ। गाया हुआ।

पुं० वह छोटी पद्यात्मक रचना जो केवल गाये जाने के लिए बनी हो।

विशेष—(क) इसमें प्रायः एक ही भाव की अभिव्यंजना होती है। (ख) इसमें लय तथा स्वर की प्रधानता अन्य पद्यात्मक रचनाओं से अधिक होती है।

२. प्रशंसा। बड़ाई।

मुहा०—(किसी के) **गीत गाना**=प्रशंसा या बड़ाई करना।

३. कथन। चर्चा।

मुहा०—**(अपना) गीत गाना**=बराबर अपनी ही बात कहते जाना।

गीतक—पुं० [सं० गीत+कन्] १. गीत। गाना। २. प्रशंसा। बड़ाई। वि० १. गीत गानेवाला। २. गीत बनानेवाला।

गीतकार—पुं० [सं० गीत√कृ (करना)+अण्] [भाव० गीतकारिता] वह जो लोगों के गाने के लिए गीत बनाता या रखता हो।

गीत-क्रम—पुं० [ष० त०] १. किसी गीत के स्वरों के उतार-चढ़ाव अर्थात् गाने का क्रम। २. संगीत में एक प्रकार की तान।

गीत-प्रिय—पुं० [ब० स०] शिव।

गीत-प्रिया—स्त्री० [ब० स० टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

गीत-भार—पुं० [ष० त०] १. गीत का पहला चरण या पद। टेक। २. उक्त (टेक) के विस्तृत अर्थ में की हुई ऐसी प्रतिज्ञा जिसका पूरा निर्वाह किया जाय। टेक।

गीता—स्त्री० [सं० गीत+टाप्] १. ऐसी छंदोबद्ध कथा या वृत्तान्त जो लोगों के गाने के लिए प्रस्तुत किया गया हो। २. किसी का दिया हुआ छन्दोबद्ध और ज्ञानमय उपदेश। जैसे—रामगीता, शिवगीता आदि। ३. तारीफ। प्रशंसा। उदा०—एक रस एक रूप जाकी गीता सुनियत।—केशव। ४. भगवद्गीता। ५. संकीर्ण राग का एक भेद। ६. छब्बीस मात्राओं का एक छंद जिसमें १४ और १२ मात्राओं पर विराम होता है।

गीतातीत—वि० [सं० गीत-अतीत, द्वि० त०] १. जो गाया न जा सके। २. जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय। अनिर्वचनीय।

गीतायन—पुं० [सं० गीत-अयन, ष० त०] गीत के साधन, वीणा, मृदंग आदि।

गीति—स्त्री० [सं०√गै+क्तिन्] १. गान। गीत। २. आर्या छन्द का एक भेद जिसके विषम चरणों में १२ और सम चरणों में १८ मात्राएँ होती हैं। उद्गाथा। उद्गाहा।

गीतिका—स्त्री० [सं० गीति+कन्-टाप्] १. छोटा गीत। २. एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ और १० के विराम से २६ मात्राएँ होती हैं। इसकी तीसरी, १० वीं, १७ वीं और २४ वीं मात्राएँ सदा लघु होती हैं। ३. एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में, सगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु, गुरु, होते हैं।

गीति-काव्य—पुं० [मध्य० स०] ऐसा काव्य जो मुख्यतः गाये जाने के उद्देश्य से ही बना हो।

गीति-नाट्य—पुं०=गीति-रूपक।

गीति-रूपक—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का रूपक जो पूरा या बहुत कुछ पद्य में लिखा होता है। (ऑपेरा)

गीती (तिन्)—वि० [सं० गीत+इनि] गाकर पढ़ने या पाठ करनेवाला।

गीत्यार्या—पुं० [सं० गीति-आर्या, कर्म० स०] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ५ नगण और एक लघु होता है। अचल धृति।

गीथा—स्त्री० [सं०√गै+थक्-टाप्] १. वाणी। २. गीत।

गीदड़—पुं० [सं० गृध्र=लुब्ध या फा० गीदी] १. भेड़िये या कुत्ते की जाति का एक जानवर जो लोमड़ी से मिलता-जुलता होता है। यह प्रायः उजाड़ स्थानों और जंगलों में रहता है; और इसका दिखाई देना या बोलना अशुभ माना जाता है। शृगाल। सियार। (जैकाल) २. कायर या डरपोक व्यक्ति।

पद—गीदड़-भभकी (देखें)।

मुहा०—किसी स्थान पर गीदड़ बोलना=बिलकुल उजाड़ या निर्जन होना।

गीदड़-भभकी—स्त्री० [हिं०] मन में डरते हुए ऊपर से दिखावटी साहस अथवा क्रोध या रोष प्रकट करते हुए कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—दिखाना।—देना।

गीदड़रुख—पुं० [हिं० गीदड़+रुख=वृक्ष] उत्तरी भारत में होनेवाला मँझोले कद का एक पेड़।

गीदी—वि० [फा०] १. गीध संबंधी। २. (व्यक्ति) जिसमें शक्ति या साहस न हो। कायर। डरपोक।

गीध—पुं० [सं० गृध्र] १. गिद्ध नामक प्रसिद्ध मांसाहारी पक्षी। गिद्ध। २. लाक्षणिक अर्थ में बहुत ही चतुर और लालची या लोभी व्यक्ति।

गीधना—अ० [सं० गृध्र=लुब्ध] १. गिद्ध की तरह किसी काम, चीज या बात के पीछे पड़ना। २. बहुत ही बुरी तरह से लोभ करना। उदा०—करि अभिमान विषय रस गीध्यो, स्याम सरन नहिं आयो।—सूर। ३. एक बार कोई अनुकूल बात होते देखकर या कुछ लाभ उठाकर बराबर उसकी ताक में लगे रहना। परचना। उदा०—बींधे मोसों आन के गीधे गीधहिं तारि।—बिहारी। ४. किसी से बहुत मेल-जोल रखना।

गीबत†—स्त्री० [अ०] १. अनुपस्थिति। गैर हाजिरी। २. किसी की अनुपस्थिति में उसकी की जानेवाली निन्दा या बुराई। चुगली।

गीर—वि० [फा०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर निम्न-लिखित अर्थ देता है। (क) पकड़नेवाला। जैसे—दामनगीर, राहगीर। (ख) अपने अधिकार में रखनेवाला। जैसे—जहाँगीर।

स्त्री० [सं० गिरा] वाणी।

गी-रथ—पुं० [सं० गिर्-रथ, ब० स०] १. बृहस्पति का एक नाम। २. जीवात्मा।

गीरबान*—पुं०=गीर्वाण (देवता)।

गीरवाण, गीरवान—पुं०=गीर्वाण।

गीर्ण—वि० [सं०√गॄ (शब्द करना)+क्त] १. कथित। कहा हुआ। २. विस्तारपूर्वक बतलाया हुआ। वर्णित। ३. निगला हुआ।

गीर्णि—स्त्री० [सं०√गॄ+क्तिन्] १. वर्णन। २. प्रशंसा। स्तुति। ३. निगलने की क्रिया या भाव।

गीर्देवी—स्त्री० [गिर्-देवी, ष० त०] सरस्वती। शारदा।

गीर्पति—पुं० [गिर्-पति, ष० त०] १. बृहस्पति। २. पंडित। विद्वान्।

गीर्भाषा—स्त्री० [गिर्-भाषा, कर्म० स०] दे० 'गीर्वाणी'।

गीर्वाण—पुं० [गिर-वाण ब० स०] देवता। सुर।

गीर्वाणी—स्त्री० [गिर्-वाणी, कर्म० स०] देवताओं की भाषा। देव-भाषा। संस्कृत।

गीला—वि० [हिं० गलना] [स्त्री० गीली] १. जो जल से युक्त हो। भींगा हुआ। तर। नम। जैसे—गीला कपड़ा, गीली आँखें। २. जो अभी सूखा न हो। जैसे—गीला रंग। ३. जो शराब पिये हुए हो और जिस पर उसका नशा सवार हो।

पुं० [?] एक प्रकार की जंगली लता।

गीलापन—पुं० [हिं० गीला+पन (प्रत्य०)] गीले होने की अवस्था या भाव। तरी। नमी।

गीली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड़ जिसके हीर की लकड़ी

चिकनी, भारी और मजबूत होती तथा मेज, कुर्सियाँ बनाने के काम में आती हैं। बरमी।

गीव—स्त्री० =ग्रीवा (गरदन)।

गीष्पति—पुं० [गिर्-पति, ष० त०] १. बृहस्पति। २. पंडित। विद्वान्।

गुंग†—वि०=गूँगा।

गुँगबहरी—स्त्री० [हिं० गूँगा+बहरा] साँप की तरह लंबी मछलियों की एक जाति। बरम। बाँबी।

गुंगा†—वि० [स्त्री० गूँगी] =गूँगा।

गुंगी—स्त्री० [हिं० गूँगा] दो-मुँहा साँप। चुकरैंड।

गुँगुआना—अ० [अनु०] १. गूँगे की तरह गूँ गूँ शब्द करना। २. (लकड़ी का) अच्छी तरह न जलना और बहुत धूआँ देना।

गुंचा—पुं० [अ० गुन्चः] १. फूल की कली। कोरक। २. आनंद-मंगल। ३. नाच-रंग।

मुहा०—**गुंचा खिलना**=(क) खूब नाच-रंग या आनंद-मंगल होना। (ख) मुख की आकृति आनंदपूर्ण और प्रफुल्लित होना। (ग) दे० 'गुल' के अन्तर्गत मुहा० 'गुल खिलना'।

गुंची—स्त्री०=घुँघची।

गुंज—स्त्री० [सं०√गुंज् (गूँजना)+घञ्] १. भौरों के गुंजन का शब्द। गुंजार। २. पक्षियों आदि का कलरव। ३. आनंद-ध्वनि।

†स्त्री० [सं० गुंजा] १. घुँघची। २. सोने के तारों का बना हुआ गले में पहनने का गोप नामक गहना। उदा०—मुसाहिब जू ने अपने गले का गुंज उतारा और पूरन को पहना दिया।—वृन्दावनलाल।

†पुं० [?] सलई का पेड़।

गुंजक—पुं० [सं०√गुंज्+ण्वुल्-अक] एक प्रकार का पौधा।

वि० गुंजन करने या गूँजनेवाला।

गुंजन—पुं० [सं०√गुंज्+ल्युट्—अन] १. भौंरों के गूँजने की क्रिया। २. गूँजने का शब्द। गुंजार।

गुंजना—अ० [सं० गुंजन] गूँज से युक्त होना। गूँजना।

गुंजना—अ० [सं० गुंजन] भौंरे का गुंजार करना। गुनगुनाना।

गुंज-निकेतन—पुं० [ष० त०] भौंरा। मधुकर।

गुंजरना—अ० [हिं० गुंजार] १. भौंरों का गुंजन करना। २. (स्थान का) गुंजन या मधुर ध्वनि से युक्त होना। ३. गरजना।

गुंजल्क—स्त्री० [फा०] १. कपड़े आदि की शिकन। सिलवट। २. उलझन की बात। गुत्थी। ३. गाँठ।

स्त्री० [सं० गुंजा] घुंघची नाम की लता और उसके बीज।

गुंजा—स्त्री० [सं०√गुञ्ज्+अच्—टाप्] घुंघची नामक लता और उसके बीज। । (दे० 'घुंघची')

गुंजार—पुं० [सं० गुंज+हिं० आर] भौंरों की गूंज। भौंरों की भनभनाहट।

गुंजारना—अ० [हिं० गुंजार] १. भौंरों का गुंजार करना। २. मधुर ध्वनि उत्पन्न करना।

गुंजारित—वि०=गुंजित।

गुंजित—वि० [सं०√गुंज्+क्त] १. (स्थान) जो भौंरों की गुंजार से युक्त हो। २. (स्थान) जो गूंज या प्रतिध्वनि से भर गया हो।

गुँजिया—स्त्री० [हिं० गूँज=लपेटा हुआ पतला तार] कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुंजी (जिन्)—वि० [सं० गुंज+इनि] गूँजनेवाला।

†स्त्री० =गूँज।

गुंटा—पुं० [देश०] पानी का छोटा गड्ढा या ताल।

गुंठन—पुं० [सं०√गुंठ् (ढकना)+ल्युट्—अन] १. किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु से छिपाने, ढकने, लपेटने आदि की क्रिया या भाव। २. लेप लगाना।

गुंठा*—वि० [हिं० गठना] १. अच्छी तरह से गठा हुआ। २. जो आकार-प्रकार में छोटा, परन्तु गठा हुआ हो। ३ नाटा। ठिंगना।

पुं० छोटे आकार का एक प्रकार का घोड़ा। टाँगन।

गुंठित—भू० कृ० [सं० √गुंठ्+क्त]। १. ढका हुआ। २. छिपाया हुआ। ३. लेप किया हुआ। ४. चूर किया या पीसा हुआ।

गुंड—वि० [सं०√गुंड् (चूर्ण करना)+अच्] चूर किया या पीसा हुआ।

पुं० १. चूर्ण। २. फूलों का पराग। ३. मलार राग का एक भेद। ४. कसेरू का पौधा।

गुंडई—स्त्री० [हिं० गुंडा+ई प्रत्य०] गुंडे होने की अवस्था, गुण या भाव। गुंडापन।

गुंडक—पुं० [सं० गुंड+कन्] १. मधुर और मंद स्वर। २. धूल। ३. तेल रखने का बरतन। ४. ऐसा आटा जिसमें धूल या मिट्टी मिली हो।

गुंडली†—स्त्री०=कुंडली।

गुंडा—पुं० [सं० गंडक=गैंडा, मि० असमी गुंडा=गैंडा] [स्त्री० गुंडी] अनियंत्रित रूप से हर जगह उद्दण्डतापूर्वक आचरण या व्यवहार करनेवाला व्यक्ति।

गुंडापन—पुं० [हिं० गुंडा+पन (प्रत्य०)] गुंडे होने की अवस्था या भाव।

गुंडित—भू० कृ० [सं० √गुंड्+क्त] १. चूर्ण किया या पीसा हुआ। २. धूल में मिलाया अथवा धूल से ढका हुआ।

गुंडीर—वि० [सं०√गुंड्+ईरन्) १. चूर्ण करने या पीसनेवाला। २. नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

गुंदला—पुं० [सं० गुंडाला] नागरमोथा नाम की घास।

गुंदीला—वि० [हिं० गोंद+ला] (वृक्ष) जिसका निर्यास गोंद के रूप में होता हो। गोंदवाला।

गुंधना—अ० [सं० गुध=क्रीड़ा] १. हिं० 'गूंधना' का अ०। गूंधा जाना। २. पानी में मिलाकर माँड़ा या साना जाना। ३. तागों, बालों की लटों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में गूँथा या पिरोया जाना।

†अ० दे० 'गुथना'।

गुंधवाना—स० [हिं० गूंधना का प्रे०] गूंधने का काम दूसरे से करवाना। दूसरे को कोई चीज गूंधने में प्रवृत्त करना।

गुंधाई—स्त्री० [हिं० गूंधना] १. गूंधने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गुंधावट—स्त्री० [हिं० गूंधना] गूंधने की क्रिया, ढंग या भाव।

गुंफ—पुं० [सं०√गुंफ् (गूंथना)+घञ्] [वि० गुंफित] १. कई चीजों के आपस में मिलकर उलझने या गुथने की क्रिया, दशा या भाव। २. फूलों का गुच्छा। ३. मूंछ। ४. गल-मुच्छा। ५. कारण माला अलंकार का एक नाम।

गुंफन—पुं० [सं०√गुंफ्+ल्युट्—अन] [वि० गुंफित] १. डोरे, तागे आदि के रूप में होनेवाली चीज़ों को आपस में इस प्रकार उलझाना या फँसाना कि उनका रूप सुंदर हो जाय। गूंथना। २. डोरे आदि में पिरोना। जैसे—माला गुंफन। ३. भरने का काम। भराई। जैसे—शब्दों का गुंफन।

गुंफना—स्त्री० [सं० √गुंफ्+युच्—अन, टाप्) १. गुंफन या उसके फल-स्वरूप प्राप्त होनेवाला रूप। २. शब्दों आदि की मधुर और सुन्दर योजना।

†स०=गूथना।

गुंफित—भू० कृ० [सं०√गुंफ्+क्त] १. गूँथा हुआ। २. सुन्दरता-पूर्वक एक दूसरे के साथ मिलाया या लगाया हुआ।

गुंबज—पुं०=गुंबद।

गुंबद—पुं० [फा०] वास्तु-रचना में वह शिखर जो आधे गोले के आकार का और अंदर से पोला हो। गुंबज। जैसे—मसजिदों का गुंबद।

पद—गुंबद की आवाज=प्रतिध्वनि।

गुंबदी—वि० [फा०] गुंबद की शकल का।

पुं० गुंबद के आकार का वह गोल खेमा जिसके बीचोबीच एक ही खंभा होता है।

गुंबा—पुं० [फा० गुंबद] सिर में चोट लगने और उसके फल-स्वरूप खून जमने से पड़नेवाली गाँठ। गुलमा।

गुंभी—स्त्री० [सं० गुंफ=गुच्छा] वनस्पति का अंकुर। गाभ।

स्त्री० [हिं० गून] रस्सी, विशेषतः नाव आदि का पाल खींचने की रस्सी। गून।

गुआ—पुं० [सं० गुवाक] एक तरह की सुपारी।

गुआर— स्त्री०=ग्वार (कुलथी)।

गुआर पाठा— पुं० दे० 'ग्वारपाठा'।

गुआरी† —स्त्री०=ग्वार।

गुआलिन—स्त्री० १.=ग्वार (कुलथी)। २.=ग्वालिन।

गुइयाँ—स्त्री०, पुं० दे० 'गोइयाँ'।

पुं० [हिं० गोहन=साथ] १. वह व्यक्ति जो खेल-कूद में किसी का साथ देता है। खेल का साथी। २. मित्र।

स्त्री० सखी।

गुगरल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की वत्तख।

गुगानी—स्त्री० [देश०] पानी की हलकी हिलोर। खलमली। (लश०)

गुगुलिया†—पुं० [अनु०] बंदर नचानेवाला व्यक्ति। मदारी।

गुग्गुर—पुं०=गुग्गुल।

गुग्गुल—पुं० [सं०√गुज् (शब्द करना)+क्विप्, गुज्√गुड् (रक्षा करना) +क] १ सलई का पेड़ जिससे धूप या राल निकलती है। २. राल जो सुगंधि के लिए जलाते हैं। ३. एक प्रकार का वड़ा कँटीला पेड़ जो दक्षिण भारत में होता है।

गुच—पुं० [हिं० गोछ] एक प्रकार की भेड़। (पंजाव)

गुची—स्त्री० [सं० गुच्छ] सौ पानों की गड्डी। आधी ढोली।

गुच्ची—स्त्री० [अनु०] १. जमीन में खोदा हुआ वह छोटा लंबोतरा गड्ढा जो लड़के गुल्ली-डंडा आदि खेलने के लिए वनाते हैं। २. जमीन में खोदा हुआ कोई छोटा गड्ढा।

वि० वहुत छोटा। जैसे—गुच्ची-सी आँख।

गुच्चीपाला—पुं० [हिं० गुच्ची=गड्ढा+पाला=सीमा] एक खेल जिसमें लड़के एक छोटा-सा गड्ढा बनाकर उसमें कुछ दूर से कौड़ियाँ फेंकते हैं।

गुच्छ—पुं० [सं०√गु (शब्द करना)+क्विप्, गुत्=शो (सूक्ष्म करना) +क] १. गुच्छा। २. ऐसा झाड़ या पौधा जिसमें मोटा तना न हो, केवल पतली टहनियाँ और पत्तियाँ हों। झाड़ी। ३. बत्तीस लड़ों का हार। ४. मोतियों की माला। ५. मोर की पूँछ। ६. घास का पूला।

गुच्छक—पुं० [सं० गुच्छ+कन्] =गुच्छ।

गुच्छ-पत्र—पुं० [ब० स०] ताड़ का पेड़।

गुच्छ-पुष्प—पुं० [व० स०] १. अशोक वृक्ष। २. छतिवन। ३. रीठा। ४. धव। धातकी।

गुच्छ-फल–पुं० [ब० स०] १. रीठा। २. निर्मली। ३. दमनक। दौना। ४. अंगूर। ५. केला। ६. मकोय।

गुच्छल—पुं० [सं० गुच्छ√अल् (पर्याप्ति)+अच्, पररूप] एक प्रकार की घास।

गुच्छा—पुं० [सं० गच्छ] १. एक ही प्रकार की वहुत सी वस्तुओं का ऐसा समूह जो एक साथ उगा, उपजा या बना हो। जैसे—अंगूरों का गुच्छा। २. एक साथ इकट्ठी की हुई एक प्रकार की वस्तुओं का समूह। जैसे—तालियों का गुच्छा। ३. तारों, बालों आदि की उक्त प्रकार की रचना या रूप। झब्वा। फुँदना।

गुच्छातारा—पुं० [हिं० गुच्छा+तारा] कचपचिया नाम का तारा-पुंज।

गुच्छार्द्ध—पुं० [गुच्छ-अर्द्ध, ष० त०] वह हार जिसमें सोलह अथवा चौबीस लड़ होते हैं।

गुच्छार्ध—पुं०=गुच्छार्द्ध।

गुच्छी—स्त्री० [सं० गुच्छ] १. करंज। कंजा। २. रीठा। ३. खुभी की जाति की एक वनस्पति जो कश्मीर और पंजाब में होती है। और जिसके बीज-कोषों के गुच्छों की तरकारी बनती है।

गुच्छेदार—वि० [हिं० गुच्छा+फा० दार (प्रत्य०] १. जो गुच्छे या गुच्छों के रूप में हो। २. जिसमें गुच्छा या गुच्छे लगे हों।

गुज—पुं० [देश०] बाँस आदि की वह पतली छोटी फाँक जो दो चीजों को जोड़ने के लिए उनमें जड़ी जाती है। बाँस की कील या मेख। (बढ़ई)

गुजर—पुं० [फा०] १. किसी विन्दु या स्थान से होते हुए आगे वढ़ने की क्रिया या भाव। २. काल-क्षेप या जीवन-यापन की दृष्टि से होनेवाला निर्वाह। जैसे–सौ रुपए में गुजर करना पड़ता है। ३. आने-जाने, निकलने आदि का द्वार या मार्ग। जैसे–इस कमरे में हवा का गुजर नहीं है। ४. पहुँच। पैठ। प्रवेश। जैसे—इतने बड़े दरबार में भला हमारा गुजर कैसे हो सकता है।

पद—गुजर-बसर (देखें)।

गुज़रगाह—स्त्री० [फा०] १. किसी के गुजरने अर्थात् आने-जाने का मार्ग या स्थान। २. नदी पार करने का घाट। ३. मार्ग। रास्ता।

गुजरना—अ० [फा० गुजर+ना (प्रत्य०)] १. किसी स्थान से होते हुए आगे वढ़ना। जैसे—यह सड़क बनारस से गुजरती है। २. एक स्थिति से होकर दूसरी स्थिति में पहुँचना।

मुहा०—(किसी का) गुजर जाना=मृत होना। मरना। जैसे— उनके चाचा आज गुजर गये।

३. कोई घटना या बात घटित होना। जैसे—वहाँ तुम पर क्या गुजरी।

मुहा०—किसी पर गुजरना=किसी पर विपत्ति या संकट पड़ना।

४. व्यतीत होना। बीतना। जैसे—इसी प्रकार कितने ही वर्ष गुजर गये। ५. निर्वाह होना। ६. दूर रहना। बाज आना। जैसे—हम तो ऐसे जीने से गुजरे।

गुज़रनामा—पुं० [अ०+फा०] वह अधिकार-पत्र जिसकी सहायता से कोई किसी मार्ग से होता हुआ आगे जा सकता है। राहदारी का परवाना। पार-पत्र।

गुजर-बसर—पुं० [फा०] कालक्षेप या जीवन-यापन की दृष्टि से होनेवाला निर्वाह। गुजारा।

गुजरबान—पुं० [फा०] १. नदी पार करानेवाला, अर्थात् मल्लाह। माँझी। २. वह जो घाट की उतराई या कर उगाहता हो।

गुजरात—पुं० [सं० गुर्जर-राष्ट्र] [वि० गुजराती] भारतीय संघ के बम्बई राज्य का एक प्रदेश।

गुजराती—वि० [हिं० गुजरात] 'गुजरात' प्रदेश में बनने, होने अथवा उससे संबंध रखनेवाला। जैसे—गुजराती खान-पान, पहनावा या माल। पुं० 'गुजरात' प्रदेश का निवासी।

स्त्री० १. गुजरात की भाषा। २. देवनागरी से मिलती हुई वह लिपि जिसमें उक्त भाषा लिखी जाती है। ३. छोटी इलायची।

गुजरान—स्त्री० [फा०] जीवन का निर्वाह और समय का बीतना (खाने पीने, रहने-सहने आदि के विचार से)। जैसे—हमारी भी किसी तरह गुजरान होती ही है।

गुजरानना—स० [हिं० गुजर] १. किसी के सामने उपस्थित या पेश करना। जैसे—अरजी या नजर गुजरानना। २. व्यतीत करना। बिताना। जैसे—दिन गुजरानना।

गुजरिया—स्त्री०=गूजरी।

गुजरी—स्त्री० [सं० गुर्जर, हिं० गूजर] १. कलाई पर पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २. गूजरी नाम की रागिनी। ३. दे० 'गूजरी'।

स्त्री० [हिं० गुजरना] मध्य युग में, दोपहर के बाद सड़कों के किनारे लगनेवाला छोटा बाजार।

गुजरेटा—पुं० [हिं० गूजर+एटा=बेटा (प्रत्य०)] [स्त्री० गुजरेटी] १. गूजर का पुत्र या लड़का। २. गूजर जाति का पुरुष या व्यक्ति। गूजर। ग्वाला।

गुज़श्ता—वि० [फा० गुज़श्तः] बीते हुए काल से संबंध रखनेवाला। गत। भूत।

गुज़ार—वि० [फा०] गुज़ारने (अर्थात् करने, देने या सामने लाने) वाला (यौ० के अंत में)। जैसे—खिदमतगुजार, मालगुजार, शुक्रगुजार आदि। पुं० वह स्थान जहाँ से होकर लोग गुजरते या आगे बढ़ते हों। जैसे—घाट, रास्ता आदि।

गुज़ारना—स० [फा० गुज़र] १. किसी स्थान से होते हुए आगे बढ़ाना। २. (समय) काटना या बिताना। व्यतीत करना। ३. किसी बड़े के सामने उपस्थित, पेश या निवेदन करना। जैसे—अर्ज गुजारना। ४. पालन करना। जैसे—नमाज गुजारना। ४. (कष्ट या विपत्ति) डालना। ढाना। उदा०—गजब गुजारत गरीबन की धार पै।—पद्माकर।

गुज़ारा—पुं० [फा० गुज़ारः] १. गुजरने या गुजारने की क्रिया या भाव। २. गुजर। निर्वाह। ३. जीवन-निर्वाह के लिए मिलनेवाली आर्थिक सहायता या वृत्ति। ४. वह स्थान जहाँ से लोग नाव पर चढ़कर पार जाते हों अथवा आकर उतरते हों। ५. मार्ग में पड़नेवाला वह स्थान जहाँ कोई अधिकार-पत्र दिखाना या कर देना पड़ता हो।

गुज़ारिश—स्त्री० [फा०] निवेदन। प्रार्थना।

गुज़ारिशनामा—पुं० [फा०] निवेदन-पत्र। प्रार्थना-पत्र।

गुजारी—स्त्री० [?] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

गुज़ारेदार—पुं० [फा०] वह व्यक्ति जिसे जीवन-निर्वाह के लिए गुजारा या वृत्ति मिलती हो।

गुजी†—स्त्री० [?] नथनों में जमा हुआ सूखा मल। नकटी।

गुजुआ—पुं० [देश०] [स्त्री० गूजी, गुजुई] गोबरैला नाम का कीड़ा।

गुज्जर†—पुं० दे० 'गूजर'।

गुज्जरवै*—पुं० [सं० गुर्ज (पति)] गुजरात का राजा।

गुज्जरी—स्त्री० दे० 'गूजरी'।

गुज्झ*—वि०=गुह्य।

गुज्झना—अ० [हिं० गुज्झ] छिपना।

गुज्झा—पुं० [सं० गुह्यक] १. रेशेदार गूदा। २. रेशों का गुच्छा। ३. बाँस की कील या मेख। गोझा। ४. एक प्रकार की कँटीली घास।

वि० [सं० गुह्य] छिपा हुआ। गुप्त।

गुझ*—वि०=गुह्य।

गुझबाती*—स्त्री० [सं० गुह्य+हिं० बात] १. गुप्त या छिपी हुई बात। २. ऐसी बात जिसका अर्थ या रहस्य सहज में स्पष्ट न होता हो। उदा०—स्याम सनेसो कबहूँ न दीन्हौ जानि बूझ गुझबाती।—मीराँ।

गुझरौट—स्त्री० [हिं० गुज्झा] १. साड़ी का वह भाग जो स्त्रियाँ चुनकर नाभि के पास खोंस लेती हैं। उदा०—कर उठाय घूंघट करत उसरत पट गुझरौट।—बिहारी। २. स्त्रियों की नाभि के आस-पास का भाग।

पुं० [सं० गुह्य-आवर्त] कपड़े की शिकन। सिकुड़न।

गुझिया—स्त्री० [सं० गुह्यक, प्रा० गुज्झआ, गुज्झा] १. एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २. खोए की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।

गुझौट†—पुं० दे० 'गुझरौट'।

गुट—पुं० [सं० गोष्ठ=समूह] १. झुंड। यूथ। समूह। २. किसी विशिष्ट उद्देश्य से बनाया हुआ व्यक्तियों का वह छोटा दल जो किसी विशिष्ट पक्ष या मत का पोषण करने के लिए बनाया जाता है। जैसे—अब तो कांग्रेस में भी कई गुट हो गये हैं।

क्रि० प्र०—बनाना।—बाँधना।

पद—गुटबंदी (देखें)।

पुं० [अनु०] कबूतरों आदि के बोलने अथवा इसी प्रकार का कोई शब्द।

गुटकना—अ० [अनु०] १. गुटगुट शब्द करना। जैसे—कबूतर का गुटकना, तबले का गुटकना।

अ० दे० 'गटकना' (निगलना)।

स० दे० 'गुटकाना'।

गुटका—पुं० [सं० गुटिका] [स्त्री० अल्पा० गुटकी] १. बहुत छोटे

आकार में छपी हुई पुस्तक। जैसे—गुटका रामायण। २. कोई गोल ठोस चीज। छोटा गोला। जैसे—लट्टू। ३. गुपचुप नाम की मिठाई। ४. सूखे कत्थे में मिलाए हुए इलायची, लौंग, सुपारी आदि जो मसाले के रूप में पान में मिलाकर अथवा पान के स्थान पर खाई जाती है।

गुटकाना—स० [अनु०] १. 'गुटकना' का स० रूप। गुटकने में प्रवृत्त करना। २. धीरे-धीरे किसी साधन के द्वारा गुट-गुट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—ढोलक या तबला गुटकाना।

गुटकी—स्त्री० [हिं० गुटिका] छोटी टिकिया। उदा०—गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्हीं ग्यान की गुटकी।—मीराँ।

गुटबंदी—स्त्री० [हिं० गुट+फा० बंदी] १. कुछ लोगों का आपस में मिलकर अपना एक अलग गुट या दल बनाने की क्रिया या भाव। २. पारस्परिक मत-भेद, राग-द्वेष आदि के कारण किसी संस्था, समुदाय आदि के लोगों का छोटे-छोटे गुट बनाना।

गुटबैंगन—पुं० [?] एक प्रकार का कँटीला पौधा।

गुटरगूँ—स्त्री० [अनु०] कबूतरों के गुट-गुट करते हुए बोलने का शब्द।

गुटिका—स्त्री० [सं० वटी+क, पृषो० सिद्धि] १. छोटी गोली या टिकिया। वटिका। वटी। २. योग की एक प्रकार की सिद्धि से प्राप्त होनेवाली वह गोली जिसके सम्बन्ध में यह प्रवाद है कि इसे मुँह में रख लेने पर आदमी जहाँ चाहे वहाँ तत्काल अदृश्य होकर पहुँच सकता है।

गुट्ट—पुं०=गुट।

गुट्टा—पुं० [हिं० गोटी] लाख की बनी हुई वह चौकोर गोटी जिनसे लड़कियाँ खेला करती हैं।

वि० छोटे कद का। ठिगना। नाटा।

पुं० [पं०] गेंदे का पौधा और उसका फूल।

गुट्ठल—वि० [हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २. गुठली के आकार का और कठोर या कड़ा। ३. (बात) जो जल्दी समझ में न आवे। जटिल या दुरूह। ४. (व्यक्ति) जिसकी समझ में जल्दी कोई बात न आती हो। जड़। मूर्ख। उदा०—ग्रंथ गथित गुट्ठल मति मूरखता जुत पंडिता। —रत्ना०।

†पुं० १. गुठली की तरह जमी या बँधी हुई गाँठ। (क्व०) २. गिलटी।

गुट्ठी—स्त्री० [हिं० गुठली] १. कड़ी और मोटी गाँठ। २. पैर का टखना।

गुठला—पुं० [हिं० गुठली] १. बड़ी और मोटी गुठली। २. उक्त आकार-प्रकार की कोई कड़ी चीज। जैसे—शरीर में मांस का गुठला।

वि० [हिं० कुंठ] जिसकी धार ठीक काम करने के योग्य न रह गई हो। कुंद। भोथरा। जैसे—गुठला चाकू, गुठले दाँत।

पुं० [सं० अंगुस्थल, प्रा० अंगुट्ठल] अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुठलाना—अ० [हिं० गुठली] १. गुठली की तरह कड़ा और गोल बनना या होना। जैसे—मांस गुठलाना। २. (अस्त्र-शस्त्र की धार का) कुंद या भोथरा होना। ३. खट्टी चीज खाने के बाद दाँतों का और कुछ खाने या चुबाने के योग्य न रह जाना।

स० गुठला (कुंद या भोथरा) करना।

गुठली—स्त्री० [सं० गुटिका] आम, जामुन आदि फलों के बीच से निकलनेवाला कड़ा तथा बड़ा बीज।

गुड़ंबा—पुं० [हिं० गुड़+आँब, आम] गुड़ (अथवा चीनी) में कच्चे आम को पकाकर बनाई जानेवाली एक तरकारी।

गुड़—पुं० [सं० गुड, गुल, पा० गुलो, प्रा०, पं० गुड़, बँ०, उ० गुर, सिं० गुरु, गु० गोड, ने० गुलियो, मरा० गुड़] १. ऊख के रस का वह रूप जो उसे पकाकर खूब गाढ़ा करने पर प्राप्त होता है, और जो बाजार में बट्टी, भेली आदि के रूप में मिलता है। जैसे—गुड़ न दे तो गुड़ की सी बात तो कहे। (कहा०)

मुहा०—**गुड़ च्यूँटा होना**=(क) ऐसा पारस्परिक घनिष्ट संबंध होना, जैसे गुड़ और च्यूँटे का होता है। (ख) बहुत अधिक अनुरक्त या लीन होना। **गुड़ दिखाकर ढेला मारना**=कुछ लालच देकर फिर ऐसा बरताव करना जिससे कुछ प्राप्त न हो उल्टे कष्ट भोगना पड़े। **कुल्हिया में गुड़ फोड़ना**=इस प्रकार गुप्त रूप से या छिपकर कोई काम करना कि दूसरों को पता न चले। **गूँगे का गुड़ खाना**=दे० 'गूँगा' के अन्तर्गत मुहा०।

पद—**गुड़ भरा हँसिया**=असमंजस का ऐसा काम जो बहुत अभीष्ट या प्रिय होने पर भी बहुत ही कठिन होने के कारण किया न जा सके। २. रहस्य संप्रदाय में (क) मन, (ख) ईश्वर का ध्यान, (ग) गुरु का उपदेश।

गुड़क—पुं० [सं० गुड़+कन्] १. गोलाकार पदार्थ। २. गेंद। ३. गुड़। ४. गुड़ में पकाकर तैयार की हुई दवा।

गुड़गुड़—स्त्री० [अनु०] १. वेगपूर्वक जल में से होकर वायु के बाहर निकलने पर होनेवाला शब्द। जैसे—हुक्के की गुड़गुड़, कूएँ या नदी में लोटा डुबोने से होनेवाली गुड़गुड़। २. किसी बंद चीज में हवा के चलने से होनेवाला शब्द। जैसे—पेट में होनेवाली गुड़गुड़।

गुड़गुड़ाना—अ० [अनु०] गुड़गुड़ शब्द होना।

स० गुड़गुड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे—हुक्का गुड़गुड़ाना।

गुड़गुड़ाहट—स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना+हट (प्रत्य०)] गुड़गुड़ शब्द करने या होने की अवस्था या भाव। गुड़गुड़ा।

गुड़गुड़ी—स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना] १. बार-बार गुड़गुड़ शब्द होने की अवस्था या भाव। २. फरशी या और किसी प्रकार का हुक्का जिसमें तमाकू पीने के समय गुड़गुड़ शब्द होता है।

गुड़च—स्त्री० = गुरुच।

गुड़-धनिया—पुं० [हिं० गुड़+धनियाँ] गुड़ में मिलाये हुए धनिये के बीज जो शुभ अवसरों पर थोड़े-थोड़े खाये-खिलाये जाते हैं।

गुड़धानी—स्त्री० [हिं० गुड़+धान] १. भुने हुए गेहूँ को गुड़ में मिलाकर बनाया जानेवाला लड्डू। २. दे० 'गुड़-धनिया'।

गुड़ना—स० [देश०] डंडा इस तरह फेंकना कि वह अपने सिरों के बल पलटे खाते हुए कुछ दूर तक चला जाय।

स० दे० 'गुणना'।

† अ०=बजना। (राज०)

गुड़रु—पुं० [सं० गरुड़] एक प्रकार का पक्षी।

गुड़ल†—वि० दे० 'गँदला'।

गुड़लपण†—पुं०=गँदलापन। उदा०—पृथी पंक जलि गुड़लपण।—प्रिथीराज।

गुड़हर—पुं० [हिं० गुड़+हर] १. अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

२. एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ और फूल अरहर की तरह के होते हैं।

गुड़हल†—पुं०=गुड़हर।

गुड़ा—स्त्री० [सं० गुड़+टाप्] १. गुटिका। गोली। २. कपास। ३. थूहड़।

गुड़ाकू—पुं० [हिं० गुड़+तमाकू] गुड़ मिलाकर बनाया हुआ पीने का तमाकू।

गुड़ाकेश—पुं० [सं० गुड़ाका (निद्रा)-ईश, ष० त०] १. शिव। महादेव। २. अर्जुन।

गुड़ासा—पुं० [?] दे एक प्रकार का कीड़ा।

गुड़िया—स्त्री० [हिं० गुड्ड़ा का स्त्री० अल्पा० रूप] १. बच्चों के खेलने का एक प्रकार का छोटा खिलौना जो छोटी लड़की के रूप में कपड़े, रबड़ आदि का बना होता है।

पद—गुड़िया सा=बहुत छोटा, परन्तु खूब सजा हुआ। जैसे—गुड़िया-सा घर। **गुड़ियों का खेल**=बहुत ही छोटा और सहज काम।

मुहा०—गुड़िया सँवारना=अपने वित्त के अनुसार जैसे-तैसे लड़की का व्याह करना।

२. कोई सुंदर अथवा सजकर रहनेवाली निक्म्मी और मूर्ख लड़की।

स्त्री० [हिं० गोड़=पैर] छोटा पैर (जैसे—बच्चों का)। उदा०—छोटी छोटी गुड़ियाँ अँगुरियाँ छोटी।—सूर।

गुड़िला—पुं० [सं० गुड्, हिं० गुड्डा का पुराना रूप] १. मनुष्य की आकृति का पुतला। २. दे० 'गुड्डा'।

गुड़ी†—स्त्री० [सं० गुड़िका] १. कोई गोल कड़ी चीज। गाँठ। गुट्ठी। २. मन में छिपा हुआ द्वेष। गाँठ।

†स्त्री०=गुड्डी (पतंग)।

गुड़ीला†—वि० [हिं० गुड़] १. जिसमें गुड़ मिला हो अथवा जो गुड़ के योग से बना हो। २. गुड़ के से स्वादवाला।

गुड़ुच—स्त्री० =गुरुच।

गुडुरू†—पुं० [सं० कुंडल] १. कोई ऐसी मंडलाकार रचना जिसके बीच में छोटा गड्ढा हो। २. उक्त आकार की वह लकड़ी या लोहे का टुकड़ा जिसमें किवाड़ की चूल बैठाई जाती है। ३. छोटा गड्ढा। ४. एक प्रकार का पक्षी जो प्रातःकाल मधुर स्वर में तुही-तुही बोलता है। उदा०—तुही तुही कह गुडुरू खीहा।—जायसी।

गुडुवा—पुं० [?] [स्त्री० गुड़ुई] १. बड़ी गुड़िया। २. दे० 'गुड्डा'।

गुडूची—स्त्री० [सं०√गुड्+ऊचट्–ङीप्] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा—पुं० [सं० गुड=खेलने की गोली] [स्त्री० अल्पा० गुड़िया] १. कपड़े का बना हुआ पुतला जिसे लड़कियाँ खेलती हैं।

मुहा०—(किसी के नाम का) गुड्डा बनाना या बांधना=भांड़ों, मिरासियों आदि का किसी कंजूस को अपमानित या बदनाम करने के लिए उक्त प्रकार का गुड्डा बनाना और गली-गली उसकी निंदा करते फिरना।

२. उड़ाने के लिए पतले कागज की बड़ी गुड्डी या पतंग। ३. केवल देखने भर का, पर वस्तुतः अकर्मण्य या निकम्मा व्यक्ति। जैसे—कुसंस्कारों के गुड्डे। ४. बड़ी पतंग।

गुड्डी—स्त्री० [सं० गुरु–उड्डीन] १. बहुत पतले कागज का वह चौकोर टुकड़ा जो डोर या नख की सहायता से आकाश में उड़ाया जाता है। छोटा कनकौआ या पतंग। २. घुटने पर की हड्डी। चक्की।

मुहा०—(किसी की) हड्डी-गुड्डी तोड़ना=बहुत अधिक मारना-पीटना।

३. चिड़ियों के डैनों या परों की वह स्थिति जो उड़ने के कुछ पहले होती है। कुंदा। ४. एक प्रकार का छोटा हुक्का। ५. दे० 'गुड़िया'।

गुड्डू—पुं० [?] एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो धूल में गोलाकार घर बनाकर रहता है।

गुढ़ना†—अ० [हिं० गूढ़] छिपना। उदा०—बरुनी बन दृग गढ़नि में रही गुढ़ौ की लाज।—विहारी।

अ० [हिं० गुण] गुण सीखना या गुणों से युक्त होना। जैसे—तुम पढ़े तो हो, पर गुढ़े नहीं हो।

गुढ़ा†—पुं० [सं० गूढ़] जंगल में चोरों, डाकुओं आदि के छिपने का स्थान।

गुण—पुं० [सं०√गुण् (आमंत्रण)+अच्] १. किसी वस्तु की वह महत्वपूर्ण या विशिष्ट निजी विशेषता जिसके कारण, वह दूसरी वस्तुओं से अलग मानी तथा रखी जाती हो। २. किसी वस्तु का वह तत्त्व जिसके प्रभाव से खराबियाँ या बुराइयाँ दूर होती हों। गुणकारी या लाभदायक तत्त्व। जैसे—औषध का गुण। (क्वालिटी, प्रापर्टी) ३. किसी व्यक्ति की वह प्राकृतिक विशेषता जिसके कारण समाज में उसकी प्रशंसा होती हो अथवा होनी चाहिए।

मुहा०—(किसी का) गुण गाना=किसी के किये हुए उपकार या अच्छे कामों की खूब चर्चा करना। **गुण मानना**=उपकृत होने पर कृतज्ञता प्रकट करना। उदा०— मानूँ रे ननदिया मैं तेरा गुण मानूँ।—गीत।

४. किसी कला, विद्या, शास्त्र आदि में प्राप्त की जानेवाली निपुणता। प्रवीणता। ५. कला या विद्या। हुनर। ६. प्रकृति के अन्तर्गत मानी जानेवाली तीन प्रकार की वृत्तियाँ जो जीव-जंतुओं, मनुष्यों, वनस्पतियों आदि में पाई जाती हैं। यथा—सत्त्व, रज और तम।

विशेष—सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण सांख्य में कहे गये हैं। परन्तु योगशास्त्र में शम, दम और तितिक्षा ये तीनों गुण कहे गये हैं।

७. (उक्त वृत्तियों के आधार पर) तीन की संख्या का सूचक शब्द। ८. राजनीति में, परराष्ट्र के साथ व्यवहार करने के ६ ढंग–संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय। ९. संस्कृत व्याकरण में 'अ' 'ए' और 'ओ' स्वर। १०. साहित्य में वह तत्त्व जिससे काव्य की शोभा बढ़ती है। जैसे—ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि। ११. प्रकृति। १२ रस्सी या तागा। डोरा। १३. धनुष की डोरी।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो किसी संख्या के अंत में लगकर उसका उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—द्विगुण, त्रिगुण, चतुर्गुण आदि।

अव्यय के अनुसार। उदा०—इंगित जामै समय गुण, बरनहु दूत अलोभ।—केशव।

गुणक—पुं० [सं०√गुण्+ण्वुल्—अक] १. वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करे। (मल्टिप्लायर) २. मालाकार। माली।

गुण-कर—वि० [ष० त०] गुणकारी। लाभदायक।

गुणकरी—स्त्री० [सं० गुणकर+ङीप्] सबेरे के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जो किसी के मत से भैरव राग की और किसी के मत से हिंडोल राग की भार्या है।

गुणकली—स्त्री० =गुणकरी (रागिनी)।

गुणकार—पुं० [सं० गुण√कृ (करना) अण्] १. गुणवान्। गुणी। २. संगीतज्ञ। ३. रसोइया। ४. भीमसेन जो अज्ञातवास में रसोइए का काम करते थे।

गुण-कारक—वि० [ष० त०] गुण करनेवाला। फायदेमंद। लाभदायक।

गुणकारी (रिन्)—वि० [सं० गुण√कृ+णिनि] =गुणकारक।

गुण-गौरी—स्त्री० [तृ० त०] १. गौरी के समान गुणवाली सौभाग्यवती स्त्री। २. स्त्रियों का एक प्रकार का व्रत और पूजन। गनगौर (देखें)।

गुण-ग्राहक—पुं० [ष० त०] १. गुण को परखकर उसका आदर और सम्मान करनेवाला व्यक्ति। कदरदान। २. गुणियों का सम्मान करनेवाला।

गुणग्राही (हिन्)—वि० [सं० गुण√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] [स्त्री० गुणग्राहिणी] =गुण-ग्राहक।

गुणघाती (तिन्)—वि० [गुण√हन् (हिंसा) णिनि] गुण न मानकर उलटे अपकार करनेवाला। कृतघ्न।

गुणज—वि० [सं० गुण√जन् (उत्पन्न होना)+ड] (अंक) जिसका गुणा किसी विशेष दृष्टि या प्रकार से हो सकता हो। (मल्टीपुल्) जैसे—सार्वगुणज। (कामन मल्टीपुल्)

गुणज्ञ—वि० [सं० गुण√ज्ञा (जानना)+क] १. गुण को जानने और पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २. (व्यक्ति) जिसमें बहुत से गुण हों।

गुण-दोष—पुं० [द्व० स०] किसी वस्तु की अच्छी और बुरी बातें। अच्छाइयाँ और बुराइयाँ। (मेरिट्स)

गुण-धर्म—पुं० [द्व० स०] किसी पदार्थ में विशेष रूप से पाया जानेवाला उसका कोई गुण या धर्म। वस्तुगत विशेषता। (प्रापर्टी)

गुणन—पुं० [सं०√गुण्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० गुण्य, गुणीय, गुणित] १ गणित में, एक संख्या को दूसरी संख्या से गुणा करना। जरब देना। २. हिसाब करना। गिनना। ३. अनुमान, कल्पना या विचार करना। ४. उद्धरणी करना। रटना। ५. मनन करना। सोचना।

गुणन-फल—पुं० [ष० त०] वह संख्या जो एक संख्या को दूसरी संख्या से गुणन करने पर प्राप्त होती है। (प्राडक्ट)

गुणना—स० [सं० गुणन] १. गुणन या गुणा करना। जरब देना। २. मन में सोचना, समझना या विचार करना। गुनना।

गुणनिका—स्त्री० [सं०√गुण्+युच्—अन+कन्—टाप्] १. नाटक में पूर्वरंग। २. नृत्य की कला या विद्या। ३. रत्न। ४. हार। ५. शून्य।

गुणनीय—वि० [सं०√गुण्+अनीयर्] जिसका गुणन या गुणा हो सके अथवा किया जाने को हो।

गुणमें*—पुं० =गुणमोती।
वि० =गुणमय।

गुणमोती—पुं० [सं० गुण-मौक्तिक] एक प्रकार का बहुमूल्य मोती। सर्पमणि या गजमुक्ता की भाँति राजस्थानी साहित्य में आभा एवं सौन्दर्य की दृष्टि से इसका विशेष स्थान है। उदा०—गुणमोती मखतूल गुंण।—प्रिथीराज।

गुणवंत—वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] (व्यक्ति) जिसमें अनेक अच्छे गुण हों। गुण या गुणों से युक्त। गुणवान्।

गुण-वाचक—वि० [ष० त०] जो किसी चीज या बात का गुण या विशेषता सूचित करता हो। जैसे—गुणवाचक विशेषण, गुणवाचक संज्ञा।

गुण-वाद—पुं० [ष० त०] मीमांसा में अर्थवाद का एक भेद।

गुणवान् (वत्)—वि० [सं० गुण+मतुप्, वत्व] [स्त्री० गुणवती] (व्यक्ति) जो अनेक प्रकार के गुणों से युक्त हो। गुणी।

गुण-विधि—स्त्री० [ष० त०] मीमांसा में वह विधि जिसमें गुण-कर्म का विधान हो।

गुण-व्रत—पुं० [मध्य० स०] जैनियों में मूलव्रतों की रक्षा करनेवाले तीन व्रत—दिग्व्रत, भोगोपभोगनियम और अनर्थ-दंड-निषेध।

गुण-संग—पुं० [ष० त०] गुणों का पारस्परिक मेल या सामंजस्य।

गुण-सागर—वि० [ष० त०] (व्यक्ति) जिसमें बहुत-से अच्छे-अच्छे गुण हों। बहुत बड़ा गुणी।
पुं० एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है।

गुण-हीन—वि० [तृ० त०] जिसमें किसी प्रकार का या कोई गुण अथवा विशेषता न हो।

गुणांक—पुं० [गुण-अंक, ष० त०] गणित में वह राशि या संख्या जिससे किसी दूसरी राशि या संख्या (गुण्यक) को गुणा किया जाता है।

गुणा—पुं० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित की वह क्रिया जो यह जानने के लिए की जाती है कि किसी अंक या संख्या को एक से अधिक बार जोड़ने पर फल कितना होता है। जरब। (मल्टीप्लिकेशन) जैसे—यदि यह जानना हो कि ८ को लगातार ५ बार जोड़ने से कितना होता है तो ८ को ५ से गुणा करना पड़ेगा।

गुणाकर—वि० [गुण-आकर ष० त०] जिसमें अनेक गुण हों। बहुत बड़ा गुणवान्। गुणों की खान।

गुणाढ्य—वि० [गुण-आढ्य, तृ० त०] बहुत गुणोंवाला। गुण-पूर्ण।
पुं० पैशाची भाषा के एक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

गुणातीत—वि० [गुण-अतीत, द्वि० त०] १. गुणों से अलिप्त, परे और भिन्न। २. जिसका सत्त्व, रज आदि गुणों से कोई संबंध न हो और जो इन सब से परे हो। (परमात्मा या ब्रह्म का एक विशेषण।)
पुं० परमात्मा। ब्रह्म।

गुणानुवाद—पुं० [गुण-अनुवाद, ष० त०] किसी के अच्छे गुणों की चर्चा या वर्णन। गुण-कथन। तारीफ। प्रशंसा।

गुणान्वित—वि० [गुण-अन्वित, तृ० त०] गुणों से युक्त।

गुणालय—वि० [गुण-आलय, ष० त०,] बहुत से गुणोंवाला। गुणाकर।

गुणिका—स्त्री० [सं०√गुण्+इन्+क—टाप्] शरीर पर होनेवाली गाँठ या सूजन।

गुणित—भू० कृ० [सं०√गुण् (आवृत्ति)+क्त] जिसका गुणन किया गया हो। गुणा किया हुआ।

गुणी (णिन्)—वि० [सं० गुण+इनि] (व्यक्ति) जिसमें अनेक गुण हों। गुणों से युक्त।
पुं० १. कला-कुशल पुरुष। हुनरमंद। २. वह जिसमें विशेष या अलौकिक गुण या शक्ति हो। ३. झाड़-फूँक करनेवाला ओझा।

गुणीभूत—वि० [सं० गुण+च्वि√भू (होना)+क्त] १. मुख्य अर्थ से रहित। २. गौण बना हुआ।

गुणीभूत व्यंग्य—पुं० [कर्म० स०] काव्य में व्यंग्य का वह भेद या प्रकार

जिसमें अर्थ या तो रसों आदि का अंग होता है या काकु से आक्षिप्त या वाच्यार्थ का उपपादक होता है अथवा अर्थ अस्फुट रहता है। इसमें वाच्यार्थ ही प्रधान रहता है, व्यंग्य नहीं।

गुणेश्वर—पुं० [गुण-ईश्वर, ष० त०] १. तीनों गुणों पर प्रभुत्व रखनेवाला। परमेश्वर। ईश्वर। २. चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत—वि० [गुण-उपेत, तृ० त०] १. गुणों से युक्त। २. गुणवान्। गुणी।

गुण्य—पुं० [सं० गुण+यत्] १. वह संख्या जिसका गुणन करना हो अथवा किया जा सकता हो। २. गुणी।

गुण्यांक—पुं० [गुण्य-अंक कर्म० स०] वह संख्या या राशि जिसे गुणा किया जाय।

गुतेला—पुं० [?] एक प्रकार की मछली। बंगू।

गुत्ता—पुं० [देश०] १. लगान पर खेत जोतने-बोने आदि के लिए खेतिहर को देने का व्यवहार। २. लगान।

गुत्थ—पुं० [हिं० गुथना] १. हुक्के के नैचे पर लपेटे हुए सूत की वह बुनावट जो चटाई की बुनावट की तरह होती है। २. उक्त प्रकार की बुनावटवाला नैचा।

गुत्थम-गुत्था—पुं० [हिं० गुथना] १. दो जीवों, पशुओं या व्यक्तियों में लड़ाई होते समय की वह स्थिति जिसमें वे एक दूसरे को कसकर दबाये अथवा पकड़े होते हैं और नीचे गिराने या पटकने की चेष्टा करते हैं। २. उलझाव। फँसाव।

गुत्थी—स्त्री० [हिं० गुथना] १. धागे, रस्सी आदि का उलझा हुआ रूप। २. किसी विषय, समस्या आदि का उलझा हुआ ऐसा रूप जिसका सहसा निराकरण न हो सके।

मुहा०—**गुत्थी सुलझाना**=कठिन समस्या की मीमांसा करना। कठिनाइयों से बचने का मार्ग निकालना।

गुत्स—पुं० [सं०√गुध् (वेष्टित करना)+स, कित्] दे० 'गुच्छ'।

गुथना—अ० [सं० गुत्सन, प्रा० गुत्थन] १. धागे, रस्सी आदि के अंगों का आपस में उलझ जाना। २. गूँथा या पिरोया जाना। ३. भद्दी तरह से सीया जाना। ४. लड़ते समय एक दूसरे को कसकर दबाना या पकड़ना।
पुं० गुलेल में लगी हुई वह रस्सी जिसकी सहायता से ढेला फेंका जाता है।

गुथवाना—स० [हिं० गूँथना का प्रे०] गूथने का काम दूसरे से करवाना।

गुथुवाँ—वि० [हिं० गुथना] १. उलझा हुआ। २. गूथा हुआ।

गुद—स्त्री० [सं०√गुद् (खेलना)+क] मल-द्वार। गुदा।

गुदकार—वि०=गुदकारा।

गुदकारा—वि० [हिं० गूदा वा गुदार] १. जिसमें गूदा हो। गूदे से भरा हुआ। २. मुलायम और लचीला। गुदगुदा।

गुद-कील—पुं० [ष० त०] अर्श या बवासीर नाम का रोग।

गुदगर—वि०=गुदकारा।

गुद-गुदा—वि० [हिं० गूदा] [स्त्री० गुदगुदी] १. (गूदेदार वस्तु) जो छूने पर मुलायम तथा भली प्रतीत हो। २. (ऐसी वस्तु) जिसमें कोई मुलायम चीज भरी हुई हो। ३. मांसल।

गुदगुदाना—अ० [हिं० गुदगुदा] १. किसी के कोमल या मांसल अंगों को उँगलियों से इस प्रकार खुजलाना या सहलाना कि वह हँसने लगे। गुदगुदी करना। २. विनोद या परिहास के लिए छेड़ना। ३. किसी के मन में किसी बात की इच्छा या लालसा उत्पन्न करना।

गुदगुदाहट—स्त्री० [हिं० गुदगुदाना+आहट (प्रत्य०)] १. गुदगुदाने की क्रिया या भाव। २. मन में होनेवाली किसी बात की हलकी इच्छा। ३. दे० 'गुदगुदी'।

गुदगुदी—स्त्री० [हिं० गुदगुदाना] १. किसी द्वारा गुदगुदाये जाने से शरीर में होनेवाली हलकी खुजली या सुरसुरी। २. हलकी इच्छा या वासना। ३. उल्लास। ४. संभोग की इच्छा या कामना।

गुद-ग्रह—पुं० [ष० त०] कोष्ठबद्धता का रोग।

गुदड़िया—पुं० [हिं० गूदड़] १. गुदड़ी पहनने या ओढ़नेवाला। २. गूदड़ या रद्दी चीज़ें खरीदकर बेचनेवाला व्यापारी। ३. खेमा, दरी, फर्श आदि चीजें किराये पर देनेवाला व्यापारी।
वि० गुदड़ी या गूदड़ संबंधी।

गुदड़ी—स्त्री० [हिं० गूथना=मोटी सिलाई करना] १. फटे-पुराने कपड़ों की कई तहों को एक में सीकर बनाया हुआ ओढ़ना या बिछावन। २. टूटी-फूटी तथा फटी-पुरानी वस्तुओं की संज्ञा। ३. वह स्थान जहाँ पर फटी-पुरानी तथा टूटी-फूटी वस्तुएँ मिलती हों।

पद—**गुदड़ी बाजार**=वह बाजार जिसमें पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुएँ बिकती हों। **गुदड़ी में का लाल**=(क) तुच्छ स्थान में छिपी या दबी हुई उत्तम वस्तु। (ख) ऐसा गुणी जिसके रूप-रंग, वेष आदि से उसके गुणी होने का पता न चलता हो।

गुदनहारी—स्त्री०=गोदनहारी।

गुदना—अ० [हिं० गोदना का अ०] गोदा जाना।
†पुं० दे० 'गोदना'।

गुद-निर्गम—पुं० [ष० त०] गुदा से काँच बाहर निकलने का रोग।

गुदनी—स्त्री० दे० 'गोदनी'।

गुद-पाक—पुं० [ष० त०] गुदा के पक जाने का रोग।

गुद-भ्रंश—पुं० [ष० त०] गुदा से काँच निकलने का रोग।

गुदमा—पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा और मुलायम पहाड़ी कंबल।

गुदर*—पुं० [फा० गुज़र] १. निर्वाह। २. निवदन। प्रार्थना। ३. निवेदन आदि के लिए किसी की सेवा में होनेवाली उपस्थिति। हाजिरी।

गुदरना*—अ० [फा० गुज़र+हिं० ना० (प्रत्य०)] १. गुजरना। २. सेवा में उपस्थित होना। ३. अलग रहना या होना।
स० दे० 'गुदरानना'।

गुदरानना—स० [फा० गुज़र+हिं० ना (प्रत्य०)] १. किसी के आगे रखना या पेश करना। २. निवेदन करना। ३. भेंट करना।

गुदरिया—पुं० [देश०] एक प्रकार का नीबू।
स्त्री०=गुदड़ी।

गुदरी—स्त्री०=गुदड़ी।

गुदरैन†—स्त्री० [हिं० गुदरना] १. याद किये हुए पाठ को दोहराना या सुनाना। २. परीक्षा।

गुदवाना—स० [हिं० गोदना] गोदने का काम दूसरे से कराना। गुदाना। जैसे—गोदना गुदवाना।

गुद-स्तंभ—पुं० [ष० त०] पेट में से मल का जल्दी न निकलना। मलावरोध। कब्जियत।

गुदांकुर—पुं० [गुद-अंकुर, स० त०] १. गुदा में निकलनेवाले बवासीर के दाने या मसे। २. बवासीर।

गुदा—स्त्री० [सं० गुद] वह इंद्रिय जिससे प्राणी मल त्याग करते हैं। मलद्वार।

गुदाज—वि० [फा०] १. गदराया हुआ। गुदकारा। २. गूदेदार। ३. मांस से भरा हुआ। मांसल। मोटे दलवाला। ४. खूब चमकीला और तेज (रंग)।

गुदाजरंग—पुं० [फा०] चित्रकला में, खूब चमकीला रंग।

गुदाना—स०=गुदवाना।

गुदाम—पुं० दे० 'गोदाम'।

†पुं० दे० 'बुताम' (बटन)।

गुदार†—वि० [हिं० गूदा] १. जिसमें अधिक गूदा हो। गूदेदार। २. मांसल।

गुदारना*—स० [हिं० गुदरना का स० रूप] १. गुजारना। २. सेवा में उपस्थित करना। ३. अलग करना। ४. छोड़ देना। ५. पढ़कर सुनाना।

गुदारा—पुं० [फा० गुजारा] १ नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। २. वह स्थान जहाँ से लोग नाव पर सवार होते या उतरते हैं।

मुहा०—गुदारे लगना=(क) किनारे लगना। (ख) कार्य पूरा या समाप्त होना।

३. दे० 'गुजारा'।

वि०=गुदार।

गुदियारा†—वि०=गुदकारा।

गुदी—स्त्री० [देश०] नदी के किनारे का वह स्थान जहाँ टूटी-फूटी नावों की मरम्मत होती तथा नई नावें बनाई जाती हैं।

गुदुरी†—स्त्री० [हिं० गदराना] १. मटर की फली। २. मटर तथा चने की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

गुदौष्ठ—पुं० [गुद-ओष्ठ, ष० त०] गुदा के मुख पर का मांस।

गुद्दा†—पुं० [देश०] वृक्ष की मोटी डाली।

पुं०=गूदा।

पुं०=कुंदा (लकड़ी का)।

गुद्दी†—स्त्री० [हिं० गूदा] १. किसी फल के बीज के भीतर का गूदा। गिरी। मगज। २. सिर का पिछला भाग।

मुहा०—आँखें गुद्दी में होना या चला जाना=ऐसी मानसिक स्थिति होना जिसमें कोई चीज ठीक तरह से दिखाई न दे अथवा कोई बात समझ में न आवे। (परिहास और व्यंग्य) **गुद्दी से जीभ खींचना**=(क) जवान खींचकर निकाल लेना। (ख) बहुत कड़ा दंड देना।

पद—गुद्दी की नागिन=गरदन के पीछे बालों की भौंरी जो बहुत अशुभ मानी जाती है।

३. हथेली पर का गुदगुदा मांसल अंश। गद्दी।

गुन*—पुं० [सं० गुण] १. गुण। २. ऐसा कार्य जिसे पूरा करने के लिए विशिष्ट गुण या योग्यता अपेक्षित हो। उदा०—काहू नर सों यह गुन होई।—जायसी।

गुनगुना—वि० [अनु०] (व्यक्ति) जो नाक से बोलता हो।

वि०=कुनकुना (कदुष्ण)।

गुनगुनाना—अ० [अनु०] १. भौंरों का गुन गुन शब्द करना। २. इस प्रकार बोलना कि कुछ स्वर नाक से भी निकले। ३. बहुत धीरे-धीरे और अस्पष्ट रूप में गाना।

गुनधुन—स्त्री० [हिं० गुनना+धुन] सोच-विचार। चिंतन।

गुनना—अ० [सं० गुणन] १. गुणों आदि से युक्त होना। जैसे—पढ़ना और गुनना। २. मन में सोच-विचार करना। कुछ समझने के लिए सोचना। ३. किसी को कुछ महत्त्व का समझना। जैसे—वह तुम्हें गुनता है।

स० १. कथन या वर्णन करना। २. गुणा करना।

*पुं० गुनी या विचारी हुई बात।

गुनमंत—वि० =गुणवंत।

गुनरखा—पुं० =गोनरखा।

गुनवंत†—वि०=गुणवान्।

गुनवान—वि०=गुणवान्।

गुनह—पुं० [फा०] 'गुनाह' का संक्षिप्त रूप। जैसे—गुनहगार।

गुनहगार—वि० [फा०] १. जिसने कोई गुनाह किया हो। पापी। २. अपराधी। ३. दोषी।

गुनहगारी—स्त्री० [फा०] गुनहगार होने की अवस्था या भाव।

गुनही†—पुं०=गुनहगार।

वि० दे० 'गुनहगार'।

गुना—प्रत्य० [सं० गुणन] १. एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के अंत में यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि कोई परिमाण, मात्रा या संख्या निरंतर कई बार जोड़ने पर कितनी होती है। जैसे—चौगुना, दस गुना आदि।

पुं० गणित में गुणन करने की क्रिया। गुणन।

†पुं० [?] टिकिया के आकार का एक प्रकार का मीठा पकवान।

गुनावन†—पुं० [सं० गुणन] १. मन में किसी बात पर सोच-विचार करने की क्रिया या भाव। उदा०—लखत भूप यह साज मनहिं मन करत गुनावन।—रत्ना०। २. आपस में होनेवाला परामर्श। सलाह-मशविरा।

गुनाह—पुं० [फा०] धर्म, विधि, शासन आदि की आज्ञा या मान्यता के विरुद्ध किया हुआ ऐसा आचरण जिसके कारण उसके कर्त्ता को दण्ड का भागी बनना पड़ता है। अपराध। पाप।

गुनाहगार—पुं०=गुनहगार।

गुनाही—वि० [फा० गुनाह] अपराधी या दोषी। गुनहगार।

गुनिया—पुं० [हिं० गुणी] वह जिसमें कोई विशिष्ट गुण हो। गुणवान्। गुणी।

स्त्री० [हिं० कोण] १. वह उपकरण या औजार जिससे बढ़ई, राज आदि कोने की सीध नापते हैं। २. दे० 'कोनिया'।

†पुं० [हिं० गून] नाव की गून खींचनेवाला मल्लाह। गुनरखा।

गुनियाला*—वि० [हिं० गुण] गुणोंवाला। गुणी। उदा०—प्रीति अड़ी है तुज्झ से बहु गुनियाला कंत।—कबीर।

गुनी—वि०, पुं०=गुणी।

वि० [सं० गुण] जिसमें डोरी या रस्सी लगी हो। उदा०—बाँधे बाँधे मोहन गुनी सुनी न ऐसी प्रीति।—घनानंद।

गुनीला—वि० [हिं० गुणी] १. जिसमें गुण हों। गुणवान्। २. गुणन या गुणा करनेवाला। ३. अपने गुणों के द्वारा लाभ पहुँचाने या हित करनेवाला।

गुनोबर—पुं० [फा० सनोबर] देवदार या सनोबर की जाति का पेड़।

गुन्ना—पुं० [अ० गुन्नः] अनुस्वार का वह आधा उच्चारण जो हिंदी में अर्द्ध चंद्र से सूचित होता है। जैसे—रवाँ में नून (अनुस्वार) गुन्ना है।

गुन्नी—स्त्री० [सं० गुण, हिं० गून] रस्सी को बटकर बनाया हुआ एक प्रकार का कोड़ा जिससे व्रज में होली के अवसर पर लोग एक दूसरे को मारते हैं।

गुपंति—वि०=गुप्त।

स्त्री०=गुप्ति।

गुपचुप—क्रि० वि० [हिं० गुप्त+चुप] बिना किसी से कुछ कहे या बतलाए हुए।

पुं० १. गुलाब जामुन की तरह की एक प्रकार की मिठाई। २. लड़कों का एक खेल जिसमें वे गाल या मुँह फुलाकर धीरे से उस पर मुक्का मारते हैं। ३. एक प्रकार का खिलौना।

गुपाल*—पुं०=गोपाल।

गुपुत*—वि०=गुप्त।

गुप्त—वि० [सं०√गुप् (छिपाना, रक्षा करना)+क्त] १. (कार्य या व्यवहार) जो दूसरों की जानकारी से छिपाकर किया जाय। जैसे—गुप्त दान, गुप्त मंत्रणा। २. (गुण, वस्तु आदि) जिसके संबंध में लोग परिचित न हों। जैसे—गुप्त मार्ग। ३. जिसे जानना कठिन हो। गूढ़। दुरूह। ४. जिसका पता ऊपर से देखने पर न चले। जैसे—गुप्त भार। ५. छिपाकर रखा हुआ। रक्षित।

पुं० १. मगध का एक प्राचीन राजवंश जिसने सारे उत्तरीय भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया था। (ई० चौथी-पाँचवीं शताब्दी) २. वैश्यों के नाम के साथ लगनेवाला अल्ल। जैसे—कृष्णदास गुप्त।

गुप्तक—वि० [सं० गुप्त से] किसी चीज को छिपा तथा सँभालकर रखनेवाला रक्षक।

गुप्त-काशी—स्त्री० [कर्म० स०] हरिद्वार और बदरीनाथ के बीच में पड़नेवाला एक तीर्थ।

गुप्त-चर—पुं० [कर्म० स०] १. प्राचीन भारत में वह व्यक्ति जो गुप्त रूप से दूसरे राज्यों के भेद जानने के लिए इधर-उधर भेजा जाता था। २. जासूस। भेदिया।

गुप्त-दान—पुं० [कर्म० स०] ऐसा दान जो अपना नाम, पता और दान की वस्तु का मूल्य, स्वरूप आदि बिना किसी पर प्रकट किये हुए दिया जाय।

गुप्ता—स्त्री० [सं० गुप्त+टाप्] १. साहित्य में, वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष से अपना संबंध या संभोग छिपाने का प्रयत्न करती हो। २. रखी हुई स्त्री। रखेली।

गुप्ति—स्त्री० [सं०√गुप्+क्तिन्] १. गुप्त रखने अर्थात् छिपाने की क्रिया या भाव। छिपाव। २. रक्षा करने या रक्षित रखने की क्रिया या भाव। ३. तंत्र में गुरु से मंत्र लेने के समय का एक संस्कार जो मंत्र को गुप्त रखने के उद्देश्य से किया जाता है। ४. कारागार। ५. गुफा। ६. योग का यम नामक अंग।

गुप्ती—स्त्री० [सं० गुप्त] १. कुछ अस्त्रों में रहनेवाली वह व्यवस्था जिसमें आघात करनेवाली चीज किसी आवरण में छिपी रहती है और खटका दबाने पर बाहर निकल आती है। २. वह छड़ी जिसके अंदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार छिपी रहती है।

गुप्तीदार—वि० [हिं० गुप्ती+फा दार (प्रत्य०)] (अस्त्र) जो गुप्ती-वाली प्रक्रिया से बना हो। जैसे—गुप्तीदार कुलंग, छड़ी या फरसा।

गुप्तोत्प्रेक्षा—स्त्री० [सं० गुप्त-उत्प्रेक्षा, कर्म० स०] उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद जिसमें 'मानों' 'जानों' आदि सादृश्यवाचक शब्द नहीं होते। प्रतीयमाना उत्प्रेक्षा।

गुप्फा—पुं० [सं० गुम्फ] गुच्छा।

गुफा—स्त्री० [सं० गुहा] जमीन अथवा पहाड़ के अंदर का गहरा तथा अँधेरा गड्ढा। कंदरा।

गुफ़्त—वि० [फा०] कहा हुआ।

स्त्री० उक्ति। कथन।

गुफ़्तगू—स्त्री० [फा०] दो पक्षों में होनेवाली साधारण बातचीत। वार्तालाप।

गुफ़्तार—स्त्री० [फा०] १. बात-चीत। २. बात-चीत करने का ढंग।

गुबरैला—पुं० [हिं० गोबर+ऐला (प्रत्य०)] सड़े या सूखे हुए गोबर में पड़ने या रहनेवाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

गुबार—पुं० [अ०] १. गर्द। धूल।

पद—गर्द-गुबार=हवा में उड़नेवाली धूल और मिट्टी।

२. मन में रहनेवाला दुर्भाव या मैल।

मुहा०—(मन का) गुबार निकालना=अप्रिय तथा कटु बातें कहकर मन का क्रोध या दुःख कम करना।

३. आँखों की वह अवस्था जिसमें चीजें धुँधली दिखाई देती हैं।

गुबारा—पुं० दे० 'गुब्बारा'।

गुबिंद—पुं०=गोविन्द।

गुब्बा—पुं० [देश०] रस्सी में डाला हुआ फंदा। (लश०)

गुब्बाड़ा—पुं०=गुब्बारा।

गुब्बार—पुं० १=गुबार। २. =अफशाँ।

गुब्बारा—पुं० [हिं० कुप्पा] १. कागज आदि का बना हुआ वह गोलाकार उपकरण जिसके बीच में जलता हुआ लत्ता बाँधने से उसके धूएँ के जोर से वह आकाश में उड़ने लगता है। २. रबड़ की बनी हुई एक प्रकार की थैली जिसमें हवा से कोई हलकी गैस भरने से वह हवा में उड़ने लगती है। ३. हवा से भरी हुई उक्त आकार की वह थैली जिसकी सहायता से सैनिक लोग हवाई जहाजों पर से जमीन पर उतरते हैं। छतरी। ४. गोले के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी जो ऊपर आकाश की ओर फेंकने पर फट जाती है।

गुभीला—पुं० [हिं० गुह=मल] पेट के अंदर का सूखा हुआ मल। गोटा। सुद्दा।

गुम—वि० [फा०] १. जो आँखों के सामने न हो। । छिपा हुआ। अप्रकट। गुप्त। २. जो भूल आदि के कारण हाथ से निकल गया हो और न मिल रहा हो। खोया हुआ। ३. जिसका पता न हो या न लगता हो। ४. जो ख्यात या प्रसिद्ध न हो। जैसे—गुमनाम।

पुं० ऐसी वातावरणिक स्थिति जिसमें हवा न चल या न बह रही हो।

पुं० [?] समुद्र की खाड़ी। (लश०)

गुमक—स्त्री०=गमक।

गुमकना—अ० [सं० गम] किसी स्थान में शब्द का गूँजना।

गुमका†—पुं० [देश०] डंठल या भूसी से दाना अलग करने का काम।

गुमची†—स्त्री०=घुँघची।

गुमजी—स्त्री०=गुमटी।

गुमटा—पुं० [सं० गुंबा+टा (प्रत्य०)] १. वह गोल सूजन जो माथे या सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमी। २. कोई अर्द्ध-गोलाकार उभार। ३. कपास के डोडे नष्ट करनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

गुमटी—स्त्री० [फा० गुंबद] १. मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी की छत जो शेष भाग से अधिक ऊपर उठी हुई होती है। २. रेलवे लाइन के किनारे कहीं-कहीं बना हुआ वह छोटा गोलाकार और गुंबद-नुमा कमरा जिसमें खलासी रहता है।

पुं० जहाज या नाव में का पानी वाहर फेंकनेवाला खलासी या मल्लाह।

पुं० [हिं० गुमटा का अल्पा० रूप] छोटा गुमटा।

गुमना†—अ० [फा० गुम] गुम हो जाना। खो जाना।

स० गुम करना। खो देना।

गुमनाम—वि० [फा०] १. जिसे या जिसका नाम कोई न जानता हो। अप्रसिद्ध। जैसे—गुमनाम आदमी या वस्ती। २. जिसमें किसी का नाम न लिखा हो। बिना नाम का। जैसे—गुमनाम पत्र, गुमनाम शिकायत।

गुमर—पुं० [फा० गुबार] १. अभिमान। घमंड। शेखी। २. मन में छिपा हुआ दुर्भाव या द्वेष। गुबार।

गुमराह—वि० [फा०] [भाव० गुमराही] जो ठीक या सीधा रास्ता भूलकर इधर-उधर चला गया हो। भटका या भूला हुआ। पथ-भ्रष्ट।

गुमराही—स्त्री० [फा०] गुमराह होने की अवस्था या भाव। पथ-भ्रष्टता।

गुम-सुम—वि० [फा० गुम+अनु० सुम] १. जो कुछ भी बोल-चाल न रहा हो। २. जो बिलकुल हिल-डोल न रहा हो।

क्रि० वि० बिलकुल चुप-चाप और बिना किसी को जतलाये हुए।

गुमान—पुं० [फा०] १. अनुमान। २. कल्पना। ३. अभिमान। घमंड। ४. अनुमान या कल्पना के आधार पर किया जानेवाला संदेह। शक।

गुमाना†—स० [फा० गुम=खोया हुआ] १. गुम करना। खोना। २. हाथ से निकल जाने देना। गँवाना।

अ०=गुमना (गुम होना)।

गुमानी—वि० [हिं० गुमान] गुमान करनेवाला। अभिमानी। घमंडी।

गुमावण—वि० [हिं० गुम] १. गुम करने या खोनेवाला। २. खराब या नष्ट करनेवाला। उदा०—काय कलाली छल कियो, सेज गुमावण रंग।—कविराजा सूर्यमल।

गुमाश्ता—पुं० [फा० गुमाश्तः] वह जो किसी बड़े व्यापारी या कोठीवाल की ओर से वहीखाता लिखने या माल खरीदने और बेचने का काम करता हो।

गुमाश्तागीरी—स्त्री० [फा०] गुमाश्ते का काम या पद।

गुमिटना†—अ० [सं० गुम्फित] लिपटना।

स० लपेटना।

गुम्मट—पुं० १. =गुंवद। २.=गुमटा।

गुम्मर†—पुं०=गुमटा।

गुम्मा—पुं० [देश०] वड़ी और मोटी ईंट।

वि० [हिं० गुम] बिलकुल गुम-सुम या चुप रहनेवाला। चुप्पा।

गुरँब—पुं०=गुडंबा। उदा०—औभा अंब्रित गुरँब गरेठा।—जायसी।

गुरंबा†—पुं० दे० 'गुडंबा'।

गुरंभर*—पुं० [हिं० गुडंबा] मीठे आम का पेड़।

गुर—पुं० [सं० गुरुमंत्र] १. वह अमोघ साधन या सूत्र जिससे कोई कठिन काम निश्चित रूप से चटपट तथा सरलता से संपन्न होता हो। २. बहुत अच्छी युक्ति।

†पुं० [सं० गुण] तीन गुणों के आधार पर तीन की संख्या। (डिं०)

†पुं०=गुरु।

पुं०=गुड़।

गुरखई†—स्त्री० [?] जमीन रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें रेहनदार उसकी तीन चौथाई मालगुजारी देता है और एक चौथाई महाजन देता है।

गुरखाई†—स्त्री० = गुरखई।

गुरगा—पुं० [सं० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १. गुरु का अनुगामी। चेला। शिष्य। २. टहलुआ। दास। सेवक। ३. अनुचर। ४. जासूस। भेदिया।

गुरगाबी—पुं० [फा०] एक प्रकार का देशी जूता।

गुरच—स्त्री० =गुरुच।

गुरचना†—अ० [हिं० गुरुच] सिकुड़कर गुरुच की बेल की तरह टेढ़ा-मेढ़ा होना और आपस में उलझ जाना।

गुरचियाना—अ०=गुरचना।

गुरची†—स्त्री० [हिं० गुरुच] १. सिकुड़न। बल। २. डोरे आदि के उलझने या फँसने से पड़नेवाली गाँठ या गुत्थी।

गुरचों†—स्त्री० [अनु०] आपस में धीरे-धीरे होनेवाली बात-चीत। काना-फूसी।

गुरज*—पुं० [फा० गुर्ज] १. किसी भवन, मीनार आदि का ऊपरी गोलाकार भाग। गुंबज। उदा०—सोभित सुवरन बरन मैं उरज गुरज के रूप।—मतिराम। २. एक प्रकार की गदा। गुर्ज।

गुरजा—पुं० [देश०] लवा या लोवा नामक पक्षी।

गुरझन*—स्त्री० [सं० अवरुंधन, पुं० हिं० उरझन] १. पेंच की बात। उलझन। २. ग्रंथि। गाँठ।

गुरझना†—अ०=उलझना।

गुरझाना†—स०=उलझाना।

गुरथ्य—पुं० [सं० गुरु+अर्थ] गंभीर, बहुत बड़ा या महत्त्वपूर्ण अर्थ।

गुरदा—पुं० [फा० गुर्दः] १. रीढ़दार जीवों के पेट के अंदर के वे दो अंग जो खाये हुए पदार्थों से बननेवाला रक्त साफ करते हैं और बचे हुए तरल पदार्थ को पेशाब के रूप में नीचे मूत्राशय में भेजते हैं। (किडनी) २. साहस। हिम्मत। ३. एक प्रकार की छोटी तोप। ४. लोहे का एक प्रकार का बड़ा कलछा जिससे पकाते समय गुड़ चलाया जाता है।

गुरदाह†—पुं०=गुरदा (छोटी तोप)।

गुरदिल—पुं० [देश०] १. जलाशयों के किनारे रहने तथा मछलियाँ खानेवाला किलकिला की जाति का पक्षी। बदामी। २. कचनार।

गुरना†—अ०=घुलना। उदा०—गुरि गुरि आपु हेराई जौं मुएहु न छाँड़ै पास।—जायसी।

गुरनियालू—पुं० [देश०] जमीकंद, रतालू आदि की जाति का एक प्रकार का कंद।

गुरबत—स्त्री० [अ०] १. विदेश का निवास। प्रवास। २. यात्रा-काल में पथिक की दीन स्थिति। निस्सहाय होने की अवस्था। ३. उक्त अवस्था के फलस्वरूप होनेवाली मनुष्य की परवशता तथा विवशता।

गुरबरा—पुं० [हिं० गुड़+बरा] [स्त्री० अल्पा० गुरबरी] १. गुड़ डालकर पकाया हुआ मीठा बड़ा। २. गुड़ के घोल में डाला हुआ बड़ा।

गुरबिनी*—स्त्री० [सं० गुर्विणी] १. गुरु-पत्नी। २. गर्भवती स्त्री।

गुरमुख—वि० [हिं० गुरु+मुख] जिसने गुरु से मंत्र लिया हो। दीक्षित।

गुरमुखी—स्त्री० [सं० गुरु+मुख+हिं० ई (प्रत्य०)] पंजाब में प्रचलित देवनागरी लिपि का वह रूप जिसे सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने चलाया था।

गुरम्मर—पुं० [हिं० गुड़+अंब] १. गुड़ की तरह मीठे फलोंवाला आम का पेड़। २. दे० 'गुड़ंबा'।

गुरल—पुं० [?] भूरे रंग की एक प्रकार की पहाड़ी बकरी जिसे कश्मीर में रोम और असम में छागल कहते हैं और जिसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है।

गुरवनी—स्त्री०=गुर्विणी (गर्भवती)।

गुरवी*—वि० [सं० गर्व] अभिमानी। घमंडी।

गुरसल—पुं० [देश०] किलहँटी या गिलगिलिया नामक पक्षी।

गुरसी†—स्त्री०=गोरसी।

गुरसुम—पुं० [देश०] सोनारों की एक प्रकार की छेनी।

गुरहा—पुं० [देश०] १. छोटी नावों के अंदर की ओर दोनों सिरों पर जड़े हुए तख्ते जिनमें से एक पर मल्लाह बैठता है और दूसरे पर सवारियाँ बैठती हैं। २. एक प्रकार की छोटी मछली।

गुराई†—स्त्री० [?] तोप लादने की गाड़ी।

स्त्री०=गोराई (गोरापन)। उदा०—साँवरे छैल छुओगे जु मोहि तो गोरे गात गुराई न रैहै।

गुराउ†—पुं०=गोरापन।

गुराव—पुं० [देश०] १. तोप लादने की गाड़ी। २. वह नाव जिसमें एक ही मस्तूल हो।

वि० [सं० गुरु] १. बहुमूल्य। उदा०—सुनि सौमेस बधाइ दिय, है गै चीर गुराव।—चंदवरदाई। २. बड़ा या भारी।

†पुं०=गुराई।

पुं० [हिं० गुरिया] १. चारा काटने का काम। २. चारा काटने का गँड़ासा।

गुरायसु*—स्त्री० [सं० गुरु+हिं० आयसु] गुरुओं या बड़े लोगों की आज्ञा या आदेश।

गुरिंद†—पुं० [फा० गुर्ज] गदा। (क्व०)

गुरिंदा—पुं० [फा० गोयंदा] जासूस। भेदिया।

गुरि—स्त्री०=गुर (युक्ति)।

गुरिग*—स्त्री०=गोरी।

गुरिय*—स्त्री०=गोरी।

गुरिया—स्त्री० [सं० गुटिका] १. धातु, लकड़ी, शीशे आदि का वह छोटा छेददार दाना जिसे माला में पिरोते हैं। मनका। २. किसी वस्तु का छोटा अंश। टुकड़ा। ३. मछली के मांस का टुकड़ा।

स्त्री० [देश०] १. दरी बुनने के करघे की वह बड़ी लकड़ी जिसमें बै का बाँस लगा रहता है। झिल्लन। २. पाटे या हेंगे की वह रस्सी जो बैलों की गरदन के पास जूए के बीच में बाँधी जाती है।

गुरिल्ला†—पुं०=गोरिल्ला।

गुरीरा*—वि० [हिं० गुड़+ईरा (प्रत्य०)] १. जिसमें गुड़ की-सी मिठास हो। २. उत्तम। बढ़िया।

गुरु—वि० [सं०√गॄ (उपदेश देना)+कु] १. (वस्तु) जो तौल या भार में अधिक हो। वजनी। जैसे—गुरु भार। २. अधिक लंबाई-चौड़ाई या विस्तारवाला। ३. (शब्द या स्वर) जिसके उच्चारण या निर्वहण में किसी नियत मान से दूना समय लगता हो। जैसे—गुरु अक्षर, गुरु मात्रा। ४. महत्त्वपूर्ण। जैसे—गुरु अर्थ। ५. बल, बुद्धि, वय, विद्या आदि में बड़ा और फलतः आदरणीय या वंदनीय। जैसे—गुरु-जन। ६. कठिन। मुश्किल। जैसे—गुरु-कार्य। ७. कठिनता से अथवा देर में पकने या पचनेवाला। जैसे—गुरु-पाक।

पुं० [स्त्री० गुरुआनी] १. विद्या पढ़ाने या कला आदि की शिक्षा देनेवाला आचार्य। शिक्षक। उस्ताद। २. यज्ञोपवीत कराने और गायत्री मंत्र का उपदेश देनेवाला आचार्य। ३. देवताओं के आचार्य और शिक्षक बृहस्पति। ४. बृहस्पति नामक ग्रह। ५. पुष्य नक्षत्र जिसका अधिष्ठाता देवता बृहस्पति ग्रह है। ६. छंदशास्त्र में, दो कलाओं या मात्राओंवाला अक्षर जिसका चिह्न ऽ है। जैसे—का, दा आदि। ७. संगीत में, ताल का वह अंश जिसमें एक दीर्घ या दो लघु मात्राएँ होती हैं और जिसका चिह्न ऽ है। ८. ब्रह्मा। ९. विष्णु। १०. महेश। शिव। ११. परमेश्वर। १२. द्रोणाचार्य। १३. कोई पूज्य और बड़ा व्यक्ति। १४. कुछ हठयोगियों के अनुसार शरीर के अन्दर का एक चक्र या कमल जो अष्टकमल से भिन्न और अतिरिक्त है।

गुरुआइन†—स्त्री०=गुरुआनी।

गुरुआई—स्त्री० [सं० गुरु+हिं० आई (प्रत्य०)] १. गुरु का कार्य, धर्म या पद। २. चालाकी। धूर्त्तता।

गुरुआनी—स्त्री० [सं० गुरु+आनी प्रत्य०] १. गुरु की पत्नी। २. विद्या सिखाने अथवा शिक्षा देनेवाली स्त्री। शिक्षिका।

गुरुइ—स्त्री०=गुर्वी (गर्भवती)।

वि०=गुरु (भारी)। उदा०—विरह गुरुइ खप्पर कै हिया।—जायसी।

गुरु-कुंडली—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष में वह कुंडली या चक्र जिसके द्वारा जन्म-नक्षत्र के अनुसार एक-एक वर्ष के अधिपति ग्रह का निरूपण होता है।

गुरु-कुल—पुं० [ष० त०] १. गुरु का घराना या वंश। २. गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का वह स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने पास रखकर शिक्षा देता हो। ३. उक्त के अनुकरण पर बननेवाला एक आधुनिक विद्यापीठ जिसमें विद्यार्थियों को प्राचीन सांस्कृतिक ढंग से शिक्षा देने के सिवा उनसे ब्रह्मचर्य आदि का पालन कराया जाता है।

गुरु-गंधर्व—पुं० [कर्म० स०] इन्द्रजाल के छः भेदों में से एक।

गुरु-गम—वि० [सं०+हिं०] १. गुरु के माध्यम से प्राप्त होनेवाला। जैसे—गुरु-गम ज्ञान। २. गुरु का बतलाया हुआ।

गुरु-गृह—पुं० दे० 'गुरु-कुल' २. और ३.।

गुरुघ्न—पुं० [स० गुरु√हन् (हिंसा)+क] गुरु अथवा किसी गुरुजन को मार डालनेवाला व्यक्ति, अर्थात् बहुत बड़ा पापी।

गुरुच—स्त्री० [सं० गुडूची] पेड़ों पर चढ़नेवाली एक प्रकार की मोटी लता जो बहुत कड़वी होती और प्रायः ज्वर आदि रोगों में दी जाती है। गिलोय।

गुरुच खाप—पुं० [?] एक उपकरण या औजार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलकर गोल करते हैं।

गुरुचांद्री—वि० [सं० गुरुचंद्रीय] जो गुरु और चन्द्रमा के योग से होता हो। जैसे–गुरुचांद्री योग।

गुरु-जन—पुं० [कर्म० स०] माता, पिता, आचार्य आदि पूज्य और बड़े लोग।

गुरुडम—पुं० [सं० गुरु+अं० प्रत्य० डम] दूसरों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए गुरु बनने का ढोंग रचना।

गुरु-तल्प—पुं० [ष० त०] १. गुरु की शय्या। २. गुरु की पत्नी। ३. गुरु (पूज्य और बड़ी) की स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग जो बहुत बड़ा पाप माना गया है।

गुरु-तल्पग—पुं० [सं० गुरुतल्प√गम् (जाना)+ड] गुरुतल्प नामक पाप करनेवाला व्यक्ति।

गुरुतल्पी (ल्पिन्)—पुं० [गुरुतल्प+इनि]=गुरु-तल्पग।

गुरुता—स्त्री० [सं० गुरु+तल्–टाप्] १. गुरु होने की अवस्था या भाव। २. भारीपन। ३. वड़प्पन। महत्ता।

गुरु-ताल—पुं० [ब० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

गुरु-तोमर—पुं० [कर्म० स०] तोमर छंद का वह रूप जो उसके प्रत्येक चरण के अन्त में दो मात्राएँ बढ़ाने से वनता है।

गुरुत्व—पुं० [सं० गुरु+त्व] १. गुरु होने की अवस्था या भाव। २. गुरु का कार्य या पद। ३. भारीपन। ४. वड़प्पन। महत्त्व। ५. पृथ्वी की वह आकर्षण-शक्ति जो अधर में के पदार्थों को अपनी ओर अर्थात् नीचे खींचती है। (ग्रैविटी)

गुरुत्व-केन्द्र—पुं० [ष० त०] पदार्थ विज्ञान में किसी पदार्थ के बीच का वह विन्दु जिस पर यदि उस पदार्थ का सारा विस्तार सिमट कर आ जाय तो भी उसके गुरुत्वाकर्षण में कोई अन्तर न पड़े। (सेन्टर ऑफ ग्रैविटी)

गुरुत्व-लम्ब—पुं० [ष० त०] किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खींची जानेवाली रेखा।

गुरुत्वाकर्षण—पुं० [सं० गुरुत्व-आकर्षण ष० त०] भौतिक शास्त्र में, वह शक्ति जिसके द्वारा कोई पिंड किसी दूसरे पिंड को अपनी ओर आकृष्ट करता है अथवा स्वयं उसकी ओर आकृष्ट होता है। पिंडों की एक दूसरे को आकृष्ट करने की वृत्ति। (ग्रैविटेशन)

गुरु-दक्षिणा—स्त्री० [मध्य० स०] प्राचीन भारत में सारी विद्या पढ़ चुकने के उपरान्त गुरु को दी जानेवाली उसकी दक्षिणा।

गुरु-दैवत—पुं० [ब० स०] पुष्य नक्षत्र।

गुरुद्वारा—पुं० [सं० गुरु-द्वार] १. आचार्य या गुरु के रहने का स्थान। २. सिक्खों का वह पवित्र मन्दिर जहाँ लोग ग्रन्थसाहब का पाठ करने जाते हैं।

गुरु-पत्रक—पुं० [ब० स०] राँगा या वंग नामक धातु।

गुरु-पाक—वि० [ब० स०] (खाद्य पदार्थ) जो सहज में न पकता या न पचता हो। कठिनता से अथवा देर में पकने या पचनेवाला।

गुरु-पुष्य—पुं० [मध्य० स०] बृहस्पति के दिन पुष्य नक्षत्र पड़ने का योग; जो शुभ कहा गया है।

गुरु-पूर्णिमा—स्त्री० [ष० त०] आषाढ़ की पूर्णिमा जिस दिन गुरु की पूजा करने का माहात्म्य है।

गुरु-बला—स्त्री० [ब० स०] संकीर्ण राग का एक भेद।

गुरुबिनी—स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरुभ—पुं० [ष० त०] १. पुष्य नक्षत्र। २. मीन राशि। ३. धनु राशि।

गुरुभाई—पुं० [सं० गुरु+हिं० भाई] दो या दो से अधिक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने एक ही गुरु से मंत्र लिया या शिक्षा पाई हो। एक ही गुरु के शिष्य।

गुरु-मंत्र—पुं० [मध्य० स०] १. वह मंत्र जो गुरु के द्वारा शिष्य को दीक्षा देने के समय गुप्त रूप से बतलाया जाता है। २. कोई काम करने की सबसे बड़ी युक्ति जो किसी बहुत बड़े अनुभवी ने बतलाई हो।

गुरु-मार—वि० [सं० गुरु+हिं० मारना] १. अपने गुरु को दबाकर उसका स्थान स्वयं लेनेवाला। (व्यक्ति) २. गुरु को भी दवा या परास्त कर सकनेवाला (उपाय या साधन)। जैसे—गुरु मार विद्या।

गुरु-मुख—वि० [ब० स०] जिसने धार्मिक दृष्टि से किसी गुरु से मंत्र लिया या सीखा हो।

गुरुमुखी—स्त्री०=गुरमुखी (लिपि)।

गुरु-रत्न—पुं० [कर्म० स०] १. पुष्पराग या पुखराज नामक रत्न। २. गोमेद नामक रत्न।

गुरु-वर—पुं० [स० त०] १. बृहस्पति। २. गुरुओं में श्रेष्ठ व्यक्ति।

गुरु-वार—पुं० [ष० त०] सप्ताह का पाँचवाँ दिन जो बुधवार के बाद और शुक्रवार से पहले पड़ता है। बृहस्पतिवार।

गुरु-वासर—पुं० [ष० त०]=गुरुवार।

गुरुवासी (सिन्)—पुं० [गुरुवास, स० त०, +इनि] गुरु के घर में रहकर शिक्षा प्राप्त करनेवाला शिष्य। अंतेवासी।

गुरुशिखरी (रिन्)—पुं० [मध्य० स०,+इनि] हिमालय, जिसकी चोटी सब पहाड़ों की चोटियों में ऊँची है।

गुरु-सिंह—पुं० [ब० स०] एक पर्व जो उस समय लगता है जब बृहस्पति ग्रह सिंह राशि पर आता है।

गुरू—पुं० [सं० गुरु] १. गुरु। आचार्य। २. बहुत बड़ा धूर्त्त। चालाक।

गुरू घंटाल—पुं० [हिं० गुरु+घंटा] बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त।

गुरेट—पुं० [हिं० गुर, गुड़+बेट] एक प्रकार का बेलन जिससे कड़ाहे में पकाया जानेवाला ईख का रस चलाया जाता है।

गुरेर—स्त्री० [हिं० गुरेरना]। गुरेरने की क्रिया, ढंग या भाव। †स्त्री०=गुलेल।

गुरेरना†—स० [सं० गुरु=बड़ा+हेरना=ताकना] आँखें फाड़कर और क्रोधपूर्वक किसी की ओर देखना। घूरना।

गुरेरा—पुं० [हिं० गुरेरना] १. किसी को गुरेरने या क्रोधपूर्वक देखने की क्रिया या भाव।

पद—गुरेरा-गुरेरी=एक दूसरे को क्रोधपूर्वक देखना। २. आमना-सामना। देखा-देखी।

गुर्ज—पुं० [फा०] १. गदा नामक पुराना शस्त्र। २. मोटा डंडा या सोंटा।
†पुं०=बुर्ज।

गुर्ज-बरदार—पुं० [फा०] गदाधारी सैनिक।

गुर्जमार†—पुं० [फा० गुर्ज+हिं० मार] १. हाथ में लोहे की गदा लेकर चलनेवाले मुसलमान फकीरों का एक संप्रदाय। २. उक्त संप्रदाय का फकीर।

गुर्जर—पुं० [सं० गुरु√ जॄ (जीर्ण होना)+णिच्+अण्] [स्त्री० गुर्जरी]। १. गुजरात देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश में रहने वाली एक प्राचीन जाति जो अब गूजर कहलाती है।

गुर्जराट—पुं० [सं० गुर्जर-राष्ट्र] गुजरात देश।

गुर्जरी—स्त्री० [सं० गुर्जर+ङीष्] १. गुजरात देश की स्त्री। २. गुर्जर या गूजर जाति की स्त्री। ३. एक रागिनी जो भैरव राग की भार्या कही गई है। गूजरी।

गुर्जी—पुं० [?] १. एक प्रकार का कुत्ता।
†स्त्री० १.= वुर्जी। २. = झोंपड़ी।

गुर्द—पुं० [फा०] गुर्दिस्तान का निवासी।

गुर्दा†—पुं० = गुरदा।

गुर्दिस्तान—पुं० [फा०] फारस के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश। आजकल का कुर्दिस्तान।

गुर्र—वि०, पुं० १. = गुर्रा। २. =गर्रा।
स्त्री०=गुर्राहट।

गुर्रा—पुं० [अ० गुर्रः] १. मुहर्रम महीने की द्वितीया का चाँद। २. छुट्टी का दिन। ३. काम के बीच में पड़नेवाला नागा। ४. अनशन। उपवास। ५. टाल-मटोल। हीला-हवाला।
क्रि० प्र०—बताना।
पुं० वि०, लाल और सफेद मिला हुआ।
पुं० दे० 'गर्रा'।

गुर्राना—अ० [अनु०] १. गुर्र गुर्र शब्द करना। जैसे—कुत्ते का गुर्राना। २. क्रोध में आकर कर्कश स्वर में बोलना। जैसे—आपस में एक दूसरे पर गुर्राना।

गुर्राहट—स्त्री० [हिं० गुर्राना] गुर्राने की क्रिया या भाव ।

गुर्री—स्त्री० [देश०] भुने हुए जौ।

गुर्वादित्य—पुं० [सं० गुरु-आदित्य, ब० स०] गुरु अर्थात् बृहस्पति और आदित्य अर्थात् सूर्य का एक साथ एक ही राशि में होनेवाला गमन। इसे एक प्रकार का योग माना गया है।

गुर्विणी—स्त्री० [सं० गुरु+इनि–ङीष्] १. गर्भवती स्त्री। २. गुरु की स्त्री । गुरु-पत्नी।

गुर्वी—स्त्री० [सं० गुरु+ङीष्] =गुर्विणी।

गुलंच—पुं० [सं० गुड√अञ्च् (गति)+अण्, शक० पररूप] एक प्रकार का कंद।

गुलंचा†—पुं० = गुरुच।

गुलंदाज—पुं० = गोलंदाज।

गुल— पुं० [फा०] १. गुलाब।जैसे—गुलकंद, गुलरोगन आदि। २. पुष्प। फूल। जैसे—गुलमेंहदी।

मुहा०—गुल कतरना=कोई अनोखा या विलक्षण काम करना या बात कहना। (परिहास और व्यंय)। **गुल खिलना**=किसी प्रसंग में कोई नई, मजेदार या विलक्षण घटना होना। **गुल खिलाना**=नई, मजेदार या विलक्षण घटना घटित करना।

३. वह गड्ढा जो हँसने के समय कुछ लोगों के गालों में पड़ता है और सौंदर्यवर्धक माना जाता है। ४. पशुओं के शरीर पर होनेवाला फूल के आकार का रंग या गोल दाग। जैसे—कुत्ते या चीते पर का गुल। ५. गरम लोहे से दागकर शरीर पर बनाया जानेवाला उक्त प्रकार का चिह्न या दाग।

मुहा०—गुल खाना=किसी चीज से अपना शरीर उक्त प्रकार से जलाना या दागना जिसमें शरीर पर उस चीज का दाग या निशान बन जाय। जैसे—प्रियतमा की अँगूठी या छल्ले से अपनी छाती या हाथ पर गुल खाना। (उर्दू कविताओं में प्रयुक्त)

६. दीए की वत्ती का वह अंश जो बिलकुल जल जाने पर छोटे से फूल का आकार धारण कर लेता है।

मुहा०—(चिराग) गुल-करना=(चिराग) बुझाना या ठंढा करना।

७. जलता हुआ कोयला। अंगारा। ८. चिलम पर रखकर पीये जानेवाले तमाकू का वह रूप जो उसे बिलकुल जल जाने पर प्राप्त होता है। जट्ठा। ९. जूते के तल्ले में एड़ी के नीचे पड़नेवाला अंश जो प्रायः पान के आकार का होता है। १०. कारचोबी की बनी हुई फूल के आकार की बड़ी टिकुली जो स्त्रियाँ सुन्दरता के लिए कनपटी पर लगाती हैं। ११. चूने की वह बड़ी गोलाकार बिंदी जो सिर में दर्द होने पर कनपटियों पर लगाते हैं। १२. कनपटी। १३. एक रंग की चीज पर दूसरे रंग का बना हुआ कोई गोल निशान। १४. आँख का डेला। (क्व०) १५. एक प्रकार का रंगीन या चलता गाना। १६. गोबर में कोयले का चूरा मिलाकर बनाया हुआ वह गोला जो अंगीठियों में जलाने के लिए बनाया जाता है। १७. युवती और सुंदर स्त्री। (बाजारू)
पुं० [अ० गुल] शोर। हल्ला। जैसे–लड़कों का गुल मचाना।
पुं० [देश०] १. हलवाई का भट्ठा। २. खेतों में पानी ले जाने की नाली।

गुल-अजायब—पुं० [फा० गुल+अ० अजायब=अजीब का बहु०] १. एक प्रकार का फूलदार पौधा। २. इस पौधे का फूल।

गुल-अब्बास—पुं० [फा० गुल+अ० अब्बास] १. एक प्रकार का बरसाती पौधा। २. इस पौधे का पीले या लाल रंग का फूल।

गुल-अब्बासी—वि० [फा० गुल+अ० अब्बास+ई (प्रत्य०)] गुल-अब्बास के रंग का।
पुं० एक प्रकार का रंग जो हलका कालापन लिये हुए पीला या लाल होता है।

गुल-अशर्फी—पुं० [फा०] १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौध का फूल जो पीला होता है।

गुलउरा†—पुं०=गुलौर।

गुल-औरंग—पुं० [फा०] एक प्रकार का गेंदा और उसका फूल।

गुलकंद—पुं० [फा०] चीनी या मिसरी में मिलाकर और धूप अथवा चाँदनी में रखकर पकाई हुई गुलाब की पत्तियाँ जो प्रायः रेचक होती हैं और औषध के रूप में खाई जाती हैं।

गुलकट—पुं० [फा० गुल+हिं० काटना] कपड़े पर बेल-बूटे छापने-का एक प्रकार का ठप्पा। (छीपी)

गुलकार—पुं० [फा०] [भाव० गुलकारी] बेल-बूटे, फूल आदि बनानेवाला कारीगर।

गुलकारी—स्त्री० [फा०] तरह-तरह के बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ बनाने का काम। २. किसी चीज पर बनाये हुए बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ।

गुल-केश—पुं० [फा० गुल+केश] १. मुर्गकेश नामक पौधा। कलगा। २. उक्त पौधे का फूल।

गुलखैरू—पुं० [फा० गुल+खैरू] १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल जो नीले रंग का होता है।

गुलगचिया—स्त्री० दे० 'गिलगिलिया'।

गुलगपाड़ा—पुं० [अ० गुल+हिं० गप्प] बहुत से लोगों का एक साथ बोलने तथा हँसने से होनेवाला शब्द। शोर-गुल। हो-हल्ला।

गुलगीर—पुं० [फा०] वह कैंची जिससे दीए आदि की बत्ती का गुल काटा जाता है। गुल काटने की कैंची।

गुलगुल—वि० = गुलगुला।

गुलगुला—वि० [अनु०] [स्त्री० गुलगुली] कोमल। नरम। मुलायम।

पुं० १. गोली के आकार का एक प्रकार का पकवान। २. कनपटी।

†पुं० [?] ऊसर में होनेवाली एक प्रकार की घास।

गुलगुलाना†—स० [हिं० गुलगुल] किसी कड़ी और गूदेदार चीज को दबा-दबाकर मुलायम करना।

अ० नरम या मुलायम पड़ना। पिचपिचा होना।

गुलगुलिया—पुं० [?] मदारी, विशेषतः बंदर नचानेवाला मदारी।

गुलगुली—स्त्री० [देश०] पहाड़ी झरनों में रहनेवाली एक प्रकार की काँटेदार बड़ी मछली।

गुलगोथना—वि०=गल-गुथना

गुलचना†—स० [हिं० गुलचा] गुलचा मारना। हलकी, चपत लगाना।

गुलचमन—पुं० [फा०] फूलों का बाग।

गुलचला—पुं० [हिं० गोला+चलाना] तोप का गोला चलानेवाला। तोपची।

गुलचाँदनी—स्त्री० [फा० गुल+हिं० चाँदनी] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें फूल लगते हैं। २. इस पौधे का सफेद फूल जो प्रायः रात के समय खिलता है।

गुलचा—पुं० [हिं० गाल] १. प्रेमपूर्वक किसी के गाल पर लगाई जानेवाली हलकी चपत। २. कोई छोटी, गोल मुलायम चीज।

गुलचाना†*—स० [हिं० गुलचा+ना] १. हलकी चपत लगाना। २. आघात करना।

गुलचिआना—स०=गुलचाना।

गुलंची—स्त्री० [?] लकड़ी में गलता बनाने का बढ़इयों का एक औजार।

गुलचीन—पुं० [?] १. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो बारहों महीने फूलता है। २. उक्त वृक्ष का फल जो अन्दर की ओर पीला और बाहर सफेद होता है।

गुल-छर्रा—पुं० [हिं० गोली+छर्रा] अनुचित रूप से तथा खूब खुलकर किया जानेवाला आनन्द-मंगल या भोग-विलास।

क्रि० [illegible]—उड़ाना।

गुलजलील—पुं० [फा०] असवर्ग का फूल जिससे रेशम रँगा जाता है।

गुलजार—पुं० [फा०] बाग। वाटिका।

वि० १. हरा-भरा। २. सब तरह से भरा-पूरा और सुन्दर। आनंद और शोभा से युक्त। जैसे—घर गुलजार होना। ३. जिसमें खूब चहल-पहल और रौनक हो। जैसे—गुलजार शहर।

गुलझटी—स्त्री० [हिं० गोल+झट=जमाव] १. तागों आदि के उलझने से पड़नेवाली गाँठ। २. मन में रहनेवाला द्वेष या वैर-भाव। मन की गाँठ। ३. कपड़े में की सिकुड़न। सिलवट।

गुलझड़ी—स्त्री० = गुलझटी।

गुलझरी—स्त्री०=गुलझटी।

गुलतराश—पुं० [फा०] १. वह जो कपड़े, कागज आदि के टुकड़े काटकर उनके फूल बनाता हो। २. वह माली जो पौधे आदि को काट-छाँटकर उन्हें गमले, घोड़े, हाथी आदि की आकृतियों में लाता हो। ३. वह नौकर जो दीपकों के गुल काटने का काम करता हो। ४. दीए की बत्ती पर का गुल काटने की कैंची। गुलगीर। ५. बढ़इयों, संगतराशों आदि का वह औजार जिससे लकड़ी, पत्थर आदि पर बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ बनाते हैं।

गुलता—पुं० [हिं० गोल] मिट्टी की वह छोटी गोली जो गुलेल में रखकर चलाई या छोड़ी जाती है।

गुलतुर्रा—पुं० [फा०] कलगा नाम के पौधे का फूल जो गहरे लाल रंग का होता है। मुर्गकेश। जटाधारी।

गुलत्थी—स्त्री०=गुलथी।

गुलथी—स्त्री० [हिं० गोल+सं० अस्थि] १. किसी गाढ़ी चीज की जमी हुई गाँठ या गुठली। २. माँस की जमी हुई गाँठ। गिल्टी। ३. दे० 'गुत्थी'।

गुलदस्ता—पुं० [फा० गुलदस्तः] १. कई प्रकार के फूलों तथा पत्तियों को विशेष क्रम से सजाकर बाँधा हुआ गुच्छा। २. लाक्षणिक अर्थ में उत्कृष्ट तथा चुनी हुई वस्तुओं का संग्रह या समूह। ३. दे० 'गुलदान'।'

गुल-दाउदी—स्त्री०=गुलदावदी।

गुलदान—पुं० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र। फूलदान।

गुलदाना—पुं० [फा०] बुंदिया नाम की मिठाई जिसके लड्डू भी बनते हैं।

गुलदार—वि० [फा०] १. (पौधा या वृक्ष) जिसमें फूल लगे हों। २. (कपड़ा, कागज, पत्थर आदि) जिस पर फूल काढ़े, लिखे या खोदे हुए हों।

पुं० १. वह जानवर जिसके शरीर पर फूल के गोल चिह्न हों। २. एक प्रकार का कसीदा।

गुल-दावदी—स्त्री० [फा० गुल+दाऊदी] एक पौधा और उसके फूल जो गुच्छों में लगते हैं।

गुल-दुपहरिया—स्त्री० [फा० गुल+हिं० दुपहरिया] १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का सुगंधित फूल जो गहरे लाल रंग का होता है।

गुलदुम—स्त्री० [फा०] बुलबुल।

गुलनरगिस—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की लता।

गुलनार—पुं० [फा०] १. अनार का फूल। २. एक प्रकार का अनार जिसमें सुन्दर फूल ही होते हैं फल नहीं लगते। ३. एक प्रकार का गहरा लाल रंग जो अनार के फूल की तरह का होता है।

गुलपपड़ी—स्त्री० [फा० गुल+हिं० पपड़ी] सोहन हलुए की तरह की एक प्रकार की मिठाई।

गुलफानूस—पुं० [फा०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो शोभा के लिए बगीचों में लगाया जाता है।

गुल-फाम—वि० [फा०] फूलों के समान रंगवाला, अर्थात् परम सुंदर।

गुलफिरकी—स्त्री० [फा० गुल+हिं० फिरकी] १. एक प्रकार का बड़ा पौधा जिसमें गुलाबी रंग के फूल लगते हैं। २. उक्त पौधे के फूल।

गुलफुँदना—पुं० [हिं० गोल+फुँदना] एक प्रकार की घास।

गुलबकावली—स्त्री० [फा० गुल+सं० बकावली] १. हल्दी की जाति का एक पौधा जो प्रायः दलदलों या नम जमीन में होता है। २. इस पौधे का लंबोतरा फूल जो कई रंगों का और बहुत सुगंधित होता है। (यह आँखों के रोगों में उपकारी माना जाता है।)

गुलबक्सर—पुं० [फा० गुल+देश० बक्सर] ताश के पतों में खेले जानेवाले नकश नामक खेल की एक बाजी।

गुल-बदन—वि० [फा०] जिसके शरीर की रंगत फूल के समान सुंदर हो।

पुं० एक प्रकार का बहुमूल्य रेशमी धारीदार कपड़ा।

गुलबादला—पुं० [फा०] एक प्रकार का पेड़ जिसके रेशों को बटकर रस्से बनाये जाते हैं। ऊदल।

गुलबूटा—पुं० [फा० गुल+हिं० बूटा] (किसी चीज पर) खोदे, छापे, बनाये या लिखे हुए फूल, पत्ते, पौधे आदि।

गुलबेल—स्त्री० [फा० गुल+हिं० बेल] एक प्रकार की लता।

गुलमा—पुं० [सं० गुल्म] [स्त्री० गुलमी] १. चोट लगने के कारण होनेवाली गोल कड़ी सूजन। २. कीमा भरकर पकाई हुई बकरी की आँत। दुलमा।

†पुं० = गुलाम।

गुलमेंहदी—स्त्री० [फा० गुल+हिं० मेंहदी] १. एक प्रकार का छोटा पौधा जिसके तने में कई रंगों के फूल लगते हैं। २. उक्त पौधे के फूल।

गुलमेख—स्त्री० [फा०] वह कील जिसका ऊपरी सिरा फूल के आकार का गोल और चौड़ा होता है। फुलिया।

गुलरेज—पुं० [फा०] आतिशबाजी में, वह अनार या फुलझड़ी जिससे कई प्रकार के फूल झड़ते हैं।

गुलरोगन—पुं० [फा०+अ०] गुलाब की पत्तियों के योग से बनाया हुआ तेल।

गुललाला—पुं० [फा०] १. पोस्ते के पौधे की तरह का एक पौधा। २. इस पौधे का फूल जो गहरे लाल रंग का और बहुत सुन्दर होता है।

गुलशकरी—स्त्री० [फा०] १. चीनी और गुलाब के फूल के योग से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। २. दे० 'गँगेरन' (पक्षी)।

गुलशन—पुं० [फा०] वह छोटा बगीचा जिसमें अनेक प्रकार के फूल खिले हों। फुलवारी।

गुलशब्बो—पुं० [फा०] १. लहसुन से मिलता-जुलता एक प्रकार का छोटा पौधा। २. इस पौधे के सफेद रंग के सुगंधित फूल जो प्रायः रात के समय खिलते हैं। रजनीगंधा। सुगंधराज। ३. रात के समय अँधेरे में खेला जानेवाला एक खेल जिसमें एक दूसरे को चपत लगाते हैं।

गुलसुम—पुं० [फा० गुल+हिं० सुमन] सुनारों का एक औजार जिससे वे गहनों पर बेल-बूटे आदि बनाते हैं।

गुलसौसन—पुं० [फा०] १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल जो हलके आसमानी रंग का होता है।

गुलहजारा—पुं० [फा०] एक प्रकार का गुललाला (पौधा और फूल)।

गुलहथी†—स्त्री०=गुलथी।

गुलाब—पुं० [फा०] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध कँटीला पौधा जो कभी-कभी लता के रूप में भी होता है। इसके सुगंधित फूल गुलाबी, लाल, पीले, सफेद आदि अनेक रंगों के होते हैं। २. इस पौधे या लता का फूल जो अनेक रंगों का, बहुत सुन्दर और बहुत सुगंधित होता है। ३. गुलाब-जल।

मुहा०—गुलाब छिड़कना=गुलाब-जल छिड़कना।

गुलाब-चश्म—पुं० [फा०] एक प्रकार की चिड़िया जिसके पैर लाल, चोंच काली और बाकी शरीर खैरे रंग का होता है।

गुलाब-छिड़काई—स्त्री० [फा० गुलाब+हिं० छिड़कना] १. विवाह की एक रीति जिसमें वर पक्ष और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे पर गुलाब-जल छिड़कते हैं। २. उक्त रीति के समय मिलनेवाला नेग।

गुलाबजम—पुं० [?] एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियों से एक प्रकार का भूरा रंग निकलता है। सोना-फूल।

गुलाब-जल—पुं० [फा०+सं०] गुलाब के फूलों का भभके से उतारा हुआ सुगंधित अरक।

गुलाबजामुन—पुं० [फा० गुलाब+हिं० जामुन] १. घी में तली हुई तथा शीरे में भिगोई हुई खोये की एक प्रसिद्ध मिठाई। २. एक प्रकार का फलदार वृक्ष। ३. उक्त वृक्ष का फल जो बहुत स्वादिष्ट होता है।

गुलाब-तालू—पुं० [फा० गुलाब+तालू] वह हाथी, जिसके तालू का रंग गुलाबी हो। (ऐसा हाथी बहुत अच्छा समझा जाता है।)

गुलाबपाश—पुं० [फा०] झारी के आकार का एक प्रकार का लम्बा पात्र जिसमें गुलाब-जल आदि भरकर शुभ अवसरों पर लोगों पर छिड़कते हैं।

गुलाबपाशी—स्त्री० [फा०] गुलाब-जल छिड़कने की क्रिया या भाव।

गुलाब-बाड़ी—स्त्री० [फा० गुलाब+हिं० बाड़ी] आनंद-मंगल का वह उत्सव जिसमें आस-पास के स्थान और चीजें गुलाब के फूलों से सजाई गई हों।

गुलाबाँस—पुं० =गुल-अब्बास।

गुलाबा—पुं० [फा० गुलाबः] एक प्रकार का बरतन।

गुलाबी—वि० [फा०] १. गुलाब-संबंधी। गुलाब का। २. गुलाब के रंग का। ३. गुलाब के फूल की तरह का। ४. गुलाब अथवा गुलाब-जल से सुगंधित किया हुआ। ५. बहुत थोड़ा या हलका। जैसे—गुलाबी नशा, गुलाबी सरदी।

पुं० गुलाब के फूल की तरह का रंग। (रोज)

स्त्री० १. शराब पीने की प्याली। २. गुलाब की पंखड़ियों से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। ३. एक प्रकार की मैना जो ऋतु-भेद के अनुसार अपना रंग बदलती है।

गुलाम—पुं० [अ०] १. मोल लिया या खरीदा हुआ नौकर। दास। २. बहुत ही तुच्छ सेवाएँ करनेवाला नौकर। ३. ताश का वह पत्ता जिस पर गुलाम की आकृति बनी रहती है। ४. गंजीफे के पत्तों में, एक प्रकार का रंग।

गुलाम-गर्दिश—स्त्री० [अ०+फा०] १. वह छोटी दीवार जो जनानखाने में अन्दर की ओर सदर दरवाजे के ठीक सामने अथवा ओट या परदे के लिए बनाई जाती है। २. किसी बड़ी कोठी के आस-पास बने हुए वे

छोटे मकान जिनमें नौकर-चाकर रहते हैं।

गुलाम-चोर—पुं० [अ०+हिं०] एक प्रकार का ताश का खेल।

गुलाम-जादा—पुं० [अ०+फा०] गुलाम या दास की सन्तान।

गुलाम-माल—पुं० [अ०] १. सस्ती या हल्के दरजे की वह चीज जो बहुत दिनों तक काम देती हो। जैसे—मोटा कंबल या दरी। २. बहुत थोड़े दाम पर खरीदी हुई बढ़िया चीज।

गुलामी—स्त्री० [अ० गुलाम+ई (प्रत्य०)] १. गुलाम होने की अवस्था या भाव। दासता। २. बहुत ही तुच्छ सेवाएँ। चाकरी। ३. परतंत्रता। पराधीनता।

बि० गुलाम-सम्बन्धी। गुलाम या उसकी तरह का। जैसे—गुलामी आदत।

गुलाल—पुं० [फा० गुल्लाला] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे होली के दिनों में हिंदू एक दूसरे पर छिड़कते हैं।

गुलाला—पुं० [हिं० गुल्ली] महुए के बीज की गिरी या मींगी।

वि० गुली या महुए के बीज से निकाला हुआ।

पुं० दे० 'गुल्लाला'।

गुलाली—स्त्री० [हिं० गुलाल+ई० (प्रत्य०)] चित्रकारी में काम आनेवाला गहरे लाल रंग का एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी। किरमिजी। (कारमाइन)

गुलिका—स्त्री० [सं० गुड+ठन्—इक—टाप्, 'ड' को 'ल'] १. खेलने का छोटा गेंद। २. गोली। ३. गुल्ली।

गुलियाना†—स० [सं० गिल=निगलना] बाँस आदि के चोंगे में भरकर पशुओं को ओषधि आदि पिलाना। ढरका देना।

स० [हिं० गोल] गोले या गोली के रूप में बनाना या लाना।

गुलिस्ताँ—पुं० [फा०] फूलों का बाग। फुलवारी। बाग।

गुली†—स्त्री०=गुल्ली।

गुलुफ†—पुं०=गुल्फ।

गुलू—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का जंगली बड़ा पेड़ जिसका गोंद कतीरा कहलाता है। २. एक प्रकार का बटेर।

स्त्री० एक प्रकार की मछली।

पुं० [फा०] १. गरदन। गला। २. कंठ-स्वर।

गुलूबंद—पुं० [फा०] १. लंबी पट्टी के आकार का बना हुआ वह कपड़ा जो जाड़े से बचने के लिए गले में, कानों तथा सिर पर लपेटा जाता है। २. गले में पहनने का एक गहना जो लंबी पट्टी के आकार का होता है।

गुलूला—पुं०=गुलेला।

गुलेंदा—पुं० [हिं० गोल] महुए का पका हुआ फल। कोलेंदा।

गुले—पुं० [देश०] उत्तरी भारत का एक प्रकार का छोटा पेड़।

गुलेटन—पुं० [हिं० गोल] सिकलीगरों का मसाला रगड़ने का छोटा गोल पत्थर।

गुलेनार—पुं०=गुलनार (अनार का फूल)।

गुले राना—पुं० [फा० गुल+अ० रअनः] १. एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे का सुन्दर फूल जो अन्दर की ओर लाल और बाहर पीला होता है।

गुलेल—स्त्री० [फा० गिलूलः] एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जिसमें लगी हुई डोरी की सहायता से मिट्टी की छोटी गोलियाँ दूर तक फेंकी जाती हैं और जिससे छोटी चिड़ियाँ आदि मारी जाती हैं।

† पुं०=गुरुच।

गुलेलची—पुं० [हिं० गुलेल+ची (प्रत्य०)] वह जो गुलेल चलाने में अभ्यस्त हो। गुलेल चलानेवाला शिकारी।

गुलेला—पुं० [फा० गुलूला] १. मिट्टी की वह गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २. दे० 'गुलेल'।

गुलैंदा—पुं० =गुलेंदा।

गुलोह—स्त्री० [फा० गिलोय] गुरुच।

गुलौर—पुं० [सं० गुल=गुड़+हिं० औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ रस पकाकर गुड़ बनाया जाता हो।

गुलौरा†—पुं० = गुलौर।

गुला†—पुं० [देश०] जलाशयों के किनारे होनेवाली एक प्रकार की लता।

गुल्फ—पुं० [सं०√गल् (चुआना)+फक्, उत्व] एड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—पुं० [सं०√गुड् (वेष्टित करना)+मक्, 'ड' को 'ल'] १. ऐसी वनस्पति जिसकी जड़ या नीचे का भाग गोल बड़ी गाँठ के रूप में होता है और जिसमें से कोमल डंठलोंवाली अनेक शाखाएँ निकलती हैं। जैसे-ईख, बाँस आदि। २. पेट में होनेवाला एक रोग जिसमें वायु के कारण गाँठ-सी पड़ जाती या गोला-सा बँध जाता है। ३. रोग के रूप में शरीर के ऊपर बननेवाली किसी प्रकार की गाँठ। ४. प्राचीन भारत में, सेना की वह टुकड़ी जिसमें ९ रथ, ९ हाथी, २७ घोड़े और ४५ पैदल सैनिक होते थे। ५. किला। दुर्ग।

गुल्म-वात—पुं० [ब० स०] तिल्ली या प्लीहा में होनेवाला एक रोग।

गुल्म-शूल—पुं० [ब० स०] पेट में होनेवाली वह पीड़ा जो अन्दर गुल्म रोग होने के कारण होती है।

गुल्मी (ल्मिन्)—वि० [सं० गुल्म+इनि] [स्त्री० गुल्मिनी] १. गुल्म या गाँठ के रूप में होनेवाला। २. गुल्म रोग से पीड़ित।

स्त्री० [सं० गुल्म+अच्—ङीष्] १. पेड़ों या पौधों का झुरमुट। झाड़ी। २. इलायची का पेड़। ३. आँवले का पेड़। ४. खेमा। तंबू।

गुल्मोदर—पुं० [सं० गुल्म-उदर, मध्य० स०] दे० 'गुल्मवात'। (रोग)

गुल्लक—स्त्री०=गोलक।

गुल्लर†—पुं० = गूलर।

गुल्ला—पुं० [अ० गुल या हिन्दी हल्ला का अनु०] शोर। हल्ला। जैसे—हल्ला-गुल्ला।

†पुं० [सं० गुलिक] १. ईख आदि का कटा हुआ छोटा टुकड़ा। गँडेरी। २. कालीन, दरी आदि बुनने के करघों में लगनेवाला बाँस का टुकड़ा। ३. लकड़ी का कोई बड़ा टुकड़ा। बड़ी गुल्ली। ४. रूई ओटने की चरखी में लोहे का वह छड़ जो उसके खूंटे को इधर-उधर हिलने नहीं देता। ५. गोटा, पट्ठा, आदि बुननेवालों का एक प्रकार का मोटा डोरा।

पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पहाड़ी पेड़ जिसके हीर की लकड़ी सुगंधित, हल्की और भूरे रंग की होती है। इसे 'सराय' भी कहते हैं।

†पुं० १. = गुलेला। २. रस-गुल्ला। (बँगला मिठाई)

गुल्लाला—पुं० [फा० गुलेलालः] गुललाला नामक पौधा और उसका फूल।

वि० उक्त फूल की तरह का गहरा लाल।

पुं० एक प्रकार का गहरा लाल रंग। उदा०—जेहि चंपक बरनी करै, गुल्लाला रंग नैन।—बिहारी।

गुल्ली—स्त्री० [सं० गुलिका=गुठली] १. धातु, लकड़ी आदि का कोई गोलाकार, छोटा लंबोतरा टुकड़ा। जैसे—डंडे के साथ खेलने की गुल्ली, छापेखाने में फरमा कसने की गुल्ली, हथियारों पर का मोरचा खुरचने की गुल्ली। २. उक्त आकार और रूप में ढाला हुआ धातु का टुकड़ा। पासा। जैसे—चाँदी या सोने की गुल्ली। ३. मक्के की वह बाल जिसके दाने झाड़ लिये गये हों। खुखड़ी। ४. केवड़े का फूल जो गोलाकार लंबा होता है। ५. ऊख या गन्ने के कटे हुए टुकड़े। गँडेरी। ६. मधुमक्खी के छत्ते का वह भाग जिसमें शहद इकट्ठा होता है। ७. फल के अन्दर की गुठली।

क्रि० प्र०—बँधना।

मुहा०—गुल्ली बँधना=युवावस्था में शरीर के अन्दर वीर्य का एकत्र होकर पुष्ट होना।

८. एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे 'गंगा मैना' भी कहते हैं।

गुल्ली-डंडा—पुं० [हिं०] १. हाथ भर लंबा डंडा और चार-छः अंगुल गोल लंबोतरी गुल्ली, जिससे बच्चे खेलते हैं। २. लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जिसमें काठ की उक्त गुल्ली डंडे से मारकर दूर फेंकी जाती है।

मुहा०—गुल्ली-डंडा खेलना=खेल-कूद अथवा इधर-उधर के फालतू कामों में समय नष्ट करना।

गुवा*—पुं० दे० 'गुवाक'।

गुवाक—पुं० [सं०√गु (अव्यक्त शब्द करना)+आक, नि० सिद्धि] सुपारी, विशेषतः चिकनी सुपारी।

गुवार†—पुं० = ग्वाल।

गुवारपाठा—पुं० =ग्वारपाठा।

गुवाल*—पुं० =ग्वाल।

गुविंद*—पुं० = गोविन्द।

गुष्टि—स्त्री०=गोष्ठी।

गुसल—पुं० [अ० गुस्ल] नहाने की क्रिया। स्नान। सारे शरीर से नहाना।

गुसलखाना—पुं० [अ० गुस्ल+फा० खानः] नहाने-धोने का कमरा या कोठरी। स्नानागार।

गुसाँई—पुं०=गोसाँई या गोस्वामी।

गुसा*—पुं० = गुस्सा।

गुसैयाँ—पुं० =गोसाईं।

गुसैल—वि०=गुस्सैल।

गुस्ताख—वि० [फा०] [भाव० गुस्ताखी] (व्यक्ति) जो बड़ों की आज्ञा को शिरोधार्य न करता हो और उन्हें अनुचित रूप से तथा अशिष्टतापूर्वक उत्तर देता हो। उद्दंड। बे-अदब।

गुस्ताखी—स्त्री० [फा०] १. गुस्ताख होने की अवस्था या भाव। धृष्टता। उद्दंडता। २. उद्दण्डता का परिचायक कोई कार्य।

गुस्ल—पुं० =गुसल।

गुस्लखाना—पुं० =गुसलखाना।

गुस्सा—पुं० [अ०] १. किसी के द्वारा कोई अनुचित कार्य, विरोध या हानि होने पर मन में होनेवाली वह उग्र भावना जिसमें उस वस्तु या व्यक्ति को तोड़ने-फोड़ने, मारने-पीटने या उसकी किसी प्रकार की हानि करने की इच्छा होती है। क्रोध।

विशेष—इसमें मनुष्य स्वयं अपने पर नियंत्रण खो बैठता है और कभी-कभी अपनी भी हानि कर बैठता है।

मुहा०—(किसी पर) गुस्सा उतारना=किसी को अपने क्रोध की प्रतिक्रिया का पात्र बनाना। **(किसी पर) गुस्सा चढ़ना**=किसी पर क्रोध आना। **गुस्सा निकालना**=क्रुद्ध होने पर हानि करनेवाले की हानि करना। **गुस्सा पीना**=गुस्सा आने पर भी किसी से कुछ न कहना।

गुस्सैल—वि० [अ० गुस्सा+हिं० ऐल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसे स्वभावतः बात-बात पर गुस्सा आता हो। क्रोधी।

गुह—पुं०[सं०√गुह् (रक्षा करना, छिपाना)+क] १. विष्णु। २. कार्तिकेय। ३. गौतम बुद्ध। ४. घोड़ा। ५. मेढ़ा। ६. कंदरा। गुफा। ७. हृदय। ८. माया। ९. शालिपर्णी। सरिवन। १०. निषाद जाति का एक नायक जो राम को वनवास के समय मिला था और जिसने उन्हें शृंगबेरपुर में गंगा के पार उतारा था। ११. एक प्रकार के बंगाली कायस्थों का अल्ल या उपाधि।

पुं० [सं० गूथ =मैल] गुदा मार्ग से निकलनेवाला मल। पाखाना।

मुहा०—(किसी पर) गुह उछालना=किसी के निंदनीय कार्यों का प्रचार करना। **गुह उठाना**= (क) पाखाना साफ करना। (ख) तुच्छ से तुच्छ सेवा करना। **गुह खाना**=बहुत ही बुरा या अनुचित काम करना। **(किसी का) गुह-मूत करना**=बच्चे का पालन-पोषण करना। **(किसी को) गुह में घसीटना**=बहुत अधिक अपमान या दुर्दशा करना। **गुह में ढेला फेंकना**=नीच के साथ ऐसा व्यवहार करना जिससे अपना ही अहित या बुराई होती हो। **(किसी को) गुह में नहलाना**=बहुत अधिक दुर्दशा करना।

वि० [सं० गुह्य] रहस्यमय! गूढ़। उदा०—बेंधि वार मार ह्वै गो ग्यान गुह गाँसी।—मीराँ।

गुहज्य†—वि० [सं० गुह्य] छिपा हुआ। गुप्त। उदा०—गुहज्य नाम अमीरस मीठाजो षोजै सो पावै।—गोरखनाथ।

गुहड़ा†—पुं० [देश०] चौपायों का खुरपका नामक रोग।

गुहना*—स०=गूथना (पिरोना)।

गुहराना†—स०=गोहराना (पुकारना)।

गुहवाना†—स० [हिं० गुहना का प्रे०] गुहने या गूँथने का काम कराना। गुँथवाना।

गुह-षष्ठी—स्त्री० [मध्य० स०] अगहन सुदी छठ जो कार्तिकेय की जन्मतिथि कही गई है।

गुहाँजनी—स्त्री० [सं० गुह्य-अंजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुंसी। बिलनी। अंजनहारी।

गुहा—स्त्री० [सं० गुह+टाप्] १. गुफा। कंदरा। २. जानवरों के रहने की माँद। चुर। ३. चोरों-डाकुओं के छिपकर रहने की जगह। ४. अंतःकरण। हृदय। ५. बुद्धि। ६. शालपर्णी। ७. वह कल्पित मूल स्थान जहाँ से सारी सृष्टि का उद्भव तथा विकास माना गया है। उदा०—किस गहन गुहा से अति अधीर।—प्रसाद।

गुहाई†—स्त्री० [हिं० गुहना] गुहने (गूंथने) की क्रिया, भाव या

मजदूरी।

गुहाचर—पुं० [सं० गुहा√चर् (गति)+ट] ब्रह्म।

गुहाना—स०=गुहवाना।

गुहा-मानव—पुं० [सं० मध्य० स०] इतिहास पूर्व काल के वे मनुष्य जो पाषाण युग में पर्वतों आदि की कदंराओं में रहते थे। (केव-मैन)

गुहार—स्त्री०=गोहार।

गुहारना—स० [हिं० गुहार] रक्षा या सहायता के लिए पुकार मचाना। उदा०—दीन प्रजा दुःख पाइ आई नृप-द्वार गुहारति।—रत्ना०।

गुहाल†—स्त्री०=गोशाला।

गुहाशय—पुं० [सं० गुहा√शी (सोना)+अच्] १. बिल या माँद में रहनेवाला जंतु। २. परमात्मा।

गुहिन—पुं० [सं० √गुह्+इनन्] जंगल। वन।

गुहिर†—वि०=गंभीर।

गुहेरा—पुं० [हिं० गुहना=गूथना] गहने आदि गूथने का काम करनेवाला व्यक्ति। पटवा।

†पुं० =गोध (जन्तु)।

गुहेरी†—स्त्री० [सं० गौधेरिका] गुहाँजनी (बिलनी)।

गुह्य—वि० [सं० √गुह+यत्] १. गुप्त रखने या छिपाये जाने के योग्य। २. (अलौकिक या रहस्यमय बात या वस्तु) जिसका ठीक-ठीक अर्थ या स्वरूप समझना कठिन हो। जिसे जानने या समझने के लिए विशेष आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता हो। (एसोट्रिक) ३. रहस्यमय।

पुं० १. छल। कपट। २. भेद। रहस्य। ३. ढोंग। ४. शरीर के गुप्त अंग। जैसे—गुदा, भग, लिंग आदि। ५. कछुआ। ६. विष्णु। ७. शिव।

गुह्यक—पुं० [सं०√गुह्+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] किन्नर, गंधर्व, यक्ष आदि देवताओं की तरह की एक देव-योनि जो कुबेर की संपत्ति आदि की रक्षा करती है।

गुह्यकेश्वर—पुं० [सं० गुह्यक-ईश्वर ष० त०] कुबेर।

गुह्य-दीपक—पुं० [सं० कर्म० स०] जुगनूँ।

गुह्य-द्वार—पुं० [सं० कर्म० स०] १. मल-द्वार। गुदा। २. चोर-दरवाजा।

गूँ—पुं० [फा०] १. रंग। जैसे—गुलगूँ=गुलाब के रंग का। २. ढंग। प्रकार। ३. वर्ग।

गूँगा—वि० [फा० गुँग=जो बोल न सके] [वि० स्त्री० गूँगी] १. (व्यक्ति) जिसकी वाक्-शक्ति ऐसी विकृत हो कि कुछ भी बोल न सके। जैसे—गूँगा लड़का। २. जिसमें मनुष्य की तरह शब्दों का उच्चारण करने की शक्ति न हो। जैसे—पशु-पक्षी गूँगे होते हैं।

पुं० वह जो बोल न सकता हो।

पद—**गूँगे का गुड़**=ऐसी स्थिति जिसमें उसी प्रकार अनुभूति का वर्णन न हो सके, जिस प्रकार गूँगा व्यक्ति गुड़ खाने पर भी उसकी मिठास का वर्णन नहीं कर सकता। **गूँगे का सपना**=गूँगे का गुड़। **गूँगी पहेली**=वह पहेली जो मुँह से न कही जाय, इशारों में कही जाय।

मुहा०—**गूँगे का गुड़ खाना**=कोई ऐसा अनुभव करना जिसका वर्णन न हो सकता हो।

गूँगी—स्त्री० [हिं० गूँगा] पैर में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

गूँच—स्त्री० [सं० गुञ्ज] गुंजा। घुँघची।

गूँछ—स्त्री० [देश०] गहरे पानी में रहनेवाली एक प्रकार की बड़ी मछली बूँछ।

गूँज—स्त्री० [सं० गुंज] १. भौंरों का गुनगुन शब्द करना। गुंजन। २. मक्खियों के भिनभिनाने का शब्द। ३. किसी तल या सतह से परावर्तित होकर सुनाई पड़नेवाला शब्द या ध्वनि। प्रतिध्वनि। ४. किसी स्थान में होनेवाली किसी बात की विस्तृत चर्चा। धूम। जैसे—शहर में इस बात की गूँज है। ५. किसी प्रकार के कार्य की प्रतिक्रिया। (ईको) ६. किसी स्थान पर किसी विशिष्ट बात के होने की अधिक या विस्तृत चर्चा। जैसे—आज-कल शहर में इस बात की बहुत गूँज है। ७. लट्टू में नीचे की ओर जड़ी हुई वह लोहे की कील जिस पर लट्टू घूमता है। ८. नथ, बाली आदि में सुन्दरता के लिए लपेटा हुआ छोटा पतला तार।

गूँजना—अ० [सं० गुंजन] १. भौंरों का गुंजारना। गुंजन करना। २. मक्खियों का भिनभिनाना। ३. किसी शब्द का किसी तल से टकरा कर फिर से सुनाई पड़ना। प्रतिध्वनि होना। ४. (किसी चर्चा का) किसी स्थान में फैलना।

गूँझ—स्त्री०=गूँज।

गूँठ—पुं० [हिं० गोठा=छोटा, नाटा] एक प्रकार का छोटे कद का पहाड़ी टट्टू।

गूँथना†—स० = गूथना।

गूँदना—स० = गूँधना।

गूँदा†—पुं०= गोंदा।

गूँदी—स्त्री० [?] गँधेला नाम का पेड़ जिसकी जड़, छाल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

गूँधना—स० [सं० गुध=क्रीड़ा] १. किसी प्रकार के चूर्ण में थोड़ा-थोड़ा पानी (अथवा कोई तरल पदार्थ) मिलाते तथा हाथ से मलते हुए उसे गाढ़े अवलेह के रूप में लाना। माँड़ना। सानना। जैसे—आटा गूँधना। २. दे० 'गूथना'।

गू—पुं० = गुह (मल)।

गूगल, गूगुल—पुं० = गुग्गुल।

गूजर—पुं० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] १ गुर्जर देश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति। २. अहीर। ग्वाला। ३. क्षत्रियों का एक भेद।

गूजरी—स्त्री० [सं० गुर्जरी] १. गूजर जाति की स्त्री। २. ग्वालिन। ३. पैरों में पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना। ४. गुर्जरी नाम की रागिनी।

गूजी†—स्त्री० [हिं० गुजुवा की स्त्री०] काले रंग का एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

गूझना†—अ० = छिपना।

स०= छिपाना।

गूझा—पुं० [सं० गुह्यक, प्रा० गुज्झा] [स्त्री० गुझिया] १. बड़ी गुझिया (पकवान)। २. मलद्वार। गुदा।

†पुं० = गुज्झा (रेशा)।

गूटी—स्त्री० [देश०] १. लीची का पेड़ लगाने का एक ढंग या प्रकार। २. चौपायों का एक रोग।

गूड़ी—स्त्री० [सं० गुहा वा गुह्य] अनाज की वाली में का वह छोटा गड्ढा जिसमें से दाना निकाल लिया गया हो।

गूढ़—वि० [सं०√गुह् (छिपाना) +क्त] १. छिपा हुआ। गुप्त। जैसे—गूढ़पाद। २. (क्लिष्ट या पेचीदी वात) जिसका अभिप्राय या आशय सहज में लोग न समझ सकते हों। अर्थ-गर्भित। जटिल। दुरूह। जैसे—गूढ़ विषय। ३. जिसमें कोई विशेष अभिप्राय छिपा हो। गंभीर। पुं० १. स्मृति में पाँच प्रकार के साक्षियों में से वह जिसे अर्थी ने प्रत्यर्थी की बात बतला या सुना दी हो। २. गूढ़ोक्ति नामक अलंकार। (साहित्य)

गूढ़चर—पुं०=गुप्तचर। उदा०—गूढ़चर इन्द्रिय अगूढ़ चोर मारि दै।—देव।

वि० छिपकर घूमने-फिरनेवाला।

गूढ़-चारी (रिन्)—वि०, पुं० [सं० गूढ़√चर् (गति)+णिनि, उप० स०] = गूढ़चर।

गूढ़ज—पुं० [सं० गूढ़√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] वह पुत्र जिसे पति के घर रहते हुए भी पत्नी ने अपने किसी सवर्ण जार से पैदा किया हो।

गूढ़-जात—पुं० [पं० त०] =गूढ़ज।

गूढ़-जीवी (विन्)—पुं० [सं० गूढ़√जीव् (जीना)+णिनि, उप० स०] वह जिसकी जीविका के साधन का किसी को पता न चले।

गूढ़ता—स्त्री० [सं० गूढ़+तल्—टाप्] गूढ़ होने की अवस्था या भाव।

गूढ़त्व—पुं० [सं० गूढ़+त्व] गूढ़ता।

गूढ़-नीड़—पुं० [ब० स०] खंजन पक्षी।

गूढ़-पत्र—पुं० [ब० स०] १. करील वृक्ष। २. अंकोट वृक्ष। ३ [कर्म० स०] मतदान-पत्र। (वैलट)

गूढ़-पथ—पुं० [कर्म० स०] १. छिपा हुआ रास्ता। जैसे—सुरंग। २. [ब० स०] अंतःकरण या अंतरात्मा।

गूढ़-पद, गूढ़-पाद—पुं० [ब० स०] सर्प। साँप।

गूढ़-पुरुष—पुं० [कर्म० स०] जासूस। भेदिया।

गूढ़-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. पीपल, बड़, गूलर, पाकर इत्यादि वृक्ष जिनमें फूल नहीं होते अथवा नहीं दिखाई देते। २. मौलसिरी।

गूढ़-भाषित—पुं० [कर्म० स०] ऐसे शब्दों में कही हुई बात जो सब की समझ में न आती हो।

गूढ़-मंडप—पुं० [कर्म० स०] देव मंदिर के अन्दर का बरामदा या दालान।

गूढ़-मार्ग—पुं० [कर्म० स०] सुरंग।

गूढ़-मैथुन—पुं० [ब० स०] काक। कौआ।

गूढ़-लेख—पुं० [कर्म० स०] लिखने या संवाद भेजने की गुप्त लिपि-प्रणाली। (साइफर)

गूढ़-व्यंग्य—पुं० [कर्म० स०] काव्य में एक प्रकार की लक्षणा जिसमें व्यंग्य का अभिप्राय जल्दी सब की समझ में नहीं आ सकता।

गूढ़-संहिता—स्त्री० [ष० त०] वह संग्रह जिसमें गूढ़-लेख के नियमों, संकेतों सिद्धान्तों आदि का विवेचन हो। (साइफर कोड)

गूढ़ांग—पुं० [गूढ़-अंग, कर्म० स०] १. इन्द्रिय, गुदा आदि गुप्त अंग। २. [ब० स०] कछुआ।

गूढ़ा†—स्त्री० [सं० गूढ़] १. ऐसी बात जिसका अर्थ जल्दी सब की समझ में न आवे। २. पहेली। (राज०)

गूढ़ाशय—पुं० [गूढ़-आशय, कर्म० स०] =गूढ़-पुरुष (जासूस)।

गूढ़ोक्ति—स्त्री० [गूढ़-उक्ति, कर्म० स०] १. गूढ़ कथन या बात। २. साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई व्यंग्यपूर्ण बात किसी दूसरे आदमी को सुनाने के लिए किसी उपस्थित आदमी से कहीं जाती है।

गूढ़ोत्तर—पुं० [गूढ़-उत्तर कर्म० स०] साहित्य में उत्तर अलंकार का एक भेद जिसमें किसी बात का दिया जानेवाला उत्तर अपने में कोई और गूढ़ अर्थ छिपाये होता है।

गूथना—स० [सं० ग्रंथन] १. डोरे, तागे आदि के रूप की चीजों को समेट कर सुंदरतापूर्वक आपस में बाँधना। जैसे—चोटी या सिर के बाल गूथना। २. बिखरी हुई अथवा कई चीजों को पिरोकर एक में मिलाना। जैसे—फूलों या मोतियों की माला गूथना। ३. आपस में जोड़ने या मिलाने के लिए मोटे-मोटे टाँके लगाना। गाँथना। जैसे—गुदड़ीगूथ ना।

गूद—स्त्री० [सं० गूढ़ या हिं० गोदना] १. गड्ढा। गर्त्त। २. कम गहरा चिह्न या रेखा।

†पुं० = गूदा।

गूदड़—पुं० [हिं० गूथना] [स्त्री० गुदड़ी] जीर्ण-शीर्ण या फटा-पुराना कपड़ा जो काम में आने के योग्य न रह गया हो।

पद—गूदड़शाह वा गूदड़साँई=फटे-पुराने कपड़े सीकर पहननेवाला साधु।

गूदर†—पुं० = गूदड़।

गूदा—पुं० [सं० गुप्त, प्रा० गुत्त] [स्त्री० गूदी] १. फल आदि के अन्दर का कोमल और गुदगुदा सार भाग। जैसे—आम, इमली या नारंगी का गूदा। २. किसी चीज के अन्दर का गीला गाढ़ा सार भाग। मज्जा। (पिथ्) ३. किसी चीज को कूटकर तैयार किया हुआ उसका कुछ गीला पिंड या रूप। (पल्प) ४. खोपड़ी का सार भाग। भेजा। ५. गिरी। मींगी।

गूदेदार—वि० [हिं० गूदा+फा० दार] जिसके अन्दर गूदा रहता हो।

गून—स्त्री० [सं० गुण=रस्सी] १. नाव खींचने की रस्सी। २. रीहा नामक घास।

गूना—पुं० [फा० गून:=रंग] एक प्रकार का सुनहला रंग जो धातु की बनी चीजों पर चढ़ाया जाता है।

गूनी*—स्त्री०=गोनी।

गूमट†—पुं० = गुम्मट।

गूमड़ा—पुं०= गुमड़ा या गुम्मड़।

गूमना†—स० [?] १. गूँधना। माँड़ना। सानना। २. कुचलना। रौंदना।

गूमा—पुं० [सं० कुंभा, गुंभा] एक प्रकार का पौधा जिसकी गाँठों पर सफेद फूलों के गुच्छे लगते हैं। कुंभा। द्रोणपुष्पी।

गूरा†—पुं०=गुल्ला।

गूल—पुं०=गुल्म (सेना का)।

गूलर—पुं० [सं० उदुंबर] १. पीपल, बरगद आदि की जाति का एक बड़ा पेड़ जिसकी डालें आदि से एक प्रकार का दूध निकलता है और जिसका फल ओषधि, तरकारी आदि के रूप में खाया जाता है। उदुंबर। २. उक्त वृक्ष का फल।

पद—गूलर का फूल= (क) दुर्लभ वस्तु। (ख) असंभव बात। (गूलर में फूल होता ही नहीं, इसी आधार पर यह पद बना है।)

मुहा०—गूलर का पेट फड़वाना=गुप्त या दबी हुई बात का प्रकट कराना। भेद खुलवाना।

†पुं० = मेंढ़क।

गूलर-कबाब—पुं० [हिं० गूलर+फा० कबाब] एक प्रकार का कबाव जो उबलें और पिसे हुए मांस से गूलर के फल के आकार का होता या गोलियों के रूप में बनाया जाता है।

गूलू—पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष। पुंड्रक।

गूवाक—पुं०=गुवाक।

गूषणा—स्त्री० [सं० गु√उष् (जलाना)+युच्—अन, टाप्] मोर की पूँछ पर बना हुआ अर्द्धचन्द्र चिह्न। मोर-चंद्रिका।

गूह—पुं० [सं० गूथ] गुह। मल।

मुहा० के लिए दे० 'गुह' के मुहा०।

गूहन—पुं० [सं०√गूह+ल्युट्—अन] छिपाने का कार्य।

गूहा छीछी—स्त्री० [हिं० गूह+छीछी] ऐसा गंदा झगड़ा या लड़ाई जिससे देखने-सुननेवालों तक के मन में घृणा उत्पन्न होती हो।

गृंजन—पुं० [सं०√गृञ्ज् (शब्द करना)+ल्युट्—अन] १. एक प्रकार का लाल रंग का लहसुन। । २. शलजम।

गृत्स—वि० [सं०√गृध् (चाहना)+स] चतुर तथा योग्य (व्यक्ति)। मेधावी।

गृधु—वि० [सं०√गृध्+कु] कामुक।

पुं० कामदेव।

गृध्य—पुं० [सं०√गृध्+क्यप्] १. इच्छा। कामना। २. लालच। लोभ।

गृध्र—पुं० [सं०√गृध्+क्रन्] [स्त्री० गृध्री] १. गिद्ध नाम का प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २. जटायु।

वि० लालची। लोभी।

गृध्र-कूट—पुं० [ब० स०] राजगृह के पास का एक पर्वत।

गृध्र-व्यूह—पुं० [मध्य० स०] प्राचीन भारत में सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना जो गिद्ध के आकार की होती थी।

गृध्रसी—स्त्री० [सं० गृध्र√सो (नष्ट करना)+क—ङीप्] एक वातरोग जिससे कमर, कूल्हों और टाँगों में दर्द होता है। (स्याटिका)

विशेष—गृध्रस्या एक नाड़ी का नाम है। कहते हैं कि उसी में वात का प्रकोप बढ़ने से यह रोग होता है।

गृध्रस्या—स्त्री० [सं० गृध्रसी+यत्—टाप्?] एक वात-नाड़ी।

गृध्रिका—स्त्री० [सं० गृध्र+ङीष्+कन्—टाप्, ह्रस्व] कश्यप की पुत्री जो गिद्धों की आदि माता थी। (पुराण)

गृमा—स्त्री० [सं० ग्रीवा] गला। उदा०—फूटल वलय टूटल गृम-हार। —विद्यापति।

गृष्टि—स्त्री० [सं०√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्तिच्, पृषो० सिद्धि] १. वह गाय, जिसे एक ही बच्चा हुआ हो। २. वह स्त्री जिसे एक ही सन्तान हुई हो।

गृह—पुं० [स[illegible]ग्रह्+क] १. इंट, पत्थर, चूने, सीमेंट आदि से बना हुआ वह निवास-स्थान जहाँ कोई व्यक्ति (अथवा परिवार) रहता हो। घर। मकान। जैसे—राजगृह। २. विस्तृत क्षेत्र में, वह क्षेत्र, शहर या राज्य जिसमें कोई रहता हो। ३. राज्य या राष्ट्र के भीतरी कामों का क्षेत्र। जैसे—गृह-मंत्री।

वि० १. (यौ० के आरम्भ में) घर में रखकर पाला हुआ जैसे—गृह-कपोत, गृह-दास। २. गृह या घर से संबंध रखनेवाला। जैसे—गृह-शास्त्र। ३. देश के भीतरी भाग से संबंध रखनेवाला। जैसे—गृह-युद्ध।

गृह-उद्योग—पुं० [मध्य० स०] जीविका उपार्जन करने के लिए घर में बैठकर किये जानेवाले रचनात्मक कार्य। जैसे—करघे से कपड़ा बुनना, बाँस की खपचियों से टोकरियाँ बनाना, रस्सी बटना आदि आदि।

गृह-कन्या—स्त्री० [ष० त०] घीकुवार। ग्वारपाठा।

गृह-कर्मन्—पुं० [ष० त०] घर-गृहस्थी के काम-धन्धे।

गृह-कलह—पुं० [स० त०] १. घर के लोगों में आपस में होनेवाला झगड़ा या लड़ाई। २. किसी देश या राष्ट्र के निवासियों में आपस में होनेवाला झगड़ा या लड़ाई।

गृह-कार्य—पुं० [ष० त०] घर-गृहस्थी के काम-धन्धे।

गृह-कुमारी—स्त्री०=गृहकन्या।

गृह-गोधा—स्त्री० [ष० त०] छिपकली।

गृह-गोधिका—स्त्री० [ष० त०] छिपकली।

गृहज—वि० [सं० गृह√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] जो घर में उत्पन्न हुआ हो।

पुं० घर में पैदा होनेवाला दास। गोला।

गृह-जन—पुं० [ष० त०] घर में रहनेवाले आपस के सब लोग। कुटुंबी।

गृह-जात—वि० [स० त०] जो घर में उत्पन्न हुआ हो।

पुं० सात प्रकार के दासों में से वह जो घर में रखे हुए दास या दासी से उत्पन्न हुआ हो।

गृह-ज्ञानी (निन्)—वि० [स० त०] जिसका सारा ज्ञान घर के अन्दर ही सीमित हो। बाहर का कुछ भी हाल न जाननेवाला। कूप-मंडूक।

गृहणी—स्त्री० [सं० गृह√नी (ले जाना)+क्विप्, णत्व] १. काँजी। २. प्याज।

†स्त्री० दे० 'गृहिणी'।

गृह-त्याग—पुं० [ष० त०] विरक्त होकर और घर छोड़कर कहीं निकल जाना।

गृहत्यागी (गिन्)—वि० [सं०गृहत्याग+इनि] जो घर-बार छोड़कर और विरक्त होकर गृहस्थाश्रम से निकल आया हो।

गृह-दाह—पुं० [ष० त०] १. घर में आग लगाने या भस्म करने की क्रिया या भाव। २. ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिससे घर का सब-कुछ नष्ट हो जाय।

गृह-दीर्घिका—स्त्री० [मध्य० स०] प्राचीन भारत में धवल-गृह के आस-पास की नहर जो राजाओं और रानियों के जल-विहार के लिए बनी होती थी।

गृह-देवता—पुं० [ष० त०] घर के भिन्न-भिन्न कार्यों के देवता जिनकी संख्या ४५ कही गई है।

गृह-देवी—स्त्री० [ष० त०] घर की स्वामिनी। गृहिणी।

गृह-नीड़—पुं० [ब० स०] गौरैया (पक्षी)।

गृहप—पुं० [सं० गृह√पा (रक्षा करना)+क, उप० स०] १. घर

का स्वामी। गृहपति। २. चौकीदार। पहरेदार। ३. अग्नि। आग। ४. कुत्ता।

गृह-पति—पुं० [ष० त०] [स्त्री० गृहपत्नी] १. वह व्यक्ति जिसके पास घर या मकान हो। घर या मकान का मालिक। २. किसी घर अर्थात् घर में रहनेवाले परिवार का मुख्य व्यक्ति। ३. अग्नि। आग। ४. कुत्ता।

गृह-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] =गृहिणी।

गृह-पशु—पुं० [ष० त०] १. घर में पाला हुआ पशु। पालतू जानवर। २. कुत्ता।

गृह-पाल—पुं० [सं० गृह√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १. घर की रखवाली करनेवाला चौकीदार। २. कुत्ता।

गृह-पालित—भू० कृ० [स० त०] जो घर में रखकर पाला-पोसा गया हो। जैसे—गृह-पालित दास या पशु।

गृह-प्रवेश—पुं० [स० त०] १. नये बनवाये या खरीदे हुए मकान में, विधिपूर्वक पूजन आदि करने के उपरांत, पहले-पहल बाल-बच्चों सहित उसमें प्रवेश करना। २. उक्त अवसर पर होनेवाला समारोह और धार्मिक कृत्य। वास्तु-पूजन।

गृह-बलि—स्त्री० [मध्य० स०] घर में ही नित्य दी जानेवाली बलि। वैश्वदेव।

गृह-भूमि—स्त्री० [ष० त० या मध्य० स०] वह भूमि जिस पर मकान बना हो या जो मकान बनाने के लिए उपयुक्त हो। (कृषि भूमि से भिन्न)

गृह-भेद—पुं० [ष० त०] घर के लोगों का आपस में लड़-झगड़कर एक दूसरे से अलग होना।

गृह-भेदी—(दिन्)—वि० [सं० गृह√भिद् (फाड़ना)+णिनि, उप० स०] घर के लोगों में आपस में लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

गृह-मंत्रालय—पुं० [ष० त०] १. वह मंत्रालय जिसमें किसी राज्य या राष्ट्र के गृह-संबंधी कार्यों की देख-भाल करनेवाले लोग काम करते हैं। गृहमंत्री का कार्यालय। (होममिनिस्टरी) २. उक्त मंत्रालय का अधिकारी वर्ग।

गृह-मंत्री (त्रिन्)—पुं० [ष० त०] राज्य या राष्ट्र के भीतरी मामलों (तथा शांति, रक्षा आदि) की व्यवस्था करनेवाला मंत्री। (होम मिनिस्टर)

गृह-मणि—पुं० [ष० त०] दीपक। दीया।

गृह-माचिका—स्त्री० [सं० गृह√मच् (छिपकर रहना)+ण्वुल्—अक +टाप्, इत्व, उप० स०] चमगादड़।

गृह-मृग—पुं० [स० त०] कुत्ता।

गृह-मेध—पुं० [ष० त०] पंच महायज्ञ।

गृह-मेधी (धिन्)—पुं० [सं० गृहमेध+इनि] १. गृह-मेध करनेवाला। २. गृहस्थ।

गृह-युद्ध—पुं० [स० त०] १. घर में ही आपस के लोगों में होनेवाला लड़ाई-झगड़ा। २. किसी एक ही राज्य या राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशों के निवासियों या राजनीतिक दलों का आपस में होनेवाला युद्ध। (सिविल वार)

गृह-रक्षक—पुं० [ष० त०] १. एक प्रकार का अर्द्ध सैनिक संघटन जो स्वतंत्र भारत में स्थानिक शांति और सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। २. इस संघटन का कोई अधिकारी या सदस्य। (होमगार्ड)

गृह-लक्ष्मी—स्त्री० [ष० त०] घर की स्वामिनी, सती और सुशीला स्त्री।

गृह-वाटिका—स्त्री० [मध्य० स०] घर में ही लगाया हुआ छोटा बाग।

गृह-वासी (सिन्)—वि० [सं० गृह√वस् (बसना)+णिनि, उप० स०] घर बनाकर उसमें रहनेवाला।
पुं० गृहस्थ।

गृह-वित्त—पुं० [ब० स०] गृह-स्वामी।

गृह-सचिव—पुं० [ष० त०] गृह-मंत्रालय का प्रधान शासनिक अधिकारी। (होम सेक्रेटरी)

गृह-सज्जा—स्त्री० [ष० त०] घर की सजावट और उसकी सामग्री।

गृहस्त†—पुं०=गृहस्थ।

गृहस्थ—पुं० [सं० गृह√स्था (ठहरना)+क] १. वह जो घर-बार बनाकर उसमें अपने परिवार और बाल-बच्चों के साथ रहता हो। पत्नी और बाल-बच्चोंवाला आदमी। घरबारी। २. हिंदू धर्म-शास्त्रों के अनुसार वह जो ब्रह्मचर्य का पालन समाप्त करके और विवाह करके दूसरे आश्रम में प्रविष्ट हुआ हो। ज्येष्ठाश्रमी। ३. खेती-बारी आदि से जीविका चलानेवाला व्यक्ति। ४. जुलाहा।

गृहस्थाश्रम—पुं० [सं० गृहस्थ-आश्रम, ष० त०] हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग ब्रह्मचर्य के उपरान्त विवाह करके प्रवेश करते थे और स्त्री-पुत्र आदि के साथ रहते और उनका पालन करते थे।

गृहस्थाश्रमी (मिन्)—पुं० [सं० गृहस्थाश्रम+इनि] गृहस्थाश्रम में रहनेवाला व्यक्ति।

गृहस्थी—स्त्री० [सं० गृहस्थ+हिं० ई० (प्रत्य०)] १. प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि से उसका घर, परिवार के सब लोग और उसमें रहनेवाली जीवन-निर्वाह की सब सामग्री। घर-बार और बाल-बच्चे। २. घर का सब सामान। माल-असबाब। जैसे—इतनी बड़ी गृहस्थी उठाकर कहीं ले जाना सहज नहीं है। ३. खेती-बारी और उससे संबंध रखनेवाले काम-धंधे। ४. गृहस्थाश्रम। ५. खेती-बारी।

गृह-स्वामी (मिन्)—पुं० [ष० त०] [स्त्री० गृह-स्वामिनी] घर का मालिक जो गृहस्थी के सब लोगों का पालन-पोषण और देख-रेख करता हो।

गृहाक्ष—पुं० [सं० गृह-अक्षि, ष० त० टच् प्रत्य०] घर में बनी हुई खिड़की या झरोखा।

गृहागत—भू० कृ० [सं० गृह-आगत, द्वि० त०] घर में आया हुआ।
पुं० अतिथि। मेहमान।

गृहाराम—पुं० [सं० गृह-आराम, मध्य० स०] घर के चारों ओर या सामने लगाया हुआ बाग।

गृहाश्रम—पुं० [सं० गृह-आश्रम, कर्म० स०] =गृहस्थाश्रम।

गृहाश्रमी (मिन्)—पुं० [सं० गृहाश्रम+इनि] =गृहस्थाश्रमी।

गृहासक्त—वि० [गृह-आसक्त, स० त०] १. घर से दूर रहने या होने के कारण जो चिंतित तथा दुःखी हो। (होम सिक) २. हर दम जिसे घर-गृहस्थी, बाल-बच्चों आदि की चिंता लगी रहती हो।

गृहिणी—स्त्री० [सं० गृह+इनि—ङीप्] १. घर की मालकिन जो गृहस्थी के सब कामों की देख-रेख करती हो। २. जोरू। पत्नी। भार्या।

गृही (हिन्)—पुं० [सं० गृह +इनि] [स्त्री० गृहिणी] १. गृहस्थ। गृह-

स्थाश्रमी। २. दर्शनों आदि के लिए तीर्थ में आया हुआ व्यक्ति। (पंडे और भड्डर)

गृहीत—भू० कृ० [सं०√ग्रह् (पकड़ना)+क्त] [स्त्री० गृहीता] १. जो ग्रहण या प्राप्त किया गया हो। २. लिया, पकड़ा या रखा हुआ। ३. जिसने कोई चीज धारण की हो। जैसे—गृहीतगर्भा (गर्भवती स्त्री)। ४. जिस पर किसी उग्र मनोविकार का प्रभाव पड़ा हो। जैसे—गर्व-गृहीत। ५. जाना या समझा हुआ।

गृहीतार्थ—वि० [सं० गृहीत-अर्थ, ब० स०] जिसने अर्थ समझ लिया हो। पुं० किसी पद या वाक्य का गृहीत या प्रचलित अर्थ।

गृहोद्यान—पुं० [सं० गृह-उद्यान, मध्य० स०] बहुत बड़े मकान या महल के सामने या अगल-बगल का बगीचा।

गृहोपकरण—पुं० [सं० गृह-उपकरण, ष० त०] घर-गृहस्थी के सब सामान।

गृह्य—वि० [सं० गृह+यत्] १. घर या घर-बार से संबंध रखनेवाला। घर का। २. घर में किया जाने या होनेवाला। जैसे—गृह्य-कर्म। पुं० १. घर में रहनेवाली अग्नि या आग। २. दीपक। दीआ। उदा० —देखौ पतंग गृह्य मन रीझा। —जायसी।

वि० [सं०√ग्रह् (पकड़ना)+क्यप्] १. ग्रहण किये जाने के योग्य। जिसे ग्रहण कर सके। २. पकड़कर घर में रखा या पाला हुआ। पालतू।

गृह्यक—वि० [सं० गृह्य+कन्] १. जिसने घर में आकर आश्रय लिया हो। आश्रित। २. जो घर में रखकर पाला-पोसा गया हो।

गृह्य-कर्म (न्)—पुं० [कर्म० स०] हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार वे सब कर्म जो प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक कर्त्तव्य के रूप में बतलाये गये हैं। जैसे—अग्निहोत्र, बलि, १६ संस्कार आदि।

गृह्य-सूत्र—पुं० [ष० त०] वे विशिष्ट वैदिक ग्रंथ जिनमें सब प्रकार के गृह्य-कर्मों, संस्कारों आदि के विधान बतलाये गये हैं। जैसे—आश्वलायन, कात्यायन अथवा गोभिलीय गृह्य-सूत्र।

गेंगटा—पुं० [सं० कर्कट] केकड़ा।

गेंठी—स्त्री० [सं० गृष्टि, प्रा० गिट्ठि, गेठ्ठि] वाराही कंद।

गेंड़—पुं० [सं० गोष्ठ] १. डंठलों, पत्तियों आदि से बनाया हुआ वह घेरा जिसमें खेतिहर अपना अनाज रखते हैं। २. घेरा। मंडल। ३. ऊख के ऊपर के पत्ते। अगौरा। ४. दे० 'गेड़'।

गेंड़ना—स० [हिं० गेंड़] १. खेतों की सीमा निर्धारित करने के लिए उनके चारों ओर मेंड़ बनाना। २. बाढ़ आदि लगाकर चारों ओर से घेरना। ३. अन्न रखने के लिए गेड़ या घेरा बनाना। ४. लकड़ी के टुकड़े काटने के लिए कुल्हाड़ी से उसके चारों ओर छेव लगाना। ५. दे० 'गेड़ना'।

गेंड़ली—स्त्री० [सं० कुंडली] मंडलाकार घेरा। कुंडली। (साँपों आदि की)

गेंड़ा—पुं० [सं० कांड] १. ईख के ऊपर के पत्ते। अगौरी। २. ईख। गन्ना। ३. ईख के छोटे-छोटे टुकड़े। गँडेरी। ४. धातु के टुकड़े पीटने की पत्थर की निहाई।

†पुं० दे० 'गैंडा'।

गेंडु—पुं० [सं०] कंदुक। गेंद।

गेंडुआ†—पुं० [सं० गेंदुक=गेंद] १. बड़ा गेंद। २. सिर के नीचे रखने का गोल तकिया।

गेंडुक—पुं० [सं०=गेंदुक, पृषो० सिद्धि] कंदुक। गेंद।

गेंडुरी—स्त्री० [सं० कुंडली] १. कपड़े या रस्सी का बना हुआ वह गोल मेंडरा जिस पर घड़ा रखते हैं अथवा जिसे बोझ उठाने के समय सिर पर रखते हैं। इँडुरी। २. कुंडली या फेंटा (साँपों आदि का)।

गेंडुली†—स्त्री०=गेंडुरी।

गेंती—स्त्री० [?] १. एक प्रकार का छोटा वृक्ष। २. एक प्रकार की कुदाल।

गेंद—पुं० [सं० पा० गेन्डुक, प्रा० गेन्दुआ, उ० गेण्डु, सिं० खेनुरो, प्रा० गेन्दु, चेण्डु, गु०, ने०, मरा० गेंद] १. बच्चों के खेलने के लिए कपड़े, चमड़े रबड़, लकड़ी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध छोटा गोला। २. वह कलबूत जिस पर रखकर टोपियाँ, पगड़ियाँ आदि बनाई जाती थीं। कालिब। ३. तारों आदि का बना हुआ वह गोलाकार घेरा जिसके अन्दर रखकर दीआ जलाते थे।

गेंदई—वि० [हिं० गेंदा] १. गेंदे से संबंध रखनेवाला। गेंदे का। २. गेंदे के फूल के रंग का। पीला।

पुं० उक्त प्रकार का पीला रंग।

गेंदघर—पुं० [हिं० गेंद+घर] वह स्थान जहाँ लोग गेंद से तरह-तरह के खेल खेलते हैं।

गेंदतड़ी—स्त्री० [हिं० गेंद+तड़ी=चोट या मार] लड़कों का एक खेल जिसमें वे एक दूसरे को गेंद से मारते हैं।

गेंदबल्ला—पुं० [हिं० गेंद+बल्ला] १. गेंद और उस पर आघात करने का लकड़ी का बल्ला। २. गेंद, बल्ले तथा यष्टियों से खेला जानेवाला एक प्रसिद्ध खेल जिसमें ग्यारह-ग्यारह खेलाड़ियों की दो टोलियाँ होती हैं और एक दूसरी से अधिक दौड़ें बनाकर विजय प्राप्त करती हैं। (क्रिकेट)

गेंदवा†—पुं० १=गेंडुआ (तकिया)। २.=गेंद।

गेंदा—पुं [हिं० गेंद] १. एक प्रकार का छोटा पौधा जिसमें पीले, लाल, नारंगी आदि रंगों के फूल लगते हैं। २. उक्त पौधे के फूल जिनकी मालाएँ बनती हैं।

गेंदिया†—स्त्री० [हिं० गेंद+ईया (प्रत्य०)] फूलों को मालाओं के नीचे लटकनेवाला फूल-पत्तों आदि का गुच्छा।

गेंदुक*—पुं० [सं०√गम् (जाना)+ड, ग-इंदु कर्म० स०, गेंदु+कन्] कन्दुक। गेंद।

गेंदुवा—पुं०=गेंडुआ।

गेंदौरा†—पुं०=गिँदौड़ा।

गेंवर†—पुं० [सं० गज-वर] १. हाथी। २. बड़ा हाथी।

गे†—अव्य० [सं० हे] संबोधन का चिह्न। (पूरब)

गेगम—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धारीदार या चारखानेदार कपड़ा। सींकिया।

गेगला—पुं० [?] १. मसूर की जाति का एक प्रकार का जंगली पौधा। २. छोटा बच्चा। ३. निर्बुद्धि या मूर्ख व्यक्ति।

गेगलापन—पुं० [हिं० गेगला] १. लड़कपन। २. मूर्खता।

गेज—पुं० [अं०] १. किसी चीज को नापने या मापने का कोई साधन। २. रेल की दोनों पटरियों के बीच का विस्तार जो साधारणतः ५६½ इंच होता है।

विशेष—मानक गेज ५६½ इंच ही माना जाता है, वैसे छोटे तथा बड़े गेजों की भी पटरियाँ होती हैं।

गेजुनिया†—पुं० [देश०] गुलदुपहरिया (पौधा और फूल)।

गेटिस—पुं० [अं० गेटर] १. सैनिकों आदि के पहनने का कपड़े या चमड़े का वह आवरण जिससे पिंडलियाँ ढकी या बाँधी जाती हैं। २. कपड़े, रबर आदि का वह छोटा तस्मा या पतली पट्टी जिससे पहने हुए मोजे का ऊपरी भाग इसलिए कसा जाता है कि मोजा नीचे न गिरने पावे।

गेड़—स्त्री० [हिं० गेड़ना] गेड़ने की क्रिया या भाव। २. मंडलाकार बनाया हुआ गड्ढा या खींची हुई रेखा। ३. दे० 'गेंड़'।

गेड़ना—स० [सं० गंड=चिह्न] १. किसी चीज को घेरने के लिए उसके चारों ओर गड्ढा, मेंड़ या और किसी प्रकार की रेखा बनाना। २. किसी चीज के चारों ओर घूमना। परिक्रमा करना। ३. रहट चलाने के लिए उसका हत्था पकड़कर चारों ओर चक्कर लगाना। ४. दे० 'गेंड़ना'।

गेड़ी—स्त्री० [सं० गंड=चिह्न] १. गेड़ने की क्रिया या भाव। २. लड़कों का एक खेल जिसमें किसी मंडलाकार रेखा के बीच में लकड़ी का एक टुकड़ा रखकर और उस पर आघात करके उसे रेखा से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। ३. उक्त खेल की वह लकड़ी जो मंडलाकार रेखा के बीच में रखी जाती है।

गेणा†—पुं०=गहना या आभूषण। (राज०) उदा०—गेणो तो म्हाँरे माला दोवड़ी और चन्दन की कुटकी।—मीराँ।

गेदा†—पुं० [?] चिड़िया का वह छोटा बच्चा जिसके पर अभी तक न निकले हों।

गेन†—पुं०=गगन (आकाश)। उदा०—कोपि कन्ह धायौ वली, जनु अगि विच्छुटी गेन।—चन्दबरदाई।

गेनुर—स्त्री० दे० 'गोनर'।

गेबा—पुं० [देश०] करघे में, कंघी की वे तीलियाँ जिनके बीच में से ताने के सूत आपस में उलझने से बचाने के लिए निकाले जाते हैं।

गेय—वि० [सं० √गै (गाना)+यत्] १. गाये जाने के योग्य। २. जो गाया जा सके। जैसे—गेय पद। ३. प्रशंसनीय। श्रेष्ठ।

गेरना†—स० [हिं० गिराना का पुराना रूप] १. (गले आदि में ऊपर से) डालना। उदा०—माला पै लाल गुलाल गुलाब सों गेरि गरे गजरा अलबेलौ।—पद्माकर। २. गिराना।

स० दे० 'गेड़ना'।

गेरवाँ†—पुं० दे० 'गेराँव।'

गेराँई†—स्त्री० =गेराँव।

गेराँव†—पुं० [हिं० गर=गला] १. चौपायों के गले में बाँधी जानेवाली रस्सी। पगहा। २. उक्त रस्सी का वह मंडलाकार अंश जो चौपायों के गले में पड़ा रहता है।

†पुं० हिं० 'गाँव' का अनु०। जैसे—गाँव-गेराँव की चीज।

गेरुआ—वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०)] १. गेरू के रंग का। मटमैलापन लिये लाल रंग का। २. गेरू-मिट्टी के रंग से रंगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

पुं० १. गेरू से तैयार किया हुआ रंग। जोगिया। (सैमन) २. गेरू के रंग का एक छोटा कीड़ा जो फसल की हानि करता है। ३. गेहूँ के पौधों का एक रोग जिससे उनकी पेड़ी बहुत कमजोर हो जाती है।

गेरुआ बाना—पुं० [हिं०] त्यागियों, योगियों अथवा साधु-संन्यासियों का पहनावा जो गेरुए रंग का होता है।

गेरुई—स्त्री० [हिं० गेरू] फसल या पौधों को होनेवाला एक रोग जो प्रायः उनकी जड़ों में एक प्रकार के गेरुए रंग के कीड़े लगने से उत्पन्न होता है।

गेरुल—पुं०=गेंद।

गेरुला†—पुं० [?] जूड़ा या वेणी (स्त्रियों की)।

गेरू—पुं० [सं० गैरिका, पा० गेरुकम्, प्रा० गेरिअ, गैरुप, पं०, बं० गेरी, उ०, गु०, ने० गेरु, सि०, मरा० गेरू] एक प्रसिद्ध खनिज लाल मिट्टी जो प्रायः कपड़े, दीवारें आदि रंगने में और कभी-कभी दवाओं के काम आती है।

गेला†—वि० [हिं० गेया, या गया (बीता)?] [स्त्री० गेली] १. नासमझ। मूर्ख। २. गया-बीता। तुच्छ। हेय। उदा०—गेली दुनियाँ बावली ज्याँ कूँ राम न भावे।—मीराँ।

गेली—स्त्री० [अं०] छापेखाने में धातु या लकड़ी की वह छिछली किश्ती जिस पर छापे के अक्षर जोड़ या बैठाकर रखे जाते हैं।

पद—गेली प्रूफ=इस प्रकार उक्त किश्ती में जोड़कर रखे हुए अक्षरों पर से छापा जानेवाला कागज जिस पर बैठाये हुए अक्षरों की भूलें ठीक की जाती हैं।

गेल्हा†—पुं० [देश०] तेल रखने का चमड़े का बड़ा कुप्पा। (तेली)

गेवर—पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़। गँगवा।

गेसू—पुं० [फा०] बालों की लट। जुल्फ।

गेह—पुं० [सं० ग-ईह, ब० स०] १. रहने की जगह। २. घर। मकान।

गेहनी—स्त्री० [हिं० गेह] १. घर की मालिक स्त्री। गृह-स्वामिनी। गृहिणी। २. पत्नी। भार्या।

गेह-पति—पुं० [ष० त०] घर का मालिक। गृहपति।

गेही (हिन्)—पुं० [सं० गेह+इनि] घर-बार बनाकर उसमें रहनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ। उदा०—गेही संग्रह परिहरै, संग्रह करै विरक्त।—भगवत-रसिक।

गेहुँअन—पुं० [हिं० गेहूँ] मटमैले रंग का एक प्रकार का बहुत जहरीला फनदार साँप।

गेहुँआ—वि० [हिं० गेहूँ] १. गेहूँ के रंग का। हलका बादामी। २. (शरीर का वर्ण) जो न बहुत गोरा हो और न बहुत साँवला।

गेहूँ—पुं० [सं० गोधूम, पा० गोधूमो, प्रा० गहूअँ, गहूम, पं० ग्यूँ, गु० घऊँ-बं० गोम, उ० गहम्, मरा० गहूँ] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी बालों में लगनेवाले दाने छोटे, लंबोतरे बीजों के रूप में होते हैं और जिनके आटे या चूर्ण से कचौरी, पूरी, रोटी आदि पकवान बनते हैं। २. उक्त पौधे के छोटे लंबोतरे दाने या बीज।

गेहे-शूर—पुं० [सं० त०, सप्तमी का अलुक्] वह जो घर में ही बहादुरी दिखानेवाला हो, बाहरी लोगों के सामने कायर हो।

गेंटा†—पुं० [देश०] कुल्हाड़ी।

गेंडा—पुं० [सं० गण्डक, पा० गण्डको, प्रा० गण्डअ, गु० गंडो, मरा०, गेंडा] भैंसे के आकार का एक प्रसिद्ध शाकाहारी स्तनपायी जंगली पशु जिसके थुथने पर एक या दो सींग होते हैं। प्राचीन काल में इसके चमड़े से ढालें बनाई जाती थीं। (रेहाइनोसेरस)

गैंती—स्त्री० [देश०] १. जमीन खोदने की कुदाल। २. एक पेड़ जिसकी लकड़ी का रंग लाल होता है।

गैंद—पुं० [सं० गयंद] हाथी। उदा०—जिण बन भूल न जावता, गैंद गिनल गिड़राज।—कविराजा सूर्यमल।

†पुं० =गेंद।

गै*—पुं० [सं० गज, प्रा० गय] हाथी।

गैगहण—वि० [अनु० गहगहाना] आकाश को गुँजानेवाला (शब्द)। पुं० आकाश गुँजानेवाला शब्द। उदा०—होइ वीर हक गैगहण।—प्रिथीराज।

गैंति—स्त्री० [सं० गज=गय>गै+?] हाथियों का झुंड।

स्त्री०=गैंती।

गैन—पुं० [सं० गमन] १. गमन करना। जाना। २. गैल। मार्ग। ३. कदम। पग। उदा०—कबहुँक ठाढ़े होत टेकि कर चल न सकै इक गैन—सूर।

†पुं०=गगन (आकाश)।

†पुं०=गयंद (हाथी)। उदा०—कोऊ नहिं बरजै, जो इनको बनै मत्त जिमि गैन।—भारतेंदु।

गना—पुं० [हिं० गाय] छोटा और नाटा बैल।

गैनी*—वि० स्त्री०=गामिनी (गामी का स्त्री रूप)। जैसे—गज-गैनी।

गैफल—पुं० [?] जहाज के आगे की तरफ का एक छोटा पाल। (लश०)

गैफल कँजा—पुं० [?] गैफल नामक पाल को चढ़ाने-उतारने की रस्सी। (लश०)

गैब—पुं० [अं०] १. वह लोक जो सामने दिखाई न देता हो। अदृश्य लोक। २. परोक्ष।

गैबत—स्त्री० [अं०] किसी के पीठ-पीछे की जानेवाली शिकायत। निन्दा। चुगली।

गैबदाँ—वि० [अ०] [भाव० गैबदानी] ऐसी वातों का जाननेवाला जो प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा न जानी जा सकें। परोक्ष की वातों का ज्ञाता।

गैबर—पुं० [देश०] लकलक की जाति की एक चिड़िया जिसके डैने और पीठ सफेद, दुम काली तथा चोंच और पैर लाल होते हैं।

*पुं० [सं० गजवर] बड़ा हाथी।

गैबी—वि० [अ० गैब] १. गैब या परोक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला। गैब का। २. छिपा हुआ। गुप्त। ३. किसी अज्ञात देश या स्थान से आया हुआ। ४. बिलकुल नया और अपरिचित।

गैयर*—पुं० [सं० गजवर] हाथी। बड़ा हाथी।

वि० [हिं० गैया] गौ की तरह सीधे स्वभाववाला। उदा०—मन मतंग गैयर हने मनसा भई सिचान।—कवीर।

स्त्री० दे० 'नीलगाय'।

गैया—स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

ग़ैर—वि० [अ०] १. प्रस्तुत से भिन्न। कुछ और या कोई और। जैसे—गैर मौरूसी=मौरूसी से भिन्न। २. अन्य। दूसरा। ३. जिसके साथ आत्मीयता का संबंध न हो। जैसे—गैर आदमी, गैरमर्द। ४. दूसरे या दूसरों से संबंध रखनेवाला। जैसे—गैर इलाके या गैर मुल्क का।

मुहा०—**गैर करना**=(क) गैरों या परायों का-सा व्यवहार करना। (ख) वैर-विरोध या शत्रुता करना।

५. कथित से भिन्न होने के कारण ही विपरीत या विरुद्ध। जैसे—गैर जरूरी, गैर मुमकिन, गैर वाजिब, गैर हाजिर आदि।

पुं० दे० 'गैयर'।

†स्त्री १. दे० 'गैल'। २. दे० 'घर'।

ग़ैर-आबाद—वि० [अ०+फा०] १. (प्रदेश) जिसमें मनुष्यों की बस्ती न हो। २. (भूमि) जो जोती-बोई न गई हो या न जाती हो।

ग़ैर-इंसाफी—स्त्री० [अ०] अन्याय।

गै-रखी—स्त्री० [हिं० गै=गला+रखी] सुनारों की बोली में, हँसुली।

ग़ैर-जरूरी—वि० [अ०] अनावश्यक।

ग़ैर-जिम्मेदार—वि० [अ०+फा०] [भाव० गैर-जिम्मेदारी] १. जो जिम्मेदार या जवाबदेह न हो। २. जो अपनी जिम्मेदारी या उत्तर-दायित्व न समझता हो। अनुत्तरदायी।

ग़ैरत—स्त्री० [अ०] मन में होनेवाली अपने ही संबंध में वह खेदजनक भावना जो कोई अनुचित या अशोभन काम करने पर उत्पन्न होती है या होनी चाहिए। लज्जा। शर्म।

ग़ैरतदार—वि० [अ०+फा०] लज्जाशील।

ग़ैरतमंद—वि०=गैरतदार।

ग़ैर-दखीलकार—पुं० [अ०+फा०] वह असामी (या खेतिहर) जिसे दखीलकारीवाले अधिकार प्राप्त न हों। (नान्ऑकुपेन्सी टेनेन्ट)

ग़ैर-मजरूआ—वि० [अ०] (भूमि) जो जोती-बोई न गई हो या न जाती हो।

ग़ैर-मनकूला—वि० [अ०] (पदार्थ या सम्पत्ति) जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जाया जा सके। अचल। स्थावर।

ग़ैर-मामूली—वि० [अ०] १. नित्य के नियम से भिन्न। २. असाधारण।

ग़ैर-मिसिल—वि० [अ०] १. जो मिसिल में न हो, बल्कि उसके बाहर हो। २. किसी दूसरे वर्ग या विभाग का। ३. अनुचित। ४. जो उपयुक्त अवसर पर न हो। बे-मौके। ५. अशिष्टतापूर्ण या अश्लील। (परहास, व्यंग्य आदि के संबंध में प्रयुक्त) जैसे—गैरमिसिल दिल्लगी।

ग़ैर-मुनासिब—वि० [अ०] जो मुनासिब अर्थात् उचित न हो। अनुचित।

ग़ैर-मुमकिन—वि० [अ०] जो मुमकिन अर्थात् संभव न हो। असंभव।

ग़ैर-मुल्की—वि० [अ०] १ गैर या दूसरे देश का। विदेशी। २. दूसरे राज्यों या राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला। पर-राष्ट्रीय।

ग़ैर-रस्मी—वि० [अ०+फा०] (कार्य या व्यवहार) जो परंपरा, रीति आदि के अनुसार न किया गया हो।

ग़ैर-वसली—स्त्री० [अ०] कच्चे मकानों की छत छाने की वह प्रणाली जिसमें बाँस की पतली कमाचियों को दृढ़तापूर्वक केवल बुन देते हैं और उन्हें रस्सियों से नहीं बाँधते।

ग़ैर-वसूल—वि० [अ०] [भाव० गैर-वसूली] जो वसूल या प्राप्त न हुआ हो, अभी वसूल होने को बाकी हो।

ग़ैर-वाजिब—वि० [अ०] अनुचित। नामुनासिब।

ग़ैर-सरकारी—वि० [अ०] १. जो सरकारी या राजकीय न हो बल्कि,

उससे भिन्न हो। अराजकीय। २. जिसके लिए सरकार उत्तरदायी न हो। (वक्तव्य आदि)

गैर-हाजिर—वि० [अ०] जो हाजिर या उपस्थित न हो। अनुपस्थित।

गैर-हाजिरी—स्त्री० [अ०] हाजिर या उपस्थित न होने की अवस्था या भाव। अनुपस्थिति।

गैरिक—पुं० [सं० गिरि+ठञ्—इक] १. गेरू। २. सोना। स्वर्ण।
वि० १. गेरू के रंग में रंगा हुआ। २. गेरू के रंग का।

गैरियत—स्त्री० [अ०] गैर (पराया या भिन्न) होने की अवस्था या भाव।

गैरी—स्त्री० [सं०] लांगलिका वृक्ष। विषलाँगला।
वि० [?] १. कूड़ा-करकट भरकर खाद बनाने का गड्ढा। २. खेत से काटकर लाए हुए डंठलों आदि का ढेर। खरही।

गैरीयत—स्त्री०=गैरियत।

गैरेय—पुं० [सं० गिरि+ढक्—एय] शिलाजीत।

गैल—स्त्री० [हिं० गली] १. मार्ग। रास्ता। २. गली।
मुहा०—**(किसी को) गैल करना**=रास्ते में जाने के लिए किसी को साथ कर देना। **(किसी की) गैल जाना**=(क) किसी के बतलाये हुए रास्ते पर जाना। अनुकरण या अनुसरण करना। (ख) कोई ऐसा काम करना जिससे किसी का सामना हो या विरोध करना पड़े। **(किसी को) गैल बताना**=दे० 'रास्ता' के अंतर्गत मुहा०—'(रास्ता बताना'। **(किसी को) गैल लेना**=रास्ते में चलने के लिए किसी व्यक्ति को अपने साथ लेना।

गैलड़—पुं० [अ० गैर+हिं० लड़का] वह लड़का जिसे उसकी माँ अपने साथ लेकर दूसरे पति या यार के यहाँ चली आई हो।

गैलन—पुं० [अं०] तरल पदार्थ मापने का एक अँगरेजी मान जो तीन सेर के लगभग होता है।

गैलरी—स्त्री० [अं०] १. सीढ़ियों की तरह ऊपर-नीचे बनी हुई कोई ऐसी रचना जिस पर बहुत-से लोग बैठते या चीजें रखी जाती हों। २. उक्त कार्यों के लिए ऊपर के खंड में बनी हुई कोई समतल रचना।

गैला—पुं० [हिं० गैल] १. गाड़ी के पहियों की लीक। २. बैलगाड़ियों आदि के चलने का रास्ता। ३. गैल या रास्ते में चलनेवाला। बटोही। यात्री। उदा०—गैल चलत गैला हूँ मारे घायल पड़े गरियाले में।—ग्राम्य-गीत।
†वि० [हिं० गया] [स्त्री० गैली] गया-बीता। उदा०—गैली दीखे मीराँ बावली, सुपना आल जँजाल।—मीराँ।

गैलारा—पुं०=गैला।

गैस—स्त्री० [अं०] १. किसी पदार्थ (या द्रव्य) का प्राकृतिक अथवा रासायनिक क्रिया से बना हुआ वह वायुवत् रूप जो अत्यंत प्रसरणशील होता है। २. वह दह्य जिसे जलाकर रोशनी की जाती है तथा चीजें गरम की जाती हैं। ३. बड़ी लालटेन की तरह का वह उपकरण जिसमें गैस जलाकर रोशनी उत्पन्न की जाती है। ४. पाखाने आदि में से निकलनेवाली तीव्र गंधयुक्त वायु।

गैस-मापी—पुं० [अं०+हिं०] गैस के आधान के मुँह पर लगा हुआ वह उपकरण जो गैस बाहर निकलने पर उसका मान या माप बतलाता है। (गैसोमीटर)

गैसा†—वि० [?] [स्त्री० गैसी] =गहरा। उदा०—सुनहु सूर तुम्हरे छिन छिन मति बड़ी पेट की गैसी ही।—सूर।

गोंइठा†—पुं० [सं० गो-विष्ठा] १. गाय के गोबर का सूखा हुआ उपला या चिप्पड़। गोहरा। २. उपला। गोहरा।

गोंइड़—पुं० [हिं० गाँव+मेड़] १. गाँव की सीमा। २. उक्त सीमा के आस-पास का क्षेत्र या भूमि।

गोंइयाँ†—उभय० =गोइयाँ।

गोंईं†— स्त्री० [हिं० गोहन] बैलों की जोड़ी।

गोंच†—स्त्री० [सं० गोचंदना] जोंक।

गोंछ—स्त्री० [हिं० गलमोछ] १. गलमुच्छा। २. बहुत बड़ी मूँछ।

गोंजना—स० [?] १. भद्दी तरह से मिला-जुलाकर खराब या गंदा करना। २. घँघोलना। ३. खोंसना।

गोंजिया†—स्त्री०=गोभी।

गोंटा—पुं० [?] एक प्रकार का छोटा पेड़।
†पुं० दे० 'गोटा'।

गोंठ—स्त्री० [सं० गोष्ठ] धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

गोंठना—स० [सं० कुंठन] (शस्त्र आदि की) धार या नोक कुंठित या भोथरी करना।
स० [सं० गोष्ठ] १. चारों ओर रेखा या लकीर बनाकर घेरना। २. पकवान के अंदर मसाले, मेवे आदि भरकर उनका मुँह इस प्रकार मोड़ कर बंद करना कि वे मसाले या मेवे बाहर न गिरने पावें।

गोंठनी—स्त्री० [हिं० गोंठना] लोहे, पीतल का एक छोटा औजार जिससे पकवानों का मुँह गोंठते या मोड़कर बंद करते हैं।

गोंड़—पुं० [सं० गोण्ड] १. एक असभ्य जंगली जाति जो प्रायः गोंडवाना प्रदेश (मध्य भारत) में रहती थी और अब चारों ओर फैल गई है। २. उक्त जाति का कोई व्यक्ति। ३. वर्षाऋतु में गाया जानेवाला एक राग।
†पुं० [सं० गोरणु] १. नाभि के ऊपर का निकला हुआ मांस-पिंड। २. वह व्यक्ति जिसका उक्त मांस-पिंड असाधारण रूप से बड़ा या मोटा हो।
पुं० [सं० गोष्ट] १. गायों के रहने का स्थान। २. लंगर के ऊपर का गोलाकार भाग।

गोंडरा—पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० गोंडरी] १. चरसे या मोट के ऊपर का काठ का घेरा। मेंडरा। २. गोल आकार की कोई वस्तु। मेंड़रा। ३. गोल घेरा। ४. चारों ओर खींची हुई मंडलाकार रेखा या लकीर।

गोंडरी—स्त्री० [सं० कुंडली] १. कुंडल की तरह की कोई गोलाकार रचना या वस्तु। २. दे० 'इँडुरी'।
स्त्री० [हिं० गोंड़] गोंडवाने की बोली। गोंड़वानी।

गोंडला†—पुं० =गोंडरा।

गोंडवाना—पुं० [हिं० गोंड़] मध्यभारत का वह प्रदेश जिसमें मूलतः गोंड़ जाति के लोग रहते थे।

गोंडवानी—स्त्री० [हिं० गोंडवाना] गोंड़वाना प्रदेश की बोली।
वि० गोंडवाने का।

गोंड़ा—पुं० [सं० गोष्ठ] १. घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २. गाँव या ऐसी हो कोई छोटी बस्ती। ३. किसी एक किसान के वे सब खेत या उनका घेरा

जो एक ही स्थान पर एक दूसरे से सटे हुए हों। ४. घर के बीच का आँगन। ५. विवाह के समय की परछन नामक रीति।

मुहा०—गोंडा सीजना=दरवाजे पर बरात आने के समय कन्या-पक्ष से कुछ धन निछावर करके बाँटना या लुटाना।

† पुं० [?] साल के जंगलों में होनेवाली एक प्रकार की लता।

गोंड़ी—स्त्री० [हिं० गोंड़] गोंडवाना प्रदेश में बोली जानेवाली गोंड़ जाति की बोली। गोड़वानी।

गोंद—पुं० [सं० कुंदुरु वा हिं० गूदा] १. कुछ विशिष्ट पौधों तथा वृक्षों में से निकलनेवाला चिपचिपा या लसीला तरल निर्यास जो जमकर डलों या दानों के रूप में हो जाता है। २. उक्त निर्यास को पानी में घोलकर तैयार किया हुआ वह रूप जिससे कागज आदि चिपकाये जाते हैं।

स्त्री० दे० 'गोंदी'।

गोंददानी—स्त्री० [हिं० गोंद+फा० दान] वह पात्र जिसमें गोंद भिगोकर रखा रहे।

गोंदनी† —स्त्री० दे० 'गोंदी'।

गोंदपँजीरी—स्त्री० [हिं० गोद+पँजीरी] वह पँजीरी जिसमें गोंद भी मिलाया गया हो।

गोंदपाग—पुं० [हिं० गोंद+पाग] गोंद और चीनी के मेल से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। पपड़ी।

गोंदरा†—पुं० [सं० गुंद्रा=एक घास] १. गोनरा नामक घास। २. नरम घास या पयाल का बना हुआ एक प्रकार का छोटा आसन।

गोंदरी—स्त्री० [सं० गुंद्रा] १. एक प्रकार की मुलायम लंबी घास जो पानी में होती है। गोनी। २. उक्त घास की बनी हुई चटाई।

गोंदला—पुं० [सं० गुंद्रा] १. नागरमोथा नामक घास की एक जाति। २. गोनरा या गोनी नामक घास।

गोंदा—पुं० [हिं० गूँधना] १. बुलबुलों को खिलाई जानेवाली गूँधे हुए भूने चने के बेसन की छोटी-छोटी गोलियाँ।

मुहा०—गोंदा दिखाना=(क) बुलबुलों को लड़ाने के लिए उनके आगे गोंदा फेंकना। (ख) दो पक्षों में लड़ाई लगाना।

२. गीली मिट्टी के वे पिंड जो कच्ची दीवारें बनाने के समय एक पर एक रखे जाते हैं। गारा। उदा०—उसको मिट्टी के गोंदों की ऊँचाई देकर फूस से ढक दिया।—वृन्दावनलाल वर्मा।

गोंदी†—स्त्री० [सं० गुन्द्रा] एक प्रकार की घास जिसके डठंलों से चटाइयाँ बनती हैं। गोंदरी।

गोंदीला—वि० [हिं० गोंद+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गोंदीली] १. (वृक्ष) जिसमें से गोंद निकलती हो। २. जिसमें गोंद लगी हो। गोंद से युक्त।

गोंवडा—पुं० [हिं० गाँव] गाँव के आस-पास के खेत।

गो—स्त्री० [सं०√गम् (जाना)+डो] १. गाय। गौ। २. वृष राशि। ३. वृषभ नामक ओषधि। ४. इंद्रिय। ५. वाणी। ६. सरस्वती। ७. जिह्वा। जीभ। ८. प्रकाश या उसकी किरण। उदा०—ध्वांत ठौर तजि गो दिसि जाहीं।—जायसी। ९. देखने की शक्ति। दृष्टि। १०. बिजली। ११. पृथ्वी। १२. दिशा। १३. जननी। माता। १४. दूध देनेवाले पशु। जैसे—बकरी, भैंस आदि।

पुं० [सं०] १. बैल। २. शिव का नंदी नामक गण। ३. घोड़ा। ४. चंद्रमा। ५. शिव। ६. आकाश। ७. स्वर्ग। ८. तीर। बाण। ९. वह जो किसी की प्रशंसा करता या यश गाता हो। १०. गवैया। गायक। ११ जल। पानी। १२. वज्र। १३. शरीर के रोएँ। रोम। १४. शब्द। १५. नौ की संख्या।

अव्य० [?] संख्यावाचक विशेषणों के साथ प्रयुक्त होनेवाला एक अव्यय जो गिनती पर जोर देने के लिए 'ठो' की तरह आता है। (पूरब) जैसे—चार गो कपड़ा।

स्त्री० [फा०] गाय। गौ।

पद—गो-कुशी (देखें)।

अव्य० [फा०] यद्यपि।

पद—गो कि=यद्यपि।

वि० [फा०] १. कहने या बोलनेवाला। जैसे—दरोग-गो=झूठ बोलनेवाला। २. बतलाने, समझाने या व्याख्या करनेवाला। जैसे—कानूनगो=नियम या विधान बतलानेवाला।

अ० भूतकालिक 'गया' क्रिया का स्थानिक रूप।

प्रत्य० हिं० 'गा' प्रत्यय का स्थानिक रूप। (व्रज०)

गोअर†—वि० दे० 'गँवार'। उदा०—सखि हे बुझल कान्ह गोअर।—विद्यापति।

†पुं०=ग्वाल।

गोइँजी†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जिसका मुँह और सिर देखने में बहुत कुछ एक जैसा लगता है।

गोइँठा—पुं० [सं० गो+विष्ठा] उपला। गोहरा। कंड़ा।

गोइँठौरा—पुं० [हिं० गोइँठा+औरा (प्रत्य०)] व्यक्ति जो उपले या गोहरे बनाता तथा बेचता हो।

गोइँड़(ा) †—पुं० [सं० गोष्ठ=ग्राम] १. गाँव की सीमा। २. गाँव की सीमा के पास की जमीन। ३. किसी स्थान के आस-पास का प्रदेश।

गोइंदा—पुं० [फा० गोयन्दः] गुप्त रूप से समाचार एकत्र करके किसी के पास पहुँचानेवाला व्यक्ति। गुप्तचर। जासूस। भेदिया।

गोइ*—पुं० [?] गेंद।

गोइयाँ—उभय० [हिं० गोहनियाँ] बराबर साथ में रहनेवाला संगी या साथी।

गोइयार—पुं० [देश०] खाकी रंग का एक प्रकार का पक्षी।

गोई—स्त्री० [फा०] १. कहने की क्रिया या भाव। २. वह जो कुछ कहा जाय। कथन। उक्ति।

स्त्री०=गोइयाँ।

स्त्री० [?] १. रूई की पूनी। २. बैलों की जोड़ी।

गोऊ†—वि० [हिं० गोना+ऊ (प्रत्य०)] १. कोई चीज या बात किसी से छिपानेवाला। २. छीनने या हरण करनेवाला।

गो-कंटक—पुं० [ष० त०] गोक्षुर। गोखरू।

गो-कन्या—स्त्री० [ष० त०] कामधेनु।

गो-कर—पुं० [ब० स०] सूर्य।

गो-कर्ण—वि० [ब० स०] जिसके कान गऊ के कानों की तरह लंबे हों।

पुं० [ष० त०] १. गौ के कान। २. [ब० स०] खच्चर, जिसके कान गौ के कानों की तरह लंबे होते हैं। ३. एक तरह का हिरन। ४. एक तरह का तीर या बाण। ५. एक प्रकार का साँप जिसके कान की तरह के अंग होते हैं। ६. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध शैव तीर्थ। ७. उक्त

तीर्थ में स्थापित शिव की मूर्ति। ८. शिव के एक गण का नाम। ९. नाप के लिए, बित्ता। बालिश्त। १० नृत्य में हाथ की एक प्रकार की मुद्रा।

गोकर्णी—स्त्री० [सं० गोकर्ण+ङीष्] मूर्वा या मुरहरी नाम की लता। वि० जिसका आकार या रूप गौ के कान की तरह समकोणिक त्रिभुज की तरह का हो।

गोका—स्त्री० [सं० गो+कन्–टाप्] १. छोटी गाय। २. नील गाय। -†वि० [हिं० गौ+का] गाय का। जैसे—गौ का दूध। (पश्चिम)

गोकिराटी—स्त्री० [सं० गोकिरा=वाणी√अट् (गति)+अच्—ङीष्] सारिका (पक्षी)।

गो-कील—पुं० [ष० त०] १. हल। २. मूसल।

गो-कुंजर—पुं० [स० त०] १. खूब मोटा-ताजा और बलिष्ठ बैल या साँड़। २. शिव का एक गण।

गोकुंद—स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत की नदियों में पाई जानेवाली एक प्रकार की मछली।

गो-कुल—पुं० [ष० त०] १. गौओं का झुंड। गो-समूह। २. गोशाला। ३. मथुरा के पास की वह बस्ती जहाँ नंद और यशोदा ने श्रीकृष्ण और बलराम को पाला था।

गोकुल-नाथ—पुं० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

गोकुल-पति—पुं० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

गोकुलस्थ—पुं० [सं० गोकुल√स्था (ठहरना)+क) १. वल्लभी गोस्वामियों का एक भेद। २. तैलंग ब्राह्मणों का एक भेद।

गो-कुशी—स्त्री० [फा०] गौ का मांस खाने के लिए किया जानेवाला गौ का वध। गो-हत्या। गोवध।

गो-कृत—पुं० [तृ० त०] गोबर।

गोकोक्ष—पुं० [?] जोंक नामक कीड़ा।

गोकोस—पुं० [सं०गो-क्रोश] १. उतनी दूरी जहाँ तक गाय के रँभाने का शब्द पहुँचता हो। २. छोटा या हलका कोस।

गोक्ष—पुं० [सं० गो-अक्ष, ष० त० ?] =गोकोक्ष (जोंक)।

गो-क्षीर—पुं० [ष० त०] गौ का दूध।

गोक्षुर—पुं० [ष० त०] १. गौ का खुर। २. गोखरू नामक क्षुप और उसका फल।

गोख†—पुं० [सं० गवाक्ष] झरोखा। (राज०) उदा०—ऊभी गोख अवेखियौ पेलां रौदल सेर।—कविराजा सूर्यमल।

गोखग—पुं० [सं० गो और खग] पशु और पक्षी।

गोखरू—पुं० [सं० गोक्षुर] १. एक प्रकार का क्षुप जिसमें चने के बराबर कड़े और कँटीले फल लगते हैं। २. उक्त क्षुप के फल जो दवा के काम आते हैं। ३. उक्त फलों के आकार के धातु के बने वे कँटीले दाने जो मस्त हाथियों को वश में करने के लिए उनके रास्ते में बिछाये जाते हैं। ये दाने हाथी के पैरों में चुभकर उन्हें चलने या भागने नहीं देते। ४. गोटे और बादले से बनाया हुआ उक्त आकार का वह साज जो कपड़ों में शोभा के लिए टाँका जाता है। ५. शरीर के किसी अंग में काँटा गड़ने या कोई रोग होने के कारण बना हुआ कड़ा गोलाकार उभार। ६. पौधों की बाल। ७. हाथ में पहनने के कड़े के आकार का एक गहना। ८. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोखा—पुं० [सं० गवाक्ष] झरोखा।

पुं० [सं० गो से] गौ या बैल का कच्चा चमड़ा।

गो-खुर—पुं० [ष० त०] १. गौ का पैर। २. जमीन पर पड़ा हुआ गौ के खुरों का निशान।

गोखुरा—पुं० [सं० गोक्षुर] साँप।

गोगा†—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० गोगी] छोटा काँटा। मेख।

गोगापीर—पुं० एक पीर जिसकी पूजा प्रायः छोटी जातियों के हिंदू और मुसलमान करते हैं। (पश्चिम)

गो-गृह—पुं० [ष० त०] गोशाला।

गो-ग्रंथि—स्त्री० [मध्य० स०] १. गोबर। २. [ब० स०] गोशाला। ३. [ष० त०] गोजिह्विका नामक ओषधि।

गो-ग्रास—पुं० [ष० त०] भोजन का वह थोड़ा-सा अंश जो खाने से पहले गौ को देने के उद्देश्य से निकालकर अलग रख दिया जाता है।

गोघरी—स्त्री० [देश०] गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की कपास।

गो-घात—पुं० [सं० गो√हन् (हिंसा)+अण्, उप० स०] १. दे० 'गोघातक'। २. [ष० त०] गोहत्या।

गो-घातक—पुं० [ष० त०] १. गौ की हत्या करनेवाला। २. कसाई।

गो-घाती (तिन्)—पुं० [सं० गो√हन्+णिनि, उप० स०] =गोघातक।

गो-घृत—पुं० [ष० त०] गौ के दूध से तैयार किया हुआ घी।

गो-घोख—पुं० [सं० गो-घोष] गोशाला। उदा०—घर हट ताल भमर गोघोख।—पृथीराज।

गोघ्न—वि० [सं० गो√हन्+क] १. गौ को मारने या उसका वध करनेवाला।

पुं० अतिथि या मेहमान जिसके सत्कार के लिए किसी समय गौ का वध करने की प्रथा थी।

गो-चंदन—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का चंदन।

गोचंदना—स्त्री० [सं० गोचन्दन+अच्+टाप्] एक प्रकार की जहरीली जोंक।

गोचना†—पुं० [हिं० गेहूँ+चना] ऐसा गेहूँ जिसमें आधे के लगभग चना मिलाया गया हो।

†स० [?] गति में बाधक होना। रास्ता रोकना।

गोचनी—स्त्री०=गोचना (गेहूँ और चना)।

गो-चर—वि० [सं० गो√चर् (गति)+अच्, उप० स०] जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके।

पुं० १. वे सब चीजें या बातें जिनका ज्ञान इंद्रियों से होता अथवा हो सकता हो। उदा०—गो गोचर जहँ लगि मन जाई।—तुलसी। २. गौओं के चरने का स्थान। चरागाह। चरी। (पास्चर लैंड) ३. प्रदेश। प्रांत। ४. फलित ज्योतिष में वह गणना जो मनुष्य की जन्मपत्री के अभाव में उसके प्रसिद्ध नाम के आधार पर की जाती और वास्तविक से कुछ भिन्न तथा स्थूल होती है।

गोचर-भूमि—स्त्री० [कर्म० स०] गौओं के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि। चरागाह। चरी। (पास्चर-लैंड)

गोचरी—स्त्री० [सं० गोचर से] भिक्षावृत्ति।

†स्त्री०=गोचर-भूमि।

गोचर्म (र्मन्)—पुं० [ष० त०] १. गौ का चमड़ा। २. जमीन की एक

पुरानी नाप जो २१०० हाथ लंबी और इतनी ही चौड़ी होती थी। चरस। चरसा।

गो-चारक—पुं० [ष० त०] वह जो गौएँ चराने का काम करता हो।

गो-चारण—पुं० [ष० त०] गौएँ-भैंसें आदि चराने का काम।

गो-चारो (रिन्)—पुं० [सं० गो√चर्+णिच्+णिनि, उप० स०]=गोचारक।

गोची—स्त्री० [सं० गो√अच् गति)+क्विप+.ङीष्, नलोप, अलोप] १. एक प्रकार की मछली। २. हिमालय की एक पत्नी का नाम।

गोज—वि० [सं० गो√जन् (ज़न्म लेना)+ड, उप० स०] गौ से उत्पन्न, निकला या बना हुआ।

पुं० १. दूध से बना हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। २. एक प्रकार के प्राचीन क्षत्रिय जो राज्याभिषेक के अधिकारी नहीं होते थे।

पुं० [फा०] १. अपानवायु। पाद। २. चिल्गोजा।

गोजई—स्त्री० [हिं० गेहूँ+जौ] ऐसा गेहूँ जिसमें आधे के लगभग जौ मिला हुआ हो।

गो-जर—पुं० [स त०] बुड्ढा बैल या साँड़।

पुं० दे० 'कनखजूरा'।

गो-जल—पुं० [ष० त०] गो-मूत्र।

गोजा†—पुं० [सं० गजावन] छोटे पौधों का नया कल्ला।

†पुं०=वड़ी गोजी (छड़ी या डंडा)।

गोजागरिक—पुं० [सं० गो=स्वार्थ-जागर=सावधानी, स०त०, गोजागर+ठन्—इक[१. कँटियारी नाम का क्षुप। २. सुख और सौभाग्य।

गोजिया—स्त्री० [सं० गोजिह्वा] वनगोभी नाम की घास।

गो-जिह्वा—स्त्री० [सं० ष० त०] वनगोभी नामक घास जो औषध के काम आती है।

गोजी†—स्त्री० [सं० गजावन] १. पशुओं विशेषतः गौओं को हाँकने की लकड़ी। २. वड़ी और मोटी लाठी। ३. उक्त लाठियों से खेला जानेवाला वह खेल जिसमें लाठी चलाने और लाठी रोकने का अभ्यास किया जाता है।

गो-जीत—वि० [सं० गोजित्] जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो। जितेंद्रिय।

गोज्जल—पुं० [सं० ?] छोटे जलाशयों में रहनेवाली एक प्रकार की मछली।

गोझनवट†—स्त्री० [देश०] स्त्रियों की साड़ी के अंचल या पल्ले का उतना अंश जो पीठ और सिर पर रहता है।

गोझा—पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १. गुझिया नामक पकवान। २. जेव। खलीता। ३. जोंक। ४. दे० 'गुज्झा'।

गोट—स्त्री० [सं० गोष्ठ] चुनरी, धोती, लिहाफ आदि के किनारों पर सुन्दरता के लिए लगाई जानेवाली कपड़े की पट्टी। मगजी।

स्त्री० [सं० गोष्ठी] गोष्ठी।

स्त्री० [सं० गुटक] गोटी। (दे०)

स्त्री० [सं० गोष्ठ] गोठ। गोशाला।

†पुं० छोटा गाँव। खेड़ा।

गोट-वस्ती—स्त्री० [हिं० गोट+वस्ती] १. छोटा गाँव। २. छोटी वस्ती।

गोटा—पुं० [हिं० गोट] १. रुपहले या सुनहले तारों की वनी हुई वड़ी पट्टी जो गोट के रूप में सिले हुए कपड़ों के किनारा पर टाँकी जाती है।

पद—गोटा-पट्ठा। (देखें)

२. भुना हुआ धनिया अथवा उसके बीज। ३. भोजन के वाद खाने के लिए एक में मिलाये हुए इलायची, खरबूजे, सुपारी आदि के कतरे हुए छोटे-छोटे टुकड़े। ४. गरी या नारियल का गोला। ५. पेट के अन्दर का सूखा हुआ मल। कंडी।

†पुं०=गोला। उदा०—(क) चंदा गोटा टीका करि लै सूरा करि लै बाटी।—गोरखनाथ। (ख) औ घूटहि तँह ब्रज के गोटा।—जायसी।

†वि० १. पूरा। समूचा। सारा। २. कुल। सब। (पूरब)

गोटा-पट्ठा—पुं० [हिं० गोटा+पट्ठा] गोटा और पट्ठा नामक बादले की पट्टियाँ जो कपड़ों पर प्रायः साथ-साथ टाँकी जाती हैं।

गोटिया-चाल—स्त्री० [हिं० गोटी+चाल] वैसी ही दाँव-पेंच भरी चाल जैसी चौपड़, शतरंज आदि की गोट चलने में चली जाती है। गहरी और छिपी हुई चालबाजी।

गोटी—स्त्री० [सं० गुटिका] १. कंकड़, पत्थर इत्यादि का छोटा टुकड़ा जिससे लड़के कई तरह के खेल खेलते हैं। २. लकड़ी, हाथीदाँत आदि के बने हुए वे विशिष्ट आकार-प्रकार के टुकड़े जिनसे चौपड़, शतरंज आदि खेलते हैं। नरद। मोहरा। ३. कार्य सिद्ध होने का उपयुक्त अवसर। उदा०—सतरु कोटि जो पाइअ गोटी।—जायसी। ४. कार्य सिद्ध करने के लिए चली जानेवाली चाल या की जानेवाली युक्ति।

मुहा०—गोटी जमना या बैठना=चली हुई चाल या की हुई युक्ति का ठीक बैठना और कार्य सिद्ध होने का निश्चय या संभावना होना। **गोटी लाल होना**= युक्ति ठीक बैठने के कारण कार्य पूरी तरह से सिद्ध होना या पूरा लाभ होना।

५. एक प्रकार का खेल जो ९, १५, १८ या इससे अधिक गोटियों से भूमि पर एक दूसरी को काटती हुई कई आड़ी और सीधी रेखाएँ बनाकर खेला जाता है।

पद—गोटिया-चाल (देखें)।

गोठ—स्त्री० [सं० गोष्ठ, पा०प्रा० गोट्ठ, बं०ने० उ० गोठ, सिं० गोठु, गु० गोठो, मरा० गोठा] १. गौएँ बाँधकर रखने का घेरा या स्थान। गोशाला। २. गोष्ठी नामक श्राद्ध। ३. नगर या वस्ती के बाहर किसी रमणीक स्थान में की जानेवाली वह सैर जिसमें लोग वहीं भोजन आदि बनाकर खाते और घूमते-फिरते हैं। (पिकनिक)

गोठा†—पुं० [सं० गोष्ठी] परामर्श। सलाह।

गोठि—स्त्री० १.=गोठ। २.=गोष्ठी।

गोठिल†—वि० [हिं० गुठला] १. जिसमें गुठले पड़े हों। गुट्ठल। २. जिसकी धार या नोक मुड़कर बेकाम हो गई हो। कुंद। भोथरा।

गोड़—पुं० [सं० गम, गो] १. पाँव। पैर। (पूरब)

क्रि० प्र०—दबाना।

मुहा०—(किसी के) गोड़ पड़ना या लगना=चरण छूना। प्रणाम करना। **गोड़ भरना**= पैरों में आलता या महावर लगाना।

२. टाँग। ३. जहाज के लंगर का फाल जिसके सहारे वह जमीन पर टिकता या ठहरता है।

†पुं० [?] भड़भूँजों की एक जाति।

गोड़इत—पुं० [हिं० गोइँड़+ऐत (प्रत्य०)] १. मध्ययुग में चिट्ठियाँ

आदि ले जानेवाला हरकारा। २. आज-कल गाँव-देहातों में पहरा देनेवाला राजकीय चौकीदार।

गोड़ई—स्त्री० [हिं० गोड़+पाई] करघे की वे लकड़ियाँ जो पाई करने में पाई के दोनों ओर खड़ी की जाती हैं। (जुलाहे)

†स्त्री०=गोड़ाई।

गोड़गाव—पुं० [हिं०गोड़=पैर +गाव] वह छोटी रस्सी जिसे गिरावँ की तरह बनाकर और पिछाड़ीवाली रस्सी के सिरों पर बाँधकर घोड़े के पिछले पैर में फँसाते हैं।

गोड़न—पुं० [देश०] वह प्रक्रिया जिससे ऐसी मिट्टी से भी नमक बनाया जा सकता है जो नोनी नहीं होती।

गोड़ना—स० [हिं० कोड़ना] फावड़े से अखाड़े, खेत आदि की मिट्टी इस प्रकार खोदना तथा उसे उलट-पलट करना कि वह पोली, भुरभुरी और मुलायम हो जाय।

गोड़ली—उभय०[कर्णाटी] वह जो संगीत विशेषतः नृत्य में पारंगत हो।

गोड़वाँस—पुं० [हिं० गोड़=पैर+वाँस (प्रत्य०)] पैर विशेषतः पशुओं के पैर बाँधने की रस्सी।

गोड़वाना—स० [हिं० गोड़ना का प्रे०] दूसरे को खेत आदि गोड़ने में प्रवृत्त करना। गोड़ने का काम दूसरे से कराना।

गोड़-सँकर†—पुं० [हिं० गोड़+साँकर] पैरों में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोड़-सिहा†—वि० [हिं० गोड़+सिहाना=ईर्ष्या करना] सिहाने अर्थात् डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

गोड़-हरा—पुं० [हिं० गोड़+हरा (प्रत्य०)] पैर में पहनने का कोई गहना। जैसे—कड़ा, पाजेब आदि।

गोड़ाँगी†—स्त्री० [हिं० गोड़+अंगी] १. पायजामा। २. जूता।

गोडा—पुं० [हिं० गोड़=पैर] पैर और जाँघ के बीच का जोड़। घुटना। (पश्चिम)

मुहा०—गोडे थकना=परिश्रम, वृद्धावस्था आदि के कारण बहुत शिथिल होना।

गोड़ा†—पुं० [हिं० गोड़=पैर] १. चौकी, तिपाई, पलंग आदि का पाया। २. वह रस्सी जिसमें पानी सींचने की दौरी बाँधी जाती है। ३. वृक्ष का थाँवला या थाला।

गोड़ाई—स्त्री० [हिं० गोड़ना] गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गोड़ाना—स० [हिं० गोड़ना का प्रे०] खेत आदि की गोड़ाई दूसरे से कराना।

†अ० खेत आदि का गोड़ा जाना।

गोड़ा पाई†—स्त्री० [हिं० गोड़ना+पाई (जुलाहों की)] बार-बार कहीं आते-जाते रहना।

गोड़ारी†—स्त्री० [हिं० गोड़=पैर+आरी (प्रत्य०)] १. खाट, पलंग आदि का वह भाग जिधर पैर रखे जाते हैं। पैताना। २. जूता।

†स्त्री० [हिं० गोड़ना ?] तुरंत खोदकर निकाली हुई घास।

गोड़िया—स्त्री० [हिं० गोड़=पैर का अल्पा०] १. छोटा गोड़ा। २. छोटा पैर।

वि०, पुं० [हिं० गोटी ?] तरह-तरह की युक्तियाँ लगाने और जोड़-तोड़ बैठानेवाला। काइयाँ। चालाक।

†पुं० [?] १. मल्लाह। २. सँपेरा। उदा०—कलपै अकब्बर काय, गुण पूंगीधर गोड़िया।—दुरसाजी।

गोड़ी—स्त्री० [हिं० गोटी] किसी युक्ति के फलस्वरूप उत्पन्न ऐसी स्थिति जिसमें कुछ लाभ की संभावना हो। प्राप्ति का डौल।

मुहा०—गोड़ी जमना या बैठना=फायदे के लिए जो चाल चली गई हो उसका सफल होना। **गोड़ी हाथ से जाना**=उक्त प्रकार का प्रयत्न विफल होना।

†स्त्री०=गोड़ (चरण या पैर)।

मुहा०—(कहीं किसी को) गोड़ी आना या पड़ना=किसी का कहीं आकर उपस्थित होना या पहुँचना।

गोढ़—पुं०=गोठ (गोशाला)।

गोणी—स्त्री० [सं० √गुण् (आवृत्ति)+घञ् ? ङीप्] १. दोहरे टाट का बोरा। २. अनाज आदि की एक पुरानी नाप या तौल। ३. ऐसा पतला कपड़ा जिसमें कोई चीज छानी जा सके।

गोत—पुं० [सं० गोत्र] १. गोत्र। २. कुल, परिवार या वंश। जैसे—नात का न गोत का, बाँटा माँगे पोत का।—कहा०। ३. समूह। उदा०—मनु कागदि कपोत गोत के उड़ाये। —रत्ना०।

†स्त्री० [हिं० गोतना] १. गोते या डुबाये जाने की क्रिया या भाव। २. तंद्रा। ३. चिंता। फिक्र।

गोतम—पुं० [सं० ब० स०, पृषो० सिद्धि] १. एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि जो अहल्या के पति थे। २. एक मंत्रकार ऋषि। ३. दे० 'गौतम'।

गोतमी—स्त्री० [सं० गोतम+ङीष्] गोतम ऋषि की पत्नी, अहल्या।

गोता—पुं० [अ० गोतः] १. गहरे जलाशय में उतरकर अपने शरीर को जल में इस प्रकार डुबाना कि बाहर कोई अंग न रह जाय। डुबकी।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी को) गोता देना=किसी को जल में उक्त प्रकार से डुबाना और निकालना।

२. नदी, समुद्र आदि के तल में पड़ी हुई चीजें निकालने के लिए उक्त प्रकार से उसके तल तक जाने की क्रिया या भाव। ३. किसी अथाह या बहुत गहरी चीज या बात में से किसी तत्त्व का पता लगाने का प्रयत्न। जैसे—साहित्य में गोता लगाना। ४. इस प्रकार कहीं से अनुपस्थित या गायब हो जाना कि किसी को कुछ पता न चले। जैसे—यह धोबी तो महीने-महीने भर का गोता लगाया करता है। ५. सहसा होनेवाली कोई बहुत बड़ी भूल। (क्व०)

मुहा०—गोता खाना=(क) कोई बहुत बड़ी भूल या हानि कर बैठना। (ख) धोखे में आना। छल में फँसना।

†पुं० [सं० गोत्र] समान गोत्र या वंश। जैसे—नाते-गोते के लोग।

गोताखोर—पुं० [अ०] १. वह जो गहरे पानी में गोता लगाकर नीचे की चीजें निकाल लाने का व्यवसाय करता हो। (डाइवर) २. जल के अंदर गोता लगाकर चलनेवाली डुबकनी नाव। (सब मेरीन)

गोतामार†—पुं०=गोताखोर।

गोतिया†—वि० [सं० गोत्र] १. गोत्र-संबंधी। २. अपने गोत्र का। गोती।

गोती—वि० [सं० गोत्रीय] [स्त्री० गोतिन, गोतिनी] (व्यक्ति) जो अपने ही गोत्र का हो।

गोतीत—वि० [गो-अतीत, द्वि० त०] जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके। पुं० ईश्वर।

गो-तीर्थ—पुं० [मध्य० स०] गोशाला।

गोतीर्थक—पुं० [सं० गोतीर्थ+कन्] सुश्रुत के अनुसार फोड़े आदि चीरने का एक ढंग या प्रकार।

गोत्र—पुं० [सं० गो√त्रै (पालन करना)+क] १. संतति। संतान। २. नाम। संज्ञा। ३. क्षेत्र। ४. वर्ग। समूह। ५. राजा का छत्र। ६. वढ़ती। वृद्धि। ७. धन-संपत्ति। दौलत। ८. पर्वत। पहाड़। ९. वंधु। भाई। १०. कुल। वंश। ११. भारतीय आर्यों में किसी कुल या वंश का एक प्रकार का अल्ल या संज्ञा जो किसी पूर्वज अथवा कुल-गुरु ऋषि के नाम पर होती है। वंश-नाम। जैसे—काश्यप, शांडिल्य, भारद्वाज आदि गोत्र।

गोत्र-कार—पुं० [सं० गोत्र√कृ (करना)+अण्, उप० स०] वह ऋषि जो किसी गोत्र के प्रवर्त्तक माने जाते हों।

गोत्रज—वि० [सं० गोत्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] १. किसी के गोत्र में उत्पन्न। २. वे जो एक ही गोत्र में उत्पन्न हुए हों। गोती।

गोत्र-प्रवर्त्तक—वि० [ष० त०] (ऋषि) जो किसी गोत्र के मूल पुरुष माने जाते हों। जैसे—भारद्वाज, वसिष्ठ आदि।

गोत्र-सुता—स्त्री० [ष० त०] पार्वती।

गोत्रा—स्त्री० [सं० गोत्र+टाप्] १. गौओं का झुंड या समूह। २. पृथ्वी।

गोत्री (त्रिन्)—वि० [सं० गोत्र+इनि] एक ही अर्थात् समान गोत्र में उत्पन्न होनेवाले (व्यक्ति)। गोती।

गात्रोच्चार—पुं० [गोत्र-उच्चार, ष० त०], १. विवाह के समय वर और वधू के वंश, गोत्र और पूर्वजों आदि का दिया जानेवाला परिचय। २ किसी के पूर्वजों तक को दी जानेवाली गालियाँ। (परिहास और व्यंग्य)

गोदंत—पुं० [ष० त०] गोदंती हरताल।

गोदंती—स्त्री० [सं० गोदन्त+ङीष्] वह कच्ची और सफेद हरताल जो अभी शुद्ध न की गई हो।

गोद—स्त्री० [सं० क्रोड़] १. बैठे हुए व्यक्ति का सामने का कमर और घुटनों के बीच का भाग जिसमें बच्चों आदि को लिया जाता है। २. खड़े हुए मनुष्य का वक्षःस्थल और कमर के बीच का वह स्थान जिस पर बच्चों को बैठाकर हाथ के घेरे से सँभाला जाता है।

पद—गोद का बच्चा=ऐसा छोटा बच्चा जो प्रायः गोद में ही रहता हो।

मुहा०—(किसी को) गोद बैठाना या लेना=किसी को अपना दत्तक पुत्र बनाना।

३. स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो पेट तथा वक्षःस्थल पर रहता है। अंचल।

मुहा०—(किसी के आगे) गोद पसारकर बिनती करना या माँगना=अत्यन्त अधीरता से माँगना या प्रार्थना करना। अपनी असहाय तथा दीन अवस्था बतलाते हुए किसी से किसी बात की प्रार्थना करना। **गोद भरना**=(क) सौभाग्यवती स्त्रियों के अंचल में मंगल कामना से नारियल, मिठाई आदि रखना जो शुभ समझा जाता है। (ख) संतान होना। औलाद होना।

४. कोई ऐसा स्थान जहाँ किसी को माँ की गोद का-सा आराम तथा सुख मिले। जैसे—प्रकृति की गोद में ही आपका लालन-पालन हुआ था।

गोद-गुदालो—पुं० [देश०] गूलू नाम का पेड़।

गोदनहर—स्त्री०=गोदनहारी।

गोदनहरा—पुं० [हिं० गोदना+हरा (प्रत्य०)] १. गोदना गोदने का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २. वह व्यक्ति जो माता छापता या टीका (सूई) लगाता हो।

गोदनहारी—स्त्री० [हिं० गोदना+हारी (प्रत्य०)] कंजड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदती है।

गोदना—स० [हिं० खोदना=गड़ाना] १. कोई नुकीली तथा कड़ी चीज निरर्थक किसी कोमल तल में गड़ाना या चुभाना। जैसे—चमड़े में सूई गोदना। २. बिलकुल निरर्थक रूप में अक्षर, चिह्न आदि बनाना। जैसे—लड़का लिखता क्या है, यों ही बैठा-बैठा गोदा करता है। ३. किसी को उत्तेजित या प्रेरित करनेवाली कोई क्रिया करना या बात कहना। ४. चुभती या लगती हुई कोई कड़वी या कड़ी बात कहना। ५. हाथी के मस्तक में अंकुश गड़ाना।

†स०=गोड़ना (जमीन)।

पुं० १. तिल के आकार का वह विशिष्ट प्रकार का चिह्न या बिंदी जो शरीर के किसी अंग पर सुन्दरता, पहचान आदि के लिए नील या कोयले के पानी में डुबाई हुई सूई बार-बार गड़ाकर बनाई जाती है।

विशेष—ऐसी एक या अनेक बिंदियाँ प्रायः गाल, कलाई, आदि पर यों ही अथवा कुछ विशिष्ट आकृतियों के रूप में बनाई जाती हैं।

२. वह सूई जिसकी सहायता से अनेक प्रकार के रोगों (जैसे—प्लेग, शीतला, हैजा आदि) से रक्षित रखने के लिए कुछ विशिष्ट ओषधियाँ शरीर में प्रविष्ट की जाती हैं। सूई। ३. खेत गोड़ने का कोई उपकरण।

गोदनी—स्त्री० [हिं० गोदना] १. कोई ऐसी चीज जिससे गोदा जाय। २. गोदना गोदने की सूई।

गोदर—वि० [हिं० गदराना] १. गदराया हुआ। २. पूरी तरह से युवा अवस्था में आया हुआ।

गोदा—स्त्री० [सं० गो√दा (देना)+क—टाप्] १. गोदावरी नदी। २. गायत्री स्वरूपा महादेवी।

पुं० [हिं० गोदना] चित्रकला में वे छोटे-छोटे विन्दु जो आकृतियों आदि के स्थान और रूप-रेखा स्थिर करने के लिए लगाये जाते हैं।

पुं० [?] १. कटवाँसी बाँस। २. वृक्ष की नई डाल या शाखा। ३. गूलर, पीपल, बड़ आदि के पके हुए फल।

गो-दान—पुं० [ष० त०] १. शास्त्रीय विधि से संकल्प करके ब्राह्मण को गौ दान करने की क्रिया जिसका विधान कुछ विशिष्ट शुभ अवसरों पर अथवा प्रायश्चित्त आदि के लिए किया गया है। २. एक धार्मिक संस्कार जो विवाह से पहले ब्राह्मण कुमार को १६ वर्ष, क्षत्रिय को २२ वर्ष और वैश्य को २४ वर्ष की अवस्था में करना चाहिए। केशांत।

गोदाना—स० [हिं० गोदना] (गोदना) गोदने का काम किसी से कराना।

गोदाम—पुं० [अं० गोडाउन] वह घर या कमरा जहाँ पर बिक्री के लिए खरीदी हुई वस्तुएँ जमा करके रखी जाती हैं।

गो-दारण—पुं० [सं० गो√दॄ (विदारण)+णिच्+ल्यु—अन, उप० स०] १. जमीन खोदने की कुदाल। २. जमीन जोतने का हल।

गोदावरी—स्त्री० [सं० गो√दा (देना)+वनिप्—ङीप्, र] दक्षिण भारत

की एक प्रसिद्ध पवित्र नदी जो नासिक के पास से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

गोदी†—स्त्री०=गोद।

स्त्री० [मरा०] समुद्र का घाट जहाँ से जहाजों पर माल चढ़ाया-उतारा जाता है। (डाक)

पुं० [देश०] एक प्रकार का बबूल जो प्रायः नहरों के किनारे बाँधों पर लगाया जाता है।

गोदी मजदूर—पुं० [मरा०+फा०] जहाजों पर से माल उतारने तथा चढ़ाने का काम करनेवाला मजदूर।

गो-दुह—पुं० [सं० गो√दुह (दूहना)+क्विप्, उप० स०] १. गौ दुहनेवाला। २. ग्वाला।

गोदूनिका—स्त्री [बं०] बेंत की जाति का एक वृक्ष जो पूर्वीय बंगाल और आसाम में बहुत होता है। इसकी टहनियों से चटाइयाँ बनाई जाती हैं।

गो-दोहन—पुं० [ष० त०] गौ का दूध दुहने की क्रिया या भाव।

गोदोहनी—स्त्री० [सं० दोहन+ङीप्, गो-दोहनी, ष० त०] वह बरतन जिसमें गौ का दूध दूहा जाता है।

गो-द्रव—पुं० [ष० त०] गौ या बैल का मूत्र । गोमूत्र।

गोध—स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की तरह का गोह नामक एक जंगली जानवर।

गो-धन—पुं० [ष० त०] १. गौओं का झुंड या समूह । २. [कर्म० स०] गौ या गौओं के रूप में होनेवाली संपत्ति। ३. [गो-धन=शब्द, ब० स०] चौड़े फलवाला एक प्रकार का तीर। ४. जलाशयों के पास रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर भूरा, पैर हरे और चोंच लाल होती है।

†पुं० =गोवर्धन।

गोधना†—पुं० [सं० गोधन] भाई दूज के दिन का एक कृत्य जिसमें स्त्रियाँ गोबर से भाई के शत्रु की आकृति बनाकर उसे मूसल से मारती हैं।

गो-धर—पुं० [सं० √धृ (धारण)+अच्, गो-धर, ष० त०] पर्वत। पहाड़।

गो-धर्म्म—पुं० [ष० त०] पशुओं की भाँति पराये पुरुषों या स्त्रियों से संभोग करना।

गोधा—स्त्री० [सं० √गुध् (लपेटना)+घ ? टाप्] छिपकली की तरह का एक जंगली जानवर। गोह।

गोधा-पदी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १. मूसली नाम की ओषधि। २. हंसपदी लता।

गोधावती—स्त्री० [सं० गोधा+मतुप्, वत्व, ङीप्]=गोधापदी।

गोधिका—स्त्री० [सं० √गुध्+ण्वुल्–अक, टाप् इत्व] १. छिपकली। २. घड़ियाल की मादा।

गोधिकात्मज—पुं० [गोधिका-आत्मज, ष० त०] गोह की तरह का एक छोटा जानवर।

गोधिया†—स्त्री० दे० 'गोइयाँ'।

गोधी—स्त्री० [सं० गोधूम] एक प्रकार का गेहूँ जो दक्षिण में अधिकता से होता है और जिसकी भूसी जल्दी नहीं छूटती।

गोधूम—पुं० [सं०√गुध्+ऊम] १. गेहूँ। २. नारंगी।

गोधूमक—पुं० [सं० गोधूम-क=शिर, ब० स०] गेहुँअन नाम का साँप।

गो-धूलि—स्त्री० [मध्य० स०] १. गौओं के चलने-फिरने या दौड़ने से उड़नेवाली धूल। २. सायंकाल का वह समय जब जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ती है और जो शुभ कार्यों के लिए उपयुक्त समझा जाता है।

गोधूली—स्त्री०=गोधूलि।

गो-धेनु—स्त्री० [कर्म० स०] वह गौ जो दूध देती हो और जिसके साथ उसका बच्चा भी हो।

गोध्र—पुं० [सं० गो√धृ (धारण)+क] पहाड़। पर्वत।

गोनंद—पुं० [सं० गो√नन्द् (प्रसन्न होना)+णिच्+अण्] १. कार्तिकेय के एक गण का नाम। २. एक प्राचीन देश।

गोन—स्त्री० [सं० गोणी, गु०, बं० गुण, सिं० गूणी, मरा० गोण] १. वह दोहरा बोरा जो अनाज आदि भरकर बैलों की पीठ पर लादा जाता है। २. अनाज आदि भरने का बोरा। ३. कोई बड़ा थैला। ४. अनाज आदि की एक पुरानी तौल जो १६ मानी (२५६ सेर) की होती थी।

†स्त्री० [?] एक प्रकार का साग।

†स्त्री० दे० 'गून'।

*पुं०=गमन।

गोनर†—पुं०=गोनरा।

गोनरखा—पुं० [हिं० गोन=रस्सी+रखना] १. नाव का वह मस्तूल जिसमें गोन बाँधकर उसे खींचते हैं। २. उक्त मस्तूल में रस्सी बाँधकर नाव को खींचनेवाला मल्लाह या मजदूर।

गोनरा—पुं० [सं० गुंद्रा] उत्तरी भारत में होनेवाली एक प्रकार की लम्बी घास जो पशुओं के खाने और चटाइयाँ बनाने के काम आती है।

गोनर्द—पुं० [सं० गो√नर्द् (शब्द)+अच्] १. उत्तर-पश्चिमी भारत का एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था। २. महादेव। शिव। ३. नागरमोथा। ४. सारस पक्षी।

गोनर्दीय—पुं० [सं० गोनर्द+छ–ईय] महर्षि पतंजलि जो गोनर्द देश के थे।

गो-नस—पुं० [सं० गो-नासिका, ब० स०, नस आदेश] १. एक प्रकार का साँप। २. वैक्रांत मणि।

गोना*—स० [सं० गोपन] १. छिपाना। लुकाना। उदा०—होइ मैदान परी अब गोई।—जायसी। २. चुराना। उदा०—नगर नवल कुँवर बर सुंदर मारग जात लेत मन गोई।—सूर।

गो-नाथ—पुं० [ष० त०] १. गोस्वामी। २. बैल।

गोनास—पुं० =गोनस।

गोनिया—स्त्री० [सं० कोण, हिं० कोना+इया (प्रत्य०)] बढ़ई, लोहार आदि का एक समकोण औजार जिससे वे दीवार, लकड़ी आदि की सिधाई जाँचते हैं।

पुं० [हिं० गोन] वह जो अपनी या बैलों की पीठ पर गोन, अर्थात् बोरा लादकर ढोता हो।

पुं० [हिं० गोन=रस्सी+इया (प्रत्य०)] रस्सी बाँधकर उससे नाव खींचनेवाला मल्लाह।

गो-निष्यंद—पुं० [सं० नि√स्यन्द् (बहना)+अच् गो-निष्यंद, ष० त०] गोमूत्र।

गोप—पुं० [सं० गो√पा (पालना)+क] १. गौओं का पालन करनेवाला और स्वामी। २. ग्वाला। अहीर। ३. गोशाला का अध्यक्ष। ४.

राजा। ५. उपकारक, रक्षक और सहायक। ६. गाँव का मुखिया। ७. बोल या मुर नाम की ओषधि।

पुं० [सं० गुंफ] सिकरी या जंजीर की तरह की गले में पहनने की माला।

गोपक—पुं० [सं० गोप+कन्] १. गोप जाति का व्यक्ति। २. बहुत से गाँवों का मालिक या सरदार। ३. [√गुप् (रक्षा करना, छिपाना)+ण्वुल्–अक्] रक्षा करनेवाला व्यक्ति।

वि० १. गोपन करने या छिपानेवाला। २. रक्षक।

गोप-ज—वि० [सं० गोप√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] [स्त्री० गोपजा] गोप से उत्पन्न।

पुं० गोप जाति का पुरुष।

गोपजा—स्त्री० [सं० गोपज+टाप्] १. गोप जाति की स्त्री। २. राधिका।

गो-पति—पुं० [ष० त०] १. शिव। २. विष्णु। ३. श्रीकृष्ण। ४. सूर्य। ५. राजा। ६. नौ उपनंदों में से एक। ७. बैल या साँड़। ८. ग्वाला। अहीर। ९. ऋषभ नामक ओषधि। १०. वह जो बहुत बोलता हो। मुखर। वाचाल।

गो-पथ—पुं० [ष० त०] अथर्ववेद का एक ब्राह्मण।

गो-पद—पुं० [ष० त०] १. गौओं के रहने का स्थान। २. गौ का खुर। ३. गौ के खुरों या पैरों का चिह्न या निशान। ४. गौ के खुर से जमीन में पड़नेवाला गड्ढा। उदा०—गो-पद जल बूड़हिं घट जोनी।—तुलसी।

गोप-दल–पुं० [गोपद√ला (लेना)+क, उप० स०] सुपारी का पेड़।

गोपदी (दिन्)—वि० [सं० गोपद+इनि] गाय के खुर के समान बहुत छोटा।

गोपन—पुं० [सं० √गुप् (रक्षा करना)+ल्युट्—अन] १. छिपाने या लुकाने की क्रिया या भाव। २. कोई बात किसी दूसरे से छिपाकर रखना। दुराव। ३. रक्षा। ४. व्याकुलता। ५. चमक। दीप्ति। ६. डाँट-डपट। भर्त्सना। ७. निंदा। ८. भय। ९. छिपी हुई जगह। उदा० —दोनों सखियाँ मिल गोपन में करतीं मर्म निवेदन।—पंत। १०. तेजपत्ता।

वि० छिपा हुआ। गुप्त। उदा०—मंद हास्य से गोपन स्वीकृति देती थीं। —पंत।

गोपना—स० [सं० गोपन] १. छिपाना। २. मन की बात प्रकट न करना।

गोपनीय—वि० [सं०√गुप्+अनीयर] १. (वस्तु) जिसे दूसरों से छिपाकर रखना आवश्यक हो। २. (बात या रहस्य) जिसे दूसरों पर प्रकट न करना चाहिए।

गोपयिता (तृ)—वि० [सं०√गुप्+णिच्+तृच्] छिपानेवाला।

गोप-राष्ट्र—पुं० [मध्य० स०] आधुनिक ग्वालियर का प्राचीन नाम।

गोपांगना—स्त्री० [गोप-अंगना, ष० त०] १. गोप जाति की स्त्री। गोपी। २. अनंतमूल नाम की ओषधि।

गोपा—वि० [सं० गोपक से] १. छिपानेवाला। २. जो मन की बात न बतलाता हो अथवा रहस्य प्रकट न करता हो।

स्त्री० [सं० गोप+टाप्] १. गोप जाति की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन। ग्वालिन। ३. श्यामा नाम की लता। ४. गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा का दूसरा नाम।

गोपाचल—पुं० [सं० गोप-अचल, मध्य० स०] १. ग्वालियर के पास के पर्वत का पुराना नाम। २. ग्वालियर।

गोपायक—वि० [सं०√गुप्+आय्+ण्वुल्–अक] १. छिपानेवाला। २. रक्षा करनेवाला।

गोपायन—पुं० [सं०√गुप्+आय्+ल्युट्–अन] १. गोपन। २. रक्षण।

गो-पाल—पुं० [सं० गो√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १. गौ का पालक, रक्षक और स्वामी। २. अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण। ४. मन जो इंद्रियों का पालन और रक्षा करता है। ५. राजा। ६ एक प्रकार का छंद जिसका प्रत्येक चरण १५ मात्राओं का होता है। इसमें ८ और ७ पर यति होती है।

गो-पालक—पुं० [ष० त०] १. गौओं का पालन करनेवाला। गो-पाल। ग्वाला। २. शिव। ३. राजा।

गोपाल-कक्षा—स्त्री० [ष० त०] महाभारत के अनुसार पश्चिम भारत का एक प्राचीन देश।

गोपाल-तापन, गोपाल-तापनीय—पुं० [सं० √ तप्+णिच्+ल्यु–अन, गोपाल-तापन, ष० त०] [गोपाल-तापनीय=सेव्य, ब० स०] एक उपनिषद् जिसकी टीका शंकराचार्य तथा अन्य कई विद्वानों ने की है।

गोपाल-मंदिर—पुं० [ष० त०] वैष्णवों का वह बड़ा मन्दिर जिसमें गोपाल जी की मूर्ति रहती है।

गो-पालि—पुं० [सं० गो √पाल+णिच्+इन्, उप०स०] १. एक प्रवर। २. महादेव। शिव।

गोपालिका—स्त्री० [सं० गोपालक+टाप्, इत्व] १. ग्वालिन। अहीरिन। २. सारिवा नाम की ओषधि। ३. ग्वालिन नामक बरसाती कीड़ा। गिंजाई।

गोपाली—स्त्री० [सं० गोपाल+ङीष्] १. गौ पालनेवाली स्त्री। २. कार्तिकेय की एक मातृका।

गोपाष्टमी—स्त्री० [गोप अष्टमी मध्य० स०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी। कहते हैं कि इसी दिन श्रीकृष्ण ने गोचारण आरंभ किया था। इस दिन गोपूजन, गो प्रदक्षिणा आदि का माहात्म्य कहा गया है।

गोपिका—स्त्री० [सं० गोपी+कन्-टाप्, ह्रस्व] १. गोप जाति की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन। ग्वालिन।

वि० स्त्री० 'गोपक' का स्त्री०।

गोपिका-मोदी—स्त्री० [सं० गोपिका√मुद् (प्रसन्न होना)+णिच्+अण् ङीप्, उप० स०] एक संकर रागिनी जो कामोद और केदारी के योग से बनती है।

गोपित—भू० कृ० [सं० √गुप्+णिच्+क्त] १. छिपा या छिपाया हुआ। गुप्त। २. रक्षित।

गोपिनी—स्त्री० [सं० गोपी] १. गोप जाति की स्त्री। गोपी। २. [सं०√गुप्+णिनि—ङीप्] श्यामा लता। ३. तांत्रिकों की तंत्र पूजा के समय की नायिका।

वि० स्त्री० छिपानेवाली।

गोपिया—स्त्री० [हिं० गोफन] गोफन। ढेलवाँस (दे०)।

गोपी (पिन्)—वि० [सं० √गुप्+णिनि] [स्त्री० गोपिनी] १. छिपानेवाला। २. बचाने या रक्षा करनेवाला।

स्त्री० [सं० गोप+ङीष्] १. गोप जाति की स्त्री। २. अहीर या

ग्वाले की स्त्री। ३. ब्रज की उक्त जाति की प्रत्येक स्त्री जो श्रीकृष्ण से प्रेम करती थी। ४. [√गुप्+अच्—ङीष्] सारिवा नाम की ओषधि।

गोपी-चंदन—पुं० [मध्य० स०] द्वारका के सरोवर की वह पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं (आज कल यह नकली भी बनने लगी है।)

गो-पीत—पुं० [सं० गो=गोरोचना-पीत, उपमि० स०] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

गोपीता*—स्त्री०=गोपी।

गोपीथ—पुं० [सं० गो√पा (पीना, रक्षा करना)+थक्, नि० ईत्व] १. वह सरोवर जहाँ गौएँ जल पीती हों। २. एक प्राचीन तीर्थ। ३. पालन-पोषण या रक्षण। ४. राजा।

गोपी-नाथ—पुं० [ष० त०] गोपियों के स्वामी, श्रीकृष्ण।

गो-पुच्छ—पुं० [ष० त०] १. गौ की पूँछ। गाय की दुम। २. एक प्रकार का बंदर। ३. एक प्रकार का गावदुम हार। ४. एक प्रकार का पुराना बाजा।

गो-पुटा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बड़ी इलायची।

गो-पुत्र—पुं० [ष० त०] १. सूर्य के पुत्र। कर्ण। २. गाय का बछड़ा।

गोपुर—पुं० [सं०√गुप् (रक्षा)+उरच्] १. बड़े किले, नगर, मंदिर आदि का ऊँचा, बड़ा और मुख्य द्वार। २. बड़ा दरवाजा। फाटक। ३. गोलोक। स्वर्ग।

गोपेंद्र—पुं० [गोप-इंद्र, ष० त०] १. गोपों का राजा या स्वामी। २. श्रीकृष्ण।

गोप्ता(प्तृ)—वि० [सं०√गुप्+तृच्] १. छिपानेवाला। २. रक्षक।
पुं० विष्णु।
स्त्री० गंगा।

गोप्य—वि० [सं० √गुप्+ण्यत्] १. गुप्त रखने या छिपाने लायक। गोपनीय। २. बचाकर या रक्षित रखे जाने के योग्य। ३. छिपा या बचाकर रखा हुआ। गुप्त।
पुं० १. दास। सेवक। २. दासी से उत्पन्न की हुई संतान। ३. कोई चीज रेहन या गिरवी रखने का वह प्रकार जिसमें रेहन रखी हुई चीज के आय-व्यय पर उसके स्वामी का ही अधिकार रहता हो और जिसके पास चीज रेहन रखी जाय वह केवल सूद लेने का अधिकारी हो। दृष्टबंधक। ४. [गोपी+यत्] गोपियों का वर्ग या समूह।

गो-प्रचार—पुं० [ष० त०] गौओं के घूमने-फिरने और चरने की जगह। चरागाह। चरी।

गो-प्रवेश—पुं० [ब० स०] गौओं के चरकर लौटने का समय। संध्या। गोधूलि।

गोफ—पुं० [?] गले में पहनने का सोने का एक प्रकार का गहना।

गो-फण—स्त्री० [सं०?] जख्म, फोड़े आदि पर बाँधने की एक प्रकार की पट्टी या बंधन। (सुश्रुत)

गोफन(ा)—पुं० [सं० गोफंण] छींकें की तरह का एक प्रकार का जाल जिसमें भरे हुए छोटे-छोटे कंकड़, पत्थर उसे रस्सी से बाँधकर घुमाने पर चारों ओर वेग से गिरते हैं और चोट पहुँचाते हैं। ढेलवाँस।

गोफा—पुं० [सं० गुम्फ] १. अरुई, केले, सूरन आदि का नया मुँह-बँधा कल्ला। २. एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में फँसाने से बनने वाली मुद्रा।
क्रि० प्र०—जोड़ना।

गो-बंधन—पुं० [ष० त०] बंधन (रस्सी या साँकल) जिससे गाय बाँधी जाय। उदा०—गोबंधन कंधन पै धारे फेंटा झुकि रह्यो माथ।—हरिश्चन्द्र।

गोबर—पुं० [सं० गोमय] गाय का मल या विष्ठा जो हिंदुओं में पवित्र माना जाता और सूख जाने पर ईंधन के रूप में जलाया जाता है।
क्रि० प्र०—पाथना।

मुहा०—गोबर खाना=एक बार अनुपयुक्त ढंग से काम करने पर तथा अपनी भूल मालूम होने या सफलता न मिलने पर भी फिर से उपयुक्त ढंग से काम न करना।

गोबर-गणेश—वि० [हिं० गोबर+सं० गणेश] १. जो आकार-प्रकार या रूप-रंग की दृष्टि से बहुत ही भद्दा हो। २. निरा मूर्ख (व्यक्ति)।

गोबर-गिद्धा—पुं० [हिं० गोबर+गिद्धा] गिद्ध की जाति का एक पक्षी।

गोबर-धन—पुं०=गोवर्धन।

गोबरहारा—पुं० [हिं० गोबर+हारा (प्रत्य०)] गोबर उठाने तथा पाथनेवाला व्यक्ति।

गोबराना†—स० [हिं० गोबर+ना (प्रत्य०)] जमीन या दीवार पर गोबर पोतना या लीपना।

गोबरिया—पुं० [हिं० गोबर] बछनाग की जाति का एक पहाड़ी पौधा।

गोबरी—स्त्री० [हिं० गोबर+ई (प्रत्य०)] १. उपला। कंडा। गोहरा। २. जमीन या दीवार पर गोबर से की जानेवाली पोताई या लिपाई।
क्रि० प्र०—करना।—फेरना।
स्त्री० [देश०] जहाज के पेंदे का छेद। (लश०)

मुहा०—गोबरी निकालना=जहाज के पेंदे में छेद करना।

गोबरैला—पुं० [हिं० गोबर+ऐला या औला (प्रत्य०)] गोबर में उत्पन्न होने और रहनेवाला एक छोटा कीड़ा।

गोबरौरा, गोबरौला†— पुं०=गोबरैला।

गोबिया—पुं० [देश०] आसाम की पहाड़ियों में होनेवाला एक प्रकार का छोटा बाँस।

गोबी†—स्त्री०=गोभी।

गोभ—पुं० [सं० गुंफ वा हिं० गोफा] पौधों का एक रोग जिसमें उनकी जड़ों में से नये-नये अंकुर निकलने के कारण उनकी बाढ़ रुक जाती है।

गोभा—स्त्री० [?] १. पानी की तरंग। लहर। २. मन की तरंग। उमंग। उदा०—जसुमति ढोटा ब्रज की सोभा देखि सखि कछु औरै गोभा।—सूर।
पुं० दे० 'गाभा'।

गोभिल—पुं० [सं०] सामवेदीय गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोभी—स्त्री० [सं० गोजिह्वा=वन गोभी वा गुंफ=गुच्छा] १. एक प्रकार की जंगली घास। २. एक प्रसिद्ध पौधा जिसमें सफेद रंग का बड़ा फूल लगता है और जिसकी तरकारी बनाई जाती है। ३. उक्त पौधे का फूल।

गो-भुज—पुं० [सं० गो√भुज् पालन करना)+क, उप० स०] राजा।

गो-भृत—पुं० [सं० गो√भृ (धारण करना)+क्विप् उप० स०] पर्वत। पहाड़।

गोमंत—पुं० [सं०] १. सह्याद्रि के अंतर्गत एक पहाड़ी जहाँ गोमती देवी का स्थान है। यह सिद्धपीठ माना जाता है। २. वह जो कुत्ते पालता और बेचता हो।

गोम—पुं० [सं० गगन] आकाश। उदा०—मिली सेन दूनों निजरि गज्जे गोम निसान।—चंदवरदाई।

स्त्री० [देश०] १. घोड़ों की नाभि पर होनेवाली एक प्रकार की भँवरी। २. पृथ्वी। (डिं०)

गो-मक्षिका—स्त्री० [मध्य० स०] कुकुरमाछी। कुकरौंछी।

गोमती—स्त्री० [सं० गो+मतुप्–ङीप्] १. उत्तर प्रदेश की एक नदी जो सैदपुर के समीप गंगा में मिलती है। २. बंगाल की एक नदी। ३. एक देवी जिसका प्रधान स्थान गोमंत पर्वत पर है। ४. एक वैदिक मंत्र। ५. ग्यारह मात्राओं का एक छंद।

गोमती-शिला—स्त्री० [मध्य० स०] हिमालय पर की एक चट्टान या पहाड़ी।

विशेष :—कहते हैं कि अर्जुन का शरीर यहीं पहुँचने पर गला था।

गो-मत्स्य—पुं० [उपमि० स०] एक प्रकार की मछली। (सुश्रुत)

गोमथ—पुं० [सं० गो√मथ् (बिलोना)+अच्] गोप। ग्वाला।

गोमय—पुं० [सं० गो+मयट्] गाय का मल या विष्ठा। गोबर।

गोमर—पुं० [हिं० गौ+मर (प्रत्य०)=मारनेवाला] १. गौ को मारनेवाला व्यक्ति। २. कसाई। बूचर।

गो-मल—पुं० [ष० त०] गोबर।

गो-मांस—पुं० [ष० त०] गाय का मांस जिसे खाना हिंदू शास्त्रों में वर्जित है।

गोमा—स्त्री० [देश०] गोमती नदी।

पुं० [फा०] १. एक प्रकार का वृक्ष जिसके फूलों का रस कान की पीड़ा दूर करता है। २. उक्त वृक्ष का फूल।

गोमाय—पुं०=गोमायु।

गोमायु—पुं० [सं० गो√मा (शब्द करना)+उण्, युक् आगम] १. गीदड़। श्रृगाल। २. एक प्रकार का मेढक।

गोमी (मिन्)—पुं० [सं० गो+मिनि] गीदड़ (श्रृगाल)।

स्त्री० [?] पृथ्वी। (डिं०)

गोमुख—पुं० [ष० त०] १. गौ का मुँह। २. [ब० स०] मगर नामक जलजंतु। ३. योग में एक प्रकार का आसन। ४. टेढ़ा-मेढ़ा घर। ५. ऐपन। ६. एक यक्ष का नाम। ७. इंद्र के पुत्र जयंत का सारथी। ८. नरसिंहा नामक बाजा।

वि० गौ के समान मुँहवाला। जिसका मुँह गौ के मुँह के समान हो। जैसे—गोमुख नाली या शंख, गोमुख संधि या सेंध।

पद—गोमुख नाहर या व्याघ्र=ऐसा परम क्रूर और हिंसक व्यक्ति जो ऊपर से देखने पर गौ के समान निरीह और सीधा-सादा जान पड़े।

गो-मुखी—स्त्री० [सं० गोमुख+ङीष्] १. कपड़े की वह कोणाकार थैली जिसमें हाथ डालकर जप करते समय माला फेरते हैं। जप-गुथली। २. गंगा का उद्गम स्थान जो गौ के मुख के आकार का है। ३. गौ के मुँह के आकार की घोड़ों की भौंरी। ४. चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रकार का पुराना बाजा। ५. राढ़ देश की एक नदी जिसे आज-कल गोमुड़ कहते हैं।

गो-मूत्र—पुं० [ष० त०] गौ का मूत्र जो हिन्दुओं में बहुत पवित्र तथा अनेक रोगों की ओषधि माना गया है।

गो-मूत्रिका—स्त्री० [सं० गोमूत्र+ठन्–इक] १. एक विशेष प्रकार का चित्र-काव्य जो लहरियेदार रेखा के रूप में होता है।

विशेष—इस चित्र-काव्य का नाम इसलिए 'गो-मूत्रिका पड़ा है कि इसकी पंक्तियाँ प्रायः वैसी ही होती हैं जैसी गौ या बैल के चलते-चलते जमीन पर मूतने से बनती है।

२. अंकन, चित्रण आदि में लहरियेदार वेल। बैलमुतनी। बरधमुतान। (मिएन्डर) ३. सुगंधित बीजोंवाली एक प्रकार की घास।

गो-मृग—पुं० [मध्य० स०] नील गाय।

गो-मेद—पुं० [सं० गो√मिद् (चिकना करना)+णिच्+अच्, उप० स०]=गोमेदक।

गोमेदक—पुं० [सं० गोमेद+कन्] १. एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो कई रंगों का होता है। राहुमणि। (जर्कन) २. काकोल नामक विष। ३. पत्रक नाम का साग। ४. कबाबचीनी। शीतलचीनी।

गो-मेध—पुं० [सं०√ मेध् (हिंसा)+घञ्, गो-मेध, ब० स०] अश्वमेध की तरह का एक यज्ञ जिसमें गौ के मांस से हवन किया जाता था और जो कलियुग में वर्जित है।

गोयँड़—स्त्री० [सं० गोष्ठ अथवा हिं० गाँव+मेड़] गाँव के आस-पास की भूमि।

गोयंदा—पुं०=गोइंदा।

गोय*—पुं० दे० 'गेंद' (खेलने का)।

गोया—अव्य० [फा०] १. जैसे। २. मानों।

गो-यान—पुं० [मध्य० स०] वह गाड़ी जिसे गाय या बैल खींचते हों।

गो-रंकु—पुं० [तृ० त०] १. वह जो मंत्रों का पाठ करता हो। २. दिगम्बर साधु। ३. कैदी। ४. एक प्रकार का जल-पक्षी।

गोर—स्त्री० [फा०] जमीन में खोदा जानेवाला वह गड्ढा जिसमें मुसलमान आदि मुर्दा गाड़ते हैं। कब्र।

†पुं० [अ० गोर] [वि० गोरी] फारस देश का एक पुराना प्रान्त।

†वि० [सं० गौर] १. गौर वर्ण का। गोरा। २. सफेद।

गोरका—पुं० [देश०] अरैल नाम का वृक्ष।

गो-रक्ष—पुं० [सं० √रक्ष् (रक्षा करना)+घञ्, गो-रक्ष, ष० त०] १. गौ की रक्षा करने का काम। २. [गो √रक्ष्+अण्, उप० स०] ग्वाला। ३. नेपाल देश का निवासी। गोरखा। ४. नारंगी।

गो-रक्षक—वि० [ष० त०] गौओं की रक्षा करनेवाला।

पुं० १. गोपाल। २. ग्वाला।

गो-रक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० गो√रक्ष्+णिनि, उप० स०] [स्त्री० गोरक्षिणी] गोरक्षक।

गोरख—पुं०=गोरखनाथ (योगी)।

गोरख-इमली—स्त्री० [हिं० गोरख+इमली] बहुत बड़ा और मोटे तनेवाला एक प्रकार का पेड़।

गोरख-ककड़ी––स्त्री॰ [हिं॰ गोरख+ककड़ी] फूट नामक ककड़ी या फल। गोरखी।

गोरख-डिब्बी––स्त्री॰ [हिं॰ गोरख+डिब्बी] पानी का वह कुंड या स्रोत जिसमें से गरम अथवा खनिज पदार्थों से युक्त जल निकलता हो।

गोरख-धंधा––पुं॰ [हिं॰ गोरखनाथ+धंधा] १. ऐसा कठिन और जटिल काम या बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। २. ऐसी झंझट या बखेड़ा जिससे जल्दी छुटकारा न हो। ३. कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों का वह समूह या रचना जिसे जोड़ने या अलग-अलग करने के लिए विशेष बुद्धिबल की आवश्यकता होती है।

विशेष :––ये एक प्रकार के खिलौने से होते हैं।

गोरख-नाथ––पुं॰ [गोरक्षनाथ] ई॰ १५ वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध अवधूत महात्मा और हठयोगी जिनका चलाया हुआ गोरखपंथ नामक संप्रदाय है। इन्हीं के नाम पर गोरखपुर शहर बसा है।

गोरख-पंथ––पुं॰ [हिं॰ गोरखनाथ+पंथ] महात्मा गोरखनाथ द्वारा प्रस्थापित एक पंथ या संप्रदाय।

गोरख-पंथी––वि॰ [हिं॰ गोरखनाथ+पंथी] गोरखनाथ के चलाये हुए पंथ का अनुयायी।

गोरख-मुंडी––स्त्री॰ [सं॰ मुण्डी] एक प्रकार की घास जिसमें घुण्डी की तरह के छोटे गोल फल लगते हैं, ये फल रक्तशोधन के लिए बहुत गुणकारी कहे गये हैं।

गोरखर––पुं॰ [फा॰] गधे की जाति का एक प्रकार का जंगली पशु जो गधे से बड़ा और घोड़े से छोटा होता तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में पाया जाता है।

गोरखा––पुं॰ [सं॰ गोरक्ष अथवा हिं॰ गो+रखना] १. नेपाल देश का एक प्रदेश। २. उक्त प्रदेश में रहनेवाली एक वीर जाति। ३. उक्त जाति का पुरुष।

गोरखाली––स्त्री॰ [हिं॰ गोरख] गोरखा नामक जाति और प्रदेश की बोली।

गोरखी––स्त्री॰=गोरख-ककड़ी।

गोर-चकरा––पुं॰ [देश॰] सन की जाति का एक जंगली पौधा।

गो-रज (स्)––स्त्री॰ [मध्य॰ स॰] गौओं के चलते समय उनके खुरों से उड़नेवाली धूल जो पवित्र मानी गई है।

गोरटा––वि॰ [हिं॰ गोरा] [स्त्री॰ गोरटी] गोरे रंगवाला। गोरा।

गोरड़ा†––वि॰ [स्त्री॰ गोरड़ी]=गोरटा। (राज॰) उदा॰––तियाँ तिहारी गोरड़ी, दिन दिन लाख लहाइ।––ढोलामारू।

†पुं॰ [हिं॰ गोड़ना] ईख। ऊख। (अवधी)

गोरन––पुं॰ [देश॰] १. कुछ नदियों तथा समुद्र के किनारे पर होनेवाला एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी का रंग लाल होता है। २. उक्त वृक्ष की लकड़ी जो नावें बनाने के काम आती हैं। ३. उक्त वृक्ष की छाल जो चमड़ा सिझाने के काम आती है।

गोर-मदाइन––स्त्री॰ [?] इंद्रधनुष। (बुंदेल॰)

गोरया––पुं॰ [देश॰] अगहन में होनेवाला एक प्रकार का धान।

गोरल––पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का जंगली बकरा।

†वि॰ =गोरा (गौर वर्णवाला)।

†स्त्री॰ गौरी। पार्वती। (राज॰) उदा॰––म्हाँना गुरु गोविन्द री आण, गोरल ना पूजाँ।––मीराँ।

गो-रव––पुं॰ [व॰ स॰] केसर।

गोरवा––पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का बाँस जिसकी छोटी तथा पतली टहनियों से हुक्कों के नैचे बनाये जाते हैं।

गो-रस––पुं॰ [ष॰ त॰] १. गौ का दूध। २. दही। ३. छाछ। मठा। ४. इन्द्रियों के सुख-भोग से मिलनेवाला आनंन्द।

गोरसर––पुं॰ [देश॰] बाँस के पंखों में डंडी के पास लगाई जानेवाली कमाची।

गोरसा––पुं॰ [सं॰ गोरस] [स्त्री॰ गोरसी] वह बच्चा जो गाय का दूध पीकर पला हो।

गोरसी––स्त्री॰ [सं॰ गोरस+ई (प्रत्य॰)] एक प्रकार की छोटी अंगीठी जिस पर दूध गरम किया जाता है।

गोरा––वि॰ [सं॰ गौर, प्रा॰ गोर, बं॰ उ॰ पं॰ मरा॰ गोरा, सिं॰ गोरो, गु॰ गोरूँ, ने॰ गोरो] (व्यक्ति) जिसके शरीर का वर्ण बरफ की तरह सफेद और स्वच्छ हो। गौर वर्णवाला।

पद––गोरा भभूका=बहुत अधिक गोरा-चिट्टा।

पुं॰ [स्त्री॰ गोरी] अमेरिका, यूरोप आदि ठंढे देशों में रहनेवाला ऐसा व्यक्ति जिसका वर्ण गौर हो।

पुं॰ [देश॰] १. एक प्रकार की कल जिससे नील के कारखाने में बट्टियाँ काटीं जाती हैं। २. एक प्रकार का नीबू।

गोराई†––स्त्री॰ [सं॰ गौर +हिं॰ आई] १. गोरे होने की अवस्था या भाव। गोरापन। २. व्यक्ति का रूप सम्बन्धी सौन्दर्य।

गोराटी––स्त्री॰ [सं॰ गो॰ √रट्(रटना)+अण्––ङीप्] मैना पक्षी।

गोराड़ू––पुं॰ [देश॰] ऐंसी मिट्टी जिसमें बालू का भी अंश हो।

गोरा-पत्थर––पुं॰ [हिं॰ गोरा+पत्थर] सफेद रंग का एक प्रकार का चिकना तथा मुलायम पत्थर। घीया पत्थर। संग-जराहत। (सोप स्टोन)

गोरामूंग––पुं॰ [हिं॰ गोरा+मूंग] एक प्रकार का जंगली मूंग।

गो-राष्ट्र––पुं॰ [मध्य॰ स॰] प्राचीन भारत का एक प्रदेश जिसमें अधिकतर गोप जाति के लोग रहते थे।

गोरिल्ला––पुं॰ [अफ्रिका] अफ्रीका के जंगलों में रहनेवाला एक प्रकार का बनमानुस।

गोरी––स्त्री॰ [सं॰गौरी] १. वह स्त्री जिसका वर्ण गौर हो। २. रूपवती स्त्री। सुन्दरी।

वि॰ [अ॰ गोर देश॰] फारस के गोर नामक देश का। जैसे––मुहम्मद गोरी।

गोरू––पुं॰ [सं॰ गोरूप; पा॰ गोरूप; बं॰ गरु; उ॰ ने॰ गोरू; पं॰ गोरु; मरा॰ गुरूँ] गौ, बकरी, भैंस आदि सींगवाले पालतू पशु। (कैटिल)

पुं॰ [सं॰ गोरुत] दो कोस की दूरी। (राज॰)

गोरू-चोर––पुं॰ [हिं॰ गोरू+चोर] दूसरों की गौएँ, बकरियां, भैंसें आदि चुरानेवाला व्यक्ति। (ए बैक्टर)

गो-रूप––पुं॰ [ब॰ स॰] महादेव।

गो-रोच––पुं॰ [सं॰ गो√रुच् (दीप्ति)+अच्, उप॰ स॰] हरताल।

गो-रोचन––पुं॰ [मध्य॰ स॰] एक पीला सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्ताशय से निकलता और पवित्र माना जाता है।

गो-रोचना—स्त्री० [मध्य० स०] गोरोचन।

गोर्खा—पुं०=गोरखा।

गोर्खाली—स्त्री०=गोरखाली।

गोर्द, गोर्ध—पुं० [सं०√गुर् (उद्यम)+ददन् नि० सिद्धि] मस्तिष्क।

गोलंदाज—पुं० [फा०] वह व्यक्ति जो तोप में गोला भरकर चलाता हो।

गोलंदाजी—स्त्री० [फा०] तोप से गोले चलाने का काम या कला।

गोलंबर—पुं० [हिं० गोल+अंबर] १. वास्तु में किसी प्रकार की गोलाकार रचना। जैसे—गुंबद, बगीचों आदि में बना हुआ गोल चबूतरा। २. गोलाई। ३. कलबूत जिसपर रखकर जूता, टोपी आदि चीजें सीते हैं। (कालिब)

गोल—पुं० [सं० √गुड् (रक्षण)+अच्, डस्य लः] १. मंडलाकार या वृत्ताकार बनावट या रचना। २. गोलाकार पिंड। गोला। ३. ज्योतिष में, गोल यंत्र। ४. विधवा का जारज पुत्र। गोलक। ५. मदन या मैनफल नामक वृक्ष। ६. मुर नामक ओषधि। ७. मिट्टी का गोलाकार घड़ा। ८. दक्षिण-पश्चिमी युरोप के कुछ विशिष्ट भागों का पुराना नाम।

वि० १. जिसकी गोलाई वृत्त के समान हो। (सर्कुलर) जैसे—अँगूठी, पहिया, सूर्य आदि। २. जो बहुत कुछ वृत्ताकार हो। जैसे—गोल मुँह, गोल सिर। ३. (वस्तु) जिसके बाहरी तल का प्रत्येक बिंदु उसके केंद्र से बराबर दूरी पर हो। (स्फेरिकल) जैसे—खेलने का गेंद, फेंकने का गोला। ४. (वस्तु) जिसकी आकृति बेलन जैसी हो। जैसे—गोल गिलास, गोल पाया।

पुं० [सं० गोल-योग] उपद्रव। खलबली।

पद—गोल बात=ऐसे रूप में कही जानेवाली बात जिसका ठीक-ठीक आशय या भाव किसी की समझ में न आता हो। कई अर्थोवाली बात।

मुहा०—गोल करना=कोई चीज कहीं से चुपके से हटा देना। गायब करना। **गोल रहना**=बिलकुल चुप रहना। **गोल होना**=कहीं से चुपचाप हट जाना। खिसक जाना।

पुं० हिं० 'गोला' का संक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदों में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—गोलंदाज, गोलंबर।

पुं० [फा० गोल] १. एक ही जाति के बहुत से पशुओं का समूह। जैसे—भेड़ों का गोल। २. एक ही प्रकार या वर्ग के बहुत से लोगों का झुंड।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पुं० [अं०] १. फुटबाल, हाकी आदि खेलने के मैदानों का वह भाग जहाँ एक दल के खेलाड़ी गेंद पहुँचाकर दूसरे दल को हराते हैं। २. उक्त स्थान में गेंद पहुँचाने की अवस्था या भाव।

गोलक—पुं० [सं० गोल+कन् वा√गुड्+ण्वुल्—अक, डस्य लः] १. किसी प्रकार का गोल पिंड या डला। २. विधवा स्त्री की वह संतान जो उसके जार या यार से उत्पन्न हो। ३. मिट्टी का बहुत बड़ा घड़ा। कुंडा। ४. फूलों का निकाला हुआ सुगंधित सार भाग। ५. आँख का डेला। ६. आँख की पुतली। ७. वह थैली या संदूक जिसमें किसी विशेष कार्य के लिए धन संग्रह किया जाय। गुल्लक। ८. वह थैली या संदूक जिसमें दूकानदार रोज की बिक्री के रुपए-पैसे रखते हैं। ९. गुंबद या उसके आकार की कोई गोल रचना। उदा०—गिर रहा निस्तेज गोलक जलधि में असहाय।—प्रसाद। १०. दे० 'गो-लोक'।

गोल-कलम—स्त्री० [हिं० गोल+कलम] एक प्रकार की छेनी जो धातुओं पर नक्काशी करने के काम में आती है।

गोल-कली—स्त्री० [हिं० गोल+कली] एक प्रकार का अंगूर और उसकी लता।

गोल-गप्पा—पुं० [हिं० गोल+अनु० गप] घी, तेल आदि में तली हुई एक प्रकार की छोटी फुलकी जो खटाई के रस में डुबा कर खाई जाती है।

वि० (उक्त के आधार पर) जो गोल गप्पे के समान गोलाकार और फूला हुआ हो।

गोल-पंजा—पुं० [हिं० गोल+पंजा] पुरानी चाल का वह जूता जिसकी नोक ऊपर की ओर मुड़ी हुई नहीं होती थी। मुंडा जूता।

गोल-पत्ता—पुं०=गोल-फल।

गोल-फल—पुं० [देश०] गुलगा नामक ताड़ (वृक्ष) का फल। [सं० ब० स०] मदन वृक्ष।

गोल-मटोल—वि० [हिं० गोल+ मटोल (अनु०)] १. बहुत कुछ गोलाकार। २. नाटे कद तथा भारी शरीरवाला। (व्यक्ति)

गोल-माल—पुं० [सं० गोल (योग)] ऐसी अव्यवस्था या गड़बड़ी जो जान-बूझकर और दुष्ट उद्देश्य से की गई हो।

गोल-मिर्च—स्त्री० [हिं० गोल+मरिच] काली मिर्च।

गोल-मुँहाँ—पुं० [हिं० गोल+मुँह] कसेरों की एक प्रकार की गोल मुँहवाली हथौड़ी।

गोल-मेज—स्त्री० [हिं० गोल+फा० मेज] वह गोल मेज (या मेजों का मंडलाकार विन्यास) जिसके चारों ओर बैठकर कुछ दलों या देशों के प्रतिनिधि पूर्ण समानता के भाव से किसी समस्या पर न्यायोचित रूप से और सबको सन्तुष्ट करने के उद्देश्य से विचार करें।

गोल-मेथी—स्त्री० [हिं० गोल+मोथा] मोथे की जाति का एक पेड़ जिसके डंठलों से चटाइयाँ बनाई जाती हैं।

गोल-यंत्र—पुं० [कर्म० स०] ज्योतिषियों का एक प्रकार का यंत्र जिससे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि ग्रहों और नक्षत्रों की गति-विधि, स्थिति, अयन, परिवर्तन आदि का पता लगाते हैं। और जो प्राचीन भारत में बाँस की तीलियों आदि से बनता था।

गोल-योग—पुं० [कर्म० स०] १. ज्योतिष में एक योग जो एक ही राशि में छः या सात ग्रहों के एकत्र होने से होता और बहुत अनिष्टकारक माना जाता है। २. गड़बड़ी। गोल-माल।

गोलर—पुं० [देश०] कसेरू।

गोलरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का लम्बा सुन्दर पेड़ जिसके हीर की लकड़ी चमकीली और बहुत कड़ी होती है। इसके पत्तों से चमड़ा सिझाया जाता है और लकड़ी से नावें, जहाज आदि और खेती के औजार बनाये जाते हैं।

गोल-विद्या—स्त्री० [ष० त०] ज्योतिष विद्या का वह अंग जिसमें आकाशस्थ पिंडों और ग्रहों के आकार-विस्तार, ऋतु-परिवर्तन, गति-विधि आदि का विचार तथा विवेचन होता है।

गो-लांगूल—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का बंदर जिसकी पूँछ गौ की पूँछ की तरह होती है।

गोला—पुं० [सं० गोल] [स्त्री० गोली] १. गेंद की तरह का कोई गोलाकार पिंड या वस्तु। २. धागों, रस्सियों आदि को लपेटकर बनाया हुआ उक्त आकार का पिंड। जैसे—डोरी या सूत का गोला। ३. किसी

पिसी हुई वस्तु के चूर्ण को भिगोकर या पानी आदि में सानकर बनाया जानेवाला पिंड। जैसे—आटे या भाँग का गोला। ४. लोहे का वह गोल बड़ा पिंड जिसे व्यायाम करते समय लोग हाथ से उठाकर दूर फेंकते हैं।

मुहा०—गोला उठाना=प्राचीन काल में अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए जलता हुआ लोहे का गोला इस प्रतिज्ञा से उठाना कि यदि हम निर्दोष हैं तो हमारा हाथ नहीं जलेगा।

५. धड़ाके से फटनेवाला एक प्रकार का रासायनिक विस्फोटक पिंड।

पद—गोला बारूद=युद्ध में शत्रुओं का नाश करनेवाली सामग्री। अस्त्र-शस्त्र आदि। (अम्यूनिशन्स)

६. वास्तु में, खंभे, दीवार आदि के ऊपर की गोलाकार रचना। ७. मिट्टी, काठ आदि का गोलाकार ढाँचा जिसके ऊपर कपड़ा लपेटकर पगड़ी तैयार की जाती है। ८. नारियल का वह भाग जो उसके ऊपर की जटा छीलने के बाद बच रहता है। गरी का गोला। ९. कुछ विशिष्ट प्रकार की लकड़ियों का वह लंबा तना या लट्ठा जो छाजन आदि के काम के लिए छतों पर रखा जाता है। १०. एक प्रकार का ठोस बाँस जो डंडे, छड़ियाँ आदि बनाने के काम आता है।

मुहा०—गोला लाठी करना=लड़कों का हाथ पैर बाँधकर दोनों घुटनों के बीच में डंडा डालना। (दुष्टता करने पर दिया जानेवाला एक प्रकार का दंड या सजा)

११. पेट में होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमें थोड़ी थोड़ी देर पर पेट के अन्दर नाभि से गले तक वायु का एक गोला आता-जाता हुआ जान पड़ता है। १२. अनाज, किराने आदि का बड़ा बाजार या मंडी। १३. घास का गट्ठर। १४. जंगली कबूतर। १५. कूएँ के ऊपर की गोलाकार जगत। १६. तालाब या नदी के किनारे का घाट। १७. एक प्रकार का बेंत जो बहुत लंबा और मुलायम होता है तथा टोकरे आदि बनाने के काम में आता है।

स्त्री० [सं०] १. बच्चों के खेलने का गेंद या गोली। २. छोटा घड़ा या मटकी। ३. गोदावरी नदी। ४. दुर्गा। ५. सखी। सहेली। ६. स्याही। मसि। ७. मैनसिल। ८. मंडली।

वि० वृत्त के आकार का गोल।

पुं० [अ० गोल=झुंड] पशु-पक्षियों आदि का झुंड।

पुं० [हिं० गोली=दासी] गोली (अर्थात् दासी) के गर्भ से उत्पन्न लड़का या व्यक्ति।

विशेष—मध्ययुग में राजपूताने (राजस्थान) में ऐसे लोगों की अलग जाति या वर्ग ही बन गया था।

पुं० [अ० गुलाम] ताश में का गुलाम नाम का पत्ता।

गोलाई—स्त्री० [हिं० गोल+आई (प्रत्य०)] १. किसी वस्तु के गोल होने का भाव या स्थिति। २. किसी गोल वस्तु के किनारे पर का बाहरी गोल घेरा।

गोलाकार—वि० [गोल-आकार ब० स०] जिसकी आकृति गोल हो। गोल आकारवाला। जैसे—गोलाकार चबूतरा।

गोलाधार—वि० [हिं० गोला+धार] मूसलाधार। (वर्षा)

गोलाध्याय—पुं० [गोल-अध्याय, ब० स०] भास्कराचार्य का एक ग्रंथ जिसमें भूगोल और खगोल का वर्णन है।

गोलार्द्ध—पुं० [गोल-अर्द्ध, ष० त०] १. किसी प्रकार के गोले का आधा भाग। २. गोल या पृथ्वी का आधा भाग। (हेमिस्फियर)

विशेष—भूमध्य रेखा पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों में विभाजित करती है और खमध्य रेखा पृथ्वी को पूर्वी तथा पश्चिमी गोलार्द्धों में।

३. उक्त किसी आधे भू-भाग का मानचित्र।

गोलासन—पुं० [गोल-आसन=क्षेपण, ब० स०] पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप।

गोलियाना†—स० [हिं० गोल या गोला] १. कोई चीज गोल करना। गोले के रूप में बनाना या लाना। २. छोटी-छोटी गोलियाँ बनाना। ३. पशुओं को औषध आदि गोली के रूप में बनाकर जबरदस्ती खिलाना। ४. जबरदस्ती कोई चीज या बात किसी के गले में उतारना। ५. कोई चीज कहीं से गायब करना। गोल करना। उड़ाना।

गोली—स्त्री० [हिं० गोला का स्त्री० और अल्पा०] १. कोई छोटा गोला या गोलाकार पिंड। वटिका। जैसे—दवा की गोली, बंदूक की गोली, रेशम या सूत की गोली। २. मिट्टी का वह छोटा गोलाकार पिंड जिससे बच्चे कई तरह के खेल खेलते हैं। ३. उक्त पिंडों से खेला जानेवाला खेल। ४. उक्त प्रकार का शीशे का वह गोलाकार या लंबोतरा पिंड जो तमंचों, बंदूकों आदि से शत्रुओं को मारने अथवा पशु-पक्षियों का शिकार करने के लिए चलाया जाता है।

मुहा०—गोली खाना=बंदूक आदि की गोली का आघात सहना। **(किसी काम या व्यक्ति को) गोली मारना**=उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। जैसे—गोली मारो ऐसे नौकर को।

५. किसी प्रकार का घातक वार।

मुहा०—गोली बचाना=किसी संकट वा आपत्ति से धूर्ततापूर्वक अपना बचाव कर लेना।

स्त्री० [?] १. मिट्टी का छोटा घड़ा। ठिलिया। २. पीले या बादामी रंग की गौ। ३. पशुओं का एक प्रकार का रोग।

स्त्री० [सं० गोला=सखी] १. मध्य युग में वह स्त्री जो वधुओं की सहेली के रूप में उसके साथ ससुराल भेजी जाती थी।

विशेष—ऐसी स्त्रियाँ प्रायः दासी वर्ग की होती थीं। आगे चलकर राजस्थान आदि में ऐसी दासियों की एक अलग जाति या वर्ग ही बन गया था, जो पूर्ण रूप से दास ही माना जाने लगा था। भारत में स्वराज्य होने और सामंतशाही का अंत होने पर समाज का यह वर्ग भी स्वतन्त्र हो गया।

२. छोटी-मोटी सेवाएँ या टहल करनेवाली दासी।

पुं० [अं० गोल] फुटबाल, हाकी आदि का वह खिलाड़ी जो गोल में खड़ा होता है तथा उसमें गेंद जाने से रोकता है। (गोलकीपर)

गोलीय—वि० [सं० गोल+छ—ईय] १. गोल-संबंधी। २. खगोल, भूगोल आदि से संबंध रखनेवाला।

गोलैंदा—पुं० [देश०] महुए का फल। कोइंदा।

गो-लोक—पुं० [मध्य० स०] १. विष्णु या कृष्ण का निवास-स्थान जो पुराणानुसार ब्रह्मांड में सब लोकों से ऊपर और श्रेष्ठ माना गया है। २. स्वर्ग। ३. व्रजमंडल।

गोलोक-वास—पुं० [स० त०] परलोक वास। (मृत्यु के लिए आदरार्थक)

गोलोकेश—पुं० [गोलोक-ईश, ष० त०] श्री कृष्णचन्द्र।

गोलोचन—पुं०=गोरोचन।

गो-लोमी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १. सफेद दूब। २. वेश्या।

गोलौआ—पुं० [हिं० गोल] बाँस आदि का बड़ा टोकरा।

गो-वध—पुं० [सं० ष० त०] गौ को मार डालना जो हिन्दुओं में बहुत बड़ा पाप समझा जाता है।

गोवना*—स०=गोना (छिपाना)।

गो-वर्द्धन—पुं० [ष० त०] १. गौओं का पालन, रक्षण और वृद्धि करने का काम। २. [गो√वृध् (बढ़ना)+णिच्+ल्यु—अन] वृंदावन का एक प्रसिद्ध पर्वत। कहते हैं अति वर्षा से व्रज की रक्षा करने के लिए श्री कृष्ण ने इसे उँगली पर उठा लिया था। ३. उक्त पर्वत के पास की एक वस्ती।

गोवर्धन-धारी (रिन्)—पुं० [गोवर्धन√धृ (धारण करना)+णिनि, उप० स०] श्रीकृष्ण।

गोवल—पुं० [सं० गोबल, ब० स०] गोप। ग्वाला। उदा०—जिम गोवल माँहि सोहइ गोव्यंद।—नरपतिनाल्ह।

गोविंद—पुं० [सं० गो√विद् (लाभ)+श, नुम्] १. परब्रह्म। परमात्मा। २. तत्त्व शास्त्र और वेदान्त का अच्छा ज्ञाता या पंडित। ३. गौओं या गोशाला का मालिक। ४. श्रीकृष्ण। ५. बृहस्पति। ६. शंकराचार्य के गुरु का नाम।

गोविंद-द्वादशी—स्त्री० [मध्य० स०] फागुन महीने के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि।

गोविंद-पद—पुं० [ष० त०] मोक्ष। निर्वाण।

गोवि—पुं० [सं० ?] संकीर्ण राग का एक भेद।

गो-वीथी—स्त्री० [ष० त०] चन्द्रमा के मार्ग का वह अंश जिसमें भाद्रपद, रेवती और आश्विनी तथा किसी किसी के मत से हस्त, चित्रा और स्वाती नक्षत्रों का समूह है।

गो-वैद्य—पुं० [ष० त०] १. पशुओं की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। २. [उपमि० स०] अनाड़ी या ना-समझ चिकित्सक। (परिहास)

गो-व्रज—पुं० [ष० त०] १. गौओं का झुंड या समूह। गोठ। २. गोचर भूमि। चरागाह।

गो-व्रत—पुं० [सं० त०] गो-हत्या लगने पर उसके प्रायश्चित्त के लिए किया जानेवाला व्रत जिसमें बराबर एक मास तक किसी गौ के पीछे-पीछे घूमना और केवल गौ का दूध पीकर रहने का विधान है।

गोश—पुं० [फा०] सुनने की इंद्रिय। कान।

गोश-गुजार—वि० [फा०] किसी के कानों तक पहुँचाया हुआ (विवरण या समाचार)।

गोश्पेंच—पुं० [फा०] कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गोशम—पुं० दे० 'कोसम'।

गोशमायल—पुं० [फा०] मोतियों का वह गुच्छा जो कान के पास पगड़ी पर लटकाया जाता था।

गोशमाली—स्त्री० [फा०] १. किसी को दंड देने के लिए उसके कान उमेठना या मलना। २. चेतावनी मिली हुई भर्त्सना। ताड़ना।

गोशवारा—पुं० [फा०] १. खंजक नामक पेड़ का गोंद जो मस्तगी का-सा होता है और मस्तगी ही की जगह काम में भी लाया जाता है। २. कान में पहनने का कुंडल या बाला। ३. ऐसा बड़ा मोती जो सीप में से अकेला ही निकला हो। ४. कलगी। तुर्रा। ५. कलाबत्तू का बुना हुआ पगड़ी का आँचल जो प्रायः झब्बे के रूप में कान के पास लटकता है। ६. संख्याओं का योग। जोड़। ७. वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर मद का आय-व्यय अलग-अलग दिखाया गया हो। ८. पंजी, बही आदि में भिन्न मदों या विभागों का शीर्षक।

गोशा—पुं० [फा० गोशः] १. अंतराल। कोण। कोना। २. एकान्त स्थान। ३. कमान की नोक। धनुष की कोटि। ४. ओर। दिशा।

गोशा-नसीन—वि० [फा०] [भाव० गोशा-नशीनी] घर-गृहस्थी या संसार से विरक्त होकर एकान्त वास करनेवाला।

गो-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ गौएँ पाली तथा रखी जाती हों। बहुत सी गौओं के रहने का स्थान।

गो-शीर्ष—पुं० [ब० स०] १. एक पर्वत का प्राचीन नाम। २. उक्त पर्वत पर होनेवाला चन्दन। ३. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

गो-शृंग—पुं० [ब० स०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक प्राचीन पर्वत। ३. कीकर। बबूल।

गोश्त—पुं० [फा०] १. शरीर के अन्दर का मांस। २. मारे हुए पशु का मांस जो लोग खाते हैं। जैसे—बकरी या भेड़ का गोश्त।

गोष्ठ—पुं० [सं० गो√स्था (ठहरना)+क] १. गौओं के रहने का स्थान। गोशाला। २. [गोष्ठी+अच्] एक ही प्रकार के पशुओं के रहने का स्थान। जैसे—अश्व गोष्ठ। ३. एक प्रकार का प्राचीन श्राद्ध जो बहुत से लोग मिलकर करते थे। ४. परामर्श, सलाह मशविरा। ५. दल। मंडली।

गोष्ठ-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ लोग मिल कर परामर्श आदि करते हों। सभा का भवन या स्थल।

गोष्ठागार—पुं० [गोष्ठ-आगार, ष० त०] =गोष्ठ-शाला।

गोष्ठी—स्त्री० [सं० गोष्ठ+ङीष्] १. छोटा गोष्ठ। २. परिचितों या मित्रों की मंडली या समुदाय। ३. औपचारिक रूप से होनेवाली ऐसी बैठक जिसमें किसी विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए मित्र-मंडली के सदस्य भाग लेते हैं। जैसे—उद्यान गोष्ठी, सान्ध्य-गोष्ठी। ४. इस प्रकार होनेवाला विचार-विमर्श। ५. एक प्रकार का एकांकी नाटक जिसमें ५ या ७ स्त्रियाँ और ९ या १० पुरुष हों।

गोष्पद—पुं० [सं० ष० त० सुट् नि० वा गो√पद् (गति)+अच्] १. गौओं के रहने का स्थान। गोष्ठ। २. वह गड्ढा जो गीली जमीन पर गौ का खुर पड़ने से बनता है। ३. प्रभास क्षेत्र के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ। ४. दे० 'गोपद'।

गोस—पुं०] ?] १. एक प्रकार का झाड़ जिसमें से गोंद निकलता है। २. तड़का। प्रभात।

पुं० [फा० गोश] १. कान। २. जहाज का रुख इस प्रकार कुछ टेढ़ा करना कि उसे ठीक प्रकार से हवा लगे। (लश०)

गोसई—स्त्री० [देश०] कपास के पौधों का एक रोग जिसके कारण उनमें फूल नहीं लगते।

गोसठ*—स्त्री० =गोष्ठी।

गोसमावल†—पुं०=गोशमायल।

गो-सर्ग—पुं० [ष० त० वा० ब० स०] वह समय जब गौएँ चरने के लिए खोलकर छोड़ी जाती है; अर्थात् प्रातःकाल।

गोसली†—स्त्री० दे० 'गोधूलि'।

गोसल्ल—पुं० [अ० गुस्ल] स्नान। उदा०—करि गोसल्ल पवित्र होइ चिन्त्यौ रहमानम्।—चंदवरदाई।

गोसव—पुं० [सं० गो√सू (हिंसा)+अप् (आधारे)] गोमेध-यज्ञ।

गोसहस्री—स्त्री० [गो-सहस्र ष० त०, +अच्–ङीप्] ज्येष्ठ और कार्तिक मासों की अमावास्याएँ।

गोसा—पुं० [सं० गो] उपला। कंडा

†पुं० = गोशा।

गोसाईं—पुं० [सं० गोस्वामी] १. उत्तर भारत की एक जाति जो गृहस्थ होने पर भी प्रायः गेरुए वस्त्र पहनती है (कदाचित् ऐसे त्यागियों के वंशज जो फिर गृहस्थ आश्रम में आ गये थे)। २. साधु-संन्यासियों और त्यागियों के लिए सम्बोधन। ३. जितेंद्रिय। ४. मालिक। स्वामी। ५. ईश्वर।

वि० बड़ा। श्रेष्ठ।

गोसाती—स्त्री० [फा० गोशा] विपरीत दिशा से चलनेवाली हवा जो जहाज के मार्ग में बाधक होती है। (लश०)

गोसी—स्त्री० [देश०] समुद्र में चलनेवाली एक प्रकार की नाव जिसमें कई मस्तूल होते हैं।

गोसी परवान—पुं० [देश०] जहाज के मस्तूल में पाल के ऊपरी छोर को हटाने-वढ़ाने के लिए लगाया जानेवाला धातु का लंबा छड़।

गो-सुत—पु० [ष० त०] गौ का बच्चा। बछड़ा।

गो-सूक्त—पुं० [सं० ष० त०] अथर्ववेद का वह अंश जिसमें ब्रह्माण्ड की रचना का गौ के रूप में वर्णन किया गया है। गोदान के समय इसका पाठ किया जाता है।

गोसैयाँ†—पुं० [सं० गोस्वामी, हिं० गोसाईं] १. गौओं का स्वामी। गोस्वामी। २. मालिक। स्वामी। ३. ईश्वर। प्रभु।

गोस्तना—स्त्री० [ब० स०, टाप्] द्राक्षा। दाख। मुनक्का।

गो-स्तनी—स्त्री० [ब० स० ङीष्] दाख। मुनक्का।

गो-स्वामी (मिन्)—पुं० [ष० त०] १. वह जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो। जितेन्द्रिय। २. वैष्णव संप्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी।

गोह—स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की जाति का एक बड़ा जंगली (लगभग डेढ़ फुट लंबा) जंतु जिसकी फुफकार विषैली होती है।

गोहटा†—पुं० [हिं० गोह+टा (प्रत्य०)] गोह का बच्चा।

गो-हत्या—स्त्री० [ष०त०] गौ को मार डालना, जो बहुत बड़ा पाप माना गया है।

गोहन—पुं० [?] १. संगी। साथी। २. संग। साथ।

क्रि० वि० संग में। साथ-साथ। उदा०—औ तोहि गोहन झाँझ मँजीरा।—जायसी।

गोहनियाँ†—पुं० [हिं० गोहन+इया (प्रत्य०)] संगी। साथी।

गोहने—क्रि० वि० [हिं० गोहन] साथ में। संग मिलकर। उदा०—गोहनै गुपाल फिरूँ ऐसी आवत मन में। —मीराँ।

गोहर—पुं० [सं० गोधा] बिसखोपरा नामक जंतु।

गोहरा—पुं० [हिं० गो+ईल्ल या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] गोबर पाथ कर धूप में सुखाया हुआ उसका गोलाकार पिंड जो ईंधन का काम देता है। उपला। कंडा।

गोहराना†—अ० [हिं० गोहार] १. पुकारना। बुलाना। आवाज देना। २. जोर से चिल्लाना। उदा०-धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं।—तुलसी।

गोहरोरा—पुं० [हिं० गोहरी+ओरा (प्रत्य०)] १. गोहरों अर्थात् उपलों या कंडों का ढेर। २. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार का ढेर लगा रहता है।

गोहलोत—पुं० [गोह (नाम)] = गहलौत (क्षत्रियों का वर्ग)।

गोहानी†—स्त्री० दे० 'गोंइड़'।

गोहार—स्त्री० [सं० गो+हार (हरण)] १. प्राचीन भारत में वह चिल्लाहट या पुकार जो अपनी गौओं के छिन जाने या लुटेरों द्वारा लुट जाने पर मचाई जाती थी। २. कष्ट, संकट, हानि आदि के समय अपनी रक्षा या सहायता के लिए मचाई जानेवाली पुकार।

मुहा०—**गोहार मारना** =सहायता के लिए पुकार मचाना। **गोहार लड़ना**=पहलवानों आदि का अखाड़े में उतरकर तथा दूसरे पहलवानों आदि को ललकार कर उनसे लड़ना।

३. चिल्लाकर लोगों को इकट्ठा होने के लिए पुकारना। चिल्लाहट। ४. शोर। हल्ला।

गोहारी†—स्त्री० [हिं० गोहार] १. गोहार। २. किसी की क्षति पूरी करने के लिए दिया जानेवाला धन। (लश०) ३. बन्दरगाह में उचित से अधिक समय तक ठहरने के बदले में दिया जानेवाला धन। (लश०)

गोही†—स्त्री० [सं० गोपन] १. दुराव। छिपाव। २. गुप्त या छिपी हुई बात-चीत।

†स्त्री० [?] फलों की गुठली या बीज।

गोहुवन†—पुं० =गेहुँअन (साँप)।

गोहूँ†—पुं०=गेहूँ।

गौं—स्त्री० [सं० गम्, प्रा० गवँ] १. अपने स्वार्थ या हित के साधन की प्रबल इच्छा। प्रयोजन। मतलब। जैसे—वह अपनी गौं को आवेगा।

पद—**गौं का यार**=मतलबी। स्वार्थी।

मुहा०—**गौं गाँठना या निकालना**= अपना मतलब निकालना। स्वार्थ साधन करना। **गौं पड़ना**=मतलब होना।

२. प्रयोजन, स्वार्थ आदि सिद्ध होने का उपयुक्त समय। उदा०—······समय सयानी कीन्ही जैसी आई गौं परी।—तुलसी।

मुहा०—**गौं ताकना**=स्वार्थ साधने के लिए उपयुक्त अवसर की ताक में रहना।

३. ढंग। ढब। ४. तरह। प्रकार। उदा०—भोग करौ जोई गौं—सूर। ५. पार्श्व। पक्ष।

गौंच†—स्त्री० = कौंछ।

गौंजिक—पुं० [सं० गुञ्जा+ठक्–इक] १. जौहरी। २. सुनार।

वि० गुंजा या घुंघची से संबंध रखनेवाला।

गौंट—पुं० [?] एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है।

गौंटा†—पुं० [हिं० गाँव+टा (प्रत्य०)] १. छोटा गाँव। २. गाँव के सब लोगों से लिया जानेवाला चन्दा। बेहरी। ३. गाँव की गली या पगडंडी। ४. बरात के घर लौट आने पर गाँव के लोगों को दिया जानेवाला दान।

गौंस†—स्त्री० =गौं।

गौंहाँ†—वि० [हिं० गाँव+हा (प्रत्य०)] गाँव का। गाँव-संबंधी।

गौ—स्त्री० [सं०गो] १. गाय। गैया। २. रहस्य संप्रदाय में (क) मन की वृत्ति, (ख) आत्मा और (ग) इंद्रियाँ तथा मन।

*अ० हिं० 'गया' का स्थानिक रूप। उदा०—अलपै लाभ मूलगौ खाई—कबीर।

गौख†—पुं०=गौखा (गवाक्ष)।

गौखा†—पुं० [सं० गवाक्ष] १. छोटी खिड़की। २. आला। ताखा। ३. देहाती मकानों में दरवाजे के पास का छोटा दालान या बैठक।

पुं० [हिं० गौ=गाय] १. गाय या बैल का चमड़ा। २. गावदी। मूर्ख।

गौखी†—स्त्री० [हिं० गौखा] १. गाय या बैल की खाल का बना जूता। २. जूता।

गौगा—पुं० [अ०] १. शोर। गुल-गपाड़ा। हल्ला। २. अफवाह। जनश्रुति।

गौचरी—स्त्री० [हिं० गौ+चरना] मध्य युग में, वह कर जो जमींदार अपने खेतों में गौएँ आदि चरानेवाले किसानों, चरवाहों आदि से वसूल करता था।

गौड़—पुं० [सं० √गुड् (रक्षण)+घञ्] १. वंग देश का वह प्राचीन विभाग जो किसी के मत से मध्य बंगाल से उड़ीसा की उत्तरी सीमा तक और किसी के मत से वर्तमान बर्दवान के आस-पास था। २. उक्त देश का निवासी। ३. पुराणानुसार ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ ये पाँच भेद हैं और इसी लिए जिन्हें पंच गौड़ भी कहते हैं। ४. उक्त वर्ग के अन्तर्गत ब्राह्मणों की एक जाति जो दिल्ली के आस-पास तथा राजपूताने में रहती है। ५. राजपूतों के ३६ कुलों या वर्गों में से एक। ६. कायस्थों की एक उपजाति। ७. सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं और जो तीसरे पहर तथा संध्या के समय गाया जाता है।

गौड़-नट—पुं० [ब० स०] गौड़ और नट के योग से बना हुआ एक संकर राग। (संगीत)

गौड़-पाद—पुं० [ब० स०] स्वामी शंकराचार्य के गुरु के गुरु का नाम।

गौड़-सारंग—पुं० [ब० स०] गौड़ और सारंग के योग से बना हुआ एक संकर राग जो दिन के तीसरे पहर में गाया जाता है।

गौड़िक—वि० [सं० गुड़+ठक्—इक] १. गुड़-संबंधी। २. गुड़ का बना हुआ। ३. जिसमें गुड़ मिला हुआ हो।

पुं० १. ईख। २. गुड़ से बनी हुई शराब।

गौड़िया†—वि०, पुं०=गौड़ीय।

गौड़ी—स्त्री० [सं० गुड़+अण्-ङीप्] १. गुड़ को सड़ाकर बनाई हुई शराब। २. काव्य में एक प्रकार की रीति या वृत्ति जो ओज गुण प्रधान मानी जाती है तथा जिसमें द्वित्व, टवर्गीय, संयुक्त आदि वर्ण तथा लंबे-लंबे समास अधिक होते हैं। ३. संध्या के समय तथा रात के पहले पहर में गाई जानेवाली संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

गौड़ीय—वि० [सं० गौड़+छ—ईय] १. गौड़ देश संबंधी। गौड़ देश का। २. (साहित्यिक रचना) जिसमें गौड़ी वृत्ति के तत्त्व हों।

पुं० चैतन्य महाप्रभु का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।

स्त्री० गौड़ देश की बोली या भाषा।

गौड़ेश्वर—पुं० [गौड़-ईश्वर, ष० त०] महात्मा कृष्ण चैतन्य जिन्हें गौरांग महाप्रभु भी कहते हैं।

गौण—वि० [सं० गुण+अण्] १. जो किसी की तुलना में महत्त्व, मान आदि के विचार से कुछ घटकर हो। जो प्रधान या मुख्य न हो। २. (शब्द का अर्थ) जो मुख्य या मूल अर्थ से भिन्न हो। लाक्षणिक (अर्थ)। ३. बहुत ही सामान्य रूप से पूरक या सहायक बनने या होनेवाला।

गौण-चान्द्र—पुं० [कर्म० स०] वह चांद्र मास जिसका आरंभ कृष्ण प्रतिपदा से माना जाता है।

गौणिक—वि० [सं० गुण+ठक्—इक] १. गुण-संबंधी। गुण या गुणों का। जैसे—पदार्थों की गौणिक समानता। २. सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों से संबंध रखनेवाला। ३. गुणवान्। गुणी।

गौणी—स्त्री० [सं० गौण+ङीष्] साहित्य में अस्सी प्रकार की लक्षणाओं में से एक जिसमें किसी पद का अर्थ केवल गुण, रूप आदि के सादृश्यवाले (उसके कार्य, कारण या अंगांगी भाववाले संबंध से भिन्न) तत्त्व से निकलता है। जैसे—यदि कहा जाय 'देवदत्त सिंह है' तो शब्दार्थ के विचार से ऐसा होना असंभव है, पर समझनेवाला लक्षणा के द्वारा इससे यह समझता है कि देवदत्त सिंह के समान बलवान् या पराक्रमी है।

वि० सं० गौण का स्त्री० रूप। (क्व०)

गौतम—पुं० [सं० गोतम+अण्] १. गोतम ऋषि के वंशज। २. पुराणों आदि के अनुसार एक ऋषि जिन्होंने अपनी स्त्री अहल्या को इन्द्र के साथ अनुचित संबंध करने के कारण शाप देकर पत्थर की तरह जड़ कर दिया था और जिसका उद्धार भगवान् श्री रामचन्द्र ने किया था। ३. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और प्रणेता एक ऋषि जो ईसा से प्रायः ६०० वर्ष पहले हुए थे। ४. बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक बुद्धदेव का एक नाम। ५. एक स्मृतिकार ऋषि। ६. कृपाचार्य। ७. सप्तर्षि मंडल में का एक तारा। ८. नासिक के पास का वह पर्वत जिससे गोदावरी नदी निकलती है। ९. क्षत्रियों का एक वंश या वर्ग। १०. भूमिहारों का एक वंश या वर्ग। ११. एक प्रकार का विष।

गौतमी—स्त्री० [सं० गौतम+ङीष्] १. गोतम ऋषि की पत्नी, अहल्या। २. कृपाचार्य की स्त्री। ३. गोदावरी नदी। ४. गौतम ऋषि की बनाई हुई स्मृति। ५. दुर्गा।

गौद(ा)—पुं० दे० 'घौद'।

गौदान—पुं०=गोदान।

गौदुमा—वि०=गावदुम।

गौन—पुं० [देश०] खेत में वह छायादार स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हैं।

†पुं०=गाउन।

पुं० [सं० गमन] १. जाना। २. गति। पैठ। ३. प्रवेश।

गौनई†—स्त्री० [सं० गायन] गायन। संगीत।

गौनर्द—पुं० [सं० गोनर्द+अण्] पतंजलि ऋषि जो गोनर्द देश के थे।

गौनहर—स्त्री०=गौनहारी।

गौनहाई†—स्त्री० [हिं० गौना+हाई (प्रत्य०)] वह वधू जो गौना होने के बाद ससुराल में पहले-पहल आई हो।

गौनहार—स्त्री० [हिं० गौन+हार (प्रत्य०)] १. वह स्त्री जो दुलहिन का गौना होने पर उसके साथ उसकी ससुराल जाय। २. दे० 'गौनहारी'।

गौनहारिन—स्त्री० =गौनहारी।

गौनहारी—स्त्री० [हिं० गावना=गाना+हारी प्रत्य०] निम्न कोटि की

गानेवाली स्त्रियों का एक वर्ग या समाज। इस वर्ग की स्त्रियाँ प्रायः टोली वनाकर गाती और वेश्यावृत्ति भी करती हैं।

गौना—पुं० [सं० गमन] विवाह के बाद की एक रसम जिसमें वर अपनी ससुराल से वधू को पहले-पहल अपने साथ अपने घर लाता है। द्विरागमन। मुकलावा।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—लाना।

†पुं० [स्त्री० गौनी] बारहसिंघा।

गौपिक—वि० [सं० गोपिका+अण्] गोपी-संबंधी।

पुं० गोपी का वंशज या संतान।

गौपुच्छ—वि० [सं० गोपुच्छ+अण्] गाय की पूँछ के समान। गावदुम।

गौप्तेय—पुं० [सं० गुप्ता+ढक्–एय] गुप्त जाति नामवाले (अर्थात् वैश्य) का पुत्र।

गौमुख—पुं०=गोमुख।

गौमुखी—स्त्री०=गोमुखी।

गौमेद—पुं०=गोमेद।

गौरंड—पुं० [सं० गौरांग] गोरों अर्थात् अंगरेजों का देश। विलायत। उदा०—कला कलित गौरंड देस के दिव्य बनाए।—रत्नाकर।

गौर—वि० [सं० गु (जाना)+र नि० सिद्ध] १. गौर वर्ण का। गोरे रंग का। गोरा। २. उज्ज्वल। स्वच्छ। ३. श्वेत। सफेद।

पुं० १. सफेद या गोरा रंग। २. लाल रंग। ३. पीला रंग। ४. चंद्रमा। ५. सोना। स्वर्ण। ६. प्राचीन काल का एक प्रकार का बहुत छोटा मान जो तीन सरसों के बराबर होता था। ७. एक प्रकार का हिरन। ८. केसर। ९. धौ का पेड़। १०. सफेंद सरसों। ११. बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव महापुरुष चैतन्य महाप्रभु का एक नाम जो उनके शरीर के गौर वर्ण के कारण पड़ा था। १२. कैलास के उत्तर का एक पर्वत। १३. पद्म केसर। १४. वृहस्पति ग्रह का एक नाम।

स्त्री० [सं० गौरी] हिंदुओं में कहीं-कहीं प्रचलित एक प्रथा जिसमें विवाह निश्चित हो जाने पर कन्या के संबंधी उसकी पूजा करते हैं।

पुं० [?] ऊँचे कद का एक सुन्दर शाकाहारी जंगली पशु जो भूरे रंग का होता है।

†पुं० दे० 'गौड़'।

पुं० [अ०] १. सोच-विचार। चिंतन। २. खयाल। ध्यान।

गौरक्ष्य—पुं० [सं० गोरक्ष+ष्यञ्] गौएँ पालने तथा उनकी रक्षा करने का काम। गो-रक्षण।

गौर-ग्रीव—पुं० [ब० स०]पुराणानुसार एक देश जो कूर्म्म विभाग के मध्य में है।

गौर-तलब—वि० [अ०] (विषय) जिस पर विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय।

गौरता—स्त्री०[स० गौर+तल्+टाप्] १ गौर अर्थात् गोरे होने की अवस्था या भाव। गोराई। गोरापन। २ सफेदी।

गौर-मदाइन—पुं० [?] इंद्रधनुष। (बुंदेल०)

गौरव—पुं० [सं० गुरु+अण्] १ गुरु अर्थात् भारी होने की अवस्था या भाव। गुरुता। भारीपन। २. गुरु अर्थात् बड़े होने की अवस्था या भाव। बड़प्पन। महत्त्व।३. आदर। इज्जत। सम्मान। ४. अभ्युत्थान। उत्कर्ष। उन्नति। ५. गंभीरता। गहराई।

गौरवा*—पुं० [सं० गौर, गौरववत्] गौरैया का नर। चिड़ा पक्षी। उदा०—जाहि वया गहि पिय कंठ लवा। करे मेराउ सोई गौरवा।—जायसी।

वि० गौरवयुक्त।

गौरवान्वित—वि० [गौरव-अन्वित, तृ० त०] गौरव या महिमा से युक्त। सम्मानित।

गौरवित—वि० [सं० गौरव+इतच्] १. जिसका गौरव हुआ हो। २. जो गौरव से युक्त हो। सम्मानित।

गौर-शाक—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का महुआ और उसका फल।

गौर-शालि—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का शालि धान्य।

गौर-सुवर्ण—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का साग जिसके पत्ते छोटे, सुनहले और सुगंधित होते हैं।

गौरांग—पुं० [गौर-अंग, ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. चैतन्य महाप्रभु।

वि० [स्त्री० गौरांगी] गोरे अंग या शरीरवाला। जैसे—अमेरिका या यूरोप के निवासी।

गौरा—स्त्री० [सं० गौर+टाप्] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गौरी। ३. हल्दी। ४. संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

गौरार्द्रक—पुं० [गौर-आर्द्रक, कर्म० स०] अफीम, संखिया, कनेर आदि स्थावर विष।

गौरास्य—पुं० [गौर-आस्य ब० स०] एक प्रकार का बंदर जिसके शरीर का रंग काला और मुँह गोरे रंग का होता है।

गौराहिक—पुं० [गौर-अहि, कर्म० स० +कन्] एक प्रकार का साँप।

गौरि—पुं० [सं० गौर+इञ्] आंगिरस ऋषि।

†स्त्री०=गौरी।

गौरिक—वि० [सं० गौर+ठन्—इक] गोरा।

पुं० सफेद सरसों।

गौरिका—स्त्री० [सं० गौरी+कन्–टाप्, ह्रस्व] आठ वर्ष की कन्या। गौरी।

गौरिया—पुं० [?] १. मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का। २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

†स्त्री० दे० 'गौरैया'।

गौरिल—पुं० [सं० गौर+इलच्] १. सफेद सरसों। २. लोहे का चूरा।

गौरी—स्त्री०[सं० गौर+ङीष्] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। ३. वरुण की पत्नी। ४. आठ वर्ष की कन्या। ५. तुलसी। ६. मल्लिका। ७. चमेली। ८. हलदी। ९. दारु हल्दी। १०. मंजीठ। ११. सफेद दूब। १२. संध्या समय गाई जानेवाली संपूर्ण राग की एक रागिनी। १३, चित्रों आदि में दिखायी जानेवाली उज्ज्वलता या प्रकाश। १४. भारत (अखंड) की पश्चिमोत्तर सीमा पर बहनेवाली एक प्राचीन नदी।

स्त्री० दे० 'गौड़ी'।

गौरी-चंदन—पुं० [मध्य० स०] लाल चंदन।

गौरीज—पुं०[सं० गौरी√ज़न् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] १. गौरी के पुत्र, कार्त्तिकेय और गणेश। २. अभ्रक।

वि० गौरी से उत्पन्न।

गौरी-पुष्प—पुं० [ब० स०] प्रियंगु नाम का वृक्ष।

गौरी बेंत—पुं० [?] एक प्रकार का बेंत जिसे पक्का बेंत भी कहते हैं।

गौरी-ललित—पुं० [उपमि० स०] हरताल।

गौरी-शंकर—पुं० [मध्य० स०] १. शिव का वह रूप जिसमें उनके साथ गौरी अर्थात् पार्वती भी रहती हैं। २. हिमालय की एक बहुत ऊँची चोटी।

गौरीश—पुं० [गौरी-ईश, ष० त०] शिव।

गौरीसर—पुं० [?] हंसराज नाम की बूटी। सँमल पत्ती।

गौरुतल्पिक—पुं० [सं० गुरु-तल्प+ठक्–इक] वह शिष्य जिसका गुरु-पत्नी से अनुचित संबंध हो।

गौरैया†—स्त्री० [?] १. काले रंग का एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका सिर भूरा और गरदन सफेद होती है। २. हर जगह घरों में रहनेवाली एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया। चिड़ी।

†पुं० मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गौलक्षणिक—पुं० [सं० गो-लक्षण ष० त०+ठक् – इक] गाय-बैलों के भले-बुरे लक्षण पहचाननेवाला।

गौलना—अ० [?] अनुभूत होना।

गौला—स्त्री०=गौरी (पार्वती)।

गौलिक—पुं० [सं० गुड+ठक्–इक 'ड' को 'ल'] १. मुष्कक नामक वृक्ष। २. एक प्रकार का लोध।

गौल्मिक—पुं० [सं० गुल्म+ठक्–इक] सैनिकों के गुल्म का नायक।

वि० गुल्म-संबंधी।

गौशाला—पुं०=गोशाला।

गौभृंग—पुं० [सं० गोशृंग+अण्] एक प्रकार का साम गान।

गौषो*—स्त्री० [सं० गवाक्ष] खिड़की।

गौसम—पुं० [हिं० कोसम] १. कोसम नामक वृक्ष और उसका फल। २. उक्त पेड़ की लकड़ी।

गौहर—पुं० [फा०] मोती।

†पुं० [सं० गोष्ठ] गोशाला। गोठ।

ग्यांबिर—पुं० [देश०] कीकर की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकड़ियों से पपड़िया खैर बनाया जाता है।

ग्याति*—स्त्री० १.=ज्ञाति। २.=जाति।

ग्यान†—पुं०=ज्ञान।

ग्यारस—स्त्री० [हिं० ग्यारह] चांद्र मास के कृष्ण या शुक्ल की ग्यारहवीं तिथि। एकादशी।

ग्यारह—वि० [सं० एकादशन्; पा० पै० एकादस, एकारस; अर्धमा० एक्कारस; प्रा० अप० एग्गारह, एआरह; गु० अगिआर; सिं० यारहं; -पं० ग्यासँ; बं० उ० एगार] जो गिनती में दस और एक हो।

पुं० उक्त अंक की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—११।

ग्रंथ—पुं० [सं०√ ग्रंथ् (रचना, बाँधना)+घञ्] १. गाँठ। ग्रंथि। २. किताब या पुस्तक जिसके पन्ने या पृष्ठ पहले गाँठ बाँध कर रखे जाते थे। ३. धार्मिक या साहित्यिक दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण बड़ी पुस्तक। जैसे—गुरु ग्रंथ-साहब। ४. गाँठ में का अर्थात् अपने पास का धन। [illegible]ना। पूंजी।

ग्रंथ-कर्त्ता (र्तृ)—पुं० [ष० त०] ग्रंथ या पुस्तक का रचयिता। लेखक।

ग्रंथ-कार—पुं० [ग्रंथ √कृ (करना)√अण् उप० स०] दे० 'ग्रंथ-कर्त्ता'।

ग्रंथ-चुंबक—पुं० [ष० त०] वह जो ग्रंथों या पुस्तकों को यों ही सरसरी तौर पर देख जाता हो, उनमें प्रतिपादित विषयों का अध्ययन न करता हो।

ग्रंथ-चुंबन—पुं० [ष० त०] ग्रंथ या पुस्तक यों ही सरसरी तौर पर देख जाना, उसमें प्रतिपादित विषय का ठीक ज्ञान प्राप्त न करना।

ग्रंथन—पुं० [सं०√ग्रंथ्+ल्युट्–अन] १. गाँठ लगाकर जोड़ना, बाँधना या मिलाना। २. गूंथना। ३. ग्रंथ या पुस्तक की रचना करना। ग्रंथ बनाना।

ग्रंथना*—स०=गूथना।

ग्रंथ-माला—स्त्री० [ष० त०] एक ही स्थान से समय-समय पर प्रकाशित होनेवाली एक ही प्रकार अथवा वर्ग की अनेक पुस्तकों की अवली या श्रृंखला।

ग्रंथ-संधि—स्त्री० [ष० त०] ग्रंथ का कोई विभाग। जैसे—सर्ग, परिच्छेद, अध्याय, अंक, पर्व्व आदि।

ग्रंथ-साहब—पुं० [हिं० ग्रंथ+साहब] सिक्खों का धर्म-ग्रंथ जिसमें नानक, कबीर आदि गुरुओं की वाणियाँ संगृहीत हैं।

ग्रंथालय—पुं० [ग्रंथ-आलय, ष० त०] १. वह स्थान जहाँ पुस्तकें रखी जाती हों। २. वह कमरा या घर जिसमें लोगों के पढ़ने के लिए पुस्तकें रखी गई हों। पुस्तकालय।

ग्रंथावलि (ली)—स्त्री० [ग्रंथ-आवलि (ली) ष० त०] ग्रंथमाला।

ग्रंथि—स्त्री० [सं०√ग्रंथ्+इन्] १. धागे, रस्सी आदि में पड़ने या डाली जानेवाली गाँठ। २. गाँठ के आकार की कोई कड़ी गोलाकार रचना या वस्तु। ३. वायु आदि के विकार के कारण शरीर के किसी अंग में बननेवाली गाँठ। ४. शरीर के अन्दर कोषाणुओं के योग से बनी हुई कई प्रकार की गाँठों में से हर एक।

विशेष—ये ग्रंथियाँ शरीर के भिन्न भिन्न भागों में अनेक आकार-प्रकार की होती हैं और इनमें से ऐसे तरल तत्त्व या रस निकलते हैं जो शरीर की रक्षा और वृद्धि के लिए उपयोगी होते या अनुपयोगी तत्त्वों को शरीर के बाहर निकालते हैं। जैसे—बीज ग्रंथि, लस ग्रंथि आदि। (दे०)

५. कोई बाँधनेवाली चीज। बंधन। ६. आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र में वे बातें जो मनुष्य को इस संसार के साथ बाँधे रहती हैं और उसे आध्यात्मिक दिशा में जाने से रोकती हैं। ७. कुटिलता। टेढ़ापन। ८. आलू। ९. पिपरामूल। १०. भद्रमुस्तक। ११. ग्रंथिपर्णी। गठिवन।

ग्रंथिक—पुं० [सं० ग्रंथ+ठन्–इक] १. पिपरामूल। २. ग्रंथिपर्णी। गठिवन। ३. गुग्गुल। ४. करील। ५. ज्योतिषी। ६. सहदेव पाण्डव का वह नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय धारण किया था।

ग्रंथित—भू० कृ० [सं० ग्रंथ+इतच्] १. जिसमें गाँठ लगी हो। २. गाँठ लगाकर बाँधा हुआ। ३. गूथा हुआ।

ग्रंथि-दूर्व्वा—स्त्री० [मध्य० स०] गाडर दूब।

ग्रंथि-पत्र—पुं० [ब० स०] चोरक नामक गंध-द्रव्य।

ग्रंथि-पर्ण—पुं० [ब० स०] गठिवन का पेड़।

ग्रंथिपर्णी—स्त्री० [सं० ग्रंथिपर्ण+ङीष्] गाडर दूब।

ग्रंथि-फल—पुं० [ब० स०] १. कैथ का पेड़ या फल। २. मैनफल।

ग्रंथि-बंधन—पुं० [ष० त०] १. गाँठ बाँधकर अथवा ऐसी ही और किसी क्रिया से दो या अधिक चीजें एक साथ करना या लगाना। २. विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के पल्लों को गाँठ देकर आपस में बाँधने

की क्रिया जो पारस्परिक घनिष्ठ संबंध स्थापित करने की सूचक होती है। गँठ-बंधन।

ग्रंथि-मूल--पुं० [ब० स०] ऐसी वनस्पतियाँ जो गाँठों के रूप में होती हैं। कंद। जैसे--गाजर, मूली, शलजम आदि।

ग्रंथि-मोचक--पुं० [ष० त०] गिरहकट। जेब-कतरा।

ग्रंथिल--वि० [सं० ग्रन्थि+लच्] जिसमें गाँठ या गाँठें हों। गाँठदार।

पुं० १. करील का वृक्ष। २. पिपरामूल। ३. अदरक। आदी। ४. विकंकत वृक्ष। ५. चौलाई का साग। ६. आलू या ऐसा ही और कोई गोल कंद। ७ चोरक नामक गंध-द्रव्य।

ग्रंथिला--स्त्री० [सं० ग्रन्थिल+टाप्] १. गाडर दूब। २. माला दूब। ३. भद्रमुस्तक। भद्रमोथा।

ग्रंथीक--पुं० [सं०=ग्रन्थिक, पृषो० सिद्धि] पिपरामूल।

ग्रंस†--पुं० [सं० ग्रंथि=कुटिलता] १. कुटिलता। टेढ़ापन। २. कुटिलता या छल-कपट से भरा हुआ आचरण या व्यवहार। ३. मन में रखा जानेवाला द्वेष। ४. दे० 'गाँसी'।

ग्रथन--पुं० [सं० ग्रन्थन] [भू० कृ० ग्रन्थित] १. ग्रंथि या गाँठ लगाकर बाँधना। २. ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत करना। रचना। ३. गूथना। पिरोना।

ग्रथित--भू० कृ० [सं०√ग्रन्थ् (गूथना)+क्त] १. जिसका ग्रथन हुआ हो। गठा या बँधा हुआ। २. बनाया या रचा हुआ। रचित। ३. गूथा या पिरोया हुआ। ४. जिसमें जमने के कारण गाँठें पड़ गई हों। ५. दबाया या जीता हुआ।

पुं० दे 'अर्बुद'।

ग्रब्ब*--पुं०=गर्व।

ग्रसन--पुं० [सं०√ग्रस् (खाना)+ल्युट्-अन] १. ग्रसने या पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २. खाना या निगलना। भक्षण। ३. बुरी तरह से अपने चंगुल में फँसाना। ४. कौर। ग्रास। ५. ग्रहण। ६. फलित ज्योतिष में दस प्रकार के ग्रहणों में से एक खंड-ग्रहण जिसके फलस्वरूप अभिमानियों का पतन या नाश होता है।

ग्रसना--स० [सं० ग्रसन] १. इस प्रकार किसी को पकड़ना कि वह जल्दी छूटने, निकलने या भागने न पावे। अच्छी तरह से दबाते हुए पकड़ना। २. काम निकालने के लिए बहुत तंग करना या पीछे पड़ना।

ग्रसपति--पुं० [ष० त०?] प्राचीन वास्तु-कला में मनुष्य के मुख की वे आकृतियाँ जो एक पंक्ति में किसी पत्थर में खुदी हुई हों।

ग्रसित--भू० कृ०=ग्रस्त।

ग्रसिष्णु--वि० [सं०√ग्रस्+इष्णुच्] १. जो ग्रसन करने पर उद्यत हो या उसका अभ्यस्त हो। २. निगलने या हड़पनेवाला।

पुं० परमात्मा।

ग्रस्त--भू० कृ० [सं०√ग्रस्+क्त] १. खाया या निगला हुआ। २. ग्रसा या पकड़ा हुआ। जैसे--ग्रह-ग्रस्त। ३. कष्ट, रोग आदि से युक्त। पीड़ित। जैसे--ज्वर-ग्रस्त। ४. किसी के नियंत्रण में आया हुआ।

ग्रस्ता(स्तृ)--वि० [सं०√ग्रस्+तृच्] १. ग्रसन करने या पकड़नेवाला। २. भक्षक।

ग्रस्तास्त--वि० [सं० ग्रस्त-अस्त, कर्म०स०] (चन्द्रमा या सूर्य) जो ग्रहण लगे रहने की दशा में ही अस्त हो जाय।

पुं० ऐसा ग्रहण जो चन्द्रमा या सूर्य के अस्त होने के समय तक न छूटा हो।

ग्रस्ति--स्त्री० [सं०√ग्रस्+क्तिन्] १. निगलने की क्रिया या भाव। २. ग्रसने या पकड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। ग्रास।

ग्रस्तोदय--पुं० [ग्रस्त-उदय, ष० त०] ऐसा ग्रहण जिसमें चन्द्रमा या सूर्य ऐसी अवस्था में उदित हों कि उस पर ग्रहण लगा हुआ हो।

ग्रस्य--वि० [सं०√ग्रस्+यत्] १. जिसे खाया या निगला जा सके। २. जिसे ग्रसा जा सके। ग्रस्त होने का पात्र।

ग्रह--पुं० [सं०√ग्रह् (ग्रहण करना)+अप्] १. ग्रहण करने, पकड़ने, लेने या वश में करने की क्रिया या भाव। २. [√ग्रह्+अच्] वह जो किसी को पकड़ता, वश में करता या प्रभावित करता हो। ३. वह आकाशस्थ पिंड जो किसी सौर जगत् का अंग हो और उस जगत् के सूर्य की परिक्रमा करता हो। (प्लैनेट) जैसे--पृथ्वी, बुध, शुक्र आदि।

विशेष--कुछ आकाशस्थ पिंडों का नाम ग्रह कदाचित् इसलिए पड़ा था कि वे मनुष्यों के भाग्यों को वश में रखने और प्रभावित करनेवाले माने जाते थे।

४. हमारे सौर जगत् में चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु जो सूर्य की परिक्रमा करनेवाले पिंड माने गये थे और जिनमें स्वयं सूर्य को भी सम्मिलित करके नौ ग्रहों की कल्पना की गई थी।

विशेष--आधुनिक ज्योतिषियों ने अनुसंधान करके दो-तीन और भी ऐसे छोटे तारों और तारा-पुंजों का पता लगाया है जो हमारे सूर्य की परिक्रमा करते हैं, और इसी लिए जिनकी गिनती ग्रहों में होने लगी है।

५. उक्त नौ ग्रहों के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द। ६. राहु जो ग्रहण के समय चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रसनेवाला माना गया है। ७. बालकों को होनेवाले अनेक प्रकार के छोटे-मोटे रोग जो पहले भूत-प्रेत आदि बाधा के फल समझे जाते थे। बाल-ग्रह (देखें)।

ग्रहक--वि० [सं० ग्राहक] ग्रहण करनेवाला।

पुं० १. ग्राहक। २. कैदी।

ग्रह-कल्लोल--पुं० [स० त०] राहु नामक ग्रह।

ग्रह-कुष्मांड--पुं० [कर्म० स०] एक देव-योनि। (पुराण)

ग्रह-गोचर--पुं० [ष० त०] दे० 'गोचर'।

ग्रह-ग्रस्त--भू० कृ० [तृ० त०] जिस पर भूत-प्रेत आदि की बाधा हो।

ग्रह-ग्रामणी--पुं० [ष० त०] ग्रहों का स्वामी, सूर्य।

ग्रह-चिंतक--पुं० [ष० त०] ग्रहों की गति, स्थिति आदि का विचार करनेवाला व्यक्ति। ज्योतिषी।

ग्रहण--पुं० [सं० ग्रह्+ल्युट्-अन] १. पकड़ने या लेने की क्रिया या भाव। २. कोई बात ठीक समझकर मान लेना। ३. अंगीकार या स्वीकार करना। ४. सूर्य या चंद्रमा पर क्रमशः चंद्रमा या पृथ्वी की छाया पड़ने की वह स्थिति जिसमें उनका कुछ अथवा पूरा बिंब अँधेरा या ज्योति-विहीन-सा प्रतीत होने लगता है। (इक्लिप्स) ५. उक्त के आधार पर किसी वस्तु, व्यक्ति आदि की वह स्थिति जिसमें उसकी उज्ज्वलता, महत्त्व, मान आदि पर किसी प्रकार का धब्बा लगा हो। ६. ऐसी वस्तु जिसके कारण किसी की उज्ज्वलता, महत्त्व, मान आदि पर [illegible] प्रभाव पड़ता हो। ७. तात्पर्य। मतलब।

ग्रहणांत--पुं० [ग्रहण-अंत, ष० त०] अध्ययन का समाप्ति पर होना।

ग्रहणा*—स०=गहना (पकड़ना)।

ग्रहणि, ग्रहणी—स्त्री० [सं०√ग्रह्+अनि] [ग्रहणि+ङीष्] १. पक्वाशय और आमाशय के बीच की एक नाड़ी जो अग्नि या पित्त का प्रधान आधार मानी गयी है। (सुश्रुत) २. उक्त नाड़ी में विकार होने के कारण होनेवाली दस्तों की एक बीमारी। संग्रहणी।

ग्रहणीय—वि० [सं०√ग्रह्+अनीयर्] १. ग्रहण अर्थात् अंगीकार किये जाने के योग्य। २. नियम या विधि के रूप में माने जाने के योग्य।

ग्रह-दशा—स्त्री० [ष० त०] १. गोचर ग्रहों की स्थिति। २. ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के किसी विशिष्ट स्थिति में होने के फलस्वरूप मनुष्य की होनेवाली अवस्था (प्रायः कष्टप्रद या दुःखद अवस्था) ३. अभाग्य। दुर्भाग्य।

ग्रह-दाय—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष में, किसी की वह आयु जो उसके जन्म लेने के समय के ग्रहों की स्थिति के अनुसार निश्चित की जाती है।

ग्रह-दृष्टि—स्त्री० [ष० त०] फलित ज्योतिष में, जन्म-कुंडली के विभिन्न घरों में स्थित ग्रहों का एक दूसरे पर पड़नेवाला प्रभाव।

विशेष—शुभ ग्रह की दृष्टि का फल शुभ और अशुभ ग्रह की दृष्टि का फल अशुभ माना जाता है।

ग्रह-द्रुम—पुं० [मध्य० स०] काकड़ासींगी।

ग्रह-नायक—पुं० [ष० त०] सूर्य।

ग्रहनाश—पुं० [सं० ग्रह√नश् (नष्ट होना)+णिच्+अण्, उप०स०] सतिवन नामक पेड़।

वि० ग्रहों का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

ग्रहनेमि—पुं० [ष० त०] १. चंद्रमा। २. चंद्रमा के मार्ग का वह भाग जो मूल और मृगशिरा नक्षत्रों के बीच में पड़ता है। ३. आकाश। (डिं०)

ग्रह-पति—पुं० [ष० त०] १. सूर्य। २. शनि। ३. आक या मदार का पौधा।

ग्रह-पीड़ा—स्त्री० [मध्य० स०] ग्रह-बाधा।

ग्रह-बाधा—स्त्री० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष में ग्रहों की क्रूर दृष्टि या स्थिति के कारण होनेवाला भौतिक कष्ट या पीड़ा।

ग्रह-मर्द—पुं० [ष० त०]=ग्रह-युद्ध।

ग्रह-मैत्री—स्त्री० [ष० त०] वर और कन्या के ग्रहों के स्वामियों की मित्रता या अनुकूलता जिसका विचार हिन्दुओं में विवाह के समय किया जाता है। (फलित ज्योतिष)

ग्रह-यज्ञ—पुं० [ष० त०] ग्रहों की उग्रता या कोप की शान्ति के लिए किया जानेवाला एक प्रकार का पूजन या यज्ञ ।

ग्रह-युति—स्त्री० [स० ष० त०] एक राशि के एक ही अंश पर एक ही समय में दो या कई ग्रहों का एकत्र होना ।

ग्रह-युद्ध—पुं० [ष० त०] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि या मंगल में से किसी एक ग्रह का चंद्रमा के साथ अथवा उक्त ग्रहों में से किसी दो ग्रहों का एक साथ एक राशि के एक अंश पर इस प्रकार एकत्र होना कि उस पर ग्रहण लगा हुआ जान पड़े। इसका फल भयंकर कहा गया है।

ग्रह-युद्धभ—पुं० [ग्रह-युद्ध, ब० स०, ग्रहयुद्ध-भ, कर्म० स०] वह नक्षत्र जिस पर कोई दो ग्रह एक साथ एकत्र हों। ग्रह-युद्ध का केन्द्र।

ग्रह-योग—पुं० [ष० त०]=ग्रहयुति।

ग्रह-राज—पुं० [ष० त०] १. सूर्य। २. चंद्रमा। ३. बृहस्पति।

ग्रह-वर्ष—पुं० [मध्य० स०] वह सारा समय जितने में कोई ग्रह अपने सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है।

विशेष—ग्रहों की कक्षाओं के अलग-अलग विस्तारों के अनुसार ही यह वर्ष या समय छोटा या बड़ा होता है।

ग्रह-विप्र—पुं० [मध्य० स०] बंगाल और दक्षिण में होनेवाले एक प्रकार के ब्राह्मण जो कुछ विशिष्ट क्रियाओं से ग्रहों के शुभाशुभ फल बतलाते हैं। २. ग्रहों का फल तथा स्थिति बतलानेवाला ब्राह्मण। ३. ज्योतिषी।

ग्रह-वेध—पुं० [ष० त०] शास्त्रीय विधि से वेध (देखें) करके ग्रहों की स्थिति आदि का ठीक पता लगाना।

ग्रह-शांति—स्त्री० [ष० त०] १. वह पूजन जो ग्रहों का प्रकोप शांत करने के उद्देश्य से किया जाता है। २.ग्रहों का प्रकोप शांत होने की अवस्था या भाव।

ग्रह-शृंगाटक—पुं० [ष० त०] बृहत्संहिता के अनुसार ग्रहों का एक प्रकार का योग जिसके फल अवस्थानुसार कभी शुभ और कभी अशुभ होते हैं।

ग्रह-समागम—पुं० [ष० त०] किसी राशि में चंद्रमा के साथ मंगल, बुध आदि ग्रहों का योग।

ग्रह-स्वर—पुं० [ष०त०] संगीत में वह स्वर जिससे किसी राग का आरंभ होता है।

ग्रहा—स्त्री०=गृहिणी। उदा०—सुख्खं धामय तेज दीपक कला, तारुण्य लच्छी ग्रहा।—चन्दवरदाई।

ग्रहागम—पुं० [ग्रह-आगम, ष०त०] ग्रहों या भूत-प्रेत आदि की कष्टदायक बाधा होना।

ग्रहाचार्य्य—पुं०=ग्रहविप्र।

ग्रहाधार—पुं० [ग्रह-आधार ष० त०] ध्रुव नक्षत्र।

ग्रहाधीश—पुं० [ग्रह-अधीश, ष० त०] सूर्य।

ग्रहामय—पुं० [ग्रह-आमय, मध्य० स०] ग्रहों या भूत-प्रेतों की बाधा के कारण होनेवाले रोग। (मिरगी, मूर्च्छा, आदि रोग इसी के अन्तर्गत माने जाते हैं।)

ग्रहावर्त—पुं० [ग्रह-आवर्त ब०स०] जन्मपत्री।

ग्रहाश्रय—पुं० [ग्रह-आश्रय , ष० त०]=ग्रहाधार।

ग्रहाह्वय—पुं० [सं० ग्रह-आ√ह्वे (स्पर्धा)+श] भूतांकुश नामक पौधा।

ग्रहिल—वि० [सं० ग्रह+इलच्] १. जिसे किसी ने ग्रस्त किया या बुरी तरह से पकड़ा हो। २. जो किसी ग्रह या भूत-प्रेत की बाधा से पीड़ित हो। ३. दुराग्रही। हठी। ४. किसी विषय का अनुरागी या रसिक।

ग्रहीत—वि० दे० 'गृहीत'।

ग्रहीतव्य—वि० [सं०√ग्रह्√तव्यत्] दे० 'गृहीतव्य'।

ग्रहीता (तृ)—वि० [सं०√ग्रह्+तृच्] दे० 'गृहीता'।

ग्रहोपराग—पुं० [ग्रह-उपराग, ष० त०] ग्रहों को लगनेवाला ग्रहण।

ग्रह्य—पुं० [सं० ग्रह+यत्] एक प्रकार का यज्ञपात्र।

वि० ग्रह-संबंधी।

ग्रांडील—वि० [अँ० ग्रैंड=विशाल] १. ऊँचे कद का। २. लंबा, चौड़ा और ऊँचा। ३. खूब मोटे-ताजे शरीरवाला।

ग्राम—पुं० [सं०√ग्रस् (खाना)+मन् आत्व] १. मनुष्यों का समूह या उनके रहने का स्थान। आबादी। बस्ती। २. छोटी बस्ती। गाँव। ३. ढेर। राशि। समूह। जैसे—गुण-ग्राम। ४. शिव। ५. षड्ज से निषाद तक क्रम से सातों स्वरों का समूह। सप्तक।

वि० १. गाँव या बस्ती में रहनेवाला। २. पालतू। जैसे—ग्राम-शूकर। ३. गवाँर। देहाती।

ग्राम-कंटक—पुं० [ष० त०] वह जो गाँव या बस्ती में तरह-तरह के उत्पात या उपद्रव करके सब लोगों को कष्ट पहुँचाता या दु:खी रखता हो।

ग्राम-कुक्कुट—पुं० [ष० त०] पालतू मुरगा।

ग्राम-कूट (क)—पुं० [ष० त०] शूद्र।

ग्राम-गीत—पुं० [सं० मध्य० स०] गाँवों में गाये जानेवाले गीत। लोक-गीतों के अंतर्गत ग्रामगीतों और जंगली लोगों के गीतों को सम्मिलित किया या माना जाता है।

ग्राम-गेय—पुं० [स० त०] एक प्रकार का साम।

वि० गाँव में गाया जाने वाला।

ग्राम-घात—पुं० [ष० त०] गाँव को लूटना।

ग्राम-चर—वि० [सं० ग्राम√चर् (गति)+ट, उप० स०] गाँव में रहनेवाला।

ग्राम-चर्या—स्त्री० [ष० त०] स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग या सहवास।

ग्राम-चैत्य—पुं० [ष० त०] गाँव का पवित्र और पूज्य वृक्ष।

ग्रामज—वि० [सं० ग्राम√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] गाँव में उत्पन्न होनेवाला। ग्राम में उत्पन्न।

ग्राम-जात—वि० [पं० त०] =ग्रामज।

ग्रामणी—पुं० [सं०ग्राम√नी (ले जाना)+क्विप्, उप० स०] १. गाँव का मालिक। २. गाँव का मुखिया। ३. लोगों का नेता या प्रधान व्यक्ति। ४. विष्णु। ५. यक्ष। ६. नाई। हज्जाम।

स्त्री० १. वेश्या। २. नील का पौधा।

ग्राम-देव—पुं० [ष० त०]=ग्राम देवता।

ग्राम-देवता—पुं० [ष० त०] गाँव का वह स्थानिक प्रधान देवता जो उसका रक्षक माना जाता है और जिसकी पूजा गाँव के सब लोग करते हैं।

ग्राम-धर्म—पुं० [ष० त०] स्त्री-संभोग। मैथुन।

ग्राम-पंचायत—स्त्री० [सं०+हिं०] गाँव के चुने हुए लोगों की वह पंचायत जो गाँव भर के झगड़ों-बखेड़ों का निर्णय करती है और वहाँ की सब प्रकार से सुव्यवस्था करती है।

ग्राम-पाल—पुं० [सं० ग्राम√पाल् (रक्षाकरना)+णिच्+अण्, उप० स०] १. गाँव का मालिक या स्वामी। २. गाँव का प्रधान अधिकारी और रक्षक।

ग्राम-प्रेष्य—पुं० [ष० त०] वह जो गाँव के सब लोगों की सेवा करता हो। मनु के अनुसार ऐसा मनुष्य यज्ञ और श्राद्ध आदि कार्यों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

ग्राम-मुख—पुं० [ब० स०] गाँव का बाजार। हाट।

ग्राम-मृग—पुं० [ष०त०] १. गाँव में रहनेवाले पशु। २. कुत्ता।

ग्राम-याजक—पुं० [ष० त०] वह ब्राह्मण जो ऊँच-नीच सभी तरह के लोगों का पुरोहित हो। (ऐसा व्यक्ति प्रायः पतित माना जाता है।)

ग्राम-याजी (जिन्)—पुं० [सं० ग्राम√यज् (पूजा)+णिच्+णिनि, उप० स०]=ग्राम-याजक।

ग्राम-युद्ध—पुं० [ष०त०] गाँव या बस्ती भर में होनेवाला उपद्रव और मार-पीट।

ग्राम-वल्लभा—स्त्री० [ष० त०] १. वेश्या। रंडी। २. पालक का साग।

ग्राम-वासी (सिन्)—वि० [सं० ग्राम√वस् (बसना)+णिनि, उप० स०] १. गाँव में बसने या रहनेवाला। २. पालतू।

ग्राम-सिंह—पुं० [ष० त०] कुत्ता।

ग्राम-सुधार—पुं० [सं० ग्राम+हिं० सुधार] गाँव के दोष दूर करने तथा सब क्षेत्रों में उसकी उन्नति करने का काम। गाँव की अवस्था सुधारने का काम। (रूरल अपलिफ्ट)

ग्राम-हासक—पुं० [ष०त०] बहनोई, जिससे गाँव भर के सब लोग हँसी-मजाक करते हैं।

ग्रामाचार—पुं० [ग्राम-आचार, ष०त०] किसी गाँव की विशिष्ट प्रथाएँ तथा रीति-रिवाज।

ग्रामाधान—पुं० [ग्राम-आधान, ष०त०] आखेट। मृगया। शिकार।

ग्रामाधिप, ग्रामाध्यक्ष—पुं० [ग्राम-अधिप, ग्राम अध्यक्ष, ष० त०] गाँव का प्रधान अधिकारी। मुखिया।

ग्रामिक—वि० [सं० ग्राम+ठञ्—इक] १. गाँव में उपजने या होनेवाला। २. ग्रामवासियों से संबंधित।

पुं० १. गाँव का चुना या माना हुआ प्रधान अथवा मुखिया। २. ग्रामवासी।

ग्रामिणी—स्त्री० [सं० ग्राम+इनि —ङीप्] नील का पौधा।

ग्रामी (मिन्)—वि० [सं० ग्राम+इनि] १. (व्यक्ति) जो गाँव में रहता हो। २. ग्राम्य।

पुं० १. ग्रामवासी। देहाती। २. गाँव में रहनेवाले पशु। जैसे—कुत्ता, कौआ, मुरगा आदि।

स्त्री० १. पालक का साग। २. नील का पेड़।

ग्रामीय—वि० [सं० ग्राम+छ ईय] ग्राम्य।

ग्रामेय—पुं० [सं० ग्राम+ढक्—एय] ग्रामवासी।

वि० ग्राम्य।

ग्रामेयी—स्त्री० [सं० ग्रामेय+ङीष्] वेश्या।

ग्रामेश, ग्रामेश्वर—पुं० [सं० ग्राम-ईश, ग्राम-ईश्वर, ष०त०] गाँव का प्रधान या मुखिया।

ग्राम्य—वि० [सं० ग्राम+यत्] १. गाँव से संबंध रखनेवाला। गाँव का। जैसे—ग्राम्य गीत, ग्राम्य-सुधार। २. गाँव में रहने या पाया जानेवाला। ३. ग्रामवासियों के रीति-रिवाज, स्वभाव, व्यवहार आदि से संबंध रखनेवाला। जैसे—ग्राम्य व्यवहार। ४. जो ग्रामवासियों की प्रकृति, स्वभाव, व्यवहार आदि का-सा हो। असभ्य या अरुचिपूर्ण। ५. अश्लील। ६. जिसमें किसी प्रकार का संशोधन या सुधार न हुआ हो। अनगढ़ और प्रकृत। ७. (जीव या पशु) जो पाला-पोसा और गाँव या बस्ती में रखा गया हो अथवा रहता आया हो। जैसे—कुत्ता, गधा, गौ आदि ग्राम्य पशु।

पुं० १. अनाड़ी। बेवकूफ। मूर्ख। २. मैथुन की एक मुद्रा या रति-वंध। ३. काव्य का एक दोष, जो किसी साहित्यिक रचना में (क) गँवारू शब्दों के प्रयोग अथवा (ख) गँवारू विषयों के वर्णन के कारण उत्पन्न माना गया है। ४. यह शब्दगत और अर्थगत दो प्रकार का होता है। ४. अशिष्ट और अश्लीलतापूर्ण कथन या बात। ५. स्त्री-प्रसंग। मैथुन। ६. मिथुन राशि।

ग्राम्य-कर्म (न्)—पुं० [कर्म० स०] स्त्री-प्रसंग। मैथुन।

ग्राम्य-कुंकुम—पुं० [कर्म०स०] बर्रें का पौधा या फूल। कुसुंभ।

ग्राम्य-देवता—पुं० [कर्म० स०]=ग्रामदेवता।

ग्राम्य-दोष—पुं० [कर्म० स०] काव्य का 'ग्राम्य' नामक दोष। (दे० 'ग्राम्य')

ग्राम्य-धर्म—पुं० [ष०त०] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

ग्राम्य-पशु—पुं० [कर्म० स०] पालतू जानवर।

ग्राम्य-मृग—पुं० [कर्म० स०] कुत्ता।

ग्राम्य-वल्लभा—स्त्री०=ग्राम-वल्लभा।

ग्राम्या—स्त्री० [सं० ग्राम्य+टाप्] १. नील का पौधा। २. तुलसी।

ग्राव (न्)—पुं० [सं०√ग्रस्(भक्षण)+ड=ग्र-आ√वन् (संलग्न होंना)+विच्] १. पत्थर। २. पहाड़। ३. ओला। ४. बादल।

वि० कठोर। कड़ा।

ग्राव-स्तुत्—पुं० [सं० ग्राव√स्तु(स्तुति करना)+क्विप्, उप० स०] सोलह ऋत्विजों में से तेरहवाँ ऋत्विज्। अच्छावाक।

ग्रावह—पुं० [सं० ग्रावा] पत्थर की कील। उदा०—परि पै प्रसन्न परतीत करि, तव काढ़त ग्रावह जुही।—चन्दवरदाई।

ग्राव-हस्त—पुं० [ब०स०] यज्ञ करनेवाला वह ऋत्विज् जिसके हाथ में अभिषव का पत्थर रहता है।

ग्रावायण—पुं० [सं० ग्राव+फक्—आयन] एक प्रवर का नाम।

ग्रास—पुं० [सं०√ग्रस्+घञ्] १. ग्रसने अर्थात् बुरी तरह से पकड़ने या दवाने की क्रिया या भाव। २. चंद्रमा या सूर्य को लगनेवाले ग्रहण की स्थिति जो उसके ग्रस्त अंश के विचार से कही जाती है। जैसे—खग्रास, सर्व-ग्रास। ३. उतना भोजन जितना एक वार मुंह में डाला जाय। कौर। निवाला।

ग्रासक—वि० [सं०√ग्रस्+ण्वुल्—अक] १. ग्रस्त करने या बुरी तरह से पकड़नेवाला। २. ग्रास के रूप में खाने या मुँह में रखनेवाला। ३. भक्षक। ४. छिपाने या दवानेवाला।

ग्रासना—पुं० [सं० ग्रास] १. ग्रस्त करना। बुरी तरह से पकड़ना। २. निगलना। ३. कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना।

ग्राह—पुं० [सं०√ग्रह्(पकड़ना)+ण] १. मगर। घड़ियाल। २. भक्त समाज में, वह विशिष्ट मगर जिसके पंजे से भगवान् ने गज को छुड़ाया था। ३. [√ग्रह्+घञ्] चंद्रमा आदि को लगनेवाला ग्रहण। ४. ग्रहण करने, पकड़ने या लेने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ५. ज्ञान। ६. [√ग्रह्+ण] ग्राहक।

ग्राहक—पुं० [सं०√ग्रह्+ण्वुल्—अक] १. ग्रहण करने या लेनेवाला। २. वह जो मूल्य देकर कोई चीज लेता या लेना चाहता हो। खरीददार। ३. आदरपूर्वक कुछ पाने या लेने की इच्छा या प्रवृत्ति रखनेवाला। जैसे—गुण-ग्राहक। ४. वह औषधि जिसके सेवन से पतला दस्त आना वन्द हो जाय और बँधा पैखाना होने लगे। ५. बाज नामक पक्षी। ६. चौपतिया नामक साग। ७. विष आदि के प्रकोपों की चिकित्सा करनेवाला वैद्य। विष-वैद्य।

वि० ग्रहण करनेवाला। जैसे—ग्राहक यंत्र।

ग्राहक-यंत्र—पुं० [कर्म० स०] एक वैज्ञानिक उपकरण जो प्रेषक यंत्र द्वारा भेजे गये संदेश ग्रहण करता है। (रिसीवर)

ग्राहना*—स० [सं० ग्रहण] १. ग्रहण करना। लेना। उदा०—पै केवल निज नगर माँहि प्रचलित मत ग्राहैं।—रत्ना०। २. ग्रस्त करना। पकड़ना।

ग्राह-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसका मुख घड़ियाल का-सा हो।

ग्राहिका—स्त्री० [सं० ग्राहक+टाप्, इत्व] त्रिवली का तीसरा बल।

ग्राही (हिन्)—वि० [सं०√ ग्रह्+णिनि] १. ग्रहण या स्वीकार करनेवाला। लेनेवाला। २. आदरपूर्वक मानने या लेनेवाला। जैसे—गुण-ग्राही। ३. (औषध या खाद्य पदार्थ) जो मल रोकता हो। कब्ज करनेवाला।

ग्राह्य—वि० [सं०√ग्रह+ण्यत्] १. जो ग्रहण किये जाने को हो अथवा किये जाने के योग्य हो। २. जो प्राप्त किया या लिया जा सकता हो। ३. जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो। ४. जिसे इंद्रियाँ देख, सुन, पहचान या समझ सकती हों।

ग्राह्य-व्यक्ति—पुं० [कर्म० स०] १. वह प्रमुख व्यक्ति जिसे और लोग या दूसरे देशवाले भी प्रमुख मानें और उसकी बातें या मत ग्रहण कर सकें। २. आधुनिक राजनीति में, विदेशी दूतावास का ऐसा अधिकारी जो अपनी ईमानदारी और सचाई के कारण ग्राह्य हो। (पर्सना ग्रैटा)

ग्रिह—पुं० १. दे० 'ग्रह'। २. दे० 'गृह'।

ग्रीक—वि० [अं०] यूनान देश अथवा इसके वासियों से संबंध रखनेवाला। यूनानी।

पुं० यूनान देश का निवासी।

स्त्री० यूनान देश की प्राचीन भाषा।

ग्रीखम†—पुं०=ग्रीष्म।

ग्रीध†—पुं० [सं० गृध्र] [स्त्री० ग्रीधणी] गीध। उदा०—चारौं पल ग्रीधणी चिड़।—प्रिथीराज।

ग्रीवा—स्त्री० [सं०√गॄ (निगलना)+वन्, नि० सिद्धि] सिर और धड़ को जोड़नेवाला अंग। गरदन। गला

ग्रीवी (विन्)—वि० [सं० ग्रीवा+ईनि] लंबी गरदनवाला।

पुं० ऊँट।

ग्रीषम†—पुं०= ग्रीष्म।

ग्रीष्म—स्त्री० [सं०√ग्रस्+मक् नि० सिद्धि] [वि० ग्रैष्म, ग्रैष्मिक] १. छः ऋतुओं में से दूसरी ऋतु जिसमें बहुत अधिक गरमी पड़ती है। जेठ और आषाढ़ के दिन। २. गरमी। ताप।

वि० उष्ण। गरम।

ग्रीष्म-ऋतु—स्त्री० [ष० त०] गरमी के दिन। जेठ और आषाढ़ के महीने।

ग्रीष्म-काल—पुं०=ग्रीष्म ऋतु।

ग्रीष्म-भवा—स्त्री० [सं०ग्रीष्म√भू(होना)+अच्—टाप्] नेवारी का फूल।

ग्रीष्मावकाश—पुं० [सं० ग्रीष्म—अवकाश ष० त०] कुछ विशिष्ट गरम

प्रदेशों में कड़ी गरमी के समय होनेवाली छुट्टियाँ। गरमी की छुट्टियाँ। (समर वोकेशन)

ग्रीष्मी—स्त्री० [सं० ग्रीष्म+अच्–ङीष्] =ग्रीष्मभवा।

ग्रीस—पुं० [अं०] [वि० ग्रीक] यूनान देश।

ग्रेन—पुं० [अं०] एक पाश्चात्य तौल जो प्रायः एक जौ के बराबर होती है।

ग्रेनाइट—पुं० [अं०] हलके भूरे रंग का एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कड़ा होता है।

ग्रेह*—पुं०=गेह (घर)।

ग्रेही*—पुं० [सं० गृही] घर-बारवाला अर्थात् संसारी व्यक्ति।

ग्रैजुएट—पुं० [अं०] वह जिसने उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त की हो। स्नातक।

ग्रैम—पुं० [अं०] एक पाश्चात्य तौल जो लगभग १५½ ग्रेन (या औंस के अट्ठाइसवें भाग) के बराबर होती है।

ग्रैवेयक—पुं० [सं० ग्रीवा+ढकञ्–एय] १. गले में पहनने का कोई गहना। जैसे—हार, माला, हैकल आदि। २. हाथी के गले में बाँधी जानेवाली जंजीर। ३. जैनों के एक प्रकार के नौ देवता जो लोक पुरुष की गरदन पर स्थित माने गये हैं।

ग्रैष्म—वि० [सं० ग्रीष्म+अण्] १. ग्रीष्म-संबंधी। २. ग्रीष्म ऋतु में होनेवाला। जैसे-ग्रैष्म रोग। ३. ग्रीष्म ऋतु में बोया जानेवाला।

ग्रैष्मिक—वि० [सं० ग्रीष्म+ठञ्–इक] =ग्रैष्म।

ग्लान—वि० [सं० √ग्लै (अप्रसन्नता)+क्त] १. ज्वर आदि रोगों से पीड़ित। बीमार। रोगी। २. थका हुआ। शिथिल। ३. कमजोर। दुर्बल।

*स्त्री० = ग्लानि।

ग्लानि—स्त्री० [सं०√ग्लै+क्तिन्] १. मानसिक या शारीरिक शिथिलता। **विशेष**—साहित्य में यह एक संचारी भाव माना जाता और अनाहार, निद्रा, परिश्रम, प्यास, रोग, संभोग आदि के कारण होता है। इसके अनुभाव है—शिथिलता, निर्बलता, मंद गति, कांतिहीन दृष्टि आदि आदि।

२. अपने ही किसी कार्य का अनौचित्य मालूम होने पर मन में होनेवाला खेद या हल्का दुःख। मानसिक खेद।

ग्लास—पुं० दे० 'गिलास'।

ग्लौ—पुं० [सं०√ग्लै+डौ] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. पृथ्वी।

ग्वाँड़ा†—पुं० [सं० गुण्ड] १. घेरा। वृत्त। २. घिरा हुआ स्थान। बाड़ा।

ग्वार—स्त्री० [सं० गोराणी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और उसकी फलियों में से निकलनेवाले बीजों की दाल बनती है।

ग्वार-नट—स्त्री० [अं० गारनेट] एक प्रकार का बढ़िया रंगीन रेशमी कपड़ा।

ग्वार-पाठा—पुं० [सं० कुमारी-पाठा] घी-कुआँर।

ग्वारी*—स्त्री० दे० 'ग्वार'।

ग्वाल—पुं० [सं० गोपाल, प्रा० गोवाल, बं० गोयाल, गु० गोवाड़, मरा० गवडी, पं० गवाल] [स्त्री० ग्वालिन] गौएँ पालने तथा दूध आदि बेचने का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। अहीर।

ग्वाल-ककड़ी—स्त्री० [हिं० ग्वाल+ककड़ी] एक वनस्पति जिसकी जड़ें, पत्ते, बीज आदि दवा के काम आते हैं।

ग्वाल-गीत—पुं० [हिं० ग्वाल+गीत] वे गीत जो ग्वाले या चरवाहे पशु चराते समय गाते हैं। (पैस्चोरल सांग)

ग्वाल-दाड़िम—पुं० [हिं० ग्वाल+दाड़िम] मालकंगनी की जाति का एक छोटा पेड़।

ग्वाल-बाल—पुं० [हिं० ग्वाल+बाल] १. अहीरों के लड़के। २. कृष्ण के बाल-सखा।

ग्वाला—पुं० [सं० गोपाल, प्रा० गोवाल] १. अहीर। ग्वाल। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मुलायम होती है और जिस पर चित्रों आदि की उकेरी या खुदाई होती है।

ग्वालिन—स्त्री० [हिं० ग्वाल] १. ग्वाल जाति की स्त्री। २. ग्वाले की पत्नी। ३. ग्वार नामक पौधा। ४. गिंजाई नामक बरसाती कीड़ा।

ग्वाह*—पुं० = गवाह।

ग्वैंठना*—स० [सं० गुंठन, हिं० गुमेठना] १. मरोड़ना। २. दे० 'गोठना'।

ग्वैंठा†—पुं० =गोंइठा।

ग्वैंड़ा*—पुं० [हिं० गाँव + इड़ा] १. गाँव के आस-पास की भूमि। २. खेत या गाँव की सीमा।

ग्वैंड़े†—क्रि० वि० [हिं० ग्वैंड़ा] १. गाँव के आस-पास। गाँव के नजदीक।

२. निकट। पास। करीब।

ग्वैंयाँ†—स्त्री० दे० 'गोइँयाँ'।

वि० [हिं० गाँव+ऐयाँ (प्रत्य०)] गाँव में रहने या होनेवाला।

पुं० देहाती।

घ

घ—देवनागरी वर्णमाला में क-वर्ग का चौथा व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कंठ्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा सघोष है।

घँगोल†—पुं० [देश०] कुमुद। कोईं।

घँघरा†—पुं० [स्त्री० घँघरी] घघरा।

घँघोना—स०=घँघोलना।

घँघोरना†—स०=घँघोलना।

घँघोलना—स० [हिं० घन+घोलना] १. किसी पात्र में रखे हुए पानी में हाथ या और कोई चीज डालकर उसे इस प्रकार हिलाना-डुलाना कि उसमें नीचे जमी या बैठी हुई कोई वस्तु पानी में अच्छी तरह घुल-मिल जाय। २. नदी, नाले आदि के तल की मिट्टी इस प्रकार पैर, लकड़ी आदि से हिलाना-डुलाना कि वह ऊपर उठकर पानी गँदला कर दे।

घंट—पुं॰ [सं॰ घट] १. घड़ा। २. पानी का वह घड़ा जो किसी के मरने पर उसकी आत्मा को जल पहुँचाने के लिए १० या १२ दिनों तक पीपल में बाँधकर लटकाते हैं।

†पुं॰=घंटा।

घंटक—पुं॰ [सं॰√घण् (दीप्ति)+क्त+कन्] एक प्रकार का क्षुप।

घंट धातु—स्त्री॰ [सं॰ घंटा–धातु] ताँबे और टीन के योग से बनाई जानेवाली एक मिश्र धातु जिससे घंटे आदि बनते हैं। (बेल मेटल)

घंटा—पुं॰ [सं॰√घंट् (शब्द करना)+अच्—टाप्] [स्त्री॰ अल्पा॰ घंटी] १. घंट धातु का बना हुआ गोलाकार टुकड़ा जिसे लकड़ी, लोहे आदि के डंडे या हथौड़े से पीटने या मारने पर जोर की आवाज होती है।

विशेष—हमारे यहाँ इसकी गिनती बाजों में होती है और मंदिरों में आरती आदि के समय यह बजाया जाता है।

मुहा॰—(किसी को) घंटे मोरछल से उठाना=किसी वृद्ध का शव बाजे-गाजे और धूम-धाम से श्मशान पर ले जाना।

२. उक्त बाजा बजाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

क्रि॰ प्र॰—बजना।—बजाना।

३. प्राचीन काल में पहर-पहर पर घंटा बजाकर समय की दी जानेवाली सूचना। ४. आज-कल दिन-रात का चौबीसवाँ भाग जो ६० मिनट का होता है। ५. कोई काम करने की वह निश्चित अवधि या भोग-काल जो ६० मिनटों या कभी-कभी इससे कुछ कम का होता है। जैसे—स्कूल में पहले घंटे में हिसाब सिखाया जाता है और दूसरे घंटे में हिन्दी पढ़ाई जाती है। ६. उक्त अवधि की घंटा बजाकर दी जानेवाली सूचना। ७. पूर्ण अस्वीकृति, विफलता, व्यर्थता आदि का सूचक निराशाजनक शब्द। ठेंगा।

मुहा॰—(किसी को) घंटा दिखाना=ऐसा उत्तर देना या मुद्रा बनाना जिससे कोई अर्थी पूरी तरह से निराश हो जाय। **घंटा हिलाना**=(क) व्यर्थ बैठे रहना। (ख) व्यर्थ का काम करना।

८. लिंगेंद्रिय। (बाजारू)

घंटाकरन—पुं॰ [सं॰ घंटाकर्ण] १. बड़े पत्तोंवाली एक प्रकार की घास। २. दे॰ 'घंटा-कर्ण'।

घंटा-कर्ण—पुं॰ [ब॰ स॰] शिव का एक प्रसिद्ध उपासक जो कानों में इसलिए घंटे बाँधे रहता था कि राम या विष्णु का नाम उसके कानों में न पहुँचने पाये।

घंटाघर—पुं॰ [हिं॰ घंटा+घर] वह ऊँची मीनार जिस पर बड़ी धर्म-घड़ी लगी रहती है और जिसके घंटे का शब्द दूर तक सुनाई पड़ता है।

घंटापथ—पुं॰ [ष॰ त॰] चौड़ी या बड़ी सड़क। राजमार्ग।

घंटिक—पुं॰ [सं॰ घंटा+ठन्—इक] घड़ियाल या मगर। (जल-जन्तु)

घंटिका—स्त्री॰ [सं॰ घंटा+कन्–टाप् इत्व] १. छोटा घंटा। २. घुंघरू। ३. वे छोटे घड़े जो रहट में बाँधे जाते हैं। क्षुद्र-घंटिका।

घंटियार—पुं॰ [हिं॰ घंटी] पशुओं का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके गले में काँटे निकल आते हैं और उनसे कुछ खाया नहीं जाता।

घंटी—स्त्री॰ [सं॰ घंटा] १. घंटे की तरह बजाया जानेवाला धातु का वह उपकरण जो औंधे मुँह के अर्ध गोलाकार पात्र की तरह होता है तथा जिसके बीच में बजाने के लिए कोई धातु का टुकड़ा (लोलक) बँधा रहता है और जिसके ऊपरी भाग में डाँड़ी होती है जिसे हाथ में पकड़कर उसे बजाते हैं। २. कोई ऐसा छोटा उपकरण जिस पर आघात करने से शब्द उत्पन्न होता हो। जैसे—साइकिल या मेज पर की घंटी। ३. उक्त उपकरणों के बजने का शब्द। ४. छोटी लुटिया। ५. घुंघरू। ६. गले का वह बाहरी बीचवाला भाग जिसमें हड्डी कुछ उभरी हुई होती है। ७. गले में अन्दर को आगे बढ़ा हुआ मांस-पिंड। कौआ। घाँटी।

मुहा॰—घंटी उठाना या बैठाना=घंटी के बढ़ या लटक जाने पर कोई दवा लगाकर उसे मलते हुए बैठाना।

घंटील—स्त्री॰ [देश॰] एक प्रकार की घास जो चारे के काम में आती और जमीन पर दूर तक फैलती है।

घंटु—पुं॰ [सं॰√घंट्+उन्] १. ताप। २. प्रकाश। ३. गजघंटा।

घई*—स्त्री॰ [?] १. पानी का भँवर। २. खंभे की जगह लगाई जानेवाली चाँड़। टेक। थूनी।

वि॰ [सं॰ गंभीर ?] बहुत अधिक गहरा।

घउरी—स्त्री॰ =घौरी।

घघरबेल—स्त्री॰ [हिं॰ घुघराला+बेल] बंदाल।

घघरा—पुं॰ [हिं॰ घन+घेरा] [स्त्री॰ अल्पा॰ घघरी] १. टखनों तक लंबा, गोल तथा बड़े घेरेवाला एक प्रसिद्ध पहनावा जिसे स्त्रियाँ कमर में नाड़े से बाँधती हैं। २. वह लहँगा जो स्त्रियाँ धोती के नीचे पहनती हैं।

घघराघोर†—पुं॰ [हिं॰ घँघरा+घोर] १. छुआछूत के विचार का अभाव। २. बहुत अधिक भ्रष्टाचार।

घघरी—स्त्री॰ [हिं॰ घघरा] छोटा घघरा या लहँगा।

घट—पुं॰ [सं॰√घट् (शब्द करना)+अच्] १. जल भरकर रखने का बड़ा बरतन विशेषतः मिट्टी का बरतन। कलश। घड़ा।

पद—मंगल घट=मांगलिक अवसर पर जल से भरकर रखा जानेवाला कलश या घड़ा।

२. देह। शरीर। ३. अन्तःकरण। मन।

मुहा॰—घट में बसना या बैठना=(क) हृदय में स्थापित होना। मन में बसना। (ख) ध्यान पर चढ़ा रहना।

४. कुंभ राशि। ५. हाथी का कुंभ। ६. २० द्रोण की तौल। ७. किनारा।

वि॰ [हिं॰ घटना] किसी की तुलना में कुछ घटा हुआ, कम, थोड़ा या हलका। उदा॰—को घट ये वृषभानुजा ये हलधर के बीर—बिहारी।

घट-कंचुकी—स्त्री॰ [मध्य॰ स॰] तांत्रिकों की एक रीति जिसमें पूजा करनेवाली सब स्त्रियों की कंचुकियाँ या चोलियाँ एक घड़े में भर देते हैं, और तब जिस पुरुष के हाथ में जिस स्त्री की कंचुकी या चोली आ जाती है, वह उसी स्त्री के साथ संभोग करता है।

घटक—वि॰ [सं॰√घट्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री॰ घटिका] १. कोई चीज घटित करने, बनाने या रचनेवाला (अंश या तत्त्व)। २. कोई घटना या बात घटित या प्रस्तुत करनेवाला (पदार्थ या व्यक्ति)। ३. चतुर। चालाक।

पुं॰ १. विवाह-संबंध स्थिर करानेवाला ब्राह्मण या और कोई व्यक्ति। बरेखिया। २. दलाल। ३. मध्यस्थ। ४. बीच में पड़कर काम.

पूरा करानेवाला चतुर व्यक्ति। ५. घड़ा। ६. बंगाल और मिथिला में एक प्रकार के ब्राह्मण जो सब गोत्रों और परिवारों का लेखा रखते और यह बतलाते हैं कि अमुक-अमुक पक्षों में विवाह संबंध हो सकता है या नहीं। ७. वह चीज या बात जो कोई दूसरी चीज या बात घटित करने या बनाने में मुख्य रूप से अथवा साधन की भाँति सहायक होती है। घटित करनेवाला अंश या तत्त्व। (फैक्टर)

घटकना*—स०=टकना।

घट-कर्कट—पुं० [सं० ?] संगीत में एक प्रकार का ताल।

घट-कर्पर—पुं० [ष० त०] १. कालिदास के सम-कालीन कवि जिनकी गिनती विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में होती थी। २. घड़े आदि का टूटा हुआ अंश। ठीकरा।

घटका—पुं० [सं० घटक=शरीर, अथवा अनु० घर्र-घर्र] मृत्यु होने से पहले की मनुष्य की वह स्थिति जिसमें उसका साँस घर-घर शब्द करता तथा रुक-रुक कर चलता है। घर्रा।

क्रि० प्र०—लगना।

घट-कार—पुं० [सं० घट√कृ (करना)+अण्, उप० स०] घट अर्थात् घड़े बनानेवाला अर्थात् कुम्हार।

घट-घाट*—वि० [हिं० घटना] किसी की अपेक्षा थोड़ा कम या हलका। घटकर।

घटज—पुं० [सं० घट√जन् (उत्पन्न होना)+ड,उप०स०] अगस्त्य मुनि, जिनके संबंध में कहा जाता है कि ये घड़े में से उत्पन्न हुए थे।

वि० घट से उत्पन्न।

घटती—स्त्री० [हिं० घटना] १. घटने अथवा कम होने की क्रिया या भाव। घटाव। 'बढ़ती' का विपर्याय। २. उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आने की अवस्था या स्थिति। ३. मात्रा, मान, मूल्य आदि में घटने या कम होने की अवस्था या भाव।

पद—घटती से=बट्टे से। (देखें 'बट्टा' के अन्तर्गत)

४. अवनति। ह्रास।

मुहा०—घटती का पहरा=अवनति या दुर्दशा के दिन। बुरा जमाना।

५. कमी। न्यूनता।

वि० जिसमें कुछ घटी, कमी या न्यूनता हो। (डेफिशिट) (विशेष दे० 'अववर्त्त')

घट-दासी—स्त्री०[सं०√घट्+णिच्+अन्—टाप्, घटा-दासी कर्म०स०] १. नायक और नायिका को एक दूसरे के सन्देश पहुँचानेवाली दूती। २. कुटनी।

घटन—पुं० [सं०√घट्+ल्युट्—अन] [वि० घटनीय, घटित] १. घटित होने अर्थात् गढ़े या बनाये जाने की क्रिया या भाव। २. कोई घटना उपस्थित होने या सामने आने की क्रिया या भाव।

घटना—स्त्री०[सं०√घट् +णिच्+युच् अन, टाप्] १. ऐसी बात जो घटित हुई अर्थात् अस्तित्व में आई अथवा प्रत्यक्ष हुई हो। कार्य या क्रिया के रूप में सामने आनेवाली बात। २. कोई अप्रत्याशित या विलक्षण बात जो हो जाय। वाकया। ३. कोई ऐसी अनिष्टकारक बात जो नियम, विधि, व्यवहार आदि के विरुद्ध हो।

अ० [सं० घटन] १. घटित होना। अस्तित्व में आना। उदा०—घटई तेज बल मुख छवि सोई।—तुलसी। २. कार्य के रूप में किया जाना। संपन्न होना। बनना। उदा०—कार्य-बचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये।—तुलसी। ३. ठीक आना, उतरना या बैठना। ४. चरितार्थ होना। सिद्ध होना।

†स० १. बनाना। रचना। २. पूरा या संपन्न करना। उदा०—सब विधि काज घटब मैं तोरे।—तुलसी।

अ०[सं० घृष्ट, प्रा० घट्ट] १. उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आना। जैसे—(क) नदी का पानी घटना। (ख) किसी का मान या प्रतिष्ठा घटना। २. मात्रा, मान, मूल्य आदि में कम ठहरना। कम पड़ना। जैसे—(क) खाने की सामग्री घटना। (ख) पुस्तक का दाम घटना। ३. पूरा न रह जाना। ४. रोगी का अंत समय में मृत्यु के समीप पहुँचना। प्राणवायु का कम होना। ५. मृत होना। मरना। जैसे—उनका चार बरस का लड़का परसों घट गया।

घटनाई†—स्त्री० दे० 'घड़नई'।

घटना-क्रम—पुं० [ष० त०] एक के बाद एक कुछ घटनाएँ होते रहने का क्रम या भाव। घटनाओं का सिलसिला।

घटना-चक्र—पुं० [ष० त०] एक के बाद एक अथवा एक के साथ एक करके होनेवाली अनेक प्रकार की घटनाओं का समूह। जैसे—घटना-चक्र ने फिर महायुद्ध की सम्भावना उत्पन्न कर दी।

घटनावली—स्त्री० [घटना-आवली, ष० त०] बहुत-सी घटनाओं का सिलसिला या समूह।

घटना-स्थल—पुं० [ष० त०] घटना घटित होने का स्थान। (प्लेस आफ अकरेन्स)

घट-पल्लव—पुं०[द्व० स०, घटपल्लव+अच्?] वास्तु शास्त्र में, वह खंभा जिसका सिरा घड़े और पल्लव के आकार का बना हो।

घट-बढ़—स्त्री० [हिं० घटना+बढ़ना] १. घटने-बढ़ने अर्थात् कम या अधिक होने की अवस्था या भाव। कमी-बेशी। न्यूनाधिक्य। २. उतार-चढ़ाव। परिवर्तन। ३. नृत्य, संगीत आदि में आवश्यकतानुसार लय घटाने और बढ़ाने की क्रिया या भाव।

वि० कभी अथवा कहीं कुछ कम और कभी अथवा कहीं कुछ अधिक।

घट-योनि—पुं० [ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घट-राशि—पुं० [मध्य० स०] एक द्रोण की नाप जो लगभग सोलह सेर की होती है।

घटवाई—पुं० [हिं० घाट+वाई] घाट का कर लेनेवाला अधिकारी।

स्त्री० वह कर जो घाट का अधिकारी यात्रियों आदि से घाट पर उतरने-चढ़ने के बदले वसूल करता है।

स्त्री० [हिं० घटवाना] घटवाने अर्थात् कम कराने की क्रिया, भाव अथवा पारिश्रमिक।

घट-वादन—पुं० [ष० त०] संगीत में मिट्टी का घड़ा औंधा करके उसे तबले की तरह बजाने की क्रिया अथवा विद्या।

घटवाना—स० [हिं० घटना का प्रे०] घटाने या कम करने का काम कराना।

घटवार—पुं० [हिं० घाट+पाल या वाला] १. घाट का महसूल लेनेवाला। २. मल्लाह। केवट। ३. घाट का देवता। ४. दे० 'घाटिया'।

घटवारिया—पुं०=घटवालिया।

घटवाल—पुं० घटवार।

घटवालिया—पुं० [हिं० घाट+वाला] १. तीर्थ स्थानों में दान लेनेवाला

पंडा। तीर्थ-पुरोहित। २. नदी आदि के घाट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

घटवाह—पुं० [हिं० घाट+वाह (प्रत्य०)] घाट का ठेकेदार जो घाट पर महसूल लेता है।

घटवाही—स्त्री० दे० 'घट्ट-कर'।

घट-संभव—पुं० [ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घटहा†—पुं० [हिं० घाट+हा (प्रत्य०)] १. घाट का ठेकेदार। घटवाह। २. वह नाव जो घाट पर से सवारियाँ लेकर दूसरी जगह या उस पार ले जाती है।

वि० [स्त्री० घटही] घाट पर का। घाटवाला।

घटा—स्त्री० [सं०√घट्+अङ्—टाप्] १. आकाश में उमड़े या छाए हुए घने बादलों की राशि या समूह । मेघमाला। २. ढेर। राशि। ३. झुंड। समूह। ४. गोष्ठी। ५. एक प्रकार का ढोल।

घटाई—स्त्री० [हिं० घटना+ई (प्रत्य०)] १. घटने या घटाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. घटे हुए अर्थात् हीन होने की अवस्था या भाव। हीनता। ३. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाकाश—पुं० [घट-आकाश, मध्य०स०] तर्क या न्याय में घड़े के अन्दर का अवकाश अर्थात् खाली स्थान।

घटाग्र—पुं० [घट-अग्र, ष० त०] वास्तु विद्या में खंभे के नौ विभागों में से आठवाँ विभाग।

घटा-टोप—पुं० [सं० घटा-आटोप, तृ० त०] १. घने बादलों की गहरी और चारों ओर छाई हुई घटा जिससे प्रायः बहुत अँधेरा हो जाता है। २. चारों ओर से ढकने के लिए गाड़ी, पालकी आदि के ऊपर डाला जानेवाला ओहार। ३. चारों ओर से खूब घेरनेवाला दल या समूह।

वि० चारों ओर से पूरी तरह घिरा हुआ। उदा०—घटाटोप करि चहुँदिसि घेरी।—तुलसी।

घटा-घूम—स्त्री० [हिं०घटा+घूम] किसी काम या बात की अधिकता के कारण मचनेवाली धूम या हलचल। जैसे—सप्ताह के प्रारम्भ में व्यापार कुछ ढीला था, बाद को घटा-घूम के कारण बाजार सँभल गया।

घटाना—स० [हिं० घटना (प्रा० घट्ट)] १. हिन्दी 'घटना' क्रिया का स० रूप। २. उच्च स्तर से निम्न स्तर पर लाना। जैसे—मान घटाना। ३. मात्रा, मान, मूल्य आदि में कमी करना। कम करना। जैसे—दाम घटाना। ४. गणित में, किसी बड़ी राशि में से कोई छोटी राशि निकालना।

स० [हिं० घटना (सं० घटन)] १. घटित करना। २. किसी एक बात के तथ्य या तथ्यों का दूसरी बात पर पूरा उतारना या आरोपित करना।

घटाव—पुं० [हिं० घटना] १. घटने अर्थात् कम होने की अवस्था या भाव। कमी। २. मात्रा, मान आदि घटने अर्थात् उतरने या कम होने की अवस्था या भाव। 'चढ़ाव' या 'बढ़ाव' का विपर्याय। उतार। ३. अवनति।

पद—घटाव-बढ़ाव=कभी घटने और कभी बढ़ने की अवस्था , क्रिया या भाव।

४. दे० 'घटती'।

घटावना†—स०=घटाना।

घटि—वि० [हिं० घटना] किसी की तुलना में घटिया या कम।

क्रि० वि०=घटकर।

स्त्री०=घटी (कमी)।

घटिक—पुं० [सं० घट+ठन्—इक] वह व्यक्ति जो विशिष्ट समयों पर लोगों की जानकारी के लिए घंटे बजाता हो।

घटिका—स्त्री० [सं०√घट्+णिच्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १. समय का मान बतलानेवाला कोई छोटा यंत्र। घड़ी। २. समय का एक मान जो आज-कल के २४ मिनटों के बराबर होता है। ३. [घट+ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] छोटा घड़ा। गगरी।

घटिका-यंत्र—पुं० [ष० त०] =घटी-यंत्र।

घटिकावधान—पुं० [घटिका-अवधान, ब स०] घड़ी भर में ही बहुत से काम एक साथ कर डालने की कला, विद्या अथवा शक्ति।

घटिकाशतक—पुं० [ब० स०] १. वह व्यक्ति जो घड़ी भर में सौ अर्थात् बहुत से काम कर सकता हो। २. वह जो घड़ी भर में सौ श्लोक या पद्य बना सकता हो।

घटित—भू० कृ० [सं०√घट्+णिच्+क्त] १. जो घटना के रूप में उपस्थित या वर्तमान हुआ हो। २. अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतरा हुआ। घटा हुआ। ३. जो गढ़कर अथवा और किसी रूप में बनाया गया हो अथवा किसी रूप में बना हो। निर्मित। रचित।

घटिताई*—स्त्री० [हिं० घटित] घटित होने की अवस्था या भाव।

स्त्री० [हिं० घटना=कम होना] १. कमी। न्यूनता। उदा०—इनहूँ में घटिताई कीन्हीं।—सूर। २. त्रुटि।

घटिया—वि० [हिं० घट+इया (प्रत्य०)] १. जो औरों की तुलना में घटकर अर्थात् खराब या हीन हो। २. जो गुण, धर्म आदि की दृष्टि से प्रसम या मानक स्तर से घटकर हो। जैसे—घटिया कपड़ा, घटिया पुस्तक। 'बढ़िया' का विपर्याय। ३. अधम। नीच।

घटियारी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे खवी भी कहते हैं। इसमें अदरक की-सी महक होती है।

घटिहा—वि० [हिं० घात+हा (प्रत्य०)] १. घात या धोखे-बाजी करनेवाला। २. घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। ३. चालाक। धूर्त। ४. दुष्ट और लंपट या व्यभिचारी। ५. नीच। वाहियात।

घटी—स्त्री० [सं० घट+अच्—ङीष्] १. २४ मिनट का समय। घड़ी। २. छोटा घड़ा। गगरी। ३. प्राचीन काल का वह छोटा घड़ा जिसमें जल भरकर और उसमें छेददार कटोरा रखकर उसमें भरनेवाले पानी के हिसाब से समय का मान स्थिर करते थे। ४. आज-कल समय बतलानेवाला किसी प्रकार का यंत्र। घड़ी। ५. रहट में बाँधी जानेवाली छोटी गगरी या हँड़िया।

पुं० [सं० घट+इनि=घटिन्] १. कुंभ राशि। २. शिव।

स्त्री० [हिं० घटना] १. घटने अर्थात् कम होने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता। २. घाटा। टोटा। ३. क्षति। नुकसान। हानि। ४. मूल्य, महत्त्व आदि में होनेवाली कमी। विशेष दे० 'छीज'।

घटी-यंत्र—पुं० [ष० त०] १. प्राचीन काल का समय-सूचक यंत्र जो छोटे घड़े की तरह होता था और जिसमें भरे हुए जल में डूबनेवाले कटोरे की सहायता से समय का मान स्थिर करते थे। २. रहट। ३. संग्रहणी नामक रोग का एक प्रकार या भेद।

घटूका*—पुं० = घटोत्कच।

घटोत्कच—पुं० [घट-उत्कच, ब० स०] हिडिंबा के गर्भ से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र जिसे महाभारत के युद्ध में कर्ण ने मारा था।

घटोद्भव—पुं० [घट-उद्भव, ब० स०] अगस्त्य मुनि।

घटोर*—पुं० [सं० घटोदर] मेढ़ा। मेष। (डिं०)

घट्ट—पुं० [सं०√घट्ट् (चलाना)+घञ्] १. घाट। २. वह स्थान जहाँ चुंगी या महसूल लिया जाता था।

* पुं० =घट।

घट्ट-कर—पुं० [मध्य० स०] वह कर जो किसी घाट पर नदी पार करनेवालों से लिया जाता है। (फेरी टोल)

घट्टन—पुं० [सं० घट्ट+ल्युट्—अन] १. चलाना या हिलाना-डुलाना। २. घोटना। ३. संघटन।

घट्टना—स्त्री० [सं०√घट्ट्+युच्—अन टाप्] १. हिलाना-डुलाना। २. रगड़ना। ३. पेशा। वृत्ति।

घट्टा—पुं० १. दे० 'घाटा'। २. दे० 'घट्ठा'।

घट्टित—पुं० [सं०√घट्ट्+ क्त] नृत्य में पैर चलाने का एक प्रकार जिसमें एड़ी को जमीन पर दबाकर पंजा नीचे-ऊपर हिलाते हैं।

घट्टी—स्त्री० = घटिका।

घट्ठ—पुं० [सं० गोष्ठ] परामर्श आदि के लिए होनेवाला जमावड़ा। (राज०)

घट्ठा—पुं० [सं० घट्ट] चोट, रगड़ आदि के कारण शरीर के किसी अंग में होनेवाली कड़ी, उभारदार गाँठ। जैसे—बरतन माँजने से हाथ में या लाठी की चोट लगने से सिर पर घट्ठा पड़ गया।

मुहा०—(किसी काम या बात का) घट्ठा पड़ना=पूरा पूरा अनुभव और ज्ञान होना।

घड़†—स्त्री० [सं० घट्ट] सेना। (राज०) उदा०—दाटक अवड़ दंड नह दीधो, दोयण घड़ सिर दाव दियो।— दुरसाजी।

†स्त्री०=घटा। (राज०)

घड़घड़—स्त्री० [अनु०] किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला घड़घड़ शब्द।

घड़घड़ाना—अ० [अनु०] गड़गड़ या घड़घड़ शब्द होना। गड़गड़ाना। जैसे—गाड़ी या बादलों का घड़घड़ाना।

स० घड़घड़ शब्द उत्पन्न करना।

घड़घड़ाहट—स्त्री० [अनु० घड़घड़] घड़घड़ होने-की ध्वनि या भाव।

घड़त—स्त्री० दे० 'गढ़त'।

घड़न—स्त्री० [सं० घटन] घड़ने या गढ़ने की क्रिया, प्रकार या भाव। गढ़न।

घड़नई—स्त्री० [हिं० घड़ा+नैया (नाव)] घड़ों में बाँस बाँधकर बनाया हुआ वह ढाँचा जिस पर चढ़कर लोग छोटी-छोटी नदियाँ, नाले पार करते हैं।

घड़ना—स० दे० 'गढ़ना'।

घड़नैल†—स्त्री० दे० 'घड़नई'।

घड़ा—पुं० [सं० घट, पा० घटो, प्रा० घडग, घड, बँ० घरा, सिं० घरो, गु० घडो, मरा० घड़ाँ] १. धातु, मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध गोलाकार पात्र जो प्रायः पानी भरने या अनाज आदि रखने के काम आता है। कलसा। गगरा।

मुहा०—(किसी पर) घड़ों पानी पड़ना=अपनी त्रुटि या भूल सिद्ध होने पर दूसरों के सम्मुख लज्जित होना।

पद—चिकना घड़ा=ऐसा व्यक्ति जो दूसरों द्वारा लज्जित किये जाने पर भी संकुचित न होता हो। बहुत बड़ा निर्लज्ज।

घड़ाई—स्त्री० दे० 'गढ़ाई'।

घड़ाना—स० दे० 'गढ़ाना'।

घड़ामोड़ा*—वि० [हिं० गढ़+मोड़ना] शूर-वीर। (डिं०)

घड़िया—स्त्री० [सं० घटिका, हिं० घड़ी] १. छोटी घड़ी, कलसी या गगरी। २. मिट्टी के वे छोटे बरतन जो रहट में बाँधे जाते हैं। ३. गर्भाशय। बच्चेदानी। ४. शहद का छत्ता। ५. मिट्टी का वह छोटा प्याला जिसमें आँच देने से उसमें धातु की मैल कटकर ऊपर आ जाती है। (सुनार)

घड़ियाल—पुं० [सं० घटिकालि, प्रा० घड़ियालि=घंटों का समूह] वह बड़ा घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिए बजाया जाता है।

पुं० [सं० ग्राह ?] छिपकली की जाति का, परंतु उससे बहुत बड़ा, भीषण तथा हिंसक एक प्रसिद्ध जलजंन्तु जिसकी त्वचा कँटीली होती है और मुँह बहुत अधिक लंबा होता है। ग्राह।

घड़ियाली—पुं० [हिं० घड़ियाल] समय की सूचना देने के लिए घड़ियाल बजानेवाला व्यक्ति।

स्त्री० एक प्रकार का छोटा घड़ियाल या घंटा जो प्रायः देव-पूजन के समय बजाया जाता है। विजय-घंट।

घड़ी—स्त्री० [सं० घटी] १. काल का एक प्राचीन मान जो दिन-रात का ३२ वाँ भाग और ६० पलों का होता है। आज-कल के हिसाब से यह २४ मिनट का होता है।

पद—घड़ी घड़ी=रह-रहकर थोड़ी देर पर। बार-बार। **घड़ी पहर**=थोड़ी-देर। उदा०—घड़ी पहर बिलबीरे भाई जरता है।– कबीर।

मुहा०। घड़ी या घड़ियाँ गिनना =(क) बहुत उत्सुकतापूर्वक और समय पर ध्यान रखते हुए किसी बात की प्रतीक्षा करना। (ख) मरने के निकट होना। **(किसी का) घड़ी सायत पर होना**=ऐसी स्थिति में होना कि थोड़ी ही देर में प्राण निकल जायँगे। मरणासन्न अवस्था। २. किसी काम या बात के घटित होने का अवसर या समय। जैसे—जब इस काम की घड़ी आवेगी तब यह आप ही हो जायगा।

मुहा०—घड़ी देना=ज्योतिषी का मुहूर्त या सायत बतलाना।

३. आज-कल, वह प्रसिद्ध छोटा या बड़ा यंत्र जो नियमित रूप से घंटा, मिनट आदि अर्थात् समय का ठीक मान बतलाता है। यह यंत्र कई प्रकार का होता है। जैसे—जेब घड़ी, दीवार घड़ी, धूप घड़ी आदि। ४.पानी रखने का छोटा घड़ा।

पद—घड़ी-दीया (देखें)।

स्त्री० [हिं० घड़ना] कपड़ों आदि की लगाई जानेवाली तह।

घड़ी-दीया—पुं० [हिं० घड़ी+दीया=दीपक] हिन्दुओं में, कर्मकांड का एक कृत्य जो किसी के मरने पर १०, १२ या १३ दिनों तक चलता है। इसमें एक छेददार घड़े में जल भरकर उसे चूने या टपकने के लिए कहीं रख-दिया जाता है और उसके पास एक दीया रखा जाता है जो दिन-रात जलता रहता है।

घड़ीसाज—पुं० [हिं० घड़ी+फा० साज] घड़ियों की मरम्मत करनेवाला कारीगर।

घड़ीसाजी—स्त्री० [हिं० घड़ी+फा० साजी] घड़ी (यंत्र) की मरम्मत करने का काम।

घड़ोला—पुं० [हिं० घड़ा+ओला (प्रत्य०)] छोटे आकार का घड़ा। छोटा घड़ा।

घड़ौंची—स्त्री० [हिं० घड़ा+औंची (प्रत्य०)] लकड़ी की बनी हुई वह चौकी या चौखटा जिस पर पानी से भरे हुए घड़े रखे जाते हैं।

घण*—पुं० दे० 'घन'।

वि० दे० 'घना'।

घणा*—वि० [स्त्री० घणी] दे० 'घना'।

घत†—पुं० [हिं० घात] १. दे० 'घात'। २. ठीक और पूरा ढंग या रीति। उदा०—मैं जाऩत या व्रत के घत कौं।—सूर।

घतर†—पुं० [?] तड़का। प्रभात का समय।

घतिया—पुं० [हिं० घात+इया(प्रत्य०)] १. घात करनेवाला। २. विश्वासघात करनेवाला। धोखेबाज।

घतियाना—स० [हिं० घात] १. अपनी घात या दाँव में लाना। मतलब पर चढ़ाना। २. कोई चीज चुरा, छिपा या दबाकर रख लेना।

घत्ता—पुं० [?] अपभ्रंश का एक प्रसिद्ध मात्रिक अर्द्धसम छंद जिसके विषम चरणों में १८-१९ और सम चरणों में १३ मात्राएँ तथा तीन लघु होते हैं।

घत्तानंद—पुं० [?] एक मात्रिक अर्द्धसम छंद।

घन—पुं० [सं०√हन् (हिंसा)+अप्, घनादेश] १. मेघ। बादल। २. लोहा। ३. लोहा पीटने का बहुत बड़ा हथौड़ा। ४. झुंड। समूह। ५. कपूर। ६. अभ्रक। ७. बजाने का बड़ा घंटा। घड़ियाल। ८. एक प्रकार की सुगंधित घास। ९. कफ। श्लेष्मा। १०. नृत्य का एक प्रकार या भेद। ११. संगीत में धातु का ढला हुआ वह बाजा जो केवल ताल देने के काम आता हो। जैसे—झाँझ, मँजीरा आदि। १२. किसी चीज या बात की अधिकता या यथेष्ट मान। जैसे—आनन्द-घन। उदा०—पवन के घन घिरे पड़ते ये बने मधु अंध।—प्रसाद। १३. मुख। (डिं०) १४.गणित में किसी अंक को किसी अंक के वर्ग से गुणा करने पर निकलनेवाला गुणनफल। जैसे—४ का घन (४×१६=) ६४ होगा। १५. पदार्थों के मान का वह रूप जिसमें उनकी लंबाई (या ऊँचाई) चौड़ाई (या गहराई) और मोटाई के कुल विस्तारों का अंतर्भाव होता है। १६. ज्यामिति में वह पदार्थ जिसके छः समान वर्गित पक्ष हों। १७. वैज्ञानिक क्षेत्रों में, पदार्थ की तीन स्थितियों में से एक जिसमें उसके अणु एक साथ इस प्रकार सटे होते हैं कि वे अलग तथा अकेले क्रियाशील या गतिशील नहीं हो सकते हैं।

वि० १. घना (देखें)।

पद—घन का=(क) देखने में बहुत अधिक घना। जैसे—घन का बादल। (ख) मात्रा या मान में बहुत अधिक। जैसे—घन की विपत्ति।

२. (पदार्थ) जिसके अणु एक साथ इस प्रकार सटे हुए हों कि वे अलग-अलग क्रियाशील या गतिमान न हो सकते हों। ठस या ठोस ३. भारी। ४. दृढ़। पक्का।

* पुं०=शत्रुघन। उदा०—रघुनंदन बिनु बंधु कुअवसर जद्यपि घनु दूसरे हैं।—तुलसी।

घनक*—स्त्री० [सं० घन] १. गर्जन। २. गड़गड़ाहट। ३. चोट। प्रहार।

घनकना—अ० [हिं० घनक] जोर की आवाज करना। गरजना।

स० चोट या प्रहार करना।

घनकफ—पुं० [ष० त०] ओला।

घनकारा*—वि० [हिं० घनक] ऊँची आवाज करने या गरजनेवाला।

घन-काल—पुं० [ष० त०] वर्षा ऋतु। बरसात।

घन-कोदंड—पुं० [ष० त०] इन्द्रधनुष।

घन-क्षेत्र—पुं० [ष० त०] किसी चीज की गहराई, चौड़ाई और लंबाई का समूचा विस्तार।

घनगरज—स्त्री० [हिं० घन+गर्जन] १. बादल के गरजने की ध्वनि। २. खुभी की जाति का एक छोटा पौधा जिसकी तरकारी बनती है। ढिगरी। ३. एक प्रकार की तोप।

घनघटा—स्त्री० [हिं० घन+घटा] बादलों की गहरी या घनी घटा।

घनघनाना—अ० [अनु०] घन घन शब्द होना। घंटे की ऐसी ध्वनि निकलना।

स० घन-घन शब्द उत्पन्न करना।

घनघनाहट—स्त्री० [अनु०] घन-घन शब्द निकलने की ध्वनि या भाव।

घनघोर—वि० [हिं० घन+घोर] १. बहुत अधिक घना। जैसे—घनघोर बादल। २. भीषण या विकट। जैसे—घनघोर युद्ध। ३. (कलन या गणित) जिसमें लंबाई, चौड़ाई औंर मोटाई तीनों का योग या विचार हों। (क्यूब)।

पुं० १. तुमुलनाद। भीषण ध्वनि। २. बादलों की गरज।

घनचक्कर—पुं० [हिं० घन+चक्र] १. वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदा चंचल रहे। बहुत चंचल बुद्धि का आदमी। २. बेवकूफ़। मूर्ख। ३. वह जो बराबर इधर-उधर व्यर्थ घूमता फिरे। ४. जंजाल। झंझट। ५. एक प्रकार की आतिशबाजी जो चक्कर के रूप में होती और बहुत जोर का शब्द करती है। ६. सूरजमुखी (पौधा और फूल)।

घनता—स्त्री० [सं० घन+तल्—टाप्] १. घने होने की अवस्था या भाव। घनापन। २. अणुओं आदि की पारस्परिक ठोस गठन। ठोसपन। ३. दृढ़ता। मजबूती। ४. किसी पदार्थ की सारी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई का समूह।

घनताल—पुं० [सं० घनता√अल् (पर्याप्ति) + अच्] १. चातक। पपीहा। २. [घन-ताल, कर्म० स०] करताल की तरह का एक बड़ा बाजा।

घनतोल—पुं० [सं० घन√तुल् (तोलना)+अण्, उप० स०] चातक। पपीहा।

घनत्व—पुं० [सं० घन+त्व] =घनता।

घननाद—पुं० [ष० त०] १. बादलों की गरज। २. मेघनाद (रावण का पुत्र)।

घनपति—पुं० [ष० त०] मेघों के अधिपति, इन्द्र।

घन-प्रिय—वि० [ब० स० वा ष० त०] बादल जिसे प्रिय हों अथवा जो बादलों का प्रिय हो।

पुं० १. मोर। मयूर। २. मोरशिखा नाम की घास।

घन-फल—पुं० [ष० त०] १ वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से निकलता है। घन। २. वह जो किसी ठोस चीज की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (या गहराई) के मानों को एक दूसरे से गुणा करने पर निकलता है।

घनबहेड़ा—पुं० [हिं० घन+बहेड़ा] अमलतास।

घनबान—पुं० [हिं० घन + वाण] १. एक प्रकार का वाण।

घन-बेला—पुं० [हिं० घन+वेला] [स्त्री० अल्पा० घन-बेली] एक प्रकार के बेले का पौधा और उसका फूल।

घन-मान—पुं० [ष० त०] किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई का सम्मिलित मान। (क्यूब मेजर)

घन-मूल—पुं० [ष० त०] गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक। (क्यूब रूट) जैसे—२७ का घन मूल ३ होता है, क्योंकि ३ को ३ से दो बार गुणा करने पर ही २७ होता है।

घन-रस—पुं० [ष० त०] १. जल। पानी। २. कपूर। ३. हाथियों का एक रोग जिसमें उनका खून बिगड़ जाता और नाखून गलने लगते हैं।

घन-वर्धन—पुं० [तृ० त०] [वि० घनवर्धनीय, भाव० घनवर्धनीयता] धातुओं आदि को हथौड़े से पीटकर बढ़ाना।

घन-वाह—पुं० [घनं√वह (ले जाना) +णिच्, +अण् उप० स०] वायु।

घनवाहन—पुं० [बं० स०] इन्द्र, जिसका वाहन मेघ माना गया है।

घन-वाही—स्त्री० [हिं० घन+वाही (प्रत्य०)] १. किसी चीज को घन या हथौड़े से कूटने का काम। घन चलाना। २. वह गड्ढा या स्थान जहाँ खड़े होकर घन (हथौड़ा) चलाया जाता है।

घन-श्याम—वि० [उपमि० स०] जिसका रंग बादल के समान श्याम हो। हल्का नीलापन लिये हुए काला।

पुं० १. काला बादल। २. श्रीकृष्ण का एक नाम।

घन-सार—पुं० [ष० त०] १. कपूर। २. चंदन। ३. जल। ४. सुंदर बादल। ५. [ब० स०] पारा।

घनहर*— पुं० [सं० घन=बादल] बादल। मेघ।

घनहस्त—वि० [ब० स०] जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई या गहराई तीनों आयामों में एक-एक हाथ भर हो।

पुं० १. क्षेत्र या पिंड जो एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा या मोटा हो। २. अन्न आदि नापने का एक पुराना मान जो एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा होता था। खारी। खारिका।

घनांजनी—स्त्री० [घन-अंजन, ब० स०, ङीष्] दुर्गा।

घनांत—पुं० [घन-अंत, ब० स०] वर्षा की समाप्ति पर आनेवाली शरद् ऋतु।

घना—वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी] १. (वस्तु) जिसके विभिन्न अंश, अवयव या कण इस प्रकार आपस में मिल या सट गये हों कि वह अविभिन्न समूह जान पड़े। जैसे—घना कोहरा, घना बादल। २. (अवकाश या स्थान) जिसमें बहुत सी वस्तुएँ सट-सटकर खड़ी, पड़ी या रहती हों। जैसे—घना जंगल, घना शहर। ३. (वस्त्र आदि) जिसकी बुनावट के तानें-बाने आपसु में खूब सटे हुए हों। गफ। गझिन। ४. जिसमें गाढ़ता या प्रखरता बहुत अधिक हो। जैसे—घना अंधकार, घनी नीलिमा। ५. जिसमें आपसदारी या समीपता बहुत अधिक हो। घनिष्ठ। गहरा। जैसे—घना संबंध। ६. बहुत अधिक। अतिशय। जैसे—घनी पीड़ा। जैसे—जिनके लाड़ बहुतेरे, उनके दुःख भी घनेरे। (कहा०)

स्त्री० [सं० घन+अच्—-टाप्] १. माषपर्णी। २. रुद्रजटा। जटाधारी लता। ३. एक प्रकार का पुराना बाजा।

घनाकर—पुं० [घन-आकर, ष०त०] वर्षाॠतु।

घनाक्षरी—स्त्री० [घन-अक्षर, ब० स०, ङीष्] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ३१ वर्ण होते हैं और अंत में प्रायः गुरु वर्ण होता है। इसे कवित्त भी कहते हैं।

घनागम—पुं० [घन-आगम, ष०त०] वर्षाॠतु का आरम्भ।

घनाघन—पुं० [सं०√हन् (हिंसा) +अच्, नि० सिद्धि] १. देवताओं का राजा, इंद्र। २. बरसनेवाला बादल। उदा०—गगन-अंगन घनाघन ते सघन तम।—सेनापति। ३. मस्त हाथी।

क्रि० वि० लगातार घन-घन शब्द करते हुए।

घनात्मक—वि० [सं० घन-आत्मन्, ब०स०, कप्] १. (पदार्थ) जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई या गहराई बराबर हो। २. (क्षेत्रफल) जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।

घनात्यय—पुं० –[घन-अत्यय, ब०स०]=घनांत।

घनानंद—पुं० [घन-आनंद, ब०स०] गद्य काव्य का एक भेद।

घनामय—पुं० [घन-आमय, ब०स०] खजूर।

घनाली*—स्त्री० [सं० घन-अवली] बादलों की पंक्ति या समूह। उदा० —चंचला थी चमकी घनाली घहराई थी।—मैथिलीशरण।

घनाश्रय—पुं० [घन-आश्रय, ष०त०] आकाश।

घनिष्ठ—वि० [सं० घन+इष्ठन्] जिसके साथ बहुत अधिक या घना हेल-मेल, मित्रता, संबंध या सहचार हो। जैसे—घनिष्ठ मित्र।

घनिष्ठता—स्त्री० [सं० घनिष्ठ+तल–टाप्] १. घनिष्ठ होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह स्थिति जिसमें दो व्यक्तियों में पारस्परिक इतना मेल या स्नेह होता है कि वे एक दूसरे के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझने लगते हैं।

घनीभवन—पुं० [सं० घन+च्वि ईत्व√भू (होना)+ल्युट्–अन] किसी तरल या द्रव पदार्थ का जमकर गाढ़ा, घना या ठोस होना।

घनीभाव—पुं० [सं० घन+च्वि, ईत्व√भू+घञ्]=घनीभवन।

घनीभूत –भू० कृ० [सं० घन+च्वि, ईत्व, √भू+क्त] १. जो गाढ़ा होकर या जमकर घना हो गया हो। २. जो किसी प्रकार बढ़कर बहुत अधिक या घोर हो गया हो। जैसे—जो घनीभूत पीड़ा थी···।—प्रसाद।

घनेतर—वि० [घन-इतर, पं० त०] १. जो घन न हो, बल्कि उससे भिन्न हो। २. तरल।

घनेरा*—वि० [हिं० घना] १. मान, संख्या आदि में बहुत अधिक या बहुत-सा। २. घना।

घनोदधि—पुं० [घन-उदधि, ब० स०] एक नरक।

घनोदय—पुं० [घन-उदय, ब०स०] वर्षाॠतु का आरम्भ।

घनोपल—पुं० [घन-उपल, ष०त०] ओला।

घन्नई*—स्त्री० दे० 'घड़नई'।

घपचिआना—अ० [हिं० घपची] १. असमंजस में पड़कर चकपकाना। चक्कर में आना। २. व्याकुल होना। घबराना।

स० १. किसी को असमंजस या चक्कर में डालना। २. घबराहट पैदा करना।

घपची—स्त्री० [हिं० घन+पंच] वस्तु को पकड़ रखने के लिए दोनों हाथों के पंजों की गठान। दोनों हाथों की मजबूत पकड़।

क्रि० प्र०—बाँधना।

घपला—पुं० [अनु०] १. बिना क्रम की मिलावट। २. ठीक प्रकार से कोई काम न करने के कारण होनेवाली अव्यवस्था या गड़बड़ी। ३. वह कार्य जिसके कारण कोई गड़बड़ी विशेषतः अधिक आर्थिक गड़बड़ी हुई हो। गोल-माल।

घपलेबाज—वि [हिं +फा०] घपला करने की प्रवृत्तिवाला।

घपलेबाजी—स्त्री० [हिं०+फा०] घपला करने की अवस्था, गुण या भाव।

घपुआ†—वि०=घप्पू।

घप्पू†—वि० [अनु०] निरा मूर्ख। निर्बुद्धि।

घबड़ाना—अ० =घबराना।

घबड़ाहट—स्त्री०=घबराहट।

घबराना—अ० [सं० गह्वर या हिं० गड़बड़ाना] १. आशंका या भय उत्पन्न होने पर मन में धुकधुकी होने लगना। डर के कारण हृदय काँपने लगना। कुछ विकल होना। जैसे—(क) अधिकारी के नाम से ये कर्मचारी घबराते हैं। (ख) इन बीमारियों से शहरवाले घबरा गये हैं। २. कोई काम करने से भय आदि के कारण हिचकना। जैसे—थाने जाने से वह न जाने क्यों घबराता है। ३. आश्चर्य आदि के कारण भौचक्का होना। सकपकाना। जैसे—इतने आदमियों को एक साथ देखकर वह घबरा गया। ४. कोई काम करते-करते उससे जी उकता, उचट या ऊब जाना। जैसे—यहाँ रहते-रहते वह घबरा गये हैं। ५. किसी व्यक्ति, समाचार आदि की प्रतीक्षा करते-करते बहुत अधिक बेचैन या विकल होना। जैसे—आपके समय पर न पहुँचने से सारा घर घबरा रहा था।

स० १. ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि कोई अधीर या विकल होकर यह निश्चय न कर सके कि क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए। २. इतना उद्विग्न करना कि दूर होने या हट जाने को जी चाहने लगे। ३. किसी के मन में आतुरता और चंचलता उत्पन्न करना।

घबराहट—स्त्री० [हिं० घबराना] घबराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

घमंका†—पुं० [अनु०] १. आघात आदि से उत्पन्न होनेवाला घम् शब्द। २. घूँसा। मुक्का।

घमंड—पुं० [?] अहं भावना का वह अनुचित तथा उग्र रूप जिसमें मनुष्य अपने बुद्धि-बल, सामर्थ्य आदि को बहुत अधिक महत्त्व देता हुआ दूसरों को अपने सामने तुच्छ या नगण्य समझने लगता है। अभिमान। शेखी।

क्रि० प्र०—करना। —टूटना।—होना।

घमंडी—वि० [हिं० घमंड] [स्त्री० घमंडिन] जिसे घमंड हो। घमंड करनेवाला।

घम—पुं० [अनु०] कोमल तल पर कड़ा आघात लगने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। जैसे—पीठ पर घम से मुक्का लगना।

घमकना—अ० [अनु० घम] १. घम-घम शब्द होना। २. जोर का शब्द करना। गरजना। जैसे—बादलों का घमकना।

स० १. घम-घम शब्द उत्पन्न करना। २. ऐसा आघात करना जिसमें घम शब्द हो। जैसे—मुक्का घमकना।

घमका—पुं० [अनु०] १. आघात आदि से उत्पन्न होनेवाला घम शब्द। घमंका। २. दे० 'उमस'।

घमकाना*—स० [हिं० घमकना] १. घम-घम शब्द उत्पन्न करना। २. बजाना।

घमखोर†—वि० [हिं० घाम+फा० खोर (खानेवाला)] १. घाम या धूप खानेवाला। २. जो धूप में रह सके या धूप सह सके।

घमघमा†—पुं० [हिं० घाम=धूप] दिन का ऐसा समय जिसमें धूप निकली हो।

घमघमाना—अ० [अनु० घम-घम] घम-घम शब्द होना।

स० [अनु०] घम-घम शब्द उत्पन्न करते हुए कई आघात या प्रहार करना। जैसे—दस-पाँच घूँसे या मुक्के घमघमाना।

घमर—पुं० [अनु०] १. नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। २. गंभीर ध्वनि।

घमरा—पुं० [सं० भृंगराज] भृंगराज नाम की बूटी। भँगरैया।

घमरौल—स्त्री० [अनु० घम घम] घाल-मेल की ऐसी स्थिति जिसमें किसी चीज या बात का कुछ भी पता न चले। बहुत बड़ी अव्यवस्था या गड़बड़ी।

घमस—स्त्री० दे० 'घमसा'।

घमसा—पुं० [हिं० घाम] १. वर्षा काल की वह गरमी जो हवा न चलने के कारण होती है। उमस। २. घनापन। घनता।

घमसान—वि०, पुं०=घमासान।

घमाका—पुं० [अनु० घम] भारी आघात से होनेवाला घम शब्द।

घमाघम—क्रि० वि० [अनु०] घम-घम शब्द के साथ। भारी आघात करते हुए। जैसे—उसने घमाघम चार घूँसे लगा दिये।

स्त्री०= घमाघमी।

घमाघमी—स्त्री० [अनु०] १. निरंतर घमघम होनेवाली ध्वनि या जोर का शब्द। २. गहरी या भारी मार-पीट। ३. ऐसी भीड़-भाड़ जिसमें खूब धक्कम-धक्का होता हो। ४. धूम-धाम।

घमाना—अ० [हिं० घाम] सरदी से बचने के लिए घाम या धूप में बैठना। धूप खाना या सेंकना।

स० सुखाने आदि के लिए कोई चीज धूप में रखना। धूप दिखाना।

घमायल—वि० [हिं०घमाना] घाम या धूप की गरमी से पका हुआ (प्रायः फलों के लिए)।

घमासान—पुं० [अनु० घम+सान (प्रत्य०)] घोर और भीषण मार-काट अथवा युद्ध। गहरी और भारी लड़ाई।

वि० बहुत ही घोर, भीषण या विकट (उपद्रव या मार-काट)। जैसे—घमासान युद्ध।

घमाह†—पुं० [हिं० घाम] ऐसा बैल जो गरमी में हल जोतने से जल्दी थक जाता हो।

घमीला—वि० [हिं० घाम=धूप] घाम खाया हुआ। घाम से मुरझाया हुआ।

घमूह—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो प्रायः करील आदि की झाड़ियों के पास होती और चारे के काम में आती है।

घमोई—स्त्री० [देश०] बाँस का एक प्रकार का रोग जिससे बाँस की जड़ों में बहुत से पतले और घने अंकुर निकलकर उसकी बाढ़ और

नये कल्लों का निकलना रोक देते हैं। २. दे० 'घमोय'।

घमोय—स्त्री० [देश०] गोभी की तरह का एक छोटा पौधा जिसके पत्ते कटावदार तथा काँटों से भरे होते हैं। भड़भाड़। स्वर्णक्षीरी।

घमौरी—स्त्री०=अँभौरी।

घर—पुं० [सं० गृहम्; पा०, प्रा० घरम्; उ०, गु० ने०, पं०, बँ०, मरा० घर; सि० घरु; कन्न०, सिंह० गर] [वि० घरु, घराऊ, घरेलू] १. ईंट, पत्थर, मिट्टी, लकड़ी आदि की वह विशिष्ट वास्तु रचना जो प्रायःदीवारों से घिरी और छतों से पटी हुई होती हैं और जिसमें लोग अपने परिवार या बाल-बच्चों के साथ रहते हैं; और इसी लिए जिसमें गृहस्थी का भाव भी सम्मिलित है। मकान। (हाउस)

मुहा०—घर आँगन हो जाना=घर का टूट-फूटकर खँडहर या मैदान हो जाना। जैसे—ऐसा सुन्दर घर अब आँगन हो गया है। **घर का आँगन होना**=घर या उसमें रहनेवाले परिवार के सुख-सौभाग्य आदि का ऐसा विस्तार या वृद्धि होना जो सब प्रकार से अभीष्ट तथा शुभ हो। **घर-घर के हो जाना**=अपने रहने का घर न होने के कारण कभी किसी के घर और कभी किसी के घर जाकर रहना। इधर-उधर मारे-मारे फिरना। उदा०—तेरे मारे यातुधान भये घर-घर के।—तुलसी। **घर सिर पर उठाना**=बहुत कोलाहल करना या शोर मचाना। हो-हल्ला करना।

२. (क) उक्त प्रकार के भवन या रचना का कोई ऐसा अलग खंड या विभाग जिसमें स्वतंत्र रूप से कोई परिवार रहता हो। किसी परिवार का निवास-स्थान। (ख) उक्त खंड या विभाग में रहनेवाला परिवार। जैसे—इस मकान के चारों घरों से एक-एक रुपया मिला है। ३. उक्त में एक साथ रहनेवालों की पूरी सामाजिक इकाई। एक ही मकान या उसके विभाग में एक साथ रहनेवाले परिवार या रिश्ते-नाते के सब लोग। जैसे—(क) आज घर भर मेला देखने जायगा। (ख) घर के सब प्राणियों को ब्याह का न्योता मिला है। (ग) हैजे में घर के घर तबाह हो गये।

मुहा०—घर करना=(क) बसने या स्थायी रूप से रहने के लिए अपना निवास स्थान बनाना। जैसे—जंगल में घर करना। (ख) घर-गृहस्थी का ऐसा ठीक और पूरा प्रबंध करना कि परिवार के सब लोगों का ठीक तरह से निर्वाह होता रहे। (ग) पुरुष और स्त्री का पति-पत्नी के रूप में रहकर गृहस्थी चलाना। जैसे—आओ मीता, घर करें, आया सावन मास।—स्त्रियों का गीत। **(किसी काम को) घर का रास्ता समझना**=(क) बहुत ही सरल और सुगम समझना। (ख) सामान्य और सुपरिचित समझना। **घर के घर**=अंदर ही अंदर और गुप्त रूप से। बिना औरों को या बाहरी लोगों को जतलाये। जैसे—सब झगड़े घर के घर तै हो गये। **घर के घर रहना**= लेन-देन, व्यवहार, व्यापार आदि में ऐसी स्थिति में रहना कि न तो कुछ आर्थिक लाभ हो और न हानि ही। **(किसी का) घर घालना**=(क) किसी को इस प्रकार नष्ट या बरबाद करना कि उसकी बहुत बड़ी आर्थिक हानि हो अथवा मान-मर्यादा नष्ट हो जाय। (ख) किसी परिवार में अशांति, कष्ट, वैमनस्य आदि उत्पन्न करना। **घर चलाना**=घर के व्यय आदि का निर्वाह और प्रबंध करना। **घर जमाना**=घर-गृहस्थी की सभी उपयोगी चीजें एकत्र करना, जिसमें सब आवश्यकताएँ पूरी होती रहें। **(किसी के) घर तक पहुँचना**=किसी को माँ-बहन तक की गालियाँ देना। **(किसी का) घर देख पाना या देख लेना**=एक बार कहीं से उद्देश्य-सिद्धि या फल-प्राप्ति हो जाने पर परच जाना और प्रायः उसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—अब तो इन्होंने घर देख लिया है; नित्य पहुँचा करेंगे। **(किसी स्त्री का किसी के) घर पड़ना**=किसी के घर जाकर पत्नी भाव से रहना। **(दर, लागत या भाव के विचार से कोई चीज) घर पड़ना**=भाव, लागत, व्यय आदि के विचार से किसी चीज की दर या दाम ज्ञात या स्थिर होना। जैसे—ये मोजे दस रुपये दरजन तो घर पड़ते हैं, यदि ग्यारह रुपये दरजन भी न बिकें तो हमें क्या बचेगा? (दूकानदार) **(किसी का) घर फोड़ना**=किसी परिवार में उपद्रव, कलह या लड़ाई-झगड़ा खड़ा करना जिसमें उस घर के रहनेवाले एक दूसरे से अलग हो जाना चाहें। **(अपना) घर बनाना**=आर्थिक दृष्टि से अपना घर सम्पन्न और सुखी करना। **(किसी का) घर बसना**=विवाह हो जाने और घर में पत्नी के आ जाने के कारण घर आबाद होना। **(किसी) का) घर बिगाड़ना**=(क) किसी के घर की समृद्धि नष्ट करना। घर तबाह करना। (ख) घर में फूट फैलाना। घर के लोगों में परस्पर लड़ाई कराना। (ग) किसी की बहू-बेटी को बुरे मार्ग पर ले जाना। **(स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना**=किसी के घर जाकर पत्नी भाव से रहने लगना। **घर बैठे**=बिना कोई विशेष परिश्रम या प्रयास किये। जैसे—अब सारा काम घर बैठे हो जायगा। **(अपना या किसी का) घर भरना**=घर को धन-धान्य से पूर्ण करना। जैसे—इन्होंने जन्म भर अपना (या अपने मालिक का) घर भरने के सिवा किया ही क्या है? **(किसी स्त्री को) घर में डालना**=उपपत्नी या रखेली बनाकर अपने घर में रख लेना। **घर से**=अपने पास से। पल्ले से। जैसे—हमें तो घर से सौ रुपए निकाल कर देने पड़े। **घर सेना**=घर में चुपचाप और व्यर्थ पड़े रहना, बाहर न निकलना। **घर से बाहर पाँव या पैर निकालना**=किसी प्रकार के कुमार्ग या दुष्कर्म में प्रवृत्त हो काम करना।

पद—घर का=(क) निज का। अपना। जैसे—घर का मकान या बगीचा, घर के लोग। (ख) आपस के लोगों का। जिससे परायों या बाहरवालों का कोई संबंध न हो। जैसे—घर का झगड़ा, घर की पूँजी। (ग) स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी। उदा०—घर के हमारे परदेस को सिधारे यातें दया करि बूझीए हम रीति राहबारे की।—कविंद। **घर का अच्छा**=(क) कुल, शील आदि के विचार से श्रेष्ठ। (ख) आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और सुखी। **घर का उजाला**=परिवार, वंश आदि की मान-मर्यादा बढ़ानेवाला व्यक्ति। **घर का न घाट का**=जिसके रहने का ठीक-ठिकाना या कोई निश्चित स्थान न हो। जैसे—धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का। (कहा०) **घर का बहादुर, मर्द या शेर**=वह जो अपने घर के अन्दर या घर के लोगों के सामने ही बहादुरी की डींग हाँकता हो, बाहरी लोगों के सामने दब जाता हो। **घर की खेती**=ऐसा काम, चीज या बात जो अपने घर में आप से आप या अपने साधारण परिश्रम से यथेष्ट परिमाण में मिल या हो सकती हो। **घर के बाढ़े**=जो अपने घर में ही रहकर बड़ा हुआ हो, परन्तु जिसे अभी बाहरवालों के सामने कुछ कर दिखाने का अवसर न मिला हो अ[illegible]. ऐसी शक्ति न आई हो। घर ही का बहादुर या शेर। उदा०—द्विज देवता घरहि के बाढ़।—तुलसी। **घर में**=(क) स्त्री। जोरू। घरवाली।

जैसे—उनके घर में बीमार हैं। (ख) पति। स्वामी। जैसे--हमारे घर में परसों बाहर गये हैं। (स्त्रियाँ) **घरवाला**= स्त्री के विचार से उसका पति। जैसे—अपने घरवाले को भी साथ ले आतीं। **घरवाली**=पति के विचार से, उसकी पत्नी। जैसे—जरा घरवाली से भी पूछ लो। **घर से**=(क) पति के विचार से, उसकी पत्नी। घरवाली। जैसे—उनके घर से भी साथ आई हैं। (ख) स्त्री के विचार से, उसका पति। घरवाला। **अँधेरे घर का उजाला** =(क) वह जिससे किसी छोटे या साधारण घर की मर्यादा, शोभा आदि भी बहुत अधिक बढ़ जाती हो। (ख) परम रूपवान् या सुन्दर (अथवा सुन्दरी)।

४. किसी परिवार के रहने के स्थान की सब चीजें। गृहस्थी की सब सामग्री। घर का सारा सामान।

मुहा०—घर फूंककर तमाशा देखना=अपना सब कुछ नष्ट करके किसी प्रकार आनन्द लेना या सुख भोगना। (ऐसे अनुचित और निन्दनीय कार्यों के संबंध में प्रयुक्त जो बहुत अधिक व्यय-साध्य हों।)
५. प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, वैभव आदि के विचार से कोई गृहस्थी या परिवार। खानदान। घराना। जैसे—अब भी वहाँ पुराने रईसों के कई घर बचे हैं। ६. स्थायी रूप से गृहस्थी या परिवार बनाकर रहने के लिए उपयुक्त स्थान। जैसे—लड़की (के विवाह) के लिए कोई अच्छा घर ढूंढ़ना। उदा०—जो घर बर कुल होय अनूपा।—तुलसी। ७. वह स्थान जहाँ रहने पर वैसा ही सुख और सुभीते मिलते हों, जैसा सुख और जितने सुभीते स्वयं अपने घर या निवास स्थान में मिलते हैं। जैसे—(क) इसे भी आप अपना घर ही समझें। (ख) सब बच्चों को उन्होंने सदा घर की तरह रखा था। ८. पशु-पक्षियों आदि के रहने की जगह। जैसे—चूहे जमीन के अन्दर और तोते पेड़ों पर अपना घर बनाते हैं। ९. केला, बाँस, मूँज आदि के पौधों का एक जगह और बहुत पास-पास या एक साथ उगा हुआ समूह। झुरमुट। जैसे—उनके बगीचे में केले के ५-६ घर हैं। १०. वह स्थान जहाँ कोई काम, चीज या बात अधिकता या प्रचुरता से देखने में आती अथवा होती हो। जैसे—(क) कश्मीर शोभा और सौन्दर्य का घर है। (ख) यहाँ का जंगली क्षेत्र मलेरिया (या साँपों) का घर है। (ग) नगर का वह भाग गुंडों और बदमाशों का घर है। ११. वह चीज या बात जिससे कोई दूसरी चीज या बात निकलती या पैदा होती हो। जैसे—रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी। (कहा०) १२. वह स्थान जहाँ किसी मनुष्य अथवा उसके पूर्वजों का जन्म, पालन-पोषण आदि हुआ हो। जन्म-भूमि या स्वदेश। जैसे—घर तो उनका पंजाब में था पर वे बहुत दिनों से बंगाल में जाकर बस गये थे। १३. वह स्थान जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त या ठीक हो, अथवा उसके लिए बनाया या रक्षित किया गया हो। जैसे—कल-घर (जिसमें पानी या नल लगा हो), पूजा-घर (जहाँ देवता की मूर्ति और पूजन की सामग्री रहती हो), रसोई घर आदि। १४. वह स्थान जहाँ जनता को कुछ विशिष्ट चीजें या बातें अपने उपयोग या व्यवहार के लिए नियमित रूप से और सुगमतापूर्वक प्राप्त होती हों। जैसे—टिकटघर, रेलघर। १५. वह स्थान जहाँ किसी विशिष्ट प्रकार का उत्पादन कार्य नियमित और व्यवस्थित रूप से होता हो। जैसे—पुतलीघर, बिजलीघर। १६. वह स्थान जहाँ किसी विशिष्ट प्रकार का सार्वजनिक काम करने के लिए अनेक कर्मचारी एकत्र होते हों। जैसे—डाकघर, तारघर। १७. किसी अलमारी, संदूक आदि में अलग-अलग चीजें रखने के लिए बने हुए चौकोर खाने। जैसे—इस संदूक में कागज-पत्र, गहने, रुपए-पैसे आदि रखने के लिए अलग-अलग घर बने हैं। १८. कोई चीज रखने का डिब्बा या चोंगा। खाना (केस) जैसे—अँगूठी, चश्मे या तलवार का घर। १९. किसी तल पर खड़ी और बेड़ी रेखाओं से किए हुए खंड या विभाग। कोण। खाना। जैसे—चौसर या शतरंज की बिसात के घर। २०. कोई चीज जमाकर बैठने, रखने या लगाने के लिए बना हुआ चौखटा, छेद या स्थान। जैसे—अँगूठी में नगीने का घर, तसवीर का घर (अर्थात् चौखटा)। २१. आकाश में क्षितिज के उत्तर दक्षिणी वृत्त के मुख्य बारह विभागों में से हर एक जो फलित ज्योतिष में जन्म कुंडली बनाने के समय ग्रहों की स्थिति दिखाने के काम आता है। ये विभाग राशि-चक्र के सूचक होते हैं और इनमें से प्रत्येक में किसी ग्रह के पहुँचने का अलग-अलग प्रकार का प्रभाव या फल माना जाता है। जैसे—चौथा, छठा या नवाँ घर। २२. किसी वस्तु के टिके, ठहरे या रुके रहने की कोई जगह। जैसे—पानी ने छत में स्थान-स्थान पर घर कर लिया है।

मुहा०—(किसी चीज का कहीं) घर करना=किसी वस्तु का अपने जमने या ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान बनाना। जैसे—दो-चार दिनों में जूते में पैर घर कर लेता है। **(किसी चीज का) चित्त या मन में घर करना**=अपने गुण, रूप आदि के कारण किसी को इतना पसंद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। अत्यन्त प्रिय होना।

२३. किसी बात या व्यक्ति का उपयुक्त अथवा नियत स्थान या स्थिति।

मुहा०—(कोई काम या बात) घर तक पहुँचाना=पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचाना। जैसे—जो काम हाथ में लिया है, पहले उसे घर तक पहुँचाओ। **(किसी व्यक्ति को, उसके) घर तक पहुँचाना** =ऐसी स्थिति में पहुँचाना या ले जाना कि उसका वास्तविक स्वरूप सब लोगों पर प्रकट हो जाय। जैसे—झूठे को उसके घर तक पहुँचाना चाहिए (अर्थात् उसे झूठा सिद्ध कर देना चाहिए)। **(आग या दीया) घर करना**=ठंढा करना। बुझाना। (मंगल-भाषित)

२४. आघात, प्रहार या वार करने अथवा उससे बचने या उसे रोकने का कोई विशिष्ट ढंग या प्रकार। दाँव। पेंच। जैसे—वह कुश्ती (तलवार या पटा-बनेठी) के सब घर जानता है।

पद—घर-घाट। (देखें)

मुहा०—(प्रहार में) घर खाली छोड़ना या देना=वार करते हुए भी आघात या प्रहार न करना, बल्कि जान-बूझकर खाली जाने देना। **(वार का) घर बचाना**=अपने कौशल या चातुरी से प्रहार या वार विफल करना। जैसे—कई घर तो तुम बचा गये, पर इस बार जरा सँभलकर रहना।

२५. संगीत में, किसी तान, बोल या स्वर की नियत और मर्यादित सीमा। जैसे—(क) यह तान ठीक नहीं आई; जरा फिर से और ठीक घर में कहो। (ख) यह चिड़िया कई घर बोलती है। २६. गुदा या भग। (बाजारू)

घरऊ†—वि०=घराऊ (घरू)।

घर-गृहस्थ—पुं० [हिं० घर+सं० गृहस्थ] वह व्यक्ति जो अपने परिवार के साथ रहता हो और गृहस्थी के निर्वाह के लिए सब काम-काज करता हो।

घर-गृहस्थी—स्त्री० [हिं० घर+गृहस्थी] १. घर में रहनेवाले परिवार के सदस्य और उनकी सब वस्तुएँ। जैसे—घर-गृहस्थी यहाँ से उठाकर अब कहाँ जायँ। २. परिवार के लोग।

घरघराना—अ० [अनु० घर घर] [भाव० घरघराहट] कफ के कारण गले से साँस लेते समय घर-घर शब्द निकलना या होना।
स० घर-घर शब्द उत्पन्न करना।

घर-घराना—पुं० [हिं० घर+घराना] १. आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से संपन्न और प्रतिष्ठित परिवार। २. कुल या वंश और उसकी मर्यादा आदि। जैसे—पहले उनका घर-घराना देख लेना तब विवाह की बात करना।

घरघराहट—स्त्री० [अनु० घर्र घर्र] घर-घर शब्द होने की क्रिया या भाव। जैसे—कफ के कारण गले में होनेवाली घरघराहट।

घर-घाट—पुं० [हिं०] १. किसी काम या वात के वे महत्त्वपूर्ण अंग या पक्ष जिनकी ठीक और पूरी जानकारी होने पर वह काम या बात अच्छी तरह और सुगमतापूर्वक पूरी या सम्पन्न होती है। जैसे—कुश्ती, चित्रकारी, रोजगार या संगीत के घर-घाट। २. किसी चीज की बनावट के विचार से उसके उतार-चढ़ाव या सुडौल गठन। जैसे—कटार या तलवार का घर-घाट। ३. अपनी विशिष्ट प्रकार की मनोवृत्ति के अनुसार किसी व्यक्ति का कार्य अथवा व्यवहार करने का कौशल, ढंग या प्रणाली। जैसे—पहले यह तो समझ लो कि वह किस (या कैसे) घर-घाट का आदमी है। ४. उचित और उपयुक्त स्थिति। ठौर-ठिकाना। जैसे—पहले अपना पेट पालने का तो घर-घाट कर लो; फिर ब्याह भी होता रहेगा।

घर-घालक—वि० [हिं० घर+घालक=घालनेवाला] १. दूसरों का घर घालने या बिगाड़नेवाला। २. अपने कुल या वंश को कलंकित या बरबाद करनेवाला।

घर-घालन†—पुं० [हिं० घर+घालना] अपना या दूसरों का घर कलंकित या बरबाद करना।
वि०=घर-घालक।

घर-घुसड़—वि०=घर-घुसना।

घर-घुसना—वि० [हिं० घर+घुसना=घुसा रहनेवाला] [स्त्री० वि० घर-घुसनी] (व्यक्ति) जो प्रायः घर में और विशेषतः स्त्रियों के पास वैठा रहता हो, बाहर घूमता-फिरता या काम-काज न करता हो अथवा कम करता हो।

घर-घुसा—वि०=घर-घुसना।

घर-चित्ता—पुं० [हिं० घर+चीतर] घरों आदि में रहनेवाला एक प्रकार का साँप।

घर-जँवाई—पुं० [हिं० घर+जँवाई =जामाता] वह जँवाई या दामाद जिसे ससुर ने अपने ही घर में रख लिया हो। ससुराल में स्थायी रूप से रहनेवाला दामाद। घर-दमाद।

घर-जाया—पुं० [हिं० घर+जाया=पैदा] [स्त्री० घर-जायी] गृह-स्वामी की दृष्टि से, उसके घर में उत्पन्न होनेवाला दासी-पुत्र।

घर-जुगत—स्त्री० [हिं० घर+सं० युक्ति] घर-गृहस्थी के सब काम-कम या थोड़े खर्च में अच्छी तरह चलाने की युक्ति या योग्यता।

घर-झँकना†—वि० [हिं० घर+झाँकना] [स्त्री० घर-झँकनी] वारी-वारी से लोगों के घर व्यर्थ जाकर तुरन्त ही लौट आनेवाला।

घरट्ट (क)—पुं० [स० √घृ (सींचना)+विच्, घर्√ अट्ट (गति) + अण्, उप० स०] [घरट्ट+कन्] [स्त्री० अल्पा० घरट्टिका] हाथ से चलाई जानेवाली चक्की। जाँता।

घरण (णि)†—स्त्री०=घरनी।

घर-दमाद—पुं० =घर-जँवाई।

घरदारी—स्त्री० [हिं० घर+फा० दारी] घर में रहकर किये जानेवाले गृहस्थी के काम-काज।

घर-दासी—स्त्री० [हिं० घर+सं० दासी] १. गृहिणी। २. पत्नी।

घर-द्वार—पुं०=घर-वार।

घरद्वारी—स्त्री० १. दे० 'घर-पत्ती'। २. दे० 'घर-वारी'।

घरन—स्त्री० [देश०] पहाड़ी भेड़ों की एक जाति। जुँबली।

घरनई†—स्त्री०=घड़नई।

घरनाल—स्त्री० [हिं० घोड़ा+नाली] पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप। रहकला।

घरनी—स्त्री० [सं० गृहिणी] १. गृह-स्वामिनी। २. पत्नी। भार्या। जैसे—विन घरनी घर भूत का डेरा। (कहा०)

घरपत्ती—स्त्री० [हिं० घर+पत्ती=भाग] किसी जातीय या सार्वजनिक कार्य की अभिपूर्ति के लिए संबंधित घरों या परिवारों से लिया जानेवाला सहांश। चंदा। वेहरी।

घरपरना—पुं० [सं० घर+परना=बनाना] कच्ची मिट्टी का गोल पिंडा जिस पर ठठेरे घरिया बनाते हैं।

घर-फोड़ा—वि० [हिं० घर+फोड़ना] [स्त्री० वि० घर-फोड़ी] १. (व्यक्ति) जो दूसरों के घरों में कलह या विरोध उत्पन्न कराता हो अथवा उसके सदस्यों को आपस में लड़ाता हो। २. अपने ही परिवार के सदस्यों से लड़-झगड़ कर उन्हें अलग रहने के लिए विवश करनेवाला।

घर-फोरा†—वि०=घर-फोड़ा।

घर-बंद—वि० [हिं०] १. घर में बंद किया हुआ। २. पूर्णतया अधिकार में लिया हुआ। जैसे—विद्या किसी की घर-बंद नहीं है।

घरबंदी—स्त्री० [हिं० घर+बंदी=बाँधना] १. अपराधी या अभियुक्त को उसके घर में ही कैद करने की आज्ञा, क्रिया या भाव। २. चित्रकला में, अलग-अलग पदार्थ दिखाने के लिए पहले छोटे-छोटे विन्दुओं से उनका स्थान घेरकर उनके विभागों के लिए स्थान नियत करना।

घर-बसा†—पुं० [हिं० घर+बसना] [स्त्री० घर-बसी] १. स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी जिसके कारण उसका घर बसा हुआ माना जाता अथवा रहता है। उदा०—एहो घर-बसे, आजु कौन घर बसे हो। —घनानन्द। २. उपपति। यार।

घरबसी—वि०, स्त्री० [हिं० घर+बसना] १. घर बसानेवाली (अर्थात् पत्नी)। २. घर की समृद्धि बढ़ानेवाली। भाग्यवती। ३. उपपत्नी। रखेली।

घर-बार—पुं० [हिं० घर+बार=द्वार] १. वह स्थान जहाँ कोई स्थायी रूप से रहता तथा काम-काज करता हो। जैसे—आपका घर-बार कहाँ है? २. घर और घर के सब काम-काज। जैसे—अपना घर-बार अच्छी तरह से देखो। ३. घर-गृहस्थी की सब सामग्री।

घरबारी—पुं० [हिं० घर+बार] स्त्री, बाल-बच्चों तथा परिवार के अन्य

सदस्यों के साथ रहने तथा उनका भरण-पोषण करनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ।

घरबैसी†—स्त्री [हिं० घर+बैठना] वह स्त्री जो पत्नी बनाकर घर में बैठा या रख ली गई हो। उपपत्नी। रखेली।

घरम—पुं० [सं० घर्म] घाम। धूप।

घरमकर†—पुं०=घर्मकर (सूर्य)।

घरयार†—पुं०=घड़ियाल।

घरर-घरर—पुं० [अनु०] वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु को दूसरी कड़ी वस्तु पर रगड़ने से होता है। रगड़ का शब्द।

घररना—स० [अनु० घरर घरर] १. घरर-घरर शब्द उत्पन्न करना। २. किसी कड़ी चीज को किसी दूसरी कड़ी चीज पर इस प्रकार रगड़ना कि वह घरर-घरर शब्द उत्पन्न करने लगे।

अ० घरर-घरर शब्द होना।

घरवात†—स्त्री० [हिं० घर+वात (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का सामान।

घरवाला—पुं० [हिं० घर+वाला (प्रत्य०)] १. घर का मालिक। गृह-स्वामी । २. स्त्री की दृष्टि से उसका पति। जैसे—तुम्हारा घरवाला क्या काम करता है?

घरवाली—स्त्री० [हिं० घर+वाली (प्रत्य०)] १. घर की मालकिन । गृह-स्वामिनी। २. पति की दृष्टि से उसकी पत्नी या स्त्री। जैसे—आज-कल आपकी घरवाली शायद कहीं गई हैं।

घरवाहा—पुं०[हिं० घर+वा या वाहा (प्रत्य०)] १. छोटा-मोटा घर। २. घरौंदा।

घरसा†—पुं० [सं० घर्ष]=घिस्सा।

घरहाँई†—वि० [हिं० घरहाया का स्त्री० रूप] १. अपने घर अथवा दूसरों के घरों में झगड़ा लगाने या फूट डालनेवाली (स्त्री)। २. अपने अथवा दूसरों के घरों की फूट या लड़ाई-झगड़े की बातें इधर-उधर कहनेवाली।

घरहाया—वि० [हिं० घर+घात] [स्त्री० घरहाई] घर में मत-भेद उत्पन्न करने, फूट डालने या लड़ाई-झगड़ा लगानेवाला।

घराँव—पुं० [हिं० घर] घर का-सा संबंध। मेल-जोल। घनिष्ठता। उदा०—दोनों परिवारों में इतना घराँव था कि इस संबंध का हो जाना कोई आसाधारण बात न थी। —प्रेमचन्द।

घरा†—पुं०=घड़ा।

घराऊ—वि० [हिं० घर+आऊ (प्रत्य०)] घर में होने अथवा उससे संबंध रखनेवाला। जैसे—घराऊ कलह।

घराट†—वि० [?] भीषण । विकट ।

घराड़ी—स्त्री० [हिं० घर+आड़ी (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति और उसके पूर्वज बहुत दिनों से रहते चले आये हों। डीह।

घराती—पुं० [हिं० घर+आती (प्रत्य०)] विवाह में, कन्या पक्ष के लोग। 'बराती' का विपर्याय।

घराना—पुं० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] कुल। खानदान। वंश । (विशेषतः प्रतिष्ठित और सम्पन्न)

घरिआर†—पुं०=घड़ियाल।

घरिआरी—वि०=घड़ियाली।

घरिणी—स्त्री० [सं० घर+इनि—ङीप्] घरनी (पत्नी)।

घरियक*—क्रि० वि० [हिं० घरी (घड़ी)+सं० एक] घड़ी भर। बहुत थोड़े समय तक।

घरिया—स्त्री० [हिं० घरा (घड़ा)+इया (प्रत्य०)] १. छोटा घड़ा। २. मिट्टी का प्याला या हाँड़ी। ३. मिट्टी का वह छोटा प्याला जिसमें आँच देने से धातु की मैल कटकर ऊपर आ जाती है। घड़िया।

घरियाना†—स० [हिं० घरी] कागज, कपड़े आदि की तह लगाना।

घरियार†—पुं० = घड़ियाल।

घरियारी†—पुं० = घड़ियाली (घंटा बजानेवाला व्यक्ति)।

घरी—स्त्री० [?] तह। परत।

स्त्री० = घड़ी।

घरीक†—क्रि० वि० [हिं० घरी+एक] घड़ी भर अर्थात् बहुत थोड़े समय के लिए।

घरुआ† —पुं० [हिं० घर+वा (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का अच्छा प्रबंध।

वि० घर का। घर संबंधी।

घरुआदार†—पुं० [हिं० घर+फा० दार] [स्त्री० घरुआ-दारिन, भाव० घरुआदारी] १. घर या गृहस्थी का उत्तम प्रबंध करनेवाला व्यक्ति। २. वह जो समझ-बूझकर गृहस्थी का खर्च चलाता हो।

घरुआदारी† —स्त्री० [हिं० घर + दारी] घर का उत्तम प्रबंध करने का भाव।

घरुवा† —पुं० = घरुआ।

घरू—वि० [हिं० घर+ऊ (प्रत्य०)] घर का। १. जिसका संबंध स्वयं अपने घर या गृहस्थी से हो। घरेलू। २. आपसदारी का । निजी।

घरेला† —वि० = घरेलू।

घरेलू—वि० [हिं० घर+ एलू (प्रत्य०)] १. घर का। घर संबंधी। जैसे-घरेलू झगड़ा। २. (कार्य या व्यवहार) जो अपने घर या आपसदारी से संबंध रखता हो। निजी। ३. (धंधा) जो घर के अंदर बैठ कर किया जाय। जैसे—घरेलू उद्योग-धंधे। ४. (पशु) जो घर में रखकर पाला-पोसा गया हो। पालतू।

घरैया† —वि० = घराऊ।

पुं० १. अपने घर का आदमी। २. बहुत ही निकट का संबंधी।

घरोप—पुं० [हिं० घर+ओप (प्रत्य०)] घर के लोगों का-सा आपसी व्यवहार। घनिष्ठ संबंधी।

घरौंदा—पुं० [हिं० घर+औंदा (प्रत्य०)] १. छोटा घर। २. कागज, मिट्टी आदि का छोटा घर जिससे बच्चे खेलते हैं। ३. लाक्षणिक अर्थ में कोई अस्थायी या नश्वर वस्तु।

घरौना† —पुं० दे० 'घरौंदा'।

घर्घर—पुं० [सं० घर्घ√रा (दान)+क] पुरानी चाल का ताल देने का एक प्रकार का बाजा।

पुं० [अनु०] किसी भारी चीज के चलने से होनेवाली कर्कश ध्वनि। जैसे—गाड़ी, चक्की या मशीन की घर्घर।

घर्घरक—पुं० [सं० घर्घर+कन्] घाघरा नदी ।

घर्घरा (री)—स्त्री० [सं० घर्घर+टाप्] [घर्घर+ङीष्] १. एक प्रकार की वीणा। २. घुंघरूदार करधनी। ३. घुँघरू या छोटी घंटी।

घर्म—पुं० [सं०√घृ (क्षरण) +मक्] १. अग्नि या सूर्य का ताप। गरमी।

२. धूप। ३. गरमी के दिन। ग्रीष्म काल। ४. पसीना। ५. पतीला। ६. एक प्रकार का यज्ञ।

घर्म-विंदु—पुं० [ष० त०] पसीना।

घर्मांबु—पुं० [घर्म-अंबु, ष० त०] पसीना।

घर्मांशु—पुं० [घर्म-अंशु, ब० स०] सूर्य।

घर्माक्त—वि० [घर्म-अक्त, तृ० त०] पसीने से तर या लथ-पथ।

घर्मार्द्र—वि० [घर्म-आर्द्र तृ० त०] पसीने से लथ-पथ।

घर्मोदक—पुं० [घर्म-उदक, ष० त०] पसीना।

घर्रा—पुं० [अनु० घरर घरर=घिसने वा रगड़ने का शब्द] १. एक प्रकार का अंजन जो आँख आने पर लगाया जाता है। २. गले में कफ रुकने के कारण होनेवाली घरघराहट।

मुहा०—**घर्रा चलना या लगना**=मरने के समय गले में कफ रुकने के कारण साँस का घर-घर करते हुए रुक-रुककर चलना। घुँघुरू बोलना। घटका लगना।

३. जेल के कैदियों को दिया जानेवाला वह कठोर दंड जिसमें उन्हें मोट खींचने या कोल्हू पेरने के काम में लगाया जाता है।

घर्राटा—पुं० [अनु० घर्र+आटा (प्रत्य०)] १. घर्र-घर्र का शब्द। २. गहरी नींद के समय कुछ लोगों की नाक में से निकलनेवाला शब्द। खर्राटा।

मुहा०—**घर्राटा मारना या लेना**=गहरी नींद में नाक से घर्र-घर्र शब्द निकालना। गहरी नींद सोना।

घर्रामी—पुं० [?] वह राज या मिस्त्री जो छप्पर छाने का काम करता हो। छपरबंद।

घर्ष—पुं० [सं०√घृष् (घिसना)+घञ्] १. रगड़। घर्षण। २. टक्कर। ३. संघर्ष। ४. पीसना।

घर्षण—पुं० [सं०√घृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० घृष्ट] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घिस्सा। रगड़। (फ्रिक्शन) २. लाक्षणिक अर्थ में, दो व्यक्तियों या विचारधाराओं में होनेवाला पारस्परिक विरोधजन्य संघर्ष।

घर्षणी—स्त्री० [सं० घर्षण+ङीप्] हरिद्रा। हलदी।

घर्षित—भू० कृ० [सं० घृष्ट] १. घिसा, पिसा या रगड़ा हुआ। २. अच्छी तरह माँजा हुआ।

घलना—अ० [हिं० घालना] १. हिं० घालना का अकर्मक रूप। घाला जाना। २. किसी पर शस्त्र या हथियार का चलाया या छोड़ा जाना। अस्त्र का प्रहार होना। ३. मार-पीट या गहरी लड़ाई होना।

घलाघल (ली)—स्त्री० [हिं० घलना] १. गहरा आघात-प्रतिघात। २. मार-पीट।

घलुआ†—पुं० [हिं० घाल] वह वस्तु जो दुकानदार किसी खरीददार को प्रसन्न करने के लिए तौल से अधिक या सौदे से अतिरिक्त देता है।

वि० घालनेवाला।

पुं० दे० 'घोलुआ'।

घवद*—स्त्री० = घौद।

घवरि†—स्त्री० =घौद।

घसकना†—अ० = खिसकना।

घसखुदा—वि० [हिं० घास+खोदना] १. घास खोदनेवाला। २. किसी काम में घसियारों की तरह बहुत ही अनाड़ी या मूर्ख।

पुं० घसियारा।

घसत—पुं० [?] बकरा। (डिं०)

घसना†—स० [सं० घसन] खाना। भक्षण करना। (डिं०)

† अ०, स० = घिसना।

घसिटना—अ० हिं० 'घसीटना' का अकर्मक रूप। घसीटा जाना।

घसियारा—पुं० [हिं० घास+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घसियारी वा घसियारिन] घास खोदकर लाने और बेचनेवाला व्यक्ति।

घसीट—स्त्री० [हिं० घसीटना] १. घसीटने की क्रिया या भाव। २. जल्दी-जल्दी लिखने की क्रिया या भाव। ३. बहुत जल्दी में और अक्षर आदि घसीट कर लिखी हुई लिखावट। ४. वह पट्टी या फीता जिससे उड़ते हुए पालों को मस्तूल से बाँधा जाता है।

घसीटना—स० [सं० घृष्ट, प्रा० घिस्ट+ना (प्रत्य०)] १. जमीन पर खड़ी या पड़ी हुई वस्तु, व्यक्ति आदि को इस प्रकार खींचकर आगे ले चलना कि वह जमीन पर गिरता-पड़ता तथा जमीन से रगड़ खाता हुआ खींचनेवाले के पीछे खिचता चला जाय। २. लाक्षणिक अर्थ में, किसी व्यक्ति को बलपूर्वक किसी कार्य या व्यापार में शामिल करना या फँसाना। जैसे—हमें आप ही तो यहाँ घसीट लाये थे। ३. बहुत जल्दी-जल्दी तथा अस्पष्ट लिखावट लिखना।

घसीटा-घसीटी—स्त्री० [हिं० घसीटना] बार-बार इधर-उधर या अपनी ओर घसीटने की क्रिया या भाव।

घस्मर—वि० [सं०√घस् (खाना)+क्मरच्] भक्षक। खानेवाला।

पुं० वह जिसका ध्यान सदा खाने की ओर ही रहे। पेटू।

घस्सा†—पुं० =घिस्सा।

घहनना—अ० = घहनाना।

घहनाना†—अ० [अनु०] १. घंटा बजने का शब्द होना। घंटे आदि से ध्वनि निकलना। २. जोर की ध्वनि होना। गरजना।

स० उक्त प्रकार की ध्वनि उत्पन्न करना।

घहरना—अ० = घहराना।

घहराना—अ० [अनु०] १. गरजने का-सा भीषण नाद होना। २. वेगपूर्वक या घोर शब्द करते हुए कहीं आकर गिरना या पहुँचना। सहसा आ उपस्थित होना। टूट पड़ना। ३. चारों ओर से आकर घेरना या छाना।

स० १. भीषण शब्द करना। २. घेरना या छाना।

घहरानि†—स्त्री० [हिं० घहराना] १. घहराने की क्रिया या भाव। २. गंभीर या घोर शब्द। गरज।

घहरारा*—पुं० [हिं० घहराना] [स्त्री० अल्पा० घहरारी] घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज।

वि० १. घोर शब्द करने या गरजनेवाला। २. घहराकर अथवा जोर से आकर गिरने या पड़नेवाला।

घहाना—अ०, स० =घहराना।

घाँ*—स्त्री० [सं० ख; या घाट = ओर।] १. दिशा। दिक्। २. ओर। तरफ। ३. जगह। स्थान।

घाँघरा—पुं० [स्त्री० घाँघरी] १. =घाघरा। २. =लोबिया (फली)।

घाँघल—स्त्री० [?] बखेड़ा। झंझट। (राज०)

घाँची†—पुं० [हिं० घान+ची] तेली। (डिं०)

घांटिक—वि० [सं० घंटा+ठक्—इक] घंटा या घंटी बजानेवाला।
पुं० १. स्तुति-पाठक। २. धतूरा।

घाँटी†—स्त्री० [सं० घंटिका] १. गले के अंदर की घंटी। कौआ। २. कंठ। गला।

घाँटो—पुं० [?] चैती की तरह का एक प्रकार का लोक-गीत जो चैत-बैसाख में गाया जाता है। (पूरब)

घाँह†—स्त्री० = घा (ओर या तरफ)।

घा†—स्त्री० [सं० ख अथवा घाट=ओर] १. ओर। तरफ। जैसे—चहूँघा। २. दिशा।

घाइ†—पुं० = घाव।
वि० = घायल।

घाइल*—वि० = घायल।

घाईं†—स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १. ओर। तरफ। २. दो चीजों के बीच की जगह। अवकाश। ३. बार। दफा। ४. पानी में का चक्कर। भँवर।
अव्य०=तरह। नाई। (बुन्देल०)

घाई—स्त्री० [सं० गभस्ति=उँगली] १. दो उँगलियों के बीच की संधि। अंटी। २. कोई ऐसा कोना जहाँ दो रेखाएँ आकर मिलती हों। जैसे—पौधे की पेड़ी और डाल के बीच की घाई। ३. अँगीठी के ऊपरी सिरे पर का उभार।
स्त्री० [सं० घात] १. आघात। प्रहार। वार। जैसे—बनेठी या सोटे की घाई। २. चोट लगने से होनेवाला घाव। जैसे—कुठार की घाई। ३. चालाकी या धोखे की चाल।
मुहा०—(किसी को) घाइयाँ बताना=धोखा देने के लिए इधर-उधर की बातें करना। झाँसा-पट्टी या दम-बुत्ता देना।
†स्त्री० = गाही।

घाऊ—पुं० [सं० घात] १. आघात। चोट। उदा०—यह सुनि परा निसानहि घाऊ।—तुलसी। २. घाव। जखम।

घाऊघप—वि० [हिं० खाऊ+गप वा घप] १. गुप्त रूप से या चुपचाप दूसरों का माल उड़ाने, खाने या हजम करनेवाला। २. सब कुछ खा-पी या फूँक-तापकर नष्ट करनेवाला। ३. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त।

घाग—पुं० = घाघ।

घागही†—स्त्री० [देश०] पटसन।

घाघ—पुं० [?] १. गोंडे के रहनेवाले एक बहुत चतुर और अनुभवी कवि जिसकी कही हुई बहुत-सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं। ये कहावतें खेती-बारी, ऋतु, काल तथा लग्न, मुहूर्त्त आदि के संबंध में हैं, और देहातों में बहुत प्रचलित हैं। २. बहुत ही अनुभवी, चतुर या धूर्त व्यक्ति। ३. ऐंद्रजालिक। जादूगर। बाजीगर। ४. उल्लू की जाति का एक बड़ा पक्षी।

घाघरा—पुं० [सं० घर्घर=क्षुद्रघंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] १. वह चुननदार तथा बड़े घेरेवाला पहनावा जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं और जिससे कमर से एड़ी तक के अंग ढके रहते हैं। लहँगा। २. एक प्रकार का कबूतर। ३. एक प्रकार का पौधा।
स्त्री० [सं० घर्घर] सरयू नदी का एक स्थानिक नाम।

घाघरापलटन—स्त्री० [हिं०] स्काटलैंड देश के पहाड़ी गोरों की सेना जिनका पहनावा कमर से घुटने तक लहँगे की तरह का होता है।

घाघस—पुं० [?] १. बटेर की जाति का भूरे रंग का एक पक्षी जिसका मांस खाया जाता है। २. एक प्रकार की मुरगी।
पुं० = घाघ (उल्लू की जाति का बड़ा पक्षी)।

घाघी—स्त्री० [सं० घर्घर] मछलियाँ फाँसने का एक प्रकार का बड़ा जाल।

घाट—पुं० [सं० घट्ट] १. जलाशय, नदी आदि के तट पर वह स्थान जहाँ लोग विशेष रूप से नहाते, धोते, जल भरते, नावों पर चढ़ते-उतरते, अथवा उन पर सामान आदि लादते-उतारते हों।
मुहा०—घाट नहाना=किसी के मरने पर उदक क्रिया करना। **(नाव का) घाट लगना**=नाव का सवारियाँ चढ़ाने या उतारने, सामान लादने या उतारने के लिए घाट पर पहुँचना या किनारे पर लगना। **(लोगों का) घाट लगना**=नाव द्वारा नदी पार जाने के इच्छुक व्यक्तियों का घाट पर इकट्ठा होना।
२. तालाव, नदी आदि के तट के आस-पास का वह स्थान जहाँ सीढ़ियाँ आदि बनी होती हैं तथा जिस पर से होकर लोग जल तक पहुँचते हैं। ३. चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ४. पहाड़। जैसे—पूर्वी घाट। ५. किसी चीज की बनावट में वह अंश जिसमें कुछ चढ़ाव-उतार या गोल रेखा का-सा रूप हो।
पद—घर-घाट। (देखें)
५. कोई काम पूरा होने की जगह या स्थान। ठिकाना।
मुहा०—घाट-घाट का पानी पीना=(क) अनेक स्थानों को देख आना अथवा वहाँ रह आना। (ख) अनेक अथवा तरह-तरह की चीजों के स्वाद लेना अथवा तरह-तरह के काम करना।
६. ओर। तरफ। दिशा। ७. चाल-चलन। रंग-ढंग। ८. तलवार की धार। ९. जौ की गिरी। १०. दुलहिन का लहँगा। ११. रहस्य संप्रदाय में, घट या हृदय।
स्त्री० [हिं० घटिया=बुरा] १. धोखा। छल। कपट। २. कुकर्म। बुराई।
स्त्री० [हिं० घटना] घटने या घटकर होने की अवस्था या भाव।
वि० [हिं० घट] १. कम। थोड़ा। २. घटिया।
क्रि० वि० घटकर।
पुं० [सं०√घट्+घञ्+अच्] [स्त्री० घाटी, घाटिका] १. गरदन का पिछला भाग। २. अँगिया में का गला।

घाटना*—अ० = घटना (कम होना)।

घाट-पहल—पुं० [हिं०] गढ़ या तराशकर बनाई जानेवाली चीज में उसकी बनावट का उतार-चढ़ाव और पार्श्व जो उसे सुडौल बनाते हैं। जैसे—इस हीरे का घाट-पहल बहुत बढ़िया है।

घाट-बंदी—स्त्री० [हिं० घाट+बंदी] १. घाट पर नाव लाने-ले जाने अथवा माल आदि चढ़ाने या उतारने का निषेध या रुकावट। (एम्बार्गो) २. घाट बाँधने अर्थात् बनाने की क्रिया, ढंग, भाव या रूप।

घाटवाल—पुं० [हिं० घाट+वाला (प्रत्य०)] १. घाट का अधिकारी, मालिक या स्वामी। २. वह ब्राह्मण जो घाट पर बैठकर स्नान करनेवालों से दान-दक्षिणा लेता हो। घाटिया।

घाटा—पुं० [हिं० घटना] १. घटने की क्रिया या भाव। २. वह (धन

या सामग्री) जो कुछ घटे या कम पड़े। ३. लेन-देन, व्यापार आदि में होनेवाली आर्थिक हानि। टोटा। नुकसान। (लॉस)

क्रि० प्र०– आना।–उठाना।–खाना।–देना।–पड़ना।–भरना।–सहना।–होना।

पुं० [हिं० घाटी] पहाड़ी मार्ग।

घाटारोह†—पुं० [हिं० घाट +सं० रोध] घाट पर का आवागमन वंद करना। घाट पर किसी को आने-जाने, उतरने-चढ़ने न देना। घाट रोकना।

घाटि†—वि० [हिं० घटना] कम। न्यून।

क्रि० वि० किसी की तुलना में कम, थोड़ा या हलका।

स्त्री० [सं० घात] अनुचित और निंदनीय कर्म। दुष्कर्म।

घाटिका—स्त्री० [सं० घाट+कन्– टाप्, इत्व] गले का पिछला भाग। गरदन।

घाटिया—पुं० [हिं० घाट+इया (प्रत्य०)] १. वह ब्राह्मण जो घाट पर वैठकर नहानेवालों से दान-दक्षिणा आदि लेता हो। २. घाट का स्वामी।

घाटी—स्त्री० [हिं० घाट] १. दो पर्वत-श्रेणियों के बीच का तंग या सँकरा मार्ग। २. पर्वतीय प्रदेशों के बीच में पड़नेवाला मैदान। जैसे—कश्मीर की घाटी। ३. चढ़ाव या उतार का पहाड़ी मार्ग। पहाड़ की ढाल। ४. वह पत्र जिसमें यह लिखा रहता है कि घाट पर आने या वहाँ से जानेवाले माल का महसूल चुका दिया गया है।

स्त्री० [सं० घाटिका] गले का पिछला भाग।

घाटी-मार्ग—पुं० [हिं० घाट+सं० मार्ग] १. पहाड़ियों के वीच में नदी की धारा आदि से वना हुआ संकीर्ण पथ। २. दर्रा।

घाटो†—पुं० = घाटा।

वि० [हिं० घटना] दरिद्र। गरीब।

पुं० [हिं० घाट] १. एक प्रकार का गीत जो घाट पर पानी भरने के समय स्त्रियाँ गाती थीं। २. दे० 'घाँटो'।

घात—पुं० [सं०√हन् (हिंसा)+घञ्, कुत्व, त आदेश] [वि० घाती] १. अस्त्र-शस्त्र अथवा हाथ-पैर आदि से किसी पर की जानेवाली चोट। प्रहार। मार। २. जान से मार डालना। वध। हत्या। जैसे—गोघात। ३. धोखे में रखकर किया जानेवाला अहित या बुराई। ४. गणित में किसी संख्या को उसी संख्या से गुणा करने से निकलनेवाला गुणनफल। (पावर)

स्त्री० १. अपना स्वार्थ सिद्ध करने का उपयुक्त अवसर।

मुहा०—**घात ताकना**=उपयुक्त अवसर की ताक में रहना। **(किसी के) घात पर चढ़ना या घात में आना**=ऐसी अवस्था में होना जिससे कोई दूसरा आसानी से अपना मतलब गाँठ सके। **(किसी को) घात में पाना**= किसी को ऐसी स्थिति में पाना जिससे कोई स्वार्थ सिद्ध होता हो। **(किसी की) घात में फिरना, रहना या होना** = किसी को हानि पहुँचाने का अवसर ढूंढ़ते रहना। **(किसी की) घात में बैठना**=ऐसी जगह छिपकर बैठना जहाँ से किसी पर सहज में आघात या वार किया जा सके। **घात लगना** = ऐसा इष्ट और उपयुक्त अवसर मिलना जिसमें कोई दुष्ट उद्देश्य या स्वार्थ सहज में सिद्ध हो सके। **घात लगाना**=कोई काम करने (विशेषतः अपना मतलब साधने) की युक्ति निकालना।

२. वह स्थान या स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति ऐसे उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में हो जिसमें कोई काम बन या उद्देश्य सिद्ध हो सकता हो। ३. दाँव। पेच। छल। ४. रंग-ढंग। तौर-तरीका।

वि० अमंगल या हानि करनेवाला। अशुभ। जैसे—घात तिथि, घात नक्षत्र, घात वार।

घातक—वि० [सं०√हन्+ण्वुल्—अक, कुत्व, त आदेश] १. घात या प्रहार करनेवाला। २. मार डालनेवाला। वधिक। ३. कष्ट या हानि पहुँचानेवाला। जैसे—घातक विचार। ४. जिसके कारण या द्वारा कोई मर सकता हो या मर जाय। (फैटल) जैसे—घातक रोग।

पुं० १. हिंसक। २. हत्यारा। ३. फलित ज्योतिष में, वह योग जिसके फलस्वरूप आदमी मर सकता हो। ४. दुश्मन। शत्रु।

घातकी †—वि०, पुं० = घातक।

घातन—पुं० [सं० √हन्+णिच्+ल्युट्—अन, कुत्व, त आदेश] १. घात करने की क्रिया या भाव। २. मारना।

घात-स्थान—पुं० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पर प्रहार किया गया हो या होता हो। वध-स्थान।

घाता—पुं० [?] १. वह चीज जो ग्राहक को तौल या गिनती के ऊपर दी जाय। घाल। २. कोई काम करते समय वीच में अनायास होनेवाला लाभ। जैसे—पुस्तक तो वापस मिली ही, तिस पर जलपान मिल गया घाते में।

घाति—पुं० [सं० √हन्+क्तिन्, कुत्व, त आदेश] पक्षियों को फँसाना या मारना।

स्त्री० चिड़िया फँसाने का जाल।

घातिक—वि० =घातक।

घातिया—वि० = घाती।

घाती (तिन्)–वि० [सं०√हन्+णिनि, कुत्व, त आदेश] [स्त्री० घातिनी] १. घात या प्रहार करनेवाला। २. मार डालने या वध करनेवाला। ३. नाश करनेवाला।

घातुक—वि० [सं०√हन्+उकञ्, कुत्व, त आदेश] १. घातक। २. हानि करनेवाला। ३. क्रूर। निर्दय।

घात्य—वि० [सं०√हन्+ण्यत्, कुत्व, त आदेश] १. जिसका या जिसे घात किया जा सके या किया जाने को हो। २. नष्ट किये या मारे जाने के योग्य।

घान—पुं० [सं० घना=समूह] १. किसी वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक बार कड़ाही, कोल्हू, चक्की आदि में तलने, पेरने, पीसने आदि के लिए डाली जाय। २. उतना अंश जितना एक वार में पकाया, वनाया या तैयार किया जाय। ३. हर बार क्रमशः उक्त प्रकार के या ऐसे ही और काम करने की क्रिया या भाव। जैसे—दूसरा या चौथा घान।

मुहा०—**घान उतरना** =उक्त प्रकार से एक वार काम ठीक उतरना या पूरा होना। **घान डालना** =उक्त प्रकार का कोई काम शुरू करना। **घान पड़ना या लगना**=उक्त प्रकार का कोई काम आरंभ होना।

पुं० [हिं० घन=वड़ा हथौड़ा] १. बड़ा हथौड़ा। घन। २. वहुत वड़ा आघात या प्रहार।

*पुं० [सं० घ्राण] १. सूंघने की क्रिया या भाव। २. गंध। बू। उदा०—जहाँ न राति न दिवस है, जहाँ न पौन न घानि।—जायसी।

घाना*—स० [सं० घात, प्रा० घाय + ना (प्रत्य०)] १. घात या प्रहार करना। २. नाश या संहार करना।

स० = गहना (पकड़ना)।

घानि*—स्त्री० १ = घान (गंध)। २.=घानी।

घानी—स्त्री० [हिं० घान] १. वह स्थान जहाँ कोई काम करने के लिए एक-एक करके घान डाले जाते हों। २. ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू या उसकी जगह। ३. ढेर। राशि ४. दे० 'घान'।

मुहा०—घानी करना=पीसना, पेरना या ऐसा ही और कोई काम करना।

घानी की सवारी—स्त्री० [हिं०] मालखंभ की एक कसरत जिसमें एक हाथ में मोंगरा पकड़कर मालखंभ के चारों ओर घानी या कोल्हू की तरह चक्कर लगाते हैं।

घाप†—स्त्री० [?] बादलों की घटा।

घाम†—पुं० [सं० घर्म, प्रा० घम्म, पा० गिहन] १. सूर्य का ताप-युक्त प्रकाश। धूप।

मुहा०—घाम खाना=(क) सरदी दूर करने के लिए धूप में रहना। (ख) धूप के अधिक या तीव्र प्रभाव में पड़ना। **घाम लगना**=लू लगना।

२. कष्ट। विपत्ति। संकट।

मुहा०—(कहीं या किसी पर) घाम आना=कठिनाई या संकट आना। **घाम बचाना या बराना**=कष्टदायक बात से बचना।

† ३. पसीना।

घामड़—वि० [हिं० घाम] १. (पशु) जो अधिक घाम या धूप लगने के कारण विकल हो गया हो। २. ना-समझ। मूर्ख। † ३. आलसी।

घाम-निधि*—पुं०=सूर्य।

घामरी*—स्त्री० [हिं० घामड़ी] १. धूप आदि न सह सकने के कारण होनेवाली विकलता। २. प्रेम के कारण होनेवाली विह्वलता।

घाय†—पुं०=घाव।

घायक*—वि०=घातक।

घायल—वि० [हिं० घाय] १. जिसे घाव या चोट लगी हो, विशेषतः ऐसी चोट लगी हो जिसके कारण उसके शरीर का कोई अंग कट या फट गया हो और रक्त बहने लगा हो। जख्मी। २. (व्यक्ति) जिसे किसी के कुव्यवहार से क्लेश हुआ हो। दूसरे के अनुचित व्यवहार से अपने को अपमानित समझनेवाला (व्यक्ति)। ३. जुए में हारा हुआ (जुआरी)।

पुं० कनकौआ या गुड्डी लड़ाने का एक ढंग या प्रकार।

घार†—स्त्री० [सं० गर्त्त] पानी के बहाव से कटकर बना हुआ गड्ढा या नाला।

घारी†—स्त्री० दे० 'खरिक'।

घार्षणिक—वि० [सं० घर्षण + ठक्—इक] घर्षण-संबंधी। घर्षण का।

घाल—पुं० [हिं० घालना=डालना] १. किसी चीज का वह थोड़ा-सा अंश जो सौदा बिक चुकने पर उचित गिनती या तौल के अतिरिक्त अन्त में ग्राहक के माँगने पर दुकानदार उसे प्रसन्न रखने के लिए देता है। घलुआ। २. उक्त के आधार पर बहुत ही तुच्छ या हेय पदार्थ।

मुहा०—घाल न गिनना=कुछ भी न समझना। तुच्छ समझना। उदा०—सरग न घालि गनै बैरागा।—जायसी।

३. आघात। प्रहार। उदा०—को न गएउ एहि रिसि कर घाला। —जायसी।

क्रि० वि० बे-फायदा। व्यर्थ।

स्त्री० घालने की क्रिया या भाव। उदा०—तिसकी घाल अजाँईं जाइ। —कबीर।

घालक—वि० [हिं० घालना] [स्त्री० घालिका] १. मारने या वध करनेवाला। २. नाशक। ३. बहुत अधिक अपकार या हानि करनेवाला।

घालकता—स्त्री० [घालक+ता (प्रत्य०)] घालक होने की अवस्था, गुण या भाव।

घालना—स० [प्रा० अप० घल्ल, मरा० घालणें] १. कोई चीज किसी के अन्दर डालना या रखना। उदा०—को अस हाथ सिह मुख घालै। —जायसी। २. कोई चीज किसी दूसरी चीज पर बैठाना, रखना या लगाना। उदा०—(क) राजकुँवरि घाली वर-माल।—नरपति नाल्ह। (ख) घालि कचपचो टीका सजा।—जायसी। ३. (अस्त्र या शस्त्र किसी पर) चलाना, छोड़ना या फेंकना। ४. कोई कार्य संपन्न या संपादित करना। ५. बुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। बिगाड़ना। जैसे—किसी का घर घालना। ६. वध या हत्या करना। मार डालना।

घाल-मेल—पुं० [हिं० घालना+मेलना] १. विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की ऐसी मिलावट अथवा विभिन्न बातों का ऐसा सम्मिश्रण जो देखने अथवा सुनने में भला प्रतीत न होता हो। २. अनुचित संबंध। ३. मेल-जोल।

घाव—पुं० [सं० घात, पा० घातो, प्रा० घाअ, गु० पं० घा, सिं० घाऊ, मरा० घाव, घाय] १. शरीर के किसी अंग पर किसी वस्तु का आघात लगने से होनेवाला कटाव या पड़नेवाली दरार। क्षत। जख्म।

मुहा०—घाव खाना=आघात या प्रहार सहने के कारण घायल होना। **घाव पूजना या भरना**= क्षत या घाव में नया मांस भर आने के कारण उसका अच्छा होना।

२. शरीर का वह अंग या अंश जो कटने-फटने, सड़ने-गलने आदि के कारण विकृत हो गया हो। ३. मानसिक आघात आदि के कारण होनेवाली मन की दुःखपूर्ण स्थिति।

मुहा०—घाव पर नमक छिड़कना=दुःखी या पीड़ित को और अधिक दुःख या पीड़ा पहुँचाना।

घाव-पत्ता—पुं० [हिं० घाव+पत्ता] एक प्रकार की लता जिसके पत्ते घाव पर बाँधने से घाव जल्दी भरता है।

घावरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा सुगंधित वृक्ष जिसकी छाल चिकनी और लकड़ी मजबूत तथा चमकीली होती है।

घावरिया†*—पुं० [हिं० घाव+वरिया (वाला)] घावों की चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति। जर्राह।

घावा†—वि०=घायल। (राज०)

घास—स्त्री० [सं० √घस् (खाना)+घञ्; पा० प्रा० घास; पं० घाहं; सिं० गाहु; गु० घास्; ने० घाँस्; उ० मरा० घास] १. छोटी हरी वनस्पतियों में से कोई और हर एक जिसके पत्ते चरनेवाले पशु खाते हैं। तृण।

पद—घास-पात या घास-फूस—(क) तृण और वनस्पति। (ख) कूड़ा-करकट। **घास-भूसा**=(क) पशुओं का चारा। (ख) व्यर्थ की रद्दी चीजें।

मुहा०—घास काटना, खोदना, गढ़ना या छीलना =तुच्छ या व्यर्थ का काम करना।

२. घास की आकृति के कटे हुए कागज, पन्ना आदि के पतले लंबोतरे टुकड़े। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

घासलेट—पुं० [अं० गैस लाइट] १. मिट्टी का तेल। २. तुच्छ या अग्राह्य वस्तु।

घासलेटी—वि० [हिं० घासलेट+ई प्रत्य०] १. हलके किस्म का। साधारण या निम्न कोटि का। २. अश्लील या गंदा और रद्दी। जैसे—घासलेटी साहित्य।

घासी† —स्त्री० [हिं० घास] घास। चारा। तृण।

पुं० घसियारा।

घाह—स्त्री० [सं० ख=ओर] ओर। दिशा। उदा०—उतरि समुद्द अथाह, घाह लंका धर धुज्जिय।—चंदवरदाई।

स्त्री०=घाई।

घिअ†—पुं०=घी।

घिआँड़ा—पुं० [हिं० घी+हंडा] वह बरतन जिसमें घी रखा जाता हो।

घिआ—स्त्री०=घीया।

घिऊ†—पुं०=घी।

घिग्घी—स्त्री० [अनु०] १. अधिक देर तक रोने से थकावट आदि के कारण साँस में होनेवाली वह रुकावट जिससे आदमी घी-घी शब्द करने लगता है। २. भयभीत होने पर मुँह से ठीक प्रकार से शब्द न निकलने की स्थिति।

क्रि० प्र०—बँधना।

घिघिआना—अ० [हिं० घिग्घी] १. असहाय तथा दीन बनकर करुण स्वर से बार-बार विनती करना। २. चिल्लाना।

घिचपिच—स्त्री० [सं० घृष्ट-पिष्ट] १. लिखावट या लेख जिसके अक्षर या शब्द इस प्रकार आपस में सटे हों कि पाठक सुविधापूर्वक उसे न पढ़ पाता हो। २. अपेक्षाकृत थोड़े में अत्यधिक वस्तुओं के बिना क्रम से रखे जाने की स्थिति।

वि० अस्पष्ट (लिखावट)।

घिन—स्त्री० [सं० घृणा] [क्रि० घिनाना, वि० घिनौना] किसी गंदी अथवा गली-सड़ी वस्तु को देखने पर मन में होनेवाली अरुचिपूर्ण भावना जिसके फल-स्वरूप मनुष्य उस वस्तु से घबराकर दूर भागना चाहता है। घृणा। नफरत।

क्रि० प्र०—आना।—खाना।—लगना।

घिनावना—वि० [स्त्री० घिनावनि] घिनौना। उदा०—देखत कोइलरि घिनावनि बोलत सोहावनि हो।—ग्रा० गी०।

घिनौंची†—स्त्री०=घड़ौंची।

घिनौना†—वि० [हिं० घिन+औना (प्रत्य०)] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने पर मन में घिन उत्पन्न होती हो। घृणित।

घिनौरी†—स्त्री० [हिं० घिन] ग्वालिन नामक कीड़ा।

घिन्नी—स्त्री०=घिरनी।

†स्त्री०=गिन्नी।

घिय†—पुं०=घी।

घियांड़ा—पुं० [हिं० घी+हँडा] घी रखने का पात्र। घृत-पात्र।

घिया—स्त्री०=घीया।

घियाकश—पुं०=घीयाकश।

घियातरोई—स्त्री०=घीयातोरी।

घिरत†—पुं०=घृत।

घिरना—अ० [सं० ग्रहण] १. किसी के घेरे में आना। जैसे—शेर घिर गया। २. सब दिशाओं से किसी वस्तु द्वारा ढक लिया जाना। जैसे—बादलों से आकाश घिरना। ३. चारों ओर से आकर उपस्थित होना। जैसे—घटाएँ घिरना।

घिरनी—स्त्री० [सं० घूर्णन] १. गराड़ी। चरखी। २. चक्कर। फेरा।

मुहा०—घिरनी खाना=चारों ओर चक्कर लगाना।

३. रस्सी बटने की चरखी। ४. लट्टू नामक खिलौना। ५. दे० 'घिन्नी'।

†स्त्री०=गिनी या गिन्नी। (सोने का अंगरेजी सिक्का)

पुं० [?] १. किलकिला या कौड़ियाला नामक जलपक्षी। २. लोटन कबूतर।

घिरवाना—स० [हिं० 'घेरना' का प्रेर०] घेरने का काम किसी से कराना।

घिराई—स्त्री० [हिं० घेरना] १. घेरने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. पशु चराने का काम या पारिश्रमिक।

घिरायँद—स्त्री० =खरायँद (मूत्र की दुर्गन्ध)।

घिराव—पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने अथवा घेरे जाने की क्रिया या भाव। २. घेरा।

घिरावना*—स० १. दे० 'घिरवाना'। २. दे० 'घेरना'।

घिरित*—पुं०= घृत।

घिरिन परेवा—पुं० [हिं० घिरनी+परेवा] गिरहबाज कबूतर।

घिरिया—स्त्री० [हिं० घिरनी] १. शिकार को घेरने के लिए बनाया जानेवाला मनुष्यों का घेरा। २. बहुत असमंजस या संकट की स्थिति।

घिरौंची—स्त्री०=घड़ौंची।

घिरौरा†—पुं० [देश०] घूस नामक जन्तु का बिल।

घिर्तकाँदौ—पुं० [?] चम्पारन में होनेवाला एक प्रकार का जड़हन धान। उदा०—घिर्तकाँदौ औ कुंवर बेरासू।—जायसी।

घिर्राना†—स० [अनु० घिर घिर] घसीटना। (पु० हिं०)

अ० दे० 'घिघियाना'।

घिर्री—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

स्त्री० [हिं० घेरा] एक ही घेरे में बार-बार घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया।

मुहा०—घिर्री खाना=कोई काम पूरा करने के लिए बार-बार कहीं आना-जाना।

†स्त्री०=घिरनी।

घिव†—पुं०=घी।

घिसकना†—अ०=खिसकना।

घिसकाना†—स०=खिसकाना।

घिसघिस—स्त्री० [हिं० घिसना] जान-बूझकर और सुस्ती से किया जानेवाला ऐसा काम जिसमें उचित से बहुत अधिक समय लगे। जैसे—तुम्हारी यह घिस-घिस हमें अच्छी नहीं लगती।

घिसटना†—अ० [हिं० घसीटना का अ०] १. घसीटा जाना। २. जमीन पर रेंगते या उससे रगड़ खाते हुए बहुत धीरे-धीरे चलना।

घिसन†—स्त्री०[हिं० घिसना] १. घिसने की क्रिया या भाव। २. घिसने के कारण होनेवाली कमी या छीज।

घिसना—स० [सं० घर्षण, प्रा० घसण] १. किसी वस्तु को जोर लगाकर किसी दूसरी चीज पर इस प्रकार रगड़ना कि वह छीजने लगे। जैसे—पत्थर पर चन्दन या वादाम घिसना। २. किसी वरतन आदि पर जमी हुई काई, मैल आदि छुड़ाने के लिए उस पर कोई चीज मलना, रगड़ना या लगाना। माँजना। ३. संभोग करना।

अ० उपयोग, व्यवहार में आते-आते अथवा अन्य वस्तुओं से रगड़ खाते-खाते किसी वस्तु का क्षीण हो जाना। जैसे—लोटा घिस गया है।

घिसपिस†—स्त्री०[अनु०] १.=मेल-जोल। २.=घिस-घिस।

वि०=घिचपिच।

घिसवाना—स०[हिं० घिसना का प्रे०] घिसने का काम किसी दूसरे से कराना। रगड़वाना।

घिसाई—स्त्री०[हिं० घिसना] घिसने या घिसे जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घिसाव—पुं० [हिं० घिसना] घिसने या घिसे जाने की क्रिया या भाव।

घिसावट—स्त्री०=घिसाव।

घिसिआना†—स०=घसीटना।

घिसियाना†स०=घसीटना।

घिसिर-पिसिर—स्त्री० दे० 'घिस-पिस'।

घिस्ट-पिस्ट—स्त्री०=घिस-पिस।

घिस्समघिस्सा—पुं० [अनु०] १. वार-वार घिसने या रगड़ने की क्रिया। २. वच्चों का एक खेल जिसमें एक दूसरे की डोरी या नख में डोरी या नख फँसाकर इस प्रकार झटका दिया जाता है कि दूसरे की डोरी या नख टूट जाय। ३. रेल-पेल।

घिस्सा—पुं०[हिं० घिसना] १. रगड़। २. धक्का। ३. टक्कर। ४. चकमा। धोखा। ५. कलाई या कोहनी से गरदन पर किया जानेवाला आघात। (पहलवान) ६. दे० 'घिस्समघिस्सा'।

घींच†—स्त्री०[हिं० घीचना वा सं० ग्रीव] गरदन। ग्रीवा।

*स्त्री०=खींच।

घींचना*—स०=खींचना।

घी—पुं० [सं० घृत, पा० घत, प्रा०, उ० घिअ, मरा० गु० बं० घी, पं० घ्यो, ने० घिउ] मक्खन को तपाकर बनाया हुआ प्रसिद्ध चिकना पदार्थ जो रोटी आदि पर लगाया और तरकारियों आदि में डाला जाता है।

मुहा०—घी का कुप्पा लुढ़कना=(क) किसी धनी का गुजर या मर जाना। (ख) बहुत बड़ी क्षति या हानि होना। **घी का डोरा देना**=परोसी हुई दाल, सब्जी आदि में ऊपर से धार बाँधकर घी डालना। **घी के कुप्पे से जा लगना**=किसी ऐसे व्यक्ति के पास अथवा किसी ऐसे स्थान पर पहुँचना कि खूब लाभ हो। **घी के चिराग या दीये जलाना**=मनोरथ पूर्ण होने पर खुशी मनाना। **घी खिचड़ी होना**=परस्पर अत्यधिक घनिष्ठता या मेल-जोल होना। **पाँचों उँगलियाँ घी में होना**=ऐसी सुखद स्थिति में होना कि किसी बात की कमी न रह जाय।

घीउ†—पुं०=घी।

घीकुआर—पुं०[सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा।

घीकुवाँर—पुं०[सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा।

घीया—स्त्री०[हिं० घी ?] १. एक प्रसिद्ध लता जिसमें लंबोतरे फल लगते हैं और जिनकी सब्जी बनाई जाती है। लौकी। २. उक्त लता का फल।

घीया-कश—पुं०[हिं० घीया+कश] पीतल, लोहे आदि का एक प्रसिद्ध दाँतेदार चौकोर उपकरण जिस पर घीया, पेठा आदि रगड़ने से उसके छोटे-छोटे टुकड़े हो जाते हैं।

घीया-तोरी—स्त्री० [हिं० घीया+तोरी] १. एक प्रसिद्ध लता जिसके छोटे लंबोतरे फलों की तरकारी बनाई जाती है। २. उक्त लता के फल।

घीस†—स्त्री०=घूस (जंतु)।

घीसना†—स०=घसीटना।

घीसा*—पुं०=घिस्सा (रगड़ा)।

घुंइयाँ—स्त्री० [देश०] अरुई नाम की तरकारी।

घुंघची—स्त्री०[सं० गुंजा, प्रा० गुंचा] १. एक प्रकार की जंगली बेल जिसमें लाल-लाल रंग के छोटे-छोटे बीज होते हैं। गुंजा। २. उक्त बेल के बीज।

घुंघनी—स्त्री०[अनु०] भिगोकर तला हुआ अन्न (चना, मटर आदि)।

घुंघरारा*—वि०=घुंघराला।

घुंघराला—वि० [हिं० घूंघर+वाला] जिसमें कई घुमाव या घूंघर पड़े हों। जिसमें छल्ले की तरह के कई बल पड़े हों। छल्लेदार (बाल)।

घुंघरू—पुं०[अनु० घुन घुन, +सं० खवारू] १. पीतल आदि की बनी हुई गोल और पोली गुरिया जिसमें कंकड़, लोहे आदि का छोटा टुकड़ा रहता है और जिसके हिलने से घन-घन ध्वनि होती है। २. पैरों में पहना जानेवाला एक गहना जिसमें छोटे-छोटे अनेक घुंघरू लगे रहते हैं।

मुहा०—घुंघरू बाँधना=नाचने के लिए तैयार होना।

३. गले का वह घुर-घुर शब्द जो मरते समय कफ छेंकने के कारण निकलता है। घुटका।

मुहा०—घुंघरू बोलना=मरने के समय गले से घुर-घुर शब्द निकलना।

घुंघरूदार—वि० [हिं० घुंघरू+फा० दार] (आभूषण या वाजा) जिसमें घुंघरू लगे हुए हों।

†वि०=घुंघराला।

घुंघरूबंद—स्त्री० [हिं० घुंघरू+फा० बंद] (पैरों में घुंघरू बाँधकर) नाचनेवाली वेश्या।

घुंघरू-मोतिया—पुं० [हिं० घुंघरू+मोतिया] एक प्रकार का मोतिया (पौधा और फूल)।

घुंघ (घु) वारा—वि० दे० 'घुंघराला'।

घुंट—पुं०[देश०] एक जंगली पेड़ जिसकी छाल और फलियों से चमड़ा सिझाया जाता है।

घुंटना†—अ०, पुं०=घुटना।

घुंडी—स्त्री०[सं० गुंठ से] १. कपड़े की बनी हुई छोटी गोली जिसे अंगरखे, कुरते आदि का पल्ला बंद करने के लिए टाँकते हैं। कपड़े का गोल बटन। गोपक।

क्रि० प्र०—खोलना।—टाँकना।—लगाना।

२. कपड़े, सूत आदि का कोई गोलाकार फुंदना जो शोभा के लिए लगाया जाता है। ३. किसी चीज के सिरे पर बनी हुई कोई गोलाकार छोटी आकृति या रचना। जैसे— हाथ में पहनने के कड़े या जोशन की घुंडी। ४. द्वेष, राग, वैर आदि के कारण मन में रहनेवाली गाँठ या दुर्भाव।

मुहा०—**जी या मन की घुंडी खोलना** =मन में दबी हुई बात कहकर या रोष प्रकट करके दुर्भाव दूर करना।

५. कोई पेचीली बात। ६. धान का अंकुर जो खेत कटने पर जड़ से फूटकर निकलता है। दोहला। ७. एक प्रकार की घास।

घुंडीदार—वि० [हिं० घुंडी+फा० दार] १. (चीज) जिसमें घुंडी टँकी, बनी या लगी हो। २. पेचीला।

पुं० एक प्रकार की सिलाई जिसमें एक टाँके के बाद दूसरा टाँका फंदा डालकर लगाते और जगह-जगह उसे घुंडी का रूप देते चलते हैं।

घुंसा†—पुं० [देश०] वह लकड़ी जिसके सहारे जाठ उठाकर कोल्हू में डालते हैं।

घुआ—पुं०=घूआ।

घुइयाँ†—स्त्री० [?] अरुई या अरवी नामक तरकारी।

घुड़रना†—स० १. दे० 'घूरना'। २. दे० 'घुड़कना'।

घुइस†—स्त्री०=घूस (जन्तु)।

घुकुआ†—पुं० [हिं० घूका] तंग मुँह की बाँस आदि की टोकरी।

घुघी—स्त्री० [?] पंडुक या फाख्ता नाम का पक्षी।

†स्त्री०=घोघी।

घुग्घू—पुं० [सं० घूक] १. उल्लू नामक पक्षी। २. मूर्ख व्यक्ति। ३. मिट्टी का एक प्रकार का खिलौना जो फूँककर बजाया जाता है।

घुघुआ†—पुं० दे० 'घुग्घू'।

घुघुआना—अ० [हिं० घुग्घू] १. उल्लू पक्षी का बोलना। २. उक्त पक्षी की तरह अस्पष्ट स्वर में बोलना। ३. दे० 'गुर्राना'।

घुघुरी—स्त्री० दे० 'घुँघनी'।

†स्त्री० [हिं० घुँघरू] छोटा घुँघरू।

घुघ्घू†—पुं०=घुग्घू।

घुटकना†—स० [सं० घुट् प्रा० घोट्ट] १. घूँट-घूँट करके कोई तरल पदार्थ पीना। २. दे० 'गुटकना'।

घुटकी—स्त्री० [हिं० घुटकना] १. गले की वह नली जिसमें से होकर खाद्य पदार्थ पेट में जाते हैं। २. गले में रुक-रुककर आने-जानेवाला साँस।

मुहा०—**घुटकी लगना**=मरने के समय रुक-रुककर साँस आना-जाना।

घुटन—स्त्री० [हिं० घुटना] १. दम घुटने की-सी अवस्था या भाव। २. ऐसी अवस्था जिसमें कर्तव्य न सूझने पर मन में बहुत घबराहट होती हो। (सफोकेशन)

घुटना—पुं० [सं० घुंटक, दे० प्रा० गोड्डक, प्रा० गोड्ड, गोड, बं० गोर, उ० गोरो, पं० गोड्डा, सिं० गोडो, मरा० घुडगा, गुडगा] १. पैर के बीच का वह जोड़ जिसके ऊपर जाँघ और नीचे टाँग होती है।

मुहा०—**घुटना टेकना**=सुस्ताने के लिए घुटनों के बल बैठना। **(किसी के आगे) घुटना या घुटने टेकना**=अपनी अधीनता या पराजय मानकर किसी के आगे सिर झुकाना। **घुटनों (के बल) चलना**=हाथों और घुटनों के बल उस प्रकार धीरे-धीरे खिसकते हुए चलना जिस प्रकार छोटे बच्चे चलते हैं। **घुटनों में सिर देना**=(क) सिर नीचा किये चिंतित या उदास होकर बैठना। (ख) लज्जित होना। सिर नीचा करना। **(किसी के) घुटनों से लगकर बैठना** =सदा पास और सटकर बैठे रहना।

२. उक्त गाँठ के आस-पास का स्थान।

अ० [हिं० घोटना] १. हिं० 'घोटना' क्रिया का अ० रूप। घोटा जाना। २. गले में साँस का रुकना। जैसे—धूएँ या धूल से दम घुटना। ३. बहुत अधिक मानसिक कष्ट या वेदना के कारण जीवन बिताना कठिन होना।

मुहा०—**घुट-घुटकर मरना**= बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट भोगते हुए और कठिनता से मरना।

४. किसी चीज का बहुत कस या जकड़कर अटकना, फँसना या बंद होना। जैसे—डोरी या रस्सी की गाँठ घुटना। उदा०—आन गाँठ घुटि जाय त्यौं, मान गाँठ छुटि जाय।—बिहारी। ५. अच्छी तरह पीसा या मिलाया जाना। खूब पिसना या मिलना। जैसे—(क) भंग घुटना। (ख) उबलने के बाद अच्छी तरह गलकर दाल का घुटना।

पद—**घुटा हुआ**=बहुत ही अनुभवी और चालाक (आदमी)।

६. घिसे जाने पर चिकना होना। ७. आपस में बहुत ही घनिष्ठ संबंध होना। जैसे—आज-कल उन दोनों में खूब घुटती है। ८. आपस में गुप्त अथवा घनिष्ठतापूर्ण बातें होना। जैसे—जब मैं वहाँ पहुँचा, तब उन दोनों में खूब घुट रही थी। ९. बार-बार करते रहने से किसी काम या बात का पूरा अभ्यास होना। हाथ बैठना। जैसे—लिखने के समय बच्चों की पट्टी घुटना। १०. उस्तरे से बालों का अच्छी तरह मूँड़ा जाना। जैसे—दाढ़ी घुटना।

स० जकड़ने, बाँधने आदि के लिए अच्छी तरह कसना। बंधन कड़ा करना। जैसे—घुटकर बाँधना।

घुटनी†—स्त्री० हिं० घुटना का स्त्री० अल्पा० रूप।

घुटन्ना—पुं० [हिं० घुटना] १. घुटनों तक पहुँचनेवाला पायजामा। २. तंग मोहरीवाला पायजामा।

घुटरूँ—क्रि० वि० [हिं० घुटना] घुटनों के बल, उसी प्रकार घिसटकर जिस प्रकार छोटे बच्चे चलते हैं।

घुटरू†—पुं० [हिं० घुटना] छोटा घुटना। बच्चे का घुटना।

घुटवाना—स० [हिं० घोटना का प्रे०] १. घोटने का काम दूसरे से कराना। २. दाढ़ी, मूँछ आदि मुँड़ाना।

स० [हिं० घुटना] घुटने दबवाना।

घुटाई—स्त्री० [हिं० घुटना या घोटना] १. घोटने या घोटे जाने की क्रिया भाव या मजदूरी। २. खूब रगड़-रगड़कर किसी चीज को चिकना बनाने का काम। ३. दाढ़ी, मूँछ आदि मूँड़ने या मुँड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घुटाना—स० [हिं० घोटना का प्रे०] ५. घोटने का काम किसी से कराना। २. कोई चीज रगड़वाकर चमकीला बनवाना। घटवाना। ३. दाढ़ी, मूँछ आदि मुँड़ाना।

घुटाला—पुं०=घोटाला।

घुटी†—स्त्री०=घुट्टी।

घुटुरुन—पुं० [हिं० घुटुरु+अन (प्रत्य०)] घुटनों के बल चलने की क्रिया या भाव।

क्रि० वि० घुटनों के बल। घुटरूँ।

घुट्टरू†—पुं०=घुटरू।
क्रि० वि०=घुटरूँ।

घुट्टवा†—पुं०=घुटना (पैर का)।

घुट्टा†—पुं०=घोटा।

घुट्टी—स्त्री० [हिं० घूंट या घोटना]। देशी दवाओं का एक प्रकार का घोल जो बहुत छोटे बच्चों को उनकी पाचन-शक्ति ठीक करने के लिए पिलाया जाता है।
क्रि० प्र०—देना।–पिलाना।
मुहा०—**(कोई चीज या बात) घुट्टी में पड़ना**=बहुत छोटी अवस्था से ही प्रकृति का अंग बनना या स्वभाव बनना। जैसे—कह कर मुकर जाना तो उनकी घुट्टी में पड़ा है।

घुड़—पुं० [हिं० घोड़ा] हिन्दी 'घोड़ा' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—घुड़-चढ़ा, घुड़-दौड़, घुड़-मुंहा आदि।

घुड़कना—स० [अनु० घुर घुर] खीझने अथवा क्रुद्ध होने पर खिझाने अथवा क्रोध दिलानेवाले को डाँटते हुए यह कहना कि ऐसा काम मत करो जिससे हम खीझें या क्रुद्ध हों।

घुड़की—स्त्री० [हिं० घुड़कना] १. घुड़कने की क्रिया या भाव। २. क्रुद्ध होकर अथवा खीझकर डाँटते हुए किसी को कही जानेवाली बात।
पद—बंदर-घुड़की (देखें)।

घुड़चढ़ा—पुं० [हिं० घोड़ा+चढ़ना] १. वह जो घोड़े पर चढ़ा हो। घुड़ सवार। अश्वारोही। २. एक प्रकार का स्वाँग जिसमें घोड़े की-सी आकृति बनाकर उसके बीच में सवार की तरह चलते हैं।

घुड़चढ़ी—स्त्री० [हिं० घोड़ा+चढ़ना] १. हिंदुओं में विवाह की एक रीति जिसमें वर घोड़े पर चढ़कर दुल्हिन के घर जाता है। २. गाँवों में रहनेवाली वेश्या, जो घोड़े पर चढ़कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती हो। ३. घोड़े की पीठ पर रख या लादकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी तोप। घुड़नाल।

घुड़दौड़—स्त्री० [हिं० घोड़ा+दौड़] १. घोड़ों की दौड़। २. एक प्रतियोगिता जिसमें घोड़ों को खूब तेज दौड़ाया जाता है और सबसे तेज दौड़नेवाले घोड़े (अथवा उसके स्वामी को) पुरस्कृत किया जाता हैं। ३. चलने में घोड़ों की तरह की बहुत तेज चाल। ४. एक प्रकार की वड़ी नाव जिसके अगले भाग पर घोड़े का मुँह बना होता है। ५. घुड़सवार सेना की कवायद।
क्रि० वि० घोड़ों की तरह तेजी से आगे वढ़ते या दौड़ते हुए।

घुड़नाल—स्त्री० [हिं० घोड़ा+नाल] घोडे की पीठ पर रखकर चलाई जानेवाली एक प्रकार की पुरानी चाल की छोटी तोप।

घुड़बहली—स्त्री० [हिं० घोड़ा+वहल+ई] एक प्रकार का रथ जिसमें घोड़े जुतते हों।

घुड़मक्खी—स्त्री० [हिं० घोड़ा+मक्खी] भूरे रंग की वह मक्खी जो घोड़ों को काटती है।

घुड़मुंहा—वि० [हिं० घोड़ा+मुँह] जिसका मुख घोड़े की तरह लंबा हो।
पुं० एक कल्पित मनुष्य जाति जिसका धड़ मनुष्य का-सा और मुँह घोड़े का-सा माना गया है।

घुड़ला—पुं० [हिं० [घोड़ा+ला (प्रत्य०)] १. बच्चों के खेलने के लिए बनाया हुआ काठ, पत्थर, मिट्टी आदि का छोटा घोड़ा। २. छोटा घोड़ा। ३. छोटी रस्सी या सिकड़ी। (लश०)

घुड़सवार—पुं० [हिं० घोड़ा+सवार] [भाव० घुड़सवारी] वह जो घोड़े पर सवार हो। अश्वारोही।

घुड़सवारी—स्त्री० [हिं० घोड़ा+सवारी] घोड़े पर सवार होने की क्रिया या भाव।

घुड़सार—स्त्री० =घुड़साल।

घुड़साल—स्त्री० [हिं० घोड़ा+सं० शाला] वह जगह या बाड़ा जहाँ घोड़े बाँधे जाते हैं। अस्तबल।

घुड़िया—स्त्री० [हिं० घोड़ी का अल्पा०] बहुत छोटी घोड़ी। विशेष दे० 'घोड़िआ'।

घुड़ुकना†—स०=घुड़कना।

घुण—पुं० [सं० √घुण् (घूमना)+क] घुन।

घुण-लिपि—स्त्री० [मध्य० स०]=घुणाक्षर।

घुणाक्षर—पुं० [घुण-अक्षर, मध्य० स०] लिखे हुए अक्षरों की तरह के वे चिह्न जो पत्ते, लकड़ी आदि पर घुन लगने से बन जाते हैं।

घुणाक्षर-न्याय—पुं० [ष०त०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस अवस्था में होता है जिसमें कोई घटना संयोगवश वैसे ही हो जाती है जैसे लकड़ी आदि पर घुन लगने से यों ही कुछ अक्षर से बन जाते हैं।

घुन—पुं० [सं० घूण; प्रा० मरा० घूण; बं० घुन्; उ० घूण; पं० घुण्] १. एक प्रकार का लाल रंग का छोटा कीड़ा जो अनाज के दानों का भीतरी अंश खाकर उन्हें खोखला कर देता है। २. सफेद रंग का एक प्रकार का छोटा पतला कीड़ा जो कागज, लकड़ी आदि खाता है।
मुहा०—**घुन लगना**= चिन्ता, रोग, शोक आदि के कारण मनुष्य की ऐसी स्थिति होना कि उसका शरीर दिन पर दिन क्षीण होता जाय।

घुनघुना--पुं० [अनु०] बच्चों का झुनझुना नामक खिलौना।

घुनना—अ० [सं० घुण] १. घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। जैसे—अनाज या लकड़ी घुनना। २. चिन्ता, रोग आदि के कारण मनुष्य का शरीर दिन पर दिन क्षीण होना।

घुनाक्षरन्याय—पुं०=घुणाक्षरन्याय।

घुन्ना—विं० [अनु०] [स्त्री० घुन्नी] (व्यक्ति) जो अपने क्रोध, दुःख, द्वेष आदि के भाव मन में उपयुक्त अवसर पर किसी से बदला लेने के लिए छिपाये रखता हो।

घुप—वि० [सं० कूप या अनु०] गहरा (अँधेरा)। निविड़। (अंधकार)।

घुमंड़ना†—अ०=घुमड़ना।

घुमंतू—वि० [हिं० घूमना] जो वराबर इधर-उधर यों ही घूमता-फिरता रहता हो।

घुमक†—स्त्री०=घुमड़।

घुमक्कड़—वि० [हिं० घूमना+अक्कड़ (प्रत्य०)] बहुत अधिक घूमनेवाला (व्यक्ति)।

घुमची†—स्त्री०=घुंघची।

घुमटा—पुं० [हिं० घूमना+टा (प्रत्य०)] सिर में चक्कर आने का एक

रोग। इसमें प्रायः मनुष्य का सिर चकराने लगता है, उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है और वह गिर पड़ता है।

क्रि० प्र०—आना।

घुमड़—स्त्री० [हिं० घुमड़ना] वरसनेवाले बादलों का घेर-घार।

घुमड़ना—अ० [हिं० घूम+अटना] १. बादलों का उमड़-उमड़ तथा घूम-घूमकर इकट्ठा होना। गहरे बादल छाना। २. इकट्ठा होना। छा जाना।

घुमड़ी—स्त्री० [हिं० घुमड़ना=घूमना] १. किसी केन्द्र पर स्थिर रहकर चारों ओर फिरने की क्रिया। २. किसी केन्द्र के चारों ओर घूमते रहने की क्रिया। ३. उक्त प्रकार से घूमते रहने के कारण सिर में आनेवाला चक्कर। ४. एक प्रकार का रोग जिसमें सिर में चक्कर आते हैं। ५. पानी का भँवर। ६. चौपायों का घुमनी नामक रोग।

घुमना†—वि० [हिं० घुमना] [स्त्री० घुमनी] १. बराबर घूमता रहनेवाला। २. घुमक्कड़।

अ०=घूमना।

घुमनी—स्त्री० [हिं० घुमना] १. पशुओं का एक रोग जिसमें उनके पेट में पीड़ा होती है और वे चक्कर खाकर गिर जाते हैं।

घुमरना—अ० [हिं० घूमना] १. चक्कर खाना। घूमना। २. भ्रम में पड़ना।

अ० दे० ‘घुमड़ना’।

घुमराना—अ० =घुमड़ना।

घुमरी†—स्त्री० =घुमड़ी।

घुमाँ—पुं० [हिं० घूमना] जमीन की एक नाप जो आठ बीघों के बराबर होती है। (पंजाब)

घुमाऊ—वि० [हिं० घुमाना] घुमानेवाला।

*पुं० दे० ‘घुमाव’ ४.।

घुमाना—सं० [हिं० घूमना का स०] १. किसी को घूमने में प्रवृत्त करना। जैसे—आँखें घुमाना। २. चक्कर या फेरा देना। जैसे—घड़ी की सूई घुमाना। ३. कुछ दिखाने या सैर कराने के लिए इधर-उधर ले जाना। जैसे—किसी को शहर घुमाना। ४. एक ओर से हटाकर दूसरी ओर ध्यान प्रवृत्त करना या लगाना। ५. एक दिशा से दूसरी दिशा में ले जाना। ६. वापस करना। लौटाना।

†अ० [हिं० घूम=नींद] शयन करना। सोना।

घुमारा—वि० [हिं० घूमना] १. घूमनेवाला। २. घूमता हुआ।

वि० [हिं० घूम= नींद] १. जिसे नींद आ रही हो। उनींदा। २. मतवाला। मत्त।

घुमाव—पुं० [हिं० घुमाना] १. घूमने या घुमाने की क्रिया या भाव। २. वह स्थान या स्थिति जहाँ से कुछ घूमकर किसी ओर जाता हो। जैसे-रास्ते या सड़क का घुमाव। ३. किसी बात, वाक्य आदि में होनेवाला पेचीलापन या जटिलता। चक्कर। फेर।

पद—घुमाव-फिराव। (देखें)

४. उतनी भूमि जितनी दिन भर में एक हल से जोती-जाती हो। ५. दे० ‘घुमाँ’।

घुमावदार—वि० [हिं० घुमाव+दार] १. जिसमें कुछ घुमाव हो। २. चक्करदार।

घुमाव-फिराव—पुं० [हिं० घूमना-फिरना] १. घूमने या फिरने की क्रिया या भाव। २. बात-चीत या व्यवहार में होनेवाला ऐसा पेचीलापन या जटिलता जिसमें कुछ कपट या छल भी हो। जैसे-हमें घुमाव-फिराव की बातें अच्छी नहीं लगतीं।

घुम्मरना—अ० १. = घुमड़ना। २.=घूमना।

घुरकना†—अ० = घुड़कना।

घुरका—पुं० [हिं० घुरघुराना] चौपायों का एक रोग।

घुरकी†—स्त्री० = घुड़की।

घुरघुर—पु० [अनु०] १. बिल्ली, सूअर आदि के गले से तथा साँस लेते समय कफ अटकने के कारण मनुष्य के गले से निकलनेवाला शब्द। २. किसी के कान के पास मुँह ले जाकर बहुत ही धीमे स्वर में कही जानेवाली बात।

घुरघुरा†—पुं० [अनु०] गले में होनेवाला कंठमाला नामक रोग।

घुरघुराना—अ० [अनु० घुर घुर] गले से घुर-घुर शब्द निकलना।

स० गले से घुर-घुर शब्द उत्पन्न करना।

घुरघुराहट—स्त्री० [हिं० घुरघुराना] घुर-घुर शब्द निकालने की क्रिया या भाव।

घुरचा†—पुं० [देश०] एक प्रकार की चरखी जिससे कपास ओटी जाती है।

घुरण—पुं० [सं०√घुर (शब्द)+ल्युट्-अन] घुर-घुर शब्द करने की क्रिया या भाव।

घुरना*—अ० [अनु०] घुर-घुर शब्द होना।

स० १. घुर-घुर शब्द करना। उदा०—घुरत परेवा गीवँ उचावा।—जायसी। २. बजना या बोलना। जैसे—डंका या मृदंग घुरना। उदा० घुरै नीसाण सोइ घनघोर।—प्रिथीराज।

†अ० =घुलना। उदा०—तब पिय उर घुरि सोयो चहै।—नंददास।

अ० [सं० घूर्णन] १. घूमना। २. (आँख) झपकना। ३. (झंडे आदि का) फहरना। उदा०—घर घर घुरत निसान कहि न जात कछु आज की।—नंददास।

घुरबिनिया—स्त्री० [हिं० घूरा+बीनना] कूड़े-करकट के ढेर पर से अनाज के दाने आदि चुन या बीनकर एकत्र करने की क्रिया या भाव।

पुं० वह जो उक्त प्रकार से दाने आदि एकत्र करके उन्हीं से अपना निर्वाह करता हो (अर्थात् परम दरिद्र)।

घुरमना* अ० = घूमना। उदा०—घुरमि घुरमि घायल महि परहीं।—तुलसी।

घुरला*—स्त्री० [हिं० घुरना= घूमना] लोगों के आने-जाने से बना हुआ मार्ग। कच्चा छोटा रास्ता। पगडंडी। उदा०—नेह नेह की बहल में घुरला जानत नाह।—रसनिधि।

घुरहरी†—स्त्री० दे० ‘खुरहरी’।

घुराना—अ० [हिं० घुरना] चारों ओर से आकर छा या भर जाना।

स० शब्द उत्पन्न करना। बजाना।

†स० १. = घुलाना। २. = घुमाना। ३. =फहराना (झंडा आदि)।

घुल्मना†—अ० =१. घुमड़ना। २.=घूमना।

घुल्हरी†—स्त्री० [हिं० खुर + हरं (प्रत्य०)] १. जंगल में पशुओं के

चलने से बना हुआ तंग रास्ते का-सा निशान या पगडंडी। २. बहुत ही छोटा और पतला या सँकरा रास्ता। पगडंडी।

घुर्मित—वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ।

घुर्राना†—अ० = गुर्राना।

घुर्रूवा—पुं० [देश०] जानवरों का एक संक्रामक रोग।

घुलंच—पुं० [सं०√घुर्+क्विप्, घुर्√अञ्च् (गति)+अण्, उप० स०] गवेघु नामक कदन्न।

घुलना—अ० [सं० घूर्धन, प्रा० घुलन] १. किसी कड़ी या ठोस चीज का तरल पदार्थ में गलकर अच्छी तरह मिल जाना। जल के संयोग से संयोजक अणुओं का अलग-अलग होना। जैसे—दूध या पानी में चीनी घुलना।२. आँच आदि की सहायता से गलकर, नरम होकर या मुलायम पड़कर तरल पदार्थ में मिल जाना। जैसे—दाल जरा और घुलने दो। ३. किसी में या किसी के साथ बहुत अच्छी तरह या खूब मिल जाना। जैसे—किसी के साथ आँखें घुलना। उदा०—तब पिय उर घुरि सोयो यहँ।—नंददास।

मुहा०—(किसी से) घुल घुलकर बातें करना=प्रेमपूर्वक खूब मिलकर बातें करना। बहुत घनिष्ठता से बातें करना। **घुल-मिलकर**=बहुत अच्छी तरह मिलकर। बहुत मेल-जोल से।

४. पकने आदि के कारण ठोस न रहकर मुलायम पड़ जाना। जैसे—ये आम खूब घुल गये हैं।५. बुढ़ापे, रोग, शोक आदि के कारण शारीरिक दृष्टि से बहुत ही क्षीण या दुर्बल हो जाना।

मुहा०—घुल-घुलकर मरना=बहुत दिनों तक मानसिक या शारीरिक कष्ट भोगते हुए बहुत क्षीण तथा दुर्बल होकर मरना।

६. जुए में दाँव का किसी कारण व्यर्थ हो जाना। जैसे—कौड़ी पर कौड़ी टिकने से दाँव घुल गया। ७. समय का व्यर्थ हाथ से निकलना या बीतना। जैसे—कचहरी में जरा-जरा सी बातों में बरसों घुल जाते हैं।

घुलवाना—स० [हि० घुलाना का प्रे०] १. घोलने का काम किसी दूसरे से कराना। २. आँख में काजल या सुरमा लगवाना।

घुलाना—स० [हि० घुलना] १. किसी तरल पदार्थ में कोई कड़ी या ठोस चीज छोड़कर उसे इस प्रकार हिलाना, मिलाना या उबालना कि वह उसमें घुल जाय। २. मुँह में रखी हुई चीज का रस चूसते हुए उसे खा जाना। ३. गरमी या ताप पहुँचाकर नरम करना। ४. शरीर क्षीण या दुर्बल करना। ५. यंत्रणा देना। ६. अपनी ओर प्रवृत्त करने का प्रयत्न करना। ७. (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ८. (काल या समय) बिताना। गुजारना।

घुलावट—स्त्री० [हि० घुलना] १. घुलने या घुलाने की क्रिया या भाव। २. पारस्परिक स्नेहपूर्ण व्यवहार की घनिष्ठता।

घुवा—पुं० = घूआ।

घुसड़ना†—अ० = घुसना।

घुसना—अ० [सं० गुघ, पं० घुसणा, गु० घुसवूं, ने० घुस्नु, मरा० घुसणें] १ बलपूर्वक और सामने के निषेधक अथवा बाधक तत्त्वों को इधर-उधर हटाते हुए अन्दर जाना, प्रवेश करना या आगे बढ़ना। जैसे—(क) दरवाजा तोड़कर (अथवा और किसी प्रकार) किसी के मकान के अन्दर घुसना। (ख) तमाशा देखने के लिए धक्कम-धक्का करते हुए भीड़ में घुसना। (ग) पेट में तलवार या तीर घुसना।

क्रि० प्र०—आना।—जाना—पड़ना। —बैठना।

पद—घुस-पैठ। (देखें)

मुहा०—(किसी जगह) घुसकर बैठना=(क) आस-पास के लोगों को दबाते या हटाते हुए कहीं जाकर बैठना। (ख) लोगों की दृष्टि से बचने के लिए आड़ में छिपकर बैठना। जैसे—सिपाहियों का नाम सुनते ही वह घर में घुसकर बैठ गया।

२. अनावश्यक अथवा अनुचित रूप से परंतु बलपूर्वक या हठात् किसी कार्य या चर्चा में सम्मिलित होना। जबरदस्ती किसी के बीच में पड़ना। जैसे—दूसरों की बातों में जबरदस्ती घुसने की आदत अच्छी नहीं। ३. किसी बात या विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए मनोनिवेशपूर्वक उसके अंगों-उपांगों आदि का अध्ययन या विचार करके उसकी तह तक पहुँचना। जैसे—किसी विषय में अच्छी तरह घुसे बिना कभी उसका पूरा ज्ञान नहीं होता। ४. किसी चीज या बात का इस प्रकार पूरी तरह से दबना या दूर होना कि सहसा वह दिखाई न दे। जैसे—मुकदमे की पहली पेशी में ही उनकी सारी अकड़ और शेखी घुस गई।

घुस-पैठ—स्त्री० [हि० घुसना+पैठना] १. घुसने और पैठने की क्रिया या भाव। २. गति। पहुँच। प्रवेश। ३. प्रयत्न करके या बलपूर्वक कहीं पहुँच कर अपने लिए स्थान बनाने की क्रिया या भाव।

घुसवाना—स० [हि० घुसाना का प्रे०] घुसने या घुसाने का काम किसी से कराना।

घुसाना—स० [हि० घुसना] १. हि० 'घुसना' का स० रूप। किसी को घुसने में प्रवृत्त करना। २. कोई चीज गड़ाना, चुभाना या धँसाना। ३. किसी अवकाश या स्थान में किसी वस्तु या व्यक्ति को ढकेलना, पहुँचाना या प्रविष्ट करना।

घुसेड़ना—स० = घुसाना।

घूंगची†—स्त्री० = घुँघची।

घूंघट—पुं० [सं० गुंठ] १. स्त्रियों की चुंदरी, धोती, साड़ी आदि का वह भाग जिसे वे सिर पर से कुछ नीचे खींचकर अपना मुँह ढँकती हैं।

क्रि० प्र०—उठाना।—उलटना।—करना। —काढ़ना।—खोलना। —डालना। —निकालना।—मारना।

२. वह दीवार जो बाहरी दरवाजे के सामने इसलिए बनी रहती है जिसमें चौक वा आँगन बाहर से दिखाई न पड़े। गुलामगर्दिश। ओट। ३. सैनिक-क्षेत्र में युद्ध के समय सेना का दबकर किसी ओर मुड़ना।

मुहा०—घूंघट खाना= (क) सेना का युद्धस्थल से पीछे की ओर अथवा दाहिने-बाएँ मुड़ना। (ख) किसी चीज का सामने से हटकर इधर-उधर मुड़ना या लौटना।

घूंघर—पुं० [हि० घुमरना] बालों में पड़ा हुआ मरोड़। छल्ला।

घूंघरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

घूंघरि†—स्त्री० [हि० घुमड़ना] ? बादलों का समूह। उदा०—घूंघरि दिसनि देखि मय बाढ़ी।—नन्ददास। २. दे० 'घूंघर'।

घूंघरी†—स्त्री० [हि० घूंघरू] छोटा घुंघरू। नूपुर।

घूंघरू+—पुं० = घुंघरू।

घूंचा—पुं० =घूंसा।

घूंट—पुं० [अनु० घुट घुट=गले के नीचे पानी आदि उतरने का शब्द] १. तरल

पदार्थ की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुँह में भर कर गले के नीचे उतार दी जाती है।

मुहा०—घूँट लेना=घूँट-घूँट करके या थोड़ा-थोड़ा करके पीना।

पुं० [सं० घूँट] एक प्रकार का पहाड़ी टट्टू। गुंठा। गूँठ।

२. एक प्रकार का झाड़ या छोटा पेड़।

घूँटना—स० [हिं० घूँट] पानी या और कोई तरल पदार्थ घूँट-घूँट या थोड़ा थोड़ा करके गले के नीचे उतारना।

घूँटा†—पुं० [सं० गुंफ] पैर के बीच का जोड़। घुटना।

घूँटी—स्त्री० दे० 'घुट्टी'।

घूँबना—अ० =घूमना। उदा०—महिं घूँबिअ पाइअ नहिं वारू।—जायसी।

घूँस—स्त्री० = घूस (रिश्वत)।

पुं० = घूस (जंतु)।

घूँसा—पुं० [हिं० घिस्सा] १. बँधी हुई मुट्ठी का वह रूप जो किसी को मारने के लिए बनाकर उठाया या ताना जाता है। मुक्का। २.उक्त प्रकार से किया जानेवाला प्रहार।

घूँसेबाज—पुं० [हिं० घूँसा+फा० बाज] वह खिलाड़ी जो घूँसेवाजी के खेल में भाग लेता हो।

घूँसेबाजी—स्त्री० [हि० घूँसा+फा० बाजी] १. आपस में घूँसों या मुक्कों के प्रहार से होनेवाली लड़ाई। २. एक खेल जिसमें दो खिलाड़ी एक दूसरे को घूँसे मार कर परास्त करते हैं।

घूआ—पुं० [देश०] १. काँस, मूँज वा सरकंडे आदि का रूई की तरह का फूल जो लंबे सींकों में लगता है। २. कीचड़, मिट्टी आदि में होनेवाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा। रेवाँ। ३. दरवाजे के पास का वह छेद जिसमें किवाड़े की चूल धँसी रहती है।

घूक—पुं० [सं० घू √कै (शब्द)+क] [स्त्री० घूकी] उल्लू पक्षी। घुग्घू।

घूक-नादिनी—स्त्री० [घूक √ नद् (शब्द) + णिनि—ङीप्, उप० स०] गंगा।

घूका—पुं० [हिं० घूआ] १. बाँस। बेंत। २. मूँज आदि की वनी हुई सँकरे मुँहवाली डलिया।

घूगस† —पुं० [देश०] ऊँचा बुर्ज। गरगज।

घूघ—स्त्री० [हिं० घोघी] धातु की वह टोपी जो लड़ाई में सिर को चोट से वचाने के लिए पहनी जाती है।

पुं० [सं० घूक] उल्लू।

घूघरा—पुं० =घुँघुरू।

घूघस—पुं० [?] किले के फाटक से अन्दर जाने के लिए बना हुआ चक्करदार रास्ता। (राज०)

घूघी†—स्त्री० [देश०] १. थैली। २. जेव। खीसा। ३. पंडुक या फाख्ता नाम का जल-पक्षी।

घूघू—पुं० =घुग्घू।

घूटना†—स० १ =घूँटना। २. =घोटना।

घूठन†—पुं० =घुटना।

घूड़ा† —पुं० =घूर।

घूनस†—स्त्री०[?] पाग (ब्याह की पगड़ी) में लटकनेवाला झब्बा या झालर।

घूना †—वि० =घुन्ना।

घूम—स्त्री० [हिं० घूमना] १. घूमने की क्रिया, भाव या स्थिति। घुमाव। २. चक्कर। घेरा। ३. मोड़।

स्त्री० [वँ० मिलाओ हिं० ऊँघ] १. निद्रा। नींद। (पूरब) उदा०—न इस मोह की घूम से घिरो।—मैथिलीशरण। २. नशा।

घूम-घुमारा† —वि० [हिं० घूमना] १. घूमता या चक्कर खाता हुआ। २. अलसता, मद आदि से भरा हुआ। उदा०—कृष्ण रसामृत-पान अलस कछु घूम-घुमारे।—नंददास।

घूमना—अ० [सं० घूर्णन, प्रा० घुम्मइ] १. किसी केंद्र पर स्थित वस्तु का चारों ओर चक्कर लगाना। जैसे—चक्की के पाट, घड़ी की सूई अथवा रथ के पहियों का घूमना। २. किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु को केंद्र बनाकर उसके चारों ओर चक्कर लगाना। जैसे—चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर और पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। ३. किसी वस्तु का अपने अक्ष या धुरी पर चारों ओर फिरना। जैसे—लट्टू का घूमना। ४. किसी ओर चलते-चलते दाहिने या बाएँ बढ़ना। जैसे—यह रास्ता आगे चलकर दाहिनी ओर घूम गया है। ५. चलते-चलते पीछे की ओर फिरना। लौटना। जैसे—मैंने घूमकर देखा तो वह भी मेरे पीछे-पीछे आ रहा था।

मुहा०—(किसी को) घूम घुमाना=टाल-मटोल या हीला-हवाला करते हुए किसी को किसी काम के लिए बार-बार दौड़ाना।

६. मन वहलाने या सैर करने के लिए इधर-उधर जाना। जैसे—रोज सवेरे वह घूमने निकलता है। ७. अनेक देशों या स्थानों में सैर-सपाटे के लिए अथवा किसी विशिष्ट उद्देश्य से जाना। जैसे—(क) वे अमेरिका या यूरोप घूम आये हैं। (ख) गाँव-गाँव घूमकर गाँधी ने सोये भारतीयों को जगाया था। ८. अचानक एक ओर से किसी दूसरी ओर प्रवृत होना।

मुहा०—(किसी की ओर) घूम पड़ना=आवेश या क्रोध में आकर किसी दूसरे से वातें करने लगना। जैसे—उनसे वातें करते-करते वे अचानक मुझ पर घूम पड़े।

† ९. किसी चीज का घेर।

पद—घूम-घुमारा। (देखें)

अ० [वँ० घूम =नींद] १. निद्रा में होना। सोना। २. उन्मत्त या मतवाला होना। ३. तन्मय या लीन होना। उदा०—बिहँसि बुलाय विलोकि उत्त प्रौढ़ तिया रस घूमि।—बिहारी।

घूमनी—स्त्री० =घुमरी (चक्कर)।

घूमा—पुं० [देश०] एक प्रकार का साग जिसमें सफेद फूल लगते हैं।

घूर—पुं० [सं० कूट] १. कूड़े-करकट का ढेर। २. वह स्थान जहाँ पर उक्त ढेर लगा हो। ३. पोले गहने को भारी करने के लिए उसके अन्दर भरा हुआ बालू, सुहागा आदि। (सुनार)

घूरघार—स्त्री०=घूरा-घारी।

घूरना—अ० [सं० घूर्णन] इस प्रकार आँखें निकालकर क्रोधपूर्वक किसी की ओर देखना जिससे वह कोई कार्य करने या न करने को विवश होता हो। जैसे—पिता जी के घूरते ही लड़के घर चले आये।

घूरा-घारी—स्त्री० [हिं० घूरना+अनु०] १. घूरने की क्रिया या भाव। २. एक दूसरे की ओर देखने अथवा नजर मिलाने का कार्य।

घूर्ण—पुं० [सं०√घूर्ण् (चक्कर काटना)+घञ्] १. इधर-उधर घूमना। २. किसी वस्तु के चारों ओर घूमना।

वि० घूमता हुआ।

घूर्णन—पुं० [सं० √घूर्ण् + ल्युट्—अन] घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव।

घूर्णिका—स्त्री० [सं० √घूर्ण् + ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] एक प्रकार का वैज्ञानिक यंत्र जिसकी सहायता से घूमने या चक्कर लगानेवाले पदार्थों या पिंडों के बल, वेग आदि मापे जाते हैं। (जाइरोस्टेट)

घूर्णित—वि० [सं० √घूर्ण्+ क्त] घूमा, घूमता या घुमाया हुआ।

घूर्णी (र्णिन्)—वि० [सं० घूर्ण + इनि] घूमनेवाला।

घूर्ण्य—वि० [सं० √घूर्ण् + ण्यत्] १. जो घूम सकता या घुमाया जा सकता हो। २. घूमता हुआ।

घूस—स्त्री० [सं० गुहाशय = चूहा] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु जो प्रायः पृथ्वी के अन्दर बिल खोदकर रहता है। घुंइस।

पुं० [सं० गुह्याशय या हिं० घुसना] १. किसी अधिकारी को कोई अनुचित, अवैध या कर्त्तव्य-विरुद्ध कार्य करने के लिए दिया जानेवाला धन। २. अपना काम जल्दी कराने के लिए किसी अधिकारी को दिया जानेवाला धन जो अवैध या अविधिक होता है। रिश्वत।

घूस-खोर—वि० [हिं० घूस + फा० खोर] [भाव० घूसखोरी] घूस या रिश्वत लेनेवाला रिश्वती।

घृणा—स्त्री० [सं० √घृ (सींचना) + नक्—टाप्] [वि० घृणित] १. अनुचित या मर्यादा के विरुद्ध कार्य करनेवाले व्यक्ति अथवा उसके किये हुए कार्य या कृति के प्रति होनेवाली घोर स्वाभाविक अरुचि। जैसे—अश्लील साहित्य से मुझे घृणा है। २. दया।

घृणित—वि० [सं० √घृणा +इतच्] देखने-सुनने से जिसके प्रति मन में घृणा होती या हो सकती हो। घृणा के योग्य। घृण्य।

घृणी (णिन्)—वि० [सं० घृणा +इनि] १. घृणा करनेवाला। २. दयालु। ३. दीप्त।

घृण्य—वि० [सं० घृणा+यत्] =घृणित।

घृत—पुं० [सं० √घृ + क्त] १. मक्खन को तपाकर तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध खाद्य द्रव्य। घी। २. पानी।

वि० तर किया या सींचा हुआ।

घृत-कुमारी—स्त्री० [तृ० त०] घी-कुँवार। ग्वार-पाठा।

घृत-धारा—स्त्री० [ष० त०] १. घी की धारा। २. [घृत √धृ (धारण करना)+णिच् + अण्, उप० स०, टाप्] पुराणानुसार कुशद्वीप की एक नदी।

घृत-पूर—पुं० [घृत √पूर् (पूर्ण करना) + अप्, उप० स०] घेवर नाम की मिठाई।

घृत-प्रमेह—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र घी के समान चिकना और गाढ़ा होता है।

घृताची—स्त्री० [सं० घृत √अंच् (गति) +क्विप्, ङीप्] १. स्वर्ग की एक अप्सरा। २. यज्ञ में आहुति देने का स्रुवा।

घृतान्न—पुं० [घृत-अन्न, मध्य० स०] १. घी में पकाया या तला हुआ अन्न या खाद्य पदार्थ। २. [ब० स०] अग्नि।

घृतार्चि (स्)—पुं० [घृत-अर्चिस्, ब० स०] अग्नि।

घृती (तिन्)—वि० [सं० घृत+इनि] जिसमें घी पड़ा हो।

घृतोद—पुं० [घृत-उदक, ब० स०, उद आदेश] घी का समुद्र। (पुराण)

घृष्ट—वि० [सं० √घृष् (घिसना) +क्त] घिसा या रगड़ा हुआ।

घृष्टि—स्त्री० [स० √घृष् +क्तिन्] १. घिसने या रगड़ने की क्रिया या भाव। २. संघर्ष। ३. स्पर्धा।

पुं० [√घृष्+ क्तिच्] [स्त्री० घृष्टी] सूअर।

घेंघ—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का भोजन जो भुने हुए चने को चावलों में मिलाकर पकाने से बनता है।

†पुं०=घेघा (रोग)।

घेंघा†—पुं०=घेघा।

घेंट†—पुं० [हिं० घाँटी] गला। गरदन।

घेंटा—पुं० [अनु० घें-घें] [स्त्री० घेंटी] सूअर का बच्चा।

घेंटी†—स्त्री० [?] चने की फली जिसके अन्दर बीज रूप से चना होता है।

घेंटुला—पुं० [हिं घेंटा] [स्त्री० घेंटुली या घेंटुलिया] सूअर का छोटा बच्चा।

घेंड़ी—स्त्री० [हिं० घी+हंडी] मिट्टी की वह हाँड़ी जिसमें घी रखा जाता है।

घेघा—पुं० [देश०] १. गले की नली जिसमें से होकर खाद्य पदार्थ पेट में पहुँचता है। २. गला। ३. एक प्रकार का रोग जिसमें गले के चारों ओर बहुत अधिक सूजन हो जाती है और मांस बढ़ जाता है।

घेतला—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० घेंतली] एक प्रकार का भद्दा जूता जिसका पंजा चपटा और मुड़ा हुआ होता है। (महाराष्ट्र)

घेपना†—स० [देश०] १. हाथ या पैर से रौंदकर मिलाना। एक में लथ-पथ करना। २. खुरचना। ३. स्त्री के साथ प्रसंग या संभोग करना। (बाजारू)

घेर—पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने की क्रिया या भाव। जैसे—घेर-घार। २. चारों ओर से घेरनेवाली चीज का फैलाव या विस्तार। घेरा। मंडल। ३. परिधि। घेरा।

घेरघार—स्त्री० [हिं० घेरना] १. चारों ओर से घेरने की क्रिया या भाव। जैसे—बादलों की घेर-घार। २. अपना काम निकालने के लिए किसी को प्रायः घेरते रहना और उससे अनुनय-विनय करते रहना। ३. घेरा। फैलाव।

घेरदार—वि० [हिं० घेर+फा० दार] जिसका घेरा या फैलाव अधिक हो। जैसे—घेरदार पायजामा।

घेरना—स० [हिं० घिर्, बं० घेरा, उ० घेरिबा, गु० घेरवूं, मरा० घेरणें] १. किसी वस्तु के चारों ओर पंक्ति के रूप में कोई चीज या कुछ चीजें खड़ी करना। जैसे—दीवार आदि बनाकर अथवा पेड़-पौधे उगाकर कोई स्थान घेरना। २. किसी वस्तु, बिंदु आदि के चारों ओर घेरा या वृत्त बनाना। जैसे—लाल स्याही से घेरे हुए शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। ३. रेखाओं आदि की सहायता से किसी क्षेत्र की सीमा निर्धारित करना। ४. आरक्षी (पुलिस) अथवा सेना का इस प्रकार किसी मकान या स्थान के चारों ओर खड़े हो जाना कि उस मकान या स्थान से कोई बाहर न निकलने या भागने पावे। छेंकना। ५. चारों ओर बिखरी हुई वस्तुओं अथवा चरते हुए पशुओं को एक स्थान पर इकट्ठा करना। ६. किसी वस्तु का चारों ओर से आकर किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार छा जाना कि वह ढक जाय। जैसे—कई दिनों से बादलों ने आकाश घेर रखा है। ७. चारों ओर से बंधन या रुकावट में लाना। जैसे—कष्टों या रोगों

का आकर घेरना। ८. कहीं बैठ या रुककर कोई स्थान इस प्रकार भरना कि औरों के लिए अवकाश या जगह न रह जाय। जैसे—आगे की सारी कुरसियाँ तो लड़कों ने घेर रखी हैं। ९. किसी को चारों ओर से बहुत दबाव डालकर, कोई काम करने के लिए विवश करना। जैसे—वे मुझे भी घेरकर वहाँ ले गये। १०. बहुत अनुनय, आग्रह या खुशामद करना।

घेरनी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का पक्षी।

घेरा—पुं० [हिं० घेरना] १. किसी वस्तु, स्थान आदि को चारों ओर से घेरने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु या वस्तुओं का वह मंडलाकार रूप या समूह जो किसी दूसरी वस्तु को चारों ओर से घेरे हुए हो। जैसे—दीवार या बाँसों का घेरा। ३. परिधि तथा परिधि का मान। जैसे—गोपियों के घेरे में कृष्ण का नृत्य। ४. दीवार, बाढ़ आदि से घिरा हुआ स्थान। अहाता। (एन्क्लोज़र) ५. आरक्षी (पुलिस), सेना आदि के इस प्रकार किसी स्थान को घेरकर खड़े होने की स्थिति जिसमें उस स्थान के निवासी उस स्थान से बाहर न निकल सकें अथवा बाहर से उनके पास कोई सहायता न पहुँच सके। जैसे—किले के चारों ओर मराठा सैनिकों का घेरा पड़ा था। ६. पहनने के कपड़ों में, शरीर की चौड़ाई के बल का कुल विस्तार। जैसे—कमीज या कुरते का घेरा। ७. किसी घन पदार्थ की चौड़ाई और मोटाई का कुल विस्तार। जैसे—इस पेड़ का घेरा चार हाथ है।

घेराई—स्त्री०=घिराई।

घेरा-बंदी—स्त्री०[हिं० घेरा+फा० बंदी] १. किसी के चारों ओर घेरा डालने की क्रिया या भाव। २. आधुनिक राजनीति में, वह स्थिति जिसमें कुछ राज्य मिलकर किसी दूसरे देश अथवा राज्य के चारों ओर इस उद्देश्य से घेरा बनाते हैं कि वह देश उभरने न पावे अथवा अपना प्रभाव और शक्ति बढ़ा न सके। (एन्सर्किलमेंट)

घेराव—पुं०=घिराव।

घेलौना†—पुं०=घाल (घलुआ)।

घेवर—पुं०[सं० घृतपूर, घृतवर; प्रा० घेऊर, घेवर; गु० ने० घेवर; मरा० घीवर] मैदे की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई जिसमें घी बहुत अधिक पड़ता या लगता है।

घेवरना—स०[?] पोतना। लगाना। उदा०—पुरुखन्ह खरग संभारे चंदन घेवरे देह।—जायसी।

घैंटा—पुं०=घेंटुला।

घैंसाहर—स्त्री०[?] फौज। सेना। (डिं०)

घैया—स्त्री० [हिं० घी या सं० घात] १. गौ के थन से निकली हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पीई जाय। २. ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। ३. वृक्ष के तनों आदि में रस या स्राव निकालने के लिए उस पर लगाया हुआ क्षत। छेव।

†स्त्री० =घा (ओर)।

घैर—पुं०[देश०] १. निन्दामय चर्चा। बदनामी। उदा०—घैर तें डरपि सखी घर लाई।—नंददास। २. चुगली। शिकायत। ३. चर्चा।

घैरनी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का कीड़ा जो दीवारों पर मिट्टी से घर बनाता है।

घैरा, घैरु*—पुं०=घैर।

घैला†—पुं० [सं० घट] [स्त्री० अल्पा० घैली] मिट्टी का घड़ा।

घैहल†—वि०=घायल।

घैहा†—वि० [हिं० घाव] घायल।

घोंघ—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

घोंघा—पुं० [सं० कम्बुक] [स्त्री० घोंघी] १. शंख की तरह का एक कीड़ा जो प्रायः नदियों, तालाबों आदि में पाया जाता है। उदा०—भरे समुन्दर घोंघा हाथ।—कहा०। २. अनाजों में छिलके का वह कोश जिसके अन्दर दाना रहता है। ३. निरर्थक या व्यर्थ की वस्तु या व्यक्ति।

वि० बेवकूफ। मूर्ख।

पद—घोंघा बसंत=परम मूर्ख।

घोंघिल—पुं०[?] लगलग की जाति का एक पक्षी।

घोंघी—स्त्री०=घुग्घी।

घोंचा—पुं०[हिं० गुच्छा] [स्त्री० घोंची] १. फलों, फूलों आदि का गुच्छा। घौद। स्तबक। २. ऐसा बैल जिसके सींग मुड़कर कानों तक जा पहुँचे हों।

घोंची—स्त्री०[हिं० घोंचा] वह गाय जिसके सींग कानों की ओर मुड़े हों।

घोंचुआ†—पुं०=घोंसला।

घोंचू†—पुं०[?] मूर्ख। बेवकूफ।

घोंट—पुं०[देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी खेती के औजार बनाने के काम में आती है।

पुं० [हिं० घोंटना] १. घोटने की क्रिया या भाव। २. दे० 'घूंट'।

घोंटना—स० १.=घूंटना। २.=घोटना

घोंटू—वि० [हिं० घोंटना+ऊ (प्रत्य०)] घोंटने अर्थात् चारों ओर से कसकर दबानेवाला। जैसे—गलाघोंटू कानून।

घोंपना—स०[अनु० घप] १. गड़ाना। चुभाना। धँसाना। २. भद्दी और मोटी सिलाई करना। ३. दे० 'घेपना'।

घोंसला—पुं०[सं० कुलाय] १. तिनकों, पत्तों आदि की वह कलापूर्ण रचना जिसमें पक्षी रहते तथा अंडे देते हैं। जैसे—बया का घोंसला। २. वह आला या ताखा जिसमें पक्षी रहते तथा बच्चे देते हों। जैसे—कबूतर का घोंसला। ३. किसी व्यक्ति के रहने का तुच्छ तथा छोटा स्थान।

घोंसुआ†—पुं०=घोंसला।

घोखना—स०[सं० घुष] याद रखने के लिए बार-बार पढ़ना या रटना। स्मरण रखने के लिए बार-बार उच्चारण करना। जैसे—पाठ घोखना।

घोखवाना—स०[हिं० घोखना का प्रे०] किसी को घोखने या रटने में प्रवृत्त करना।

घोगर—पुं० [देश०] खरपत नामक पेड़।

घोघ†—पुं० [देश०] वह जाल, जिसमें बटेर फँसाये जाते हैं।

घोघा—पुं० [देश०] चने आदि की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

घोघी†—स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

घोचिल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

घोट—पुं० [सं० घोटक] १. घोड़ा। २. ऐसा पुरुष, जिसमें घोड़े की-सी शक्ति हो। उदा०—काय दहेसइ पोयणी, काय कुँवारा घोट।—ढोला मारू।

पुं०[हिं० घोटना] घोटने की क्रिया या भाव।

घोटक—पुं० [सं०√घुट्(लौटना)+ण्वुल्–अक] घोड़ा। अश्व।

घोटकारि—पुं० [घोटक-अरि ष०त०] भैंसा।

घोटना—स०[सं० घृष्टः√घृष्, घट्ट्; उ० घोटिबा; पं० घोटणा; सिं० घोटणू; मरा० घोटणें] १. किसी कड़ी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर बार-बार इस प्रकार मलना या रगड़ना कि वह चमकीली या चिकनी हो जाय। जैसे—कपड़ा या दीवार घोटना। २. पत्थर, लकड़ी, लोहे आदि के किसी उपकरण से किसी वस्तु को इस प्रकार बार-बार दबाना या रगड़ना कि वह चूर-चूर या बहुत महीन हो जाय। जैसे—भाँग घोटना, मोती घोटना। ३. किसी का गला इतने जोर से दबाना कि वह मर जाय या उसका दम घुटने अर्थात् रुकने लगे। ४. कुछ सीखने में किसी बात का अभ्यास या मश्क करना। जैसे—पटिया पर अक्षर घोटना। ५. मुँह जबानी याद करना। जैसे—पाठ घोटना। ६. उस्तरे, आदि से बाल साफ करना। जैसे—दाढ़ी घोटना।

पुं०[स्त्री० घोटनी] १. वह वस्तु जिससे कोई चीज घोटी जाय। घोटने का उपकरण। २. लकड़ी का वह कुंदा जो जमीन में कुछ गड़ा रहता है और जिस पर रखकर रँगे कपड़े घोटे जाते हैं। (रँगरेज)

घोटवाना—स०[हिं० घोटना का प्रे०] रगड़वाना। घोटकर चिकना कराना। घोटने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ घोटने में प्रवृत्त करना। (दे० 'घोटना')

घोटा—पुं०[हिं० घोटना] १. घोटने, पीसने अथवा रगड़ने की क्रिया या भाव। २. पत्थर, लकड़ी, लोहे, शीशे आदि का वह उपकरण जिससे कोई चीज घोंटने का काम किया जाय। (बर्निशर) ३. रँगरेजों का एक उपकरण जिसे वह रंगे हुए कपड़ों पर रगड़ते हैं जिससे कपड़े चमकीले हो जाते हैं। ४. घुटा हुआ चमकीला कपड़ा। ५. पाठ आदि मुंह जबानी याद करने के लिए उसे बार-बार पढ़ने तथा कहने का काम। जैसे—पाठशाला में लड़के घोटा लगाते हैं। ६. बाँस आदि का वह चोंगा जिससे घोड़ों, बैलों आदि को ओषधि पिलाई जाती है। ७. नगजड़ियों का एक औजार जिससे वे डाँक को चमकीला करते हैं। ८. छुरे से बाल बनाने या बनवाने की क्रिया या भाव। हजामत।

क्रि० प्र०—फिरवाना।

घोटाई—स्त्री० [हिं० घोटना+आई (प्रत्य०)] १. घोटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (सभी अर्थों में) २. चित्रकला में, पूरी तरह से चित्र अंकित हो जाने पर उसे शीशे पर उलटकर उसकी पीठ पर घोटे से रगड़ना जिससे चित्र में चमक आ जाय।

घोटा-घोबा—पुं०[देश०] रेवंद चीनी की जाति का एक पेड़ जिसमें से एक प्रकार की राल निकलती है जो दवा, रँगाई आदि के काम आती है।

घोटाला—पुं० [मरा०] १. किसी काम या बात में होनेवाली बहुत बड़ी अव्यवस्था या गड़बड़ी। २. किसी कार्यालय, संस्था आदि के किसी अधिकारी, कर्मचारी द्वारा उसके हिसाब-किताब में की हुई गड़बड़ी अथवा उसकी सामग्री, धन आदि का किया हुआ दुरुपयोग।

मुहा०—घोटाले में पड़ना=(क) किसी कार्य या बात का निपटारे या सुलझने की स्थिति में न होना। (ख) सामग्री, धन आदि का ऐसी स्थिति में होना कि उसका वापस मिलना बहुत कठिन हो।

घोटिका, घोटी—स्त्री०[सं० घोटी+कन्–टाप्, ह्रस्व] [√घुट्+अच्–ङीप्] घोड़ी।

घोटू†—वि० [हिं० घोटना] १. घोटनेवाला। २. चारों ओर से कसकर दबानेवाला। जैसे—गल-घोटू नियम।

पुं० १.=घोटा। २.=घुटना।

घोड़†—पुं० दे० 'घुड़'।

घोड़चढ़ा—पुं० दे० 'घुड़-चढ़ा'।

घोड़-दौड़—स्त्री० दे० 'घुड़-दौड़'।

घोड़-मुहाँ—वि० दे० 'घुड़-मुहाँ'।

घोड़रासन—पुं०[हिं० घोड़ा+रासन] रास्ना नामक ओषधि का एक भेद।

घोड़-रोज—पुं०[हिं० घोड़ा+रोज] एक प्रकार की नीलगाय जो घोड़े की तरह बहुत तेज दौड़ती है।

घोड़-सन—पुं०[हिं० घोड़ा+सन] एक प्रकार का सन।

घोड़-सार, घोड़-साल†—स्त्री० दे० 'घुड़-साल'।

घोड़ा—पुं०[सं० घोटक प्रा० घोडा] [स्त्री० घोड़ी] १. तेज दौड़नेवाला एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया जिस पर लोग सवारी करते हैं तथा जो गाड़ियाँ, टाँगे, रथ आदि भी खींचता है।

मुहा०—घोड़ा उठाना=घोड़े को तेज दौड़ाना। **घोड़ा उलाँगना**=किसी नये घोड़े पर पहले-पहल सवारी करना। **घोड़ा कसना**=सवारी के लिए घोड़े पर जीन या चारजामा कसना। **घोड़ा खोलना**=(क) घोड़े का साज या चारजामा उतारना। (ख) घोड़े को बन्धन-मुक्त करना। **घोड़ा छोड़ना**=(क) किसी के पीछे घोड़ा दौड़ाना। (ख) दिग्विजय के लिए अश्वमेध का घोड़ा छोड़ना। (ग) घोड़े का साज या चारजामा उतारकर उसे चरने के लिए खुला छोड़ना। **(किसी के पीछे) घोड़ा डालना**=किसी को पकड़ने के लिए उसके पीछे तेजी से जाना। **घोड़ा निकालना**=(क) घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। (ख) दौड़ आदि में घोड़े को आगे बढ़ा ले जाना। **घोड़े पर चढ़े आना**=अपना काम पूरा कराने के लिए बहुत जल्दी मचाना। **घोड़ा फेरना**=घोड़े को दौड़ाने का अभ्यास कराने के लिए एक वृत्त में घुमाना। कावा देना। **घोड़ा बेचकर सोना**=निश्चिंत या बेफिक्र होकर गहरी नींद सोना।

२. बंदूक, मशीन आदि का वह खटका या पेंच जो घोड़े के मुख के आकार का होता है, और जिसे दबाने से कोई विशिष्ट क्रिया होती है। ३. बच्चों के खेलने का घोड़े की आकृति का खिलौना। ४. शतरंज में घोड़े की आकृति का एक मोहरा जो २$\frac{\text{१}}{\text{२}}$ घर चलता है। ५. घोड़े के मुख के आकार का लकड़ी, पत्थर आदि का बना हुआ टोंटा जो भार सँभालने के लिए छज्जे के नीचे दीवार में लगाया जाता है। ६. कसरत करने के लिए लकड़ी का वह मोटा कुंदा जो चार पायों पर ठहरा होता है और जिसे लड़के दौड़कर लाँघते हैं। ७. दीवार में लगी हुई कपड़े टाँगने की खूंटी।

घोड़ा-करंज—पुं० [सं० घृतकरंज] एक प्रकार का करंज जो चर्मरोग और बवासीर को ठीक करता है तथा विष-नाशक माना जाता है।

घोड़ा-गाड़ी—स्त्री०[हिं० घोड़ा+गाड़ी] वह गाड़ी जिसे घोड़ा या घोड़े खींचते हों।

घोड़ाचोली—स्त्री०[हिं० घोड़ा+चोला=शरीर] वैद्यक की एक प्रसिद्ध ओषधि जो अनेक रोगों को दूर करनेवाली मानी गई है।

घोड़ानस—स्त्री० [हिं० घोड़ा+नस] पिंडली के नीचे और एड़ी के पीछे की मोटी नस। कूँच। पै।

घोड़ानीम—स्त्री०[हिं० घोड़+नीम] बकायन (वृक्ष)।

घोड़ापलास—पुं० [देश०] मालखंभ की एक कसरत जिसमें एक हाथ मालखंभ पर घुमाकर सामने रखते और दूसरे से मोंगरा पकड़ते हैं।

घोड़ा-बच—स्त्री०[हिं० घोड़ा+वच] बच नामक वनस्पति का एक भेद जिसका रंग सफेद और गंध उग्र होती है।

घोड़ा-बाँस—पुं०[हिं० घोड़ा+बाँस] एक प्रकार का वड़ा और मोटा बाँस।

घोड़ा-बेल—स्त्री०[हिं० घोड़ा+वेल] एक वेल जिसकी पत्तियाँ एक बालिश्त भर लंबे सींकों में लगती हैं।

घोड़िया—स्त्री०[हिं० घोड़ी+या (प्रत्य०)] १. घोड़ी। २. छोटी घोड़ी। ३. दीवार में कपड़ा आदि टाँगने के लिए लगाई जानेवाली खूंटी। ४. जुलाहों का एक उपकरण।

घोड़ी—स्त्री०[हिं० घोड़ा] १. घोड़ा जाति के पशु की मादा। २. खेल में वह लड़का जिसकी पीठ पर दूसरे लड़के चढ़ते हैं। ३. विवाह की वह रस्म जिसमें वर घोड़ी पर चढ़कर कन्या के घर जाता है।

मुहा०—घोड़ी चढ़ना=विवाह के दिन वर का घोड़ी पर चढ़कर कन्या के घर जाना।

४. विवाह के दिनों में वर-पक्ष में गाये जानेवाले कुछ विशिष्ट प्रकार के गीत। ५. हाथीदाँत आदि का वह छोटा लंबोतरा टुकड़ा जो तंबूरे, सारंगी, सितार आदि में तूंबे के ऊपर लगा हुआ होता है तथा जिस पर उसके तार टिके या ठहरे रहते हैं। ६. दो जोड़ी बाँसों में रस्सी तानकर बनाया हुआ वह ढाँचा जिस पर धोबी गीले कपड़े सूखने के लिए फैलाते हैं। ७. काठ का एक प्रकार का आयताकार ढाँचा (जिसके नीचे चार पाये लगे रहते हैं) जिसे दौड़ आदि के समय दौड़नेवालों के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने के लिए रखा जाता है। (हर्डल) ८. दे० 'घोड़िया'।

घोण—पुं०[देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का सितार की तरह का बाजा।

घोणा—स्त्री० [सं०√घुण् (घूमना)+अच्–टाप्] १. नाक। (डिं०) २. थूथन।

घोणी (णिन्)—पुं०[सं० घोण+इनि] शूकर।

घोमस—पुं०[?] सामुद्रिक।

घोमसा—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।

घोर—वि० [सं०√हन् (हिंसा)√अच्, घुर् आदेश] [स्त्री० घोरा] १. जो आकार, प्रकार, प्रभाव आदि की दृष्टि से विकराल या भीषण हो। डरावना। २. जो मान, मात्रा आदि के विचार से अति तक पहुँचा हुआ हो। जैसे—घोर तपस्या, घोर निद्रा, घोर वर्षा। ३. (स्वर) जो बहुत ही कठोर और भय-उत्पादक हो। जैसे—घोर नाद। ४. बहुत बड़ा। उदा०—ऊँचे घोर मंदिर के अन्दर रहाती हैं।—भूषण। ५. बहुत ही बुरा। जैसे—घोर पाप। ६. बहुत ही घना या सघन। जैसे—घोर जंगल, घोर बियाबान।

क्रि० वि० बहुत अधिक। अत्यन्त।

†पुं०=घोड़ा।

†पुं०=घोल।

उभ०=घोष।

स्त्री० [फा० गोर] कब्र। उदा०—सज्यौ घोर हुस्सैन सथ करयो प्रवेश अपांन।—चंदवरदाई।

घोरना*—अ०[सं० घोर] जोर का या भारी शब्द करना। गरजना। स०=घोलना।

घोरमारी—स्त्री० दे० 'महामारी'।

घोरसार*—पुं०=घुड़साल।

घोरा—स्त्री० [सं० घोर+टाप्] श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में बुध की गति। (ज्योतिष)

पुं०[हिं० घोड़ा] १. घोड़ा। २. खूंटी। ३. टोड़ा।

घोराघोरी†—क्रि० वि० [सं० घोर से अनु०] खूब जोरों से। उदा०—घोरा-घोरी कीन्ह बटोरा।—कबीर।

स्त्री० बहुत अधिक उग्रता, तीव्रता या विकटता।

घोरारा—पुं०[देश०] एक प्रकार का गन्ना।

घोरिया†—स्त्री०=घोड़िया।

घोरिला†—पुं०[हिं० घोड़ी] १. बच्चों के खेलने का मिट्टी का घोड़ा। २. छोटे आकार का घोड़ा। ३. दीवार में लगी हुई खूंटी। उदा०—फूलन के विविध हार घोरिलन ओरमत उदार।—केशव।

घोरी†—स्त्री० १.=अघोरी। २.=घोड़ी।

घोल—पुं० [सं० √घुड् (व्याघात)+घञ्, ड को ल] १. बिना पानी डाले मथा हुआ दही। २. लस्सी। ३. किसी तरल पदार्थ में कोई दूसरी (तरल अथवा घुलनशील) वस्तु मिलाकर तैयार किया हुआ मिश्रण। (सोल्यूशन)

घोल-दही—पुं० [हिं० घोलना+दही] मट्ठा।

घोलना—स०[सं० घुण्, घोलय; प्रा० घोलेई; बं० घुलान; उ० घोरिबा; पं० घोलणा; सि० घोरणु; गु० घोड़वूं; ने० घोल्नु; मरा० घोलणें] किसी तरल पदार्थ में कोई अन्य घुलनशील वस्तु मिलाना। जैसे—दूध में चीनी घोलना।

मुहा०—(कोई चीज) घोल कर पी जाना=किसी चीज का संपूर्णतया अंत कर देना। जैसे—तुम तो लज्जा घोल कर पी गये। **घोल पीना**=घोल कर पी जाना।

घोला—पुं०[हिं० घोलना] १. किसी वस्तु को जल में घोलकर बनाया हुआ मिश्रण। जैसे—अफीम या भाँग का घोला।

मुहा०—घोले में डालना=(क) रोक या फँसा रखना। उलझन में डाल रखना। (ख) किसी काम में टाल-मटोल करना। **घोले में पड़ना**= झंझट या बखेड़े में पड़ना। ऐसे काम में फँसना जो जल्दी पूरा न हो।

२. वह नाली जिससे खेत सींचने के लिए पानी ले जाते हैं। बरहा।

घोलुआ (लुवा)†—वि० [हिं० घोलना+उवा (प्रत्य०)] घोला हुआ। जो घोल कर बनाया गया हो।

पुं० १. सब्जी, मांस आदि का रसा या शोरबा। २. पीने की तरल ओषधि। ३. पानी में कोई चीज (जैसे—अफीम, भाँग, सीमेंट) घोल कर बनाया हुआ मिश्रण। ४. मिट्टी का पुरवा।

घोष—पुं० [सं०√घुष् (स्तुति आदि)+घञ्] १. अहीरों की बस्ती। आभीर-पल्ली। २. अहीर। ३. गोशाला। ४. छोटी बस्ती। गाँव। ५. बंगालियों की एक जाति। ६. शब्द। नाद। ७. जोर से की हुई पुकार। घोर शब्द। गर्जन। ८. किसी विशेष दल, पक्ष या सिद्धान्त की वह पुकार या पद जो जन-साधारण को अपनी ओर आकृष्ट

करने के लिए बनाया जाता है। नारा। (स्लोगान) ९. व्याकरण में शब्दों के उच्चारण में होनेवाला एक प्रकार का बाह्य प्रयत्न। ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व और ह का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है। १०. ईशान कोण का एक प्राचीन देश। ११. ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक। (संगीत)

घोषक—पुं० [सं०√घुष्+ण्वुल्–अक] घोषणा करनेवाला अधिकारी या कर्मचारी।
वि० घोष करनेवाला।

घोषण—पुं० [सं०√घुष्+ल्युट्–अन] घोषणा करने की क्रिया या भाव।

घोषणा—स्त्री० [सं०√घुष् +णिच्+युच्–अन, टाप्] १. जन-साधारण को सुनाकर जोर से कही जानेवाली बात। २. सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा। (प्रोक्लेमेशन) ३. मुनादी। डुग्गी।

घोषणा-पत्र—पुं० [ष०त०] १. वह पत्र जिस पर कोई राजाज्ञा लिखी हो। २. वह पत्र जिस पर कोई व्यक्ति किसी बात की सत्यता घोषित करता हो। (प्रोक्लेमेशन)

घोषलता—स्त्री० [सं० कर्म० स०] कड़ुई तोरई।

घोषवत्—वि० [सं० घोष+मतुप्, व आदेश] (शब्द) जिसमें घोष प्रयत्न-वाले अक्षर अधिक हों।

घोषवती—स्त्री० [सं० घोषवत्+ङीप्] वीणा।

घोषा—स्त्री० [सं० घोष+टाप्] सौंफ।

घोषाल—पुं० [सं० घोष] बंगाली ब्राह्मणों की एक जाति।

घोसना*—स्त्री०=घोषणा।

स० घोषणा करना।

घोसी—पुं० [सं० घोष] अहीर या ग्वाला (विशेषतः मुसलमान)।

घौंर (ा)—पुं०=घौद।

घौद—पुं० [देश०] फलों का बड़ा गुच्छा। गौद। जैसे—केले का घौद।

घौर (ा) —पुं०=घौद।

घौरी—स्त्री० [फा० घूरी] १. कूड़े-कचरे की ढेरी। २. राशि। ढेर। ३. घोंदा। उदा०—काहूँ गही केश की घौरी।—जायसी।

घौह (ा)—पुं० [हिं० घाव] अमरूद, आम आदि का वह फल जिसमें दाग पड़ गया हो। चुटैल फल।

घ्न —वि० [सं० पूर्वपद के साथ] नष्ट करनेवाला (यौ० शब्दों के अंत में) जैसे—कृमिघ्न, पापघ्न।

घ्यूंट†—पुं०=घूंट।

घ्यूंटना†—स०=घूंटना।

घ्राण—स्त्री० [सं०√घ्रा (सूंघना)+ल्युट्–अन] [वि० घ्रेय] १. सूंघने की इन्द्रिय। नाक। २. सूंघने की शक्ति। ३. सुगंध।

घ्राणन्द्रिय—स्त्री० [घ्राण-इन्द्रिय, ष० त०] सूंघने की इन्द्रिय अर्थात् नाक।

घ्रात—भू० कृ० [सं०√घ्रा+क्त] सूंघा हुआ।

घ्रातव्य—वि० [सं०√घ्रा+तव्यत्] सूंघे जाने के योग्य।

घ्राता (तृ)—वि० [सं०√घ्रा+तृच्] सूंघनेवाला।

घ्राति—स्त्री० [सं०√घ्रा+क्तिन्] सूंघने की क्रिया या भाव।

घ्रेय—वि० [सं०√घ्रा+यत्] सूंघे जाने के योग्य। जो सूंघा जा सके।

ङ

ङ—व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ और क-वर्ग का अन्तिम अक्षर या वर्ण। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है। इसमें संवार, नाद, घोष और अल्पप्राण नामक प्रयत्न लगते हैं।

च

च—हिन्दी वर्ण- माला का छठा व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्शसंघर्षी, अल्पप्राण और अघोष माना गया है।

चंक—वि० [सं० चक्र] १. पूरा-पूरा। २. समूचा। सारा। समस्त।
पुं० उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के किसानों का एक उत्सव जो फसल कटने पर होता है।

चंकवर—पुं० दे० 'चकवँड़'।

चंकुर—पुं० [सं०√चंक् (घूमना)+उरच्] १. रथ। यान। २. पेड़। वृक्ष।

चंक्रमण—पुं० [सं० √क्रम् (गति) +यङ्, द्वित्वादि, + ल्युट्–अन] [वि० चंक्रमित] १. धीरे-धीरे टहलना। घूमना। सैर करना। २. बहुत अधिक या बार-बार घूमना। ३. घूमने, चलने या सैर करने का स्थान। (बौद्ध)

चंग—वि० [सं० √चक् (तृप्त होना)+अच्, नि० सिद्धि] १. दक्ष। कुशल। २. स्वस्थ। तंदुरुस्त। ३. सुन्दर।
स्त्री० [फा०] १. डफ की तरह का एक प्रकार का बाजा। २. बड़ी गुड्डी। पतंगा।

मुहा०—(किसी की) चंग उमहना या चढ़ना=(क) किसी बात की अधिकता या जोर होना। (ख) किसी व्यक्ति का प्रताप या वैभव बढ़ा हुआ होना। (ग) किसी व्यक्ति की इच्छा पूरी करनेवाली बात होना या ऐसी बात का अच्छा अवसर मिलना। उदा०—त्यों पद्माकर दीन्ह मिलाइ कौं चंग चबाइन की उमही है।—पद्माकर। **(किसी को) चंग पर चढ़ाना**=कोई काम करने के लिए किसी को बहुत अधिक बढ़ावा देना। मिजाज या हौसला बढ़ाना।

३. वीन, सितार आदि बाजों का ऊँचा या चढ़ा हुआ स्वर। ४. गंजीफे के आठ रंगों में से एक। ५. तिब्बत में होनेवाला एक प्रकार का जौ। ६. भूटान में बननेवाली एक प्रकार के जौ की शराब।

चंगना—स० [फा० चंग या तंग] १. कसना। खींचना। २. तंग या परेशान करना।

चंगबाई—स्त्री० [हिं० चंग + वाई] एक वात रोग जिसमें हाथ, पैर आदि जकड़ जाते हैं।

चंगला—स्त्री० [सं०?] एक रागिनी जो मेघराग की पुत्रवधू कही गयी है।

चंगा—वि० [सं० प्रा० चंग; बं० चाना; कन्न०चांगु; पं० चंगा; सिं० चंगी; गु० चाँगी; मरा० चांग, चांगलें] [स्त्री० चंगी] १. तंदुरुस्त। नीरोग। स्वस्थ। जैसे—रोगी को चंगा करना। २. अच्छा। उत्तम। बढ़िया या श्रेष्ठ। जैसे—चंगा खेल, चंगा विचार। ३. निर्विकार और पवित्र। शुद्ध। जैसे—मन चंगा तो कठौती में गंगा। (कहा०)

अव्य० [पं०] अच्छा।

चंगु—पुं० [हिं० चौ=चार +अंगु] १. चंगुल। (दे०) २. पकड़ रखने की क्रिया या भाव। पकड़। ३. अधिकार। वश।

चंगुल—पुं०[हिं० चौ=चार+अंगुल वा फा० चंगाल] १. पक्षियों (जैसे—कौआ , चील आदि) तथा पशुओं (जैसे— चीते, शेर आदि) का टेढ़ा पंजा जिससे वे किसी पर प्रहार करते अथवा कोई चीज पकड़ते हैं। २. हाथ की उँगलियों को हथेली की ओर कुछ झुकाने पर बननेवाली एक विशिष्ट मुद्रा जो कोई चीज पकड़ने के समय स्वभावतः बन जाती है। जैसे—एक चंगुल आटा उठा लाओ। ३. किसी व्यक्ति के प्रभाव अथवा वश में होने की वह स्थिति जिसमें से निकलना सहज न हो।

मुहा०—(किसी के) चंगुल में फँसना =पूरी तरह से किसी के अधिकार या वश में पड़ना या होना।

चँगेर—स्त्री०[सं० चंगेरिका] १. बाँस की खमाचियों की बनी हुई छोटी डलिया जिसमें फल, फूल, मिठाइयाँ आदि रखते हैं। २. धातु आदि का बना हुआ उक्त प्रकार का पात्र। ३. पानी भरने की चमड़े की मशक। पखाल। ४. पालने की तरह की वह टोकरी जिसमें बच्चे लेटाकर झुलाये और सुलाये जाते हैं।

चँगेरा—पुं० [स्त्री० चँगेरी] बड़ी चँगेर।

चंगेरिक—पुं० [सं०?] [स्त्री० चंगेरिका ?] बड़ी चँगेर। टोकरा। डला।

चँगेरी†—स्त्री०=चँगेर।

चँगेल—स्त्री० [देश०] खँडहरों आदि में होनेवाली एक प्रकार की घास।

†स्त्री०=चँगेर।

चँगेली—स्त्री०=चँगेर।

चंच—पुं०[सं० √चंच् (हिलना-डुलना)+अच्] पाँच अंगुल की एक नाप।

†पुं०=चंचु।

चंचत्पुट—पुं०[सं०√चंच्+शतृ, चंचत्-पुट, ब०स०] संगीत में, एक ताल जिसमें पहले दो गुरु, तब एक लघु, फिर एक प्लुत मात्रा होती है।

चँचरी—स्त्री०[देश०] १. पत्थर के ऊपर से होकर बहनेवाला पानी। २. एक प्रकार की चिड़िया जो जमीन पर घास के नीचे घोंसला बनाती है। ३. अनाज का वह दाना जो कूटने - पीटने पर भी बाल में लगा रह जाता है। कोसी। भूडरी।

चंचरी—स्त्री०[सं०√चर् (गति)+यङ्—लुक्, द्वित्वादि,+टक्—ङीप्] १. भौंरी। भ्रमरी। २. चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, सगण, दो जगण, भगण और तब फिर रगण होता है। ३. छियालिस मात्राओंवाला एक प्रकार का छंद। ४. चाँचर नामक गीत।

चंचरीक—पुं० [सं० √चर्+ईकन्, नि० सिद्धि] [स्त्री० चंचरीकी] भौंरा। भ्रमर।

चंचरीकावली—स्त्री० [सं० चंचरीक-आवली, ष० त०] १. भौरों की अवली, पंक्ति या समूह। २. तेरह अक्षरों के एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, दो रगण और एक गुरु होता है।

चंचल—वि० [सं० √चंच् (चलना)+अलच्] [स्त्री० चंचला, भाव० चंचलता] १. जो एक स्थान पर खड़ा, स्थित या स्थिर न रहकर बराबर इधर-उधर आता-जाता, चलता-फिरता अथवा हिलता-डुलता रहता हो। जैसे—चंचल दृग, चंचल पवन। २. जिसमें स्थायित्व न हो। ३. (व्यक्ति) जो एक न एक काम, बात आदि में स्वभावत. फँसा या लगा रहता हो। चुलबुला। ४. जो स्थिरचित्त अथवा एकाग्र होकर कोई काम न करता हो। जैसे—चंचल बालक। ५. नटखट। शरारती। ६. जो शांत न हो। उद्विग्न। विकल। जैसे—चंचल हृदय।

पुं० १. वायु। हवा। २. उपद्रवी, कामुक या रसिक व्यक्ति।

चंचलता—स्त्री० [सं० चंचल+तल्—टाप्] १. चंचल होने की अवस्था या भाव। अस्थिरता। २. चपलता। ३. पाजीपन। शरारत। ४. उद्विग्नता।

चंचलताई*—स्त्री०=चंचलता।

चंचला—स्त्री० [सं० चंचल+टाप्] १. लक्ष्मी। २. बिजली। विद्युत्। ३· पिप्पली। ४. चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण, रगण और लघु होता है।

चंचलाई*—स्त्री० = चंचलता।

चंचलास्य—पुं० [चंचल-आस्य, ब० स०] एक प्रकार का गंध-द्रव्य।

चंचलाहट—स्त्री० = चंचलता।

चंचली—स्त्री०[सं० चंचरी, रस्य लः] चंचरी नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम।

चंचा—स्त्री० [सं० चंच+टाप्] १.घास-फूस का पुतला जो खेतों में पक्षियों आदि को डराने के लिए लगाया जाता है। २. बाँस, बेंत आदि की बनी हुई चटाई, टोकरी आदि।

चंचा-पुरुष—पुं० [कर्म० स०] दे० 'चंचा' १. ।

चंचु—पुं० [सं० √चंच्+उन्] १. चेंच नाम का साग। २. रेंड़ का पेड़। ३. हिरन।

स्त्री० १. पक्षियों की चोंच। २. किसी चीज के आगे का नुकीला भाग। (बीक)

चंचुका—स्त्री० [सं० चंचु+कन्—टाप्] चोंच।

चंचु-पत्र—पुं० [ब० स०] चेंच नाम का साग।

चंचु-पुट—स्त्री० [ष० त०] पक्षियों की चोंच।

चंचु-प्रवेश—पुं० [ष० त०] किसी चीज या बात में होनेवाला बहुत थोड़ा ज्ञान, प्रवेश या सम्पर्क।

चंचुभृत्—पुं० [सं०चंचु √भृ (भरना) + क्विप्, उप० स०] चिड़िया। पक्षी।

चंचुमान् (मत)—पुं० [सं० चंचु+मतुप्] पक्षी।

चंचुर—वि० [सं०√चंच्+उरच्] दक्ष। निपुण।

पुं० चेंच नाम का साग।

चंचुल—पुं० [सं० चंचुर, र को ल] हरिवंश के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

चंचू—स्त्री० [सं० चंचु+ऊङ्] चोंच।

चंचू-सूची—पुं० [ब० स०] हंस की जाति का एक पक्षी। बत्तख। कारंडव।

चँचोरना—स० = चिचोड़ना।

चंट—वि० [सं० चंड] चालाकी अथवा धूर्तता से अपना काम निकाल लेनेवाला। बहुत बड़ा चालाक या धूर्त।

चंड—वि० [सं० √चंड् (क्रोध करना) + अच्] [स्त्री० चंडा] १. बहुत अधिक तेज या प्रखर। बहुत उग्र या तीव्र। २. प्रबल। बलवान्। ३. बहुत कठिन। विकट। ४. उग्र, उद्धत या क्रोधी स्वभाववाला।

पुं० १. ताप। गरमी। २. क्रोध। गुस्सा। ३. शिव। ४. कार्तिकेय। ५. यम का एक दूत। ६. एक दैत्य जो दुर्गा के हाथों से मारा गया था। ७. शिव का एक गण। ८. एक भैरव का नाम। ९. विष्णु का एक पारिषद। १०. इमली का पेड़। ११. राम की सेना का एक बंदर। १२. कुबेर के आठ पुत्रों में से एक जो शिवपूजन के लिए सूँघकर फूल लाया था और इसी पर पिता के शाप से जन्मांतर में कंस का भाई हुआ था और कृष्ण के हाथ से मारा गया था।

चंडकर—पुं० [ब० स०] सूर्य।

चंडकौशिक—पुं० [कर्म० स०] १. एक मुनि का नाम। २. राजा हरिश्चंद्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला एक प्रसिद्ध नाटक। ३. वह साँप जिसने महावीर स्वामी के दर्शन करके दूसरों को काटना छोड़ दिया था। (जैन)

चंडता—स्त्री० [सं० चंड+तल्–टाप्] चंड होने की अवस्था या भाव।

चंडत्व—पुं० [सं० चंड+त्व] =चंडता।

चंड-दीधिति—पुं० [ब० स०] सूर्य।

चंड-नायिका—स्त्री० [कर्म० स०] १. दुर्गा। २. तांत्रिकों की आठ नायिकाओं में से एक जो दुर्गा की सखी कही गई है।

चंड-भार्गव—पुं० [कर्म० स०] च्यवन वंशी एक ऋषि जो महाराज जनमेजय के सर्प-यज्ञ के होता हुए थे।

चंड-मुंड—पुं० [द्व० स०] चंड और मुंड नाम के दो राक्षस जो दुर्गा के हाथों मारे गये थे।

चंड-मुंडा—स्त्री० [सं० चंडमुंड+अच्—टाप्] चामुंडा देवी।

चंडमुंडी—स्त्री० [सं० चंडमुंड+अच्—ङीप्] तांत्रिकों की एक देवी।

चंड-रसा—स्त्री० [ब० स०, टाप्]एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक यगण होता है। इसी को चौवंसा, शशिवदना और पादांकुलक भी कहते हैं।

चंड-रुद्रिका—स्त्री० [कर्म० स०] तंत्र में एक प्रकार की सिद्धि जो अष्ट नायिकाओं के पूजन से प्राप्त होती है।

चंडवती—स्त्री० [सं० चंड+मतुप्–म =व–ङीप्] १. दुर्गा। २. तांत्रिकों की आठ नायिकाओं में से एक।

चंड-वात—पुं० [कर्म० स०] कुछ अधिक तेज चलनेवाली वह आँधी जिसके बीच-बीच में कुछ वर्षा भी होती है। तूफान। (टाइफून)

चंड-वृष्टि-प्रयात—पुं० [चंड-वृष्टि, कर्म० स०, चंडवृष्टि-प्रयात, ष० त०] एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण (।।।) और सात रगण (ऽ।ऽ) होते हैं।

चंडांशु—पुं० [चंड अशु ब० स०] सूर्य।

चंडा—स्त्री० [सं० चंड +टाप्] १. उग्र स्वभाववाली स्त्री। २. तांत्रिकों की आठ नायिकाओं में से एक। ३. केवाँच। कौंछ। ४. चोर नामक गंध द्रव्य। ५. सफेद दूब। ६. सौंफ। ७. सोआ नाम का साग। ८. एक प्राचीन नदी।

चंडाई*—स्त्री० [सं० चंड=तेज] १. चंडता। २. शीघ्रता। जल्दी। ३. उतावली। ४. प्रबलता। तेजी। ५. अत्याचार। उपद्रव।

चंडात—पुं० [सं० चंड √अत् (गति) +अण्, उप० स०] एक प्रकार की सुगंधित घास।

चंडातक—पुं० [सं० √अत् +ण्वुल्—अक, चंडा-आतक, ष० त०] एक प्रकार की छोटी कुरती या चोली।

चंडाल—वि० [सं० √चंड् (कोप) +आलव्] [स्त्री० चंडालिन, चंडालिनी] =चांडाल।

वि० बहुत ही निकृष्ट तथा नृशंस कर्म करनेवाला।

पुं० १. एक बहुत निकृष्ट या निम्न जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता तथा ब्राह्मणी माता से मानी जाती है। २. उक्त जाति का पुरुष।

चंडाल-कंद—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का कंद जो कफ-पित्त-नाशक तथा रक्त-शोधक माना जाता है।

चंडालता—स्त्री०] सं० चंडाल+तल्—टाप्] चंडाल या चांडाल होने की अवस्था, गुण या भाव।

चंडालत्व—पुं० [सं० वंडाल+त्व] =चंडालता।

चंडाल-पक्षी (क्षिन्)—पुं० [कर्म० स०] कौआ।

चंडाल-बाल—पुं० [हिं० चंडाल+बाल] कुछ लोगों के माथे पर उगनेवाला वह कड़ा और मोटा बाल जो अशुभ फलदायक माना जाता है।

चंडाल-वल्लकी—स्त्री० = चंडाल-वीणा।

चंडाल-वीणा—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का चिकारा या तँबूरा।

चंडालिका—स्त्री० [सं० चंडाल +ठन्–इक, टाप्] १. दुर्गा। २. चंडाल-वीणा। ३. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ दवा के काम आती है।

चंडालिनी—पुं० [सं० चंडाल+इनि—ङीप्] १. चंडाल वर्ण की स्त्री। २. बहुत ही दुष्ट और निकृष्ट स्वभाववाली स्त्री। ३ वह दोहा जिसके आरंभ में जगण पड़ा हो। (अशुभ)

चंडावल—पुं० [हिं० चंड + अवलि] १. सेना के पीछे का भाग। पीछे रहनेवाले सिपाही। 'हरावल' का विपर्याय। २. बहुत बड़ा योद्धा या वीर। ३. पहरेदार। संतरी।

चँडासा—पुं० [हिं० चाँड़ = जल्दी +आसा (प्रत्य०)] किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी।

मुहा०—चँडासा चढ़ाना = (क) बहुत जल्दी मचाना। (ख) कोई ऐसा काम या युक्ति करना जिससे किसी को विवश होकर कोई काम जल्दी करना पड़े।

चंडाह—पुं० [देश०] गाढ़े की तरह का एक मोटा कपड़ा।

चंडि—स्त्री० [सं० √चंड् + इन्] = चंडिका।

चंडिक—वि० [सं० चंड + ठन्—इक] [स्त्री० चंडिका] १. कर्कश स्वभाववाला और दुष्ट। २. जिसके लिंग के आगे का चमड़ा कटा हो। जिसका खतना हुआ हो।

चंडिक-घंट—पुं० [चंडिका-घंटा, ब० स०] शिव।

चंडिका—स्त्री० [सं० चंडिक+टाप्] १. दुर्गा का एक रूप। २. बहुत कर्कशा और दुष्ट स्त्री। ३. गायत्री देवी।

वि० कर्कशा, दुष्टा और लड़ाकी।

चंडिमा (मन्)—स्त्री० [सं० चंड+इमनिच्] १. गरमी। ताप। २. उग्रता। तीव्रता। ३. क्रोध। गुस्सा। ४. निष्ठुरता। ५. आवेश। जोश।

चंडिल—पुं० [सं० √चंड्+इलच्] १. रुद्र। २. बथुआ नामक साग। ३. नापित। हज्जाम।

चंडी—स्त्री० [सं० चंड+ङीष्] १. दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिए धारण किया था। २. बहुत ही उग्र स्वभाववाली, कर्कशा और दुष्टा स्त्री। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण, दो सगण और एक गुरु होता है।

चंडी-कुसुम—पुं० [ब० स०] १. कनेर का वह पौधा जिसमें लाल रंग के फूल लगते हों। २. [मध्य० स०] उक्त प्रकार का फूल।

चंडी-पति—पुं० [ष० त०] शिव।

चंडीश—पुं० [चंडी-ईश, ष० त०] शिव।

चंडीसुर—पुं० [सं० चंडीश्वर] एक प्राचीन तीर्थ-स्थल।

चंडु—पुं० [सं० √चंड्+उन्] १. चूहा। २. छोटा बंदर।

चंडू—पुं० [सं० चंड=तीक्ष्ण से ?] अफीम से बनाया हुआ एक प्रकार का अवलेह जो नशे के लिए तमाकू की तरह पीया जाता है।

चंडूखाना—पुं० [हिं० चंडू+खाना] वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर चंडू पीते हैं।

पद—चंडूखाने की गप=बिलकुल झूठी और बे-सिर-पैर की खबर या गप।

चंडूबाज—पुं० [हिं० चंडू+फा० बाज (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो प्रायः चंडू पीता हो।

चंडूल—पुं० [देश०] १. मधुर स्वरवाली खाकी रंग की एक चिड़िया जो झाड़ियों, पेड़ों आदि में सुंदर घोंसला बनाकर रहती है। २. बहुत बड़ा बेवकूफ या भद्दा आदमी।

चंडेश्वर—पुं० [चंड-ईश्वर, कर्म० स०] शिव का एक रूप।

चंडोग्रा—स्त्री० [चंडा-उग्रा, कर्म० स०] दुर्गा का एक रूप या शक्ति।

चंडोदरी—स्त्री० [चंड-उदर, ब० स० ङीष्] एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिए नियत किया था।

चंडोल—पुं० [सं० चन्द्र-दोल] १. हाथी के हौदे की तरह की एक प्रकार की पालकी जिसे चार आदमी उठाते हैं। २. मिट्टी का एक प्रकार का खिलौना। चौघड़ा।

चंद—पुं० [सं० √चंद् (आह्लादित करना)+णिच्+अच्] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. पिंगल में रगण का दसवाँ भेद जिसमें दो लघु, एक दीर्घ और तब फिर दो लघु वर्ण होते हैं। (ıısıı)। जैसे—पुतली-घर। ४. लाहौर के रहनेवाले हिंदी के एक बहुत प्राचीन कवि जो दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा में थे। इनका बनाया हुआ पृथ्वीराज रासो बहुत प्रसिद्ध महाकाव्य है। चंदवरदाई।

वि० [फा०] १. गिनती में थोड़ा। कुछ। २. कई। जैसे—चंद आदमी आने को हैं।

चंदक—पुं० [सं० √चंद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. चंद्रमा। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३. चाँद या चाँदा नाम की छोटी मछली। ४. सिर पर पहना जानेवाला एक अर्द्धचंद्राकार गहना। ५. उक्त गहने के आकार की कोई रचना जो मालाओं आदि के नीचे शोभा के लिए लगाई जाती है। ६. एक प्रकार की मछली।

चंदक-पुष्प—पुं० [मध्य० स०] १. लौंग। लवंग। २. [ष० त०] चंद्रकला।

चंदण—पुं० =चंदन।

चंद-धर—पुं० [सं० ष० त० ?] ध्रुपद राग का एक भेद।

चंदन—पुं० [सं० √चंद्+णिच्+ल्युट्—अन] १. दक्षिण भारत में उगनेवाला एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत सुगंधित होती है। गंधसार। मलयज। श्रीखंड। २. उक्त वृक्ष की लकड़ी। ३. उक्त लकड़ी को जल में घिस या रगड़कर बनाया हुआ गाढ़ा घोल या लेप जिसका टीका आदि लगाया जाता है।

मुहा०—चंदन उतारना=पानी के साथ चंदन की लकड़ी को घिसना जिसमें उसका अंश पानी में घुल जाय। **चंदन चढ़ाना**=किसी चीज पर घिसे हुए चंदन का लेप करना।

४. गंध-प्रसारिणी लता। ५. छप्पय छंद के तेरहवें भेद का नाम। ६. एक प्रकार का बड़ा तोता जो उत्तरीय भारत, मध्य भारत, हिमालय की तराई, काँगड़ा आदि में होता है।

वि० १. बहुत ही शीतल और सुगंधित। २. उत्कृष्ट। उदा०—चंदन तेज त्यौं चंदन की रति...। भूषण।

चंदन-गिरि—पुं० [ष० त०] मलय पर्वत।

चंदन-गोह—स्त्री० [हिं० चंदन+गोह] १. चंदन के पेड़ पर रहनेवाली एक प्रकार की गोह। २. छोटी गोह।

चंदन-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] चंदन से लेपी हुई वह गौ जो सौभाग्यवती स्वर्गीया माता के उद्देश्य से (वृषोत्सर्ग की तरह) खुली छोड़ दी जाती है।

चंदन-पुष्प—पुं० [ष० त०] १. चंदन का फूल। २. [ब० स०] लौंग। लवंग।

चंदन-यात्रा—स्त्री० [ब० स०] वैशाख सुदी तीज। अक्षय तृतीया।

चंदनवती—वि० स्त्री० [सं० चंदन+मतुप्, वत्व, ङीप्] केरल देश की भूमि जहाँ चंदन के वृक्ष अधिकता से होते हैं।

चंदन-शारिवा—स्त्री० [उपमि० स०] एक प्रकार की शारिवा या अनंतमूल की लता जिसमें चंदन की-सी सुगंध होती है।

चंदन-सार—पुं० [ष० त०] १. पानी के साथ घिसकर तैयार किया हुआ चंदन। २. [ब० स०] वज्रक्षार। ३. नौसादर।

चंदनहार—पुं० =चंद्रहार।

चंदना—स्त्री० [सं० चंदन+अच्—टाप्]=चंदन-शारिवा।

स० [सं० चंदन] शरीर में चंदन पोतना या लगाना।

†पुं० =चंद्रमा।

चंदनादि—पुं० [चंदन-आदि, ब स०] वैद्यक में चंदन, खस, कपूर, बकुची, इलायची आदि पित्तशामक दवाओं का एक वर्ग।

चंदनादि-तैल—पुं० [ष० त०] वैद्यक में लाल-चंदन के योग से बननेवाला एक प्रसिद्ध तैल जो अनेक रोगों में शरीर पर मला जाता है।

चंदनी—वि० [हिं० चंदन+ई (प्रत्य०)] १ चंदन-संबंधी। चंदन का।

२. जिसमें चंदन की सुगंध हो। ३. चंदन की लकड़ी के रंग का। कुछ लाली लिये हुए भूरा।

स्त्री० [सं० चन्दन+ङीष्] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी।

पुं० शिव।

† स्त्री० = चाँदनी।

चंदनीया—स्त्री० [सं० √चंद्+अनीयर्+टाप्] गोरोचन।

चँदनौटा †—पुं० [हिं० चंदन+औटा (प्रत्य०)] १. वह चकला जिस पर चंदन घिसा जाता है। २. एक प्रकार का लंहगा। उदा०—चंदनौटा खीरोदक फारी।—जायसी।

चँदनौता—पुं०=चँदनौटा।

चंदबान—पुं० [सं० चंद्रबाण] एक प्रकार का बाण जिसके सिरे पर अर्द्धचंद्राकार लोहे की गाँसी वा फल लगा रहता था और जिससे शत्रुओं का सिर काटा जाता था।

चँदराना†—अ० [सं० चंद्रमा] १. पागल या विक्षिप्त होना जो चंद्रमा का प्रभाव माना जाता है। २. जान-बूझकर अनजान बनना।

स० १. (किसी को) झूठा, पागल या मूर्ख बनाना। २. चकमा या धोखा देना।

चँदला—वि० [हिं० चाँद = खोपड़ी] जिसकी चाँद के बाल उड़ या झड़ गये हों। खल्वाट। गंजा।

चँदवा—पुं० [सं० चन्द्रकः] १. एक प्रकार का छोटा मंडप जो राजाओं के सिंहासन या गद्दी के ऊपर चाँदी, सोने आदि की चार चोबों के सहारे ताना जाता है। चँदोवा। वितान। चदरछत। २. छाया आदि के लिए ताना जानेवाला लंबा-चौड़ा कपड़ा। ३. किसी चीज के ऊपरी भाग में लगाया जानेवाला कोई गोल या चौकोर टुकड़ा। ४. मोर की पूँछ पर की चंद्रिका। ५. एक प्रकार की मछली। चाँदा। ६. तालाब में का वह गहरा गड्ढा जिसमें मछलियाँ फँसाकर पकड़ी जाती हैं।

चंदसिरी—स्त्री० [सं० चंद्र-श्री] एक प्रकार का बड़ा गहना जो हाथी के मस्तक पर बाँधा या पहनाया जाता है।

चंदा—पुं० [सं० चन्द्र] चंद्रमा। जैसे—चंदा मामा दौड़ि आ। दूध भरी कटोरिया।

पुं० [फा० चंद] १. किसी परोपकारी अथवा सार्वजनिक कार्य के लिए दो या माँगी जानेवाली व्यक्तिगत आर्थिक सहायता। जैसे—मंत्री जी ने अनाथालय के निर्माण के लिए सभी भाइयों से चंदा देने की अपील की है। २. वह नियत धन जो किसी अवधि के लिए किसी संस्था को उसके सदस्य आदि बने रहने अथवा किसी पत्र-पत्रिका के ग्राहक बने रहने के लिए देना पड़ता है। जैसे—इस पत्रिका का वार्षिक चंदा ५) है। (सब्सक्रिप्शन; उक्त दोनों अर्थों में) ३. किसी प्रकार का बीमा कराने पर उसके लिए समय समय पर दिया जानेवाला धन। (प्रीमियम)

चंदामामा—पुं [हिं० चंदा=चाँद+मामा] बच्चों को बहलाने का एक प्रिय पद जो उनके लिए चंद्रमा का वाचक होता है।

चंदावत—पुं० [सं० चन्द्र] क्षत्रियों की एक जाति।

चंदावती—स्त्री० [सं० चंद्रवती] संगीत में एक रागिनी जो श्रीराग की सहचरी कही गई है।

चंदावल—पुं० [फा०] वे सैनिक जो सेना के पीछे रक्षा के लिए चलते हैं। चंडावल। 'हरावल' का विपर्याय।

चंदिका—स्त्री० = चंद्रिका।

चंदिनि, चंदनी †—स्त्री० [सं० चंद्रिका] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. बिछाने की चाँदनी।

चँदिया—स्त्री० [हिं० चाँद का अल्पा०] १. सिर का मध्यभाग। खोपड़ी। चाँद।

मुहा०—चँदिया पर बाल तक न छोड़ना = (क) सिर पर जूते, थप्पड़ आदि मार-मारकर सिर गंजा कर देना। (ख) सर्वस्व छीन या लूट लेना। **चँदिया मूड़ना** =चँदिया पर बाल तक न छोड़ना।

२. वह छोटी रोटी जो सब के अंत में बचे हुए आटे और पलेथन से बनाई जाती है। ३. तालाब के नीचे का गहरा गड्ढा। ४. चाँदी की छोटी टिकिया।

चंदिर—पुं० [सं० √चंद्+किरच्] १. चंद्रमा। २. हाथी। ३. पूरक।

चँदिरा—स्त्री० [सं० चंद्रिका] चंद्रमा का प्रकाश। ज्योत्स्ना। चाँदनी। उदा०—शरद चंदिरा उतर रही धीरे धरती पर।—पंत।

चंदे—अ०य० [फा०] १. थोड़े से। कुछ। २. थोड़ी देर तक।

चँदेरी—स्त्री० [सं० चेदि वा हिं० चंदेल] राजस्थान के अंतर्गत एक प्राचीन नगरी जो शिशुपाल की राजधानी थी।

चँदेरीपति—पुं० [हिं० चँदेरी+सं० पति] चँदेरी का राजा, शिशुपाल।

चंदेल—पुं० [सं० चेदि से] [स्त्री० चंदेलिन] क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।

चंदेवरी—स्त्री०=चँदेरी। उदा०—प्रोहित चंदेधरी पुरी।—प्रिथीराज।

चँदोआ †=पुं० =चँदवा।

चँदोवा †—पुं० = चँदवा।

चंद्र—पुं० [सं० √चंद्+रक्] १. चंद्रमा। २. जल। पानी। ३. कपूर। ४. सोना। स्वर्ण। ५. रोचनी नाम का पौधा। ६. पुराणानुसार १८. उपद्वीपों में से एक। ७. लाल रंग का मोती। ८. हीरा। ९. मृगशिरा नक्षत्र। १०. नेपाल का एक पर्वत। ११. मोर की पूँछ की चंद्रिका। १२. सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जानेवाली बिंदी। १३. हठ योग में, (क) इडा नाड़ी। (ख) तालु-मूल में स्थित वह गाँठ जिसमें से अमृत या सोम नामक रस निकलता है। १४. रहस्य संप्रदाय में, ज्ञान।

स्त्री० चंद्रभागा में गिरनेवाली एक नदी।

वि० १. आनंददायक। २. सुंदर। ३. श्रेष्ठ।

चंद्रक—पुं० [सं० चंद्र+ कन्] १. चंद्रमा। २. चंद्रमा की तरह का घेरा या मंडल। ३. चंद्रिका। चाँदनी। ४. मोर की पूँछ पर की चंद्रिका। ५. नाखून। नख। ६. कपूर। ७. सफेद मिर्च। ८. सहिजन। ९. जल। पानी। १०. एक प्रकार की मछली। ११. एक राग जो मालकोश का पुत्र कहा गया है।

चंद्रकर—पुं० [ष० त०] १. चन्द्रमा की किरण। २. चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्र-कला—स्त्री० [ष०त०] १. चंद्रमा की १६ कलाएँ या भाग जिनके नाम ये हैं—पूषा, यशा, सुमनसा, रति, प्राप्ति, धृति, ऋद्धि, सौम्या, मरीचि, अंशुमालिनी, अंगिरा, शशिनी, छाया, संपूर्णमंडला, तुष्टि और अमृता। २. उक्त कलाओं में से कोई एक या प्रत्येक। ३. चंद्रमा की किरण। ४. माथे पर पहनने का एक गहना। ५. एक प्रकार का छोटा ढोल। ६. एक प्रकार की मछली। वचा। ७. एक प्रकार का सवैया छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और एक गुरु होता है।

इसका दूसरा नाम सुन्दरी भी है। ८. संगीत में एक प्रकार का सातताला ताल जिसमें तीन गुरु और तीन प्लुत के बाद एक लघु होता है। ९. मोर की पूँछ पर की चंद्रिका। १०. एक प्रकार की बंगला मिठाई।

चंद्रकला-धर—पुं०[ष०त०] महादेव। शिव।

चंद्र-कांत—पुं०[उपमि० स०] १. एक प्रकार की प्रसिद्ध कल्पित मणि जो लोक प्रवाद के अनुसार चंद्रमा की किरणें पड़ने पर पसीजने लगती है। २. चंदन। ३. कुमुद। ४. एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है। ५. लक्ष्मण के पुत्र चंद्रकेतु की राजधानी का नाम।

चंद्र-कान्ता—स्त्री० [ष०त०] १. चंद्रमा की स्त्री। २. रात्रि। रात। ३. मल्ल प्रदेश की एक प्राचीन नगरी। ४. वे वर्ण-वृत्त जिनमें पन्द्रह अक्षर होते हों।

चन्द्र-कांति—स्त्री० [ब०स०] १. चाँदी। रजत। २. [ष० त०] चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्र-काम—पुं० [मध्य० स०] तंत्र में वह मानसिक कष्ट या पीड़ा जो किसी पुरुष को उस समय होती है जब कोई स्त्री उसको वशीभूत करने के लिए मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग करती है।

चंद्रकी (किन्)—वि०[सं० चंद्रक+इनि] चद्रक से युक्त।
पुं० मयूर। मोर।

चंद्र-कुमार—पुं०[ष०त०] बुध ग्रह, जो चंद्रमा का पुत्र माना जाता है।

चंद्र-कुल्या—स्त्री०[ष० त०] कश्मीर की एक प्राचीन नदी।

चंद्र-कूट—पुं०[ष०त०] कामरूप देश का एक पर्वत।

चंद्र-केतु—पुं०[ब०स०] लक्ष्मण का एक पुत्र, जिसे चंद्रकांत प्रदेश का राज्य मिला था।

चंद्र-क्रीड—पुं०[ब०स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

चंद्र-क्षय—पुं०[ष०त०] अमावास्या।

चंद्र-गिरि—पुं०[ष०त०] नैपाल का एक पर्वत जो काठमांडू के पास है।

चंद्र-गुप्त—पुं०[तृ०त०] १. चित्रगुप्त। २. मगध देश का प्रथम मौर्यवंशी राजा जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी और जिसने यूनानी राजा सील्यूकस पर विजय प्राप्त करके उसकी कन्या ब्याही थी। समुद्रगुप्त इसी का पुत्र था।

चंद्र-गृह—पुं०[ष०त०] कर्क राशि।

चंद्र-गोल—पुं०[कर्म०स०] १. चंद्र-मंडल। २. चंद्रलोक।

चंद्र-ग्रह—पुं०=चंद्रग्रहण।

चंद्र-ग्रहण—पुं०[ष०त०] १. चंद्रमा की वह स्थिति जिसमें उसका कुछ या सारा बिंब पृथ्वी की छाया पड़ने के कारण दिखाई नहीं देता। २. हठयोग की परिभाषा में वह अवस्था जब प्राण इड़ा नाड़ी के द्वारा कुंडलिनी में पहुँचते हैं।

चंद्र-चंचल—पुं०[उपमि०स०] खरसा या चंद्रक नाम की मछली।

चंद्र-चित्र—पुं०[ष०त०] वाल्मीकि रामायण में उल्लिखित एक देश।

चंद्र-चूड़—पुं०[ब०स०] (मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले) शिव। महादेव।

चंद्र-चूड़ामणि—पुं०[ब०स०] १. फलित ज्योतिष में ग्रहों का एक योग। जब नवम स्थान का स्वाभी केन्द्रस्थ हो तब यह योग होता है। २. महादेव।

चंद्रज—पुं०[सं० चंद्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप०स०] बुध ग्रह, जो चंद्रमा का पुत्र माना जाता है।

चंद्रजोत—स्त्री०[सं० चंद्रज्योति] १. ज्योत्स्ना। चाँदनी। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।

चंद्र-ताल—पुं०[मध्य०स०] एक प्रकार का बारहताला ताल जिसे परम भी कहते हैं। (संगीत)

चंद्र-दारा—स्त्री०[ष० त०] चंद्रमा की पत्नियाँ।
विशेष—आकाशस्थ २७ नक्षत्र ही जो दक्ष की कन्याएँ कही जाती हैं, चंद्रमा की पत्नियाँ मानी गई हैं।

चंद्र-द्युति—स्त्री०[ष० त०] १. चंद्रमा का प्रकाश या किरण। चाँदनी। २. चंदन वृक्ष की लकड़ी।

चंद्र-धनु (म्)—पुं०[मध्य० स०] रात के समय चंद्रमा के प्रकाश में दिखाई देनेवाला इंद्रधनुष।

चंद्र-धर—वि०[ष० त०] चंद्रमा को धारण करनेवाला।
पुं० महादेव।

चंद्र-पंचांग—पुं०[मध्य०स०] वह पंचांग जिसमें महीनों की तिथियों का आरंभ चान्द्रमास के अनुसार अर्थात् प्रतिपदा से होता हो।

चंद्र-पर्णी—स्त्री०[ब० स०, ङीष्] प्रसारिणी लता।

चंद्र-पाद—पुं०[ष० त०] चंद्रमा की किरणें।

चंद्र-पाषाण—पुं०[मध्य०स०] चंद्रकांत मणि।

चंद्र-पुत्र—पुं०[ष०त०] बुध ग्रह, जो पुराणानुसार चंद्रमा का पुत्र माना गया है।

चंद्र-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] १. चाँदनी। २. सफेद भटकटैया। ३. बकुची।

चंद्र-पुरी—स्त्री० [सं० चंद्र+देश० पूर] गरी के योग से बननेवाली एक प्रकार की बंगला मिठाई।

चंद्र-प्रभ—वि०[ब०स०] जिसमें चंद्रमा की-सी प्रभा या ज्योति हो।
पुं० १. जैनों के आठवें तीर्थंकर जो महासेन के पुत्र थे। २. तक्षशिला के एक प्राचीन राजा।

चंद्र-प्रभा—स्त्री०[ष०त०] १. चंद्रमा की प्रभा। चाँदनी। २. [ब० स०] बकुची नामक ओषधि। ३. वैद्यक की एक प्रसिद्ध गुटिका जो अर्श, भगंदर आदि के रोगियों को दी जाती है।

चंद्र-प्रासाद—पुं०[मध्य० स०] छत के ऊपर का वह कमरा जिसमें बैठकर लोग चाँदनी का आनंद लेते हों।

चंद्र-बंधु—पुं०[ष०त०] १. चंद्रमा का भाई शंख (क्योंकि चंद्रमा के साथ वह भी समुद्र में से निकला था)। २. [ब०स०] कुमुद, जो चंद्रमा के निकलने पर खिलता है।

चंद्र-बधूटी—स्त्री० =चंद्रवधू।

चंद्र-बाण—पुं०[मध्य०स०] पुरानी चाल का एक बाण जिसका फल अर्द्धचंद्राकार होता था।

चंद्र-बाला—स्त्री०[ष०त०] १. चंद्रमा की पत्नी। २. चंद्रमा की किरण। ३. बड़ी इलायची।

चंद्र-बिंब—पुं०[ष०त०] दिन के पहले पहर में गाया जानेवाला संपूर्ण जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा गया है।

चंद्रबोड़ा—पुं०[सं० चंद्र–बोड्र ?] एक प्रकार का अजगर।

चंद्र-भवन—पुं०[ष० त०] संगीत में एक प्रकार का राग।

चंद्र-भस्म—पुं०[उपमि०स०] कपूर।

चंद्र-भा—स्त्री० [ष०त०] १. चंद्रमा का प्रकाश। २. [ब०स०] सफेद भटकटैया।

चंद्र-भाग—पुं०[ष०त०] १. चंद्रमा की कला। २. चंद्रमा की सोलह कलाओं के आधार पर सोलह की संख्या। ३. [ब०स०] हिमालय पर्वत का वह भाग जिसमें से चन्द्रभागा या चनाब नदी निकलती है।

चंद्र-भागा—स्त्री०[सं० चंद्रभाग+अच्—टाप्] पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में बहनेवाली प्रसिद्ध चनाब नदी का पुराना नाम जो उसके चंद्रभाग नामक हिमालय के एक शिखर से निकलने के कारण पड़ा था।

चंद्र-भाट—पुं०[सं०चंद्र+हिं० भाट] शिव और काली के उपासकों का एक संप्रदाय।

चंद्रभानु—पुं०[सं०] श्रीकृष्ण की पटरानी सत्यभामा के १० पुत्रों में से सातवें पुत्र का नाम।

चंद्र-भाल—पुं०[ब०स०] वह जिसके मस्तक पर चंद्रमा हो, अर्थात् महादेव।

चंद्र-भास—पुं०[ब०स०] तलवार।

चंद्र-भूति—स्त्री०[ब०स०] चाँदी।

चंद्र-भूषण—पुं०[ब०स०] वह जिसका भूषण चंद्रमा हो, अर्थात् महादेव।

चंद्र-मंडल—पुं०[ष०त०] चंद्रमा का पूरा बिंब या मंडल।

चंद्र-मणि—पुं०[मध्य० स०] १. चंद्रकांत मणि। २. उल्लाला छंद का दूसरा नाम।

चंद्र-मल्लिका—स्त्री०[मध्य० स०] एक प्रकार की चमेली।

चंद्रमस्—पुं०[सं० चंद्र=आह्लाद√मि (मापना)+असुन्, म् आदेश] चंद्रमा।

चंद्रमा—पुं०[सं० चंद्रमस्] पृथ्वी का एक प्रसिद्ध उपग्रह जो पृथ्वी से २५३०००मील दूर है और जिसका व्यास २१६० मील है तथा जिसके कारण रात के समय पृथ्वी पर चाँदनी या प्रकाश होता है और जो एक चांद्र मास में पृथ्वी की एक परिक्रमा करता है। चाँद। विधु। शशि।

चंद्र-मात्रा—स्त्री० [ष०त० ?] तालों के १४ भेदों में से एक। (संगीत)

चंद्रमा-ललाट—पुं० [हिं० चंद्रमा+ललाट] शिव, जिनके ललाट पर चंद्रमा है।

चंद्रमा-ललाम—पुं०[हिं० चंद्रमा+ललाम=तिलक] महादेव।

चंद्र-माला—स्त्री०[ष०त०] १. २८ मात्राओं का एक छंद। २. चंद्रहार।

चंद्रमास—पुं०=चांद्रमास।

चंद्र-मुकुट—पुं०[ब०स०] शिव।

चंद्र-मुख—वि०[ब०स०] [स्त्री० चंद्रमुखी] चंद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।

चंद्र-मौलि—पुं०[ब०स०] शिव। महादेव।

चंद्र-रत्न—पुं०[मध्य० स०] मोती।

चंद्र-रेख (ा)—स्त्री०[ष०त०] १. चंद्रमा की कला। २. चंद्रमा की किरण। ३. द्वितीया का चंद्रमा। ४. बकुची। गठरी। ५. एक प्रकार का गहना। ६. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, रगण, भगण और दो यगण होते हैं।

चंद्र-ललाम—पुं०[ब०स०] महादेव। शिव।

चंद्र-लेखा—स्त्री० =चंद्र-रेख।

चंद्र-लोक—पुं०[ष०त०] १. आकाश-मंडल का वह क्षेत्र जिसमें चंद्रमा रहता है। चंद्रमा का लोक २. चन्द्रमा में स्थित जगत् या संसार ।

चंद्र-वंश—पुं०[ष०त०] क्षत्रियों का एक प्राचीन वंश जिसके आदि पुरुष राजा पुरूरवा थे।

चंद्रवंशी (शिन्)—वि०[सं०चंद्रवंश +इनि] १. चंद्रवंश-सम्बन्धी २. क्षत्रियों के चंद्रवंश में जन्म लेनेवाला।

चंद्र-वदन—वि० [ब०स०] [स्त्री० चंद्रवदनी] चंद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला। परम सुन्दर।

चंद्र-वधू—स्त्री०[ष०त०] बीरबहूटी।

चंद्र-वर्म (त्)—पुं०[ष०त०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण भगण और सगण (SIS III SII IIS) होते हैं।

चंद्र-वल्लरी—स्त्री०[ष०त०] सोम लता।

चंद्र-वल्ली—स्त्री०[ष०त०] १ सोम लता। २. माधवी लता। २. ३. प्रसारिणी नाम की लता।

चंद्रवा—पुं०=चँदवा।

चंद्र-वार—पुं०[ष०त०] सोमवार।

चंद्र-विंदु—पुं०[मध्य०स०] लिखने में अर्द्धचंद्राकार युक्त वह विन्दु जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगता है। जैसे—'साँस' में के ऊपर का ँ।

चंद्र-वेष—पुं०[ब०स०] शिव। महादेव।

चंद्र-व्रत—पुं०[ष० त०]=चांद्रायण (व्रत)।

चंद्रशाला—स्त्री०[सं० चंद्र√शाल् (शोभित होना)+अच्—टाप्, उप० स०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. छत के ऊपर का वह कमरा जिसमें बैठकर लोग चाँदनी रात का आनन्द लेते हों।

चंद्रशालिका—स्त्री०[सं० चंद्रशाला+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व]=चंद्रशाला।

चंद्र-शिला—स्त्री०[मध्य०स०] चंद्रकांत मणि।

चंद्र-शूर—पुं०[स०त०?] हालों या हालम नाम का पौधा। चसुर।

चंद्र-शृंग—पुं०[ष०त०] द्वितीया के चंद्रमा के दोनों नुकीले छोर या भाग।

चंद्र-शेखर—पुं०[ब०स०] १. महादेव, जिनके मस्तक पर चंद्रमा है। २. एक पर्वत का नाम जो अराकान में है। ३. एक प्राचीन नगर। ४. संगीत में, एक प्रकार का सात-ताला ताल।

चंद्रस†—पुं०[देश०] गंधा बिरोजा।

चंद्र-सुत—पुं०[ष०त०] बुध (ग्रह)।

चंद्र-हार—पुं०[मध्य०स०] एक प्रकार का गले का हार जिसमें अर्द्धचंद्राकार धातु के कई टुकड़े लगे रहते हैं और बीच में पूर्णचन्द्र के आकार का गोल टिकड़ा बना होता है।

चंद्र-हास—पुं०[ब०स०] १. खड्ग। तलवार। २. रावण की तलवार का नाम। ३. [ष०त०] चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

चंद्रहासा—स्त्री०[सं०चंद्रहास+टाप्] सोमलता।

चंद्रांकित—पुं०[चंद्र-अंकित, तृ०त०] महादेव। शिव। वि०चंद्रमा की आकृति से अंकित या युक्त।

चंद्रांशु—पुं०[चंद्र-अंशु, ष०त०] १.चंद्रमा की किरण। २. [ब०स०] विष्णु।

चंद्रा—स्त्री०[सं० चंद्र+टाप्] १. छोटी इलायची। २. चँदोआ। ३. गुडूची। गुरुच।

स्त्री०[सं० चंद्र] मरने के समय से कुछ पहले की वह अवस्था जिसमें आँखों की टकटकी बँध जाती है, गला कफ से रुँध जाता है और बोला नहीं जाता।

चंद्रातप—पुं०[चंद्र-आतप, ष०त०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. [चंद्र-आ√तप्+अच्] चँदवा।

चंद्रात्मज—पुं०[चंद्र-आत्मज, ष०त०] बुध ग्रह।

चंद्रानन—वि०[चंद्र-आनन, ब०स०] [स्त्री० चंद्रानना] =चंद्रवदन। पुं०=कार्त्तिकेय।

चंद्रापीड़—पुं० [चंद्र-आपीड, ब०स०] १. शिव। महादेव। २. कश्मीर का एक प्रसिद्ध धर्मात्मा राजा जो प्रतापादित्य का बड़ा पुत्र था और जो शकाब्द ६०४ में सिंहासन पर बैठा था।

चंद्रायण—पुं०=चांद्रायण।

चंद्रायतन—पुं०[ष० त०] चंद्रशाला।

चंद्रार्क—पुं०[चंद्र-अर्क, द्व० स०] १ चंद्रमा और सूर्य। २. चाँदी, ताँबे आदि के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु।

चंद्रार्द्ध—पुं० [चंद्र-अर्द्ध, ष० त०] चंद्रमा का आधा भाग जो प्रायः द्वितीया के दिन दिखाई देनेवाले रूप का होता है। अर्धचंद्र।

चंद्रार्द्ध-चूड़ामणि—पुं० [ब० स०] महादेव। शिव।

चंद्रालोक—पुं०[चंद्र-आलोक, ष० त०] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। चंद्रिका। २. कविवर जयदेव कृत संस्कृत का एक प्रसिद्ध अलंकार-ग्रंथ।

चंद्रावती—स्त्री० [चंद्र-आवर्त, ब०स० टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक पद में ४ नगण पर एक सगण होता है और ८, ७ पर विराम। विराम न होने पर "शशिकला" (मणिगुणशरभ) वृत्त होता है। इसका दूसरा नाम 'मणिगुणनिकर' है।

चंद्रावली—स्त्री०[चंद्र-आवली ष० त० ?] कृष्ण की सखी एक गोपी जो चंद्रभानु की कन्या थी।

चंद्रिका—स्त्री० [सं० चंद्र+ठन्—इक, टाप्] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २. मोर की पूँछ पर का वह अर्द्धचंद्राकार चिह्न जो सुनहले मंडल से घिरा होता है। ३. इलायची। ४. चाँदा नाम की मछली। ५. चन्द्रभागा नदी। ६. कनफोड़ा नाम की घास। ७. चमेली। ८. सफेद भटकटैया। ९. मेथी। १०. चंसुर या हालम पौधा। ११. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, न, त, त, ग (।।। ।।। ऽऽ। ऽऽ। ऽ) और ७-६ पर यति होती है। १२. एक देवी का नाम। १३. माथे पर पहनने का टीका या बेंदी। १४. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का मुकुट या शिरोभूषण जिसे चंद्रकला भी कहते थे।

चंद्रिकातप—पुं० [चंद्रिका-आतप, मयू० स०] चाँदनी। ज्योत्स्ना।

चंद्रिका-द्राव—पुं०[ब०स०] चंद्रकांत मणि।

चंद्रिकापायी (यिन्)—पुं० [सं० चंद्रिका√पा(पीना)+णिनि युक्, उप०स०] चकोर पक्षी जो चन्द्रमा से निकलनेवाले अमृत या रस का पीनेवाला कहा गया है।

चंद्रिकाभिसारिका—स्त्री० [चंद्रिका-अभिसारिका, मध्य० स०]=शुक्लाभिसारिका (नायिका)।

चंद्रिकोत्सव—पुं०[चंद्रिका-उत्सव, मध्य० स०] शरत् पूर्णिमा के दिन होनेवाला एक प्राचीन उत्सव।

चंद्रिमा—स्त्री०=चंद्रिका।

चंद्रिल—पुं० [सं० चंद्र+इलच्] १. शिव। महादेव। २. नाई। हज्जाम। ३. बथुआ नाम का साग।

चंद्रेष्टा—स्त्री० [चंद्र-इष्टा, ब०स०] कुमुदिनी।

चंद्रोदय—पुं०[चंद्र-उदय, ष० त०] १. चंद्रमा के उदित होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. चँदोआ। ३. वैद्यक में एक रस।

चंद्रोपराग—पुं०[सं० चंद्र-उपराग, ष० त०] चंद्रमा को लगनेवाला ग्रहण। चंद्र-ग्रहण।

चंद्रोपल—पुं० [चंद्र-उपल, मध्य० स०] चंद्रकांत मणि।

चंद्रौल—पुं० [सं० चंद्र] राजपूतों की एक जाति।

चंप—पुं०[सं०√चंप्(गमन)+अच्] १. चंपा। २. कचनार।

चंपई—वि० [हिं० चंपा] चंपा के फूल के रंग का। पीले रंग का।

चंपक—पुं० [सं०√चंप्+ण्वुल्—अक] १. चंपा। २. चंपाकली। ३. चंपा केला। ४. सांख्य में एक सिद्धि जिसे रम्यक भी कहते हैं। ५. संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

चंपक-माला—पुं०[ष० त०] १. चंपक के फूलों की माला। २. चंपाकली। ३. चार चरणों का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, मगण, सगण, और गुरु होता है।

चंपक-रंभा—स्त्री० [मध्य०स०] चंपा केला।

चंपकली—स्त्री० =चंपाकली।

चंपकारण्य—पुं० [चंपक-अरण्य, मध्य०स०] आधुनिक चम्पारन का पुराना नाम।

चंपकालु—पुं० [सं० चंपक√अल् (भूषित करना) +उण्] जाक या रोटी फल का पेड़।

चंपकावती—स्त्री० [सं० चंपक+मतुप्, वत्व, ङीप्, दीर्घ] चंपापुरी।

चंप-कोश—पुं० [ब०स०] कटहल।

चंपत—वि० [देश०]१. (व्यक्ति) जो बिना किसी से कुछ कहे अथवा अपना पता बतलाये कहीं चला अथवा भाग गया हो। २. (वस्तु) जो किसी स्थान पर से गायब कर दी गई हो।

चँपना—अ० [सं० चप्] १. बोझ पड़ने पर झुकना या दबना। २. उपकार, लज्जा आदि के कारण किसी के सामने झुकना या दबना। †स०=चाँपना।

चंपा—पुं०[सं० चंप+टाप्; प्रा० चंपअ, चंपय; गु० चाँपुं; पं० चंबा; म० चाँफा] [वि० चंपई] १. एक प्रकार का वृक्ष जिसमें उग्र गंधवाले पीले लंबोतरे फूल लगते हैं। २. उक्त वृक्ष का फूल। ३. बंगाल में होनेवाला एक प्रकार का केला। ४. एक प्रकार का घोड़ा। ५. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा। ६. एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जो दक्षिण भारत में अधिकता से होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती और इमारत के काम के सिवा गाड़ी, पालकी, नाव आदि बनाने के काम में भी आती है। इसे 'सुलताना चंपा' भी कहते हैं।

स्त्री० अंग देश की पुरानी राजधानी का नाम।

चंपाकली—स्त्री०[हिं० चंपा+कली] गले में पहनने का एक आभूषण। जिसमें चंपा की कली के आकार के सोने के टुकड़े रेशम के डोरे में पिरोये हुए रहते हैं।

चंपापुरी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] अंग देश की पुरानी राजधानी, चंपा। कर्णपुरी।

चंपारण्य—पुं०[सं० चंपा-अरण्य, मध्य० स०] प्राचीन काल का एक जंगल जो उस स्थान पर था जिसे आज-कल चंपारन कहते हैं।

चंपावती—स्त्री० [सं० चंपा+मतुप्, वत्व, ङीप्, दीर्घ] चंपा नगरी।

चंपू—पुं० [सं०√चंप्+उ]नाटक का वह प्रकार या भेद जिसका कुछ अंश गद्य में हो और कुछ पद्य में।

चंपेल—पुं० [सं० चंपा-तेल] चमेली अथवा चंपा का तेल। (राज०)

चंपेली†—स्त्री०=चमेली।

चँपौनी—स्त्री०[हिं० चाँपना] जुलाहों के करघे की भँजनी में लगी हुई एक पतली लकड़ी।

चंबई—पुं०[चंबा प्रदेश से] एक प्रकार का गहरा फीरोजी रंग जिसमें कुछ नीली झलक होती है। (एज्यूरिअन)

वि० उक्त रंग का अथवा उक्त रंग में रंगा हुआ।

चंबल—स्त्री० [सं० चर्मण्वती] १. एक नदी जो विन्ध्य पर्वत से निकलकर इटावे के पास जमुना में मिली है। २. नहरों आदि के किनारे पर लगी हुई वह लकड़ी जिससे उनका पानी ऊपर चढ़ाया जाता है। ३. पानी की बाढ़।

क्रि० प्र०—आना।—लगाना।

पुं० [फा० चंबुल] [स्त्री० अल्पा० चंबली] १. भीख माँगने का कटोरा या खप्पर। भिक्षापात्र। २. चिलम के ऊपर का ढकना।

पुं० [?] तलुए या हथेली में होनेवाला एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें उनका चमड़ा फटने तथा सड़ने लगता है।

चंबी—स्त्री०[हिं० चाँपना] कागज या मोमजामे का वह तिकोना टुकड़ा जो कपड़ों पर रंग छापते समय उन स्थानों पर रखा जाता है जहाँ रंग चढ़ाना अभीष्ट नहीं होता। पट्टी। कतरनी।

चंबू—पुं०[?] १. एक प्रकार का धान जो पहाड़ों पर बिना सींची जमीन पर चैत में होता है। २. धातु का बना छोटे मुँहवाला एक प्रकार का लोटा या लुटिया जिससे देवमूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं।

चँबेलिया†—वि०=चमेलिया।

चँबेली†—स्त्री०=चमेली।

चँवर—पुं०[सं० पा० प्रा० चामर, बँ० चमर, उ० चाअर, पं० चौर, मरा० चौरी] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. पशुओं मुख्यतः सुरा गाय की पूँछ के लंबे बालों का वह गुच्छा जो दस्ते के अगले भाग में लगा होता है और जिसे देवमूर्तियों, धर्मग्रंथों, राजाओं आदि के ऊपर और इधर-उधर इसलिए डुलाया जाता है कि उन पर मक्खियाँ आदि न बैठने पावें।

क्रि० प्र०—डुलाना।—हिलाना।

२. घोड़ों, हाथियों आदि के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी।

चवरढार—पुं० [हिं० चँवर+ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चँवरी—स्त्री० [?] विवाह-मंडप। उदा०—चँवरी ही पहिचाणियौ, कँवरी मरणौ कंत।—कविराजा सूर्यमल।

स्त्री०=छोटा चँवर।

चंसुर—पुं०[सं० चंद्रशूर] एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते पतले और कटावदार होते हैं। इन पत्तों का साग बनाकर खाया जाता है। हालम। हालों।

चइ—पुं०[अनु०] महावतों की बोली का एक आदेश-सूचक शब्द जो हाथी को घूमने के लिए कहा जाता है।

चइत†—पुं०=चैत।

चइन†—पुं०=चैन।

चई—स्त्री० [सं० चव्य] चव्य या चाब नामक वनस्पति।

चउँहान—पुं०=चौहान।

चउक—पुं० =चौक।

चउकी†—स्त्री०=चौकी।

चउतरा†—पुं०=चबूतरा।

चउथा†—वि०, पुं०=चौथा।

चउदस†—स्त्री०=चौदस।

चउदह†—वि०=चौदह।

चउपाई†—स्त्री० =चौपाई।

चउपारि—स्त्री० = चौपाल।

चउर†—पुं० = चँवर।

चउरा—पुं० = चौरा।

चउरास्या—पुं० = चौरासिया। उदा०—चउरास्या जे कै बसइ असेस।—नरपति नाल्ह।

चउहट्ट—पुं० =चौहट्ट।

चउहान*—पुं० = चौहान।

चक—पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक (पक्षी)। चकवा। २. २. चक्र नामक अस्त्र। ३. चाक। पहिया। ४. चकई नाम का खिलौना। ५. चक्क (दे०)। ६. जमीन का लंबा-चौड़ा बड़ा टुकड़ा।

पद—चकबंदी (देखें)।

७. छोटा गाँव। खेड़ा। ८. करघे की बैसर के कुलवाँसे से लटकती हुई रस्सियों से बँधा हुआ डंडा जिसके दोनों छोरों पर से चकडोर नीचे की ओर जाती है। ९. ओर। तरफ। दिशा। उदा०—पवन विचार चक चक्रमन चित्त चढ़ि भूतल अकास भ्रमै घाम जल सीत में।—केशव। १०. अधिकता। ज्यादती। बाहुल्य।

मुहा०—चक बँधना=बराबर अधिकता या वृद्धि होना।

११. अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा०—चक जमना वा बैठना=पूरी तरह से अधिकार या प्रभुत्व स्थापित होना।

१२. एक प्रकार का गहना जिसका आकार गोल और उभारदार होता है। (पंजाब)

वि० बहुत अधिक। भरपूर। यथेष्ट।

वि० =भौंचक।

पुं० [सं०] साधु।

वि० खल। दुष्ट।

चकई—स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।

स्त्री० [सं० चक्र] काठ का एक प्रसिद्ध खिलौना जो लगी हुई डोरी पर ऊपर-नीचे चढ़ता-उतरता है।

वि० चक्र के आकार का। गोल। जैसे—चकई आड़ू या सेब।

चकचकाना—अ० [देश०] १. किसी तरल पदार्थ का किसी चीज में रस कर ऊपर या बाहर निकलना। २. भींग जाना। भींगना।

†अ० = चकना (चकित होना)।

चकचकी†—स्त्री० [अनु०] करताल नाम का बाजा।

चकचाना†—अ० [देश०] अधिक प्रकाश में नेत्रों का चौंधियाना।

चकचाल†—स्त्री० [सं० चक्र+हिं० चाल] १. चक्र की गति या चाल। २. चक्कर। फेरा। ३. चक्र की तरह घूमते रहने का भाव। ४. पार्थिव आवागमन के चक्र में पड़े या फँसे होने की अवस्था।

चकचाव*—पुं० = चकाचौंध।

चकचून—वि० [सं० चक्र-चूर्ण] १. चूर किया हुआ। चकनाचूर। अच्छी तरह पीस कर बारीक किया हुआ। २. अच्छी तरह तोड़ा-फोड़ा या चकनाचूर किया हुआ।

चक+चूर—वि० = चकचून।

चकचूरना*—स० [हिं० चक+चूरन] १. बहुत महीन पीसना या छोटे-छोटे टुकड़े करना। २. चकनाचूर करना।

चकचोह—स्त्री० = चुहल।

चकचोहा—वि० [हिं० चक (=भरपूर)+चोआ (=रस)] [स्त्री० चकचोही] १. रस से खूब भरा हुआ। २. चिकना-चुपड़ा।

स्त्री० [अनु०] हँसी-ठट्ठा। चुहल।

चकचौंध—स्त्री०=चकाचौंध।

चकचौंधना—अ० [सं० चक्षु और अंध] चकाचौंध होना।

स० चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंह—स्त्री०= चकाचौंध।

चका-चौबंद—वि० = चाक-चौबंद।

चकचौहना—अ० [हिं० चक + चौहना] चाह भरी दृष्टि से देखना। प्रेम-पूर्वक देखना।

चकचौहाँ—वि० [हिं० चकचौहना] १. जो नेत्रों को चौंधिया देता हो। २. बहुत ही प्रकाशपूर्ण या चमकीला। ३. सुंदर। सुहावना।

चकड़बा—पुं० = चकरबा।

चक-डोर—पुं० [हिं० चकई+डोर] १. चकई, लट्टू आदि घुमाने या नचाने की डोरी। २. जुलाहों के करघे की वह डोरी जिसमें बेसर बँधी रहती है।

चकडोल—स्त्री० [सं० चक्र-दोला] एक प्रकार की पुरानी चाल की पालकी। (राज०) उदा०—चकडोल लगै इणि भाँति सुँचाली।—प्रिथीराज।

चकत—स्त्री० [हिं० चकी =दाँतों की पकड़] दाँतों से कसकर पकड़ने की क्रिया या भाव। दाँतों की पकड़।

मुहा०—**चकत मारना** = दाँतों से पकड़कर मांस आदि नोचना।

चकताई†—पुं०= चकत्ता।

चकती—स्त्री० [सं० चक्रवत] १. कपड़े, चमड़े, धातु आदि का फाड़ या काटकर बनाया हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा। २. उक्त प्रकार का कटा हुआ वह टुकड़ा जो वैसी किसी दूसरी ही चीज की कटी या टूटी हुई जगह पर लगाया जाता है। जैसे—कपड़े या परात में लगाई हुई चकती।

मुहा०—**आसमान या बादल में चकती लगाना** = (क) अनहोनी या असंभव काम या बात करने का प्रयास करना। (ख) बहुत बढ़-चढ़कर और अपनी शक्ति के बाहर की बातें करना।

३. दुंबे भेड़े की गोल चक्राकार दुम।

चकत्ता—पुं० [सं० चक्रवत्ता] १. रक्त-विकार आदि के कारण पड़ा हुआ शरीर पर बड़ा गोल दाग। चमड़े पर उभरा हुआ धब्बा वा दाग। ददोरा। जैसे—कोढ़ या दाद होने पर शरीर में जगह-जगह चकत्ते पड़ जाते हैं। २. शरीर में गड़े या गड़ाये हुए दाँतों का चिह्न या निशान। जैसे—कुत्ते या बंदर के काटने से शरीर पर पड़नेवाला चकत्ता।

मुहा०—**चकत्ता भरना या मारना** = दाँतों से काटकर मांस निकाल लेना।

पुं० [तु० चगताई] १. मुगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह हुए थे। २. उक्त के वंश का कोई व्यक्ति। ३. बहुत बड़ा राजा। महाराज।

चकदार—पुं० [हिं० चक+फा० दार (प्रत्य०)] वह जो किसी दूसरे की जमीन पर कुआँ बनवाकर उस जमीन का लगान देता है।

चकना—अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १. चकित या विस्मित होना। भौंचक्का होना। चकराना। २. भयभीत या सशंकित होना। ३. चौंकना।

चकनाचूर—वि० [हिं० चक =भरपूर+चूर] १. जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे-छोटे टुकड़े हो गये हों। चूर-चूर। चूर्णित। २. लाक्षणिक रूप में, बहुत अधिक थका हुआ। बहुत शिथिल और श्रांत।

चकपक—वि० [सं० चक्र =भ्रांत] चकित। भौंचक्का। हक्का-बक्का।

स्त्री० चकित या विस्मित होने की अवस्था या भाव।

चकपकाना—अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १. बहुत अधिक चकित या विस्मित होना। भौचक्का या हक्का-बक्का होना। २. भय या शंका से विकल होना। ३. चौंकना।

चकफेरी—स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक+हिं० फेरी] किसी वृत्त वा मंडल के चारों ओर घूमने या फिरने की क्रिया या भाव। परिक्रमा। भँवरी।

क्रि० प्र०—करना।—खाना। —फिरना।—लेना।

चकबंट—स्त्री० [हिं० चक+बाँटना] बहुत से खेतों को कुछ आदमियों में बाँटने का वह प्रकार जिसमें कई खेतों के चक या समूह प्रत्येक हिस्सेदार को दिये जाते हैं।

चकबंदी—स्त्री० [हिं० चक+फा० बंदी] १. भूमि के बहुत बड़े खंड को छोटे-छोटे चकों या भागों में बाँटने की क्रिया या भाव। २. छोटे-छोटे खेतों को एक में मिलाकर उनके बड़े-बड़े चक या विभाग बनाने की क्रिया या भाव। (कन्सोलिडेशन आफ होल्डिंग्स)

चकबक—पुं० = चकमक।

चकबस्त—पुं० [फा०] १. चकों में बँटा हुआ भूमि खंड। २. कश्मीरी ब्राह्मणों का एक भेद या वर्ग।

चकमक—पुं० [तु० चकमाक] एक प्रकार का आग्नेय कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से आग निकलती है। (फ्लिन्ट)

चकमा—पुं० [सं० चक्र=भ्रांत] १. ऐसा धोखा या भुलावा जो किसी का ध्यान किसी दूसरी ओर आकृष्ट करके दिया जाय। किसी का ध्यान दूसरी ओर रखकर उसे दिया जानेवाले धोखा।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

२. लड़कों का एक प्रकार का खेल।

†पुं० [?] एक प्रकार का बंदर।

चकमाक—पुं० = चकमक।

चकमाकी—वि० [तु० चकमक] चकमक का। जिसमें चकमक हो।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की बंदूक जो चकमक पत्थर के योग से गोली छोड़ती थी।

चकर—पुं० [सं० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।

† पुं० चक्कर।

चकरबा—पुं० [सं० चक्रव्यूह] १. ऐसी स्थिति जिसमें यह न सूझे कि क्या करना चाहिए। असमंजस की और विकट अवस्था। २. व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

चकर-मकर—पुं० [सं० चक्र + फा० मकर] छल-कपट की बात। धोखेबाजी।

चकरसी—पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जो बंगाल और आसाम में होता है। इसके हीर की चमकीली और मजबूत लकड़ी मेज, कुरसी आदि सामान बनाने के काम में आती है।

चकरा †—पुं० [हिं० चक्कर] पानी का भँवर।

† वि० [स्त्री० चकरी] चारों ओर घूमने या चक्कर खानेवाला।

वि० [स्त्री० चकरी] चौड़ा। विस्तृत।

† पुं० = चकला।

चकराना—अ० [सं० चक्र] १. सिर का चक्कर खाना। सिर घूमना। २. किसी प्रकार के चक्कर या फेर में पड़ना। ३. चारों ओर या इधर-उधर घूमना। भ्रांत होना। भटकना। ४. चकित होना।

स० १. चक्कर देना या खिलाना। २. किसी को चक्कर या फेर में डालना। चकित या स्तंभित करना।

चकरानी—स्त्री० [फा० चाकर का स्त्री०] = चाकरानी (दासी)।

चकरिया—वि० [फा० चाकरी + हा (प्रत्य०)] नौकरी-चाकरी करनेवाला।

पुं० टहलुआ। सेवक।

चकरिहा—वि० = चकरिया।

चकरी†— स्त्री० [सं० चक्री] १. चक्की। २. चक्की का पाट। ३. चक्की के पाट की तरह की कोई गोलाकार चिपटी चीज। ४. लड़कों के खेलने का चकई नाम का खिलौना। ५. चारों ओर भटकानेवाला चक्कर या फेर। भ्रांति। उदा०—यह तौ सूर तिन्हैं लै सौंपौ जिनके मन चकरी।—सूर।

चकरी-गिरह—स्त्री० [जहाजी] अर्गल में लगी हुई रस्सी की गाँठ जो उसे रोके रहती है। (लश०)

चकल†—पुं० [हिं० चक्का] १. किसी पौधे को दूसरी जगह लगाने या खोदकर निकालने की क्रिया या भाव। २. वह मिट्टी जो उक्त प्रकार से पौधे को उखाड़कर दूसरी जगह ले जाने पर उसकी जड़ में लिपटी रहती है।

चकलई—स्त्री० [हिं० चकला] चकला (चौड़ा या सपाट) होने की अवस्था या भाव। विस्तार।

चकला—पुं० [सं० चक्र, हिं० चक, + ला (प्रत्य०)] १. काठ, पत्थर, लोहे आदि का गोलाकार चिकना खंड जिस पर पूरी या रोटी बेली जाती है। २. वह भू-भाग जो एक ही तल में दूर तक फैला हो और जिसमें कई गाँव या बस्तियाँ हों।

पद—चकलेदार (देखें)। ३. व्यभिचार करानेवाली वेश्याओं की बस्ती या मुहल्ला। ४. चक्की।

वि० [स्त्री० चकली] अधिक विस्तारवाला। चौड़ा। जैसे—चकला मैदान।

चकलाना—स० [हिं० चकल] पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाने के लिए मिट्टी समेत उखाड़ना। चकल उठाना।

स० [हिं० चकला] चकला अर्थात् चौड़ा या विस्तृत करना।

चकली—स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक्र] १. छोटा चकला जिस पर चंदन आदि घिसते हैं। चौकी। हिरसा। २. गड़ारी। घिरनी।

चकलेदार—पुं० [हिं० चकला + फा० दार] वह अधिकारी जो किसी चकले अर्थात् विस्तृत भू-भाग की मालगुजारी आदि वसूल करता और किसी की ओर से वहाँ की व्यवस्था तथा शासन करता था।

चकल्लस—स्त्री० [?] १. झगड़ा-बखेड़ा। २. मित्रों में होनेवाला हँसी-मजाक या हास-परिहास।

चकवँड़—पुं० [सं० चक्रमर्द] एक प्रकार का जंगली बरसाती पौधा जिसकी पत्तियाँ, डंठल या तने की ओर नुकीली और सिरे की ओर गोलाई लिये हुए चौड़ी होती हैं। पमार। पवाड़।

पुं० [सं० चक्र] मिट्टी का वह छोटा पात्र जिसमें से थोड़ा-थोड़ा हाथ से जल निकालकर चक्क पर चढ़े हुए पात्र को कुम्हार गीला तथा चिकना करता है।

चकवा†—पुं० [सं० चक्रवाक; पा० चक्कवाको; प्रा० चक्कवाअ, चकाअ; गु० चको; सिं० चकुओ; पं० चक्का; सिं० सक्का; ने० चखेवा; मरा० चकवा] [स्त्री० चकई] १. एक प्रसिद्ध जल-पक्षी जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि यह रात को अपने जोड़े से अलग हो जाता है। सुरखाब। २. रहस्य संप्रदाय में, मन।

पुं० [सं० चक्र] १. एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत मजबूत और छाल कुछ स्याही लिये सफेद वा भूरी होती है। इसके पत्ते चमड़ा सिझाने के काम में आते हैं। २. जुलाहों की चरखी में लगी हुई बाँस की छड़ी। ३. हाथ से दबा-दबाकर बढ़ाई हुई आटे की लोई।

चकवाना†—अ० = चकपकाना।

चकवार†—पुं० दे० 'कछुआ'।

चकवाह†—पुं० = चकवा।

चकवी—स्त्री० = चकई।

चकवै—पुं० १. दे० 'चक्रवर्त्ती'। २. दे० 'चकोर'।

चकसेनी†—स्त्री० [देश०] काकजंघा।

चकहा†—पुं० [सं० चक्र] गाड़ी आदि का पहिया।

पुं० = चकवा।

चकाँड़—पुं० [हिं० चक + आँड़] चिपटा अंडकोश।

चका†—पुं० [सं० चक्र] १. पहिया। २. चक्क।

* पुं० = चकवा।

चकाकेवल—स्त्री० [हिं० चकवा, चक्का,] काले रंग की मिट्टी जो सूखने पर चिटक जाती और पानी से लसदार होती है। यह कठिनता से जोती जाती है।

चकाचक—स्त्री० [अनु०] तलवार आदि के लगातार शरीर पर पड़ने का शब्द।

क्रि० वि० [अनु०] अच्छी तरह से। अधिक मात्रा में। जैसे—चकाचक खाया था।

वि० १. चटकीला। २. मजेदार। ३. रस आदि में डूबा हुआ। तर। तराबोर।

चकाचौंध—स्त्री० [सं० चक्र= चमकना + चौ = चारों ओर + अंध] १. किसी वस्तु के अत्यधिक प्रकाशित होने की वह स्थिति जिसमें नेत्र अधिक प्रकाश के कारण उस वस्तु को देख न पाते हों और जल्दी-जल्दी खुलने तथा बंद होने (झपकने) लगते हों। २. उक्त प्रकार की वस्तुओं के देखने से आँखों पर होनेवाला परिणाम।

क्रि० प्र० — लगना। —होना।

चकाचौंधी†—स्त्री० = चकाचौंध।

चकातरी—पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

चकाना†—अ० १. = चकपकाना। २. =चकराना।

चकाबू—पुं० [सं० चक्रव्यूह] १. प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसके चारों ओर खड़ा किया जानेवाला सैनिक व्यूह। २. भूल-भुलैयाँ (दे०)।

चकार—पुं० [सं० च + कार] १. वर्णमाला में छठा व्यंजन वर्ण जो च है। २. मुँह से निकलनेवाला किसी प्रकार का शब्द। जैसे—उसके मुँह से चकार तक न निकला।

†पुं० [हिं० चोर का अनु०] चोर या उचक्का। जैसे—चाईं-चकार चोर और नटखट तोरे वदे।—तेगअली।

चकावल—स्त्री० [देश०] घोड़े के अगले पैर में गामचे की हड्डी का उभार।

चकासना*—अ० = चमकना।

चकित—वि० [सं० √चक् (भ्रांत होना) + क्त] जो अप्रत्याशित या अद्भुत कार्य, बात या व्यवहार देखकर विकल या विस्मित, सशंकित या स्तब्ध हो गया हो। आश्चर्य में आया या पड़ा हुआ।

चकितवंत*—वि० = चकित।

चकिता—स्त्री० [सं० चकित + टाप्] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

चकिताई*—स्त्री० [हिं० चकित] चकित होने की अवस्था या भाव।

चकिया†—स्त्री० [सं० चक्रिका] किसी चीज का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। जैसे—पत्थर की चकिया।

चकुंदा†—पुं० [सं० चक्रमर्द] चकवँड़ (दे०)।

चकुरी†—स्त्री० [सं० चक्र] मिट्टी की छोटी हाँड़ी।

चकुला†—पुं० [देश०] चिड़िया का बच्चा। चेंटुआ।

चकुलिया—स्त्री० [सं० चक्रकुल्या] एक प्रकार का पौधा।

चकृत†—वि० = चकित।

चकेठ—पुं० [सं० चक्र-यष्टि] वह डंडा जिससे कुम्हार चाक घुमाते हैं।

चकेड़ी—स्त्री० [सं० चक्रभाण्डिका, प्रा० चक्कहंडिया] चकवँड़ (दे०)।

चकेव*—पुं० = चक्रवाक (चकवा पक्षी)। उदा०—कुच-जुग चकेव चरइ गंगाधारे।—विद्यापति।

चकोट—पुं० [हिं० चकोटना] १. चकोटने की क्रिया या भाव। २. गाड़ी के पहिये से जमीन पर पड़नेवाली लकीर।

चकोटना—स० [हिं० चिकोटी] चिकोटी काटना। चुटकी से मांस नोचना।

चकोतरा—पुं० [सं० चक्र =गोला] १. एक प्रकार का नीबू की ज़ाति का पेड़ जिसमें खट-मीठे गोल फल लगते हैं। २. उक्त पेड़ का फल जो प्रायः खरबूजे की तरह बड़ा होता है।

चकोता—पुं० [हिं० चकत्ता] एक प्रकार का रोग जिसमें घुटने के नीचे छोटी-छोटी फुंसियाँ निकल आती हैं।

चकोर—पुं० [सं० √चक् (तृप्त होना) + ओरन्] [स्त्री० चकोरी] १. एक प्रकार का बड़ा तीतर जो नैपाल, पंजाब और अफ़गानिस्तान के पहाड़ी जंगलों में बहुत मिलता है। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण, एक गुरु और अंत में एक लघु होता है। यह एक प्रकार का सवैया है।

चकोह†—पुं० [सं० चक्रवाह] पानी का भँवर।

चकौंड़†—पुं० =चकवँड़।

चकौंध—स्त्री० = चकाचौंध।

चकौटा—पुं० [देश०] १. भूमि की लगान का एक पुराना प्रकार। २. ऋण चुकाने के बदले में दिया जानेवाला पशु। मुलवन।

चक्क—पुं० [सं० √चक्क् (पीड़ा होना) + अप्] पीड़ा। दर्द।

† वि० भर-पूर। यथेष्ट। जैसे—चक्क माल।

पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक पक्षी। चकवा। २. कुम्हार का चाक। ३. ओर। तरफ। दिशा। ४. दे० 'चक्र'।

चक्कर—पुं० [सं० चक्र] १. लकड़ी, लोहे आदि का गोलाकार ढाँचा जो छड़ों, तीलियों आदि द्वारा चक्रनाभि पर कसा रहता है और किसी अक्ष या धुरे को केंद्र बनाकर उसके चारों ओर घूमता तथा यान, रथ आदि को आगे खींचता चलता है। २. उक्त आकार की कोई घूमनेवाली वस्तु। चाक। जैसे—(क) अतिशबाजी का चक्कर। (ख) पानी का चक्कर (भँवर)। (ग) सुदर्शन चक्कर। ३. कोई गोलाकार आकृति। मंडल। घेरा। ४. गोल सड़क या रास्ता। ५. किसी गोलाकार मार्ग के किसी विंदु से चलकर तथा उसके चारों ओर घूमकर फिर उसी विंदु पर पहुँचने की क्रिया या भाव। गोलाई में घूमना।

मुहा०—चक्कर काटना =किसी चीज के चारों ओर घूमना। मँडराना।

६. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना और फिर वहाँ से लौटकर आना। जैसे—(क) आज मुझे शहर के चार चक्कर लगाने पड़े हैं। (ख) मैं उनके घर कई चक्कर लगा आया पर वे मिले नहीं।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

७. रास्ते का घुमाव-फिराव। जैसे—इस रास्ते से बहुत चक्कर पड़ेगा। ८. कोई ऐसी कठिन, पेचीली या झंझट की बात या समस्या जिससे आदमी परेशान या दुःखी होता हो। जैसे—कचहरी के चक्कर में इस भले आदमी को व्यर्थ फँसाया गया है। ९. धोखा। भुलावा।

मुहा०—(किसी के) चक्कर में आना=किसी के फेर में फँसना। धोखा खाना। **(किसी को) चक्कर में डालना** =(क) किसी ऐसे कठिन काम में किसी को फँसाना कि वह परेशान हो जाय। (ख) चकित करना।

१०. ऐसी असमंजस की स्थिति जिसमें मनुष्य कुछ सोच या निश्चित न कर पाता हो। ११. पीड़ा, रोग आदि के कारण मस्तिष्क में होनेवाला एक विकार जिसमें व्यक्ति के चारों ओर सामने की चीजें घूमने लगती हैं। घुमटा।

चक्कल—वि० [सं० √चक्क् (पीड़ित होना) + अलन्] गोल। वर्तुल।

चक्कवइ*—वि० = चक्रवर्ती।

चक्कवत*—पुं० = चक्रवर्ती (राजा)।

चक्कवा*—पुं० = चकवा।

चक्कवै—वि० =चक्रवर्ती। उदा०—अइस चक्कवै राजा चहूँ खंड भैहोई। —जायसी।

चक्कस—पुं० [फा० चकस] बुलबुल, बाज आदि पक्षियों के बैठने का अड्डा जो प्रायः लोहे के छड़ का बना होता है।

चक्का—पुं०[सं०चक्रम्; प्रा० पा० चक्क; बँ० गु० मरा० चाक; उ० चक; पं० चक्क; सिं० चकु; ने० चाको] स्त्री० अल्पा० चक्की] १. गाड़ी, रथ आदि का पहिया। चाक। २. पहिये की तरह की कोई गोलाकार चीज। ३. किसी चीज का गोलाकार जमा हुआ टुकड़ा। चक्का। जैसे– कत्थे या दही का चक्का। ४. ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा जो प्रायः फेंककर मारा जाता है। ५. ईंट, पत्थर के टुकड़ों आदि का क्रम से और सजाकर लगाया हुआ ढेर। थाक।

चक्की—स्त्री० [सं० चक्री, प्रा० चक्की] १. आटा पीसने, दाल दलने आदि का वह प्रसिद्ध यंत्र जो एक दूसरे पर रखे हुए पत्थर के दो गोलाकार टुकड़ों के रूप में होता है और जिनमें से ऊपरवाले पत्थर के घूमने से उसके नीचे डाली हुई चीजें पिसती या दली जाती हैं। जाँता।

क्रि० प्र०—चलाना।—पीसना।

मुहा०—**चक्की पीसना** = (क) चक्की में डालकर गेहूँ आदि पीसना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम का काम निरंतर करते रहना।

पद—**चक्की का पाट** = चक्की के दोनों पत्थरों में से हर एक। **चक्की की मानी** = (क) चक्की के नीचे के पाटे के बीच में गड़ी हुई वह खूँटी जिस पर ऊपर का पाट घूमता है। (ख) ध्रुवतारा। **चलती चक्की** = जगत्। संसार। जैसे—चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।—कबीर।

स्त्री० [सं० चक्रिका] १. पैर के घुटने की गोल हड्डी। २. ऊँटों के घुटनों पर का गोल घट्ठा। चाकी। बिजली।

चक्की-रहा—पुं० [हिं० चक्की + रहाना] चक्की को टाँकी से कूटकर खुरदरी करनेवाला कारीगर।

चक्कू†—पुं० = चाकू।

चक्खी—स्त्री० [हिं० चखना] १. स्वाद के लिए चखी अर्थात् थोड़ी-थोड़ी खाई जानेवाली चटपटी और नमकीन चीज। चाट। जैसे—कचालू, गोलगप्पा आदि। २. कोई नशे की चीज पीने के समय या उसके बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जानेवाली चटपटी या नमकीन चीज। ३. बटेरों को दाना चुगाने की क्रिया।

चक्र—पुं० [सं० √कृ (करना) + क, नि० द्वित्व] १. गाड़ी का वर्त्तुलाकार पहिया। विशेष दे० 'चक्कर'। २. कुम्हार का चाक। ३. कोई वर्त्तुलाकार चीज। ४. छोटे पहिए के आकार का एक प्राचीन अस्त्र। ५. चक्की। ६. कोल्हू। ७. पानी का भँवर। ८. हवा का बवंडर। चक्रवात। ९. दल। समुदाय। १० एक प्रकार का सैनिक-व्यूह। ११. गाँवों, शहरों का समूह। मंडल। १२. मंडलाकार घेरा। जैसे—राशि-चक्र। १३. ऐसे गोल या चौकोर खाने जो रेखाओं आदि से घिरे हों। जैसे—कुंडली चक्र। १४. सामुद्रिक में हाथ की वह रेखा जो गोलाई में घूमी हो। १५. समय की वह अवधि जिसमें कुछ निश्चित प्रकार की घटनाएँ आदि क्रमशः घटती अथवा अवस्थाएँ बदलती हों और फिर उतने ही समय में जिनकी पुनरावृत्ति होती हो। (साइकिल) जैसे–अर्थशास्त्र में व्यापार चक्र। (ट्रेड साइकिल)। १६. फेरा चक्कर। १७. चकवा। १८. तगर का फूल। १९. योग के अनुसार मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर आदि शरीरस्थ कमल या पद्म। २०. एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रांत भूमि। २१. दिशा। प्रांत। २२. एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण, तीन नगण और अंत में लघु, गुरु होते हैं। २३. धोखा। २४. (क) शरीर विज्ञान या दैहिकी के अनुसार जीवधारियों के शरीर के अंदर की वह रचना जो तंतु-जाल के रूप में होती और कुछ विशिष्ट प्रक्रियाएँ करती हैं। (प्लेक्सस) (ख) योग शास्त्र के अनुसार शरीर के उक्त विशिष्ट अंग जो आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं के अनुसार कुछ विशिष्ट जीवनरक्षिणी और विकासकारिणी गिल्टियों के आस-पास पड़ते हैं। (प्लेक्सस)

विशेष—पहले इनकी संख्या ६ मानी गई थी जिससे 'षट्-चक्र' (दे०) पद बना, पर आगे चलकर हठ-योग में जब इनकी संख्या आठ मानी गई जिससे ये अष्टचक्र या अष्टकमल (दे०) कहलाने लगे। और भी आगे चलकर कुछ लोगों ने इनमें 'ललना-चक्र' नामक नवाँ और 'गुरु-चक्र' नामक दसवाँ चक्र भी बढ़ा दिया है।

२५. अपना संघटन दृढ करने के लिए राजनीतिक, सामाजिक आदि कार्य करनेवालों का किसी स्थान पर एकत्र होकर विचार-विनिमय, प्रदर्शन आदि करना। जमाव। (रैली) २६. गुप्त रूप से कहीं आड़ में रहकर की जानेवाली कार्रवाई। अभिसंधि। जैसे—यह सारा चक्र आप ही का चलाया हुआ है। २७. (संख्या के विचार से) बंदूक, राइफल आदि से गोली चलाने की क्रिया। (राउण्ड) जैसे—पुलिस ने चार चक्र गोलियाँ चलाई। २८. धातु का एक विशेष प्रकार का टुकड़ा जो प्रायः सैनिकों को कोई वीरता-पूर्ण काम करने पर पदक या तमगे के रूप में दिया जाता है। जैसे—महावीर चक्र, वीर चक्र आदि।

चक्रक—पुं० [सं० चक्र √कै (प्रतीत होना) + क) १. नव्य न्याय में, एक प्रकार का तर्क। २. एक प्रकार का साँप।

वि० पहिये के आकार का। गोलाकार।

चक्र-कारक—पुं० [ष० त०] १. नखी नामक गंध द्रव्य। २. हाथ के नाखून।

चक्र-कुल्या—स्त्री० [ष० त०] चक्रपर्णी लता। पिठवन।

चक्र-क्रम—पुं० [उपमि० स०] कुछ विशिष्ट घटनाओं का कई विशिष्ट अवसरों पर क्रमशः तथा बराबर रहने का क्रम। चक्र की तरह बार-बार घूमकर आनेवाला क्रम। (साइक्लिक आर्डर) जैसे—गरमी, बरसात और सरदी का चक्र-क्रम।

चक्र-गज—पुं० [स० त०] चकवँड़।

चक्र-गति—स्त्री० [ष० त०] १. किसी केंद्र के चारों ओर अथवा अपने ही अक्ष पर चारों ओर घूमने की क्रिया या भाव। २. दे० 'चक्र क्रम'।

चक्र-गर्त्त—पुं० = चक्र-तीर्थ।

चक्र-गुच्छ—पुं० [ब० स०] अशोक (वृक्ष)।

चक्र-गोप्ता (प्तृ)—पुं० [ष० त०] १. सेनापति। २. राज्य का रक्षक अधिकारी। ३. रथ और उसके चक्र आदि की रक्षा करनेवाला योद्धा।

चक्र-चर—वि० [सं० चक्र √चर् (चलना) +ट, उप० स०] चक्कर या चक्र में चलनेवाला।

पुं० तेली।

चक्र-जीवक—पुं० [सं० चक्र √जीव् (जीना) +ण्वुल्—अक, उप० स०] कुम्हार।

चक्र-जीवी (विन्)—पुं० [सं० चक्र √जीव्+णिनि, उप० स०] =चक्र-ज़ीवक।

चक्र-ताल—पुं० [मध्य० स०] संगीत में एक प्रकार का चौदह-ताला ताल।

चक्रतीर्थ—पुं० [मध्य० स०] १. दक्षिण भारत का वह तीर्थ-स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतों के बीच तुंगभद्रा नदी घूमकर बहती है। २. नैमिषारण्य का एक सरोवर।

चक्र-तुंड—पुं० [ब० स०] गोल मुँहवाली एक प्रकार की मछली।

चक्र-दंड—पुं० [उपमि० स०] एक प्रकार की कसरत जिसमें जमीन पर दंड करके झट दोनों पैर समेट लेते हैं और फिर दाहिने पैर को दाहिनी ओर और बाएँ पैर को बाईं ओर चक्कर देते हुए पेट के पास लाते हैं।

चक्र-दंती—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १. दंती वृक्ष। २. जमाल गोटा।

चक्र-दंष्ट्र—पुं० [ब० स०] सूअर। शूकर।

चक्रधर—वि० [सं० चक्र √धृ (धारण) +अच्, उप० स०] चक्र धारण करनेवाला। जिसके पास या हाथ में चक्र हो।

पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. ऐंद्रजालिक। बाजीगर। ४. किसी छोटे भू-भाग का अधिकारी या शासक। ५. साँप। ६. गाँव का पुरोहित। ७. नटराग से मिलता-जुलता षाडव जाति का एक राग जो संध्या समय गाया जाता है।

चक्रधारा—स्त्री० [ष० त०] चक्र की परिधि।

चक्रधारी (रिन्)—वि०, पुं० [सं० चक्र √धृ (धारण) +णिनि, उप० स०] = चक्रधर।

चक्र-नख—पुं० [ब० स०] व्याघ्र नख नामक ओषधि। बघनखा।

चक्र-नदी—स्त्री० [मध्य० स०] गंडकी नदी।

चक्र-नाभि—स्त्री० [ष० त०] पहिये का वह मध्य भाग जिसके बीच में से अक्ष या धुरा होकर जाता है।

चक्र-नाम—पुं० [ब० स०] १. माक्षिक धातु। सोनामक्खी। २. चकवा या चक्रवाक पक्षी।

चक्र-नायक—पुं० [ष० त०] व्याघ्र नख नाम की ओषधि।

चक्र-नेमि—स्त्री० [ष० त०] पहिये का घेरा या परिधि।

चक्र-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] पिठवन।

चक्र-पाणि—पुं० [ब० स०] हाथ में चक्र धारण करनेवाले, विष्णु।

चक्र-पाद—पुं० [ब०स०] १. गाड़ी। रथ। २. हाथी।

चक्र-पादक—पुं० चक्रपाद (दे०)।

चक्र-पानि*—पुं० = चक्रपाणि।

चक्र-पाल—पुं० [सं० चक्र √पाल् (रक्षा) +णिच् +अण्, उप० स०] १. वह जो चक्र धारण करे। २. किसी प्रदेश का शासक या सूबेदार। ३. गोल आकृति। वृत्त। ४. संगीत में शुद्ध राग का एक भेद।

चक्र-पूजा—स्त्री० [स० त०] १. तांत्रिकों की एक प्रकार की पूजा-विधि जिसमें बहुत से उपासक एक चक्र या मंडल के रूप में बैठकर तांत्रिक क्रियाएँ करते हैं। २. दे० 'चरकपूजा'।

चक्र-फल—पुं० [ब० स०] एक प्राचीन अस्त्र जिसका फल गोलाकार होता था।

चक्र-बंध—पुं० [ब० स०] कविता-रचना का एक प्रकार जिसमें उसके शब्द खानों में भरे जाते हैं।

चक्र-बंधु—पुं० [ष० त०] १. सूर्य। २. अँगूठी। ३. समूह।

चक्र-बांधव—पुं० [ष० त०] चक्र-बंधु (दे०)।

चक्र-भृत्—पुं० [सं० चक्र √भृ (धारण) +क्विप्, उप० स०] १. चक्र नामक अस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति। २. विष्णु।

चक्र-भेदिनी—स्त्री० [सं० चक्र √भिद् (विदारण) √णिनि—ङीप्, उप० स०] रात्रि। रात।

चक्र-भोग—पुं० [ष० त०] ज्योतिष में ग्रह की वह गति जिसके अनुसार वह एक स्थान से चलकर फिर उसी स्थान पर पहुँचता है।

चक्र-भ्रम—पुं० [सं० चक्र √भ्रम् (घूमना) + अच्, उप० स०] खराद।

चक्र-भ्रमर—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का नृत्य।

चक्र-मंडल—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का नृत्य जिसमें नाचनेवाला किसी केंद्र के चारों ओर नाचता हुआ घूमता है।

चक्र-मंडली (लिन्)—पुं० [सं० चक्र-मंडल उपमि० स०, +इनि] अजगर साँप की एक जाति।

चक्र-मर्द—पुं० [सं० चक्र √मृद् (मर्दन) +अण, उप० स०] चकवँड़।

चक्र-मीमांसा—स्त्री० [ष० त०] वैष्णवों की चक्र-मुद्रा धारण करने की विधि।

चक्र-मुख—वि० [ब० स०] गोल मुँहवाला।

पुं० सूअर।

चक्र-मुद्रा—पुं० [मध्य० स०] शरीर के विभिन्न अंगों पर दगवाया या लगवाया जानेवाला चक्र के आकार का चिह्न।

चक्र-यंत्र—पुं० [उपमि० स०] ज्योतिष संबंधी वेध करने का एक प्रकार का यंत्र।

चक्र-यान—पुं० [मध्य०स०] ऐसी गाड़ी जिसमें पहिये लगे हों।

चक्र-रद—पुं० [ब० स०] सूअर।

चक्र-रिष्टा—स्त्री० [ब० स०] बक। बगला।

चक्र-लक्षणा—स्त्री० [ब० स०] गुरुच या गुडूची नामक लता।

चक्र-लिप्ता—स्त्री० [ष० त०] ज्योतिष में राशि-चक्र का कलात्मक भाग अर्थात् २१६०० भागों में से एक भाग।

चक्र-लेखित्र—पुं० [मध्य० स० (लेखित्र ?)] एक प्रकार का छोटा उपकरण जिसकी लेखनी की नोक पर लगे हुए छोटे से चक्र द्वारा एक विशेष प्रकार के कागज पर बनाये हुए अक्षरों की सहायता से किसी लेख आदि की प्रतिलिपियाँ तैयार की जाती हैं। (साइक्लोस्टाइल)

चक्र-वर्तिनी—स्त्री० [सं० चक्र √वृत् (बरतना) +णिनि, ङीप्, उप० स०] १. किसी दल या समूह की अधीश्वरी। २. जनी या पानड़ी नाम का पौधा जिसकी पत्तियाँ सुगंधित होती हैं।

चक्र-वर्ती (तिन्)—वि० [सं० चक्र √वृत् + णिनि, उप० स०] [स्त्री० चक्र-वर्तिनी] (राजा) जिसका राज्य बहुत दूर-दूर तक और विशेषतः समुद्र-तट तक फैला हुआ हो। सार्वभौम।

पुं० १. ऐसा सम्राट् जो दो समुद्रों के बीच की सारी भूमि पर एकच्छत्र

राज्य करता हो। २. किसी दल का अधिपति। समूह-नायक। ३. बथुआ (साग)।

चक्र-वाक—पुं० [सं० वाक √वच् (बोलना) +घञ्, ब० स०] [स्त्री० चक्रवाकी] चकवा पक्षी।

चक्रवाड़—पुं० = चक्रवाल।

चक्र-वात—पुं० [सं० उपमि० स०] चक्कर खाती हुई बहुत तेज चलनेवाली हवा। बवंडर। (व्हर्ल विंड)

चक्रवान् (वत्)—पुं० [सं० चक्र+मतुप्] पुराणानुसार चौथे समुद्र के बीच में स्थित माना जानेवाला एक पर्वत जहाँ विष्णु भगवान ने हयग्रीव और पंचजन नामक दैत्यों को मारकर चक्र और शंख दो आयुध प्राप्त किये थे।

चक्रवाल—पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत जो भूमंडल के चारों ओर स्थित तथा प्रकाश और अंधकार (दिन-रात) का विभाग करनेवाला माना गया है। लोकालोक पर्वत। २. घेरा। मंडल। ३. चंद्रमा के चारों ओर दिखाई देनेवाला धुँधले प्रकाश का घेरा या मंडल।

चक्र-वृत्ति—स्त्री० [मध्य स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक भगण, तीन नगण और अंत में लघु-गुरु होते हैं।

चक्र-वृद्धि—स्त्री० [उपमि० स०] १. ऋण का वह प्रकार जिसमें मूल धन पर ब्याज देने के अतिरिक्त उस ब्याज पर भी ब्याज दिया जाता है जो किसी निश्चित अवधि तक चुकाया नहीं जाता। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट) २. गाड़ी आदि का भाड़ा।

चक्र-व्यूह—पुं० [मध्य० स०] १. युद्ध-क्षेत्र में किसी वस्तु या व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसके चारों ओर असंख्य सैनिकों का किसी क्रम या सिलसिले से खड़े होने की अवस्था या स्थिति। २. सेना का ऐसे ढंग से युद्ध-क्षेत्र में खड़ा या स्थित होना कि शत्रु उन्हें सरलता से भेद न सके।

चक्र-शल्य—स्त्री० [ब० स०]। सफेद घुँघची। २. काक-तुंडी। कौआ, ठोठी।

चक्र-श्रेणी—स्त्री० [ब० स०] मेढ़ासींगी।

चक्र-संज्ञ—पुं० [ब० स०] १. वंग नामक धातु। राँगा। २. चकवा पक्षी।

चक्र-संवर—सं० [सं० चक्र-सम्√वृ (रोकना) +अच्, उप० स०] एक बुद्ध का नाम।

चक्र-हस्त—पुं० [ब० स०] विष्णु।

चक्रांक—पुं० [चक्र-अंक, ष० त०] विष्णु के चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर के अंगों पर दगवाते हैं।

चक्रांक-पुच्छ—पुं० [ब० स०] १. मोर। २. मोर का पंख। उदा०—उन्मुक्त गुच्छ चक्रांक-पुच्छ।—निराला।

चक्रांकित—वि० [चक्र-अंकित, तृ० त०] १. जिस पर चक्र का चिह्न अंकित हो। २. (व्यक्ति) जिसने अपने शरीर पर चक्र का चिह्न दगवाया हो। जिसने चक्र की छाप लीया हो।

पुं० वैष्णवों का एक सम्प्रदाय जिस के लोग अपने शरीर पर चक्र का चिह्न दगवाते हैं।

चक्रांग—पुं० [चक्र-अंग, ब० स०] १. चकवा पक्षी। २. गाड़ी या रथ। ३. हंस। ४. कुटकी नाम की ओषधि। ५. हिलमोचिका या हुलहुल नाम का साग।

चक्रांगा—स्त्री० [सं० चक्रांग+टाप्] १. काकड़ासिंगी। २. सुदर्शन नाम का पौधा या लता।

चक्रांगी—स्त्री० [सं० चक्रांग+ङीष्] १. कुटकी नाम की ओषधि। २. हंस की मादा। हंसिनी। ३. हुलहुल नाम का साग। ४. मजीठ। ५. काकड़ासिंगी। ६. मूसाकानी।

चक्रांत—पुं० [चक्र-अंत, ब० स०] गुप्त अभिसंधि। षड्यंत्र।

चक्रांतर—पुं० [सं० चक्रांत √रा (लेना) +क] एक बुद्ध का नाम।

चक्रांश—पुं० [चक्र-अंश, ष० त०] १. किसी चक्र का कोई अंश। २. चंद्रमा के चक्र का ३६० वाँ अंश।

चक्रा—स्त्री० [सं० चक्र+टाप्] १. नागरमोथा। २. काकड़ासिंगी।

चक्राक—पुं० [सं० चक्र √अक् (गति) +अच्] [स्त्री० चक्राकी] हंस नामक पक्षी।

चक्राकार—वि० [चक्र-आकार, ब० स०] चक्र या पहिये के आकार का। मंडलाकार।

चक्राट—पुं० [सं० चक्र √अट् (गति) +अण्, उप० स०] १. साँप पकड़नेवाला। २. मदारी। ३. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त। ४. सोने का दीनार नाम का सिक्का।

चक्रानुक्रम—पुं० [चक्र-अनुक्रम, उपमि० स०] = चक्र-क्रम।

चक्रायुध—पुं० [चक्र-आयुध, ब० स०] विष्णु।

चक्रावल—पुं० [सं०] १. घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके पैरों में घाव हो जाता है। २. उक्त रोग से होनेवाला घाव।

चक्राह्व—पुं० [चक्र-आह्वान, ब० स०] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। २. चकवँड़।

चक्रिक—वि० [सं० चक्र+ठन्—इक] १. चक्र से युक्त। २. चक्र धारण करनेवाला।

चक्रिका—स्त्री० [सं० चक्रिक+टाप्] घुटने की गोल हड्डी। चक्की।

चक्रित†—वि० = चकित।

चक्री (क्रिन्)—पुं० [सं० चक्र+इनि] १. वह जो चक्र धारण करे। २. विष्णु। ३. गाँव का पुरोहित। ४. कुम्हार। ५. कुंडली मारकर बैठनेवाला साँप। ६. चकवा पक्षी। ७. गुप्त-चर। जासूस। ८. तेली। ९. बकरा। १०. चकवँड़। ११. तिनिश नामक वृक्ष। १२. कौआ। १३. व्याघ्र नख या बघनहाँ नामक गंधद्रव्य। १४ गधा। १५. रथ का सवार। रथी। १६. चंद्रशेखर के मत से आर्याछंद का २२ वाँ भेद जिसमें ६ गुरु और ४५ लघु होते हैं। १७. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। १८. चक्रवर्ती राजा।

वि० १. (गाड़ी आदि) जिसमें पहिया लगा हो। २. गोलाकार (वस्तु)। ३. चक्र धारण करनेवाला (व्यक्ति)।

चक्रीय—वि० [सं० चक्र+छ—ईय] १. चक्र-संबंधी। चक्र का। २. चक्र-क्रम के अनुसार होनेवाला। (साइक्लिक)

चक्रेश्वर—पुं० [चक्र-ईश्वर, ष० त०] १. चक्रवर्त्ती। २. तांत्रिकों में चक्र के अधिष्ठाता देवता।

चक्रेश्वरी—स्त्री० [सं० चक्र-ईश्वरी, ष० त०] जैनों की एक महाविद्या।

चक्ष—पुं० [सं० √चक्ष् (देखना, बोलना) +अच्] नकली दोस्त। स्वार्थी मित्र।

चक्षण—पुं० [सं०√चक्ष्+ल्युट्–अन] १. कृपा-दृष्टि। २. अनुग्रह-पूर्ण व्यवहार। ३. बातचीत। कथन। ४. मद्य आदि के साथ खाने की चाट। चक्खी।

चक्षम—पुं० [सं०√चक्ष्+अम] १. बृहस्पति। २. उपाध्याय।

चक्षा (क्षस्)—पुं० [सं०√चक्ष्+अस्] १. बृहस्पति। २. आचार्य।

चक्षुः पथ—पुं० [ष० त०] १. दृष्टि-पथ। २. क्षितिज।

चक्षुःश्रवा (वस्)—वि० [ब० स०] नेत्रों से सुननेवाला।

पुं० साँप।

चक्षु (क्षुस्)—पुं० [सं०√चक्ष्+उस्] १. देखने की इंद्रिय। आँख। नेत्र। २. पश्चिमी एशिया के वंक्षु नद (आधुनिक आक्सस नदी) का एक पुराना नाम।

चक्षुरपेत—वि० [चक्षुर्-अपेत, तृ० त०] नेत्रहीन। अंधा।

चक्षुरिंद्रिय—स्त्री० [चक्षुर्-इंद्रिय, कर्म० स०] देखने की इंद्रिय। आँख। नेत्र।

चक्षुर्दर्शनावरण—पुं० [चक्षुर्-दर्शन तृ० त०, चक्षुर्दर्शन-आवरण ष० त०] जैन शास्त्र में वे कर्म जिनके उदय होने से चक्षु द्वारा दिखाई पड़ने में बाधा होती है।

चक्षुर्मल—पुं० [ष० त०] आँख से निकलनेवाला मल या कीचड़।

चक्षुर्वन्य—वि० [तृ० त०] नेत्र रोग से ग्रस्त या पीड़ित।

चक्षुर्विषय—पुं० [ष० त०] १. वे सब चीजें या बातें जो आँख से दिखाई देती हैं। २. क्षितिज।

वि० जो चक्षुओं का विषय हो।

चक्षुर्हा (हंन्)—वि० [सं० चक्षुस्√हन् (मारना)+क्विप्, उप० स०] जिसके देखने मात्र से कोई चीज नष्ट हो जाती हो।

चक्षुष्कर्ण—पुं० [ब० स०] सर्प। साँप।

चक्षुष्पति—पुं० [ष० त०] सूर्य।

चक्षुष्पथ—पुं० [ष० त०] १. दृष्टि-पथ। २. क्षितिज।

चक्षुष्मान् (मत्)—वि० [सं० चक्षुस्+मतुप्] १. आँखोंवाला। २. सुंदर आँखोंवाला।

चक्षुष्य—वि० [सं० चक्षुस्+यत्] १. नेत्र-संबंधी। २. जो देखने में प्रिय लगे। मनोहर। सुंदर। ३. जो नेत्रों के लिए हितकर हो। ४. नेत्रों से उत्पन्न होनेवाला।

पुं० १. आँखों में लगाने का अंजन या सुरमा। २. केतकी। केवड़ा। ३. सहिंजन। ४. तूतिया।

चक्षुष्या—स्त्री० [सं० चक्षुष्य+टाप्] १. सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री। २. वनकुलथी। चाकसू। ३. मेढ़ासींगी।

चक्षुस्—पुं०=चक्षु।

चख—पुं० [सं० चक्षुस्] आँख।

पुं० [अनु०] झगड़ा। तकरार।

पद—चख-चख=कहा-सुनी या बक-झक। झगड़ा और तकरार।

पुं० १. =नीलकँठ (पक्षी)। २. =गिलहरी।

चख-चख—स्त्री० [अनु०] १. दो व्यक्तियों या पक्षों में किसी बात पर होनेवाली कहा-सुनी। झगड़ा। २. कलह।

चखचौंध†—स्त्री० =चकाचौंध।

चखना—सं० [प्रा० चक्ख, चड्ड; बँ० चाखा; उ० चाखिबा; पं० चक्खणा; मरा० चाखणें] १. किसी खाद्य वस्तु का स्वाद जानने के लिए उसका थोड़ा-सा अंश मुँह में रखना या खाना। चीखना। २. किसी चीज या बात की साधारण अनुमति प्राप्त करना। जैसे—लड़ाई का मज़ा चखना।

चखा—पुं० [हिं० चखना] १. चखनेवाला। २. रस का आस्वादन करनेवाला। प्रेमी। रसिक। उदा०—विपिन बिहारी दोउ लसत एक रूप सिंगार। जुगल रस के चखा।—सत्यनारायण।

चखा-चखी—स्त्री० [फा० चख =झगड़ा] १. जोरों का या बहुत अधिक लड़ाई-झगड़ा या तकरार। २. बहुत अधिक वैर-विरोध या लाग-डाँट।

चखाना—स० [हिं० 'चखना' का प्रे०] किसी को कुछ चखने में प्रवृत्त करना।

चखिया—वि० [फा० चख =झगड़ा] चख-चख या तकरार करनेवाला। झगड़ालू।

चखु*—पुं० =चक्षु।

चखोड़ा†—पुं० [हिं० चख+ओड़] बुरी नजर से बचाने के लिए लगाई जानेवाली काली बिंदी। डिठौना। उदा०—बनि रहे रुचिर चखोड़ा गाल।—नंददास।

चखौती—स्त्री० [हिं० चखना] खाने-पीने की चट-पटी और स्वादिष्ट चीजें।

चगड़—वि० = चघड़।

चगताई—पुं० [तु०] मध्य एशिया निवासी तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताई खाँ से चला था। बाबर, अकबर, औरंगजेब आदि इसी वंश के थे।

चगत्ता—पुं० दे० 'चगताई'।

चगर—पुं० [देश०] १. घोड़ों की एक जाति। २. एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

चगुनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली जो प्रायः १८ इंच लंबी होती है।

चघड़—वि० [देश०] १. चतुर। चालाक। २. धूर्त।

चचर—स्त्री० [देश०] वह जमीन जो बहुत दिन परती रहने के बाद पहली बार जोती तथा बोई गई हो।

चचरा—पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

† वि० =चचेरा।

चचा—पुं० [सं० तात] [स्त्री० चची] =चाचा।

मुहा०—(किसी को) चचा बनाना या बनाकर छोड़ना= उचित दंड या प्रतिफल देना। (व्यंग्य)

चचिया—वि० उभ० [हिं० चचा] संबंध में चाचा या चाची के स्थान पर पड़ने या होनेवाला। जैसे—चचिया ससुर. चचिया सास अर्थात् पति या पत्नी का चाचा या चाची।

चचींड़ा†—पुं० [सं० चिचिंडा] १. एक प्रकार की लता। २. इस लता के फूल जो तरोई की तरह के होते और तरकारी बनाने के काम आते हैं। ३. दे० 'चिचड़ा'।

चचेंड़ा†—पुं० = चचींड़ा।

चचेरा—वि० [हिं० चचा] [स्त्री० चचेरी] १. चाचा से उत्पन्न। जैसे—चचेरा भाई, चचेरी बहन। २. संबंध के विचार से चाचा या चाची के स्थान पर पड़ने या होनेवाला। चचिया। जैसे—चचेरी सास।

चचोड़ना—स० [अनु० वा० देश०] दाँत से खींच या दबाकर खाना या रस चूसना। दाँतों से दबा-दबाकर खाना या चूसना। जैसे—आम चचोड़ना।

चचोड़वाना—स० [हिं० 'चचोड़ना' का प्रे०] किसी को चचोड़ने में प्रवृत्त करना।

चच्चर—पुं० दे० 'चाँचर'।

चच्छु*—पुं० = चक्षु।

चच्छुस्रवासी*—पुं० [सं० चक्षुःश्रवस्] सर्प। साँप। उदा०—सो लट भई तेहि चच्छुस्रवासी।—जायसी।

चट—क्रि० वि० [अनु०] १. चट शब्द करते हुए। २. जल्दी से। झट। तुरंत।

पद—चट-पट (देखें)।

मुहा०—चट से = बहुत जल्दी। तुरंत।

पुं० १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है। जैसे—लकड़ी या शीशा चट से टूट गया। २. उँगलियों के पोर जोर से खींचने पर अंदर की हड्डियों की रगड़ से होनेवाला शब्द।

क्रि० प्र०—बोलना।

भू० कृ० [हिं० चाटना] १. (पदार्थ) जो चाट या खाकर समाप्त कर दिया गया हो। २. (धन) जो भोग आदि के द्वारा नष्ट या समाप्त कर दिया गया हो।

मुहा०—चट कर जाना =(क) सब खा जाना। (ख) दूसरे की वस्तु लेकर न देना। दवा रखना। **चट करना** =खाना या निगलना।

पुं० [सं० चित्र, हिं० चित्ती] १. दाग। धब्बा। २. घाव आदि के कारण शरीर पर बना हुआ चिह्न या दाग। ३. चकत्ता। ४. ऐब। दोष। ५. कलंक। लांछन।

†पुं० [?] पटसन का बना हुआ टाट।

चटक—पुं० [सं० √चट् (भेदन करना) +क्वुन्—अक] [स्त्री० चटका] १. गौरा पक्षी। गौरैया। चिड़ा।

पद—चटकाली (देखें)।

२. पिप्पलामूल।

स्त्री० [सं० चटुल = सुन्दर] चटकीलापन। चमक-दमक। कांति।

पद—चटक-मटक (देखें)।

३. छापे के कपड़ों को साफ करने का एक ढंग।

वि० चटकीला। चमकीला। जैसे—चटक रंग, चटक चाँदनी।

स्त्री० १. फुरतीलापन। तेजी। २. चंचलता। शोखी।

वि० १. फुरतीला। तेज। २. चटपटा। चटकारा।

क्रि० वि० चटपट। शीघ्रता से। तुरंत।

चटकई†—स्त्री० [हिं० चटक] १. चटक होने की अवस्था या भाव। २. चमकीलापन। ३. तेजी। फुरती। ४. जल्दी।

चटकदार—वि० [हिं० चटक+फा० दार (प्रत्य०)] १. जिसमें चटक या चमक-दमक हो। चमकते हुए रंगवाला। चमकीला। २. तेज। फुरतीला।

चटकना—अ० [अनु० चट] १. 'चट' शब्द करते हुए टूटना या फूटना। हलकी आवाज के साथ टूटना या तड़कना। कड़कना। जैसे—शीशा चटकना। २. किसी बीच में कहीं से कुछ कट या फट जाना। हलकी दरार पड़ना। जैसे—लकड़ी चटकना। ३. कोयले, लकड़ी आदि का जलते समय चट-चट शब्द करना। ४. कलियों आदि का चट-चट शब्द करते हुए खिलना। जैसे—गुलाब की कलियाँ चटकना। ५. चिढ़कर अप्रसन्न होना या हलका क्रोध दिखलाना। रुष्ट होना। जैसे—तुम तो जरा-सी बात में चटक जाते हो। ६. आपस में अनबन या बिगाड़ होना।

वि० जल्दी चटकने या टूटनेवाला।

पुं० तमाचा। थप्पड़।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

चटकनी—स्त्री० = सिटकिनी (दरवाजे की)।

चटक-मटक—स्त्री० [हिं० चटक+मटक] नाज-नखरे से लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए शरीर के कुछ अंग हिलाने-डुलाने की क्रिया या भाव।

चट-कल—स्त्री० [हिं० चट = पटसन+कल (यंत्र)] वह कारखाना जहाँ जूट या पटसन की चीजें बनती हों।

चटकवाही†—स्त्री० [हिं० चटक+ वाही (प्रत्य०)] १. शीघ्रता। जल्दी। २. तेजी। फुरती।

चटका—पुं० [हिं० चटकना] १. चटकने की क्रिया या भाव। २. मन उचटने का भाव या स्थिति। विराग। ३. तमाचा। थप्पड़।

पुं० [हिं० चाट] १. चरपरा स्वाद। २. सुख या स्वाद मिलने के कारण उत्पन्न होनेवाली लालसा। चसका।

पुं० [देश०] हरे चने की डोडी। पपटा।

पुं० [सं० चित्र, हिं० चट्टा] १. दाग। धब्बा। २. शरीर पर पड़नेवाला चकत्ता।

†पुं० [हिं० चट] १. शीघ्रता। जल्दी। २. तेजी। फुरती।

चटकाई*—स्त्री० [हिं० चटक+आई (प्रत्य०)] चटकीलापन। उदा०—लगत चित्र सी नंदनादि बन की चटकाई।—रत्ना०।

चटकाना—स० [हिं० चटकना हिं० चटकना का स०] १. किसी को चटकने में प्रवृत्त करना। ऐसा करना जिससे कुछ चटके। २. उँगलियों के पोरों को इस प्रकार झटके से खींचना या जोर से दबाना कि उनमें से चट शब्द निकले। ३. किसी चीज से चट चट शब्द उत्पन्न करना। जैसे—जूतियाँ चटकाना। देखें 'जूती' के अन्तर्गत। ४. चट शब्द उत्पन्न करते हुए कोई चीज तोड़ना। ५. किसी व्यक्ति को इस प्रकार अप्रसन्न या उद्विग्न करना कि वह कड़वी और रूखी बातें करने लगे। ६. किसी के मन में विरक्ति उत्पन्न करके उसे कहीं से चले जाने या भगाने में प्रवृत्त करना। जैसे—ये लोग नये नौकर को टिकने नहीं देते, उसे आते ही चटका देते हैं। ७. चिढ़ाना।

चटकारा—पुं० [अनु० चट] १. किसी चटपटी वस्तु के खाते या चाटते समय तालू पर जीभ टकराने से होनेवाला शब्द।

पद—चटकारे का = इतना स्वादिष्ठ कि खाने या पीने के समय मुँह से चट चट शब्द होता हो। जैसे—चटकारे की तरकारी या हलुआ।

२. कोई स्वादिष्ठ चीज खाने या पीने के बाद उसके स्वाद की वह स्मृति जो वह चीज फिर से खाने या पीने का चसका उत्पन्न करे।

मुहा०—चटकारे भरना = खूब चाट-चाटकर और स्वाद लेते हुए

कोई चीज खाना या पीना। खाने-पीने के समय जीभ से होंठ चाटते रहना।

† वि० १. =चटकीला। २. =चटपटा।

वि० [सं० चटुल] [स्त्री० चटकारी] चंचल। चपल।

चटकारी*—स्त्री० [अनु०] चुटकी, जिसे बजाने पर चट-चट शब्द होता है।

क्रि० प्र०—बजाना।—भरना।

चटकाली—स्त्री० [सं० चटक-आली, ष० त०] १. चटकों अर्थात् गौरा पक्षियों की पंक्ति या समूह। २. चिड़ियों की पंक्ति या समूह।

चटका-शिरा—स्त्री० [ष० त०] पिपरामूल।

चटकाहट—स्त्री० [हिं० चटकना] १. कोई चीज चटकने से उत्पन्न होनेवाला चट शब्द। उदा०—फूलति कली गुलाब की चटकाहट चहुँ-ओर।—बिहारी। २. चटकने या तड़कने की क्रिया या भाव।

चटकी—स्त्री० [सं० चटक] बुलबुल की तरह की एक चिड़िया।

† स्त्री० =चटका।

चटकीला—वि० [हिं० चटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] [भाव० चटकीलापन] १. (रंग) जो चमकीला और तेज हो। जैसे—चटकीला लाल या हरा। २. (पदार्थ) जिसका रंग चमकीला और तेज हो। जैसे—चटकीला कपड़ा, चटकीली धारियाँ। ३. जिसमें खूब आभा और चमक हो। जैसे—मुख की चटकीली ज्योति या छबि। ४. (खाद्य पदार्थ) जिसमें खूब नमक, मिर्च और मसाले पड़े हों। जैसे—चटकीली तरकारी। ५. (बात) जो चित्ताकर्षक तथा सुंदर हो। लुभावना। जैसे—चटकीला राग। ६. (पदार्थ) जिसका स्वाद उग्र या तीव्र हो। जैसे—दाल में नमक कुछ चटकीला है।

चटकीलापन—पुं० [हिं० चटकीला+पन (प्रत्य०)] चटकीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

चटकोरा*—पुं० [अनु०] एक प्रकार का खिलौना।

चटखना—अ० =चटकना।

पुं० =चटकना।

चटखनी†—स्त्री० =चटकनी (सिटकिनी)।

चटखारा—वि०, पुं० =चटकारा।

चट-चट—स्त्री० [अनु०] किसी चीज के चटकने या तड़कने के समय होनेवाला चट-चट शब्द। जैसे—चट-चट करके छत की कई कड़ियाँ टूट गईं। २. किसी चीज के जलने या फटने के समय होनेवाला चट-चट शब्द। जैसे—लकड़ियाँ चट चट करती हुई जल रही थीं। ३. उँगलियाँ चटकाने पर होनेवाला चट-चट शब्द।

क्रि० वि० चट-चट शब्द उत्पन्न करते हुए।

मुहा०—चट-चट बलैयाँ लेना =प्रिय व्यक्ति (विशेषतः बच्चे) को विपत्ति, संकट आदि से बचाने के उद्देश्य से उँगलियाँ चटकाते हुए उसकी मंगल-कामना करना। (स्त्रियाँ)

चटचटा—पुं० [अनु०] बार-बार होनेवाला चट-चट शब्द।

वि० [स्त्री० चटचटी] जिसमें से बार-बार चट-चट शब्द होता हो। जैसे—चट-चटी लकड़ी (जलाने की)।

चटचटाना—अ० [हिं० चट चट+आना (प्रत्य०)] १. किसी वस्तु का चट-चट शब्द करना। २. चट-चट शब्द करते हुए किसी वस्तु का टूटना या तड़कना। ३. चट-चट शब्द करते हुए जलना।

स० चट-चट शब्द करते हुए कोई काम करना।

चटनी—स्त्री० [हिं० चाटना] १. चाटकर खाई जानेवाली वस्तु। अवलेह। २. आम, इमली, पुदीना आदि खट्टी वस्तुओं में नमक, मिर्च, धनिया आदि मिलाकर गीला पीसा या घोला हुआ गाढ़ा चरपरा अवलेह जो भोजन का स्वाद तीक्ष्ण करने के लिए उसके साथ खाया जाता है।

मुहा०—(किसी की) चटनी करना या बनाना =(क) पदार्थ आदि तोड़-फोड़कर चूर-चूर करना। (ख) व्यक्ति आदि को बहुत अधिक मारना। **(किसी चीज का) चटनी होना या हो जाना** =(क) खाद्य पदार्थ का स्वादिष्ठ होने के कारण सब में इस प्रकार थोड़ा-थोड़ा बँट जाना कि कुछ भी बाकी न बचे। (ख) किसी चीज का कम होने के कारण थोड़ा-थोड़ा काम में लगने या बँटने पर कुछ भी बाकी न बचना।

३. काठ का चार-पाँच अंगुल लंबा एक खिलौना जिसे छोटे बच्चे मुँह में डालकर चाटते या चूसते हैं।

चटप—स्त्री० [अनु०] १. आक्रमण। २. मनोवेग की प्रबलता। उदा०—काम स्याम तनु चटप कियौ। —सूर।

चट-पट—क्रि० वि० [अनु०] १. बहुत जल्दी। तुरंत। जैसे—चट-पट चले जाओ। २. अपेक्षाकृत बहुत थोड़े समय में। जैसे—काम चट-पट खत्म कर यहाँ चले आना।

वि० [स्त्री० चटपटी] =चटपटा।

चटपटाना†—अ० [हिं० चटपट] जल्दी मचाना।

स० किसी को जल्दी करने में प्रवृत्त करना।

चटपटी—स्त्री० [हिं० चटपट] १. जल्दी। शीघ्रता। २. उतावली। हड़बड़ी।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।

३. आकुलता। घबराहट। ४. बेचैनी। विकलता। उदा०—मो दृग लागि रूप, दृगन लगी अति चटपटी।—बिहारी। ५. उत्सुकता। छटपटी।

स्त्री० [हिं० चटपटा] खाने की चटपटी चीज। चाट। जैसे—कचालू आदि।

चटर—पुं० [अनु०] चट-चट शब्द।

चटर-चटर—स्त्री० [अनु०] खड़ाऊँ पहनकर चलने से होनेवाली चट-चट की ध्वनि।

चटरजी—पुं० [बं० चाटुर्ज्या] बंगाली ब्राह्मणों की एक शाखा। चट्टोपाध्याय।

चटरी†—स्त्री० [देश०] १. खेसारी नाम का अन्न। लतरी। २. रबी की फसल के साथ उगनेवाली एक वनस्पति।

चटवाना—स० [हिं० चाटना का प्रे०] किसी को कुछ चाटने में प्रवृत्त करना। चटाना।

चटशाला—स्त्री० [हिं० चट+सं० शाला] छोटे बच्चों की पाठशाला।

चटसार—स्त्री० =चटशाला।

चटसाल—स्त्री० =चटशाला।

चटा—पुं० [हिं० चटशाला] चटशाला में पढ़नेवाला बालक या विद्यार्थी। उदा०—मनौं मार-चटसार सुढार चटा-से पढ़हीं।

चटाई—स्त्री० [सं० कट=चटाई?] बाँस आदि खर जाति के डंठलों की खपाचियों, ताड़ आदि के पत्तों का एक दूसरे में गूँथकर बनाया हुआ लंबा आसन या आस्तरण।

स्त्री० [हिं० चाटना] चटाने या चाटने की क्रिया या भाव।

चटाईदार—वि० [हिं० चटाई+फा० दार] जिसकी बुनावट या रचना चटाई की बनावट की तरह हो। जैसे—धोती का चटाईदार किनारा, गले में पहनने की चटाईदार सिकड़ी।

चटाक—पुं० [अनु०] १. वह शब्द जो दो वस्तुओं के टकराने अथवा किसी वस्तु के गिरने, टूटने आदि से होता है।

क्रि० वि० चट या चटाक शब्द उत्पन्न करते हुए।

पद—चटाक-पटाक=(क) चटाक या चट-चट शब्द के साथ। (ख) बहुत जल्दी। तुरन्त।

२. थप्पड़ मारने से होनेवाला शब्द।

†पुं०=चकत्ता (दाग)।

चटाकर—पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसका फल खट्टा होता है।

चटाका—पुं० [अनु०] १. लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द। २. तीव्रता। प्रबलता।

मुहा०—चटाके का=कड़ाके का। जोरों का।

३. थप्पड़ जिसके लगने से चटाक शब्द होता है। (पश्चिम)

क्रि० वि० चट-पट। तुरन्त।

चटाख†—पुं०=चटाक।

चटाचट—स्त्री० [अनु०] क्रमशः अथवा लगातार टूटती हुई वस्तुओं से होनेवाला चट-चट शब्द।

क्रि० वि० एक पर एक। लगातार। जैसे—उसे चटाचट थप्पड़ लगे।

चटान†—स्त्री० =चट्टान।

चटाना—स० [हिं० चाटना का प्रे०] १. किसी को कुछ चाटने में प्रवृत्त करना। जैसे—बच्चे को खीर चटाना। २. थोड़ा-थोड़ा खिलाना। जैसे—बच्चे को कुछ चटा दो। ३. घूस या रिश्वत देना। जैसे—कचहरी वालों को कुछ चटाकर अपना काम निकालना। ४. छुरी, तलवार आदि की धार रगड़कर या और किसी प्रकार तेज करना। जैसे—चाकू को पत्थर चटाना।

चटापटी—स्त्री० [हिं० चटपट] १. चटपटी। जल्दी। २. ऐसा रोग या महामारी जिसमें लोग चटपट या बहुत जल्दी मर जाते हों।

क्रि० वि०=चट-पट।

चटावन—पुं० [हिं० चटाना] १. चटाने की क्रिया या भाव। २. हिंदुओं का एक संस्कार जिसमें छोटे बच्चे के मुँह में पहले-पहल अन्न लगाया जाता है। अन्नप्राशन।

चटिक—क्रि० वि० [हिं० चट] चटपट। तत्काल। तुरंत।

चटिका—स्त्री० [सं० चटक+टाप्, इत्व] पिपरामूल।

चटियल—वि० [देश०] (मैदान) जिसमें पेड़, पौधे आदि बिलकुल न हों। उजाड़ और सपाट।

चटिया—पुं० [हिं० चटशाला+इया (प्रत्य०)] १. चटशाला में पढ़नेवाला अथवा पढ़ा हुआ विद्यार्थी। २. चेला। शिष्य।

चटिहाट—वि० [देश०] १. उजड्ड। २. जड़। मूर्ख।

चटी†—स्त्री० १.=चटसार। २.=चट्टी।

चटु—पुं० [सं०√चट् (भेदन करना)+कु] १. खुशामद। चापलूसी। २. उदर। पेट। ३. यतियों, योगियों आदि का आसन।

चटुक—पुं० [सं० चटु+कन्] काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

चटुकार—वि० [सं० चटु√कृ (करना)+अण्, उप० स०] खुशामद करनेवाला।

चटुल—वि० [सं० चटु+लच्] १. चंचल। चपल। २. सुंदर। ३. मधुर-भाषी।

चटुला—स्त्री० [सं० चटुल+टाप्] १. बिजली। २. प्राचीन काल का स्त्रियों का एक प्रकार का केश-विन्यास।

चटु-लालस—वि० [ब०स०] (व्यक्ति) जो अपनी खुशामद करवाना चाहता हो। खुशामद-पसन्द।

चटुलित—भू० कृ० [सं० चटुल+इतच्] १. हिलाया हुआ। २. बनाया-सँवारा या सजाया हुआ।

चटुल्लोल—वि० [सं० चटुल-लोल, कर्म० स० नि० सिद्धि] १. चंचल। २. सुन्दर। ३. मधुर-भाषी।

चटैल†—वि०=चटियल।

चटोर—वि० दे० 'चटोरा'।

चटोरपन—पुं०=चटोरापन।

चटोरा—वि० [हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० चटोरी] १. जिसे चटपटी चीजें खाने का शौक हो। २. अधिक खाने का लोभी। ३. जो अपनी संपत्ति या पूंजी खा-पका गया हो।

चटोरापन—पुं० [हिं० चटोरा+पन (प्रत्य०)] चटोरे होने की अवस्था, गुण या भाव।

चट्ट†—वि० [हिं० चाटना] १. (खाद्य पदार्थ) जिसे अच्छी तरह खा या चाट लिया गया हो। २. (माल) जो खा-पीकर खतम कर दिया गया हो। ३. जिसका कुछ भी अंश न बच रहा हो।

क्रि० वि०=चट।

चट्टा—पुं० [सं० चेट्क=दास] चेला। शिष्य।

पुं० [देश०] १. चटियल मैदान। २. चकत्ता। ददोरा। ३. ईंटों, बालू, मिट्टी आदि को गिनने या नापने के लिए उनका लगाया या बनाया हुआ सुव्यवस्थित थाक या ढेर।

पुं० [सं० कट+चटाई ?] बाँस आदि की लंबी चटाई।

चट्टान—स्त्री० [हिं० चट्टा] १. पत्थर का बहुत बड़ा और विशाल खंड। २. किसी वस्तु का बहुत बड़ा और ठोस टुकड़ा। जैसे—नमक की चट्टान। ३. ऐसी वस्तु जिसमें चट्टान की-सी दृढ़ता या स्थिरता हो।

चट्टा-बट्टा—पुं० [हिं० चट्टू=चाटने का खिलौना+ बट्टा=गोला] १. काठ के खिलौनों का समूह जिसमें चट्टू, झुनझुने, गोले आदि रहते हैं।

मुहा०—चट्टे-बट्टे लड़ाना=इधर की बातें उधर कहकर लोगों को आपस में लड़ाना या उनमें वैर-विरोध उत्पन्न कराना।

२. वे गोले जिन्हें बाजीगर झोले में से निकालकर लोगों को दिखाते हैं।

पद—एक ही थैले के चट्टे-बट्टे=एक ही गुट के मनुष्य। एक ही तरह या स्वभाव के लोग।

चट्टी—स्त्री० [हिं० चट्टा या अनु०] टिकान। पड़ाव। मंजिल। (विशेषतः पहाड़ी इलाकों में प्रयुक्त)

स्त्री० [अनु० चट चट] खुली एड़ी का एक प्रकार का जूता।

स्त्री० [हिं० चाँटा=चपत] १. क्षति। २. जुरमाना। दंड।

क्रि० प्र०—भरना।

चट्टू†—वि०=चटोरा।

पुं० [अनु०] १. पत्थर का बड़ा खरल। २. छोटे बच्चों का एक प्रकार का खिलौना जिसे वे प्रायः मुँह में रखकर चाटते या चूसते रहते हैं। चुसनी।

चड़—पुं०[अनु०] १. लकड़ी आदि के टूटने या फटने से होनेवाला शब्द। २. सूखी लकड़ी के जलने, टूटने आदि से होनेवाला शब्द।

चड़ना†—अ०=चढ़ना। (पंजाब और राजस्थान)

चड़-बड़—स्त्री०[अनु०] निरर्थक प्रलाप। टें-टें। बक-बक।

चड़ाक—पुं० [अनु०] किसी वस्तु के टूटने, फूटने, नोचे जाने पर होनेवाला चड़ शब्द।

चड़ी—स्त्री० [सं० चरण या हिं० चढ़ना?] उछलकर मारी जानेवाली लात।

चड्डा—पुं० [देश०] जंघे का ऊपरी भाग।

वि० मूर्ख।

चड्डी—स्त्री० [हिं० चड्डा] एक प्रकार का लँगोट।

चड्ढी—स्त्री० [हिं० चढ़ना] बच्चों का एक खेल जिसमें वे एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर सवारी करते हैं।

मुहा०—**चड्ढी गाँठना**—सवारी करना। **चड्ढी देना**—हारने पर पीठ पर सवार कराना।

चड्ढो—स्त्री० [हिं० चुड़=भग] स्त्रियों के लिए एक प्रकार की गाली जो उनकी दुश्चरित्रता की सूचक होती है।

चढ़त—स्त्री० [हिं० चढ़ाना] वह जो कुछ चढ़ाया (श्रद्धापूर्वक देवी-देवता को भेंट किया) गया हो।

चढ़ता—वि० [हिं० चढ़ना] [स्त्री० चढ़ती] १. आरम्भ होकर बढ़ता हुआ। जैसे—चढ़ता दिन। २. जिस की अभिवृद्धि, उन्नति या विकास हो रहा हो। विकासशील। जैसे—चढ़ती जवानी। ३. किसी की तुलना में अच्छा या बढ़िया। जैसे—इससे भी चढ़ती धोती लाओ।

†पुं० पूरब की दिशा जिधर से सूर्य चढ़ता या निकलता है। (पश्चिम)

चढ़न—स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने या चढ़ाने की क्रिया या भाव। चढ़ाई। २. देवताओं पर चढ़ाया हुआ धन आदि। चढ़ावा। चढ़त।

चढ़नदार—पुं० [हिं० चढ़ना+फा० दार (प्रत्य०)] वह मनुष्य जिसे व्यापारी गाड़ी, नाव आदि पर चढ़ाकर माल के साथ उसकी रक्षा के लिए भेजते हैं। (लश०)

चढ़ना—अ० [सं० उच्चलन या चलन; प्रा० उच्चउन, चड्डुन] १. केवल पैरों की सहायता से यों ही अथवा हाथों का सहारा लेते हुए ऊपर की ओर बढ़ना। जैसे—(क) आदमियों का पहाड़ या सीढ़ियों पर चढ़ना। (ख) गिलहरियों या बंदरों का पेड़ों पर चढ़ना। २. कहीं चलने या जाने के लिए अथवा यों ही किसी चीज, जानवर, सवारी आदि के ऊपर बैठना या स्थित होना। आरोहण करना। जैसे—(क) घोड़े, झूले नाव, पालकी या रेल पर चढ़ना। (ख) किसी की गोद अथवा कंधे, पीठ, सिर आदि पर चढ़ना। ३. किसी विशिष्ट उद्देश्य से और जान-बूझकर चल या जाकर पहुँचना। जैसे—(क) मुकदमा चलाने के लिए कचहरी चढ़ना। (ख) मार-पीट करने के लिए किसी के घर या दूकान पर चढ़ना। (ग) युद्ध करने के लिए शत्रु के देश पर चढ़ना।

मुहा०—**(किसी पर) चढ़ बैठना**=किसी को पूरी तरह से अपने अधीन करते हुए विवश कर देना।

४. किसी प्रकार के क्रमिक विकास में ऊपर की ओर अग्रसर होना या आगे बढ़ना। जैसे—(क) लड़कों का दरजा चढ़ना। (ख) दिन या वर्ष चढ़ना। (ग) ताप-मापक यंत्र का पारा चढ़ना। ५. किसी चीज का मान, मूल्य आदि बढ़ना। जैसे—(क) गाने-बजाने में स्वर चढ़ना। (ख) बाजार में चावल या चीनी का दाम (या भाव) चढ़ना।

मुहा०—**(किसी की) चढ़ बनना**=यथेष्ट प्रभाव, सफलता आदि के कारण किसी का महत्त्व या मान बहुत बढ़ जाना। जैसे—मंत्री हो जाने पर तो अब उनकी और भी चढ़ बनी है।

६. देवी-देवता आदि के सामने श्रद्धा-भक्ति से निवेदित और समर्पित किया जाना। जैसे—(क) मंदिर में दक्षिणा या मिठाई चढ़ना। (ख) देवी के आगे बकरा या भेड़ा चढ़ना। ७. किसी प्रकार या रूप से ऊपर की ओर उठना, खिंचना, तनना या बढ़ना। जैसे—(क) गुड्डी का आसमान में चढ़ना। (ख) तालाब या नदी का पानी चढ़ना। (ग) कुरते की आस्तीन या पायजामे का पाँयचा चढ़ना। ८. एक चीज का दूसरी चीज पर टाँका, बैठाया, मढ़ा, रखा या लगाया जाना। स्थापित या स्थित किया जाना। जैसे—(क) साड़ी पर गोटा-पट्ठा या बेल चढ़ना। (ख) चूल्हे पर कड़ाही या तवा चढ़ना। (ग) किताब पर जिल्द, तकिये पर गिलाफ या तसवीर पर चौखटा और शीशा चढ़ना। ९. किसी प्रकार की प्रक्रिया से किसी चीज के ऊपरी तल या भाग पर पोता, फैलाया या लगाया जाना। जैसे—(क) कपड़े या दरवाजे पर रंग चढ़ना। (ख) बिजली की सहायता से चाँदी पर सोना चढ़ना। १०. ग्रहों, नक्षत्रों आदि का उदित होकर आकाश में ऊपर आना या उठना। जैसे—चंद्रमा या सूर्य चढ़ना। ११. कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजों की डोरी, तार, बंधन आदि का आवश्यकता से अधिक कड़ा या कसा हुआ होना, जिसके फल-स्वरूप ध्वनि या स्वर अपेक्षया अधिक ऊँचा या तीव्र होता है। जैसे—तबला या सारंगी चढ़ना। १२. किसी प्रकार की क्रिया या प्रक्रिया का आरंभ, संचार या संपादन होना। जैसे—बुखार चढ़ना, रसोई चढ़ना। १३. कुछ विशिष्ट प्रकार की दशाओं, मनोवेगों आदि का उत्कट या तीव्र रूप धारण करते हुए प्रत्यक्ष या स्पष्ट होना। जैसे—(क) जवानी, नशा या मस्ती चढ़ना। (ख) उमंग, गुस्सा, दिमाग, शेखी या शौक चढ़ना। १४. बही-खाते आदि में नामों, रकमों आदि का यथास्थान अंकित होना या लिखा जाना। जैसे—(क) रजिस्टर में नाम चढ़ना। (ख) बही में हिसाब चढ़ना।

चढ़वाना—स० [हिं० चढ़ाना का प्रे०] १. किसी को कहीं चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. (माल आदि) चढ़ाने का काम कराना।

चढ़ाई—स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने अर्थात् ऊँचे स्थल की ओर जाने की क्रिया या भाव। २. ऐसी भूमि जिसका विस्तार एक ओर से बराबर ऊँचा होता गया हो। ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि। ३. विपक्षी या शत्रु-राज्य अथवा व्यक्ति के अधिक्षेत्र में पहुँचकर उस पर हठात् किया जानेवाला आक्रमण। ४. दे० 'चढ़न'।

चढ़ाउ†—पुं० =चढ़ाव।

चढ़ा-उतरी—स्त्री० [हिं० चढ़ना+उतरना] १. बार-बार चढ़ने तथा उतरने की क्रिया या भाव। २. दे० 'चढ़ा-ऊपरी'।

चढ़ा-ऊपरी—स्त्री०[हिं० चढ़ना +ऊपर] १. आर्थिक क्षेत्र में, कोई चीज खरीदने के समय उसके खरीददारों का एक दूसरे से बढ़-चढ़कर मूल्य देने को प्रस्तुत होना। २. एक दूसरे से आगे बढ़ने या निकलने का प्रयत्न करना।

चढ़ा-चढ़ी—स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. बार-बार लोगों के ऊपर चढ़ने की क्रिया या भाव। २. चढ़ा– ऊपरी।

चढ़ान†—स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऐसा स्थान जो बराबर ऊपर की ओर उठता या चढ़ता चला गया हो। जैसे-पहाड़ की चढ़ान।

चढ़ाना—स० [हिं० चढ़ना] १. किसी को चढ़ने में अर्थात् ऊपर की ओर जाने में प्रवृत्त करना। २. उठाकर किसी चीज को ऊँचाई पर ले जाना। ३. यान, सवारी आदि पर किसी को बैठाना। जैसे—लड़के को घोड़ी पर (विवाह के समय) चढ़ाना। ४. किसी प्रकार के क्रमिक विकास में ऊपर की ओर अग्रसर करना या बढ़ाना। ५. किसी चीज का मान, मूल्य आदि बढ़ाना।

मुहा०—सिर पर चढ़ाना (दे०)।

६. श्रद्धापूर्वक कोई चीज समर्पित करना। जैसे—भगवान को फ़ल चढ़ाना। ७. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज उच्च स्तर पर पहुँचे। जैसे—(क) आस्तीन चढ़ाना। (ख) गुड्डी या पतंग चढ़ाना। ८. कोई चीज या आवरण किसी चीज पर रखना या पहनाना। जैसे—(क) चूल्हे पर कड़ाही चढ़ाना। (ख) तकिये पर खोली चढ़ाना। ९. लेप आदि पोतना या लगाना। जैसे—दीवारों पर रंग चढ़ाना। १०. कोई क्रिया, मनोवेग या व्यापार तीव्र करना। जैसे—किसी को गुस्सा चढ़ाना। ११. बही, खाते आदि पर कोई आय या व्यय की मद लिखना। १२. अपने ऊपर या सिर पर लेना। जैसे—कर्ज चढ़ाना।

चढ़ाव—पुं० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने या चढ़ाने की क्रिया या भाव।

पद—चढ़ाव-उतार =ऊँचा-नीचा स्थान।

२. बराबर आगे या ऊपर की ओर होनेवाली गति। ३. बढ़ती। वृद्धि।

पद—चढ़ाव-उतार= (क) एक ओर मोटे और दूसरी ओर पतले होने का भाव। (ख) उन्नति और अवनति।

४. दर या भाव की तेजी। ५. वह दिशा जिधर से जल-धारा आ रही हो। ६. स्वर का आरोह। ७. काम -वासना। ८. दरी के करघे का वह बाँस जो बुननेवाले के पास रहता है। ९. दे० 'चढ़ावा' १. और २.।

चढ़ावा—पुं० [हिं० चढ़ाना] १. वे आभूषण जो विवाह के समय कन्या को पहनने के लिए वर-पक्ष के घर से आते हैं। २. कन्या को विवाह के समय उक्त आभूषण पहनाने की एक रीति। ३. वे चीजें जो श्रद्धापूर्वक किसी देवता को चढ़ाई जायँ। पुजापा। ४. उत्तेजना। बढ़ावा। ५. टोटके की वह सामग्री जो बीमारी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए किसी चौराहे या गाँव के किनारे रखी जाती है। उतारा।

चढ़ैत—वि० [हिं० चढ़ना +ऐत (प्रत्य०)] १. चढ़नेवाला। २. सवार होनेवाला।

चढ़ैया*—वि० [हिं० चढ़ना+ऐया (प्रत्य०)] चढ़ने या चढ़ानेवाला। उदा०—छात्र छत्र को छेम चफरचित् चाव-चढ़ैया।—रत्ना०।

चढ़ौआ—पु०—चढ़ावा।

चढ़ौवाँ—वि० [हिं० चढ़ाना] १. (पदार्थ) जो चढ़ाया जाता हो। २. (जूता) जिसकी एड़ी ऊँची या उठी हुई हो।

चण—पुं० [सं० √चण् (देना) +अच्] चना।

चणक—पुं० [सं० √चण् +क्वुन्—अक] १. चना। २. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

चणका—स्त्री० [सं० चणक +टाप्] तीसी।

चणकात्मज—पुं०[सं० चणक-आत्मज, ष० त०] चणक के पुत्र, चाणक्य।

चण-द्रुम—पुं० [उपमि० स०] १. क्षुद्र गोक्षुर। छोटा गोखरू। २. एक प्रकार का रोग।

चणपत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] रुदंती नामक पौधा।

चणिका—स्त्री० [सं० चणक +टाप्, इत्व] एक प्रकार की घास जो औषध के काम आती है।

चणिया—पुं० [गुज० चणियो] औरतों का छोटा घाघरा।

चतरंग†—पुं० =चतुरंग।

चतर†—वि० =चतुर।

†पुं० =छत्र।

चतरना—अ० [हिं० छितराना] छितराया जाना।

स० छितराना।

† स० =चितरना।

चतरभंग–पुं० [सं० छत्र-भंग] १. बैल के डिल्ले का मांस एक ओर लटक जाने की अवस्था, भाव या दोष। २. दे० 'छत्र-भंग'।

चतरभाँगा—वि० [हिं० चतरभंग] (बैल) जिसके डिल्ले का मांस एक ओर लटक गया हो।

चतुःशाख—वि० [सं० चतुर्-शाखा, ब० स०] चार शाखाओंवाला। पुं० देह। शरीर।

चतुःसीमा(मन्)—स्त्री० [सं० चतुर्-सीमन्, ष० त०] किसी क्षेत्र, भवन आदि के चारों ओर की सीमा। चौहद्दी।

चतुरंग—वि० [सं० चतुर्-अंग, ब० स०] [स्त्री० चतुरंगिणी] जिसके चार अंग हों। चार अंगोंवाला।

पुं० १. सेना के चार अंग—हाथी, घोड़ा रथ और पैदल। २. चतुरंगिणी सेना का सेनापति। ३. चतुरंगिणी (सेना)। ४. संगीत में वह गाना जिसमें उसके साधारण बोल के साथ सरगम, तराने और किसी वाद्य (जैसे-तबला, सितार आदि) के बोल भी मिले हों। ५. शतरंज का खेल।

चतुरंगिणी—स्त्री० [सं० चतुर्-अंग, कर्म० स०+इनि] ऐसी सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल ये चारों अंग हों।

चतुरंगी—वि० =चतुर। उदा०—चित्रन होर च्यंति मनरे चतुरंगी नाह। –चन्दवरदाई।

चतुरंगुल—पुं० [सं० चतुर्-अगुल, ब० स०] अमलतास।

चतुरंगुला—स्त्री० [सं० चतुरंगुल +टाप्] शीतल लता।

चतुरंता—स्त्री० [सं० चतुर्-अंत, ब० स०, टाप्] पृथ्वी।

चतुर—वि० [सं० √चत् (याचना करना) + उरच्] १. (व्यक्ति) जिसकी बुद्धि प्रखर हो और इसी लिए जो हर काम बहुत समझ-बूझकर तथा जल्दी करता हो। कार्य और व्यवहार में कुशल। २. अपना मतलब निकाल लेनेवाला। ३. निपुण। दक्ष। ४. चालाक। धूर्त्त। ५. जिसे बातें बनानी खूब आती हो।

चतुरई—†स्त्री० =चतुराई।

चतुरक—पुं० [सं० चतुर+कन्] चतुर।

चतुर-क्रम—पुं [ब० स०?] संगीत में ३२ मात्राओं का एक प्रकार का ताल।

चतुरता—स्त्री० [सं० चतुर+तल– टाप्] चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव।

चतुरदसगुन*—पुं० = चौदह विद्या। (दे० 'विद्या')

चतुरनीक—पुं० [सं० चतुर्-अनीक, ब० स०] चतुरानन। ब्रह्मा।

चतुरपन—पुं० [हिं० चतुर+पन] = चतुरता।

चतुरबीज†—पुं० = चतुर्बीज।

चतुरभुज†—पुं० = चतुर्भुज।

चतुरमास†— पुं० = चतुर्मास।

चतुरमुख†—वि०, पुं० चतुर्मुख।

चतुरम्ल—पुं० [सं० चतुर्-अम्ल द्विगुस०] वद्यक में, अमलबेत, इमली, जंबीरी और कागजी नीबू के रसों को मिलाकर बनाया हुआ खट्टा द्रव्य।

चतुरश्र—वि० [सं० चतुर्-अश्रि, ब० स०, अच् नि०] चार कोनोंवाला।
पुं० १. ब्रह्मसंतान नामक केतु। २. ज्योतिष में चौथी या आठवीं राशि।

चतुरसम*—पुं० = चतुस्सम।

चतुरस्र—पुं० [सं० चतुर-अस्रि, ब० स०, अच् नि०] १. संगीत में, एक प्रकार का तिताला ताल। २. नृत्य में, हाथ की एक प्रकार की मुद्रा या हस्तक।

चतुरह—पुं० [सं० चतुर्-अहन्, द्विगुस०, टच्] वे याग जो चार दिनों में पूरे होते हों।

चतुरा—स्त्री० [हिं० चतुर से] नृत्य में धीरे-धीरे भौंह कँपाने की क्रिया।
वि०, पुं० = चतुर।

चतुराई—स्त्री० [सं० चतुर+हिं० आई (प्रत्य०)] १. चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव। २. होशियारी। ३. चालाकी। धूर्तता।

चतुरात्मा—पुं० [सं० चतुर्-आत्मन्. ब० स०] १. ईश्वर। २. विष्णु।

चतुरानन—वि०, पुं० [सं० चतुर्-आनन, ब० स०] जिसके चार मुँह हों। चार मुखोंवाला।
पुं० ब्रह्मा।

चतुरापन*—पुं० = चतुराई।

चतुराश्रम—पुं० [सं० चतुर्-आश्रम, द्विगुस०] ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये चारों आश्रम।

चतुरासीति†—वि० [सं० चतुरशीति] चौरासी।

चतुरिंद्रिय—पुं० [सं० चतुर्-इंद्रिय, ब० स०] चार इंद्रियोंवाले जीव या प्राणी।

चतुरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की पतली लंबी नाव जो एक ही पेड़ के तने को खोदकर बनाई जाती है।

चतुरूषण—पुं० [सं० चतुर्-ऊषण, द्विगुस०] वैद्यक में सोंठ, मिर्च, पीपल, और पिपरामूल, इन चार उष्ण या गरम पदार्थों का समूह।

चतुर्गति—वि० [सं० ब० स०] चार दिशाओं या प्रकारों की गतिवाला।
पुं० १. विष्णु। २. ईश्वर। ३. कछुआ।

चतुर्गव—पुं० [सं० चतुर्-गो, द्विगुस०] वह गाड़ी जिसे चार बैल मिलकर खींचते हों।

चतुर्गुण—वि० [सं० द्विगुस०] १. चार गुणोंवाला। २. चौपहला। ३. चौगुना।

चतुर्जातक—पुं० [सं० द्विगुस०] वैद्यक में, इलायची (फल), दारचीनी (छाल), तेजपत्ता (पत्ता) और नागकेसर (फूल) इन चारों पदार्थों का समूह।

चतुर्थ—वि० [सं० चतुर्+डट्. थुक् आगम] क्रम या गिनती में चार की संख्या पर पड़नेवाला। चौथा। जैसे—चतुर्थ आश्रम, चतुर्थ श्रेणी।
पुं० एक प्रकार का चौताला ताल। (संगीत)

चतुर्थक—पुं० [सं० चतुर्थ+कन्] वह बुखार जो हर चौथे दिन आता हो। चौथिया ज्वर।

चतुर्थ-काल—पुं० [कर्म० स०] १. दिन का चौथा पहर। २. सन्ध्या का समय।

चतुर्थ-भाज्—वि० [सं० चतुर्थ √भज् (ग्रहण करना) +ण्वि, उप० स०] प्रजा द्वारा उपजाये हुए अन्न आदि में से कर स्वरूप एक चौथाई अंश पानेवाला (अर्थात् राजा)।

चतुर्थांश—पुं० [चतुर्थ-अंश, कर्म० स०] १. किसी चीज के चार बराबर भागों में से हर एक। चौथाई। २. [ब० स०] चार अंशों या भागों में से किसी एक अंश या भाग का मालिक।

चतुर्थांशी (शिन्) —वि० [सं० चतुर्थांश+इनि] चतुर्थांश पानेवाला।

चतुर्थाश्रम—पुं० [सं० चतुर्थ-आश्रम, कर्म० स०] आश्रमों में चौथा, अर्थात् संन्यास।

चतुर्थिका—स्त्री० [सं० चतुर्थ+कन्, टाप्, इत्व] एक परिमाण जो ४ कर्ष के बराबर होता है। पल।

चतुर्थी—स्त्री० [सं० चतुर्थ+ङीप्] १. चांद्रमास के किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २. संस्कृत व्याकरण में संप्रदान कारक या उसमें लगनेवाली विभक्ति।

चतुर्थी-कर्म (र्मन्)—पुं० [मध्य० स०] विवाह के चौथे दिन के कृत्य जिनमें स्थानिक देवता, नदी आदि के पूजन होते हैं।

चतुर्थी-क्रिया—स्त्री० [मध्य० स०] किसी की मृत्यु के चौथे दिन होनेवाले कृत्य।

चतुर्थी-तत्पुरुष—पुं० [तृ० त०] तत्पुरुष समास का वह प्रकार या भेद जिसमें चौथी विभक्ति का लोप होता है।

चतुर्दंत—वि० [सं० ब० स०] चार दाँतोंवाला। जिसके चार दाँत हों।
पुं० ऐरावत नामक हाथी जिसके चार दाँत कहे गये हैं।

चतुर्दंष्ट्र—पुं० [सं० ब० स०] १. ईश्वर। २. कार्तिकेय की सेना। ३. एक राक्षस का नाम।

चतुर्दश (न्) —वि० [सं० मध्य० स०] चौदह।

चतुर्दश-पदी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] पाश्चात्त्य ढंग की एक प्रकार की कविता जिसमें कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार कुल चौदह चरण या पद होते हैं। (सॉनेट)

चतुर्दशी—स्त्री० [सं० चतुर्दशन्+डट्–ङीप्] चांद्रमास के किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चौदस।

चतुर्दिक् (श्)—अव्य० [सं० द्विगुस०] चारों दिशाओं में। चारों ओर।
पुं० चारों दिशाएँ।

चतुर्दिश—पुं० [सं० द्विगुस०] चारों दिशाएँ।

क्रि० वि० चारों ओर से। चारों दिशाओं में या से।

चतुर्दोल—पुं० [सं० चतुर् √दुल् (ढोना) +णिच् + घञ्] १. चार डंडों का हिंडोला या पालना। २. वह सवारी जिसे चार कहार उठाकर ले चलते हों। ३. चंडोल नाम की सवारी।

चतुर्द्वार—पुं० [सं० ब० स०] वह घर जिसके चारों ओर चार दरवाजे हों।

चतुर्धाम (न्)—पुं० [सं० द्विगुस०] हिन्दुओं के द्वारका, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी और बदरिकाश्रम ये चार मुख्य तीर्थ या धाम।

चतुर्बाहु—वि० [सं० ब० स०] चार बाँहों या भुजाओंवाला।

पुं० १. महादेव। शिव। २. विष्णु।

चतुर्बीज—पुं० [सं० द्विगुस०] वैद्यक में, काला जीरा, अजवाइन, मेथी और हालिम इन चार पदार्थों के दानों या बीजों का समूह।

चतुर्भद्र—पुं० [सं० द्विगुस०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों का समूह।

वि० उक्त चारों पदार्थों से युक्त।

चतुर्भाव—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

चतुर्भुज—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० चतुर्भुजा] १. (व्यक्ति) जिसकी चार भुजाएँ हों। चार भुजाओंवाला। २. (ज्यामिति में वह क्षेत्र) जिसमें चार भुजाएँ या कोण हों। जैसे—सम चतुर्भुज क्षेत्र।

पुं० १. विष्णु। २. ज्यामिति में, चार भुजाओंवाला क्षेत्र।

चतुर्भुजा—स्त्री० [सं० चतुर्भुज +टाप्] १. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति। २. दुर्गा की एक चार भुजाओंवाली विशिष्ट मूर्त्ति।

चतुर्भुजी—पुं० [हिं० चतुर्भुज से] १. एक वैष्णव संप्रदाय जिसके आचार, व्यवहार आदि रामानन्दियों से मिलते-जुलते होते हैं। २. उक्त संप्रदाय का अनुयायी या सदस्य।

वि० चार भुजाओंवाला।

चतुर्मास—पुं० [सं० द्विगुस०] आषाढ़ मास की शुक्ला एकादशी से कार्तिक-शुक्ला एकादशी तक की अवधि जिनमें विवाह आदि शुभ काम वर्जित हैं। चौमासा।

चतुर्मुख—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० चतुर्मुखी] जिसके चार मुख हों। चार मुँहोंवाला।

क्रि० वि० चारों ओर।

पुं० १. ब्रह्मा। २. संगीत में, एक प्रकार का चौताला ताल। ३. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा।

चतुर्मुखी—वि० [हिं० चतुर्मुख से] चतुर्मुख।

चतुर्मूर्ति—पुं० [सं० ब० स०] विराट्, सूत्रात्मा, अव्याकृत और तुरीय इन चारों अवस्थाओं या रूपों में रहनेवाला, ईश्वर।

चतुर्युग—पुं० [सं० द्विगुस०] चारों युगों का समूह। चतुर्युगी।

चतुर्युगी—स्त्री० [सं० चतुर्युग +ङीप्] सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग इन चारों युगों का समूह। ४३२०००० वर्षों का समय। चौकड़ी।

चतुर्वक्त्र—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा।

चतुर्वर्ग—पुं० [सं० द्विगुस०] अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष ये चारों पदार्थ या इनका समूह।

चतुर्वर्ण—पुं० [सं०द्विगुस०] हिंदुओं के चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वाही (हिन्)—वि० [सं० चतुर् √वह् (ढोना) +णिनि, उप० स०] जिसे चार (पशु या व्यक्ति) मिलकर खींचते या वहन करके ले चलते हों।

पुं० चार घोड़ों की गाड़ी। चौकड़ी।

चतुर्विंश—वि० [सं० चतुर्विंशति +डट्] चौबीसवाँ।

पुं० एक दिन में पूरा होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

चतुर्विंशति—वि० [सं० मध्य० स०] चौबीस।

स्त्री० चौबीस का सूचक अंक या संख्या।

चतुर्विद्य—वि० [सं० ब० स०] १. जिसने चारों वेद पढ़े हों। २. चारों विद्याओं का ज्ञाता। पंडित।

चतुर्विद्या—स्त्री० [सं० कर्म० स०] चारों वेदों की विद्या या ज्ञान।

चतुर्विध—वि० [सं० ब० स०] १. चार प्रकारों या रूपों का। २. चौतरफा।

क्रि० वि० चार प्रकारों या रूपों में।

चतुर्वीर—पुं० [सं० ब० स० ?] चार दिनों में होनेवाला एक प्रकार का सोमयाग।

चतुर्वेद—पुं० [सं० ब० स०] १. परमेश्वर। ईश्वर। २. [कर्म० स०] चारों वेद।

वि० [ब० स०] चारों वेदों का ज्ञाता।

चतुर्वेदी (दिन्)—पुं० [सं० चतुर्वेद +इनि] १. चारों वेदों को जाननेवाला पुरुष। २. ब्राह्मणों का एक भेद या वर्ग।

चतुर्व्यूह—पुं० [सं० ष० त०] १. चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। जैसे—(क) राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। (ख) कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध। (ग) संसार, संसार का हेतु, मोक्ष और मोक्ष का उपाय। २. विष्णु। ३. योग-शास्त्र। ४. चिकित्सा-शास्त्र।

चतुर्होत्र—पुं० [सं० ब० स०] १. परमेश्वर। २. विष्णु।

चतुल—वि० [सं० √ चत् (गति) + उलच्] स्थापन करनेवाला। स्थापक।

चतुश्चक्र—पुं० [सं० चतुर्-चक्र, ब० स०] एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार मंत्रों के शुभ या अशुभ होने का विचार किया जाता है। (तंत्र)

चतुश्चत्वारिंश—वि० [सं० चतुश्चत्वारिंशत्+डट्] चौवालीसवाँ।

चतुश्चत्वारिंशत्—स्त्री० [सं० चतुर्-चत्वारिंशत् मध्य० स०] चौवालीस की संख्या या अंक।

चतुश्चरण—वि० [सं० चतुर्-चरण, ब० स०] १. चार पैरोंवाला। २. चार भागों या वर्गोंवाला।

पुं० चौपाया। पशु।

चतुश्शृंग—वि० [सं० चतुर्-शृंग, ब० स०] जिसके चार सींग हों। चार सींगोंवाला।

पुं० कुश द्वीप के एक पर्वत का नाम। (पुराण)

चतुष्क—वि० [सं० चतुर् +कन्] जिसके चार अंग या पार्श्व हों। चौपहल।

पुं० १. चार वस्तुओं का वर्ग या समूह। २. वास्तु में एक प्रकार का चौकोर मकान। ३. एक प्रकार की छड़ी या डंडा।

चतुष्कर—पुं० [सं० चतुर्-कर, ब० स०] वह जंतु जिसके चारों पैरों के आगे के भाग हाथ के समान हों। पंजेवाले जानवर। जैसे—बंदर।

वि० जिसके चार हाथ हों।

चतुष्करी (रिन्)—वि० [सं० चतुर्-कर, द्विगुस०, +इनि] =चतुष्कर।

चतुष्कर्ण—वि० [सं० चतुर्-कर्ण, ब० स०] (बात) जिसे चार कान अर्थात् दो ही आदमी जानते हों।

चतुष्कर्णी—स्त्री० [सं० चतुष्कर्ण +ङीष्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

चतुष्कल—वि० [सं० चतुर्-कला, ब० स०] चार कलाओं या मात्राओं-वाला। जिसमें चार कलाएँ या मात्राएं हों। जैसे—छन्दःशास्त्र में चतुष्कल गण, संगीत में चतुष्कल ताल।

चतुष्की—स्त्री० [सं० चतुष्क +ङीष्] १. एक प्रकार की चौकोर पुष्करिणी। २. मसहरी। ३. चौकी।

चतुष्कोण—वि० [सं० चतुर्-कोण, ब० स०] चार कोणोंवाला। चौकोर। चौकोना। जैसे—चतुष्कोण क्षेत्र।

पुं० ज्यामिति में, वह क्षेत्र जिसमें चार कोण हों। (क्वाड्रैंगिल)

चतुष्टय—पुं० [सं० चतुर् +तयप्] १. चार की संख्या। २. चार चीजों का वर्ग या समूह। ३. फलित ज्योतिष में जन्म-कुंडली में केन्द्र, लग्न, और लग्न से सातवाँ तथा दसवाँ घर या स्थान।

चतुष्टोम—पुं० [सं० चतुर्-स्तोम, मध्य० स०] १. चार स्तोमवाला एक प्रकार का यज्ञ। २. अश्वमेध यज्ञ का एक अंग। ३. वायु। हवा।

चतुष्पथ—पुं० [सं० चतुर्-पथिन्, ब० स०] १. चौराहा। चौमुहानी। २. ब्राह्मण।

चतुष्पद—वि० [सं० चतुर्-पद, ब० स०] १. चार पैरोंवाला (जीव या पशु)। २. (पद्य) जिसमें चार चरण या पद हों।

पुं० १. चौपाया। २. वैद्यक में वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक इन चारों का समूह। ३. फलित ज्योतिष में एक प्रकार का करण जिसमें जन्म लेनेवाला दुराचारी, दुर्बल और निर्धन होता है। ४. दे० 'चतुष्पदी'।

चतुष्पद-वैकृत—पुं० [ष० त०] एक जाति के पशुओं का दूसरी जाति के पशुओं के साथ होनेवाला मैथुन अथवा स्तन-पान।

चतुष्पदा—स्त्री० [सं० चतुष्पद +टाप्] चौपैया छंद जिसके प्रत्येक चरण में तीस मात्राएँ होती हैं।

चतुष्पदी—स्त्री० [सं० चतुष्पद +ङीप्] १. चौपाई छंद जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अन्त में गुरु-लघु होते हैं। २. ऐसा गीत जिसमें चार चरण या पद हों।

चतुष्पर्णी—स्त्री० [सं० चतुर्-पर्ण, ब० स०, ङीष्] १. छोटी अमलोनी। २. सुसना नाम का साग जिसमें चार-चार पत्तियाँ एक साथ होती हैं।

चतुष्पाटी—स्त्री० [सं० चतुर् √पट् (गति) +णिच् +अण्—ङीप्, उप० स०] नदी।

चतुष्पाठी—स्त्री० [सं० चतुर्-पाठ, ब० स०, ङीष्] वह विद्यालय जिसमें बच्चों को चारों वेद पढ़ाये जाते हैं।

चतुष्पाणि—वि० [सं० ब० स०] जिसके चार हाथ हों। चार हाथों-वाला।

पुं० विष्णु।

चतुष्पाद—वि०, पुं० [सं० चतुर्-पाद, ब० स०] = चतुष्पद।

चतुष्पार्श्व—वि० [सं० चतुर्-पार्श्व, ब० स०] चौपहला। चौतरफा।

चतुष्फल—वि० [सं० चतुर्-फल, ब० स०] १. जिसमें चार फल हों। २. जिसमें चार पहल या पार्श्व हों। चौपहला।

चतुष्फलक—पुं० [सं० चतुर्-फल, ब० स०, कप्] ऐसा ठोस पदार्थ जिसमें किसी तल के ऊपर चार त्रिकोणिक तल (जैसे—किसी केलास या रवे में होते हैं) हों। (ट्रेट्राहेड्रन)

चतुष्फला—स्त्री० [सं० चतुष्फल +टाप्] नागबला नाम की बूटी।

चतुस्तन—वि० [सं० चतुर्-स्तन, ब० स०] [स्त्री० चतुस्तनी] चार स्तनोंवाला (प्राणी)।

स्त्री० गाय। गौ।

चतुस्ताल—पुं० [सं० चतुर्-ताल, ब० स०] संगीत में एक प्रकार का चौताला ताल।

चतुस्सन—पुं० [सं० चतुर्—सन्, द्विगुस०] १. सनक, सनत्कुमार, सनंदन और सनातन ये चार ऋषि जिनके नामों के आरंभ में 'सन' है। २. विष्णु।

चतुस्सम—पुं० [सं० चतुर्-सम, ब० स०] १. एक औषध जिसमें लौंग, जीरा, अजवाइन और हड़ बराबर मात्राओं में मिलाये जाते हैं। यह पाचक, भेदक और आमशूल नाशक कहा गया है। २. एक मिश्रित गंध द्रव्य जिसमें २ भाग कस्तूरी, ४ भाग चंदन, ३ भाग कुंकुम और ३ भाग कपूर मिला रहता है।

वि० १. जिसमें चार चीजें बराबर मिली हों। २. जो चारों ओर अथवा प्रकार से बराबर हो।

चतुस्सीमा (मन्)—स्त्री० [सं० चतुर्-सीमन्, द्विगुस०, डाप्] चौहद्दी।

चतुस्सूत्री—स्त्री० [सं० चतुर्-सूत्र, द्विगुस०, ङीप्] व्यासदेव-कृत वेदांत के आरम्भिक चार सूत्र जो बहुत कठिन हैं और जिन पर भाष्यकारों में बहुत मत-भेद है।

चतुस्सम्प्रदाय—पुं० [सं० चतुर्-सम्प्रदाय, द्विगुस०] वैष्णवों के ये चार प्रधान संप्रदाय—श्री, माध्व, रुद्र और सनक।

चतूरात्र—पुं० [सं० चतुर्-रात्रि, द्विगुस० अच्] चार रात्रियों में समाप्त होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

चत्र-भुज†— वि०, पुं० = चतुर्भुज।

चत्वर—पुं० [सं० √चत् (स्वीकार करना) +ष्वरच्] १. कोई चौकोर टुकड़ा या स्थान। २. वह स्थान जहाँ चार भिन्न-भिन्न मार्ग आकर मिलते हों। चौमुहानी। चौराहा। ३. वह स्थान जहाँ भिन्न-भिन्न जातियों, देशों आदि के लोग आकर एकत्र होते या मिलते हों। ४. हवन आदि के लिए बनाया हुआ चौतरा या वेदी। ५. चार रथों का समूह।

चत्वर-वासिनी—स्त्री० [सं० चत्वर √वस् (रहना) +णिनि—ङीप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

चत्वाल—पुं०] सं० √चत् +वालञ्] १. हवन आदि के लिए जमीन में खोदा हुआ चौकोर गड्ढा। होमकुंड। २. कुश नामक घास। ३. गर्भ। ४. चबूतरा। चौतरा। ५. वेदी।

चदरा†—पुं० दे० 'चादर'।

चदरिया*—स्त्री० =चादर। उदा०—झीनी झीनी बीनी चदरिया। —कबीर।

चदिर—पुं० [सं० √चन्द् (चमकना) +किरच्] १. चन्द्रमा। २. कपूर। ३. हाथी। ४. साँप।

चद्दर—स्त्री० [फा० चादर] १. ओढ़ने की चादर। २. धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर टुकड़ा या पत्तर। जैसे—पीतल या लोहे की चद्दर। ३. नदी के बहाव में वह स्थिति जिसमें उसका पानी कुछ दूर तक ऊपर

से देखने पर चादर के समान सम-तल रहता है। ४. एक प्रकार की छोटी तोप।

चनक*—पुं०[सं० चणक] चना।

चनकन|—पुं०[देश०] शलगम।

चनकना|—अ०=चटकना। उदा०—चनकि गई सीसी गयो छिरकत छनकि गुलाब।—शृं०।

चनखना—अ०[?] चिढ़ना। खफा होना। उदा०—श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी सों प्यारी जब तुं बोलत चनख चनख।—हरिदास।

चनचना—पुं०[अनु०] एक प्रकार का कीड़ा जो तमाकू की फसल को हानि पहुँचाता है। झनझना।

चनन|—पुं०=चंदन।

चनवर*—पुं०[?] ग्रास। कौर।

चना—पुं०[सं० चण, चणक; प्रा० चणअ; ने० बं० चना; सिं० चणो; उ० गु० पं० मरा० चणा] १. चैती की फसल का एक प्रसिद्ध पौधा जो हाथ भर ऊँचा होता है। २. उक्त पौधे के दाने या बीज जिनकी गिनती अनाजों में होती है। बूट। छोले।

पद—लोहे के चने=बहुत कठिन और परिश्रमसाध्य काम।

चनियारी—स्त्री० [?] एक प्रकार का जल-पक्षी जो साँभर झील के निकट और बरमा में अधिकता से पाया जाता है। इसके पर बहुत सुन्दर होते हैं और टोपियों में लगाने तथा गुलूबंद बनाने के काम में आते हैं। हरगीला।

चनुअरी—स्त्री०=चनोरी।

चनेठ—पुं० [हिं० चना] १. एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ चने की पत्तियों से मिलती-जुलती होती हैं। २. इस घास से बनाया हुआ एक औषध जो पशुओं को कुछ रोगों में खिलाया जाता है।

चनोरी—स्त्री०[?] वह भेड़ जिसके सारे शरीर के बाल या रोएँ सफेद हों। (गड़ेरिया)

चन्हारिन—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जंगली चिड़िया।

चप—स्त्री०[देश०] कोई घोली हुई वस्तु। घोल। जैसे—चूने का चप।

वि० [फा०] बायाँ। वाम।

पद—चप व रास्त=(क) बाएँ और दाहिने भाग। (ख) बाएँ और दाहिने, दोनों ओर।

स्त्री० [हिं० चाप] चाप। दबाव। उदा०—कौन की है चप तोहि तेरौ और अरि को?—सेनापति।

चपकन—स्त्री० [हिं० चपकना] १. एक प्रकार का अंगा। अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे, पीतल आदि का वह दोहरा साज जिसमें ताला लगाकर बंद किया जाता है।

चपकना—अ०=चिपकना।

चपका—पुं० [हिं० चपकना] एक प्रकार का कीड़ा।

चपकाना—स०=चिपकाना।

चप-कुलिश—स्त्री० [तु० चपकलश] १. तलवारों से होनेवाली लड़ाई। २. अड़चन, असमंजस या कठिनाई की स्थिति।

क्रि० प्र०—में पड़ना।

३. बहुत अधिक भीड़-भाड़ या रेल-पेल।

चपट—पुं० [सं०√चप् (सांत्वना देना)+क, चप√अट् (जाना)+अच्, पररूप] चपत। तमाचा।

चपटना—अ० १.=चिपकना। २.=चिमटना।

चपटा|—वि०[स्त्री० चपटी] =चिपटा।

चपटाना—स० १.=चिपकाना। २.=चिमटाना।

चपटी—स्त्री० [हिं० चपटा] १. एक प्रकार की किलनी जो चौपायों को लगती है। २. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। थपोड़ी। ३. भग। योनि।

मुहा०—चपटी खेलना या लड़ाना=संभोग की वासना पूरी करने के लिए दो स्त्रियों का परस्पर योनि मिलाकर रगड़ना। (बाजारू)

चपड़-चपड़—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो कुत्ते, बिल्ली, शेर आदि के पानी पीते समय होता है।

क्रि० वि० उक्त प्रकार का शब्द करते हुए।

चपड़ा—पुं० [हिं० चपटा] १. साफ की हुई लाख का पत्तर। २. किसी चीज का चिप्पड़ या पत्तर। ३. लाल रंग का एक प्रकार का फतिंगा जो गंदे और सीड़वाले स्थानों में रहता है। ४. मस्तूल में बाँधने की रस्सी।

चपड़ी—स्त्री० [हिं० चपटा] १. तख्ती। पटिया। २. दे० 'चिपड़ी'।

चपत—पुं० [सं० चपट] १. वह प्रहार जो मनुष्य अपनी हाथ की उँगलियों तथा हथेली के योग से किसी के सिर पर करता है। २. लाक्षणिक अर्थ में, आघात या क्षति।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगना।—लगाना।

चपतगाह—स्त्री०[हिं० चपत+फा० गाह] खोपड़ी जिस पर चपत लगाया जाता है। (परिहास)

चपतियाना—स० [हिं० चपत] किसी को चपत या चपतें लगाना।

चपती—स्त्री० [हिं० चिपटा] काठ का वह चिपटा छड़ जिससे लड़के पट्टी, कागज आदि पर सीधी लकीरें खींचते हैं।

चपदस्त—पुं० [फा० चप+दस्त] ऐसा घोड़ा जिसका अगला दाहिना पैर सफेद हो।

चपना—अ० [हिं० चाँप] १. अंदर या नीचे की ओर धँसना। २. किसी के सामने लज्जित भाव से चुप रहना और उससे दबना। ३. दबाव पड़ने से कुचला जाना। ४. चौपट या नष्ट होना। (क्व०)

चपनी—स्त्री० [हिं० चपना] १. छिछली कटोरी। २. बरतनों का ढक्कन। ३. दरियाई नारियल का बना हुआ एक प्रकार का कमंडल। ४. वह लकड़ी जिसमें ताना बाँधकर गड़रिये कंबल बुनते हैं। ५. घुटने की हड्डी। चक्की।

चपरकनातिया—वि०=चपर-कनाती।

चपर-कनाती—वि० [हिं० चपर+तु० कनात+ई (प्रत्य०)] बहुत ही तुच्छ कोटि का ऐसा व्यक्ति जो इधर-उधर लोगों की खुशामद और सेवाएँ करके पेट पालता हो।

चपर गट्टू—वि० [हिं० चौपट+गटपट] १. चारों ओर से कसकर पकड़ा या दबाया हुआ। २. विपत्ति का मारा। अभागा।

चपरना|—अ०[हिं० चुपड़ना?] १. आपस में खूब अच्छी तरह मिलना। ओत-प्रोत होना। उदा०—दोउ चपरि ज्यौं तरुवर छाया।—सूर। २. भाग या हट जाना।

स० दे० 'चुपड़ना'।

चपरनी†—स्त्री० [देश०] वेश्याओं का गाना। मुजरा। (वेश्याओं की परिभाषा)

चपरा†—वि० [?] कोई बात कहकर या कोई काम करके मुकर जानेवाला। झूठा।

अव्य० १. हठात्। २. जैसे हो, वैसे। ३. ख्वाहमख्वाह।

पुं० दे० 'चपड़ा'।

चपराना—स०[हिं० चपरा] किसी को झूठा बनाना। झुठलाना।

चपरास—स्त्री०[हिं० चपरासी] १. धातु आदि का वह टुकड़ा जिसे पेटी या परतले में लगाकर अरदली, चौकीदार, सिपाही आदि पहनते हैं और जिस पर उनके मालिक, कार्यालय आदि के नाम खुदे या छपे रहते हैं। २. वह कलम जिससे सुनार मुलम्मा करते हैं। ३. मालखंभ की एक कसरत जो दुबगली के समान होती है। दुबगली में पीठ पर से बेंत आता है और इसमें छाती पर से आता है। ४. आरे आदि के दाँतों का दाहिनी या बाईं ओर होनेवाला झुकाव। (बढ़इयों की परिभाषा) ५. कुरतों के मोढ़े पर की चौड़ी धज्जी या पट्टी।

चपरासी—पुं० [फा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना] १. वह नौकर जो चपरास पहनकर अपने मालिक के सामने उसकी छोटी-मोटी सेवाएँ करने के लिए सदा उपस्थित रहता है। अरदली। जैसे—किसी अदालत या हाकिम का चपरासी। २. कार्यालय के कागज-पत्र आदि लाने या ले जानेवाला नौकर।

चपरि†—क्रि० वि० [सं० चपल] १. फुरती से। तेजी से। २. जोर से। ३. सहसा। एकबारगी। ४. बलपूर्वक पकड़ या दबाकर।

उदा०—चपरि चढ़ायौ चाप चंद्रमा ललाम कौ।—तुलसी।

चपरी—स्त्री० [हिं० चपटा] खेसारी नाम का कदन्न जिसमें चपटी फलियाँ लगती है।

चपरैला—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास। कूरी।

चपरौनी†—स्त्री० [हिं० चपटा] लोहारों का एक औजार जिससे बालटू का सिरा पीटकर चौड़ा किया जाता है।

चपल—वि० [सं० √चुप् (रेंगना)+कल, उकारस्य अकारः] १. जो गति में हो। गतिमान्। २. काँपता या हिलता हुआ। ३. अस्थिर। ४. क्षणिक। ५. चुलबुला। ६. चटपट काम करनेवाला, फुरतीला (व्यक्ति)। ७. उतावली करनेवाला। जल्दबाज। ८. चालाक। धूर्त्त।

पुं० १. पारा। पारद। २. मछली। ३. चातक। पपीहा। ४. एक प्रकार का पत्थर। ५. चोर नामक गंध-द्रव्य। ६. राई। ७. एक प्रकार का चूहा।

चपलक—वि० [सं० चपल+कन्] १. अस्थिर। चंचल। २. बिना सोचे-समझे काम करनेवाला। अविचारी।

चपलता—स्त्री० [सं० चपल+तल्–टाप्] १. चपल होने की अवस्था या भाव। चंचलता। २. साहित्य में वह अवस्था जब किसी प्रकार के अनुराग के कारण आचरण की गम्भीरता या अपनी मर्यादा का ध्यान नहीं रह जाता। इसकी गिनती संचारी भावों में होती है। ३. तेजी। फुरती। ४. जल्दी। शीघ्रता। ५. चालाकी। ६. ढिठाई। धृष्टता।

चपलत्व—पुं० [सं० चपल+त्व] =चपलता।

चपलफाँटा—पुं० [सं० चपल+हिं० फट्टा=धज्जी] जहाज के फर्स के तख्तों के बीच की खाली जगह में खड़े बल में बैठाए हुए तख्ते या पच्चड़ जिनमें मस्तूल फँसे रहते हैं।

चपलस—पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी से सजावट के सामान, चाय के संदूक, नावों के तख्ते आदि बनते हैं। यह ज्यों-ज्यों पुरानी होती है त्यों-त्यों अधिक कड़ी और मजबूत होती जाती है।

चपला—स्त्री० [सं० चपल+टाप्] १. लक्ष्मी। २. बिजली। विद्युत्। ३. दुश्चरित्रा या पुंश्चली स्त्री। ४. पिप्पली। ५. जीभ। जिह्वा। ६. भाँग। विजया। ७. मदिरा। शराब। ८. आर्या छंद का वह भेद जिसके पहले गण के अंत में गुरु हो, दूसरा गण जगण हो, तीसरा गण दो गुरुओं का हो, चौथा गण जगण हो, पाँचवें गण का आदि गुरु हो, छठा गण जगण हो, सातवाँ जगण न हो और अंत में गुरु हो। ९. प्राचीन काल की एक प्रकार की नाव जो ४८ हाथ लंबी, २४ हाथ चौड़ी और २४ हाथ ऊँची होती थी और केवल नदियों में चलती थी।

वि० सं० 'चपल' का स्त्री०।

पुं० [हिं० चप्पड़] जहाज में लोहे या लकड़ी की पट्टी जो पतवार के दोनों ओर उसकी रोक के लिए लगाई जाती है। (लश०)

चपलाई*—स्त्री०=चपलता।

चपलान—पुं० [हिं० चप्पड़] जहाज की गलही के अगल-बगल के कुंदे जो धक्के सँभालने के लिए लगाए जाते हैं। (लश०)

चपलाना—अ० [सं० चपल] १. चपलता दिखाना। २. धीरे-धीरे आगे बढ़ना, चलना या हिलना-डोलना।

स० १. किसी को चपल बनाना। २. चलाना-फिराना या हिलाना-डुलाना।

चपली—स्त्री० [हिं० चप्पल+ई (प्रत्य०)] छोटी चप्पल।

चपवाना—स० [हिं० चपना का प्रे०] चपने या चापने का काम किसी से कराना।

चपाक†—क्रि० वि० [अनु०] १. अचानक। २. चटपट।

चपाट—पुं० [हिं० चपटा] वह जूता जिसकी एड़ी उठी न हो। चपौर जूता।

चपाती—स्त्री० [सं० चर्पटी; प्रा० चप्पती; बं० चापाती; गु० ने० फा० मरा० चपाती] एक प्रकार की पतली, हलकी और मुख्यतः हाथों से दबाकर बढ़ाई हुई (चकले पर बेली हुई रोटी से भिन्न) रोटी।

पद—चपाती-सा पेट=ऐसा पेट जो बहुत निकला हुआ न हो। कृशोदर।

चपाती-सुमा—पुं० [उ०] चपाती या रोटी की तरह के पतले सुमोंवाला घोड़ा।

चपाना—स० [हिं० चपना] १. किसी को चपने या दबने में प्रवृत्त करना।

उदा०—मुफलिस को इस जगह भी चपाती है मुफलिसी।—नजीर।

२. एक रस्सी के सिरे को दूसरी रस्सी के सिरे के साथ बटकर जोड़ना या मिलाना।

चपेकना†—स०=चिपकाना।

चपेट—स्त्री० [सं० चप√इट् (गति)+अच्] १. चपेटने की क्रिया, परिणाम या भाव। २. आघात। प्रहार। ३. तमाचा। थप्पड़। ४. कठिनाई या संकट की स्थिति।

चपेटना—स० [सं० चपेट] १. अचानक आक्रमण, प्रहार आदि करके दबाना या संकट में डालना। दबोचना। २. उक्त प्रकार की क्रिया

से दबाते हुए पीछे हटाना। जैसे—सिक्खों की सेना चारों ओर से शत्रुओं को चपेटने लगी। ३. क्रोधपूर्वक डराते-धमकाते हुए किसी पर बिगड़ना।

चपेटा—पुं०=चपेट।
वि० [हिं० चपेटना?] दोगला। वर्ण-संकर।

चपेटिका—स्त्री०[सं० चपेट+कन्—टाप्, इत्व] तमाचा।

चपेटी—स्त्री० [सं० चपेट+ङीप्]भादों सुदी छठ। भाद्रपद की शुक्ला षष्ठी। (इस दिन स्त्रियाँ संतान की रक्षा के उद्देश्य से पूजन आदि करती हैं।)

चपेड़†—स्त्री० [सं० चपेट] तमाचा। थप्पड़।

चपेरना—स०=चपेटना।

चपेहा†—पुं०[देश०] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

चपोटसिरीस—पुं०[देश०] सिरीस की जाति का एक पेड़।

चपौटी†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की छोटी टोपी।

चपौर—पुं०[देश०] १. एक प्रकार का जलपक्षी जिसकी चोंच और पैर पीले तथा सिर गर्दन और छाती हलकी भूरी होती है। २. ऐसा जूता जिसकी एड़ी उठी हुई न हो।

चप्पड़†—पुं०=चिप्पड़।

चप्पन—पुं० [हिं० चपना=दबना] छोटे आकार का छिछला कटोरा।

चप्पल—स्त्री० [चपचप से अनु०] १. खुली एड़ी का एक प्रसिद्ध जूता जिसमें चमड़े आदि की पट्टियाँ तल्ले पर लगी रहती हैं और जिनमें पैर फँसाये जाते हैं। २. वह लकड़ी जिस पर जहाज की पतवार या कोई खंभा गड़ा रहता है। (लश०)

चप्पल सेंहुड़—पुं०[हिं० चपटा+सेहुँड़] नागफनी।

चप्पा—पुं० [सं० चतुष्पाद, प्रा० चड़प्पाव] १. चतुर्थांश। चौथाई भाग। चौथाई हिस्सा। २. कुछ या थोड़ा अंश। टुकड़ा। भाग। ३. चार अंगुल की नाप। ४. भूमि का बहुत छोटा टुकड़ा। उदा०—चप्पे जितनी कोठरी और मियाँ मुहल्लेदार। (कहा०)
वि० एक चौथाई। जैसे—चप्पा रोटी।

चप्पी—स्त्री० [हिं० चपना=दबना] सेवा-भाव से धीरे-धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया या भाव। चरण-सेवा। चंपी।

चप्पू—पुं० [हिं० चाँपना] नाव का वह डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी

चफाल—पुं० [हिं० चौ+फाल] ऐसा भू-खंड जिसके चारों ओर कीचड़ या दलदल हो।

चबक—स्त्री० [अनु०] रह-रहकर उठनेवाला दर्द। चिलक। टीस।
वि० कायर। डरपोक।

चबकना—अ०[अनु०] रह-रहकर दर्द करना। टीसना। चमकना।

चबका†—पुं०=चाबुक। उदा०—सहज पलांण पवन करि घोड़ा, लै लगाम चित चबका।—गोरखनाथ।

चबकी—स्त्री० [हिं० चाबुक] स्त्रियों के केश बाँधने की सूत या ऊन की गुथी हुई रस्सी। चोटी। परांदा।

चबनी हड्डी—स्त्री० [हिं० चावना+हड्डी] वह हड्डी जो भुरभुरी और पतली हो; और फलतः सहज में चबाई जा सकती हो।

चबर-चबर—स्त्री० [अनु०] बकवास। उदा०—हमको यह सब चबर-चबर पसंद नहीं है।—वृन्दावनलाल वर्मा।
क्रि० वि० चब-चब शब्द करते हुए।

चबला—पुं० [देश०] पशुओं के मुँह में होनेवाला एक रोग। लाल रोग।

चबवाना—स० [हिं० चबाना का प्रे०] किसी को कुछ चबाने में प्रवृत्त करना।

चबाई—स्त्री०[हिं० चबाना] चबाने की क्रिया, ढंग या भाव।
पुं०=चवाई।

चबाना—स० [सं० चर्वण] १. खाते समय किसी चीज को दाँतों से बार-बार इस प्रकार दबाते हुए काटना या कुचलना कि वह छोटे-छोटे कणों में विभक्त हो जाय।

मुहा०—चबा-चबाकर बातें करना=बहुत धीरे-धीरे और रुक-रुककर बातें करना। (धूर्तता, बनावट आदि का सूचक)। **चबे को चबाना**=किए हुए काम को फिर-फिर करना। पिष्टपेषण करना।
२. पशुओं आदि का किसी को दाँतों से काटना। ३. लाक्षणिक अर्थ में, नष्ट करना। जैसे—तुम्हें तो वह चबा डालेगा।

चबारा—पुं०=चौबारा।

चबाव*—पुं०=चवाव।

चबूतरा—पुं०[सं० चतुस्-स्तर (प्र-स्तर); प्रा० चउत्थर; बं० चौतारा; पं० चौंतरा; गु० चोतरो; ने० चौतारो; मरा० चौथरा] १. मकान के अगले भाग में बैठने के लिए बनाई हुई खुली, चौकोर और चौरस जगह। चौंतरा। २. उक्त प्रकार की कोई बड़ी रचना जो चारों ओर से खुली हो। चौंतरा। ३. मध्ययुग में कोतवाली या थाने में का वह स्थान जहाँ कोतवाल या थानेदार बैठकर अभियोग सुनते और दंड देते थे।

चबेना—पुं०[हिं० चबाना] चबाकर खाने के लिए सूखा भुना हुआ चना अथवा और कोई अन्न। चर्वण। भूँजा।

चबेनी†—स्त्री० [हिं० चबाना] १. जल-पान की सामग्री। २. वह धन या रकम जो जल-पान आदि के लिए दी जाय।

चब्बा—पुं० =चौआ।

चब्बू—वि० [हिं० चबाना] १. बहुत चबाने अर्थात् खानेवाला। बहुत अधिक भोजन करनेवाला। २. खा-खरचकर धन नष्ट करनेवाला।

चब्भू—वि० =चब्बू।

चब्भो—स्त्री० [हिं० चमक] किसी की गरदन पकड़कर उसे जबरदस्ती पानी में दी जानेवाली डुबकी या गोता।

चभक—स्त्री० [अनु०] १. पानी में किसी वस्तु के डूबने का शब्द।
२. काटने या डंक मारने की क्रिया या भाव।

चभच्चा—पुं० = चहबच्चा।

चभड़-चभड़—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो कोई वस्तु खाने या पीने के समय मुँह के हिलने आदि से होता है। जैसे—कुत्तों का चभड़-चभड़ पानी पीना।

चभना—अ० [सं० चर्वण] १. चाभा या खाया जाना। २. दरेरा खाना। दबना। पिसना। उदा०—मुरयौन मन मुरुवानु, चभि भौ चूरनु चपि चूरू।—बिहारी।

चभाना—स० [हिं० चाभना का प्रे०] १. किसी को चाभने या खाने में प्रवृत्त करना। २. अच्छी तरह भोजन कराना।

† अ० = चबाना।

चभोक—वि० [देश०] बेवकूफ। मूर्ख।

चभोरना—स० [हिं० चुभकी] १. तरल पदार्थ में कोई चीज अच्छी तरह डुबाना। जैसे—घी में रोटी चभोरना। २. गरदन से पकड़कर किसी को गहरे पानी में गोता देना।

चमंक—स्त्री० = चमक।

चमंकना—अ० = चमकना।

चमक—स्त्री० [हिं० चमकना] १. चमकने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व जिसके कारण उसमें से प्रकाश निकलता है। जैसे—कपड़े, बिजली या सोने की चमक। ३. प्रकाश। रोशनी। ४. आभा। कांति। ५. कमर, पीठ आदि में होनेवाली वह आकस्मिक और क्षणिक पीड़ा जो अधिक तनाव या बल पड़ने के कारण होती है। झटका लगने से होनेवाला दर्द। ६. चौंकने की क्रिया या भाव। चौंक।

चमक चाँदनी—स्त्री० [हिं०] वह स्त्री जो हर समय खूब बनी-ठनी रहे और खूब चमकती-मटकती रहे।

चमक-दमक—स्त्री० [हिं० चमक+दमक (अनु०)] १. चमकने और दमकने की क्रिया, गुण या भाव। २. तड़क-भड़क। ठाठ-बाट।

चमकदार—वि० [हिं० चमक +फा० दार] जिसमें चमक हो। चमकीला।

चमकना—अ० [सं० चमत्क, प्रा० चमक्केइ; बँ० चकान; उ० चमकिबा; मरा० चमकणें] १. किसी प्रकाशमान वस्तु का इतना अधिक तथा सहसा प्रकाश देना कि उस पर आँखें न ठहर सकें। जैसे—बिजली चमकना। २. किसी वस्तु का झिल-मिलाती हुई किरणों के माध्यम से प्रकाश देना। जैसे—आकाश में तारों का चमकना। ३. किसी चिकने तलवाली वस्तु का प्रकाश में अधिक उज्ज्वल तथा प्रकाशपूर्ण भासित होना। जैसे—धूप में गहना या शीशा चमकना। ४. उक्त प्रकार के प्रकाश का आँखों पर ऐसा प्रभाव पड़ना कि वे निरन्तर खुली न रह सकें। जैसे—धूप में आँखें चमकना। ५. किसी वस्तु का बहुत ही उत्कृष्ट रूप में प्रकट या प्रस्तुत होना। जैसे—गला या गाना चमकना। ६. (कार्य, वस्तु आदि का) उन्नति या वृद्धि पर होना। जैसे—रोजगार चमकना। ७. (किसी वस्तु, बात आदि का) अपना उग्र या प्रचंड रूप दिखलाना। जैसे—शहर में हैजा चमकना। ८. कीर्ति, प्रताप, वैभव आदि से युक्त होना। जैसे—भाग्य चमकना। ९. किसी को देखने पर घबराते हुए चौंक कर पीछे हटना। बिदकना। जैसे—हाथी को देखकर गौ या घोड़े का चमकना। १०. साधारण रूप से नाराज होना या बिगड़ना। जैसे—गलती तो उन्हीं की थी; पर वे चमके हम पर। ११. जल्दी से दूर हो जाना या हट जाना। चंपत होना। उदा०—सखा साथ के चमकि गए सब, गह्यौ श्याम कर धाइ।—सूर। १२. नाज-नखरे या हाव-भाव से चेष्टाएँ करना। (स्त्रियाँ) जैसे—तुम तो बातों-बातों में चमकने लगती हो।

†वि० [स्त्री० चमकनी] १. खूब चमकनेवाला। २. जरा-सी बात में चिढ़ या बिगड़ जानेवाला। ३. अनुचित रूप से नाज-नखरा या हाव-भाव दिखलानेवाला। ४. जल्दी चौंकने या बिदकनेवाला। जैसे—चमकता घोड़ा या बैल।

चमकवाना—स० [चमकाना का प्रे०] १. चमकाने का काम करवाना। २. किसी चीज में चमक उत्पन्न कराना।

चमकाना—स० [हिं० चमकना का स०] १. कांति, दीप्ति या चमक से युक्त करना। ओप या चमक लाना। उज्ज्वल करना। २. चौंकाना। ३. भड़काना। ४. खिझाना। चिढ़ाना। ५. उत्तेजित करके आगे बढ़ाना। जैसे—लड़ाई के मैदान में घोड़ा चमकाना। ६. नखरे से कोई अंग जल्दी-जल्दी हिलाना-डुलाना। जैसे—आँखें या उँगलियाँ चमकाना। ७. कीर्ति, वैभव, सफलता आदि से युक्त करना। जैसे—उनके छोट भाई ने आकर उनका रोजगार चमका दिया।

चमकारा—पुं० [हिं० चमक] चकाचौंध उत्पन्न करनेवाली चमक या प्रकाश।

वि० [स्त्री० चमकारी] खूब चमकनेवाला। चमकता हुआ। चमकीला। उदा०—अधरबिंब दसनन की सोभा, दुति दामिनि चमकारी।—सूर।

चमकारी †—स्त्री० १. = चमक। २. = चमकी।

चमकी—स्त्री० [हिं० चमक] रुपहले या सुनहले तारों के वे छोटे-छोटे गोल या चौकोर चिपटे टुकड़े जो जरदोजी के काम में लगाये जाते हैं। सितारे। तारे।

चमकीला—वि० [हिं० चमक+ईला (प्रत्य०)] १. जिसमें चमक हो। चमकदार। जैसे—चमकीला कपड़ा, चमकीले तारे।

चमकुल†—वि० [हिं० चमकना] १. चमकीला। २. चटकने-मटकनेवाला। उदा०—बैल मरकहा चमकुल जोय।— घाघ।

चमकौवल—स्त्री० [हिं० चमक+औवल (प्रत्य०)] शरीर के अंगों को नखरे से चमकाने-मटकाने की क्रिया या भाव। जैसे—उँगलियों की चमकौवल।

चमक्को—स्त्री० [हिं० चमकना] १. बहुत अधिक चमकने-मटकनेवाली स्त्री। चंचल और निर्लज्ज स्त्री। २. झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़—पुं० [सं० चर्मचटक] [स्त्री० चमगिदड़ी] १. केवल रात के समय उड़नेवाला एक प्रसिद्ध छोटा जन्तु जिसके चारों पैर झिल्लीदार होते हैं और जो दिन में वृक्षों की डालों आदि में लटका रहता है। इसकी छोटी बड़ी अनेक जातियाँ होती हैं और इसे दिन में दिखाई नहीं देता। २. ऐसा व्यक्ति जो अपना कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न रखता हो और केवल स्वार्थ-साधन के लिए कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में जा मिलता हो। (एक प्रसिद्ध कहानी के आधार पर)

चमचम—स्त्री० [अनु०] एक प्रसिद्ध लंबोतरी बंगला मिठाई।

वि० [हिं० चमक] खूब चमकता हुआ। चमकीला। दे० 'चमाचम'।

क्रि० वि० खूब चमक-दमक से। दे० 'चमाचम'।

चमचमाना—अ० [हिं० चमक] खूब चम-चम करना या चमकना। प्रकाशमान होना।

स० ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज खूब चमकने लगे या उसमें से चमक निकलने लगे। जैसे—जूता या तलवार चमचमाना।

चमचा—पुं० [तु० चम्चः मि० सं० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १. कलछी की तरह का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जिसमें अंडाकार छोटी कटोरी में लंबी डाँड़ी लगी होती है, और जिससे कोई चीज उठाकर खाई या पी जाती है। चम्मच। २. जहाज की दरजों में अलकतरा ढालने

की कलछी। (लश०) ३. नाव में डाँड़ का चौड़ा अग्रभाग। हाथा। हलेसा। पँगई। बैठा। ४. इंजन, भट्ठी आदि में से कोयला निकालने का एक प्रकार का बड़ा फावड़ा। † ५. चिमटा।

चमचिच्चड़—वि० [हिं० चाम+चिचड़ी] (व्यक्ति) जो चिचड़ी या किलनी की तरह किसी में या किसी से चिपटा रहे। पिंड या पीछा न छोड़नेवाला।

चमची—स्त्री० [हिं० चमचा] १. छोटा चम्मच। २. आचमनी। ३. वह चिपटे और चौड़े मुँहवाली सलाई जिससे पान पर कत्था और चूना लगाते हैं।

चमजुई—स्त्री० [सं० चर्मयूका] पशुओं या मनुष्यों के शरीर में से उत्पन्न होनेवाला एक छोटा कीड़ा। चिचड़ी।

वि० स्त्री० = चमचिच्चड़।

चमटना†—स० = चिमटना।

चमटा—पुं० =चिमटा।

चमड़ा—पुं० [सं० चर्म] १. पशुओं और मनुष्यों के सारे शरीर का वह ऊपरी आवरण जिससे मांस और नसें ढकी रहती हैं और जिस पर प्रायः बाल या रोएँ उगे रहते हैं। त्वचा। (स्किन) २. मरे हुए पशुओं अथवा पशुओं को मार कर उनकी उतारी हुई खाल को छील तथा सिझाकर औद्योगिक कार्यों के लिए तैयार किया हुआ उसका रूप। (हाइड)

मुहा०—चमड़ा उधेड़ना या खींचना = चमड़े को शरीर से अलग करना। **चमड़ा सिझाना** = (क) चमड़े को बबूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी में डाल कर मुलायम करना। (ख) लाक्षणिक रूप में, बहुत अधिक मारना या पीटना।

३. छाल। छिलका।

चमड़ी—स्त्री० [हिं० चमड़ा] चर्म। त्वचा। खाल।

मुहा०—(किसी की) चमड़ी उधेड़ना=इतना अधिक मारना कि शरीर की त्वचा उड़ जाय और उसमें से खून निकलने लगे।

चमत्करण—पुं० [सं० चमत् √ कृ (करना) +ल्युट्—अन] चमत्कार करने या होने की क्रिया या भाव।

चमत्कार—पुं० [सं० चमत् √कृ +घञ्] [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १. कोई ऐसी अनोखी या विलक्षण बात जिसे देखकर सब लोग चौंक पड़ें और यह न समझ सकें कि यह कैसे हो गई। २. ऐसा अद्भुत काम या बात जो इस लोक में सहसा न दिखाई देती हो। अलौकिक-सा जान पड़नेवाला काम या बात। करामात। जैसे—मृत प्राणी को जीवित कर दिखाना; या जलते हुए अंगारों पर दौड़ना और उन्हें उठा-उठाकर खाने लगना। ३. ऐसी अद्भुत या अनोखी बात जिसे देख या सुनकर मन फड़क उठे। जैसे—कविता या कहानी की चमत्कार। ४. आश्चर्य। विस्मय। ५. [चमत् √कृ +अण्] डमरू। ६. अपामार्ग। चिचड़ा।

चमत्कारक—वि० [सं० चमत् √कृ +ण्वुल्—अक] चमत्कार उत्पन्न करनेवाला।

चमत्कारिक—वि० [सं० चमत्कार+ठन्–इक] १. चमत्कार-संबंधी। २. इतना विलक्षण कि चौंका दे। (मार्वलस) ३. अलौकिक या असंभव-सा जान पड़नेवाला। (मिरैक्यूलस)

चमत्कारित—भू० कृ० [सं० चमत्कार+इतच्] चमत्कृत। विस्मित।

चमत्कारिता—स्त्री० [सं० चमत्कारिन् +तल्—टाप्] चमत्कारी होने की अवस्था, गुण या भाव। चमत्कारपन।

चमत्कारी (रिन्)—वि० [सं० चमत् √कृ (करना) +णिनि] [स्त्री० चमत्कारिणी] १. (वस्तु) जिसमें चमत्कार हो। जिसमें कुछ विलक्षणता हो। अद्भुत। २. चमत्कार उत्पन्न करनेवाला। ३. चमत्कार दिखानेवाला (व्यक्ति)। करामाती।

चमत्कृत—भू० कृ० [सं० चमत् √कृ +क्त] जो किसी प्रकार का चमत्कार या विलक्षण बात देखकर चौंक पड़ा हो। चकित। विस्मित। उदा०—इतना न चमत्कृत हो बाले ! अपने मन का उपचार करो।—प्रसाद।

चमत्कृति—स्त्री० [सं० चमत् √कृ +क्तिन्] १. चमत्कृत होने की अवस्था या भाव। २. चमत्कार।

चमन—पुं० [फा०] १. फूल-पत्तों आदि से भरी हुई हरी क्यारी। २. फुलवारी। छोटा बगीचा। ३. ऐसी गुलजार जगह जहाँ खूब रौनक हो।

चमन-बंदी—स्त्री० [फा०] क्यारियाँ आदि बनाकर बाग लगाने या सजाने की कला या क्रिया।

चमर—पुं० [सं० √चम् (खाना) +अरच्] १. सुरा गाय। २. सुरा गाय की पूँछ का बना हुआ चँवर। चामर। ३. किसी प्रकार का चँवर। ४. एक दैत्य का नाम।

वि० [हिं० चमार] हिं० 'चमार' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों में लगने के पहले प्राप्त होता है और जो तुच्छ या हीन का वाचक होता है। जैसे—चमर चलाकी, चमर रग आदि।

चमरक—पुं० [सं० चमर+कन्] मधुमक्खी।

चमरख—स्त्री० [हिं० चाम+रक्षा] चरखे में लगी हुई चमड़े, मूँज आदि की वह चकती जिसमें तकला पहनाया जाता है।

चमरखा—पुं० [सं० चर्मकशा] एक प्रकार की सुगंधित जड़ जो उबटन आदि में पड़ती है।

चमर-गिद्ध—पुं० [हिं०] एक प्रकार का बड़ा गिद्ध।

चमर-चलाक†—वि० [हिं० चमार+फा० चालाक] बहुत ही तुच्छ या हीन प्रकार का चतुर या चालाक।

चमर-चलाकी—स्त्री० [हिं०] चमारों की-सी तुच्छ या हीन चालाकी या धूर्त्तता।

चमर-जुलाहा—पुं० [हिं० चमार+जुलाहा] हिंदू जुलाहा। कोरी। (मुसलमानों की दृष्टि से, उपेक्षा-सूचक पद)।

चमर-पुच्छ—वि० [ब० स०] (पशु) जिसकी पूँछ चँवर की तरह हो या चँवर बनाने के काम आ सकती हो।

पुं० १. चँवर। २. गिलहरी। ३. लोमड़ी।

चमर-बंकुलिया†—स्त्री० = चमर-बगली।

चमर-बगली—स्त्री० [हिं० चमार +बगला] बगले की जाति की काले रंग की एक चिड़िया।

चमर-रग—वि० [हिं०] (व्यक्ति) जिसकी रग या स्वभाव चमारों का-सा तुच्छ या हीन हो।

स्त्री० चमारों की-सी तुच्छ या हीन प्रकृति, प्रवृत्ति या स्वभाव।

चमर-शिखा—स्त्री० [उपमि० स०] घोड़ों के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी।

चमरस—पुं० [हिं० चाम] चमड़े के जूते की रगड़ से पैर में होनेवाला घाव।

चमरा खारी—पुं० [हिं० चमार+खारी] खारी नमक।

चमरावत—स्त्री० [हिं० चमार] चमड़े के मोट आदि बनाने की मजदूरी जो काश्तकारों या जमींदारों से चमारों को मिलती है।

चमरिक—पुं० [सं० चमर+ठन्—इक] कचनार का पेड़।

चमरिया†—वि० [हिं० चमार] चमारों का-सा तुच्छ। हीन।

चमरिया सेम—पुं० [हिं०] एक प्रकार की सेम। सेम का एक भेद।

चमरी—स्त्री० [सं० चमर+ङीष्] १. सुरा गाय। २. चँवर। ३. पौधों की मंजरी।

चमरू—पुं० [देश०] १. चमड़ा। २. खाल। ३. चरसा। (लश०)

चमरोर—पुं० [देश०] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी छाया बहुत घनी होती है।

चमरौट—स्त्री० [हिं० चमार+औट (प्रत्य०)] खेत, फसल आदि का वह भाग जो चमारों को उनकी सेवाओं के बदले में दिया जाता है।

चमरौधा—पुं० दे० 'चमौआ'

चमला—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चमली] भीख माँगने का ठीकरा। भिक्षा-पात्र।

चमस—पुं० [सं० √चम् (खाना)+असच्] [स्त्री० अल्पा० चमसी] १. सोम-पान करने का यज्ञ-पात्र जो पलाश आदि की लकड़ी का बनता और चम्मच के आकर का होता था। २. कलछा या कलछी। ३. पापड़। ४. लड्डू। ५. उड़द का आटा। धुआँस। ६. एक प्राचीन ऋषि। ७. नौ योगीश्वरों में से एक योगीश्वर का नाम।

चमसा—पुं० [सं० चमस] चमचा। चम्मच।

†पुं० = चौमासा।

चमसी—स्त्री० [सं० चमस+ङीष्] १. चम्मच के आकार का लकड़ी का एक यज्ञ-पात्र। २. उड़द, मसूर, मूँग आदि का आटा या पीठी।

चमाऊ—पुं० [सं० चामर] चामर। चँवर।

†पुं० दे० 'चमौआ'।

चमाक*—स्त्री० = चमक।

चमाचम—वि० [हिं० चमकना का अनु०] इतना अधिक साफ और स्वच्छ कि चम-चम करता हुआ चमकता हो।

चमार—पुं० [सं० चर्मकार; प्रा० चम्मारअ; बँ० चामार; उ० ने० चमार; सिं० चमारु; सिंह० सोम्मारु; पं० चम्यार; मरा० चांभार] १. एक जाति जो चमड़े के जूते, मोट आदि बनाती तथा उनकी मरम्मत करती है। २. एक जाति जो गलियों आदि में झाड़ू देती है। ३. उक्त जातियों का पुरुष। ४. नीच प्रकृतिवाला आदमी।

चमारनी—स्त्री० = चमारी।

चमारिन—स्त्री० = चमारी।

चमारी—स्त्री० [हिं० चमार] १. चमार जाति की स्त्री। २. गलियों में और सड़कों पर झाड़ू देनेवाली स्त्री। ३. चमार का काम या पेशा। ४. चमारों की-सी वृत्ति या स्वभाव।

वि० १. चमार-संबंधी। चमार का। २. चमारों की तरह का।

स्त्री० [?] कमल का वह फूल जिसमें कमलगट्टे के जीरे खराब हो जाते हैं।

चमियारी—स्त्री० [देश०] पद्म काठ।

चमीकर—पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक खान जिससे सोना निकलता था। (इसी से सोने को चामीकर कहते हैं।)

चमू—स्त्री० [सं० √चम् (नष्ट करना)+णिच्+ऊ] १. सेना। फौज। २. प्राचीन भारत में सेना का वह विभाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घुड़-सवार और ३६४५ पैदल सैनिक होते थे। ३. कफन। ४. कब्र।

चमूकन—पुं० [देश०] एक प्रकार की किलनी जो चौपायों के शरीर में चिपटी रहती है।

चमू-चर—पुं० [सं० चमू √चर् (चलना)+ट] १. सिपाही। सैनिक। २. सेनापति।

चमू-नाथ—पुं० [ष० त०] = चमूपति।

चमू-नायक—पुं० [ष० त०] = चमूपति।

चमू-पति—पुं० [ष० त०] सेनापति। सेनानायक।

चमूरु—पुं० [सं० √चम् (खाना)+ऊरु] एक प्रकार का हिरन।

चमू-हर—पुं० [सं० चमू √हृ (हरण करना)+अच्, उप० स०] महादेव। शिव।

चमेलिया—वि० [हिं०] १ चमेली के फूल की तरह का ऐसा सफेद (रंग) जिसमें कुछ पीली झलक हो। (लैवेंडर) २. चमेली की गंध से युक्त।

पुं० हलका पीलापन लिये सफेद रंग।

चमेली—स्त्री० [सं० चंपावेल्ली; बँ० ने० चमेली; पं० मरा० सिं० चँबेली; गु० चँपेली] १. एक प्रसिद्ध लता जिसमें पीलापन लिये सफेद रंग के छोटे-छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। २. उक्त लता का फल।

पद—चमेली का जाल = एक प्रकार के कसीदे का काम।

३. नदी या समुद्र की ऊँची लहर की वह थपेड़ जिससे नावें आदि डगमगाने लगती और कभी-कभी डूब जाती हैं।

चमोई—स्त्री० [देश०] सिक्किम, भूटान आदि प्रदेशों में होनेवाला एक पेड़ जिसकी छाल से कागज बनाया जाता है। इसे धनकोटा, सतपूरा, सतबरसा इत्यादि भी कहते हैं।

चमोटा—पुं० [सं० चर्मपट्ट] [स्त्री० अल्पा० चमोटी] १. नरम चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई छूरे को उसकी धार तेज करने के लिए बार-बार रगड़ते हैं। २. बड़ी चमोटी। कोड़ा।

चमोटी—स्त्री० [हिं० चमोट] १. चाबुक। कोड़ा। २. पतली छडी। कमची। बेंत। ३. वह चमड़ा जो बेड़ियों के भीतरी भाग में इसलिए लगाया जाता है कि पैरों में लोहे की रगड़ न लगे। ४. चमड़े का बना छोटा चमोटा। ५. चमड़े का वह पट्टा जिसकी सहायता से खराद का चक्कर खींचा जाता है।

चमौआ—पुं० [हिं० चाम] वह देशी जूता जिसका तला चमड़े से सीया गया हो। चमरौधा।

चम्मच—पुं० [फा० मिलाओ, सं० चमस्] बड़ा चमचा जिससे खाने-पीने की चीजें चलाई तथा निकाली जाती हैं।

चम्मल—पुं० = चमला (भिक्षापात्र)।

चम्मोरानी—पुं० [देश०] बच्चों का एक प्रकार का खेल। सात समुंदर।

चय—पुं० [सं० √चि (बटोरना)+अच्] १. ढेर। राशि। समूह। २. टीला। ढूह। ३. किला। गढ़। ४. किले या शहर की चार-दीवारी।

परकोटा। फसील। ५. इमारत या दीवार की नींव। बुनियाद। ६. चबूतरा। चौंतरा। ७. चौकी या ऐसा ही और कोई ऊँचा आसन। ८. बहुत ही मनोहर और हरा-भरा स्थान। ९. वैद्यक में कफ, पित्त या वात का विकृत होकर इकट्ठी होना। १०. यज्ञ के लिए अग्नि का चयन जो एक संस्कार के रूप में होता है।

चयक—वि० [सं० चायक] चयन करनेवाला।

चयन—पुं०[सं०√चि +ल्युट्—अन] १. आवश्यकता, रुचि आदि के अनुसार बहुत-सी वस्तुओं में से कोई एक या कई वस्तुएँ चुन या छाँटकर अलग निकालने की क्रिया या भाव। जैसे—गुलदस्ते के लिए फूलों अथवा संग्रहालय के लिए पुस्तकों का चयन करना। २. इस प्रकार चुनी हुई वस्तुओं का समूह। संकलन। ३. यज्ञ के लिए अग्नि का एक संस्कार।

चयनक—पुं० [हिं० चयन से] चुने हुए व्यक्तियों का वह वर्ग या समूह जिसमें से कोई एक या कई व्यक्ति किसी विशेष कार्य के संपादन या संचालन के लिए किसी उच्च अधिकारी या संस्था द्वारा नियत किये जाते हैं। नामिका। (पैनेल)

चयन-शील—वि० [ब० स०] जो चयन करने या संग्रह करने के काम में लगा हो या लगा रहता हो।

चयना—स० [सं० चयन] चयन करना। इकट्ठा करना। उदा०—रजनी गत बासर मृग तृष्ना रसहरि कौन चयौ।—सूर।

चयनिका—स्त्री०[सं० चयन +कन् +टाप्—इत्व] १. चुनी हुई कविताओं, कहानियों, लेखों या ऐसी ही और चीजों या बातों आदि का संग्रह। २. पत्र-पत्रिकाओं आदि का वह विभाग या स्तंभ जिसमें दूसरी पत्र-पत्रिकाओं से ली हुई अच्छी टिप्पणियाँ, लेख या उनके सारांश रहते हैं।

चयनीय—वि० [सं०√चि+अनीयर्] जो चयन किये या चुने जाने के योग्य हो।

चयित—भू० कृ० [सं० चित] १. चयन किया या चुना हुआ। २. चुनकर इकट्ठा किया हुआ।

चरंद—पुं० [फा० चरिंद] चरनेवाले जीव या प्राणी। जैसे—गौ, घोड़े, बैल आदि।

चर—वि० [सं०√ चर् (गमन) +अच्] १. जो इधर-उधर चलता-फिरता हो। जैसे—चर जीव या प्राणी। २. जो विचरण करता रहता हो। विचरण करनेवाला। जैसे—खेचर, जलचर, निशिचर आदि। ३. जो अपने स्थान से इधर-उधर हटता-बढ़ता रहता हो। जैसे—चर नक्षत्र या राशि। ४. खाने या चरनेवाला।

पुं० १. वह व्यक्ति जो राज्य या राष्ट्र की ओर से देश-विदेश की बातों का छिपकर पता लगाने के लिये नियुक्त हो। गूढ़ पुरुष। जासूस। २. वह जो किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए कहीं भेजा जाय। दूत। ३. ज्योतिष में देशांतर जिसकी सहायता से दिन-मान निकाला जाता है। ४. खंजन या खँडरिच नाम का पक्षी। ५. कौड़ी। ६. कौड़ियों या पासे से खेला जानेवाला जूआ। ७. मंगल ग्रह। ८. मंगलवार। ९. मेष, वृष, मियुन आदि राशियाँ। १० कीचड़ या दलदल। ११. वह जमीन जो नदी के साथ बहकर आनेवाली मिट्टी ज़मने से बनी हो। १२. वह गड्ढा जिसमें बरसात का पानी इकट्ठा हो। १३. नदी के बीच में बना हुआ बालू का टापू या मैदान। १४. नदी का किनारा जहाँ पानी कम हो। (लश०) १५. नाव या जहाज में एक गूढ़े (बाहर की ओर निकला हुआ आड़ा शहतीर) से दूसरे गूढ़े तक की लंबाई या स्थान। (लश०) १६. वायु। हवा।

पुं० [अनु०] कपड़े, कागज आदि के फटने से होनेवाला शब्द।

चरई—स्त्री० [सं० चारिका] जुलाहों का वह स्थान जहाँ ताने के सूत छोटे तागों से बाँधे जाते हैं।

स्त्री० दे० 'चरनी'।

चरक—पुं० [सं० चर+कन्] १. दूत। चर। २. गुप्तचर। जासूस। भेदिया। ३. पथिक। यात्री। ४. वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य जो शेष नाग के अवतार कहे गये हैं और जिनका 'चरक-संहिता' नामक ग्रन्थ बहुत प्रामाणिक है। ५. उक्त चरक 'संहिता नामक' ग्रन्थ। ६. बौद्धों का एक संप्रदाय। ७. भिखमंगा। भिक्षुक।

स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।

†पुं० [सं० चक्र] सफेद कोढ़ का दाग। फूल।

†पुं० = चटक।

चरकटा—पुं० [हिं० चारा+काटना] १. चारा काटनेवाला व्यक्ति। २. अयोग्य या हीन बुद्धिवाला व्यक्ति।

चरकना*—अ० = चिटकना।

चरकसंहिता—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चरक मुनि द्वारा रचित एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ।

चरका—पुं० [फा० चरकः] १. हलके हाथ से किया हुआ वार या घाव या जखम। २. धातु के गरम टुकड़े से दागने के कारण शरीर पर पड़ा हुआ चिह्न। ३. नुकसान। हानि। ४. चकमा। धोखा।

पुं० [देश०] मड़ुआ नाम का कदन्न।

चर-काल—पुं० [कर्म० स०] १. ज्योतिष के अनुसार समय का कुछ विशिष्ट अंश जिसका काम दिन-मान स्थिर करने में पड़ता है। २. उतना समय जितना किसी ग्रह को एक अंश से दूसरे अंश तक जाने या पहुँचने में लगता है।

चरकी—स्त्री० [सं० चरक+ङीष्] एक प्रकार की जहरीली मछली।

चरख—पुं० [फा० चर्ख मि० सं० चक्र] १. पहिए के आकार का अथवा इसी प्रकार का और कोई घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। २. खराद। ३. कलाबत्तू, रेशम आदि लपेटने का चरखा। ४. कुम्हार का चाक। ५. गोफन। ढेलवाँस। ६. तोप लादकर ले चलने की गाड़ी।

पु० [फा० चरग] १. लकड़बग्घा नाम का जंगली हिंसक पशु। २. बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

चरख कश—पुं० [फा० चर्खकश] खराद या चरख की डोरी या पट्टा खींचनेवाला व्यक्ति।

चरखड़ी—स्त्री० [हिं० चरख] एक प्रकार का दरवाजा।

चरखपूजा—स्त्री० [सं० चक्र–पूजा] कुछ जंगली जातियों की एक प्रकार की शिव-पूजा जो चैत की संक्रांति को होती थी। इसमें किसी खम्भे पर बरछा लगाकर लोग गाते, बजाते और नाचते हुए चक्कर लगाते थे और बरछे से अपनी जीभ या शरीर छेदते थे। कहते हैं कि इसी दिन बाण नामक शैव राजा ने अपना रक्त चढ़ाकर शिव को प्रसन्न किया था जिसकी स्मृति में यह पूजा होती थी, जो ब्रिटिश शासन-काल में बंद कर दी गई।

चरखा—पुं० [फा० चरखी मि० स० चक्र] [स्त्री० अल्पा० चरखी] १. पहिए के आकार का अथवा इसी प्रकार का कोई और घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। जैसे--कुएँ से पानी निकालने का चरखा। २. लकड़ी का वह प्रसिद्ध छोटा यंत्र जिससे ऊन, रेशम, सूत आदि कातते हैं। रहट। ३. ऊख का रस पेरने की लोहे की कल। ४. तारकशों का तार खींचने का यंत्र। ५. सूत लपेट कर उसकी पेचक या लच्छी बनाने का यंत्र। ६. किसी प्रकार की गराड़ी या घिरनी। ७. बड़ी या बेडौल पहियोंवाली गाड़ी। ८. रेशम की लच्छी खोलने का 'डड़ा' नामक उपकरण। ९. गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें नया घोड़ा जोतकर सधाया और सिखाया जाता है। खड़खड़िया। १० बुढ़ापे के कारण जर्जर और शिथिल व्यक्ति। ११. झंझट से भरा हुआ और प्रायः व्यर्थ का लंबा-चौड़ा काम। (व्यंग्य) १२. कुश्ती में नीचे पड़े हुए विपक्षी को चित करने का एक पेंच। १३ रहस्य संप्रदाय में, चित्त।

चरखी—स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १. पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २. गोलाकार घूमनेवाला किसी प्रकार का छोटा उपकरण। जैसे—कपास ओटने या सूत लपेटने की चरखी, रस्सी। बटने की चरखी, कुएँ से पानी निकालने की चरखी। ३. कुम्हार का चाक ४. चक्कर की तरह गोलाकार घूमनेवाली एक प्रकार की आतिशबाजी। ५. मटमैले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसे 'सत-बहिनी' भी कहते हैं।

चरग—पुं० [फा० चरग] १. एक प्रकार की शिकारी चिड़िया। २. लकड़-बग्घा।

चर-गृह, चर गेह—पुं० [मध्य० स०] =चर-राशि।

चरचना—स० [सं० चर्चन] १. शरीर में चंदन आदि पोतना या लगाना। २. किसी चीज पर कुछ पोतना। लेप लगाना। ३. अनुमान, कल्पना आदि से कुछ समझना या सोचना। ताड़ना या लखना।
४. चर्चा या जिक्र करना। ५. पहचानना।
स० [सं० अर्चन] अर्चन या पूजा करना।

चरचरा†—वि० [अनु०] [स्त्री० चरचरी] १. = चरपरा। (राज०) उदा०—लूंब सरीसी प्यारी चरचरी जी म्हाँरा राज।—लोकगीत। २. =चिड़चिड़ा।
पुं० खाकी रंग की एक चिड़िया जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं।

चरचराटा†—पुं० [अनु०] दबदबा। रोबदाब। उदा०–अब तो सब तरफ अँगरेजों का चरचराटा है।—वृंदावनलाल वर्मा।

चरचराना—अ० [अनु० चरचर] १. चर-चर शब्द करते हुए गिरना, टूटना या जलना। २. घाव के आस-पास का चमड़ा तनने और सूखने के कारण उसमें हलकी पीड़ा होना। चर्राना। ३. दे० 'चर्राना'।
स० चर चर शब्द करते हुए कोई चीज गिराना या तोड़ना।

चरचराहट—स्त्री० [हिं० चरचराना+हट (प्रत्य०)] १. चरचराने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज के गिरने या टूटने से होनेवाला चर-चर शब्द।

चरचा—स्त्री० = चर्चा।
विशेष—उर्दूवाले इसके आकारान्त होने के कारण भूल से इसे पुंलिंग मानते हैं।

चरचारी†—वि० [हिं० चरचा] १. चर्चा चलानेवाला। २. दूसरों की निंदात्मक चर्चा करनेवाला।

चरचित*—भू० कृ० = चर्चित।

चरज--पुं० [फा० चरग] चरख नामक शिकारी चिड़िया।
†पुं०= आचरज।

चरजना—अ० [सं० चर्चन] १. धोखा या भुलावा देना। बहकाना। २. अनुमान या कल्पना करना।

चरट—पुं० [सं० √चर् (चलना)+अटच्] खंजन।

चरण—पुं० [सं०√चर् (चलना)+ल्युट्—अन] १. किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के पाँव या पैर के लिए आदर-सूचक शब्द। जैसे—(क) हमारा धन्य भाग जो आज यहाँ आपके चरण पधारे हैं। (ख) बड़ों की चरण-पादुका पूजना या चरण-सेवा करना।
मुहा०—(किसी के) चरण छूना = बहुत आदरपूर्वक चरण छूते हुए दंडवत् या प्रणाम करना। **(कहीं-कहीं) चरण देना**=पैर रखना। **(कहीं किसी के) चरण पड़ना** =पदार्पण या शुभागमन होना। **(किसी के) चरण लेना**=चरण छूकर प्रणाम करना। **(किसी के) चरणों पड़ना**= चरणों पर सिर रखकर प्रणाम करना।
२. बड़ों या महापुरुषों का सान्निध्य या सामीप्य। जैसे—भगवान् के चरण छोड़कर वह कहीं जाना नहीं चाहते। ३. किसी चीज विशेषतः काल, मान आदि का चौथाई भाग। जैसे—यह बीसवीं सदी का तीसरा चरण है। ४. छंद, पद्य, श्लोक आदि का चौथा भाग अथवा कोई एक पूरी पंक्ति। ५. नदी का वह भाग जो तटवर्ती पहाड़ी गुफा या गड्ढे तक चला गया हो। ६. घूमने-फिरने या सैर करने की जगह। ७. जड़। मूल। ८. गोत्र। ९. क्रम। सिलसिला। १०. आचार-व्यवहार। ११. चंद्रमा, सूर्य आदि की किरण। १२. कोई काम पूरा करने के लिए की जानेवाली सब क्रियाएँ। अनुष्ठान। १३. गमन। जाना। १४. पशुओं आदि का चारा चरना। १५. भक्षण करना। खाना। १६. वेद की कोई शाखा। जैसे—कठ, कौथुम आदि चरण। १७. किसी जाति, वर्ग या संप्रदाय के लिए विहित कर्म। १८. आधार। सहारा। १९. खंभा।

चरण-कमल—पुं० [उपमि० स०] कमलों के समान सुन्दर चरण या पैर। (आदर-सूचक)

चरणकरणानुयोग—पुं० [चरण-करण, ष० त०, चरणकरण-अनुयोग, ब० स०] जन साहित्य में, ऐसा ग्रन्थ जिसमें किसी के चरित्र का बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से विचार या व्याख्या की गई हो।

चरण-गुप्त—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसके कई भेद होते हैं। इसमें कोष्ठक बनाकर उनमें कविता के चरणों या पंक्तियों के अक्षर भरे जाते हैं।

चरण-ग्रंथि—स्त्री० [ष० त०] पैरों में नीचे की ओर की गाँठ। गुल्फ। टखना।

चरण-चिह्न—पुं० [ष० त०] १. पैरों के तलुए की रेखा या लकीरें। २. बालू, मिट्टी आदि पर पड़े हुए किसी के पैरों के चिह्न या निशान जिन्हें देखकर किसी का अनुकरण या अनुसरण किया जाता है। ३. धातु, पत्थर आदि की बनाई हुई देवताओं आदि के चरणों की आकृति जो प्रायः पूजी जाती है।

चरण-तल—पुं० [ष० त०] पैर का तलुआ।

चरण-दास—पुं॰ [ष॰ त॰] १. चरणों की सेवा करनेवाला दास या सेवक। २.दिल्ली के एक महात्मा साधु जो जाति के धूसर बनिये थे। इनका जन्म संवत् १७६० में और शरीरांत सं॰ १८३९ में हुआ था। इनके चलाये हुए सम्प्रदाय के साधु चरणदासी साधु कहलाते हैं। ३. जूता। (परिहास)

चरण-दासी—वि॰ स्त्री॰ [ष॰ त॰] चरणों की सेवा करनेवाली (दासी या स्त्री)।

स्त्री॰ १. पत्नी। भार्या। २. जूता।

वि॰ चरण-दास संबंधी।

पुं॰ महात्मा चरणदास के चलाये हुए सम्प्रदाय का अनुयायी।

चरण-न्यास—पुं॰ =चरण-चिह्न।

चरणप—पुं॰ सं॰ चरण √पा (रक्षा करना)+क, उप॰ स॰] पेड़। वृक्ष।

चरण-पर्व (न्)—पुं॰ [ष॰ त॰] गुल्फ। टखना।

चरण-पादुका—स्त्री॰ [ष॰ त॰] १. खड़ाऊँ। पाँवड़ी। २. धातु, पत्थर आदि की बनी हुई किसी देवी-देवता या महापुरुष के चरणों की आकृति जिसकी पूजा होती है।

चरण-पीठ—पुं॰ [ष॰ त॰] = चरण-पादुका।

चरण-युग (ल)—पुं॰ [ष॰ त॰] किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के दोनों चरण या पैर।

चरण-रज (स्)—स्त्री॰ [ष॰ त॰] किसी पूज्य व्यक्ति के चरणों की धूल जो बहुत पवित्र समझी जाती है।

चरण-शुश्रूषा—स्त्री॰ = चरण-सेवा।

चरण-सेवा—स्त्री॰ [ष॰ त॰] किसी पूज्य व्यक्ति के पैर दबाकर की जाने वाली सेवा।

चरण-सेवी (विन्)—पुं॰ [सं॰ चरण√सेव् (सेवा करना)+णिनि, उप॰ स॰] १. वह जो किसी की चरण-सेवा करता हो। २. दास। सेवक।

चरणा—स्त्री॰ [सं॰ चरण+अच्+टाप्] एक रोग जिसमें मैथुन के समय स्त्रियों का रज बहुत जल्दी स्खलित हो जाता है।

†पुं॰ [?] काछा।

क्रि॰ प्र॰—काछना।

चरणाक्ष—पुं॰ [चरण-अक्षि, ब॰ स॰] अक्षपाद या गौतम ऋषि का एक नाम।

चरणाद्रि—पुं॰ [चरण-अद्रि, ब॰ स॰] १. विंध्य पर्वत की एक शिला (चुनार नगरी के समीप) जिस पर बने चरण-चिह्न को हिंदू बुद्धदेव का और मुसलमान जिसे 'कदमे रसूल' बतलाते हैं। २. उत्तर प्रदेश का चुनार नामक स्थान।

चरणानति—स्त्री॰ [चरण-आनति, स॰ त॰] किसी बड़े के चरणों पर झुकना, गिरना या पड़ना।

चरणानुग—वि॰ [चरण-अनुग, ष॰ त॰] १. किसी के चरणों या पद-चिह्नों का अनुगमन करनेवाला व्यक्ति। अनुगामी। २. अनुयायी। ३. शरणागत।

चरणामृत—पुं॰ [सं॰ चरण-अमृत, ष॰ त॰] वह पानी जिससे किसी देवता या महात्मा के चरण धोये गये हों और इसी लिए जो अमृत के समान पूज्य समझ कर पिया जाता हो। २. दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण जिसमें लक्ष्मी, शालिग्राम आदि को स्नान कराया जाता है और जो उक्त जल की भाँति पवित्र समझकर पिया जाता है। पंचामृत।

मुहा॰—चरणामृत लेना = (क) चरणामृत पीना। (ख) बहुत ही थोड़ी मात्रा में कोई तरल पदार्थ पीना।

चरणायुध—पुं॰ [चरण-आयुध, ब॰ स॰] मुरगा जो अपने पैरों के पंजों से लड़ता है।

चरणार्द्ध—वि॰ [चरण-अर्द्ध ष॰ त॰] चरण अर्थात् चतुर्थांश का आधा (भाग)।

पुं॰ १. किसी चीज का आठवाँ भाग। २. किसी कविता या पद्य के चरण का आधा भाग।

चरणि—पुं॰ [सं॰ √चर् (चलना)+अनि] मनुष्य।

वि॰ गमन करने या चलनेवाला। चर।

चरणोदक—पुं॰ [चरण-उदक, ष॰ त॰] चरणामृत। (दे॰)

चरणोपधान—पुं॰ [चरण-उपधान ष॰ त॰] १. वह चीज जिस पर पैर रखे जायँ। २. पाँवदान।

चरत—पुं॰ [हिं॰ बरत (व्रत) का अनु॰ अथवा हिं॰ चरना से] १. व्रत या उपवास के दिन व्रत न रखकर या उपवास न करके सब कुछ खाना-पीना। २. ऐसा दिन जिसमें मनुष्य नियमित रूप से अन्न आदि खाता-पीता हो।

चरता—स्त्री॰ [सं॰ चर+तल्—टाप्] चर होने की अवस्था या भाव। पृथ्वी।

चरतिरिया†—स्त्री॰ [देश॰] मिरजापुर जिले में होनेवाली एक प्रकार की कपास।

चरती—पुं॰ [हिं॰ चरत] व्यक्ति, जिसने व्रत न रखा हो। व्रत के दिन भी नियमित रूप से अन्न आदि खानेवाला।

चरत्व—पुं॰ [सं॰ चर+त्व] चर होने की अवस्था या भाव। चरता।

चरथ—वि॰ [सं॰ √चर् (चलना) +अथ)] चलनेवाला। चर। जंगम।

चरदास—स्त्री॰ [?] मथुरा जिले में होनेवाली एक प्रकार की घटिया कपास।

चर-द्रव्य—पुं॰ [कर्म॰ स॰] वह संपत्ति जिसका स्थान-परिवर्त्तन हो सकता हो। जैसे—गहने, पशु आदि।

चरनंग—पुं॰ [सं॰ चरण-अंग] चरण। पैर। उदा॰—चरनंग बीर तल बज्जइय, सबर जोर जम दढ्ढ कसि।—चन्दवरदाई।

चरन†—पुं॰ दे॰ 'चरण'। ('चरन' के यौ॰ के लिए दे॰ 'चरण' के यौ॰)।

†स्त्री॰ [?] कौड़ी।

चर-नक्षत्र—पुं॰ [कर्म॰ स॰] स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण और धनिष्ठा आदि कुछ विशिष्ट नक्षत्र जिनकी संख्या भिन्न-भिन्न आचार्यों के मत से अलग-अलग है।

चरनचर*—पुं॰ [सं॰ चरणचर] पैदल चलनेवाला दूत या सिपाही।

चरनदासी—स्त्री॰ = चरण-दासी।

चरन-धरन*—पुं॰ [सं॰ चरण+हिं॰ धरना] खड़ाऊँ। उदा॰—चरन धरन तब राजै लीन्हा।— जायसी।

चरनबरदार—पुं॰ [सं॰ चरण+फा॰ बरदार] वह नौकर जो बड़े आदमियों को जूते पहनाता, उतारता, लाता, ले जाता तथा यथास्थान रखता हो।

चरना—अ॰ [सं॰ पा॰ चरति; प्रा॰ चरइ; बँ॰ चरा; उ॰ चरिबा; पं॰

चरना; सिं० चरणु; गु० चरवूं; ने० चर्नु; मरा० चरणें; मि० फा० चरीदन] १. पशुओं का घास आदि खाने के लिए खेतों और मैदानों में फिरना। जैसे—मैदान में गौएँ चर रही हैं।

मुहा०—**अक्ल का चरने जाना** =दे० 'अक्ल' के मुहा।

२. इधर-उधर घूमना-फिरना या चलना। विचरण करना।

स० १. पशुओं का खेतों आदि में उगी हुई घास, पौधे आदि खाना। जैसे—घोड़े घास चर रहे हैं। २. (व्यक्तियों का) अभद्रतापूर्वक तथा जल्दी-जल्दी खाना।

पुं० [?] काछा।

क्रि० प्र०—काछना।

३. सुनारों का वह औजार जिससे वे नक्काशी करते समय सीधी लकीरें बनाते हैं।

चरनायुध†—पुं० = चरणायुध।

चरनि*—स्त्री० [सं० चर = गमन] चाल। गति।

चरनी*—स्त्री० [हिं० चरना] १. पशुओं के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २. वह नाँद या बड़ा पात्र अथवा पात्र के आकार की रचना जिसमें पशुओं को चारा खिलाया जाता है। ३. पशुओं के खाने की घास आदि। चारा।

चरन्नी†—स्त्री० [हिं० चार+आना] = चवन्नी।

चरपट—पुं० [सं० चर्पट] १. चपत। तमाचा। थप्पड़। २. उचक्का। उदा०—चरपटचोर धूर्त गँठिछोरा।—जायसी। ३. चर्पट नामक छंद।

चरपर†—वि० = चरपरा।

चरपरा—वि० [अनु०] [वि० स्त्री० चरपरी] (खाद्य पदार्थ) जिसमें खटाई, मिर्च आदि कुछ अधिक मात्रा में मिली हो और इसी लिए जो स्वाद में कुछ तीखी हो।

वि० [सं० चपल] चुस्त। तेज। फुरतीला।

चरपराना—अ० [हिं० चरचर] घाव में खुश्की के कारण तनाव होना और उसके फलस्वरूप पीड़ा होना।

अ० [हिं० चरपर] चरपरी वस्तु खाने पर मुँह में हलकी जलन होना।

चरपराहट—स्त्री० [हिं० चरपरा] १. चरपरा होने की अवस्था, भाव या स्वाद। २. घाव आदि की चरचराहट। ३. ईर्ष्या। डाह।

चरफराना—अ० १. = चरपराना। २. = छटपटाना।

चरब—वि० [फा० चर्ब] तेज। तीखा।

चरब जबान—वि० [फा० चर्ब-जबान] [भाव० चरब-जबानी] १. प्रायः कठोर और तीखी बातें कहनेवाला। कटु-भाषी। २. बहुत बढ़बढ़कर बातें करनेवाला। वाचाल। ३. बिना सोचे-समझे बहुत अधिक या तेज बोलनेवाला।

चरबन—पुं० =चबैना।

चरबाँक—वि० [फा० चर्ब = तेज] १. चतुर। चालाक। होशियार। २. निडर। निर्भय। ३. आचार, व्यवहार, स्वभाव आदि के विचार से उद्दंड. तेज या शोख। ४. चंचल। चुलबुला। जैसे—चरबाँक आँखें।

चरबा—पुं० [फा० चर्बः] १. लेखे, हिसाब आदि का लिखा हुआ पूर्व रूप। खाका। २. अनुलिपि। नकल। ३. चित्रकला में वह पतला पारदर्शी कागज जिसकी सहायता से चित्रों की छाप ली जाती है।

क्रि० प्र०—उतारना।

चरबाई—वि० = चरबाँक।

चरबाना—स० [सं० चर्म] ढोल पर चमड़ा मढ़ाना।

चरबी—स्त्री० [फा०] प्राणियों के शरीर में रहनेवाला सफेद या हलके पीले रंग का गाढ़ा, चिकना तथा लसीला पदार्थ।

मुहा०—(शरीर पर) **चरबी चढ़ना** = मोटा होना। **(आँखों में) चरबी छाना** = अभिमान या मद में अंधा होना।

चरी—पुं० [कर्म० स०] चर ग्रह या राशि।

चर-भवन—पुं० [मध्य० स०] =चर राशि।

चरम—वि० [सं० √चर् (चलना) +अमच्] १. अंतिम सीमा तक पहुँचा हुआ। हद दरजे का। जैसे—चरम पंथ। २. सबसे अधिक या आगे बढ़ा हुआ। जैसे—चरम गति। ३. अंतिम। आखिरी। जैसे—चरम अवस्था (=वृद्धावस्था)। ४. पश्चिमी।

पुं० १. पश्चिम दिशा। २. वृद्धावस्था। ३. अंत। ४. उपन्यास, कहानी, नाटक आदि में का वह अंश या अवस्था जहाँ पर कथा की धारा अधिकतम ऊँचाई पर पहुँचती है। (क्लाइमैक्स)

* पुं० = चर्म।

चरम-काल—पुं० [कर्म० स०] मृत्यु का समय।

चरम-गिरि—पुं० [कर्म० स०] अस्ताचल।

चरम-पंथ—पुं० [सं० चरम + हिं० पंथ] वह विचार-धारा जो यह प्रतिपादित करती है कि समाज को अस्वस्थ बनानेवाले तत्त्वों को सारी शक्ति से और शीघ्रतापूर्वक दूर या नष्ट कर देना चाहिए। (ऐक्स्ट्रीमिज्म)

चरम-पंथी—पुं० [हिं० चरमपंथ से] वह जो इस बात का पक्षपाती हो कि सामाजिक दोषों को बलपूर्वक और शीघ्रता से दूर या नष्ट कर देना चाहिए। (एक्स्ट्रीमिस्ट)

चरम-पत्र—पुं० [कर्म० स०] अपनी संपत्ति के उत्तराधिकार, व्यवस्था आदि के संबंध में अंतिम अवस्था में लिखा जानेवाला पत्र या लेख। दित्सा-पत्र। वसीयतनामा। (विल)

चरमर—पुं० [अनु०] कसी या तनी हुई चीमड़ चीज के दबने या मुड़ने से होनेवाला शब्द। जैसे—चलने में जूते का चरमर बोलना।

चरमरा—वि० [अनु०] चरमर शब्द करनेवाला। जिससे चरमर शब्द निकले। जैसे—चरमरा जूता।

पुं० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे तकड़ी भी कहते हैं।

चरमराना—अ० [हिं० चरमर] चरमर शब्द होना।

स०—चरमर शब्द उत्पन्न करना।

चरमवती—स्त्री० [सं० चर्मण्वती] चंबल नदी।

चरम-वय (स्)—वि० [ब० स०] १. अधिक अवस्थावाला (व्यक्ति)। २. पुराना।

चर-मूर्ति—स्त्री० [कर्म० स०] देवता की वह मूर्ति या विग्रह जो किसी एक जगह स्थापित न हो, बल्कि आवश्यकता के अनुसार एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखी जा सकती हो।

चर-राशि—स्त्री० [मध्य० स०] मेष, कर्क, तुला और मकर ये चार राशियाँ जो चर मानी गई हैं। (ज्योतिष)

चरलीता—पुं० [देश०] एक प्रकार की काष्ठौषधि।

चरवाँक—वि० = चरबाँक।

चरवा—पुं० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया मुलायम चारा जो बारहों महीने अधिकता से उत्पन्न होता है। कहीं-कहीं यह गौओं-भैंसों को उनका दूध बढ़ाने के लिए दिया जाता है। धम्मन।

चरवाई—स्त्री० [हिं० चरवाना] पशु चरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चरवाना—स० [हिं० चराना का प्रे०] चराने का काम किसी से कराना। पशु चराने का काम दूसरे से कराना।

चरवाहा—पुं० [हिं० चरना+वाहा=वाहक] वह व्यक्ति जो दूसरों के पशुओं को चराकर अपनी जीविका चलाता हो।

चरवाही—स्त्री० [सं० चर+हिं० वाही] १. पशु चराने का काम, भाव या मजदूरी। २. उलटी-सीधी या निर्लज्जता से भरी बातें कर के दूसरों को उपेक्षापूर्वक धोखे में रखना। उदा०—चरवाही जानो करो बेपरवाही बात।—राम सतसई।

चरवी—स्त्री० [सं० चर] कहारों का एक सांकेतिक शब्द जो इस बात का सूचक होता है कि रास्ते में आगे गाड़ी, एक्का आदि हैं।

चरवैया—वि० [हिं० चरना] १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।

पुं० चरवाहा।

चरव्य—वि० [सं० चरु+यत] जिसका या जिससे चरु बनाया जा सके।

चरस—स्त्री० [सं० चर्य या रस?] १. गाँजे के पौधों के डंठलों पर से उतारा हुआ एक प्रकार का हरा या हलका पीला गोंद या चेप जो प्रायः मोम की तरह का होता है और जिसे लोग गाँजे या तमाकू की तरह पीते हैं। नशे में यह प्रायः गाँजे के समान ही होता है।

पुं० [फा० चर्ज] आसाम में अधिकता से होनेवाला एक प्रकार का पक्षी जिसका मांस बहुत स्वादिष्ठ होता है। इसे वनमोर या चीनी-मोर भी कहते हैं।

†पुं० दे० 'चरसा'।

चरसा—पुं० [सं० चर्म्म] १. भैंस या बैल आदि के चमड़े का बना हुआ वह बड़ा थैला जिसकी सहायता से खेत सींचने के लिए कूएँ से पानी निकाला जाता है। पुर। मोट। २. चमड़े का बना हुआ कोई बड़ा थैला। ३. जमीन की एक नाप जो प्रायः २००० हाथ लंबी और इतनी ही चौड़ी होती थी। गो-चर्म।

† पुं० =चरस (पक्षी)।

चरसिया—पुं० =चरसी (चरस पीनेवाला)।

चरसी—पुं० [हिं० चरस+ई (प्रत्य०)] १. वह जो चरस की सहायता से कूएँ से पानी निकालकर खेत सींचता हो। मोट खींचनेवाला। २. वह जो गाँजे, तमाकू आदि की तरह चरस पीता हो।

चरही—स्त्री० दे० 'चरनी'।

चराई—स्त्री० [हिं० चरना] १. चरने की क्रिया या भाव। २. पशु आदि चराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चराऊ—पुं० [हिं० चरना] पशुओं के चराने का स्थान। चरी।

चराक—पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

* पुं० =चिराग।

चरागां—पुं० =चिराग।

चरागाह—पुं० [फा०] पशुओं के चरने का स्थान, जहाँ प्रायः घास आदि उगी रहती है। चरनी। चरी।

चराचर—वि० [चर-अचर, द्व० स०] चर और अचर। जड़ और चेतन। स्थावर और जंगम।

पुं० १. संसार। २. संसार में रहनेवाले सभी जीव और पदार्थ। ३. कौड़ी।

चराचर-गुरु—पुं० [ष० त०] १. ब्रह्मा। २. ईश्वर।

चरान—पुं० [हिं० चर=दल दल] समुद्र के किनारे की वह दल-दल जिसमें से नमक निकाला जाता है।

स्त्री० चरने या चराने की क्रिया या भाव।

† पुं० =चरागाह।

चराना—स० [हिं० चरना] १. पशुओं को खेतों या खुले मैदानों में लाकर वहाँ उगी हुई घास खाने या चरने में उन्हें प्रवृत्त करना। जैसे—गौ-भैंस चराना। २. किसी के साथ इस प्रकार का चातुर्यपूर्ण आचरण या व्यवहार करना कि मानों वह पशु के समान अबोध हो। जैसे—वाह! अब तो तुम भी हमें चराने लगे।

चराव—पुं० [सं० चर] पशुओं के चरने का स्थान। चरनी। चरागाह।

चरावना†—स० =चराना।

चरावर—स्त्री० [चरचर से अनु०] व्यर्थ की बातें। बकवाद।

चरिंद—पुं० =चरिंदा।

चरिंदा—पुं० [फा० चरिन्दः] चरनेवाला जीव या प्राणी। पशु। हैवान। जैसे—गाय भैंस, बैल आदि।

चरि—पुं० [सं० चर+इनि] जानवर। पशु।

चरित—पुं० [सं० √चर् (चलना)+क्त] १. आचरण और व्यवहार या रहन-सहन। २. किसी के जीवन की घटनाओं का उल्लेख या विवरण। जीवन-चरित्र। ३. किसी के किए हुए अनुचित या निंदनीय काम। करतूत। करनी। (व्यंग्य) जैसे—इनके चरित्र सुने तो दंग रह जाएँगे।

चरित-कार—पुं० [ष० त०] =चरित-लेखक।

चरित-नायक—पुं० [ष० त०] वह व्यक्ति जिसके जीवन की घटनाओं के आधार पर कोई पुस्तक या जीवनी लिखी गई हो।

चरित्र-लेखक—पुं० [ष० त०] किसी के जीवन की घटनाएँ या जीवन-चरित्र लिखनेवाला लेखक।

चरितवान्—वि० दे० 'चरित्रवान्'।

चरितव्य—वि० [सं० √चर्+तव्यत्] (कार्य या व्यवहार) जो करने या आचरण के रूप में लाये जाने के योग्य हो।

चरितार्थ—वि० [चरित-अर्थ, ब० स०] १. (व्यक्ति) जिसका अर्थ, अभिप्राय या उद्देश्य पूरा या सिद्ध हो चुका हो। कृतकार्य। कृतार्थ। जैसे—भगवान की भक्ति में लगकर वे चरितार्थ हो गए। २. (बात या विषय) जिसके अस्तित्व का उद्देश्य पूरा या सिद्ध हो गया हो। जैसे—अपना जीवन चरितार्थ करना। ३. (उक्ति या कथन) जो अपने ठीक-ठीक अर्थ में पूरा उतरता या घटित होता हो। जैसे—आपकी उस दिन की भविष्यद्वाणी आज चरितार्थ हो गई।

चरितार्थता—स्त्री० [सं० चरितार्थ+तल्—टाप्] चरितार्थ या कृतार्थ होने की अवस्था या भाव।

चरित्तर†—पुं० [सं० चरित्र] छलपूर्ण अनुचित आचरण या व्यवहार जैसे—तिरिया-चरित्तर।

चरित्र—पुं० [सं०√चर्+इत्र] १. वे सब बातें जो आचरण, व्यवहार आदि के रूप में की जायँ। किया या किये हुए काम। कार्य-कलाप। २. अच्छा आचरण या चाल-चलन। सदाचार। जैसे—चरित्रवान्। ३. जीवन में किये हुए कार्यों का विवरण। जीवन-चरित। जीवनी। ४. कहानी, नाटक आदि में कोई पात्र। ५. कोई महान् अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति। ६. स्वभाव। ७. छलपूर्ण अनुचित आचरण और व्यवहार। करतूत। चरित्र। (व्यंग्य) ८. कर्त्तव्य। ९. शील। स्वभाव। १०. चलने की क्रिया या भाव। ११. पग। पाँव। पैर।

चरित्र-नायक—पुं०=चरितनायक।

चरित्र-पंजी—स्त्री० दे० 'आचरण-पंजी'।

चरित्र-बंधक—पुं० [ष० त०] १. मैत्रीपूर्ण तथा सद्व्यवहार करने की प्रतिज्ञा। २. वह चीज जो किसी के पास कुछ शर्त्तों के साथ बंधक या रेहन रखी जाय। ३. उक्त प्रकार से बंधक या रेहन रखने की प्रणाली।

चरित्रवान् (वत्)—वि० [सं० चरित्र+मतुप्] [स्त्री० चरित्रवती] (व्यक्ति) जिसका चरित्र सद् हो। सदाचारी।

चरित्र-हीन—वि० [तृ० त०] (व्यक्ति) जिसका आचरण या चाल-चलन बहुत ही खराब या निन्दनीय हो। बदचलन।

चरित्रा—स्त्री० [सं० चरित्र+टाप्] इमली का पेड़।

चरिष्णु—वि० [सं०√चर्+इष्णुच्] चलनेवाला। चर। जंगम।

चरी—स्त्री० [हिं० चरना] १. वह जमीन जो किसानों को अपने पशुओं के चारे के लिए जमींदार से बिना लगान मिलती है। २. वह प्रथा जिसके अनुसार किसान उक्त प्रकार से जमींदार से जमीन लेता है। ३. वह स्थान जो पशुओं के चरने के लिए खुला छोड़ा जाता है। चरागाह। ४. छोटी ज्वार के हरे पेड़ जो पशुओं के चारे के काम आते हैं। कड़बी।

स्त्री० [सं० चर=दूत] १. संदेशा ले जानेवाली स्त्री। दूती। २. दासी। नौकरानी।

चरीद—पुं० [फा० चरिंद या हिं० चरना] खाने या चरने के लिए निकला हुआ जंगली पशु। (शिकारी)

चरु—पुं० [सं० √चर्+उ] [वि० चरव्य] १. हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न। हविष्यान्न। हव्यान्न। २. वह पात्र जिसमें उक्त अन्न पकाया जाता है। ३. यज्ञ। ४. ऐसा भात जिसमें से माँड़ न निकाला गया हो। ५. पशुओं के चरने की जगह। चरी। चरागाह। ६. वह महसूल जो पशुओं के चरने की जमीन पर लगता है। ७. बादल। मेघ।

चरुआ†—पुं० [सं० चरु] [स्त्री० अल्पा० चरुई] चौड़े मुँहवाला मिट्टी का वह बरतन जिसमें प्रसूता स्त्री के लिए औषध मिला जल पकाया जाता है।

चरुका—स्त्री० [सं० चरु+कन्—टाप्] एक प्रकार का धान। चरक।

चरुखला†—पुं० [हिं० चरखा, पं० चरखला] सूत कातने का छोटा चरखा।

चरुचेली (लिन्)—पुं० [सं० चरु-चेल, उपमि०स०,+इनि] शिव।

चरु-पात्र—पुं० [ष०त०] वह पात्र जिसमें यज्ञ आदि के लिए हविष्यान्न रखा या पकाया जाता है।

चरु-व्रण—पुं० [ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ (पकवान) जिस पर चित्र बनाये जाते थे।

चरु-स्थाली—स्त्री० [ष० त०] =चरु-पात्र।

चरू—पुं० दे० 'चरु'।

स्त्री० दे० 'चरी'।

चरेर—वि०=चरेरा।

चरेरा—वि० [चरचर से अनु०] [स्त्री० चरेरी] १. कड़ा और खुरदरा। २. कर्कश।

पुं० [देश०] हिमालय में होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती और इमारत के काम में आती है।

चरेरू—पुं० [हिं० चरना] चरनेवाला पशु।

चरेली—स्त्री० [?] ब्राह्मी बूटी।

चरैया—पुं० [हिं० चरना] १. चरानेवाला। २. चरनेवाला।

†स्त्री० चिड़िया।

चरैला—पुं० [हिं० चार+ऐल=चूल्हे का मुंह] एक प्रकार का चार मुंहोंवाला चूल्हा जिस पर एक साथ चार चीजें पकाई जा सकती हैं।

पुं० [?] चिड़ियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल।

चरोखर—स्त्री० [हिं० चारा+खर] १. पशुओं के चरने की जगह। चरी। चरागाह। २. मिट्टी आदि की वह रचना जिसमें नाँद बैठाई जाती है।

चरोतर—पुं० [सं० चिरोत्तर] वह भूमि जो किसी मनुष्य को जीवन भर भोगने के लिए दी गई हो।

चरौआ—पुं० [हिं० चराना] १. पशुओं के चरने का स्थान। चरी। २. चरवाहा।

चर्क—पुं० [देश०] जहाज का मार्ग। रूस। (लश०)

चर्ख†—पुं०=चरख।

चर्खकश—पुं० [फा०] खराद की डोरी या पट्टा खींचने या चरख चलानेवाला।

चर्खा†—पुं०=चरखा।

चर्खी†—स्त्री०=चरखी।

चर्च—पुं० [अं०] १. वह मंदिर जिसमें मसीही प्रार्थना करते हैं। गिरजा। २. मसीही धर्म की कोई शाखा या संप्रदाय।

पुं०=चर्चन।

चर्चक—वि० [सं०√चर्च् (बोलना)+ण्वुल्—अक] चर्चा करनेवाला।

चर्चन—पुं० [सं०√ चर्च्+ल्युट्—अन] १. चर्चा करने की क्रिया या भाव। २. चर्चा। ३. लेप लगाना। लेपन।

चर्चर—वि० [सं०√चर्च्+अरन्] गमनशील। चलनेवाला। चर।

चर्चरिका—स्त्री० [सं० चर्चरी+कन्—टाप्—ह्रस्व] नाटक में वह गीत जो दर्शकों के मनोरंजन के लिए दो अंकों के बीच में अर्थात् ऐसे समय में होता है जब कि रंगमंच पर अभिनय नहीं होता।

चर्चरी—स्त्री० [सं० चर्चर+ङीष्] १. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, सगण, दो जगण, भगण और तब फिर रगण (र, स, ज,ज, भ, र) होता है। २. वसंत या होली के दिनों में गाया जानेवाला चाँचर नामक गीत। ३. होली की धम-धाम और हुल्लड़। ४. ताली बजने या बजाने का शब्द। ५. ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक। (संगीत) ६. प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ७. आमोद-प्रमोद के समय की जानेवाली क्रीड़ा। ८. नाच-गाना। ९. दे० 'चर्चरिका'।

चर्चरीक—पुं॰ [सं॰√चर्च् (ताड़ना)+ईकन् नि॰ सिद्धि] १. महाकाल भैरव। २. साग-भाजी। तरकारी। ३. सिर के बाल गूँथना या बनाना। केश-विन्यास।

चर्चस—पुं॰ [सं॰√चर्च्+असुन्] कुबेर की नौ निधियों में से एक।

चर्चा—स्त्री॰ [सं॰√चर्च्+णिच+अङ्–टाप्] १. किसी विषय पर या व्यक्ति के संबंध में होनेवाली बात-चीत। जिक्र। वार्त्तालाप। २. बहुत-से लोगों में फैली हुई ऐसी बात जिसके संबंध में प्रायः सभी लोग कुछ न कुछ कहते हों। ३. किसी प्रकार का कथन या उल्लेख। ४. विचारपूर्वक किसी बात के सब पक्षों पर होनेवाला विचार। जैसे—आज की गोष्ठी में इन्हीं विषयों पर चर्चा हो सकती है। ५. किंवदंती। अफवाह। ६. किसी चीज के ऊपर कोई गाढ़ी चीज पोतना, लगाना या लेपना। लेपन। ७. गायत्री रूपा महादेवी। ८. दुर्गा।

चर्चिक—वि॰ [सं॰ चर्चा+ठन्–इक] वेद आदि जाननेवाला।

चर्चिका—स्त्री॰ [सं॰ चर्चा+कन्—टाप्, इत्व] १. चर्चा। जिक्र। २. दुर्गा। ३. एक प्रकार का सेम।

चर्चित—भू॰ कृ॰ [सं॰√चर्च्+क्त] १. चर्चा के रूप में आया हुआ। २. जिसकी चर्चा की गई हो या हुई हो ३. जो लेप के रूप में ऊपर से पोता या लगाया गया हो। जैसे—चंदनचर्चित ललाट या शरीर।

चर्नाक—पुं॰ दे॰ 'चरणाद्रि'।

चर्पट—पुं॰ [सं॰ √चृप् (उद्दीप्त करना)+अटन्] १. हाथ की खुली हुई हथेली। २. उक्त प्रकार की हथेली से लगाया हुआ तमाचा या थप्पड़। वि॰ बहुत अधिक। विपुल।

चर्पटा—स्त्री॰ [सं॰ चर्पट+टाप्] भादों सुदी छठ।

चर्पटी—स्त्री॰ [सं॰ चर्पट+ङीष्] एक प्रकार की चपाती या रोटी।

चर्परा—वि॰=चरपरा।

चर्बजबान—वि॰[फा॰] बहुत अधिक और तेजी से बोलनेवाला।

चर्बण—पुं॰=चर्वण।

चर्बित—भू॰ कृ॰=चर्वित।

चर्बी—स्त्री॰=चरबी।

चर्भट—पुं॰ [सं॰√चर्+क्विप्, √भट् (पालना)+अच्, चर्-भट्, कर्म॰ स॰] ककड़ी।

चर्भटी—स्त्री॰ [सं॰ चर्भट+१, ङीष्] चर्चरी गीत। २. चर्चा। ३. आनन्द के समय की जानेवाली क्रीड़ा। ४. आनन्दध्वनि।

चर्म (न्)—पुं॰ [सं॰√चर्+मनिन्] १. शरीर पर का चमड़ा। २. ढाल जो पहले चमड़े की बनती थी।

चर्म-करंड—पुं॰ [ष॰ त॰] चमड़े का बड़ा कुप्पा जिसके सहारे नदी पार करते थे। (कौ॰)

कर्म-करण—पुं॰ [ष॰ त॰] चमड़े की चीजें बनाने का काम।

चर्म-करी—स्त्री॰ [सं॰ चर्मन्√कृ (करना) +ट–ङीप्, उप॰ स॰] १. एक प्रकार का गंध-द्रव्य। २. मांसरोहिणी नाम की लता।

चर्म-कशा—स्त्री॰ [सं॰=चर्मकषा, पृषो॰ सिद्धि] १. एक प्रकार का गंध द्रव्य। चमरखा। २. मांसरोहिणी लता। ३. सातला नाम का थूहड़।

चर्मकषा—स्त्री॰ [सं॰ चर्मन् √कष् (खरोंचना)+अच्–टाप्] चर्म-कशा।

चर्मकार—पुं॰[सं॰ चर्मन्√कृ+अण्, उप॰स॰] [स्त्री॰ चर्मकारी] चमड़े का काम करने अर्थात् चमड़े की चीजें बनानेवाला व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्तियों की जाति। चमार।

चर्म-कारक—पुं॰[ष॰ त॰]=चर्मकार।

चर्मकारी—स्त्री॰=चर्म-कार्य।

चर्म-कार्य—पुं॰[ष॰ त॰] चमड़े की चीजें बनाने का कार्य या पेशा।

चर्म-कील—पुं॰ [स॰ त॰] १. बवासीर नामक रोग। २. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर पर मांस की कीलें सी निकल आतीं और बहुत कष्ट देती हैं। न्यच्छ।

चर्म-कूप—पुं॰[ष॰ त॰] चमड़े का कुप्पा।

चर्म-ग्रीव—पुं॰[ब॰ स॰] शिव का एक अनुचर।

चर्म-घटिका—स्त्री॰ [ष॰ त॰] जोंक।

चर्मचक्षु (स्)—पुं॰ [ष॰ त॰] चमड़े की बनी हुई ऊपरी आँखें (अंतश्चक्षु या ज्ञान चक्षु से भिन्न)। जैसे—खाली चर्म-चक्षुओं से देखने पर ईश्वर नहीं दिखाई देगा।

चर्म-चटका, चर्मचटी—स्त्री॰ [तृ॰ त॰] [चर्मन्√अट्+अच्–ङीष्] चमगादड़।

चर्म-चित्रक—पुं॰ [ष॰ त॰] श्वेत कुष्ठ नामक रोग।

चर्म-चेल—पुं॰ [मध्य॰स॰] वह चमड़ा जो उलटकर कपड़े की तरह ओढ़ा या पहना गया हो।

चर्मज—वि॰ [सं॰ चर्मन्√जन् (उत्पत्ति)+ड, उप॰स॰] चर्म या चमड़े से उत्पन्न होनेवाला।

पुं॰ १. रोआँ। रोम। २. खून। रक्त। लहू।

चर्मण्वती—स्त्री॰ [सं॰ चर्मन्+मतुप्–ङीप्] १. चंबल नदी जो विंध्याचल पर्वत से निकलकर इटावे के पास यमुना से मिलती है। शिवनद। २. केले का पेड़।

चर्म-तरंग—पुं॰ [सं॰ त॰] शरीर के चमड़े पर पड़ी हुई झुर्री।

चर्म-दंड—पुं॰[मध्य॰स॰] चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।

चर्म-दल—पुं॰ [सं॰ चर्मन्√दल् (विदीर्ण करना)+णिच्+अण्, उप॰स] एक प्रकार का कोढ़ जिसमें पहले किसी स्थान पर बहुत-सी फुंसियाँ हो जाती हैं और तब वहाँ का चमड़ा फट जाता है।

चर्म-दूषिका—स्त्री॰ [ष॰ त॰] दाद नामक रोग।

चर्म-दृष्टि—स्त्री॰ [ष॰ त॰] चर्म-चक्षुओं की अर्थात् साधारण दृष्टि। आँख। (ज्ञान-दृष्टि से भिन्न)

चर्म-देहा—पुं॰[ब॰ स॰] मशक के ढंग का एक प्रकार का पुराना बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

चर्म-द्रुम—पुं॰ [मध्य॰ स॰] भोजपत्र का पेड़।

चर्म-नालिका—स्त्री॰ [ष॰ त॰] चमड़े का कोड़ा या चाबुक।

चर्म-नासिका—स्त्री॰ =चर्म-नालिका।

चर्म-पट्टिका—स्त्री॰ [ष॰ त॰] चमोटी।

चर्म-पत्रा—स्त्री॰[ब॰ स॰, टाप्] चमगादड़।

चर्म-पत्री—स्त्री॰ [ब॰ स॰, ङीष्]=चर्म-पत्रा।

चर्म-पादुका—स्त्री॰[मध्य॰ स॰] चमड़े का बना हुआ जूता।

चर्म-पीड़िका—स्त्री॰[ष॰ त॰] एक प्रकार की शीतला (रोग)।

चर्म-पुट—पुं॰[मध्य॰ स॰] चमड़े का कुप्पा या थैला।

चर्म-पुटक—पुं० [सं० चर्म-पुट+कन्] =चर्म-पुट।

चर्म-प्रभेदिका—स्त्री० [ष०त०] चमड़ा काटने का सुतारी नामक औजार।

चर्म-बंध—पुं० [ष० त०] १. चमड़े का तस्मा या पट्टी। २. चमड़े का कोड़ा या चाबुक।

चर्म-मंडल—पुं० [मध्य०स०] एक प्राचीन देश का नाम। (महाभारत)

चर्म-मसूरिका—स्त्री० [मध्य०स०] मसूरिका रोग का एक भेद जिसमें रोगी के शरीर में छोटी-छोटी फुंसियाँ या छाले निकल आते हैं।

चर्म-मुंडा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] दुर्गा।

चर्म-मुद्रा—स्त्री० [मध्य०स०] १. तंत्र में एक प्रकार की मुद्रा। २. चमड़े का सिक्का।

चर्म-यष्टि—स्त्री० [मध्य०स०] चमड़े का कोड़ा या चाबुक।

चर्म-रंगा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] एक प्रकार की लता जिसे आवर्त्तकी और भगवद्वल्ली भी कहते हैं।

चर्मरी—स्त्री० [सं० चर्मन्√रा (दाने)+क–ङीष्] एक प्रकार की लता जिसका फल बहुत विषैला होता है।

चर्मरु—पुं० [सं० चर्मन्√रा+कु] =चमार।

चर्म-वंश—पुं० [ब०स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

चर्म-वसन—पुं० [ब०स०] महादेव। शिव।

चर्म-वाद्य—पुं० [मध्य०स०] ढोल, नगाड़ा आदि ऐसे बाजे जिन पर चमड़ा मढ़ा होता है।

चर्म-वृक्ष—पुं० [मध्य०स०] भोजपत्र का पेड़।

चर्म-संभवा—स्त्री० [ब०स०] इलायची।

चर्मसार—पुं० [ष०त०] वैद्यक में, खाये हुए पदार्थों से शरीर के अंदर बननेवाला रस।

चर्मांत—पुं० [चर्मन्-अंत, ब०स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यंत्र जिसका व्यवहार चीर-फाड़ आदि में होता था।

चर्माख्य—पुं० [चर्मन्-आख्या, ब०स०] कुष्ठ रोग का एक प्रकार या भेद।

चर्मानला—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की एक नदी।

चर्मानुरंजन—पुं० [चर्मन्-अनुरंजन, ष०त०] बदन पर लगाने का सिंदूर की तरह का एक द्रव्य।

चर्मार—पुं० [सं० चर्मन्√ऋ (गति)+अण्, उप० स०] चर्मकार। चमार।

चर्मिक—पुं० [सं०चर्मन्+ठन्—इक] हाथ में ढाल लेकर लड़नेवाला योद्धा।

चर्मी (र्मिन्)—पुं० [सं० चर्मन्+इनि, टिलोप] =चर्मिक।

चर्य्य—वि० [सं०√चर् (चलना) +यत्] १. जो चरण अर्थात् आचरण के रूप में किये जाने के योग्य हो। २. कर्त्तव्य।

चर्य्या—स्त्री० [सं० चर्य्य+टाप्] १. वह जो किया जाय। आचरण। जैसे—व्रतचर्य्या, दिनचर्य्या आदि। २. आचरण। चाल-चलन। ३. काम-धंधा। ४. जीविका या वृत्ति। ५. सेवा। ६. धर्मशास्त्र के अनुसार विहित काम करना और निषिद्ध काम न करना। ७. भोजन करना। खाना। ८. चलना। गमन।

चर्राना—अ० [अनु०] १. लकड़ी आदि का टूटने या तड़कने के समय चर चर शब्द होना। २. घाव के सूखने के समय होनेवाले तनाव के कारण हलकी पीड़ा होना। ३. शरीर में चुनचुनाहट या हलकी जलन होना। ४. किसी कार्य, बात, वस्तु आदि की प्रबल इच्छा होना। जैसे—किसी काम या बात का शौक चर्राना।

चर्री—स्त्री० [हिं० चर्राना] ऐसी लगती हुई बात जिससे किसी के मर्म पर आघात होता हो।

चर्वण—पुं० [सं०√चर्व् (चबाना)+ल्युट्—अन] [वि० चर्व्य] १. किसी चीज को मुँह में रखकर दाँतों से बराबर कुचलने की क्रिया। चबाना। २. चबाकर खाई जानेवाली चीज। ३. भुना हुआ अन्न। चबेना। दाना।

चर्वित—भू०कृ० [सं० √चर्व्+क्त] १. चाबा या चबाया हुआ। २. खाया हुआ। भक्षित।

चर्वित-चर्वण—पुं० [ष० त०] किसी किये हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।

चर्वित-पात्र—पुं० [ष० त०] उगालदान। पीकदान।

चर्विल—पुं० [अं०] गाजर की तरह की एक पाश्चात्य तरकारी जो कुआर-कातिक में क्यारियों में बोई जाती है।

चर्व्य—वि० [सं०√चर्व्+ण्यत्] १. चबाये जाने के योग्य। २. जो चबाकर खाया जाय।

चर्षणि—पुं० [सं०√कृष् (लिखना)+अनिच्, च आदेश] आदमी। मनुष्य।

चर्षणी—स्त्री० [सं० चर्षणि+ङीष्] १. मानव जाति। २. कुलटा स्त्री।

चर्स—स्त्री० =चरस।

चलंता—वि० [हिं० चलना] १. चलता हुआ। चलता रहनेवाला। २. चलनेवाला।

चलंदरी—स्त्री०=चलनदरी।

चल—वि० [सं०चल् (जाना)+अच्] १. जो चल रहा हो, चलता हो या चल सकता हो। जैसे—चल-चित्र। २. चलता या हिलता-डुलता रहनेवाला। जैसे—चल चंचु। ३. अस्थिर। चंचल। ४. जो एक स्थान से उठाकर या हटाकर दूसरे स्थान पर रखा या लाया जा सके। (मूवेबुल) जैसे—चल संपत्ति। ५. नश्वर।

पुं० [√चल्+णिच्+अप्] १. काँपने, चलने या हिलने की क्रिया या भाव। २. पारा। ३. महादेव। शिव। ४. विष्णु। ५. ऐब। दोष। ६. चूक। भूल। ७. कपट। छल। धोखा। ८. दोहा छंद का एक भेद जिसमें ११ गुरु और २६ लघु मात्राएँ होती हैं। ९. नृत्य में अंग की वह चेष्टा जिसमें हाथ के इशारे से किसी को अपनी ओर बुलाया जाता है। १०. नृत्य में शोक, चिंता, परिश्रम या उत्कंठा दिखलाने के लिए गहरा साँस लेना। ११. गणित में वह राशि जिसके कई मान या मूल्य हों। १२. उक्त राशि का प्रतीक चिह्न। (वेरिएब्ल; उक्त दोनों अर्थों में)

चलक—पुं० [सं० चल+कन्] १. माल। असबाब। २. दे० 'चल' ११ तथा १२।

चलकना†—अ०=चिलकना।

चल-कर्ण—वि० [ब०स०] जिसके कान सदा हिलते रहते हों।

पुं० १. हाथी। २. ज्योतिष में, पृथ्वी से ग्रहों का प्रसम अन्तर।

चलका—पुं० [देश०] एक प्रकार की नाव।

चल-केतु—पुं० [कर्म० स०] ज्योतिष में, एक प्रकार का पुच्छलतारा जिसके उदय से अकाल या दुर्भिक्ष पड़ता है।

चल-चंचु—पुं० [ब०स०] जिसकी चोंच हिलती रहती हो अर्थात् चकोर।

चल-चलाव—पुं० [हिं० चलना+चलाव (अनु०)] १. कहीं से चलने अथवा चल पड़ने की क्रिया, तैयारी या भाव। चलाचली। २. मृत्यु। उदा०—दुनियाँ है चल-चलाव का रस्ता, संभल के चल।—कोई शायर।

चलचा—पुं० [देश०] ढाक। पलास।

चल-चाल—वि० [ब० स०] चलविचल। चंचल। अस्थिर।

चल-चित्त—वि० [ब०स०] (व्यक्ति) जिसका मन कहीं या किसी निश्चय पर टिकता या लगता न हो। चंचल चित्तवाला।

चल-चित्र—पुं० [कर्म० स०] १. भा या छाया चित्रों का वह अनुक्रम जो इतनी तेजी से परदे पर विक्षेपित किया जाता है कि दृष्टि-भ्रम के कारण उनमें दिखाई देनेवाली वस्तुएँ, व्यक्ति आदि चलते-फिरते नजर आते हैं। २. छाया या भाचित्रित कथा या कहानी। (मूवी)

चल-चित्रण—पुं० [ष० त०] भा या छाया-चित्रण के द्वारा चल-चित्र तैयार करना। (फिल्मिंग)

चल-चित्रित—वि० [सं० चलचित्र+णिच्+क्त] चल-चित्र के रूप में तैयार किया हुआ। (फिल्म्ड)

चल-चूक—स्त्री० [सं० चल=चंचल] धोखा। छल। कपट।

चलता—स्त्री० [सं० चल+तल्–टाप्] १. चल अर्थात् गतिमान् या गतिशील होने की अवस्था या भाव। २. अस्थिरता। चंचलता।

वि० [हिं० चलना] [स्त्री० चलती] १. जो चल रहा हो। जो गति में हो। जैसे—चलती गाड़ी में से मत उतरो।

मुहा०—**(किसी को) चलता करना**=जैसे-तैसे दूर करना या हटाना। पीछा छुड़ाने के लिए रवाना करना। जैसे—मैंने दो-चार बातें करके उन्हें चलता किया। **(कोई काम) चलता करना**=जैसे-तैसे निपटाना या पूरा करना। जैसे—कई काम तो आज मैंने यों ही चलते किये। **(किसी व्यक्ति का) चलता या चलते बनना या होना**=चुपचाप खिसक या हट जाना। जैसे—झगड़ा बढ़ता हुआ देखकर मैं तो वहाँ से चलता बना। **चलते-फिरते नजर आना**=चलता या चलते बनना। जैसे—अब आप यहाँ से चलते-फिरते नजर आइए।

२. जो प्रचलन या व्यवहार में बराबर आ रहा हो। जैसे—चलता माल, चलता सिक्का। ३. जिस पर से होकर लोग बराबर आते-जाते रहते हैं। जैसे—चलता रास्ता। ४. जो ठीक प्रकार से काम करने की स्थिति में हो। जैसे—चलती मशीन, चलती घड़ी। ५. जिसका अथवा जहाँ पर काम-काज या कारोबार ठीक प्रकार से चल रहा हो। जैसे—चलती दूकान, चलती वकालत। ६. जिसका क्रम बराबर चलता रहता हो। जैसे—चलता खाता (दे०)। ७. जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से जा अथवा ले जाया जा सकता हो। जैसे—चलता पुस्तकालय, चलता सिनेमा। ८. (व्यक्ति) जो अधिक चतुर या होशियार हो। धूर्त्त। जैसे—चलता पुरजा (दे०)। ९. (कार्य या वस्तु) जिसे करने अथवा बनाने में विशेष योग्यता अपेक्षित न हो। जैसे—ऐसे चलते काम तो यहाँ नित्य आया करते हैं।

पद—चलता गाना। (देखें)

१०. जिसमें समस्त अंगों या ब्योरे की बातों पर विशेष ध्यान न दिया गया हो या न दिया जाय। काम-चलाऊ। जैसे—किसी काम या किताब को चलती निगाह से देखना। ११. जो अपने अंत या समाप्ति के पास तक पहुँच रहा हो। जैसे—चलती अर्थात् ढलती उमर।

पद—चलता समय या समाँ। (देखें)

पुं० [हिं० चलना] १. उलटा नाम का पकवान जो पिसी हुई दाल या वेसन से रोटी के रूप में पकाया जाता है। २. रास्ते में वह स्थान जहाँ फिसलन और कीचड़ वहुत अधिक हो।

पुं० [देश०] १. एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी लकड़ी वहुत मजबूत होती है और पानी में भी जल्दी गलती-सड़ती नहीं है। २. उक्त वृक्ष का फल जो तरकारी बनाने और यों भी खाने के काम आता है। ३. कवच।

†पुं०=चिलता (कवच)।

चलता खाता—पुं० [हिं० पद] लेन-देन का ऐसा हिसाव जिसका क्रम बराबर चलता या वना रहता हो, वीच में बंद न होता हो। (करेण्ट एकाउण्ट)

चलता गाना—पुं० [हिं०] ऐसा गाना जो शुद्ध राग-रागिनियों के अन्तर्गत न हो पर जिसका प्रचार सर्व-साधारण में हो। जैसे—गजल, दादरा, लावनी आदि।

चलता छप्पर—पुं० [हिं० पद] छाता। (फकीरों की भाषा)

चलता पुरजा—पुं० [हिं० पद] व्यवहार-कुशल व्यक्ति। चालाक या चुस्त व्यक्ति।

चलता लेखा—पुं०=चलता खाता।

चलता समय—पुं०=चलता समाँ।

चलता समाँ—पुं० [हिं०] जीवन का अंतिम भाग या समय। वृद्धावस्था।

चलती—स्त्री० [हिं० चलना] कोई कार्य करने या करा सकने का अधिकार। उदा०—आज-कल उस दरबार में उनकी बड़ी चलती है।

वि० हिं० 'चलता' का स्त्री० रूप।

चलतू—वि० [हिं० चलना] १. दे० 'चलता'। २. (भूमि) जो जोती-बोई जाती हो।

चलदंग—पुं० [ब०स०] झींगा मछली।

चल-दल—पुं० [ब०स०] पीपल का वृक्ष।

चलन—पुं० [सं०√चल्+ल्युट्–अन] १. गति। चाल। २. कंपन। ३. चरण। पैर। ४. हिरन। ५. ज्योतिष में विषुवत् की वह गति जिससे दिन और रात दोनों बराबर रहते हैं। ६. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा या मुद्रा।

पुं० [हिं० चलना] १. चलने की अवस्था, क्रिया या भाव। गति। चाल। २. प्रचलित रहने की अवस्था या भाव। प्रचलन। जैसे—कपड़े या सिक्के का चलन। ३. आचार-व्यवहार आदि से संबंध रखने वाली प्रथा। रीति। रवाज। ४. अच्छा आचरण या व्यवहार। जैसे—जो चलन से रहेगा, उसे कभी कोई कष्ट न होगा।

चलन-कलन—पुं० [तृ० त०] ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन-रात के घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनदरी—स्त्री० [हिं० चलन+दरी] वह स्थान जहाँ यात्रियों को पुण्यार्थ जल पिलाया जाता हो। पौसरा।

चलन-समीकरण—पुं०[ष० त०] गणित में एक प्रकार की क्रिया। दे० 'समीकरण'।

चलनसार—वि० [हिं० चलन+सार (प्रत्य०)] १. जिसका उपयोग, चलन या व्यवहार बराबर हो रहा हो। जैसे—चलनसार सिक्का। २. जो बहुत दिनों तक चल सके अर्थात् काम में आ सके। जैसे—चलनसार धोती।

चलनहार†—वि०[हिं० चलना+हार (प्रत्य०)] १. जो अभी चलने को उद्यत या प्रस्तुत हो। २. जो अभी चल रहा हो। चलनेवाला। ३. दे० 'चलनसार'।

चलना—अ० [सं० चलन] १. पैरों की सहायता से जीव-जंतुओं का एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए आगे बढ़ना। जैसे—आदमियों या घोड़ों का चलना।

मुहा०—चल देना=(क) कोई स्थान छोड़कर वहाँ से दूर होना या हट जाना। (ख) विना कहे-सुने या चुपके से खिसक या हट जाना। जैसे—वह लड़का मेरे सब कपड़े लेकर चल दिया। **चल पड़ना**=चलना आरंभ करना। जैसे—सवेरा होते ही यात्री चल पड़े।

२. पहियों आदि कीं सहायता से अथवा और किसी प्रकार किसी ओर अग्रसर होना या वढ़ना। जैसे--गाड़ी या जहाज का चलना, मछली या साँप का चलना। ३. किसी प्रकार की गति से युक्त होकर आगे वढ़ना। गति में होना। जैसे—आँधी या हवा चलना, ग्रहों या नक्षत्रों का चलना। ४. किसी प्रकार की गति से युक्त होकर या हिलते-डोलते हुए कोई कार्य संपन्न या संपादित करना। जैसे—घड़ी, नाड़ी या यंत्र चलना। ५. कोई काम करते हुए उसमें आगे की ओर वढ़ना। उन्नति करना। अग्रसर होना।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) चल निकलना=किसी काम या बात में तत्परतापूर्वक लगे रहकर औरों से कुछ आगे बढ़ना या उन्नति करना। जैसे—थोड़े ही दिनों में वह संस्कृत पढ़ने (या दस्तकारी सीखने) में चल निकलेगा। **(किसी काम या बात का) चल निकलना**=उन्नति, वृद्धि आदि के मार्ग पर आगे बढ़ना। जैसे—रोजगार (या वकालत) चल निकलना।

६. उचित या साधारण गति से क्रियाशील रहना। सक्रिय रहना या होना। जैसे—(क) लिखने में कलम चलना। (ख) कारखाना या दूकान चलना। (ग) बिना कहीं अटके या रुके बराबर बढ़ते चलना। ७. किसी कार्य, बात या स्थिति का उचित रूप से निर्वाह या वहन होना। काम निकलना या होता रहना। जैसे—(क) इतने रुपयों से काम नहीं चलेगा। (ख) यह लड़का चौथे दरजे में चल जायगा।

मुहा०—पेट चलना=खाने-पीने का सुभीता होता रहना। जीविका-निर्वाह होना। जैसे—इसी मकान के किराये से उनका पेट चलता है।

८. किसी चीज का ठीक तरह से उपयोग या व्यवहार में आते रहना। बराबर काम देते रहना। जैसे—(क) यह कपड़ा तो अभी बरसों चलेगा। (ख) बुढ़ापे के कारण अब उनका शरीर नहीं चलता। (ग) पाकिस्तानी नोट और रुपए भारत में नहीं चलते। ९. शरीर के किसी अंग का अपने कार्य में प्रवृत्त या रत होना। जैसे--जबान या मुँह चलना अर्थात् जबान या मुँह से बातें निकलना; मुँह चलना अर्थात् मुँह से खाने या चबाने की क्रिया होना; हाथ चलना अर्थात् हाथ के द्वारा किसी पर प्रहार होना। १०. किसी काम या बात का आरंभ होना। छिड़ना। जैसे—किसी की चर्चा या जिक्र चलना; कोई प्रसंग या बात चलना; कोई नई प्रथा या रीति चलना। ११. प्रहार के उद्देश्य से अस्त्र-शस्त्र आदि का प्रयोग या व्यवहार होना। जैसे—गोली, तलवार या लाठी चलना। १२. उक्त के आधार पर, लाक्षणिक रूप में आपस में वैर-विरोध या वैमनस्य का व्यवहार होना। जैसे—आज-कल दोनों भाइयों में खूब चल रही है। १३. तरल पदार्थ का अपने आवान या पात्र में से होते हुए आगे बढ़ते या वहते रहना। जैसे—पानी गिरने या वरसने पर पनाला या मोरी चलना। १४. उक्त के आवार पर लाक्षणिक रूप में शरीर के किसी अंग में से तरल पदार्थ का असाधारण या विकृत रूप में बाहर निकलना या निकलते रहना। जैसे—पेट चलना अर्थात् दस्त के रूप में पेट में से निरंतर वहुत सा मल निकलना; पेट और मुँह चलना अर्थात् लगातार बहुत से दस्त और कै होना। १५. मार्ग या रास्ते के संवंध में, ऊपर से लोगों का आना-जाना होना। जैसे—(क) यह सड़क रात भर चलती है। (ख) यह गली सवेरे से चलने लगती है। (ग) यह जल-मार्ग आज-कल नहीं चलता। १६. किसी क्रम या परंपरा का बरावर आगे बढ़ते रहना या जारी रहना। जैसे—किसी का नाम या वंश चलना। उदा०—रघुकुल रीति सदा चलि आई।—तुलसी। १७. मन का किसी प्रकार की वासना से युक्त होकर किसी ओर प्रवृत्त होना। जैसे—खाने-पीने की किसी चीज पर मन चलना। १८. अधिकार, युक्ति वश, शक्ति आदि के संवंध में अपना ठीक और पूरा काम करना अथवा परिणाम या फल दिखाना। जैसे—जब तक हमारी (युक्ति या शक्ति) चलेगी, तव तक हम उन्हें ऐसा नहीं करने देंगे।

मुहा०—(किसी की) कुछ चलना=किसी का कुछ अविकार या वश अथवा उपाय या कौशल सफल या सार्थक होना। जैसे—किसी की कुछ नहीं चलती कि जब तकदीर फिरती है।—कोई शायर।

१९. किसी लिखावट या लेख का ठीक तरह से पढ़ा जाना और समझ में आना। जैसे—उनका लिखा हुआ पत्र या लेख यहाँ किसी से नहीं चलता (पढ़ा जाता)। २०. खाने या पीने के समय किसी पदार्थ का ठीक तरह से गले के नीचे उतरना। खाया, निगला या पीया जाना। जैसे—(क) पेट बहुत भर गया है; अव एक भी पूरी (या रोटी) नहीं चलेगी। (ख) ले लो अभी दो लड्डू तो और चल ही जायँगे। २१. खाने-पीने की चीजें परोसने के समय अलग-अलग चीजों का क्रम से सामने आना या रखा जाना। जैसे—पहले पूरी-तरकारी और तव मिठाई चलनी चाहिए। २२. लोगों के साथ अच्छा और मेल-जोल का आचरण या व्यवहार करना। जैसे—संसार (या समाज) में सबसे मिलकर चलना चाहिए। २३. आज्ञा, आदेश, उदाहरण आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करना। जैसे—सदा बड़ों की आज्ञा और उपदेश के अनुसार अथवा उनके दिखलाये या बतलाये हुए मार्ग पर चलना चाहिए। २४. किसी प्रकार के कपट, चालाकी या धूर्तता का आचरण या व्यवहार करना। जैसे—हम देखते हैं कि आज-कल तुम हमसे भी चलने लगे हो। २५. किसी काम या चीज का अपने उचित, चलित या नियत क्रम, मार्ग या स्थिति से इधर-उधर या विचलित होना जो दोष, विकार आदि का सूचक होता है। जैसे—(क) ऐसा जान पड़ता है कि छत (या दीवार) भी दो-चार दिन में चली जायगी। (ख) उनका आधा खेत तो इस वरसात में गंगा में चला गया।

मुहा०—(किसी चीज का) चल जाना=किसी चीज का कट-फट, टूट-फूट या गल-सड़कर अथवा और किसी प्रकार खराब या विकृत हो जाना। जैसे—(क) थान में से टुकड़ा फाड़ने के समय कपड़े का चल जाना अर्थात् सीधा न फटकर इधर-उधर या तिरछा फट जाना। (ख) कढ़ी, दाल या भात का चल जाना अर्थात् बासी होने के कारण सड़ने लगना। (ग) अंगरखा या कुरता चल जाना अर्थात् किसी जगह से कट, फट या मसक जाना। (घ) किसी का दिमाग या मस्तिष्क चल जाना अर्थात् कुछ-कुछ पागल या विक्षिप्त-सा हो जाना। जैसे–जान पड़ता है कि इस लड़के का दिमाग कुछ चल गया है। २६. इस लोक से प्रस्थान करना। काल के मुँह में जाना। मर जाना। जैसे—सबको एक न एक दिन चलना है।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) चल बसना= मर जाना। स्वर्गवासी होना। जैसे—आज मोहन के पिता चल बसे।

२७. नष्ट या समाप्त होना।

मुहा०—(किसी चीज का) चला जाना =नष्ट या समाप्त हो जाना। न रह जाना। जैसे—उनके आने से मेरी भूख और प्यास चली जाती है।

स० १. कुछ विशिष्ट खेलों में किसी चीज के द्वारा अपनी बारी से चलने की-सी क्रिया करना। आगे बढ़ाना या रखना अथवा सामने लाना। जैसे —(क) चौसर की गोटी, ताश का पत्ता या शतरंज का मोहरा चलना। (ख) घोड़ा या हाथी चलना; बादशाह या बेगम चलना। २. किसी प्रकार की चाल, तरकीब या युक्ति को क्रियात्मक रूप देना। जैसे—(क) आपस में तरह-तरह की चालें चलना। (ख) नित्य नई तरकीब चलना।

पुं० [हिं० चलनी] १. बड़ी चलनी या छलनी। २. चलनी की तरह का लोहे का वह बड़ा कलछा या पौना जिससे उबलते हुए ऊख के रस पर का फेन या मैल उठाते हैं। ३. हलवाइयों का उक्त प्रकार का वह उपकरण जिससे चाशनी या शीरे पर की मैल उठाई जाती है।

चलनि*—स्त्री० = चलन।

चलनिका—स्त्री० [सं० चलनी+कन्–टाप्, ह्रस्व] १. स्त्रियों के पहनने का घाघरा। २. झालर।

चलनी—स्त्री० =छलनी।

स्त्री० [सं० √चल्+ल्युट्—अन, ङीप्] =चलनिका।

चलनौस—पुं० [हिं० चालना+औस (प्रत्य०)] किसी वस्तु में का वह अंश जो उसे चालने या छानने पर चलनी में बच रहता है। चालन। चोकर।

चलनौसन—पुं० =चलनौस।

चलपत †—पुं० =चलपत्र।

चल-पत्र—पुं० [ब० स०] पीपल का पेड़, जिसके पत्ते हरदम कुछ न कुछ हिलते रहते हैं।

चलबाँक—वि० [हिं० चलना+बाँका] तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी। †वि० =चरबाँक।

चलबिचल—वि० = चल-विचल।

चल-मित्र—पुं० [कर्म० स०] वह मित्र (राजा) जो सदा साथ न दे सके।

चल-मुद्रा—स्त्री० [कर्म० स०] वह मुद्रा जिसका चलन किसी देश में सब जगह समान रूप से होता हो। (करेन्सी)

चल-रेखा—स्त्री० [कर्म० स०] चंचल रेखा अर्थात् तरंग।

चलवंत—पुं० [सं० चल+हिं० वंत] पैदल सिपाही। प्यादा।

चलवाना—स० [हिं० चलाना का प्रे०] १. चलने का काम दूसरे से कराना। २. किसी को कोई चीज चलाने में प्रवृत्त करना।

चल-विचल—वि० [सं० कर्म० स०] १. अपने स्थान से हटा हुआ। २. अस्थिर। चंचल। ३. अस्त-व्यस्त।

चलवया—पुं० [हिं० चलना] १. चलनेवाला। २. चलानेवाला।

चल-संपत्ति—स्त्री० [कर्म० स०] ऐसी संपत्ति जो एक स्थान से आसानी से हटाई-बढ़ाई जा सकती हो। (मूवेबुल प्रापर्टी)

चला—स्त्री० [सं० √चल्+अच्—टाप्] १. बिजली। दामिनी। २. पृथ्वी। ३. लक्ष्मी। ४. पीपल। ५. शिलारस नामक गंध-द्रव्य। †पुं० =चाला।

चलाऊ—वि० [हिं० चलना] १. जैसे-तैसे काम चलानेवाला। जैसे–काम-चलाऊ पुस्तक। २. अधिक समय तक टिकने या ठहरनेवाला।

चलाक—वि०=चालाक।

चलाकी—स्त्री०=चालाकी।

चलाका—स्त्री० [सं० चला =बिजली] बिजली। दामिनी। विद्युत्।

चलाचल—वि० [सं० √चल्+अच्, द्वित्व] चंचल। चपल।

स्त्री० [हिं० चलना] १. चलाचली। २. गति।

चलाचली—स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने की क्रिया या भाव। २. कहीं से चलने के समय की जानेवाली तैयारी। ३. प्रस्थान। ४. एक के बाद दूसरे का भी जाना।

चलातंक—पुं० [चल-आतंक, ब० स०] एक वातरोग जिसके कुप्रभाव से हाथ-पाँव आदि काँपने लगते हैं। राशा।

चलान—स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने या चलाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. व्यापारिक क्षेत्र में, कोई चीज या माल कहीं भेजे जाने या रवाना करने की क्रिया या भाव। जैसे–अनाज या रूई की चलान। ३. उक्त प्रकार से कहीं से चलकर आई हुई चीज या माल। जैसे–नई चलान का कपड़ा। ४. अभियुक्त को पकड़कर न्यायालय में विचार के लिए भेजे जाने की क्रिया या भाव। जैसे—चोर या जुआरी की चलान होना। ५. वह कागज जिसमें सूचना के लिए भेजी हुई चीजों की सूची, विवरण आदि लिखे रहते हैं। रवन्ना।

चलानदार—पुं० [हिं० चलान+फा० दार] वह व्यक्ति जो माल की चलान रक्षा के लिए उसके साथ जाता है।

चलाना—स० [हिं० चलना का स०] १. हिन्दी 'चलना' क्रिया का सकर्मक रूप। किसी को चलाने में प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई चले। जैसे—लड़के को पैदल चलाना। २. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई यान या सवारी किसी ओर आगे बढ़े। जैसे—गाड़ी, नाव, मोटर या रेल चलाना। ३. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई यंत्र ठीक तरह से अपना काम करने लगे। जैसे–घड़ी, मशीन, रेडियो या हल चलाना। ४. किसी प्रकार की या किसी रूप में गति देना। इधर-उधर करते हुए हिलाना-डुलाना। जैसे—चूल्हे पर चढ़ाई हुई तरकारी या दाल चलाना। ५. किसी के आचरण, गति-विधि, व्यवहार आदि की देख-रेख रखते हुए

उसके सब व्यापार संचालित करना। जैसे—लड़कों को जैसे चलाओगे, वैसे ही वे चलेंगे। ६. उक्त प्रकार या रूप से किसी का संचालन करते हुए उसे अपने साथ निर्वाह के योग्य बनाना। कुछ करने के लिए उपयुक्त बनाना। जैसे—(क) इस लड़के को हम छठे दरजे में चला ले जायँगे। (ख) ऐसे गँवार नौकर को भी आप चला ही ले गये। ७. उचित अथवा साधारण रूप से किसी काम, चीज या बात को क्रियाशील या सक्रिय रखना। ऐसी व्यवस्था करना जिससे कोई काम अच्छी तरह से चलता रहे। जैसे—कार्यालय, कोठी या पाठशाला चलाना। ८. किसी स्थिति का निर्वाह या उत्तरदायित्व का वहन करना। जैसे—(क) वह गृहस्थी के सब काम अच्छी तरह चला लेता है। (ख) इस महँगी में लोगों के लिए गृहस्थी चलाना बहुत कठिन हो रहा है।

मुहा०—(अपना या किसी का) पेट चलाना = भोजन आदि के व्यय का निर्वाह करना। जीविका चलाना। जैसे—पहले तुम अपना पेट तो चला लो, तब व्याह की बात सोचना। **(कोई काम या बात) चलाये चलना** =किसी प्रकार निर्वाह करते चलना। जैसे—अभी तो हम जैसे-तैसे चलाये चलते हैं।

९. कौशल, योग्यता तथा तत्परतापूर्वक कोई काम करना। जैसे–शासन चलाना। १०. किसी चीज को बराबर उपयोग या व्यवहार में लाते रहना। जैसे–यह कंबल तो वह दस बरस चलावेगा। ११. शरीर के किसी अंग को उसके किसी नियमित कार्य में प्रवृत्त या रत करना। जैसे—(क) मुंह चलाना; अर्थात् भोजन करना या खाना। (ख) हाथ चलाना अर्थात् ठीक तरह सक्रिय रहकर पूरा काम करना। १२. शरीर के किसी अंग को किसी असाधारण रूप में अथवा कुछ उग्र प्रकार से प्रयुक्त या सक्रिय करना। जैसे—(क) जबान चलाना; अर्थात् बहुत बढ़-बढ़कर या उद्दंडतापूर्ण बातें करना। (ख) किसी पर हाथ चलाना अर्थात् उसे थप्पड़ या मुक्का मार बैठना। १३. प्रहार करने के लिए अस्त्र-शस्त्र या किसी और साधन से काम लेना। जैसे—(क) तलवार, तीर या तोप चलाना। (ख) डंडा या लाठी चलाना। (ग) घूंसा या लात चलाना। १४. तंत्र-मंत्र आदि के प्रयोग से कोई ऐसी क्रिया संपादित करना कि जिससे किसी का कोई अनिष्ट हो अथवा वह कोई उद्दिष्ट कार्य करने में प्रवृत्त हो। जैसे—मंत्र-बल से कटोरा या कौड़ी चलाना।

मुहा०—(किसी पर) मूठ चलाना=मुट्ठी में भरी या रखी हुई कोई चीज अभिमंत्रित करके किसी के नाम पर या किसी के उद्देश्य से कहीं फेंकना।

१५. भेजने की प्रेरणा करना। भेजवाना। उदा०—. . . जलभाजन सब दिये चलाई।—तुलसी। १६. तरल पदार्थ इतनी अधिकता से गिराना या डालना कि वह बहने लगे। जैसे—(क) पानी गिराकर मोरी चलाना। (ख) खून की नदियाँ चलाना अर्थात् बहाना। १७. ऐसी क्रिया करना जिससे शरीर के अंदर से कोई तरल पदार्थ अधिक मात्रा में बाहर निकलने लगे। जैसे–-इस दवा की एक पुड़िया ही तुम्हारा पेट चला देगी। १८. किसी काम या बात का आरंभ करना। शुरू करना। छेड़ना। जैसे—किसी की चर्चा, जिक्र या प्रसंग चलाना।

मुहा०—किसी की चलाना = किसी के अधिकार, प्रभुत्व, शक्ति आदि की चर्चा या प्रसंग छेड़ना। जैसे–उनकी क्या चलाते हो; वे तो बहुत कुछ कर सकते हैं।

१९. कोई नया नियम, प्रथा, रीति आदि प्रचलित करना। जारी करना। जैसे–-नया कानून या नया धर्म चलाना। २०. किसी क्रम, परंपरा आदि का निर्वाह करना या उसे बराबर बनाये रखना। जैसे—पूर्वजों या बड़ों का नाम चलाना। २१. किसी प्रकार की कामना या वासना के वश में होकर अपने मन को उसी के अनुसार प्रवृत्त करना। जैसे—दूसरों के अधिकार या वैभव पर मन चलाना ठीक नहीं। २२. अस्पष्ट लिखावट पढ़ने का प्रयत्न करना। जैसे—हमसे तो यह चिट्ठी नहीं चलती, जरा तुम्हीं चलाकर देखो। २३. खाने-पीने की चीजें परोसने के लिए लोगों के सामने लाना। जैसे–-पहले नमकीन चला लो; तब मिठाई चलाना। २४. सामाजिक रीति-व्यवहार आदि का ठीक तरह से आचरण या पालन करना। जैसे—हम तो बराबर उसी तरह से उनके साथ चलाते हैं; आगे उनकी इच्छा। २५. दूसरों को अपनी आज्ञा, आदेश आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करने में प्रवृत्त करना अथवा ऐसा करने के लिए जोर देना। जैसे—आपसवालों पर इस तरह हुकुम मत चलाया करो। २६. कपड़े आदि के संबंध में अनुचित रूप से या बुरी तरह ऐसी क्रिया करना कि वे कहीं इधर-उधर से कुछ फट जायँ। जैसे—(क) इस खींचातानी में तुमने हमारी कमीज चला दी। (ख) जल्दी में टुकड़ा फाड़ने के समय तुमने यह कपड़ा चला दिया। २७. खोटे या जाली सिक्कों के संबंध में, कोई देन चुकाने के लिए धोखे से किसी को दे देना। जैसे—वह खोटी अठन्नी नौकर ने बाजार में चला दी। २८. विधिक क्षेत्रों में, कोई अभियोग किसी न्यायालय में कार्रवाई या विचार के लिए उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—किसी पर मुकदमा चलाना।

चलानी—वि० [हिं० चलान] १. दूसरे स्थान से बिकने के लिए आया हुआ। जैसे—चलानी आम, चलानी परवल। २. चलान संबंधी। जैसे—चलानी मुकदमा।

स्त्री० बिक्री के लिए माल बाहर भेजने का काम या व्यवसाय।

चलायमान—वि० [सं० चल+क्यङ्+शानच्] १. चलनेवाला। जो चलता हो। २. चंचल। ३. विचलित।

चलार्थ—पुं० [सं० चल-अर्थ, कर्म०स०] वह धन विशेषतः मुद्रा जिसका प्रयोग या व्यवहार निरंतर होता रहता हो। (करेंसी)

चलार्थ-पत्र—पुं० [ष० त०]=चल-पत्र।

चलाव—पुं० [हिं० चलना] १. चलने की क्रिया या भाव। २. प्रयाण। पयान। ३. चलावा (गौना)।

चलावना†—स०=चलाना।

चलावा—पुं० [हिं० चलाना] १. रीति। रस्म। रिवाज। २. द्विरागमन। गौना। ३. गाँव में संक्रामक रोग फैलने पर उसके उपचार के लिए किया जानेवाला उतारा। चलौआ।

चलासन—पुं० [चल-आसन, कर्म०स०] सामयिक व्रत में आसन बदलना जो बौद्धों में एक दोष माना गया है।

चलि—पुं० [सं०√चल्+इन्] १. आवरण। २. अँगरखा।

चलित—वि० [सं०√चल्+क्त] १. अस्थिर। चलायमान। २. जो चल रहा हो। चलता हुआ। जैसे—चलित ग्रह। ३. जो चलन में हो। (करेंट) जैसे—चलित प्रथा। ४. जिसका प्रचलन या व्यवहार प्रायः सब जगह या सब लोगों में होता हो। (यूजुअल)

पुं० नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा जिसमें ठुड्डी की गति से क्रोध या क्षोभ प्रकट हो।

चलित-ग्रह—पुं०[कर्म०स०] ज्योतिष में वह ग्रह जिसमें भोग का आरम्भ हो चुका हो।

चलित्र—पुं०[सं०?]अपनी ही शक्ति से चलनेवाला इंजन। (लोकोमोटिव)

चलुक—पुं० [सं०√चल्+उन्+कन्] १. चुल्लू भर पानी। २. एक छोटा पात्र।

चलैया—पुं० [हिं० चलना] चलनेवाला।

चलोर्मि—स्त्री० [सं० चल+ऊर्मि, कर्म०स०] चलती या आगे बढ़ती हुई लहर।

चलौना—पुं०[हिं० चलाना] १. दूध, तरकारी आदि चलाने का लकड़ी का एक उपकरण या डंडा। २. वह लकड़ी का टुकड़ा जिससे चरखा चलाया जाता है।

चलौवा—पुं०=चलावा।

वि०=चलाऊ।

चल्ली—स्त्री० [देश०]तकले पर लपेटा हुआ सूत या ऊन आदि। कुकड़ी।

चल्हवा—पुं०=चेल्हा (मछली)।

चव—वि०=चौ।

पुं० १. =चौ। २. =चव्य।

चवदसु—*वि०=चौदह।

स्त्री०=चौदस (चतुर्दशी)।

चवना—अ०[सं० च्यवन] चूना। टपकना।

स० चुआना या टपकाना। उदा०—लता विटप माँगे मधु चवहीं। —तुलसी।

चवन्नी—स्त्री० [हिं० चौ(चार का अल्पा०) +आना+ई (प्रत्य०)] एक सिक्का जिसका मूल्य २५ नये पैसे अथवा पुराने चार आने के वरावर होता है।

चवर—पुं०=चँवर।

चवरा—पुं०[सं० चवल] लोविया।

†पुं०=चौरा।

चवर्ग—पुं०[ष० त०] [वि० चवर्गीय] नागरी वर्णमाला के च से ञ तक के अक्षरों का समूह।

चवल—पुं० [सं √चर्व् (चवाना)+अलच् पृषो०] लोविया।

चवा—स्त्री० [सं० चौ+वात] चारों ओर से एक साथ चलनेवाली वायु। उदा०—सुणि सुन्दरि, सच्चउ चवा.....।—ढोलामारू।

चवाइन—स्त्री० 'चवाई' का स्त्री० रूप। उदा०—जदपि चवाइन चीकनी चलति चहूँ दिसि सैन।—विहारी।

चवाई—वि० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] १. वदनामी की चर्चा फैलानेवाला। कलंकसूचक प्रवाद फैलानेवाला। २. दूसरों की वुराई करनेवाला। निंदक।

स्त्री० १ चारों ओर फैली हुई निंदा। २. झूठी अफवाह या खबर।

चवाउ†—पुं०=चवाव।

चवायनि—स्त्री०= चवाइन।

चवालीस—वि०=चौवालीस।

चवाव—पुं० [हिं० चौवाई] १. चारों ओर फैलनेवाली चर्चा। प्रवाद। अफवाह। २. उक्त प्रकार की निन्दा।

चवि—स्त्री० [सं०√चर्व् (चवाना)+इन्, पृषो० सिद्धि]=चविका।

चविक—पुं० [सं० चवि+कन्] एक प्रकार का पेड़।

चविका—स्त्री० [सं० चविक+टाप्] चव्य नाम की ओषधि।

चवैया—पुं०=चवाई।

चव्य (का)—पुं० [सं०√चर्व+ण्यत्, पृषो० चव्य+कन्–टाप्] चाव नाम की ओषधि। दे० 'चाव'।

चव्यजा—स्त्री०[सं० चव्य√जन्(उत्पत्ति)+ड–टाप्] गजपीपल।

चव्या—स्त्री०[सं० चव्य+टाप्]=चव्य।

चशक—स्त्री०[हिं० चसका] किसी विशिष्ट अवसर पर साहबों के यहाँ से वावर्चियों को मिलनेवाला भोजन।

चशम—स्त्री०=चश्म।

चशमा—पुं० =चश्मा।

चश्म—स्त्री०[फा०] १. आँख। नयन। नेत्र। २. आँख की तरह का कोई छेद या रचना।

पद—चश्म बद्दूर=इसे वुरी नजर न लगे। (कोई अच्छी या सुन्दर चीज देखने पर)

चश्मक—स्त्री० [फा० चश्म] १. आँखों से किया जानेवाला इशारा या संकेत। २. मनमुटाव। वैमनस्य। ३. ऐनक। चश्मा।

चश्मदीद—वि० [फा०] १. जो आँखों से देखा हुआ हो। प्रत्यक्ष देखा हुआ। २. प्रत्यक्षदर्शी। जैसे—चश्मदीद गवाह।

चश्मदीद गवाह—पुं० [फा०] वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी हुई घटना कहे। वह गवाह जो चश्मदीद माजरा (आँखों देखी घटना) वयान करे।

चश्मनुमाई—स्त्री०[फा०] आँखें दिखा या निकालकर किसी को डराना। भयभीत करना।

चश्मपोशी—स्त्री०[फा०]जान-बूझकर किसी अनुचित वात को टाल जाना। उपेक्षा करना।

चश्मा—पुं० [फा० चश्मः] १. जल-स्रोत। सोता। २. आँखों पर लगाया जानेवाला धातु आदि का एक प्रकार का प्रसिद्ध ढाँचा या कमानी जिसमें लगे हुए शीशों की सहायता से वस्तुएँ अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं।

क्रि० प्र—लगाना।

चष—पुं० [सं० चक्षुस्] नेत्र। आँख।

चषक—पुं० [सं०√चप् (पीना)+क्वुन्–अक] १. वह पात्र जिसमें ढालकर शराव पी जाती है। शराव पीने का प्याला। २. मधु।

चषचोल—पुं०[हिं० चष+चोल=वस्त्र] आँख पर की पलक।

चषण—पुं० [सं०√चष् (खाना)+ल्युट्–अन] १. भोजन करना। खाना। २. वध करना। मार डालना। ३. क्षय या नाश करना।

चषाल—पुं० [सं०√चष्(वाँधना) आलच्] लकड़ी की वह गराड़ी जो यज्ञ के खंभे में लगी रहती थी और जिसमें वलि-पशु की रस्सी वाँधी जाती थी।

चस—स्त्री० [अनु०] गोटे आदि की पतली धारी जो मगजी के आगे पहने जानेवाले वस्त्रों में लगाई जाती है।

चसक—स्त्री० [अनु०] १. हलका दर्द या पीड़ा। कसक। टीस। २. गोटे आदि की वह पतली गोट जो मगजी के आगे लगाई जाती है।

पुं०=चषक।

चसकना—अ०[हिं० चसक] शरीर के किसी अंग में रह-रहकर हल्की पीड़ा होना। टीस उठना।

चसका—पुं०=चस्का।

चसकी—स्त्री० दे० 'चसका'।

चसना—अ०[सं० चषण] १. प्राण त्यागना। मर जाना। २. ठगा जाना।

अ०[हिं० चाशनी] १. दो चीजों का आपस में चिपक, लग या सट जाना। २. कपड़े आदि का खिंचने पर फट या मसक जाना।

चसम—पुं० [देश०] रेशम के तागों में निकला हुआ निरर्थक अंश।

स्त्री०=चश्म।

चसमा†—पुं०=चश्मा।

चस्का—पुं०[सं० चषण] १. किसी काम या बात से होनेवाली तृप्ति या मिलनेवाले सुख के कारण फिर-फिर वैसी ही तृप्ति या सुख पाने के लिए मन में होनेवाली लालसापूर्ण प्रवृत्ति या मनोवृत्ति। चाट। जैसे—जूए या शराब का चस्का; गाना सुनने या बातें करने का चस्का। २. उक्त प्रकार की प्रवृत्ति का वह पुष्ट रूप जो आदत या बान बन गया हो। लत।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।—लगाना।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग मुख्यतः ऐसे ही कामों या बातों के संबंध में होता है जो लोक में या तो कुछ बुरी या प्रायः अनावश्यक और व्यर्थ की समझी जाती हैं। साधारणतः भगवद्भक्ति का चस्का' या 'साहित्य- सेवा का चस्का' सरीखे प्रयोग देखने-सुनने में नहीं आते।

चस्पाँ—वि० [फा०] १. गोंद, लेई, सरेस आदि की सहायता से किसी पर चिपकाया, लगाया या सटाया हुआ। २. किसी के साथ अच्छी तरह चिपका या लगा हुआ।

चस्म†—स्त्री०=चश्म।

चस्सी—स्त्री०[देश०] हथेली या पैर के तलुए में होनेवाली सुरसुराहट या हलकी खुजली।

चह—पुं०[सं० चय] १. नदी के किनारे बनाया हुआ वह चबूतरा जिस पर चढ़कर मनुष्य, पशु आदि नाव पर जाते हैं। पाट। २. नदी पार करने के लिए बनाया हुआ पीपे आदि का अस्थायी पुल।

स्त्री०[फा० चाह] गड्ढा।

चहक—स्त्री०[हिं० चहकना] १. चहकने की क्रिया या भाव। २. चिड़ियों का चहचह शब्द।

†पुं० दे० 'चहला'।

चहकना—अ०[अनु०] १. कुछ पक्षियों का प्रसन्न होकर चहचह शब्द करना। जैसे—चिड़ियों का चहकना। चहचहाना। २. लाक्षणिक अर्थ में, उमंग में आकर प्रसन्नतापूर्वक खूब बोलना या बढ़-बढ़कर या अधिक बातें करना। (परिहास और व्यंग्य)

चहका—पुं०[देश०] १. लकड़ी, जिसका कुछ अंश जल रहा हो। जलती हुई लकड़ी। लुआठी। लूका।

क्रि० प्र०—लगाना।

२. बनेठी।

पुं०[सं० चय] ईंट या पत्थर का बना हुआ फर्श।

†पुं० दे० 'चहला'।

चहकार—स्त्री०[हिं० चहकना+कार (प्रत्य०)] चिड़ियों के चहकने का शब्द।

चहकारना†—अ०=चहकना।

चहचहा—पुं०[हिं० चहचहाना] १. चहचहाने की क्रिया या भाव। चहक। २. खूब जोरों से होनेवाला हँसी-ठट्ठा।

वि० १. आनंद या प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला २.। तुरन्त का। ताजा।

चहचहाना—अ० [अनु०] कुछ पक्षियों का उमंग में आकर या प्रसन्न होकर चहचह शब्द करना। चहकना।

चहचहाहट—स्त्री० [हिं० चहचहाना+हट(प्रत्य०)] चहचहाने या चहकने की क्रिया या भाव।

चहटा—पुं०[देश०] १. कीचड़। पंक। २. दलदल।

चहता—वि०[स्त्री० चहती] =चहेता (दे०)।

चहनना—स० [हिं० चहलना] १. कुचलना। चहलना। रौंदना। २. अच्छी तरह मिलाना। मिश्रित करना। ३. खूब जी भरकर या अच्छी तरह खाना।

चहना†—अ०=चाहना।

चहनि*—स्त्री० [हिं० चाहना=देखना] १. देखने की क्रिया या भाव। २. दृष्टि। नजर।

†स्त्री०=चाह (अभिलाषा)।

चह-बच्चा—पुं० [फा० चाह=कुआँ+बच्चा] १. पानी, विशेषतः गंदा या मैला पानी भरने का छोटा गड्ढा या हौज। २. वह गड्ढा जो गाड़ या छिपाकर धन रखने के लिए बनाया गया हो।

चहर†—वि० [हिं० चाह या चाहना] जो चाहा जा सके; अर्थात् उत्तम, वांछनीय या श्रेष्ठ।

वि०[चहचह से अनु०] १. चपल। चुलबुला। २. तीखा। तेज।

स्त्री० १. जोर की ध्वनियाँ या शब्द। २. शोर-गुल। हो-हल्ला। ३. उत्पात।

स्त्री०[हिं० चहल] आनन्दोत्सव। धूम-धाम।

स्त्री०[हिं० चहरना] चहचहानेवाली चिड़िया।

पद—चहर की बाजी=चिड़ियों का-सा खेल। बहुत ही तुच्छ काम या बात। उदा०—यों संसार चहर की बाजी, साँझ पड़्याँ उठ जासी।—मीराँ।

चहरना†—अ०[हिं० चहचह या चहर] १. चहचह शब्द करना। २. आनंदित होना।

स० [?] १. कुचलना। २. खूब अच्छी तरह खाना।

चहराना—स०[हिं० चहरना का स०] किसी को चहरने में प्रवृत्त करना।

अ० १. =चहरना। २. =चर्राना। ३. =चहकना।

चहरुम—वि० दे० 'चहारुम'।

चहल—स्त्री०[हिं० चहलना या चहला] १. चहलने की क्रिया या भाव। २. आनन्द मनाने की क्रिया या भाव।

पद—चहल-पहल। (देखें)

३. कीचड़। ४. दलदल। ५. कीचड़ से भरी हुई वह जमीन जिसमें हल से जोताई करने की आवश्यकता न पड़ती हो।

वि० १. अच्छा। बढ़िया। २. चटकीला। तेज। ३. चंचल। चुलबुला।

चहल-कदमी—स्त्री०[हिं० चहल+फा० कदम] सुखपूर्वक तथा धीरे-धीरे चलने की क्रिया या भाव।

चहलना—स०[देश०] पैरों से कुचलना या रौंदना।

अ० धीरे-धीरे अथवा मस्ती से चलना या सैर करना। टहलना।

चहल-पहल—स्त्री० [हिं० चहल+पहल, अनु०] १. किसी स्थान पर किसी कारण से बहुत से लोगों के आते-जाते रहने की अवस्था या भाव। रौनक। २. उक्त के कारण होनेवाला आनन्दोत्सव। धूम-धाम। क्रि० प्र०—मचना।

चहला—पुं० [सं० चिकिल] १. कीचड़। २. कीचड़ से भरी हुई जमीन। दलदल। उदा०—इक भींजे चहले परे, बूड़े-बहे हजार।—बिहारी।

चहली—स्त्री० [देश०] कूएँ में से पानी खींचने की चरखी। गराड़ी। घिरनी।

चहलुम†—पुं०=चेहलुम।

चहवारा—वि०[हिं० चहना+वारा (वाला)] चहचहानेवाला।

पुं० पक्षी।

चहा†—पुं०[?] चितकबरे रंग का एक प्रकार का पक्षी जो कीचड़ में के कीड़े-मकोड़े खाता है और जिसका मांस बहुत स्वादिष्ट माना जाता है।

चहार—वि०[फा०] तीन और एक। चार।

पुं० चार की संख्या अथवा उसका सूचक अंक।

चहार-चंद—वि०[फा०] चार गुना। चौगुना।

चहारदीवारी—स्त्री०[फा०] किसी मैदान या स्थान को चारों ओर से घेरने के लिए बनाई जानेवाली दीवार या दीवारें। प्राचीर।

चहार-यारी—पुं०[फा०] मुसलमानों का शीया संप्रदाय जो मुहम्मद साहब के चारों यारों या साथियों का भक्त और समर्थक है।

चहारशंबा—पुं०[फा० चहारशंबः] बुधवार।

चहारुम—वि०[फा०] चौथाई।

पुं० चौथाई अंश या भाग। चतुर्थांश।

चहियत—अव्य०=चाहिए। (व्रज)

चही-चहा—पुं० [हिं० चाहना=देखना] परस्पर देखने की क्रिया या भाव।

चहुं*—वि०[हिं० चौ=चार] चारों। जैसे—चहुँ ओर।

चहुंक†—स्त्री०=चिहुँक।

चहुंकना†—अ०=चौंकना।

चहुंटना*—अ०=चिहुँकना।

स० [?] चोट पहुँचाना।

चहुंटी—स्त्री०[?] चुटकी।

चहु-मुखा—वि०=चौमुखा।

चहुरा—पुं०=चौघरा।

वि०=चौहरा।

चहुरी†—स्त्री०[?] एक प्रकार का छोटा बरतन।

चहुवान—पुं० =चौहान।

चहूँ—वि०=चहुँ० (चारों)।

चहूंटना—अ०=चिमटना।

चहेटना—स०[?] १. किसी चीज को दबा या निचोड़कर उसका रस या सार निकालना। गारना। २. खदेड़ना। भगाना। ३. दे०'चपेटना'।

चहेता—वि०[हिं० चाहना+एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे कोई बहुत अधिक चाहता हो। । प्रिय। जैसे—चहेता लड़का, चहेती स्त्री।

चहेल—स्त्री०[हिं० चहला] १. चहला। कीचड़। २. दलदल।

चहोड़ना—स०[?] १. चारों ओर से अच्छी तरह दबाते हुए पीटना या मारना। उदा०—हंड ब्रह्मंड चहोड़िया मानूं बेस्या अंत।—गोरखनाथ। २. पौधों को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। ३. देख-भाल कर अपने अधिकार में लेना। सँभालना। सहेजना। ४. उपस्थित या वर्तमान करना। ५. कर दिखाना। ६. अच्छी तरह से कोई काम करना।

चहोड़ा—पुं० [हिं० चहोड़ना] जड़हन धान, जो चहोड़ या रोपकर तैयार किया जाता है।

चहोरना—स०=चहोड़ना।

चहोरा—पुं०=चहोड़ा।

चाँइयाँ—पुं०[हिं० चाँई=एक जाति] १. लोगों की चीजें उठा या चुरा ले जानेवाला। उचक्का। २. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त।

चाँई—पुं०[?]१. नैपाल की एक जंगली जाति, जो किसी समय डाके डाला करती थी। २. दे० 'चाँइयाँ।

स्त्री०[?]१. एक रोग जिसमें सिर में बहुत-सी फुंसियाँ निकल आती हैं, जिनसे बाल झड़ जाते हैं। २. उक्त प्रकार की फुंसियाँ।

वि० जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंजा।

चाँई चूंई—स्त्री०[?] सिर में होनेवाली एक प्रकार की छोटी फुंसियाँ जिनसे बाल गिर जाते हैं।

चाँक—पुं०[हिं० चौ=चार+अंक=चिह्न] १. काठ की वह थापी जिस पर कुछ चिह्न खुदे होते हैं और जिससे खलिहान में अन्न की राशि के चारों ओर निशान लगाये जाते हैं। २. उक्त प्रकार से लगाया हुआ चिह्न या निशान। ३. टोटके के लिए शरीर के किसी पीड़ित स्थान के चारों ओर खींचा जानेवाला घेरा। गोंठ।

चाँकना—स०[हिं० चाँक] १. खलियान में अनाज की राशि के चारों ओर मिट्टी, राख, ठप्पे आदि से निशान लगाना। चाकना। २. रेखा खींचकर सीमा निर्धारित करना। ३. पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।

चाँका—पुं० १. दे० 'चाँक'। २. दे० 'चक्का'।

चाँगज—पुं०[देश०] एक प्रकार का तिब्बती बकरा।

चाँगला—वि०[मरा० सं० चंग से] [स्त्री० चाँगली] १. अच्छा। बढ़िया। २. स्वस्थ। तंदुरुस्त। ३. हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। ४. चतुर। चालाक।

पुं० घोड़ों का एक प्रकार का रंग।

चाँगेरी—स्त्री०[सं०] अमलोनी नाम का साग।

चांच*—स्त्री०=चोंच। (राज०) उदा०—चाँच कटाऊँ पपइयारे।—मीराँ।

चांचर—स्त्री०[सं० चर्चरी] १. वसन्त ऋतु में गाया जानेवाला एक राग। जिसके अन्तर्गत होली, पलग, लेद आदि गाने होते हैं। चर्चरी। २. परती छोड़ी हुई जमीन। ३. एक प्रकार की मटियार जमीन। ४. कच्चे मकानों के दरवाजे पर लगाई जानेवाली टट्टी।

†पुं०[देश०] सालपान नामक क्षुप।

चाँचरि—स्त्री०=चाँचर।

चाँचल्य—पुं० [सं० चंचल+ष्यञ्] चंचल होने की अवस्था, गुण या भाव। चंचलता।

चाँचिया—पुं०[?] १. एक छोटी जाति जो चोरी, डाके आदि से निर्वाह करती है। २. चोर। ३. उचक्का। ४. डाकू। लुटेरा। ५. बहुत बड़ा धूर्त्त व्यक्ति। काँइयाँ।

वि०[हिं० चाँईं ?] चोरों, डाकुओं आदि का। जैसे—चाँचिया जहाज।

चाँचियागिरी—स्त्री० [हिं० चाँचिया+फा० गीरी (प्रत्य०)] चाँचिया लोगों का काम या व्यवसाय। चोरी करने या डाके डालने का धंधा।

चाँचिया जहाज—पुं०[हिं० चाँईं?] समुद्री डाकुओं का जहाज।

चाँची—पुं०=चाँचिया।

चाँचु†—स्त्री०=चोंच।

चाँट—पुं०[हिं० छींटा] १. हवा में उड़ते हुए जल-कणों का प्रवाह जो तूफान आने पर समुद्र में उठता है। (लश०)

मुहा०—चाँट मारना=जहाज के बाहरी किनारे के तख्तों पर या पाल पर पानी छिड़कना। (यह पानी इसलिए छिड़का जाता है जिसमें तख्ते धूप के प्रभाव से चटक न जायँ और पाल कुछ भारी हो जाय।)

चाँटा—पुं०[हिं० चिमटना] [स्त्री० चाँटी] च्यूँटा। चींटा।

पुं०[अनु०] हथेली तथा हाथ की उँगलियों से किसी के गाल पर किया जानेवाला प्रहार। तमाचा। थप्पड़।

क्रि० प्र०—जड़ना।—मारना।—लगाना।

चाँटी—स्त्री०[हिं० चाँटा] १. च्यूँटी। चींटी। २. मध्य युग में कारीगरों पर लगनेवाला एक प्रकार का कर। ३. तबले की संजाफदार मगजी जिस पर तबला बजाते समय तर्जनी उँगली से आघात किया जाता है। ४. तबले के उक्त अंश पर तर्जनी उँगली से किया जानेवाला आघात। ५. उक्त आघात के कारण होनेवाली मधुर ध्वनि या शब्द।

चाँड़—वि०[सं० चंड] १. उग्र। तीव्र। प्रबल। २. बलवान्। शक्तिशाली। ३. उद्दंड। उद्धत। ४. किसी की तुलना में बढ़कर। श्रेष्ठ। ५. अघाया हुआ। तृप्त। संतुष्ट। ६. चतुर। चालाक।

स्त्री०[सं० चंड=प्रबल] १. वह वस्तु या रचना जो किसी दूसरी वस्तु विशेषतः छत या दीवार को गिरने या ढहने से रोकने के लिए लगाई या बनाई जाती है। टेक। थूनी।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२. ऐसी प्रबल आवश्यकता या कामना जिसकी पूर्त्ति तत्काल होने की अभिलाषा हो। ३. उक्त प्रकार की आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए मन में होनेवाली आकुलता या बेचैनी।

मुहा०—चाँड़ सरना= उक्त प्रकार की आवश्यकता पूरी हो जाना अथवा उस आवश्यकता की पूर्त्ति होने पर मन की आकुलता या बेचैनी दूर होना।

४. तीव्रता। प्रबलता। ५. किसी ओर से पड़नेवाला ऐसा दबाव जिसके फलस्वरूप किसी को विवश होकर कोई उद्दिष्ट कार्य करना पड़े। जैसे—जब तक चाँड़ नहीं लगाओगे, तब तक वह तुम्हारा काम नहीं करेगा।

चाँड़ना—स०[हिं० चाँड़] १. चाँड या टेक लगाना। २. खोदकर उखाड़ना या गिराना। ३. ख़ोदकर गहरा करना। ४. नष्ट-भ्रष्ट करना। उजाड़ना। ५. कसना या दबाना। उदा०—माया लोभ मोह है चाँड़े, काल नदी की धार।—तुलसी।

चांडाल—पुं०[सं० चण्डाल+अण्] [स्त्री० चांडाली, चांडालिनी] १. एक प्राचीन अन्त्यज, नीच और वर्बर जाति। पुक्कस। मातंग। श्वपच। २. बहुत ही दुष्ट, नीच और पतित व्यक्ति। (गाली)

चांडालिका—स्त्री०[सं० चण्डाल +वुञ्—अक, चांडालक+टाप्, इत्व] १. चंडालवीणा। २. दुर्गा। ३. एक प्रकार का पौधा।

चांडालिनी—स्त्री० [सं० चांडाल+इनि—ङीप्] एक देवी।

चांडाली—स्त्री०[सं० चांडाल+ङीष्] १. चांडाल जाति की स्त्री। २. [हिं०] चांडाल होने की अवस्था, गुण या भाव। ३. चांडाल का कार्य।

चाँड़िला—वि०[सं० चंड] [स्त्री० चाँड़िली] १. उग्र। प्रचंड। २. उद्धत। नटखट। शोख। ३. बहुत अधिक।

चाँड़ी†—स्त्री०=चोंगी या कीप।

चांडू†—पुं०=चंडू।

चाँढा—पुं०[हिं० चाँड़] जहाज के दो तख्तों के बीच का जोड़। (लश०)

चाँद—पुं०[सं० चंद्र; पा० प्रा० पं० चंद; उ० बं० गु० ने० चाँद; सि० चंडु. चंद्रु; मरा० चाँद, चाँदोबा] १. चंद्रमा।

मुहा०—चाँद का खेत करना=चंद्रमा के निकलने के समय उसकी आभा का चारों ओर फैलना। **चाँद चढ़ना**=चंद्रमा का ऊपर आना या उदय होना। **चाँद पर थूकना**=ऐसा अनुचित और निन्दनीय कार्य करना जिसका परिणाम उल्टे कर्त्ता पर पड़े। जैसे—किसी ऐसे महात्मा पर कलंक लगाना जिसके फल-स्वरूप स्वयं अपमानित होना पड़े। (ऊपर की ओर थूकने से अपने ही मुँह पर थूक पड़ती है। इसी से यह मुहा० बना है) **चाँद पर धूल डालना**=किसी निर्दोष अथवा परम पवित्र पर कलंक लगाना।

पद—चाँद का कुंडल या मंडल=बहुत हल्की बदली पर प्रकाश पड़ने के कारण चंद्रमा के चारों ओर दिखायी देनेवाला वृत्त या घेरा। **चाँद का टुकड़ा**=परम सुन्दर वस्तु या व्यक्ति। **चाँद दीखे**=शुक्ल पक्ष की द्वितीया के बाद। जैसे—चाँद दीखे आना तुम्हें काम दे दिया जायगा। **चाँद-सा मुखड़ा**=अत्यन्त सुन्दर मुख। **आज किधर चाँद निकला?**=(क) आज कैसे दिखाई पड़े? (ख) यह नई बात कैसे हुई? (जब कोई मनुष्य बहुत दिनों पर दिखाई पड़ता है तब उससे कहा जाता है)।

२. चांद्रमास। महीना। जैसे—आज एक चाँद बाद आप दिखाई पड़े हैं। ३. मुसलमानी मास गणना के अनुसार महीने का पहला दिन जो उनके हिसाब से शुक्ल पक्ष की द्वितीया को आरम्भ होता है। जैसे—चाँद के चाँद तनख्वाह मिलना। ४. द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक गहना। ५. चंद्रमा के आकार-प्रकार का कोई अर्द्ध-गोलाकार अथवा मंडलाकार धातु-खंड या रचना। जैसे—ढाल पर का चाँद; चाँदमारी में निशाना साधने का चाँद, लंप की चिमनी के पीछे उसका प्रकाश प्रत्यावर्त्तित करने के लिए लगाया जानेवाला चाँद। ६. घोड़े के माथे पर की एक प्रकार की भौंरी। ७. भालू की गरदन के नीचे का सफेद बालोंवाला घेरा। (कलंदर) ८. सिर पर पहना जानेवाला चंद्रमा के आकार का मंडलाकार ताज। ९. पशुओं के मस्तक पर का गोलाकार सफेद या किसी भिन्न रंग का दाग या फूल। १०. कलाई पर गोदा जानेवाला मंडलाकार गोदना।

स्त्री० १. खोपड़ी का सबसे ऊँचा और मध्य भाग। २. खोपड़ी।

मुहा०—चाँद पर बाल न छोड़ना=(क) सिर पर इतना मारना कि बाल झड़ जायँ। (ख) सब कुछ ले लेना, कुछ बाकी न छोड़ना।

चाँद-तारा—स्त्री०[हिं० चाँद+तारा] १. एक प्रकार की बढ़िया मलमल जिस पर चाँद और तारों के आकार की बूटियाँ बनी होती थीं। २. एक प्रकार का कनकौआ या पतंग जिस पर उक्त प्रकार की आकृतियाँ बनी होती हैं।

चाँदना—पुं०[हिं० चाँद+ना (प्रत्य०)] १. उजाला। प्रकाश। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना।

मुहा०—(किसी जगह) चाँदना कर देना=सब कुछ उड़ा ले जाना। कुछ भी बाकी न छोड़ना। जैसे—चोरों ने घर पर चाँदना कर दिया।

चांदनिक—वि० [सं० चन्दन+ठक्–इक] १. चंदन का। चंदन-संबंधी। २. चंदन में होने, रहने अथवा उससे बननेवाला। ३. जिसमें चंदन की महक हो। चंदन से सुवासित।

चाँदनी—स्त्री० [सं० चंद्र>चंद्रण; दे० प्रा० चंदिण; प्रा० चंद्दण; बँ०, उ० चांदनी; गु० चांदरणुं; मरा० चांदणें] १. चाँद का प्रकाश। रात के समय होनेवाला चंद्रमा का उजाला या प्रकाश। कौमुदी। चंद्रिका। ज्योत्स्ना।

क्रि० प्र०—खिलना।—छिटकना।—फैलना।—बिछना।

मुहा०—चाँदनी मारना=(क) लोक-प्रवाद के अनुसार चाँदनी का बुरा प्रभाव पड़ने के कारण घाव या जख्म का अच्छा न होना। (ख) चाँदनी पड़ने या लगने के कारण घोड़ों को एक प्रकार का आकस्मिक रोग होना।

पद—चाँदनी रात=वह रात जिसमें चंद्रमा का प्रकाश चारों ओर फैला हो। शुक्ल पक्ष की रात्रि। **चार दिन की चाँदनी**=अस्थायी या क्षणिक वैभव या सुख। स्त्री० [हिं० चंदनी] १. बिछाने की बड़ी सफेद चादर। सफेद फर्श। **विशेष**—कहते हैं कि पहले नूरजहाँ ने अपने महल में चंदन के रंग का एक फर्श बनवाया था; उसी से यह शब्द 'बिछाने की चादर' के अर्थ में चल पड़ा।

२. छत पर या ऊपर की ओर तानने का कपड़ा। छतगीर। ३. गुल-चाँदनी नाम का पौधा और उसका फूल।

चाँद-बाला—पुं० [हिं० चाँद+बाला (कान में पहनने की बड़ी बाली)] कान में पहनने का एक प्रकार का बाला जिसके नीचे का भाग अर्द्धचन्द्राकार होता है।

चाँदमारी—स्त्री०[हिं० चाँद+मारना] १. कपड़े, तख्ते, दीवार आदि पर बने हुए चद्र-चिह्नों पर तीर, बन्दूक आदि से निशाने लगाने की अभ्यासात्मक क्रिया। २. वह मैदान जहाँ उक्त प्रकार की क्रिया होती है।

चाँदला—वि०[हिं० चाँद] १. (दूज के चंद्रमा के समान) टेढ़ा। वक्र। २. जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। चँदला। गंजा।

चाँद-सूरज—पुं०[हिं० चाँद+सूरज] एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ चोटी में गूँथकर पहनती हैं।

चाँदा—पुं०[हिं० चाँद] १. चाँदमारी के मैदान में वह स्थान जहाँ से दूरबीन लगाई जाती है। २. वह पटरा जिस पर निशाना लगाने या अभ्यास करने के लिए छोटे-छोटे चिह्न बने रहते हैं। ३. खेत, भूमि आदि की नाप में वह केन्द्र-स्थल जहाँ से दूरी की नाप लेकर हद बाँधी जाती है। ४. छप्पर का पाखा जो प्रायः चन्द्राकार होता है। ५. ज्यामिति में, धातु, प्लास्टिक, सींग आदि का अर्द्ध-वृत्ताकार एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे कोण आदि नापे जाते हैं। (प्रोट्रेक्टर)

चाँदी—स्त्री०[हिं० चाँदनी] १. एक प्रसिद्ध सफेद चमकीली कीमती धातु जो अपेक्षया नरम होती है और जिसके गहने, बरतन, सिक्के आदि बनते हैं। इसका गुरुत्व सोने के गुरुत्व का आधा होता है। इससे कई एक ऐसे क्षार बनाये जाते हैं जिन पर प्रकाश का प्रभाव बहुत विलक्षण पड़ता है। रजत। रौप्य।

मुहा०—चाँदी कर डालना या कर देना=जलाकर राख कर डालना। (गाँजे, तमाकू आदि की भरी हुई चिलम के संबंध में प्रयुक्त।)

२. चाँदी के सिक्कों के आधार पर, धन-संपत्ति। दौलत।

मुहा०—चाँदी बरसना=खूब आमदनी होना। **चाँदी काटना**=प्रायः अनुचित रूप से खूब रुपया पैदा करना। खूब धन कमाना। **चाँदी को ऐनक लगाना**= घूस या रिश्वत लेकर ही किसी का काम करना। जैसे—हमारे तहसीलदार साहब चाँदी की ऐनक लगाते हैं। **(किसी की) चाँदी होना**=बहुत अधिक आय या आर्थिक लाभ होना।

पद—चाँदी का जूता=वह धन जो किसी को अपने अनुकूल या वश में करने को दिया जाता है। घूस या रिश्वत के रूप में दिया जानेवाला धन। **चाँदी का पहरा** =आर्थिक दृष्टि से पूर्णता, सुख-समृद्धि के दिन।

३. खोपड़ी का मध्य भाग। चाँद। चँदिया।

मुहा०—चाँदी खुलवाना=चाँद के ऊपर के बाल मुड़ाना।

४. एक प्रकार की छोटी मछली। ५. चूने की सफेदी। (क्व०) ६. सफेद रंग अथवा सफेद रंग की कोई वस्तु। ७. जल जाने पर किसी चीज की होनेवाली सफेद राख। जैसे—तमाकू जलकर चाँदी हो गया।

चांद्र—वि०[सं० चन्द्र+अण्] चंद्रमा-संबंधी। चंद्रमा का। जैसे—चांद्र मास, चांद्रवत्सर।

पुं० १. चांद्रायण व्रत। २. चंद्रकांत मणि। ३. मृगशिरा नक्षत्र। ४. पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ५. अदरक। आदी।

चांद्रक—पुं० [सं० चान्द्र√कै (प्रतीत होना)+क] सोंठ।

चांद्र-पुर—पुं०[कर्म०स०] बृहत्संहिता के अनुसार एक नगर जिसमें एक प्रसिद्ध शिवमूर्ति होने का उल्लेख है।

चांद्रमस—वि०[सं० चन्द्रमस्+अण्] चंद्रमा संबंधी।

पुं० मृगशिरा नक्षत्र।

चांद्रमसायन—पुं०[सं० चांद्रमसायनि, पृषो० सिद्धि] बुध ग्रह।

चांद्रमसायनि—पुं०[सं० चंद्रमस्+फिञ्–आयन] बुध ग्रह।

चांद्रमसी—स्त्री० [सं० चान्द्रमस+ङीप्] बृहस्पति की पत्नी का नाम।

चांद्र-मास—पुं० [कर्म० स०] वह मास जो चंद्रमा की गति के अनुसार निश्चित होता है। उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक का समय।

चांद्र-वत्सर—पुं०[कर्म०स०] =चांद्रवर्ष।

चांद्र-वर्ष—पुं०[कर्म०स०] बारह चांद्र मासों का समय। (यह सौर वर्ष से लगभग १० दिन छोटा है।)

चांद्रव्रतिक—वि० [सं० चान्द्रव्रत+ठन्–इक] चांद्रायण व्रत करनेवाला।

पुं० राजा।

चांद्रायण—पुं०[चंद्र-अयन, ब-स०, णत्व, दीर्घ] [वि० चांद्रायणिक] १. महीने भर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-वढ़ने के अनुसार आहार के कौर या ग्रास घटाने-वढ़ाने पड़ते हैं। २. २१ मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११ और १० पर यति होती है। पहले विराम पर जगण और दूसरे पर रगण होना आवश्यक होता है।

चांद्रायणिक—वि०[सं० चान्द्रायण+ठञ्–इक] चांद्रायण व्रत करनेवाला।

चांद्रि—पुं०[सं० चन्द्र+इञ्] बुध ग्रह।

चांद्री—स्त्री०[सं० चान्द्र+ङीप्] १. चंद्रमा की स्त्री। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३. सफेद भटकटैया।

वि०=चांद्र।

चाँप—पुं०, स्त्री०=चाप। (दे०)

पुं० [हिं० चंपा] चंपा का फूल।

चाँपना—स०=चापना।

चांपिला—स्त्री०[सं०√चम्प्+अङ्+इलच्–टाप्] एक प्राचीन नदी। (कदाचित् आधुनिक चंबल।)

चांपेय—पुं०[सं० चम्पा+ढक्–एय] १. चंपक। २. नागकेसर। ३. किंजल्क। ४. सुवर्ण। ५. धतूरा।

चांपेयक—पुं०[सं० चाम्पेय+कन्] किंजल्क। केसर।

चाँयँचाँयँ—स्त्री०[अनु०] व्यर्थ की बातें। वकवाद।

चाँवँ चाँवँ—स्त्री० =चाँयँ चाँयँ।

चांवर†—पुं०=चावल।

†स्त्री०=चँवर।

चा†—विभ० [मरा० चा (विभक्ति)] [स्त्री० ची] का (विभक्ति)। उदा०—देस-देस चा देसपति।—प्रिथीराज।

स्त्री०=चाप।

चाइ*—पुं०=चाव।

चाइँ†—पुं०=चाँइँ।

चाउ†—पुं०=चाव।

चाउर†—पुं०=चावल।

चाऊ—पुं०[देश०] ऊँट या बकरे का (के) बाल। (पहाड़ी बोली)

चाक—पुं० [सं० चक्र, प्रा० चक्क] १. किसी प्रकार का चक्कर या घूमने वाली गोलाकार चीज। २. वह गोल पत्थर जो एक कील पर घूमता है और जिस पर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलाल चक्र। ३. गाड़ी, रथ आदि का पहिया। ४. कूएँ से पानी खींचने की गराड़ी। चरखी। ५. मिट्टी का वह गोलाकार छोटा पात्र जिसमें मिसरी के कूजे जमाये जाते हैं। ६. खलिहान में अन्न की राशि पर लगाया जानेवाला चिह्न या छाप। थापा। ७. हथियारों पर सान रखने या उनकी धार तेज करने का चक्कर। ८. मिट्टी का वह थक्का या लोंदा जो कूएँ से पानी निकालने की ढेंकली के दूसरे सिरे पर जमाया रहता है। ९. मिट्टी का वह बरतन जिससे पकाने के लिए ऊख का रस कड़ाहे में डालते हैं। १०. किसी प्रकार का मंडलाकार चिह्न या रेखा।

पुं० [फा०] १. फटी या फाड़ी हुई चीज के बीच में पड़ी हुई दरार या संधि। फटा हुआ अंश या भाग। २. आस्तीन की खुली हुई मोहरी।

वि० फटा या फाड़ा हुआ। जैसे—दामन या सीना चाक करना।

वि० [तु०] १. हृष्ट-पुष्ट। २. दृढ़। पक्का। मजबूत।

पद—चाक-चौबंद। (देखें)

स्त्री० [अं० चॉक] खरिया मिट्टी। दुद्धी।

चाकचक—वि० [सं० चाकचक्य] १. चारों ओर से सुरक्षित। २. दृढ़। मजबूत। ३. दे० 'चाक-चौबंद'।

चाकचक्य—स्त्री० [सं० √चक् (तृप्ति)+अच्+द्वित्व, चकचक+ष्यञ्] १. चमक-दमक। २. चकाचौंध। ३. सुंदरता। ४. शोभा।

चार्कचिक्य—पुं० [सं०=चाकचक्य, पृषो० सिद्धि] १. चमक। २. चकाचौंध।

चाक-चौबंद—वि० [तु०+फा०] १. चारों ओर से ठीक और दुरुस्त। २. हर तरह से काम के लायक। ३. चुस्त। फुरतीला।

चाकट—पुं० [देश०] हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा।

चाकदिल—पुं० [फा०] एक प्रकार का बुलबुल (पक्षी)।

चाकना—स० [हिं० चाक = चक्र] १. किसी ढेर या वस्तु को घेरने के लिए उसके चारों ओर विशेषतः वृत्ताकार रेखा खींचना। २. उक्त के आधार पर सीमा निर्धारित करने के लिए रेखा खींचना। ३. खलिहान में पड़े हुए अन्न की राशि पर चिह्न या निशान लगाना, जिसमें से यदि कोई कुछ चुरा ले जाय तो पता लग जाय। ४. पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।

†स० [फा० चाक] चाक करना। फाड़ना।

चाकर—पुं० [फा०] [स्त्री० चाकरानी] १. दास। भृत्य। २. नौकर। सेवक। उदा०—म्हाँने चाकर राखो जी।—मीराँ।

चाकरनी†—स्त्री० =चाकरानी।

चाकरानी—स्त्री० [हिं० चाकर का स्त्री०] दासी। नौकरानी।

चाकरी—स्त्री० [फा०] १. चाकर का काम, पद या भाव। २. नौकरी। ३. टहल। सेवा।

क्रि० प्र०—वजाना।

चाकल†—वि० = चकला (चौड़ा)।

चाकलेट—पुं० [अं० चॉकलेट] एक प्रकार की पाश्चात्य मिठाई।

चाकसू—पुं० [सं० चक्षुष्या] १. निर्मली या वनकुलथी का पौधा। २. उक्त पौधे के बीज जिनका चूर्ण आँख के कुछ रोगों में उपयोगी होता है।

चाका—पुं० १.=चाक। २. = चक्का (पहिया)।

चाकी—स्त्री० [सं० चक्र] विजली। वज्र।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

स्त्री० [हिं० चक्की या फा० चाक ?] पटे या बनेठी का एक प्रकार का आघात या वार जो सिर पर किया जाता है।

†स्त्री० = चक्की।

चाकू—पुं० [तु०] तरकारी, फल आदि चीजें काटने, छीलने आदि के काम आनेवाला लोहे का धारदार एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण जो लकड़ी आदि के दस्ते में जड़ा होता है। छुरी।

चाक्रः—वि० [सं० चक्र+अण्] १. चक्र या पहिये से संबंध रखनेवाला। २. जिसकी आकृति चक्र या पहिये जैसी हो। ३. जो चक्रों या पहियों की सहायता से चलता हो। ४. (युद्ध) जो चक्रों की सहायता से हो।

चाक्रायण—पुं० [सं० चक्र+फञ्—आयन] चक्र नामक ऋषि के वंशधर।

चाक्रिक—पुं० [सं० चक्र+ठक्—इक] १. दूसरों की स्तुति गानेवाला। चारण। भाट। २. वह जो किसी प्रकार का चक्र चलाकर जीविका निर्वाह करता हो। जैसे—कुम्हार, गाड़ीवान, तेली आदि। ३. सहचर। साथी।
वि० १. चक्र के आकार का। गोलाकार। २. चक्र-संबंधी। ३. किसी चक्र या मंडली में रहने या होनेवाला।

चाक्रिका—स्त्री० [सं० चाक्रिक+टाप्] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

चाक्रेय—वि० [सं० चक्र+ढञ्—एय] चक्र-संबंधी। चक्र का।

चाक्षुष—वि० [सं० चक्षुस्+अण] १. चक्षु-संबंधी। २. जो चक्षुओं या नेत्रों से जाना या देखा जा सके। जिसका बोध आँखों से होता हो।
पुं० १. न्याय में वह प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध आँखों से होता या हो सकता हो। २. पुराणानुसार छठे मन्वंतर का नाम। ३. स्वायंभुव मनु के एक पुत्र का नाम।

चाक्षुष-यज्ञ—पुं० [सं० कर्म० स०] अच्छी, मनोरंजक और सुंदर चीजों, दृश्य आदि देखकर आँखें तृप्त करने की क्रिया। जैसे—अभिनय, नृत्य आदि देखना।

चाख—पुं० [सं० चाष] नीलकंठ (पक्षी)।

चाखना†—स० = चखना।

चाखुर†—स्त्री० [देश०] खेतों आदि को निराकर निकाली हुई घास।
†स्त्री० [सं० चिकुर] गिलहरी।

चाचपुट—पुं० [सं०] संगीत में, ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक।

चाचर—पुं० [सं० चर्च=घायल करना] युद्धस्थल। रण-भूमि। (राज०) उदा०—चोटियाली कूदै चौसठि चाचरि।—प्रिथीराज।
स्त्री० = चाँचर (होली के गीत)।

चाचरि—स्त्री० = चाँचर।

चाचरी—स्त्री० [सं० चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा—पुं० [सं० तात] [स्त्री० चाची] १. पिता का छोटा भाई। २. प्रौढ़ या वृद्ध आदमी के लिए संबोधन का एक शब्द। जैसे—चाचा नेहरू।

चाट—स्त्री० [हिं० चाटना] १. चाटने की क्रिया या भाव। २. वह चटपटी चीज जो प्रायः चरपरे और तीखे स्वाद के लिए ही चाटी या खाई जाती है। जैसे—कचालू, गोलगप्पा, दही का बड़ा आदि। ३. उक्त प्रकार की चीजें खाने की इच्छा या कामना। ४. उक्त प्रकार की चीजों से मिलनेवाले स्वाद के फल-स्वरूप पड़नेवाली आदत या लत जो बार-बार वैसी चीजें खाने या पाने की इच्छा उत्पन्न करती या शौक लगाती है। जैसे—अफीम या मिठाई की चाट।
मुहा०—**(किसी को) चाट पर लगाना** = किसी को किसी चीज या बात का चस्का या स्वाद लगाकर उसका अभ्यस्त करना।
५. किसी प्रकार की प्रबल इच्छा या गहरी चाह। लोलुपता। जैसे—तुम्हें तो बस रुपये की चाट लगी है। ६. बुरी आदत। लत।
क्रि० प्र०—लगना।
पुं० [सं० √चट् (भेदन करना)+णिच्+अच्] १. वह जो किसी का विश्वासपात्र बनकर उसका धन हरण करे। ठग। २. उचक्का। उठाईगीरा।

चाटना—स० [सं० चष्ट; दे प्रा० चट्ट; प्रा० चट्टई; बँ० चाटा; उ० चाटिबा; पं० चट्टना; सि० चटणु; गु० चाटवूं; ने० चाटनु; मरा० चाटणें] १. खाने की कोई गाढ़ी या लसीली चीज मुँह में ले जाने के लिए जबान से समेट कर उठाना। जैसे—हथेली पर रखा हुआ घी या शहद चाटना। २. उँगली से उक्त प्रकार की कोई चीज उठाकर जीभ पर रखना या लगाना। जैसे—चटनी या दवा चाटना। ३. कोई वस्तु अधिक मात्रा में तथा लोलुपतापूर्वक खाना। जैसे—तुम्हें तो खीर अच्छी नहीं लगी, तुम्हारा भाई तो चाट-चाटकर खा गया है। ४. धन, संपत्ति आदि खा-पकाकर नष्ट करना। जैसे—लाखों रुपये की संपत्ति वह दो वर्षों में चाट गया। ५. पशुओं का प्रेमपूर्वक किसी के शरीर पर बराबर जीभ फेरना। जैसे—कुत्ते का अपने पिल्ले या मालिक का हाथ चाटना।
मुहा०—**चूमना चाटना** = बार-बार प्रेमपूर्वक चुंबन करना।
६. कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना। जैसे—ऊनी कपड़े कीड़े चाट गये।

चाटपुट—पुं० दे० 'चाचपुट'।

चाटा—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चाटी] १. वह बरतन जिसमें कोल्हू का पेरा हुआ रस इकट्ठा होता है। नाँद। २. मिट्टी का बड़ा और मोटे दल का मटका। जैसे—अचार या आटे का चाटा (या चाटी)।

चाटी—पुं० [हिं० चटशाला में का चट] चेला। शिष्य। जैसे—चेले-चाटी।
स्त्री० [हिं० चाटा] मिट्टी का एक प्रकार का मटका। छोटा चाटा।

चाटु—पुं० [सं० √चट् (भेदन करना)+ञुण्] १. बहुत ही प्रिय और मीठी बात। मधुर वचन। २. किसी बड़े को केवल प्रसन्न करने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिसमें उसकी कुछ प्रशंसा या बड़ाई हो। खुशामद। चापलूसी।

चाटुक—पुं० [सं० चाटु+कन्] मीठी बात।

चाटुकार—पुं० [स० चाटु √कृ (करना)+अण्, उप० स०] १. खुशामद करनेवाला व्यक्ति। चापलूस। २. सोने के तार में पिरोई हुई मोतियों की माला।

चाटुकारी—स्त्री० [सं० चाटुकार+हिं० (प्रत्य०)] झूठी प्रशंसा या खुशामद करने का काम। चापलूसी। चाटु।

चाटुता—स्त्री० [सं० चाटु] खुशामद। चापलूसी।

चाटु-पटु—वि० [स० त०] १. चाटुकार। खुशामदी। २. भंड़। भाँड।

चाटु-लोल—वि० [स० त०] चाटुकार।

चाटूक्ति—स्त्री० [चाटु-उक्ति, कर्म०स०] चाटुता से भरी हुई बात। खुशामद या चापलूसी की बात।

चाड़†—स्त्री० = चाँड़।
†स्त्री० = चढ़ाई।

चाड़ना—स० = चाँड़ना। उदा०—कुचगिरि चढ़ि अति थकित ह्वै चली डीठि मुख-चाड़। —बिहारी।

चाड़िला—वि० = चाँड़िला (चाँड़)।

चाड़ी†—स्त्री० [सं० चाटु] किसी की अनुपस्थिति में पीठ पीछे की जानेवाली निंदा। चुगली।
क्रि० प्र०—खाना।

चाड़ू—पुं० = चाटुकार। उदा०—मान करत रिस माने चाड़ू।—जायसी।

चाढ़—स्त्री० [हिं० चाह से] १. इच्छा। चाह। २. अनुराग। प्रेम।
†स्त्री० [हिं० चढ़ना] चढ़ाई।

चाढ़ना—स० १.=चढ़ना। २. =चढ़ाना।

चाढ़ा—वि० [हिं० चढ़ना या चढ़ाना] १. ऊपर चढ़ा या चढ़ाया हुआ। २. जिसकी प्रतिष्ठा या मर्यादा बहुत बढ़ाई गई हो।

वि० [हिं० चाँड़] १. प्रिय। प्यारा। २. प्रेमी।

पुं० दे० 'चाढ़ी'।

चाढ़ी—पुं० [हिं० चाढ़] १. चाहने वाला। इच्छुक। २. किसी पर आसक्त होने या प्रेम करनेवाला। अनुरक्त। प्रेमी। उदा०—देखत ही जुस्याम भए चाढ़ी।—सूर।

चाणक—पुं० [सं० चाणक्य] १. चालाकी। होशियारी। २. धूर्त्तता। चालबाजी। उदा०–साच का सबद सोना की रेख निगुरां कौं चाणक सगुरां कौं उपदेस।—गोरखनाथ।

चाणक्य—पुं० [सं०चणक+ष्यञ्] १. वह जो चणक ऋषि के वंश या गोत्र का हो। २. अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य और चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधान मंत्री विष्णुगुप्त (कौटिल्य) का एक नाम।

चाणूर—पुं० [सं०√चण् (शव्द करना)+ऊरण] कंस का एक मल्ल जो कृष्ण के हाथों मारा गया था।

चातक—पुं० [सं० √चत् (माँगना)+णवुल्–अक] [स्त्री० चातकी] १. पपीहा पक्षी जो वर्षा-काल में बहुत बोलता है। विशेष दे० 'पपीहा'। २. रहस्य संप्रदाय में, मन।

* वि० =याचक।

चातकनी*—स्त्री० = चातकी।

चातकानन्दन—पुं०[सं० चातक-आ √नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु—अन] १. वर्षा काल। २. बादल। मेघ।

चातर—पुं० [हिं० चादर ?] मछली पकड़ने का बड़ा जाल। २. षड्यंत्र।

वि० =चातुर (चतुर)।

चातुर—वि० [सं० चतुर+अण्] जो आँखों से दिखाई दे। नेत्र-गोचर।

पुं० [चतुर्+अण्] १. चार पहियों की गाड़ी। २. मसनद।

वि० [सं० चतुर] १. चतुर। होशियार। २. चालाक। धूर्त्त। ३. खुशामदी। चापलूस। (क्व०)

चातुरई*—स्त्री० = चतुराई।

चातुरक—वि०, पुं० [सं० चातुर+कन्] =चातुर।

चातुरक्ष—पुं० [सं० चतुरक्ष+अण्] १. चार पासों का खेल। २. छोटा गोल तकिया।

चातुरता—स्त्री० = चतुरता।

चातुरिक—पुं० [सं० चातुरी+ठक्—इक] सारथी। रथवान।

चातुरी—स्त्री० [सं० चतुर+ष्यञ्–ङीष्, यलोप] १. चतुरता। व्यवहार-दक्षता। होशियारी। २. चालाकी। धूर्त्तता। ३. निपुणता।

चातुर्थक—वि० [सं० चतुर्थ+ठक्—क] हर चौथे दिन आने, घटने या होनेवाला। चौथिया।

पुं० चौथिया ज्वर।

चातुर्थिक—वि० [सं० चतुर्थ+ठक्–इक] = चातुर्थक।

चातुर्दश—पुं० [सं० चतुर्दशी+अण्] राक्षस।

वि०

१. चतुर्दशी संबंधी। २. जो चतुर्दशी को उत्पन्न हुआ हो।

चातुर्भद्र(क)—पुं० [सं० चतुर्भद्र+अण्] १. चारों पदार्थ, यथा—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। २. वैद्यक में, ये चार ओषधियाँ—नागर मोथा, पीपल (पिप्पली), अतीस और काकड़ासिंगी। कोई-कोई चक्रदत्त के अनुसार इन चार चीजों को भी चातुर्भद्र कहते हैं—जायफल, पुष्कर-मूल, काकड़ा सिंगी और पीपल।

चातुर्महाराजिक—पुं० [सं० चतुर्महाराजिक+अण्] १. विष्णु। २. गौतम बुद्ध का एक नाम।

चातुर्मास—वि०[सं०चतुर्मास+अण्] १. चार महीनों में संपन्न होनेवाला। २. चार महीनों का।

चातुर्मासिक—वि० [सं० चतुर्मास+ठक्—इक] चार महीनों में होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि)।

चातुर्मासी—स्त्री० [सं० चतुर्मास+अण्–ङीप्] पूर्णमासी।

वि० [हिं०] चौमासे का।

चातुर्मास्य—पुं० [सं० चतुर्मास+ण्य] १. चार महीनों में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। २. वर्षा ऋतु के चार महीनों में होनेवाला एक प्रकार का पौराणिक व्रत। चौमासा।

चातुर्य्य—पुं० [सं० चतुर+ष्यञ्] = चतुरता।

चातुर्वर्ण्य—पुं० [सं० चतुर्वर्ण+ष्यञ्] १. हिंदुओं के ये चारों वर्ण,—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। २. चारों वर्णों के पालन के लिए विहित धर्म। जैसे—ब्राह्मण का धर्म यजन, याजन, दान, अध्यापन, अध्ययन और प्रतिग्रह, क्षत्रिय का धर्म बाहुबल से प्रजा-पालन आदि।

वि० चारों वर्णों में होने अथवा उनसे संबंध रखनेवाला।

चातुर्विद्य—वि० [सं० चतुर्विद्या+ष्यञ्] चारों वेदों का ज्ञाता।

पुं० चारों वेद।

चातुर्होत्र—पुं० [सं० चतुर्होतृ+अण्] [वि० चातुर्होत्रिय] चार होताओं द्वारा संपन्न होनेवाला यज्ञ।

चात्र—पुं०[सं०√चाय् (देखना)+ष्ट्रन्] अग्नि-मंथन यंत्र का एक अवयव जो बारह अंगुल लंबा और खैर की लकड़ी का होता था।

चात्रण—पुं०=चात्र।

चात्रिक—पुं०=चातक। उदा०—चात्रिक भइउ कहत पिउ पिऊ।—जायसी।

चात्वाल—पुं० [सं०√चत् (याचना)+ वालञ्] १. हवन-कुंड। २. वेदी। ३. कुश। दर्भ। ४. गड्ढा।

चादर—स्त्री०[फा०] १. कपड़े का वह आयताकार टुकड़ा जिसे सोते समय लोग नीचे बिछाते अथवा ऊपर ओढ़ते हैं। २. उक्त आकार-प्रकार का वह टुकड़ा जिसे स्त्रियाँ धड़ पर लपेटती तथा उसके कुछ अंश से सिर ढकती हैं; और जो प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि का सूचक होता है। **मुहा०— (किसी का) चादर उतारना**=अपमानित या अप्रतिष्ठित करना। नष्ट करना। **चादर रहना**=कुल या परिवार की मर्यादा रक्षित रहना। प्रतिष्ठा का बना रहना। **चादर से बाहर पर फैलाना**=अपनी बिसात, योग्यता या शक्ति से अधिक काम या व्यय करना। **चादर हिलाना**=युद्ध में शत्रुओं से घिरे हुए सैनिकों का आत्म-समर्पण का संकेत करने के लिए कपड़ा हिलाना। युद्ध रोकने का झंडा दिखाना। ३. स्त्रियों के ओढ़ने का उक्त प्रकार का कपड़ा जो उनके सधवा या सौभाग्यवती होने का सूचक होता है।

मुहा०—(किसी स्त्री को) चादर ओढ़ाना=किसी विधवा स्त्री को पत्नी बनाकर अपने घर में रखना।

४. किसी धातु का बहुत बड़ा आयताकार और पतला पत्तर। जैसे—टीन, पीतल या शीशे की चादर। ५. ऊपर से गिरते या बहते हुए पानी की वह धारा जिसकी चौड़ाई अधिक और मोटाई कम हो। ६. बढ़ी हुई नदी के वेगपूर्ण प्रवाह में स्थान-स्थान पर पानी का वह फैलाव जो बिलकुल समतल होता है और जिसमें भँवर या हिलोरा नहीं होता। ७. फूलों आदि की बनी हुई वह लंबी-चौड़ी और चौकोर रचना जो चँदोए, चादर आदि के रूप में किसी धार्मिक या पूज्य स्थान पर चढ़ाई जाती है। (मुसलमान) जैसे—किसी मजार पर चादर चढ़ाना। ८. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें यथेष्ट लंबाई और चौड़ाई में फुलझड़ियाँ झड़ती हैं। झरना।

चादर छिपौवल—स्त्री० [हिं०] लड़कों का एक खेल जिसमें वे किसी लड़के के ऊपर चादर डालकर लड़कों से उसका नाम पूछते हैं। जो लड़का ठीक नाम बता देता है, वह चादर से ढके हुए लड़के को स्त्री बनाकर ले जाता है।

चादरा—पुं०[हिं० चादर] पुरुषों के ओढ़ने-बिछाने की बड़ी चादर।

चानक†—क्रि० वि०=अचानक।

पुं०=चाणक्य।

चानणा†—पुं०=चाँदना (प्रकाश)।

चानन†—पुं० १.=चाँदना। २.=चंदन।

चानस†—पुं० [अं० चांस] ताश का एक प्रकार का खेल।

चाप—पुं०[सं० चप+अण्] १. धनुष। २. ज्यामिति में वृत्त की परिधि का कोई भाग। (आर्क) ३. मेहराब।

स्त्री० [हिं० चापना=दबाना] १. चापने की क्रिया या भाव। दाब। २. पैरों की आहट।

पुं० [अं० चॉप] आलू, बेसन आदि की बनी तथा घी आदि में तली हुई नमकीन टिकिया।

चापक—पुं०[सं० चाप से] धनुष की डोरी। उदा०—क्रीड़त गिलोल जब लालकर, मार जानि चापक सुमन।—चन्दवरदाई।

चाप-कर्ण—पुं०[प० त०] ज्यामिति में वह सरल रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गई हो। जीवा। (कॉर्ड)

चाप-जरीब—पुं०[हिं० चाप+अ०जरीब] जमीन की लंबाई की एक नाप या मान।

चापट—स्त्री०[हिं० चिपटना] १. चोकर। २. भूसी।

†वि०=चौपट।

चापड़—वि० [सं० चिपिट, हिं० चिपटा, चपटा] १. जो दबकर चिपटा हो गया हो। २. जो कुचले जाने के कारण जमीन के बराबर हो गया हो। ३. सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट। चौपट।

पुं० वह कड़ी जमीन जो अच्छी तरह जोती न गई हो। जैसे—मत बो चापड़, उजड़ेगा टापर।—खेतिहरों की कहावत।

चाप-दंड—पुं०[उपमि०स०] वह डंडा जिससे कोई वस्तु आगे की ओर ढकेली जाय।

चापना—स० [सं० चप्; प्रा० चप्पइ; बँ० चांपा; उ० चापुआ; गु० चांपवूं मरा० चाँपणे] ऊपर से जोर लगाकर भार या रखकर दबाना। चाँपना २. छाती से लगाकर दबाना। आलिंगन करते समय किसी को दबाना।

चापर†—वि०=चापड़।

चापल—पुं०[सं० चपल+अण्] चंचलता। चपलता।

वि० चंचल। चपल।

चापलता—स्त्री०=चपलता।

चापलूस—वि० [फा०] [भाव० चापलूसी] जो किसी के सामने उसकी आवश्यकता से अधिक या झूठी प्रशंसा करे। खुशामदी। चाटुकार।

चापलूसी—स्त्री० [फा०] वह झूठी प्रशंसा जो केवल दूसरों को प्रसन्न और अनुकूल करने के लिए की जाय। झूठी बड़ाई या प्रशंसा से भरी बात। खुशामद। चाटुता।

चापी (पिन्)—पुं० [सं० चाप+इनि] १. वह जो हाथ में चाप अर्थात् धनुष रखता हो। धनुर्धर। २. शिव। ३. धनु राशि।

चापू—पुं०[देश०] हिमालय के आस-पास के प्रदेशों में होनेवाली एक प्रकार की छोटी बकरी जिसके बाल बहुत लंबे और मुलायम होते और कंबल आदि बनाने के काम आते हैं।

चाफंद—पुं०[हिं० चौ=चार+फंदा] मछलियाँ फँसाने का एक प्रकार का जाल।

चाब—स्त्री० [सं० चव्य] १. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषध के काम में आती है। इसकी लकड़ी और जड़ से कपड़े आदि रँगने के लिए एक प्रकार का पीला रंग निकाला जाता है। २. उक्त पौधे के छोटे गोल फल जो औषध के रूप में काम आते हैं।

स्त्री० [हिं० चाबना] १. चाबने की क्रिया या भाव। २. डाढ़। चौभड़। ३. कुछ स्थानों में घर में बच्चा होने के समय का एक उत्सव या रीति।

स्त्री०[सं० चतुः] १. चार की संख्या। (डिं०) २. कपड़ा। वस्त्र। (डिं०)

†पुं० [सं० चप] एक प्रकार का बाँस।

चाबन†—पुं०=चबेना।

चाबना—स० [सं० चर्वण, प्रा० चब्बण] १. दाँतों से कोई कड़ी चीज खाते समय दबाना। चबाना। जैसे—कुत्ते का हड्डी चाबना। २. खूब पेट भरकर भोजन करना। ३. अनुचित रूप से किसी का धन खाते चलना।

चाबस—अव्य० दे० 'शाबाश'।

चाबी—स्त्री०[हिं० चाप=दबाव; पुर्त्त० चेव] १. धातु आदि का वह उपकरण जिससे ताला खोला तथा बंद किया जाता है। कुंजी। ताली। २. किसी यंत्र में लगा हुआ वह अंग जिसे घुमाकर उसकी कमानी इसलिए कसी जाती है कि वह यंत्र चलता रहे या चलने लगे। जैसे—घड़ी या बाजे की चाबी।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

३. कोई ऐसा पच्चड़ जिसे दो जुड़ी हुई वस्तुओं की संधि में ठोंक देने से जोड़ दृढ़ होता हो।

क्रि० प्र०—भरना।

४. कोई ऐसी युक्ति या साधन जिसके प्रयोग से किसी को कुछ करने में प्रवृत्त किया जा सके। जैसे—उनकी चाबी तो हमारे हाथ में है।

चाबुक—पुं० [फा०] १. चमड़े, रस्सी आदि को बटकर बनाया हुआ कोड़ा जिसका प्रयोग किसी को मारने के लिए होता है। छोटा, पतला कोड़ा। जैसे—भले घोड़े को एक चाबुक बहुत है।

पद—चाबुक सवार। (देखें)

२. लाक्षणिक रूप में कोई ऐसी बात जिससे कोई कार्य करने की उत्तेजना उत्पन्न हो।

चाबुक-सवार—पुं०[फा०] [भाव० चाबुक-सवारी] घोड़े पर सवार होकर उसे विविध प्रकार की चालें सिखाने अथवा उसकी चाल दुरुस्त करनेवाला व्यक्ति।

चाबुक-सवारी—स्त्री०[फा०] चाबुक सवार का काम, पद या पेशा।

चाभ—स्त्री० दे० 'चाब'।

चाभना—स०=चाबना।

चाभा—पुं०[हिं० चावना] बैलों का एक रोग जिसमें उनकी जीभ पर काँटे उभड़ आते हैं और उनसे कुछ खाया या चबाया नहीं जाता।

चाभी—स्त्री०=चाबी।

चाम—पुं०[सं०चर्म] चमड़ा। खाल। उदा०—मानवता की मूर्त्ति गढ़ोगे तुम सँवार कर चाम।—पंत।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=(क) चमड़े के सिक्के चलाना। (ख) अपने प्रताप, बल, वैभव आदि से उसी प्रकार जबरदस्ती अनोखे और असाधारण कार्य करना, जिस प्रकार निजाम नामक भिश्ती ने हुमायूँ को डूबने से बचाकर फल-स्वरूप थोड़े समय के लिए राज्याधिकार प्राप्त करके चमड़े के सिक्के चलाये थे। (ग) व्यभिचार से धन कमाना। (बाजारू)

चाम-चोरी—स्त्री० [हिं० चाम+चोरी] गुप्त रूप से किया जानेवाला पर-स्त्री-गमन।

चामड़ी—स्त्री०=चमड़ी।

चामर—पुं०[सं० चमरी+अण्] १. चँवर। मोरछल। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं।

चामर-ग्राह—पुं०[सं० चामर√ग्रह् (ग्रहण करना)+अण्, उप० स०] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चामर-ग्राहिक—पुं० [सं० चामरग्राहिन्+कन्]=चामर-ग्राह।

चामर-ग्राही (हिन्)—पुं० [सं० चामर√ग्रह्+णिनि, उप०स०]=चामर-ग्राह।

चामर पुष्प—पुं०[ब०स०] १. सुपारी का पेड़। २. आम का पेड़। ३. केतकी। ४. काँस।

चामर-व्यजन—पुं० [ष० त०] चँवर। मोरछल।

चामरिक—पुं० [सं० चामर+ठन्–इक] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चामरी—स्त्री०[सं० चामर+अच्+ङीप्] सुरागाय।

चामिल—स्त्री०दे० 'चंबल'।

चामीकर—पुं० [सं० चमीकर+अण्] १. सोना। स्वर्ण। २. कनक। धतूरा।

वि० [चामीकर+अण्] १. सोने का बना हुआ। २. सोने की तरह का। सुनहला।

चामीकराचल—पुं०[चामीकर-अचल, ष० त०] सुमेरु पर्वत।

चामुंडा—स्त्री०[सं० चमू√ला (आदान)+क, पृषो० सिद्धि] एक देवी जिन्होंने शुंभ-निशुंभ के चंड और मुंड नामक दो सेनापति दैत्यों का वध किया था। कापालिनी। भैरवी।

चाम्य—पुं०[सं०√चम् (खाना)+ण्यत्] खाद्य पदार्थ।

चाय—स्त्री०[चीनी चा] १. एक प्रसिद्ध पौधा या झाड़ जिसकी पत्तियाँ १०-१२ अंगुल लंबी, ३-४ अंगुल चौड़ी और दोनों सिरों पर नुकीली होती हैं। २. उक्त पौधे की सुगंधित और सुखाई हुई पत्तियाँ जिन्हें उबालकर पीने की चाल अब संसार भर में फैल गई है। ३. उक्त पत्तियों का उबालकर तैयार किया हुआ पेय जिसमें चीनी, दूध आदि भी मिलाया जाता है।

†पुं०=चाव(चाह)। उदा०—मौन वदन उर चाय।—नागरीदास।

चायक—पुं० [सं० √चि (चयन करना) ण्वुल्—अक] चुननेवाला। चयन करनेवाला।

वि० [हिं० चाय=चाव या चाह] चाहने या प्रेम करनेवाला।

चायदान—पुं०[हिं० चाय+फा० दान [करवे की आकृति का एक प्रकार का चीनी-मिट्टी या धातु का एक प्रसिद्ध पात्र जिसमें चाय का गरम पानी रक्खा जाता है।

चायदानी—स्त्री०=चायदान।

चाय-पानी—पुं० [हिं० पद] ऐसा जल-पान जिसके साथ पेय रूप में चाय भी हो।

चार—वि०[सं० चत्वारि, प्रा० चत्तार, चत्तारी, चत्तारो, अप० उ० बँ० मि० चारि, गु० पं० मरा० चार] १. जो गिनती में तीन से एक अधिक हो। दो का दूना। तीन और एक। जैसे—चार घोड़ों की गाड़ी।

मुहा०—(किसी से) चार आँखें करना=किसी के सामने होकर उसकी ओर देखना। आँखें मिलाना। **(किसी चीज में) चार चाँद लगना**=प्रतिष्ठा, शोभा, सौंदर्य आदि चौगुनी होना या बहुत बढ़ जाना। **चार पगड़ी करना**=जहाज का लंगर डालना। जहाज ठहराना। (लश०) **चार पाँच करना**= इधर-उधर की बातें या हीला-हवाला करना। **चारों खाने चित गिरना**=(क) इस प्रकार चित गिरना जिससे हाथ-पाँव फैल जायँ। (ख) पूरी तरह से या सब प्रकार से ऐसा परास्त होना कि फिर कुछ भी करने योग्य न हो। **चारों फूटना**=चारों आँखें (दो हिये की और दो ऊपर की) फूटना अर्थात् इतना दुर्बुद्धि या मत्त होना कि बुरा-भला कुछ दिखाई न दे।

पद—चार गुरदेवाला=बहादुर और साहसी। जीवटवाला। **चारों ओर**=सभी ओर। हर तरफ। **चारों धाम**=हिंदुओं के ये चारों बड़े तीर्थ या पुण्य धाम—जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारका, और बदरिकाश्रम। **चारों पदार्थ**=हिन्दुओं में ये चारों काम्य पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। **चारों मग्ज** =हकीमी नुसखों में, इन चारों चीजों के बीजों की गिरियाँ—ककड़ी, कद्दू, खरबूजा और खीरा।

२. कई एक। बहुत से। अनेक। जैसे—चार आदमी जो कहें, वह मान लेना चाहिए।

मुहा०—चार के कंधों पर चढ़ना या चलना=मर कर अरथी आदि पर चढ़ना और कुछ लोगों की सहायता से कब्रिस्तान या श्मशान की ओर जाना।

३. गिनती में कुछ कम या थोड़े। कतिपय। कुछ। जैसे—(क) चार

बातें उन्होंने कहीं तो चार मैंने भी सुनाईं। (ख) अभी चार दिन की तो बात है कि वे यहाँ आकर नौकर हुए हैं।

पद—चार-तार=थोड़े से अच्छे कपड़े और गहने। जैसे—जब से मियाँ का रोजगार चला है, तब से बीबी के पास चार-तार दिखाई देने लगे हैं, नहीं तो पहले क्या था। (स्त्रियाँ) **चार दिन की चाँदनी**=थोड़े समय तक ठहरनेवाला वैभव या सुख-भोग। जैसे—उनकी यह सारी रईसी बस चार दिन की चाँदनी है। **चार पैंसे**=थोड़ा धन। कुछ रुपया-पैसा। उदा०—जब पास में चार पैंसे रहेंगे, तभी नाते-रिश्ते के लोग पूछेंगे। पुं० चार का सूचक अंक या संख्या। चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४।

*†वि०=चारु।

पुं०[सं०√चर् (चलना)+घञ्। चर+अण् (अर्थानुसार ज्ञातव्य)] [भू० कृ० चारित, वि० चारी] १. चलने की क्रिया या भाव। गति। चाल। २. आचार। ३. रसम। रीति। जैसे—द्वारचारी। ४. कारागार। जेलखाना। ५. गुप्तचर। जासूस। ६. दास। सेवक। ७. भोजन करना। खाना। भक्षण। ८. चिरौंजी। पियाल। ९. वह विष जो पशु-पक्षियों आदि को फँसाने या मारने के लिए बनाया जाता है।

चार आइना—पुं०[फा० चार+आइनः=लोह] एक प्रकार का कवच या बकतर जिसमें लोहे की चार पटरियाँ जड़ी रहती हैं जिनमें से एक छाती पर, एक पीठ पर और दो दोनों बगलों में (भुजाओं के नीचे) रहती हैं।

चारक—पुं० [सं० √चर्+णिच्+ण्वुल्–अक। चार+कन्। √चर्+ण्वुल्–अक (अर्थानुसार ज्ञातव्य)] १. चलाने या संचार करानेवाला। संचारक। २. गति। चाल। ३. गाय-भैंस चरानेवाला। चरवाहा। ४. चिरौंजी। पियाल। ५. गुप्त-चर। जासूस। ६. सहचर। साथी। ७. घुड़सवार। ८. वह ब्रह्मचारी या ब्राह्मण जो बराबर इधर-उधर घूमता-फिरता रहे। ९. आदमी। मनुष्य। १०. चरक ऋषि का ग्रंथ या सिद्धान्त। ११. वह कारागार जिसमें अभियुक्त तब तक रखा जाता है, जब तक उसके अभियोग का निर्णय न हो जाय। हवालात।

चार-कर्म (न्)—पुं०[ष० त०] चर अर्थात् जासूस का काम। जासूसी। (एस्पायनेज)

चारकाने—पुं० बहु०[हिं० चार+काना=मात्रा] चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना—पुं०[फा० चारखानः] १. आड़ी और खड़ी धारियों या रेखाओं की ऐसी रचना जिसमें बीच-बीच में चौकोर खाने पड़ते हों। २. वह कपड़ा जिसमें उक्त प्रकार के चौकोर खाने बने हों।

चारग-मारग—पुं०[सं० चार+मार्ग] आचरण और व्यवहार की धूर्त्तता। चालबाजी और ढंग।

चार-चक्षु (स्)—पुं०[ब० स०]राजा, जो अपने चरों या जासूसों के द्वारा सब बातें देखता है।

चार-चश्म—वि०[फा०] [भाव० चार-चश्मी] १. निर्लज्ज। बेहया। २. जिसमें शील, सौजन्य आदि का अभाव हो। बेमुरौवत। ३. कृतघ्न। नमक-हराम।

चारज—पुं० दे० 'चार्ज'।

चारजामा—पुं०[फा० चारजामः]चमड़े या कपड़े का वह टुकड़ा जो सवारी करने से पहले घोड़े की पीठ पर कसा जाता है। जीन।

चारटा—स्त्री० [सं०√चर् (चलना)+णिच्+अटन्—टाप्] पद्मचारिणी वृक्ष। भूम्यामलकी।

चारटिका—स्त्री०[सं०√चर्+णिच्+अटन्—ङीष्+कन्—टाप्, ह्रस्व] नली नामक गंध-द्रव्य।

चारटी—स्त्री० [सं० √चर्+णिच्+अटन्-ङीष्]=चारटा।

चारण—पुं० [सं०√चर् (चलना)+णिच्+ल्यु—अन] १. एक जाति जो मध्ययुग में राजाओं के दरबार में उनकी तथा उनके पूर्वजों की कीर्ति या यश का वर्णन गाकर करती थी। वंदीजन। भाट। २. उक्त जाति का व्यक्ति। ३. वह जो बराबर इधर-उधर घूमता रहता हो।

चार-तूल—पुं०[स०त०] चँवर।

चारदा†—पुं०[हिं० चार+दा (प्रत्य०)] १. चौपाया। २. कुम्हारों की बोली में उनका गधा।

चारदीवारी—स्त्री०[फा०] १. सुरक्षा अथवा सीमा निर्धारण की दृष्टि से किसी मकान या स्थान के चारों ओर बनाई जानेवाली ऊँची दीवार। २. नगर के चारों ओर का परकोटा। प्राचीर। शहर-पनाह।

चारन†—पुं०=चारण।

चारना†—स० १.=चराना। २.=चलाना।

चार-ना-चार—क्रि० वि० [फा०] विवश होकर। मजबूर या लाचार होकर।

चार-पथ—पुं०[ब०स०] राज-मार्ग।

चारपाई—स्त्री०[हिं० चार+पाया] चार पायोंवाला वह प्रसिद्ध उपकरण जो बीच में बाध, सुतली, निवाड़ आदि से बुना रहता है और जिस पर लोग सोते हैं। छोटा पलंग। खाट।

पद—चारपाई का कान=चारपाई का वह अंग जो उसके टेढ़े हो जाने के कारण एक ओर ऊपर उठ आया हो।

मुहा०—चारपाई धरना, पकड़ना या लेना=(क) चारपाई पर लेटना। (ख) इतना बीमार होना कि चारपाई से उठ न सके। अत्यन्त रुग्ण होना। **चारपाई पर पड़ना**=चारपाई पकड़ना। **चारपाई सेना**=रोग आदि के कारण अधिक समय तक चारपाई पर पड़े रहना। **चारपाई से पीठ लगना**=चारपाई पकड़ना। **चारपाई से लगना**=चारपाई पकड़ना।

चारपाया—पुं०[फा० चारपायः] चार पैरोंवाला पशु। चौपाया।

चार-पाल—पुं०[सं० चार√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण्] गुप्तचर। जासूस।

चार-पुरुष—पुं०[कर्म०स०] गुप्त-चर। भेदिया।

चार-प्रचार—पुं०[ष०त०] किसी काम के लिए जासूस नियुक्त करना। (प्राचीन भारतीय राजतंत्र)

चार-बंद—पुं०[फा०] १. शरीर के अंग या अवयव। २. शरीर के अंगों की गाँठें या जोड़।

चार-बाग—पुं०[फा०] १. चौकोर बगीचा। २. ऐसा बाग या बगीचा जिसमें फलोंवाले वृक्ष हों। ३. एक प्रकार का बड़ा रूमाल या शाल जिसके चारों बराबर भाग अलग-अलग रंगों के और अलग-अलग प्रकार के बेल-बूटों से युक्त होते हैं।

चार-बालिश—पुं०[फा०] एक प्रकार का बड़ा गोल तकिया। मसनद।

चार-भट—पुं०[स० त०] वीर सैनिक।

चार-मेख—स्त्री० [हिं० +फा०] मध्ययुग का एक प्रकार का दंड या सज़ा जिसमें अपराधी को जमीन पर लेटाकर उसके दोनों हाथ और दोनों पैर चार खूंटों से बाँध दिये जाते थे।

चारयारी—स्त्री० [हिं० चार+फा० यार] १. चार मित्रों का दोस्ताना। २. चार मित्रों की गोष्ठी या मंडली। ३. मुसलमानों में सुन्नियों का वह संप्रदाय जो मुहम्मद के चार मित्रों और सहायकों (अबूबकर, उसर, उस्मान और अली) को खलीफा मानता है। ३. मुसलमानी शासनकाल का चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर मुहम्मद साहब के उक्त चारों मित्रों या साथियों के नाम अंकित हैं। और जिसका प्रचार कई तरह के टोने-टोटकों के लिए होता है।

चारवा—पुं०=चौपाया।

चार-वायु—स्त्री० [मध्य०स०] गरम हवा। लू।

चारांतरित—पुं० [सं० चार-अंतरित तृ० त०] गुप्तचर।

चारा—पुं० [हिं० चरना] १. गाय, बैल आदि पशुओं के खाने के लिए दी जानेवाली, पत्ती, घास आदि। २. चिड़ियों, मछलियों आदि को फँसाने अथवा जीवित रखने के लिए खिलाई जानेवाली वस्तु। ३. निकृष्ट भोजन। (व्यंग्य) ४. लाक्षणिक अर्थ में, किसी को फँसाने अथवा अपना काम निकालने के लिए दूसरे को दिया जानेवाला प्रलोभन।

क्रि० प्र०—डालना।—फेंकना।

पुं० [फा० चारः] १. इलाज। २. उपाय। ३. युक्ति।

चाराजोई—स्त्री० [फा०] दूसरे से पहुँची हुई या पहुँचनेवाली हानि के प्रतिकार या बचाव के लिए न्यायालय या हाकिम से की जानेवाली याचना। नालिश। फरियाद। जैसे—अदालत से चाराजोई करना।

चारायण—पुं० [सं० चर+फक्—आयन] काम-शास्त्र के एक आचार्य।

चारासाज—वि० [फा० चारः साज] [भाव० चारासाजी] विपत्ति के समय सहायता देकर दूसरे का काम बनानेवाला।

चारि—वि०, पुं०=चार।

चारिका—स्त्री० [सं० चारक+टाप्, [illegible]] सेविका। दासी।

चारिटी—स्त्री०=चारटी।

चारिणी—स्त्री० [सं० √चर्+णिच्+[illegible]—ङीप्] [illegible]रुणी वृक्ष।

वि० सं० चारी (चारिन्) का स्त्री० रूप। जैसे—ब्रह्मचारिणी, व्रतचारिणी।

स्त्री० [हिं० चारण] चारण ज़ाति की स्त्री।

चारित—भू० कृ० [सं०√चर्+णिच+क्त] १. जो चलाया गया हो। चलाया हुआ। गतिमान किया हुआ। २. भभके आदि से उतारा या खींचा हुआ। जैसे—चारित आसव।

पुं० आरा (लकड़ी चीरने का)।

†पुं०=चारा (पशुओं का भोजन)।

चारितार्थ्य—पुं० [सं०चरितार्थ+ष्यञ्] चरितार्थ होने की अवस्था या भाव। चरितार्थता।

चारित्र—पुं० [सं० चरित्र+अण्] १. किसी कुल या वंश में परम्परा से चला आया हुआ आचार-व्यवहार। कुल की रीति। २. अच्छा चाल-चलन। सदाचार। ३. रीति-व्यवहार। ५. मरुत् गणों में से एक। ४. स्त्री का पातिव्रत या सतीत्व। ६. संन्यास। (जैन)

चारित्रवती—स्त्री० [सं० चारित्र+मतुप्, वत्व, ङीप्] योग में एक प्रकार की समाधि।

चारित्र-विनय—पुं० [तृ०त०] आचरण या चरित्र द्वारा नम्र और विनीत भाव-प्रदर्शन। शिष्टाचार। नम्रता।

चारित्रा—स्त्री० [सं० चारित्र+अच्—टाप्] इमली।

चारित्रिक—वि० [सं० चरित्र+ठक्—इक] १. चरित्र-संबंधी। २. अच्छे चरित्रवाला।

चारित्रिकता—स्त्री० [सं० चारित्रिक+तल्—टाप्] १. अच्छा चरित्र। २. चरित्र-चित्रण की कला या कौशल।

चारित्री (त्रिन्)—वि० [सं० चारित्र+इनि] अच्छे चरित्रवाला। सदाचारी।

चारित्र्य—पुं० [सं० चरित्र+ष्यञ्] चरित्र। आचरण।

चारिम—वि० १.=चौथा। उदा०—जामिनि चारिम पहर पाओल।—विद्यापति। २.=चारों।

चारी (रिन्)—वि० [सं० (पूर्वपद के साथ होने पर)√चर् (चलना)+णिनि] एक विशेषण जो समस्त पदों के अंत में लग कर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) चलने या विचरण करनेवाला। जैसे—व्योम-चारी। (ख) कोई विशिष्ट आचरण या क्रिया करनेवाला। जैसे—व्यभिचारी। (ग) पालन करनेवाला। जैसे—ब्रह्मचारी, व्रतचारी।

पुं० १. पैदल चलनेवाला सिपाही। २. साहित्य में, संचारी भाव। ३. नृत्य में एक प्रकार की क्रिया।

चारु—वि० [सं०√चर् (चलना)+उण्] आकर्षक और मनोहर। सुन्दर।

पुं० १. बृहस्पति। २. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३. कुंकुम। केसर।

चारुक—पुं० [सं० चारु+कन्] सरपत के बीज जो दवा के काम आते हैं।

चारु-केशरा—स्त्री० [ब० स०] १. नागरमोथा। २. सेवती का फूल।

चारु-गर्भ—पुं० [ब० स०] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारु-गुप्त—पुं० [कर्म० स०] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारु-चित्र—पुं० [ब० स०?] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चारुता—स्त्री० [सं० चारु+तल्—टाप्] चारु होने की अवस्था, गुण या भाव। मनोहरता। सुन्दरता।

चारुत्व—पुं० [सं० चारु+त्व] चारुता।

चारु-दर्शन—वि० [ब० स०] [स्त्री० चारु-दर्शना] जो देखने में बहुत सुंदर हो। रूपवान्।

चारुदेष्ण—पुं० [सं०] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र जिन्होंने निकुंभ आदि दैत्यों के साथ युद्ध किया था। (हरिवंश)

चारु-धामा—स्त्री० [ब० स०] इंद्र की पत्नी, शची।

चारु-धारा—स्त्री० [ब० स०] इंद्र की पत्नी, शची।

चारु-घिष्ण—पुं० [सं०] ग्यारहवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक।

चारु-नालक—पुं० [ब० स०, कप्] कोकनद। लाल कमल।

चारु-नेत्र—वि० [ब० स०] [स्त्री० चारुनेत्रा] सुन्दर नेत्रोंवाला।

पुं० एक प्रकार का हिरन।

चारु-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] प्रसारिणी लता। गंधपसार।

चारु-पुट—पुं० [ब० स०] ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक। (संगीत)

चारु-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अंगूर या दाख की लता।

चारु-लोचन—वि० [ब०स०] [स्त्री० चारु-लोचना] सुन्दर नेत्रोंवाला। पुं० एक प्रकार का हिरन।

चारु-वर्धना—स्त्री० [सं० चारु√वृध् (वृद्धि करना)+णिच्+ल्युट-अन–टाप्] सुन्दर स्त्री। सुन्दरी।

चारु-शिला—स्त्री०[कर्म०स०] एक प्रकार का रत्न।

चारु-शील—वि०[ब.स०] [स्त्री० चारु-शीला] उत्तम शील या स्वभाव-वाला।

चारु-सार—पुं०[कर्म०स०] सोना। स्वर्ण।

चारुहासिनी—स्त्री०[सं० चारुहासिन्+ङीप्] १. सुन्दर रूप से हँसने-वाली स्त्री। २. वैताली नामक छंद का एक प्रकार या भेद।

चारुहासी (सिन्)—वि० [सं० चारु√हस् (हँसना)+णिनि][स्त्री० चारुहासिनी] १. सुंदर रूप से हँसनेवाला। मनोहर मुसकानवाला। २. जो हँसता हुआ सुन्दर तथा भला जान पड़े। पुं० वैताली छंद का एक भेद।

चारेक्षण—पुं० [सं० चार-ईक्षण, ब०स०] राजा।

चारोली—स्त्री०[देश०] फलों आदि की गुठली।

चार्चा—स्त्री०[सं०] प्राचीन भारत में एक प्रकार की सड़क जो छः हाथ चौड़ी होती थी।

चार्चिक—वि०[सं० चर्चा+ठक्–इक] वेद-पाठ में कुशल।

चार्चिक्य—पुं०[सं० चर्चिका+ष्यञ्] १. शरीर में अंगराग का लेपन। २. अंगराग। ३. वेद-पाठ-संबंधी कौशल या निपुणता।

चार्ज—पुं०[अं०] १. किसी काम या पद का भार। कार्य-भार। २. रक्षण आदि के लिए की जानेवाली देख-रेख। ३. किसी पर लगाया जानेवाला अभियोग। ४. किसी कार्य या सेवा का पारिश्रमिक। परिव्यय। ५. एक-दम से किया जानेवाला आक्रमण।

चार्टर—पुं०[अं०] १. वह लेख जिसमें शासन की ओर से किसी को कोई स्वत्व या अधिकार देने की बात लिखी रहती है। सनद। अधिकार-पत्र। २. कुछ शर्त्तों पर जहाज या और कोई बड़ी सवारी किराये पर देना या लेना।

चार्म—वि० [सं० चर्मन्+अण्] १. चर्म-संबंधी। २. चमड़े का बना हुआ। ३. चमड़े से मढ़ा हुआ।

चार्मिक—वि०[सं० चर्मन्+ठक्-इक] चमड़े से बना हुआ।

चार्य—पुं०[सं० चर+ष्यञ्] १. चर होने की अवस्था या भाव। चरता। २. दूतत्व। ३. जासूसी। ४. [√चर्+ण्यत्] एक प्राचीन वर्ण संकर जाति। (व्रात्य वैश्य की सवर्णा स्त्री से उत्पन्न)

चार्वाक—पुं०[सं० चारु-वाक, ब०स०, पृषो० सिद्धि०] १. एक प्रसिद्ध अनीश्वरवादी और नास्तिक विद्वान्। बार्हस्पत्य। (चार्वाक दर्शन के रचयिता) २. उक्त विद्वान् द्वारा चलाया हुआ मत या दर्शन जो 'लोकायत' कहलाता है। चार्वाक दर्शन। ३. एक राक्षस जिसने कौरवों के मारे जाने पर ब्राह्मण वेश में युधिष्ठिर की राजसभा में जाकर उनको राज्य के लोभ से भाई-बन्धुओं को मारने के लिए धिक्कारा था और जो उस सभा के ब्राह्मणों के हाथों मारा गया था।

चार्वाक-दर्शन—पुं०[मध्य०स०] चार्वाक नामक प्रसिद्ध विद्वान् का बनाया हुआ दर्शन-ग्रन्थ जिसमें ईश्वर, पर-लोक, पुनर्जन्म और वेदों के मत का खंडन किया गया है।

चार्वाक-मत—पुं०[ष०त०] चार्वाक का चलाया हुआ मत या संप्रदाय।

चार्वी—स्त्री०[सं० चारु+ङीप्] १. बुद्धि। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३. चमक। दीप्ति। ४. सुन्दर स्त्री। सुन्दरी। ५. कुबेर की पत्नी का नाम। ६. दारु हल्दी।

चाल—स्त्री०[हिं० चलना या सं० चार] १. चलने की क्रिया या भाव। गति। २. वह अवस्था या क्रिया जिसमें कोई जीव या पदार्थ किसी दिशा में अथवा किसी रेखा पर बराबर अपना स्थान बदलता हुआ क्रमशः आगे बढ़ता रहता है। चलने, दौड़ने आदि के समय निरंतर आगे बढ़ते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—चलते या दौड़ते आदमी की चाल, डाक या सवारी गाड़ी की चाल। ३. पैर उठाने और रखने के ढंग के विचार से किसी के आगे बढ़ते रहने का प्रकार, मुद्रा या रूप। जैसे—(क) खरीदने से पहले घोड़े की चाल देखी जाती है। (ख) वह झूमती (या लड़खड़ाती) हुई चाल से चला आ रहा था। ४. गति में लगनेवाले समय के विचार से, चलने की क्रिया या भाव। जैसे—कछुए या च्यूँटी की चाल। ५. किसी आदमी या चीज के चलते रहने की दशा में उसकी गति-विधि आदि की सूचक ध्वनि या शब्द। आहट।

मुहा०—(किसी की) चाल मिलना=किसी के गतिमान होने, चलने-फिरने आदि की आहट, ध्वनि या शब्द सुनाई पड़ना। जैसे—(क) आज तो पिछवाड़ेवाले मकान में कुछ आदमियों की चाल मिल रही है; अर्थात् ऐसा जान पड़ता है कि उसमें कुछ लोग आकर ठहरे हैं। (ख) सन्ध्या हो जाने पर जंगल में पशु-पक्षियों की चाल नहीं मिलती।

६. बहुत से आदमियों या जीवों के चलने-फिरने के कारण होनेवाली चहल-पहल, धूम-धाम, हलचल या हो-हल्ला। जैसे—कूच की आज्ञा मिलते (या नगाड़ा बजते) ही सारी छावनी में चाल पड़ गई।

क्रि० प्र०—पड़ना।

७. फलित ज्योतिष के अनुसार अथवा और किसी प्रकार के सुभीते के विचार से कहीं से चलने या प्रस्थान करने के लिए स्थिर किया हुआ दिन, मुहूर्त्त या समय। चाला। उदा०—पोथी काढ़ि गवन दिन देखें, कौन दिवस है चाला।—जायसी। ८. किसी पदार्थ (जैसे—यंत्र आदि) अथवा उसके किसी अंग की वह अवस्था जिसमें वह बराबर इधर-उधर आता-जाता, घूमता या हिलता-डोलता रहता है। जैसे—इंजन के पुरजों की चाल; घड़ी के लंगर की चाल। ९. तत्परता, वेग आदि के विचार से किसी काम या बात के होते रहने की अवस्था या गति। जैसे—(क) 'आज-कल कार्यालय (या ग्रंथ-सम्पादन) का काम बहुत धीमी चाल से हो रहा है। (ख) इमारत (या नहर) के काम की चाल अब तेज होनी चाहिए। १०. किसी चीज की बनावट, रचना, रूप आदि का ढंग या प्रकार। ढब। तर्ज। जैसे—नई चाल का कुरता या टोपी; नई चाल की थाली या लोटा। ११. कोई काम करने का ढंग, प्रकार या युक्ति। जैसे—अब उसे किसी और चाल से समझाना पड़ेगा। १२. ऐसा ढंग, तरकीब या युक्ति जिसमें कुछ विशिष्ट कौशल भी मिला हो। विशिष्ट प्रकार का उपाय। तरकीब। जैसे—अब तो किसी चाल से यहाँ से अपना छुटकारा कराना चाहिए। १३. किसी को धोखा देने या बहकाने के लिए की जानेवाली चालाकी से भरी तरकीब या युक्ति। जैसे—हम तुम्हारी चाल समझते हैं।

मुहा०—(किसी से) चाल चलना=किसी को धोखा देने या भ्रम में रखने

की तरकीब या युक्ति करना। जैसे—तुम कहीं चाल चलने से बाज नहीं आते। **(किसी की) चाल में आना या फँसना**=किसी के धोखे या बहकावे में आना। जैसे—वह सीधा आदमी तुम्हारी चाल में आ गया। **पद—चाल-बाज, चालबाजी।** (देखें स्वतन्त्र पद)। १४. किसी काम, चीज या बात के चलनसार या प्रचलित रहने की अवस्था या भाव। जैसें—आज-कल इस तरह के गहनों (या साड़ियों) की चाल नहीं है। १४. नैतिक दृष्टि से आचरण, व्यवहार आदि करने का ढंग, प्रकार या स्वरूप। जैसें—(क) तुम अपने लड़के की चाल सुधारो। (ख) यदि तुम्हारी यही चाल रही तो तुम्हारा कहीं ठिकाना न लगेगा। **पद—चाल-चलन, चाल-ढाल।** (देखें स्वतन्त्र पद) १६. चौसर, ताश, शतरंज आदि खेलों में अपना दाँव या बारी आने पर गोटी, पत्ता, मोहरा आदि आगे बढ़ाने या सामने लाने की क्रिया। जैसे—(क) हमारी चाल हो चुकी; अब तुम्हारी चाल है। (ख) तुम्हारी इस चाल ने सारी बाजी का रुख पलट दिया। १७. मुद्रणकला में, छापने के लिए यथा-स्थान बैठाये हुए अक्षरों के संबंध में वह स्थिति, जब बीच में कोई नया पद, वाक्य या शब्द घटाये-बढ़ाये जाने के कारण कुछ अक्षरों या शब्दों के आगे-पीछे खिसकाने या हटाने-बढ़ाने की आवश्यकता होती है। १८. यंत्रों के पुरजों के संबंध में, वह स्थिति जिसमें वे किसी त्रुटि या दोष के कारण कुछ आगे-पीछे या इधर-उधर हट-बढ़कर चलते हैं और इसी लिए या तो कुछ खड़-खड़ करते या यंत्र के ठीक तरह से चलने में बाधक होते हैं। जैसे—इस आगेवाले चक्कर (या पहिये) में कुछ चाल आ गई है।

स्त्री० [हिं० चालना = छानना] छलनी आदि में रखकर कोई चीज चालने या छानने की क्रिया, ढंग या भाव।

पुं० [सं०√चल् (चलना) +ण; णिच्+अच् वा] १. घर के ऊपर का छप्पर या छाजन। २. छत। पाटन। ३. स्वर्णचूड़ पक्षी। ४. आज-कल बड़े नगरों में वह बहुत बड़ा मकान जो गरीबों अथवा साधारण स्थिति के लोगों को किराये पर देने के लिए बनता है। जैसे—बम्बई में उसने सारी उमर एक ही चाल में रहकर बिता दी।

चालक—वि० [सं०√चल् (चलना) +णिच्+ण्वुल्–अक] [स्त्री० चालिका] १. चलानेवाला। जो चलाता हो। २. चलने के लिए प्रेरित करनेवाला। जैसे—चालक शक्ति। ३. चालबाज। धूर्त्त। उदा०—घर घालक, चालक, कलहप्रिय कहियत परम परमारथी।—तुलसी।

पुं० १. वह व्यक्ति जो यानों, इंजनों आदि को गतिमान करता हो। २. संवाहक (दे०)। ३. वह हाथी जो अंकुश का दबाव या नियंत्रण न माने। उद्दंड और नटखट हाथी। ४. नृत्य में भाव बताने और सुंदरता लाने के लिए हाथ हिलाने की क्रिया।

चालकुंड—पुं० [सं०] चिल्का नाम की झील जो उड़ीसा में है।

चाल-चलन—पुं० [हिं० चाल+चलन] नैतिक दृष्टि से देखा जाने-वाला आचरण या व्यवहार। चरित्र। मनुष्य के आचरण और व्यवहार करने का ढंग जिसका मूल्यांकन नैतिक दृष्टि से किया जाता है।

चाल-ढाल—स्त्री० [हिं० चाल+ढाल] १. किसी व्यक्ति के चलने-फिरने का ढंग या मुद्रा। रंग-ढंग। २. किसी व्यक्ति का ऊपरी आचरण और व्यवहार। ३. किसी चीज की बनावट या रचना का ढंग या प्रकार। ४. चाल-चलन।

चालणी—स्त्री० = चलनी (छलनी)।

चालन—पुं० [सं०√चल् (चलना) +णिच्+ल्युट्+अन] १. चलाने की क्रिया या भाव। परिचालन। २. चलने की क्रिया या भाव। गति। ३. चलनी। छाननी।

पुं० [हिं० चालना] १. भूसी या चोकर जो आटा चालने के बाद बच रहता है। २. बड़ी चलनी।

चालनहार—वि० [हिं० चालन+हार (प्रत्य०)] १. चलानेवाला। २. ले जाने या ले चलनेवाला।

वि० [हिं० चलना] चलनेवाला।

चालना—स० [सं० चालन] १. किसी को चलने में प्रवृत्त करना। चलाना। २. हिलाना-डुलाना। ३. एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ४. बहू को उसके मैके से विदा कराके लाना। उदा०— पाखहू न बीत्यो चालि आयो हमें पीहरतें।—शिवराम। ५. कार्य या उसके भार का निर्वाह या वहन करना। परिचालन करना। उदा०—चालत सब राज-काज आयसु अनुभरत।—तुलसी। ६. चर्चा या प्रसंग उठाना। ७. आटे को छलनी में रखकर इधर-उधर हिलाना जिसमें महीन आटा नीचे गिर जाय और भूसी या चोकर छलनी में ऊपर रह जाय। छानना। ८. बहुत-सी चीजों में से छाँटकर कोई अच्छी चीज अलग करना या निकालना। उदा०—जाति, वर्ण, संस्कृति समाज से मूल व्यक्ति को फिर से चालो।—पंत।

अ० = चलना।

पद—चालन हार। (देखें)

पुं० [स्त्री० चालनी] चलना (बड़ी चलनी)।

चालनीय—वि० [सं०√चल् (चलना) +णिच्+अनीयर्] चलाये या हिलाये जाने के योग्य। जो चलाया या हिलाया-डुलाया जा सके।

चालबाज—वि० [हिं० चाल+फा० बाज] [भाव० चालबाजी] स्वार्थ साधन के लिए व्यवहार आदि में कपट या छल से भरी हुई चालें चलनेवाला। धूर्त्तता से अपना काम निकाल लेनेवाला।

चालबाजी—स्त्री० [हिं० चालबाज] १. चालबाज होने की अवस्था या भाव। २. व्यवहार आदि में छल-पूर्ण चालें चलने की क्रिया या भाव। चालाकी। छल। धोखेबाजी।

चाला—पुं० [हिं० चाल] १. चलने या प्रस्थान करने की क्रिया या भाव। २. दुल्हिन का पहली बार अपने मायके से ससुराल अथवा ससुराल से मायके जाने की क्रिया। उदा०—चाले की बातें चलीं सुनत सखिन के टोला।—बिहारी। ३. वह दिन या समय जो किसी दिशा में रवाना होने के लिए शुभ समझा जाता है। जैसे-रविवार को पश्चिम का चाला नहीं है बल्कि सोमवार को है। ४. एक प्रकार का औपचारिक कृत्य जो मृतक की षोड़शी आदि हो जाने पर रात के समय किया जाता है। ५. दे० 'चलौआ'।

चालाक—वि० [फा०] [भाव० चालाकी] १. कौशलपूर्ण ढंग से कोई काम करनेवाला। होशियार। २. व्यवहार-कुशल। सूझ-बूझ वाला। समझदार। ३. चालबाज। धूर्त्त।

चालाकी—स्त्री० [फा०] १. चालाक होने की अवस्था या भाव। चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। २. चालबाजी। धूर्त्तता।

मुहा०—चालाकी खेलना = धूर्त्तता-पूर्ण चाल चलना।

३. कौशल या होशियारी से मिली हुई युक्ति।

चालान—पुं० =चलान। (देखें)

चालानदार—पुं० =चलानदार।

चालिया—पुं० [हिं० चाल+इया (प्रत्य०)] धूर्त्तता-पूर्ण चालें चलनेवाला। चालबाज।

चालिस—वि० =चालीस।

चाली—वि० [हिं० चाल] १. चालबाज। २. नटखट। पाजी। ३. चंचल।

†पुं० [?] केंचुआ।

†स्त्री० [हिं० चाल=छाजन] १. नाव के ऊपर का छप्पर या छाजन। २. घोड़े की जीन।

†पुं० [हिं० चलाना] व्यक्तियों का वह दल जो अपने काम से अलग कर दिया या हटा दिया गया हो।

चालीस—वि० [सं० चत्वारिंशत्, पा० चत्तालीस] जो गिनती में तीस से दस अधिक हो। जैसे—चालीस दिन।

पुं० उक्त की सूचक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४०।

चालीसवाँ—वि० [हिं० चालीस] गिनती में जिसका स्थान उनतालीसवें के बाद पड़ता हो। जो क्रम में ४० के अंक या संख्या पर पड़ता हो।

पुं० मुसलमानों का एक कृत्य जो किसी के मर जाने के चालीसवें दिन किया जाता है। चहलुम।

चालीस-सेरा—वि० [हिं० चालीस+सेर] १. (घी) विशुद्ध या अमिश्रित। २. निरा मूर्ख। (व्यक्ति)

चालीसा—पुं० [हिं० चालीस] [स्त्री० चालीसी] १. चालीस वस्तुओं का समूह। जैसे—चालीसा चूरन (जिसमें चालीस चीजें पड़ती हैं।) २. चालीस पदों का संकलन या समूह। जैसे—हनुमान-चालीसा। ३. चालीस दिनों का समय। चिल्ला। ४. मृत्यू के चालीसवें दिन होनेवाला कृत्य। चालीसवाँ। (मुसल०)

चालुक्य—पुं० [?] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रतापी राजवंश जिसने ईसवी ५वीं शताब्दी से ईसवी १२वीं शताब्दी तक राज्य किया था।

चालू—वि० [हिं० चलना] १. जो चल रहा हो। जो ठीक प्रकार से काम कर रहा हो। जैसे—चालू घड़ी। २. जो चलन या रिवाज में हो। प्रचलित। जैसे—चालू प्रथा, चालू सिक्का। ३. जो प्रयोग या कार्य रूप में लाया जा रहा हो। ४. चलता हुआ। चालाक। जैसे—चालू आदमी।

†पुं० =चाला।

चाल्य—वि० [सं० √चल् (चलना)+णिच्+यत्] जो चलाया जा सके। चालनीय।

चाल्ह—स्त्री० =चेल्हा (मछली)।

चाल्ही—स्त्री० [हिं० चलाना?] नाव में वह स्थान जहाँ मल्लाह बैठकर नाव खेता या चलाता है।

चाँय चाँय—[अनु०] चिड़ियों का या चिड़ियों का सा शोर।

चावंड—पुं० =चामुंड।

चाव—पुं० [हिं० चाह] १. किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति होनेवाली अनुरागजन्य और स्नेहपूर्ण ऐसी अभिलाषा या लालसा जिसमें यथेष्ट उत्कंठा भी मिली हो। अरमान। उदा०—चित्र केतु पृथ्वीपति राव। सुत हित भयो तासु हिय चाव।—सूर।

मुहा०—चाव निकालना =अभिलाषाएँ या लालसाएँ जी खोलकर पूरी करना।

२. अनुराग। प्रीति। स्नेह। ३. उत्कंठा। ४. प्रिय या प्रेम-पात्र के साथ किया जानेवाला लाड़-प्यार। दुलार। उदा०—बिछुड़े सजन मिलाय दे, मैं कर लूँ मन के चाव।—गीत।

पद—चाव-चोचले =नाज-नखरे।

५. उत्साह और उमंग से भरा हुआ आनंद।

चावड़ा—पुं० [?] १. एक प्रकार के राजपूत। चावण। २. खत्रियों की एक उपजाति या वर्ग।

चावड़ी—स्त्री० [देश०] यात्रियों के टिकने या ठहरने का स्थान। पड़ाव।

चावण—पुं०]देश०] गुजरात का एक प्रसिद्ध और प्राचीन राजपूत वंश जिसने कई शताब्दियों तक गुजरात में राज्य किया था। इस वंश की राजधानी अन्हिलवाड़ा में थी। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय सोमनाथ चावण राजा के ही अधिकार में था।

चावना*—स०=चाहना।

चावर+—पुं०=चावल।

चावल—पुं० [सं० तंडुल?] १. धान के बीजों के अन्दर के दाने जिनकी गिनती प्रसिद्ध अन्नों में है।

विशेष—इनका उबाला या पकाया हुआ रूप ही भात कहलाता है।

मुहा०—चावल चबवाना =जिन लोगों पर कोई चीज चुराने का संदेह हो, उन्हें जादू-टोने के रूप में इस उद्देश्य से कच्चे चावल चबवाना कि जो चोर होगा उसके मुँह से थूकने पर खून निकलेगा।

२. उबाला या पकाया हुआ चावल। भात। ३. बीजों के छोटे दाने जो किसी प्रकार खाने के काम में आवें। जैसे—तिन्नी या साँवें के चावल। ४. लगभग एक चावल की तौल जो रत्ती के आठवें भाग के रूप में मानी जाती है।

पद—चावल भर =(क) रत्ती के आठवें भाग के बराबर। (ख) बहुत ही थोड़ा।

चाशनी—स्त्री० [फा०] १. खाने से पहले चखकर देखी जानेवाली चीज या उसका कोई अंश। खाने की चीज का नमूना। २. गुड़, चीनी, मिसरी आदि के घोल को पकाकर गाढ़ा किया हुआ वह रूप जिसमें दवाएँ, पकवान, मिठाइयाँ आदि पागी जाती है। शीरा।

मुहा०—चाशनी देखना =शीरा पकाने के समय यह देखना कि चाशनी ठीक तरह से तैयार हो गई है या नहीं।

३. किसी चीज का वह थोड़ा-सा अंश जो किसी दूसरी चीज में उसका स्वाद बढ़ाने के लिए मिलाया जाय। जैसे—पीने के तमाकू में मिलाई हुई खमीर की चाशनी। ४. किसी चीज या बात का ऐसा आनंद, मजा या स्वाद जो उस बात के प्रति लालसा उत्पन्न करे। चस्का। जैसे—जब तुम्हें अफीम (या शराब) की चाशनी मिल गई है, तब तुम उसे जल्दी नहीं छोड़ोगे। ५. चाँदी, सोने आदि का वह थोड़ा-सा अंश जो सुनारों को गहने बनाने केलिए देने से पहले इसलिए अपने पास रख लिया जाता है कि जब गहना बन जाय तब उससे मिलाकर देखा जा सके कि सुनार ने उसमें किसी तरह का खोट तो नहीं मिलाया है।

चाशनीगीर—पुं० [फा०] वह कर्मचारी जो नवाबों और बादशाहों के यहाँ उनके खाद्य पदार्थ पहले चखकर देखने के लिए नियुक्त होता था।

चाष—पुं० [सं० √चष् (खाना) +णिच् +अच्] १. नीलकंठ पक्षी। २. २. चाहा नामक पक्षी।

†पुं० =चक्षु (नेत्र)।

चास—स्त्री० [हिं० चासा] १. खेत जोतने की क्रिया या भाव। जोताई। २. जोता हुआ खेत।

स्त्री० [फा० चाशनी] किसी चीज की जाँच या परख के लिए उसमें से निकाला हुआ कुछ अंश। चाशनी।

चासना—अ० [हिं० चास] जोतना।

चासनी—स्त्री० =चाशनी।

चासा—पुं० [देश०] १. उड़ीसा की एक जाति जो खेती-बारी करती है। २. किसान। खेतिहर। ३. हल चलाने या जोतनेवाला। हलवाहा।

चाह—स्त्री० [सं० उत्साह, प्रा० उच्छाह] १. वह मनोवेग जो मनुष्य को कोई ऐसी वस्तु प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है जिससे उसे संतोष या सुख मिल सकता हो। जैसे—मुझे आपके दर्शनों की चाह थी। २. प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी को चाहने की अवस्था या भाव। अनुराग। प्रेम। जैसे—दिल को तुम्हारी ही चाह है। ३. चाहे जाने की अवस्था या भाव। आवश्यकता। गरज। जरूरत। जैसे—जिसकी यहाँ चाह है, उसकी वहाँ भी चाह है। ४. इस बात की जानकारी या परिचय कि किसे किस चीज की आवश्यकता या चाह है। उदा०—सब की चाह लेइ दिन राती।—जायसी। ५. दे० 'चाव'।

पुं० [फा०] कूआँ। कूप।

†स्त्री०=चाय।

*स्त्री० [हिं० चाल = आहट] १. खबर। समाचार। उदा०—को सिंहल पहुँचावै चाहा।—जायसी। २. टोह। ३. गुप्त भेद। रहस्य।

चाहक—वि० [हिं० चाहना] १. चाहनेवाला। २. अनुराग या प्रेम करनेवाला।

चाहत—स्त्री० [हिं० चाहना] किसी को अनुराग तथा उत्कंठापूर्वक चाहने की अवस्था, क्रिया या भाव। चाह। प्रेम।

चाहना—स० [हिं० चाह] १. ऐसी वस्तु की प्राप्ति अथवा ऐसे कार्य या बात की सिद्धि की इच्छा करना जिससे संतोष या सुख मिल सकता हो। जैसे—कौन नहीं चाहता कि मैं धनी हो जाऊँ। २. किसी से कोई चीज लेने या कोई कार्य कर देने की विनयपूर्ण प्रार्थना करना। जैसे—हम तो आपकी की कृपा-दृष्टि चाहते हैं। ३. अधिकार या अनधिकारपूर्वक किसी का या किसी से कुछ लेने की उत्कट या उग्र इच्छा व्यक्त करना। जैसे—मेरा भाई तो मेरी जान लेना चाहता है। ४. अनुराग, प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी व्यक्ति को अपने पास और सुख से रखने की अभिलाषा या कामना करना। जैसे—माता अपने छोटे पुत्र को बहुत चाहती है। ५. श्रृंगारिक क्षेत्र में, स्त्री के मन में किसी पुरुष के प्रति अथवा प्रतिक्रमात् कामवासना से युक्त अनुराग या प्रेम का भाव होना। जैसे—राजा अपनी छोटी रानी को सब से अधिक चाहता था। ६. अनुराग, चाह या प्रेम से युक्त होकर किसी की ओर ताकना या देखना। जोहना। उदा०—अली अली की ओट ह्वै चली भली बिधि चाहि।—बिहारी। ७. साधारण रूप से देखना। दृष्टिपात करना। उदा०—चालिया चंदाणी मग चाहि।—प्रिथीराज।

स्त्री० चाहने की अवस्था या भाव। जैसे—आप की चाहना तो यहाँ भी है।

चाहा—पुं० [सं० चाष] एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका सारा शरीर फूलदार और पीठ सुनहरी होती है। लोग मांस के लिए इसका शिकार करते हैं। यह कई प्रकार का होता है। जैसे-चाहा करमाठी =गर्दन सफेद बाकी सब अंग काले। चाहा चुक्का =चोंच और पैर लाल; बाकी सब अंग खाकी; चाहा लमगोड़ा =लंबी और चितकबरी चोंच वाला।

†पुं० [हिं० चाहना] [स्त्री० चाही] वह जिसे चाहा या जिससे प्रेम क्रिया जाय। चहेता। प्रिय।

चाहि*—अव्य० [सं० चैव =और भी?] बनिस्बत। से। किसी की तुलना में अधिक या बढ़कर। उदा०—कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा।—तुलसी।

चाहिए—अव्य० [हिं० चाहना] १. आवश्यकता या जरूरत है। जैसे—हमें वह पुस्तक चाहिए। २. उचित, मुनासिब या वाजिब है। जैसे—आगे से तुमको सँभलकर चलना चाहिए।

चाही—वि० [फा० चाह =कूआँ] (खेत) जो कूएँ के पानी से सींचा जाता हो।

चाहे—अव्य० [हिं० चाहना] १. 'यदि जी चाहे' का संक्षिप्त रूप। यदि जी चाहे। यदि मन में आवे। जैसे-(क) चाहे यहाँ रहो, चाहे वहाँ। (ख) जो चाहे सो करो। २. दो में से किसी एक वरण करने के प्रसंग में, जो इच्छा हो। जो चाहते हो। जैसे—चाहे कपड़ा ले लो, चाहे रुपया। ३. जो कुछ हो सकता हो, वह सब; या उनमें से कुछ। जैसे—चाहे जो हो; तुम वहाँ जरूर जाओ।

चिआँ—पुं० =चीयाँ (इमली का बीज)।

चिउँटा—पुं० =च्यूँटा। (देखें)

चिउँटी—स्त्री० = च्यूँटी। (देखें)

चिकारा—पुं० =चिकारा।

चिंगट—पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० चिंगटी] झींगा मछली।

चिंगड़ा—पुं० [सं० चिंगट] झींगा (मछली)।

चिंगना—पुं० [सं० चिंगट?] १. मुरगी आदि का छोटा बच्चा। २. छोटा बच्चा।

चिंगारी—स्त्री० = चिनगारी।

चिंगुड़ना—अ० [हिं० सिकुड़ना] १. सूखने आदि के कारण ऊपरी तल में झुर्रियाँ या शिकन पड़ना। जैसे—शरीर का चमड़ा चिंगुड़ना। २. एक ही स्थिति में रहने अथवा तनाव या दबाव पड़ने और फलतः खून का दौरा रुकने के कारण नसों आदि का इस प्रकार तनना या सिकुड़ना कि वह अंग सहसा उठाया या फैलाया न जा सके। ३. संकुचित होना। सिकुड़ना। जैसे—कपड़ा चिंगुड़ना।

चिंगुड़ा—पुं० [हिं० चिंगुड़ना] बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण किसी अंग के चिंगुड़ने की स्थिति जिसमें वह अंग फैलाने से जल्दी न फैले।

क्रि० प्र०—लगना।

पुं० [?] एक प्रकार का बगुला।

चिंगुरना—अ०=चिंगुड़ना।

चिंगुरा—पुं०=चिंगुड़ा।

चिंगुला—पुं०[देश०] १. बच्चा। बालक। २. पक्षियों आदि का बच्चा।

चिंघाड़—स्त्री०[सं० चीत्कार] १. हाथी के बहुत जोर से चिल्लाने या बोलने का शब्द। २. किसी के सहसा उत्तेजित होकर बहुत जोर से चिल्लाने की ध्वनि या शब्द। (क्व०)

चिंघाड़ना—अ० [सं० चीत्कार] १. हाथी का बहुत जोर से चिल्लाना या बोलना। २. उक्त प्रकार से सहसा जोर की ध्वनि या शब्द करना। चिल्लाना। चीखना।

चिंघाना—अ०=चिंघाड़ना।

चिंचा—स्त्री० [सं० चिम्√चि (चयन)+ड–टाप्] १. इमली। २. इमली का बीज। चीआँ।

चिंचाटक—पुं० [सं० चिंचा√अट् (गमनादि+)ण्वुल्—अक] चेंच नामक साग।

चिंचाम्ल—पुं०[सं० चिंचा-अम्ल, उपमि०स०] चूका नामक साग।

चिंचिका—स्त्री०[सं० चिंचा+कन्–टाप्, ह्रस्व, इत्व] घुँघची। गुंजा।

चिंचिनी—स्त्री०[सं०] १. इमली का पेड़। २. इमली की फली।

चिंची—स्त्री०[सं० चिंच+ङीष्] गुंजा। घुँघची।

चिंचोटक—पुं० [सं० चिंचाटक, पृषो० सिद्धि] चेंच नाम का साग।

चिंजा—पुं० [सं० चिरंजीव] [स्त्री० चिंजी] १. पुत्र। बेटा। २. बालक। लड़का। ३. जीव-जंतुओं का छोटा बच्चा।

चिंड—पुं०[सं०] नृत्य का एक प्रकार या भेद।

चिंत—स्त्री० १.=चिंतन। २.=चिंता।

चिंतक—वि० [सं०√चिंत् (सोचना-विचारना)+णिच्+ण्वुल्–अक] १. चिंतन या मनन करनेवाला। २. चिंता करनेवाला। ३. चाहने तथा सोचनेवाला। जैसे—शुभचिंतक।

चिंतन—पुं०[सं०√चिंत्+णिच्+ल्युट्–अन] [वि० चिंतनीय, चिंतित, चिंत्य] १. कोई बात समझने या सोचने के लिए मन में बार-बार किया जानेवाला उसका ध्यान या विचार। मन ही मन किया जानेवाला विवेचन। गौर। जैसे—यह विषय अच्छी तरह चिंतन करने के योग्य है। २. किसी वस्तु या विषय का स्वरूप जानने या समझने के लिए मन में रह-रहकर होनेवाला उसका ध्यान या स्मरण। जैसे—ईश्वर चिंतन में समय बिताना।

चिंतना—स्त्री० [सं०√चिंत्+णिच्+युच्–अन, टाप्] १. चिंतन करने की क्रिया या भाव। चिंतन। २. चिंता। फिक्र। ३. सोच-विचार। *स० १. किसी का चिंतन या ध्यान करना। २. किसी बात की चिंता या फिक्र करना। ३. किसी विषय का विचार करना। गौर करना। सोचना-समझना।

चिंतनीय—वि०[सं√चिंत्+णिच्+अनीयर्] १. जिसका चिंतन किया जा सके या हो सके। जो चिंतन का विषय हो सके। २. जिसके संबंध में चिंता, फिक्र या सोच करना आवश्यक अथवा उचित हो। जो चिंता का विषय हो। जैसे—रोगी की दशा चिंतनीय है।

चिंतवन*—पुं०=चिंतन।

चिंता—स्त्री०[सं०√चिंत्+णिच्+अङ्–टाप्] १. चिंतन करने का कार्य या भाव। किसी बात या विचार का मन में होनेवाला ध्यान या स्मरण। मन में उठने और कुछ समय तक बनी रहनेवाली भावना। २. मन को विकल करने या विचलित रखनेवाली वह भावना जो कोई कष्ट या संकट उपस्थित होने या सामने आने पर उसका निवारण करने या उससे बचने के उपाय सोचने के संबंध में होती है। फिक्र। सोच। (वरी)

विशेष—साहित्य में तैंतीस संचारी भावों में से एक जिसके विभाव धन-हानि, वस्तु का अपहरण, निर्धनता आदि और अनुभाव उच्छ्वास, चिंतन, दुर्बलता, नत मुख होना आदि कहे गये हैं। और इसे वियोग की दस दशाओं में दूसरा स्थान दिया गया है।

३. किसी बात के महत्त्व का विचार। परवाह। (सदा नहिक रूप में) जैसे—तुम्हें इसकी क्या चिंता है!

मुहा०—(किसी बात की) चिंता लगना=चिंता का बराबर बना रहना। जैसे—तुम्हें तो दिन-रात खाने की चिंता लगी रहती है।

पद—कुछ चिंता नहीं=कुछ परवाह नहीं। खटके की कोई बात नहीं है। चिंता मत करो।

४. कोई ऐसी बात या विषय जिसके लिए चिंतन या फिक्र की जाती हो या की जानी चाहिए।

चिंताकुल—वि० [चिंता-आकुल, तृ०त०] चिंता से आकुल या उद्विग्न।

चिंता-जनक—वि०[ष०त०] १. चिंता उत्पन्न करनेवाला। जिसके कारण मन में चिंता हो। २. जिसकी अवस्था गंभीर या शोचनीय हो।

चिंतातुर—वि०[चिंता-आतुर, तृ०त०] चिंता से उद्विग्न या घबराया हुआ।

चिंतापर—वि०[चिंता-पर, ब०स०] जो चिंतन या चिंता में लगा हुआ या लीन हो।

चिंता-मणि—पुं०[स०त०] १. एक प्रसिद्ध कल्पित मणि या रत्न जिसके संबंध में कहा जाता है कि जिसके पास यह रहता है, उसकी सब आवश्यकताएँ आप से आप और तुरंत पूरी हो जाती हैं। २. कोई ऐसी चीज या तत्त्व जो किसी विषय की सभी आवश्यकताएँ और इच्छाएँ पूरी कर दे। ३. ब्रह्मा। ४. परमात्मा। ५. सरस्वती का एक मंत्र जो लड़के की जीभ पर इसलिए लिखा जाता है कि उसे खूब विद्या आवे। ६. एक बुद्ध का नाम। ७. घोड़े के गले की एक भौंरी जो शुभ मानी जाती है। ८. वह घोड़ा जिसके गले में उक्त भौंरी हो। ९. फलित ज्योतिष में यात्रा का एक योग। १०. वैद्यक में एक प्रकार का रस जो अभ्रक, गंधक, पारे आदि के योग से बनता है। ११. पुराणानुसार एक गणेश जिन्होंने कपिल के यहाँ जन्म लेकर महाबाहु नामक दैत्य से उस चिंतामणि रत्न का उद्धार किया था जो उसने कपिल से छीन लिया था।

चिंता-वेश्म (न्)—पुं०[ष०त०] गोष्ठी, मंत्रणा, विचार आदि करने का स्थान। मंत्रणागृह।

चिंता-शील—वि०[ब०स०] १. जो किसी बात की प्रायः या बहुत चिंता करता रहता हो: २. दे० 'चिंतन'-शील'।

चिंति—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

चिंतित—भू०कृ० [सं०√चिंत्+क्त] जो चिंता से विकल हो रहा हो। जिसे किसी बात की चिंता या फिक्र हो रही हो। चिंतायुक्त।

चिंतिति—स्त्री०[सं०√चिंत्+क्तिन्] चिंता।

चिंतोड़ी—स्त्री०[सं०=तिंतिड़ी, पृषो० सिद्धि] इमली।

चिंत्य—वि०[सं० चिंत्+ण्यत्] १. जिसके संबंध में चिंता करना आवश्यक या उचित हो। २. दे० 'चिंतनीय'।

चिंदी—स्त्री० [देश०] किसी चीज का बहुत ही छोटा टुकड़ा या धज्जी।

मुहा०—चिंदी चिंदी करना=किसी चीज को ऐसा तोड़ना-फोड़ना या

चीरना-फाड़ना कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायँ। धज्जियों के रूप में लाना। **हिंदी की चिंदी निकालना**=बहुत ही सूक्ष्म परन्तु व्यर्थ का तर्क करना या दोष निकालना।

चिंपा—पुं०[देश०] एक प्रकार का काला कीड़ा जो ज्वार, बाजरे, अरहर और तमाखू की फसल में लगकर उसे खा जाता है।

चिंपाजी—पुं०[अं० शिंपैंजी] अफ्रीका में होनेवाला एक प्रकार का बनमानुष जिसकी आकृति मनुष्य से बहुत मिलती-जुलती होती है। इसके सारे शरीर पर काले, घने और मोटे बाल होते हैं। यह प्रायः झुंड बनाकर रहता है।

चिउँटा—पुं०=च्यूंटा। (देखें)

चिउँटी—स्त्री०=च्यूँटी। (देखें)

चिउड़ा—पुं०=चिड़वा। (देखें)

चिउरा—पुं०=चिड़वा।

चिउली—स्त्री०[देश०] १. महुए की जाति का एक जंगली पेड़ जिसमें से एक प्रकार का तेल निकलता है जो मक्खन की तरह जम जाता है। और इसी लिए जो कहीं-कहीं घी में मिलाया जाता है। २. एक प्रकार का रंगीन रेशमी कपड़ा।

स्त्री०[सं० चिपिट, प्रा० चिविड़, चिविल] चिकनी सुपारी।

चिक—स्त्री०[तु० चिक] बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा। चिलमन।

पुं० मांस बेचनेवाला कसाई। बूचड़।

स्त्री०[अनु०] कमर, पीठ आदि में बल पड़ने के कारण सहसा उत्पन्न होनेवाला दर्द या चिलक।

पुं०=चेक (देयादेश)।

चिकट—वि०=चिक्कट।

चिकटना—अ० [हिं० चिकट] चिक्कट से युक्त होना। मैल जमने के कारण चिपचिपा होना।

चिकटा—वि०=चिक्कट।

चिकड़ी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। इस लकड़ी की कंघियाँ बहुत अच्छी बनती हैं।

चिकन—पुं०[फा०] एक प्रकार का सूती कपड़ा जिस पर सूई और डोरे से कढ़े हुए उभारदार फूल या बूटियाँ बनी होती हैं।

चिकनकारी—स्त्री० [फा०] कपड़े पर सूई-डोरे की सहायता से उभारदार फूल, बूटियाँ आदि काढ़ने या बनाने की कला या काम।

चिकनगर—पुं०[फा०] चिकन का काम करनेवाला कारीगर।

चिकनदोज—पुं० =चिकनगर।

चिकना—वि०[सं० चिक्कण, प्रा० चिक्कण्ण, गु० चिकोणु, मरा० चिक्कण] [वि० स्त्री० चिकनी] १. जिसका ऊपरी तल जरा भी ऊबड़-खाबड़ या खुरदरा न हो, बल्कि इतना समतल हो कि उँगली या हाथ फेरने से कहीं उभार न जान पड़े। जैसे—चिकना पत्थर, चिकनी लकड़ी। २. जिसका ऊपरी तल बहुत ही कोमल और बिलकुल सम हो। जिस पर पैर या हाथ बिना किसी बाधा या रुकावट के आगे बढ़ता या फिसलता जाय। जैसे—चिकनी ज़मीन, चिकनी मलमल। ३. जिसका ऊपरी तल या रूप बना सँवारकर बहुत ही मोहक और स्वच्छ किया गया हो। जैसे—तुम्हारा यह चिकना मुँह देखकर ही कोई तुम्हें नौकरी नहीं देगा। **मुहा०—चिकने घड़े पर पानी पड़ना**=अच्छी बातों का उसी प्रकार व्यर्थ सिद्ध होना जिस प्रकार चिकने घड़े पर पानी पड़ना इसलिए व्यर्थ सिद्ध होता है कि वह पानी तुरंत बहकर नीचे चला जाता है।

पद—चिकना घड़ा=(क) वह जिस पर उपदेश, दंड आदि का कुछ भी प्रभाव न पड़ता हो, फलतः निर्लज्ज या लापरवाह। (उक्त मुहावरे के आधार पर) **चिकना-चुपड़ा**=(क) घी, तेल आदि लगाकर अच्छी तरह चिकना और साफ किया हुआ। (ख) अच्छी तरह सजाया हुआ। (ग) ऊपर से देखने पर बहुत अच्छा जान पड़ने या प्रिय लगनेवाला। जैसे—चिकनी-चुपड़ी बातें।

४. जिस पर घी, चरबी, तेल या ऐसा ही और कोई स्निग्ध पदार्थ चुपड़ा या लगा हो। जिसका खुरदरापन या रुखाई किसी प्रकार दूर कर दी गई हो। ५. जिसका ऊपरी रूप केवल दिखाने के विचार से सँवारकर सुन्दर बनाया गया हो।

मुहा०—चिकना देखकर फिसल पड़ना=केवल वैभव, सजावट, सौंदर्य आदि देखकर मोहित होना। केवल ऊपरी रूप देखकर रीझना।

६. केवल दूसरों को प्रसन्न करने के लिए चिकनी-चुपड़ी अर्थात् मीठी और सुन्दर बातें कहनेवाला। खुशामदी। चाटुकार। ७. अनुराग, प्रेम या स्नेह करनेवाला। (क्व०)

पुं० घी, चरबी, तेल आदि चिकने पदार्थ। जैसे—इसमें चिकना बहुत अधिक पड़ा है।

चिकनाई—स्त्री०[हिं० चिकना+ई (प्रत्य०)] १. चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २. मन, व्यवहार आदि की सरसता या स्निग्धता। ३. घी, तेल आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाना—स०[हिं० चिकना] १. खुरदरापन दूर करके ऊपरी तल चिकना, सम या साफ करना। २. घी, तेल या और कोई चिकना पदार्थ लगा कर रूखापन दूर करना। ३. किसी प्रकार साफ और स्वच्छ करना या बनाना-सँवारना। ४. केवल अनुरक्त या प्रसन्न करने के लिए मीठी बातें कहना। ५. कोई बिगड़ी हुई बात बनाने के लिए बनावटी बातें कहना।

अ० १. चिकना होना। २. चिकने पदार्थ से युक्त होकर स्निग्ध बनना। ३. शरीर में कुछ चरबी भरने और ऊपर से सँवारे-सजाये जाने के कारण डील-डौल या रूप-रंग अच्छा निकलना या बनना। जैसे—जब से उनका रोजगार चला है, तब से बहुत कुछ चिकना गये हैं। ४. अनुराग, स्नेह आदि से युक्त होना। उदा०—ज्यों ज्यों रुख रूखो करति त्यों त्यों चित चिकनाय।—बिहारी।

चिकनापन—पुं०[हिं० चिकना+पन (प्रत्य०)] चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनाई। चिकनाहट।

चिकनावट†—स्त्री०[हिं० चिकना] १. चिकनी-चुपड़ी बातें कहने की अवस्था या भाव। २. बिगड़ा हुआ काम बनाने के लिए मीठी बातें कहने की क्रिया या भाव। जैसे—तुम्हारी यह चिकनावट हमें अच्छी नहीं लगती। ३. दे० 'चिकनाहट'।

चिकनाहट—स्त्री०[हिं० चिकना+हट (प्रत्य०)] चिकने होने की अवस्था या भाव। चिकनापन।

चिकनिया—वि०[हिं० चिकना] (व्यक्ति) जो प्रायः या सदा तेल-फुलेल आदि लगाकर और खूब बन-ठनकर रहता हो। छैला और बाँका। सज-

घजवाला और सुन्दर। उदा०—सूरदास प्रभु तजी कामरी अब हरि भए चिकनियाँ।—सूर।

चिकनी मिट्टी—स्त्री० [हिं० चिकनी+मिट्टी] १. एक प्रकार की लसदार मिट्टी जो सिर मलने आदि के काम में आती है। करैली मिट्टी। २. पीले या सफेद रंग की वह लसीली मिट्टी जो हाथ धोने तथा जमीन, दीवार आदि लीपने-पोतने के काम आती है।

चिकनी सुपारी—स्त्री० [सं० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई बढ़िया सुपारी जो चिपटी और अधिक स्वादिष्ट होती है। चिकनी डली।

चिकर—-पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चिकरना—अ० [सं० चीत्कार, प्रा० चीक्कार, चिम्कार] १. चीत्कार करना। जोर से चिल्लाना। २. चिंघाड़ना।

चिकवा—पुं० [देश०] १. एक. प्रकार का टसर। २. उक्त टसर का बना हुआ कपड़ा। चिकट।

†पुं०=चिक (कसाई)।

चिकार—पुं० [सं० चीत्कार, प्रा० चिक्कार] १. चीत्कार। चिल्लाहट।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।—मचाना।

२. चिंघाड़।

चिकारना—अ० [हिं० चिकार] १. चीत्कार करना। चिल्लाना। २. हाथी का चिंघाड़ना।

चिकारा—पुं० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १. सारंगी की तरह का एक बाजा जो घोड़े के बालों की कमानी से बजाया जाता है। २. [स्त्री० चिकारी] हिरन की जाति का एक जानवर जो बहुत तेज दौड़ता है और अपनी बड़ी तथा सुन्दर आँखों के लिए प्रसिद्ध है। इसके स्वादिष्ट मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है। छिकरी। छिगार।

चिकारी—स्त्री० [हिं० चिकारा] १. छोटा चिकारा। २. मच्छर की तरह का एक फतिंगा।

†स्त्री० =चीत्कार।

चिकित--पुं० [सं०√कित् (ज्ञाने)+यङ–लुक्, द्वित्वादि, +अच्] एक ऋषि का नाम।

चिकितायन—पुं० [सं० चिकित+फक्–आयन] चिकित ऋषि के वंशज।

चिकित्सक—पुं० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +ण्वुल्–अक] रोगों की चिकित्सा करनेवाला, वैद्य।

चिकित्सन—पुं० [सं०√कित्+सन्, द्वित्वादि, +ल्युट्–अन] चिकित्सा करना।

चिकित्सन-प्रमाणक--पुं० [ष० त०] वह प्रमाण-पत्र जिसमें चिकित्सक किसी की अवस्था या अस्वस्थता को प्रमाणित करता है। (मेडिकल सर्टिफिकेट)

चिकित्सा—स्त्री० [सं०√कित्+सन्, द्वित्वादि, +अ—टाप्] १. वे सब उपाय और कार्य जो किसी रोगी का रोग दूर कर उसे स्वस्थ बनाने के लिए किये जाते हैं। इलाज। (ट्रीटमेंट) २. वैद्य का काम या व्यवसाय। ३. उक्त की कोई विशिष्ट प्रणाली या ढंग। (थेरैपी) जैसे—जल-चिकित्सा, विद्युत् चिकित्सा।

चिकित्सालय—पुं० [चिकित्सा-आलय, ष०त०] वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा की जाती है। अस्पताल। दवाखाना।

चिकित्सावकाश—पुं० [चिकित्सा-अवकाश, च० त०] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के लिए मिलती है। (मेडिकल लीव)

चिकित्सा-शास्त्र- –पुं० [ष०त०] वह शास्त्र जिसमें अनेक प्रकार के रोगों के लक्षणों और उनकी चिकित्साओं का विवेचन होता है। (मेडिकल सायन्स)

चिकित्सित—भू० कृ० [सं० √कित्+सन्, द्वित्वादि, +क्त] जिसकी चिकित्सा या दवा की गई हो। जिसका इलाज किया गया हो।

पुं० एक प्राचीन ऋषि का नाम।

चिकित्सु—पुं० [सं०√कित्+सन्, द्वित्वादि, +उ] चिकित्सक।

चिकित्स्य—वि० [सं०√कित् +सन् द्वित्वादि, +यत्] १. (रोग) जिसे दूर किया जा सके। २. (रोगी) जिसे स्वस्थ बनाया जा सके। (क्योरेबुल; उक्त दोनों अर्थों में)

चिकिन--वि० [सं० नि=नत नासिका+इनच्, चिक् आदेश] चिपटी नाकवाला।

पुं०=चिकन।

चिकिल—पुं० [सं०√चि (चयन)+ इलच् क् आगम] कीचड़। पंक।

चिकीर्षक—वि० [सं०√कृ (करना)+सन्, द्वित्वादि, +ण्वुल्—अक] (व्यक्ति) जो कोई कार्य करने के लिए इच्छुक हो।

चिकीर्षा—स्त्री० [सं०√कृ+सन्, द्वित्वादि, +अ–टाप्] [वि० चिकीर्षित, चिकीर्ष्य] कुछ या कोई काम करने अथवा कोई काम जानने की इच्छा।

चिकुटी†—स्त्री०=चिकोटी।

चिकुर—पुं० [सं० चि√कुर् (शब्द करना)+क] १. सिर के बाल। केश। २. पर्वत। पहाड़। ३. रेंगकर चलनेवाले जंतु। सरीसृप। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. एक प्रकार का वृक्ष। ६. छछूंदर। ७. गिलहरी।

वि० चंचल। चपल।

चिकुर-पक्ष—पुं० [ष० त०] १. सिर के सँवारे और सजाये हुए बाल। २. बालों की लट। जुल्फ।

चिकुर-भार—पुं० [ष० त०]=चिकुर-पक्ष।

चिकुर-हस्त—पुं० [ष० त०] =चिकुर-पक्ष।

चिकुला—पुं० [सं० चिकुर] १. चिकुर नामक पक्षी का बच्चा। २. चिड़िया का बच्चा।

चिकूर—पुं० [सं० चिकुर, नि०-दीर्घ]=चिकुर (केश)।

चिकोटी—स्त्री० [अनु०] हाथ की चुटकी की वह मुद्रा जिससे किसी के शरीर का थोड़ा-सा मांस पकड़कर (उसे पीड़ित अथवा कभी सचेत करने के लिए) दबाया जाता है। चुटकी।

चिक्क—वि० [सं० चिक्√कै (शब्द करना)+क] चिपटी नाकवाला।

पुं० छछूंदर।

पुं०=चिक (कसाई)।

स्त्री०=चिक (तीलियों का झँझरीदार परदा)।

चिक्कट—वि० [सं० चिक्लिद] १. चिकनाहट और मैल से भरा हुआ। जिस पर तेल आदि की मैल जमी हो। बहुत गंदा और मैला। २. चिपचिपा। लसीला।

†पुं०[?]१. एक प्रकार का टसर या रेशमी कपड़ा। २. वे कपड़े जो भाई अपनी वहन को उसकी संतान के विवाह के समय देता है।

चिक्कण—वि० [सं० चित्√कण् (शब्द करना)+क] चिकना।

पुं० १. सुपारी का पेड़ और फल। २. हरीतकी। हर्रे। ३. आयुर्वेद में पाक बनाने के समय उसके नीचे की आँच की एक अवस्था।

चिक्कणा—स्त्री०[सं० चिक्कण+टाप्]=चिक्कणी।

चिक्कणी—स्त्री०[सं० चिक्कण+ङीप्] १. सुपारी। २. हड़। हर्रे।

चिक्कन—वि०=चिकना।

चिक्करना—अ० [सं० चीत्कार] चीत्कार करना। जोर से चिल्लाना।

चिक्कस—पुं० [सं०√चिक्क् (पीसना)+असच्] १. जौ का आटा अथवा जौ के आटे का बना हुआ भोजन। २. तेल और हल्दी के योग से बनाया हुआ जौ के आटे का उबटन जो प्रायः यज्ञोपवीत के समय वटु के शरीर पर मला जाता है।

पुं०[देश०] लोहे, पीतल आदि के छड़ का बना हुआ वह अड्डा जिस पर तोते, वाज, बुलबुल आदि पक्षी बैठाये जाते हैं।

चिक्का—स्त्री०[सं०√चिक्क्+अच्–टाप्] सुपारी।

पुं०=चिक्किर (चूहा)।

†पुं०=चक्का।

चिक्कार—पुं०=चीत्कार।

चिक्किर—पुं०[सं०√चिक्क्+इरच्] १. एक प्रकार का जहरीला चूहा जिसके काटने से सूजन होती है। २. गिलहरी।

चिक्लिद—पुं० [सं०√क्लिद् (गीला करना)+यङ्–लुक्, द्वित्वादि,+अच्] १. आर्द्रता। नमी। २. चंद्रमा।

चिखना†—पु० [हिं० चखना] मद्यपान के समय चखी या खाई जानेवाली चटपटी चीज। चाट।

†स०=चखना।

चिखर—पुं०[सं० चिकुर या चिक्क ?] चने का छिलका या भूसी। चने की कराई।

चिखल्ल—पुं०[सं०]१. कीचड़। २. दलदल।

चिखुरन—स्त्री०[सं० चिकुर ?] पौधों आदि के आस-पास आप से आप उग आनेवाली घास।

चिखुरना—स०[हिं० चिखुरन] पौधों आदि के आस-पास उगी हुई घास को निकालना।

चिखुरा—पुं० [सं० चिक्किर या चिकुर] [स्त्री० चिखुरी] नर गिलहरी। गिलहरा।

चिखुराई—स्त्री०[हिं०चिखुराना] चिखुरने अर्थात् पौधों आदि के आस-पास उगी हुई घास को उखाड़ने तथा निकालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

स्त्री०[हिं० चीखना=चखना] चखने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

चिखुरी—स्त्री०[हिं० चिखुरा] गिलहरी।

चिखौनी—स्त्री०[हिं० चीखना] १. चखने या स्वाद देखने की क्रिया या भाव। २. मद्य आदि के साथ चखकर खाई जानेवाली चीज। चाट।

चिग—स्त्री०=चिक (बाँस की तीलियों का झँझरीदार परदा)।

चिचड़ा—पुं० [सं० चिंचिड] १. डेढ़, दो हाथ ऊँचा एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसकी डालों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं। इसकी जड़, पत्तियाँ आदि दवा के काम आती हैं। इसके फल ककड़ी की तरह के होते और तरकारी के काम आते हैं। २. अपामार्ग। ३. पशुओं के शरीर में चिमटकर उनका खून पीनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा। किलनी।

चिचड़ी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो गाय, बैल आदि पशुओं के विभिन्न अंगों में चिपका रहता और उनका खून पीता है। किलनी।

चिचान—पुं०[सं०सचान] बाज पक्षी।

चिचावना†—अ०=चिल्लाना।

चिंचिगा—पुं०=चचींड़ा।

चिंचिडा—पुं०=चचींड़ा।

चिचियाना—अ०[अनु० चीं चीं] [भाव० चिचियाहट] बार-बार जोर से चिल्लाना।

चिचियाहट—स्त्री०=चिल्लाहट।

चिचुकना—अ०=चुचुकना।

चिचेड़ा—पुं०=चचींड़ा।

चिचोड़ना—स०=चचोड़ना।

चिचोड़वाना—स०=चचोड़वाना।

चिच्छक्ति—स्त्री०[सं० चिद्-शक्ति, कर्म०स०] चेतना-शक्ति।

चिच्छल—पुं०[सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

चिजारा—पुं०[?] मकान बनानेवाला कारीगर। मेमार। राज।

चिज्जड़—वि०[सं० चिद्-जड, कर्म० स०] जो कुछ अंशों में चेतन और कुछ अंशों में जड़ हो।

चिट—स्त्री०[हिं० चिट्ठी से?] १. कागज का वह छोटा टुकड़ा जिस पर कोई बात लिखी जाय। छोटा पत्र। रुक्का। २. कागज, कपड़े आदि का फटा हुआ कोई छोटा लंबा टुकड़ा। धज्जी।

चिटक—वि०=चिक्कट या चीकट (बहुत गंदा और मैला)।

चिटकना—अ० [अनु० चिट चिट+ना (प्रत्य०)] १. कड़े तलवाले पदार्थ का चिट शब्द करते हुए टूटना अथवा उसमें पतली दरार पड़ना। जैसे—लालटेन की चिमनी चिटकना। २. लकड़ी का जलते समय चिट चिट शब्द करते हुए चिंगारियाँ छोड़ना। ३. चिट शब्द करते हुए खिलना। जैसे—कलियों का चिटकना। ४. अपनी इच्छा के अनुसार कोई कार्य न होते देख अथवा अपने विरुद्ध कोई कार्य या बात होते देखकर सहसा कुछ बिगड़ खड़े होना। ५. चिढ़ना।

चिटकनी—स्त्री०=सिटकिनी।

चिटका—पुं०=चिता।

चिटकाना—स० [अनु०]१. किसी चीज को चिटखने में प्रवृत्त करना। २. किसी व्यक्ति को खिझाना या चिढ़ाना।

चिटनवीस—पुं०[हिं० चिट+फा० नवीस] मध्ययुग में दक्षिण भारतीय दरबारों आदि में चिट्ठी-पत्री या हिसाब-किताब लिखनेवाला कर्मचारी। मुहर्रिर। लेखक।

चिटनीस—पुं०=चिटनवीस।

चिटी—स्त्री० [सं०√चिट् (प्रेरणा)+क–ङीष्] चांडाल वेष धारिणी योगिनी, जिसकी उपासना वशीकरण के लिए की जाती है। (तंत्रशास्त्र)

चिट्की—स्त्री०=चुटकी।

चिट्ट—स्त्री०=चिट।

चिट्टा—वि०[सं० सित, प्रा० चित] [स्त्री० चिट्टी] जिसका रंग या वर्ण सफेद हो। जैसे—कपड़ा धोने से चिट्टा हो जाता है।

पुं० १. कुछ विशेष प्रकार की मछलियों के ऊपर का सीप के आकार का बहुत सफेद छिलका या पपड़ी जिससे रेशम के लिए माँड़ी तैयार की जाती है। २. रुपया (दलालों की बोली)।

पुं०[चटचट शब्द से अनु०?] वह उत्तेजना जो किसी को कोई ऐसा काम करने के लिए दी जाय जिसमें उसकी हानि या हँसी हो। झूठा बढ़ावा।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—चिट्टा लड़ाना=उक्त प्रकार की उत्तेजना देकर किसी को कुछ अनुचित काम करने में प्रवृत्त करना।

चिट्ठा—पुं० [हिं० चिट्ठी का पुं० रूप] १. आय-व्यय या लेन-देन का वह हिसाब जो मुख्यतः एक ही कागज पर लिखा गया हो। उदा०—दिया चिट्ठा चाकरी चुकाई।—कबीर।

मुहा०—चिट्ठा बाँटना=(क) दैनिक मजदूरी पर काम करनेवाले मजदूरों की मजदूरी चुकाना। जैसे—अब मंगल के दिन चिट्ठा बँटेगा। (ख) चिट्ठे पर लिखे हुए आदमियों को अन्न या रसद बाँटना। **चिट्ठा बाँधना**=आय-व्यय आदि का लेखा तैयार करना।

२. वह कागज जिसपर नियमित रूप से किसी निश्चित अवधि के आय-व्यय आदि का मोटा हिसाब लिखा रहता है और जिससे यह पता चलता है कि इस काम में कितना आर्थिक लाभ या हानि हुई। जैसे—कोठी या दूकान का छमाही या सालाना चिट्ठा। ३. वह कागज जिसपर प्राप्त या प्राप्य धनराशि का विवरण लिखा रहता है।

मुहा०—चिट्ठा उतारना (क) चिट्ठा तैयार करना या बनाना। (ख) चिट्ठे पर लिखी हुई रकम वसूल करना। (ग) लोगों से रकम वसूल करते हुए चिट्ठे पर क्रमशः लिखते या लिखाते चलना।

४. किसी प्रकार के काम में लगनेवाले धन का विवरण। खरच के मदों की सूची। जैसे—ब्याह का चिट्ठा, मकान की मरम्मत का चिट्ठा। ५. किसी काम या बात का पूरा ब्योरा या विस्तृत विवरण।

पद—कच्चा चिट्ठा=(क) आय-व्यय आदि का वह आरंभिक विवरण जो अभी पूरी तरह से जँचा न हो अथवा ठीक और पक्का न माना जा सकता हो। जैसे—पहले कच्चा चिट्ठा तैयार कर लो, तब रोकड़ पर चढ़ाना। (ख) किसी आदमी के आचरण, व्यवहार आदि का अथवा घटना के संबंध की ऐसी बातों का विवरण जो अभी तक पूरी तरह से सबके सामने न आया हो अथवा जिसमें कुछ ऐसी बातें हों जो अनुचित होने के कारण साधारणतः सब लोगों के सामने आने योग्य न हों। जैसे—अब तुम चुपचाप बैठे रहो नहीं तो वह तुम्हारा सारा कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देगा।

क्रि० प्र०—खोलना।

चिट्ठी—स्त्री०[सं० चिट् (?) चिट्टीका-चिट्टी; फा० चिट; उ० बँ० मरा० सिं० चिठी; पं० चिट्ठी] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जानेवाला कागज का वह टुकड़ा जिस पर सूचना आदि के लिए कुछ समाचार लिखे हों। खत्त। पत्र। २. मध्य युग में किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसमें किसी को कुछ रुपए देने का आग्रह या आदेश होता था।

मुहा०—(किसी के नाम) चिट्ठी करना=किसी के नाम इस आशय का पत्र लिखना कि अमुक व्यक्ति या पत्र-वाहक को हमारे हिसाब में इतने रुपए दे दो। **(किसी की) चिट्ठी भरना**=(क) किसी के लिखे हुए पत्र के अनुसार किसी को कुछ रुपए देना। (ख) किसी प्रकार की विवशता के कारण किसी दूसरे का ऋण, देन आदि चुकाना या और किसी तरह का खरच करना। जैसे—नानी खसम करे, दोहता चिट्ठी भरे। —कहा०।

३. कागज का कोई ऐसा छोटा टुकड़ा या पुरजा जिस पर कुछ लिखा हो। जैसे—निमंत्रण या ब्राह्मण भोजन की चिट्ठी। ४. वह कागज या पत्र जिस पर कहीं भेजे जानेवाले माल की तालिका, मूल्य, विवरण आदि लिखे रहते हैं। ५. वह क्रियात्मक प्रणाली जिसके अनुसार कुछ नाम या किसी समस्या के नहिक और सहिक सूचक संकेत कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर अलग-अलग लिखकर उन कागजों की छोटी गोलियाँ बनाई जाती हैं; और तब उनमें से कोई गोली उठाकर यह निश्चय किया जाता है कि अमुक काम कौन करे, अमुक चीज किसे मिले अथवा अमुक काम किया जाना चाहिए या नहीं। गोटी। (बैलट)

क्रि० प्र०—उठाना।—डालना।—निकलना।—पड़ना।

चिट्ठी-पत्री—स्त्री०[हिं० चिट्ठी+पत्री] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जानेवाला खत। पत्र। २. आपस में चिट्ठियाँ या पत्र भेजने-मँगाने आदि का व्यवहार। पत्र-व्यवहार। पत्रालाप। (कारेस्पान्डेन्स)

चिट्ठीरसाँ—पुं०[हिं०चिट्ठी+फा० रसाँ] डाकखाने में आई हुई चिट्ठियाँ बाँटनेवाला कर्मचारी। डाकिया।

चिड़—स्त्री०[सं० चटक] चिड़िया। पक्षी। उदा०—चारौं पल ग्रीधणी चिड़।—प्रिथीराज।

स्त्री०=चिढ़।

चिड़चिड़ा—वि० [हिं० चिड़चिड़ाना] [स्त्री० चिड़चिड़ी] १. (व्यक्ति) जो बिना किसी बात के अथवा बहुत ही साधारण बात से चिढ़कर बिगड़ खड़ा होता हो। बात-बात पर क्रुद्ध हो जानेवाला। जैसे—रुपए-पैसे की तंगी से वे चिड़चिड़े हो गये हैं। २. (स्वभाव) जिसमें चिड़चिड़ापन हो। ३. जो चिड़ चिड़ या चिट चिट शब्द करता हुआ जलता हो। जैसे—चिड़ चिड़ लकड़ी।

पुं०[अनु०] भूरे रंग का एक प्रकार का छोटा पक्षी।

†पुं०=चिचड़ा।

चिड़चिड़ाना—अ०[अनु०] [भाव० चिड़चिड़ाहट] १. (व्यक्ति के संबंध में) जरा-सी बात से चिढ़कर क्रोध-भरी बातें कहना। नाराज होना। बिगड़ बैठना। २. (काठ या जलावन के संबंध में) जलने या जलाने पर चिड़ चिड़ शब्द होना। ३. (पदार्थ के संबंध में) ऊपरी तल का सूख कर जगह-जगह से थोड़ा बहुत उखड़ या फट जाना। जैसे—चमड़े का पट्टा या जूता चिड़चिड़ाना।

स० किसी व्यक्ति को इस प्रकार अप्रसन्न या रुष्ट करना कि वह चिढ़ या बिगड़कर उलटी-सीधी बातें कहने लगे। जैसे—तुमने तो आते ही उन्हें चिड़चिड़ा दिया।

चिड़चिड़ाहट—स्त्री० [हिं० चिड़चिड़ाना+हट (प्रत्य०)] १. चिड़चिड़ाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

चिड़वा—पुं० [सं० चिविट] हरे भिगोये या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ में भूनकर और फिर कूटकर बनाया हुआ उसका चिपटा दाना। चिउड़ा।

चिड़ा—पुं० [हिं० चिड़ी का पुं०] गौरा या गौरैया पक्षी का नर।

चिड़ाना—स० दे० 'चिढ़ाना'।

चिड़ारा—पुं० [देश०] नीची जमीन का खेत जिसमें जड़हन बोया जाता है। डबरी।

चिड़िया—स्त्री० [सं० चटिका, प्रा० चड़िआ या सं० चिरि =तोता] १. वह जीव जो पंखों या परों की सहायता से आकाश में उड़ता है। पक्षी।

मुहा०—चिड़िया के छिनाले में पकड़ा जाना=अकारण झंझट में पड़ना या फँसना।

२. गौरैया।

पद—चिड़िया का दूध =ऐसी चीज जो वास्तव में उसी प्रकार न होती हो, जिस प्रकार चिड़ियों का दूध नहीं होता। **चिड़िया-नोचन**= ऐसी स्थिति जिसमें चारों ओर से लोग उसी प्रकार तंग या परेशान करते हों, जैसे—चिड़िया के पर नोचे जाते हैं।

३. ऐसा मालदार असामी जिससे कुछ धन ऐंठा या ठगा जा सकता हो। ४. कोई युवती और सुंदर परन्तु कुछ दुश्चरित्रा स्त्री। (बाजारू)

पद—सोने की चिड़िया=(क) बहुत बड़ा और मालदार असामी। (ख) बहुत रूपवती या सुंदरी स्त्री।

५. काठ का वह डंडा जिसके ऊपर दोनों ओर निकला हुआ कुछ लंबोतरा अंश होता है और जो किसी चीज के नीचे बैसाखी की तरह टेक या सहारे के लिए लगाया जाता है। जैसे—डोली या पालकी रोकने के समय उसके डंडों के नीचे लगाई जानेवाली चिड़िया। ६. उक्त आकार का लोहे का वह टुकड़ा जो तराजू की डाँडी के ऊपर और नीचे लगा रहता है। ७. अँगिया, कुरती आदि में लगे हुए वे गोलाकार टुकड़े जिनमें स्त्रियों के स्तन रहते हैं। कटोरी। ८. पायजामें, लहँगे आदि का वह ऊपरी नलाकार अंश जिसमें इजारबंद या नाला डाला जाता है। नेफा। ९. ताश के चार रंगों में से एक रंग जो काला और प्रायः पक्षी के आकार का होता है। चिड़ी। (शेष तीन रंग हुकुम, पान और ईंट कहलाते हैं।) १०. एक प्रकार की सिलाई जिसमें पहले कपड़े के दोनों पल्ले सीकर तब सिलाई की ओरवाले उनके दोनों सिरों को अलग-अलग उन्हीं पल्लों पर उलट कर इस प्रकार बखिया कर देते हैं कि एक प्रकार की बेल-सी बन जाती है।

चिड़ियाखाना—पुं० = चिड़िया-घर।

चिड़िया-घर—पुं० [हिं० पद] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी आदि जन-साधारण को प्रदर्शित करने के लिए एकत्र करके रखे जाते हैं। चिड़िया-खाना। (जू)

चिड़िया-चुनमुन—पुं० [हिं० चिड़िया +अनु०] चिड़िया और उनकी तरह के दूसरे छोटे जीव-जंतु।

चिड़िहार—पुं० [हिं० चिड़िया +हार (प्रत्य०)] चिड़िया पकड़नेवाला व्यक्ति। बहेलिया।

चिड़ी—स्त्री० [हिं० चिड़िया] १. चिड़िया। पक्षी। पखेरू। २. ताश का चिड़िया नामक रंग।

चिड़ीमार—पुं० [हिं० चिड़ी + मारना] चिड़िया पकड़ने या फँसानेवाला। बहेलिया।

चिढ़—स्त्री० [हिं० चिढ़ना] १. चिढ़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी विशिष्ट काम या बात के प्रति होनेवाली वह मनोवृत्ति जिसमें वह चिढ़ता (अर्थात् अप्रसन्न होता या खीझता) हो। किसी के प्रति होनेवाला रोषपूर्ण विराग। जैसे—मुझे चालबाजी और झूठ से बहुत चिढ़ है। ३. किसी के संबंध में ढूँढ़कर निकाली या बनाई हुई वह बात जिससे वह बहुत चिढ़ता हो। जैसे—उनकी चिढ़ 'करेला' थी। अर्थात् करेला कहने या दिखाने पर वे बहुत चिढ़ते थे।

मुहा०—(किसी की) चिढ़ निकालना=किसी को चिढ़ाने के लिए कोई खास बात ढूंढ़ निकालाना। जैसे—जब वह सिरके के नाम से बहुत चिढ़ने लगे तो लोगों ने उनके लिए सिरके की चिढ़ निकाली।

चिढ़कना†—अ० = चिढ़ना।

चिढ़काना†—स० = चिढ़ाना।

चिढ़ना—अ० [हिं० चिड़चिड़ाना] १. कोई अप्रिय या अरुचिकर घटना देख या बात सुनकर दुःखी तथा क्रुद्ध होना। जैसे—(क) वे पैसे के नाम पर चिढ़ जाते हैं। (ख) उन्हें स्त्री जाति से चिढ़ है। २. वैर-विरोध आदि के कारण किसी का नाम अथवा उसका कार्य या बात सुनना या देखना न पसंद करना। जैसे—वह तुम्हारे नाम से चिढ़ता है।

चिढ़वाना—स० [हिं० चिढ़ाना का प्रे०] किसी को दूसरे से चिढ़ाने का काम कराना।

चिढ़ाना—सं० [हिं० चिढ़ना] १. जान-बूझकर कोई ऐसा काम करना या बात कहना जिससे कोई चिढ़े और नाराज हो। अप्रसन्न और खिन्न करना। खिझाना। जैसे—तुम तो मेरा नाम लेकर उन्हें और भी चिढ़ाते हो। २. किसी को अप्रसन्न या खिन्न करने के लिए उसी की तरह की कोई चेष्टा करना या मुद्रा बनाना। नकल उतारना।

मुहा०—(किसी का) मुंह चिढ़ाना=उपहास करने के लिए उपेक्षापूर्वक किसी के बोलने, हँसने आदि अथवा मुख की आकृति का विद्रूपित अनुकरण करना। बहुत विगाड़कर वैसा ही मुँह बनाना जैसा किसी दूसरे का हो। जैसे—रास्ते में लड़के बुढ़िया को मुँह चिढ़ाते थे।

३. किसी का उपहास करके उसे अप्रसन्न और खिन्न करने के लिए बार-बार कोई काम करना या बात कहना। जैसे—अब तो घर के लड़के भी उन्हें चिढ़ाने लगे हैं।

चिढ़ौनी—स्त्री० [हिं० चिढ़ाना] ऐसी बात जो किसी को केवल चिढ़ाने के लिए प्रायः बार-बार कही जाती हो। छेड़।

चित्—स्त्री० [सं० √चित् (ज्ञाने) +क्विप्] १. सोची, विचारी या अनुभूत की हुई कोई बात। विचार। अनुभूति। २. चेतना। ज्ञान। ३. चित्त की वृत्ति। ४. हृदय। मन। ५. आत्मा। ६. ब्रह्म। ७. रामानुजाचार्य के अनुसार तीन पदार्थों में से एक जो ज्ञान-स्वरूप, निन्य, निर्मल, और भोक्ता कहा गया है। ८. अग्नि।

प्रत्य० संस्कृत का एक अनिश्चयवाचक प्रत्यय जो कः, किम् आदि सर्वनाम शब्दों में लगता है। जैसे—कदाचित्, कश्चित्, किंचित् आदि।

चित—वि० [सं० √चि (चयन करना) +क्त] १. चुनकर इकट्ठा किया हुआ। ढेर के रूप में लगाया हुआ। २. ढका हुआ। आच्छादित।

वि० [सं० चित्र] इस प्रकार जमीन पर लंबा पड़ा हुआ कि पीठ या

पीछे की ओर के सब अंग जमीन से लगे हों और छाती, पेट, मुँह आदि ऊपर हों। पीठ के बल सीधा पड़ा हुआ। 'औंधा' या 'पट' का विपर्याय।

विशेष—प्राचीन काल में चित्र प्रायः कपड़ों पर बनाये जाते थे; इसी लिए उन्हें चित्र-पट कहते थे। जिस ओर चित्र बना रहता था उस ओर का भाग चित्र कहलाता था; और उसके विपरीत नीचेवाला भाग पट (कपड़ा) कहलाता था। इसी चित्र-पट में के चित्र और पट शब्द से विशेषण रूप में 'चित' और 'पट' शब्द बने हैं।

मुहा०—(किसी को) चित करना = कुश्ती में पछाड़कर जमीन पर सीधा पटकना जो हराने का सूचक होता है। **चित होना**=बेसुध होकर या और किसी प्रकार सीधे पड़ जाना। जैसे—इतनी भाँग में तो तुम चित हो जाओगे।

पद—चारों खाने (या शाने) चित = (क) हाथ-पैर फैलाये बिलकुल पीठ के बल पड़ा हुआ। (ख) लाक्षणिक रूप में, पूरी तरह से परास्त या हारा हुआ।

क्रि० वि० पीठ के बल। जैसे—चित गिरना या लेटना।

पुं० [हिं० चितवन] चितवन। दृष्टि। नजर।

†पुं० = चित्र।

चितउन*—स्त्री० = चितवन।

चितउर*—पुं० १. दे० 'चित्तौर'। २. दे० चित्त'।

चितकबरा—वि० [सं० चित्र+कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] १. सफेद रंग पर काले, लाल या पीले दागोंवाला। २. रंग-बिरंगा। कबरा। चितला। शबल। जैसे—चितकबरा कबूतर, चितकबरी बिल्ली।

पुं० उक्त प्रकार का रंग या वर्ण।

चितकाबर—वि० = चितकबरा।

चितकूट*—पुं० =चित्रकूट।

चितगुपति—पुं० = चित्रगुप्त।

चित-चोर—पुं० [हिं० चित+चोर] चित्त को चुराने अर्थात् मोहित करने या लुभानेवाला। बलपूर्वक अपनी ओर अनुरक्त और मुग्ध कर लेनेवाला। परम आकर्षक और मनोहर (व्यक्ति)।

चित-पट—पुं० [हिं० चित+पट] १. बाजी लगाकर खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल जिसमें किसी फेंकी हुई वस्तु (जैसे—सिक्का आदि) के चित या पट पड़ने पर हार या जीत मानी जाती है। २. मल्ल-युद्ध। कुश्ती। (क्व०)

चित-बाहु—पुं० [हिं० चित+बाहु] तलवार चलाने के ३२ प्रकारों या हाथों में से एक।

चित-भंग—पुं० [हिं० चित+भंग] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य का चित्त या मन एकाग्र और स्वस्थ न रह सके। मानस शांति में होनेवाली बाधा। २. किसी ओर से मन उचटने पर होनेवाली उदासी और विकलता। ३. चेतना, ज्ञान, बुद्धि आदि का ठिकाने न रहना।

चितरना—स० [सं० चित्र] १. चित्रित करना। चित्र बनाना। २. बेल-बूटों आदि की तरह की आकृतियाँ बनाना। जैसे—आड़ चितरना= किसी रंग या चमकीली चीज से मस्तक या मुख पर बेल-बूटों आदि की आकृतियाँ बनाना। ३. ठीक ढंग से लगाना। जैसे—काजल चितरना।

चितरवा—पुं० दे० 'चितरोख'।

चितरा†—पुं० = चीतल (देखें)।

चितराला—पुं० [सं० चित्र] एक प्रकार का छोटा जंतु या पशु जो छोटे-छोटे झुंडों में रहता और प्रायः पेड़ों पर चढ़कर गिलहरियाँ, चिड़ियाँ आदि खाता है

चितरोख†—पुं० [सं० चित्रक] लाल रंग की एक प्रकार की छोटी सुंदर चिड़िया जिसकी चोंच और पीठ काली तथा पैर कुछ लाल होते हैं।

चितला—वि० [सं० चित्रल] चितकबरा। रंग-बिरंगा।

पुं० १. एक प्रकार का खरबूजा जिसके छिलके पर चित्तियाँ होती हैं। २. एक प्रकार की बड़ी मछली जिसकी पीठ उभारदार होती है और जिसके शरीर से यथेष्ट चरबी निकलती है जो खाने और जलाने के काम आती है।

चितवन—स्त्री० [हिं० चितवना] १. किसी की ओर प्रेमपूर्वक या स्नेहपूर्वक देखने की अवस्था, ढंग या भाव। २. दृष्टि। निगाह।

चितवना—स० [सं० चित् =ध्यानपूर्वक देखना] १. अनुराग या स्नेहपूर्वक किसी की ओर देखना। उदा०—जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत इक बार।—बिहारी। २. यों ही या जल्दी में देख जाना। उदा०—फिरि चितवा पाछैं प्रभु देखा।—तुलसी।

चितवनि—स्त्री०=चितवन।

चितवाना—स० [हिं० चितवना का प्रे०] किसी को चितवने (देखने) में प्रवृत्त करना।

चितसारी—स्त्री० दे० 'चित्रसारी'।

चिता—स्त्री० [सं० √चि (चयन करना)+क्त—टाप्] १. क्रम से चुनकर रखी या सजाई हुई लकड़ियों का वह ढेर जिस पर मृत शरीर जलाये जाते हैं। चिति। चित्या। चैत्य।

मुहा०—चिता चुनना या सजाना=शव-दाह के लिए लकड़ियाँ क्रम से सजाकर रखना। चिता तैयार करना। **चिता पर चढ़ना** =मरने पर जलाये जाने के लिए चिता पर रखा जाना। **(स्त्री का) चिता पर चढ़ना** = पति के शव के साथ उसकी चिता पर जलने के लिए जाकर बैठना।

२. श्मशान। मरघट।

चिताउनी†—स्त्री० १. = चेतावनी। २. = चितवन।

चिताना—स०= चेताना (देखें)।

अ० [सं० चित्रण] चित्रित होना। उदा०—लता सुमन पशु पच्छि चित्र सों चारु चिताए।— रत्नाकर।

स० चित्रित करना।

चिता-प्रताप—पुं० [ष० त०] जीते जी चिता पर रखकर जला देने का दंड।

चिता-भूमि—स्त्री० [ष० त०] मरघट। श्मशान।

चितारना—स० [सं० चिंतन] १. चित्त या मन में लाना। किसी ओर चित्त या ध्यान देना। उदा०—युगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारै।—कबीर। २. ध्यान में लाना। याद करना। उदा०—रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारयौ।—मीराँ।

†स०=चितरना।

चितारी—पुं०=चितेरा।

चितारोहण—पुं० [चिता-आरोहण, स० त०] १. चिता पर जल मरने के उद्देश्य से चढ़कर बैठना। २. विधवा स्त्री का सती होने के लिए अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना।

चितावनी—स्त्री० = चेतादनी।

चिता-साधन—पुं० [स० त०] चिता के पास या श्मशान पर बैठकर इष्ट-सिद्धि के लिए मंत्र आदि जपना। (तंत्र)

चिति—स्त्री० [सं० √चि (चयन करना) +क्तिन्] १. चुनकर लगाने या सजाने की क्रिया या भाव। २. चिता। ३. ढेर। राशि। ४. अग्नि का एक प्रकार का वैदिक संस्कार। ५. यज्ञ में वेदी बनाने की ईंटों का एक संस्कार। ६. चेतनता। ७. दुर्गा।

चितिका—स्त्री० [सं० चिति √कै (शब्द करना) +क–टाप्] १. करधनी। मेखला। २. दे० 'चिति'।

चितिया—वि० [हिं० चित्ती] जिस पर चित्तियाँ या दाग पड़े हों। चित्तीदार। जैसे—चितिया साँप, चितिया हिरन।

चितिया गुड़—पुं० [हिं०] खजूर की चीनी की जूसी से जमाया हुआ गुड़।

चिति-व्यवहार—पुं० [ष० त०] गणित की वह क्रिया जिसके द्वारा किसी दीवार या मकान में लगनेवाली ईंटों आदि की संख्या जानी जाती है।

चितु†—पुं० =चित्त।

चितेरा—पुं० [सं० चित्रकार, गु० चितारो, पं० चितेरा, सिंह० सितिए र] [स्त्री० चितेरिन, चितेरी] वह जो चित्र अंकित करने या बनाने का काम करता हो। चित्रकार। मुसौवर।

चितेला—पुं० = चितेरा।

चितैना—स० = चितवना।

चितौन—स्त्री० =चितवन।

चितौना—स० = चितवना।

चितौनि (नी)—स्त्री० =चितवन।

चित्कार—पुं० =चीत्कार।

चित्त—पुं० [सं० √चित् (ज्ञान करना)+क्त] १. अंतःकरण की चार वृत्तियों में से एक जो अंतरिंद्रिय के रूप में मानी गई है और जिसके द्वारा धारण, भावना आदि की क्रियाएँ सम्पन्न होती है। जी। दिल।

मुहा०—**चित्त उचटना** = किसी काम, बात या स्थान से जी विरक्त होना या हटना। दिल को भला न लगना। **चित्त करना** =जी चाहना। इच्छा होना। जैसे—उनसे मिलने को मेरा चित्त नहीं करता। **चित्त चढ़ना**=दे० "चित्त पर चढ़ना'। **चित्त चिहुँटना**=प्रेमासक्त होने के कारण मन में कष्टदायक स्मृति होना। उदा०—नहिं अन्हाय नहिं जाय घर चित चिहुँठ्यो तकि तीर।—बिहारी। **चित्त चुराना**=मन को मोहित करना। **चित्त देना**=ध्यान देना। मन लगाना। उदा०—चित्त दै सुनो हमारी बात।—सूर। **चित्त धरना**= (क) किसी बात पर ध्यान देना। मन लगाना। (ख) कोई बात या विचार मन में लाना। उदा०—हमारे प्रभु औगुन चित न धरो—सूर। **चित्त पर चढ़ना** = (क) मन में बसने के कारण बार-बार ध्यान में आना। (ख) स्मृत्ति जाग्रत होना। याद आना या पड़ना। **चित्त बँटना** =एक बात या विषय की ओर ध्यान रहने की दशा में कुछ समय के लिए दूसरी ओर ध्यान जाना जो बाधा के रूप में हो जाता है। **चित्त में जमना, धँसना या बैठना** = अच्छी तरह हृदयंगम होना। दृढ़ निश्चय के रूप में मन में बैठना। **चित्त में होना या चित्त होना**= इच्छा होना। जी चाहना। **चित्त लगना**= किसी काम या बात में मन की वृत्ति लगना। ध्यान लगना। जैसे—चित्त लगाकर काम किया करो। **चित्त से उतरना**=(क) ध्यान में न रहना। भूल जाना। जैसे—वह बात हमारे चित्त से उतर गई थी। (ख) पहले की तरह आदरणीय या प्रिय न रह जाना। जैसे—अब तो वह हमारे चित्त से उतर गया है। **चित्त से न टलना** =ध्यान में बराबर बना रहना। न भूलना।

२. नृत्य में, शृंगारिक प्रसंगों में अनुराग, प्रसन्नता आदि प्रकट करनेवाली चितवन या दृष्टि।

† वि० चित।

चित्तक—पुं० दे० 'चित्रक'।

चित्त-कलित—वि० [स० त०] १. मन में जिसकी आशा या ध्यान किया गया हो। २. प्रत्याशित।

चित्त-गर्भ—वि० [सं० चित्त √गर्भ् (ग्रहण करना) +अच्, उप० स०] मनोहर। सुंदर।

चित्त-चारी (रिन्)—वि० [सं० चित्त √चर् (चलना) +णिनि, उप० स०] दूसरों की इच्छा के अनुसार आचरण करने या चलनेवाला।

चित्त-चौर—पुं० [ष० त०] = चित्त-चोर।

चित्तज—वि० [सं० चित्त √जन् (उत्पन्न होना) +ड, उप० स०] चित्त या मन से उत्पन्न।

पुं० १. प्रेम। २. कामदेव।

चित्त-जन्मा (न्मन्)—पुं० [ब० स०] कामदेव।

चित्तज्ञ—वि० [सं० चित्त √ज्ञा (जानना) +क उप० स०] दूसरों के चित्र या मन की बातें जाननेवाला।

चित्त-निवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] इच्छा, कष्ट, भावना आदि से होनेवाला चित्त का छुटकारा या निवृत्ति। मन की शांति, संतोष और सुख।

चित्त-प्रसादन—पुं० [ष० त०] योग में चित्त का एक संस्कार जो करुणा, मैत्री, हर्ष आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा होता है। जैसे—किसी को सुखी देखकर प्रसन्न होना, दुःखी के प्रति करुणा दिखाना, पुण्य के प्रति हर्ष और पाप के प्रति उपेक्षा करना। इस से चित्त में सात्त्विक वृत्ति का प्रादुर्भाव होता है।

चित्त-भंग—पुं० [ब० स०] बदरिकाश्रम के समीप स्थित एक पर्वत श्रेणी।

चित्त-भू—पुं० [सं० चित्त √भू (होना) +क्विप्, उप० स०] १. प्रेम। २. कामदेव।

चित्त-भूमि—स्त्री० [ष० त०] योग-सावन के समय होनेवाली चित्त की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ या वृत्तियाँ जिनमें से कुछ तो अनुकूल और कुछ बाधक होती हैं। मुख्यतः क्षिप्त, मूल, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ये पाँच चित्त-भूमियाँ मानी गई हैं जिनमें से अन्तिम दो योग-साधन के लिए अनुकूल होती हैं।

चित्त-भेद—पुं० [ष० त०] १. मन की अस्थिरता और चंचलता। २. दृष्टिकोणों या विचारों में होनेवाला भेद।

चित्त-भ्रम—पुं० [ष० त०] १. मन में होनेवाला किसी प्रकार का भ्रम या भ्रांति। २. [ब० स०] उन्माद। पागलपन।

चित्त-भ्रांति—स्त्री० [ष० त०] =चित्त-भ्रम।

चित्त-योनि—पुं० [ब० स०] कामदेव।

चित्तर†—पुं० =चित्र।

चित्तर-सारी*—स्त्री० = चित्रशाला।

चित्तरा—स्त्री० = चित्रा (नक्षत्र)।

चित्तल—पुं० =चीतल। (मृग)।

चित्तवान् (वत्)—वि० [सं० चिता+मतुप्, म =व] [स्त्री० चित्तवती] जिसके चित्त में सदा अच्छी बातें रहती हों।

चित्त-विक्षेप—पुं० [ष० त०] १. चित्त का एकाग्र न हो पाना या न रह जाना। चित्त का स्थिर न रहना। २. चित्त की अस्थिरता या चंचलता।

चित्त-विद्—पुं० [सं० चित्त √विद् (जानना) + क्विप्, उप० स०] १. वह जो दूसरों के चित्त की बात जानता हो। २. वह जो चित्त या मन के सब भेद और रहस्य जानता हो।

चित्त-विप्लव—पुं० [ब० स०] उन्माद। पागलपन।

चित्त-विभ्रंश—पुं० [ब० स०] = चित्त-भ्रम।

चित्त-विभ्रम—पुं० =चित्त-भ्रम।

चित्त-विश्लेषण—पुं० [ष० त०] मनोविश्लेषण। (दे०)

चित्त-वृत्ति—स्त्री० [ष० त०] १. चित्त की गति। चित्त की अवस्था। २. अभिरुचि। झुकाव।

चित्त-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] बुरे विचारों को मन से हटाकर अच्छी बातों की ओर ध्यान देना जिससे चित्त निर्मल तथा शुद्ध हो जाय।

चित्त-हारी (रिन्)—वि० [सं० चित्त√हृ (हरण करना)+णिनि, उप० स०] चित्त हरण करनेवाला, अर्थात् आकर्षक। मनोहर।

चित्ताकर्षक—वि० [सं० चित्त-आकर्षक, ष० त०] जो चित्त को अपनी ओर आकृष्ट करता हो। मोहित करने या लुभानेवाला।

चित्तापहारक—वि० [सं० चित्त-अपहारक ष० त०] =चित्तहारी।

चित्ताभोग—पुं० [सं० चित्त आभोग, ष० त०] १. पूर्ण चेतनता। २. किसी विषय के प्रति मन की आसक्ति।

चित्तासंग—पुं० [सं० चित्त-आसंग] अनुराग। प्रेम।

चित्ति—स्त्री० [सं० √चित् (ज्ञान होना)+क्तिन्] १. चित्त की वह वृति जो मनुष्य को सोचने-विचारने में प्रवृत्त या समर्थ करती है। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. आस्था। श्रद्धा। ४. कर्म। कार्य। ५. ५. उद्देश्य। लक्ष्य। ६. अथर्व ऋषि की पत्नी का नाम।

चित्ती—स्त्री० [सं० चित्र, प्रा० चित्त] १. किसी एक रंगवाली वस्तु पर दूसरे रंग का लगा हुआ चिह्न या दाग।

मुहा०—(रोटी पर) चित्ती पड़ना = रोटी सेंकते समय उस पर छोटे-छोटे काले दाग पड़ना।

२. वे छोटे-छोटे चिह्न आदि जो वस्त्रों पर काढ़े या छापे जाते हैं। ३. मादा लाल। मुनिया। ४. एक प्रकार का साँप। चीतल। (दे०)

स्त्री० [हिं० चित =सफेद दाग] एक ओर से कुछ रगड़ा हुआ इमली का चिआँ जिससे छोटे लड़के जूआ खेलते हैं।

चित्तोद्रेक—पुं० [सं० चित्त-उद्रेक, ष० त०] गर्व। घमंड।

चित्तौर—पुं० [सं० चित्रकूट, प्रा० चित्त ऊड़, चितउड़] राजपूताने का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ किसी समय महाराणा प्रताप की राजधानी थी।

चित्य—वि० [सं० √चि (चयन) +क्यप्, तुक् आगम] १. इकट्ठा किये या चुने जाने के योग्य। २. जो इकट्ठा किया या चुना जा सके। ३. चिता संबंधी।

पुं० १. चिता। २. अग्नि।

चित्र—पुं० [सं० √चित्र् (लिखना) +अच्] १. चंदन आदि से शरीर के किसी अंग विशेषतः मस्तक पर बनाया जानेवाला चिह्न। तिलक। २. कलम, कूची, पेंसिल आदि की सहायता से कपड़े, कागज, दीवार या किसी चिपटे तलवाली वस्तु पर बनाई हुई किसी वस्तु या व्यक्ति की आकृति।

क्रि० प्र०—उतारना। —बनाना।—लिखना।

३. यंत्र की सहायता से खींचा या छापा जानेवाला चित्र। जैसे—कैमरे का चित्र (फोटो) या समाचार-पत्रों में प्रकाशित होनेवाले चित्र। ४. कल्पना करने या सोचने पर मानसिक चक्षुओं के सामने आनेवाली आकृति या रूप। मानसिक चित्र। ५. चित्र-काव्य। (दे०) ६. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसका प्रत्येक चरण समानिका वृत्त के दो चरणों के योग से बनता है। ७. काव्य के तीन अंगों में से एक जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं होती। अलंकार। ८. चित्रगुप्त। ९. एक यम का नाम। १०. धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक। ११. रेंड़ का पेड़। १२. अशोक वृक्ष। १३. चित्रक। चीता। १४. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर में सफेद चित्तियाँ या दाग पड़ जाते हैं।

वि० १. रंग-बिरंगा। कई रंगों का। २. चित-कबरा। ३. अनेक प्रकार का। कई तरह का। ४. अद्भुत। विचित्र। विलक्षण। ५. प्रायः बदलता रहनेवाला या तरह-तरह के रंग बदलनेवाला। ६. चित्र की तरह सब प्रकार से ठीक, दुरुस्त और सुंदर।

चित्र-कंठ—पुं० [ब० स०] कबूतर।

चित्र-कंबल—पुं० [कर्म० स०] १. कालीन, दरी या इसी तरह की और कोई रंगीन बुनावटवाला कपड़ा। २. हाथी की झूल।

चित्रक—पु० [सं० चित्र +कन्] १. मस्तक पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक। २. चीता नामक पेड़। ३. चीता नाम का जंतु। ४. रेंड़ का पेड़। ५. चिरायता। ६. मुचकुंद का पेड़। ७. चित्रकार। ८. बहादुर। शूर-वीर।

चित्र-कर—पुं० [सं० चित्र √कृ (करना)+ट, उप० स०] १. एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति विश्वकर्मा पुरुष और शूद्रा स्त्री से कही गई है। २. उक्त जाति का व्यक्ति। ३. तिनिश का पेड़। ४. चित्रकार।

चित्र-कर्म (न्)—पुं० [ष० त०] चित्रकारी।

चित्रकर्मी (र्मिन्)—पुं० [सं० चित्रकर्म +इनि] १. चित्रकार। मुसौवर। २. अदभुत या विलक्षण काम करनेवाला व्यक्ति। ३. तिनिश का पेड़।

चित्र-कला—स्त्री० [ष० त०] चित्र अंकित करने की क्रिया, ढंग, भाव या विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्र-काय—पुं० [ब० स०] चीता। (जंतु)

चित्र-कार—पुं० [सं० चित्र √कृ (करना) +अण् उप० स०] वह व्यक्ति जो चित्र अंकित करने की कला में दक्ष हो। चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी—स्त्री० [हिं० चित्र +कारी] १. चित्र बनाने की कला या विद्या। २. चित्रकार का काम, पद या भाव। ३. बनाये हुए चित्र।

चित्र-काव्य—पुं० [मध्य० स०] वह आलंकारिक काव्य जिसके चरणों की रचना ऐसी युक्ति से की गई हो कि वे चरण किसी विशिष्ट क्रम से लिखे जाने पर कमल, खड्ग, घोड़े, रथ, हाथी आदि के चित्रों के समान बन जाते हों। (इसकी गणना अधम प्रकार के काव्यों में होती है।)

चित्र-कुष्ठ—पुं० [मध्य० स०] सफेद कोढ़।

चित्र-कूट—पुं० [सं० ब० स०] १. उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वन-वास के समय राम-लक्ष्मण और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था। यह बाँदा जिले में है और इसके नीचे पयोष्णी नदी बहती है। २. हिमवत् खंड के अनुसार हिमालय की एक चोटी का नाम। ३. राजस्थान के चित्तौर नगर का पुराना नाम।

चित्र-कृत्—पुं० [सं० चित्र √कृ (करना) +क्विप्, तुक्, उप० स०] १. चित्रकार। २. तिनिश का पेड़।
वि० अद्भुत। विलक्षण।

चित्र-केतु—पुं० [ब० स०] १. वह जिसकी पताका चित्रित या रंग-विरंगी हो। २. लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम। (भागवत) ३. वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ४. गरुड़ के एक पुत्र का नाम। ५. शूरसेन का एक पौराणिक राजा जिसे नारद ने मंत्र का उपदेश दिया था।

चित्र-कोण—पुं० [ब० स०] १. कुटकी। २. काली कपास।

चित्र-गंध—पुं० [ब० स०] हरताल।

चित्रगुप्त—पुं० [ब० स०] पुराणानुसार चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखनेवाले कहे गये हैं।

चित्र-घंटा—स्त्री० [ब० स०] एक देवी जो नौ दुर्गाओं में से एक है।

चित्र-जल्प—पुं० [कर्म० स०] साहित्य में ऐसी बातें जो मान करनेवाली नायिका अथवा रूठा हुआ नायक एक दूसरेसे कहते हैं। (इसके दस भेद कहे गये हैं।)

चित्र-जात—पुं० =चित्र योग।

चित्रण—पुं० [सं० √चित्र +णिच्+ल्युट्–अन] १. चित्र अंकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. चित्र में रंग भरने का भाव। ३. किसी घटना, भाव, वस्तु, व्यक्ति आदि का विशद तथा सजीव रूप से शब्दों में किया जानेवाला वर्णन। जैसे-चरित्र-चित्रण।

चित्र-तंडुल—पुं० [ब० स०] वायविडंग।

चित्र-तल—पुं० [ष० त०] वह तल या सतह जिस पर चित्र अंकित हो। जैसे—कपड़ा, कागज, काठ, पत्थर आदि।

चित्र-ताल—पुं० [कर्म० स०] संगीत में एक प्रकार का चौताला ताल।

चित्र-तैल—पुं० [कर्म० स०] अंडी या रेंडी का तेल।

चित्र-त्वक् (च्)—पुं० [ब० स०] भोज-पत्र।

चित्र-दंडक—पुं० [ब० स०, कप्] जमीकंद। सूरन।

चित्र-देव—पुं० [कर्म० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

चित्र-देवी—स्त्री० [कर्म० स०] १. एक प्रकार की देवी या शक्ति। २. महेन्द्रवारुणी लता।

चित्र-धर्मा (र्म)—पुं० [ब० स०, अनिच्] महाभारत में उल्लिखित एक दैत्य।

चित्र-धाम—पुं० [कर्म० स०] यज्ञादि में पृथ्वी पर बनाया जानेवाला एक चौखूँटा चक्र जिसके खाने भिन्न-भिन्न रंगों से भरे जाते हैं। सर्वतोभद्र चक्र।

चित्रना—स० [सं० चित्र +हिं० ना (प्रत्य०)] १. चित्र आदि बनाना। २. चित्रों में रंग भरना। ३. किसी तल पर बेल-बूटे आदि बनाना। ४. शोभा के लिए मुँह पर चमकी आदि लगाना।

चित्र-नेत्रा—स्त्री० [ब० स० टाप्] मैना पक्षी।

चित्र-पक्ष—पुं० [ब० स०] तीतर पक्षी।

चित्र-पट—पुं० [ष० त०] १. वह पट (वस्त्र) जिस पर प्राचीन भारत में चित्र बनता था। २. कपड़े या चमड़े पर बना हुआ वह चित्र जो लपेट कर रखा जा सकता हो और आवश्यकता पड़ने पर दीवार आदि पर टाँगा जा सकता हो। ३. कोई ऐसा तल (जैसे-कागज, काठ, पत्थर, हाथी दाँत आदि) जिस पर चित्र बना या अंकित हुआ हो। ४. चल-चित्र। (दे०)

चित्र-पटी—स्त्री० [ष० त०] छोटा चित्र-पट।

चित्र-पत्र—पुं० [ब० स०] आँख की पुतली के पीछे का वह परदा जिस पर देखी जानेवाली वस्तुओं का प्रतिबिंब पड़ता है।
वि० रंग-विरंगे और विचित्र पंखों या परोंवाला।

चित्र-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] १. कपित्थपर्णी वृक्ष। २. द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्र-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] जल-पिप्पली।

चित्र-पथा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] प्रभास तीर्थ के अंतर्गत ब्रह्मकुंड के पास की एक छोटी नदी जो अब सूख चली है।

चित्र-पदा—पुं० [ब० स०, टाप्] १. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में २ भगण और २ गुरु होते हैं। २. मैना पक्षी। ३. लजालू या लज्जावंती लता। छूई-मूई।

चित्र-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १. मजीठ। २. कनफोड़ा नाम की लता। ३. जल-पिप्पली। ४. द्रोण पुष्पी। गूमा।

चित्र-पादा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] मैना पक्षी।

चित्र-पिच्छक—पुं [ब० स०] मयूर। मोर।

चित्र-पुंख—पुं [ब० स०] वाण। तीर।

चित्र-पुट—पुं० [ब० स०] संगीत में एक प्रकार का छः ताला ताल।

चित्र-पुत्री—स्त्री० [मध्य० स०] कपड़े, लकड़ी आदि की बनी हुई गुड़िया।

चित्रपुष्प—पुं० [ब० स०] शर जाति की एक घास जिसे राम-शर कहते हैं।

चित्र-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] आमड़ा।

चित्र-पृष्ठ—पुं० [ब० स०] गौरैया पक्षी।

चित्र-फल—पुं० [ब० स०] १. चितला मछली। २. तरबूज।

चित्र-फलक—पुं० [ष० त०] काठ, पत्थर, हाथी-दाँत आदि की वह तख्ती या पटिया जिस पर चित्र बना हो।

चित्रफला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. ककड़ी। २. बैंगन। ३. भटकटैया। ४. लिंगिनी नाम की लता। ५. महेन्द्र वारुणी लता। ६. फलुई नाम की मछली।

चित्र-वर्ह—पुं० [ब० स०] १. मोर। मयूर। २. गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

चित्रभानु—पुं० [ब० स०] १. अग्नि। २. सूर्य। ३. चीते का पेड़। ४. आक। मदार। ५. भैरव का एक नाम। ६. अश्विनीकुमार। ७. साठ संवत्सरों के अंतर्गत सोलहवें वर्ष का नाम। ८. अर्जुन की पत्नी चित्रांगदा के पिता जो मणिपुर में राज्य करते थे।

चित्र-भेषजा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] कठगूलर। कठूमर।

चित्र-भोग—पुं० [ब० स०] राजा का वह सहायक और शुभ-चिंतक जो समय पर अनेक प्रकार के पदार्थों तथा गाड़ी, घोड़े आदि से उसकी सहायता करे। (कौ०)

चित्र-मंच—पुं० [ब० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

चित्र-मंडप—पुं० [ब० स०] १. अश्विनीकुमार। २. अर्जुन की पत्नी

चित्रांगदा के पिता का नाम।

चित्र-मंडल—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का साँप।

चित्र-मति—वि० [ब० स०] विचित्र या विलक्षण बुद्धिवाला।

चित्र-मद—पुं० [तृ० त०] नाटक में किसी स्त्री का अपने पति या प्रेमी का अभिनय या चित्र देखकर मस्त होना और उसके प्रति अपने अनुराग का भाव दिखलाना।

चित्र-मृग—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का चितकबरा हिरन जिसकी पीठ पर सफेद सफेद-चित्तियाँ होती हैं। चीतल।

चित्र-मेखल—पुं० [ब० स०] मयूर। मोर।

चित्र-योग—पुं० [कर्म० स०] ६४ कलाओं में से एक जिसके द्वारा बुड्ढे को जवान या जवान को बुड्ढा बनाया जाता था।

चित्र-योधी (धिन्)—वि०[सं० चित्र√युध् (युद्ध करना)+णिनि, उप०-स०] असाधारण और विलक्षण योद्धा। अद्भुत ढंग से युद्ध करनेवाला। पुं० १. अर्जुन। २. अर्जुन वृक्ष।

चित्र-रथ—पुं० [ब० स०] १. सूर्य। २. कुबेर का सखा एक गंधर्व, अंगारपर्ण। ३. गद के एक पुत्र और श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम। ४. गंधर्वों के एक राजा का नाम जो कश्यप ऋषि का पुत्र था।

चित्ररथा—स्त्री० [सं० चित्ररथ+टाप्] महाभारत में वर्णित एक नदी।

चित्र-रश्मि—पुं० [ब० स] ४९ मरुतों में से एक।

चित्र-रेखा—स्त्री० [ब० स०] वाणासुर की कन्या ऊषा की एक सखी का नाम।

चित्र-रेफ—पुं० [ब० स०] १. भागवत के अनुसार शाकद्वीप के राजा प्रियव्रत के पुत्र मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक। २. उक्त के नाम पर प्रसिद्ध एक वर्ष अर्थात् भूखंड।

चित्रल—वि० [सं० चित्र√ला (लेना)+क] चितकबरा। रंग-बिरंगा। चितला।

चित्र-लता—स्त्री० [कर्म० स०] मँजीठ।

चित्रला—स्त्री० [सं० चित्रल+टाप्] गोरख इमली।

चित्र-लिखित—भू० कृ० [उपमि० स०]१. जो चित्र की तरह सुन्दर बनाकर या सजा-सँवार कर लिखा गया हो। २. जो लिखे हुए चित्र की तरह निश्चल हो गया हो।

चित्र-लिपि—स्त्री० [मध्य स०] वह लिपि जिसमें अक्षरों या वर्णों की जगह वस्तुओं और क्रियाओं के चित्र बनाकर उनके द्वारा भाव व्यक्त किये जाते हैं। (पिक्टोग्राफी) जैसे—चीन की प्राचीन लिपि।

चित्र-लेखक—पुं० [ष० त०] चित्रकार।

चित्र-लेखन—पुं० [ष० त०] १. कलम, कूँची आदि की सहायता से चित्र अंकित करना। २. बहुत बनाकर और सुन्दर अक्षर लिखना।

चित्र-लेखनी—स्त्री० [ष० त०] चित्र अंकित करने की कलम। कूँची।

चित्र-लेखा—स्त्री० [ब० स०] १. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १ भगण १ मगण १ नगण और ३ यगण होते हैं। २. बाणासुर की कन्या ऊषा की एक सखी जो चित्र बनाने में बहुत निपुण थी। ३. एक अप्सरा का नाम। ४. [ष० त०] चित्र बनाने की कलम या कूँची।

चित्र-लोचना—स्त्री० [ब० स०] मैना पक्षी।

चित्रबत*—पुं०=चित्रकार।

चित्रवत्—वि० [सं० चित्र+वति] उसी प्रकार गति-रहित और स्तब्ध जिस प्रकार चित्र होता है। (ला०)

चित्रवती—स्त्री० [सं० चित्र+मतुप्, वत्व,+ङीप्] गांधार स्वर की एक मूर्च्छना। (संगीत)

चित्रवदाल—पुं० [सं० आल, आ√अल् (पर्याप्ति)+अच्, चित्रवत्-आल, कर्म स०] पाठीन मत्स्य। पहिना मछली।

चित्र-वन—पुं० [कर्म स०] गंडकी नदी के किनारे का पुराण-प्रसिद्ध एक वन।

चित्र-वर्मा (र्मन्)—पुं० [ब० स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्र-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] १. विचित्र नामक लता। २. महेन्द्र वारुणी।

चित्र-वहा—स्त्री० [सं० चित्र√वह् (ढोना)+अच्–टाप्] महाभारत के अनुसार एक नदी।

चित्र-वाण—पुं० [ब० स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्र-विचित्र—वि० [द्व० स०] १. जिसमें कई रंग हो। रंग-बिरंगा। २. जिसके कई रूप या प्रकार हों। ३. विलक्षण। ४. बेल-बूटेदार। ५. नक्काशी-दार।

चित्र-विद्या—स्त्री० [ष० त०] चित्र बनाने की विद्या। चित्रकारी। चित्रकला।

चित्र-विन्यास—पुं० [ष० त०] चित्रकारी।

चित्र-वीर्य्य—वि०[ब० स०] विचित्र और बहुत बड़ा बलवान् या वीर। पुं० लाल रेंड।

चित्र-शार्दूल—पुं० [कर्म स०] चीता नामक हिंसक पशु।

चित्र-शाला—स्त्री० [ष० त०] १. वह स्थान जहाँ चित्र बनते हों या विक्रयार्थ रखे जाते हों। २. वह स्थान जहाँ प्रदर्शन के लिए बहुत-से चित्र रखे रहते हों। ३. वह कमरा जिसमें बहुत-से चित्र टँगें या लगे हों। (पिक्चर गैलरी) ४. मध्य युग में दंपति के रहने और सोने का कमरा। (राज०)

चित्र-शालिका—स्त्री०=चित्र-शाला।

चित्र-शिखंडिज—पुं० [सं० चित्र-शिखंडिन्√ जन् (उत्पत्ति)+ड, उप० स०] बृहस्पति।

चित्र-शिखंडी (डिन्)—पुं०[सं० चित्र-शिखंड कर्म स०, +इनि] मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ ये सातों ऋषि। सप्तर्षि।

चित्र-शिर (स्)—पुं० [सं० ब० स०] १. एक गंधर्व का नाम। २. मल-मूत्र के विकार से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का विष। (सुश्रुत)

चित्र-शिल्पी (ल्पिन्)—पुं० [ष० त०] चित्रकार।

चित्र-संग—पुं० [ब० स०] १६ अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

चित्र-सभा—स्त्री०=चित्र-शाला।

चित्र-सर्प—पुं० [कर्म० स०] चीतल साँप।

चित्र-सामग्री—स्त्री० [ष० त०] चित्र अंकित करने की सामग्री। जैसे—रंग, तूलिका, कागज, कपड़ा आदि।

चित्र-सारी—स्त्री० [सं० चित्र-शाला] १. चित्र अंकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. चित्रशाला। ३. राजाओं के भोग-विलास और शयन का कमरा जिसमें अनेक सुंदर चित्र लगे रहते थे। ४. स्त्रियों की वह ओढ़नी जिस पर सलमे-सितारे का काम हुआ हो।

चित्र-सेन--पुं० [ब० स०] १. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २. एक गंधर्व का नाम। ३. पुरुवंशी राजा परीक्षित के एक पुत्र। ४. पुराणानुसार शंबरासुर का एक पुत्र।

चित्रस्थ—वि० [सं० चित्र√स्था (ठहरना)+क] १. चित्र में अंकित किया हुआ। २. चित्र में अंकित व्यक्ति के समान निश्चल या स्तब्ध।

चित्र-हस्त—पुं० [ब० स०] तलवार या और कोई हथियार चलाने का एक विशिष्ट ढंग या हाथ।

चित्रांकन—पुं० [चित्र-अंकन, ष० त०][भू० कृ० चित्रांकित] चित्र अंकित करने या हाथ से तसवीर बनाने का काम। आलेख्य कर्म। (पेन्टिंग)

चित्रांकित—भू० कृ० [सं० चित्र-अंकित स० त०] जो चित्र के रूप में या चित्र में अंकित किया गया हो। चित्रित।

चित्रांग—वि० [चित्र-अंग, ब० स] जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ, चिह्न आदि हों।

पुं० १. चित्रक या चीता नाम का पेड़। २. चीतल साँप। ३. ३. ईंगुर। सिंदूर। ४. हरताल।

चित्रांगद—पुं० [चित्र-अंगद, ब० स०] १. सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न राजा शांतनु के एक पुत्र और विचित्रवीर्य्य के छोटे भाई। २. पुराणानुसार एक गंधर्व। ३. महाभारत के अनुसार दशार्ण के एक राजा।

चित्रांगदा—स्त्री० [सं० चित्रांगद+टाप्] १. मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या जो अर्जुन को ब्याही थी। और जो बभ्रुवाहन की माता थी। २. रावण की एक पत्नी जिसके गर्भ से वीरबाहु का जन्म हुआ था।

चित्रांगी—स्त्री० [सं० चित्रांग+ङीष्] १. मँजीठ। २. कनखजूरा।

चित्रा—स्त्री० [सं०√चित्र्+अच्-टाप्] १. सत्ताइस नक्षत्रों में से चौदहवाँ नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं। इसमें गृह-प्रवेश, गृहारंभ, और यानों, वाहनों आदि का व्यवहार शुभ कहा गया है। २. मूषिकपर्णी या मूसाकानी लता। ३. ककड़ी, खीरा आदि फल। ४. दंती वृक्ष। ५. गाँडर नामक घास। ६. मँजीठ। ७. बायबिडंग। ८. अजवायन। ९. चितकबरी गाय। १०. एक अप्सरा का नाम। ११. सुभद्रा का एक नाम। १२. एक प्राचीन नदी। १३. एक प्रकार की रागिनी जो भैरव राग की पत्नी कही गई है। १४. संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। १५. एक प्रकार का पुराना बाजा। १६. पंद्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसमें पहले तीन नगण, फिर दो यगण होते हैं। १७. एक प्रकार की चौपाई जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं और अंत में एक गुरु होता है। इसकी पाँचवीं, आठवीं और नवीं मात्रा लघु तथा अंतिम मात्रा गुरु होती है।

चित्राक्ष—पुं० [चित्र-अक्षि, ब० स०, षच्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वि० [स्त्री० चित्राक्षी] विचित्र और सुंदर आँखोंवाला।

चित्राक्षी—स्त्री० [सं० चित्राक्ष+ङीष्] मैना पक्षी।

चित्राटीर—पुं० [सं० चित्रा√अट् (गति)+ईरच्] १. चंद्रमा। २. शिव का घंटाकर्ण नामक अनुचर।

चित्रादित्य—पुं० [चित्र-आदित्य, मध्य० सं०] प्रभास क्षेत्र में चित्रगुप्त की स्थापित सूर्य्य की मूर्ति। (स्कंद पुराण)

चित्राधार—पुं० [चित्र-आधार, ष० त०] कोरे पन्नों की नत्थी की हुई वह पुस्तक जिसमें आग्रहण, चित्र, रेखा-चित्र आदि लगाये जाते हैं। (एलबम)

चित्रान्न—पुं० [चित्र-अन्न, कर्म० स०] बकरी के दूध में पकाया और बकरी के कान के रक्त में रंगा हुआ जौ और चावल। (कर्मकांड)

चित्रायस—पुं० [चित्र-अयस्, कर्म० स०, टच्] इस्पात। (लोहा)

चित्रायुध—पुं० [चित्र-आयुध, कर्म० स०] १. विलक्षण अस्त्र। २. [ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

वि० जिसके पास विचित्र या विलक्षण अस्त्र-शस्त्र हों।

चित्रार—पुं०=चित्रकार। उदा०--किरि कठचीत्र पूतली निज करि चीत्रारै लागी चित्रण--प्रिथीराज।

चित्राल—पुं० [?] कश्मीर के पश्चिम का एक पहाड़ी प्रदेश। चितराल।

चित्रालय—पुं०[चित्र-आलय, ष० त०] चित्रशाला। (दे०)

चित्रावसु—स्त्री० [सं०] तारों से शोभित रात।

चित्रा-विरली—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पुराना कामदार कपड़ा जो आज-कल की जामदानी की तरह का होता था।

चित्राश्व—पुं० [चित्र-अश्व, ब० स०] सत्यवान् का एक नाम।

चित्रिक—पुं० [सं० चैत्र+क, पृषो० सिद्धि] चैत का महीना। चैत्र मास।

चित्रिणी—स्त्री० [सं० चित्र+इनि-ङीप्] कामशास्त्र तथा साहित्य में चार प्रकार की नायिकाओं या स्त्रियों में वह नायिका जो अनेक प्रकार की कलाओं तथा बनाव-सिंगार करने में निपुण हो।

चित्रित—भू० कृ० [सं०√चित्र्+क्त] १. चित्र के रूप में खींचा या दिखाया हुआ। २. जिसका रंग-रूप चित्र में दिखाया गया हो। ३. जिस पर चित्तियाँ, बेल-बूटे आदि बनें हों। ४. जिसका चित्रण हुआ हो। ५. जो शब्दों में बहुत ही सुन्दर रूप से लिखा गया हो।

चित्री (त्रिन्)—वि० [सं० चित्र+इनि] १, चितकबरा। २. चित्रित।

चित्रीकरण—पुं० [सं० चित्र+च्वि०, ईत्व-दीर्घ,√कृ (करना)+ल्युट्-अन] १. विभिन्न वर्णों से रंग भरकर चित्रित करना। २. चित्र के रूप में लाना या उपस्थित करना। ३. सजाना।

चित्रेश—पुं० [चित्रा-ईश, ष० त०]चित्रा नक्षत्र के पति चंद्रमा।

चित्रोक्ति—स्त्री० [चित्रा-उक्ति, कर्म स०] १. आकाश। २. अलंकृत भाषा में कही हुई बात। ३. सुन्दर अलंकारों से युक्त उक्ति या कविता।

चित्रोत्तर—पुं० [चित्र-उत्तर, ब० स०] साहित्य में उत्तर अलंकार का एक भेद जिसमें प्रश्न ऐसे विचित्र ढंग से रखे जाते हैं कि उन्हीं के शब्दों में उनके उत्तर भी रहते हैं अथवा कई प्रश्नों का एक ही उत्तर भी रहता है। जैसे--'मुग्धा तियकी केलि रुचि कोन भौन में होय?' में का उत्तर 'कोन भौन' अर्थात् 'भवन का कोना' है।

चित्रोत्पला—स्त्री० [चित्र-उत्पल, ब० स०] उड़ीसा की एक नदी जिसे आज-कल चितरतला कहते हैं। २. पुराणानुसार ऋक्षपाद पर्वत से निकली हुई एक नदी।

चित्र्य—वि० [सं०√चित्र्+ण्यत्] १. पूज्य। २. चुनने या चयन किये जाने के योग्य। ३. जिसे चित्र के रूप में लाया जा सके। ४. जो चित्र के रूप में अंकित किये जाने के लिए उपयुक्त हो।

चिथड़ा—पुं० [हिं० चीथना=दाँत से फाड़ना] १. पुराने तथा घिसे हुए कपड़े का फटा या फाड़ा हुआ ऐसा छोटा टुकड़ा जो किसी काम न आ सकता हो। २. बहुत पुराना, फटा हुआ और मैला कपड़ा।

पद—चियड़ा-गुदड़ा=फटे-पुराने और रद्दी कपड़े।

मुहा०—चिथड़ा लपेटना =फटा-पुराबा कपड़ा पहनना।

वि० बहुत फटा हुआ। जैसे—चिथड़ा कपड़ा।

चिथाड़ना—स० [सं० चीर्ण] १. चादर के रूप की वस्तुओं को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करना। धज्जी-धज्जी करना। २. किसी को खूब खरी-खोटी सुनाकर अपमानित करना। धज्जियाँ उड़ाना। डाँटना।

चिद*—पुं०=चित्।

चिदाकाश—पुं० [सं० चित्-आकाश, उपमि० स०] आकाश के समान निर्लिप्त और सब का आधार भूत ब्रह्म। परब्रह्म।

चिदात्मक—वि० [सं० चित्-आत्मन्, ब० स०, कप्] चेतना से युक्त।

चिदात्मा (त्मन्)—पुं० [चित्-आत्मन् ब० स०] १. चैतन्य स्वरूप परब्रह्म। २. चेतना शक्ति।

चिदानंद—पुं० [सं० चित्-आनंद, कर्म० स०] चैतन्य और आनन्दमय पर ब्रह्म।

चिदाभास—पुं० [सं० चित्-आभास, ष० त०] १. आत्मा के चैतन्य स्वरूप पर पड़नेवाला ब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब। २. जीवात्मा।

चिदालोक—पुं० [सं० चित्-आलोक ष० त०] सदा बना रहनेवाला आत्मा का प्रकाश। शाश्वत प्रकाश।

चिद्घन—वि० [सं० चित्√हन्+अप्, घन आदेश] जिसमें चेतना शक्ति हो। चेतना से युक्त। उदा०—श्री वृंदावन चिद्घन कछु छवि बरनि न जाई।—नंददास।

पुं० ब्रह्म।

चिद्रूप—वि० [सं० चित्-रूप, ब० स०] १. शुद्ध चैतन्य रूप, चिन्मय। २. परम ज्ञानी। ३. अच्छे स्वभाववाला।

पुं० चैतन्य-स्वरूप। परब्रह्म।

चिद्विलास—पुं० [सं० चित्-विलास, ष० त०] १. चैतन्य-स्वरूप ईश्वर की माया। २. शंकराचार्य के एक प्रसिद्ध शिष्य।

चिन—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती और इमारतों में लगती हैं। २. एक प्रकार की घास जो चौपायों के खाने के लिए सुखाकर भी रखी जा सकती है।

चिनक—स्त्री० [हिं० चिनगी] १. जलन लिये हुए हलकी स्थानिक पीड़ा। चुनचुनाहट। जैसे—पेशाब करने के समय मूत्रनाली में होनेवाली चिनक। २. चिनगारी।

चिनग—स्त्री०=चिनक।

चिनगटा—पुं०=चिथड़ा।

चिनगारी—स्त्री० [सं० चूर्ण, हिं० चुन+अंगार] १. जलती हुई वस्तु से निकलकर अलग होनेवाला आग का छोटा कण जो उड़कर इधर-उधर जाता या जा सकता हो।

मुहा०—**(किसी की) आँखों से चिनगारी छूटना**=अत्यधिक क्रुद्ध होने पर आँखों का लाल हो जाना। **चिनगारी छोड़ना**=ऐसा काम करना या बात कहना जिससे बहुत बड़ा उपद्रव या लड़ाई खड़ी हो।

२. दो कड़ी वस्तुओं की रगड़ से उत्पन्न होनेवाला आग का कण। ३. लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा छोटा कार्य या बात जिसका प्रभाव आगे चलकर बहुत उग्र तथा भीषण हो सकता है।

चिनगी—स्त्री०=चिनगारी।

पुं० बाजीगरों और मदारियों के साथ रहनेवाला वह छोटा लड़का जो अनेक प्रकार के कौशलपूर्ण खेल दिखलाता है।

चिनत्ती—स्त्री० [हिं० चेना] चेना नामक कदन्न के आटे की रोटी।

चिनना*—स०=चुनना।

चिनाई दौड़—स्त्री० [चिनाई ?+दौड़] जहाज की घुमाव-फिराव की चाल। (लश०)

चिनाना—स०=चुनवाना।

चिनाब—स्त्री० [सं० चन्द्रभागा] पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी। चंद्रभागा नामक नदी।

चिनार—पुं० [?] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

चिनिंग—पुं० [?] बटेर की जाति का एक पक्षी जो रूप-रंग में घाघस जैसा किंतु उससे कुछ छोटा होता है।

चिनिया—वि० [चीन देश से] १. चीन देश में उपजने, बनने या होनेवाला। जैसे—चिनिया केला। २. जिसका संबंध चीन देश से हो। चीन संबंधी।

पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

वि० [हिं० चीनी] १. चीनी का बना हुआ। २. जिसमें चीनी मिली हुई हो। ३. चीनी के रंग या स्वाद का।

चिनिया केला—पुं० [हिं० चिनिया+केला] भारत के पूर्वी प्रदेशों में होनेवाला छोटी जाति का एक केला जिसका स्वाद चीनी की तरह मीठा होता है।

चिनिया घोड़ा—पुं० [हिं० चीन या चीनी] वह घोड़ा जिसके पैर सफेद रंग के और शरीर का अधिकांश लाल और कुछ भाग सफेद होता है।

चिनिया बत—पुं० [हिं० चिनिया+बत] बत्तख की तरह की एक चिड़िया।

चिनिया बदाम—पुं० [हिं० चीन+बादाम] मूँगफली।

चिनियारी—स्त्री० [सं० चुचु ?] सुसना का साग।

चिनिया बेगम—स्त्री० [हिं० चिनिया+बेगम] अफीम। (परिहास)

चिनौटिया—वि० [हिं० चिनना=चुनना] १. जिससे चुनट पड़ी हुई हो। २. चुना हुआ।

चिनौटिया चीर—पुं० [हिं०+सं०] चुंदरी या चूनरी नाम का कपड़ा। उदा०—पहिरैं चीर चिनौटिया, चटक, चौगुनी होति।—बिहारी।

चिनौती—स्त्री०=चुनौती।

चिन्न—पुं० [सं० चणक] चना।

चिन्मय—पुं० [सं० चित्+मयट्] पूर्ण तथा विशुद्ध ज्ञानमय।

पुं० परमात्मा।

चिन्ह—पुं०=चिह्न। (अशुद्ध रूप)

चिन्हना†—अ०=चीन्हना (पहचानना)।

चिन्हवाना—स० [हिं० 'चीन्हना का प्रे०] किसी को कुछ चीन्हने (पहचानने) में प्रवृत्त करना।

चिन्हाना—स० [हिं० चीन्हना का प्रे०] पहचान या परिचय कराना। चीन्हने या पहचानने में प्रवृत्त करना।

चिन्हानी—स्त्री० [हिं० चिह्न] १. निशानी। यादगार। २. पहचान। ३. रेखा आदि के रूप में लगाया हुआ चिह्न या निशान।

चिन्हार—वि० [सं० चिह्न] १. जिसे कोई चीन्हता अर्थात् पहचानता हो। २. जान-पहचान का। परिचित।

चिन्हारना—स० [सं० चिह्न] चिह्नित करना। निशान लगाना।

चिन्हारी—स्त्री०[हिं०चिह्न] १. जान-पहचान। परिचय। २. चिह्नानी। पुं० १. व्यक्ति जिससे जान-पहचान या परिचय हो। परिचित। २. चिह्न। निशान।

चिन्हित—भू० कृ०=चिह्नित। (अशुद्ध रूप)

चिपकना—अ० [अनु० चिपचिप] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ बीच में कोई लसदार वस्तु होने के कारण लग या सट जाना। जुड़ जाना। जैसे—आँखें चिपकना। २. दो वस्तुओं का तल से तल मिलकर इस प्रकार एक होना कि बीच में अवकाश न रह जाय। जैसे—दरवाजा चिपकना। ३. व्यक्तियों का पास-पास या सटकर बैठना। जैसे—दूर बैठो, चिपको मत। ४. किसी वस्तु या बात का कसकर पकड़ लेना। जैसे—लता का खंभे से चिपकना। ५. किसी व्यक्ति से प्रगाढ़ प्रेम स्थापित करना और उसके पास या साथ रहना। ६. लीन या रत रहना। जैसे—बच्चे खेल में चिपके रहते हैं।

चिपकाना—स० [हिं० चिपकना] १. किसी लसीली वस्तु की सहायता से दो वस्तुओं के तल परस्पर इस प्रकार जोड़ना कि वे जल्दी अलग न हो सकें। श्लिष्ट करना। जैसे—लिफाफे पर टिकट चिपकाना। २. अच्छी तरह आलिंगन करना। गले लगाना। लिपटाना। ३. किसी काम-धंधे या नौकरी में लगाना। (बोल-चाल) जैसे—इस लड़के को भी कहीं चिपका दो।

चिपचिप—स्त्री० [अनु०] १. वह अनुभूति जो किसी रसदार वस्तु को छूने से होती है। २. लसदार वस्तु को बार-बार छूते और उस पर से उँगली या हाथ हटाने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चिपचिपा—वि० [हिं० चिपचिप] [स्त्री० चिपचिपी] (पदार्थ) जो गाढ़ा तथा लसदार होने के कारण वस्त्र, शरीर आदि से छूए जाने पर उससे चिपक जाता हो। जैसे—किवाड़ पर लगा हुआ चिपचिपा रंग।

चिपचिपाना—अ० [हिं० चिपचिप] किसी गाढ़ी तथा लसीली वस्तु का चिपचिप शब्द करना या किसी वस्तु से छूए जाने पर उससे चिपक जाना। जैसे—गोंद या चाशनी का चिपचिपाना।

स० किसी चीज को चिपचिपा करना या बनाना।

चिपचिपाहट—स्त्री० [हिं० चिपचिपा] चिपचिपाने अथवा चिपचिपे होने की अवस्था, गुण या भाव। लसीलापन। लस। लसी।

चिपट—वि० [सं० नि+पटच्, चि आदेश] चिपटी नाकवाला। पुं० चिड़वा।

चिपटना—अ० [सं० चिपिट=चिपटा] १. इस प्रकार जुड़ना कि जल्दी अलग न हो सके। चिपकना। सटना। जैसे—लता या पेड़ से चिपटना। २. दे० 'चिमटना'।

चिपटा—वि० [सं० चर्पट, दे प्रा० चाप्टो, बँ० चाप्टी, उ० चेप्टी, गु० चांपट, चपट्; ने० चेप्टो, मरा० चापट] [स्त्री० चिपटी] १. जिसके ऊपरी तल में आवश्यक अथवा उचित उभार न हो। जिसकी सतह बहुत कुछ दबी हुई या सम हो। जैसे—चिपटी नाक, चिपटी सुपारी।

चिपटाना—स० [हिं० चिपटना] १. चिपकाना। सटाना। २. आलिंगन करना। लिपटाना।

चिपटी—स्त्री० [हिं० चिपटा] १. कान में पहनने की एक प्रकार की बाली। २. भग। योनि। (बाजारू)

मुहा०—**चिपटी खेलना या लड़ना**=कामातुर अथवा दुश्चरित्रा स्त्रियों का आपस में भग या योनि रगड़ना। (बाजारू)

वि० हिं० 'चिटा' का स्त्री० रूप।

चिपड़ा—वि० [हिं० चीपड़ा] जिसकी आँख में अधिक चीपड़ रहता हो। पुं० [स्त्री० चिपड़] जलाने के लिए सुखाए हुए गोबर के बड़े पिंड। उपला। कंडा। गोंइठा।

चिपड़ी—स्त्री० [हिं० चिप्पड़] छोटा चिपड़ा या कंडा। उपली। गोंइठी।

चिपिट—वि० [सं०√चि (चयन)+पिटच्] चिपटा।

पुं० १. चिड़वा। २. चिपटी नाकवाला व्यक्ति। ३. आँख में उँगली लगने, दबने आदि के कारण दृष्टि में होनेवाला वह क्षणिक विकार जिससे चीजें अपने स्थान से कुछ ऊपर-नीचे हटी हुई या एक ही जगह दो दिखाई देती हैं।

चिपिट-नासिक—पुं० [ब० स०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक देश जो कैलाश पर्वत के उत्तर कहा गया है। २. तातार या मंगोल देश जहाँ के निवासियों की नाक चिपटी होती है। ३. उक्त देश का निवासी। वि० चिपटी नाकवाला।

चिपीटक—पुं० [सं०=चिपिट+कन् पृषो० सिद्धि] चिड़वा।

चिपुआ†—पुं० [देश०] चेल्हवा या चेल्हा मछली।

चिप्प—पुं० [सं०√चिक्क् (पीड़ा देना)+अच्, क्क् को प्प् आदेश] एक रोग जिसमें उँगलियों के नाखूनों के नीचे तथा आस-पास का माँस गलने या पकने लगता है।

चिप्पख—वि० [हिं० चिपकना] १. चिपका या दबा हुआ। २. चिपटा। ३. बहुत ही दुबला-पतला।

चिप्पड़—पुं० [सं० चिपिट] [स्त्री० चिप्पी] १. वह छोटा चिपटा टुकड़ा जो किसी चीज के सूख जाने पर उसके ऊपरी तल में से कुछ अलग हो रहा हो या निकल चला हो। जैसे—जलाने की लकड़ी के ऊपर का चिप्पड़। २. ऊपर से लगाया या सटाया जानेवाला कोई चिपटा खंड। जैसे—इसका छेद बंद करने के लिए ऊपर से एक चिप्पड़ लगा दो।

चिप्पिका—स्त्री० [सं० चिप्प+कन्—टाप्, इत्व] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक रात्रिचर जंतु। २. एक प्रकार की चिड़िया।

चिप्पी—स्त्री० [हिं० चिप्पड़] १. छोटा चिप्पड़ जो ऊपर से चिपकाया, लगाया या सटाया जाय। जैसे—कागज की चिप्पी। २. वह बटखरा जिससे तौलकर सब को बराबर-बराबर अनाज या रसद बाँटी जाती है। ३. उक्त प्रकार से बाँटा जानेवाला अनाज या रसद। सीधा। (साधुओं की परिभाषा)

†स्त्री०=चिपड़ी।

चिबि—स्त्री० दे० 'चिवि'।

चिबिल्ला—वि० दे० 'चिलबिल्ला'।

चिबिल्लापन—पुं०=चिलबिल्लापन।

चिबुक—पुं० दे० 'चिवुक'।

चिमगादड़—पुं०=चमगादड़।

चिमटना—अ० [सं० स्तिम्; प्रा० तिम्, चिम्, बँ० चिमटा; उ० चिमुटबा; मरा० चिवटणें] १. किसी जीव का दूसरे जीव या पदार्थ को अच्छी तरह पकड़कर उसके साथ लग या सट जाना। जैसे—(क) बच्चे का माँ के गले से चिमटना। (ख) गुड़ से च्यूंटों का चिमटना। २. स्वाथ

साधन के लिए बुरी तरह से किसी को ग्रसना या पकड़ना। जैसे—मुफ्त-खोरों का किसी रईस से चिमटना। ३. बहुत बुरी तरह से किसी के पीछे पड़ना और जल्दी उसका पिंड न छोड़ना। जैसे—भिखमंगों का यात्रियों से चिमटना। ४. चिपकना। सटना।

चिमटवाना—स० [हिं० चिमटना का प्रे०] दूसरे से चिमटाने का काम कराना। किसी को चिमटने या चिमटाने में प्रवृत्त करना।

चिमटा—पुं० [हिं०चिमटना] [स्त्री० चिमटी] (हाथ की सुरक्षा के लिए) पीतल, लोहे आदि धातुओं का बना हुआ वह लंबा उपकरण जिसमें आगे की ओर दो लंबी फलियाँ होती हैं और जिनसे पकड़कर चीजें उठाई या रखी जाती हैं। दस्त पनाह। जैसे—रसोई घर में कोयला उठाने या तवा पकड़ने का चिमटा, साँप पकड़ने का चिमटा।

चिमटाना—स० [हिं० चिमटना] १. किसी को चिमटने में प्रवृत्त करना। २. आलिंगन करना। गले लगाना। लिपटाना।

चिमटी—स्त्री० [हिं० चिमटा] कई प्रकार के कारीगरों के काम का वह छोटा उपकरण जो चिमटे के आकार-प्रकार का होता है और जिससे वे छोटी-छोटी चीजें उठाते, जमाते या रखते हैं। जैसे—लोहारों, सुनारों या हज्जामों की चिमटी।

चिमड़ा—वि०=चीमड़।

चिमन—पुं०=चमन। (बगीचा)

चिमनी—स्त्री० [अं०] १. भवनों, यंत्रों आदि में ऊपर की ओर ऊँची उठी हुई वह गोलाकार नली जिसके द्वारा नीचे का धूआँ ऊपर उठकर बाहर निकलता है। जैसे—बिजलीघर की चिमनी, रेल के इंजन की चिमनी। २. लंपों आदि में शीशे की वह गोलाकार नली जिससे धूआँ ऊपर जाता है और नीचे की ओर प्रकाश फैलता है।

चिमिक—पुं० [सं०√चि (चयन)+मिक्, चिमि+कन्] तोता।

चिमीट—स्त्री० [हिं० चिमटना] १. चिमटने की क्रिया या भाव। २. २. चिमटने के कारण पड़नेवाला दबाव या भार। उदा०—इनको लक्कड़ की चिमीट में भूमि से सटा हुआ कर दो। —वृंदावनलाल वर्मा।

चिमोटा—पुं०=चमोटा।

चिमोटी—स्त्री० १. =चिमटी। २.=चमोटी।

चिरंजीव—वि० [सं० चिरम्√जीव् (जीना)+अच्] १. बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। २. अमर।

अव्य० छोटों के लिए एक आशीर्वादात्मक विशेषण या संबोधन जिसका अर्थ होता है—बहुत दिनों तक जीवित रहो।

पुं० १. पुत्र। बेटा। जैसे—हमारे भाई साहब के चिरंजीव आज यहाँ आनेवाले हैं। २. पुराणों के अनुसार अश्वत्थामा, कृपाचार्य, परशुराम, बलि, विभीषण, व्यास और हनुमान जो सदा जीवित रहनेवाले माने जाते हैं। ३. विष्णु। ४. कौआ।

चिरंजीवी (विन्)—वि० [सं० चिरम्√जीव्+णिनि] =चिरजीवी।

चिरंटी—स्त्री० [सं० चिर√अट् (गति)+अच्, ङीप्, पृषो० मुम्] १. वह सयानी लड़की जो पिता के घर रहती हो। २. युवती।

चिरंतन—वि० [सं० चिरम्+ट्यु—अन, तुट् आगम] जो बहुत दिनों से चला आ रहा हो। पुरातन। पुराना।

चिर—वि० [सं०√चि (चयन करना)+रक्] १. जो बहुत दिनों से चला आ रहा हो या बहुत दिनों तक चलता रहे। दीर्घ काल-व्यापी। जैसे—चिरायु=अधिक काल तक बनी रहनेवाली आयु; चिरस्थायी=बहुत दिनों तक बना रहनेवाला। २. दीर्घ या बहुत। (समय)

पुं० देर। विलंब।

क्रि० वि० बहुत दिनों तक।

पुं० तीन मात्राओं का वह गण जिसका पहला वर्ण लघु हो।

चिरई—स्त्री० = चिड़िया। (पूरब)

चिरक—स्त्री० [हिं० चिरकना] बहुत जोर लगाने पर होनेवाला जरा-सा पाखाना। मल-कण।

चिरक ढाँस—स्त्री० [हिं० चिरकना+ढ़ाँसना] १. कुकरखाँसी। ढ़ाँसी। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य प्रायः कुछ न कुछ रोगी बना रहता है। ३. नित्य होता रहनेवाला या प्रायः बना रहनेवाला झगड़ा।

चिरकना—अ० [अनु०] बहुत कष्ट से और थोड़ा-थोड़ा मल-त्याग करना। (कोष्ठ-बद्धता का लक्षण)

चिरकार—वि० [सं० चिर√कृ (करना)+अण्] हर काम में बहुत देर लगानेवाला। दीर्घ सूत्री।

चिरकारिक—वि० [सं० चिरकारिन्+कन्] = चिरकार।

चिरकारी (रिन्)—वि० [सं० चिर√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० चिरकारिणी] चिरकार। (दे०)

चिर-काल—पुं० [कर्म० स०] [वि० चिरकालिक] दीर्घकाल। बहुत समय। जैसे—चिरकाल से ऐसा ही होता चला आ रहा है।

चिरकालिक—वि० [सं० चिर-काल+ठन्—इक] १. बहुत दिनों से चला आता हुआ। पुराना। २. बहुत दिनों तक बना रहनेवाला।

चिरकालीन—वि० [सं० चिरकाल+ख—ईन] =चिरकालिक।

चिरकीन—वि० [फा०] १. कोष्ठबद्धता के कारण थोड़ा-थोड़ा मल-त्याग करनेवाला। २. बहुत अधिक कुत्सित, गंदा या मैला।

चिरकुट—पुं० [हिं० चिरना+कुटना] फटा-पुराना कपड़ा। चिथड़ा।

चिर-कुमार—वि० [च० त०] [स्त्री० चिर कुमारी] सदा कुमार अर्थात् ब्रह्मचारी बना रहनेवाला। विवाह न करनेवाला।

चिर-क्रिय—वि० [ब० स०] काम में देर लगानेवाला। दीर्घ सूत्री।

चिरक्रियता—स्त्री० [सं० चिरक्रिय+तल्—टाप्] चिर-क्रिय होने की अवस्था या भाव। दीर्घसूत्रता।

चिरचना—अ० = चिड़चिड़ाना।

चिरचिटा—पुं० [सं० चिर्चिडा] १. चिचड़ा। अपामार्ग। २. एक प्रकार की बहुत ऊँची या बड़ी घास जो चौपाये खाते हैं।

चिरचिरा†—वि० = चिड़चिड़ा।

पुं० दे० 'चिचड़ा'।

चिरजीवक—वि० [सं० चिर√जीव् (जीना)+ण्वुल्—अक] बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। चिरजीवी।

पुं० जीवक नामक वृक्ष।

चिर-जीवन—पुं० [मध्य० स०] सदा बना रहनेवाला जीवन। अमर जीवन।

चिरजीवी (विन्)—वि० [सं० चिर√जीव्+णिनि] १. अधिक या बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। २. सदा जीवित रहनेवाला। अमर। ३. सदा बना रहनेवाला। शाश्वत।

पुं० १. विष्णु। २. मार्कंडेय ऋषि। ३. कौआ। ४. जीवक वृक्ष। ५.

सेमर का वृक्ष। ६. अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गये हैं।

चिरता†—पुं० =चिलता (कवच)।

चिर-तिक्त—पुं० [ब० स०] चिरायता।

चिर-तुषार-रेखा—स्त्री० [मध्य० स०] पहाड़ों आदि की ऊँचाई का वह स्तर जिसके ऊपर सदा बरफ जमा रहता है। (स्नोलाइन)

चिरना—अ० [सं० चीर्ण, हिं० चीरना] १. किसी वस्तु का किसी दूसरी धारदार वस्तु द्वारा चीरा जाना। छोटे-छोटे टुकड़ों में आरे, चाकू आदि के द्वारा विभक्त होना। २. किसी सीध में फटना या फाड़ा जाना। जैसे—चाकू से उँगली चिरना।

†पुं० वह औजार जिससे कोई चीज चीरी जाती हो। जैसे—कसेरों, कुम्हारों या सुनारों का चिरना।

चिर-निद्रा—स्त्री० [च० त०] मृत्यु।

चिर-नूतन—वि० [च० त०] बहुत दिनों तक या सदा नया बना रहनेवाला।

चिर-परिचित—वि० [तृ० त०] जिससे बहुत दिनों से परिचय या जान-पहचान हो।

चिरपाकी (किन्)—वि० [सं० चिर √पच् (पकना) +णिनि] १. बहुत देर में पकनेवाला। २. बहुत देर में पचनेवाला।

पुं० कपित्थ। कैथ।

चिरपुष्प—पुं० [ब० स०] बकुल। मौलसिरी।

चिर-प्रतीक्षित—वि० [तृ० त०] जिसकी बहुत दिनों से प्रतीक्षा की जा रही हो।

चिर-प्रसिद्ध—वि० [तृ० त०] जो बहुत दिनों से प्रसिद्ध या मशहूर हो।

चिरबत्ती—वि० [हिं० चिरना +बत्ती] (कपड़ा) जो चिर या फटकर इतने छोटे-छोटे-टुकड़ों के रूप में हो गया हो कि दीए की बत्ती बनाने के सिवा और किसी काम में न आ सकता हो। चिथड़े-चिथड़े किया हुआ।

चिर-बिल्व—पुं० [सं० चिर √बिल् (ढकना) +वन्] करंज वृक्ष। कंजा।

चिरम—स्त्री० [सं० चिर्मरी] गुंजा। घुंघची।

चिरमिटी—स्त्री० [हिं० चिरम] गुंजा। घुंघची।

चिरमी—स्त्री० =चिरमिटी।

चिर-मेही (हिन्)—पुं० [सं० चिर √मिह् (मूत्र करना) +णिनि] गधा, जो बहुत देर तक पेशाब करता रहता है।

चिर-रोगी (गिन्)—वि० [तृ० त०] १. जो बहुत दिनों से बीमार चला आ रहा हो। २. सदा रोगी बना रहनेवाला।

चिरला—पुं० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाड़ी।

चिरवल—पुं० [सं० चिरबिल्व या चिरबल्ली] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ की छाल से कपड़े रंगने के लिए सुंदर लाल रंग निकलता है।

चिरवाई—स्त्री० [हिं० चिरवाना] चिरवाने का काम, भाव या मजदूरी।

स्त्री० [सं० चिर +वाही ?] पानी बरसने पर खेतों में होनेवाली पहली जोताई।

चिरवादार+—पुं० [चिरवा ?+फा० दार] [स्त्री० चिरवा दारिन] साईस।

चिरवाना—स० [हिं० चीरना का प्रे०] चीरने का काम दूसरे से कराना।

चिर-विस्मृत—वि० [तृ० त०] जिसे लोग बहुत दिनों से भूल चुके हों।

चिर-वीर्य्य—पुं० [ब० स०] लाल रेंड़ का वृक्ष।

चिर-शत्रु—वि० [कर्म० स०] [भाव० चिर-शत्रुता] १. पुराना दुश्मन। २. सदा दुश्मन या शत्रु बना रहनेवाला।

चिर-शांति—स्त्री० [च० त०] १. मृत्यु। २. मुक्ति। मोक्ष।

चिर-संगी (गिन्)—वि० [कर्म० स०] बहुत दिनों का या पुराना संगी (साथी)।

चिर-समाधि—स्त्री० [कर्म० स०] ऐसी समाधि जिसका कभी अंत न हो अर्थात् मृत्यु।

चिरस्थ—वि० [सं० चिर √स्था (ठहरना) +क] चिरस्थायी।

चिरस्थायी (यिन्)—वि० [सं० चिर √स्था +णिनि] बहुत दिनों तक बना रहनेवाला। जैसे—चिरस्थायी आदेश।

चिर-स्मरणीय—वि० [सं० कर्म० स०]. जिसे लोग बहुत दिनों तक याद या स्मरण करते रहें। जो जल्दी भुलाया या भूला न जा सके। (पूजनीयता, महत्त्व आदि का सूचक)

चिरहँटा—पुं० [हिं० चिड़ी +हंता] चिड़ीमार। बहेलिया।

चिरहुला—पुं० [?] [स्त्री० चिरहुली] १. चिड़ा। २. पक्षी।

चिराँदा—वि० [अनु० चिर चिर=लकड़ी आदि के जलने का शब्द] थोड़ी-थोड़ी बात पर बिगड़ बैठनेवाला। चिड़चिड़ा।

चिराइता—पुं० =चिरायता।

चिराइन—स्त्री० =चिरायँध।

चिराई—स्त्री० [हिं० चीरना] चीरने या चीरे जाने का काम, भाव या मजदूरी।

चिराक—पुं० =चिराग।

चिराग—पुं० [फा० चिराग] दीपक। दीआ।

मुहा०—**चिराग का हँसना**=दीये की बत्ती से फूल (अर्थात् चिनगारियाँ) झड़ना। **चिराग को हाथ देना**=चिराग बुझाना। **चिराग गुल होना**=(क) दीये का बुझ जाना। (ख) रौनक या शोभा का नष्ट हो जाना। (ग) परिवार या वंश में कोई न बच रहना। **चिराग ठंढा करना**=दीया बुझाना। **चिराग तले अंधेरा होना**=ऐसे स्थान या स्थिति में खराबी या बुराई होना जहाँ साधारणतः वह किसी प्रकार न होता या न हो सकता हो। जैसे—हाकिम के सामने रिश्वत लेना, उदार धनी के संबंधी का भूखों मरना आदि। **चिराग बढ़ाना**=चिराग बुझाना। दीया ठंढा करना। **चिराग में बत्ती पड़ना**=संध्या हो जाने पर दीया जलना। **चिराग लेकर ढूँढ़ना**=बहुत अधिक प्रयत्नपूर्वक ढूँढ़ना। **चिराग से चिराग जलना**=एक से दूसरे का उपकार, लाभ या हित होना। **चिराग से फूल झड़ना**=चिराग की जली हुई बत्ती से चिनगारियाँ निकलना या गिरना।

पद—**चिराग जले**=अँधेरा होने पर। संध्या समय। **चिराग बत्ती का वक्त**=संध्या का समय जब दीआ जलाया जाता है।

कहा०—**चिराग गुल, पगड़ी गायब**=मौका मिलते ही धन का उड़ा लिया जाना।

चिराग-गुल—पुं० [फा०] १. युद्ध आदि के समय वह संकट की स्थिति जिसमें शत्रुओं के आक्रमण से लोग या तो रोशनी नहीं करते या अपने घर से रोशनी बाहर नहीं आने देते। २. युद्धाभ्यास के समय नगर में बत्तियाँ न जलाने से उत्पन्न होनेवाली स्थिति। (ब्लैक आउट)

चिराग-दान—पुं० [अ०] वह आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीयट। शमादान।

चिरागी—स्त्री० [अ०] १. किसी स्थान पर दीया-बत्ती करने अर्थात् नित्य और नियमित रूप से दीया जलाते रहने का व्यय। २. किसी पवित्र स्थान पर उक्त प्रकार के व्यय-निर्वाह के लिए चढ़ाई जानेवाली भेंट। ३. वह पुरस्कार जो जुए के अड्डे पर दीया जलाने और सफाई करनेवाले व्यक्ति को जीतनेवाले जुआरियों से मिलता है।

चिराटिका—स्त्री० [सं० चिर √अट्+ण्वुल्–अक-टाप्, इत्व] १. सफेद पुनर्नवा। २. चिरायता।

चिरातन—वि० [सं० चिर+तनप्, दीर्घ] १. पुरातन। पुराना। २. फटा हुआ। जीर्ण-शीर्ण।

चिरातिक्त—पुं० =चिरतिक्त।

चिराद्—पुं० [सं० चिर √अत् (गति) +क्विप्] गरुड़।

चिराद—पुं० [सं० चिराद् ?] वत्तक की जाति की एक वड़ी चिड़िया जिसका माँस खाने में स्वादिष्ठ होता है।

चिरान†—वि०=चिराना (पुराना)।

चिराना—स० [हिं० चीरना] चीरने का काम किसी से कराना। फड़वाना। जैसे—लकड़ी चिराना।

वि० [सं० चिरंतन] १. पुराना। प्राचीन। २. जीर्ण-शीर्ण। जैसे—पुराने-चिराने कपड़े।

चिरायंध—स्त्री० [सं० चर्म+गंध] १. वह दुर्गंध जो चरबी, चमड़े, बाल, माँस आदि के जलने से फैलती है। २. किसी के संबंध में बहुत बुरी तरह से फैलनेवाली बदनामी।

चिरायता—पुं० [सं० चिरतिक्त] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ और छाल वहुत कड़वी होती और वैद्यक में ज्वर नाशक तथा रक्तशोधक मानी जाती हैं। इसकी छोटी-वड़ी अनेक जातियाँ होती हैं, जैसे—कलपनाथ, गीमा, शिलारस आदि। किरातक। चिरतिक्त। भूनिंव।

चिरायु (स्)—वि० [सं० चिर-आयुस् ब० स०] जिसकी आयु लंबी हो। दीर्घायु।

चिरारी†—स्त्री० [सं० चार] चिरौंजी।

चिराव—पुं० [हिं० चिरना] १. चीरने या चीरे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. चिरने या चीरे जाने के कारण होनेवाला क्षत या घाव।

चिर्रिटिका, चिर्रिटी—स्त्री० =चिरटी।

चिरि—पुं० [सं० √चि (चयन करना) +रिक्] तोता।

†स्त्री० =चिड़िया।

चिरिका—स्त्री० [सं० चिरि+कन्–टाप्] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

चिरिया†—स्त्री० =चिड़िया।

चिरिहार*—पुं० [हिं० चिड़िया+हार (प्रत्य०)] चिड़ीमार। उदा०—कत चिरिहार ढुकत लै लासा।—जायसी।

चिरीं†—स्त्री० =चिड़ी (चिड़िया)।

चिरु—पुं० [सं० चि+रुक्] कंधे और बाँह का जोड़। मोढ़ा।

चिरैता†—पुं० चिरायता।

चिरैया—स्त्री० [हिं० चिड़िया] १. पक्षी। २. पुष्य नक्षत्र।

चिरौंटा—पुं० =चिड़ा (गौरैया पक्षी)।

चिरौंजी—स्त्री० [सं० चार+वीज] पयार या पयाल नामक वृक्ष के फलों के बीच की गिरी जो खाने में बहुत स्वादिष्ठ होती है और मेवों में गिनी जाती तथा पकवानों और मिठाइयों में पड़ती है।

चिरौरी—स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनंती।

चिर्क—पुं० [फा०] १. गंदगी। २. गुह। मल। ३. पीब। मवाद।

चिर्भटी—स्त्री० [सं० चिर √भट् (पालना) +अच्, पृषो० सिद्धि] ककड़ी।

चिर्म—पुं० [फा० मि० सं० चर्म] चमड़ा।

चिर्री—स्त्री० [सं० चिरिका =एक अस्त्र] बिजली। वज्र।

क्रि० प्र०— गिरना।—पड़ना।

चिलक—स्त्री० [हिं० चिलकना] १. सहसा दिखाई देनेवाली और क्षणिक कांति या चमक। उदा०—चिलक चौंधि में रूप-ठग हाँसी फाँसी डारि।—बिहारी। २. सहसा अथवा रह-रहकर कुछ समय के लिए उठनेवाली क्षणिक पीड़ा। टीस। चमक।

†पुं० =तिलक (पौधा)।

चिलकना—अ० [हिं० चिल्ली=बिजली या अनु०] १. रह-रहकर चमकना। चमचमाना। उदा०—सब ठाठ इसी चिलकी से देखें हैं चिलकते।—नजीर। २. रह-रहकर दरद या पीड़ा होना। जैसे—उठने-बैठने में कमर या पीठ चिलकना।

चिलका†—पुं० [?] नवजात शिशु।

†पुं० =चिलकी (रुपया)।

†स्त्री० उड़ीसा की एक प्रसिद्ध वड़ी झील।

चिलकाई*—स्त्री० [हिं० चिलक+आई (प्रत्य०)] १. चमक। उदा०—कै मेघनि सों सुचि चंचला की चिलकाई।—रत्नाकर। २. उतार-चढ़ाव। ३. उत्तेजना।

वि० चमकीला।

चिलकाना—स० [हिं० चिलक] १. चिलकने या चमकने में प्रवृत्त करना। जैसे—माँज या रगड़कर गहने या बरतन चिलकाना। २. चमकाना।

चिलकी†—स्त्री० [हिं० चिलकना] १. चाँदी का रुपया, विशेषतः नया रुपया जो चमकता हो। उदा०—सब ठाठ इसी चिलकी से देखे हैं चिलकते।—नजीर। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। उदा०—चिलकी चिक्कन चाह चीर चीनी जापानी।—रत्नाकर।

वि० चमकीला।

चिलगोजा—पुं० [फा०] चीड़ या सनोबर का छोटा, लंबोतरा फल जिसके अंदर मीठी और स्वादिष्ट गिरी होती है और इसी लिए जिसकी गिनती मेवों में होती है।

चिलचिल—पुं० [हिं० चिलकना] अभ्रक। अबरक। भोंडल।

वि० चमकीला।

चिलचिलाना—अ० =चिलकना (चमकना)।

स० =चमकाना।

चिलड़ा—पुं० [देश०] पिसी हुई दाल, बेसन आदि की बनी हुई पूरी या रोटी के आकार का पकवान। उलटा। चीला।

चिलता—पुं० [फा० चिलतः] एक प्रकार का कवच या बकतर।

चिलबिल—पुं० [सं० चिलबिल्व] १. एक प्रकार का वड़ा जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी वहुत मजबूत होती है और खेती के औजार बनाने के काम में आती है। २. एक प्रकार का बरसाती पौधा जिसकी सफेद जड़ से वर के लिए मुकुट, मौर आदि बनते हैं।

चिलबिला—वि० [सं० चल+वल] [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल। चपल। नटखट।

चिलबिल्ला—वि०=चिलबिला।

चिलम—स्त्री० [फा०] मिट्टी का कटोरीके आकार का नलीदार एक प्रसिद्ध पात्र जिसमें गाँजा, चरस या तमाकू तथा आग रखकर यों ही अथवा हुक्के की नली पर लगाकर पीया जाता है।

क्रि० प्र०—पीना।

मुहा०—चिलम चढ़ाना या भरना=चिलम पर तमाकू (गाँजा आदि) और आग रखकर उसे पीने के लिए तैयार करना। **(किसी की) चिलमे चढ़ाना या भरना**=किसी की तुच्छ से तुच्छ सेवाएँ करना।

चिलम-गर्दी—स्त्री० [फा०] हुक्के में वह लंबी बाँस की नली जो चूल और जामिन से मिली होती है। इस पर चिलम रखी जाती है। (नैचाबन्द)

चिलम चट—वि० [फा० चिलम+हिं० चाटना] १. वह जो चिलम पीने का बहुत व्यसनी हो। २. वह जो इस प्रकार कसकर चिलम पीता हो कि फिर वह दूसरे के पीने योग्य न रह जाय।

चिलमची—स्त्री० [फा०] देग के आकार का एक बरतन जिसके किनारे चारों ओर थाली की तरह दूर तक फैले होते हैं। इसमें लोग हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।

चिलमन—स्त्री० [फा०] बाँस की फट्टियों आदि का परदा जो खिड़कियों, दरवाजों आदि के आगे लटकाया जाता है। चिक।

चिलम-पोश—पुं० [फा०] धातु का झँझरीदार गहरा ढक्कन जो चिलम पर इसलिए रखा जाता है कि उसमें से चिनगारियाँ उड़कर इधर-उधर न गिरे।

चिलम-बरदार—पुं० [फा०] चिलम भरकर हुक्का पिलानेवाला सेवक।

चिलमिलिका—स्त्री० [सं० चिर√मिल्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १. गले में पहनने की एक प्रकार की माला। २. खद्योत। जुगनूं। ३. बिजली।

चिलमीलिका—स्त्री०=चिलमिलिका।

चिलवांस—पुं [हिं० चिड़िया] चिड़िया फँसाने का एक प्रकार का फंदा।

चिलसी—स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का सुरती का पत्ता जो कश्मीर में होता है। २. दे० 'चिलबाँस'।

चिलहुल†—पुं० [सं० चिल] एक प्रकार की छोटी मछली।

चिलिम†—स्त्री०=चिलम।

चिलिया—स्त्री० [सं० चिल] चिलहुल मछली।

चिलुआ†—स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

चिल्काउर—स्त्री० [?] प्रसूता स्त्री। जच्चा।

चिल्लका—स्त्री० [सं० चिल्ल √का (शब्द करना)+क टाप्] झींगुर।

चिल्लड़†—पुं०=चीलर (कीड़ा)।

चिल्ल-पों—स्त्री० [हिं० चिल्लाना+अनु० पों] १. संकट पड़ने पर होनेवाली दीनतापूर्ण चिल्लाहट। जैसे—कुत्ते आदि मार पड़ने पर करते हैं। २. चिल्लाहट। शोर-गुल। जैसे—इस घर में रोज चिल्लपों होती रहती हैं।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

चिल्लभक्ष्या—स्त्री० [ष० त०] नख या नखी नामक गंध द्रव्य।

चिल्लवांस—स्त्री० [हिं० चिल्लाना] कष्ट, रोग आदि के समय बच्चों का चिल्लाना।

चिल्लवाना—स० [हिं० चिल्लाना का प्रे०] किसी को चिल्लाने में प्रवृत्त करना।

चिल्ला—पुं० [फा० चिल्लः] १. किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियत किये हुए ४० दिन जिनमें बहुत-सी बातों का बचाव और बहुत-से नियमों का पालन करना पड़ता है। जैसे—(क) प्रसूता के संबंध में प्रसव के दिन से ४० दिनों का समय। (ख) किसी की मृत्यु होने पर ४० दिनों तक मनाया जानेवाला शोक। (ग) व्रत आदि के पालन के लिए ४० दिनों का समय।

मुहा०—चिल्ला खींचना या बाँधना=४० दिनों तक धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट प्रकार के व्रतों का आचरण या पालन करना।

२. सौर धनुमास के अंतिम १५ दिनों और मकर मास के आरंभिक २५ दिनों का समय जिसमें बहुत कड़ी सरदी पड़ती है।

पद—चिल्ले का जाड़ा या सरदी=बहुत कड़ा जाड़ा या तेज सरदी।

पुं० [?] १. कमान या धनुष की डोरी। पतंचिका।

क्रि० प्र०—उतारना। —चढ़ाना।

२. पगड़ी का वह पल्ला या सिरा जिस पर कलाबत्तू का काम बना हो। ३. एक प्रकार का जंगली पेड़। ४. चीला या उलटा नाम का पकवान।

चिल्लाना—अ० [हिं० चीत्कार] १. अधिक जोर से तीखे स्वर में मुंह से कोई शब्द बार-बार कहना। जैसे—वह पगला दिन भर गलियों में राम राम चिल्लाता फिरता है। २. किसी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए गला फाड़कर कुछ कहना। जैसे—इस मिथ्या दोष के लगाये जाने पर वह चिल्लाकर बोल उठे। ३. अस्पष्ट तथा कर्णकटु शब्द या ध्वनि करना। शोर या हल्ला करना। जैसे—गली में कुत्ते चिल्ला रहे थे।

चिल्लाभ—पुं० [सं० चिल्ल-आ√भा (प्रतीत होना)+क] १. छोटी-छोटी चोरियाँ करनेवाला व्यक्ति। २. गिरहकट।

चिल्लाहट—स्त्री० [हिं० चिल्लाना] १. चिल्लाने की क्रिया या भाव। ऊँचे तथा अस्पष्ट शब्दों में किया हुआ उच्चारण। २. शोर-गुल। हो-हल्ला।

क्रि० प्र०—मचना। —मचाना।

चिल्लिका—स्त्री० [सं० चिल्ल+इनि+कन्, टाप्√] १. दोनों भौंहों के बीच का स्थान। २. छोटी पत्तियोंवाला एक प्रकार का बथुआ नामक साग। ३. झिल्ली नामक कीड़ा।

चिल्ली—स्त्री० [सं० चिल्लि+ङीप्] १. झिल्ली नाम का कीड़ा। २. लोध। ३. बथुआ का साग। ४. एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी खाकी छाल पर सफेद चित्तियाँ होती हैं।

स्त्री० [सं० चिरिका=एक प्रकार का अस्त्र] १. एक प्रकार का भीषण अस्त्र। चिर्री। २. बिजली। वज्र।

चिल्हवांस*—पुं०=चिलवाँस।

चिल्हवाड़ा—पुं० [हिं० चील] लड़कों का एक खेल जो पेड़ों पर चढ़कर खेला जाता है। गिलहर।

चिल्ही†—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चिल्होर—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चिवि—स्त्री० [सं०√चीव् (ढँकना)+इनि, पृषो० सिद्धि] चिवुक। ठोढ़ी।

चिविट—पुं० [सं० चिपिट, पृषो० सिद्धि] चिड़वा।

चिविल्लिका—स्त्री० [सं० चिविल्ल+कन्+टाप्, इत्व] एक प्रकार का क्षुप।

चिवुक—पुं० [सं०√चीव्+उ, +कन्] १. चिबुक। ठुड्डी। ठोढ़ी। २. मुचकुंद का पेड़।

चिहकार*—पुं० १.=चीत्कार। २. =चहचहा (पक्षियों का)।

चिहल—स्त्री०=चहल (आनंद)।

चिहाना—अ० [?] चकित होना।

चिहार—स्त्री० दे० 'चिंघाड़'।

चिहुँक—स्त्री० [हिं० चिहुँकना] १. चिहुँकने अर्थात् चौंकने की अवस्था या भाव। २. ऐसी आशंका या बात जिससे कोई चौंकता हो।

चिहुँकना—अ० [सं० चमत्कृ, प्रा० चवँकि] चौंकना। (देखें)

चिहुँटना—स० [सं० चिपिट, हिं० चिमटना] १. चुटकी से किसी के शरीर का माँस इस प्रकार पकड़ना जिसमें कुछ पीड़ा हो। चिकोटी या चुटकी काटना। २. लाक्षणिक रूप में उक्त प्रकार की ऐसी क्रिया करना जिससे किसी को मर्म-भेदी कष्ट या पीड़ा हो। जैसे—किसी का चित्त या मन चिहुँटना। ३. अच्छी तरह से किसी को पकड़कर दबा या दबोच लेना, जैसा आलिंगन आदि के समय होता है। ४. चिपटना। लिपटना।

चिहुँटनी—स्त्री० [चिहुँटना]१. चिहुँटने अर्थात् चिकोटी काटने की क्रिया या भाव। २. चिहुँटी। चुटकी।

स्त्री० [देश०] गुंजा। घुंघची।

चिहु—वि० दे० 'चहुँ'। उदा०—लगन लिद्धिअनु जासु, नाम चिहु चक्क चलायप।—चंदवरदाई।

चिहुर—पुं० [सं० चिकुर] सिर के बाल। उदा०—(क) चिहुरे जल लागौ चुवण। —प्रिथीराज। (ख) कटि अति-सात चिउर की नाईं। —जायसी।

चिहुरार†—पुं०=चिहुर। उदा०—लंबोजा चिहुरार भार जघना विघना घनानासिनी।—चंदवरदाई।

चिहूँटना—स०=चिहुँटना। उदा०—चतुरनारि चित अधिक चिहूँटी। —जायसी।

चिह्न—पुं० [सं०√चिह्न (निशान लगाना)+अच्] १. ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाले कोई विकार-सूचक शारीरिक निशान। जैसे—आघात या प्रहार का चिह्न। २. कोई विकार-सूचक निशान। दाग। धब्बा। ३. किसी वस्तु आदि पर अंकित वह विशेष शब्द, बात या छाप जिससे उस वस्तु के निर्माता या निर्माणशाला का ज्ञान होता है। ४. किसी चीज के संपर्क, संघर्ष या दाब से पड़ा हुआ निशान। जैसे—चरण चिह्न। ५. कोई ऐसी आरंभिक छोटी बात जो किसी भावी बात या घटना की सूचक हो। लक्षण। ६. किसी चीज या बात का पता देनेवाला कोई तत्त्व। ७. झंडा । पताका।

चिह्नकारी (रिन्)—वि० [सं० चिह्न√कृ (करना) +णिनि] १. चिह्न या निशान करने, बनाने या लगानेवाला। २. घाव करनेवाला। ३. वध-करनेवाला। ४. भयानक। भीषण।

चिह्नधारिणी—स्त्री०। [सं० चिह्न√धृ (धारण करना)+णिनि-ङीप्] श्यामा लता। कालीसर।

चिह्नित—भू० कृ० [सं० चिह्न+क्त] पहचान के लिए जिस पर चिह्न लगाया गया हो।

चीं—स्त्री० [अनु०] १. चिड़ियों के बोलने का शब्द। २. कष्ट या पीड़ा के समय किसी दीन के मुँह से निकलनेवाला उक्त प्रकार का शब्द।

मुहा०—चीं बोलना=असमर्थता और दीनता के सूचक लक्षण दिखाना।

चींचख—स्त्री० [अनु०] चिल्लाहट। उदा०—उल्लुओं की चींचख सोना को नहीं सुहाती थी।—वृंदावनलाल वर्मा।

चीं-चपड़—स्त्री० [अनु०] वह हल्का प्रतिवाद या विरोध जो किसी बड़े या सबल के सामने किया जाय। जैसे—उसने बिना चीं-चपड़ किये सारा अत्याचार सह लिया।

चीं-चीं—स्त्री० [अनु०] १. पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत ही कोमल और दीनता-सूचक शब्द। २. धीमे स्वर में की जानेवाली बातें।

चींटवा—पुं०=चींटा (च्यूँटा)।

चींटा—पुं०[स्त्री० चींटी]=च्यूँटा।

चींतना*—स० [सं० चित्रण] अंकित या चित्रित करना। चित्र बनाना या लिखना। चित्रना।

अ०=चीतना।

चींथना—स०=चीथना।

चीक—स्त्री०=चीख।

†पुं०=चिक (बूचड़)।

†पुं०=कीच (कीचड़)।

चीकट—पुं०, वि०=चिक्कट।

पुं० [हिं० कीचड़?] १. मटियार भूमि। २. कीचड़।

पुं०=चिकट (रेशमी कपड़ा)।

चीकड़†—पुं०=कीचड़।

चीकन—वि०=चिकना।

चीकना—अ० [सं० चीत्कार] १. पीड़ा या कष्ट आदि के कारण जोर से चिल्लाना। चीत्कार करना। चीखना। २. बहुत जोर से चिल्लाकर कुछ कहना या बोलना। ३. बहुत जोर से कर्णकटु शब्द करना। जैसे—कुत्तों का चीकना।

वि० [स्त्री० चीकनी]=चिकना।

चीकर—पुं० [देश०] कूएँ के ऊपर का वह स्थान जिसमें मोट या चरस आदि से निकाला हुआ पानी गिराया जाता है।

चीख—स्त्री०[अनु०] १. तीव्र और कर्णकटु ध्वनि। जैसे—इंजन की चीख। २. भय अथवा अधिक पीड़ा या व्यथा के कारण निकलनेवाली उच्च या तीव्र ध्वनि या शब्द। जैसे—बच्चे की चीख निकल गई।

मुहा०—चीख मारना=कष्ट या पीड़ा के समय जोर से चिल्लाना।

चीखना—स०=चखना (खाने की चीज)।

अ०=चीकना (चिल्लना)।

चीख-पुकार—स्त्री० [हिं०] कष्ट के समय रक्षा, सहायता आदि के लिए चिल्लाकर मचाई जानेवाली पुकार।

चीखर (ल)—पुं० [हिं० चीकड़ (कीचड़)] १. कीच। कीचड़। २. गारा। (डिं०)

चीज—स्त्री० [फा० चीज़] १. दैनिक उपयोग या व्यवहार में काम आनेवाला कोई भौतिक पदार्थ। जैसे—बाजार से कई चीजें लानी हैं। २. किसी कला-कृति, रचना, वस्तु आदि का कोई अंग या अवयव। जैसे—इस मशीन में कोई चीज खराब जरूर है। ३. कोई उपयोगी, निराली या महत्त्वपूर्ण वस्तु। जैसे—यह भी तो कोई चीज है। ४. स्त्रियों की बोल-चाल में कोई आभूषण। जैसे—उनसे कई बार कहा है कि लड़की को कोई चीज बनवा दें। ५. कोई उत्कृष्ट, महत्त्वपूर्ण या विचारणीय बात। जैसे—इस लेख की कई चीजें समझने और समझाने की हैं। ६. संगीत, साहित्य आदि में कोई विशिष्ट कृति। जैसे—उन्होंने कई चीजें सुनाईं।

चीठ—स्त्री० [हिं० चीकड़=कीचड़] गंदगी। मैल।

चीठा—पुं०=चिट्ठा।

चीठी—स्त्री०=चिट्ठी।

चीड़—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का देशी लोहा। २. चमड़ा छीलकर साफ करने की क्रिया। (मोची)

पुं०=चीढ़।

चीड़ा—स्त्री० [सं० चिड़-टाप्-दीर्घ पृषो०] चीढ़ नामक पेड़।

चीढ़—पुं० [सं० चीड़ा] एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़ जिसकी चिकनी और नरम लकड़ी इमारत और संदूक आदि बनाने के काम आती है। इस लकड़ी में तेल का अंश अधिक होता है जो निकाला जाता और ताड़पीन के तेल के नाम से बिकता है। गंधा बिरोजा इसी पेड़ का गोंद है। इसके कुछ अंशों का प्रयोग औषध, गंध-द्रव्य आदि के रूप में भी होता है।

†पुं०=चीड़ (लोहा)।

चीत—पुं० [सं०√चि (चयन करना)+क्त-दीर्घ पृषो०] सीसा नामक धातु।

*पुं०=चित्त।

†पुं०=चित्रा (नक्षत्र)।

चीतकार†—पुं० १=चीतकार। २. =चित्रकार।

चीतना—स० [सं० चेत][वि० चीता] १. मन में किसी प्रकार की भावना या सोच-विचार करना। सोचना। जैसे—किसी का बुरा या भला चीतना। २. याद या स्मरण करना। जैसे—विरह में प्रिय को चीतना।

अ० होश में आना। चेतना।

स० [सं० चित्रण] चित्र अंकित या चित्रित करना।

चीतर—पुं० दे० 'चीतल'।

चीतल—पुं० [सं० चित्रल] १. एक प्रकार का बारहसिंघा जिसका चमड़ा चित्तीदार और बहुत सुन्दर होता है। यह जलाशयों के पास झुंड में रहता है और मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है। २. एक प्रकार का चित्तीदार बड़ा साँप या छोटा अजगर जो खरगोश, बिल्ली आदि छोटे जंतुओं पर निर्वाह करता है। ३. एक प्रकार का पुराना सिक्का।

चीता—पुं० [सं० चित्रक, पा० चित्रो, चित्तो, प्रा० चित्तअ; बँ० चिता; गु० सिं० चित्रो, मरा० चित्ता] १. बिल्ली, शेर आदि की जाति का एक प्रसिद्ध बड़ा हिंसक जंतु जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं। इसकी कमर पतली होती है और गरदन पर अयाल या बाल नहीं होते। इसकी सहायता से कुछ लोग हिरनों आदि का शिकार भी करते हैं। २. एक प्रकार का बड़ा क्षुप जिसकी पत्तियाँ जामुन की पत्तियों से मिलती-जुलती होती हैं। इसकी कई जातियाँ हैं जिनमें भिन्न-भिन्न रंगों के सुगंधित फूल लगते हैं। इसकी छाल और जड़ ओषधि के काम में आती है।

पुं० [सं० चित्त] १. चित्त। मन। हृदय। दिल। २. चेतना। संज्ञा। होश-हवास।

वि० [हिं० चेतना] [स्त्री० चीता] मन में विचारा या सोचा हुआ। जैसे—मन-चीती बात होना।

चीतावती—स्त्री० [सं० चेत्] यादगार। स्मारक चिह्न।

चीत्कार—पुं० [सं० चीत्√कृ (करना)+अण्] १. खूब जोर से चिल्लाने की क्रिया, भाव या शब्द। चिल्लाहट। २. घोर दुःख या संकट में पड़ने पर मुंह से अनायास निकलनेवाली बात या शब्द।

चीथड़ा—पुं०=चिथड़ा (देखें)।

चीथना—स० [सं० चीर्ण] १. टुकड़े-टुकड़े करना। फाड़ना। २. दाँतों से कुचलना।

चीथरा—पुं०=चिथड़ा।

चीद—वि० [फा०] चुना या छाँटा हुआ।

चीन—पुं० [सं० √चि+नक्. दीर्घ, चीन+अण्-लुक] १. झंडी। पताका। २. सीसा नामक धातु। नाग। ३. तागा। सूत। ४. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ५. एक प्रकार का हिरन। ६. एक प्रकार की ईख या ऊख। ७. एक प्रकार का साँवाँ (कदन्न)।

पुं०[√चि+नक्, दीर्घ] १. दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक प्रसिद्ध विशाल देश। २. उक्त देश का निवासी।

†पुं० १. =चिह्न (निशान)। २. =चुनन।

चीनक—पुं० [सं० चीन+कन्] १. चीनी कपूर। २. चेना नामक कदन्न। ३. कंगनी नामक कदन्न।

चीन-कर्पूर—पुं० [मध्य० स०] चीनी कपूर।

चीन की दीवार—स्त्री० [चीन देश+फा० दीवार] १. चीन के उत्तरी भाग में प्रायः १५०० मील लंबी एक दीवार जो प्रायः दो हजार वर्ष पहले बनी थी और जिसकी गिनती संसार के सात आश्चर्यजनक वस्तुओं में होती है। २. कोई बहुत बड़ी अड़चन या बाधा।

चीनज—पुं० [सं० चीन√जन्+ड] एक प्रकार का इस्पात या लोहा जो चीन से आता था।

वि० चीन देश में उत्पन्न होनेवाला।

चीनना†—स० =चीन्हना (पहचानना)।

चीन-पिष्ट—पुं० [ष० त० स०] १. सीसा नामक धातु। २. सिंदूर। ३. इस्पात (लोहा)।

चीनवंग—पुं० [मध्य० स०] सीसा नामक धातु।

चीन-वास(स्)—पुं० [मध्य० स०] चीन देश का बना हुआ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चीनांशुक—पुं० [चीन-अंशुक, मध्य० स०] १. एक प्रकार का लाल ऊनी कपड़ा जो पहले चीन से आता था। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चीना—पुं० [हिं० चीन] चीन देश का वासी।

पुं० [सं० चिह्न] एक प्रकार का कबूतर जिसके शरीर पर काले या लाल दाग या फूल होते हैं।

वि० चीन देश का। जैसे--चीना कपूर।

†पुं०=चेना (कदन्न)।

चीनाक—पुं० [सं० चीन√अक् (गति)+अण्] चीनी कपूर।

चीना ककड़ी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की छोटी क़कड़ी।

चीनाचंदन—पुं० [हिं० पद] एक प्रकार का पक्षी जिसके पीले शरीर पर काली धारियाँ होती हैं और जिसका स्वर मनोहर होता है। यह प्रायः पाला जाता है।

चीनाबादाम—पुं० [हिं० चीन+फा० बादाम] चिनिया बादाम। मूँगफली।

चीनिया—वि० [देश०] चीन देश का। चीन देश-संबंधी।

चीनी—स्त्री० [चीन (देश)+ई (प्रत्य०)] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध मीठा चूर्ण जो ईख, चुकंदर, खजूर, आदि कई पदार्थों के मीठे रस को उबाल और गाढ़ा करके बनाया जाता है। इसका व्यवहार प्रायः मिठाइयाँ बनाने और पीने के लिए दूध या पानी आदि मीठा करने में होता है।

वि० चीन देश-संबंधी। चीन देश का। जैसे—चीनी भाषा, चीनी मिट्टी।

पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा।

चीनी कपूर—पुं० [हिं०] एक प्रकार का कपूर जो पहले चीन देश से आता था।

चीनी कबाब—स्त्री० दे० 'कबाब चीनी'।

चीनी-चंपा—पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा बढ़िया केला। चिनिया केला।

चीनी मिट्टी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की मिट्टी जो पहले-पहल चीन के एक पहाड़ से निकली थी और अब अन्य देशों में भी कहीं-कहीं पाई जाती है। इस पर पालिश बहुत अच्छी होती है, इसी लिए इससे खिलौने, गुलदान और छोटे बरतन बनाए जाते हैं।

चीनी मोर—पुं० [हिं० चीनी+मोर] सोहन चिड़िया की जाति का एक पक्षी जिसका माँस बहुत स्वादिष्ट होता है।

चीन्ह—पुं० दे० 'चिह्न'। (अशुद्ध रूप)

चीन्हना—स० [सं० चिह्न] किसी ऐसी वस्तु या व्यक्ति को पहचान लेना जिसे पहले कभी देखा हो।

चीन्हा—पुं० दे० 'चिह्न'।

पुं०=परिचय (जान-पहचान)।

चीप—स्त्री० [देश०] वह लकड़ी जो जूते के कलबूत में सब से पीछे भरी या चढ़ाई जाती है। (मोची)

†स्त्री०=चिप्पड़।

†स्त्री०=चेप।

चीपड़—पुं० [हिं० कीचड़] १. आँख में से निकलनेवाली सफेद रंग की लसदार मैल। आँख का कीचड़। २. दे० 'चिप्पड़'।

चीमड़—वि० [हिं० चमड़ा] १. (वस्तु) जो चमड़े की तरह कड़ी हो तथा लचीली न हो। २. (व्यक्ति) जो जल्दी किसी बात या व्यक्ति का पीछा न छोड़ता हो। किसी बात या व्यक्ति के पीछे पड़ा रहनेवाला। ३. (व्यक्ति) जिससे जल्दी पैसा वसूल न किया जा सकता हो।

चीयाँ—पुं० [सं० चिंचा] इमली का बीज।

चीया*—पुं०=चित्र। उदा०—अदेषि देषिबा देपि विचारिबा आदि सिहि राषिबा चीया। —गोरखनाथ।

चीर—पुं० [√चि (ढकना)+क्रन्, दीर्घ] १. कपड़ा। वस्त्र। २. आजकल थान, धोती आदि में लंबाई के बल का वह अंतिम छोर या सिरा जिसमें बनावट कुछ भिन्न प्रकार की अथवा हलकी होती है। ३. कपड़े, कागज आदि का कम चौड़ा और अधिक लंबा टुकड़ा। धज्जी। ४. पुराने कपड़े का टुकड़ा। चिथड़ा। लत्ता। ५. योगियों, साधुओं आदि और विशेषतः बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा।। ६. पेड़ की छाल। ७. गौ का थन। ८. मोतियों की वह माला जिसमें चार लड़ हों। ९. एक प्रकार का बड़ा पक्षी जिसकी लंबी दुम बहुत सुंदर होती है। यह प्रायः 'चीर चीर' शब्द करता है। १०. धूप या सरल का पेड़। ११. सीसा नामक धातु। १२. छप्पर या छाजन का अगला भाग। मँगरा। मथौत।

पुं० [हिं० चीरना] १. चीरने की क्रिया या भाव।

पद—चीर-फाड़=(क) चीरने या फाड़ने का भाव या क्रिया। (ख) शल्य-चिकित्सा।

२. चीर कर बनाई हुई दरार या संधि। शिगाफ। ३. रेखा। लकीर। ४. कुश्ती का एक दाँव या पेच जिसमें विपक्षी के दोनों हाथ एक दूसरे से बिलकुल अलग और बहुत दूर करके उसे नीचे गिराया जाता है।

चीरक—पुं० [सं० चीर+कन्] १. कागज के किसी टुकड़े पर लिखी हुई कोई सार्वजनिक घोषणा। २. लिखने का एक ढंग। ३. लेख्य। ४. मुट्ठे की तरह गोलाकार लपेटा हुआ लंबा कागज। खर्रा। (रोल, स्क्रोल)

चीर-चरम*—पुं० [सं० चीर+चर्म] हिरन आदि की खाल जो ओढ़ी और बिछाई जाय। जसे-बाघंबर, मृग-छाला आदि।

चीरना—स० [सं० चीर्णन] १. किसी चीज को एक जगह या सिरे से दूसरी जगह या सिरे तक सीध में किसी धारदार उपकरण द्वारा काट या फाड़कर अलग या टुकड़े करना। जैसे—कपड़ा, फोड़ा या लकड़ी चीरना। २. कहीं से कोई चीज निकाल लेना।

मुहा०—माल चीरना=अनुचित रूप से बहुत अधिक आर्थिक लाभ करना।

३. किसी बड़ी चीज या तल के अंश इधर-उधर करते हुए आगे बढ़ने के लिए मार्ग निकालना या रास्ता बनाना। जैसे—(क) पानी चीरते हुए नाव का आगे बढ़ना। (ख) भीड़ चीर कर सबके आगे पहुँचना।

चीरनिवसन—पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक देश जो कूर्म विभाग के ईशान कोण में है। २. उक्त देश का निवासी।

चीर-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०] चेंच नाम का साग।

चीर-परिग्रह—पुं०, वि० [ब० स]=चीर-वासा।

चीर-पर्ण—पुं० [ब० स] साल नामक वृक्ष।

चीर-फाड़—स्त्री० [हिं० चीर+फाड़] १. चीरने और फाड़ने की क्रिया या भाव। २. नश्तर आदि से फोड़े चीरने का काम। शल्य-चिकित्सा। ३. बहुत ही अनुचित रूप से किया जानेवाला किसी साहित्यिक कृति, तथ्य, वाद आदि का विश्लेषण।

चीरल्लि—पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

चीरवासा (सस्)—पुं० [सं० चीरवासस्] १. शिव। महादेव। २. यक्ष।

वि० जो चीर (छाल या वल्कल) ओढ़ता या पहनता हो।

चीर-हरण—पुं० [ष० त०] श्रीकृष्ण की एक प्रसिद्ध लीला जो इस अनुश्रुति के आधार पर है कि एक बार यमुना में नहाती हुई गोपियों के चीर या वस्त्र लेकर वे वृक्ष के ऊपर जा बैठे थे।

चीरा—पुं० [सं० चीर] १. एक प्रकार का लहरिएदार रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है। २. उक्त प्रकार के कपड़े की बनी या बँधी हुई पगड़ी।

पुं० [हिं० चीरना] १. चीरने की क्रिया या भाव। २. चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

मुहा०—चीरा उतारना या तोड़ना=कुमारी के साथ पहले-पहल संभोग या समागम करना। (बाजारू)

३. गाँव की सीमा सूचक खंभा या पत्थर।

चीरा बंद—पुं० [हिं० चीरा=पगड़ी+फा० बंद] वह कारीगर जो लोगों के लिए चीरे बाँधकर तैयार करता हो।

वि० (कुमारी या बालिका) जिसके साथ अभी तक किसी पुरुष ने संभोग या समागम न किया हो। (बाजारू)

चीरा बंदी—स्त्री० [हिं० चीरा=पगड़ी का कपड़ा+फा० बंदी] १. चीरा (पगड़ी) बनाने या बाँधने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की बुनावट जो पगड़ी बनाने के लिए ताश के कपड़े पर कारचोबी के साथ की जाती है।

चीरि—स्त्री० [सं० चि+क्रि, दीर्घ] १. आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी। २. धोती आदि की लाँग। ३. झींगुर।

चीरिका—स्त्री० [सं० चीरि√कै (शब्द करना)+क-टाप्] झींगुर। झिल्ली।

चीरिणी—स्त्री० [सं० चीर+इनि-ङीप्] बदरिकाश्रम के निकट की एक प्राचीन नदी जिसके तट पर वैंवस्वत मनु ने तस्पया की थी। (महाभारत)

चीरित—भू० कृ० [सं० चीर+इतच्] फटा हुआ (केवल समास में)।

चीरितच्छदा—स्त्री० [चीरित-छद, ब० स०, टाप्] पालक का साग।

चीरी (रिन्)—वि० [सं० चीर+इनि] १. वल्कलधारी। २. चिथड़े लपटनेवाला।

पुं० १. झिल्ली। झींगुर। २. एक प्रकार की छोटी मछली।

†स्त्री०=चिड़ी (पक्षी)।

†स्त्री० दे० 'चीढ़'।

स्त्री० [सं० चीर] चिट्ठी। पत्र। उदा०—सात बरस पेहलो रह्यो चीरी जणहन मोकल्यें कोई।—नरपति नाल्ह।

चीरी-वाक—पुं० [सं० ब० स] एक प्रकार का कीड़ा।

चीरु*—पुं०=चीर।

चीरुक—पुं० [सं० ची√रु (शब्द करना) +क] एक प्रकार का फल जो वैद्यक में रुचिकर और कफ-पित्त वर्द्धक माना गया है।

चीरू—पुं० [सं० चीर] १. एक प्रकार का लाल रंग का सूत। २. चीर। कपड़ा।

चीरेवाला—पुं० [हिं०] १. घोड़ों आदि की चीर-फाड़ करनेवाला हकीम। जर्राह। २. चिकित्सक। (मुसल० स्त्रियाँ)

चीर्ण—वि० [सं०√चर् (चलना)+नक् पृषो० ईत्व] चिरा या चीरा हुआ।

चीर्ण-पर्ण—पुं० [ब० स०] १. नीम का पेड़। २. खजूर का पेड़।

चील—स्त्री० [सं० चिल्ल] गिद्ध और बाज आदि की जाति की बहुत तेज उड़ने तथा झपट्टा मारकर चीजें छीन ले जानेवाली एक बड़ी चिड़िया जो संसार के प्रायः सभी गरम देशों में पाई जाती है।

पद—चील का मूत=कोई दुर्लभ वस्तु।

चील-झपट्टा—पुं० [हिं० चील+झपटना] १. चील की तरह एकाएक झपटकर किसी से कोई चीज छीन कर ले भागना। २. बच्चों का एक खेल जिसमें वे एक दूसरे के सिर पर धौल लगाते हैं।

चीलड़—पुं०=चीलर।

चीलर—पुं० [देश०] पहने जानेवाले गंदे कपड़ों अथवा कुछ पशुओं के शरीर में पड़नेवाला एक प्रकार का सफेद रंग का छोटा कीड़ा।

चीला†—पुं०=चिल्ला (पकवान)।

चीलिका—स्त्री० [सं०√ला (लेना)+क–टाप्, इत्व] झिल्ली। झींगुर।

चीलू—पुं० [देश०] आड़ू की तरह का एक प्रकार का पहाड़ी फल।

चील्लक—पुं० [सं० ची√लक्क् (शब्द करना)+अच् पृषो० सिद्धि] झिल्ली। झींगुर।

चील्ह†—स्त्री०=चील (पक्षी)।

चील्हर—पुं०=चीलर (कीड़ा)।

चील्ही—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का टोटका जो स्त्रियाँ बालकों के कल्याणार्थ करती हैं।

चीवर—पुं० [सं० चि (चयन करना) +ष्वरच्, नि० सिद्धि] १. भिक्षुओं, योगियों, संन्यासियों आदि के पहनने का फटा-पुराना कपड़ा। २. बौद्ध भिक्षुओं का गैरिक उत्तरीय वस्त्र या चादर।

चीवरी (रिन्)—पुं० [सं० चीवर+इनि] १. चीवर पहननेवाला। बौद्ध भिक्षु। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

चीस*—स्त्री० १.=टीस। २.=चीख। उदा०—हसति भागि कै चीसा मारै।—कबीर।

चीसना—अ०=चीखना। उदा०—परिभख्खन रख्खिसन, कुइक चीसन मुख सासन।—चन्दबरदाई।

चीह*—स्त्री०=चीख (चीत्कार)। उदा०—मोर सोर कोकिलनि रोर, चीह पप्पहि पुकारत।—चन्दबरदाई।

चुँगना†—स०= चुगना।

चुंगल—पुं० दे० 'चंगुल'।

चुंगली—स्त्री० [देश०] नाक में पहनने की एक प्रकार की नथ, जिसे 'समथा' भी कहते हैं।

चुँगवाना—स०=चुगवाना।

चुंगा†—पुं० दे० 'चोंगा'।

चुँगाना—स०=चुगाना।

चुंगी—स्त्री० [हिं० चुंगल या चंगुल] १. चुंगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज। २. मध्य युग में वह कर जो पैठों, बाजारों या मंडियों में आकर अन्न, फल आदि बेचनेवालों से उनकी विक्रय वस्तुओं आदि में से एक-एक चुंगल या चंगुल भरकर लिया जाता था। ३. आज-कल नगरपालि-

काओं, जिला मंडलों आदि में उक्त कर का वह विकसित रूप जो बाहर से आनेवाले पदार्थों पर नगद धन के रूप में लगता है। (ऑक्ट्रॉय, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

चुंगी-कचहरी—स्त्री०[हिं० पद] नगरपालिका आदि का प्रधान कार्यालय जहाँ और काम होने के सिवा चुंगी भी वसूल की जाती है।

चुंगीकर—पुं०[हिं०] १. नगर की सीमा पर का वह स्थान जहाँ नगरपालिका आदि का चुंगी वसूल करने का काम होता है। २. दे० 'चुंगीकचहरी'।

चुँघाना—स०[हिं० चुसाना] माता का बच्चे को अपना स्तन अथवा पशुओं का अपने बच्चों को थन चूसने में प्रवृत्त करना। चुसाकर बच्चे को दूध पिलाना।

स०=चुगाना।

चुंच—स्त्री०=चोंच।

चुंचरी—स्त्री० [सं० चुंच√रा (लेना)+क ङीप्] वह जूआ जो इमली के चीओं से खेला जाय।

चुंचली—स्त्री०=चुंचरी।

चुंचु—पुं०[सं०√चंच् (हिलना)+उ, पृषो० उत्व] १. छछूंदर। २. एक प्राचीन संकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहिक माता और ब्राह्मण पिता से कही गई है। ३. चिनियारी नाम का पौधा।

चुंचुक—पुं०[सं० चुंचु+कन्] बृहत्संहिता के अनुसार नैर्ऋत्य कोण का एक देश।

चुंचुल—पुं०[सं०] विश्वामित्र का एक पुत्र जो संगीत शास्त्र का बहुत बड़ा पंडित था।

चुंटली—स्त्री०[देश०] घुँघची। गुंजा।

चुंटा—पुं०=चुंडा।

चुंडा—पुं०[सं० चुडि+अच्-टाप्] [स्त्री० अल्पा० चुंडी] कूआँ। कूप।

पुं० =चोंडा।

चुंडित—वि०[हिं० चुंडी=शिखा] चुंडी या शिखावाला। शिखाधारी।

चुंडी—स्त्री०=चुंदी (शिखा)।

चुंदरी—स्त्री०=चुनरी।

चुंदरीगर—पुं०[हिं० चूंदरी+फा० गर] वह रँगरेज जो रँगकर चुनरी तैयार करता हो।

चुंदी—स्त्री०[सं०√चुद् (प्रेरणा देना)+अच्-ङीप्-निया० सिद्ध] कुटनी। दूती।

स्त्री० [सं० चूड़ा ?] हिंदू पुरुषों के सिर पर की चुटिया। चोटी। शिखा।

चुंधलाना†—अ०=चौंधियाना।

अ०=चोंधराना।

चुंधा—वि०[हिं० चौ=चार+अंध] [स्त्री० चुंधी] १. (जीव) जिसे कुछ दिखाई न देता हो। अंधा। २. अपेक्षाकृत बहुत छोटी आँखोंवाला।

चुँधियाना—अ०=चौंधियाना।

चुंब—पुं०[सं०√चुम्ब ('चूमना)+घञ्] चुंबन।

चुंबक—वि०[सं०√चुम्ब+ण्वुल्-अक] १. चुंबन करनेवाला। २. कामुक। ३. धूर्त। ४. जो ग्रंथों को ध्यानपूर्वक पूरा न पढ़ता हो, बल्कि इधर-उधर से कुछ देखकर छोड़ देता हो।

पुं० १. वह फंदा जो कूएँ से पानी भरने के समय घड़े के गले में फँसाया जाता है। फाँस। २. एक प्रकार का पत्थर जो लोहे आदि के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी ओर खींच लेता है। ३. लोहे आदि का बनाया हुआ वह कृत्रिम उपकरण जिसमें उक्त पत्थर के गुणों का आरोपण किया गया हो तथा जो लोहे, निकिल आदि के टुकड़ों को अपनी ओर खींच लेता हो। (मेगनेट) ४. लाक्षणिक अर्थ में, वह व्यक्ति जो किसी को अपनी ओर आकृष्ट करता हो।

चुंबकत्व—पुं०[सं० चुम्बक+त्व] चुम्बक पत्थर का गुण या भाव।

चुंबकीय—वि० [सं० चुंबक+इ–ईय] १. चुंबक-संबंधी। २. जिसमें चुंबक या उसका गुण हो।

चुंबना—स०=चूमना।

चुंबा—पुं० दे० 'सुंबा'। (लश०)

पुं०=चुम्मा।

चुंबित—भू० कृ० [सं०√चुंब+क्त] १. जिसका चुंबन किया गया हो। चूमा हुआ। २. किसी के साथ थोड़ा स्पर्श करता हुआ।

चुंबी—वि०[सं०√चुंब+णिनि] १. चूमनेवाला। २. जो किसी को छूता या स्पर्श करता हुआ हो। बहुत ऊँचा। जैसे—गगन-चुंबी पर्वत या प्रासाद।

चुँभना—स०=चूमना।

चुअना†—अ० दे० 'चूना'।

†वि० [स्त्री० चुअनी] जो चूता हो। चूनेवाला। जैसे—चुअना लोटा।

चुआ—पुं०[हिं० चौआ=चौपाया] चार पैरोंवाला पशु। चौपाया।

पुं०[?] १. हड्डी की नली के अन्दर का गाढ़ा लसीला पदार्थ। गूदा। मज्जा। २. एक प्रकार का पहाड़ी गेहूँ। ३. दे० 'चौआ''।

चुआई—स्त्री०[हिं० चुआना] १. चुआने या टपकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. गौ–भैंस आदि दुहने या दुहाने का काम या पारिश्रमिक।

चुआक—पुं०[हिं० चूना=टपकना] वह छेद जिसमें से पानी चूता (अथवा जहाज के अन्दर आता) हो। (लश०)

चुआना—स० [हिं० चूनाटपकना] १. किसी तरल पदार्थ को चूने या टपकने में प्रवृत्त करना। बूंद-बूंद गिराना या टपकाना। २. भभके आदि की सहायता से अरक, आसव आदि तैयार करना। जैसे—शराब चुआना। ३. अच्छी तरह परिष्कृत करके संयम और सावधानी से थोड़ा-थोड़ा प्रस्तुत करना या किसी के सामने लाना। उदा०—वेष सु बनाई सुचि बचन कहै चुआइ जाई तौन जरनि धरनि धन धाम की।—तुलसी।

स० दे० 'दुहाना'।

चुआव†—स्त्री०=चुआन।

चुकंदर—पुं०[फा०] गाजर, शलजम आदि की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा कंद जो लाल रंग का होता और तरकारी बनाने के काम आता है। इसके रस से एक प्रकार की चीनी भी बनती है।

चुक†—पुं०=चूक।

चुकचुकाना—अ०[हिं० चूना=टपकना] तरल पदार्थ का किसी पात्र या तल में होनेवाले छोटे छेद के मार्ग से सूक्ष्म कणों के रूप में बाहर निकलना। पसीजना। जैसे—थप्पड़ लगने पर गाल से खून चुकचुकाना।

चुकचुहिया—स्त्री०[देश०] १. एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो बहुत

तड़के बोलने लगती है। २. बच्चों का एक प्रकार का खिलौना जिसे दबाने या हिलाने से चूँचूँ शब्द होता है।

चुकट—पुं०[हिं० चुटका] १. चंगुल। २. चुटकी।

चुकटी†—स्त्री०=चुटकी।

चुकता—वि०[हिं० चुकना] १. (ऋण या देना) जो चुका दिया गया हो। २. (हिसाब) जिसमें लेना और देना दोनों बराबर हो गये हों।

चुकती—वि०=चुकता।

चुकना—अ०[सं० च्यव, चुक्क, प्रा० चुक्कइ, उ० चुकाइबा, पं० चुक्कणा; सिं० चुकणु; गु० चुकवूँ, मरा० चुकणें] १. (काम या बात का) पूरा या समाप्त होना। बाकी न रहना। २. (पदार्थ का) कम होते होते निःशेष या समाप्त होना। जैसे—घर में आटा चुक गया। ३. (ऋण या देन का) पूरा-पूरा परिशोध होना। देना बाकी न रहना। जैसे—उनका हिसाब तो कभी का चुक गया। ४. (झगड़ा या बखेड़ा) तै हो जाना। निपटना। जैसे—चलो, आज यह झगड़ा भी चुका। ५. एक संयोज्य क्रिया जो मुख्य क्रिया की समाप्ति की सूचक होती है। जैसे—खेल चुकना, लड़ चुकना आदि। ६. दे० 'कूकना'।

†अ०=चूकना। उदा०—चुकइन घात मार मुठ भेरी।—तुलसी।

चुकरी—स्त्री०[देश०] रेवंद चीनी।

चुकरैंड़—पुं०[देश०] दो-मुँहा साँप जिसे गूँगी भी कहते हैं।

चुकवाना—स०[हिं० चुकाना का प्रे०] किसी को कुछ चुकाने में प्रवृत्त करना। जैसे—कर्ज या झगड़ा चुकवाना।

चुकाई—स्त्री०[हिं० चुकता] चुकने या चुकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुकाना—स०[हिं० चुकना का स०] १. किसी से लिया हुआ धन पूरा-पूरा वापस करना। जैसे—ऋण चुकाना। २. किसी की हुई हानि को पूरा करना। क्षति-पूर्ति करना। जैसे—रेल दुर्घटना में मरनेवाले व्यक्ति-के परिवारों को दो दो हजार रुपए सरकार ने चुकाए हैं। ३. झगड़ा या विवाद तै करना। निपटाना।

चुकाव—पुं०[हिं० चुकना] चुकने या चुकाये जाने की क्रिया या भाव।

चुकावरा†—पुं०[हिं० चुकाना] ऋण, देन आदि चुकाने की क्रिया या भाव। (बुन्देल०)

चुकिया—स्त्री०[देश०] तेलियों की घानी में पानी देने का छोटा बरतन। कुल्हिया।

चुकौता†—पुं०[हिं० चुकाना+औता(प्रत्य०)] १. चुकाने की क्रिया या भाव। २. रुपया चुकता पाने के समय लिखी जानेवाली पावती। रसीद।

चुकौती—स्त्री०=चुकौता।

चुक्क—पुं०=चूक (खटाई)। उदा०—चुक्क लाइकै रींधे भाँटा।—जायसी।

चुक्कड़—पुं०[?] पानी, शराब आदि पीने का मिट्टी का गोल छोटा बरतन। कुल्हड़। पुरवा।

चुक्का—पुं० १. दे० 'चूक'। (खटाई) २. दे० 'चुक्कड़'।

चुक्कार—पुं०[सं०√चुक्क (पीड़ा देना)+अच्] चुक्क-आ√रा(लेना)+क] गरजने की क्रिया या भाव। गर्जन। गरज।

चुक्की—स्त्री०[हिं० चूकना] १. चूक। भूल। २. छल। धोखा।

चुक्कीमाली—स्त्री०[?] मुड़े हुए घुटनों को पीठ के सहारे अंगौछे से कुछ ढीला बाँधकर बैठने का एक ढंग। (देहाती)

चुक्र—पुं०[सं०√चक्र(तृप्त करना)+रक्, उत्व] १. चूक नाम की खटाई। चुक। महाम्ल। २. चूका नाम का खट्टा साग। ३. अमलबेत। ४. काँजी। संधान।

चुक्रक—पुं०[सं० चुक्र+कम्] चूक नाम का साग।

चुक्र-फल—पुं०[ब० स०] इमली।

चुक्र-वास्तुक—पुं०[उपमि०स०] अमलोनी नाम का साग।

चुक्र-वेधक—पुं०[ष०त०] एक प्रकार की काँजी।

चुक्रा—स्त्री० [सं० चुक्र+टाप्] १. अमलोनी नाम का साग। २. इमली।

चुक्राम्ल—पुं०[सं० चुक्र-अम्ल, उपमि० स०] १. चूक नाम की खटाई। २. चूका नाम का साग।

चुक्राम्ला—स्त्री० [चुक्र-अम्ल, ब० स० टाप्] अमलोनी नाम का साग।

चुक्रिका—स्त्री० [सं० चुक्र+ठन्—इक+टाप] १. अमलोनी नाम का साग। नोनिया। २. इमली।

चुक्रिमा (मन्)—स्त्री०[सं० चुक्र+इमनिच्] खट्टापन। खटाई। खटास।

चुक्षा—स्त्री०[सं० √चष् (वध करना)+स० बाहु० पृषो०] हिंसा।

चुखाना—स०[सं० चूषण] १. गौ, भैंस आदि दुहने के समय थन से दूध उतारने के लिए पहले उसके बछड़े को थोड़ा-सा अंश पिलाना। २. कोई चीज या उसका स्वाद चखाना। ३. दे० 'चुसाना'।

चुगद—पुं० [फा०] १. उल्लू पक्षी। २. उल्लू की जाति का डुंडुल नामक पक्षी।

वि० बहुत बड़ा बेवकूफ। महामूर्ख।

चुगना—स० [सं० चयन] पक्षियों आदि का अपनी चोंच से अनाज के कण, कीड़े-मकोड़े आदि उठा-उठाकर खाना।

चुगल—पुं०[फा०] १. चुगलखोर। २. तमाकू आदि पीने के समय चिलम के छेद पर रखा जानेवाला कंकड़। गिट्टक।

चुगलखोर—पुं०[फा०] किसी की परोक्ष में उसकी हानि करने के उद्देश्य से दूसरों के सम्मुख बुराई करनेवाला।

चुगलखोरी—स्त्री०[फा०] किसी की हानि करने के उद्देश्य से परोक्ष में उसकी निन्दा करने की क्रिया या भाव। चुगलखोर का काम।

चुगलस—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की लकड़ी।

चुगलाना—स० दे० 'चुभलाना'।

चुगली—स्त्री०[फा०] किसी की हानि करने के उद्देश्य से परोक्ष में दूसरों से की जानेवाली उसकी निंदा या शिकायत। पीठ पीछे की जानेवाली बुराई या लगाया जानेवाला अभियोग।

मुहा०—**(किसी की) चुगली खाना**=किसी के परोक्ष में दूसरों से की जानेवाली उसकी अभियोगात्मक निंदा।

चुगा—पुं०[हिं० चुगना] अन्न के वे दाने आदि जो चिड़ियों के आगे चुगने के लिए डाले जाते हैं। चिड़ियों का चारा। उदा०—कपट-चुगी दै फिरि निपट करौ बुरी।—घनानंद।

†पुं०=चोगा (पहनावा)।

चुगाई—स्त्री०[हिं० चुगाना+ई(प्रत्य०)] चुगने या चुगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुगाना—स० [हिं० चुगना] चिड़ियों को चुगने में प्रवृत्त करना। अनाज के कण इस प्रकार बिखेरना कि चिड़ियाँ चुगने लगें।

चुगुल|—पुं०=चुगलखोर।

चुगुलखोरी—स्त्री०=चुगलखोरी।

चुगुली—स्त्री०=चुगली।

चुग्गा—पुं० १.=चुगा। २. चोगा।

चुग्घी—स्त्री० [देश०] १. चखने की थोड़ी-सी वस्तु। २. चसका। चाट।

चुचकना—अ०[सं० शुष्क] १. इस प्रकार सूखना कि ऊपरी या बाहरी तल पर झुर्रियाँ पड़ जायं। सूखकर सिकुड़ना। जैसे—आम या चेहरा चुचकना। २. मुरझा जाना।

चुचकारना—स०=चुमकारना।

चुचकारी—स्त्री०[अनु०] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव। चुमकार । पुचकार।

चुचाना|—अ० दे०'चुकचुकाना'।

चुचि—स्त्री०[सं०] स्तन।

चुचु--पुं०[सं० चञ्चु] चेंच नाम का साग।

चुचुआना—अ० दे० 'चुकचुकाना'।

चुचुक—पुं०[सं० चुचु√कै (शब्द करना)+क] १. कुच या स्तन के सिरे या नोक पर का भाग जो गोल घुंडी का-सा होता है। ढिपनी। २. दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। ३. उक्त देश का निवासी।

चुचुकना—अ० [सं० शुष्क+ना (प्रत्य०)] १. अधिक ताप आदि के कारण किसी वस्तु का सूख जाना। २. फल आदि का इतना अधिक सूख जाना कि उसमें का रस उड़ जाय।

अ०=चुचकना।

चुचुकारना|—स० दे० 'चुमकारना'।

चुञ्चु—पुं०[सं०] पालक की तरह का एक प्रकार का साग। चौपतिया।

चुटक—स्त्री०[हिं० चुटकना] १. चुटकने की क्रिया या भाव। २. चुटकी। ३. एक प्रकार का कोड़ा जिसका प्रयोग घोड़ों को चलाना सिखाने के लिए होता है।

पुं० [?] एक प्रकार का कालीन या गलीचा।

चुटकना—स० [हिं० चुटकी] १. चुटकी से पकड़कर कोई चीज उखाड़ना या तोड़ना। जैसे—पत्तियाँ, फूल या साग चुटकना। २. चुटकी से पकड़कर शरीर का कुछ अंश जोर से दबाना। चिकोटी काटना। ३. साँप का किसी को काटना। ४. कोड़ा मारना। चाबुक चलाना।

अ० १. चुटकी बजाना। २. चुट चुट शब्द करना। उदा०—करै चाह सौं चुटकि कै खरे उड़ौहैं मैन।—बिहारी।

चुटकला|—पुं०=चुटकुला।

चुटका--पुं०[हिं० चुटकी] १. बड़ी चुटकी। २. उतनी चीज जो चुटकी में आवे। जैसे—चुटका भर आटा।

चुटकी—स्त्री०[चुट चुट शब्द से अनु०] १. कोई वस्तु उठाने, दबाने, पकड़ने आदि के लिए अथवा कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए अँगूठे के सिरे से तर्जनी का सिरा मिलाने की मुद्रा या स्थिति। जैसे—गौ, भैंस दुहने या पत्तों का दोना बनाने के लिए चुटकी से काम लेना।

मुहा०—चुटकी बठना=चुटकी की सहायता से किये जानेवाले काम का ठीक और पूरा अभ्यास होना। जैसे—जब चुटकी बैठ जायगी, तब दोने ठीक बनने लगेंगे। **चुटकी लगाना**=(क) कोई चीज उठाने, खींचने, तोड़ने, दबाने, पकड़ने आदि के लिए अँगूठे और तर्जनी की उक्त प्रकार की मुद्रा से काम लेना। जैसे—(क) उचक्के ने चुटकी लगाकर उसके जेब से नोंट निकाल लिये। (ख) पत्तों को मोड़कर दोना बनाने के लिए चुटकी लगाना। (ग) चुनरी आदि रंगने के समय जगह-जगह से कपड़े के कुछ अंश पकड़कर डोरी-तागे से इस प्रकार बाँधना कि उतने अंश पर रंग न बढ़ने पावे।

२. किसी के शरीर में पीड़ा उत्पन्न करने अथवा उसका ध्यान किसी बात की ओर आकृष्ट करने के लिए अँगूठे और तर्जनी से उसके शरीर का थोड़ा-सा चमड़ा पकड़ कर दबाने की क्रिया या भाव। चिकोटी। जैसे—(क) उसने ऐसे जोर से चुटकी काटी कि चमड़ा लाल हो गया।

क्रि० प्र०—काटना।

मुहा०—चुटकी भरना=उक्त प्रकार की मुद्रा से किसी के शरीर का चमड़ा पकड़कर दबाना। चिकोटी या चुटकी काटना।

३. उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में किसी को मार्मिक कष्ट पहुँचाने, लज्जित करने या हास्यास्पद बनाने के लिए कही हुई कोई चुभती या लगती हुई व्यंग्यपूर्ण उक्ति या बात। जैसे—अपने भाषण में वे मंत्रियों पर भी चुटकियाँ लेते चलते थे।

क्रि० प्र०—लेना।

मुहा०—(किसी को) चुटकियों में उड़ाना=किसी को बहुत ही तुच्छ या हीन समझते हुए और बहुत सहज में नगण्य और हास्यास्पद ठहराना या सिद्ध करना। जैसे—पंडित जी को तो उन्होंने चुटकियों में ही उड़ा दिया।

४. किसी चीज को उठाने या देने के लिए अँगूठे, तर्जनी और मध्यमा उँगलियों के अगले सिरों को मिलाने की मुद्रा या स्थिति।

पद—चुटकी भर=किसी चीज का उतना अश जितना उक्त प्रकार की पकड़ में आता हो अर्थात् बहुत थोड़ा। जैसे—भिखमंगे को चुटकी भर आटा दे दो।

मुहा०—चुटकी माँगना=उक्त प्रकार से थोड़ा-थोड़ा अन्न घर-घर भीख के रूप में माँगते फिरना।

५. चुमकारने, पुचकारने अथवा अपनी ओर किसी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए अँगूठे और मध्यमा के सिरों को मिलाकर इस प्रकार जोर से चटकाने की क्रिया जिससे चुट शब्द होता है। जैसे—चुटकी बजाकर तोते को पढ़ाना या बच्चे को बुलाना।

क्रि० प्र०—बजाना।

मुहा०—चुटकी देना=अँगूठे और तर्जनी की उक्त प्रकार की मुद्रा से चुट-चुट शब्द उत्पन्न करना। चुटकी बजाना। उदा०—सो मूरति तू अपने आँगन दै दै चुटकी नचाई।—सूर। **(किसी की) चुटकी या चुटकियों पर कोई काम करना**=बहुत ही थोड़े या सामान्य संकेत पर कोई काम ठीक या पूरा करना। जैसे—हमारा पुराना नौकर तो चुटकियों पर सब काम करता था। **चुटकी या चुटकियों में**=उतने ही थोड़े समय में जितना चुटकी या चुटकियाँ बजाने में लगता है; अर्थात् बहुत जल्दी या शीघ्र। जैसे—घबराते क्यों हो ; सब काम चुटकियों में हुआ जाता है।

६. धातु आदि का बना हुआ वह उपकरण जो देखने में चुटकी की पकड़

के आकार का होता है और जिससे कपड़े, कागज आदि पकड़कर इसलिए दबाये जाते हैं कि वे इधर-उधर उड़ने या बिखरने न पावें। (इस पर पहले हाथ की उँगलियों की-सी आकृति बनी रहती थी; इसी लिए इसे पंजा' भी कहते हैं)। ७. जरदोजी के काम में गोटे, लचके आदि को बीच-बीच में मोड़ते हुए बनाया जानेवाला लहरियेदार और सुंदर रूप जो कई प्रकार का होता है। जैसे—उस ओढ़नी पर किश्तीनुमा चुटकी बनी थी। ८. एक प्रकार का गुलबदन या मशरू जिसमें उक्त प्रकार का कटावदार काम होता है। ९. पैर की उँगलियों में पहना जानेवाला एक प्रकार का चौड़ा छल्ला। १०. कपड़े की छपाई और रंगाई का एक प्रकार का पुराना ढंग जिसमें बीच-बीच में कपड़े का कुछ अंश दबाकर रंग से अलग रखा जाता था। ११. दरी की बुनावट में ताने के सूत। १२. बंदूक का वह खटका जिसे दबाने से गोली चलती है। बंदूक का घोड़ा। (लश०) १३. पेच कसने और खोलने, बोतल का काग निकालने आदि का पेचकस। (क्व०)

चुटकुला—पुं०[हिं० चुटकी] १. कोई ऐसी चमत्कारपूर्ण और विलक्षण उक्ति, कहानी आदि जिसे सुनकर सब लोग प्रसन्न हो जायँ या हँस पड़ें। हँसी-विनोद की कोई बढ़िया और मजेदार बात।

मुहा०—चुटकुला छेड़ना=कोई ऐसी अनोखी बात कहना जिससे लोगों को कौतूहल हो और वे उसकी चर्चा करने लगें या उसके सम्बन्ध में आपस में कुछ झगड़ा या विवाद करने लगें।

२. दवा का कोई ऐसा छोटा और सहज अनुयोग या नुस्खा जो बहुत गुण-कारक सिद्ध होता हो। लटका।

चुटफुट—वि०[अनु०] १. इधर-उधर फैला या बिखरा हुआ, परन्तु छोटा और बहुत साधारण। जैसे—घर का चुट-फुट सामान। २. जो सब जगह न होकर कभी थोड़ा यहाँ और कभी थोड़ा वहाँ होता हो। जैसे—नगर में हैजे से चुट-फुट मौतें होने लगीं हैं।

स्त्री० इधर-उधर फैली हुई फुटकर और मामूली चीजें।

चुटला—पुं०[हिं० चोटी] १. एक प्रकार का गहना जो सिर पर चोटी या वेणी के ऊपर पहना जाता है। २. सिर के बालों की वेणी या जूड़ा।

वि० दे० 'चुटीला'।

चुटाना—अ० [हिं० चोट] चोट खाना। घायल होना।

चुटिया—स्त्री०[हिं० चोट.] १. सिर के बालों की वह लट जो हिन्दू पुरुष सिर के बीचोबीच रखते हैं। शिखा। चुंदी। चोटी।

विशेष—विस्तृत विवरण और मुहा० के लिए देखें 'चोटी'।

२. चोरों या ठगों का सरदार।

चुटियाना—स०[हिं० चोट] १. घायल या जख्मी करना। चोट पहुँचाना। २. जीव-जन्तुओं का किसी को काट या डसकर घायल करना।

चुटिला†—पुं०=चुटला।

चुटीलना—स०[हिं० चोट] चोट पहुँचाना।

चुटीला—वि०[हिं० चोट+ईला (प्रत्य०)] १. चोट खाया हुआ। जिसे घाव या चोट लगी हो। २. चोट करनेवाला (जन्तु)।

वि०[हिं० चोटी] १. चोटी पर का या सिरे का सब से अच्छा और बढ़कर। २. ठाठ-बाटवाला। भड़कीला।

पुं०=चुटला।

चुट्की—स्त्री०=चुटकी।

चुटैल—वि०[हिं० चोट] १. जो चोट खाकर घायल हुआ हो। जिसे चोट लगी हो। जैसे—इस मार-पीट में चार आदमी चुटैल हुए हैं। २. आक्रमण या चोट करनेवाला। (क्व०)

चुट्टना—स० दे० 'चुनना'। (राज०) उदा०—कली न चुट्टई आइ।—ढोलामारू।

चुट्टा—पुं०[हिं० चोटी] बड़ी और भारी चोटी या उसका बना हुआ जूड़ा। चुटला।

चुड़—स्त्री० दे० 'चुड्ड'।

चुड़ला—पुं०[स्त्री० अल्पा० चुड़ली]=चूड़ा (हाथ में पहनने का)।

चुड़ाव—पुं०[देश०] एक जंगली जाति।

चुड़िया—स्त्री०=चूड़ी।

चुड़िहारा—पुं०[हिं० चूड़ी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० चुड़िहारिन] १. स्त्रियों के पहनने की चूड़ियाँ बनानेवाला। २. चूड़ियाँ बेचनेवाला व्यक्ति।

चुड़ुक्का—पुं०[हिं० चिड़िया] लाल की तरह की एक छोटी चिड़िया जिसकी चोंच और पैर काले, पीठ मटमैली तथा पूँछ कुछ लंबी होती है। चिडुक्का।

चुड़ैल—स्त्री०[सं० चूड़ा या हिं० चुड्ड?] १. भूत की स्त्री। भूतनी। डायन। पिशाचिनी। २. बहुत ही क्रूर या दुष्ट स्वभाववाली स्त्री। ३. बहुत ही कुरूप और घृणित स्त्री।

चुड्ड—स्त्री०[सं० च्युत=भग] भग। योनि। (पश्चिम)

चुड्डो—स्त्री० [हिं० चुड्ड] स्त्रियों को दी जानेवाली एक गारी। छिनाल स्त्री।

चुत—पुं०[सं०√चुत् (बहना)+क] गुदद्वार।

चुत्यल—वि०[हिं० चुहल] ठठोल। मसखरा।

वि०=चुत्या।

चुत्या—पुं०[हिं० चोथना=नोचना] वह बटेर जिसे लड़ाई में दूसरे बटेर ने घायल किया हो, और उसके पर आदि चोथ या नोच लिये हों।

वि० चोंथा या नोचा-बकोटा हुआ।

चुदक्कड़—वि०[हिं० चोदना] बहुत अधिक चोदनेवाला। अत्यन्त कामी।

चुदना—अ० [हिं० चोदना] स्त्री का पुरुष के द्वारा चोदा जाना।

चुदवाई—स्त्री०[हिं० चुदवाना] चुदवाने की क्रिया, भाव या पुरस्कार।

चुदवाना—अ, स० दे० 'चुदाना'।

चुदवास—स्त्री०[हिं० चुदवाना+आस (प्रत्य०)] स्त्री की संभोग कराने की इच्छा। मैथुन कराने की कामना।

चुदवैया—पुं०[हिं० चोदना+वैया (प्रत्य०)] स्त्री के साथ प्रसंग करने या संभोग करनेवाला।

चुदाई—स्त्री०[हिं० चोदना] १. चोदने की क्रिया या भाव। स्त्री-प्रसंग। मैथुन। २. उक्त क्रिया के बदले में लिया या दिया जानेवाला धन।

चुदाना—अ०[हिं० चोदने का प्रे०] स्त्री का पुरुष से प्रसंग या संभोग कराना।

चुदास—स्त्री०[हिं० चोदना+आस (प्रत्य०)] स्त्री-प्रसंग करने की प्रबल इच्छा या कामना।

चुदासा—पुं०[हिं० चोदना] [स्त्री० चुदासी] वह पुरुष जिसे स्त्री-प्रसंग करने की प्रबल इच्छा या कामना हो।

चुदौवल—स्त्री० [हिं० चोदना] स्त्री के साथ पुरुष के प्रसंग या संभोग करने की क्रिया या भाव।

चुन—पुं० [सं० चूर्ण; हिं० चून] १. गेहूँ, जौ आदि का आटा। २. चूर्ण। बुकनी।

चुनचुना—पुं० [अनु०] पेट में उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के सफेद रंग के लंबोतरे कीड़े जो मलद्वार से मल के साथ बाहर निकलते हैं।

मुहा०—चुनचुना लगना=चुभती या लगती हुई बात सुनने पर बहुत बुरा लगना।

वि० [देश०] जिसके स्पर्श करने से हलकी जलन होती हो।

क्रि० प्र०—लगना।

चुनचुनाना—अ० [अनु०] [भाव० चुनचुनाहट, चुनचुनी] १. शरीर के किसी अंग में रह-रहकर हल्की खुजली और जलन-सी होना। जैसे—घाव चुनचुनाना। २. कोई तीक्ष्ण वस्तु खाने अथवा किसी अंग से उसका स्पर्श होने पर हलकी जलन होना। जैसे—सूरन खाने से गला अथवा राई का लेप करने से किसी अंग का चुनचुनाना। ३. लड़कों का धीरे-धीरे चीं-चीं शब्द करते हुए रोना। (क्व०)

चुनचुनाहट—स्त्री०=चुनचुनी।

चुनचुनी—स्त्री० [हिं० चुनचुनाना] १. चुनचुनाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. हलकी जलन।

स्त्री० दे० 'चुलचुली'।

चुनट—स्त्री० दे० 'चुनना'।

चुनत†—स्त्री०=चुनट (चुनन)।

चुनन—स्त्री० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. अनाज में का वह रद्दी अंश जो उसमें से चुनकर अलग किया जाता है। जैसे—सेर भर दाल में से आधा पाव चुनन निकली है। ३. कपड़े को जगह-जगह से मोड़ या दबा कर उसमें सुंदरता लाने के लिए डाली या बनायी जानेवाली परतें। कपड़े में डाला जानेवाला बल या शिकनें। जैसे—साड़ी की चुनन। ४. कुरते, दुपट्टे आदि में चुटकी से चुनकर या इमली के चीएँ से रगड़कर डाली या बनाई जानेवाली छोटी-छोटी रेखाएँ या शिकनें जो देखने में सुंदर जान पड़ती हैं।

चुननदार—वि० [हिं० चुनन+फा० दार] जिसमें चुनन पड़ी हो। जो चुना गया हो।

चुनना—स० [सं चयन] १. बहुत-सी चीजों में से अपनी आवश्यकता, इच्छा, रुचि आदि के अनुसार अच्छी या काम की चीजें छाँटकर अलग करना। जैसे—(क) पढ़ने के लिए किताब या पहनने के लिए कपड़ा चुनना। (ख) चुन-चुनकर गालियाँ देना। २. आज-कल राजनीतिक क्षेत्र में, कई उम्मीदवारों में से किसी को अपने प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित करना। जैसे—नगरपालिका या राज-सभा के लिए सदस्य चुनना। ३. कहीं पड़ी या रखी हुई छोटी चीजें उठाना या लेना। जैसे—कबूतरों या मुर्गियों का जमीन पर पड़े हुए दाने चुनना। चुगना। ४. पौधों में लगे हुए फूलों आदि के सम्बन्ध में, उँगलियों या चुटकी से तोड़कर इकट्ठा करना। जैसे—माली का कलियाँ या फूल चुनना। ५. एक में मिली हुई कई तरह की चीजों में से अच्छी और काम की चीजें एक ओर करना और फालतू या रद्दी चीजें अलग करना। जैसे—चावल या दाल चुनना, अर्थात् उसमें मिले हुए कदन्न, कंकड़ियाँ आदि उठा-उठाकर अलग करना या फेंकना। ६. किसी स्थान पर बहुत-सी चीजें क्रम से और सजाकर यथा-स्थान रखना। जैसे—अलमारी में किताबें चुनना, मेज पर खाना चुनना। ७. दीवारों की जुड़ाई में क्रम से और ठीक तरह से ईंटें, पत्थर आदि बैठाना या लगाना। जैसे—इस कमरे की दीवारें चुनने में ही दस दिन लग गये।

मुहा०—(किसी को) दीवार में चुनना=मध्य युग में किसी को प्राण-दंड देने के लिए कहीं खड़ा करके उसके आस-पास या चारों ओर ईंट-पत्थर आदि की दीवार या दीवारें बनाना, जिसमें दम घुटने के कारण अभियुक्त उसी में मर जाय।

८. उँगलियों की चुटकी, इमली के बड़े चीएँ आदि की सहायता से कपड़े में सुंदरता लाने के लिए उसे बहुत ही थोड़ी-थोड़ी दूर पर दबाते तथा मोड़ते हुए उसमें छोटी-छोटी शिकनें या सिकुड़नें डालना या बनाना। जैसे—कुरता चुनना। ९. हाथ की चारों उँगलियों की सहायता से कपड़े को बार-बार इधर-उधर घुमाते या ले जाते हुए उसकी तीन-चार अंगुल चौड़ी तहें लगाना। जैसे—दुपट्टा या धोती चुनकर खूँटी पर टाँगना या रखना।

चुनरिया†—स्त्री०=चूनरी।

चुनरी—स्त्री० [हिं० चुनना] १. पुरानी चाल का एक प्रकार का रंगीन विशेषतः लाल रंग का कपड़ा जिसके बीच में थोड़ी-थोड़ी दूर पर सफेद अथवा किसी दूसरे रंग की बुँदकियाँ होती थी। इस कपड़े का उपयोग स्त्रियाँ साड़ी के रूप में भी और चादर के रूप में भी करती थीं। २. चुन्नी नामक रत्न का छोटा टुकड़ा।

चुनवट—स्त्री०=चुनट।

चुनवाँ—वि० [हिं० चुनना] १. चुनां हुआ। २. अच्छा। बढ़िया।

पुं० [हिं० चुन्नी या चुन्नू (लड़कों का नाम)] [स्त्री० चुनियाँ] १. वह छोटा लड़का जो अभी काम सीखता हो। २. बालक। लड़का।

चुनवाना—स० [हिं० चुनना का प्रे०] चुनने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को चुनने में प्रवृत्त कराना।

चुनाँ—वि० [फा०] इस प्रकार का। ऐसा। 'केवल यौ० में प्रयुक्त। जैसे—चुनाँचः, चुनाँ-चुनीं आदि।

चुनाँ, चुनी—स्त्री० [फा०] १. किसी के आदेश, कथन आदि के संबंध में यह कहना या पूछना कि ऐसा क्यों होना चाहिए अथवा इसका औचित्य क्या है। २. व्यर्थ की आपत्ति या विरोध। जैसे—अब चुनाँ-चुनीं मत करो, हम जो कहते हैं, वह करो।

चुनांचे—अव्य० [फा० चुनान्चः] इसलिए। अतः।

चुनाई—स्त्री० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कोई चीज चुनने का ढंग, प्रणाली या स्वरूप। जैसे—इस दीवार की चुनाई कुछ टेढ़ी हुई है।

चुनाखा—पुं० [हिं० चूड़ी+नख] वृत्त बनाने का कंपास या परकार।

चुनाना—स०=चुंनवाना।

चुनाव—पुं० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. बहुत-सी वस्तुओं आदि में से अपनी रुचि, पसन्द, विवेक आदि के अनुसार कोई चीज अंगीकार, ग्रहण करने या ले लेने का कार्य। जैसे—शिक्षा अधिकारी पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चुनाव करेंगे। ३. किसी पद के लिए

कई उम्मीदवारों में से किसी एक को मतों या बहुमत के आधार पर अपना प्रतिनिधि चुनने का कार्य या व्यापार।

मुहा०—चुनाव लड़ना=निर्वाचन में उम्मीदवार के रूप में खड़े होना।

४. वह चीज, बात या वस्तु जो आवश्यकता, रुचि आदि के अनुसार चुनी जाय। जैसे—यह भी तो आप ही का चुनाव है।

चुनावट—स्त्री०=चुनट।

चुनाव-याचिका—स्त्री० [हिं० पद] विधिक क्षेत्र में, वह याचिका या आवेदन-पत्र जो किसी विशिष्ट न्यायालय में इस आधार पर तथा इस उद्देश्य से किया जाता है कि प्रतिनिधि रूप में अमुक सदस्य का चुनाव अवैध रूप से हुआ है; अतः यह चुनाव रद्द किया जाय। (इलेक्शन पेटिशन)

चुनिंदा—वि० [हिं० चुनना+फा० इंदा (प्रत्य०)] १. चुना या छँटा हुआ। २. अच्छा। श्रेष्ठ। ३. गण्य-मान्य या प्रतिष्ठित।

चुनिया गोंद—पुं०[हिं० चूना+गोंद]ढाक या पलास का गोंद। कमरकस।

चुनी—स्त्री०[सं० चूर्णी]१. मोटे अन्न, दाल, आदि का पीसा हुआ आटा या चूर्ण जो प्रायः गरीब लोग खाते हैं।

पद—चुनी-भूसी। (देखें)

†स्त्री०=चुन्नी।

चुनी भूसी—स्त्री० [हिं०] मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण, चोकर आदि।

चुनैटी†—स्त्री०=चुनौटी।

चुनौटिया—पुं० [हिं० चुनौटी] एक प्रकार का खैरा या काकरेजी रंग जो आकिलखानी रंग से कुछ अधिक काला होता है।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

चुनौटी—स्त्री०[हिं० चूना+औटी (प्रत्य०)] वह छोटी डिबिया जिसमें पान, सुरती आदि के साथ खाने के लिए गीला चूना रखा जाता है।

चुनौती—स्त्री०[हिं० चुनना या चुनाव]१. किसी को ललकारते हुए उससे यह कहना कि या तो तुम हमारी बात मान लो या यदि अपनी बात पर दृढ़ रहना चाहते हो तो हमसे लड़-झगड़कर या वाद-विवाद आदि के द्वारा निपटारा कर लो। अपना कथन या पक्ष पुष्ट या सिद्ध करने अथवा अपनी बात मनवाने के लिए किसी को उत्तेजित करते हुए आकर सामना करने के लिए कहना। प्रचारणा। २. इस प्रकार कही हुई बात।

क्रि० प्र०—देना।

†स्त्री०=चुनट (चुनन)।

चुन्नट†—स्त्री०=चुनट।

चुन्नन—स्त्री०=चुनन।

चुन्ना—पुं० दे० 'चूना'।

स० दे० 'चुनना'।

पुं०[मुन्ना का अनु०] छोटे बच्चों को प्यार से बुलाने का शब्द।

चुन्नी—स्त्री० [सं० चूर्णी]१. किसी प्रकार के रत्न विशेषतः मानिक का बहुत छोटा टुकड़ा या नग। २. सुनहले-रुपहले सितारे जो स्त्रियाँ शोभा के लिए कपोलों और मस्तक पर लगाती हैं। चमकी।

मुहा०—चुन्नी रचना=मस्तक और कपोलों पर सितारे या चमकी लगाना।

३. अनाज के दानों का चूरा या छोटे-छोटे टुकड़े। ४. लकड़ी को आरे से चीरने पर निकलनेवाला उसका चूरा या बुरादा। कुनाई। ५. एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

चुप—वि०[सं० चुप्, उ० बँ० चुप; पं० चुप्प; सिं० चुपु; गु०, मरा० चुप] १. जो कुछ भी बोल न रहा हो। जिसके मुँह से कोई बात या शब्द न निकल रहा हो। मौन। जैसे—सब लोग चुप थे।

पद—चुप-चाप। (देखें)

मुहा०—चुप नाधना, मारना, लगाना या साधना=बोलने का अवसर या आवश्यकता होने पर भी जान-बूझकर कुछ न बोलना और चुप रहना। उदा०—गुस्सा चुप नाध के निकालते हैं।—इन्शाउल्ला।

२. (यौ० के आरंभ में) इस प्रकार चुपचाप और चोरी से काम करनेवाला कि औरों को पता न लगे। जैसे—चुप छिनाल।

स्त्री० बिलकुल चुप रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुप्पी। मौन। जैसे—(क) सबसे भली चुप। (ख) एक चुप सौ बातों को हराती है।

स्त्री०[?] पक्के लोहे की वह तलवार जिसे टूटने से बचाने के लिए ऊपर से कच्चा लोहा लगा रहता है।

चुपका—वि०[हिं० चुप] [स्त्री० चुपकी] १. जो बिलकुल चुप हो। मौन।

मुहा०—चुपके से=(क) बिना कुछ भी कहे-सुने। बिलकुल चुपचाप। जैसे—चुपके से हमारे रुपए चुका दो। (ख) इस प्रकार जिसमें किसी को कुछ भी पता न चले। जैसे—वह किताब उठाकर चुपके से चलता बना।

२. दे० 'चुप्पा'।

पुं० बिलकुल चुप रहने की अवस्था या भाव। चुप्पी। मौन।

क्रि० प्र०—साधना।

पुं० [?] एक प्रकार का चाहा पक्षी जिसकी चोंच नुकीली और लंबी होती है।

चुपकाना—स०[हिं० चुपका]१. चुप या मौन कराना। २. बोलने से रोकना।

चुपकी†—स्त्री०=चुप्पी।

चुपचाप—अव्य० [हिं०चुप+अनु० चाप] १. बिना कुछ भी कहे-सुने। बिलकुल चुप या मौन रहकर। जैसे—वह चुप-चाप यहाँ से उठकर चला गया। २. इस प्रकार छिपे-छिपे या धीरे से कि किसी को पता तक न लगे। जैसे—घर में लोगों के जागते ही चोर चुपचाप निकल भागा। ३. बिना कोई उद्योग या प्रयत्न किये। जैसे—यों चुपचाप बैठे रहना ठीक नहीं है। ४. धीर और शांत भाव से। जैसे—यह लड़का चुपचाप बैठना तो जानता ही नहीं।

चुपचुप=अव्य० दे० 'चुपचाप'।

चुप-चुपाते†—अव्य० वि०=चुपचाप।

चुपछिनाल—स्त्री० [हिं० पद] छिपे-छिपे व्यभिचार करनेवाली स्त्री।

वि० चुप-चाप अथवा छिपे-छिपे सब प्रकार के दुष्कर्म करनेवाला।

चुपड़ना—स०[हिं० चिपचिपा] १. किसी वस्तु के तल पर किसी गाढ़े चिकने पदार्थ का हलका लेप करना। जैसे—रोटी पर घी या सिर पर तेल चुपड़ना। २. लाक्षणिक रूप में, किसी प्रकार की बात का किसी पर आरोप करना या भार रखना। जैसे—सब दोष हमारे ही सिर चुपड़ते चलो। ३. कोई बिगड़ी-हुई बात बनाने के लिए चिकनी-चुपड़ी या चापलूसी की बातें करना।

चुपड़ा—वि०[हिं० चुपड़ना] [स्त्री० चुपड़ी] जिसकी आँखों में बहुत कीचड़ हो। कीचड़ से भरी आँखोंवाला।

चुपरना—स०=चुपड़ना।

चुपरी आलू—पुं०=रतालू (पिंडालू)।

चुपाना—अ० [हिं० चुप] चुप हो जाना। मौन रहना। न बोलना। स० किसी को चुप या मौन कराना। उदा०—मैं आज चुपा आई चातक।—महादेवी।

चुप्पा—वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] १. बहुत कम बोलनेवाला। जो किसी बात का जल्दी कोई उत्तर न दे। २. जो अपने मन का भाव सहसा दूसरों पर प्रकट न होने दे। मन की बात मन में ही रखनेवाला। घुन्ना।

चुप्पी—स्त्री०[हिं० चुप]बिलकुल चुप रहने की अवस्था या भाव। मौन।

क्रि० प्र०—लगाना।—साधना।

चुबलाना—स०=चुभलाना।

चुभकना—अ० [अनु०]पानी में डूबते हुए चुभ-चुभ शब्द करते हुए गोता खाना। बार-बार डूबना-उतराना।

चुभकाना—स०[अनु०] पानी में डुबाकर इस प्रकार बार-बार गोते देना कि मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकलने लगे।

चुभकी—स्त्री०[अनु० चुभ-चुभ] १. चुभकने की क्रिया या भाव। २. गोता। डुबकी।

चुभन—स्त्री०[हिं० चुभन]१. चुभने की क्रिया या भाव। २. किसी के चुभने के कारण होनेवाली टीस या पीड़ा।

चुभना—अ०[अनु०] १. दाब पड़ने पर किसी नुकीली चीज का सिरा अंदर घुसना या धँसना। जैसे—पैर में काँटा या हाथ में सूई चुभना। २. कोई बात मन को उसी प्रकार कष्टदायक जान पड़ना जिस प्रकार किसी चीज का चुभना कष्टदायक होता है। जैसे—हँसी में कही हुई उसकी वह बात भी मेरे कलेजे (या मन) में चुभ गई। ३. उक्त कथन आदि का मन में प्रविष्ट होकर अच्छी तरह स्थित होना। ४. किसी चीज या बात का अपने गुण, रूप आदि के कारण मन में घर करना। उदा०—टरति न टारे यह छबि मन में चुभी।—सूर।

चुभर चुभर—अव्य० वि० [अनु०] इस प्रकार कि मुँह से चुभ-चुभ शब्द निकले। जैसे-कुत्ता चुभर चुभर पानी पीता है।

चुभलाना—स०[अनु०] मुँह में कोई खाद्य पदार्थ रखकर उसे जीभ से बार-बार हिलाकर इधर-उधर करना और इस प्रकार उसका रस चूसना या स्वाद लेना।

चुभवाना—स०[हिं० चुभना का प्रे०] किसी को कुछ चुभाने में प्रवृत्त करना।

चुभाना—स०[हिं० चुभना का प्रे०] ऐसी क्रिया करना जिससे नुकीली चीज या उसका सिरा अन्दर धँसे। गड़ाना। जैसे—किसी के शरीर में काँटा या सूई चुभाना।

चुभीला*—वि०[हिं० चुभना]१. जो शरीर में चुभता हो, अर्थात् नुकीला। २. जो मन में खटकता हो। ३. जो मन में बरबस घर कर लेता हो; अर्थात् मनोहर या मोहक।

चुभोना†—स०=चुभाना।

चुभौना—वि०=चुभीला।

चुमकार—स्त्री०[हिं० चूमना+कार]१. चुमकारने की क्रिया या भाव। पुचकार। २. किसी को चूमने के समय मुँह से निकलनेवाला चुम शब्द।

चुमकारना—स० [हिं० चुमकार] किसी को अनुरक्त, आकृष्ट या शांत करने के लिए चूमने का-सा चुम चुम शब्द मुँह से निकालते हुए उससे दुलार या प्रेम करना। पुचकारना। जैसे—घोड़े या बच्चे को चुमकारना।

चुमकारी—स्त्री०=चुमकार।

चुमवाना—स०[हिं० चूमना का प्रे०] किसी को कुछ चूमने में प्रवृत्त करना। चुंबन कराना।

चुमाना—स०[हिं० चूमना]चूमने में प्रवृत्त करना।

चुम्मक†—पुं०=चुंबक।

चुम्मा—पुं० [हिं० चूमना]किसी को, विशेषतः प्रिय को चूमने की क्रिया। चुंबन।

पद—चुम्मा-चाटी। (देखें)

चुम्मा-चाटी—स्त्री०[हिं० चूमना+चाटना]किसी को बार-बार चूमने और उसके अंगों को चाटने या उन पर मुँह रखने की क्रिया या भाव।

चुर—वि० [√चुर् (चुराना)+क]चोरी करनेवाला।

†वि०[सं० प्रचुर]बहुत अधिक या ज्यादा।

पुं० १. जंगली हिंसक पशुओं के रहने का गड्ढा। माँद। २. कुछ लोगों के मिलकर बैठने का स्थान। उदा०—घाट, बाट, चौपार, चुर, देवल, हाट, मसान।-भगवतरसिक।

पुं०[अनु०]कड़ी चीजों; सूखे पत्तों आदि के दबकर टूटने से होनेवाला चुर शब्द।

चुरकट—वि० १=चिरकुट। २.=चुरकुट।

चुरकना—अ० [अनु० चुर चुर] १. चूर-चूर होना। २. चटकना, दरकना या फटना।

†अ०=चुरगना।

चुरकी†—स्त्री०[हिं० चोटी] सिर पर की चुटिया। चोटी। शिखा।

चुरकुट—वि० [हिं० चूर+कूटना]१. चकनाचूर या चूर-चूर किया हुआ। चूर्णित। २. घबराया, डरा या सहमा हुआ। उदा०—कुरकुट सुनि चुरकुट भइ बाला।-नंददास।

चुरकुस—वि०[हिं० चूर] जो चूर-चूर हुआ या किया गया हो। चकनाचूर। पुं० चूर्ण। बुकनी।

चुरगना—अ०[चुर चुर से अनु०]१. प्रसन्न या मगन होकर बातें बोलना या मुँह से शब्द निकालना। जैसे—चिड़ियों का चुरगना। २. किसी व्यक्ति का मगन होकर अपने संबंध में कुछ बढ़-बढ़कर परन्तु धीरे-धीरे बातें करना। जैसे—आज चुपचाप मोहन का चुरगना सुनो।

चुरगम—स्त्री०[हिं० चुरगना]१. आनंद या मगन होकर की जानेवाली बातें। २. आपस में बहुत धीरे-धीरे की जानेवाली बातें। काना-फूसी। जैसे—उन लोगों की आपस में खूब चुरगम हो रही थी।

चुरचुरा—वि०[अनु०]१. (खाद्य वस्तु) जिसे खाने पर मुँह से चुर चर शब्द निकले। खस्ता। जैसे—चुरचुरा पापड़। २. (वस्तु) जो टूटते समय चुरचुर शब्द करती हो।

चुरचुराना—अ० [अनु०] १. चुरचुर शब्द उत्पन्न होना या निकलना।

२. (किसी वस्तु का) चुर-चुर शब्द करते हुए चूरचूर या टुकड़े-टुकड़े होना।

स० १. चुरचुर शब्द उत्पन्न करना या निकालना।२. इस प्रकार चूर करना या तोड़ना कि चुर चुर शब्द होने लगे।

चुरट—पुं०=चुरुट।

चुरना†—अ०[सं० चूर=जलना, पकना]१. खाद्य पदार्थ का आँच पर पकना विशेषतः खौलते हुए पानी में उबलकर पकना। जैसे—चावल या दालचुरना। २. आपस में धीरे-धीरे गुप्त या रहस्यपूर्ण बातें होना।

†अ० चोरी जाना। चुराया जाना ।

†पुं०=चुनचुना (कीड़ा)।

चुरमुर—पुं० [अनु०] करारी, कुरकुरी या खरी वस्तु के टूटने का शब्द। जैसे—भुने हुए चने या सूखी पत्तियों का चुरमुर बोलना।

†वि०=चुरमुरा।

चुरमुरा—वि० [अनु०] (वस्तु) जो दबाये या तोड़े जाने पर चुरमुर शब्द करे। करारा।

चुरमुराना—अ० [अनु०] चुरमुर शब्द करते हुए चूर होना।

स० चुरमुर शब्द करते हुए चूर करना या तोड़ना।

चुरवाना—स०[हिं०चुराना=पकाना] चुरने अर्थात् उबलने और पकने में प्रवृत्त करना।

स०[हिं० चुराना=चोरी करना]चुराने या चोरी करने में प्रवृत्त करना। चोरी कराना।

चुरस—स्त्री० [देश०] दबने, मुड़ने आदि के कारण पड़नेवाली शिकन। सिकुड़न।

पुं०=चुरुट।

चुरा†—पुं०=चूरा।

†—पुं०=चूड़ा।

चुराई—स्त्री०[हिं० चुरना] चुरने अर्थात उबलने की क्रिया या भाव।

स्त्री०[हिं० चुराना] चुराने की क्रिया या भाव।

चुराना—स०[सं० चुर=चोरी करना] १. किसी की कोई वस्तु बिना उसकी अनुमति के तथा छलपूर्वक कहीं से उठाकर अपने उपयोग के लिए ले जाना। चोरी करना। जैसे—किसी की कलम या किताब चुराना। २. किसी दूसरे का कोई भाव, विचार आदि अपना बनाकर कहना या लिखना। छलपूर्वक अपना बना लेना। ३. इस प्रकार बरबस अपने अधिकार या वश में कर लेना कि सहसा किसी को पता न चले। जैसे—किसी का चित्त या मन चुराना। ४. किसी वस्तु को इस प्रकार सुरक्षित रखना कि कोई उसे देखने न पावे। छिपाकर रखना। जैसे—गाय का अपने थन में दूध चुराना। ५. भय, संकोच आदि के कारण कोई चीज या बात दबा रखना और दूसरों के सम्मुख न लाना अथवा उन्हें न बतलाना। जैसे-(क) रमणी का आँखें चुराना। (ख) मित्रों से विवाह का समाचार चुराना। ६. आवश्यकता पड़ने पर ठीक या पूरा प्रयोग न करना। जैसे—काम करने से जी चुराना।

स०[हिं० चुरना का स०] किसी तरल पदार्थ को उबालकर अच्छी तरह गरम करते हुए पकाना। चुरने में प्रवृत्त करना। जैसे—हाँड़ी में चावल या दाल चुराना।

चुरिला—पुं०=चुड़िला।

चुरिहारा†—पुं०=चुड़िहारा।

चुरी—स्त्री०[सं०]छोटा कूआँ।

†स्त्री०=चूड़ी।

चुरुट—पुं० [अं० शेरूट—चेरूट] तंबाकू के पत्तों के चूरे की बनाई हुई बड़ी बत्ती जिसका धूआँ लोग पीते हैं। सिगार।

चुरू—पुं०=चुल्लू। उदा०—एक चुरू रस भरै न हिया।—जायसी।

चुरैल—स्त्री०=चुड़ैल।

चुर्ट—पुं०=चुरुट।

चुर्स†—पुं०=चुरुट।

†स्त्री०=चुरस।

चुल—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना से]१. शरीर के किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट। खुजली। २. प्रसंग या संभोग की प्रबल इच्छा या कामना। काम-वासना। ३. किसी प्रकार की प्रबल इच्छा, कामना या वासना।

क्रि० प्र०—उठना।—मिटना।—मिटाना।

†स्त्री०=चुर (माँद)। उदा०—तेंदुओं के आकार स्पष्ट दिखलाई पड़ने लगे उनको चुल भी दिखलाई पड़ी।—वृंदावनलाल वर्मा।

चुलका—स्त्री०=चुलुका।

चुलचुलाना—अ०[अनु०] १. शरीर के किसी अंग में ऐसी हलकी जलन या सुरसुरी होना कि उसे खुजलाने को जी चाहे। हलकी खुजली होना। २. प्रसंग या संभोग की प्रबल कामना होना। ३. चंचलतापूर्वक इधर-उधर हाथ-पैर करना या चीजें हटाना-बढ़ाना। चिलबिल्लापन करना।

चुलचुलाहट—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] चुलचुलाने की क्रिया या भाव।

चुलचुली—स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] १. शरीर में होनेवाली हलकी खुजली। २. काम-वासना। चुल।

चुलबुल—स्त्री०[सं० चल और बल] १. चुलबुलाने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुलबुलाहट। २. चंचलता। चपलता।

चुलबुला—वि०[हिं० चुलबुलाना] [स्त्री० चुलबुली] १. उमंग के कारण जिसके अंग बहुत अधिक हिलते-डोलते रहते हों। चंचल । चपल। २. दुष्ट। नटखट। पाजी।

चुलबुलाना—अ० [सं० चल=चंचल अथवा अनु०] १. उमंग, यौवन आदि के कारण बार-बार अंग हिलाना-डुलाना। चुलबुल करना। २. २. चंचलता या चपलता दिखलाना।

चुलबुलापन—पुं० [हिं० चुलबुला+पन (प्रत्य०)] १. चुलबुले होने की अवस्था, क्रिया या भाव। चुलबुलाहट। २. चंचलता। चपलता। शोखी।

चुलबुलाहट—स्त्री०=चुलबुलापन।

चुलबुलिया—वि०=चुलबुला।

चुलहाई—वि०[हिं० चुलहाया का स्त्री०] (स्त्री) जिसमें काम या संभोग की वासना अधिक हो।

स्त्री० छिनाल। पुंश्चली।

चुलहाया—वि० [हिं० चुल+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० चुलहाई] जिसमें काम-वासना की अधिकता या प्रबलता हो।

चुलाना—स० =चुआना।

चुलाव—पुं० [हिं० चुलाना=चुआना] चुलाने अर्थात् चुआने की क्रिया या भाव।

पुं०[हिं० पुलाव का अनु०] पुलाव की तरह पकाये हुए ऐसे चावल जिनमें मांस न पड़ा हो।

चुलियाला—पुं० [?] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १३ और १६ के विश्राम से २९ मात्राएँ होती हैं। इसके अंत में एक जगण और एक लघु होता है। दोहे के अंत में एक जगण और एक लघु जोड़ने से यह छंद बनता है। कोई इसके दो और कोई चार पद मानते हैं। जो दो पद मानते हैं वे दोहे के अंत में एक जगण और एक लघु रखते हैं। जो चार पद मानते हैं, वे दोहे के अंत में एक यगण रखते हैं।

चुली|—स्त्री०[हिं० चुल्लू] १. धार्मिक दृष्टि से कोई चीज दान करने के लिए हथेली में जल लेकर किया जानेवाला संकल्प। २. दे० 'चुल्लू'।

चुलुक—पुं० [सं० चुल्(ऊँचा होना)+उकक् बा०] १. उतना जल जितने में उड़द का दाना डूब जाय। २. बहुत अधिक कीचड़ या दलदल। ३. हाथ में पानी लेने के लिए हथेली का बनाया हुआ चुल्लू। ४. एक प्रकार का पुराना बरतन जिससे अनाज आदि नापते थे। ५. एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

चुलुका—स्त्री०[सं० चुलुक+टाप्] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

चुलुपा—स्त्री० [सं० चुलु√पा (रक्षा करना)+क-टाप्] बकरी।

चुलूक*—पुं०=चुल्लू।

चुल्ल—वि०[सं० क्लिन्न+लच्, चुल् आदेश] जिसकी आँखों में कीचड़ भरा हो।

स्त्री०=चुल।

चुल्लक—पुं०[सं० चुल्ल+कन्] चुल्लू।

चुल्लकी—स्त्री० [सं०√चुल्ल् (क्रीड़ा करना)+ण्वुल्-अक+ङीष्] शिशुमार या सूंस नामक जल-जंतु।

चुल्ला—पुं०[सं० चूड़ा=वलय] जुलाहों के करघे में का कांच का छोटा छल्ला।

वि०=चुल्ली (चंचल और दुष्ट)।

चुल्लि—स्त्री०[सं०√चुल्ल्+इनि]१. चूल्हा। २. चिता।

चुल्ली—वि०[हिं० चुल] १. चुलबुला। चंचल। २. चिलबिल्ला। नटखट। पाजी।

स्त्री० [सं० चुल्लि+ङीष्]=चुल्लि।

|स्त्री०=चुली।

चुल्लू—पुं० [सं० चुलुक] १. उँगलियों को अंदर की ओर कुछ मोड़कर गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें। २. उतनी वस्तु जितनी हाथ की उक्त मुद्रा में आती है।

पद—चुल्लू-भर=उतना कम या थोड़ा (तरल पदार्थ) जितना एक बार चुल्लू में आता हो।

मुहा०—चुल्लू चुल्लू साधना=थोड़ा-थोड़ा करके किसी प्रकार का अभ्यास, संग्रह या साधन करना। **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**=बहुत ही लज्जाजनक स्थिति में आना, पड़ना या होना। किसी को मुंह दिखाने या जीवित रहने के योग्य न रह जाना। (तिरस्कार सूचक) जैसे—ऐसा काम (या बात) करने से तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना ज्यादा अच्छा है। **(किसी का) चुल्लू भर लहू पीना**=बदला चुकाने के लिए उसी तरह किसी को मार कर उसका रक्त पीना जिस प्रकार भीम ने दुःशासन का लहू पीया था। **चुल्लू में उल्लू होना**=बहुत थोड़ी सी नशे की चीज। जैसे—भाँग या शराब पीते ही बेसुध होना। **चुल्लुओं रोना**=बहुत अधिक आँसू बहाना। बहुत रोना। **(किसी का) चुल्लुओं लहू पीना**=(क) चुल्लू भर लहू पीना। (ख) बहुत अधिक तंग या दुःखी करना। बहुत सताना।

चुल्हौना|—पुं०=चूल्हा।

चुवना—अ०=चूना।

वि०=चूना।

चुवा—पुं० दे० 'चुआ'।

चुवाना—स०=चुआना।

चुसकी—स्त्री०=चुस्की।

चुसना—अ० [हिं० चूसना का अ०] १. चूसा जाना। २. चूसे जाने के कारण रस या सार भाग से रहित होना। ३. सोखा जाना। ४. लाक्षणिक अर्थ में दूसरों द्वारा किसी का शोषण किया जाना। धन-धान्य, बल-वीर्य आदि से रहित हो जाना।

|पुं० [स्त्री० अल्पा० चुसनी] बड़ी चुसनी।

चुसनी—स्त्री०[हिं० चूसना] १. चूसने की क्रिया या भाव। २. बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में रखकर चूसते हैं। ३. बच्चों को दूध पिलाने की शीशी।

चुसवाना—स०[हिं० चूसना का प्रे०] १. किसी को कुछ चूसने में प्रवृत्त करना। चुसाना। २. दूसरों से अपना शोषण करवाते जाना।

चुसाई—स्त्री०[हिं० चूसना] १. चूसने या चूसे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. चूसने या चुसाने का पारिश्रमिक।

चुसाना—स०[हिं० चूसना का प्रे०]चूसने का काम किसी और से कराना। किसी को कुछ चूसने में प्रवृत्त करना। चुसवाना।

चुसौअल—स्त्री०[हिं० चूसना] अधिक मात्रा या मान में अथवा परस्पर चूसने और चुसाने की क्रिया या भाव।

चुसौवल—स्त्री०=चुसौअल।

चुस्की—स्त्री०[हिं० चूसना] १. होंठो से कोई तरल पदार्थ थोड़ा-थोड़ा या धीरे-धीरे सुड़कने की क्रिया या भाव। २. तरल पदार्थ का उतना थोड़ा अंश जितना एक बार में चूस या सुड़ककर पीया जाय। जैसे—एक चुस्की तो और ले लो।

क्रि० प्र०—लगाना।—लेना।

३ मद्य पीने का पात्र। (राज०)

चुस्त—वि०[फा०] १. (पहनावा) जो खूब कसा हुआ हो। जो कहीं से कुछ भी ढीला न हो। यथा-स्थान ठीक और पूरा बैठनेवाला। जैसे—चुस्त अंगा या पाजामा। २. (व्यक्ति) जिसमें किसी प्रकार का आलस्य या शिथिलता न हो। फुर्तीला।

पद—चुस्त-चालाक=हर काम या बात में ठीक या पूरा और होशियार।

३. जिसमें किसी प्रकार का अभाव या त्रुटि न हो। जो उपयोगिता, औचित्य आदि के विचार से अच्छे और ऊँचे स्तर पर हो। जैसे—चुस्त बन्दिश या लिखावट। ४. दृढ़। पक्का। मजबूत।।

पुं० [?] जहाज का वह भाग जो अन्दर की ओर झुका या दवा हो। मूढ़। (लश०)

चुस्ता—पुं०[सं० चुस्त=मांसपिंड विशेष] बकरी के बच्चे का आमाशय जिसमें पीया हुआ दूध भरा रहता है।

चुस्ती—स्त्री०[फा०] १. चुस्त होने की अवस्था या भाव। २. काम करने में दिखाई देनेवाली तेजी या फुरती। ३. कसे हुए या तंग होने की अवस्था या भाव। कसावट। ४. पक्कापन। प्रौढ़ता। ५. दृढ़ता। मजबूती।

चुहँटी†—स्त्री०=चुटकी।

चुहचाहट—स्त्री०=चहचहा।

चुहचुहा—वि०[हिं० वुहचुहाना] [स्त्री० चुहचुही]=चुहचुहाता।

चुहचुहाता—वि०[हिं० चुहचुहाना] जिसमें चटक तथा रसीलापन हो। रंगीला और रसीला। जैसे—चुहचुहाता पद।

चुहचुहाना—अ० [अनु०] रस से इतना अधिक ओत-प्रोत या भरा हुआ होना कि उसमें से रस टपकता हुआ जान पड़े।

†अ०=चहचहाना (पक्षियों का)।

चुहचुही—स्त्री०[अनु०]काले रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। फुलसुँघनी।

चुहट—स्त्री०[हिं० चुहटना] १. चुहटने की क्रिया या भाव। २. कसक। पीड़ा।

चुहटना—स० [अनु०]१. चिकोटी काटना। २. पैरों से रौंदना। ३. कुचलना। मसलना।

अ० चिमटना।

चुहटनी†—स्त्री०[?] गुंजा। करजनी।

चुहड़ा—पुं० [देश०] [स्त्री० चुहड़ी] १. भंगी। मेहतर। २. चमार। ३. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत ही निकृष्ट और नीच व्यक्ति।

चुहना†—स०=चूसना।

चुहल—स्त्री०[अनु० चुहचुह=चिड़ियों की बोली] मनोरंजन के लिए आपस में होनेवाली रस और विनोद की बात-चीत। हलकी हंसी-दिल्लगी।

चुहलपन—पुं०=चुहलबाजी।

चुहलबाज—वि०[हिं० चुहल+फा० बाज़ (प्रत्य०)] जो बीच-बीच में हलकी हँसी-दिल्लगी की बातें भी कहता चलता हो। चुहल करनेवाला। विनोदशील।

चुहलबाजी—स्त्री०[हिं० चुहल+फा० बाजी] बार-बार या रह-रहकर चुहल करने की क्रिया या भाव।

चुहिया—स्त्री०[हिं० चूसा का स्त्री० अल्पा०] १. मादा चूहा। चूही। २. छोटा चूहा। चूहे का बच्चा।

चुहिल—वि०[हिं० चुहचुहाना] १. रमणीक। सुन्दर। २. (स्थान) जहाँ चहल-पहल या रौनक हो।

चुहिली—स्त्री०[देश०] चिकनी सुपारी।

चुहुँटना*—स०[अनु०] १. चिकोटी काटना। २. तोड़ने, दबाने आदि के लिए चुटकी से कसकर पकड़ना।

वि० [स्त्री० चुहुँटनी] १. चिकोटी काटनेवाला। २. कसकर पकड़ने और दबानेवाला।

अ० [हिं० चिमटना] चिपकना।

वि०[स्त्री० चुहुँटनी] चिपकनेवाला।

चुहुकना—स०[सं० चूष] वछड़े आदि का भैंस, गाय आदि का स्तन-पान करना। चूसना।

चुहुटना—स०=चुहुँटना।

चुहुटनी—स्त्री०[देश०]गुंजा।

चूं—स्त्री०[अनु०] १. छोटी चिड़ियों या उनके बच्चों के बोलने का शब्द। २. आपत्ति, विरोध आदि के रूप में डरते या सहमते हुए कही जानेवाली कोई छोटी या हलकी बात। जैसे—वहाँ उसने चूं तक नहीं की, सब रुपए चुपचाप चुका दिए।

मुहा०—चूं-चिरा करना=आपत्ति या विरोध में डरते या सहमते हुए कुछ कहना।

अ० [फा०] किस कारण से। क्यों।

पद—चूंकि (देखें)।

चूंकि—अ०य० [फा०] कारण यह है कि। क्योंकि।

चूंच—†स्त्री०=चोंच।

चूंची—स्त्री०=चूची।

चूंचूँ—स्त्री०[अनु०] १. छोटी चिड़ियों या उनके बच्चों के बोलने का शब्द। २. विरोध में धीरे से कही हुई कोई वात।

पुं० एक प्रकार का खिलौना जिसे दबाने से चूं चूं शब्द निकलता है।

चूंटना—स०[हिं० चुटकी या चुटकना] तोड़ने या दबाने के लिए चुटकी से पकड़ना। उदा०—मन लुटिगो लोटनि चढ़त चूंटत ऊँचे फूल। —बिहारी।

चूंदरी†—स्त्री०=चुनरी।

चूंदी—स्त्री०=चुंदी।

चूअरी—स्त्री०[देश०] जरदालू नामक फल। खूबानी।

चूऊ—पुं०[देश०] पहाड़ी प्रदेशों में बननेवाला एक प्रकार का बढ़िया महीन ऊनी कपड़ा।

चूक—स्त्री०[हिं० चूकना] १. चूकने की क्रिया या भाव। २. अनजान में असावधानी से अथवा प्रमाद, विस्मृति आदि के कारण होनेवाली कोई गलती या भूल। उदा०—छमहू चूक अनजानत केरी।—तुलसी। ३. वह अक्षर, शब्द, पद, वाक्य आदि जो कहने, पढ़ने-लिखने आदि के समय अनजान में अथवा असावधानी, जल्दी या विस्मृति के कारण छूट जाता है। (ओमिशन) ४. छल-कपट। धोखा-फरेब। उदा०—अहो हरि बलि सों चूक करी। —परमानंददास। ५. छोटा छेद या दरार।

पुं०[सं० चुक्र] १. किसी खट्टे फल विशेषतः नीवू के रस से वनी एक प्रकार की बहुत तेज खटाई। २. एक प्रकार का खट्टा साग।

चूकना—अ०[सं० च्युत कृत] १. भूल करना। २. कहने, पढ़ने, लिखने आदि के समय कोई अक्षर, शब्द, पद, बात आदि प्रायः असावधानी या विस्मृति के कारण छोड़ देना। जैसा होना चाहिए उससे भिन्न कुछ और कर या कह जाना। ३. किसी लक्ष्य पर ठीक प्रकार से संधान न कर पाना। निशाना या वार खाली जाना। ४. असावधानी, उपेक्षा आदि के कारण किसी सुअवसर का सदुपयोग करने से रह जाना। ठीक समय पर लाभ न उठा पाना। ५. न रह जाना। समाप्त होना। चुकना। उदा०—सतगुरू मिलै अँधेरा चूकै...।—कबीर।

चूका—पुं०[सं० चुक्र] चूक नामक खट्टा साग।

चूची—स्त्री०[सं० चूचुक] १. स्तन का अगला भाग अथवा उसके ऊपर की घुंडी। २. कुच। स्तन।

मुहा०—चूची पीना=स्तन में मुँह लगाकर उसमें का दूध पीना।

चूचुक—पुं०[सं०√चूष् (पीना) +उक्र वाहु० ष=च] कुच के ऊपर की अगली काली घुंडी। चूची की ढेंपी।

चूछना†—स०=चूसना।

चूजा—पुं०[फा० चूज़ः] १. मुर्गी का बच्चा। २. छोटी उमर का सुंदर लड़का या लड़की (संभोग की दृष्टि से)। (बाजारू)

चूड़—पुं०[सं०चूड़ा] १. चोटी। शिखा। २. पक्षियों आदि के सिर पर की कलगी या चोटी। ३. वास्तु रचना में, खंभे आदि का ऊपरी भाग। ४. पहाड़ की चोटी। ५. छोटा कूआँ। ६. शंखचूड़ दैत्य का एक नाम।

चूड़क—पुं० [सं० चूड़ा+कन्, ह्रस्व] कूआँ।

चूड़ांत—वि०[सं० चूड़ा-अन्त, ब० स०] १. जो चरम सीमा या पराकाष्ठा तक पहुँचा हो। २. बहुत अधिक। अत्यन्त।

पुं०[ष० त०]चूड़ा या शिखर का अन्तिम और ऊपरी भाग।

चूड़ा—पुं०[सं०√चुल्(ऊँचा होना)+अङ्, दीर्घ (नि०), ल को ड; प्रा० चूड, चूडक (भुजा भरण) गु० चूडो, सिं० चूरो; मरा० चुड़ा] १. सिर के बालों की चोटी। शिखर। २. पक्षियों आदि के सिर पर की चोटी। ३. किसी चीज का सबसे ऊँचा और ऊपरी भाग। ४. मस्तक। सिर। ५ कूआँ। ६. घुँघची। ७. प्रधान या मुख्य व्यक्ति। ८. हाथ में पहनी जानेवाली एक प्रकार की चूड़ियाँ जो प्रायः हाथी दाँत की बनती और विवाह के समय कन्या को पहनाई जाती हैं। ९. हाथ में पहनने का कंगन या कड़ा। १०. दे० 'चूड़ा करण'।

पुं० १. दे० 'चूहड़ा' २. दे० चिड़वा'।

चूड़ा-करण—पुं०[ष० त०] हिंदुओं के १६ संस्कारों में से एक, जिसमें बालक का सिर पहले-पहल मूँडा जाता है। मुंडन।

चूड़ा-कर्म (न्)—पुं०[ष० त०]=चूड़ाकरण।

चूड़ा-मणि—पुं०[मध्य० स०] १. सिर पर पहनने का एक गहना। शीशफूल। बीज। २. वह जो अपने कुल, वर्ग आदि में सब से बढ़कर या श्रेष्ठ हो। ३. गुंजा। घुँघची।

चूड़ाम्ल—पुं०[चूड़ा-अम्ल, ब० स] इमली।

चूड़ार—वि० [सं० चूड़ाऋ (गति) √+अण्] १. चूड़ा से युक्त। चूड़ावाला। २. (बालक) जिसके सिर पर चुंदी या चोटी हो। ३. (पशु या पक्षी)। जिसके सिर पर कलगी हो।

चूड़ाल—वि०[सं० चूड़ा+लच्] चूड़ायुक्त।

पुं० सिर।

चूड़ाला—स्त्री०[सं० चूड़ाल+टाप्] १. सफेद घुँघची। २. नागरमोथा। ३. एक प्रकार की निर्विषी (वनस्पति)।

चूड़िया—पुं० [हिं० चूड़ी+इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

चूड़ी—स्त्री० [दे प्रा० चूड़; बं० उ० चुरी; गु० पं० चूड़ी, सिं० चूरी; ने० चूरि; मरा० चूडा] १. स्त्रियों का एक प्रसिद्ध वृत्ताकार गहना जो धातु, लाख, शीशे, सींग आदि का बनता है और जो स्त्रियाँ हाथ में शोभा के लिए और प्रायः सौभाग्य-सूचक चिह्न के रूप में पहनती हैं।

मुहा०—चूड़ियाँ ठंढी करना या बढ़ाना=(क) बदलने के लिए चूड़ियाँ उतारना। (ख) विधवा होने पर चूड़ियाँ तोड़ डालना। **चूड़ियाँ पहनना**=स्त्रियों का-सा आचरण या व्यवहार करना। (कायरता सूचक व्यंग्य) जैसे—तुम्हें तो चूड़ियाँ पहनकर घर में बैठना चाहिए था। **(किसी पर या किसी के नाम की) चूड़ियाँ पहनना**=स्त्री का किसी को अपना उपपति बना लेना और उसके वशवर्त्ती होकर रहना। **(किसी स्त्री को) चूड़ियाँ पहनाना**=(क) विधवा स्त्री का विवाह करना। (ख) विधवा स्त्री को पत्नी बनाकर अपने घर में रखना।

२. उक्त आकार-प्रकार की वे वृत्ताकार रेखाएँ जो किसी चीज में उसके विभाग नियत करने के लिए बनाई जाती हैं। जैसे—कल के किसी पुरजे या पेंच की चूड़ियाँ, मेहराब की चूड़ियाँ। ३. फोनोग्राफ नामक बाजे का वह उपकरण जो पहले नल के आकार का होता था और जिन पर उक्त प्रकार की रेखाएँ बनी होती थीं इसी के योग से उक्त बाजा बजता था, क्योंकि वैज्ञानिक क्रिया से इसी पर कही जानेवाली बात या सुनाई पड़नेवाला गीत अंकित होता था। ४. उक्त के आधार पर और उक्त प्रकार का काम देनेवाला तवे की तरह का वह उपकरण जो आजकल ग्रामोफोन नामक बाजे पर रखकर बजाया जाता है। ५. रेशम फेरनेवालों का एक उपकरण जो मोटे कड़े के आकार का होता है। यह छत में बँधा रहता है और इसके दोनों सिरों पर दो तकलियाँ होती हैं जिनमें से एक पर उलझा हुआ और दूसरी पर साफ किया हुआ तथा सुलझा हुआ रेशम रहता है।

चूड़ीदार—वि० [चूड़ी+फा० दार] जिसमें बहुत-सी चूड़ी के आकार की वृत्ताकार रेखाएँ या धारियाँ पड़ी हो या पड़ती हो। जैसे—चूड़ीदार पायजामा।

चूड़ीदार पायजामा—पुं०[हिं० चूड़ीदार+पायजामा] तंग और लंबी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा जिसे पहनने पर टखने पर चूड़ी के आकार की वृत्ताकार अनेक धारियाँ या रेखाएँ बन जाती हैं।

चूड़ो—पुं० १. दे० 'चुहड़ा'। २. दे० 'चूड़ा'।

चूत—पुं०[सं०√चूष् (चूसना)+क पृषो० षलोप] आम का पेड़।

स्त्री०[सं० च्युति=भग] स्त्रियों की भग। योनि।

चूतक—पुं०[सं० चूत+कन्] आम का पेड़।

चूतड़—पुं० [हिं० चूत+तल] मनुष्य के शरीर का वह मांसल भाग जो अर्द्ध गोलाकार रूप में जाँघ, कमर के नीचे पीछे की ओर होता है।

मुहा०—चूतड़ दिखाना—कठिन समय पर भाग खड़े होना। पीठ दिखाना। **(अपना) चूतड़ पीटना या बजाना**=ओछेपन से बहुत प्रसन्नता प्रदर्शित करना।

चूतर†—पुं०=चूतड़।

चूतिया—वि०[हिं० चूत्+इया (प्रत्य०)] १, बिलकुल नासमझ या मूर्ख। २. चूत-संबंधी । जैसे—चूतिया चक्कर।

क्रि० प्र०—फँसाना।—बनाना।

चूतिया चक्कर—वि०=चूतिया।

पुं० बिलकुल व्यर्थ की झंझट, झगड़ा या प्रपंच।

चूतिया पंथी—स्त्री०[हिं० चूतिया+पंथी] मूर्खता। बेवकूफी।

चूतिया शहीद—पुं०[हिं०+फा०] बहुत बड़ा मूर्ख।

चून—पुं० [सं० चूर्ण[१. गेहूँ, जौ आदि का आटा। २. चूरा। चूर्ण। जैसे—लोह चून=लोहे का चूरा।

पुं० [?] पश्चिमी भारत में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा थूहर।

†पुं०=चूना।

चूनर—स्त्री०=चूनरी।

चूनरी—स्त्री०[हिं० चुनना] वह रंगीन बुंदकियोंवाला महीन-पतला कपड़ा जिसे स्त्रिया चादर के रूप में कंधों पर रखती हैं और जिससे सिर तथा सारा शरीर ढकती हैं।

चूना—पुं०[सं० चूर्ण, पा० प्रा० चुण्ण; दे० प्रा० चुणओ; उ० बँ० चून चुना, सिं० चुनु; गु० चुनो; मरा० चुना] कुछ विशिष्ट प्रकार के कंकड़-पत्थरों, शंख, सीप आदि को फूंककर बनाया जानेवाला एक प्रसिद्ध तीक्ष्ण और दाहक क्षार जिसका उपयोग दीवारों पर सफेदी करने, पान -सुरती के साथ खाने और दवाओं आदि में डालने के लिए होता है।

मुहा०—चूना छूना या फेरना=चूने को पानी में घोलकर दीवारों पर उन्हें सफेद करने के लिए लगाना। **(किसी को) चूना लगाना**=दाँव-पेच, छल-कपट आदि के व्यवहार में किसी को बुरी तरह से परास्त करना। नीचा दिखाना।

अ०[सं०च्यवन] १. किसी आधान या पात्र में रखे हुए तरल पदार्थ का किसी छेद या सन्धि में से होकर बाहर निकलना। जैसे—घड़ा या बाल्टी चूना। २. भींगे हुए वस्त्र आदि में से जल आदि का निकलना या बह चलना ३. घाव में से रक्त निकल कर टपकना। ४. किसी वस्तु का ऊपरी आधार छोड़कर नीचे आ गिरना। जैसे—पेड़ में से फल चूना। ५. किसी चीज में ऐसा छेद या दराज हो जाना जिससे कोई द्रव पदार्थ बूँद-बूँद करके नीचे गिरने लगे। जैसे—छत चूना, लोटा चूना। ६. स्त्री का गर्भ-पात या गर्भ-स्राव होना।

वि०[स्त्री० चूनी] जिसमें किसी चीज़ के चूने योग्य छेद या दरज हो। जैसे—चूना घड़ा; चूनी छत।

चूनादानी—स्त्री०=चूनेदानी।

चूनी—स्त्री०[सं० चूर्णिका] १. गेहूँ, चावल आदि का छोटा कण। कनी।

पद—चूनी-भूसी=मोटे अन्न का पीसा हुआ चूर्ण।

२. चुन्नी। ३. बिंदी पर लगाये जानेवाले सितारे। चमकी। उदा०—तिलक संवारि जो चूनी रची।—जायसी।

चूनेदानी—स्त्री०[हिं० चूना+फा० दान] पान या सुरती के साथ खाने के लिए चूना रखने की छोटी डिबिया। चुनौटी।

चुनौटी†—स्त्री०=चूनेदानी।

चूमना—स०[सं० चुव् पा० चुंब; प्रा० चुम्ब, बं० चुचा, उ० चुंबिबा, गु० चुमवूँ, सिं० चुमनु] १. आदर, प्रेम या स्नेहपूर्वक किसी प्रिय या स्नेह-भाजन व्यक्ति (या वस्तु) के किसी अंग को होंठों से स्पर्श कर कुछ चूसने की-सी क्रिया करना। जैसे—बच्चे या स्त्री का मुँह चूमना।

मुहा०—(कोई चीज) चूमकर छोड़ देना=अपने वश या सामर्थ्य के बाहर का काम या बात देखकर अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के विचार से उस काम या बात के प्रति अपना आदर-भाव प्रकट करते हुए उससे अलग या दूर होना। जैसे—जब भारी पत्थर दिखाई पड़े तो उसे (न उठा सकने के कारण) चूमकर छोड़ देना चाहिए। (कहा०)

(किसी को) चूमना चाटना=(बच्चे आदिको) बार-बार चूमना और उसका दुलार करना।

२. हिन्दुओं में विवाह से पहले वर के भिन्न-भिन्न अंगों से हरी दूब का स्पर्श कराके उस दूब पर होंठ रखते हुए उक्त प्रकार की क्रिया करना।

चूमा—पुं०[सं० चुम्बन, हिं० चूमना] चूमने की क्रिया। चुंबन। चुम्मा।

पद—चूमा-चाटी (देखें)।

चूमा-चाटी—पुं०[हिं० चूमना+चाटना] प्रेम या स्नेह प्रकट करने के लिए बार-बार चूमने की क्रिया या भाव। (बाजारू)

चूर—वि०[सं० चूर्ण] १. बहुत अधिक और बार-बार काटे, कूटे या तोड़े-फोड़े जाने के कारण बहुत ही छोटे-छोटे खंडों या टुकड़ों में बँटा हुआ। जैसे—काँच की प्याली जमीन पर गिरते ही चूर हो गई। २. जो थकावट, परिश्रम आदि के कारण अत्यन्त शिथिल हो गया हो। जैसे—दिन भर काम करते-करते सन्ध्या को हम थककर चूर हो जाते हैं। ३. जो किसी काम या बात में इतना अधिक तन्मय या लीन हो जाता हो कि उसे किसी और काम या बात का ध्यान ही न रह गया हो। जैसे—बातें करने में चूर। ४. आवेश, उमंग आदि के कारण किसी भाव या विषय में बेसुध। जैसे—(क) घमंड में चूर। (ख) नशे में चूर।

चूरण—पुं०=चूरन।

वि०=चूर्ण।

चूरन—पुं०[सं० चूर्ण] खूब महीन पीसी हुई पाचक ओषधियों की बुकनी। चूर्ण।

चूरनहार—पुं० [सं० चूर्णहार] चिकने, मोटे तथा लंबे पत्तोंवाली एक जंगली बेल, जिसके पत्ते दवा के काम आते हैं।

चूरना—स० [सं० चूर्ण] १. चूर करना। टुकड़े-टुकड़े करना। २. तोड़-फोड़ कर नष्ट करना।

†स०=चुराना। उदा०—तुम्ह अँब राँड लीन्ह का चूरी।—जायसी।

चूरमा—पुं०[सं० चूर्ण] रोटी को घी में गूँध तथा भूनकर और चीनी मिलाकर बनाया जानेवाला व्यंजन।

चूरमूर—पुं०[देश०] जौ या गेहूँ की वे खूँटियाँ जो फसल कट जाने पर खेत में बची रह जाती हैं।

चूरा—पुं०[सं० चूर्ण] १. किसी चीज के टूटे-फूटे या घिसे-पिसे बहुत छोटे-छोटे टुकड़े। जैसे—शीशे का चूरा। २. काठ, धातु आदि को चीरने-रेतने आदि पर उसमें से निकले हुए छोटे-छोटे कण। बुरादा। जैसे—लकड़ी या लोहे का चूरा।

वि०=चूर (देखें)।

पुं०[सं० चूड़]१. पैर या हाथ में पहनने का कड़ा। २. दे० 'चूड़ी'।

†पुं०=चिड़वा।

चूरामणि—वि०, पुं०=चूड़ामणि।

चूरी—स्त्री०[सं० चूर्ण] १. बहुत महीन चूरा या चूर्ण। बुकनी। २. पूरी, रोटी आदि को चूर-चूर करके घी और चीनी मिलाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। चूरमा।

†स्त्री०=चूड़ी।

चूरू—पुं०[हिं० चूर]गाँजे के मादा पेड़ों से निकाली हुई एक प्रकार की चरस जो कुछ घटिया समझी जाती है।

चूर्ण—पुं०[सं०√चूर्ण् (चूर्ण करना)+अप्] १. किसी चीज के वे बहुत छोटे-छोटे कण जो उसे बहुत अधिक कूटने, पीसने, रेतने आदि से बनते हैं। चूरा। बुकनी। सफूफ। २. वैद्यक में, औषधों आदि का वह पिसा हुआ रूप जो खाने, छिड़कने आदि के काम में आता है। बुकनी। ३. विशिष्ट रूप से उक्त प्रकार से तैयार की हुई कोई ऐसी दवा जो पाचक हो। जैसे—हिंगाष्टक चूर्ण। ४. अबीर। ५. गर्दा। धूल। ६. चूना। ७. कौड़ी।

वि० १. तोड़-फोड़ या काट-चीर कर बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में लाया हुआ। चूर किया हुआ। २. सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट या शक्ति-हीन किया हुआ। जैसे—किसी का गर्व या शक्ति चूर्ण करना।

चूर्णक—पुं०[सं० चूर्ण+कन्] १. सत्तू। सतुआ। २. एक प्रकार का शालि धान्य। ३. एक प्रकार का वृक्ष। ४. साहित्य में ऐसी गद्य रचना जिसमें छोटे-छोटे तथा मधुर शब्द और पद होते हैं।

चूर्ण-कार—वि० [सं० चूर्ण√कृ (करना)+अण्, उप० स०] चूर्ण करनेवाला।

पुं० १. आटा पीसने और बेचनेवाला व्यापारी। २. पराशर के अनुसार एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति पुंड्रक पुरुष और नट स्त्री से कही गई है।

चूर्ण-कुंतल—पुं० [कर्म स०] गुँथे हुए बाल। लट। जुल्फ।

चूर्ण-खंड—पुं०[सं० च० त०] कंकड़।

चूर्णन—पुं०[सं०√चूर्ण्+ल्युट्-अन] चूर्ण करना। किसी सूखी वस्तु को कूट अथवा पीसकर उसे चूर्ण का रूप देना।

चूर्ण-पारद—पुं०[एक० त० स०] शिंगरफ।

चूर्ण-योग—पुं०[ष० त० स०] पीसकर एक में मिलाए हुए बहुत से सुगंधित पदार्थ।

चूर्णशाकांक—पुं०[सं० चूर्ण-शाक, उपमि० स०, √अंक+अण्, उप० स०] गौर सुवर्ण नामक साग।

चूर्ण-हार—पुं० [ष० त०]चूरनहार नाम की बेल।

चूर्णा—स्त्री०[सं० चूर्ण+टाप्] आर्या छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में १८ गुरु और २१ लघु होते हैं।

चूर्णि—स्त्री०[सं०√चूर्ण+इन्] १. पतंजलि मुनि का रचा हुआ भाष्य। २. कौड़ी। ३. सौ कौड़ियों का समूह।

चूर्णिका—स्त्री० [सं० चूर्ण+ठन्-इक+टाप्] १. सत्तू। सतुआ। २. किसी बहुत कठिन ग्रंथ की किसी टीका या भाष्य जिससे उसके सब प्रसंग या स्थल स्पष्ट हो जायँ। ३. प्राचीन साहित्य में, गद्य की एक शैली।

चूर्णि-कृत्—पुं०[सं० चूर्णि√कृ (करना)+क्विप्, उप० स०] १. भाष्यकार। २. महाभाष्यकार पतंजलि मुनि की एक उपाधि।

चूर्णित—भू० कृ० [सं०√चूर्ण+क्त] १. जिसे कूट अथवा पीसकर चूर्ण का रूप दिया गया हो। २. अच्छी तरह तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

चूर्णि-दासी—स्त्री०[मध्य० स०] चक्की पीसनेवाली। पिसनहारी।

चूर्णी—स्त्री०[सं० चूर्णि+ङीष्] १. कार्षापण नामक पुराना सिक्का। २. कपर्द्दिका। कौड़ी। ३. एक प्राचीन नदी का नाम ४. दे० 'चूर्णिका'।

चूर्मा†—पुं०=चूरमा।

चूल—पुं० [सं०+चुल् (ऊँचा होना)+क, पृषो० दीर्घ चर+क, र=ल पृषो०] १. चोटी। शिखा। २. सिर के बाल। ३. पशुओं आदि के शरीर पर के बाल।

†पुं० [?] एक प्रकार का थूहड़।

†पुं०=चून।

स्त्री०[देश०] १. किसी आधार पर इधर-उधर घूमनेवाली चीज के वे ऊपर और नीचे के नुकीले, पतले सिरे जो किसी छेद या गड्ढे में जमाये या फँसाये रहते हैं और जिनके सहारे वह चीज इधर-उधर घूमती है। (पिवॉट) जैसे—किवाड़ के पल्ले की चूल। २. वह मुख्य आधार जिसके सहारे कोई काम चलता या कोई चीज ठहरी रहती हो।

मुहा०—(किसी की) चूलें ढीली करना=बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर या परिश्रम करके उसे बहुत कुछ त्रस्त, पराभूत या शिथिल करना।

चूलक—पुं० [सं० चूल+कन्] १. हाथी की कनपटी। २. हाथी के कान की मैल। ३. खंभे का ऊपरी भाग। चूड़ा। ४. किसी घटना या बात की परोक्ष रूप में मिलनेवाली सूचना।

चूलदान—पुं० [सं० चुल्लि-आधान] १. पाकशाला। रसोईघर। २. बैठने या चीजें आदि रखने के लिए सीढ़ीनुमा बना हुआ स्थान। (गैलरी)

चूला—स्त्री०[सं० चूड़ा=ड=ल] १. चोटी। शिखा। २. बालाखाने का कमरा। ३. चंद्रशाला।

चूलिक—पुं०[सं०√चुल् (उन्नत होना)+ण्वुल्-अक नि० इत्व] मैदे की पतली पूरी। लूची। लुचुई।

चूलिका—स्त्री०[सं० चूलक+टाप्, इत्व] १. चूलक। २. नाटक में वह स्थिति जिसमें किसी घटना की सूचना नेपथ्य से पात्रों द्वारा दी जाती है।

चूलिकोपनिषद्—स्त्री० [सं० चूलिका-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेदीय एक उपनिषद् का नाम।

चूल्हा—पुं०[सं० चुल्लि बं० उ० चुल्ली चुला; बि० चूल्ह; पं० चुल्ह; गु० चूलो; ने० चुलि; सिं० चल्ही; मरा० चूल] [स्त्री० अल्पा० चूल्ही] मिट्टी, लोहे आदि का वह प्रसिद्ध उपकरण जिसमें चीज़ें पकाने या गरम करने के लिए कोयले, लकड़ियाँ आदि जलाई जाती हैं।

मुहा०—चूल्हा जलना=भोजन या रसोई बनना। जैसे—आज दो दिन बाद उनके घर चूल्हा जला है। **चूल्हा झोंकना या फूंकना**=भोजन बनाने के लिए चूल्हे में आग सुलगाना। **चूल्हा न्यौतना**=किसी के घर के सब लोगों को भोजन का निमंत्रण देना। **चूल्हे में जाना**=(क) नष्ट-भ्रष्ट होना। (ख) किसी के विनाश की ओर से उपेक्षा दिखाने के लिए प्रयुक्त होनेवाला पद। जैसे—हमारी तरफ से वह चूल्हे में जाय। **चूल्हे में झोंकना या डालना**=बहुत ही उपेक्ष्य, तुच्छ या नगण्य समझना। **चूल्हे में पड़ना**=दे० 'चूल्हे में जाना'। **चूल्हे से निकलकर भाड़ में आना या पड़ना**=छोटी विपत्ति से निकल कर बड़ी विपत्ति में फँसना।

चूषण—पुं०[सं०+चूष् (चूसना)+ल्यूट्-अन] [वि० चूषणीय, चूष्य] चूसने की क्रिया या भाव।

चूषणीय--वि०[सं०+चूष्√अनीयर्] जो चूसा जा सके। चूसे जाने के योग्य।

चूषा—स्त्री०[सं०√चूष्+क, टाप्] हाथी की कमर में बाँधा जानेवाला चमड़े का पट्टा।

चूष्य—वि०[सं०√चूष्+ण्यत्] १. जो चूसा जा सकता हो। २. जो चूसा जाने को हो।

चूसना—स० [सं० चूषण] १. किसी वस्तु विशेषतः किसी फल को मुँह और होठों से लगाकर उसका रस अन्दर खींचना। जैसे—आम चूसना, अँगूठा चूसना। २. किसी वस्तु को मुँह में डालकर तथा उसे दाँतों से दबाकर उसमें से निकलनेवाला रस पीना। जैसे--गडेरी चूसना। ३. किसी वस्तु को मुँह में रखकर तथा जीभ से चाटते हुए उसका रस लेना। जैसे—दवा की गोली मुँह में रखकर चूसना। ४. बच्चे का माता के स्तन का दूध पीना। ५. किसी आर्द्र अथवा गीली वस्तु में की आर्द्रता सोख लेना। जैसे—सोखते ने सारी स्याही चूस ली है। ६. वलपूर्वक अथवा अनुचित रूप से, किसी का सत्त्व या सर्वस्व छीन, निकाल या हड़प लेना। जैसे--इसे खुशामदियों ने चूस डाला है।

मुहा०—(किसी को) चूस डालना या लेना =किसी का धन खा-पका या हड़पकर उसे कंगाल या निर्धन कर देना।

चूहड़†—पुं०=चूहड़ा।

चूहड़ा†—पुं०[?] [स्त्री० चूहड़ी] १. भंगी या मेहतर। चांडाल। २. बहुत ही गंदा तथा तुच्छ व्यक्ति।

चूहर—पुं०=चूहड़ा।

चूहरी—स्त्री०=चुड़िहारिन।

चूहा—पुं०[फा० चुवा; वँ० चुया; उ० चुआ; पं० चूहा; सिं० चूहो; गु० चुवो; ने० चुहा; मरा० चुवा] [स्त्री० अल्पा० चूहिया, चूही] लंबी पूंछ तथा चार पैरोंवाला एक प्रसिद्ध छोटा घरेलू जन्तु जो अनाज, कपड़े आदि कुतरकर खा जाता है।

चूहा-दंती—स्त्री०[हिं० चूहा+दाँत] चाँदी या सोने की वनी हुई एक प्रकार की पहुँची जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं। इसके दाँत चूहे के दाँत जैसे लंवे और नुकीले होते हैं जो रेशम या सूत में पिरोये रहते हैं।

चूहादान—पुं०[हिं० चूहा+फा० दान]=चूहेदानी।

चूहेदानी—स्त्री०[हिं०] चूहे पकड़ने या फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।

चें—स्त्री०[अनु०] चिड़ियों का शब्द।

पद—चें चें=(क) व्यर्थ की वकवाद। (ख) रोने, चिल्लाने आदि का शब्द।

मुहा०—चें बोलना=चीं बोलना। (दे०)

चेंगड़ा—पुं०[अनु०] [स्त्री० चिंगड़ी] छोटा बच्चा। शिशु।

चेंगा—पुं० दे० "चेंगड़ा"।

स्त्री० दे० 'चेनगा'।

चेंगी—स्त्री० [देश०] गाड़ियों में चमड़े की वह चकती अथवा सन का घेरा जिसे पैंजनी और पहिए के बीच में इसलिए पहना देते हैं जिससे दोनों एक दूसरे से रगड़ न खायँ।

चेंघी†—स्त्री०=चेंगी।

चेंच—पुं०[सं० चंचु] एक प्रकार का वरसाती साग।

चेंचर—वि०[चें चें से अनु०] चें चें करनेवाला। वकवादी।

चेंचुआ—पुं०[चें चें से अनु०]चातक का वच्चा।

चेंचुला—पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान जिसमें आटे को पूरी की तरह पतला वेलकर गोंठते और चौखूंटा वनाकर कुछ दवा देते हैं फिर घी आदि में तल लेते हैं।

चेंटियारी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का वहुत वड़ा जल-पक्षी जिसके पैर और चोंच लंवी होती है और जिसका शिकार किया जाता है।

चेंटी--स्त्री०=च्यूंटी।

चेंटुआ--पुं०[हिं० चिड़िया] चिड़िया का वच्चा।

चेंड़ा—पुं०=चेंगड़ा।

चेंथरी--स्त्री०[?] मस्तक का ऊपरी भाग। उदा०—अक्कल चेंथरी में चढ़ गई।--वृंदावनलाल वर्मा।

चेंधी—स्त्री०=चेंगी।

चेंपु—पुं०=चेप। उदा०--दृग खंजन गहि लै गयो चितवन चेंपु लगाय।--विहारी।

चेंगें—स्त्री०[अनु०] १. चिल्लाहट। व्यर्थ की वकवाद। २. डरते या सहमते हुए कही जानेवाली वात।

चेंफ†--पुं०[देश०] ऊख का छिलका।

चेउरी—स्त्री०[हिं० जेवड़ी=रस्सी] कुम्हार का वह डोरा जिससे वह चाक पर तैयार किये हुए पात्र आदि को काटकर उतारता है।

चेक—पुं०[अं०] १. आड़ी और वेड़ी पड़ी हुई धारियाँ। चारखाना। २. दे० 'धनादेश'।

चेकित—पुं० [सं० कित् (ज्ञान)+यङ्-लुक्+अच्] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. बहुत वड़ा ज्ञानी।

चेकितान—पुं० [सं०√कित्+यङ्—लुक्+चानश्] १. महादेव। शिव। २. वहुत वड़ा ज्ञानी। ३. केकय देश का एक राजकुमार जो महाभारत में पांडवों की ओर से लड़ा था।

चेचक—स्त्री० [फा०] शीतला या माता नामक रोग।

चेचकरू—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसके मुंह पर चेचक के दाग हों।

चेजा—पुं० [हिं० छेद ?] सुराख । छेद।

चेजारा—पुं०[?] दीवारों की चुनाई का काम करनेवाला व्यक्ति। राज।

चेट—पुं० [सं०√चिट् (प्रेरणा)+अच्] [स्त्री० चेटी, चेटिका] १. दूसरों की छोटी-मोटी सेवाएँ करनेवाला। टहलुआ। २. पति। स्वामी। ३. दुराचारिणी स्त्रियों को पुरुषों से मिलानेवाला दलाल। ४. भाँड़। ५. एक प्रकार की मछली।

†वि० दे० 'कनौड़ा'।

चेटक—पुं०[सं०√चिट्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० चेटकनी, चेटकी] १. दास या सेवक, विशेषतः वह दास या सेवक जो किसी विशिष्ट काम में लगाया गया हो। २. दूत। ३. इंद्रजाल। जादूगरी। ४. हास्य रस का खेल या तमाशा। ५. चस्का। ६. फुरती। जल्दी। ७. चटक-मटक।

चेटकनी—स्त्री०[सं० चेटक का स्त्री० रूप] गोली। दासी।

चेटका—स्त्री०[सं० चिता] १. शव जलाने की चिता । २. मरघट। श्मशान।

चेटकी (किन्)—पुं०[सं० चेटक+इनि] १. चेटक या जादू के खेल

दिखानेवाला। जादूगर। इंद्रजाली। २. तरह-तरह के कौतुक करनेवाला। कौतुकी।

स्त्री० 'चेटक' का स्त्री० रूप। दासी।

चेटवा—स्त्री० दे० 'तुरमुती'।

पुं०=चेंटुआ।

चेटिका—स्त्री०[सं० चेटक+टाप्,इत्व] सेविका । दासी।

चेटिकी—स्त्री०[सं० चेटी+कन्-ङीष्, ह्रस्व] चेटिका।

चेटिया—पुं० [सं० चेटक] १. चेला। शिष्य। उदा०—सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरि पद चितलाई।—सूर। २. दास। नौकर।

चेटी—स्त्री०[सं० चेट+ङीष्] दासी। नौकरानी।

चेटुवा—पुं०=चेंटुआ।

चेड़—पुं०[सं०√चिड् (प्रेरणा करना)+अच्] चेट। चेटक।

चेड़क—पुं०=चेटक।

चेड़िका—स्त्री०=चेटिका।

चेड़ी—स्त्री०=चेटी।

चेत्—अव्य०[सं०√चित् (जानना)+विच्-लुक्] १. ऐसा हुआ तो। ऐसी अवस्था या परिस्थिति में । अगर। २. कदाचित्।

चेत (स्)—पुं०[सं०√चित्+असुन्] १. चित्त की मुख्य वृत्ति, चेतना। होश। २. ज्ञान। बोध। ३. सावधानी। होशियारी। ४. याद। स्मृति। ५. चित्त। मन।

चेतक—वि०[सं०√चित्+णिच्+ण्वुल्-अक] १. सचेत करनेवाला। २. चेतन।

पुं० १. महाराणा प्रताप का प्रसिद्ध और परम-प्रिय घोड़ा जो हल्दीघाटी की लड़ाई में मारा गया था। २. दे० 'सचेतक'।

पुं०=चेटक।

चेतकी—स्त्री०[सं० चेतक+ङीष्] १. एक विशिष्ट प्रकार की हड़ या हर्रे जिस पर तीन धारियाँ होती हैं। २. हड़। हर्रे। ३. चमेली का पौधा। ४. संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

चेतत—स्त्री० दे० 'चेतना'।

चेतन—पुं०[सं०√चित् (जानना) +ल्यु—अन] १. आत्मा। २. जीव। प्राणी। ३. आदमी। मनुष्य। ४. परमात्मा।

वि० जिसमें चेतना या ज्ञान हो। चेतनायुक्त। 'जड़' का विपर्याय। जैसे—जीव, जन्तु आदि।

चेतनकी—स्त्री० [सं० चेतन√कृ (करना)+ड—ङीष्] हरीतकी। हड़।

चेतनता—स्त्री०[सं० चेतन+तल्—टाप्] १. चेतन होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। चैतन्य। सज्ञानता। २. सजीवता।

चेतनत्व—पुं०[सं० चेतन+त्व]=चेतनता।

चेतना—स्त्री० [सं०√चित्+युच्—अन, टाप्]१. मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक (अनुभूतियों, भावों, विचारों आदि) और वाह्य (घटनाओं) तत्त्वों या बातों का अनुभव या भान होता है। होश-हवास। २. वुद्धि। समझ। ३. मनोवृत्ति, विशेषतः ज्ञानमूलक मनोवृत्ति। ४. याद। स्मृति।

अ० [हिं० चेत]१. संज्ञा से युक्त होना। होश में आना। उदा०—नैन पसारि चेत धन चेती।—जायसी। २. ऐसी स्थिति में होना कि बुरे परिणामों या बातों से बचकर अच्छी बातों की ओर प्रवृत्त हो सके। ३. सावधान या होशियार होना। ४. सोच-समझकर किसी बात की ओर ध्यान देना।

स० विचारना। समझना। जैसे—किसी का बुरा या भला चेतना।

चेतनीय—वि०[सं०√चित्+अनीय] जो चेतन करने या जानने योग्य हो। चेतन का अधिकारी या पात्र।

चेतनीया—स्त्री०[सं० चेतना+छ—ईय, टाप्] ऋद्धि नाम की ओषधि।

चेतन्य—पुं०=चैतन्य।

चेतवनि*—स्त्री० १.=चेतावनी। २.=चितवन।

चेतव्य—वि०[सं०√चि (चयन करना)√तव्यत्] जो चयन या संग्रह किये जाने के योग्य हो। संग्राह्य।

चेता—वि०[सं० चेतस्] (यौ० शब्दों के अन्त में) जिसे चेतना हो। चित्तवाला। जैसे—दृढ़ चेता।

†पुं० १. चेतना। संज्ञा। होश। २. याद। स्मृति।

क्रि० प्र०--भूलना।—रहना।

चेताना—स० [हिं० चेतना का स०] १. किसी का किसी विस्मृत बात की ओर ध्यान दिलाना। २. उपदेश देना। ३. चेतावनी देना। सावधान करना। ४. (आग) जलाना या सुलगाना। (पू०)

चेतावनी—स्त्री० [हिं० चेत+आवनी (प्रत्य०)] १. किसी को चेताने या सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात। २. भविष्य में पुनः आज्ञा, आदेश, कर्त्तव्य आदि का पालन न करने अथवा ठीक प्रकार से पालन न करने पर किसी के विरुद्ध की जानेवाली कार्रवाई की पहले से दी जानेवाली आदेशात्मक और आधिकारिक सूचना। (वार्निंग) ३. उपदेश। शिक्षा।

चेतिका—स्त्री०[सं० चिति] चिता।

चेतुरा†—पुं०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

चेतोजन्मा (न्मन्)—पुं०[सं० चेतस्-जन्मन्, ब० स०] कामदेव।

चेतोभव—पुं०[सं० चेत्स्-भव, ब० स०] कामदेव।

चेतोभू—पुं०[सं० चेतस्+भू (होना)+क्विप्] कामदेव।

चेतोविकार—पुं०[सं० चेतस्-विकार, ष० त०] चित्त संबंधी विकार।

चेतोहर—वि०[सं० चेतस्√हृ (हरण करना)+अच्]चेतना हरने या नष्ट करनेवाला।

चेतौनी†—स्त्री०=चेतावनी।

चेत्य—वि०[सं०√चित् (जानना)+ण्यत्] १. जो चेतना का विषय हो। २. जो जाना जा सके। ३. स्तुत्य।

चेदि—पुं०[सं०] १. आधुनिक चँदेरी के आस-पास का एक प्राचीन जनपद। शिशुपाल यहीं का राजा था। इसे त्रैपुर और चेद्य भी कहते थे। २. उक्त जनपद का राजा । ३. उक्त जनपद का निवासी। ४. कौशिक मुनि के पुत्र का नाम।

चेदिक—पुं०=चेदि (दे०)।

चेदि-राज—पुं०[ष० त०] १. चेदि देश का राजा। २. शिशुपाल, जो चेदि देश का राजा था। ३. एक वसु जिन्हें इन्द्र से एक विमान मिला था। ये जमीन पर नहीं चलते थे और उसी विमान पर घूमा करते थे; इसीलिए इन्हें 'उपरिचर' भी कहते हैं।

चेन—स्त्री०[अं०] एक में गुँथी हुई छोटी-छोटी कड़ियों की लचीली माला या श्रृंखला। जंजीर। सिकड़ी। जैसे—गले में पहनने की चेन।

चेनआ†—पुं०=चेना।

चेनगा—स्त्री०=चेंगा (मछली)।

चेनवा (वा)—पुं०=चेना (साग)।

चेना—पुं०[सं० चणक] १. साँवें की जाति का एक मोटा अन्न जिसके दाने छोटे-छोटे और सुन्दर होते हैं। २. चेंच नाम का साग।

पुं०=चीना कपूर।

चेप—पुं०[हिं० चिप-चिपा का भाव०] १. गाढ़ा, चिपचिपा और लसदार रस। लसीला पदार्थ। जैसे—किसी फल या वृक्ष का चेप, चेचक नामक रोग का चेप। २. चिड़ियों को फँसाने के लिए फैलाया या बिछाया जानेवाला लासा।

पुं० दे० 'चाव' (ओषधि)।

चेपदार—वि०[हिं० चेप+फा० दार] (पदार्थ) जो चिपचिपा या लसदार हो। जिसमें चेप हो। लसीला।

चेपना—स०[हिं० चेपना] १. किसी वस्तु पर चेप लगाना। २. चेप लगाकर चिपकाना या सटाना।

चेपांग—पुं०[देश०] नेपाल देश की एक जाति।

चेबुला—पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल से चमड़ा सिझाया और रंग बनाया जाता है।

चेय—वि० [सं० चि+यत्] चयन किये जाने के योग्य। जिसका चयन किया जा सके या होने को हो।

स्त्री० वह अग्नि जो धार्मिक-विधि-पूर्वक चयन की या लाई गई हो।

चेर—पुं०=चेरा (चेला)।

चेंरना—पुं० [हिं० चीरना ?] नक्काशों की एक प्रकार की छेनी जिससे वे काठ, धातु, पत्थर आदि पर सीधी रेखा खींचते हैं।

चेरा—पुं० [सं० चेटक, प्रा० चेड़ा] [स्त्री० चेरी, भाव० चेराई] १. चेला। शिष्य। २. नौकर। सेवक। ३. गुलाम। दास।

†पुं० [?] एक प्रकार का गलीचा जो मोटे ऊन का बुना हुआ होता है।

चेराई—स्त्री० [हिं० चेरा+ई (प्रत्य०)] चेरा (अर्थात् चेला अथवा दास) होने की अवस्था या भाव।

चेरायता†—पुं०=चिरायता।

चेरि—स्त्री०=चेरी।

चेरी—स्त्री० [सं० चेटी] हिं० 'चेरा' (चेला, दास या सेवक) का स्त्री०।

चेरु—वि० [सं०√चि (चयन) +रु बा०] १. जिसे संग्रह करने का अभ्यास हो। २. संग्रह करनेवाला।

चेरुआ—पुं० [देश०] एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो सत्तू सानकर और पानी में उबालकर बनाया जाता है।

चेरुई†—स्त्री० [देश०] घड़े के आकार का एक प्रकार का मिट्टी का बड़ा बरतन।

चेरू—स्त्री० [?] १. एक प्रकार की जंगली जाति जो मिरजापुर जिले तथा दक्षिण भारत में पाई जाती है। २. उत्तरी भारत के पर्वतों में रहनेवाला एक प्रकार का हिरन।

चेल—पुं० [सं०√चिल् (पहनना) + घञ्] कपड़ा। वस्त्र।

वि० (समासांत में) अधम।

चेलक—पुं० [सं०] वैदिक काल के एक मुनि।

चेलकाई†—स्त्री०=चेलहाई।

चेल-गंगा—स्त्री० [उपमि० स०] गोकर्ण (आधुनिक मालाबार) प्रदेश की एक नदी।

चेल-प्रक्षालक—वि० [ष० त०] कपड़े धोनेवाला।

पुं० धोबी।

चेलवा†—स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

†पुं०=चेला।

चेलहाई—स्त्री० [हिं० चेला+हाई (प्रत्य०)] १. चेलों का समूह। शिष्य वर्ग। २. धार्मिक गुरुओं का चारों ओर घूम-घूमकर अपने चेले बनाने अथवा चेलों से भेंट, पूजा आदि लेने की प्रणाली या प्रथा।

चेला—पुं० [सं० चेट; दे प्रा० चेल्ल, चिल्ल] [स्त्री० चेलिन, चेली] १. वह जिसने किसी गुरु से शिक्षा पाई हो। २. वह जो धार्मिक दृष्टि से किसी से उपदेश या गुरु-मंत्र लेकर उसका शिष्य बना हो। ३. वह जो किसी को आदर्श या पूज्य मानकर उसके आचरणों, सिद्धान्तों आदि का अनुकरण करता हो। शिष्य।

पद—चेले-चाटी=अनुयायियों, चेलों आदि का वर्ग या समूह।

पुं० [देश०] एक प्रकार का साँप जो बंगाल में अधिकता से पाया जाता है।

स्त्री०=चेल्हा (मछली)।

चेलान—पुं० [सं०] तरबूज की लता।

†पुं० [हिं० चेला] चेलों का वर्ग।

चेलाल†—पुं०=चेलान (तरबूज की लता)।

चेलाशक—पुं० [चेल—आशक, ष० त०]=चैलाशक।

चेलिका—स्त्री० [सं० चेल+कन्–टाप्, इत्व] १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। चिउली। २. चोली।

चेलिकाई†—स्त्री०=चेलहाई।

चेलिन, चेली—स्त्री० हिं० 'चेला' का स्त्री० रूप।

चेलुक—पुं० [सं०√चेल् (चलना)+उक] बौद्ध भिक्षुओं का एक वर्ग।

चेल्हवा—स्त्री०=चेल्हा।

चेल्हा—स्त्री० [सं० चिल=मछली] एक प्रकार की छोटी मछली।

चेवारी—पुं० [देश०] दक्षिण भारत का एक प्रकार का बाँस जिसकी खमाचियों से चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाई जाती हैं।

चेवी—स्त्री० [सं० चेव–ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (संगीत)

चेषटा*—स्त्री० दे० 'चेष्टा'।

चेष्टक—वि० [सं०√चेष्टा (चेष्टा करना) + ण्वुल्—अक] चेष्टा करनेवाला।

पुं० काम-शास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

चेष्टन—पुं० [सं०√चेष्ट् (इच्छा करना)+ल्युट्—अन] चेष्टा करने की क्रिया या भाव।

चेष्टा—स्त्री० [सं०√चेष्ट्+अङ्—टाप्] १. इधर-उधर हाथ-पैर हिलाना। हिलना-डोलना। २. मन में कोई भाव या विचार उत्पन्न होने पर बाह्य आकृति या शरीर पर होनेवाली उसकी प्रतिक्रिया। मन का भाव सूचित करनेवाली अंग-भंगी या शारीरिक व्यापार। ३. मन का भाव प्रकट करनेवाली मुख की आकृति।

मुहा०—चेष्टा बिगड़ना=मरने से कुछ पहले आकृति या चेहरा बिगड़ जाना।

४. वह शारीरिक आयास या व्यापार जो कोई उद्देश्य या काम पूरा करने के लिये किया जाय। कोशिश। प्रयत्न। ५. उक्त के आधार पर साहित्य में वह क्रिया या प्रयत्न जो प्रिय को अनुरक्त करने के लिए उसके प्रति किया जाय। जैसे—प्रिय को देखकर आँखें नचाना, हँसना आदि। ६. काम। कार्य। ७. परिश्रम। मेहनत। ८. इच्छा। कामना।

चेष्टा-नाश—पुं० [ष० त०] सृष्टि का अंत। प्रलय।

चेष्टा-बल—पुं० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष में, ग्रहों का किसी विशिष्ट गति या स्थिति के अनुसार अधिक बलवान हो जाना। जैसे—उत्तरायण में सूर्य या वक्रगामी मंगल।

चेष्टित—भू० कृ० [सं०√चेष्ट् (चेष्टा करना) +क्त] (काम या व्यापार) जिसके लिए चेष्टा या प्रयत्न हुआ हो।

चेस—पुं० [अं०] १. लोहे का वह चौखट जिसमें मुद्रण के लिए जोड़े हुए टाइप कसे जाते हैं। २. शतरंज का खेल।

चेहरई—वि० [हिं० चेहरा] हलका गुलाबी (रंग)।

स्त्री० १. चित्र या मूर्ति आदि में चेहरे की रंगत या बनावट। २. चित्रकला में चेहरे में ऐसे रंग भरना जिससे आकृति सजीव-सी जान पड़े। ३. ऐसा रंग जो चेहरे की रंगत ठीक तरह से दिखानेवाला हो।

चेहरा—पुं० [फा० चहरः] १. काली खोपड़ी और गरदन के बीच का वह अगला गोलाकार भाग जिसमें मुँह, आँख, नाक आदि रहते हैं। मुखड़ा। वदन। २. आकृति शकल।

मुहा०—चेहरा उतरना=कष्ट, चिन्ता, रोग, लज्जा आदि के कारण मुख की आकृति का तेज या श्री से रहित या हीन हो जाना। **चेहरा तमतमाना**=क्रोध, ताप आदि के कारण चेहरे का लाल हो जाना। **चेहरा बिगाड़ना**=इतना अधिक मारना कि सूरत न पहचानी जाय। **(किसी का) चेहरा भाँपना**=शकल-सूरत देखकर किसी के मन का भाव ताड़ लेना। **चेहरा होना**=मुसलमानी शासन काल में, लोगों का सेना में नाम लिखाना या भरती होना।

३. कागज, मिट्टी, धातु आदि का बना हुआ किसी देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर बाँधा या पहना जाता है।

मुहा०—चेहरा उठाना=नियमपूर्वक पूजन आदि के उपरांत किसी देवी या देवता का चेहरा अपने मुँह पर बाँधना या लगाना। जैसे—काली या हनुमान का चेहरा उठाना।

४. किसी चीज का अगला या सामने का भाग।

चेहल—वि० [फा०] चालीस।

स्त्री०=चहल।

चेहलुम—पुं० [फा०] १. मुसलमानों में किसी की मृत्यु के उपरान्त का चालीसवाँ दिन। २. उक्त दिन होनेवाला धार्मिक कृत्य। ३. मुहर्रम में ताजिया दफ़न होने के दिन से चालीसवाँ दिन; और उस दिन होनेवाला कृत्य।

चेहाना†—अ० [?] चकित या विस्मित होना।

चटी†—स्त्री०=च्यूँटी।

चैं—पुं० [सं० चय] ढेर। राशि। समूह।

विभ० [?] १. से। २. के। उदा०—देवाधिदेव चै लाधै दूवै। —प्रिथीराज।

चैंक—पुं०=चेक।

चैंकित—पुं० [सं० चिकित +अण] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

चैंकितान—वि० [सं० चेकितान+अण्] चेकितान के वंश में उत्पन्न। चेकितान का वंशज।

चैंकित्य—पुं० [सं० चैंकित+य्] वह जो चैंकित ऋषि के गोत्र का हो।

चैंत—पुं० [सं० चैत्र] [वि० चैती] वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़े। फागुन के बादवाला महीना।

†पुं० दे० 'चैती' (गीत)।

चैंतन्य—पुं० [सं० चेतन+ष्यञ्] १. चेतन आत्मा। २. न्याय दर्शन के अनुसार प्राणियों में होनेवाला ज्ञान। ३. चेतन होने का भाव। चेतनता। ४. ब्रह्म। ५. परमात्मा। ६. निसर्ग। प्रकृति। ७. बंगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त श्रीकृष्ण चैतन्य जो गौरांग महाप्रभु भी कहे जाते हैं।

वि० १. जिसमें चेतना या चेतन-शक्ति हो। सचेत। सचेतन। २. जो अपना ठीक और पूरा काम करने और सब बातें सोचने-समझने की स्थिति में हो।

चैंतन्यता—स्त्री० [सं० चैतन्य+तल्—टाप्] चैतन्य। (दे०)

चैंतन्य-भैरवी—स्त्री० [कर्म० स०] १. तांत्रिकों की एक देवी। २. संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

चैंता—पुं० [सं० चित्रित] काले रंग का एक प्रकार का पक्षी।

पुं० [हिं० चैत] चैत मास में गाये जानेवाले एक प्रकार के लोक-गीत जिनकी प्रत्येक पंक्ति के आरंभ में 'रामा' और अंत में 'हो रामा' विशेष रूप से लगता है। जब वाद्य के साथ गाया जाता है तब इसे झलकुटिया कहते हैं। (उत्तर प्रदेश)

चैंतावर—पुं० [हिं० चैता] विहार में चैत मास में गाये जानेवाले लोक-गीत।

चैंती—वि० [हिं० चैत महीना] १. चैत-संबंधी। चैत का। २. चैत महीने में होनेवाला। जैसे—चैती गुलाब, चैती फसल।

स्त्री० १. वह फसल जो चैत में तैयार होती और काटी जाती है। रबी। २. चैत-बैसाख में गाया जानेवाला एक प्रकार का पूरबी चलता गाना। ३. चैत में बोया जानेवाला जमुआ नील। ४. बत्तख की जाति की एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः चैत-बैसाख में मैदानों में दिखाई देती है।

चैंती गौरी—स्त्री० [सं० चैत्र-गौडी] चैत के महीने में प्रायः संध्या समय गाई जानेवाली षाडव संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

चैंतुआ—पुं० [हिं० चैत महीना] चैत में रबी की फसल काटनेवाला मजदूर।

चैंत्त—वि० [सं० चित्त+अण्] चित्त-संबंधी। चित्त का।

पुं० बौद्ध दर्शन में विज्ञान स्कंध को छोड़कर शेष सब स्कंध।

चैंत्य—वि० [सं० चित्या+अण्] चिता-संबंधी। चिता का।

पुं० १. घर। मकान। २. देवालय। मंदिर। ३. किसी देवी-देवता के नाम पर अथवा किसी की मृत्यु या शव-दाह के स्थान पर बना हुआ भवन या चबूतरा। ४. यज्ञ-शाला। ५. गौतम बुद्ध की मूर्ति। ६. बौद्ध भिक्षुओं के रहने का मठ या विहार। ७. बौद्ध

भिक्षु । ८. गाँव की सीमा पर के वृक्ष। ९. पीपल । १० वेल। ११. चिता ।

चैंत्यक—पुं० [सं० चैंत्य√कौ (प्रतीत होना)+क] १. अश्वत्थ। पीपल। २. राजगृह के पास का एक पुराना पर्वत ।

चैंत्यतरु—पुं० [कर्म० स०] १. अश्वत्थ। पीपल। २. गाँव या वस्ती का पूज्य या पवित्र बड़ा वृक्ष।

चैंत्य-द्रुम—पुं० [कर्म० स०] १. पीपल का पेड़। २. अशोक का पेड़।

चैंत्यपाल—पुं० [सं० चैंत्य√पाल् (रक्षा करना) +णिच्+अच्] चैत्य (घर, चबूतरे, मन्दिर आदि का) अधिकारी, प्रवंधक या रक्षक।

चैंत्य-मुख—पुं० [ब० स०] कमंडलु ।

चैंत्य-यज्ञ—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

चैंत्य-वंदन—पुं० [ष० त०] १. जैन या वौद्ध देवता। २. जैन या बौद्ध मंदिर ।

चैंत्य-वृक्ष—पुं०=चैंत्य-तरु।

चैंत्य-स्थान—पुं० [ष० त०] १. वह स्थान जहाँ वुद्धदेव की मूर्ति स्थापित हो। २. कोई पवित्र स्थ।न ।

चैंत्र—पुं० [सं०√चि (चयन)+ष्ट्रन्,+अण्] १. वह महीना जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़े। चैत। २. पुराणानुसार चित्रा नक्षत्र के गर्भ से उत्पन्न बुधग्रह का एक पुत्र जो सातों द्वीपों का स्वामी कहा गया है। ३. पुराणानुसार सात वर्ष पर्वतों में से एक। ४. चैत्य। ५. बौद्ध भिक्षु। ६. यज्ञ-भूमि। ७. देवालय। मंदिर।

वि० चित्रा नक्षत्र-संवंधी । चित्रा नक्षत्र का ।

चैंत्रक—पुं० [सं० चैत्र+कन्] चैत्र मास । चैत।

चैंत्र-गौड़ी—स्त्री० [मध्य० स०] ओड़व जाति की एक रागिनी जो चैत्र मास में संध्या समय अथवा रात के पहले पहर में गाई जाती है। कुछ लोग इसे श्रीराग की पुत्र-वधू मानते हैं।

चैंत्र-मख—पुं० [ष० त०] चैत मास के उत्सव जो प्रायः मदन-संवंधी होते हैं।

चैंत्र-रथ—पुं० [सं० चित्ररथ+अण्] १. पुराणानुसार कुबेर का वह उपवन या बगीचा जो चित्ररथ ने बनाया था। २. एक प्राचीन ऋषि।

चैंत्र-रथ्य—पुं० [सं० चैत्ररथ+ष्यञ्] =चैंत्ररथ।

चैंत्रवती—स्त्री० [सं० चैत्र+मतुप्—ङीष्, तत्व] एक पौराणिक नदी। (हरिवंश पुराण)

चैंत्रसखा—पुं० [ष० त०] कामदेव ।

चैंत्रावली—स्त्री० [सं० चैत्र—आ√वृ (वरण करना) +णिच् +अच्—ङीष्, लत्व] १. चैत्र शुक्ला त्रयोदशी। २. चैत्र मास की पूर्णिमा।

चैंत्रि—पुं० [चैंत्री+इञ्] चैत मास। चैत्र ।

चैंत्रिक—पुं० [चैत्र+ठक्—इक] चैत्र। चैत।

चैंत्री—स्त्री० [सं० चित्रा+अण्—ङीष्] चैत मास की पूर्णिमा ।

चैंदिक—वि० [सं० चेदि+ठञ्—इक] चेदि (प्रदेश, उसके निवासी अथवा उसके राज से) संबंध रखनेवाला ।

चैंद्य—पुं० [सं० चेदि+ष्यञ्] शिशुपाल ।

वि० चेदि-संवंधी । चेदि का ।

चैंन—पुं० [सं० शयन] १. कष्ट, थकावट, विकलता आदि का अंत होने पर मिलनेवाला आराम या सुख। २. किसी प्रकार की झंझट, दायित्व, भार आदि से छुटकारा होने पर मिलनेवाली मानसिक शांति।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना ।

३. आनंद और सुख का भोग।

मुहा०—**चैंन उड़ाना**=आनंद करना। खूब अच्छी तरह और मनमाने ढंग से आराम या सुख भोगना। आनंद-मंगल करना। **चैंन पड़ना**=कष्ट, चिन्ता, विकलता आदि का अन्त होने पर शान्ति का अनुभूत होना। **चैंन से कटना**=आनंद और सुख से समय वीतना ।

पुं० [सं० चैंलक ?] एक छोटी जाति।

चैंपला—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी ।

चैंयाँ—स्त्री० [?] वाँह । (व्रज०)

चैंराही†—वि० दे० 'चेहरई' (रंग) ।

चैंल—पुं० [सं० चेल+अण्] १. कपड़ा। वस्त्र। २. पहनने का कपड़ा। पोशाक।

चैंलक—पुं० [सं० चैंल+कन्] एक प्राचीन वर्ण संकर जाति जो शूद्र पिता और क्षत्रिया माता से उन्पन्न मानी जाती है।

चैंला—पुं० [चीरना-छीलना] कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का बड़ा टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है।

चैंलाशक—पुं० [सं० चैंल—आशक, ष० त०] कपड़ों में लगनेवाले कीड़ों को खानेवाला एक छोटा कीड़ा।

चैंलिक—पुं० [सं० चैंल+ठक्—इक] कपड़े का टुकड़ा।

चैंली—स्त्री० [हिं० चैंला का स्त्री०अल्पा० रूप] १. रँदने पर निकलनेवाले लकड़ी के पतले-पतले टुकड़े जो जलाने के काम आते हैं। २. गरमी के कारण नाक से निकलनेवाला जमे हुए खून का थक्का।

चैंलेंज—पुं० [अं०] लड़ाई-भिड़ाई, संघर्ष आदि के लिए ललकारने की क्रिया या भाव। ललकार।

चोंक—स्त्री० [?] वह चिह्न जो दाँत गड़ाते हुए चूमने के समय किसी के गाल पर पड़ जाता है।

चोंकना—स० [हिं० चोका] १. स्तन से मुँह लगा कर दूध पीना। २. पानी पीना।

चोंकर†—पुं०=चोकर ।

चोंका†—पुं० [देश०] चूसने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**चोंका-पीना**=बच्चों का माँ का स्तन-पान करना ।

चोंखना†—स०=चोखना ।

चोंगा—पुं० [सं० चतुर अंगुलि ? बँ० चुंगी; उ० चुंगा] [स्त्री० अल्पा० चोंगी] १. बाँस का वह खोखला टुकड़ा जिसका मुँह तो ऊपर से खुला हो और पेंदा नीचेवाली गाँठ के कारण बंद हो। २. टीन, बाँस आदि की वह नली जिसमें कागज-पत्र रखे जाते हैं।

चोंगी—स्त्री० [हिं० चोंगा का स्त्री० अल्पा०] भाथी में की वह नली जिससे होकर हवा निकलती है।

चोंच—स्त्री० [सं० चंचु] १. पक्षियों के मुँह का नुकीला और प्रायः लंबोतरा भाग जिसमें उनके जबड़ों पर सींग की तरह का कड़ा आवरण रहता है। जैसे—कबूतर, चील या तोते की चोंच। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा व्यक्ति या उसका मुँह जो कोई अनुचित, असंगत या विरुद्ध बात कहने को हो या कहता हो।

मुहा०—**चोंच बंद करना या कराना**=भय आदि के कारण स्वयं चुप हो जाना अथवा भय दिखाकर किसी को कुछ कहने से रोकना।

(किसी से दो-दो) चोंच होना=कुछ हलकी कहा-सुनी या झड़प हो जाना।

चोंचला—पुं०=चोचला।

चोंटना—स० [हिं० चिकोटी या अनु०] हाथ की चुटकी से कोई चीज तोड़ना। जैसे—फूल चोंटना।

चोंटली—स्त्री० [?] सफेद घुंघची।

चोंड़ा—पुं० [सं० चूडा] १. स्त्रियों के सिर के बाल। झोंटा। २. मस्तक। सिर।

पद—(किसी के) चोंड़े पर चढ़कर=किसी की परवाह न करते हुए उसके सामने होकर। सिर पर चढ़ कर। जैसे—हमें जो कुछ करना होगा, वह हम उनके चोंड़े पर चढ़कर करेंगे। (स्त्रियाँ)

पुं० [सं० चूंडा] वह कच्चा कुआँ जिससे खेती की सिंचाई की जाती है।

चोंड़ी—स्त्री० [हिं० चोंड़ा=सिर?] स्त्रियों के पहनने की साड़ी।

चोंथ—पुं० [अनु०] परिमाण के विचार से उतना गोबर जितना एक बार में गाय, भैंस आदि ने किया या गिराया हो।

स्त्री० [हिं० चोंथना] चोंथने की क्रिया या भाव।

चोंथना—स० [अनु०] १. किसी चीज में से उसका कुछ अंश बुरी तरह से काट, नोच या बकोटकर निकालना। २. लाक्षणिक रूप में किसी का धन बुरी तरह से और जबरदस्ती उससे लेना।

चोंथना—स० [अनु०] १. पक्षियों का दाने चुगना। २. दे० 'चुंथना'।

चोंधर—वि० [सं० चक्षुरंध्र] १. बहुत छोटी आँखोंवाला (व्यक्ति या पशु)। २. जिसे अपेक्षया बहुत कम दिखाई देता हो। ३. बेवकूफ। मूर्ख। (अवज्ञा और हास्य में)

चोंप—पुं०=चोप।

स्त्री०=चोव।

चोंपी†—स्त्री०=चेप।

चोंहका†—पुं० [सं० चूषण] १. गाय, बकरी, भैंस आदि को दुहने से पहले उनके बच्चों को चुसाया जानेवाला दूध। २. इस प्रकार दूध चुसाने की क्रिया या भाव। ३. होंठ लगाकर किसी प्रकार का रस चूसने की क्रिया या भाव।

चोआ—पुं० [हिं० चुआना=टपकाना] १. चुआकर गिराई, निकाली या रखी हुई चीज। २. वह छोटा और हलका दांव जो जुआरी लोग किसी दूसरे जुआरी के दांव पर उसके साथ मिलकर हार-जीत के लिए लगाते हैं। ३. वह कंकड़, पत्थर जो तराजू के पल्ले या बटखरे की कमी पूरी करने के लिए पल्ले पर रखा जाता है। ४. अनेक प्रकार के सुगंधित पदार्थों को पकाकर निकाला हुआ रस जिसकी गिनती गन्ध द्रव्यों में होती है। ५. दे० 'चोटा'।

चोईं—स्त्री० [देश०] १. मछली आदि कुछ जल-जंतुओं की त्वचा पर होनेवाला गोल चितकबरा तथा चमकीला छिलका। २. दाल आदि का छिलका।

चोई—स्त्री०=चोईं।

चोक—पुं० [सं०√कुच् (रोकना)+क्विप्, क=च, पृषो०, चुक—अच्] भड़भाँड़ या सत्यानासी नामक पौधे की जड़ जो दवा के काम आती है।

चोकर—पुं० [हिं० चून=आटा+कराई=छिलका] गेहूँ, जौ आदि के आटे को छानने पर उसमें से बचनेवाला छिलके का अंश जो दरदरा तथा मोटे कणों के रूप में होता है।

चोका—पुं० दे० 'चोहका'। उदा०—चोका लाई अधर रस लेहीं।—जायसी।

वि० [स्त्री० चोकी]=चोखा। उदा०—चोकी मेरी देह, तन सँजोग कोइ लाल कौं।—सेनापति।

चोकी—स्त्री०=चौकी।

चोक्ष—वि० [सं०√चक्ष् (प्रशस्त होना)+घञ्,—पृषो० सिद्धि] १. पवित्र। शुद्ध। २. चतुर। दक्ष। ३. तीक्ष्ण। तेज। ४. प्रशंसित।

चोख—पुं० [हिं० चोखा] चोखे अर्थात् प्रखर होने की अवस्था या भाव। चोखापन।

वि०=चोखा।

†पुं० [सं० चक्षु] आँख। (बंगाल)

चोखना—स० [सं० चूषण] प्राणियों विशेषतः पशुओं का अपनी माता के थन में मुँह लगाकर उसका दूध पीना। उदा०—नियरावनि चोखनि मन ही में झुकि बछियान छबीली।—ललित किशोरी।

चोखनि, चोखनी—स्त्री० [हिं० चोखना] चोखने अर्थात् स्तन-पान करने की क्रिया या भाव।

चोखा—वि० [सं०, चोक्ष, पा० प्रा० चोख, मरा० गु० ष० चोख; आ उ० पं० चोखा] १. तेज या पैनी धारवाला। जैसे—चोखा चाकू। २. जिसमें किसी प्रकार का खोट या मिलावट न हो। जैसे—चोखा घी, चोखा सोना। ३. व्यवहार आदि में खरा और साफ। जैसे—चोखा असामी। ४. औरों की तुलना में बहुत अच्छा या बढ़कर। जैसे—इस मामले में तो तुम्हीं सब से चोखे रहे। ५. सब प्रकार से अच्छा और ठीक। उदा०—चला बिमान तहाँ ते चोखा।—तुलसी। †६. मात्रा, मान आदि में अधिक।

पुं० [?] १. एक प्रकार का चटपटा व्यंजन या सालन जो आलू या बैंगन को उबाल या भूनकर बनाया जाता है। भरता। भुरता। २. पकाया हुआ चावल। भात। (राज०)

चोखाई—स्त्री० [हिं० चोखना] चोखने या चोखाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। चुसाई।

†स्त्री०=चोखापन।

चोखाना—स० [हिं० चोखना] १. बछड़ों आदि को चोखने अर्थात् स्तन-पान करने में प्रवृत्त करना। २. स्तन-पान कराना। †३. दूध दुहना। ४. धार चोखी या तेज करना। जैसे—चाकू चोखाना।

†अ० १. चोखा अर्थात् स्तन-पान किया जाना। २. दूहा जाना। ३. धार का चोखा या तेज किया जाना।

चोगर—पुं० [फा० चुगद] उल्लू की-सी आँखोंवाला घोड़ा।

चोगा—पुं० [तु० चुगड़] एक प्रकार का पहनावा जो घुटनों तक लंबा और ढीला-ढाला होता है। लबादा।

चोगान—पुं०=चौगान।

चोच—पुं० [सं०√कुच् (रोकना)+अच्, पृषो० क=च] १. छाल। २. चमड़ा। त्वचा। ३. तेजपत्ता। ४. दालचीनी। ५. नारियल। ६. कदली-फल। केला।

चोचक—पुं० [सं० चोच+कन्] छाल। वल्कल।

चोचलहाई—स्त्री० [हिं० चोचला+हाई (प्रत्य०)] (स्त्री) जो चोचले करती या दिखाती हो।

चोचला—पुं० [अनु०] १. अल्हड़पन या जवानी की उमंग में किसी को खिझाने, रिझाने आदि के उद्देश्य से दिखाई जानेवाली ऐसी अंग-भंगी, कही या की जानेवाली बात या किया जानेवाला व्यवहार जिसकी गिनती निकृष्ट प्रकार के हाव-भावों में होती है। नखरा।

मुहा०—चोचले दिखाना या बघारना=दूसरों को खिझाने, रिझाने आदि के लिए ऐसी अंग-भंगी, हाव-भाव दिखलाना अथवा चेष्टा या बात करना जो प्रिय या रुचिकर न लगे। जैसे—चोचले मत बघारो; सीधी तरह से बातें करो।

२. ऐसा कार्य जो अपनी आन-बान दिखाकर किसी को विशेष रूप से प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। जैसे—ये सब अमीरों के चोचले हैं।

चोज—पुं० [सं० चोद्य ?] १. किसी चुटीली उक्ति या बात में का वह चमत्कारपूर्ण अंश या तत्त्व जिससे लोग प्रसन्न और मुग्ध हो जायँ। अनूठी, सुन्दर और हास्य की बात। २. ऐसी बात जिसमें उक्त प्रकार का चमत्कारपूर्ण तत्त्व दिखाई देता हो।

पद—चोज का=अनोखा, दुष्प्राप्य और बढ़िया। **उदा०—**चोज के चंदन खोज खुले जहँ ओछे उरोज रहे उर में घिसि। —देव।

चोट—स्त्री० [सं० चुट=काटना] १. किसी धारदार वस्तु के प्रबल या वेगपूर्ण आघात से शरीर के किसी अंग के कट, फट अथवा छिल जाने से होनेवाला घाव। जैसे—तलवार या पत्थर की चोट। २. अस्त्र-शस्त्र आदि के द्वारा किसी जीव पर किया जानेवाला लक्ष्य-भेदन या वार का आघात।

मुहा०—चोट खाली जाना=आघात या वार का चूक जाना। वार खाली जाना **(किसी की) चोट बचाना**=किसी के आघात या प्रहार को युक्ति से विफल करना। **(आपस में) चोटें चलना**=दोनों पक्षों का एक दूसरे पर मौखिक रूप से आघात या वार करना।

३. गिरने-पड़ने, टकराने, ठोकर खाने अथवा किसी वस्तु के शरीर पर आ गिरने से होनेवाला बाहरी या भीतरी घाव, विकृति या सूजन।

मुहा०—चोट उभरना=किसी ऐसी पुरानी चोट में फिर से पीड़ा, सूजन आदि उत्पन्न होना जो बीच में अच्छी या ठीक हो गई हो। **चोट खाना**=किसी आघात या प्रहार के फल-स्वरूप कष्टदायक या विकृतिकारक परिणाम, प्रभाव या फल से युक्त होना।

४. किसी हिंसक जंतु या पशु द्वारा किया हुआ आघात, वार या प्रहार जो घातक भी हो सकता है। जैसे—शेर या साँप छेड़ने पर अवश्य चोट करते हैं। ५. कोई ठोस चीज तोड़ने, फोड़ने या चिपटी करने के लिए उस पर किया जानेवाला किसी भारी औजार का आघात। जैसे—पत्थर या लोहे पर की जानेवाली घन या हथौड़े की चोट। ६. लाक्षणिक रूप में, (क) किसी का कोई ऐसा कथन जिससे कोई अपने को अपमानित या लज्जित समझने लगे। (ख) कोई ऐसी घटना जिससे किसी की कोई बहुत बड़ी क्षति या हानि हुई हो अथवा (ग) अनिष्ट आदि के कारण होनेवाला कष्ट जिसके परिणाम-स्वरूप मनुष्य चिंतित, दुःखी या विकल होता हो। ७. कपट या छलपूर्वक किया जानेवाला कोई ऐसा काम या बात जिससे किसी का कुछ अनिष्ट हो। दगा। धोखा। विश्वासघात। जैसे—तुमने बहुत बुरे समय में मेरा साथ छोड़ कर मुझ पर चोट की है। ८. आक्रमण, आघात, प्रहार आदि के रूप में होनेवाले कामों या बातों के संबंध में प्रत्येक बार होनेवाली उक्त प्रकार की क्रिया। जैसे—एक चोट कुश्ती, दो चोट दंगा-फसाद, चार चोट लड़ाई-झगड़ा आदि। ९. वह जो किसी की तुलना में बराबरी या मुकाबले का ठहरता या सिद्ध होता हो। उदा०—उज्ज्वल, अखंड खंड सातएँ महल महामंडल चवारो चंदमंडल की चोट ही।—देव।

मुहा०—(किसी की) चोट का=तुलना या बराबरी का। जोड़ या मुकाबले का।

चोटइल†—वि०=चुटैल।

चोटना-पोटना*—स० [हिं० चोटी-पोटी] १. रूठे हुए को मनाना। २. फुसलाना।

अ० खुशामद अथवा चापलूसी की बातें करना।

चोटहा†—वि० [हिं० चोट+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० चोटही] १. जिस पर चोट का निशान हो। २. (व्यक्ति या जीव-जंतु) जिसे चोट लगी हो। ३. (अंग) जिस पर चोट का दाग या निशान बना हुआ हो। ४. चोट करनेवाला।

चोटा—पुं० [हिं० चोआ] गुड़ से चीनी बनाते समय उसे छानने पर निकला हुआ गुड़ का पसेव। चोआ। माठ।

चोटाना†—अ० [हिं० चोट] चोट से युक्त होना। चोट खाना।

†स० चोट या प्रहार करना।

चोटा-पोटा—वि० [?] [स्त्री० चोटी-पोटी] खुशामद से भरा हुआ (कथन)। चिकनी-चुपड़ी (बात-चीत)। उदा०—हमसों सदा दुरावति सो यह बात कहत मुख चोटी-पोटी।—सूर।

चोटार—वि० [हिं० चोट+आर (प्रत्य०)] १. (जीव) जो चोट करता या कर सकता हो। २. चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना—अ० [हिं० चोट] चोट पहुँचाना। चुटैल करना।

चोटिका—स्त्री० [सं०√चट् (घेरदार) + अण्-ङीप्-कन्-टाप्] लहँगा।

चोटिया—स्त्री०=चुटिया (चोटी)।

चोटियाना—स० [हिं० चोटी] १. मारने-पीटने आदि के लिए किसी की चोटी या सिर के बाल हाथ से पकड़ना। २. किसी को इस प्रकार पकड़कर तंग करना या दबाना कि मानो उसकी चोटी अपने हाथ में आ गई हो।

अ० [हिं० चोटी] स्त्रियों का चोटी करना या वेणी बाँधना।

चोटियाला†—वि० [हिं० चोटी] [स्त्री० चोटियाली] सिर पर के बड़े-बड़े बालोंवाला। उदा०—चोटियाली कूदै चौसठि ज्ञाचरि।—प्रिथीराज।

पुं० पिशाच, प्रेत, भूत आदि।

चोटी—स्त्री० [सं० चूड़ा ? प्रा० पं० चोटी; गु० मरा० चोटी, चोटली] १. स्त्रियों के सिर के वे बड़े और लंबे बाल जो कई प्रकार से लट या लटों के रूप में गूँथे रहते हैं। वेणी।

मुहा०—चोटी करना=स्त्रियों का सिर के बाल गूथ और सँवारकर उनकी लट या वेणी बनाना।

२. हिन्दू पुरुषों में सिर के ऊपर पिछले भाग के मध्य में थोड़े से

बचाकर रखे हुए वे लंबे बाल जो हिन्दुत्व का एक मुख्य चिह्न होता है। चुंदी। शिखा।

पद—चोटीवाला। (देखें)

मुहा०—चोटी कटाना=सिर मुंड़ाकर साधु-संन्यासी या संसार-त्यागी होना। **(किसी के नीचे) चोटी दबना**=ऐसी स्थिति में होना कि किसी से दबकर रहना पड़े। जैसे— जब तक उनके नीचे तुम्हारी चोटी दबी है, तब तक तुम उनके विरुद्ध नहीं जा सकते। **(किसी की) चोटी (किसी के) हाथ में होना**=किसी का किसी दूसरे के अधीन या वश में होना। जैसे—उनकी चोटी तो हमारे हाथ में है। वे हम से बचकर कहाँ जायँगे। **चोटी रखना**=सिर के पिछले मध्य भाग में थोड़े से बाल आस-पास के बालों से अलग रखकर बढ़ाना जो हिन्दुत्व का चिह्न है। शिखा धारण करना।

३. प्रायः काले धागों या सूतों का वह लंबा लच्छा जो स्त्रियाँ अपने सिर के बालों के साथ गूंथकर उन्हें बांधने और अपनी चोटी लंबी तथा सुन्दर बनाकर दिखाने के काम में लाती हैं। ४. पान के आकार का वह गहना जो स्त्रियां सिर के बालों की जूड़े में खोंसती या अपनी चोटी के नीचे लटकाती हैं। ५. कुछ विशिष्ट पक्षियों के सिर पर ऊपर उठे हुए कुछ लंबे पर या बाल। कलगी। जैसे—मुरगे या मोर की चोटी। ६. किसी बड़ी या भारी चीज़ का सब से ऊँचा और ऊपरी भाग। जैसे—पहाड़ या महल की चोटी। ७. किसी चीज का किसी ओर निकला हुआ कुछ नुकीला और लंबा सिरा। जैसे—नीलम, पन्ने या हीरे की चोटी। ८. किसी प्रकार के उतार-चढ़ाव या ऊपरी मोड़ का सब से ऊँचा और ऊपरी अंश या भाग। जैसे—पूस-माघ में गेहूँ का भाव चोटी पर पहुँच जाता है।

पद—चोटी का=अपने वर्ग में सब से अच्छा, बढ़कर या श्रेष्ठ। सर्वोत्तम। जैसे—चोटी का ग्रन्थ, चोटी का पंडित या विद्वान्।

चोटीवाला—पुं० [हिं०] जिन, प्रेत या भूत जिसके संबंध में यह प्रवाद है कि उसकी चोटी बहुत लंबी होती है। (स्त्रियाँ)

विशेष—प्रायः स्त्रियाँ भूत-प्रेत आदि से बहुत डरती हैं और उनका नाम तक नहीं लेना चाहतीं; इसलिए वे इसी नाम से उसकी चर्चा करती हैं।

चोट्टा†—पुं० [हिं० चोर] [स्त्री० चोट्टी, भाव० चोट्टापन] वह व्यक्ति जो छोटी-मोटी चीजें दूसरों के घरों से उनकी नजरें बचाकर उठा लाता हो। छोटे दरजे का चोर।

चोड़—पुं० [सं०√चुड् (संवरण करना)+अच्] १. उत्तरीय वस्त्र। २. चोल देश।

चोड़क—पुं० [सं० चोड़+कन्] पहनने का एक कपड़ा।

चोड़ा—पुं० [सं० चोड़+टाप्] बड़ी गोरखमुंडी।

चोड़ी—स्त्री० [सं० चोड़+ङीप्] स्त्रियों के पहनने की साड़ी।

चोड़†—पुं० [?] उत्साह। उमंग।

चोतक—पुं० [सं० चुत् (टपकना)+ण्वुल्—अक] १. दालचीनी। २. छाल। वल्कल।

चोथ—पुं०=चोंथ।

†स्त्री०=चौथ। (गुजरात)

चोथना† सं०=चोंथना।

चोद—पुं० [सं०√चुद् (प्रेरणा करना)+णिच्)+अच्] १. चाबुक। २. ऐसी लंबी लकड़ी जिसके सिरे पर नुकीला लोहा लगा हो।

चोदक—वि० [सं०√चुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] चोदना या प्रेरणा करनेवाला।

चोदना—स्त्री०[सं० √चुद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २. प्रेरणा। ३. प्रयत्न।

स० पुरुष का स्त्री के साथ संभोग करना। स्त्री-प्रसंग करना।

चोदू—पुं०[हिं० चोदना] चोदने अर्थात् प्रसंग या संभोग करनेवाला।

चोदू†—वि०[हिं० चोदना]=चूतिया। (राज०)

चोद्य—वि०[सं०√चुद्+णिच्+यत्] जो चोदना या प्रेरणा का उपयुक्त पात्र या विषय हो।

पुं०१. प्रश्न। सवाल। २. तर्क-वितर्क या वाद-विवाद में पूर्व पक्ष।

चोप—पुं०[हिं० चाव] १. उत्साह और उमंग से भरी हुई कामना या वासना। चाव।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

२. उत्साह या उमंग बढ़ानेवाला काम, चीज़ या बात। ३. उत्तेजना। बढ़ावा।

क्रि० प्र०—देना।

पुं०[हिं० चूना=टपकना] कच्चे आम के ऊपरी भाग का वह रस जो शरीर में लगने पर खुजली, जलन, फुन्सी आदि उत्पन्न करता है।

†स्त्री०[फा० चोब] १. दे० 'चोब'। २. डंके पर लकड़ी से किया जानेवाला आघात। डंके की चोट। ३. इस प्रकार उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चोपदार†—पुं०=चोबदार।

चोपी—वि०[हिं० चोप] १. जिसे किसी बात का बहुत अधिक चाव या चाह हो। २. जिसमें विशेष उत्साह या उमंग हो।

स्त्री०=चेप (लसीला पदार्थ)। जैसे—आम की चोपी।

चोब—स्त्री०[फा०] १. शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा या बाँस। २. वह पतली लकड़ी या खमाची जिससे नगाड़े पर आघात किया जाता है। ३. मोटा डंडा विशेषतः वह मोटा डंडा जिस पर सोने या चाँदी का पत्तर चढ़ा या लगा हो।

चोबकारी—स्त्री०[फा०] जरदोजी।

चोबचीनी—स्त्री०[फा० चोब+हिं० चीनी (चीन देश का)] चीन देश में होनेवाली एक लता जिसकी जड़ औषध के काम आती है।

चोबदार—पुं०[फा०] [भाव० चोबदारी] वह दरबान या नौकर जिसके हाथ में चोब (मोटा डंडा) रहता हो।

चोबदारी—स्त्री०[फा०] चोबदार का काम या पद।

चोबा—पुं०[फा० चोब] १. उबाले हुए चावल। भात। २. दे० 'चोब'।

†पुं०=चौबे। (पंजाब)

चोबी—वि०[फा०] लकड़ी का बना हुआ। जैसे—चोबी इमारत या मकान।

चोभ—स्त्री०[हिं० चुभना] १. चुभने की क्रिया या भाव। २. चुभनेवाली कोई वस्तु या बात।

चोभना—स०=चुभाना।

चोभा—पुं०[हिं०चोभना] १. चोभने या चुभाने की क्रिया या भाव। २. लोहे की सूइयोंवाला वह दस्ता जिससे मुरब्बा बनाने के लिए आँवला, आम, पेठे के टुकड़े आदि कोंचे जाते हैं। ३. दवाओं की बँधी हुई वह पोटली जिससे पीड़ित अंग मुख्यतः आँख सेंकी जाती है। भाथा। ४. उक्त पोटली से शरीर का कोई पीड़ित अंग सेकने की क्रिया या भाव।

चोभाकारी—स्त्री०[हिं० चोभना+फा० कारी=काम] पत्थरों, रत्नों आदि का किसी चीज पर होनेवाला ऐसा जड़ाव जो किसी तल में चुभा या धँसाकर कुछ उभारदार रूप में बनाया गया हो।

चोभाना†—स० =चुभाना।

चोम—स्त्री०[अ० जोम] १. उमंग। जोश। २. गर्व। घमंड। (राज०)

चोया†—पुं० =चोआ।

चोर—पुं०[सं०√चुर् (चुराना)+णिच्+अच्; प्रा०, पा०, गुज०, पं० बँ०, मरा०, चोर; सिं० चोरु; सिंह० होर] १. वह जो लोगों की आँख बचाकर दूसरों की कोई चीज अपने उपयोग के लिए उठा ले जाता या रख लेता हो। बिना किसी को जतलाये हुए पराई चीज लेकर उस पर अपना अधिकार या स्वामित्व स्थापित करनेवाला व्यक्ति। चुराने या चोरी करनेवाला। तस्कर। जैसे—(क) चोर उनके घर में घुस कर सब माल-असबाब उठा ले गये। (ख) आजकल नगर में चोरों का ऐसा दल आया है जो मकान किराये पर लेकर आस-पास की दूकानों या मकानों में चोरी करता है।

मुहा०—(कहीं या किसी के घर) चोर पड़ना =चोर या चोरों का आकर बहुत-सी चीजें चुरा ले जाना।

कहा०—चोर के घर (या चोर पर) मोर पड़ना=(क) एक चोर के घर पहुँचकर दूसरे चोर का चीज़ें चुराना या चोरी करना। (ख) किसी दुष्ट या धूर्त्त के साथ उससे भी बड़े दुष्ट या धूर्त्त के द्वारा दुष्टता या धूर्त्तता का व्यवहार होना।

२. लड़कों के खेल में, वह लड़का जो अपना दाँव हार जाता है, और इसीलिए दूसरे लड़के जिससे कोई दौड़-धूप या परिश्रम का काम कराके अपना दाँव लेते या बदला चुकाते हैं।

विशेष—ऐसे लड़के को प्रायः किसी दूसरे लड़के को छूकर चोर बनाना या अपनी पीठ पर चढ़ाकर कुछ दूर पहुँचाना या ले जाना पड़ता है।

३. क्षत या घाव के संबंध में, वह दूषित और विषाक्त अंश, तत्त्व या विकार जो किसी प्रकार अन्दर या नीचे छिपा या दबा रह गया हो और आगे चलकर दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता हो। जैसे—इस घाव का मुँह ऊपर से तो बंद हो गया है; पर अभी इसके अन्दर चोर है। (आशय यह कि इसका मुँह फिर से खुलकर दूषित अंश या विकार निकलना चाहिए) ४. किसी तल में वह थोड़ा-सा या सूक्ष्म अंश जो ठीक तरह से बनने, भरने आदि से छूट गया हो, और इसीलिए जो दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकता या दोष माना जाता हो। जैसे—(क) जब छत बनने में कहीं चोर रह जाता है, तभी वह चूती या टपकती है। (ख) मेहदी हाथ में ठीक तरह से नहीं लगी है, कई जगह चोर रह गया है। ५. ताश, गंजीफे आदि के खेलों में, वह हलका पत्ता जो किसी खिलाड़ी के हाथ में इसलिए रुका रहता है कि इसे चलने पर उसकी हार की सम्भावना होती है।

पद—गुलाम चोर=ताश का एक विशिष्ट खेल जिसमें कोई एक पत्ता चोर बनाकर अलग कर दिया जाता है। खेल के अंत में जिसके हाथ में उस पत्ते के जोड़ का दूसरा पत्ता बच रहता है, वही खिलाड़ी चोर कहलाता है।

६. लाक्षणिक रूप में, मन में उत्पन्न होने या रहनेवाला कोई अनुचित और कपटपूर्ण उद्देश्य, भाव या विचार। जैसे—यदि तुम उनसे मिलकर सब बातों का निपटारा नहीं करना चाहते तो तुम्हारे मन में जरूर कोई चोर है। ७. चोरक नाम का गंध द्रव्य। ८. रहस्य संप्रदाय में, (क) काम, क्रोध, मोह आदि विकार। (ख) मृत्यु।

वि० (क) समस्त पदों में उत्तर पद के रूप में और व्यक्तियों के संबंध में—१. किसी की कोई चीज चुरानेवाला। चोरी करनेवाला। जैसे—किताब चोर, जूता-चोर। २. किसी प्रकार कुछ चुराने, छिपाने, दबा रखने या सामने न करनेवाला। जैसे—मुँहचोर=जल्दी किसी को मुँह न दिखानेवाला। ३. कर्त्तव्यपालन, कष्ट, परिश्रम आदि से अपने आप को बचानेवाला। (ख) समस्त पदों में पूर्वपद के रूप में पदार्थों आदि के संबंध में—१. जो इस प्रकार आड़ में छिपा हुआ हो कि ऊपर या बाहर से देखने पर जल्दी दिखाई न दे, जिसका सब लोगों को सहसा पता न चलता हो या जिसे साधारण लोग न जानते हों। जैसे—अलमारी या संदूक में का चोर-खाना या चोर-ताला, किसी बड़ी बस्ती में की चोर गली, किसी तख्ते में का चोर छेद, किसी बड़े मकान में का चोर दरवाजा या चोर सीढ़ी आदि। २. (स्थान) जहाँ या जिसमें कोई ऐसा काम या बात होती हो जो सबके सामने या खुले आम न हो सकती हो, बल्कि चुरा-छिपाकर की जाती हो। जैसे—चोरबाजार, चोर महल आदि। ३. (तल या स्थान) जो ऊपर से देखने पर तो बिलकुल ठीक और पक्का जान पड़े; परन्तु जिसके नीचे कुछ पोलापन हो और इसीलिए जो थोड़ा-सा भार पड़ने पर या सहज में दब अथवा धँस सकता हो। जैसे—चोर जमीन, चोर बालू या चोर मिट्टी आदि। ४. शरीर या उसके किसी अंग के संबंध में, जिसकी क्रिया, शक्ति, स्वरूप आदि का बाहर से देखने पर अनुमान न हो सकता हो या पूरा पता न चलता हो। जैसे—चोर थन, चोर पेट, चोर बदन आदि। ५. अनाज के दानों के संबंध में, जो साधारण से बहुत अधिक कड़ा हो और इसलिए कूटने-पीसने आदि पर भी ज्यों का त्यों बचा या बना रहता हो और टूटता या पिसता न हो। जैसे—चोर ऊड़द, चोर मटर, चोर मूँग आदि।

चोर-कंटक—पुं० [कर्म०स०] चोरक नाम का गंध द्रव्य।

चोरक—पुं०[सं० चोर+कन्] १. एक प्रकार का गठिवन जिसकी गणना गंध द्रव्यों में होती है। २. असबरग जिसकी गिनती गंध द्रव्यों में होती है।

चोरकट—पुं०[हिं० चोर+कट=काटनेवाला] उचक्का। चोट्टा।

चोरखाना—पद पुं०[हिं०] अलमारी, संदूक आदि में का ऐसा छिपा हुआ खाना, घर या विभाग जो ऊपर से देखने पर सहसा न दिखाई देता हो।

चोर खिड़की—स्त्री०[हिं०] छोटा चोर दरवाजा। (दे० 'चोर दरवाजा')

चोर-गणेश—पुं० [कर्म० स०] तांत्रिकों के एक गणेश जिनके विषय में कहा जाता है कि यदि जप करने के समय हाथ की उँगलियों में संधि रह जाय, तो वे उसका फल चुरा या हरण कर लेते हैं।

चोरगली—स्त्री०[हिं०] १. नगर या बस्ती की वह छोटी और तंग गली जिसका पता सब लोगों को न हो। २. पाजामें का वह भाग जो दोनों जाँघों के बीच में पड़ता है।

चोर-चकार—पुं०[हिं० चोर+अनु०चकार] १. चोर। २. उचक्का। चोट्टा।

चोर-चमार—वि०[हिं०] [भाव० चोरी-चमारी] (व्यक्ति) जो चोरी आदि निन्दनीय तथा निकृष्ट काम करता हो।

चोर-छेद—पद पुं०[हिं०] दो चीजों के बीच का बहुत छोटा और छिपा हुआ अवकाश। संधि। दरज।

चोर-जमीन—स्त्री०[हिं० चोर+जमीन] ऐसी जमीन जो ऊपर से देखने में तो ठस या पक्की जान पड़े, पर नीचे से पोली हो और जो भार पड़ते ही नीचे धँस या दब जाय।

चोरटा†—वि० [हिं० चोर+टा (प्रत्य०)] [स्त्री० चोरटी] १. चोरी करने या चुरानेवाला। उदा०—लिये जाति चित चोरटी वह गोरटी नारि।—बिहारी। २. दे० 'चोट्टा'।

पुं० चोर।

चोर-ताला—पुं० [हिं०] ऐसा ताला जो ऊपर से सहसा दिखाई न देता हों; अथवा साधारण से भिन्न और किसी विशिष्ट युक्ति से खुलता हो।

चोर-थन— पुं०[हिं०] गौओं-भैंसों का ऐसा थन जिसके अंदर दूध बचा रह जाता या बचा रह सकता हो।

वि०[हिं०] (गौ, बकरी या भैंस) जो अपने बच्चे के लिए थन में कुछ दूध चुरा या बचा रखे; दुही जाने पर पूरा या सारा दूध न दे।

चोर-दंत—पुं०[हिं०] वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त निकलता और निकलने के समय बहुत कष्ट देता है।

चोर-दरवाजा—पुं०[हिं०] किसी महल या बड़े मकान में प्रायः पिछवाड़े की ओर का वह छोटा दरवाजा जो आड़ में हो और जिसका पता सब लोगों को न हो।

चोर-द्वार—पुं०=चोर-दरवाजा।

चोरना*—स०=चुराना।

चोर-पट्टा—पुं०[हिं० चोर+पाट=सन] एक प्रकार का जहरीला पौधा जिसके पत्तों और डंठलों पर बहुत जहरीले रोएँ होते हैं जो शरीर में लगने से सूजन पैदा करते हैं। सूरत।

चोर-पहरा—पुं०[हिं० चोर=गुप्त+पहरा] पहरे का वह प्रकार जिसमें पहरेदार या तो छिपे रहते हैं अथवा भेष बदल कर पता लगाने के लिए घूमते-फिरते रहते हैं।

चोर-पुष्प—पुं०=चुरपुष्पी।

चोर-पुष्पिका—स्त्री०[चोरपुष्पी+कन्—टाप्, ह्रस्व]=चोर-पुष्पी।

चोर-पुष्पी—स्त्री० [ब०स०, ङीष्] एक प्रकार का क्षुप जिसमें आसमानी रंग के फूल लगते हैं। अंधाहुली। शंखाहुली।

चोर-पेट—पुं०[हिं०] १. स्त्रियों का ऐसा पेट जिसमें गर्भ की स्थिति का ऊपर से देखने पर जल्दी पता न चले। २. ऐसा छोटा उदर या पेट जिसमें साधारण से बहुत अधिक भोजन समा सकता या समाता हो। ३. किसी चीज के अन्दर का कोई ऐसा गुप्त विभाग या स्थान जो ऊपर से दिखाई न दे।

चोर-पैर—पुं०[हिं०] ऐसे पैर जिनके चलने की आहट न मिले या शब्द न सुनाई पड़े। उदा०—ऐसा ही मोर के चोर पैर आला के ने उन्हें पाया।—अज्ञेय।

चोर-बत्ती—पद स्त्री०[हिं०] हाथ में रखने की बिजली की वह बत्ती जो खटका या बटन दबाने पर ही जलती है।

चोर-बदन—पद पुं०[हिं०] ऐसा बदन या शरीर जो देखने में विशेष हृष्ट-पुष्ट न होने पर भी यथेष्ट बलवान् या शक्तिशाली हो।

चोर-बदन—वि०[हिं०] (मनुष्य या व्यक्ति) जो देखने में दुबला-पतला या सामान्य जान पड़ने पर भी अपेक्षया अधिक बलवान् या शक्तिशाली हो।

चोर-बाजार—पुं०[हिं०] [भाव० चोर बाजारी] व्यापार का वह क्षेत्र जिसमें नियंत्रित अथवा राशन में मिलनेवाली चीजें चोरी से और अधिक ऊँचे मूल्य पर खरीदी और बेची जाती हैं।

चोर-बाजारी—स्त्री०[हिं०] नियंत्रित अथवा राशन में मिलनेवाली वस्तुएँ खुले बाजार में और उचित मूल्य पर न बेचकर चोरी से और अधिक दाम पर बेचने की क्रिया, प्रकार या भाव।

चोर-बालू—पुं०[हिं० चोर+बालू] वह बालू या रेत जिसके नीचे दलदल, धँसाव या पोलापन हो।

चोर-महल—पुं०[हिं०] १. राजाओं, रईसों आदि का ऐसा महल या मकान जिसमें वे अपनी रखेली स्त्री या स्त्रियाँ रखते थे। २. घर के अन्दर का वह छिपा हुआ छोटा कमरा जो साधारणतः लोगों की दृष्टि में न आता हो।

चोर-मिहीचनी—स्त्री०[हिं० चोर+मीचना=बंद करना] आँख मिचौली नाम का खेल।

चोर-रास्ता—पुं०[हिं०] वह छिपा हुआ मार्ग जिसका जन-साधारण को पता न हो। चोरगली।

चोर-सीढ़ी—स्त्री०[हिं०] किसी बड़े मकान या महल में वह छोटी और सँकरी सीढी जो कहीं आड़ में हो और जिसका पता सब लोगों को न हो।

चोर-स्नायु—पुं०[ष०त०] कौवा ठोंठी। काकतुंडी।

चोर-हटिया—पुं०[हिं० चोर+हटिया] चोरों से अथवा चोरी का माल खरीदनेवाला दूकानदार।

चोर-हुली—स्त्री०=चोर-पुष्पी।

चोरा—स्त्री०[सं० चोर+अच्-टाप्]=चोर-पुष्पी।

चोराख्य—पुं०[सं० चोर-आख्या, ब०स०]=चोर-पुष्पी।

चोराना—स०=चुराना।

चोरिका—स्त्री०[सं० चोर+ठन्—इक, टाप्] चुराने का काम। चोरी।

चोरित—भू०कृ० [सं०√चुर् (चुराना)+णिच्+क्त] चुराया हुआ।

चोरिला—पुं०[सं०?] एक प्रकार का बढ़िया चारा जिसके दाने या बीज कभी-कभी गरीब लोग अनाज की तरह खाते हैं।

चोरी—स्त्री०[हिं० चोर] १. चुराने या चोरी करने की क्रिया या भाव। २. दूसरों से कोई बात चुराने या छिपाने की क्रिया या भाव। जैसे—खुदा की गर नहीं चोरी की तो फिर बन्दे की क्या चोरी।—कोई शायर।

चोरी-चोरी—क्रि० वि० [हिं० चोरी] १. धीरे-धीरे। २. चुपके-चुपके। ३. बिना किसी को कहे या बतलाये। जैसे—(क) उन्होंने चोरी-चोरी विवाह कर लिया। (ख) आप चोरी-चोरी चले गये; मुझसे मिले तक नहीं।

चोल—पुं०[सं० √चुल् (ऊँचाई)+घञ्] १. दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश जो आधुनिक तंजौर, त्रिचनापल्ली आदि के आस-पास और दक्षिणी मैसूर तक विस्तृत था। २. उक्त देश का निवासी। ३. स्त्रियों के पहनने की चोली। ४. मंजीठ। ५. कवच। जिरह-बक्तर। ६. छाल। वल्कल।

वि० लाल (रंग)।

चोलक—पुं०[सं० चोल+कन्]=चोल।

चोलकी (किन्)—पुं०[सं० चोलक+इनि] १. बाँस का कल्ला। २. नारंगी का पेड़। ३. करील का पेड़। ४. हाथ की कलाई या पहुँचा।

चोल-खंड—पुं०[मध्य० स०] कपड़े का वह टुकड़ा जो प्रायः साड़ियों के साथ (अथवा अलग भी) इसलिए बुना जाता है कि उससे चोली या कुरती बन सके।

चोलन—स्त्री०[सं० चोल+क्विप्+ल्यु—अन]=चोलकी।

चोलना—स०[?] थोड़ीमात्रा में कोई चीज खाना।

मुहा०—मुँह चोलना=नाममात्र के लिए कुछ या थोड़ा-सा खा लेना। †पुं०=चोला।

चोल-रंग—पुं०[सं० चोल=मंजीठ+रंग] मंजीठ का रंग जो पक्का लाल होता है।

चोल-सुपारी—स्त्री०[सं० चोल+हिं० सुपारी] चोल देश की बढ़िया सुपारी।

चोला—पुं०[सं० चोड़क, चोलक, प्रा० चोलअ, पा० चोलो; पं० चोल्ला; सिं० चोलो] [स्त्री० अल्पा० चोली] १. एक प्रकार का बहुत लंबा और घेरदार पहनावा जो प्रायः साधु-संत आदि पहनते हैं। २. वह सिला हुआ नया कपड़ा जो कुछ रसम करने के बाद छोटे बच्चों को पहले-पहल पहनाया जाता है।

मुहा०—चोला पड़ना=कुछ धार्मिक और सामाजिक कृत्यों के बाद छोटे बच्चे को पहले-पहल सिला हुआ नया कपड़ा पहनाया जाना।

३. छोटे बच्चे को पहले-पहल सिला हुआ नया कपड़ा पहनाने की रसम या रीति। ४. तन। बदन। शरीर। जैसे—चोला मगन रहे। (आशीर्वाद।)

मुहा०—चोला छोड़ना=दूसरा और नया जन्म या शरीर धारण करने के लिए यह शरीर छोड़ना। जैसे—स्वामी जी ने अस्सी वर्ष की आयु भोग कर चोला छोड़ा था। **चोला बदलना**=(क) एक शरीर छोड़कर दूसरा नया शरीर धारण करना। (ख) एक रूप या वेष छोड़कर दूसरा रूप या वेष धारण करना। जैसे—आज तो आप चोला बदल कर आये हैं।

चोली—स्त्री०[सं०चोल+ङीष्, हिं० चोला] १. स्त्रियों का वह मध्य-युगीन पहनावा जिससे उनका वक्ष-स्थल ढका रहता था; और जिसमें नीचे की ओर लगी हुई तनियाँ या बंद पीठ की ओर खींचकर बाँधे जाते थे। २. आज-कल उक्त पहनावे का वह सुधरा हुआ रूप जो स्त्रियाँ स्तनों को ढलने से बचाने के लिए कुरती आदि के नीचे पहनती हैं। ३. अँगरखे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमें बंद लगे रहते हैं।

पद—चोली दामन का साथ=वैसा ही अभिन्न, घनिष्ठ और सदा बना रहने-वाला साथ जैसे अँगरखे के उक्त ऊपरी भाग तथा दामन या नीचेवाले भाग में होता है। जैसे—रिश्तेदारों में तो आपस में चोली दामन का साथ होता है।

४. साधु-संतों आदि के पहनने का कुछ छोटा चोला।

स्त्री० [?] तमोलियों की पान रखने की डलिया या दौरी।

चोली-मार्ग—पुं०[मध्य० स०] वाम मार्ग का वह भेद या संप्रदाय जिसमें उपासिकाओं की चोलियाँ एक बरतन में ढककर रख दी जाती हैं, और तब निकालने पर जिस स्त्री की चोली जिस उपासक के हाथ में आती है, उसी के साथ वह संभोग करता है।

चोल्ला—पुं०=चोला।

चोवा—पुं०=चोआ (दे०)।

चोष—पुं०[सं०√चि (चयन)+ड, च-उप, कर्म० स०] पार्श्व या बगल में जलन होने का एक रोग। (भाव प्रकाश)

चोषक—वि०[सं०√चूष (चूसना)+ण्वुल्—अक, आर्ष० गुण] चोषण करने अर्थात् चूसनेवाला।

चोषण—पुं०[सं०√चूष्+ल्युट्-अन्, आर्ष० गुण] चूसने की क्रिया या भाव। चूसना।

चोषना*—स०[सं० चोषण] चूसना।

चोष्य—वि०[सं०√चूष्+ण्यत्, आर्ष०] १. जो चूसा जा सके। २. जो चूसा जाने को हो।

चोसर—स्त्री०=चौसर।

चोसा—पुं० [देश०] वह रेती जिससे लकड़ी को रगड़ या रेतकर समतल किया जाता है।

चोस्क—पुं०[सं०] १. अच्छी जाति का घोड़ा। २. सिंधुवार वृक्ष।

चोहट†—पुं०=चौहट्टा (बाजार)।

चोहान†—पुं०=चौहान।

चौं†—अव्य०[हिं० क्यों] क्यों। किसलिए। उदा०—झुकि जा बदरिया बरस चौं न जाय। (व्रज का लोक गीत)

चौंक—स्त्री०[हिं० चौंकना] चौंकने की क्रिया या भाव।

चौंकड़ा†—पुं०[देश०] करील का पौधा।

चौंकना—अ० [?] १. एकाएक किसी प्रकार की आहट, ध्वनि या शब्द सुनकर कुछ उत्तेजित तथा विकल हो उठना। २. सहसा कोई भयभीत करनेवाली बात सुनकर अथवा वस्तु या व्यक्ति को देखकर घबरा जाना। ३. स्वप्न में कोई विलक्षण या भीषण बात, वस्तु आदि देखने पर एका-एक घबराकर जाग उठना। ४. किसी प्रकार की अहित संबंधी अप्रत्याशित सूचना मिलने पर चौकन्ना या सतर्क होना। ५. आशंका, भय आदि से सहमना या काँपने लगना। ६. बिदकना। भड़कना। जैसे—चलते-चलते घोड़े का चौंकना।

चौंकाना—स०[हिं० चौंकना] १. कोई ऐसा काम करना या बात कहना जिसे सहसा देख अथवा सुनकर कोई चौंक उठे। २. संभावित अहित, क्षति या हानि की सूचना किसी को देना और उसे उससे बचने के लिए सतर्क तथा सावधान करना। ३. भड़काना।

चौंचा—पुं०[हिं० चौ+फा० चह] सिंचाई के लिए पानी एकत्र करने का गड्ढा।

चौंटना*—स०[हिं० चुटकी] हाथ की चुटकी से फूल आदि तोड़ना। चोंटना।

चौंटली†—स्त्री० [सं० चूड़ाला या श्वेतोच्चटा] सफ़ेद घुंघची। श्वेत चिरभिटी।

चौंडा--पुं०[सं० चुंडा] १. वह स्थान जहाँ मोट का पानी गिराया जाता है। २. दे० 'चोंडा'।

पुं०=चोंडा (स्त्रियों के सिर के बाल)।

चौंतरा—पुं०=चबूतरा।

चौंतिस—वि०[सं० चतुस्त्रिशत्, प्रा० चत्तुत्तिसो, पा० चउतीसो] जो गिनती में तीस और चार हों।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—३४।

चौंतिसवाँ—वि० [हिं० चौंतिस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में चौंतिस के स्थान पर पड़नेवाला।

चौंतीस—वि०, पुं०=चौंतिस।

चौंध—स्त्री०[सं०√चक्=चमकना या चौं=चारों ओर+अंध] प्रखर और प्रायः क्षणिक प्रकाश की वह स्थिति जिसे नेत्र सहसा सहन नहीं कर पाते और इसीलिए क्षण भर के लिए मुंद जाते हैं। कौंध। चकाचौंध।

चौंधना*—अ०[हिं० चौंध] किसी वस्तु का क्षणिक किन्तु प्रखर प्रकाश से युक्त होना। कौंधना। चमकना।

चौंधियाना—अ०[हिं० चौंध] नेत्रों का, किसी वस्तु के चौंधने पर स्वतः पलकें झपकने लगना (जिसके कारण कोई चीज ठीक प्रकार से सुझाई नहीं पड़ती)

स० ऐसा काम करना जिससे किसी की आँखें प्रकाश के कारण क्षण भर के लिए झपक या मुंद जायँ। किसी की आँखों में चौंध उत्पन्न करना।

चौंधियारी—स्त्री० दे० 'कस्तूरी'।

चौंधी—स्त्री०=चौंध।

चौंबक—वि०[सं० चुम्बक+अण्] १. चुंबक-सम्बन्धी। चुंबक का। चुंबकीय। २. चुंबक से युक्त। जिसमें चुंबक मिला या लगा हो।

चौंर—पुं०[सं० चामर ?] १. पिंगल में मगण के पहले भेद (ऽ) की संज्ञा। २. भड़भाँड़ या सत्यानाशी नामक पौधे की जड़।

†पुं० १.=चँवर (देखें०)। २. झालर। ३. किसी चीज का गुच्छा।

चौंरगाय—स्त्री०[हिं० चौंर+सं० गो] सुरागाय।

चौंरा—पुं०[सं० चुंड=गड्ढा] १. वह गड्ढा जिसमें सुरक्षा के लिए अन्न गाड़ा जाता है। २. 'चौंड़ा'।

चौंराना—स०[हिं० चौंर+आना (प्रत्य०)] १. किसी के ऊपर या चारों ओर चँवर डुलाना। चँवर करना। २. जमीन पर झाड़ देना या लगाना।

चौंरी—स्त्री०[हिं० चौंर+ई (प्रत्य०)] १. छोटा चँवर। चँवरी। २. रेशम या सूत का वह लच्छा जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल बाँधती हैं। चोटी। ३. किसी चीज के आगे लटकनेवाला फुँदना। ४. सफ़ेद पूँछवाली गाय। ५. सुरागाय।

चौंवालिस—वि०,पुं०=चौवालिस।

चौंसठ—वि०[सं० चतुःषष्टि, प्रा० चउसट्ठि] जो गिनती में साठ से चार अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६४।

चौंसठवाँ—वि०[हिं० चौंसठ+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में चौंसठ के स्थान पर पड़नेवाला।

चौंह—पुं०[देश०] गलफड़ा।

चौंही—स्त्री०[देश०] हल में की एक लकड़ी। परिहारी।

चौ—वि०[सं० चतुः, प्रा० चउ] चार का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में लगने से प्राप्त होता है। जैसे—चौकोना, चौखंडा, चौगुना आदि।

पुं०मोती आदि तौलने का एक बहुत छोटा मान। जैसे—यह मोती तौल में चार चौ है।

†विभ० सम्बन्ध-कारक की विभक्ति, का या की। (राज०)उदा०—बालकति करि हंस चौ बालक।-प्रिथीराज।

चौअन—वि०, पुं०=चौवन।

चौआ--पुं०[सं० चतुष्पाद] गाय, बैल, भैंस आदि पशु। चौपाया।

वि०[हिं० चौ=चार] जिसमें चार हों। चार से युक्त।

पुं० १. हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. चौड़े बल में अँगूठे को छोड़ बाकी चार उँगलियों का विस्तार जो नाप का एक मान है। ३. हाथ की उक्त चार उँगलियों को सटाकर उन पर लपेटा हुआ तागा। ४. ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूटियाँ हों। जैसे—पान का चौआ।

चौआई—स्त्री०= चौवाई।

चौआना†—अ०[हिं० चौकना] १. चकित या विस्मित होना। चकपकाना। २. चौंकना। ३. चौकन्ना या सतर्क होना।

चौक--पुं०[सं० चतुष्क; प्रा० चउक्क; गु० पं० वँ० मरा० चौक; उ० चौका; सिं० चउकु, चौको] १. कोई ऐसी चौकोर जमीन जो ऊपर से बिलकुल खुली हो। २. मकान के अंदर का चारों ओर से घिरा और ऊपर से खुला स्थान। आँगन। सहन। जैसे—इस मकान में दो चौक हैं। ३. कोई ऐसा चौकोर तल जो चारों ओर से सीमित, परन्तु ऊपर से खुला हो। जैसे--यज्ञ की वेदी। ४. उक्त के आधार पर कर्मकांड में या मांगलिक अवसरों पर अबीर, आटे, गुलाल आदि से बनाई जानेवाली वह विशिष्ट आकृति जिसमें बहुत से खाने या घर और रेखाएँ या लकीरें बनी रहती हैं।

मुहा०--चौक पूरना=अबीर, आटे आदि से उक्त प्रकार की आकृति बनाना। ५. चौसर खेलने की बिसात जो प्रायः उक्त आकार-प्रकार की होती है। ६. नगर या बस्ती का वह चौकोर मध्यभाग जो कुछ दूर तक बिलकुल खुले मैदान की तरह रहता है। ७. उक्त के आस-पास या चारों ओर के बाजार और मकान जो एक महल्ले के रूप में होते हैं। ८. मकानों के संबंध में प्रयुक्त होनेवाला संख्या-सूचक शब्द। अदद। जैसे—शहर में उनके तीन चौक मकान हैं। ९. चौमुहानी। चौराहा। १०. चार चीज़ों या बातों का समूह। जैसे—दाँतों का चौक=ठीक सामने के (दो ऊपर के और दो नीचे के) चार दाँत। उदा०—दसन चौक बैठे जनु हीरा।—जायसी।

पद—चारों चौक=(क) चारों ओर या चारों कोनों से। (ख) हर तरह से बिलकुल ठीक, पक्का या बढ़िया। उदा०—पुनि सोरहो सिंगार जस चारिहु चउक (चौक) कुलीन।—जायसी।

११. स्त्रियों के गर्भ-धारण के आठवें महीने होनेवाला सीमंत कर्म नामक संस्कार। अठमासा। अठवाँसा।

चौक गोभी—स्त्री० [हिं० गोभी] एक प्रकार की गोभी।

चौकठ†—पुं०=चौखट।

चौकठा†--पुं०=चौखटा।

चौकड़—वि० [हिं० चौ+सं० कला=अंग, भाग] अच्छा। बढ़िया। (बाजारू) जैसे—चौकड़ माल।

चौकड़याऊ--पुं०[?] बुंदेलखंड में होली के दिनों में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

चौकड़ा—पुं०[हिं० चौ+कड़ा] १. कान में पहनने की बाली जिसमें दो-दो मोती हों। २. फसल में का चौथा भाग जो जमींदार का होता है। ३. दे० 'चौघड़ा'।

चौकड़ी—स्त्री०[हिं० चौक (चार चीज़ों का समूह) का स्त्री०] १. एक में बँधी या लगी हुई एक ही तरह की चार चीज़ों का वर्ग या समूह। जैसे—घोड़ों, दाँतों या मोतियों की चौकड़ी।

पद—**चंडाल चौकड़ी**=चार अथवा चार के लगभग गुंडों, बदमाशों या लुच्चों का वर्ग या समूह।

२. वह गाड़ी जिसके आगे चार घोड़े या बैल अथवा ऐसे ही और पशु जुतकर खींचते हों। ३. गले में पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमें चार-चार चौकोर खंड एक साथ पिरोये या लगे रहते हैं। ४. कालमान की सूचना के लिए चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५. बैठने का वह ढंग या प्रकार जिसमें दोनों पैरों और दोनों जाँघों के नीचेवाले भाग जमीन पर समतल रूप से लगे रहते हैं। पलथी। पालथी।

मुहा०—**चौकड़ी मारकर बैठना**=उक्त प्रकार से आसन या जमीन पर बैठना।

६. चारपाई की वह बुनावट जिसमें चार-चार डोरियाँ इकट्ठी और एक साथ बुनी जाती हैं। ७.हिरन की वह चाल या दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ जमीन पर उठाकर कूदता या छलाँग मारता हुआ आगे बढ़ता है।
क्रि० प्र०--भरना।

मुहा०--**(किसी की) चौकड़ी भूल जाना**=तेजी से आगे बढ़ते रहने की दशा में सहसा बाधा, विपत्ति आदि आने पर इतना घबड़ा जाना कि यह समझ में न आवे कि अब क्या उपाय करना चाहिए अथवा कैसे आगे बढ़ना चाहिए।

८. वास्तु-रचना में, मंदिर की चौकी या मंडप का वह ऊपरी भाग या शिखर जो प्रायः चार खंभों पर स्थित रहता है।

चौकनिकास—पुं०[हिं० चौक+निकास] चौक (बाजार) में बैठनेवाले दूकानदार से लिया जानेवाला कर।

चौकन्ना—वि०[हिं० चौ=चारों ओर+कान] १. (जीव) जो कान लगाकर चारों ओर की आहट लेता रहे। जैसे—चौकन्ना कुत्ता। २. (व्यक्ति) जो चारों ओर होनेवाले कार्यों या बातों विशेषतः अपने विरुद्ध होनेवाले कार्यों या बातों का ध्यान रखता हो। ३. हर तरह से किसी प्रकार की विपत्ति, संकट आदि का सामना करने को प्रस्तुत। (एलर्ट) ४ जो सतर्क या सावधान रहता हो। जैसे—चौकन्ने कान, चौकन्नी आँखें। ५. चौंका हुआ। सशंकित।

चौकरी†—स्त्री०=चौकड़ी।

चौकल--पुं०[सं०] पिंगल में चार मात्राओं के समूह की संज्ञा। इसके पाँच भेद हैं। यथा--(ऽऽ, ।।ऽ, ।ऽ।, ऽ।। और ।।।)

चौकस—वि० [हिं० चौ=चार+कस=कसा हुआ] [भाव० चौकसी] १. चारों ओर से अच्छी तरह कसा हुआ। २. जो अपनी अथवा किसी की रक्षा के लिए पूर्णतः सचेत हो। चौकसी करनेवाला। ३. ठीक। दुरुस्त। जैसे—चौकस माल।

चौकसाई—स्त्री०=चौकसी।

चौकसी—स्त्री०[हिं० चौकस+ई(प्रत्य०)] १. चौकस होने की अवस्था या भाव। २. किसी की रक्षा के लिए उस पर सूक्ष्म दृष्टि रखने का कार्य या भाव।

चौका—पुं० [सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क, हिं० चौक] १. एक ही तरह की चार चीजों का वर्ग या समूह। जैसे—अँगौछों का चौका (एक साथ बुने हुए चार अँगोछे); दाँतों का चौका (अगले दो ऊपरी और दो नीचे के दाँत); मोतियों का चौका (एक साथ पिरोये हुए चार मोती)। २. एक प्रकार का जंगली बकरा जिसके चार सींग होते हैं। चौसिंघा। ३. ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूटियाँ होती हैं। चौआ। जैसे—पान या हुकुम का चौका। ४. किसी प्रकार चौकोर कटा हुआ ठोस, बड़ा और भारी टुकड़ा। जैसे—पत्थर या लकड़ी का चौका। ५. एक प्रकार की चौकोर ईंट। ६. पत्थर या लकड़ी का वह गोलाकार टुकड़ा जिस पर रोटी बेलते हैं। चकला। ७. रसोई बनाने और बैठकर भोजन करने का स्थान जो पहले प्रायः चौकोर हुआ करता था। रसोई बनाने से पहले और भोजन कर चुकने के बाद उक्त को धो-पोछकर अथवा गोबर मिट्टी आदि से लीप-पोतकर की जानेवाली सफाई।
क्रि० प्र०--करना।--लगाना।

पद—**चौका-बरतन**=रसोई बनने और भोजन होने के बाद चौका धोकर साफ करने और बरतन माँज-धोकर रखने का काम। जैसे--वह मजदूरनी चार घरों का चौका-बरतन करती है।

९. किसी स्थान को पवित्र और शुद्ध करने के विचार से गोबर, मिट्टी आदि से पोतने या लीपने की क्रिया या भाव। जैसे—आज यहीं पूजन (या हवन) होगा, इसलिए यहाँ जरा चौका लगा दो।
क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—**चौका देना, फेरना या लगाना**=किसी काम या बात को बुरी तरह से चौपट या नष्ट करना। (परिहास और व्यंग्य) जैसे-तुमने जरा सी भूल करके बने-बनाये काम पर चौका फेर या लगा दिया। उदा०--कियो तीन तेरह सबै चौका चौका लाय।-भारतेंदु।

पद—**चौके की राँड़**=वह स्त्री जो विवाह के कुछ दिन बाद ही विधवा हो गई हो।

१०. सिर के पिछले भाग में बाँधा जानेवाला चौक या सीसफूल नाम का अर्ध गोलाकार गहना। ११. एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो मकानों के चौक में (या फर्श पर) बिछाया जाता है। १२. एक प्रकार का पात्र या बरतन जिसमें अलग-अलग तरह की चीजें (जैसे-नमक, मिर्च, मसाले या साग, भाजी, रायता आदि) रखने के लिए अलग-अलग कटोरे या खाने बने होते हैं। चौघड़ा।

चौका-विधि—स्त्री० [हिं० चौका+सं० विधि] कबीर-पंथियों की एक शाखा में प्रचलित एक कर्मकांडीय विधान जिसमें कुछ निश्चित तिथियों या वारों को दिन भर उपवास करके रात को आटे के बनाये हुए चतुर्भुज क्षेत्र की पूजा होती है।

चौकिया सोहागा—पुं॰ [हिं॰ चौकी+सोहागा] छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा जो औषध के लिए विशेष उपयुक्त होता है।

चौकी—स्त्री॰ [सं॰ चतुष्किका; प्रा॰ चौक्किआ; गु॰ चोकी; ने॰ चौकि; उ॰ पं॰, बं॰, मरा॰, सि॰, चौकी] १. लकड़ी, धातु या पत्थर का वह (छोटा या बड़ा) आयताकार आसन जो चार पावों पर कसा या जड़ा रहता है। २. मंदिर के मंडप के नीचे की चौकोर भूमि। ३. किसी पवित्र आसन पर विराजमान किसी देवी, देवता या महा पुरुष को चढ़ाई जानेवाली भेंट।

मुहा॰—चौकी भरना=किसी देवी या देवता के दर्शनों का मन्नत पूरी करने के लिए उक्त प्रकार के किसी स्थान पर जाना और वहाँ पूजा करके कुछ भेंट चढ़ाना।

४. कुरसी। (क्व॰) ५. गले में पहनने का एक प्रकार का गहना जिसमें कई छोटे-छोटे चौकोर खंड एक साथ पिरोये रहते हैं। जगनी। पटरी। ६. वह स्थान जहाँ पहरेदार चौकी बिछा कर बैठते या विश्राम करते हों। ७. पहरा। रखवाली।

क्रि॰ प्र॰—बैठना या बैठाना।

८. नगर के बाहरी भाग में का वह स्थान जहाँ कुछ अधिकारी या कर्मचारी व्यवस्था, सुरक्षा आदि के लिए नियत रहते हों। जैसे—चुंगी, पुलिस या सेना की चौकी।

मुहा॰—चौकी जाना=दुराचारिणी या पुंश्चली स्त्रियों का संभोग कराने तथा धन कमाने के लिए उक्त किसी स्थान पर जाना। **चौकी भरना**=अपनी बारी आने पर घूम-घूमकर पहरा देना। ९. रक्षा आदि के लिए किया जानेवाला जादू या टोना। १०. उक्त के आधार पर, रास्ते में पैदल यात्रियों के ठहरने का स्थान। अड्डा। पड़ाव। ११. खेत की पैदावार बढ़ाने के लिए उसमें इस उद्देश्य से रात भर भेड़-बकरियों को रखवाना कि वहीं वे मल-मूत्र त्यागें। १२. तेलियों के कोल्हू की एक विशिष्ट लकड़ी। १३. पूरी, रोटी आदि बेलने का गोलाकार चकला। १४. शहनाई और उसके साथ बजनेवाले बाजे। रोशनचौकी। जैसे—आज तो उनके दरवाजे पर चौकी बैठी (या हो रही) है। १५. रोशनचौकीवालों के द्वारा एक बैठक में बजाई जानेवाली चीजें (गीत या धुन)। जैसे-एक चौकी और बजा दो तो तुम्हारी छुट्टी हो जाय।

क्रि॰ प्र॰—बजाना।

१६. प्रासादों, मंदिरों का प्रवेशद्वार जहाँ या जिसके ऊपर शहनाई बजानेवाले बैठते हैं।

चौकी-घर—पुं॰[हिं॰ चौकी=पहरा+घर] वह छोटा-सा छाया हुआ स्थान जहाँ चौकीदार पहरा देने के समय धूप, वर्षा आदि से बचने के लिए खड़ा रहता है।

चौकीदार पुं॰ [हिं॰ चौकी+फा॰ दार] १. किसी स्थान पर चौकी-पहरे का काम करनेवाला कर्मचारी। २. राज्य द्वारा नियुक्त पुलिस विभाग का एक निम्न कर्मचारी जो गाँव-देहात में पहरा देता है। ३. जुलाहों का का वह खूँटा जिसमें भाँज की डोरी फँसा या बाँधकर रखते हैं।

चौकीदारी स्त्री॰ [हिं॰] १. चौकीदार का काम। रखवाली। २. चौकीदार का पद। ३. गाँव-देहातों में लगनेवाला वह कर जो चौकीदार का वेतन देने के लिए लगाया जाता है।

चौकी-दौड़—स्त्री॰[हिं॰] कई दलों में प्रतियोगिता के रूप में होनेवाली एक प्रकार की दौड़ जिसमें दल के हर आदमी को थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनी हुई चौकियों पर नये दौड़ाक को प्रतीक रूप में एक डंडा सौंपना पड़ता है। (रिलेरेस)

चौकुर—पुं॰ [हिं॰ चौ=चार+कुरा] खेत की फसल बाँटने का वह प्रकार जिसमें एक हिस्सा जमीदार को और तीन हिस्सा काश्तकार को मिलता है।

चौकोन, चौकोना—वि॰ [सं॰ चतुष्कोण, प्रा॰ चउक्कोण] [स्त्री॰ चौकोनी] १. जिसके या जिसमें चार कोण हों। २. चार कोनोंवाला। चौखूंटा।

चौकोर—वि॰[सं॰ चतुष्कोण, प्रा॰ चउक्कोण, चउक्कोड़,] १. (वस्तु या क्षेत्र) जिसके चारों पार्श्व बराबर हों। २. दे॰ सम 'चतुर्भुज'। ३. हर तरह से ठीक और दुरुस्त।

पुं॰ क्षत्रियों की एक शाखा।

चौक्ष—वि॰[सं॰ चुक्षा+ण] १. निर्मल। स्वच्छ। २. प्रिय या लुभावना। ३. चोखा।

चौखंड, चौखंडा—वि॰ [हिं॰ चौ (चार)+सं॰ खण्ड] १. जिसके चार खण्ड या विभाग हों। २. जो चार खण्डों में विभक्त हो।

पुं॰ १. चार खण्डों या तल्लोंवाला मकान। २. उक्त मकान का सबसे ऊपर वाला अर्थात् चौथा खंड या तल्ला। ३. वह मकान जिसमें चार चौक हों। (क्व॰)

चौखट—स्त्री॰[हिं॰ चौ=चार+काठ] १. चार लकड़ियों का वह चौकोना ढाँचा जो दरवाजे के पल्ले कसने के लिए दीवार में लगाया जाता है। २. उक्त ढाँचे की ऊपर या नीचेवाली लकड़ी। जैसे—चौखट से सिर (या पैर) में चोट लगी है।

चौखटा—पुं॰[हिं॰ चौखट] १. चौखट के आकार का वह चौकोर छोटा ढाँचा जो चित्र, शीशे आदि के चारों ओर उसकी सुरक्षा तथा शोभा के लिए मढ़ा जाता है। २. उक्त प्रकार का कोई चौकोर वस्त्र जिसके बीच का भाग किसी विशिष्ट कार्य के लिए खाली रहता है।

चौखना—वि॰[हिं॰ चौखंड] चौखंडा या चौमंजिला (मकान)।

चौखा—पुं॰[हिं॰ चौ+खाइं] वह स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सीमाएँ मिलती हों।

चौखाना†—वि॰, पुं॰=चारखाना।

चौखानि—स्त्री॰[हिं॰ चौ=चार+खानि=(जाति या प्रकार)] अंडज, पिंडज, स्वेदज और उद्भिज ये चार प्रकार के जीव।

चौखूंट—पुं॰ [हिं॰ चौ+खूंट] १. चारों दिशाएँ। २. सारी पृथ्वी मंडल।

क्रि॰ वि॰ १. चारों ओर। २. सब ओर।

वि॰=चौखूंटा।

चौखूंटा—वि॰[हिं॰ चौ+खूंट] जिसमें चार कोने हों। चतुष्कोण। चौकोर।

चौगड़ा—पुं॰[हिं॰ चौ+गोड़=पैर] १. खरगोश। खरहा। २. चौघड़ा।

वि॰ चार पैरोंवाला। (पशु)

चौगड्डा—पुं॰ [हिं॰ चौ+गड्डबड्ड=मेल] १. चार चीजों का वर्ग या

समूह। २. वह गाँव जहाँ चार गाँवों की सीमाएँ मिली हों। चौहद्दी। चौसिहा। चौखा।

चौगड्डी—स्त्री० [हिं० चौ+गड्डा] जानवर फँसाने का बाँस की फट्टियों का चौकोर ढाँचा।

चौगान—पुं० [फा०] १. गेंद-बल्ले का एक प्रकार का पुराना खेल जो आज-कल के हाकी खेल से बहुत कुछ मिलता-जुलता होता था। यह खेल घोड़ों पर चढ़कर भी खेला जाता था। २. वह मैदान जिसमें उक्त खेल खेला जाता था। ३. उक्त खेल खेलने का बल्ला जिसका अगला भाग कुछ झुका हुआ होता था। ४. नगाड़ा बजाने की लकड़ी। ५. किसी प्रकार की प्रतियोगिता का स्थान।

चौगानी—स्त्री० [फा० चौगान ?] हुक्के के ढाँचे की वह सीधी नली जिससे धुआँ खींचा जाता है। निगाली।

वि० चौगान-सम्बन्धी।

चौगिर्द—क्रि० वि० [हिं० चौ+फा० गिर्द=तरफ] (किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के) चारों ओर। चारों तरफ।

चौगुन, चौगुना—वि० [सं० चतुर्गुण, प्रा० चउगुण] [स्त्री० चौगुनी] मान या मात्रा में जितनी कोई वस्तु, शक्ति आदि हो उस जैसी चार वस्तुओं या शक्तियोंवाला। जैसे--शारीरिक क्षमता में वह आप से चौगुने तो हैं ही।

मुहा०—(किसी का मन) चौगुना होना—बहुत अधिक उत्साह या प्रसन्नता बढ़ना।

चौगून—स्त्री० [हिं० चौगुना] १. चौगुना होने का भाव। २. गाना या बजाना आरम्भ करते समय जिस गति से गाया या बजाया जाता है, अन्त में उससे चौगुनी गति में और चौथाई समय में उसे गाने या बजाने का प्रकार।

चौगोड़ा—वि० [हिं० चौ+गोड़=पैर] चार पैरोंवाला। जिसके चार गोड़ हों अर्थात् पशु।

चौगोड़िया—स्त्री० [हिं० चौ+गोड़=पैर] १. वह ऊँची चौकी जिस पर चढ़ने के लिए उसके पाँवों में सीढ़ियों सदृश डंडे लगे हों। २. चिड़ियों को फँसाने का बाँस की तीलियों का एक प्रकार का ढाँचा।

चौगोशा—पुं० [हिं० चौ+फा० गोशा] एक प्रकार की चौखूंटी तश्तरी जिसमें मेवे, मिठाइयाँ आदि रखकर कहीं भेजते हैं।

चौगोशिया—वि० [हिं० चौ=चार+फा० गोशा=कोना] चार कोनोंवाला। जिसमें चार कोने या सिरे हों।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की टोपी जो चार तिकोने टुकड़ों को सीकर बनाई जाती थी।

पुं० तुरकी घोड़ा।

चौघड़—पुं० [हिं० चौ=चार+दाढ़] दोनों जबड़ों के चारों सिरों पर होनेवाले एक-एक चिपटे तथा चौड़े दाँतों की सामूहिक संज्ञा। चौभड़।

चौघड़ा—पुं० [हिं० चौ=चार+घर=खाना] १. वह डिब्बा या बरतन जिसमें अलग-अलग कामों के लिए चार अलग-अलग खाने या घर बने हों। जैसे—नमक, मिर्च आदि रखने या तरकारी-भाजी आदि परोसने का चौघड़ा; दीवाली में मिठाइयाँ, धान का लावा आदि रखने का चौघड़ा। २. वह दीवट जिसमें चारों ओर जलाने के लिए चार दीये या वत्तियाँ रखी जाती हैं। ३. पत्ते में खोंसकर एक साथ बाँधे हुए पान के चार बीड़े। जैसे—दो चौघड़े पान लेते आना। ४. चौडोल नाम का बाजा। ५. बड़ी जाति की गुजराती (या छोटी) इलायची जो प्रायः चौकोर सी होती है।

चौघड़िया—वि० [हिं० चौ=चार+घड़ी+इया (प्रत्य०)] चार घड़ियों का। चार घड़ी-सम्बन्धी। जैसे—चौघड़िया मुहूर्त्त निकालनेवाला।

स्त्री० [हिं० चौ+गोड़ा] एक प्रकार की ऊँचे पाँवों किन्तु छोटे आसनवाली चौकी जिस पर खड़े होकर दीवारों आदि पर चूना आदि छूआ जाता है।

चौघड़िया मुहूर्त—पुं० ह० चौघड़िया+सं० मूहूर्त्त] वह मुहूर्त्त जो कोई आकस्मिक किन्तु श्यक कार्य या यात्रा करने के लिए एक दो दिन के अन्दर ही निकाला जाता है। और जो दो-चार घड़ी तक ही रहता है।

चौघड़ी—वि० [हिं० चौ+घेरा] जिसकी अथवा जिसमें चार तहें या परतें हों।

चौघर†—वि० [देश०] घोड़ों की सपाट चाल। चौफाल। पोइयाँ। सरपट।

पुं० दे० 'चौघड़'।

चौघरा—पुं०=चौघड़ा।

चौघोड़ी—स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ा] वह गाड़ी जिसमें चार घोड़े जोते जाते हों। चौकड़ी।

चौचंद–.पुं० [हिं० चौथ+चंद वा चवाव+चंड] १. कलंक-सूचक चर्चा। अपवाद। बदनामी। २. शोर। हल्ला। ३ क्रीड़ा।

चौचंदहाई–.वि० स्त्री० [हिं० चौचंद+हाई (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसे दूसरों की निंदा करने का व्यसन हो।

चौज—वि० [हिं० चोज ?] सुन्दर। अच्छा। उदा०—सूणिवाई ! बचन तै कह्या चौज।—नरपतिनाल्ह।

पुं० दे० 'चोज'।

चौजुगी–.स्त्री० [हिं० चौ+सं० युग] चार युगों का काल।

वि० चारों युगों में होने अथवा उन सबसे संबंध रखनेवाला।

स्त्री० सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग इन चारों युगों का समूह।

चौठी—स्त्री० [सं० चतुर्थ] लवनी (ताड़ी का बर्तन) का चतुर्थांश।

चौड़– पुं० [सं० चूड़ा+अण्] चूड़ाकरण संस्कार।

†वि०=चौपट।

चौड़-कर्म (न्)—पुं० [कर्म० स०] चूड़ाकर्म। मुंडन।

चौड़ा—वि० [सं० चृद् (?) चतर् (चडर>] चडड); दे० प्रा० चाऊड; बं उ० पं० चौड़ा; गु० चोड़ूं मरा० चौडे] [स्त्री० चौड़ी, भाव० चौड़ाई] १. जिसके दोनों पार्श्वों के बीच में अधिक विस्तार हो। लंबाई के बल में नहीं, बल्कि उसके विपरीत बल में अधिक विस्तृत। जैसे—चौड़ी नहर। २. जो सँकरा न हो बल्कि खुलता हो। जैसे—चौड़ी गली।

पुं० [सं० चुरा] अनाज रखने का गड्ढा।

चौड़ाई—स्त्री० [हिं० चौड़ा+ई (प्रत्य०)] १. चौड़े होने की अवस्था या भाव। २. वह मान जिससे यह पता चलता हो कि कोई वस्तु कितनी चौड़ी है। जैसे—कपड़े की चौड़ाई दो गज है।

चौड़ान—स्त्री० [हिं० चौड़ा+आन (प्रत्य०)] चौड़ाई। (दे०)

चौड़ाना—स० [हिं० चौड़ा] १. चौड़ा करना। फैलाना। २. व्यर्थ का विस्तार करना। जैसे—बात चौड़ाना।
अ० चौड़ा होना। उदा०—नद चौड़ात चले आगें नित आवैं।—रत्नाकर।

चौड़ाव—पुं०=चौड़ाई। (दे०)

चौड़े—क्रि० वि०[हिं० चौड़ा] खुले आम। सब के सामने। उदा०—कोई कहै छाने कोई कहै चौड़े लियोरी बजंता ढोल।—मीराँ।

चौडोल—पुं० १. दे० 'चंदोल' (सवारी)। २. दे० 'चौघड़ा' (बाजा)।

चौतगा—पुं० [हिं० चौ+तागा] वह डोरा जिसमें चार तागे एक साथ बटे गये हों।

चौतनिया—स्त्री०=चौतनी।

चौतनी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+तनी=बंद] १. पुरानी चाल की बच्चों की टोपी जिसमें चार तनियाँ या बंद लगते थे। २. अंगिया। चोली।

चौतरका—पुं० [हिं० चौ+तड़क=लकड़ी, धरन] एक प्रकार का खेमा या तंबू।

चौतरा—पुं० [हिं० चौ (चार)+तार] सारंगी की तरह का एक बाजा जिसमें चार तार लगे होते हैं।
†वि० चार तारोंवाला।
पुं०=चबूतरा।

चौतरिया—स्त्री० [हिं० चौतरा] छोटा चबूतरा।
वि० चार तारोंवाला।

चौतही—स्त्री० [हिं० चौ=चार+तह] एक प्रकार का मोटा और बहुत लंबा खेस जो चार तह करके ओढ़ा-बिछाया जाता है। चौतरा।

चौतार—पुं० [सं० चतुष्पद] चौपाया। उदा०—प्यंडै होइ तौ पद की आसा, वंनि निपजै चौतारं।— गोरखनाथ।

चौताल—पुं० [हिं० चौ+ताल] १. मृदंग बजाने का एक ताल जिसमें चार आघात और दो खाली होते हैं। २. उक्त ताल पर गाया जानेवाला कोई गीत।

चौताला—पुं० [हिं० चौताल] संगीत में वह ताल जिसमें चार ताल होते हैं।

चौताली—स्त्री० [देश०] कपास के पौधे की कली जिसमें से रूई निकलती है। ढेंढी। डोंडा।

चौतुका—वि० [हिं० चौ+तुक] जिसमें चार तुक हों।
पुं० एक प्रकार का छन्द जिसके चारों चरणों में अनुप्रास होते अथवा तुक मिलते हैं।

चौथ—स्त्री० [सं० चतुर्थी, प्रा० चउत्थि, हिं० चउथि] १. चौथाई अंश या भाग। चतुर्थांश। २. मराठी शासन काल का एक प्रकार का कर जो अधीनस्थ भू-खंडों से उनकी आय के चतुर्थांश के रूप में लिया जाता था। ३. चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।
पद—चौथ का चांद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चंद्रमा जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि इसे देखने से झूठा कलंक लगता है।
†वि०=चौथा।

चौथपन—पुं० [हिं० चौथा+पन] १. मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था। संन्यास आश्रम में रहने का समय। २. बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

चौथा—वि० [सं० चतुर्थ, प्रा० चउत्थ] [स्त्री० चौथी] क्रम या गिनती में चार की जगह पड़नेवाला।
पुं० कुछ बिरादरियों में मृतक की मृत्यु के चौथे दिन होनेवाला एक सामाजिक कृत्य जिसमें आपस-दारी के लोग एकत्र होकर मृतक के पुत्र अथवा विधवा को कुछ धन या वस्त्र देते हैं।

चौथाई—पुं० [हिं० चौथा+ई (प्रत्य०)] किसी वस्तु के चार सम अंशों या भागों में से कोई एक अंश या भाग। चौथा भाग।

चौथि—स्त्री०=चौथ।

चौथिआई—पुं०=चौथाई।

चौथिया—पुं० [हिं० चौथा] १. हर चौथे दिन अर्थात् तीन-तीन दिन के अन्तर पर आनेवाला ज्वर। २. वह व्यक्ति जो किसी व्यवसाय, संपत्ति आदि के चौथे हिस्से का मालिक हो। चौथे हिस्से का हकदार।

चौथी—स्त्री० [हिं० चौथा] १. हिन्दुओं में विवाह के चौथे दिन होनेवाली एक रसम जिसमें वर और कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं।
पद—चौथी का जोड़ा=वस्त्रों का वह कुलक जो वर के घर से कन्या के लिए चौथी के दिन आता है।
मुहा०—चौथी खेलना=चौथी के दिन दूल्हा-दुलहिन का एक दूसरे के ऊपर मेवे, फल आदि फेंकना। **चौथी छूटना**=चौथी के दिन वर-कन्या के हाथों के कंगन खुलना।
२. फसल का चौथाई अंश जो पहले जमींदार को मिला करता था।

चौथैया—पुं० [हिं० चौथाई] चौथाई भाग। चतुर्थांश।
स्त्री० एक प्रकार की छोटी नाव।

चौदंता—वि० [सं० चतुर्दंत] [स्त्री० चौदंती] १. चार दाँतोंवाला। जिसके चार दाँत हों। २. (पशु) जिसके अभी चार ही दाँत निकले हों; फलतः जिसकी जवानी अभी आरभ होने लगी हो। ३. छोटी उमर का और अल्हड़।
पुं० एक प्रकार का हाथी।

चौदंती—स्त्री० [हिं० चौदंता] १. नव-यौवन के समय का अल्हड़पन। २. ढिठाई। धृष्टता। ३. अक्खड़पन। उद्दंडता।

चौदश†—स्त्री०=चौदस।

चौदस—स्त्री० [सं० चतुर्दशी, प्रा० चउद्दशि] चांद्रमास के कृष्ण या शुक्ल पक्षी की चौदहवीं तिथि। चतुर्दशी।

चौदह—वि० [सं० चतुर्दश, प्रा० चउद्दश, अप० पा० चउद्दह] जो गिनती में दस से चार अधिक हो।
पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१४।

चौदहवाँ—वि० [हिं० चौदह+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में चौदह के स्थान पर पड़नेवाला।
पद—चौदहवीं रात का चांद—(क) शुक्ल पक्ष की चौदस की रात का चाँद। (ख) बहुत ही सुन्दर व्यक्ति।

चौदाँत—वि० [हिं० चौ=चार+दाँत] (दो हाथी) जिनके दाँत लड़ने के लिए आपस में आमने-सामने आकर मिल गये हों।
पुं० हाथियों की लड़ाई।

चौदांवा—वि० [हिं० चौ=चार+दाँव] जिसमें चार दाँव एक साथ लगते हों।
पुं० जूए का वह खेल जिसमें चार दाँव एक साथ लगाये जाते हैं।

चौदा†—पुं०=चौना।

चौदानिया—स्त्री०=चौदानी।

चौदानी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+दाना+ई (प्रत्य०)] १. कान में पहनने की एक प्रकार की बाली जिसमें चार पत्तियाँ लगी रहती हैं। २. कान की वह बाली जिसमें चार मोती पिरोये रहते हैं।

चौदायनि—पुं० [सं०] एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

चौदौंआ, चौदौवाँ—वि०, पुं०=चौदाँवा।

चौधराई—स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी होने की अवस्था, काम या पद। चौधरीपन।

चौधरात—स्त्री० [हिं० चौधरी] १. चौधराना। २. चौधराई।

चौधराना—पुं० [हिं० चौधरी] १. चौधरी का काम या पद। २. चौधरी का अधिकार या हक।

चौधरानी—स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी की स्त्री।

चौधरी—पुं० [सं० चतुः+धर (=धरनेवाला)] [स्त्री० चौधरानी, चौधराइन] १. किसी वर्ग, संप्रदाय या समाज का प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। मुखिया। २. लाक्षणिक अर्थ में, वह व्यक्ति जो अगुआ होकर हर काम में हाथ डालता हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्रायः सभी जातियों और वर्गों में कुछ लोग चौधरी बना या मान लिये जाते थे, जो आपस के झगड़ों का निपटारा करते थे।

चौधारी*—स्त्री० [हिं० चौ=चार+धारा] एक रंग का कपड़ा जिस पर दूसरे रंगों की आड़ी तथा बेड़ी धारियाँ या रेखाएँ छपी या बनी हुई हों।

चौना—पुं० [सं० च्यवन] वह ढालुआँ स्थान जिस पर चरस या मोट का पानी उँडेला जाता है।

चौनावा—वि० [हिं० चौ+नाव (रेखा)] [स्त्री० चौनावी] (शस्त्र आदि का वह फल) जिस पर चार नावें अर्थात् खाँचे या लंबे गड्ढे बने हों। जैसे—चौनावा खड्ग, चौनावी तलवार।

चौप†—पुं०=चोप।

चौपई—स्त्री० [सं० चतुष्परी] १५ मात्राओं का एक प्रकार का छंद जिसके चरणों के अन्त में एक-एक गुरु और एक-एक लघु होता है।

चौपखा†—पुं० [हिं० चौ=चार+सं० पक्ष, हिं० पाख] १. चारों ओर के पाखे या दीवारें। २. चहारदीवारी। परिखा।

चौपग—पुं० [हिं० चौ+पग] वह जिसके चार पैर हों। चौपाया।

चौपट—वि० [हिं० चौ=चार+पट=किवाड़ा, या हिं० चापट] १. चारों ओर से खुला हुआ; और फलतः अरक्षित। जैसे—घर के सब दरवाजे चौपट खुले छोड़कर चल दिये। २. (कार्य या वस्तु) जो नष्ट-भ्रष्ट हो गई हो। जैसे—उन्होंने सारा खेल (या मकान) चौपट कर दिया। ३. (व्यक्ति) जो बुरे संग-साथ के कारण बुरी आदतें सीखकर बिलकुल बिगड़ गया या भ्रष्ट हो चुका हो।

चौपट चरण—पुं० [हिं० चौपट+सं० चरण] वह व्यक्ति जिसके कहीं पहुँचने अथवा किसी काम में हाथ लगाने पर सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाता हो। (परिहास और व्यंग्य)

चौपटहा, चौपटा—वि० [हिं० चौपट+हा (प्रत्य०)] १. किया-धरा काम चौपट करनेवाला। २. तोड़-फोड़ या नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला।

चौपड़—स्त्री० [सं० चतुर्ष्पट, प्रा० चउप्पट] १. चौसर (खेल और बिसात)।

मुहा०—चौपड़ मँड़ना, मढ़ना या माँड़ना=चौपड़ खेलने के लिए बिसात बिछाना।

२. खाट, पलंग आदि की बुनावट का वह प्रकार जिसमें चौसर की आकृति बनी होती है। ३. मन्दिर, महल आदि के आँगन की उक्त प्रकार की बनावट। जैसे—मन्दिर के चौपड़ में....भाले गड़वाये।—वृन्दावनलाल वर्मा।

चौपत—वि० [हिं० चौ=चार+परत] १. चार तहों या परतों में लगाया या लपेटा हुआ। २. जिसकी या जिसमें चार तहें हों।

पुं० [?] पत्थर का वह टुकड़ा जिसकी कील पर कुम्हार का चाक रखा रहता है।

चौपतना, चौपताना—स० [हिं० चौपात] १. किसी चीज विशेषतः कपड़े आदि की चार तहें लगाना। २. लपेटकर तह लगाना।

चौपतिया—वि० [हिं० चौ+पत्ती] १. चार पत्तोंवाला। जिसमें चार पत्ते हों। २. जिसमें चार पत्तियाँ एक साथ दिखाई गई हों। जैसे—चौपतिया फूल, चौपतिया कसीदा।

स्त्री० १. कसीदे, चित्रकला आदि में, ऐसी बूटी जिसमें चार पत्तियाँ बनी हों। २. एक प्रकार का साग। ३. एक प्रकार की घास जो गेहूँ की खेती को हानि पहुँचाती है।

चौपथ—पुं० [सं० चतुष्पथ] १. चौराहा। चौमुहानी। २. वह पत्थर जिसकी कील पर कुम्हार का चाक रहता है।

चौपद (ा)—पुं० [सं० चतुष्पद] १. चार पैरोंवाला पशु। चौपाया। २. एक प्रकार का छंद। चतुष्पद।

चौपया—पुं०=चौपाया।

चौपर—स्त्री०=चौपड़।

चौपरतना—स०=चौपतना।

चौपल—पुं०=चौपथ।

चौपहरा—वि० [हिं० चौ=चार+पहर] [स्त्री० चौपहरी] १. चार पहर का। चार पहर-संबंधी। २. चार-चार पहरों के अंतर पर होनेवाला। ३. चारों पहर अर्थात् हर समय (दिन भर या रात भर) होता रहनेवाला। जैसे—चौपहरी नौबत बजना।

चौपहल—वि० [हिं० चौ+फ़ा० पहलू, सं० फलक] जिसके या जिसमें चार पहल या पार्श्व हों। जिसमें लंबाई, चौड़ाई और मोटाई हो। वर्गात्मक।

चौपहला—पुं०=चौपाल (डोला)।

वि०=चौपहल।

चौपहलू†—वि०=चौपहल।

चौपहिया—वि० [हिं० चौ+पहिया] चार पहियोंवाला। जिसमें चार पहिये हों। जैसे—रेल-गाड़ी का चौपहिया डिब्बा।

पुं० चार पहियोंवाली गाड़ी।

चौपहिलू†—वि०=चौपहल।

चौपा†—पुं०=चौपाया।

चौपाई—स्त्री० [सं० चतुष्पदी] चार चरणों का एक प्रसिद्ध मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं।

†स्त्री० चारपाई।

चौपाड़†—पुं०=चौपाल।

चौपाया—पुं० [सं० चतुष्पाद, चतुष्पदी; प्रा० चौप्पअ, चउपाइया; बँ० उ० चौपाया; सिं० चौपाई; गु० चोपाई] ऐसा पशु जो चारों (दो अगले और दो पिछले) पैरों से चलता हो। जैसे—गाय, घोड़ा, हिरन आदि।

वि० जिसमें चार पाये या पावे हों।

चौपार†—स्त्री०=चौपाल। उदा०—सब चौपारिन्ह चंदन खंभा।—जायसी।

चौपाल—पुं० [हिं० चौबार] १. ऊपर से छाया हुआ और चारों ओर से खुलता स्थान जहाँ देहात के लोग बैठकर बात-चीत, विचार-विमर्श आदि करते हैं। २. छायादार बड़ा चबूतरा। ३. देहाती मकानों के आगे का दालान या बरामदा। ४. एक प्रकार की पालकी जो ऊपर से छायादार पर चारों ओर से खुली हुई होती है।

चौपुरा—पुं० [हिं० चौ=चार+पुर=चरस+आ (प्रत्य०)] वह बड़ा कूआँ जिस पर एक साथ चार पुर या मोट चलते अथवा चल सकते हों।

चौपेजी—वि० [हिं० चौ (चार)+अं० पेज] १. चार पृष्ठोंवाला। २. (पुस्तकों आदि की छपाई में कागज) जिसके पूरे ताव को दो बार मोड़कर चार सम पृष्ठों में विभक्त किया गया हो। (क्वार्टो)

चौपैया—पुं० [सं० चतुष्पदी] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अन्त में गुरु होता है।

चौफला—वि० [हिं० चौ+फल] चाकू या ऐसा ही और कोई धारदार (अस्त्र) जिसमें चार फल लगे हों।

चौफुलिया—वि० [हिं० चार+फूल] १. (पौधा) जिसमें चार फूल एक साथ निकलते हों। २. (अंकन, चित्रण या रचना) जिसमें चार फूल एक-साथ बने या बनाये गये हों।

चौफेर—क्रि० वि० [हिं० चौ+फेर] चारों ओर। चारों तरफ।

वि० चार ओर फेरा या मोड़ा हुआ।

चौफेरी—स्त्री० [हिं० चौ+फेरा] १. चारों ओर लगाई जानेवाली फेरी। परिक्रमा। २. मुग्दर भाँजने का एक विशिष्ट प्रकार।

क्रि० वि० चारों ओर।

चौबंदी—स्त्री० [हिं० चौ+बंदी] १. कोई चीज चारों ओर से बाँधने की क्रिया या भाव। जैसे—पल्ले की चौबंदी। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का पहनावा जिसके दोनों तरफ दो-दो बंद लगते हैं। बगलबंदी। ३. घोड़े के चारों सुमों में नाल जड़ने की क्रिया।

चौबंसा—पुं० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण और एक यगण रहता है।

चौबगला—पुं० [हिं०] १. कुरती, अंगे आदि में दोनों ओर बगल के नीचे और कली के ऊपर पड़नेवाला भाग।

क्रि० वि० चारों ओर।

वि० [स्त्री० चौबगली] जिसमें चार बगलें या पार्श्व हों।

चौबगली—स्त्री० [हिं० चौ+अ० बगल] बगलबंदी नाम का पहनावा।

चौबच्चा†—पुं०=चहबच्चा।

चौबरदी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+बर्द] वह गाड़ी जिसमें चार बरद या बैल जुते या जुतते हों।

चौबरसी—स्त्री० [हिं० चौ+बरसी] १. वह उत्सव या कृत्य जो किसी घटना के चौथे बरस होता हो। २. हिंदुओं में किसी मृतक की मरण तिथि से चौथे वर्ष होनेवाला श्राद्ध।

चौबरा—पुं० [हिं० चौ=चार+बखरा] जमींदार को मिलनेवाला फसल में का चौथाई अंश।

चौबा—पुं० [स्त्री० चौबाइन]=चौबे।

चौबाई—स्त्री० [हिं० चौ+बाई=हवा] १. चारों ओर से बहनेवाली हवा। २. चारों ओर फैलनेवाली खबर या होनेवाली धूम-धाम। ३. चारों ओर फैलनेवाली निन्दा या बदनामी।

चौबाछा—पुं० [हिं० चौ=चार+बाछना=कर या चंदा वसूल करना] मुगल शासन-काल में पाग (प्रति मनुष्य), ताग (प्रति बालक), कूरी (प्रति घर) और पूँछी (प्रति चौपाया) के हिसाब से लगनेवाला एक कर।

चौबार†—पुं०=चौबारा।

चौबारा—पुं० [हिं० चौ (चार)+बार (द्वार)] १. वह कमरा जिसमें चार विशेषतः चारों ओर एक-एक दरवाजा हो। २. मकान के ऊपरी तल्ले पर का कमरा जिसके चारों ओर प्रायः दरवाजे होते हैं।

क्रि० वि० चौथी बार। जैसे—वे चौबारा भी आ सकते हैं।

चौबाहा†—वि० [हिं० चौ+बाहना (जोतना)] (खेत) जो बोने से पहले चार बार जोता गया हो।

पुं० चार बार खेत जोतने की क्रिया या भाव।

चौबिस—वि०=चौबीस।

चौबीस—वि० [सं० चतुर्विंशति; प्रा० चउवीस, चव्वीस, सिं० चोवीह; पं० चौबी;] जो गिनती में बीस से चार अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२४।

चौबीसवाँ—वि० [हिं० चौंबीस+वाँ] क्रम या गिनती में चौबीस के स्थान पर पड़नेवाला।

चौबे—पुं० [सं० चतुर्वेदी, प्रा० चउब्वेदी] [स्त्री० चौबाइन] व्रज-मंडल में रहनेवाले चतुर्वेदी ब्राह्मण।

चौबोला—पुं० [हिं० चौ+बोल] १५ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में लघु-गुरु होता है।

चौभड़—स्त्री०=चौघड़। (दे०)

चौभी—स्त्री० [हिं० चोभना] हल में की वह लकड़ी जिसमें फाल जड़ा होता है।

चौमंजिला—वि० [हिं० चौ=चार+फा० मंजिल] (भवन) जिसमें चार मंजिलें या तल्ले हों। चार खंडोंवाला।

चौमसिया—वि० [हिं० चौमासा+इया (प्रत्य०)] १. चौमासे से संबंध रखनेवाला। चौमासे का। २. चौमासे में होनेवाला।

चौमहला—वि० [हिं० चौ+महल] चार खंडों या तल्लोंवाला। चौमंजिला (मकान)।

चौ-माप—स्त्री० [हिं० चौ (=चार)+सं० माप] कोई चीज नापने के ये चार अंग—लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई तथा काल या इन चारों का समन्वित रूप। चारों आयाम। विशेष दे० 'आयाम'।

चौ-मापी—वि० [हिं० चौ-माप] चार आयामोंवाला। उदा०—वीर मुझे वितरण करना है चौमापी धरती अम्बर को।—बच्चन।

चौमार्ग—पुं० [सं० चतुर्मार्ग] चौरस्ता। चौमुहानी।

चौमास—पुं०=चौमासा।

चौमासा—पुं० [सं० चतुर्मास] १. वर्षाऋतु के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, और आश्विन। चातुर्मास। २. उक्त ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। ३. किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने का कृत्य या उत्सव।

वि० १. चातुर्मास में होनेवाला। २. चार महीनों में होनेवाला।

वि० पुं० दे० 'चौमसिया' (तौल)।

चौमासी—स्त्री० [हिं० चौमासा+ई (प्रत्य०)] बरसात में गाया जानेवाला एक प्रकार का शृंगारिक गीत।

वि०=चौमासा।

चौमुख—क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] चारों ओर। चारों तरफ।

वि०=चौमुखा।

चौमुखा—वि० [हिं० चौ=चार+मुख=ओर] [स्त्री० चौमुखी] १. जिसके चारों ओर चार मुख हों। जैसे—चौमुखा दीया।

मुहा०—चौमुखा दीया जलाना=दीवाला निकालना। दिवालिया बनना।

२. जो चारों अथवा सब ओर उन्मुक्त या प्रवृत्त हो। जैसे—चौमुखी लड़ाई।

चौमुहानी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+फा० मुहाना] वह स्थान जहाँ से चारों ओर चार रास्ते जाते हों। चौरस्ता। चौराहा।

चौमेंड़ा—पुं० [हिं० चौ=चार+मेंड़+आ (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ पर चार खेतों की मेंड़ें या सीमाएँ मिलती हों।

चौमेखा—वि० [हिं० चौ=चार+मेख] जिसमें चार मेखें या कीले हों। चार मेखोंवाला।

पुं० प्राचीन काल का एक कठोर दंड जिसमें अपराधी के प्राण लेने के लिए उसको जमीन पर चित लेटाकर उसकी हथेलियों और तलुए जमीन में मेखों से इस प्रकार ठोंक देते थे कि वह उठ-बैठ या हिल-डोल नहीं सकता था।

चौरंग—वि० [हिं० चौ=चार+रंग] १. चार रंगोंवाला। चौरंगा। २. चारों ओर समान रूप से होनेवाला। ३. सब प्रकार से एक-जैसा। ४. तलवार से ठीक, पूरा या साफ कटा हुआ।

पुं० तलवार चलाने का वह ढंग या प्रकार जिसमें कड़ी से कड़ी अथवा भारी से भारी चीज एक ही हाथ से ठीक और पूरी कट जाती अथवा मुश्किल से मुश्किल वार एक ही हाथ में पूरा उतरता या सफल होता है।

चौरंगा—वि० [हिं० चौ+रंग] [स्त्री० चौरंगी] चार रंगोंवाला।

चौरंगिया—पुं० [हिं० चौ+रंग] मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

चौर—पुं० [सं० चुरा+ण] १. दूसरों की चीजें चुरानेवाला। चोर। २. चोर नामक गंध द्रव्य। ३. चोर-पुष्पी।

पुं० [सं० चुंडा?] वह गड्ढा या ताल जिसमें बरसाती पानी इकट्ठा होता हो। खादर।

चौरई†—स्त्री०=चौराई।

चौर-चार—स्त्री० [?] चहल-पहल। (बुन्देल०) उदा०—बड़ी चौर-चार होगी।—वृन्दावनलाल वर्मा।

चौरठ, चौरठा†—पुं०=चौरेठा।

चौरस—वि० [सं० चतुरस्र, प्रा० चउरस] १. जो चारों ओर से एक रस हो। सब तरफ से एक-जैसा। २. (स्थल) जिसके सब बिंदु एक समान ऊँचाई के हों। ३. जिसका ऊपरी तल सम हो, कहीं पर ऊँचा-नीचा या ऊबड़-खाबड़ न हो। जैसे—चौरस जमीन। ४. चौपहल।

पुं० १. ठठेरों का एक औजार जिससे वे बरतनों का तल खुरचकर चौरस या सम करते हैं। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक यगण होता है। इसको 'तनुमध्या' भी कहते हैं।

चौरसा—वि० [हिं० चौ+रस] जिसमें चार प्रकार के रस या स्वाद हों। चार रसोंवाला।

पुं० १. चार रुपए भर का बाट। २. मन्दिर में ठाकुर या देवता की शय्या पर बिछाने की चादर।

चौरसाई—स्त्री० [हिं० चौरसाना] १. जमीन आदि चौरस करने या होने की अवस्था या भाव। चौरसपन। २. जमीन चौरस करने की पारिश्रमिक या मजदूरी।

चौरसाना—स० [हिं० चौरस] चौरस करना। बराबर करना। किसी वस्तु का तल चौरस या सम करना या बनाना।

चौरसी—स्त्री० [हिं० चौरस] १. बाँह पर पहनने का एक प्रकार का चौकोर गहना। २. अन्न रखने का कोठा या बखार।

चौरस्ता—पुं० [हिं० चौ+फा० रास्ता] वह स्थान जहाँ पर चार रास्ते मिलते हों अथवा चार ओर रास्ते जाते हों। चौराहा।

चौरहा†—पुं०=चौराहा।

चौरा—पुं० [सं० चतुर, प्रा० चउर] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १. चबूतरा। बेदी। २. चबूतरे या वेदी के रूप में बनी हुई वास्तु-रचना जिसमें किसी देवी-देवता, भूत-प्रेत, अथवा मृत साधु-सन्त या सती-साध्वी का निवास माना जाता है और इसी लिए जिसकी पूजा की जाती है।

†पुं० [सं० चाभर] सफेद पूंछवाला बैल।

†पुं० [?] बोड़ा या लोबिया नाम की फली।

स्त्री० [सं० चुरा+ण—टाप्] गायत्री का एक नाम।

चौराई—स्त्री० [?] १. एक प्रकार का साग। चौलाई।

मुहा०—चौराई बाँटना=उदारतापूर्वक कोई चीज चारों ओर देते या दिखाते फिरना। (बाजारू)

२. एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने चितकबरे, पूँछ ऊपर से लाल और नीचे से सफेद, गला मटमैले रंग का और चोंच तथा पैर पीले रंग के होते हैं। ३. एक रीति जिसमें किसी व्यक्ति को निमंत्रण देते समय उसके घर के द्वार पर हल्दी में रंगे हुए चावल रखे या छिड़के जाते हैं।

चौरानबे—वि० [सं० चतुर्नवति, प्रा० चउण्णवइ] जो गिनती या संख्या में नब्बे से चार अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९४।

चौरानयन—पुं० [सं० चौर्य-आनयन] कर, दंड आदि से बचने के लिए कोई चीज चोरी से या छिपाकर एक देश या स्थान से दूसरे देश या स्थान में ले आना या ले जाना। (स्मगलिंग) जैसे—भारत और पाक की सीमा पर होनेवाला चौरानयन।

चौराष्टक—पुं० [सं० चौर—अष्टक, ब० स०] षाड़व जाति का एक संकर राग जो सबेरे के समय गाया जाता है।

चौरासी—वि० [सं० चतुरशीति, प्रा० चउरासीइ] जो गिनती या संख्या में अस्सी से चार अधिक हो।

पुं० १. उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८४। **मुहा०—चौरासी में पड़ना या भरमना**=बार-बार जनमना और मरना। चौरासी लाख योनियों में एक-एक रूप छोड़कर और हर बार दूसरा रूप धारण कर आना-जाना। इस लोक में आत्मा का बार-बार आना-जाना।

२. घुँघरुओं का वह गुच्छा जो नाचते समय पैर में पहनते हैं। ३. छोटा घुँघरू। ४. पत्थर काटने की एक प्रकार की टाँकी। ५. बढ़इयों की एक प्रकार की रुखानी।

चौराहा—पुं० [हिं० चौ=चार+राह=रास्ता] वह स्थान जहाँ चारों ओर से आनेवाले मार्ग मिलते हों अथवा चारों दिशाओं को मार्ग जाते हों। चौमुहानी। चौरस्ता।

चौरिंदी *वि०=चउरिंदी।

चौरी—स्त्री० [सं० चोर+ङीष्] १. चुराने की क्रिया या भाव। चोरी। २. गायत्री देवी का एक नाम।

स्त्री० [हिं० चौरा का स्त्री० रूप] १. छोटा चबूतरा। २. विवाह मंडप।

स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल से रंग बनता और चमड़ा सिझाया जाता है। २. एक प्रकार का पेड़ जो हिमालय में होता है और जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

स्त्री० [सं० चाभर] छोटा चँवर।

चौरेंठा—पुं० [हिं० चाउर (=चावल)+पीठा] चावल को महीन पीसकर बनाया जानेवाला चूर्ण जो कई प्रकार के पकवान बनाने के काम आता है।

चौर्य—पुं० [सं० चोर+ष्यञ्] १. चोर होने की अवस्था या भाव। २. चीजें चुराने की क्रिया या भाव। चोरी।

पुं०=चोल (देश)।

चौर्य-रत—पुं० [मध्य० स०] गुप्त मैथुन।

चौर्य-वृत्ति—स्त्री० [मध्य० स०] १. दूसरों का माल चुराते रहने का स्वभाव। २. चुराये हुए माल से जीविका चलाना।

चौल-कर्म (न्)—पुं० [सं०चौल=चौड+कर्मन्, कर्म० स०] चूड़ाकर्म। मुंडन।

चौ-लड़ा—वि० [हिं० चौ+लड़] [स्त्री० चौ-लड़ी] जिसमें चार लड़ या मालाएँ हो। जैसे—चौ-लड़ा झुमका या हार।

चौला—पुं० [देश०] एक लता और उसके वीज। वोड़ा। लोबिया।

चौलाई—स्त्री० [?] १.एक पौधा जिसका साग खाया जाता है। उदा०—चौलाई लाल्हा अरु पोंई। मध्य मेलि निबुआन निचोई।—सूर। २. छोटी-छोटी पत्तियोंवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्तों का साग बनाया जाता है। ३. इस पौधे के पत्ते जिनका साग बनता है।

चौलावा—पुं० [हिं० चौ+लाना=लगाना] वह बड़ा कूआँ जिसमें एक साथ चार मोट चल सकें।

चौलि—पुं० [सं० चौल+इञ्] एक प्राचीन ऋषि।

चौलुक्य—पुं० [सं० चुलुक+यञ्] १. चुलुक ऋषि के वंशज। २. दे० 'चालुक्य'।

चौली—पुं० [देश०] बोड़ा या लोबिया नाम की फली।

चौवन—वि० [सं० चतुःपञ्चाशत्, पा० चतुपञ्जासो, प्रा० चउवराणं] जो गिनती या संख्या में पचास से चार अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५४।

चौवा—पुं० =चौआ।

चौवाई—स्त्री०=चौबाई।

चौवालीस—वि० [सं० चतुश्चत्वारिंशत्, पा० चतुचत्तालीसति, प्रा० चउव्वालीसइ] जो गिनती या संख्या में चालीस से चार अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—४४।

चौस—पुं० [हिं० चौ=चार+स (प्रत्य०)] १. वह खेत जो चार बार जोता गया हो। २. खेत को चौथी बार जोतने की क्रिया। चौथी जोताई।

पुं० चूर्ण। बुकनी।

चौसठ—वि० दे० 'चौंसठ'।

चौंसठ-घड़ी—पद [हिं०] सारा दिन। दिन और रात। आठों पहर। जैसे—चौसठ घड़ी रोना ही बदा है।

चौसर—पुं० [हिं० चौ=चार+सर=बाजी अथवा चतुस्सरि] १. एक प्रकार का खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार-चार गोटियों और तीन पासों से खेला जाता है। चौपड़। नर्दबाजी। २. उक्त खेल की बिसात। ३. चार लड़ोंवाला हार। ४. खेल में लगातार चार बार होनेवाली जीत। चार सरों की जीत। ५. ताश के नकश नामक खेल में किसी खिलाड़ी के हाथ में एक साथ तीन तसवीरें आना जिससे चौगुनी जीत होती है।

चौसरी—स्त्री०=चौसर।

चौसल्ला—पुं० [हिं० चौ =चार+सालना] १. चौकोर जमीन पर विशेषतः आँगन की चारों दीवारों पर लंबाई के बल रखे हुए चार शहतीर जिन पर इमारत खड़ी की जाती है। २. उक्त शहतीरों के ऊपर बनी हुई इमारत।

चौसिंगा—वि० [हिं० चौ =चार +सींग] चार सींगोंवाला। पुं० एक प्रकार का हिरन जिसके चार सींग होते हैं।

चौसिंघा—वि०, पुं०=चौसिंगा।

पुं०=चौसिंहा।

चौसिंहा—पुं० [हिं० चौ=चार+सींव=सीमा] वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमाएँ मिलती हों।

चौहट, चौहट्ट—पुं०=चौहट्टा।

चौहट्टा—पुं० [हिं० चौ =चार+हाट] १. वह स्थान जिसके चारों ओर हाट या दुकानें हों। २. उक्त प्रकार का बाजार। ३. चौरस्ता। चौमुहानी।

चौहड़†—पुं०=चौघड़ (दे०)।

चौहत्तर—वि० [सं० चतुःसप्तति, प्रा० चौहत्तरि] जो गिनती या संख्या में सत्तर से चार अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७४।

चौहद्दी—स्त्री० [हिं० चौ=चार+हद=सीमा] १. किसी क्षेत्र या

स्थान के चारों ओर (पूरब, पच्छिम, उत्तर और दक्खिन) की सीमा। जैसे—खेत या मकान की चौहद्दी २. किसी मकान या जमीन के चारों ओर पड़नेवाले मकानों, जमीनों, सड़कों आदि का विस्तृत विवरण ।

स्त्री० [सं० चातुर्भद्र, प्रा० चाउहद्द+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का अवलेह जो जायफल, पिप्पली, काकड़ासिंगी और पुष्करमूल को पीसकर शहद में मिलाने से बनता है ।

चौहरा—वि० [हिं० चौ=चार+हर (प्रत्य०)] [स्त्री० चौहरी] १. जिसमें चार तहें या परतें हों। जैसे--चौहरा कपड़ा। २. चौगुना । पुं० १. एक में बँधी हुई एक ही प्रकार की चार चीज़ें। जैसे--पानों का चौहरा। २. दे० 'चौघड़ा ।'

चौहलका—पुं० [चौ=चार+फा० हल्कः =घेरा ?] गलीचे की एक प्रकार की बुनावट ।

चौहान—पुं० [हिं० चौ=चार+भुजा] अग्निकुल के अंतर्गत क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा जो प्रायः उत्तर भारत में निवास करती है ।

चौहें†—क्रि० वि० [देश०] चारों ओर। चारों तरफ।

च्यंतना*--अ० [सं० चिंतन] १. चिंतन करना। २. चिंता करना।

च्यंतामनि—स्त्री० १. दे० 'चेतावनी'। २. दे० 'चिंतामणि।'

च्यवन—पुं० [सं०√च्यु (टपकना) +ल्युट्—अन] १. बूंद-बूंद करके चूना या टपकना। २. [√च्यु+ल्यु—अन] एक प्राचीन ऋषि जो भृगु के पुत्र थे ।

च्यवन-प्राश—पुं० [सं० मध्य० स०] वैद्यक में आँवले के रस से बना हुआ एक प्रकार का अवलेह। कहते हैं कि यह अवलेह पहले-पहल अश्विनी कुमारों ने च्यवन ऋषि का वृद्धत्व और अंधत्व दूर करने के लिए बनाया था।

च्यारि—वि०=चार। उदा०—च्यारि प्रकार पिष्पि बन-वारन ।—चंदवरदाई ।

च्यावन —पुं० [सं०√च्यु+णिच्+ल्युट्—अन] १. चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव । २. निकाल देना ।

च्युत—वि० [सं०√च्यु+क्त] [भाव० च्युति] १. ऊपर से गिरा, चूआ, झड़ा या टपका हुआ। २. अपने उचित या नियत स्थान से उतर, गिर या हटकर नीचे आया हुआ । गिरा हुआ। पतित। जैसे—पद-च्युत। ३. औचित्य की सीमा से हटकर अनौचित्य की सीमा में आया हुआ। जैसे—कर्तव्य-च्युत। ४. नष्ट-भ्रष्ट।

च्युत-मध्यम—पुं० [ब० स०] संगीत में दो श्रुतियों का एक विकृत स्वर जो पीति नामक श्रुति से आरंभ होता है ।

च्युत-षड्ज—पुं० [ब० स०] संगीत में दो श्रुतियों का एक विकृत स्वर जो मंदा नामक श्रुति से आरंभ होता है ।

च्युत-संस्कारता—स्त्री० [सं० च्युत्-संस्कार ब० स०,+तल्—टाप्] १. संस्कार से च्युत होने की अवस्था या भाव। २. साहित्य में काव्य या रचना का वह दोष जो व्याकरण-विरुद्ध पदविन्यास करने पर होता है। साहित्यिक रचना का व्याकरण-संबंधी दोष।

च्युत-संस्कृति—स्त्री० [कर्म०स०]=च्युत-संस्कारता।

च्युतात्मा (त्मन्)—वि० [सं० च्युत—आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा या विचार औचित्य और मर्यादा की सीमा से गिरे हुए या पतित हों।

च्युताधिकार—वि० [सं० च्युत—अधिकार, ब० स०] अपने अधिकार, पद आदि से हटा या हटाया हुआ ।

च्युति—स्त्री० [सं०√च्यु+क्तिन्] १. च्युत होने अर्थात् ऊपर से गिरने, चूने, झड़ने या टपकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. अपने स्थान से हट जाने विशेषतः नीचे आ जाने का भाव। पतन। ३. तत्परतापूर्वक कोई काम न करने की स्थिति। जैसे—कर्तव्य-च्युति। ४. अभाव। कमी। ५. गुदा। मलद्वार। ६. भग। योनि।

च्युप—पुं० [सं०√च्यु+प कित्] मुख। चेहरा।

च्यटा—पुं० [अल्पा० च्यूंटी] च्यूंटी की जाति और प्रकार का, किन्तु आकार में उससे बड़ा कीड़ा।

च्यूंटी—स्त्री० [हिं० चिमटना] एक प्रकार का बहुत छोटा कीड़ा जो गुड़, चीनी आदि या मीठी और रसवाली चीजें खाता है और जमीन आदि में गड्ढ़ा करके तथा उसी में अपना घर बनाकर रहता है।

मुंहा०—च्यूंटी की चाल चलना=बहुत धीरे-धीरे और प्रायः रुक-रुक कर चलना। **च्यूंटी के पर निकलना**=मृत्यु या विनाश का समय समीप आना ।

च्यूड़ा—=चिड़वा ।

च्यूत—पुं० [सं०√च्युत्, पृषो० दीर्घ] आम का पेड़ और फल ।

च्योत—पुं० [सं०=च्युत, पृषो०गुण] च्युत होने की क्रिया या भाव। च्युति।

छ

छ—देवनागरी वर्ण-माला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जो उच्चारण की दृष्टि से तालव्य, अघोष, महाप्राण और स्पष्ट है। कभी-कभी इसका प्रयोग ६ संख्या के सूचक के रूप में होता है।

छंग*—पुं० [हिं० उछंग] गोद।

छंगा—वि० [हिं० छः+उँगली] [स्त्री० छंगी] जिसके हाथ में (पाँच की जगह) छः उँगलियाँ हों।

छँगुनियाँ*—स्त्री०=छँगुली।

छँगुलिया†—स्त्री०=छँगुली।

छंगुली†—स्त्री० [हिं० छोटी+उँगली)] हाथ की सबसे छोटी उँगली।

छंगू—पुं०= छंगा।

छँछला†—पुं० [अनु०] छन छन शब्द (नूपुरों आदि का)।

छंछाल—स्त्री० [?+हिं० उछाल] छोटी धारा। फव्वारा। उदा०—रायजादी घर-अंगणइ छुटे पेट, छुटे पेट छंछाल।—ढोला मारू।

छंछोरी—स्त्री० =छछोरी।

छंट—क्रि० वि० [हिं० झट?] शीघ्र। जल्दी। उदा०—कहै सखी सूंनीर लै रावल छंट उनय।—जटमल।

छँटना—अ०[हिं० छाँटना] १. किसी वस्तु अथवा उसके किसी अंश का कटकर अलग होना। जैसे—सिर के वाल या पेड़ की डाल छँटना। २. किसी का अपने वर्ग या समूह से अलग होना। जैसे—दल में से चार आदमियों का छँटना। ३. किसी वस्तु में से अतिरिक्त, अनावश्यक या फालतू अंश निकलकर अलग होना। जैसे—कार्यालय से कर्मचारियों का छँटना। ४. छिन्न-भिन्न या तितर-वितर होना। जैसे—वादल छँटना, भीड़ छँटना। ५. किसी क्रिया के फल-स्वरूप कम होना या नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे—आँख की लाली छँटना, कपड़े की मैल छँटना। ६. चुन कर अच्छी वस्तुएँ अलग रखी जाना। जैसे—ये अनार छँटे हुए हैं।

पद—छँटा हुआ=चालाक या धूर्त्त (व्यक्ति)।

७. आकार या मोटाई में कम होना। क्षीण होना।

छँटनी—स्त्री०[हिं० छाँटना]१. छाँटने या छाँटे जाने की क्रिया या भाव। छँटाई। २. किसी काम या कार्यालय में लगे हुए आवश्यकता से अधिक कर्मचारियों या कार्यकर्त्ताओं को निकालकर अलग करने या सेवा से हटाने का काम। (रिट्रेन्चमेंट)

छँटवाना—स०[हिं० छाँटना का प्रे० रूप] छाँटने का काम दूसरे से कराना।

छँटाई—स्त्री०[हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० 'छँटनी'।

छँटाना†—स०=छँटवाना।

छँटाव—पुं०[हिं० छाँटना] छाँटने की क्रिया या भाव। छँटाई।

छँटुआ†—वि०[हिं० छाँटना] १. छाँटकर निकाला हुआ। (पदार्थ) २. जिसमें से अच्छी वस्तुएँ छाँटकर निकाल ली गई हों। बचा-खुचा या रद्दी। जैसे—छँटुआ माल।

छँटैल—वि०[हिं० छाँटना] १. छँटुआ। (दे०) २ (व्यक्ति) जो वहुत ही धूर्त्त हो। छँटा हुआ।

छँटौनी†—स्त्री०=छँटनी।

छंड़ना*—स०[हिं० छोड़ना] छोड़ना। छोड़ देना। उदा०—इमि रसाल गुन गरुव, वधि वसुधा महि छंड़हि।—चंदवरदाई।

स०[हिं० छड़ना] १ किसी चीज का रद्दी अंश निकालने के लिए उसे कूटना। जैसे—ओखली में धान छंड़ना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना।

छंड़ाना*—स०[हिं० छुड़ाना] १. मुक्त कराना। २. छीन लेना।

†स०[हिं० छड़ना का प्रे० रूप] छंड़ने का काम दूसरे से कराना।

छंडुआ†—वि०[हिं० छाड़ना] १. छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। २. मुक्त किया हुआ।

छंदःशास्त्र—पुं०[ष० त०] वह शास्त्र जिसमें विभिन्न छंदों के रूप और लक्षण वतलाये जाते हैं।

छंद—पुं०[सं०√छंद् (प्रसन्न करना)+घञ्] १. अभिलाषा। इच्छा। २. अभिप्राय। मतलव। ३. उपाय। तरकीव। युक्ति। ४. तरह-तरह के रूप धारण करने की क्रिया या भाव। ५. कपट। छल। ६. संघात। समूह। ७. गाँठ। बंधन।

पुं०[सं० छंदस् (√छंद्+असुन्)] १. मात्राओं या वर्णों का कोई निश्चित मान जिसके अनुसार किसी पद्य के चरण लिखे जाते हैं। आकार, विस्तार आदि के विचार से वे रूप या साँचे जिनमें पद्यात्मक रचना बनती है। (मीटर)

विशेष—हमारे यहाँ छंद दो प्रकार के होते हैं—मात्रिक और वर्णिक। मात्रिक छंद को मात्रा-वृत्त और जाति छंद तथा वर्णिक को वर्ण-वृत्त भी कहते हैं।

२. वह साहित्यिक पद्यात्मक रचना जो किसी छंद के नियमों के अनुसार लिखी गई हो। ३. विवाह के समय वर द्वारा कन्या पक्षवालों को सुनाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी कविता। ४. वेद। ५ मनमाना आचरण। स्वेच्छाचार।

पुं०[सं० छंदक] कलाई पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।

छंदक—पुं०[सं० √छंद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वासुदेव। २. गौतम बुद्ध का सारथी।

वि० रक्षा करनेवाला।

छंदना—अ०[हिं० छंद] १. छंद बनाना। २. किसी छंद में कविता करना। ३. कविता करना। उदा०—दुःख-प्रद उभय वीच कुछ छंदूं।—निराला।

अ०[हिं० छाँदना का अ० रूप] छाँदा अर्थात् बाँधा जाना। जैसे—गधे या घोड़े का पैर छंदना।

छँदरना†—स०[सं० छंद] धोखा देना। छलना।

छंदवासी (सिन्)—वि० [सं० छंद√वस् (रहना)+णिनि] [स्त्री० छंदवासिनी] उच्छृंखलतापूर्ण और मनमाना आचरण करनेवाला।

छंदा—वि०[हिं० छानना] [स्त्री०छँदी] चरने के लिए छोड़ा हुआ (पशु) जिसके दोनों पैर बँधे हुए हों।

छंदानुवृत्ति—स्त्री०[छंद-अनुवृत्ति तृ० त०] किसी को किसी छल या वहाने से प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

छंदित—भू० कृ०[सं०√छंद+क्त] प्रसन्न किया हुआ।

छंदोगति—स्त्री०[सं० छंदस्-गति, ष०त०] किसी छंद में शब्दों आदि की वह योजना जिसके द्वारा उसके पढ़ने में एक विशेष प्रकार की गति या लय का अनुभव हो।

छंदोदोष—पुं०[सं० छंदस्+दोष, ष० त०] छंद में निश्चित मात्राओं या वर्णों से अधिक या कम मात्राएँ या वर्ण होने का दोष। (छंदशास्त्र)

छंदोबद्ध—वि०[सं० छंदस्-बद्ध स०त०] (साहित्यिक रचना) जो किसी छंद या पद्य के रूप में हो। छंद या पद्य के रूप में बँधा या रचा हुआ (कथन या लेख)। (मीट्रिकल)

छंदोभंग—पुं०[सं० छंदस्-भंग, ष०त०] छंद-रचना में छंदःशास्त्र के नियमों के पालन की वह त्रुटि जिससे उसमें ठीक गति या लय का अभाव होता है अथवा ठीक स्थान पर यति या विराम नहीं होता।

छः—वि०[सं० षट्; पा० प्रा० छः; अप० चह; बं० छय; ओ० छअ; पं० छे, ल्हां० छे, छी; ने० सिं० गु० छ; सिंह० स० सय, ह, हय, मरा० सहा] जो गिनती में पाँच से एक अधिक हो।

पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६।

छई—स्त्री०[हिं० छाना] संतान। औलाद। उदा०—अब की छई की निराली बातें।—कहा०।

†स्त्री०=क्षय (रोग)।

छउँड़ा†—वि०[स्त्री० छउँड़ी]=छौंड़ा (छोकरा)।

छउनी†—स्त्री० =छावनी।

छकड़ा—पुं०[सं शकट] [स्त्री० अल्पा० छकड़ी] माल ढोने की वह छोटी गाड़ी जिसे आदमी या बैल खींचते हों।

छकड़ी—स्त्री०[हिं० छः] १. छः का समूह। २. वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हैं।

छकना—अ०[सं० चकन] [भाव० छाक] १.किसी प्रकार की यथेष्ट प्राप्ति से पूर्ण संतुष्ट होना। २. कौशल, चातुरी आदि में परास्त होना। हारना।

स० कोई चीज इतनी मात्रा में खाना या पीना कि पूरी तृप्ति हो जाय। जैसे—प्रसाद या भोजन छकना।

अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १. चकराना। २. भ्रम में पड़कर परेशान होना।

छकाछक—क्रि० वि०[हिं० छकना] १. पूरी तरह से। भरपूर। २. भली-भाँति।

वि० १. पूर्ण रूप से तृप्त। २. नशे में भरा हुआ।

छकाना—स०[हिं० छकना] १. किसी को कुछ देकर पूरी तरह से तृप्त या संतुष्ट करना। २. किसी को अच्छी तरह खिला-पिलाकर तृप्त करना। जैसे—ब्राह्मणों को हलुआ-पूरी छकाना। ३. किसी को किसी प्रयत्न या प्रयास में परास्त या विफल करने के लिए कौशल, छल आदि से दुःखी और शिथिल करना।

छकित—वि०[हिं० छकना] छका हुआ।

†वि०=चकित।

छकीला*—वि०[हिं० छकना] १. छकनेवाला। जी भरकर कोई चीज खाने या पीनेवाला। २. छका हुआ। तृप्त। उदा०—रंगनि ढरीले हौ छकीले मद-मोह तें।—घनानंद। ३ मस्त। ४. नशे में चूर।

छकौहाँ—वि०[हिं० छकना] १.छकनेवाला। २. छकानेवाला।

छक्करा—पुं०[हिं० छक्का-पंजा या छल] छल-कपट। दाँव-पेंच।

†पुं०=छकड़ा।

छक्कवै*—पुं०[सं० चक्रवर्ती] चक्रवर्ती। उदा०—अनंगपाल छक्कवै, बुद्धि जो इसी उकिल्लिय।—चंदवरदाई।

छक्का—पुं०[सं० षड्क, प्रा० छक्को] १. छः का समूह। २. छः अंगों या अवयवोंवाली वस्तु। ३. चौसर के खेल में पासे का वह पहल जिस पर छः बिंदियाँ होती हैं।

पद—छक्का-पंजा=दाँव-पेंच।

मुहा०—(किसी का या के) छक्का या छक्के छूटना=प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि में पूरी तरह से परास्त या विफल होकर निरुपाय और हताश होना। **छक्का. पंजा भूलना**=परास्त या विफल होकर ऐसी स्थिति में होना कि कोई और युक्ति सूझ न पड़े।

४.सोलही के खेल में वह स्थिति जिसमें छः कौड़ियाँ चित पड़ें। ५. ताश का वह पत्ता जिस पर छः बूटियाँ होती हैं।

छक्का-पंजा—पुं०[हिं० छक्का+पंजा] दाँव-पेंच। छल-कपट।

छक्केबाज—वि०[हिं० छक्का+फा० बाज] [भाव० छक्केबाजी] बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त।

छगड़ा†—पुं० [सं० छागल] बकरा।

†पुं०=छकड़ा।

छगन—पुं० [सं० छगट=एक छोटी मछली] छोटा बच्चा। छोटा बालक।

छगन-मगन—पुं०[हिं० छगन+सं० मग्न] छोटे-छोटे हँसते-खेलते हुए प्यारे बच्चे।

छगना†अ०=छकना।

†स०=छकना।

छगरा—पुं०[सं० छागल] [स्त्री० छगरी] बकरा।

छगलांत्री(त्रिन्)—पुं०[सं० छगलांत्र+इनि ब०स०] भेड़िया।

छगुनिया, छगुनी†—स्त्री०=छँगुली।

छ-गोड़ा—वि० [हिं० छः+गोड़=पैर] [स्त्री० छ-गोड़ी] जिसके छः पैर हों। छः पैरोंवाला।

पुं० मकड़ा (जंतु)।

छग्गर—पुं०[सं० शकट] बोझ ढोने की पुरानी चाल की गाड़ी या ठेला जिसे आदमी खींचते या ठेलते हैं। सग्गड़।

छछंद—वि०[सं० स्वच्छन्द] १. मुक्त। स्वतन्त्र २. स्वच्छन्दता-पूर्वक आचरण करनेवाला। उदा०—छछंद मुक्ता भै भ्रमपारं।—गोरखनाथ।

† पुं०=छल-छंद।

छछार*—पुं०[?] उछले हुए जल-कण। छींटा उदा०--छिछकैं छछारे छिति अधिक उछार के।—सेनापति।

छछिआ†—स्त्री०=छछिया।

छछिया—स्त्री०[हिं० छाछ] छाछ नापने या रखने का एक प्रकार का मिट्टी का छोटा पात्र।

छछूंदर—पुं०[सं० छुच्छुंदर] १. चूहे की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु जिसके शरीर से बहुत दुर्गंध निकलती है। २. पश्चिमी भारत में गले में पहना जानेवाला एक प्रकार का तावीज। ३. एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी जो छोड़े जाने पर छू छू शब्द करती है। ४. जगह-जगह छोटे-छोटे उत्पात या उपद्रव करनेवाला व्यक्ति।

छछेड़—पुं०[हिं० छाछ] घी गरम करने पर उसमें से निकलनेवाला छाछ का अंश।

छछौरी—स्त्री०[हिं० छाँछ+बरी] एक व्यंजन जो छाँछ में बरी डालकर बनाया जाता है।

छजना*—अ०[हिं० सजना] सुशोभित होना। सुन्दर जान पड़ना।

छजली—स्त्री०[हिं० छज्जा] १. छोटा और पतला छज्जा। २.छज्जे के आकार की वह वास्तु-रचना जो प्रायः दीवार के ऊपरी भाग में कुछ आगे या बाहर की ओर निकली हुई होती है। (कारनिस)

छज्जा—पुं०[सं० छाद्यः; हिं० छाजन] १. दीवार से बाहर निकली या बढ़ी हुई छत का भाग। २. ओलती। ओरी।

छज्जू—वि०[हिं० छीजना] छीजा या फटा हुआ (नया कपड़ा)। (दलाल)

छटंकी—स्त्री०[हिं०छटाँक] छटाँक भर तौल का बटखरा।

वि० बहुत छोटा और हलका।

छटकना—अ०[हिं० छूटना]१. आघात, दाब आदि पड़ने पर अपने स्थान से उछलकर वेगपूर्वक किसी चीज का कुछ दूर जा गिरना। जैसे—मुट्ठी में से रुपए छटकना। २. बंधन या वश में से निकल जाना।

जैसे—गाय का छटकना। ३. उछलना। कूदना। ४. वर्ग, समूह आदि में से अलग या दूर रहना या हो जाना। ५. पकड़, बंधन आदि से निकलने या बचने का प्रयत्न करना।

छटकाना--स० [हिं० छटकना] झटके से किसी चीज को दूर गिराना या फेंकना। छटकने में प्रवृत्त करना।

छटपटाना—अ० [अनु०] [भाव० छटपटी] १. बहुत अधिक पीड़ा के कारण हाथ-पैर आदि पटकना। जैसे—दरद के कारण मछली की तरह छटपटाना। २. बहुत अधिक दुःखी होने के कारण बेचैन या व्यग्र होना। ३. किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए बहुत अधिक चिंतित और व्यग्र होना।

छटपटी—स्त्री० [हिं० छटपटाना] १. छटपटाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. घबराहट। ३. मन में होनेवाली आतुरता या आकुलता।

छटाँक—स्त्री० [सं० षट्+टंक; >छटंक>छटाँक] १. एक तौल जो ५ तोले अर्थात् सेर के १६ वें भाग के बराबर होती है। २. उक्त तौल का बटखरा।

छटा—स्त्री० [सं०] वह विशिष्ट शोभा या सौन्दर्य जो दूर तक फैलती और देखनेवालों पर यथेष्ट प्रभाव डाल कर उन्हें मुग्ध करती हो। जैसे--वर्षाऋतु में पर्वत की छटा, देव-मंदिर में मूर्ति की छटा।

छटुआ†—वि० [हिं० छँटना] छाँटकर अलग किया या निकाला हुआ, फलतः निकम्मा या रद्दी।

छट्ठी--स्त्री०=छठी।

छठवाँ—वि० [स्त्री० छठवीं] छठा।

छठा—वि० [सं० षष्ठ, हिं० छः] [स्त्री० छठी] गिनती में छः के स्थान पर पड़नेवाला।

पद—छठे-छमासे=दो, चार, छः महीनों पर एक-आध बार। साल में एक-दो बार, फलतः कभी-कभी।

छठी—स्त्री० [हिं० छठा का स्त्री०] १. चांद्र मास के कृष्ण या शुक्ल पक्ष की छठवीं तिथि। २. बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाला एक कृत्य जो उत्सव के रूप में होता है।

मुहा०—छठी का दूध याद आना=ऐसी कठिन या विकट स्थिति में पड़ना कि बुद्धि ठिकाने न रहे।

छड़—पुं० [सं० शर] [स्त्री० अल्पा० छड़ी] किसी धातु का गोल या चौकोर लंबा पतला टुकड़ा।

छड़ना—स० [सं० चट] १. अनाज के दाने कूटकर उनकी भूसी अलग करना या छंड़ना। जैसे—जौ या धान छड़ना। २. खूब पीटना या मारना। (परिहास)

छड़ा--पुं० [हिं० छड़] १. पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। २. मोतियों की लड़ी। ३. हाथ का पंजा। (राज०)

वि० [हिं० छाँड़ना] [स्त्री० छड़ी] अकेला। एकाकी। जैसे—छड़ी सवारी।

पुं० नौजवान आदमी जिसका अभी विवाह न हुआ हो अथवा जिसके साथ घर-गृहस्थी न हो।

छड़ाना†--स०=छुड़ाना।

छड़िया—वि० [हिं० छड़ी] जिसके हाथ में छड़ी हो।

पुं० दरबान जिसके हाथ में प्रायः मोटा डंडा रहता है। ड्योढ़ीदार।

छड़ी--स्त्री० [हिं० छड़] १. वह सीधी पतली लकड़ी जिसे लोग सहारे के लिए हाथ में लेकर चलते हैं। २. उक्त प्रकार की पतली छोटी डंडी या लकड़ी जिस पर फूल-पत्तियाँ बँधी रहती हैं और जो शोभा के लिए कहीं रखी या लगाई जाती हैं। ३. किसी की कब्र या मजार पर लगाई जानेवाली झंडी। ४. कपड़े आदि में बनी हुई सीधी धारी या रेखा।

छड़ीदार—पुं० =चोबदार।

छड़ीबरदार—पुं० =चोबदार।

छड़ीला—पुं०=छरीला।

छड़ी सवारी--स्त्री० [हिं०] ऐसा व्यक्ति जो कहीं अकेला जा रहा हो। वह जिसके साथ और कोई न हो। (परिहास और व्यंग्य)

छत—स्त्री० [सं० छत्र] १. वह वास्तु-रचना जिससे कमरा ढका होता है। पाटन। २. उक्त रचना का ऊपरी या निचला तल या भाग। जैसे—(क) छत पर मिट्टी डालना। (ख) छत में झाड़-फानूस टाँगना। ३. किसी चीज को ऊपर से ढकनेवाला भाग।

पुं [सं० क्षत] घाव। व्रण।

वि०=क्षत।

क्रि० वि० [सं० सत्] रहते हुए। आछत।

छतगीर--पुं० [हिं० छत+फा० गीर] १. कमरे में ऊपरवाली छत के साथ प्रायः उसे ढकने के लिए तथा तानी जानेवाली चाँदनी। २. पलंग के पायों से बाँधकर खड़े किये हुए बाँसों आदि पर तानी जानेवाली चाँदनी।

छतगीरी—स्त्री०=छतगीर।

छतना--स० [हिं० छत] छत डालना या बनाना। कमरा या घर छाना।

अ० छाया जाना। छत आदि से युक्त होना।

अ० [सं० क्षत] घाव होना।

अ० [सं० सत्] वर्त्तमान रहना।

अ० [?] अदृश्य होना।

पुं० [हिं० छाता] बड़े-बड़े पत्तों का बनाया हुआ छाता।

छतनार--वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] (वृक्ष) जिसकी शाखाएँ छत्र की तरह चारों ओर दूर तक फैली हुई हों।

छतराना--अ० [सं० छत्रक] १. छत्रक या खुमी की तरह चारों ओर फैलना। जैसे—दाद छतराना। २. अधिक विस्तार से युक्त होना। जैसे—घाव छतराना।

छतरी--स्त्री० [सं० छत्र] १. चारों ओर से खुले हुए स्थान के ऊपर का मंडप। २. किसी पूज्य व्यक्ति का समाधि-स्थल जिसके ऊपर मंडप बना हुआ हो। ३. कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की पट्टियों का टट्टर। ४. खुम। ५. दे० 'छाता'। ६. एक प्रकार का बहुत बड़ा छाता जिसकी सहायता से हवाई जहाज पर से कूदकर सैनिक नीचे उतरते हैं। (पैराशूट)

पद—छतरी फौज=छत्तरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरनेवाली सेना।

छतलोट—स्त्री० [हिं० छत+लोटना] छत पर पेट के बल लेटकर इधर-उधर लोटते हुए की जानेवाली कसरत या व्यायाम।

छतवंत*—वि० [सं० क्षत+वंत] जिसे क्षत या घाव लगा हो। घायल।

छताँ†—क्रि० वि० [हिं० आछत का एक प्रांतिक रूप] विद्यमानता में। रहते हुए। उदा०—देह छताँ तुम मिलहु कृपा करि आरतिवंत कबीर। —कबीर।

छता†—पुं० १.=छाता। २.=छत्ता।

छति†—स्त्री०=क्षति।

छतिया—स्त्री० =छाती।

छतियाना—अ० [हिं० छाती] १. छाती से लगाना। २. छाती पर या उसके पास लाना या लाकर रखना। जैसे—गोली चलाने के लिए बंदूक छतियाना।

छतिवन—पुं० [सं० छत्रपर्ण] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं।

छतीस*—पुं० [सं० क्षितीश] राजा। उदा०—और दसा परहरी छतीस।—गोरखनाथ।

छतीसा—वि० [हिं० छत्तीस] [स्त्री० छतीसी] १. बहुत ही चतुर। चालाक। २. ढोंगी। उदा०—आए हौ पठाए वा छतीसे छलिया के इतैं।—रत्नाकर। ३. व्यभिचारी।

छतुरी†—स्त्री०=छतरी।

छतौना†—पुं० =छाता।

छत्त†—स्त्री०=छत।

छत्तर—पुं० १. दे० 'छत्र'। २. दे० 'अन्नसत्र'।

छत्ता—पुं [सं० छत्र] १. छाता। छतरी। २. राजा का छत्र। ३. गली आदि की ऊपरी छत। ४. वर्रे, मधुमक्खियों आदि द्वारा निर्मित मोम की वह रचना जिसमें वे स्वयं रहती, अंडे देती तथा शहद जमा करती हैं। ५. वह पौधा या वृक्ष जिसकी शाखाएँ छितरी या फैली हुई हों। ६. कमल का बीजकोश।

छत्ति—स्त्री० [सं० छत्र] चमड़े का वह कुप्पा जिस पर बैठकर प्राचीन काल में लोग नदी पार करते थे।

छत्ती†—स्त्री० =छत्ति।

पुं० = क्षत्रिय।

छत्तीस— [सं० षट्त्रिशत्; प्रा०, छत्तीसंती; छत्तीसम्; बँ० सात्रीस; ओ० छत्रीस; पं० छत्ती; सिं० छत्रीह; गु० छत्रीस; ने०. छत्तिस् मरा० छत्तीस) जो गिनती में तीस से छः अधिक हो।

पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३६।

छत्तीसगढ़—पुं० [हिं० छत्तीस+सं० गढ़] आधुनिक मध्यप्रदेश का एक विभाग।

छत्तीसगढ़ी—स्त्री० [हिं० छत्तीसगढ़] छत्तीसगढ़ की बोली।

छत्तीसा—वि० [स्त्री० छत्तीसी, भाव० छत्तीसापन]=छतीसा।

छत्तेदार—वि० [हिं० छत्ता+फा० दार] १. जिसके ऊपर छत्र या छत्ता हो। २. मधुमक्खियों के छत्ते के आकार का।

छत्र—पुं० [सं छद् (ढकना) णिच्+ष्ट्रन] १. छतरी। २. राजाओं या राज-सिंहासन के ऊपर लगाया जानेवाला बड़ा छाता। ३. कुकुरमुत्ता। ४. एक विष। ५. गुरु का दोषगोपन।

पुं० [सं० सत्र] वह स्थान जहाँ गरीबों या दीन-दुःखियों को धर्मार्थ भोजन कराया जाता है।

छत्रक—पुं० [सं० छत्र√कै (मालूम पड़ना)+क] १. एक प्रकार का छोटा उद्भिज जिसका निचला भाग छड़ी की तरह पतला होता है और जिसका ऊपरी भाग खुले हुए छाते की तरह फैला हुआ होता है। खुमी। (फंगस) २. कुकुरमुत्ता। ३. तालमखाने की जाति का एक पौधा। ४. कौडिल्ला (पक्षी)। ५. मण्डप। ६. [छत्र+कन्] छत्ता।

छत्रकायमान—वि० [सं० छत्रक+क्यङ्+शानच्] छत्रक के रूप में होने या फैलनेवाला। (फंगेटिव)

छत्र-चक्र—पुं० [मध्य०स०] ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिससे शुभ-अशुभ फल जाने जाते हैं।

छत्र-छाँह†—स्त्री०=छत्र-छाया।

छत्र-छाया—स्त्री० [ष० त०] छाया, ऐसा आश्रय जो छाते की तरह सुरक्षित रखनेवाला और सुखद हो। संरक्षण।

छत्र-धनी*—पुं०=छत्रधारी।

छत्र-धर—पुं० [छत्र√धृ (धारण)+अच्] १. वह राजा जो छत्र लगाता हो। २. राजा के ऊपर छत्र लगानेवाला सेवक।

छत्रधारी (रिन्)—वि० [सं० छत्र√धृ+णिनि] छत्र-धर।

छत्रप*—पुं०=क्षत्रप।

छत्रपति—पुं० [ष० त०] बहुत बड़ा राजा।

छत्रपन—पुं० [सं० छत्रिय+पन (प्रत्य०)] क्षत्रियत्व।

छत्र-बंध—पुं० [ब०स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें कविता के अक्षर विशिष्ट प्रकार से सजाने से छत्र या छाते की आकृति बन जाती है।

छत्र-भंग—पुं० [ष०त०] १. राजा का नाश या मृत्यु। २. ज्योतिष का एक योग, जो राजा या उसके शासन के नाश का सूचक माना जाता है। ३. अराजकता।

छत्राक—पुं० [सं० छत्र+टाप्, छत्रा√कै+क] कुकुरमुत्ते, खुमी आदि की जाति के उद्भिजों की सामूहिक संज्ञा।

छत्रिक—पुं० [सं० छत्र+ठन्-इक] छत्र धारण करनेवाला राजा।

छत्री (त्रिन्)—वि० [सं० छत्र+इनि] छत्रयुक्त।

पुं०=क्षत्रिय।

छदंब—पुं० [सं० छद्म] १. छल। २. बहाना।

छद—पुं० [√छद्+अच्] १. ढकनेवाली चीज। आवरण। २. खाल। ३. छाल। ४. खोल। गिलाफ। ५. पत्ता। ६. चिड़िया का पंख।

छद-पत्र—पुं० [ब० स०] १. भोजपत्र। २. तेजपात।

छदन—पुं० [√छद् ल्युट्—अन्] छद। (दे०)

छदाम—पुं० [हिं० छः+दाम] सिक्के का एक मान जो छः दामों अर्थात् पुराने पैसे के चौथाई भाग के बराबर होता था।

छद्दर†—पुं० [हिं० छः+दर ?] वह बैल जिसके मुँह में छः दाँत हो।

छद्दिय*—पुं० [सं० क्षुधा] भूख। उदा०—मरत काल चलि सय्य, घाम घामन अरु छद्दिय।—चंदवरदाई।

छद्म (न्)—पुं० [√छद्+मनिन्] १. किसी चीज पर आवरण डालकर उसे ढकना या छिपाना। २. वह आवरण जिससे कोई चीज ढकी या छिपाई जाती हो। जैसे—मकान की छत या छाजन। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति का वास्तविक बाह्य रूप इस प्रकार कृत्रिम प्रसाधनों,

वस्त्रों आदि से छिपाना या बदलना जिससे उसे कोई पहचान न सके। ऐसा रूप प्रायः किसी को छलने या धोखा देने अथवा दूसरे का मनोरंजन करने के लिए धारण किया जाता है। ४. छल। धोखा।

छद्म-तापस—पुं०[मध्य०स०] वह व्यक्ति जिसने दूसरों को ठगने के लिए अपना साधुओं का-सा वेश बनाया हो।

छद्म-वेश—पुं०[मध्य०स०] दूसरों को छलने या धोखा देने या मन-बहलाव के लिए बनाया हुआ कृत्रिम वेश।

छद्मवेशी (शिन्)—वि०[सं० छद्मवेश+इनि] १. जिसने छद्मवेश धारण किया हो। २. जो प्रायः छद्मवेश धारण करके दूसरों को छलता, धोखा देता अथवा उनका मनोरंजन करता हो।

छद्मी (द्मिन्)—वि०[सं० छद्म+इनि] [स्त्री० छद्मिनी] १. छद्मवेशी। २. छली।

छन—पुं०[सं० क्षण; प्रा० पा० छण; पं० खिण; गु० खण; सिं० खुणु] १. क्षण। (दे०) २. पर्व का समय। पुण्यकाल।

†पुं०[हिं० छद] हाथों में पहनने का छंद नामक गहना।

पुं०[अनु०] १. तपे हुए धातु के पात्र पर ठंढा तरल पदार्थ पड़ने या छिड़कने से होनेवाला शब्द। २. कड़कड़ाते हुए घी या तेल में किसी वस्तु के तले जाने पर होनेवाला शब्द। ३. घुंघरू या पायल के बजने से होनेवाला शब्द।

छनक—स्त्री०[हिं० छनकना] १. छन-छन शब्द। झनकार। जैसे—घुंघरुओं की छनक। २. छन-छन शब्द होने की अवस्था या भाव।

क्रि० वि० [सं० क्षण+एक] क्षण भर।

वि०[सं० क्षणिक] १. क्षणिक। क्षणभंगुर। २. (व्यक्ति) जो क्षण-क्षण में अपना मत या विचार बदल देता हो। उदा०—छाके है अयान मद छिति के छनक क्षुद्र।—केशव।

छनकना—अ०[अनु० छन छन] छन-छन शब्द होना। जैसे—घुंघरू का छनकना।

अ० [अनु०] चौंकना। भड़कना।

†पुं० दे० 'झुनझुना'।

छनक-मनक—स्त्री०[हिं० छनक+अनु०] १. वह शब्द जो पहने हुए गहनों के आपस में टकराने से उत्पन्न होता है। २. सक। नखरा।

छनकाना—स०[हिं० छनकना] १. पानी को उबाल तथा खौलाकर उसका परिमाण कम करना। २. तपे हुए पात्र में कोई द्रव पदार्थ डाल कर उसे गरम करना। ३. भड़काना। चौंकाना।

स० १. कोई चीज वजाते हुए उसमें से छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २. झुनझुना वजाना।

छनछनाना—अ०[अनु०] १. तपी हुई धातु पर जल-कण छोड़ने से छन-छन शब्द होना। २. खौलते हुए घी या तेल में तलने के लिए कोई वस्तु छोड़ने पर छन-छन शब्द होना। ३. क्रुद्ध होना।

स० १. छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २. कुपित या क्रुद्ध करना।

छन-छवि—स्त्री०[सं० क्षण+छवि] विजली।

छनदा*—स्त्री०=क्षणदा (रात्रि)।

छनन-मनन—पुं० [अनु०] १. घुंघरुओं आदि के वजने से होनेवाला छन-छन शब्द। २. वह शब्द जो खौलते हुए घी या तेल में किसी तली जानेवाली वस्तु को छोड़ने से उत्पन्न होता है।

छनना—अ०[सं० क्षरण] १. चलनी या छलनी अथवा किसी महीन कपड़े में से किसी चूर्ण (जैसे—आटा), छोटे कणों या दानोंवाली वस्तु (जैसे—गेहूँ) अथवा द्रव पदार्थ (जैसे—भाँग) का छाना जाना। २. उक्त के आधार पर किसी नशीले तरल पदार्थ विशेषतः भाँग का पीसा, छाना या पीया जाना। ३. उक्त के आधार पर आपस में गूढ़ वार्त्तालाप या घनिष्ठ संबंध होना।

मुहा०—(आपस में) गहरी छनना=गूढ़ वार्त्तालाप या मेल-जोल होना।

४. उक्त क्रिया से किसी वस्तु या द्रव पदार्थ का अनावश्यक या अनुपयोगी अंश अलग होना। ५. किसी चीज का छोटे-छोटे छेदों में से होकर आना या निकलना। जैसे—पेड़ के पत्तों के बीच से चाँदनी का छनकर आना। ६. किसी आवरण में से किसी चीज का भासित होना या झलक दिखाना। जैसे—घूंघट में से सौंदर्य का छनकर निकलना। ७. छेदों से युक्त होना। जैसे—तीरों के घावों से शरीर छनना। ८. किसी अभियोग, झगड़े या विषय की पूरी तथा सही वातों का पता चलना। जैसे—मामला छनना। ९. किसी प्रकार के जाल या धोखे में फँसना। उदा०—घात मैं लगे हैं ये बिसाखी सबै, इनके अनोखे छल-छंदनि छनौ नहीं।—रत्नाकर।

अ० [हिं० छानना का अ० रूप] १. कड़कड़ाते घी या तेल में खाद्य वस्तुओं का तला जाना। छाना जाना। जैसे—पूरी या वुँदिया छनना। २. इस प्रकार तली हुई चीजों का खाया जाना। जैसे—चलो! वहाँ पूरी-कचौरी छनेगी और खीर उड़ेगी।

अ० [सं० आछन्न] १. आच्छादित होना। घिरा होना। २. लिपटा या लपेटा हुआ होना। उदा०—मनों धनी के नेह की वनी छनी पट लाज।—बिहारी।

छनभंगु*—वि०=क्षण भंगुर।

छनभर* क्रि० वि०=क्षण भर।

छनवाना*—स०[हिं०छानना का प्रे०रूप] छानने का काम दूसरे से कराना।

छनिक*—वि०=क्षणिक।

छन्न*—पुं० १.=छन। २.=क्षण।

वि० १.=आच्छन्न। २.=छिन्न।

छन्ना—पुं० [हिं० छानना] १. वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय। २. चलनी। छलनी। ३. छोटा कटोरा।

छप—स्त्री० [अनु०] १. किसी तरल पदार्थ (जैसे—जल) अथवा किसी गाढ़े तरल पदार्थ (जैसे—कीचड़) में किसी चीज के आ गिरने से होनेवाला शब्द। २. जोर से छींटा पड़ने का शब्द।

छपकना—स० [हिं० छप (अनु०)] किसी चीज से आघात करना। मारना।

छपका—पुं०[हिं० छपकना] १. बाँस आदि की कमाची। २. पतली छड़ी।

पुं० [अनु०] १. कोई चीज कीचड़, जल आदि में फेंककर उसे उछालने की क्रिया या भाव। २. पानी आदि का छींटा। ३. कीचड़ या पानी के छींटे का कपड़े आदि पर पड़ा हुआ धब्बा। ४. लकड़ी के संदूक के ढक्कन में की वह पटरी जिसमें जंजीर लगी रहती है।

पुं० सिर पर पहनने का एक आभूषण।

छपछप--स्त्री० [अनु०] धारा के किसी चीज से बार-बार टकराने से अथवा किसी चीज को बार-बार धारा में फेंकने से होनेवाला शब्द।

छपछपाना--अ० [हिं० छपछप] छप-छप शब्द होना।

स० छप-छप शब्द उत्पन्न करना।

छपटना--अ० [सं० चिपिट] १. चिपकना। २. आलिंगित होना।

छपटाना--स० [हिं० छपटना] १. चिपकाना। २. आलिंगन करना। छाती से लगाना। उदा०--छिति-पति उमगि उठाइ छोहि छाती छपटायौ--रत्नाकर।

छपद--पुं० [सं० षट्पद] भौंरा। भ्रमर।

छपन*--वि० [हिं० छिपना] छिपा हुआ।

पुं० [सं० क्षपण] नाश। संहार।

छपनहार--वि० [हिं० छपन+हारा (प्रत्य०)] नाश या संहार करनेवाला।

छपना--अ० [हिं०छापना] १. ठप्पे, साँचे आदि की छाप से युक्त होना। ठप्पे या साँचे से चिह्नित होना। जैसे--धोती छपना। २. कागज, पुस्तक आदि का छपकर तैयार होना। मुद्रित होना। जैसे--कोश छपना ३. किसी कृति, घटना आदि का प्रकाशित होना। जैसे--कविता, लेख या समाचार छपना। ४. छापे में सीसे के बैठाए हुए अक्षरों का अंकित, चिह्नित या मुद्रित होना।

†अ०=छिपना।

छपरखट--स्त्री० [हिं० छप्पर+खाट] वह पलंग जिसके ऊपर डंडों के सहारे कपड़ा तना हो।

छपर खाट--स्त्री०=छपरखट।

छपर छपर--स्त्री०=छपछप।

क्रि० वि० छपछप करते हुए।

छपरबंद--वि०, पुं० छप्परबंद।

छपरबंदी--स्त्री०=छप्परबंदी।

छपरा†--पुं० [हिं० छप्पर] १. छप्पर। २. बाँस का टोकरा जो पत्तों से मढ़ा होता है तथा जिसमें तमोली पान रखते हैं।

छपरिया--स्त्री०=छपरी।

छपरिहाना†--अ० [हिं० छप्पर] १. छप्पर का गिरना या टूटना। २. छप्पर से गिरना या गिरकर टूटना।

छपरी†--स्त्री० [हिं० छप्पर का अल्पा० रूप] १. छोटा छप्पर। २. झोपड़ी (जिसका छोटा-सा छप्पर होता है)।

छपवाई†--स्त्री०=छपाई।

छपवाना†--स०=छपाना।

छपवैया--वि० [हिं० छापना] छापनेवाला।

छपही†--स्त्री० [देश०] उँगलियों में पहनने का एक गहना।

छपा*--स्त्री० [सं० क्षपा] १. रात्रि। २. हलदी।

छपाई--स्त्री० [हिं० छापना] छपने या छापने की क्रिया, ढंग, भाव या पारिश्रमिक।

छपाकर*--पुं० [सं० क्षपाकर] १. चंद्रमा। २. कपूर।

छपाका--पुं० [अनु० छपछप] १. कीचड़, पानी आदि में कोई चीज फेंकने से होनेवाला छप शब्द। २. धारा के किसी चीज के टकराने से होनेवाला शब्द। ३. छींटा।

छपाना--स० [हिं० छापना] १. छापने (दे० 'छापना') का काम दूसरे से कराना। २. शीतला का टीका लगवाना।

†स०=छिपाना। उदा०--उठि रेनु रवि गयउ छपाई।--तुलसी।

†अ०=[अनु० छप छप] खेत का सींचा जाना।

छपानाथ--पुं० [सं० क्षपानाथ] चंद्रमा।

छपाव†--पुं०=छिपाव।

छप्पन--वि० [सं० षट्पंचाशत्, प्रा० छप्पणम्, छप्पण] जो गिनती में पचास से छः अधिक हो।

पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है--५६।

छप्पन-भोग--पुं० [हिं० छप्पन+सं० भोग] छप्पन प्रकार के व्यंजन। तरह-तरह की खाद्य वस्तुएँ।

छप्पय--पुं० [सं० षट्पद] छः चरणोंवाला एक मात्रिक छंद, जिसके पहले चरण में रोला के और फिर दो चरण उल्लाला के होते हैं।

छप्पर--पुं० [सं० छत्वर, प्रा० छप्पर, बँ० छापर, ओ० छपर, पं० ल्हां. छप्पर, सिं० छरु, गु० छाप्रो, ने० छाप्रो, मरा० छप्पर] १. कच्चे मकानों, झोपड़ियों आदि की वह छाजन जो बाँसों, लकड़ियों तथा फूस की बनी होती है।

मुहा०--**(किसी पर) छप्पर टूट पड़ना**=एकाएक कोई विपत्ति या संकट आ पड़ना। **(किसी को) छप्पर पर रखना**=नगण्य समझना। **(किसी को) छप्पर फाड़कर देना**=अनायास और बहुत अधिक देना।

२. झोपड़ी या मकान जिसकी छाजन फूस आदि की हो। ३. किसी प्रकार का आवरण जो रक्षा आदि के लिए ऊपर लगाया जाय। जैसे--नाव पर का छप्पर।

छब*--स्त्री० [सं० छवि] छवि। सौंदर्य।

छबड़ा--पुं० [हिं० छबड़ी का पुं० रूप] बड़ी छबड़ी।

छबड़ी--स्त्री० [पं० छावड़ी] १. खोंचा। (दे०) २. टोकरी। डलिया।

छब-तखत--स्त्री० [हिं०छवि+अ० तकतीअ] शरीर की सुंदर बनावट।

छबना*--अ० [हिं० छवि] १. छवि या सौंदर्य से युक्त होना। सुशोभित होना। उदा०--उझकि-उझकि पद कंजनि के पंजनि पै पेखि पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगि।--रत्नाकर। २. किसी चीज का किसी स्थान पर लगकर ठहर जाना। जैसे--गाल पर कालिख छबना। (बुंदेल०)

छबि--स्त्री० [सं० छवि] छवि। सौंदर्य।

स्त्री० [अ० शबीह] १. ऐसा चित्र या तस्वीर जिसमें किसी व्यक्ति के मुख की आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई गई हो। २. चित्र।

छबीना--पुं० [देश०] पड़ाव। उदा०--आध मील चलने के उपरान्त वह अंग्रेजी छबीने के पास पहुँचा।--वृंदावनलाल वर्मा।

छबीला--वि० [सं० प्रा० छवि, दे० प्रा० छाइल्लो; गु० छबिलो; पं० छबीला; मरा० छबिला] [स्त्री० छबीली] १. (व्यक्ति) जो छबि से युक्त हो। सुंदर। २. जो बन-ठन कर रहता हो। छैला। बाँका।

छबुंदा--पुं० [हिं० छ+बुंदा] काले रंग का एक प्रकार का छोटा जहरीला कीड़ा जिसकी पीठ पर सफेद रंग की ६ बुंदकियाँ होती हैं।

छब्बीस--वि० [सं० षट्विंशति] जो गिनती में बीस से छः अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२६।

छब्बीसी--स्त्री० [हिं० छब्बीस] फलों आदि की गिनती का एक प्रकार जिसमें २६ गाहियों (अर्थात् १३० दानों) का सैंकड़ा माना जाता है।

छम*--वि०=क्षम।

स्त्री० [अनु०] घुंघरू या पायल के बजने का शब्द।

छमक--स्त्री० [हिं० छमकना] छमकने की क्रिया या भाव।

छमकना--अ० [हिं० छम(अनु०)] १. घुंघरुओं आदि के बजने का शब्द होना। २. आभूषणों की झंकार होना। ३. स्त्रियों का गहने पहन कर अथवा यों ही इठलाते या चमकते-मटकते हुए इधर-उधर आना-जाना।

†स०=छौंकना।

†अ०=छौंकना।

छमछम—स्त्री०[अनु०] १. पैरों में पहने हुए गहनों, घुँघरुओं, पायलों आदि के बजने से होनेवाला शब्द। २. जोर से पानी बरसनें का शब्द।

क्रि० वि० १. छमछम शब्द करते हुए। २. इठलाते या चमकते-मटकते हुए।

छमछमाना—अ०[अनु०] १.छमछम शब्द उत्पन्न होना। २. चमकना।

स० छमछम शब्द उत्पन्न करना।

छमता*—स्त्री०=क्षमता।

छमना—सं० [सं० क्षमन्] क्षमा करना। माफ करना।

छमवाना*—स० [हिं० छमना का प्रे० रूप] १. किसी को क्षमा करने में प्रवृत्त करना। २. अपने आपको क्षमा या माफ करवाना।

छमाई*—स्त्री० [हिं० छमा] क्षमा।

छमाछम—क्रि० वि० [अनु०] छमछम शब्द करते हुए।

छमाना*—स० [हिं० छमना का प्रे० रूप] १. क्षमा कराना। २. सहन कराना। उदा०--कौ लगि जीव छमावै छपा मैं छपाकर की छवि छाई रहैरी।—देव।

छमाशी—स्त्री० [हिं० छः+माशा] छः माशे की तौल का बाट।

छमासी—स्त्री० [हिं० छः+सं० माश] वह श्राद्ध जो किसी व्यक्ति के मरने के छः महीने बाद किया जाता है। छमाही।

छमाही—स्त्री० [हिं० छः +माह] १. छः महीनों का समय। २. छः महीनों बाद मिलनेवाली अनुवृत्ति। ३. दे० 'छमासी'।

वि० हर छः महीने पर होनेवाला।

छमिच्छा*--स्त्री० १.=समीक्षा। २.=समस्या।

छमुख—वि० [हिं० छः+सं० मुख] जिसके छः मुख हों।

पुं० षड़ानन।

छय—पुं० [सं० क्षयं] क्षय। नाश।

छयना—अ० [हिं० छय] १. क्षय होना। २. क्षीण होना।

स० क्षय करना। उदा०—ह्वै कै काई जल कौ छयौ।—सूर।

अ०=छाना।

स०=छाना।

छयल (ल्ल)*—वि०=छैला।

छयासठ—वि०, पुं०=छियासठ।

छर*—पुं०=छल।

पुं०=क्षर।

वि० [सं० क्षर] भारी। जैसे--छरभार=भारी बोझ।

छरकना†—अ० [अनु० छरछर] किसी पदार्थ का कभी तल या धरातल को स्पर्श करते हुए और कभी वेग से उछलते हुए आगे बढ़ना।

*अ०=छटकना।

†अ०=छलकना।

†अ०=छिटकना।

छरकायल—वि०=छरकीला।

छरकीला—वि० [हिं० छड़ी] १. दुबला-पतला। २. वहुत लंबा।

छरछंद*—पुं०=छलछंद।

छरछराना†--अ०[सं० क्षार] [भाव० छरछराहट] घाव में चुनचुनाहट या जलन होना।

स० चुनचुनाहट या जलन उत्पन्न करना।

छरद--स्त्री० [सं० छर्दि] कै। वमन।

मुहा०--छिया छरद करना=दे० 'छिया' के अंतर्गत मुहा०।

छरन—वि० [हिं० छरना=छलना] [स्त्री० छरनि] छलनेवाला।

पुं०=क्षरण।

छरना†—स० [सं० क्षरण] सूप में अनाज आदि छाँटना या फटकना।

अ० १. अनाज आदि का छाँटा या फटका जाना। २. दूर होना। न रह जाना। ३. तरल पदार्थ का कहीं से निकलकर धीरे-धीरे बहना। चूना। टपकना। रसना।

*स०=छलना।

*स०=छड़ना।

स्त्री०=छलना।

छरबर*—पुं०=छलबल।

छरहटा—पुं० [सं० छलहट्ट] १. ऐसा स्थान जहाँ लोग छले या ठगे जाते हैं। छल का बाजार। २. इन्द्रजाल। उदा०—कतहुँ छरहटा पेखन लावा।—जायसी।

छरहरा—वि० [हिं० छड़+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी, भाव० छरहरापन] १. जो शारीरिक दृष्टि से इकहरे शरीर का हो। जिसमें मोटाई सामान्यतः बहुत कम हो। दुबला-पतला। २. चुस्त। फुरतीला।

†वि० [हिं० छल+हारा] बहुरुपिया।

छरा—पुं० [सं० शर, हिं० छड़] १. माला या हार का लड़। २. इजारबंद। ३. छर्रा।

छरिंदा—वि०=छरीदा।

छरी—स्त्री०=छड़ी।

† वि०=छली।

*स्त्री० [सं० अप्सरा, हिं० अपछरी] अप्सरा।

छरीदा*--वि० [अ० जरीदः] १. अकेला। २. (यात्रा के समय) जिसके पास असबाब या माल न हो।

छरीला—पुं० [सं० शैलेय] एक सुगंधित वनस्पति।

पुं० [?] बकरा।

छरोरा†—पुं० [सं० क्षर] वह घाव या खरोंच जो शरीर के छिलने से बनती हो।

छर्द--पुं० [सं०√छर्द् (वमन करना)+घञ्] कै। वमन।

छर्दिका--स्त्री० [√छर्द्+णिच्+ण्वुल्--अक,--टाप्, इत्व] १. कै। वमन। २. विष्णुक्रांता लता।

छर्दिका-घ्न---पुं० [छर्दिका√हन् (मारना)+टक्] बकाइन। महानिंवा।

छर्रा—पुं० [अनु० छरछर] १ पत्थर आदि का छोटा टुकड़ा। २. कंकड़ का छोटा टुकड़ा जो घुँघरू की कटोरी में बंद रहता है और जो घुँघरू के हिलाए जाने पर शब्द करता है। ३. बंदूक, राइफल के द्वारा छोड़ी जानेवाली किसी धातु की गोली अथवा उसका कोई कण।

मुहा०---छर्रा पिलाना=बंदूक या राइफल में छर्रे भरना।

छलंक, छलंग†—स्त्री० =छलाँग।

छल—पुं० [सं०√छो (काटना) +कलच्, पृषो० सिद्धि पा० प्रा छल; ब० छल; आ० छड़; पं० छल; गु० छड़; ने० छल० मरा० सड़] १. कपट, कौशल, धूर्त्तता आदि से युक्त वह व्यवहार जो अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को धोखे में रखकर, बहकाकर या वास्तविकता छिपाकर उसके साथ किया जाता है। २. बहाना। मिस। ३. धूर्त्तता। ४. कपट। ५. धोखेबाजी। ६. शत्रु पर युद्ध के नियम के विरुद्ध वार करना। ७. शास्त्रार्थ में, प्रतिपक्षी के कथन का उसके अभिप्राय से भिन्न कोई दूसरा अर्थ करना।

छलक—स्त्री० [हिं० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव।

छलकन*--स्त्री० [हिं० छलकना] १. छलक। २. वह अंश जो छलक कर गिरे।

छलकना--अ० [सं० क्षल्] १. किसी तरल पदार्थ का अपने आधान या पात्र में पूरी तरह से भर जाने पर उमड़कर इधर-उधर गिरना या गिरने को होना। जैसे--आँखों में आँसू छलकना। २. किसी पात्र में रखे हुए तरल पदार्थ का (पात्र के हिलने पर) झटके से उछलकर पात्र से बाहर गिरना। ३. लाक्षणिक रूप में, किसी चीज का किसी बात से पूरी तरह से भर जाने या युक्त होने पर चारों ओर फूटना या फैला हुआ दिखाई पड़ना। जैसे--आँखों या हृदय से स्नेह छलकना।

छल-कपट—पुं० [द्व० स०] धूर्त्ततापूर्ण आचरण या व्यवहार। धोखेबाजी।

छलकाना—स० हिं० 'छलकना' का स० रूप।

छल-छंद--पुं० [द्व० स०] दूसरे को छलने के लिए किया जानेवाला छलपूर्ण व्यवहार। चालबाजी।

छलछंदी (दिन्)—वि० [सं० छलछंद+इनि] चालबाज।

छलछलाना--अ०=छलकना।

छल-छाया—स्त्री० [ष० त०] माया। कपट-जाल।

छल-छिद्र—पुं० [द्व० स०] कपट या छलपूर्ण व्यवहार।

छलछिद्री (दिन्)—वि० [सं० छलछिद्र+इनि] कपटी। धूर्त्त।

छलन—पुं० [सं० छल+णिच्+ल्युट्—अन] छलने की क्रिया या भाव।

छलना--स्त्री० [सं० छल+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. किसी को छलने अर्थात् धोखा देने की क्रिया या भाव। २. वह काम, चीज या बात जिसका उद्देश्य ही दूसरों को छलना या धोखा देना हो। जैसे—यह सारी सृष्टि ही छलना है।

स० [सं० छलन] १. छ्लपूर्ण आचरण या व्यवहार करना। धोखा देना। भुलावे में डालना। २. अपने गुण, रूप आदि का ऐसा प्रदर्शन करना कि उसकी आड़ में किसी का कुछ हर लिया जाय।

छलनी—स्त्री० [सं० क्षरण] १. आटा आदि छानने का छेदोंवाला या जालीदार छोटा उपकरण। चलनी।

मुहा०—छलनी में डालकर छाज उड़ाना=छोटी बात को बड़ी करना।

२. ऐसी चीज जिसमें उक्त प्रकार के बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। जैसे—काँटों में चलते-चलते पाँव छलनी हो गये।

छल-बल--पुं० [द्व० स०] वे कपटपूर्ण ढंग या व्यवहार जिनसे किसी की खुशामद करके, धोखा देकर अथवा दबाव डालकर अपना काम निकाला जाता है।

छलबल—स्त्री० [अनु०] १. चटक-मटक। २. शोभा।

छलमलना*--अ०=छलकना।

छलमलाना*--अ०=छलकना।

स०=छलकाना।

छलहाया--वि० [सं० छल+हिं० हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० छलहाई] छल करने या छलनेवाला। छली। छलिया।

छलाँग—स्त्री० [हिं० छाल=उछाल+अंग] एक स्थान से खड़े-खड़े वेगपूर्वक उछलकर दूसरे स्थान पर जा खड़े होने की क्रिया या भाव। क्रि० प्र० —भरना।

मुहा०—छलाँगें मारना=(क) बहुत तेजी से चलना। (ख) जल्दी-जल्दी उन्नति करते हुए ऊँचे पद पर पहुँचना।

छलाँगना--अ० [हिं० छलाँग] छलाँगे भरते हुए आगे बढ़ना।

छला†—पुं०=छल्ला।

छलाई*—स्त्री०=छल।

छलाना—स० [हिं० छलना का प्रे० रूप] छलने का काम दूसरे से कराना।

अ० छला जाना। धोखे में आना।

छलावरण—पुं० [सं० छल–आवरण ष० त०] [वि० छलावृत्त] १. वास्तविक बात या रूप छिपाने के लिए ऊपर से उसे कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे में पड़ जायें। २. युद्ध-क्षेत्र में अपनी तोपों, मोरचों आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षों की डालियों, पत्तियों आदि से ढकना। (कैमोफ्लेज)

छलावा--पुं० [हिं० छल] १. भूत-प्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २. दलदल या जंगलों में रह-रहकर दिखाई पड़नेवाला वह प्रकाश जो मृत शरीरों की हड्डियों में छिपे हुए फासफोरस के जल उठने से उत्पन्न होता है।

विशेष--इसी को लोग अगिया वैताल या उल्कामुख (प्रेत के मुख से निकलनेवाली आग) भी कहते हैं।

मुहा०—छलावा खेलना=अगिया वैताल का इधर-उधर दिखाई पड़ना।

छलिक—पुं० [सं० छल+ठन्--इक] रूपक का एक प्रकार।

छलित—वि० [सं० छल+णिच्+क्त] जो छला या ठगा गया हो।

छलिया—वि० [सं० छल] दूसरों को छलनेवाला। छलपूर्ण आचरण या व्यवहार करनेवाला।

छली (लिन्)--वि० [सं० छल+इनि] छलिया।

छलौरी—स्त्री० [हिं० छाला] एक रोग जिसमें उँगलियों के नाखूनों के नीचे का मांस सड़ने लगता है और उसमें छाले पड़ जाते हैं।

छल्ला—पुं० [सं० छल्ली=लता] १. किसी धातु अथवा किसी पदार्थ

की बनी हुई अँगूठी के आकार की कोई गोलाकार रचना । २. उक्त की तरह की कोई गोलाकार आकृति। जैसे—बालों का छल्ला। ३. वह गोलाकार रचना या घेरा जो हुक्के के नेंचे में कलाबत्तू आदि के तारों का बना होता है। ४. किसी प्रकार का गोल घेरा या मंडल।

छल्लि—स्त्री० [सं० छद√ला (लेना)+कि] १.छाल । २. लता। ३. संतति।

छल्ली--स्त्री० [सं० छल्लि+ङीष्] १. छाला। २. लता। ३. वृक्षों की टहनियों आदि से बनी हुई दौरी या झाबा। ४. अनाज के बोरों की पंक्ति या क्रम से लगा हुआ ढेर। ५. मक्के की बाल। भुट्टा। (पश्चिम)

छल्लेदार—वि० [हिं० छल्ला+फा० दार] मंडलाकार घेरे या चिह्नों-वाला। जिसकी आकृति छल्ले की तरह घेरदार हो। जैसे--छल्लेदार बाल।

छव†—वि०=छः।

छवक्क—वि० [हिं० छकना] छका हुआ। तृप्त।

छवा†—पुं०=छावा (शावक)।

पुं० [देश०] पैर की ऐड़ी।

छवाई--स्त्री० [हिं० छाना] छाने या छवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

छवाना—स० [हिं० छाना का प्रे० रूप] छाने का काम दूसरे से कराना।

छवि—स्त्री० [सं०√छो (छेदन) +क्निन्] छवि। (दे०)

छवैया†—वि० [हिं० छाना] छवाने या छानेवाला। छाने या छवाने का काम करनेवाला।

छहर--स्त्री० [हिं० छहरना] बिखरने की क्रिया या भाव।

छहरना—अ० [सं० क्षरण] छितराना। बिखरना। उदा०—मोती की फुहार सी छहरें--पंत।

छहराना†—स० [हिं० छहरना] छितराना। बिखेरना।

†अ०=छहरना।

छहरीला†—वि० [हिं० छहरना] [स्त्री० छहरीली] छितराने या बिखरनेवाला।

छहियाँ†—स्त्री०=छाँह।

छही--स्त्री०[देश०] वह मादा पक्षी विशेषतः कबूतरी जो अन्य पक्षियों को बहकाकार अपने अड्डे पर या दल में लाये।

छाँ*—स्त्री०=छाँह।

छाँउं*—स्त्री०=छाँह।

छाँक—पुं० [फा० चाक] खंड। भाग।

†स्त्री० =छाक।

छाँगना—स० [सं० छिन्न] १. छिन्न या अलग करना। २. कुल्हाड़ी आदि से पेड़ आदि की शाखा काटना।

छाँगुर—पुं० [हिं० छः+अंगुल] वह व्यक्ति जिसके हाथ में छः उँगलियाँ हों।

छाँछ—स्त्री० [हिं० छाछ] १.=छाछ। २. छाछ रखने का एक पात्र। छछिया।

छाँछी†—स्त्री० [हिं० छाँछ] छाछ रखने का छोटा पात्र। छछिया।

छाँट—स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २. छाँट कर अलग की हुई निकम्मी वस्तु या रद्दी अंश। ३. दे० 'छँटनी'।

†स्त्री० [सं० छर्दि] कै। वमन।

छाँट-छिड़का†--पुं० [हिं० छींटा+छिड़कना] बूँदा-बाँदी। हलकी वर्षा।

छाँटना—स्त्री०=छाँट।

छाँटना—स० [सं० छर्द्; प्रा० छड्ड; २. सं० शत्>शातः>छाट; उसं, श्वठ; दे प्रा० छाण्ट; बं० छाटा; ओ० छाटिबा; पं० छाटणा; गु० छाटवूं; मराठी छाट (णे)] १. आगे की ओर निकला या बढ़ा हुआ (फलतः अनावश्यक और फालतू अंश) काटकर अलग करना। जैसे--पेड़ की शाखाएँ या सिर के बाल छाँटना। २. कूट-फटक कर अनाज की भूसी अलग करना। ३. गंदी या दूषित वस्तु किसी चीज में से निकालना। साफ करना। जैसे—मैल छाँटना। ४. कै करना। वमन करना। ५. किसी वस्तु को कतरकर विशेष आकार या रूप देना। जैसे--मलमल के टुकड़े में से कुर्ता छाँटना। ६. कुल सामग्री में से उपयुक्त वस्तुएँ चुनकर अपने काम के लिए अलग कर लेना। जैसे—पुस्तकें छाँटना। ७. लेख आदि में का वांछनीय अंश ले लेना और अवांछनीय अंश काट या छोड़ देना।

पद—काटना-छाँटना। (दे०)

८. अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। जानकारी बघारना। जैसे--अंग्रेजी छाँटना, कानून छाँटना।

छाँटा--पुं० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २. किसी को छल से किसी मंडली, सभा अथवा उसकी सदस्यता से अलग करना।

क्रि० प्र०--देना।

छाँड़ना†--स०=छोड़ना।

छाँद—स्त्री० [सं० छंद=बंधन] १. चौपायों के पैरों में बाँधी जानेवाली रस्सी। २. छाँदने की क्रिया या भाव।

छाँदना—स० [हिं० छाँद+ना (प्रत्य०)] १. रस्सी से बाँधना। जैसे—असबाब बाँधना-छाँदना। २. चौपायों के पिछले दोनों पैरों को सटाकर रस्सी से बाँधना जिससे वह दूर जाने या भागने न पावें।

छांदसीय—वि० [सं० छन्दस्+अण्+छ--ईय] (वह) जो छंदशास्त्र का ज्ञाता हो।

छाँदा--पुं० [हिं०छाँदना] वह भोजन जो ज्योनार, भंडारे आदि से कपड़े आदि में बाँधकर लाया जाय। परोसा। जैसे—ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद एक-एक छाँदा भी दिया गया था।

छांदोग्य—पुं० [सं० छन्दोग+ञ्य] एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो सामवेद का अंग है और जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, यज्ञों के विधान तथा अनेक प्रकार के उपदेश हैं।

छाँधना†--स०=छाँदना।

छाँव--स्त्री० =छाँह।

छाँवड़ा—पुं०=छौना।

छाँह†—स्त्री० [सं० छाया; पा० छाय; प्रा० छाआ, छाहा; का० छाय; उ० छाइ; पं० छाँ; सिं० छाव; गु० छाँइ, मराठी सावली] १. दे० 'छाया'। २. दे० 'प्रतिबिंब'। ३. ऊपर से छाया हुआ स्थान। ४. शरण।

मुहा०—छाँह न छूने देना=किसी को पास या समीप न आने देना।

५. भूत-प्रेत आदि का प्रभाव

मुहा०—छाँह बचाना=बहुत दूर या परे रहना।

छाँहगीर—पुं० [हिं० छाँह+फा० गीर] १. राजछत्र। २. चँदोआ (दे०)। ३. दर्पण।

छाई†—स्त्री० [सं० क्षार] १. राख। २. जले हुए पत्थर के कोयले के वे छोटे-छोटे कण जिनमें चूना मिलाकर जुड़ाई के लिए गारा बनाया जाता है।

छाउँ†—स्त्री०=छाया।

छाउर*—पुं० [सं० क्षार] राख।

छाक—स्त्री० [हिं० छकना] १. छकने की क्रिया या भाव। २. वह भोजन जो दोपहर के समय खेत पर काम करनेवाले व्यक्ति के लिए भेजा जाता है। दोपहर का कलेवा। ३. शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीजें। चाट। ४. नशा। मद। उदा०—दिन छिनदा छाकी रहत छुटत न बिनु छबि छाकु।—बिहारी। ५. नशीली चीज। मादक पदार्थ। उदा०—आठहू पहर की छाक पीवै।—कबीर। ६. मत्तता। मस्ती।

छाकना—अ० [हिं० छकना] १. तृप्त होना। छकना। २. भर जाना। उदा०—कियो हुमुकि हुंकार छोभि त्रिभुवन भय छाक्यौ।—रत्नाकर। ३. चकित होना।

अ० छकना। धोखा खाना।

छाकु—पुं० [हिं० छाक] मद्य। मदिरा।

छाग—पुं० [√छो (काटना)+गन्] १. बकरा। २. बकरी का दूध। ३. पुरोडाश। ४. मेष राशि।

वि० बकरा-संबंधी। बकरे का।

छागभोजी (जिन्)—वि० [छाग√भुज् (खाना+णिनि] बकरे का मांस खानेवाला।

पुं० भेड़िया।

छागमय—पुं० [सं० छाग+मयट्] कार्तिकेय का छठा मुख।

छाग-मुख—पुं० [ब० स०] १. कार्तिकेय। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।

छागर—पुं० [सं० छागल] बकरा। उदा०—छागर मेंढ़ा बड़ औ छोटे।—जायसी।

छाग-रथ—पुं० [ब० स०] अग्नि।

छागल—पुं० [सं० छगल+अण्] बकरा।

स्त्री० पानी भरने के लिए बनाई हुई चमड़े की मशक। डोल।

स्त्री० [पश्तो] पैर में पहनने का एक गहना।

छाग-वाहन—पुं० [ब० स०] अग्नि।

छागिका—स्त्री० [सं० छागी+कन्, टाप्, ह्रस्व] बकरी।

छागी—स्त्री० [सं० छाग+ङीष्] बकरी।

छाच्छार—वि० [सं० साक्षात्] मूर्तिमान। साकार। उदा०—रानी का है छाच्छार दर्गा है।

छाछ—स्त्री० [सं० छच्छिका] दही का वह घोल जिसमें से मक्खन मथकर निकाल लिया गया हो। मट्ठा।

छाछरी*—स्त्री० [?] मछली।

छाछठ—वि० [सं० षट्षष्ठि] जो गिनती या संख्या में साठ से छः अधिक हो।

पुं० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६६।

छाछी†—स्त्री०=छाछ।

छाज—पुं० [सं० छाद्र] १. सरकंडों, सीकों आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे अनाज फटका जाता है। सूप। २. छप्पर। ३. छज्जा।

पुं० [हिं० छजना] १. छजने की क्रिया या भाव। २. किसी को छलने या ठगने के लिए बनाया जानेवाला रूप। स्वाँग ३. सजावट। ४. वेष-भूषा।

छाजन—स्त्री० [सं० छादन] १. छाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। छवाई। २. छप्पर। ३. घर के ऊपर की बनावट जो छत के रूप में और छाया के लिए होती है। ४. त्वचा का एक रोग जिसमें जलन होती है।

पुं० कपड़ा। वस्त्र।

पुं० [हिं० छजना] छलने या ठगने के लिए धारण किया जानेवाला वेश।

छाजना—अ० [हिं० छजना] १. सुंदर जान पड़ना। २. सुशोभित होना। फबना।

स० १. सुंदर बनाना। सजाना। २. सुशोभित करना।

छाड़ना*—स०=छोड़ना।

छात—स्त्री०=छत।

पुं० १.=छत्र। उदा० —का कहँ बोलि सौहँभा, पातसाहि कर छात।—जायसी। २. छाता।

छाता—पुं० [सं० छत्रकम्; पा० छत्तकम् सि० छद्रु; उ० छाता; मराठी छत्र] १. कपड़े का वह प्रसिद्ध आच्छादन जो छड़ी में लगी हुई तीलियों पर कपड़ा आदि चढ़ाकर बनाया जाता है और जिसे धूप, वर्षा आदि से रक्षित रहने के लिए सिर के ऊपर खोल या तानकर चलते हैं। २. उक्त आकार की कोई वानस्पतिक रचना। छत्ता। जैसे—खुमी का छाता। ३. दे० 'छतरी'।

छाती—स्त्री० [सं० छादिन् छाने या छाया करनेवाला] १. जीवों के शरीर का सामनेवाला वह भाग जो पेट और गरदन के बीच स्थित होता है। वक्षस्थल। २. मनुष्य के शरीर का उक्त भाग, जिसमें स्त्री जाति में स्तन होते हैं।

मुहा०—छाती जलना=अपच के कारण उक्त अंश के भीतरी भागों में जलन होना। **छाती पीटना**=बहुत दुःखी या शोकमग्न होने पर छाती पर हथेली से बार-बार आघात करना। **छाती लगाना**=आलिंगन करना।

३. स्त्रियों का स्तन।

मुहा०—छाती छुड़ाना=ऐसी क्रिया करना जिससे शिशुओं के स्तन-पान करने का अभ्यास छूटे। **छाती पिलाना**=स्त्री का संतान को अपना दूध पिलाना।

४. मन। हृदय।

मुहा०—छाती उमड़ना=प्रसन्नता से फूले न समाना। **छाती जलना**=कोई कष्टदायक घटना या बात होने पर संतप्त होना। **छाती जुड़ाना**

या ठंडी होना=अभिलाषा पूर्ण होने पर मन का शान्त होना । **छाती पत्थर की करना**=अपने हृदय को इतना कड़ा करना या बनाना कि उस पर किसी दुःख का प्रभाव न पड़े। **(किसी की) छाती पर कोदों या मूंग दलना**=किसी के सामने जान-बूझकर ऐसा आचरण या काम करना जिससे उसका दिल दुखता हो। **छाती पर पत्थर रखना**=दुःखी या शोकमग्न होने पर अपने दिल को कड़ा करना । **छाती पर साँप फिरना या लोटना** (क) कलेजा दहल जाना । (ख) ईर्ष्या के कारण व्यथित होना। **छाती फ़टना**=बहुत अधिक असह्य दुःख या वेदना होना । **छाती भर आना**=हृदय गद्गद् हो जाना ।

५. जीवट। साहस। हिम्मत।

छात्र--पुं० [सं० छत्र +ण] [स्त्री० छात्रा] १. विद्यार्थी। २. शिष्य। वि० १. छात्र—संबंधी। २. गुरु या बड़े पर छत्र लगाकर उसके पीछे-पीछे चलनेवाला ।

छात्रवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] निर्धन तथा योग्य छात्रों को विद्याध्ययन करने अथवा किसी विषय में अनुसंधान करने के लिए कुछ समय तक नियमित रूप से दी जानेवाली आर्थिक सहायता। (स्कालर शिप)

छात्रालय--पुं० [सं० छात्र-आलय ष०त०]=छात्रावास ।

छात्रावास--पुं०[सं० छात्र-आवास ष०त०] वह स्थान जहाँ बहुत से छात्र निवास करते हों। छात्रों के रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)

छाद--पुं०[सं०√छद् (छाना)+णिच्+घञ्] १. छत। २. छप्पर।

छादक--वि०[सं०√छद्+णिच्+ण्वुल्—अक] आच्छादित करने या छानेवाला।

छादन--पुं०[सं० √छद्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० छादित] १. छाने या ढकने की क्रिया या भाव। २. वह चीज जिससे कुछ छाया या ढका जाय। आच्छादन। आवरण। ३. छिपाव। दुराव। ४. कपड़ा। ५. चादर। दुपट्टा।

छादित--भू०कृ० [सं०√छद्=णिच्+क्त] ऊपर छाया हुआ। उदा०--तुहिन वाष्प के सुरंग जलद से छादित, इन्दु रश्मि के इन्द्र जाल से स्पर्शित।--पंत।

छादिनी--स्त्री०[सं०√छद्+णिच्+णिनि- ङीष्] १. चमड़ा। २. खाल।

छाद्मिक -वि०[सं० छद्मन्+ठक्—इक] १. (व्यक्ति) जो छद्मवेश धारण किये हो। बहुरुपिया। २. ढोंगी। मक्कार।

छान--स्त्री०[सं० छादन] छप्पर। छाजन ।

स्त्री०[हिं० छानना] छानने की क्रिया या भाव।

पद—छान-बीन (दे०)।

स्त्री० [सं० छंद या हिं० छाँद] चौपायों के पैरों में बाँधी जानेवाली रस्सी।

छानना—स०[सं० चालन] १. (क) चलनी या छाननी में कोई चीज डालकर उसे (चलनी को) बार-बार इस प्रकार हिलाना कि उस चीज के मोटे कण चलनी में बचे रहें और महीन कण नीचे गिर पड़ें। जैसे—गेहूँ छानना। (ख) कपड़े के ऊपर चूर्ण या बुकनी रखकर उसे ऊपर से हाथ आदि से इस प्रकार चलाना कि उसमें का महीन अंश नीचे छनकर गिर पड़े। कपड़छान करना। (ग) किसी तरल पदार्थ को चलनी या वस्त्र में से इस प्रकार निकालना कि उसमें मिले या पड़े हुए मोटे कण ऊपर रह जायँ। जैसे--चाय या दूध छानना। (घ) उक्त के आधार पर पिसी या घुली हुई भाँग के संबंध में उक्त क्रिया करना।

मुहा०—भाँग छानना =भाँग पीस तथा घोलकर पीना।

विशेष—कुछ लोग इसी के आधार पर शराब के साथ 'छानना' क्रिया का प्रयोग करते हैं जो ठीक नहीं है।

२. ऐसी रासायनिक क्रिया करना जिससे एक धातु में मिला हुआ दूसरी धातु का अंश अलग हो जाय। जैसे—तेजाब में सोना छानना। ३. कोई चीज ढूंढ़ने के लिए सब जगह या सब चीजें अच्छी तरह देखना-भालना। जैसे--(क) सारा घर या शहर छानना। (ख) पूरी रामायण या महाभारत छानना।

छाननी—स्त्री०=चलनी।

छान-बीन—स्त्री० [हिं० छानना+बीनना] १. छानने या बीनने की क्रिया या भाव। २. अनुसंधान। जाँच-पड़ताल ।

छाना--स०[सं० छादनक; पा० छाद] १. छाया के लिए किसी स्थान पर कोई आवरण डालकर या कोई रचना खड़ी कर उसे ढकना। जैसे--छाजन छाना। २. छाया करने के लिए किसी स्थान से कुछ ऊपर कोई वस्त्र तानना या फैलाना। ३. आवास के प्रसंग में, निर्मित करना। जैसे—घर या झोपड़ी छाना।

अ०१. किसी चीज या बात का इस प्रकार चारों ओर फैल जाना कि अपने क्षेत्र में हर जगह वही दिखाई दे। जैसे—अंधकार छाना, बादल छाना, रोब छाना। २. डेरा डाल कर या जमकर कहीं रहना। उदा०—जोगिया जी छाइ रह्या परदेश।--मीराँ।

छानि*--स्त्री०=छानी।

छानी--स्त्री०[हिं० छाना] घास-फूस की छाजन।

मुहा०—(किसी की) छानी छवाना=ऐसी व्यवस्था करना कि कोई सुरक्षित रूप से रह सके।

वि० छिपा हुआ। गुप्त।

छाने-छाने*—क्रि० वि० [हिं० छाना] चुपके से। छिपे-छिपे।

छाप—स्त्री०[हिं० छापना] १. छापने की क्रिया या भाव। २. वह ठप्पा या साँचा जिससे कोई चीज छापी जाय।३.छापने से बननेवाला विशिष्टता सूचक कोई चित्र या चिह्न। जैसे--वैष्णवों के अंगों पर गरम धातु से अंकित शंख, चक्र आदि का चिह्न। ४.ऐसी अँगूठी जिस पर छापने के लिए कोई अंक या चिह्न बना हो। मुद्रा।५. अँगूठी (पश्चिम)। ६. कविता के अन्त में रहनेवाला कवि का उपनाम। ७. किसी प्रकार के विशिष्ट प्रभाव के फलस्वरूप दिखाई देनेवाला चिह्न या बात। जैसे—इस कवि पर ब्रजभाषा की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है। ८. किसी कथन, घटना, दृश्य आदि के प्रभावशाली होने या ठीक जान पड़ने के कारण मन पर पड़नेवाला उसका प्रभाव।

छापना--स०[हिं० छाप] १. ठप्पे आदि पर रंग या स्याही लगाकर उसे किसी वस्तु पर इस प्रकार दबाना कि ठप्पे पर बनी हुई आकृति उस वस्तु पर छप या बन जाय। २. यंत्रों की सहायता से अक्षर, चित्र आदि मुद्रित करना। ३. पुस्तक, लेख, समाचार-पत्र आदि प्रकाशित करना। ४. किसी तल पर काला कागज़ रख कर उस पर इस प्रकार चित्र बनाना या कुछ लिखना कि उस तल पर उस कागज की सहायता से चिह्न बन जायँ।

स०=छोपना। उदा०--सब मुख कंजनि खिलत सोक पाला परि छाप्यौ।--रत्नाकर।

छापा--पुं०[हिं० छापना] १. धातु अथवा लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर फूल-पत्ती आदि खुदी रहती है और जिस पर रंग या स्याही लगाकर उसकी छाप किसी तल पर लगाई जाती है। ठप्पा। २. उक्त उपकरण की छाप। ३. विष्णु के आयुधों के वे चिह्न जो भक्त लोग तप्त मुद्रा से अपने शरीर पर अंकित कराते हैं।उदा०--जप माला छापे तिलक....।--बिहारी। ४. मोहर, मुद्रा और उसकी छाप। ५: मंगल अवसरों पर हथेली और पाँचों उँगलियों का वह चिह्न जो हल्दी आदि की सहायता से दीवारों आदि पर लगाया जाता है। ६. पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छापने की कला या यंत्र। ७. शत्रु या शिकार पर अचानक किया जानेवाला हमला।

क्रि० प्र०--डालना।--मारना।

८. किसी की तलाशी लेने के लिए और कुछ विशिष्ट वस्तुएँ पकड़ने के लिए पुलिस का अचानक या अप्रत्याशित रूप से कहीं पहुँचकर सब चीजें देखना-भालना।

क्रि-प्र०--मारना।

छापा-खाना--पुं०[हिं०छापना+फा० खानः] वह संस्थान जहाँ यंत्रों आदि की सहायता से छपाई का काम होता हो। मुद्रणालय। (प्रिंटिंग प्रेस)

छापामार--वि०[हिं० छापा+मारना] अचानक किसी पर आक्रमण करनेवाला। छापा मारनेवाला।

छापामारी--स्त्री०[हिं० छापामार] छापा मारने की क्रिया या भाव।

छाब†--पुं०[देश०] घुटना।

छाबड़--पुं०[हिं० छाबड़ी] बड़ी छाबड़ी। उदा०--मिणधर छाबड़ मांय, पड़ै न राणप्रतापसी।--दुरसाजी।

छाबड़ी--स्त्री०[हिं० छाबा] वह टोकरी या थाल जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं। खोंचा।

छाबा†--पुं०=झाबा।

छाम†--वि०=छाँह।

वि०=क्षाम।

छामोदर*--वि०[स्त्री० छामोदरी]=क्षामोदर।

छाय†--स्त्री०=छाया।

छायल--स्त्री०[?] स्त्रियों की एक प्रकार की कुरती।

छायांक--पुं०[सं० छाया-अंक ब०स०] चंद्रमा।

छाया--स्त्री०[सं०√ छो (काटना)+य--टाप्] १. वह अंधकार या अंधकारपूर्ण वातावरण जो किसी स्थान (अवकाश) में प्रकाश की किरणें किसी बीच में पड़नेवाली आड़ या आवरण के कारण न पहुँच सकने पर उत्पन्न होता है। २. ऐसा स्थान जहाँ उक्त प्रकार का अंधकार या अंधकारपूर्ण वातावरण हो। ३. ऊपर या सामने रहनेवाली वह चीज जो धूप, वर्षा, शीत आदि से बचाती है। ४. वह अंधकारपूर्ण आकृति जो किसी स्थान पर प्रकाश की किरणें न पहुँच सकने पर बनती है और यह उस वस्तु की आकृति जैसी होती है जो प्रकाश की किरणों को किसी स्थान पर नहीं पहुँचने देती। परछाई। प्रतिबिंब। ५. प्रायः किसी के पीछे या साथ टोंह, रक्षा आदि के लिए लगा रहनेवाला व्यक्ति। ६. किसी वस्तु के अनुकरण पर बनी हुई और कुछ-कुछ वैसी ही जान पड़नेवाली पर कम महत्त्व की चीज। प्रतिकृति। अनुहार। ७. ऐसी तत्त्वहीन या निस्सार बात या पदार्थ जो किसी वास्तविक या महत्त्वपूर्ण बात या पदार्थ की भद्दी नकल भर हो। व्यर्थ की निकम्मी और भ्रामक प्रतिकृति। ८. किसी बात या पदार्थ का बहुत ही क्षीण या नाम-मात्र का अवशेष जो उस मूल बात या पदार्थ का आभास देता हो। ९. चित्र का वह अंश जहाँ पर किसी अंश की छाया पड़ने के कारण अपेक्षाकृत कुछ अधिक कालापन आ गया हो। (शेड) १०. भूत-प्रेत आदि के कारण होनेवाली बाधा। ११. कांति। दीप्ति। १२. एक रागिनी। १३. दुर्गा। १४. सूर्य की पत्नी। १५. आर्या छंद का एक भेद।

छाया-कर--पुं० [छाया √ कृ (करना)+अच्] किसी के पीछे छतरी लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

छाया-गणित--पुं०[मध्य०स०] गणित की वह प्रक्रिया जिससे उनकी छाया के सहारे ग्रहों की गति-विधि आदि जानी जाती है।

छाया-गत--वि० दे० 'पार्श्वगत'।

छाया-ग्रह--पुं०[छाया √ग्रह् (ग्रहण)+अच्] आईना। शीशा।

छाया-ग्राहिणी--स्त्री०[सं० छायाग्राहिन्+ङीप्] सिंहिका (दे०) नामक राक्षसी।

छाया-ग्राही--(हिन्) वि० [सं० छाया√ग्रह +णिनि] [स्त्री० छाया-ग्राहिणी] किसी की छाया के आधार पर ही उसे ग्रहण कर लेने या पकड़नेवाला।

छाया-चित्र--पुं०[मध्य० स०] १. वह चित्र जो विशेष प्रकार से निर्मित कागज या शीशे पर किसी वस्तु की छाया मात्र पड़ने से उतर आता है। २. उक्त प्रतिबिम्ब को छापने से बननेवाला चित्र। (फोटो)

छाया-चित्रण--पुं०[ष०त०] वह कला या क्रिया जिससे किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब एक प्रकार के शीशे पर ले लिया जाता है और उसके द्वारा एक विशेष प्रकार के कागज पर उसका चित्र छापा जाता है। (फोटोग्राफी)

छाया-तनय--पुं०[ष०त०] शनि।

छाया-दान--पुं०[मध्य०स०] एक प्रकार का दान जिसमें ग्रहजन्य अरिष्टों की शांति के लिए काँसे की कटोरी में घी या तेल भरकर पहले उसमें अपनी छाया देखी जाती है और तब उस पात्र का घी या तेल दक्षिणा सहित किसी को दे दिया जाता है।

छाया-नट--पुं०[ब०स०] षाडव संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

छाया नाटच--पुं०[सं०] पुतलियों का एक प्रकार का नाटक जिसमें चमड़े की पुतलियाँ और पुतले बनाकर उन्हें कठपुतलियों की तरह इस प्रकार नचाया और उनसे अभिनय कराया जाता था कि उनकी छाया आगे पड़े हुए उस पर्दे पर पड़ती जो दर्शकों के सामने होता था।

विशेष--इसका आरम्भ चीन में और विकास भारत में हुआ था जहाँ से यह भारत और अरब होता हुआ अफ्रीका और यूरोप में पहुँचा था। यही आधुनिक चलचित्रों का मूल रूप माना गया है।

छाया-पथ--पुं०[मध्य०स०] असंख्य नक्षत्रों का विशिष्ट समूह जो हमें उत्तर-दक्षिण फैला हुआ दिखाई देता है। आकाशगंगा। (गैलैक्सी)

विशेष--वस्तुतः महाशून्य में ऐसे अनेक छाया-पथ जगह-जगह फैले

हुए हैं और हमारी पृथ्वी तथा सौर मंडल इसी प्रकार के एक छाया-पथ के अंतर्गत हैं।

छायापाती (तिन्)--पुं०[सं० छाया√ पत् (गिरना)+णिनि] सूर्य।

छायापात्र--पुं०[ष० त०] वह छोटा पात्र जिसमें घी या तेल भर कर छाया-दान किया जाता है।

छाया-पुरुष--पुं०[मध्य०स०] हठ योग की एक साधना के फलस्वरूप द्रष्टा को आकाश में दिखाई पड़नेवाली निजी छाया रूपी आकृति।

छायाभ (ा)--वि०[सं० छाया-आभा ब०स०] १. जो छाया से युक्त हो। २. जिस पर छाया पड़ी हो।

स्त्री० अंधकार और प्रकाश। उदा०--यह छायाभा है अविच्छिन्न यह आँख मिचौनी चिर सुन्दर।--पंत।

छायामय--वि०[सं० छाया+मयट्] छाया से युक्त।

छायामान--पुं०[ब०स०] चंद्रमा।

छाया-मित्र--पुं०[ष०त०] छतरी।

छाया-मूर्ति--स्त्री०[मध्य०स०] छाया पड़ने से बनी हुई आकृति या रूप।

छाया-मृगधर--पुं० [छाया-मृग मध्य०स०, छायामृग-धर ष०त०] चंद्रमा।

छाया-यंत्र--पुं० [मध्य०स०] धूप-घड़ी।

छाया-लोक--पुं० [मध्य ० स०] अदृश्य जगत्। इस लोक से परे माना जानेवाला वह लोक जो दिखाई न देता हो।

छाया-वाद--पुं० [ष०त०] आधुनिक साहित्य में आत्म अभिव्यक्ति का वह नया ढंग या उससे संबंध रखनेवाला सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी सौंदर्यमय प्रतीक की कल्पना करके ध्वनि, लक्षणा आदि के द्वारा उसके संबंध में अपनी अनुभूति या आंतरिक भाव प्रकट किए जाते हैं।

छायावादी (दिन्)--वि०[सं० छायावाद+इनि] १. छायावाद संबंधी (रचना)। २. छायावाद के सिद्धान्त माननेवाला या उसका अनुसरण करनेवाला (व्यक्ति)।

छाया-सुत--पुं० [ष० त०]शनि।

छार†--पुं० [सं० क्षार] १. जली हुई वस्तु का वह अंश जो भस्म या राख हो गया हो। २. खारा नमक।

छारना*--स० [हिं० छार] १. पूरी तरह से जलाकर राख करना। २. चौपट या नष्ट करना।

छारा*--पुं०=छाला।

छाल*--स्त्री० [सं०पा०, प्रा० छल्ली] वृक्षों आदि के तने पर का कड़ा, खुरदरा और मोटा छिलका।

*पुं० चिट्ठी या पत्र (जो पहले छाल पर लिखा जाता था)।

पुं० छाला। चर्म। उदा०--बैठ सिंघ छाला होइ तपा।--जायसी।

†स्त्री०=उछाल(पश्चिम)।

छालक*--वि० [सं० क्षालक] [स्त्री०छालिका] धोने या धोकर साफ करनेवाला। उदा०--त्रिपथ गासि पुन्य रासि पाद-छालिका।--तुलसी।

छालटी--स्त्री०[हिं० छाल] एक प्रकार का कपड़ा जो अलसी आदि के रेशों से बनाया जाता है।

छालित--भू० कृ०[सं० प्रक्षालित] धोया अथवा धोकर साफ किया हुआ।

छालिया*--वि० [सं० स्थाली] एक प्रकार की छिछली तथा छोटी कटोरी।

पुं० [?] १. सुपारी के कटे हुए छोटे-छोटे टुकड़े। २. बादाम, पिस्ते आदि के एक में मिले हुए छोटे टुकड़े।

छालो*--पुं०=छागल (बकरी)।

छाँव--स्त्री०=छाँह।

छावना†--स०= छाना।

छावनी--स्त्री०[हिं० छाना]१. छप्पर आदि छाने की क्रिया या भाव। २. छप्पर। ३. डेरा। पड़ाव।

मुहा०--छावनी छाना=मार्ग में डेरा लगाना। अस्थायी रूप से कहीं परदेश में जाकर रहना।

४. शहर का वह भाग जहाँ सैनिक रहते हों। सैनिकों की बस्ती। (कैन्टूनमेंट)

छाहरि--स्त्री०[हिं० छाँह] छाया। उदा०--आपनि छाहरि तेज न पास। --विद्यापति।

छिउँकी--स्त्री० [हिं० च्यूँटी] [पुं० छिउका]१. एक प्रकार की भूरे रंग की च्यूँटी। २. एक प्रकार का कीड़ा।

†स्त्री०=चिकोटी।

छिकना--अ०=छिकना।

छिकोरा--पुं०[देश०] एक वन्य पशु।

छिछ--पुं० [अनु०] १. फुहारा। फव्वारा। उदा०--ऊँच छिछ ऊछलै अति।--प्रिथीराज। २. छींटा।

†वि० =छूँछा।

छिछना--स०[सं० इच्छ] चाहना। इच्छा करना।

छि--अव्य०[अनु०] अश्रद्धा,घृणा, तिरस्कार आदि का सूचक एक शब्द। जैसे--छिः तुम भी ऐसा करने लगे।

छिअ--वि०=छः (संख्या)।

छिउकी--स्त्री०=छिउँकी।

छिउल--पुं०[सं० शाल्मलि ?] टेसू। पलाश।

छिकना--अ० [हिं० छेंकना] १. (स्थान आदि का) घेरा जाना। २. मार्ग में अवरुद्ध किया या रोक लिया जाना। ३. (खाते में नाम पड़ी हुई रकम का वसूल होने पर) काटा या रद्द किया जाना।

छिकनी--स्त्री० [सं० छिक्कनी] नकछिकनी नाम की एक बूटी।

छिकरा--पुं०=चिकारा।

छिकुला†--पुं०=छिलका।

छिक्कनी--स्त्री० [सं० छिक्√कन् (शब्दकरना)+अप ङीष्] नकछिकनी नाम की बूटी।

छिक्का--स्त्री० [सं० छिक्√कै (शब्द करना)+क--टाप्] छींक।

†पुं०=छीका।

छिगार†--पुं०=चिकारा।

छिगुनी--स्त्री०[सं० क्षुद्र+हिं० उँगली] हाथ या पैर की सब से छोटी उँगली। कानी उँगली।

छिगुली†--स्त्री० छिगुनी।

छिच्छ*--पुं०=छींटा।

छिछकारना--स०=छिड़कना।

छिछड़ा—पुं०=छीछड़ा।

छिछड़ी—स्त्री०[हिं० छिछड़ा] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का आवरण।

छिछला—वि०[सं० उच्छल] [स्त्री० छिछली] १. जिसमें गहराई न हो। कम गहरा। जैसे—छिछला पात्र। २. (जलाशय) जो कम गहरा हो और इसी लिए जिसमें जल थोड़ी मात्रा में रहता हो। ३. तुच्छ (बात या स्वभाव)।

छिछिल—वि०=छिछला।

छिछोरा—वि०[हिं० छिछला] [स्त्री० छिछोरी, भाव० छिछोरापन] (व्यक्ति) जो स्वभाव से गंभीर न हो।

छिजना†—अ०=छीजना।

छिटकना—अ०[सं० क्षिप्ति] १. किसी पदार्थ के कणों का इधर-उधर बिखरना। २. =छिड़कना।

स०=छिटकाना।

छिटकाना—स०[हिं० छिटकना] किसी पदार्थ के कणों को चारों ओर डालना, फेंकना या बिखेरना। जैसे—अन्न या बालू छिटकाना।

छिटकी†—स्त्री०[हिं० छींटा] कोई चीज छिटकने के कारण पड़ा हुआ उसका कण या चिह्न।

छिट-फुट—क्रि० वि०[हिं० छिटकना+अनु०] १. कुछ यहाँ कुछ वहाँ। थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ। २. कहीं-कहीं। चुट-फुट।

वि० गिनती या मान में कम।

छिटवा†—पुं०[सं० शिक्य] टोकरा।

छिड़कना—स० [हिं० छींटना] १. जल या कोई तरल पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके छींटे बिखर कर चारों ओर पड़ें। जैसे—आग या जमीन पर पानी छिड़कना, अभ्यागतों पर गुलाब-जल छिड़कना। २=छिटकना।

छिड़का†—पुं०=छिड़काव।

छिड़काई—स्त्री०[हिं० छिड़कना] १. छिड़कने का कार्य या भाव। २. छिड़कने का पारिश्रमिक या पुरस्कार। जैसे—गुलाब छिड़काई।

छिड़काव—पुं०[हिं० छिड़कना] जल या कोई तरल पदार्थ छिड़कने की क्रिया या भाव।

छिड़ना—अ०[हिं० छेड़ना] १. छेड़ा जाना। जैसे-बात छिड़ना, राग-छिड़ना। २. आरंभ होना। जैसे—युद्ध छिड़ना।

छिण*—पुं०=क्षण।

छित*—वि०[सं० सित] सफेद।

छितनी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की छिछली या कम गहरी टोकरी।

छितराना—अ०, स०=छितराना।

छितर-बितर—वि०=तितर-बितर।

छितरा—वि०[हिं०छितराना] छितराया हुआ।

छितराना—अ०[सं० क्षिप्त+करण] १. किसी वस्तु के कणों या छोटे-छोटे टुकड़ों का चारोंओर बिखरना। २. थोड़े से पशुओं, व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का विस्तृत भू-भाग में फैलना। जैसे—यहूदी सारे संसार में छितरे हुए हैं।

स० १. किसी वस्तु के कणों को चारों ओर गिराना, फेंकना या बिखेरना। २. दूर-दूर या विरल करना। जैसे—किताबें छितराना। ३. व्यक्तियों, पशुओं आदि को तितर-बितर करना।

छितराव—पुं०[हिं० छितराना] छितरे या छितराए हुए होने की अवस्था या भाव।

छितव*—स्त्री०=क्षिति।

छिताई—स्त्री०[स० क्षिति] देवगिरि के राजा की पुत्री।

छिति*—स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी। भूमि।

छितिकंत, छितिनाथ, छितिपाल—पुं० [हिं० छिति+सं० कंत, नाथ या पाल] राजा।

छितिरुह—पुं०[हिं० छिति+सं० रुह] वृक्ष।

छितीस*—पुं०[सं० क्षितीश] राजा।

छित्ति—स्त्री० [सं०√छिद् (छेदना)+क्तिन्] काटने अथवा छेदने की क्रिया या भाव।

छिदक—पुं०[सं०√छिद् (छेदना)+क्वुन्—अक] १. वज्र। २. हीरा।

छिदना—अ० [हिं० छेदना] १. नुकीली वस्तु के धँसने या धँसाये जाने के कारण किसी वस्तु में आर-पार छेद होना। जैसे—कान या नाक छिदना। २. सुराख होना। छेदा जाना। जैसे—तीर से शरीर छिदना। ३. घायल होना। ४. चुभना। धँसना।

छिदवाई—स्त्री०[हिं० छिदवाना] १. छेदने की क्रिया या भाव। २. छेदने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

छिदवाना—स०[हिं० छेदना का प्रे० रूप] [भाव० छिदवाई] छेद या सुराख करवाना।

छिदाना—स०=छिदवाना।

छिदि—स्त्री०[√छिद्(काटना)+इन्] १. काटने या छेदने की क्रिया या भाव। २. कुल्हाड़ी। ३. वज्र।

छिदिर—पुं०[सं० √छिद्+किरच्] १. कुल्हाड़ी। २. तलवार। ३. अग्नि। ४. रस्सी।

छिद्र—पुं०[√छिद्+रक्] १. किसी वस्तु के बीच में का दोनों ओर से खुला हुआ छोटा भाग।छेद। जैसे—कपड़े या चलनी में का छिद्र। २. किसी घन या ठोस वस्तु में का वह गहरा स्थान जिसमें उस वस्तु का कुछ अंश निकाल लिया गया हो। जैसे—जमीन, दीवार या फल में का छिद्र। ३. किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति में होनेवाली कोई त्रुटि या दोष। जैसे—छिद्रान्वेषण।

छिद्र-कर्ण—वि०[ब० स०] जिसके कान छिदे या बिंधे हुए हों।

छिद्रदर्शी (र्शिन्)—पुं०[छिद्र√दृश् (देखना)+णिनि] व्यक्ति, जो दूसरों के कार्यों में त्रुटियाँ या दोष ही ढूँढ़ता हो।

छिद्र-पिप्पली—स्त्री०[मध्य० स०] गजपिप्पली।

छिद्र-वैदेही—स्त्री०[मध्य० स०] गजपिप्पली।

छिद्रांतर्—पुं०[सं० छिद्र-अंतर् ब० स०] १. सरकंडा। २. नरकुल।

छिद्रांश—पुं० [सं० छिद्र-अंश ब० स०] सरकंडा।

छिद्रात्मा (त्मन्)—पुं०[सं० छिद्र-आतमन् ब० स०] छिद्रान्वेषी।

छिद्रान्वेषण—पुं० [सं० छिद्र-अन्वेषण ष० त०] किसी कार्य, बात या व्यक्ति में से त्रुटियाँ या दोष ढूँढ़ने का काम।

छिद्रान्वेषी (षिन्)—पुं०[सं० छिद्र-अनु√इष् (गति+णिनि] वह जो छिद्रान्वेषण करता हो। दूसरों के कार्यों में से त्रुटियाँ या दोष खोजनेवाला।

छिन*—पुं०=क्षण।

छिनक—पुं०[हिं० छिन+एक] एक क्षण।

क्रि० वि० क्षण भर। थोड़ी देर।

छिनकना—स०[हिं० छिड़कना]नाक में से इस प्रकार जोर से हवा निकालना कि उसमें रुका हुआ मल बाहर निकल पड़े। सिनकना।

छिनकु--पुं०, क्रि० वि०=छिनक।

छिनकुरना—अ०[हिं० छिनकु+करना] १. एक क्षण रुकना। २. रुकना। ३. विलंब करना।

छिनछबि—वि०[हिं० छिन+छवि] जिसकी छबि क्षणिक या अस्थायी हो।

स्त्री० बिजली। विद्युत्।

छिनदा—स्त्री०[सं० क्षणदा] रात।

छिनना—अ०[हिं० छीनना](किसी अधिकार, वस्तु आदि का किसी से) छीना जाना। जैसे—धन छिनना।

छिनभंग—वि०[सं० क्षणभंगुर]१. जो क्षण में नष्ट हो जाने को हो। क्षणिक। २. नश्वर।

छिनरा†—वि०=छिनाल।

छिनवाना—स०[हिं० छीनना का प्रे० रूप] किसी को किसी दूसरे से कोई चीज छीनने में प्रवृत्त करना। छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना—अ०[हिं० छिनना] छीन लिया जाना।

स० छीनना।

छिनाल—वि०[सं० छिन्ना] (स्त्री) जिसका संबंध बहुत से पर-पुरुषों से हो।

स्त्री० पुंश्चली। व्यभिचारिणी स्त्री।

छिनाला—पुं०[हिं० छिनाल] पर-पुरुष या पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित संबंध या सहवास। व्यभिचार।

छिनौछबि*—स्त्री०[हिं० छिनछवि] बिजली।

छिन्न—वि०[सं०√छिद् (छेदना)+क्त] १. (किसी वस्तु का वह अंश) जो मूल वस्तु से कटकर अलग हुआ हो। २. (वस्तु) जिसमें का कोई अंश या भाग काट लिया गया हो अथवा कट कर अलग हो गया हो। खंडित। ३. जो किसी के साथ लगा हुआ न हो। किसी से अलग। ४. नष्ट किया हुआ। ५. क्षीण। ६. थका हुआ। क्लांत।

छिन्नक—वि०[सं० छिन्न+कन्] जिसका कुछ भाग कटकर अलग हो गया हो।

पुं०ज्यामिति में, किसी कोण या कोणाकार गढ़े हुए घन पदार्थ का वह बचा हुआ भाग जो उसका ऊपरी अंश तल के समानान्तर धरातल पर से काट लेने के बाद बच रहे। (फ्रस्टम)

छिन्न-धान्य--वि०[ब० स०] (शत्रुओं द्वारा घिरी हुई वह सेना) जिसके पास धान्य न पहुँच सकता हो।

छिन्न-नास--वि०[ब० स०] जिसकी नाक कटी हुई हो। नकटा।

छिन्न-नासिक--वि०[ब० स०] कटी हुई नाकवाला। नकटा।

छिन्न-पत्री--स्त्री[ब० स०] पाठा।

छिन्न-पुष्प—पुं०[ब० स०] पुन्नाग की जाति का वृक्ष। तिलक।

छिन्न-बंधन—वि०[ब० स०] जिसके बंधन खोल या काट दिये गये हों। मुक्त।

छिन्न-भिन्न—वि०[द्व० स०] १. (वस्तु) जिसके अंग अथवा अंश कट-फट या टूट-फूट कर इधर-उधर बिखर गये हों। २. तितर-बितर। बिखरा या छितराया हुआ।

छिन्न-मस्त (क)—वि०[ब० स०] जिसका सिर कट गया हो।

छिन्न-मस्तका—स्त्री०[ब० स०, टाप्] दस महाविद्याओं में से एक देवी जिसके संबंध में कहा जाता है कि वह अपना सिर हथेली पर रखती है और गले में से निकलती हुई रक्त धारा पीती है।

छिन्न-मस्ता—स्त्री०[ब० स०, टाप्]=छिन्न-मस्तका।

छिन्न-मूल—वि० [ब० स०] जो जड़ से उखाड़ या काट दिया गया हो।

छिन्न-रुह--पुं०[छिन्न√रुह् (उगना)+क] तिलक नामक वृक्ष।

छिन्न-रुहा—स्त्री०[छिन्नरुह+टाप्] गुर्च। गुडुची।

छिन्न-वेशिका--स्त्री०[छिन्न-वेश ब० स०, कन्-टाप्, इत्व] पाठा।

छिन्न-व्रण--पुं०[कर्म०स०] चोट, हथियार आदि से शरीर में होनेवाला घाव।

छिन्न-श्वास--पुं०[कर्म० स०] एक प्रकार का श्वास रोग।

छिन्नांत्र--पुं०[सं० छिन्न-अंत्र ब० स] एक प्रकार का उदर रोग।

छिन्ना--स्त्री० [सं० छिन्न+टाप्] १. गुर्च। २ व्याभिचारिणी स्त्री। छिनाल।

छिन्नाधार—वि०[छिन्न+आधार ब० स०] १. जिसका आधार कट या टूट चुका हो। उदा०—पात हत लतिका वह सुकुमार पड़ी है छिन्नाधार।--पंत। २. निस्सहाय।

छिपकली--स्त्री०[सं० शेप(=दुम) या रोप्यवान्] एक प्रसिद्ध चार पैरों और लंबी दुमवाला सरी-सृप जो दीवारों तथा छतों पर रेंगता है और कीड़े-मकोड़े पकड़कर खाता है।

छिपना—अ० [सं० क्षिप्=डालना] १. दूसरों की दृष्टि से ओझल होने के लिए किसी आड़ के पीछे खड़े होना अथवा किसी गुप्त स्थान में चले जाना। जैसे—चोर आलमारी के पीछे छिप गया था। २. किसी चीज का इस प्रकार ढका जाना कि वह दृश्य न रहे। जैसे--वस्त्र से अंग छिपना, बादलों में सूर्य छिपना। ३. किसी ऐसे स्थान या स्थिति में होना कि दूसरों को ज़ल्दी उसका पता न लग सके। जैसे—वे छिपे-छिपे चालें चलते हैं। ४. जो प्रकट या प्रत्यक्ष न हो। ५. अस्त होना। जैसे—दिन छिपना।

छिपाठी—स्त्री०[?] किनारे का भाग।

छिपाना—स०[हिं० छिपना] १. दूसरों की दृष्टि से बचाकर अथवा उनकी दृष्टि से बचाने के लिए किसी (जीव या वस्तु) को आड़ या गुप्त स्थान में रखना। जैसे--यह चित्र मैंने संदूक में छिपा दिया था। २. किसी वस्तु या शरीर के किसी अंग को वस्त्र आदि से ढाँकना। ३.किसी बात की किसी को जानकारी न कराना अथवा न होने देना। जैसे—भेद छिपाना।

छिपाव--पुं०[हिं० छिपाना] छिपने या छिपाने की क्रिया या भाव। दुराव।

छिपिया—पुं० [?] दर्जी। उदा०--अँगिया जो उघड़ी हरेलाल की छिपिया को नइआँ।

पुं०=छीपी।

स्त्री०[हिं० छीपा] छोटा छीपा या डलिया।

छिपी—पुं०=छीपी।

छिपे-छिपे--क्रि० वि०[हिं० छिपना] इस प्रकार गुप्त रूप से कि दूसरों को पता न चले।

छिप्र--क्रि० वि०=क्षिप्र।

छिमता†--स्त्री०=क्षमता।

स्त्री०=क्षमा।

छियना--अ०[हिं० छीजना] क्षीण होना। उदा०--काम दंभ मद श्रवण छिया है।--निराला।

छिया--स्त्री०[हिं० छी] गुह। मल।

मुहा०--छिया छरद करना=गुह और वमन की तरह घृणित समझकर दूर हटाना। उदा०--जो छिया छरद करि सकल संतति तजी तासौं मैं मूढ़-मति प्रीति ठानी।--सूर।

†स्त्री०[?] युवती।

छियाज--पुं०[हिं० ब्याज का अनु०] ब्याज की रकम पर भी जोड़ा जाने वाला ब्याज। कटुआँ ब्याज।

छियानबे--वि०[सं० षण्णवति] जो गिनती में नब्बे से छः अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या--९६।

छियालीस--वि०[सं० षट्चत्वारिंशत्; प्रा० छायालीसम्] जो गिनती में चालीस से छः अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या--४६।

छियासठ--वि०[सं० षट्षष्टि; प्रा० छसठि, छवठिठ्म्] जो साठ से छः अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या--६६।

छियासी--वि०[सं० षड शीति; या छडसीति; प्रा० छडसीईअँ] जो संख्या में अस्सी से छः अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या--८६।

छिरकना†--स०=छिड़कना।

छिरना*--अ०=छिलना।

*अ०=छिड़ना।

*स०=छीलना।

छिरिआना--अ० दे० 'छिटकना'। उदा०--उघसल केस कुसुम छिरिआयल।--विद्यापति।

छिलक--पुं०[सं० तिलक] तिलक नामक वृक्ष।

छिलकना†--स०=छिड़कना।

छिलका--पुं०[सं० छिल्लक] वह आवरण जिसके अन्तर्गत फल का सार भाग रहता है। फल की त्वचा। जैसे--केले या सेब का छिलका।

छिलन--स्त्री०[हिं० छिलना] १. छिलने या छीलने की क्रिया या भाव। २. शरीर के किसी अंग की त्वचा रगड़ आदि के कारण छिल जाने से होनेवाला घाव।

छिलना--अ०[हिं० छीलना] १. फलों आदि का छिलका उतारा जाना। २. वृक्ष आदि की छाल उतारी जाना। ३. पशु आदि की खाल मांसल भाग पर से उतारी जाना। ४. शरीर के किसी अंग में रगड़ लगने से त्वचा का उतर जाना।

छिलवाना--स०[हिं० छीलना का प्रे० रूप] छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिलाई--स्त्री०[हिं० छीलना] छिलने या छीलने की क्रिया या भाव। छीलने की मजदूरी।

छिलाना--स० [हिं० छीलना का प्रे०] छीलने का काम दूसरे से कराना।

†अ०=छिलना।

छिल्लड़†--पुं०=छिलका।

छींक--स्त्री०[सं० छिक्का] १. शरीर का एक प्राकृतिक व्यापार जिसमें श्वास की वायु अकस्मात् नाक और गले से एक साथ ही एक विशिष्ट प्रकार का शब्द करती हुई निकलती है। २. उक्त शारीरिक व्यापार से होनेवाला शब्द।

छींकना--अ०[हिं० छींक] सहसा जोर से नाक और मुँह में से इस प्रकार साँस फेंकना कि जोर का शब्द हो।

छींका--पुं०[सं० शिक्यं,प्रा० सिक्का] १. दीवार की खूँटी अथवा छत में की कड़ी में टाँगा या लटकाया जानेवाला तारों या रस्सियों का वह उपकरण जिसमें खाने, पीने आदि की रखी हुई वस्तुएँ चूहों, बिल्लियों, बच्चों आदि से सुरक्षित रहती हैं।

मुहा०--बिल्ली के भाग से छींका टूटना=संयोग से कोई अभीष्ट या वांछित घटना घटित होना।

२. बैलों के मुँह पर बाँधी जानेवाली रस्सियों की जाली। ३. झूला। (क्व०)

छींट--स्त्री०[सं० क्षिप्त, हिं० छींटना] १. पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ का किसी तल से टकराने पर उड़नेवाला छोटा जल-कण या बूंद। २. किसी वस्तु, वस्त्र, शरीर आदि पर उक्त जल-कण या बूंद पड़ने से होनेवाला दाग या धब्बा। ३. एक प्रकार का वह कपड़ा जिस पर छापकर बेल-बूटे या फूल पत्तियाँ बनाई गई हों। ४. चित्र कला में, चित्रों में बनाये जानेवाले बेल-बूटे या फूल-पत्तियाँ।

छींटना--स०=छितराना।

स०=छिड़कना।

छींटा--पुं०[संक्षिप्त हिं० छींटना] १. झटके से उछली या उछाली हुई जल अथवा द्रव पदार्थ की बूंदें। जैसे--(क) मुंह पर पानी का छींटा देना। (ख) कीचड़ में पत्थर फेंकने से छींटे उड़ना। २. उक्त बूंदों के वस्त्र आदि पर पड़ने से होनेवाला धब्बा। ३. हलकी वृष्टि। ४. मुट्ठी में बीज भरकर एक बार में खेत में बिखेरने की प्रक्रिया। ५. बोआई का वह ढंग जिसमें बीज खेत में छींटे जाते हैं। ६. चंडू या मदक की एक मात्रा। दम। ७. किसी को खिन्न या लज्जित करने के लिए कही जानेवाली चुभती हुई व्यंग्यपूर्ण बात।

छींबी--स्त्री० [सं० शिम्बी] १. पौधे की फली जिसमें बीज रहते हैं। २. मटर की फली। ३. पशुओं विशेषतः गाय, बकरी, भैंस आदि के थन में का फली के आकार का वह अंश जो नीचे लटकता रहता है और जिसे खींच तथा दबाकर दूध निकाला जाता है।

छी--अव्य०[अनु०] घृणा, तिरस्कर, धिक्कार, आदि का सूचक एक अव्यय।

मुहा०--छी छी करना=घृणा करना।

स्त्री०[अनु०] छिया। गूह।

छीअना*--स०=छूना।

छीआ--स्त्री०=छिया।

छीआ-बीआ--वि० [अनु०]छिन्न-भिन्न।

छीका--पुं०=छींका।

छीछ--वि०[सं० क्षीण] क्षीण। दुर्बल। उदा०--लाज की आंचनि या चित राचन नाच नचाई हौं नेह न छीछैं।--देव।

छीछड़ा--पुं०[सं० छुच्छ, प्रा०, तुच्छ] १. कटे हुए मांस का रद्दी टुकड़ा। २. पशुओं की अंतडी का वह भाग जिसमें मल भरा होता है।

छीछना--अ० [सं० क्षीण] क्षीण होना।

छीछल†--वि०=छिछला।

छीछा--वि०[स्त्री० छी छी]=छिछला।

छीछालेदर--स्त्री०[हिं० छीछी] बुरी तरह से की हुई दुर्गति।

छीज--स्त्री०[हिं० छीजना] १. किसी वस्तु में का वह अंश जो नष्ट हो गया हो। २. कमी। घाटा। हानि।

छीजना--अ०[सं० क्षीण] १. उपयोग, व्यवहार आदि में आते रहने अथवा पुराने पड़ने के कारण किसी चीज का क्षीण होना या घिस जाना। २.उपयोग में आ जाने अथवा व्यय हो जाने के कारण किसी चीज़ का कम होना। ३. हानि होना। उदा०--लंकापति-तिय कहति पियसों या मैं कछू न छीजौ।--सूर। ४. नष्ट होना।

छीट†--स्त्री०=छींट।

छीटा†--पुं० [सं० शिक्य, हिं० छींका] [स्त्री० अल्पा० छिटनी] १. वाँस की खमाचियों या किसी अन्य वृक्ष की पतली टहनियों का वना हुआ टोकरा। २. चिलमन। चिक।

छीड़--स्त्री० [सं० क्षीण] मनुष्यों के जमघट का अभाव। 'भीड़' का विपर्याय।

छींण--वि० [सं० क्षीण] क्षीण। दुर्बल।

वि०[सं० छिन्न, प्रा० छिण्ण] टूटा हुआ। उदा०--छीणे जाणि छछोहा छूटा।--प्रिथीराज।

छीत (ति)†--स्त्री०[व्रज० छीना=छूना] १. छूने या स्पर्श करने की क्रिया या भाव। २. संपर्क। संबंध। उदा०--सो करु सूर जेहि भाँति रहै पति जनि वल बाँधि वढ़ावहु छीति।--सूर।

†स्त्री०=छीज।

छीदा--वि०[सं० क्षीण] जो घना या सघन न हो। उदा०--मांहिलीं मांड़ली छीदा होइ।--नरपतिनाल्ह।

वि०[सं० छिद्र] जिसमें वहुत से छेद हों।

छीन*--वि०=क्षीण।

छीन-झपट--स्त्री०[हिं० छीनना+झपटना] किसी से अथवा आपस में एक दूसरे से कुछ छीनने के लिए झपटने की क्रिया या भाव।

छीनना--स०[सं० छिन्न; प्रा० छिण्ण; वं० छिना; सिं० छिनो, छिनणु; गु० छिनवूं; मराठी छिण (णें)] १. छिन्न करना। काटकर अलग करना। २. किसी के हाथ से कोई वस्तु बलात् ले लेना। ३. अनुचित रूप से किसी की वस्तु अपने अधिकार में कर लेना। ४. किसी को दिया हुआ अधिकार, सुविधा आदि वापस ले लेना। ५. दे० 'रेहना'।

छीना†--स०=छूना। (व्रज)

छीना खसोटी--स्त्री०=छीन-झपट।

छीना-छीनी--स्त्री०=छीन-झपट।

छीना-झपटी--स्त्री०=छीन-झपट।

छीप*--स्त्री०[हिं० छाप] १. मुद्रण का चिह्न। छाप। २. चिह्न। ३. दाग। ४. एक प्रकार का चर्म रोग।

वि०[सं० क्षिप्र] तेज। वेगवान्।

छीपा--पुं०[?] [स्त्री० अल्पा० छीपी] १. बाँस आदि की खमाचियों का टोकरा। २. थाली।

छीपी--पुं०[हिं० छापा] [स्त्री० छीपनी, छीपिनी] १. वह व्यक्ति जो कपड़ों पर बेल-बूटे आदि छापने का काम करता हो। २. दरजी। (बुंदेल०)

छीबर--स्त्री०[सं० चीवर] १. छींट नामक कपड़ा। २. एक प्रकार की चुनरी। उदा०--हा हा हमारी सौं साँचीं कहौ वह कौन ही छोहरी छीवर वारी।--देव।

छीमर†--स्त्री०=छीबर।

छीमी--†स्त्री०=छींबी।

छीया--पुं०[अनु० छी] गूह। विष्ठा।

छीर--पुं०=क्षीर।

पुं०[सं० चीर] १. दे० 'चीर'। २. कपड़े की लम्बाईवाले सिरे का किनारा। ३. उक्त किनारे पर की पट्टी या धारी।

छीरज--पुं०[सं० क्षीरज] १. चन्द्रमा। २. दही।

छीरधि--पुं०=क्षीरधि (समुद्र)।

छीरप--पुं०[सं० क्षीरप] दूध-पीता बच्चा। शिशु।

वि० दूध पीनेवाला।

छीर-फेन--पुं०[सं० क्षीर(=दूध)+फेन] दूध पर की मलाई।

छीर-सागर--पुं०=क्षीर-सागर।

छीलक*--पुं०=छिलका।

छीलन--स्त्री०[हिं० छीलना] १. छीलने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु के वे छोटे टुकड़े जो उसे छीलने पर निकलते हैं। (शेविंग्स)

छीलना--अ०[प्रा० छोल्लइं, पुं० हिं० छोलना] १. किसी चीज के ऊपर जमा या सटा हुआ आवरण, तह या परत खींचकर उससे अलग करना। जैसे--(क) फल के ऊपर का छिलका छीलना। (ख) पेड़ पर की छाल छीलना।(ग) प्याज छीलना। २. उगी या जमी हुई चीज को काट, खुरच या नोचकर निकालना या हटाना। जैसे--(क) घास छीलना। (ख) भुथरे उस्तरे से दाढ़ी छीलना। (ग) रंदे से लकड़ी छीलना।

छीलर--पुं०[हिं० छिछला] पानी से भरा हुआ छोटा गड्ढा।

वि० छिछला।

छीव*--पुं०=क्षीव।

छीवना*--स०=छीना(छूना)।

छीवर†--स्त्री०=छीवर।

छुँगनी†--स्त्री०=छँगुली।

छुँगली*--स्त्री०=छंगुली।

छुआई--स्त्री०[हिं० छूना] छूने या छुआने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। जैसे--मकान की चूना छुआई।

छुआना†--स०=छुलाना।

छुई-मुई--स्त्री०=छूई-मूई (पौधा)।

छुगनूं†--पुं०=घुंघरू।

छुच्छा--वि०[स्त्री० छुच्छी]=छूंछा।

छुच्छी--स्त्री०[हिं० छूछा] १. कोई छोटी नली। जैसे–दीये में की छुच्छी, जिसके अंदर कपड़े की बत्ती रहती है। २. कान या नाक में पहनने के फूल या लौंग का वह पूरक अंश जो बहुत छोटी पतली नली के रूप में होता है और जिसमें फूल या लौंग के नीचे की कील घुमा या धँसाकर जमाई या बैठाई जाती है। ३. कीप, जिसकी सहायता से बोतलों में तेल डाला जाता है।

छुच्छू--वि०[हिं० छूछा] १. मूर्ख। २. तुच्छ।

छुछमछली--स्त्री०[सं० सूक्ष्म, पुं० हिं० छूछम+मछली] मेंढक आदि कई छोटे जल-जंतुओं के बच्चों का वह आरंभिक रूप जो बहुत-कुछ लंबी पूंछवाले कीड़े अथवा मछली के बच्चे जैसा होता है। (टेडपोल)

छुछहँड़--स्त्री० [हिं० छूछा+हाड़ी] १. वह हाँड़ी जिसमें से पकाई हुई खाद्य वस्तु निकाल ली गई हो। २. खाली हाँड़ी।

छुछूंदर--स्त्री०=छछूंदर।

छुट--अव्य०[हिं० छूटना] छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा। जैसे--जिसमें हिंदी छुट और किसी वोली का पुट न हो।--इंशाउल्ला खाँ।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ यौगिक शब्दों के अंत में लगकर अनियंत्रित आचरण करनेवाले का सूचक होता है। जैसे--बत-छुट, हथ-छुट आदि करनेवाला वि०हिं० छोटा का लघु रूप जो उसे यौगिक शब्दों में प्राप्त होता है। जैसे--छुट-भैया।

छुटकना†--अ०=छूटना (छोड़ा जाना)।

छुटकाना*--स०=छुड़ाना

छुटकारा--पुं०[हिं० छूटना] १. छूटने अथवा छुड़ाये जाने अर्थात् मुक्त होने या मुक्त किये या कराये जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। मुक्ति। जैसे--कारागार से छुटकारा पाना या मिलना। २. किसी प्रकार की विपत्ति, संकट आदि से सकुशल बच निकलने का भाव। जैसे--कष्टों से छुटकारा पाना या मिलना।

छुटना†--अ०=छूटना।

छुटपन--पुं०[हिं० छोटा+पन] १. छोटे होने की अवस्था या भाव। छोटाई। २. बचपन। लड़कपन।

छुट-फुट--वि०[हिं० छूटा+फूटा] १. मूल अंग से कटकर छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में इधर-उधर फैला हुआ। २. जो थोड़ा-थोड़ा करके कभी कहीं और कभी कहीं घटित हो। चुट-फुट। (स्पोरडिक) जैसे-छुट-फुट मुठभेड़, छुट-फुट वर्षा आदि।

छुटभैया--पुं०[हिं० छोटा+भैया] व्यक्ति जिसकी गिनती बड़े आदमियों में न होकर छोटे या साधारण आदमियों में होती हो। बड़ों की तुलना में अपेक्षया निम्न स्थिति का व्यक्ति।

छुटलना*--अ०=छूटना।

छुटाना†--स०=छुड़ाना।

छुटौती--स्त्री०=छूट।

छुट्टा--वि०[हिं० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] १. (वह) जो बंधन से मुक्त होकर स्वतंत्रतापूर्वक विचरण कर रहा हो। २. (जंतु या जीव) जो अपने दल, वर्ग से निकल कर अलग हो गया हो। जैसे--छुट्टा कबूतर, छुट्टा बन्दर। ३. एकाकी। अकेला। ४. फुटकर।

पुं० छोटे सिक्के। रेजगारी।

छुट्टी--स्त्री०[हिं० छूटना] १. छूटने या छोड़े जाने की क्रिया या भाव। छुटकारा। जैसे--चलो, इस काम से भी छुट्टी मिली। २. कोई काम कर चुकने के उपरान्त अथवा कुछ निश्चित समय तक काम करने के उपरान्त मिलनेवाला अवकाश। जैसे--भोजन करने के लिए दस मिनट की छुट्टी मिलती है। ३. वह दिन जिसमें नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नहीं होते। जैसे--होली की दो दिन की छुट्टी मिलती है। ४. वह दिन जिसमें काम पर से अनुपस्थित रहने की स्वीकृति मिल गई हो। जैसे--विवाह में चलने के लिए दो दिन की छुट्टी लेनी पड़ेगी। ५. कहीं से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनुमति या आज्ञा।

छुड़ाई--स्त्री०[हिं० छोड़ना] छोड़ने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

स्त्री०[हिं० छुड़ाना] छुड़ाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

छुड़ाना-- स०[हिं० छोड़ना] १. बंधन, वाधा आदि से मुक्त कराना। उन्मुक्त या स्वतंत्र कराना। जैसे--जेल से कैदी छुड़ाना। २. जकड़, पकड़ आदि से अलग या रहित करना। जैसे--पल्ला या हाथ छुड़ाना। ३. डोरे, रस्सी आदि में का उलझाव दूर करना। जैसे--गाँठ छुड़ाना। ४.देन चुकाकर अथवा और किसी प्रकार से अपनी वस्तु वापस लेना। जैसे--(क) ऋण चुकाकर धरोहर छुड़ाना। (ख) दंड भरकर कांजी हौज से गाय छुड़ाना। ५. किसी को सेवा से अलग करना। नौकरी से हटाना। ६. किसी के साथ चिपकी, सटी या लगी हुई वस्तु अथवा उसका कोई अंश अलग करना। जैसे--(क) लिफाफे पर से टिकट छुड़ाना। (ख) कपड़े पर का दाग या धब्बा छुड़ाना। ७. (देय धन में) कुछ कमी कराना। जैसे--सौ रुपयों में से दस रुपए तो तुमने छुड़ा ही लिये। ८. किसी प्रकार की क्रिया, प्रवृत्ति आदि से रक्षित या रहित करना। जैसे--(क) बालक की पढ़ाई छुड़ाना। (ख) किसी का अभ्यास या आदत छुड़ाना। (ग) हाथा-बाहीं करने वाले लोगों को छुड़ाना।

स०=छुड़वाना। जैसे--आतिशबाजी छुड़ाना।

छुड़ैया--वि०[हिं० छुड़ाना+ऐया (प्रत्य०)] बंधन से छुड़ाने या मुक्त करानेवाला।

स्त्री० १.छोड़ने की क्रिया या भाव। २. गुड्डी उड़ानेवाले की सहायता के लिए उसकी गुड्डी को कुछ दूर ले जाकर इस प्रकार उसे हवा में छोड़ना कि उड़ानेवाला उसे सहज में उड़ा सके।

क्रि० प्र०--देना।

छुतहा--वि०[हिं०छूत+हा (प्रत्य०)] १. (रोग) जो छूत से फैलता या बढ़ता हो। छूतवाला। संक्रामक। २. जो किसी प्रकार की छूत लगने के कारण अस्पृश्य हो गया हो। ३. जिसे किसी कारण से छूना निषिद्ध हो।

छुतिहर†--वि०=छुतहा।

छुतिहा--वि०=छुतहा।

छुद्र--*वि०=क्षुद्र।

छुद्रघंटिका--स्त्री०=क्षुद्रघंटिका।

छुद्रावली--स्त्री०=क्षुद्रघंटिका।

छुधा†--स्त्री०=क्षुधा।

छुधावंत†—वि०[सं० क्षुधा+हिं० वंत (प्रत्य०)] जिसे भूख लगी हो। भूखा।

छुधित*—वि०[सं० क्षुधित] भूखा।

छुन्य†—वि०=शून्य।

छुप*—पुं०=क्षुप।

छुपना†—अ०=छिपना।

छुभित*—वि०=क्षुब्ध।

छुभिराना*—अ०[सं० क्षोभ] क्षुब्ध होना।

छुलरधार†—स्त्री०[सं० क्षुरधार] १. छुरे की धार। २. किसी हथियार की तेज धार।

वि० तेज धारवाला (अस्त्र)।

छुरहँड़ी—स्त्री०[सं० क्षुर भांडिक] वह आधान या पात्र जिसमें नाई उस्तरा, कैंची आदि रखते हैं। किस्बत।

छुरा—पुं० [सं० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १. लंबे फलवाला बड़ा चाकू। २. बाल मूँड़नेवाला उस्तरा।

छुरिका—स्त्री० [सं०√छुर (काटना)+कुन्-अक-इत्व-टाप्] छुरी।

छुरित—पुं० [सं०] लास्य नृत्य का वह प्रकार जिसमें नायक और नायिका परस्पर आलिंगन, चुंबन आदि भी करते चलते हैं।

छुरी—स्त्री० [सं० क्षुरिका] लंबे फलवाला एक प्रकार का चाकू।

मुहा०—(किसी पर) छुरी चलाना या फेरना=जान-बूझकर ऐसा काम करना जिससे किसी की बहुत बड़ी हानि हो।

छुलकना—अ०=छुलछुलाना।

छुलछुलाना—अ० [अनु०] थोड़ा-थोड़ा करके मूतना।

छुलाना—स० [सं० हिं० छूना] स्पर्श कराना।

छुवना†—स०=छूना।

छुवाना—स०=छुलाना।

छुहना—अ० [हिं० छूना] १. छूआ जाना। २. किसी तरल पदार्थ से लेपा या पोता जाना। उदा०—त्यौं त्यौं छुही गुलाब सैं छतिया अति सियराति।—बिहारी।

†स०=छूना।

छुहारा—पुं० [?] खजूर की जाति का एक सूखा मेवा।

छुही—स्त्री० [हिं० छूना] खड़िया नाम की सफेद मिट्टी।

छूंछा—वि०=छूछा।

छूंटा—पुं० [देश०] एक प्रकार का गहना जो काले काँच की गुरियों का बना होता है।

छू—पुं० [अनु०] मंत्र पढ़कर फूंक मारने का शब्द। जैसे—दन्त-डाक छू। मियाँ की माई का मूई की भू।—भारतेन्दु।

मुहा०—छू-मंतर होना=चंपत होना। गायब होना।

छूआछूत—स्त्री० [हिं० छूना+छूत] १. अछूत अर्थात् अस्पृश्य को न छूने या उससे अपने को न छुलाने की भावना या विचार। २. धार्मिक या सामाजिक दृष्टि से अस्पृश्य वस्तुओं या व्यक्तियों से छूए जाने का भाव। ३. बच्चों का एक खेल, जिसमें किसी एक लड़के को दूसरे लड़कों को छूना पड़ता है।

छूई-मूई—पुं० [हिं० छूना+मूना=मरना] लजालू या लज्जावंती नाम का पौधा जो स्पर्श किये जाने पर अपनी पत्तियाँ सिकोड़ लेता है।

छूछा—वि० [हिं० तुच्छ] १. (पात्र) जिसमें कुछ भी न हो। खाली। २. (व्यक्ति) जिसके पास या हाथ में धन, हथियार आदि कुछ न हो। जैसे—छूछे हाथ चला आया हूँ। ३. तत्त्वहीन। निःसार।

छूछुम†—वि० [सं० सूक्ष्म] १. सूक्ष्म। २. अल्प। थोड़ा। थोड़ी मात्रा का।

छूट—स्त्री० [हिं० छूटना] १. छूटने अर्थात् बंधन आदि से मुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—बच्चों को मिलनेवाली खेलने की छूट। २. नियम, बंधन, मर्यादा आदि से मिली हुई स्वतंत्रता। जैसे—(क) दिल्लगी में होनेवाली छूट अर्थात् ऐसी स्थिति जिसमें मर्यादा, शिष्टता, श्लीलता आदि का ध्यान न रखा जाता हो। (ख) पटा, बनेठी, बांक आदि खेलों में की छूट अर्थात् वह स्थिति जिसमें खिलाड़ी अपने विपक्षी के जिस अंग पर चाहे चोट कर सकता है। ३. वह रियायत या सुविधा जिसके कारण किसी को कोई कर्तव्य या दायित्त्व पूरा न करने पर भी दंड का भागी नहीं समझा जाता है। ४. देय धन चुकाने में किसी कारण से मिलनेवाली वह सुविधा जिसमें उसका कुछ अंश नहीं देना पड़ता। ५. असावधानता, जल्दी आदि के कारण कार्य के किसी अंग पर ध्यान न जाने अथवा उसके छूट या रह जाने की अवस्था या भाव। ६. मालखंभ की एक कसरत। ७. स्त्री-पुरुष का संबंध त्याग। ८. परिहास के समय अशिष्ट, अश्लील आदि बातों का किया जानेवाला प्रयोग। (बोलचाल)

छूटना—अ० [सं० छुट्ट या आच्छोहन] १. बंधन आदि से मुक्त होकर स्वतंत्र होना। जैसे—(क) कैदियों का छूटना। (ख) सांसारिक आवागमन या जन्म-मरण से छूटना। २. जकड़, पकड़ आदि से रहित होकर अलग या दूर होना। जैसे—हाथ में पकड़ा हुआ गिलास या शीशा छूटना (अर्थात् नीचे गिर पड़ना)। ३. द्रव पदार्थ का बंधन टूटने या हटने पर धारा के रूप में वेगपूर्वक आगे बढ़ना। जैसे—रक्त की धारा छूटना। ४. द्रव पदार्थ का किसी चीज में से रस-रसकर निकलना। जैसे—(क) शरीर में से पसीना छूटना। (ख) पकाते समय तरकारी में से पानी छूटना। ५. निर्दोष सिद्ध होने पर अभियोग, आरोप आदि की क्रियाओं से मुक्त या रहित होना। बरी होना। जैसे—अदालत से अभियुक्त का छूटना। ६. व्यवहार, संग-साथ से अलग या विमुक्त होना। वियोग होना। बिछुड़ना। जैसे—(क) नौकरी के कारण घर छूटना। (ख) लड़ाई-झगड़े के कारण भाई-बंधु या मित्र छूटना। ७. देन आदि चुकाये जाने पर अथवा और किसी प्रकार से किसी दूसरे के हाथ गई हुई वस्तु का वापस मिलना। जैसे—(क) बंधक रखा हुआ मकान छूटना। (ख) वयस्क होने पर अभिभावक के हाथ से संपत्ति छूटना। ८. किसी स्थान पर जमे या लगे हुए तत्त्व या पदार्थ का किसी प्रकार अलग या दूर होना। जैसे—(क) कागज पर लगा हुआ टिकट छूटना। (ख) कपड़े पर लगा हुआ दाग या मैल छूटना। (ग) दीवार पर लगा हुआ रंग छूटना। ९. यांत्रिक, रासायनिक आदि क्रियाओं से चलनेवाली चीजों के संबंध में, पकड़ या, रोक से निकलकर वेगपूर्वक किसी ओर बढ़ना या किसी व्यापार में प्रवृत्त होना। जैसे—आतिशबाजी, गोली, तीर या फुहारा छूटना। १०. आगे बढ़ते या चलते समय मार्ग में किसी का पीछे पड़ या रह जाना। जैसे—(क) यात्रियों में से किसी का पीछे छूटना। (ख)

किसी की दूकान या कोई बाजार पीछे छूटना। ११. किसी यान आदि का गंतव्य स्थान के लिए चल पड़ना। प्रस्थान या यात्रा आरंभ करना। जैसे—गाड़ी या जहाज छूटना। १२. अनुसंधान करने या टोह लेने के लिए किसी के पीछे लगना या लगाया जाना। जैसे—उनके पीछे जासूस छूटे हैं। १३. शारीरिक विकार का दूर होना अथवा न रह जाना। जैसे—खाँसी या बुखार छूटना। १४. कुछ विशिष्ट मानसिक या शारीरिक क्रियाओं के संबंध में, अस्तित्व, गति, व्यवहार, व्यापार आदि से रहित होना। जैसे—(क) रोगी की नाड़ी या प्राण छूटना। (ख) भय या साहस छूटना। (ग) अभ्यास या आदत छूटना। १५. काम-धंधे से अलग किया जाना या होना। जैसे—नौकरी या रोजगार छूटना। १६. कष्ट, विपत्ति, बाधा, विघ्न आदि से मुक्त या रहित होना। जैसे—(क) झगड़े-बखेड़े या मुकदमेबाजी से जान छूटना। १७. औचित्य, मर्यादा आदि का इस प्रकार अतिक्रमण या उल्लंघन होना कि उसके फल-स्वरूप कोई अनुचित या निन्दनीय कार्य या व्यापार घटित हो। जैसे—(क) बात-चीत करने में जबान छूटना। (ख) क्रोध में किसी पर हाथ छूटना। १८. कथन, लेख आदि के प्रसंग में, आवश्यक या उपयुक्त पद, वाक्य या विषय यथा-स्थान आने से रह जाना। जैसे—(क) भाषण में कोई प्रसंग छूटना। (ख) प्रतिलिपि करने में अक्षर, पद या वाक्य छूटना। १९. किसी चीज का भूल से कहीं रह जाना या न लाया जाना। जैसे—न जाने मेरा छाता कहाँ छूट गया है। २०. उपयोग, व्यवहार आदि में आने से बचा या रह जाना। जैसे—(क) थाली में जूठन छूटना (ख)। प्रश्न-पत्र में का कोई प्रश्न छूटना। २१. नियम, व्रत आदि का भंग होना। जैसे—रोजा छूटना। २२. संयोग के लिए नर का मादा की ओर प्रवृत्त होना या उस पर आसन जमाना। जैसे—घोड़ी पर घोड़ा छूटना।

छूटा—स्त्री॰ [हिं॰ छूटना] एक प्रकार की बरछी।
वि॰=छुट्टा।

छूत—स्त्री॰ [सं॰ युप्ति, प्रा॰ छुट्टी] १. छूने की क्रिया या भाव।
मुहा॰—छूत छुड़ाना=पीछा छुड़ाने या नाम-मात्र के लिए यों ही अवज्ञापूर्वक कोई काम करना।
२. ऐसा निषिद्ध संसर्ग जिससे रोग आदि का संचार होता हो। ३. गंदी अथवा घृणित वस्तु का संसर्ग। ४. धार्मिक क्षेत्र में अपवित्र होने अथवा अपवित्र वस्तु छूने पर लगनेवाला दोष। ५. यह धारणा कि अमुक वस्तु या व्यक्ति छूने अथवा उससे छुए जाने पर हम अपवित्र हो जायँगे। ६. व्यक्ति पर पड़नेवाली भूत-प्रेत आदि की छाया या उससे होनेवाली बाधा।
मुहा॰—छूत झाड़ना=प्रेत बाधा दूर करना।

छूत-छात—स्त्री॰ [हिं॰ छूत+अनु॰ छात] स्पृश्य और अस्पृश्य का भाव। छुआछूत।

छूना—स॰ [सं॰ चुपति, प्रा॰ छुवइ] १. उँगलियों या हाथ से किसी वस्तु या व्यक्ति को अथवा उसके तल का कोई अंश स्पर्श करना।
मुहा॰—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।
२. शरीर के किसी अंग का अथवा पहने हुए किसी वस्त्र का किसी से लगना या स्पर्श करना। जैसे—तुम्हें चमार ने छू दिया है। ३. दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना। जैसे—चावल छूकर भिखमंगे को बाँटना। ४. ऐसा काम करना जिससे किसी चीज में गति उत्पन्न हो। जैसे—हृदय के तार छूना। ५. किसी विषय के संबंध में कुछ कहना या लिखना। जैसे—इस विषय को भी उन्होंने छुआ है। ६. लीपना। पोतना। जैसे—कमरा छूना।

छेंक—स्त्री॰ [हिं॰ छेंकना] १. छेंकने की क्रिया या भाव। २. रोक।
†पुं॰=छेद।

छेंकन—स्त्री॰ [हिं॰ छेकना] १. छेंकने की क्रिया या भाव। २. वास्तु-कला में, मकान आदि बनाने से पहले उसके भूमि-तल के संबंध में यह निश्चय या स्थिर करना कि आँगन, कोठरियाँ, बैठक, रसोई आदि विभाग कहाँ-कहाँ रहेंगे। जैसे—इस मकान की छेंकन बहुत अच्छी हुई है।

छेंकना—स॰ [हिं॰ छंद] १. स्थान घेरना। २. विभाग आदि करने के लिए लकीरों से अवकाश घेरना। ३. जानेवाले के सामने खड़े होकर उसे जाने से रोकना। ४. किसी का मार्ग अवरुद्ध करना। मिटाना। ५. किसी के नाम लिखी हुई चीज़ या रकम लौट आने पर काट कर रद्द करना।

छेक†—पुं॰=छेद। (पश्चिम)
पुं॰ [सं॰√छो (काटना)+डेकन्] १. पालतू पशु-पक्षी। २. शब्दालंकार का एक भेद। छेकानुप्रास।
वि॰ १. पालतू। २. नागरिक।

छेकानुप्रास—पुं॰ [सं॰ छेक-अनुप्रास कर्म॰ स॰] कवित्त में एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही चरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेकापह्नुति—स्त्री॰ [सं॰ छेक-अपह्नुति ष॰ त॰?] साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी से कही जानेवाली कोई भेद की बात किसी तीसरे या अनभीष्ट व्यक्ति के सुन लेने पर कोई दूसरी बात बनाकर वह भेद छिपाने का उल्लेख होता है। 'कह मुकरी' या मुकरी में यही अलंकार होता है।

छेकोक्ति—स्त्री॰ [सं॰ छेक-उक्ति ष॰ त॰] साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई बात सिद्ध करने के लिए उसके साथ किसी लोकोक्ति या कहावत का भी उल्लेख किया जाता है।

छेड़—स्त्री॰ [हिं॰ छेड़ना] १. छेड़ने की क्रिया या भाव। २. ऐसा शब्द, पद या बात जिसके कहने से कोई चिढ़ जाता हो। चिढ़ानेवाली बात। ३. दे॰ 'चिढ़ौनी'। ४. झगड़ा। ५. किसी कार्य का आरंभ या श्री गणेश। ६. अपनी ओर से कोई ऐसी बात आरंभ करना कि उसका उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर आता हो। पहल। उदा॰—हम तो चुपचाप बैठे थे, छेड़ तो तुम्हीं ने की।
मुहा॰—छेड़ निकालना=उक्त प्रकार से कोई ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लड़ाई-झगड़ा या वैर-विरोध खड़ा हो सकता हो।

छेड़खानी—स्त्री॰=छेड़-छाड़।

छेड़छाड़—स्त्री॰ [हिं॰ छेड़ना+अनु॰] १. किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव। २. अनुचित रूप से किसी के प्रति आरंभ किया जानेवाला व्यवहार।

छेड़ना—स॰ [सं॰ छिदन या हिं॰ छेड़] १. इस प्रकार छूना या स्पर्श

करना कि उसके फल-स्वरूप कोई क्रिया या व्यापार घटित हो। जैसे--बीन या सितार के तार छेड़ना। २. जीव-जन्तुओं आदि को इस प्रकार स्पर्श करना या उन्हें तंग करना जिससे वे क्षुब्ध होकर आक्रमण कर सकते हों। जैसे--कुत्ते, साँड़ या साँप को छेड़ना। ३. व्यक्ति को चिढ़ाने या तंग करने के लिए हँसी-ठट्ठे के रूप में कोई ऐसी बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे वह चिढ़ या दुःखी होकर प्रतिकार कर सकता हो। जैसे—पागल, बच्चे या स्त्री को छेड़ना। ४. किसी को तंग करने के लिए उसके काम में अड़ंगा लगाना या बाधा खड़ी करना। ५. किसी चीज को अकारण या व्यर्थ में छूना जिससे उसमें विकार उत्पन्न हो सकता हो। जैसे—घाव या उसमें बँधी पट्टी को छेड़ना। ६. किसी को कोई ऐसी बात (छेड़) बार-बार कहना जिससे कोई चिढ़ता हो। जैसे—उसे सब बुड्ढू मियाँ कह कर छेड़ते हैं। ७. कोई कार्य या बात आरंभ करना। जैसे—मकान की मरम्मत छेड़ना। ८. संगीत में गीत, वाद्य आदि कलापूर्ण ढंग से आरंभ करना। ९. चिकित्सा के क्षेत्र में, फोड़ा बहाने के लिए नश्तर से उसका मुँह खोलना।

†स०=छेतना (छेदना)।

छेड़वाना--स०[हिं० छेड़ना का प्रे० रूप]छेड़ने का काम दूसरे से करवाना।

छेड़ी—स्त्री० [?] छोटी और तंग गली। (बुंदेल०)

स्त्री०=छेरी (बकरी)।

छेत*—पुं० [सं० छेद] १. अलग होने की क्रिया या भाव। पार्थक्य। २. वियोग। ३. छेद।

छेतना† सं०=छेदना।

स० [?] १. ठोंक-पीटकर कोई चीज तैयार करना या बनाना। जैसे—चाँदी की गुल्ली से कड़ा छेतना। २. अच्छी तरह मारना-पीटना या प्रहार करना। जैसे—किसी का मुँह छेतना।

छेति*—स्त्री० [सं० छेदन] बाधा।

छेत्ता (तृ)—वि० [सं०√छिद् (काटना)+तृच्] छेद करने या छेदनेवाला।

छेत्र--पुं० १. =क्षेत्र। २. =सत्र (अन्नसत्र)।

छेद—पुं० [सं०√छिद्+घञ्] १. काटने, छेदने या विभक्त करने की क्रिया या भाव। जैसे—उच्छेद, विच्छेद। २. बकरे आदि मारने की 'झटका' नाम की क्रिया। उदा०--कतहूँ मिस मिल कतहूँ छेद।—कबीर। ३. विनाश। बरबादी।

पुं० [सं० छिद्र] १. किसी वस्तु में का दोनों का दोनों ओर से खुला हुआ छोटा अंश। छिद्र। सुराख। जैसे—चलनी में का छेद, कपड़े में का छेद। २. किसी घन या ठोस वस्तु में का वह गहरा स्थान जिसमें से उस वस्तु का कुछ अंश निकाल लिया गया हो। जैसे--जमीन या दीवार में का छेद। ३. विवर। बिल। ४. दोष। दूषण।

छदक—वि० [सं० छिद्+ण्वुल्—अंक] छेदनेवाला।

छेदन—पुं० [सं०√छिद्+ल्युट्—अन] छेदने की क्रिया या भाव।

छेदनहार—वि० [हिं० छेदना+हार (प्रत्य०)] १. छेदनेवाला। २. काटनेवाला। ३. नष्ट करने या मिटानेवाला।

छेदना—स० [सं० छेदन] १. किसी तल में नुकीली वस्तु धँसाकर उसमें छेद या सुराख करना। २. शरीर में क्षत या घाव करना। जैसे—तीरों से किसी का शरीर छेदना। ३. छिन्न करना। काटना।

छेदनीय—वि० [सं०√छिद्+अनीयर्] जिसका छेदन हो सकता हो या किया जाने को हो।

छेदि—वि०[सं० छिद्+इनि्]छेद करनेवाला।

पुं० बढ़ई।

छेदिका—स्त्री० [सं० छेदक+टाप् इत्व] १. छेदन करनेवाली चीज या रेखा। २. ज्यामिति में वह रेखा जो किसी वक्र रेखा को दो या अधिक भागों में काटती हो। (सिकैन्ट)

छेदित—भू० कृ० [सं० छेद+इतच्] १. जिसमें छेद किया गया हो। छेदा हुआ। २. कटा या काटा हुआ।

छेना--पुं० [सं० छिन्न] फटे या फाड़े हुए दूध का वह गाढ़ा अंश जो उसका पानी निकाल देने पर बच रहता है।

छेनी--स्त्री० [हिं० छेदना] धातु, पत्थर आदि काटने का चौड़े फलवाला एक प्रसिद्ध उपकरण। टाँकी।

छेम*--पुं०=क्षेम।

छेमकरी*--स्त्री०[सं० क्षेमकरी] सफेद चील।

छेर†--स्त्री०=छेरी (बकरी)।

छेरना†—अ० [सं० क्षरण] बार-बार पतला मल त्याग करना।

*स०=छेड़ना।

छेरवा--पुं०=छुहारा।

छेरा--पुं० [हिं० छेरना] पतला मल। पतला दस्त।

†पुं० [स्त्री० छेरी] १. बच्चा। २. बकरा।

छेरी—स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

छेलक--पुं० [सं०√छो (काटना)+डेलकन्] बकरा।

छेलरा--पुं०=छैला।

छेव--पुं० [सं० क्षेप] १. किसी वस्तु के तल का कुछ अंश काटने या छीलने की क्रिया या भाव। २. कुछ विशिष्ट वृक्षों का रस निकालने के लिए उनके तने का कुछ अंश काटने या छीलने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०— लगाना।

३. प्रहार। वार। ४. चोट। घाव। ५. नाश। ६. मृत्यु। ७. विपत्ति। संकट। ८. कपटपूर्ण व्यवहार।

छेवना—स० [हिं० छेव] १. किसी चीज में छेव लगाना। २. आघात, प्रहार या वार करना। ३. चोट पहुँचाना। ४. कष्ट आदि झेलना या सहना। जैसे—अपने जी पर छेवना (अर्थात् मन ही मन कष्ट सहना या दुःखी होना।) उदा०—जो अस कोई जिय पर छेवा।—जायसी। ५. फेंकना।

स्त्री० ताड़ी, जो ताड़ के वृक्ष में छेव लगाकर निकाली जाती है।

स० [हिं० छेदना] १. काटना। २. चिह्न लगाना।

छेवला--पुं० [?] पलाश का वृक्ष। (बुंदेल०)

छेवा—पुं० [हिं० छेव] १. छीलने, काटने आदि का काम। २. काटने, छीलने आदि से पड़ा हुआ निशान। ३. महाजनी बहीखाते में वह चिह्न जो कहीं से लौटी हुई चीज या रकम के लेख पर यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि अब वह प्राप्य नहीं रह गई। ४. पानी का तेज बहाव। (मल्लाह)

†पुं०=छेद।

छेह*—पुं० [हिं० छेव] १. दे० 'छेव'। २. ध्वंस। नाश। ३. वियोग। विच्छेद। ४. परम्परा का भंग। ५. अंत। समाप्ति।

वि० १. खंडित। २. न्यून।

*स्त्री०=खेद।

छेहर†—स्त्री०=छाया।

छेहरा—पुं०=छेह।

छै†—वि०=छः।

*पुं०=क्षय।

छैदिक—पुं० [सं० छेद+ठञ्–इक] बेत।

छैना—अ० [सं० क्षय] १. क्षय होना। २. क्षीण होना।

स० १. नष्ट करना। २. क्षीण करना।

ुं० [छन छन से अनु०] छोटी झाँझ (बाजा)।

छैया—पुं० [हिं० छवना] बच्चा।

वि० [हिं० छाना] छानेवाला।

छैल—स्त्री० [हिं० छैलाना] छैलने या छैलाने की क्रिया या भाव। लड़कों की-सी मचल या हठ।

*पुं०=छैला।

छैलचिकनिया—पुं०=छैला।

छैल छबीला—पुं०=छैला।

छैलना*—अ०=छैलाना।

छैला—पुं० [सं० छविल्ल, प्रा० छइल्ल] बहुत बन-ठनकर रहनेवाला नवयुवक।

छैलाना—अ० [हिं० छैला] लड़कों का कोई काम करने या कोई चीज पाने के लिए मचलना और हठ करना। उदा०—कोउ छेंकत छैलात देखि कहुँ मंजु खिलौना।—रत्नाकर।

स० किसी को छैलाने या हठ करने में प्रवृत्त करना।

छोंच†—पुं०=शौच।

छोंड़ा*—पुं० [सं० क्ष्वे] [स्त्री० अल्पा० छोंड़ी] मथानी।

छोआ†—पुं० दे० 'खोई'।

छोई†—स्त्री० [सं० क्षोद] १. दे० 'खोई'। २. निस्सार वस्तु। रद्दी चीज। उदा०—आन ब्रतै मानै सब छोई।—श्री भट्ट

छोकरा—पुं० [सं० शावक+रा; प्रा० छावक+रा; दे प्रा० छाक्कर] [स्त्री० छोकरी] लड़का। बालक। (उपेक्षा सूचक)

छोछा†—वि० [स्त्री० छोछी] दे० 'छूछा'।

छोट†—वि०=छोटा।

छोटा—वि० [सं० क्षुद्र+ट, दे० प्रा० छोट्ट] मान, विस्तार आदि में अपेक्षया कम या थोड़ा। जैसे—(क) छोटा पेड़, छोटा मकान। २. जिसकी अवस्था या उमर किसी की तुलना में कम हो। थोड़े वय का। जैसे—छोटा भाई, छोटा लड़का। ३. प्रतिष्ठा, मान आदि में औरों से घटकर होनेवाला। तुच्छ। हीन। जैसे—छोटा काम, छोटी जाति, छोटी बात।

छोटाई—स्त्री० [हिं० छोटा+ई (प्रत्य०)] छोटे होने की अवस्था या भाव। छोटापन।

छोटापन—पुं० [हिं० छोटा+पन] छोटाई।

छोटिका—स्त्री० [सं०√छुट् (काटना)+ण्वुल्–अक, टाप्, इत्व] चुटकी।

छोटी (टिन्)—पुं० [सं०√छुट्+णिनि] मछुआ।

छोटी इलायची—स्त्री० [हिं०] छोटे आकार की एक प्रकार की इलायची जिसका छिलका पीलापन लिये सफ़ेद होता है।

छोड़—अव्य०[हिं० छोड़कर का संक्षिप्त रूप] छोड़कर। अतिरिक्त। सिवाय। जैसे—तुम्हें छोड़ और कोई ऐसा नहीं कहता।

छोड़ना—स० [सं० छोड़] १. बंधन से मुक्त करना। स्वतंत्र करना। जैसे—कैदियों को छोड़ना। २. अभियोग, आरोप आदि से मक्त करना। जैसे—अदालत ने उन्हें छोड़ दिया है। ३. कोई काम, चीज या बात कुछ समय के लिए अथवा सदा के लिए न करने का निश्चय करना। त्याग देना अथवा संबंध विच्छेद करना। परित्याग करना। जैसे—(क) आज-कल हमने अन्न खाना छोड़ दिया है। (ख) उसने अब कलकत्ता छोड़ दिया है। (ग) उन्होंने अपनी पत्नी को छोड़ दिया है। ४. कथन, लेख आदि के प्रसंग में, कोई आवश्यक अक्षर, पद या वाक्य का उपयोग या व्यवहार न करना अथवा न लिखना। ५. कोई चीज जान-बूझकर या भूल से कहीं रख देना या रहने देना। जैसे—(क) वह अपना सामान यहीं छोड़ गये हैं। (ख) कोई अपनी छड़ी यहीं छोड़ गया है। ६. उत्तराधिकार आदि के रूप में किसी के लिए कुछ बचा या बाकी रहने देना। जैसे—पिता का पुत्र के लिए ऋण या संपत्ति छोड़ना। ७. अवशिष्ट या बाकी रहने देना। जैसे—आज का काम कल पर छोड़ना। ८. कोई चीज किसी में अथवा किसी पर डालना। जैसे—(क) पत्र-पेटी में पत्र छोड़ना। (ख) जलते अंगारों पर पानी छोड़ना। (ग) खेत में खाद छोड़ना। ९. किसी वस्तु पर से अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। जैसे—मकान छोड़ना। १०. कोई चीज किसी से उदारतापूर्वक या रियायत करते हुए न लेना। जैसे—मूलधन लेकर ब्याज छोड़ना। ११. उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक जाने देना। ध्यान न देना। जैसे—ये सब बातें छोड़ो; इनमें क्या रखा है। १२. कोई ऐसी यांत्रिक या रासायनिक क्रिया करना जिससे कोई चीज गति में आ जाय या अपना कार्य करने लगे। जैसे—(क) अग्निवाण या उपग्रह छोड़ना। (ख) तोप, बंदूक, मोटर छोड़ना। १३. अनुसंधान या पीछा करने के लिए किसी को गुप्त रूप से नियुक्त करना। जैसे—उनका पता लगाने के लिए कई आदमी छोड़े गये। हैं। १४. कोई ऐसा कार्य या व्यापार करना जिससे किसी चीज या बात का उपयुक्त परिणाम या फल निकले, उसका कोई प्रभाव पड़े अथवा स्पष्ट रूप से सामने आवे। जैसे—(क) तान छोड़ना। (ख) फुलझड़ी या शगूफा छोड़ना। १५. आश्रय के रूप में रहनेवाली चीज का अपने ऊपर टिकी, ठहरी या लगी हुई चीज को अपने से अलग या दूर करना। जैसे—(क) पेड़ की छाल छोड़ना। (ख) खंभे का छत या दीवार छोड़ना। १६. कर्त्तव्य, कार्य आदि का निर्वाह या पालन न करना। जैसे—तुम आधा काम करते हो और आधा छोड़ देते हो।

छोड़वाना—स० [हिं० छोड़ना का प्रे० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से करवाना। छुड़वाना।

छोत†—स्त्री०=छूत।

छोतरा—पुं० [?] १. छिलका। २. अफीम।

छोना- ं०, स०=छूना।

छोणिप*—पुं०=क्षोणिप।

छोनिय*—स्त्री०=क्षोणी (पृथ्वी)।

छोनी—स्त्री०=क्षोणी (पृथ्वी)।

छोप—स्त्री० [हिं० छोपना] १. छोपने की क्रिया या भाव। २. छोपा हुआ अंश। छोपकर जमाई या लगाई हुई तह।

छोपना—स० [सं० क्षेपण] १. बहुत गाढ़ी वस्तु या सानी हुई वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर थोपना या लगाना। २. ढकना। ३. दबोचना।

छोभ†—पुं०=क्षोभ।

छोभन—पुं०=क्षोभ।

छोभना*—अ०, स० [सं० क्षोभ] क्षुब्ध होना या करना।

छोभित—वि०=क्षोभित।

छोम—वि० [सं० क्षोभ] १. चिकना। २. कोमल।

छोर—पुं० [हिं० ओर का अनु०] किसी वस्तु के किनारे या सिरे पर का अंश, भाग या विस्तार। अंतिम सिरा।

*पुं०=छोरा।

छोरटा—पुं० [स्त्री० छोरटी]=छोर।

छोरना—स० [सं० छोरण] १. गाँठ आदि खोलना। २. पहने हुए वस्त्र उतारना। उदा०—कोउ ऐंठति तन तोरि छोरि अंगिया कोउ पैंठति।—रत्नाकर। ३. किसी की चीज बलात् लेना। छीनना।

*स०=छोड़ना।

छोलंग—पुं० [स० छुर+अङ्गच्-रू ल्] नीबू।

छोलना†—स० [हिं० छीलना का पुराना रूप] १. छीलना। २. अनावश्यक और फालतू रूप से अधिक योग्यता दिखाना। छाँटना। उदा०—जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुराई छोलत हौ।—सूर।

पुं० वह उपकरण जिससे कोई चीज छीली जाय।

छोला—पुं० [हिं० छोलना] १. छोलने या छीलने का काम करनेवाला व्यक्ति। २. चना।

छोह—पुं० [सं० क्षोभ] १. प्रेम। स्नेह। २. अनुग्रह। दया।

छोहगर†—वि० [हिं० छोह] छोह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

छोहना—अ० [हिं० छोह=प्रेम+ना (प्रत्य०)] १. प्रेम या स्नेह करना। उदा०—छितिपति उमगि उठाइ छोहि छाती छपटायौ।—रत्ना० २. विचलित या क्षुब्ध होना।

छोहर† (ा)—पुं० [स्त्री० छोहरिया, छोहरी] छोकरा। लड़का।

छोहाना*—अ०=छोहना।

छोहारा†—पुं०=छुहारा।

छोहिनी*—स्त्री०=अक्षौहिणी।

छोही*—वि० [हिं० छोह] १. प्रेम करनेवाला। २. अनुग्रह या दया करनेवाला।

छौंक—स्त्री० [हिं० छौंकना] १. छौंकने की क्रिया या भाव। बघार। २. वह मसाला जिससे तरकारी, दाल आदि छौंकी जाती है। तड़का। बघार।

छौंकन†—स्त्री०=छौंक।

छौंकना—स० [अनु० छँव छँन्] दाल, तरकारी को सुगंधित या सोंधा करने के लिए उसमें जीरे, मिर्च, हींग आदि से मिला हुआ कड़कड़ाता घी या तेल छोड़ना। बघारना। (स्पाइसिंग)

अ० [अनु० या सं० चतुष्क] १. शिकार को पकड़ने के लिए हिंसक जंतु का अकस्मात् उछलकर आगे बढ़ना। जैसे—बकरी पर शेर का छौंकना। २. आक्रमण या वार करने के लिए अचानक उछलकर आगे बढ़ना।

छौंक-बघार—स्त्री० [हिं०] १. दाल, तरकारी आदि छौंकने की क्रिया या भाव। २. किसी बात में उसे आकर्षक या रोचक बनाने के लिए अपनी ओर से कुछ बातें मिलाकर कहना।

छौंड़ा—पुं० [सं० शंकटा, हिं० छोकरा] [स्त्री० छौंडी] लड़का। बालक।

पुं० [सं० चुंडा] अनाज रखने का गड्ढा।

छौना—पुं० [सं० शाव; पा० छाप; प्रा० छाव] १. पशु का बच्चा। जैसे—मृग-छौना। २. बच्चा। बालक।

छौर†—पुं०=क्षौर।

छौलदारी—स्त्री० [हिं० छौल ?+फा० दारी] एक प्रकार का छोटा खेमा। रावटी।

छ्वाना*—स०=छुलाना।

ज

ज

ज—चवर्ग का तीसरा अक्षर जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्श, संघर्षी अल्प प्राण, सघोष व्यंजन है।

प्रत्य० यह प्रत्यय रूप में कुछ शब्दों के अंत में लगकर 'में उत्पन्न' या 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है। जैसे—जलज, देशज, पित्तज आदि।

पुं० 'जगण' का संक्षिप्त रूप। (छंद शास्त्र)

अव्य० ही। भी। तो। (डिं०) उदा०—तिणि तिणि हीज ब्राह्मण तणै।—प्रिथीराज।

जंकशन—पुं०=जंक्शन।

जंक्शन—पुं० [अं०] वह रेलवे स्टेशन जहाँ दो से अधिक दिशाओं से गाड़ियाँ आती-जाती हों। (जंक्शन)

जंग—स्त्री० [फा०] सशस्त्र सैनिकों की लड़ाई। युद्ध।

पुं० [फा० जंग] १. लोहे पर जमनेवाली वह मैल या विकृत अंश जो लोहे में वायु और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है। मोरचा। २. अफ्रीका का जंगवार या जंजीवार नामक प्रदेश।

स्त्री० [अं० जंक] एक प्रकार की बहुत बड़ी नाव।

जंगआवर—वि० [फा०] लड़ाका। योद्धा।

जंगजू—वि० [फा०] युद्ध करने की इच्छा रखनेवाला (व्यक्ति)।

ज़ंगबार—पुं० [फा० जंग+बार] पूर्वी अफ्रीका का एक प्रदेश। जंजीबार।

जंगम—वि० [√गम् (जाना) +यङ्—लुक्, द्वित्वादि+अच्] १. जो एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाता हो या जा सकता हो। २. चलनेवाले प्राणियों से उत्पन्न होने या उनसे संबंध रखनेवाला। जैसे—जंगम विष=कीड़े-मकोड़ों, पशु-पक्षियों आदि के शरीर से निकलनेवाला विष। ३. जिसे एक स्थान से उठा या हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता हो।

पुं० १, लिंगायत शैव संप्रदाय के गुरुओं की उपाधि। २. एक प्रकार के साधु।

जंगम-गुल्म—पुं० [कर्म० स०] पैदल चलनेवाले सिपाहियों का दस्ता।

जँगरा—पुं० [देश०] कुछ वनस्पतियों के डंठल। जैसे—मूँग का जँगरा।

पुं० [हिं० जाँगर] शारीरिक बल।

जँगरैत—वि० [हिं० जाँगर] [स्त्री० जँगरैतिन] (व्यक्ति) जो कोई काम करने में अपनी पूरी शारीरिक शक्ति लगाता हो। जाँगरवाला। परिश्रमी।

जंगल—पुं० [सं०√गल् (भक्षण) +यङ्+अच्, नि० सिद्धि] १. जलशून्य भूमि। रेगिस्तान। २. वह स्थान जहाँ बहुत से वृक्ष तथा वनस्पतियाँ आप से आप उग आई हों। वन।

पद—जंगल में मंगल=सूने स्थल में होनेवाली चहल-पहल।

मुहा०—जंगल जाना=शौच के लिए मैदान में जाना। टट्टी जाना।

३. लाक्षणिक अर्थ में, वह स्थान जहाँ पर बहुत-सी वस्तुएँ ऐसे अव्यवस्थित रूप में रखी हुई हों कि जल्दी किसी वस्तु का पता न लगे। ४. मांस।

जंगल-जलेबी—स्त्री० [सं० जंगल+हिं० जलेबी] १. काँटेदार जंगली पौधा, जिसमें जलेबी की तरह फल लगते हैं। २. गू की लेंडी। (परिहास)

जंगल बाड़ी—स्त्री० [हिं० जंगल+बाड़ी] एक प्रकार की बढ़िया मलमल।

जंगला—पुं० [पुर्त० जेंगिला] १. बरामदे, छज्जे आदि के किनारे-किनारे खड़ी की हुई वह रचना जिसमें एक पंक्ति में लकड़ी या लोहे के छड़ लगे होते हैं। २. खिड़की का वह चौखट जिसमें लोहे के छड़ लगे हुए हों। ३. खिड़की। ४. वह चित्रण या नक्काशी जिसमें एक दूसरे को काटती हुई बेलें आदि बनी हों। जैसे—जंगले की साड़ी।

पुं० [सं० जांगल्य] १. संगीत के बारह मुकामों में से एक। २. एक राग का नाम। ३. एक प्रकार की मछली जो बंगाल की नदियों में बहुतायत से होती है। ४. वनस्पतियों के डंठल।

जंगली—वि० [सं० जंगल] १. जंगल में उगने, उपजने या होनेवाला। २. (वह वनस्पति) जो आप से आप उग आई हो। ३. ज़ंगल में रहनेवाला। जैसे—जंगली चिड़ियाँ, जंगली जातियाँ। ४. जो घरेलू या पालतू न हो। जैसे—जंगली कुत्ता। ५. जंगल में रहने वाले पशुओं, व्यक्तियों जैसा (आचरण, स्वभाव)। जैसे—ज़ंगली आदत। ६. असभ्य तथा असंस्कृत। गँवार। ७. मूर्ख। ८. (प्रदेश) जिसमें जंगल हों।

पुं० १. जंगल में रहनेवाला व्यक्ति। २. असभ्य या अशिष्ट व्यक्ति।

जंगली बादाम—पुं० [हिं० जंगली+बादाम] १. कतीले की जाति का एक पेड़ जिसके फलों के बीज को भूनकर खाया या उबालकर तेल निकाला जाता है। २. हर्रे की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल से चमड़ा सिझाया जाता है और बीजों से तेल निकाला जाता है। हिंदी-बादाम।

जंगली रेंड़†—पुं०=वन रेंड।

जंगा—पुं० [फा० जगूला] घुँघरू का दाना।

जंगार—पुं० [फा०] [वि० जंगारी] १. ताँबे का कसाव। तूतिया। २. एक प्रकार का नीला रंग जो ताँबे को सिरके में भिगोकर निकाला जाता है। ३. आज-कल कुछ नई प्रक्रियाओं से बनाया हुआ उक्त प्रकार का रंग।

जंगारी—वि० [फ़ा० जंगार] जंगार अर्थात् नीले रंगवाला। नीला।

जंगाल—पुं०=जंगार।

†पुं० [फा० जंग] जंग। मोरचा।

जंगाली†—वि०=जंगारी।

पुं० [हिं० जंगार] नीले रंग का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

जंगाली पट्टी†—स्त्री० [हिं० जंगारी+पट्टी] फोड़े-फुंसियों पर लगाई जानेवाली गंधे-बिरोजे की पट्टी।

जंगी—वि० [फा०] १. जंग अर्थात् युद्ध संबंधी। २. युद्ध में भाग लेनेवाला अथवा युद्ध में काम आनेवाला। सामरिक। ३. सेना संबंधी। सैनिक। ४. बहुत बड़ा। दीर्घ काय। ५. लड़ने-झगड़नेवाला। झगड़ालू।

पुं० [देश०] घड़ा। (कहार)

जंगी लाट—पुं० [हिं०] आज-कल किसी देश का प्रधान सेनापति।

जंगीहड़—स्त्री० [फा० जंगी+हड़] काली हड़। छोटी हड़।

जंगुल—पुं० [सं०√गम् (जाना) +यङ—लुक्+डुल् बा०] जहर। विष।

जंगेला—पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसे चौरी, मामरी या रूही भी कहते हैं।

जंगें—स्त्री० [सं० जंघा] एक प्रकार की करधनी जिसमें घुँघरू लगे रहते हैं और जिसे नाच के समय अहीर, धोबी आदि कमर में बाँधते हैं।

जंघ*—स्त्री०=जंघा।

†पुं०=जाँघिया।

जंघा—स्त्री० [√हन् (जाना) √यङ्—लुक्+अच्, टाप्] १ पैर का घुटने और पेड़ू के बीच का भाग। २. एक प्रकार का जूता। ३. कैंची का दस्ता जिसमें फल और दस्ताने लगे रहते हैं।

जंघा-त्राण—पुं० [ष० त०] एक प्रकार का कवच जो जाँघ पर बाँधा जाता था।

जंघाफार—पुं० [हिं० जंघा+फारना] रास्ते में पड़नेवाली खाईं। (कहार)

जंघा-बन्धु—पुं० [ब० स०] एक ऋषि का नाम

जंघामथानी—स्त्री० [सं० जंघा+हिं० मथानी] १. छिनाल स्त्री। पुंश्चली। २. वेश्या।

जंघार—पुं० [हिं० जंघा+आर] जाँघ पर होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

जंघा-रथ—पुं० [ब० स०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. उक्त ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

जंघारा—पुं० [देश०] राजपूतों की एक जाति।

जंघारि—पुं०[सं० ब० स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

जंघाल—पुं० [सं० जंघा+लच्] १. धावन। धावक। दूत। २. मृग।

जंघिल—वि० [सं० जंघा+इलच्] १. तेज दौड़नेवाला। २. फुर्तीला।

जंचना—अ० [हिं० जाँचना] १. जाँचा जाना। जाँचा-परखा जाना। जैसे—हिसाब जँचना। २. जाँच में ठीक या पूरा उतरना। ३. जान पड़ना। प्रतीत होना। ४. भला जान पड़ना।

जंचा—वि० [हिं० जँचना] १. जाँचा हुआ। सुपरीक्षित। २. जो ठीक प्रकार से जाँच करने में अभ्यस्त हो। ३. जाँच करते-करते जिसे किसी बात का अभ्यास हो गया हो। जैसे—जँचा हाथ।

पद—**जँचा-तुला**=ठीक ठीक।

जंज—अव्य० [?] जो।

स्त्री० [सं० यज्ञ] बरात। (पंजाब)

जंज-घर—पुं० [हिं० जंज+घर] १. बरात को ठहराने का स्थान। २. वह स्थान जहाँ पर बरातें आकर ठहरती हों।

जंजपूक—पुं०[सं०√जप् (जपना)+यङ्+ऊक] मंद स्वर में जप करनेवाला व्यक्ति।

जंजबील—स्त्री० [अ०] सोंठ।

जंजर (ल)*—वि० =जर्जर।

जंजाल—पुं० [हिं० जग+जाल] [वि० जंजालिया] १. सांसारिक व्यापार जिसमें मनुष्य फँसा रहता है। मनुष्य को ईश्वर या भगवत् भजन से विमुख करने तथा उसका ध्यान अपनी ओर लगाये रखनेवाली बात। माया। २. प्रपंच। झंझट। बखेड़ा। ३. उलझन। ४. पानी का भँवर। ५. पुराने ढंग की एक प्रकार की पलीतेदार बड़ी बंदूक। ६. चौड़े मुँहवाली एक प्रकार की पुरानी चाल की तोप। ७. मछलियाँ पकड़ने का बड़ा जाल।

जंजालिया—वि० [हिं० जंजाल+इया (प्रत्य०)]=जंजाली।

जंजाली—वि० [हिं० जंजाल+ई (प्रत्य०)] १. जो जंजाल में फँसा हो। सांसारिक बंधनों में पड़ा हुआ। २. झगड़ा-बखेड़ा करनेवाला।

स्त्री० [देश०] वह रस्सी और घिरनी जिससे नावों का पाल चढ़ाया और उतारा जाता है।

जंजीर—स्त्री०[फा०] १. धातु की बहुत-सी कड़ियों को एक दूसरे में पहनाकर बनाई जानेवाली लड़ी। साँकल। २. साँकल की तरह का बना हुआ गले में पहनने का एक आभूषण। सिकड़ी। ३. कैदियों के पावों में बाँधी जानेवाली लोहे की श्रृंखला। ४. किवाड़े के पल्ले बंद करने की सिकड़ी। साँकल। ५. लाक्षणिक अर्थ में, वह बात जो आगे-पीछे की घटनाओं को जोड़ती या मिलाती है। श्रृंखला।

जंजीरा—पुं०[हिं० जंजीर] १. कसीदे के काम में, कपड़े आदि पर काढ़ी या निकाली हुई जंजीर की बनावट। लहरिया। २. लहरियेदार कपड़ा। उदा०—जनि बाँधों जंजीरे की पाग नजर तोहें लगि जायगी।—गीत।

जंजीरी—वि० [हिं० जंजीर] १. गले में पहनने की सिकड़ी। २. हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।

वि० जिसमें जंजीर या सिकड़ी लगी हो।

जंट†—पुं० [अं० ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट] [भाव० जंटी] जिला मजिस्ट्रेट का सहायक अधिकारी।

जंटी—स्त्री० [हिं० जंट] ज्वाइंट मजिस्ट्रेट होने की अवस्था, भाव या पद।

जंड—पुं० [देश०] एक जंगली पेड़ जिसकी फलियों का अचार डाला जाता है। सागर।

जंतर—पुं० [सं० यंत्र] १. दे० 'यंत्र'। २. गले आदि में पहनने का धातु का वह छोटा आधान जिसके अंदर मंत्र या टोटके की कोई वस्तु रहती है। तावीज। ३. जंतर-मंतर। ४. यंत्र, जिससे तेल या आसव आदि तैयार किया जाता है। ५. वाद्य यंत्र। बाजा।

जंतर-मंतर—पुं० [सं० यंत्र-मंत्र] १. भूत-बाधा आदि उतारने अथवा किसी पर भूत-बाधा आदि लाने का मंत्र। टोटका। २. वेधशाला, जहाँ पर नक्षत्रों आदि की गति-विधि देखी जाती है।

जंतरा—स्त्री० [सं० यंत्री] वह रस्सी जो गाड़ी के ढाँचे पर कसी, तानी या बाँधी जाती है।

जंतरी—स्त्री० [सं० यंत्र] सोनारों का एक उपकरण जिसमें से वे तार खींचकर पतले तथा लंबे करते हैं। २. पंचांग। तिथिपत्र। (उर्दू) ३. जादूगर। ४. बाजा बजानेवाला।

जंतसर—पुं० [हिं० जाता+सर (प्रत्य०)] वह गीत जिन्हें जाँता अर्थात् चक्की पीसते समय स्त्रियाँ गाती हैं।

जंतसार—स्त्री० [हिं० जाँता+सार=शाल] वह स्थान जहाँ पर जाँता गाड़ा हो।

जंता—पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० जंती, जंतरी] १. यंत्र। कल। २. सुनारों का तार खींचने का उपकरण।

वि० [सं० यंतृ] १. यंत्रणा देनेवाला। २. दंड देनेवाला।

जंताना—अ० [हिं० जाँता] १. (अन्न आदि का) जाँते में पीसा जाना। २. भीड़ में चारों ओर से इस प्रकार दबना जैसे जाँते में दाने पिसते हैं।

जंती—स्त्री० [हिं० जंता] सुनारों का तार खींचने का छोटा जंता।

स्त्री० [सं० जनयित्री] जननी। माता।

जंतु—पुं० [सं०√जन् (प्रादुर्भाव) +तुन्] १. वह जिसने जन्म लिया हो। २. शारीरिक दृष्टि से साधारण या छोटे आकार-प्रकार के पशु, कीड़े-मकोड़े आदि। जैसे—चूहा, मछली, साँप आदि।

जंतुका—स्त्री० [सं० जंतु√क (प्रकाश करना) +क—टाप्] लाख। लाक्षा।

जंतुघ्न—वि० [सं० जंतु√हन् (मारना)+टक्] (औषध या पदार्थ) जंतुओं को नष्ट करनेवाला।

पुं० १. वायबिडंग। २. हींग।

जंतुघ्नी—स्त्री० [सं० जंतुघ्न+ङीष्] बायबिडग।

जंतु-नाशक—पुं० [ष० त०] हींग।

वि० जंतुओं या कीड़ों का नाशक।

जंतु-फल—पुं० [ब० स०] गूलर।

जंतुमारी (रिन्)—पुं० [सं० जंतु√मृ (मरना)+णिच्+णिनि] जँबीरी नीबू।

वि०=जंतुघ्न।

जंतुला——स्त्री० [सं० जंतु√ला (लेना)+क—टाप्] काँस नामक घास।

जंतु-विज्ञान—पुं०=जीव-विज्ञान।

जंतु-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के पशु-पक्षी और जीव-जंतु प्रदर्शन के लिए रखे गये हों। चिड़ियाघर।

जंतुहन—वि०=जंतुघ्न।

जंतंत——पुं० [हिं० जाँता] वह व्यक्ति जो जाँता अर्थात् चक्की पीसकर अपनी जीविका उपार्जन करता हो।

जंत्र—पुं० [सं० यंत्र] १. यंत्र (दे०)। २. ताला।

जंत्रना*—स० [हिं० जंत्र] १. जंत्र अर्थात् ताला लगना। २. बाँध या रोक (दे०) रखना।

स० स्त्री० [सं० यंत्रणा] १. यंत्रणा देना। दुःख देना। २. दंड देना।

जंत्र-मंत्र—पुं०=जंतर-मंतर।

जंत्रा—स्त्री०=जंतरा।

जंत्रित—वि० [सं० यंत्रित] १. यंत्र द्वारा बाँधा या रोका हुआ। २. जो किसी के वश में हो। पर-वश।

जंत्री—पुं० [सं० यंत्रिन्] वीणा आदि बजानेवाला। बाजा बजानेवाला व्यक्ति।

*पुं० [सं० यंत्र] बाजा।

†स्त्री०=जंतरी।

जंद—पुं० [सं० छन्दस् का ईरानी रूप] पारसियों का प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ जो जरतुश्त की रचना है। (पहले लोग इसे भूल से उक्त ग्रंथ की भाषा का नाम समझते थे जो वास्तव में अवेस्ता है)

जंदरा—पुं० [सं० यंत्र] ताला। (पश्चिम)

†पुं०=जाँता।

जंधाला—स्त्री० [सं०] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो १२८ हाथ लम्बी, १६ हाथ चौड़ी और १२ हाथ ऊँची होती थी।

जंप—पुं० [सं० जल्प ?] शांति। उदा०—जंप जीव नहीं आवतौ जाणे। —प्रिथीराज।

जंपती—पुं० [सं० जाया-पति द्व० स०, जम् आदेश] दंपती।

जंपना*—स० [हिं० जपना, सं० जल्पन] १. कहना। बोलना। उदा०—यों कवि भूषण जंपत है लखि संपति को अलका-पति लाजै। —भूषण। २. बकना। बकवाद करना।

अ०=झंपना (कूदना)।

जंब—पुं० [सं०√जम्ब्+घञ्] कीचड़।

जंबाल—पुं० [सं० जंब—आ√ला (लेना)+क] १. कीचड़। २. मिट्टी। ३. पानी में होनेवाली एक घास। ४. केवड़े का फूल।

जंबाला—स्त्री० [सं० जंबाल+टाप्] केतकी का पौधा।

जंबालिनी—स्त्री० [सं० जंबाल+इनि-.ङीप्] नदी।

जंबीर—पुं० [सं०√जम् (खाना)+ईरन्—बुक्] जँबीरी नीबू (दे०)।

स्त्री० [अ० जंबीर] मुँह से बजाने की पुरानी चाल की एक सीटी।

जंबीरी नीबू—पुं० [सं० जंबीर] एक प्रकार का बड़ा नीबू जिसका रस बहुत खट्टा होता है।

जंबील—स्त्री० [फा०] फकीरों, साधुओं, संन्यासियों आदि की किसी कपड़े के चारों कोनों को गाँठ लगाकर बनाई हुई थैली जिसमें वे भिक्षा से मिली हुई वस्तुएँ रखते हैं।

जंबु—पुं० [सं० √जंबू पृषो० ह्रस्व] जामुन का पेड़ और उसका फल।

जंबुक—पुं० [स० जंबु+कन्] १. बड़ा जामुन। फरेंदा। २. श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ३. केवड़ा। ४. गीदड़। ५. वरुण। ६. स्कंद का एक अनुचर।

जंबु-खंड—पुं० दे० 'जंबूद्वीप'।

जंबु-द्वीप—पुं०=जंबूद्वीप।

जंबु-प्रस्थ—पुं०=जंबूप्रस्थ (दे०)।

जंबुमती—स्त्री० [सं० जबुमत+ङीष] एक अप्सरा का नाम।

जंबुमान् (मत्)—पुं० [स० जंबु+मतुप्] १. पहाड़। २. जांबवान नामक एक वानर।

जंबुमाली (लिन्)—पुं० [सं० जंबु-माला ष० त०, इनि ?] एक राक्षस का नाम।

जंबुर†—पुं०=जंबूर।

जंबुल—पुं० [सं० जंबु√ला (लेना)+क] जंबूल। (दे०)

जंबू—पुं० [स० जबु+ऊङ्]=जंबु। (दे०)

जंबूका—स्त्री० [सं० जंबू√(प्रतीत होना)+क-टाप्] किशमिश।

जंबू-खंड—पुं० [मध्य० स०] जंबूद्वीप।

जंबू-दीप—पुं०=जंबूद्वीप।

जंबू-द्वीप—पुं० [मध्य० स०] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक जिसमें भारतवर्ष की भी स्थिति मानी गई है।

जंबूनद—पुं०=जंबू-नदी।

जंबू-नदी—स्त्री० [मध्य० स०] ब्रह्म लोक से निकली हुई सात नदियों से एक जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि यह जामुन के पेड़ों से वाले जामुनों के रस से निकलती है।

जंबू-प्रस्थ—पुं० [ब० स०] वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक नाम।

जंबूर—पुं० [अ० ज़न बूर] १. बर्रे। भिड़। २. शहद ३. पुरानी चाल की एक तोप।

†पुं०=जंबूरा।

जंबूरक—स्त्री० [फा० जंबूर] १. एक प्रकार की छोटी रखने की गाड़ी। ३. भँवर कली।

जंबूरखाना—पुं० [अ० जनंबूर+फा० खानः] भिड़ या का छत्ता।

जंबूरची—पुं० [अ० जंबूर+फा० ची (प्रत्य०) १.

जंबूरा—पुं० [फा० जंबूर] १. एक प्रकार की लादने की गाड़ी। ३. भँवर कली (दे०)। ४. तरह का एक उपकरण जिससे कारीगर ची घुमाते हैं। ५. मस्तूल पर आड़ा बँधा रहने

जंबूरी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का जाली

जंबूल—पुं० [सं० जंबू√ला (लेना)+क] १ फल। २. केवड़ा।

जंबू-वनज—पुं० [जंबू-वन मध्य० स०, श्वेत जपापुष्प। सफेद गुड़हल का फ

जंभ—पुं०[√जंभ (भक्षण, जमुहाई)+घञ्] १. दाढ़। २. जबड़ा। ३. जँभाई। ४. तरकश। ५. जँबीरी नीबू। ६. [√जंभ+अच्] महिषासुर का पिता जिसका वध इंद्र ने किया था।

जंभक—पुं० [सं०√जंभ्+णिच्+ण्वुल्-अक] १. जँबीरी नीबू। २. शिव। ३. एक राजा।

वि० १. जिसके सेवन से जँभाई आती हो। २. हिंसक। ३. [जंभ् (संभोग)+ण्वुल्-अक] कामुक।

जंभका—स्त्री०[सं० जंभा+कन्-टाप्, ह्रस्व] जँभाई।

जंभन—पुं०[सं०√जंभ्+ल्युट्-अन] १. भक्षण। २. रति। ३. जँभाई।

जंभ-भेदी (दिन्)—पुं० [सं० जंभ√भिद् (विदारण)+णिनि] इंद्र।

जंभ-रिपु—पुं०[ष० त०] इंद्र।

जंभा—स्त्री०[सं०√जंभ्+णिच्√अ-टाप्] जँभाई।

जँभाई—स्त्री०[सं० जृम्भा] एक शारीरिक व्यापार जिसमें मनुष्य गहरा साँस लेने के लिए पूरा मुँह खोलता है।

विशेष—यह व्यापार थकावट या नींद के आने का सूचक होता है।

क्रि० प्र०-आना।—लेना।

जँभाना—अ०[सं० जृम्भण] पूरा मुँह खोलकर गहरा साँस लेना। जँभाई लेना।

जंभाराति—पुं०[सं० जंभ-अराति ष०त०] जंभारि। (दे०)

जंभारि—पुं०[सं०-जंभ-अरि ष० त०] १. इंद्र। २. विष्णु। ३ अग्नि। ४. वज्र।

जं

जंज **जंभिका**—स्त्री०[सं० जंभा+कन्+टाप, इत्व] जंभा।

जंभी—(भिन्)पुं० [सं०√जंभ्+णिच्+णिनि] दे० 'जंबीरी'।

विमुं**जीर**—पुं०[सं०√जंभ्+ईरन्] दे० 'जंबीरी'।

माया।**री**—पुं० दे० 'जंबीरी नीबू'।

का भँवर—पुं०=जंबूरा।

६. चौड़े मुं**पुं**०[सं० जामातृ] दामाद।

पकड़ने का वअ०[हिं० झंखना] पछताना। पश्चात्ताप करना।

जंजालिया—वि० [०, स०=जहँड़ना।

जंजाली—वि० [हिं० [हिं० जैसे] जिस प्रकार। जैसे।

सांसारिक बंधनों में जौ] १. एक प्रसिद्ध मोटा अन्न जिसका पौवा जौ के

स्त्री० [देश०] वह कुछ मिलता-जुलता होता है। २. उक्त अन्न का पौवा।

और उतारा जाताोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य माना जाता है। ४. किसी पौवे

जंजीर—स्त्री०[फा०]ला। अंकुर। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के पौवों, वृक्षों,

पहनाकर बनाई जाें लगनेवाले वे फूल जिनके मूल में बतिया (फल का

का बना हुआ गले में पहोता है।

के पावों में बाँधी जानेद] विजयी।

बंद करने की सिकड़ी। फ़ा] [स्त्री० जईफा, भाव० जईफी] बुड्ढा। बूढ़ा।

आगे-पीछे की घटनाओं को

जंजीरा—पुं०[हिं० जंजीर] १.] जईफ अर्थात् वृद्ध होने की अवस्था या भाव।

या निकाली हुई जंजीर की

कपड़ा। उदा०—जनि बाँधों

जायगी।—गीत।) उदा०—जउवा में फूटेला वालि।—

जंजीरी—वि० [हिं० जंजीर] १. गले

के पिछले भाग पर पहना जानेवालाद्यपि। अगरचे। उदा०—(क) कहै

रतनाकर धरैंना मृगछाला अरु धूरि हू परैं भी जऊ अंग छिलि जाइयौ।—रत्ना०। (ख) लाल हैं प्रवाल फूले देखत बिसाल जऊ।—सेनापति।

जकंद—स्त्री० [फा० ज़कंद] उछाल। छलांग।

जकंदना—अ० [हिं० जकंद] १. उछाल भरना। छलांग लगाना। २. २. टूट पड़ना।

जकंदनि—स्त्री०[हिं० जकंद] १. उछलने-कूदने की क्रिया या भाव। २. दौड़-धूप। ३. उलझन।

जक—स्त्री० [अ० ज़क] १. पराजय। हार। २. हानि।

स्त्री० [हिं० झक] १. जिद। हठ।

मुहा०—जक पकड़ना=जिद करना। हठ करना। उदा०—अधम समूह उधारन कारन तुम जिय जक पकरी।—सूर।

२. धुन। रट। स्त्री०[?] १. आराम। सुख। २. मन की स्थिरता। शान्ति। चैन। उदा०—जक न परति चकरी भई फिरि आवत फिरि जाति।—विहारी। *पुं० [सं० यक्ष] १. यक्ष। २. कंजूस आदमी।

जकड़—स्त्री० [हिं० ज़कड़ना] १. जकड़ने की क्रिया, ढंग या भाव। २. जकड़े अर्थात् चारों ओर से दृढ़ बंधन में होने की अवस्था या स्थिति।

जकड़ना—स० [सं० युक्त+करण] १. इस प्रकार किसी चीज को कसकर दबाते हुए बाँधना कि वह हिल-डुल न सके। २. इस प्रकार से नियम, बंधन आदि बनाना या लागू करना कि उनसे बच सकना किसी का संभव न हो।

अ० १.जकड़ा जाना। चारों ओर से कसकर बाँधा जाना। २.नियमों, बंधनों आदि से इस प्रकार घिरना कि छुटकारा या बचत न हो सकती हो। ३. शीत आदि के कोप से शरीर अथवा शरीर के किसी अंग का इस प्रकार कस, ऐंठ या तन जाना कि वह हिल-डुल न सके। जैसे—गठिया के रोग से घुटने जकड़ना।

जकड़बंद—वि० [हिं० जकड़+फा० बंद] जिसे अच्छी तरह जकड़कर बाँध लिया गया हो। किसी की जकड़ में आया हुआ।

जकना*—अ० [हिं० जक] [वि० जकित] १. भौचक्का होना। चकित या स्तंभित होना। उदा०—दीन से रहैं संत जन सों, रूप में नैना जके।—अलबेली अली। २. व्यर्थ बोलना। बकना। ३. रटना।

जकर—पुं० [अ०] १. पुरुषेंद्रिय। लिंग। २. नर। ३. फौलाद।

जकरना*—स०, अ०=जकड़ना।

जकाजक*—पुं०[अनु०] जोरों की लड़ाई। घोर युद्ध।

क्रि० वि० खूब जोरों से। वेग-पूर्वक।

जकात—स्त्री०[अ० ज़कात] १. इस्लाम में विहित आय का वह चालीसवाँ भाग जो दान-धर्म में देना आवश्यक कहा गया है। २.दान। खैरात। ३. कर। महसूल।

जकाती—वि०[अ० ज़कात] कर या महसूल उगाहनेवाला। जगाती।

जकित*—वि०=चकित।

जकी—वि०[हिं० जक] १. जिद्दी। हठी। २. चकित। स्तंभित। उदा०—चकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलति नीठि।—बीसलदेव।

जकुट—पुं० [सं० ज√कुट् (कौटिल्य)+क] १. मलयाचल। २. कुत्ता। ३. बैंगन के पौवे में लगनेवाला फूल।

जक्की—स्त्री० [देश०] बुलबुलों की एक जाति।

वि० दे० 'झक्की'।

जक्त*—पुं०=जगत्।

जक्ष—पुं०=यक्ष।

जक्षण—पुं० [सं०√जक्ष् (भक्षण करना)+ल्युट्-अन] १. भक्षण। २. भोजन। खाना।

जक्ष्म—पुं०=यक्ष्म।

जक्ष्मा†—पुं०=यक्ष्मा (तपेदिक)।

जखन—अव्य०=जब। (पूरब)

जखनी*—स्त्री०=यक्षिणी (यक्ष की पत्नी)।

†स्त्री०=यखनी। (दे०)

जखम—पुं० [फा० ज़ख़्म] १. आघात आदि के कारण शरीर में लगनेवाली ऐसी चोट जिसमें त्वचा कट, फट या छिल जाती है और रक्त बहने लगता है। घाव। जैसे—ईंट सिर पर गिर पड़ने से यह जखम हुआ है। २. फोड़ा आदि फटने से होनेवाला घाव। ३. लाक्षणिक अर्थ में, किसी के द्वारा किया हुआ वह आघात या अपकार जिससे मनुष्य सदा दुःखी रहता हो।

मुहा०—जखम पर नमक छिड़कना=ऐसा काम करना जिससे दुःखी व्यक्ति और भी अधिक दुःखी हो। **जखम ताजा या हरा होना**=किसी के द्वारा किया हुआ अपकार स्मरण हो आना।

जखमी—वि०[फा० ज़ख़्मी] जिसे जखम या घाव हुआ हो। घायल।

जखीरा—पुं०[अ० ज़खीरः] १. ढेर। राशि। २. कोष। ३. वह प्रदेश जहाँ कोई वस्तु वहुतायत से प्राप्त होती है। जैसे-पंजाब गेहूँ का जखीरा है। ४. वह स्थान जहाँ पौधे, बीज आदि बिकते हों।

जखेड़ा†—पुं०=जखीरा।

पुं० हिं० बखेड़ा का अनु०।

जखैया—पुं० [सं० यक्ष]एक कल्पित भूत जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि वह लोगों को यों ही बहुत कष्ट देता है।

जख्ख*—पुं० [स्त्री० जख्खनी] =यक्ष। उदा०—सहस जख्ख भक्खनिय, मनह अचले चल वद्दिय।—चंदबरदायी।

जख्म—पुं०=जखम।

जग—पुं०[सं० जगत्] १. जगत्। संसार। २. चेतन सृष्टि।

*पुं०=यज्ञ।

जगकर—पुं०[सं०] ब्रह्मा।

जगकारन—पुं०[हिं० जग+कारन] परमेश्वर जो जगत्कर्ता माना जाता है।

जगच्चक्षु—पुं०[सं० जगत्-चक्षुस् ष० त०] सूर्य।

जगजग (ा)—वि०[हिं० जगजगाना=जगमगाना] जगमगाता हुआ।

जगजगा—पुं०[जगमग से] किसी चमकीली धातु का पतला पत्तर जिसके कटे हुए छोटे-छोटे टुकड़े टिकुली, ताजिए आदि में लगाये जाते हैं।

जगजगाना†—अ०=जगमगाना।

†स०=जगमगाना।

जग-जीवन—पुं०[सं० जगज्जीवन] ईश्वर। परमात्मा।

जगजोनि—पुं०[सं० जगद्योनि] ब्रह्मा।

जगज्जनी—स्त्री०[सं० जगत्-जननी ष० त०] १. जगदंबा। २. परमेश्वरी। ३. सीता।

जगज्जयी (यिन्)—वि० [सं० जगत्-जयी ष० त०] जग को जिसने जीत लिया हो। विश्वविजयी।

जगझंप—पुं०[सं० ?] युद्ध-क्षेत्र में बजाया जानेवाला एक प्रकार का ढोल।

जगड्वाल—पुं०[सं०?] व्यर्थ का आडंबर या बखेड़ा।

जगण—पुं०[ष० त०] छंद शास्त्र में, तीन ऐसे अक्षरों के समूह की संज्ञा जिसका पहला अक्षर लघु, दूसरा गुरु और तीसरा लघु हो। इसका सांकेतिक चिह्न ।ऽ। है।

जगत्—वि०[सं०√गम् (जाना)√क्विप्, द्वित्व, तुगागम] १. जागता हुआ। चेतन। २. जो चलता-फिरता हो।

पुं० १. पृथ्वी का वह अंश या भाग जिसमें जीव या प्राणी चलते-फिरते या रहते हों। चेतन सृष्टि। २. किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य-क्षेत्र अथवा उसमें रहनेवाले जीवों, पिंडों आदि का वर्ग या समूह। जैसे—नारी जगत्, सौर जगत्, हिन्दी जगत् आदि। ३. इस पृथ्वी के निवासी। जैसे—जगत् तो मेरी हँसी उड़ाने पर तुला हुआ है। ४. संसार। दुनिया। जैसे—यह जगत् और उसके सब जंजाल झूठे हैं।

जगत—स्त्री०[सं० जगति=घर की कुरसी] कूएँ के ऊपर चारों ओर बना हुआ वह चबूतरा जिस पर खड़े होकर उसमें से पानी खींचा जाता है।

पुं०=जगत्। (दे०)

जगत-जननि—स्त्री०=जगज्जनी।

जगतसेठ—पुं०[सं० जगत्श्रेष्ठी] वह महाजन या सेठ जो किसी नगर या बस्ती में और उसके चारों ओर दूर-दूर तक सब से बड़ा माना जाता हो।

जगतारण—वि० [सं० जगत्-तारण] १. संसार को तारनेवाला। २. संसार की रक्षा करनेवाला।

जगति—स्त्री०[सं० जगत्] द्वारिका।

जगती—स्त्री० [सं०√गम्+अति—ङीप्] १. जगत्। २. पृथ्वी। ३. जीवन। ४. एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं। ५. बारह अक्षरों के छंदों की संज्ञा।

जगती-चर—वि०[जगती√चर् (चलना)+ट] जगत् में विचरण करनेवाला।

पुं० मनुष्य।

जगती-जानि—पुं०[जगती-जाया ब० स०, नि०-आदेश] राजा।

जगती-तल—पुं०[ष० त०] १. धरती। पृथ्वी। २. संसार।

जगती-धर—पुं०[ष० त०] पर्वत।

जगती-पति—पुं० [ष० त०] राजा।

जगती-भर्ता (र्तृ)—पुं०[ष त०] राजा।

जगती-रुह—पुं० [सं० जगती√रुह् (उगना)+क] वृक्ष।

जगत्प्राण—पुं०[जगत्-प्राण ष० त०] १. संसार को जीवित रखनेवाले तत्त्व। २. ईश्वर।

जगत्साक्षी (क्षिन्)—पुं०[जगत्-साक्षिन् ष० त०] सूर्य।

जगत्सेतु—पुं०[जगत्-सेतु ष० त०] परमेश्वर।

जगदंतक—पुं०[जगत्-अंतक ष० त०] १. वह जो जगत् का नाश करता हो। मृत्यु। २. यमराज। ३. शिव।

जगदंबा—स्त्री०[जगत्-अंबा ष० त०] दुर्गा।

जगदंबिका—स्त्री०[जगत्-अंबिका ष० त०] दुर्गा।

जगदात्मा (त्मन्)—पुं०[जगत्-आत्मन् ष० त०] १. ईश्वर। २. वायु।

जगदादि—पुं०[जगत्-आदि ष० त०] १. ब्रह्मा। २. परमेश्वर।

जगदाधार—पुं०[जगत्-आधार ष० त०] १. परमेश्वर। २. वायु।
वि० जगत् का आधार।

जगदानन्द—पुं०[जगत्-आनंद ष० त०] परमेश्वर।

जगदायु (स्)—पुं०[जगत्-आयुस् ष० त०] वायु।

जगदीश—पुं०[जगत्-ईश ष० त०] १. ईश्वर। परमेश्वर। २. विष्णु। जगन्नाथ।

जगदीश्वर—पुं०[जगत्-ईश्वर] ईश्वर। परमेश्वर।

जगदीश्वरी—स्त्री०[जगत्-ईश्वरी ष० त०] भगवती।

जगदीस—पुं०=जगदीश।

जगद्गुरु—पुं०[जगत्-गुरु ष० त०] १. परमेश्वर। २. शिव। ३. नारद। ४. वह महान व्यक्ति जिसे सब लोग गुरु के समान पूज्य मानते हों। जैसे—जगद्गुरु शंकराचार्य। ५. शंकराचार्य की गद्दी के अधिकारी महंत की उपाधि।

जगद्गौरी—स्त्री०[स० त०] १. दुर्गा। २. नागों की बहन मनसादेवी, जिसका विवाह जरत्कारु ऋषि से हुआ था।

जगद्दीप—पुं०[जगत्-दीप ष० त०] १. ईश्वर। २. महादेव।

जगद्धाता (तृ)—पुं०[जगत्-धातृ ष० त०] [स्त्री० जगद्धात्री] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। शंकर।

जगद्धात्री—स्त्री०[जगत्-धात्री ष० त०] १. दुर्गा। २. सरस्वती।

जगद्बल—पुं०[जगत्-बल ब० स०] वायु। हवा

जगद्योनि—पुं०[जगत्-योनि ष० त०] १. शिव। २. विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४. परमेश्वर। ५. पृथ्वी।

जगद्वंद्य—वि०[जगत्-वंद्य ष० त०] १. जिसकी वंदना जगत् करता हो। २. जिसकी वंदना जगत् को करनी चाहिए।

जगद्वहा—स्त्री०[सं० जगत्√वह् (ढोना)+अ-टाप्] पृथ्वी।

जगद्विख्यात—वि०[जगत्-विख्यात स० त०] जिसकी ख्याति जगत् में हो।

जगद्विनाश—पुं०[जगत्-विनाश ब० स०] प्रलयकाल।

जगन*—पुं०[सं० यज्ञाग्नि] १. यज्ञ की अग्नि। २. यज्ञस्थल। उदा०--जो वै जाँ गृहि गृहि जगन जागवै। --प्रिथीराज।
स्त्री०[हिं० जागना] जागने की क्रिया या भाव।
पुं०=जगण।

जगनक—पुं०[देश०] महोबे के राजा परमाल के दरबार का एक प्रसिद्ध कवि।

जगना†—अ०[सं० जागरण] १. जाग्रत होना। जागना। २. अग्नि, दीप-शिखा आदि का प्रज्वलित होना। जैसे—ज्योति जगना।

जगनी—स्त्री०[?]१. एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे के बीज जिनका तेल निकाला जाता है।

जगनु—पुं०[सं० जगन्नु] १. अग्नि। २. कीड़ा। ३. जंतु।
पुं०=जुगनूं।

जगन्नाथ—पुं०[जगत्-नाथ ष० त०] १. जगत् के नाथ; ईश्वर। २. विष्णु। ३. उड़ीसा प्रदेश की पुरी नगरी के एक प्रसिद्ध देवता।

जगन्नाथ-क्षेत्र—पुं०[ष० त०] उड़ीसा प्रदेश की पुरी नामक नगरी जो एक तीर्थस्थल है। जगन्नाथपुरी।

जगन्नाथ-धाम (न्)—पुं०[ष० त०] जगन्नाथपुरी।

जगन्नियंता (तृ)—पुं०[जगत्-नियंतृ ष० त०] वह जो जगत् का नियंत्रण करता हो। ईश्वर।

जगन्निवास—पुं०[जगत्-निवास ष० त०] ईश्वर। परमेश्वर।

जगन्नु—पुं०[सं० जगत्√नम् (नम होना)+डु] १. अग्नि। २. कीड़ा। ३. जंतु।

जगन्मंगल—पुं०[जगत्-मंगल ब० स०] काली का एक कवच।

जगन्मय—पुं०[सं० जगत्+मय] विष्णु।

जगन्मयी—स्त्री०[सं० जगन्मय+ङीप्] १. लक्ष्मी। २. वह शक्ति जो जगत् का संचालन करती है।

जगन्माता (तृ)—स्त्री०[जगत्-मातृ ष० त०] दुर्गा।

जगन्मोहिनी—स्त्री०[जगत्-मोहिनी ष० त०] १. दुर्गा। २. महामाया।

जगबंद*—वि०[सं० जगत् वंद्य] जगत् जिसकी वंदना करे। जगद्वंद्य।

जगमग, जगमगा—वि०[अनु०] १. जगमगाता हुआ। २. चमकदार।

जगमगाना—अ०[अनु० जग-मग] [भाव० जगमगाहट] किसी चीज पर प्रकाश पड़ने से उसका चमकने लगना। जगमग करना। जैसे—बिजली की रोशनी में पंडाल जगमगा रहा था।
स० प्रकाश आदि से प्रज्वलित करना या चमकाना।

जगमगाहट—स्त्री०[हिं० जगमग] जगमगाने की अवस्था या भाव।

जगर—पुं०[सं०√जागृ (जागना)+अच् पृषो० सिद्ध] कवच।

जगरन*—पुं०=जागरण।

जगरनाथ—पुं०=जगन्नाथ।

जगरमगर—वि०=जगमग।

जगरा—स्त्री०[सं० शर्करा] खजूर के रस से बनी हुई खांड या चीनी।

जगल—पुं०[सं०√जन् (उत्पत्ति)+ड,√गल्+अच्, ज-गल, कर्म० स०] १. पीठी से बना हुआ मद्य जिसे पृष्टी भी कहते हैं। २. शराब की सीठी। कल्क। ३. मदन वृक्ष। मैनी। ४. कवच। ५. गोमय। गोबर।
वि० धूर्त। चालाक।

जगवाना—स०[हिं० जगाना का प्रे० रूप] किसी को जगाने में प्रवृत्त करना। जगाने का काम दूसरे से कराना।

जगसूर—पुं०[सं०जगत्-सूर] राजा। उदा०—बिनती कीन्ह घालि गिउ पागा, ए जगसूर सीउ मोहि लागा—जायसी।

जगसेन—स्त्री०[हिं० जग+?] संसार-प्रसिद्ध। उदा०—स्यामि समुँद मोर निरमल, रतनसेनि जगसेनि।—जायसी।

जगहँसाई—स्त्री०[हिं० जग+हँसना] लोगों का किसी पर उसके कोई मर्यादा विरुद्ध काम करने पर हँसना। जगत् में होनेवाली बदनामी।

जगह—स्त्री०[फा० जायगाह] १. कोई विशिष्ट भू-भाग या उसका विस्तार। स्थान। २. बीच में होनेवाला अवकाश या विस्तार। ३. वह पद या स्थान जहाँ पर कोई काम करता हो। जैसे—इस समय कार्यालय में कोई जगह खाली नहीं है। ४. अवसर। मौका। जैसे—हर बात अपनी जगह पर अच्छी मालूम होती है।

जगहर†—स्त्री०[हिं० जगना] जागते रहने की अवस्था या भाव।
वि० जागता हुआ। जागनेवाला।

जगाजोति*—स्त्री०=जगमगाहट।

जगात†—पुं०=जकात।

जगाती†—पुं० [अ० जकात=कर] १. कर उगाहने की क्रिया या भाव। २. कर उगाहनेवाला अधिकारी। उदा०—काहे कौ कर माँगतौं बिरह जगाती आइ।—रसनिधि।

जगाना—स० [हिं० जगाना] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई जाग उठे। जागने में प्रवृत्त करना। २. सचेत या सावधान करना या जागरूक करना। ३. तंत्र, मंत्र आदि के प्रसंग में, किसी अलौकिक या दैवी शक्ति को जाग्रत करके अपने अनुकूल करने का प्रयत्न करना। जैसे—अलख जगाना, जादू जगाना। ४. धूमिल या मद्धिम चीज को उज्ज्वल और स्पष्ट करना।

जगार—स्त्री० [हिं० जागना] जागरण। जाग्रति।

जगी—स्त्री० [देश०] मोर की जाति की एक प्रसिद्ध बड़ी चिड़िया जिसका शिकार किया जाता है।

जगीत†—स्त्री०=जगत (कूएँ के ऊपर का चबूतरा)।

जगीर†—स्त्री०=जागीर।

जगीला*—वि० [हिं० जागना] [स्त्री० जगीली] १. जागता हुआ। जागा हुआ। २. जागने के कारण थका तथा आलस्य से भरा हुआ।

जगुरि—पुं० [सं०√गृ (निगलना)+किन्, द्वित्व, उत्व] जंगम।

जगैया—वि० [हिं० जगाना] जगानेवाला।

जगौहाँ—वि० [हिं० जागना] १. बराबर जागता रहनेवाला। २. दूसरों को जगाने का प्रयत्न करता रहनेवाला।

जग्ग†—पुं० [हिं० जग] जगत्।
*पुं० [सं० यज्ञ] यज्ञ।
†पुं०=जंग।

जग्य—पुं०=यज्ञ।

जग्युपवीत†—पुं०=यज्ञोपवीत।

जग्मि—पुं० [सं०√गम् (जाना)+कि, द्वित्व] वायु। हवा।
वि० जिसमें गति हो। गतिमान। गतिशील।

जघन—पुं० [√हन् (मारना)+अच्, द्वित्व] १. पेड़। (विशेषतः स्त्रियों का)। २. चूतड़। ३. जंघा। जाँघ। ४. सेना का पिछला भाग।

जघन-कूप—पुं० [ष० त०] चूतड़ के ऊपर का गड्ढा।

जघनकूपक—पुं० [जघनकूप√कै (शब्द करना)+क] जघन-कूप। (दे०)।

जघन-चपला—स्त्री० [ब० ०] १. दुश्चरित्रा स्त्री। कुलटा। २. वह स्त्री जो बहुत तेजी से नाचती हो। ३. आर्या छंद का एक भेद जिसका कोई पूर्वार्द्ध आर्या छंद का और उत्तरार्द्ध चपला छंद का होता है।

जघनी (निन्)—वि० [सं० जघन+इनि] जिसके नितंब बड़े-बड़े हों।

जघन्य—वि० [सं० जघन+यत्] [भाव० जघन्यता] १. अंतिम सीमा पर का। चरम। २. बहुत ही निंदनीय और बुरा। गर्हित। ३. क्षुद्र। नीच।
पुं० १. नीच जाति का व्यक्ति। २. पीठ पर का पुट्ठे के पास का भाग।

जघन्यज—पुं० [सं० जघन्य√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. शूद्र। २. अंत्यज।

जघन्य-भ—पुं० [कर्म० स०] आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा ये छः नक्षत्र।

जघ्नि—पुं० [सं०√हन् (मारना)+किन्, द्वित्व] १. वह जो वध करता हो। २. वध करने का अस्त्र।

जघ्नु—वि० [सं०√हन्+कु, द्वित्व] वध करनेवाला।

जघ्रि—पुं० [सं०√घ्रा (सूँघना)+कि, द्वित्व] सूँघनेवाला।

जचगी—स्त्री० [फा०] १. प्रसव। २. प्रसूतावस्था।

जचना—अ०=जँचना।

जचा—स्त्री०=जच्चा।

जच्चा—स्त्री० [फा० ज़च्चः] वह स्त्री जिसको हाल ही में बच्चा हुआ हो। प्रसूता।

जच्चा-खाना—पुं० [फा० ज़चः खाना] सूतिका-गृह। सौरी।

जच्छ*—पुं०=यक्ष।

जच्छपति*—पुं०=यक्षपति।

जच्छेस*—पुं०=यक्षेश्वर।

जज—पुं० [सं०√जज् (युद्ध करना)+अच्] योद्धा।
पुं० [अं०] न्यायाधीश (दे०)।

जजन*—स० [सं० यजन] १. आदर करना। २. पूजना।

जजमनिका—स्त्री० [हिं० जजमान] पुरोहिताई।

जजमान—पुं०=यजमान।

जजमानी—स्त्री० [सं० यजमान] १. यजमान होने की अवस्था, पद या भाव। २. ऐसी वृत्ति जो यजमानों के कृत्य कराने से चलती हो।

जजा—स्त्री० [अ० जज़ा] १. बदला। प्रतिफल। २. परलोक में मिलनेवाला अच्छा या बुरा फल।

जजाति*—पुं०=ययाति।

जजित—पुं० [सं० यज्ञ] यज्ञकर्ता। उदा०—सुकरि कमंडल वारि, जजित आह्वान थान दिया।—चंदवरदाई।

जजिमान—पुं०=यजमान।

जजिया—पुं० [अ० जज़्यः] १. दंड। २. मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्मवालों पर लगनेवाला एक प्रकार का कर।

जजी—स्त्री० [हिं० जज+ई (प्रत्य०)] १. जज होने की अवस्था, पद या भाव। २. जज की कचहरी।

जजीरा—पुं० [अ० जज़ीरः] द्वीप।

जजीरानुमा—[पुं० अ०] प्रायद्वीप।

जज्ज—पुं०=जज (न्यायाधीश)।

जज्ञ*—पुं०=यज्ञ।

जज्ब—वि० [अ० जज़्ब] १. जो सोख लिया गया हो। शोषित। २. जो हड़प लिया गया हो।

जज्बा—पुं० [अ० जज़्बा] १. भाव। भावना। २. जोश। ३. रोष।

जझर—पुं० [हिं० झरना] लोहे की चद्दर का तिकोना टुकड़ा जो उसमें से तवे काटने के बाद बच रहता है।

जट—पुं० [?] एक प्रकार का गोदना जो झाड़ के आकार का होता है।
पुं० [हिं० जाट] १. पंजाब में खेती-बारी करनेवाली एक जाति। २. कृषक। किसान।

जटना—स० [सं० जटन या हिं० जाट] धोखा देकर किसी की कोई चीज ले लेना। ठगना।
†स०=जड़ना।

जटल—स्त्री० [सं० जटिल] व्यर्थ और झूठ-मूठ की बात। गप। बकवास।

मुहा०–जटल काफिये उड़ाना या मलाना=बेसिर-पैर की और व्यर्थ की बातें करना।

जटा—स्त्री०[√जट् (परस्पर संलग्न होना)+अच्—टाप्] १. सिर के लंबे तथा आपस में गुथे और लिपटे हुए बालों की ऐसी लट जो कभी चिकनाई या सुलझाई न गई हो। जैसे—ऋषि-मुनियों या साधुओं की जटा। २. बालों जैसी किसी वस्तु का चिपका हुआ रूप। जैसे—नारियल की जटा। ३. पेड़-पौधों की जड़ों के आपस में गुथे हुए पतले-पतले रेशों या सूतों का समूह। झकरा। ४. जटामासी। ५. जूट। पाट। ६. केवाँच। ७. वेद-पाठ का एक प्रकार जिसमें मंत्र के दो या तीन पदों को क्रमानुसार पूर्व और उत्तरपद पहले पृथक् पृथक् और फिर मिलाकर दो बार पढ़े जाते हैं। ८. शतावर। ९. बालछड़।

जटा-चीर—पुं० [ब० स०] शिव।

जटा-जूट—पुं०[ष० त०] जटा को लपेटकर बनाया जानेवाला जूड़ा।

जटा-ज्वाल—पुं०[ब०स०] दीया।

जटा-टंक—पुं०[ब०स०] शिव।

जटाटीर—पुं०[सं० जटा√अट् (प्राप्त होना)+ईरन्] शिव।

जटा-धर—वि०[ष०त०]=जटाधारी।

जटा-धारी (रिन्)—वि०[सं० जटा√धृ (रखना)+णिनि] जिसके सिर पर जटा हो।

पुं० १. शिव। २. ऐसा साधु, जिसके सिर पर जटा हो। ३. मरसे की जाति का एक पौधा।

जटाना—अ० [हि० जटना] धोखे में आकर ठगा जाना।

जटा-पटल—पुं०[ब०स०] वेदपाठ का एक जटिल क्रम।

जटामांसी—स्त्री० [जटा√मन् (जानना)+स, दीर्घ, ङीष्] औषध के काम आनेवाली एक प्रकार की सुगंधित वनस्पति। बालछड़।

जटा-माली (लिन्)—पुं० [जटा-माला, ष०त० +इनि] शिव।

जटामासी—स्त्री०=जटा-मांसी।

जटायु—पुं०[सं० जटा√या (गति)+कु] एक प्रसिद्ध गिद्ध जिसने सीता को हरण करके ले जाते हुए रावण से युद्ध किया था और जो उसी के हाथों मारा गया था। यह सूर्य के सारथी अरुण का पुत्र था जो उसकी श्येनी नामक पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

जटाल—वि०[सं० जटा+लच्] जटा से युक्त। जटावाला।

पुं० [सं०] १. वट वृक्ष। बरगद। २. कचूर। ३. मुष्कक। मोरवा। ४. गुग्गुल।

जटाला—स्त्री०[सं० जटाल+टाप्] जटामांसी।

जटाव—स्त्री० [देश०] कुम्हारों की बोली में वह मिट्टी जिससे वे बरतन आदि बनाते हैं।

पुं०[हि० जटना] जटने या जटे जाने अर्थात् ठगने या ठगे जाने की क्रिया या भाव। -

जटावती—स्त्री०[सं० जटा+ मतुप्, वत्व, ङीप्] जटामांसी।

जटा-वल्ली—स्त्री० [उपमि०स०] १. रुद्र जटा। शंकर जटा। २. गंधमासी नाम की वनस्पति।

जटासुर—पुं०[जटा-असुर मध्य०स०] १. एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध भीम ने उस समय किया था जब वह ब्राह्मण वेश धारण करके द्रौपदी को हर कर ले जा रहा था। २. एक प्राचीन देश।

जटित—भू०कृ० [सं०√जट् (जुड़ना)+क्त +इतच्] जड़ा हुआ। जैसे—रत्नजटित मुकुट या सिंहासन।

जटियल—वि०[सं० जटिल] निकम्मा। रद्दी।

जटिल—वि० [सं० जटा+इलच्] १. जटावाला। जटाधारी। २. (व्यक्ति) जिसके सिर पर जटा हो। ३. (कार्य) जो इतना अधिक उलझा हुआ हो कि सरलता से संपन्न न किया जा सके। ४. (बात) जो इतनी पेचीली हो कि जल्दी समझ में न आ सके। ५. क्रूर।

पुं० १. शिव। २. जटामांसी। ३. ब्रह्मचारी। ४. सिंह।

जटिलक—पुं० [सं० जटिल+कन्] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. उक्त ऋषि के वंशज।

जटिलता—स्त्री०[सं० जटिल+तल्—टाप्] जटिल होने की अवस्था, गुण या भाव।

जटिला—स्त्री०[सं० जटिल+टाप्] १. ब्रह्मचारिणी। २. जटामांसी। ३. पिप्पली। पीपल। ४. वचा। वच। ५. दोना। ६. एक ऋषि-कन्या जिसका विवाह सात ऋषि पुत्रों से हुआ था। (महाभारत)

जटी (टिन्)—वि०[सं० जटा+इनि] जटाधारी।

पुं०१. शिव। २. बरगद।

स्त्री०[√जट्√इन्—ङीष्]=जटामांसी।

जटुल—पुं०[सं०√जट्+उलच्] १. त्वचा पर का काला प्राकृतिक दाग। लच्छन। २. शरीर के अंगों में होनेवाले चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार (स्थल भेद के कारण) शुभ या अशुभ फलदायक माने जाते हैं।

जट्टा—पुं०[हि० जाट] एक प्रसिद्ध खेतिहर जाति। उदा०—ब्रज के गूजर जट्टा।—भगवत रसिक।

जठर—पुं० [√जन् (उत्पन्न होना)+अर, ठ आदेश] १. पेट। २. पेट का भीतरी भाग। ३. किसी वस्तु का भीतरी भाग। ४. एक उदर रोग जिसमें पेट फूलने लगता है और भूख बन्द हो जाती है। ५. शरीर। ६. एक पर्वत। (पुराण)

वि० १. जो कठोर, कड़ा या दृढ़ हो। २. पुराना। ३. वृद्ध। ४. बँधा या बाँधा हुआ।

जठर-गद—पुं०[ष०त०] आँत में होनेवाला विकार।

जठर-ज्वाला—स्त्री० [ष०त०] १. पेट में लगनेवाली भूख अथवा इस भूख से होनेवाला कष्ट। २. शूल। (दे०)

जठराग्नि—स्त्री०[जठर-अग्नि, मध्य०स०] जठर या पेट के अंदर का वह शारीरिक ताप जिससे खाया हुआ अन्न पचता है।

जठराजि*—स्त्री०=जठराग्नि।

जठरानल—पुं०[जठर-अनल मध्य०स०] जठराग्नि। (दे०)

जठरामय—पुं०[जठर-आमय] १. अतिसार रोग। २. जलोदर (रोग)।

जठारि*—पुं० [देश०] पाला। उदा०—पूस मास जठारि पड़त वा, जस कुठार के घाई।—ग्रा० गीत।

जठेरा—वि०[हि० जेठ, सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जठेरी] जो अवस्था में किसी से अपेक्षाकृत बड़ा हो। जेठा।

जड़—वि० [√जल् (जमना)+अच्, ड आदेश] १. जिसमें जीवन न हो। निर्जीव। २. जिसमें चेतना-शक्ति न हो। अचेतन। ३. जिसमें कुछ भी बुद्धि या ज्ञान विशेषतः व्यावहारिक बुद्धि या ज्ञान न हो।

४. वेद पढ़ने में असमर्थ। ५. ठंढा। ६. ठंड आदि से ठिठुरा हुआ।

स्त्री०[सं० जटा] १. पेड़-पौधों आदि का नीचेवाला वह मूल भाग जो जमीन के अन्दर रहता है और जो जमीन में से रस खींचकर उन पेड़-पौधों का पोषण और वृद्धि करता है। मूल।

मुहा०—(किसी की) जड़ उखाड़ना, काटना या खोदना=(क) ऐसा काम करना जिससे कोई फिर उभड़ या पनप न सके। (ख) किसी की बहुत बड़ी हानि करना। **(किसी की) जड़ जमना**=ठीक प्रकार से चल या बढ़ सकने की स्थिति में हो जाना। **जड़ जमाना**=ऐसा काम या प्रयास करना जिससे कोई किसी स्थान पर टिककर अपने कार्य में सफलतापूर्वक अग्रसर होता जाय। **(किसी की) जड़ (में) लगना**=किसी की बहुत बड़ी हानि करने में प्रयत्नशील होना। उदा०—सउतिनि जर लागल हो रामा।—ग्रा० गीत। **जड़ों में तेल या पानी देना**=समूल नाश करने का प्रयत्न करना या कुचक्र रचना।

२. नींव। आधार-स्थल। जैसे—आपको पहले संस्था की जड़ मजबूत करनी चाहिए। ३. किसी चीज का बिलकुल नीचेवाला भाग। जैसे—नाखून को जड़ से मत काटो। ४. वह भाग या स्थल जिसमें कोई चीज गड़ी या फँसी हुई हो। जैसे—दाँत या वाल को जड़ से निकालो। ५. किसी कार्य का मूल कारण या प्रेरक। जैसे—चलो, इस झगड़े की जड़ ही कट गई।

जड़ आमला—पुं० [हिं० जड़+आमला] भुँइ आँवला।

जड़कना—अ० [हिं० जड़] जड़ के समान हो जाना। निश्चल या स्तब्ध होना।

जड़-काला—पुं० [हिं० जाड़ा+सं० काल] जाड़े का समय। सरदी के दिन।

जड़-जगत्—पुं० [कर्म०स०] ऐसा जगत् जो जड़ के रूप में हो। पाँच भौतिक पदार्थों की समष्टि। जड़-प्रकृति।

जड़ता—स्त्री० [सं० जड़+तल्—टाप्] १. जड़ (अर्थात् निर्जीव, अचेतन या मूर्ख) होने की अवस्था, गुण या भाव। २. साहित्य में एक संचारी भाव और पूर्वराग की दस दशाओं में से एक जो ऐसी अवस्था का सूचक है जिसमें मनुष्य आश्चर्य या भय के कारण इतना अधिक स्तब्ध हो जाता है कि उसे अपने कर्त्तव्य की ही सुध नहीं रहती।

जड़ताई*—स्त्री०=जड़ता।

जड़त्व—पुं०[स० जड़√त्व]=जड़ता।

जड़ना—स०[सं० जटन] १. किसी चीज को किसी दूसरी चीज के तल में ठोंक या धँसाकर इस प्रकार जमाना या बैठाना कि वह अपने स्थान से इधर-उधर न हो सके। जड़ जमाते हुए कहीं कुछ बैठाना या लगाना। जैसे—तख्ते या दीवार में कील जड़ना। २. किसी प्रकार के अवकाश में कोई चीज इस प्रकार जमाकर बैठाना कि वह अपने स्थान से इधर-उधर न हो सके। जैसे—अँगूठी में नगीना जड़ना, दीवार बनाते समय उसमें खिड़की या दरवाजे की चौखट जड़ना। ३. जोर से आघात या प्रहार करना। जैसे—थप्पड़, मुक्का या लाठी जड़ना। ४. किसी के संबंध में कोई बात किसी दूसरे से चोरी से कहना। चुगली खाना। लगाना। जैसे—(क) उन्होंने सब बातें भाई साहब से जड़ दीं। (ख) किसी ने तुम्हें जड़ दिया है इसलिए तुम ऐसी बातें करते हो।

जड़-पदार्थ—पुं० [कर्म०स०] अचेतन पदार्थ।

जड़-प्रकृति—स्त्री०[कर्म०स०] जड़-जगत्। (दे०)

जड़-भरत—पुं० [उपमि० स०] आंगरिस गोत्री एक ब्राह्मण जो संसार की आसक्ति से बचने के लिए जड़वत् रहते थे, इसलिए जड़ भरत कहलाते थे।

जड़-वाद—पुं०[ष०त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार चेतन आत्मा का अस्तित्व नहीं माना जाता और सब कुछ जड़ता का ही विकार माना जाता है।

जड़वादी (दिन्)—वि० [सं० जड़वाद+इनि] जड़वाद का अनुयायी या समर्थक।

जड़वाना—स०[हिं० जड़ना का प्रे० रूप] जड़ने का काम दूसरे से कराना।

जड़-विज्ञान—पुं०[ष०त०]=पदार्थ विज्ञान।

जड़वी—स्त्री०[हिं० जड़] धान का वह छोटा पौधा जिसे जमे अभी थोड़े ही दिन हुए हों।

जड़हन—पुं०[हिं० जड़+हनन=गाड़ना] वह धान जिसके पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह पर रोपा जाता है।

जड़ा—स्त्री०[सं० जड +णिच्+अच्—टाप्]१. भुईंआमला। २. केवाँच। कौंछ।

जड़ाई—स्त्री०[हिं० जड़ना] जड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
*स्त्री०=जड़ता।

जड़ाऊ—वि०[हिं० जड़ना] (वह आभूषण) जिसमें नग, मोती, रत्न आदि जड़े हुए हों।

जड़ान—स्त्री०[हिं० जड़ना] जड़े जाने की क्रिया या भाव।

जड़ाना—स०=जड़वाना।
†अ० जड़ा जाना।
अ० [हिं० जाड़ा] सरदी से ठिठुरना। उदा०—नगन जड़ाती ते अब नगन जड़ाती हैं।—भूषण।

जड़ाव—पुं०[हिं० जड़ना] जड़ने या जड़े जाने की क्रिया, ढंग या भाव।

जड़ावट—स्त्री०=जड़ाव।

जड़ावर—पुं०[हिं० जाड़ा] १. जाड़े में पहनने के वस्त्र। २. वे वस्त्र जो किसी कर्मचारी को अथवा नौकर, मजदूर आदि को पहनने के लिए जाड़े के दिनों में दिये जाते हैं।

जड़ावर्त—पुं० [सं० जड़-आवर्त्त ष०त०] दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रों में अज्ञान का आवर्त्त या चक्कर।

जड़ावल†—पुं०=जड़ावर।

जड़ित—वि० [सं० जटित] १. जड़ा हुआ। २. जकड़ा हुआ। (असिद्ध प्रयोग)

जड़िमा—स्त्री० [सं० जड़+इमनिच्] १. जड़ता। जड़त्व। २. ऐसी अवस्था जिसमें मनुष्य इस प्रकार जड़वत् हो जाता है कि उसे भले-बुरे, सुख-दुःख या हानि-लाभ का ज्ञान ही नहीं होने पाता।

जड़िया—पुं०[हिं० जड़ता] वह सुनार जो गहनों पर नगीनें आदि जड़ने का काम करता हो। कुंदनसाज।

जड़ी—स्त्री०[हिं० जड़] किसी वनस्पति की वह जड़ जो औषध के रूप में काम आती हो।

जड़ी-बूटी—स्त्री० [हिं०] औषध के काम आनेवाली जंगली वनस्पतियाँ और उनकी जड़ें।

जड़ीभूत—वि० [सं०जड़+च्वि√भू (होना)+क्त, दीर्घ] जो जड़ अथवा जड़ के समान अचेतन हो गया हो। जिसमें हिलने-डुलने की शक्ति न रह गई हो।

जड़ीला—वि०[हिं० जड़+ईला (प्रत्य०)] जिसमें जड़ हो। जड़ से युक्त।

जड़आ—पुं०[हिं० जड़ना] पैर के अँगूठे में पहनने का एक आभूषण।

जड़ुल—पुं०[सं० जटुल] त्वचा पर का काला दाग। लच्छन।

जड़ैया—स्त्री०[हिं० जड़ा+ऐया (प्रत्य०)] वह ज्वर जिसके आने के समय जाड़ा लगता हो। जूड़ी। मलेरिया।

†वि०=जड़िया (=जड़नेवाले)।

जढ़†—वि०[भाव० जढ़ता]=जड़।

†स्त्री०=जड़।

जढ़ाना—अ०=जड़ाना।

जण—पुं०=जन।

जत—वि०[सं० यत्] जितना। जिस मात्रा का।

क्रि० वि० जिस मात्रा में।

पुं०[सं० यति] ढोलक, तबले आदि में, एक प्रकार का ठेका या ताल।

स्त्री०=यति (कविता की)।

जतन†—पुं०=यत्न।

जतनी—वि० [सं० यत्नी] १. यत्न करनेवाला। २. चालाक या धूर्त्त।

स्त्री०[सं०यत्न?] सूत कातने के चर्खे की वह रस्सी जो उसकी चरखी के पंखों पर बँधी रहती है।

जतलाना—स०=जताना।

जतसर—पुं०=जँतसर।

जताना—स०[सं० ज्ञाप्त] १. किसी को किसी बात की जानकारी कराना। ज्ञात कराना। बतलाना। २. पूर्व सूचना देना। सचेत करने के लिए पहले से सूचना देना। चेताना।

जतारा—पुं०[सं० जाति] कुल। जाति। वंश।

ज़ति*—पुं०=यति।

वि०[सं०√जित्] जीतनेवाला।

जती—पुं०=यति।

जतु—पुं०[सं०√जन् (उत्पन्न होना)+उ, त आदेश] १. वृक्ष में से निकलनेवाला गोंद। २. लाक्षा। लाख। ३. शिलाजीत।

जतुक—पुं० [सं० जतु √कै (प्रतीत होना)+क] १. हींग। २. लाख। ३. त्वचा पर का काला चिह्न। लच्छन।

जतुका—स्त्री० [सं० जतुक+टाप्] १. पहाड़ी नामक लता जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं। २. चमगादड़। ३. लाक्षा। लाख।

जतुकारी—स्त्री०[सं० जतुक्√ऋ (गमनादि)+अण्—ङीष्] पपड़ी नामक लता।

जतु-कृष्णा—स्त्री०[उपमि०स०] जतुका या पपड़ी नामक लता।

जतु-गृह—पुं०[मध्य०स०] १. घास-फूस की झोपड़ी। २. लाख का वह घर जो वारणावत में दुर्योधन ने पांडवों के रहने के लिए बनवाया था।

जतुनी—स्त्री०[सं० जतु√नी (पहुँचाना)+क्विप्] चमगादड़।

जतु-पुत्रक—पुं० [सं० जतु-पुत्र मध्य०स०, √कै (प्रतीत होना)+क] १. शतरंज का मोहरा। २. चौसर की गोटी।

जतु-रस—पुं०[ष०त०] लाख से बनाया जानेवाला लाल रंग जिसे स्त्रियाँ पैरों, हाथों आदि पर लगाती हैं। अलक्तक। आलता। महावर।

जतूका—स्त्री०[सं० जतुका, नि० दीर्घ] जतुका। (दे०)

जतेक*—क्रि० वि० [सं० यत् या हिं० जितना+एक] जिस मात्रा में।

वि० जितना।

जत—पुं०=जगत्।

*पुं०=यति।

जत्था—पुं० [सं० यूथ] एक ही वर्ग, विचार या संप्रदाय के लोगों का समूह जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी विशिष्ट उद्देश्य से जाता हो। जैसे—यात्रियों का जत्था, स्वयं-सेवकों का जत्था।

जत्र—*क्रि० वि०=यत्र।

जत्रानी—स्त्री०[?] रुहेलखंड में बसी हुई जाटों की एक जाति।

जत्रु—पुं०[सं०√जन् (उत्पत्ति)+रु, त आदेश] धड़ के ऊपरी भाग में गले के नीचे और छाती के ऊपर दोनों ओर की अर्द्ध-चंद्राकार हड्डियाँ। हँसली।

जत्रुक—पुं०[सं० जत्रु+कन्]=जत्रु।

जत्वश्मक—पुं०[सं० जतु-अश्मन्, मध्य० स०,+कन्] शिलाजीत।

जथा*—अव्य०=यथा।

स्त्री०[हिं० गथ] पूँजी। धन।

स्त्री०[सं यूथ हिं० जत्था] मंडली।

जथारथ—वि०=यथार्थ।

जद—अव्य०[सं० यदा] १. जिस समय। २. जब कभी। ३. यदि।

स्त्री० [फा० ज़द] १. आघात। चोट। २. लक्ष्य। निशाना। ३. हानि। नुकसान।

जदनी—वि०[फा०] मारने योग्य। वाध्य।

स्त्री० मारने की क्रिया या भाव।

जदपि*—अव्य०=यद्यपि।

जदबद—पुं०=जद्दबद्द।

जदल—पुं०[अ०] युद्ध। लड़ाई।

जदवर, जदवार—पुं० [अ० जडदवार] निर्विषी नामक ओषधि। निर्विसी।

ज़दा—वि०[फा० ज़दा] १. जिस पर किसी प्रकार का आघात हुआ हो। २. पीड़ित।

जदि*—अव्य०=यदि। २=जब।

जदीद—वि०[अ०] १. नया। नवीन। २. आधुनिक। हाल का।

जदु*—पुं०=यदु।

जदुकुल*—पुं०=यदुकुल।

जदुपति*—पुं०[सं० यदुपति] श्रीकृष्ण।

जदुपाल—पुं०[सं० यदुपाल] श्रीकृष्ण।

जदुपुर—पुं०=यदुपुर (मथुरा)।

जदुबंसी*—पुं०=यदुवंशी।

जदुबीर*—पुं०=यदुवीर।

जदुराई*—पुं०[सं० यदुराज] श्रीकृष्णचंद्र।

जदुराज—पुं०[सं० यदुराज] श्रीकृष्णचंद्र।

जदुराम—पुं०[सं० यदुराम] यदुकुल के राम। बलदेव।

जदुराय—पुं०[सं० यदुराज] श्रीकृष्णचंद्र।

जदुवर*—पुं०[सं० यदुवर] श्रीकृष्णचंद्र।

जदुवीर—पुं०=यदुवीर।

जद्द—पुं०[अ०] १. दादा। पितामह। २. पूर्वज। वि०[अ० ज्यादा] अधिक। ज्यादा। वि०[फा० जद।] प्रचंड। प्रबल। अव्य०[सं० यदि] १. जब। २. जब कभी।

जद्दपि*—अव्य०=यद्यपि।

जद्दबद्द—पुं०[सं० यत्+अवद्य] अकथनीय या अश्लील बात।

जद्दव—पुं०[सं० यादव] श्रीकृष्ण। उदा०—का चहुआनि कित्ति, जेपि जद्दव रस चंगी।—चंदबरदाई।

जद्दी—वि०[अ०] (वह अधिकार या संपत्ति) जो बाप-दादाओं से उत्तराधिकार में मिलती हो। बाप-दादाओं के समय से चला आनेवाला। स्त्री० कोशिश। प्रयत्न।

जद्दौ—पुं०[सं० यादव] यादववंशी राजा।

जनंगम—पुं०[सं० जन√गम् (जाना)+ खच्, मुम् आगम] चांडाल।

जन—पुं०[सं०√जन् (उत्पन्न होना)+अच्] १. लोक। लोग। २. प्रजा। ३. सेवक। जन। ४. अनुयायी। अनुचर। ५. समुदाय। समूह। ६. सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।
अव्य०=जनि (नहीं)।

जन-आंदोलन—पुं० [ष० त०] वह आंदोलन जिसमें जनता अथवा बहुत से लोग भाग लें।

जनक—वि०[√जन्+णिच्+ण्वुल्—अक] जननेवाला। जन्म देनेवाला। पुं० १. पिता। २. मिथिला के एक राजवंश की उपाधि। ३. मिथिला के राजा जिनकी सीता कन्या थी। ४. शंबरासुर का चौथा पुत्र। ५. एक वृक्ष का नाम।

जनक-तनया—स्त्री० [ष० त०] सीता।

जनकता—स्त्री० [सं० जनक+तल्-टाप्] जनक होने की अवस्था या भाव।

जनक-नंदिनी—स्त्री०[ष० त०] सीता।

जनक-पुर—पुं०[ष० त०] मिथिला की राजधानी।

जनक-सुता—स्त्री०[ष० त०] सीता।

जनकात्मजा—स्त्री०[जनक-आत्मजा ष० त०] सीता।

जन-कारी (रिन्)—पुं० [जन√कृ (बिखेरना)+णिनि, उप० स०] अलक्तक। अलक्तका। अलता।

जनकौर—पुं०[हिं० जनक+औरा (प्रत्य०)] १. जनकपुर। २. राजा जनक के वंशज।

जनखा—पुं० [फा० जन्खः] १. वह व्यक्ति जिसके कार्य-व्यापार या हाव-भाव औरतों जैसे हों। २. वह व्यक्ति जिसमें किसी प्रकार के शारीरिक विकार के कारण बच्चे उत्पन्न करने की शक्ति न हो। नपुंसक।

जन-गणना—स्त्री०[ष० त०] किसी देश या राज्य के समस्त जनों अर्थात् निवासियों की गणना। वह कार्य जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इस देश में कुल कितने व्यक्ति रहते हैं।

जनगी—स्त्री०[देश०] मछली।

जनघर—पुं०[सं० जन-गृह] मंडप। (डिं०)

जन-चक्षु (स्)—पुं०[ष० त०] सूर्य।

जन-चर्चा—स्त्री०[स० त०] वह बात जिसकी चर्चा सब लोग करते या कर रहे हों। सर्वसाधारण में फैली हुई बात। जनश्रुति।

जन-जागरण—पुं०[ष० त०] जनता के जागरूक होने की स्थिति या भाव।

जन-जाति—स्त्री०[ष० त०] जंगलों, पहाड़ों आदि पर रहनेवाली ऐसी असभ्य जाति या लोगों का वर्ग जो साधारणतः एक ही पूर्वज के वंशज होते हैं और जिनका प्रायः एक ही पेशा, एक-जैसे विचार और एक जैसी रहन-सहन होती है।

जनड़ी†—स्त्री०[सं० जनती] माँ। माता। (स्त्रियाँ)

जन-तंत्र—पुं० [ष० त०] वह शासन प्रणाली जिसमें देश या राज्य का शासन जनता द्वारा स्वयं अथवा जनता के प्रतिनिधियों द्वारा होता हो।

जनता—स्त्री०[सं० जन+तल्-टाप्] १. जन का भाव। २. किसी देश या राज्य में रहनेवाले कुल व्यक्तियों की संज्ञा। प्रजा। जन-साधारण।

जन-त्रा—स्त्री०[जन√त्रै (रक्षा करना)+क] छाता।

जनथोरी—स्त्री०[देश०] कुकड़बेल। बंदाल।

जन-देव—पुं०[ष० त०] १. राजा। २. महाभारत में वर्णित मिथिला का एक राजा।

जन-धन—पुं०[द्व० स०] मनुष्य और उसकी संपत्ति।

जनधा—पुं०[सं० जन√धा (रखना)+क्विप्] अग्नि। आग।

जनन—पुं०[सं०√जन् (उत्पत्ति)+ल्युट्-अन] १. जनने अर्थात् संतान को जन्म देने की क्रिया या भाव। २. उत्पत्ति। ३. आविर्भाव। ४. [√जन्+णिच्+ल्यु—अन] पिता। ५. कुल। वंश। ६. ईश्वर।

जनन-गति—स्त्री०[ष० त०] किसी एक वर्ष में किसी एक स्थान पर बसे हुए एक हजार व्यक्तियों के पीछे जन्मे हुए बच्चों की संख्या। (बर्थरेट)

जनना—स०[सं० जनन] जन्म देकर बच्चों को अस्तित्व में लाना। जन्म देना। प्रसव करना।

जननाशौच—पुं०[सं० जनन-अशौच तृ० त०] वह अशौच जो घर में बच्चे के जन्म लेने पर लगता है। वृद्धि।

जननि—स्त्री०=जननी।

जननिर्देश—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति में, जनता के प्रतिनिधियों, विधान सभाओं आदि के निश्चयों या प्रस्तावित कार्यों आदि के संबंध में की जानेवाली वह व्यवस्था जिसके अनुसार यह जाना जाता है कि मत-दाता वर्ग उस बात के पक्ष में है या नहीं। (रेफ़रेण्डम)

जननी—स्त्री०[सं०√जन्+अनि—ङीष्] जन्म देने वाली स्त्री। माँ। माता।

जनेंद्रिय—स्त्री०[सं० जनन-इंद्रिय ष० त०] वह इंद्रिय जो जनने (जैसे-योनि) या जनाने (जैसे-लिंग) का काम करती हो।

जन-पद—पुं० [ब० स०] [वि० जान-पद, जानपदिक, जनपदीय] १. मनुष्यों से बसा हुआ स्थान। बस्ती। २. किसी राज्य की वह समस्त भूमि जिसमें केवल राजधानी का क्षेत्र सम्मिलित न हो। राजधानी के अतिरिक्त बाकी सारा राज्य। ३. किसी देश का वह अंश या भाग जिसमें एक ही तरह की बोली बोलनेवाले लोग बसते हों। सूबा।

जनपद-कल्याणी—स्त्री० [ष० त०] वेश्या।

जनपदी (दिन्)—पुं० [सं० जनपद+इनि] जन-पद का शासक।

जनपदीय—वि॰ [सं॰ जनपद+छ—ईय] जनपद-संबंधी। जनपद का।

जन-पाल—पुं॰ [जन√पल् (पालन करना)+णिच्+अण्, उप॰ स॰] १. मनुष्यों का पालन करनेवाला व्यक्ति। २. राजा। ३. सेवक।

जन-प्रवाद—पुं॰[स॰ त॰] जनता में फैली हुई कोई बात।

जन-प्रिय—वि॰[ष॰ त॰] [भाव॰ जनप्रियता] १. (व्यक्ति) जो जनता को प्रिय हो। जैसे—जनप्रिय नेता। २. (वात आदि) जिसे जन-साधारण उचित या वांछनीय समझते हों। जैसे—जनप्रिय विचार या सिद्धांत। ३. धनिया। ४. सहिजन का पेड़।

जन-प्रिया—स्त्री॰[ष॰ त॰] हुलहुल का साग।

जनवगुल—पुं॰[सं॰ जन+हिं॰ वगुला] बगुलों की एक जाति।

जनम*—पुं॰[सं॰ जन्म] १. जन्म। २. जीवन-काल। आयु। जिंदगी।

मुहा॰—**जनम गँवाना या घालना**=व्यर्थ जीवन नष्ट करना। उदा॰—देखत जनम आपनौ घालै।—कवीर। **जनम हारना**=(क) व्यर्थ सारा जीवन बिताना। (ख) जन्म भर किसी का दास होकर रहने की प्रतिज्ञा करना।

जनमघूंटी—स्त्री॰[हिं॰ जनम+घूंटी] वह घूंटी जो वच्चों को जन्म लेने के वाद कुछ दिनों तक दी जाती है।

मुहा॰ (किसी बात का) जन्म-घूंटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात का) अभ्यास या चसका होना।

जनम-जला—वि॰[हिं॰ जनम+जलना] [स्त्री॰ जनम जली] अभागा। भाग्यहीन।

जन-मत—पुं॰[ष॰ त॰] १. आधुनिक राजनीति में किसी विशिष्ट प्रदेश या स्थान के वयस्क निवासियों का वह मत जो किसी प्रकार की संधि या सार्वराष्ट्रीय संस्था के निर्णय के अनुसार यह जानने के लिए लिया जाता है कि वे लोग किस अथवा किस के राज्य या शासन में रहना चाहते हैं। (प्लेविसाइट) २. दे॰ 'लोकमत'।

जनमधरती—†स्त्री॰=जन्मभूमि।

जनमना—अ॰[सं॰ जन्म] १. जन्म लेकर अस्तित्त्व में आना। २. खेल में मरे हुए व्यक्ति का या मरी हुई गोटी का फिर से खेल में सम्मिलित होने के योग्य होना।

स॰ संतान को जन्म देना। प्रसव करना।

जनमपत्री†—स्त्री॰=जन्मपत्री।

जन-मरक—पुं॰[ष॰ त॰] वह बीमारी या रोग जिससे वहुत से लोग मरते हों। महामारी।

जन-मर्यादा—स्त्री॰[ष॰ त॰] लौकिक आचार या रीति।

जनमसंघाती—वि॰[हिं॰ जनम+संघाती] १. जिसका साथ जन्म से ही रहा हो। २. जो जन्म भर साथ रहे।

पुं॰ मित्र। घनिष्ठ मित्र।

जनमाना—स॰[हिं॰ जनम] १. प्रसूता को प्रसव कार्य में सहायता देना। २.=जनमना।

जनमारो*—पुं॰=जन्म।

जन-मुरीद—वि॰[फा॰ जन मुरीद] (व्यक्ति) जो अपनी पत्नी का अंधभक्त हो। पत्नी का गुलाम।

जनमेजय—पुं [सं॰ जन√एज् (कँपाना)+णिच्+खश्, मुम्]=जन्मेजय।

जन-यात्रा—स्त्री॰[सं॰ ष॰ त॰] वहुत से लोगों का मिल-जुलकर प्रदर्शन आदि के लिए शहर के प्रमुख कूचों, बाजारों आदि में से होकर जाना। जलूस।

जनयिता (तृ)—पुं॰ [सं॰√जन् (उत्पत्ति)+णिच्+तृच्] [स्त्री॰ जनयित्री] पिता। बाप।

जन-रंजन—वि॰ [ष॰ त॰] जनता का रंजन करनेवाला।

जनरल—पुं॰ [अं॰] सेना का एक वहुत बड़ा अधिकारी। सेनानायक। सेना-पति।

जन-रव—पुं॰[ष॰ त॰] १. लोगों का कोलाहल। शोर। २. [सं॰ त॰] अफवाह। जनश्रुति।

जनवरी—स्त्री॰[अं॰ जनअरी] ईसवी सन् का पहला महीना।

जन-वल्लभ—पुं॰[ष॰ त॰] श्वेत रोहित का पेड़। सफेद रोहिड़ा।

वि॰ जनता का प्यारा। जन-प्रिय।

जनवाई—स्त्री॰[हिं॰ जनवाना] १. जनवाने अर्थात् प्रसव में सहायक होने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. दे॰ 'जनाई'।

जन-वाद—पुं॰ जनरव। ('दे॰')

जनवाना—स॰ [हिं॰ 'जनना' का प्रे॰ रूप] [भाव॰ जनवाई] जनने अर्थात् प्रसव करने में सहायक होना।

स॰ [हिं॰ 'जानना' का प्रे॰ रूप] जानने या ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होना। ज्ञात या विदित कराना। जनाना। (दे॰)

जन-वास—पुं॰ [ष॰ त॰] १. मनुष्यों के बसने या रहने का स्थान। २=जनवासा।

जनवासा—पुं॰[सं॰ जनवास] वह स्थान जहां पर बराती ठहरते या ठहराये जाते हैं। बरातियों के ठहरने की जगह।

जन-शून्य—वि॰[तृ॰ त॰] सुनसान। निर्जन।

जन-श्रुत—वि॰[स॰ त॰] १. जिसके संबंध में लोगों ने सुना हो। २. प्रसिद्ध।

जन-श्रुति—स्त्री॰[ष॰ त॰] १. वह बात जिसे लोग परंपरा से सुनते चले आये हों। २. अफवाह।

जन-संख्या—स्त्री॰[ष॰ त॰] १. किसी प्रदेश, राज्य या स्थान पर बसे हुए कुल लोग। २. उक्त बसे हुए लोगों की संख्या।

जन-साधारण—पुं॰[कर्म॰ स॰] १. जनता। २. समाज का कोई एक व्यक्ति।

जन-सेवक—पुं॰[ष॰ त॰] १. वह जो जन-साधारण या जनता की सेवा के काम करता हो। २. दे॰ 'लोक-सेवक'।

जन-सेवा—स्त्री॰[ष॰ त॰] ऐसे काम जो जन-साधारण या जनता के उपकार या हित के लिए हो। (पब्लिक सर्विस)

जन-स्थान—पुं॰[ष॰ त॰] दंडकारण्य। दंडकवन।

जन-हरण—पुं॰[ष॰ त॰] एक दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीस लघु और एक गुरु होता है।

जन-हित—पुं॰ [ष॰ त॰] १. जनता या जन-साधारण का हित। २. जनता के हित का काम।

जन-हीन—वि॰[तृ॰ त॰] निर्जन।

जनांत—पुं॰[जन-अंत] १. वह स्थान जहां मनुष्य न रहते हों। २. वह प्रदेश जिसकी सीमा निश्चित हो। ३. यम।

वि॰ मनुष्यों का अंत या नाश करनेवाला।

जनांतिक—पुं०[जन-अंतिक ष० त०] नाटक में, ऐसी सांकेतिक बात-चीत जिसका आशय औरों की समझ में न आता हो।

जना—स्त्री० [सं०√जन्+णिच्+अ–टाप्] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २. माहिष्मती के राजा नीलध्वज की स्त्री।
पुं०=जन (आदमी)।

जनाई—स्त्री० [हिं० जनना] १. जनाने अर्थात् प्रसव कराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. प्रसव में सहायक होनेवाली दाई।
स्त्री० [हिं० जनाना=जतलाना] किसी बात का परिचय या परिज्ञान कराने की क्रिया या भाव।

जनाउ*—पुं०=जनाव।

जनाकीर्ण—वि०[जन-आकीर्ण तृ० त०] १. (प्रदेश) जिसमें बहुत अधिक व्यक्ति बसे हुए हों। घनी बस्तीवाला। २. (स्थान) जो मनुष्यों से भरा हुआ हो।

जनाचार—पुं०[जन-आचार ष० त०] लोकाचार।

जनाजा—पुं०[अ० ज़नाजः] १. शव। २. अरथी या वह संदूक जिसमें मुसलमान लोग शव रखकर कब्रिस्तान ले जाते हैं।

जनाती—पुं[हिं० बराती का अनु० ?] विवाह के अवसर पर कन्या-पक्ष के लोग। घराती।

जनाधिनाथ—पुं०[जन-अधिनाथ ष० त०] जनाधिप।

जनाधिप—पुं०[जन-अधिप ष० त०] १. राजा। २. विष्णु।

जनानखाना—पुं० [फा० जनान खानः] घर या महल का वह भीतरी भाग जिसमें औरतें या रानियाँ रहती हैं।

जनाना—स० [सं० ज्ञापय, जानाय, प्रा० जाणाव्इ] किसी घटना, चीज या बात की जानकारी किसी को कराना। अवगत कराना।
स० [सं० जनन, हिं० जनना] प्रसवकाल में गर्भिणी की सहायता करना। प्रसव कराना।
वि०[फा० ज़नानः] [स्त्री० जनानी, भाव० जनानापन] १. स्त्रियों का-सा आचरण अथवा उन जैसे हाव-भाव दिखलानेवाला (व्यक्ति)। २. स्त्रियों का-सा। ३. केवल स्त्रियों में चलने या होनेवाला। जैसे—जनानी धोती।
पुं० १. हीजड़ा। नपुंसक। २. अंतःपुर।
स्त्री० पत्नी। जोरू।

जनानापन—पुं०[फा० जनानः+हिं० पन (प्रत्य०)] स्त्री होने की अवस्था, गुण या भाव। स्त्रीत्व।

जनानी—स्त्री०[हिं० जनाना] १. स्त्री। २. पत्नी। जोरू।

जनाब—पुं०[अ०] महाशय। महोदय।

जनाब-आली—पुं०[अ०] मान्य महोदय।

जनाबा—स्त्री०[अ०] श्रीमती।

जनारदन—पुं०[सं० जनार्दन] विष्णु।

जनार्दन—पुं० [सं० जन√अर्द् (पीड़ित करना)+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु।

जनाव—पुं०[हिं० जनाना=जतलाना] जनाने अर्थात् जानकारी कराने की क्रिया या भाव।
पुं०[हिं० जनाना=प्रसव कराना] प्रसव करने या कराने की क्रिया या भाव।

जनावर—पुं०=जानवर।

जनाशन—वि० [सं० जन√अश् (खाना)+ल्यु–अन] मनुष्यों को भक्षण करनेवाला।
पुं० भेड़िया।

जनाश्रम—पुं० [जन-आश्रम ष० त०] वह आश्रम या स्थान जिसमें मनुष्य जाकर कुछ समय के लिए रहते हों। जैसे—धर्मशाला, सराय आदि।

जनाश्रय—पुं०[जन-आश्रय ष० त०] १. घर। मकान। २. धर्मशाला। ३. सराय। ४. किसी विशेष कार्य के लिए बनाया हुआ मंडप।

जनि—स्त्री० [सं० जन्+इन्] १. उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २. नारी। स्त्री। ३. पत्नी। ४. माता।
अव्य० मत। नहीं। उदा०—तहँ तहँ जनि छिन छोह न छाँड़िये।—तुलसी।
स्त्री०=जनी।

जनिक—वि०[सं० जनक] १. जन्म देनेवाला। २. उत्पादक।

जनिका—स्त्री०[हिं० जनाना] पहेली। बुझौवल।
स्त्री० [सं० जनि+कन्—टाप्]=जनि। (दे०)

जनित—वि० [सं०√जन्+णिच्+क्त] १. जन्मा या उपजा हुआ। २. जना हुआ। ३. किसी के कारण या फल-स्वरूप उत्पन्न होनेवाला। जैसे—रोगजनित दुर्बलता।

जनिता (तृ)—पुं० [सं०√जन्+णिच्+तृच्, णिलोपनि०] वह जो किसी को जनाये अर्थात् जन्म दे। जनक। पिता।

जनित्र—पुं० [सं० जनि+त्रल्] जन्म-स्थान।

जनित्री—स्त्री०[सं० जनितृ+ङीप्] वह जो किसी को जन्म दे। माँ। माता।

जनित्व—पुं० [सं०√जन्+णिच्+इत्वन्] [स्त्री० जनित्वा=माता] पिता।

जनियाँ*—स्त्री०=जानी।

जनी—स्त्री० [सं० जनि+ङीप्] १. प्रकृति, जो सब को उत्पन्न करनेवाली मानी गई है। २. माता। ३. स्त्री। ४. बेटी। ५. दासी।
वि० स्त्री० जिसे जना गया हो। पैदा की हुई।

जनु—स्त्री०[सं०√जन्+उ] जन्म। उत्पत्ति।
*अव्य०[हिं० जानना] मानों।

जनुक—अव्य०[हिं० जनु] जैसे। कि।

जनू—स्त्री०[सं० जनु+ऊङ्] जन्म।

जनून—पुं०[अ० जुनून] पागलपन। उन्माद।

जनूनी—वि०[अ०] पागल।

जनूब—पुं०[अ०] दक्षिण (दिशा)।

जनूबी—वि०[अ० जनूब] दक्षिण दिशा का। दक्षिणी।

जनेंद्र—पुं० [सं० जन-इंद्र ष० त०] राजा।

जनेऊ—पुं०[सं० यज्ञोपवीत] १. हिन्दुओं में बालकों का यज्ञोपवीत नामक संस्कार। २. सूत के धागे की वह तेहरी माला जो उक्त संस्कार के समय गले में पहनाई जाती है। यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र।

जनेत—स्त्री० [सं० जन+एत (प्रत्य०)] बरात। उदा०—जम से बुरी जनेत।—कहा०।

जनेता—पुं० [सं० जनयिता] पिता। बाप। (डिं०)

जनेरा—पुं० [हिं० ज्वार] बाजरे की एक जाति।

जनेव—पुं०=जनेऊ।

जनेवा—पुं० [हिं० जनेऊ] १. किसी चीज के चारों ओर जनेऊ की तरह पड़ी हुई धारी या लकीर। २. एक प्रकार की घास। ३. तलवार का वह वार जो कंधे पर पड़कर तिरछे बल (दूसरी ओर) कमर तक काट करे।

जनेश—पुं० [सं० जन-ईश ष० त०] १. ईश्वर। २. राजा।

जनेष्टा—स्त्री० [सं० जन-इष्टा ष० त०] १. हल्दी। २. चमेली का पेड़। ३. पपड़ी। ४. एक औषधि।

जनैया—वि० [हिं० जनना+ऐया (प्रत्य०)] जानने या जनानेवाला। जो स्वयं जानता हो अथवा किसी को कुछ जतलाता हो।

जनो—पुं०=जनेऊ।

अव्य० [हिं० जनु] मानों।

जनोपयोगी (गिन्)—वि० [सं० जन-उपयोगिन् ष० त०] जन-साधारण के लिए उपयोगी।

जनौ—अव्य० [हिं० जानना] मानों।

जनौघ—पुं० [सं० जन-ओघ ष० त०] मनुष्यों का समूह। भीड़।

जन्नत—पुं० [अ०] १. उद्यान। बाग। २. मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग।

जन्नती—वि० [अ०] १. जन्नत में होने या रहनेवाला। २. स्वर्गीय।

जन्म (न्)—पुं० [सं० √जन् (उत्पत्ति)+मनिन्] १. गर्भ से निकलकर जीवन धारण करने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति। पैदाइश। २. अस्तित्व में आना। आविर्भाव। जैसे—नये विचार जन्म लेते हैं। ३. जीवन। जिन्दगी। ४. जीवन-काल। आयु। जैसे—जन्म भर वह पछताता रहा।

जन्मअष्टमी—स्त्री०=जन्माष्टमी।

जन्म-कील—पुं० [ष० त०] विष्णु।

जन्म-कुण्डली—स्त्री० [ष० त०] १. फलित ज्योतिष में, वह चक्र जिसमें जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बताई गई हो। † २ दे० 'जन्मपत्री।'

जन्म-कृत्—पुं० [सं० जन्म√कृ (करना)+क्विप्, तुक् आगम] जनक। पिता।

जन्म-क्षेत्र—पुं० [ष० त०] जन्मस्थान। जन्मभूमि।

जन्म-गत—वि० [तृ० त०] जन्म से ही साथ लगा रहने या होनेवाला।

जन्म-ग्रहण—पुं० [ष० त०] गर्भ से निकलकर जीवन प्राप्त करने की क्रिया या भाव।

जन्म-तिथि—स्त्री० [ष० त०] जन्म-दिन।

जन्मतुआ—वि० [हिं० जन्म+तुआ (प्रत्य०)] [स्त्री० जन्मतुई] (बच्चा) जिसको जन्म लिए अभी थोड़े ही दिन हुए हों। शिशु।

जन्म-दिन—पुं० [ष० त०] १. वह दिन जिसमें किसी ने जन्म लिया हो। किसी के जीवन धारण करने का दिन। २. तिथि, तारीख आदि के विचार से प्रति वर्ष पड़नेवाला किसी के जन्म लेने का दिन जो प्रायः उत्सव के रूप में मनाया जाता है। वर्ष गाँठ। (बर्थ डे)

जन्म-दिवस—पुं० [ष० त०] जन्म-दिन। (दे०)

जन्म-नक्षत्र—पुं० [ष० त०] वह नक्षत्र जिसके भोग-काल में किसी का जन्म हुआ हो।

जन्मना—अ० [सं० जन्म+हिं० ना (प्रत्य०)] १. जन्म होना। जन्मग्रहण करना। पैदा होना। २. अस्तित्व में आना।

स० १. जन्म देना। प्रसव करना। २. अस्तित्त्व में लाना।

अव्य० जन्म के विचार से। जन्म की दृष्टि से। जैसे—जन्मना जाति मानना।

जन्म-पंजी—स्त्री० [ष० त०] वह पंज़ी जिसमें जन्म लेनेवाले बच्चों का जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम आदि लिखा जाता है। (बर्थ रजिस्टर)

जन्म-पति—पुं० [ष० त०] १. कुण्डली में जन्म राशि का मालिक। २. जन्म लग्न का स्वामी।

जन्म-पत्र—पुं०=जन्मपत्री।

जन्म-पत्रिका—स्त्री०=जन्म-पत्री।

जन्म-पत्री—स्त्री० [ष० त०] १. वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी के जन्म-काल के समय के ग्रहों की स्थिति, उनकी दशा, अंतर्दशा आदि और उनके फलों आदि का उल्लेख होता है। (हारस्कोप) २. किसी घटना या कार्य का आदि से अन्त तक का सारा विवरण।

जन्म-पादप—पुं० [ष० त०] वंश वृक्ष। शजरा।

जन्म-प्रतिष्ठा—स्त्री० [तृ० त०] १. माता। माँ। २. जन्म होने का स्थान।

जन्म-प्रमाणक—पुं० [सं०] वह प्रमाण-पत्र जिसमें किसी व्यक्ति के जन्म-काल, जन्मतिथि, जन्म-स्थान आदि का आधिकारिक विवरण होता है। (बर्थ सर्टिफिकेट)

जन्म-भूमि—स्त्री० [ष० त०] वह देश या राज्य (अथवा संकुचित अर्थ में नगर या ग्राम) जिसमें किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-भृत्—पुं० [सं० जन्म√भृ (भरण)+क्विप्, तुक् आगम] जीव। प्राणी।

जन्म-योग—पुं० [ष० त०] फलित ज्योतिष में, ग्रहों की वह स्थिति जो इस बात की सूचक होती है कि अमुक अवसर या समय पर घर में संतान का जन्म होगा।

जन्म-राशि—स्त्री० [ष० त०] वह राशि जिसमें किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-वर्त्म (न्)—पुं० [ष० त०] योनि। भग।

जन्म-विधवा—स्त्री० [तृ० त०] अक्षत योनि। बाल-विधवा।

जन्म-सिद्ध—वि० [तृ० त०] जिसकी सिद्धि या प्राप्ति जन्म से ही होती या मानी जाती हो। जैसे—जन्म-सिद्ध अधिकार।

जन्म-स्थान—पुं० [ष० त०] १. जन्मभूमि। २. माता का गर्भ। ३. कुंडली में वह स्थान जिसमें जन्म समय के ग्रहों का उल्लेख होता है।

जन्मांतर—पुं० [जन्म-अंतर मयू० स०] एक बार मरने के बाद होनेवाला दूसरा जन्म।

जन्मांध—वि० [जन्म-अंध तृ० त०] जो जन्म से ही अंधा हो।

जन्मा—पुं० [सं० जन्मन्] समस्तपदों के अंत में; वह जिसका जन्म हुआ हो। जैसे—अग्र जन्मा, नेत्र जन्मा आदि।

वि० जन्मा हुआ। जो पैदा हुआ हो।

जन्माधिप—पुं० [जन्म-अधिप ष० त०] १. शिव का एक नाम। २. जन्म राशि का स्वामी। ३. जन्म लग्न का स्वामी।

जन्माना—स० [हिं० जन्मना] जन्म देना।

जन्माष्टमी—स्त्री० [जन्म-अष्टमी ष० त०] भाद्रपद की कृष्णाष्टमी।

विशेषः—भगवान कृष्ण का जन्म इसी अष्टमी की रात्रि में हुआ था।

जन्मास्पद—पुं० [जन्म-आस्पद ष० त०] जन्मभूमि। जन्मस्थान।

जन्मी (न्मिन्)—पुं० [सं० जन्म+इनि] प्राणी। जीव।

वि० जन्मा हुआ।

जन्मेजय—पुं० [सं० जनमेजय] १. विष्णु। २. एक प्रसिद्ध राजा जो हस्तिनापुर के महाराज परीक्षित का पुत्र था।

विशेषः—इसी राजा ने तक्षक नाग से अपने पिता का बदला लिया था और एक नागमेध यज्ञ किया था।

जन्मेश—पुं० [जन्म-ईश ष० त०] फलित ज्योतिष में, वह ग्रह जो किसी की जन्म-राशि का स्वामी हो।

जन्मोत्सव—पुं० [जन्म-उत्सव ष० त०] १. किसी के जन्म के समय होनेवाला उत्सव। २. किसी के जन्म-दिन के स्मरण में होनेवाला उत्सव।

जन्य—वि० [सं० जन+यत्; √जन् (उत्पत्ति)+ण्यत्] [भाव० जन्यता] १. जिसका संबंध जन अर्थात् मनुष्य से हो। जन-संबंधी। २. जिसे मनुष्य ने उत्पन्न किया हो। ३. किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला। जातीय, देशीय या राष्ट्रीय। ४. किसी चीज से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—विचारजन्य।

पुं० १. साधारण मनुष्य। २. राष्ट्र। ३. पुत्र। ४. पिता। ५. जन्म। ६. किंवदंती। ७. लड़ाई। ८. बाजार। ९. विवाह के समय दूल्हे के साथ जानेवाला बालक। सहबाला।

जन्यता—स्त्री० [सं० जन्य+तल्—टाप्] जन्म होने की अवस्था या भाव।

जन्या—स्त्री० [सं० जन्य+टाप्] १. माता की सखी। २. वधू की सहेली। ३. वधू।

जन्यु—पुं० [सं० जन+युच्] १. जीव। प्राणी। २. अग्नि। ३. ब्रह्मा।

जप—पुं० [सं०√जप् (जपना)+अप्] १. जपने या जाप करने की क्रिया या भाव। २. वह शब्द, पद या वाक्य जिसका उच्चारण भक्तिपूर्वक बार-बार किया जाय। ३. पूजा, संध्या आदि में मंत्रों का संख्यापूर्वक पाठ करना। जप करने में मंत्र की संख्या का ध्यान रखना पड़ता है, इसलिए जप में माला की भी आवश्यकता होती है।

जपजी—पुं० [हिं० जप] सिक्खों का प्रसिद्ध ग्रंथ जिसका वे प्रायः पाठ करते हैं।

जपतप—पुं० [हिं० जप+तप] संध्या, पूजा, और पाठ आदि। पूजा-पाठ।

जपता—स्त्री० [सं० जप+तल्-टाप्)] जपने की क्रिया या भाव।

जपन—पुं० [सं०√जप्+ल्युट्-अन] जपने की क्रिया या भाव। जप।

जपना—स० [सं० जपन] १. धार्मिक फल-प्राप्ति के लिए किसी शब्द, पद, वाक्य आदि को भक्ति या श्रद्धापूर्वक बार-बार कहना। २. पूजा, संध्या, यज्ञ आदि करते समय संख्यानुसार मन ही मन उच्चारण करना। ३. यज्ञ करना। ४. किसी की कोई चीज हजम करना। हड़पना। (बाजारू)

जपनी—स्त्री० [हिं० जपना] १. माला जिसे जप करते समय फेरा जाता है। जप करने की माला। २. वह थैली जिसमें माला और हाथ डालकर जप किया जाता है। गुप्ती। गोमुखी। ३. जपने की क्रिया या भाव। (क्व०) ४. बार-बार कोई बात बहुत आग्रहपूर्वक कहना। रट।

जपनीय—वि० [सं०√जप्+अनीयर्] जिसको जपना चाहिए। जपे जाने योग्य।

जप-माला—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वह माला जो जप करने के समय फेरी जाती है। जपनी।

जपा—स्त्री० [सं०√जप्+अच्–टाप्] जवा। अड़हुल।

पुं० [सं० जप] जप करनेवाला व्यक्ति। उदा०—तपा जपा सब आसन मारे।—जायसी।

जपाना†—स० [हिं० 'जपना' का प्रे० रूप] दूसरे से जप कराना।

जपालक्त—पुं० [जपा-अलक्त उपमि० स०] एक प्रकार का अलक्तक जो गहरे लाल रंग का होता है।

जपिया*—वि०=जपी।

जपी—वि० [हिं० जपना+ई (प्रत्य०)] जप करनेवाला।

जप्त—वि०=जब्त।

जप्तव्य—वि० [सं०+जप्+तव्यत्] जपे जाने के योग्य। जपनीय।

जप्ती—स्त्री०=जब्ती।

जप्य—वि० [सं०√जप्+ण्यत्] जपे जाने के योग्य।

जफर—पुं० [फा० जफ़र] तावीज, यंत्र आदि बनाने की कला या काम। पुं० [अ०] विजय।

जफा—स्त्री० [फा०] १. अन्यायपूर्ण कार्य या व्यवहार। २. अत्याचार।

जफाकश—वि० [फा०] १. अन्यायपूर्ण व्यवहार या अत्याचार सहन करनेवाला। सहनशील। २. परिश्रमी।

जफीरी—स्त्री० [अ०] १. सीटी अथवा उससे किया जानेवाला शब्द। २. मुंह में दो उँगलियाँ रखकर बजाई जानेवाली सीटी। ३. एक प्रकार की कपास।

जफील—स्त्री०=जफीरी।

जफीलना—अ० [हिं० जफील] सीटी बजाना। सीटी देना।

जब—अव्य० [सं० यावत्] १. जिस समय। जिस वक्त (इस अर्थ में इसका नित्य संबंधी 'तब' है)। जैसे—जब सवेरा होता है तब अंधकार आप से आप नष्ट हो जाता है। २. जिस अवस्था में। जिस दशा या हालत में। (इस अर्थ में इसका नित्य संबंधी 'तो' है)। जैसे—जब उन्हें क्रोध चढ़ता है तो उनका चेहरा लाल हो जाता है।

पद–जब कभी=किसी समय। **जब जब**=जिस जिस समय। **जब तब**=कभी-कभी। जैसे—वहाँ जब-तब ही जाना होता है। **जब देखो तब**=प्रायः। अक्सर। जैसे—जब देखो तब तुम खेलते ही रहते हो। **जब होता है तब**=अक्सर। प्रायः।

जबड़ा—पुं० [सं० जृंभ] मुंह में की उन दो (एक ऊपर तथा एक नीचे) हड्डियों में से हर एक जिसमें दाँत जमे या जड़े रहते हैं।

पद—जबड़े की तान=गवैयों की एक प्रकार की तान (हलक की तान से भिन्न) जो साधारण या निम्न कोटि की मानी जाती है।

जबर—वि० [अ० ज़बर] १. बलवान। बली। २. पक्का। दृढ़। मजबूत।

जबरई—स्त्री० [हिं० जबर] १. जबरदस्ती। २. ज्यादती।

जबर-जंग जबरदस्त,—वि० [फा०] १. बहुत बड़ा या बलवान। २. उच्च। श्रेष्ठ।

वि०=जबरदस्त।

जबरदस्त—वि० [फा०] [भाव०, जबरदस्ती] १. (व्यक्ति) जो बहुत अधिक शक्तिशाली हो तथा स्वभाव से कड़ा हो। जैसे—वह जबरदस्त हाकिम है। २. (वस्तु) जो बहुत ही दृढ़ या मजबूत हो। ३. (कार्य) जो बहुत अधिक कठिन हो। जैसे—जबरदस्त सवाल।

जबरदस्ती—स्त्री० [फा०] १. जबरदस्त या शक्तिशाली होने की अवस्था या भाव। २. कोई ऐसा कार्य या व्यवहार जो बलपूर्वक तथा कड़ाई के साथ किसी के प्रति किया गया हो। जैसे—यह सरासर आपकी जबरदस्ती है।

अव्य० १. बलपूर्वक। जैसे—वे जबरदस्ती अंदर घुस आये। २. दबाव पड़ने पर। जैसे—जबरदस्ती खाना पड़ा।

जबरन्—अव्य० [अ० जब्रन] बलात्। जबरदस्ती। बलपूर्वक।

जबरा—पुं० [अं० जेब्रा] घोड़े की तरह का एक जंगली जानवर जिसके सारे शरीर पर लंबी-लंबी सुन्दर काली धारियाँ होती हैं।

† वि०=जबर।

जबरूत—स्त्री० [अ०] १. महत्ता। २. वैभव। ३. ऊपर के नौ लोकों में से तीसरा। (मुसल०)

जबल—पुं० [अ०] पहाड़।

जबह—पुं० [अ०] १. गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। २. मुसलमानों में मंत्र पढ़ते हुए पशु-पक्षियों आदि का गला रेतकर काटना।

जबहा—पुं० [?] जीवट। साहस।

जबाँ—स्त्री०=जबान।

जबान—स्त्री० [फा०] [वि० जबानी] १. मुँह के अन्दर का वह लचीला लंबोतरा चिपटा अंग, जिसके द्वारा चीजों का स्वाद लिया जाता है, मुँह में डाली हुई चीजें गले के नीचे उतारी जाती हैं तथा ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है। जीभ।

मुहावरे (क) स्वाद संबंधी (कोई चीज) जबान पर रखना=किसी वस्तु का स्वाद चखना। थोड़ी मात्रा में कोई चीज खाना। **जबान बिगड़ना**=(क) बीमारी आदि के कारण मुँह का स्वाद खराब होना। (ख) अच्छी-अच्छी; विशेषतः चटपटी चीजें खाने का चस्का लगना। **मुहावरे (ख) उच्चारण संबंधी; (किसी की) जबान खींचना या खींच लेना**=कोई अनुचित या विरुद्ध बात कहनेवाले को कठोर दंड देना। **(किसी की) जबान खुलना**=(क) बहुत समय तक चुप रहने पर किसी का कुछ कहना आरंभ करना। (ख) अनुचित या उद्दंडतापूर्ण बातें कहने का अभ्यास पड़ना या होना। **(किसी की) जबान घिस जाना या घिसना**=कोई बात कहते कहते हार जाना। **जबान चलना**=हर समय कुछ न कुछ कहते या बोलते रहना। **जबान चलाना**=(क) जल्दी-जल्दी बातें कहना। (ख) अनुचित बात कहना। **जबान चलाने की रोटी खाना**=केवल लोगों की खुशामद करके जीविका चलाना। **(बच्चे की) जबान टूटना**=छोटे बच्चे की जबान का ऐसी स्थिति में आना कि वह कठिन शब्दों या संयुक्त वर्णों का उच्चारण कर सके। **जबान डालना**=किसी से किसी प्रकार की प्रार्थना या याचना करना। **(किसी की) जबान थामना या पकड़ना**=कहते हुए को कोई बात कहने से रोकना। **(कोई बात) जबान पर आना**=भूली हुई कोई बात अथवा अवसर के अनुकूल कोई बात याद आना। **जबान पर चढ़ना**=कंठस्थ होना। **जबान पर रखना**=सदा स्मरण रखना। जैसे—यह गाली तो उनकी जबान पर रखी रहती है। **जबान पर लाना**=चर्चा या बात कहना। **जबान पर होना**=स्मरण रहना। याद होना। **(किसी की) जबान बंद करना**=किसी प्रकार किसी को कुछ कहने से रोकना। **जबान बंद होना**=कुछ न कहने को विशेषतः उत्तर न देने को विवश होना। **जबान बंदी करना**=किसी की कही हुई बात को उसी के शब्दों में लिख लेना। **जबान बिगड़ना**=मुँह से अपशब्द निकलने का अभ्यास होना। **जबान में लगाम न होना**=अशिष्टता या धृष्टतापूर्वक अनुचित या कठोर बातें कहने का अभ्यास होना। **जबान रोकना**=(क) कुछ कहते-कहते रुक जाना। (ख) किसी को कुछ कहने से रोकना। **जबान संभालना**=मुँह से अनुचित या अशिष्ट शब्द न निकलने देना। **जबान हिलाना**=बहुत दबते हुए कुछ कहना।

२. किसी को दिया हुआ वचन।

मुहा०—जबान देना=कोई काम करने का किसी को वचन देना। **जबान बदलना**=कही हुई बात या दिये हुए वचन से पीछे हट जाना। मुकर जाना। **जबान हारना**=वचन देना।

३. भाषा। बोल-चाल।

जबानदराज—वि० [फा०] [भाव० जबानदराजी] अशिष्टता या धृष्टतापूर्वक बड़ों से बातें करनेवाला। न कहने योग्य बातें भी बढ़-बढ़कर कहनेवाला।

जबानबंदी—स्त्री० [फा०] १. किसी घटना के संबंध में लिखी जानेवाली किसी साक्षी की गवाही। २. मौन। चुप्पी। ३. चुप रहने की आज्ञा।

जबानी—वि० [फा०] १. जबान-संबंधी। २. जो केवल जबान से कहा गया हो। मौखिक। ३. जो कहा तो गया हो परन्तु जिसका आचरण या व्यवहार न किया गया हो। जैसे—जबानी जमा-खरच।

जबाला—स्त्री० [सं०] छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सत्यकामं जाबाल ऋषि की माता का नाम जो एक दासी थी।

जबून—वि० [तु०] १. खराब। बुरा। २. निकृष्ट। निकम्मा।

जब्त—वि० [अ०] १. दबाया या रोका हुआ। जैसे—गुस्सा जब्त करना। २. (वह वैयक्तिक संपत्ति) जो किसी अपराध के दंडस्वरूप शासन द्वारा किसी से छीन ली गई हो।

क्रि० प्र०—करना।

जब्ती—स्त्री० [अ० जब्त] जब्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

जब्भा†—पुं०=जबहा।

जब्र—वि०=जबर।

जब्रन—अव्य० =जबरन्।

जब्री—वि० [अ०] जबरदस्ती या बलात् किया हुआ।

जभन—पुं० [सं० यभन] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

जम—पुं०=यम।

जमक†—पुं०=यमक।

जमकना*—अ०=चमकना।

जमकात*—स्त्री०=जमकातर (यम का खाँड़ा)। उदा०—बिजुरी चक्र फिरै चहुँ फेरी। औ जमकात फिरै जम केरी।—जायसी।

जमकातर—पुं०[सं० यम+हिं० कातर] भवँर।

स्त्री०[सं० यम+कर्त्तरी] १. यम का खाँड़ा। २. एक प्रकार की तलवार। खाँड़ा।

जमकाना*—स०[हिं० जमकना का सकर्मक रूप] चमकाना।

जमघट—पुं० [हिं० जमना+घट] किसी स्थान पर विशेष काम से आये हुए लोगों की भीड़।

जमघटा†—पुं०=जमघट।

जमघट्ट†—पुं०=जमघट।

जमज*—वि०=यमज।

जमजम—अव्य०[सं० जन्म, पुं० हिं० जमना=जन्म लेना] ऐसे आवश्यक और शुभ रूप में जिसका सब लोग हार्दिक स्वागत करें। जैसे—आप हमारे यहाँ आवें और जमजम आवें।

जम-जाई*—स्त्री०[सं० यम+जाया] मृत्यु। मौत।

जमजोहरा—पुं०[देश०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

जमड़ा*—पुं० [हिं० जन्मना] वह जो जन्म दे। पिता। उदा०—अपने जमड़ा जमड़ी को छोड़ा बिलकता।—साँपा।

जमडाढ़—स्त्री०[सं० यम+हिं० डाढ़] शरीर में भोंकने का कटारी की तरह का एक हथियार जिसकी नोक आगे की ओर झुकी हुई होती है।

जमण—स्त्री०=जमुना।

जमदग्नि—पुं० [सं०] एक ऋषि जो भृगुवंशी ऋचीक के पुत्र थे तथा जिनकी गणना सप्तर्षियों में होती है।

जमदढ्ढ—स्त्री०=जम-डाढ़।

जम-दिसा*—स्त्री० [सं० यम+दिशा] वह दिशा जिसमें यम का निवास माना जाता है। दक्षिण दिशा।

जमधर†—पुं०=जमडाढ़।

जमन*—पुं० [सं० यवन] [स्त्री० जमनी] १. यवन। २. मुसलमान।

पुं०=जमाना।

स्त्री०=यमुना (नदी)।

जमना—अ०[सं० यमन=जकड़ना, मि० अ० जमा] १. किसी तरल पदार्थ का अधिक शीत के कारण ठोस रूप धारण करना। जैसे—पानी जमना। २. उक्त प्रकार से ठोस रूप धारण किये हुए किसी पर स्थित होना। जैसे—(क) पहाड़ों पर बरफ जमना। (ख) दीवार पर रंग जमना। ३. किसी प्रकार का किसी तरल पदार्थ में विकार उत्पन्न किये जाने पर उसका ठोस रूप धारण करना। जैसे—दही जमना। ४. दृढ़तापूर्वक स्थित होना। जैसे—धाक जमना। ५. हाथ से काम करने का पूरा अभ्यास होना। जैसे—लिखने में हाथ जमना। ६. किसी कार्य का बहुत ही अच्छे तथा प्रभावशाली रूप में निर्वाह होना। जैसे—खेल या गाना जमना। ७. किसी काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना। जैसे—रोजगार जमना। ८. एकत्र होना। जमा होना। जैसे—भीड़ जमना। ९. अच्छा प्रहार होना। खूब चोट पड़ना। जैसे—थप्पड़ या लाठी जमना। १०. घोड़े का हुमक-हुमककर चलना।

अ०[सं० जन्म+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न होना। उगना। जैसे—(क) जमीन पर घास या पौधा जमना। (ख) सिर पर बाल जमना।

पुं०[हिं० जमना=उत्पन्न होना] वह घास जो पहली बरसात के बाद खेतों में उगती है।

स्त्री०=यमुना।

जमनिका—स्त्री०[सं० जवनिका] १. जवनिका। परदा। २. काई।

जमनोत्तरी—स्त्री०. [सं० यमनोत्तरी] हिमालय में वह स्थान जहाँ से यमुना निकलती है।

जमनौता—पुं०[अ० जमानत+औता (प्रत्य०)] वह धन जो अपनी जमानत करने के बदले में जमानत करनेवाले को दिया जाता है।

जमनौती—स्त्री०=जमनौता।

जमराण*—पुं०=यमराज।

जमरूद—पुं०[?] जामुन की तरह का एक प्रकार का छोटा लंबोतरा तथा सफ़ेद फल।

जमरूल—पुं०=जमरूद।

जमवट—स्त्री०[सं० जम्बु पट्ट] जामुन की लकड़ी का वह गोल चक्कर या पहिया जो कूआँ बनाने में भगाड़ में रखा जाता है और जिसके ऊपर कोठी की जोड़ाई होती है।

जमवार*—पुं० [सं० यमद्वार] यम का द्वार। न्याय-सभा। उदा०—सिंहल द्वीप भए औतारू। जंबूद्वीप जाइ जमवारू।—जायसी।

जमशेद—पुं०[ईरा०] ईरान का एक प्राचीन राजा जिसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि इसके पास एक ऐसा प्याला था जिसमें संसार में होनेवाली घटनाएँ, बातें आदि दिखाई देती थीं।

जमहूर—पुं०[अ०] १. जन-समूह। २. राष्ट्र।

जमहूरियत—स्त्री०[अ०]=लोकतंत्र।

जमहूरी—वि०[अ०] प्रजातांत्रिक।

जमाँ—पुं०[अ०] 'जमाना' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के अंत में प्राप्त होता है। जैसे—खलीलुलजमाँ, रुस्तमेजमाँ आदि।

जमा—वि०[अ० जमऽ] १. बचा अथवा जोड़कर रखा हुआ (धन)। जैसे—दो वर्षों में मैंने केवल सौ रुपये मुश्किल से जमा किए हैं।

पद—कुल जमा=सब मिलाकर। कुल। जैसे—कुल जमा वहाँ दस आदमी आये थे।

२. देन अथवा पावने के रूप में दिया अथवा प्राप्त होनेवाला (धन)। जैसे—(क) सदस्यों का चंदा जमा हो गया है। (ख) २० रुपया इनका गेहूँ मद्दे जमा कर लो। ३. (धन आदि) सुरक्षा के लिए किसी के पास अमानत रूप में रखा हुआ। जैसे—बैंक में रुपये जमा करना। ४. किसी खाते के आय पक्ष में लिखा हुआ।

स्त्री०[अ०] १. मूलधन। पूँजी। २. धन। रुपया-पैसा।

मुहा०—जमा मारना=अनुचित रीति से किसी का धन हजम कर लेना।

३. भूमिकर। मालगुजारी। ४. जोड़ (गणित)। ५. खाते या बही का वह भाग या कोष्ठक जिसमें प्राप्त हुए धन का ब्योरा दिया जाता है। ६. व्याकरण में किसी शब्द का बहुवचन रूप। जैसे—खबर की जमा अखबार है।

जमाई†—पुं०[सं० जामातृ] जँवाई।

स्त्री०[हिं० जमाना] जमाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जमाखर्च—पुं०[फा० जमा+खर्च] २. आय और व्यय। २. आय और व्यय का हिसाब और मद।

मुहा०—जमा-खर्च करना=किसी के यहाँ से आई हुई रकम जमा करके उसके नाम पड़ी हुई रकम का हिसाब पूरा करना।

जमाजथा—स्त्री०[हिं० जमा+गथ=पूंजी]धन-संपत्ति। नगदी और माल।

जमात—स्त्री०[अ० जमाअत] १. कक्षा (विद्यार्थियों की)। २. समुदाय या संघ (व्यक्तियों का)। ३. गरोह।

जमादार—पुं० [फा०] भाव० जमादारी] छोटे कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षक एक अधिकारी। जैसे—सेना या सिपाहियों का जमादार, भंगियों या मजदूरों का जमादार।

जमादारी—स्त्री०[अ०] जमादार का कार्य या पद।

जमान—पुं०[फा० जामिन] जमानतदार।

जमानत—स्त्री०[अ०] १. जिम्मेदारी। २. वह जिम्मेदारी जो इस रूप में ली जाती है कि यदि कोई व्यक्ति विशेष समय पर कोई काम नहीं करेगा तो उसका दण्ड या हरजीना हम देंगे। जैसे—अदालत ने एक हजार की जमानत पर इसे छोड़ने को कहा है। २. वह धन जो किसी को जिम्मेदारी लेते समय किसी अधिकारी के पास जमा किया जाता है।

जमाननामा—पुं०[अ०जमानत+फा० नामा] वह लिखा हुआ कागज जो जमानतदार जमानत के प्रमाण में लिखकर देता है।

जमानती—पुं०[अ० जमानत+ई(प्रत्य०)] जमानत करनेवाला व्यक्ति। वह जो जमानत करे। जामिन। जिम्मेदार।

वि० १. जमानत संबंधी। २. जो जमानत के रूप में हो।

जमाना—स०[हिं० जमना का स० रूप।] १. किसी तरल पदार्थ को शीत पहुँचाकर अथवा और किसी प्रक्रिया से ठोस बनाना। जैसे—दही या बरफ जमाना। २. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दृढ़तापूर्वक स्थित करना या बैठाना। जैसे—दीवार पर पत्थर जमाना। ३. अच्छी तरह चलने के योग्य बनाना। जैसे—रोजगार या वकालत जमाना। ४. ऐसे ढंग से कोई काम करना कि वह यथेष्ट प्रभावशाली सिद्ध हो। जैसे—खेल या महफिल जमाना। ५. कोई काम अच्छी तरह कर सकने की योग्यता प्राप्त करने के लिए बराबर उसका अभ्यास या संपादन करना। जैसे—लिखने में हाथ जमाना। ७. अच्छी तरह या जोर लगाकर प्रहार करना। जैसे—थप्पड़ या मुक्का जमाना।

पु०[अ० ज़मानः] १. काल। समय।

पद—जमाने की गर्दिश=समय का फेर।

मुहा०—(किसी का) जमाना बदलना या पलटना=किसी की अवस्था या स्थिति बदल जाना।

२. सौभाग्य का समय। जैसे—उनका भी जमाना था। ३. सारी सृष्टि। संसार।

मुहा०—जमाना देखना=संसार की गति-विधियाँ देखना। **जमाना देखे होना**=संसार की गति-विधियों का ज्ञान होना। अनुभवी होना।

पद—जमाने भर का=संसार में जितना हो सकता हो उतना सब। बहुत अधिक। जैसे—उन्हें तो जमाने भर का सुख चाहिए।

४. संसार के लोग। जैसे—जमाना जो चाहे सो कहे आप किसी की नहीं सुनेंगे।

जमानासाज—वि० [फा०] [भाव० जमानासाजी] १. (व्यक्ति) जो समय विशेष के अनुकूल अपने को ढाल सके। २. विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न रूप धारण करनेवाला।

जमाबंदी—स्त्री०[अ०+फा०] पटवारी का वह खाता जिसमें असामियों के नाम, उनसे मिलनेवाले लगान की रकमें आदि लिखी जाती हैं।

जमामार—वि०[हिं० जमा+मारना] दूसरों की संपत्ति अनुचित रूप से ले लेनेवाला।

जमाल—पुं० [अ०] १. बहुत सुन्दर रूप। २. सौंदर्य। खूबसूरती।

जमालगोटा—पुं०[सं०जयपाल]एक पौधा जिसका बीज बहुत अधिक रेचक होता है। जयपाल। दंतीफल।

जमाली—वि०[अ०] सुन्दर रूपवाला।

जमाव—पुं० [हिं० जमाना] १. एक स्थान पर बहुत-सी चीजों या व्यक्तियों के इकट्ठे होने की अवस्था या भाव। २. जमने, जमाने या जमे हुए होने की अवस्था या भाव।

जमावट—स्त्री०[हिं० जमाना] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।

जमावड़ा—पुं०[हिं० जमना=एकत्र होना] एक स्थान पर इकट्ठे होनेवाले व्यक्तियों का समूह।

जमींकंद—पुं०[फा० जमीन+कंद] सूरन। ओल।

जमींदार—पुं०[फा०] जमीन का मालिक। भूमि का स्वामी। विशेषतः वह व्यक्ति जो किसानों को लगान पर अपनी जमीन जोतने-बोने को देता है।

जमींदारा†—पुं०=जमींदार।

जमींदारी—स्त्री०[फा०] १. जमींदार होने की अवस्था, भाव या पद। २. जमींदार की वह भूमि जिसका लगान वह उन काश्तकारों से वसूल करता है जिसे वे जोतते-बोते हैं।

विशेष—अब इस प्रथा का प्रायः अंत हो चुका है।

जमींदोज—वि०[फा०] १. जमीन से मिला या सटा हुआ। २. जो जमीन पर गिरा या ढा कर उसके बराबर कर दिया गया हो। ३. भूगर्भ में स्थित।

जमी—स्त्री०[सं० यमी] यम की बहन। यमी।

वि०[सं० यमिन्] यम या संयमपूर्वक रहनेवाला।

जमीन—स्त्री०[फा०]१. सौर जगत् का वह उपग्रह जिसमें हम लोग रहते हैं। पृथ्वी। २. उक्त उपग्रह का ठोस तल (समुद्र से भिन्न) धरातल।

पद—जमीन आसमान का फरक=बहुत बड़ा तथा स्पष्ट अंतर या भेद। **जमीन का गज**—व्यक्ति जो सदा इधर-उधर घूमता-फिरता रहता हो।

मुहा०—जमीन आसमान एक करना=किसी काम के लिए बहुत अधिक प्रयत्न करना। **जमीन आसमान के कुलाबे मिलाना**=(क) शेखी बघारना। लंबी-चौड़ी हाँकना। डींग मारना। (ख) तोड़-जोड़ मिलाना। चालाकी करना। **जमीन का पैरों तले से निकल या सरक जाना**=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि होश-हवाश ठिकाने न रहे। **जमीन चूमने लगना**=जमीन पर पट गिरना। **(किसी को)| जमीन दिखाना**=जमीन पर गिराना या पटकना। बुरी तरह से पराजित या परास्त करना। **जमीन पर पैर न रखना**=अकड़कर अथवा बड़प्पन दिखाते हुए कोई काम करना। ऐंठ या शेखी दिखलाना। **जमीन पर पैर न पड़ना**= बहुत अभिमान होना।

३. उक्त के आधार पर, ठोस तल अर्थात् धरातल का कोई कोई अंश या भाग। जैसे—ऊँची या नीची जमीन।

मुहा०—जमीन पकड़ना=किसी स्थान पर जमकर बैठना।

४. वह आधार या सतह जिस पर बेल-बूटे आदि कढ़े, छपे या बने हुए हों। जैसे—इस धोती की जमीन सफेद और धारियाँ पीली हैं। ५. वह सामग्री जिसका उपयोग किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से किया जाय। जैसे—अतर खींचने में चंदन की जमीन, फुलेल में मिट्टी के तेल की जमीन। ६. चित्र बनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल। आधार पृष्ठ।

मुहा०—जमीन बाँधना=अस्तर या मसाला लगाकर चित्र आदि बनाने के लिए सतह तैयार करना।

७. किसी कार्य के लिए पहले से निश्चित की हुई प्रणाली। उपक्रम। आयोजन।

मुहा०—जमीन बाँधना=कोई काम करने से पहले उसकी प्रणाली निश्चित करना।

जमीनी—वि०[फा०] जमीन-संबंधी। जमीन का।

जमीमा—पुं०[अ० जमीम:] परिशिष्ट। (दे०)

जमीर—पुं०[अ० ज़मीर]१. मन। हृदय। २ अन्तःकरण। ३. विवेक।

जमील—वि० [अ०] [स्त्री० जमीला] जमाल अर्थात सौन्दर्य से युक्त। सुन्दर।

जमुआ†—पुं० [हिं० जामुन] जामुन का पेड़ और उसका फल।

जमुआर—पुं०[हिं० जमुआ+आर (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ जामुन के बहुत से पेड़ हों।

जमुकना—अ०[?] आगे बढ़कर या बढ़ते हुए किसी के साथ लगना।

जमुण*—स्त्री०[सं० यमुना] यमुना नदी।

जमुना†—स्त्री०=यमुना।

जमुनियाँ†—वि०[हिं० जामुन] जामुन के रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

जमुरका—पुं०[फा० जंबूर] १. कुलावा। २. एक प्रकार की छोटी तोप।

जमुरी—स्त्री०[फा० जंबूर] १. एक प्रकार की छोटी चिमटी या सँड़सी। २. घोड़ों के नाखून काटने का एक उपकरण।

जमुर्रद—पुं०[अ० ज़मुर्रद] पन्ना नामक रत्न।

जमुर्रदी—वि०[फा० ज़मुर्रदीन] जमुर्रद अर्थात् पन्ने के रंग का। नीलापन लिये हुए हरे रंग का।

पुं० नीलापन लिये हुए हरा रंग।

जमुवाँ—पुं०[हिं० जमुआ] जामुन का रंग। जामुनी।

पुं०=जामुन।

जमुहाना*—अ०[हिं० जम्हाना] जम्हाई लेना। जँभाई लेना।

जमूरक†—पुं०[फा० जंबूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।

जमूरा—पुं० =जमूरक।

जमेंती*—स्त्री०=दमयंती।

जमैयत—स्त्री०[अ०] परिषद्। संस्था।

जमैयतुलउलेमा—स्त्री०[अ०] आलिमों अर्थात् विद्वानों की परिषद् या संस्था।

जमोग†—पुं० [हिं० जमोगना] १. जमोगने की क्रिया या भाव। २. ऋण चुकाने की एक प्रथा जिसके अनुसार ऋण लेनेवाला स्वयं ऋण नहीं चुकाता वल्कि ऋण चुकाने का भार किसी दूसरे पर डाल देता है। ३. चित्रकला में, बेल-बूटे आदि एक दूसरे से नियत दूरी और अपने-अपने ठीक स्थान पर बैठाने की क्रिया या भाव।

जमोगदार—पुं०[हिं० जमोग+फा० दार] वह व्यक्ति जो ऋणी का रुपया चुकाता हो। वह जिसने किसी दूसरे का ऋण चुकाने का भार अपने ऊपर लिया हो।

जमोगना—स०[?] १. आय-व्यय या हिसाव-किताव की जाँच करना। २. व्याज को मलधन में जोड़ना। ३. अपने उत्तरदायित्व विशेषतः लिए हुए ऋण या देन का भार दूसरे को सौंपकर उससे ऋण चुकाने की स्वीकृति दिला देना। सरेखना। ३. किसी वात का दूसरे व्यक्ति से समर्थन कराना।

जमोगवाना—स०[हिं० जमोगना] जमोगने का काम किसी दूसरे से कराना। सरेखवाना।

जमौआ†—वि० [हिं०जमाना] वुनकर नहीं, वल्कि जमा कर वनाया हुआ। जैसे—जमौआ कंवल, जमौआ वनात।

जम्मु*—पुं० १.=यम। २.=जन्म।

जम्हाई—स्त्री०=जँभाई।

जम्हाना†—अ०=जँभाना।

जयंत—वि०[सं०√जि (जीतना)+झच्—अन्त] [स्त्री० जयंती] १. जय प्राप्त करनेवाला। विजयी। २. तरह-तरह के भेस बनानेवाला। बहुरुपिया।

पुं० १. रुद्र। २. कार्त्तिकेय, इंद्र के पुत्र, धर्म के पुत्र, अक्रूर के पिता, दशरथ के मंत्री आदि लोगों का नाम। ३. संगीत में ध्रुवक जाति का एक ताल। ४. फलित ज्योतिष में एक योग जिसमें युद्ध के समय यात्रा करने पर विजय निश्चित मानी जाती है।

जयंत-पुर—पुं०[मध्य०स०] एक प्राचीन नगर जिसकी स्थापना निमिराज ने की थी और जिसका अवस्थान गौतम ऋषि के आश्रम के निकट था।

जयंतिका—स्त्री०[सं० जयंती+कन्—टाप्, ह्रस्व]=जयंती।

जयंती—वि० [सं०√जि (जीतना) +शतृ—ङीप्] विजय प्राप्त करनेवाली। विजयिनी।

स्त्री०१. वह स्त्री जिसने विजय प्राप्त की हो। २. दुर्गा। ३. पार्वती। ४. ध्वजा। ५. हल्दी। ६. अरणी और जैत नामक पेड़ों की संज्ञा। ७. बैजंती का पौधा। ८. ज्योतिष का एक योग जो श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी की आधी रात के समय रोहिणी नक्षत्र पड़ने पर होता है। ९. जन्माष्टमी। १०. जौ के छोटे पौधे जो ब्राह्मण अपने यजमान को मंगल द्रव्य के रूप में विजयादशमी के दिन भेंट करता है। ११. किसी महापुरुष की जन्म-तिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव। १२. किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने की वार्षिक तिथि पर होनेवाला उत्सव। जैसे—स्वर्ण या हीरक जयंती।

जय—स्त्री०[सं० जि+अच्] किसी बहुत बड़े कार्य में मिलनेवाली महत्त्वपूर्ण विजय या सफलता।

पद—जय गोपाल=भेंट होने पर पारस्परिक अभिवादन के लिए कहा जानेवाला एक पद।

मुहा०—जय बोलना या मनाना=विजय, सफलता आदि की कामना करना।

पुं०१. विष्णु के एक पार्षद का नाम। २. 'महाभारत' नामक महाकाव्य

का पुराना नाम। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल। ४. ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के प्रौष्ठपद नामक युग का तीसरा वर्ष। ५. युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट् के यहाँ अज्ञातवास कर रहे थे। ६. जयंती नामक पेड़। ७. लाभ। ८. अयन। मार्ग। ९. वशीकरण। १०. एक नाग। ११. दसवें मन्वन्तर के एक ऋषि।

जय-कंकण—पुं०[मध्य०स०] विजय का सूचक कंकण जो प्राचीन काल में विजयी को पहनाया जाता था।

जयक—वि०[सं० जय+कन्] जीतनेवाला। विजयी।

जयकरी—स्त्री०[सं० जय√कृ (करना)+ट—ङीप् ?] चौपाई नामक छंद का दूसरा नाम।

जय-कार—पुं०[ष०त०] १. किसी की 'जय' कहने की क्रिया या भाव। २. वह पद या वाक्य जिसमें किसी की जय कही जाय। जैसे—बोलेगा सो निहाल सत् श्री अकाल।

जय-कोलाहल—पुं०[व०स०] पासे का एक प्राचीन खेल।

जय खाता—पुं०[हिं० जय=लाभ+खाता] वह बही जिसमें बनिये प्रतिदिन होनेवाले लाभ का हिसाब लिखते हैं।

जय-घोष—पुं०[ष०त०] जोर से कही जानेवाली किसी की जय।

जय-चिह्न—पुं०[ष०त०] १. कोई ऐसा चिह्न या संकेत जो किसी प्रकार की जीत का सूचक हो। जैसे—आखेट, युद्ध आदि में प्राप्त की हुई और अपने पास स्मृति के रूप में रखी जानेवाली कोई चीज। २. खेल, प्रतियोगिता आदि में विजयी को मिलनेवाली कोई ऐसी चीज जो स्मारक के रूप में पास रखी जाय। (ट्राफी)

जय जयकार—स्त्री०[हिं०] सामूहिक रूप से किसी की वार-वार जय कहने की क्रिया या भाव।

जयजयवंती—स्त्री० [हिं०] रात के दूसरे पहर में गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसे कुछ लोग मेघराज की भार्या और कुछ लोग मालकोश की सहचरी बताते हैं।

जय-जीव—पुं०[हिं० जय+जी] एक प्रकार का अभिवादन जिसका अर्थ है कि तुम्हारी जय हो और तुम चिरजीवी होओ।

जय-ढक—पुं०=जयढक्का।

जय-ढक्का—स्त्री०[मध्य०स०] युद्ध में जीत होने पर बजाया जानेवाला बाजा।

जय-ताल—पुं०[मध्य०स०] संगीत में एक ताल का नाम।

जयति—पुं०[सं० जयत्] एक संकर राग जिसे कुछ लोग गौरी और ललित तथा कुछ लोग पूरिया और कल्याण के योग से बना हुआ मानते हैं।

जयति-श्री—स्त्री०[हिं०] एक रागिनी जिसे दीपक राग की भार्या कहा गया है।

जयती—स्त्री०=जयति।

जयत्कल्याण—पुं०[सं०] रात के पहले पहर में गाया जानेवाला संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो कल्याण और जयति-श्री के योग से बनता है।

जयत्सेन—पुं० [सं० जयन्ती-सेना व०स०] नकुल का वह नाम जो उसने स्वयं विराट् नगर में अज्ञातवास करते समय अपने लिए रखा था।

जय-दुंदुभी—स्त्री०[मध्य०स०] जीत होने पर बजाया जानेवाला डंका।

जय-दुर्गा—स्त्री०[कर्म०स०] दुर्गा की एक मूर्ति। (तंत्र)

जयदेव—पुं०[सं०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो 'गीत गोविंद' के रचयिता थे।

जयद्बल—पुं०[सं० जयत्-बल ब०स०] सहदेव का वह नाम जो उसने स्वयं विराट् नगर में अज्ञातवास करते समय अपने लिये रखा था।

जयद्रथ—पुं०[सं० जयत्-रथ ब०स०] महाभारत में वर्णित एक राजा जिसने अभिमन्यु को मारा था और जिसका वध अर्जुन ने किया था।

जय-ध्वज—पुं०[मध्य० स०] विजय पताका।

जयना*—स० [सं० जयन्] जय प्राप्त करना। जीतना।

जयनी—स्त्री०[सं०√जि+ल्युट्—अन, ङीप्] इन्द्र की कन्या का नाम।

जय-पत्र—पुं०[मध्य०स०] १. वह पत्र जो प्राचीन काल में पराजित राजा विजयी राजा को अपनी पराजय स्वीकार करते हुए लिखकर देते थे। २. न्यायालय द्वारा किसी व्यक्ति को दिया हुआ वह पत्र जिसमें उसकी मुकदमे में होनेवाली जीत का उल्लेख होता है।

जय-पत्री—स्त्री०[मध्य०स०] जावित्री।

जय-पाल—पुं० [जय√पाल् (रक्षा करना)+अण्] १. जमालगोटा। २. विष्णु। ३. राजा।

जय-पुत्रक—पुं०[मध्य०स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का पासा।

जय-प्रिय—पुं०[ब०स०] १. राजा विराट् के भाई का नाम। २. ताल का एक भेद।

जयफर—पुं०=जायफल। उदा०—जयफर, लौंग सुपारि छोहारा। मिरिच होइ जो सहै न झारा।—जायसी।

जय-मंगल—पुं०[ब०स०] १. वह हाथी जिस पर विजयी राजा सवारी करता था। २. संगीत में एक प्रकार का ताल।

जय-मल्लार—पुं०[सं०] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सभी शुद्ध स्वर लगते हैं।

जय-माल—स्त्री०=जय-माला।

जय-माला—स्त्री०[मध्य०स०] १. विजेता को पहनाई जानेवाली माला। २. विवाह के समय फूलों आदि की वह माला जो कन्या अपने भावी पति के गले में डालती है।

जय-यज्ञ—पुं०[मध्य०स०] अश्वमेध यज्ञ।

जयरात—पुं०[सं०] महाभारत में वर्णित कलिंग देश का एक राजकुमार जो युद्ध में भीम के हाथों मारा गया था।

जय-लक्ष्मी—स्त्री०[मध्य०स०] जय-श्री। विजय-श्री।

जय-लेख—पुं०=जय-पत्र। (दे०)

जय-वाहिनी—स्त्री०[ष०त०] इंद्राणी। शची।

जयशाल—पुं०[सं०] यादव वंश के प्रसिद्ध राजा जिन्होंने जैसलमेर नगर बसाया था।

जय-शृंग—पुं०[मध्य०स०] जय-ध्वनि करनेवाला। नरसिंघा।

जय-श्री—स्त्री० [ष०त०] १. विजय। २. विजय की अधिष्ठात्री देवी। ३. संध्या के समय गाई जानेवाली संपूर्ण राग की एक रागिनी।

जय-स्तंभ—पुं० [मध्य०स०] वह स्तम्भ या बहुत ऊँची वास्तु-रचना जो किसी देश पर विजय होने की स्मृति में बनाई जाती है।

जया—स्त्री०[सं०√जि (जीतना)+अच्—टाप्] १. दुर्गा, दुर्गा की सहचरी तथा पार्वती जी का नाम। २. अरणी, जयंती तथा शमी के वृक्षों की संज्ञा। ३. अड़हुल का फूल। ४. हरी दूब। ५. हरीतकी। हड़।

६. भाँग। ७. पताका। ८. सोलह मातृकाओं में से एक। ९. माघ शुक्ला एकादशी। १०. कृष्ण तथा शुक्ल पक्षों की तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथियाँ।

वि० स्त्री० जय दिलानेवाली।

जयादित्य—पुं०[सं०] काश्मीर के एक प्राचीन राजा जो 'काशिकावृत्ति' के कर्त्ता माने जाते हैं।

जया-द्वय—स्त्री०[ष०त०] जयंती और हड़।

जयानीक—पुं० [सं०] १. राजा द्रुपद के एक पुत्र का नाम। २. राजा विराट् के भाई का नाम।

जयावती—स्त्री०[सं० जया+मतुप, वत्व-ङीप्] १. कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। २. संकर जाति की एक रागिनी।

जयावह—वि०[सं० जय-आ√वह् (पहुँचाना)+अच्] जय दिलानेवाला।

जयाश्व—पुं०[सं०] राजा विराट् के एक भाई का नाम।

जयिष्णु—वि० [सं०√जि (जीतना)+इष्णुच्] १. जय दिलानेवाला। विजय प्राप्त करनेवाला। २. जो वरावर जीतता रहता हो।

जयी (यिन्)—वि० [सं०√जि (जीतना)+इनि] जिसकी जय अर्थात् विजय हुई हो।

†स्त्री०=जई।

जयेंद्र—पुं०[सं०] काश्मीर के राजा विजय के एक पुत्र का नाम।

जयेती—स्त्री०[सं०] एक संकर रागिनी।

जयोल्लास—पुं०[जय-उल्लास, ष०त०]जय अर्थात्, विजय मिलने पर होनेवाला उल्लास।

जय्य—वि० [सं०√जि+यत्] जो जीता जा सकता हो। जीते जाने के योग्य।

जरंड—वि०[सं०] १. क्षीण। २. वृद्ध।

जरंत—पुं० [सं०√जॄ (जीर्ण होना)+झच्–अंत] १. अधिक अवस्थावाला व्यक्ति। २. भैंसा।

जर—पुं० [सं०√जॄ+अप्] १. जीर्ण या नष्ट होने की अवस्था या भाव। २. वह कर्म जिससे शुभाशुभ कर्मों का क्षय होता है।

वि०[√जॄ+अच्] १. वृद्ध होनेवाला। २. क्षीण या वृद्ध करनेवाला।

पुं०[सं० जरा] जरा। वृद्धावस्था।

†पुं०=ज्वर।

पुं०[फा० ज़र] १. सोना। २. धन।

पुं० [हिं० जड़] जड़।

पुं० [देश०] एक प्रकार की समुद्री सेवार।

जरई—स्त्री० [सं० जीरक] १. बोये हुए बीज में से निकलनेवाला नया अंकुर। २. जौ या धान के छोटे अंकुर जो विशिष्ट अवसरों पर मंगल-कामना प्रकट करने के लिए भेंट किये जाते हैं।

जर-कंबर—पुं० [फा० जरी+हिं० कंबल] वह आवरण या ओढ़ना जिस पर जरी का काम बना हो। उदा०—जुरा जर कंबर सो पहिरायो। केशव।

जरक—स्त्री०=झलक।

जरकटी—स्त्री०[देश०] एक शिकारी चिड़िया।

जरकस—वि०[फा० जरकश] (वस्त्र) जिस पर जरी का काम हुआ हो।

पुं० जरी का काम।

जरकसी—वि०=जरकस।

जरकान—पुं०[अ०] गोमेद नामक रत्न।

जर-खरीद—वि०[फा०] धन देकर खरीदा हुआ। क्रीत।

जरखेज—वि०[फा०] [भाव० जरखेजी] (भूमि) जिसमें फसल अधिक मात्रा में होती हो। उपजाऊ।

जरगह, जरगा—पुं०=जिरगा।

जरछार—वि०[हिं० जरना+सं० क्षार] १. जो जलकर राख हो गया हो। २. नष्ट।

जरज—पुं०[देश०] एक प्रकार का कंद।

जरजर—वि०=जर्जर।

जरजरना—अ०[हिं० जरजर] जर्जर होना या जीर्ण-शीर्ण होना।

जरठ—वि०[सं० √जॄ +अठच्] १. वुड्ढा। वृद्ध। २. जीर्ण। ३. कठिन। कठोर। ४. कर्कश। ५. निर्दय। ६. जिसका रंग कुछ पीलापन लिये हुए सफेद हो।

पुं० बुढ़ापा।

जरठाई*—स्त्री०[सं० जरठ+हिं० आई (प्रत्य०)] बुढ़ापा।

जरडा—स्त्री०[√जॄ(बुढ़ापा)+ष्यङ–ङीप्] एक प्रकार की घास।

जरण—पुं० [सं०√जॄ+णिच्+ल्यु—अन] १. हींग। २. जीरा। ३. काला नमक। ४. कासमर्द। कसौंजा। ५. बुढ़ापा। ६. दस प्रकार के ग्रहणों में से वह जिसमें पश्चिम से मोक्ष होना आरम्भ होता है।

वि० जीर्ण। पुराना।

जरण-द्रुम—पुं०[कर्म०स०] १. साखू का वृक्ष। २. सागौन।

जरणा—स्त्री०[सं० जरण+टाप्] १. काला जीरा। २. वृद्धावस्था। ३. स्तुति। ४. मोक्ष।

जरत्—वि०[सं०√जॄ+अतृन] [स्त्री० जरती] १. वुड्ढा। वृद्ध। २. क्षीण। ३. पुराना।

जरतार—पुं०[फा० जर+हिं० तार] जरी अर्थात् सोने, चाँदी आदि के वे तार जिनसे कपड़ों पर वेल-बूटे आदि वनाये जाते हैं।

जरतारा†—वि० [हिं० जरतार] [स्त्री० जरतारी] (वस्त्र) जिस पर जरी का काम हुआ हो।

जरतारी—स्त्री०[हिं० जरतार] जरी से वना हुआ वेल-बूटों का काम।

जरतिका—स्त्री०[सं० जरती+कन्—टाप्, ह्रस्व] बूढ़ी स्त्री।

जरती—स्त्री०[सं० जरत्+ङीप्]=जरतिका।

जरतुवा—वि०[हिं० जलना] दूसरे की अच्छाई या समृद्धि को देखकर मन ही मन कुढ़ने या जलनेवाला।

जर तुश्त—पुं०=जरदुश्त।

जरत्कर्ण—पुं०[सं०] एक वैदिक ऋषि।

जरत्कारु—पुं०[सं०] एक ऋषि जिन्होंने वासुकि नाग की कन्या मनसा से विवाह किया था।

स्त्री० उक्त ऋषि की पत्नी मनसा का दूसरा नाम।

जरद—वि०[फा० ज़र्द] पीले रंग का।

जरद अंछी—स्त्री०[हिं० जरद+अंछी] काली अंछी की तरह की एक झाड़ी।

जरदक—पुं०[फा० ज़र्दक] जरदा या पीलू नाम का पक्षी।

जरदष्टि—वि०[सं०]१. वृद्ध। २. बुड्ढा। दीर्घजीवी।

स्त्री०१. बुढ़ापा। २. दीर्घ जीवन।

जरदा—पुं०[फा० ज़रद:] १. विशेष प्रकार से पकाये हुए मीठे पीले चावल। २. पान के साथ खाने के लिए विशेष प्रकार से बनाई हुए मसालेदार सुगंधित सुरती जो प्रायः पीले रंग की और कभी-कभी काले या लाल रंग की भी होती है। ३. पीले रंग का घोड़ा।

पुं०[सं० जरदक] एक प्रकार का पक्षी जिसकी कनपटी तथा पैर पीले होते हैं। पीलू।

जर-दार—वि०[फा०] [भाव० जरदारी] १. (व्यक्ति) जिसके पास जर अर्थात् धन हो। २ अमीर। धनवान।

जरदालू—पुं०[फा० जरद+आलू] खूबानी।

जरदी—स्त्री०[फा०]१. जरद अर्थात् पीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

मुहा०—**(किसी पर) जरदी छाना**=रोग आदि के कारण किसी के शरीर का रंग पीला पड़ना।

२. अंडे में से निकलनेवाला पीला अंश।

जरदुश्त—पुं०[फा० मि० सं० जरदष्टि=दीर्घजीवी, वृद्ध] फारस का एक प्रसिद्ध विद्वान् जिसका जन्म ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व हुआ था।

जरदोज—पुं०[फा० ज़रदोज] [भाव० जरदोजी] वह व्यक्ति जो सोने, चाँदी आदि की तारों से कपड़ों पर वेल-बूटे बनाता हो। जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोज़ी—स्त्री०[फा० ज़रदोजी]१. सोने, चाँदी आदि के तारों से वस्त्रों आदि पर वेल-बूटे वनाने का काम। २. उक्त प्रकार का वना हुआ काम।

वि० (कपड़ा) जिस पर उक्त प्रकार का काम वना हो।

जरद्गव—पुं०[सं० जरत्-गो कर्म० स०, टच्] १ बुड्ढा वैल। २. बृहत्संहिता के अनुसार एक वीथी जिसमें विशाखा और अनुराधा नक्षत्र हैं।

जरद्विष—पुं०[सं०] जल।

जरन*—स्त्री०=जलन।

जरना*—अ०=जलना।

†स०=जड़ना।

जरनि*—स्त्री०[हिं० जलन] जलन। उदा०—हृदय की कबहुँ न जरनि घटी।—सूर।

जरनिशाँ—पुं०[फा० जरनिशाँ] लोहे पर सोने, चाँदी आदि से की जानेवाली पच्चीकारी।

जरनैल—पुं० =जनरल (सेनापति)।

जरब—स्त्री०[अ० ज़र्ब]१. आघात। चोट। प्रहार। २. तवले, मृदंग आदि पर किया जानेवाला आघात। चाँटी। ३. गुणा। ४. कपड़े आदि पर काढ़ी या छापी हुई वेल।

जर-बफ्त—पुं०[फा० ज़रबफ़्त] वह रेशमी कपड़ा जिस पर कलाबत्तू का काम हुआ हो।

जर-बफ्ती—वि०[फा० ज़रबफ़्ती]१. जर बफ्त संबंधी। २. (कपड़ा) जिस पर जरबफ्त का काम हुआ हो।

जर-बाफ—पुं०[फा०] वह व्यक्ति जो कपड़े पर जरबफ्त का काम करता हो।

जरबाफी—वि०[फा०] जर-बफ्त या जरबाफ संबंधी।

स्त्री० कपड़े आदि पर कलाबत्तू से वेल-बूटे आदि काढ़ने की क्रिया या भाव।

जरबीला—वि०[फा० ज़रब] चमक-दमकवाला। भड़कीला।

जरम—पुं०=जन्म। उदा०—कहुँ सुख राखै की दुख दहुं कस जरम निबाहु।—जायसी।

जरमन—पुं०[अं०] यूरोप के जर्मनी नामक देश का नागरिक या निवासी।

स्त्री० उक्त देश की भाषा।

वि० १. जरमनी देश में होने या रहनेवाला। २. जरमन देश-संबंधी।

जरमनसिलवर—पुं०[अं०] एक चमकीली मिश्र धातु जो जस्ते, ताँबे, निकल आदि के योग से बनाई जाती है।

जरमनी—पुं०[अं०] यूरोप का एक प्रसिद्ध राज्य।

जरमुआ—वि०[हिं० जरना+मुअना=मरना] [स्त्री० जरमुई] ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण जलनेवाला।

जरर—पुं० [अ० जरर] १. नुकसान। हानि। २. आघात। चोट। ३. विपत्ति।

जरल†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास। सेवाती।

*स्त्री०=जलन।

जरवारा†—वि० [फा० ज़र(=धन)+हिं० वारा (वाला)] [स्त्री० जरवारी] १. जिसके पास जर अर्थात् धन हो। २. अमीर। धनी।

जरस—पुं०[देश०] समुद्र में होनेवाली एक प्रकार की घास।

जरांकुश—पुं०[सं० ज्वरांकुश] एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियाँ सुगंधित होती हैं।

जरा—स्त्री०[सं०√जॄ (वृद्ध होना)+अङ्—टाप्] १. वृद्ध होने की अवस्था। बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. बुढ़ापे में होनेवाली कमजोरी। ३. काल की कन्या का नाम। (पुराण)

पुं० एक व्याध जिसके वाण से कृष्ण जी देवलोक सिधारे थे।

वि०[अ० ज़रः] मान या मात्रा में थोड़ा। अल्प। कम।

पद—**जरा-सा**=(क) बहुत ही कम। नहीं के बराबर। जैसे—जरा सा चूर्ण खा लो। (ख) तुच्छ या हेय। जैसे—जरा सी बात।

अव्य० किसी काम या वात की अल्पता, तुच्छता, सामान्यता आदि पर जोर देने के लिए प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—(क) जरा तुम भी चले चलो। (ख) जरा कलम उठा दो।

जराअत—स्त्री०[अ० ज़िराअत] [वि० जराअती] खेती-वारी।

जराऊ†—वि०[हिं० जड़ाऊ] जिसमें नगीने जड़े हों। उदा०—पाँवरि कबक जराऊ पाऊँ। दीन्हि असीस आइ तेहि ठाऊँ।—जायसी।

जरा-कुमार—पुं०[ष०त०] जरासंध।

जरा-ग्रस्त—वि०[तृ० त०] जो जरा से पीड़ित हो। वृद्धावस्था के कारण कमजोर तथा शिथिल।

जरा-जीर्ण—वि०[तृ०त०] जो पुराना अथवा वृद्ध होने के कारण जर्जर हो गया हो। जरा से जर्जर।

जरातुर—वि०[जरा-आतुर तृ० त०] जरा-ग्रस्त। बूढ़ा।

जराद—पुं० [सं० जरा√अ (खाना)+अण् ?] टिड्डी।

जराना—स०=जलाना।

स०=जड़ाना।

जरा-पुष्ट—पुं०[तृ० त०] जरासंध।

जराफत—स्त्री० [अ० ज़राफ़त] जरीफ अर्थात् हँसोड़ होने की अवस्था या भाव। मसखरापन।

जराफा—पुं०[अ०जुर्राफ़ः] ऊँट की तरह का लंबी गरदन तथा लंबी टाँगों-वाला एक पशु।

जराभीत—वि०[तृ०त०] वृद्धावस्था से डरनेवाला।

पुं० कामदेव।

जरायम—पुं०[अ० 'जुर्म' का बहु०] अनेक प्रकार के अपराध।

जरायम पेशा—वि०[अ० जरायम+फा० पेशः] (वह) जो अनेक प्रकार के अपराधों के द्वारा ही जीविका चलाता हो। अपराधशील।

जरायु—पुं०[सं० जरा√इ (गति)+ञुण्] १. वह झिल्ली जिसमें माता के गर्भ से निकलते समय बच्चा लिपटा हुआ होता है। आँवल। खेड़ी। २. गर्भाशय। ३. योनि।

जरायुज—पुं०[सं० जरायु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] वह प्राणी जो माता के गर्भ में से निकलते समय खेड़ी में लिपटा हुआ होता है। पिंडज।

जराव—वि०=जड़ाऊ।

पुं०=जड़ाव।

जरा-शोष—पुं०[मध्य०स०] वृद्धावस्था में होनेवाला एक शोष रोग।

जरा-संध—पुं०[ब०स०] मगध का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा जो कंस का श्वसुर था।

जरा-सुत—पुं०[ष० त०] जरासंध।

जराह†—पुं०=जर्राह।

जरिणी—स्त्री० [सं० जरा+इनि—ङीप्?] अधिक अवस्थावाली स्त्री। बुढ़िया।

जरित—वि०[सं० जरा+इतच्] बुड्ढा।

*वि०=जटित।

जरिमा (मन्)—स्त्री० [सं० जरा+इमनिच्] जरा। बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

जरिया—पुं०[अ० ज़रीअऽ] १ संबंध। लगाव। २. कारण। हेतु। ३ साधन।

पद—के जरिये=द्वारा।

†वि०[हिं० जड़ना] जड़नेवाला।

†वि०[हिं० जलना] १. जला हुआ। २. जलाने से बननेवाला। जैसे—जरिया नमक।

जरिश्क—पुं०[फा० जरिश्क] दारुहल्दी।

जरी (रिन्)—वि०[सं० जरा+इनि] बुड्ढा। वृद्ध।

†स्त्री० जड़ी।

स्त्री० [फा०]१. बादले से बुना हुआ ताश नामक कपड़ा। २. सोने के वे तार जिनसे कपड़ों पर बेल-बूटे आदि बनाये जाते हैं।

जरीनाल—स्त्री०[?] वह स्थान जहाँ पर ईंटें और रोड़े पड़े हों।

जरीफ—वि०[अ० ज़रीफ़] १. परिहास-प्रिय। २. हँसोड़।

जरीब—स्त्री०[फा०]१. खेत या जमीन नापने की एक प्रकार की जंजीर या डोरी जो लगभग ६० गज लंबी होती है।

क्रि० प्र०—डालना।

२. डंडा। लाठी।

जरीबकश—पुं०[फा०] जरीब खींचने अर्थात् जरीब से जमीन नापनेवाला व्यक्ति।

जरी-बाफ—पुं०[फा० ज़रीबाफ़] जरी के काम के कपड़े आदि बुननेवाला कारीगर।

जरीमाना†—पुं०=जुरमाना।

जरीया—पुं० =जरिया।

ज़रूथ—पुं०[सं०√जॄ (जीर्ण होना)+ऊथन्] गोश्त। मांस।

जरूर—अव्य० वि०[अ०] अवश्य। अवश्यमेव।

जरूरत—स्त्री०[अ० ज़रूरत] १. आवश्यकता। २. प्रयोजन।

जरूरी—वि०[फा० ज़रूरी] १. जिसके बिना किसी का काम ठीक प्रकार से न चले। जैसे—रोगी को नींद आना जरूरी है। २. जिसका होना या घटित होना रुकने को न हो। जैसे—मृत्यु जरूरी है। ३. प्रस्तुत परिस्थितियों में जो किया ही जाना चाहिए। जैसे—उन पर मुकदमा चलाना जरूरी है। ४. जो तुरन्त किया जाने को हो। जैसे—एक जरूरी काम आ गया है।

जरोल—पुं०[देश०] आसाम और नीलगिरि के पहाड़ों पर होनेवाला एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

जरौट†—वि०[हिं० जड़ना] जड़ाऊ।

जर्कबर्क—वि० [फा०] चमक-दमकवाला। चमकीला।

जर्कान—पुं०=जरकान।

जर्जर—वि०[सं०√जर्ज् (झिड़कना)+अरन्] १. (वस्तु) जो पुरानी हो जाने के कारण या अधिक उपयोग में आने के कारण कमजोर तथा बेकाम हो चली हो। जैसे—जर्जर मकान या जर्जर वस्त्र। २. लाक्षणिक अर्थ में कोई चीज या बात जिसका महत्त्व या मान पुराने पड़ने के कारण बहुत ही कम हो गया हो। जैसे—ये साहित्यिक परम्पराएँ अब जर्जर हो चुकी हैं। ३. खंडित; टूटा-फूटा। ४. वृद्ध। बुड्ढा।

पुं० छरीला। पत्थर फूल।

जर्जरानना—स्त्री० [सं० जर्जर-आनन ब०स०] कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

जर्जरित—वि०[सं० जर्जर+णिच्+क्त] जर्जर किया हुआ।

जर्ण—पुं०[सं०√जॄ+नन्] १. चंद्रमा। २. वृक्ष।

जर्त्त—पुं०[√जन् (उत्पत्ति)+त, र आदेश] १. हाथी। २. योनि।

जर्त्तिक—पुं०[सं०√जॄ+तिकन्] १. प्राचीन वाहीक देश का नाम। २. उक्त देश का निवासी।

जर्तिल—पुं० [सं०√जॄ+विच्<जर्—तिल, कर्म०स०] जंगली तिल। वन तिलवा।

जर्त्तु—पुं०[सं०√जन्+तु, र आदेश]=जर्त्त।

ज़र्द—वि०[फा० ज़र्द] पीले रंगवाला। पीला। जरद।

जर्दा—पुं०=जरदा।

जर्दालू—पुं०=जरदालू।

ज़र्दी—स्त्री० [फा०]=जरदी।

जर्दोज—पुं०[भाव० जर्दोजी]=जरदोज। (दे०)

ज़र्रा—पुं०[अ० ज़र्रः] १. किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा। अणु। कण। २. धूल आदि का कण विशेषतः वह कण जो प्रकाश में उड़ता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है। रेणु। ३. तौल में एक जौ का सौवाँ भाग।

जर्रार—वि० [अ०] [भाव० जर्रारी] बहादुर। वीर।

जर्राह—पुं०[अ०] [भाव० जर्राही] वह चिकित्सक जो विकृत अंगों की शल्य-चिकित्सा करता हो। चीर-फाड़ करनेवाला व्यक्ति।

जर्राही—स्त्री०[अ०] जर्राह का काम या पेशा।

जर्वर—पुं०[सं०] नागों के एक पुरोहित।

जर्हिल—पुं० [सं० जर्तिल पृषो० सिद्धि] जंगली तिल। जर्त्तिल।

जलंग—पुं०[सं० जल√गम् (जाना)+ड, मुम्] महाकाल नामक लता।

जलंगम—पुं०[सं० जल√गम्+खच्, मुम्] चांडाल।

जलंधर—पुं०[सं० जल√धृ(धारण)+खच्, मुम्] १. एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका जन्म समुद्र से माना जाता है, और जिसका वध विष्णु ने किया था। २. नाथपंथी एक सिद्ध।

पुं०=जलोदर (रोग)।

जलंबल—पुं०[सं०] १. नदी। २. अंजन।

जल—पुं०[√जल(जीवन देना)+अच्] १. गंध तथा स्वाद से रहित वह प्रसिद्ध सफेद तरल पदार्थ जो बादल वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिराते हैं। और जिससे झीलें, नदियाँ, समुद्र आदि बनते हैं। पानी। २. उशीर। खस। ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। ४. जन्म कुंडली में का चौथा घर। ५. सुगंधवाला। ६. तेल। उदा०—मेरे अंतरतम के दीपक वे क्या जल बिन जल न सकेंगे।—नरेंद्र। ७. एक प्रकार का दिव्य (परीक्षा)। ८. रहस्य सम्प्रदाय में, (क) माया। (ख) शरीर। (ग) संसार।

जल-अलि—पुं० [ष० त०] १. पानी का भँवर। २. पानी पर तैरनेवाला काले रंग का एक छोटा कीड़ा। भौंरा।

जलई—स्त्री० [?] एक प्रकार की कील या काँटा जिसके दोनों ओर अँकुड़े होते हैं।

जल-कंटक—पुं० [स० त०] १. सिंघाड़ा। २. कुंभी।

जल-कंडु—पुं० [मध्य० स०] पैरों में होनेवाली वह खुजली जो उनके जल में भींगते रहने के कारण उत्पन्न होती है।

जल-कंद—पुं० [मध्य० स०] १. केला। २. काँदा नामक गुल्म।

जलक—पुं० [सं० जल√कै (प्रकाशित होना) +क] १. शंख। २. कौड़ी।

जल-कपि—पुं० [स० त०] सूँस नामक जल-जंतु।

जल-कपोत—पुं० [मध्य० स०] जलाशयों के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।

जल-करंक—पुं० [मध्य० स०] १. नारियल। २. कमल। ३. शंख। ४. तरंग। लहर। ५. बादल।

जल-कर—पुं० [मध्य० स०] १. वह कर जो किसानों को नहर से सिंचाई के लिए जल लेने के बदले में देना पड़ता है। २. जलाशयों में होनेवाले पदार्थ। जैसे—कमल गट्टा, मछली, सिंघाड़ा आदि। ३. उक्त प्रकार के पदार्थों पर लगनेवाला कर।

जल-कल—स्त्री० [सं० जल+हिं० कल] १. वह यंत्र जिसकी सहायता से नलों द्वारा किसी नगर के घर-घर में पानी पहुँचाया जाता है। २. उक्त कार्य की व्यवस्था करनेवाला विभाग।

जल-कल्क—पुं० [ष० त०] १. कीचड़। २. सेवार। ३. काई।

जल-कल्मष—पुं० [ष० त०] हलाहल।

जल-कांक्ष—पुं० [जल√कांक्ष् (चाहना) +अण्] हाथी।

जल-कांक्षी (क्षिन्)—पुं० [जल√कांक्ष्+णिनि] हाथी।

जल-काँच—पुं० [सं० जल+हिं० काँच] १. काँच का वह बड़ा पात्र जिसमें इसलिए जल भरकर रखते हैं कि उसमें मछलियाँ, वनस्पतियाँ आदि रह सकें। २. एक प्रकार का यंत्र जो ऐसी बालटी के रूप में होता है जिसके पेंदे में शीशा लगा रहता है और जिसकी सहायता से जल के अंदर की चीजें देखी जाती हैं। (वाटर ग्लास)

जल-कांत—पुं० [ष० त०] १. वायु। २. वरुण।

जल-कांतार—पुं० [ब० स०] वरुण।

जल-काक—पुं० [स० त०] जल-कौआ नामक पक्षी।

जल-कामुक—पुं० [ष० त०] कुटुंबिनी नामक वृक्ष।

जलकिनार—पुं० [हिं० जल+किनारा] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

जल-किराट—पुं० [जल–किर स० त०,√अट् (गति) +अच्] ग्राह। घड़ियाल।

जल-कुंतल—पुं० [ष० त०] सेवार।

जलकुंभी—स्त्री० [हिं० जल+कुंभी] कुंभी।

जल-कुक्कुट—पुं० [स० त०] मुरगाबी नामक पक्षी।

जल-कुक्कुभ—पुं० [स० त०] एक जल-पक्षी।

जल-कुब्जक—पुं० [जल-कुब्ज स० त०, √कै (प्रतीत होना)+क] १. सेवार। २. काई।

जल-कूपी—स्त्री० [ष० त०] १. तालाब। २. भँवर।

जल-कूर्म—पुं० [स० त०] सूँस नामक जल-जंतु।

जल-केतु—पुं० [ष० त०] एक पुच्छल तारे का नाम।

जल-केलि—स्त्री० [स० त०] जलाशय में नहाते या तैरते समय की जानेवाली क्रीड़ाएँ।

जल-केश—पुं० [ष० त०] सेवार।

जलकौआ—पुं० [हिं० जल+कौआ] काले रंग का एक प्रसिद्ध जल-पक्षी जिसकी गर्दन सफेद और चोंच भूरे रंग की होती है।

जल-क्रिया—स्त्री० [मध्य० स०] तर्पण।

जल-क्रीड़ा—स्त्री० [स० त०] जलाशय में नहाते समय की जानेवाली क्रीड़ा। जल-विहार।

जल-खग—पुं० [ष० त०] जलाशयों के किनारे रहनेवाला एक पंक्षी।

जलखर—पुं० [हिं० जाल] [स्त्री० अल्पा० जलखरी] धागों या रस्सियों की बनी हुई वह बड़ी जाली जिसमें फल आदि रखकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाये जाते हैं।

जलखावा†—पुं० [सं० जल+हिं० खाना] जलपान। कलेवा।

जल-गर्द—पुं० [स० त०] जल में रहनेवाला साँप। डेढ़हा।

जल-गर्भ—पुं० [मध्य० स०] बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य आनंद का पूर्व जन्म का नाम।

वि० [ब० स०] जिसके गर्भ में जल हो। पानी बरसानेवाला (बादल)।

जलग्रभ*—वि०=जल-गर्भ।

जलगुल्म—पुं० [ष० त०] १. पानी में का भँवर। २. कछुआ। ३. ऐसा प्रदेश जिसमें जल की कमी हो।

जल-घड़ी—स्त्री० [सं० जल+हिं० घड़ी] समय का बोध करानेवाला एक प्राचीन यंत्र।

विशेष—एक विशेष प्रकार की कटोरी को जिस में एक छोटा-सा छेद

होता था, पानी से भरी हुई नाँद में छोड़ा जाता है और इसमें भरे जानेवाले जल के परिमाण से समय का ज्ञान होता था।

जलघुमर†—पुं० [हिं० जल+घूमना] पानी का भँवर। जलावर्त्त। चक्कर।

जल-चत्वर—पुं० [तृ० त०] वह भू-भाग जहाँ जल की कमी हो।

जल-चर—पुं० [जल√चर् (चलना)+ट] जल में रहनेवाले जीव-जंतु।

जलचरी—स्त्री० [जलचर+ङीप्] मछली।

जल-चादर—स्त्री० [सं० जल+हिं० चादर] ऊँचे स्थान से चादर के रूप में गिरनेवाला जल का चौड़ा प्रवाह। झरना।

जल-चारी (रिन्)—पुं० [जल√चर् +णिनि] जल में रहनेवाला जीव।

जल-चिह्न—पुं० [ष० त०] १. एक जल-जंतु। कुंभीर। नाक। २. वह चिह्न या रेखा जो यह सूचित करने के लिए बनाई जाती है कि नदी की बाढ़ आदि का पानी कब कितना ऊँचा पहुँचता या पहुँचा था। ३. कागज बनाने के समय एक विशिष्ट प्रक्रिया से बनाया जानेवाला वह चिह्न जो उसकी किसी विशिष्टता का सूचक होता है और जो कागज को केवल प्रकाश के सामने रखने पर दिखाई देता है। (वाटर मार्क)

जलचौलाई†—स्त्री०=चौलाई।

जल-जन्तु—पुं० [ष० त०] जल में रहनेवाले जीव या प्राणी।

जलजन्तुका—स्त्री० [सं० जलजंतु+कन्—टाप्] जोंक।

जलजंबुका—स्त्री० [सं० जल—जंबु मध्य० स०,+कन्—टाप्] जलजामुन नामक पेड़ और उसका फल।

जलज—वि० [सं० जल√जन् (उत्पत्ति) +ड] जल में से उत्पन्न होनेवाला।

पुं० १. कमल। २. जल-जंतु। ३. मोती। ४. शंख।

जल-जन्य—पुं० [तृ० त०] कमल।

जलजला—पुं० [अ० ज़ल ज़लः] भूकंप। भूडोल।

जल-जात—वि० [स० त०] जो जल में उत्पन्न हो। जलज।

पुं० कमल।

जलजामुन—पुं० [सं० जल+हिं० जामुन] १. नदियों के किनारे होनेवाला एक प्रकार का जंगली जामुन का वृक्ष। २. उक्त पेड़ का फल।

जलजासन—पुं० [जलज—आसन ब० स०] वह जिसका आसन कमल हो अर्थात् ब्रह्मा।

जल-जिह्व—पुं० [ब० स०] घड़ियाल।

जल-जीवी (विन्)—पुं० [जल√जीव् (जीना)+णिनि] मछुआ।

जल-डमरूमध्य—पुं० [सं०] भूगोल में जल की वह पतली जलधारा जो दो बड़े समुद्रों को मिलाती हो।

जल-डिब—पुं० [स० त०] घोंघा।

जलण*—स्त्री० [सं० ज्वलन] अग्नि।

जल-तरंग—पुं० [ष० त०] १. जल से भरी हुई कटोरियों का वर्ग या समूह जिस पर अलग-अलग आघात कर के सातों स्वर निकाले जाते हैं। २. उक्त कटोरियों पर आघात करने से होनेवाली ध्वनि या शब्द।

जल-तरोई—स्त्री० [हिं० जल+तरोई] मछली। (व्यंग्य और हास्य)

जल-ताड़न—पुं० [ष० त०] जल पर आघात करने के समान व्यर्थ का काम करना।

जल-तापिक—पुं० [सं० जलतापिन्+कन्] एक प्रकार की बड़ी समुद्री मछली।

जल-तापी (पिन्)—पुं० [सं० जल√तप् (तपना) +णिनि] =जल-तापिक।

जलताल—पुं० [सं० जल+तल्—टाप्, जलता√अल् (पूरा होना) +अच्] सलई का पेड़ और उसकी लकड़ी।

जल-तिक्तिका—स्त्री० [मध्य० स०] सलई का पेड़ और उसकी लकड़ी।

जलत्रा—स्त्री० [जल√त्रा (बचाना)+क —टाप्] छाता।

जल-त्रास—पुं० [तृ० त०] जलातंक। (दे०)

जलथंभ—पुं० [सं० जलस्तंभन] १. जल की धारा को बाँधने या रोकने की क्रिया या भाव। २. दे० 'जलस्तंभ'।

जलद—वि० [जल√दा (देना) +क] जल देनेवाला।

पुं० १. बादल। २. वंशज, जो पितरों को जल देते हैं।

जलद-काल—पुं० [ष० त०] वर्षाऋतु।

जलद-क्षय—पुं० [ब० स०] शरद ऋतु।

जलदर्दुर—पुं० [उपमि० स०] एक प्रकार का पुराना बाजा।

जल-दस्यु—पुं० [मध्य० स०] [भाव० जलदस्युता] वह जो समुद्री जहाजों के यात्रियों आदि का सामान लूटता हो।

जलदागम—पुं० [सं० जलद—आगम, ब० स०] वर्षाकाल।

जल-दान—पुं० [ष० त०] तर्पण।

जलदाभ—पुं० [सं० जलद—आभा, ब० स०] वह जिसकी आभा बादल के रंग जैसी हो।

जल-दाशन—पुं० [सं० जलद—अशन, ष० त०] साखू का पेड़ और उसकी लकड़ी।

जल-दुर्ग—पुं० [मध्य० स०] वह दुर्ग जो किसी झील, नदी, समुद्र आदि से घिरा हुआ हो।

जल-देव—पुं० [ब० स०] १. पूर्वाषाढ़ा नामक नक्षत्र। २. [ष० त०] वरुण।

जल-देवता—पुं० [सं० ष० त०] वरुण।

जलदोदो—पुं० [?] जलाशयों में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके शरीर से स्पर्श होने पर खुजली उत्पन्न होती है।

जल-द्रव्य—पुं० [मध्य० स०] जल में उत्पन्न होनेवाली वस्तुएँ। जैसे—मुक्ता, शंख आदि।

जल-धर—पुं० [√धृ (धारण)+अच्—धर, जल-धर ष० त०] १. बादल। २. समुद्र। ३. जलाशय।

जलधर-केदारा—पुं० [सं० जलधर+हिं० केदारा] मेघ और केदारा के योग से बननेवाला एक संकर राग।

जलधर-माला—स्त्री० [ष० त०] १. बादलों की श्रेणी या समूह। २. बारह वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, एक भगण, एक सगण, और एक यगण होता है।

जलधरी—स्त्री० [सं० जलधर+ङीष्] धातु, पत्थर आदि का बना हुआ वह आधान जिसके बीच में शिवलिंग स्थापित किया जाता है और जो

तीन ओर से गोलाकार होता है और एक ओर से लंबोतरा। अर्घा।

जलधार—पुं० [सं० जल√धृ(रखना) +णिच्+अण्] शाक द्वीप का एक पर्वत।

स्त्री० [सं० जल+धारा] जल की धारा।

जल-धारा—स्त्री० [ष० त०] १. जल की वह राशि जो पृथ्वी पर बह रही हो। जल का प्रवाह। २. एक प्रकार की तपस्या जिसमें ध्यान-मग्न तपस्वी पर धारा के रूप में जल कुछ समय तक छोड़ा जाता है।

जलधारी (रिन्)—वि० [सं० जल√धृ +णिनि] [स्त्री०जलधारिणी] जलधारण करनेवाला।

पुं० मेघ। बादल।

जलधि—पुं० [सं० जल√धा +कि] १. समुद्र। २. दस शंख की सूचक संख्या की संज्ञा। ३. महापद्म।

जलधिगा—स्त्री०[सं० जलधि√गम् (जाना) +ड—टाप्] १. लक्ष्मी। २. नदी।

जलधिज—पुं० [सं० जलधि√जन् (उत्पत्ति)+ड] चंद्रमा।

जल-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] एक कल्पित गाय। (पुराण)

जलन—स्त्री० [हिं० जलना] १. जलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. शरीर के किसी अंग के जलने पर उसमें होनेवाली कष्टकारक चुन-चुनाहट या पीड़ा। ३. शरीर में अथवा उसके किसी अंग में किसी प्रकार का रोग या विकार होने के कारण होनेवाली कष्टकारक चुन-चुनाहट। जैसे—खुजली के कारण शरीर में जलन होना। ४. किसी की उन्नति, वैभव, सुख आदि देखकर ईर्ष्या और द्वेष के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट।

जलनकुल—पुं० [सं० स० त०] ऊदबिलाव।

जलना—अ० [सं० ज्वलन] १. आग का संयोग या संपर्क होने पर किसी वस्तु का ऐसी स्थिति में होना कि उसमें से (क) लपट (जैसे—कोयला जलना) (ख) प्रकाश (जैसे—दीया जलना) (ग) ताप (जैसे—कड़ाही या तावा जलना) (घ) धूआँ (जैसे—गीली लकड़ी जलने पर) आदि उत्पन्न होने या निकलने लगे।

विशेष—प्रयोग की दृष्टि से 'जलना' का क्षेत्र बहुत व्यापक है। हमारे यहाँ स्वयं आग भी जलती है, आग की भट्ठी या चूल्हा भी जलता है, भट्ठी या चूल्हे में का ईंधन भी जलता है, इस ईंधन पर पकाई जानेवाली वस्तु भी जलती है और स्वयं वह पात्र भी जलता है जिसमें कोई चीज पकाई जाती है। इसी प्रकार दीया भी जलता है, उसमें का तेल भी जलता है और उसमें की वत्ती भी जलती है।

पद—जलती आग=भयावह या संकट-पूर्ण वातावरण या स्थिति।

मुहा०—जलती आग में कूदना=जान-बूझकर अपनी जान जोखिम में या विशेष संकट की स्थिति में डालना।

२. उक्त के आधार पर किसी वस्तु का आग से संयोग या संपर्क होने पर जलकर भस्म हो जाना। जैसे—घर या शव जलना। ३. किसी विशिष्ट प्रक्रिया से किसी वस्तु के साथ अग्नि का ऐसा संयोग होना कि उस वस्तु को कोई दूसरा या नया रूप प्राप्त हो। ४. शरीर के किसी अंग का अग्नि या ताप के कारण विकृत अवस्था को प्राप्त होना। जैसे—(क) रोटी पकाते समय तवे से हाथ जलना। (ख) गरम बालू पर चलते समय पैर जलना। (ग) गरम दूध पीने से मुँह जलना।

मुहा०—जले पर नमक छिड़कना=ऐसा काम करना जिससे दुखिया का दुःख और अधिक बढ़े।

५. पेड़-पौधों के संबंध में, अधिक ताप के प्रभाव के कारण मुरझा या सूख जाना। जैसे—इस भीषण गरमी में खेत के खेत जल गये हैं। ६. (आंतरिक ताप) के कारण शरीर का बहुत अधिक तप जाना। जैसे—ज्वर के कारण शरीर जलना। ७. किसी प्रकार की भौतिक या रासायनिक प्रक्रिया के कारण किसी वस्तु के विशिष्ट गुणों का नष्ट होना। जैसे—(क) बिजली का तार जलना। (ख) तेजाब की बूँद पड़ने पर कपड़ा जलना। ८. लाक्षणिक अर्थ में, ईर्ष्या, क्रोध, राग-द्वेष आदि के कारण बहुत अधिक उत्तप्त होना।

मुहा०—जली कटी सुनाना=ईर्ष्या या क्रोध आदि के कारण बहुत सी कटु बातें कहना। **जल मरना**=ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण बहुत अधिक दुःखी होना।

जल-नाथ—पुं० [ष० त०] १. इंद्र। २. वरुण। ३. समुद्र।

जल-निधि—पुं० [ष० त०] १. समुद्र। २. चार की संख्या की सूचक संज्ञा।

जल-निवास—पुं० [स० त०] वह झोंपड़ी या छोटा मकान जो कुछ देशों के जंगली लोग बड़ी झील के छिछले भाग में खंभों पर अपने रहने के लिए बनाते हैं। (लेक ड्वेलिंग)

जलनीम—स्त्री० [सं० जल निंब] जलाशयों की दलदली भूमि में उपजनेवाली एक प्रकार की लोनिया।

जलनीलिका—स्त्री० [सं०जलनीली+कन्—टाप्, ह्रस्व] सेवार।

जलनीली—स्त्री०[सं० जल√निल्(नीला करना)+णिच्+अण्—ङीष्] सेवार।

जलपक*—वि०=जल्पक।

जल-पक्षी (क्षिन्)—पुं०[मध्य०स०]वे पक्षी जो जलाशयों के समीप रहते तथा उनमें की मछलियाँ पकड़कर खाते हैं।

जल-पति—पुं० [ष० त०] १. वरुण। २. समुद्र। ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

जल-पथ—पुं० [ष० त०] १. दे० 'जलमार्ग'। २. नहर।

जलपना†—अ० [सं० जल्पन] १. निरर्थक या व्यर्थ की बातें कहना। बकना। उदा०—धाए बुद्धि विरुद्ध क्रुद्ध जलपत दुर्भाषा।—रत्ना०। २. लंबी चौड़ी हाँकना। डींग मारना।

जल-परी—स्त्री०[सं० जल+फा० परी] एक कल्पित जल-जंतु जिसका कमर से ऊपरी भाग स्त्रियों का-सा और नीचे का भाग मछलियों का-सा माना जाता है। (मर्मेड)

जलपाई—स्त्री०[देश०] रुद्राक्ष की जाति का एक पेड़ और उसका फल।

जलपाटल—पुं०[सं० जल और पटल] काजल।

जल-पान—पुं०[सं० जल और पान] भोजन से पहले या बाद में (प्रायः प्रातःकाल और सायंकाल) किया जानेवाला हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जल-पारावत—पुं० [स०त०] जलाशयों के किनारे रहनेवाली जल-कपोत नामक चिड़िया।

जल-पिंड—पुं०[ष० त०] अग्नि] आग।

जल-पिप्पलिका—स्त्री० [मध्य स०] जलपीपल।

जल-पिप्पली—स्त्री०[मध्य० स०] जलपीपल नामक ओषधि।

जल-पिप्पिका—स्त्री०[ष० त०] मछली।

जल-पीपल—स्त्री०[सं० जलपिप्पली] १. पीपल की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़ जो खड़े या स्थिर पानी में होता है। २. उक्त पेड़ की फली जो पाचक होती है और ओषधि के काम आती है।

जल-पुष्प—पुं०[मध्य० स०] १. जलाशयों में उत्पन्न होनेवाले फूलों की संज्ञा। २. लज्जावंती की जाति का एक पौधा जो प्रायः दलदलों में होता है।

जल-पृष्ठ-जा—स्त्री०[सं०जल-पृष्ठ ष० त०, √जन्(उत्पत्ति)+ड–टाप्] सेवार।

जल-प्रदान—पुं०[ष० त०] जल देने विशेषतः तर्पण करते समय पितरों आदि को जल देने की क्रिया या भाव।

जल-प्रपा—पुं०[ष० त०] पौंसरा। प्याऊ।

जल-प्रपात—पुं०[ष० त०] १. पहाड़ों आदि में वहुत ऊँचाई से गिरनेवाला पानी का प्राकृतिक झरना। प्रपात। (वाटर फाल) २. वह स्थान या ऊँचा पहाड़ जहाँ पर से जल की धारा नीचे गिरती हो।

जल-प्रवाह—पुं०[ष० त०] १. कोई चीज जल में प्रवाहित करने अर्थात् वहाने की क्रिया या भाव। २. जल की धारा के किसी ओर वहने की क्रिया, गति या भाव।

जल-प्रांगण—पुं०[ष० त०] समुद्र का उतना भाग जितने पर उसके तट पर स्थित राज्य का अधिकार समझा जाता है। (टेरिटोरियल वाटर्स)
विशेष—अंतर्राष्ट्रीय विधान के अनुसार यह क्षेत्र तट से तीन मील की दूरी तक होता है। पर अब कुछ राष्ट्र इसे १२ मील तक रखना चाहते हैं।

जल-प्रांत—पुं०[ष० त०] जलाशय के आस-पास का प्रदेश।

जल-प्राय—वि० [ब० स०] (ऐसा भू-भाग) जिसमें जलाशय अर्थात् ताल, नदियाँ, नहरें आदि बहुत अधिक हों।

जल-प्रिय—पुं०[ष० स०] १. मछली। २. चातक। पपीहा।

जलप्लव—पुं०[सं० जल√प्लु(कूदना)+अच्] ऊदबिलाव।

जल-प्लावन—पुं०[ष० त०] १. ऐसी भीषण बाढ़ जिसमें चारों ओर बहुत दूर-दूर तक जल ही जल दिखाई देता हो और धरातल उक्त बाढ़ के फलस्वरूप पानी से ढक जाता हो। २. एक प्रकार का प्रलय जिसमें सब देश डूब जाते हैं। (पुराण)

जल-फल—पुं०[मध्य० स०] सिंघाड़ा।

जलबंध—पुं०[सं० जल√ बंध् (बांधना)+अच्] मछली।

जल-बंधक—वि०[ष० त०] जल को बाँधनेवाला।
पुं० बाँध।

जल-बंधु—पुं०[ब० स०] मछली।

जल-बम—पुं०[सं० जल+अं० बाम्ब] जल में छोड़ा जानेवाला एक प्रकार का रासायनिक विस्फोटक गोला जो आस-पास के जहाजों, पनडुब्बियों आदि को नष्ट कर देता है।

जलबालक—पुं०[सं० जल√बल् (जिलाना)+णिच्+ण्वुल्—अक] विंध्याचल पर्वत।

जल-बाला—स्त्री०[ष० त०] विजली। उदा०—जलवाला न समाइ जलदि।–प्रिथीराज।

जल-बालिका—स्त्री०[ष० त०] विजली। विद्युत्।

जल-बिंब—पुं०[ष० त०] पानी का वुलवुला। वुल्ला।

जल-बिडाल—पुं०[स० त०] ऊदबिलाव।

जल-बिल्व—पुं०[मध्य० स०] १. केकड़ा। २. वह प्रदेश जहाँ जल की कमी हो।

जल-बुद्बुद—पुं०[ष० त०] पानी का वुलवुला। वुल्ला।

जलबेंत—पुं०[सं० जलवेत्र] जलाशयों या दलदल में लता के रूप में उपजनेवाला एक प्रकार का बेंत का पौधा जिसके छिलकों से कुर्सियाँ आदि बुनी जाती हैं।

जल-ब्राह्मी—स्त्री०[स० त०] हुरहुर का साग।

जल-भँगरा—पुं० [सं० जल+हिं० भँगरा] जलाशयों में होनेवाला एक प्रकार का भँगरा।

जल भालू—पुं० [हिं० जल+भाल] सील की जाति का आठ-दस हाथ लंबा एक समुद्री जंतु जिसके सारे शरीर पर बड़े-बड़े बाल होते हैं।

जलभू—पुं०[सं० जल√भू (होना)+क्विप्] १. मेघ। २. एक प्रकार का कपूर । ३. जलचौलाई।।
स्त्री० जल-प्राय भूमि। कछ।

जल-भूषण—पुं०[ष० त०] वायु। हवा।

जलभृत्—पुं० [सं० जल√भृ (धारण)+क्विप्] १. वादल। मेघ। २. वह पात्र, जिसमें जल रखा जाता हो। ३. एक प्रकार का कपूर।

जल-भौंरा—पुं० [सं० जल+हिं० भौंरा] काले रंग का एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो जल के ऊपरी स्तर पर चलता, दौड़ता या तैरता रहता है। भौंतुआ।

जल-मंडल—पुं० [ब० स०] एक प्रकार की बड़ी विषैली मकड़ी जिसके स्पर्श से कभी-कभी मनुष्य मर जाता है। चिरैयाबुदकर।

जल-मंडूक—पुं०[उपमि० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का वाजा।

जलम†—पुं०=जन्म।

जल-मद्गु—पुं०[उपमि० स०] कौड़िल्ला (पक्षी)।

जल-मधूक—पुं[मध्य० स०] जल-महुआ।

जलमय—पुं०[सं० जल+मयट्] १. चंद्रमा। २. शिव की एक मूर्त्ति।

जल-मल—पुं०[ष० त०] झाग। फेन।

जल-मसि—पुं०[तृ० त०] १. बादल। मेघ। २. एक प्रकार का कपूर।

जल-महुआ—पुं०[सं० जलमधूक] जलाशयों के समीप होनेवाला एक प्रकार का महुआ (पेड़) और उसका फल।

जल-मातृका—स्त्री०[मध्य० स०] जल में रहनेवाली सात देवियों—मत्सी, कूर्मी, वाराही, दर्दुरी, मकरी, जलूका और जंतुका में से कोई एक। (पुराण)

जल-मानुष—पुं०[मध्य० स०] [स्त्री० जलमानुषी] दे० 'जल-परी'।

जल-मापक—पुं०[ष० त०] घड़ी के आकार का वह यंत्र जो जल आदि में से निकले हुए जल का मान बतलाता है। (हाइड्रो मीटर)

जल-माया—स्त्री०[ष० त०] मृग-तृष्णा।

जल-मार्ग—पुं०[ष० त०] नहर, नदी, समुद्र आदि में का वह मार्ग या

रास्ता जिससे जहाज, नावें आदि आती-जाती रहती हैं। (वाट़रवेज़)

जल-मार्जार—पुं०[ष० त०] ऊदबिलाव।

जलमुच्—पुं०[सं० जल√मुच् (छोड़ना)+क्विप्] १. बादल। मेघ। २. एक प्रकार का कपूर।

जल-मुलेठी—स्त्री० [सं० जलयष्टी] जलाशय में होनेवाली एक प्रकार की मुलेठी।

जल-मूर्ति—पुं०[ब० स०] शिव।

जलमूर्तिका—स्त्री०[सं० जल-मूर्ति ष० त०, +कन्-टाप्] ओला। करका

जलमोद—पुं०[सं० जल√मुद् (प्रसन्न होना)+ णिच्+अण्] खस।।

जल-यंत्र—पुं०[ष० त०] १. वह उपकरण जिससे कूएँ आदि से पानी ऊपर उठाकर नलों की सहायता से दूर-दूर तक पहुँचाया जाता है। २. फुहारा। ३. जलघड़ी।

जल-यात्रा—स्त्री०[मध्य० स०] १. नदी, समुद्र आदि के द्वारा होनेवाली यात्रा। २. अभिषेक आदि के समय पवित्र जल लाने के लिए कहीं जाना। ३. ज्येष्ठ की पूर्णिमा को होनेवाला वैष्णवों का एक उत्सव जिसमें विष्णु की मूर्त्ति को ठंडे जल से स्नान कराया जाता है। ४. राजपूताने में कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी को मनाया जानेवाला एक उत्सव।

जल-यान—पुं०[ष०त०] वह यान या सवारी जो जल में चलती हो। जैसे—जहाज, नाव आदि।

जल-रंक—पुं०[सं० स० त०] बगुला।

जल-रंकु—पुं०[सं० स० त०] वनमुर्गी।

जल-रंग—पुं० [मध्य० स०] १. चित्र-कला में, तैल-रंग से भिन्न वह रंग जो जल और गोंद आदि के योग से तैयार किया जाता है। (वाटर-कलर) २. उक्त प्रकार के रंगों से चित्र अंकित करने की प्रणाली। ३. उक्त प्रकार के रंगों से अंकित चित्र।

जलरंज—पुं०[सं० जल√रंज् (अनुरक्त होना)+ अच्] बगुलों की एक जाति।

जल-रंड—पुं०[ष० त०] १. भवँर। २. जलकण। ३. साँप।

जल-रस—पुं०[मध्य०] नमक।

जल-राशि—पुं०[ष० त०] १. अथाह जल। २. समुद्र। ३. ज्योतिष में, कर्क, मकर, कुंभ और मीन राशियाँ।

जल-रुद्ध—वि०[तृ० त०] १. जल से घिरा या रुँधा हुआ। २. इतना कड़ा या ठोस (पदार्थ) कि उसके छेदों में जल का प्रवेश न हो सकता हो। (वाटर टाइट)

जल-रुह—वि०[सं० जल√रुह् (उगना)+क] जल में उत्पन्न होनेवाला।

पुं० जल में उत्पन्न होनेवाली वनस्पतियों तथा उनके फल-फूलों आदि की संज्ञा। जैसे—कमल, सिवाड़ा आदि।

जल-रूप—पुं०[ब० स०] ज्योतिष में, मकर राशि।

जल-लता—स्त्री०[स० त०] तरंग। लहर।

जल-लोहित—पुं०[ब० स० ?] एक राक्षस का नाम।

जल-वर्त—पुं०[ष० त०] १. एक प्रकार के मेघ। २. जलावंत।

जल-वल्कल—पुं०[ष० त०] जलकुंभी।

जल-वल्ली—स्त्री०[मध्य० स०] सिघाड़ा।

जलवाना—स० [हिं० जलाना का प्रे० रूप] जलाने का काम किसी दूसरे से कराना।

जल-वानीर—पुं०[मध्य० स०] जलबेंत।

जल-वायस—पुं०[स० त०] कौड़िल्ला (पक्षी)।

जल-वायु—पुं०[द्व० स०] किसी प्रदेश की प्राकृतिक या वातावरणिक स्थिति जिसका विशेष प्रभाव जीवों, जंतुओं, वनस्पतियों आदि की उपज, विकास तथा स्वास्थ्य पर पड़ता है। (क्लाइमेट)

जल-वायुयान—पुं०[ष० त०] वह वायुयान जो समुद्र या बड़े जलाशयों के तल पर भी उतर सकता और फिर वहीं से उड़कर आकाश में भी जा सकता हो। (हाइड्रो प्लेन)

जल-वाष्प—पुं०[ष० त०] पानी की वह भाप जो वेग से किसी चमकीले पदार्थ पर डाल कर ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के काम में लाई जाती है। (वाटरगैस)

जल-वास—पुं०[स० त०] १. जल में वास करने अर्थात् रहने की क्रिया या भाव। २. साँस रोककर तथा पानी में डुबकी लगाकर बैठने की क्रिया या साधना। उदा०—कुशल बली है जलवास की कला में भी। मैथलीशरण। ३. [ब० स०] खस। ४. [जल√वस्] विष्णुकंद।

जलवाह—पु०[सं० जल√वह् (ढोना)+अण्] मेघ।

जलविंदुजा—स्त्री०[सं० जल-विंदु ष० त०,√जन् (उत्पत्ति)+ड—टाप्] एक प्रकार की रेचक ओषधि।

जल-विषुव—पुं०[मध्य ० स०] ज्योतिष में वह योग या स्थिति जब सूर्य कन्या राशि से तुला राशि में संक्रमण करता है।

जल-विश्लेषण—पुं०[ष० त०] जल के संयोजक तत्त्वों को अलग-अलग करने की क्रिया या भाव। (हाइड्रोलिसिस)

जल-वीर्य—पुं०[ब० स०] भरत के एक पुत्र का नाम।

जल-वृश्चिक—पुं०[स० त०] झींगा मछली।

जल-वेतस—पुं०[मध्य० स०] जलबेंत।

जल-वैकृत—पुं०[ष० त०] जलाशयों, नदियों आदि के संबंध में होनेवाली कुछ अनोखी और असाधारण बातें जो भावी दैवी उत्पात आदि की सूचक होती हैं। जैसे—नदी का अपने स्थान से हटना, जलाशयों का अचानक सूख जाना आदि आदि।

जल-व्याघ्र—पुं० [स० त०] [स्त्री० जल-व्याघ्री] सील की जाति का एक हिंसक जल-जंतु।

जल-व्याल—पुं०[मध्य० स०] पानी में रहनेवाला साँप।

जल-शयन—पुं०[ब० स०] विष्णु।

जलशायी (यिन्)—पुं० [जल√शी (शयन करना)+णिनि] विष्णु।

जलशुंडी—स्त्री०=जलस्तंभ।

जल-शूक—पुं०[स० त०] सेवार।

जल-शूकर—पुं०[ष० त०] कुंभीर नाक नामक जल-जंतु।

जल-संघात—पुं०[ष० त०] जल-राशि।

जल-संत्रास—पुं०=जलांतक।

जल-संध—पुं०[ब० स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

जल-संस्कार—पुं०[स० त०] १. स्नान करना। नहाना। २. धोना। ३. शव को नदी आदि में प्रवाहित करना।

जल-समाधि—स्त्री०[स० त०] १. जल में डूबकर प्राण देना। २. जल में डुबाया या प्रवाहित किया जाना।

जल-समुद्र—पुं०[मध्य० स०] सात समुद्रों में से अंतिम समुद्र। (पुराण)

जल-सर्पिणी—स्त्री० [स० त०] जोंक।

जलसा—पुं०[अ०] १. दे० 'उत्सव' तथा 'समारोह'। २. दे० 'अधिवेशन'।

जलसाईं—पुं०[हिं० जलाना] मुरदे जलाने का स्थान। मरघट।

जलसिंह—पुं०[स० त०] [स्त्री० जलसिंही] सील की जाति का एक प्रकार का बड़ा तथा हिंसक जल-जंतु।

जलसिरस—पुं०[सं० जलशिरीष] जलाशयों में पैदा होनेवाला एक प्रकार का सिरस का वृक्ष।

जलसीप—स्त्री०[सं० जलशुक्ति] वह सीप जिसके अंदर मोती हो।

जलसीम—स्त्री०[सं० जल+ शिंबा] जल की सेम अर्थात् मछली।

जल-सूचि—पुं० [स० त०] १. सूंस। २. बड़ा कछुआ। ३. जोंक। ४. जल में होनेवाला एक पौधा। ५. सिंघाड़ा। ६. कौआ। ७. कौआ नामक मछली।

जल-सूत—पुं०[स० त०] नहरुआ (रोग)।

जल-सेना—स्त्री०[मध्य० स०] किसी राष्ट्र की वह सेना (वायु तथा स्थल-सेना से भिन्न) जो समुद्र-तटों की शत्रुओं से रक्षा करती तथा समुद्र में पहुँचकर विपक्षियों के जहाजों से युद्ध करती है। (नेवी)

जल-सेनी—पुं०[सं०] एक प्रकार की मछली।

जल-स्तंभ—पुं० [ष० त०] एक प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय या समुद्र में आकाश से बादल झुक पड़ते हैं और जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तंभ का रूप धारण कर लेता है। सूँडी। (वाटर स्पाउट)

जल-स्तंभन—पुं० [ष० त०] मंत्रों आदि की शक्ति से जल की गति या प्रवाह रोकना या बंद करना।

जलस्या—स्त्री०[सं० जल√स्था (रहना)+क-टाप्] गंडदूर्वा।

जलहर†—वि०=जलहल।

पुं०=जलधर।

जल-हरण—पुं० [ष० त०] मुक्तक दंडक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ वर्ण होते हैं और आठ, आठ, नौ और फिर सात पर यति होती है।

जलहरी—स्त्री०=जलधरी।

जलहल†—वि०[हिं० जल] जल से भरा हुआ। जलमय।

†पुं० १=जलाशय।

२=सागर

जल-हस्ती (स्तिन्)—पुं०[स० त०] सील की जाति का एक स्तनपायी जल-जंतु।

जलहार—पुं०[सं० जल√हृ (हरण)+अण्] [स्त्री० जलहारी] पानी भरनेवाला मजदूर। पनिहारा।

जलहालम—पुं० [सं० जल+हालम ?] जलाशयों के किनारे होनेवाला एक प्रकार का हालम वृक्ष।

जल-हास—पुं०[ष० त०] समुद्र-फेन।

जल-होम—पुं[स० त०]हवन का एक प्रकार जिसमें जल में ही आहुति दी जाती है।

जलांक—पुं०[सं० जल-अंक, ष० त०] [वि० जलांकित] जल-चिह्न। (दे०)

जलांकन—पुं०[सं० जल-अंकन, ष० त०] जलांक या जल-चिह्न अंकित करने की क्रिया या भाव।

जलांचल—पुं० [सं० जल-अंचल ष० त०] पानी की नहर।

जलांजल—पुं० [सं० जल√अंज् (व्याप्त करना)+अलच्] १. सेवार। २. सोता। स्रोत।

जलांजलि—स्त्री०[सं० जल-अंजलि, मध्य० स०] १. जल से भरी अंजुली। २. तर्पण के समय पितरों आदि को दी जानेवाली जल की अंजुलि।

जलांटक—पुं०[सं० जल√अंट् (घूमना)+ण्वुल्—अक] मगर।

जलांतक—पुं० [सं० जल-अंतक व० स०, कप्] १. सात समुद्रों में से एक। २. श्री कृष्ण का एक पुत्र जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। (हरिवंश)

जलांबिका—स्त्री०[सं० जल-अंबिका ष० त०] कूआँ। कूप।

जलाऊ—वि० [हिं० जलाना+आऊ (प्रत्य०)] १. जलानेवाला। २. (वह) जो जलाया जाय या जलाये जाने को हो। जैसे—जलाऊ लकड़ी।

जलाक—स्त्री०[हिं० जलाना] १. पेट की जलन। २. तेज धूप की लपट। ३. लू।

जलाकर—पुं०[सं० जल-आकर ष० त०] वह स्थान जहाँ बहुत अधिक जल हो। जलाशय। जैसे—नदी, समुद्र आदि।

जलाकांक्ष—पुं०[सं० जल-आ√कांक्ष्, (चाहना)+अण् ब० स०] हाथी।

जलाका—स्त्री० [सं० जल-आ√का (जाहिर होना)+क–टाप्] जोंक।

जलाक्षी—स्त्री० [सं० जल√अक्ष् (व्याप्त होना)+अच्–ङीष्] जलपीपल। जलपिप्पली।

जलाखु—पुं०[सं० जल-आखु] ऊदबिलाव (जंतु)।

जलाजल†—वि०=झलाझल।

†पुं०=झलाझल।

जलाटन—पुं०[सं० जल√अट् (घूमना)+ल्यु—अन] सफेद चील।

जलाटनी—स्त्री०[सं० जलाटन+ङीप्] जोंक।

जलाटीन—पुं०=जेलाटीन।

जलांतक—पुं०[सं० जल-आतंक, पं० त०] १. जल से लगनेवाला भय। २. पागल कुत्तों, गीदड़ों आदि के काटने से होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमें मनुष्य को जल देखने भर से बहुत अधिक डर लगता है। (हाइड्रोफोबिया)

जलातन—वि०[हिं० जलना+तन] १. जिसका तन जला हो अर्थात् बहुत अधिक दुःखी या संतप्त। २. क्रोधी। ३. ईर्ष्यालु।

पुं० कष्ट देने की क्रिया या भाव। जैसे—इतना जलातन करोगे तो मैं चला जाऊँगा।

जलात्मिका—स्त्री०[सं० जल-आत्मन् ब० स०, कप्, टाप्, इत्व ब० स०] १. जोंक। २. कूआँ।

जलात्यय—पुं०[सं० जल-अत्यय, ब० स०] शरत्काल।

जलाद†—पुं०=जल्लाद।

जलाधार—पुं०[सं० जल-आधार, ष० त०] जलाशय।

जलाधिदैवत—पुं० [सं० जल-अधिदैवत, ष० त०] १. वरुण। २. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

जलाधिप—पुं०[सं० जल-अधिप, ष० त०] १. वरुण। २. ज्योतिष में, वह ग्रह जो किसी विशिष्ट संवत्सर में जल का अधिपति होता है।

जलाना—स०[हिं० जलना क्रिया का स० रूप] १. आग के संयोग से किसी चीज को जलने में प्रवृत्त करना। प्रज्वलित करना।

विशेष—कोई चीज या तो (क) ताप उत्पन्न करने के लिए जलाई जाती है, जैसे—ईंधन जलाना; या (ख) प्रकाश उत्पन्न करने के लिए; जैसे—लालटेन जलाना; अथवा (ग) नष्ट या भस्म करने के लिए; जैसे—मकान या शहर जलाना।

२. आज-कल उक्त क्रियाएँ आग के अतिरिक्त कुछ दूसरी प्रक्रियाओं से भी की जाती हैं। जैसे— बिजली की बत्ती या लट्टू जलाना। ३. ऐसा काम करना जिससे अधिक ताप लगने के कारण कोई चीज जलकर विकृत दशा को प्राप्त हो जाय। जैसे—तरकारी या रोटी जलाना। ३. किसी पदार्थ को आग पर रखकर इस प्रकार गरम करना कि उसका कुछ अंश भाप के रूप में उड़ जाय। जैसे—दूध में का पानी जलाना। ४. कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थों के संयोग से ऐसी क्रिया करना जिससे कोई तल निर्जीव या विकृत हो जाय। जैसे—क्षार या तेजाव से कपड़ा या फोड़ा-फुंसी जलाना। ५. किसी को ऐसी चुभती हुई बात कहना अथवा कोई ऐसा काम करना जिससे कोई बहुत अधिक मन ही मन दुःखी हो। ६. ऐसा काम करना जिससे किसी के मन में ईर्ष्या-जन्य कष्ट उत्पन्न हो।

जलापा—पुं० [हिं० जलना+आपा (प्रत्य०)] बराबर बहुत समय तक मन ही मन जलते रहने की अवस्था या भाव।

जलापात—पुं०[जल-आपात, ष० त०] जलप्रपात (दे०)।

जलायुका—स्त्री०[जल-आयुस्, ब० स०, कप्, पृषो० सलोप] जोंक।

जलार्क—पुं०[जल-अर्क, मध्य० स०] जल में दिखाई पड़नेवाला सूर्य का प्रतिबिंब।

जलार्णव—पुं०[जल-अर्णव, मध्य० स०] १. जल-समुद्र। २. बरसात। वर्षाकाल।

जलार्द्र—वि०[जल-आर्द्र, तृ० त०] पानी में या से भींगा हुआ। गीला।

जलार्द्रा—स्त्री०[सं० जालार्द्र+टाप्] १. गीला वस्त्र। २. भींगा पंखा।

जलाल—पुं०[अ०] १. तेज। प्रकाश। २. प्रताप। महिमा। ३. वैभव और संपन्नता।

जलाली—वि०[अ० जलाल] तेज या प्रकाश से युक्त।

जलालु—पुं०[जल-आलु, मध्य० स०] जमींकंद। सूरन।

जलालुक—पुं०[सं० जलालु√कै(जाहिर होना)+उंक] कमल की जड़। भसींड।

जलालुका—स्त्री०[सं० जल√अल् (जाना)+उंक-टाप्] जोंक।

जलाव—पुं०[हिं० जलना+आव (प्रत्य०)]१. जलने या जलाने की क्रिया या भाव। २. जलने के कारण कम होनेवाला अंश। ३. खमीर। ४. पतला शीरा।

जलावतन—वि०[अ०] [स्त्री० जलावतनी] देश या राज्य से निर्वासित।

जलावतनी—स्त्री०[अ०] देश-द्रोह आदि के अभियोग में किसी को देश छोड़कर विदेश चले जाने की दी जानेवाली आज्ञा या दंड। निर्वासन। देश निकाला।

जलावतार—पुं०[जल-अवतार, ष० त०] नाव आदि पर से उतरने का घाट।

जलावन—पुं०[हिं० जलाना] १. जलाने की वस्तुएँ। ईंधन। २. किसी वस्तु का वह अंश जो जलकर विकृत या नष्ट हो गया हो।

जलावर्त्त—पुं०[जल-आवर्त्त, ष० त०] पानी का भँवर।

जलाशय—पुं०[जल-आशय, ष० त०] १. वह स्थल (प्रायः गहरा स्थल) जिसमें जल भरा हो। जैसे—गड्ढा, झील, नदी, नहर आदि। २. खस। उशीर। ३. सिंघाड़ा। ४. लामज्जक नामक तृण।

जलाशया—स्त्री०[सं० जलाशय+टाप्] नागरमोथा।

जलाश्रय—पुं०[जल-आश्रय ब० स० १. दीर्घनाल या वृत्तगुंड नामक तृण। २. सिंघाड़ा।

जलाश्रया—स्त्री०[सं० जलाश्रय+टाप्] शूली घास।

जलाष्ठीला—स्त्री०[जल-अष्ठीला, तृ० त०] बहुत बड़ा तथा चौकोर तालाब।

जलासुका—स्त्री०[जल-असु, ब० स०, कप्-टाप्] जोंक।

जलाहल—वि० [हिं० जलाजल अथवा सं० जलस्थल] जल से भरा हुआ। जलमय। उदा०—जगत जलाहल होइ कुलाहल त्रिभुवन व्यापै।—रत्ना०।

जलाह्वय—पुं०[सं० जल-आह्वय, ब० स०] १. कमल। २. कुईं। कुमुद।

जलिका—स्त्री०[सं० जल+ठन्-इक-टाप्] जोंक।

जलिया†—पुं०[सं० जल] केवट। मल्लाह।

जलीय—वि० [सं० जल+छ–ईय] १. जल-संबंधी। जल का। जैसे—जलीय क्षेत्र। २. जल में उपजने, रहने या होनेवाला। जैसे—जलीय जंतु। ३. जिसमें जल का अंश हो।

जलीय-क्षेत्र—पुं०[कर्म० स०] दे० 'जल-प्रांगण'।

जलील—वि० [अ०] [भाव० जलाल] पूज्य या महान (व्यक्ति)। वि० [अ० ज़लील] [भाव० जिल्लत] १. जिसका अपमान हुआ हो। अपमानित। २. जो अपमानित किये जाने पर भी हठ वश वही काम करता हो। ३. तुच्छ। नीच।

जलुका—स्त्री०[सं०√जल् (तेज होना)+उक–टाप्] जोंक।

जलू—स्त्री०[सं० जलौका] जोंक।

जलूका—स्त्री०[जल-ओक, ब० स०, पृषो० सिद्धि] जोंक।

जलूस—पुं०[अ० जुलूस] १. गलियों, बाजारों, सड़कों आदि पर प्रचार, प्रदर्शन आदि के लिए निकलनेवाला व्यक्तियों का समूह।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।

२. बहुत ही ठाठ-बाट या सजावट की अवस्था या स्थान। उदा०—बैठीं जमन जलूस करि फरस फवीं सुखयान।—विक्रम सतसई।

जलूसी—वि०[अ० जुलूस] १. जलूस संबंधी। जलूस का। २. (सन या संवत्) जिसका आरंभ किसी राजा के सिंहासन पर बैठने के दिन से हुआ हो।

जलेंद्र—पुं०[जल-इंद्र, ष० त०] १. वरुण। २. महासागर।

जलेंधन—पुं०[जल-इंधन, ब० स०] बड़वाग्नि।

जलेचर—वि०[सं० जले√चर् (चलना)+ट] जलचर।

जलेच्छया—पुं० [सं० जल√इ (गति)+क्विप्, √शी (सोना)+अच्, टाप्] जलाशय में होनेवाला हाथी सूँड़ नामक पौधा।

जलेज—पुं० [सं० जले√जन् (उत्पत्ति)+ड] कमल।

जलेतन—वि० [हिं० जलना+तन] १. जिसे बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचा हो। २. ईर्ष्या, द्रोह आदि के कारण बहुत अधिक दुःखी या संतप्त। ३. क्रुद्ध।

जलेबा—पुं० [हिं० जलेबी] बड़ी जलेबी।

जलेबी—स्त्री० [देश०] १. घी में तलकर शीरे में पगाई हुई मैंदे की कुंडलाकार एक प्रसिद्ध मिठाई। २. बरियारे की जाति का एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं। ३. एक प्रकार की छोटी अतिशबाजी। †४. घेरा। लपेट।

जलेभ—पुं० [जल-इभ, मध्य० स०] जलहस्ती नामक जल-जंतु।

जलेरुहा—स्त्री० [सं० जले√रुह (उगना)+क—टाप्] सूरजमुखी नाम का पौधा और उसका फूल।

जलेला—स्त्री० [सं० जले√ला (लेना)+क—टाप्] एक मातृका जो कार्त्तिकेय की अनुचरी कही गई है।

जलेवाह—पुं० [सं० जले√वाह् (प्रयत्न)+अण्] गोताखोर। पनडुब्बा।

जलेशय—पुं० [सं० जले√शी (शयन करना)+अच्] १. मछली। २. विष्णु।

जलेश्वर—पुं० [जल-ईश्वर, ष० त०] १. वरुण। २. समुद्र।

जलोका—स्त्री० [जल-ओक ब० स०, पृषो० सिद्धि] जोंक।

जलोच्छ्वास—पुं० [जल-उच्छ्वास ष० त०] जलाशय में उठनेवाली वह बड़ी लहर जो तट की भूमि को भी स्पर्श करती है।

जलोत्सर्ग—पुं० [जल-उत्सर्ग, ष० त०] पुराणानुसार ताल, कूआँ या बावली आदि का विवाह।

जलोदर—पुं० [जल-उदर, ब० स०] एक रोग जिसमें पेट में पानी जमा होने लगता है और उसके फलस्वरूप पेट फूलने लगता है।

जलोद्धतिगति—स्त्री० [जल-उद्धति, ष० त०, जलउद्धति-गति, ब० स०] बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, सगण, जगण और सगण होता है।

जलोद्भवा—स्त्री० [जल-उद्भव, ब० स०, टाप्] १. गुंदला नाम की घास। २. छोटी ब्राह्मी।

जलोद्भूता—स्त्री० [जल-उद्भूता, स० त०] गुंदला नामक घास।

जलोन्माद—पुं० [जल-उन्माद, ब० स०] शिव का एक अनुचर।

जलोरगी—स्त्री० [जल-उरगी, स०त०] जोंक।

जलौकस—पुं० [जल-ओकस्, कर्म० स०,+अच्] जोंक।

जलौका—स्त्री० [जल-ओक, ब० स०, टाप्] जोंक।

जल्द—अव्य० [अ०] जल्दी। (दे०)

जल्दबाज—वि० [फा०] [भाव० जल्दबाजी] (किसी काम में) आवश्यकता से अधिक जल्दी करनेवाला। हर काम या बात में जल्दी मचानेवाला।

जल्दबाजी—स्त्री० [फा०] जल्दबाज होने की अवस्था या भाव। आवश्यक या उचित से अधिक जल्दी या शीघ्रता करना।

जल्दी—स्त्री० [अ०] तीव्र गति से आगे बढ़ने या कोई काम करने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—हर काम में जल्दी करना ठीक नहीं।

अव्य० १. शीघ्रता से। जैसे—जल्दी चलो। २. आनेवाले थोड़े समय में। जैसे—अभी जल्दी पानी नहीं बरसेगा। ३. सहज में। सुगमता से। जैसे—यह बात जल्दी तुम्हारी समझ में न आयगी।

जल्प—पुं० [सं०√जल्प् (कहना)+घञ्] १. कथन। २. बकवाद। प्रलाप। ३. ऐसा तर्क-वितर्क या विवाद जिसमें औचित्य, न्याय, सत्य आदि का विचार छोड़कर केवल अपनी बात ठीक सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाय। ४. सोलह पदार्थों में से एक पदार्थ। (न्याय)

जल्पक—वि० [सं०√जल्प्+ण्वुल्—अक] १. कहनेवाला। २. बकवादी। वाचाल। ३. झूठ-मूठ तर्क-वितर्क करनेवाला।

जल्पन—पुं० [सं०√जल्प्+ल्युट्—अन] १. जल्प करने की क्रिया या भाव। २. डींग।

जल्पना—अ० [सं० जल्पन] १. कहना। बोलना। २. व्यर्थ में या बे-फायदा बोलना। बकवाद करना। ३. व्यर्थ में तर्क-वितर्क करना। ४. डींग मारना।

जल्पाक—वि० [सं०√जल्प्+षाकन्]=जल्पक।

जल्पित—भू० कृ० [सं०√जल्प्+क्त] १. कहा हुआ। २ बका हुआ। ३. मनगढ़ंत और मिथ्या (बात)।

जल्ला—पुं० [सं० जल] १. झील। (लश०) २. ताल। ३. हौज। ४. वह स्थान जहाँ जल अधिक होता या ठहरता हो।

जल्लाद—पुं० [अ०] १. मुस्लिम शासन-काल में, राज्य द्वारा नियुक्त वह कर्मचारी जो दंडित अपराधी का किसी तेज धारवाले अस्त्र से सिर काटता था। २. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत बड़ा क्रूर तथा निर्दय (व्यक्ति)।

जल्वा—पुं० [अ० जल्वः] १. प्रकाश। तेज। २. शोभा। सौंदर्य।

जल्सा—पुं०=जलसा।

जल्होर†—पुं० [देश०] एक प्रकार का धान।

जव—पुं० [सं०√जु (जाना)+अप्] १. वेग। तेजी। २. जल्दी। शीघ्रता।

वि० १. [√जु+अच्] १. वेगवान्। २. जल्दी या शीघ्रता करनेवाला।

पुं०=जौ।

जवन—वि० [सं०√जु (जाना)+ल्यु—अन] [स्त्री० जवनी] तेज। वेगवान्।

पुं० [√जु+ल्युट्] वेग।

पुं०=यवन।

जवनाल—पुं०=यवनाल।

जवनिका—स्त्री०=यवनिका।

जवनिमा (मन्)—स्त्री० [सं० जवन+इमनिच्] वेग।

जवनी—स्त्री० [सं० जवन+ङीप्] १. अजवायन। २. वेग। तेजी।

स्त्री०=यवनी (यवन जाति की स्त्री)।

जवस्—पुं० [सं०√जु+असुन्] वेग।

जवस—पुं० [सं०√जु+असच्] घास।

जवाँ—वि० [फा०] जवान का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में प्राप्त होता है। जैसे—जवाँमर्द।

जवाँमर्द—पुं० [फा०] [भाव० जवाँमर्दी] १. नौजवान आदमी। २. वीर पुरुष। बहादुर।

जवांमर्दी—स्त्री० [फा०] १. जवान अर्थात् युवा होने की अवस्था या भाव। २. बहादुरी। वीरता।

जवा—स्त्री० [सं०√जु (प्राप्त होना)+अच्-टाप्] अड़हुल। जपा।

पुं० [सं० यव] १. जौ के आकार का दाना। २. लहसुन का दाना। ३. एक प्रकार की सिलाई।

जवाइन†—स्त्री०=अजवायन।

जवाई†—स्त्री०[हिं० जाना] १. जाने की क्रिया या भाव। गमन। २. वह धन जो किसी को कहीं जाने पर उपहार या पारिश्रमिक के रूप में दिया जाय।

†पुं०=जँवाई (दामाद)।

जवा-कुसुम—पुं० [मध्य० स०] अड़हुल का फूल।

जवाखार—पुं० [सं० यवक्षार] वैद्यक में जौ के क्षार से बनाया जानेवाला एक प्रकार का नमक।

जवाड़ी—स्त्री० [हिं० जौ+आड़ी (प्रत्य०)] गेहूँ में मिले हुए जौ के दाने।

जवादानी†—स्त्री० [हिं० जौ+दानी] गले में पहनने का एक प्रकार का आभूषण। चंपाकली।

जवादि—पुं० [अ० जब्वाद, ज़बाद] कस्तूरी की तरह का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गंध-मार्जार की नाभि में से निकलता है।

जवाधिक—पुं० [सं० जव-अधिक, ब० स०] वहुत तेज चलनेवाला घोड़ा।

जवान—वि० [फा०] [भाव० जवानी] १. युवा। तरुण। २. (व्यक्ति) जो तरुण अवस्था प्राप्त कर चुका हो। बचपन और प्रौढ़ता के बीच की अवस्थावाला। ३. वीर।

पद—जवान-जहान=पूर्ण यौवन प्राप्त। जैसे—जवान-जहान लड़की।

पुं० १. वीर पुरुष। २. पुलिस या सेना का सिपाही।

जवानी—स्त्री० [फा०] जवान होने की अवस्था या भाव। तरुणाई। यौवन।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—ढलना।

पद—उठती या चढ़ती जवानी=वह अवस्था जिसमें किसी का यौवन-काल आरंभ हो रहा हो।

मुहा०—उतरती या ढलती जवानी=यौवन-काल समाप्त होने का समय।

स्त्री० [सं०] अजवायन।

जवाब—पुं० [अ०] [वि० जवाबी] १. वह बात जो किसी के प्रश्न, अभियोग, तर्क आदि के संबंध में उसके समाधान के लिए कही जाय। उत्तर। जैसे—पत्र का जवाब दिया गया है।

मुहा०—जवाब तलब करना=अधिकारपूर्वक किसी से उसके अनुचित या अवैधानिक आचरण या व्यवहार का कारण पूछना।

२. ऐसा कार्य जो बदला चुकाने के लिए किया जाय। जैसे—उन्होंने थप्पड़ का जवाब मुक्के से या ईंट का जवाब पत्थर से दिया है। ३. किसी वस्तु के जोड़ की कोई दूसरी वस्तु। जैसे—(क) ताजमहल का जवाब देनेवाली रचना संसार में नहीं है। (ख) वह ऐसा लुच्चा है जिसका जवाब नहीं। (ग) यह कंगूरा उस कंगूरे का जवाब है। ४. नहिक या नकारात्मक आदेश या उत्तर। जैसे—उन्हें नौकरी से जवाब मिल गया है।

जवाबदारी—स्त्री०=जवाबदेही।

जवाबदावा—पुं० [अ०] वह लिखित पत्र जो वादी के अभियोग या कथन के उत्तर में प्रतिवादी की ओर से न्यायालय में उपस्थित किया जाता है।

जवाबदेह—वि० [फा०] (व्यक्ति) जिस पर किसी कार्य का पूरा उत्तर-दायित्त्व हो। दायी।

जवाबदेही—स्त्री० [फा०] जवाबदेह होने की अवस्था या भाव। उत्तर-दायित्त्व।

जवाब सवाल—पुं० [अ० जवाब+सवाल] १. किसी द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों का दिया जानेवाला उत्तर। प्रश्न और उत्तर। २. वाद-विवाद।

जवाबी—वि० [फा० जवाब] १. जवाब संबंधी। २. जिसका जवाब दिया जाने को हो। ३. जो किसी के जवाब के रूप में हो। जैसे—जवाबी कंगूरा।

जवार—पुं० [अ०] १. आस-पास का स्थान। २. पड़ोस। ३. मार्ग। रास्ता।

*पुं०=जवाल।

†स्त्री०=ज्वार।

जवारा—पुं० [हिं० जौ] १. जौ के नये निकले हुए अंकुर। २. नवरात्र की नवमी को होनेवाला एक उत्सव जिसमें लोग दल बाँधकर जौ के अंकुर प्रवाह करने के लिए निकलते हैं।

जवारी—स्त्री० [हिं० जव] १. एक प्रकार की माला जिसमें जौ, छुहारे, तालमखाने के बीज आदि गूँथे जाते हैं। २. ऊन या रेशम का वह धागा जो तंबूरे के तार के नीचे उस अंश पर लपेटा जाता है जो घोड़ी पर रहता है।

पद—जवारीदार गला=संगीत में ऐसा गला जिससे गाने के समय उसी के साथ कंप या छाया के रूप में उस स्वर की बहुत महीन या हलकी रेखा भी सुनाई पड़ती है।

३. जवारा।

जवाल—पुं० [अ० ज़वाल] १. अवनति। उतार। ह्रास। २. आफत। झंझट।

मुहा०—जवाल में डालना=संकट में फँसाना। **जवाल में पड़ना**=आफत या संकट में पड़ना।

जवाशीर—पुं० [फा० गावशीर] एक प्रकार का गंधा बिरोजा।

जवास (ा)—पुं० [सं० यवासक, प्रा० यवासअ] एक प्रकार का कँटीला क्षुप जिसके कई अंग औषध के रूप में काम आते हैं।

जवाह†—पुं० [?] प्रवाल नामक रोग।

जवाहड़—स्त्री० [हिं० जवा=दाना+हड़] एक प्रकार की छोटी हड़।

जवाहर—पुं० [अ० जौहर का बहु० रूप] रत्न। मणि।

जवाहर खाना—पुं० [अ० जवाहर+फा० खानः] वह स्थान जहाँ पर जवाहर अर्थात् रत्न आदि रखे जायँ।

जवाहरात—पुं० [अ० जवाहर का बहुवचन रूप] अनेक प्रकार की मणियों या रत्नों का संग्रह या समूह।

जवाहिर—पुं०=जवाहर।

जवाहिरात—पुं०=जवाहरात।

जवाही—वि० [हिं० जवाह] जवाह अर्थात् प्रवाल रोग से पीड़ित।

जवी (जविन्)—वि॰ [सं॰ जव+इनि] वेगवान्। तेज।
पुं॰ १. घोड़ा। २. ऊँट।

जवीय (स्)—वि॰ [सं॰ जव+ईयसुन्] बहुत तेज। वेगवान्।

जवैया†—वि॰ [हिं॰ जाना+ऐया (प्रत्य॰)] प्रस्थान करने या रवाना होनेवाला। जानेवाला। उदा॰—बरसत में कोऊ घर सों न निकसत तुमही अनोखे बिदेस जवैया।—कोई कवि।

जशन—पुं॰ [फा॰ मि॰ सं॰ यजन] १. बहुत धूमधाम से मनाया जानेवाला कोई धार्मिक या सामाजिक उत्सव। आनन्दोत्सव। जलसा। २. बड़ी महफिलों के अन्त में होनेवाला वह नृत्य जिसमें सब नर्त्तकियाँ या वेश्याएँ एक साथ मिलकर नाचती और गाती हों।

जष्ट*—स्त्री॰=यष्टि।

जस—वि॰=जैसा।
पद—जस का तस=ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। उदा॰—जस दूलहा तस बनी बराता।—तुलसी।
क्रि॰ वि॰=जैसे।
†पुं॰=यश।

जसद—पुं॰ [सं॰ जस√दा (देना)+क] जस्ता।

जसन†—पुं॰=जशन।

जसवै*—स्त्री॰=यशोदा।

जसामत—स्त्री॰ [अ॰ जिस्म का भाव॰ रूप] शारीरिक स्थूलता। मोटापा।

जसीम—वि॰ [अ॰ जिस्म का वि॰] स्थूल आकारवाला। भारी भरकम।

जसु—पु॰ [सं॰√जस् (छोड़ना आदि)+उ] १. अस्त्र। हथियार। २. अशक्तता। ३. थकावट।
†पुं॰=जस (यश)।
†सर्व॰ [सं॰ यस्य प्रा॰ जस्स] जिसका।
*स्त्री॰=यशोदा।

जसुरि—पुं॰ [सं॰√जस्+उरिन्] वज्र।

जसूंद—पुं॰ [देश॰] एक वृक्ष जिसके रेशों को बटकर रस्से बनाये जाते हैं। नताउल।

जसोदा†—स्त्री॰=यशोदा।

जसोमति—स्त्री॰=यशोदा।

जसोवा*—स्त्री॰=यशोदा।

जसोवै—स्त्री॰=यशोदा।

जस्त—पुं॰=जस्ता (धातु)।
स्त्री॰ [फा॰] छलाँग। चौकड़ी।

जस्तई—वि॰ [हिं॰ जस्ता] १. जस्ते का बना हुआ। २. जस्ते के रंग का। खाकी।
पुं॰ उक्त प्रकार का रंग जो प्रायः मटमैला होता है।

जस्ता—पुं॰ [सं॰ जसद] १. कुछ मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध धातु। २. कपड़ों में, बुनावट के सूतों का इधर-उधर हट जाने के कारण दिखाई देनेवाला झीनापन।

जहँ†—अव्य॰=जहाँ।

जहँड़ना†—अ॰ [सं॰ जहन, हिं॰ जँहड़ना] १. घाटा उठाना। २. धोखे में आना। ठगा जाना। ३. निष्फल या व्यर्थ होना। उदा॰—ई जग तो जहँड़े गया, भया जोग ना भोग।—कबीर।
स॰ धोखा देना। ठगना।

जहँड़ाना—अ॰, स॰=जहँड़ना।

जहक—वि॰ [सं॰√हा (त्याग)+कन्, द्वित्वादि] त्याग करनेवाला।
स्त्री॰ [हिं॰ जहकना] जहकने की क्रिया या भाव।

जहकना†—अ॰ [हिं॰ झकना] १. चिढ़ना। २. कुढ़ना। ३. बढ़-बढ़कर बातें करना।

जहका—स्त्री॰ [सं॰ जहक-टाप्] कटास, नेवले आदि की तरह का एक जन्तु।

जहटना—स॰=जटना (ठगना)।

जहत्—पुं॰ [सं॰√हा (त्याग)+शतृ, द्वित्वादि] परित्याग।

जहत्-लक्षणा—स्त्री॰ [व॰ स॰] साहित्य में लक्षणा का एक भेद जिसमें पद या वाक्य अपना वाच्यार्थ छोड़कर सामीप्य-संबंध से किसी और अर्थ का बोध कराता है। जैसे—'हमारा घर गंगा पार है' का अर्थ होगा हमारा घर गंगा के किनारे है।

जहत्-स्वार्था—स्त्री॰ [व॰ स॰]=जहद जहल्लक्षणा।

जहतिया—पुं॰ [हिं॰ जगात+कर] वह जो कर उगाहता या वसूल करता हो। जगाती।

जहद—स्त्री॰ [अ॰] १. उद्योग। प्रयत्न। २. परिश्रम। मेहनत।

जहदजहल्लक्षणा—स्त्री॰ [सं॰ जहत्-अजहत्-लक्षणा, व॰ स॰] लक्षणा का वह भेद जिसमें वक्ता के शब्दों से निकलनेवाले कई अर्थों या आशयों में से केवल एक विशिष्ट और संबद्ध अर्थ या आशय ग्रहण किया जाता है।

जहदना—अ॰ [हिं॰ जहदा] १. कीचड़ होना। २. शिथिल होना।

जहदा—पुं॰ [?] १. कीचड़। २. दलदल।

जहद्दम—पुं॰=जहन्नुम।

जहना*†—स॰ [सं॰ जहन] १. छोड़ना। त्यागना। २. नष्ट करना।

जहन्नुम—पुं॰ [अ॰] मुसलमानों के अनुसार नरक। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा स्थान जहाँ बहुत कष्ट भुगतना पड़े।

जहन्नुमी—वि॰ [फा॰] १. नरक-संबंधी। २. नरक में जाने या वास करनेवाला। नारकीय।

जहमत—स्त्री॰ [अ॰ ज़हमत] [वि॰ जहमती] १. आपत्ति। विपत्ति। २. झंझट। बखेड़ा।
मुहा॰—जहमत उठाना=कष्ट उठाना। विपत्ति भोगना।

जहर—स्त्री॰ [फा॰ ज़ह्र] १. ऐसी वस्तु जिसका सेवन या स्पर्श करने पर जीवन के लिए घातक परिणाम होता या हो सकता हो। विष।
क्रि॰ प्र॰—खाना।—देना।—पीना।
२. लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा अप्रिय, कटु या दोषपूर्ण कार्य या बात जिससे कोई बहुत अधिक दुःखी या संतप्त होता हो।
पद—जहर का बुझाया हुआ=(क) (व्यक्ति) जो बहुत अधिक उपद्रवी तथा दुष्ट हो। (ख) (कथन या वचन) जो बहुत ही अप्रिय और कटु हो। (ग) (अस्त्रों के संबंध में) जिसे किसी विषाक्त घोल या तरल पदार्थ में इस उद्देश्य से डुबा लिया गया हो कि उससे प्रहार करने पर उस विष का प्रभाव आहत व्यक्ति के सारे शरीर में फैलकर अंत में

उसके प्राण ले ले। जैसे—बहुत-सी जंगली जातियाँ जहर में बुझाए हुए तीर चलाती हैं। **जहर की गाँठ**=दे० 'विष की गाँठ'।

मुहा०—जहर उगलना=बहुत ही कटु, चुभती या लगती हुई बातें कहना। **(कोई चीज या बात) जहर कर देना**=अत्यन्त अप्रिय या कटु अथवा प्रायः असंभव कर देना। जैसे—तुमने झगड़ा करके खाना-पीना जहर कर दिया है। **जहर का घूंट पीना**=बहुत ही अप्रिय बात सुनकर भी चुपचाप सहन कर लेना। **जहर मार करना**=अनिच्छा, अरुचि या भूख न होने पर भी जबरदस्ती खाना।

वि० १. विषाक्त। २. घातक। ३. बहुत ही कड़ुआ।

जहरगत—स्त्री० [हिं० जहर?+सं० गति] घूंघट काढ़कर नाचने का एक प्रकार।

जहरदार—वि० [फा०] जिसमें जहर हो। जहरीला। विषाक्त।

जहरबाद—पुं० [फा०] एक प्रकार का फोड़ा जिसमें उत्पन्न होनेवाले जहर के कारण मनुष्य के प्राण संकट में पड़ जाते हैं।

जहरमोहरा—पुं० [फा० जहर मुहरा] एक प्रकार का पत्थर जिसमें जहरीला तत्त्व सोख लेने फलतः जहर के प्रभाव से किसी को मुक्त करने की शक्ति होती है।

जहरी—वि० [हिं० जहर] जिसमें जहर हो। विषैला।

जहरीला—वि० [हिं० जहर+ईला (प्रत्य०)] १. जिसमें जहर भरा या मिला हो। विषैला। २. बहुत अधिक अप्रिय या कटु बातें कहनेवाला। ३. बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। ४. बहुत अधिक अप्रिय। कटु।

जहल*—स्त्री० [अ०] [भाव० जहालत] अज्ञान। मूर्खता।

स्त्री० [?] ताप।

जहल्लक्षणा—स्त्री० [सं० जहत्-लक्षणा, ब० स०]=जहदजहल्लक्षणा।

जहाँ—अव्य० [सं० यत्र, पा० यत्थ, प्रा० जह] जिस स्थान पर। जिस जगह। जैसे—जहाँ गये वहीं के हो गये।

पद—जहाँ का तहाँ=जिस स्थान पर कोई चीज है या थी उसी स्थान पर। जैसे—गिलास जहाँ का तहाँ रख देना। **जहाँ-तहाँ**=इधर-उधर। किसी जगह। जैसे—उनके दूत जहाँ-तहाँ फैले हुए थे।

पुं० [फा० जहान] लोक। संसार।

जहाँगीर—वि० [फा०] [भाव० जहाँगीरी] संसार को अपने अधिकार में रखनेवाला।

जहाँगीरी—स्त्री० [फा०] हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक गहना जिसके आगे पाँचों उँगलियों में पहनने के लिए पाँच अँगूठियाँ लगी रहती हैं।

जहाँदीद (ा)—वि० [फा०] जिसने संसार को देखा-परखा हो। अनुभवी।

जहाँपनाह—वि० [फा०] संसार की रक्षा करनेवाला।

पुं० १. ईश्वर। २. राजा।

जहा—स्त्री० [सं०] गोरखमुंडी।

जहाज—पुं० [अ० जहाज़] १. समुद्रों में चलनेवाली बहुत बड़ी नाव।

पद—जहाज का पंछी=ऐसा व्यक्ति जिसका आधार या आश्रय एक ही व्यक्ति या स्थान हो। एक को छोड़कर जिसका और कहीं ठिकाना न लगे।

२. दे० 'जलयान'। ३. दे० 'वायुयान'।

विशेष—जो पक्षी कहीं से जहाज़ पर आ बैठता है, वह जहाज के बीच समुद्र में पहुँच जाने पर इधर-उधर कहीं आश्रय नहीं पाता और चारों ओर से घूम-फिर कर उसी जहाज पर आ बैठने के लिए विवश होता है। इसी आधार पर यह पद बना है।

जहाजी—वि० [अ०] १. जहाज या जहाजों पर बनने, रहने या होनेवाला।

पद—जहाजी कौआ=(क) जहाज के अन्तर्गत जहाज का पंछी। (ख) बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त।

२. जहाज के कर्मचारियों से संबंध रखनेवाला।

पुं० १. जहाज का कर्मचारी। खलासी। २. जहाज पर यात्रा करनेवाला व्यक्ति।

स्त्री० पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

जहाजी सुपारी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की सुपारी जो साधारण सुपारी से कुछ बड़ी होती है।

जहाद—पुं० [अ० जिहाद] धर्म की सुरक्षा अथवा अपने सहधर्मियों के लिए किया जानेवाला युद्ध। (मुसलमान)

जहादी—वि० [हिं० जहाद] जहाद-संबंधी। जहाद का।

पुं० वह व्यक्ति जो जहाद में सम्मिलित होता हो।

जहान—पुं० [फा०] जगत। लोक। संसार।

जहानक—पुं० [सं० √हा (त्याग)+शानच्, द्वित्वादि+कन्] प्रलय।

जहालत—स्त्री० [अ०] १. अज्ञान। २. मर्खता।

जहिया*—वि० [सं० यद्+हिं० हिया] १. जिस समय। जब। २. जिस दिन।

जहीं†—क्रि० वि० [सं० यत्र, पा० यत्थ] [हिं० जहाँ+ही (प्रत्य०)] जिस स्थान पर ही। जहाँ ही।

विशेष—तहीं और वहीं इसके नित्य संबंधी हैं। जैसे—जहीं देखो तहीं या वहीं लोग यही चर्चा कर रहे थे।

†अव्य० ज्यों ही।

जहीन—वि० [अ० ज़हीन] १. हर बात को जल्दी सीख या समझ लेनेवाला। २. समझदार। बुद्धिमान्।

जहु—पुं० [सं० √हा+उण्, द्वित्वादि] संतान।

जहूर—पुं० [अ० ज़हूर] जाहिर अर्थात् प्रकट करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। प्रकाश में आना या होना।

जहूरा†—पुं० [अ० ज़हूर] १. प्रताप। २. अभिव्यक्ति। ३. दृश्य। ४. ठाठ-बाट।

जहेज—पुं०=दहेज।

जह्नु—पुं० [सं० √हा (छोड़ना)+नु, द्वित्वादि] १. विष्णु। २. एक ऋषि जिन्होंने गंगा नदी का पान कर लिया था और फिर राजा भगीरथ के प्रार्थना करने पर उसे कान के रास्ते से बाहर निकाल दिया था।

जह्नु-तनया—स्त्री० [ष० त०] गंगा नदी।

जह्नु-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] गंगा नदी।

जह्नु-सप्तमी—स्त्री [ष० त०] दे० 'गंगा सप्तमी'।

जह्नु-सुता—स्त्री० [ष० त०] गंगा।

जह्र—पुं० [फा० ज़ह्र] जहर।

जाँ—अव्य० [सं० यत्र] जहाँ। उदा—जो वै जाँ गृहि गृहि जगन जागवै। —प्रिथीराज।

स्त्री०=जान।

वि० [फा० जा] उचित। वाजिब।

जाँउन†—पुं०=जामुन।

जाँग—पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

†स्त्री०=जाँघ।

जाँगड़ा—पुं० [देश०] प्राचीन काल में राजाओं का यश गानेवाला। भाट या वंदी।

जाँगर—पुं० [हिं० जान या जाँघ] १. देह। शरीर।

क्रि० प्र०—चलना।

२. शरीर का बल विशेषतः कोई काम करते समय उसमें लगनेवाला बल। पौरुष।

पद—जाँगरचोर। (दे०)

पुं० [देश०] ऐसा डंठल जिसमें से अन्न झाड़ या निकाल लिया गया हो। उदा०—तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौज संपदा अकेलि चाकि राखी रासि जाँगर जहान भो।—तुलसी।

जाँगरचोर—पुं० [हिं० जाँगर+चोर] वह व्यक्ति जो आलस्य आदि के कारण जान-बूझकर अपनी पूरी शक्ति किसी काम में न लगाता हो।

जाँगरा*—पुं०=जाँगड़ा (भाट)।

जांगल—पुं० [सं० जंगल+अण्] १. ऐसा ऊसर तथा निर्जन प्रदेश जिसमें वर्षा कम होने तथा गरमी अधिक पड़ने के कारण वनस्पतियाँ, वृक्ष आदि बहुत थोड़े हों। २. उक्त प्रदेश में रहने तथा होनेवाला जीव या वस्तु। जैसे—जल, लकड़ी, हिरन आदि। ३. हिरन आदि पशुओं का मांस। ४. तीतर।

वि० १. जंगल-संबंधी। २. जंगली या वन्य अर्थात् जो पालतू न हो।

जांगलि—पुं० [सं० जंगल+इञ्] जांगलिक।

जांगलिक—वि० [सं० जंगल+ठक्–इक] १. जंगल-संबंधी। २. जंगली।

पुं० [जांगली+ठन्–इक] १. साँप पकड़नेवाला व्यक्ति। २. साँप के काट खाने पर चढ़नेवाले विष उतारने या दूर करनेवाला। गारुड़ी।

जांगली—स्त्री० [सं० जांगल+ङीप्] केवाँच। कौंछ।

जाँगलू—वि० [सं० जांगल] १. जंगल संबंधीं। २. जंगली। ३. अशिष्ट और असभ्य। उजड्ड।

जाँगी—पुं० [?] नगाड़ा।

जांगुल—पुं० [सं० जंगुल+अण्] १. तोरी नामक पौधा और उसकी फली। २. विष।

जांगुलि (क)—वि०, पुं० [सं० जंगुल+इञ्]=जांगलिक।

जांगुली—स्त्री० [सं० जांगुल+ङीप्] वह विद्या या मंत्र-शक्ति जिसके द्वारा विष के प्रभाव को दूर किया जाता है।

जाँघ—स्त्री० [सं० जंघा=पिंडली] मनुष्यों और चौपायों के घुटने और कमर के बीच का अंग।

मुहा०—(अपनी) जाँघ उघाड़ना या नंगी करना=अपनी बदनामी या कलंक की बात स्वयं करना। उदा०—करियै कहा लाज मरियै जब अपनी जाँघ उघारी।—सूर।

पद—जाँघ का कीड़ा=बहुत ही तुच्छ और हीन व्यक्ति।

जाँघा—पुं० [देश०] १. हल। (पूरब) २. कूएँ पर बना हुआ गड़ारी रखने का खंभा। ३. वह धुरा जिसमें उक्त गड़ारी पहनाई जाती है।

जांघिक—वि० [सं० जंघा+ठन्–इक] १. जांघ-संबंधी। २. बहुत तेज चलनेवाला।

पुं० १. ऐसा जीव जो बहुत तेज चलता हो। जैसे—ऊँट, हिरन, हरकारा आदि। २. मृगों की एक जाति। श्रीकारी जाति के मृग।

जाँघिया—पुं० [हिं० जाँघ+इया (प्रत्य०)] १. कमर में पहना जानेवाला एक प्रकार का सिला हुआ छोटा पहनावा जिससे दोनों चूतड़ और जाँघें ढकी जाती हैं। २. मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

जाँघिल—वि० [सं० जंघा+इलच्] बहुत तेज दौड़नेवाला।

वि० [हिं० जाँघ] चलने में जिसका पैर कुछ लचकता हो। (पशु)

स्त्री० [देश०] खाकी या मटमैले रंग की एक शिकारी चिड़िया।

जाँच—स्त्री० [हिं० जाँचना] १. जाँचने की क्रिया या भाव। (क) वस्तु के संबंध में, उसकी शुद्धता या उसमें के शुद्ध अंश का किसी प्रक्रिया से पता लगाना। (ख) बात के संबंध में, उसकी सत्यता का पता लगाना। (ग) घटना आदि के संबंध में, उसके घटित होने के कारण का पता लगाना। (घ) कार्य के औचित्य या अनौचित्य का पता लगाना। (ङ) व्यक्ति के संबंध में, उसकी कार्य कुशलता, योग्यता, स्थिति आदि का पता लगाना। २. अनुसंधान या छान-बीन करने का काम। ३. पूछ-ताछ।

जाँचक* —पुं० दे० 'याचक'।

वि० [हिं० जाँचना] जाँचनेवाला।

*वि०=याचक।

जाँचकता—स्त्री० [हिं० जाँचक+ता (प्रत्य०)] जाँचक होने की अवस्था या भाव।

जाँचना—स० [सं० याचन] १. किसी प्रक्रिया, प्रयोग आदि द्वारा (क) किसी वस्तु की प्रामाणिकता, शुद्धता आदि का पता लगाना, जैसे—घी, तेल या दूध जाँचना। (ख) किसी मिश्रण के संयोजक तत्त्वों अथवा उसमें मिली हुई अन्य वस्तुओं का पता लगाना। जैसे—खून, थूक या पेशाब जाँचना। २. किसी बात, सिद्धांत आदि की उपयुक्तता, सत्यता का पता लगाना। जैसे—कवित्त की परिभाषा जाँचना। ३. घटना आदि के घटित होने के कारणों का पता लगाना। ४. किसी कृत्य या क्रिया के औचित्य, अनौचित्य अथवा ठीक होने या न होने का पता लगाना। जैसे—हिसाब जाँचना। ५. किसी की शारीरिक या मानसिक कार्य-कुशलता, योग्यता, समर्थता, स्थिति आदि का पता लगाना। जैसे—(क) डाक्टर का रोगी को जाँचना। (ख) सेना में भरती करने से पहले रंग-रूटों को जाँचना। ६. अनुसंधान या छान-बीन करना। ७. पूछ-ताछ करना। ८. याचना करना। माँगना।

*स० [सं० यातना] १. यातना या कष्ट देना। २. नष्ट करना। उदा०—ह्वै गई छान छपाकर की छवि जामिनि जोन्ह मनौं जम जाँची।—देव।

जाँजरा*—वि० [सं० जर्ज्जर] जीर्ण-शीर्ण। जर्जर।

जाँझ (ा)—पुं० [सं० झंझा] वह गहरी वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी चल रही हो।

जाँट—पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़। रोया।

जाँत—पुं०=जाँता।

जांतव—वि० [सं० जंतु+अण्] १. जीव-जंतुओं से सम्बन्धित। २. जीव-जंतुओं से उत्पन्न होने या मिलनेवाला। जैसे—जांतव विष।

जांतविक—वि०[सं० जंतु+ठक्—इक]=जांतव।

जाँता—पुं०[सं० यंत्रम्; पा० यन्तम्; प्रा० जन्तम्; बँ० जात; जाति; सिं० जण्डु; मरा० जातें] १. गेहूँ, आदि पीसने की हाथ से चलाई जानेवाली पत्थर की बड़ी चक्की जो प्रायः किसी स्थान पर गाड़ दी जाती है। २. सोनारों, तारकशों आदि का जंती नामक औजार।

जाँपना*—स०[? अथवा हिंदी चाँपना का अनु०] चाँपना। दबाना।

जाँपनाह—पुं०=जहाँपनाह।

जाँब†—पुं०[सं० जाँबव] जामुन का वृक्ष और उसका फल।

जाँबव—पुं०[सं० जंबू+अण्] १. जामुन का वृक्ष और उसका फल।

वि० १. जामुन संबंधी। २. जामुन के रस से बना हुआ। जैसे—शराव, सिरका आदि।

जाँबवंत—पुं०=जाँबवान्।

जांबवक—पुं०[जंबू+वुन्—अक]=जांबव।

जांबवती—स्त्री०[सं० जांबवत्+अण्—ङीप्] १. द्वापर युग के जांबवान की वह कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था। २. नागदौनी।

जाँबवान् (वत्)—पुं०[सं०] राम की सेना का एक रीछ जो राजा सुग्रीव का मंत्री था।

जाँबवि—पुं० [सं०जंबू०+इञ्] वज्र।

स्त्री० जांबवती।

जांबवौष्ठ—पुं०[सं० जांबव-ओष्ठ व०स०] दे० 'जांबोष्ठ'।

जाँ-बाज—वि०[फा०] [भाव० जाँबाजी] प्राणों की बाजी लगानेवाला। प्राण तक देने को तैयार रहनेवाला।

जांबीर—पुं०[सं० जंबीर+अण्] जंबीरी नींबू।

जांबील—पुं०[सं०] घुटने पर की गोल हड्डी। चक्की।

जाँबु—पुं०=जामुन।

जांबुक—वि०[सं० जंबुक+अण्] जंबुक अर्थात् सियार संबंधी।

जांबुमाली (लिन्)—पुं०[सं०] एक राक्षस जिसका वध हनुमान् जी ने अशोक वाटिका में किया था।

जांबुवत्—पुं०=जांबवान्।

जांबुवान—पुं०=जांबवान्।

जांबू—पुं०=जंबू (द्वीप)।

जांबूनद—पुं०[सं० जंबू-नदी+अण्] १. धतूरा। २. सोना।

जांबोष्ठ—पुं०[सं० जांबवौष्ठ] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसकी सहायता से फोड़ों आदि को जलाया या दागा जाता था। (शल्य-चिकित्सा)

जाँय†—क्रि० वि०[फा० बेजा] व्यर्थ। बे-फायदे। उदा०—भरतहि दोसु देइ को जायँ।—तुलसी।

जाँर—पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड़।

जाँवत—वि०[सं० यावत्] १. सब। २. जितना। उदा०—जाँवत गरब गहीलि हुति।—जायसी।

अव्य०=यावत्।

जाँवर*—पुं०[हिं० जाना] गमन। जाना।

जा—स्त्री० [सं०√जन् (उत्पत्ति)+ड—टाप्] १. माँ। माता। २. देवरानी।

वि० स्त्री० समस्त पदों के अंत में, उत्पन्न होनेवाली। जैसे—गिरिजा, जनकजा।

सर्व० [हिं० जो] जिस।

वि०[फा०] उचित। मुनासिब।

पद—जा-बेजा=उचित और अनुचित।

स्त्री०[फा०] जगह। स्थान।

जाइ—वि०[हिं० जाना] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बे-फायदा।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदं।

वि० [फा० जा] उचित।

†वि०[सं० यानि] जितना।

*सर्व०[सं० यत्] जिसको।

जाइफर (फल)—पुं०=जायफल।

जाइस†—पुं०=जायस।

जाई—स्त्री०[हिं० जाया (वि०) का स्त्री० रूप] कन्या। पुत्री।

स्त्री०=जाही (पौधा और फूल)।

जाईदा—वि०[फा० जाइदः] समस्त पदों के अन्त मे, उत्पन्न या पैदा किया हुआ। जना या जाया हुआ। जात। जैसे—नवाव जाईदा=नवाब का पैदा किया हुआ।

जाउक—पुं०=जावक (अलता)।

जाउर†—स्त्री०[हिं० चाउर=चावल।] खीर।

जाउरि†—स्त्री०=जाउर। (खीर)

जाएँ—क्रि० वि० =जाँय।

जाएल†—वि०[देश०] (खेत) जो दो बार जोता गया हो।

पुं० दो बार जोता हुआ खेत।

वि०[अ० जायल] १. नष्ट-भ्रष्ट। २. जो व्यर्थ हो गया हो।

जाएस†—पुं० =जायस।

जाक*—पुं०[सं० यक्ष] यक्ष।

स्त्री०[हिं० जकना] जकने की क्रिया या भाव।

जाकट†—स्त्री०=जाकेट।

जाकड़—पुं०[हिं० जाकर] १. कोई चीज इस शर्त पर लेना कि यदि पसंद न आई तो वापस कर दी जायगी। २. उक्त शर्त पर दी या ली जानेवाली वस्तु।

जाकड़-बही—स्त्री० [हिं० जाकड़+बही] वह बही जिसमें दूकानदार जाकड़ दी जानेवाली वस्तुओं का विवरण आदि लिखता है।

जाकिट—स्त्री०=जाकेट।

जाकिर—वि०[अ० ज़ाकिर] जिक्र अर्थात् उल्लेख, चर्चा या वर्णन करनेवाला।

जाकेट—स्त्री० [अं० जैकेट] सदरी की तरह का एक आधुनिक पहनावा।

जाखन†—स्त्री०[देश०] जमवट (दे०)।=जमवट (कूएँ में की)।

जाखिनी—स्त्री०=यक्षिणी।

जाग—पुं०[सं० यज्ञ] यज्ञ।

स्त्री०[हिं० जगह] १. जगह। स्थान। २. गृह। घर।

स्त्री०[हिं० जागना] जागने अथवा जागते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव।

†पुं०=जामन।

पुं०[देश०] बिलकुल काले रंग का कबूतर।

जागत—पुं० [सं० जगती+अण्] जगती छंद।

जागता—वि० [हिं० जागना] [स्त्री० जागती] १. जागा हुआ। २. जो जाग रहा हो। ३. सतर्क। सावधान। ४. जो अपने अस्तित्व, शक्ति आदि का पूरा और स्पष्ट परिचय या प्रमाण दे रहा हो। जैसे—जागती कला, जागता जादू।

जागतिक—वि० [सं० जगत्+ठञ्—इक] १. जगत्-सम्बन्धी। जगत का। २. जगत् या संसार में रहने या होनेवाला।

जागती-कला—स्त्री० [हिं० जागती+सं० कला] देवी-देवता आदि का ऐसा प्रभाव जो स्पष्ट दिखाई देता हुआ माना जाता हो।

जागती जोत—स्त्री० [हिं० जागना+सं० ज्योति] १. कोई देवीय चमत्कार। २. दीपक। दीया।

जागना—अ० [सं० जागरण] १. सोकर उठना। नींद खुलने पर चेतन होना। २. जागता हुआ होना। निद्रारहित होना। ३. सजग या सावधान होना। ४. प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से अपने अस्तित्व, प्रभाव आदि का प्रमाण दे सकने की अवस्था में होना। ५. देवी-देवताओं का अपना प्रभाव दिखलाना। ६. उत्तेजित होना। ७. विख्यात होना। ८. (आग का) अच्छी तरह जलना।

जागनौल—स्त्री० [देश०] प्राचीन काल का एक अस्त्र।

जागबलिक†—पुं०=याज्ञवल्क्य।

जागर—पुं० [सं०√जागृ (जागना)+घञ्] १. जागरण। जागने की क्रिया। २. वह स्थिति जिसमें अंतःकरण की सब वृत्तियाँ जाग्रत अवस्था में होती हैं। ३. कवच।

जागरक—वि० [सं०√जागृ+ण्वुल्—अक] १. जागता हुआ। २. जागनेवाला।

जागरण—पुं० [सं० √जागृ+ल्युट्—अन] [वि० जागरित] १. जागते रहने की अवस्था या भाव। २. किसी उत्सव, पर्व आदि की रात को जागते रहने का भाव। ३. लाक्षणिक अर्थ में, वह अवस्था जिसमें किसी जाति, देश, समाज आदि को अपनी वास्तविक परिस्थितियों और उनके कारणों का ज्ञान हो जाता है और वह अपनी उन्नति तथा रक्षा करने के लिए सचेष्ट हो जाता है।

जागरन— पुं०=जागरण।

जागरा—स्त्री० [सं०√जागृ+अच्-टाप्] जागरण।

जागरित—वि० [सं०√जागृ+क्त] १. जाग्रत या जागता हुआ। २. (वह अवस्था) जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के व्यवहारों और कार्यों का अनुभव और ज्ञान होता हो। (सांख्य)

जागरू†—पुं० [देश०] १. दाँयी हुई फसल में का वह अंश जिसमें भूसा और कुछ अन्न-कण भी मिले हुए हों। २. भूसा।

जागरूक—वि० [सं०√जागृ+ऊक] १. (व्यक्ति) जो जाग्रत अवस्था में हो। २. (वह) जो अच्छी तरह सावधान होकर सब ओर निगाह या ध्यान रखता हो। (विजिलेन्ट)

पुं० पहरेदार।

जागरूप—वि० [हिं० जागना+सं० रूप] जिसका रूप बहुत ही प्रत्यक्ष और स्पष्ट हो।

जागर्ति—स्त्री० [सं०√जागृ+क्तिन्] १. जाग्रत होने की अवस्था या भाव। २. जागरण। ३. चेतनता।

जागर्या—स्त्री० [सं√जागृ+यक्—टाप्] जागरण।

जागा—पुं० [हिं० जागना] किसी धार्मिक उपलक्ष्य में रात भर जागते रहने की क्रिया या भाव।

स्त्री०=जगह।

जागी†—पुं० [सं० यज्ञ] भाट।

जागीर—स्त्री० [फा०] वह भूमि जो मध्ययुग में राजाओं, बादशाहों आदि की ओर से बड़े बड़े लोगों को विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में सदा के लिए दी जाती थी।

जागीरदार—पुं० [फा०] वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक।

जागीरी†—स्त्री० [फा० जागीर+ई (प्रत्य०)] १. जागीरदार होने की अवस्था, पद या भाव। २. रईसी।

वि० जागीर संबंधी। जैसे—जागीरी आमदनी।

जागुड़—पुं० [सं० जगुड़+अण्] १. केसर। २. एक प्राचीन देश। ३. उक्त देश का निवासी।

जागृति—स्त्री० [सं०√जागृ+क्तिन्]=जाग्रति।

जागृवि—पुं० [सं० √जागृ+क्विन्] १. राजा। २. आग।

वि०=जाग्रत।

जाग्रत्—वि० [सं०√जागृ + शतृ] १. जागता हुआ। २. सचेत। सावधान। ३. जो अपने दूषित वातावरण को बदलने और अपनी उन्नति तथा रक्षा करने के लिए तत्पर हो चुका हो। ४. प्रकाशमान।

पुं० दर्शनशास्त्र में, जीव या मनुष्य की वह अवस्था जिसमें उसे सब बातों का परिज्ञान होता हो और वह अपनी इंद्रियों के सब विषयों का भोग-कर सकता हो।

जाग्रति—स्त्री० [सं० जागृति] १. जाग्रत होने की अवस्था या भाव। २. जागते रहने की क्रिया। जागरण।

जाघनी—स्त्री० [सं० जघन+अण्—ङीप्] जंघा। जाँघ।

जाचक—वि०, पुं०=याचक (माँगनेवाला या भिखमंगा)।

जाचकता†* —स्त्री०=याचकता।

जाचना*—स० [सं० याचन] याचना करना। माँगना।

†स०=जाँचना।

जाजम—स्त्री० दे० 'जाजिम'।

जाज मलार—पुं० [देश०] संपूर्ण जाति का एक संकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

जाजरा—वि० [सं० जर्जर] [वि० स्त्री० जाजरी] १. बहुत पुराना। जर्जर। जैसे—जाजरा शरीर। २. जिसमें बहुत से छेद हों। जैसे—जाजरी नाव।

जाजरी—पुं० [देश०] चिड़ीमार। बहेलिया।

जाजरूर—पुं० [फा० जा+अ० जरूर] वह विशिष्ट स्थान जहाँ पर टट्टी की जाय। मल-त्याग करने का स्थान। पाखाना।

जाजल—पुं० [सं०] अथर्ववेद की एक शाखा।

जाजलि—पुं० [सं०] एक प्रवर-प्रवर्त्तक ऋषि।

जाजात†— स्त्री०=जायदाद।

जाजिब—वि० [फा० जाजिब] १. (तरल पदार्थ) जज्ब करने या सोखनेवाला। २. अपनी ओर खींचनेवाला। आकर्षक।

जाजिम—स्त्री०[तु० जाजम] १. फर्श आदि पर बिछाई जानेवाली छपी हुई चादर। २. बिछाने की कोई चादर। ३. कालीन।

जाजी (जिन्)—पुं०[सं०√जज् (युद्ध)+णिनि] योद्धा।

जाजुलित—वि० =जाज्वलित। 'जाज्वलित'

जाज्वलित—वि० (सं०)—चमकता हुआ। प्रकाशमान।

जाज्वल्य—वि०=जाज्वल्यमान।

जाज्वल्यमान—वि०[सं०√ज्वल् (दीप्ति)+यङ्, द्वित्व, +शानच्] १. खूब चमकता हुआ या प्रकाशमान्। २. खूब अच्छी तरह सब को दिखाई देनेवाला। ३. तेजपूर्ण।

जाट—पुं०[?]१. भारत की एक प्रसिद्ध जाति जो समस्त पंजाब, सिंध, राजपूताना और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में रहती और मुख्यतः खेती-बारी करती है। २. खेती-बारी करनेवाला व्यक्ति। कृषक। ३. एक प्रकार का चलता गाना।

वि० उजड्ड। गँवार। उदा०—ऐसे कुमति जाट सूरज कौं प्रभु विनु कोउ न धात्र।—सूर।

पुं०=जाठ।

जाटालि—स्त्री०[सं०] पलाश की जाति का मोरवा नामक पेड़।

जाटालिका—स्त्री०[सं०] कार्त्तिकेय की एक मातृका।

जाटिकायन—पुं०[सं०] अथर्ववेद के एक ऋषि।

जाटू—स्त्री०[हिं० जाट] करनाल, रोहतक, हिसार, आदि के जाटों की बोली। बाँगडू। हरियानी।

जाठ—पुं०[सं० यष्टि]१. लकड़ी का वह मोटा तथा लंबोतरा लट्ठा जो कोल्हू की कूँडी में लगा रहता है और जिसकी दाब से ऊख की गँडेरियों में से रस अथवा तिलहन में से तेल निकलता है। २. उक्त के आधार पर लकड़ी का कोई मोटा तथा लंबोतरा लट्ठा, विशेषतः तालाब आदि के बीच में गड़ा हुआ।

जाठर—वि०[सं० जठर+अण्] जठर अर्थात् पेट-संबंधी। जठर का। जैसे—जाठर अग्नि या रोग।

पुं०१. जठर। पेट। २. उदर या पेट की वह अग्नि जिसकी सहायता से भोजन पचता है। जठराग्नि। ३. क्षुधा। भूख। ४. संतति। संतान।

जाठराग्नि—स्त्री०=जठराग्नि।

जाठरानल—पुं०=जठराग्नि।

जाठि—स्त्री०=जाठ।

जाड़—पुं०[सं० जाड्य] जड़ता।

वि० बहुत अधिक। अत्यन्त।

†पुं०=जाड़ा।

जाड़ा—पुं०[सं० जड़]१. छः ऋतुओं में से एक जो हमारे यहाँ मुख्यतः पूस-माघ में पड़ती है और जिसमें तापमान अन्य ऋतुओं की अपेक्षा बहुत कम हो जाता है और अधिकतर जीव इसके फलस्वरूप ठिठुरने लगते हैं। शीतकाल। २. शीत। सरदी।

जाड्य—पुं०[सं० जड+ष्यञ्] जड़ होने की दशा या भाव। जड़ता।

जाड्यारि—पुं०[सं० जाड्य-अरि, ष० त०] जंभीरी नीबू।

जाणगर—वि० [हिं० जान+फा० गर] जानकार। जाननेवाला। (राजस्थान)

जाणि—अव्य०[सं० ज्ञान] जानों। मानों। जैसे—उदा०—छीणे जाणि छछोहा छूटा।—प्रिथीराज।

जाणिक—अव्य० [सं० ज्ञान] जानों। मानों। उदा०—जाणिक रोहणीड तप्पइ सूर।—नरपतिनाल्ह।

जात—वि०[सं०√जन् (उत्पत्ति) +क्त]१. जिसने जन्म लिया हो। उत्पन्न। जैसे—नवजात। २. यौगिक के आरम्भ में, (क) जिसमें या जिसे कुछ उत्पन्न हुआ हो। जैसे—जात-दंत=जिसके दाँत निकल आये हों, (ख) जिसने कुछ उत्पन्न किया हो। जैसे—जात-पुत्रा=. जिसने पुत्र जन्माया हो। ३. यौगिक के अंत में, जो किसी में या किसी से उत्पन्न हुआ हो। जैसे—जल-जात=जल में या जल से उत्पन्न। ४. जन्म से संबंध रखनेवाला। जैसे—जातकर्म। (दे०) ५. जो घटना के रूप में हुआ हो। घटित। ६. एकत्र किया हुआ। संगृहीत। ७. प्रकट। व्यक्त। ८. उत्तम। श्रेष्ठ।

पुं० १. पुत्र। बेटा। २. चार प्रकार की संतानों में से वह; जिसमें प्रधानतः उसकी माता के से गुण हों। ३. जीव। प्राणी। ४. वर्ग। ५. समूह।

स्त्री०[सं० जाति से फा० ज़ात]१. व्यक्तित्व। जैसे—किसी की जात से फायदा उठाना। २. देह।

†स्त्री०=जाति।

जातक—पुं०[सं० जात+कन्] [†स्त्री० जातकी] १. नवजात शिशु। २. बच्चा। बालक। ३. फलित ज्योतिष में, फल कहने का वह प्रकार जिसमें जन्म-कुंडली देखकर उसके आधार पर भविष्य की सब बातें बतलाई जाती हैं। ४. बौद्धों में भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ या कहानियाँ जो ५०० से ऊपर हैं। ५. बौद्ध भिक्षु। ६. बेंत। ७. हींग का वृक्ष।

जात-कर्म(न्)—पुं०[सं०] हिंदुओं में, बालक के जन्म के समय होनेवाला एक संस्कार।

जात-कलाप—पुं०[ब०स०] मोर।

जात-क्रिया—स्त्री०[ष०त०] जातकर्म। (दे०)

जात-दंत—वि०[ब०स०] (बच्चा) जिसके दाँत निकल आये हों।

जात-दोष—वि०[ब०स०] दोषी।

जातना†—स्त्री०=यातना।

स०=जाँतना=दबाते हुए पीसना।

जात-पक्ष—वि०[ब०स०] जिसमें से पर निकले हों।

पुं० पक्षी।

जात-पाँत—स्त्री०[सं० जाति+पंक्ति] जातियों और उपजातियों से संबंध रखनेवाले विभाग।

जातमात्र —वि०[सं० जात+मात्रच्] हाल का जन्मा हुआ।

जात-मृत—वि०[कर्म०स०] जो जन्मते ही मर गया हो।

जातरा†—स्त्री०=यात्रा।

जात-रूप—वि०[ब० स०] रूपवान्। सुन्दर।

पुं०[जात+रूपप्]१. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा।

जात-वेद (स्)—पुं०[ब०स०] १. अग्नि। २. सूर्य। ३. परमेश्वर। ४. चीता नामक वृक्ष। चित्रक।

जातवेदसी—स्त्री०[जातवेदस्+ङीप्] दुर्गा।

जात-वेश्म (न्)—पुं०[ष०त०] १. वह कमरा, कोठरी या घर जिसमें बालक जन्मा हो। सौरी। सूतिकागार।

जाता—स्त्री०[सं० जात+टाप्] कन्या। पुत्री। बेटी।
वि० स्त्री०, सं० जात (विशेषण) का स्त्री०।
†पुं०=जाँता।

जाति—स्त्री० [सं०√जन् (उत्पत्ति)+क्तिन्] १. जन्म। पैदाइश। २. हिंदुओं में, समाज के उन मुख्य चार विभागों में से हर एक जिसमें जन्म लेने पर मनुष्य को जीविका निर्वाह करने के लिए विशिष्ट कार्य-क्षेत्र अपनाने का विधान है। वर्ण। विशेष दे० 'वर्ण'। ३. उक्त में से हर एक बहुत से छोटे-छोटे विभाग और उपविभाग। जैसे—पांडेय, शुक्ल, लोहार, सोनार आदि। ४. किसी राष्ट्र (या राष्ट्रों) के वे निवासी जिनकी नसल एक हो। जैसे—अंगरेज जाति, हिंदू जाति।

विशेष—ऐसी जातियों के सदस्यों की शारीरिक बनावट, उनके स्वभाव, परम्पराएँ, विचारधाराएँ भी प्रायः एक-सी होती हैं। जैसे—आर्य, मंगोल या हब्शी जातियाँ।

५. पदार्थों या जीव-जंतुओं की आकृति, गुण, धर्म आदि की समानता के विचार से किया हुआ विभाग। कोटि। वर्ग। (जेनस) जैसे—पशु जाति, पक्षी जाति। ६. उक्त में के छोटे-छोटे विभाग और उप-विभाग। जैसे—घोड़े या हिरन की जाति का पशु। ७. कुल। वंश। ८. गोत्र। ९. तर्कशास्त्र और न्यायदर्शन में, किसी हेतु का वह अनुपयुक्त खंडन या उत्तर जो तथ्य के आधार पर नहीं, बल्कि केवल साधर्म्य या वैधर्म्य के आधार पर हो। १०. मात्रिक छंद। ११. छोटा आँवला, चमेली, जायफल, जावित्री आदि पौधों की संज्ञा। ११. मालती नामक लता और उसका फूल।

जाति-कर्म (न्)—पुं०[ष० त०] जातकर्म।

जाति-कोश (ष)—पुं०[ष० त०] जायफल।

जाति-कोशी (षी)—स्त्री०[जातिकोश+ङीष्] जावित्री।

जातिच्युत—वि०[तृ०त०] (व्यक्ति) जिसके साथ किसी (उसी की) जाति के लोगों ने व्यवहार करना छोड़ दिया हो।

जातित्व—पुं०[सं० जाति+त्व] जातीयता।

जातिधर्म—पुं०[ष०त०] १. वे सब कार्य, गुण या बातें जो किसी जाति में समान रूप से होती हैं। २. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का अपना अपना अथवा अपनी अपनी जाति के प्रति होनेवाला विशिष्ट कर्त्तव्य।

जाति-पत्र—पुं०[ष०त०] जावित्री।

जाति-पत्री—स्त्री०[ष० त०] जावित्री।

जाति-पर्ण—पुं०[ष०त०] जावित्री।

जाति-पाँति—स्त्री० दे० 'जात-पाँत'।

जाति-फल—पुं०[मध्य०स०] जायफल।

जाति-ब्राह्मण—पुं०[तृ० त०] वह ब्राह्मण जिसका केवल जन्म किसी ब्राह्मण कुल में हुआ हो परन्तु अपने जाति-धर्म का पालन न करता हो।

जाति-भ्रंश—पुं०[ष०त०] जाति भ्रष्टता।

जातिभ्रंशकर—पुं०[सं० जातिभ्रंश√कृ (करना)+ट] मनु के अनुसार नौ प्रकार के पापों में से एक जिसमें मनुष्य अपनी जाति, आश्रम आदि से भ्रष्ट हो जाता है।

जाति-भ्रष्ट—वि०[तृ०त०] जाति-च्युत।

जाति-लक्षण—पुं०[ष०त०] किसी जाति में विशिष्ट रूप से पाये जानेवाले चिह्न या लक्षण।

जाति-वाचक—वि० [ष० त०] १. जाति बतानेवाला। २. जाति के हर सदस्य का समान रूप से सूचक। जैसे—जातिवाचक संज्ञा।

जाति-वाद—पुं०[ष०त०] [वि० जातिवादी] यह विचार-धारा या सिद्धान्त कि हमारी अथवा अमुक जाति और सब जातियों की तुलना में श्रेष्ठ है। (रेशियलिज्म)

जाति-विद्वेष—पुं०[तृ०त०] जाति-वैर।

जाति-वैर—पुं०[तृ०त०] एक जाति के जीवों का दूसरी जाति के जीवों के प्रति होनेवाला प्राकृतिक या वंशगत वैर।

जाति-शस्य—पुं०[ष०त०] जायफल।

जाति-शास्त्र—पुं० [ष०त०] वह शास्त्र जिसमें मनुष्यों की जातियों के विभागों, पारस्परिक संबंधों, जातीय गुणों आदि का विवेचन होता है। (एन्थालोजी)

जाति-संकर—पुं०[ष०त०] दोगला। वर्णसंकर।

जाति-सार—पुं०[ष०त०] जायफल।

जाति-स्मर—पुं०[ष०त०] वह अवस्था जिसमें मनुष्य को अपने पूर्वजन्म की बातें याद आती या रहती हैं।

जाति-स्वभाव—पुं०[ष०त०] एक अलंकार जिसमें आकृति और गुण का वर्णन किया जाता है।

जाति-हीन—वि०[तृ०त०] नीच जाति का।

जाती—स्त्री०[सं०√जन् (उत्पत्ति)+क्तिच्—ङीष्] १. चमेली। २. मालती। ३. जायफल। ४. छोटा आँवला।
†पुं०[?] हाथी। (डिं०)
†स्त्री०=जाति।
वि०[सं० जातीय से फा० जाती] १. स्वयं अपना। निजी। २. व्यक्तिगत।

जाती-कोश (ष)—पुं०[ष० त०] जायफल।

जाती-पत्री—स्त्री०[ष० त०] जावित्री।

जातीपूग—पुं०[ष० त०] जायफल।

जाती-फल—पुं०[मध्य० स०] जायफल।

जातीय—वि०[सं० जाति+छ—ईय] १. जाति-संबंधी। जाति का। २. जाति में होनेवाला। ३. सारी जाति अर्थात् राष्ट्र या समाज का। (नैशनल)

जातीयता—स्त्री० [सं० जातीय+तल्—टाप्] १. जाति का भाव। २. किसी जाति के आदर्शों, गुणों, मान्यताओं, विचारधाराओं आदि की सामूहिक संज्ञा। जैसे—प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जातीयता का अभिमान होना चाहिए।

जाती-रस—पुं०[ब०स०] बोल नामक गंध द्रव्य।

जातु—अव्य०[सं०√जन्+क्तुन् पृषो० सिद्धि] कदाचित्।

जातु-क—ब०[जातु=निंदित क=जल ब०स०] हींग।

जातुज—पुं०[सं० जातु√जन्+ड] गर्भिणी की इच्छा। दोहद।

जातु-धान—पुं०[जातु=निंदित+धान=सामीप्य ब०स०] असुर। राक्षस।

जातुष—वि०[सं० जतु+अण्, षुक् आगम] १. लाख-संबंधी। २. लाख का बना हुआ।

जातू—पुं॰[सं॰ ज√तुर्व् (मारना)+क्विप्, दीर्घ] वज्र।

जातूकर्ण—पुं॰[सं॰] हरिवंश के अनुसार एक उपस्मृतिकार ऋषि जिनका जन्म अट्ठाइसवें द्वापर में हुआ था। (हरिवंश)

जातेष्टि—स्त्री॰[सं॰ जात-इष्टि ष॰त॰] जातकर्म।

जातोक्ष—वि॰[जात-उक्षन कर्म॰स॰, टच्(वह बैल) जिसे छोटी अवस्था में ही बधिया किया गया हो।

जात्यंध—वि॰[सं॰ जाति-अंध तृ॰त॰] (जीव) जो जन्म से ही अंधा हो।

जात्य—वि॰[सं॰ जाति+यत्]१. किसी की दृष्टि में, जो उसी की जाति का हो। नातेदार। सजातीय। जैसे—जात्य भाई। २. जो अच्छे कुल या जाति में उत्पन्न हुआ हो। कुलीन। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. सुन्दर। सुरूप।

जात्यारोह—पुं॰[सं॰ जात्य-आरोह, कर्म॰स॰]खगोल के अक्षांश की गिनती में वह दूरी जो मेष से पूर्व की ओर प्रथम अंश से ली जाती है।

जात्यासन—पुं॰[सं॰ जात्य-आसन, कर्म॰स॰] तांत्रिक साधना में, एक विशिष्ट आसन जिसमें हाथ और पैर साथ-साथ जमीन पर रखते हुए चला जाता है।

जात्रा†—स्त्री॰=यात्रा।

जात्री—†पुं॰=यात्री।

जाथका—स्त्री॰[सं॰ जूथिका] ढेर। राशि।

जादव†—पुं॰ [सं॰ यादव] यादव। यदुवंशी।

जादव-पति—पुं॰[सं॰ यादवपति] श्रीकृष्णचन्द्र।

जादसपति, (ती)—पुं॰ [सं॰ यादसांपति] जल-जंतुओं के स्वामी। वरुण।

जादा†—वि॰=ज्यादा।

वि॰ [सं॰ जात से फा॰ ज़ादः] [स्त्री॰ जादी] जो किसी से उत्पन्न हुआ हो। उत्पन्न। जात। जैसे—नवाबजादा, साहबजादा।

जादुई†—वि॰[हिं॰ जादू] जादू का। जादू संबंधी।

जादू—पुं॰[फा॰]१. वह क्रिया या विद्या जिसकी सहायता से किसी दैवी शक्ति (जैसे—आत्मा, देवता भूत-प्रेत आदि) का आराधन किया जाता है और उसी के द्वारा कोई अभिप्रेत कार्य संपन्न कराया जाता है। जैसे—लड़की पर किसी ने जादू कर दिया है।

पद—जादू टोना=तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेतों आदि के द्वारा कोई काम कराने की क्रिया या भाव।

२. बुद्धि के कौशल और हाथ की सफाई से दिखाया जानेवाला कोई ऐसा खेल जिसका रहस्य न समझने के कारण लोग उसे अलौकिक कृत्य समझें। ३. किसी वस्तु में का वह गुण या शक्ति जिसके कारण उस वस्तु की ओर लोग बरबस आकृष्ट हो जाते हों। जैसे—इनकी आँखों में भी जादू है। ४. उक्त गुण या शक्ति का किसी पर पड़नेवाला प्रभाव। क्रि॰ प्र॰—डालना।

मुहा॰—जादू जगाना=ऐसा कार्य या प्रयोग करना कि लोगों को जादू का-सा प्रभाव दिखाई दे। **जादू जमाना**=किसी पर प्रभाव डालकर उसे पूरी तरह अपने वश में करना।

पुं॰=यदु।

जादूगर—पुं॰[फा॰] [स्त्री॰ जादूगरनी] १. जादू के खेल दिखानेवाले व्यक्ति। २. लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसा व्यक्ति जो आश्चर्यजनक रीति से कोई कठिन या विलक्षण कार्य कर दिखलाता हो।

जादूगरी—स्त्री॰[फा॰] १. जादूगर का काम, पेशा या वृत्ति। २. लाक्षणिक अर्थ में, कोई बहुत ही अद्भुत तथा विलक्षण काम जो अलौकिक-सा जान पड़ता हो।

जादूनजर—वि॰[फा॰] (व्यक्ति) जिसकी आँखों में जादू हो। बहुत ही सुन्दर तथा लुभावनी आँखोंवाला।

जादौं† —वि॰, पुं॰=यादव (यदुवंशी)।

जादौराय*—पुं॰ [सं॰ यादव]=यादवराय (श्रीकृष्ण)।

जान—स्त्री॰[फा॰]१. वह प्राकृतिक गुण या तत्त्व जिसके द्वारा मनुष्य जीव-जंतु, पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ आदि जीवित रहती तथा अपने सब काम (जैसे—खाना-पीना, फलना-फूलना, अपने वर्ग का अभिवर्धन आदि) अच्छी तरह करती चलती हैं। जीवन। प्राण।

पद—जान का गाहक=(क) ऐसा व्यक्ति जो किसी की जान लेने अथवा उसका अंत कर देने पर उतारू हो। (ख) बहुत दिक, तंग या परेशान करनेवाला व्यक्ति। **जान का लागू**=दे॰ 'जान का 'गाहक'। **जान जोखिम या जान जोखों**=ऐसा काम या बात जिसमें जान जाने या मरने का डर हो।

मुहा॰—(किसी में) जान आना=किसी मरती हुई या बेदम वस्तु का फिर से सक्रिय और स्वस्थ होना। **(जान में) जान आना**=धैर्य तथा स्थिरता होना। **जान के लाले पड़ना**=ऐसे संकट में फँसना कि जान बचना कठिन हो जाय। प्राण संकट में पड़ना। **(किसी की) जान को रोना**=ऐसे व्यक्ति को कोसना जिसके कारण बहुत दुःख उठाना पड़ा हो। **(किसी की) जान खाना**=बार-बार दिक या परेशान करना। **जान खोना**=प्राण गवाँना। **(किसी काम से) जान चुराना**=परिश्रम का काम करने से कतराना या भागना। जी चुराना। **जान छुड़ाना**=झंझट या संकट से पीछा छुड़ाना या छुटकारा पाने का प्रयत्न करना। **जान छूटना**=झंझट या संकट से छुटकारा मिलना। **जान जाना**=प्राण निकलना। मरना। **जान तोड़कर**=बहुत अधिक परिश्रम करके। **जान दूभर होना**=जीवन-यापन में बहुत अधिक कष्ट होना। जीना कठिन होना। **(अपनी) जान देना**=(क) प्राण-त्यागना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम करना। **(किसी पर) जान देना**=(क) प्यार करना। बहुत अधिक प्रेम या स्नेह करना। (ख) जान निछावर करना। **(किसी वस्तु के पीछे या लिए) जान देना**=किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए बहुत अधिक व्यग्र होना। **(अपनी जान को) जान न समझना**=किसी बहुत बड़े काम की सिद्धि में अपने प्राणों तक को संकट में डालना। **(दूसरे की जान को) जान न समझना**=किसी के साथ बहुत ही निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार करना। **जान निकलना** =(क) प्राण निकलना। मरना। (ख) किसी से बहुत अधिक भयभीत होना। जैसे—वहाँ जाने पर अथवा उनके सामने होने पर उसकी जान निकलती है। **(किसी में) जान पड़ना**=(क) मृत शरीर में प्राणों का फिर से संचार होना। (ख) फिर से प्रफुल्लित, प्रसन्न तथा स्वस्थ होना। **(किसी की) जान पर आ बनना**=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना जिससे जीवित रहना बहुत कठिन जान पड़ता हो। **(अपनी) जान पर खेलना**=(क) प्राणों को संकट में डालकर जोखिम का काम करना।

(ख) (किसी के लिए) वीरतापूर्वक जान देना। **जान पर नौबत आना**=जान पर आ बनना। (दे०) **जान बचाना**=(क) प्राण रक्षा करना। (ख) पीछा छुड़ाना। **(किसी की) जान मारना या लेना**=(क) बध या हत्या करना। (ख) अधिक कष्ट देना या सताना। **जान सूखना**=चिंता, भय आदि के कारण निर्जीव-सा होना। **जान से जाना**=प्राण गवाँना। मर जाना। **जान से मारना**=वध या हत्या करना। **जान से हाथ धोना**=जान से जाना। (देखें) **जान हलाकान करना**=बहुत अधिक दुःखी और परेशान करना (या होना)।

२. शारीरिक बल या सामर्थ्य। ३. कोई ऐसी चीज या बात जो किसी दूसरी चीज या बात को सजीव या सार्थक करती अथवा उसे यथेष्ट प्रभावशाली तथा सबल बनाती हो। मूल तत्त्व। सार भाग। जैसे—यही पंक्ति तो इस कविता की जान है। ४. लाक्षणिक रूप में, वह चीज जिसके कारण किसी दूसरी वस्तु की महत्ता या शोभा बहुत अधिक बढ़ जाती हो।

मुहा०—(किसी चीज में) जान आना=बहुत अधिक शोभा बढ़ाना। जैसे--चित्र टाँगने से इस कमरे में जान आ गई है।

वि० प्रिय। उदा०—जान महा सहजे रिझवार।—आनंदघन।

स्त्री० [सं० ज्ञान] १. जानकारी। परिचय। परिज्ञान।

पद—जान-पहचान=परिचय। **जान में**=ध्यान या जानकारी में।

२. ख्याल। समझ।

वि० जाननेवाला। जानकार।

†पुं० १. यान। २. जानु।

जानकार—वि० [हिं० जानना+कार (प्रत्य०)] १. जाननेवाला। अभिज्ञ। २. परिचित। ३. किसी बात या विषय में कुशल या उसका अच्छा ज्ञाता।

जानकारी—स्त्री० [हिं० जानकार] जानकार होने की अवस्था, गुण या भाव।

जानकी—स्त्री० [सं० जनक+अण्—ङीप्] जनक की पुत्री, सीता।

जानकी-जानि—पुं० [सं० जानजी-जाया ब० स०, नि आदेश] श्री रामचंद्र।

जानकी-नाथ—पुं० [ष० त०] श्री रामचंद्र।

जानकी-रमण—पुं० [ष० त०] श्री रामचंद्र।

जानकी रवन—पुं० दे० 'जानकी रमण'।

जानदार—वि० [फा०] १. जिसमें जान हो। सजीव। जीवधारी। २. जिसमें जीवनी-शक्ति हो। प्रबल। शक्तिशाली। जैसे—जानदार पौधा। ३. बहुत ही महत्त्वपूर्ण। जैसे—जानदार बात।

पुं० प्राणी।

जाननहार*—पुं० [हिं० जानना+हार (प्रत्य०)] जाननेवाला। ज्ञाता।

जानना—सं० [सं० ज्ञान] १. किसी बात, वस्तु, विषय आदि के संबंध को वस्तु-स्थिति का ज्ञान होना। जैसे--(क) किसी का घर या पता जानना। (ख) अँगरेजी या हिंदी जानना।

पद—जान बूझकर=अच्छी तरह समझते हुए और इच्छापूर्वक।

मुहा०—जान कर अनजान बनना=किसी बात के विषय में जानकारी रखते हुए भी किसी को चिढ़ाने, धोखा देने या अपना मतलब निकालने के लिए अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना। **जान रखना**=सचेत तथा सावधान रहना। जैसे--जान रखो, ईंट का जवाब पत्थर से मिलेगा।

२. परिचय या सूचना पाना।

पद—जानकर=सूचना मिलने पर। जैसे--आप के पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप काशी पधार रहे हैं।

३. इस बात की जानकारी तथा समर्थता होना कि कोई काम कैसे किया जाता है। जैसे--वह इंजन या मोटर चलाना जानता है। ४. किसी क्रिया, बात आदि की सत्यता पर विश्वास होना। जैसे--मैं जानता हूँ कि पिता जी ऐसे कामों से अवश्य असंतुष्ट होंगे। ५. मनोभाव के संबंध में, (क) भाँप लेना। जैसे—मेरे बिना कुछ कहे ही वह मेरे आंतरिक भाव जान लेता है। (ख) अनुभूत करना। जैसे--वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे।—नरसी मेहता।

जानपद—वि० [सं० जनपद+अण्] १. जनपद संबंधी। जनपद का।

पुं० १. जनपद। प्रदेश। २. जनपद का निवासी। जन। ३. जमीन पर लगनेवाला कर। मालगुजारी। ४. मिताक्षरा के अनुसार लेख्य (दस्तावेज) के दो भेदों में एक जो प्रजावर्ग के पारस्परिक व्यवहार के संबंध में होता है।

जानपदी—स्त्री० [सं० जानपद+ङीप्] १. वृत्ति। २. महाभारत में एक अप्सरा जिसने इन्द्र के कहने के अनुसार शरद्वान ऋषि की तपस्या भंग की थी।

जानपना*†—पुं० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] १. जानकार होने का भाव। २. चतुराई। बुद्धिमत्ता।

जानपनी*—स्त्री०=जानपना।

जान-पहचान—स्त्री० हिं० [हिं० जानना+पहचानना] आपस में एक दूसरे को जानने तथा पहचानने की क्रिया, अवस्था या भाव (केवल व्यक्तियों के संबंध में प्रयुक्त।

विशेष:--दो व्यक्तियों में जान-पहचान होने के लिए यह आवश्यक है कि उनमें परस्पर प्रत्यक्ष परिचय हुआ हो और कई वार वात-चीत भी हुई हो।

जान-पहचानी—वि० [हिं० जान-पहचान] (व्यक्ति) जिससे जान-पहचान हो। परिचित।

जान-बख्शी—स्त्री० [फा०] १. प्राण-दंड जिसे दिया जा सकता हो उसे कृपाकर छोड़ देने की क्रिया या भाव। २. किसी को दिया जानेवाला ऐसा आश्वासन या वचन कि तुम्हें प्राण-दंड नहीं दिया जायगा।

जान-बीमा—पुं० [फा० जान+अ० बीमा] वह संविधा या व्यवस्था जिसमें बीमा करनेवाला कुछ निश्चित समय के अनंतर बीमा करानेवाले को अथवा उसकी मृत्यु हो जाने पर उसके उत्तराधिकारी को कुछ निश्चित धन देता है।

विशेष—बीमा करानेवाले को भी संविधा के अनुसार कुछ धन किस्तों के रूप में कुछ समय तक देना पड़ता है।

जानमनि*—पुं० [हिं० जान+सं० मणि] बहुत बड़ा ज्ञानी या विद्वान्।

जा-नमाज—पुं० [फा० जा (=जगह) +अ० नमाज] वह छोटी जाजिम या दरी जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।

जानराय—पुं० [हिं० जान+राय] बहुत बड़ा जानकार या ज्ञानी पुरुष।

जानवर—पुं० [फा०] १. वह जिसमें जान या प्राण हों। प्राणी। २. मनुष्य से भिन्न, चलने-फिरने, उड़ने या तैरनेवाले अन्य जीव। जैसे—समुद्र में हजारों प्रकार के जानवर होते हैं। ३. उक्त जीवों में से विशेषतः वे जीव जिनके चार पैर हों। चौपाया पशु। जैसे—वह जानवर चराने गया है। ४. लाक्षणिक अर्थ में, कम अक्लवाला, उजड्ड या गँवार आदमी। ५. पशुओं का-सा आचरण या व्यवहार करनेवाला।

जा-नशीन—पुं० [फा०] [भाव० जा-नशीनी] १. किसी दूसरे के स्थान पर विशेषतः किसी अधिकारी के न रहने या हट जाने पर उसके पद या स्थान पर बैठनेवाला व्यक्ति। उत्तराधिकारी।

जानहार†—वि० [हिं० जाना+हारा (प्रत्य०)] १. जानेवाला। २. जो हाथ से निकल जाने को हो। ३. जो नष्ट होने को हो।

वि० [हिं० जानना+हार (प्रत्य०)] जाननेवाला।

जानहु*—अव्य० [हिं० जानना] जानों। मानों।

जानाँ—स्त्री० [फा० 'जान' का बहु०] प्रेमपात्र। प्रेयसी।

जाना—अ० [सं० या, प्रा० जा+हिं० प्र० ना] १. एक स्थान से चलकर अथवा और किसी प्रकार की गति में होकर दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए आगे या उसकी ओर बढ़ना। गमन या प्रस्थान करना। जैसे—(क) अपने मित्र के घर जाना। (ख) रेल पर बैठकर कलकत्ते अथवा हवाई जहाज पर बैठकर अमेरिका जाना।

मुहा०—(कहीं) जा पड़ना=अचानक कहीं पहुँचना या उपस्थित होना।

२. किसी उद्देश्य की सिद्धि या कार्य की पूर्ति के लिए कहीं प्रस्थान करना। जैसे—लड़के का कहीं खेलने या पढ़ने जाना। (ख) कर्मचारी का अधिकारी के पास जाना। (ग) सेना का युद्ध पर जाना। ३. यानों आदि के संबंध में, अथवा उनसे भेजी जानेवाली चीजों के संबंध में, नियत या नियमित रूप से यात्रा आरंभ करना। जैसे—(क) यहाँ से रोज सन्ध्या को एक नाव या मोटर जाती है। (ख) हजारों रुपये के बरतन बाहर जाते हैं। ४. भौतिक या यांत्रिक प्रक्रियाओं से होनेवाले कामों या बातों के संबंध में, किसी प्रकार के वाहक साधन के द्वारा प्रसारित या प्रेषित होना। जैसे—(क) अब अनेक स्थानों से हिंदी में भी तार जाने लगे हैं। (ख) अब तो रेडियो से सब जगह खबरें जाने लगी हैं। (ग) हवा चलने पर इस फूल की सुगंध बहुत दूर तक जाती है। ५. तरल पदार्थ का आधार या पात्र में से निकलना, बहना या रसना। जैसे—आँखों से पानी जाना, फोड़ा से मवाद जाना, गले या नाक से खून जाना। ६. रेखा आदि के रूप में होनेवाली कृतियों, रचनाओं आदि के संबंध में, एक बिंदु या स्थान से दूसरे बिंदु या स्थान तक विस्तृत रहना या होना। जैसे—यह गली उनके मकान तक अथवा यह सड़क दिल्ली से अमृतसर तक जाती है। ७. मन, विचार आदि के संबंध में, किसी की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—किसी काम, बात या व्यक्ति की ओर ध्यान या मन जाना।

मुहा०—किसी बात पर या किसी की बात पर जाना=महत्त्वपूर्ण समझकर उसकी ओर ध्यान देना। जैसे—आप इनकी बातों पर न जायँ, ये तो यों ही बकते रहते हैं।

८. किसी स्थान से किसी चीज का उठाने या हटाने पर वर्तमान न रहना। जैसे—मेज पर से घड़ी चोरी जाना, घर से माल या सामान जाना। ९. किसी के अधिकार, कार्यक्षेत्र, वश आदि से निकलना या बाहर होना। जैसे—(क) मुकदमेबाजी में उनके दोनों मकान गये। (ख) हमारी घड़ी जायगी तो तुम्हें दाम देना पड़ेगा।

मुहा०—जाने देना=(क) अधिकार, नियम आदि शिथिल रखकर किसी को प्रस्थान आदि की अनुमति देना। जैसे—लड़कों को खेलने-कूदने के लिए भी जाने दिया करो। (ख) किसी को उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर उसकी चिंता या विचार न करना अथवा उस पर ध्यान न देना। जैसे—अब लड़ाई-झगड़े की बातें जाने दो, और काम की बातें करो।

१०. कहीं या किसी से छूटकर अलग होना या रहना। जैसे—(क) घर से बीमारी या रोग जाना। (ख) किसी की नौकरी या यजमानी जाना। ११. न रह जाना। नष्ट होना। जैसे—आँखों की ज्योति जाना।

पद—गया गुजरा या गया बीता=जो बहुत कुछ नष्ट या विकृत हो चुका हो।

मुहा०—क्या जाता है=कुछ चिंता नहीं। कोई हानि नहीं है। जैसे—हमारा क्या जाता है, वह जो चाहे सो करे।

१२. मरना। जैसे—(क) उसके माँ-बाप तो पहले ही जा चुके थे। (ख) जो आया है, वह जायगा ही। १३. काल या समय व्यतीत होना। गुजरना। बीतना। जैसे—इस महीने में भी चार दिन जा चुके हैं। १४. बेचा जाना या बिकना। जैसे—यह मकान दस हजार रुपए से कम में नहीं जायगा।

विशेष—'जाना' क्रिया प्रायः दूसरी क्रियाओं के साथ संयोज्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त होकर कई प्रकार के अर्थ देता या भाव सूचित करता है। यथा—(क) मुख्य क्रिया की पूर्णता या समाप्ति। जैसे—बन जाना, मर जाना, मिट जाना, हो जाना। (ख) कुछ जल्दी या सहज में, परन्तु पूरी तरह से। जैसे—खा जाना, निगल जाना, समझ जाना। (ग) कोई कठिन, बड़ा या महत्त्वपूर्ण कार्य कौशलपूर्वक कर डालना। जैसे—(क) आप भी कभी-कभी बहुत-कुछ कह जाते हैं। (ख) वह भी बहुत-कुछ कर जायँगे।

जानि—स्त्री० [सं० जाया] स्त्री। भार्या।

वि० [सं० ज्ञानी] जानकार। उदा०—सेनापति देखत ही जानि सब जानि गई।—सेनापति।

अव्य० तुल्य। समान। उदा०—वाणी पाणि सुवानि जानि दधिजा हंसा रसा आसनी।—चंदबरदायी।

जानिब—स्त्री० [अ०] ओर। तरफ। दिशा।

जानिबदार—वि० [फा०] [भाव० जानिबदारी] तरफदारी या पक्षपात करनेवाला।

जानिबदारी—स्त्री० [फा०] विवाद आदि में, किसी का पक्ष लेने की क्रिया या भाव। तरफदारी करना।

जानी—वि० [फा०] १. जान या प्राणों से संबंध रखनेवाला। जैसे—जानी दुश्मन। २. जान या प्राणों के समान परम प्रिय। जैसे—जानी दोस्त या जानी मित्र।

स्त्री० [फा० जान] परमप्रिय स्त्री।

जानु--पुं० [सं० √ जन्+ञुण्] १.टाँग के वीच का जोड़। घुटना ।
स्त्री० [फा० जान] परमप्रिय स्त्री ।
२. उक्त जोड़ तथा उसके आस-पास का स्थान। जैसे—जानु में दर्द होता है। ३. जंघा। रान।

जानु-पाणि--क्रि० वि० [द्व० स०] घुटनों और हाथों से। घुटनों और हाथों के वल ।

जानुपानि--क्रि० वि०=जानु-पाणि।

जानुवाँ--पुं० [सं० जानु] पशुओं विशेषतः हाथियों को होनेवाला एक रोग जिसमें उनके घुटनों में पीड़ा होती है तथा जिसमें कभी-कभी घुटनों की हड्डियाँ उभर भी आती हैं ।

जानु-विजानु--पुं० [सं०] तलवार चलाने का एक ढंग।

जानू--पुं० [सं० जानु से फा० जानू] जंघा । जाँघ।

जाने--अव्य० [हिं० न जाने] ज्ञान या जानकारी नहीं कि । मालूम नहीं कि। उदा०--जाने किसकी दौलत हूँ मैं—दिनकर ।
पद--न जाने=नहीं जानता हूँ कि ।

जानो†--अव्य० [हिं० जानना] १. ऐसा या इस प्रकार प्रतीत या भासित होता है कि। २. इस प्रकार जान या समझ लो कि।

जान्य--पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि। (हरिवंश)

जाप--पुं० [सं०√जप् (जप करना) +घञ्] इष्ट देवता के नाम, मंत्र आदि का बार-बार उच्चारण। जप। (दे०)
†स्त्री०=जय-माला। (वव०)
स्त्री० [सं० जप] नाम, मंत्र आदि जपने की माला । जप-माला । उदा०--विरह भभूत जटा बैरागी। छाला काँध जाप कँठ लागी। जायसी ।

जापक—वि० [सं०√जप्+ण्वुल्—अक] जाप करने या जपनेवाला ।

जापन--पुं० [सं०√जप् +णिच्--ल्युट्--अन] १. जपने की क्रिया या भाव। २. जप ।

जापना--अ० [सं० ज्ञपन] जान पड़ना । मालूम होना । उदा०--अनमिल आखर अरथ न जापू ।--तुलसी।
स०=जपना।

जापा—पुं० [सं० जनन] १. स्त्री का संतान उत्पन्न करना ।प्रसव। २. प्रसूतिका-गृह। सौरी।

जापान—पुं० [हिं०] १. एशिया के पूर्वी समुद्र-तट पर के कई द्वीपों की सामूहिक संज्ञा । २. उक्त द्वीपों का राष्ट्र।

जापानी--वि० [हिं० जापान (देश)] १. जापान देश का। जापान संबंधी। २. जापान में बनने या होनेवाला ।
पुं० जापान देश का निवासी ।
स्त्री० जापान देश की भाषा ।

जापी (पिन्)—वि० [सं०√जप्+णिनि] जाप या जप करनेवाला ।

जाप्य—वि० [सं०√जप् +ण्यत्] १. जप करने या जपने योग्य । २. जो जपा जाने को हो ।

जाफ†—स्त्री० [अ० जोफ़] १. दुर्बलता, रोग आदि के कारण होनेवाली वेहोशी । मूर्च्छा। २. घुमटा । चक्कर ।

जाफत—स्त्री० [अ० जियाफ़त] बन्धु-बान्धवों, मित्रों आदि को दिया जानेवाला प्रीति-भोज । दावत ।

जाफरान--पुं० [अ० जाफ़रान] [वि० जाफ़रानी] १. केसर २. अफगानिस्तान में रहनेवाली एक तातारी जाति ।

जाफरानी--वि० [अ०] १. जिसमें जाफरान या केसर पड़ा हो। केसरिया। २. जाफरान या केसर के रंग का पीला। केसरिया ।

जाफरानी ताँबा--पुं० [हिं०] एक प्रकार का बढ़िया ताँबा जिसका रंग केसर की तरह पीला होता है ।

जाफरी--स्त्री० [अ० जअफर] १. बाँसों अथवा उसकी खपचियों की बनी हुई टट्टी अथवा परदा। २. एक प्रकार का गेंदा (पौधा और उसका फूल)।

जाब†--पुं०=जवाब ।

जा-बजा--क्रि० वि० [फा०] जगह-जगह पर। वहुत-सी जगहों में ।

जाबड़ा†—पुं०=जबड़ा ।

जाबता†—पुं०=जाब्ता।

जाबर†—वि० [?] वुड्ढा । वृद्ध। (डिं०)
†पुं०=जावर।

जाबाल—पुं० [सं० जवाला+अण्] सत्यकाम नामक एक वैदिक ऋषि।

जाबालि—पुं० [सं० जवाला+इञ्] महाराज दशरथ के एक मंत्री का नाम जो उनके गुरु भी थे।

जाबित—वि० [अ० जाबित] जब्त करनेवाला ।

जाबिर—वि० [फा०] १. (वह) जो जबर हो। जबरदस्ती करनेवाला। २. अत्याचारी। ३. उग्र। प्रचंड।

जाब्ता—पुं० [अ० ज़ाब्तः] १. नियम। २. कानून। विधान। जैसे--जाब्ता दीवानी या जाब्ता फौजदारी (अर्थात् आर्थिक व्यवहार से या दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला विधान)। ३. प्रबंध। व्यवस्था।

जाम†—पुं० [सं० जम्बू] १. जामुन का पेड़ या फल। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसमें छोटे मीठे फल लगते हैं। ३. उक्त वृक्ष का फल।
†पुं० जिमि (जिस प्रकार या ज्यों ही)। उदा०--जाम हड्ड पल कटे, ताम बाँधत वीर दम।--चंद्रवरदाई ।
पुं०=याम। (पहर)
पुं० [फा०] १. एक विशिष्ट प्रकार का कटोरा या प्याला जो प्रायः मद्य पीने के काम आता था। २. मद्य पीने का पात्र।
मुहा०—जाम चलना=शराव का दौर शुरू होना ।
पुं० [अनु० झम=जल्दी] जहाज की दौड़। (लश०)
वि० [अ० जैम, मि० हिं० जमना] अधिकता, दबाव आदि के कारण चारों ओर से कसे या दबे होने के कारण अपने स्थान पर अड़ा या रुका हुआ। जैसे--काँटा या कील जाम होना, रास्ता जाम होना ।

जामगिरी—स्त्री० [?] बंदूक का पलीता।

जामगी—स्त्री०=जामगिरी ।

जामण†—पुं० [सं० जन्मन्] १. जन्म। उदा०— छूटा जामण मरण सूं, भवसागर तिरियाह।--बाँकीदास २. दे० 'जामन'।

जामदग्न्य—पुं० [सं० जमदग्नि+ष्यञ्] जमदग्नि ऋषि के पुत्र, परशुराम।

जामदानी—पुं० [फा० जामःदानी] १. पहनने के कपड़े रखने की पेटी या बक्स। २. वह पेटी जिसमें बच्चे अपने खिलौने आदि रखते हैं।

३. कपड़ों पर होनेवाला एक प्रकार का कसीदे का काम या कढ़ाई। ४. एक प्रकार की मलमल जिस पर उक्त प्रकार का काम होता था।

जामन—पुं० [हिं० जमाना] वह खट्टा दही जो दूध को जमाने के लिए उसमें छोड़ा जाता है।

†पुं०=जामुन।

†पुं० [हिं० जन्मना] जन्म लेने की क्रिया या भाव।

जामना—अ०=जमना।

स०=जन्मना।

जामनी—स्त्री० [सं० यामिनी] रात।

†वि०=यवनी (यवनों का)।

जामबेतुआ—पुं० [हिं० जाम+बेत] १. बाँसों की एक जाति। २. उक्त जाति का बाँस।

जामल—पुं०=रुद्रयामल।

जामवंत—पुं०=जांबवान्।

जामा—पुं० [फा० जामः] १. पहनने का वह सिला हुआ कपड़ा जिससे गला, छाती, पीठ तथा पेट ढका रहे।

मुहा०—जामे से बाहर होना=इतना अधिक क्रुद्ध होना कि अपनी मर्यादा का ध्यान न रह जाय।

२. घुटने तक लम्बा एक विशेष प्रकार का पहनावा जिसमें कमर के नीचे का भाग घेरदार होता है और जो प्रायः विवाह के समय वर को पहनाया जाता है।

जामात—पुं०=जमायत।

जामाता (तृ)—पुं० [सं० जाया√मा (मान करना)+तृच्] १. संबंध में वह व्यक्ति जिसके साथ किसी ने अपनी कन्या का विवाह किया हो। दामाद। २. हुलहुल का पौधा।

जामातु*—पुं०=जामाता।

जामा मसजिद—स्त्री० [अ०] नगर की सब से बड़ी और मुख्य मसजिद जिसमें सब मुसलमान पहुँचकर नमाज पढ़ते हों।

जामि—स्त्री० [सं०√जम्+(खाना) इञ्] १. बहन। भगिनी। २. कन्या। लड़की। ३. पुत्री। बेटी। ४. पुत्र-वधू। ५. अपने कुल, गोत्र या परिवार की स्त्री। ६. अच्छे कुल की स्त्री। महिला।

जामिक—पुं० [सं० यामिक] १. पहरा देनेवाला २. रक्षक। रखवाला।

जामिन—पुं० [अ०] १. वह व्यक्ति जो अभियुक्त की जमानत करे। २. वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के कार्य करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले।

पुं० [हिं०जमाना] वह छोटी लकड़ी या लकड़ी का टुकड़ा जो नैंचे की दोनों नलियों को अलग रखने के लिए चिलमगर्दे और चूल के बीच में बांधा जाता है।

जामित्र—पुं० [सं० जायामित्र] जन्म-कुंडली में लग्न से सातवाँ स्थान जिसका विचार विवाह के समय इस दृष्टि से होता है कि भावी जाया या पत्नी से कितना और कैसा सुख-दुःख मिलेगा।

जामित्र-वेध—पुं० [ष० त०] ज्योतिष का एक अशुभ योग जो लग्न से सातवें स्थान में सूर्य, शनि या मंगल होने पर होता है। यह भावी पत्नी से प्राप्त होनेवाले सुख में बाधक होता है।

जामिनदार—पुं० [अ० जामिन+फा० दार] जमानत करनेवाला। जमानतदार।

जामिनी—स्त्री०=यामिनी।

†स्त्री०=जमानत।

जामी—स्त्री० १. दे० 'यामी'। २. दे० 'जामि'।

†पुं० [सं० जन्म] जन्म देनेवाला अर्थात् पिता। बाप। (डिं०)

जामुन—पुं० [सं० जंबु] १. गरम देशों में होनेवाला एक सदा बहार पेड़ जिसके गोल, छोटे, काले फल कसैलापन लिये मीठे होते हैं। २. उक्त वृक्ष के फल जो खाने और सिरका बनाने के काम आते हैं।

जामुनी—वि० [हिं० जामुन] १. जामुन का वृक्ष अथवा उसके फल से बनने, होने या संबंध रखनेवाला। जैसे—जामुनी लकड़ी, जामुनी सिरका। २. जामुन के रंग का। कुछ नीलापन लिये हुए काले रंग का।

पुं० जामुन के फल की तरह का नीलापन लिये काला रंग।

जामेय—पुं० [सं० जामि+ढञ्—एय] बहन का लड़का। भांजा।

जामेवार—पुं० [देश०] १. एक प्रकार का दुशाला जिस पर बेल-बूटे कढ़े रहते हैं। २. उक्त प्रकार की छपी हुई छींट।

जायँ†—क्रि० वि०=जाँय (व्यर्थ)।

जाय*—वि० [फा० जा=ठीक] उचित। वाजिब।

वि० [अ० जायः=नष्ट] निष्फल। व्यर्थ।

क्रि० वि० व्यर्थ।

स्त्री० [देश०] भूने हुए चने और उड़द की पकाई हुई दाल।

जायक—पुं० [सं०√जि (जीतना) +ण्वुल्—अक] पीला चंदन।

ज़ायका—पुं० [अ० जायक़ः] किसी वस्तु का वह गुण जिसके कारण वह खाई जाने पर प्रिय लगती या रुचिकर होती है। स्वाद।

जायकेदार—वि० [अ० जायक़ः+फा० दार] (खाद्य-पदार्थ) जिसमें अच्छा जायका या स्वाद हो। स्वादिष्ठ।

ज़ायचा—पुं० [फा० जायचः] जन्म-कुंडली।

जायज—वि० [अ० जायज़] १. जो नियम, विधान आदि के अनुसार ठीक हो। वैध। २. उचित। मुनासिब। वाजिब।

जायजरूर—पुं० [फा० जा+अ० जरूर] वह स्थान जहाँ लोग पाखाना फिरते हों। टट्टी। शौचालय।

जायजा—पुं० [अ० जायजः] १. जाँच-पड़ताल। २. किये हुए कामों का दिया या लिया जानेवाला विवरण। कैफियत।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

३. नित्य और नियमित रूप से लिखाई जानेवाली उपस्थिति। हाजिरी।

जायद—वि० [फा० जायद] १. अधिक। ज्यादा। २. अतिरिक्त।

जायदाद—स्त्री० [फा०] १. वह वस्तु अथवा वस्तुएँ जो किसी के निजी अधिकार में हों अथवा जिनपर कोई निजी अधिकार जतलाता हो। जैसे—हमारी जायदाद का उपभोग हमारे शत्रु करें, यह हमें सह्य नहीं हो सकता। २. उक्त के आधार पर विशेषतः वह वस्तु या वस्तुएँ जिन्हें उपभोग करने, बेचने आदि का पूरा अधिकार किसी को न्यायतः प्राप्त होता है।

जाय नमाज़—स्त्री०=जा-नमाज।

जायपत्री—स्त्री०=जावित्री।

जायफर—पुं०=जायफल ।

जायफल—पुं० [सं० जातीफल] एक प्रकार का सुगंधित फल जो औषध और मसाले के काम आता है ।

जायरी—पुं० [देश०] नदियों के किनारे की पथरीली भूमि में होनेवाली एक प्रकार की लता ।

जायल—वि० [फा०] जिसका नाश हो गया हो। जो नष्ट हो चुका हो। विनष्ट ।

जायस—पुं० [देश०] उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में का एक गाँव। (मलिक मुहम्मद जायसी की जन्म-भूमि)

जायसवाल—पुं० [हिं० जायस] १. जायस नामक गाँव में अथवा उसके आस-पास रहनेवाला व्यक्ति। २. कुरमियों, कलवारों आदि का एक वर्ग।

जायसी—वि० [हिं० जायस] १. जायस गाँव में होने अथवा उससे संवंध रखनेवाला। २. जायस गाँव में रहनेवाला (व्यक्ति)।

जाया—स्त्री० [सं०√जन् (उत्पत्ति) +यक्,--आत्व,--टाप्] १. विवाहिता स्त्री, विशेषतः ऐसी स्त्री जो किसी बालक को जन्म दे चुकी हो। २. जोरू। पत्नी । ३. जन्म कुंडली में लग्न से सातवाँ स्थान जहाँ से पत्नी के संबंध में गणना या विचार किया जाता है।

पुं० [हिं० जाना=जन्म देना] १. वह जो प्रसव कर के उत्पन्न किया गया हो। २. पुत्र। बेटा।

वि० [अ० जायः] जो उपयोग या उपभोग में ठीक प्रकार से न लाया गया हो और फलतः यों ही नष्ट हो गया हो।

जायाघ्न—पुं० [सं० जाया√हन् (मारना) +टक्] १. फलित ज्योतिष में एक योग जो पत्नी के जीवन के लिए घातक माना जाता है। २. व्यक्ति, जिसकी कुंडली में उक्त योग हो। ३. शरीर में का तिल।

जायाजीव—पुं० [सं० जाया—आजीव, ब० स०] १. वह जो अपनी पत्नी से व्यभिचार अथवा और कोई काम कराके अपनी जीविका चलाता हो। २. बगला पक्षी।

जायानुजीवी (विन्)—पुं० [सं० जाया--अनु√जीव् (जीना)+णिनि] =जायाजीव।

जायी (यिन्)--पुं० [सं०√जि (जीतना) + णिनि] संगीत में एक ताल।

जायु—पुं०[सं०√जि+उण्] औषध। दवा।

वि० जीतनेवाला। जेता।

जार—पुं०[सं०√जॄ (जीर्ण होना)+घञ्] १. किसी स्त्री के विचार से, वह पर-पुरुष जिसके साथ उसका अनुचित संबंध हो। उपपति। यार।

†पुं०=यार (मित्र)।

†वि०[हिं० जलाना] जलाने, नष्ट करने या मारनेवाला।

पुं० जलने की क्रिया या भाव।

†पुं०=जाल।

पुं०[फा० ज़ार] स्थान। जैसे—गुलजार, सब्जजार।

पुं०[लै० सीज़र] रूस के पुराने बादशाहों की उपाधि।

जारक—वि० [सं०√जॄ+ण्वुल्—अक] १. जलानेवाला। २. क्षीण या नष्ट करनेवाला। ३. पाचक।

जार-कर्म (न्)—पुं०[ष० त०] छिनाला। व्यभिचार।

जारज—पुं०[सं० जार√जन्+ड] वह बालक जो किसी स्त्री के उप-पति के योग से उत्पन्न हुआ हो।

जार-जन्मा (न्मन्)—वि०]ब० स०] जारज।

जारज-योग—पुं०[मध्य स०] फलित ज्योतिष में एक योग जिसमें उत्पन्न होनेवाला बालक जारज समझा जाता है।

जार-जात—वि०[तृ० त०] स्त्री के उपपति या जार से उत्पन्न। जारज।

जारजेट—स्त्री० [अं० जार्जेट] एक प्रकार का बढ़िया महीन कपड़ा।

जारण—पुं०[सं०√जॄ+णिच्+ल्युट्-अन] १. जलाने की क्रिया, भाव या विधि। २. पारे की भस्म बनाने के समय होनेवाली एक क्रिया या संस्कार।

जारणी—स्त्री०[सं० जारण+ङीष्] सफेद जीरा।

जारदवी—स्त्री० [सं० जरद्गव+अण्—ङीप्] ज्योतिष में एक वीथी का नाम जिसमें वराहमिहिर के अनुसार श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा और विष्णु पुराण के अनुसार विशाखा, अनुराधा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र हैं।

जारन—पुं०[सं० जारण] १. जलाने की क्रिया या भाव। २. जलाने की लकड़ी। ईंधन। जलावन।

जारना—सं०=जलाना।

जार-भरा—स्त्री० [जार√भृ (पोषण करना)+अच्-टाप्] अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से संबंध रखनेवाली स्त्री।

जारा†—पुं०=जाला।

जारिणी—स्त्री० [सं० जार+इनि--ङीप्] वह स्त्री जो किसी अन्य पुरुष से प्रेम करती हो।

जारी—वि०[अ०] १. जिसका चलन या प्रचलन बराबर हो रहा हो। जो चल रहा हो। जैसे--कार-बार या रोजगार जारी रहना। २. जिसका प्रवाह या बहाव बराबर होरहा हो। प्रवाहित। जैसे--गले से कफ या खून जारी होना। ३. (नियम आदि) जो इस समय लागू हो। जैसे--अध्यादेश आज ही जारी होगा।

पुं०[अ० ज़ारी=रोना] मुहर्रम में ताजियों के सामने गाया जानेवाला एंक प्रकार का गीत।

स्त्री०[सं० जार+ई (प्रत्य०)] पर-स्त्री गमन। जार-कर्म। जैसे—चोरी-जारी करना।

पुं०[देश०] झरबेरी का पौधा।

जारुत्थ—पुं०=जारूथ्य।

जारुथी—स्त्री०[सं० जरुथ+अण्-ङीप्] एक प्राचीन नगरी। (हरिवंश)

जारुधि—पुं०[सं० जारु√धा (रखना)+कि] एक पर्वत का नाम।

जारूथ्य—पुं०[सं० जरूथ+यञ्] वह अश्वमेध जिसमें तिगुनी दक्षिणा दी जाय।

जारोब—स्त्री०[फा०] झाड़ू। बुहारी।

जारोब कश—पुं०[फा०] झाड़ू देने या लगानेवाला व्यक्ति।

जार्य्यक—पुं०[सं०√जॄ (जीर्ण होना)+ण्यत्+कन्] मृगों की एक जाति।

जालंधर—पुं०[सं०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. जलंधर नामक दैत्य।

जालंधरी विद्या—स्त्री०[सं० जालंधर+अण्—ङीप्, जालंधरी और विद्या व्यस्त पद] इन्द्र-जाल।

जाल—पुं० [सं०√जल् (घात)+ण; बँ०,पं०जाल्; सिं० जारु; गु० जाडू;

मरा० जाड़ें] [स्त्री० अल्पा० जाली] १. धागे, सुतली आदि की बुनी हुई वह छेदोंवाली रचना जो चिड़ियाँ, मछलियाँ आदि फँसाने के काम आती है।

मुहा०—जाल डालना या फेंकना=मछलियाँ आदि पकड़ने के लिए जलाशय या नदी में जाल छोड़ना। **जाल फैलाना या बिछाना**=चिड़ियों, पशु-पक्षियों आदि को फँसाने के लिए जाल लगाना।

२. उक्त के आधार पर छेदोंवाली कोई रचना जिसमें कोई चीज फँसती या फँसाई जाती हो। जैसे—मकड़ी का जाल (जाला)। ३. बुनी या बनाई हुई कोई छेदोंवाली रचना। जैसे—टेनिस या फुटबाल के खेल में खंभों में बाँधा जानेवाला जाल। ४. झरोखा। ५. जाल की तरह का तंतुओं, रेशों आदि का उलझा हुआ रूप। जैसे—जटा या जड़ों का जाल। ६. रेखा या रेखाओं के आकार की वस्तुओं के एक दूसरे को काटते हुए मिलने से बननेवाला उक्त प्रकार का रूप। जैसे—(क) किसी देश में बिछा हुआ नदियों का जाल। (ख) साड़ी में बना हुआ जरदोजी के तारों का जाल। ७. आपस में गुथी हुई तथा दूर तक फैली हुई चीजों का विस्तार या समूह। जैसे—पद्य जाल। ८. लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसी युक्ति जिसके कारण कोई दूसरा व्यक्ति प्रायः असावधानता के कारण धोखा खाता हो। जैसे—तुम्हारे जाल में वे भी फँस जायँगे।

मुहा०—(बातों के संबंध में) जाल बिछाना या फैलाना=कोई ऐसी युक्ति निकालना जिससे कोई दूसरा व्यक्ति धोखा खा जाय। **(व्यक्ति के संबंध में) जाल बिछाना**=स्थान-स्थान पर किसी को पकड़ने के लिए व्यक्ति खड़े करना।

९. इंद्र-जाल। १०. अभिमान। घमंड। ११. वनस्पतियों आदि को जलाकर तैयार किया हुआ क्षार। खार। १२. कदंब का वृक्ष। १३. फूल की कली।† १४. पुरानी चाल की एक प्रकार की तोप।
पुं० [अ० जअल मि० सं० जाल] [वि० जाली] १. कोई दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी वास्तविक वस्तु का तैयार किया हुआ नकली रूप। २. विधिक क्षेत्र में, ऐसे पत्र, लेख आदि जो वास्तविक न होने पर भी वास्तविक के रूप में उपस्थित करना। (फोरजरी)

जालक—पुं० [सं०√जल् (संवरण)+घञ्,√कै (प्रतीत होना)+क] १. चिड़ियाँ, मछलियाँ आदि फँसाने का जाल। २. घास, भूसा आदि बाँधने का जाल। ३. झुंड। समूह। ४. कली। ५. झरोखा। ६. केला। कदली। ७. चिड़ियों का घोंसला। ८. अभिमान। घमंड। ९. गले में पहनने का मोतियों का एक गहना।

जाल-कारक—पुं० [ष० त०] मकड़ा।

जालकि—पुं० [सं०] १. जाल लगाकर पशु-पक्षी या मछलियों पकड़नेवाला व्यक्ति। २. बाज। ३. मकड़ा। ४. जादूगर।

जालकिनी—स्त्री० [सं० जालक+इनि-ङीप्] भेड़ी। मेषी।

जालकिरच—स्त्री० [हिं० जाल+किरच] वह पेटी जिसके ऊपर परतला लगा हो और नीचे तलवार लटकती हो।

जालकी (किन्)—पुं० [सं० जालक+इनि] बादल। मेघ।

जाल-कीट—पुं० [ब० स०] १. मकड़ी। २. [मध्य० स०] मकड़ी के जाल में फँसा हुआ कीड़ा।

जाल-गर्दभ—पुं० [मध्य० स०] एक क्षुद्र रोग जिसमें शरीर में सूजन, ज्वर आदि होते हैं। (सुश्रुत)।

जाल-जीवी (विन्)—पुं० [सं० जाल√जीव् (जीना)+णिनि] मछुआ। धीवर।

जालदार—वि० [हिं० जाल+फा० दार] १. जिसमें जाल की तरह बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। जालीदार। २. (वस्त्र) जिस पर धागों अथवा जरदोजी आदि के तारों का जाल बुना हुआ हो। जैसे—जालदार साड़ी।

जालना†—स०=जलाना।

जाल-पाद—पुं० [ब० स०] १. हंस। २. एक प्राचीन देश। ३. ऐसा जंतु या पक्षी जिसके पैर जालीदार झिल्ली से ढके हों। जैसे—चमगादड़, बत्तख आदि।

जाल-प्राया—स्त्री० [ब० स०] कवच। जिरह-बकतर।

जालबंद—पुं० [हिं० जाल+फा० बंद] एक प्रकार का गलीचा जिस पर कढ़ी हुई बहुत-सी लताओं, बेल-बूटों आदि के एक दूसरे को काटने के कारण जाल-सा बन जाता है।

जाल-बर्बुरक—पुं० [मध्य० स०] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड़।

जाल-रंध्र—पुं० [ब० स०] जालीदार खिड़की। झरोखा।

जालव—पुं० [सं०] एक दैत्य जिसका वध बलदेव जी ने किया था। (पुराण)

जालसाज—पुं० [अ० जअल+फा० साज़] ऐसा व्यक्ति जो धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए किसी असल चीज की जगह वैसी ही नकली चीज तैयार करता हो।

जालसाजी—स्त्री० [फा०] १. जाल साज होने की अवस्था या भाव। २. जालसाज का वह काम जो जाल के रूप में हो।

जाला—पुं० [सं० जाल] [स्त्री० अल्पा० जाली] १. घास भूसा आदि बाँधने की बड़ी जाली। २. बहुत से तंतुओं का वह विस्तार जो मकड़ी अपना शिकार फँसाने के लिए दीवारों के कोनों आदि में बनाती है। ३. आँख का एक रोग जिसमें अंदर की ओर मैल के बहुत से तंतु इधर-उधर फैल कर दृष्टि में बाधक होते हैं। ४. सरपत की जाति की एक घास जिससे चीनी साफ की जाती है। ५. पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का घड़ा।
†पुं०=जाल।
*स्त्री०=ज्वाला।

जालाक्ष—पुं० [सं० जाल-अक्षि ब० स०, षच्] झरोखा। गवाक्ष।

जालिक—पुं० [सं० जाल+ष्ठन्-इक] १. वह जो रस्सियों आदि का जाल बनाता या बुनता हो। २. वह जो जाल में जीव-जंतु फँसाता हो। बहेलिया। ३. बाजीगर। इंद्रजालिक। ४. मकड़ी। (डिं०)

जालिका—स्त्री० [सं० जाल+ठन्-इक्, टाप्] १. जाली। २. पाश। फंदा। ३. विधवा स्त्री। ४. मकड़ी। ५. कवच या जिरह-बक्तर। ६. लोहा। ७. झुंड। समूह।

जालिनी—स्त्री० [सं० जाल-इनि-ङीप्] १. कद्दू, घीया, तरोई आदि फल जिनकी तरकारी बनती है। २. परवल की लता। ३. चित्रशाला। ४. प्रमेह के रोगियों को होनेवाला एक रोग जिसमें मांसल अंगों में फुन्सियाँ होती हैं।

जालिनी-फल—पुं० [ष० त०] तरोई। घीया।

जालिम—वि० [अ०] जुल्म अर्थात् अत्याचार करनेवाला। अत्याचारी।

जालिमाना—वि०[अ०] अत्याचार-संबंधी। अत्याचारपूर्ण।

जालिया—पुं०[अ० जअल=फरेब+इया (प्रत्य०)] वह जो नकली दस्तावेज आदि बनाकर जालसाजी करता हो और इस प्रकार दूसरों की सम्पत्ति छीनता हो। जालसाज।

†पुं० [हिं० जाल+इया (प्रत्य०)] वह जो जाल में जीव-जंतु फँसाकर जीविका चलाता हो।

जाली—स्त्री०[हिं० जाल] १. कोई ऐसी रचना जिसमें प्रायः नियत और नियमित रूप से थोड़ी दूर पर छेद या कटाव हों। जैसे—दीवार में बनी हुई सीमेंट की जाली। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें उक्त प्रकार के बहुत छोटे-छोटे छेद होते हैं। ३. कच्चे आम के अंदर का तंतुजाल। ४. वह क्षेत्र जिसका पानी ढलकर किसी नदी में मिलता हो। ढलान। (कैचमेंट एरिया) ५. दे० 'रंध्र' (किले का)। ६. कुट्टी या चारा काटने का गड़ाँसा। ७. डोरियों आदि की वह जालदार रचना जिसमें घास-भूसा आदि बाँधते हैं।

वि० जो जाल रचकर धोखा देने के लिए बनाया गया हो। झूठा और नकली या बनावटी। जैसे--जाली दस्तावेज, जाली सिक्का।

जालीदार--वि० [देश०] (रचना) जिसमें जाली कटी या बनी हो।

जाल्म—वि० [सं०√जल् (दूर करना)+णिच्+म] १. नीच। २. मूर्ख।

जाल्मक—वि०[सं० जाल्म+कन्] १. घृणित। २. नीच।

जाव†—पुं०=जवाब।

जावक—पुं०[सं० यावक] १. अलता। अलक्तक। २. मेंहदी।

जावत—अव्य०=यावत्।

जावन—पुं०=जामन।

जावन्य—पुं०[सं० जवन+ष्यञ्] १. तेजी। वेग। २. जल्दी। शीघ्रता।

जावर†—पुं०[?] १. ऊख के रस में पकाई हुई एक प्रकार की खीर। २ कद्दू के टुकड़ों के साथ पकाया हुआ चावल।

जावा—पुं० [हिं० जामन या जमना] वह मसाला जिससे शराब चुआई जाती है। पाँस। बेसवार।

जावित्री—स्त्री०[सं० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका जो दवा, मसाले आदि के काम आता है।

जाषक—पुं०[सं०√जस् (छोड़ना)+ण्वुल्-अक, पृषो० षत्व] पीला चंदन।

जाषिणी—यक्षिणी।

जासु—सर्व०[हिं० जो] १. जिसको। जिसे। २. जिसका।

जासू—पुं०[देश०] वे पान जो मदक बनाने के लिए अफीम में मिलाये जाते हैं।

*सर्व०=जासु।

जासूस—पुं०[अ०] वह व्यक्ति, जो प्रायः छिपकर अपराधियों, प्रतिपक्षियों आदि की काररवाइयों का पता लगाता हो। गुप्तचर। भेदिया।

जासूसी—स्त्री०[अ०] १. जासूस होने की अवस्था या भाव। २. जासूस का काम, पद या विद्या।

वि० १. जासूस संबंधी। २. (साहित्य में उपन्यास, कहानी आदि) जिसमें जासूसों की कारगुजारियों का उल्लेख हो।

जासौं—अव्य०[हिं० जासु] १. जिसकी ओर। २. जिस ओर। उदा०--जासौं वै हेरहिं चख नारी।। बाँक नैन जनु हनहिं कटारी। —जायसी।

सर्व० जिसको।

जास्ती—वि०=ज्यादा।

स्त्री०=ज्यादती।

जास्पति—पुं० [सं० जाया-पति ष० त०, नि० सिद्धि।] जामाता। दामाद।

जाह—पुं० [फा०] १. पद। पदवी। २. वैभव। ३. गौरव। मर्यादा।

जाहक—पुं० [सं०√दह् (चमकना)+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] १. गिरगिट। २. जोंक। ३. घोंघा। ४. बिस्तर। बिछौना।

जाहर पीर--पुं०[फा० जहर+पीर] १४ वीं शताब्दी के पंजाब के एक प्रसिद्ध संत जो विषवैद्य भी थे। पंजाब तथा मारवाड़ में अब भी नागपंचमी के दिन इनकी धूमधाम से पूजा की जाती है।

जाहि—स्त्री०[सं० जाति] मालती नामक लता और उसका फूल।

जाहिद—पुं०[अ०] ऐसा व्यक्ति जो सांसारिक प्रपंचों, बखेड़ों, बुराइयों आदि से दूर रहकर ईश्वर का ध्यान करता हो।

जाहिर—वि०[अ०] जो स्पष्ट रूप से सबके सामने हो। २. प्रकट। ज्ञात। विदित।

जाहिरदारी—स्त्री०[अ०] केवल ऊपर से दिखाने के लिए (शुद्ध हृदय से नहीं) किया जानेवाला सद्व्यवहार। दिखौआ शिष्टाचार।

जाहिरा—क्रि० वि०[अ०] ऊपर से देखने पर।

वि० ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला।

जाहिरी—वि०[अ०] १. जो जाहिर हो। २. ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला। ३. ऊपरी। दिखौआ। बनावटी।

जाहिल—वि०[अ०] जो न तो पढ़ा-लिखा हो और न समझदार हो। निरा अशिक्षित और मूर्ख।

जाहिली—स्त्री०[अ०] जाहिल होने की अवस्था या भाव। मूर्खता।

जाही—स्त्री० [सं० जाती] १. चमेली की जाति का एक पौधा। २. उक्त पौधे के छोटे सुगंधित फूल। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें से उक्त प्रकार के फूल छूटते हैं।

जाहूत—पुं०[अ० लाहूत का अनु०] ऊपर के नौ लोकों में से अंतिम या नवाँ लोक। (मुसल०)

जाह्नवी—स्त्री०[सं० जह्नु+अण्-ङीप्] जह्नु ऋषि की पुत्री। गंगा।

जिंगिनी—स्त्री०[√जिंग् (गति)+णिनि—ङीप्] जिंगिन का पेड़।

जिंगी—स्त्री० [सं०√जिंग्+अच् ङीष्] मजीठ।

जिंद—पुं०=जिन (भूत-प्रेत)।

स्त्री०=जंद (फारस की पुरानी भाषा)।

†स्त्री०=जिंदगी। (पंजाब)

जिंदगानी—स्त्री०[फा०] जिंदगी।

जिंदगी—स्त्री०[फा०] १. जीवित रहने की अवस्था। जीवन। २. पूरी आयु या जीवन-काल।

मुहा०—**जिंदगी के दिन पूरे करना**=जैसे-तैसे या बहुत कष्ट से जीवन बिताना।

३. निश्चिंत और प्रसन्न रहने की मनोवृत्ति।

जिंदा—वि०[फा० ज़िंदः] १. जिसमें जीवन या प्राण हो। जीवित।

२. जिसमें जीवनी-शक्ति हो। सक्रिय और सचेष्ट। ३. प्रफुल्ल। हरा-भरा।

पद—जिन्दाबाद=अमर हो। सदा जीवित रहे।

जिंदादिल—वि० [फा०] [भाव० जिंदादिली] १. (व्यक्ति) जो सदा प्रसन्न रहता हो। हँसमुख। २. उत्साही।

जिंदु—स्त्री०=जिंदगी।

जिंवाना†—स०=जिमाना।

जिंस—स्त्री० [फा० जिन्स] १. चीज। पदार्थ। २. गेहूँ, चावल आदि अनाज। ३. जीवों, पदार्थों आदि की जाति, प्रकार या वर्ग।

जिंसवार—पुं० [फा०] पटवारियों या लेखपालों का वह कागज जिसमें वे परताल के समय खेत में बोई हुई फसल का नाम लिखते हैं।

जिंसी लगान—पुं० [हिं० जिंस+लगान] १. पकी हुई फसल का वह अंश जो जमींदार या सरकार की ओर से लगान के रूप में लिया जाय। २. जिंस के रूप में लगान उगाहने की प्रथा।

जिअना†—पुं० [सं० जीवन] १. जीवन। २. जल।
अ०=जीना (जीवित रहना)।

जिआ—स्त्री० पुं०=जिया।

जिआना†—स० १=जिलाना। २=पालना।

जिउ†—पुं०=जीव।

जिउका†—स्त्री० दे० 'जीविका'।

जिउकिया—पुं० [सं० जीविका] किसी विशिष्ट कार्य से जीविका निर्वाह करनेवाला व्यापारी; विशेषतः जंगलों और पहाड़ों से चीजें लाकर नगरों में बेचनेवाला व्यापारी।

जिउतिया—स्त्री० =जीवित-पुत्रिका (व्रत)।

जिउलेवा†—वि० [सं० जीव+हिं० लेना] जीवन या प्राण लेनेवाला। प्राण-घातक।

जिकड़ी—स्त्री० [देश०] व्रज में गाये जानेवाले एक तरह के गीत जिनमें दो दल में प्रायः होड़ बद कर एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

जिकिर†—पुं०=जिक्र।

जिक्र—पुं० [अ० जिक्र] १. किसी घटना या विषय का विवेचनात्मक वर्णन। चर्चा। २. भाषण, लेख आदि में होनेवाला किसी असंबद्ध या गौण घटना या विषय का उल्लेख। संक्षिप्त कथन। ३. परमात्मा के नाम का स्मरण। (सूफी संप्रदाय)

जिगन—स्त्री०=जिगिन।

जिगर—पुं० [सं० यकृत् से फा०] १. कलेजा। यकृत्। २. साहस। हिम्मत। ३. चित्त। मन। ४. किसी चीज का वह भीतरी अंश जिसमें उसका सार भाग रहता हो। जैसे—इमारती लकड़ी का जिगर।

जिगर कीड़ा—पुं० [फा० जिगर+हिं० कीड़ा] १. भेड़ों आदि का एक रोग जिसमें उनके कलेजे में कीड़े पड़ जाते हैं। २. उक्त रोग का कीड़ा।

जिगरा†—पुं० [हिं० जिगर] वह मनोभाव जिसके कारण मनुष्य बिना भय-भीत हुए बहुत बड़ा और प्रायः विकट काम करने के लिए उद्यत होता है।

जिगरी—वि० [फा०] १. जिगर-संबंधी। जिग़र का। २. आंतरिक और हार्दिक। जैसे—जिगरी बात। ३. अभिन्न हृदय। घनिष्ठ। जैसे—जिगरी दोस्त।

जिगिन—स्त्री० [सं० जिंगनी] एक प्रकार का जंगली पेड़।

जिगीषा—स्त्री० [सं० √जि (जीतना)+सन् द्वित्वादि, +अ–टाप्] १. किसी पर विजय प्राप्त करने अथवा किसी को अधीन या वशीभूत करने की इच्छा। २. लड़ने-भिड़ने या युद्ध करने की इच्छा। ३. उद्योग। प्रयत्न।

जिगीषु—वि० [सं०√जि+सन्, द्वित्वादि, +उ] १. (व्यक्ति) जिसमें जिगीषा हो। विजय का इच्छुक। २. युद्ध करने या चाहनेवाला। युयुत्सु।

जिगुरन—पुं० [देश०] चकोरों की एक जाति।

जिघांसक—वि० [सं०√हन् (मारना)+सन्, द्वित्वादि√ण्वुल्–अक] (व्यक्ति) जो किसी का वध करना चाहता हो।

जिघांसा—स्त्री० [सं०√हन्+सन्, द्वित्वादि, +अ–टाप्] वध करने की इच्छा।

जिघांसु—वि० [सं०√हन्+सन्, द्वित्वादि, +उ]=जिघांसक।

जिघ्र—वि० [सं०√घ्रा (सूंघना)+श, जिघ्र आदेश] १. सूंघनेवाला। २. शंका या संदेह करनेवाला।

जिच—स्त्री० [फा० जिच्च] १. शतरंज के खेल में वह स्थिति जिसमें बादशाह की शह तो न लगे पर उसके चलने के लिए कोई घर न रह जाय। २. उक्त के आधार पर प्रतियोगिता, विवाद में उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े रहें और समझौते आदि के लिए आगे कोई रास्ता न दिखाई देता हो। (डेड-लॉक)

जिजिया—स्त्री०=जीजी।
†पुं०=जजिया (मुसलमानी कर)।

जिजीविषा—स्त्री० [सं०√जीव् (जीना)+सन्, द्वित्वादि, +अ–टाप्] जीने की इच्छा।

जिजीविषु—वि० [सं०√जीव्+सन् द्वित्वादि, +उ] जो अधिक समय तक जीवित रहना चाहता हो।

जिज्ञासा—स्त्री० [सं०√ज्ञा (जानना)+सन् द्वित्वादि, +अ–टाप्] १. मनुष्य की वह इच्छा या भावना जिसके कारण वह नई तथा अद्भुत चीजों, बातों आदि के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त होता है। २. जानने अथवा जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी से कुछ पूछना।

जिज्ञासित—भू० कृ० [सं०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि, +क्त] (वस्तु या विषय) जिसके संबंध में किसी से जिज्ञासा की गई हो। पूछा हुआ।

जिज्ञासु—वि० [सं०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि, +उ] १. जिज्ञासा करनेवाला। २. (वह) जो किसी विषय के संबंध में नई बातों का पता लगा रहा हो।

जिज्ञासू—वि०=जिज्ञासु।

जिज्ञास्य—वि० [सं०√ज्ञा+सन्, द्वित्वादि, +ण्यत्] १. जिसके संबंध में जिज्ञासा की जाय। २. जिज्ञासा किये जाने के योग्य।

जिठाई†—स्त्री०=जेठाई।

जिठानी—स्त्री०=जेठानी।

जित्—वि० [सं० (पूर्व पद रहने पर) √जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] यौगिक शब्दों में, जिसने किसी को जीत लिया हो। जैसे—इंद्र-जित् (जिसने इंद्र को जीता हो)।
पुं० जीत। विजय।

क्रि० वि० जिस ओर। जिधर।

जितना—वि० [सं० इयत् अथवा हिं० जिस+तना (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० जितनी] जिस मान, मात्रा या संख्या में हो या हो सकता हो। जैसे—(क) जितना धन चाहो लुटा दो। (ख) जितने लड़के आये हैं उनमें मिठाई बाँट दो।

क्रि० वि० जिस मात्रा या परिमाण में। जैसे—जितना चाहो उतना बोलो। स०=जीतना।

जित-मन्यु—वि० [ब०स०] जिसने क्रोध आदि मनोविकारों को जीत लिया हो।

जितरा†—पुं०[हिं० जिता] वह कृषक जो किसी दूसरे कृषक की मजदूरी करने के बदले उससे हल, बैल आदि लेकर अपने खेत जोतता हो।

जित-लोक—वि०[ब० स०] (वह) जिसने स्वर्ग को जीत लिया हो।

जितवना*—स० [हिं०-जताना का पुराना रूप] जतलाना। परिचित कराना। उदा० -जितवत जितवत हित हिए किये तिरीछे नैन। बिहारी। स०=जिताना (जीत कराना)।

जितवाना—स०[हिं० जीतना का प्रे० रूप] दूसरे की जीत कराना।

जितवार†—वि० [हिं० जीतना] १. जीतनेवाला। विजेता। २. जितेंद्रिय।

जितवैया†—वि०[हिं० जीतना +वैया] जीतने या विजय प्राप्त करनेवाला।

जित-शत्रु—वि०[ब० स०] जिसने शत्रु पर विजय पाई हो।

जित-स्वर्ग—वि०[ब० स०] जिसने स्वर्ग को जीत लिया हो।

जिता†—वि०=जितना।

पुं० [हिं० जोतना] वह सहायता जो किसान लोग परस्पर जोताई, बोआई आदि के समय करते हैं।

जिताक्ष—वि०[जित-अक्ष, ब० स०] जितेंद्रिय।

जिताक्षर—वि० [जित-अक्षर, ब० स०] अच्छी तरह पढ़ने-लिखनेवाला।

जितात्मा (त्मन्)—वि० [जित-आत्मन् ब० स०] ज़ितेंन्द्रिय।

जिताना—स० [हिं० जीतना का प्रे० रूप] १. ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा जीत जाय। २. कुछ जीतने में किसी की सहायता करना।

जितार†—वि०[सं० जित्वर] १. जीतनेवाला। विजेता। २. प्रबल। बलवान। ३. भारी। वजनी। (क्व०)

जितारि—वि० [जित-अरि, ब० स०] १. शत्रुओं को जीतनेवाला। २. काम, क्रोध आदि मनोविकारों को जीतनेवाला।

पुं०गौतम बुद्ध का एक नाम।

जिताष्टमी—स्त्री०[सं० जिता-अष्टमी, कर्म० स०] आश्विन कृष्ण अष्टमी जिस दिन हिन्दू स्त्रियाँ अपने पुत्रों के कल्याण के लिए उपासना, व्रत आदि करती हैं। जीवित-पुत्रिका।

जिति--स्त्री०[सं०√जि (जितना)+क्तिन्] १. जीत। विजय। २. प्राप्ति। लाभ।

जितुम—पुं०[यू० डिडुमाई] मिथुन राशि।

जितेंद्रिय—वि०[जित-इंद्रिय, ब० स०] जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो। अर्थात् उन्हें अपने वश में कर लिया हो।

जितै*—क्रि० वि०[सं० यत्र, प्रा० यत्त] जिस ओर। जिस दिशा में। जिधर।

जितैया*—वि० [हिं० जीतना+ऐया (प्रत्य०)] जीतनेवाला।

जितो†—क्रि० वि०[हिं० जिस] जितना।

जित्तम—पुं०[यू० डिड्डुमाइ] मिथुन राशि।

जित्य—पुं०[सं०√जि+क्यप्, तुक्] [स्त्री० जित्या] १. एक प्रकार का बड़ा हल। २. पाटा। हेंगा।

जित्या—स्त्री० [सं० जित्य+टाप्] १. विजय। २. प्राप्ति। लाभ। ३. हल और उसका फाल।

जित्वर—वि० [सं०√जि+क्वरप्, तुक्] वह जिसे विजय मिली हो। जीतनेवाला। विजयी।

जित्वरी—स्त्री० [सं० जित्वर+ङीप्] काशी पुरी का एक प्राचीन नाम।

जिद—स्त्री० [अ० ज़िद] [वि० जिद्दी] १. अपनी बात किसी से पूरी कराने के लिए उस पर अड़े रहने और दूसरे की बात न मानने की अवस्था या भाव। हठ। २. अनुचित रूप से किसी बात के लिए किया जानेवाला आग्रह या हठ। दुराग्रह।

क्रि० प्र०—करना।—चढ़ना।—ठानना।—पकड़ना।—बाँधना।

जिदियाना—अ० [हिं० जिद] जिद करना।

स० किसी को जिद करने में प्रवृत्त करना।

जिद्द†—स्त्री०=जिद।

जिद्दन्—क्रि० वि० [अ०] जिद अर्थात् दुराग्रह या हठ करते हुए।

जिद्दी—वि० [फा०] वह जो बहुत अधिक जिद (दुराग्रह या हठ) करता हो और दूसरों की बात न मानता हो। दुराग्रही।

जिधर—क्रि० वि० [हिं० जिस्+धर (प्रत्य०)] जिस ओर। जिस तरफ। जैसे—जिधर जी चाहे, उधर चले जाओ।

पद—जिधर-तिधर=अधिकतर स्थानों में। जहाँ-तहाँ।

जिन—पुं० [सं०√जि+नक्] १. विष्णु। २. सूर्य। ३. गौतम बुद्ध। ४. जैनों के एक तीर्थंकर।

वि० १. जयी। २. राग-द्वेष आदि को जीतनेवाला। ३. बहुत बुड्ढा।

वि० सर्व० हिं० 'जिस' का विभक्ति युक्त बहु-वचन रूप। जैसे--जिन (लोगों) को चलना हो, वे यहाँ आ जायँ।

पुं० [फा०] भूत-प्रेत।

जिनगी†—स्त्री०=ज़िंदगी।

जिनस†—पुं०=जिंस।

जिना—पुं० [अ० ज़िना] पर-पुरुष या पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित-संबंध। छिनाला। व्यभिचार।

जिनाकार—वि० [अ० ज़िना+फा० कार] [भाव० जिनाकारी] पर-स्त्री गमन करनेवाला।

जिना-बिल-जब्र—पुं० [अ०] पर-स्त्री से बलात् किया जानेवाला संभोग जो विधिक दृष्टि से बहुत बड़ा अपराध है। बलात्कार।

जिनि—अव्य० [हिं० जनि] मत। नहीं।

जिनिस—स्त्री०=जिंस।

जिनिसवार—पुं०=जिंसवार।

जिनेंद्र—पुं० [जिन-इंद्र, ष० त०] १. एक बुद्ध। २. एक जैन संत।

जिन्नात—पुं० [अ० 'जिन' का बहु० रूप] भूत-प्रेत आदि।

जिन्नी—वि० [अ०] जिन या भूत संबंधी।

पुं० वह व्यक्ति जिसके वश में कोई जिन या भूत हो।

जिन्स—स्त्री०=जिंस ।

जिन्ह†—सर्व०=जिन ।

पुं०=जिन (भूत-प्रेत) ।

जिप्सी—पुं० [ई० जिप्ट (मिस्र देश)] १. भारतीय मूल से उत्पन्न एक यायावर जाति जो पहले मिस्र देश में रहती थी और जो अब संसार के अनेक भागों में फैल गई है। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

जिबह*—पुं०=जबह ।

जिब्भा†—स्त्री०=जिह्वा (जीभ)।

जिब्रील—पुं० [अ० जिब्रईल] इस्लाम में, एक देव-दूत ।

जिभला†—वि० [हिं० जीभ+ला (प्रत्य०)] चटोरा।

जिमखाना—पुं० [अं० जिमनास्टिक में का जिम+फा० खानः] वह सार्वजनिक स्थान जहाँ तरह-तरह के खेलाड़ी इकट्ठे होकर व्यायाम करते और शारीरिक श्रम के खेल खेलते हों।

जिमाना—स० [हिं० जीमना का स० रूप] भोजन कराना। खिलाना ।

जिमि—क्रि० वि० [हिं० जिस+इमि (प्रत्य०)] जिस प्रकार से। जैसे।

जिमित—पुं० [सं०√जिम् (खाना) +क्त] भोजन ।

जिमीदार—पुं०=जमींदार ।

जिम्मा—पुं० [अ० ज़िम्मः] १. किसी वस्तु के संरक्षण का भार । २. कोई कार्य संपादित करने या कराने का भार । ३. किसी प्रकार के परिणाम या फल की जवाबदेही । उत्तरदायित्व।

जिम्मादार (वार)—पुं० [भाव० जिम्मादारी (वारी)] जिम्मेदार ।

जिम्मेदार—पुं० [फा०] वह जिस पर किसी कार्य, वस्तु अथवा और किसी बात की जवाबदेही हो ।

जिम्मेदारी—स्त्री० [फा०] जिम्मेदार होने की अवस्था या भाव ।

जिम्मेवार—वि० [भाव० जिम्मेवारी]=जिम्मेदार ।

जिय†—पुं० [सं० जीत] जी। चित्त। मन ।

जियन†—पुं० =जीवन।

जिय-बधा*—वि० [सं० जीव+वध] जीवों को वधने या उनकी हत्या करनेवाला। हत्यारा।

पुं० जल्लाद ।

जियरा*—पुं० [हिं० जी] मन। हृदय ।

जिया—स्त्री० [हिं० जी या जिलाना] दूध पिलानेवाली दाई। (मुसल० स्त्रियाँ)

पुं०=जी (मन)।

जिया जंतु†—पुं०=जीव-जंतु ।

जियादा—वि० [भाव० जियादती] =ज्यादा ।

जियान†—पुं० [अ०] १. नुकसान। हानि। २. आर्थिक हानि। घाटा।

जियाना†—स०=जिलाना। (पूरब)

जिया पोता—पुं०=पुत्र जीवा (पेड़)।

जियाफत—स्त्री० [अ०] १. आतिथ्य। मेहमानदारी । २. दावत। भोज।

जियारत—स्त्री० [अ० जियारत] मुसलमानों में, किसी महापुरुष अथवा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ की जानेवाली यात्रा ।

जियारतगाह—पुं० [जियारत+फा० गाह] १. धार्मिक दृष्टि से वह पवित्र और पूज्य स्थान जहाँ लोग दर्शन, पूजन आदि के लिए जाते हों।

जियारती—वि० [फा० ज़ियारती] १. जियारत (दर्शन, पूजन आदि) से संबंध रखनेवाला। २. जियारत करने के लिए कहीं जानेवाला ।

जियारी†—स्त्री० [हिं० जिय=जीव] १. जीवन । जिंदगी। २. जीविका। ३. जीवट। साहस। हिम्मत।

जिरगा—पुं० [फा० जिरगः] १. दल। मंडली । २. पठानों आदि में किसी एक ही कुल, परिवार आदि के ऐसे लोगों का समूह जो प्रायः एक ही क्षेत्र या स्थान में रहते हों। ३. उक्त प्रकार के लोगों की सामूहिक सभा या सम्मेलन ।

जिरण—पुं० [सं०√जिर् (हिंसा करना) +ल्युट्--अन्] जीरा ।

जिरह—पुं० [अ० जुरह] १. व्यर्थ में किया जानेवाला तर्क । २. न्यायालय में, किसी की कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिए की जानेवाली पूछ-ताछ।

स्त्री० [फा० जिरह] लोहे की कड़ियों का बना हुआ एक प्रकार का जाल जिसे युद्ध के समय छाती पर पहना जाता था।

जिरही—वि० [हिं० जिरह] (योद्धा) जिसने जिरह पहना हो।

जिराअत—स्त्री० [अ० ज़िराअत] खेती। कृषि।

क्रि० प्र०—करना।

पद—जिराअत पेशा=किसान । खेतिहर ।

जिराफा—पुं० [अं० जेराफ़] अफ्रीका के जंगलों में रहनेवाला हिरन की जाति का एक पशु ।

जिरायत—स्त्री०=जिराअत।

जिरिया—पुं० [हिं० जीरा] एक प्रकार का धान जिसमें से निकलनेवाले चावल जीरे के समान छोटे तथा पतले होते हैं।

जिला—स्त्री० [अ०] १. अच्छी तरह साफ करके खूब चमकाने की क्रिया या भाव । २. उक्त प्रकार से उत्पन्न की हुई चमक-दमक । ओप ।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

पुं० [अ० ज़िलऽ] १. प्रदेश । प्रांत । २. आज-कल किसी राज्य का वह छोटा विभाग जो किसी एक प्रधान अधिकारी (कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर) की देख-रेख में हो और जिसमें कई तहसीलें हों। ३. किसी इलाके या प्रदेश का कोई छोटा विभाग । ४. किसी बात या विषय की वह निश्चित सीमा जिसका उल्लंघन अनुचित माना जाता हो । जैसे—जिले की दिल्लगी=शिष्ट-सम्मत परिहास ('छूट की दिल्लगी' से भिन्न) ।

जिलाकार—पुं० [अ० जिला+फा० कार] धातुओं को माँजकर तथा रोगन आदि के द्वारा उन्हें चमकानेवाला कारीगर ।

जिला-जज—पुं० [अ० ज़िला+अं० जज] न्यायालय में, वह अधिकारी जिसे जिले भर के दीवानी और फौजदारी मुकदमों की अपीलें सुनने का अधिकार होता है।

जिलाट—पुं० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का चमड़े का बाजा।

जिलादार—पुं०=जिलेदार ।

जिलादारी—स्त्री०=जिलेदारी ।

जिलाना—स० [हिं० जीना का स०] १. मृत शरीर को फिर से जीवित करना। जीवन डालना या देना। २. मरते हुए को मरने से बचाना।

३. ऐसा उपाय, प्रयत्न या व्यवस्था करना जिसमें कोई अच्छी तरह जीवित रह सके। ४. (पशु-पक्षी आदि) पालना-पोसना। ५. धातु की भस्म को फिर से धातु के रूप में परिवर्तित करना। (कल्पित)

जिला बोर्ड—पुं० [अ० ज़िला+अं० बोर्ड] वह अर्द्ध सरकारी संस्था जिसे किसी जिले की जनता चुनती है और जो स्थानीय प्रशासन तथा लोक-सेवा संबंधी कार्य करती है।

जिलासाज—पुं० [फा०] धातुओं के बरतनों, हथियारों आदि पर ओप चढ़ानेवाला कारीगर।

जिलाह*—वि० [अ० जल्लाद ?] अत्याचारी।

जिलेदार—पुं० [फा०] मध्य युग में, बड़े जमींदारों या छोटे राजाओं का वह अधिकारी जो किसी छोटे भू-भाग या जिले की देख-रेख करता और वहाँ से कर, लगान आदि वसूल करता था।

जिलेदारी—स्त्री० [फा०] जिलेदार का काम, पद या भाव।

ज़िलेबी†—स्त्री०=जलेबी।

जिल्द—स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १. शरीर के ऊपर की खाल या चमड़ा। त्वचा। २. कागज, चमड़े आदि से मढ़ी हुई वह दफ्ती जो किसी पुस्तक के ऊपर और नीचे उसके पृष्ठों की रक्षा के लिए लगाई जाती है।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँधना।—मढ़ना।

३. पुस्तक की प्रति। ४. पुस्तक का ऐसा खंड जो अलग भाग के रूप में हो। भाग।

जिल्दगर—पुं० [फा०] जिल्द बंद।

जिल्दबंद—पुं० [फा०] पुस्तकों पर जिल्दें बाँधनेवाला कारीगर।

जिल्दबंदी—स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जिल्दसाज—पुं० [फा०] [भाव० जिल्दसाजी] जिल्द बाँधनेवाला व्यक्ति। जिल्दबंद।

जिल्दसाजी—स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने का काम या पेशा।

जिल्दी—वि० [अ०] त्वचा संबंधी। जैसे—जिल्दी-बीमारी।

जिल्लत—स्त्री० [अ०] अपमानित, तिरस्कृत और तुच्छ या दुर्दशा-ग्रस्त होने की अवस्था या भाव। दुर्गति।

क्रि० प्र०—उठाना।

जिल्ली—पुं० [देश०] बाँसों की एक जाति।

जिल्होर—पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

जिव†—पुं०=जीव।

जिवड़ा—पुं० [सं० जीव] प्राण। उदा०—स्याम बिना जिवड़ो मुरझावे।—मीराँ।

जिवड़ी—स्त्री० [सं० जीव] शरीर। उदा०—जो इहाँ परि पालै जिवड़ी।—प्रिथीराज।

जिवाँना†—स० १. =जिमाना। २.=जिलाना।

जिवाजिव—पुं० [सं०=जीवञ्जीव, पृषो० सिद्धि] चकोर (पक्षी)।

जिवाना*—स० १.=जिलाना। २.=जिमाना।

जिष्णु—वि० [सं०√जि (जीतना)+ग्स्नु] विजय प्राप्त करनेवाला। जेता। विजयी।

पुं० १. विष्णु। २. सूर्य। ३. इंद्र। ४. वसु। ५. अर्जुन।

जिस—वि० [सं० यः, यस्] हिंदी विशेषण 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति से युक्त विशेष्य के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—जिस व्यक्ति को, जिस जीवन का, जिस नौकर ने, जिस कमरे में आदि।

सर्व० हिं० सर्वनाम 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—जिसने, जिससे, जिस पर, जिसमें, जिसको आदि।

पद—जिसका तिसका=किसी निश्चित व्यक्ति का नहीं। चाहे किसी व्यक्ति का। जैसे—सारी संपत्ति जिसकी तिसकी हो जायगी।

जिसिम—पुं०=जिस्म (शरीर)।

जिस्ट—वि० [?] १. बड़ा। २. भारी। उदा०—जग्य जिस्ट उचिष्ट करै, कातर कृत हारिय।—चन्दवरदाई।

जिस्ता—पुं० १=जस्ता। २=दस्ता।

जिस्म—पुं० [फा०] [वि० जिस्मानी] १. देह। बदन। शरीर। २. स्त्री या पुरुष का गुप्त अंग। भग या लिंग। (क्व०)।

जिस्मानी—वि० [फा०] जिस्म या शरीर से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। शारीरिक।

जिस्मी—वि०=जिस्मानी।

जिह—स्त्री० [फा०, सं० ज्या] धनुष का चिल्ला। ज्या।

वि०, सर्व०=जिस। उदा०—जिह जिह बिधि रीझे हरी सोई विधि कीजै हो।—मीराँ।

जिह्न—पुं० [अ० जिह्न]=जेह्न (बुद्धि)।

जिहाद—पुं० [अ०] [वि० जिहादी] १. धार्मिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया जानेवाला युद्ध। २. वह युद्ध जो मध्य-युग में मुसलमान अपने धार्मिक प्रचार करने के लिए दूसरे धर्मावलम्बियों से करते थे।

मुहा०—जिहाद का झंडा खड़ा करना=मजहब के नाम पर लड़ाई छेड़ना।

जिहादी—वि० [अ०] १. जिहाद-संबंधी। २. जिहाद करनेवाला।

जिहानक—पुं० [सं०√हा (गति)+शानच्, +कन्] प्रलय।

जिहालत—स्त्री०=जहालत (मूर्खता)।

जिहासा—स्त्री० [सं०√हा (त्यागना)+सन् द्वित्वादि+अ—टाप्] त्याग की इच्छा।

जिहासु—वि० [सं०√हा+सन्, द्वित्वादि+उ] त्याग की इच्छा रखनेवाला।

जिहीर्षा—स्त्री० [सं०√हृ (हरण करना)+सन्। द्वित्वादि+अ—टाप्] हरने या हरण करने की इच्छा।

जिहीर्षु—वि० [सं०√हृ+सन् द्वित्वादि,+—उ] हरण करने की इच्छा या कामना करनेवाला।

जिह्म—वि० [सं०√हा (त्याग)+मन्, सन्वद्भाव, द्वित्वादि] १. टेढ़ा। वक्र। २. क्रूर। निर्दय। ३. कपटी। छली। ४. दुष्ट। पाजी। ५. खिन्न। दुःखी। ६. धीमा। मंद।

पुं० १. अधर्म। २. तगर का फूल।

जिह्मग—वि० [सं० जिह्म√गम् (जाना)+ड] १. टेढ़ी-तिरछी चाल चलनेवाला। २. धीमी चाल से चलनेवाला। ३. चालबाज। धूर्त्त।

पुं० सर्प। साँप।

जिह्म-गति—वि० [ब० स०] जिसकी गति या चाल टेढ़ी हो। टेढ़ा चलनेवाला।

पुं० साँप ।

जिह्मगामी (मिन्)—वि० [सं० जिह्म√गम्+णिनि] [स्त्री० जिह्मगाभिनी]=जिह्मग ।

जिह्मता—स्त्री० [सं० जिह्म+तल्—टाप्] १. टेढ़ापन। वक्रता । २. धीमापन । मंदता । ३. कुटिलता। ४. दुष्टता। ५. धूर्त्तता।

जिह्माक्ष—वि० [जिह्म-अक्षि] टेढ़ी या तिरछी आँखवाला । ऐंचा या भेंगा ।

जिह्मित—वि० [सं०जिह्म+इतच्] १. टेढ़ा। २. घूमा हुआ। ३. चकित। विस्मित ।

जिह्मीकृत—वि० [सं० जिह्म+च्वि√कृ (करना) +क्त, दीर्घ] झुकाया या टेढ़ा किया हुआ ।

जिह्वक—पुं० [सं० √ह्वे (बुलाना)+ड, द्वित्वादि,+कन्] एक प्रकार का सन्निपात रोग जिसमें रोगी से स्पष्ट बोला नहीं जाता और उसकी जीभ लड़खड़ाती है। इसके रोगी प्रायः गूंगे या बहरे हो जाते हैं ।

जिह्वल—वि० [सं० जिह्व√ला (लेना) +क] चटोरा ।

जिह्वा—स्त्री० [सं०√लिह् (चाटना)+व, नि० सिद्धि] १. जीभ। २. आग की लपट ।

जिह्वाग्र—पुं० [जिह्वा--अग्र, ष० त०] जीभ का अगला भाग । वि० (कथन, बात या विषय) जो जीभ के अगले भाग पर अर्थात् हर समय उपस्थित या प्रस्तुत रहे । जैसे--सारी गीता उन्हें जिह्वाग्र है।

जिह्वाच्छेद—पुं० [ष० त०] वह दंड जिसमें किसी की जीभ काट ली जाती है।

जिह्वाजप— वि० [तृ० त०] एक प्रकार का जप जिसमें केवल जीभ हिले।

जिह्वाप—वि० [सं० जिह्वा√पा (पीना) +क] जीभ से जल पीनेवाला। जैसे--कुत्ता, गदहा, घोड़ा आदि।

जिह्वामूलीय—वि० [सं० जिह्वा—मूल ष० त०, +छ—ईय] १. जो जिह्वा के मूल से संबंध रखता या उसमें होता हो। २. (व्याकरण में उच्चारण की दृष्टि से वर्ण) जिसका उच्चारण जीभ के मूल या बिलकुल पिछले भाग से होता है। जैसे—यदि क या ख से पहले विसर्ग हो तो क या ख का उच्चारण (जैसे—दुःख में के 'ख' का उच्चारण) जिह्वामूलीय हो जाता है ।

जिह्वा-रद—पुं० [ब० स०] पक्षी ।

जिह्वा-रोग—पुं० [ष० त०] जीभ में होनेवाले रोग जो सुश्रुत में ५ प्रकार के माने गये हैं।

जिह्वालिह—पुं० [जिह्वा√लिह् (चाटना) +क्विप्] कुत्ता ।

जिह्विका—स्त्री० [सं० जिह्वा+ठन्—इक, टाप्] जीभी।

जिह्वोल्लेखनी—स्त्री० [जिह्वा—उल्लेखनी, ष० त०] जीभी।

जींगन† —पुं०=जुगनू ।

जी—पुं० [सं० जीव] चित्त, मन, हृदय, विशेषतः इनका वह पक्ष या रूप जिसमें इच्छा, कामना, दुःख-सुख, प्रवृत्ति, संकल्प-विकल्प, साहस आदि का अवस्थान होता है ।

विशेष—'जी' हमारे शारीरिक अस्तित्व, रुचि, विचार आदि सभी का प्रतिनिधित्व करता या प्रतीक होता है, और इसी लिए अनेक अवसरों पर कलेजा, चित्त, जान, मन, हृदय आदि से संबद्ध कुछ मुहावरे भी 'जी' के साथ चलते और प्रायः उसी प्रकार के अर्थ देते हैं। जैसे—जी या मन उदास या दुःखी होना, जी या मन फिर जाना, जी या चित्त चाहना, जी या मन करना या चाहना, जी या मन का बुखार निकालना आदि।

पद—जी का=जीवटवाला। साहसी । हिम्मती। **जी चला**=मनचला। (देखें) **जी जानता है**=हृदय ही अनुभव करता है, कहा नहीं जा सकता है । **जी से** =चित्त या मन लगाकर । पूरी तरह से ध्यान देते हुए ।

मुहा०—जी अच्छा होना=शारीरिक आरोग्य के फल-स्वरूप चित्त शांत, सुखी और स्वस्थ होना । **(किसी व्यक्ति पर) जी आना**=शृंगारिक दृष्टि से, मन में किसी के प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न होना । **जी उकताना या उचटना** =किसी काम, बात या स्थान से प्रवृत्ति या मन हटना और विकलता या विरक्ति होना। **जी काँपना**=मन ही मन बहुत अधिक भय होना । **जी उड़ जाना**=आशंका, भय आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। धैर्य और होश-हवास जाता रहना । **जी करना या चाहना**=कुछ करने, पाने आदि की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **(किसी बात से) जी काँपना**=बहुत अधिक दुर्भावना या भय होना। बहुत डर लगना । **जी का बुखार निकालना**=कुछ कठोर बातें कहकर मन में दबा हुआ कष्ट या संताप दूर या हल्का करना । **जी का बोझ हल्का होना**=इच्छा पूरी होने, खटका या चिंता दूर होने आदि पर मन निश्चित और स्वस्थ होना। **जी की जी में रहना**=अभिलाषा, कामना अथवा ऐसी ही और कोई बात पूरी न होना और मन में ही रह जाना। **जी की निकालना**=(क) मन में दबी हुई कटु या कठोर बात मुँह से कहकर जी हल्का करना । (ख) जी की उमंग, वासना या हौसला पूरा करना । **जी की पड़ना**=प्राण बचाना कठिन हो जाना । **(किसी के) जी को जी समझना**=दूसरे को क्लेश न पहुँचाना दूसरे पर दया करना । **जी को मार कर रखना**=प्रवृत्ति, वासना आदि को दबा या रोककर रखना। **(कोई.बात) जी को लगना**=(क) चिंता आदि का मन में घर करना या स्थायी होना । (ख) मन पर पूरा प्रभाव डालना। जैसे—उनकी बात हमारे जी में लग गई । **(किसी के) जी को लगना**=किसी के पीछे पड़ना। किसी को सुख से न रहने देना। जैसे—यह लड़का तो खिलौनों के लिए जी को लग जाता है। **जी खटकना**=मन में कुछ आशंका या खटका होना। **(किसी से) जी खट्टा होना**=किसी की ओर से (कष्ट पहुँचने पर) चित्त या मन में विरक्ति उत्पन्न होना । **जी खपाना**=बहुत अधिक परिश्रम या सिरपच्ची करना। **जी खरा-खोटा होना**=मन कभी स्थिर और कभी चंचल होना। यह निश्चय न कर पाना कि अमुक अच्छा काम करें या अमुक बुरा काम। **जी खोलकर**=(क) खूब अच्छी या पूरी तरह से और शुद्ध हृदय से। यथेच्छ। जैसे—जी खोलकर दान देना या बातें करना। **जी गिरा जाना**=जी बैठा जाना । **जी घबराना**=मन में विकलता, व्यग्रता आदि उत्पन्न होना। **(किसी चीज पर) जी चलना**=कुछ पाने या लेने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **जी चाहना**=इच्छा या कामना होना। **जी चुराना**=कोई काम करने से बचने के लिए इधर-उधर हटना या होना। **जी छूटना**=(क) मन में उत्साह, साहस आदि न रह जाना । (ख) पिंड या पीछा छूटना । छुटकारा मिलना । जैसे—चलो, इस झगड़े से तो जी छूटा । **जी छोटा करना**=(क)

निराश या विफल होने पर उदास या खिन्न होना। (ख) उदारता के भावों से रहित या संकीर्णता के विचारों से युक्त होना। **जी छोड़ना**=हृदय की दृढ़ता या साहस खोना। हिम्मत हारना। **जी छोड़कर भागना**=अपने बचाव या रक्षा के लिए पूरी शक्ति से दूर निकल जाने का प्रयत्न करना। **जी जलना**=चित्त बहुत ही दुःखी और संतप्त होना। मन में बहुत अधिक कष्ट या संताप होना। **(किसी का) जी जलाना**=किसी को बहुत अधिक दुःखी और संतप्त करना।

मुहा०—**(किसी काम में) जी जान लड़ाना या जी जान से लगना**=किसी कार्य या प्रयत्न में अपनी सारी शक्ति लगा देना। **(कोई काम या बात) जी जान को या जी जान से लगना**=किसी काम या बात की इतनी अधिक चिंता होना कि हर समय उसका ध्यान बना रहे या उसकी सिद्धि का प्रयत्न होता रहे। **(किसी ओर) जी टँगा या लगा रहना**=हर समय चिंता बनी रहना और ध्यान लगा रहना। **जी टूट जाना**=उत्साह भंग हो जाना। नैराश्य होना। **जी ठंढा होना**=अभिलाषा पूरी होने से चित्त शांत और संतुष्ट होना। प्रसन्नता होना। **(किसी में) जी डालना**=(क) मृत शरीर में प्राणों का संचार करना। (ख) किसी के मन में आशा, उत्साह, बल आदि का संचार करना। **(किसी के) जी में जी डालना**=प्रेम, सौहार्द आदि दिखाकर किसी को अपनी ओर अनुरक्त करना। **जी डूबना या ढहा जाना**=चिंता, निराशा, व्याकुलता आदि के कारण बहुत ही शिथिल और हतोत्साह होना। **जी दहलना**=मन में कुछ भय का संचार होना। **जी दुखना**=मन में कष्ट या दुःख होना। **(किसी के लिए) जी देना**=किसी पर जीवन या प्राण निछावर करना। **जी दौड़ना**=कुछ करने या पाने के लिए मन का प्रवृत्त होना। **जी धँसा जाना**=दे० 'जी बैठा जाना।' **जी धक धक करना या धड़कना**=भय या आशंका से चित्त का स्थिर न रहना और उसमें धड़कन होना। **जी निकलना**=प्राणों के निकलने की-सी अनुभूति या कष्ट होना। (व्यंग्य) जैसे—रुपया खरच करते हुए तो इनका जी निकलता है। **जी निढाल होना**=दुःख, चिंता शिथिलता आदि के कारण चित्त ठिकाने न रहना। **(किसी से) जी पक जाना**=बहुत दुःखी या संतप्त होने के कारण बहुत अधिक उदासीनता या विरक्ति हो जाना। **जी पकड़ा जाना**=खुटका, विपत्ति आदि बात सुन या संभावना देखकर मन में बहुत चिंता और विकलता होना। **जी पर आ बनना**=किसी घटना या बात के कारण ऐसी स्थिति होना कि प्राणों पर संकट आ जाय और फलतः सुख शान्ति का अंत हो जाय। **जी पर खेलना**=कोई विकट काम पूरा करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देना। अपना जीवन संकट में डालना। **(किसी से) जी फट जाना**=किसी से बहुत दुःखी होने के कारण पूरी तरह से विरक्त हो जाना। **(किसी की ओर से) जी फिर जाना**=चित्त का उदासीन, खिन्न और विरक्त हो जाना। **(किसी से) जी फीका होना**=किसी के साथ होनेवाले व्यवहार या संबंध में पहले की-सी सरसता न रह जाना। **जी बँटना**=(क) मन लगाकर कोई काम करते रहने की दशा में किसी बाधा के कारण चित्त या ध्यान इधर-उधर होना। (ख) दे० 'जी बहलना'। **(किसी ओर अपना) जी बढ़ाना**=अपना ध्यान, मन या विचार किसी ओर प्रवृत्त करना। **(किसी का) जी बढ़ाना**=प्रोत्साहित करना। बढ़ावा देना। **जी बहलना**=ऐसा काम या बात करना जिससे खिन्न, चिंतित या दुःखी मन कुछ समय के लिए प्रसन्न हो और खेद, चिंता या दुःख न रह जाय अथवा कम हो जाय। **जी बिगड़ना या बुरा होना**=(क) उदासीनता खिन्नता या विरक्ति होना। (ख) कै या उलटी करने को जी चाहना। मिचली होना। (ग) मन में कोई अनुचित या बुरा भाव उत्पन्न होना। **जी बैठा जाना**=आशंका, चिंता, दुर्बलता आदि के कारण आंतरिक शक्ति या साहस का बहुत ही क्षीण होने लगना। **जी भर आना**=करुणा आदि के कारण मन का द्रवित होना। **जी भरकर**=जितना जी चाहे उतना। मनमाना। यथेष्ट। **(किसी काम, चीज या बात की ओर से) जी भर जाना**=(क) कटु अनुभव होने के कारण प्रवृत्ति न रह जाना। (ख) भोग आदि की अधिकता के कारण मन में पहले का सा अनुराग या उत्साह न रह जाना। **(अपना जी) भरना**=संदेह आदि दूर करके आश्वस्त, निश्चित या संतुष्ट होना। **(किसी का) जी भरना**=किसी की शंका, संदेह आदि दूर करके उसका पूरा समाधान करना। **जी भरभराना**=करुणा आदि के कारण हलका सा रोमांच होना। **जी भारी होना**=रोग आदि के आगमन से कुछ पहले मन में अस्वस्थता का बोध होना। **जी भिटकना**=घृणा का अनुभव होने के कारण मन में विरक्ति होना। **जी मलमलाना**=विवशता की दशा में मन में खेद और पछतावा होना। **जी मारना**=कामना, वासना आदि का दमन करना। **जी मिचलाना या मितलाना**=उलटी या कै करने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **(किसी से) जी मिलना**=प्रकृति, व्यवहार आदि की अनुकूलता दिखाई देने पर परस्पर प्रीति और सद्भाव उत्पन्न होना। **जी में आना**=किसी काम या बात की इच्छा, कामना या प्रवृत्ति होना। जैसे—जो हमारे जी में आयेगा, वह हम करेंगे। **जी में चुभना, गड़ना या घर करना**=बहुत ही प्रिय और सुखद होने के कारण मन में अपने लिए विशिष्ट स्थान बनाना। **जी में जी आना**=चिंता भय आदि का कारण दूर होने पर मन निश्चिन्त और शांत होना। **जी में जी डालना**=चिंता, भय आदि का कारण दूर करके आश्वस्त और निश्चित करना। **(कोई बात) जी में धरना**=किसी बात या विचार को अपने मन में स्थान देना और उसके अनुसार आचरण करने का निश्चय करना। **(कोई बात) जी में बैठना**=बिलकुल उचित या ठीक जान पड़ना। मन पर पूरा प्रभाव होना। **(कोई बात) जी में रखना**=अपने मन में छिपा या दबाकर रखना। जल्दी किसी पर प्रकट न होने देना। **(किसी का) जी रखना**=इसलिए किसी का अनुरोध या आग्रह मान लेना कि वह अपने मन में दुःखी या हताश न हो। **(किसी काम में) जी लगना**=अनुकूल, रुचिकर आदि जान पड़ने के कारण यथेष्ट रूप से तत्पर या संलग्न होना। काम में अच्छी तरह चित्त लगाना। **(किसी व्यक्ति से) जी लगना**=अनुराग या प्रेम होना। **(किसी ओर) जी लगा रहना**=चिंता आदि के कारण बराबर ध्यान लगा रहना। **जी लरजना**=दे० 'जी काँपना'। **जी ललचाना**=कुछ पाने के लिए मन में बहुत अधिक लालच या लोभ होना। **(किसी का) जी लुभाना**=किसी को मोहित करके अपनी ओर आकृष्ट करना। **(किसी का) जी लेना**=(क) बातों ही बातों में किसी की इच्छा, प्रवृत्ति या विचार का पता लगाने का प्रयत्न करना। (ख) जीवन या प्राण लेना। **जी सन्न होना**=बहुत अधिक घबराहट, चिंता आदि के कारण स्तब्ध हो जाना। **जी से उतर जाना**=कटु अनुभव होने या दोष आदि दिखाई देने पर

किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति होनेवाला अनुराग नष्ट हो जाना। **जी से जाना**=जीवन या प्राण गवाँना। मरना। **(किसी व्यक्ति या वस्तु से) जी हट जाना**=पहले का-सा अनुराग या प्रवृत्ति न रह जाने के कारण उदासीनता या विरक्ति होना। **जी हवा हो जाना**=भय या आशंका आदि के कारण चित्त ठिकाने न रह जाना। होश-हवाश गुम हो जाना। **(किसी का) जी हाथ में करना, रखना या लेना**=किसी को अपने अनुकूल या वश में करना या रखना। **जी हारना**=उत्साह, साहस आदि से रहित या हीन हो जाना। हिम्मत हारना। **जी हिलना**=(क) मन में करुणा, दया आदि का आविर्भाव होना। (ख) दे॰ 'जी दहलना'। **जी ही में जी जलना**=ईर्ष्या, क्रोध, दुर्भाव आदि के कारण मन ही मन बहुत दुःखी होना।

अव्य॰ १. धार्मिक स्थानों, मान्य व्यक्तियों आदि के अल्लों और नामों के पीछे लगनेवाला आदर-सूचक अव्यय। जैसे—गया जी, गाँधी जी, शुक्ल जी आदि। २. किसी के द्वारा बुलाये जाने पर उत्तर में कहा जानेवाला एक आदर-सूचक शब्द। जैसे--जी, शहर जा रहा हूँ। ३. किसी मान्य व्यक्ति के आदेश, कथन आदि के उत्तर में सहमति, स्वीकृति आदि जतलानेवाला अव्यय। जैसे--जी, ऐसी ही होगा।

जीअ*—पुं॰ =जीव।

अव्य॰=जी।

जीअन——पुं॰=जीवन।

जीउ—पुं॰=जीव।

जीकाद—पुं॰ [अ॰ ज़ीक़ाद] हिजरी सन् के ग्यारहवें महीने का नाम।

जीगन*-—पुं॰=जुगनूँ।

जीगा—पुं॰ [तु॰] कलगी। तुर्रा।

जीजना*-—अ॰=जीना (जीवित रहना)।

जीजा—पुं॰ [हिं॰ जीजी] भाई (या वहन) की दृष्टि में उसकी किसी वहन का पति। वहनोई।

जीजी—स्त्री॰ [सं॰ देवी, हिं॰ देई, दीदी] भाई (या वहन) की दृष्टि में, उसकी बड़ी वहन।

जीजूराना—पुं॰ [देश॰] एक प्रकार की चिड़िया।

जीट—स्त्री॰ [हिं॰ सीटना] डींग।

जीण*—पुं॰=जीवन।

जीत—स्त्री॰ [सं॰ जिति] १. युद्ध में, जीतने की अवस्था या भाव। विजय। २. उक्त के आधार पर, किसी प्रतियोगिता, मुड़भड़, शर्त आदि में मिलनेवाली या होनेवाली सफलता। ३. लाभ।

स्त्री॰ [?] जहाज में पाल का बुताम या बटन। (लश॰)

जीतना—स॰ [हिं॰ जीत+ना (प्रत्य॰)] १. युद्ध में शत्रु को हराकर विजय प्राप्त करना। विजयी होना। २. किसी प्रतियोगिता, मुठभेड़, शर्त में सफल होना। जैसे--दौड़ जीतना। ३. उक्त के आधार पर तथा जीत के उपलक्ष्य में कोई चीज प्राप्त करना। जैसे—देश जीतना, दौड़ में सफल होने पर पुस्तक या पुरस्कार जीतना।

जीता--वि॰ [हिं॰ जीना] १. जिसमें अभी जीवन या प्राण हो। जिन्दा। जीवित। २. तौल, नाप आदि के प्रसंग में, जो आवश्यक या उचित से थोड़ा अधिक या बढ़ा हुआ हो। जिंदा।

जीतालू—पुं॰ [सं॰ आलू] अरारोट।

जीता लोहा—पुं॰ [हिं॰ जीना+लोहा] चुंबक।

जीति—स्त्री॰ [देश॰] एक प्रकार की लता जिसका मोटा तना धनुष की डोरी के रूप में काम में लाया जाता था।

जीन—पुं॰ [फा॰ ज़ीन] १. घोड़े आदि की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। काठी। २. कजावा। पलान। ३. एक प्रकार का बढ़िया, मज़बूत तथा मोटा सूती कपड़ा।

वि॰=जीर्ण।

जीनत—स्त्री॰ [फा॰ ज़ीनत] १. शोभा। २. सजावट।

जीनपोश—पुं॰ [फा॰ ज़ीन पोश] जीन पर विछाया जानेवाला कपड़ा।

जीनपोशी—स्त्री॰=जीनपोश।

जीन सवारी-—स्त्री॰ [देश॰] घोड़े की पीठ पर जीन रखकर की जानेवाली सवारी।

जीनसाज—पुं॰ [फा॰] [भाव॰ जीनसाजी] घोड़ों की जीनें बनानेवाला कारीगर।

जीना—अ॰ [सं॰ जीवति, प्रा॰ जिअइ, जीअन्त, मरा॰ जिणे] १. जीवित रहना। काया या शरीर में प्राण रहना।

मुहा॰—जीती मक्खी निगलना=जान-बूझकर कोई अनुचित और घृणित कार्य करना। **जीते जी मरना**=बहुत अधिक कष्ट भोगना। **जीना भारी हो जाना**=जीवन बहुत अधिक दुःखमय हो जाना।

पद—जीता जागता=जीवित और सक्रिय। भला-चंगा। स्वस्थ। **जीते जी**=जीवनकाल में। जीवित अवस्था में।

२. जीवन या जिन्दगी के दिन बिताना। ३. अभीष्ट फल या वस्तु प्राप्त होने पर बहुत अधिक प्रसन्न या प्रफुल्लित होना।

*वि॰ [स्त्री॰ जीनी] १.=जीर्ण। २. =झीना।

पुं॰ [फा ज़ीनः] सीढ़ी।

जीपना*—स॰ [सं॰ जिति] जीतना। उदा॰—हल जीपिस्यै जू वाहिस्यइ हाथ।— प्रिथीराज।

जीभ—स्त्री॰ [सं॰ जिह्वा, जिह्विका, प्रा॰ जिब्भा, जिब्भया, जैन प्रा॰ जिब्भा, जीहा] १. मुँह में तालु के नीचे का वह चिपटा, लंबा तथा लचीला टुकड़ा जिससे रसों का आस्वादन और ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है। जवान। रसना।

पद—छोटी जीभ=गले के अंदर की घंटी। कौआ। गलशुंडी।

मुहा॰—जीभ करना=ढिठाई से जवाब देना। **जीभ खोलना**=कुछ कहना। **जीभ चलना**=(क) विभिन्न वस्तुओं के स्वाद लेने की इच्छा होना। (ख) बहुत उग्र या कटु बातें कहना। **जीभ निकालना**=दंड देने के लिए जीभ उखाड़ना या काट लेना। **(किसी की) जीभ पकड़ना**=(क) किसी को कोई वात कहने न देना। किसी को विवश करना कि वह कोई विशिष्ट बात न कहे। (ख) किसी को उसकी कही हुई बात के पालन के लिए विवश करना। **जीभ हिलाना** =मुँह से कुछ कहना। **(किसी की) जीभ के नीचे जीभ होना**=किसी का अपने सुभीते के अनुसार कई तरह की बातें कहना। अपने कथन या वचन का ध्यान न रखना।

२. जीभ के आकार की कोई चिपटी तथा लंबोतरी वस्तु। जैसे—निब।

जीभा—पुं॰ [हिं॰ जीभ] १. जीभ के आकार की कोई बड़ी वस्तु। जैसे—कोल्हू का पच्चर। २. एक रोग जिसमें चौपायों की जीभ के काँटे कुछ

सूज तथा बढ़ जाते हैं और जिसके कारण उन्हें कुछ खाने में बहुत कष्ट होता है। ३. एक रोग जिसमें बैलों की आँख के आगे का मांस बढ़कर लटकने लगता हैं।

जीभी—स्त्री०[हिं० जीभ] १. धातु आदि का बना हुआ वह पतला धनुषाकार पत्तर जिससे जीभ पर जमी हुई मैल उतारी या छीली जाती है। २. मैल साफ करने के लिए जीभ छीलने की क्रिया। ३. कलम की निब.। ४. छोटी जीभ। गलशुंडी।

जीमट—पुं०[सं० जीमूत=पोषण करनेवाला] पेड़, पौधे आदि की टहनी या धड़ में का गूदा।

जीमणवार—स्त्री० =ज्यौनार।

जीमना—स०[सं० जेमन] कहीं बैठकर अच्छी तरह भोजन करना।

जीमूत—पुं०[सं०√जि (जीतना)+क्त, मूट्, दीर्घ]१. पर्वत। पहाड़। २. बादल। मेघ। ३. नागरमोथा। ४. देव-ताड़ नामक वृक्ष। ५. घोषा नाम की लता। ६. शाल्मलि द्वीप के एक वर्ष का नाम। ७. इन्द्र। ८. सूर्य। ९. विराट् की सभा का एक मल्ल। १०. एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं।

वि० जीवित रखने या पोषण करनेवाला।

जीमूत-कूट—पुं०[ब०स०] पर्वत।

जीमूत-केतु—पुं०[ब०स०] शिव।

जीमूत मुक्ता—स्त्री०[मध्य०स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति बादलों से मानी गयी है।

जीमूत मूल—पुं०[ब०स०] गंधमूली।

जीमूत वाहन--पुं०[सं०]इंद्र।

जीमूतवाही (हिन्)--पुं० [सं० जीमूत√वह् (ले जाना)+णिनि] धूआँ।

जीय†—पुं० =जीव।

जीयट†—पुं०=जीवट।

जीयति†--स्त्री०[हिं० जीना] जीवन। जिंदगी।

जीयदान—पुं०=जीव-दान।

जीर—पुं०[सं०√जु (गति)+रक्, ई आदेश]१. जीरा। २. फूलों का केसर। ३. तलवार।

वि० जल्दी या तेज चलनेवाला।

पुं०[फा० जिरह] जिरह। कवच।

*वि०=जीर्ण।

जीरक—पुं०[सं० जीर+कन्] जीरा।

जीरण (रन)—वि०=जीर्ण।

जीरना*--अ०[सं० जीर्ण]१. जीर्ण या पुराना होना। उदा०--वह हाले वह जीरई साकर संग निवेदि।--कबीर।

२. कुम्हलाना। मुरझाना। ३. फटना।

जीरह--पुं०=जिरह।

जीरा--पुं०[सं० जीरक]१. एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं। २. उक्त पौधे के सुखाये या सूखे हुए फूल। ३. उक्त आकार की कोई छोटी महीन लंबी चीज। ४. फूलों का केसर।

जीरिका—स्त्री०[सं० √जृ (जीर्ण होना)+रिक, ई आदेश,+कन्--टाप्] वंशपत्री नामक घास।

जीरी—पुं०[हिं० जीरा]१. फूलों आदि का छोटा कण। २. एक प्रकार का अगहनी धान। ३. काली जीरी।

जीरोपटन—पुं०[देश०] एक पौधा और उसका फूल।

जीर्ण--वि०[सं०√जृ+क्त, ईत्व, नत्व] [स्त्री० जीर्णा] १. जो बहुत पुराना होने के कारण इतना कट-फट या टूट-फूट गया हो कि ठीक तरह से काम में न आ सकता हो। जैसे—जीर्ण दुर्ग, जीर्ण वस्त्र। २. (व्यक्ति) जो बुड्ढ़ा होने के कारण जर्जर और शिथिल हो गया हो। ३. बहुत दिनों का पुराना। जैसे—जीर्ण रोग। ४. जो पुराना होने के कारण अपना महत्त्व गँवा चुका हो। जैसे—जीर्ण विचार। ५. पेट में पहुँचकर अच्छी तरह पचा हुआ। पचित या पाचित। जैसे--जीर्ण अन्न।

जीर्णक--वि०[सं० जीर्ण+कन्]=जीर्ण।

जीर्ण-ज्वर—पुं०[कर्म० स०] वैद्यक में, वह ज्वर जो २१ या अधिक दिनों तक आता हो। पुराना बुखार।

जीर्णता--स्त्री०[सं० जीर्ण+तल्--टाप्] १. जीर्ण होने की अवस्था या भाव। २. बुढ़ापा।

जीर्ण-दारु--पुं०[ब०स०] वृद्धदारक वृक्ष। विधारा।

जीर्ण-पत्र--पुं०[ब०स०] कदंब का पेड़।

जीर्ण-वज्र--पुं०[कर्म०स०] वैक्रांत मणि।

जीर्णा--स्त्री०[सं० जीर्ण+टाप्] काली जीरी।

जीर्णि—स्त्री०[सं० जृ+क्तिन्, ईत्व, नत्व] १. जीर्णता। २. पाचन।

जीर्णोद्धार--पुं०[सं० जीर्ण-उद्धार, ष०त०] किसी पुरानी वास्तु-रचना का फिर से होनेवाला उद्धार, सुधार या मरम्मत। टूटी-फूटी इमारत या चीज फिर से ठीक और दुरुस्त करना।

जील—स्त्री०[फा० जीर]१. धीमा या हलका शब्द। २. संगीत में, नीचा या मध्यम स्वर। ३. तबले आदि में का बाँया (बाजा)।

जीला†—वि०[सं० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १. झीना। पतला। २. बारीक। महीन।

जीलानी—पुं०[अ०] एक प्रकार का लाल रंग।

वि० उक्त प्रकार का, लाल।

जीवंजीव—पुं० [सं० जीव√जीव् (जीना)+णिच्,+खच्, मुम्+] १. चकोर पक्षी। २. एक वृक्ष का नाम।

जीवंत--पुं० [सं०√जीव्+झ—अन्त] १. जीवनी शक्ति। प्राण। २. औषध। दवा। ३. जीव नाम का साग।

वि० जिसमें प्राण हों। जीता जागता। जीवित।

जीवंतक--पुं०[सं० जीवंत+कन्] जीव शाक।

जीवंतिका--स्त्री०[सं० जीवंत+कन्—टाप्, इत्व]१. वह वनस्पति जो दूसरे वृक्षों पर रहकर और उन्हीं के शरीर से रस चूसकर फैलती या बढ़ती हो। बंदा। बाँदा। २. गुडूची। गुरुच। ३. जीव नामक साग। ४. जीवंती लता। ५. एक प्रकार की पीली हर्रें। ५. शमी वृक्ष।

जीवंती—स्त्री० [सं० जीवंत+ङीष्] १. एक प्रकार की लता जिसकी टहनियों में दूध होता है और जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं।

२. एक प्रकार की पीली हर्रे। ३. गुडूची। गुरुच। ४. परगाछा। बाँदा। ५. शमी वृक्ष।

जीव—पुं०[सं०√जीव+घञ्] १. वह जिसमें चेतना और जीवन या प्राण हो और जो अपनी इच्छा के अनुसार खा-पी और हिल-डुल सकता हो। जीवधारी। प्राणी। २. प्राणियों में रहनेवाला चेतन तत्त्व। जीवात्मा। ३. जान। प्राण। ४. विष्णु। ५. बृहस्पति। ६. आश्लेषा नक्षत्र। ७. बकायन का पेड़।

जीवक—पुं०[सं० जीव+कन्]१. जीवधारी। प्राणी। २. [√जीव्+णिच्+ण्वुल्—अक] बौद्ध क्षपणक या भिक्षु। ३. सूद-ब्याज से जीविका निर्वाह करनेवाला व्यक्ति। महाजन। ४. मनुष्य के वे सब कार्य जो सामूहिक रूप में उसकी उन्नति या अवनति के सूचक होते हैं। (केरियर) ५. सँपेरा। ६. नौकर। सेवक। ७. पीतसाल नामक वृक्ष। ८. वैद्यक में अष्ट-वर्ग के अन्तर्गत एक प्रकार का कंद जो कामोद्दीपक और बलवर्द्धक कहा गया है।

जीवजीव—पुं०[सं०=जीवञ्जीव पृषो० सिद्धि] चकोर पक्षी।

जीवट—पुं०[सं० जीवक]हृदय की वह दृढ़ता जिसके कारण मनुष्य साहसिक कार्यों में निर्भय होकर प्रवृत्त होता है। दम। साहस। हिम्मत।

जीवड़ा—पुं०[सं० जीव] १. जीव, विशेषतः तुच्छ जीव। २. जीवन। ३. जीवट। ४. धोबी, नाई आदि को उनकी सेवाओं के बदले दिया जानेवाला अनाज।

जीवत्—वि०[√जीव्+शतृ]=जीवित। (मुख्यतः यौगिक पदों के आरम्भ में, जैसे—जीवत्पति=सधवा स्त्री)

जीवति*—स्त्री० [सं० जीवत्] जीविका।

जीवत्तोका—स्त्री०[जीवत-तोक ब०स०] वह स्त्री जिसके बच्चे जीते हों।

जीवत्पति—स्त्री०[ब० स०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा या सौभाग्यवती स्त्री।

जीवत्पितृक—पुं० [ब० स० कप्] वह जिसका पिता जीवित हो।

जीवत्पुत्रिका—वि० [जीवत्-पुत्र ब० स०,+कन्—टाप् इत्व] (स्त्री) जिसका पुत्र या जिसके पुत्र जीवित हों अर्थात् वर्तमान हों।

जीवत्पुत्रिका-व्रत—पुं०[सं०] आश्विन कृष्ण अष्टमी को होनेवाला स्त्रियों का एक व्रत जो वे अपनी सन्तान के कल्याण की कामना से करती हैं।

जीवथ—पुं० [सं०√जीव्+अथ]१. जीवनी-शक्ति। प्राण। २. बादल। मेघ। ३. मोर। ४. कछुआ।

वि०१. दीर्घ-जीवी। २. धर्म-निष्ठ।

जीवद—वि० [सं० जीव√दा (देना)+क] जीवन या प्राण देनेवाला।

पुं०१. वैद्य। २. जीवक पौधा। ३. जीवंती। ४. शत्रु।

जीव-दया—स्त्री०[स० त०] जीवों पर उनके जीवन की रक्षा के विचार से की जानेवाली दया।

जीव-दान—पुं०[ष० त०]१. वश में आये हुए अपराधी या शत्रु को बिना उसके प्राण लिये छोड़ देना। २. किसी मरते हुए प्राणी की रक्षा करके उसे मरने से बचाना।

जीवद्भर्तृका—स्त्री० [सं० जीवत्-भर्तृ ब० स० कप्-टाप्]=जीवत्पति।

जीवद्वत्सा—वि० स्त्री०[सं० जीवत्-वत्स, ब०स०] जिसका पुत्र जीवित हो।

जीव-धन—पुं० [ब० स०] वह जो जीवों अर्थात् पशु-पक्षियों आदि को रखकर उनसे जीविका चलाता हो। वह जिसके लिए जीव या जानवर ही धन हो।

वि० जो किसी के जीवन का धन या सर्वस्व हो। परमप्रिय। जीवन-धन।

जीव-धातु—स्त्री०[ष० त०] कुछ विशिष्ट रासायनिक तत्त्वों से बना हुआ वह पारदर्शक स्वच्छ तत्त्व या धातु जिसमें जीवनी-शक्ति होती है और जो आधुनिक विज्ञान में जीवों, जंतुओं, वनस्पतियों आदि के भौतिक स्वरूप का मूल आधार माना जाता है। (प्रोटो प्लाज्म)

जीव-धानी—स्त्री०[ष०त०] वह आधार जिस पर जीव रहते हैं। पृथ्वी।

जीवधारी (रिन्)—वि०[सं० जीव√धृ(धारण)+णिनि] (वह) जिसमें जीव अर्थात् जीवनीशक्ति हो। जीव-युक्त।

पुं० प्राणी।

जीवन—पुं०[सं०√जीव्+ल्युट्—अन] [वि० जीवित] १. वह नैसर्गिक शक्ति जो प्राणियों, वृक्षों आदि को अंगों और उपांगों से युक्त करके सक्रिय और सचेष्ट बनाती है और जिसके फलस्वरूप वे अपना भरण-पोषण करते हुए अपने वंश की वृद्धि करते हैं। आत्मा या प्राणों से पिंड या शरीर से युक्त रहने की दशा या भाव। जान। प्राण।

विशेष—आधुनिक विज्ञान के मत से वह विशिष्ट प्रकार की क्रियाशीलता है जो समस्त जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों और मानव जाति में पाई जाती है। इसके ये मुख्य पाँच लक्षण माने गये हैं--गतिशीलता, अनुभूति या संवेदन, आत्मपोषण, आत्म-वर्धन और प्रजनन। जब तक भौतिक तत्त्वों से बने हुए पिंड या शरीर में आत्मा या प्राण रहते हैं, तब तक वह चेतन और जीवित रहता है। इसकी विपरीत दशा में वह नष्ट हो जाता या मर जाता है। जिन पदार्थों में आत्मा या प्राण होते ही नहीं, वे अचेतन और निर्जीव कहलाते हैं।

२. किसी विशिष्ट रूप या शरीर में आत्मा के बने रहने की सारी अवधि या समय। जिंदगी। जैसे--अमर या शाश्वत जीवन, पार्थिव या भौतिक जीवन। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति के आदि से अन्त तक अथवा जन्म से मरण तक की सारी अवधि या समय। जैसे--(क) इस प्रकार के भवनों (या मंदिरों) का जीवन कई सौ वर्षों का होता है। (ख) बहुत से कीड़ों-मकोड़ों का जीवन कुछ घंटों या (दिनों) का होता है। ४. भौतिक शरीर में प्राणों के बने रहने की अवस्था या दशा। जैसे--(क) हमारे लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न है। (ख) डूबे हुए बच्चे को तुरंत जल से निकाल कर उसमें फिर से जीवन लाया गया। ५. किसी प्राणी के अस्तित्व काल का वह विशिष्ट अंग, अंश या पक्ष जिसमें वह किसी विशेष प्रकार से या विशेष रूप में रहकर अपने दिन बिताता हो। जैसे--(क) आध्यात्मिक या वैवाहिक जीवन। (ख) ग्राम्य, नागरिक, सभ्य या सैनिक जीवन। (ग) दरिद्रता या पराधीनता का जीवन। ६. किसी विशिष्ट प्रकार के क्रिया-कलाप, व्यवसाय या व्यापार में बिताई जानेवाली कोई अवधि या उसका कोई अंश। जैसे---(क) खेल-कूद या भोग-विलास का जीवन। (ख) बढ़इयों, लोहारों या सुनारों का जीवन। ७. वह तत्त्व, पदार्थ या शक्ति जो किसी दूसरे तत्त्व, पदार्थ या व्यक्ति का अस्तित्व बनाये रखने के लिए अनिवार्य अथवा उसे सुखमय रखने के लिए परम आवश्यक हो। जैसे--जल (या वायु) ही सब प्राणियों का जीवन है। ८. उक्त के आधार पर, कोई परम प्रिय वस्तु या व्यक्ति। उदा०--जीवन मूरि हमारी अली यह कौन कह्यौ तोहि नंद-लला है।--बलबीर। ९. वह जिससे किसी को

कुछ करने या अपना अस्तित्व बनाये रखने की पूरी प्रेरणा या शक्ति प्राप्त होती हो। जान। प्राण। जैसे--आप ही तो इस संस्था के जीवन हैं। १०. वह तत्त्व या बात जिसके वर्तमान होने पर किसी दूसरे तत्त्व या बात में यथेष्ट ऊर्जा, ओज आदि अथवा यथेष्ट वांछित प्रभाव उत्पन्न करने या फल दिखाने की शक्ति दिखाई देती है। जैसे--किसी जाति, दल या संघटन में दिखाई देनेवाला जीवन। ११. वायु। हवा। १२. जल। पानी। १३. नवनीत। मक्खन। १४. हड्डियों के अन्दर का गूदा। मज्जा। १५. जीविका निर्वाह का साधन। वृत्ति। १६. पुत्र। बेटा। १७. परमात्मा। परमेश्वर। १८. जीवक नामक ओषधि।

वि० परम प्रिया। बहुत प्यारा।

जीवनक—पुं० [सं० जीवन+कन्] १. आहार। २. अन्न।

जीवन-कारण—पुं०[ष०त०] न्याय-दर्शन में जीव या प्राणी के वे कृत्य या प्रयत्न जो बिना इच्छा, द्वेष आदि के आप से आप और प्राकृतिक रूप से बराबर होते रहते हैं। जैसे--श्वास, प्रश्वास आदि।

जीवन-चरित—पुं०[ष०त०]१. सारे जीवन में किसी के किये हुए कार्यों आदि का विवरण। २. वह पुस्तक जिस में किसी के जीवन के मुख्य-मुख्य कार्यों का विवरण हो।

जीवन-चरित्र—पुं०=जीवन-चरित।

जीवन-धन—वि०[ष०त०]१. जो किसी के जीवन का धन अर्थात् सर्वस्व हो। परम प्रिय। २. प्राणाधार। प्राण-प्रिय।

जीवन-नौका—स्त्री० [ष० त०] वह छोटी नौका जो बड़े जहाजों पर इसलिए रखी रहती है कि जब जहाज डूबने लगे तब लोग उस पर सवार होकर अपनी जान बचा सकें। (लाइफ-बोट)

जीवन-प्रभा—स्त्री० [ष० त०] आत्मा।

जीवन-प्रमाणक—पुं०[ष०त०] इस बात का प्रमाण कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था अथवा इस समय जीवित है। (लाइफ-सर्टिफिकेट)

जीवन-बूटी—स्त्री०[सं० जीवन+हिं० बूटी]१. वह कल्पित जड़ी या बूटी जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को जिला देती है। संजीवनी। २. लाक्षणिक अर्थ में, वह चीज जो किसी के जीवन का आधार हो। ३. प्राण-प्रिय वस्तु।

जीवनमूरि—स्त्री०=जीवन-बूटी।

जीवन-वृत्त—पुं०[ष० त०] १. जीवन-चरित। जीवनी। २. किसी जीव या प्राणी के आदि से अंत तक की सब घटनाओं या बातों का वर्णन या इतिहास। (लाइफ-हिस्ट्री)

जीवन-वृत्तांत—पुं० [ष० त०] जीवन-वृत्त।

जीवनवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] जीविका। रोजी।

जीवन-संग्राम—पुं० =जीवन-संघर्ष।

जीवन-संघर्ष—पुं०[ष० त०] प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवित बने रहने या जीविका उपार्जन करने के लिए किया जानेवाला विकट प्रयत्न या प्रयास। (स्ट्रगल फार एक्जिस्टेन्स)

जीवन-हेतु—पुं० [ष० त०] जीविका। रोजी।

जीवनांत—पुं०[जीवन-अंत्, ष० त०] जीवन का अंत अर्थात् मृत्यु।

जीवना—स्त्री० [सं०√जीव्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. महौषध। २. जीवंती लता।

†अ०=जीना (जीवित रहना)।

†स०=जीमना (भोजन करना)।

जीवनाघात—पुं० [सं० जीवन-आघात, ब० स०] विष।

जीवनावास—वि० [सं० जीवन-आवास, ब० स०] जल में रहनेवाला।

पुं० १. वरुण। २. देह। शरीर।

जीवनार्ह—पुं०[सं० जीवन-अर्ह, ष०त०] १. अन्न। २. दूध।

जीवनि—वि० [सं० जीवनी]१. (ऐसी ओषधि या वस्तु) जो किसी को जीवित रखने में विशिष्ट रूप से समर्थ हो। २. अत्यन्त प्रिय (वस्तु या व्यक्ति)।

स्त्री०१. संजीवनी बूटी। २. काकोली। ३. तिक्त जीवंती। डोडी। ४. मेदा नाम की ओषधि।

स्त्री०=जीवनी।

जीवनी—स्त्री० [सं० जीवन+ङीप्] १. काकोली। २. जीवंती। ३. महामेदा। ४. डोडी। तिक्त जीवंती।

स्त्री०=जीवन-चरित।

जीवनीय—वि० [सं०√जीव्+अनीयर्] १. जो जीवित रखने या रहने योग्य हो। जी सकनेवाला। २. जीवन या जीवनीशक्ति प्रदान करनेवाला। ३. अपनी जीविका आप चलानेवाला।

पुं०१. जल। पानी। २. जयंती वृक्ष। ३. दूध। (डिं०)।

जीवनीय-गण—पुं०[ष० त०] वैद्यक में बलकारक औषधों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत अष्टवर्ग पर्णिनी, जीवंती, मधूक और जीवन नामक वनस्पतियाँ हैं।

जीवनीया—स्त्री० [सं० जीवनीय+टाप्] जीवंती नामक लता।

जीवनेत्री—स्त्री०[सं० जीव√नी(ढोना)+तृच्—ङीप] सैंहली वृक्ष।

जीवनोपाय—पुं०[सं० जीवन-उपाय ष०त०] जीवन के निर्वाह और रक्षा का उपाय या साधन। जीविका। रोजी।

जीवनौषध—स्त्री० [जीवन-औषध, ष० त०] वह औषध जिससे मरता हुआ प्राणी जी जाय। जीवन बूटी। संजीवनी।

जीवन्मुक्त—वि० [सं०√जीव्+शतृ, जीवत्-मुक्त कर्म० स०] [भाव० जीवन्मुक्ति] (जीव) जिसने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो और इसीलिए जो आवागमन के बंधन से मुक्त हो गया हो।

जीवन्मुक्ति—स्त्री० [सं० जीवत्-मुक्ति, ष० त०] जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव।

जीवन्मृत—वि०[सं० जीवत्-मृत, कर्म०स०] (अधम प्राणी) जो जीवित होने पर भी मरे हुए के समान हो।

जीव-न्यास—पुं० [ष० त०] मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करते समय कहा जानेवाला एक मन्त्र।

जीव-पति—पुं० [ष० त०] धर्मराज।

जीव-पत्नी—स्त्री० [ब० स०] स्त्री, जिसका पति जीवित हो। सधवा।

जीव-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] जीवंती नामक लता।

जीव-पुत्र—पुं०[ब० स०] [स्त्री० जीवपुत्रा] वह जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवपुत्रक—पुं०[सं० जीवपुत्र+कन्] १. जिया-पोता या पुत्रजीव नामक वृक्ष। २. इंगुदी का पेड़। हिंगोट।

जीव-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बड़ी जीवंती।

जीव-प्रभा—स्त्री० [ष० त०] आत्मा। रूह।

जीव-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] हरीतकी। हर्रे।

जीवबंद*—पुं०=जीवबंधु।

जीव-बन्धु—पुं० [ष०त०] गुल दुपहरिया या बंधूक नामक पौधा और उसका फूल।

जीव-भद्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] जीवंती नामक लता।

जीव-मातृका—स्त्री० [ष० त०] १. वे सात देवियाँ जो जीवों का कल्याण, पालन आदि माता के समान करती हैं।

विशेष—ये सात देवियाँ हैं– कुमारी, धनदा, नंदा, विमला, मंगला, बला और पद्मा।

२. उक्त देवियों में से हर एक।

जीव-याज—पुं० [तृ० त०] वह यज्ञ जिसमें पशुओं की बलि दी जाती हो।

जीव-योनि—स्त्री० [कर्म० स०] १. सजीव सृष्टि। २. [ष० त०] जीव-जंतु का वर्ग या समूह।

पुं० वह जीव या प्राणी जो इंद्रियों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता हो।

जीव-रक्त—पुं० [मध्य० स०] रजस्वला स्त्री की योनि से जानेवाला रक्त।

जीवरा*—पुं०=जीव।

जीवरी†—स्त्री०=जीवन।

जीवला—स्त्री० [सं० जीव√ला (लेना)+क—टाप्] सिंह-पिप्पली।

जीव-लोक—पुं० [ष० त०] वह लोक जिसमें जीव रहते हों। भू-लोक।

जीव-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] क्षीर काकोली (पौधा)।

जीव-विज्ञान—पुं० [ष०त०] वह विज्ञान जिसमें जीवों की उत्पत्ति, विकास, शारीरिक रचना तथा उनके रहन-सहन के संबंध में विचार किया जाता है। इसी विज्ञान की शाखाओं के रूप में, वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान, आकारिकी आदि की गिनती होती है। (बायलॉजी)

जीव-वृत्ति—स्त्री० [ष० त०] १. जीव की वृत्ति अर्थात् गुण, धर्म और व्यापार। २. [कर्म० स०] जीव-जंतुओं का पालन-पोषण करके चलाई जानेवाली जीविका।

जीव-शाक—पुं० [कर्म०स०] मलाया में बहुतायत से पाया जानेवाला एक प्रकार का साग। सुसना।

जीव-शुक्ला—स्त्री० [कर्म० स०] क्षीर काकोली (पौधा)।

जीव-संक्रमण—पुं० [ष० त०] जीव का एक योनि से दूसरी योनि अथवा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना।

जीव-साधन—पुं० [ष० त०] धान।

जीव-सुत—पुं० [ष०त०] [स्त्री० जीव-सुता] वह जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवसू—स्त्री० [सं० जीव√सू (प्रसव) क्विप्] वह स्त्री जिसकी सन्तान जीवित हो।

जीव-स्थान—पुं० [ष०त०] हृदय, जिसमें जीव निवास करता है।

जीव-हत्या—स्त्री० [ष० त०] १. जीवों को मारने की क्रिया या भाव। २. धार्मिक दृष्टि से वह पाप जो जीवों को मारने से लगता है।

जीव-हिंसा—स्त्री० [ष०त०] जीव-हत्या।

जीवांतक—वि० [जीव-अतंक, ष०त०] जीव या प्राण अथवा जीवों या प्राणियों का अन्त या नाश करनेवाला।

पुं० १. यमराज। २. वधिक। ३. बहेलिया। व्याध।

जीवा—स्त्री० [सं०√जीव्+णिच्+अच्—टाप्] १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक जानेवाली सीधी रेखा। ज्या। २. धनुष की डोरी। ३. जीवंती नामक लता। ४. बच। बचा। ५. जमीन। भूमि। ६. जीविका। ७. जीवन।

जीवाजून—स्त्री० =जीव-योनि।

जीवाणु—पुं० [जीव-अणु, ष० त०] १. सेन्द्रिय जीवों का वह मूल और बहुत सूक्ष्म रूप जो विकसित होकर नये जीव का रूप धारण करता है। २. जीवनी-शक्ति से युक्त ऐसे अणु जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। (जर्म)

जीवातु—पुं० [सं०√जीव्+आतु] वह ओषधि जिससे प्राणों की रक्षा होती हो। प्राण-दान करनेवाली ओषधि।

जीवातुमत्—पुं० [सं० जीवातु+मतुप] आयुष्काम यज्ञ के एक देवता जिनसे आयुवृद्धि की प्रार्थना की जाती है।

जीवात्मा (त्मन्)—पुं० [जीव-आत्मन्, ष० त०] १. जीव या प्राणियों में रहनेवाली आत्मा। वह शक्ति जिसके कारण प्राणी जीवित रहते हैं। †२. हृदय। जैसे—किसी की जीवात्मा नहीं दुखानी चाहिए।

जीवादान—पुं० [जीव-आदान, ष० त०] बेहोशी। मूर्च्छा।

जीवाधार—पुं० [जीव-आधार, ष०त०] हृदय, जो आत्मा का आधार या आश्रय माना जाता है।

जीवानुज—पुं० [जीव-अनुज, ष०त०] गर्गाचार्य मुनि जो वृहस्पति के वंशज और किसी के मत से बृहस्पति के भाई कहे जाते हैं।

जीवावशेष—पुं० [जीव-अवशेष, ष० त०]=जीवाश्म।

जीवाश्म (न्)—पुं० [जीव-अश्मन्, ष० त०] बहुत प्राचीन काल के जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि के वे अवशिष्ट रूप जो जमीन की खोदाई करने पर निकलते हैं। जीवावशेष। पुराजीव। (फ़ासिल)

जीवाश्म-विज्ञान—पुं० [ष०त०] वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्राचीन युगों में कहाँ-कहाँ और किस प्रकार के जीव होते थे। पुराजैविकी। (पेलिएन्टालोजी)

जीवास्तिकाय—पुं० [जीव-अस्तिकाय, ष० त०] जैन दर्शन के अनुसार विशिष्ट कर्म करने और उनके फल भोगनेवाले जीवों का एक वर्ग।

जीविका—स्त्री० [सं०√जीव्+अ+कन्—टाप, इत्व] वह काम-धंधा, पेशा या वृत्ति जिसके द्वारा मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए धन तथा अन्य आवश्यक पदार्थ मिलते हों।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—लगना।—लगाना।

जीवित—वि० [सं०√जीव्+क्त] १. जिसे फिर से जीवन या प्राण मिले हों। २. जो अभी जी रहा हो। जिसमें जीवन या प्राण हो। ३. (पदार्थ) जिसकी क्रियात्मक शक्ति काम कर रही हो या वर्त्तमान हो। (एलाइव) जैसे—जीवित कारतूस, बिजली का जीवित तार।

पुं० १. जीवन। २. जीवन-काल।

जीवित-काल—पुं० [ष० त०] जीवित रहने का पूरा या सारा समय। आयु। उमर।

जीवित-नाथ—पुं० [ष० त०] पति।

जीवितव्य—वि० [सं०√जीव+तव्यत्] जीवित रखने या रहने योग्य।

जीवितांतक—पुं० [जीवित-अंतक, ष० त०] शिव।

जीवितेश—पुं० [जीवित-ईश, ष०त०] १. जीवन का स्वामी। २. यम। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. इड़ा और पिंगला नाड़ियाँ।

वि० प्राणों से भी बढ़कर प्रिय। प्राणाधार।

जीवी (विन्)—वि० [सं० जीव+इनि] १. जीनेवाला। २. किसी विशिष्ट प्रकार की जीविका से अपना निर्वाह करनेवाला। जैसे--श्रम-जीवी शस्त्र-जीवी।

जीवेश—पुं०[जीव-ईश, ष० त०] १. जीव या जीवों का स्वामी। ईश्वर। २. प्रियतम।

जीवोपाधि—स्त्री० [सं० जीव-उपाधि] जीव की ये तीन उपाधियाँ या अवस्थाएँ--स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत।

जीसो†--वि०=जैसा।

जीस्त—स्त्री० [फा० जीस्त] जीवन।

जीह*—स्त्री० [सं० जिह्वा] जीभ।

जीहि*—स्त्री०=जीह।

जुंईं—स्त्री०=जुईं।

जुंग—पुं०[सं०√जुंग् (त्यागना)+अच्] विधारा नामक वृक्ष।

जुंगित—वि० [सं०√जुंग्+क्त] १. परित्यक्त। २. नीच या शूद्र जाति का।

जुंडी†—स्त्री०=जुन्हरी।

जुंदर—पुं०[?]बंदर का बच्चा। (कलंदर)

जुंबली—स्त्री०[हिं० दुंबा] एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।

जुंबिश—स्त्री०[फा०] १. हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। गति। २. अपने स्थान से थोड़ा हटकर इधर-उधर होने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**जुंबिश खाना**=किसी पदार्थ का अपने स्थान से थोड़ा हटकर इधर-उधर होना।

जु—अव्य० १.=जो। २.=ज्यों। ३=जी।

जुअ—अव्य०[?]अलग। (दूर या पृथक्)। उदा०--बक्खर पक्खर टुट्टि, टुट्टि हय खंड परिय जुअ।--चंदबरदाई।

जुअती†—स्त्री०=युवती।

जुअना†—स०=जोवना (देखना)। उदा०—बिरदैत दमित आजान भुअ, उर किवार वर वज्र जुअ।--चंदबरदाई।

जुअलि—वि०[सं० युगल] दो। उदा०--जुअलि नालि तसु गरभ जेहवी। --प्रिथीराज।

जुआँ—स्त्री०=जूं।

जुआँरी†—स्त्री०[हिं० जूं] बहुत छोटी जूं (कीड़ा) या उसका बच्चा। †स्त्री०=ज्वार।

जुआ†—पुं०=जूआ।

जुआठा—पुं० दे० 'जूआ' (हल का)।

जुआनी†—स्त्री०=जवानी।

जुआर†—स्त्री०=ज्वार।

जुआर दासी—स्त्री०[?] एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

जुआर भाटा†—पुं०=ज्वारभाटा।

जुआरा—पुं०[हिं० जोतार] वह भूखंड जिसे एक जोड़ी बैल एक दिन में जोत सकते हों।

जुआरी—पुं०[हिं० जुआ] वह व्यक्ति जिसे जुआ खेलने का व्यसन हो।

जुआल*—स्त्री०=ज्वाला।

जुइना—पुं०[सं० यूनि=बंधन या जोड़] घास, फूस आदि को बटकर बनाई जानेवाली रस्सी।

जुईं—स्त्री०[हिं० जूं] १. बहुत छोटी जूं (कीड़ा) या उसका बच्चा। २. मटर, सेम आदि की फलियों में लगनेवाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

जुईं—स्त्री०[?]लंबा पतला पात्र जिससे हवन करते समय अग्नि में घी छोड़ा जाता है। श्रुवा।

जुकत्तिय*--स्त्री०=युक्ति।

जुकाम—पुं०[अ०] सरदी-गरमी के योग से होनेवाला वह रोग जिसमें नाक से कफ मिला हुआ पानी निकलता और सिर भारी जान पड़ता है। प्रतिश्याय सरदी। (कोल्ड)

मुहा०—**मेंढकों को भी जुकाम होना**=किसी छोटे व्यक्ति का भी बड़े बनने या बड़प्पन दिखलाने के लिए बड़े आदमियों का अनुकरण, बराबरी या रीस करना।

जुकिहारा—पुं० [हिं० जोंक] [स्त्री०-जुकिहारी] जोंक लगानेवाला। उदा०—जुकिहारी जौवन लिए हाथ फिरै रस हेत। --रहीम।

जुकुट—पुं०[सं०]१. कुत्ता। २. मलय पर्वत।

जुगतै—वि०=जाग्रत। उदा०—जानि जुगतै जम लैं करण प्रथीपुर अन्त। --रासो।

जुग—पुं०[सं० युग्म]१. एक ही तरह की दो चीजों का जोड़ा। जोड़। युग्म।

मुहा०--**जुग टूटना या फूटना**=प्रायः साथ रहनेवाली दो वस्तुओं या व्यक्तियों का किसी प्रकार एक दूसरों से अलग हो जाना। **जुग बैठना या मिलना**=एक ही तरह की दो वस्तुओं या व्यक्तियों का घनिष्ठ संपर्क या संग-साथ होना।

२ चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर में एक साथ बैठने की अवस्था।

विशेष—ऐसी गोटियों में से कोई गोटी तब तक मारी नहीं जा सकती, जब तक वे दोनों एक दूसरी से अलग या आगे-पीछे न हो जायँ।

३ करघे में का वह डोरा जो ताने के सूतों को अलग-अलग रखने के लिए होता है।

पद† पुं०=युग (काल-विभाग)।

जुगजुग—अव्य० [हिं० जुग] अनेक युगों अर्थात् बहुत दिनों तक। जैसे—बच्चा तुम जुग-जुग जीओ (आशीष)।

जुगजुगाना—अ०[हिं० जगना=प्रज्वलित होना] १. रह-रहकर थोड़ा थोड़ा चमकना। टिमटिमाना। २. अपने अस्तित्व का परिचय या प्रमाण देते रहना। ३ नया जीवन पाकर हीन दशा से कुछ अच्छी दशा में आना। उभरना।

जुगजुगी—स्त्री०[हिं० जुगजुगाना] १. शकरखोरा नाम की चिड़िया। २. गले में पहनने का एक आभूपण। जुगनूं।

जुगत--स्त्री०[सं० युक्ति] [कर्त्ता जुगती] १. बहुत सोच-समझकर किया जानेवाला उपाय। तरकीब। युक्ति। २. आचार, व्यवहार आदि में दिखाई देनेवाला कौशल। जैसे-खूब जुगत से गृहस्थी चलाना।

जुगती—पुं०[हिं० जगत] १. व्यक्ति जो समझ-बूझकर कोई विकट काम करने का उत्तम उपाय निकाले। २. किफायत से घर-गृहस्थी का खरच चलानेवाला व्यक्ति।

स्त्री०=जुगत (युक्ति)।

जुगनी—स्त्री=जुगनूं।

जुगनूं—पुं०[हिं० जुगजुगाना] १. एक प्रसिद्ध कीड़ा जिसका पिछला भाग रात में खूब चमकता है। खद्योत। २. पान के पत्ते के आकार का गले का एक गहना। जुगजुगो। रामनामी। ३. गले में पहनने के गहनों में नीचे लटकनेवाला खंड। (पेन्डेन्ट)

जुगम—वि०=युग्म।

जुगराफिया—पुं०[अं०] भूगोल।

जुगल—वि०=युगल।

जुगलिया—पुं०[?] जैन कथाओं के अनुसार वह कल्पित प्राणी जिसके ४०९६ वाल मिलकर आज कल के मनुष्यों के एक वाल के वरावर हों।

जुगवना—स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] यत्न अथवा युक्तिपूर्वक थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा करके और सँभाल कर रखना। युक्तिपूर्वक बचाकर रखना।

जुगाड़—पुं० [सं० योग, हिं० जुगवना] १. कोई आवश्यक वस्तु कहीं से लाकर उपस्थित करना। २. कोई कठिन कार्य सिद्ध करने की युक्ति। क्रि० प्र०—वैठाना।

जुगादरी—वि०[सं० युगादि से] वहुत पुराना।

जुगादि—*पुं०[सं० युगादि] १. युग का आरंभिक समय। २. वहुत पुराना समय।

जुगाना —स०=जुगवना।

जुगार†—स्त्री०=जुगाली।

जुगारना —अ०=जुगालना।

जुगालना—अ० [सं० उद्गिलन=उगलना] सींगवाले पशुओं (जैसे—गाय भैंस, वकरी आदि), का जुगाली या पागुर करना।

जुगाली—स्त्री० [हिं० जुगालना] सींगवाले पशुओं का जल्दी-जल्दी खाये या निगले हुए चारे को गले से थोड़ा निकालकर फिर से अच्छी तरह चवाना। पागुर।

जुगुत, जुगुति—स्त्री०=जुगत।

जुगुप्सक—वि० [सं०√गुप् (निंदा करना)+सन्, द्वित्वादि,+ण्वुल्-अक] दूसरे की व्यर्थ में निंदा करनेवाला। निंदक।

जुगुप्सन—पुं०[सं०√गुप्+सन्., द्वित्वादि+ल्युट्–अन] [वि० जुगुप्सु, जुगुप्सित] जुगुप्सा या निंदा करना।

जुगुप्सा—स्त्री० [सं०√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+अ--टाप्] १. दूसरों की की जानेवाली निंदा या वुराई। २. उपेक्षापूर्वक की जानेवाली घृणा। ३. योग शास्त्र के अनुसार अपने शरीर तथा संसार के लोगों के प्रति होनेवाली वह घृणा जो मन के परम शुद्ध हो जाने पर होती है।

जुगुप्सित—भू० कृ० [सं०√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+क्त] १. जिसकी जुगुप्सा हुई हो। निंदक। २. घृणित।

जुगुप्सु—वि० [सं०√गुप्+सन्, द्वित्वादि,+उ] वुराई करनेवाला। निंदक।

जुगुल†—वि०=युगल।

जुग्ग—पुं०=युग।

जुग्गिनवै*—पुं० [सं० योगिनी+पति] दिल्ली का राजा पृथ्वीराज।

जुग्गिनी—स्त्री० [सं० योगिनी] योगिनीपुर। दिल्ली।

जुज़—पुं० [फा० मि० सं० युज] १. अंश। भाग। २. छपे हुए कागज के जुड़े हुए ८ या १६ पृष्ठों का समूह। एक फारम।

जुजबन्दी—स्त्री०[फा०] पुस्तकों की सिलाई का वह प्रकार जिसमें प्रत्येक फरमा एक ओर तो अलग-अलग और दूसरी ओर वाकी सब फरमों के साथ मिलाकर भी सीया जाता है। (दफ्तरी)

जुजवी—वि०[फा०] १. जो जुज या वहुत छोटे अंश के रूप में अथवा वहुत थोड़ी मात्रा में किसी के अंतर्गत हो। २. वहुत कम।

जुजोठल†—पुं०=युधिष्ठिर।

जुज्झ*—स्त्री०[?] १. जूझने की क्रिया या भाव। जूझ। २. युद्ध। लड़ाई।

जुझवाना*—स०[हिं० जूझना का प्रे०] किसी को जूझने में प्रवृत्त करना।

जुझाऊ—वि०[हिं० जूझ+आऊ (प्रत्य०)] १. प्रायः जूझता या लड़ता रहनेवाला। लड़ाका। २. युद्ध या लड़ाई के उपयोग में आनेवाला। युद्ध-संबंधी। जैसे—जुझाऊ जहाज।

जुझाना—स०=जुझवाना।

जुझार—वि०[हिं० जुज्झ+आर (प्रत्य०)] योद्धा। लड़ाका।
पुं० युद्ध। लड़ाई। उदा०—का जानसि कस होइ जुझारा।
—जायसी।

जुझारू—वि०, पुं०=जुझार।

जुझ्झ—पुं०[सं० युद्ध] १. जूझने की क्रिया या भाव। जूझ। २. युद्ध। लड़ाई।

जुट—पुं०[हिं० जुटना] १. एक ही तरह की दो चीजों का जोड़ा। जुग। २. एक साथ काम आनेवाली कई वस्तुओं का समूह। जोड़ा। जैसे—कपड़ों या गहनों का जुट। ३. किसी के जोड़ या मुकावले की कोई दूसरी चीज। जोड़ा। ४. एक साथ वँधी या लगी हुई चीजों का एक वर्ग या समूह जो प्रायः गुच्छे के रूप में हो। ५. जत्था। दल। मंडली। ६. दे० 'जुग'।

जुटक—पुं०[सं०√जुट् (मिलना)+क+कन्] १. जटा। २. कवरी। जूड़ा।

जुटना—अ० [सं० युक्त, प्रा० जुत्त+ना (प्रत्य०)] १. एक चीज का दूसरी चीज के बिलकुल पास पहुँचकर उससे लगना या सटना। जुड़ना। जैसे—इमारत में पत्थर के पास पत्थर जुटना। २. इस प्रकार पास या समीप होना कि बीच में वहुत ही थोड़ा अवकाश रह जाय। ३. किसी काम में जी लगाकर योग देना। जैसे—तुम भी आकर जुट जाओ तो काम जल्दी हो जाय। ४. एक या अनेक प्रकार की चीजों, व्यक्तियों आदि का एक जगह इकट्ठा होना। जैसे—(क) धन या पत्थर, लकड़ी आदि जुटना। (ख) तमाशा देखने के लिए भीड़ जुटना। ५. किसी प्रकार प्राप्त या हस्तगत होना। मयस्सर होना। ६. स्त्री का पुरुष से अथवा पुरुष का स्त्री से प्रसंग या संभोग करना। (बाजारू)

जुटला—वि०[हिं० जूट] [स्त्री० जुटली] लंबे-लंबे वालों की लटोंवाला। पुं०[अल्पा० जुटली] लंबे लंबे वालों की लटा। जटा-जूट।

जुटाना—स०[हिं० जुटना] १. जुटने या एकत्र होने में प्रवृत्त करना। २. इकट्ठा करना। ३. वहुत पास लाकर मिलाना या सटाना।

जुटाव—पुं०[हिं० जुटना] जुटाने की क्रिया या भाव।

जुटिका—स्त्री०[सं० जुटक+टाप्,—इत्व] १. चोटी। शिखा। २. बालों का जूड़ा। ३. गुच्छा। ४. एक प्रकार का कपूर।

जुट्टा—वि० [हिं० जुटना=मिलना] [स्त्री० जुट्टी] आपस में मिले या सटे हुए (पदार्थ)। जैसे—जुट्टी भौंहें।

पुं०[स्त्री० अल्पा० जुट्टी] १. घास, डंठलों आदि का बड़ा पूला। २. दे० 'जुट्टी'।

जुट्टी—स्त्री०[हिं० जुटना] १. घास, डंठलों आदि का पूला। २. ऐसे डंठलों, पत्तों आदि का कल्ला जो आरम्भ में प्रायः एक में मिले या सटे हुए रहते हैं। ३. एक दूसरी पर रखी हुई एक ही तरह की चीजों की गड्डी या थाक। ४. वेसन में लपेट कर तले हुए पत्ते या साग।

जुठारना—स० [हिं० जूठा] १. खाने-पीने की चीज कुछ खा या पीकर जूठो करना। जैसे—कुत्ते का दूध जुठारना। २. नाम मात्र के लिए थोड़ा-सा खाकर बाकी छोड़ देना। जैसे—थाली जुठारना। ३. नाम मात्र के लिए या बहुत थोड़ा-सा खाना, जैसे—मुँह जुठारना।

जुठिहारा—पुं०[हिं० जूठा+हारा] [स्त्री० जुठिहारी] दूसरों का जूठा खानेवाला।

जुठैल*—वि०[सं० जुष्ठ+ऐल]जूठा। उच्छिष्ट। उदा०—कातिक राति जगी जम जोइ जुठैल जठेरि सुजठ की जेणी।—देव।

जुठौली—स्त्री०[देश०] झुंड में रहनेवाली हलके बादामी रंग की एक चिड़िया जिसके पैर छोटे, शरीर कुछ चौड़ा तथा चिपटा होता है। इसके नर का सिर भूरा होता है

जुड़ंगी—वि०[हिं० जुड़ना+अंग] जिसके साथ अंग और अंगीवाला संबंध हो। बहुत ही निकट का संबंधी।

जुड़ना—अ०[हिं० जोड़ना का अ०] १. हिंदी 'जोड़ना' का अकर्मक रूप। जोड़ा जाना। २. दो या अधिक वस्तुओं का आपस में इस प्रकार मिलना कि एक का कोई भाग या अंग दूसरे के साथ दृढ़तापूर्वक लगा या सटा रहे। दृढ़तापूर्वक संवद्ध, संश्लिष्ट या संयुक्त होना। जैसे—सरेस से कुरसी के पाये जुड़ना।

संयो० क्रि०—जाना।

३. संगृहीत या संचित होकर एक स्थान पर एकत्र होना। जुटना। जैसे—किसी के पास धन जुड़ना। ४. किसी प्रकार उपलब्ध, प्राप्त या हस्तगत होना। मयस्सर होना। जैसे— हमें ऐसे कपड़े भला कहाँ जुड़ेंगे। ५. गाड़ी, घोड़े, बैल आदि के संबंध में, जोता जाना। जुतना। जैसे—इस गाड़ी में दो घोड़े जुड़ते हैं। ६. किसी प्रकार के कठिन या श्रमसाध्य कार्य में किसी व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का योग देने के लिए सम्मिलित होना। ७. दे० 'जुटना'।

जुड़पित्ती—स्त्री०[हिं० जूड़+पित्त] शीत और पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें सारे शरीर में बड़े-बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं और उनमें खुजली या जलन होती है।

जुड़वाँ—वि०[हिं० जुड़ना] १. (बच्चे) जो एक साथ जुड़े हुए जन्मे हों। २. (बच्चे) जिनका जन्म एक ही समय में कुछ आगे-पीछे हुआ हो। ३. (कोई ऐसे दो या अधिक पदार्थ) जो आपस में एक साथ जुड़े, लगे या सटे हों। जैसे—जुड़वाँ केले या फलियाँ।

जुड़वाई—स्त्री०[हिं० जुड़वाना] जुड़वाने या जोड़ लगवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जुड़वाना—स० [हिं० जुड़ाना=ठंढा होना] ठंढा या शीतल करना। २. किसी संतप्त को शांत, संतुष्ट या सुखी करना।

स०[हिं० जोड़ना का प्रे०] १. जोड़-बैठवाना, मिलवाना या लगवाना। २. जुड़ाना

जुड़ाई†—स्त्री०=जोड़ाई।

स्त्री०[हिं० जुड़ाना] १. ठंढे या शीतल होने की क्रिया या भाव। ठंढक। शीतलता। २. तृप्ति।

स्त्री०=जुड़वाई।

जुड़ाना—स०[हिं० जुड़ना का स०] १. जुड़ने या जोड़ने में प्रवृत्त करना। २. फलित ज्योतिष के अनुसार योग और फल का मिलान करना। जैसे—जन्म पत्र जुड़ाना अर्थात् वर और कन्या के ग्रहों का मिलान कराके यह जानना कि दोनों का वैवाहिक संबंध कैसा होगा।

अ०[हिं० जाड़ा, पू० हिं० जूड़=ठंढा] १. ठंढा या शीतल होना। २. शांत और सुखी होना। जैसे—किसी को देखकर कलेजा जुड़ाना। ३. तृप्त होना।

स० ठंढा या शीतल करना। २. शांत और सुखी करना।

जुड़ावना†—स०=जुड़ाना।

जुड़िया†—वि०, पुं०=जुड़वाँ।

जुत†—वि०=युक्त।

जुतना—अ०[सं० युक्त, प्रा० जुत्त] १. घोड़े, बैल आदि का गाड़ी में जोता जाना। २. खेत आदि का जोता जाना। ३. जी लगाकर किसी ऐसे काम में सम्मिलित होना जिसमें बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता हो। जैसे—वह दिन भर काम में जुता रहता है।

जुतवाना—स०[हिं० जोतना का प्रे०] १. जोतने का काम किसी दूसरे से कराना। २. ऐसा काम करना जिससे कुछ (जैसे-खेत) या कोई (जैसे-घोड़ा या बैल) जोता जाय।

जुताई†—स्त्री०[हिं० जोतना] जुतने या जोते जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जुताना†—स०=जुतवाना।

+अ०=जुतना।

जुतिऔवल—स्त्री० [हिं० जूता] ऐसी लड़ाई जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरे पर जूतों से प्रहार करते हों। जूतों से होनेवाली लड़ाई।

जुतियाना—स० [हिं० जूता+इयाना (प्रत्य०)] १. जूतों से किसी पर प्रहार करना। २. किसी को बहुत अधिक खरी-खोटी सुनाकर अपमानित तथा लज्जित करना।

जुत्य†—पुं०=यूथ।

जुथौली—स्त्री०=जुठौली।

जुदा—वि०[फा०] [स्त्री० जुदी (क्व०)] १. किसी से दूर हटा या बिछुड़ा हुआ। अलग। पृथक्। जैसे—माँ का बेटी से जुदा होना। २. आकार, गुण, महत्त्व, रंग-रूप आदि की दृष्टि से भिन्न प्रकार का। भिन्न। जैसे—यह बात जुदा है कि आप भी जायँगे या नहीं।

जुदाई—स्त्री०[फा०] १. जुदा या भिन्न होने की अवस्था या भाव। भिन्नता। २. जुदा या पृथक् होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। ३. प्रेमियों, मित्रों आदि का पारस्परिक वियोग। बिछोह।

जुद्ध†—पुं०=युद्ध।

जुधवान—पुं०[सं० युद्ध] १. युद्ध करनेवाला। योद्धा। उदा०—जग्गेयं जुधवानं, कुंभेनयं कंक लंकायं !-चंद वरदाई। २. जो युद्ध कर रहा हो। लड़ता हुआ।

जुन†—स्त्री० १.=जून (काल या समय)। २.=‘योनि’।

जुनब्बा†—स्त्री० [अ० जुनूब=दक्षिण] [स्त्री० अल्पा० जुनब्बी] पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

जुनरी—स्त्री०=जुन्हरी (ज्वार)।

जुनून—पुं०[फा०] उन्माद। पागलपन।

जुनूनी—वि०[अ०] उन्मत्त। पागल।

जुनूब—पुं०=जनूब। (दक्षिण)।

जुन्हरी—स्त्री०[सं० यवनाल] ज्वार नाम का अन्न।

जुन्हाई—स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्हा, हिं० जोन्हीं+ऐया] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २. चन्द्रमा।

जुन्हैया†—स्त्री०=जुन्हाई।

जुफ्त—पुं०[फा०] १. जोड़ा। २. सम संख्या।

जुब-राज†—पुं०=युवराज।

जुबाद—पुं०[अ०] एक प्रकार का तरल गंध द्रव्य जो गंध मार्जार या मुश्क विलाव के अंडकोश से निकलता है।

जुबान†—स्त्री०=जबान।

जुबानी†—वि०=जबानी।

जुमकना†—अ०[हिं० जमना या सं० युग्म] १. दृढ़तापूर्वक किसी जगह खड़े रहना। डटना। २. पास या समीप आना। ३. इकट्ठा होना।

जुमना—स०[?] खेत में उगी या पड़ी हुई झाड़ियों को जलाकर उनकी खाद बनाना।

पुं० खाद बनाने की उक्त क्रिया।

जुमला—वि०[फा० जुम्लः] कुल। पूरा। सब।

पुं० वाक्य।

जुमा—पुं०[अ० जुमऽ] शुक्रवार।

जुमा मसजिद—स्त्री०[अ०]जामा मस्जिद।

जुमिल—पुं०[?] एक प्रकार का घोड़ा।

जुमिल्ला—पुं० [?] करघे की लपेटन की बाईं ओर गड़ा रहनेवाला खूंटा।

जुमुकना—अ०=जुमकना।

जुमेरात—स्त्री०[अ०] गुरुवार। बृहस्पतिवार।

जुम्मा—पुं०[अ० जुमा] शुक्रवार।

†पुं०=जिम्मा।

जुयांग—पुं०[?] सिंह भूमि के पास पाई जानेवाली एक जंगली जाति जो कोलों से मिलती-जुलती है।

जुर*—पुं०[सं० ज्वर] ज्वर। बुखार। उदा०—बासर रैनि नाँव लै बोलत भयो बिरह जुर कारो।—सूर।

जुरअत—स्त्री०[फा०] साहस। हिम्मत।

जुरझना†—अ०, स०=झुलसना।

जुरझरी†—स्त्री०=झुरझुरी।

जुरना*—अ० [हिं० जुड़ना का पुराना रूप] १. एक में मिलना। जुड़ना। २. अँगड़ाई लेना। उदा०—झुकि झुकि झंपकौं हैं पलनु फिरि फिरि जुरि जमुहाई।—बिहारी।

अ०=जुड़ाना (ठंढा होना)।

जुरबाना†—पुं०=जुरमाना।

जुरमाना—पुं०[फा० जुर्मानः] १. किसी अपराध के फल-स्वरूप न्यायालय द्वारा अभियुक्त को दिया जानेवाला अर्थ-दंड। २. किसी प्रकार की चूक, त्रुटि या भूल करने पर किसी अधिकारी द्वारा दिया जानेवाला अर्थ दंड। जैसे—पुस्तकालय में १५ दिन के अंदर पुस्तक न लौटाने पर एक आना रोज जुरमाना लगता है। ३. वह धन जो किसी प्रकार का अपराध, दोष या भूल करने पर दंड-स्वरूप देना पड़ता है।

जुरा*†—स्त्री० [सं० जरा] १. बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. मृत्यु।

जुराना—अ०, स०=जुड़ाना।

जुराफा—पुं०[अ० जुर्राफ़ः] ऊँट की तरह का पंद्रह-सोलह फुट ऊँचा अफ्रीका का एक जंगली पशु जो संसार का सबसे ऊँचा प्राणी माना जाता है। कहते हैं कि मादा से विछोह होते ही नर की मृत्यु हो जाती है।

जुरावना*—अ०, स०=जुड़ाना।

जुरी†—स्त्री०=जूड़ी।

जुरूर—क्रि० वि०=जरूर।

जुर्म—पुं०[अ०] १. ऐसा अनुचित कार्य जो विधिक दृष्टि से दंडनीय हो। अपराध। २. कोई ऐसा दोष या भूल जिसके लिए दंड मिल सकता हो।

जुर्माना†—पुं०=जुरमाना।

जुर्रत—स्त्री०[अ० जुरअत] साहस।

जुर्रा—पुं०[फा० जुर्रः] बाज नामक पक्षी में का नर।

जुर्राब—स्त्री०[तु०] धागों आदि का बुना हुआ पैरों का एक प्रसिद्ध पहनावा। मोजा।

जुल—पुं०[सं० छल ?] [वि० जुलबाज] कोई ऐसी बात जो किसी को धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए कही गई हो।

क्रि० प्र०—देना।—में आना।

जुलकरन—पुं०[अ० जुलकरनैन] सुप्रसिद्ध यूनानी बादशाह सिकंदर की एक उपाधि।

जुलकरनैन—पुं०=जुलकरन।

जुलकरीं—पुं०=जुलकरन।

जुलना—स०[हिं० मिलना का अनु० या हिं० जुड़ना] १. मेल-मिलाप करना या रखना। जैसे—मित्रों से मिलना-जुलना। (केवल ‘मिलना’ के साथ प्रयुक्त)

जुलफ—स्त्री०[अ० ज़ुल्फ़] बालों की लट।

जुलफिकार—पुं०[अ० ज़ुलफ़िकार] अली (मुसलमानों के चौथे खलीफा) की तलवार का नाम।

जुलबाज—वि०[हिं० जुल+फा० बाज़] [भाव० जुलबाजी] दूसरों को जुल देनेवाला। धोखेबाज।

जुलम†—पुं०=जुल्म (अत्याचार)।

जुलहा†—पुं०=जुलाहा।

जुलाई—वि०[हिं० जुल+आई (प्रत्य०)] जुल देनेवाला। धोखेबाज। उदा०--घाती, कुटिल, ढीठ अतिक्रोधी, कपटी कुमति जुलाई।—सूर।
स्त्री०=जूलाई (अँगरेजी का सातवाँ महीना)।

जुलाब—पुं०[फा० गुलाब, अ० जुल्लाब] १. रेचन। दस्त। २. दस्त लानेवाली दवा। रेचक औषध।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
मुहा०—**जुलाब पचना**=रेचक औषध खाने पर भी उसका प्रभाव या फल न होना।
३. किसी से कुछ व्यय कराने की तरकीब या युक्ति। (बाजारू)

जुलाहा—पुं०[फा० जौलाह] १. करघे पर कपड़ा बुननेवाला शिल्पी। कोरी। तंतुवाय। २. कपड़ा बुननेवालों की एक विशिष्ट जाति। ३. योग साधना में साधक। ४. पानी पर तैरनेवाला एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा।

जुलुफ--स्त्री०[अ० जुल्फ] बालों की लट।

जुलुम—पुं०=जुल्म (अत्याचार)।

जुलुस—पुं०[अ०] १. सिंहासनारोहण। २. दे० 'जलूस'।

जुलोक—पुं०[सं० द्युलोक] स्वर्ग।

जुल्फ—स्त्री०[फा० जुल्फ़] सिर के वे लंबे बाल जो पीछे या इधर-उधर लटों के रूप में लटकते रहते हैं।

जुल्फी—स्त्री०=जुल्फ।

जुल्म—पुं०[अ०] १. किसी प्रबल या शक्तिशाली व्यक्ति का अनीति या अन्यायपूर्ण ऐसा कार्य जिससे असहायों, दुर्बलों तथा निरीहों को कष्ट होता हो। अत्याचार। २. कोई कठोर आचरण या व्यवहार। जैसे—शरीर के साथ जुल्म मत करो।
मुहा०—**जुल्म ढाना**=(क) कोई बहुत बड़ा अत्याचार करना। (ख) कोई अद्भुत या विलक्षण काम कर दिखाना।

जुल्मत—स्त्री०[अ० ज़ुल्मत] अंधकार।

जुल्मात—पुं०[अ० ज़ुल्मत का बहु० रूप] १. अंधकार। २. कुछ विशिष्ट अंधकारपूर्ण स्थान। जैसे--स्त्रियों का गर्भाशय, समुद्र का बिलकुल नीचेवाला भाग।

जुल्मी—वि० [अ० ज़ुल्मी] १. जुल्म अर्थात् अत्याचार करनेवाला। २. बहुत अधिक उग्र, तीव्र या विकट। प्रचंड। प्रबल।

जुल्लाब—पुं०=जुलाब।

जुव†—पुं०=युवक।

जुवजन--पुं०[सं० युवा+जन] नवजवान आदमी। उदा०--मनु जग-जुवजन जीतन एकहि बिधिना रची।बनाय—भारतेन्दु।

जुवती†—स्त्री०=युवती।

जुवराज*—पुं०=युवराज।

जुवा—वि०=युवा।
पुं०=जूआ।

जुवान†—पुं०=जवान।

जुवानी†—स्त्री०=जवानी।

जुवार—स्त्री०=ज्वार।

जुवारी—पं०=जुआरी।

जुविराज*—पुं०=युवराज।

जुष्ट—वि०[सं०√जुष् (प्रीति, सेवा)+क्त] १. प्रसन्न। २. सेवित। ३. जूठा।
पुं० जूठन।

जुष्य—वि०[सं०√जुष्+क्यप्] १. पूज्य। २. सेव्य।

जुस्तजू—स्त्री०[फा०] खोज। तलाश।

जुहाना†—स०[सं० यूथ, प्रा० जूह+आना (प्रत्य०)] १. एकत्र करना। जुटाना। २. वास्तु-रचना में एक पत्थर या लकड़ी को ठीक तरह से दूसरे पत्थर या लकड़ी पर या उसके साथ जमाना या बैठाना। (बढ़ई और राज) ३. चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को यथा-स्थान बैठाना। संयोजन करना।

जुहार—स्त्री०[सं० अवहार=युद्ध का रुकना या बंद होना?] १. राजपूतों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन। २. अभिवादन। प्रणाम।
†स्त्री०=ज्वार।

जुहारना--अ०[हिं० जुहार] अभिवादन या प्रणाम करना। उदा०--मंत्री, मित्र कलत्र पुत्र सब आइ जुहार्‌यो।-? सं० [जीवहार] किसी से कुछ सहायता माँगना। किसी का एहसान लेना।

जुहावना—स०=जुहाना।

जुही—स्त्री० [सं० यूथी]=जूही (एक पौधा और उसका सुगंधित फूल)।

जुहुराण—वि०[सं० √हुर्च्छ् (कुटिलता)+सन्, द्वित्वादि, आनच्, सन-लुक् छलोप] कुटिल।
पुं० चंद्रमा।

जुहुवान—पुं०[सं०√हु (देना, लेना)+कानच्] १. अग्नि। आग। २. पेड़। वृक्ष। ३. क्रूर या निष्ठुर आदमी।

जुहू—पुं०[सं०√हु+क्विप्] १. पलाश की लकड़ी का बना हुआ एक प्रकार का अर्द्ध चंद्राकार यज्ञ-पात्र। २. पूर्व दिशा।

जुहूर--पुं० [अ० जहूर] प्रकट या प्रत्यक्ष होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

जुहू-राण—पुं०[सं० जुहू√रण् (शब्द करना)+अण्] १. अग्नि। २. अध्वर्यु। ३. चंद्रमा।

जुहू-वाण—पुं०[सं० जुहू√वण् (शब्द करना)+अण्] दे० 'जुहूराण'।

जुहूवान् (वत्)—पुं०[सं० जुहू+मतुप्] अग्नि।

जुहोता—पुं०=होता।

जूं—स्त्री० [सं० यूका, पा० ऊका] काले रंग का एक बहुत छोटा स्वेदज कीड़ा जो सिर के बालों में पड़ जाता है। (लाउस)
क्रि० प्र०—पड़ना।
पद-जूं की चाल=बहुत ही धीमी चाल।
मुहा०—**(किसी के) कानों पर जूं तक न रेंगना**=किसी के कुछ कहने-सुनने पर भी उसका नाम मात्र को भी परिणाम या फल न होना।
†पुं० [सं० युज, प्रा० जुआ] जूआ (गाड़ी या हल का)। उदा०--जूं सहरी भ्रूह नयण मृग जूता।—प्रिथीराज।

जूंठ†--स्त्री०=जूठन।

जूंठन—स्त्री०=जूठन।

जूंड़िहा—पुं०[हिं० झुंड] वह बैल जो झुंड में सबके आगे चलता हो।

जूंदन—पुं०[देश०] [स्त्री० जूंदनी] बंदर। (मदारी)

जूँमुँहाँ—वि० [हिं० जूँ+मुँह] (वह व्यक्ति) जो देखने में सीधा-सादा होने पर भी वास्तव में बहुत बड़ा धूर्त हो।

जू—स्त्री० [सं०√जू (गमनादि)+क्विप्] १. सरस्वती। २. वायुमंडल। ३. घोड़े, बैल आदि पशुओं के मस्तक पर का टीका।
†अव्य०=जो।
अव्य०=जी।

जूआ—पुं० [सं० युग] १. गाड़ी, हल आदि के आगे की वह लकड़ी जो जोते जानेवाले पशुओं के कंधे पर रखी तथा बाँधी जाती है। २. चक्की में की वह लकड़ी जिसे पकड़कर उसे चलाया जाता है। मूठ।
पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूअ] १. वह खेल जिसमें हार या जीत होने पर कुछ निश्चित या नियत धन विपक्षी से लिया या उसे दिया जाता है। २. इस प्रकार धन लगाकर खेल खेलने की क्रिया या भाव। ३. कोई ऐसा जोखिम का काम जिसमें हानि और लाभ दोनों अनिश्चित होते हैं।

जूआ-खाना—पुं० [हिं० जूआ+फा० खानः] वह घर या स्थान जहाँ बैठकर लोग जूआ खेलते हों।

जूआघर—पुं०=जूआ-खाना।

जूआ-चोर—पुं० [हिं० जूआ+चोर] [भाव० जूआ-चोरी] बहुत बड़ा ठग या धूर्त्त।

जूक—पुं० [यूना० ज्यूकस] तुला राशि।

जूजू—पुं० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसका नाम लेकर छोटे बच्चों को डराया जाता है। हौआ।

जूझ—स्त्री० [हिं० जूझना] १. जूझने की क्रिया या भाव। २. युद्ध। लड़ाई।

जूझना—अ० [सं० युद्ध वा हिं० जूझ] १. शारीरिक बल लगाते हुए किसी से लड़ना। उठा-पटक और हाथा-बाहीं करना। जैसे—योद्धाओं का आपस में जूझना। २. शारीरिक बल लगाते हुए कोई प्रयत्न करना। जैसे—कुरसी या मेज से जूझना। ३. व्यर्थ ही बहुत अधिक तकरार या हुज्जत करना।

जूट—पुं० [सं०√जूट् (मिलना)+अच्] १. सिर के उलझे हुए और घने तथा बड़े बालों की लट या उन्हें लपेटकर बाँधा हुआ जूड़ा। जैसे—सिर पर जटा-जूट रखना। २. शिव की जटा।
पुं० [अं०] पटसन।

जूटना—स० [हिं० जुटना का स० रूप] जुटाना।

जूटि*—स्त्री० [सं० जुड्] १. जोड़ी। २. मेल। ३. संधि।

जूठ—वि०=जूठा।
स्त्री०=जूठन।

जूठन—स्त्री० [हिं० जूठा] १. वह खाद्य पदार्थ जो किसी ने जूठे छोड़ हों। किसी के खाने-पीने से बची हुई जूठी वस्तु।
मुहा०—(किसी के यहाँ) जूठन गिराना=किसी के यहाँ निमंत्रित होकर भोजन करना। जैसे—प्रार्थना है कि आज संध्या को मेरे यहाँ आकर जूठन गिराइये।
२. वह पदार्थ जो किसी दूसरे के द्वारा एक या अनेक बार काम में लाया जा चुका हो और जिसमें किसी प्रकार की नवलता या नवीनता न रह गई हो।

जूठा—वि० [सं० जुष्ठ, प्रा० जुट्ठ] १. (खाद्य पदार्थ) जो किसी के खाने-पीने के बाद बच रहा हो। उच्छिष्ट। २. (खाद्य पदार्थ) जिसे किसी ने मुँह लगाकर या उसमें का कुछ अंश खा-पीकर अपवित्र या अशुद्ध कर दिया हो। जैसे—कुत्ते या बिल्ली का जूठा भोजन। ३. (पात्र या साधन) जिसके द्वारा अथवा जिसमें कुछ खाया-पीया गया हो। जैसे—जूठा बरतन, जूठा हाथ। ४. (कथन या विषय) जिसका किसी ने पहले उपभोग, प्रयोग या व्यवहार कर लिया हो और इसीलिए जिसमें कोई चमत्कार या नवलता न रह गई हो। जैसे—दूसरों की जूठी उक्ति।
पुं०=जूठन।

जूड़—वि० [सं० जड़] [क्रि० जुड़वाना, जुड़ाना] ठंढा। शीतल।
पुं०=जूड़ा।

जूड़न—पुं० [देश०] कुछ कालापन लिये खैरे रंग का एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी बिच्छू।

जूड़ना—अ०=जुड़ना।

जूड़ा—पुं० [सं० जूट] १. सिर के बड़े-बड़े बालों को लपेटकर गोलाकार बाँधने या गाँठ लगाने से बननेवाला रूप। २. चोटी। कलगी। ३. मूँज आदि का पूला।

जूड़ी—स्त्री० [हिं० जूड़] जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर। विषम ज्वर। शीत ज्वर।

जूण*—स्त्री०=योनि।

जूत—पुं० [हिं० जूता] १. जूता। २. बड़ा और भारी या मोटा जूता।

जूता—पुं० [सं० युक्त, प्रा० जुत्त] १. कंकड़, काँटे, कीचड़, मिट्टी आदि से पैरों की रक्षा करने के लिए उनमें पहने जानेवाले उपकरण की जोड़ी जो चमड़े, टाट, रबर आदि की बनी होती है। उपानह। जोड़ा।
विशेष—(क) हमारे देश में इसकी गिनती बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ चीजों में होती है और इससे मारना बहुत ही अपमान-जनक और तिरस्कार सूचक होता है। (ख) मुहावरों आदि में इसका प्रयोग एक-वचन में भी होता है और बहुवचन में भी।
मुहा०—(आपस में) जूता उछलना=(क) आपस में जूतों से मार-पीट होना। (ख) आपस में बहुत ही निकृष्ट प्रकार की कहा-सुनी और थुक्का-फजीहत होना। **(किसी पर) जूता उछालना**=किसी के संबंध में बहुत ही अपमान-जनक बातें कहना। **(किसी का) जूता उठाना**=बहुत ही तुच्छ या हीन बनकर छोटी-छोटी सेवाएँ तक करना। **(किसी पर) जूता उठाना**=जूते से आघात या प्रहार करने पर उद्यत होना। **जूता खाना**=(क) जूतों की मार खाना। (ख) बहुत ही बुरी तरह से अपमानित और तिरस्कृत होना। **जूता घुमाना**=जूता चलाना। (देखें) **(आपस में) जूता चलना**=(क) आपस में जूतों से मार-पीट होना। (ख) आपस में बहुत बुरी तरह से कहा-सुनी या थुक्का-फजीहत होना। **जूता चलाना**=छोटे-मोटे चोर का पता लगाने के लिए वह टोना या तांत्रिक उपचार करना जिसमें जूता चारों तरफ घूमता रहता है, पर चोर का नाम लेने पर ठहर या रुक जाता है। **(किसी पर) जूता चलाना**=किसी को मारने के लिए उस पर जूता फेंकना। **(किसी का) जूता चाटना**=स्वार्थवश बहुत ही दीन-हीन बनकर किसी की खुशामद और तुच्छ सेवाओं में लगे रहना। **(किसी को) जूता देना**=जूते से प्रहार करना। **(किसी पर) जूता पड़ना**=बहुत ही बुरी तरह से अपमानित, तिरस्कृत या लांछित होना। **जूता मारना**=बहुत ही बुरी तरह से अप-

मानित या तिरस्कृत करना। **(किसी पर) जूता पड़ना या बैठना**=बहुत ही अपमान-जनक या तिरस्कार-सूचक व्यवहार होना। **(किसी पर) जूता लगना**=जूता पड़ना। (देखें ऊपर) **(पैर में) जूता लगना**=पैर में जूते की रगड़ के कारण घाव होना **(आपस में) जूतों दाल बँटना**=बहुत ही बुरी तरह से या नीचों की तरह लड़ाई-झगड़ा होना। **(किसी के साथ) जूतों से आना**=मारने के लिए वैयार होना। **(किसी के साथ) जूतों से बात करना**=(क) जूतों से मारना। (ख) बहुत ही बुरी तरह से अपमानित और तिरस्कृत करना। अत्यन्त अनादरपूर्ण व्यवहार करना।

२. ऐसा व्यय जो बहुत ही बुरे आघात या प्रहार के रूप में हो। जैसे—इनके फेर में सौ रुपये का जूता तुम्हें भी लगा (अर्थात् तुम्हें भी व्यर्थ सौ रुपए खर्च करने पड़े)।

पद—चाँदी का जूता=घूस आदि के रूप में धन का ऐसा व्यय जो किसी को दबाकर अपने अनुकूल या वश में करने के लिए हो। नगद रिश्वत। जैसे--चाँदी का जूता तुम्हें भी ठीक या (सीधा) कर देगा।

जूताखोर—वि॰ [हिं॰ जूता+फा॰ खोर] जो बार-बार अपमानित और तिरस्कृत होने पर भी निंदनीय आचरण या व्यवहार न छोड़ता हो। परम निर्लज्ज और हीन।

जूति—पुं॰ [सं॰√जू (वेग)+क्तिन्] वेग। तेजी।

जूतिका—स्त्री॰ [सं॰ जूति√कै (प्रकाशित होना)+क–टाप्] एक तरह का कपूर।

जूतिया—पुं॰=जीवत्पुत्रिका (व्रत)।

जूती—स्त्री॰ [हिं॰ जूता] १. स्त्रियों के पहनने का जूता जो अपेक्षया कुछ छोटा और हलका होता है।

विशेष—इससे संबद्ध अधिकतर मुहावरे मुख्यतः स्त्रियों में ही चलते हैं।

मुहा॰—जूतियाँ चटकाना=व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना या मारे-मारे फिरना। **(किसी की) जूतियाँ सीधी करना**=बहुत ही तुच्छ और हीन बनकर किसी की छोटी-छोटी सेवाएँ तक करना। **(किसी को) जूती की नोक पर मारना**=बहुत ही उपेक्ष्य, तुच्छ या हेय समझना। **जूती के बराबर**=बहुत ही तुच्छ, नगण्य या महत्त्वहीन। **(किसी की) जूती के बराबर न होना**=किसी की तुलना में बिलकुल तुच्छ या नगण्य होना। **(किसी को) जूती पर रखकर रोटी देना**=किसी को बहुत ही तुच्छ और हीन ठहराते हुए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना।

जूतीकारी--स्त्री॰ [हिं॰ जूती+कार] लगातार जूतों की मार। (परिहास) जैसे--जब तक इसकी जूतीकारी न होगी तब तक यह सीधा न होगा।

जूतीखोर—वि॰=जूताखोर।

जूतीछिपाई—स्त्री॰ [हिं॰ जूती+छिपाना] १. विवाह के समय की एक रसम जिसमें बधू की बहनें और सहेलियाँ वर को तंग करने के लिए उसके जूते कहीं छिपाकर रख देती हैं। २. उक्त रसम के बाद वह धन या नेग जो जूता चुरानेवाली लड़कियों को दिया जाता है।

जूती-पैजार—स्त्री॰ [हिं॰ जूती+फा॰ पैज़ार] १. आपस में होनेवाली जूतों की मार-पीट। २. बहुत ही बुरी तरह से या नीच लोगों की तरह होनेवाली कहा-सुनी या लड़ाई झगड़ा।

जूथ—पुं॰=यूथ।

जूथका—स्त्री॰=यूथिका (जूही)।

जूथिक—स्त्री॰=यूथिका (जूही)।

जून—पुं॰ [सं॰ द्युवन्=सूर्य] समय। बेला।

पुं॰ [सं॰ जूर्ण] तिनका। तृण।

पुं॰ [अं॰] ईसवी सन् का छठा महीना।

†स्त्री॰ [सं॰ योनि] योनि। जैसे—कुत्ते-बिल्ली की जून पाना।

जूना—पुं॰ [सं॰ जूर्ण=एक तृण] १. घास-फूस आदि बटकर बनाई हुई रस्सी जो बोझ आदि बाँधने के काम आती है। २. घास-फूस आदि का पूला।

†वि॰ [सं॰ जीर्ण] १. पुराना। २. बुड्ढा। वृद्ध।

पुं॰ [देश॰] १. एक प्रकार का पौधा जो प्रायः बागों में शोभा के लिए लगाया जाता है। २. उक्त पौधे का पीले रंग का सुन्दर फूल।

जूप†—पुं॰ [सं॰ द्यूत, प्रा॰ जूव] १. जूआ (खेल)। २. विवाह के उपरान्त वर और वधू को खेलाया जानेवाला जूए का एक खेल।

पुं॰ [सं॰ यूप] खंभा। स्तम्भ। उदा॰—कित गए वे सब भूप जूप लारे बजमारे।—नंददास।

जूमना—अ॰ [अ॰ जमा] इकट्ठा होना। जुटना।

†स॰ इकट्ठा करना। जुटाना।

जूर—पुं॰ [हिं॰ जुरना] १. जोड़कर रखी हुई चीजों का समूह। संचय। २. ढेर। राशि।

जूरना†—स॰=जोड़ना।

स॰ [हिं॰ जूरी] एक पर एक रखकर गड्डियाँ या थाक लगाना।

जूरा†—पुं॰ [सं॰ यून] [स्त्री॰ अल्पा॰ जूरी] घास या पत्तों का पूला। जुट्टी।

पुं॰=जूड़ा।

जूर्ण—पुं॰ [सं॰√जूर् (बढ़ना)+क्त] एक प्रकार का तृण।

जूर्णि—स्त्री॰ [सं॰ ज्वर् (रोग)+नि] १. तेजी। वेग। २. देह। शरीर। ३. स्त्रियों का एक रोग।

वि॰ १. वेगवान्। तेज। २. गला हुआ। द्रवित। ३. तपानेवाला। ४. प्रशंसा या स्तुति करनेवाला। ५. खुशामदी।

पुं॰ १. सूर्य। २. ब्रह्मा। ३. क्रोध। गुस्सा।

जूर्ति—स्त्री॰ [सं॰√ज्वर्+क्तिन्] ज्वर।

जूलाई—स्त्री॰ [अं॰] अंगरेजी सन् का सातवाँ महीना।

जूव—वि॰ [सं॰ युवा] नौजवान। युवक।

स्त्री॰=युवती।

जूषण—पुं॰ [सं॰√जूष् (सेवा करना)+ल्युट्–अन] १. धाय का पेड़, जो फूलों के लिए लगाया जाता है। २. उक्त पेड़ का फूल।

जूस—पुं॰ [सं॰ जूष्] १. तरकारी, दाल आदि उबालने पर उसका वह पानी या रसा जो प्रायः दुर्बल रोगियों को पथ्य के रूप में दिया जाता है। २. रोगी को दिया जानेवाला पथ्य या बहुत हलका पेय पदार्थ। ३. तरकारियों आदि का झोल या रसा। शोरबा। ४. पके हुए फल का निचोड़ा हुआ रस।

वि॰ [फा॰ जुफ़्त, मि॰ सं॰ युक्त] जो गिनती या संख्या में युग्म या सम

ठहरे। ताक या विषम का विपर्याय। जैसे—२, ४, १०, २० सब गिनती के विचार से जूस और ३, ५, ११, १९ ताक हैं।

जूस-ताक—पुं० [हिं० जूस+फा० ताक] एक प्रकार का जूआ जिसमें, मुट्ठी में कौड़ियाँ भरकर विपक्षी से पूछा जाता है कि इनकी संख्या सम है या विषम।

जूसी—स्त्री० [हिं० जूस] ऊख के रस को उबालकर गाढ़ा करते समय उसमें से निकलने वाली गाढ़ी तल-छट। चोटा।

जूह—पुं० [सं० यूथ, प्रा० जूह] १. झुंड। २. समूह।

जूहर—पुं०=जौहर।

जूही—स्त्री० [सं० यूथी] १. चमेली की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूलों की गंध भीनी तथा मधुर होती है। २. उक्त पौधे का फूल।

जृंभ—पुं० [सं०√जृंभ् (जंभाई लेना)+घञ्] १. जँभाई। २. आलस्य।

जृंभक—वि० [सं०√जृम्भ्+ण्वुल्-अक] जँभाई लेनेवाला।
पुं० १. रुद्र या शिव का एक गण। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। (कहते हैं कि इसके चलने पर विपक्षी योद्धाओं को जँभाइयाँ आने लगती थीं और वे सो जाते थे।)

जृंभण—पुं० [सं०√जृम्भ्+ल्युट्-अन] जँभाई लेना।

जृंभमान—वि० [सं०√जृम्भ्+शानच्] १. जो जँभाई ले रहा हो। जँभाइयाँ लेता हुआ। २. चमकता हुआ। प्रकाशमान्।

जृंभा—स्त्री० [सं०√जृंभ्+अ-टाप्] १. जँभाई। २. आलस्य। ३. साहित्य में, एक सात्विक अनुभाव जो आलस्य से उत्पन्न माना गया है।

जृंभिका—स्त्री० [सं० जृंभा+कन्+टाप्, इत्व] १. जृम्भा। जँभाई। २. आलस्य। ३. एक रोग जिसमें रोगी को प्रायः जँभाई आती रहती हैं और वह धीरे-धीरे शिथिल होता जाता है।

जृंभी (भिन्)—वि० [सं०√जृंभ्+णिनि] १. जम्हाई लेनेवाला। २. विकसित होनेवाला।

जेंगना*—पुं०=जुगनूं।

जेंगरा—पुं० [देश०] वह कटा हुआ डंठल जिसमें से अनाज के दाने निकाल लिए गए हों।

जेंताक—पुं० [सं०] एक प्रक्रिया जिसके द्वारा रोगी को शरीर में इसलिए गरमाहट पहुँचाई जाती है कि उसे पसीना आये और उसके साथ ही रोग के कीटाणु आदि भी निकल जायँ।

जेंना*—स०=जीमना (भोजन करना)।

जेंवन†—पुं० [हिं० जेंवना] १. जीमने अर्थात् भोजन करने की क्रिया या भाव। २. खाने के लिए बनी या परोसी हुई सामग्री। भोज्य पदार्थ।

जेंवना—स० [सं० जेमन] भोजन करना। जीमना।
पुं०=जेंवन (भोज्य पदार्थ)।

जेंवनार—स्त्री०=ज्योनार।

जेंवाना—स० [हिं० जेंवना] अच्छी तरह से भोजन कराना। जिमाना।

जे—सर्व० [सं० ये] १. =जो। २. ='जो' का बहु० रूप।
अव्य० जो। यदि। (भोजपुरी)।

जेइ—सर्व० १. =जो। २. =जिसने।

जेउँ*—क्रि० वि० [सं० यः+इव] ज्यों। जिस प्रकार।
उदा०—आपु करै सब भेस मुहमद चादर ओट जेउँ।—जायसी।

जेऊ†—सर्व०=जो।

जेकर—सर्व० [हिं० जें=जो+कर=का] जिसका।

जेकरा—सर्व०=जेकर (जिसका)।

जेज*—पुं० [देश०] देर। विलम्ब। उदा०—हजरत गढ़ कीजे हलो, करो जेज किण कज्ज।—बाँकीदास।

जेट—स्त्री० [सं० यूथ] १. ढेर। समूह। २. एक पर एक करके रखी हुई एक तरह की चीजों की तही। थाक। जैसे—कसोरों या हँड़ियों की जेट; पूरियों या रोटियों की जेट।
†स्त्री० [?] क्रोड़। गोद।

जेटी—स्त्री० [अं०] समुद्र तट पर बना हुआ वह स्थान जहाँ पर से जहाजों पर माल लादा तथा उतारा जाता है। गोदी।

जेठंस—पुं० [हिं० जेठ (ज्येष्ठ)+अंस (अंश)] १. पैतृक संपत्ति में होनेवाला बड़े भाई का अंश। २. उक्त अंश प्राप्त करने का बड़े भाई का अधिकार।

जेठंसी—स्त्री०=जेठंस।

जेठ—वि० [सं० ज्येष्ठ; प्रा०-जिट्ठ; गु० पं० जेठ; सिं० जेठु; का० झेठु; पं० बं० और मरा० जेठ] १. बड़ा। २. मुख्य। ३. उत्तम।
पुं० * [स्त्री० जेठानी] १. पति का बड़ा भाई। २. वैशाख और आषाढ़ के बीच का महीना।

जेठरा—वि०=जेठा।

जेठरैत—पुं० [हिं० जेठा+अ० रैत] १. गाँव में सब से बड़ा या सयाना आदमी। २. गाँव का मुखिया।
वि० जेठा। बड़ा।

जेठवा—वि० [हिं० जेठ] १. जेठ-संबंधी। २. जेठ में होनेवाला।
पुं० एक प्रकार की बढ़िया कपास जो जेठ मास में तैयार होती है। झुलवा।

जेठा—वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] [भाव० जेठाई] १. अवस्था या वय में औरों से बड़ा। जैसे—जेठा लड़का। २. अपेक्षया अच्छा या बढ़िया। ३. सब के अन्त में और सब से बढ़कर आने या होनेवाला। जैसे—कपड़े की रँगाई में जेठा रंग।

जेठाई—स्त्री० [हिं० जेठा] १. जेठ होने की अवस्था या भाव। जेठापन। २. बड़प्पन। महत्त्व।

जेठानी—स्त्री० [हिं० जेठ] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से, उसके पति के बड़े भाई की स्त्री।

जेठी—वि० [हिं० जेठ+ई (प्रत्य०)] १. जेठ-संबंधी। जेठ मास का। २. जेठ मास में होनेवाला। जैसे—जेठी धान। ३. हिं० 'जेठा' का स्त्री० रूप।
स्त्री० १. जेठ मास का शेषांश जिसमें अगली फसल के लिए जमीन जोती जाती है। २. जेठ में होनेवाली एक प्रकार की कपास। ३. जेठ में होनेवाला एक प्रकार का धान।

जेठी-मधु—स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी।

जेठुआ—वि० [हिं० जेठ] १. =जेठा। २. दे० 'जेठी'।

जेठौत (ा)†—पुं० [सं० ज्येष्ठ+पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ अर्थात् पति के बड़े भाई का पुत्र।

जेणि—सर्व० [सं० येन] जिसने। उदा०—आरंभ मैं कियो जेणि उपायौ। —प्रिथीराज।

जेतवार†—वि०=जैतवार (जीतनेवाला)।

जेतव्य—वि० [सं०√जि (जीतना)+तव्यत्] १. जीते जाने के योग्य। २. जो जीता जा सके।

जेता (तृ)—वि० [सं०√जि+तृच्] जिसे जय या विजय प्राप्त हुई हो। जीतनेवाला। विजयी।

पुं० विष्णु।

†वि०, क्रि० वि० [स्त्री० जेती]=जितना।

जेतार—वि० [सं० जित्वर] जीतनेवाला। जेता।

जेतिक—क्रि० वि० [हिं० जितना] जितना।

जेन-केन—क्रि० वि०=येन-केन (जैसे-तैसे)।

जेना† —स०=जीमना।

†वि०=जितना।

जेन्यावसु—पुं० [सं०√जि या√जन् (उत्पत्ति)+णिच्+डेन्य,+वसु, ब० स०] १. इन्द्र। २. अग्नि।

जेब—पुं० [फा०] कमीज, कुरते, कोट आदि में प्रायः अन्दर की ओर लगी हुई वह थैली जिसमें छोटी-मोटी चीजें रखी जाती हैं। खीसा।

स्त्री० [फा० जेब] १. शोभा। फबन। २. प्रोत्साहन। बढ़ावा। (क्व०) कि० प्र०—देना।—पाना।

†अव्य०=जिमि।

जेबकट†—पुं०=जेबकतरा।

जेबकतरा—पुं० [हिं० जेब+कतरना] वह व्यक्ति जो दूसरों के जेब काट कर उनमें से रुपये-पैसे निकाल लेता हो।

जेब खरच—पुं० [हिं०] वह धन जो निजी या वैयक्तिक (पारिवारिक से भिन्न) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय किया जाता हो, अथवा किसी को मिलता हो।

जेबघड़ी—स्त्री० [फा० जेब+हिं० घड़ी] जेब में रखीं जानेवाली चिपटी गोल घड़ी।

जेबदार—वि० [फा०] शोभा से युक्त। सुन्दर।

जेबरा† —पुं०=जेबरा (पशु)।

जेबा—पुं० [?] जिरह बख्तर। कवच। उदा०—जेबा खोलि राग सों मढ़े। लेजिम घालि इराकिन्ह चढ़े।—जायसी।

† पुं०=जेब।

वि० [फा० जेबा] शोभाजनक।

जेबी—वि० [फा०] १. जो साधारणतः जेब में रखा जाता हो या रहता हो। जैसे—जेबी घड़ी, जेबी रूमाल। २. जो इतना छोटा हो कि जेब में रखा जा सके। जैसे—किताब का जेबी संस्करण।

जेम—अव्य०=जिमि (जैसे)।

जेमन—पुं० [सं०√जिम् (भक्षण)+ल्युट्—अन] १. भोजन करना। जीमना। २. ज्योनार।

जेय—वि० [सं०√जि (जीतना)+यत्] जीते जाने के योग्य। जो जीता जा सके।

वि० [सं० जय] जीतनेवाला। जेता। उदा०—अदेव देव जेय भीत रक्षमान लेखिए।—केशव।

जेर—वि० [फा० जेर] [भाव० जेरबारी] १. नीचे आया या लाया हुआ। २. पराजित। परास्त। ३. अधिकार या वश में किया हुआ। ४. जिसे बहुत तंग या परेशान किया गया हो।

क्रि० वि० नीचे। तले।

पुं० [?] सुन्दर वन में होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष।

स्त्री० दे० 'आँवल' (खेड़ी)।

जेरना*—स० [हिं० जेर] १. पराजित करना। २ अधिकार या वश में करना। ३. तंग या परेशान करना।

जेरपाई—स्त्री० [फा०] १. स्त्रियों की जूती। २. जूता।

जेरबंद—पुं० [फा०] घोड़े के साज की मोहरी में लगा हुआ तस्मा जिसका दूसरा सिरा तंग में बाँधा जाता है।

जेर-बार—वि० [फा० ज़ेरबार] [भाव० जेरबारी] १. विपत्ति, संकट आदि से दबा हुआ। २. व्यय आदि के भार से दबा हुआ।

जेरी—स्त्री० [?] १. चरवाहों के हाथ में रहनेवाला डंडा या लाठी। २. खेती-बारी का एक उपकरण।

स्त्री० [फा० जेर=नीचे] तंग या परेशान होने की अवस्था या भाव।

जेल—पुं० [अं०] वह घिरा हुआ स्थान जिसमें राज्य द्वारा दंडित अपराधी कुछ समय तक दंड भोगने के लिए बंद करके रखे जाते हैं।

क्रि० प्र० —काटना।—भोगना।

†स्त्री० [फा० जेर] परेशानी।

जेलखाना—पुं० [अं० जेल+फा० खानः] वह इमारत जिसमें अपराधी दंड भोगने के लिए बंद करके रखे जाते हैं। कारागार।

जेलर—पुं० [अं०] जेल का अधिकारी या प्रबंधक।

जेलाटीन—स्त्री० [अं०] एक प्रकार का बढ़िया गंधहीन और पारदर्शक सरेस जो हलके पीले रंग का होता है और जिसका प्रयोग औषधों, छाया-चित्रों और रासायनिक प्रक्रियाओं में होता है।

जेली—स्त्री० [हिं० जेरी] घास या भूसा इकट्ठा करने का एक उपकरण। पाँचा।

जेवड़ी— स्त्री०=जेवरी।

जेवना†— स०=जीमना।

जेवनार—स्त्री० [हिं० जेवना] बहुत से लोगों का प्रायः किसी विशिष्ट अवसर पर एक साथ बैठकर खाना। प्रीति-भोज। दावत।

जेवर—पुं० [फा० ज़ेवर] आभूषण। गहना।

पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

†स्त्री०=जेवरी।

जेवरा—पुं०=ज्योरा।

पुं० [हिं० जेवरी] मोटा रस्सा।

जेवरात—पुं० [फा० 'ज़ेवर' का बहु० रूप] बहुत से आभूषण।

जेवरी—स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

जेवाँ—पुं० [हिं० जेवना] भोजन। उदा०—बिनु ससि सूरहि भाव न जेवाँ।—जायसी।

जेष्ठ—पुं० [सं० ज्येष्ठ] जेठ या ज्येष्ठ मास।

वि० अवस्था या वय में बड़ा। जेठा।

पुं०=जेठ (सभी अर्थों में)।

जेष्ठा—स्त्री० [सं० ज्येष्ठा]=ज्येष्ठा।

जेस्लिड पतंग—पुं० [?] कपास की पत्तियों में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर शरीर के दोनों ओर छप्पर की तरह लटके होते हैं।

जेह—स्त्री० [सं० ज्या से फा० जिह=चिल्ला] १. धनुष की डोरी में का वह अंश जो खींचकर आँख के पास लाया जाता है तथा निशाने की सीध में रखा जाता है। चिल्ला। २. दीवार के नीचेवाले भाग में होनेवाला पलस्तर जो साधारणतः कुछ अधिक मोटा होता है।

क्रि० प्र०—उतारना।—निकालना।

जेहड़—स्त्री० [हिं० जेट+घट] एक के ऊपर एक करके रखे हुए जल से भरे घड़े।

जेहड़ि—अव्य० [?] १. ज्यों ही। २. जैसे ही। (डिं०)

जेहन—पुं० [अ० ज़ेहन] [वि० जहीन] समझने-बूझने की योग्यता या शक्ति। धारणा-शक्ति। बुद्धि।

जेहनदार—वि०=जहीन (तीक्ष्ण बुद्धिवाला)।

जेहर—स्त्री० [?] पैर में पहनने की पाजेब।

जेहरि—स्त्री०=जेहर (पाजेब)।

जेहल—स्त्री० [फा० जिह्ल] [वि० जेहली] १. बेवकूफी। मूर्खता। २. हठ। जिद।

†पुं०=जेल।

जेहलखाना†—पुं०=जेलखाना।

जेहली†—वि० [फा० जिहल] जो कोई बात समझाने-बुझाने पर जल्दी न समझता हो।

जेहवा—क्रि० वि० [स्त्री० जेहवी]=जैसा।

जेहा—क्रि० वि० [स्त्री० जेही]=जैसा।

जेहि*—सर्व० [सं० यस्] १. जिसको। जिसे। २. जिससे।

जैंता—पुं० [सं० जयंती] जैंत का पेड़।

जैं†—स्त्री०=जय।

†वि०=जितने।

जैकरी†—पुं०=जयकरी।

जैकार†—स्त्री०=जयकार।

जैगीषव्य—पुं० [सं० जिगीषु+यञ्] एक मुनि जो योग शास्त्र के वेत्ता थे।

जैजैकार†—स्त्री०=जयजयकार।

जैजैवंती—स्त्री० [सं० जयजयवंती] प्रातःकाल गाई जानेवाली भैरव राग की एक रागिनी।

जैढक—पुं० [सं० जय+हिं० ढक्का] एक प्रकार का बड़ा ढोल। जंगी ढोल।

जैत—स्त्री० [सं० जिति] जीत। जय। विजय।

पुं० [सं० जयंती] अगस्त की तरह का एक पेड़।

†पुं०=जैतून।

जैतपत्र†—पुं० [सं० जितिपत्र] जयपत्र।

जैतवार—वि० [सं० जित्वर] जीतनेवाला। विजयी। उदा०—सूर सरदार जैतवार दिगपालन कौं —सेनापति।

जैतश्री—स्त्री० [सं० जितिश्री] एक रागिनी।

जैती—स्त्री० [सं० जयंतिका] एक तरह की घास।

जैतू—पुं० [अ०] जैतून का तेल।

जैतून—पुं० [अ०] १. एक सदाबहार पेड़ जिसके फल दवा के काम आते हैं। २. उक्त वृक्ष के फल अथवा उनका तेल जो दवा के काम आता है।

जैत्र—पुं० [सं० जेतृ+अण्] [स्त्री० जैत्री] १. विजेता। विजयी। २. पारा। ३. औषध। दवा।

जैत्री—स्त्री० [सं० जैत्र+ङीप्] जैत का पेड़। जयंती।

जैन—पुं० [सं० जिन+अण्] १. भारत का एक प्रसिद्ध अनीश्वरवादी धार्मिक संप्रदाय जिसका प्रवर्त्तन महावीर स्वामी ने बुद्ध के समय में किया था। २. उक्त धार्मिक संप्रदाय का व्यक्ति।

जैनी—वि० [हिं० जैन] १. जैन धर्म-संबंधी। २. जैनियों का।

पुं० जैन धर्म को माननेवाला व्यक्ति। जैन-धर्मावलंबी।

जैनु—पुं० [हिं० जेवना] आहार। भोजन।

जैन्य—वि० [सं० जैन+यत्] जैन संबंधी।

जैपत्र†—पुं०=जयपत्र।

जैफर†—पुं०=जायफल।

जैबो†—अ०=जाना।

जैमंगल—पुं० [सं० जयमंगल] १. एक तरह का वृक्ष। जयमंगल। २. राजा की सवारी का हाथी।

जैमाल(ा)†—स्त्री०=जयमाल।

जैमिनि—पुं० [सं०] एक ऋषि जो महर्षि वेद व्यास के शिष्य तथा जो पूर्व मीमांसा के रचयिता थे।

जैमिनीय—वि० [सं० जैमिनि+छ–ईय] १. जैमिनी सम्बन्धी। २. जैमिनी द्वारा बनाया हुआ। जैमिनीकृत।

जैयद—वि० [अ० जद्द=बहुत बड़ा] १. बहुत बड़ा या भारी। २. प्रचंड। प्रबल। ३. घोर। विकट।

जैल—पुं० [अ०] १. पहनने के कपड़े का अगला भाग। आगा। दामन। २. नीचे की ओर का अंश या स्थान। ३. किसी मद, विभाग या शीर्षक के अंतर्गत आनेवाली बातें। ४. इलाका। भू-भाग।

जैलदार—पुं० [अ० जैल+फा० दार] मुसलिम शासन-काल में किसी इलाके का प्रधान शासनिक अधिकारी।

जैव—वि० [सं० जीव+अण्] १. जीव-संबंधी। जीव का। २. जीवों से उत्पन्न होने, निकलने, बनने या मिलनेवाला। ३. बृहस्पति-संबंधी।

पुं० १. बृहस्पति के क्षेत्र में पड़नेवाली धनु राशि और मीन राशि। २. पुष्य नक्षत्र।

जैवातृक—पुं० [सं० √जीव् (जीना)+णिच्+आतृ+कन्] १. कपूर। २. चंद्रमा। ३. औषधि। दवा।

वि० बड़ी उमरवाला। दीर्घायु।

जैवेय—पुं० [सं० जीव+ढक्-एय] बृहस्पति के पुत्र कच।

जैस*—वि०=जैसा।

जैसवार†—पुं०=जायसवाल।

जैसा—वि० [सं० यादृश, प्रा० जारिस, पैशा० जइस्सो] [स्त्री० जैसी] १. जिस आकार-प्रकार या रूप-रंग का। जिस तरह का।

पद—**जैसा का तैसा**=जिस रूप में पहले था, वैसा ही। **जैसे को तैसा**=(क) जोड़ या मुकाबले का। (ख) पूरी शक्ति से जवाब देने या सामना

करनेवाला। जैसा उपयुक्त या समीचीन हो। जैसा होना चाहिए या होता हो।

मुहा०—(किसी की) जैसी की तैसी करना=किसी की शेखी दूर करके उसे फिर पूर्व अवस्था या रूप में कर दिखाना। (उपेक्षा और तिरस्कार-सूचक)

२. समान। सदृश। ३. जितना। (क्व०)

जैसे—अव्य० [हिं० जैसा] १. जिस तरह से। जिस प्रकार।

पद—जैसे-जैसे=जिस क्रम से। ज्यों-ज्यों। **जैसे-तैसे**—(क) बहुत ही साधारण और तुच्छ रूप में। किसी प्रकार। जैसे--वह तो जैसे-तैसे काम-चलता करता है। (ख) बहुत कुछ कठिनता से। जैसे—जैसे-तैसे यह झगड़ा भी खतम हुआ। **जैसे बने वैसे**=जिस प्रकार संभव हो। जिस तरह हो सके।

२. उदाहरणार्थ। यथा।

जैसो—वि०=जैसा।

जोंक—स्त्री० [सं० जलौका] १. पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो अन्य जीवों के शरीर में चिपक कर उनका रक्त चूसता है।

क्रि० प्र०—लगवाना।--लगना।

२. ऐसा व्यक्ति जो अपना काम निकालने के लिए बुरी तरह से पीछे पड़ता हो। ३. सेवार की बनी हुई चीनी साफ करने की एक प्रकार की चलनी या छाननी।

जोंकी—स्त्री० [हिं० जोंक] १. जोंक नाम का कीड़ा। २. वह जलन जो पशुओं के पेट में पानी के साथ जोंक उतर जाने के कारण होती है। ३. पानी में रहनेवाला एक प्रकार का लाल कीड़ा। ४. लोहे का एक प्रकार का काँटा जो दो तख्तों या पत्थरों को मजबूती के साथ जोड़ने के काम में आता है। ५. चित्र कला में ऐसी फंदेदार या लहरिएदार बेल जो देखने में जोंक की तरह जान पड़ती हो।

जोंग—पुं० [√जुंग् (वर्जन) +अप्, पृषो० सिद्धि] अगर या अगरु नाम की सुगंधित लकड़ी।

जोंगट—पुं० [सं०√जुंग् +अटन्] गर्भिणी स्त्री की इच्छा। दोहद।

जों जों—अव्य०=ज्यों-ज्यों।

जों तों—अव्य०=ज्यों-त्यों।

जोंदरी—स्त्री०=जोंधरी (ज्वार)।

जोंधरा—पुं० [हिं० जोंधरी] बड़े दानोंवाली ज्वार।

जोंधरी—स्त्री० [सं० जूर्ण] एक तरह की ज्वार जिसके दाने अपेक्षया कुछ छोटे होते हैं।

जोंधैया*—स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना] चंद्रमा की चाँदनी। चंद्रिका।

जो—सर्व० [सं० यत्; प्रा० जो; गु० सि० पं० वं० जे; मरा० जो] एक संबंधवाचक सर्वनाम जिसका प्रयोग पहले कही हुई किसी बात अथवा पहले आई हुई संज्ञा, सर्वनाम या पद के संबंध में कुछ और कहने से पहले किया जाता है। जैसे—वही कविता सुनाइये जो आपने उस दिन सुनाई थी।

वि० किसी अज्ञात या अनिश्चित बात का सूचक विशेषण। जैसे—(क) जो बात कहनी हो कह डालो। (ख) जो चाहो सो करो।

अव्य० [सं० यद्] यदि। अगर। (पु० हिं०)

जोअना†—स०=जोवना (देखना)।

जोइ—स्त्री० [सं० जाया] पत्नी। भार्या। स्त्री।

†स्त्री० [?] बड़ा खेमा या तंबू। (डिं०)

सर्व०=जो।

जोइगर†—पुं० [हिं० जोइ+फा० गर] वह जिसकी पत्नी जीवित या वर्त्तमान हो।

जोइनि—स्त्री० [सं० योनि] १. योनि। २. खान।

जोइसी†—पुं०=ज्योतिषी।

जोई—स्त्री०[सं० जाया]पत्नी। स्त्री०। उदा०—तुम्हहि पुरुष हमही तोर जोई।—कबीर।

अव्य०=जो ही।

स्त्री० [फा०] १. ढूंढ़ने की क्रिया या भाव। जैसे--ऐबजोई। २. अनुकूल, प्रसन्न या सन्तुष्ट रखने की क्रिया या भाव। जैसे--दिल-जोई।

जोउ—सर्व०, अव्य०=जो।

जोक†—स्त्री०=जोंक।

जोख—स्त्री०[हिं० जोखना] जोखने अर्थात् तौल या वजन करने की क्रिया या भाव।

जोखता—स्त्री०=योषिता (पत्नी)।

जोखना—स०[सं० जोषण] १. तौलना। वजन करना। २. किसी बात पर मन ही मन अच्छी तरह विचार करके उसका ऊँच-नीच या भला-बुरा समझना।

जोखम†—स्त्री०=जोखिम।

जोखा—पुं०[हिं० जोखना]१. जोखने अर्थात् तौलने की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह समझ कर ठीक करने की क्रिया या भाव। जैसे—लेखा-जोखा।

स्त्री०[सं० योषा] स्त्री।

जोखाई—स्त्री०[हिं० जोखना] जोखने या तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोखिउँ*—स्त्री०=जोखिम।

जोखिता*—स्त्री० [सं० योषिता] पत्नी। स्त्री।

जोखिम—स्त्री० [सं० जोषण]; [वि० जोखिमी] १. ऐसी स्थिति जिसमें लाभ या हित की संभावना तो हो, पर साथ ही अहित, संकट या हानि की संभावना भी कम न हो। जैसे--जिस काम में जोखिम हो, उसमें बहुत सोच-समझकर हाथ डालना चाहिए।

क्रि० प्र०--उठाना।--में डालना या पड़ना।--सहना।

पद—जान-जोखिम=ऐसी स्थिति जिसमें प्राण तक जाने की संभावना हो। **जोखिम धनी-सिर**=एक पद जिसका प्रयोग व्यापारिक क्षेत्रों में माल बेचने या भेजने के समय लिखा-पढ़ी में यह सूचित करने के लिए होता है कि यदि रास्ते में हानि होगी तो उसका जिम्मेदार खरीदने-वाला होगा। (ओनर्स रिस्क)

२. अर्थ-शास्त्र में, ऐसा काम जिसके लिए बहुत अधिक धन-शक्ति तथा साहस की अपेक्षा हो, फिर भी जिसकी सिद्धि अनिश्चित हो। झोंकी। (देखें) ३. कोई ऐसा बहुमूल्य पदार्थ जिसके नष्ट होने या हारे जाने की संभावना हो। जैसे—जोखिम (गहने, धन आदि) साथ में ले चलना ठीक नहीं है।

जोखिमी—वि० [हिं० जोखम] जिसमें कोई जोखिम हो या हो सकती हो। जिसमें बहुत कुछ अहित, संकट या हानि की संभावना हो। जोखिम का। जैसे--जोखिमी काम, जोखिमी माल।

जोखुआ—पुं० [हिं० जोखना+उआ (प्रत्य०)] माल जोखने या तौलनेवाला। बया।

वि० जोखा या तौला हुआ। जैसे--जोखुआ अनाज।

जोखुवा--पुं०=जोखुआ।

जोखों—स्त्री०=जोखिम।

जोगंधर—पुं० [सं० योगंधर] शत्रु के अस्त्रों से आत्म-रक्षा करने की एक प्राचीन युक्ति।

जोग—पुं० [सं० योग] १. एक प्रकार के गीत जो कन्या और वर दोनों पक्षों में विवाह से पहले गाये जाते हैं, जिनमें प्रायः वैवाहिक विधियों का वर्णन होता है। २. जादू। टोना। (पूरब)

मुहा०—जोग करना=जादू या टोना करना।

३. दे० 'योग'। ४. दे० 'जोड़'।

वि०=योग्य।

अव्य० पुरानी चाल की चिट्ठी-पत्रियों में, के लिए। को। जैसे—पत्री भाई किशनचन्द्र जोग लिखा काशी से——।

जोगड़ा—पुं० [हिं० जोगी+ड़ा (प्रत्य०)] १. जोगी (उपेक्षा-सूचक)। २. बना हुआ जोगी। नकली या बनावटी योगी।

जागता†—स्त्री०=योग्यता।

जोगन†—स्त्री०=जोगिन।

जोगनिया—स्त्री०=जोगिनिया।

जोगनैर—पुं० [सं० योगिनीपुर] दिल्ली। उदा०—-जोगनैर जोतिग कहै, प्रभुसु होइ. प्रथुराव।--चंदवरदाई।

जोगमाया†—स्त्री०=योगमाया।

जोगवना—स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] १. योगियों का योगाभ्यास करना। २. उक्त के आधार पर कोई कठिन काम परिश्रम तथा यत्नपूर्वक करना। ३. यत्नपूर्वक कोई चीज सम्हाल कर रखना। ४ एकत्र या संचित करना। ५. किसी का आदर या सम्मान करने के लिए उसकी अच्छी-बुरी सभी तरह की बातें मानना, सहना और सुनना। ६. पूरा करना। ७. परखना। ८. प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोगवाट†—पुं०=जोगौटा।

जोगसाधन—पुं० [सं० योगसाधन] १. तपस्या। २. परिश्रमपूर्वक किया जानेवाला कोई काम।

जोगा—वि० [सं० योग्य] किसी काम के लिए उपयुक्त, योग्य या लायक। यौ० के अन्त में। (स्त्रियाँ) जैसे--मरने-जोगा।

पुं० [देश०] अफीम छानने पर उसमें से निकलनेवाली मैल। खूदड़।

जोगाड़†—पुं०=जुगाड़।

जोगानल—स्त्री० [सं० योगानल] वह अग्नि, जो योगबल से उत्पन्न की गई हो।

जोगिंद—पुं० १.=योगीन्द्र। २. महादेव। (डि०)

जोगि†—स्त्री०=योगिन।

जोगिणी—स्त्री०=योगिनी।

जोगिन—स्त्री० [सं० योगिनी] १. योग साधनेवाली विरक्त स्त्री। २. जोगियों या योगियों की तरह आचार-विचार, गेरुए वस्त्र पहनने और नियम, व्रत आदि का पालन करते हुए संयमपूर्वक रहनेवाली स्त्री; विशेषतः किसी प्रकार के आराधन या प्रेम से युक्त उक्त प्रकार की स्त्री। ३. एक प्रकार की रण देवी। ४. पिशाचिनी। ५. एक प्रकार का झाड़ीदार पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं। ६. दे० 'योगिनी'।

जोगिनिया—स्त्री० [हिं० जोगिन]=जोगिन।

पुं० १. एक प्रकार का बढ़िया अगहनी धान जिसका चावल कई वर्ष तक ठहरता है। २. एक प्रकार का आम।

जोगिनी—स्त्री०=जोगिन।

जोगिया—वि० [हिं० जोगी+इया (प्रत्य०)] १. जोगी संबंधी। जोगी का। जैसे—जोगिया भेस। २. योगियों के वस्त्रों के रंग का। मटमैलापन लिये लाल। गेरुआ। गैरिक। जैसे—-जोगिया कपड़ा।

पुं० १. गेरू के रंग की तरह का एक प्रकार का लाल रंग जो कुछ मटमैलापन लिये हुए रहता है। २. जोगीड़ा। ३. जोगी। ४. संपूर्ण जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है।

जोगींद्र—पुं०=योगींद्र।

जोगी—पुं० [सं० योगी] १. नाथ-पंथी जंगम शैव साधु। २. इस वर्ग के कुछ गृहस्थ जो प्रायः सारंगी पर भजन गाकर भीख माँगते हैं। ३. संपूर्ण जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है। जोगिया राग। ४. रहस्य संप्रदाय में, मन। ५. दे० 'योगी'।

जोगीड़ा—पुं० [हिं० जोगी+ड़ा (प्रत्य०)] १. होली के दिनों में गाया जानेवाला एक प्रकार का गँवारू गाना। २. उक्त गीत गाने-बजानेवाला व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का दल।

जोगीश्वर†—पुं०=योगेश्वर।

जोगेश्वर—पुं०=योगेश्वर।

जोगोटा†—वि०=जोगड़ा।

जोगौटा—पुं० [सं० योगपट्ट] १. जोगी। २. योगियों की वह चादर जिसे वे योग-साधना करते समय सिर से पैर तक ओढ़ते हैं। ३. जोगियों की झोली।

जोग्य†—वि० [भाव० जोग्यता] योग्य।

जोजन†—पुं०=योज़न।

जोट—पुं० [सं० योटक] १. जोड़ा। जोड़ी। २. संगी। साथी। ३. झुंड। ४. समूह। उदा०—बाहर जुन्हाई जगी जोतिन की जोट ही।—देव।

वि० बराबरी का।

जोटा—पुं० [सं० योटक] १. दो चीजों का जोड़ा। २. संगी। साथी। ३. पशुओं की पीठ पर लादा जानेवाला दोहरा थैला या बोरा। गोन। ४. दे० 'जोड़ा'।

वि० [स्त्री० जोटी] १. बराबरी का। २. साथ रहने या होनेवाला।

जोटिंग—पुं० [सं० जोट√इंग् (प्रकाशित करना)+अच्, पृषो०] शंकर। शिव।

जोटी†—स्त्री०=जोड़ी।

जोड़—पुं० [सं० जुड़] १. जुड़ने या जुड़े हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. दो वस्तुओं का आपस में इस प्रकार जुड़ा, मिला या सटा होना कि वे या तो एक हो जायँ या देखने में एक जान पड़ें। ३. वह संधि

या स्थान जहाँ दो या अधिक चीजें आपस में मिली या सटी हुई हों। जैसे—हड्डियों का जोड़, पहुँचे और बाँह का जोड़, तख्तों या पत्थरों में का जोड़।

क्रि० प्र०—उखड़ना।—बैठना।—लगाना।

४. वह अंग या अंश जो किसी दूसरी चीज के साथ जोड़ा या उसमें लगाया गया हो। ५. दो या अधिक चीजों को आपस में जोड़ने या मिलाने पर उनके संधि स्थान में दिखाई देनेवाला चिह्न या लक्षण। जैसे—कुरसी के हत्थे में का जोड़ साफ दिखाई पड़ता है।

पद—जोड़-तोड़। (दे०)

६. ऐसा मिलान या संयोग जो उपयुक्त, तुल्य अथवा सुंदर जान पड़े। जैसे—उन दोनों पहलवानों का जोड़ तो अच्छा है। ७. उक्त के आधार पर होनेवाली बराबरी। गुण, धर्म आदि के विचार से होनेवाली समानता। जैसे—उस लड़के के साथ तुम्हारा क्या जोड़ है।

क्रि० प्र०—बैठाना।—मिलाना।

८. एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम में आनेवाली दो या अधिक चीजें। जैसे—एक जोड़ कपड़ा (अर्थात् कुरता, टोपी और धोती अथवा कमीज या कोट, टोपी और पाजामा) भी साथ रख लो। ९. दे० 'जोड़ा'। १०. गणित में, दो या दो से अधिक अंकों, संख्याओं आदि के जुड़े हुए होने या जोड़ने की क्रिया, अवस्था या भाव। ११. इस प्रकार जोड़ने से प्राप्त होनेवाली संख्या। †१२. धन आदि का संग्रह।

जोड़ती—स्त्री० [हिं० जोड़+ती (प्रत्य०)] जोड़ (गणित का)।

जोड़-तोड़—पुं० [हिं०] १. कभी जोड़ने और कभी तोड़ने की क्रिया या भाव। २. कौशल या धूर्त्तता से की जानेवाली ऐसी युक्तियाँ जिनसे कहीं कोई क्रम या परम्परा जुड़ती और कहीं टूटती हो। कार्य-साधन के लिए चालाकी और दाँव-पेंच से मिली हुई कार्रवाई।

क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।

जोड़न†—स्त्री० [हिं० जोड़ना] १. जोड़ने की क्रिया या भाव। २. वह दही या और कोई खट्टा पदार्थ जो दूध में उसे जमाकर दही बनाने के लिए मिलाया जाता है। जामन।

जोड़ना—स० [सं० √जुड्, हिं० जोड़+ना (प्रत्य०)] १. दो या अधिक चीजों को किसी क्रिया या युक्ति से आपस में इस प्रकार साथ बैठाना, लगाना या सटाना कि वे या तो एक हो जायँ या एक के समान काम दें और जान पड़ें। अच्छी तरह दृढ़तापूर्वक किसी के साथ मिलाना। जैसे—लकड़ी के तख्ते और पाये जोड़ कर कुरसी या मेज बनाना; कपड़े के टुकड़े जोड़ कर कुरता या चादर बनाना, लेई से फटे हुए कागज या पुस्तक के पन्ने जोड़ना। २. किसी चीज में का टूटा हुआ अंग या अंश उसमें फिर से इस प्रकार जड़ना, बैठाना या लगाना कि वह चीज फिर से पूरी हो जाय और पहले की तरह काम देने लगे। जैसे—पैर या हाथ की टूटी हुई हड्डी जोड़ना। ३. किसी चीज के भिन्न-भिन्न या संयोजक अंगों को इस प्रकार क्रम से यथा-स्थान बैठाना, रखना या लगाना कि वह चीज पूरी तैयार होकर अपना काम करने लगे। जैसे—घड़ी के पुरजे या छापे के अक्षर जोड़ना, दीवार बनाने के लिए ईंटें, पत्थर आदि (मसाले से) जोड़ना। ४. पहले से जो कुछ रहा हो अथवा मूलतः जो कुछ हो, उसमें अपनी ओर से कुछ और मिलाना या लगाना। वृद्धि करना। बढ़ाना। जैसे—उसने वहाँ का हाल कहते समय अपनी तरफ से भी कई बातें जोड़ दी थीं। ५. एक ही तरह की बहुत-सी चीजें इकट्ठी करके एक केन्द्र में लाना या एक स्थान पर रखना। एकत्र या संगृहीत करना। जैसे—धन-संपत्ति जोड़ना, संग्रहालय के लिए चित्र, पुस्तकें, मूर्तियाँ आदि जोड़ना। उदा०—कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, जोड़ जमीं में धरता है। ६. गणित में दो या अधिक संख्याओं का योग-फल प्रस्तुत करना। मीजान लगाना। ७. लिखना-पढ़ना सीखने अथवा साहित्यिक रचना का अभ्यास करने के लिए अक्षर, पद, वाक्य आदि उपयुक्त क्रम से बैठाना, रखना या लिखना। जैसे—अक्षर जोड़ कर शब्द बनाना; शब्द जोड़कर कविता का चरण या पंक्ति बनाना। ८. किसी के साथ किसी प्रकार का संबंध स्थापित करना। जैसे—किसी के साथ नाता या मित्रता जोड़ना। ९. अग्नि, दीपक आदि के संबंध में, जलनेवाली चीज के साथ अग्नि का संयोग कराना। जैसे—रसोई बनाने के लिए आग जोड़ना, प्रकाश करने के लिए दीआ जोड़ना। १०. गाड़ी, हल आदि के संबंध में, घोड़े या बैल लाकर आगे बाँधना। जोतना। (क्व०) जैसे—तुरंत रथ जोड़ा गया और वे चल पड़े।

जोड़ला†—वि०=जुड़वाँ।

जोड़वाँ†—वि०=जुड़वाँ।

जोड़वाई—स्त्री० [हिं० जोड़वाना] जोड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़वाना—स० [हिं० जोड़ना का प्रे०] जोड़ने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ जोड़ने में प्रवृत्त करना।

जोड़ा—पुं० [हिं० जोड़ना] [स्त्री० जोड़ी] १. प्रायः एक साथ रहने, साथ-साथ काम आने या साथ रहने पर उपयुक्त जान पड़नेवाले दो पदार्थ या व्यक्ति। जोड़ी। युग्म। जैसे—धोतियों का जोड़ा, हाथ में पहनने के कड़ों या पहुँचियों का जोड़ा।

क्रि० प्र०—मिलाना।—लगाना।

२. एक साथ पहने जानेवाले दो या अधिक कपड़े। जोड़।

पद—जोड़ा-जामा। (दे०)

३. एक ही प्रकार के जीवों, पशु-पक्षियों आदि के नर और मादा का युग्म। जैसे—वर और कन्या का जोड़ा, शेर और शेरनी का जोड़ा, बिच्छुओं और साँपों का जोड़ा।

मुहा०—जोड़ा खाना=पशु-पक्षियों का मैथुन या संभोग करना।

४. दोनों पैरों में पहनने के दोनों जूते। ५. वह जो किसी दूसरे की बराबरी या समता का हो। जोड़। ६. दे० 'जोड़'।

जोड़ाई—स्त्री० [हिं० जोड़ना+आई (प्रत्य०)] १. जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दीवार बनाने के समय क्रम से ईंटे रखने या लगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ा-जामा—पुं० [हिं० जोड़ा+फा० जामः] १. विवाह के समय वर के पहनने के सब कपड़े जो प्रायः उसकी ससुराल से आते हैं। २. पहनने के वे कपड़े जो राजाओं आदि से लोगों को पुरस्कार-स्वरूप मिलते थे। खिलअत।

जोड़ासंदेस—पुं० [देश०] छेने की एक बँगला मिठाई।

जोड़ी—स्त्री० [हिं० जोड़ा] १. एक ही आकार-प्रकार, गुण और धर्मवाली दो चीजें। जैसे—मुगदरों की जोड़ी। २. संग-साथ रहनेवाले दो जीवों विशेषतः एक ही जाति के एक नर और एक मादा (जीवों) की सामूहिक संज्ञा। जैसे—बैलों की जोड़ी, भैंसों की जोड़ी। ३. वह गाड़ी जिसे दो घोड़े या दो बैल खींचते हैं। जैसे—पहले के रईस जोड़ी पर निकला

करते थे। ४. एक साथ रहनेवाले दो मुग्दर जो कसरत करने के समय दोनों हाथों में पकड़ कर घुमाये जाते हैं।

क्रि० प्र०—भाँजना।

५. एक में बँधी हुई कटोरियों के तरह की वे दोनों चीजें जो गाने-बजाने के समय ताल देने के काम आती हैं। मंजीरा।

क्रि० प्र०—बजाना।

६. दे० 'जोड़'।

जोड़ी की बैठक स्त्री० [हिं० जोड़ी=मुग्दर+बैठक=कसरत] वह बैठकी (कसरत) जो मुदग्रों की जोड़ी पर हाथ टेक कर की जाती है।

जोड़ीदार—पुं० [हिं० जोड़ी+फा० दार] वह जो किसी के साथ उसकी बराबरी का होकर रहता हो।

वि० मुकाबले का।

जोड़ीवाल—पुं० [हिं० जोड़ी+वाला (प्रत्य०)] १. गाने-बजानेवालों के साथ जोड़ी या मंजीरा बजानेवाला। २. दे० 'जोड़ीदार'।

जोड़ुआ—पुं० [हिं० जोड़ा+उआ (प्रत्य०)] पैर में पहनने का चाँदी का एक प्रकार का सिकड़ीदार गहना।

†वि०=जुड़वाँ।

जोड़ू—स्त्री०=जोरू।

जोत—स्त्री० [हिं० जोतना] १. जोतने की क्रिया या भाव। २. वह विशिष्ट अधिकार जो किसी असामी को कोई जमीन जोतने-बोने पर उसके संबंध में प्राप्त होता है।

क्रि० प्र०—लगना।

३. उतनी भूमि जितनी एक असामी को जोतने-बोने आदि के लिए मिली हो अथवा उसके अधिकार में हो। ४. चमड़े आदि की वे लंबी पट्टियाँ या रस्सियाँ जो घोड़ों, बैलों आदि के पार्श्वों में उनकी गरदन से एक्के, गाड़ी, हल तक इस लिए बँधी रहती है कि उन पशुओं के चलने से वह चीज भी चलने लगे जिसमें वे बँधे रहते हैं। ५. वह रस्सी जिससे तराजू की डंडी से बँधे हुए उसके पल्ले लटकते रहते हैं।

†स्त्री० [सं० ज्योति] १. ज्योति। २. शरीर में रहनेवाली आत्मा जो परमात्मा की ज्योति के रूप में मानी जाती है।

मुहा०—जोत में जोत समाना=आत्मा का शरीर में से निकलकर परमात्मा के साथ मिल जाना। उदा०—इक मुरछा गत सी आय गई और जोत में जोत समाय गई।—नजीर।

३. देवी-देवता आदि के सामने जलाया जानेवाला घी का दीआ। ४. चित्रकला में, चेहरे के चारों ओर दिखाया जानेवाला प्रभा-मंडल।

जोतखी—पुं०=ज्योतिषी।

जोतगी—पुं०=ज्योतिषी।

जोतदार—पुं० [हिं० जोत+दार] वह असामी जो दूसरे की भूमि पर खेती-बारी करता हो।

जोतना—स० [सं० योजन या युक्त, प्रा० जुत्त+ना] १. कोई चीज घुमाने या चलाने के लिए उसके आगे कोई पशु लाकर बाँधना। जैसे—एक्के, गाड़ी आदि में घोड़ा (या घोड़े) अथवा कोल्हू, मोट, रथ आदि में बैल जोतना।

विशेष—इस क्रिया का प्रयोग स्वयं उन यानों के संबंध में भी होता है जिनके आगे पशु बाँधे जाते हैं (जैसे—एक्का, गाड़ी या रथ जोतना) और उन पशुओं के संबंध में भी होता है जो उनके आगे बाँधे जाते हैं (जैसे—घोड़ा या बैल जोतना)।

२. उक्त के आधार पर किसी को जबरदस्ती या विवश करके किसी काम में लगाना। जैसे—शिक्षक ने लड़कों को भी उस काम में जोत दिया। ३. खेत को बोये जाने के योग्य बनाने के लिए उसमें हल चलाना। ४. एक दम से, ऊपर से या कहीं से कोई चीज या बात लाकर उसी का क्रम चलाने लगना। जैसे—तुम अपनी ही जोतते रहोगे या दूसरे किसी को भी कुछ करने (या कहने) दोगे।

जोतनी—स्त्री० [हिं० जोतना] जुए में लगी हुई वह रस्सी जो जोते जाने-वाले पशु के गले में बाँधी जाती है।

जोतसी†—पुं० =ज्योतिषी।

जोतांत—स्त्री० [हिं० जोतना] खेत की मिट्टी की ऊपरी तह।

जोता—पुं० [हिं० जोतना] १. जुआँठे में बँधी हुई वह रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है। २. करघे में दोनों ओर बँधी हुई वह रस्सियाँ जो ताने के दोनों सिरों पर सूतों को यथास्थान रखने के लिए बँधी रहती हैं। ३. वह बड़ी धरन या शहतीर जो खंभों या उनकी पंक्तियों पर इसलिए रखते हैं कि उसके ऊपर और इमारत उठाई जा सके।

†वि० जोतनेवाला (यौ० के अंत में)। जैसे—हल-जोता=हल जोतने-वाला।

†पुं०=किसान (खेतिहर)।

जोताई—स्त्री० [हिं० जोतना+आई (प्रत्य०)] जोते जाने या जोतने की अवस्था, क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोतात†—स्त्री०=जोतांत।

जोताना—स० [हिं० जोतना का प्रे० रूप] जोतने का काम किसी दूसरे से कराना।

जोति—स्त्री० [सं० ज्योति] १. किसी देवी-देवता के सामने जलाया जाने-वाला दीया। जोत।

क्रि० प्र०—जलाना।

२. दे० 'ज्योति'।

†स्त्री० [हिं० जोतना] ऐसी भूमि जो जोती-बोई जाती हो या जोती-बोई जा सकती हो।

जोतिक†—पुं०=ज्योतिषी।

जोतिख†—पुं०=ज्योतिष।

जोतिखी†—पुं०=ज्योतिषी।

जोतिर्लिंग†—पुं०=ज्योतिर्लिंग।

जोतिवंत*—वि० [सं० ज्योतिवान्] १. ज्योति अर्थात् प्रकाश से युक्त। प्रकाशमान्। २. चमकदार।

जोतिष†—पुं०=ज्योतिष।

जोतिषी†—पुं०=ज्योतिषी।

जोतिस†—पुं०=ज्योतिष।

जोतिहा—पुं० [हिं० जोतना+हा (प्रत्य०)] १. खेत जोतनेवाला मजदूर। २. कृषक। खेतिहर।

जोती—स्त्री० [हिं० जोतना या जोत] १. घोड़े, बैल आदि की लगाम। रास। २. चक्की में की वह रस्सी जो उसके बीचवाली कीली और

हत्थे में बँधी रहती है। ३. वह रस्सी जो खेत सींचने की दौरी में बँधी रहती है। ४. वह रस्सी जिससे तराजू के पल्ले बँधे रहते हैं।

†स्त्री०=ज्योति।

जोत्स्ना†—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

जोध—पुं०=योद्धा।

जोधन—स्त्री०[सं० योग+धन] वह रस्सी जिससे जूए के ऊपर और नीचेवाले भाग आपस में बँधे रहते हैं।

जोधा—पुं०=योद्धा।

जोधार†—पुं०[हिं० जोधा] योद्धा।

जोन†—स्त्री०=योनि।

जोनरी—स्त्री०=जोन्हरी (ज्वार)।

जोना†—स० [हिं० जोवना] १. देखना। २. प्रतीक्षा करना। बाट देखना।

जोनि†—स्त्री०=योनि।

जोन्ह—स्त्री०[सं० ज्योत्स्ना] चंद्रमा की चाँदनी। चंद्रिका। ज्योत्स्ना।

जोन्हरी—स्त्री०[?]=जोंधरी (ज्वार)।

जोन्हाई—स्त्री०[सं० ज्योत्स्ना]=जोन्ह।

जोन्हार—पुं०=जोंधरी (ज्वार)।

जोन्हि—स्त्री०=जुन्हाई (चाँदनी)।

जोप—पुं०=यूप (यज्ञ का)।

जोपै—अव्य० [हिं०जो+पर] १. अगर। यदि। २. यद्यपि।

जोफ़—पुं०[अ०] १. वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २. शारीरिक दुर्बलता। कमजोरी। जैसे--जिगर, दिमाग या मेदे का जोफ।

जोबन—पुं०[सं०] १. युवा होने की अवस्था या भाव। यौवन। २. युवावस्था में होनेवाली तेज, लावण्य और सौन्दर्य मिश्रित शारीरिक गठन। जैसे--पेड़ या पौधे में जोबन आना।

मुहा०— जोबन पर आना=पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त करना।

३. युवा स्त्रियों में स्पष्ट दिखाई देनेवाला आकर्षक और मोहक रूप या रौनक। सौन्दर्य।

क्रि० प्र०--आना।–उतरना।–चढ़ना।–ढलना।

मुहा०—(किसी का) जोबन लूटना=किसी स्त्री के साथ भोग-विलास करना। (बाजारू)

४. स्त्रियों के कुच। स्तन। ५. एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

जोबना—स०=जोवना।

†पुं०=जोबन।

जोम—पुं० [अ० ज़ोम] १. उमंग। उत्साह। २. आवेश। जोश। ३. शक्ति आदि का अभिमान। घमंड।

क्रि० प्र०—दिखाना।

४. तीक्ष्णता। तीव्रता।

†पुं०[?] १. झुंड। २. समूह।

जोय—स्त्री०[सं० जाया] १. जोरू। पत्नी। २. औरत। स्त्री।

†सर्व० १.=जो। २.=जिस।

जोयण—पुं०=योजन।

जोयना—स०[सं० ज्योति] आग, दीया आदि जलाना। उदा०--दीपक जोय कहा करूँ सजनि पिय परदेश रहावे।—मीराँ।

स०=जोवना (देखना)।

जोयसी†—पुं० =ज्योतिषी।

जोर—पुं०[फा० ज़ोर][वि० जोरदार, जोरावर] १. शरीर का बल या शक्ति। ताकत।

मुहा०—(किसी चीज पर) जोर डालना या देना=शरीर का भार आश्रित या स्थिर करना।

२. शारीरिक बल या शक्ति के फल-स्वरूप दिखाई देनेवाला उत्साह, तेज, दृढ़ता, सामर्थ्य आदि। ओज।

मुहा०—किसी काम के लिए जोर करना, बाँधना, मारना या लगाना=विशेष शक्ति लगाकर प्रयत्न करना। जैसे--तुम लाख जोर मारो पर होगा कुछ नहीं।

३. आर्थिक, मानसिक, शारीरिक या और किसी प्रकार की योग्यता या सामर्थ्य। जैसे—धन का जोर, विद्या का जोर आदि। ४. कोई ऐसी क्रियात्मक प्रबल शक्ति जो अपना गुण, प्रभाव या फल स्पष्ट दिखाती हो। जैसे--दवा, नशे या बीमारी का जोर।

मुहा०—जोर करना या बाँधना=उग्र, उत्कट या विकट रूप धारण करना। जैसे--शहर में आजकल हैजे ने जोर बाँधा है।

५. अति, वेग आदि के रूप में दिखाई देनेवाली क्रिया की प्रबलता। जैसे—नदी में पानी के बहाव का जोर, आँधी या तूफान के समय हवा का जोर।

पद—जोरों का=बहुत उग्र, प्रबल या विकट। जैसे--जोरों की वर्षा।

६. किसी कृति में दिखाई देनेवाली रचना-कौशल, विशिष्ट दक्षता या योग्यता अथवा आकर्षक, उत्साहवर्द्धक या मनोरंजक तत्त्व। ओज। दम। जैसे—कलम, कविता या कहानी का जोर। ७. अनुभूति, आग्रह, तर्क आदि में दिखाई देनेवाला बल या शक्ति। जैसे—किसी बात पर दिया जानेवाला जोर, खून या मुहब्बत का जोर। ८. उत्कर्ष, प्रबलता, वृद्धि आदि की ओर होनेवाली प्रवृत्ति।

मुहा०—जोर में आना या जोरों पर होना=जल्दी-जल्दी बढ़ना या तेज होना। जैसे--(क) अब यह पेड़ जोरों में आया है, अगले साल खूब फलेगा। (ख) आज-कल शहरों में चोरियाँ और देहातों में डाके खूब जोरों पर है।

९. ऐसा आधार या साधन जिससे किसी को कुछ विशेष बल या साहस प्राप्त हो। सहारा। जैसे—उनकी यह सारी उछल-कूद राजकीय अधिकारियों के जोर पर है। १०. अधिकार। वश। जैसे--आप पर हमारा कोई जोर तो है नहीं। ११. कसरत। व्यायाम। जैसे—अखाड़े में लड़के जोर करने जाते हैं। १२. किसी अंग से अधिक अथवा अनुचित रूप से काम लिए जाने के फलस्वरूप होनेवाला हानिकारक परिणाम या प्रभाव। जैसे--आँखों या आँतों पर जोर पड़ना। १३. शतरंज के खेल में, वह स्थिति जिसमें किसी मोहरे को मुफ्त में या व्यर्थ मारे जाने से रोकने के लिए कोई और मोहरे भी किसी तरफ लगा रहता है। जैसे--घोड़े पर हाथी का जोर है, हमारा घोड़ा मारोगे तो तुम्हारा वजीर मरेगा।

मुहा०—जोर पहुँचाना=उक्त के आधार पर ऐसा काम करना जिससे किसी पर दबाव या प्रभाव पड़े। जैसे--अफसर या हाकिम पर जोर पहुँचाना।

क्रि० वि० अपने कार्य, फल आदि के विचार से असाधारण तेज या बहुत

अधिक। काफी। खूब। जैसे—चना जोर गरम। उदा०—तौं मैं बहुत कठोर जोर इन चने चबाये।—दीनदयालगिरि।

*पुं०=जोड़ (जोड़ी या युग्म)।

जोरई—स्त्री०[हिं० जोड़]१. एक ही में बँधे हुए दो बाँस जिसके सिरे पर मोटी रस्सी का फंदा लगा रहता है। २. हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा।

जोरदार—वि० [फा०] १. (व्यक्ति) जिसमें जोर अर्थात् बल हो। २. (बात) जो तत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली हो।

जोरन†—स्त्री०=जोड़न (देखें)।

जोरना—स०१=जोड़ना। २.=जोतना।

जोर शोर—पुं०[फा०]किसी काम को पूरा करने के लिए लगाया जानेवाला जोर और दिखाया जानेवाला उत्साह तथा प्रयास।

जोरा†—पुं०=जोड़ा।

जोराजोर†—पुं०=जोर शोर।

जोरा जोरी—स्त्री०[फा० जोर]किसी से हठात् कुछ लेने या छीन लेने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। जबरदस्ती।

क्रि० वि० बलपूर्वक। बलात्।

जोरावर—वि० [फा०] १. बलवान। २. जबरदस्त। शक्तिशाली।

जोरावरी—स्त्री० [फा०] १. जोरावर या बलवान होने की अवस्था, गुण या भाव। २. जबरदस्ती। धींगा-धींगी।

जोरिल्ला—पुं० [देश०] एक प्रकार का गंध बिलाव।

जोरी†—स्त्री० १=जोरावरी। २=जोड़ी।

जोरू—स्त्री० [हिं० जोड़ा] पत्नी। भार्या। स्त्री।

पद—**जोरू का गुलाम**=ऐसा व्यक्ति जो पत्नी के वश में रहकर उसके कहे अनुसार चलता हो। स्त्री-भगत। **जोरू-जाँता**—पत्नी, घर-गृहस्थी और बाल-बच्चे।

जोल†—पुं० [?] झुंड। समूह।

†पुं० =जोर। (क्व०)

जोलाह=†—पुं०=जुलाहा।

जोलाहल—स्त्री०=ज्वाला।

जोलाहा†—पुं०=जुलाहा।

जोली—वि० [हिं० जोड़ी] १. वह जिसके साथ बहुत मेल-जोल हो। संगी। साथी। २. बराबरी का। समवयस्क। ३. प्रायः साथ रहनेवाला। जैसे—हम-जोली।

स्त्री० [हिं० झोली] १. जाली या किरमिच का बना हुआ एक प्रकार का बिस्तर जिसके दोनों सिरों पर अदवान की तरह कई रस्सियाँ होती हैं और जो वृक्षों आदि में लटकाकर काम में लाया जाता है। २. वह रस्सी जो जहाजों के पाल चढ़ाने-उतारने के काम में आती है। (लश०) ३. रस्सों के सिरों को बाँधने के लिए उनमें लगाई जानेवाली एक प्रकार की गाँठ।

जोलो*—पुं०[?]अंतर। फरक।

जोवण*—पुं०=यौवन।

जोवना—स०[सं० जुषण=सेवन]१. ध्यानपूर्वक देखना। २. प्रतीक्षा करना। जोहना। ३. तलाश करना। ढूंढ़ना।

जोवारी—स्त्री०[देश०] मैना पक्षी की एक जाति।

जोश—पुं०[फा०]१. आँच या गरमी के कारण द्रव-पदार्थ में आनेवाला उफान। उबाल।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

२. वह मनोवेग जिसके कारण मनुष्य अकर्मण्यता, आलस्य या तटस्थता छोड़कर किसी कार्य में आवेश, उत्साह या तत्परतापूर्वक अग्रसर या प्रवृत्त होता है।

क्रि० प्र०—आना।—दिलाना।

पद—**खून का जोश**=प्रेम का वह वेग जो अपने कुल, परिवार या वंश के किसी मनुष्य के प्रति हो। जैसे—वह उसके खून का जोश ही था जिससे वह अपने लड़के (या भाई) को बचाने के लिए जलते हुए मकान में घुस गया था। **जोश-खरोश**=बहुत उत्सुकतापूर्ण आवेश या मनोवेग।

जोशन—पुं०[फा०] १. बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। २. कवच। जिरहबक्तर। (क्व०)

जोशाँदा—पुं०[फा०]१. ओषधियों, जड़ी-बूटियों आदि को उबालकर बनाया हुआ काढ़ा। २. एक में मिली हुई वे सब ओषधियाँ जिनका काढ़ा बनाया जाता है। जैसे—जोशाँदे की पुड़िया।

जोशी—पुं०=जोषी।

जोशीला—वि०[फा० जोश+ईला (प्रत्य०)]१. (व्यक्ति) जो जोश में हो अथवा जिसे बहुत जल्दी जोश आ जाता हो। २. जोश में आकर अथवा दूसरों को जोश में लाने के लिए कहा या किया हुआ। जैसे—जोशीला भाषण।

जोष—पुं०[सं०√जुष् (प्रेम करना)+घञ्] १. प्रीति। प्रेम। २. आराम। सुख। ३. सेवा।

*स्त्री०[सं० योषा] १. पत्नी। भार्या। २. नारी। स्त्री।

*स्त्री०=जोख।

जोषक—पुं०[सं०√जुष्+ण्वुल्-अक] सेवक।

जोषण—पुं०[सं०√जुष्+ल्युट्-अन] १. प्रेम। प्रीति। २. सेवा।

जोषा—स्त्री०[सं० जोष+टाप्] नारी। स्त्री।

जोषिका—स्त्री०[सं० जोषक+टाप्, इत्व] १. स्त्री। २. कलियों का गुच्छा।

जोषिता—स्त्री०[सं०=योषिता, पृषो० य को ज] औरत। नारी। स्त्री।

जोषी—पुं० [सं० ज्योतिषी] १. गुजराती, महाराष्ट्र आदि ब्राह्मणों की एक जाति का अल्ल। २. दे० 'ज्योतिषी'।

जोस†—पुं०=जोश।

जोसीड़ा—पुं०[सं० ज्योतिषी] पुरोहित। उदा०—जोसिड़ा ने लाख बधाई रे।—मीरां।

जोह—स्त्री०[हिं० जोहना] १. जोहने की क्रिया या भाव। २. खोज। तलाश। ३. प्रतीक्षा। ४. कृपापूर्ण दृष्टि। कृपा-दृष्टि।

जोहड़—पुं०[देश०] कच्चा तालाब।

जोहन—स्त्री०[हिं० जोहना] जोहने की क्रिया या भाव। दे० 'जोह'।

जोहना—स० [सं० जुषण=सेवन] १. अच्छी तरह ध्यानपूर्वक देखना २. कुछ ढूंढ़ने या पाने के लिए इधर-उधर देखना। तलाश करना। ढूंढ़ना। ३. प्रतीक्षा करना। रास्ता देखना।

जोहर†—पुं०=ज़ोहड़।

पुं०=जौहर।

जोहार†—स्त्री०[सं० जुषण=सेवन] मुख्यतः क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन या नमस्कार।

†पुं०=जौहर।

जोहारना—अ० [हिं०] प्रणाम या नमस्कार करना। अभिवादन करना।

जौं—अव्य०[सं० यदि] जो। यदि।

†अव्य०=ज्यों।

जौंकना—स०[अनु० झाँव-झाँव] १. रोष जतलाते हुए ऊँचे स्वर में बोलना। २. एकाएक वहुत जोर से चिल्ला या बोल उठना।

जौंची—स्त्री०[देश०] एक रोग जिसमें पौधों की वालें (जैसे—गेहूँ, चने आदि की वालें) काली पड़ कर मुरझा जाती हैं।

जौंड़—स्त्री०=जेवड़ी (रस्सी)।

जौंड़ा†—पुं०=जौरा।

जौंरा—पुं०=जौरा।

जौंरा भौंरा—पुं०[हिं० भुइँहरा] १. किले या राजमहल का वह तहखाना जिसमें प्राचीन काल में राजे, नवाव आदि सुरक्षा की दृष्टि से सोना-चाँदी, हीरे-मोती रखते थे।२. एक साथ जन्म लेनेवाले दो वालक। ३. प्रायः या वरावर साथ रहनेवाले दो व्यक्ति।

जौंरे—क्रि० वि०[फा० जवार] निकट। समीप।

जौ—पुं०[सं० यव] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानों या वीजों को पीसकर बनाया हुआ चूर्ण रोटी बनाने के काम आता है।

विशेष—यह पौधा गेहूँ के पौधे से वहुत-कुछ मिलता-जुलता होता है।

२. उक्त पौधे का दाना या बीज जो गेहूँ के दाने की अपेक्षा कुछ वड़ा तथा लंवोतरा होता है। ३. ६ राई की एक तौल। ४. एक पौधा जिसकी लचीली टहनियों से टोकरे आदि बनते हैं। मध्य एशिया के प्राचीन खंडहरों में इसकी बनी हुई टट्टियाँ भी पाई गई हैं।

*अव्य० १.=जो (अगर या यदि)। २=जब।

सर्व०=जो।

जौक—पुं०[तु०जूक=सेना] १. सेना। फौज। २. गोल। झुंड। ३. जत्था मंडली। ४. पंक्ति। श्रेणी।

पुं०[अ० जौक] किसी वस्तु या वस्तु से प्राप्त होनेवाला आनंद या सुख।

पद-जौक शौक=आनंद, उत्साह और प्रसन्नता।

जौ केराई—स्त्री०[हिं० जौ+केराव] केराव या मटर के साथ मिला हुआ जौ।

जौख†—पुं०=जौक।

जौगढ़वा—पुं०[जौगढ़=कोई प्रदेश] अगहन में तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

जौचनी—स्त्री० [हिं० जौ+चना] एक में मिले हुए जौ तथा चने के दाने या बीज।

जौजा—स्त्री० [अ० जौजः] जोरू। पत्नी।

जौजियत—स्त्री०[फा० जौजियत] जौजा अर्थात् जोरू या पत्नी होने की अवस्था या भाव।

जौतुक—पुं०=यौतुक (दहेज)।

जौधिक—पुं० [सं० यौधिक] तलवार चलाने का एक ढंग, प्रकार या हाथ।

जौन—सर्व०[स० यः हिं० जो] जो।

वि०=जो।

पुं०=यवन।

स्त्री०=योनि।

जौनाल—स्त्री० [सं० यव+नाल] १. जौ के पौधे का डठल और बाल। २. वह भूमि जिसमें जौ वोया जाता हो। ३. ऐसी भूमि जिसमें रवी की कोई सफल होती हो।

जौन्ह†—स्त्री०=जोन्ह(चाँदनी)।

जौपै—अव्य०[हिं० जौ+पै=पर] अगर। यदि।

जौबति†—स्त्री०=युवती।

जौबन†—पुं०=जोवन।

जौम†—पुं०=जोम (ताकत)।

जौर—पुं० [फा०] अत्याचार। जुल्म।

जौरा—पुं०[हिं० जूरा] वह अनाज जो गाँवों में नाई, वारी आदि पौनियों को उनके काम के वदले में प्रति वर्ष दिया जाता है।

†पुं०[हिं० जेवड़ी] वड़ा रस्सा।

†पुं०=यमराज।

जौलाई† स्त्री०=जूलाई (महीना)।

जौलाय—वि० [?] वारह। (दलाल)

जौशन—पुं०=जोशन।

जौहड़†—पुं० [पहलवी आवे-जोहर=पवित्र-जल] १. वह गड्ढा जिसमें बरसाती जल जमा होता हो। २. छोटा ताल।

जौहर—पुं०[फा० गौहर का अरवी रूप] १. कोई वहुमूल्य पत्थर। जैसे—नीलम, पन्ना, हीरा आदि। २. किसी वात, वस्तु या व्यक्ति में निहित वे तात्त्विक और मौलिक बातें जो उसके गुणों, दोषों, विशेषताओं, त्रुटियों आदि की परिचायक या सूचक होती हैं। जैसे—आदमी का जौहर विकट परिस्थितियों में, वहादुरों का जौहर लड़ाई के मैदान में अथवा सोने का जौहर उसे तपाने पर खुलते हैं।

क्रि० प्र०—खुलना।

३. उक्त के आधार पर लोहे के धारदार औजारों, हथियारों आदि के संबंध में विशिष्ट प्रकार के वे चिह्न या धारियाँ जो लोहे की उत्तमता की सूचक होती हैं। जैसे—तलवार या कटार का जौहर। ४. उत्तमता। श्रेष्ठता।

पुं०[सं० जीव-हर] १. मध्य-युग में राजपूत स्त्रियों की एक प्रथा जिसमें गढ़ या नगर के शत्रुओं से घिर जाने और अपने पक्ष की हार निश्चित होने पर वे एक साथ इस उद्देश्य से जलती चिता में कूद पड़ती थीं कि विजयी शत्रु हमारा अपमान तथा हम पर अत्याचार न करने पावें। २. उक्त उद्देश्य से बनाई हुई बहुत बड़ी चिता।

क्रि० प्र०—सँजोना।—सजाना।

३. आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए की जानेवाली आत्म-हत्या।

पुं०=जौहड़।

जौहरी—पुं०[फा०] १. हीरा, लाल आदि वहुमूल्य रत्न परखने और बेचनेवाला व्यापारी। २. किसी काम, चीज या वात के गुण-दोष

आदि अच्छी तरह जानने और समझने वाला व्यक्ति। पारखी। जैसे—शब्दों का जौहरी।

ज्ञ—ज और ञ के योग से बना हुआ एक अक्षर जिसका उच्चारण हिंदी में ग्य, मराठी में 'द्न्य' और गुजराती में 'ज्न' होता है।

पुं०[सं०√ज्ञा (जाना)+क] १. ज्ञानी पुरुष। २. ब्रह्म। ३. बुध नामक ग्रह। ४. मंगल ग्रह। ५. ज्ञान। बोध।

वि० जाननेवाला। ज्ञाता। (शब्दों के अन्त में) जैसे—गणितज्ञ, दैवज्ञ, शास्त्रज्ञ आदि।

ज्ञपित—वि० [सं०√ज्ञा+णिच्+क्त, पुक्] १. जाना हुआ। ज्ञात। २. दूसरों को जतलाया या बतलाया हुआ। ४. तृप्त या सन्तुष्ट किया हुआ ५. मारा हुआ। हत। ६. (शस्त्र) चोखा या तेज किया हुआ। ७. प्रशंसित या स्तुत।

ज्ञप्ति—स्त्री०[सं०√ज्ञप् (जानना)+क्तिन्] १. कोई बात जानने या जनाने की क्रिया या भाव। २. जानी या जनाई हुई बात। ३. बुद्धि ४. मार डालना। मारण। ५. तुष्टि या तृप्ति। ६. प्रशंसा। स्तुति। ७. जलाना।

ज्ञ-वार—पुं०[सं० ष० त०] बुधवार।

ज्ञा—स्त्री०[सं० ज्ञ+टाप्] ज्ञान। जानकारी।

ज्ञात—भू० कृ० [सं०√ज्ञा+क्त] जिसके विषय में सब बातें मालूम हों। विदित। जाना हुआ।

पुं०=ज्ञान।

ज्ञात-नंदन—पुं०[सं० ज्ञात√नंद् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्यु–अन] जैनों के तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञात-यौवना—स्त्री०[ब० स०] साहित्य में वह मुग्धा नायिका जिसे अपने तारुण्य या यौवन के आगमन का स्पष्ट रूप से आभास या भान होने लगा हो।

ज्ञातव्य—वि०[सं०√ज्ञा+तव्यत्] १. जानने के योग्य (कोई महत्त्वपूर्ण बात)। २. जो जाना जा सके। बोध गम्य। ३. जो दूसरों को जतलाया जाने को हो।

ज्ञाता(तृ)—वि०[सं०√ज्ञा+तृच्] [स्त्री० ज्ञात्री] जिससे किसी बात, विषय आदि का पूरा ज्ञान हो। जानकार।

ज्ञाति—पुं०[सं०√ज्ञा+क्तिच्] एक ही गोत्र या वंश में उत्पन्न मनुष्य। गोती। भाई-बंधु। बांधव।

स्त्री०=जाति।

ज्ञाति-पुत्र—पुं० [ष० त०] १. गोत्रज का पुत्र। २. जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञातृत्व—पुं०[सं० ज्ञातृ+त्व] अभिज्ञाता। जानकारी।

ज्ञान—पुं०[सं०√ज्ञा+ल्युट्–अन] १. चेतन अवस्थाओं में इंद्रियों आदि के द्वारा बाहरी वस्तुओं, विषयों आदि का मन को होनेवाला परिचय या बोध। मन में होनेवाली वह धारणा या भावना जो चीजों या बातों को देखने, समझने, सुनने आदि से होती है।

विशेष—न्यायदर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चारों प्रमाणों को ज्ञान का मूल कारण या स्रोत माना गया है।

२. लोक-व्यवहार में, शरीर की वह चेतना-शक्ति जिसके द्वारा जीवों, प्राणियों आदि को अपनी आवश्यकताओं और स्थितियों के अनुसार अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ और सब बातों की जानकारी या परिचय होता है। कुछ जानने, समझने आदि की योग्यता, वृत्ति या शक्ति। जैसे—(क) वनस्पतियों आदि में भी इतना ज्ञान होता है कि वे गरमी, सरदी और दिन-रात का अनुभव करते हैं। (ख) उसकी चेष्टाओं से पता चलता था कि मरते समय तक उसका ज्ञान बना रहा।

विशेष—प्राणि-विज्ञान के अनुसार, हमारे सारे शरीर में स्नायविक तंतुओं का जो जाल फैला हुआ है, उसी की कुछ क्रियाओं से हमें सब बातों और विषयों का ज्ञान होता है। चेतना की दृष्टि से उक्त तंतु-जाल का केन्द्र हमारे मस्तिष्क में है, जहाँ सारा ज्ञान पहुँचकर एकत्र होता और हमसे सब प्रकार के काम कराता है।

३. किसी बात या विषय के सबंध में होनेवाली वह तथ्यपूर्ण, वास्तविक और संगत जानकारी या परिचय जो अध्ययन, अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग आदि के द्वारा प्राप्त होता है। जैसे—किसी कला, भाषा या विद्या का ज्ञान। ४. आध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्रों में, आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक संबंध, वास्तविक स्वरूप आदि और भौतिक जगत संसार की अनित्यता, नश्वरता आदि से संबंध की होनेवाली अनुभूति, जानकारी या परिचय जो आवागमन के बंधन से छुड़ाकर मुक्ति या मोक्ष देनेवाला माना गया है। तत्त्व-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान।

मुहा०—ज्ञान छाँटना या बघारना=अनावश्यक रूप से, बहुत बढ़-बढ़कर और केवल अपनी जानकारी या पांडित्य दिखाने के उद्देश्य से ज्ञान संबंधी तरह-तरह की बातें कहना।

ज्ञान-कांड—पुं०[ष० त०] वेद के तीन कांडों या विभागों में से एक जिसमें जीव और ब्रह्म के पारस्परिक संबंधों, स्वरूपों आदि पर विचार किया गया है।

ज्ञान-कृत—वि० [तृ० त०] (कार्य, व्यापार या पाप) जो ज्ञान रहते अर्थात् जान-बूझकर तथा सचेत अवस्था में किया गया हो।

ज्ञान-गम्य—वि०[तृ० त०] (विषय) जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हो।

ज्ञान-गोचर—वि०[ष० त०] जो ज्ञान के द्वारा जाना जा सके।

ज्ञान-चक्षु (स्)—पुं० [ष० त०] १. अंतर्दृष्टि। २. बहुत बड़ा विद्वान्।

ज्ञानतः (तस्)–क्रि० वि० [सं० ज्ञान+तस्] ज्ञान रहने या होने की दशा में। जान-बूझकर।

ज्ञानद—वि० [सं० ज्ञान√दा (देना)+क] [स्त्री० ज्ञानदा] ज्ञान कराने या देनेवाला।

पुं० गुरु।

ज्ञान-दा—स्त्री०[सं० ज्ञानद+टाप्] सरस्वती।

ज्ञान-दाता (तृ)—वि० [ष० त०] ज्ञान कराने या देनेवाला।

पुं० गुरु।

ज्ञान-दात्री—स्त्री०[ष० त०] सरस्वती।

ज्ञान-पति—पुं०[ष० त०] १. परमेश्वर। २. गुरु।

ज्ञान-पिपासु—वि०[ष० त०] जो ज्ञान अर्थात् किसी विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता हो। ज्ञान का जिज्ञासु।

ज्ञान-प्रभ—पुं०[ब० स०] एक तथागत का नाम।

ज्ञानमय—वि०[सं० ज्ञान+मयट्] ज्ञान से युक्त। ज्ञान से भरा हुआ।
पुं० ईश्वर।

ज्ञान-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] राम की पूजा की एक मुद्रा। (तंत्रसार)

ज्ञान-मूढ़—पुं०[मध्य०स०] वह जो ज्ञानी होने पर भी मूढ़ों या मूर्खों का-सा आचरण या व्यवहार करता हो।

ज्ञान-यज्ञ—पुं०[तृ० त०] आत्मा और परमात्मा के अ-भेद का पूरा ज्ञान प्राप्त करके अपने आपको पूर्ण रूप से ईश्वर में लीन कर देने की क्रिया या भाव।

ज्ञान-योग—पुं०[कर्म०स०] वह योग या साधन जिसमें परमात्मा या ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य मोक्ष का अधिकारी बनता है।

ज्ञानवान् (वत्)—वि०[सं० ज्ञान+मतुप्, वत्व] १. जिसे बहुत-सी बातों, विषयों आदि की जानकारी हो। २. योग्य तथा समझदार। ३. आत्मा और परमात्मा के अभेद का ज्ञाता।

ज्ञान-साधन—पुं०[ष० त०] १. इंद्रियाँ जिनकी सहायता से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। २. किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न।

ज्ञानांजन—पुं०[ज्ञान-अंजन, कर्म० स०] ब्रह्मज्ञान।

ज्ञानाकर—पुं०[ज्ञान-आकर, ष०त०] बुद्ध।

ज्ञानाकार—पुं०[ज्ञान-आकार, ष० त०] गौतम बुद्ध।

ज्ञानालय—पुं०[ज्ञान-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ ज्ञान संबंधी चर्चा या विवेचन हो और ज्ञान का लोक में प्रचार होता हो। (इन्स्टिट्यूट)

ज्ञानावरण—पुं०[ज्ञान-आवरण, ष० त०] १. वह चीज या परदा जो ज्ञान की प्राप्ति में बाधक हो। २. वह पाप जिसका उदय होने पर ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

ज्ञानावरणीयकर्म (र्मन्)—पुं० [ज्ञान-आवरणीय, ष० त०, ज्ञानावरणीय कर्मन्, कर्म० स०]=ज्ञानावरण।

ज्ञानाश्रयी—वि० [सं०] १. ज्ञान पर आश्रित। २. ज्ञान-संबंधी।

ज्ञानाश्रयी शाखा—स्त्री०[सं०] १. आध्यात्म एवं धार्मिक साधना आदि में एक प्रवृत्ति जिसमें भक्त भगवान् को ज्ञान द्वारा प्राप्त करने के सिद्धांत का समर्थक होता है। २. हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की एक धारा।

ज्ञानासन—पुं०[ज्ञान-आसन, मध्य० स०] योग की सिद्धि का एक आसन।

ज्ञानी (निन्)—वि० [सं० ज्ञान+इनि] १. जिसे ज्ञान या जानकारी हो। २. योग्य तथा समझदार।
पुं० १. वह जिसे आत्म और ब्रह्म के स्वरूप का ठीक-ठीक ज्ञान हो चुका हो। ब्रह्मज्ञानी। २. चार प्रकार के भक्तों में से एक जो सब बातों का ज्ञान रखकर भक्ति करता और इसी लिए सब में श्रेष्ठ माना जाता है।

ज्ञानेंद्रिय—स्त्री० [ज्ञान-इंद्रिय, मध्य० स०] आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँच इंद्रियाँ जिनसे भौतिक विषयों का ज्ञान होता है।

ज्ञानोदय—पुं०[ज्ञान-उदय, ष० त०] किसी प्रकार के ज्ञान का (मन में) होनेवाला उदय।

ज्ञापक—वि० [सं०√ज्ञा+णिच्+ण्वुल्–अक] १. ज्ञान प्राप्त करानेवाला। २. जतलाने, बतलाने या परिचय देनेवाला। व्यंजक या सूचक (तत्त्व या बात)।

ज्ञापन—पुं०[सं०√ज्ञा+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० ज्ञापित, वि० ज्ञाप्य] कोई बात किसी को जतलाने, बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव।

ज्ञापित—भू० कृ० [सं०√ज्ञा+णिच्+क्त] जिसकी जानकारी किसी को कराई जा चुकी हो। जतलाया या बतलाया हुआ।

ज्ञाप्य—वि० [सं०√ज्ञा+णिच्+यत्] जिसका ज्ञान प्राप्त किया या कराया जा सकता हो।

ज्ञेय—वि०[सं०√ज्ञा+यत्] १. जिसे जानना आवश्यक या कर्त्तव्य हो। जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।

ज्या—स्त्री०[सं०√ज्या (जीर्ण होना)+अङ–टाप्] १. धनुष की डोरी। २. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अथवा किसी वृत्त के व्यास तक गई हो। ३. किसी वृत्त का व्यास। ४. माता। माँ। ५. पृथ्वी।

ज्यादती—स्त्री०[फा०] १. ज्यादा अर्थात् अधिक होने की अवस्था या भाव। अधिकता। २. अतिरिक्त होने की अवस्था या भाव। अतिरेक। ३. आवश्यक से अधिक अथवा अनावश्यक रूप से किया हुआ कड़ा या कठोर व्यवहार। अत्याचार।

ज्यादा—वि०[फा० ज़ियादः] मान या मात्रा में आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। अधिक । बहुत। जैसे-किसी को ज्यादा बात नहीं कहनी चाहिए।

ज्यान*—पुं०[फा० जियान] घाटा। नुकसान। हानि।
पुं०=ज्ञान।

ज्याना*—स०[हिं० जिलाना] १. जीवित करना। प्राण डालना। जिलाना। २. जीवित रखना। ३. (पशु-पक्षी आदि) पालना-पोसना। उदा०—सुक सारिका जानकी ज्याए।—तुलसी।

ज्याफत—स्त्री०[अ० ज़ियाफ़त] १. दावत। भोज। २. आतिथ्य-सत्कार।

ज्या-मिति—स्त्री०[ब० स०] गणित का वह विभाग जिसमें पिंडों की नाप-जोख, रेखा, कोण, तल आदि का विचार किया जाता है। रेखा-गणित। (ज्यामेट्री)

ज्यारना—स०=ज्याना (जिलाना)।

ज्यारा*—वि०[हिं० ज्याना] १. जीवन-दान देनेवाला। २. जिलाने अर्थात् पालने-पोसनेवाला।

ज्यारी—स्त्री०[हिं० जी=जीवट] १. कड़े जी या दिलवाला। २. साहसी। हिम्मती।

ज्यावना†—स०=जिलाना।

ज्युति—स्त्री०=ज्योति।

ज्यूँ—अव्य०=ज्यों।

ज्येष्ठ—वि० [सं० वृद्ध+इष्ठन्, ज्य आदेश] [स्त्री० ज्येष्ठा] १. अवस्था में जो अपने वर्ग के अन्य जीवों से सब से बड़ा हो। जैसे—ज्येष्ठ पुत्र। २. अधिक अवस्थावाला। वृद्ध। बुड्ढा। ३. जो किसी से पद, मर्यादा आदि की दृष्टि से ऊँचा या बढ़कर हो।
पुं० १. ग्रीष्म ऋतु का वह महीना जो बैसाख के बाद और असाढ़ से पहले पड़ता है। २. फलित ज्योतिष में वह वर्ष जिसमें बृहस्पति का उदय ज्येष्ठा नक्षत्र में हो। ३. एक प्रकार का सामगान।

४. परमात्मा। परमेश्वर। ५. जीवनी-शक्ति। प्राण।

ज्येष्ठक—पुं०[सं० ज्येष्ठ+कन्] किसी नगर का प्रधान अधिकारी। (प्राचीन भारत)

ज्येष्ठता—स्त्री०[सं० ज्येष्ठ+तल्-टाप्] १. ज्येष्ठ होने की अवस्था या भाव। २. बड़प्पन। श्रेष्ठता।

ज्येष्ठ-बला—स्त्री०[मध्य० स०] सहदेई नाम की वनस्पति।

ज्येष्ठ-साम (मन्)—पुं०[सं० कर्म० स०] एक प्रकार का साम। आरण्यक साम।

ज्येष्ठसामग--पुं०[सं० ज्येष्ठसामन्√गै (गाना)+क] आरण्यक साम पढ़नेवाला।

ज्येष्ठांबु—पुं०[सं० ज्येष्ठ-अंबु, कर्म० स०] वह पानी जिसमें चावल धोये गये हों। चावलों की धोवन।

ज्येष्ठा—स्त्री०[सं० ज्येष्ठ+टाप्] १. २७ नक्षत्रों में से अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से मिलकर बना और कुंडल के आकार का है। २. किसी व्यक्ति की कई पत्नियों में से वह जो उसे सब से अधिक प्रिय हो। ३. हाथ की उँगलियों में बीच की उँगली जो और सब उँगलियों में बड़ी होती है। ४. गंगा नदी। ५. पुराणानुसार अ-लक्ष्मी जो समुद्र मथने के समय लक्ष्मी से पहले निकली थी। ६. छिपकली।

ज्येष्ठाश्रम—पुं० [सं० ज्येष्ठ-आश्रम, कर्म० स०] गृहस्थाश्रम जो शेष सब आश्रमों का पालक होने के कारण उनमें बड़ा माना गया है।

ज्येष्ठाश्रमी (मिन्)—पुं० [सं० कर्म० स०] गृहस्थाश्रम में रहनेवाला व्यक्ति। गृहस्थ।

ज्येष्ठी—स्त्री० [सं० ज्येष्ठ+ङीष्] छिपकली।

ज्यों—अव्य० [सं० यः+इव] १. जिस तरह। जिस प्रकार। जैसे—उदा०—ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी।—तुलसी।

पद—ज्यों का त्यों=(क) जैसा पहले हो, या रहा है, वैसा ही या उसी रूप में। जैसे—वह ज्यों का त्यों नकल करके ले आया। (ख) जिसके पूर्व रूप के संबंध में कुछ भी काम न हुआ हो। जैसे—सारा ग्रंथ ज्यों का त्यों पड़ा है। (ग) जिसमें कुछ भी अन्तर, परिवर्त्तन या फेर-बदल न हो या न किया जाय। जैसे—वह समूचा पेड़ ज्यों का त्यों उखाड़ लाओ। **ज्यों ज्यों**=जिस क्रम से। जिस मात्रा या मान में। जितना। (वाक्य-रचना में इसका नित्य संबंधी त्यों त्यों होता है) जैसे—ज्यों ज्यों वह सयाना होता गया, त्यों त्यों वह स्वयं अपने सब काम देखने और करने लगा। उदा०—ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों गरुई होय। **ज्यों त्यों**=(क) कठिनाइयों और झंझटों के रहते हुए भी किसी न किसी प्रकार। सहज में या अच्छी तरह नहीं। जैसे—ज्यों त्यों व्याह के कामों से छुट्टी पाई। (ख) जी न चाहते हुए भी। अनिच्छा या अरुचिपूर्वक। जैसे—ज्यों त्यों उनसे भी मेल हो गया। (ग) जिस प्रकार हो सके। जैसे—ज्यों त्यों सबको बुलवाओ। **ज्यों ही**=ठीक उसी क्षण या समय, जब कोई पहला काम पूरा हुआ हो। कोई काम होते ही ठीक उसी वक्त (इस अर्थ में 'त्यों ही' इसका नित्य-संबंधी होता है।) जैसे—ज्यों ही मैं घर से निकला, त्यों ही पानी बरसने लगा, (अथवा, आपका सँदेसा मिला)।

२. किसी के ढंग, प्रकार या रूप से। किसी के अनुकरण पर। उदा०—भीम तैरते समय मगर ज्यों डुबकी साधे आते।—मैथलीशरण। ३. ठीक किसी दूसरे की तरह। किसी के तुल्य या समान। उदा०—प्रिय न था विदुर ज्यों जिसे अनय।—मैथलीशरण।

ज्योतिःशास्त्र—पुं० [ज्योतिस्-शास्त्र, ष०त०] ज्योतिष। (देखें)

ज्योतिःशिखा—स्त्री० [ज्योतिस्-शिखा, ष० त०] १. जलती हुई लपट या लौ। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके चरण के पहले दल में ३२ लघु और दूसरे दल में १६ गुरु वर्ण होते हैं।

ज्योतिःसर—वि० [ज्योतिस्√सृ (गति)+ट, उप० स०] ज्योति में चलने या सरकनेवाला। उदा०—पहले का-सा उन्नत विशाल ज्योतिःसर।—निराला।

ज्योति (तिस्)—स्त्री० [सं०√द्युत् (प्रकाश)+इसुन्, ज आदेश] १. वह चमक और प्रकाश जो किसी चीज के जलने से उत्पन्न होता है। जैसे—अग्नि, दीपक या बिजली की ज्योति।

मुहा०—ज्योति जगाना या जलाना=किसी देवी देवता के पूजन के समय घी का दीया जलाना। २. कहीं से निकलनेवाला उज्ज्वल और चमकीला प्रकाश। जैसे—किसी महापुरुष की आँखों या मुखड़े की ज्योति। ३. अग्नि। ४. ब्रह्म। ५. सूर्य। ६. विष्णु। ७. नक्षत्र। ८. आँख की पुतली के बीच का काला विन्दु। तिल। ९. दृष्टि। नजर। १०. मेथी। ११. संगीत में अष्ट-ताल का एक भेद।

ज्योतिक—पुं०=ज्यौतिषी।

ज्योतित—वि० [सं० द्योतित] १. ज्योति के रूप में आया या लाया हुआ। २. ज्योति या प्रकाश से युक्त किया हुआ।

ज्योतिमान—वि०=ज्योतिष्मान्।

ज्योतिरिंग—पुं० [सं० ज्योतिस्√इंग् (गमनादि)+अच्] जुगनूं।

ज्योतिरिंगण—पुं० [सं० ज्योतिस्√इंग्+ल्यु-अन] जुगनूं।

ज्योतिर्बीज—पुं० [ज्योतिस्-बीज, ब०स०] जुगनूं।

ज्योतिर्मंडल—पुं० [ज्योतिस्-मंडल, ष० त०] आकाशस्थ तारों, नक्षत्रों आदि का मंडल या लोक।

ज्योतिर्मय—वि० [सं० ज्योतिस्+मयट्] बहुत अधिक ज्योति से युक्त। जगमगाता हुआ। परम प्रकाशमान्।

ज्योतिर्लिंग—पुं० [ज्योतिस्-लिंग, मध्य० स०] १. महादेव। शिव। २. शिव के मुख्य १२ लिंग जो भारत के भिन्न-भिन्न भागों में स्थापित हैं।

ज्योतिर्लोक—पुं० [ज्योतिस्-लोक, ष० त०] १. ध्रुव लोक जो काल-चक्र का प्रवर्त्तक माना गया है। २. उक्त लोक के अधिष्ठाता देवता, विष्णु। ३. परमात्मा। परमेश्वर।

ज्योतिर्विद्—पुं० [सं० ज्योतिस्√विद् (जानना)+क्विप्] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—स्त्री० [ज्योतिस्-विद्या ष० त०] ज्योतिष।

ज्योतिर्हस्ता—स्त्री० [ज्योतिस्+हस्त ब० स०] दुर्गा।

ज्योतिश्चक्र—पुं० [ज्योतिस्-चक्र मध्य० स०] ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों आदि का चक्र या मंडल।

ज्योतिश्चुंबी (बिन्)—वि० [सं०ज्योतिस्√ चुंब् (चूमना)+णिनि] [स्त्री० ज्योतिश्चुंबिनी] आकाशस्थ ज्योति को चूमने अर्थात् उसके बहुत पास तक पहुँचनेवाला; अर्थात् बहुत ऊँचा। गगनचुंबी। उदा०—ज्योतिश्चुंबिनी कलश-मधुकर छाया में।—निराला।

ज्योतिश्छाया—स्त्री० [ज्योतिस्-छाया मध्य० स०] १. ज्योति अथवा

प्रकाश से युक्त छाया। २. ज्योति अथवा प्रकाश में पड़नेवाली छाया। उदा०--ज्योतिश्छाय केश-मुख वाली।—निराला।

ज्योतिष—पुं० [सं० ज्योतिस्+अच्] १. एक प्रसिद्ध विद्या या शास्त्र जिसमें इस बात का विचार होता है कि आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र आदि पिंड कितनी दूरी पर हैं, कितने दिनों में किन मार्गों से चक्कर लगाते हैं, उनके कितने प्रकार के वर्ग या विभाग हैं आदि आदि।

विशेष—बहुत दिनों से इस शास्त्र के मुख्य दो विभाग चले आ रहे हैं—गणित और फलित। गणित ज्योतिष में पहले प्रायः उन्हीं बातों का अनुसंधान होता था जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। प्राचीन भारत में इस शास्त्र की गणना छः वेदांगों के अन्तर्गत होती थी। आजकल पाश्चात्य ज्योतिष में इस बात का भी विचार होने लगा है कि आकाशस्थ पिंडों की उत्पत्ति या जन्म किस प्रकार होता है, वे किन-किन तत्त्वों के बने हुए होते हैं और वे हमारी पृथ्वी से भी और आपस में एक दूसरे से भी कितनी दूरी पर स्थित हैं।

२. आज-कल लोक-व्यवहार में उक्त विद्या या शास्त्र का वह पक्ष या विभाग जिसमें इस बात का विचार होता है कि इस पृथ्वी के निवासियों, प्रदेशों आदि पर हमारे सौर जगत् के भिन्न-भिन्न ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों आदि की स्थितियों पर कैसे-कैसे भौतिक प्रभाव पड़ते हैं। इसी आधार पर अनेक प्रकार के भविष्य कथन भी होते हैं और अनेक प्रकार के कार्यों के लिए शुभाशुभ मुहूर्त्त या समय भी बतलाये जाते हैं। ३. प्राचीन भारत में अस्त्रों आदि का एक प्रकार का मारक या रोक जिससे शत्रुओं के चलाये हुए अस्त्र निष्फल किये जाते थे।

ज्योतिषिक—वि० [सं० ज्योतिस्+ठक्-इक] ज्योतिष संबंधी। ज्योतिष का। पुं०=ज्योतिषी।

ज्योतिषी (षिन्)—पुं० [सं० ज्योतिष+इनि] १. ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला विद्वान्। दैवज्ञ। गणक। २. आज-कल मुख्यतः फलित ज्योतिष का ज्ञाता या पंडित जो ग्रहों की गति-विधि आदि के आधार पर भविष्यद्वाणी करता और पर्व, मुहूर्त्त आदि का समय स्थिर करता हो। स्त्री० [सं० ज्योतिष+ङीष्] तारा।

ज्योतिष्क—पुं० [सं० ज्योतिष्√कै (प्रकाशित होना)+क] १. ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि आकाश में रहनेवाले पिंड जो रात के समय चमकते हुए दिखाई देते हैं। २. जैनों के अनुसार एक प्रकार के देवता जिनमें आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र और सूर्य, चन्द्रमा आदि भी हैं। ३. मेरु पर्वत की एक चोटी का नाम। ४. चित्रक वृक्ष। चीता। ५. मेथी। ६. गनियारी।

ज्योतिष्का—स्त्री० [सं० ज्योतिष्क+टाप्] मालकंगनी।

ज्योतिष्टोम—पुं० [ज्योतिस्-स्तोम, ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें १६ ऋत्विक् होते थे।

ज्योतिष्ना†—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

ज्योतिष्पथ—पुं० [ज्योतिस्-पथिन्, ष० त०] आकाश।

ज्योतिष्पुंज—पुं० [ज्योतिस्-पुंज, ष० त०] आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि का समूह।

ज्योतिष्मती—स्त्री० [सं० ज्योतिस्+मतुप्-ङीप्] १. रात्रि। रात। २. एक प्रकार का वैदिक छंद। ३. एक प्राचीन नदी। ४. एक प्रकार का पुराना बाजा। ५. मालकंगनी।

ज्योतिष्मान् (मत्)—वि० [सं० ज्योतिस्+मतुप्] १. जिसमें ज्योति हो। ज्योतिवाला। २. खूब चमकता हुआ। प्रकाशमान्।

पुं० १. सूर्य। २. प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। (पुराण)

ज्योतीरथ—पुं० [ज्योतिस्-रथ, ब० स०] ध्रुव।

ज्योतीरस—पुं० [ज्योतिस्-रस, द्व० स०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

ज्योत्स्ना—स्त्री० [सं० ज्योतिस्+न, इलोप नि०] १. चंद्रमा का प्रकाश। २. पृथ्वी पर छिटका या फैला हुआ उक्त प्रकाश। चाँदनी। ३. शुक्ल पक्ष की या चाँदनी रात। ४. सौंफ।

ज्योत्स्नाकाली—स्त्री० [सं०] वरुण के पुत्र पुष्कर की पत्नी जो सोम की कन्या थी।

ज्योत्स्ना-प्रिय—पुं० [ब० स०] चकोर।

ज्योत्स्ना-वृक्ष—पुं० [ष० त०] दीपाधार। दीवट।

ज्योत्स्निका—स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना+कन्+टाप्, इत्व]=ज्योत्स्ना।

ज्योत्स्नी—स्त्री०=ज्योत्स्ना।

ज्योत्स्नेश—पुं० [ज्योत्स्ना-ईश, ष० त०] चंद्रमा।

ज्योनार—स्त्री० [सं० जेमन=भोजन] १. पका हुआ भोजन। रसोई। २. बहुत से लोगों को बुलाकर एक साथ कराया जानेवाला भोजन। भोज। दावत।

मुहा०—ज्योनार बैठना=आये हुए लोगों का भोजन करने बैठना। **ज्योनार लगाना**=आये हुए लोगों के लिए खाने-पीने की चीजें परोसना।

ज्योरा—पुं० [सं० जीव=जीविका] गाँवों में, चमारों, नाइयों आदि को उनकी सेवाओं के बदले दिया जानेवाला अन्न।

ज्योरी—स्त्री० [सं० जीवा] डोरी। रस्सी।

ज्योहत—वि० [सं० जीव+हत] जिसने जीव की हत्या की हो।

पुं० १. =आत्म-हत्या। २.=जौहर।

ज्यौं—क्रि० वि०=ज्यों।

ज्यौ*—पुं० [सं० जीव] १. आत्मा। जीव। उदा०—तनमाया ज्यौ ब्रह्म कहावत सूर सुमिलि बिगरी।--सूर। २. जीवन। प्राण। उदा०--बदी बदी ज्यौ लेत हैं, ए बदरा बदराह।—बिहारी। ३. जी। मन।

अव्य० [सं० यदि] जो। यदि।

ज्यौतिष—वि० [सं० ज्योतिष+अण्] ज्योतिष-संबंधी।

पुं०=ज्योतिष।

ज्यौतिषिक—पुं० [सं० ज्योतिष+ठक्—इक] ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नी—स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना+अण्-ङीप्] पूर्णिमा की रात।

ज्यौनार—स्त्री०=ज्योनार।

ज्यौरा—पुं०=ज्योरा।

ज्यौहर—पुं०=जौहर

ज्वर—पुं० [सं० √ज्वर् (जीर्ण होना)+घञ्] १. अनेक प्रकार के शारीरिक विकारों के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें शरीर का तापमान प्रसम या साधारण से बहुत-कुछ बढ़ जाता है और जिसके फलस्वरूप नाड़ी की गति बहुत तीव्र हो जाती है और कभी-कभी मनुष्य बकने झकने लगता या अचेत हो जाता है। ताप। बुखार।

क्रि०प्र०--आना।-चढ़ना।-होना।

२. ऐसी स्थिति जिसमें अशान्ति, आवेग, उत्तेजना, मानसिक चंचलता

आदि बातें बहुत बढ़ी हुई हों। जैसे--युद्ध भी देशों और राष्ट्रों को चढ़नेवाला ज्वर-ही समझना चाहिए।

ज्वर-कुटुंब—पुं० [ष० त०] ज्वर के फलस्वरूप या साथ-साथ होनेवाले दूसरे उपद्रव। जैसे--शारीरिक शिथिलता, अधिक प्यास, भोजन के प्रति अरुचि, सिर में दरद आदि आदि।

ज्वरघ्न—वि० [सं० ज्वर√हन् (नाश)+टक्] जिससे ज्वर का अन्त या नाश होता हो।

पुं० १. गुड़ुच। २. बथुआ नामक साग।

ज्वर-हंत्री—स्त्री० [ष० त०] मजीठ।

ज्वरांकुश—पुं० [ज्वर-अंकुश, ष० त०] १. कुश की जाति की एक घास जिसकी जड़ में नीबू की-सी सुगंध होती है। २. वैद्यक में ज्वर की एक दवा जो गंधक, पारे आदि के योग से बनती है।

ज्वरांगी—स्त्री० [सं० ज्वर√अंग् (गति)+अच्-ङीष्] भद्रदंती नामक पौधा।

ज्वरांतक—वि० [ज्वर-अंतक, ष० त०] ज्वर का अन्त या नाश करनेवाला।

पुं० १. चिरायता। २. अमलतास।

ज्वरांश—पुं० [ज्वर-अंश, ष० त०] मंद या हलका ज्वर जैसा प्रायः जुकाम आदि के साथ होता है और जो कभी-कभी दूसरे रोग के आगमन का सूचक माना जाता है। हरारत।

ज्वरा—स्त्री० [सं० जरा] १. बुढ़ापा। २. मृत्यु।

ज्वरापह—स्त्री० [सं० ज्वर-अप√हन् (मारना)+ड] बेलपत्री।

ज्वरार्त्त—वि० [ज्वर-आर्त्त, तृ० त०] ज्वर से पीड़ित।

ज्वरित—वि० [सं० ज्वर+इतच्] जिसे ज्वर या बुखार चढ़ा हुआ हो।

ज्वरी (रिन्)—वि० [सं० ज्वर+इनि] ज्वर से पीड़ित।

ज्वर्रा†—पुं०=जुर्रा (पक्षी)।

ज्वलंत—वि० [सं० ज्वलत्] १. जलता और चमकता हुआ। देदीप्यमान। २. बहुत अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। जैसे—ज्वलंत उदाहरण या प्रमाण।

ज्वल—पुं० [सं०√ज्वल् (दीप्ति)+अच्] १. ज्वाला। अग्नि। २. दीप्ति। प्रकाश।

ज्वलका—स्त्री० [सं०√ज्वल्+ण्वुल-अक, टाप्] आग की लपट। अग्निशिखा।

ज्वलन—पुं० [सं०√ज्वल्+ल्युट्–अन] १. कोई चीज जलने की क्रिया या भाव। दहन। जलना। २. जलन। दाह। ३. [√ज्वल्+युच्–अन] अग्नि। आग। ४. आग की लपट। लौ। ५. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

ज्वलनांक—पुं० [ज्वलन-अंक, ष० त०] तीव्र तापमान की वह मात्रा या स्थिति जो किसी चीज को जला देने में समर्थ होती है। (बर्निंग प्वाइंट)

ज्वलनांत—पुं० [ज्वलन-अंत, ब० स०] एक बौद्ध का नाम।

ज्वलनाश्मा (श्मन्)—पुं० [ज्वलन-अश्मन्, कर्म० स०] सूर्यकांत मणि।

ज्वलित—भू० कृ० [सं०√ज्वल्+क्त] १. जलता या जलाया हुआ। २. जला हुआ। दग्ध। ३. खूब चमकता हुआ। ४. स्पष्ट रूप से सामने दिखाई देनेवाला।

ज्वलिनी—स्त्री० [सं० ज्वल+इनि+ङीप्] मूर्वा लता। मरोड़फली।

ज्वलिनी सीमा—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] दो गाँवों के बीच की वह सीमा जो ऊँचे पेड़ लगाकर बनाई गई हो।

ज्वान†— वि० [भाव० ज्वानी] =जवान।

ज्वाब—पुं०=जवाब।

ज्वार—स्त्री० [सं० यवनाल, यवाकार वा जूर्ण] १. एक प्रसिद्ध पौधा और उसके दाने या बीज जिनकी गिनती अनाजों में होती है। २. समुद्र, उससे संबद्ध नदियों की वह स्थिति जब कि उनमें ऊँची-ऊँची तरंगें उठ रही हों। 'भाटा' का विपर्याय।

विशेष—चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण के फलस्वरूप दिन-रात में एक बार बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठती हैं जिसे ज्वार कहते हैं और दूसरी बार यह लहरें बिलकुल थम जाती हैं जिससे संबद्ध नदियों का पानी बहुत उतर या घट जाता है। इसी को भाटा कहते हैं। अमावास्या और पूर्णिमा के दिन ज्वार का रूप बहुत ही उग्र या प्रबल होता है।

*स्त्री०=ज्वाला।

ज्वार भाटा—पुं० [हिं० ज्वार+भाटा] समुद्र में लहरों का वेगपूर्वक बहुत ऊँचे उठना और बराबर नीचे गिरना।

ज्वारी†—पुं०=जुआरी।

ज्वाल—पुं० [सं०√ज्वल् (दीप्ति)+ण वा घञ्]=ज्वाला।

ज्वालक—वि० [सं०√ज्वल्+णिच्+ण्वुल्–अक] जलाने या प्रज्वलित करनेवाला।

पुं० दीपक, लंप आदि का वह भाग जो बत्ती के जलनेवाले अंश के नीचे रहता है और जिसके कारण दीप-शिखा बत्ती के नीचेवाले अंश तक नहीं पहुँचने पाती। (बर्नर)

ज्वालमाली (लिन्)—पुं० [सं० ज्वाल-माला ष० त०,+इनि] सूर्य।

ज्वाला—स्त्री० [सं० ज्वाल+टाप्] १. आग की लपट या लौ। अग्निशिखा। २. ताप, विष आदि के प्रभाव से जान पड़नेवाली बहुत अधिक गर्मी। ३. कष्ट, दुःख आदि के कारण मन में होनेवाली पीड़ा। संताप। ४. तक्षक की एक कन्या जिसका विवाह ऋक्ष से हुआ था।

ज्वाला-जिह्वा—पुं० [ब० स०] १. अग्नि। आग। २. एक प्रकार का चित्रक या चीता (वृक्ष)।

ज्वाला-देवी—स्त्री० [मध्य० स०] काँगड़े के पास की एक देवी जिसका स्थान सिद्ध पीठों में माना जाता है।

ज्वाला-मालिनी—स्त्री० [सं० ज्वाला-माला, ष० त०, +इनि–ङीप्] तंत्र के अनुसार एक देवी।

ज्वाला-मुखी—पुं० [ब० स०, ङीष्] पृथ्वी तल के कुछ विशिष्ट स्थानों और मुख्यतः पर्वतों में होनेवाले मुख के आकार के बड़े-बड़े गड्ढे जिनमें से कभी आग की लपटें, कभी गली हुई धातुएँ, पत्थर आदि और कभी धूएँ या राख के बादल निकलते हैं।

विशेषः—ऐसे गड्ढे जल और स्थल दोनों में होते हैं। जिन पर्वतों की चोटियों पर ऐसे गड्ढे होते हैं उन्हें ज्वालामुखी पर्वत कहते हैं।

ज्वाला हलदी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की हलदी जिससे चीजें रंगी जाती हैं।

ज्वाली (लिन्)—वि० [सं० ज्वाल+इनि] ज्वालायुक्त।

पुं० शिव।

ज्वैना†—स०=जोवना।

झ

झ—देवनागरी वर्णमाला में च वर्ग का चौथा अक्षर जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, स्पर्श संघर्षी, महाप्राण तथा सघोष व्यंजन है।

झं—पुं० [अव्यक्त ध्वनि] १. धातु के किसी पात्र पर आघात होने से उसमें से निकलनेवाला शब्द। २. हाथी की चिंघाड़।

झंकना—अ० दे० 'झीखना'।

झंकाड़†+पुं०=झंखाड़।

झंकार—स्त्री० [सं० झन्-कार, ब० स०] १. धातु के किसी पात्र पर आघात लगने पर कुछ समय तक उसमें से बराबर निकलता रहनेवाला झनझन शब्द। झनकार। २. कुछ कीड़ों के बोलने का झन झन शब्द। जैसे—झिल्ली या झींगुर की झंकार।

झंकारना—स० [सं० झंकार] धातु के किसी टुकड़े का पात्र पर इस प्रकार आघात करना कि वह झन झन शब्द करने लगे।

अ० झन झन शब्द उत्पन्न होना।

झंकारिणी—स्त्री० [सं० झंकार+इनि–ङीप्] गंगा।

झँकिया—स्त्री० [हिं० झाँकना] १. छोटी खिड़की। झरोखा। २. झँझरी। जाली।

झंकृत—भू० कृ० [सं०-झन् √कृ (करना)+क्त] जिसमें से झंकार निकली या उत्पन्न हुई हो।

झंकृता—स्त्री० [सं० झंकृत+टाप्] तारा देवी।

झंकृति—स्त्री० [सं० झन्√कृ (करना)+क्तिन्] झंकार।

झँकोर†पुं०=झकोरा।

झँकोरना†—अ०=झकोरना।

झँकोलना†—अ०=झकोरना।

झँकोला†—पुं०=झकोरा।

झंखना—अ० १. दे० 'झीखना'। २. दे० 'झाँकना'।

झंखर†—पुं०=झंखाड़।

झंखाट†—वि०=झंखाड़।

झंखाड़—पुं० [हिं० झाड़ का अनु०] १. काँटेदार अथवा और प्रकार के जंगली घने पौधे या उनका समूह। २. व्यर्थ के कूड़े-करकट का ढेर।

वि० (वृक्ष) जिसके पत्ते झड़ गये हों।

झँगरा†—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० झँगरी] बाँस की खपचियों का बना हुआ जालीदार बड़ा टोकरा।

झंगा†—पुं०=झगा।

झंगिया†—स्त्री०=झँगुली।

झँगुला—पुं० [हिं० झगा] [स्त्री० अल्पा० झँगुलिया, झँगुली] बच्चों के पहनने का छोटा कुरता।

झँगुली—स्त्री० [हिं० झँगुला का स्त्री०] छोटा झँगुला।

झगूला—पुं० [स्त्री० अल्पा० झँगूली]=झँगुला।

झंजोड़ना—स०=झझोड़ना।

झंझ†—स्त्री० १. दे० 'झाँझ'। २. दे० 'झंझा'।

झंझट—स्त्री० [अनु०] ऐसा काम या बात जिसके साधन में कई प्रकार की छोटी-मोटी कठिनाइयाँ हों और जिसके लिए विशेष परिश्रम या प्रयत्न करना पड़े। बखेड़ा।

झंझटी—वि० [हिं० झंझट] १. (काय या बात) जिसे संपादन करने में अनेक प्रकार की झंझटें खड़ी होती हों। २. (व्यक्ति) जो हर बात को उलझाता तथा उसे झगड़े का रूप देता हो। ३. झगड़ालू।

झंझन—पुं० [सं०] झंकार।

झंझनाना—अ० [हिं० झन झन] झन झन शब्द उत्पन्न होना।

स० झन झन शब्द उत्पन्न करना।

झंझंर—स्त्री० [सं० अलिजर] मिट्टी का जल रखने का एक छोटा पात्र।

†वि०=झँझरा।

झँझरा—पुं० [हिं०] मिट्टी का छोटे-छोटे छेदोंवाला वह ढकना जिससे खौलता हुआ दूध ढका जाता है।

वि० [स्त्री० झँझरी] १. जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। २. बहुत ही झीना या महीन (कपड़ा)।

झंझरि—वि० [सं० जर्जर] जर्जर। क्षत-विक्षत।

स्त्री०=झँझरी।

झँझरी—स्त्री० [हिं० झर झर से अनु०] १. किसी चीज में बने हुए बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह। जाली। २. दीवारों आदि की जालीदार खिड़की या झरोखा। ३. लोहे के चूल्हे की वह जाली जिस पर जलते हुए कोयले रहते हैं। ४. छेद। सुराख। ५. आटा छानने की चलनी। छाननी। ६. लोहे का जालीदार पौना। झरना। ७. एक प्रकार की जल-क्रीड़ा जिसमें छोटी नावों पर बैठकर उन्हें चक्कर देते हैं।

झँझरीदार—वि० [हिं० झँझरी+फा० दार] जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद पास-पास बने हुए हों।

झंझा—स्त्री० [सं० झम्√झट् (इकट्ठा होना)+ड–टाप्] १. वह तेज आँधी जिसके साथ पानी भी जोरों से बरसता हो। २. अंधड़। आँधी।

†वि० तेज। प्रचंड।

†स्त्री०=झाँझ।

झंझानिल—पुं० [सं० झंझा-अनिल, मध्य० स०] १. प्रचंड वायु। आँधी। २. ऐसी आँधी जिसके साथ पानी भी बरसे।

झंझा-मरुत्—पुं०=झंझानिल।

झंझार—पुं० [सं० झंझा] आग की ऊँची तथा बड़ी लपट।

झंझावात—पुं०=झंझानिल।

झंझी—स्त्री० [देश०] १. फूटी कौड़ी। २. दलालों को दलाली में मिलनेवाली रकम। (दलाल)

झंझोड़ना—सं० [सं० झर्झन] किसी चीज को अच्छी तरह पकड़कर जोर-जोर से तथा बार-बार झटकना या हिलाना जिससे वह टूट-फूट जाय या बेदम हो जाय। झकझोरना। जैसे—बिल्ली का कबूतर या चूहे को झँझोड़ना।

झँझोरा—पुं० [देश०] कचनार का पेड़।

झँझोटी, झँझौटी†—स्त्री०=झिंझौटी।

झंड—स्त्री० [सं० जट] छोटे बालकों के जन्म-काल के सिर के बाल।

बच्चों के मुंडन से पहले के बाल जो प्रायः कटवाये न जाने के कारण बड़े बड़े हो जाते हैं।

मुहा०—झंड उतारना=बच्चे का मुंडन-संस्कार करना।

†पुं०=जंड (करील का वृक्ष)।

झंडा†—पुं०[सं० ध्वज+दंड; पा० धजोदंड; प्रा० झपअंड; गु०,सि० झंडो; मरा० झेंडा] [स्त्री० अल्पा० झंडी] १. डंडे के सिर पर लगा हुआ कपड़ा का वह आयताकार या तिकोना टुकड़ा जिस पर कुछ विशिष्ट चिह्न बने होते हैं तथा जो किसी जाति, दल, राष्ट्र, संप्रदाय या समाज का प्रतीक चिह्न होता तथा जो भवनों, मंदिरों आदि पर फहराया जाता है। ध्वजा। पताका।

मुहा०—(किसी बात का) झंडा खड़ा करना=इस रूप में कोई नया काम आरंभ करना कि और लोग भी आकर उसमें सम्मिलित हों तथा उसके अनुयायी बनें। जैसे—विद्रोह का झंडा खड़ा करना। **(किसी स्थान पर) झंडा गाड़ना**=किसी स्थान पर अधिकार कर लेने के उपरांत वहाँ अपना झंडा लगाना, जो विजय का सूचक होता है। **झंडा फहराना**=झंडा गाड़ना। **(किसी के) झंडे तले आना**=किसी की अधीनता स्वीकार करना तथा उसी के पक्ष में सम्मिलित होना या उसका अनुयायी बनना।

पद—झंडे तले की दोस्ती=बहुत ही साधारण या आकस्मिक रूप से होनेवाली जान-पहचान।

२. उक्त झंडे का प्रतीक कागज का वह छोटा टुकड़ा जिस पर किसी राष्ट्र, संप्रदाय आदि के चिह्न बने होते हैं। (फ्लेग)

पद—झंडा दिवस (दे०)।

पुं०[सं० जयंत]ज्वार, बाजरे आदि पौधे के ऊपर का नर-फूल। जीरा।

झंडा दिवस—पुं० [हिं० झंडा+सं० दिवस] किसी विशिष्ट आंदोलन या लोकोपकारी कार्य से लोगों को परिचित कराने और उनकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए मनाया जानेवाला कोई विशिष्ट दिन जिसमें स्वयंसेवक लोग प्रतीक रूप में छोटे-छोटे झंडे बेचते और बड़े-बड़े झंडे घरों, दूकानों आदि पर लगाते हैं। (फ्लेग डे)

झंडी—स्त्री० [हिं० झंडा का स्त्री० अल्पा० रूप] कपड़े, कागज आदि का बना हुआ बहुत छोटा झंडा जिसका व्यवहार प्रायः दीवारों पर सजावट आदि के लिए लगाने और सेना आदि में संकेत करने के लिए होता है।

पद—लाल झंडी=किसी प्रकार के अनिष्ट या संकट की सूचना देनेवाला पदार्थ या संकेत।

झंडीदार—वि० [हिं० झंडी+फा० दार] जिसमें झंडी लगी हो।

झँडूलना†—पुं० दे० 'झँडूला'।

झँडूला—वि० [हिं० झंड+ऊला (प्रत्य०)] १. (बालक) जिसके सिर पर जन्म-काल के बाल अभी तक वर्त्तमान हों। जिसका अभी तक मुंडन-संस्कार न हुआ हो। २. (सिर के बाल) जो गर्भ-काल से ही चले आ रहे हों और अभी तक मूँडे न गये हों। ३. घनी डालियों और पत्तियों-वाला। सघन (वृक्ष)।

पुं० १. वह बालक जिसके सिर पर अभी तक गर्भ के बाल हों। २.गर्भ-समय से चले आये हुए बाल जो अभी तक मूँडे न गये हों। ३. घनी डालियों और पत्तियोंवाला वृक्ष।

†४.=झुंड।

झंडोत्तोलन—पुं० [हिं० झंडा+उत्तोलन] झंडा फहराने की क्रिया या रस्म। ध्वजोत्तलन। (असिद्ध रूप)

झंप—पुं०[सं०झम्√पत्(गिरना)+ड] १. उछलने की क्रिया या भाव। उछाल। २. कूदने की क्रिया या भाव। कुदान।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।

३. बहुत शीघ्रता से होनेवाली उन्नति या वृद्धि।

पुं०=झाँप।

झँपकना—अ० १.=झपकना। २. =झँपना।

झँपकी†—स्त्री०=झपकी।

झँपताल† —पुं०=झपताल।

झँपना—अ० [सं० झंप] १. उछलना। २. कूदना। ३. झपटना। ४. एकदम से आ पहुँचना। टूट पड़ना। ५. झेंपना। ६. पलकों का गिरना या बंद होना। ७. आड़ में होना। छिपना। ८. सो जाना। उदा०—वृक्ष मानों व्यर्थ बाट निहार। झँप उठे हैं झीम, झुक, थक, हार।—मैथिलीशरण।

स० १. आड़ में करना। छिपाना। २. ढकना। ३. बन्द करना। मूंदना।

झँपरिया† —स्त्री०=झँपरी।

झँपरी—स्त्री० [हिं० झापना=ढकना] वह कपड़ा जो डोली या पालकी के ऊपर डाला जाता है। ओहार।

झंपा† —पुं० १. दे० 'झब्बा'। २. दे० 'बाल' (अनाज की)।

झंपाक—पुं० [सं० झंप√अक् (जाना)+अण्] [स्त्री० झंपाकी] बंदर।

झँपान—पुं० [सं० झंप] पहाड़ों पर सवारी के काम आनेवाली एक प्रकार की खटोली।

झंपारु—पुं० [सं० झंप-आ√रा (लेना)+डु] बंदर।

झंपित—भू० कृ० [सं० झंप] १. ढका हुआ। २. छिपा हुआ।

झँपिया—स्त्री० [हिं० झाँपा] छोटा झाँपा।

झंपी (पिन्)—पुं० [सं० झंप+इनि] बंदर।

झँपोला—पुं० [हिं० झाँपा+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] १. छोटा झाँपा। २. पिटारा।

झंब—पुं० [देश०] गुच्छा (प्रायः फलों का गुच्छा)।

झँवकार† —वि० [हिं० झाँवला=काला] झाँवें के रंग का। कुछ-कुछ काला।

झँवन—स्त्री० [हिं० झँवाना] १. झँवाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी चीज का वह अंश जो झँवाने या किंचित् जल जाने के कारण कम हो जाय। जैसे—मशीन में पीसे जाने पर गेहूँ या आटे की झँवन।

झँवराना—अ० [हिं० झाँवर] १. झाँवला या कुछ काला पड़ना। २. कुम्हलाना। मुरझाना।

स० १. झाँवला या कुछ-कुछ काला करना। २. कुम्हलाने या मुरझाने में प्रवृत्त करना।

झँवा†—पुं०=झाँवाँ।

झँवाना—अ० [हिं० झाँवाँ] १. ताप आदि के प्रभाव से झाँवें के रंग का हो जाना। कुछ काला या झाँवला हो जाना। जैसे—धूप से शरीर का

रंग झँवाना। .२. अग्नि का जलते-जलते बुझने को होना। आँच धीमी या मन्द पड़ना। ३. जलने, सूखने आदि के कारण किसी चीज का कुछ अंश कम होना या घट जाना। ४. कुम्हलाना। मुरझाना। ५. निर्जीव या बेदम होना। उदा०—मुरछित अवनी परी झँवाई।—तुलसी। ६. शरीर के किसी अंग का झाँवें से रगड़ कर साफ किया जाना। ७. झेंपना।

स० १. ताप आदि के प्रभाव से किसी चीज को झाँवे के रंग का अर्थात् झाँवला या कुछ-कुछ काला कर देना। २. ऐसा करना कि आग धीमी या मंद पड़कर बुझने लगे। ३. जला या सुखाकर किसी चीज का कुछ अंश कम करना या घटाना। ४. कुम्हलाने या मुरझाने में प्रवृत्त करना। ५. शरीर का कोई अंश साफ करने के लिए उसे झाँवे से रगड़ना। ६. निर्जीव या बेदम करना। ७. लज्जित या शर्रमिदा करना।

झँवावना†—स० [हिं० झँवाना] झँवाने का काम किसी दूसरे से कराना।

झँवैला†—वि० [हिं० झाँवाँ+ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० झँवली] १. जो जलकर झाँवें के रंग का हो गया हो। झँवाया हुआ। २. झाँवें के रंग का। कुछ-कुछ काला। ३. झावे से रगड़ा हुआ।

झँसना—अ० [अनु०] १. शरीर के किसी अंग में तेल या और कोई चीज कोई प्रभाव उत्पन्न करने के लिए बार-बार रगड़ते हुए मलना। जैसे—सिर में तेल झँसना, पैरों के तलुओं में कद्दू या फूल की कटोरी झँसना। २. झाँसा देकर किसी से कुछ धन वसूल करना। तिकड़म से किसी की कोई चीज ले लेना।

झइ*—स्त्री०=झाईं।

झउवा—पुं०=झावा।

झक—स्त्री० [अनु०] १. मन की वह वृत्ति जिसके फलस्वरूप मनुष्य बिना समझे-बूझे और प्रायः हठवश किसी काम में प्रवृत्त होता है। इसकी गिनती कुछ हलके पागलपन में होती है।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—लगना।—सवार होना।

२. दुर्गंध या बू। जैसे—सड़ी तरकारी की झक।

वि० [हिं० झकाझक] १. स्वच्छ तथा उज्ज्वल। २. चमकदार। चमकीला।

†स्त्री०=झख।

झककेतु*—पुं०=झषकेतु।

झकझक—स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की तकरार या हुज्जत। किचकिच।

झकझका—वि० [हिं० झकझक] १. जो बिलकुल साफ या स्वच्छ हो। उज्ज्वल। जैसे—झकझका कुरता। २. जिसमें ओप या चमक हो। चमकीला।

झकझकाहट—स्त्री० [अनु०] ओप। चमक।

झकझोर—पुं० [अनु०] १. झकझोरने की क्रिया या भाव। २. हवा का झकोरा या झोंका। ३. झटका।

वि० १. झकझोरा हुआ। २. जिसमें किसी तरह का झोंका या गति की तीव्रता हो। तीव्र। तेज।

झकझोरना—स० [अनु०] १. किसी चीज या जीव को उठा या पकड़कर इस प्रकार झटकना या जोर-जोर से हिलाना कि वह टूट-फूट जाय या बेदम हो जाय। २. पेड़ या उसकी शाखा को इस प्रकार हिलाना कि उसके पत्ते या फल नीचे गिर पड़ें।

झकझोरा—पुं० [अनु०] झटका। धक्का।

झकझोलना—स०=झकझोरना।

झकड़†—पुं०=झक्कड़।

झकड़ी†—स्त्री० [देश०] वह बरतन जिसमें दूध दूहा जाता है।

झकना अ० हिं० बकना का अनु०।

अ० [हिं० झख+ना (प्रत्य०)] झख मारना।

झकर†—पुं०=झक्कड़।

झका*—वि०=झक।

झकाझक—वि० [अनु०] १. स्वच्छ तथा उज्ज्वल। २. चमकीला।

झकुरना—अ० [?] उदास होना। (बुंदेल)

झकुराना†—अ० [हिं० झकोरा] झकोरा लेना। झूमना।

स० झकोरा देना। हिलाना।

झकूटा—पुं० [?] छोटा पेड़। क्षुप।

झकोर*—स्त्री० [अनु०] झकोरने की क्रिया या भाव।

स्त्री०=झकोरा (हवा का झोंका)।

झकोरना—अ० [अनु०] हवा का झोंका मारना।

†स०=झकझोरना।

झकोरा—पुं० [अनु०] हवा का झोंका।

झकोलना—स० [?] १. डालना। २. मिलाना।

झकोला†—पुं०=झकोरा।

झकोला—पुं० [हिं० झोंका] १. हवा का झोंका। २. तेज हवा के कारण उठनेवाली पानी की लहर।

वि० जिसमें कुछ भी कसाव या तनाव न हो। ढीला-ढाला। उदा०—चारपाई बिलकुल झकोला थी।—वृन्दावनलाल।

झक्क—वि०, स्त्री० =झक।

झक्कड़—पुं० [अनु०] तेज आँधी। अंधड़।

क्रि० प्र०—उठना।—चलना।

पुं० दे० 'झक्की'।

झक्का—पुं० [अनु०] १. हवा का तेज झोंका। २. तेज आँधी। झक्कड़। (लश०)

झक्की—वि० [हिं० झक] जिसे किसी बात की झक या सनक हो। नासमझी से और केवल हठ-वश किसी काम में लगा रहनेवाला। सनकी।

झक्खड़†—पुं०=झक्कड़।

झक्खना*—अ०=झीखना।

झख—स्त्री० [हिं० झीखना] १. झीखने की क्रिया या भाव।

मुहा०—झख मारना=(क) ऐसा तुच्छ और व्यर्थ का काम करना जिसमें विफलता निश्चित हो, अथवा जिसका कुछ भी परिणाम या फल न हो सकता हो। (उपेक्षा और तिरस्कार-सूचक)। जैसे—आप भी वहाँ झख मारने गये थे। (ख) बहुत ही विवशता की दशा में झीखना। जैसे—तुम्हें भी झखमार कर वहाँ जाना पड़ेगा।

विशेष—कुछ लोग 'झख' को सं० झष से व्युत्पन्न मानकर उक्त मुहावरे का अर्थ करते हैं मछली मारने की तरह का व्यर्थ-सा काम बहुत-सा समय लगाकर और चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करते हुए पूरा करना। पर वह व्युत्पत्ति ठीक नहीं जान पड़ती।

†स्त्री० [सं० झष] मछली। उदा०—झखौ बिलखि दुरि जात जल लखि जलजात लजात।—बिहारी।

झखकेतु—पुं०=झषकेतु।

झखना*—अ०=झीखना।

झखनिकेत—पुं०=झषनिकेत।

झखराज†—पुं०=झषराज।

झखलगन*—पुं०=झखलग्न।

झखिया†—स्त्री०=झखी।

झखी*—स्त्री०[सं० झष] मछली।

झगड़ना—अ० [हिं० झकझक से अनु०] अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए दो व्यक्तियों या पक्षों का आवेश या क्रोध में आकर आपस में कुछ कहा-सुनी करना। झगड़ा करना।

झगड़ा—पुं०[हिं० झगड़ना का भाव०]१. दो पक्षों में होनेवाली ऐसी कहा-सुनी या विवाद जिसमें प्रत्येक अपना पक्ष ठीक बतलाता हुआ दूसरे को अन्यायी या दोषी ठहराता है। २. वह चीज या बात जिसके कारण लोग आपस में लड़ते हों। ३. मुकदमा।

झगड़ालू—वि०[हिं० झगड़ा+आलू (प्रत्य०)]जो प्रायः दूसरों से झगड़ा किया करता हो।

झगड़ी*—वि०=झगड़ालू।

†स्त्री०=झगड़ा।

झगर—पुं०[देश०]एक प्रकार की चिड़िया।

झगरना†—अ०=झगड़ना।

झगरा†—पुं०=झगड़ा।

झगराऊ†—वि०=झगड़ालू।

झगरी†—स्त्री०=झगड़ी।

झगला —पुं०=झगा।

झगा—पुं०[?]१. छोटे बच्चों के पहनने का एक प्रकार का ढीला-ढाला छोटा कुरता। उदा०—सीस पगा न झगा तन पै, प्रभु जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।—नरोत्तम। २. ढीला कुरता।

झगुलिया—स्त्री०=झगुली।

झगुली*—स्त्री०[हिं० झगा का अल्पा०] झगा।

झज्झर—स्त्री०=झंझर।

झज्झी—स्त्री०=झंझी।

झझक—स्त्री० [हिं० झझकना] १. झझकने की क्रिया या भाव। २. क्रोध में आकर पागलों की तरह या झुंझलाते हुए बिगड़ खड़े होने की अवस्था या भाव। ३. कभी-कभी होनेवाला पागल का सा हलका दौरा। जैसे—जब कभी इन्हें झझक आ जाती है तब ये इसी तरह बकते हैं। ४. किसी पदार्थ में से रह-रहकर निकलनेवाली हल्की दुर्गन्ध। जैसे—इस नल में से कभी-कभी कुछ झझक आती है।

क्रि० प्र०—आना।—निकलना।

†स्त्री०=झिझक।

झझकन*†—स्त्री०=झझक।

झझकना—अ० [अनु०] १. झझक में आकर अर्थात् झक या सनक में आकर बिगड़ खड़े होना। २. दे० 'झिझिकना'।

झझकाना—स०[हिं०झझकना का प्रे०]किसी को झझकने में प्रवृत करना। चौंकाना।

स० [हिं० झिझकरना] झिझकने में प्रवृत्त करना।

झझकार—स्त्री०[झझकारना] १. झझकारने की क्रिया या भाव। २. दे०'झझक'।

झझकारना—स० [अनु०] १. डाँटना। डपटना। २. तुच्छ समझकर दुरदुराना।

झझिया—स्त्री०=झिझिया।

झट—अ०य० [सं० झटिति]१. बहुत तेजी या फुरती से। २. चटपट। तत्काल। तुरन्त।

झटकना—स०[सं० झट्ट]१. इस प्रकार किसी चीज को एकाएक जोर से हिलाना कि वह गिर पड़े। झटका देना। २. धोखा देकर अथवा जबरदस्ती किसी की कोई चीज ले लेना।

अ० चिंता, रोग आदि के कारण बहुत अधिक अशक्त या दुर्बल होना।

झटका—पुं०[हिं० झटकना]१. झटकने की क्रिया या भाव। २. ऐसा आघात या हलकी ठोकर जिससे गति सहसा रुक जाय और इधर-उधर हटना या गिरना पड़े। हलका धक्का। झोंका। (जर्क) ३. आपत्ति, रोग, शोक आदि का ऐसा आघात जो बहुत कुछ निकम्मा कर दे। ४. मांस खाने के लिए पशु-पक्षी आदि काटने का वह प्रकार (जबह या हलालवाले प्रकार से भिन्न) जिसमें हथियार के एक ही आघात से गरदन काट देते हैं।

झटकारना—स०[हिं० झटकना] जोर से झटका देना। जैसे—कपड़ा झट-कारना।

झटपट—अव्य० [हिं० झट+अनु० पट] अति शीघ्र । तुरंत ही । फौरन।

झटा—स्त्री०[सं०√झट्+अच्—टाप्]भू-आँवला।

झटाका—क्रि० वि०=झड़ाका।

झटास†—स्त्री०[हिं० झड़ी] बौछार।

झटि—स्त्री०[सं०√झट्+इन्] झाड़। झाड़ी।

झटिका—स्त्री०[?] तेज हवा।

झटिति†—क्रि० वि० [सं०√झट्+क्विप्,√इ+क्तिन्] १. झट से। चटपट। तुरंत। २. बिना कुछ सोचे-समझे और तुरन्त।

झट्ट†—क्रि० वि० =झट।

झड़—स्त्री०=झड़ी।

झड़कना—स०=झिड़कना।

झड़क्का†—पुं०=झड़ाका।

झड़झड़ाना—स०[अनु०]१. झड़ झड़ शब्द उत्पन्न करना। २. झड़ झड़ शब्द करते हुए कुछ गिराना, फेंकना या हटाना। झटकारना। ३. झँझोड़ना। ४. झिड़कना।

अ०१. झड़झड़ शब्द होना। २. झड़ झड़ शब्द करते हुए गिरना।

झड़न—स्त्री०[हिं० झड़ना]१. झड़ने की क्रिया या भाव। २. झड़ने या झाड़ने से निकलनेवाली चीज। ३. दलाली, मुनाफे, सूद आदि के रूप में मिलनेवाली रकम जो किये हुए परिश्रम या लगाई हुई पूँजी में से झडी या निकली हुई होती है।

झड़ना—अ०[सं० क्षरण]१. किसी चीज में से उसके छोटे-छोटे अंगों या अंशों का टूट-टूटकर गिरना। जैसे—पेड़ में से पत्तियाँ झड़ना। २. ऊपर पड़े हुए बहुत छोटे छोटे कणों का अलग होकर गिरना। जैसे—

कपड़े या शरीर पर की धूल झड़ना। ३. वीर्य का स्खलित होना। (बाजारू)

अ०[हिं० झाड़ना का अ०]झाड़ा या साफ किया जाना।

झड़प—स्त्री०[अनु०]१. झड़पने की क्रिया या भाव। २. दो जीवों या प्राणियों में कुछ समय के लिए होनेवाली ऐसी छोटी लड़ाई जिसमें वे एक दूसरे पर रह-रहकर झपटते हों। ३. दो व्यक्तियों में उक्त प्रकार से होने वाली कहा-सुनी। आवेश और क्रोध के वश में होकर की जाने वाली अप्रिय, आक्षेपपूर्ण और कटु बात-चीत।

झड़पना—अ०[अनु०]आवेश और क्रोधपूर्वक किसी पर आक्रमण करना। टूट पड़ना।

स० उक्त प्रकार से आक्रमण करके किसी से कुछ छीन लेना। जैसे—लड़के के हाथ से बंदर ने अमरूद झड़प लिया।

झड़पा-झड़पी—स्त्री०[अनु०] १. झड़प। २. गुत्थमगुत्था। हाथापाई।

झड़पाना—स०[हिं० झड़पना]१. दो जीवों विशेषतः पक्षियों को झड़पने या झपटने में प्रवृत्त करना। २. दूसरों को लड़ने-झगड़ने में प्रवृत्त करना।

झड़बेरी—स्त्री०[हिं० झाड़+बेर]१. जंगली बेर का वृक्ष। २. उक्त वृक्ष का फल।

पद—झड़-बेरी का काँटा=ऐसा व्यक्ति जो सदा उलझने या लड़ने-भिड़ने को तैयार रहता हो और जिससे जल्दी पीछा छुड़ाना कठिन हो।

झड़बैरी†—स्त्री०=झड़-बेरी।

झड़वाई—स्त्री०[हिं० झड़वाना] झाड़ने या झड़वाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

झड़वाना—स० [हिं० झाड़ना का प्रे० रूप] १ झाड़ने का काम दूसरे से कराना। २. नजर या भूत-प्रेत आदि लगने पर ओझे से झाड़-फूंक कराना।

झड़ाई—स्त्री०[हिं० झाड़ना] झाड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=झड़वाई।

स्त्री०[हिं० झड़ना] झड़ने की क्रिया या भाव।

झड़ाक—पुं०, क्रि० वि०=झड़ाका।

झड़ाका—क्रि० वि०[अनु०] बहुत जल्दी से। चटपट। झट से।

†पुं०=झड़प।

झड़ाझड़—क्रि० वि०[अनु०] १. बराबर एक के बाद एक। निरंतर। लगातार। २. बहुत जल्दी जल्दी या तेजी से।

झड़ी—स्त्री०[हिं० झड़ना]१. झड़ने की क्रिया या भाव। २. कुछ समय तक लगातार झड़ते रहने की क्रिया या भाव। २. ऐसी वर्षा जो लगातार अधिक समय तक होती रहे। जैसे—तीन दिन से पानी की झड़ी लगी है। ४. लगातार एक पर एक होती रहनेवाली क्रिया या बात। जैसे—गालियों की झड़ी, प्रश्नों की झड़ी।

क्रि० प्र०—बँधना।—लगना।

५. ताले के अंदर का वह खटका जो चाबी के आघात से हटता-बढ़ता रहता है और जिसके कारण ताला खुलता और बंद होता है।

झड़ूला—वि०=झंडूला।

झण-झण—पुं० [सं० अव्यक्त शब्द]झनझन शब्द।

झड़त्कार—पुं०[सं० झणत् (=अव्यक्त शब्द)-कार ब०स०] झनकार।

झन—स्त्री० [अनु०]धातु के किसी पटल या पात्र पर आघात होने से उसमें से निकलनेवाला शब्द।

झनक—स्त्री०[अनु०]झन झन शब्द।

झनकना—अ०[अनु०]१. धातु के किसी पटल या पात्र पर आघात होने पर उसमें से झन झन शब्द निकलना। २. कुछ क्रुद्ध और बहुत दुःखी होकर बड़बड़ाते रहना। बकना-झकना। ३ झीखना। ४. आवेश तथा क्रोध में आकर हाथ-पाँव पटकना।

झनक-मनक—स्त्री०[अनु]१. पहने हुए गहनों की एक दूसरे से टकराने पर होनेवाली झंकार। २. घुँघरुओं के बजने का शब्द।

झनकवात—स्त्री०[अनु० झनक+सं० वात] घोड़ों को होनेवाला एक वात रोग जिसमें उनकी टांगों में एक प्रकार की कँपकपी होती है।

झनकार—स्त्री०=झंकार।

झनकारना†—अ०,स०=झंकारना।

झनझन—स्त्री०[अनु०] झनझन शब्द। झंकार।

झनझना—पुं०[देश०]तमाखू में लगनेवाला एक कीड़ा जो उसकी नसों में छेद कर देता है। चनचना।

वि० झनझन शब्द करनेवाला।

झनझनाना—अ०[अनु०]१. झनझन शब्द होना। २. दे० 'झनझना'।

स० झनझन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झनझनाहट—स्त्री०[अनु०]१. झनझन शब्द होने की अवस्था, क्रिया या भाव। झंकार। २. दे० 'झुनझुनी'।

झनझोरा—पुं०[देश०] एक प्रकर का पेड़।

झननन—पुं०[अनु०] घुँघरू या पायल के बजने से होनेवाला शब्द।

झननाना—अ०[हिं० झननन] झन झन शब्द होना।

स० झन झन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झनवाँ—पुं०[देश०]एक प्रकार का धान।

झनस—पुं०[?] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा हुआ होता था।

झनाझन—स्त्री०[अनु०] झनझन शब्द। झंकार।

क्रि० वि० झन झन शब्द करते हुए।

झनिया†—वि०=झीना।

झन्नाना†—अ०=झनझनाना।

झन्नाहट—स्त्री०=झनझनाहट।

झप—स्त्री०[सं० झंप या हिं० झपना] एकाएक किसी चीज के ऊँचाई पर से गिर पड़ने की अवस्था या भाव।

मुहा०—(गुड्डी या पतंग का) झप खाना=उड़ती हुई गुड्डी या पतंग का एकाएक पेंदे के बल नीचे गिर पड़ना।

क्रि० वि० जल्दी से। झटपट।

झपक—स्त्री०[हिं० झपकना]१. झपकने अर्थात् बार-बार पलकें खोलने और बंद करने की क्रिया या भाव। २. एक बार पलक गिरने में लगनेवाला समय। ३. झपकी।

झपकना—अ०[सं० झंप]१. पलकें गिरना। २. पलकों का उठना और गिरना या खुलना और बंद होना। ३. झपकी लेना। ऊँघना।

स०=झपकाना।

†अ०=झेंपना।

†अ०=झपटना।

झपका—पुं०[अनु०]हवा का झोंका। (लश०)

झपकाना—स०[अनु०]१. पलकें गिराना। २. पलकें उठा तथा गिराकर आँखें खोलना और बंद करना।

झपकी—स्त्री०[हिं० झपकना]१. झपकने या झपकाने की क्रिया या भाव। २. वह नींद जो पलकें गिरने से आरम्भ होती है और कुछ ही क्षणों बाद पलकें खुल जाने के कारण टूट जाती हो। हलकी नींद।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।—लेना।

स्त्री०[अनु०]१. वह कपड़ा जिससे अनाज ओसाते हैं। २. धोखा।

झपकौहाँ*—वि०[हिं० झपना] [स्त्री० झपकौहीं] बार बार या रह-रहकर झपकनेवाला या झपकता हुआ। (आलस्य, तंद्रा, निद्रा आदि के आगमन का सूचक) जैसे—झपकौहें नयन, झपकौहीं पलकें।

झपट—स्त्री०[सं० झंप]१. झपटने अर्थात् तेजी से आगे बढ़कर किसी पर आक्रमण करने की क्रिया या भाव। २. दे० 'झड़प'।

झपटना—अ०[सं० झंप=कूदना] १. वेगपूर्वक किसी की ओर बढ़ना। २. किसी को पकड़ने अथवा किसी के हाथ से कोई चीज छीन लेने के लिए उस पर वेगपूर्वक आक्रमण करना। जैसे—बिल्ली का चूहे पर झपटना। चील का मांस पर झपटना।

स० झपटकर या तेजी से बढ़कर कोई चीज ले लेना।

झपटान†—स्त्री०=झपट।

झपटाना—स०[हिं० झपटना का प्रे० रूप] किसी को झपटने में प्रवृत्त करना। जैसे—कुत्ते को बिल्ली पर झपटाना।

झपट्ट†—स्त्री०=झपट।

झपट्टा—पुं०[हिं० झपट] १. झपटने की क्रिया या भाव। झपट। २. किसी से कुछ सहसा छीन लेने के लिए उस पर किया जानेवाला आक्रमण।

क्रि० प्र०—मारना।

पद—**चील झपट्टा** =चील की तरह किसी पर झपटकर कोई चीज छीन लेने की क्रिया या भाव।

झपड़ियाना—अ०[हिं० झापड़+इयाना (प्रत्य०)]लगातार कई झापड़ या थप्पड़ लगाना।

झपताल—पुं०[देश०] संगीत में पांच मात्राओं का एक ताल।

झपना—अ०[हिं० झपकना]१. पलक गिरना। २. किसी वस्तु का ऊपर से नीचे की ओर एकाएक आना। जैसे—गुड्डी या पतंग का झपना।

†अ०=झेंपना।

पुं०[स्त्री० अल्पा० झपनी]किसी पात्र का ढकना।

झपनी†—स्त्री०[हिं० झाँपना=ढकना] १. वह जिससे कोई चीज ढकी जाय। ढकना। ढक्कन। २. छोटी ढक्कनदार पिटारी।

झपलैया†—स्त्री०[हिं० झँपोला] छोटी टोकरी।

झपवाना—स०[हिं० झपाना का प्रे० रूप] किसी को झपाने अर्थात् पलकें मूंदने में प्रवृत्त करना।

झपस—स्त्री०[हिं० झपसना] १. झपसने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. मार्ग में बाधक होनेवाले पेड़ की झुकी हुई डाल। (कहार)

झपसट†—स्त्री० [अनु०] छल। धोखे-बाजी। जैसे—तुम तो अपना काम झपसट में ही निकाल लेते हो।

झपसना—अ०[हिं० झँपना+ढँकना] पेड़-पौधों, लताओं आदि का खूब अच्छी तरह चारों ओर फैलना।

झपाका—पुं०[हिं० झप] जल्दी। शीघ्रता।

क्रि० वि० बहुत जल्दी या तेजी से। चटपट। तुरन्त।

झपाट†—क्रि० वि०=झटपट।

झपाटा†—पुं०=झपट्टा।

झपाना—स०[हिं० झपना]१. पलकें गिराना या मूंदना। झपकाना। २. झुकाना।

अ०=झेंपना (लज्जित होना)।

स० ऐसा काम करना जिससे कोई झेंपे। लज्जित करना।

झपाव—पुं०[देश०] घास काटने का एक उपकरण।

झपित—वि०[हिं० झपना]१. झपा या मुंदा हुआ। २. जो झप या झपक रहा हो। बार बार बन्द होता हुआ। ३. झेंपा हुआ। लज्जित।

झपिया—स्त्री०[देश०]१. गले में पहनने का पुरानी चाल का हँसुली के आकार का एक गहना जिसके बीच में कोई नग जड़ा होता है। २. पिटारी।

झपेट†—स्त्री०[हिं० झपेटना] १. झपेटने की क्रिया या भाव। २. झपेटे जाने की अवस्था या भाव।

झपेटना—स०[हिं० झपटना] १. सहसा आक्रमण करना। झपटना। २. झपटकर किसी से कुछ छीन अथवा किसी को पकड़ या दबोच लेना।

झपेटा—पुं० [हिं० झपेटना] १. झपेटे जाने या किसी की झपट में आने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—भूत-प्रेत के झपेटे में आना या पड़ना। २. हवा का झोंका। झकोरा। ३. दे० 'झपट'। ४. दे० 'झिड़की'।

झपोला—पुं०[स्त्री० झपोली]=झँपोला (छोटी टोकरी)।

झप्पड़†—पुं०=झापड़।

झप्पर†—पुं० झापड़।

झप्पान†—पुं०=झँपान (एक प्रकार की पालकी या सवारी)।

झप्पानी—पुं०[हिं० झप्पान] झप्पान अर्थात् पालकी उठानेवाला आदमी।

झब-झबी —स्त्री० [देश०] कान में पहनने का एक प्रकार का तिकोना गहना।

झबड़ा†—वि०=झबरा।

झबघरी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास जो गेहूँ की फसल के लिए हानिकारक होती है।

झबरा—वि०[अनु०] [स्त्री० झबरी] (पशु) जिसके अंगों या शरीर में बड़े-बड़े बाल हों। जैसे—झबरा कुत्ता, झबरी बिल्ली।

†पुं०=भालू। (कलंदर)

झबरीला†—वि०[स्त्री० झबरीली]=झबरा।

झबरैरा—वि० =झबरीला (झबरा)।

झबा†—पुं०=झब्बा।

झबार†—पुं० दे० 'झगड़ा'।

झबिया—स्त्री०[हिं० झब्बा का स्त्री० अल्पा०] १. छोटा झब्बा। छोटा फुंदना। २. बहुत छोटी कटोरियों के आकार के वे छोटे-छोटे टुकड़े जो शोभा के लिए जोशन, बाजूबंद आदि गहनों में लगाए जाते हैं।

स्त्री०[हिं० झाबा का स्त्री० अल्पा०] छोटा झाबा।

झबुआ†—वि०=झबरा।

झबूंकना—अ०१.=चमकना। २. =चौंकना।

झब्बा—पुं०[अनु०] १. धागे के छोटे-छोटे टुकड़ों को बीच में एक साथ बाँधकर बनाया जानेवाला गुच्छा या फुँदना जो कपड़ों, गहनों आदि में शोभा के लिए लगाया जाता है। २. गुच्छा।

झमक—स्त्री०[हिं० झमकना]१. झमकने की क्रिया या भाव। २. झम झम के रूप में होनेवाला शब्द। ३. तीव्र उजाला या प्रकाश। ४. ठसक। नखरा। (क्व०)

झमकड़ा†—पुं०=झमक।

झमकना—अ० [अनु० झमझम]१. रह-रहकर परन्तु तेजी से चमकना। २. झमझम शब्द होना। ३. झमझम शब्द करते हुए चलना-फिरना या उछलना-कूदना। ४. अकड़, ऐंठ या ठसक दिखाना। ५. अधिक मात्रा या तीव्र रूप में उपस्थित होना। छाना। जैसे—आँखों में नींद झमकना।

स०=झमकाना।

झमकाना—स०[हिं० झमकना का स० रूप]१. ऐसा काम करना जिससे कोई चीज खूब झमके या अपनी चमक-दमक दिखलावे। जैसे—कपड़े, गहने या हथियार झमकाना। २. झमझम शब्द उत्पन्न करना।

झमकारा—वि० [हिं० झमझम] १. झमकनेवाला। २. (बादल) जो बरसने को हो।

झमकीला†—वि०[हिं० झमकना+इला(प्रत्य०)] १. चमकीला। २. अकड़ या ऐंठ दिखानेवाला।

झमक्का†—पुं०=झमाका।

झमझम—स्त्री०[अनु०]१. घुंघरुओं आदि के बजने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २. छोटी छोटी बूंदों की वर्षा का शब्द। ३. चमक-दमक।

वि०१. झमझम शब्द करता हुआ। जैसे—झमझम पानी बरसना। २. खूब चमकता या दमकता हुआ।

क्रि० वि० १. झमझम शब्द करते हुए । जैसे—पानी का झमझम बरसना। २. दे० 'झमाझम'।

झमझमाना—अ०[अनु०]१. झमझम शब्द होना। २. खूब चमक-दमक से युक्त होना। चमचमाना।

स०१. झमझम शब्द उत्पन्न करना। २. चमक-दमक से युक्त करना। ३. चमक-दमक दिखलाना। जैसे—कपड़े या गहने झमझमाना।

झमझमाहट—स्त्री०[अनु०]१. झमझम शब्द होने की अवस्था या भाव। २. खूब चमकते हुए होने की अवस्था या भाव।

झमना—अ०[अनु०]१. पलकों आदि का गिरना। झपकना। २. किसी के आगे नम्रतापूर्वक झुकना। ३. चारों ओर से आकर एकत्र होना। ४. दे० 'झमाना'।

झमाका—पुं०[अनु०]१. किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला झमझम शब्द। जैसे—गहनों या घुंघरुओं का झमाका। २. ठसक। नखरा। (क्व०)

क्रि० वि०१. झमझम शब्द करते हुए। २. झट से। चटपट। तुरन्त।

झमाझम—क्रि० वि०[अनु०]१. झमझम शब्द करते हुए। जैसे—पानी झमाझम बरस रहा था। २. चमचमाते हुए। कांति या दमक के साथ। जैसे—रेशमी कपड़ों का झमाझम चमकना।

वि०१. झमाझम शब्द करता हुआ। २. खूब चमकता-दमकता हुआ।

झमाट†—पुं०=झुरमुट।

झमाना—अ०[अनु०]१. पलकों का गिरना या झपकना। २ कुंठित या लज्जित होना। (पूरब)

स० कुछ या कोई चीज झमने में प्रवृत्त करना।

अ०[हिं० झाम=झुंड] इकट्ठा होना। एकत्र होना।

अ०, स०=झँवाना।

झमूरा—वि०[?](पशु) जिसके सारे शरीर पर घने और लंबे बाल हों। झबरा।

पुं०१. घने और घुंघराले बालोंवाला छोटा सुन्दर बच्चा। २. नटों और बाजीगरों के साथ रहनेवाला लड़का जो प्रायः अनेक प्रकार के करतब या खेल दिखलाता है। ३. भालू। (कलंदर और मदारी)

झमेला—पुं०[अनु० झाँव झाँव]१. कोई ऐसी पेचीली बात जिसमें दोनों पक्ष आपस में झांव-झांव करते हों। २. ऐसी झंझट या बखेड़ा जिसका निपटारा सहज में न हो सकता हो। ३. ऐसा काम जिसके संपादन में अनेक प्रकार की विपत्तियां खड़ी होती हों। बखेड़ा। ४. अव्यवस्थित या विश्रृंखल जन-समूह। बहुत से लोगों की भीड़-भाड़। (क्व०)

झमेलिया—पुं०[हिं० झमेला+इया (प्रत्य०)]१. वह जो जान-बूझकर और प्रायः झमेला खड़ा किया करता हो। २. झगड़ा करनेवाला व्यक्ति।

झर—स्त्री०[सं०√झृ (झरना)+अच्]१. पानी का झरना। निर्झर। सोता। २. समूह। ३. तेजी। वेग। ३. पानी की (या और किसी चीज की) लगातार होनेवाली झड़ी। ४. आग की लपट। ५. दे० 'झड़ी'।

स्त्री० [हिं० झाल का पुराना रूप]१. ज्वाला। जलना। २. गरमी। ताप। उदा०—नैंक न झुरसी बिरह-झर नेह लता कुम्हलाति।—बिहारी।

झरक†—स्त्री०=झलक।

झरकना—अ०१.=झिड़कना। २. झनखना।

झरझर—स्त्री०[अनु०] तेज हवा के चलने से अथवा उसके किसी चीज के टकराने से होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० झरझर शब्द करते हुए।

झरझराना—अ०[हिं० झरझर]१. झरझर शब्द होना। २. झरझर शब्द करते हुए किसी चीज का चलना, जलना या बहना।

स० इस प्रकार किसी चीज को गिराना कि वह झरझर शब्द करे।

झरन—स्त्री०[हिं० झरना]१. झरने की क्रिया या भाव। २. झर कर निकलनेवाली या निकली हुई चीज। ३. दे० 'झड़न'।

झरना—पुं०[सं० झर][स्त्री० अल्पा० झरनी]१. पहाड़ों आदि में ऊँचे स्थान से नीचे गिरनेवाला जल-प्रवाह। २. लगातार बहनेवाली पानी की कोई प्राकृतिक छोटी जल-धारा। चश्मा। सोता। ३. कपड़ों की बुनाई का वह प्रकार जिसमें थोड़ी-थोड़ी दूर पर दूसरे रंग के सूत इस प्रकार लगाये जाते हैं जो देखने में धाराओं के समान जान पड़ते हैं। जैसे—झरने की साड़ी।

वि० झरनेवाला।

अ० ऊँचे स्थान से पानी या और किसी चीज का लगातार नीचे गिरना।

पुं०[सं० क्षरण][स्त्री० अल्पा० झरनी]१. अनाज छानने की एक प्रकार

की बड़ी छलनी। २. लंबी डंडी की एक झँझरीदार चिपटी कलछी। पौना।

†अ०=झड़ना।

झरनी—स्त्री०हिं० 'झरना' का स्त्री० अल्पा० रूप।

झरप†—स्त्री० [अनु०] १.=झड़प। २.=झकोरा। ३.=तेजी। वेग। ४.=चाँड़। टेक। ५. चिक। चिलमन। ६. झरोखा।

झरपना—अ०, स०=झड़पना।

अ० [अनु०] बौछार मारना।

झरपेटा†—पुं०=झपेटा।

झरफ *—स्त्री०=झरिफ (चिलमन)।

झरबेर†—पुं०=झड़-बेरी।

झरबैरी†—स्त्री०=झड़-बेरी।

झरवाना†—स०=झड़वाना।

झरसना*—अ०[अनु०]१. झुलसना। २. मुरझाना।

स०१. झुलसना। २. मुरझाने या सूखने में प्रवृत्त करना।

झरहरना†—अ०=झरझराना।

झरहरा†—वि०=झँझरा।

झरहराना† स०=झरझराना।

झर्रहिल—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

झरा—पुं०[देश०] एक प्रकार का धान।

झराझर—क्रि० वि०[अनु०] १. झरझर शब्द करते हुए। २. निरंतर। लगातार। ३. जल्दी-जल्दी या वेगपूर्वक।

झरापना†—अ०=झरपना (झड़पना)।

झराबोर—पुं०, वि०=झलाबोर।

झरार—वि० [हिं० झाल] झालदार। चरपरा।

झराहर—पुं०[सं० ज्वालाघर] सूर्य।

झरि—स्त्री०=झड़ी।

अव्य०[?] १. बिलकुल। २. कुल। सब।

पुं०=झार।

झरिफ*—पुं०[हिं० झरप] १. चिक। चिलमन। २. परदा।

झरी—स्त्री०[हिं० झरना]१. पानी का झरना। सोता। चश्मा। २ वह धन जो हाट या बाजार में बैठकर सौदा बेचनेवाले छोटे दूकानदारों से नित्य प्रति कर के रूप में उगाहा जाता है। ३. दो तख्तों, पत्थरों आदि के बीच में पड़नेवाला थोड़ा-सा अवकाश। दरज। ४. दे० 'झड़ी'।

झरुआ—पुं०[देश०] एक प्रकार की घास।

झरोखा—पुं०[अनु० झरझर=वायु बहने का शब्द+ओख=गावाक्ष] १. दीवार में बनी हुई जालीदार छोटी खिड़की। २. खिड़की।

झर्झर—पुं०[सं० झर्झ√ रा (दान)+क] १. एक प्रकार का पुराना बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा हुआ होता था। २. झाँझ। ३. पैर में पहनने की झाँझन। ४. कलियुग। ५. एक प्राचीन नद। ६. रसोई में काम आनेवाला झरना नामक उपकरण। पौना।

झर्झरक—पुं०[सं० झर्झर+कन्] कलियुग।

झर्झरा—स्त्री०[सं० झर्झर+टाप्] १. तारादेवी का एक नाम। २. रंडी। वेश्या।

झर्झरावती—स्त्री०[सं० झर्झरा+मतुप्, वत्व, ङीप्] १. गंगा। २. कटसरैया (क्षुप)।

झर्झरिका—स्त्री०[सं० झर्झरा+कन्, टाप्, इत्व] तारादेवी।

झर्झरी (रिन्)—पुं०[सं० झर्झर+इनि] शिव।

स्त्री०[सं० झर्झर+ङीष्] झाँझ नामक बाजा।

झर्झरीक—पुं०[सं० झर्झर+ईकन्] १. देश। २. देह। शरीर। ३. चित्र। तस्वीर।

झर्प†—स्त्री०=झड़प।

झर्रा—पुं०[देश०] १. एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २. बया नामक पक्षी।

झर्राटा—पुं०[अनु०] कपड़ा फटने अथवा फाड़े जाने पर होनेवाला शब्द।

†क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

झर्रैया—पुं० [देश०] बया (पक्षी)।

झल—पुं०[हिं० झार; सं० झल=ताप] १. स्वाद आदि की तीक्ष्णता। झाल। २. जलन। ताप। दाह। ३. काम-वासना। संभोग की प्रबल इच्छा। ४. किसी बात की प्रबल कामना या इच्छा। ५. क्रोध। गुस्सा। ६. झक। सनक। ७. उन्माद। पागलपन। ८. दल। ९. राशि। समूह।

झलक—स्त्री० [सं० झल्लिका=चमक] १. झलकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २. ऐसा क्षणिक दर्शन या प्रत्यक्षीकरण जिसमें किसी चीज के रूप-रंग, आकार-प्रकार आदि का पूरा-पूरा ज्ञान तो न हो, पर उसका कुछ आभास अवश्य मिल जाय। ३. ऐसा दृश्य जिससे किसी चीज का संक्षिप्त परिचय मात्र मिलता हो। ४. चित्रकला में, वह आभा या रंगत जो किसी समूचे चित्र में व्याप्त हो। ५. चमक। प्रभा।

झलकदार—वि०[हिं० झलक+फा० दार] जिसमें आभा या चमक हो। चमकीला।

झलकना—अ०[हिं० झलक+ना (प्रत्य०)] १. इस प्रकार किसी के सामने एकाएक कुछ ही क्षणों के लिए उपस्थित होना और तुरंत ही अंतर्धान या अदृश्य हो जाना कि उसके आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि का ठीक और पूरा भान न हो पाये। २. लाक्षणिक अर्थ में किसी बात आदि का आभास मात्र मिलना। जैसे—उसकी बात से झलकता था कि पुस्तक उसी ने चुराई है। ३. चमकना।

झलकनि†—स्त्री०=झलक।

झलका—पुं०[सं० ज्वल=जलना] छाला। फफोला। उदा०—झलका झलकत पायन ऐंसे।—तुलसी।

झलकाना—स०[हिं० झलकना का स० रूप] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज झलके या कुछ चमकती हुई थोड़ी देर के लिए सामने आये। २. चमकाना। ३. बात-चीत, व्यवहार आदि में कोई अभिप्राय या आशय बहुत ही अस्पष्ट या कुछ छिपे हुए रूप में लक्षित कराना। आभास देना। दरसाना।

झलकी—स्त्री०[हिं० झलक] १. आकाशवाणी रेडियो से प्रसारित होनेवाली एक प्रकार की बहुत छोटी नाटिका जिसके अंगों को परस्पर सम्बद्ध करने के लिए व्याख्यात्मक छोटी वार्ता भी होती है। इनमें दैनिक जीवन की सामान्य घटनाओं का उल्लेख होता है। (आधुनिक) २.=झलक।

झलझल—स्त्री०[सं० झलज्झलः] चमक-दमक, विशेषतः गहनों की चमक-दमक।

वि० खूब चमकता-दमकता हुआ।

क्रि० वि० १. चमक-दमक से। २. तीव्र आभा या प्रकाश से युक्त होकर। जैसे—गहनों का झलझल चमकना।

झलझलाना—अ०[अनु०] खूब चमकना।

स० खूब चमकाना।

झलझलाहट—स्त्री०[हिं० झल झल+आहट (प्रत्य०)] झलझलाने अर्थात् चमकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

झलना—स० [हिं० झलझल (हिलना) से अनु०] १. हवा करने के लिए पंखा या और कोई चीज बार-बार चलाना या हिलाना-डुलाना। २. धक्का देकर आगे बढ़ाना। ढकेलना।

अ० किसी चीज के अगले भाग का इधर-उधर हिलना-डोलना। (क्व०)

स०=झेलना। (देखें)

अ०[हिं० झल्ला=पागल ?] शेखी बघारना। डींग हाँकना।

अ०[हिं० झालना का अ०] धातु आदि की चीजों का झाला या टाँके से जोड़ा जाना।

झलमल—स्त्री०[सं० ज्वल=दीप्ति] १. अँधेरे के बीच में रह-रहकर होने वाला मध्यम या हल्का प्रकाश। २. अंधकार। अँधेरा। ३. चमक-दमक।

वि० १. जिसमें अंधकार के साथ कुछ-कुछ प्रकाश भी हो। २. चमकीला।

झलमला†—वि०=झिलमिला।

झलमलाना—अ०[हिं० झलमल] १. रह-रहकर चमकना। चमचमाना। २. (दीपक का) रह-रहकर कभी तीव्र और कभी मंद प्रकाश देना।

स० १. रह-रहकर चमकाना। २. ऐसी क्रिया करना जिससे कभी कुछ तीव्र और कभी कुछ मंद प्रकाश निकले।

झलरा† पुं०=झालर(पकवान)।

झलराना—स०[हिं० झालर] १. झालर के रूप में बनाना। झालर का रूप देना। २. झालर टाँकना या लगाना।

अ० झालर के रूप में या यों ही फैलकर छाना या छितराना।

झलरी—स्त्री०[सं० झल√रा+ड-ङीष्] १. हुडुक नाम का बाजा। २. झाँझ।

झलवाना—स०[हिं० झलना] झलने का काम दूसरे से कराना। जैसे—पंखा झलवाना।

स०[हिं० झालना] झालने का काम दूसरे से कराना।

झलहल—वि०[अनु० झलाझल] चमकदार।

पुं०=झलमल।

क्रि० वि०=झल झल।

झलहाया—वि०[हिं० झल] [स्त्री० [झलहाई] १. जिसे किसी प्रकार की झल या सनक हो। २. डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

झला—स्त्री०[सं०] आतप। धूप।

पुं०[हिं० झड़] १. हलकी वर्षा। २. ढेर। राशि। ३. झुंड। दल।

पुं०[हिं० झलना] पंखा जो झला जाता है।

स्त्री०=झालर।

झलाई—स्त्री० [हिं० झालना] कड़ी धातुओं को मुलायम धातुओं के टाँके से जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (सोल्डरिंग)

झलाऊ—वि०[हिं० झोल?] १. जिसमें झोल हो। झोलदार। २. ढीला-ढाला।

झलाझल—वि० [अनु०] [भाव० झलाझली] बहुत अधिक चमक-दमक वाला। चमकता हुआ।

क्रि० वि० चमकते हुए। प्रकाश के साथ।

पुं० एक प्रकार का झकीला कपड़ा।

झलाझली—स्त्री० [अनु०] झलझल या बहुत अधिक चमकीले होने की अवस्था या भाव।

वि०, क्रि० वि०=झलाझल।

स्त्री०[हिं० झलना]पंखे आदि का बराबर झला और झलवाया जाना।

झलाना—स०[हिं० झलना] झलने का काम दूसरे से कराना। झलवाना।

झलाबोर—पुं० [हिं० झलझल=चमक] १. जरी आदि के बने हुए दुपट्टों या साड़ियों का आँचल। २. कोई ऐसी चीज जिस पर कारचोबी या जरी का काम किया हुआ हो। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी। ४. चमक-दमक। ५. कँटीली झाड़ी।

वि० खूब चमक-दमकवाला।

झलामल†—स्त्री, वि०=झलमल।

झलारा—वि० [हिं० झाल] [स्त्री० झलारी] बहुत ही तीक्ष्ण स्वाद-वाला। झालदार।

झलाहा—वि०[हिं० झाल] [स्त्री० झलाही] १. बहुत तीक्ष्ण स्वाद-वाला। झालदार। २. ईर्ष्या या डाह करनेवाला। ३. बहुत ही उग्र या कठोर स्वभाववाला। उदा०—मैं अपने बनड़े से पानी भराऊँ, ननदी झलाही को क्या है मलोला।—स्त्रियों का गीत।

झलि—स्त्री०[सं०] एक तरह की सुपारी।

झल्ल—पुं०[सं०√झर्च्छ्+क्विप्√ला+क] १. वह जिसके वैदिक संस्कार न हुए हों। व्रात्य। २. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति। ३. भाँड़। विदूषक। ४. हुडुक नाम का बाजा। पटह। ५. आग की लपट। ज्वाला।

स्त्री०[हिं० झल्ला] झल्ले होने की अवस्था या भाव। पागलपन। सनक।

झल्ल-कंठ—पुं० [ब०स०] कबूतर।

झल्लक—पुं०[सं० झल्ल+कन्] १. काँसे का बना हुआ करताल। झाँझ। २. मँजीरा।

झल्लकी—स्त्री०[सं० झल्लक+ङीष्]=झल्लक।

झल्लना†—अ०[हिं० झल्ल] १. बावला या पागल होना। २. क्रुद्ध होना। ३. डींग मारना।

†स०=झलना।

झल्लरा—स्त्री०[√झर्च्छ्+अरन्, पृषो० सिद्धि] १. पुरानी चाल का चमड़े से मढ़ा हुआ एक बाजा। हुडुक। २. झाँझ। ३. पसीना। स्वेद। ४. घुँघराले बाल। ५. शुद्धता।

झल्लरी—स्त्री०[सं० झल्लर+ङीष्]=झल्लरा।

झल्ला—पुं०[देश०] [स्त्री० झल्ली] १. बहुत बड़ा टोकरा। झावा। २. वर्षा की ऐसी झड़ी जिसके साथ तेज हवा भी हो। झंझा। ३. तमाकू के पत्तों पर उभरनवाले चकत्ते या दाने।

वि०[हिं० झल्लाना] [स्त्री० झल्ली] कम बुद्धि होने के कारण पागलों जैसा आचरण करनेवाला। सिड़ी।

वि०[हिं० झाल] [स्त्री० झल्ली] बहुत ही तरल या पतला। जैसे–झल्ली दाल, तरकारी का झल्ला रसा।

झल्लाना—अ०[हिं० झल] १. क्रुद्ध होकर या खीझकर बहुत ही तीक्ष्ण स्वर में बोलना। २. बिगड़ते हुए बोलना।

स० किसी को खिजलाने या खीझने में प्रवृत्त करना।

झल्लिका—स्त्री०[सं० झल्ली√कै (प्रकाश करना)+क, पृषो० सिद्धि] १. शरीर पोंछने का कपड़ा। अँगोछा। २. शरीर को मलकर पोंछने पर निकलनेवाली मैल। ३. चमक। दीप्ति। ४. सूर्य की किरणों का तेज या प्रकाश।

झल्ली—स्त्री०[सं० झल्ल+ङीप्] एक प्रकार का चमड़े से मढ़ा हुआ छोटा बाजा।

वि० हिं० 'झल्ला' का स्त्री० रूप।

झल्लीवाला—पुं० [हिं० झल्ली] [स्त्री० झल्लीवाली] वह व्यक्ति जो टोकरे में बोझ रखकर ढोता हो।

झल्लीषक—पुं०[सं०] एक तरह का नृत्य।

झवर†—पुं०[हिं० झगड़ा] झगड़ा।

झवारि†—स्त्री०=झवर(झगड़ा)।

झष—पुं०[सं०√झष् (मारना)+अच्] १. मछली। २. मगर। ३. मकर राशि। ४. मीन राशि। ५. ताप। ६. बन।

†स्त्री०=झख।

झष-केतु(केतन)—पुं० [ब० स०] कामदेव। मदन।

झष-ध्वज—पुं०[ब० स०] कामदेव।

झषना†—अ० [हिं० झख] १. झख मारना। २. दे० 'झींखना'।

झष-निकेत—पुं०[ष० त०] वह स्थान जहाँ मछलियाँ रहती हों। जैसे—जलाशय, समुद्र आदि।

झष-राज—पुं०[ष० त०] मकर या मगर नामक जल-जन्तु।

झषांक—पुं०[झष-अंक, ब० स०] कामदेव। मदन।

झषा†—स्त्री०[सं०√झष्+अच्-टाप्] नागबला। गुलसकरी।

झषाशन—पुं०[सं० झष√अश् (भक्षण)+ल्यु–अन] सूँस (जल-जंतु)।

झषोदरी—स्त्री०[झष-उदर, ब० स०, ङीष्] व्यास की माता मत्स्यगंधा का एक नाम।

झसना†—सं०=झँसना।

झहँगी—वि०[फा० जंगी] १. जंग अर्थात् युद्ध-संबंधी। २. युद्ध में काम आनेवाला। ३. बहुत बड़ा। (राज०)

झहनना*—अ०[अनु०] १. झन झन शब्द होना। २. झल्लाना। ३. शरीर के रोएँ खड़े होना। रोमांच होना। ४. चकित या स्तब्ध होना। सन्नाटे में आना। सकपका जाना।

स०=झहनाना।

झहनाना—स०[हिं० झहनना का सकर्मक] १. झनझन शब्द उत्पन्न करना। २. किसी प्रकार किसी के शरीर में रोमांच उत्पन्न करना। ३. ऐसा काम करना जिससे कोई चकित हो जाय या सन्नाटे में आ जाय।

झहरना—अ० [अनु०] १. झर झर शब्द होना। जैसे—हवा से पत्तों का झहरना। २. हिलते-डुलते रहना। ३. सामने आना। उपस्थित होना। ४. शिथिल या ढीला होना। ५. दुःखी होना।

अ० १.=झल्लाना। २.=झरना।

झहराना—स० [हिं० झहरना] किसी को झहरने में प्रवृत्त करना।

अ०=झहरना।

झाँई—स्त्री० [सं० छाया] १. छाया। परछाई। उदा०—जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।—बिहारी। २. अंधकार। अँधेरा। ३. छल। धोखा।

मुहा०—झाँई देना या बताना=बातें बनाकर धोखा देना।

४. रक्त-विकार से मूँह पर पड़नेवाले काले धब्बे। ५. किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग। ६. आभा। झलक।

झाँईं-झप्पा†—पुं०=झाँसा।

झाँई-माँई—स्त्री०[अनु०] बहुत छोटे बच्चों का एक खेल जिसमें वे कुछ गाते हुए घूमते और झूमते हैं।

मुहा०—(कोई चीज) झाँईं माँई हो जाना=गायब, गुम या लुप्त हो जाना।

झाँक—स्त्री०[हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। २. झलक।

स्त्री०[?] आग। अग्नि। उदा०—नई गोरी नये बालमा नई होरी की झाँक।—बुंदेल० लो० गी०।

†पुं०=चीतल (जंगली हिरन)।

झाँकना—अ०[सं० अध्यक्ष, प्रा० अज्झक्ख] १. नीचे की ओर की चीज देखने के लिए गरदन झुकाकर तथा आँखें नीची करके उसकी ओर ताकना। देखने के लिए झुकना। जैसे—खिड़की में से या छत पर से झाँकना। २. आड़ में से दाहिने या बाएँ कुछ झुककर या किसी संधि में से टोह लेने के लिए देखना। ३. कोई काम करने के लिए उसकी ओर प्रवृत्त होना। उदा०—यही ठीक है धनुष छोड़कर कोड़ा झाँको।—मैथिलीशरण।

झाँकनी—स्त्री०=झाँकी।

झाँकर†—पुं०=झंखाड़।

झाँका—पुं० [हिं० झाँकना] झरोखा, जिसमें से झाँककर देखते हैं।

पुं०=खाँचा(रहठे आदि का दौरा)।

झाँकी—स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। २. किसी पूज्य या प्रिय वस्तु या व्यक्ति का सुखद अवलोकन। दर्शन। ३. सहसा कुछ देर के लिए एक बार दिखाई पड़ने या सामने आने की क्रिया या भाव। (ग्लांस) ४. कोई मनोहर या सुंदर दृश्य। ५. किसी बात का किया जानेवाला संक्षिप्त परिचय या परिज्ञान। जैसे—कश्मीर और बुंदेलखंड की झाँकी। ६. छोटी खिड़की।

झाँकृत—पुं०[सं० झंकृत+अण्] १. पैरों में पहनने का झाँझन नामक आभूषण। २. झनझन करने या झरने का शब्द।

झाँख—पुं०[देश०] जंगली हिरनों की एक जाति।

झाँखना*—अ०=झींखना।

झाँखर—पुं०[हिं० झंखाड़] १. अरहर की वे खूँटियाँ जो फसल काटने के बाद खेत में रह जाती हैं। २. झाड़-झंखाड़।

वि० १. जिसके सारे तल में बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। २. ढीली बुनावटवाला।

झाँगला—वि०[देश०] ढीला-ढाला (कपड़ा)।
पुं० एक प्रकार का ढीला-ढाला कुरता। झगा।

झाँगा†—पुं०[?] चितकबरे रंग का एक छोटा कीड़ा जो गोभी, सरसों आदि के पत्तों में लगकर उन्हें खाता या उनका रस चूसता है।
पुं०=झगा (बच्चों का कुरता)।

झाँजन—स्त्री०=झाँझन।

झाँझ—स्त्री०[सं० झर्झर] [स्त्री० अल्पा० झाँझड़ी] १. काँसे, पीतल आदि के मोटे पत्तर की बनी हुई एक प्रकार की कम उभारदार कटोरियों का जोड़ा जो पूजन आदि के समय एक दूसरी पर आघात करके बजाई जाती हैं। छैना।
क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।
२. क्रोध। गुस्सा। ३. किसी दूषित मनोविकार का आवेग। ४. पाजीपन। शरारत।
क्रि० प्र०—उतरना।—चढ़ना।—निकलना।
५. ऐसा जलाशय जिसका जल सूख गया हो।
†स्त्री०=झाँझन।

झाँझड़ी*—स्त्री० १.=छोटी झाँझी। २.=झाँझन (पैर में पहनने का गहना)।

झाँझन*—स्त्री०[अनु०] चाँदी आदि का बना हुआ नक्काशीदार कड़ा जिसे स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं और जिससे झनझन शब्द निकलता है। पैंजनी। पायल।

झाँझर†—स्त्री०[अनु०] १. झाँझन। पैंजनी नाम का गहना जो पैर में पहना जाता है। २. आटा आदि छानने की छाननी।
वि०[सं० जर्जर] १. झँझरा। २. जर्जर। ३. बहुत ही खिन्न और दुःखी। कष्ट या दुःख से क्षीण या जर्जर। (पूरब) उदा०—एक हम झाँझरि हरि बिनु हो, पीतम मेल त्यागी।—स्त्रियों का गीत।

झाँझरी—स्त्री०[देश०] १. झाँझ नाम का बाजा। झाल। २. झाँझन या पैंजनी नाम का पैर में पहनने का गहना।

झाँझा—पुं०[हिं० झंझारा] १. फसल के पत्ते आदि खा जानेवाले कुछ छोटे कीड़ों का एक वर्ग। २. वह बड़ा पौना जिससे कड़ाही में सेव (नमकीन पकवान) छाना या गिराया जाता है। ३. घी में भूनकर चीनी के साथ मिलाई हुई भाँग की पत्तियाँ जो यों ही फाँक ली जाती हैं।
पुं० १. झंझट या बखेड़े की बात। २. तकरार। हुज्जत।
पुं०=बड़ी झाँझ।

झाँझिया—पुं० [हिं० झाँझ+इया (प्रत्य०)] वह जो झाँझ बजाता हो।

झाँझी—स्त्री० [हिं० झँझरी] १. एक उत्सव जिसमें बालिकाएँ रात के समय झँझरीदार हाँड़ी में दीपक रखकर गीत गाती हुई घर-घर जाती और वहाँ से पैसे या अनाज पाती हैं। २. उक्त अवसर या उत्सव पर गाये जानेवाले गीत।

झाँट—स्त्री०[सं० जट, हिं० झंड=बाल] १. पुरुष या स्त्री की जननेंद्रिय पर के बाल। उपस्थ पर के बाल। शष्प। पशम। २. बहुत ही तुच्छ और निकम्मी चीज।
पद—झाँट की झँटुल्ली=बहुत ही तुच्छ या हीन।

झाँटा†—पुं०[देश०] झंझट।
पुं०=झाड़ू। (पूरब)

झाँटि†—स्त्री०=झाँट।

झाँप—स्त्री०[हिं० झाँपना] १. वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज झाँपी या ढकी जाती हो। ऊपरी आवरण। जैसे—पिटारी की झाँप। २. वास्तु कला में, खिड़की, दरवाजे आदि के ऊपर दीवार से बाहर निकली हुई वह रचना जो धूप, वर्षा के जल आदि को कमरे के अन्दर आने में रुकावट उत्पन्न करती है। (शेड) ३. परदा। ४. टट्टी। ५. मस्तूल का झुकाव। ६. कान का एक आभूषण। ७. घोड़े को गले में पहनाई जानेवाली एक प्रकार की हुमेल या हैकल।
स्त्री०=झपकी।
†स्त्री०=उछल-कूद।

झाँपना—स०[सं० उत्थापन, हिं० ढाँपना] १. ऊपर से आवरण डाल कर ढाँकना। ढकना। २. मलना। रगड़ना। उदा०—फिरि फिरि झाँपति है कहा रुचिर चरन के रंग।—मतिराम। ३. पकड़कर दबाना या दबोचना।
अ०=झेंपना।

झाँपा—पुं०[हिं० झाँपना] [स्त्री० झाँपी] १. वह बड़ी टोकरी या दौरी जिससे दही, दूध आदि ढाँके जाते हैं। २. मूँज की बनी हुई एक प्रकार की बड़ी पिटारी।
†स्त्री०=झपकी।

झाँपो—स्त्री०[देश] १. खंजन पक्षी। २. दुश्चरित्रा या पुंश्चली स्त्री। (गाली)

झाँवना—स०[हिं० झाँवा+ना (प्रत्य०)] झाँवें से रगड़कर (हाथ-पैर आदि) धोना।
स०, अ०=झँवाना।

झाँवर—पुं०[?] वह नीची भूमि जिसमें वर्षा का पानी अधिक मात्रा में रुकने के कारण मोटा अन्न अधिकता से उपजता हो। २. धान के लिए उपयुक्त नीची भूमि।
वि०[हिं० झाँवला] [स्त्री० झाँवली] १. झाँवें के रंग का। काला। २. मलिन। मैला। ३. कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। ४. धीमा। मंद। ५. सुस्त।

झाँवली—स्त्री०[हिं० झाँई] १. बहुत ही थोड़े समय के लिए या एकाध क्षण कुछ दिखाई पड़ने की अवस्था या भाव। २. झलक। ३. आँख के कोने से देखने की अवस्था या भाव। कनखी।
मुहा०—झाँवली दना=आँख हिलाकर हलका-सा संकेत करना।

झाँवाँ—पुं०[सं० झामक] १. भट्ठे में पकी हुई वह ईंट जो अधिक ताप लगने के कारण काली पड़ गई हो और कुछ टेढ़ी भी हो गई हो। २. उक्त जली हुई ईंट का टुकड़ा जिसमें प्रायः छोटे-छोटे छेद होते हैं तथा जिसका प्रयोग चीजों पर से दाग छुड़ाने और विशेषतः पाँवों पर जमी हुई मैल रगड़कर छुड़ाने के लिए होता है।

झाँसना—स० [हिं० झाँसा] झाँसा या धोखा देना। २. झाँसा या धोखा देकर किसी से कुछ ले लेना। झँसना।

झाँसा—पुं०[सं० अध्यास=मिथ्या ज्ञान; प्रा० अज्झास] १. किसी से कुछ झँसने या वसूल करने के लिए उसे समझाई जानेवाली उलटी-

सीधी बात। २. अपने काम निकालने के लिए कही जानेवाली कोई छलपूर्ण बात।

क्रि० प्र०—देना।—बताना।—में आना।

पद—झाँसा—पट्टी। (देखें)

झाँसा-पट्टी—स्त्री०[हिं०] किसी को छल-कपट की बातों में फुसलाकर दिया जानेवाला धोखा।

झाँसिया—पुं०[हिं० झाँसा+इया (प्रत्य०)] वह जो लोगों को झाँसा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता हो।

झाँसी—पुं०[देश०] तमाखू, दाल आदि की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का गुबरैला कीड़ा।

झाँसू—पुं०[हिं० झाँसा] झाँसिया। (दे०)

झा—पुं०[सं० उपाध्याय, प्रा० उज्झाओं, हिं० ओझा] १. मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाँईं—स्त्री०=झाँईं।

झाऊ—पुं०[सं० झावुक] मोर पंखी की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियाँ औषध के काम आती हैं।

झाग—पुं०[हिं० गाज] १. किसी तरल पदार्थ को फेंटने आदि पर उसमें से निकलनेवाले तथा एक में मिले हुए असंख्य बुलबुलों का समूह। फेन। जैसे—तेल या दूध की झाग। २. रोग आदि के कारण मुँह में से निकलनेवाली वह थूक जिसमें बहुत अधिक बुलबुले हों।

क्रि० प्र०—उठना।—छूटना।—छोड़ना।—निकासना।—फेंकना।

झागड़†—पुं०=झगड़ा।

झागना†—अ०[हिं० झाग] झाग या फेन निकलना।

स० झाग या फेन उत्पन्न करना।

झाझ†—स्त्री०=झाँझ।

†पुं०=जहाज।

झाझन—स्त्री०=झाँझन।

पुं०=झाऊ (पेड़)।

झाझा†—वि० [सं० दग्ध?] [स्त्री० झाझी] १. जला हुआ। दग्ध। २. गहरा-गाढ़ा या तेज। जैसे—झाझा नशा।

झाट—पुं०[सं० √झट् (शीघ्रता)+घञ्] १. कुंज। २. झाड़ी। ३. घाव को धोकर साफ करना।

झाटक-पट—पुं०[हिं० झटपट?] एक प्रकार की ताजीम जो राजपूताने के राज-दरबारों में अधिक प्रतिष्ठित सरदारों को मिला करती थी।

झाटल—पुं०[सं० झाट√ला (लेना)+क] एक प्रकार का पेड़ जिसके बड़े-बड़े पत्ते होते हैं और फल घंटियों के समान लटकते हैं। आक की तरह इसकी शाखाओं से भी दूध निकलता है।

झाटा†—स्त्री०[सं०√झट्+णिच्+अच्—टाप्] १. जूही। २. भुइँ आँवला।

झाटास्त्रक—पुं०[सं० झाट-अस्त्र, ब०स०] तरबूज।

झाटिका—स्त्री०[सं० झाट+कन्—टाप्, इत्व] भुइँ आँवला।

झाटी—स्त्री०=झाटिका।

झाड़—पुं०[सं० झाट] [स्त्री० अल्पा० झाड़ी] ऐसे छोटे पेड़ों या पौधों का वर्ग जिनकी पतली-पतली शाखाएँ आपस में उलझी हुई और जमीन से थोड़ी ही ऊँचाई पर छितरी या फैली हुई रहती हैं।

पद—झाड़ का काँटा=ऐसा झगड़ालू या हुज्जती आदमी जिससे पीछा छुड़ाना कठिन हो। **झाड़-झंखाड़**। (देखें स्वतंत्र शब्द)

२. उक्त झाड़ की तरह का एक प्रकार का अनेक शाखाओंवाला दीये, मोमबत्तियाँ आदि जलाने का शीशे का बहुत बड़ा आधान जो कमरे की छत में शोभा के लिए लटकाया जाता है। ३. उक्त आकार या रूप की एक प्रकार की आतिशबाजी। ४. उक्त आकार या रूप का छीपियों का एक प्रकार का छापा। ५. एक प्रकार की समुद्री घास। जरस। जार। ६. एक ही तरह की बहुत-सी छोटी-बड़ी चीज़ों का बड़ा गुच्छा या लच्छा।

स्त्री०[हिं० झाड़ना] १. झाड़ने की क्रिया या भाव। २. झाड़ने पर निकलने वाली धूल आदि। झाड़न। ३. मंत्र आदि पढ़कर किसी की प्रेत-बाधा, रोग आदि दूर करने का काम।

पद—झाड़-फूंक। (देखें)

४. क्रोधपूर्वक डाँटकर कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—देना।—पड़ना।—बताना।—सुनाना।

५. कुश्ती में विपक्षी के किसी अंग को दिया जानेवाला झटका।

झाड़खंड—पुं०=झारखंड।

झाड़-झंखाड़—पुं०[हिं० झाड़+झंखाड़] १. काँटेदार झाड़ियों का समूह। २. व्यर्थ के पेड़-पौधों का समूह। निकम्मी, रद्दी और व्यर्थ की चीजों, विशेषतः काठ-कबाड़ का लगा हुआ ढेर।

झाड़दार—वि०[हिं० झाड़+फा० दार] १. (पौधा या वृक्ष) जिसमें बहुत-सी घनी डालियाँ लगती हों। घना। सघन। २. काँटेदार। कटीला। ३. जिस पर झाड़ों अर्थात् पेड़-पौधों की आकृतियाँ बनी हों।

पुं० १. एक प्रकार का कसीदा जिसमें पौधों और बेल-बूटों की आकृतियाँ कढ़ी होती हैं। २. उक्त प्रकार के बेल-बूटोंवाला कालीन या गलीचा।

झाड़न—स्त्री०[हिं० झाड़ना] १. झाड़ने पर निकलनेवाली धूल अथवा रद्दी चीजें या उनके टुकड़े। २. वह कपड़ा जिससे अलमारियों, कुरसियों, चौकियों दरवाजों आदि पर पड़ी हुई धूल आदि झाड़ी और पोंछी जाती है।

झाड़ना—स०[सं० झर्च=आघात करना] १. कोई चीज उठाकर उसे इस प्रकार झटका देना कि उस पर पड़ी या लगी हुई फालतू और रद्दी चीज़ें दूर जा गिरें। जैसे—चाँदनी या दरी झाड़ना। २. झाड़ू, झाड़न आदि की सहायता से किसी चीज के ऊपर पड़ी हुई धूल आदि साफ करना। जैसे—कमरे का फरश झाड़ना। ३. ऐसा आघात करना कि कहीं लगी या सटी हुई चीज या चीजें कटकर या टूटकर अलग हो जायँ या नीचे गिर पड़ें। जैसे—पेड़ में से आम या इमली झाड़ना। ४. डरा धमका कर या और किसी युक्ति से कुछ धन वसूल करना या रकम ऐंठना। झटकना। जैसे—जरा-सी बात में पुलिस ने दो सौ रुपए झाड़ लिये। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के शस्त्र इस प्रकार चारों ओर घुमाते हुए चलाना कि कोई पास आने का साहस न करे। जैसे—तलवार, पटा या लाठी झाड़ना। ६. जोर का आघात या प्रहार करना। जैसे—थप्पड़ या मुक्का झाड़ना। (क्व०) ७. पक्षियों का कुछ विशिष्ट ऋतुओं में, प्रकृत रूप से अपने पुराने पंख या पर गिराना जिसमें उनके स्थान पर फिर से नये पंख या पर निकलें।

जैसे—यह पक्षी ग्रीष्मऋतु में अपने पुराने पंख झाड़ता है। ८. कंघी फेर कर सिर के बाल साफ करना। ९. संभोग या समागम करके वीर्य-पात करना। (बाजारू) १०. तंत्र-मंत्र आदि का ऐसा प्रयोग करना कि किसी का कोई रोग अथवा उस (व्यक्ति) पर चढ़ा हुआ प्रेत या भूत उतर जाय। जैसे—ओझा लोग देहातियों को भूत-प्रेत झाड़ने के नाम पर खूब ठगते हैं। ११. किसी की अकड़, ऐंठ या शेखी दूर करनेवाली कड़ी-कड़ी बातें सुनाना। फटकारना। जैसे—आज मैंने उन्हें ऐसा झाड़ा कि वे ठंढे हो गये। उदा०—ऐसे वचन कहूँगी इनतें, चतुराई इनकी मैं झारति।—सूर। १२. अपनी योग्यता दिखाकर धाक जमाने के लिए किसी भाषा या विषय में बहुत सी उलटी-सीधी बातें कह जाना। जैसे—देहातियों के सामने अँगरेजी या कानून झाड़ना, मूर्खों के सामने वेदांत झाड़ना।

झाड़-फानूस—पुं० [हिं० झाड़+फा० फ़ानूस] शीशे के झाड़, हाँड़ियाँ आदि जो छत पर टाँगी जाती हैं तथा जिनमें दीये, मोमवत्तियाँ आदि जलाई जाती हैं।

झाड़-फूंक—स्त्री० [हिं० झाड़ना+फूँकना] मंत्र-बल के द्वारा किसी का रोग या प्रेत-बाधा दूर करने की क्रिया या भाव।

झाड़ बुहार—स्त्री० [हिं० झाड़ना+बुहारना] कूड़ा-करकट, धूल आदि झाड़ने की क्रिया या भाव।

झाड़ा†—पुं० [हिं० झाड़ना] १. भूत-प्रेत की बाधा, रोग आदि दूर करने के लिए की जानेवाली झाड़-फूंक या मंत्रोपचार। २. किसी के पहने हुए कपड़े आदि झाड़कर ली जानेवाली तलाशी। ३. पाखाना फिरने या मल त्याग करने की क्रिया।

क्रि० प्र०—फिरना (हगना)।

४. मल-त्याग करने की कोठरी। पाखाना। शौचालय। ५. गुह। मल। ६. दे० 'झाला' (सितार का)।

झाड़ी—स्त्री० [हिं० झाड़] १. हिं० झाड़ का स्त्री० अल्पा० रूप। छोटा झाड़। २. बहुत से छोटे-छोटे झाड़ों या पेड़-पौधों का झुरमुट।

स्त्री० [हिं० झाड़ना] सूअर के बालों की बनी हुई कूची। बलौंछी।

झाड़ीदार—वि० [हिं० झाड़ी+फा० दार] १. आकार, रूप आदि के विचार से झाड़ी की तरह का। छोटे झाड़ का-सा। २. काँटेदार। कँटीला। ३. (स्थान) जहाँ पर बहुत सी झाड़ियाँ हों। ४. दे० 'झाड़-दार'।

झाड़ू—पुं० [हिं० झाड़ना] १. लंबी सींकों आदि का वह मुट्ठा जिससे फर्श पर पड़ा हुआ कूड़ा-करकट, धूल आदि साफ करते हैं।

क्रि० प्र०—**देना**।—लगाना।

मुहा०—झाड़ू देना=(क) झाड़ू की सहायता से जमीन या फर्श पर का कूड़ा-करकट साफ करना। (ख) इस प्रकार सब कुछ नष्ट करना कि कुछ भी बाकी न रह जाय। **झाड़ू फिरना**=ऐसा अपव्यय या नाश होना कि कुछ भी बाकी न बच रहे। **झाड़ू फेरना**=पूरी तरह नाश करके कुछ भी बाकी न रहने देना। पूरा सफाया करना। **(किसी को) झाड़ू मारना**=बहुत ही उपेक्षा तथा तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। (स्त्रियाँ) जैसे—झाड़ू मारो ऐसे धोबी (या नौकर) को।

२. दुमदार सितारा। पुच्छलतारा। धूम-केतु।

झाड़ूदुमा—पुं० [हिं० झाड़+फा० दुम] हाथी, जिसकी दुम के बाल झाड़ू के अगले भाग की तरह छितरे या फैले हुए हों। ऐसा हाथी ऐबी माना जाता है।

झाड़बरदार—पुं० [हिं० झाड़+फा० बरदार] [भाव० झाड़ बरदारी] १. वह सेवक जो घर में झाड़ लगाता हो। २. गलियों में और सड़कों पर झाड़ू देनेवाला मेहतर।

झाड़वाला—पुं० [हिं० झाड़+वाला (प्रत्य०)] झाड़ू देने या लगानेवाला व्यक्ति। झाड़बरदार।

झाण—पुं० [सं० ध्यान] हठ-योग में, एक प्रकार की साधना जिसमें पंच महाभूतों का ध्यान करके उन्हें ऊपर की ओर प्रवृत्त किया जाता था, और इसके लिए शरीर के अन्दर के पाँच चक्रों का भी ध्यान किया जाता था। (बौद्ध)

झापड़—पुं० [?] थप्पड़। तमाचा।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

झाबड़-झल्ला—वि० [हिं०] बहुत अधिक ढीला-ढाला।

झाबर—पुं० [?] दलदली भूमि।

†पुं०=झाबा।

†वि०=झबरा।

झाबा—पुं० [हिं० झाँपना=ढाँकना] [स्त्री० अल्पा० झाबी] १. रहठे का बना हुआ बड़ा टोकरा या दौरा। खाँचा। २. घी, तेल आदि रखने का चमड़े का वह कुप्पा जिसमें टोंटी भी लगी रहती है। ३. चमड़े का एक प्रकार का बड़ा थाल। सफरा। (पश्चिम) ४. शीशे का बड़ा झाड़ जो रोशनी के लिए छत में लटकाया जाता है।

†पुं०=झब्बा।

झाम*—पुं० [देश०] १. गुच्छा। २. समूह। ३. झब्बा। तुर्रा। ४. मिट्टी खोदने की एक प्रकार की कुदाल। ५. एक प्रकार का बड़ा यंत्र जो नदियों आदि के तल की मिट्टी खोदने के काम आता है। ६. डाँट-फटकार। ७. घुड़की। ८. कपट। छल। धोखा।

झामक—पुं० [सं० झम् (खाना)+ण्वुल्—अक] जली हुई ईंट। झाँवाँ।

झामर—पुं० [सं० झाम√रा (देना)+क] १. टेकुआ रगड़ने की सान। सिल्ली। २. पैंजनी की तरह का पैर में पहनने का एक गहना।

झामर-झूमर—पुं० [अनु०] ऐसी चीज या बात जिसमें ऊपरी आडंबर, झंझटें या बखेड़े तो बहुत से हों परन्तु जिसमें तत्त्व या सार कुछ भी न हो। उदा०—दुनिया झामर-झूमर उलझी सत्तमान के बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा।—कबीर।

झामरा—वि० [हिं० झाँवला?] १. झाँवें के रंग का। झाँवला। २. मलिन। उदा०—सामरि हे झामरि तोर देह।—विद्यापति।

झामा—वि०=झाँवला।

पुं०=झाँवाँ।

झामी†—वि० [हिं० झाम=धोखा] धोखा देनेवाला। धोखेबाज।

स्त्री० [अनु०] १. झन् झन् शब्द। झनकार। २. सुनसान जगह में तेज हवा चलने पर होनेवाला शब्द जो प्रायः डरावना होता है।

झार†—वि० [सं० सर्व, प्रा० सारो, हिं० सारा] १. आदि से अन्त तक का सब। कुल। पूरा। समस्त। सारा। २. जिसमें कुछ भी मिलावट न हो। खालिस।

पुं० १. झुंड। दल। २. समूह।

अव्यं० १. केवल। निपट। निरा। २. एक दम से। एक सिरे से।

स्त्री० [हिं० झाल] १. स्वाद में चरपरे या तीखे होने की अवस्था या भाव। झाल। २. आग की लपट। ज्वाला। ३. जलन। ताप। ४. ईर्ष्या के कारण होनेवाला मनस्ताप। डाह।

पुं० [हिं० झरना] रसोई का झरना या पौना नामक उपकरण।

पुं० [?] एक प्रकार का पेड़।

झारखंड—पुं० [हिं० झार सं०+ खंड] १. उजाड़ जगह। २. जंगल। ३. बिहार राज्य के एक छोटे भू-भाग का नाम। ४. एक पर्वत जो वैद्यनाथ धाम से जगन्नाथ पुरी तक विस्तृत है।

झारन—स्त्री०=झाड़न।

झारना—स०=झाड़ना।

झारा—पुं० [हिं० झार] बहुत पतली घुली हुई भाँग।

पुं० [हिं० झारना] १. अनाज फटकने का सूप। २. अनाज छानने का झरना। ३. पटा, बनेठी, लाठी आदि चलाने की कला या विद्या।

†पुं०=झाड़ा।

झारि†—स्त्री०=झार।

झारी—स्त्री० [हिं० झरना] १. लंबी गरदनवाली एक प्रकार की टोंटीदार लुटिया जिससे जल बँधी हुई धार के रूप में निकलता है। २. पानी में अमचूर, जीरा, नमक आदि मिलाकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का स्वादिष्ठ पेय।

†स्त्री०=झाड़ी।

*स्त्री० [हिं० झार] समष्टि। समूह। उदा०—गई जहाँ सुर नर मुनि झारी।—तुलसी।

*क्रि० वि० एक दम से। एक सिरे से।

झारू—पुं०=झाड़।

झार्झर—पुं० [सं० झर्झर+अण्] हुडुक या ढोल बजानेवाला व्यक्ति।

झाल—स्त्री० [सं० झालि:=आम का पना या पन्ना] १. गंध, स्वाद आदि की तीव्रता। जैसे—मिर्च, राई आदि की झाल। २. स्वाद का चरपरापन या तीक्ष्णता। जैसे—तरकारी या दाल की झाल, आम या इमली के पन्ने की झाल।

स्त्री० [हिं० झालना] १. झालने (अर्थात् धातु की चीजों को टाँका लगाकर जोड़ने) की क्रिया या भाव। २. धातु की चीजों का वह अंश जिसमें उक्त प्रकार का टाँका लगा हो।

स्त्री० [सं० ज्वाल] १. जलन। ताप। दाह। २. लपट। लौ। ३. उत्कट या प्रवल काम-वासना। ४. मन की तरंग। मौज। (क्व०)

पुं० [सं० झल्लक] काँसे आदि की वनी हुई बड़ी झाँझ।

स्त्री० [हिं० झड़ी] १. (वर्षा की) झड़ी। २. बादल के कारण होनेवाला अँधेरा।

झालड़—स्त्री०=झालर।

झालना—स० [?] [भाव० झलाई] १. धातु की बनी हुई चीजों के भिन्न-भिन्न अंगों को टाँका लगाकर उन्हें आपस में जोड़ना। २. किसी पात्र का मुँह धातु का टाँका लगाकर चारों ओर से अच्छी तरह बंद करना। जैसे—गंगा जल से भरी हुई लुटिया झालना। ३. पेय पदार्थों की बोतलें आदि बरफ या शोरे में रखकर खूब ठंढी करना।

†स० १. =झेलना। (सहना)। २. =झलना। (ग्रहण या धारण करना)।

झालर—स्त्री० [सं० झल्लरी] १. किसी विस्तार में उसके एक या कई सिरों पर शोभा या सजावट के लिए टाँका, बनाया या लगाया जानेवाला लहरियेदार किनारा या हाशिया। जैसे—तकिये, पंखे या परदे में लगी हुई झालर; सायबान में लगाई जानेवाली झालर। २. वास्तु-रचना में पत्थर, लकड़ी आदि को गढ़ या तराशकर प्रस्तुत की जानेवाली उक्त प्रकार की बनावट। जैसे—दरवाजे के पल्ले या मेहराब में की झालर। ३. उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी लटकती हुई चीज जो प्राय: हिलती रहती हो। जैसे—गौ या बैल के गले की झालर। ४. किनारा। छोर। सिरा। (क्व०) ५. एक प्रकार का बहुत बड़ा छैना या झाँझ जो पूजा आदि के समय देवताओं के सामने बजाते हैं।

†पुं०=झलरा (पकवान)। उदा०—झालर माँडे आए पोई।—जायसी।

झालरदार—वि० [हिं० झालर+फा० दार] जिसमें झालर टँकी, बनी या लगी हो।

झालरना—अ० [हिं० झालर+ना (प्रत्य०)] १. झालर का हिलना या हवा में लहराना। २. हवा में किसी वस्तु का लहराना। ३. (पेड़-पौधों का) शाखाओं, पत्तियों, फूलों आदि से युक्त या संपन्न होना। उदा०—नित नित होति हरी हरी खरी झालरति जाति।—बिहारी।

झालरा†—पुं० [हिं० झालर] एक प्रकार का रुपहला हार। हुमेल।

पुं० [?] कुछ विशिष्ट प्रकार का बना हुआ चौकोर और बड़ा कूआँ। बावली।

झाला—पुं० [देश०] १. गुजरात, मारवाड़ आदि प्रदेशों में बसी हुई एक राजपूत जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति। ३. सितार आदि बजाने में उत्पन्न होनेवाली एक विशेष प्रकार की कलात्मक झंकार।

झालि—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की काँजी जो कच्चे आम को पीसकर और उसमें राई, नमक आदि मिलाकर बनाई जाती है। झारी।

†स्त्री०=झाल (वर्षा की झड़ी)।

झावँ झावँ—पुं०=झाँवँ झाँवँ।

झावर—वि०=झाबर (झबरा)।

झावु—पुं० [सं० झा√वा (गति)+डु] झाऊ। (एक क्षुप)

झावुक—पुं० [सं० झावु+कन्] झाऊ।

झिंकार†—पुं० [?] बारहसिंघा।

झिंगन—पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी पत्तियों से लाल रंग बनता है।

†पुं० [?] सारस्वत ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

झिंगनी†—स्त्री०=खर-तरोई।

झिंगवा—स्त्री० [सं० चिंगट] एक प्रकार की छोटी मछली जिसके अगले और पिछले दोनों भागों पर बाल होते हैं।

झिंगाक—पुं० [सं०√लिंग् (गमनादि)+आकन्, पृषो० सिद्धि] तरोई। तोरी।

झिंगारना†—अ० [हिं० झींगुर] झींगुर का बोलना या शब्द करना।

स० उक्त प्रकार का शब्द उत्पन्न करना।

झिंगिन —पुं०=जुगनूँ।

झिंगिनी—स्त्री० [सं० √लिंग्+इनि, पृषो० सिद्धि] एक जंगली पेड़ जिसके फल बेर के समान छोटे-छोटे और सफेद रंग के फूल होते हैं जो औषध के काम आते हैं।

झिंगी†—स्त्री०=झिंगिनी।

झिंगुला—पुं० [स्त्री० अल्पा० झिंगुली] झगा (बच्चों का)।

झिंझा†—वि० [?] [स्त्री० झिंझी] चिपटी नाकवाला।

झिंझिम—पुं० [सं० झिम्√झम्+अच्, पृषो० सिद्धि] ऐसा वन जिसमें आग लगी हो।

झिंझिया†—स्त्री०=झाँझी।

झिंझिरिष्टा—स्त्री० [सं०] झिंझिरोटा।

झिंझिरोटा—पुं० [सं० झिंझिरिष्टा] एक प्रकार का क्षुप।

झिंझी—स्त्री० [सं०] झींगुर। झिल्ली।

†स्त्री०=झंझी या झज्झी।

झिंझोटी—स्त्री० [देश०] दिन के चौथे पहर में गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

झिंटी—स्त्री० [सं० झिम्√रट् (रटना)+अच्-ङीष्, पृषो० सिद्धि।] कटसरैया। पियावासा।

झिगड़ना*—अ०=झगड़ना।

झिगड़ा†—पुं०=झगड़ा।

झिझक†—स्त्री० [हिं० झिझकना] झिझकने की क्रिया या भाव।

†स्त्री० दे० 'झझक'।

झिझकना†—अ० [अनु०] [भाव० झिझक] भय, लज्जा, संकोच आदि के कारण कुछ कहने या करने से आनाकानी करना, पीछे हटना या रुकना।

†अ० दे० 'झझकना'।

झिझकार†—स्त्री०=झझकार।

झिझकारना†—स०=झझकारना।

झिटकारना†—स०=झटकारना।

झिड़क†—स्त्री० [हिं० झिड़कना] १. झिड़कने की क्रिया या भाव। २. =झिड़की।

झिड़कना—स० [हिं० झटकना या झाड़ना] १. पुरानी हिन्दी में झटका देकर या झटकारते हुए दूर करना या हटाना। उदा०—कोटि सुर को दंड आभा झिरकि डारैं वारि।—सूर। २. आज-कल किसी के अनुचित आचरण या व्यवहार से क्रुद्ध या रुष्ट होकर उसे तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई कठोर बात कहना।

झिड़की—स्त्री० [हिं० झिड़कना] १. झिड़कने की क्रिया या भाव। झिड़क। २. क्रोध में आकर या बिगड़ते हुए किसी अधीनस्थ या छोटे व्यक्ति से कही हुई वह बात जिसमें उसके अनुचित कामों के प्रति असन्तोष या रोष प्रकट किया गया हो और जिसमें आगे से सचेत रखने का उद्देश्य भी निहित हो।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।—सुनना।

झिड़झिड़ाना†—अ० [भाव० झिड़झिड़ाहट]=चिड़चिड़ाना।

झिनवा—पुं० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया धान जिसके चावल बारीक होते हैं।

वि०=झीना।

झिपना†—अ०=झेंपना।

झिपाना—स० [हिं० 'झेंपना' का स० रूप] किसी को झेंपने में प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

झिमकना†—अ०=झमकना।

झिमिटना—अ० [अनु०] एकत्र होना। उदा०—झिमिट जाते हैं जहाँ जो लोग....।—मैथिलीशरण।

झिर†—स्त्री०=झिरी।

झिरकना†—स०=झिड़कना।

झिरझिर—क्रि० वि० [अनु०] १. थोड़ा-थोड़ा करके और मन्द गति से। धीरे-धीरे। जैसे—झिरझिर झरना (पानी का सोता) बहना। २. उक्त प्रकार से और झिरझिर शब्द करते हुए। जैसे—झिरझिर हवा बहना।

झिरझिरा†—वि०=झीना।

झिरझिराना†—अ०=झिड़झिड़ाना (चिड़चिड़ाना)।

झिरना—पुं० [हिं० झरना] १. झरना। २. झिरी।

अ०=झरना।

झिरहर†—वि०=झीना।

झिरा†—स्त्री० [हिं० झरना=रसकर निकलना] आमदनी। आय।

झिराना—अ०, स०=झुराना।

झिरिका—स्त्री० [सं०] झींगुर।

झिरिया†—स्त्री० [हिं० झरना] छोटा झरना।

झिरी—स्त्री० [हिं० झरना] १. वह छोटा छेद या संधि जिसमें से कोई चीज धीरे-धीरे निकल या बह जाय। दरज। २. वह गड्ढा जिसमें आस-पास का पानी झिर-झिरकर इकट्ठा होता है। ३. किसी बड़े जलाशय के आस-पास का वह छोटा झरना या सोता जिसमें से पानी झिर या रसकर निकलता हो। ४. तुषार। पाला। ५. ऐसी फसल जो पाला पड़ने से खराब हो गई हो।

झिरीका—स्त्री० [सं० झिरी√कै (शब्द)+क-टाप्] झींगुर।

झिर्री†—स्त्री० [हिं० झरना या झिरी] वह छोटा गड्ढा जो नाली आदि का पानी रोकने के लिए खोदा जाता है। घेरुआ।

झिलँगा—वि० [हिं० ढीला+अंग] १. ढीले अंगोंवाला। २. झीनी बुनावटवाला। उदा०—झिलँगा खटिया बातल देह।—घाघ। ३. दुबला-पतला।

पुं० १. वह छोटी, हलकी खाट जिसकी बुनावट दूर दूर या विरल हो। २. ऐसी टूटी-फूटी और पुरानी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।

†पुं०=झींगा (मछली)।

झिलना—अ० [हिं० झेलना] १. हिं० 'झेलना' का अ० रूप। झेला या सहा जाना। २. कष्ट सहते और जोर लगाते हुए अन्दर घुसना, धँसना या पैठना। उदा०—वाणी की वीणा-ध्वनि सी भर उठी शून्य में झिलकर।—प्रसाद। ३. कष्ट सहते हुए अपनी कामना या वासना पूरी करना। ४. तृप्त होना। अघाना। ५. किसी काम या बात में पूरी तरह से तन्मय या लीन होना।

†पुं० [सं० झिल्ली] झींगुर।

झिलम—स्त्री० [हिं० झिलमिला] युद्ध के समय पहने जानेवाले टोप में

पीछे की ओर लगी हुई सिकड़ियों की वह झालर जो गरदन पर लटकी रहती थी।

झिलमटोप—पुं०=झिलम।

झिलमा—पुं० [देश०] एक प्रकार का धान।

झिलमिल—स्त्री० [सं० ज्वल्+झला] १. संध्या या सवेरे की वह स्थिति जब कि कुछ-कुछ अंधकार भी हो और कुछ-कुछ प्रकाश भी; और जिसमें चीजें साफ न दिखाई देती हों। झिलमिला। २. प्रकाश की किरणों या लौ के हिलते रहने की वह स्थिति जिसमें कभी तो कुछ अँधेरा हो जाता हो और कभी-कभी कुछ उजाला। ३. किसी चमकीली चीज की वह स्थिति जिसमें रह-रहकर प्रकाश की किरणें दिखाई देती या निकलती हों। जैसे—पानी की झिलमिल। ४. पुरानी चाल की एक प्रकार की बहुत बढ़िया मलमल जिसकी प्रायः साड़ियाँ बनती थीं।

वि०=झिलमिला।

झिलमिला– वि० [सं०√ज्वल्+झला] १. (समय) जिसमें न तो पूरा अंधकार ही हो और न पूरा प्रकाश ही। मिला-जुला थोड़ा अँधेरा और थोड़ा उजाला। २. (प्रकाश) जो हिलते रहने के कारण रह-रहकर चमकता हो और फिर बीच-बीच में आँखों से ओझल हो जाता हो। रह-रहकर चमकनेवाला। ३. (आवरण) जिसमें जगह-जगह बहुत-से छोटे-छोटे अवकाश या छेद हों और इसी लिए जिसके कारण कहीं तो प्रकाश आ जाता हो और कहीं अँधेरा बना रहता हो। ४. जिसका कुछ-कुछ आभास तो मिलता हो, फिर भी जो पूरी तरह से स्पष्ट न हो।

पुं०=झिलमिल।

झिलमिलाना—अ० [अनु०] [भाव० झिलमिलाहट, झिलमिली] हिलते रहने के कारण रह-रहकर चमकना। जैसे—लौ का झिलमिलाना।

स० किसी चमकीली चीज को इस प्रकार थोड़ा-थोड़ा हिलाना कि उसमें से रह-रहकर प्रकाश या उसकी किरणें निकलें।

झिलमिलाहट—स्त्री० [अनु०] झिलमिलाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

झिलमिली—स्त्री० [हिं० झिलमिल] १. वेड़े बल में एक दूसरी पर जड़ी या बैठाई हुई पटरियों का वह ढाँचा जो किवाड़ों के पल्लों के कुछ भागों में इसलिए जड़ा रहता है कि खड़े बल में लगी हुई लकड़ी के सहारे आवश्यकतानुसार प्रकाश, वायु आदि के आने के लिए कुछ अवकाश निकाला जा सके। खड़खड़िया।

क्रि० प्र०—उठाना।—खोलना।—गिराना। —चढ़ाना।

२. चिक। चिलमन। ३. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. झिलमिलाहट।

झिलवाना—स० [हिं० 'झेलना' का प्रे० रूप] किसी को कुछ झेलने में प्रवृत्त करना।

झिली† —स्त्री०=झींगुर।

झिल्ल—पुं० [सं०] छोटे-छोटे पत्तोंवाला एक पौधा जिसमें लाल रंग के फूल लगते हैं।

झिल्लड़—वि० [हिं० झिल्ला] (वह कपड़ा) जिसकी बुनावट दूर दूर पर हो। पतला और झँझरा। झीना। 'गफ' का विपर्याय।

झिल्लन—स्त्री० [देश०] दरी बुनने के करघे की वह लकड़ी जिसमें वय का बाँस लगा रहता है। गुरिया।

झिल्ला†—वि० [अनु०] [स्त्री० झिल्ली] १. पतला। बारीक। महीन। २. दे० 'झिल्लड़'।

झिल्लि—स्त्री० [सं० झिर्√लिश् (गमनादि)+डि] १. एक प्रकार का बाजा। २. झींगुर।

झिल्लिका—स्त्री० [सं० झिल्लि+कन्–टाप्] १. झींगुर। २. झिल्ली। २. झींगुर की झनकार। ३. सूर्य का प्रकाश।

झिल्ली—स्त्री० [सं० झिल्लि+ङीष्] झींगुर।

स्त्री० [?] १. किसी चीज के ऊपर या चारों ओर प्राकृतिक रूप से लगा या लिपटा हुआ बहुत ही पतला और पारदर्शक आवरण। जैसे—गर्भस्थ शिशु के चारों ओर लिपटी हुई झिल्ली, आँख, त्वचा अथवा फेफड़े के ऊपर की झिल्ली। २. फलों आदि के ऊपर का उक्त प्रकार का बहुत पतला छिलका। जैसे—अंगूर या जामुन पर की झिल्ली। ३. आँख का जाला नामक रोग।

झिल्लीक—पुं० [सं० झिल्ली+कन्] झींगुर।

झिल्लीका —स्त्री० [सं० झिल्लीक+टाप्] झींगुर।

झिल्लीदार—वि० [हिं० झिल्ली+फा० दार] जिसमें या जिसके ऊपर झिल्ली हो। झिल्ली से युक्त।

झींक—स्त्री०=झींका।

झींकना†—स० [?] १. पटकना। २. फेंकना। ३. मंडित या सज्जित करना।

अ० १. मंडित या सज्जित होना। उदा०—आनंद-कंद चन्द्र के ऊपर तो तारा-गण झींके।—लोक-गीत। २. दे० 'झीखना'।

झींका—पुं० [देश०] पीसे जानेवाले अन्न की उतनी मात्रा जितनी एक बार चक्की में डाली जाती है।

झींख—स्त्री०=झीख।

झींखना—अ०=झीखना।

झींगट—पुं० [देश०] मल्लाह। माँझी। (लश०)

झींगन—पुं० [देश०] मोटे तने तथा कम शाखाओंवाला मँझोले कद का एक पेड़।

झींगा—पुं० [सं० चिंगट] १. एक प्रकार की छोटी मछली जो प्रायः नदियों और जलाशयों में पाई जाती है। इसका मांस खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है। २. एक प्रकार का बढ़िया अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है। ३. कपास की फसल में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

झींगुर—पुं० [झीं+कर से अनु०] एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा जो झीं झीं शब्द करने के लिए प्रसिद्ध है।

झींझना†—अ० [अनु०] झुँझलाना।

झींझी—पुं०=झाँझी।

झींटना†—अ०=झीखना।

झींपना—अ०=झेंपना।

स० दे० 'ढकना'।

झींवर†—पुं०=झीवर (मल्लाह)।

झींसी—स्त्री० [अनु० या हिं० झीना=बहुत महीन] ऐसी हलकी वर्षा जिसमें पानी बहुत ही छोटी-छोटी या महीन बूंदों के रूप में बरसता हो

क्रि० प्र०—पड़ना।

झीका—पुं० [सं० शिक्य] छीका। सिकहर।

झीख—स्त्री० [हिं० झीखना] झीखने की अवस्था, क्रिया या भाव।

झीखना—अ० [अनु०] मानसिक कष्ट, चिंता आदि से व्यथित होकर बहुत ही दु:खी भाव से रह-रहकर और समय-कुसमय उसकी चर्चा करते रहना। कुढ़-कुढ़ कर अपना दुखड़ा रोते रहना।

पुं० वह कथन या बात जो उक्त प्रकार से कुढ़-कुढ़कर कहीं जाती हो।

झीझा†—वि० [स्त्री० झीझी]=झीना।

†वि० [?] धीमा। मन्द।

झीठ†—वि०=झूठ। (ब्रज)

झीड़ना*—अ० [अनु०] १. बलपूर्वक प्रविष्ट होना। घुसना। २. धँसना।

झीणा†—वि०=झीना।

झीत—पुं० [?] जहाज के पाल में लगा हुआ बटन। (लश०)

झीन†—वि०=झीना।

झीना—वि० [सं० क्षीण] [स्त्री० झीनी] १. क्षीण शरीरवाला। दुबला-पतला। २. पतला। बारीक। महीन। ३. (कपड़ा) जिसके ताने तथा बाने के सूतों की बुनावट ठस न होकर विरल हो। उदा०—झीनी झीनी बीनी चदरिया।—कबीर।

मुहा०—झीना ओढ़ाना=चित्रकला में आकृतियों पर ऐसा झीना या पतला वस्त्र अंकित करना कि नीचे के अंग दिखाई दें।

४. (रचना) जिसके दोनों बल के डोरे, तार आदि अपेक्षया एक दूसरे से दूर या विरल हों। जैसे—खाट या पलंग की झीनी बुनावट। ५. जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। झँझरा। ६. धीमा। मंद।

झीनासारी†—पुं० [?] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

झीमना†—अ० [अनु०] १. झूमना। उदा०—नवनील कुंज है झीम रहे कुसुमों की कथा न बंद हुई।—प्रसाद। २. ऊँघना।

झींमर—पुं०=झीवर (मल्लाह)।

झीमस†—स्त्री० [हिं० झीमना] ऊँघ। झपकी।

झीरिका—स्त्री० [सं०] झींगुर।

झीरुका—स्त्री० [सं०] झींगुर।

झील—स्त्री० [सं० क्षीर=जल] १. वह बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय जिसमें पानी रुका रहता हो। बहुत बड़ा ताल। २. उक्त प्रकार का कोई कृत्रिम छोटा जलाशय।

स्त्री० [?] झोंका।

झीलना—स०=झेलना।

झीलम†—स्त्री०=झिलम।

झीलर—पुं० [हिं० झील] छोटी झील। ताल।

झीली—स्त्री० [हिं० झिल्ली] १. दही, दूध आदि के ऊपर की मलाई। २. दे० 'झिल्ली'।

झीवर—पुं० [सं० धीवर] मल्लाह। माँझी।

झुँकवाई†—स्त्री०=झोंकवाई।

झुँकवाना†—स०=झोंकवाना।

झुँकाई†—स्त्री०=झोंकवाई।

झुँगना†—पुं०=जुगनूं।

झुँगरा—पुं० [देश०] साँवाँ (कदन्न)।

झुँझना†—पुं० [हिं० झुनझुना] १. घर में बालक के जन्म लेने पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमें शिशु के झुनझुना बजाने या उससे खेलने का उल्लेख होता है। २. दे० 'झुनझुना'।

झुँझलाना—अ० [अनु०] [भाव० झुँझलाहट] इस प्रकार कुछ क्रुद्ध तथा व्यथित होकर कोई बात कहना जिससे अप्रसन्नता, असंतोष या असहमति सूचित होती हों।

झुँझलाहट—स्त्री० [हिं० झुँझलाना] झुँझलाने की अवस्था, क्रिया या भाव।

झुंट—पुं० [सं०√लुंट् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि] झाड़ी।

झुंड—पुं० [सं० यूथ, प्रा० जूट] १. एक ही जाति या वर्ग के बहुत से पक्षियों, पशुओं आदि के एक स्थान पर एकत्र रहने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—कबूतरों या हिरनों का झुंड।

मुहा०—झुंड में रहना=पशु-पक्षियों का अकेले नहीं, बल्कि अपने वर्ग के अन्य जीवों के साथ मिलकर रहना।

२. व्यक्तियों का समूह।

झुंडी—स्त्री० [?] १. पौधों का ऊपरी भाग काट लेने पर नीचे बची रह जानेवाली उसकी जड़ या खूँटी। २. वह कुलावा जिसमें चिलमन या परदा टाँगा जाता है।

झुकझोरना†—स०=झकझोरना।

झुकना—अ० [सं० युज्=किसी ओर प्रवृत्त होना] १. किसी ऊर्ध्व या खड़े बल में रहनेवाली चीज के ऊपरी भाग का कुछ टेढ़ा होकर किसी दिशा या पार्श्व में कुछ नीचे की ओर आना या होना।—जैसे—(क) पढ़ने-लिखने के समय आदमी की गरदन या सिर झुकना। (ख) बरसात में पानी भरने के कारण मकान की दीवार या बरामदा झुकना। २. क्षैतिज या बेड़े बल में रहनेवाली अथवा सीधी चीज का कोई अंश या सिरा नीचे की ओर आना, मुड़ना या होना। जैसे—(क) लकड़ी की धरन का बीच में झुकना। (ख) लोहे के छड़ का एक या दोनों सिरे झुकना। ३. बोझ, भार आदि के कारण किसी चीज का अपनी प्रसम और स्वाभाविक अवस्था या स्थिति से हटकर कुछ नीचे की ओर आना या प्रवृत्त होना। जैसे—फलों के भार से वृक्ष की डालियाँ झुकना। ४. आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की अपनी पूरी ऊँचाई तक पहुँच चुकने के बाद क्षितिज की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—चंद्रमा या सूर्य का (अस्तमित होने के समय या उससे पहले) झुकना। ५. दुर्बलता, रोग, वार्धक्य, शिथिलता आदि के कारण शरीर के किसी ऐसे अंग का कुछ नीचे की ओर आना या प्रवृत्त होना जो साधारणतः खड़ा या सीधा रहता हो अथवा जिसे खड़ा या सीधा रहना चाहिए। जैसे—(क) नशे या लज्जा से आँखें या सिर झुकना। (ख) बुढ़ापे में कमर या गरदन झुकना। ६. उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि के लिए थोड़ा आगे बढ़ते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—किसी के चरण छूने या कोई चीज उठाने के लिए झुकना। ७. प्रतियोगिता, बैर, विरोध आदि के प्रसंगों में प्रतिपक्षी की प्रबलता या महत्ता मानते हुए उसके सामने दबना अथवा नम्र भाव से आचरण या व्यवहार करना। अभिमान, बल आदि का प्रदर्शन छोड़कर विनीत और सरल होना। जैसे—(क) युद्ध में शत्रु के सामने झुकना। (ख) लड़ाई-झगड़े में भाइयों के आगे झुकना। ८. आवेश, क्रोध आदि से युक्त होकर कठोर बातें कहने या रोष प्रकट करने के लिए किसी की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—पहले तो वे अपने भाई से उलझ रहे थे फिर मेरी ओर (या मुझ पर) झुक पड़े। उदा०—(क)

नहिं जान्यौ बियोग सो रोग है आगे झुकी। तब हौं तेहि सों तरजी।—तुलसी। (ख) तऊ लाज आई झुकत खरे लजौंहैं देखि।—बिहारी। ९. विशेष ध्यान देते हुए किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होकर कुछ करने लगना। जैसे—आज-कल वह इतिहास छोड़कर दर्शन (या वेदांत) की ओर झुके हैं।

झुकमुख—पुं० दे० 'झुट-पुटा'।

झुकरना†—अ० [अनु०] १.=झुंझलाना। २. =झुकराना।

झुकराना†—अ० [हिं० झोंका] वायु, वेग आदि के कारण इधर-उधर झुकना। झोंके खाना।

झुकवाई—स्त्री० [हिं० झुकवाना] झुकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकवाना—स० [हिं० झुकाना का प्रे० रूप] १. किसी को झुकने में प्रवृत्त करना। २. किसी के द्वारा ऐसा काम करना जिससे कोई दूसरा झुके। स० दे० 'झोंकवाना'।

झुकाई—स्त्री० [हिं० झुकाना] झुकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकाना—स० [हिं० झुकना का स०] १. किसी खड़ी या सीधी चीज का कोई अंश या तल किसी प्रकार कुछ नीचे की ओर लाना। ऐसा काम करना जिससे कुछ झुके। नीचे की ओर प्रवृत्त करना। जैसे—दबाकर लकड़ी या ठोंक-पीटकर लोहे का छड़ झुकाना। २. जो चीज ऊँचाई पर अथवा ऊपर हो उसे या उसका कोई अंश नीचे की ओर लाना। जैसे—राजा या सेनापति की मृत्यु होने पर किले का झंडा झुकाना। ३. अपना कोई अंग किसी ओर कुछ नीचे करना या ले जाना। जैसे—किसी के सामने आँखें या सिर झुकाना, किसी ओर कंधा, पैर या हाथ झुकाना। ४. किसी को किसी प्रकार दबाते हुए अथवा उसका अभिमान, विरोध, हठ आदि दूर करते हुए उसे नम्र या विनीत बनाना। जैसे—उदारता अथवा कौशल से विरोधी को अपने सामने झुकाना। ५. उक्त के आधार पर बैरी या शत्रु को पराजित या परास्त करना। ६. कुछ बल प्रयोग करते हुए किसी को किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त करना या उसमें लगाना। जैसे—लड़का तो अभी पढ़ना चाहता था, पर पिता ने उसे नौकरी (या रोजगार) में झुका दिया। ७. कोई चीज या बात किसी ओर अग्रसर या प्रवृत्त करना। जैसे—आप लोगों ने आपस के लड़ाई-झगड़े (या हँसी-मजाक) की बात लाकर मुझ पर झुका दी। ८. प्रायः या सदा खड़ी अथवा सीधी रहनेवाली चीज कुछ टेढ़ी करके किसी ओर नत या प्रवृत्त करना। जैसे—बीमारी या बुढ़ापे ने उसकी कमर झुका दी।

झुकामुकी (मुखी)—स्त्री०=झुकमुख (झुटपुटा)।

झुकार—पुं० [हिं० झकोरा] हवा का झोंका। झकोरा।

झुकाव—पुं० [हिं० झुकना] १. झुकने की क्रिया या भाव। २. झुके हुए होने की अवस्था या भाव। ३. किसी विशेष कार्य या विषय की ओर होनेवाली सामान्य से कुछ आगे बढ़ी हुई प्रवृत्ति जिसके कारण वह कार्य या विषय अपेक्षया अधिक प्रिय और रुचिकर होता है। जैसे—गणित की ओर इस लड़के का शुरू से ही झुकाव है।

झुकावट—स्त्री०=झुकाव।

झुगिया† —स्त्री०=झुग्गी।

झुग्गी—स्त्री० [?] १. फकीरों, साधुओं आदि के रहने की झोंपड़ी। २. कोई बहुत छोटा मकान।

झुझकावना—स०=जुझाना (जूझने में प्रवृत्त करना)।

झुझ*—पुं०=युद्ध।

झुट-पुटा—पुं० [अनु०] सूर्योदय होने से कुछ पहले और सूर्यास्त होने के कुछ बाद का वह समय जिसमें प्रकाश धुँधला होने के कारण चीज़ें स्पष्ट रूप से नहीं दिखाई देतीं।

झुटलाना†—स०=झुठलाना।

झुटालना†—स०=जुठारना (जूठा करना)।

झुटुंग—वि० [हिं० झोंटा] जिसके सिर पर बहुत बड़ा या भारी झोंटा हो।

झुट्ठल—वि० [हिं० झूठ] झूठा।

क्रि० वि० झूठ-मूठ। व्यर्थ में।

झुट्ठा†—वि०=झूठा।

झुठकाना—स० [हिं० झूठ] झूठ-मूठ कोई बात कह कर किसी को धोखे या भ्रम में डालना।

झुठलाना—स० [हिं० झूठ+लाना (प्रत्य०)] १. किसी को झूठा ठहराना या सिद्ध करना। जैसे—तुम तो अपनी बातों से सच्चों को भी झुठला देते हो। २. झूठ-मूठ कोई बात कहकर किसी को धोखे या भ्रम में डालना। जैसे—खेल में बच्चों को झुठलाना।

झुठाई†—स्त्री० [हिं० झूठ+आई (प्रत्य०)] झूठे होने की अवस्था या भाव। झूठापन। मिथ्यात्व।

झुठाना—स० [हिं० झूठ+आना (प्रत्य०)] १. (किसी विषय या बात को) झूठा सिद्ध करना। २. झुठलाना।

झुठामूठी†—क्रि० वि० =झूठ-मूठ।

झुठालना†—स०=झुठलाना।

झुन्—स्त्री०=झुनझुनी।

झुनक—पुं० [अनु०] घुँघरुओं या नूपुरों के बजने का शब्द।

झुनकना—अ० [अनु० झुनझुन शब्द निकलना या होना।

स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

†पुं०=झुनझुना (खिलौना)।

झुनका—पुं० [?] छल। धोखा।

झुनकारा—वि० [स्त्री० झुनकारी]=झीना।

झुनझुन—स्त्री० [अनु०] घुँघरुओं आदि के बजने से होनेवाला शब्द।

झुनझुना—पुं० [हिं० झुनझुन] बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।

झुनझुनाना—अ० [अनु०] १. झुनझुन शब्द निकलना या होना। २. शरीर के किसी अंग में झुनझुनी होना।

स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना या निकालना।

झुनझुनियाँ—स्त्री० [अनु०] १. पैरों में पहनने का एक गहना जिसके घुँघरुओं से झुनझुन शब्द निकलता है। २. अपराधियों के पैरों में पहनाई जानेवाली बेड़ी। ३. सनई का पौधा। ४. दे० 'झुनझुनी'।

झुनझुनी—स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] शरीर के किसी अंग विशेषतः हाथ या पैर की वह अस्थायी या क्षणिक अवस्था जिसमें रक्त का संचार रुकने के कारण उस अंग में कुछ देर तक हलकी चुनचुनाहट और कुछ सनसनी-सी होती है।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

झुनी†—स्त्री० [देश०] जलाने की पतली लकड़ी।

झुपझुपी†—स्त्री०=झुबझुबी।

झुपरी†—स्त्री०=झोंपड़ी।

झुप्पा—पुं०=झब्बा।

झुबझुबी—स्त्री०[अनु०] कानों में पहनने का एक आभूषण। झुपझुपी।

झुमका—पुं० [प्रा० झुम्म+अक्क (प्रत्य०)] १. कानों में पहनने का एक प्रकार का आभूषण जो नीचे लटकता रहता है। २. एक प्रकार का पौधा जिसमें उक्त आभूषण के आकार के फूल लगते हैं। ३. इस पौधे का फूल। ४. उक्त गहने या फूल के आकार का गुच्छा।

झुमना†—वि०[हिं० झूमना] जो प्रायः या बराबर झूमता रहता हो। जिसकी प्रवृत्ति झूमने या झूमते रहने की हो।

पुं० वह बैल जो बँधा रहने पर प्रायः झूमता रहता हो। (ऐसा बैल ऐबी या बुरा समझा जाता है)

अ०=झूमना।

झुमरा†—पुं०[देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा हथौड़ा।

झुमरि—स्त्री०[सं०] एक रागिनी।

झुमरी—स्त्री०[देश०]छत, दीवार का पलस्तर आदि पीटने की काठ की छोटी मुँगरी।

झुमाऊ—वि०=झुमना।

झुमाना—स०[हिं०झूमना का स०रूप] किसी को झूमने में प्रवृत्त करना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई झूमने लगे।

झुमिरना†—अ०=झूमना।

झुरकुट—वि०[अनु०] १. मुरझाया या सूखा हुआ। २. कृश और क्षीण शरीरवाला। दुबला-पतला।

झुरकुटिया—पुं०[देश०] एक प्रकार का बढ़िया पक्का लोहा जिसे खेड़ी भी कहते हैं।

वि०=झुरकुट।

झुरकुन†—पुं० [हिं० झड़+कण]१. झड़ी हुई चीज। झड़ना। २. किसी चीज के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े। चूर।

झुरझुरी—स्त्री०[अनु०]शरीर में होनेवाली कुछ हलकी कँपकँपी; विशेषतः वह कँपकपी जो जूड़ी या शीत-ज्वर चढ़ने के समय होती है।

झुरना—अ०[सं० क्षर, प्रा० झूरइ; या सं० ज्वल्]१. किसी विकट चिंता या दुःख के कारण मन ही मन इतना अधिक संतप्त तथा विकल रहना कि शरीर धीरे-धीरे सूखता जाय। अन्दर ही अन्दर दुःखी रहकर अपना शरीर घुलाना। २. सूखना। ३. कुम्हलाना। मुरझाना।

झुरमुट—पुं०[सं० झुंट=झाड़ी]१. पास-पास उगी तथा एक दूसरी से उलझी हुई घनी झाड़ियों का समूह। २. बहुत से लोगों का समूह।

मुहा०—झुरमुट मारना=बहुत से लोगों का घेरा बनाकर खड़े होना। जैसे—जगह-जगह सिपाही झुरमुट मार कर लड़ रहे हैं।

३. बच्चों का एक खेल जिसमें वे घेरा बनाकर नाचते हैं। ४. चादर से सिर, मुँह तथा सारा शरीर के लपेटे हुए होने की अवस्था। ५. उक्त प्रकार से कोई ओढ़ना ओढ़ने या लपेटने का ढंग या प्रकार।

झुरवन—स्त्री०[हिं० झुरना]१. झुरने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. किसी चीज के झुरने अर्थात् सूखने के कारण उसमें होनेवाली कमी या छीज।

झुरवाना—स०[हिं० झुराना]१. ऐसा काम करना जिससे कोई मन ही मन चिंतित और दुःखी होकर सूखता चला जाय। किसी को झुरने में प्रवृत्त करना। २. कोई चीज धूप आदि में रखकर या और किसी प्रकार सुखाना।

झुरसना†—अ, स०=झुलसना।

झुरसाना†—स०=झुलसाना।

झुरहुरी—स्त्री०=झुरझुरी (कँपकँपी)।

झुराना—स० [हिं० झुरना] १. किसी को झुरने में प्रवृत्त करना। २. सुखाना।

†अ० १.=झुरना। २.=सूखना।

झुरावन—स्त्री०[हिं० झुरना+वन (प्रत्य०)]=झुरवन।

झुर्री—स्त्री०[हिं० झुरना]१. वृद्धावस्था में शरीर के दुर्बल और शुष्क हो जाने पर त्वचा पर पड़नेवाली शिकन। २. किसी वस्तु के सूखने पर उसके चिकने या सपाट ऊपरी आवरण या तल पर पड़नेवाली शिकन। जैसे—सूखे हुए आम या परवल पर झुर्री।

झुलका†—पुं०=झुनझुना। (खिलौना)।

झुलना—पुं०=झुल्ला (स्त्रियों का पहनावा)।

वि०, पुं०= झूलना।

झुलनी—स्त्री० [हिं० झूलना]१. नाक में पहनने की नथ में लटकता रहनेवाला मोतियों का छोटा गुच्छा। २. झूमर (गहना)।

झुलनी बोर—पुं०[देश०] धान की बाल। (कहार)

झुलमुला†—वि०[स्त्री० झुलमुली]=झिलमिला।

झुलमुलाना—अ०[?]१. झिलमिलाना। २. सिर में चक्कर आने के कारण लड़खड़ाना।

झुलमुली†—स्त्री०=१ झिलमिली। २.=झालर।

झुलवा†—पुं० दे० 'जेठवा'।

पुं०=झूला।

झुलवाना—स०['झुलाना' का प्रे० रूप]किसी को झुलाने का काम किसी दूसरे से कराना।

झुलस—स्त्री०=झुलसन।

झुलसन—स्त्री० [हिं० झुलसना] १. झुलसने की क्रिया या भाव। २. झुलसे हुए होने की अवस्था या भाव। ३. ऐसी गरमी या ताप जिससे शरीर झुलस जाय।

झुलसना—अ०[सं०√ज्वल्]१. आग की लपट से सहसा स्पर्श होने पर किसी अंग की त्वचा का कुछ-कुछ जल जाने के कारण काला पड़ जाना। जैसे—रोटी पकाते समय हाथ झुलसना। २. अत्यधिक ताप या गरमी के कारण किसी वस्तु के ऊपरी या बाहरी तल का सूखकर काला पड़ जाना। जैसे—लू से पौधों के पत्ते या शरीर झुलसना।

स० किसी वस्तु को इस प्रकार जलाना या तप्त करना कि उसके ऊपरी आवरण या त्वचा का-रंग काला पड़ जाय। जैसे—जलती हुई लकड़ी से किसी का मुँह झुलसना।

झुलसवाना—स०[हिं० 'झुलसाना का प्रे०रूप]कोई चीज झुलसने का काम किसी दूसरे से कराना।

झुलसाना—स० १.=झुलसना। २.=झुलसवाना।

† अ०=झुलसना।

झुलाना—स०[हिं० झूलना का स०]१. टँगी या लटकी हुई चीज को बार-बार इधर-उधर हिलाना। जैसे—पालना झुलाना। २. ऐसी क्रिया

करना जिससे कोई झूलने लगे। जैसे—बच्चे को झुलाना। ३. किसी काम या बात के लिए किसी को बराबर आसरा देते रहना या प्रतीक्षा में रखना (परन्तु वह काम या बात पूरी न करना)। जैसे—यह सुनार तो चीज बनाकर देने में महीनों झुलाता है।

झुलावना—स०=झुलाना।

झुलावनि†—स्त्री०[हिं० झुलाना]झुलाने की क्रिया, ढंग या भाव।

झुलुआ†—पुं०[हिं० झूला]छोटा झूला।

झुलौआ†—वि०=झूलना।

†पुं०१.=झूला। २.=झुल्ला।

झुल्ला—पुं०[देश०] स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का कुरता।

†पुं०=झूला।

झुहिरना—अ०[?]लादा जाना। लदना।

झुहिराना—स०[हिं० झुहिरना] लादना।

अ०=झुहिरना।

झूंक†—स्त्री०१.=झोंक। २.=झोंका।

झूंकना†—स०=झोंकना।

अ०=झींखना।

झूंका†—पुं०=झोंका।

झूंखना†—अ०=झीखना।

झूंझल†—स्त्री०=झुंझलाहट।

झूंटा—पुं०[हिं० झोंका] झूले पर चढ़कर तथा उसे झुलाकर एक बार आगे जाने और फिर उसी स्थान पर लौट आने की क्रिया या भाव। पेंग।

†वि० झूठा।

झूंठ†—पुं०=झूठ।

वि०=झूठा।

झूंठा†—वि०१.=झूठा। २.=जूठा।

झूंठी—स्त्री०[?]वे डंठल जो नील के पौधों की डालियों को सड़ाने पर बच रहते हैं।

झूंपड़ा†—पुं०=झोंपड़ा।

झूंबना—अ०=झूमना।

झूंसना†—स०=झँसना (धोखा देकर लेना)।

अ०, स०=झुलसना।

झूंसा—पुं०[देश०] एक तरह की घास।

झूकटी—स्त्री०[देश०] झाड़ी।

झूझ†—पुं०=जूझ।

झूझना†—अ०=जूझना।

झूट—पुं०=झूठ।

झूटना—पुं०[?]कानों में पहनने का झुमका।

झूठ—पुं०[सं० अयुक्त; प्रा० अजुत] ऐसा कथन या बात जो वस्तुतः यथार्थ या सत्य न हो फिर भी जो यथार्थ या सत्य के रूप में कही गई हो।

पद—**झूठ का पुतला**=बहुत बड़ा झूठा आदमी। **झूठ की पोट**=सरासर झूठी बात।

मुहा०—**झूठ का पुल बांधना**=बराबर एक पर एक झूठ बोलते चलना। **झूठ सच जोड़ना**=किसी सच्ची बात में अपनी ओर से भी झूठी बातें मिलाकर कहना।

वि०=झूठा।

†स्त्री०=जूठ।

झूठन—स्त्री०[?] ऐसी भूमि जिसमें दो फसलें पैदा होती हों। दु-फसली जमीन।

†स्त्री०=जूठन।

झूठ-मूठ—अव्य० [हिं० झूठ+अनु० मूठ] १. बिना किसी वास्तविक या सत्य आधार के। झूठ ही। जैसे—झूठमूठ किसी को दौड़ाना। २. यों ही या व्यर्थ किसी को बहकाने या बहलाने के लिए।

झूठा—वि०[हिं० झूठ][स्त्री० झूठी]१. (कथन) जो सत्य न हो, बल्कि उसके विपरीत हो। वास्तव से अन्यथा या भिन्न। मिथ्या। जैसे—झूठा बयान, झूठी शिकायत। २. (व्यक्ति) जो उक्त प्रकार की बात कहता हो या जिसने उक्त प्रकार की बात कही हो। जैसे—झूठा गवाह। ३. (व्यक्ति) जो वास्तव में विश्वसनीय और सत्यनिष्ठ न हो, पर स्वार्थ साधन के लिए अपने आपको विश्वसनीय और सत्य-निष्ठ बतलाता हो या सिद्ध करना चाहता हो। जैसे—झूठा मित्र। ४. (स्थिति) जिसमें उक्त प्रकार की विश्वसनीयता और सत्यनिष्ठा का अभाव हो। जैसे—झूठी दोस्ती, झूठी मुहब्बत। ५. (पदार्थ) जो नकली या बनावटी होने पर भी देखने में असल की तरह जान पड़ता हो और असल की जगह काम देने के लिए बनाया गया हो। जो केवल दिखाने और धोखा देने भर को हो। जैसे—झूठा गहना, झूठा ताला, झूठा सिक्का।

मुहा०—**(किसी चीज का) झूठा पड़ना**=खराब हो जाने या बिगड़ जाने के कारण जो ऊपर से देखने में तो ज्यों का त्यों हो, पर ठीक या पूरा काम न दे सकता हो। जैसे—(क) उसका बायाँ हाथ झूठा पड़ गया है। (ख) इस कल के कई पुरजे झूठे पड़ गये हैं।

६. (तथ्य या पदार्थ) जो अपेक्षया या तुलनात्मक दृष्टि से बहुत घटकर, तथ्यहीन या निरर्थक-सा हो। जैसे—इसके सामने तुम्हारे (क) सब व्यवहार या (ख) सब कपड़े झूठे हैं।

†वि० दे०'जूठा'।

झूठों—अव्य० [हिं० झूठा]१. केवल किसी को बहकाने भर के लिए। झूठ-मूठ। यों ही। २. सिर्फ कहने भर के लिए। नाम मात्र को। जैसे—उन्होंने झूठों भी मुझसे साथ चलने को नहीं कहा।

झूणि—पुं०[सं०] १. एक तरह की सुपारी। २. एक प्रकार का अपशकुन।

झूना†—वि०=झीना।

झूबना†—अ०=झूमना।

झूम—स्त्री० [हिं० झूमना] १. झूमने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—होती थी प्रकट एक झूम पद पद से।—मैथिलीशरण। २. ऊँघने की अवस्था या भाव।

झूमक—पुं० [हिं झूमना] १. देहाती स्त्रियों का एक प्रकार का नाच जिसमें वे दल बाँधकर और झूम-झूमकर नाचती हैं। झुमकरा। झूमर। २. इस नृत्य के साथ गाये जानेवाले गीत। ३. विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। ४. चादर, साड़ी आदि से टाँकी जानेवाली वह झालर जिसमें मोतियों आदि के छोटे-छोटे गुच्छे या झुमके लटकते रहते हैं। ५. झुमका।

झूमक साड़ी—स्त्री० [हिं० झूमक+साड़ी] वह साड़ी जिसमें झूमक अर्थात् ऐसी झालर लगी हो जिसमें मोतियों के गुच्छे आदि टँके हुए हों।

झूमका—पुं० १. =झूमक। २. =झुमका।

झूमड़†—पुं०=झूमर।

झूमड़ झामड़—पुं० [हिं० झूमड़] व्यर्थ का प्रपंच। आडंबर।

झूमड़ा—पुं०=झूमरा।

झूमना—अ० [सं० झंप=कूदना] १. किसी चीज के अगले भाग या ऊपरी सिरे का बार-बार या रह-रहकर आगे-पीछे और इधर-उधर झुकते और उठते या हिलते-डुलते रहना। कुछ झोंका खाते हुए कभी किसी ओर और कभी किसी ओर हलकी गति में होना। जैसे—हवा के झोंके से पेड़ों की डालियों का झूमना। २. नशे या नींद के कारण अथवा प्रसन्नता और मस्ती में आने पर किसी जीव या प्राणी के धड़ और सिर में उक्त प्रकार की हलकी गति होना। जैसे—(क) बहुत सुन्दर गीत, भजन या व्याख्यान सुनकर श्रोताओं का झूमना। (ख) मस्ती में आकर साँप या हाथी का झूमना। ३. एक जगह इकट्ठे होकर कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होते रहना। जैसे—आकाश में बादलों का झूमना।

झूमर—पुं० [हिं० झूमना] १. सिर पर पहनने का एक गहना जिसमें एक या कई लड़ों में आगे की ओर एक छोटी पटरी-सी बनी होती है जो सिर की गति-विधि के अनुसार इधर-उधर झूमती या लहराती रहती है। २. कान में पहनने का झुमका। ३. पूरब में, देहाती स्त्रियों का एक प्रकार का नाच जिसमें वे घेरा बाँधकर झूमती हुई नाचती हैं। ४. उक्त नाच के साथ गाये जानेवाले गीत। ५. विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जो प्रायः उक्त प्रकार से नाचते हुए गाये जाते हैं। ६. होली के दिनों में गाये जानेवाले झूमक नामक गीत। ७. एक ही तरह की बहुत-सी चीजों का ऐसा समूह कि उनके कारण एक गोल घेरा-सा बन जाय। जमघटा। जैसे—नावों का झूमर।

†पुं०=झूमड़।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

८. एक प्रकार की मोंगरी जिससे गाड़ीवान आदि अपनी गाड़ियों की मरम्मत करते हैं। ९. काठ का एक प्रकार का खिलौना जिसमें एक गोले या डंडे के साथ छोटी-छोटी गोलियाँ बँधी रहती हैं। १०. दे० 'झूमरा' (ताल)।

झूमरा—पुं० [हिं० झूमर] चौदह मात्राओं का एक ताल।

झूमरि†—स्त्री०=झूमर।

झूमरी—स्त्री० [देश०] शालक राग के पाँच भेदों में से एक।

झूर†—वि० [सं० जुष्ट] जूठा।

स्त्री० [हिं० झूरना] १. झुरने की क्रिया या भाव। २. उग्र मनस्ताप। जलन। दाह।

वि०=झूरा (सूखा)।

वि०=झूठा।

क्रि० वि०=झूठ-मूठ।

झूरना†—अ०=झुरना।

स०=झुराना।

झूरा—वि० [हिं० झूर] १. सूखा। शुष्क। उदा०—काठहु चाहि अधिक सो झूरा।—जायसी। २. रस-हीन। नीरस। ३. जिसके साथ और कुछ या कोई न हो।। अकेला। ४. (वेतन) जिसके साथ भोजन आदि न मिलता हो। विशेष दे० 'सूखा'।

पुं० १. ऐसा स्थान जहाँ जल का अभाव हो। २. ऐसा समय जिसमें वृष्टि का अभाव हो। सूखा। ३. कमी। न्यूनता। विशेष दे० 'सूखा'।

क्रि० प्र०—पड़ना।

झूरि—स्त्री०=झूर।

झूरैं—क्रि० वि० [हिं० झूर] १. बिना किसी अर्थ या प्रयोजन के। यों ही। व्यर्थ। २. बिना किसी और उपकरण या सामग्री के। खाली।

†क्रि० वि०=झूठमूठ।

झूल—स्त्री० [हिं० झूलना] १. झूलने की क्रिया या भाव। २. वह चौकोर कपड़ा जो प्रायः शोभा के लिए घोड़ों, बैलों, हाथियों आदि की पीठ पर डाला जाता है और जो दाहिने-बाएँ झूलता या लटकता रहता है।

मुहा०—गधे पर झूल पड़ना=बहुत ही अयोग्य या कुपात्र पर कोई बहुत अच्छा अलंकरण या आवरण पड़ना।

३. वह कपड़ा जो पहनने पर ढीला-ढाला, भद्दा या भोंडा जान पड़े। (व्यंग्य) जैसे—किसी का ढीला-ढाला कोट देखकर कहना—यह झूल आपको कहाँ से मिल गई।

†पुं०=झूला।

झूल-दंड—पुं० [हिं० झूलना+सं० दंड] एक प्रकार का व्यायाम जिसमें बारी-बारी से बैठक और झूलते हुए दंड किया जाता है।

झूलन†—स्त्री० [हिं० झूलना] झूलने की क्रिया या भाव। झूल।

पुं० १. सावन के महीने में ठाकुरों, देवताओं आदि के संबंध में होनेवाला वह उत्सव जिसमें उनकी मूर्तियाँ हिंडोले में बैठाकर झुलाई जाती हैं और उनके सामने नृत्य, गीत आदि होते हैं। हिंडोला। २. उक्त अवसर पर अथवा सावन-भादों में गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत।

झूलना—अ० [सं० झुल्, प्रा० झुलइ, झुल्ल, उ० झुलिबा, गु० झूलवूँ, मरा० झुलणें, सिं० झुलणु] १. किसी आधार या सहारे पर लटकी हुई चीज का रह-रहकर आगे-पीछे या इधर-उधर लहराना अथवा हिलना-डोलना। जैसे—टँगा हुआ परदा या उसमें बँधी हुई डोरी का झूलना, पेड़ों में लगे हुए फलों का झूलना। २. झूले पर बैठकर पेंग लेना या बार-बार आगे बढ़ना और पीछे हटना। ३. किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि की आशा अथवा प्रतीक्षा में बार-बार किसी के यहाँ आना-जाना, अथवा अनिश्चित दशा में पड़े रहना। जैसे—किसी कार्यालय में नौकरी पाने की आशा में झूलना।

स० झूले पर बैठकर पेंग लेते हुए उसका आनन्द या सुख भोगना। जैसे—बरसात में लड़के-लड़कियाँ दिन भर झूला झूलती रहती हैं।

वि० [स्त्री० झूलनी] (पदार्थ) जो रह-रहकर इधर-उधर हिलता-डोलता हो। झूलता रहनेवाला या झूलता हुआ। जैसे—पहाड़ी झरने या नदी पर बना हुआ झूलना पुल।

पुं० १. मात्रिक सम दंडक छंदों का एक भेद या वर्ग जिसे प्राकृत में झुल्लण कहते थे। इसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ और पहली तथा दूसरी १० मात्राओं के बाद यति या विश्राम होता है। यतियों पर तुक मिलना और अन्त में यगण होना आवश्यक है। २. एक प्रकार का

वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में स, ज, ज, भ, र, स और लघु होता है। रूप-माला के प्रत्येक चरण के आरंभ में दो लघु रखने से भी यह छंद बन जाता है। इसमें १२ और ७ वर्णों पर यति होती है। इसे मणि-माल भी कहते हैं। ३. दे० 'झूला'।

झूलनी बगली—स्त्री० [हिं० झूलना+बगली] बगली की तरह की मुगदर की एक प्रकार की कसरत।

झूलनी बैठक—स्त्री० [हिं० झूलना+बैठक=कसरत] एक प्रकार की कसरत जिसमें बैठक करके पैर को हाथी के सूँड़ की तरह झुलाया जाता है।

झूलरि†—स्त्री० [हिं० झूलना] झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला—पुं० [सं० दोल या हिं० झूलना] १. पेड़ की डाल, छत या किसी और ऊँचे स्थान में बाँधकर लटकाई हुई दोहरी या चौहरी जंजीरें या रस्सियाँ जिन पर तख्ता, पीढ़ा या और कोई आसन लगाकर लोग खड़े होकर या बैठकर आनन्द और मनोविनोद के लिए झूलते हैं।

क्रि०—प्र०—झूलना।—डालना।—पड़ना।

२. जंगली या पहाड़ी नदियाँ और नाले पार करने के लिए उनके दोनों किनारों पर किसी ऊँचे खंभों, चट्टानों या पेड़ों की डालों पर रस्से बाँधकर बनाया जानेवाला वह पुल जिसका बीचवाला भाग अधर में लटकता और इसी लिए प्रायः इधर उधर झूलता रहता है। झूलना पुल। जैसे—लछमन झूला। ३. यात्रा आदि में काम आनेवाला वह बिस्तर जिसके दोनों सिरे दो ओर रस्सियों से वृक्षों की डालों आदि में बाँध देते हैं और जो उक्त प्रकार से बीच में झूलता या लटकता रहता है। ४. हवा का ऐसा झटका या झोंका जिससे चीजें इधर-उधर झूलने या हिलने-डोलने लगें। (क्व०) ५. दे० 'झूल'।

†पुं० [?] तरबूज।

†पुं०=झुल्ला (स्त्रियों का पहनावा)।

झूलि—स्त्री० १. =झूल। २. =झूली।

झूली—स्त्री० [हिं० झूलना] १. वह कपड़ा जिससे हवा करके अन्न ओसाया जाता है। २. ऐसा बिस्तर जिसके दोनों सिरे दोनों ओर किसी ऊँची चीज या जगह में बँधे हों और जिसका बीचवाला भाग झूलता रहता हो। (दे० 'झूला' के अन्तर्गत)

झूसा—पुं० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जिसे चौपाये बहुत चाव से खाते हैं। गुलगुला। पलंजी।

झेंपना—अ० [?] कोई लगती हुई बात सुनकर लज्जित भाव से सिर झुकाना या आँखें नीची करना। कुछ लज्जित होना।

संयो० क्रि०—जाना।

झेंपू—वि० [हिं० झेंपना] जो साधारण-सी बात होने पर भी लज्जित भाव से सिर या आँखें झुकाकर चुप रह जाता हो। प्रायः झेंप जानेवाला।

झेपना—अ०=झेंपना।

झेपू—वि०=झेंपू।

झेर†—स्त्री० [?] १. झगड़ा। बखेड़ा। २. उलझन। पेच। ३. देर। विलंब।

झेरना†—स० १.=छेड़ना (आरंभ करना)। २.=झेलना।

झेरा†—पुं० [?] १. गिरा या ढहा हुआ कूआँ। २. गड्ढा।

पुं०=झेर।

झेल—स्त्री० [हिं० झेलना] १. झेलने की क्रिया या भाव। २. हलका और सुखद आघात, धक्का या हिलोरा। ३. तैरने के समय पानी हटाने के लिए हाथ-पैर चलाने की क्रिया या भाव।

†स्त्री०=झेर (देर)।

झेलना—स० [सं० √जल्=घेरकर फँसाना ?] १. कठिन या विकट परिस्थिति आने या प्रसंग पड़ने पर उससे पार पाने के लिए धैर्य और साहस पूर्वक तत्संबंधी कष्ट सहना। विपत्तियों आदि से न घबराते हुए या उनकी परवाह न करते हुए उन्हें बरदाश्त या सहन करना। जैसे—(क) इतने बड़े परिवार का पालन करने में उन्हें बड़े-बड़े कष्ट झेलने पड़े। (ख) यहाँ तक आने में हमें रास्ते में कमर और छाती तक पानी झेलना पड़ा। २. लाक्षणिक रूप में, शुभ और सुखद परिस्थितियों का आनन्द लेते हुए भोग करना। उदा०—बाल केलि को विशद परम सुख, सुख समुद्र नृप झेलत।—सूर। ३. उचित ध्यान देते हुए ग्राह्य या मान्य करना। कोई बात सुनकर मान लेना। उदा०—पायन आनि परे तो परे रहे, केतो करी मनुहार न झेली।—मतिराम। ४ (कोई चीज या बात) हजम करना। पचाना।

झेलनी—स्त्री० [हिं० झेलना] वह जंजीर जो गहनों आदि में उनका भार सँभालने अथवा उन्हें यथास्थान ठहराये रखने के लिए उनमें लगी रहती है और जिसका दूसरा सिरा ऊपर कहीं अटकाया या खोंसा जाता है। जैसे—नथ या बाली की झेलनी।

झेली—स्त्री० [हिं० झेलना] प्रसव के समय प्रसूता स्त्री को विशेष प्रकार से हिलाने-डुलाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।

झोंक—स्त्री० [सं० जूटक (जटा)] १. झोंकने की क्रिया या भाव। २. सहसा किसी बात की ओर वेगपूर्वक झुक पड़ने अथवा मन के प्रवृत्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—झोंक में आकर कोई काम कर बैठना। ३. नशे, मनोविकार, रोग आदि की अवस्था में सहसा मन में होनेवाली वह प्रवृत्ति जिसमें भले-बुरे का ज्ञान अथवा ध्यान न रह जाता हो। जैसे—पागलपन (या बीमारी) की झोंक में वह दिन भर बकता-झकता रहा। ४. किसी कार्य में होनेवाली ऐसी तल्लीनता जिसमें कुछ प्रमाद या भूल हो जाने की संभावना बनी रहती हो अथवा औचित्य की सीमा का उल्लंघन हो सकता हो। जैसे—(क) लिखने की झोंक में कलम से कुछ ऐसी बातें भी निकल गईं जो नहीं आनी चाहिए थीं। (ख) पहली ही झोंक में उसने आधा काम निपटा डाला। ५. गति की ऐसी तीव्रता या वेग जो सहसा रुक न सकता हो अथवा जिसे सँभालना प्रायः कठिन होता हो। जैसे—(क) मोटर इतनी झोंक से जा रही थी कि चालक उसे ढाल पर रोक न सका। (ख) नींद की झोंक में वह पलंग से गिरता-गिरता बच गया। ६. किसी चीज के यों ही अथवा वेगपूर्वक किसी ओर झुकने की क्रिया, प्रवृत्ति या भाव। जैसे—(क) नदी के बहाव की किनारे पर पड़नेवाली झोंक। (ख) तराजू की डंडी या पलड़े में होनेवाली झोंक (पासंग की सूचक)।

मुहा०—झोंक मारना=कौशल या वेगपूर्वक तराजू का आगेवाला पलड़ा इस प्रकार आगे झुकाना कि देखनेवाला समझ ले कि चीज तौल में पूरी हो गई। डाँड़ी मारना।

७. उक्त प्रकार के झुकाव, नति या प्रवृत्ति के कारण किसी ओर अथवा

किसी चीज पर पड़नेवाला बोझ या भार।—जैसे—दीवार (या बरामदे) की सारी झोंक इसी खंभे पर पड़ती है।

पद—नोक-झोंक। (देखें)

८. बैलगाड़ी में वे दोनों लट्ठे जो दोनों ओर उसका झुकाव या भार रोकने के लिए लगे रहते हैं। ९. दे० 'झोंका'। १०. दे० 'झोंकी'।

झोंकदार—वि० [हिं० झोंक+दार (प्रत्य०)] (वास्तु कला में, ऐसी रचना) जो सम रेखा के नीचे की ओर झुकी हुई हो। जैसे—झोंकदार छज्जा।

झोंकना—स० [हिं० झोंक] १. झोंक या वेग से एक चीज किसी दूसरी चीज में गिराना, डालना या फेंकना। जैसे—(क) इंजन में कोयला, भट्ठी में लकड़ी या भाड़ में झाड़-झंखाड़ झोंकना। (ख) लड़के को कूएँ में झोंकना।

मुहा०—भाड़ झोंकना =दे० 'भाड़' के मुहावरे।

२. ढकेलते या धक्का देते हुए अथवा बलपूर्वक किसी अनिष्ट, अप्रिय अथवा कष्टप्रद स्थिति की ओर अग्रसर करना। जान-बूझकर विपत्ति या संकट में डालना या फँसाना। जैसे—तुम तो मजे में घर बैठे रहे, और मुझे तुमने इस झंझट (मुकदमेबाजी, लड़ाई-झगड़े आदि) में झोंक दिया। ३. किसी प्रकार का कार्य या भार जबरदस्ती किसी पर रखना या लादना। जैसे—यह काम भी तुमने मुझ पर ही झोंक दिया। ४. धन आदि के संबंध में बिना परिणाम आदि का विशेष विचार किये आवश्यकता से कहीं अधिक व्यय करना। जैसे—अमेरिका आज-कल अरबों रुपए संसार के पिछड़े हुए देशों में झोंक रहा है।

झोंकवा†—पुं० [हिं० झोंकना] १. वह जो कहीं कोई चीज झोंकते रहने की सेवा पर नियुक्त हो। २. भट्ठे, भाड़ आदि में ईंधन झोंकनेवाला व्यक्ति।

झोंकवाई—स्त्री० [हिं० झोंकना] १. झोंकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २.=झोंकाई।

झोंकवाना†—स० [हिं० झोंकना का प्रे०] झोंकने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ झोंकने में प्रवृत्त करना।

झोंका—पुं० [हिं० झोंक] १. शांत या स्तब्ध वातावरण में थोड़े समय के लिए सहसा वेगपूर्वक चलनेवाली वायुलहरी। २. थोड़े समय के लिए परन्तु सहसा तथा वेगपूर्वक होनेवाली वर्षा। ३. पानी की लहर। हिलोरा। ४. थोड़े समय के लिए परन्तु सहसा आनेवाली नींद। ५. वेगपूर्वक चलनेवाली वस्तु का लगनेवाला आघात या झटका। ६. वेगपूर्वक इधर-उधर झुकने या हिलने की क्रिया या भाव। ७. उक्त प्रकार के हिलने-डोलने के कारण लगनेवाला आघात, झटका या धक्का। ८. किसी प्रकार के उत्कर्ष आदि में दिखाई देनेवाली अनोखी असाधारणता या विशेषता। उदा०—कटि लहँगा लीलो बन्यो झोंको जो देखि मन मोहै।—सूर। ९. कुश्ती का एक पेंच जिसमें विपक्षी की बाँह के नीचे से हाथ ले जाकर उसके कन्धे पर रखते और तब उसे झटके या झोंके से नीचे गिरा देते हैं।

झोंकाई—स्त्री० [हिं० झोंकना] १. झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकिया†—पुं०=झोंकवा।

झोंकी—स्त्री० [हिं० झोंका] १. ऐसी स्थिति जिसमें अनिष्ट, संकट, हानि आदि की विशेष आशंका या संभावना हो। जोखिम। २. ऐसा साहसपूर्ण कार-बार या लेन-देन जिसमें लाभ और हानि दोनों की बराबर बराबर संभावना हो। (व्यापारी)

क्रि० प्र०—उठाना।—लेना।—सहना।

३. उत्तरदायित्व। जवाबदेही।

झोंझ†—पुं० [देश०] १. पक्षियों का घोंसला। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के पक्षियों के गले में लटकनेवाली मांस की थैली या झालर। जैसे—गिद्ध का झोंझ। ३. उदर। पेट। ४. कोलाहल। हल्ला। ५. खुजली। चुल।

मुहा०—झोंझ मारना=किसी अनिष्ट या अनुचित बात की कामना या वासना होना।

झोंझल—स्त्री०=झुँझल (झुँझलाहट)।

झोंट—पुं० [सं० झुंट] १. झाड़ी। २. झाड़ियों या पौधों का झुरमुट। ३. घास-फूस आदि का पूला। जूट्टी। ४. झुंड। समूह।

†पुं०=झोंटा।

झोंटा—पुं० [सं० जूट] [स्त्री० अल्पा० झोंटी] १. सिर पर के बढ़े हुए लंबे-लंबे बालों का समूह। उदा०—लगे घसीटन धरि धरि झोंटी।—तुलसी।

पद—झोंटा-झोंटी=ऐसी लड़ाई जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरे का झोंटा ही पकड़कर खींचते हों। **झोंटी-झोंटा**=झोंटा-झोंटी।

२. पतली और लंबी वस्तुओं का इतना बड़ा समूह जो एक बार हाथ में आ सके।

पुं०=झूंटा (पेंग)।

पुं० [हिं० ढोटा] १. भैंसा। २. भैंस का बच्चा। पड़वा।

झोंपड़ा—पुं० [सं० झोप्प या झोम्प] [स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी] गाँव, जंगल आदि में बना हुआ वह छोटा घर जिसकी दीवारें मिट्टी की और छाजन घास-फूस आदि की होती है। कुटी। पर्णशाला।

झोंपड़ी—स्त्री० [हिं० झोंपड़ा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा झोंपड़ा।

झोंपा—पुं० [हिं० झब्बा] १. झब्बा। फुँदना। २. गुच्छा।

झोकना—स०=झोंकना।

झोकवाना—स० [भाव० झोकवाई] झोंकवाना।

झोका—पुं०=झोंका।

झोझ—पुं०=झोंझ।

झोझर—पुं० [अनु०]=ओझर।

झोझरू—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास।

झोझा—वि० [हिं० झोंझ=पेट] जिसका पेट फूला तथा बढ़ा हुआ हो। तोंदवाला।

झोंटिंग—वि० [हिं० झोंटा] जिसके सिर पर झोंटा अर्थात् लंबे-लंबे बाल हों। झोंटेवाला।

पुं०=झोंटा।

झोड—पुं० [सं०] सुपारी का वृक्ष।

झोड़ी†—स्त्री०=झोली।

झोपड़ा—पुं० [स्त्री० अल्पा० झोपड़ी]=झोंपड़ा।

झोर†—पुं०=झोल।

झोरई†—वि० [हिं० झोल] (तरकारी) जिसमें झोल, रसा या शोरबा हो। रसेदार।

स्त्री॰ रसेदार तरकारी।

झोरना†—स॰ [सं॰ दोलन या हिं॰ झकझोरना] १. सहसा जोर से हिलाकर गति में लाना। २. इस प्रकार किसी चीज को हिलाना या झटकारना कि उस पर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीजें गिर जायँ। ३. झकझोरना। ४. बलपूर्वक या धोखे से धन ऐंठना। ५. अच्छी तरह तृप्त होकर खाना। ६. इकट्ठा या एकत्र करना।

झोरा†—पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ झोरी]=झोला।

पुं॰ [?] गुच्छा। झब्बा।

झोरि†—स्त्री॰=झोली।

झोरी—स्त्री॰ [?] एक प्रकार की रोटी।

†स्त्री॰=झोली।

झोल—पुं॰ [हिं॰ झूलना या झूला] १. ताने जानेवाले कपड़ों का वह अंश या भाग जो उचित कसाव या तनाव के अभाव में किसी ओर कुछ झुका, दबा या फूला रहता है। जैसे—छत में टँगी हुई चादर या शामियाने में का झोल। २. पहनने के कपड़ों में उक्त प्रकार का ढीला-ढाला अंश जो प्रायः कटाई-सिलाई आदि के दोषों के कारण होता है। जैसे—कमीज, कुरते या कोट में का झोल। ३. ओढ़े या बाँधे जानेवाले कपड़ों का आँचल, पल्ला या सिरा जो किसी ओर झूलता या लटकता रहता है। जैसे—पगड़ी या साड़ी का झोल। ४. झिल्ली की वह थैली जिसमें गर्भ से निकलने के समय अंडे या बच्चे बंद या लिपटे रहते हैं।

मुहा॰—झोल बैठाना=सेने के लिए मुरगी के नीचे अंडे रखना।

५. खिड़कियों, दरवाजों आदि में टाँगने का परदा। ६. किसी प्रकार की खड़ी की हुई आड़ या ओट। ७. तरकारियों आदि में का रसा या शोरबा जिसमें उनके टुकड़े झूलते या इधर-उधर हिलते हुए दिखाई देते हैं। ८. उक्त प्रकार की अथवा कढ़ी की तरह की खाने या पीने की कोई चीज। जैसे—आम या इमली का झोल। ९. भात में से निकाली हुई पीच। माँड़। १०. धातु की चीजों पर किया जानेवाला गिलट या मुलम्मा।

क्रि॰ प्र॰—चढ़ाना।—फेरना।

११. हाथी की वह दोषपूर्ण चाल जिसमें वह कुछ इधर-उधर झूलता हुआ-सा चलता है। १२. किसी प्रकार की कमी, त्रुटि या दोष। उदा॰—कैधों तुम पावन प्रभु नाहीं, कै कछु मो मैं झोलो।—सूर। १३. झंझट, धोखे या बखेड़े की बात। जैसे—यह सब झोल है, पहले हमारा रुपया चुकाकर तब और कोई बात करो। १४. चूक। भूल।

पद—झोल-झाल। (देखें)

वि॰ १. जिसमें उचित कसाव या तनाव न हो। २. निकम्मा और व्यर्थ का अथवा निस्सार। ३. दूषित। बुरा।

पुं॰ [हिं॰ झाल] १. जलन। दाह। २. भस्म। राख। उदा॰—तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल। —जायसी।

झोल-झाल—पुं॰ [हिं॰ झोल+अनु॰ झाल] १. कपड़ों में का झोल। २. निकम्मी या व्यर्थ की चीज या बात।

वि॰ १. ढीला-ढाला। २. निकम्मा या व्यर्थ। ३. दूषित। बुरा।

झोलदार—वि॰ [हिं॰ झोल+फा॰ दार] १. (तरकारी) जिसमें झोल अर्थात् रसा हो। रसेदार। २. (धातु) जिस पर मुलम्मा हुआ हो। ३. (वस्त्र) जिसमें झोल पड़ता हो।

झोलना—स॰ [सं॰ ज्वलन] १. तपाना या जलाना। २. संतप्त या दुःखी करना।

स॰ १. दे॰ 'झुलाना'। २. दे॰ 'झकझोरना'।

†अ॰ दे॰ 'झूलना'।

झोला—पुं॰ [हिं॰ झूलना या झोली] [स्त्री॰ अल्पा॰ झोली] १. कपड़े आदि की सिली हुई एक प्रकार की प्रसिद्ध लंबोतरी थैली जिसके मुँह पर डोरी या तनी उसे पकड़ने या लटकाने के लिए लगी रहती है। थैला। २. कपड़े का सिला हुआ आवरण। खोली। जैसे—बंदूक का झोला। ३. साधुओं के पहनने का ढीला-ढाला कुरता। ४. वात रोग के कारण होनेवाला एक प्रकार का पक्षाघात जिसमें हाथ या पैर निष्प्राण होकर झूलने लगते हैं।

क्रि॰ प्र॰—मारना।

५. पाले, लू आदि के कारण पेड़ों के कुम्हला या सूख जाने का एक रोग। ६. आघात। धक्का। ७. झोंका। झकोरा। उदा॰—कोई खाहिं पवन कर झोला।—जायसी। ८. पाल की रस्सी को ढीला करने की क्रिया। ९. इशारा। संकेत।

झोलिहारा—पुं॰ [हिं॰ झोली+हारा (प्रत्य॰)] १. वह जो गले या हाथ में अथवा कंधे पर झोली लटकाकर चलता हो। २. कहार।

झोली—स्त्री॰ [प्रा॰ झोल्लिअ] १. छोटा झोला। थैली। २. ओढ़े या पहने हुए कपड़े का पेट पर पड़नेवाला वह अंश जिसे दोनों हाथों से फैलाकर उसमें कोई चीज ग्रहण की जाती है। जैसे—फकीर अपनी झोली में रोटियाँ रखता जाता था।

क्रि॰ प्र॰—फैलाना।

मुहा॰—झोली डालना=भिक्षा ग्रहण करने के लिए झोली फैलाना। **(किसी की) झोली भरना**=देवी, देवता आदि का प्रसाद किसी की झोली में डालना। (मंगल सूचक)

३. वह कपड़ा जिसकी सहायता से अनाज ओसाया या बरसाया जाता है। ४. घास-भूसा आदि बाँधने का बड़ा जाल। ५. चीजें फँसाने के लिए बनाया जानेवाला रस्सियों का एक प्रकार का फंदा। ६. चरसा। मोट। ७. एक प्रकार का सफरी बिस्तर। विशेष दे॰ 'झूला' के अन्तर्गत।

स्त्री॰ [सं॰ ज्वाल या झाला] राख। भस्म।

मुहा॰—झोली बुझाना=(क) कार्य का संपादन या बात की सिद्धि हो जाने के उपरान्त किसी का उसे करने का ढोंग रचना। (ख) निराश होकर या व्यर्थ बैठना।

झौंझट†—स्त्री॰=झंझट।

झौंद†—पुं॰=झोंझ (पेट)।

झौंर†—पुं॰=झौर।

झौंरना†—स॰=झौरना।

अ॰ [?] गूँजना। गुंजारना।

झौंरा†—पुं॰=झौर।

झौंराना—अ॰, स॰=झँवाना।

†अ॰=झूमना।

स॰ झूमने में प्रवृत्त करना।

झौंसना†—स॰=झुलसना।

झौआ†—पुं० [हिं० झावा] [स्त्री० अल्पा० झौनी] मिट्टी आदि ढोने का खाँचा।

झौड़—स्त्री० [हिं० झाँव झाँव से अनु०] १. कहा-सुनी। २. हुज्जत। ३. डाँट-फटकार। ४. झंझट। बखेड़ा।

झौनी†—स्त्री० [देश०] टोकरी। दौरी।

स्त्री० हिं० 'झौआ' का स्त्री अल्पा० रूप। छोटा खाँचा।

झौर—पुं० [?] १. फूलों आदि का गुच्छा। उदा०—माधुरी झौरनि फूलनि भौंरनि बौरनि बौरनि बेली बची है।—देव। २. सूत आदि का झब्बा। ३. झुंड। समूह। उदा०—कहैं रत्नाकर गुवालिनि की झौरि झौरि दौरि दौरि नन्द पौरि आवन तबै लगीं।—रत्नाकर। ४. झुमका नाम का गहना।

†स्त्री०=झौड़ (कहा-सुनी, तकरार आदि)।

झौरना—स० [प्रा० झोडण] १. दबाने के लिए झपट कर पकड़ना। २. छोप लेना।

स० [हिं० झौर+ना (प्रत्य०)] झुंड बनाना।

झौरा—पुं० १. =झौर। २. =झौड़।

झौरे—क्रि० वि० [हिं० धौरे] १. समीप। पास। निकट। २. संग। साथ।

झौवा†—पुं०=झौआ।

झौहाना—अ० [अनु०] क्रुद्ध होकर झल्लाते हुए बोलना।

ञ

ञ—देवनागरी वर्ण-माला का दसवाँ व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तालव्य, अनुनासिक, अल्प-प्राण यथा सघोष है।

ट

ट—देवनागरी वर्ण-माला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा अघोष है।

पुं० [सं०√टल् (उपद्रव करना)+ड] १. नारियल का खोपड़ा २. वामन। बौना। ३. किसी चीज का चौथाई भाग। चतुर्थांश। ४. आवाज। शब्द।

टंक—पुं० [सं०√टंक् (बाँधना, कसना आदि)+घञ्] १. प्राचीन भारत में चाँदी की एक तौल जो प्रायः चार मासे के बराबर होती थी। २. उक्त तौल का बटखरा या बाट जिसके भार के हिसाब से टकसाल में सिक्के ढाले जाते थे। ३. उक्त तौल का चाँदी का एक पुराना सिक्का। ४. मोती की एक तौल जो लगभग २१ रत्ती की होती थी। ५. पत्थर काटने और गढ़ने की टाँकी। ६. कुदाल। फरसा। फावड़ा। ७. कुल्हाड़ी। ८. तलवार। ९. तलवार की म्यान। १०. टाँग। पैर। ११. अभिमान। घमंड। १२. क्रोध। गुस्सा। १३. सुहागा। १४. पहाड़ का खड्ड। १५. नीला कैथ। १६. बेल की तरह का एक प्रकार का कँटीला पेड़ और उसका फल। १७. सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग जो रात के समय गाया जाता है।

पुं० [अं० टैंक] १. तालाब। २. पानी रखने का बड़ा हौज। ३. स्थल पर चलनेवाला एक युद्धयान जिस पर तोपें चढ़ी रहती हैं।

टंकक—पुं० [सं० टंक+कन्] १. सिक्का, विशेषतः चाँदी का ऐसा सिक्का जिस पर छाप आदि लगी हुई हो। २. कुदाल।

पुं० [सं० टंकण से] आज-कल वह व्यक्ति जो टंकण यंत्र पर चिट्ठी-पत्री आदि छापता हो। (टाइपिस्ट)

टंकक-शाला—स्त्री० [ष० त०] धातुओं के सिक्के ढालने का कारखाना। टकसाल।

टंकटीक—पुं० [सं० ब० स०] महादेव। शिव।

टंकण—पुं० [सं०√टंक्+ल्यु—अन, णत्व] १. टाँकी से कोई चीज काटने, गढ़ने, तोड़ने आदि का काम। २. टाँका या जोड़ लगाने का काम। ३. दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। ४. उक्त देश में होनेवाला एक प्रकार का घोड़ा। ५. सुहागा। सिक्के ढालने तथा उन पर चित्र, चिह्न आदि की छाप लगाने की क्रिया या भाव। ६. आज-कल टंकण-यंत्र पर चिट्ठी-पत्री आदि छापने का काम। (टाइपराइटिंग)

टंकण-यंत्र—पुं० [ष० त०] आज-कल छापे की एक प्रकार की छोटी कल जिसमें अलग-अलग पत्तियों पर अक्षर खुदे होते हैं और उन पत्तियों को जोर से दबाने पर वे अक्षर ऊपर लगे हुए कागज पर छपते चलते हैं। इससे प्रायः चिट्ठियाँ, छोटे लेख आदि छापे जाते हैं। (टाइपराइटर)

टंकना—अ० [हिं० टाँकना का अ० रूप] १. टाँका जाना। २. कपड़े आदि के टुकड़ों के जोड़ पर सूई-धागे से टाँका लगाया जाना। ३. टाँका लगने के कारण कपड़े के एक टुकड़े का दूसरे टुकड़े के साथ अथवा किसी चीज का कपड़े पर अटकाया जाना। जैसे—साड़ी में बेल या कमीज में बटन टंकना। ४. धातुखंडों या पात्रों का टाँके के योग से जोड़ा जाना। ५. टाँकी आदि के द्वारा चक्की, सिल आदि का रेहा जाना। ६. स्मरण रखने के लिए संक्षिप्त रूप में कहीं लिखा जाना। जैसे—खाते में रकम टँकना। ७. अनुचित रूप से हड़प लिया जाना।

टंक-पति—पुं० [ष० त०] टंक-शाला अर्थात् टकसाल का प्रधान अधिकारी।

टंक-मार—स्त्री० [अं० टैंक+हिं० मारना] एक प्रकार की बहुत बड़ी तोप जिसका उपयोग टैंकों पर मढ़ी हुई इस्पात की मोटी चादरें तोड़ने में होता है।

टंकवान् (वत्)—पुं० [सं० टंक+मतुप्] वाल्मीकि-रामायण में वर्णित एक पर्वत।

टँकवाना—स० [हिं० टाँकना का प्रे० रूप] १. टाँकने का काम दूसरे से कराना। टँकाना। २. टाँका लगवाना। ३. स्मरण रखने के लिए लिखवाना। †४. (सिक्का) परखवाना। जँचवाना। ५. खिलाना। ६. लाभ कराना। (दलाल)

टंकशाला—स्त्री० [ष० त०] टंक अर्थात् सिक्के ढालने तथा उन पर अंक, चित्र, चिह्न आदि छापने का कारखाना। टकसाल।

टंका—स्त्री० [सं०√टंक्+अच्—टाप्] १. तारादेवी का एक नाम। २. जाँघ। रान। ३. संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

पुं० [सं० टंक] १. टंक नाम की पुरानी तौल। २. टका नाम का ताँबे का पुराना सिक्का।

†पुं० [देश०] एक प्रकार का गन्ना। टनका।

टँकाई—स्त्री० [हिं० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टंकानक—पुं० [सं० टंक√अन् (प्रदीप्त करना)+ण्वुल्–अक] शहतूत।

टँकाना—स० [हिं० टाँकना का प्रे० रूप]=टँकवाना।

टंकार—स्त्री० [सं० टम्√कृ (करना)+अण्] १. धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) को तानकर सहसा ढीला छोड़ने पर टन-टन होनेवाली कर्कश ध्वनि। २. धातु-खंड, विशेषतः धातु के कसे या तने हुए तार पर आघात लगने से होनेवाला टन टन शब्द। टनाका। ३. तर्जनी या मध्यमा उँगली का नाखून अँगूठे से दबाकर वह उँगली झटके से छोड़ते हुए इस प्रकार किसी चीज पर आघात करना कि उससे टन का शब्द हो। ४. चिल्लाहट। ५. ख्याति। ६. कुख्याति। ७. आश्चर्य। अचरज।

टंकारना—स० [सं० टंकार] १. धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) को तानकर सहसा ढीला छोड़ना जिससे वह टन-टन शब्द करने लगे। २. टन-टन शब्द उत्पन्न करना।

टंकारी (रिन्)—वि० [सं० टंकार+इनि] टंकार उत्पन्न करनेवाला।

स्त्री० [सं० टंक√ऋ (गति)+अण्–ङीप्] लंबोतरी पत्तियोंवाला एक प्रकार का वृक्ष जिसमें कई रंगों के फूल लगते हैं और जिसके कुछ अंग औषध के काम आते हैं।

टंकिका—स्त्री० [सं० टंकक+टाप्, इत्व] लोहे की वह छोटी टाँकी जिससे चक्की, सिल आदि रेती जाती है।

टंकी—स्त्री० [अं० टैंक, मि० सं० टंक=गड्ढा] १. गारे-चूने-ईंट, पत्थर, लोहे आदि का वह चौकोर आधान जिसमें पानी भर कर रखा जाता है। कुंड। हौज। २. पानी रखने का एक प्रकार का बरतन।

स्त्री० [?] एक प्रकार की रागिनी।

†स्त्री०=पंक्ति।

टँकुआ† —वि० [हिं० टाँकना] [स्त्री० टँकुई] (वस्त्र) जिस पर कोई चीज टाँकी गई हो। जैसे—टँकुआ दुपट्टा। टँकुई साड़ी।

टंकोर†—स्त्री०=टंकार।

टंकोरना†—स०=टंकारना।

टंकौरी—स्त्री० [सं० टंक] टंक अर्थात् सिक्के आदि तौलने की छोटी तुला। तराजू।

विशेष—प्राचीन काल में सिक्कों को तौलकर देखा जाता था कि कहीं इसमें धातु की मात्रा कम या अधिक तो नहीं है।

टंग—पुं० [सं० टंक√पृषो० सिद्धि] १. टाँग। २. कुल्हाड़ी। ३. कुदाल। फरसा। ४. सुहागा। ५. चार मासे की एक तौल। टंक।

टँगड़ी—स्त्री०=टाँग। (टँगड़ी के मुहा० के लिए दे० 'टाँग' के मुहा०)।

टंगण—पुं० [सं० टंकण, पृषो० सिद्धि] सोहागा।

टँगना—अ० [सं० टंकण] १. टाँगा जाना। २. किसी चीज का ऊपरी भाग किसी ऊँचे आधार के साथ या स्थान पर इस प्रकार अटकाया, जड़ा, बाँधा या लगाया जाना कि वह चीज उसी के सहारे टिकी या ठहरी रहे। ३. फाँसी पर चढ़ाया जाना।

पुं० १. दो खूँटियों आदि में बेड़े बल में बँधा हुआ तार, बाँस, रस्सी आदि जिस पर वस्त्र आदि टाँगे जाते हैं। २. उक्त काम के लिए लकड़ी का बनाया हुआ एक प्रकार का ऊँचा चौखटा।

टँगरी†—स्त्री०=टँगड़ी (टाँग)।

टँगवाना—स० [हिं० टाँगना का प्रे० रूप] किसी को कुछ टाँगने में प्रवृत्त करना।

टँगा†—पुं० [देश०] मूंज।

टँगाना—स०=टँगवाना।

अ०=टँगना।

टँगारी†—स्त्री० [सं० टंग] कुल्हाड़ी।

टंगिनी—स्त्री० [सं०√टंक् (गलाना आदि)+णिनि, पृषो० सिद्धि] पाठा।

टंच—वि० [सं० चंड, हिं० चंट] १. बहुत बड़ा कंजूस या कृपण। २. बहुत बड़ा चालाक या धूर्त्त। उदा०—पायो जानि जगत में सब कपटी कुटिल कलिजुगी टंचु।—हरिवंश। ३. निष्ठुर।

वि० दे० 'टिंचन'।

टंट-घंट—पुं० [अनु० टन-टन+सं० घंटा] १. पूजा-पाठ का भारी आडंबर या आडंबरपूर्ण सामग्री। २. फालतू, रद्दी या व्यर्थ की चीजें।

टंटा—पुं० [अनु० टन-टन] १. ऐसा व्यर्थ का उपद्रव, झगड़ा या बखेड़ा जिसमें बहुत-सी पेचीदी बातें हों। सारहीन लड़ाई या वैर-विरोध।

क्रि० प्र०—मचाना।

२. निकम्मी, रद्दी या व्यर्थ की चीजें या विस्तार।

टंडर—पुं०=टेंडर।

टंडल—पुं०=टंडैल।

†पुं०=टेंडर।

टँडिया—स्त्री० [सं० ताड़] बाँह पर पहनने का टाँड़ नामक गहना।

टँडुलिया—स्त्री० [देश०] बन-चौलाई।

टंडैल—पुं० [अं० टेंडर] १. मजदूरों का सरदार। २. हृष्ट-पुष्ट जवान।

टंसरी—स्त्री० [?] एक प्रकार की वीणा।

टँसहा†—पुं० [हिं० टाँस+हा (प्रत्य०)] वह बैल जिसकी टाँग की नसें सिकुड़ गई हों और जो इसी कारण लँगड़ा कर चलता हो।

टई†—स्त्री० १. =टही (थाक)। २. =टहल।

टक—स्त्री० [सं० टंक=बाँधना वा सं० त्राटक] अनुराग, आश्चर्य, प्रतीक्षा आदि के कारण किसी ओर मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से देखते रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। नजर गड़ाकर लगातार किसी ओर देखते रहना। टकटकी।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—लगना।—लगाना।

मुहा०—टक-टक देखना=विवशता की दशा में स्थिर दृष्टि से देखते रहना। **टक लगाना**=आसरा देखते रहना। दृष्टि लगाकर ध्यानपूर्वक किसी ओर देखते रहना।

स्त्री० [?] चीजें या बोझ तौलने का बड़ा तराजू।

टकटका†—पुं०=टकटकी।

टकटकाना†—स०. [हिं० टक] टकटकी लगाकर किसी ओर देखना। स्थिर दृष्टि किए हुए किसी ओर देखते रहना।

स० [अ०] टक-टक शब्द उत्पन्न करना।

अ० टक-टक शब्द होना।

टकटकी—स्त्री० [हिं० टक या सं० त्राटकी] टक लगाकर, मनोनिवेशपूर्वक स्थिर दृष्टि से किसी ओर देखते रहने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—लगना।—लगाना।

टकटोना—स०=टकटोरना। उदा०—सबै देस टकटोये।—नागरीदास।

टकटोरना†—स० [हिं० टकटकी] अन्धकार आदि में किसी चीज के आकार, रूप आदि का पता लगाने के लिए उसे जगह-जगह से छूकर देखना। टटोलना।

टकटोलना—स० [अनु०]=टकटोरना।

टकटोहन†—पुं० [हिं० टकटोना] टटोलने की क्रिया या भाव।

टकटोहना†—स०=टकटोरना।

टकतंत्री—स्त्री० [सं०] पुरानी चाल का एक प्रकार का सितार की तरह का बाजा।

टकना—पुं० दे० 'टखना'।

अ०=टँकना।

टकबीड़ा—पुं० [देश०] प्राचीन काल में मंगल तथा शुभ अवसरों पर प्रजा द्वारा जमींदार को दी जानेवाली भेंट।

टकराना—अ० [हिं० टक्कर] १. विपरीत दिशाओं में वेगपूर्वक आगे बढ़नेवाली दो वस्तुओं, व्यक्तियों आदि अथवा उनके अगले भागों या सिरों का आपस में इस प्रकार भिड़ना या जोर से लगना कि उनमें से किसी एक अथवा दोनों को भारी आघात लगे। जैसे—बाइसिकिलों या मोटरों का टकराना। २. किसी दिशा में चलती या बढ़ती हुई वस्तु का मार्ग में खड़ी किसी बड़ी या भारी चीज से सहसा तथा जोर से जा लगना अथवा आघात करना। जैसे—किनारे से लहरों का टकराना। ३. किसी के मार्ग में बाधक होना अथवा किसी का मुकाबला या सामना करने के लिए उसके मार्ग में आना या पड़ना। संघर्ष होना। जैसे—जो हमसे टकरायेगा चूर-चूर हो जायगा। ४. इधर-उधर मारे-मारे फिरना। टक्करें खाना।

स० एक चीज पर दूसरी चीज मारना।

स० दो चीज़ों के अगले भागों या सिरों को एक दूसरे से इस प्रकार जोर से भिड़ाना कि उनमें से एक या दोनों को चोट लगे या उनकी कोई विशेष हानि हो। आपस में टक्कर खिलाना या लगाना।

टकरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड़।

टकसरा—पुं० [देश०] भारत के पूर्वी प्रदेशों में होनेवाला एक तरह का बाँस।

टकसार†—स्त्री०=टकसाल।

टकसाल—स्त्री० [सं० टकशाला] [वि० टकसाली] १. प्राचीन भारत में वह कारखाना जहाँ पैसे, रुपए आदि के सिक्के ढलते थे। २. आज-कल वह स्थान जहाँ आधुनिक यंत्रों से ठप्पों आदि की सहायता से रुपए, पैसे आदि के सिक्के तैयार किये या बनाये जाते हैं। ३. लाक्षणिक रूप में, वह स्थान जहाँ मानक चीजें बनती हों।

मुहा०—टकसाल चढ़ाना=(क) प्राचीन भारत में खरे-खोटे की परख के लिए सिक्कों का टकसाल में पहुँचना। (ख) लाक्षणिक रूप में, किसी चीज का ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ उसकी बुराई-भलाई की परख हो सके। (ग) दुष्कर्मों आदि में पराकाष्ठा या पूर्णता तक पहुँचना। (परिहास और व्यंग्य)

पद—टकसाल-बाहर=(चीज या बात) जो ठीक, प्रामाणिक या मानक न मानी जाती हो। जैसे—इस प्रकार के प्रयोग आधुनिक भाषा में टकसाल बाहर माने जाते हैं। ४. वह चीज या बात जो सब प्रकार से ठीक, निर्दोष, प्रामाणिक या मानक मानी जाती हो। उदा०—सार शब्द टकसार (ल) है, हिरदय माँहि विवेक।—कबीर।

टकसाली—वि० [हिं० टकसाल] १. टकसाल-संबंधी। टकसाल का। २. टकसाल में ढला या बना हुआ। ३. उतना ही प्रामाणिक और लोकमान्य जितना टकसाल में ढाला हुआ असली सिक्का होता है। सब तरह से चलनसार, ठीक और मान्य। शिष्ट-सम्मत। जैसे—बा० बालमुकुंद गुप्त की भाषा टकसाली होती थी। ४. सब प्रकार से परीक्षित और प्रामाणिक। जैसे—आप की हर बात टकसाली होती है।

पुं० मध्य युग में टकसाल या सिक्के ढालनेवाले विभाग का प्रधान अधिकारी।

टकहा†—पुं०=टका।

वि०=टकाहा।

टकहाया—वि० [स्त्री० टकहाई]=टकाहा।

टका—पुं० [सं० टंक] १. प्राचीन भारत में चाँदी का एक सिक्का जो प्रायः आज-कल के एक रुपये के बराबर होता था। २. उक्त के आधार पर वैद्यक में तीन तोले की तौल। ३. अँगरेजी शासन में ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसे मूल्य का होता था। अधन्ना।

पद—टका भर=बहुत ही अल्प या थोड़ी मात्रा में। जैसे—टका भर घी दे दो। **टका सा**=बहुत ही छोटा, तुच्छ, थोड़ा या हीन। जैसे—टके-सी जान, और इतना गुमान। **टके गज की चाल**=(क) बहुत ही मद्धिम या सामान्य अथवा पुराने ढंग की चाल-ढाल या रहन-सहन। जैसे—वह तो जनम भर वही टके गज की चाल चलते रहे। (ख) बहुत ही धीमी गति या सुस्त चाल। जैसे—छोटी लाइन की गाड़ियाँ तो बस वही टके गज की चाल चलती हैं।

मुहा०—टका-सा जवाब देना=उसी प्रकार तिरस्कारपूर्वक और नकारात्मक उत्तर देना जैसे किसी भिक्षुक के आगे टका फेंका जाता था। इनकार करते हुए साफ जवाब देना। **टका-सा मुँह लेकर रह जाना**=अपमानित या तिरस्कृत होने पर लज्जित भाव से चुप रह जाना।

४. धन-सम्पत्ति। रुपया-पैसा। ५. गढ़वाल के पहाड़ी इलाकों की एक तौल जो प्रायः सवा सेर के लगभग होती है।

टकाई—वि०, स्त्री०=टकहाई (टकहाया का स्त्री० रूप)।

स्त्री०=टकासी।

टकातोप—स्त्री० [देश०] समुद्री जहाजों पर की एक प्रकार की छोटी तोप।

टकाना†—स०=टँकवाना।

टकानी—स्त्री०=टेकानी।

टकासी—स्त्री० [हिं० टका] १. एक रुपये पर प्रतिमास दो पैसे का सूद

या ब्याज देने-लेने का एक ढंग। २. मध्य युग में व्यक्ति पीछे एक टके के हिसाब से लगनेवाला कर या चंदा।

स्त्री०=टकहाई।

टकाहा†—वि०[हिं० टका] [स्त्री० टकाही] टके-टके पर बिकने या मिलनेवाला; अर्थात् बहुत ही तुच्छ या हीन। जैसे—टकाहा कपड़ा, टकाही रंडी।

टकाही—वि० हिं० 'टकाहा' का स्त्री० रूप।

स्त्री० बहुत ही निम्न कोटि की वेश्या या दुश्चरित्रा स्त्री।

†स्त्री दे० 'टकासी'।

टकी†—स्त्री०=टकटकी।

टकुआ—पुं०[सं० तर्कुक, प्रा० तक्कुअ] [स्त्री० अल्पा० टकुई, टकुली] १. चरखे में का तकला। (देखें) २. कई प्रकार के छोटे अँकुसीदार या टेढ़े औजारों की संज्ञा। जैसे— बिनौले निकालने का टकुआ; मोची का टकुआ।

टकुली—स्त्री०[हिं० टकुआ] १. छोटा टकुआ। २. नक्काशी करनेवालों का एक औजार।

स्त्री० [?] सिरिस की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।

टकूचना—स०[हिं० टाँकना=खाना] खाना। (दलाल)

टकैट—वि०=टकैत।

टकैत—वि०[हिं० टक+ऐत (प्रत्य०)] जिसके पास टके हों अर्थात् धनी। धनवान।

टकोर—स्त्री०[सं० टंकार] १. धनुष की डोरी खींचने से होनेवाला शब्द। टंकार। २. नगाड़े पर होनेवाला आघात। ३. आघात। ठेस।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

४. शरीर के किसी विकारग्रस्त विशेषतः सूजे हुए अंग पर दवा की पोटली को बार-बार गरम करके उससे किया जानेवाला हलका सेंक। ५. खट्टी या चरपरी चीज खाने से दाँतों या मसूड़ों में होनेवाली चुनचुनी या टीस। ६. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसी बात जिससे दुःखी व्यक्ति और अधिक दुःखी होता हो। (पश्चिम)

टकोरना—स०[हिं० टकोर] १. टकोर या हलका सेंक करना। २. हलका आघात लगाना। जैसे–डंका बजाने के लिए उसे टकोरना। ३. ठेस लगाना। ४. ऐसी बात कहना जिससे दुःखी व्यक्ति और अधिक दुःखी हो।

टकोरा—पुं०[सं० टंकार] १. डंके की चोट। २. आघात। ठेस।

टकोरी†—स्त्री०[सं० टंकार] हलकी चोट या आघात।

टकौना†—पुं०=टका।

टकौरी—स्त्री०[सं० टंक] सोना, चाँदी आदि तौलने का पुरानी चाल का एक प्रकार का काँटा या तराजू।

स्त्री० १.=टकासी। २.=टकहाई।

टक्क—पुं०[√टक् (बाँधना)+कक्, पृषो० सिद्धि] १. वाहीक जाति का आदमी। २. कंजूस व्यक्ति।

टक्क-देश—पुं०[सं० मध्य० स०] चनाब और ब्यास नदियों के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

टक्कदेशीय—वि०[सं० टक्कदेश+छ–ईय] १. टक्क देश का। २. टक्क देश में होनेवाला।

पुं० बथुआ नामक साग।

टक्कर—स्त्री०[प्रा०] १. दो या अधिक चीजों के आपस में टकराने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. एक ही सीध में, परन्तु दो विपरीत दिशाओं में वेगपूर्वक आगे बढ़ने या चलनेवाली दो वस्तुओं, व्यक्तियों आदि के अगले भाग या सिरे के सहसा एक दूसरे से टकराने या भिड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—रेल-गाड़ियों की टक्कर। ३. बल-परीक्षा, मनोविनोद, व्यायाम आदि के लिए दो प्राणियों के आपस में मस्तक या सिर से एक दूसरे पर आघात करने या धक्का देने की क्रिया ग्रा भाव। जैसे––मेढ़ों या लड़कों में होनेवाली टक्कर।

क्रि० प्र०—लड़ना।––लड़ाना।

४. वेगपूर्वक आगे बढ़ने के समय किसी वस्तु या व्यक्ति के अगले या ऊपरी भाग का मार्ग में पड़नेवाली किसी बड़ी या भारी चीज के साथ इस प्रकार लगनेवाली ठोकर या होनेवाली भिड़न्त कि उनमें से किसी एक अथवा दोनों को किसी प्रकार की आघात लगे। जैसे—अँधेरे में चलते समय खंभे या दीवार से लगनेवाली टक्कर।

मुहा०––इधर-उधर टक्करें खाना या मारना=जगह-जगह मारे-मारे फिरना। दुर्दशा भोगते हुए कभी कहीं और कभी कहीं आना-जाना।

५. बराबर के दो पक्षों में होनेवाला ऐसा मुकाबला या सामना जिसमें दोनों एक दूसरे को गिराना या दबाना चाहते हों या उन्हें हानि पहुँचाना चाहते हों। जैसे—दो देशों या विचारधाराओं में होनेवाली टक्कर।

पद––टक्कर का=जोड़, बरावरी या मुकाबले का। जैसे––भगवद्गीता या रामचरित्मानस की टक्कर की पुस्तक विश्व-साहित्य में मिलना दुर्लभ है।

मुहा०––(किसी से) टक्कर लेना=वराबरी या मुकावला करना। जैसे—यह घोड़ा दौड़ में रेलगाड़ी से टक्कर लेता है।

६. घाटा। हानि। (क्व०)

टखना—पुं०[सं० टंक=टाँग] १. पिंडली और एड़ी के बीच की दोनों ओर उभरी हुई हड्डी। २. उक्त हड्डी के आस-पास का भाग।

टग†—स्त्री०=टकटकी।

टगटगाना†—स०=टकटकाना।

टगण—पुं०[सं० मध्य० स०] साहित्य शास्त्र में, छः मात्राओं के गणों की सामूहिक संज्ञा।

टगर—पुं०[अनु०] १. टंकण। सोहागा। २. भोग-विलास के लिए की जानेवाली क्रीड़ा। ३. तगर का वृक्ष।

टगरगोड़ा—पुं० [?] कौड़ियों से खेला जानेवाला एक खेल।

टगरना†—अ० १.=टघरना (पिघलना)। २. खिसकना।

टगरा†—वि०[सं० टेरक] ऐंचा-ताना। भेंगा।

टघरना—अ० दे० 'पिघलना'।

टघराना—स०=पिघलाना।

टघार—पुं०[हिं० टघरना] १. टघरने अर्थात् पिघलने की क्रिया या भाव। २. किसी जमी हुई चीज के टघरने या पिघलने पर उसकी बहनेवाली धार।

टचटच—स्त्री०[अनु०] आग के जलने का शब्द।

टचना—अ०[अनु० टचटच से] आग का जलना।

टचनी—स्त्री०[सं० टंक] बरतनों पर नक्काशी करने का कसेरों का एक उपकरण।

टट*—पुं०[सं०]·तट। उदा०—आएउँ भागि समुद टट...।—जायसी।

टटका—वि०[सं० तत्काल] [भाव० टटकाई, स्त्री० टटकी] १. (फलों आदि के संबंध में) जो अभी-अभी (खेत, पौधे आदि से तोड़कर) लाया गया हो, फलतः जो बासी न हो। ताजा। जैसे—टटका आम, टटकी तरकारी। २. (समाचार) जिसकी सूचना अब या अभी मिली हो। ताजा। जैसे—टटकी खबर। ३. नया।

टटकाई*—स्त्री०[हिं० टटका] टटके या ताजे होने की अवस्था या भाव। ताजापन।

टटड़ी†—स्त्री०=टटरी।

टटरी†—स्त्री० १=टट्टी। २=ठठरी।

टटरूँ—पुं०[अनु०] पेंडुकी (चिड़िया)।

टटल-बटल—वि०[अनु०] ऊटपटाँग।

पुं० अंगड़-खंगड़। काठ-कबाड़।

टटाना†—अ० [हिं० ठाँठ] शुष्क होना। सूखना। २. खुश्की, थकावट आदि के कारण शरीर या उसके अंगों में हलकी पीड़ा होना। ३. भूख आदि से विकल होना।

स० १. सुखाना। २. भूखे रखकर विकल करना।

टटावक—पुं०[?] काला टीका। उदा०—मोर चन्द सिर अस कछु लौनौ। मानहु अली टटावक टौनौ।—नन्ददास।

टटावली—स्त्री०[सं० टिटिट्भ] कुररी या टिटिहरी नाम की चिड़िया।

टटिया†—स्त्री०=टट्टी।

टटियाना†—अ०, स०=टटाना।

टटोबा—पुं०[अनु०] १. चारों ओर घूमनेवाला चक्कर या चरखी। २. घिरनी। ३. चारों ओर घूमने या चक्कर खाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

४. दे० 'टिटिंबा'।

टटीरी—स्त्री०=टिटिहरी (चिड़िया)।

टटुआ†—पुं०[स्त्री० टटुई]=टट्टू।

†पुं० दे० 'टेंटुआ'।

टटोना†—स०=टटोलना।

टटोरना†—स०=टटोलना।

टटोल—स्त्री०[हिं० टटोलना] टटोलने की क्रिया, ढंग या भाव।

टटोलना—स०[सं० तुला से अनु०] १. अन्धकार में अथवा स्पष्ट दिखाई न देने पर किसी चीज के आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि का पता लगाने के लिए उसके अंगों आदि पर उँगलियाँ या हाथ फेरना। २. किसी आवरण में रखी हुई वस्तु का अनुमान करने के लिए उसे बाहर से छूना, दबाना या हिलाना। जैसे—किसी का जेब टटोलना। ३. ठीक पता न चलने पर अन्दाज से इधर-उधर ढूँढ़ना याँ तलाश करना। ४. किसी का आशय या विचार जानने अथवा उसके मन की थाह लेने के लिए उससे जिज्ञासात्मक बात-चीत करना। ५. जाँचने, परखने आदि के लिए किसी प्रकार की ऊपरी या बाहरी क्रिया करना।

टटोहना*—स०=टटोलना।

टट्टड़†—पुं०=टट्टर।

टट्टनी—स्त्री०[सं० टट्ट√नी (ढोना)+ड—ङीष्] छिपकली।

टट्टर—पुं०[सं० तट=ऊँचा किनारा या सं० स्याता=जो खड़ा हो] गांवों, देंहातों आदि के कच्चे मकानों में दरवाजे के स्थान पर मार्ग अवरुद्ध करने के लिए लगाया जानेवाला बाँस की फट्टियों का चौकोर जालीदार ढाँचा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

पुं०[सं० टट्ट√रा (देना)+क] भेरी का शब्द।

टट्टरी—स्त्री०[सं०टट्टर+ङीष्] १. ढोल, नगाड़े आदि के बजने का शब्द। २. लंबा या विस्तृत कथन या विवरण। ३. हँसी-मजाक। ठट्ठा।

टट्टा—पुं० [सं० तट=ऊँचा किनारा या सं० स्याता=जो खड़ा हो]। [स्त्री० टट्टी] १. टट्टर। बड़ी टट्टी। २. लकड़ी का तख्ता या पल्ला। ३. अंडकोश। (पंजाब)

टट्टी—स्त्री०[सं० तटी=ऊँचा किनारा या सं० स्थायी] १. तिनकों, तीलियों आदि को आपस में फँसा या बाँधकर तैयार किया हुआ परदा। जैसे—खस की टट्टी। २. टट्टर। ३. आड़ या ओट के लिए सामने खड़ा किया हुआ वह आवरण या परदा जो प्रायः वृक्षों की डालियों, बाँसों आदि से बनाया जाता है।

पद—धोखे की टट्टी=(क) ऐसा आवरण या परदा जो लोगों को धोखे में रखकर अपना काम निकालने के लिए खड़ा किया जाय। (ख) ऐसी चीज या बात जो ऊपर से देखने पर कुछ और जान पड़े, परन्तु जिसके अन्दर कुछ और ही हो।

मुहा०—टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना=स्वयं आड़ में रहकर या छिपकर किसी पर आघात या वार करना अथवा किसी प्रकार के स्वार्थ-साधन का प्रयत्न करना।। **टट्टी में छेंद करना**=ढकने या परदा करनेवाली चीज में ऐसा अवकाश निकालना जिससे बाहरवालों को अन्दर की चीजों या बातों का पता लगने लगे। **टट्टी लगाना**=ऐसा आवरण या परदा खड़ा करना जिसके अन्दर लुक-छिप कर कोई काम किया जा सके।

४. बाँस की फट्टियों आदि का वह ढाँचा जो बेलें आदि चढ़ाने के लिए खड़ा किया जाता है। जैसे—अंगूर की टट्टी। ५. वे तख्ते या पटरियाँ जिन पर नकली पेड़-पौधे आदि बनाकर रखे या लगाये जाते हैं और जो शोभा के लिए जुलूसों, बरातों आदि के साथ ले जाये जाते हैं। ६. किसी प्रकार की आड़ या ओट करने के लिए बनाई जानेवाली छोटी, पतली दीवार। ७. चारों ओर उक्त प्रकार का दीवारों से घेरा हुआ वह स्थान जो केवल शौच आदि के लिए नियत हो। पाखाना।

मुहा०—टट्टी जाना—मल-मूत्र आदि का विसर्जन करने के लिए उक्त प्रकार के स्थान में अथवा खेत आदि में जाना।

८. मल। गूह। पाखाना। ९. चिक। चिलमन। १०. कोई पतली, चौकोर या लंबी-चौड़ी रचना।

पद—टट्टी का शीशा=बहुत ही पतले दल का और साधारण शीशा, जैसा तसवीरों, दरवाजों आदि की चौखट में लगाया जाता है।

टट्टर—पुं०[सं० टट्ट√रा (देना)+क] नगाड़े का शब्द।

टट्टू—पुं०[अनु०] [स्त्री० टटुआनी, टटुई] १. छोटे या नाटे कद का घोड़ा। टाँगन।

पद—भाड़े का टट्टू=ऐसा व्यक्ति जो अपने पद, मर्यादा, विवेक आदि का ध्यान छोड़कर पैसे के लालच से दूसरों का काम करता हो अथवा उनकी बातों का समर्थन करता हो।

मुहा०—टट्टू पार होना=काम पूरा होना। प्रयोजन सिद्ध हो जाना।
२. पुरुष की लिंगेंद्रिय। (बाजारू)

टट्‌डा—पुं०=टाड़ (गहना)।

टठिया—स्त्री० [?] १. एक प्रकार की भाँग जो राजपूताने में होती है।
स्त्री०=टाड़ (बाँह में पहनने का गहना)।
†स्त्री०=टट्टी।

टड़िया†—स्त्री०=टाड़ (गहना)।

टण—पुं०=टना।

टन—पुं० [अनु०] घंटा बजने का शब्द। टंकार।
वि० नशे आदि में चूर। बेसुध। टन्न।
पुं० [अं०] एक प्रकार की पाश्चात्य तौल जो लगभग २७॥ मन के बराबर होती है।

टनकना—अ० [अनु० टन] १. टन टन शब्द होना। २. गरमी, धूप आदि के कारण सिर में धमक या पीड़ा होना।

टनटन—स्त्री० [अनु०] घंटा बजने का शब्द।

टनटनाना—स० [हिं० टनटन] घंटे पर आघात करके उसमें से 'टनटन' शब्द उत्पन्न करना। जैसे—घंटा टनटनाना।
अ० किसी चीज में से टन-टन शब्द निकलना या होना।

टनमन—पुं० [सं० तंत्र मंत्र] जादू-टोना। तंत्र-मंत्र।
वि०=टनमना।

टनमना—वि० [सं० तन्मनस्] १. सब प्रकार से नीरोग और स्वस्थ। २. प्रसन्न-चित्त और मगन। 'अनमना' का विपर्याय।

टना—पुं० [सं० तुंड] १. स्त्रियों की योनि में का वह निकला हुआ मांस का टुकड़ा जो दोनों किनारों के बीच में होता है। टिंगा। २. भग। योनि।

टनाका†—पुं० [अनु० टन] १. घंटा बजने का शब्द। जोर से होनेवाला टन शब्द। २. कुछ समय तक टनटन शब्द बजते या होते रहने की अवस्था या भाव।
वि० उभ्य० बहुत उग्र, तीव्र या विकट। जैसे—टनाका धूप या सरदी।

टनाटन—स्त्री० [अनु०] लगातार घंटा बजने के कारण होनेवाला टन-टन शब्द।
क्रि० वि० १. टनटन शब्द करते हुए। २. अच्छी तथा ठीक अवस्था में। जैसे—वहाँ वे टनाटन हैं।

टनी—स्त्री०=टना।

टनेल—स्त्री० [अं० टनल] पहाड़ के बीच में से अथवा नदी के नीचे से बनायी हुई। सुरंग।

टप—स्त्री० [अनु०] १. वर्षा अथवा किसी तरल पदार्थ की बूंद पृथ्वी तल पर अथवा धातुओं आदि पर गिरने से होनेवाला शब्द। २. एकाएक किसी भारी चीज के जमीन पर गिरने से होनेवाला शब्द। जैसे—जामुनों का टप-टप पेड़ से गिरना।
मुहा०—टप से=एकाएक या सहसा। जैसे—वह वहाँ पर टप से आ पहुँचा।
स्त्री०=टोप (बूंद)।
पुं० [अं० टेब ?] १. गाड़ियों आदि के ऊपर छाया के लिए बनाया हुआ आच्छादन। जैसे—गाड़ी का टप। २. लटकनेवाले लंप के ऊपर की छतरी।
पुं० [अं० टब] टीन आदि का बना हुआ चौड़े मुँह का पानी रखने का बड़ा पात्र।
पुं० [देश०] कान में पहनने का एक प्रकार का फूल।
पुं० [अं० ट्यूब] जहाजों की गति का पता लगाने का एक उपकरण। (लश०)
पुं० [हिं० ठप्पा] एक औजार जिससे डिबरी का पेच घुमावदार बनाया जाता है।

टपक—स्त्री० [हिं० टपकना] १. टपकने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज के ऊपर से गिरने पर होनेवाला टपटप शब्द। ३. शरीर के किसी अंग में मवाद आदि अथवा और कोई विकार उत्पन्न होने के कारण रह-रह कर होनेवाला हलका दरद या पीड़ा। टीस।

टपकन—स्त्री०=टपक।

टपकना—अ० [सं० √टिप् या अनु०] १. किसी चीज में से बूंद बूंद करके किसी तरल पदार्थ का धरातल पर टपटप शब्द करते हुए गिरना। जैसे—(क) छत में से वर्षा का पानी टपकना। (ख) आम में से रस टपकना। २. (फलों आदि का पेड़ से टूटकर) ऊपर से सहसा नीचे गिरना। जैसे—अमरूद या जामुन टपकना। ३. (व्यक्तियों का) सहसा कहीं आ पहुँचना। जैसे—इतने में न जाने वह कहाँ से टपक पड़ा। ४. कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ५. शरीर के किसी अंग में मवाद भरा होने के कारण रह-रह कर पीड़ा होना। ६. फोड़े में से मवाद का निकलना। ७. (हृदय का) झट आकर्षित होना। लुभा जाना। मोहित हो जाना। ८. स्त्री का संभोग की ओर प्रवृत्त होना। ढल पड़ना। (बाजारू) ९. युद्ध में घायल होकर गिरना।

टपकवाना—स० हिं० 'टपकाना' का प्रे० रूप।

टपका—पुं० [हिं० टपकना] १. टप-टप शब्द करते हुए बूँदों के गिरने की अवस्था या भाव। २. उक्त प्रकार से गिर, चू या रसकर निकली हुई चीज। रसाव। ३. ऐसा फल जो पककर या हवा के झोंके से जमीन पर गिरा हो। जैसे—टपका आम। ४. चौपायों के खुर में होनेवाला एक रोग जिसमें टपक या टीस होती है। ५. दे० 'टपक'।

टपका-टपकी—स्त्री० [हिं० टपकना] १. बार-बार या रह-रह कर कभी इधर और कभी उधर कुछ टपकने की क्रिया या भाव। जैसे—आम या जामुन की टपका-टपकी। २. रह-रहकर होनेवाली बूंदा-बांदी या हलकी वर्षा। ३. लाक्षणिक रूप में महामारी आदि के प्रकोप से होनेवाली छुट-पुट मौतें।
क्रि० प्र०—लगना।

टपकाना—स० [हिं० टपकना] १. कोई चीज रह-रहकर बूँदों या छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में कहीं गिराना। २. भभके आदि के द्वारा अरक, आसव आदि तैयार करना। चुआना।

टपकाव—पुं० [हिं० टपकना] टपकने अथवा टपकाने की क्रिया या भाव।

टपकी—स्त्री० [हिं० टपकना] १. टपकने की क्रिया या भाव। २. अचानक होनेवाली मृत्यु।
मुहा०—टपकी पड़े=नष्ट या बरबाद हो जाय। (बोल-चाल)

टपना—अ० [हिं० टापना] १. बिना कुछ खाये-पिये अथवा किसी प्रकार की प्राप्ति या फल-सिद्धि के यों ही चुप-चाप कष्ट सहते हुए समय बिताना। जैसे—(क) बिना कुछ खाये-पीये सवेरे से टप रहे हैं। (ख)

ये तो महीनों से नौकरी की आशा में यहाँ बैठे हुए टप रहे हैं। २. पशु-पक्षियों आदि का जोड़ा खाना या संभोग करना। ३. उछलना। कूदना। स० १. उछल या कूदकर किसी चीज को लाँघते हुए उसके पार जाना। (पश्चिम) जैसे—दीवार या मुँडेरा टपना। २. आच्छादित करना। ढकना। तोपना। (क्व०)

टपनामा—पुं० [हिं० टिप्पन] वह रजिस्टर जिसमें समुद्री जहाजों पर तूफानों आदि का लेखा रखा जाता है।

टपमाल—पुं० [अं० टापमाल] जहाजों पर काम आनेवाला लोहे का भारी घन।

टपरना†—स० [अनु०] दीवार में, मसाला भरने से पहले उसके फर्श की दरज़ों को कुछ खोदकर चौड़ी या बड़ी करना जिससे उनमें मसाला अच्छी तरह से भरा जा सके।

टपरा†—पुं० [स्त्री० अल्पा० टपरी] =टप्पर।

टपरियाना†—अ०=टपरना।

टपाटप—क्रि० वि० [अनु० टप टप] १. टप टप शब्द करते हुए। जैसे—टपाटप आँसू गिरना। २. निरन्तर। लगातार। ३. चटपट। तुरन्त। जैसे—टपाटप काम निपटाना।

टपाना—स० [हिं० टपना का स०] १. किसी को टपने (अर्थात् निराश भाव से कष्टपूर्वक समय बिताने) में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिसमें किसी को टपना पड़े। २. पशु-पक्षियों आदि को जोड़ा खिलाना या संभोग कराना। ३. कूदने-फाँदने या लाँघने में प्रवृत्त करना। जैसे—नाले पर से घोड़ा टपाना। (पश्चिम)

टपाल—स्त्री० [तेलगु तप्पालु] भेजी जानेवाली चिट्ठी-पत्री आदि। डाक। (महाराष्ट्र)

टप्पर†—पुं० [?] १. झोंपड़ा। २. छप्पर। ३. बिछाने का टाट।

मुहा०—टप्पर उलटना=दे० 'टाट' के अन्तर्गत मुहा० 'टाट उलटना'।

टप्पा—पुं० [हिं० टाप या फा० तप्पा] १. उतनी दूरी या फासला जितना कोई चीज उछाली, कुदाई या फेंकी जाने पर एक बार में पार करे। जैसे—गेंद या गोली का टप्पा।

मुहा०—टप्पा खाना=किसी फेंकी हुई वस्तु का बीच में गिरकर जमीन से छू जाना और फिर उछलकर आगे बढ़ना।

२. उछाल। फलाँग। ३. दो चीजों या स्थानों के बीच की दूरी या फासला। ४. जमीन का छोटा टुकड़ा। ५. टिकने का स्थान। पड़ाव। ६. डाक-घर। ७. वह बेड़ा जिसमें पाल लगी हो। ८. बड़ी या मोटी सीयन। ९. एक प्रकार का पंजाबी लोकगीत, जिसकी तीन-तीन पंक्तियों में स्वतंत्र भाव सँजोये हुए होते हैं।

विशेष—इसका आरंभ पंजाब के सारबानों से हुआ था।

१०. एक प्रकार का पक्का गाना जिसमें गले से स्वरों के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े या दाने एक विशेष प्रकार से निकाले जाते हैं।

विशेष—इसका प्रचलन लखनऊ के गुलाम नबी शोरी ने किया था।

११. संगीत में एक प्रकार का ठेका जो तिलवाड़ा ताल पर बजाया जाता है। १२. एक प्रकार का हुक या काँटा।

टब—पुं० [अं० टब] पानी रखने का एक प्रकार का खुले मुँह का चौड़ा और बड़ा बरतन।

†पुं० दे० 'टप' (कान में पहनने का गहना)।

टब्बर†—पुं० [?] कुटुंब। परिवार। (पंजाब)

टमकी—स्त्री० [सं० टंकार] डुगडुगी नाम का बाजा।

टमटम—स्त्री० [अं० टैंडेम] एक प्रकार की ऊँची और बड़ी दो पहियोंवाली घोड़ा-गाड़ी।

टमटी—स्त्री० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बरतन।

टमस—स्त्री० [सं० तमसा] टौंस नदी। तमसा।

टमाटर—पुं० [अं० टमैटो] १. बैंगन की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसमें लाल रंग के गोल-गोल फल लगते हैं। २. उक्त फल जिनकी तरकारी बनाई जाती है।

टमुकी—स्त्री०=टमकी।

टर—स्त्री० [अनु] १. तीव्र तथा कर्कश ध्वनि। जैसे—मेंढक का टर-टर बोलना। २. ऊँचे स्वर में कही हुई कोई बात।

मुहा०—टर-टर करना या लगाना=हठपूर्वक बढ़-बढ़कर बोलते चलना।

३. अविनीत आचरण या चेष्टा। उद्दंडता। ४. जिद। हठ। ५. मुसलमानों का, एक त्यौहार।

टरकना—अ०=टलना।

अ० [अनु०] १. टर-टर शब्द होना। २. टर-टर या व्यर्थ की बकवाद करना।

टरकनी†—स्त्री० [देश०] खेत की (विशेषतः ऊख के खेत की) की जाने वाली दुबारा सिंचाई।

टरकाना—स०=टालना।

टरकी—स्त्री० [अनु० टर्क टर्क से] मुरगे की जाति का एक प्रकार का पक्षी जो अनेक देशों में मुरगों की तरह पाला जाता है।

विशेष—यह पक्षी मूलतः उत्तरी अमेरिका का है; और टरकी (तुर्क) देश से इसका कोई संबंध नहीं है। यह टर्क-टर्क शब्द करता है; इसी से इसका यह नाम पड़ा है।

टरकुल—वि० [हिं० टरकाना] बहुत ही साधारण या घटिया। निकम्मा।

टरखल—वि० [?] बुड्ढा। (घृणासूचक)

टरगी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

टरटराना—स० [हिं० टर] १. टर-टर शब्द करना। २. धृष्टतापूर्वक बहुत अधिक या बढ़-बढ़ कर तथा जोर से बोलना।

टरना†—अ०=टलना।

पुं० [देश०] तेली के कोल्हू की वह रस्सी जो ढेंका और कतरी से बँधी होती है।

टरनि†—स्त्री० [हिं० टरना] टलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

टराना†—अ०=टरना (टलना)।

स०=टारना (टालना)।

टर्र टर्र—स्त्री० [अनु०] १. मेंढक का तीव्र तथा कर्कश शब्द। २. उद्दण्डतापूर्वक ऊँचे स्वर में बढ़-बढ़कर कही जानेवाली बातें जिनसे लड़ाई-झगड़ा छिड़ सकता हो।

टर्रा—वि० [अनु० टर टर] १. (व्यक्ति) जो उद्दण्डतापूर्वक ऊँचे स्वर में बढ़-बढ़कर बातें करता हो। कटुवादी। २. जो जरा-सी बात पर लड़ने को तैयार हो जाय। ३. कठोर तथा कर्णकटु (शब्द)।

टर्राना—अ० [अनु० टर] ऐसी उद्दण्डतापूर्ण और घमंडभरी बातें करना जिनसे झगड़ा या लड़ाई हो सकती हो।

टर्रापन—पु० [हिं० टर्रा] उद्दंडतापूर्वक घमंड-भरी बातें करने का ढंग या भाव।

टरू—पुं० [हिं० टर-टर] १. बहुत टर-टर करने अर्थात् अनावश्यक रूप से बकने या बोलनेवाला व्यक्ति। २. बहुत ही कठोर और रूखे स्वभाव का ऐसा व्यक्ति जो जरा सी बात पर भी लड़ने को तैयार हो जाता हो। टर्रा आदमी। ३. मेंढक। ४. कौआ या भौंरा नामक खिलौना जिसे घुमाने से मेंढक की तरह का टर-टर शब्द होता है।

टलन—पुं० [सं०√टल् (बेचैन होना)+ल्युट्–अन] घबड़ाहट। विह्वलता। स्त्री० [हिं० टलना] टलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

टलना—अ० [सं० टलन=विचलित होना] १. हिं० 'टालना' का अ० रूप। किसी चीज का अपने स्थान से कुछ खिसकना, सरकना या हटना। २. किसी काम से आए हुए व्यक्ति का बिना अपना काम पूरा किये चले जाना या हट जाना। जैसे—आज तो वह जैसे-तैसे टल गया; कल देखा जायगा। किसी अनिष्ट घटना या स्थिति का किसी प्रकार घटित होने से रुक जाना या कुछ समय के लिए स्थगित हो जाना। जैसे—चलो यह बला भी टली। ४. किसी काम का अपने पूर्व निश्चित समय पर न होकर स्थगित होना। जैसे—मुकदमे की तारीख टलना। ५. किसी के अनुरोध, आग्रह, आदेश, निश्चय आदि का पालन न होना। किसी की बात का न माना जाना। जैसे—उनकी आज्ञा टल नहीं सकती। ६. अपने कार्य, निश्चय, विचार आदि छोड़ना या उनसे हटना। जैसे—यह लड़का इतनी मार खाता है, पर अपनी आदतों (या शरारतों) से किसी तरह नहीं टलता। ७. बहुत कठिनता से या जैसे-तैसे समय बिताना। जैसे—आज का दिन तो किसी तरह टाले नहीं टलता।

टलमल—वि० [हिं० टलना+अनु०] हिलता हुआ। चंचल।

टलवा†—पुं० [देश०] बैल।

टलहा†—वि० [देश०] [स्त्री० टलही] १. निकम्मा। रद्दी। २. जिसमें रद्दी चीजों की मिलावट हो। खोटा। जैसे—टलही चाँदी।

टलाटली—स्त्री०=टाल-मटोल।

टलाना—स० हिं० 'टालना' का प्रे० रूप।

टलुआ—वि० [हिं० टाल] टाल-संबंधी।
पुं० टाल का स्वामी।

टल्ला†—पुं० [अनु०] १. ठोकर। २. धक्का।
मुहा०—टल्ले मारना=व्यर्थ इधर-उधर घूमते रहना।
३. टाल-मटोल।

टल्ली—पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसे 'टोली' भी कहते हैं।

टल्लेनवीसी—स्त्री० [हिं० टल्ला+फा० नवीसी] १. टाल-मटोल। बहानेबाजी। २. निकम्मे या निठल्ले होने की अवस्था या भाव। ३. बहुत छोटे, व्यर्थ के या इधर-उधर के काम।

टल्लो†—स्त्री० [सं० पल्लव] छोटी हरी टहनी। जैसे—आम का टल्लो।

ट-वर्ग—पुं० [प० त०] वर्णमाला के ट ठ ड ढ और ण इन पाँच व्यंजनों का समूह।

टवाई—स्त्री० [सं० अटन=घूमना] १. भ्रमण। २. व्यर्थ का घूमना-फिरना।

टस—स्त्री० [अनु०] १. किसी भारी चीज के खिसकने का शब्द। २. जोर लगाये जाने पर भी भारी चीज के अपने स्थान से न हिलने की अवस्था या भाव।
मुहा०—टस से मस न होना=(क) भारी चीज का अपने स्थान से न हिलना। (ख) समझाने-बुझाने आदि पर भी अपनी अड़ या बात न छोड़ना।

टसक—स्त्री० [हिं० टसकना] १. टसकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. टीस।

टसकना—अ० [सं० तस=ढकेलना+करण] १. अपने स्थान से थोड़ा खिसकना या हटना। २. निश्चय, विचार आदि से थोड़ा इधर-उधर या विचलित होना। ३. रह-रहकर हलकी पीड़ा होना। टीस उठना। ४. फलों आदि का पककर गदराना।
अ० [हिं० टसुआ=आँसू] धीरे धीरे-रोते हुए आँसू बहाना। बिसूरना।

टसकाना—स० [हिं० टसकना] १. खिसकाना। हटाना। २. विचलित करना। ३. आँसू बहाना।

टसना†—अ० [अनु० टस] खींच पड़ने के कारण कपड़े आदि का फटना, मसकना या दरकना।

टसर—पुं० [सं० त्रसर] १. मटमैले, पीले रंग का एक प्रकार का रेशम। २. उक्त रेशम से बुना हुआ कपड़ा।

टसरी—वि० [हिं० टसर] टसर के रंग का। मटमैला और पीला। गरदी।
पुं० उक्त प्रकार का रंग। गरदी।

टसुआ†—पुं० [हिं० अँसुआ (आँसू) का अनु०] अश्रु। आँसू।
क्रि० प्र०—बहाना।

टहक—स्त्री० [हिं० टहकना] १ टहकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २. शरीर के अंगों में रह-रहकर दरद होने की अवस्था या भाव।

टहकना—अ० [अनु०] १. रह-रहकर शरीर के अंगों में दरद होना। २. पिघलना। ३. टक-टक शब्द करना।

टहकाना—स० [हिं० टहकना का स० रूप] पिघलाना।

टहटहा—वि० [हिं० टहटहाना] १. हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २. टटका। ताजा।

टहटहाना—अ० =लहलहाना।

टहना—पुं० [हिं० टहनी] बहुत बड़ी तथा मोटी टहनी।

टहनी—स्त्री० [सं० तनुः] वृक्ष की शाखा। डाल। डाली।

टहरकट्ठा†—पुं० [हिं० ठहर+काठ] काठ का वह टुकड़ा जिस पर तकले से उतारा हुआ सूत लपेटा जाता है।

टहरना†—अ०=टहलना।

टहल—स्त्री० [हिं० टहलना] १. टहलने की क्रिया या भाव। २. किसी को शारीरिक सुख पहुँचाने के लिए की जानेवाली उसकी छोटी या निम्न कोटि की सेवा। खिदमत। जैसे—पैर या सिर दबाना, बदन में तेल मलना आदि।

टहलना—अ० [सं० तत्+चलन =चलना] केवल जी बहलाने, स्वास्थ्य ठीक रखने, हवा खाने आदि के उद्देश्य से धीरे-धीरे इधर-उधर चलना-फिरना या कहीं जाना।
मुहा०—(कहीं-से) टहल जाना=किसी जगह से चुपचाप या धीरे से खिसक या हट जाना। चल देना।

टहलनी—स्त्री० [हिं० टहलुआ का स्त्री० रूप] १. टहल करनेवाली दासी। सेविका। २. मजदूरनी।

†स्त्री० [?] दीए की बत्ती उसकाने की छोटी लकड़ी या सींक।

टहलाना—स० [हिं० टहलना] १. किसी को टहलने में प्रवृत्त करना। मनोविनोद, स्वास्थ्य-रक्षा आदि के लिए धीरे-धीरे चलाना या घुमाना-फिराना। २. चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाकर किसी को अपने साथ कहीं ले जाना।

टहलुआ—पुं० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] टहल या सेवा करनेवाला व्यक्ति।

टहलुई—स्त्री० [हिं० टहलुवा का स्त्री० रूप] =टहलनी।

टहलुवा†—पुं०=टहलुआ।

टहलू†—पुं० =टहलुआ।

टही†—स्त्री० [हिं० तह या तही] १. एक पर एक करके रखी हुई चीजों का ढेर या थाक। २. कोई उद्देश्य पूरा करने या काम निकालने के लिए की जाने वाली छोटी-मोटी युक्ति।

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—लगाना।

टहुआटारी†—स्त्री० [देश०] दुष्ट उद्देश्य से एक की बात दूसरों से कहने की क्रिया या भाव। चुगलखोरी।

टहूकड़ा—पुं० [अनु०] १. कोयल के बोलने का शब्द। २. ऊँट के बोलने का शब्द।

पुं०—टहूका।

टहूका—पुं० [हिं० ठक या ठहाका] १. पहेली। २. चमत्कारपूर्ण या हास्य रस की छोटी कहानी या बात। चुटकुला।

†पुं०—टहूकड़ा।

टहोका—पुं० [हिं० ठोकर] १. हाथ या पैर से किया हुआ बहुत हलका आघात। २. लाक्षणिक रूप में, मन पर लगनेवाला हलका आघात या ठेस।

टाँक—स्त्री० [सं० टंक] १. तीन या चार मासे की एक पुरानी तौल। २. प्रायः २५ सेर का एक पुराना बाट जिसकी सहायता से धनुष की शक्ति की परीक्षा की जाती थी। ३. अंश। भाग। हिस्सा।

स्त्री० [हिं० टाँकना] १. टाँकने की क्रिया या भाव। २. लिखावट या लेख। ३. लिखने की कलम का अगला भाग या सिरा।

स्त्री० [हिं० आँकना] मान, मूल्य आदि का अनुमान। कूत।

टाँकना—स० [सं० टंकण=बाँधना] १. सूई, डोरे आदि से सीकर कोई चीज कपड़ों पर लगाना। जैसे—साड़ी पर बेल या सलमा-सितारे टाँकना; कमीज या कोट में बटन टाँकना। २. दो चीजों को आपस में जोड़ने, मिलाने आदि के लिए किसी प्रकार उनमें टाँका (देखें) लगाना। ३. किसी क्रिया से कोई चीज किसी दूसरी चीज के साथ अटकाना या लगाना। ४. चक्की, सिल आदि को टाँकी से रेहना। ५. आरी, रेती आदि के दाँत किसी क्रिया से चोखे, तेज या नुकीले करना। ६. स्मरण रखने के लिए अथवा हिसाब ठीक रखने के लिए कोई बात या रकम कहीं लिखना। जैसे—(क) जाकड़ दिया हुआ माल बही पर टाँकना, कापी पर किसी का पता टाँकना। ७. लिखित रूप में कोई चीज; या बात किसी के सामने उपस्थित करना। (क्व०) ८. भोजन करना। खाना। जैसे—वह सारी मलाई टाँक गया। ९. किसी प्रकार के लेन-देन में, बीच में से कुछ रकम निकाल या हथिया लेना। (दलाल) जैसे—मकान की बिक्री में सौ रुपये वह भी टाँक गया।

टांकर—पुं० [सं० टंक+अण्, टांक√रा (देना)+क] १. व्यभिचारी। २. कामुक या विषयी व्यक्ति।

टाँकली—स्त्री० [सं० ढक्का] पुरानी चाल का एक तरह का बड़ा ढोल।

स्त्री० [देश०] वह गराड़ी या घिरनी जिसकी सहायता से जहाज के पाल लपेटे जाते हैं। (लश०)

टाँका—पुं० [हिं० टाँकना] १. हाथ की सिलाई में, धागे आदि की वह सीयन जो एक बार सूई को एक स्थान से गड़ाकर दूसरे स्थान पर निकालने से बनती है। जैसे—(क) इस लिहाफ में टाँके बहुत दूर-दूर पर लगे हैं। (ख) उसके घाव में चार टाँके लगे हैं। २. उक्त प्रकार से जोड़ी, टाँकी या लगाई हुई चीजों का वह अंश जहाँ जोड़ दिखाई पड़ता हो। ३. सूई, तागे आदि से की हुई सिलाई या ऊपर से दिखाई देनेवाले उसके चिह्न। सीवन। ४. उक्त प्रकार से टाँक लगाकर जोड़ा जानेवाला टुकड़ा। चकती। थिगली। ५. कड़ी धातुओं को आपस में जोड़ने या सटाने के लिए उनके बीच में मुलायम धातु या मसाले से लगाया हुआ जोड़। जैसे—इस थाली (या लोटे) का टाँका बहुत कमजोर है।

मुहा०—(किसी के) टाँके उधड़ना=बहुत ही दुर्गत या दुर्दशा होना। जैसे—इस मुकदमें में उनके टाँके उधड़ गये।

६. धातुएँ जोड़ने का मसाला।

पुं० [सं० टंक=गड्ढा या अं० टैंक] [स्त्री० अल्पा० टंकी टाँकी] १. पानी आदि भरकर रखने के लिए वह आधान जो चारों ओर छोटी दीवारें खड़ी करके बनाया जाता है। चहबच्चा। हौज। २. पानी रखने का बड़ा गोलाकार बरतन। कंडाल। लोहे की बड़ी छेनी या टाँकी। ३. दे० 'टाँकी'।

टाँकाटूक—वि० [हिं० टाँक+तौल] तौल में ठीक-ठीक। वजन में पूरा-पूरा। (दूकानदार)

टांकार—पुं० =टंकार।

टाँकी—स्त्री० [सं० टंक] १. दो चीजों को जोड़नेवाला छोटा टाँका। २. छेनी की तरह का संगतराशों का एक औजार जिससे पत्थर काटे और तोड़े जाते हैं।

मुहा०—(किसी चीज पर) टाँकी बजना=टाँकी का आघात होना।

३. फलों आदि में से काटकर निकाला हुआ कुछ गोलाकार अंश, अथवा इस प्रकार काटने से उनमें बननेवाला छेद या सूराख जिससे उनकी भीतरी स्थिति का पता चलता है। ४. गरमी। सूजाक आदि रोगों के कारण शरीर में होनेवाला घाव या व्रण। ५. एक प्रकार का फोड़ा। डुंबल। ६. आरी का नुकीला दाँत या दाँता।

†स्त्री० दे० (टँकी)।

टाँकीबंद—वि० [हिं० टाँकी =फा० बंद] (वस्तु या रचना) जिसके विभिन्न अंगों को टाँके लगाकर जोड़ा गया हो। जैसे—टाँकीबंद जोड़ाई, टाँकीबंद इमारत।

टाँग—स्त्री० [सं० टंग] १. मनुष्य के शरीर का चूतड़ और एड़ी के बीच का अंग जिसमें रान, घुटना, पिंडली, दूखना आदि अवयव सम्मिलित हैं।

विशेष—कभी कभी टाँग से घुटने और एड़ी के बीच के अंग मात्र का बोध होता है।

मुहा०—(किसी काम या बात में) टाँग अड़ाना=किसी काम में प्रायः अनावश्यक रूप से और केवल अपना अधिकार या जानकारी दिखलाने के लिए हस्तक्षेप करना। **(किसी की) टाँग तले से या नीचे से निकलना**=नीचा देखना, अपनी छोटाई या हार मान लेना।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग ऐसी ही अवस्था में होता है जब कि वक्ता को अपने कथन या पक्ष की प्रामाणिकता सिद्ध करनी होती है और किसी दूसरे को इसके विपरीत चुनौती देनी होती है।

(किसी की) टाँग तोड़ना=पंगु बनाना। नष्ट-भ्रष्ट करना। जैसे—भाषा की तो आपने टाँग तोड़ दी है। **(किसी की) टाँग से टाँग बाँध कर बैठना**= किसी के पास बैठ रहना अथवा उसे अपने पास से न हटने देना। **टाँगें पसार कर सोना**=निश्चित होकर सोना।

पद—टाँग बराबर=बहुत छोटा।

२. कुश्ती का एक पेंच जिसमें विपक्षी की टाँग में टाँग अड़ाकर उसे चित गिराते हैं। ३. चतुर्थांश। चौथाई भाग। चहारुम। (दलाल)

टाँगन—पुं० [सं० तुरंगम] छोटे कद का घोड़ा। टट्टू।

टाँगना—स० [हिं० टँगना का स०] १. किसी चीज को किसी ऊँचे स्थान पर इस प्रकार अटकाना, बाँधना या लगाना कि वह बिना आधार के अधर में खड़ी, झूलती या लटकती रहे। जैसे–(क) रस्सी पर कपड़े या खूंटी में छीका टाँगना। (ख) दीवार पर घड़ी या चित्र टाँगना। २. छींके आदि पर कोई चीज सुरक्षा के लिए रखना। जैसे—दही, दूध या तरकारी टाँगना। ३. फांसी पर चढ़ाना या लटकाना।

विशेष—'टाँगना' में मुख्य भाव किसी चीज के ऊपरी भाग को कहीं लगाने का और 'लटकाना' में चीज के नीचवाले भाग के झूलते या लटकते रहने का है।

टाँगा—पुं० [सं० टंग] [स्त्री० अल्पा० टाँगी] बड़ी कुल्हाड़ी।

पुं० [हिं० टाँगन ?] दो ऊँचे पहियोंवाली एक प्रकार की गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है।

टाँगानोचन—स्त्री० [हिं० टाँग+नोचना] खींचा-खींची। खींचा-तानी।

टाँगी†—स्त्री० [हिं० टाँगा] कुल्हाड़ी।

टाँगुन—स्त्री० [देश०] बाजरे की तरह का एक कदन्न जिसे उबालकर गरीब लोग खाते हैं।

टाँघन†—पुं०=टाँगन।

टाँच—स्त्री० [हिं० टाँचना] १. टाँचने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज में लगाया जानेवाला टाँका। ३. कहीं टाँककर लगाई हुई वस्तु। ४. किसी चीज को काट या छीलकर ठीक करने की क्रिया या भाव। ५. किसी चीज में से काटकर निकाला हुआ अंश। ६. ऐसी उक्ति या कथन जिसके फलस्वरूप किसी का बना या होता हुआ काम बिगड़ जाय या न होने पाये।

क्रि० प्र०—मारना।

टाँचना—स० [हिं० टाँकना] १. टाँका लगाना। टाँकना। २. काट या छीलकर किसी चीज को कोई रूप देना। ३. किसी चीज में से काटकर कुछ अंश निकाल लेना। ४. कोई उलटी-सीधी बात कहकर किसी के बनते या होते हुए काम में बाधा खड़ी करना। टाँच मारना।

टाँची—स्त्री० [सं० टंक=रुपया] रुपए रखने की एक प्रकार की पतली लंबी थैली। बसनी।

स्त्री० टाँच।

टाँचु†—स्त्री० =टाँच।

टाँट—स्त्री० [?] सिर का ऊपरी भाग। खोपड़ी।

मुहा०—टाँट के बाल तक उड़ जाना—बहुत अधिक दुर्दशा होना। **टाँट खुजलाना (अकर्मक)**—दुर्दशा कराने या मार खाने की इच्छा या प्रवृत्ति होना। **टाँट खुजलाना (सकर्मक)**—दुर्दशा होने पर लज्जित भाव से पछताना। **टाँट गंजी होना**—टाँट के बाल तक उड़ जाना। (देखें ऊपर)

टाँटर†—स्त्री०=टाँट।

टाटा—वि०=टाठा (हृष्ट-पुष्ट)।

वि० =टाठा (सूखा हुआ)।

टाँठ†—वि० =टाँठा।

टाँठा—वि० [अनु० ठन-ठन या सं० स्थाणु] जो पक या सूखकर कड़ा और नीरस हो गया हो।

वि०=टाठा।

टाँड़—स्त्री० [हिं० स्थाणु या हिं० टाँड़ा?] १. चीजें रखने के लिए दो दीवारों या आलमारी के बीच में बेड़े बल में लगा हुआ लकड़ी का तख्ता या पत्थर। २. लकड़ी के खंभों या पायों से युक्त वह रचना जिसमें सामान रखने के लिए बेड़े बल में कुछ तख्ते लगे हुए होते हैं। (रैक) ३. लकड़ी आदि के खंभों पर बनी हुई कोई छोटी रचना। जैसे—मचान। ४. बाँस का पोला डंडा जो हल में जुड़ा रहता है और जिसके ऊपरी सिरे पर लकड़ी का कटोरेनुमा टुकड़ा संबद्ध रहता है। ५. गुल्ली-डंडे के खेल में डंडे से गुल्ली पर किया जानेवाला आघात।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

६. कंकरीली मिट्टी।

पुं० १. =टाँड़ा। २. टाल (ढेर या राशि)।

स्त्री० =टाड़।

टाँड़ा—पुं० [हिं० टाँड़=समूह] १. चौपायों का वह झुंड या दल जिस पर व्यापारी लोग माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाते थे। २. उक्त प्रकार से माल कहीं ले जाने या कहीं से लाने की क्रिया अथवा व्यवस्था। ३. उक्त प्रकार से लादकर लाया या ले जाया जानेवाला माल।

क्रि० प्र०—लादना।

४. पैदल यात्रियों, बंजारों, व्यापारियों आदि के दलों का कूच या प्रस्थान। ५. उक्त प्रकार के लोगों का जत्था या दल। उदा०—लीजे बेगि निबेरि सूर प्रभु यह पतितन को टाँड़ो।—सूर। ६. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के यात्री अथवा जंगली यायावर जातियों के लोग कुछ समय के लिए ठहरते या अस्थायी रूप से घर बनाकर अथवा पड़ाव डालकर रहते हैं। जैसे—आज-कल कंजरों का टाँड़ा पड़ा है। ७. कुटुंब। परिवार।

पुं० [सं० टुंड, हिं० टुंड़] एक प्रकार का हरा कीड़ा जो गन्ने आदि की जड़ों में लगकर फसल को हानि पहुँचाता है।

क्रि० प्र०—लगना।

टाँड़ी†—स्त्री० =टिड्डी।

टाँय-टाँय—स्त्री० [अनु०] कर्कश स्वर में कहीं जानेवाली व्यर्थ की बात। बक-बक।

मुहा०—टाँय टाँय फिस होना—बहुत ही लम्बी-चौड़ी बातों के बाद भी उनका कोई परिणाम या फल न निकलना।

टाँस—स्त्री० [हिं० टाँसना] १. हाथ या पैर के मुड़ने या मोड़े जाने पर उसमें होनेवाला तनाव। २. उक्त तनाव के फलस्वरूप होनेवाली पीड़ा।

टाँसना—स० [?] किसी का हाथ या पैर मरोड़कर उसमें तनाव उत्पन्न करना।

अ० तनाव उत्पन्न होने के फलस्वरूप अंग में पीड़ा होना।

स० १.=टाँचना। २.=टाँकना।

टा—स्त्री० [सं० ट—टाप] १. पृथ्वी। २. शपथ।

टाइटिल—स्त्री० [अं०] १. आवरण-पत्र। २. उपाधि। ३. लेख आदि का शीर्षक। शीर्ष-नाम।

टाइप—पुं० [अं०] धातु या लकड़ी का वह टुकड़ा, जिसके एक सिरे पर कोई अक्षर या चिह्न खुदा रहता है।

विशेष—इन्हीं टुकड़ों को जोड़कर पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छापे जाते हैं।

टाइप राइटर—पुं० दे० 'टंकण यंत्र'।

टाइपिस्ट—पुं० दे० 'टंकक'।

टाइफायड—पुं० [अं०] एक प्रकार का रोग जिसमें ज्वर किसी निश्चित अवधि में उतरता है। मियादी बुखार।

टाइफोन—पुं० दे० 'तूफान'।

टाइम—पुं० [अं०] समय।

टाइम-टेबुल—पुं० दे० 'समय सारिणी'।

टाइम पीस—स्त्री० [अं०] एक प्रकार की छोटी घड़ी जिसे मेज आदि पर रखा जाता है। (बाँधी या लटकाई जानेवाली घड़ियों से भिन्न)

टाई—स्त्री० [अं०] १. अँगरेजी पहनावे के अन्तर्गत विशेष ढंग से सिली हुई कपड़े की वह पट्टी जिसे गले में कमीज के कालर के ऊपर बाँधा जाता है और जिसके दोनों सिरे सामने लटकते रहते हैं। २. प्रतियोगिता आदि में होनेवाली जिच्च। ३. जहाज के ऊपर के पाल की वह रस्सी जिसकी मुद्धी मस्तूल के छेदों में लगाई जाती है।

टाउन—पुं० [अं०] दे० 'नगर'।

टाउन-हाल—पुं० [अं०] किसी नगर का वह सार्वजनिक भवन जिसमें बड़ी-बड़ी सभाओं के अधिवेशन आदि होते हों।

टाकरा—पुं०=टाकरी (लिपि)।

टाकरी—स्त्री० [टक्क देश] टक्क देश अर्थात् चनाब और व्यास नदियों के बीच के प्रदेश में प्रचलित एक प्रकार की लिपि जो देवनागरी वर्णमाला का ही एक लेखन-प्रकार है।

टाकू†—पुं०=तकला।

टाट—पु० [अनु०] १. पटुए, सन आदि की डोरियों से बुनकर तैयार की हुई मोटे कपड़े की तरह की वह रचना जो प्रायः बिछाने, परदों आदि के रूप में टाँगने और बाहर भेजा जानेवाला माल बाँधने आदि के काम आती है।

पद—टाट में मूँज का बखिया=एक भद्दी चीज की सजावट में लगी हुई दूसरी भद्दी चीज। **टाट में पाट का बखिया**=एक भद्दी चीज की सजावट में लगी हुई दूसरी बढ़िया चीज।

२. एक ही बिरादरी के वे सब लोग जो मध्ययुग में पंचायतों आदि के समय एक ही टाट पर बैठा करते थे। ३. उक्त के आधार पर कोई उप-जाति या बिरादरी।

पद—टाट बाहर=जो किसी उप-जाति या बिरादरी से निकाला या बहिष्कृत किया हुआ हो।

४. महाजनों, साहूकारों आदि के बैठने की गद्दी और उसके आस-पास का बिछावन जो एक टाट के ऊपर बिछा हुआ होता है, और जिस पर बैठकर वे रोजगार या लेन-देन करते हैं। जैसे—अपने टाट पर बैठकर किया जानेवाला सौदा अच्छा होता है।

मुहा०—(महाजन या साहूकार का) टाट उलटना=दिवालिया बनकर पावनेदारों का भुगतान बंद कर देना। जैसे—लक्षणों से तो ऐसा जान पड़ता है कि दस-पाँच दिन में वह टाट उलट देगा।

५. टाट की वह थैली जिसमें एक हजार रुपये आते हैं। ६. महाजनी बोलचाल में एक हजार रुपये। जैसे—इस मुकदमे में चार टाट लग गये।

†वि० [अं० टाइट] अच्छी तरह कसा, बैठाया या जमाया हुआ। (लश०)

टाटक†—वि०=टटका।

टाटबाफी जूता—पुं० [फा० तारबाफी] कामदार जूता।

टाटर†—पुं० १.=टट्टर। २.=टाँट (खोपड़ी)।

टाटिका†—स्त्री०=टट्टी।

टाटी†—स्त्री०=टट्टी।

टाठ†—पुं० [सं० स्थाली] [स्त्री० अल्पा० टाठी] १. बड़ी थाली। थाल। २. बटुआ या बटलोई नाम का बरतन।

टाठा—वि० [सं० दृढ़ांग] [स्त्री० टाठी] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २. उग्र। विकट।

वि०=टाँठा (सूखा हुआ)।

टाड़—स्त्री० [सं० ताड़] भुजाओं पर पहनने का एक प्रकार का चौड़ी पट्टीवाला बाजूबंद।

†स्त्री०=टाँड़।

टाडर—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

टाड़ा—पुं० [देश०] १. मिट्टी का तेल रखने का एक प्रकार का बरतन। २. लकड़ियों में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

टान—स्त्री० [सं० तान=फैलाव, खिंचाव] १. तनाव। खिंचाव। २. आकर्षण। ३. छापे के यंत्र में, कागज हर बार छापे जाने का भाव। ४. सारंगी, सितार आदि के परदों पर उँगली रखकर उसे इस प्रकार खींचना कि क्रमात् कई स्वर या उनकी श्रुतियाँ निकलती चलें। ५. साँप के दाँत लगने का एक प्रकार जिससे दाँत कुछ दूर तक खरोंच डालता हुआ बाहर निकलता है।

स्त्री०=टाँड।

टानना—स० [हिं० टान+ना (प्रत्य०)] १. तानना। २. खींचना। ३. छापे के यंत्र में, कागज लगाकर कुछ छापना।

टाप—स्त्री० [सं० स्तप्] १. गधे और घोड़े के पैर का वह निचला भाग जिसमें खुर होता है और जमीन पर पड़ता है। २. उक्त भाग के जमीन पर पड़ने से होनेवाला शब्द। ३. खंभे, पाए आदि का जमीन से लगा रहनेवाला अंश। ४. वह खाँचा जिसकी सहायता से तालाबों आदि में से मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। ५. वह खाँचा जिसके नीचे मुरगियाँ वन्द करके रखी जाती हैं।

टापड़—पुं० [हिं० टप्पा] ऊसर मैदान।

टापदार—वि० [हिं० टाप+फा० दार] जिसके ऊपर या नीचे का छोर कुछ फैला हुआ और चौड़ा हो। जैसे—टापदार पाया।

टापना—अ० [हिं० टाप+ना (प्रत्य०)] घोड़ों का इस प्रकार पैर पटकना जिससे टप-टप शब्द हो। खूँद करना।

†अ०=टपना।

टापर(ा)—पुं० [देश०] १. ओढ़ने का मोटा कपड़ा। चादर। २. टट्टू, टाँघन या ऐसे ही किसी और चौपाये की सवारी। ३. तिरपाल। ४. झोंपड़ा।

टापा—पुं० [हिं० टापना] १. भूमि का वह विस्तार जिसे टापकर पार करने में कुछ समय लगता हो। टप्पा। २. ऊसर या बंजर मैदान। ३. चलने के समय भरा जानेवाला डग।

मुहा०—टापा देना या भरना=लंबे-लंबे डग बढ़ाते हुए आगे बढ़ना या चलते बनना। उदा०—राम नाम जाने नहीं, आये टापा दीन।—कबीर।

४. व्यर्थ की उछल-कूद। ५. चीजें ढकने का एक प्रकार का टोकरा। ६. वह खाँचा या टोकरा जिसमें मुरगियाँ आदि बन्द करके रखी जाती हैं। ७. खाँचे या टोकरे की तरह का वह ढाँचा जो बहुत-सी मछलियाँ एक साथ पकड़ने या फँसाने के काम आता है।

टापू—पुं० [हिं० टापा या टप्पा=ऐसा स्थान जहाँ टाप या लाँघकर जाना पड़े] १. स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो। द्वीप। २. दे० 'टापा'।

टावर—पुं० [पंजावी टव्बर] १. वाल-बच्चे। सन्तान। (राज०) २. परिवार।

पुं० [?] छोटा जलाशय या झील।

टाबू—पुं० [देश०] पशुओं के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली।

टामक—पुं० [अनु०] १. डुग्गी का शब्द। २. डुग्गी।

टामन—पुं० [सं० तंत्र] तंत्रविधि। टोटका।

टामी—पुं० [अं० टॉमी] सेना का साधारण विशेषतः गोरा सिपाही।

टार—पुं० [सं० टा √ऋ (गति) +अण्] १. घोड़ा। २. लौंडा। ३. कुटना। दलाल।

†पुं० टाल।

टारकोल—पुं० [अं०] अलकतरा।

टारन—पुं० [हिं० टारना] १. टारन अर्थात् टालने की क्रिया या भाव। २. वह उपकरण जिससे कोई चीज टाल या हटाकर एक जगह इकट्ठी की जाती है। ३. वह लकड़ी जिससे कोल्हू में की गँड़ेरियाँ चलाई जाती हैं।

वि० टालने, हटाने या दूर करनेवाला।

टारना—स०=टालना।

टारपीडो—पुं० [अं०] समुद्री जहाजों को नष्ट करने के लिए जल में छोड़ा जानेवाला एक प्रकार का लंबोतरा गोला।

टाल—पुं० [सं० अट्टाल, हिं० अटाला] १. एक दूसरी पर लादकर रखी हुई बहुत-सी चीजों का ऊँचा और बड़ा ढेर। अंबार। अटाला। राशि। जैसे—पत्थरों या लकड़ियों का टाल। २. पयाल, भूसे, लकड़ी आदि की दूकान जहाँ इन चीजों का उक्त प्रकार का ढेर लगा रहता है।

पुं० [देश०] १. गौओं, बैलों आदि के गले में बाँधा जानेवाला एक प्रकार का घंटा। २. बैल-गाड़ी के पहिए का किनारा।

पुं० [हिं० टालना] १. किसी काम या बात के लिए किसी को टालने की क्रिया या भाव। हीला-हवाला।

पद—टाल-मटोल। (देखें)

मुहा०—टाल मारना=कोई चीज तौलने के समय कोई ऐसी चालाकी या युक्ति करना कि वह चीज तौल में पूरी न होने पावे।

पुं० [सं० टार=अप्राकृतिक संभोग करानेवाला लड़का] व्यभिचार के लिए स्त्री और पुरुष को आपस में मिलानेवाला व्यक्ति। औरतों का दलाल। कुटना।

टाल-टूल—स्त्री०=टाल-मटोल।

टालना—स० [हिं० टलना] १. किसी को उसके स्थान से खिसकाना या हटाना। २. अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को किसी वहाने से अपने सामने से दूर करना या हटाना। जैसे—जब वह शराब पीने बैठता था, तव लड़कों को अपने कमरे से टाल देता था। ३. किसी उद्देश्य से आये हुए व्यक्ति का उद्देश्य पूरा न करके किसी बहाने से उसे कुछ समय के लिए दूर कर देना या हटा देना। टरकाना। जैसे—जब उससे रुपए माँगने जाओ, तब किसी न किसी बहाने से हमें वह टाल देता है। ४. अनिष्ट घटना या स्थिति से किसी को रक्षित रखने अथवा स्वयं रक्षित रहने के लिए किसी युक्ति से उसे घटित न होने देना या दूर करना। जैसे—(क) किसी की विपत्ति या संकट टालना। (ख) अपने मन में आया हुआ बुरा विचार टालना। ५. कोई काम अपने पूर्व-निश्चित समय पर न करके उसे किसी और समय के लिए छोड़ रखना। जैसे—परीक्षा या विवाह की तिथि टालना। ६. जो काम अभी किया जाने को हो, उसे किसी और समय के लिए छोड़ रखना। जैसे—इस तरह हर काम टालने की आदत छोड़ दो।

मुहा०—(कोई काम या बात) किसी पर टालना=स्वयं कोई काम या बात न करके यह कह देना कि इसे अमुक व्यक्ति कर सकता है या करेगा। जैसे—तुम तो अपना सारा काम मुझ पर टाल दिया करते हो।

७. किसी के अनुरोध, आज्ञा, परामर्श आदि की उपेक्षा करना या उस पर उचित ध्यान न देना। जैसे—आप की बात मैं किसी तरह टाल नहीं सकता। ८. कोई अनुचित काम या बात होती हुई देखकर भी उसकी उपेक्षा करना या उस पर ध्यान न देना। तरह दे जाना। बचा जाना। जैसे—अब तक तुम्हारे सब दुर्व्यवहार हम टालते आये हैं, पर आगे के लिए तुम्हें सावधान रहना चाहिए। ९. बहुत कठिनता से समय व्यतीत करना। ज्यों-त्यों करके वक्त बिताना। उदा०—राम बियोग असोक बिटप तर सीय निमेष कलप सम टारति।—तुलसी।

टाल-मटाल—स्त्री० =टाल-मटोल।

टालम-टाल—वि० [हिं० टाला=आधा] (धन, सम्पत्ति) जिसका आधा

भाग एक व्यक्ति के हिस्से में और आधा भाग किसी दूसरे व्यक्ति के हिस्से में आया हो या आने को हो। आधा-आधा। (दलाल) जैसे—यह रकम हम लोग आपस में टालम-टाल बाँट लेंगे।

टाल-मटूल—पुं०=टाल-मटोल।

टाल-मटोल—स्त्री० [हिं० टालना में का टाल+अनु० मटोल] १. सामने आया हुआ काम तुरंत पूरा न करके उसे बार-बार दूसरे समय के लिए टालते रहने की क्रिया या भाव। २. किसी विशिष्ट उद्देश्य से आये हुए व्यक्ति का काम पूरा न करके उसे बार-बार टालते रहने की क्रिया या भाव।

टाला—वि० [हिं० टाली] आधा। (दलाल)

टाली—स्त्री० [देश० टलटल से अनु०] १. गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी। २. बहुत चंचल बछिया या छोटी गौ। ३. एक प्रकार का बाजा।

स्त्री० [देश०] आठ आने का सिक्का। अठन्नी। (दलाल)

पुं० [देश०] शीशम का पेड़ और उसकी लकड़ी। (पश्चिम)

टाल्हां—पुं०=टाली (शीशम)।

टाहली†—पुं० =टहलुआ।

टिटिनिका—स्त्री० [सं०] १. जल सिरिस का पेड़। दाढ़ौन। २. जोंक।

टिंड—स्त्री० [देश०] रहट में लगा हुआ मिट्टी, धातु आदि का वह पात्र जिसके द्वारा कूएँ का पानी सिंचाई के लिए ऊपर खींचा तथा बाहर निकाला जाता है। (पश्चिम)

पुं० [?] घुटा या मुँड़ा हुआ सिर। (परिहास और व्यंग्य)

स्त्री०=टिंडा।

टिंडर—स्त्री०=टिंड।

टिंडसी—स्त्री०=टिंडा।

टिंडा—पुं० [सं० टिंडिश] १. एक लता जिसके छोटे गोल फलों की तरकारी बनाई जाती है। २. उक्त लता का फल। डेंड़सी।

टिंडी—स्त्री० [देश०] १. हल की मुठिया। २. वह खूंटा जिसे पकड़कर चक्की का पाट घुमाया या चलाया जाता है।

टिक—स्त्री० [अनु०] किसी यंत्र विशेषतः घड़ी के चलने से होनेवाला शब्द। टिकटिक।

पुं० आटे आदि का टिक्कर या लिट्टी नाम का पकवान।

टिकई—वि० [हिं० टीका] जिसमें या जिस पर टीका लगा हुआ हो अथवा टीके के आकार के चिह्न बने हुए हों।

स्त्री० वह गाय जिसके माथे पर दूसरे रंग के ऐसे बाल होते हैं जो लगाये हुए टीके की तरह जान पड़ते हैं।

टिकट—पुं० [अं०] कागज, दफ्ती आदि का कुछ विशिष्ट चिह्नों से युक्त वह छोटा टुकड़ा जो कुछ निश्चित मूल्य पर बिकता और खरीदनेवाले को कोई विशिष्ट कार्य करने, कहीं आने-जाने या कुछ भेजने-मँगाने आदि का अधिकारी बनाता है अथवा इस बात का प्रमाण-पत्र होता है कि खरीदनेवाले ने देन चुकाकर कोई काम करने का अधिकार प्राप्त कर लिया है। जैसे—डाक, रेल या सिनेमा का टिकट।

†पुं० दे० 'टैक्स'।

टिकट-घर—पुं० [अं०+हिं०] वह स्थान जहाँ कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए टिकट बिकते हों। जैसे—रेलवे या सिनेमा का टिकट-घर।

टिकटिक—स्त्री० [अनु०] १. घोड़े, बैल आदि हाँकने के लिए किया जानेवाला टिकटिक शब्द। २. घड़ी के चलते रहने की दशा में उसमें होनेवाला शब्द।

टिकटिकी—स्त्री० [अनु०] १. भूरापन लिये लाल रंग की एक प्रकार की चिड़िया। २. दे० 'टिकठी'।

टिकठी—स्त्री० [सं० त्रिकाष्ठ या हिं० तीन+काठ] १. मध्ययुग में लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें अपराधियों के हाथ-पैर उन्हें मारने-पीटने के समय बाँध या जकड़ दिये जाते थे। २. उक्त प्रकार का वह चौखटा या ढाँचा जिसमें फाँसी पानेवाले अपराधियों को खड़ा करके उनके गले में फाँसी का फंदा लगाया जाता है। ३. मृत शरीर या शव को श्मशान तक ले जाने के लिए बनाया जानेवाला बाँसों, लकड़ियों आदि का ढाँचा। अरथी। ४. जुलाहों का वह ढाँचा जिस पर वे कलफ या माँडी लगाने के लिए कपड़ा फैलाते हैं। ५. दे० 'तिपाई'।

टिकड़ा—पुं० [हिं० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकड़ी] १. किसी चीज का छोटा विशेषतः चिपटा गोल टुकड़ा। २. गले में पहने जानेवाले आभूषणों में लटकता रहनेवाला धातु का वह गोल खंड जिसमें नग आदि जड़े रहते हैं। ३. जड़ाऊ गहनों में बना हुआ उक्त आकार-प्रकार का विभाग। ४. आँच पर सेंककर पकाई हुई छोटी चिपटी मोटी रोटी।

क्रि० प्र०—लगाना।

५. प्रसूता स्त्रियों को खिलाई जानेवाली वह रोटी जिसके आटे में अजवाइन, सोंठ आदि मसाले मिले रहते हैं।

टिकड़ी—स्त्री० [हिं० टिकड़ा] आँच पर सेंककर पकाई हुई छोटी चिपटी रोटी। टिकड़ा।

टिकना—अ० [सं० टिक] १. किसी आधार पर ठीक प्रकार से खड़ा या स्थित होना। जैसे—(क) चौकी पर मोमबत्ती का टिकना। (ख) छड़ी की नोक पर तश्तरी का टिकना। २. यात्रा के समय विश्राम के लिए बीच में कहीं ठहरना या रुकना। जैसे—धर्मशाला में यात्रियों का टिकना। ३. प्रवास में किसी के यहाँ अतिथि के रूप में ठहरना। ४. कुछ समय के लिए अस्तित्व में बने रहना। जैसे—प्रथा का टिकना। ५. किसी चीज का ठीक या प्रसम स्थिति में बने रहना फलतः दूषित या विकृत न होना। जैसे—(क) गरमी की अपेक्षा सरदी में पकाई या पकी हुई चीजें अधिक टिकती हैं। (ख) यह कपड़ा या जूता अधिक टिकेगा। ६. (ध्यान आदि के संबंध में) केंद्रित होना। जैसे—ध्यान टिकना। ७. किसी घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना।

टिकरी—स्त्री० [हिं० टिकिया] १. एक नमकीन पकवान जो बेसन और मैदे की टिकियों को एक में बेलकर और घी में तलकर बनाया जाता है। २. टिकिया। ३. सिर पर पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. हलके काले या मटमैले रंग का एक प्रकार का बड़ा जल-पक्षी।

†स्त्री०=टोकरी (छोटा टीला)।

टिकली—स्त्री० [हिं० टीका] १. काँच, पन्नी आदि का छोटा टुकड़ा जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २. टीका नामक आभूषण।

स्त्री० [हिं० टिकिया] छोटी टिकिया।

स्त्री०=तकली।

टिकसा†—पुं० =१. टिकट। २.=टैक्स (कर)।

टिकसार†—वि० =टिकाऊ।

टिका†—पुं०=टीका।

टिकाई†—पुं०=टिकैत।

टिकाऊ—वि०[हिं० टिकना] (चीज) जो अधिक समय तक टिके अर्थात् उपयोग या व्यवहार में आती रहे या आ सके। जैसे—टिकाऊ कपड़ा।

टिकान—स्त्री०[हिं० टिकना] १. टिकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वह स्थान जहाँ पर कोई टिके या बराबर टिकता हो। ३. दे० 'टेकान'।

टिकाना—स० [हिं० टिकना] १. किसी आधार पर किसी चीज को खड़ा करना या ठहराना। टिकने में प्रवृत्त करना। २. किसी के टिकने अर्थात् कुछ समय तक ठहरने या रहने की व्यवस्था करना। ३. किसी को कहीं टिकने या रहने देना। जैसे—बरात धर्मशाला में टिकाई जायगी। ४. किसी को अपने यहाँ अतिथि रूप में ठहराना या रखना। ५. सहारे पर खड़ा करना। ६. सहारा देना। ७. चुप-चाप या धीरे-से किसी के हाथ में कोई चीज दे देना। (दलाल)

टिकानी—स्त्री०[हिं० टिकाना] छकड़ा गाड़ी की वे दोनों लकड़ियाँ जिनमें रस्सी से पैंजनी बँधी होती है।

टिकाव—पुं०[हिं० टिकना] १. टिके हुए होने की अवस्था या भाव। २. स्थिरता। ३. टिकने का स्थान। ४. पड़ाव।

टिकिया—स्त्री०[सं० वटिका] १. कोई गोलाकार चिपटी कड़ी तथा छोटी वस्तु। जैसे—दवा या स्याही की टिकिया। २. कोयले की बुकनी से बना हुआ वह गोल टुकड़ा जिसे सुलगाकर तमाखू पीते हैं। ३. उक्त आकार की एक मिठाई। ४. बाटी। लिट्टी। ५. बरतन के साँचे का ऊपरी भाग जिसका सिरा बाहर निकला रहता है।

स्त्री०[हिं० टीका] १. माथा। ललाट। २. माथे पर लगी हुई बिंदी। ३.=टिक्की।

टिकुरा†—पुं०[देश०] टीला। भींटा।

पुं०=टिकड़ा।

टिकुरी—स्त्री०=टिकली (तकली)।

†स्त्री०=दे० 'निसोथ'।

टिकुला—पुं०[स्त्री० टिकुली]=टीका (माथे पर का)।

†पुं०=टिकोरा (छोटा कच्चा आम)।

टिकुली†—स्त्री०=टिकली।

टिकुवा†—पुं०=टेकुआ (तकला)।

टिकैत—पुं०[हिं० टीका+ऐत (प्रत्य०)] १. राजा का वह पुत्र जो उसके बाद राजतिलक का अधिकारी हो। राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २. अधिष्ठाता। ३. जिसके मस्तक पर नेतृत्व का तिलक लगाया गया हो; अर्थात् सरदार।

टिकोर†—स्त्री०=टकोर।

टिकोरा†—पुं०[हिं० टिकिया] आम का कच्चा छोटा फल।

टिकोला†—पुं०=टिकोरा।

टिक्कड़†—पुं० [हिं० टिकिया] १. बड़ी टिकिया। २. आग पर सेंकी हुई मोटी रोटी।

टिक्का—पुं० १.=टिकड़ा। २.=टीका। ३. टिकैत (पश्चिम)।

पुं०[देश०] मूँगफली की फसल में होनेवाला एक रोग।

टिक्की†—स्त्री०[हिं० टिकिया] १. छोटी टिकिया। २. छोटी पूरी या रोटी। ३. ताश के पत्ते पर की बूटी। बुंदकी। ४. संकेत आदि के लिए किसी रंग की वह बिंदी जो उँगली के पोर से लगाई जाती है।

टिखटी—स्त्री०=टिकठी।

टिघलना—अ०=पिघलना।

टिघलाना†—स०=पिघलाना।

टिचन—वि०[अं० अटेंशन] १. जो हर तरह से बिलकुल ठीक या दुरुस्त हो। २. किसी काम के लिए तैयार या लैस। प्रस्तुत।

टिट*—स्त्री० [हिं० टेक] जिद। हठ।

टिटकारना—स०[अनु०] [भाव० टिटकारी] टिकटिक शब्द करते हुए घोड़ों आदि को हाँकना।

टिटकारी—स्त्री०[हिं० टिटकारना] १. टिक-टिक शब्द करते हुए पशुओं को हाँकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. मुँह से निकलनेवाला टिकटिक शब्द।

क्रि० प्र०—देना।

टिटिंबा—पुं०[अ० ततिम्मः=परिशिष्ट] १. व्यर्थ का बखेड़ा। २. आडंबर। ढकोसला।

टिटिभी—स्त्री०=टिटिहरी।

टिटिह=पुं०=टिटिहा।

टिटिहरी—स्त्री०[सं० टिट्टिभ] जलाशयों के समीप रहनेवाली एक छोटी चिड़िया जिसके सिर, गले तथा सीने पर के बाल काले रंग के, पीठ तथा डैने भूरे रंग के, और निचला भाग सफेद होता है। कुररी।

विशेष—यह अपना घोंसला नहीं बनाती बल्कि बालू में ही अंडे देती है।

टिटिहा—पुं०[?] नर टिटिहरी।

टिटिहारोर—पुं०[हिं० टिटिहा+रोर] १. टिटिहरी के बोलने का शब्द। २. टिटिहरियों की तरह की असंयत और निरर्थक चिल्लाहट, पुकार या हल्ला-गुल्ला।

टिट्टिभ—पुं०[टिट्टि√भण् (शब्द करना)+ड] [स्त्री० टिटिट्भा, टिटिभी] १. कुररी या टिटिहरी नामक पक्षी। २. टिड्डी।

टिड्डा—पुं०[सं० टिटिट्भ] एक प्रकार का उड़नेवाला बड़ा फतिंगा।

टिड्डी—स्त्री०[सं० टिटिट्भ] १. दल बाँधकर उड़नेवाला एक प्रकार का बड़ा फतिंगा जो फसलों को नष्ट कर देता है। २. घरों में रहनेवाला एक छोटा कीड़ा जो कपड़ों आदि को खाता है।

टिढ़-बिडंगा—वि०[हिं० टेढ़ा+बेढंगा] जो सीधा या सुडौल न हो। टेढ़ा-मेढ़ा।

टिन—पुं०=टीन।

टिप—स्त्री०[हिं० टीपना] वह अवस्था जिसमें साँप के काटने पर विष रक्त में प्रविष्ट हो चुका हो।

टिपकना†—अ०=टपकना।

टिपका†—पुं०=टपका।

टिपटिप—स्त्री० [अनु०] १. जल की बूँदें गिरने से होनेवाला शब्द। २. छोटी-छोटी बूँदों के रूप में होनेवाली थोड़ी या हलकी वर्षा।

क्रि० वि० टिप-टिप शब्द करते हुए। जैसे—टिप-टिप पानी बरसना।

टिपवाना—स०[हिं० टीपना का प्रे० रूप] टीपने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को टीपने में प्रवृत्त करना।

टिपाई—स्त्री०[हिं० टीपना] १. टीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. चित्रकला में, आकृतियों आदि की आरंभिक रूपरेखा अंकित करने या बनाने की क्रिया या भाव। ३. दे० 'टीप'।

टिपारा—पुं०[हिं० तीन+फा० पारः=टुकड़ा] पुरानी चाल की एक प्रकार की तिकोनी टोपी जो मुसलमान फकीर पहना करते थे।

†पुं०=पिटारा।

टिपुर—पुं०=टिपोर।

टिपोर†—पुं० [देश०] १. अभिमान। घमंड। २. आडंबर। पाखंड।

टिप्पणी—स्त्री०[सं०√टिप् (प्रेरणा)+क्विप्, टिप√पन् (स्तुति)+अच्—ङीष्, णत्व] १. स्मरण रखने के लिए कोई बात टीपने या संक्षिप्त रूप में लिख रखने की क्रिया। २. उक्त प्रकार से लिखा हुआ लेख। ३. जन्म-पत्री। ४. किसी के संबंध में प्रकट किया जानेवाला संक्षिप्त विचार। उप-कथन। ४. आज-कल पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि में किसी शब्द, पद या वाक्य के संबंध में कुछ नवीन तथ्य, तर्क या मत उपस्थित करने के लिए लिखा जानेवाला छोटा लेख। ५. समाचार पत्रों में संपादक की ओर से किसी घटना के संबंध में लिखा हुआ छोटा लेख। (अग्रलेख से भिन्न)

टिप्पन—पुं०[सं० टिप्पणी] १. टीका। २. व्याख्या। ३. जन्मपत्री।

टिप्पनी—स्त्री०=टिप्पणी।

टिप्पस†—स्त्री०[देश०] अपना काम या मतलब निकालने के लिए की जानेवाली छोटी-मोटी युक्ति।

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—भिड़ाना।—लगाना।

टिप्पी—स्त्री०=टिक्की।

टिफिन—पुं०[अं०] दोपहर के समय किया जानेवाला जलपान।

टिबरी†—स्त्री०[देश०] पहाड़ की छोटी चोटी।

टिमकी†—स्त्री०[अनु०] १. छोटा-मोटा बरतन। २. बच्चे का पेट।

टिमटिमाना—अ०[सं० तिम=ठंढा होना] १. किसी चीज में से रह-रहकर मंद या हलका प्रकाश निकलना। जैसे—जुगनूँ, तारे या दिये का टिमटिमाना। २. (दिये की लौ का) बुझने से कुछ पहले रह-रहकर कुछ प्रकाश देना।

टिमाक—स्त्री०[देश०] १. बनाव-सिंगार। २. ठसक।

टिमिला—पुं०[देश०] [स्त्री० टिमिली] छोकरा। लड़का।

टिम्मा†—वि० [देश०] छोटे डील-डौलवाला। ठेंगना। नाटा।

टिर—स्त्री०=टर।

टिरफिस—स्त्री०[हिं० टिर+फिस] १. बहुत ही तुच्छ कोटि का प्रतिवाद या विरोध। २. व्यर्थ का टर्रापन।

टिर्रा†—वि०=टर्रा।

टिर्राना†—अ०=टर्राना।

टिलटिलाना†—अ०[अनु०] [भाव० टिलटिली] पतला दस्त करना या फिरना।

टिलटिली—स्त्री०[अनु०] १. पतला दस्त फिरने की क्रिया या भाव। †२. पतला दस्त।

टिलवा—पुं०[देश०] १. लकड़ी का टेढ़ा-मेढ़ा छोटा टुकड़ा। कुंदा। २. नाटे कद का आदमी। ३. खुशामदी या चापलूस व्यक्ति।

टिलिया†—स्त्री० [देश०] १. छोटी मुर्गी। २. मुर्गी का बच्चा।

टिली-लिली—स्त्री०[अनु०] बच्चों की आपस में एक दूसरे को चिढ़ाने की वह क्रिया जिसमें वे टिली-लिली करते हुए अपनी मध्यमा उँगली नचाते हैं।

टिल्हू—पुं०[देश०] नेवलों की जाति का एक जंतु जिसके शरीर से बहुत अधिक दुर्गंध निकलती है।

टिलोरिया†—स्त्री०[देश०] मुरगी का बच्चा।

स्त्री०=टिलिया।

टिल्ला—पुं०[हिं० ठेलना] १. चोट। २. धक्का।

वि०=निठल्ला।

टिल्लेनवीसी—स्त्री०[हिं० टिल्ला=फा० नवीसी] १. निकृष्ट या निम्न कोटि की सेवा। २. निठल्लापन। ३. टाल-मटोल। बहानेबाजी।

क्रि० प्र०—करना।

टिसुआ†—पुं०[सं० अश्रु] आँसू। (पश्चिम)

टिहक—स्त्री०=ठिठक।

टिहकना—अ०=ठिठकना।

टिहुकना—अ० १.=ठिठकना। २. चौंकना।

टिहुनी†—स्त्री०[सं० घुंट, हिं० घुटना] १. घुटना। २. कोहनी।

टिहूक—स्त्री०[हिं० टिहुकना] टिहुकने (अर्थात् १. ठिठकने; और २. चौंकने) की अवस्था, क्रिया या भाव।

टिहूकना—अ०=टिहुकना।

टींड—स्त्री०=टिंड (रहट की)।

पुं०=टिंडा।

टींड़सी—स्त्री०[सं० टिंडिश]=टिंडा।

टींड़ा—पुं०[देश०] १. जाँता घुमाने का खूँटा। २. जाँते का जुआ।

पुं०=टिंडा।

टींड़ी—स्त्री०=टिड्डी।

टीक—स्त्री०[सं० तिलक] १. गले में पहनने का एक आभूषण। २. माथे पर पहनने का टीका नामक आभूषण।

टीकठ†—पुं०[हिं० टिकना] रीढ़ की हड्डी।

टीकन—स्त्री० =टेकन।

टीकना†—स०[हिं० टीका] १. टीका या तिलक लगाना। २. संकेत के लिए टिक्की या बिंदी लगाना।

टीका—पुं०[सं० टीक=चलना] १. धार्मिक हिंदुओं में वह सांप्रदायिक चिह्न जो केसर, चंदन, रोली आदि से मुख्यतः मस्तक पर और गौणतः छाती, बाँह आदि पर लगाया जाता है। तिलक। २. विवाह स्थिर करने के समय का वह कृत्य जिसमें कन्या-पक्ष से वर को केसर का तिलक लगाकर कुछ धन, मिठाई आदि देते हैं। तिलक। ३. कुछ विशिष्ट धार्मिक संस्कारों के अवसर पर संबंधियों के यहाँ दी या भेजी जानेवाली मिठाई, धन आदि। (टीका लगाने का औपचारिक लक्षण)

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।—भेजना।

४. किसी नये राजा के राजसिंहासन पर बैठने के समय का वह कृत्य जिसमें पुरोहित उसके मस्तक पर तिलक लगाकर नियमतः या विधानतः उसे सिंहासन का अधिकारी नियत या स्थिर करता है। ५. वह राजकुमार जो राजा के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी होने को हो या जिसे टीका लगने को हो। टिकैत। ६. दोनों भौंहों या ललाट के बीच का वह

मध्य भाग जहाँ उक्त प्रकार का चिह्न लगाया जाता है। ७. पशुओं के मतस्क या ललाट का उक्त भाग। जैसे—घोड़े या बैल का टीका। ८. वह जो किसी कुल, वर्ग, समाज, समूह आदि में सबसे बढ़कर या मुख्य माना जाता हो। शिरोमणि। ९. आधिपत्य, प्रधानता आदि का चिह्न या लक्षण। जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर कोई टीका है जिससे तुम्हारी ही बात मानी जाय ?

पद—टीके का=सब से बढ़कर। अच्छा। उत्तम।

१०. मध्य युग में धन आदि के रूप में वह भेंट जो असामी या प्रजा-वर्ग के लोग किसी बड़े जमींदार या राजा को कुछ विशिष्ट मांगलिक अवसरों पर देते थे। ११. माथे या ललाट पर पहना जानेवाला एक प्रकार का लंबोतरा गहना। १२. किसी प्रकार का लंबोतरा चिह्न या निशान। १३. आज-कल कुछ विशिष्ट रोगों का वह चेप या रस जो रासायनिक प्रक्रिया से प्रस्तुत करके प्राणियों के शरीर में सूइयों आदि से इसलिए प्रविष्ट किया जाता है कि प्राणी उस रोग से रक्षित रहें। जैसे—चेचक, प्लेग या हैजे का टीका।

स्त्री०[सं०] किसी ग्रंथ, पद या वाक्य का अर्थ स्पष्ट करनेवाला कथन या लेख। अर्थ का विवरण। विवृति। व्याख्या। जैसे—(क) महाभारत या रामायण की टीका। (ख) किसी के उपदेश या गूढ़ बात की टीका।

टीकाकार—पुं०[सं० टीका√कृ (करना)+अण्] १. वह जो किसी कठिन या दुर्बोध ग्रंथ की टीका करता हो। २. गूढ़ शब्दों, पदों, वाक्यों आदि की सुबोध भाषा में व्याख्या लिखनेवाला व्यक्ति।

टीका-टिप्पणी—स्त्री०[सं० व्यस्त शब्द] कोई प्रसंग छिड़ने या बात सामने आने पर उसके गुणों, दोषों आदि के संबंध में प्रकट किये जानेवाले विचार।

टीकी†—स्त्री०[हिं० टीका] १. टिकुली। २. टिकिया। ३. बिंदी। ४. पुरुषों की चुटिया। चोटी। शिखा।

टीकुर†—पुं०[देश०] १. ऊँची भूमि। २. जलाशयों के तट की ऊँची सूखी भूमि। ३. जंगल। वन।

टीटा—पुं०[देश०] स्त्रियों की योनि में का वह ऊँचा मांस-पिंड जो दोनों भगोष्ठों के बीच निकला रहता है। टना।

टीड़ी†—स्त्री०=टिड्डी।

टीन—पुं०[अं० टिन] १. राँगा। २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर जिससे कनस्तर, डिब्बे आदि बनाये जाते हैं। ३. टीन की चद्दर का बना हुआ कनस्तर या डिब्बा।

टीप—स्त्री०[हिं० टीपना, मि० अं० टिप] १. टीपने की क्रिया या भाव। २. धीरे-धीरे ठोंकने, पीटने या दबाने की क्रिया या भाव। जैसे—गच, छत या दीवार के पलस्तर पर होनेवाली टीप। ३. ईंटों की बनी हुई दीवार, फरश आदि पर पलस्तर न करके केवल उसकी दरजों, संधियों में मसाला भरकर उन्हें बंद करने की क्रिया या भाव। ४. जोर की ध्वनि या शब्द। ५. संगीत में, किसी एक स्वर पर बहुत जोर देते हुए कुछ देर तक किया जानेवाला उसका ऐसा उच्चारण जिसकी तीव्रता बराबर बढ़ती चलती हो।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—टीप लड़ाना=ऊँचे स्वर में या गले का पूरा जोर लगाते हुए कोई चीज गाना।

६. पानी मिला हुआ वह दूध जिससे चीनी या शीरा बनाने के समय उसकी मैल साफ की जाती है। ७. हाथी के शरीर पर औषध का किया जानेवाला लेप। ८. सेना की टुकड़ी या दल। ९. गंजीफे के खेल में विपक्षी के एक पत्ते को अपने दो पत्तों से मारने की क्रिया। १०. स्मरण रखने के लिए संक्षेप में लिखी हुई संक्षिप्त बात या उसका मुख्य अंश। ११. सूचना, व्याख्या या आलोचना के रूप में लिखी हुई कोई बात। (नोट) १२. वह कागज जिस पर दोनों पक्षों की ओर से लेन-देन, व्यवहार आदि से संबंध रखनेवाला कोई निश्चय या उसकी शरतें लिखी रहती हैं। दस्तावेज। लेख्य। १३. वह कागज जिस पर किसी को निश्चित समय पर कुछ धन देने का आदेश या प्रतिज्ञा लिखी हो। जैसे—चेक, हुंडी आदि। १४. जन्म-पत्री। टीपन।

वि० बहुत अच्छा या बढ़िया।

टीपटाप—स्त्री [अनु०] १. टीप करने अर्थात् दरजों या दरारों में मसाला भरने का काम। २. दे० 'टीम-टाम'।

टीपन—स्त्री०[हिं० टीपना] कंकड़, काँटे आदि के चुभने के कारण पड़ने-वाली गाँठ या घट्ठा।

स्त्री०=टीप (जन्म-पत्री)।

टीपना—स० [सं० टेपनं=फेंकना] १. उँगलियों या हथेलियों से दबाना। जैसे—किसी के पैर या हाथ टीपना। २. कोई चीज ठीक तरह से बनाने या सुन्दर रूप देने के लिए उस पर धीरे-धीरे हलका आघात या प्रहार करना। जैसे—गच या पलस्तर टीपना। ३. ईंटों की बनी हुई दीवार, फरश आदि पर सीमेंट आदि का पलस्तर न करके उसकी दरजों या संधियों को बंद करने के लिए उनमें मसाला भरना। ४. हलके हाथों से लेप आदि लगाना। ५. गाने के समय किसी स्वर को बहुत खींचते हुए और पूरी शक्ति लगाकर उसका उच्चारण करना। ६. गंजी के खेल में अपने दो पत्तों से विपक्षी का एक पत्ता मारना।

स०[सं० टिप्पनी] १. याद रखने के लिए कुछ लिख या टाँक लेना। २. अंकित करना। निशान लगाना। उदा०—कुंकुम चंदन चारु चून ऐपन सौं टीपे।—रत्ना०।

टीबा—पुं०[हिं० टीला] [स्त्री० टिबरी, टीबी] टीला।

टीम—स्त्री०[अं०] किसी खेल, प्रतियोगिता में सम्मिलित होनेवाले एक पक्ष के सब लोग। टोली।

टीम-टाम—स्त्री०[देश०] १. ऊपरी बनाव-सिंगार या सजावट। २. ठाट-बाट। तड़क-भड़क। ३. व्यर्थ का आडंबर।

टीला—पुं०[सं० अष्ठीला] १. छोटी पहाड़ी की तरह उभड़ा तथा ऊँचा उठा हुआ भूखंड। ढूह। २. मिट्टी का वह ऊँचा ढेर जो प्राकृतिक रूप से बना हो। २. छोटी पहाड़ी।

† पुं०[देश०] एक जल-पक्षी।

टीस—स्त्री०[देश०] १. सहसा तथा रह-रहकर उठनेवाली वह पीड़ा जो शरीर का भीतरी भाग चीरती हुई-सी जान पड़े। हूल।

क्रि० प्र०—उठना।—मारना।

२. दुश्मनी। बैर। शत्रुता। (पूरब)

†स्त्री०[अं० स्टिच] पुस्तकों की सिलाई का वह प्रकार जिसमें उसके फरमें पहले अलग-अलग और तब एक साथ सीये जाते हैं।

टीसना—अ०[हिं० टीस] शरीर के किसी अंग में रह-रहकर ऐसी तीव्र

पीड़ा होना जो शरीर के उस अंग को अंदर से चीरती हुई-सी जान पड़े।

टीसा—पुं० [देश०] खैरे रंग का एक शिकारी पक्षी जिसके डैने भूरे होते हैं।

टुँगना—स०=टूँगना।

टुंच—वि० [सं० तुच्छ] १. क्षुद्र। तुच्छ। २. दे० 'टुच्चा'।
स्त्री० बहुत ही थोड़ा धन या पूँजी।

टुंटा—वि०=टुंडा।

टुंटुक—पुं० [सं० टुंटु√कै (शब्द)+क] १. सोना पाठा। २. काला खैर।

टुंटुका—स्त्री० [सं० टुंटुक+टाप्] पाठा।

टुंड(ा)—वि० [सं० तुंड] [स्त्री० टुंडी] १. (वृक्ष) जिसकी डालें या पत्तियाँ कट, गिर या झड़ गई हों। २. (व्यक्ति) जिसका एक या दोनों हाथ कटे हुए हों। ३. (पशु) जिसका एक या दोनों सींग कटकर या और किसी प्रकार गिर गये हों। ४. (चीज) जिसका कोई अंग खंडित हो।
पुं० १. ठूँठ वृक्ष। २. लूला। ३. पशु जिसका एक सींग टूट चुका हो। ४. एक काल्पनिक प्रेत जिसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि वह रात के समय अपना कटा हुआ सिर हथेली पर रखकर तथा घोड़े पर सवार होकर निकलता है।

टुंडी—स्त्री० [सं० तुंडि] नाभि। ढोंढी।
स्त्री० [?] बाँह। मुश्क।
मुहा०—टुंडियाँ कसना या बाँधना=दे० 'मुश्क' के अन्तर्गत 'मुश्कें कसना या बाँधना'।

टुइँयाँ—पुं० [देश०] १. तोतों या सुग्गों की एक जाति। २. उक्त जाति का तोता जिसकी चोंच पीले रंग की और गरदन बैंगनी होती है। यह अपेक्षाकृत छोटे आकार का होता है।
वि० १. बहुत छोटा। २. बहुत ठिंगना या नाटा।

टुक—वि० [सं० स्तोक=थोड़ा] थोड़ा। जरा-सा।
क्रि० वि० जरा। तनिक।
पुं० टुकड़ा। उदा०—इक टुक कपड़े पर तेहिं जनि अजिं छुड़ाओ। —रत्ना०।

टुक-टुक—अव्य०=टुकुर-टुकुर। जैसे—लोग टुक-टुक देखते रहे।—राहुल।

टुकड़—पुं० हिं० 'टुकड़ा' का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—टुकड़गदा, टुकड़तोड़ आदि।

टुकड़गदा—पुं० [हिं० टुकड़ा+फा० गदा=भिखमंगा] १. रोटी के टुकड़े घर-घर से माँगकर निर्वाह करनेवाला भिखारी। २. वह व्यक्ति जो दूसरों के टुकड़ों पर पलता हो।
वि० १. बहुत ही तुच्छ और हीन (व्यक्ति)। २. परम दरिद्र। ३. कंगाल।

टुकड़गदाई—स्त्री० [हिं० टुकड़ा+फा० गदाई=भिखमंगापन] घर-घर से रोटी के टुकड़े भीख माँगने की क्रिया या भाव। भिखारीपन।
वि०, पुं०=टुकड़गदा।

टुकड़तोड़—पुं० [हिं० टुकड़ा+तोड़ना] वह निठल्ला व्यक्ति जो दूसरों के दिये हुए टुकड़े खाकर दिन बिताता हो।

टुकड़ा—पुं० [सं० त्रोटक या स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १. किसी वस्तु का वह छोटा अंश या भाग जो मूल वस्तु से कट, फट या टूटकर अलग हो गया हो। जैसे—(क) कपड़े या कागज का टुकड़ा। (ख) बादल का टुकड़ा। (ग) ईंट या पत्थर का टुकड़ा।
मुहा०—(किसी चीज के) टुकड़े उड़ाना=किसी चीज को इस प्रकार काटना, तोड़ना या फोड़ना कि उसके बहुत से छोटे-छोटे टुकड़े हो जायँ।
२. रोटी आदि में से काट या तोड़कर निकाला हुआ अंश या भाग।
मुहा०—टुकड़ा या टुकड़े माँगना=घर-घर घूमकर भिक्षा के रूप में रोटी का टुकड़ा माँगना। **टुकड़ा-तोड़ या टुकड़ा-सा जवाब देना**=बहुत ही रुखाई से इन्कार करना या साफ जवाब देना। **(किसी के) टुकड़े तोड़ना**=बहुत ही दीन-हीन बनकर किसी के दिये हुए रूखे-सूखे भोजन से निर्वाह करना। दीन रूप में आश्रित बनकर दिन बिताना या रहना। **(किसी के) टुकड़ों पर पड़ना या पलना**=(किसी के) टुकड़े तोड़ना।
३. जमीन का वह अंश जो मूल से नदी, पहाड़, मेंड़ आदि बीच में पड़ने या बनने के कारण अलग हो गया हो। जैसे—खेत के इस टुकड़े में खरबूज और उस टुकड़े में तरबूज बोया गया है। ४. किसी कृति या रचना का कोई विशिष्ट अंश, खंड या भाग। जैसे—कविता, गीत या शेर का टुकड़ा।

टुकड़ी—स्त्री० [हिं० टुकड़ा] १. छोटा टुकड़ा। जैसे—नमक या मिसरी की टुकड़ी। २. छोटे-छोटे खंडों या टुकड़ों में काटी या बनाई हुई चीज। जैसे—चार टुकड़ी मिठाई। ३. कुछ विशिष्ट प्रकार के प्राणियों अथवा कोई विशिष्ट कार्य करनेवाले लोगों का छोटा दल, वर्ग या समुदाय। जैसे—(क) कबूतरों की टुकड़ी। (ख) ठगों, डाकुओं या सैनिकों की टुकड़ी। ४. कपड़े का वह टुकड़ा जो स्त्रियाँ महीन साड़ी पहनने से पहले कमर में लपेट लेती हैं। ५. कार्तिक-स्नान का मेला जिसमें लोग छोटे-छोटे दलों के रूप में जाया करते थे।

टुकनी†—स्त्री०=टोकनी (टोकरी)।

टुकरी†—स्त्री० [?] सल्लम की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
†स्त्री०=टुकड़ी।

टुकुर-टुकुर—अव्य० [अनु०] ललचाई हुई नजर से या विवशता की दशा में।
मुहा०—टुकुर टुकुर देखना=ललचाई हुई नजरों से या विवशता की दशा में किसी की ओर चुपचाप टक लगाकर देखना।

टुक्कड़ (र)†—पुं० [सं० स्तोक] रोटी का टुकड़ा। (पंजाब) उदा०—वह पायेगी सदा दया का टुक्कड़।—कोई कवि।

टुक्का—पुं० [हिं० टूक] १. किसी चीज का बहुत छोटा अंश।
मुहा०—टुक्का-सा जवाब देना=साफ इनकार करना। कोरा जवाब देना। **टुक्का-सा मुँह लेकर रह जाना**=लज्जित होकर चुप रह जाना।
२. किसी वस्तु का चौथाई अंश।

टुघलाना—अ०=चुभलाना।

टुच्चा—वि० [सं० तुच्छ] [स्त्री० टुच्ची] १. (व्यक्ति) जो बहुत ही निम्न या हीन विचारों का या क्षुद्र प्रकृतिवाला हो। २. (कथन) जो अनुचित तथा ओछा या हेय हो। जैसे—टुच्ची बात। ३. जो देखने में बहुत ही तुच्छ या हेय जान पड़ता हो। ४. (पहनने का कपड़ा) जिसकी ऊँचाई, लंबाई या घेरा उचित या साधारण से कम हो। टुच्ची कमीज, टुच्चा पाजामा।

टुटका †—पुं०=टोटका।

टुटनी—स्त्री० [हिं० टोंटी] झारी या गड़ुवे की पतली नली। छोटी टोंटी।

टुटपुंजिया—वि० [हिं० टूटना+पूंजी] (व्यक्ति) जिसके पास बहुत ही थोड़ी पूंजी हो।

टुटरूँ—स्त्री० [अनु० टुटरूँटूं] छोटी पंडुकी।

टुटरूँ-टूँ—स्त्री० [अनु०] पंडुकी के बोलने का शब्द। पेंडुकी या फाख्ता की बोली।

वि० १. अकेला। २. बहुत कम। थोड़ा। ३. क्षीण-काय। दुबला-पतला। ४. तुच्छ। हीन।

टुटहा† —पुं० [देश०] एक तरह की चिड़िया।

वि० [हिं० टूटना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० टुटही] १. टूटा हुआ। २. जो अपनी जाति, पंक्ति या वर्ग से छूटकर अलग हो गया हो।

टुटियल—वि० [हिं० टूटना] १. जो टूटा-फूटा हो अथवा टूटने-फूटने की अवस्था में हो। जर्जर। २. कमजोर। दुर्बल। ३. टुटपुंजिया।

टुटुका—स्त्री० [देश ०] एक प्रकार का नगाड़ा।

टुटुहा—पुं०=टुटहा।

टुटेला†—वि०=टुटहा।

टुड़ी†—स्त्री० [सं० तुंडि] नाभि।

स्त्री०=टुकड़ी।

टुनका† —पुं० [देश०] एक रोग जिसमें मूत्र जल्दी-जल्दी होता और उसके साथ वीर्य भी गिरता है।

टुनकी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फतिंगा।

टुनगा†—पुं० [सं० तनु=पतला+अग्र=अगला] [स्त्री० टुनगी] १. डाल या टहनी का सिरा या अगला भाग। २. टहनी।

टुनटुना †—पुं० [देश०] मैंदे आदि का एक नमकीन पकवान।

टुनहाया—पुं० [हिं० टोना] [स्त्री० टुनहाई] टोना करनेवाला व्यक्ति। टोनहा।

टुनाका—स्त्री० [सं०] तालमूली। मुसली।

टुनियाँ—स्त्री० [सं० तुंड] एक प्रकार का मिट्टी का छोटा पात्र जिसमें टोंटी भी लगी होती है।

टुनिहाया—पुं० [स्त्री० टुनिहाई]=टुनहाया।

टुन्ना—पुं० [सं० तुंड] वह नाल जिसमें फल लगते तथा लटकते हैं। जैसे—कद्दू या कमल का टुन्ना।

टुपकना†—अ० [अनु०] १. धीरे से ऊपरी भाग काटना या कुतरना। २. जीव-जन्तुओं का चुपचाप यां धीरे से किसी को काटना या डंक मारना। ३. धीरे से या बहुत ही सीधे-सादे बनकर कोई ऐसी छोटी-सी बात कहना जो किसी का अनिष्ट कर सकती या किसी को कुछ हानि पहुँचा सकती हो।

टुबी†—स्त्री० [हिं० डूबना] गोता। डुबकी। (प्रश्चिम)

टुमकना—अ०=टुपकना।

टुम्मा—पुं० [देश०] कच्ची रसीद।

टुरा—पुं० [देश०] [स्त्री० टुरिन, टुरिया] बच्चा। लड़का।

टुर्रा—पुं० [?] १. किसी चीज का जमा हुआ या ठोस टुकड़ा या डला। जैसे—मिसरी का टुर्रा। २. ज्वार, बाजरे आदि मोटे अन्नों का बड़ा दाना।

टुलकना—अ०=ढुलकना।

टुलकाना†—स०=ढुलकाना।

टुलड़ा—पुं० [देश०] भारत के पूर्वी प्रदेशों में होनेवाला एक तरह का बाँस।

टुसकना—अ०=टसकना।

टूँ—स्त्री० [अनु०] पादने पर होनेवाला शब्द।

टूँक—पुं०=टूक।

टूँगना—स० [हिं० टुनगा] १. (चौपायों का) टहनी के सिरे की कोमल पत्तियों को दाँत से काटना। कुतरना। २. थोड़ा-थोड़ा करके और धीरे-धीरे खाना। (व्यंग्य)

टूँगा—वि० [सं० तुंग] ऊँचा। उदा०—तहाँ एक परबत हा टूँगा।—जायसी।

टूँड़—पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टूँड़ी] १. मक्खी, मच्छड़ आदि के मुँह पर का रोआँ जो नली के समान लंबा होता है तथा जिसके द्वारा वे किसी चीज का रस चूसते अथवा उसे छूकर उसका पता लगाते हैं। २. गेहूँ, जौ आदि की बालों में आगे या ऊपर की ओर निकला हुआ उक्त प्रकार का पतला लंबा अंश। सींगुर। ३. कन्दों, फलों आदि का अगला नुकीला और पतला भाग। जैसे—गाजर, बैंगन या मूली की टूँड़। ४. किसी चीज की पतली, लंबी नोक। ५. ढोंढी। नाभि।

टूक†—पुं० [सं० स्तोक] १. खंड। टुकड़ा।

मुहा०—**दो टूक जवाब देना**=थोड़े में तथा स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर देना। साफ इनकार करना।

२. कपड़े का थान। (बजाज) जैसे—दस टूक मलमल पाँच टूक मारकीन।

टूकर†—पुं०=टुक्कड़।

टूका†—पुं० [हिं० टूक] १. टुकड़ा। २. भिक्षा। भीख। ३. किसी चीज का चौथाई अंश या भाग।

टूकी†—स्त्री० [हिं० टूक] १. खंड। टुकड़ा। २. पहनने की अँगिया में मुलकट के ऊपर लगनेवाला कपड़े का टुकड़ा।

टूक्यो*—पुं० [?] भालू। (डिं०)

टूगर—वि० [?] अनाथ।

टूट†—स्त्री० [सं० त्रुट्, हिं० टूटना] १. टूटने की क्रिया या भाव। २. कटने, टूटने आदि पर निकला हुआ अंश या भाग। खंड। ३. ऐसी स्थिति जिसमें बीच का कोई अंश कटा या टूटा हुआ हो। ४. क्रम के निर्वाह के प्रसंग में कहीं बीच में होनेवाला थोड़ा-सा अभाव या छूट। जैसे—किसी कविता या लेख में की टूट। ५. कमी। त्रुटि। ६. घाटा। टोटा।

टूटन—स्त्री० [हिं० टूटना] १. टूटने की क्रिया, भाव या स्थिति। टूट। २. टूटी हुई चीज के टुकड़े।

टूटना—अ० [सं०√त्रुट्, हिं० तोड़ना का अ०] १. किसी चीज के अंग, अंश या अवयव का कटकर अपने मूल से अलग हो जाना। जैसे—पेड़ की डाल या उसमें लगा हुआ फल टूटना। २. किसी चीज का इस प्रकार खंडित या भग्न होना कि उसके दो या बहुत से टुकड़े हो जायँ। जैसे—घन की चोट से पत्थर टूटना। ३. किसी चीज के इस प्रकार खंड या टुकड़े होना कि वह काम में आने योग्य अथवा अपने पूर्व रूप में न रह

जाय। जैसे—(क) छत, दीवार या मकान टूटना। (ख) गिलास, थाली या लोटा टूटना। (ग) तालाब या नदी का बाँध टूटना।

पद—टूटा-फूटा=(क) जो खंडित या भग्न होने के कारण अपने पूर्व रूप में न रह गया हो अथवा ठीक तरह से काम न दे सके। जैसे—टूटी-फूटी घड़ी, टूटा-फूटा मकान। (ख) जो नियम, विधान आदि की दृष्टि से अधूरा या असंगत हो अथवा ठीक या समीचीन न जान पड़े। जैसे—बच्चों का टूटी-फूटी बातें करना या बोली बोलना। (ग) इतर भाषा-भाषियों का टूटी-फूटी हिंदी लिखना।

४. आघात आदि के कारण किसी चीज का कहीं बीच में से इस प्रकार कुछ खंडित होना कि उसमें कुछ अवकाश, दरज या लकीर पड़ जाय। जैसे—(क) पैर या हाथ की हड्डी टूटना। (ख) टक्कर लगने से आरसी या घड़ी का शीशा टूटना। ५. अपने दल, पक्ष, वर्ग, समाज आदि से किसी प्रकार अलग या दूर हो जाना अथवा निकल जाना। अलगाव या पार्थक्य हो जाना। जैसे—(क) कबूतर का अपने झुंड से टूटना। (ख) मुकदमें का गवाह टूटना। (ग) जाति या बिरादरी से टूटना (अर्थात् अलग होना या निकाला जाना)। ६. किसी प्रकार के निश्चित या परम्परागत संपर्क या संबंध का अंत या विच्छेद होना। पहले का-सा लगाव या व्यवहार न रह जाना। जैसे—(क) नाता या रिश्ता टूटना। (ख) आपस की संधि, संविदा या समझौता टूटना। ७. किसी चलते हुए कार्य या व्यवहार का इस प्रकार अन्त या समाप्त हो जाना कि उसकी सब क्रियाएँ बिलकुल बन्द हो जायँ। जैसे—(क) कोठी, पाठशाला, महकमा या संस्था टूटना। (ख) दल, मंडली या संघटन टूटना। (ग) पदाधिकार की जगह या पद टूटना (समाप्त हो जाना)। ८. किसी प्रकार के क्रम, निश्चय या परम्परा का अन्त होना अथवा उसमें किसी प्रकार की बाधा या व्यतिक्रम होना। जैसे—(क) खाँसते-खाँसते (या हिचकियाँ लेते लेते) उसका दम टूट गया। (ख) पंद्रह दिन बाद अब बुखार टूटा है। (ग) बकवाद बंद करो, हमारा ध्यान टूटता है। (घ) उनका मौन (या व्रत) टूट गया। ९. किसी पदार्थ के किसी अंश या भाग का कहीं इस प्रकार दब या रुक जाना कि वह काम में न आ सके या मिल न सके। घटकर या और किसी प्रकार नहीं के बराबर हो जाना। जैसे—(क) गरमी में कूओं का पानी टूटना। (ख) लेन-देन या व्यवहार में सौ-पचास रुपए टूटना (कम मिलना)। १०. किसी प्रकार के तत्त्व या शक्ति में इस प्रकार कमी या ह्रास होना कि पहले की-सी सबल और स्वस्थ स्थिति न रह जाय अथवा बहुत कुछ नष्ट हो जाय। जैसे—(क) रोग से शरीर टूटना अर्थात् बहुत कृश या दुर्बल होना। (ख) बाजार गिरने से महाजन या व्यापारी का टूटना अर्थात् बहुत कुछ निर्धन हो जाना। (ग) युद्ध के कारण देशों या राष्ट्रों का बल टूटना। ११. किसी प्रकार की अनिष्ट, अप्रिय, बाधक या विपरीत घटना अथवा परिस्थिति के कारण किसी मनोदशा या स्थिति का अपने पहले के सबल और स्वस्थ रूप में न रह जाना। जैसे—उत्साह, दिल या हिम्मत टूटना।

संयो० क्रि०—जाना (उक्त सभी अर्थों में)।

१२. दुर्बलता, रोग, शिथिलता, श्रम आदि के कारण शरीर के अंगों का इस प्रकार पीड़ा से युक्त होना कि वे अपनी जगह से अलग होते या हटते हुए से जान पड़ें। जैसे—ज्वर आने या बहुत अधिक परिश्रम करने पर शरीर या उसके अंग-अंग टूटना। १३. किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार से बहुत से लोगों का एक साथ दल बाँधकर अथवा प्रायः एक ही समय में कहीं जाना या पहुँचना। जैसे—(क) डाकुओं का यात्रियों पर (अथवा सैनिकों का शत्रु के नगर पर) टूटना। (ख) मेला देखने के लिए (या राशन की दूकान पर) लोगों का टूटना।

संयो० क्रि०—पड़ना।

१४. पूरे वेग या शक्ति से किसी ओर अथवा किसी काम में प्रवृत्त होना या लगना। जुटना। जैसे—भुक्खड़ों का भोजन पर टूटना।

संयो० क्रि०—पड़ना।

१५. किसी चीज का प्रायः अनायास और बहुत अधिक मात्रा या मान में आने लगना या प्राप्त होना। जैसे—दौलत तो उनके घर मानो टूटी पड़ती है।

संयो० क्रि०—पड़ना।

पद—टूटकर या टूट-टूटकर=बहुत अधिक मात्रा या मान में। जैसे—टूटकर पानी बरसना (अर्थात् मूसलधार वर्षा होना)।

१६. युद्ध के प्रसंग में, किले या गढ़ के संबंध में, शत्रु के आक्रमण से ध्वस्त या नष्ट होकर आक्रमणकारियों या विरोधियों के हाथ में चला जाना। जैसे—मुगलों के शासन-काल में एक-एक करके राजपूताने के बहुत से गढ़ टूट गये।

संयो० क्रि०—जाना।

१७. प्रतियोगिता, होड़ आदि के प्रसंग में, पहले के किसी कीर्तिमान या सीमा का किसी नये कृत्य या कौशल से उल्लंघित होना या पीछे छूट जाना। जैसे—इस बार के सर्वराष्ट्रीय खेलों की प्रतियोगिता में कई क्षेत्रों के पुराने कीर्ति-मान टूट गये और उनके स्थान पर नये कीर्ति-मान स्थापित हुए हैं।

संयो० क्रि०—जाना।

१८. आर्थिक, व्यापारिक आदि प्रसंगों में, किसी चल-पत्र, देयादेश या सिक्के का नगद धन या छोटे सिक्कों के रूप में परिवर्तित होना। भुनना। जैसे—नोट, रुपया या हुंडी टूटना।

संयो० क्रि०—जाना।

टूठना—अ०, स० =तूठना

टूठनि—स्त्री० [हिं० टूठना] तुष्टि। संतोष।

टूनरोटी†—स्त्री० [अं० टाउन-ड्यूटी] चुंगी।

टूना†—पुं०=टोना।

टूम—स्त्री० [अनु० टुन टुन] १. आभूषण। गहना।

पद—टूम-छल्ला=छोटे-छोटे गहने।

२. बनाव-सिंगार। सजावट।

पद—टूम-टाम=बढ़िया कपड़े, गहने आदि; अथवा सजावट और शृंगार की सामग्री।

३. धनी या सुन्दर स्त्री जिसके प्रति लोगों के मन में लोभ उत्पन्न होता हो। ४. बहुत ही चतुर या चालाक या छँटा हुआ आदमी जिससे सहसा कोई पार न पा सकता हो। ५. चेतावनी, संकेत आदि के रूप में किया जानेवाला बहुत हलका आघात या दिया जानेवाला झटका। जसे—कबूतरों को छतरी पर से टूम देकर उड़ाना।

क्रि० प्र०—देना।

६. ताने के रूप में कही हुई कोई व्यंग्यपूर्ण बात। (क्व०)

टूमना†—स० [अनु०] १. झटका या धक्का देना। २. व्यंग्यपूर्ण बात कहना। ताना देना।

टूरनामेंट—स्त्री० दे० 'चक्र-स्पर्धा'।

टूल—पुं० [अं० स्टूल] एक प्रकार की छोटी तिपाई।

टूस—पुं०=तूस।

टूसा†—पुं० [सं० तुष] १. मंदार का फल। २. पाकर का फूल। ३. तंतु। रेशा। ४. खंड। टुकड़ा।

टूसी†—स्त्री० [हिं० टूसा] बिना खिला फूल। कली।

टें—स्त्री० [अनु०] १. तोते की बोली। २. कर्कश या तीखा स्वर।

पद—टें टें=व्यर्थ की बकवाद।

मुहा०—**टें बोलना या होना**=चट-पट मर जाना।

टेंकी—स्त्री० [सं०] १. संगीत में शुद्ध जाति का एक प्रकार का राग। २. एक प्रकार का नृत्य।

टेंगड़—स्त्री०=टेंगर।

टेंगन—स्त्री०=टेंगर।

टेंगनि—स्त्री०=टेंगर।

टेंगर—स्त्री० [सं० तुंड=एक प्रकार की मछली] एक प्रकार की मछली जिसकी रीढ़ में केवल एक काँटा होता है।

टेंघुना†—पुं०=घुटना।

टेंघुनी—स्त्री० १.=टेंघुना। २ =कोहनी।

टेंचन†—पुं० [हिं० टेक] चाँड़। थूनी।

टेंट—स्त्री० [?] कमर में पड़नेवाली धोती की वह लपेट जिसमें रुपये, पैसे आदि भी रखे जाते हैं।

मुहा०—**टेंट में कुछ होना**=पास में कुछ रुपया-पैसा होना।

स्त्री० [सं० तुंड] १. कपास की ढोंढ़। २. करील का फल। ३. भीतरी घाव।

टेंटर†—पुं०=ढेंढर।

टेंटा—पुं० [देश०] वगुले की जाति का चितकवरे रग का एक बड़ा पक्षी।

टेंटार—पुं०=टेंटा।

टेंटिहा†—पुं० [?] क्षत्रियों की एक शाखा।

वि०=टेंटी।

टेंटी—स्त्री० [देश०] १. करील नामक पौधा और उसका फल। कचड़ा। उदा०—फेंट किसी टेंटिन पै मेवन कौ क्यों स्वाद बिसार्यौ।—भारतेन्दु।

वि० [अनु० टें टें] जिद्दी और झगड़ालू।

टेंटुवा—पुं० [देश०] १. गरदन। २. अँगूठा।

टेंटू*—स्त्री० [सं० टुंटक] सोनापाठा।

वि०=टेंटी।

टेंटें—स्त्री० [अनु०] १. तोते के वोलने का शब्द। २. बार बार होनेवाला कोई कर्कश या तीखा स्वर। ३. व्यर्थ की बकवाद या वात-चीत।

टेंठा—वि० [?] [स्त्री० टेंठी] चंचल।

टेंड†—स्त्री०=टिंड।

टेंडर—पुं० [अं०] किसी काम या सेवा का ठेका लेने से पहले उपस्थित किया जानेवाला वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि हम अमुक अमुक काम इतने दिनों के अन्दर और इतने रुपये लेकर पूरा कर देंगे।

पुं०=ढेंडर (आँख का रोग)।

टेंडसी†—स्त्री०=डेंडसी (टिंडा)।

टेउ*—स्त्री०=टेव।

टेउकन—स्त्री०=टेकन।

टेउकी†—स्त्री०=टेवकी (साधुओं की अधारी)।

टेक—स्त्री० [हिं० टेकना] १. टेकने की क्रिया या भाव। २. वह वड़ी लकड़ी या ऐसी ही और कोई चीज जो किसी दूसरी बड़ी या भारी चीज को गिरने, लुढ़कने आदि से वचाने तथा रोकने के लिए अथवा किसी प्रकार के सहारे के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। चाँड़। थूनी। जैसे—छत के नीचे या दीवार के पार्श्व में लगाई जानेवाली टेक।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

३. कोई ऐसी चीज जो उठने-वैठने आदि के समय सहारा देती हो। जैसे—टेक लगाकर बैठना=तकिये, दीवार आदि के सहारे पीठ टेककर बैठना। ४. साधुओं की अधारी। टेवकी। ५. अवलंब। आश्रय। सहारा। ६. टीला। टेकरी। जैसे—राम-टेक। ७. आग्रह, प्रतिज्ञा, हठ आदि की कोई ऐसी बात जिस पर आदमी दृढ़तापूर्वक अड़ा रहे और जल्दी इधर-उधर न हो।

मुहा०—**टेक गहना**=टेक पकड़ना। (देखें नीचे) **टेक निभाना**=अपनी की हुई प्रतिज्ञा या हठ पूरा करना। **टेक पकड़ना**=अपनी कही हुई बात पूरी करने या कराने के लिए जिद या हठ करना। **टेक रहना**=कही हुई बात या जिद पूरी होना। टेक का निर्वाह होना।

८. वह बात जो अभ्यास पड़ जाने के कारण कोई मनुष्य अवश्य या प्रायः करता हो। आदत। टेव। बान।

क्रि० प्र०—पड़ना।

९. गीत के आरंभ का वह पद जो प्रायः शेष पदों से छोटा होता और हर पद के बाद दोहराया जाता है। १०. स्थल का वह नुकीला, लंबोतरा भाग जो जल में कुछ दूर तक चला गया हो। (लश०)

टेकड़ी—स्त्री०=टेकरी (छोटी पहाड़ी)।

टेकन—स्त्री० [हिं० टेकना] वह बड़ी लकड़ी या ऐसी ही और कोई चीज जो किसी दूसरी बड़ी या भारी चीज को गिरने, लुढ़कने आदि से बचाने तथा रोकने के लिए अथवा किसी प्रकार के सहारे के लिए उसके नीचे लगाई जाती है। चाँड़। थूनी।

टेकना—स० [हिं० टिकना का स० रूप] १. किसी चीज को किसी दूसरी चीज के सहारे खड़ा करना, बैठाना या लेटाना। टिकाना। ठहराना। २. किसी चीज को गिरने, लुढ़कने आदि से बचाने के लिए उसके नीचे या वगल में टेक लगाना। ३. थकावट, दुर्बलता, शिथिलता आदि के समय सीधे खड़े रहने, चलने-फिरने या बैठ सकने के योग्य न रहने पर उठने-वैठने आदि में सहारे के लिए शरीर के बोझ का कुछ अंश किसी चीज पर डालना या स्थित करना। जैसे—उठते समय दीवार टेकना, चलते समय किसी का कंधा टेकना। बैठते समय लकड़ी टेकना।

मुहा०—**(किसी के आगे) घुटने टेकना**=हार मानकर अधीनता सूचित करना। **माथा टेकना** =दंडवत करना। नमस्कार या प्रणाम करना।

४. अपनी टेक या हठ पर दृढ़ रहना। ५. टेक ग्रहण करना। दृढ़ प्रतिज्ञा या हठ करना। जैसे—आज तो तुमने यह नई टेक टेकी है।

†पुं० [देश०] एक प्रकार का जंगली धान।

टेकनी—स्त्री०=टेकन।

टेकरा—पुं० [हिं० टेक] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] १. प्राकृतिक रूप से ऊँची उठी हुई भूमि या छोटी-सी पहाड़ी। टीला। (देखें)
†पुं०=टिकरा।

टेकरी—स्त्री० [हिं० टेकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटी-सी पहाड़ी। टीला।

टेकला*—स्त्री० [हिं० टेक] १. मन में ठानी हुई बात। टेक। संकल्प। २. धुन। रट।
पुं० [?] [स्त्री० टेकली] एक उपकरण जिससे चीजें उठाई तथा गिराई जाती हैं।

टेकान—स्त्री० [हिं० टेकना] १. टेकने या टेके जाने की अवस्था या भाव। २. वह चीज जो किसी दूसरी चीज के साथ उसे सहारा देने के लिए लगाई जाती है। टेक। चाँड़। ३. वह ऊँचा चबूतरा जहाँ बोझ ढोनेवाले मजदूर बोझ रखकर थोड़ी देर के लिए सुस्ताते हैं। ४. वह स्थान जहाँ से जुआरियों को जूए के अड्डे का पता मिलता है।

टेकाना—स० [हिं० टेकना का स०] १. किसी चीज को सहारा देने के लिए उसके साथ कोई दूसरी चीज खड़ी करना या लगाना। २. किसी भारी चीज का कुछ अंश किसी आधार पर स्थित करना। ३. चुप-चाप या धीरे से कोई चीज किसी को थमाना या देना। (दलाल)

टेकानी†—स्त्री० [हिं० टेकाना] १. वह चीज जो किसी को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे या बगल में लगाई जाय। टेक। २. बैल-गाड़ी का जूआ। ३. वह कील जो पहिये को धुरे में पहनाने पर इसलिए जड़ी जाती है कि वह बाहर निकलकर गिर न जाय।

टेकी—वि० [हिं० टेक] १. अपनी टेक या प्रतिज्ञा या हठ पर अड़ा रहनेवाला। २. जिद्दी।

टेकुआ†—पुं०=तकला।
†पुं०=टेकानी।

टेकुरा—पुं० [देश०] पान।

टेकुरी—स्त्री० [सं० तर्कु, हिं० टेकुआ] १. रस्सी बटने या सूत कातने की तकली। २. चरखे में का तकला। ३. चमड़ा सीने का सूआ या सूजा। ४. सुनारों का एक औजार जिससे सोने आदि के तार खींचकर उनमें फंदा लगाया जाता है। ५. संगतराशों का एक औजार जिससे मूर्तियों आदि का तल चिकना किया जाता है। ६. जुलाहों की बाँस की वह फिरकी जिसकी नोक में रेशम के डोरे अटकाये या फँसाये जाते हैं।

टेघरना†—अ० दे० 'पिघलना'।

टेटका† —पुं० [सं० ताटंक] कानों में पहनने का एक लटकौआ आभूषण। लौलक।

टेढ़—स्त्री० [हिं० टेढ़ा] १. टेढ़ापन। वक्रता। २. बात-चीत या व्यवहार में दिखाई देनेवाला लड़ाकापन।
मुहा०—टेढ़ की लेना=जहाँ सीधी तरह की बातें होनी चाहिए वहाँ भी ऐंठ या लड़ाई-झगड़े की बात करना।
†वि०=टेढ़ा। उदा०—टेढ़ जानि संका सब काहू।—तुलसी।

टेढ़ बिड़ंगा—वि०=टिढ़-बिड़ंगा।

टेढ़ा—वि० [सं० त्रेधा, मरा० तेड़ा, सिं० टेडो, पु० हिं० टेढ़] [स्त्री० टेढ़ी, भाव टेढ़ाई] १. जो लंबाई के बल में किसी एक सीध में न गया हो, बल्कि बीच में कहीं इधर-उधर कुछ घूम या मुड़ गया हो। वक्र। 'सीधा' का विपर्याय। जैसे—टेढ़ा बाँस, टेढ़ी लकीर। २. जिसकी क्रिया, गति या मार्ग में किसी प्रकार की कुटिलता या वक्रता आ गई हो। जैसे—टेढ़ी आँख या चितवन। ३. जिसमें सरलता, सुगमता आदि का बहुत कुछ अभाव हो। जैसे—टेढ़ा रास्ता। ४. जिसमें अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ, विकटताएँ आदि हों। जो सहज में ठीक या संपन्न न हो सकता हो। जैसे— टेढ़ा काम, टेढ़ा मुकदमा, टेढ़ी समस्या।
पद—टेढ़ी खीर=बहुत ही कठिन या विकट काम। जैसे—चंद्रमा या मंगल तक पहुँचना टेढ़ी खीर है।
विशेष—यह पद उस कहानी के आधार पर बना है, जिसमें किसी अंधे ब्राह्मण को खीर का परिचय कराने के लिए पहले उसके सफेद होने का और फिर सफेदी का बोध कराने के लिए बगले का उल्लेख किया गया था और अंत में बगले का बोध कराने के लिए उसके आगे हाथ टेढ़ा करके रखा गया था, जिसे टटोलकर उसने कहा था कि खीर तो टेढ़ी होती है। वह मेरे गले में अटक जायगी।
५. व्यावहारिक दृष्टि से जिसमें उग्रता, उद्दंडता, कठोरता आदि हों, फलतः जिसमें कोमलता, नम्रता, शिष्टता आदि का बहुत-कुछ अभाव हो। जैसे—टेढ़ा आदमी, टेढ़ा स्वभाव।
मुहा०—(किसी को) टेढ़ी आँख से देखना=वैर-विरोध, शत्रुता आदि के भाव से देखना। **(किसी से) टेढ़े पड़ना या होना**=क्रुद्ध या रुष्ट होकर कठोरतापूर्ण बातें कहना या लड़ने-झगड़ने को तैयार होना। **टेढ़े-टेढ़े चलना**=इतरा या ऐंठ कर चलना।
पद—टेढ़ी-सीधी बातें=ऐसी बातें जिनमें से कुछ तो ठीक या सीधे ढंग से और कुछ क्रुद्ध या रुष्ट होकर कही गई हों। जैसे—उस दिन वे अकारण ही मुझे बहुत-सी टेढ़ी-सीधी बातें सुना गये।

टेढ़ाई—स्त्री० [हिं० टेढ़ा] =टेढ़ापन।

टेढ़ापन—पुं० [हिं० टेढ़ा+पन (प्रत्य०)] टेढ़े होने की अवस्था या भाव।

टेढ़ा-मेढ़ा—वि० [हिं० टेढ़ा+अनु० मेढ़ा अथवा हिं० बेड़ा] [स्त्री० टेढ़ी-मेढ़ी] १. (वस्तु) जिसमें बहुत अधिक घुमाव-फिराव या मोड़ हों। २. (कार्य) जो कठिन या मुश्किल हो।

टेढ़े, टेढ़े मेढ़े—क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] सीधी तरह से नहीं, बल्कि टेढ़ेपन या घुमाव-फिराव के साथ।
मुहा०—टेढ़े टेढ़े चलना=सरल या सीधा व्यवहार न करके छल-कपट या लड़ाई-झगड़े की बात करना।

टेना—स० [देश०] १. धार तेज करने के निमित्त अस्त्र आदि को पत्थर पर रगड़ना। २. धार चोखी या तेज करना। ३. मूँछों के बालों में बल डालकर उन्हें खड़ा या तना रखने के लिए उमेठना।

टेनिस—पुं० [अं०] गेंद का एक विदेशी खेल। टेनिस।

टेनी† —स्त्री० [देश०] १. कानी अर्थात् सबसे छोटी उँगली।
मुहा०—टेनी मारना=कोई चीज तौलने के समय तराजू की डंडी में कानी उँगली से इस प्रकार सहारा लगाना कि चीज उचित से कम तौली जाय।
†२. एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

टेपारा—पुं०=टिपारा।

टेबुल—पुं० [अं०] १. मेज। २. सारिणी। (दे०)

टेम—स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीप-शिखा। दीये की लौ या ज्योति।
पुं०=टाइम (समय)।

टेमन—पुं० [देश०] १. साँपों की एक जाति। २. उक्त जाति का साँप।

टेमा†—पुं० [देश०] चारे की छोटी अँटिया।

टेर—स्त्री० [सं० तार=संगीत में ऊँचा स्वर] १. टेरने की क्रिया या भाव। २. किसी को बुलाने के लिए ऊँचे स्वर से की जानेवाली पुकार। ३. संगीत में वह ऊँचा स्वर जिसका उच्चारण एक साथ निरन्तर कुछ समय के लिए किया जाय। ४. गुजर। निर्वाह।

टेरक—वि० [सं० केकर, पृषो० सिद्ध] ऐंचाताना। भेंगा।

टेरना—स० [हिं० टर+ना (प्रत्य०)] १. किसी को अपने पास बुलाने के लिए कुछ ऊँचे स्वर से या चिल्लाकर पुकारना। २. किसी प्रकार के संकेत के रूप में या यों ही ऊँचा स्वर निकालना। जैसे—मुरली या वंशी टेरना।
स० [?] १. (काम, बात या समय) टालना। २. (किसी व्यक्ति को) टरकाना।

टेरवा—पुं० [देश०] हुक्के की वह नली जिस पर चिलम रखी जाती है।

टेरा—पुं० [?] १. अंकोल का पेड़। २. पेड़ का तना या धड़। ३. पेड़ की डाल या शाखा।
†वि० दे० 'भेंगा'।

टेराकोटा—पुं० [अं०] मृण्मूर्ति। (दे०)

टेरी—स्त्री० [देश०] १. पतली शाखा। टहनी। २. कुंती या बखेरी नाम का पौधा जिसकी कलियाँ चमड़ा सिझाने के काम आती है। ३. वक्कम की फली। ४. दरी की बुनाई में काम आनेवाला एक प्रकार का सूजा।

टेरो—स्त्री० [देश०] एक तरह की सरसों। उलटी।

टेलिग्राफ—पुं० [अं०]=दूरलेख।

टेलिग्राम—पुं० [अं०]=दूरलेख।

टेलिपैथी—स्त्री० [अं०]=दूरबोध।

टेलि-प्रिंटर—पुं० [अं०]=दूर मुद्रक।

टेलि-प्रिंटिंग—पुं० [अं०]=दूरमुद्रण।

टेलिफोन—पुं० [अं०]=दूरभाषक।

टेलिविजन—पुं० [अं०]=दूरदर्शन।

टेलिस्कोप—पुं० [अं०]=दूरवीक्षक।

टेली—स्त्री० [देश०] मझोले आकार का एक पेड़ जिसकी लकड़ी का रंग लाल होता है।

टेव—स्त्री० [हिं० टेक] आदत। बान।
क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

टेवकी—स्त्री० [हिं० टेवकन, टेकन] १. किसी चीज को गिरने से बचाने या सहारा देने के लिए उसके नीचे लगाई जानेवाली छोटी पतली लकड़ी। टेक। २. जुलाहों की वह लकड़ी जो ताने के सूतों को जमीन पर गिरने से बचाने के लिए उनके नीचे लगाई जाती है। ३. नाव में सबसे ऊपरवाला पाल जो प्रायः सबसे छोटा होता है।

टेवना†—स०=टेना (अस्त्र की धार रगड़ कर तेज करना)।

टेवा—पुं० [सं० टिप्पन] १. जन्मपत्री। जन्मकुंडली। २. लग्नपत्री जिसमें विवाह सम्बन्धी भिन्न-भिन्न कृत्यों का समय लिखा रहता है।

टेवैया†—वि० [हिं० टेवना] १. टेने (टेवने) अर्थात् अस्त्रों आदि की धारें रगड़कर तेज करनेवाला। २. मूँछ के वाल टेने अर्थात् उमेठनेवाला।

टेसुआ†—पुं०=टेसू।

टेसू—पुं० [सं० किंशुक] १. पलाश का फूल। २. शारदीय नवरात्र का एक उत्सव जिसमें लड़के गाते हुए घर-घर जाते और वहाँ से पैसे या अनाज पाते हैं। (इसी अवसर पर इस प्रकार का लड़कियों का जो उत्सव होता है वह 'झाँझी' कहलाता है।) ३. इस उत्सव पर गाये जानेवाले गीत।

टेहला†—पुं० [देश०] विवाह के समय होनेवाली अनेक छोटी रस्मों में से कोई एक या हर एक।

टेहुना—पुं०=घुटना।

टेहुनी†—स्त्री०=कोहनी।

टैंक—पुं० [अं०] १. तालाव। २. स्थल पर चलनेवाला एक प्रकार का बड़ा युद्धयान जिस पर तोपें लगी होती हैं।

टैंटी—स्त्री०, वि०=टेंटी।

टैंया—स्त्री० [देश०] चित्ती कौड़ी।
वि० छोटा या नाटा होने पर भी हृष्ट-पुष्ट।

टैक्स—पुं० [अं०] १. =कर। २. =शुल्क।

टैक्सी—स्त्री० [अं०] किराये पर चलनेवाली छोटी मोटरगाड़ी (निजी मोटरगाड़ी से भिन्न)।

टैन—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास जिससे चमड़ा सिझाया जाता है।

टैना†—पुं० [देश०] वह पुतला या हाँड़ी जिसे खेत में इसलिए खड़ा किया या टाँगा जाता है कि पशु-पक्षी उससे भयभीत हों और फलतः फसल की क्षति न करने पावें।

टैनी†—स्त्री० [देश०] भेड़ों का झुंड।
†स्त्री०=टहनी।

टैरा†—पुं० [स्त्री० टैरी]=टेरा।

टोंक†—स्त्री०=टोक।
पुं०=टोका (सिरा)।

टोंका†—पुं०=टोका।

टोंगा†—पुं०=टाँगा।

टोंगू—पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके रेशों से रस्सियाँ बनती हैं।

टोंच—स्त्री० [हिं० टोंचना] १. टोंचने की क्रिया या भाव। २. सिलाई का टाँका। सीयन।

टोंचना—स० [सं० टंकन] १. सिलाई करना। सीना। २. गड़ाना। चुभाना।

टोंट—स्त्री० [सं० तुंड] चोंच।

टोंटरी†—स्त्री०=टोंटी।

टोंटा—पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टोंटी] १. कोई ऐसी खोखली, गोलाकार लंबी चीज जो नोक की तरह आगे निकली हो। जैसे—बाँस का टोंटा, आतिशबाजी का टोंटा। २. बन्दूक की गोली का ऊपरी आवरण। कारतूस। ३. कच्चे देहाती मकानों में छाजन के नीचे लगाई जानेवाली लकड़ी की घोड़िया।

टोंटी—स्त्री० [सं० तुंड] १. किसी पात्र या नल में आगे की ओर लगा हुआ वह छोटा मुँह जिसमें से होकर कोई तरल पदार्थ गिरता या निकलता है। (टैप) २. सूअर आदि पशुओं का थूथन।

टोंस—स्त्री०=टौंस (तमसा नदी)।

टोआ—स्त्री० [?] आम के वृक्ष के आरंभिक अंकुर जो कुछ समय बाद मंजरी का रूप धारण करते हैं। डाभ।

पुं० [हिं० टोना=छूकर देखना] जहाज या नाव का वह मल्लाह जो आगे की ओर बैठकर पानी की गहराई नापता या थाह लेता चलता हो।

टोइयाँ—पुं० [देश०] एक तरह का छोटे आकार का तोता जिसकी चोंच पीले रंग की तथा गला और सिर बैंगनी रंग का होता है।

टोई†—स्त्री० [देश०] उँगली का खंड। पोर।

टोक—स्त्री० [सं० स्तोक या हिं० टोकना] १. टोकने की क्रिया या भाव। २. वह प्रश्नात्मक छोटी बात जो किसी को कुछ करने या कहने से टोक या रोककर बीच में कही या पूछी जाती है। साधारणतः ऐसी बात कुछ बाधक या विघ्नकारक समझी जाती है।

मुहा०—किसी की टोक में आना=किसी के टोकने पर उसके अनिष्टकारक प्रभाव में पड़ना। **टोक लगना**=किसी के बीच में टोकने पर उसका कुछ अनिष्टकारक या विघ्नकारक प्रभाव पड़ना। जैसे—(क) तुम्हारी टोक लग गई; इसी से वहाँ जाने पर हमारा काम नहीं हुआ। (ख) बच्चे को किसी की टोक लगी है; इसी से वह बीमार हो गया।

पद—टोक-टाक=किसी को कोई काम करते देखकर उसके संबंध में किये जानेवाले छोटे-मोटे प्रश्न जो साधारणतः लोक में उस काम के लिए बाधक लक्षण या अपशकुन समझे जाते हैं।

३. बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर।

†पुं०=टोका (सिरा)।

टोकना—स० [हिं० टोक+ना (प्रत्य०)] १. वक्ता के बोलते समय बीच में ही श्रोता का उसे कोई बात कहने से रोकना अथवा किसी बात के संबंध में अपनी शंका प्रकट करना।

विशेष—साधारणतः लोक में इस प्रकार के प्रश्न अपशकुन के रूप में माने जाते हैं।

२. किसी को कोई काम करते हुए देखकर अथवा कोई काम करने के लिए प्रस्तुत देखकर उसे वह काम न करने के लिए अथवा उसे ठीक तरह से करने के लिए कहना। ३. लड़ने आदि के लिए आह्वान करना।

पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकनी] १. टोकरा। २. एक प्रकार का हंडा।

टोकनी—स्त्री० [हिं० टोकना] १. पानी रखने का चौड़े मुँह का एक प्रकार का बड़ा बरतन। २. बड़ी देगची या बटलोई।

†स्त्री०=टोकरी।

टोकरा—पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकरी] बाँस की खमाचियों या तीलियों अथवा बेंत, सरकंडे आदि का बना हुआ खुले तथा चौड़े मुँहवाला बड़ा आधान। खाँचा। झाबा।

टोकरिया†—स्त्री० [हिं० टोकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] टोकरी।

टोकरी†—स्त्री० [हिं० टोकरा का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा टोकरा। स्त्री०=टोकनी।

टोकवा†—पुं० [देश०] उत्पाती या उपद्रवी लड़का।

टोकसी†—स्त्री० [देश०] नारियल की आधी खोपड़ी।

पुं० [देश०] एक तरह का कीड़ा जो उर्द की फसल को हानि पहुँचाता है।

टोका†—पुं० [हिं० टूक] १. किसी चीज का किनारा या सिरा। जैसे—डोरे या धागे का टोका। २. कपड़े आदि का कोना या पल्ला। ३. नोक। ४. स्थल का वह भाग जो कुछ दूर तक जल में चला गया हो।

पुं० [हिं० टूक] १. चारा काटने का गँडासा नामक उपकरण। (पश्चिम) २. चारा काटने की कल या यंत्र।

टोकारा—पुं० [हिं० टोक] १. वह बात जो किसी को टोकने अथवा टोक कर कुछ याद दिलाने या सचेत करने के लिए कही जाय। २. उक्त उद्देश्य से किया जानेवाला कोई संकेत। उदा०—उसने उँगली से उसके गाल पर टोकारा दिया।—नागार्जुन।

क्रि० प्र०—देना।

टोट—स्त्री० [हिं० टूट] १. टोटा। कमी। २. घाटा। हानि।

टोटक—पुं०=टोटका।

टोटक-हाया—पुं० [हिं० टोटका+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० टोटक-हाई] वह व्यक्ति जो टोटका या टोना करता हो।

टोटका—पुं० [सं० तांत्रिक से] तांत्रिक प्रयोगों के अंतर्गत, वह छोटा उपचार या औपचारिक कृत्य जो कष्ट, बाधा, रोग आदि दूर करने या इनसे बचने-बचाने अथवा इसी प्रकार के दूसरे उद्देश्य सिद्ध करने के लिए यह समझकर किया जाता है कि इसमें कुछ अलौकिक या दैवी शक्ति होती है अथवा यह कुछ विलक्षण चमत्कार या प्रभाव दिखाता है।

विशेष—टोटका बहुधा औपचारिक कृत्य के रूप में ही होता है; और इसमें मंत्रों आदि का प्रयोग नहीं होता। रोगी के सिर पर से उतारा उतारकर चौमुहानी या किसी विशिष्ट स्थान पर रखना, वर्षा कराने अथवा रोकने के लिए नंगे होकर कोई कृत्य करना, नजर या भूत-प्रेत का प्रभाव या कोई रोग दूर करने के लिए कुछ चीजें जलाना, अपने बच्चे को जीवित या नीरोग रखने के लिए दूसरों के बच्चों के कपड़े फाड़कर कहीं गाड़ना आदि छोटे-मोटे कृत्य टोटकों के वर्ग में आते हैं।

मुहा०—(किसी के यहाँ) टोटका करने आना=बहुत ही थोड़ी देर के लिए या केवल नाम करने के लिए आना। (स्त्रियों का परिहास और व्यंग्य) जैसे—तुम तो आते ही इस प्रकार उठकर चलने लगी कि मानों टोटका करने के लिए आई थी। (साधारणतः जब और जहाँ कोई टोटका किया जाता है, तब टोटका करनेवाला व्यक्ति प्रायः तुरंत वहाँ से हट जाता है।)

†पुं० दे० 'टोना'।

टोटके-हाया—पुं० [स्त्री० टोटके-हाई]=टोटक-हाया।

टोटल—पुं० [अं०] संख्याओं का जोड़ या योग। मीजान।

मुहा०—टोटल मिलाना=आय-व्यय आदि के ठीक होने की जाँच या मिलान करना।

टोटा—पुं० [सं०√त्रुट्, हिं० टूटना] १. लेन-देन, व्यवहार आदि में होनेवाली आर्थिक क्षति। घाटा। हानि। २. खटकनेवाला अभाव या कमी। जैसे—आज-कल बाजार में गेहूँ का टोटा है। ३. किसी वस्तु का कोई छोटा अंश या खंड। टुकड़ा। जैसे—कपड़े का टोटा। ४. एक प्रकार की छोटी गरम चद्दर जिसे स्त्रियाँ ओढ़ती हैं। (पश्चिम)

टोडा—पुं०[सं० तुंड] देहाती कच्चे मकानों में छाजन के नीचे बाहर की ओर लगाई जानेवाली काठ की घोड़िया। टोंटा।

टोडिक—पुं०[हिं० टोड] वह जिसे सदा पेट भरने की चिन्ता रहे। पेटू। उदा०—टोडिक ह्वै घनआनन्द डाँटत काटत क्यौं नहिं दीनता सों दिन। —घनानन्द।

टोडिस†—वि० [?] उत्पाती। उपद्रवी।

टोड़ी—स्त्री०[सं० त्रोटकी] १. प्रातःकाल गाई जानेवाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। २. संगीत में चार मात्राओं का एक ताल।

पुं०[अं०] नीच प्रकृति का मनुष्य। खुशामदी तथा कमीना व्यक्ति।

टोनहा†—वि०[हिं० टोना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० टोनही] टोना करनेवाला।

टोनहाई—स्त्री०[हिं० टोना+हाई (प्रत्य०)] टोना-टोटका करने की क्रिया या भाव।

स्त्री० हिं० 'टोनहाया' का स्त्री०।

टोनहाया—वि०[स्त्री०टोनाहाई]=टोनहा।

टोना—पुं०[हिं० टोटका या तंत्र] १. वह टोटका या छोटा-मोटा तांत्रिक उपचार जो प्रायः किसी को अनुरक्त या वशीभूत करने, मूढ़ बनाकर अपना काम निकालने या सहज में अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कुछ मंत्र पढ़कर किया जाता है।

क्रि० प्र०—चलाना।—डालना।—पढ़ना।—मारना।

२. विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत जिसके हर चरण या पद में 'टोना' शब्द आता है; और जिसका मुख्य उद्देश्य वर-वधू को परस्पर अनुरक्त करना और उनके अनुराग को दूसरों की नजर या बुरी दृष्टि से बचाना होता है।

स०[हिं० टोहना] किसी चीज के रूप आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस पर उँगलियाँ या हथेली रखना। जानने या समझने के लिए छूना या छूकर देखना। टटोलना।

†पुं०[?] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

टोप—पुं०[हिं० तोपना=ढाँकना] १. बड़ी टोपी। २. युद्ध में सिर पर पहना जानेवाला खोद। शिरस्त्राण। ३. अंगुश्ताना। ४. खोली। गिलाफ।

†स्त्री०[अनु०]पानी की बूँद।

टोपन—पुं०[देश०] टोकरा।

टोपरा†—पुं०=टोकरा।

टोपरी†—स्त्री०=टोकरी।

टोपही—स्त्री०[हिं० टोप] बरतन ढालने के साँचे का ऊपरी भाग जो कटोरे के आकार का होता है।

टोपा—पुं०[हिं० तोपना] १. बड़ी टोपी। २. टोकरा। दौरा। ३. काठ का एक पात्र जिसमें भरकर अनाज आदि नापे (तौले) जाते थे और जिसमें लगभग सवा सेर अन्न आता था। (पंजाब)

†पुं०=तोपा (सिलाई का)।

पुं०[हिं० तोपना] टोकरा।

टोपी—स्त्री०[सं० √स्तुभ्√स्तूप्; दे० प्रा० टिपिआ, टोप्पर] १. सिर पर रखने का एक विशिष्ट प्रकार का हलका पहनावा जो लंबोतरा, तिकोना, चौकोर या ऐसे ही किसी और रूप का होता है। जैसे—गांधी या तुर्की टोपी।

क्रि० प्र०—पहनना।—रखना।—लगाना।

मुहा०—(किसी की) टोपी उछालना=किसी को सबके सामने अपमानित या बेइज्जत करना। **(किसी से) टोपी बदलना**=भाई भाई का-सा संबंध जोड़ना।

२. राजमुकुट। ताज।

मुहा०—टोपी बदलना=राज्य के एक राजा या शासक के न रह जाने पर उसके स्थान पर दूसरे राजा या शासक का आना या बैठना।

३. टोपी के आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु जिससे प्रायः कोई चीज ढकी जाती है। जैसे—चिलम ढकने की टोपी। ४. बोतल आदि का मुँह बंद करने का धातु का ढक्कन। ५. टोपी के आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे बंदूक पर चढ़ा कर घोड़ा गिराने से आग पैदा होती है। ६. दरजी का वह चौड़ा छल्ला जिसे वह हाथ से सिलाई आदि करते समय उँगली में पहन लेता है। अंगुश्ताना। ७. वह थैली जो कुछ जानवरों के मुँह पर इसलिए चढ़ाई या बाँधी जाती है कि वे किसी को काट न सकें अथवा कुछ खाने न पावें। ८. लिंग का अग्रभाग।

टोपीदार—वि०[हिं० टोपी+फा० दार] टोपी से युक्त। जिस पर टोपी लगी हो।

टोपीवाला—पुं०[हिं० टोपी] वह जो कुछ विशिष्ट प्रकार की या बड़ी टोपी पहनता हो।

विशेष—मध्ययुग में अहमदशाह और नादिरशाह के सिपाही एक विशिष्ट प्रकार की लाल टोपी पहनने के कारण और परवर्त्ती काल में युरोप के निवासी हैट पहनने के कारण 'टोपीवाले' कहे जाते थे।

टोभ†—पुं०[हिं० डोभ] टाँका।

टोया†—पुं०[सं० तोय] गड्ढा। (पश्चिम)

टोर—स्त्री०[देश०] १. वह पानी जो घोले हुए क्षार में से नमक निकाल लेने पर बच रहता है और जिसे उबाल तथा छानकर शोरा निकाला जाता है। २. कटार।

टोरना—स०[?] १. इधर-उधर करना, फिराना या हटाना। जैसे—लज्जित होकर आँखें टोरना। २. दे० 'तोड़ना'।

पुं०[देश०]सूत तौलने का जुलाहों का तराजू।

टोरा†—पुं०[सं० तोक] [स्त्री० टोरी] लड़का।

†पुं०=टोडा।

टोरी†—स्त्री०=टोड़ी (रागिनी)।

टोर्रा†—पुं०=टुर्रा।

टोल—पुं०[सं० चटशाला?] १. पाठशाला। २. मध्ययुग में वह बड़ी पाठशाला जिसमें कोई बहुत बड़ा पंडित अपने शिष्यों को दर्शन, न्याय, व्याकरण आदि की ऊँची शिक्षा दिया करता था। (बंगाल)

पुं०[?]संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

†स्त्री० दे० 'टोली'।

पुं० दे० 'टोला' (महल्ला)।

पुं०[अं०] किसी विशिष्ट मार्ग पर चलने के समय यात्रियों पर लगनेवाला मार्ग-कर।

टोला—पुं०[हिं० टोली का पुं०] १. किसी बस्ती का कोई विशिष्ट विभाग

जो किसी स्वतंत्र नाम से प्रसिद्ध हो। मुहल्ला। जैसे—महाजनी टोला।
२. ईंट-पत्थर आदि का बड़ा तथा भारी टुकड़ा।
पुं० [देश०] १. गुल्ली पर किया जानेवाला डंडे का आघात या चोट।
२. उँगली मोड़कर उसकी हड्डी से किया जानेवाला आघात।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।
२. बेंत आदि की चोट का निशान।
क्रि० प्र०—पड़ना।
३. बड़ी कौड़ी। कौड़ा।

टोली—स्त्री० [सं० टोलिका=घेरा वाड़ा] १. किसी बस्ती का कोई ऐसा छोटा विभाग जो किसी विशिष्ट नाम से प्रसिद्ध हो। छोटा टोला या मुहल्ला। जैसे—ग्वाल टोली। २. जीव-जन्तु या प्राणियों का झुंड। जैसे—बंदरों की टोली। ३. मनुष्यों का दल या मंडली। जैसे—यात्रियों की टोली। ४. पत्थर की चौकोर पटिया। बड़ी सिल। ५. पूर्वी हिमालय में होनेवाला एक प्रकार का बाँस जिसे 'नाल' भी कहते हैं।

टोली धनवा—पुं० [हिं० टोली+धान] एक तरह की घास जिसके पत्ते धान के पत्तों जैसे होते हैं।

टोवना†—स०=टोना। उदा०—जोबन रतन कहाँ भुंइं टोवा।—जायसी।

टोवा—पुं०=टोआ।

टोह—स्त्री० [हिं० टोहना] १. टोहने अर्थात् टटोलने या टोने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।—लगना।
२. किसी अज्ञात बात का लगनेवाला कुछ पता। अंधेरे में छिपी या दबी हुई बात की होनेवाली थोड़ी बहुत जानकारी। थाह।

टोहना—स० [हिं० टोह] १. किसी अज्ञात बात की टोह लेना या पता लगाना। थाह लेना। २. जानने के लिए कुछ छूकर देखना।

टोहा-टाई—स्त्री० [हिं० टोह] बार-बार टोहने या टोह लेने की क्रिया या भाव।

टोहिया—वि०=टोही।

टोहियाना†—स०=टोहना।

टोही—वि० [हिं० टोह] खोज या टोह लेने या पता लगानेवाला।
पुं० जासूस।

टौंस—स्त्री० [सं० तमसा] १. एक छोटी नदी जो अयोध्या के पश्चिम से निकलकर बेतिया के पास गंगा में मिलती है। २. विन्ध्य-प्रदेश की एक नदी जो रीवाँ की ओर से आकर प्रयाग के पूर्व सिरसा के पास गंगा में मिलती है। ३. टेहरी और देहरादून के पास की एक नदी जो जमुना में मिलती है।

टौनहाल—पुं०=टाउनहाल।

टौर†—स्त्री० [हिं० टौरना] १. टौरने की क्रिया या भाव। २. किसी बात की होनेवाली जानकारी या लगनेवाला पता। उदा०—बैठी रही अभिमान सौं टाह टौर नहिं पायौ।—सूर। ३. घात। दाव। ४. उपयुक्त अवसर।

टौरना—स० [हिं० टेरना?] १. जाँच करना। परखना। २. पता लगाना।

टौरिया—स्त्री०=टेकरी।

ट्योंझा—पुं० [देश०] व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

ट्रंक—पुं० [अं०] टीन की चद्दर का बड़ा संदूक।

ट्रक—स्त्री० [अं०] माल ढोनेवाली एक प्रकार की बड़ी मोटर-गाड़ी।

ट्रस्ट—पुं० [अं०] न्यास। (दे०)

ट्रस्टी—पुं० [अं०] न्यासी। (दे०)

ट्राम—स्त्री० [अं०] कुछ नगरों की सड़कों पर बिछी हुई पटरियों पर बिजली की सहायता से चलनेवाली एक प्रकार की छोटी गाड़ी।

ट्रेडमार्क—पुं० [अं०] किसी वस्तु पर अंकित वह विशेष चिह्न जो यह सूचित करता है कि इस वस्तु का निर्माता अमुक व्यक्ति या संस्था है।

ट्रेडिल मशीन—स्त्री० [अं०] छापे की छोटी मशीन।

ट्रेन—स्त्री० [अं०] रेलगाड़ी।

ट्रेनिंग—स्त्री० [अं०] दे० 'प्रशिक्षण'।

ट्रौली—स्त्री० [अं०] १. रेल की पटरियों पर चलनेवाली ठेला-गाड़ी। २. ठेला गाड़ी।

ठ

ठ—देवनागरी वर्णमाला का बारहवाँ तथा टवर्ग का दूसरा व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा अघोष है।
पुं० [सं० पृषो० सिद्धि] १. शिव। २. महाध्वनि। ३. चंद्रमंडल। ४. मंडल। ५. शून्य। ६. वह वस्तु जिसका ग्रहण इंद्रियों से हो सकता हो।

ठंठ—वि० [सं० स्थाणु] १. (पेड़) जिसकी डालें तथा पत्तियाँ सूख और झड़ गई हों। २. (गाय या भैंस) जिसका दूध सूख गया हो। ३. (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी धन न रह गया हो। निर्धन।

ठंठस†—स्त्री० [सं० डिंडिश] टिंडा। ढेंढ़सी।

ठंठार—वि० [हिं० ठंठ] १. (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी न हो या न रह गया हो। २. (पात्र) खाली। रीता।

ठंठी—स्त्री० [हिं० ठंठ] ज्वार, मूँग आदि की वह बाल जिसमें पीट लेने के बाद भी कुछ दाने लगे रह गये हों।
वि०=ठंठ।

ठंड†—स्त्री०=ठंढ (सरदी)।

ठंडई—स्त्री०=ठंढाई।

ठंडक—स्त्री०=ठंढक।

ठंडा—वि०=ठंढा।

ठंडाई—स्त्री०=ठंढाई।

ठंढ—स्त्री० [हिं० ठंढा] १. तापमान अधिक गिर जाने के कारण ऋतु या वातावरण की बढ़ी हुई वह शीतलता जो कुछ अप्रिय और कष्टकर जान पड़े। शीत। सरदी।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

२. उक्त शीतलता की होनेवाली अनुभूति या प्रभाव। जैसे—बच्चे को ठंढ लग गई है।

ठंढई—स्त्री०=ठंढाई।

ठंढक—स्त्री० [हिं०ठंढा] १. वातावरण की ऐसी स्थिति जिसमें हलकी ठंढ हो। । ऐसी हलकी ठंढ जो प्रिय और सुखद हो। २. लाक्षणिक रूप में, किसी प्रकार की अभीष्ट सिद्ध होने पर मन में होनेवाली तृप्ति या सन्तोष। जैसे—हमाशरे सौ रुपये खरच करा दिये; अब तो तुम्हें ठंढक पड़ी न। ३. उत्पात, उपद्रव, रोग आदि का शमन होने पर मन में होनेवाली तृप्ति या सन्तोष।

क्रि० प्र०—पड़ना।

ठंढा†—वि० [सं० स्तब्ध; प्रा० थड्ड; मरा० थंड; गु० थंडु] [स्त्री० ठंढी] १. जिसमें किसी प्रकार की और कुछ भी उष्णता या ताप न हो जिसका तापमान प्रसम स्तर से निश्चित रूप से नीचा हो। 'गरम' का विपर्याय। जसे—ठंढा पानी। २. जिसमें कष्टदायक गरमी या प्रखर ताप का अभाव हो और इसी लिए जो प्रिय, वांछित या सुखद हो। जैसे—ठंढा दिन।

पद०—ठंढे-ठंढे=ऐसे समय में जव गरमी या धूप न हो अथवा होने पर भी अधिक कष्टदायक न हो। जैसे— पैदल यात्री प्रायः कुछ रात रहते ही उठकर चल पड़ते हैं और ठंढे-ठंढे अगले पड़ाव पर पहुँच जाते हैं।

३. (पदार्थ) जो पूरी तरह से जल चुकने पर अथवा बीच में ही बिलकुल बुझ चुका हो। जो गरम या जलता हुआ न रह गया हो। जैसे—आग या चूल्हा ठंढा करना या होना।

पद—ठंढी आग। (देखें)

विशेष—कुछ विशिष्ट प्रसंगों में 'ठंढा करना' का प्रयोग मंगल-भाषित के रूप में कई विशिष्ट प्रकार के अर्थ और भाव सूचित करने के लिए होता है। इसी आधार पर 'ठंढा करना' के योग से कई मुहावरे बन गये हैं। (देखें नीचे)

मुहा०—कड़ाही ठंढी करना=किसी शुभ कार्य के अवसर पर सब पकवान, मिठाइयाँ आदि वन चुकने पर सव के अंत में बाँटने के लिए थोड़ा-सा हलुआ वनाना और तव चूल्हा या भट्ठी बुझाना। **चूड़ियाँ ठंढी करना**= =नई चूड़ियाँ पहनने के समय पुरानी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। **चूल्हा ठंढा करना= चूल्हा बुझाना**। **ताजिया ठंढा करना**=मुहर्रम के दस दिन बीत जाने पर विधिपूर्वक ताजिया गाड़ना। **दीया ठंढा करना** =दीया बुझाना। **माता या शीतला ठंढी करना**=रोगी के शरीर पर चेचक या शीतला का प्रकोप शांत हो जाने पर शीतला देवी की पूजा करना। **मूर्त्ति (या उसके पूजन की सामग्री) ठंढी करना**=पूजन की समाप्ति पर विधि और सम्मानपूर्वक मूर्ति या पूजा की सामग्री जलाशय, नदी आदि में डालना या बहाना।

४. (शरीर) जिसमें आवश्यक या उचित ताप न रह गया हो। जिसमें उतनी गरमी न रह गई हो, जितनी साधारणतः रहनी चाहिए या होती है। जैसे—मरने से कुछ पहले हाथ-पैर ठंढे हो जाते हैं। ५. (शरीर का तापमान) जो मानव-शरीर के प्रसम तापमान से कम या घटकर हो, और फलतः कष्टदायक तथा चिंताजनक या रोग का सूचक हो। जैसे—सन्ध्या-सबेरे इस लड़के के हाथ-पैर बिलकुल ठंढे हो जाते हैं। ६. जिसकी उष्णता या ताप बहुत घट गया हो अथवा कम होता हुआ बिलकुल निकल गया हो। जो गरम न रह गया हो। जैसे—ठंढा भात, ठंढी रोटी। ७. (पदार्थ) जो गरमी या ताप की अनुभूति या विकलता कम करने में सहायक हो। जैसे—ठंढे कपड़े, ठंढे पेय पदार्थ। ८. (औषध या खाद्य पदार्थ) जो शरीर के अन्दर पहुँचकर कुछ ठंढक लाता या शीतलता उत्पन्न करता हो। जैसे—ठंढी दवा, ठंढे फल। ९. (व्यक्ति) जिसमें आवेश, उत्तेजना, क्रोध, चंचलता, दुर्भाव आदि उग्र या तीव्र मनोविकारों का पूरा या बहुत-कुछ अभाव हो। गंभीर, धीर और शांत। जैसे—ठंढे मिजाज का आदमी; ठंढे होकर किसी बात पर विचार करना।

मुहा०—(किसी को) ठंढा करना=किसी का आवेश, क्रोध, चंचलता आदि दूर करके उसे प्रकृतिस्थ और शांत करना।

१०. (व्यक्ति) जो सब तरह से निश्चिन्त, सन्तुष्ट और सुखी हो। जिसे किसी बात का कष्ट या दुःख न हो।

पद—ठंढी रहो=सधवा स्त्रियों के लिए आशीर्वाद का पद जिसका आशय होता है—धन और सन्तान का सुख भोगती हुई सौभाग्यवती बनी रहो। (स्त्रियाँ)

११. (व्यक्ति) जो अपना उद्देश्य सिद्ध हो जाने या कामना पूरी हो जाने के कारण तृप्त या सन्तुष्ट हो गया हो। जैसे—जब तक हमारे सौ दो सौ रुपये खरच न करा लोगे, तब तक तुम ठंढे नहीं होगे। १२. (व्यक्ति) जिसमें उद्यम, क्रिया-शीलता, तत्परता, प्रबलता आदि का बहुत-कुछ या बिलकुल अभाव अथवा ह्रास हो गया हो। जैसे—(क) खरी-खरी बातें सुनते ही वे ठंढे पड़ (या हो) जाते हैं। (ख) इस मुकदमे ने उन्हें ठंढा कर दिया है।

पद—ठंढा साँस। (देखें स्वतन्त्र शब्द)

१३. (व्यक्ति) जिसमें काम की उमंग या संभोग-शक्ति बिलकुल न हो या बहुत ही कम हो। जैसे—लड़का तो देखने में बिलकुल ठंढा मालूम पड़ता है, इसका विवाह व्यर्थ किया जा रहा है। १४. (आवेग या उत्साह) जो केवल ऊपरी, दिखौआ या बनावटी हो।

पद—ठंढी गरमी। (देखें स्वतन्त्र शब्द)

१५. (कार्य या क्रिया) जिसमें ऊपर से देखने पर वे दुष्परिणाम, दोष या विकार न दिखाई देते हों जो साधारण अवस्थाओं में दिखाई देते, रहते या होते हैं।

पद—ठंढा युद्ध, ठंढी आग, ठंढी मार, ठंढी मिट्टी। (देखें अलग-अलग स्वतन्त्र शब्द)

मुहा०—ठंढे कलेजे, ठंढे ठंढे या ठंढे पेटों=बिना किसी प्रकार का प्रतिवाद या विरोध किये। चुपचाप या धीर और शांत भाव से। जैसे—अब आप ठंढे कलेजे (ठंढे ठंढे या ठंढे पेटों) हमारा हिसाब चुकता करके यह झगड़ा खतम कीजिए।

१६. जो या तो मर गया हो, या मरे हुए के समान जड़, निश्चेष्ट या निष्क्रिय हो गया हो। जैसे—पहली लाठी लगते ही वह गिर कर ठंढा हो गया। १७. (कार्य या स्थान) जिसमें नित्य का-सा व्यवहार या

व्यापार न हो रहा हो, बल्कि जो बहुत-कुछ मंदा या हलका पड़ गया हो। जैसे—युद्ध की सम्भावना न रह जाने (अथवा बाहर से माल आने की आशा होने) पर किसी चीज का बाजार ठंढा पड़ना या होना। १८. जिसमें किसी तरह की खराबी या बुराई न हो।

मुहा०—(किसी काम या बात में) ठंढा गरम न देखना=यह न देखना या समझना कि यह काम अच्छा, उचित अथवा लाभदायक है या नहीं। ऊँच-नीच या बुरा-भला न देखना या न समझना।

१९. (पदार्थ) जिसमें अग्नि, विद्युत् आदि का संयोग न हो अथवा इनका काम किसी और तरह से चलाया जाता हो। जैसे—ठंढा तार, ठंढा मुलम्मा।

ठंढाई—स्त्री०[हिं० ठंढा] १. एक में मिले हुए कासनी, सौंफ, गुलाब की पत्तियों और ककड़ी, खरबूजे आदि के बीज। २. उक्त पत्तियों तथा बीजों का वह मिश्रण जो प्रायः गरमी के दिनों में घोट और घोलकर शरबत के रूप में बनाया तथा पीया जाता है। ३. दे० 'ठंढक'।

ठंढा मुलम्मा—पुं०[हिं० ठंढा+अ० मुलम्मा।] कुछ विशिष्ट धातुओं पर सोने या चाँदी का पानी चढ़ाने की वह रीति जिसमें उक्त धातुओं को गरम नहीं करना पड़ता। इस प्रकार किया हुआ मुलम्मा।

ठंढा युद्ध—पुं०[हिं०+सं०] राजनीतिक क्षेत्रों में एक दूसरे के प्रति चली जानेवाली ऐसी चालें या दाँव-पेच जिसमें शस्त्रास्त्रों का प्रयोग न होने पर भी परिणाम या फल वैसा ही त्रासकारक और भीषण होता है जैसा शस्त्रास्त्रों से होनेवाले प्रत्यक्ष युद्ध का होता है। (कोल्ड वार)

ठंढा साँस—पुं०[हिं०] बहुत खींचकर लिया जानेवाला वह साँस जो बहुत अधिक दुःख, निराशा, विफलता आदि के समय प्राकृतिक रूप से निकलता है। गहरा साँस। जैसे—चुनाव में अपनी हार का समाचार सुनने पर वे केवल ठंढा साँस लेकर रह गये।

ठंढी—वि० हिं० ठंढा का स्त्री० रूप।

स्त्री० १. चेचक या शीतला नामक रोग। (प्रायः बहुवचन रूप में प्रयुक्त) जसे—बच्चे को ठंढियाँ निकली हैं।

क्रि० प्र०—निकलना।

मुहा०—ठंढी ढलना=शीतल नामक रोग के वेग का उतार या कमी होना।

२. दे० 'ठंढ'। ३. दे० 'ठंढक'।

ठंढी आग—स्त्री० [हिं०] १. बरफ। हिम। २. तुषार। पाला। ३. ऐसी धूर्ततापूर्ण चाल जिससे किसी को अन्दर ही अन्दर बहुत अधिक कष्ट या संताप हो; या उसकी कोई बहुत बड़ी हानि हो। जैसे—उस दुष्ट (या नीच) को तो ठंढी आग से जलाना (या मारना) चाहिए।

ठंढी गरमी—स्त्री० [हिं०] ऐसा उत्साह, प्रेम या सद्भाव जो वास्तविक या हार्दिक न हो, केवल ऊपर से दिखाने या नाम करने के लिए हो। जैसे—उनकी वह ठंढी गरमी देखकर मुझे तो अन्दर ही अन्दर हँसी आ रही थी।

ठंढी मार—स्त्री०[हिं०] ऐसा प्रहार या मार जिसमें ऊपर से देखने पर चोट के निशान तो न दिखाई दें, पर भीतरी अंगों पर अधिक या गहरी चोट आवे। जैसे—जेलों और थानों में लोगों पर अक्सर ठंढी मार पड़ती है।

ठंढी मिट्टी—स्त्री०[हिं०] ऐसा शारीरिक संघटन जिसमें जवानी के लक्षण अधिक दिनों तक बने रहें और बुढ़ापे की झलक अपेक्षया देर में आवे।

ठई—स्त्री०[हिं० ठाँवँ] १. अवस्था। दशा। २. स्थिति।

ठउर†—पुं०=ठौर।

ठक—स्त्री०[अनु०] आघात करने या ठोंकने से होनेवाला ठक शब्द।

वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौंचक्का। स्तब्ध।

पुं० चंडूबाजों की सलाई या सूजा जिसमें अफीम का किवाम लगाकर सेंकते हैं।

ठक-ठक—स्त्री०[अनु०] १. बार-बार आघात करने से होनेवाला शब्द। २. लाक्षणिक अर्थ में, कहा-सुनी या तू-तू मैं-मैं।

ठकठकाना—स० [अनु० ठक-ठक] १. ठक-ठक शब्द उत्पन्न करना। २. अच्छी तरह या खूब पीटना।

अ० ठक-ठक शब्द होना।

ठकठकिया—वि०[अनु० ठक-ठक] १. ठक-ठक शब्द उत्पन्न करनेवाला। २. जो स्वभावतः दूसरों से लड़ता-झगड़ता रहता हो।

ठकठेन†—स्त्री०[अनु० ठक+हिं० ठानना] अड़। जिद। हठ।

ठकठौआ—पुं० [अनु०] १. एक प्रकार का करताल। २. वह जो उक्त करताल बजाकर भीख माँगता हो। ३. एक प्रकार की छोटी नाव।

ठकना—अ०[अनु०] सहारा लगाकर बैठना। टिकना। उदा०—ठकि गो पीय पलँगिया आलस पाई।—रहीम।

स०=टेकना।

ठकमुर्री—स्त्री० [हिं० ठग+मूरि] १. वह स्थिति जिसमें आदमी बहुत अधिक चकित या भौंचक्का होकर स्तब्ध रह जाय। जैसे—उसे देखकर हमें तो ठकमुर्री लग गई।

क्रि० प्र०—लगना।

२. दे० 'ठगमूरि'।

ठकार—पुं०[सं० ठ+कार] 'ठ' अक्षर।

ठकुआ—पुं०=ठोकवा (पकवान)।

ठकुरई†—स्त्री०=ठकुराई।

ठकुरसुहाती—स्त्री० [हिं० ठाकुर=स्वामी+सुहाना] स्वामी अथवा किसी बड़े व्यक्ति को प्रसन्न करने या रखने के लिए कही जानेवाली खुशामद भरी बात।

ठकुराइत—स्त्री०=ठकुरायत।

ठकुराइन—स्त्री०=ठकुरानी।

ठकुराइस†—स्त्री०=ठकुरायत।

ठकुराई—स्त्री०[हिं० ठाकुर] १. ठाकुर होने की अवस्था या भाव। २. ठाकुरों का-सा आधिपत्य, प्रभुत्व या स्वामित्व। ३. वह प्रदेश या भू-भाग जो किसी ठाकुर के अधिकार में या अधीन हो। ४. ठाकुरों की-सी प्रतिष्ठा या महत्त्व। उदा०—हरि के जन की अति ठकुराई।—सूर। ५. बड़प्पन। महत्त्व।

†पुं० ठाकुर। राजपूत क्षत्रिय।

ठकुराना—पुं०[हिं० ठाकुर] गाँव या बस्ती का विभाग जिसमें अधिकतर ठाकुर या क्षत्रिय रहते हों।

ठकुरानी—स्त्री०[हिं० ठाकुर] १. ठाकुर या राजपूत जाति की स्त्री। २. ठाकुर अर्थात् राजा या सरदार की पत्नी। ३. मालकिन। स्वामिनी।

ठकुराय—पुं०[हिं० ठाकुर] ठाकुरों या राजपूत क्षत्रियों की एक जाति या वर्ग।

ठकुरायत—स्त्री०[हिं० ठाकुर] १. ठाकुर (अधिपति, प्रभु, आदि) होने की अवस्था, पद या भाव। २. किसी ठाकुर (अधिपति आदि) का अधीनस्थ प्रदेश या भू-भाग।

ठकोरी—स्त्री० [हिं० ठेकना+औरी (प्रत्य०)] वह लकड़ी या छड़ी जिसके सहारे अथवा जिसे टेकता हुआ कोई चलता हो।

ठक्क—पुं०[सं०] व्यापारी।

ठक्कर—स्त्री०=टक्कर।

ठक्कुर—पुं०[सं०] ठाकुर। देवता। पूज्य प्रतिमा।

ठग—पुं०[सं० स्थग] [स्त्री० ठगनी, ठगिन, भाव० ठगी] १. वह जो धोखा देकर दूसरों का धन ले लेता हो। जैसे—आज-कल तरह-तरह के ठग चारों ओर घूमते रहते हैं। २. मध्य युग में, वह व्यक्ति जो भोले-भाले लोगों पर अपना विश्वास जमा लेता था और धोखे से उन्हें कोई जहरीली या नशीली जड़ी-बूटी या मिठाई खिलाकर और उनका माल-असबाब लेकर चम्पत होता था।

विशेष—आरंभ में प्रायः इक्के-दुक्के लोग ही ठग होते थे। वे जो जहरीली या नशीली, जड़ी-बूटियाँ या मिठाइयाँ लोगों को खिलाते थे, उन्हें जन-साधारण ठग-मूरि या ठग-मोदक कहते थे। बाद में मुख्यतः अंगरेजी शासन के आरंभिक काल में ये लोग बड़े-बड़े दल बनाकर घूमने लगे थे, और प्रायः यात्रियों, व्यापारियों आदि के दलों के साथ स्वयं भी यात्री या व्यापारी बनकर दो-चार दिन यात्रा करते थे। जब कहीं जंगल या सुनसान मैदान में उन्हें अवसर मिलता था, तब वे उन यात्रियों या व्यापारियों के गले कुछ विशिष्ट प्रक्रिया से घोटकर उन्हें मार डालते और उनकी लाशें वहीं गाड़कर और माल लूटकर आगे बढ़ जाते थे। इनमें हिंदू और मुसलमान दोनों होते थे और ये काली की उपासना करते थे।

३. आज-कल अधिक प्राप्ति या लाभ के लिए अपनी चीज या सेवा के बदले में उचित से अधिक दाम या धन वसूल करनेवाला व्यक्ति। जैसे—यह दूकानदार बहुत बड़ा ठग है।

ठगई†—स्त्री० [हिं० ठग+ई(प्रत्य०)] १. ठग का काम या भाव। ठगी। २. कपट। छल। धोखा।

ठगण—पुं०[प० त०] छंदशास्त्र में, पाँच मात्राओं का एक गण।

ठगना—स० [हिं० ठग+ना (प्रत्य०)] १. किसी से उसकी कोई चीज छल या धोखे से लेना। २. क्रय-विक्रय में अधिक लाभ करने के लिए किसी से लिए हुए धन के अनुपात में उचित से कम या रद्दी चीज देना। जैसे—यह दुकानदार ग्राहकों को बहुत ठगता है।

पद—ठगा-सा—ऐसा हक्का-बक्का कि मानों किसी ने उसे ठग लिया हो।

३. किसी को धोखे में रखकर उसके उद्देश्य की सिद्धि या संकल्प की पूर्ति से वंचित करना। जैसे—मुझे मेरे ही मित्रों ने ठगा। ४. किसी प्रकार का छल या धूर्त्तता का व्यवहार करना। ५. पूरी तरह से अनुरक्त या मोहित करके अपना वशवर्त्ती बनाना।

†अ० १.=ठगाना। २.=चकित होना।

ठगनी—स्त्री०[हिं० ठग] १. ठग की पत्नी। २. दूसरों को ठगने या धोखा देनेवाली स्त्री। छली या धूर्त्त स्त्री। ३. कुट्टनी। ४. धार्मिक क्षेत्रों में माया (सांसारिक) का एक नाम।

ठग-पना—पुं०[हिं० ठग+पन] १. दूसरों को ठगने की क्रिया या भाव। ठगी। २. चालबाजी। धूर्त्तता।

ठग-मूरि—स्त्री०[हिं० ठग+मूरि] वह नशीली जड़ी जिसे खिलाकर ठग पथिकों को बेहोश करते और उनका धन लूट लेते थे।

ठग-मूरी—स्त्री०=ठग-मूरि।

ठग-मोदक—पुं०[हिं० ठग+सं० मोदक] वह मोदक या लड्डू जिसमें कुछ नशीली चीजें होती थीं, और जिसे ठग लोग भोले-भाले यात्रियों को खिलाकर बेहोश कर देते और तब उनका माल लूट लेते थे।

ठग-लाड़ू—पुं०=ठग-मोदक।

ठगवाना—स०[हिं० ठगना का प्रे०] किसी को ठगने में किसी दूसरे को प्रवृत्त करना। ठगे जाने में प्रवर्त्तक या सहायक होना।

ठग-विद्या—स्त्री०[हिं० ठग+विद्या] लोगों को ठगने की कला या विद्या।

ठगहाई†—स्त्री०[हिं० ठग] =ठगपना।

ठगहारी†—स्त्री० [हिं० ठग+हारी (प्रत्य०)] ठगपना। ठगई।

ठगाई†— स्त्री०[हिं० ठग+आई (प्रत्य०)] ठगी।

ठगाठगी—स्त्री०[हिं० ठग] धोखेबाजी। वंचकता।

ठगाना†—अ० [हिं० ठगना] १. किसी ठग के द्वारा ठगा जाना। २. किसी धूर्त्त व्यापारी के फेर में पड़कर और उचित से अधिक मूल्य देकर धन गँवाना। ३. अपना धन अथवा और कोई चीज किसी अविश्वासी को दे या सौंप बैठना। ४. अनुरक्त होना।

ठगाही†—स्त्री०=ठगी।

ठगिन—स्त्री०=ठगनी।

ठगिनी—स्त्री०=ठगनी।

ठगिया—पुं०=ठग।

ठगी—स्त्री०[हिं० ठग] १. किसी को ठगने की क्रिया या भाव। २. ठगों का काम या पेशा। ३. चालबाजी। धूर्त्तता। ४. मध्य युग की एक प्रथा जिसमें ठग लोग भोले-भाले यात्रियों को विष आदि के प्रभाव से मूर्छित करके अथवा उनकी हत्या करके उनका धन छीन लेते थे। ५. मोहित करनेवाला जादू या बात। उदा०—ठगी लगी तिहारिऐ सु आप लौं निहारिऐ।—आनन्दघन।

ठगोरी—स्त्री०[हिं० ठग-मूरि] १. ठगने की क्रिया, भाव या विद्या। २. ठगे जाने का भाव या परिणाम। उदा०—चोरन गए स्याम अँग सोभा उत सिर परी ठगोरी।—सूर। ३. ऐसी चीज या बात जिससे किसी को ठगा या धोखा दिया जाय। उदा०—जोग ठगोरी ब्रज न बिकै हैं।—सूर। ४. टोना। जादू। ५. मिथ्या भ्रम। माया। ६. सुध-बुध भुलानेवाली अवस्था, बात या शक्ति। उदा०—जानहु लाई काहु ठगोरी।—जायसी।

मुहा०—(किसी पर) ठगोरी डालना या लगाना=(क) मोहित करके अथवा और किसी प्रकार विश्वास जमाकर अपने वश में कर लेना। बहकाकर धोखे में रखना।

ठट—पुं० १.=ठठ्ठ। २.=ठाठ।

ठटई—वि०, स्त्री०=ठठई।

ठटकारी†—स्त्री०=ठठकारी।

ठटकीला†—वि०=ठठकीला।

ठटना—अ०, स०=ठठना।

ठटनि†—स्त्री०=ठठनि।

ठटया—पुं०[देश०] एक तरह का जंगली जानवर।

ठटरी—स्त्री०=ठठरी।

ठटा—पुं०=ठट्ठ (झुंड)। उदा०—जबहिं आइ जुरिहै वह ठटा।—जायसी।

†पुं०=ठट्ठा

ठटिया†—स्त्री०=ठठिया(भाँग)।

ठट्ट—पुं०१.=ठट्ठ। २.=ठाठ।

ठट्टी—स्त्री०=ठठरी।

ठट्ठ—पुं०=ठट्ठ

ठट्ठा—पुं०=ठट्ठा।

ठठ—पुं०१.=ठट्ठ। २.=ठाठ।

ठठई—वि०[हिं० ठट्ठा] हँसी-ठट्ठा करनेवाला।

†स्त्री०=ठट्ठा।

ठठकना†—अ०=ठिठकना।

ठठकान†—स्त्री०=ठिठकान।

ठठकारी†—स्त्री०[हिं० ठाठ+फा० कारी] वह टट्टी जिसकी आड़ में शिकार किया जाता है।

ठठना—अ०[हिं० ठाठ] १. खड़ा या स्थित रहना या होना। २. किसी चीज का अंदर घुसकर ठहर या रुक जाना। अड़ना। ३. निश्चित होना। ४. ठाठ से युक्त होना। सुसज्जित होना।

स० १. खड़ा या स्थित करना। ठहराना। २. निश्चित करना। ३. सुसज्जित करना। सजाना। ४. बनाना। रचना।

स०[हिं० ठठ] 'ठठ' अर्थात् दल या समूह बनाना।

ठठनि—स्त्री० [हिं० ठाठ] १. ठठने की क्रिया या भाव। २. ठाठ। सजावट। ३. बनावट। रचना।

ठठरी†—स्त्री०[हिं० ठाठ] १. मनुष्य या पशु के शरीर में की हड्डियों का पूरा ढाँचा। कंकाल। २. किसी कृति या रचना का ढाँचा। ३. अरथी, जिस पर मुरदा ले जाया जाता है। ४. घास, भूसा आदि बाँधने का जाल।

ठठवा†—पुं०[हिं० टाट] एक तरह का मोटा कपड़ा। इकतारा। लमगजा।

ठठा†—पुं०=ठट्ठा।

ठठाना—स०[अनु० ठक-ठक] १. आघात करना। २. खूब अच्छी तरह किसी को मारना-पीटना।

अ०[हिं० ठट्ठा या अनु० ठह-ठह=हँसने का शब्द] इस प्रकार खूब जी खोलकर हँसना कि मुँह से ठह-ठह या इसी प्रकार का कोई और शब्द स्वतः निकलने लगे।

अ०[हिं० ठाठ] कोई चीज या बात खूब ठाठ से, अच्छी तरह या बहुत अधिक होना। उदा०—चारों ओर छाई हुई ठठाती हुई अव्यवस्था के बीच से उसे हटाने के लिए उसे खींचने लगा।—अज्ञेय।

ठठिया—स्त्री०[देश०] राजस्थान के कुछ भागों में होनेवाली एक प्रकार की भाँग।

ठठियार—पुं०[देश०] चौपायों को चरानेवाला चरवाहा। (नैपाल-तराई)

ठठियाना—स०[हिं० ठठना] १. सुसज्जित करना।* २. किसी से सब-कुछ लेकर उसे कंगाल या निर्धन करना।

ठठियारा†—वि०[हिं० ठठियाना] जिसके पास कुछ भी न रह गया हो। उदा०—तस सिंगार सब लीन्हेसि, मोहि कीन्हेसि ठठियारि।—जायसी।

ठठिरिन—स्त्री० [हिं० 'ठठेरा' का स्त्री० रूप] ठठेरिन।

ठठुकना†—अ०=ठिठकना।

ठठेर-मंजारिका—दे० 'ठठेरा' के अंतर्गत पद 'ठठेरे की बिल्ली'।

ठठेरा—पुं० [अनु० ठन-ठन] [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] १. वह कारीगर जो ताँबे, पीतल आदि के बरतन बनाता हो। †२. उक्त प्रकार के बरतन बेचनेवाला दूकानदार।

पद—ठठेरे-ठठेरे बदलाई=ऐसे दो आदमियों के बीच का व्यवहार जो चालाकी, धूर्त्तता, बल आदि में एक दूसरे से कम न हों। **ठठेरे की बिल्ली**=ऐसा व्यक्ति जो कोई अरुचिकर या विकट काम देखते-देखते या सुनते-सुनते उसका अभ्यस्त हो गया हो।

३. एक प्रकार की चिड़िया जिसके बोलने पर ऐसा जान पड़ता है कि कोई ठठेरा ताँबा या पीतल पीटकर उसके बरतन बना रहा है।

पुं०[हिं० ठाँठ] ज्वार, बाजरे आदि का डंठल।

ठठेरिन—स्त्री०[हिं० 'ठठेरा' का स्त्री० रूप] ठठेरे की स्त्री। ठठेरी।

ठठेरी—स्त्री०[हिं० ठठेरा] १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम या व्यवसाय।

वि० ठठेरों का। ठठेरों से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—ठठेरी बाजार।

ठठोल—वि०[हिं० ठठोली] ठठोली करनेवाला। हँसोड़।

पुं०=ठठोली।

ठठोली—स्त्री०[हिं० ठट्ठा] किसी को हँसी का पात्र या हास्यास्पद बनाने के लिए उसके संबंध में कही जानेवाली कोई कुतूहलजनक तथा व्यंग्यपूर्ण परंतु हँसी की बात।

ठट्ठ—पुं०[सं० तट, हिं० टट्ठी या सं० स्थाता] १. एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओं का समूह। २. बहुत से लोगों का जमावड़ा या भीड़-भाड़। उदा०—पियें भट्ट के ठट्ठ अस गुजरातिन के वृन्द।—भारतेन्दु।

ठट्ठा—पुं०[हिं० ठठाना] १. वह परिहास या हँसी-दिल्लगी जो कुतूहलजनक या विलक्षण बातों के आधार पर केवल मनोविनोद के लिए होती है। (बैन्टर) २. परिहास। हँसी-मजाक।

क्रि० प्र०—उड़ाना।—करना।

ठड़कना†—अ०=ठिठकना।

ठड़ा†—वि०=खड़ा।

ठड़िया—पुं०[हिं० ठाड़] एक प्रकार का खड़ी निगालीवाला हुक्के का नैचा।

ठड्डा—पुं०[हिं० ठड़ा] १. पीठ के बीच की खड़ी हड्डी। रीढ़। २. गुड्डी या पतंग में खड़े बल में लगनेवाली कमाची। ३. ढड्ढा। ढाँचा।

ठढ़ा—अ०, स०=ठठना।

वि०[सं० स्थातृ] खड़ा।

ठढ़िया—स्त्री०[हिं० ठाढ़=खड़ा] काठ की ऊँची तथा बड़ी ऊखल।

ठढ़ियाना†—स०[हिं० ठढ़ा=खड़ा] खड़ा करना।

अ० खड़ा होना।

ठढ़ई†—स्त्री०=ठढ़िया।

ठढ़्ढा—वि०=ठढ़ा (खड़ा)।

पुं०=ठड्डा। (देखें)

ठन—स्त्री० [अनु०] किसी धातु खंड अथवा धातु के किसी पात्र पर आघात लगने से होनेवाला शब्द।

ठनक—स्त्री० [अनु० ठन-ठन] १. बार-बार ठन-ठन होने का शब्द। जैसे—(क) धातुखंड पर आघात करने से होनेवाली ठनक। (ख) ढोल, तबले, मृदंग आदि के बजने से होनेवाली ठनक। २. रह-रहकर उठने या होनेवाली पीड़ा। टीस।

ठनकना—अ० [अनु० ठन-ठन] १. ठन-ठन शब्द होना। जैसे—गिरने से पीतल या लोटा ठनकना। २. ढोल, तबले, मृदंग आदि ऐसे बाजे बजना जिनमें बीच-बीच में ठन-ठन शब्द होता हो। जैसे—तबला ठनकना।

मुहा०—तबला ठनकना=नाच-गाना होना।

३. रह-रहकर आघात पड़ने की-सी पीड़ा होना। जैसे—माथा ठनकना।

मुहा०—माथा ठनकना=सहसा किसी बात या व्यक्ति के संबंध में मन में कुछ आशंका या संदेह उत्पन्न होना। जैसे—उसका रंग-ढंग देखकर पहले ही मेरा माथा ठनका था।

ठनका—पुं० [हिं० ठनक] १. दे० 'ठनक'। २. गरजता हुआ बादल। उदा०—भादो रैन भयावनी अघो गरजै औ घहराय। लवका लौकै ठनका ठनकै, छति दरद उठ जाय।—गीत।

ठनकाना—स० [हिं० 'ठनकना' का स०] १. इस प्रकार आघात करना जिससे कोई चीज ठन-ठन शब्द करने लगे। जैसे—परखने के लिए रुपया ठनकाना। २. ढोल, तबला आदि ऐसे बाजे बजाना, जिनमें से ठन-ठन शब्द निकलता है।

ठनकार—स्त्री० [अनु०] 'ठन' की तरह का शब्द। ठनक।

ठनगन—स्त्री० [अनु० ठन-ठन] उपर्युक्त दाता से अपना अधिकार जतलाते हुए कुछ पाने या लेने के लिए बार-बार किया जानेवाला आग्रह या हठ। जैसे—मांगलिक अवसरों पर नाई आदि नेगी अपने नेग के लिए यजमानों से ठनगन करते ही हैं।

ठन-ठन—स्त्री० [अनु०] १. ठन-ठन शब्द। ठनक। २. दे० 'ठन-गन'।

ठन-ठन गोपाल—वि० [अनु० ठन-ठन+गोपाल=कोई व्यक्ति] १. (व्यक्ति) जिसके पास कुछ भी धन न हो या न रह गया हो। २. (वस्तु) जिसमें कुछ भी सार न हो।

पुं० रुपये-पैसे का अभाव।

ठनठनाना—स० [अनु०] ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना।

अ० ठन-ठन शब्द उत्पन्न होना।

ठनना—अ० [हिं० ठानना] १. (किसी कार्य या व्यापार का) तत्परतापूर्वक या जोर-शोर से आरम्भ होना या किया जाना। जैसे—युद्ध ठनना। २. (विचार या संकल्प का मन में) निर्धारित या पक्का होना। जसे—अब तो तुम्हारे मन में उनसे लड़ने की ठन गई है। ३. (व्यक्ति आदि का) तत्परतापूर्वक किसी कार्य या व्यापार में लगने को उद्यत होना। ४. किसी विशिष्ट रूप में दृढ़तापूर्वक सामने आकर उपस्थित होना। उदा०—दुलरी कल कोकिला कंठ बनी, मृग खंजन अंजन भाँति ठनी।—केशव।

ठनठनाना†—अ०=ठनमनाना।

ठनाका—पुं० [अनु० ठन] १. जोर से तथा सहसा होनेवाली ठन-ठन ध्वनि। २. कुछ समय तक निरंतर होती रहनेवाली ठन-ठन ध्वनि।

ठनाठन—क्रि० वि० [अनु० ठन-ठन] १. ठन-ठन शब्द करते हुए। जैसे—घंटा ठनाठन बज रहा था। २. टनाटन।

ठप—वि० [अनु०] १. (कार्य या व्यापार) जो पूरी तरह से बन्द हो गया हो। जैसे—घोर वर्षा के कारण आज दिन भर सब काम ठप रहे। २. (पदार्थ) जो खुला न हो या खोला न गया हो; अथवा जिसका उपयोग न हो रहा हो। जैसे—(क) पुस्तक ठप होना। (ख) बाजे या यंत्र का ठप पड़ा रहना।

पुं० १. खुली पुस्तक सहसा बन्द करने से होनेवाला शब्द। २. ठपने अर्थात् बन्द करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

ठपका—पुं० [हिं० ठप] १. ठप शब्द। २. खुली पुस्तक बंद करने की क्रिया। ३. आघात। धक्का।

ठपना—स० [हिं० ठप] १. कोई चीज इस प्रकार बन्द करना कि ठप शब्द हो। २. कोई कार्य या व्यापार बन्द करना। ३. कोई चीज बन्द करके कहीं रखना।

ठप्पा—पुं० [ठप से अनु०] १. धातु, लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जिस पर चित्र, चिह्न आदि खुदे रहते हैं और जिससे कपड़ों आदि पर रंग या स्याही की सहायता से छाप लगाई जाती है। जैसे—कपड़े छापने या सिक्के बनाने का ठप्पा। २. उक्त उपकरण से लगी या लगाई हुई छाप। ३. एक प्रकार का चौड़ा नकाशीदार गोटा जो ठप्पे से दबाकर बनाया जाता है। ४. वह साँचा जिससे उक्त प्रकार के उभारदार बेल-बूटे बनाये जाते हैं।

ठमक—स्त्री० [हिं० ठमकना] १. ठमकने की अवस्था, क्रिया या भाव। †२. दे० 'ठुमक'।

ठमकना—अ० [सं० स्तम्भ, हिं० थम+करना] १. चलते-चलते सहसा कुछ रुकना। ठिठकना। (प्रायः आशंका, भय आदि के कारण; अथवा हाव-भाव दिखलाने के लिए) २. दे० 'ठुमकना'।

अ० [अनु०] किसी चीज में से ठम-ठम शब्द निकलना।

ठमकाना—स० [हिं० ठमकना] १. कोई ऐसी बात कहना जिससे किसी के मन में शंका या संदेह उत्पन्न हो जाय और वह चलता-चलता या कोई काम करता करता रुक जाय। २. ठसक दिखलाते हुए अंगों का संचालन करना। ३. ठम-ठम शब्द उत्पन्न करना।

ठमकारना†—स०=ठमकाना।

ठयऊ*—पुं०=ठौर।

ठयना†—स० [सं० स्थापन, प्रा० ठावन] १. स्थापित करना। ठहराना, बैठाना या स्थित करना। २. प्रयुक्त करना। लगाना। ३. दे० 'ठानना'।

अ० १. स्थापित या स्थित होना। २. प्रयुक्त होना। लगना। ३. दे० 'ठनना'।

ठरगजो—स्त्री० [?] बहनोई की बहन। बहन की ननद। (ब्रज)

ठरना—अ० [हिं० ठार=बहुत ठंढा] १. बहुत अधिक सरदी के कारण ठिठुरना। २. बहुत अधिक जाड़ा या सरदी पड़ना।

ठरमरुआ—वि० [हिं० ठार=पाला+मरुआ=मरा हुआ] १. जो अधिक

सरदी के कारण अकड़ या ठिठुर कर मर गया हो या मरे हुए के समान हो गया हो। २. (फसल) जिसे पाला मार गया हो।

ठराना—स० [हिं० ठरना] किसी को सरदी से ठरने में प्रवृत्त करना।
†अ०=ठरना।

ठरुआ†—वि० [हिं० ठार]=ठरमरुआ।

ठर्रा—पुं० [हिं० ठड़ा=खड़ा] १. बटा हुआ मोटा डोरा या सूत जिसमें प्रायः कुछ अकड़ या ऐंठ रहती है। २. महुए के फलों के रस से बनी हुई एक प्रकार की देशी शराब। ३. अधपकी बड़ी ईंट। ४. एक तरह का भद्दा जूता। ५. बेडौल तथा भद्दा मोती। ६. अंगिया या चोली का बंद। तनी।

ठर्री—स्त्री० [देश०] १. बिना अंकुर का धान का बीज जो छितराकर बोया जाता है। २. ऐसे धान की बोआई।

ठलाना*—स० [?] १. गिराना। २. निकलवाना।

ठवन—स्त्री० [सं० स्थापन] १. किसी ऐसी विशिष्ट अवस्था में होने का भाव या ढंग जिससे शरीर के अंगों से कलापूर्ण सौंदर्य प्रकट होने लगे। २. किसी विशिष्ट भाव की अभिव्यक्ति के लिए बनाई हुई मुद्रा। ३. खड़े होने, बैठने आदि की कोई विशिष्ट मुद्रा। (पोज)

ठवना—स०=ठयना।

ठवनि†—स्त्री०=ठवन।

ठवनी†—स्त्री०=ठवन।

ठवर†—पुं०=ठौर।

ठस—वि० [सं० स्थास्नु] १. (पदार्थ) जो बहुत ही कड़ा या ठोस और फलतः दृढ़ या मजबूत हो। जैसे—ठस मकान। २. (वस्त्र) जिसके ताने और बाने के सूत परस्पर इस प्रकार सटे हुए हों कि उनमें विरलता न दिखाई पड़े। ३. (बुनावट) जो उक्त प्रकार की हो। ४. जो इतना अधिक भारी हो कि अपने स्थान से हिलाये जाने पर भी जल्दी न हिले। ५. (सिक्का) जो खनकाने पर ठीक ध्वनि न दे। ६. (व्यक्ति) जो बहुत कंजूस हो और जल्दी पैसा खरच करनेवाला न हो। ७. आलसी। सुस्त। ८. जिद्दी। हठी।
वि० गंभीर। उदा०—परंतु वातावरण बिलकुल ठस जान पड़ा।—वृंदावनलाल वर्मा।

ठसक—स्त्री० [हिं० ठस] १. बड़प्पन, योग्यता आदि दिखलाने के उद्देश्य से की जानेवाली साधारण से भिन्न कोई शारीरिक चेष्टा। २. नखरा। ३. अभिमान। गर्व।

ठसकदार—वि० [हिं० ठसक+फा० दार] १. (व्यक्ति) जिसमें ठसक हो। अपना बड़प्पन या योग्यता प्रदर्शित करने के लिए कोई विशिष्ट शारीरिक चेष्टा करनेवाला। २. घमंडी।

ठसका†—पुं०=ठसक।
पुं० [अनु०] १. एक तरह की सूखी खाँसी। २. धक्का।

ठसाठस—वि० [हिं० ठस] (अवकाश) जो इतना अधिक भर गया हो कि उसमें और अधिक समाई न हो सकती हो। जैसे—यात्रियों से रेल का डिब्बा ठसाठस था।
क्रि० वि० ऐसी अवस्था में जिसमें और अधिक भरने, रखने आदि के लिए अवकाश न बच रहा हो।

ठस्सा—पुं० [अनु०] १. एक प्रकार की छोटी रुखानी जिससे धातुओं पर नक्काशी की जाती है। २. दे० 'ठसक'।
†पुं०=ठवन।

ठहक—स्त्री० [अनु०] नगाड़े, मृदंग आदि का शब्द।

ठहना—अ० [अनु०] १. घोड़े का हिनहिनाना। २. घंटे आदि का शब्द होना।
अ० [सं० संस्थापन] १. बनाना। सँवारना। २. रक्षा करना। बचाना। उदा०—द्रुपद-सुता की हरि जू लाज ठही।—सूर।
†अ०=ठहरना।

ठहर†—पुं० [सं० स्थल] १. जगह। स्थान। २. रसोईघर। चौका। ३. रसोईघर को गोबर आदि से लीपने-पोतने का काम।
क्रि० प्र०—देना।
४. अवसर। मौका।

ठहरना—अ० [हिं० ठहर] १. चलते-चलते किसी स्थान पर रुकना। गति से रहित होकर स्थित होना। जैसे—डाक-गाड़ी इस छोटे स्टेशन पर भी ठहरती है। २. किसी स्थान पर विश्राम करने अथवा थोड़े समय के लिए रहने के लिए रुकना। टिकना। जैसे—अगली बार यहाँ आने पर हम लोग आप ही के यहाँ ठहरेंगे। ३. किसी स्थान पर किसी की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना या रुके रहना। जसे—अदालत का फैसला सुनने के लिए हम ठहरे हुए हैं। ४. कुछ समय तक किसी विशिष्ट अवस्था या स्थिति में बने रहना। जैसे—(क) दूध या दही का ठहरना। (ख) इनका बुखार १००° पर ठहरा रहता है। ५. किसी विशिष्ट स्थिति में खड़ा रहना; फलतः किसी ओर न झुकना या नीचे न गिरना। जैसे—अधर में योगी या आकाश में पतंग का ठहरना। ६. किसी विशिष्ट आधार पर स्थित होना। जैसे—यह छत चारों खंभों पर ठहरी है। ७. किसी प्रकार की क्रिया, चेष्टा या व्यापार से रहित या हीन होना। जैसे—(क) हवा या वर्षा का ठहरना। (ख) खाँसी या बुखार ठहरना। ८. किसी अशांत या उद्विग्न स्थिति का फिर से प्रसम या शांत होना। जैसे—अब कुछ तबीयत ठहरी है। ९. घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का थिराना। १०. निश्चित या पक्का होना। जैसे—(क) दर, भाव या मूल्य ठहरना। (ख) सौदा ठहरना। ११. गर्भ रहना। १२. किसी विशिष्ट स्थिति में होना। (केवल जोर देने के लिए) जैसे—(क) तुम तो भाई ठहरे। (ख) आप तो रईस ठहरे।

ठहराई—स्त्री० [हिं० ठहराना] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. अधिकार। कब्जा। (क्व०)

ठहराउ†—पुं०=ठहराव।

ठहराऊ—वि० [हिं० ठहरना] १. ठहरने या ठहरानेवाला। २. टिकाऊ।

ठहराना—स० [हिं० ठहरना का स०] १. ठहराने में प्रवृत्त करना। २. किसी चलती हुई चीज को रोककर किसी स्थान पर खड़ा या स्थित करना। जैसे—गाड़ी या नाव ठहराना। २. किसी को किसी आधार पर इस प्रकार खड़ा या स्थिति करना कि वह इधर-उधर होने या हिलने न पावे। जैसे—ऊँगली पर छड़ी ठहराना। ४. किसी प्रकार के आधार पर दृढ़तापूर्वक स्थापित करना। जैसे—खंभों पर छत ठहराना। ५. किसी को अतिथि के रूप में अपने यहाँ अथवा और कहीं ठहरने या

कुछ समय तक रखने अथवा रहने की व्यवस्था करना। जैसे—(क) मित्र को अपने यहाँ ठहराना। (ख) धर्मशाला में बरात ठहराना। ६. किसी चलते या होते हुए काम को बंद करना या रोकना। ७. कोई काम चीज या बात इस प्रकार निश्चित करना, कराना कि सहसा उसमें कोई परिवर्तन न हो सके। जैसे—(क) लड़की या लड़के का ब्याह ठहराना। (ख) किराये की गाड़ी या मोटर ठहराना। ८. किसी चीज को नीचे गिरने से रोकने के लिए कोई आड़ या टेक लगाना।

ठहराव—पुं०[हिं० ठहरना+आव (प्रत्य०)]१. ठहरने, ठहराने या ठहरे हुए होने की अवस्था या भाव। २. वह स्थिति जिसमें किसी प्रकार की अशांति, उपद्रव, चंचलता आदि न हो। स्थिरता। ३. दो पक्षों में क्रय-विक्रय, विवाद आदि निपटाने के संबंध में होनेवाला निश्चय। ४. दे०'ठहरौनी'।

ठहरु†—पुं०=ठहर।

ठहरौनी—स्त्री०[हिं० ठहराना]१. दो पक्षों में होनेवाला वह निश्चय जिसके अनुसार एक पक्ष दूसरे पक्ष को निश्चित धन आदि समय-समय पर देता है। २. विवाह के अवसर पर दहेज आदि के लेन-देन का करार या निश्चय। ३.=ठहराव।

ठहाका†—पुं०[अनु०]१. ठठाकर या जोर से हँसने का शब्द। २. जोर की हँसी।

वि० चटपट। तुरंत।

ठहिया—स्त्री०[हिं० ठाँव] ठाँव। जगह।

ठाँ—स्त्री० १.=ठाँव। २.=ठाँय।

ठाँईं—स्त्री०[हिं० ठाँव] जगह। स्थान।

वि० निकट। पास।

†अ०य० १. किसी के प्रति। २. किसी से।

ठाँउँ†—पुं०=ठाँव।

अव्य०=ठाँव।

ठाँठ—वि०[सं० स्थाणु (ठूँठा पेड़) वा ठन-ठन से अनु०]१. जिसका रस सूख गया हो। नीरस। शुष्क। २. (गौ या भैंस) जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो। जिसके स्तनों में दूध न रह गया हो।

ठाँठर*—पुं० दे० 'ठठरी'।

पुं०[सं० स्थान, प्रा० ठान] जगह। स्थान।

ठाँय—स्त्री०[अनु०] बंदूक के चलने या ऐसी ही और कोई क्रिया होने का शब्द।

अव्य० निकट। पास। समीप।

ठाँय-ठाँय—स्त्री०[अनु०]१. लगातार बंदूक से गोलियाँ छोड़ते चलने से होनेवाला शब्द। २. ऐसा झगड़ा या टंटा जिसमें व्यर्थ की बहुत-सी बक-बक हो।

ठाँव—पुं०[सं० स्थान; प्रा० ठान]१. स्थान। जगह। २. ठिकाना।

ठाँसना—अ०[हिं० खाँसना का अनु०] ठन-ठन शब्द करते हुए खाँसना।

स०=ठूसना।

ठाँह (ै)—स्त्री०=ठाँव।

ठाई—स्त्री०=ठाँव।

ठाउ—पुं०=ठाँव।

ठाक—स्त्री०[हिं० ठाकना] ठाकने अर्थात् रोकने या मना करने की क्रिया या भाव।

पुं० हिं० 'ठीक' का निरर्थक अनुकरण। जैसे—ठीक-ठाक करना।

ठाकना†—पुं०[सं० स्था] कोई ऐसा काम करने से रोकना जिसका परिणाम या प्रभाव प्रायः बुरा होता हो। मना करना। जैसे—बच्चे को गाली देने से ठाकना।

ठाकुर—पुं०[सं० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी]१. देवमूर्ति, विशेषकर विष्णु या उनके अवतारों की प्रतिमा। देवता। २. ईश्वर। भगवान। ३. मालिक। स्वामी। ४. किसी भूखंड का स्वामी। ५. नायक। सरदार। ६. गाँव का जमींदार या मुखिया। ७. पूज्य व्यक्ति। ८. क्षत्रियों की एक उपाधि। ९. नाइयों के लिए एक संबोधन।

ठाकुरद्वारा—पुं०[हिं० ठाकुर+सं० द्वार]१. देवालय। मंदिर। जैसे—माई का ठाकुरद्वारा। २. सिक्खों का गुरुद्वारा।

ठाकुरप्रसाद—पुं०[हिं०]१. देवता को भोग लगाई हुई वस्तु। नैवेद्य। २. भादों में तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

ठाकुरबाड़ी†—स्त्री०=ठाकुरद्वारा।

ठाकुर-सेवा—स्त्री०[हिं० ठाकुर+सं० सेवा]१. देवता का पूजन और सेवा। २. देवता के भोग-राग के लिए मंदिर के नाम अर्पित की हुई संपत्ति।

ठाकुरी—स्त्री०[हिं० ठाकुर+ई (प्रत्य०)]१. ठाकुर होने की अवस्था, पद या भाव। २. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर के अधिकार में हो। ३. शासन। ४. प्रधानता। ५. महत्त्व।

ठाट—पुं०=ठाठ।

ठाटना—स०=ठाठना।

ठाट बंदी—स्त्री०=ठाठ-बंदी।

ठाट-बाट—पुं०=ठाठ-बाट।

ठाटर—पुं०=ठाठर।

ठाटी†—स्त्री०=ठठ्ठ (समूह)।

ठाठ—पुं०[सं० स्थातृ= खड़ा होनेवाला]१. बाँसों, लकड़ियों आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसके आधार पर कोई रचना तैयार या पूरी की जाती है। जैसे—छप्पर या नाव का ठाठ।

क्रि० प्र०—खड़ा करना।—बनाना।

पद—ठाठ बंदी=नवठट। (देखें)

२. किसी प्रकार की लंबी-चौड़ी बनावट या रचना। जैसे—कालीन या दरी बुनने का ठाठ; अर्थात् करघा और उसके साथ की दूसरी आवश्यक सामग्री। ३. ऐसी बनावट या रचना जो तड़क-भड़क, वैभव, शोभा, सजावट आदि दिखाने के उद्देश्य से तैयार की या बनाई जाय। आडंबर। ४. तड़क-भड़कवाला। वेश-विन्यास।

मुहा०—ठाठ पर रह जाना=उद्देश्य सिद्ध करने में विफल होकर ज्यों का त्यों रह जाना। **ठाठ बदलना**=(क) नया रूप धारण करने के लिए वेश बदलना। (ख) बल, महत्ता, श्रेष्ठता आदि दिखाने या स्थापित करने के लिए नया रूप धारण करना। जैसे—पहले तो वह सीधी तरह से बातें करता था; पर आज तो उसने अपना ठाठ ही बदल दिया। **ठाठ माँजना**=ठाठ बदलना।

५. तड़क-भड़कवाला ढंग, प्रकार या शैली।

मुहा०—ठाठ से बिताना या रहना=बहुत अच्छी तरह , चैन या सुख से रहना या समय बिताना।

६. कोई काम करने का आयोजन, तैयारी, युक्ति या व्यवस्था। जैसे—(क) अब यहाँ कहीं ठहरने या रहने का ठाठ करना चाहिए। (ख) यह सब अपना मतलब निकालने का ठाठ है। उदा०—यह ठाठ तुझी ने बाँधा है, यह रंग तुझी ने रच्चा है।—नजीर।

क्रि० प्र०—बाँधना।

७. कुश्ती या पटेबाजी में खड़े होने या वार करने का ढंग। पैंतरा।

मुहा०—ठाठ बदलना=पुराना पैंतरा छोड़कर नये पैंतरे से खड़े होना या वार करना। **ठाठ बाँधना**=प्रतिपक्षी पर वार करने के लिए पैंतरे से खड़े होना।

८. संगीत में ऐसे क्रमिक सात स्वरों का वर्ग जो किसी विशेष प्रचलित तथा प्रसिद्ध अथवा शास्त्रीय महत्त्व के राग में लगता हो। जैसे—भैरवी का ठाठ। ९. कबूतरों, मुरगों आदि का प्रसन्न होकर पर फड़फड़ाने की अवस्था या ढंग।

मुहा०—ठाठ मारना=उक्त पक्षियों का प्रसन्न होकर पर फड़फड़ाना।

पुं०[हिं० ठठ्ठ]१. झुंड, दल या समूह। ठठ्ठ। जैसे—घोड़ों या हाथियों का ठाठ। २. अधिकता। बहुतायत। ३ः बैल या साँड़ की गरदन पर का डिल्ला।

ठाठना—स०[हिं० ठाठ]१. ठाठ खड़ा करना या बनाना। २. सजाना। ३. किसी कार्य के अनुष्ठान या आरम्भ का उपक्रम करना।

अ० १. ठाठ का खड़ा होना या बनना। २. सजना। ३. कार्य आदि का अनुष्ठान या आरंभ होना।

ठाठ-बंदी—स्त्री० [हिं० ठाठ+फा० वंदी] १. किसी प्रकार का ठाठ अर्थात् ढाँचा खड़ा करने या बाँधने की क्रिया अथवा भाव। जैसे—छाजन या नाव की ठाठ-बंदी। २. आयोजन। तैयारी।

ठाठ-बाट—स्त्री० [हिं० ठाठ+अनु० बाट]१. आडंबर, तड़क-भड़क तथा विलासपूर्ण आयोजन या प्रदर्शन। जैसे—वे ठाठ-बाट से रहते या ठाठ-बाट से बाजार निकलते हैं। २. सज-धज। सजावट।

ठाठर—पुं०=ठाठ।

ठाढ़—वि०=ठाढ़ा। उदा०—ठाढ़ करत हैं कारन तबही।—तुलसी।

ठाढ़ा—वि०[सं० स्थातृ=जो खड़ा हो] [स्त्री० ठाढ़ी]१. जो सीधा खड़ा हो। दंडायमान। २. जो अपने पूर्व या मूलरूप में वर्तमान या स्थित हो। उदा०—गाढ़ैं ठाढ़ैं कुचनु ठिलि पिय हिय को ठहराइ।—बिहारी।

मुहा०—ठाढ़ा देना=किसी चीज को यत्नपूर्वक सँभालकर ज्यों का त्यों रखना।

३. (अनाज का दाना) जो कूटा या पीसा न गया हो, बल्कि ज्यों का त्यों अपने मूल रूप में हो। जैसे—ठाढ़ा गेहूँ या चना। ४. हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ५. जो खड़े बल में हो या सीधा ऊपर की ओर गया हो। ६. जो सामने आकर उपस्थित या प्रस्तुत हुआ हो। वर्तमान।

ठाढ़ेश्वरी—पुं०[हिं० ठाढ़ा+सं० ईश्वर+ई (प्रत्य०)] साधुओं का एक वर्ग जो रात-दिन खड़ा रहता है।

विशेष—ये साधु या तो चलते-फिरते रहते हैं या खड़े रहते हैं, बैठते या लेटते बिलकुल नहीं।

ठादर—पुं०[देश०] झगड़ा।

ठान—स्त्री०[हिं० ठानना]१. ठानने की क्रिया या भाव। २. किसी काम को करने के संबंध में किया हुआ दृढ़ निश्चय या हठ। ३. निश्चय या हठ-पूर्वक ठाना या आरंभ किया हुआ कार्य।

ठानना—स०[सं० अनुष्ठान]१. कोई काम तत्परता और दृढ़तापूर्वक आरंभ करना। जैसे—युद्ध ठानना। २. कोई काम करने के लिए दृढ़ निश्चय या संकल्प करना। ३. पक्का करना। ठहराना।

ठाना—स०=ठानना।

स०[?] नष्ट करना। उदा०—लाज की औरं कहा कहि केशव जो सुनिये गुण ते सब ठाए।—केशव।

†पुं०=थाना।

ठाम†—पुं०[सं० धामन् या स्थान]१. जगह। स्थान। २. ठवन। मुद्रा। ३. शरीर की गठन। अँगलेट।

ठायँ—स्त्री०[अनु०]बंदूक आदि के चलने से होनेवाला शब्द। ठाँय

स्त्री०=ठाँव।

ठार—वि०[सं० स्थावर] बहुत अधिक ठंढा।

पुं०१. कड़ा जाड़ा। गहरी सरदी। २. पाला। हिम।

ठाल—वि०=ठाला।

पुं०=ठाला।

ठाला—पुं०[हिं० निठल्ला] [स्त्री० ठाली] १. (व्यवित) जो कुछ भी काम-धंधा न करता हो। निठल्ला।

मुहा०—ठाला बताना या ठाली देना=(वास्तविक काम न करके) व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना या बताना।

पुं०१. व्यापार की ऐसी स्थिति जिसमें विशेष बिक्री-बट्टा न होता हो। जैसे—आज तो बाजार में ठाला है! २. किसी बात या वस्तु का होनेवाला प्रत्यक्ष और विशेष अभाव। जैसे—रुपए-पैसे या वुद्धि का ठाला।

ठालिनी—स्त्री०[सं०] करधनी।

ठावँ—पुं०=ठाँव।

ठावण—पुं०[सं० स्थान]१. स्थान। जगह। २. ठिकाना।

ठावना—स०=ठानना।

ठासा—पुं०[हिं० ठाँसना] लोहारों का एक उपकरण जिससे वे तंग जगह में लोटे की कोर निकालते और उभारते हैं।

†पुं०=ठाह (संगीत का)।

ठाह†—स्त्री०[हिं० स्थान]१. जगह। स्थान। २. ठिकाना। ३. थाह। पता। उदा०—बैठी रही अभिमान सौं ठाह ठौर नहिं पायौ।—सूर।

स्त्री०[हिं० ठाहना]१. दृढ़ निश्चय। संकल्प। २. हठ।

स्त्री०[हिं० ठहरना या ठहराव] संगीत में, राग-रागिनी गाने या वाद्य बजाने का वह ढंग या प्रकार जिसमें गाने-बजाने में अपेक्षया अधिक समय लगाया जाता है। विलंबित। 'द्रुत' का विपर्याय।

ठाहना—स०=ठानना।

ठाहर—पुं०=ठहर (ठौर)।

ठाहरना†—अ०=ठहरना।

ठाहरु—पुं०=ठाहर (ठौर)।

ठहरूपक—पुं० [सं० स्थान+रूपक] सात मात्राओं का मृदंग का एक ताल जो आड़ा-चौताल से मिलता-जुलता होता है।

ठाहीं—स्त्री०=ठाँव (जगह)।

ठिंगना—वि० [?] [स्त्री० ठिंगनी] (व्यक्ति) जो ऊँचाई में सामान्य स्तर से अधिक कम हो। छोटे कदवाला।

ठिक—स्त्री० [हिं० टिकिया] धातु की चद्दर का कटा हुआ छोटा टुकड़ा जो जोड़ आदि लगाने के काम आता है। थिगली। चकती।

वि०=ठीक।

स्त्री०=स्थिरता।

ठिक-ठान*—पुं०=ठौर-ठिकाना।

ठिकठैन*—वि० [हिं० ठीक+ठयना] १. ठीक। २. सुन्दर।

स्त्री० १. ठीक या उत्तम व्यवस्था। २. आयोजन।

ठिकड़ा†—पुं० [स्त्री० ठिकड़ी]=ठीकरा।

ठिकना†—अ० १.=टिकना। २. किसी स्थान पर जमकर बैठना। (दलाल) ३. ठिठकना।

ठिकरा†—पुं० [स्त्री० ठिकरी]=ठीकरा।

ठिकरौर—वि० [हिं० ठीकरा] ठीकरों से युक्त।

पुं० ऐसा स्थान जहाँ बहुत से ठीकरे पड़े हुए हों।

ठिकाई—स्त्री० [हिं० ठीक] १. ठीक होने की अवस्था या भाव। २. पाल के यथास्थान जमकर ठीक बैठने की अवस्था या भाव। (लश०)

ठिकान—स्त्री० [हिं० ठिकना] ठिकने की अवस्था, क्रिया या भाव।

†पुं०=ठिकाना।

ठिकाना—पुं० [हिं० टिकान या टियान] १. टिकने अर्थात् ठहरने का उपयुक्त स्थान। २. वह जगह जहाँ कुछ या कोई टिक, ठहर या रह सके। जैसे—पहले तो इनके लिए कोई ठिकाना ढूँढ़ना चाहिए। ३. अवलंब, आश्रय, सहारे आदि का उपयुक्त या काम-चलाऊ द्वार, साधन या स्थान। जैसे—कोई नौकरी मिले तो यहाँ रहने का ठिकाना हो जाय।

क्रि० प्र०—निकलना।—मिलना।—लगना।

४. टिकने, ठहरने या रहने की नियत, निश्चित या स्थिर स्थान। जैसे—पहले इनका पता-ठिकाना तो पूछ लो। ५. किसी चीज या बात का वह उचित या उपयुक्त स्थान जहाँ उसे रहना या होना चाहिए।

क्रि० प्र०—मिलना।—लगना।

मुहा०—**(किसी चीज, बात या व्यक्ति का) ठिकाने आना**=जहाँ रहना या होना चाहिए, वहाँ आना या पहुँचना। जैसे—(क) जब ठोकर खाओगे, तब अक्ल ठिकाने आवेगी अर्थात् जैसी होनी चाहिए, वैसी हो जायगी। (ख) इतना समझाने पर अब आप ठिकाने आये हैं; अर्थात् मूल तत्त्व या वास्तविक तथ्य की बात अथवा विचार तक पहुँचे हैं। **(कोई काम या बात) ठिकाने पहुँचाना या लगाना**=उचित रूप से पूरा या समाप्त करना। जैसे—जो काम हाथ में लिया है, उसे पहले ठिकाने पहुँचाओ (या लगाओ)। **(कोई काम या उसके लिए किया जानेवाला परिश्रम) ठिकाने लगना**=सफल या सार्थक होना। जैसे—आपका काम हो जाय तो सारी मेहनत ठिकाने लगे। **(कोई चीज) ठिकाने लगाना**=(क) उपयोग या व्यवहार करके सफल या सार्थक करना। जैसे—जितना भोजन बनाकर रखा है, वह सब ठिकाने लगाओ। (ख) दुरुपयोग करके नष्ट या समाप्त करना। (व्यंग्य) जैसे—कुछ ही दिनों में उसने बाप-दादा की सारी कमाई ठिकाने लगा दी। **(किसी व्यक्ति को) ठिकाने पहुँचाना या लगाना**=किसी प्रकार मार डालना या समाप्त कर देना। जैसे—महीनों से जो लोग उसके पीछे पड़े थे, उन्होंने उसे ठिकाने लगाया अर्थात् मार डाला।

पद—ठिकाने की बात=ऐसी बात जो हर तरह से उचित या न्यायसंगत हो।

६. राजा की ओर से सरदार को मिली हुई जागीर। (राजस्थान) ७. किसी कथन या बात की प्रामाणिकता या विश्वसनीयता। जैसे—इनकी बातों का कोई ठिकाना नहीं। ८. अस्तित्व, आधार आदि की दृढ़ता या पुष्टता। जैसे—इनके जीवन का अब कोई ठिकाना नहीं। ९. चरम सीमा या आखिरी हद। अंत। पार। जैसे—उसकी नीचता का कोई ठिकाना नहीं।

स० १. टिकने, ठहरने या स्थिर होने में प्रवृत्त करना अथवा सहायक होना। २. गुप्त रूप से या छिपाकर दबा रखना या ले लेना। हथियाना। (दलाल) जैसे—एक रुपया उसने धीरे से उठाकर कमर (या जेब) में ठिका लिया। ३. किसी स्त्री को गुप्त रूप से उपपत्नी बनाकर रख लेना। (बाजारू) जैसे—उसने दो औरतें ठिकाई हुई हैं।

ठिकानेदार—पुं० [हिं० ठिकाना+फा० दार] किसी ठिकाने या जागीर का स्वामी। (राजस्थान)

ठिकियाना—स० [हिं० ठीक+इयाना (प्रत्य०)] ठीक करना।

ठिठक—स्त्री० [हिं० ठिठकना] १. ठिठकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. संकोच।

ठिठकना—अ० [सं० स्थित+करण] १. आशंका, भय आदि की कोई बात देखकर चलते-चलते एकबारगी ठहर या रुक जाना। संकोच-वश या सहमकर आगे बढ़ने या कोई काम करने से रुकना। जैसे—शेर की गन्ध आते ही घोड़ा ठिठक गया। २. चकित या स्तम्भित होकर रुकना। ठक रह जाना।

ठिठकान—स्त्री०=ठिठक।

ठिठरना—अ०=ठिठुरना।

ठिठुरना—अ० [सं० स्थित या ठार से अनु०] शरीर अथवा उसके किसी अंग का बहुत अधिक सरदी लगने के कारण काँपना या स्तब्ध होना। जैसे—सरदी से पैर या हाथ ठिठुरना।

ठिठोली—स्त्री०=ठठोली।

ठिनकना—अ० [अनु०] १. बच्चों का रह-रहकर रोने का-सा शब्द निकालना। ठुनकना। २. नखरा दिखाते हुए मचलना। ३. ठनकना। जैसे—तबला ठिनकना।

ठिया†—पुं०=ठीहा।

ठिर—स्त्री० [सं० स्थिर वा स्तब्ध] १. ठिठरने (ठिठुरने) की अवस्था, क्रिया या भाव। २. शीत। सरदी। पाला।

ठिरना—अ० १.=ठिठुरना। २. ठरना।

ठिलना—अ० [हिं० ठेलना का अ० रूप] १. किसी चीज का ठेला जाना। ढकेले जाने पर किसी दिशा में आगे की ओर बढ़ना। जैसे—मोटर या गाड़ी का ठिलना। २. दबाव पड़ने या आघात होने पर किसी चीज का किसी दूसरी चीज में घँसना।

ठिलाठिल—स्त्री०=ठेलमठेल।

ठिलिया—स्त्री॰ [हिं॰ 'ठिल्ल' का स्त्री॰ अल्पा॰] पानी रखने की मिट्टी की गगरी।

ठिलुआ—वि॰ [हिं॰ ठिलना] जो ठिलता हो अथवा ठेला जाता हो। वि॰†=निठल्ला।

ठिल्ला—पुं॰ [सं॰ स्थाली, प्रा॰ ठाली=हाँडी] मिट्टी की बड़ी ठिलिया या गगरी।

ठिल्ली—स्त्री॰=ठिलिया।

ठिल्ही—स्त्री॰=ठिलिया।

ठिहार—वि॰ [सं॰ स्थिर] १. विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय। २. ठीक। ३. निश्चित।

ठिहारी—स्त्री॰ [हिं॰ ठिहार] १. ठहराव। स्थिति। २. निश्चय। ३. विश्वास।

ठीक—वि॰ [हिं॰ ठिकाना] १. जो अपने ठिकाने अर्थात् उचित या उपयुक्त स्थान पर हो। जो मुनासिब जगह पर हो। जैसे—यह तस्वीर यहीं ठीक रहेगी। २. जो अपने स्थान पर अच्छी या पूरी तरह से आता, बैठता या लगता हो। जैसे—यह कुरता तुम्हें ठीक होगा। ३. जो क्रम, परम्परा, व्यवस्था आदि के विचार से वैसा ही हो जैसा होना चाहिए। जैसे—अलमारी में सब चीजें फिर से ठीक करके रखो। ४. जो नियम, नीति, प्रकृति, न्याय आदि की दृष्टि से उचित, उपयुक्त या संगत हो। जैसा होता हो या होना चाहिए, बिलकुल वैसा। जैसे—ठीक रास्ता, ठीक व्यवहार। ५. जो तर्क, वास्तविकता आदि के विचार से यथातथ्य या यथार्थ हो। जो मिथ्या न हो। जैसे—आखिर आप की ही बात ठीक निकली। ६. जो बहुत-कुछ या हर तरह से अनुकूल अथवा सुभीते का हो। जैसे—ठहरने के लिए यही जगह ठीक होगी। ७. जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि, चूक या भूल न हो। जैसे—(क) इन प्रश्नों के हमें ठीक उत्तर मिलने चाहिएँ। (ख) यह हिसाब गलत है, इसे ठीक करो। ८. जिसमें कोई कोर-कसर, खराबी, दोष या विकार न हो। जैसे—(क) आज तरकारी ठीक बनी है। (ख) मशीन ठीक है। ९. जो अच्छी, प्रसम या स्वस्थ दशा में हो। जैसे—आज-कल उनकी तबीयत बिलकुल ठीक है। १०. जो हर तरह से वैसा ही हो, जैसा होता है या होना चाहिए। जैसे—यह घी (या तेल) ठीक नहीं है। ११. जो कुछ भी आगे-पीछे, इधर-उधर अथवा घट-बढ़कर न हो। जैसे—(क) गाड़ी ठीक चार बजे जाती है। (ख) यह कपड़ा ठीक वैसा ही है, जैसा तुम चाहते थे। १२. नियत, निश्चित या स्थिर किया हुआ। ठहराया या पक्का किया हुआ। जैसे—(क) वे लड़की का ब्याह ठीक करने गये हैं। १३. (व्यक्ति) जो हर तरह से नीतिमान, न्यायज्ञ, प्रामाणिक, विश्वसनीय या सद्‌गुणी हो। जैसे—हमें यह आदमी ठीक नहीं मालूम होता। १४. (व्यक्ति) जिसका आचरण या व्यवहार वैसा ही हो, जैसा होना चाहिए। जो कोई अनुचित, निंदनीय या प्रतिकूल काम न करता हो। जैसे—इधर अनेक प्रकार के कष्ट भोगकर वह बिलकुल ठीक हो गया है।

पुं॰ 'ठीक' अर्थात् निश्चित या स्थिर होने की अवस्था या भाव। जैसे—उनके आने का कोई ठीक नहीं है।

क्रि॰ वि॰ १. उचित प्रकार या रीति से। जैसे—घड़ी ठीक चल रही है। २. अवधि, सीमा आदि के विचार से नियत समय पर। जैसे—ठीक साल भर बाद वह वापस आया। ३. ठहरे हुए या नियत होने की अवस्था या भाव। ठहराव। जैसे—पहले रहने का तो ठीक हो जाय; तब और बातें होती रहेंगी। ४. अंकों, संख्याओं आदि का जोड़। योग। मीजान। जैसे—इन रकमों का ठीक लगाओ।

क्रि॰ प्र॰—देना।—निकालना।—लगाना।

ठीक-ठाक—वि॰ [हिं॰ ठीक+अनु॰ ठाक] जो बिलकुल ठीक अवस्था में हो। पुं॰ १. ठीक होने की अवस्था या भाव। जैसे—गाँव पर सब ठीक-ठाक है। २. निश्चय।

ठीकड़ा—पुं॰=ठीकरा।

ठीकरा—पुं॰ [हिं॰ टुकड़ा] [स्त्री॰ अल्पा॰ ठीकरी] १. मिट्टी के टूटे-फूटे बरतन का कोई बड़ा टुकड़ा।

मुहा॰—(किसी के सिर) ठीकरा फूटना=व्यर्थ किसी बात के लिए कलंक लगना। **ठीकरा समझना**=तुच्छ, निरर्थक या व्यर्थ समझना।

२. प्राचीन काल के मिट्टी के बरतन का वह टुकड़ा जो कहीं से खुदाई में निकलता है और जो इतिहास तथा पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व का होता है। (पॉट-शर्ड) ३. भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। भिक्षा-पात्र। ४. तुच्छ वस्तु। ५. रुपया। (साधु)

ठीकरी—स्त्री॰ [हिं॰ ठीकरा का अल्पा॰ स्त्री॰] १. छोटा ठीकरा। २. तुच्छ या निकम्मी वस्तु। ३. चिलम के ऊपर रखा जानेवाला मिट्टी का तवा। ४. स्त्रियों की योनि का उभरा हुआ तल। उपस्थ।

ठीका—पुं॰ [हिं॰ ठीक] १. आपस में ठीक करके तै की हुई ऐसी बात जिसमें कोई काम करने-कराने और उसका पारिश्रमिक (वेतन से भिन्न) लेने-देने का निश्चय हुआ हो। जैसे—पुल या मकान बनाने का ठीका। (कॉन्ट्रैक्ट) २. कुछ काल के लिए कोई सम्पत्ति या किसी व्यापार का अधिकार इस शर्त पर किसी को देना या किसी से लेना कि उसकी आय, देख-रेख आदि की व्यवस्था ठीक तरह से होती रहेगी। जैसे—अफीम, गाँजे या शराब का ठीका। ३. अफीम, गाँजे, भाँग, शराब आदि की दूकान जो प्रायः ठीके पर ली जाती है। ४. उत्तरदायित्व। जिम्मेदारी। जैसे—हमने तुम्हें नौकरी दिलाने का ठीका नहीं लिया है।

ठीका-पत्र—पुं॰ [हिं॰ ठीका+सं॰ पत्र] वह पत्र या लेख्य जिसमें किसी के ठीके के संबंध की ऐसी बातें या शर्त्तें लिखी हों जिनका पालन दोनों पक्षों के लिए आवश्यक हो। संविदा-पत्र। (कॉन्ट्रैक्ट डीड)

ठीका-भेंट—स्त्री॰ [हिं॰ ठीका +सं॰ भेंट] वह धन जो ठीका लेनेवाला उस व्यक्ति को भेंट-स्वरूप देता है जिससे वह कोई ठीका लेता है।

ठीकुरी—स्त्री॰=ठीकरी।

ठीकेदार—पुं॰ [हिं॰ ठीका+फा॰ दार] वह व्यक्ति जो ठीके पर दूसरों के काम करता या करवाता हो। ठीका लेनेवाला व्यक्ति। (कन्ट्रैक्टर)

ठीठा—पुं॰=ठेंठा।

ठीठी—स्त्री॰ [अनु॰] अशिष्टतापूर्वक और तुच्छ भाव से ठी-ठी शब्द करते हुए हँसने का शब्द। जैसे—हरदम हाहा ठीठी करनी ठीक नहीं।

ठीलना—स॰=ठेलना।

ठीवन*—पुं॰ [सं॰ ष्ठीवन] १. थूक। २. खखार। ३. कफ।

ठीहँ—स्त्री॰ [अनु॰] घोड़े के हिनहिनाने का शब्द।

ठीहा—पुं॰ [ठाह से अनु] १. लकड़ी का वह गोलाकार या चौकोर छोटा टुकड़ा जो जमीन में गड़ा या धँसा रहता है तथा जिस पर रखकर चरी

आदि काटी जाती है। २. बढ़इयों, लोहारों आदि का वह कुंदा जिस पर वे लकड़ी या लोहा रखकर छीलते या पीटते हैं। ३. किसी चीज को लुढ़कने या हिलने-डोलने से बचाने के लिए उसके इधर-उधर या नीचे रखा जानेवाला ईंट, पत्थर, लकड़ी आदि का टुकड़ा। जैसे—गाड़ी के पहिये के नीचे रखा जानेवाला ठीहा। ४. लकड़ी का वह ढाँचा जिसमें फँसाकर बढ़ई लकड़ी चीरते हैं। ५. वह कुछ ऊँचा स्थान जिस पर बैठकर छोटे दूकानदार सौदा बेचते हैं। ६. गाँव, बगीचे आदि की सीमा या हद जो पहले पत्थर या लट्ठा गाड़कर सूचित की जाती थी। ७. उक्त प्रकार का गाड़ा हुआ पत्थर या लट्ठा। ८. चाँड़। थूनी।

ठुंड—पुं०=ठुंठ।

ठुक—स्त्री०[हिं० ठुकना]१. ठुकने की अवस्था, क्रिया या भाव। ठोक। २. रुपये-पैसे का व्यर्थ में होनेवाला व्यय। जैसे—उन्हें दस रुपये की ठुक लग गई।

ठुकना—अ०[हिं० ठोकना का अ०] १. ठोका जाना। २. आघात या प्रहार लगना। ३. आर्थिक हानि या व्यर्थ व्यय होना। जैसे—व्यर्थ सौ रुपये ठुके। ४. जबरदस्ती आगे बढ़ना।

मुहा०—ठुक ठुक कर लड़ना=जबरदस्ती लड़ना। उदा०—दिन-दिन दैन उरहनी आवै ठुकि-ठुकि करत लरैया।—सूर।

५. परास्त होना।

ठुकराना—स०[हिं० ठोकर] १. पैर, विशेषतः पैर के पंजे से ठोकर लगाना। २. (व्यक्ति आदि को) उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दूर करना या हटाना। ३. (प्रस्ताव, सुझाव आदि) अवज्ञा या उपेक्षापूर्वक न मानना।

ठुकवाना—स०[हिं० ठोकना का प्रे० रूप] १. ठोकने का काम दूसरे से कराना। २. मार खिलवाना। पिटवाना। ३. स्त्री का पर-पुरुष से संभोग कराना। (बाजारू)

ठुड्डी—स्त्री०[हिं० ठड़ा=खड़ा] किसी अन्न का वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। ठुर्री। जैसे—कमलगट्टे, मक्के या मखाने की ठुड्डी।

†स्त्री०=ठोढ़ी।

ठुनकना—स०[ठुन से अनु०]१. किसी प्रकार ठुन शब्द उत्पन्न करना। २. ठोकना।

अ०[हिं० ठिनकना] बच्चों का अथवा बच्चों की तरह रुक-रुककर रोना।

ठुनका—पुं०[हिं० ठुनकाना] तर्जनी या मध्यमा (उँगली) की नोक से किया जानेवाला वेगपूर्वक आघात।

ठुनकाना—स०[ठुन-ठुन से अनु०]१. ठुन-ठुन शब्द उत्पन्न करना। २. तर्जनी या मध्यमा की नोक से किसी चीज पर इस प्रकार आघात करना कि ठुन शब्द उत्पन्न हो।

स०[हिं० ठुनकना] ठुनकने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई ठुनके। ठिनकाना।

ठुन-ठुन—पुं०[अनु०]१. धातु के बरतन या टुकड़ों के बजने का शब्द। २. बच्चों आदि के रुक-रुककर और ठुन-ठुन करते हुए रोने का शब्द। जैसे— यह लड़का हरदम ठुन-ठुन लगाये रहता है; अर्थात् प्रायः रोता रहता है।

ठुमक—स्त्री०[हिं० ठुमकना]१. ठुमकने की क्रिया या भाव। २. बच्चों, युवती स्त्रियों की ऐसी आकर्षक और लुभावनी चाल जिसमें वे कुछ ठिठकती या रुकती हुई चलती हैं। ठसक-भरी चाल।

ठुमकना—अ०[अनु०]१. बच्चे का उमंग में आकर धीरे-धीरे पैर पटकते तथा इठलाते हुए चलना। उदा०—ठुमुक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनिया।—तुलसी। २. नाच में, इस प्रकार धीरे-धीरे पैर पटकते हुए आगे बढ़ना कि पैर के घुँघरू बजते रहें।

ठुमका—पुं०[अनु०] [स्त्री०ठुमकी] धीरे से किया जानेवाला आघात या दिया जानेवाला झटका। जैसे—पतंग उड़ाने के समय उसे ठुमका देना।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

†वि० [स्त्री० ठुमकी] दे० 'ठिंगना'।

ठुमकारना—स०[हिं० ठुमका] (पतंग की डोरी को) ठुमका देना।

ठुमकी—स्त्री०[देश०]१. ठुमककर चलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. धीरे से किया जानेवाला आघात। थपकी। ३. दे० 'ठुमका'। ४. एक प्रकार की छोटी खरी पूरी (पकवान)।

ठुमरी—स्त्री० [अनु०] १. एक प्रकार का चलता गाना जिसमें एक स्थायी और एक अंतरा होता है।

विशेष—ठुमरी कई हलके रागों और तरह-तरह की धुनों में गाई जाती है। इसका विकास लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के दरबार में हुआ था।

२. उड़ती खबर। अफवाह।

क्रि० प्र०—उड़ना।

ठुरियाना†—अ० =ठिठुरना।

ठुर्री—स्त्री०=ठुड्डी।

ठुसकना—अ०[अनु०]१. ठुस-ठुस शब्द करते हुए रोना। ठुन-ठुन करना। २. ठुस शब्द करते हुए पादना।

ठुसकी—स्त्री० [अनु०] १. ठुस शब्द करते हुए पादने की क्रिया। २. हलका पाद जिसमें ठुस शब्द हो।

ठुसना—अ०[हिं० ठूसना]१. किसी चीज का किसी आधान में ठूस-ठूसकर भरा जाना। २. अन्न या भोजन का पेट भर कर खाया जाना। (उपेक्षा)

ठुसवाना—स०[हिं० ठूसना का प्रे०]ठूसने का काम किसी और से कराना।

ठुसाना—स० [हिं० ठूसना] १. किसी को ठूसने में प्रवृत्त करना। २. भोजन कराना। खिलाना। (उपेक्षासूचक)

ठूँग—स्त्री०=ठोंग।

ठूँगना—स०=टूँगना।

ठूँगा—पुं०=ठोंगा।

ठूँठ—पुं०[सं० स्थाणु]१. वह वृक्ष जिसका धड़ ही बच रहा हो तथा जिसकी टहनियाँ टूट गई हों। २. कटा हुआ हाथ। टूँट। ठंड। ३. कटे हुए हाथवाला व्यक्ति। ४. ज्वार, बाजरे, ईख आदि की फसलों में लगनेवाला एक तरह का कीड़ा।

ठूँठा—वि०[हिं० ठूँठ] [स्त्री० ठूँठी] १. (पेड़) जो शाखाओं से रहित हो गया हो। २. (व्यक्ति) जिसका हाथ कटा हुआ हो। लुंज। ३. खाली। रिक्त। ४. थोथा। निस्सार।

ठूँठिया†—वि०[हिं० ठूँठ]१. लूला-लँगड़ा। २. नपुंसक। हिजड़ा।

ठूठी—स्त्री० [हिं० ठूँठ] फसल काट लिए जाने के बाद पौधे की जड़ के पास रह जानेवाले ज्वार, बाजरे, अरहर आदि के डंठल। खूँटी।

ठूँसना—स०=ठूसना।

ठूँसा—पुं० [हिं० घूँसा से अनु०] घूँसा।

†पुं०=ठोसा।

ठूनू—पुं० [देश०] पटवों की वह टेढ़ी कील जिस पर वे लोग गहने आदि अटकाकर गूँथते हैं।

ठूसना—स० [हिं० ठस] १. खूब अच्छी तरह कसकर दबाते हुए कोई चीज किसी अवकाश या आधान में भरना। २. जबरदस्ती कोई चीज किसी में डालना या भरना। ३. खूब कसकर और बुरी तरह से खाना या पेट भरना। (व्यंग्य)

ठेंगना†—वि०=ठिंगना (नाटे कद का)।

ठेंगा—पुं० [हिं० हेठ+अंग या अँगूठा] १. किसी को उसकी विफलता पर चिढ़ाने या लज्जित करने के लिए दिखाया जानेवाला दाहिने हाथ का अँगूठा।

क्रि० प्र०—दिखाना।

पद—ठेंगे से=हमारी बला से। हमें कुछ चिन्ता या परवाह नहीं है। (बाजारू)

मुहा०—ठेंगा बजना=लज्जाजनक विफलता होना।

२. लिंगेंद्रिय। (अशिष्ट) ३. डंडा। सोंटा। उदा०—जम का ठेंगा बुरा है ओहु नहि सहिआ जाई।—कबीर।

मुहा०—ठेंगा बजाना=लाठियों से मार-पीट होना।

४. मध्ययुग में, बिक्री के माल पर लिया जानेवाला महसूल। चुंगी।

ठेंगुर—पुं० [हिं० ठेंगा=सोंटा] वह डंडा या लकड़ी का टुकड़ा जो उच्छृंखल पशुओं के गले में इसलिए बाँधा जाता है कि वे भाग कर दूर न जाने पावें।

ठेंघा—पुं०=टेक।

ठेंठ—वि०=ठेठ।

ठेंठा—पुं० [हिं० ठूँठ या ठूँठी] सूखा डंठल। उदा०—राजो एक मजूर से बैलों के लिए जोन्हरी का ठेंठा कटवा रही थी।—प्रसाद।

ठेंठी—स्त्री० [देश०] १. कान की मैल। २. वह कपड़ा या रूई जो कान के भीतरी छेद या मुँह पर इसलिए लगाई जाती है कि बाहर का जोर का शब्द भी न सुनाई पड़े। ३. बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने के लिए उसके ऊपर लगाया जानेवाला काग या डाट।

क्रि० प्र०—लगाना।

ठेंपी†—स्त्री०=ठेंठी।

ठेक—स्त्री० [हिं० ठेकना] १. ठेकने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज को ठेकने या उसके नीचे सहारा देने के लिए लगाई जानेवाली चीज। टेक। जैसे—मटके या हंडे के नीचे टेक लगाना। ३. चाँड़। टेक। ४. किसी वस्तु को कसने के लिए उसके बीच में ठोंकी जानेवाली चीज। पच्चर। ५. पाग का तल या पेंदा। टट्टियों आदि से घिरा हुआ वह स्थान जिसमें अनाज भरकर रखा जाता है। ६. अनाज रखने के लिए टट्टियों आदि से घेरकर बनाया हुआ स्थान।

ठेकना—स० [हिं० टेक] १. किसी चीज पर शरीर का बोझ डालते या रखते हुए उसका सहारा लेना। २. किसी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे टेक या सहारा लगाना।

स० [अनु०] छापे या ठप्पे से अंकित करना।

ठेकवा बाँस—पुं० [देश०] बंगाल, आसाम आदि प्रदेशों में होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

ठेका—पुं० [हिं० ठेकना] १. ठेकने अर्थात् टिकने-टिकाने या ठहरने-ठहराने की जगह। २. वह वस्तु जिसकी ठेक लगाई जाय। ठेकनेवाली वस्तु। अड्डा। ३. हलका आघात। थपेड़ा। जैसे—लहरों का ठेका। ४. तबले के साथ का वह दूसरा बाजा जो बाईं ओर रहता और बाएँ हाथ से बजाया जाता है। डुग्गी। ५. तबला या ढोल बजाने की वह रीति जिसमें पूरे बोल न निकाले जायँ, केवल ताल दिया जाय। यह प्रायः डुग्गी या बाएँ पर बजाया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—बजाना।

मुहा०—घोड़े का ठेका भरना=घोड़े का रह-रहकर जमीन पर टाप या पैर पटकना।

६. संगीत में, कौवाली नाम का ताल।

†पुं० दे० 'ठीका'।

ठेकाई—स्त्री० [हिं० ठेकना] ठेकना या ठेकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ठेकाना—स० [हिं० ठेकना का प्रे० रूप] किसी चीज को ठिकने या ठेकने में प्रवृत्त करना। वि० दे० 'ठिकाना'।

†पुं०=ठिकाना।

ठेकी—स्त्री० [हिं० ठेक] १. टेक। सहारा। २. चाँड़। थूनी।

ठेकेदार†—पुं०=ठीकेदार।

ठेगड़ी*—पुं० [देश०] कुत्ता। (डिं०)

ठेगना†—स० १.=ठेकना। २.=ठाकना (मना करना)।

ठेगनी—स्त्री०=टेकनी।

ठेघना†—स०=ठेगना (ठेकना)।

ठेघनी—स्त्री०=ठेगनी (टेकनी)।

ठेघा—पुं०=ठेका (टेक)।

ठेघुना—पुं०=ठेहुना (घुटना)।

ठेठ—वि० [देश०] १. जो अपने विशुद्ध मूलरूप में हो। जिसमें कृत्रिमता, बनावट या किसी तरह की मिलावट न हो। प्ररूपी। (टिपिकल्) जैसे—ठेठ बनारसी (=विशिष्ट रूप से बनारस का ही; अर्थात और कहीं का नहीं)। २. जिसमें किसी प्रकार की भूल, संदेह आदि के लिए अवकाश न हो। जैसे—उन्हें ठेठ घर तक पहुँचा आओ।

पुं० आदि। आरंभ। शुरू। जैसे—अब सारा काम ठेठ से करना चाहिए।

ठेठर—पुं०=थिएटर।

ठेप—स्त्री० [देश०] सोने, चाँदी का ऐसा टुकड़ा जो अंटी में आ सके। (सुनार)

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—लगाना।

†पुं० [सं० दीप ?] दीआ। दीपक।

ठेपी—स्त्री० १. ठेंठी। २. छोटा ढक्कन।

ठेल—स्त्री० [हिं० ठेलना] ठेलने की क्रिया या भाव।

ठेल-ठाल—स्त्री०=ठेल।

ठेलना—स०[हिं० टालना] १. किसी भारी चीज के पीछे वल लगाकर उसे आगे खिसकाना या बढ़ाना।

मुहा०—(कोई काम) ठेले चलना=जैसे-तैसे काम चलाये चलना। किसी प्रकार निबाहते चलना।

२. अपना भार या दायित्त्व अपने ऊपर से हटाते हुए किसी दूसरे की ओर बढ़ाना।

*अ० वल-प्रयोग या जवरदस्ती करना। उदा०—ताही पैं ठगावैं ठेलि जाही को ठगतु है।—केशव।

ठेलम-ठेल—स्त्री०[हिं० ठेलना से] बार-बार बहुत से लोगों का आपस में एक दूसरे को ठेलने या धक्के देने की क्रिया या भाव।

क्रि० वि० एक दूसरे को ठेलते हुए।

ठेला—पुं०[हिं० ठेलना] १. ठेलने की क्रिया या भाव। २. माल ढोने की एक तरह की दो या तीन पहियोंवाली छोटी गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं। ३. उक्त प्रकार की चार पहियोंवाली छोटी गाड़ी जो केवल रेल की पटरियों पर चलती है। ट्रॉली। ४. छिछली नदियों में चलनेवाली एक तरह की कम गहरी नाव। ५. धक्का। ६. भीड़-भाड़।

ठेलाठेल—स्त्री०=ठेलमठेल।

ठेवका—पुं०[हिं० ठेवना या सं०थापक] वह स्थान जहाँ मोट का पानी खेत सींचते समय गिराया जाता है। चवना।

ठेवकी—स्त्री०=ठेक।

ठेस—स्त्री०[देश०]१. ऐसा हलका आघात जिससे किसी चीज या व्यक्ति की थोड़ी-बहुत या सामान्य हानि हो। जैसे—ठेस लगने से शीशा टूट गया। २. किसी प्रकार के अपकृत्य के फलस्वरूप होनेवाला कुछ या सामान्य मानसिक कष्ट। जैसे—आपके व्यवहार से मेरे मन को ठेस लगी है। ३. किसी तत्त्व पर होनेवाला आघात। जैसे—किसी की प्रतिष्ठा या मान को ठेस लगना।

क्रि० प्र०—पहुँचना।—पहुँचाना।—लगना।—लगाना।

४. आश्रय। सहारा। ढासना। जैसे—तकिये पर ठेस लगाकर वैठना।

ठेसना—अ०[हिं० ठेस] आश्रय या सहारा लेना। ठेस लगाकर बैठना।

†स०=ठूसना।

ठेसमठेस—क्रि० वि०[हिं० ठेस] सब पाल एक साथ खोले हुए (जहाज का चलना)। (लश०)

ठेहरी—स्त्री०[देश०] जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर दरवाजे (पुरानी चाल के एक प्रकार के दरवाजे) की चूल घूमती है।

ठेहुका†—पुं०[हिं० ठेक]वह पशु जिसके चलते समय पिछले दोनों पैरों के घुटने आपस में टकराते हों।

ठेहुना†—पुं० [सं० अष्ठीवान्] घुटना।

ठेहुनी†—स्त्री०[हिं० ठेहुना] कोहनी।

ठैंकर—पुं०[देश०] एक प्रकार का खट्टा फल जिससे पीला रंग बनाया जाता है।

ठैन†—स्त्री०=ठवन।

ठैयाँ—स्त्री०=ठाँव।

ठैरना†—अ०=ठहरना

ठैराई—स्त्री०=ठहराई।

ठैराना—स०=ठहराना।

ठैल-पैल†—स्त्री०=ठेलपेल।

ठोंक—स्त्री०=ठोक।

ठोंकना†—स०=ठोकना।

ठोंग—स्त्री०[सं० तुंड]१. चोंच। २. चोंच की मार। ३. उँगली की नोक से किया जानेवाला आघात।

ठोंगना—स०[हिं० ठोंग]१. ठोंग या चोंच मारना। २. उँगली की नोक से आघात करना।

ठोंगा—पुं०[देश०] कागज की एक प्रकार की थैली जिसमें दूकानदार सूखा चीजें डालकर ग्राहकों को देते हैं।

ठोंचना†—स०=ठोंगना।

ठोंठ—पुं०[सं० ओष्ठ] होंठ।

पुं०=ठोठ।

ठोंठा—पुं०[देश०] ज्वार, बाजरे आदि को हानि पहुँचानेवाला एक तरह का कीड़ा।

ठोंठी—स्त्री०[सं० तुंड] १. चने के दाने का कोश या खोल। २. पोस्ते की ढोंढ़ीं या ढेंढ़ी।

ठो†—अव्य०[सं० स्था] संख्यासूचक शब्दों के साथ लगनेवाला एक अव्यय जो उनकी इकाइयों या मान पर जोर देता है। जैसे—एक ठो, दो ठो, दस ठो, बीस ठो आदि।

ठोक—स्त्री०[हिं० ठोकना] १. ठोकने की क्रिया या भाव। आघात। प्रहार। २. वह लकड़ी जिससे ठोक लगाकर दरी की बुनावट ठस की जाती है। ३. अन्न के दानों, फलों आदि पर कीड़े-मकोड़ों के दंश या पक्षियों की चोंच से लगा हुआ आघात या उसका चिह्न।

ठोकचा—पुं०[देश०] आम की गुठली का ऊपरी कड़ा आवरण। खोल।

ठोकना—स०[अनु० ठक-ठक से]१. किसी चीज को किसी दूसरी चीज के अन्दर गड़ाने, जमाने, धँसाने, वैठाने आदि के लिए उसके पिछले भाग पर हथौड़े आदि से जोर से आघात करना। जैसे—जमीन में खूँटा या दीवार में कील ठोकना। २. किसी छेद या दरज में उक्त प्रकार का आघात करते हुए कोई चीज धँसाना या बैठाना। जैसे—चूल में पच्चर ठोकना। ३. किसी चीज के विभिन्न संयोजक अंगों को यथास्थान वैठाने के लिए उन पर किसी प्रकार आघात करना। जैसे—(क) खाट या चौखट ठोकना। (ख) किसी के पैरों में बेड़ियाँ या हाथों में हथकड़ियाँ ठोकना। ४. कोई विशिष्ट प्रकार का कार्य सम्पादित करने के लिए किसी चीज पर ऐसा आघात करना कि वह कुछ दबे भी और उसमें से कुछ शब्द भी निकले। जैसे—पहलवानों का ताल ठोकना। (ग) पकाने के लिए बाटी या रोटी ठोकना।

मुहा०—(किसी की) पीठ ठोकना=(क)कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करते हुए उत्साहित करना, उसकाना या बढ़ावा देना। जैसे—तुम्हारे ही पीठ ठोकने से तो वह मुकदमेबाजी पर उतारू हुआ है।

५. किसी चीज की दृढ़ता, प्रामाणिकता आदि की परीक्षा करने के लिए कोई आवश्यक या उपयुक्त क्रिया करना।

मुहा०—ठोकना-ठठाना या ठोकना-बजाना=हर तरह से जाँचकर देखना कि यह ठीक है या नहीं। जैसे—ठोक-बजा कर सौदा करना।

६. अधिकार या बलपूर्वक अभियोग आदि उपस्थित करना। जैसे—किसी पर दावा या नालिश ठोकना। ७. अच्छी तरह पीटना या मारना। जसे—जब तक यह लड़का ठोका नहीं जायगा तब तक सीधा नहीं होगा।

ठोकर—स्त्री० [हिं० ठुकना या ठोकना] १. किसी चीज के ठुकने अर्थात टकराने आदि से लगनेवाला ऐसा आघात जिससे कुछ टूटने-फूटने या हानि पहुँचाने की आशंका या संभावना हो। जैसे—यह तसवीर (या शीशा) सँभालकर ले जाना; रास्ते में कहीं ठोकर न लगने पावे।

क्रि० प्र०—लगना।

२. वह आघात जो चलते समय रास्ते में पड़ी हुई किसी उभरी हुई कड़ी चीज से मुख्यतः पैर में लगता हो। जैसे—चलते समय ईंट, कंकड़ या पत्थर से लगनेवाली ठोकर।

क्रि० प्र०—खाना।—लगना।

३. मार्ग में पड़ी हुई कोई ऐसी (उक्त प्रकार की) चीज़ जिससे पैरों को आघात लगता या लग सकता हो। जैसे—अँधेरे में उधर मत जाया करो; रास्ते में कई जगह ठोकरें हैं। ४. नंगे पैर के अगले भाग अथवा पहने हुए जूते की नोक या पंजे से किसी वस्तु या व्यक्ति पर किया जानेवाला आघात। जैसे—नौकर या भिखमंगे को ठोकर लगाना या ठोकरों से मारना।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

मुहा०—(किसी की) ठोकरों पर पड़े रहना=बहुत ही दीन-हीन बनकर और सब तरह की दुर्दशाएँ भोगते हुए किसी के आश्रित बने रहना।

५. कुश्ती का एक दाँव-पेंच जिसमें विपक्षी को पैर से कुछ विशिष्ट प्रकार की ठोकर लगाकर नीचे गिराया जाता है। ६. लाक्षणिक रूप में लोक-व्यवहार में किसी प्रकार का ऐसा कड़ा या भारी आघात जो बहुत-कुछ अनिष्ट या हानि करनेवाला सिद्ध हो। जैसे—उन्होंने अपने जीवन में कई बार ठोकरें खाई हैं; इसलिए अब उनकी बुद्धि बहुत-कुछ ठिकाने आ गई है।

क्रि० प्र०।—खाना।—लगाना।

मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाते फिरना=इधर-उधर अपमानित होते हुए और दुःख भोगते हुए घूमना। दुर्दशा-ग्रस्त होकर मारे-मारे फिरना।

ठोकरी—स्त्री० [देश०] ऐसी गाय जिसे ब्याये कुछ या कई मास हो चुके हों और इसी लिए जिसका दूध गाढ़ा तथा मीठा हो गया हो।

ठोकवां†—पुं० [हिं० ठोकना] गुना नाम का मीठा पकवान।

ठोका†—पुं० [देश०] हाथ में पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का गहना।

ठोट—वि० [हिं० ठूँठ] १. तत्वहीन। २. मूर्ख।

ठोठ†—पुं०=ठूँठ।

†वि०=ठूँठा।

ठोठरा—वि० [हिं० ठूँठ?] [स्त्री० ठोठरी] भीतर से खाली खोखला। पोला।

ठोड़ी—स्त्री०=ठोढ़ी।

ठोढ़ी—स्त्री० [सं० तुंड] चेहरे का निचला सामनेवाला भाग जो आगे की ओर कुछ झुका हुआ होता है। ठुड्डी। चिबुक। (चिन्)

मुहा०—(किसी की) ठोढ़ी पकड़ना=प्रेमपूर्वक या अनुनय-विनय करते हुए किसी की ठोढ़ी छूना या दबाना।

ठोढ़ी-तारा—पुं० [हिं०] स्त्री की ठुड्डी पर का गोदना या तिल।

ठोप†—पुं० [अनु० टप-टप] जल-कण। पानी की बूँद।

ठोर—पुं० [देश०] एक प्रकार का मीठा पकवान जो मैंदे की मोयनदार पूरी को घी में तलने और चाशनी में पकाने से बनता है। वल्लभ-संप्रदाय के मंदिरों में प्रायः इसका भोग लगता है।

पुं० [सं० तुंड] पक्षियों की चोंच।

ठोला—पुं० [देश०] रेशम फेरनेवालों की वह चौकोर छोटी पटरी जिसमें लकड़ी का खूँटा लगा रहता है।

ठोली—स्त्री० [देश०] उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री। रखेल। (पूरब)

ठोस—वि० [हिं० ठस] १. (पदार्थ) जिसकी रचना में अन्दर कहीं खोखला-पन न हो; और इसलिए जो बहुत कड़ा, ठस और पक्का हो। जैसे—धातुएँ, पत्थर और लकड़ियाँ अपने प्राकृतिक या मूल रूप में सदा ठोस होती हैं। २. (रचना) जिसके अन्दर न तो किसी प्रकार का पोलापन हो और न पोलेपन की पूर्ति के लिए किसी प्रकार का भराव हो। जैसे—चाँदी या सोने का ठोस कड़ा या ठोस मूर्ति। ३. (तत्त्व या विषय) जिसमें भर-पूर तथ्य, पुष्टता, या सारभूत बातें हों और इसी लिए जिसमें यथेष्ट उपयोगिता, दृढ़ता, प्रामाणिकता, मान्यता आदि गुण वर्तमान हों। जैसे—उनकी सारी पुस्तक ठोस विचारों से भरी पड़ी है। ४. जिसका कोई ठीक, दृश्य या मूर्त्त रूप सामने हो। जिसमें अव्यावहारिक, असंगत या सारहीन बातों की अधिकता या प्रधानता न हो। जैसे—जब तक कोई ठोस प्रस्ताव या सुझाव सामने न आवे, तब तक इस विषय पर विचार नहीं हो सकता। ५. (व्यक्ति) जिसके पास या जिसमें कुछ आधार-भूत तथा दृढ़ तत्त्व या बातें हों; और इसी लिए जिसे प्रामाणिक या विश्वसनीय माना जा सकता हो। जैसे—ठोस आसामी, ठोस महाजन।

ठोसना—स० [हिं० ठाँसना या ठूसना ?] १. धक्का देते हुए आघात या प्रहार करना। २. किसी को जलाने या कुढ़ाने के लिए बहुत कठोर या लगती हुई बात कहना। ठोसा देना।

ठोसा—पुं० [हिं० ठोसना] १. वह आघात या प्रहार जो किसी को धक्के देते हुए किया जाय। २. वह व्यंग्यपूर्ण बात जो किसी को कुढ़ाने या जलाने के लिए कही जाय। उदा०—इक हरि के दरसन बिनु मरियत, अरु कुब्जा के ठोसनि।—सूर। ३. कुढ़ाने या चिढ़ाने के लिए दिखाया जानेवाला हाथ का अँगूठा। ठेंगा।

ठोहर—पुं० [हिं० निठोहर] १. अकाल। २. मँहगी।

ठौका—पुं०=ठेवका।

ठौनि*—स्त्री०=ठवनि।

ठौर—पुं० [सं० स्थान; प्रा० ठान; हिं० ठाँव+र (प्रत्य०)] १. जगह। स्थान।

पद—ठौर-कुठौर=अच्छी और बुरी जगह। उचित तथा अनुचित स्थान।

मुहा०—ठौर न आना=किसी ठिकाने पर न पहुँचना या न लगना। **(किसी को) ठौर रखना**=जिस स्थान पर कोई हो उसे वहीं ढेर कर देना अर्थात् मार डालना। **ठौर रहना**=कहीं पड़े रहना।

२. अवसर। मौका।

ठ्यापा†—वि० [देश०] [स्त्री० ठ्यापी] उपद्रवी। शरारती।

ड

ड—देवनागरी वर्णमाला का १३वाँ व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा सघोष व्यंजन है। जब इसके नीचे बिन्दी लगती है तब इसके उच्चारण में विशेष अन्तर होता है। जैसे—लड़का, लड़ी आदि में का ड़। ड़ मूर्द्धन्य, उत्क्षिप्त, अल्पप्राण तथा सघोष व्यंजन है।

पुं०[सं०√डी (उड़ना)+ड] १. शब्द। २. बड़वाग्नि। ३. शिव। ४. एक प्रकार का नगाड़ा। ५. भय।

डंक—पुं०[सं० दंश; प्रा० डक्क; दे० प्रा० डंक; उ० डंकिवा; गु० मरा० डंख; पं० डंक] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के कीड़ों और जन्तुओं का वह कड़ा नुकीला काँटे के आकार का अंग जो प्रायः उनके पिछले भाग में होता है तथा जिसे वे दूसरे जीवों या प्राणियों के शरीर में गड़ा या धँसाकर कुछ विष प्रविष्ट करते हैं। और जिसके फलस्वरूप या तो प्राणियों को जलन या पीड़ा होती है और या वे मर जाते हैं। जैसे—बर्रे या बिच्छू का डंक। २. कुछ कीड़े-मकोड़ों के मुँह पर का वह लंबा पतला अंग जिसे वे किसी चीज में उसका रस चूसने के लिए गड़ाते हैं।

क्रि० प्र०—मारना।

३. लाक्षणिक रूप में, कोई ऐसी खटकने या चुभनेवाली बात जो राग-द्वेष से भरी हो और किसी को बहुत अधिक कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से कही जाय। ४. देशी कलम का वह अगला भाग जिससे लिखा जाता है। उदा०—सूखि लागि स्याही लेखनी कैं नेकु डंक लागैं।—रत्नाकर। ५. पाश्चात्य ढंग की कलमों की जीभ जो धातु की बनी हुई और बहुत नुकीली होती है। (निब)

†पुं०[हिं० डंका] पूरा एकाधिपत्य। जैसे—इस स्थान पर हमारा ही डंक है।

डंकदार—वि० [हिं० डंक+फा० दार] (कीड़ा) जिसमें डंक हो। डंकवाला।

डंकना—स०[हिं० डंका] १. डंका बजाना। २. डंके की तरह का घोर शब्द उत्पन्न करना।

अ० गरजना।

डंका—पुं०[टंक या ढक्का=दुंदुभि का शब्द] १. बड़ी नाद के आकार का धातु, मिट्टी आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध बाजा जिसके मुँह पर चमड़ा मढ़ा होता है। दमामा।

मुहा०—**(कोई बात) डंके की चोट कहना**=खुल्लमखुल्ला, दृढ़तापूर्वक और सबको सुनाकर कहना। **(किसी बात का) डंका पीटना**=चारों ओर सबसे खुलेआम कहते फिरना। **डंका देना**=डंका बजाकर सैनिकों को सावधान होने या कूच करने की सूचना देना। **(कहीं किसी का) डंका बजाना**=एकाधिपत्य या पूर्ण अधिकार होने की सबको सूचना मिलना। **डंका बजाना**=एकत्र होने के लिए डंका देना।

२. मुरगों में होनेवाली लड़ाई।

मुहा०—**डंका डालना**=मुरगों को आपस में लड़ाना।

पुं०[अं० डॉक] समुद्र के किनारे जहाजों के ठहरने का पक्का घाट।

डंका-निशान—पुं०[हिं० डंका+निशान=झंडा] राजाओं की सवारी के आगे बजानेवाला डंका और उसके साथ चलनेवाला झंडा।

डंकिनी—स्त्री०=डाकिनी।

डंकिनी-बंदोबस्त—पुं०=दवामी बन्दोबस्त।

डँकियाना—स०[हिं० डंक+आना (प्रत्य०)] १. डंक से चोट करना। २. डंक मारना या लगाना।

अ०[हिं० डाँकना] १. कोई स्थान डाँकने अर्थात् पार करने के लिए चलना। २. चलकर आना या पहुँचना।

डंकी—स्त्री०[देश०] १. कुश्ती का एक दाव। २. मालखंभ की एक कसरत।

वि०[हिं० डंक] डंकवाला (जंतु)।

डँकीला†—वि० [हिं० डंक+ईला (प्रत्य०)] (जंतु) जिसके शरीर में डंकवाला अंग होता हो। डंकदार।

डंकुर—पुं० [हिं० डंका] पुरानी चाल का एक तरह का ताल देने का बाजा।

डँकौरी†—स्त्री० [हिं० डंक+औरी (प्रत्य०)] बर्रे। भिड़।

डंख†—पुं०=ढंख।

डंग—वि०[देश०] जो पूरा पका न हो। अधपका।

पुं०=पहर। (पश्चिम)

डंगम—पुं०[देश०] एक तरह का वृक्ष।

डंगर—पुं०[देश०] चौपाया। पशु।

वि० पशुओं की तरह निर्बुद्धि या मूर्ख।

डँगरा†—पुं०[सं० दशांगुल] खरबूजा।

वि० दे० 'डाँगर'।

डँगरी—स्त्री०[हिं० डँगरा] १. लंबी ककड़ी। २. हिमालय में होनेवाला एक प्रकार का मोटा बेंत।

स्त्री० हिं० 'डाँगर' का स्त्री०। उदा०—डाइन डँगरी नरन चबावत।—गोपाल।

डँगवारा—पुं०[हिं० डंगर=चौपाया] किसानों में होनेवाला डंगरों (बैलों आदि) का पारस्परिक लेन-देन, व्यवहार या सहायता।

डंगू-ज्वर—पुं०[अं०] एक तरह का ज्वर जिसमें शरीर जकड़ सा जाता है।

डँगोरी—स्त्री०[देश०] १. डाँग। लाठी। २. वह लाठी जिसे वृद्ध लोग टेकते हुए चलते हैं। जैसे—अंधे की डँगोरी।

डँठरी†—स्त्री०[हिं० डंठल] छोटा तथा पतला डंठल।

डंठल—पुं०[सं० दंड] कुछ विशिष्ट छोटी वनस्पतियों, पौधों आदि का धड़ जो पतला और कुछ लंबा होता है। जैसे—अरहर या चौलाई का डंठल।

डंठी†—स्त्री० [सं० दंड] १. डंठल। २. किसी चीज में लगा हुआ कोई लंबा अंश।

डंड—पुं०[सं० दंड] १. डंडा। सोंटा। २. बाहु-दंड। बाँह। भुजा। ३. एक प्रकार का प्रसिद्ध भारतीय व्यायाम जो मुख्य रूप से बाँहों को पुष्ट और सबल करने के लिए जमीन पर पेट के बल झुककर बाँहों के सहारे बार-बार कुछ ऊपर उठने के रूप में होता है।

क्रि० प्र०—करना।—पेलना।

मुहा०—**डंड पेलना**=खूब मौज से समय बिताना। जैसे—बाप इतनी दौलत छोड़ गये हैं; इसलिए बेटा दिन-भर खूब डंड पेलता है।

पद—डंड-पेल। (देखें)

४. अपराध आदि के लिए मिलनेवाला दंड। सजा। ५. जुरमाना।

क्रि० प्र०—भोगना।

६. किसी की हानि के वदले में उसकी पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन या रकम।

मुहा०—(किसी पर) डंड डालना=किसी पर क्षति-पूर्ति का भार डालना। **डंड भरना**=किसी की किसी प्रकार की हानि होने पर उसकी पूर्ति के लिए या बदले में अपने पास से धन देना। जैसे—उनकी कलम खो जाने से हमें १०) डंड भरने पड़े हैं।

७. समय का 'दंड' नामक बहुत छोटा मान। ८. दे० 'दंड'।

डंडक—पुं०=दंडक।

डँडका†—पुं०[हिं० डंडा]सीढ़ी का डंडा।

डंडकारन*—पुं०=दण्डकारण्य।

डंडना—स०[हिं० डंड; सं० दंड]१. दंडित करना। दंड या सजा देना। २. जुरमाना लगाना।

डंड-पेल—पुं०[हिं० डंड पेलना] १. वह जो डंड पेलता हो। डंड करनेवाला व्यक्ति अर्थात् तन्दुरुस्त और हट्टा-कट्टा। २. वह जो खूब मौज-मस्ती करता और आनन्द लेता हो।

डंडल—स्त्री०[देश०] बंगाल, बरमा आदि की नदियों में मिलनेवाली एक तरह की लंवी मछली।

डंडवत्*—पुं०=दंडवत्।

डँडवारा†—पुं०[हिं० डाँड=खेत की मेंड़+वारा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० डँडवारी] किसी खुले स्थान को किसी ओर से घेरने के लिए उठाई जानेवाली ऊँची दीवार।

क्रि० प्र०—उठाना।

मुहा०—डंडवारा खींचना=डँडवारा उठाना या खड़ा करना।

पुं०[हिं० दक्खिन+वारा(प्रत्य०)] दक्षिण दिशा की वायु। दखिनैया।

क्रि० प्र०—चलना।

डँडवारी—स्त्री०[हिं० डँडवारा का स्त्री०] छोटा डँडवारा।

डँडवी—पुं० [हिं० डंड=दंड] वह अधिकारी जो दंड दे अथवा जिसमें दंड देने की क्षमता हो।

डँडवै—पुं० =डँडवी। उदा०—डंडवै डाँड़ दीन्ह जहँ ताईं, आइ सो डँडवत कीन्ह सबाईं।—जायसी।

डँडहरा†—पुं०[हिं० डंडा]१. वह पतली, गोल लंवोतरी लकड़ी जो दरवाजों को खुलने से रोकने के लिए अंदर से लगाई जाती है। २. दरवाजों को बंद करने के लिए उनमें लगाया जानेवाला लोहे आदि का वह उपकरण जिसमें ताला आदि भी लगता है।

डँडहरी—स्त्री०[देश०] एक तरह की छोटी मछली।

डँड़हिया—पुं०[हिं०डंडा] वह डंडा जिसकी सहायता से बैलों की पीठ पर लदे दो वोरे फँसाए रहते हैं।

डंडा—पुं०[हिं० दंड] १. पेड़ की शाखा, बाँस आदि का टुकड़ा, विशेषतः सीधा और लंबा सूखा तथा छीला और गढ़ा हुआ टुकड़ा। जैसे—गुल्ली के साथ खेलने का डंडा।

विशेष—डंडे की लंबाई अपेक्षया अधिक होती है और मोटाई तथा चौड़ाई कम।

मुहा०—डंडा चलाना=डंडे से किसी पर आघात या प्रहार करना। **डंडे के जोर से**=डंड या वाहुबल के आधार पर। जैसे—आप तो डंडे के जोर से सब काम कराना चाहते हैं।

२. कुछ विशिष्ट प्रकार से गढ़कर वनाये हुए उक्त प्रकार के छोटे टुकड़ों का जोड़ा जो प्रायः खेलों में एक दूसरे पर आघात करके वजाने के काम आता है। ३. उक्त प्रकार के लकड़ी के टुकड़ों को वजाते हुए खेले जानेवाले कई प्रकार के खेल।

क्रि० प्र०—खेलना।

मुहा०—डंडे बजाते फिरना=व्यर्थ या यों ही इधर-उधर घूमते रहना। कुछ काम न करके केवल घूम-घूमकर समय विताना।

४. लकड़ी की सीढ़ी में के छोटे-छोटे खंडों में से हर एक जिस पर पैर रख कर ऊपर चढ़ा जाता है। ५. किसी पदार्थ का अपेक्षाकृत कम चौड़ा तथा कम मोटा परन्तु अधिक लंवा टुकड़ा। जैसे—साबुन का डंडा।

†पुं०=डाँड (सीमा पर की छोटी दीवार या मेंड़)।

क्रि० प्र०—उठाना।—खींचना।

डंडा-डोली—स्त्री०[हिं० डंडा+डोली]=डोली-डंडा (खेल)।

डंडा-बेड़ी—स्त्री०[हिं०] वेड़ियाँ और उनके साथ लगा रहनेवाला लोहे का डंडा जो विकट कैदियों को इसलिए पहनाया जाता है कि वे वैठ न सकें।

डंडा-मुर्री—स्त्री० दे० 'पेचक' (चित्रकला की वेल)।

डंडाल—पुं०[हिं० डंडा] दुंदुभी। नगारा।

डँड़िया—स्त्री०[हिं० डाँड़ी=रेखा]१. पुरानी चाल की वह साड़ी जिसमें डाँडों या लंवी लकीरों के रूप में गोटा-पट्ठा टँका होता था। २. गेहूँ, जौ आदि की वालों की लंवी सींक।

पुं०[हिं० डाँडा=सीमा-रेखा] वह व्यक्ति जो सीमा पर रहकर कर या महसूल उगाहने का काम करता हो।

डँड़ियाना—स०[हिं० डाँड़ी]१. किसी कपड़े के दो या अधिक पाटों को सी कर जोड़ना। दो कपड़ों की लंबाई के किनारों को एक में सीना। २. साड़ी में गोटे आदि टाँककर डंडे अर्थात् लकीरें वनाना।

डँड़ियारा गोला—पुं० [हिं० डंडा+गोला] दोहरे सिरे का लंवा (तोप का) गोला। लठिया। (लश०)

डंडी—स्त्री०[हिं० डंडा का स्त्री० अल्पा०] १. लकड़ी या धातु का गढ़ा हुआ कोई छोटा, पतला, लंबा टुकड़ा जो कई प्रकार के उपकरणों में प्रायः उन्हें पकड़कर चलाने, रखने, हिलाने आदि के काम में आता है। जैसे—कलछी, छाते या पंखे की डंडी। २. धातु या लकड़ी का उक्त प्रकार का वह लंबा टुकड़ा जिसके दोनों सिरों पर तराजू के पलड़े बँधे रहते हैं।

मुहा०—डंडी मारना=तराजू की डंडी इस प्रकार चालाकी से कुछ दबाते हुए पकड़ना कि तौली जानेवाली चीज उचित मान से कुछ कम रहे। जैसे—यह बनिया डंडी मारकर लोगों को ठगता है।

३. कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधों का वह वड़ा और लंवा डंठल जिसके सिरे पर बड़े और भारी पत्ते या फूल लगते हैं। जैसे—कमल की डंडी। ४. पेड़-पौधों में की वह छोटी पतली सींक जिसमें पत्तियाँ और छोटे फूल लगते हैं। जैसे—गुलाब या गेंदे की डंडी। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार के गहनों में उक्त आकार-प्रकार का लगा हुआ वह छोटा पतला टुकड़ा जिसके सहारे वे गहने शरीर के अंग पर अटकाये, खोंसे या फँसाये जाते हैं। जैसे—आरसी या सीसफूल की डंडी। ६. झंपान या डाँडी नाम की

पहाड़ी सवारी। ७. पुरुष की लिंगेन्द्रिय। (बाजारू) वि० [हिं० डंड=दंड ?] आपस में लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

पुं०=दंडी (दंड धारण करनेवाला संन्यासी)।

*वि० [सं० द्वंद्व] चुगलखोर।

डँड़ीर—स्त्री० [हिं० डाँड़ी] सीधी लकीर।

डँडूरना—अ० [?] हवा का धूल से भर जाना।

डँड़ोरना—स०=ढूँढ़ना।

डंडौत—पुं०=दंडवत्।

डंबर—पुं० [सं०] १. आडंबर। २. विस्तार। ३. बहुत बड़ा समूह या झुंड। उदा०—डंका के दिए तैं दल डंबर उमंडचो।—भूषण। ४. एक तरह का चँदवा।

पद—मेघ-डंबर=बड़ा शामियाना। दल-बादल। **अंबर-डंबर**=वह लाली जो संध्या समय आकाश में दिखाई देती है।

डंबेल—पुं० [अं०] १. लोहे का एक तरह का छोटा किंतु भारी उपकरण जिसे हाथों में उठाकर कुछ विशेष कसरतें की जाती हैं। २. वह कसरत जो उक्त उपकरण की सहायता से की जाती है।

डंमरिय—पुं०' [सं० डमरू+धारी] शिव। उदा०—डंमरिय डहकि बिज्जुल लहकि, खग कढ़यौ सोमेसजा।—चंदबरदाई।

डँवरुआ—पुं० [सं० डमरू] एक तरह का वात रोग जिसमें शरीर के विभिन्न जोड़ों में पीड़ा तथा सूजन होती है। गठिया।

डँवरुआ-साल—पुं० [सं० डमरू+हिं० सालना] किसी धातु या लकड़ी के दो टुकडों को परस्पर जोड़ने का एक विशेष ढंग जिसमें एक टुकड़े को एक ओर से चौड़ा और दूसरी ओर से पतला काटते हैं और दूसरे टुकड़े में उसी काट की नाप से गड्ढा करते हैं और उस कटे हुए अंश को उसी गड्ढे में बैठा देते हैं।

डँवरू—पुं०=डमरू।

डँवाँडोल†—वि०=डाँवाँडोल।

डंस—पुं० [सं० दंश] १. गहरा और तेज डंक मारनेवाला एक प्रकर का बड़ा मच्छर। डाँस। २. दे० 'दंश'।

डँसना†—स०=डसना।

डऊ—वि० [हिं० डील?] १. लंबा-चौड़ा तथा हृष्ट-पुष्ट (व्यक्ति)। २. पशुओं की तरह निर्बुद्धि और मूर्ख।

डक—पुं० [अं० डाक] १. एक प्रकार का गफ कपड़ा जिससे जहाजों की पालें बनाई जाती हैं। २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो कमीज, कोट आदि के कफ, कालर आदि में लगाया जाता है।

पुं० [अं० डेक] जहाज की ऊपरी छत।

डकइत†—पुं०=डकैत।

डकई—पुं० [ढाका नगर] १. केले की एक जाति। २. उक्त जाति का केला।

†पुं०=१. डाका। २. डकैती।

डकरना—अ० [अनु०] १. बैल, भैंसे आदि का बोलना। २. डकार लेना।

डकरा—पुं० [देश०] ताल सूखने पर उसके तले की वह मिट्टी जिसमें अधिक गरमी के कारण दरारें पड़ जाती हैं।

डकराना†—अ०=डकरना।

†स० डकरने में प्रवृत्त करना।

डकवाहा†—पुं०=डाकिया।

डकार—पुं० [सं० डक्क=पुकार] १. वह शारीरिक व्यापार जिसमें पेट भरने पर उसके अन्दर की हवा एकाएक शब्द करती हुई मुँह के रास्ते बाहर निकलती है। २. उक्त हवा के मुँह से निकलते समय होनेवाला शब्द।

मुहा०—डकार तक न लेना=किसी का धन इस प्रकार हजम कर जाना कि किसी को खबर तक न लगे।

३. बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।

क्रि० प्र०—लेना।

डकारना—अ० [हिं० डकार+ना (प्रत्य०)] १. डकार लेना। २. दे० 'डकरना'।

स० किसी का धन या माल लेकर पचा जाना। हजम कर जाना।

डकैत—पुं० [हिं० डाक+ऐत (प्रत्य०)] वह डाकू जो प्रायः डाके डाला करता हो।

डकैती—स्त्री० [हिं० डकैत] १. डकैत का काम। २. डाका। ३. व्यापारिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में, किसी की चीज या धन बलपूर्वक अपने अधिकार या हाथ में कर लेना।

डकोटा—पुं० [अं०] एक प्रकार का बड़ा वायुयान।

डकौत—पुं० [देश०] भड्डर। भड्डरी। (दे०)

डक्क—पुं० [सं० डक्कारी] वीणा। उदा०—भरै पत्र जोगिनी डक्क नारद्द बजावै।—चंदबरदाई।

डक्कारी—स्त्री० [सं०] चंडाल वीणा।

डग—पुं० [डाँकना या अनु०] १. चलते या दौड़ते समय एक पैर को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखने की क्रिया या भाव।

क्रि०-प्र०—देना।—भरना।—मारना।

२. उतना अवकाश या दूरी जितनी चलते या दौड़ते समय एक पैर एक बार उठाकर फिर रखने में पार की जाती है।

डगक*—पुं० [हिं० डग+एक] एक या दो डग। एक या दो कदम। उदा०—डगकु डगति सी चलि ठठुठि चितई चली निहारि।—बिहारी।

डगडगाना†—अ०, स०=डगमगाना।

डगड़ी*—स्त्री०=डगरी। उदा०—डगड़ी गड़ती गड़ जाय मही।—निराला।

डगडोलना†—अ०, स०=डगमगाना।

डगडौर†—वि० [हिं० डग+डोलना]=डाँवाँडोल।

डगण—पुं० [सं० मध्य०स०] पिंगल में एक गण जिसमें चार मात्राएँ होती हैं।

डगना—अ० [हिं० डग+ना (प्रत्य०)] १. डग भरना। कदम या पैर उठाकर चलना। २. डगमगाना। ३. अपने स्थान से इधर-उधर होना। हिलना। ४. चूक या भूल करना।

†अ०=डिगना।

डग-मग—वि० [हिं० डग (कदम)+मग (मार्ग, अनु०)] १. मार्ग में अर्थात् चलते समय जिसके कदम लड़खड़ा रहे हों। २. जो बहुत अधिक हिल-डुल रहा हो। ३. (व्यक्ति) जो विचलित हो गया हो और इसी लिए कोई ठीक निश्चय न कर पाता हो।

पुं० ड़गमगाने या अस्थिर रहने की अवस्था या भाव। उदा०—डगमग छाँड़ि दे मन बौरा।—कबीर।

डगमगना†—अ०=डगमगाना।

डगमगाना—अ०[हिं० डगमग+ना (प्रत्य०)]१. चलते समय मार्ग में कदमों का ठीक प्रकार से न पड़ना। २. इस प्रकार हिलना-डुलना कि पैर ठीक प्रकार से न पड़ें। ३. (नाव आदि का) बहुत जोर से इधर-उधर हिलना-डुलना। ४. विचलित होना।

स०१. ऐसा काम करना जिससे कोई डगमग करने लगे। २. विचलित करना।

डगर—स्त्री०[हिं० डग=कदम] १. मार्ग। रास्ता। २. गाँव-देहात का छोटा और तंग रास्ता।

डगरना†—अ०[हिं० डगर] डगर या रास्ता चलना।

डगरा—पुं०[देश०][स्त्री० अल्पा० डगरी] बाँस की फट्टियों का बना हुआ छिछला बरतन। छाबड़ा। डलरा।

†पुं०=डगर (रास्ता)।

डगराना—अ०=डगरना।

स० रास्ते पर चलाना या लगाना।

डगरिया†—स्त्री०[हिं० डगर का स्त्री० रूप] छोटा और तंग रास्ता।

डगरी—स्त्री०=डगर।

डगा—पुं०[हिं० डागा] वह लकड़ी जिससे डुग्गी बजाई जाती है। डाग।

†पुं०=डग्गा।

डगाना†—स०=डिगाना।

डग्गर—पुं०[सं० तर्क्षु] भेड़िये की तरह का एक मांसाहारी हिंसक पशु।

वि० दे० 'डाँगर'।

डग्गा—पुं०[हिं० डग] पतली और लंबी टाँगोंवाला दुबला घोड़ा।

†पुं०=डगा।

डच—पुं०[अं०] हालैण्ड का निवासी।

वि० हालैंड का। हालैंड-संबंधी।

डट—पुं०[देश०] निशाना।

डटना—अ०[हिं० डाट]१. किसी स्थान पर विशेषतः उसकी सुरक्षा के लिए साहसपूर्वक खड़े रहना। जैसे—युद्ध-भूमि में सनिक डटे हुए थे। **पद—डटकर**=(क) दृढ़ता तथा साहसपूर्वक और सारा बल लगाकर। जैसे—ग्रामीणों ने चोरों का डटकर मुकाबला किया। (ख) अच्छी तरह। जैसे—उन्होंने डटकर खाया।

†२. मार्ग में किसी चीज के बाधक होने पर रुकना। जैसे—नदी की बालू पर चलती हुई नाव का डटना।

†३. ठहरना। रुकना। जैसे— गाड़ी का डटना। (व्रज)

*४. सुशोभित होना। भला लगना। उदा०—लटकि लटकि लटकतु चलतु डटतु मुकुट की छाँह।—बिहारी।

†स०[सं० दृष्टि या हिं० डीठ] देखना।

डटाई—स्त्री०[हिं० डटाना]१. डटे हुए होने की अवस्था या भाव। २. डटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

डटाना—स०[हिं० डटना]१. डटने में प्रवृत्त करना। २. ठहराना। रोकना। ३. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना या भिड़ाना।

डट्टा—पुं०[हिं० डाटना]१. हुक्के का नेचा। टेरुआ। २. वह ठप्पा जिससे छींट छापते हैं। साँचा। ३. दे० 'डाट'।

डडकना†—अ० [अनु०] १. जोर से शब्द उत्पन्न होना। २. बजना।

स० १. जोर से शब्द उत्पन्न करना। २. बजाना।

डड़ही—स्त्री०[देश०] एक तरह की मछली।

डड़ा†—पुं०[?]बाँह पर पहनने का टाड नाम का गहना।

डड्ढार(1)—वि०=डढार।

डढ़न*—स्त्री०[सं० दग्ध; प्रा० डड्ढ] जलन। ताप।

डढ़ना—अ०[हिं० डढ़न] १. जलना। तपना। २. बहुत दुःखी या सन्तप्त होना।

डढ़ाना—स०[हिं० डढ़ना]१. जलाना। २. बहुत दुःखी या संतप्त करना।

डढ़ार†—वि०=डढ़ारा।

डढ़ारा—वि०[हिं० डाढ़]१. डाढ़वाला। २. डाढ़ी या दाढ़ीवाला। ३. जिसकी डाढ़ी या दाढ़ी के बाल बहुत बड़े या लंबे हों। बड़ी और लंबी दाढ़ीवाला। ४. बहुत बलवान और साहसी।

डढ़ियल†—वि०=दढ़ियल (दाढ़ीवाला)।

डढ़ुआ†—पु०[सं० दृढ] मोट में मजबूती के लिए लगाया जानेवाला बर्रे, गेहूँ, चने आदि का तेल।

डढ्ढ़—वि०[सं० दग्ध]१. जला हुआ। २. तप्त। ३. बहुत दुःखी और संतप्त।

डढ्ढ़ना—स०[सं० दग्ध, प्रा० डड्ढ+ना (प्रत्य०)]१. जलाना। तपाता। २. बहुत दुःखी और संतप्त करना।

डढ्योरा†—वि०=डढ़ारा (दाढ़ीवाला)।

डपट—स्त्री० [सं० दर्प] १. डपटने की क्रिया या भाव। २. किसी को डाँटते-डपटते हुए कही जानेवाली कोई बात।

स्त्री० [हिं० रपट] १. खूब तेजी से आगे बढ़ते रहने की क्रिया या भाव। २. घोड़े की तेज चाल।

डपटना—स० [हिं० डपट] आज्ञा, आदेश आदि का न पालन करने पर, ठीक प्रकार से काम न करने पर अथवा अनधिकार या अनुचित चेष्टा करने पर किसी को दबाने के लिए क्रोधपूर्वक कटु बातें कहना।

अ० [हिं० रपटना] तेज दौड़ना।

डपोर-संख—पुं० [अनु० डपोर=बड़ा+संख] १. ऐसा व्यक्ति जो बातें तो लंबी-चौड़ी हाँकता हो पर करता कुछ भी न हो। २. डील-डौल का बड़ा, पर मूर्ख।

डप्पू—वि० [देश०] लंबे-चौड़े आकारवाला।

डफ—पुं० [अं० दफ] १. एक तरह का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा हुआ होता है। २. लावनी गानेवालों का एक तरह का बाजा। चंग।

डफर—पुं० [अं० ड्रापर] जहाज का एक तरफ का पाल।

डफला—पुं० [अं० दफ] डफ नामक बाजा।

पुं० [?] असम देश की एक जंगली जाति।

डफली—स्त्री० [अं० दफ] छोटा डफ। खंजरी।

कहा०—अपनी अपनी-डफली अपना-अपना राग=वह स्थिति जिसमें किसी विषय पर सब लोगों के परस्पर विभिन्न मत हों।

डफार†—स्त्री० [अनु०] १. डफ के बजने का शब्द। २. गला फाड़कर रोने-चिल्लाने से होनेवाला शब्द।

डफारना—अ० [अनु०] गला फाड़कर चिल्लाना या रोना ।

डफालची—पुं०=डफाली ।

डफाली—पुं० [हिं० डफ] १. डफ बजानेवाला व्यक्ति। २. मुसलमानों का एक वर्ग जो डफ बजाने का पेशा करता है ।

डफोरना—अ०=डफारना ।

डब—पुं० [हिं० डब्बा] १. कमर पर पहनी हुई धोती, लुंगी आदि का पल्ला जिसमें रुपए-पैसे आदि लपेटकर रखे जाते हैं ।

मुहा०—(**कोई चीज**) **डब करना**=(क) कमर में खोंसकर या और किसी प्रकार अपने अधिकार या हाथ में करना । (ख) किसी को अपने अधीन या वश में करना । **डब पकड़कर कुछ कराना**=जोर से कुछ काम कराना । जैसे—रुपया कैसे नहीं देगा, डब पकड़कर लूँगा । २. जेब। ३. थैला। ४. वह चमड़ा जिससे कुप्पे बनाये जाते हैं।

डबकना—स० [हिं० डब] दबा या पीटकर कटोरी या कटोरे की तरह गहरा करना ।

अ० १. शरीर के किसी अंग में टीस या रह-रहकर दरद होना । २. लँगड़ाकर चलना ।

अ० [?] आँखों में आँसू भर आना । डबडबाना ।

डबकौंहा—वि० [अनु०] [स्त्री० डबकौंही] (नेत्र) जिसमें आँसू उतर या भर आये हों । डबडबाता हुआ ।

डबडबाना—अ० [अनु०] (नेत्रों का) अश्रुपूर्ण होना । आँसुओं से भर आना।

डबरा—पुं० [सं० दभ्र=समुद्र या झील] [स्त्री० अल्पा० डबरी] १. गंदे पानी का छिछला लंबा गड्ढा। २. वह खेत जिसमें आस-पास का पानी आकर जमा होता हो और इसी लिए जो जड़हन धान बोने के लिए उपयुक्त हो। ३. खेत का वह कोना जो जोताई में यों ही या बिना जोता हुआ छूट गया हो।

डबरी—स्त्री० [हिं० डबरा] छोटा गड्ढा या ताल ।

†स्त्री० दे० 'ढिबरी' ।

डबल—वि० [अं०] १. दोहरा। २. दो-गुना। दूना।

पुं० एक पैसे का ताँबे का पुराना सिक्का।

डबल रोटी—स्त्री० [अं० डबल+हिं० रोटी] खमीर उठाकर पकाई हुई एक प्रकार की बड़ी और मोटी रोटी। पाव रोटी।

डबला—पुं० [देश०] मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़।

डबा†—पुं०=डिब्बा ।

डबिया†—स्त्री०=डिबिया (डिब्बी)।

डबिरना†—स० [देश०] भेड़ें को खेत से बाहर निकालना । (गड़ेरिये)

डबी—स्त्री०=डिब्बी ।

डबुलिया†—स्त्री० [हिं०डिब्बा] छोट पुरवा। कुल्हिया ।

डबोना—स०=डुबाना ।

डब्ब†—पुं०=डब।

डब्बल—पुं०=डबल।

डब्बा—पुं०=डिब्बा।

डब्बू—पुं० [हिं० डिब्बा] खाने की चीजें रखने का एक प्रकार का डिब्बा या ढकनेदार कटोरा। कटोरदान।

डभकना†—अ० [अनु०] १. जल में इस प्रकार बार-बार डूबना-उतराना कि डभ-डभ शब्द हो। २. इतना भर जाना कि बाहर निकलने लगे। छलकना। उदा०—बदन पियर जल डभकहि नैना।—जायसी। ३. जी भरकर कुछ खाना या पीना।

डभका—पुं० [देश०] १. कुछ-कुछ भुना हुआ चना, मटर आदि। कोहरा। २. कूएँ का ताजा या तुरंत का निकाला हुआ पानी।

डभकाना—स० [?] कोई चीज़ इस प्रकार पानी में डुबाना कि डभ-डभ शब्द हो।

डभकौंहा—वि० [अ०] [स्त्री० डभकौंही] डभ-डभ शब्द करता हुआ। २. इतना भरा हुआ कि छलकने लगे। डबडबाता हुआ । जैसे—(आँसुओं से भरी हुई) डभकौंही आँखें ।

डभकौरी—स्त्री०=डुभकौरी ।

डम—पुं० [सं० ड=भीति√मा (मापना)+क] पुराणानुसार लेट पिता और चांडाल माता से उत्पन्न एक वर्ण संकर जाति ।

डमर—पुं० [सं० ड=त्रास+मर=मृत्यु, तृ० त०] १. दो गाँवों के बीच में होनेवाली लड़ाई। २. उत्पात। उपद्रव । ३. हलचल। ४. भगदड़।

डमरु—पुं० [सं० डम√ऋ (प्राप्ति)+कु] १. हाथ से हिलाकर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बीच में पतला होता है और जिसके दोनों सिरे अधिक बड़े तथा चौड़े होते हैं और जिन पर चमड़ा मढ़ा होता है।

विशेष—इसके बीच में गाँठदार दो रस्सियाँ लगी रहती हैं जो चमड़े पर आघात करती हैं जिससे शब्द उत्पन्न होता है ।

२. उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी वस्तु जिसका बीचवाला भाग पतला और दोनों सिरे चौड़े या मोटे हों। दे० 'डमरू-मध्य'। ३. दंडक वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ लघुवर्ण होते हैं।

डमरुआ—पुं० [सं० डमरु] घेवा नामक रोग।

डमरुका—स्त्री० [सं० डमरु+कन्—टाप्] हाथ की एक तरह की तांत्रिक मुद्रा ।

डमरु-मध्य—पुं० [ब० स०] १. कोई ऐसा पदार्थ जिसका मध्य भाग डमरु के मध्य भाग की तरह पतला हो और दोनों सिरे अधिक चौड़े, बड़े या विस्तृत हों। जैसे—भूगोल में जल-डमरु-मध्य, स्थल-डमरु-मध्य। २. स्थल का वह पतला या सँकरा खंड जिसके दोनों ओर लंबे-चौड़े भूखंड हों। दे० 'स्थल-डमरु-मध्य'।

डमरु-यंत्र—पुं० [उपमि० स०] दो हँड़ियों के मुँह जोड़कर बनाया जानेवाला एक उपकरण जिसका उपयोग धातुओं, औषधों आदि के रस फूँकने में होता है। (वैद्यक)

डमरू—पुं० दे० 'डमरु'।

डयन—पुं० [सं० डी (उड़ना) +ल्युट्—अन] १. हवा में उड़ने की क्रिया या भाव । उड़ान। २. पालकी ।

पुं० =डैना (पंख) ।

डर—पुं० [सं० दर] १. मन का वह क्षोभ या विकलता पूर्ण अनुभूति जो किसी प्रकार के उपस्थित या भावी कष्ट, विपत्ति, संकट आदि की आशंका से होती है। २. किसी बड़े या श्रद्धेय व्यक्ति से कुछ कहने अथवा उसके समक्ष उपस्थित होने के संबंध में होनेवाला संकोच। जैसे—दादा

से कुछ कहने में डर लगता है। ३. भविष्य के सम्बन्ध में किसी चिंता के कारण होनेवाली बेचैनी। आशंका। जैसे—हमें डर है कि कहीं लड़का खो न जाय। ४. वह चीज या बात जिससे कोई डरे अथवा किसी को डराया जाय। जैसे—बच्चे को मारना नहीं चाहिए, उसके लिए तो आँख का डर काफी है।

डर-डंबर†—पुं०=मेघ।

डरना—अ० [हिं० डर से] १. किसी उपस्थित या भावी कष्ट, विपत्ति, संकट आदि की आशंका से क्षुब्ध तथा विकल होना। जैसे—बीमारी या मौत से डरना। २. संकोचपूर्वक कुछ करने या कहने से पीछे हटना। जैसे—कचहरी जाने से डरना। उदा०—जेहि तेहि भाँति डरो रहौं, परो रहौं दरबार।—बिहारी। ३. किसी चिंता के कारण बेचैन होना।

संयो० क्रि०—जाना।

*अ० [हिं० डलना] १.=डलना (डाला जाना)। २. पड़ा रहना।

डरपना†—अ०=डरना।

डरपाना†—स०=डराना।

डरपोक—वि० [हिं० डरना+पोंकना] जो (साहस के अभाव के कारण) बहुत जल्दी डर जाता हो। भीरु।

डरपोकना—वि०=डरपोक।

डरवाना—स०=डलंवाना।

†स०=डराना।

डरा†—पुं० [स्त्री० डरी] =डला। उदा०—छिनकु छ्वाइ छबि गुरडरी छलै छबीलैं छैल।—बिहारी।

डराकू†—वि०=डरपोक।

डरा-डरी†—स्त्री० [हिं० डर] बार-बार मन में होनेवाला डर या भय।

डराना—स० [हिं० डरना] ऐसा काम करना जिससे कोई डर जाय। किसी के मन में डर उत्पन्न करना।

†अ०=डरना।

डरापना*—वि०=डरावना।

स०=डरपाना (डराना)।

डरावना—वि० [हिं० डर+आवना (प्रत्य०)] [स्त्री० डरावनी] (चीज या बात) जो दूसरे के मन में डर उत्पन्न करे। भय-कारक। जैसे—डरावनी आँखें, डरावनी रात।

†स०=डराना।

डरावा—पुं० [हिं० डराना] १. ऐसी बात जो किसी को डराने या भयभीत करने के लिए कही जाय।

क्रि० प्र०—दिखाना।

२. पक्षियों आदि को डराकर फलदार वृक्षों, फसलें आदि से दूर रखने के लिए बनाई जानेवाली विकराल आकृति।

डराहुक†—वि०=डरपोक।

डरिया†—स्त्री०=डलिया।

†स्त्री०=छोटी डार या डाल।

डरीला†—वि० [हिं० डार] जिसमें, डारें (डालें या शाखाएँ) हों। जैसे—डरीला पेड़।

† वि०=डरपोक। जैसे—डरीला स्वभाव।

डरैला—वि० [हिं० डर] १. डरानेवाला। डरावना। २. डरपोक।

डल—स्त्री० [सं० तल्ल] १. झील। २. कश्मीर की एक प्रसिद्ध बहुत बड़ी झील का नाम।

†पुं०=डला।

डलई†—स्त्री०=डलिया

डलक—पुं० [सं०] बड़ी डलिया।

डलना—अ० [हिं० डालना का अ० रूप] १. किसी आधान या पात्र में किसी चीज का गिराया, छोड़ा या रखा जाना। डाला जाना। पड़ना। २. किसी आधार या तल पर किसी चीज का गिराया या छोड़ा जाना। जैसे—बालों में तेल डलना। ३. किसी चीज का दिया, रखा या सौंपा जाना। जैसे—(क) चिड़ियों को दाना डलना। (ख) शस्त्र या हथियार डलना। ४. किसी कार्य या बात का किसी के जिम्मे किया जाना। पड़ना। जैसे—किसी के सिर कोई भार डलना। ५. पहना या पहनाया जाना। ६. किसी चीज का लटकाया जाना। ७. लगना या लगाया जाना। ८. घुसाया या घुसेड़ा जाना। ९. किसी चीज के ऊपर उसको ढकने के उद्देश्य से कुछ ओढ़ाया, पसारा या फैलाया जाना। १०. अंकित होना या किया जाना।

डलवा†—पुं०=डला (बड़ी डलिया)।

डलवाना—स० [हिं० 'डालना' का प्रे०] डालने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ डालने में प्रवृत्त करना।

डला—पुं० [सं० दल] [स्त्री० अल्पा० डली] किसी जमी हुई या ठोस चीज का टुकड़ा। जैसे—नमक या मिश्री का डला; पत्थर या मिट्टी का डला।

पुं० [सं० डलक] [स्त्री० अल्पा० डलिया] बाँस, बेंत आदि की पतली फट्टियों या कमचियों से बनाया हुआ बड़ा आधान या पात्र जो प्रायः थाल के आकार का होता है।

डलिया—स्त्री० [हिं० डला का स्त्री० अल्पा०] १. छोटा डला या टोकरा। दौरी। २. एक प्रकार की तश्तरी।

डली—स्त्री० [हिं० डला का स्त्री० रूप] १. छोटा टुकड़ा या ढेला। खंड। जैसे—नमक की डली। २. सुपारी।

स्त्री०=डलिया ('डला' का अल्पा० रूप)।

डल्लक—पुं० [सं०] बाँसों आदि का डला या दौरा।

डल्ला†—पुं०=डला।

डवँरू—पुं०=डमरु।

डवरा—पुं० [?] एक तरह का कटोरा।

डवित्थ—पुं० [सं०] काठ का बना हुआ हिरन (खिलौना)।

डस—स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार की शराब। २. वह डोरी जिसमें तराजू के पलड़े-बँधे रहते हैं। ३. कपड़े के थान का वह छोर जिसमें ताने-बाने के पूरे तागे नहीं कसे रहते। छीर। दसी।

†स्त्री०=डसन।

डसन—स्त्री० [हिं० डसना] १. डसने की क्रिया या भाव। २. डसने या डंक मारने का ढंग।

डसना—स० [सं० दंशन] १. किसी जहरीले कीड़े का किसी को इस प्रकार काटना कि उसके शरीर में जहर का प्रवेश हो जाय। जैसे—साँप का डसना। २. डंक मारना।

डसवाना—स०=डसाना ।

डसा†—पुं० [सं० दंश] डाढ़। चौभड़।

डसाना†—स० [हिं० डसना का प्रे०] किसी को डसने में प्रवृत्त करना।

†स० [हिं० डासना] बिछौना बिछाना। उदा०—जागे पुनि न डसैं-हौं।—तुलसी ।

डसी†—स्त्री० [?] १. पहचान कराने के लिए रखी या दी जानेवाली चीज। निशानी । २. याद कराने के लिए दी जानेवाली चीज । निशानी।

†स्त्री० दे० 'दसी'।

डस्टर—पुं० [अं०] कुरसी, मेज, दरवाजों आदि की धूल झाड़ने का कपड़ा। झाड़न ।

डहँक—वि० [?] पाँच और एक। छः। (दलाल)

डहँकलाय—वि० [?] सोलह। (दलाल)

डहकन—स्त्री० [हिं० डहकना] डहकने की क्रिया या भाव।

†वि० जितना चाहिए उतना। भर-पूर। यथेष्ट।

डहकना—अ० [हिं० डह-डह से] १. कलियों, फूलों आदि का विकसित होना। फूलना। २. शोभा से युक्त होकर अच्छी तरह चारों ओर फैलना। जैसे—पूर्णिमा की रात में चाँदनी डहकना। ३. हुंकार भरते हुए गरजना। ४. डह-डह शब्द करते हुए जोर से रोना। ५. किसी प्रकार के धोखे या लालच में पड़कर कष्ट या हानि उठाना। ठगा जाना।

स० १. छल या धोखा करना। भुलावे में रखकर मूर्ख बनाना। २. ललचाकर भी न देना।

अ० [देश०] छितराना। फैलाना।

डहकाना—अ० [हिं० डहकना] किसी के धोखे या भुलावे में आकर कुछ गवाँना या अपनी हानि करना। ठगा जाना।

स० १. किसी को धोखे में रखकर अपना लाभ करना। डहकना। (क्व०) २. कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर भी न देना।

डहडहा—वि० [डह-डह से अनु०] [स्त्री० डहडही] १. (पौधा) जो हरा-भरा हो। जो सूखा या मुरझाया हुआ न हो। २. (व्यक्ति) जो खूब प्रसन्न हो। ३. टटका। ताजा।

डहडहाट*—स्त्री० [हिं० डहडहा] १. डहडहे होने की अवस्था या भाव। २. हरियाली। ३. प्रसन्नता।

डहडहाना—अ० [हिं० डहडहा] १. हराभरा होना। लहलहाना। २. आनंदित या प्रफुल्लित होना।

स० १. लहलहा या हरा-भरा करना। जैसे—एक ही वर्षा ने पेड़, पौधों को डहडहा दिया। २. आनन्दित या प्रफुल्लित करना।

डहडहाव—पुं०=डहडहाट।

डहन—पुं० [सं० उड्डयन=उड़ना] डैना। पंख। पर।

†पुं०=दहन।

†स्त्री०=डाह। (क्व०)

डहना—अ० [सं० दहन] १. जलना। भस्म होना। २. कुढ़ना। चिढ़ना।

स० १. भस्म करना। जलाना। २. किसी के मन में कुढ़न या डाह उत्पन्न करना। डाहना।

†पुं०=डैना (पंख या पर)।

डहर—स्त्री० [हिं० डगर] १. पथ। मार्ग। रास्ता। २. आकाश-गंगा।

डहरना—अ० [हिं० डहर] १. रास्ता चलना। २. टहलना।

डहराना—स०=चलाना।

डहरिया†—स्त्री० १.=डेहरी। २. दहलीज।

डहार*—पुं० [हिं० डाहना] १. ईर्ष्या करनेवाला व्यक्ति। ईर्ष्यालु। २. दुःख देने या संतप्त करनेवाला व्यक्ति। ३. ऐसी घटना या बात जिससे कोई दुःखी या संतप्त होता हो।

डहुडहु—पुं० [सं० डहु-डहु, √दह् (जलाना)+कु, निपा० सिद्ध] १. लकुच। २. बड़हर।

डाँक—स्त्री० [हिं० दमक, दवँक] ताँबे या चाँदी का कागज की तरह का वह पतला पत्तर जो नगीनों के नीचे उनकी चमक बढ़ाने के लिए लगाया जाता है।

स्त्री० [हिं० डाँकना] १. डाँकने या लाँघने की क्रिया या भाव। २. कै। वमन।

†स्त्री०=डाक।

†पुं० १.=डंक। २.=डंका।

डाँकना—स० [सं० √तक से] १. रास्ते में पड़ी हुई किसी चीज अथवा होनेवाले किसी गड्ढे को कूदते हुए लाँघना। २. (खेल में) किसी रोक को दौड़ते तथा कूदते हुए पार करना। जैसे—रस्सी डाँकना। ३. बीच का कुछ अंश छोड़ते हुए उसके आगे या पार जाना।

अ० [हिं० डाँक] वमन करना। उलटी करना।

डाँग†—स्त्री० [सं० टंक] १. किसी चीज का ऊपरी बड़ा या भारी भाग। २. पहाड़ की ऊँची चोटी। ३. पहाड़ी। ४. जंगल। वन। ५. उछल-कूद। ६. छलाँग। फलाँग। ७. कोई उद्देश्य सिद्ध होने का अवसर या सुयोग जिसकी प्रतीक्षा में रहा जाय। ताक। (बुन्देल०) उदा०—सागर सिंह इसी डाँग में हैं।—वृन्दावनलाल। ८. बहुत बड़ा डंडा या लाठी। सोंटा। (पश्चिम)

डाँगर—वि० [?] १. इतना दुबला-पतला कि शरीर की हड्डियाँ तक दिखाई दें। २. बेवकूफ। मूर्ख।

पुं० १. चौपाया। डंगर। २. मरा हुआ पशु या उसकी लाश। (पूरब) ३. एक प्रकार की छोटी जाति।

डाँगा—पुं० [सं० दंडक] १. जहाज के मस्तूल में रस्सियों को फैलाने के लिए आड़ी लगी हुई धरन। २. लंगर के बीच का मोटा छड़। (लश०)

डाँट—स्त्री० [सं० दान्ति=दमन, वश] १. किसी को डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। २. क्रोध में आकर कही जानेवाली ऐसी कड़ी बात जो भविष्य में किसी को सचेत रखने के लिए कही जाय।

क्रि० प्र०—बताना।

३. उक्त प्रकार की बातें करते हुए किसी की उच्छृंखलता, उद्दंडता आदि नियंत्रित रखने के लिए उसके साथ किया जानेवाला आतंकपूर्ण व्यवहार। जैसे—लड़कों को डाँट में रखना।

क्रि० प्र०—मानना।

मुहा०—किसी को डाँट में रखना=वश या शासन में रखना।

डाँटना—स० [हिं० डाँट से] क्रोध में आकर किसी दोषी को कोई कड़ी बात ऊँचे स्वर में कहना ।

सं० क्रि० —देना ।

डाँठ—पुं० [सं० दंड] डंठल।

डाँड़—पुं० [सं० दंडक; प्रा० दंडअ] १. लड़की का डंडा विशेषतः सीधा डंडा । जैसे—झंडे का बाँस, छत की धरन आदि। २. किसी चीज में उसे चलाने, पकड़ने आदि के लिये लगा हुआ डंडा। दस्ता। हत्था। ३. नाव खेने का डाँड़। ४. गदका। ५. कोई ऐसी चीज जो एक सीध में चली गई हो। जैसे—रेखा, मेंड़, रीढ़ की हड्डी आदि। ६. करघे में वह ऊँची लकड़ी जिसमें ऊरी फँसाई जाती है। ७. ऊँचा स्थान। ८. समुद्र का ढालुआँ रेतीला किनारा। ९. सीमा। हद। १०. वह मैदान जिसमें का जंगल कट गया हो। ११. कमर। १२. क्षति-पूर्ति के रूप में दिया जानेवाला धन या वस्तु। दंड। १३. अर्थ-दंड। जुरमाना। १४. दे० 'कट्ठा' (लम्बाई का मान)।

डाँड़ना—स० [हिं० डाँड़+ना (प्रत्य०)] अर्थ-दंड से दंडित करना। जुरमाना करना ।

†स०=डाँटना ।

डाँड़र—पुं० [हिं० डाँठ] बाजरे की फसल कट जाने पर खेत में बची रह जानेवाली उसकी खूँटी ।

डाँडा—पुं० [हिं० डाँड] १. डंडा। २. वह बड़ा डंडा जिसके आगे चप्पू लगा रहता है और जिसकी सहायता से नाव खेते या चलाते हैं। डाँडा। ३. सीमा। हद।

पद—डाँडा मेंड़ा=। (देखें) **होली का डाँडा**= लकड़ियों और घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली की रात को जलाने के लिए पहले से ही अपने गाँव या मुहल्ले की सीमा पर इकट्ठा किया जाता है।

४. समुद्र का ढालुआँ रेतीला किनारा। (लश०)

डाँडा-मेंड़ा—पुं०[हिं० डाँड+मेंड़] १. खेत, गाँव आदि की वह सीमा या हद जिस पर डाँडा या मेंड़ बनी हो । २. ऐसी स्थिति जिसमें न तो विशेष आर्थिक लाभ ही हो और न विशेष हानि ही। जैसे—हम तो समझते थे कि इस सौदे में बहुत घाटा होगा; पर चलो, डाँडे-मेंड़े रह गये। ३. बीच की ऐसी स्थिति जिसमें आपस के लड़ाई-झगड़े का उतना ही अवकाश या संभावना हो जितना अवकाश खेतों या डाँडों का साथ-साथ या एक ही जगह पड़ने से होता है।

डाँड़ा-मेड़ी—स्त्री०=डाँड़ा-मेंड़ा।

डाँड़ा-सहेल—पुं० [देश०] साँपों की एक जाति।

डाँड़ी—स्त्री०[हिं० डाँड़]१. पतली लंबी लकड़ी। २. वृक्ष आदि की पतली लंबी शाखा। टहनी। ३. पौधों का वह लंबा डंठल जिसमें फूल, फल आदि लगते हैं। ४. व्यवहार में लाये जानेवाले उपकरणों का वह पतला लंबोतरा अंश, जिसे पकड़कर उस उपकरण को चलाया या हिलाया-डुलाया जाता है। जैसे—कलछी या पंखे की डाँड़ी। ५. तराजू की डंडी। ६. हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है। ७. डंडे में बँधी हुई एक तरह की झोली के आकार की पहाड़ी सवारी। झप्पान। ८. जुलाहों की वह लकड़ी जो चरखी की थवनी में डाली जाती है। ९. शहनाई का वह निचला भाग जिसमें से हवा बाहर निकलती है। १०. सीधी रेखा। ११. मर्यादा। १२. चिड़ियों के बैठने का अड्डा। उदा० —औ सोनहा सोने की डाँड़ी।—जायसी। १३. अनवट नामक गहने का वह भाग जो दूसरी और तीसरी उँगलियों के बीच में रहता है और उसे घूमने से रोकता है।

पुं० १. डाँड़ खेनेवाला आदमी। (लश०) २. सुस्त आदमी।

डाँढ़री—स्त्री० [सं० दग्ध; हिं० डाढ़ा] मटर की भुनी हुई फली।

डाँबरा—पुं० [सं० डिंब] [स्त्री० डाँबरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डाँबरू—पुं० [हिं० डाँबरा] १. लड़का। पुत्र। २. बाघ का बच्चा।

†पुं०=डमरु।

डाँबू—पुं० [देश०] दलदल में होनेवाला एक तरह का नरकट।

डाँभना†—स०=दागना।

डाँरी†—स्त्री०=डोली।

डाँवरा—पुं० [स्त्री० डाँवरी] =डाँबरा।

डाँवाँ-डोल—वि० [डाँवाँ (अनु०)+हिं० डोलना] १. साधारणतया अचल या स्थिर रहनेवाली वस्तु के संबंध में, जो सहसा किसी आघात के फलस्वरूप इधर-उधर हिलने-डुलने लगे। जैसे—हिलोर के कारण नाव या भूकंप के कारण पृथ्वी का डाँवाँडोल होना। २. व्यक्ति अथवा उसके चित्त के संबंध में, जो अधिक चिंतित या भावुक होने के कारण किसी निश्चय तक न पहुँच पाता हो। ३. स्थिति के संबंध में, जिसमें दो विभिन्न पक्षों में संतुलन न होने के कारण किसी परिणाम का ठीक-ठीक अनुमान न होता हो। जैसे—व्यापार का डाँवाँडोल होना।

डांशपाहिड़—पुं० [देश०] संगीत में रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक जिसमें ५ आघात के पश्चात् एक-एक शून्य होता है।

डाँस—पुं० [सं० दंश] १. बड़ा मच्छर। दंश। २. एक तरह की मक्खी जो पशुओं को काटती तथा उन्हें तंग करती है। ३. कुकरौंछी।

डाँसर—पुं०[देश०] इमली का बीज। चीयाँ।

डा—पुं० [अनु०] सितार का एक बोल। उदा०—डा डिड़ डा ड़ा डा डा ड़ा।

डाइन—स्त्री०[सं० डाकिनी] १. भूत-प्रेत योनि की स्त्री। भूतनी। २. वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से कोई मर जाता हो या बीमार पड़ जाता हो। टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री। ४. बहुत ही दुष्ट प्रभाववाली तथा क्रूर स्त्री।

डाक—स्त्री०[हिं० डाँकना] १. डाँकने की क्रिया या भाव। २. सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान आदि बदले जाते हों।

मुहा०—डाक बैठाना=शीघ्र यात्रा के लिए स्थान-स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना। **डाक लगना**=(क) शीघ्र संवाद पहुँचाने या यात्रा करने के लिए मार्ग में स्थान-स्थान पर आदमियों या सवारियों का प्रबन्ध होना। (ख) किसी चीज के आने या जाने का क्रम बराबर चलता रहना। **डाक लगाना**=डाक बैठाना।

३. पत्रों, बंडलों आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने की सरकारी व्यवस्था। ४. उक्त व्यवस्था द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने या पहुँचाया जानेवाला पत्र या सामग्री।

स्त्री०[अनु०] कै। वमन।

स्त्री०[सं० डक्क या बं० डाकिबा] १. पुकार। २. नीलाम की बोली।

पुं०[अं०] बंदरगाह का वह विशिष्ट अंश जहाँ जहाजों पर का माल लादा-उतारा जाता है। गोदी।

डाक-खाना—पुं० [हिं० डाक+फा० खानः] वह सरकारी कार्यालय या उसके भवन जो डाक द्वारा चिट्ठियाँ आदि बाहर भेजवाने तथा बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ आदि बँटवाने की व्यवस्था करता है।

डाक-गाड़ी—स्त्री०[हिं०] वह रेल-गाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है, केवल बड़े-बड़े स्टेशनों पर रुकती है तथा जिसमें डाक लाने ले जाने की भी व्यवस्था होती है।

डाकघर—पुं०=डाकखाना।

डाक-चौकी—स्त्री०[हिं०] १. प्राचीन तथा मध्य काल में वह स्थान जहाँ कई स्थानों या प्रदेशों के हरकारे चिट्ठियाँ लाते थे तथा अन्य स्थानों से आई हुई चिट्ठियाँ छाँटकर ले जाते थे। २. वह स्थान जहाँ डाक के घोड़े, सवारियाँ आदि आगे जाने के लिए बदली जाती थीं।

डाकना—स०[हिं० डाँकना] फाँदना। लाँघना।

अ० कै करना। वमन करना।

†स०[हिं० डाक] १. पुकारना। २. नीलाम के समय दाम की बोली बोलना।

डाक-बँगला—पुं०[हिं०] वह सरकारी भवन जो मुख्य रूप से दौरे पर जानेवाले सरकारी अधिकारियों के ठहरने के लिए बने होते हैं।

डाक-महसूल—पुं०[हिं० डाक+अ० महसूल] डाक के द्वारा कोई चीज भेजने का महसूल।

डाकर—पुं०[देश०] १. सूखे हुए तालों की चिटखी तथा सूखी मिट्टी। †२. कड़ी किंतु उपजाऊ भूमि।

डाक-व्यय—पुं०[हिं० डाक+सं० व्यय]वह व्यय जो डाक द्वारा कोई चीज भेजने पर करना पड़ता हो। डाक-महसूल।

डाका—पुं०[हिं० डाकना=कूदना वा सं० दस्यु] दल-बल-सहित बल-पूर्वक तथा डरा-धमकाकर लूट-मार करने के लिए किया जानेवाला धावा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मारना।

डाकाजनी—स्त्री०[हिं० डाका+फा० जनी] डाके डालने का काम।

डाकिन—स्त्री०=डाकिनी।

डाकिनी—स्त्री० [सं० ड (त्रास) √अक् (वक्रगति)+णिनि—ङीप्] १. एक पिशाची या देवी जो काली के गणों में समझी जाती है। २. भूत या प्रेत योनि की स्त्री।

डाकिया—पुं०[हिं० डाक+इया (प्रत्य०)] वह सरकारी कर्मचारी जो घर-घर डाक द्वारा आई हुई चिट्ठियाँ आदि पहुँचाने का काम करता है।

डाकी—स्त्री०[हिं० डाक] वमन। कै।

वि० [?] १. बहुत अधिक खानेवाला। २. प्रचंड।

डाकू—पुं०[हिं० डाकना या सं० दस्यु] वह व्यक्ति जो दूसरों के यहाँ पहुँचकर और उन्हें डरा-धमकाकर या मार-पीटकर उनसे अवैध रूप से धन छीन लेता हो।

डाकोर—पुं० [सं० ठक्कुर; हिं० ठाकुर] १. ठाकुर। देवता। २. विष्णु भगवान। (गुजराती)

डाक्टर—पुं०[अं०] १. किसी विद्या या विषय का आचार्य या पूर्ण पंडित। २. उक्त प्रकार के आचार्य या पूर्ण पंडित की उपाधि। ३. लोक-व्यवहार में वह व्यक्ति जो पाश्चात्य शैली से रोगियों की चिकित्सा करता हो। ४. वह व्यक्ति जिसे उक्त प्रकार की उपाधि मिली हो।

डाक्टरी—स्त्री० [अं० डाक्टर+ई (प्रत्य०)] १. डाक्टर होने की अवस्था, पद या भाव। २. डाक्टर का काम या पेशा। ३. पाश्चात्य ढंग की चिकित्सा-प्रणाली या उसका शास्त्र।

डाक्तर—पुं०=डाक्टर।

डाख†—पुं०=ढाक (पलाश)।

डाग—स्त्री०[सं० दंडक] डुग्गी, ढोल, नगाड़ा आदि बजाने की लकड़ी।

मुहा०—डाग देना=डुग्गी,नगाड़े आदि पर चोट लगाकर उनसे शब्द उत्पन्न करना।

डागरि—स्त्री०=डगर।

डागा—पुं०=डाग।

डागुर—पुं०[देश०] जाटों की एक जाति या वर्ग।

डाच—पुं० [?] मुँह। मुख। उदा०—बबक्कत डाच कितेकन बैन। मनों बड बक्कर टक्कर मैन।—कविराजा सूर्यमल।

डाट—स्त्री०[सं० दान्ति] १. दीवार या ऐसी ही किसी और चीज को गिरने से बचाने या रोकने के लिए सामने या वेड़े बल में लगाई जानेवाली चाँड़ या रोक। २. किसी चीज का छेद या मुँह बन्द करने के लिए उसमें कसकर जमाई, बैठाई या लगाई जानेवाली वस्तु। ३. वह ईंट या पत्थर जो मेहराब के बीचों-बीच दोनों ओर की ईंटों आदि को यथा-स्थान दृढ़तापूर्वक जमाये रखने के लिए लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।

४. मेहराब बनाने का वह प्रकार जिसमें दोनों ओर अर्ध-गोलाकार रूप में ईंटें जोड़ी या बैठाई जाती हैं।

†स्त्री० दे० 'डाँट'।

डाटना—स०[हिं० डाट+ना (प्रत्य०) १. दीवार आदि को गिरने से रोकने के लिए उसमें डाट लगाना। टेक लगाना। २. किसी चीज का छेद या मुँह डाट लगाकर बंद करना। ३. एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु अच्छी तरह जमाकर बैठाना या स्थिर करना। जैसे—किसी की ओर निगाह डाटना। ४. कोई चीज अंदर घुसाने या धँसाने के लिए उस पर भरपूर दबाव डालना। ५. कसकर ठूसना, दबाना या भरना। ६. खूब अच्छी तरह पेट भरकर कोई चीज खाना। (व्यंग्य) ७. ठाठ से या शान दिखलाने के लिए कपड़े, गहने आदि पहनना। जैसे—अँगरखा या अँगूठी डाटना। (व्यंग्य)

अ० १. डटकर सामने बैठना। २. ठाठ या वेष बनाना।

स० दे० 'डाँटना'।

डाड़ना—स० दे० 'डाँड़ना'।

अ० दे० 'दहाड़ना'।

डाढ़†—स्त्री०=दाढ़।

डाढ़ना†—स०[सं० दग्ध,प्रा०डड्ढ+ना (प्रत्य०)]=दाहना (जलाना)।

डाढ़ा—पुं० [सं० दग्ध प्रा० डड्ढ] १. दावानल। वन की आग। २. अग्नि। आग। ३. जलन। ताप। ४. दे० 'दाह'।

†पुं०=दाढ़ा (बड़ी दाढ़ी)।

डाढ़ी†—स्त्री०=दाढ़ी। (देखें)

डाढ़ीजार†—पुं० दे० 'दारी-जार'।

डाण†—पुं०=डाँड (दंड या अर्थ-दंड)।

डाब†—स्त्री०=डाभ।

डाबक—वि०=डाभक।

डाबर—पुं०[सं० दभ्र=समुद्र या झील] १. वह गड्ढा या नीची जमीन जिसमें आस-पास का पानी विशेषतः बरसाती पानी आकर जमा होता हो। झाँवर। ऐसी जमीन धान के लिए उपयुक्त होती है। २. छोटा तालाब। ३. गंदा या मैला पानी। ४. चिलमची नामक पात्र जिसमें हाथ-मुँह धोने का पानी रहता है।

†वि० १. गँदला। २. मटमैला।

पुं० डावरा।

डाबर-नैनी—वि० [हिं०] बड़ी-बड़ी और सुंदर आँखोंवाली (स्त्री)।

डाबा†—पुं०[स्त्री० डाबी] =डिब्बा।

डाबी—स्त्री०[?] १. फसल का दसवाँ अंश जो मजदूरी के रूप में काटनेवाले मजदूर को दिया जाता है। २. कटी हुई घास, पुआल आदि का पूला।

†स्त्री०=डिबिया।

डाभ—स्त्री०[सं० दर्भ] १. ऊसर भूमि में होनेवाली एक तरह की घास। २. कुश। दर्भ। ३. आम के वृक्ष के वे आरंभिक अंकुर जो कुछ समय बाद मंजरी के रूप में आते हैं। टोंस। मौर। ४. आम की ढेपनी या मुँह से निकलनेवाला तीखा रस। चोप। उदा०—जो लहि अंबहि डाभ न होई।—जायसी। ५. कच्चा नारियल जिसके अन्दर का पानी बहुत गुणकारक और स्वादिष्ट होने के कारण पीया जाता है।

†पुं०[हिं० डब=कमर] कमर में बाँधा जानेवाला परताला।

डाभक†—वि० [अनु० डभक-डभक से अनु०] कूएँ से तुरंत का निकाला हुआ। ताजा। जैसे—डाभक पानी।

डाभर—पुं०=डावर(बरसाती पानी का गड्ढा)।

डाम—पुं०=दाम।

डामचा—पुं०[देश०] वह मचान जिस पर बैठकर जंगली पशु-पक्षियों से फसल की रक्षा की जाती है।

डामर—पुं०[सं०] १. शिव-प्रणीत माना जानेवाला एक तंत्र, जिसके छः भेद हैं—योग डामर, शिव डामर, दुर्गा डामर, सारस्वत डामर, ब्रह्म डामर और गंधर्व डामर। २. प्राचीन भारत में एक प्रकार का चक्र जिसके द्वारा दुर्ग के शुभाशुभ फल जाने जाते थे। ३. धूम-धाम। ४. आडंबर। ५. ठाठ-बाट। ६. हलचल। ७. चमत्कार। ८. उनचास क्षेत्रपाल भैरवों में से एक भैरव का नाम। ९. साल वृक्ष का गोंद। राल। १०. दक्षिण भारत में होनेवाला एक प्रकार का सफेद गोंद। ११. एक प्रकार की छोटी मधु-मक्खी। १२. उक्त छोटी मधुमक्खियों के छत्ते से निकलनेवाला एक प्रकार का गोंद या राल। १३. अलकतरा।

†पुं० दे० 'डामल'।

पुं०=डाबर (बरसाती पानी का गड्ढा)। उदा०—यह सच है कि मनोहर बोला तुम उथले पानी के डामर।—पन्त।

डामल—पुं०[अ० दायमुल्दव्स] १. सदा के लिए बंदी बनाकर रखने की सजा। २. अपराधियों को दिया जानेवाला देश-निकाले का दंड।

डामाडोल—वि०=डाँवाँडोल।

डामिल—पुं०=डामल।

डायँ डायँ—क्रि० वि०[अनु०] बिना किसी काम या प्रयोजन के। व्यर्थ। जैसे—दिन भर डायँ-डायँ घूमते रहना।

डायन—स्त्री०=डाइन।

डायरी—स्त्री०[अं०] दैनिकी।

डार†—स्त्री०=डाल।

स्त्री०[सं० डलक] डलिया।

डारना†—स०=डालना।

डारा—पुं०[हिं० डाल] १. वह रस्सी जिस पर कपड़े लटकाये या सुखाये जाते हैं। २. किसी प्रकार का आधार या आश्रय। सहारा।

मुहा०—(किसी के) डारे लगना=किसी के सहारे पर चलना या होना। उदा०—सौंधे के डारे लगी, अली, चली सँग जाइ।—विहारी।

डारियास—पुं०[देश०] वावून वंदर की एक जाति।

डारी—स्त्री०=डार।

डाल—स्त्री०[सं० दारु=लकड़ी] १. पेड़-पौधे आदि के तने में से निकला हुआ वड़ा अंग जिसमें फल, फूल आदि लगते हैं। टहनी। शाखा।

पद—डाल का टूटा=(क) डाल से पककर गिरा हुआ (फल)। (ख) बिलकुल तुरंत या हाल का। बिलकुल नया आया हुआ। ताजा। जैसे—डाल का टूटा हुआ स्नातक। (ग) जिसे अभी तक विशेष अनुभव या ज्ञान न हुआ हो। (घ) अनोखा। विलक्षण। **डाल का पका**=(फल) जो पेड़ की डाल में लगे रहने की दशा में पका हो। उससे उतारकर पाल में न पकाया गया हो।

२. किसी चीज में से निकली हुई उक्त आकार-प्रकार की कोई शाखा। जैसे—झाड़ या फानूस की डाल जिसमें गिलास लगाये जाते हैं। ३. तलवार का फल जो शाखा के रूप में आगे की ओर निकला रहता है। ४. मध्य भारत और मारवाड़ में पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना।

स्त्री० [सं० डलक; हिं० डला] १. फल-फूल आदि रखने की डलिया। चँगेरी। २. वे कपड़े, गहने, फल आदि जो विवाह के समय किश्तियों, चँगरों आदि में सजाकर लड़कीवालों के यहाँ वधू के लिए भेजे जाते हैं।

डालना—स०[हिं० तलन] १. किसी आधान या पात्र में कोई चीज कुछ ऊँचाई से गिराना, छोड़ना, फेंकना या रखना। जैसे—(क) गिलास में पानी डालना (ख) कड़ाही में घी डालना। २. किसी आधान या पात्र में कोई चीज प्रायः सुरक्षा के उद्देश्य से भरना या रखना। जैसे—(क) झोले में पुस्तकें या बोरे में गेहूँ डालना। (ख) संदूक में कपड़े डालना। (ग) कैदी को जेल में डालना। ३. कोई चीज किसी आधार या तल पर गिराना, छोड़ना या फेंकना। जैसे—(क) पेड़ की जड़ में पानी डालना। (ख) सिर या बालों में तेल डालना। ४. कोई चीज किसी को देने या सौंपने के उद्देश्य से उसके आगे रखना या गिराना। जैसे—(क) विजयी के आगे हथियार डालना। (ख) कुत्ते या बिजली को रोटी डालना। ५. लाक्षणिक अर्थ में, कोई काम या बात किसी के जिम्मे करना। जैसे—किसी पर खरच या काम का वोझ डालना। ६. कोई चीज किसी को पहनाना। जैसे—(क) हाथ में चूँड़ियाँ या पैर में जूता डालना। (ख) कन्या का वर के गले में जय-माल

डालना। ७. कोई चीज किसी पर से या किसी में लटकाना। जैसे—(क) पेड़ की डाली जर झूला डालना। (ख) पानी निकालने के लिए कूएँ में बाल्टी डालना। ८. कोई चीज किसी में लगाना। जैसे—आँखों में कज्ज़ल या सुरमा डालना। ९. घुसाना। घुसेड़ना। १०. किसी चीज को ढकने के लिए उसके ऊपर कोई दूसरी चीज फैलाना। जैसे—(क) सिर पर चादर डालना। (ख) आग पर पानी या राखी डालना। ११. वस्त्र आदि फैलाना। जैसे—(क) बिछे हुए गद्दे पर चादर डालना। (ख) टंगने पर सूखने के लिए गीली धोती डालना। १२. (स्त्री को रखेली के रूम में) घर में रख लेना। १३. परित्याग करना। १४. पशुओं के सम्बन्ध में गर्भपात करना। १५. किसी मद या विभाग में सम्मिलित करना। जैसे—खाते में किसी के नाम रकम डालना।

विशेष—संयोज्य क्रिया के रूप में 'डालना' कुछ सकर्मक क्रियाओं के साथ लगकर यह सूचित करता है कि कर्त्ता वह काम या क्रिया पूरी तरह से समाप्त करके उससे अलग या निवृत्त हो चुका है अथवा वह काम या चीज उसने अपने से बिलकुल अलग या दूर कर दी है। जैसे—खा डालना, दे डालना, बेच डालना, मार डालना आदि।

डालर—पुं०[अं०] एक अमेरिकन सिक्का जो भारतीय ३ रुपयों से कुछ अधिक मूल्य का होता है।

डाला†—पुं०[हिं० डला] बड़ी चँगेर या डलिया।

डाला छठ—स्त्री०[हिं०] कार्तिक शुक्ला छठ, जिस दिन बड़ी चँगेर में फल आदि रखकर उदित होते हुए सूर्य की पूजा की जाती है।

डालिम—पुं०=दाडिम (अनार)।

डाली—स्त्री०[हिं० डाला या डला] १. छोटा डला या डाला। डलिया। २. वह डलिया जिसमें कोई चीज विशेषतः फल, फूल, मिठाइयाँ आदि रखकर किसी के यहाँ उपहार या भेंट स्वरूप भेजी जाती हैं। ३. उक्त प्रकार से भेजा जानेवाला उपहार या भेंट।

क्रि० प्र०—भेजना।—लगाना।

४. दाँई हुई फसल का अनाज हवा में उड़ाकर भूसे से अलग करने की क्रिया या भाव। ओसाने या बरसाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

स्त्री०[हिं० डाल] वृक्ष की छोटी या पतली टहनी।

डावा†—पुं०[हिं० दाँव का पुराना रूप] १. दाँव। बाजी। २. अवसर। मौका। उदा०—राम भगति बिनु जम को डाव।—कबीर।

डावड़ा—पुं०[देश०] पिठवन। पृश्नपर्णी।

पुं०[स्त्री० डावड़ी] =डावरा (लड़का)।

डावरा—पुं०[सं० डिंब ?] [स्त्री० डावरी] १. पुत्र। बेटा। २. बालक। लड़का।

डास—पुं०[देश०] चमारों का एक औजार जिससे वे चमड़े का निचला भाग खुरचकर साफ करते हैं।

डासन—पुं०[सं० दर्भ, हिं०डाभ+आसन] १. वह चीज जिसे बिछाकर उसके ऊपर बैठा जाय। २. बिछौना। ३. शय्या।

पुं०[हिं० डसना] वह जो डसे अर्थात् सर्प। उदा०—डासन डासन भयउ पियारी।—जायसी।

डासना—स० दे० 'बिछाना'।

स०=डसना।

डासनी—स्त्री०[हिं० डासन] चारपाई। शय्या।

डाह—स्त्री०[सं० दाह] १. मन में होनेवाली वह जलन जो ईर्ष्याजन्य हो। २. ईर्ष्या। (देखें)

डाहना—स० [सं० दाहन] १. किसी के मन में डाह उत्पन्न करके उसे दुःखी करना। २. बहुत अधिक कष्ट देना या दुःखी करना। दाहना।

डाहुक—पुं०[देश०] टिटिहरी की तरह का एक जल-पक्षी।

डिंगर—पुं०[सं० डंगर+पृषो० सिद्ध] १. मोटा आदमी। २. दुष्ट या नीच प्रकृति का आदमी। ३. गुलाम। दास।

पुं० दे० 'ठिंगुरा'।

डिंगल—स्त्री०[?] मध्ययुग में राजस्थान में बोली जानेवाली एक भाषा जिसमें यथेष्ट साहित्य मिलता है।

वि०[सं० डिंगर] दूषित और नीच।

डिंगसा—पुं०[देश०] एक तरह का चीड़ (वृक्ष)।

डिंडस—पुं० [सं० टिंडिश] टिंडा। डेंड़सी।

डिंडिभ—पुं०[सं०] जल में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

डिंडिम—पुं०[सं० डिंडि√मा (मापना)+क] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की डुग्गी। २. करौंदे की झाड़ी और उसका फल।

डिंडिमी—स्त्री०=डिंडिम।

डिंडिर—पुं०[सं०=हिंडिर, पृषो० सिद्धि] १. समुद्र फेन। २. पानी की झाग।

डिंडिर-मोदक—पुं०[सं० उपमि० स०] १. गाजर। २. लहसुन।

डिंडिश—पुं०[सं०] टिंडा। डेंड़सी।

डिंब—पुं०[सं०√डिंब् (प्रेरणा)+घञ्] १. भयभीत होकर मचाई जानेवाली पुकार। २. दंगा। फसाद। ३. कोलाहल। शोर। ४. तिल्ली। प्लीहा। ५. फुफ्फुस। फेफड़ा। ६. गेंद। ७. पक्षियों, मछलियों आदि का अंडा। ८. स्त्री के गर्भ की वह आरंभिक अवस्था जिसमें जीव केवल अंडे के रूप में रहता है। ९. गर्भाशय।

डिंब-युद्ध—पुं०[मध्य० स०] लोगों में होनेवाली आपसी मार-पीट या लड़ाई। (सैनिक युद्ध से भिन्न)

डिंबाशय—पुं०[सं०] स्त्री जाति के जीवों में वह भीतरी अंग जिसमें डिंब रहता या उत्पन्न होता है।

डिंबाहव—पुं०[डिंब-आहव, मध्य० स०]=डिंब-युद्ध।

डिंबिका—स्त्री० [सं०√डिंब्+ण्वुल्-अक् टाप्, इत्व] १. मदमाती स्त्री। मस्त औरत। २. श्योनाक। सोनापाढ़ा।

डिंभ—पुं०[सं०√डिंभ् (प्रेरणा)+अच्] १. छोटा बच्चा। २. छौना। शावक। ३. मूर्ख। ४. एक प्रकार का उदर रोग।

†पुं०=दंभ।

डिंभक—पुं०[सं० डिंभ+कन्]छोटा बच्चा।

डिंभचक्र—पुं० [उपमि० स०] एक प्रकार का तांत्रिक चक्र जिसकी सहायता से शुभाशुभ फल जाने जाते हैं।

डिंभिया—वि०[सं० दंभ; हिं० डिंभ] १. पाखंडी। २. घमंडी।

डिकामाली—स्त्री०[देश०] एक तरह का पेड़ जिसका गोंद ओषधि के रूप में काम में लाया जाता है।

डिक्करी—स्त्री०[सं० डिक्क√रा (देना)+क—ङीप्] युवती।

डिक्की—स्त्री० [हिं० धक्का] १. मेढ़े द्वारा किया जानेवाला सींगों से आघात। २. आक्रमण। ३. वार।

डिक्री—स्त्री० दे० 'डिगरी'।

डिगना—अ० [हिं० डग] १. डग का चलते समय ठीक प्रकार से न पड़ना। २. इधर-उधर होना। हिलना-डुलना। ३. निश्चय, विचार आदि से इधर-उधर होना। विचलित होना। †४. गिरना। (पश्चिम)

डिगमिगाना—अ०=डगमगाना।

डिगरी—स्त्री० [अं० डिक्री] १. किसी अधिकारी की दी हुई आज्ञा या किया हुआ निर्णय। २. लोक व्यवहार में, दीवानी न्यायालय का वह निर्णय या फैसला जिसमें यह कहा जाता है कि अमुक पक्ष दूसरे पक्ष से इतना धन पाने अथवा अमुक सम्पत्ति लेने का अधिकारी है।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

पद—डिगरीदार। (देखें)

मुहा०—डिगरी जारी करना=अदालत के फैसले के मुताबिक किसी जायदाद पर कब्जा करने या प्रतिपक्षी से प्राप्य धन प्राप्त करने की विधिक प्रक्रिया करना या कराना। **डिगरी देना**=दीवानी न्यायालय का किसी के पक्ष में यह निर्णय करना कि इसे प्रतिपक्षी से अमुक सम्पत्ति या इतना धन मिले।

पद—जर डिगरी=वह रकम जिसके सम्बन्ध में किसी को दीवानी न्यायालय से डिगरी मिली हो।

स्त्री० [अं०] १. किसी प्रकार के क्रम या श्रृंखला में का कोई निश्चित विभाग। अंश। कला। जैसे—ज्वर (या तापमान) १०२. डिगरी है। २. विश्वविद्यालय की वह उपाधि या प्रमाण-पत्र जो इस बात का सूचक होता है कि अमुक व्यक्ति अमुक संज्ञावाली उच्च परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका है।

डिगरीदार—पुं० [अं० डिक्री+फा० दार] वह व्यक्ति जिसके पक्ष में दीवानी अदालत की डिगरी हुई हो।

डिगलाना†—स०=डिगाना।

†अ० १.=डिगना। २.=डगमगाना। उदा०—डिगत पानि डिगुलात गिरि लखि सब ब्रज बे-हाल।—बिहारी।

डिगवा—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

डिगाना—स० [हिं० डिगना का स०] १. ऐसा काम करना जिससे कोई डिगे। किसी को डिगने में प्रवृत्त करना। विचलित करना। २. किसी को अपने वचन, स्थान आदि से हटाकर इधर-उधर करना। ३. ऐसा काम करना जिससे किसी का आसन या पद डगमगाने या हिलने-डुलने लगे।

संयो० क्रि०—देना।

डिग्गी—स्त्री० [सं० दीर्घिका; बंग० दीघी=बावली या तालाब] छोटा तालाब। पोखरा। जैसे—लाल डिग्गी।

स्त्री० [हिं० डिगना?] साहस। हिम्मत।

†स्त्री० दे० 'डुग्गी'।

डिठार—वि० [हिं० डीठ=नजर] जिसकी डीठ या दृष्टि ठीक और पूरा काम करती हो। जिसे अच्छी तरह दिखाई देता हो।

डिठियार (ा)—वि०=डिठार।

डिठोहरी—स्त्री० [हिं० डिठी+हरना] एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष जिसके फल के बीज को तागे में पिरो कर बच्चों के गले में उन्हें नजर से बचाने के लिए डाला जाता है।

डिठौना—पुं० [हिं० डीठ] बच्चों के माथे पर उन्हें कुदृष्टि से बचाने के लिए लगाई जानेवाली काली बिंदी।

डिड़ई—पुं० [देश०] अगहन में तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

डिडका—स्त्री० [सं० डिड+कन्-टाप्] मुँहासा।

डिडकारी*—स्त्री० [हिं० ढाड़] ढाड़ मारकर रोने की क्रिया।

डिड़वा—पुं०=डिड़ई।

डिड़सी—स्त्री०=डेंड़सी।

डिडिका—स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें युवावस्था में ही सिर के बाल सफेद होने लगते हैं।

डिढ़†—वि०=दृढ़ (पक्का)।

डिढ़ाना*—स० [हिं० डिढ़] १. दृढ़ अर्थात् पक्का या मजबूत करना। २. विचार आदि निश्चित करना। ठानना।

†अ० दृढ़ अर्थात् पक्का या मजबूत होना।

डिढ्या—स्त्री० [सं० तृष्णा] १. ऐसी उत्कट तृष्णा या लोभ जिसकी जल्दी तृप्ति न होती हो। २. लोभ-पूर्ण दृष्टि। लालच भरी निगाह।

डित्थ्—पुं० [सं०] १. काठ का बना हुआ हाथी। २. ऐसा व्यक्ति जिसमें कुछ उत्कृष्ट और विशिष्ट लक्षण हों।

डिपटी—पुं० [अं०] १. नायब। २. किसी बड़े अधिकारी का अधीनस्थ और मुख्य सहायक अधिकारी।

डिपार्टमेंट—पुं० [सं०]=विभाग।

डिपो—स्त्री० [अं०] गोदाम।

डिबिया—स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा डिब्बा।

डिबिया टँगड़ी—स्त्री० [?] कुश्ती का एक पेंच जो उस समय किया जाता है जब जोड़ (विपक्षी) कमर पर होता है और उसका दाहिना हाथ कमर पर लिपटा होता है।

डिब्बा—पुं० [सं० डिब=गोला] [स्त्री० अल्पा० डिबिया, डिब्बी] १. टीन, लकड़ी आदि का बना हुआ ढक्कनदार छोटा आधान। २. रेलगाड़ी में की कोई एक गाड़ी। जैसे—माल या सवारी गाड़ी का डिब्बा।

डिभगना†—स० [देश०] १. किसी को अपनी ओर आकृष्ट या मोहित करना। २. छलना। ठगना।

†अ० १.=डगमगाना। २.=डिगना।

डिम—पुं० [सं०] एक प्रकार का रूपक या नाटक जिसमें इंद्रजाल, क्रोध, लड़ाई आदि के दृश्य होते हैं।

डिमडिमी—स्त्री०=डुग्गी।

डिमाई—स्त्री० [अं०] छापे जानेवाले कागजों की कई नापों में से एक जिसमें कागज की लंबाई साढ़े बाईस इंच और चौड़ाई साढ़े सत्रह इंच होती है।

डिमोक्रेसी—स्त्री० [अं०] लोक-तंत्र। (दे०)

डिला—पुं० [देश०] गीली भूमि में होनेवाली एक तरह की घास।

पुं० [सं० दल] ऊन का लच्छा।

डिलिवरी—स्त्री० [अं०] डाक, रेल आदि विभागों में बाहर से आई हुई

चिट्ठियाँ या पारसल ऐसे लोगों को दिया जाना जो उन्हें पाने या लेने के अधिकारी हों।

डिल्ला—पुं० [सं०] १. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण (ııs) होते हैं। इसे तिलका, तिल्ला और तिल्लाना भी कहते हैं।

पुं० [सं० डेल्ल] बैलों के कंधे पर का उभरा हुआ मोटा भाग। कुब्बा। ककुत्थ।

डिसमिस—वि० [अं० डिस्मिस्ड] १. (मुकदमा) जो खारिज कर दिया गया हो। २. (व्यक्ति) जो नौकरी, पद या सेवा से हटा दिया गया हो।

डिहरी—स्त्री० [देश०] १. कालीनों या गलीचों की बुनावट में लगनेवाली ६००० गाँठों का एक मान जिसके अनुसार उनका मूल्य निर्धारित किया जाता है। २. अनाज़ भरकर रखने का मिट्टी का एक प्रकार का ऊँचा और बड़ा पात्र।

डिहुला—पुं० [हिं० डीह=गाँव] [स्त्री० डिहुली] (गाँव में साथ रहनेवाला)। संगी। सखा। साथी। (मिथिला)

डींग—स्त्री० [सं० डीन] १. अपने बल, योग्यता, साहस आदि के सम्बन्ध में अभिमानपूर्वक बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही जानेवाली बात। सीट। (ब्रेग, ब्रेवेडो)

क्रि० प्र०—मारना। —हाँकना।

मुहा०—डींग की लेना=बहुत बढ़-बढ़कर डींग भरी बातें कहना।

डींभू—पुं० [?] बर्रे। भिड। (राज०)

डीक—स्त्री० [देश०] आँखों का जाला नामक रोग।

डीकरा*—पुं० [सं० डिंभक] [स्त्री० डीकरी] १. पुत्र। बेटा। २. बालक। लड़का।

डीठ—स्त्री० [सं० दृष्टि] १. दृष्टि। नजर। निगाह।

मुहा०—(किसी की) डीठ बाँधना=जादू, मंत्र आदि के बल से ऐसी अवस्था उत्पन्न करना कि किसी को कुछ का कुछ दिखाई पड़े। (अन्य मुहावरों के लिए देखे आँख, नजर और निगाह के मुहा०)

२. देखने की शक्ति। ३. अंतर्दृष्टि। ज्ञान-चक्षु। ४. ऐसी दृष्टि जो किसी अच्छी चीज पर पड़कर उसकी अच्छाई या गुण नष्ट अथवा कम कर दे। नजर।

मुहा०—(किसी को) डीठ लगना=नजर लगना।

डीठना†—अ० [हिं० डीठ+ना (प्रत्य०)] दृष्टिगोचर होना। दिखाई पड़ना।

स०=देखना।

डीठ-बंध—पुं० [सं० दृष्टिबंध] १. ऐसी माया या जादू जिससे सामने की घटना या चीज के बदले कोई और ही घटना या चीज दिखाई दे। इंद्र जाल। नजरबंदी। २. वह जो उक्त प्रकार का इंद्रजाल या माया प्रत्यक्ष रूप में दिखाता हो। नजर-बंदी।

डीठि—स्त्री०=डीठ।

डीठि-मूठ†—स्त्री० [हिं० डीठि+मूठ] किसी को मुग्ध या मोहित करने के लिए मंत्र पढ़ते हुए मोहक दृष्टि से देखने की क्रिया या भाव।

डीन—पुं० [सं० √डी (उड़ना)+क्त] १. चिड़ियों आदि की उड़ान। २. चिड़ियों की एक विशिष्ट प्रकार की उड़ान। ३. उड़ने से होनेवाला शब्द।

डीनक—वि० [सं० डायक] उड़नेवाला।

डीबी—स्त्री० [?] १. शक्ति। २. कुंडलिनी।

†स्त्री०=डिबिया।

डीबुआ†—पुं०=ढेउआ (पैसा)।

डीम (।)—पुं०=ढेला।

डीमडाम†—स्त्री०=टीम-टाम।

डील—पुं० [?] १. जीव-जन्तुओं, मनुष्यों आदि के शरीर की ऊँचाई, लंबाई-चौड़ाई या विस्तार।

पद—डील-डौल। (देखें)

२. संख्या के विचार से प्राणियों, व्यक्तियों आदि के शरीर का वाचक शब्द। जैसे—चार डील बैल। ३. व्यक्तित्व। जैसे—जितने डील, उतनी बातें।

डील-डौल—पुं० [हिं०] १ बनावट या रचना के विचार से जीव-जंतुओं, प्राणियों आदि के शरीर का विस्तार। २. देह। शरीर।

डीला—पुं० [देश०] एक प्रकार का नरकट जो पश्चिमोत्तर भारत में होता है।

पुं०=डिल्ला।

डीली*—स्त्री०=दिल्ली (नगरी)।

डीह—पुं० [हिं०] १. आबादी। बस्ती। २. छोटा गाँव। ३. उजड़े हुए गाँव का भग्नावशेष। उदा०—ढहकर जैसे बन रहा डीह।—प्रसाद। ४. टीला। ५. वह स्थान जहाँ ग्राम-देवता का पूजन होता है। ६. पूर्वजों का निवास-स्थान।

डीहदारी—स्त्री० [हिं० डीह+फा० दारी] एक प्रकार का हक जो उन जमींदारों को मिलता था जो अपनी जमीन बेच डालते थे।

डुंगा†—पुं० [सं० तुंग=ऊँचा] १. ढेर। राशि। २. टीला।

डुंडा†—पुं० [सं० दंड] १. पेड़ की ऐसी सूखी डाल जिसमें पत्ते आदि न हों। २. दे० 'ठूँठ'।

डुंडु—पुं०=डुंडुभ।

डुंडुभ—पुं० [सं० डुंडु√भा (प्रतीत होना)+क] जल में रहनेवाला एक तरह का साँप जिसमें बहुत कम विष होता है। डेड़हा साँप।

डुंडुल—पुं० [सं० डुंडु√ला (लेना)+क] छोटा उल्लू।

डुंब—पुं० [सं०] डोम (जाति)।

डुंबर—पुं० [सं० डुंब] १. आडंबर। २. डंबर।

डुक—पुं० [अनु०] घूँसा। मुक्का।

डुकरिया†—स्त्री०=डोकरी (डोकरा का स्त्री०)।

डुकिया—स्त्री०=डोकी (काठ आदि का तेल रखने का छोटा प्याला)।

डुकियाना—स० [हिं० डुक] १. घूँसे मारना। २. खूब मारना।

डुक्कर†—पुं० [सं० दुष्कर] कठिन या मुश्किल काम।

डुगडुगाना—स० [अनु०] चमड़ा मढ़े बाजे को लकड़ी से बजाकर डुगडुग शब्द उत्पन्न करना।

अ० उक्त प्रकार से डुग डुग शब्द उत्पन्न होना।

डुगडुगी—स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ। एक प्रकार का छोटा बाजा जिससे डुग डुग शब्द निकलता है। डुग्गी। डौंडी।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

मुहा०—डुगडुगी फेरना=डुगडुगी बजाते हुए चारों ओर सब को सार्वजनिक रूप से कोई सूचना देना। मुनादी करना।

डुगा—पुं०=डगा (नगाड़ा बजाने का डंडा)। उदा०—किछु कहि तबल दइ डुगा।—जायसी।

डुगी—स्त्री०=डुगडुगी।

डुग्गी—स्त्री०=डुगडुगी।

डुड़†—पुं० [सं० दादुर] मेंढ़क।

डुड़का—पुं० [देश०] धान की फसल में होनेवाला एक रोग।

डुड़हा—पुं० [हिं० डाँड़] खेत में की दो नालियों (बरहों) के बीच की मेंड़।

डुपटना†—स० [हिं० दो+पट] १. कपड़ा या और कुछ दोहरा करना। दो परत करना। २. चुनना। चुनियाना।

डुपट्टा—पुं०=दुपट्टा।

डुबकी—स्त्री० [हिं० डूबना] १. जल में प्रविष्ट होने की ऐसी क्रिया कि सारे अंग जल में छिप जायँ। २. जल में एक स्थान से गोता लगाकर दूसरे स्थान पर निकलने की क्रिया या भाव। ३. पानी में दिया या लगाया जानेवाला गोता। ४. बीच में अचानक या अनियमित रूप से होनेवाली अनुपस्थिति या गैरहाजिरी।

मुहा०—डुबकी मारना या लगाना=बीच में अचानक कुछ समय के लिए अनुपस्थित या गायब हो जाना। जैसे—यह दूधवाला प्रायः कई-कई दिनों की डुबकी लगा जाता है।

डुबडुभी—स्त्री०=दुंदुभी। उदा०—बाजा बाजइ डुबडुभी।—नरपति नाल्ह।

डुबवाना—स० [हिं० डुबाना का प्रे०] किसी को कुछ डुबाने में प्रवृत्त करना। डुबाने का काम किसी से कराना।

डुबाना—स० [हिं० डूबना का स०] १. ऐसा काम करना जिससे कोई चीज डूब जाय। जैसे—नाव या पत्थर डुबाना। २. जीव को इस प्रकार जल या जलाशय में प्रविष्ट करना या कोई ऐसी क्रिया करना जिस के फलस्वरूप वह डूबकर मर जाय। ३. लाक्षणिक रूप में, कोई ऐसा काम करना जिससे कोई चीज नष्ट या समाप्त हो जाय अथवा उस पर गहरा आघात लगे। जैसे—घर, धन या प्रतिष्ठा डुबाना।

डुबाव—पुं० [हिं० डूबना] १. डूबने या डुबाने की क्रिया या भाव। २. पानी की इतनी गहराई जिसमें कुछ या कोई डूब जाय। जैसे—आदमी भर का डुबाव; हाथी का डुबाव।

डुबोना†—स०=डुबाना।

डुब्बा—पुं० [हिं० डूबना] वह जो कूएँ, नदी आदि में डुबकी लगाकर उसके तल की चीजें निकालने का काम करता हो। पनडुब्बा।

डुब्बी—स्त्री० १.=डुबकी। २.=पनडुब्बी (नाव)।

डुभकौरी—स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की धूप आदि में सुखाई हुई बरी जिसे पीठी ही के झोल में डालकर पकाया जाता है।

डुमई—स्त्री [देश०] नदी, समुद्र आदि के किनारे की गीली और नीची भूमि में होनेवाला एक प्रकार का चावल।

डुलना—अ० [हिं० डोलना] १. किसी स्थान पर जमी, बैठी या लगी हुई अथवा किसी अवस्था में स्थित किसी चीज का थोड़ा-बहुत इधर-उधर होना। जैसे—यह पत्थर अभी तक अपने स्थान से डुला नहीं।

पद—हिलना-डुलना। (देखें)

२. किसी चीज का किसी उद्देश्य से बार-बार हिलाया जाना। ढुरना। जैसे—चँवर या पंखा डुलना।

डुलाना—स० [हिं० डोलना का स०] १. किसी को डोलने अर्थात् अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होने में प्रवृत्त करना। २. कोई पदार्थ बार-बार गति में लाना या हिलाना। चलाना। जैसे—चँवर या पंखा डुलाना। ३. किसी प्राणी को चलने-फिरने में प्रवृत्त करना। घुमाना या टहलाना। ४. किसी का मन चंचल, चलायमान या विचलित करना। जैसे—किसी का चित्त या मन डुलाना।

डुलि—स्त्री० [सं० दुलि, पृषो० सिद्धि] कछुई। कच्छपी।

डुलिका—स्त्री० [सं० डुलि√कै (प्रतीत होना)+क—टाप्] खंजन की तरह की एक चिड़िया।

डुली—स्त्री० [सं० डुलि+ङीप्] चिल्ली नाम का साग। लाल पत्ती का बथुआ।

डूँगर—पुं० [फा० दांग] [स्त्री० अल्पा० डूँगरी] १. छोटी पहाड़ी। २. टीला। ३. कंकड़-पत्थर और मिट्टी आदि का ऊँचा या बड़ा ढेर। ढूह। भीटा।

डूँगरफल—पुं० [हिं० डूँगर+फल] बंदाल या देवदाली का फल जो बहुत कड़ुआ होता है।

डूँगरी—स्त्री० [हिं० डूँगर का स्त्री० अल्पा०] छोटी सी पहाड़ी।

डूँगा—पुं० [सं० द्रोण] १. चम्मच। चमचा। २. एक ही काठ में से खोद कर बनाई हुई नाव। (लश०) ३. गोले के रूप में लपेटा हुआ रस्सा। पुं० १.=डोंगा। २.=डूँगर।

स्त्री० [?] संगीत में २४ शोभाओं में से एक।

डूँज†—स्त्री० [देश०] आँधी। तेज हवा। (डिं०)

डूँड़ा—वि० [हिं० टुंडा] १. (पशु) जिसका एक सींग टूट गया हो और एक ही बच रहा हो। २. हर तरह से दुर्दशाग्रस्त या नष्ट-भ्रष्ट। उदा०—कुछ दिनों में हरा-भरा बंगाल डूँड़ा हो गया।—निराला।

डूक—स्त्री० [देश०] पशुओं के फेफड़े में होनेवाला एक रोग।

स्त्री० [हिं० डूकना] डूकने अर्थात् चूकने की क्रिया या भाव। चूक।

डूकना†—स० [सं० त्रुटि+करण] गलती या भूल करना। चूकना।

डूब—स्त्री० [हिं० डूबना] १. डूबने की क्रिया या भाव। २. डुबकी। गोता।

डूबना—अ० [डुब डुब से-अनु०] १. जल या तरल पदार्थ में व्यक्ति अथवा किसी चीज का इस प्रकार स्थित होना कि उसका कोई अंग या अंश उससे बाहर न निकला रहे। जल में पूरी तरह से समाना। जैसे—समुद्र में जहाज डूबना, नदी की बाढ़ से खेत डूबना। २. जीवों के संबंध में, जल में इस प्रकार समाना कि प्राण निकल जायँ। जैसे—उनका लड़का तालाब में डूब गया था।

मुहा०—डूब मरना=निंदनीय आचरण करने के कारण मुँह दिखाने के योग्य न रह जाना। जैसे—तुम्हारे लिए यह डूब मरने की बात है।

३. उक्त के आधार पर नष्ट होना। जैसे—घर, नाम या रकम डूबना।

मुहा०—डूबा नाम उछालना=फिर से प्रतिष्ठा प्राप्त करना।

४. ग्रह, नक्षत्रों आदि के संबंध में, अस्त होना या क्षितिज के नीचे हो जाना। जैसे—सूर्य या तारों का डूबना। ५. दिन का पूरी तरह से अंत

या समाप्ति तक पहुँचना। ६. लाक्षणिक अर्थ में, किसी कार्य या व्यापार में मग्न या लीन होना। जैसे-प्रेम या भक्ति में डूबना।

मुहा०—डूबना-उतराना=रह-रहकर चिंता में मग्न होना।

७. दुःख, निराशा, रोग आदि के कारण हृदय का बैठा जाना। ऐसा जान पड़ना कि हृदय में अब शक्ति नहीं रह गई और वह अपना काम अभी बंद कर देगा।

डेंड़सी—स्त्री० [सं० टिंडिश] १. कंकड़ी की तरह की एक लता जिसमें छोटे गोल फल लगते हैं। २. उक्त लता के फल जिनकी तरकारी बनती है। टिंडा।

डेड़ढ़ा†—वि०=ड्योढ़ा।

डेडढ़ी†—स्त्री०=ड्योढ़ी।

डेक—पुं०[अं०] लकड़ी के तख्तों आदि की बनी हुई जहाज की पाटन।

पुं०[?] बकायन। महानिंब।

डेग—पुं०१. दे० 'देग'। २. दे० 'डग'।

डेगची†—स्त्री०=देगची।

डेड़रा—पुं०[सं० डुंडुभ] मेंढक।

डेड़हा—पुं०[सं० डुंडुभ] जलाशयों में रहनेवाले और अल्प विषैले साँपों की संज्ञा।

डेढ़—वि० [सं० अध्यर्द्ध; प्रा० डिवड्ढ] मान, मात्रा, संख्या आदि की किसी एक इकाई और उसकी आधी इकाई के योग का सूचक विशेषण। जैसे—डेढ़ गज, डेढ़ दिन, डेढ़ सेर आदि।

मुहा०—डेढ़ ईंट की जुदा मसजिद बनाना=अक्खड़पन के कारण सब से अलग काम करना या रहना। **डेढ़ चावल की खिचड़ी पकना**=अपना तुच्छ या अमान्य विचार या कार्य सबसे अलग रखना या चलाना। **(किसी का) डेढ़ चुल्लू लहू पीना**=बहुत ही कठोर दंड देना। (क्रोध-सूचक उक्ति)

पद—डेढ़ गाँठ=धागे, डोरी आदि की लगाई जानेवाली एक पूरी और उसके ऊपर एक आधी गाँठ जो आवश्यकता पड़ने पर बहुत सहज में खोली जा सकती है।

डेढ़ खम्मन—स्त्री० [हिं० डेढ़+फा० खम] एक प्रकार की गोल रुखानी।

डेढ़ खम्मा—पुं [हिं० डेढ़+फा० खम=टेढ़ा] हुक्के का एक प्रकार का नैचा जिसमें कुलफी नहीं होती।

डेढ़-गोशी—पुं० [हिं० डेढ़+फा० =गोशी] मध्य युग में एक प्रकार का बहुत छोटा पर मजबूत जहाज।

डेढ़ा—वि०=ड्योढ़ा।

पुं०=ड्योढ़ा (पहाड़ा)।

डेढ़िया—पुं० [देश०] सुगंधित पत्तोंवाला एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जो दारजिलिंग, सिकिम, भूटान आदि में पाया जाता है।

स्त्री० [हिं० डेढ़] १. स्त्रियों की चादर या धोती का आंचल। (पूरब) २. दे० 'डेढ़ी'।

डेढ़ी—स्त्री० [हिं० डेढ़] वह लेन-देन या व्यवहार जिसमें उधार ली हुई वस्तु डेढ़ गुनी मात्रा में चुकानी या वापस करनी पड़ती है।

डेपूटेशन—पुं० [अं०] किसी वर्ग या समुदाय का वह प्रतिनिधि मंडल जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से कहीं जाता या भेजा जाता है। शिष्ट-मंडल।

डेबरा†—वि० [हिं० डेरा=बायाँ] [स्त्री० डेबरी.] (व्यक्ति) जो अधिकतर काम अपने बाएँ हाथ से ही करता हो।

डेबरी†—स्त्री० [देश०] खेत का वह कोना जो जोतने में छूट जाता है। कोंतर।

स्त्री०=ढिबरी।

डेमरेज—पुं० [अं०] १. वह हरजाना जो माल भेजने या मँगानेवाले को उस दशा में देना पड़ता है जब वह नियत समय के अन्दर जहाज, रेल, गाड़ी आदि पर अपना माल न लादे अथवा उस पर से उतार न ले जाय। २. आज-कल भारतीय रेलों में, वह हरजाना जो रेल द्वारा माल मँगाने वालों को उस दशा में देना पड़ता है जब कि वह नियत समय के अन्दर आया हुआ पारसल या माल न छुड़ा लें।

डेयरी—पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ दूध देनेवाले पशुओं को पाला जाता तथा उनका दूध, मक्खन आदि बेचा जाता है।

डेर—पुं०=डर (भय)।

डेरा—पुं० [?] १. पैदल यात्रा आदि के समय अस्थायी रूप से बीच में ठहरने का स्थान। टिकान। पड़ाव। २. छाया आदि का प्रबंध करके अस्थायी रूप से ठहरने के लिए किया जानेवाला आयोजन या व्यवस्था।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—पड़ना।

पद—डेरा-डंडा। (देखें)

मुहा०—डेरा डालना=(क) किसी स्थान पर अस्थायी रूप से ठहरने की व्यवस्था करना। (ख) कहीं जाकर इस प्रकार ठहर या बैठ जाना कि जल्दी उठाने या चलने का ध्यान ही न रहे।

३. ठहरने या रहने का स्थान। निवास स्थान। जैसे—उनका डेरा यहाँ से बहुत दूर है। ४. विशिष्ट रूप से वह स्थान जहाँ गाने-नाचने आदि का पेशा करनेवालों का दल या मंडली रहती हो। जैसे—भाँड़ों या रंडियों का डेरा। ५. खेमा। तंबू। शामियाना। ६. शांत और स्थिर रहने की अवस्था या भाव। उदा०—हृदै नहिं डेरा सुधि खान की न पान की।—हठी।

पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी सजावट के सामान बनाने के काम में आती है। इसकी छाल और जड़ साँप काटने पर पिलाई जाती है। धरोली।

वि० [?] [स्त्री० डेरी]। बायाँ 'दाहिने' का उलटा। जैसे—डेरा हाथ।

डेरा-डंडा—पुं० [हिं०] वह खेमा, तंबू या कनात तथा उसके साथ की रस्सियाँ, डंडे, खूँटे आदि जिनके योग से डेरा तैयार किया या बनाया जाता है। डेरा डालने की आवश्यक सामग्री।

क्रि० प्र०—उखाड़ना।—उठाना। हटाना।

डेराना†—अ०=डरना।

†स०=डराना।

डेरी—स्त्री० [अं०]=डेयरी।

डेल—पुं० [हिं० डला] १.बड़ी डलिया या झाबा, विशेषतः ऐसा झाबा जिसमें बहेलिए फँसाई हुई चिड़ियाँ आदि बन्द करके रखते हैं। २. चिड़ियाँ फँसाने का जाल या झाबा। ३. मिट्टी का ढेला।

पुं० [सं० डुंडुल] उल्लू पक्षी।

पुं० [देश०] १. कटहल की तरह का एक बड़ा और ऊँचा पेड़ जिसकी

हीर की लकड़ी चमकदार और मजबूत होती है। २. वह भूमि जो जोत कर रबी की फसल के लिए खाली छोड़ दी जाय।

डेलटा—पुं० [अं०] नदी के मुहाने का वह भू-भाग जिसमें नदी कई शाखाओं में बँटकर समुद्र में गिरती है।

विशेष—ऐसा भूभाग नदी द्वारा लाई हुई मिट्टी, रेत आदि से बन जाता और प्रायः तिकोना-सा होता है।

डेला—पुं० [सं० दल] १. आँख में का वह सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली रहती है। आँख का कोआ। २.=ढेला।

पुं० दे० 'ठेंगुर'।

डेलिगेट—पुं० [अं०] किसी शासन-संस्था आदि का वह प्रतिनिधि जो किसी प्रकार का अधिकार देकर कहीं भेजा जाता हो।

डेलिया—पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसका फूल लाल और पीला होता है।

डेली†—स्त्री०=डलिया।

वि० [अं०] दैनिक।

डेवढ़—पुं० [हिं० ड्योढ़ा] किसी उद्देश्य की पूर्ति या कार्य की सिद्धि की ऐसी स्थिति जो विशेष युक्ति से उत्पन्न की गई हो।

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

वि०=ड्योढ़ा।

डेवढ़ना—अ० [हिं० डेवढ़] १. डेढ़ गुना या ड्योढ़ा होना। २. आँच पर पकने के समय रोटी का फूलकर बहुत-कुछ डेढ़ परतों के रूप में होना।

स० १. डेढ़ गुना या ड्योढ़ा करना। २. कपड़े, कागज आदि को कई परतों में मोड़ना। ३. रोटी पकाते समय उसे आँच पर इस प्रकार फुलाना कि मानों वह डेढ़ परतों की हो जाय।

डेवढ़ा—वि०, पुं०=ड्योढ़ा।

डेवढ़ी—स्त्री० १.=ड्योढ़ी। २.=डेढ़ी।

डेस्क—पुं० [अं०] एक प्रकार की खानेदार छोटी चौकी जिस पर कागज, पुस्तक आदि रखकर लिखन-पढ़ने का काम करते हैं।

डेहरी—स्त्री० [सं० देहली] १. दीवार में लगे हुए दरवाजे के चौखट की निचली लकड़ी और उसके आस-पास की जमीन। दहलीज। २. मूल निवास-स्थान।

स्त्री० [?] अनाज रखने का एक प्रकार का मिट्टी का छोटा बरतन।

डेहल—पुं० [सं० देहली] डेहरी। दहलीज।

डेंगना—पुं० [हिं० डग] नटखट पशुओं के गले में बांधा जानेवाला बांस या लकड़ी का डंडा। ठेंगुर।

डैन*—पुं०='डैना'।

डैना—पुं० [सं० डड्डयन=उड़ना] १. चिड़ियों के दोनों ओर के वे अंग जिनमें पर निकले होते हैं और जिन्हें फड़फड़ाते हुए वे हवा में उड़ते हैं। पक्ष। पंखा। २ नाव खेने का डंडा। डाँड़ा।

डैम—पुं० [अं०] एक प्रकार की परम तिरस्कार-सूचक (अँगरेजी) गाली।

डैरू—पुं०=डमरू।

डैश—स्त्री० [अं०] लिखते समय दो पदों, वाक्यों आदि के बीच में खींची जानेवाली लंबी बेड़ी रेखा। 'हाइफन' से कुछ बड़ा और उससे भिन्न, जिसका रूप यह है—।

डोंका†—पुं०=घोंघा।

डोंगर†—पुं०=डुँगर (टीला)।

डोंगा†—पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० डोंगी] १. बिना पाल की नाव। २. बड़ी नाव।

मुहा०—डोंगा पार होना=दे० 'बेड़ा' के अन्तर्गत 'बेड़ा पार होना' (मुहा०)।

डोंगी—स्त्री० [सं० द्रोणी; पा०, प्रा० डोणी] १. एक प्रकार की छोटी खुली नाव। २. वह बरतन जिसमें लोहार तपा हुआ लोहा बुझाते हैं।

डोंड़ा—पुं० [सं० डंड] १. बड़ी इलायची। २. दे० 'टोंटा'। ३. दे० 'डोडा'।

डोंड़ी—स्त्री० १.=डोडी (डोडा का स्त्री० अल्पा०) २.=टोंटी। ३.=डौंडी।

डोंब—पुं०=डोम।

डोंबी—स्त्री० दे० 'बंगाली' (बौद्ध तांत्रिक साधना की वृत्ति)।

डोई—स्त्री० [हिं० डोकी] १. लकड़ी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी कलछी। २. मालपूए की तरह की एक प्रकार की छोटी मीठी रोटी।

डोई फोड़िया—पुं० [हिं० डोई+फोड़ना] १. एक प्रकार के साधु जो अपनी बात मनवाने के लिए पत्थर पर सिर तक पटकने लगते हैं। २. बहुत बड़ा दुराग्रही।

डोक—पुं० [देश०] खजूर जो पककर पीली हो गई हो।

डोकर—पुं०=डोकरा।

डोकरड़ो†—पुं०=डोकरा।

डोकरा—पुं० [सं० दुष्कर; प्रा० डुक्कर?] [स्त्री० डोकरिया, डोकरी] १. बुड्ढा आदमी। २. पिता या दादा (जो बहुत बुड्ढा हो गया हो)।

डोकरिया†—स्त्री० [हिं० 'डोकरा' का स्त्री० रूप] डोकरी।

डोकरी—स्त्री० [हिं० डोकरा] १. बुड्ढी स्त्री। २. वृद्धा माता या दादी। ३ औरत। स्त्री। ४. कन्या। पुत्री। (क्व०)

डोका—पुं० [सं० द्रोणक] [स्त्री० अल्पा० डोकी] १. तेल, उबटन आदि रखने का लकड़ी का बना हुआ पुरानी चाल का कटोरा। २. पशुओं के खाने के लिए सूखे डंठल।

डोगर—पुं०=डूंगर।

†पुं०=डोगरा।

डोगरा—पुं० [हिं० डोंगर?] १. काँगड़े, जम्मू आदि प्रदेशों में बसी हुई एक प्रसिद्ध जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

डोगरी—स्त्री० [हिं० डोगरा] डोगरे लोगों की बोली जो पंजाबी की एक विभाषा है और 'टाकरी' लिपि में लिखी जाती है।

डोड़हथी—स्त्री० [हिं० डांडा+हाथ] तलवार। (डिं०)

डोड़हा†—पुं०=डेड़हा।

डोडा—पुं० [देश०] [स्त्री० डोडी] कुछ विशिष्ट पौधों की बड़ी कली जिसमें उस पौधे के फल या बीज रहते हैं। बौंडी। जैसे—पोस्ते या सेमल का डोडा।

डोड़ी—स्त्री० [हिं० डोडा का स्त्री० अल्पा० रूप] १. छोटी डोडी। २. एक लता जो औषध के काम में आती है।

डोडो—पुं० [अं०] एक प्रकार की चिड़िया जिसका वंश अब समाप्त हो गया है। और इधर तीन सौ वर्षों से कहीं देखी नहीं गई।

डोब—पुं० [हिं० डूबना] किसी तरल पदार्थ में कोई चीज डुबाने की क्रिया या भाव। जैसे—रंगते समय कपड़े को कई डोब देने चाहिए।

†पुं०=डोम।

डोबना—स०=डुबाना।

डोभरी—स्त्री० [देश०] ताजा महुआ।

डोम—पुं० [सं०] [स्त्री डोमिनी, डोमनी] १. हिंदुओं में एक अस्पृश्य जाति जो सारे उत्तरीय भारत में पाई जाती है। २. इस जाति के लोग जो श्मशान पर रहकर मृतकों के शवों के लिए आग देते हैं और पशुओं की लाशें उठाकर ले जाते हैं। २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति। मीरासी।

डोमकौआ—पुं० [हिं० डोम+कौआ] गहरे काले रंग का एक प्रकार का बड़ा कौआ।

डोमड़ा—पुं० [हिं० डोम+ड़ा (प्रत्य०)] डोम जाति का व्यक्ति। (उपेक्षा सूचक)

डोम-तमौटा—पुं० [देश०] एक पहाड़ी जाति जो पीतल, ताँबे आदि का काम करती है।

डोमनी—स्त्री० [हिं० डोम] १. डोम जाति की स्त्री। २. गंदे तथा घृणित काम करनेवाली स्त्री। ३. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली डोम जाति की स्त्री।

डोमा—पुं० [देश०] एक तरह का साँप।

डोमिन—स्त्री०=डोमनी।

डोर—स्त्री० [सं० दोप√रा+ड, पृषो० सिद्धि] १. सूतों आदि का बटा हुआ पतला मजबूत मोटा तार।

मुहा०—डोर भरना=कपड़े का किनारा कुछ मोड़कर उसके अन्दर डोर रखना और तब उसे ऊपर से सीना।

२· गुड्डी, पतंग आदि उड़ाने का वह तागा जिस पर माँझा लगा होता है। ३. किसी प्रकार का ऐसा क्रम जो तागे की तरह निरंतर बहुत दूर तक चला गया हो। सूत्र।

मुहा०—(किसी को) डोर पर लगाना या लाना=(क) ठीक रास्ते पर लाकर प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल करना। (ख) परचाना। **(किसी को) डोर मजबूत होना**=जीवन का सूत्र दृढ़ होना। दीर्घ-जीवी होना। **(किसी पर) डोर होना**=किसी के प्रेम-सूत्र में बँधकर प्रायः उसके पीछे या साथ लगे फिरना।

४. आसरा। सहारा।

डोरक—पुं० [सं० डोर+कन्] डोरा। तागा। सूत्र।

डोरना—अ० [हिं० डोर] किसी की डोर या सहारे पर उसके साथ या पीछे चलना। उदा०—बैनन बंचक ताई रची रति नैनन के सँग डोलति डोरी।—केशव।

डोरही—स्त्री० [देश०] बड़ी भटकटैया।

डोरा—पुं० [सं० डोरक] १. रूई, सन, रेशम आदि के सूतों का बटकर बनाया हुआ वह पतला धागा जो प्रायः कपड़े आदि सीने और छोटी-मोटी चीजें बाँधने के काम आता है। मोटा तागा। २. कोई ऐसी धारी, रेखा या लकीर जो उक्त खंड की तरह दूर तक चली गई हो। जैसे—(क) कपड़ों की बुनावट में अलग से धारियाँ या लहरिया दिखाने के लिए डाला जानेवाला डोरा। (ख) आँखों में काजल या सुरमे का डोरा। ३. उक्त के आधार पर कोई गोलाकार पतली लंबी धारी या रेखा। जैसे—भोजन के समय रसोई परोस चुकने पर दाल, भात आदि में तपे हुए घी का दिया जानेवाला डोरा। ४. कोई ऐसा तथ्य या बात जिसका अनुसरण करने पर किसी घटना के रहस्य का पता लग सके या अनुसंधान में किसी प्रकार की सहायता मिले। सुराग। सूत्र। ५. आँखों की वे बहुत महीन लाल नसें जो साधारणतः मनुष्यों की आँखों में उस समय दिखाई देती हैं जब वे सोकर उठते या नशे, प्रेम आदि की उमंग में होते हैं। ६. उक्त के आधार पर प्रेम या स्नेह का बंधन या सूत्र।

मुहा०—(किसी का) डोरा लगना=किसी के प्रेम-सूत्र के बन्धन में पड़ना। **(किसी पर) डोरे डालना**=किसी को अपने प्रेम-पाश में बाँधने के लिए उसके साथ बहुत ही मधुर या मृदुल आचरण अथवा व्यवहार करना।

७. नृत्य में गरदन हिलाने की वह अवस्था जिसमें वह बहुत कुछ हवा में लहराते हुए डोरे या सूत की तरह कभी कुछ इधर और कभी कुछ उधर होती हो। ८. कलछी की तरह वह बरतन जिस में नीचे बड़ा कटोरा और ऊपर खड़े बल में काठ का कुछ मोटा दस्ता या हत्था लगा होता है और इसी से कड़ाही में से जलता हुआ घी, दूध, शीरा आदि निकालते हैं। ९. रहस्य संप्रदाय में, श्वास या साँस।

पुं० [हिं० ढोंड़] पोस्ते आदि का डोडा।

डोरिया—पुं० [हिं० डोरा] १. एक प्रकार का सूती कपड़ा जिसकी बुनावट में बीच-बीच में कुछ मोटे डोरे या सूत होते हैं। २. कोई ऐसा कपड़ा जिसमें थोड़ी-थोड़ी दूर पर लंबी धारियाँ हों। ३. जुलाहों का वह सहकारी लड़का जो आवश्यकतानुसार डोरे उठाने का काम करता है।

पुं० [हिं० डोर=सीधा क्रम या डोरियाना] एक पुरानी छोटी जाति जो राजाओं के शिकारी कुत्तों की देख-रेख करती और उन्हीं कुत्तों की सहायता से शिकार का पता लगाती या पीछा करती थी।

पुं० [?] एक प्रकार का बगला जो ऋतु के अनुसार अपने शरीर का रंग बदलता है।

डोरियाना—स० [हिं० डोरी+आना (प्रत्य०)] १. डोरी से युक्त करना। २. (पशुओं को) डोरी से बाँधना या बाँधकर साथ ले चलना। ३. लाक्षणिक रूप में, किसी को अपना अनुयायी और वशवर्ती बनाना।

डोरिहार—पुं० [हिं० डोरी+हारा] [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा (गहने गूथनेवाला)।

डोरी—स्त्री० [हिं० डोरा] १. रूई, सन आदि के डोरों या तागों को बटकर बनाया हुआ वह बहुत लंबा और डोर या तागे से कुछ मोटा खंड जो चीजें बाँधने आदि के काम में आता है। रस्सी। जैसे—कूएँ से पानी निकालने या गठरी बाँधने की डोरी। २. कलाबत्तू रेशम आदि की उक्त प्रकार की वह रचना जो प्रायः शोभा के लिए कपड़ों पर टाँकी या लगाई जाती है। ३. वे रस्सियाँ या रस्से जो जुलूसों, सवारियों आदि के आगे दोनों ओर कुछ दूरी तक लोग इसलिए लेकर चलते हैं कि आगे का बीचवाला रास्ता भीड़-भाड़ से साफ रहे।

क्रि० प्र०—लगाना।—ले चलना।

४. लाक्षणिक रूप में, किसी प्रकार का आकर्षण, पाश या बन्धन। जैसे—आखिर यमराज की डोरी से कब तक बचे रहोगे?

मुहा०—(किसी की) डोरी खींचना=किसी प्रकार के आकर्षण के द्वारा अपने पास बुलाना। जैसे—जब भगवती को दर्शन देना होगा, तब वे आप ही डोरी खींचेंगी। **डोरी ढीली छोड़ना**=चौकसी या देख-रेख कम करना। थोड़ी-बहुत स्वतंत्रता देना। जैसे—जहाँ डोरी ढीली छोड़ी कि बच्चा बिगड़ा। **(किसी की) डोरी लगना**=किसी की ओर बराबर ध्यान बँधा या लगा रहना जिसमें किसी प्रकार का आकर्षण हो। जैसे—अब तो घर की डोरी लगी है अर्थात् जल्दी घर पहुँचने की चिन्ता है।

५. कड़ाही आदि में से खौलती हुई या गरम चीजें निकालने के लिए वह कटोरी जिसके ऊपर खड़े बल में मूठ लगी रहती है।

डोरी-डंडा—पुं० [हिं०] चित्र-कला में, चित्र के हाशिए पर चारों ओर होनेवाला एक प्रकार का अंकन जो फंदेदार जालों के रूप में होता है।

डोरे*—क्रि० वि० [हिं० डोर] किसी के संग। साथ-साथ।

डोल—पुं० [सं० दोल; हिं० डोलना] [स्त्री० अल्पा० डोलची] १. डोलने की क्रिया या भाव। जैसे—कुछ हिल-डोल किया करो। २. कोई हिलने-डुलनेवाली वस्तु। जैसे—झूला, पालना आदि। ३. डोली नाम की सवारी। ४. धार्मिक उत्सवों के समय निकलनेवाली चौकियाँ या विमान जिन पर देव मूर्तियाँ या अनेक प्रकार के दृश्य रहते थे। ५. लोहे का चौड़े मुँहवाला एक प्रकार का बरतन जिसके द्वारा कूएँ से पानी खींचा जाता है। ६. जहाज का मस्तूल। (लश०)

वि० [हिं० डोलना] १. हिलता-डुलता हुआ। २. अस्थिर। चंचल।

स्त्री० एक प्रकार की काली उपजाऊ मिट्टी।

डोलक—पुं० [सं०] ताल देने का एक प्रकार का पुराना बाजा।

डोलची—स्त्री० [हिं० डोल+ची (प्रत्य०)] १. छोटी डोल (पानी रखने का बरतन)। २. डोल के आकार की एक प्रकार की छोटी टोकरी।

डोल-डाल—पुं० [हिं० डोलना+डाल अनु०] १. चलने-फिरने, हिलने-डुलने आदि की क्रिया या भाव। २. गाँव-देहातों में, शौच आदि के लिए बाहर खेत या जंगल में जाने की क्रिया। (बुन्देल०)

डोलना—अ० [सं० दोलन] १. किसी चीज का इधर-उधर आना-जाना या हिलना। जैसे—भूकंप से पृथ्वी का डोलना। २. लटकती हुई चीज का इधर से उधर और उधर से इधर आते-जाते रहना। जैसे—घड़ी के लंगर का डोलना। ३. किसी चीज के बने रहने की स्थिति में अस्थिरता तथा शंका होना। अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना। जैसे—आसन या सिंहासन डोलना। ४. व्यक्ति अथवा उसके मन का किसी दूसरे मत या विचार की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होने लगना। मन का चलायमान या विचलित होना। ५. घूमना, चलना या टहलना।

पद—डोलना फिरना=इधर-उधर घूमना। चलना या टहलना।

६. कहीं से दूर चले जाना या हट जाना।

†स०=डुलाना।

†पुं०=डोला (सवारी)।

डोलरी†—स्त्री० [हिं० डोल] खाट। चारपाई।

डोला—पुं० [सं० दोल यो दोलप] [स्त्री० अल्पा० डोली] १. पालकी की तरह की एक प्रसिद्ध चौकोर छाई हुई सवारी जिसे कहार उठाकर ले चलते हैं और जिस पर प्रायः वधू बैठकर पहले-पहल ससुराल जाती है।

मुहा०—(किसी को) डोला देना=डोले पर बैठाकर अपनी कन्या को इस उद्देश्य से वर-पक्ष के घर भेजना कि वहीं वर के अभिभावक वर के साथ उसका विवाह कर लें।

विशेष—प्रायः मध्य युग में ऐसे लोग अपनी कन्या को डोले पर बैठा कर रईसों, राजाओं या सरदारों के यहाँ भेजते थे जिनके यहाँ या तो बड़े आदमियों की बरात आ नहीं सकती थी या जो उन बड़े आदमियों की बरात का उचित आदर-सत्कार करने में असमर्थ होते थे। इसी लिए डोला भेजना एक प्रकार की अधीनता या हीनता का सूचक होता है।

मुहा० (किसी के) चौंडे या सिर पर (किसी का) डोला उछलना= किसी स्त्री के सामने उसके पति का दूसरा विवाह करना और जलाने के लिए उसकी सौत लाकर बैठाना।

२. झूले को दिया जानेवाला झोंका। पेंग।

डोलाना—स० दे० 'डुलाना'।

डोला यंत्र—पुं० =दोला यंत्र।

डोलियाना—स० [हिं० डोली+आना (प्रत्य०)] १. किसी को डोली में बैठाकर कहीं ले जाना। २. वधू को डोली में बैठाकर ससुराल भेजना। ३. कोई चीज चुपके से लेकर चल देना। (बाजारू)

अ० चंपत होना। खिसक जाना।

डोली—स्त्री० [हिं० डोला] १. छोटा डोला (सवारी) जिसे दो कहार कंधों पर लेकर चलते हैं।

मुहा०—डोली करना=(क) किसी को जैसे-तैसे दूर करना या हटाना। (ख) कोई चीज चुपके से उठाकर चल देना।

पद—डोली-डंडा। (देखें)

२. हिंदुओं की एक प्रथा या रस्म जिसमें विवाह के उपरान्त वधू को डोली या किसी दूसरी सवारी में बैठाकर वर पक्षवाले ले जाते हैं।

३. रहस्य संप्रदाय में, शरीर।

डोली-डंडा—पुं० [हिं०] लड़कों का एक खेल जिसमें दो लड़के अपनी बाँहों को मिलाकर उन्हें चौकी-का रूप देते और उस पर किसी तीसरे छोटे लड़के को बैठाकर, 'डोली-डंडा पालकी', कहकर इधर-उधर घुमाते हैं।

डोलू—स्त्री० [देश०] १. एक ओषधि जिसे रेनंद चीनी भी कहते हैं। २. पूरबी भारत में होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

†वि० [हिं० डोलना] जो चुपके से कुछ लेकर चंपत हो गया हो। (बाजारू) जैसे—किताब लेकर डोलू हो गया।

डोसा—पुं० [?] उलटे या चिलड़े की तरह का एक दक्षिण भारतीय पकवान जो पीसे तथा खमीर उठाये हुए चावल तथा उड़द की दाल से बनता है।

डोह†—पुं०=द्रोह।

डोहरा†—पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० डोहरी] काठ का एक प्रकार का बरतन जिससे कोल्हू में से रस निकाला जाता है।

डोही—स्त्री० दे० 'डोई'।

डौंडाना†—अ० [हिं० डावाँडोल] १. डाँवाडोल रहना। २. विचलित होना। घबराना।

स० १. डाँवाँडोल करना। २. विकल या विचलित करना।

डौंड़ी—स्त्री० [सं० डिंडिम] १. डुग्गी नाम का छोटा बाजा जिसे बजाकर लोगों को कोई बात जतलाने के लिए घोषणा की जाती है।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

मुहा०—डौंड़ी देना=(क) ढोल बजाकर सर्वसाधारण को सूचित करना। मुनादी करना। (ख) कोई बात चारों ओर लोगों से कहते फिरना। **डौंड़ी बजना**=(क) घोषणा होना। (ख) दुहाई फिरना। (ग) किसी का तेज और प्रताप सब पर प्रकट होना।

२. डौंड़ी पीटकर की जानेवाली घोषणा।

डौरा—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास जिसमें साँवाँ की तरह के परन्तु खाने में कड़ुए दाने होते हैं।

डौरू†—पुं०=डमरू।

डौआ—पुं० [हिं० डोई] बड़ी डोई।

डौकी—स्त्री० [?] पंडुकी।

डौर*—पुं० १=डौल। २.=डोर।

डौल—पुं० [हिं० डील का अनु०] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह बाहरी आकृति या स्वरूप जो उसकी विशिष्ट प्रकार की रचना—शैली, अंगों और उपांगों के संघटन आदि के आधार पर जानी जाती या स्थिर होती है। बनावट का ढंग या रचना का प्रकार। जैसे—(क) आदमी या औरत का डील-डौल। (ख) नये डौल की थाली या लोटा। २. किसी प्रकार की बनावट या रचना का आरम्भिक ढाँचा या रूप। ठाठ।

क्रि० प्र०—डालना।

३. चित्रों और मूर्तियों के अवयवों में दिखाई पड़नेवाली गोलाई, उभार और गहराई जिससे उनमें सुंदरता आती है।

मुहा०—(कोई चीज) डौल पर लाना=सुंदर आकार या रूप में प्रस्तुत करना। अच्छे या सुंदर रूप में लाना।

४. कोई काम करने का अच्छा ढंग या प्रकार। सलीका। जैसे—ये सब पुस्तकें डौल से लगाकर अलमारी में रख दो। ५. उपाय। युक्ति।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को) डौल पर लाना=युक्ति से अनुकूल बनाना। ऐसा उपाय करना जिससे कोई मतलब निकाला या उद्देश्य सिद्ध किया जा सके। जसे—मैं तो समझा कर हार गया, अब तुम्हीं उन्हें डौल पर ला सकते हो।

पद—डौल-डाल। (देखें)

मुहा०—(किसी काम का) डौल बाँधना या लगाना=उपाय या युवित करना। जैसे—कहीं से कुछ कपड़ों का डौल लगाओ।

६. रंग-ढंग। तौर-तरीका। लक्षण। ७. आशा या संभावना। रंग-ढंग। जैसे—अभी तो दो-चार दिन वर्षा का डौल नहीं दिखाई देता।

८. जमीन के बन्दोबस्त में जमा या लगान का अनुमान।

क्रि० प्र०—लगाना।

९. खेतों की मेंड़। डांड़।

डौल डाल—पुं० [हिं० डौल] किसी काम का उपाय या युक्ति। ब्योंत।

डौलदार—वि० [हिं० डौल+फा० दार (प्रत्य०)] अच्छे डौलवाला। सुडौल।

डौलना†—स० [हिं० डौलना] १. किसी रचना को सुडौल बनाना। २. डौल या बनावट का ढंग निकालना।

अ० डौल या उपाय निकालना। युक्ति निकालना।

डौलियाना—स० [हिं० डौल+इयाना (प्रत्य०)] १. काट-छाँटकर किसी ठीक आकार का बनाना। गढ़कर डौल या रूप दुरुस्त करना। २. अपना प्रयोजन सिद्ध करने केलिए किसी व्यक्ति को डौल या ढंग पर लाना मीठी-मीठी बातें करके अपने अनुकूल बनाना।

डौवर—पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जिसका धड़ सफेद, दुम काली और चोंच लाल रंग की होती है।

डौवा—पुं०=डौआ (बड़ी डोई)।

ड्यूटी—स्त्री० [अं०] १. ऐसा काम जिसे करना नैतिक, धार्मिक, विधिक आदि दृष्टियों से आवश्यक हो। कर्तव्य। २. वह काम जिसे पूरा करने के लिए कोई नियुक्त किया गया हो। ३. विदेशों से आनेवाले तथा विदेश भेजे जानेवाले माल पर लगनेवाला कर या शुल्क।

ड्योढ़ा—वि० [हिं० डेढ़] [स्त्री० ड्योढ़ी] एक पूरा और उसके साथ मिला या लगा हुआ उसका आधा। डेढ़-गुना। जैसे—इस साल हर चीज का दाम पर साल से ड्योढ़ा हो गया है।

पद—ड्योढ़ी गाँठ=रस्सी आदि में दी जानेवाली वह गाँठ जिसमें एक पूरी गाँठ के बाद उसके ऊपर दूसरी गाँठ या फंदा इस प्रकार लगाया जाता है कि रस्सी का एक सिरा खींचते ही गाँठ तुरंत खुल जाय।

पुं० १. एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें क्रम से अंकों की डेढ़ गुनी संख्या बतलाई जाती है। जैसे—एक ड्योढ़े डेढ़, दो ड्योढ़े तीन, तीन ड्योढ़े साढ़े चार आदि। २. गाने का वह प्रकार जिसमें स्वर साधारण से ड्योढ़े ऊँचे कर दिये जाते हैं। ३. ऐसा तंग रास्ता जिसके एक किनारे पर गड्ढा या ढाल हो। (कहार)

ड्योढ़ी—स्त्री० [सं० देहली] १. किसी भवन या मकान के मुख्य प्रवेश-द्वार के आस-पास की भूमि या स्थान।

पद—ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान। (देखें)

२. उक्त प्रवेश-द्वार के अन्दर का वह स्थान जिस पर प्रायः पाटन होती है। पौरी।

मुहा०—(किसी की) ड्योढ़ी खुलना=राजाओं आदि के यहाँ दरबार में आने-जाने की अनुमति या आज्ञा मिलना। **(किसी की) ड्योढ़ी बंद होना**=किसी व्यक्ति के लिए राजा के यहाँ आने-जाने की मनाही या निषेध होना। **(किसी के यहाँ) ड्योढ़ी लगना**=ड्योढ़ी पर ऐसा द्वारपाल बैठना जो बिना आज्ञा पाये लोगों को अन्दर न जाने दे।

ड्योढ़ीदार—पुं० [हिं० ड्योढ़ी+फा०दार (प्रत्य०)] वह नौकर या सिपाही जो बड़े आदमियों के मकान की ड्योढ़ी पर रखवाली आदि के लिए रहता है। दरबान। द्वारपाल।

ड्योढ़ीवान—पुं०=ड्योढ़ीदार।

ड्रम—पुं० [अं०] १. ढोल। नगाड़ा। २. ढोल के आकार का बड़ा पात्र। पीपा।

ड्राइवर—पुं० [अं०] वह व्यक्ति जो यंत्रों से चलनेवाला यान चलाता हो।

जैसे—इंजन-ड्राइवर, मोटर ड्राइवर आदि।

ड्राम—पुं० [अं०] तीन माशे के बराबर की एक अंगरेजी तौल।

ड्रामा—पुं० [अं०] नाटक।

ड्रिल—स्त्री० [अं०] वच्चों, सिपाहियों आदि के समूह को एक साथ कराया जानेवाला शारीरिक व्यायाम जिसके साथ उन्हें क्रम-बद्ध रूप में चलने-फिरने आदि की शिक्षा भी मिलती है।

ढ

ढ—हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, स्पर्शी, महाप्राण तथा सघोष व्यंजन है। इसका एक रूप ढ़ भी है जो मूर्द्धन्य उत्क्षिप्त, महाप्राण, सघोष व्यंजन है। पुं० [सं० ढौक् (गति) +ड] १. बड़ा ढोल। २. कुत्ता। ३. कुत्ते की दुम। ४. ध्वनि। नाद। ५. साँप।

ढँकना†—स०=ढकना।

पुं०=ढकना (ढक्कन)।

ढंकी†—स्त्री०=ढक्कन।

ढँकुली†—स्त्री० दे० 'ढेंकी'।

ढंख—पुं० [सं० आषाढ़क या हिं० ढाक] १. ढाक या पलाश का पौधा। २. वह स्थान जहाँ पलाश के बहुत-से पौधे हों।

ढंग—पुं० [सं० तंग (तंगन)] १. कोई काम करने की रीति, विशेषतः ऐसी रीति जिसके अनुसार प्रायः कोई काम किया जाता या होता हो। जैसे—उनके उठने-बैठने या चलने-फिरने का ढंग निराला है। २. कोई काम करने या रचना प्रस्तुत करने की प्रचलित तथा व्यवस्थित शैली। जैसे—साड़ी पर जाल बनाने का ढंग भी वह जानता है। ३. किसी चीज की बनावट या रचना का वह विशिष्ट प्रकार जिससे उसका स्वरूप स्थिर होता है। जैसे—आज-कल इस ढंग के कपड़े नहीं चलते। ४. भेद-विभेद आदि के विचार से स्थिर होनेवाला प्रकार।

पद—ढंग का=(क) अच्छे और उपयुक्त प्रकार का। जैसे—कोई ढंग की नौकरी तो पहले मिले। (ख) कार्य-व्यवहार आदि में कुशल या चतुर। जैसे—कोई ढंग का नौकर रखो।

५. किसी चीज की बनावट या रचना का प्रकार जिससे उसका स्वरूप स्थिर होता है। जैसे—आज-कल इस ढंग के कपड़ों का चलन नहीं है। ६. अभिप्राय या कार्य सिद्ध करने का उपाय या युक्ति। तरकीब। जैसे—किसी ढंग से अपनी रकम निकाल लेनी चाहिए।

क्रि० प्र०—निकालना।

मुहा०—(किसी के) ढंग पर चढ़ना=किसी की तरकीब या युक्ति के फेर में पड़कर उसके उद्देश्य-साधन में अनुकूल होकर सहायक बनना। **(किसी को) ढंग पर लाना**=अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिए किसी को अपने अनुकूल करना या बनाना। किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना जिससे कुछ मतलब निकले।

७. अभिप्राय या कार्य सिद्ध करने के लिए धारण किया जानेवाला ऐसा रूप जो केवल दूसरों को धोखे में रखने के लिए हो। जैसे—यह लड़का मिठाई खाने के लिए तरह-तरह के ढंग रचता है।

क्रि० प्र०—रचना।—साधना।

८. ऐसा आचरण, बरताव या व्यवहार जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए उपयुक्त या पात्र बनाता हो। जैसे—यह सब तो जाति (या देश) के चौपट होने का ढंग है।

मुहा०—ढंग बरतना=पारस्परिक व्यवहार में ठीक तरह से आचरण करना। जैसे—जरा ढंग बरतना सीखो।

९. कोई ऐसी अवस्था या स्थिति जो किसी विशिष्ट बात की सूचक हो। चिह्न। लक्षण। जैसे—अभी पानी बरसने का कोई ढंग नहीं दिखाई देता।

पद—रंग-ढंग=स्वरूप और कार्य-प्रणाली। जैसे—इस कार्यालय का रंग-ढंग कुछ अच्छा नहीं जान पड़ता।

ढंग-उजाड़—पुं० [हिं० ढंग+उजाड़] कुछ घोड़ों की दुम के नीचे होनेवाली भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

ढँगलाना†—स० [?] लुढ़काना।

अ०=लुढ़कना।

ढंगी—वि० [हिं० ढंग] १. (व्यक्ति) जो ढंग से कोई काम करता हो। २. बहुत बड़ा चालबाज या धूर्त्त (व्यक्ति)। ३. दे० 'ढोंगी'।

ढँढरच—स्त्री० [हिं० ढंग+रचना] ढकोसला।

ढंढस—पुं० दे० 'ढँढरच'।

ढंढार—वि० [हिं० ढंग?] जिसे कोई ढंग न आता हो। अकुशल तथा मूर्ख।

ढंढोर—पुं० [अनु० धायँ धायँ] १. आग की लपट। २. लंगूर।

†पुं०=ढँढोरा।

ढंढोरची—पुं० [हिं० ढँढोर+फा० ची (प्रत्य०)] ढँढोरा फेरनेवाला। डुग डुगी बजाकर घोषणा करनेवाला। ढँढोरिया।

ढंढोरना—स० [हिं० ढँढोरा] १. ढँढोरा पीटना या बजाना। २. ढँढोरा फेरना। मुनादी कराना।

†स० [हिं० ढूंढ़ना] तलाश करना। उदा०—सारद उपमा सकल ढँढोरी—तुलसी।

ढँढोरा—पुं० [अनु० ढम+ढोल] १. वह ढोल जो जन-साधारण को किसी बात की सूचना देने या सार्वजनिक रूप से घोषणा करने के समय बजाया जाता है। डुगडुगी। डुग्गी। डौंडी।

क्रि० प्र०—पीटना।—बजाना।

२. ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा। मुनादी।

मुहा०—ढंढोरा फेरना=(क) किसी बात की सूचना सबको ढोल बजाकर देना। जैसे—लड़के के खोने पर उन्होंने ढँढोरा फिरवाया था। (ख) किसी बात की सूचना सब को देते फिरना। जैसे—घर की बातों का ढँढोरा नहीं फेरा जाता।

ढंढोरिया—पुं०=ढँढोरची।

ढंढोलना—स०=ढँढोरना (ढूंढ़ना)।

ढँपना—अ० [हिं० ढाँपना का अ०] किसी प्रकार की आड़ में या आवरण के नीचे होने के कारण आँखों से ओझल होना। ढाँपा जाना।

†स०=ढकना।

†पुं०=ढकना (ढक्कन)।

ढई—स्त्री० [हिं० ढहना=गिराना] १. ढह या गिर पड़ने की अवस्था या भाव। २. किसी स्थान पर इस प्रकार बैठना कि जल्दी उठने का घ्यान ही न आवे।

मुहा०—**(कहीं या किसी के यहाँ) ढई देना**=(क) जमकर बैठ जाना और जल्दी उठने का नाम न लेना। (ख) धरना देना।

ढकई—वि०, पुं०=ढाकई।

ढकना—स० [सं० स्थग; प्रा० ढक्क, ढकण] १. किसी चीज के ऊपर या सामने कोई ऐसी आड़ या आवरण खड़ा करना कि वह चीज ऊपर या बाहर से दिखाई न पड़े अथवा सुरक्षित रहे। जैसे—(क) देगची को कटोरी या ढक्कन से ढकना। (ख) कपड़े से दूध या मलाई ढकना। २. ओढ़े या पहने हुए वस्त्र से शरीर का कोई अंग छिपाना। जैसे—घूंघट से मुँह ढकना अथवा चादर से छाती ढकना। ३. किसी चीज के ऊपर किसी दूसरी बात का आकर उसे आड़ में करना। जैसे—बादलों का आसमान को ढकना। ४. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा उपाय करना जिससे दूसरे के सामने दूषित बात या रूप न प्रकट होने पाये। जैसे—किसी की इज्जत या ऐब ढकना।

अ० आड़, आवरण आदि के कारण ऐसी स्थिति में होना कि ऊपर या बाहर से दिखाई न दे अथवा वातावरण आदि के प्रभाव से रक्षित रहे। जैसे—कपड़े या कागज से ढकी हुई मिठाई।

पुं० [स्त्री० अल्पा० ढकनी] वह चीज या रचना जिससे कोई चीज ढकी जाती हो। ढक्कन। जैसे—डिब्बे या सन्दूक का ढकना।

ढकनियाँ—स्त्री०=ढकनी।

ढकनी—स्त्री० [हिं० ढकना] १. छोटा ढकना या ढक्कन। २. फूल के आकार का एक प्रकार का छोटा गोदना।

ढक-पेडरू—पुं० [देश०] एक तरह की चिड़िया।

ढका—पुं० [सं० आढ़क] १. तीन सेर की एक तौल। २. उक्त तौल का बटखरा या बाट।

†पुं० [अं० डॉक] जहाजों के ठहरने का घाट। (लश०)

†पुं० [अनु०] जोर से लगाई जानेवाली टक्कर या दिया जानेवाला धक्का।

†पुं०=ढक्का (बड़ा ढोल)।

ढकिल†—स्त्री० [हिं० ढकेलना] १. एक दूसरे को ढकेलने की क्रिया या भाव। २. आक्रमण। चढ़ाई।

ढकेलना—स० [हिं०धक्का] १. किसी भारी चीज या यान को पीछे से इस प्रकार धक्का देना कि वह आगे बढ़े या चले। २. किसी व्यक्ति अथवा किसी चीज को इस प्रकार धक्का देना कि वह गिर या लुढ़क पड़े। जैसे—(क) आदमी का बच्चे को ढकेलना। (ख) पहाड़ पर से पत्थर ढकेलना। ३. अनादरपूर्वक धक्का देते हुए किसी को कहीं से बाहर निकालना। ४. किसी को किसी ओर बढ़ने में प्रवृत्त या विवश करना। जैसे—भीड़ को आगे या पीछे ढकेलना। ५. कोई काम जैसे-तैसे आगे बढ़ाना या चलाना। ६. किसी को इस प्रकार बुरी तरह से दूर करना या हटाना कि वह हीन स्थिति में पहुँचे। जैसे—लड़की का व्याह क्या किया है किसी तरह उसे घर से ढकेला है। ७. भोजन करना। खाना। (व्यंग्य)। ८. किसी के साथ प्रसंग या संभोग करना। (बाजारू)

ढकेला-ढकेली—स्त्री० [हिं० ढकेलना] आपस में एक दूसरे को बार-बार ढकेलने या धक्के देने की क्रिया या भाव।

ढकोरना†—स०=ढकेलना। (पूरब)

ढकोसना—स० [ढक-ढक से अनु०] एक बारगी या भुखमरों की तरह कोई चीज बहुत अधिक खाना या पीना। भकोसना।

ढकोसला—पुं० [हिं० ढंग+सं० कौशल] १. दूसरों को धोखा देकर अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए धारण किया या बनाया हुआ झूठा रूप। आडंबर। २. एक प्रकार की कविता जिसमें कई अन-मेल या असंगत बातें एक साथ कही जाती हैं। उदा०—भादों पक्की पीपली, झड़-झड़ पड़े कपास। बी मेहतरानी दाल पकाओगी या नंगा ही सो रहूँ। —खुसरो।

ढक्क—पुं० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम। (कदाचित् आधुनिक ढाका के आस-पास का प्रदेश)

ढक्कन—पुं० [हिं० ढकना] किसी आधान का वह अंग जो उसके मुँह पर उसे बंद करने के लिए रखा या कसा जाता है। जैसे—डिब्बे या देगची का ढक्कन, टोकरी या संदूक का ढक्कन।

विशेष—कुछ आधानों के ढक्कन उनके साथ लगे होते हैं, और कुछ के अलग होते हैं।

ढक्का—स्त्री० [सं० ढक्√कै (शब्द) +क—टाप्] [स्त्री० अल्पा० ढक्की] १. बड़ा ढोल। २. डंका। नगाड़ा।

†पुं० दे० 'धक्का'।

ढक्कारी—स्त्री० [सं० ढक्√कृ (करना)+अण्—ङीप्] तारा देवी।

ढक्की—स्त्री० [हिं० ढाल] १. पहाड़ी प्रदेशों में वह स्थान जहाँ से ऊपर की ओर चढ़ना पड़ता है। (पश्चिम) २. ढालुआँ भू-भाग।

ढगण—पुं० [मध्य० स०] पिंगल में तीन मात्राओं का एक गण।

ढचर—पुं० [हिं० ढाँचा] १. कोई काम करने या चीज बनाने से पहला खड़ा या तैयार किया जानेवाला उसका ढाँचा।

क्रि० प्र०—बाँधना।

क्रि० प्र०—फैलाना।—रचना।

२. आडंबर। ढकोसला। ढोंग। ३. व्यर्थ का जंजाल या झंझट।

वि० बहुत ही क्षीण, जर्जर या दुबला-पतला।

ढटींगड़ (र)—वि० [सं० डिंगर] १. बड़े डील-डौल वाला। ढींग। २. खूब मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। ३. देखने में अच्छा, पर वस्तुतः निकम्मा या व्यर्थ का।

ढटींगड़ा (रा)—पुं०=ढटींगड़।

ढट्ठा—पुं० [स्त्री० अल्पा० ढट्ठी] १.=ढाटा। २.=ढड्ढा ३.=डट्टा (डाट)।

ढट्ठी—स्त्री० [हिं० डाढ़] १. छोट ढाटा। २. कपड़े की वह चौड़ी पट्टी जिससे दाढ़ी बाँधी जाती है।

ढढ्ढा—वि० [हिं० ठाठ] बहुत से व्यर्थ के अंगों या बातों से युक्त होने के कारण जिसका आकार या रूप व्यर्थ बहुत बढ़ गया हो।

पुं० १. बाँसों आदि की वह रचना जिस पर खड़े होकर राज, मिस्त्री आदि ऊँची दीवारें आदि बनाते हैं। २. किसी वस्तु या रचना के अंगों की वह

स्थूल योजना जो उसके आरंभ में की जाती है और जो उसके भावी रूप की परिचायक होती है। ठाठ। ढाँचा। ३. कोई ऐसी बहुत बड़ी या विस्तृत चीज जिसके बहुत-से अंश फालतू या व्यर्थ के हों। ४. व्यर्थ का आडंबर या ठाठ-बाट।

ढड्ढो—स्त्री० [हिं० ढड्ढा] १. वह बहुत बुड्ढी स्त्री जिसके शरीर में हड्डियों का ढाँचा ही रह गया हो। २. मटमैले रंग की एक चिड़िया जो बहुत शोर करती और प्रायः अपने वर्ग की दूसरी चिड़ियों से लड़ती रहती है। चरखी।

ढनमनाना†—अ० [अनु०] लुढ़कना।

स०=लुढ़काना।

ढप—पुं०=डफ।

ढपना—पुं० [हिं० ढाँपना] ढकने की वस्तु। ढक्कन।

स०=ढकना (ढाँकना)।

ढपरी—स्त्री० [हिं० ढाँपना] १. ढाँपने या ढकने की कोई छोटी चीज। २. अंगीठी ढकने का ढक्कन। (चूड़ीवाले)

ढपला†—पुं० [स्त्री० ढपली] =डफला।

ढप्पू—वि० [देश०] १. बहुत बड़ा, परन्तु प्रायः निकम्मा या व्यर्थ का।

ढफ—पुं०=डफ (बाजा)।

ढब—पुं० [सं० धव ?] १. कोई काम ठीक प्रकार से संपादित करने की क्रिया-प्रणाली या रीति। २. ठीक प्रकार से कोई काम संपादित करने का गुण या योग्यता।

पद——ढब का=(व्यक्ति) जो ठीक प्रकार से काम करता हो। जैसे—कोई ढब का नौकर मिले तो रख लिया जायगा।

३. बनावट, रचना आदि का कोई विशिष्ट प्रकार। ४. उपाय। युक्ति।

मुहा०——ढब पर चढ़ाना, लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार फुसलाना कि उससे अपना काम निकाला जा सके।

५. प्रकृति। स्वभाव। ६. आदत। बान।

ढबका†—पुं० [हिं० ढब] उपाय। तरकीब।

ढबरा†——वि०=ढाबर।

ढबरी——=स्त्री०=ढिबरी।

ढबीला†—वि० [हिं० ढब] [स्त्री० ढबीली] १. (वस्तु) जो अच्छे रूप-रंग या प्रकार की हो तथा काम में आने योग्य हो। ढब का। २. (व्यक्ति) जो ठीक ढंग से काम करता हो।

ढबुआ†——पुं०=ढेउआ (पैसा)।

पुं० [देश०] खेत की मचान की छाजन।

ढबैला—वि० [हिं० ढाबर] (पानी) जिसमें मिट्टी और कीचड़ मिला हुआ हो।

†वि०=ढबीला।

ढमकना——अ० [अनु०] ढम ढम शब्द उत्पन्न होना।

स०=ढमकाना।

ढमकाना—स० [हिं० ढमकना] ढम ढम शब्द उत्पन्न करना। उदा०—कोउ उमंग सौं संग संग ढोलक ढमकावत—रत्ना०।

ढमढम—पुं० [अनु०] ढोल, नगाड़े आदि के बजने का शब्द।

क्रि० वि० ढम-ढम शब्द करते हुए।

ढमलाना†—स०=लुढ़काना।

अ०=लुढ़कना।

ढयना—अ०=ढहना (गिरना)।

ढरक†—स्त्री० [हिं० ढरकना] १. ढरकने की क्रिया या भाव। २. दया-लुता। ३. अनुरक्ति। ४. प्रवृत्ति।

ढरकना—अ० [हिं० ढार] १. ढलकना। २. लेटना।

ढरका†—पुं०=ढलका।

ढरकाना—स०=ढलकाना।

ढरकी—स्त्री० [हिं० ढरकना] करघे में छोटे खाने की तरह का वह अंग जिसमें बाने का सूत रहता है और जिसके दाहिने-बाएँ आते-जाते रहने से ताने में बाने का सूत भरता है।

ढरकीरा—वि० [हिं० ढरकना] ढलने या ढलकनेवाला।

ढरना—अ०=ढलना।

ढरनि—स्त्री० [हिं० ढरना] १. ढलने या ढरने की क्रिया या भाव। ढाल। २. बार-बार इधर-उधर प्रवृत्त होने अथवा हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। ३. किसी पर अनुरक्त या किसी ओर प्रवृत्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ४. किसी की दीन-हीन दशा पर मन के द्रवित होने की अवस्था या भाव। ५. नीचे की ओर गिरने या पतित होने की क्रिया या भाव। पतन।

ढरहरना—अ० [हिं० ढरना या ढलना] १. ढाला जाना। उँडेला जाना। २. पूरी तरह से भरा जाना। ३. खिसकना या लुढ़कना। ४. किसी ओर झुकना या ढलना।

ढरहरा—वि० [हिं० ढार+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० ढरहरी] १. ढलने, बहने या लुढ़कनेवाला। २. ढालुआँ। ३. किसी ओर प्रवृत्त होनेवाला।

ढरहरी—स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का पकवान। २. पकौड़ी।

†स्त्री० [हिं=ढलना] ढालुई जमीन। ढाल।

ढराई†—स्त्री०=ढलाई।

ढराना—स० [?] १. दे० 'ढलाना' या 'ढलवाना'। २. दे० 'ढलकाना'।

ढरारा—वि० [हिं० ढार] [स्त्री० ढरारी] १. किसी ओर ढलने या बहनेवाला। २. ढालुआँ। ३. जल्दी इधर-उधर लुढ़कनेवाला। ४. किसी की ओर प्रवृत्त होनेवाला। ५. सहज में किसी के साथ अनुराग या स्नेह करनेवाला। उदा०——नीके अनियारे अति चपल ढरारे प्यारे ...।—सेनापति।

ढरियाना†—स० [हिं० ढारना] १. ढालना। २. ढलकाना।

ढरैया—वि०, पुं०=ढलैया।

ढर्रा—पुं० [हिं० ढरना=ढलना] १. किसी वस्तु या व्यक्ति के ढरने (ढलने) या किसी ओर प्रवृत्त होने का प्रकार, मार्ग या रूप। २. कोई काम करने की निश्चित या बँधी हुई पद्धति, प्रणाली या शैली।

मुहा०——ढर्रे पर आना या लगना=कार्य-सिद्धि के लिए अनुकूल, ठीक ढंग या रास्ते पर आना। जैसे—अब तो वह बहुत-कुछ ढर्रे पर आ चला है।

३. उपाय। तदबीर। युक्ति। ४. आचार, व्यवहार आदि का प्रकार या रूप। जैसे—उसका यह ढर्रा तो ठीक नहीं है।

ढलकना—अ० [हिं० ढलना] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर प्रवृत्त होना या बहना। ढलना। जैसे—आँखों से आँसू

ढलकना। २. लुढ़कना। ३. नीचे की ओर प्रवृत्त होना। ४..किसी पर अनुरक्त होना। विशेष दे० 'ढलना'।

ढलका—पुं०[हिं० ढलकना] १. आँख का एक रोग जिसमें आँख से बराबर पानी बहा करता है। २. बाँस का वह चोंगा या नली जिसकी सहायता से चौपायों के गले के नीचे दवा उतारी या ढलकाई जाती है।

ढलकाना—स०[हिं० ढलकना का स०] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ को ढलकने में प्रवृत्त करना। २. नीचे की ओर प्रवृत्त करना। ३. लुढ़काना।

संयो० क्रि०—देना।

ढलकी†—स्त्री०=ढरकी।

ढलना—अ०[हिं० ढालना का अ०] १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर गिरना या गिराया जाना। जैसे—बोतल की दवा गिलास में ढलना। २. साँचे में किसी पिघले हुए पदार्थ का, उसे कोई विशेष आकार-प्रकार देने के लिए उँडेला या डाला जाना। ३. उक्त प्रकार से पिघले हुए पदार्थ का साँचे में जम या ठंढा होकर ठोस रूप धारण करना। जैसे—मूर्ति ढलना। ४. अवनति या ह्रास अथवा अंत या समाप्ति की ओर बढ़ना। जैसे—उमर या जवानी ढलना, दिन ढलना। ५. ग्रह, नक्षत्र आदि के संबंध में, अस्त होने पर आना। जैसे—चाँद या सूर्य का ढलना।

पद—ढलती फिरती छाँह=ऐसी स्थिति जो कभी बिगड़ती और कभी सुधरती हो।

६. समय का बीतने को होना। जैसे—अवधि ढलना। ७. दया, प्रेम आदि के वश में होकर किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त होना। जसे—भगवान का भक्तों पर ढलना। ८. विशिष्ट रूप से केवल मद्य के संबंध में, पीने के लिए पात्र में उँडेला जाना। जैसे—बोतल या शराब ढलना। ९. लुढ़कना। १०. दे० 'ढुलना'।

ढलमल—वि०[अनु०] जो कभी इधर और कभी उधर प्रवृत्त होता या लुढ़कता हो। ढुलमुल।

ढलवाँ—वि०[हिं० ढालना] १. जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो। ढाला हुआ। २. दे० 'ढालुआँ।'

ढलवाना—स०[हिं० ढालना का प्रे०] ढालने का काम किसी और से कराना। किसी को कुछ ढालने में प्रवृत्त करना।

ढलाई—स्त्री०[हिं० ढालना] १. ढालने की क्रिया या भाव। २. पिघली हुई धातु को साँचे में ढालकर बरतन, मूर्त्तियाँ आदि बनाने की क्रिया, भाव और मजदूरी। ३. ढलान। (दे०)

ढलान—स्त्री०[हिं० ढलना] १. ढलने या ढालने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा भू-खंड जो चिपटा और समतल न हो, बल्कि तिरछा हो; अर्थात् जिसमें नीचे की ओर ढाल हो। ३. ऐसा ढालुआँ स्थान जहाँ से वर्षा का पानी ढलकर किसी नदी में मिलता हो।

ढलाना—स०=ढलवाना।

ढलाव—पुं०[हिं० ढालना+आव (प्रत्य०)] ढलने या ढालने की क्रिया, ढंग या भाव।

ढलुआँ—वि०=ढलवाँ।

ढलैत—पुं०[हिं० ढाल] प्राचीन काल में, वह योद्धा जो ढाल बाँधे रहता था।

ढलैया†—वि०[हिं० ढालना] ढालनेवाला।

पुं० वह कारीगर जो गलाई हुई धातुओं को ढालकर कोई चीज बनाता हो।

ढवरी—स्त्री०[हिं० ढलना] १. ढलने अर्थात् किसी ओर प्रवृत्त होने अथवा किसी पर अनुरक्त होने की अवस्था या भाव। २. निरंतर किसी की ओर बना रहनेवाला ध्यान। लगन। लौ।

ढसक—स्त्री० [अनु० ढस ढस] सूखी खाँसी। ढाँसी।

ढहना—अ०[सं० ध्वंसन] १. इमारत, भवन आदि का टूट-फूटकर जमीन पर गिरना। २. पूर्णतः नष्ट या समाप्त होना।

संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।

ढहरना*—अ०=ढलना। उदा०—पै उठि लहर समूह नैकुँ इत उत नहिं ढहरै।—रत्ना०।

ढहरा†—पुं०[?] १. जंगल। वन। २. खुली और नीची भूमि। (राज०)

ढहराना†—स०[अनु०] १. ढरकाना। २. ढाना। ३. सूप में अनाज रखकर फटकना।

ढहरी—स्त्री०[सं० देहली] डेहरी। दहलीज।

†स्त्री०[?] मिट्टी का घड़ा या मटका।

ढहवाना—स०[हिं० ढहाना का प्रे०] ढाने का काम दूसरे से कराना। गिरवाना। ढहाना।

ढहाना—स०=ढहवाना।

ढाँक—पुं० [हिं० ढाँकना ?] कुश्ती का एक पेंच।

†पुं०=ढाक (पलाश)।

ढाँकना—स०=ढकना।

ढाँखा—पुं०[हिं० ढाक] ढाक या पलाश का जंगल। उदा०—जावंत जग साखा बन ढाँखा।—जायसी।

ढाँगाँ—वि० दे० 'ढालुआँ'।

ढाँच—पुं०=ढाँचा।

ढाँचा—पुं० [सं० स्थाता] १. कोई वस्तु या रचना बनाते समय उसके विभिन्न मुख्य अंगों को जोड़ या बाँधकर खड़ा किया हुआ वह आरंभिक या स्थूल रूप जिस पर बाकी सारी रचना प्रस्तुत होती है। जैसे—मकान का ढाँचा, कुरसी का ढाँचा। २. कोई ऐसी रचना जिसमें कोई दूसरी चीज जड़ी, बैठाई या लगाई जाती हो। ३. ग्रंथ, लेख, नक्शे आदि का आरंभिक तथा आधारिक रूप। ४. ठठरी। पंजर। ५. गठन। बनावट।

ढाँपना—स०=ढकना (ढाँकना)।

ढाँस—स्त्री० [अनु०] १. ढाँसने की क्रिया या भाव। दे० 'ढाँसी।

ढाँसना—अ० [हिं० ढाँस] इस प्रकार बार-बार खाँसना कि गले से वैसा ही ढाँ ढाँ शब्द निकले जैसा प्रायः कुत्तों के खाँसने के समय निकलता है।

ढाँसी—स्त्री० [अनु०] एक प्रकार की सूखी खाँसी जिसमें लगातार कुछ समय तक गले से उसी प्रकार का ढाँ ढाँ शब्द निकलता है जैसा कुत्तों के खाँसने पर होता है।

ढाई—वि० [सं० अर्द्ध—द्वितीय; प्रा० अड्ढाइय; पु० हिं० अढ़ाई] १. (इकाई या मान) जिसमें दो पूरे के साथ आधा और मिला हुआ हो।

जैसे—ढाई गज़ कपड़ा, ढाई सेर चीनी, ढाई रुपए। २. जो गिनती में दो से आधा अधिक हो। जैसे—ढाई बजे की गाड़ी।

मुहा०—(किसी को) ढाई घडी को आना=अचानक और चटपट मौत आना। (स्त्रियों का कोसना) जैसे—तुझे ढाई घड़ी को आवे।

पद—ढाई दिनों की बादशाहत=(क) थोड़े समय का ऐश्वर्य या सुख-भोग। (ख) किसी के विवाह के समय के दो-तीन दिन।

स्त्री० [हिं० ढाना] १. लड़कों का एक ख़ेल जो कौड़ियों से खेला जाता है। २. उक्त खेल खेलने की कौड़ियाँ।

ढाक—पुं० [सं० आषाढक=पलाश] पलाश का पेड़। छिड़ला। छीउल।

पद—ढाक के तीन पात=(क) ऐसा तुच्छ या हीन रूप या स्थिति जो सहायक सी बनी रहे और जिसमें जल्दी कोई परिवर्तन होता हुआ न दिखाई दे। (ख) बहुत ही निर्धन, मूर्ख या हठी होने की अवस्था या भाव।

†पुं०=ढक्का (बड़ा ढोल)।

ढाकई—वि० [हिं० ढाका नगर]। ढाके का। जैसे—ढाकई नाव, ढाकई साड़ी। पुं० ढाके की तरफ होने वाला एक प्रकार का केला।

ढाकना—स०=ढकना (ढाँकना)।

ढाक-पाटन—पुं० [ढाका नगर] एक प्रकार की बढ़िया मलमल जिसकी बुनावट में फूल या बूटियाँ बनी होती थीं।

ढाकेवाल—वि०=ढाकई। जैसे—ढाकेवाल पटैला।

ढाटा—पुं० [हिं० डाढ़] १. कपड़े की वह चौड़ी पट्टी जिससे दाढ़ी बाँधी जाती है। २. वह पगड़ी जिसका एक फेंटा या बल गालों और दाढ़ी पर भी लपेटा जाता है। ३. वह कपड़ा जो मुरदे के कफन पर उसका मुँह बँधा रखने के लिए बाँधा जाता है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

ढाड—स्त्री० [अनु०] १. दहाड़। २. दाढ़। ३. ढाह (चिल्ला कर रोना)।

मुहा०—ढाह मारकर रोना=खूब जोर से चिल्लाते हुए रोना।

ढाडना†—अ०=दहाड़ना।

ढाडी—पुं०=ढाढ़ी।

ढाढ—स्त्री०=ढाढ़।

ढाढ़ना†—स० १. दे० 'डाढ़ना'। २. दे० 'दहाड़ना'।

ढाढ़स—पुं०=ढारस।

ढाढ़िन—स्त्री० [हिं०] 'ढाढ़ी' का स्त्री० रूप।

ढाढ़ी—पुं० [देश०] [स्त्री० ढाढ़िन] १. गाने-बजानेवालों की एक जाति या वर्ग जो मंगल-अवसरों पर बधाइयाँ आदि गाती हैं। २. मुसलमान गवैयों की एक जाति या वर्ग जो प्रायः अच्छे संगीतज्ञ होते हैं।

ढाढ़ौन—पुं० [सं० ढिंढिणी] जल-सिरिस का पेड़।

ढाना—स० [सं० ध्वंसन, हिं० ढाहना] १. कोई ऊँची उठी या बनी हुई इमारत या रचना तोड़-फोड़कर गिराना। जैसे—दीवार या मकान ढाना। २. किसी प्रकार बे-काम करके जमीन पर गिराना। जैसे—कुश्ती में प्रतिपक्षी को या लड़ाई में शत्रु को ढाना। ३. कोई विकट बात उपस्थित या प्रस्तुत करना। जैसे—गजब ढाना।

संयो० क्रि०—देना।

†४. मिटाना। (पश्चिम)

ढापना—स०=ढाँपना (ढकना)।

ढाब—पुं० [हिं० डाबर] छोटा ताल। तलैया।

ढाबर—वि०, पुं०=डाबर।

ढाबा—पुं० [देश०] १. ओलती। २. जाल। ३. परछत्ती। मियानी। ४. वह स्थान जहाँ पकी हुई कच्ची रसोई बिकती या दाम लेकर लोगों को खिलाई जाती हो।

†पुं०=धावा।

ढामक—पुं० [अनु०] ढोल, नगाड़े आदि के बजने का शब्द।

ढामना†—पुं० [देश०] एक प्रकार का साँप।

ढामरा—स्त्री० [सं० ढाम√रा (देना)+क-टाप्] मादा हंस। हंसी।

ढार—पुं० [सं० धार] १. पथ। मार्ग। रास्ता। २. ढंग। प्रकार। ३. ढाँचा। ४. वस्तुएँ ढालने का साँचा। ५. साँचे में ढाली हुई वस्तु। ६. रचना। बनावट। ७. दे० 'ढरनि'।

†स्त्री० १. कान में पहनने का बिरिया नाम का गहना। २. हाथ में पहनने की पिछेले।

†स्त्री०=ढाल।

ढारना—†स० १.=ढालना। २.=डालना।

ढारस—पुं० [सं० धृष् या दार्ढ्य?] १. किसी दुःखी, निराश या हतोत्साह व्यक्ति के प्रति कही जानेवाली ऐसी आशामय बात जिससे उसके मन में फिर से कुछ उत्साह या धैर्य का संचार हो। आश्वासन।

क्रि० प्र०—देना।—बँधाना।

२. कष्ट, विपत्ति आदि के समय भी मन में बना रहनेवाला साहस या हिम्मत। ३. मन या विचार की दृढ़ता। (क्व०)

ढारा—वि० [हिं० ढारना] ढारने अर्थात् ढालनेवाला। उदा०—रखेउ छात चँवर औ ढारा।—जायसी।

ढाल—स्त्री० [सं०√ढौक् (चलाना)+अच्, पृषो०सिद्धि] चमड़े, धातु आदि का बना हुआ वह गोलाकार उपकरण जिसे युद्ध-क्षेत्र में सैनिक लोग तलवार, भाले आदि का वार रोकने के लिए अपने बाँए हाथ में रखते थे। चर्म। फलक।

मुहा०—ढाल-तलवार बाँधना=वीरों का-सा वेश धारण करके योद्धा बनना।

स्त्री० [सं० धार] किसी भूखंड का ऐसा तल जो क्षितिज के समतल न हो बल्कि तिरछा या नीचे की ओर झुका हुआ हो।

स्त्री० [हिं० ढालना] १. ढालने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वह प्रकार या रूप जिसमें कोई चीज ढली या ढालकर बनी हो। ३. रंग-ढंग। तौर-तरीका।

पद—चाल-ढाल। (देखें)

४. चन्दे, प्राप्य धन आदि की उगाही। (पश्चिम)

ढालना—स० [सं० ध्वल्; प्रा० ढाल, डल्ल; गु० ढालवूं; मरा० ढालणें; सिं० ढारराड] १. कोई द्रव पदार्थ धार बाँधकर किसी पात्र में या यों ही कहीं गिराना या डालना। उँड़ेलना। जैसे—(क) गिलास में दूध ढालना। (ख) हंडे का पानी जमीन पर ढालना। २. कोई चीज बनाने के लिए गली या पिघली हुई धातु किसी साँचे में उँड़ेलना या गिराना। जैसे—पीतल के खिलौने या लोहे के कल-पुरजे ढालना। ३. पीने के लिए बोतल में से गिलास आदि में शराब उलटना या गिराना ४. मद्य-पान करना। शराब पीना। जैसे—आज-कल मित्र-मंडली में

वह भी ढालने लगे हैं। ५. व्यंग्य, हास्य आदि के रूप में कही हुई बात किसी दूसरे व्यक्ति पर लगाना या उसकी ओर प्रवृत्त करना। जैसे—साधारण हँसी की बात भी तुम मुझ पर ही ढालने लगते हो। ६. दाम लेकर कोई चीज वेचना। (दलाल) जैसे—वे अपने दोनों मकान ढाल रहे हैं। ७. प्राप्य धन, चन्दा आदि उगाहना। (पंजाब)

ढालवाँ—वि०=ढालुआँ।

ढालिया—पुं०[हिं० ढालना] वह कारीगर जो साँचों में चीजें ढालकर बनाता हो।

पुं०[हिं० ढाल] वह योद्धा जो अपने पास ढाल (रक्षा का उपकरण) रखता हो।

ढाली (लिन्)—पुं०[सं० ढाल+इनि]वह सैनिक जो ढाल धारण किये हो।

ढालुआँ—वि०[हिं० ढाल] [स्त्री० ढालुईं] १. (तल या स्तर)जो बराबर आगे की ओर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल अर्थात् आगे की ओर बराबर उतार हो। जैसे—पहाड़ का ढालवाँ किनारा।

वि०[हिं० ढालना] (पदार्थ) जो साँचे आदि में ढालकर बनाया गया हो। जैसे—ढालवाँ लोटा।

ढालू—वि०[हिं० ढालना=बेचना] जो कोई चीज बेचने को हो। (दलाल)

वि०=ढालुआँ (तल)।

ढावना†—स०=ढाना (गिरना)।

ढास†—पुं०[सं० दस्यु]१. ठग। २. लुटेरा। ३. डाकू।

स्त्री० [हिं० ढासना] १. ढासना लगाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

२. वह चीज जिसपर ढासना लगाकर बैठा जाय।

ढासना—पुं०[सं० धा=धारण करना+आसन] वह तकिया या और कोई ऊँची खड़ी वस्तु जिस पर टेक लगाकर कहीं बैठा जाता है। जैसे—दीवार का ढासना लगाकर बैठना।

ढाहना†—स०=ढाना (गिराना)।

ढाहा†—पुं०[हिं० ढाहना]नदी का ऊँचा किनारा (जिसके आगे की मिट्टी ढह गई हो)।

ढिंढोरना—स०[हिं० ढिंढोरा] ढिंढोरा पीटना या फेरना।

स०[हिं० ढूंढ़ना] १. तलाश करना। ढूंढ़ना। २. बिलोड़ना। मथना।

ढिंढोरा—पुं०[अनु० ढम+ढोल] १. वह डुग्गी या ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सार्वजनिक घोषणा की जाती है।

मुहा०—**ढिंढोरा पीटना या बजाना**=ढोल बजाकर किसी बात की सूचना सर्वसाधारण को देना। मुनादी करना। **ढिंढोरा फेरना**=(क) ढिंढोरा बजवाकर चारों ओर सूचना दिलवाना। मुनादी कराना। (ख) किसी घटना या बात की सूचना बहुत से लोगों को देना।

२. उक्त प्रकार से की हुई घोषणा या सब को दी जानेवाली सूचना।

ढिकचन†—पुं०[देश०] एक प्रकार का गन्ना।

ढिकुली—स्त्री०=ढेंकली।

ढिग—क्रि० वि०[सं० ढिक्=ओर] पास। समीप। निकट। नजदीक।

स्त्री० १. नजदीकी। सामीप्य। २. जलाशय का किनारा या तट। ३. छोर। सिरा। ४. चादर, धोती आदि का किनारा। पाड़।

ढिठई*—स्त्री०=ढिठाई (धृष्टता)।

ढिठाई—स्त्री०[हिं० ढीठ+आई (प्रत्य०)] १. ढीठ अर्थात् धृष्ट होने की अवस्था या भाव। धृष्टता। २. बड़ों के सामने लज्जा छोडकर दुस्साहसपूर्वक किया जानेवाला कोई अनुचित, अशोभन या उद्दंडतापूर्ण आचरण या व्यवहार। ३. ऐसा साहस जो उचित या उपयुक्त न हो अथवा जिसके फल-स्वरूप कोई हानि हो सकती हो।

ढिपनी—स्त्री०[देश०] १. पत्ते, फल, फूल आदि का वह भाग जो गोल छेद या मुँह के आकार का होता है और जहाँ से वह टहनी या डाल के साथ जुड़ा रहता तथा तोड़कर अलग किया जाता है। २. उक्त छेद या मुँह का वह रूप जो वानस्पतिक रस के जमने से उभरी हुई घुंडी के आकार का हो जाता है। जैसे—आम, जामुन, या लीची की ढिपनी। ३. स्तन का अग्र भाग।

ढिपुनी†—स्त्री०=ढिपनी।

ढिबरी—स्त्री०[सं० ढिब्ब या हिं० ढपना] १. टीन, मिट्टी, शीशे आदि की वह कुप्पी जिसके मुँह पर चोंगी लगी रहती है।

विशेष—कुप्पी में मिट्टी का तेल और चोंगी में बत्ती डालकर यह प्रकाश करने के लिए जलाई जाती है।

२. बरतन बनाने के साँचे में सबसे नीचे का वह भाग जिसकी सहायता से ऊपर के दोनों खंड कसे जाते हैं। ३ किसी चीज में कसे हुए पेच को हिलने-डुलने से रोकने के लिए उसके मुँह पर लगाया जानेवाला चूड़ीदार छल्ला। ४. चमड़े या मूंज की वह चकती जो चरखे में इस लिए लगाई जाती है कि तकला घिरने न पावे।

ढिमका—सर्व०[हिं० अमका-अमुका, सं० अमुक का अनु०] [स्त्री० ढिमकी] अमुक। फलाना।

पद—अमका ढिमका=कोई अज्ञात, तुच्छ या सामान्य (पदार्थ या व्यक्ति)।

ढिमराऊ—वि०[हिं० ढीमर] ढीमर या धीवर जाति का।

पुं० वे विशिष्ट प्रकार के गीत जो ढीमर या धीवर जाति के लोग गाते हैं।

ढिमरिया†—वि०[हिं० ढीमर] ढीमर या धीवर संबंधी।

स्त्री० ढीमर या धीवर जाति की स्त्री।

ढिलढिला—वि०[हिं० ढीला] १. ढीला-ढाला। २. (रस या रसा) जो बहुत गाढ़ा न हो, बल्कि कुछ पतला हो।

ढिलाई—स्त्री०[हिं० ढीला+आई (प्रत्यय०)]१. ढीले होने की अवस्था या भाव। ढील। २. नियंत्रण, रुकावट आदि में होनेवाली कमी या शिथिलता। ३. कार्य, प्रबंध आदि में होनेवाली शिथिलता। सुस्ती।

ढिलाना—स०[हिं० ढीलना का प्रे०] किसी को कुछ ढीलने या ढीला करने में प्रवृत्त करना।

ढिल्लड़—वि०[हिं० ढीला] जो ढिलाई या बहुत सुस्ती से काम करता हो। शिथिलतापूर्वक काम करनेवाला। मट्ठर। सुस्त।

ढिल्ली—स्त्री०=दिल्ली (नगरी)।

ढिल्ली वै—पुं०=दिल्लीपति। उदा०—ढिल्ली वै स्वपनंतं मात कहिय प्रगट विप्पायं।—चंदवरदाई।

ढिसरना†—अ० [सं० ध्वंसन]१. फिसल पड़ना। २. सरककर कुछ आगे बढ़ना। ३. उन्मुख या प्रवृत्त होना। ४. फलों का कुछ-कुछ पकना।

ढींगर†—पुं०[सं० डिंगर] १. लंबा-चौड़ा तथा मोटा ताजा आदमी। २. पत्नी की दृष्टि से उसका पति। ३. उपपति।

ढींढ़—पुं०=ढींढा।

ढींढ़स—पुं०[सं० टिंडिश] डेंडसी। टिंडा।

ढींढ़ा†—पुं०[सं० ढुंढि=लंबोदर, गणेश] १. बड़ा, भारी या निकला हुआ पेट।

मुहा०—**ढींढ़ा फूलना**=पेट में बच्चा होने पर (स्त्री का) पेट बढ़ना या निकलना।

२. गर्भ। हमल।

मुहा०—**ढींढ़ा गिरना**=गर्भपात होना।

ढीगे*—क्रि० वि०=ढिग (पास)।

ढीचा†—पुं०[?] १. सफेद चील। २. कूवड़। (राज०)

ढीट†—वि०=ढीठ (धृष्ट)।

ढीठ—वि०[सं० धृष्ट] [भाव० ढिठाई] १. जो जल्दी किसी से डरता न हो और जो भय या संकट के समय भी अपने स्थान या हठ पर अड़ा रहता हो। जैसे—शहरों के बन्दर बहुत ढीठ होते हैं। २. जो प्रायः ऐसे अवसरों पर भी संकोच न करता हो जहाँ बड़ों की मान-मर्यादा का ध्यान रखना आवश्यक हो। जैसे—स्त्रियों को इतना ढीठ नहीं होना चाहिए। ३. जो जान-बूझ कर और हठ-वश ही बड़ों की आज्ञा पालन न करता हो या उनका निषेध न मानता हो। जैसे—यह लड़का दिन-पर-दिन बहुत ढीठ होता जा रहा है। ४. साहसी। हिम्मतवर।

ढीठता—स्त्री०[हिं० ढीठ+ता (प्रत्य०)] ढीठ होने की अवस्था, गुण या भाव। ढिठाई। धृष्टता। (असिद्ध रूप)

ढीठा†—वि०=ढीठ।

ढीठ्यौ*—स्त्री० [हिं० ढीठ] धृष्टता। ढिठाई। उदा०—त्यौं त्यौं अति मीठी लगति ज्यों-ज्यों ढीठ्यौ देइ।—बिहारी।

ढीम—पुं०[देश०] १. पत्थर का बड़ा टुकड़ा। पत्थर या ढोका। २. मिट्टी आदि का बड़ा डला।

ढीमड़ो*—पुं०[देश०] कूँआ। (डिं०)

ढीमर—पुं०[सं० धीवर] १. मल्लाह। २. कहारों की एक जाति।

ढीमा—पुं०=ढीम।

ढील—स्त्री०[हिं० ढीला] १. ढीले होने की अवस्था, गुण या भाव। तनाव का अभाव। २. नियंत्रण, रुकावट आदि में किसी के साथ की जानेवाली ढिलाई शिथिलता।

क्रि० प्र०—देना।

३. विलंब। देर।

वि०=ढीला।

स्त्री०[देश०] सिर के बालों में पड़नेवाला एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा। जूँ।

ढीलना—स०[हिं० ढीला] १. किसी कसी हुई चीज को ढीला करना या छोड़ना। ऐसा काम करना जिससे कसाव या तनाव दूर होता हो। २. पकड़ी हुई रस्सी आदि इस प्रकार ढीली छोड़ना जिसमें वह बराबर आगे की ओर बढ़ती जाय। जैसे—पतंग की डोर ढीलना। ३. नियंत्रण, रुकावट आदि में शिथिलता करना। ४. बंधन मुक्त करना। छोड़ देना। ५. देर या विलंब करना। ६. किसी गाढ़े द्रव में पानी मिलाकर पतला करना। ७. किसी को किसी ओर ले जाना। (क्व०) जैसे—पूरब की तरफ बैल ढीलना।

ढीला—वि०[सं० शिथिल; प्रा० सिढिल, ढिला] [स्त्री० ढीली, भाव० ढिलाई] १. बन्धन जिसमें आवश्यक या उचित कसाव न आने पाया हो। जैसे—ढीली गाँठ, ढीली मुट्ठी। २. पदार्थ जो कसकर बाँधा न गया हो। जैसे—ढीली धोती, ढीली पगड़ी। ३. जिसमें उचित कसाव-खिचाव या तनाव का अभाव हो। जैसे—ढीली चारपाई, ढीली रस्सी, ढीली लगाम।

मुहा०—**(किसी को) ढीला छोड़ना**=आवश्यक अथवा उचित अंकुश नियंत्रण या दवाव न रखना। बहुत-कुछ स्वतंत्रता दे रखना। जैसे—तुमने लड़के को ढीला छोड़ रखा है; इसी लिए वह बिगड़ता जा रहा है।

४. जो अपने स्थान पर अच्छी तरह या ठीक जमा या बैठा न हो। जैसे—ढीला ढक्कन, ढीला पेंच। ५. जो नाप आदि के विचार से आवश्यकता से अधिक गहरा, चौड़ा या लंबा हो। जैसे—ढीला कुरता, ढीला जूता।

६. जिसमें उतना गाढ़ापन या घनता न हो जितनी होनी चाहिए। जैसे—ढीली चाशनी, ढीली दाल या तरकारी। ७. मंद। मद्धिम।

पद—**ढीली आँख**=धीमी परन्तु मधुर चितवन या दृष्टि।

८. आलसी। मठ्ठर। सुस्त। जैसे—ढीला नौकर। ९. जो अपने कर्त्तव्य-पालन, प्रयत्न, विचार, संकल्प आदि में यथेष्ठ दृढ़ न रहता हो। जैसे—ढीला अफसर, ढीला मालिक। १०. जिसका आवेश, क्रोध या और कोई मनोविकार मन्द पड़ गया हो या पड़ने लगा हो। जैसे—वात-चीत या व्यवहार में किसी के साथ ढीला पड़ना।

क्रि० प्र०—पड़ना।

११. जिसमें काम का वेग या स्त्री-प्रसंग की शक्ति उचित या स्वाभाविक से बहुत कम हो।

ढीलापन—पुं० [हिं० ढीला+पन (प्रत्य०)] ढीले होने की अवस्था या भाव। ढिलाई। शिथिलता।

ढीह†—पुं० १.=ढूह (ऊँचा टीला)। २.=डीह।

ढुंढ†—पुं०[हिं० ढूँढ़ना] १. चाईं। उचक्का। २. ठग। लुटेरा।

ढुंढन—पुं०[सं०√ढुंढ् (खोजना)+ल्युट्-अन] ढूँढ़ने की क्रिया या भाव।

ढुंढपाणि*—पुं०[सं० दंडपाणि] १. दंडपाणि। भैरव। २. शिव का एक गण।

ढुंढा—स्त्री०[सं०] राक्षस हिरण्य कश्यप की एक बहन जो प्रह्लाद को जलाने के निमित्त उसे गोद में लेकर आग में बैठी थी। भगवान शिव का यह वर 'कि तुम आग में नहीं जलोगी', प्राप्त होने पर भी विष्णु भगवान की कृपा से यह जलकर भस्म हो गई थी।

ढुंढि—पुं० [सं०√ढुंढ्+इन्] गणेश का एक नाम। ढुंढिराज। ये ५६ विनायकों में से एक हैं।

ढुंढित—वि०[सं०√ढुंढ् (खोजना)+क्त] ढूँढ़ा हुआ।

ढुंढिराज—पुं०[सं०] ढूंढि नामक गणेश।

ढुंढी—स्त्री०[देश०] बाँह

मुहा०—**ढुंढियाँ चढ़ाना**=मुश्कें बाँधना।

ढुंढ़ी†—स्त्री०=ढोंढी।

ढुकना—अ० [सं० ढुक्क; प्रा० ढुक्कइ] १. अन्दर प्रवेश करना; विशेषतः झुक या छिपकर अथवा सिर झुकाकर प्रवेश करना। २. किसी के पास या समीप पहुँचना। ३. टोह लेने के लिए आड़ में छिपना। ४. किसी पर टूट पड़ना। धावा करना।

ढुकास†—स्त्री०[अनु० ढुक-ढुक] बहुत तृषित होने पर जल्दी-जल्दी बहुत सा जल पीने की प्रबल इच्छा। कड़ी या तेज प्यास।

क्रि० प्र०—लगना।

ढुक्का—पुं०=ढूका।

ढुच्चा†—पुं०[अनु०] घूंसा। मुक्का।

ढुटौना†—पुं०=ढोटा (लड़का)।

ढुनमुनिया—स्त्री०[हिं० ढनमनाना] १. बराबर लुढ़कते हुए या बार-बार कलाबाजी खाते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव। २. स्त्रियों का घेरा बाँधकर नाचते हुए कजली गाना।

ढुर—अव्य०=धुर (ठिकाने तक)।

ढुरकना†—अ० [हिं० ढार] १. लुढ़कना। २. झुकना। ३. प्रवृत्त होना। ४. अनुकूल या प्रसन्न होना।

ढुरकी—स्त्री०[हिं० ढुरकना] ढुरकने की क्रिया या भाव।

स्त्री०=ढरकी (करघे की)।

ढुर-ढुर—वि०[?] १. साफ-सुथरा। २. चिकना।

ढुरन—स्त्री०[हिं० ढुरना] ढुरने की अवस्था, क्रिया या भाव।

ढुरना—अ०[हिं० ढार] १. नीचे की ओर प्रवृत्त होना। ढलना। २. किसी ओर अथवा किसी पर अनुरक्त या कृपालु होना। अनुकूल या प्रसन्न होना। ३. कभी इधर और कभी उधर गिरना, झुकना या लुढ़कना जैसे—किसी के सिर पर चँवर ढुरना। ४. ढुलकना। लुढ़कना। ५. ढलकना।

ढुरहरी—स्त्री०[हिं० ढुरना] १. बार-बार इधर-उधर, ढुरने या हिलने-डोलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. नथ में लगी हुई सोने के गोल दानों, मोतियों आदि की पंक्ति जो प्रायः इधर-उधर लुढ़कती रहती है। ३. ढुर्री। पगडंडी।

ढुराना—स०[हिं० ढुरना का स०] १. ढुरने अर्थात् नीचे की ओर गिरने जाने आदि में प्रवृत्त करना। ढलकाना। २. बार बार इधर, उधर हिलने-डोलने में प्रवृत्त करना। जैसे—चँवर ढुराना। ३ लुढ़काना।

ढुरावना—स०=ढुराना।

ढुरुआ—पुं०[हिं० ढुरना] गोल मटर। केराव मटर।

ढुरुकना*—अ०=ढुलकना।

ढुर्री—स्त्री०[हिं० ढुरना] खेतों जंगलों, पहाड़ों आदि में का वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते रहने या आने-जाने से आप से आप रेखा के रूप में बन जाता है। पगडंडी।

ढुलकना—अ०[हिं० ढुरना या ढलना] १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर प्रवृत्त होना। २. बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना। लुढ़कना। ३. किसी पर अनुरक्त या प्रसन्न होना। ४. दे० 'ढलना'।

ढुलकाना—स०[हिं० ढुलकना का स०] १. किसी चीज को ढुलकने में प्रवृत्त करना। २. लुढ़काना।

ढुलढुल—वि० [हिं० ढुलना=ढुलकना] जो बराबर लुढ़कता रहता हो।

ढुलना—अ०[हिं० ढोना का अ०] एक स्थान से उठाकर किसी भारी चीज या चीजों का दूसरे स्थान पर पहुँचाया, रखा या लाया जाना। ढोया जाना। जैसे—असबाब या माल का ढुलना।

†अ० १.=ढुलकना (सभी अर्थों में)। २. =डुलना (चँवर आदि का)।

ढुलमुल—वि०[हिं० ढुलना में का ढुल+अनु० मुल] १. (पदार्थ) जो किसी स्थान पर स्थिर न रहने के कारण बराबर हिलता-डुलता रहे। २. (व्यक्ति) जो विचारों की दृढ़ता या निश्चय के अभाव में किसी बात के दोनों पक्षों में से कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर प्रवृत्त होता हो। जिसमें किसी बात या विषय के संबंध में अंतिम निर्णय करने की समर्थता न हो। जैसे—ढुलमुल-यकीन=जल्दी हर बात पर अथवा कभी एक बात पर और कभी दूसरी बात पर विश्वास कर लेनेवाला।

ढुलवाई—स्त्री०[हिं० ढुलवाना] ढुलवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढुलवाना—स०[हिं० ढोना का प्रे०] किसी को कुछ ढोने में प्रवृत्त करना। ढोने का काम किसी दूसरे से कराना।

ढुलाई—स्त्री० [हिं० ढोना या ढुलवाना] १. ढोने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० 'ढुलवाई'।

ढुलाना—स०[हिं० ढोना का प्रे०] कोई चीज ढोने का काम किसी से कराना। ढुलवाना। जैसे—असबाब ढुलाना।

†स० १. नीचे की ओर गिराना, बहाना या लाना। ढलकाना। २. किसी ओर अनुरक्त या प्रवृत्त कराना, अनुकूल या प्रसन्न कराना। ३. लुढ़काना। ४. इधर-उधर चलाना-फिराना या लाना-ले जाना। ५. लेप आदि के रूप में किसी चीज पर पोतना या लगाना। ६. डुलाना। (दे०)

ढुलुआ—पुं०[देश०] खजूर की बनी हुई चीनी।

ढुवारा†—पुं०[देश०] घुन (कीड़ा)।

ढूंकना—अ०=ढुकना।

ढूंका†—पुं०=ढूका।

ढूंढ़—स्त्री०[हिं० ढूँढ़ना] ढूंढ़ने की क्रिया या भाव। खोज।

ढूंढ़ना—स०[सं० ढुंढ] किसी छिपी या खोई हुई अथवा इधर-उधर पड़ी हुई या आँखों से ओझल वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने के लिए इधर-उधर देखना-भालना। जैसे—आलमारी में से किताब ढूँढ़ना। (ख) किसी वकील का घर या डाक्टर की दूकान ढूँढ़ना।

ढूंढला—स्त्री०[सं० ढुंढा] हिरण्य कश्यप की बहन ढुंढा।

ढूकड़ा†—अव्य० [सं० ढौक] पास। समीप। (राज०) उदा०—साल्ह महलहूँ ढूकड़ा ढाठी डेरउ लीध।—ढोला मारू।

ढूका—पुं०[हिं० ढुकना] १. ढुकने या प्रविष्ट होने की क्रिया या भाव। २. किसी की बात सुनने या रंग-ढंग देखने के लिए आड़ में छिप या लुककर बैठना।

मुहा०—ढूका देना या लगाना=छिप या लुककर किसी की बात-चीत सुनना या रंग-ढंग देखना। **(किसी के) ढूके लगाना**=ढूका लगाना। (देखें ऊपर)

ढूढ़िया—पुं०[देश०] एक तरह के श्वेताम्बर जैन साधु जो मुँह पर पट्टी बाँधे रहते हैं।

ढूल*—पुं०=ढोल। उदा०—असंष सारहली बाजइ ढूल।—नरपतिनाल्ह।

ढूलड़ी†—स्त्री० [?] गुड़िया। (डिं०) उदा०—राजकुँमारि ढूलड़ी रमांति।—प्रिथीराज।

ढूसर—पुं० [देश०] वैश्यों का एक वर्ग जो आज-कल प्रायः 'भार्गव' नाम से प्रसिद्ध हो रहा है।

ढूसा†—पुं० [अनु०] कुश्ती के समय नीचे गिरे या पट पड़े हुए पहलवान की गरदन पर कलाई और कोहनी के बीच की हड्डी से बार बार रगड़ते हुए किया जानेवाला आघात। रद्दा।

ढूह†—पुं० [सं० स्तूप] १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा। ३. सीमा आदि का सूचक मिट्टी का छोटा, ऊँचा ढेर।

ढूहा—पुं०=ढूह।

ढेंक—स्त्री० [सं० ढेक] लंबी गरदनवाला एक प्रकार का जलपक्षी।

ढेंकली—स्त्री० [हिं० ढेंक=लंबी गरदनवाली एक चिड़िया] १. चावल निकालने के लिए धान कूटने का एक प्रसिद्ध यंत्र जो लंबी मोटी लकड़ी का बना होता और जो बार बार पैर से दबाकर चलाया जाता है। ढेंकी।

मुहा०—(किसी को) ढेंकली में डालना=ऐसी अवस्था में रखना जिसमें बहुत कष्ट या संकट हो।

२. सिंचाई आदि के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक यंत्र जिसमें एक ढाँचे पर बंधे ऊँचे बाँस के सिरे पर पानी भरने के लिए कोई पात्र विशेषतः डोल बंधा रहता है। ३. कपड़े जोड़ने के लिए एक प्रकार की आड़ी सिलाई।

क्रि० प्र०—मारना।

४. अरक, असव आदि खींचने का वक-तुंड नामक यंत्र। ५. सिर नीचे करके सारे शरीर को उलटकर दूसरी ओर ले जाने की क्रिया। कलाबाजी। कलैया।

क्रि० प्र०—खाना।

ढेंका—पुं० [हिं० ढेंक=पक्षी] १. कोल्हू में का वह बाँस जो जाट के सिरे से कतरी तक लगा रहता है। २. दे० 'ढेंकली'।

ढेंकिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नृत्य।

ढेंकिया—स्त्री० [हिं० ढेंकी] सिलाई में, कपड़े काटने का एक ढंग या काट जिसके फलस्वरूप किसी कपड़े की लंबाई एक तिहाई घट जाती है और चौड़ाई एक तिहाई बढ़ जाती है।

ढेंकी—स्त्री० [सं०] नृत्य का एक प्रकार।

स्त्री०=ढेंकली।

ढेंकुर—पुं० [स्त्री० ढेंकुरी] दे० 'ढेंकली'।

ढेंकुला†—पुं०=बड़ी ढेंकली।

ढेंकुली—स्त्री०=ढेंकली।

ढेंटी—स्त्री० [देश०] – धव का पेड़।

ढेंढ़†—पुं० [देश०] १. हिन्दुओं में एक जाति जिसकी गिनती अन्त्यजों में होती थी। २. कौआ।

वि० जिसे कुछ भी बुद्धि न हो। परम मूर्ख। जड़।

†पुं०=डोडा (वनस्पतियों का)।

ढेंढर—पुं० [हिं० टेंटर] १. एक रोग जिसमें आँख के डेले पर मांस निकल आता है। २. इस प्रकार आँख के डेले पर उभरा या निकला हुआ मांस।

ढेंढवा—पुं० [देश०] लंगूर।

ढेंढा†—पुं० १.=ढेढ़। २.=ढेंढवा।

ढेंढी—स्त्री० [हिं० ढेंढा] १ कपास पोस्ते आदि की डोडी। २. कान में पहनने का एक गहना।

ढेंप—स्त्री०=ढेंपनी (ढिपनी)।

ढेंपनी—स्त्री०=ढिपनी।

ढेउआ†—पुं० [सं० ढेब्बुका] पैसा नाम का ताँबे का सिक्का।

ढेऊ†—पुं० [देश०] पानी की तरंग। लहर।

ढेक—स्त्री० =ढेंक (जल-पक्षी)।

ढेकुला—पुं० =ढेंकुला (बड़ी ढेंकली)।

ढेड़—पुं०=ढेंढ़।

ढेड़स—स्त्री०=डेंड़सी।

ढेपुनी†—स्त्री०=ढिपनी।

ढेबरी—स्त्री०=ढिबरी।

ढेबुआ—पुं०=ढेउआ (पैसा)।

ढेबुक—पुं०=ढेउआ (पैसा)।

ढेम मौज—स्त्री० [देश० ढेऊ+फा० मौज] ऊँची या बड़ी लहर।

ढेर—पुं० [हिं० धरना ?] [स्त्री० अल्पा० ढेरी] एक स्थान पर विशेषतः एक दूसरी पर रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का ऊँचा समूह।

विशेष—ढेर सदा निर्जीव पदार्थों का होता है।

मुहा०—ढेर करना =किसी को मारकर इस प्रकार गिरा देना कि वह निर्जीव पदार्थ का ढेर या राशि जान पड़े अथवा हो जाय।

पद—ढेर-सा=मान, मात्रा आदि में अधिक या बहुत। जैसे—ढेर-सा, रुपया।

ढेरना†—पुं० [देश०] सूत या रस्सी वटने की फिरकी।

ढेरा—†पुं० [देश०] १. सुतली बटने की फिरकी जो परस्पर काटती हुई दो आड़ी लकड़ियों के बीच में एक खड़ा डंडा जड़कर बनाई जाती है। २. लकड़ी का वह घेरा जो मोट के मुँह पर लगा होता है। ३. चकई नाम का खिलौना। ४. अंकोल वृक्ष।

†पुं०=ढेला।

पुं० [?] सिहोर नामक वृक्ष। उदा०—हँसि मकोई ढाँक औ **ढेरा**।—नूर मुहम्मद।

ढेरा ढोंक—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।

ढेरी—स्त्री० [हिं० ढेर] छोटा ढेर। जैसे—आमों की ढेरी।

ढेल—पुं०=ढेला।

ढेलवाँस—स्त्री० [हिं० ढेला+सं० पाश] एक प्रकार की जालीदार थैली जिसके एक सिरे पर लंबी रस्सी बंधी रहती है।

विशेष—थैली में बहुत से छोटे-मोटे कंकड़ पत्थर भरे जाते हैं और तब उस रस्सी से पकड़कर उसे चारों ओर आकाश में घुमाया जाता है जिससे कंकड़ पत्थर चुट-फुट इधर-उधर गिरकर आघात करते हैं।

ढेला—पुं० [सं० दल; हिं० डला] १. किसी जमी हुई चीज का कड़ा और ठोस छोटा टुकड़ा जिसका आकार या रूप नियमित न हो और जो हाथ में उठाया जा सके। जैसे—मिट्टी या पत्थर का ढेला, गुड़ या नमक का ढेला। २. अवध में होनेवाला एक तरह का धान। उदा०—मधुकर ढेलाजीरा सारी।—जायसी।

ढेला चौथ—स्त्री० [हिं० ढेला+चौथ] भादों सुदी चौथ जिस दिन चंद्रमा देख लेने पर उसके कलंकात्मक दोष से बचने के लिए आस-पास के मकानों पर ढेले फेंके जाते और गालियाँ सुनी जाती हैं।

ढेवुका—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक सिक्का जो एक पैसे के मूल्य के बराबर होता था।

ढेंका†—पुं० [?] मेंढ़क।

ढेंकली—स्त्री०=ढेंकली।

ढैंचा—पुं० [देश०] १. चकवँड़ की तरह का एक पेड़ जिसकी छाल से रस्सियाँ बनाई जाती हैं। जयंती। २. सन या पटवे के डंठल जिससे प्रायः भीटा छाया जाता है।

†पुं०=ढौंचा (पहाड़ा)।

ढैया—स्त्री० [हिं० ढाई] १. ढाई सेर का बाट। २. ढाई सेर की तौल। ३. ढाई गुने का पहाड़ा। ढौंचा। ४. फलित ज्योतिष में, शनि का भोग-काल जो ढाई पहर, ढाई दिन, ढाई महीने, ढाई वर्ष आदि का होता है।

ढोंक—स्त्री०=ढोक (मछली)।

ढोंकना—स० [अनु०] कोई चीज अधिक मात्रा में और जल्दी जल्दी पीना। (व्यंग्य)

ढोंका—पुं० [देश०] १. किसी चीज का ठोस, कड़ा तथा बड़ा टुकड़ा। बड़ा ढेला। जैसे—पत्थर या मिट्टी का ढोंका। २. वह बाँस जो कोल्हू में जाट के सिरे से लेकर कोल्हू तक बँधा रहता है। ३. दो ढोली अर्थात् ४०० पानों के मान की संज्ञा।

ढोंग—पुं० [हिं० ढंग] दूसरों की दया, सहानुभूति आदि प्राप्त करने के लिए खड़ा किया हुआ ढकोसला या रचा हुआ पाखंड।

ढोंगधतूर—पुं० [हिं० ढोंग+धूर्त्त] १. ऐसा व्यक्ति जो ढोंग रचकर अपना काम निकाल लेता हो। २. धूर्त्त विद्या।

ढोंग-बाज—वि०=ढोंगी।

ढोंग-बाजी—स्त्री० [हिं० ढोंग+फा० बाजी] झूठ-मूठ ढोंग रचने की क्रिया या भाव।

ढोंगी—वि० [हिं० ढोंग] ढोंग रचनेवाला झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। (व्यक्ति)

ढोंटा—पुं०=ढोटा।

ढोंढ़—पुं० [सं० तुंड] १. कपास, पोस्ते आदि की कली। २. कली।

ढोंढी—स्त्री० [हिं० ढोंढ़] १. नाभि। घुन्नी। २. कली। डोडी।

ढोक—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली जो १२ इंच लंबी होती है। ढेरी। ढोंक।

ढोका—पुं०=ढोंका।

ढोटा—पुं० [हिं० ढोटी का पुं०] १. पुत्र। बेटा। २. बालक। लड़का।

ढोटी—स्त्री० [सं० दुहितृ) १. पुत्री। बेटी। २. बालिका। लड़की।

ढोटौना—पुं०=ढोटा।

ढोड़†—पुं० [देश०] ऊँट। (डिं०)

ढोना—स० [सं० वोढ=वहन करना, ले जाना; आद्यंत विपर्यय—ढोव] १. पीठ या सिर पर रखकर या हाथ में लटकाकर कोई भारी चीज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—मजदूरों का माल ढोना। २. पशु, यान गादि पर लादकर भारी चीजें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—गधों पर ईंटें ढोना। ट्रक या बैलगाड़ी पर अनाज या माल ढोना। ३. कहीं से बहुत-सी संपत्ति आदि अनुचित रूप से उठाकर ले जाना। ४. विपत्ति, कष्ट आदि में निर्वाह करना।

ढोर—पुं० [हिं० ढुरना] गाय, बैल आदि पशु। चौपाया।

स्त्री० [हिं० ढुरना] १. ढुरने की क्रिया या भाव। २. अंगों आदि का कोमलतापूर्ण और मोहक संचालन। नजाकत की दशा। उदा०—कोमल चरन कौंल नटवर ढोर मोर, पोर-पोर छोरै छवि कोटिन अनंग की। —भारतेन्दु।

ढोरना†—स० [हिं० ढारना] १. ढालना। ढरकाना। २. लुढ़काना। ३. हिलाना-डुलाना। ४. (अपने या किसी के) पीछे या साथ चलने में प्रवृत्त करना। पीछे लगाना।

अ० १. जमीन पर लोटना या लुढ़कना। २. किसी का अनुयायी बनकर उसके पीछे या साथ चलना।

ढोरा—पुं०=ढोर।

ढोरी—स्त्री० [हिं० ढोरना] १. ढोरने का भाव। २. उत्कट अभिलाषा। ३. धुन। लगन। उदा०—ढोरी लाई सुनन की कहि गोरी मुसकात। —बिहारी।

ढोल—पुं० [सं० ढक्का√ला (लेना)+क, पृषो० सिद्धि, मि० फा० दुहुल] १. एक प्रकार का लंबोतरा बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है।

मुहा०—(किसी बात का) ढोल पीटना या बजाना=कोई बात खुले आम सबसे कहते फिरना। २. कान की वह झिल्ली या परदा जिसपर वायु का आघात पड़ने से शब्द का ज्ञान होता है।

ढोलक—स्त्री० [सं० ढोल+कन्] एक तरह का छोटा ढोल। ढोलकी।

ढोलकिया—पुं० [हिं० ढोलक] ढोल बजानेवाला व्यक्ति।

ढोलकी—स्त्री०=ढोलक।

ढोल-ढमक्का—पुं० [हिं० ढोल+अनु० ढमक्का] १. ढोल और उसके साथ बजनेवाले कई तरह के बाजे। २. व्यर्थ का बहुत अधिक आडंबर।

ढोलन—पुं० [हिं० ढोला] १. दूल्हा। २. पति।

ढोलना—पुं० [हिं० ढोल] ढोलक के आकार का एक तरह का छोटा जंतर जिसे तागे में पिरोकर गले में पहना जाता है।

स० १.=ढालना। २.=ढोरना या डोलाना।

ढोलनी—स्त्री० [सं० ढोलन] बच्चों का छोटा झूला। पालना।

ढोलवाई—स्त्री० दे० 'ढुलवाई'।

ढोला—पुं० [हिं० ढोल] १. सड़ी हुई वनस्पतियों, शरीरों आदि में पड़नेवाला एक तरह का सफेद छोट कीड़ा। २. हद या सीमा का निशाना। ३. देह। शरीर।

†पुं० [सं० दुर्लभ; प्रा० दुल्लह] १. वर। दूल्हा। २. पति। ३. प्रियतम। ४. विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। (पश्चिम) ५. कलवाहा वंश के राजा नल के पुत्र का नाम जिसका प्रेम माखणी पूगल के राजा पिंगल की कन्या मारू से हुआ था। इनकी प्रेम गाथा अति प्रसिद्ध है।

ढोलिनी—स्त्री० [हिं० ढोलिया का स्त्री० रूप] ढोल बजानेवाली।

ढोलिया—पुं० [हिं० ढोल] [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला व्यक्ति।

ढोली—स्त्री० [हिं० ढोल] दो सौ पानों की गड्डी या थाक।

†स्त्री०=ठठोली।

ढोव—पुं० [हिं० ढोवना (ढोना)] १. ढोने की क्रिया या भाव। २. ढोकर ले जाई जानेवाली चीज। ३. प्राचीन काल में, वह भेंट जो राजा को

सरदार लोग मंगल अवसरों पर देते थे और जो मात्रा, मान आदि की अधिकता के कारण ढोकर ले जाई जाती थी।

ढोवना†—स०=ढोना।

ढोवा—पुं०[हिं० ढोना]१. ढोये जाने की क्रिया या भाव। ढुलाई। २. माल ढोनेवाला व्यक्ति। ३. दूसरों का माल या संपत्ति अनुचित रूप से उठाकर ले जाना। लूट। †४.=ढोव।

ढोवाई†—स्त्री०=ढुलाई।

ढोहना*—स०१.=ढोना। २.=ढूँढ़ना।

ढौंचा—पुं० [सं० अर्द्ध प्रा० अट्ठ=हिं० चार] साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना—अ०[हिं० धौंस से अनु०,] आनंद ध्वनि करना।

ढौकन—पुं०[सं०√ढौक् (गमनादि)+ल्युट्—अन] १. घूसप। रिश्वत। २. उपहार। भेंट।

ढौकना—स०[देश०] तरल पदार्थ जल्दी-जल्दी और बहुत अधिक पीना। (व्यंग्य)

ढौरना†—स०[हिं० ढाल] इधर-उधर घुमाना। ढुराना।

ढौरा—वि० [सं० धवल] [स्त्री० ढौरी] १. सफेद। २. साफ स्वच्छ।

ढौरी*—स्त्री०[हिं०] धुन। लगन।

स्त्री०[हिं० ढरना] ढंग। तरीका।

ण

ण—देवनागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मूर्द्धन्य, अनुनासिक, अल्पप्राण तथा सघोष व्यंजन है।

पुं०[सं० √नख् (गति)+ड, पृषो० सिद्धि]१. आभूषण। गहना। २. ज्ञान। ३. निर्णय। फैसला। ४. वह स्थान जहाँ पीने का पानी रखा जाता हो। ५. दान। ६. शिव का एक नाम। ७ बुद्ध का एक नाम। ८. पिंगल में नगण का संक्षिप्त रूप।

वि० गुणों आदि से रहित या शून्य।

ण-गण—पुं०[मध्य०स०] छन्द शास्त्र में, दो मात्राओं का एक मात्रिक गण। इसके ये दो रूप होते हैं—(क)श्री (ऽ) और(ख) हरि (।।)।

त

त—देवनागरी वर्णमाला का १६वाँ और तवर्ग का पहला व्यंजन जो उच्चारण तथा भाषाविज्ञान की दृष्टि से दंत्य, स्पर्शी, अल्पप्राण तथा अघोष होता है। छन्दशास्त्र में यह तगण का संक्षिप्त रूप माना जाता है और कविता में यह 'तो' का अर्थ देता है। उदा०—नाहित मौन रहब दिन राती।—तुलसी।

पुं०[सं० √तक् (हँसना)+ड]१. पुण्य। २. रत्न। ३. अमृत। ४. एक बुद्ध का नाम। ५. स्तन। ६. गोद। ७. गर्भाशय। ८. नाव। ९. योद्धा। १०. बर्बर ११. शठ। १२. म्लेच्छ। १३. चोर। १४. झूठ। १५. दुम। पूँछ।

*क्रि० वि०=तो।

तँई—अव्य०=तई।

तंक—पुं० [सं० √तंक् (कष्ट से जीना)+अच्] १. दुःखी जीवन। २. प्रिय के वियोग से होनेवाला कष्ट या दुःख। ३. डर। भय। ४. पत्थर की टाँकी। ५. पहनने के कपड़े।

तंकन—पुं०[सं०√तंक्+ल्युट्—अन] कष्टमय जीवन व्यतीत करना।

तंकारी—स्त्री०=टँगारी (कुल्हाड़ी)।

तंग—वि०[फा०]१. जिसमें आवश्यक या उचित चौड़ाई या विस्तार का अभाव या कमी हो। सँकरा। संकीर्ण। जैसे—तंग कमरा, तंग गली। २. (पहनने की चीज) जिसमें कष्टदायक कसावट या संकीर्णता हो। आवश्यकता से अधिक कसा हुआ और कुछ छोटा जैसे—तंग कुरता, तंग जूता। ३. (व्यक्ति) जो किसी बात से बहुत चिन्तित और दुःखी या पीड़ित हो रहा हो। परेशान। हैरान। जैसे—(क) लड़का सब को बहुत तंग करता है। (ख) महीनों से उसे बुखार ने तंग कर रखा है। ४. (काम या बात) जिसमें आवश्यक या उचित विस्तार के लिए यथेष्ट अवकाश न हो। जैसे—आज-कल उनका हाथ बहुत तंग है, अर्थात् उनके हाथ में काम चलाने योग्य धन नहीं है। ५. (मन या हृदय) जिसमें उदारता, सहृदयता आदि का अभाव हो। जैसे—वह बहुत तंग दिल का आदमी है; उससे सहायता की कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।

पुं०वह तस्मा जिससे घोड़ों की पीठपर जीन या साज कसकर (उसके पेट के नीचे से) बाँधा जाता है।

पुं०[?] १. टाट का बोरा। २. धन-संपत्ति। ३. ज्ञान। उदा०—आवत जात दोऊ विधि लूटै सर्व तंगहरि लीन्हो हो।—कवीर।

तंगदस्त—वि०[फा०] [भाव० तंग-दस्ती]१. कृपण। २. धनहीन। ३. जिसके हाथ में अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए यथेष्ट धन न हो।

तंगदस्ती—स्त्री० [फा०] १. कृपणता। कंजूसी। २. आर्थिक कष्ट या संकट।

तंगहाल—वि०[फ़ा०+अ०] [भाव० तंग-हाली]१. कष्ट विपत्ति या या संकट में पड़ा हुआ। २. आर्थिक कष्ट या संकट में पड़ा हुआ। ३. रोग-ग्रस्त। बीमार।

तंगहाली—स्त्री०[फा०+अ०]तंगहाल होने की अवस्था या भाव।

तंगा—पुं०[?]१. एक प्रकार का पेड़। २. तांबे का एक छोटा सिक्का जो प्रायः दो पैसे मूल्य का होता था। टका।

तँगिया—स्त्री०[फा० तंग]१. छोटा तंग या तस्मा। २. पहनने के कपड़ों में लगाई जानेवाली तनी। बन्द। जैसे—अँगिया या मिरजई की तंगिया।

तंगी—स्त्री०[फा०]१. तंग होने की अवस्था या भाव। संकीर्णता। २. विपत्ति या संकट में पड़कर चिंतित और दुःखी होने की अवस्था या भाव। ३. आर्थिक संकट। धन आदि का अभाव। ४. ऐसी अवस्था जिसमें किसी चीज की पूर्ति की अपेक्षा माँग अधिक होने के कारण उसका यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होना संभव न हो। जैसे—शहर में वर्षों से पानी की तंगी है।

तंजेब—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बढ़िया महीन मलमल।

तंड—पुं० [सं०√तंड् (मारण)+अच्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

पुं०[सं० तांडव] नाच। नृत्य।

तंडक—पुं०[सं०√तंड्(नृत्य)+ण्वुल्—अक]१. खंजन पक्षी। २. फेन। ३. वृक्ष का तना या धड़। ४. साहित्य में, ऐसी पदावली जिसमें समासों की अधिकता हो। ५. बहुरूपिया।

तंडव—पुं०=तांडव।

तंडा—स्त्री०[सं०√तंड्+अच्—टाप्] वध। हत्या।

तंडि—पुं०[सं०√तंड्+इन् (बा०)] एक वैदिक ऋषि।

तंडु—पुं०[सं०√तंड्+उन्]महादेव जी के नंदिकेश्वर।

तंडुरण—पुं०[सं०]१. चावल का पानी। २ कीड़ा-मकोड़ा।

तंडुरीण—पुं०[सं० तंडा+उरच्+ख–ईन]१. चावल की धोवन। २ छोटे-मोटे कीड़े या फतिंगे। ३. बर्बर व्यक्ति। ४. वज्र मूर्ख।

तंडुल—पुं० [सं०√तंड्+उलच्] १. चावल। २. बायविडंग। ३. चौलाई का साग। ४. हीरे की एक पुरानी तौल जो सरसों के बराबर होती थी।

तंडुल-जल—पुं०[मध्य०स०] वह पानी जिसमें चावल भिगोया अथवा पकाया गया हो। वैद्यक में यह बल-वर्द्धक तथा सहज में पचनेवाला माना जाता है।

तंडुलांबु—पुं० [सं० तंडुल-अंबु, मध्य०स०]१. तंडुल-जल। २. पके हुए चावल की माँड। पीच।

तंडुला—स्त्री०[सं०√तंड्+उलच्–टाप्]१. बायविडंग। २. ककही या कंघी नाम का पौधा।

तंडुलिया—स्त्री०[सं० तंडुली] चौलाई (साग)।

तंडुली—स्त्री० [स० तडुल+ङीष्] १. एक प्रकार की ककड़ी। २. चौलाई का साग। ३. यव-तिक्ता लता।

तंडुलीक—पुं०[सं० तंडुली√कै (प्रतीत होना)+क] चौलाई का साग।

तंडुलीय—पुं०[सं० तंडुल+छ—ईय]चौलाई का साग।

वि० तडुल-संबंधी।

तंडुलीयक—पुं० [सं० तण्डुलीय + क(स्वार्थ)] १. बायबिडंग। २. चौलाई का साग।

तंडुलीयिका—स्त्री०[सं० तंडुलीय+कन्—टाप्, इत्व]बायविडंग।

तंडुलु—पुं०[सं०=तंडुल, पृषो० उत्व] बायविडंग।

तंडुलेर (रक)—पुं० [सं० तंडुल+ढ–एय] चौलाई का साग।

तंडुलोत्थ—पुं०[सं० तंडुल-उद्√स्था (ठहरना)+क]=तंडुल-जल।

तंडुलोदक—पुं०[सं० तंडुल-उदक, ष०त०]=तंडुल-जल।

तंडुलौघ—पुं०[सं० तंडुल-ओघ, ष०त०] एक प्रकार का बाँस।

तंत†—पुं०[सं० तंतु] १. तंतु। ताँत। २. निरन्तर चलता रहनेवाला क्रम। ३. सूत्र। ४. किसी बात के लिए मन में होनेवाली ऐसी उतावली जो लगन या लौ की सूचक हो। ५. प्रबल इच्छा या कामना। ६. अधीनता। वश।

क्रि० प्र०—लगना।

७. दे० 'तंतु'।

पुं०[सं० तंत्र]१. ऐसा बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं। जैसे—बीन, सितार आदि। २. क्रिया। ३. तंत्र-शास्त्र। ४. किसी के अधीन या वशवर्ती होना।

वि० जो तौल में ठीक या बराबर हो।

†पुं०=तत्त्व।

तंत-मंत—पुं०=तंत्र-मंत्र।

तंतरी*—पुं०, वि०=तंत्री।

तंति—स्त्री०[सं० √तन् (विस्तार)+क्तिच्]१. डोरी, तांत अथवा इसी तरह की कोई और वस्तु। २. कतार। पंक्ति। ३. विस्तार। ४. गाय। गौ। ५. बुनकर। जुलाहा।

तंतिपाल—पुं०[सं० तंति√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] १. सहदेव का वह नाम जिससे वह अज्ञातवास के समय विराट के यहाँ प्रसिद्ध थे। २. गौओं का पालन और रक्षा करनेवाला व्यक्ति।

तंतिसर†—पुं०[सं० तंत्री स्वर] ऐसे बाजें, जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। जैसे—सारंगी, सितार आदि।

तंतु—पुं०[सं०√तन्(विस्तार)+तुन्]१. ऊन, रेशम, सूत आदि का बटा हुआ डोरा। तागा। २. सूत की तरह के वे पतले, लंबे रेशे जिनके योग से प्राणियों, वनस्पतियों आदि के भिन्न-भिन्न अंग बने होते हैं। ३. धातु का वह विशिष्ट प्रकार का बहुत ही महीन तार जो बिजली के लट्टुओं, निर्वात नलियों आदि में लगा रहता है और जो विद्युतधारा से तपकर चमकने और प्रकाश देने लगता है। **(फिलामेन्ट)** ४. पौधों का वह पतला अंग जो आस-पास की टहनियों आदि से लगकर चक्कर खाता हुआ उनका आश्रय लेता है। ५. मकड़ी का छाता।

पद—तंतु कीट। (दे०)

६. चमड़े की बटी हुई डोरी। ताँत। ७. अष्ट-पाद जाति की मछली जो बहुत ही घातक और हिंसक होती है। ८. फैलाव। विस्तार। ९. बाल-बच्चे। औलाद। संतान। १०. किसी प्रकार की परम्परा। निरंतर चलनेवाला क्रम। जैसे—वंश या यज्ञ का तंतु।

*पुं०=तंत्र।

तंतुक—पुं० [सं० तंतु√कै (प्रतीत होना)+क] १. सरसों। २. रस्सी।

तंतुका—स्त्री०[सं० तंतुक +टाप्]नाड़ी।

तंतुकाष्ठ—पुं०[मध्य०स०] जुलाहों की एक प्रकार की लकड़ी या ब्रुश जिससे ताना साफ किया जाता है। तूली।

तंतुकी—स्त्री०[सं० तंतुक+ङीष्] नाड़ी।

तंतुकीट—पुं०[मध्य०स०]१. मकड़ी। २. रेशम का कीड़ा।

तंतु-जाल—पुं०[ष०त०] शरीर के अन्दर जाल के रूप में फैली हुई नसें। (वैद्यक)।

तंतुण, तंतुन—पुं०[सं०√तन्+तुनन्] 'मगर' नामक जल-जंतु।

तंतु-नाग—पुं० [उपमि०स०] मगर नामक जल-जंतु।

तंतु-नाभ—पुं० [ब०स०, अच्] मकड़ा।

तंतु-निर्यास—पुं० [ब० स०] ताड़ का वृक्ष।

तंतु-पर्व (न्)—पुं० [ब०स०] तागा अर्थात् राखी बाँधने का पर्व। रक्षा-बंधन।

तंतुभ—पुं० [सं० तंतु√भा (प्रकाशित होना)+क] १. सरसों। २. गौ का बच्चा। बछड़ा।

तंतुमत्—पुं० =तंतुमान्।

तंतुमान् (मत्)—पुं० [सं० तंतु+मतुप्] अग्नि। आग।

तंतुर—पुं० [सं० तंतु+र] कमल की जड़। भसींड़। मृणाल।

तंतुल—पुं० [सं० तंतु√लच्] मृणाल। कमलनाल।

तंतुवादक—पुं० [सं० ष०त०] वह व्यक्ति जो तारवाले बाजे (जैसे—सारंगी, सितार आदि) बजाता हो।

तंतुवाप—पुं० [सं० तंतु√वप् (बुनना)+अण्] दे० 'तंतुवाय'।

तंतुवाय—पुं० [सं०तंतु√वेञ् (बुनना)+अण्] १. कपड़े बुननेवाला। जुलाहा। ताँती। बुनकर। २. मकड़ी।

तंतुविग्रह—स्त्री० [ब०स०] केले का पेड़।

तंतु-शाला—स्त्री० [मध्य०स०] १. वह स्थान जहाँ तंतु बनाये जाते हों। २. वह स्थान जहाँ कपड़े बुने जाते हों।

तंतु-सार—पुं० [ब०स०] सुपारी का पेड़।

तंत्र—पुं० [सं०√तन् (विस्तार)+ष्ट्रन] १. डोरा या सूत। तंतु। २. चमड़े की डोरी। ताँत। ३. जुलाहा। ४. कपड़े बुनने की सामग्री। ५. कपड़ा। वस्त्र। ६. काम। कार्य। ७. प्रबंध। व्यवस्था। ८. कारण। वजह। ९. उपाय। युक्ति। १०. दल। समूह। ११. आनन्द। प्रसन्नता। १२. घर। मकान। १३. धन-सम्पत्ति। १४. कोटि। वर्ग। श्रेणी। १५. उद्देश्य। १६. कुल। वंश। १७. कसम। शपथ। १८. कायदा। नियम। १९. सजावट। २०. औषध। दवा। २१. प्रमाण। सबूत। २२. अधिकार। स्वत्व। २३. अधीनता। परवशता। २४. निश्चित सिद्धान्त। २५. वह पद जिस पर रहकर किसी कर्त्तव्य का पालन किया जाता है। २६. ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था जिसके अनुसार घर-गृहस्थी, राज्य, समाज आदि का नियंत्रण और संचालन किया जाता है। २७. राज्य और उसके अन्तर्गत काम करनेवाले सभी राजकीय कर्मचारी। २८. व्यवस्था, शासन आदि करने की कोई निश्चित या विशिष्ट प्रणाली या रीति। जैसे—हिन्दू राज-तंत्र, पाश्चात्य समाज-तंत्र। ३०. हिन्दुओं का प्रसिद्ध शास्त्र जो शिव-प्रोक्त कहा जाता है और जिसमें शिव तथा शक्ति की उपासना, पूजन आदि के द्वारा कुछ प्रकार की क्रियाओं और मंत्रों से अनेक प्रकार के लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्य सिद्ध करने के विधान हैं।

विशेष—इस शास्त्र का मुख्य सिद्धान्त यह है कि कलियुग में वैदिक मंत्रों, यज्ञों आदि का नहीं, बल्कि तांत्रिक उपासना, विधि और यंत्र-मंत्रों का ही अनुष्ठान होना चाहिए। सब प्रकार के अभिचार, झाड़-फूंक पुरश्चरण, भैरवी चक्र-पूजन, उच्चाटन, मारण, मोहन आदि षट्कर्म इसी तंत्रशास्त्र के अन्तर्गत आते हैं। यह मुख्यतः शाक्तों का प्रधान शास्त्र है और इसके मंत्र प्रायः एकाक्षरी और अर्थहीन होते हैं। बौद्धों ने हिन्दुओं से यह शास्त्र लेकर चीन तथा तिब्बत में इसका विशेष प्रचार तथा विकास किया था। आधुनिक विद्वान् इसे डेढ़ दो हजार वर्षों से अधिक पुराना नहीं मानते।

तंत्रक—पुं० [सं० तंत्र+कन्] नया कपड़ा।

तंत्रकार—पुं० [सं०] बाजा बजानेवाला।

तंत्रण—पुं० [सं०√तंत्र् (शासन करना)+ल्युट्—अन] १. किसी को अपने तंत्र या शासन में रखना। २. तंत्र के अनुसार चलना या चलाना।

तंत्रता—स्त्री० [सं०तंत्र+तल्—टाप्] १. किसी तंत्र के अनुसार होने-होनेवाली व्यवस्था। २. ऐसी योग्यता या स्थिति जिसमें एक काम करने पर उसके साथ और भी कई काम आपसे आप हो जाँय।

तंत्रधारक—पु० [ष० त०] यज्ञ आदि कार्यों में वह व्यक्ति जो कर्म-कांड की पुस्तक लेकर याज्ञिक आदि के साथ बैठता हो।

तंत्र-मंत्र—पुं० [द्व० स०] तंत्र शास्त्र के विधानों के अनुसार किये जाने वाले अभिचार, पुरचरण आदि कृत्य।

तंत्र-युक्ति—स्त्री० [ष० त०] सुश्रुत संहिता के अनुसार वह युक्ति जिसके द्वारा किसी वाक्य का आशय समझा जाय। ये २८ प्रकार की कही गई हैं।

तंत्रवाप—पुं० [सं० तंत्र √वप् (बुनना)+अण्] १. तंतुवाय। तांती। २. मकड़ी।

तंत्रवाय—पुं० [सं० तंत्र√वेञ्(बुनना)+अण्] १. तंतुवाय। ताँती। जुलाहा। २. मकड़ी। ३. ताँत।

तंत्रसंस्था—स्त्री० [सं० ष० त०] वह संस्था जो तंत्र अर्थात् शासन करती हो।

तंत्रस्कंद—पुं० [सं०] ज्योतिष शास्त्र का वह अंग जिसमें गणित के द्वारा ग्रहों की गति आदि का निरूपण होता है। गणित ज्योतिष।

तंत्रस्थिति—स्त्री० [ष० त०] राज्य के शासन की प्रणाली।

तंत्र-होम—पुं० [तृ० त०] तंत्र शास्त्र के अनुसार होनेवाला होम।

तंत्रा—स्त्री० [सं०√तंत्र्+अ+टाप्] तंद्रा।

तंत्रायी (यिन्)—पुं० [सं० तंत्र√इ (गति)+णिनि] सूर्य।

तंत्रि—स्त्री० [सं० √तंत्र्+इ] १. तंत्री। २. तंद्रा।

तंत्रिका—स्त्री० [सं० तंत्री+कन्—टाप्, ह्रस्व] १. गुड़ूची। गुरुच। २. ताँत।

तंत्रिपाल—पुं० [सं० तत्रि√पाल्+णिच्+अण्] तंतिपाल। (दे०)

तंत्रि-पालक—पुं० [सं० ष० त०] जयद्रथ का एक नाम।

तंत्री—पुं० [सं० तंत्र+ङीष्] १. वह जो बाजों आदि की सहायता से गाने-बजाने का काम करता हो। २. गवैया। संगीतज्ञ। ३. सैनिक।

वि० १. तंत्र-सम्बन्धी। २. जिसमें पतार लगे हों। ३. तंत्र-शास्त्र का अनुयायी। ४. जो किसी तंत्र के अधीन हो। ५. परवश। पराधीन।

स्त्री० [सं०√तन्त्र्+ई] १. वीन, सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. ऐसे बाजे जिनमें बजाने के लिए तार लगे हो। ३. ताँत। ४. डोरी। रस्सी। ५. शरीर के अन्दर की नस। ६. वीणा। बीन। ७. एक प्राचीन नदी का नाम। ८. गुड़ची। गुरुच।

तंत्री-मुख—पुं० [ब० स०] तंत्र में हाथ की एक मुद्रा।

तंदरा—स्त्री० =तंद्रा।

तंदान—पुं० [पश्तो] क्वेटा (पाकिस्तान) के आस-पास के प्रदेशों में होनेवाला एक तरह का अंगूर।

तंदिही—स्त्री० =तंदेही।

तंदुआ—पुं०[देश०] ऊसर जमीन में होनेवाली एक तरह की घास।

तंदुरुस्त—वि० [फा०] १. जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ हो। नीरोग। २. जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो।

तंदुरुस्ती—स्त्री० [फा०] १. तंदुरुस्त या स्वस्थ होने की अवस्था या भाव। २. शारिरिक स्थिति। स्वास्थ्य।

तंदुल—पुं० =तंडुल।

तंदुलीयक—पुं० [सं० तण्डुलीयक] चौलाई का साग।

तंदूर—पुं० [फा० तनूर] मिट्टी में घास, मूंज आदि मिलाकर बनाई हुई रोटियाँ पकाने की एक प्रकार की भट्ठी जिसकी ऊँची गोलाकार दीवार के भीतरी भाग में आटे की लोई को हाथ से चिपटाकर के चिपकाया जाता है।

तंदूरी-—पुं० [हिं० तंदूर] छोटा तंदूर।

वि० १. तंदूर-संबंधी। २. तंदूर में पका हुआ। जैसे—तंदूरी रोटी।

पुं० [देश०] एक तरह का बढ़िया रेशम जिसका रंग पीला होता है।

तंदेही—स्त्री० [फा० तनदिही] १. कोई काम करने के लिए खूब मन लगाकर किया जानेवाला परिश्रम या प्रयत्न। २. ताकीद। ३. तल्लीनता।

तंद्रवाप, तंद्रवाय—पुं० [सं० तन्त्रवाप, तन्त्रवाय, पृषो० सिद्धि] तंतुवाय। बुनकर।

तंद्रा—स्त्री० [सं० √तन्द्र् (अवसाद)+अ–टाप्] १. हलकी नींद। २. दुर्बलता, रोग, विष आदि के प्रभाव के कारण होनेवाली वह स्थिति जिसमें मनुष्य या पशु-पक्षी को हलकी नींद-सी आ जाती है और वह प्रायः निश्चेतन अवस्था में कुछ समय तक पड़ा रहता है।

तंद्राल—वि० [सं०] १. जो तंद्रा में पड़ा हुआ हो। २. =तंद्रालु।

तंद्रालस—पुं० [सं० तंद्रा-आलस्य] वह आलस्य या शिथिलता जो तंद्रा के फलस्वरूप होती है। उदा०—निस्तब्ध मौन था अखिल लोपक तंद्रालस का वह विजन प्रान्त।—प्रसाद।

तंद्रालु—वि० [सं० तत्√द्रा (निन्दित गति)+आलुच्] जिसे तंद्रा आ रही हो।

तंद्रि—स्त्री० [सं० √तंद्+क्िन] =तंद्रा।

तंद्रिक—वि० [सं० तंद्रा+ठन्–इक] १. तंद्रा-संबंधी। २. (रोग) जिसमें तंद्रा भी आती हो।

पुं०=तंद्रिक ज्वर।

तंद्रिक-ज्वर—पुं० [कर्म० स०] एक तरह का संक्रामक ज्वर जिसमें रोगी प्रायः तंद्रा की अवस्था में पड़ा रहता है। (टाइफस)

तंद्रिक-सन्निपात—पुं० [कर्म० स०] वैद्यक में, एक तरह का सन्निपात जिसमें ज्वर बहुत तेजी से बढ़ता है, दम फूलने लगता, दस्त आने लगते हैं, प्यास अधिक लगने लगती है तथा जीभ काली पड़ जाती है। इसकी अवधि साधारणतः २५ दिनों की कही गई है।

तंद्रिका—स्त्री० [सं० तंद्रि+कन्–टाप्] तंद्रा।

तंद्रिता—स्त्री० [सं० तंद्रिन्+तल्—टाप्] तंद्रा में पड़े हुए होने की अवस्था या भाव।

तंद्रिल—वि० [सं० तंद्रा+इलच्] १. तंद्रा-संबंधी। २. तंद्रालु।

तंद्री—स्त्री० [सं० तंद्रि+ङीष्] १. तंद्रा। २.भृकुटी। भौंह।

वि० [तंद्रा+इनि] १. थका हुआ। शिथिल। २. मट्ठर। सुस्त।

तंबा—स्त्री० [सं०√तम्व् (जाना)+अच्-टाप] गौ। गाय।

पुं० [फा० तंबान] [स्त्री० अल्पा० तंबी] ढीली मोहरीवाला एक तरह का पाजामा।

तंबाकू—पुं० = तमाकू।

तंबिया—वि० [हिं० ताँबा+इया (प्रत्य)०] तांबे का बना हुआ।

पुं० १. ताँबे या पीतल का बना हुआ तरकारी आदि बनाने का चौड़े मुँहवाला एक तरह का पात्र। तांबिया। २. तसला।

तँबियाना—अ० [हिं० ताँबा] १. किसी पदार्थ का तांवे के रंग का हो जाना। पीला पड़ना। जैसे—आँखें तांबियाना। २. खाद्य पदार्थ का कुछ समय तक ताँबे के बरतन में रखे रहने पर ताँबे की गंध और स्वाद से युक्त होना। जैसे—तरकारी या दही तांबियाना।

तंबीर—पुं० [सं०√तंव् (जाना)+ईरन् (बा०)] ज्योतिष का एक योग।

तंबीह—स्त्री० [अ०] १. किसी की भलाई के लिए अथवा भविष्य में होनेवाले किसी अपकार या अहित में सावधान रहने के लिए उसे कही जानेवाली बात या दी जानेवाली सूचना। २. दंड। सजा।

तंबू—पुं० [हिं० तनना] १. मोटे कपड़े, टाट आदि को बाँसों, खूँटों, रस्सियों आदि की सहायता से तानकर बनाया हुआ अस्थायी आश्रय स्थान। खेमा।

क्रि० प्र० —खड़ा करना।—तानना।

२. एक तरह की मछली।

तंबूर—पुं० [फा०] एक तरह का छोटा ढोल।

पुं० =तंबूरा।

तंबूरची—पुं० [फा० तंबूर+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तंबूरा बजाता हो।

तंबूरा—पुं० [हिं० तानपूरा] सितार की तरह का तीन तारोंवाला एक बाजा जो स्वर में सहायता देने के लिए बजाया जाता है। तानपूरा।

तंबूरातोप—स्त्री० [हिं० तंबूरा+तोप] एक तरह की तंबूरे के आकार की बड़ी तोप।

तंबूल†—पुं० = तांबूल।

तंबेरण—पुं० [?] हाथी। (डिं०)

तंबोरा—पुं० १. दे० 'तंबोली। २. दे० 'तंबूरा'।

तंबोल—पुं० [सं० ताम्बूल] पान। उदा०—मुख तंबोल रँग धारहिं रसा।—जायसी।

†पुं० = तमोल।

तंबोलिन—स्त्री० 'तँबोली' का स्त्री० रूप।

तँबोलिया=स्त्री० [सं० तंबूल+हिं० इया (प्रत्य०)] एक तरह की पान के आकार की मछली।

पुं० = तंबोली।

तँबोली—पुं० [हिं० तँबोल+ई (प्रत्य०)] वह जो पान लगाकर बेचता हो। पान का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। तमोली।

तंभ—पुं० =स्तंभ।

तंभन—पुं० =स्तंभन।

तंभावती—स्त्री० [सं०] रात के दूसरे पहर में गाई जानेवाली संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

तंभोर—पुं० [सं० तांबूल] पान।

तंमोर—पुं० =तंभोर (पान)।

तँवार—स्त्री० [हिं० ताव] १. थकावट, रोग आदि के कारण सिर में आनेवाला चक्कर। घुमटा। २. ज्वरांश। हरारत।

तँवयरी—स्त्री० =तँवार।

तअज्जुब—पुं० [अ०] किसी अनोखी, अप्रत्याशित या विलक्षण घटना, बात, व्यवहार आदि का मूल या रहस्यपूर्ण कारण समझ में न आने पर उत्पन्न होनेवाला मनोविकार। आश्चर्य।

तअम्मुल—पुं० [अ०] १. सोच-विचार। २. सोच-विचार के कारण किसी काम में लगनेवाली देर। विलम्ब। ३. धैर्य। सब्र।

तअल्लुक—पुं० [अ०] लगाव। संबंध।

तअल्लुका—पुं० [अ०] वह बहुत से गाँव जो किसी एक जमींदार के अधिकार में होते थे।

पद—अतल्लुकेदार।

तअल्लुकेदार—पुं० [अ० तअल्लुकः+फा० दार] वह जो किसी बड़े तअलुल्के या इलाके का अधिकारी या स्वामी हो।

तअल्लुकेदारी—स्त्री० [अ० तअल्लुकः+फा० दारी] १. तअल्लुकेदार होने की अवस्था या भाव। २. वह सारी भूमि या क्षेत्र जो किसी तअल्लुकेदार के अधिकार में हो।

तअस्सुब—पुं० [अ०] [वि० तअस्सुबी] वह असहनशील और पक्षपातपूर्ण मनोवृत्ति जो पराई जातियों, धर्मों, व्यक्तियों अथवा उनके आचार, विचारों आदि के साथ उचित और न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करने देती और जिसके फलस्वरूप मनुष्य उन्हें उपेक्षा, घृणा, भय, संदेह आदि की दृष्टि से देखता है।

तइँ—सर्व०=तैं (तू)।

तइनात—वि० =तैनात।

तइसा—वि० =तैसा।

तईं—अव्य० [सं० तनु] १. एक अव्यय जिसका प्रयोग व्यक्तियों के सम्बन्ध में 'को' 'प्रति' या 'सम्बन्ध में' के अर्थ में होता है। जैसे—आपके तईं=आपको या आपके प्रति अथवा सम्बन्ध में। अपने तईं=अपने प्रति या अपने सम्बन्ध में। २. लिए। वास्ते।

तई—स्त्री० [हिं० तवा या तया का स्त्री०] थाली के आकार की एक प्रकार की छिछली कड़ाही जिसमें प्रायः जलेबी और माल-पुआ बनाया जाता है।

अव्य० [सं० तदा] उस समय। तब। (राज०) उदा०—कहौ तई करुणा मैं केसव।—प्रिथीराज।

तउ*—अव्य० [सं० ततः] १. उस समय। तब। २. उस प्रकार। त्यों। ३. से। प्रति। उदा०—तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू।—तुलसी। ४. तो।

तऊ†—अव्य० [हिं० तब+ऊ (प्रत्य०)] तिस पर भी। तो भी। तथापि।

तक—अव्य० [सं० अंत+क] संज्ञाओं अथवा संज्ञाओं के समान प्रयुक्त होनेवाले शब्दों के साथ लगकर अवधि, सीमा आदि का अन्तिम या अधिकतम छोर सूचित करनेवाला एक संबंध सूचक अव्यय। जैसे—(क) आखिर आप कहाँ तक (सीमा) जायँगे। (ख) आप कब तक (अवधि) आयँगे।

स्त्री० [पं० तकड़ी] १. तराजू। २. तराजू का पल्ला। हिं० स्त्री० [हिं० ताकना] १. ताकने की क्रिया या भाव। २. टकटकी। टक।

तकड़ा†—वि० = तगड़ा।

तकड़ी—स्त्री० [देश०] एक तरह की बारहमासी घास जो रेतीली जमीन में होती है। इसे घोड़े चाव से खाते हैं। चरमरा। हँन।

†स्त्री० =तराजू। (पंजाब)

तकदमा—पुं० [अ० तकद्दुम] अटकल। अनुमान। कूत।

तकदीर—स्त्री० [अ०] [वि० तकदीरी] वह प्राकृतिक या लोकोत्तर शक्ति जो घटित होनेवाली बातों को पहले ही निश्चित कर देती है। किस्मत। भाग्य। उदा०—तकदीर में लिखा था पिंजरे का आबोदाना।—इकबाल।

पद—तकदीरवर।

तकदीरवर—वि० [अ० तकदीर+फा० वर] जिसकी तकदीर या भाग्य बहुत अच्छा हो। भाग्यवान्।

तकदीरी—वि० [अ०] तकदीर या भाग्य-संबंधी। जैसे—यह सब तकदीरी खेल या मामला है।

स्त्री० [हिं०ताकना] तकने ताकने या, तकन की क्रिया या भाव।

तकना*—स० [हिं० ताकना] १. ताकना। देखना। २. आश्रय, सहायता आदि पाने के लिए किसी की ओर देखना। जैसे—अकाल में प्रजा राजा की ओर तकती है। ३. किसी की ओर बुरी दृष्टि या भाव से देखना। जैसे—किसी की बहू-बेटी को तकना अच्छा नहीं है। ४. आसरा देखना। प्रतीक्षा करना। शरण लेना।

पुं० वह व्यक्ति जो बुरी दृष्टि से दूसरों विशेषतः पराई स्त्रियों की ओर ताकता रहता हो।

तकबीर—स्त्री० [अ०] ईश्वर और उसके कार्यों तथा देनों की हार्दिक प्रशंसा या स्तुति।

तकब्बुर—पुं० [अ०] [वि० तकब्बरी] अभिमान। घमंड।

तकमा—पुं० १. दे० 'तुकमा'। २. दे० 'तमगा'।

तकमील—स्त्री० [अ०] किसी काम के पूरे होने की अवस्था या भाव। पूर्णता।

तकर-मल्ही—स्त्री० [देश०] भेड़ों के शरीर से ऊन काटने की एक तरह की हँसिया। (गढ़वाल)

तकरार—स्त्री० [अ०] १. ऐसी कहा-सुनी जो अपना-अपना पक्ष ठीक सिद्ध करने के लिए कुछ उग्रता या कटुतापूर्वक हो। विवाद। हुज्जत। २. साधारण झगड़ा या लड़ाई।

पुं० १. धान का वह खेत जो फसल काटने के बाद फिर खाद देकर जोता गया हो। २. वह खेत जिसमें गेहूँ, चना, जौं आदि एक साथ बोये गये हों।

तकरारी—वि० [अ०] १. तकरार-संबंधी। २. तकरार करने वाला। झगड़ालू।

तकरीब—स्त्री० [अ०] १. पास होने की अवस्था या भाव। समीपता। २. किसी कार्य या विषय का उपलक्ष्य। ३. विवाह आदि शुभ अवसरों पर होनेवाला उत्सव।

तकरीबन्—अव्य० [अ०] करीब-करीब। प्रायः। लगभग। जैसे—कचहरी यहाँ से तकरीबन् दो मील है।

तकरीर—स्त्री० [अ०][वि० तकरीरी] १. बातें करना या कहना। बात-चीत। २. भाषण। वक्तृता।

तकरीरी—वि० [अ० तकरीर] १. तकरीर के रूप में होनेवाला। तकरीर-संबंधी। २. जिसमें कुछ कहने-सुनने की जगह हो। विवाद-ग्रस्त। ३. जवानी। मौखिक।

तकररी—स्त्री० [अ०] किसी पद या स्थान पर नियुक्त या मुकर्रर होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तकला—पुं० [सं० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १. लोहे की वह सलाई जो सूत कातने के चरखे में लगी होती है और जिस पर कता हुआ सूत लिपटता चलता है। टेकुआ। २. टेकुरी की वह सलाई जिस पर बटा हुआ कलाबत्तू लपेटा जाता है। ३. वह सलाई जिसकी सहायता से सुनार सिकड़ी के गोल दाने बनाते हैं। ४. रस्सी बटने की टेकुरी।

मुहा०— (किसी के) तकले का बल निकालना=किसी की अकड़, पाजीपन या शेखी दूर करना।

तकली—स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक प्रकार का छोटा यंत्र जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा-सा तकला या सूजा लगा रहता है।

तकलीफ़—स्त्री० [अ०] १. कष्ट। दुःख। पीड़ा। जैसे—(क) उनकी ऐसी बातों से हमें तकलीफ होती है। (ख) इस तरह उठाने से बच्चे को तकलीफ होती होगी। २. विपत्ति। संकट। जैसे—सब पर कभी न कभी तकलीफ आती ही है। ३. बीमारी। रोग। जैसे—खाँसी या बुखार की तकलीफ।

विशेष—औपचारिक रूप से इस शब्द का प्रयोग ऐसे अवसरों पर भी होता है जहाँ किसी को किसी दूसरे के अनुरोध-स्वरूप कोई कार्य या परिश्रम करना पड़ता है। जैसे—आप ही तकलीफ करके यहाँ आ जाँय।

तकल्लुफ़—पुं० [अ०] ऐसा शिष्टाचार जो केवल सौजन्य का परिचय देने के लिए किया जाय।

पद—तल्लुफ का=बहुत अच्छा या बढ़िया।

तकवाना—स० [हिं० ताकना का प्रे०] [भाव तकवाही] किसी को ताकने में प्रवृत्त करना।

तकसना†—अ०=ताकना (देखना)।

तकसी—स्त्री० [?] १. नाश। २. दुर्दशा।

तकसीम—स्त्री० [अ०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। जैसे—बच्चों में पुस्तकें या मिठाइयाँ तकसीम करना। २. गणित में किसी संख्या को भाग देने की क्रिया। भाग।

क्रि० प्र०—करना।

तकसीर—स्त्री० [अ०] १. अपराध। कसूर। २. चूक। भूल।

तकाई—स्त्री० [हिं० ताकना+ई० (प्रत्य०)] १. तकने या ताकने की क्रिया ढंग या भाव। २. दूसरों को कुछ दिखलाने की क्रिया या भाव।

तकाजा—पुं० [अ० तकाज़ः=इच्छा, कामना] १. किसी आवश्यकता, प्रवृत्ति, स्थिति आदि के फलस्वरूप प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से होनेवाला कोई कार्य या परिणाम अथवा आन्तरिक प्रेरणा। जैसे—लड़कों का बहुत अधिक उछल-कूद या पाजीपन करना उनकी उमर का तकाजा है। २. वह बात जो किसी से कोई काम करने, कराने या अपना प्राप्य प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे स्मरण कराने और जल्दी करने के लिए कही या कहलाई जाती है। तगादा। जैसे—उनकी किताब दे आओ; कई बार उनका तकाजा आ चुका है।

तकान—स्त्री० १.=तकाई। †२. =थकान।

तकाना—स० [हिं० ताकना का प्रे०] किसी को कुछ तकने या ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

तकाव—पुं० [हिं० तकना+आव (प्रत्य०)] तकने या ताकने की क्रिया ढंग या भाव।

तकावी—स्त्री० [अ०] वह धन जो जमींदार, राजा या सरकार की ओर से गरीब खेतिहरों को खेती के औजार बनवाने, बीज खरीदने या कूएँ आदि बनवाने के लिए अथवा किसी विशिष्ट संकट से पार पाने के लिए ऋण के रूप में दिया जाता है।

तकिया—पुं० [फा०] १. एक प्रकार की बड़ी मुँह-बंद थैली जिसमें रूई आदि भरी हुई होती है और जिसे सोते समय सिर के नीचे लगाया जाता है। बालिश। २. पत्थर की वह पटिया जो छज्जे में रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है। मुतक्का। ३. आश्रय या विश्राम स्थान। ४. कब्रिस्तान के पास का वह स्थान जहाँ कोई फकीर रहता हो। ५. आश्रय। सहारा। ६. चारजामा। (क्व०)

तकिया कलाम—पुं० दे० 'सखुन तकिया'।

तकियादार—पुं० [फा०] मुसलमानी कब्रिस्तान अथवा किसी पीर या फकीर की समाधि पर रहनेवाला प्रधान अधिकारी।

तकिल—पुं० [सं०√तक् (हँसना)+इलच्] १. धूर्त। २. औषध। दवा।

तकिला—स्त्री० [सं० तकिल+टाप्] औषध। दवा।

तकुआ†—पुं० १.=तकला। २. =तकना (ताकनेवाला)।

तकैया†—वि० [हिं० ताकना +ऐया (प्रत्य०)] ताकनेवाला।

तकोली†—स्त्री० [देश०] शीशम की जाति का एक तरह का बड़ा वृक्ष। वि० दे० 'पस्सी'।

तक्कर†—वि० दे० 'तगड़ा'।

तक्की†—स्त्री० [हिं० ताकना] किसी ओर ताकते रहने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लगाना।

तक्मा (क्मन्)-स्त्री० [सं० √तक्+मनिन्] बसंत या शीतला नामक रोग।

†पुं० १. दे० 'तुकमा'। २. दे० 'तमगा'।

तक्र—पुं० [सं०√तंच् (संकुचित करना)+रक्] १. छाछ। मठ्ठा। २. शहतूत के पेड़ का एक रोग।

तक्र-कूर्चिका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. फटा हुआ दूध। २. फटे हुए दूध में से निकलनेवाला पदार्थ। छेना।

तक्र-पिंड—पुं० [सं० मध्य० स०] छेना।

तक्रभिद्—पुं० [सं० तक्र√भिद् (फाड़ना)+क्विप्] एक तरह का कँटीला पेड़। कैथ।

तक्र-प्रमेह—पुं० [मध्य० स०] एक रोग जिसमें मूत्र छाछ की तरह गाढ़ा और सफेद होता है।

तक्र-मांस—पुं० [मध्य० स०] मांस का रसा। यखनी।

तक्रवामन—पुं० [सं० तक्र√वम् (वमन करना)+णिच्+ल्युट्—अन] नागरंग।

तक्र-संधान—पुं० [सं० मध्य० स०] सौ टके भर छाछ में एक एक टके भर सांभर नमक, राई और हल्दी का चूर्ण डालकर बनाई जानेवाली काँजी। (वैद्यक)

तक्र-सार—पुं० [सं० ष० त०] मट्ठे में से निकलनेवाला सार तत्त्व। नवनीत। मक्खन।

तक्राट—पुं० [सं० तक्र√अट्(चलना)+अच्] मथानी।

तक्रार—स्त्री०=तकरार।

तक्रारिष्ट—पुं० [सं० तक्र-अरिष्ट, मध्य० स०] एक प्रकार का अरिष्ट जो मट्ठे में हड़ और आँवले आदि का चूर्ण मिलाकर बनाया जाता है। (वैद्यक)

तक्राह्वा—स्त्री० [सं० तक्र—आह्वा, ब० स०] एक प्रकार का क्षुप।

तक्वा (क्वन्)—पुं० [सं०√तक्(गति)+वनिप्] १. चोर। २. शिकारी चिड़िया।

तक्ष—पुं० [सं० √तक्ष्(काटना, छीलना)+घञ्] १. पतला करने की क्रिया या भाव। २. रामचन्द्र के भाई भरत का बड़ा पुत्र जिसने तक्षशिला नामकी नगरी बसाई थी।

तक्षक—पुं० [सं०√तक्ष्+ण्वुल्—अक] १. पुराणानुसार पाताल के आठ नागों में से एक जो कश्यप का पुत्र था और कद्रु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। राजा परीक्षित की मृत्यु इसी के काटने से हुई थी। २. सर्प। साँप। ३. विश्वकर्मा। ४. बढ़ई। ५. सूत्रधार। ६. नाग नामक वायु जो दस वायुओं में से एक है। ७. एक प्रकार का पेड़। ८. प्राचीन काल की एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति सूत्रिक पिता और ब्रह्मणी माता से कही गई है।

वि० १. तक्षण करनेवाला। २. काटने या छेदनेवाला।

तक्षण—पुं० [सं०√तक्ष्+ल्युट्—अन] १. लकड़ी काट, छील या रँदकर ठीक और सुडौल करने का काम। २. उक्त काम करनेवाला कारीगर। बढ़ई। ३. पत्थर, लकड़ी आदि में बेल-बूटे या उनसे मूर्तियाँ बनाने का काम।

तक्षणी—स्त्री० [सं० तक्षण+ङीप्] बढ़इयों का रंदा नाम का औजार।

तक्ष-शिला—स्त्री० [ब० स०] भरत के पुत्र तक्ष की बसाई हुई नगरी और बाद में पूर्वी गान्धार की राजधानी जिसके खँडहर रावलपिंडी के पास खोदकर निकाले गये हैं।

तक्षा (क्षन्)—पुं० [सं०√तक्ष्+कनिन्] बढ़ई।

तखड़ी†—स्त्री० =तकड़ी (तराजू)।

तखता—पुं०=तख्ता।

तखफीफ—स्त्री० [अ०] खफीफ अर्थात् कम या हल्का करने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता।

तखमीनन—क्रि० वि० [अ०] अंदाज से। अटकल से। अनुमानतः।

तखमीना—पुं० [अ० तख्मीनः] मात्रा, मान आदि की कल्पना करने के लिए अंकों संख्याओं आदि के संबंध में किया जानेवाला अनुमान या लगाई जानेवाली अटकल। अंदाज।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

तखरी†—स्त्री० =तकड़ी।

तखलिया—पुं० [अ० तख्लियः] एकांत या निर्जन स्थान।

तखल्लुस—पुं० [अ०] वह उपनाम जिसका प्रयोग कोई कवि या लेखक अपनी रचनाओं में अपने नाम के स्थान पर करता है।

तखान—पुं० [सं० तक्षण] बढ़ाई।

तखिहा†—पुं० [अ० ताक] ऐसा बैल जिसकी एक आँख एक रंग की और दूसरी आँख दूसरे रंग की हो।

तखीत†—स्त्री० [अ० तहकीक] १. तलाशी। २. जाँच। तहकीकात।

तखैयुल—पुं० [अ०] खयाल करने की क्रिया, भाव या शक्ति। ध्यान।

तख्त—पुं० [फा०] १. राजसिंहासन।

मुहा०—तख्त उलटना=एक राजा या शासक को गद्दी से हटाकर उसके स्थान पर दूसरे को बैठना।

२. तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।

पद—तख्त की रात=वधू की सुहाग-रात।

तख्तगाह—स्त्री० [फा०] राजधानी।

तख्त ताऊस—पुं० [फा०+अ०] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य और जड़ाऊ सिंहासन जो भारत के मुगल सम्राट् शाहजहाँ ने बनवाया था और जिसे सन् १७३९ में नादिरशाह लूट ले गया था।

तख्त-नशीन—वि० [फा०] जो राजसिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ़।

तख्त-नशीनी—स्त्री० [फा०] राजा का पहले-पहल अधिकार पाकर राज-सिंहासन पर बैठना। राज्यारोहण।

तख्तपोश—पुं० [फा०] १. तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २. काठ की बड़ी चौकी। तख्त।

तख्तबंदी—स्त्री० [फा०+अ०] १. तख्तों की बनी हुई दीवार जो प्रायः कमरों में आड़, विभाग आदि के लिए खड़ी की जाती है। २. उक्त प्रकार की दीवार खड़ी करने की क्रिया।

तख्तरवाँ—पुं० [फा०] १. वह तख्त जिस पर बादशाह सवार होकर निकला करते थे। हवादार। २. वह बड़ी चौकी जिस पर जलूस, बरात आदि के चलने के समय नाच-गाना होता चलता था। ३. उड़न-खटोला।

तख्ता—पुं० [फा० तख्तः] १. लकड़ी का आयताकार या चौकोर बड़ा तथा समतल टुकड़ा।

मुहा०—तख्ता हो जाना=अकड़, ऐंठ या सूखकर काठ के समान कड़ा, जड़ या निश्चेष्ट हो जाना।

२. लकड़ी का उक्त आकार-प्रकार का वह टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा जाता है अथवा सूचनाएँ आदि चिपकाई जाती हैं। ३. बैठने, सोने आदि के लिए बनी हुई काठ की बड़ी चौकी। तख्त।

मुहा०—किसी का तख्ता उलटना=(क) बना बनाया काम बिगाड़ना। (ख) किसी प्रकार का प्रबन्ध या व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट करना।

४. शव ले जाने की अरथी। टिकटी। ५. खेतों में, बगीचों आदि में की क्यारी। ६. कागज का बड़ा और लंबा-चौड़ा टुकड़ा। ताव।

तख्ता-गरदन—पुं०[फा०] वह घोड़ा जिसकी गरदन बहुत मोटी हो; और इसी लिए लगाम खींचने पर भी जल्दी मुड़ती न हो।

तख्ता-पुल—पुं०[फा० तख्ता+पुल] लकड़ी का वह पुल जो काठ की पटरियाँ जड़कर या बिछाकर बनाया जाता है।

तख्ती—स्त्री०[फा० तख्तः] १. छोटा तख्ता। पटरी। २. काठ की वह छोटी पटरी जिसपर बच्चे अक्षर लिखने का अभ्यास करते हैं। पटिया।

तख्मीना —पुं०=तखमीना।

तगड़ा—वि०[सं० त्वक्ष, तृक्ष; प्रा० तर्ग, तग्ग; पा० तज्जे] [स्त्री० तगड़ी] १. जो शारीरिक दृष्टि से बलवान और हृष्ट-पुष्ट हो। मजबूत और हट्टा-कट्टा। २. अच्छा बड़ा और भारी। ३. (पक्ष) जो किसी दृष्टि से दूसरे से अधिक प्रबल या सशक्त हो।

तगड़ी—स्त्री० हिं० तगड़ा का स्त्री० रूप।

स्त्री०=तकड़ी।

त-गण—पुं० [मध्य० स०] छंद शास्त्र में, उन तीन वर्णों का समूह जिसके पहले दो वर्ण गुरु हों और अंतिम लघु हो (ऽऽ।)।

तगदमा†—पुं०=तकदमा।

तगना—अ०[हिं० तागना का अ०] तागों से भरा जाना या युक्त होना। तागा जाना।

तगनी—स्त्री०[हिं० तागना] (रुईदार कपड़े) तागने की क्रिया या भाव। तगाई।

तग-पहनी—स्त्री०[हिं० तागा+पहनना] जुलाहों का एक औजार जिससे टूटा हुआ सूत जोड़ा जाता है।

तगमा—पुं० दे० 'तमगा'।

तगर—पुं०[सं० ष०त०] १. प्रायः नदियों के किनारे होनेवाला एक प्रकार का वड़ा वृक्ष जिसकी सुगंधित लकड़ी से तेल निकाला जाता है। २. इस वृक्ष की जड़ जिसकी गिनती गंध-द्रव्यों में होती है। ३. मदन नामक वृक्ष। मैनफल। ४. एक प्रकार की शहद की मक्खी।

तगला†—पुं०[हिं० तकला] . तकला। २. सरकंडे का वह छड़ जिससे जुलाहे ताने के सूत ठीक करते या मिलाते हैं।

तगसा—पुं०[देश०] वह लकड़ी जिससे ऊन पीटकर मुलायम और साफ किया जाता है।

तगा—पुं०[?] एक जाति जो रुहेलखंड में बसती है। इस जाति के लोग अपने आपको ब्राह्मण कहते हैं।

†पुं०=तगा।

तगाई—स्त्री०[हिं० तागना] १. तागने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. तागों से भरे जाने या युक्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—रजाई या लिहाफ की तगाई।

तगाड़—पुं०=तगार।

तगाड़ा—पुं०=तगारा।

तगादा—पुं०[अ० तकाज़ः] वह कथन या बात जो किसी से कोई काम करने या कराने या उससे अपना प्राप्य, धन अथवा पदार्थ प्राप्त करने के उद्देश्य से उसे याद दिलाने और जल्दी करने के लिए कही या कहलाई जाती है। तकाजा। जैसे—(क) किरायेदार से किराये के रुपयों का तगादा करना। (ख) छापेखाने से किताब जल्दी छापने का तगादा करना।

तगाना—स०[हिं० तागना का प्रे०] तागने का काम कराना। तागने में किसी को प्रवृत्त करना।

तगाफुल—पुं०[अ०] ध्यान न देना। उपेक्षा। गफलत।

तगार—पुं०[फा०] [स्त्री० अल्पा० तगारी] १. मिट्टी का बड़ा कूँड़ा या नाँद। २. वह गड्ढा या छोटा घेरा जिसमें इमारत के काम के लिए ईंटें भिगोई जाती हैं अथवा चूने, सुरखी आदि का गारा बनाया जाता है। ३. वह तसला जिसमें गारा या मसाला भरकर राज मिस्तरियों के पास ईंटों की जोड़ाई आदि करने के लिए पहुँचाया जाता है। ४. दे० 'तगारा'।

तगारा—पुं० [फा० तगार=बड़ा कूँआ या नाँद] [स्त्री० अल्पा० तगारी] १. मिट्टी की वह नांद जिसका उपयोग हलवाई लोग मिठाइयाँ आदि बनाने में करते हैं। २. तरकारी, दाल आदि पकाने का पीतल का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

तगियाना—स०=तागना।

तगीर*—पुं० [अ० तगय्युर] बदलने की अवस्था, क्रिया या भाव। परिवर्तन।

तगीरी—स्त्री०[अ० तगैयुर]=तगीर (परिवर्तन)।

तग्या†—पुं०=तज्ञ।

तघार—पुं०=तगार।

तचना —अ०[हिं० तपना] १. तप्त होना। तपना। २. मन ही मन बहुत दुःखी या संतप्त होना। जलना। उदा०—तरफराति तमकति तचति सुसुकति सूखत जाति।—पद्माकर।

स० दे० 'तचाना'।

तचा†—स्त्री०=त्वचा।

तचाना—स० [हिं० तपाना] १. तप्त करना। तपाना। २. बहुत अधिक मानसिक कष्ट देना। संतप्त करना। जलाना।

तचित*—वि० [हिं० तचना] १. तपा हुआ। तप्त। २. जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा या पहुँचाया गया हो। संतप्त।

तच्छ†—पुं०=तक्ष।

तच्छक—पुं०=तक्षक।

तच्छना—स०[सं० तक्षण] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। उदा०—तीर तुपक तरवारि, तच्छि निकरै उर औरणि। —चन्दवरदाई। २. नष्ट करना। ३. काटकर टुकड़े करना।

तच्छप—पुं०=तक्षक।

तच्छिन*—क्रि० वि०[सं० तत्क्षण] उसी समय। तत्काल।

†वि०=तीक्ष्ण। (क्व०)

तज—पुं० [सं० त्वच्] १. तमाल और दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड़ जिसके पत्ते 'तेज पत्ता' कहलाते हैं। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम आती है।

तजकिरा—पुं०[अ० तज़्किरः] चर्चा। जिक्र।

क्रि० प्र०—करना।—चलाना।—छेड़ना।

तजगिरी—स्त्री०[फा० तेजगरी] सिकलीगरों की दो अंगुल चौड़ी और

प्राय: डेढ़ बालिश्त लंबी लोहे की पटरी जिसपर तेल गिराकर रंदा तेज करते हैं।

तजन†—पुं० [सं० त्यजन, √त्यज् (त्यागना)+ल्युट्—अन्] तजने की क्रिया या भाव।

पुं० [फा० ताज़ियानः] आघात करने का कोड़ा या चावुक।

तजना—सं० [सं० त्यजन] सदा के लिए त्याग या छोड़ देना। परित्याग करना।

तजम्मुल—पुं० [अ०] १. शृंगार। सजावट। २. शोभा। शान-शौकत।

तजरबा—पुं० [अ० तज्रिबः] १. अनुभव। २. परीक्षण। प्रयोग।

तजरबाकार—पुं० [अ० तज्रिबः+फा० कार] अनुभवी।

तजरबाकारी—स्त्री० [अ० तज्रिबः+फा० कारी] तजरवे से होनेवाली जानकारी या ज्ञान। अनुभव।

तजरुबा—पुं०=तजरबा।

तजरुबाकार—पुं०=तरजबाकार।

तजरुबाकारी—स्त्री०=तजरबाकारी।

तजवीज—स्त्री० [अ० तज्वीज़] १. किसी कार्य के संपादन के संबंध में सोच-कर सम्मति के रूप में कही जानेवाली बात। २. निर्णय। फैसला। ३. प्रवंध। व्यवस्था। ४. तरकीब। युक्ति।

तजबीज-सानी—स्त्री० [अ०] १. किसी अदालत से स्वयं उसके निर्णय पर फिर से विचार करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना या दिया जानेवाला आवेदन-पत्र। २. उक्त प्रकार से की हुई प्रार्थना पर फिर से होनेवाला विचार।

तजिया—स्त्री० [?] बहुत छोटा तराजू। काँटा।

तज्जनित—वि० [सं० तद्-जनित, तृ० त०] उसके द्वारा उत्पन्न किया हुआ।

तज्जातीय—वि० [सं० तद्-जाति कर्म०स०, तज्जाति+छ—ईय] उस जाति से संबंध रखनेवाला।

तज्वी—स्त्री० [सं० त √जु (गति)+क्विप्+ङीष्] हिंगुपत्री।

तज्ञ—वि० [सं० त√ज्ञा (जानना)+क] १. तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २. ज्ञानी। ३. अच्छा जानकार।

तटंक—पुं० [सं० ताटंक] कर्णफूल नामक कान का आभूषण।

तट—पुं० [सं०√तट् (ऊँचा होना)+अच्] १. ढालुइँ जमीन। ढाल। २. आकाश। ३. क्षितिज। ४. खेत। ५. भूमिखंड। प्रांत। ६. स्थल का वह भाग जो जलाशय के किसी पार्श्व से ठीक मिला या सटा हो। ७. शिव का एक नाम।

क्रि० वि० निकट। पास।

तटक—पुं० [सं० तट+कन्] नदी आदि का किनारा। तट।

तटका—वि०=टटका।

तटग—पुं० [सं०=तड़ाग, पृषो० सिद्धि] तड़ाग।

तटनी*—स्त्री०=तटिनी (नदी)।

तटवर्ती—वि० [सं०] जलाशय, झील, नदी आदि के तट से संबंध रखने या उस पर होनेवाला। (राइपेरियन)

तटस्थ—वि० [सं० तट √स्था (ठहरना)+क] [भाव० तटस्थता] १. तीर पर रहनेवाला। किनारे पर रहनेवाला। २. पास रहनेवाला। समीपवर्ती। ३. विरोध, विवाद आदि के प्रसंगों में दोनों दलों से अलग और दूर रहनेवाला। किसी का पक्ष न लेनेवाला। उदासीन। निरपेक्ष।

पुं० किसी वस्तु का वह लक्षण जो उसके स्वरूप के आधार पर नहीं, बल्कि उसके गुण और धर्म के आधार पर बतलाया जाता है।

तटस्थता—स्त्री० [सं०] १. तटस्थ रहने या होने की अवस्था या भाव। २. लड़ने-झगड़ने या वैर-विरोध रखनेवाले पक्षों से अलग रहने की अवस्था या भाव। ३. आधुनिक राजनीति में (क) किसी देश या राज्य की वह स्थिति जिसमें वह दूसरे राज्यों के युद्ध में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं होता, बल्कि बिलकुल अलग रहता है। (ख) किसी प्रदेश या स्थान के संबंध में संधि द्वारा निश्चित वह स्थिति जिससे संधि करनेवाले राज्य आपस में युद्ध छिड़ने पर भी उस प्रदेश या स्थान का न तो उपयोग ही कर सकते हैं और न उस पर आक्रमण ही कर सकते हैं। (न्यूट्रैलिटी)

तटाक़—पुं० [सं० तट√अक् (गति)+अण्] तड़ाग। तालाब।

तटाकिनी—स्त्री० [सं० तटाक+इनि—ङीप्] बड़ा तालाब।

तटाघात—पुं० [सं० तट-आघात, स०त०] पशुओं का अपने सींगों या दांतों से जमीन खोदना। खूँद।

तटिनी—स्त्री० [सं० तट+इनि+ङीप्] नदी। दरिया।

तटी—स्त्री० [सं० तट+ङीष्] १. नदी का किनारा। कूल। तट। तीर। २. नदी। ३. घाटी। ४. तराई।

तट्य—वि० [सं० तट+यत्] १. तट-संबंधी। २. तट पर बसने, रहने या होनेवाला।

पुं० शिव।

तठ†—अव्य० [सं० तत्र] उस जगह या स्थान पर। वहाँ। उदा०—काढ़ काढ़ तलवार तरल ताछन तठ आये।—केशव।

तड़—पुं० [सं० तट] १. किसी बिरादरी या वर्ग में से निकला हुआ कोई दल, वर्ग या विभाग। जैसे—आज-कल हमारी बिरादरी में दो तड़ हो गये हैं।

पद—तड़-बंदी।

२. सूखी भूमि। स्थल। (लश०)

पुं० [अनु०] किसी चीज के टूटने, फटने, फूटने अथवा उस पर अघात लगने से होनेवाला शब्द। जैसे—भूनते समय भुट्टे के दानों का तड़-तड़ शब्द करना।

पद—तड़ातड़। (दे०)

३. थप्पड़। (दलाल)

क्रि० प्र०—जड़ना।—जमाना।—देना।—लगाना।

४. आमदनी या लाभ का आयोजन या उपक्रम। (दलाल)

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।

तड़क—स्त्री० [हिं० तड़कना] १. तड़कने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज के तड़कने के कारण उस पर पड़ा हुआ चिह्न जो प्राय: सीधी धारी के रूप में होता है। ३. चमकने की क्रिया या भाव।

पद—तड़क-भड़क।

४. घरों की छाजन में वह बड़ी लकड़ी जो दीवार और बँडेर पर रखी जाती है और जिस पर दासे रखकर छप्पर या छाजन डालते हैं।

तड़कना—अ० [सं०√त्रुट् या अनु० तड़] १. किसी चीज का तड़ शब्द करते

हुए टूटना, फटना या फूटना। चटकना। जैसे—(क) चिमनी या शीशा तड़कना। (ख) भूनते समय मक्के के दाने तड़कना। २. किसी चीज के सूखने आदि के कारण उसका ऊपरी तल फटना। दरार पड़ना। ३. जोर का 'तड़' शब्द होना। ४. क्रोधपूर्ण व्यवहार करना। बिगड़ना। ५. दे० 'तड़पना' (उछलना)।

स०[हिं० तड़का=छौंक] दाल, तरकारी आदि को सुगंधित करने के लिए उसमें तड़का देना या लगाना। छौंकना। बघारना।

तड़क-भड़क—स्त्री०[अनु०]अपना बल, योग्यता, वैभव आदि दिखाने के लिए की जानेवाली ऊपरी बाहरी सजावट। (पांप) जैसे—तड़क-भड़क से सवारी निकालना।

तड़का—पुं०[हिं० तड़कना]१. दिन निकलने का समय, जिसमें रात्रि का अन्धकार घटने लगता है और कुछ-कुछ प्रकाश होने लगता है।

मुहा०—(किसी बात का) तड़का होना=(क) पूर्ण रूप से अभाव होना। जैसे—पूंजी निकल जाने से घर में तड़का हो गया। **(किसी व्यक्ति का) तड़का होना**=आघात, प्रहार आदि के कारण होश-हवास गुम हो जाना।

२. खाने-पीने की चीजों को तड़कने या छौंकने की क्रिया या भाव। बघार। ३. वह मसाला जिससे दाल आदि तड़की जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

तड़काना—स०[हिं० तड़कना का स० रूप]१. किसी वस्तु को इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २. सुखाकर बीच से फाड़ना। ३. जोर का शब्द उत्पन्न करना। ४. क्रोध दिलाना या खिजाना। चटकाना।

तड़कीलां—वि० [हिं० तड़कना+ईला (प्रत्य०)] १. तड़क-भड़क वाला। भड़कीला। २. चमकीला। ३. फुरतीला। ४. सहज में तड़क या टूट जानेवाला।

तड़क्कां—पुं०[अनु० तड़] जोर से होनेवाला 'तड़' शब्द।

क्रि० वि० चटपट। तुरंत।

तड़ग—पुं०[सं०]तड़ाग। तालाब।

तड़तड़ाना—अ०[अनु० तड़-तड़] [भाव० तड़तड़ाहट] तड़-तड़ शब्द करते हुए किसी चीज का चटकना, टूटना, फटना या फूटना।

स० इस प्रकार आघात करना कि तड़-तड़ शब्द हो। जैसे—दस-पांच थप्पड़ तड़तड़ाना।

तड़तड़ाहट—स्त्री० [हिं० तड़तड़ाना] तड़-तड़ शब्द होने की क्रिया या भाव। २. तड़-तड़ होनेवाला शब्द।

तड़ता*—स्त्री०[सं० तडित्] बिजली। विद्युत्। (डिं०)

तड़प—स्त्री०[हिं०तड़पना] १. तड़पने की अवस्था, क्रिया या भाव। छटपटाहट। २. सहसा कुछ समय के लिए उत्पन्न होनेवाली चमक। भड़क। जैसे—पन्ने या हीरे की तड़प।

तड़पदार—वि० [हिं० तड़प+फा० दार] चमकीला। भड़कीला।

तड़पन—स्त्री०=तड़प।

तड़पना—अ०[सं० तप] १. असह्य शारीरिक पीड़ा होने पर छटपटाना। जैसे—दरद के मारे तड़पना। २. कोई काम करने के लिए आवश्यकता से अधिक अधीर या बेचैन होना। जैसे—किसी से मिलने या कुछ कहने के लिए तड़पना। ३. आवेश के कारण सहसा जोरों से बोलने लगना। ४. जोर से उछलना। जैसे—शेर का तड़पना।

तड़पाना—स० [हिं० तड़पना का स० रूप] [प्रे० क्रि० तड़पवाना] १.किसी को बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट देकर तड़पने में प्रवृत्त करना। २. किसी को दिखाने के लिए बार-बार चमकाना। जैसे—अँगूठी या उसका हीरा तड़पाना। ३. तड़पने या उछलने में प्रवृत्त करना। जैसे—पटाके की आवाज करके शेर को तड़पाना।

तड़फड़—स्त्री०=तड़प।

तड़फड़ाना—अ०=तड़पना।

स०=तड़पाना।

तड़फना—अ०=तड़पना।

तड़बन्दी—स्त्री० [हिं० तड़+फा० बंदी] १. किसी बिरादरी, समाज आदि के अन्तर्गत कोई दूसरा दल या गुट बनाना। २. गुटबंदी।

तड़ाक—पुं० [सं० √तड् +आक] तड़ाग। तालाब। स्त्री०=तड़ (शब्द)।

क्रि० वि० १. तड़तड़ शब्द करते हुए। २. जल्दी-जल्दी। चटपट। ३. निरंतर। लगातार।

तड़ाका—पुं [अनु०] किसी चीज के चिटकने, टूटने फटने या फूटने से होनेवाला तड़ शब्द।

क्रि० वि० चट-पट। तुरंत।

तड़ाग—पुं [सं०√तड्+आग] १. तालाब। २. हिरन फँसाने का फंदा।

तड़ागना*—अ० [अनु०] १. डींग मारना। २. उछल-कूद मचाना। ३. प्रयत्न करना।

तड़ागी—स्त्री० [सं० तड़ाग] १. करधनी। २. कटि। कमर।

तड़ाघात—पुं०=तटाघात।

तड़ातड़—क्रि० वि० [अनु०] १. तड़-तड़ शब्द करते हुए। जैसे—तड़ातड़ थप्पड़ लगाना। २. जल्दी जल्दी और निरंतर। लगातार। जैसे—तड़ातड़ जवाव देना।

तड़ातड़ी—स्त्री०[हिं० तड़ तड़]१. किसी काम के लिए मचाई जानेवाली जल्दी। २. उतावलापन। व्यग्रता।

तड़ाना—स० [हिं० ताड़ना का प्रे० रूप] किसी को कुछ ताड़ने में प्रवृत्त करना।

तड़ावा—स्त्री० [हिं० तड़ना=दिखाना] १. वह रूप जो किसी को अपना बल, वैभव आदि तड़ाने के लिए बनाया या धारण किया जाता है। २. धोखा।

तड़ि—स्त्री० [सं०√तड्+इन्] १. आघात। २. वह चीज जिससे आघात किया जाय।

तड़िता—स्त्री० =तडित्।

*स्त्री०=तड़ित (बिजली)।

तडित्—स्त्री० [सं०√तड्+णिच्+इत्, णिलुक्] आकाश में बादलों के टकराने से होनेवाला क्षणिक परन्तु चकाचौंध उत्पन्न करनेवाला प्रकाश। बिजली।

तडित्-रक्षक—पुं० [पं० त०] ऊँचे मकानों आदि पर लगाया जानेवाला एक उपकरण जो बिजली के गिरने पर उसके प्रभाव को नष्ट करता है तथा मकानों आदि की सुरक्षा (उसके कु-परिणाम से) करता है। (लाइटनिंग एरेस्टर)

तडित्कुमार—पुं० [सं० ष०त०] जैनों के एक देवता जो भुवनपति देवगण में से हैं।

तड़ित्पति—पुं० [सं० ष०त०] बादल। मेघ।

तड़ित्प्रभा—स्त्री० [सं० ब०स०] कार्त्तिकेय की एक मातृका।

तड़ित्वान् (त्वत्)—पुं० [सं० तडित्+मतुप्] १. नागरमोथा। २. बादल। मेघ।

तड़ित्गर्भ—पुं० [सं० ब०स०] बादल। मेघ।

तड़िद्दाम (मन्)—[सं०प०त०] बिजली कौंधने के समय दिखाई पड़नेवाली उसके प्रकाश की रेखा। विद्युल्लता।

तडिन्मय—वि० [सं० तडित्+मयट्] जो बिजली के समान कौंधता हो।

तड़िपाना*—अ०=तड़पना।

स०=तड़पाना।

तडिल्लता—स्त्री० [सं० तड़ित्-लता, ष० त०] बिजली की वह रेखा जो लता के समान टेढ़ी तिरछी हो तथा जिसमें बहुत सी रेखाएँ हों। विद्युल्लता।

तडिल्लेखा—स्त्री० [सं० तडित्-लेखा] बिजली की रेखा।

तड़ी—स्त्री० [तड़ शब्द से अनु०] १. चपत। थप्पड़।

क्रि० प्र०—जड़ना।—जमाना।—देना।—लगाना।

२. किसी को ठगने के लिए किया जानेवाला छल। धोखा। (दलाल)

क्रि० प्र०—देना।—बताना।

३. बहाना। ४. तड़ातड़ी।

तड़ीत*—स्त्री०=तडित् (बिजली)।

तण—अव्य० [सं० तनु] की ओर। की तरफ।

तणई—स्त्री० [सं० तनया] कन्या। उदा०—भोज तणई नउँतई मील्यौ।—नरपति नाल्ह।

तणक्कना—अ० [अनु०] तण तण शब्द होना।

स० तण तण शब्द उत्पन्न करना।

तणतु*—पुं० १. =तंतु। २. =तंत्री।

तणमीट—पुं० [?] मुसलमान। (डिं०)

तणी—स्त्री० =तनी।

अव्य० [सं० तनु] १. की ओर। की तरफ। २. प्रति। सम्मुख।

†अव्य०= तनिक।

तणु*—पुं० = तनु।

तणौ—अव्य० [सं० तनु] की ओर। तरफ़।

तत्—पुं० [सं० √तन् (विस्तार)+क्विप्] १. ब्रह्म या परमात्मा का एक नाम। २. वायु। हवा।

सर्व० १. वही या वह। २. उस या उसी। जैसे—तत्संबंधी, तत्काल, तत्क्षण।

तत—पुं० [सं०√तन्+क्त] १. वायु। हवा। २. लंबाई चौड़ाई। फैलाव। विस्तार। ३. पिता। बाप। ४. पुत्र। बेटा। ५. [√तन्+तन्] वे बाजे जिनमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं। तंत्री। जैसे—बीन, सितार आदि।

†पुं० = तत्त्व।

†वि० = तप्त।

†सर्व० [सं० तत्] वह। जैसे—तत्-छन =उस समय।

ततकार—स्त्री० [हिं० तत+कार] तत्तायई। (दे०)

†अव्य०=तत्काल।

ततकाल—अव्य० =तत्काल।

ततखन—अव्य०=तत्क्षण।

ततछन*—अव्य०=तत्क्षण।

तततार्थेई—स्त्री० [अनु०] =तत्ताथेई (नाच के बोल)।

तत-पत्री—पुं० [सं० ब० स०, ङीष्] केले का पेड़।

ततपर—वि० =तत्पर।

ततबाउ*—पुं०=तंतुवाय।

ततबीर†—स्त्री०= तदबीर।

ततरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड़।

ततसार*—स्त्री० [सं० तप्तशाला] वह स्थान जहाँ कोई चीज तपाई जाती है।

ततहँड़ा—पुं० [सं० तप्त+हिं० हाँड़ी] [स्त्री० अल्प० ततहँड़ी] मिट्टी की बड़ी हाँडी जिसमें नहाने आदि के लिए पानी गरम किया जाता है।

तताई*—स्त्री० [हिं० तत्ता] १. तत्ते अर्थात् गरम होने की अवस्था या भाव। २. उग्रता। प्रचंडता।

ततामह—पुं० [सं० तत+ डामह] पितामह।

ततारना—स० [हिं० तत्ता=गरम] १. गरम जल से धोना। २. किसी चीज पर जल आदि की धार गिराना या छोड़ना।

तति—स्त्री० [सं० √तन् (विस्तार)+क्तिन्] १. श्रेणी। ताँता। २. समूह। ३. लंबाई-चौड़ाई। फैलाव। विस्तार।

वि० लंबाचौड़ा या फैला हुआ। विस्तृत।

ततु†—पुं० =तत्त्व।

ततुबाऊ†—पुं० =तंतुवाय।

ततुरि—वि० [सं० √तुर्व् (मारना)+कि,पृषो० सिद्धि] १. हिंसा करनेवाला। हिंसक। २. उबारने या तारनेवाला। उद्धारक।

ततैया—स्त्री० [सं० तिक्त] १. बर्रे। भिड़। २. एक प्रकार की छोटी पतली मिर्च जो बहुत कड़वी होती है।

वि० १. बहुत तेज या तीखा। तीक्ष्ण। ३. बहुत अधिक चपल और तीव्र बुद्धिवाला।

ततोधिक—वि० [सं० ततस्-अधिक, पं० त०] १. उससे अधिक। २. उससे बढ़कर।

तत्काल—अव्य० [सं० कर्म० स०] फौरन। उसी समय। उसी क्षण।

तत्कालीन—वि० [सं० तत्काल+ख–ईन] १. उस समय का। २. उन दिनों का।

तत्क्षण—अव्य० [सं० कर्म० स०] उसी क्षण। तुरन्त।

तत्त†—पुं० = तत्त्व।

तत्तत्—सर्व० [सं० द्व० स०] उन उन। जैसे—इनमें से कुछ शब्दों की व्याख्या तत्तत् शास्त्रों में की गई है।

तत्ता*—वि० [सं० तप्त] [स्त्री० तत्ती] १. जो छूने में अधिक गरम लगे। अधिक तपा हुआ। गरम। जैसे—तत्ता दूध या तत्ती कड़ाही।

पद—तत्ता तवा=गरम मिजाजवाला व्यक्ति।

२. तेजगतिवाला। उदा०—दिन महि तत्ते हयनि तजि महि मंडे अति घाइं। चंदवरदाई।

तत्ताथेई—स्त्री० [अनु०] नाच के समय जमीन पर पैर पड़ने के शब्द जो नाच के बोल कहे जाते हैं।

तत्तिम्मा—पुं० [अ० तत्तिम] १. परिशिष्ट। २. क्रोड़ पत्र।

तत्तोथंबो—पुं० [हिं० तत्ता=गरम+थामना] १. लड़ाई-झगड़ा रोकने के लिए दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर शान्त करने की क्रिया या भाव। बीच-बचाव।२. बार-बार आशा दिलाते हुए किसी को उग्र रूप धारण करने से रोक रखने की क्रिया या भाव। बहलावा। जैसे-पावनेदारों को तत्तों-थंबो करके टाल चलना।

तत्त्व—पुं० [सं० तत्+त्व] १. आकाश, अग्नि, जल, थल और पवन ये पाँच गुण (अथवा इनमें से हर एक) जो प्राचीन भारतीय विचारधारा के अनुसार किसी पदार्थ को अस्तित्त्व में लाते हैं और जो जगत् या सृष्टि के मूल कारण कहे जाते हैं।

विशेष—सांख्य में तत्त्वों की संख्या २५ मानी गई है।

२. आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार कोई ऐसा पदार्थ जिसमें दूसरे पदार्थों का कुछ भी अंश या मेल न पाया जाता हो; अर्थात् जो सब प्रकार से अमिश्र और विशुद्ध हो। (एलिमेन्ट)

विशेष—पाश्चात्य वज्ञानिकों ने अब तक १०० से ऊपर ऐसे तत्त्व ढूंढ़ निकाले हैं जो अमिश्र और विशुद्ध रूप में मिलते हैं।

३. कोई मूल, मौलिक या वास्तविक आधार, गुण या बात। सार वस्तु। ४. ईश्वर। ५. यथार्थता।

तत्त्वज्ञ—पुं० [सं० तत्त्व√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो ईश्वर या ब्रह्म को जानता हो। तत्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २. किसी बात या विषय का तत्त्व जानने या समझने वाला व्यक्ति। ३. दार्शनिक।

तत्त्वज्ञान—पुं० [ष० त०] आत्मा, परमात्मा तथा उसकी सृष्टि के संबंध में होनेवाला सच्चा या यथार्थ ज्ञान जो मोक्ष का कारण माना गया है। ब्रह्मज्ञान।

तत्त्वज्ञानी (निन्)—पुं० [सं० तत्त्वज्ञान+इनि] तत्त्वज्ञ। (दे०)

तत्त्वतः—अव्य० [सं०] तत्त्व या सार-भूत गुण के विचार से। यथार्थतः वस्तुतः।

तत्त्वता—स्त्री० [सं० तत्त्व+तल-टाप्] १. तत्त्व होने की अवस्था, गुण या भाव। २. यथार्थता। वास्तविकता।

तत्त्वदर्श—पुं० [सं० तत्त्व√दृश् (देखना)+अण्] १. तत्त्वज्ञ। २. सावर्णि मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

तत्वदर्शी (शिन्)—पुं० [सं० तत्त्व√दृश+णिनि] १. तत्त्वज्ञ। २. रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

तत्त्व-दृष्टि—स्त्री० [मध्य० स०] १. वह दृष्टि जो किसी बात के मूल-कारण या गुण का पता लगाती या उस तक पहुँचती हो। २. दिव्य दृष्टि।

तत्त्व-न्यास—पुं० [मध्य० स०] तंत्र के अनुसार विष्णु पूजा में एक अंग न्यास जो सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

तत्त्व-भाव—पुं० [ष० त०] प्रकृति। स्वभाव।

तत्त्वभाषी (षिन्)—पुं० [सं० तत्व√भाष् (कहना)+णिनि] वह व्यक्ति जो यथार्थ या सच्ची बात कहता हो। यथार्थ भाषी।

तत्त्वमसि—पद [सं० तत्-त्वम्-असि, व्यस्त पद] वेदान्त का एक प्रसिद्ध वाक्य जिसका अर्थ है, तू वही अर्थात् ब्रह्म है।

तत्त्व-रश्मि—पुं० [ष० त०] तंत्र के अनुसार स्त्री देवता का बीज। वधू बीज।

तत्त्ववाद—पुं० [सं० ष० त०] १. दर्शन-शास्त्र संबंधी विचार। २. किसी प्रकार की दार्शनिक विचार-प्रणाली या मत-निरूपण का ढंग। (फिलासिफिकल सिस्टम)

तत्त्ववादी (दिन)—पुं० [सं० तत्त्व√वद्+णिनि] जो तत्त्ववाद का ज्ञाता और समर्थक हो।

वि० १. तत्त्ववाद संबंधी। तत्त्वकी। २. सच्ची और साफ बात कहने-वाला।

तत्त्वविद्—पुं० [सं० तत्त्व√विद् (जानना)+क्विप्] १. तत्त्वज्ञ। (दे०) २. परमात्मा।

तत्त्व-विद्या—स्त्री० [ष० त०] दर्शन शास्त्र।

तत्त्व-वेत्ता (त्तृ)—पुं० [ष० त०] १. जिसे तत्त्व का ज्ञान हो। तत्त्वविद्। २. दार्शनिक।

तत्त्व-शास्त्र—पुं० [सं० ष० त०] दर्शन-शास्त्र।

तत्त्वावधान—पुं० [सं० तत्त्व-अवधान, ष० त०] किसी काम के ऊपर होनेवाली देख-रेख या निरीक्षण।

तत्त्वावधायक—पुं० [सं० तत्त्व-अवधायक, ष० त०] देख-रेख या निरीक्षण करनेवाला।

तत्थ† —वि० [सं० तत्त्व] मुख्य। प्रधान।

† पुं० = तथ्य।

तत्पत्री—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] १. केले का पेड़। २. वंशपत्री नाम की घास।

तत्पद—पुं० [सं० कर्म० स०] परमपद। निर्वाण।

तत्पदार्थ—पुं० [सं० तत्पद-अर्थ, ष० त०] सृष्टि-कर्त्ता। परमात्मा।

तत्पर—वि० [सं० ब० स०] [भाव० तत्परता] १. जो कोई काम करने के लिए तैयार हो। उद्यत। मुस्तैद। २. जो किसी काम में मनोयोगपूर्वक लगा हुआ हो या लगने को हो। ३. दक्ष। निपुण। होशियार। ४. चतुर। चालाक।

पुं० समय का एक बहुत छोटा मान जो एक निमेष का तीसवाँ भाग होता है।

तत्परता—स्त्री० [सं० तत्पर+तल्-टाप्] १. तत्पर होने की अवस्था, गुण या भाव। सन्नद्धता। मुस्तैदी। २. मनोयोगपूर्वक काम करने का भाव। जैसे—उन्होंने यह काम पूरी तत्परता से किया है। ३. दक्षता। निपुणता। ४. चालाकी।

तत्पश्चात्—अव्य० [सं० ष० त०] उसके बाद। अनंतर।

तत्पुरुष—पुं० [सं० कर्म० स०] १. ईश्वर। परमेश्वर। २. एक रुद्र का नाम। ३. एक कल्प या बड़े काल विभाग का नाम। ४. संस्कृत व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसके अनुसार दो संज्ञाओं के बीच की विभक्ति लुप्त हो जाती है; और जिसमें दूसरा पद प्रधान होकर यह सूचित करता है कि वह पहले पद का कार्य या परिणाम है अथवा उस पहले पद 'से' ही सम्बन्ध रखता अथवा उस 'में' ही होता है। जैसे—

ईश्वर दत्त=ईश्वर का दिया हुआ; देश-भक्ति=देश की भक्ति; ऋण मुक्त=ऋण से मुक्त; निशाचर=निशा में विचरण करनेवाला।

विशेष—व्याकरण में यह समास दो प्रकार का माना गया है—व्यधिकरण और समानाधिकरण और इसके विग्रह में कर्त्ता तथा संबोधन कारकों को छोड़कर शेष सभी कारकों की विभक्तियाँ लगती हैं।

तत्प्रतिरूपक व्यवहार—पुं० [सं० तत्-प्रतिरूपक ष० त०, तत्प्रतिरूपक-व्यवहार, कर्म० स०] जैनियों के मत से एक अतिचार जो बेची जानेवाली खालिस वस्तुओं में मिलावट करने से होता है।

तत्फल—पुं० [सं० तत्√फल्(फलना)+अच्] १. कूट नामक औषध। कुट। २. बेर का फल। ३. नीला कमल। ४. चोर नामक गंध-द्रव्य।

तत्र—अव्य० [सं० तत् +त्रल्] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

तत्रक—पुं० [देश०] एक तरह का पेड़ जिसकी पत्तियों आदि से चमड़ा सिझाया जाता है।

तत्रत्य—वि० [सं० तत्र+त्यप्] वहाँ रहनेवाला।

तत्रभवान् (वत्)—पुं० [सं० पूज्य अर्थ में नित्य० स०] माननीय। पूज्य श्रेष्ठ।

तत्रापि—अव्य० [सं० तत्र-अपि, द्व० स०] तथापि। तो भी।

तत्संबंधी (धिन्)—वि० [सं० ष० त०] उससे संबंध रखनेवाला।

तत्सम—पुं० [सं० तृ० त०] किसी भाषा का वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा में अपने मूल रूप में (बिना विकृत हुए) चलता हो।' 'तद्भव' से भिन्न। जैसे—हिन्दी में प्रयुक्त होनेवाले कृपा, महत्व, सेवा आदि संस्कृत के और खराब, मिजाज, हाजिर आदि अरबी-फारसी के शब्द तत्सम रूप में ही चलते हैं।

तत्सामयिक—वि० [सं० ष० त०] उस समय का।

तथा—अव्य० [सं० तद्+थाल्] १. दो चीजों, बातों आदि में योग या संगति स्थापित करनेवाला एक योजक अव्यय। और। जैसे—कृष्ण तथा राम दोनों गये। २. किसी के अनुरूप या अनुसार। वैसा ही। जैसे—यथा नाम, तथा गुण।

पुं० १. सत्य। २. निश्चय। ३. समता। समानता। ४. सीमा। हद।

†स्त्री० =तत्थ या तथ्य। (क्व०)

तथा-कथित—वि० [सं० तृ० त०] जो इस नाम से अथवा इस रूप में कहा जाता हो अथवा प्रसिद्ध हो, परन्तु जिसका ऐसा होना विवादास्पद अथवा संदिग्ध हो। जैसे—देश के तथा-कथित नेता=ऐसे लोग जो अपने आपको 'नेता' कहते हैं अथवा जिन्हें लोग 'नेता' कहते हैं फिर भी वक्ता को जिनके 'नेता' होने में संदेह है।

तथा-कथ्य—वि० दे० 'तथा-कथित'।

तथागत—पुं० [सं० तथा=सत्य+गत=ज्ञान, ब० स०] बुद्ध का एक नाम।

तथाता—स्त्री० [सं० तथा+तल्-टाप्] १. 'तथा' का भाव। २. दार्शनिक क्षेत्रों में जो वस्तु वास्तव में जैसी हो उसका ठीक वैसा ही निरूपण। (विश्व के समस्त धर्मों का यही नित्य और स्थायी तत्त्व या मूल धर्म है)।

तथापि—अव्य० [सं० तथा-अपि, द्व० स०] तो भी। तिस पर भी। फिर भी।

तथाराज—पुं० [सं० तथा√राज् (शोभित होना)+अच्] बुद्ध का एक नाम।

तथास्तु—पद [सं० तथा अस्तु—व्यस्त पद] (जैसा कहते हो) वैसा ही हो। एवमस्तु (आशीर्वाद, शुभ-कामना आदि का सूचक)।

तथैव—अव्य० [सं० तथा-एव, द्व० स०] उसी प्रकार का। वैसा ही। यथैव का नित्य-संबंधी। उदा०—तथैव मैं हूँ मलिन, यथैव तू।—हरिऔध। २. उसी प्रकार। वैसे ही।

तथोक्त—वि० [सं० तथा-उक्त, तृ० त०] १. उस प्रकारा कहा हुआ। २. तथा-कथित। (दे०)

तथ्य†—पुं० [सं० तथ्य] १. यथार्थ बात। २. तथ्य। ३. रहस्य।

†अव्य० [सं० तत्त] उस जगह। वहाँ।

तथ्यु—अव्य० [सं० तथापि ?] तो भी। तथापि। (राज०)

तथ्ये†—वि०=तथैव।

तथ्य—पुं० [सं० तथा+यत्] १. यथार्थता। सत्यता। २. वास्तविकता या मूल कारण। ३. कोई ऐसी घटना बात या संबंध जो वस्तुतः अस्तित्व में हो।

तथ्यक—वि० [सं० ताथ्यिक] तथ्य-संबंधी।

तथ्यभाषी (षिन्)—वि० [सं० तथ्य√भाष् (बोलना) +णिनि] तथ्यपूर्ण और वास्तविक बात कहनेवाला।

तथ्यवादी (दिन)—वि० [सं० तथ्य√वद् (बोलना)+णिनि] =तथ्य भाषी।

तद्—वि० [सं०√तन् (फैलना)+क्विप्] वह।

क्रि० वि० [सं० तदा] उस समय। तब। (पश्चिम)

तदंतर—अव्य०= [सं० तदनंतर] उसके बाद।

तदनंत†—अव्य०=तदनंतर।

तदनंतर—अव्य० [सं० तद्-अनंतर, ष० त०] उसके उपरान्त। उसके पीछे या बाद।

तदनन्यत्व—पुं० [सं० तद्-अनन्यत्व, ष० त०] वेदांत के अनुसार कार्य और कारण में होनेवाली एकता।

तदनु—अव्य० [सं० तद्-अनु, ष० त०] १. उसके पीछे। उसके अनुसार। ३. उसी तरह। उसी प्रकार।

तदनुकूल—वि० [सं० तद्-अनुकूल, ष० त०] उसके अनुकूल।

तदनुकूलतः—अव्य० [सं० तदनुकूल+तस्] उसके अनुकूल भाव या विचार से।

तदनुरूप—वि० [सं० तद्-अनुरूप, ष० त०] उसी के रूप का। उसी के जैसा या समान।

तदनुसार—अव्य० [सं० तद्-अनुसार, ष० त०] उसी के अनुसार।

वि० उसके अनुसार होनेवाला।

तदन्यबाधितार्थ—पुं० [सं० तदन्य पं० त०, बाधितार्थ कर्म० स०, तदन्य-बाधितार्थ कर्म० स०] नव्य न्याय में तर्क के पांच प्रकारों में से एक।

तदपि—अव्य० [सं० तद्-अपि, द्व० स०] तो भी। तिस पर भी। तथापि।

तदबीर—स्त्री० [अ०] १. विचारपूर्वक निकाली या सोची हुई युक्ति। २. काम करने या निकालने का कोई ढंग। उपाय।

तदर्थ—अव्य० [सं० तद्-अर्थ, ष० त०] उसके वास्ते।

तदर्थ समिति—स्त्री० [तद्-अर्थ, ब० स०, तदर्थ-समिति, कर्म० स०]

किसी विशिष्ट कार्य के संपादन के लिए बनी हुई समिति। (एड-हॉक कमिटी।)

तदर्थी—वि० = तदर्थीय।

तदर्थीय—वि० [सं० तदर्थ+छ–ईय] उसके अर्थ जैसा अर्थ रखनेवाला। समानार्थक। समानक।

तदा—अव्य० [सं० तद्+दा] उस समय। तब।

तदाकार—वि० [सं० तद्-आकार, ब० स०] १. उसी के आकार का। २. जो किसी के आकार या रूप में मिलकर उसी के समान हो गया हो। ३. तन्मय। तल्लीन।

तदारुक—पुं० [अ०] १. खोई हुई चीज या भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना आदि के सम्बन्ध में की जानेवाली जाँच। २. किसी दुर्घटना को रोकने या उससे बचने के लिए पहले से किया जानेवाला उपाय या प्रबन्ध। ३. दंड। सजा।

तदि—अव्य० [सं० तदा] तब। उदा०—किरि नी पापौ तदि निकुटी।—प्रिथीराज।

तदीय—सर्व० [सं० तद्+छ—ईय] १. उसका। २. उससे संबंधित।

तदुपरांत—अव्य० [सं० तद्-उपरांत, ष० त०] उसके उपरांत। उसके पीछे या बाद।

तद्गत—वि० [सं० द्वि० त०] १. उससे संबंध रखनेवाला। उसके संबंध का। २. उसमें अन्तर्युक्त या व्याप्त।

तद्गुण—पुं० [सं० ब० स०] साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु के अपने समीप की किसी दूसरी वस्तु का कोई गुण ग्रहण करने का वर्णन होता है।

तद्देशीय—वि० [सं० तद्देश, कर्म० स०,+छ—ईय] उस देश का।

तद्धन—पुं० [सं० ब० स०] कंजूस। कृपण।

तद्धर्म (न्)—वि० [सं० ब० स०] उस धर्म का।

तद्धित—पुं० [सं० च० त०] १. व्याकरण में, वे प्रत्यय जो विशेषण शब्दों में लगकर उन्हें संज्ञाएँ और संज्ञाओं में लगकर उन्हें विशेषण का रूप देते हैं। २. उक्त प्रकार के प्रत्यय लगने से बननेवाले शब्द रूप या उनके रूप।

तद्बल—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का बाण।

तद्भव—पुं० [सं० ब० स०] किसी भाषा में चलनेवाला वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा के किसी शब्द का विकृत रूप हो। जैसे—'काम' सं० के 'कर्म्म' शब्द का तद्भव है।

तद्यपि—अव्य० [सं० तदापि] तथापि।

तद्रूप—वि० [सं० ब० स०] [भाव० तद्रूपता] उसी के रूप का। वैसा ही।

पुं० साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को उपमान से पृथक् मानते हुए भी उसे उपमान का दूसरा रूप और उसके कार्य का कर्ता बतलाया जाता है।

तद्रूपता—स्त्री० [सं० तद्रूप+तल्—टाप्] तद्रूप होने की अवस्था या भाव।

तद्वत्—वि० [सं० तद्+वति] उसके समान। उसी के जैसा।

अव्य० उसी की तरह।

तभीं—अव्य० [सं० तदा] तभी। (क्व०)

तन—पुं० [सं० तनु] १. जीव का स्थूल ढाँचा। देह। शरीर।

मुहा०—**तन कसना**=तपस्या के द्वारा अपने आपको सहनशील बनाना। **तन तोड़ना** =(क) अँगड़ाई लेना। (ख) बहुत अधिक परिश्रम कराना। **तन देना**=ध्यान देना। **तन मन मारना**=इंद्रियों को वश में रखना। **(किसी के) तन लगना**=(क) किसी के उपयोग में आना। (ख) किसी के प्रति परिणाम होना या प्रभाव पड़ना। जैसे—जिसके तन लगती है वही जानता है।

२. स्त्री की मूत्रेंद्रिय। भग।

मुहा०—**(किसी को) तन दिखाना**=किसी के साथ प्रसंग या संभोग करना। जैसे—वेश्याएँ सौ आदमियों को तन दिखाती हैं।

*अव्य० [सं० तनु] ओर। तरफ।

तनक—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की रागिनी जिसे कोई कोई मेघ राग की रागिनी मानते हैं।

स्त्री० [हिं० तिनगना] १. तनने या रुष्ट होने की क्रिया या भाव।

†वि० =तनिक।

तनकना*—अ०=तिनकना।

तनकीद—स्त्री० [अ०] आलोचना। समीक्षा। २. परख। पहचान।

तनकीह—स्त्री० [अ०] १. कोई मूल कारण या तथ्य जानने या निकलने के लिए किसी से की जानेवाली पूछ-ताछ। २. आज-कल विधिक क्षेत्रों में, दीवानी मुकदमों आदि के सम्बन्ध में दोनों पक्षों के कथन और उत्तर के आधार पर न्यायालय का यह निश्चित करना कि मुख्यतः कौन-कौन सी बातें विचारणीय हैं।

तनखाह—स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन। (दे०)

तनखाहदार—पुं० [फा०] वेतन लेकर काम करनेवाला व्यक्ति। वेतनभोगी।

तनख्वाह—स्त्री०=तनख़ाह (वेतन)।

तनगना†—अ०=तिनकना।

तनज़ीम—स्त्री० [अ० तन्ज़ीम] अपने दल वर्ग, समाज आदि के लोगों को एकत्र तथा संघटित करना। संघटन।

तन-तनहा—अव्य० [हिं० तन+फा० तनहा] केवल अपना शरीर लेकर। अकेले ही। जैसे—वह तन-तनहा ही घर से निकल पड़ा।

तनतना—पुं० [अ० तन्तनः] १. रोब-दाब। दबदबा। २. आतंक। ३. आवेश में आकर प्रकट किया जानेवाला क्रोध गुस्सा।

क्रि० प्र०—दिखाना।

तनतनाना—अ० [हिं० तनना] बहुत तन या खिचकर अपनी शान दिखाते हुए क्रोध प्रकट करना।

तनत्राण†—पुं०=तनुत्राण।

तनदिही—स्त्री०=तंदेही।

तनधर—वि० [हिं० तन+सं० धर] शरीरधारी। शरीरवाला।

तनना—अ० [हिं० तानना का अ० रूप] १. ताना जाना। २. किसी चीज का इस प्रकार खींचा जाना या ऐसी स्थिति में होना कि उसमें पड़े हुए झोल, बल, सिकुड़नें आदि निकल जायँ। जैसे—रस्सी तनना। ३. किसी स्थान को आच्छादित करने के लिए उसके ऊपर किसी चीज का खींचकर फैलाया जाना। जैसे—चँदोआ या चाँदनी तनना। ४. किसी रचना का रस्सियों आदि की सहायता से खींचकर खड़ी

किया या बाँधा जाना। जैसे—खेमा तनना। ५. खिचाव से युक्त होकर किसी एक पार्श्व में होना। जैसे—भौहें तनना। ६. लाक्षणिक अर्थ में व्यक्ति का क्रोध या हठपूर्वक अपने पक्ष या बात पर अड़े रहना और किसी की ओर उन्मुख या प्रवृत्त न होना। ७. आघात करने के लिए किसी चीज का उठाया जाना। जसे—दोनों ओर से लाठियाँ तन गईं।

तनपात—पुं०=तनुपात (मृत्यु)।

तनपोषक—वि०[हिं० तन+सं० पोषक] जो अपने ही तन या शरीर का ध्यान रखे अर्थात् स्वार्थी।

तनबाल—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। (महाभारत) २. उक्त देश का निवासी।

तनमय†—वि०=तन्मय।

तनमात्रा†—स्त्री० दे० 'तन्मात्रा'।

तनमानसा—स्त्री० [सं० ?] ज्ञान की सात भूमिकाओं में तीसरी भूमिका।

तनय—पुं० [सं०√तन् (फैलाना) +कयन्] [स्त्री० तनया] १. पुत्र। बेटा। २. ज्योतिष में जन्म लग्न से पाँचवाँ स्थान जिसके आधार पर यह जाना जाता है कि कितने पुत्र या लड़के-बाले होंगे।

तनया—स्त्री०[सं० तनय+टाप्] १. पुत्री। बेटी। लड़की। २. पिण्वन नाम की लता।

तनराग—पुं०=तनुराग।

तनरुह—पुं०=तनुरुह (रोआं)।

तनवाना—स० [हिं० 'तानना' का प्रे० रूप] किसी को कुछ तानने में प्रवृत्त करना। तानने का काम किसी और से कराना।

तनवाल—पुं० [देश०] वैश्यों की एक उपजाति।

तनसल—पुं० [देश०] स्फटिक पत्थर। बिल्लौर।

तनसीख—स्त्री० [अ०] १. नष्ट करना। मिटाना। २. निरर्थक रद्द या व्यर्थ करना। मिटाना।

तनसुख—पुं० [हिं० तन+सुख] एक प्रकार की फूलदार बढ़िया महीन मलमल।

तनहा—वि०[फा०] [भाव० तनहाई] (व्यक्ति) जिसके साथ और कोई व्यक्ति न हो।

अव्य० बिना किसी संगी या साथी के।

तनहाई—स्त्री० [फा०] १. तनहा अर्थात् अकेले होने की अवस्था। २. एकान्त या निर्जन स्थान।

तना—पुं० [फा०] पेड़-पौधों का जमीन से ऊपर निकला हुआ वह मोटा भाग जिसकें ऊपरी सिरे पर डालियाँ निकली होती हैं। धड़।

*अव्य० वि० दे० 'तनु'।

तनाई—स्त्री० [हिं० तानना] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाऊ*—पुं०=तनाव।

तनाकु—क्रि० वि०=तनिक।

तनाजा—पुं० [अ० तनाजः] १. दो पक्षों में कुछ समय तक बराबर चलता रहनेवाला झगड़ा। २. वैर। शत्रुता।

तनाना—स० [हिं० तनना का प्रे०] कोई चीज किसी को तानने में प्रवृत करना। तनवाना।

तनाब—स्त्री० [अ० तिनाब] १. वह डोरी या रस्सी जिससे खेमे या तंबू के बांस आदि खींचकर खूँटों से बाँधे जाते हैं। २. बाजीगरों का वह रस्सा जिसपर चलकर वे तरह तरह के करतब दिखते हैं। ३. वह डोरी या रस्सी जिसपर धोबी कपड़े सुखाने के लिए टांगते हैं। ४. डोरी। रस्सी।

तनाय*—पुं०=तनाव।

तनाव†—पुं० [हिं० तनना] १. तने अर्थात् कसे या खिचे हुए होने की अवस्था या भाव। २. राग-द्वेष आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह स्थिति जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरे की ओर प्रवृत्त नहीं होते।

स्त्री० दे० 'तनाव'।

तनासुख—पुं० [अ०] इस लोक में आत्मा का होनेवाला आवागमन या बार बार शरीर धारण।

तनि*—अव्य०[सं० तनु] और। तरफ।

पुं० [सं० तनु] शरीर। देह। उदा०—वधिया तनि सरवरि वेस वधंती।—प्रिथीराज।

†क्रि० वि०=तनिक।

तनिक—वि० [सं० तनु=अल्प] १. जो अल्प मात्रा या मान में हो। जरा-सा। थोड़ा। २. छोटा-सा।

अव्य० कुछ। जरा। टुक। जैसे—तनिक देर हो गई।

तनिका—स्त्री० [सं० √तन् (विस्तार) +इन्+कन्—टाप्, इत्व] किसी वस्त्र, पात्र आदि में लगी हुई वह डोरी जिससे कोई चीज कसकर बाँधी जाती है। तनी। बंद।

तनिमा (मन्)—स्त्री० [सं० तनु+इमनिच्] १. शारीरिक कृशता। दुबलापन। २. सुकुमारता। नजाकत।

पुं० जिगर। यकृत।

तनिया†—स्त्री० [हिं० तनी] १. कौपीन। लँगोटी। २. काछा। जाँघिया। ३. चोली। ४. दे० 'तनी'।

तनिष्ठ—वि० [सं० तनु+इष्ठन्] जो शारीकि दृष्टि से दुबला हो। कृश।

तनिस†—पुं० [सं० तृष या हिं० तिनका ?] पुआल। उदा०—तनिस विछा के जब हम सोथन गाती बांध चार हाथ ओ।—लोकगीत।

तनी—स्त्री० [सं० तनिका] १. कुरती, चोली, मिरजई आदि में लगी हुई वह डोरी जिससे पहनी हुई कुरती या चोली या मिरजई कसी जाती है। २. कोई चीज कसने या बाँधने के लिए किसी चीज में लगी हुई डोरी। जैसे—तकिये या थैली की तनी। ३. दे० 'तनियां'।

†वि०, अव्य०=तनिक।

तनीदार—वि० [हिं० तनी+फा० दार] जिसमें तनी या बंद लगे हों।

तनु—वि० [सं०√तन् (विस्तार) +उन्] १. दुबला-पतला। कृश। २. अल्प। थोड़ा। ३. कोमल। सुकुमार। ४. अच्छा। बढ़िया। ५. तुच्छ। ६. छिछला।

पुं० १. देह। शरीर २. शरीर की खाल या चमड़ा। त्वचा। ३. ज्योतिष में जन्म-कुडली में का जन्म-स्थान।

स्त्री० १. औरत। स्त्री। २. केंचुली। ३. योग में अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश इन चारों क्लेशों का एक भेद जिसमें चित्त में क्लेश की अवस्थिति तो होती है पर साधन या सामग्री आदि के कारण उसकी अनुभूति या परिणाम नहीं होता।

क्रि० वि० [सं० तनु] ओर। तरफ। उदा०—बिहँसे करुना ऐन चितै जानकी लखन तनु।—तुलसी।

तनुक*—क्रि० वि०=तनिक।
पुं०=तनु।

तनु-कूप—पुं० [सं० ष० त०] त्वचा में होनेवाला सूक्ष्म छेद (जिसमें से पसीना आदि निकलता है।

तनुकेशी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] सुन्दर बालोंवाली स्त्री।

तनु-क्षीर—पुं० [सं० ब० स०] आमड़े का वृक्ष।

तनु-गृह—पुं० [सं०] अश्विनी नक्षत्र।

तनुच्छद—पुं० [सं० तनु√छद् (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] १. कवच। २. वस्त्र।

तनुच्छाय—पुं० [सं० ब० स०] बबूल का पेड़।

तनुज—पुं० [सं० तनु√जन् (पैदा होना)+ड] [स्त्री० तनुजा] १. बेटा। पुत्र। २. रोआँ। ३. जन्म-कुंडली में लग्न से पचवाँ स्थान जहाँ से पुत्र भाव देखा जाता है।

तनुजा—स्त्री० [सं० तनुज+टाप्] कन्या। पुत्री। बेटी।

तनुता—स्त्री० [सं० तनु+तल्—टाप्] १. तनु अर्थात् दुबले-पतले होने की अवस्था या भाव। २. सुकुमारता। ३. छोटाई। ४. तुच्छता। ५. अल्पता। ६. छिछलापन।

तनु-ताप—पुं० [ष० त०] १. शारीरिक ताप। २. मन को कष्ट देनेवाली बात। दुःख। व्यथा।

तनुत्र—पुं० [सं० तनु√त्रै (रक्षा करना)+क] =तनुत्राण।

तनु-त्राण—पुं० [ष० त०] १. वह चीज जो शरीर की रक्षा करे। २. कवच। बकतर।

तनुत्रान—पुं०=तनुत्राण।

तनु-त्वच्—वि० [ब० स०] जिसकी त्वचा पतली हो।
स्त्री० छोटी अरणी।

तनुधारी (रिन्)—वि० [सं० तनु√धृ (धारण करना)+णिनि] तनु अर्थात् शरीर धारण करनेवाला। शरीरधारी।

तनु-पत्र—पुं० [ब० स०] गोंदी का पेड़। इंगुदी।

तनु-पात—पुं० [ष० त०] शरीर का गिर अर्थात् मर जाना। मृत्यु।

तनु-प्रकाश—वि० [कर्म० स०] धुंधले या मंद प्रकाशवाला।

तनु-बीज—वि० [ब० स०] जिसके बीज छोटे हों।
पुं० राजबेर।

तनुभव—पुं० [सं० तनु√भू (होना)+अच्] [स्त्री० तनुभवा] पुत्र। बेटा।

तनु-भूमि—स्त्री० [कर्म० स०] बौद्ध श्रावकों के जीवन की एक अवस्था।

तनुभृत—वि० [सं० तनु√भृ (धारण)+क्विप्] देहधारी।

तनु-मध्य—वि० [ब० स०] [स्त्री० तनुमध्या] पतली कमरवाला।

तनु-मध्या—स्त्री० [ब० स०, टाप्] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक एक तगण और एक एक यगण होता है।

तनु-रस—पुं० [ष० त०] पसीना। स्वेद।

तनु-राग—पुं० [ब० स०] १. केसर, कस्तूरी, चंदन, कपूर आदि को मिलाकर बनाया हुआ एक सुगंधित उबटन। बटना। २. केसर, कस्तूरी, चंदन, कपूर आदि सुगंधित द्रव्य।

तनुरुह—पुं० [सं० तनु√रुह (उगना] +क] १. रोआँ। २. पंख। पर। ३. पुत्र। बेटा।

तनुल—वि० [सं०√तन् (विस्तार)+उलच्] फैला या फैलाया हुआ।

तनुवात—पुं० [ब० स०] १. ऊँचे स्थानों पर की वह पतली हवा जिसमें श्वास लेना कठिन होता है। २. ऐसा स्थान जहाँ उक्त प्रकार की वायु हो। ३. जैनियों के अनुसार एक प्रकार का नरक।

तनुवार—पुं० [सं० तनु√वृ (ढकना)+अण्] कवच।

तनु-बीज—पुं०=तनुबीज।

तनु-व्रण—पुं० [ब० स०] बल्मीक रोग। फील-पाँव।

तनु-शिरा (रस्)—वि० [ब० स०] छोटे सिरवाला।
पुं० एक प्रकार का छंद।

तनु-संचारिणी—स्त्री० [सं० तनु-सम्√चर् (गति)+णिनि—ङीप्] १. युवा स्त्री। २. दस वर्ष की बालिका।

तनु-सर—पुं० [सं० तनु√सृ (गति)+अच्] पसीना। स्वेद।

तनु-ह्रद—पुं० [ष० त०] गुदा।

तनू—पुं० [सं०√तन् (विस्तार)+ऊ] १. शरीर। २. व्यक्ति। ३. शरीर का कोई अवयव। ४. पुत्र। बेटा। ५. प्रजापति।
स्त्री० गाय। गौ।

तनूकरण—पुं० [सं० तनु+च्वि, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० तनूकृत] किसी चीज को जल में घोलकर या मिलाकर उसकी घनता, तीव्रता आदि कम करना। (डाइल्यूशन)

तनूज—वि० [सं० तनू√जन् (पैदा होना)+ड] [स्त्री० तनूजा] तन से उत्पन्न। शरीर से उद्भूत।
पुं० १. बेटा। पुत्र। २. पंख। पर।

तनूजा*—स्त्री० [सं० तनूज+टाप्] बेटी। पुत्री।

तनूताप—पुं० =तनुताप।

तनूनप—पुं० [सं० तनु-ऊन, ष०त०; तनून√पा (रक्षा)+क] घी। घृत।

तनूनपात्, तनूनपाद्—पुं० [सं० तनून√पत् (गिरना)+णिच्+क्विप्] १. चीते का वृक्ष। चीता। चित्रक। २. अग्नि। आग। ३. घी। घृत। ४. नवनीत। मक्खन।

तनूपा—पुं० [सं० तनू√पा+क्विप्] जठराग्नि।

तनू-पान—पुं० [ष० त०] अंगरक्षक।

तनू-पृष्ठ—पुं० [ब०स०] एक तरह का सोमयज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था।

तनूर†—पुं०=तंदूर।

तनूरुह—पुं० [सं० तनू√रुह (उगना)+क]=तनुरुह।

तने†—अव्य० [सं० तन] की ओर। की तरफ। उदा०—राम तने रंग राची....।—मीराँ।

तनेना—वि० [हिं० तनना+एना (प्रत्य०)] [स्त्री० तनेनी] १. तना या खिंचा हुआ। २. टेढ़ा। तिरछा। ३. (व्यक्ति) जो तनकर क्रोधपूर्वक बातें करता हो। ४. रुष्ट।

तनै*—पुं०= तनय।
*अव्य०=तने (की ओर)।

तनैना—वि०=तनेना।

तनैया*—वि० [हिं० तानना+ऐया (प्रत्य०)] ताननेवाला।

†स्त्री० [सं० तनया] कन्या। बेटी। पुत्री।

स्त्री०=तनी।

तनैला—पुं० [देश०] एक तरह के सफेद रंग के सुगंधित फूलवाला छोटा वृक्ष।

तनोआ†—पुं० [हिं० तानना] १. वह कपड़ा जो छाया आदि के लिए ताना जाता है। २. चँदोआ।

तनोज—वि०, पुं०=तनूज।

तनोरुहा†—पुं०=तनुरुह।

तनोवा—पुं०=तनोआ।

तन्दुरुस्त—वि० [फा०]=तंदुरुस्त।

तन्दुरुस्ती—स्त्री०=तंदुरुस्ती।

तन्ना—पुं० [हिं० तानना] १. बुनाई करते समय लंबे बल में ताना हुआ सूत। २. वह जिससे कोई चीज तानी जाय।

तन्नाना—अ० १.=तनना। २.=तनकना।

तन्नि—स्त्री० [सं० तत्√नी (ले जाना)+डि (बा०)] १. पिठवन। २. कश्मीर की चन्द्र-कुल्या नदी का एक नाम।

तन्नी—स्त्री० [सं० तनिका, हिं० तनी] १. तनी विशेषतः वह डोरी जिससे तराजू की डंडी में पलड़ा लटकाया जाता है। २. लोहे की मैल खुरचने की एक तरह की अँकुसी। ३. वह रस्सी जिसकी सहायता से पाल चढ़ाया जाता है। ४. व्यापारी जहाज का एक अधिकारी जो व्यापार संबंधी कार्य करता है।

†पुं० दे० 'तरनी'।

तन्मनस्क—वि० [सं० तत्-मनस् ब०स०, कप्] तन्मय। तल्लीन।

तन्मय—वि० [सं० तद्+मयट्] [भाव० तन्मयता] १. उस (पूर्वोक्त) से बना हुआ। २. जो दत्तचित होकर कोई काम कर रहा हो। किसी कार्य या व्यापार में खोया हुआ। मग्न। लवलीन।

तन्मयता—स्त्री० [सं० तन्मय+तल्—टाप्] तन्मय होने की अवस्था, गुण या भाव।

तन्मयासक्ति—स्त्री० [सं० तन्मयी-आसक्ति, कर्म०स०] भगवान के प्रति होनेवाला वह दिव्य प्रेम जिसमें मनुष्य अपनी सत्ता भूल जाता है।

तन्मात्र—वि० [सं० तद्+मात्रच्] बहुत थोड़ी मात्रा का।

पुं० पंचभूतों का मूल सूक्ष्म रूप।

तन्मात्रा—स्त्री०=तन्मात्र।

तन्मूलक—वि० [सं० तद्-मूल, ब०स०, कप्] उस (पूर्वोक्त) से निकला हुआ। तज्जन्य।

तन्य—वि० [सं० तान्य] [भाव० तन्यता] १. जो खींचा या ताना जा सके। २. (पदार्थ) जो खींच, तान या पीटकर बढ़ाया या लंबा किया जा सके, और ऐसा करने पर भी बीच में से कहीं टूटे-फूटे नहीं। जैसे—धातुएँ तन्य होती हैं और उनके तार या पत्तर बनाये जा सकते हैं। (डक्टाइल)

तन्यक—वि० तन्य। (दे०)

तन्यता—स्त्री० [सं० तान्यता] १. तन्य होने की अवस्था या भाव। २. वस्तुओं का वह गुण जिससे वे खींचने, तानने या पीटने पर बिना बीच में से टूटे, बढ़कर लंबी हो सकती हैं। (डक्टिलिटी)

तन्यतु—पुं० [सं०√तन् (फैलाना)+यतुच्] १. वायु। हवा। २. रात। रात्रि। ३. गर्जन। ४. एक प्रकार का पुराना बाजा।

तन्वंग—वि० [सं० तनु-अंग, ब०स०] [स्त्री० तन्वंगी] सुकुमार अंगोंवाला। कोमलांग।

तन्वंगी—स्त्री० [सं० तन्वंग+ङीष्] सुकुमार अंगोंवाली स्त्री।

तन्वि—स्त्री० [सं०] १. चन्द्रकुल्या नदी का एक नाम जो कश्मीर में है। २. तन्वंगी।

तन्विनी—स्त्री०=तन्वंगी।

तन्वी—वि० [सं० तनु+ङीष्] दुबले-पतले शरीर या कोमल अंगोंवाली।

स्त्री० १. सुकुमार अंगोंवाली स्त्री। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक-एक भगण, तगण, नगण और अंत में यगण होता है।

तपःकर—पुं० [सं० तपस्√कृ (करना)+ट] तपस्वी।

तपःकृश—वि० [सं० तृ० त०] तपस्या के फलस्वरूप जिसका शरीर क्षीण या कृश हो गया हो।

तपःभूत—वि० [सं० तृ० त०] जिसने तपस्या के द्वारा आत्मशुद्धि कर ली हो।

तपःसाध्य—वि० [सं० तृ० त०] जिसका साधन तपस्या से होता या हो सकता हो।

तपःसुत—पुं० [सं०] युधिष्ठिर।

तपःस्थल—पुं० [सं० ष० त०] तप करने का स्थान। तपोवन।

तपःस्थली—स्त्री० [सं० ष० त०] काशी।

तप (स्)—पुं० [सं०√तप् (शरीर को कष्ट देना)+असुन्] १. स्वेच्छा से शारीरिक कष्ट सहते हुए इन्द्रियों तथा मन को वश में रखना और यम, नियम आदि का पालन करना। शरीर को तपाना। तपस्या। २. किये हुए अपराध या पाप के प्रायश्चित्त स्वरूप स्वेच्छा से किया जानेवाला ऐसा कठोर आचरण जिससे शरीर को कष्ट होता हो। तपस्या। ३. अग्नि। आग। ४. गरमी। ताप। ५. गरमी के दिन। ग्रीष्म ऋतु। ६. ज्वर। बुखार। ७. एक कल्प का नाम। ८. माघ नाम का महीना। ९. ज्योतिष में, लग्न से नवाँ स्थान। १० दे० 'तपोलोक'।

तपकना*—अ० [हिं० टपकना या तमकना] १. (छाती या हृदय का) रह-रहकर धड़कना। २. चमकना। ३. दे० 'टपकना'।

तपचाक—पुं० [देश०] तुर्की (देश) का एक तरह का घोड़ा।

तपड़ी—स्त्री० [देश०] १. छोटा टीला। ढूह। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसमें जाड़े में लाल रंग के फल लगते हैं। ३. उक्त वृक्ष का फल।

तपत†—स्त्री०=तपन। उदा०—मेरे मन की तपत बुझाई।—कबीर।

तपती—स्त्री० [सं०] छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की कन्या। (महाभारत)

तपन—वि० [सं०√तप्+ल्यु—अन] १. तपनेवाला। २. कष्ट या दुःख देनेवाला।

पुं० १. सूर्य। २. सूर्यकांतमणि। ३. एक प्रकार की अग्नि। ४. धूप। ५. साहित्य में वे कष्टसूचक शारीरिक व्यापार जो प्रिय के वियोग में स्वाभाविक रूप से होते हैं। ६. एक नरक जिसमें ताप की बहुत अधिकता कही गई है। ७. अरनी, भिलावाँ, मंदार आदि वृक्षों की संज्ञा।

स्त्री० [हिं० तपना] १. तपे हुए होने की अवस्था या भाव। २. किसी

चीज के तपे हुए होने की वह स्थिति जिसमें अधिक ताप की अनुभूति होती है। तपिश। जैसे—कमरे में तपन है।

तपन-कर—पुं० [ष० त०] सूर्य की किरण। रश्मि।

तपनच्छद—पुं० [ब०स०] मदार का पेड़।

तपन-तनय—पुं० [ष०त०] सूर्य का पुत्र।

विशेष—कर्ण, यम, शनि, सुग्रीव, आदि सूर्य के पुत्र माने गये हैं।

तपन-तनया—स्त्री० [ष०त०] १. सूर्य की पुत्री, यमुना नदी। २. शमी वृक्ष।

तपन-मणि—पुं० [मध्य०स०] सूर्यकांत मणि।

तपनांशु—पुं० [सं० तपन-अंशु, ष०त०] सूर्य की किरण। रश्मि।

तपना—अ० [सं० तपन] १. अधिक ताप से युक्त होना। तप्त होना। जैसे—तंदूर या तवा तपना। २. तप या तपस्या करना। ३. मन ही मन बहुत अधिक कष्ट या दुःख भोगना। संतप्त होना। उदा०—निरखि सहचरी को अति तपनौ, कहा लगी तब अपनौ सपनौ।—नंददास। ४. लोगों पर आतंक फैलाते हुए अपने तेज या प्रभुत्व का सिक्का जमाना। जैसे—वह कोतवाल अपने समय में बहुत तपा था। ५. केवल शान दिखाने के लिए आवश्यकता से अधिक प्रायः व्यर्थ के कामों में धन व्यय करना। जैसे—बाप के मरने पर कंजूस रईसों के लड़के खूब तपते हैं। ६. किसी काम में निरंतर लगे रहकर उसके लिए बहुत कष्ट भोगना। जैसे—आप तपे हुए देश-सेवी हैं।

अ० [सं० तप्] तपस्या करना। उदा०—पहुँचे आनि तुरंत तपति भूपति जिहिं कानन।—रत्नाकर।

तपनाराधन—पुं० [सं० तपन-आराधन] तपस्या।

तपनि*—स्त्री०=तपन।

तपनी†—स्त्री० [हिं० तपना] १. वह स्थान जहाँ आग जलाकर तापी जाती है। कौड़ा। अलाव।

क्रि० प्र०—तापना।

२. तप। तपस्या। ३. तपन।

स्त्री० [सं० तपन+ङीष्] १. गोदावरी नदी। २. पाठा लता।

तपनीय—पुं० [सं०√तप्+अनीयर्] सोना।

वि० तपने या तपाने के योग्य।

तपनीयक—पुं० [सं० तपनीय+कन्]=तपनीय।

तपनेष्ट—पुं० [तपन-इष्ट ष० त०] ताँबा।

तपनोपल—पुं० [तपन-उपल. मध्य० स०] सूर्यकांत मणि।

तपभूमि—स्त्री०=तपोभूमि।

तपराशि—पुं०=तपोराशि।

तपरितु—स्त्री० [हिं० तपना+सं० ऋतु] गरमी का मौसम।

तपलोक—पुं० =तपोलोक।

तपवाना—स० [हिं० तपाना का प्रे०] १. तपने या तपाने का काम दूसरे से कराना। २. किसी को बहुत अधिक और व्यर्थ व्यय करने में प्रवृत्त करना।

तपवृद्ध—वि०=तपोवृद्ध।

तपशील—वि० [सं० तपःशील] तपस्या करनेवाला।

तपश्चरण—पुं० [सं० तपस्-चरण, ष०त०] तप। तपस्या।

तपश्चर्या—स्त्री० [सं० तपस्-चर्या, ष०त०] तपस्या। तप।

तपस—पुं० [सं०√तप्+असच्] १. चंद्रमा। २. सूर्य। ३. चिड़िया। पक्षी।

†पुं०=तपस्वी।

†स्त्री०=तपस्या।

तपसा—स्त्री० [सं० तपस्या] १. तपस्या। तप। २. ताप्ती नदी का दूसरा नाम।

तपसाली—पुं० [सं० तपःशालिन्] तपस्वी।

तपसी—पुं० [तपस्वी] तपस्वी।

स्त्री० [सं० तपस्या मत्स्य] बंगाल की खाड़ी में होनेवाली एक प्रकार की छोटी मछली।

तपसोमूर्ति—पुं० [सं० अलुक् स०] बारहवें मन्वंतर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियों में से एक। (हरिवंश)

तपस्तक्ष—पुं० [सं० तपस्√तक्ष् (क्षीणकरना)+अण्] इंद्र।

तपस्पति—पुं० [सं० ष०त०] विष्णु।

तपस्य—पुं० [सं० तपस्+यत्] १. तप। तपस्या। २. तापस मनु के दस पुत्रों में से एक। ३. फाल्गुन का महीना। ४. कुंद का फूल।

तपस्या—स्त्री० [सं० तपस्+क्यङ+अ–टाप्] १. मन की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति के उद्देश्य से किये जानेवाले वे कठोर और कष्टदायक आचरण तथा नियम पालन जो एकांत में रहकर किए जाते हैं। तप। २. ब्रह्मचर्य। ३. अपराध, पाप आदि के प्रायश्चित स्वरूप किया जानेवाला ऐसा आचरण जिससे शरीर को कष्ट हो। ४. इंतजार या प्रतीक्षा।

स्त्री०=तपसी (मछली)।

तपस्वत्—पुं० [सं० तपस्+मतुप्, वत्व] तपस्वी।

तपस्विता—स्त्री० [सं० तपस्विन्+तल्—टाप्] तपस्वी होने की अवस्था, गुण या भाव।

तपस्विनी—स्त्री० [सं० तपस्विन्+ङीप्] १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की पत्नी। ३. पतिव्रता और सती स्त्री। ४. वह स्त्री जो पति के मरने पर केवल सन्तान के पालन-पोषण के विचार से सती न हो और ब्रह्मचर्यपूर्वक शेष जीवन बितावे। ५. गोरखमुंडी। ६. कुटकी नाम की वनस्पति। ७. जटामासी।

तपस्वि-पत्र—पुं० [सं० ब०स०] दौने का पौधा। दमनक।

तपस्वी (स्विन्)—पुं० [सं० तपस्+विनि] [स्त्री० तपस्विनी] १. वह जो बराबर तपस्या करता रहता हो। तपी। २. तपसी (मछली)। ३. तपसोमूर्ति का एक नाम। ४. घीकुआँर।

वि० दीन-हीन और दया का पात्र।

तपा*—पुं० [हिं० तप] तपस्वी।

तपाक—पुं० [फा०] १. आवेश। जोश। २. व्यावहारिक क्षेत्र में किसी के प्रति दिखाया जानेवाला उत्साह और प्रेम। जैसे—वे बहुत तपाक से मुझसे मिले थे।

मुहा०—तपाक बदलना=आवेश में आकर क्रोधपूर्ण व्यवहार करना। नाराज होना। बिगड़ना।

३. तेजी। वेग।

तपात्यय—पुं० [सं० तप-अत्यय, ब०स०] (ग्रीष्म ऋतु के अन्त में आनेवाला) वर्षाकाल। बरसात।

तपानल—पुं०[सं० तप-अनल, मध्य०स०]१. तप की अग्नि अर्थात् तपस्या करने के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाला कष्ट। २. उक्त प्रकार से प्राप्त होनेवाला तेज।

तपाना—स०[हिं० तपना] १. ताप से युक्त करके खूब गरम करना। जैसे—आग में रखकर लोहा तपाना।

विशेष—कुछ विशिष्ट धातुओं को तपाकर उनकी शुद्धता भी परखी जाती है। जैसे—सोना या चाँदी तपाना।

२. आग पर रखकर पकाना या पिघलाना। जैसे—घी तपाना। ३. तप करके अपने शरीर को अनेक प्रकार के कष्ट देना। ४. किसी को दुःखी या संतप्त करना।

तपारी—पुं०=तपस्वी। उदा०—दीर्घ तपारी देषि श्राप दीनो कुपि तामं।—चंदवरदाई।

तपावंत—पुं०[हिं० ताप+वंत (प्रत्य०)]तपस्वी।

तपाव—पुं०[हिं० तपना+आव(प्रत्य०)]१. तपने या तपे हुए होने की अवस्था या भाव। २. तपाने की क्रिया या भाव। ३. ताप। गरमी।

तपित*—भू० कृ० [सं० तप्त] १. ताप से युक्त किया हुआ। तपाया हुआ। २. तपा हुआ।

तपिया—पुं०[देश०]एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

†पुं०=तपस्वी।

तपिश—स्त्री०[सं० तप से फा०]१. किसी चीज के तपने के फलस्वरूप फैलनेवाला ताप। जैसे—जमीन की तपिश। २. बहुत बढ़ा हुआ ताप। ३. ग्रीष्म ऋतु में होनेवाली तपन।

तपी—पुं०[हिं० तप+ई (प्रत्य०)]१. तपस्वी। २. सूर्य।

तपु(पुस्)—वि० [सं०√तप्(दाह)+उस्]१. तपा हुआ। उष्ण। गरम। २. तपाने या गरम करनेवाला।

पुं०१. अग्नि। आग। २. सूर्य। ३. दुश्मन। शत्रु।

तपुरग्र—वि०[सं० तपुस्-अग्र, ब०स०] [स्त्री० तपुरग्रा] जिसका अगला भाग तपा या तपाया हुआ हो।

तपुरग्रा—स्त्री०[सं० तपुरग्र+टाप्] बरछी या भाला।

तपेदिक—पुं०[फा० तप+अ० दिक] एक प्रसिद्ध संक्रामक रोग जिसमें रोगी को खाँसी और बुखार दीर्घकाल तक बना रहता है और जिसके फल-स्वरूप उसके फेफड़े सड़ जाते हैं। क्षय। यक्ष्मा।

तपेला—पुं०[हिं० तपाना][स्त्री० अल्पा० तपेली]१. पानी गरम करने का एक प्रकार का बड़ा पात्र। उदा०—तन मन कीन्हें बिरगाहि के तपेला हैं —रत्नाकर। २. बड़ी भट्ठी। भट्ठा।

तपेस्सा*—स्त्री०=तपस्या।

तपोज—वि०[सं० तपस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड]१. जो तप के फलस्वरूप या प्रभाव से उत्पन्न हुआ हो। २. अग्नि से उत्पन्न।

तपोजा—स्त्री०[सं० तपोज+टाप्]जल। पानी।

तपोड़ी—स्त्री०[देश०] काठ का एक प्रकार का बरतन। (लश०)

†स्त्री०[पं० थपोड़ी] करतल-ध्वनि। ताली।

तपोदान—पुं०[सं० तपस्-दान, ब०स०] महाभारत में वर्णित एक तीर्थ-स्थल।

तपोद्युति—पुं०[सं० तपस्-द्युति, ब०स०] बारहवें मन्वंतर के एक ऋषि।

तपोधन—पुं०[सं० तपस्-धन, ब०स०]१. वह जिसका सारा धन या सर्वस्व तप या तपस्या ही हो; अर्थात् बहुत बड़ा तपस्वी। २. दौने का पौधा।

तपोधना—स्त्री०[सं० तपोधन+टाप्] गोरखमुंडी।

तपोधर्म—पुं०[सं० तपस्-धर्म, ब०स०] तपस्वी।

तपोधाम (न्)—पुं०[सं० तपस्-धामन्, ष०त०]१. तप या तपस्या करने के लिए उपयुक्त स्थान। २. एक प्राचीन तीर्थ।

तपोधृति—पुं० [सं० तपस्-धृति, ब०स०] बारहवें मन्वन्तर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियों में से एक ऋषि।

तपोनिधि—पुं०[सं० तपस्-निधि, ब०स०] १. तप की निधि अर्थात् बहुत बड़ा तपस्वी। २. वह जो उक्त निधि का स्वामी हो, अर्थात् बहुत बड़ा तपस्वी।

तपोनिष्ठ—वि०[सं० तपस्-निष्ठा, ब० स०] सदा तप या तपस्या पर निष्ठा रखकर उसमें लगा रहनेवाला।

पुं० तपस्वी।

तपोबन*—पुं०=तपोवन।

तपोबल—पुं०[सं० तपस्-बल, मध्य०स०]तप या तपस्या करने के फल-स्वरूप प्राप्त होनेवाला तेज या शक्ति।

तपोभंग—पुं०[सं० तपस्-भंग, ष०त०] बाधा, विघ्न, आदि के फलस्वरूप तप या तपस्या का बीच में ही भंग होना।

तपोभूमि—स्त्री०[सं० तपस्-भूमि, ष०त०]१. ऐसी भूमि या स्थान जहाँ तपस्या होती हो; अथवा जो तपस्या के लिए सब प्रकार से उपयुक्त हो। २. वह भूमि या देश जिसमें बहुत से तपस्वियों ने तपस्या की हो।

तपोमय—पुं०[सं० तपस्+मयट्]=ईश्वर।

तपोमूर्ति—पुं०[सं० तपस्-मूर्ति, ष०त०]१. वह जो मूर्तिमान् तप या तपस्वी हो अर्थात् बहुत बड़ा तपस्वी। २. परमात्मा। परमेश्वर। ३. बारहवें मन्वंतर के चौथे सावर्णि के सप्तर्षियों में से एक। (पुराण)

तपोमूल—पुं०[सं० तपस्-मूल, ब०स०] तापस मनु के पुत्र का नाम।

तपोरति—पुं०[सं० तपस्-रति, ब०स०]१. तपस्वी। २. तापस मनु के एक पुत्र का नाम।

तपोरवि—पुं०[सं० तपस्-रवि, तृ० त०] बारहवें मन्वंतर के चौथे सावर्णि के समय के सप्तर्षियों में से एक। (पुराण)

तपोराज—पुं०[सं० तपस्-राजन्, ष०त०] चंद्रमा।

तपोराशि—पुं०[सं० तपस्-राशि, ष०त०] बहुत बड़ा तपस्वी।

तपोलोक—पुं० [सं० तपस्-लोक, मध्य० स०] पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक जो जन-लोक के बाद और सत्य-लोक के पहले पड़ता है।

तपोवट—पुं०[सं० तपस्-वट्, ष० त०] प्राचीन भारत के मध्य में स्थित एक देश। ब्रह्मावर्त्त देश।

तपोवन—पुं०[सं० तपस्-वन, ष० त०]वह वन या आश्रम जिसमें बहुत से तपस्वी तपस्या करते हों।

तपोवरणा†—वि०[सं० तपोवारणी] तप से च्युत करनेवाली। उदा०—रे असुन्दर, सुघर घर तू, एक तेरी तपोवरणा।—निराला।

तपोवृद्ध—वि०[सं० तपस्,वृद्ध तृ०त०] तपस्या में बढ़ा-चढ़ा।

पुं० बढ़ा-चढ़ा तपस्वी।

तपोव्रत—पुं०[सं० तपस्-व्रत, ष०त०] १. तपस्या-संबंधी व्रत। २. [ब०स०] वह जिसने उक्त व्रत धारण किया हो।

तपोऽशन—पुं०[सं० तपस्, अशन ब०स०] तापस मनु के पुत्र तपस्य।

तपौनी—स्त्री०[हिं० तपाना] १. तपाकर ठीक करने या उपयुक्त बनाने की क्रिया या भाव। २. मध्ययुग में ठगों की एक रसम जिसमें लूट-मार, हत्या आदि कर चुकने के बाद देवी की पूजा करके सब ठगों को प्रसाद रूप में गुड़ बाँटा जाता था।

मुहा०—(किसी को) तपौनी का गुड़ खिलाना=किसी नये आदमी को दीक्षित करके अथवा और कोई रसम करके अपनी मंडली या वर्ग में मिलाना। (परिहास)

३. दे० 'तपनी'।

तप्त—वि०[सं०√तप् (दाह)+क्त] १. (पदार्थ) जो तपा या तपाया हुआ हो। गरम। २. (व्यक्ति) जिसने खूब तपस्या की हो। ३. जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा हो। परम दुःखी। ४. आवेश आदि के कारण विकल।

तप्तक—पुं०[सं० तप्त+कन्] कड़ाही।

तप्तकुंड—पुं०[कर्म०स०] वह जलाशय जिसका जल प्राकृतिक रूप से ही गरम रहता हो।

तप्तकुंभ—पुं०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक जिसमें जीवों को तपे हुए तेल के कड़ाहों में फेंका जाता है।

तप्त-कृच्छ्—पुं०[ब०स०] एक व्रत जिसमें बराबर तीन दिन तक गरम पानी, गरम दूध या गरम घी पीया जाता है और गरम श्वास बराबर निकाला जाता है।

तप्त-पाषाण—पुं०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्त-बालुक—पुं०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्तमाष—पुं०[ब० स०] प्राचीन काल की एक परीक्षा जिसमें तपे हुए तेल में अभियुक्त के हाथ की उँगलियाँ डलवाकर यह देखा जाता था कि वह अपराधी या दोषी है या नहीं। यदि उसकी उँगलियाँ जल जाती थीं तो वह अपराधी समझा जाता था और यदि उँगलियाँ नहीं जलती थीं तो वह निर्दोष माना जाता था।

तप्त-मुद्रा—पुं०[कर्म०स०] वह चिह्न जो वैष्णव-संप्रदाय के लोग धातुओं के गरम ठप्पे से शरीर पर दगवाते हैं।

तप्त-रूपक—पुं०[कर्म०स०] तपाई हुई (और फलतः साफ) चाँदी।

तप्त-शूर्मी—पुं०[ब०स०] पुराणानुसार एक नरक जिसमें जीवों को लोहे के गरम खंभों का आलिंगन करना पड़ता है।

तप्त-सुरा-कुंड—पुं०[सं० तप्त-सुरा, कर्म० स०, तप्त-सुरा-कुंड, ब० स०] पुराणानुसार एक नरक।

तप्ता (प्तृ)—वि०[सं०√तप् (दाह)+तृच्] तप्त करनेवाला।

तप्ताभरण—पुं०[सं० तप्त-आभरण, ष०त०] तपाये हुए (फलतः शुद्ध) सोने का बना हुआ गहना।

तप्तायन—पुं० =तप्तायनी।

तप्तायनी—स्त्री०[सं० तप्त-अयनी, ष०त०] पृथ्वी, जो दुःखी प्राणियों का निवास-स्थान मानी गयी है।

तप्ति—स्त्री०[सं०√तप्+क्तिन्] तप्त होने की अवस्था, गुण या भाव। ताप। गरमी।

तप्पा†—पुं०=तप।

तप्य—वि० [सं०√तप्+यत्] १. तपाने योग्य। २. जो तपा करके शुद्ध किया जा सके। ३. तप करनेवाला।

पुं० शिव।

तफ़ज्जुल—पुं०[अ०] श्रेष्ठता। बड़प्पन।

तफतीश—स्त्री०[अ०] छान-बीन, जाँच-पड़ताल या पूछ-ताछकर किसी भेद या रहस्यपूर्ण बात अथवा उसके मूल कारण का पता लगाना।

तफरका—पुं० [अ० तफ़र्कः] आपस में होनेवाला वैर-विरोध-मूलक अन्तर। मन-मुटाव।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

तफरीक—स्त्री०[अ०] १. फरक होने की अवस्था या भाव। अन्तर। २. भिन्नता। ३. अलग होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। ४. बँटवारा। विभाजन। ५. गणित में घटाने या बाकी निकालने की क्रिया।

क्रि० प्र०—निकालना।

तफरीह—स्त्री० [अ०] १. मन-बहलाव। मनोविनोद। २. मन बहलाने के लिए इधर-उधर घूमना फिरना। सैर। ३. मन में होनेवाली प्रफुल्लता। ४. आपस में होनेवाला हास परिहास। हँसी-दिल्लगी।

तफ़रीहन—अव्य० [अ०] १. मन बहलाने के निमित्त। २. हँसी-दिल्लगी के लिए।

तफ़सीर—स्त्री० [अ०] १. किसी क्लिष्ट, गहन या दुरूह पद या वाक्य का सरल शब्दों में किया हुआ विवेचन या स्पष्टीकरण। टीका। २. कुरान की आयतों की व्याख्या।

तफसील—स्त्री० [अ०] १. विस्तृत वर्णन। २. कैफियत। विवरण। ३. कठिन पदों, वाक्यों आदि की टीका या स्पष्टीकरण। ४. ब्योरेवार बनाई हुई तालिका। सूची।

तफावत—पुं० [अ०] १. अन्तर। फरक। २. दूरी। फासला। ३. वैर-विरोध आदि के कारण आपस में होनेवाला अन्तर। मन-मुटाव।

तब—अव्य० [सं० तदा] १. किसी उल्लिखित या विशिष्ट परिस्थिति या समय में। जैसे—(क) तब हम वहाँ रहते थे। (ख) इतना हो जाय, तब तुम्हारा काम करूँगा। २. इसके पश्चात् या तुरंत बाद। जैसे—वहाँ तब निस्तब्धता छा गई। ३. इस कारण या वजह से। जैसे—मुझे जरूरत थी; तब तो मैंने माँगा था।

तबक—पुं० [अ०] १. परत। तह। २. चाँदी, सोने आदि धातुओं को खूब कूटकर बनाया हुआ बहुत पतला पत्तर जो औषधों आदि में मिलाया और शोभा के लिए मिठाइयों आदि पर लगाया जाता है। वरक। ३. एक प्रकार की चौड़ी और छिछली थाली। ४. वह उपचार जो मुसलमान स्त्रियाँ भूत-प्रेत और परियों की बाधा से बचने के लिए करती हैं।

क्रि० प्र०—छोड़ना।

४. इसलामी, पौराणिक कथाओं के अनुसार पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तल या लोक। ५. रक्त-विकार आदि के कारण शरीर पर पड़नेवाला चकत्ता। ६. घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके शरीर के किसी भाग में सूजन हो जाती और चकत्ता पड़ जाता है।

तबकगर—पुं० [अ० तबक+फा० गर] वह व्यक्ति जो सोने-चाँदी आदि के वरक बनाता हो। तबकिया।

तबकड़ी†—स्त्री० [अ० तबक+डी (प्रत्य०)] छोटी रिकाबी।

तबक-फाड़—पुं० [अ० तबक+हिं० फाड़] कुश्ती का एक पेंच।

तबका—पुं० [अ० तबकः] १. पृथ्वी या भूमि का कोई बड़ा खंड या विभाग। भू-खंड। २. पृथ्वी के ऊपर और नीचे के तल या लोक। ३. परत। तह। ४. मनुष्यों का वर्ग या समूह।

तबकिया—वि० [हिं० तबक] तबक-संबंधी। जिसमें तबक या परतें हों। जैसे—तबकिया हरताल।

पुं०=तबकगर। (देखें)

तबकिया हरताल—पुं० [हिं० तबकिया+सं० हरताल] एक प्रकार की हरताल जिसके टुकड़ों में तबक या परतें होती हैं।

तबदील—वि० [अ०] [भाव० तबदीली] १. (पदार्थ) जिसे परिवर्तित कर या बदल दिया गया हो। २. (व्यक्ति) जो एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर भेजा गया हो।

तबदीली—स्त्री० [अ०] १. तबदील होने की अवस्था या भाव। परिवर्त्तन। २. एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर जाना। तबादला।

तबद्दल—पुं०=तबदीली।

तबर—पुं० [फा०] १. कुल्हाड़ी। टाँगी। २. कुल्हाड़ी के आकार का लड़ाई का एक हथियार। परशु।

पुं० [देश०] मस्तूल के ऊपरी भाग में लगाया जानेवाला पाल। (लश०)

तबरदार—वि० [फा०] (व्यक्ति) जिसके पास तबर (कुल्हाड़ी) हो या जो तबर चलाना जानता हो।

तबरदारी—स्त्री० [फा०] तबर या कुल्हाड़ी चलाने की क्रिया या भाव।

तबर्रा—पुं० [अ०] १. घृणा। नफरत। २. वे घृणासूचक दुर्वचन जो शीया लोग मुहम्मद साहब के कुछ मित्रों के संबंध में (सुन्नियों की 'मदहे सहाबा' के उत्तर में) कहते हैं। ३. उक्त दुर्वचनों के पद या गीत।

तबल—पुं० [फा०] १. बड़ा ढोल। २. डंका। नगाड़ा। उदा०—तबल बाज तिण ही समै, निथ से सुभट अपार।—जटमल।

तबलची—पुं० [अ० तबलः+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तबला बजाने का काम करता हो। तबलिया।

तबला—पुं० [अ० तबलः] १. ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता है, और जो साधारणतः 'डुग्गी' या 'बायाँ' नामक दूसरे बाजे के साथ बजाया जाता है।

विशेष—तबला और बायाँ दोनों पास-पास रखे जाते हैं; और तबला दाहिने हाथ से और बायाँ बाएँ हाथ से बजाया जाता है।

मुहा०—तबला खनकना या ठनकना=ऐसा नाच-गाना होना जिसके साथ तबला भी बजता हो। **तबला मिलाना**=तबले का बंधन या बद्धी आवश्यकतानुसार कसकर या ढीली करके ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिसमें तबले के ठीक स्वर निकलें।

तबलिया—पुं० [अ० तबलः+इया (प्रत्य०)] दे० 'तबलची'।

तबलीग—पुं० [अ०] १. किसी के पास कुछ पहुँचाना। २. अपने धर्म का प्रचार करना। ३. दूसरों को दीक्षित करके अपने धर्म का अनुयायी बनाना।

तबस्सुम—पुं० [अ०] मधुर तथा हलकी हँसी। मुस्कराहट।

तबाख†—पुं० [अ० तबाक] बड़ी काली परात।

तबाखी—पुं० [हिं० तबाख] थाल या परात में रखकर सौदा बेचनेवाला।

तबाखी कुत्ता—पुं० [हिं०] ऐसा साथी जो अपना स्वार्थ सिद्ध होने के समय तक साथ दे और दुर्दिन में साथ छोड़ दे।

तबादला—पुं० [अ० तबादलः] १. लेन-देन के क्षेत्र में होनेवाला चीजों का विनिमय। २. रूप आदि में होनेवाला परिवर्त्तन। ३. व्यक्ति को एक स्थान या पद से दूसरे स्थान या पद पर भेजा जाना। अंतरण। बदली।

तबाबत—स्त्री० [अ०] तबीब अर्थात् चिकित्सक का काम या पेशा। चिकित्सा का व्यवसाय।

तबाशीर—पुं० [सं० तवक्षीर] वंसलोचन।

तबाह—वि० [फा०] [भाव० तबाही] १. जो बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट या ध्वस्त हो गया हो। जैसे—भूकंप ने नगरी को तबाह कर डाला। २. (व्यक्ति) जिसकी बहुत बड़ी हानि हुई हो अथवा जिसका सर्वस्व लुट गया हो।

तबाही—स्त्री० [फा०] १. तबाह करने या होने की अवस्था या भाव। २. बरबादी। विनाश।

मुहा०—तबाही खाना=जहाज का टूट-फूट कर रद्दी होना। (लश०)

तबिअत—स्त्री० =तबीअत।

तबीअत—स्त्री० [अ०] १. स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी की शारीरिक या मानसिक स्थिति। मिजाज।

मुहा०—तबीअत खराब होना=शरीर अस्वस्थ या रोगी होना। बीमार होना। जैसे—इधर महीनों से उनकी तबीअत खराब है। **तबीअत बिगड़ना**=(क) कै या मिचली मालूम होना। (ख) अस्वस्थता या रोग का आक्रमण होता हुआ जान पड़ना।

२. आचरण या व्यवहार की दृष्टि से किसी की प्रवृत्ति या मनोवृत्ति। मन की रुझान। ३. जी। मन। हृदय।

मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना=मन में किसी के प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न होना। **(किसी चीज पर) तबीअत आना**=मन में कोई चीज पाने या लेने की इच्छा होना। **तबीअत फड़क उठना या जाना**=कोई अच्छी चीज या बात देखकर चित्त या मन बहुत अधिक प्रसन्न होना। **तबीयत पाना**—अच्छे स्वभाववाला होना। जैसे—उन्होंने अच्छी तबीअत पाई है। **(किसी काम या बात से) तबीअत भर जाना**=मन में अनुराग, कामना आदि न रह जाना और विरक्ति-सी उत्पन्न होना। **(अपनी) तबीअत भरना**=अपनी तसल्ली या समाधान करना। जैसे—पहले मकान देखकर अपनी तबीअत भर लो; तब उसे लेने का विचार करना। **(किसी की) तबीअत भरना**=किसी का पूरा संतोष या समाधान करना। **(किसी काम में) तबीअत लगना**=कोई काम करने में चित्त, ध्यान या मन लगना। जैसे—लिखने-पढ़ने में तो उसकी तबीअत ही नहीं लगती। **(किसी से) तबीअत लगाना**=अनुराग या प्रेम करना।

४. बुद्धि। समझ।

मुहा०—तबीअत पर जोर डालना या देना=अच्छी तरह मन लगाते

हुए समझदारी से काम लेना। जैसे—जरा तबीअत पर जोर डालोगे तो कोई न कोई रास्ता निकल ही आवेगा। **तबीअत लड़ाना**=तबीअत पर जोर डालना।

तबीअतदार—वि० [अ० तबीअत+फा० दार] [भाव० तबीअतदारी] १. अच्छी तबीअत या बुद्धिवाला। २. सहज में औरों से मेल-मिलाप करने और रसपूर्ण कामों या बातों में सम्मिलित होनेवाला। भावुक। रसिक।

तबीअतदारी—स्त्री० [अ० तबीअत+फा० दारी] १. तबीअतदार होने की अवस्था या भाव। २. समझदारी। ३. भावुकता। रसिकता।

तबीब—पुं० [अ०] १. यूनानी चिकित्सा पद्धति के अनुसार जड़ी-बूटियों आदि के द्वारा इलाज करनेवाला चिकित्सक। हकीम। २. चिकित्सक। वैद्य।

तबीयत—स्त्री०=तबीअत।

तबेला—पुं० [अ० तवेलः] वह घिरा हुआ स्थान जहाँ पशु बाँधे जाते हों। अस्तबल।

मुहा०—तबेले में लत्ती चलना=कोई विशिष्ट काम करनेवाले व्यक्तियों में आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।

†पुं० [हिं० ताँबा] ताँबे का बना हुआ एक प्रकार का बड़ा पात्र।

तबोरी—स्त्री० [सं० तांबोल या हिं० तंबूल] लगाया हुआ पान। उदा०—अधर अधर सों भीज तबोरी।—जायसी।

तब्बर*—पुं० १=तबर। २=टावर।

तभी—अव्य० [हिं० तब+ही] १. उसी वक्त। उसी समय। २. किसी उल्लिखित या विशिष्ट अवस्था या स्थिति में ही। जैसे—तभी तो आप भी आये हैं। ३. उसी कारण या वजह से।

तमंग—पुं० [सं०] १. रंग-मंच। २. मंच।

तमंगक—पुं० [सं०] छत या छाजन का बाहर निकला हुआ भाग। छज्जा।

तमंचा—पुं० [फा० तबान्चः] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी बन्दूक। (आज-कल की पिस्तौल इसी का विकसित रूप है) २. वे लंबे पत्थर जो दरवाजे के दोनों ओर मजबूती के लिए खड़े बल में लगाये जाते हैं।

तमःप्रभ—पुं० [सं० तमस्-प्रभा, ब० स०] एक नरक।

तमःप्रभा—स्त्री०=तमः प्रभ।

तमःप्रवेश—पुं० [सं० तमस्–प्रवेश, स० त०] १. अंधकारपूर्ण स्थिति में प्रवेश करना या होना। २. ऐसी मानसिक स्थिति जिसमें बुद्धि कुछ काम न करती हो।

तम—पुं० [सं०√तम् (विकल होना)+क] १. अंधकार। अँधेरा। २. कालिख। कालिमा। ३. पाप। ४. नरक। ५. अज्ञान। अविद्या। ६. माया। मोह। ७. राहु का एक नाम। ८. क्रोध। गुस्सा। ९. पैर का अगला भाग। १०. तमाल वृक्ष। ११. वराह। सूअर। १२. प्रकृति के तीन गुणों में से अंतिम गुण (शेष दो गुण सत्त्व और रज हैं)।

विशेष—इसी गुण की प्रबलता से काम, क्रोध, हिंसा आदि की प्रवृत्ति मानी गई है।

वि० १. काला। २. दूषित। ३. बुरा।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो संस्कृत विशेषणों के अंत में लगकर सबसे बढ़कर का अर्थ देता है। जैसे—अधिकतम, श्रेष्ठतम।

तमअ—स्त्री० [अ०] १. लालच। लोभ। २. इच्छा। चाह।

तमक—स्त्री० [हिं० तमकना] १. तमकने की क्रिया या भाव। २. आवेश। जोश। ३. तीव्रता। तेजी। ४. क्रोध। गुस्सा।

पुं० दे० 'तमक श्वास' (रोग)।

तमकनत—स्त्री० [अ०] १. अधिकार। जोर। वश। २. गौरव। प्रतिष्ठा। ३. गौरव या प्रतिष्ठा का अनुचित प्रदर्शन। ४. आडंबर। टीम-टाम। ५. अभिमान। घमंड।

तमकना—अ० [अनु०] १. आवेश या क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना। उदा०—सो सुनि तमक उठी कैकेई।—तुलसी। २. क्रोध के कारण चेहरा लाल होना। तमतमाना।

तमक-श्वास—पुं० [सं०√तम्+वुन्—अक, तमक-श्वास, कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार श्वास रोग का एक भेद जिसमें दम फूलने के साथ-साथ बहुत प्यास लगती है, पसीना आता है और मतली तथा घबराहट होती है।

तमकाना—स० [हिं० तमकना का स०] १. किसी को तमकने में प्रवृत्त करना। २. क्रोध के आवेश में कुछ (हाथ आदि) उठाना। उदा०—दोउ भुजदंड उद्दंड तोलि ताने तमकाए।—रत्नाकर।

तमगा—पुं० [तु० तमग] पदक। (मेडल)

तमगुन—पुं०=तमोगुण।

तमगेही—वि० [सं० तम+हिं० गेही] अंधकार रूपी घर में रहनेवाला।

पुं० पतंगा। उदा०—दीपक कहाँ कहाँ तमगेही।—नूरमुहम्मद।

तमचर—पुं० [सं० तमीचर] १. राक्षस। निशाचर। २. उल्लू। ३. पक्षी।

वि० तम या अँधेरे में विचरण करनेवाला।

तमचुर*—पुं० [सं० ताम्रचूड] मुरगा।

तमचोर†—पुं०=तमचुर।

तमच्छन्न—वि०=तमाच्छन्न।

तमजित्—वि० [सं० तम√जि (जीतना)+क्विप्] अंधकार को जीतनेवाला। उदा०—तेजस्वी हे तमजिज्जीवन।–निराला।

तमतमाना—अ० [सं० ताम्र हिं०, ताँबा] [भाव० तमतमाहट] १. अधिक ताप के कारण किसी चीज का लाल होना। २. आवेश या क्रोध में चेहरा लाल होना। ३. चमकना।

तमतमाहट—स्त्री० [हिं० तमतमाना] तमतमाने की अवस्था या भाव।

तमता—स्त्री० [सं० तम+तल्—टाप्] १. तम का भाव। २. अंधकार। अंधेरा। ३. कालापन।

तमद्दुन—पुं० [अ०] १. नगर में रहना। नगर-निवास। २. नागरिकता। ३. सभ्यता। संस्कृति।

तमन—पुं० [सं०√तम्+ल्युट्—अन] ऐसी स्थिति जिसमें सांस लेना कठिन हो जाता हो। दम घुटने की अवस्था।

तमना—अ०=तमकना।

तमन्ना—स्त्री० [अ०] आकांक्षा। कामना।

तम-प्रभ—पुं० [सं० ब० स०] पुराणानुसार एक नरक।

तमयी—स्त्री० [सं० तममयी] रात।

तमरंग†—पुं० [देश०] एक प्रकार का नींबू।

तमर—पुं० [सं० तम√रा (दान)+क] बंग।

पुं० [सं० तम] अन्धकार। अँधेरा।

तमराज—पुं० [सं० तम√राज् (चमकना)+अच्] एक तरह की खाँड़।

तमलूक—पुं०=तामलूक।

तमलेट—पुं० [अं० टम्बलर] १. लुक फेरा हुआ टीन या लोहे का बरतन। २. फौजी सिपाहियों का लोटा।

तमस्—पुं० [सं०√तम् (विकल होना)+असच्] १. अंधकार। अँधेरा। २. अज्ञान। अविद्या। ३. प्रकृति का 'तम' नामक तीसरा गुण। ४. नगर। शहर। ५. कूआँ। ६. तमसा नदी।

तमसा—स्त्री० [सं० तमस्+अच्—टाप्] इस नाम की तीन नदियाँ; एक जो बलिया के पास गंगा में मिलती है, दूसरी जो अमरकंटक से निकल कर इलाहाबाद में सिरसा के पास गंगा में मिलती है और तीसरी जो हिमालय के पहाड़ी प्रदेश में बहती है। टौंस।

तमस्क—पुं० [सं० तमस्+कन्] अंधकार।

तमस्कांड—पुं० [ष० त०] घोर अंधकार।

तमस्तति—स्त्री० [ष० त०] घोर अंधकार।

तमस्तूर्य—पुं० [ष० त०] तम का तूर्य। अँधेरे की तुरही। उदा०—अस्तमिन आजरे तमस्तूर्य दिङ् मंडल।—निराला।

तमस्वती—स्त्री० [सं० तमस्+मतुप्+ङीप्] अँधेरी रात।

तमस्विनी—स्त्री० [सं० तमस्विन्+ङीप्] १. अँधेरी रात। २. रात्रि। ३. हल्दी।

तमस्वी (स्विन्)—वि० [सं० तमस्+विनि] अंधकारपूर्ण।

तमस्सुक—पुं० [अ०] १. वह लेख्य जो ऋण लेनेवाला महाजन को लिखकर देता है। २. किसी प्रकार का विधिक लेख्य। दस्तावेज।

तमहँड़ी—स्त्री० [हिं० ताँबा+हाँड़ी] तांबे की बनी हुई एक तरह की छोटी हाँड़ी।

तमहर—पुं० [सं० तमोहर] तम अर्थात् अंधकार हरने या दूर करनेवाला।

तमहाया—वि० [सं० तम+हिं० हाया (प्रत्य०)] १. अंधकारपूर्ण। २. तमोगुण से युक्त।

तमहीद—स्त्री० [अ०] १. प्राक्कथन। प्रस्तावना।

क्रि० प्र०—बाँधना।

२. ग्रंथ आदि की भूमिका।

तमाँचा—पुं०=तमाचा।

तमा—स्त्री० [सं०तम+अच्—टाप्] रात। रात्रि। रजनी।

पुं० [सं० तामाः तमस्] राहु।

स्त्री० [अ० तमअ] लालच। लोभ।

तमाई—स्त्री० [सं० तम+हिं० आई (प्रत्य०)] तम। अंधकार। अँधेरा। उदा०—कहै रत्नाकर औं कंचन बनाई काम ज्ञान अभिमान की तमाई बिनसाई कै।—रत्नाकर।

स्त्री० [देश०] खेत जोतने के पूर्व उसकी घास आदि साफ करना।

तमाकू—पुं० [पुर्त्त० टबैको, सं० ताम्रकूट] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में नशे के लिए काम में लाये जाते हैं। २. उक्त पौधे का पत्ता। ३. उक्त पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर रख और सुलगाकर उसका धूआँ पीते हैं। ४. दे० 'सुरती'।

तमाचा—पुं० [फा० तवनचः या तवान्चः] हथेली विशषतः उसकी पाँचों सटी हुई उगलियों से किसी के गाल पर किया जानेवाला जोर का आघात। थप्पड़।

क्रि० प्र०—जड़ना।—देना।—मारना।—लगाना।

तमाचारी (रिन्)—वि० [तमा√चर् (चलना)+णिनि] अंधकार में विचरण करनेवाला।

पुं० राक्षस।

तमादी—वि० [अ०] जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो। अवधि-बाधित। (बार्ड बाइ लिमिटेशन)

स्त्री० १. किसी काम या बात की मीयाद अर्थात् अवधि का बीत जाना। २. विधिक क्षेत्रों में वह अवधि बीत जाना या मीयाद गुजर जाना जिसके अन्दर दीवानी न्यायालय में कोई अभियोग उपस्थित किया जाना चाहिए।

तमान—पुं० [१] तंग मोहरीवाला एक प्रकार का पाजामा।

तमाम—वि० [अ०] १. कुल। सब। समस्त। २. पूरा। सारा। ३. खतम। समाप्त।

मुहा०—**(किसी का) काम तमाम करना**=किसी को जान से मार डालना।

तमामी—स्त्री० [फा०] एक तरह का देशी रेशमी कपड़ा जिस पर कलाबत्तू की धारियाँ बनी होती हैं।

तमारि—पुं० [तम-अरि, ष० त०] सूर्य।

†स्त्री० दे० 'तँवारि'।

तमाल—पुं० [सं०√तम्+कालन्] १. एक प्रकार का बड़ा सदाबहार पेड़, जिसके दो भेद हैं—साधारण तमाल और श्याम तमाल। २. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिससे गोंद निकलता है। इस गोंद से कहीं-कहीं सिरका भी बनता है। उनवेल। मन्होला। ३. काले खैर का पेड़। ४. वरुण नामक वृक्ष। ५. तिलक का पेड़। ६. तेजपत्ता। ७. बाँस की छाल। ८. पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

तमालक—पुं० [सं० तमाल+कन्] १. तेजपत्ता। २. तमाल।

तमालिका—स्त्री० [सं० तमाली+कन्—टाप्, ह्रस्व] १. भुँईआवला। २. ताम्रवल्ली लता। ३. काले खैर का पेड़। ४. ताम्रलिप्त देश।

तमाली—स्त्री० [सं० तमाल+ङीप्] १. वरुण वृक्ष। २. ताम्रावल्ली लता।

तमाशगीर—पुं० [अ० तमाशः+फा० गीर] [भाव० तमाशागीरी] १. वह जो तमाशा देखना पसंद करता हो। २. दे० 'तमाशबीन'।

तमाशबीन—पुं० [अ० तमाशः+फा० बीन (देखनेवाला)] [भाव० तमाशबीनी] १. तमाशा देखनेवाला व्यक्ति। २. वेश्यागामी। रंडीबाज।

तमाशबीनी—स्त्री० [हिं० तमाशबीन+ई (प्रत्य०)] १. तमाशा देखने की क्रिया या भाव। २. रंडीबाजी।

तमाशा—पुं० [अ० तमाशः] १. कोई ऐसा अनोखा, विलक्षण या मनोरंजक काम या बात जिसे देखने में लोगों का जी रमे। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २. इस प्रकार दिखाया जानेवाला खेल या प्रदर्शित

की जानेवाली घटना या दृश्य। ३. ऐसा कार्य जिसका संपादन सरलता या सुगमता से किया जा सके। जैसे—लेख लिखना कोई तमाशा नहीं है। ४. बहुत ही बढ़िया या हास्यास्पद बात या वस्तु। जैसे—सभा क्या है, तमाशा है। ५. पुरानी चाल की एक तरह की तलवार।

तमाशाई—पुं० [अ०] १. वह जो तमाशा देख रहा हो। तमाशा देखनेवाला। २. तमाशा दिखलानेवाला व्यक्ति।

तमासा—पुं० = तमाशा।

तमाह्वय—पुं० [सं० तम-आह्वय, ब० स०] तालीश-पत्र।

तमि—पुं० [सं०√तम् (खेद)+इन्] १. रात। रात्रि। २. हल्दी।

तमिनाथ—पुं० [ष० त०] चंद्रमा।

तमिल—पुं० [!] १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध देश। २. उक्त देश में बसनेवाली एक जाति जो द्रविड़ जातियों के अन्तर्गत है।

स्त्री० उक्त जाति (और देश) की बोली या भाषा।

तमिस्र—वि० [सं० तमस्+र, नि० सिद्धि [स्त्री० तमिस्रा] अंधकारपूर्ण।

पुं० १. अंधकार। अँधेरा। २. क्रोध। गुस्सा। ३. पुराणानुसार एक नरक।

तमिस्र-पक्ष—पुं० [मध्य० स०] चांद्र मास का अँधेरा पक्ष। कृष्ण-पक्ष।

तमिस्रा—स्त्री० [सं० तमिस्र+टाप्] अँधेरी रात।

तमी—स्त्री० [सं० तमि+ङीष्] १. रात। २. हल्दी।

पुं० [सं० तमीचर] राक्षस।

तमीचर—वि० [सं० तमी√चर् (गति)+ट] १. जो अंधकार में चलता हो। २. रात के समय विचरण करनेवाला।

पुं० राक्षस।

तमीज—स्त्री० [अ० तमीज़] १. भले-बुरे की पहचान। विवेक। २. किसी चीज या बात को परखने की बुद्धि या योग्यता। ३. कोई काम अच्छी तरह से करने की जानकारी या योग्यता। ४. आचार, व्यवहार आदि के पालन का उचित ज्ञान या बोध।

तमी-पति—पुं० [ष० त०] चंद्रमा।

तमीश—पुं० [सं० तमी-ईश, ष० त०] चंद्रमा।

तमु†—पुं०=तम।

तमूरा†—पुं०=तंबूरा।

तमूल†—पुं०=तांबूल।

तमेड़ा†—पुं०[सं० ताम्र+भांड] [स्त्री० अल्पा० तमेड़ी] ताँबे का एक प्रकार का बड़ा गोलाकार बरतन।

तमेरा—पुं० [हिं० ताँबा+एरा (प्रत्य०)] वह जो ताँबे के बरतन आदि बनाने का काम करता हो।

तमोऽन्त्य—वि० [सं०] ग्रहण के दस भेदों में से एक जिसमें चंद्रमंडल की पिछली सीमा में राहु की छाया बहुत अधिक और बीच के भाग में थोड़ी-सी जान पड़ती है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे ग्रहण से फसल को हानि पहुँचती है और चोरी का भय होता है।

तमोऽन्ध—वि० [सं० तमस्—अन्ध, तृ० त०] १. अज्ञानी। २. क्रोधी।

तमोगुण—पुं० [सं० तमस्-गुण. ष० त०] सृष्टि को अस्तित्व में लानेवाले तीन गुणों या अवयवों में से एक (अन्य दो गुण, सतोगुण और रजोगुण हैं) जो अंधकार, अज्ञान, भ्रम, क्रोध, दुःख आदि का कारण होता है।

तमोगुणी (णिन्)—वि० [सं० तमोगुण+इनि] जिसमें सतोगुण तथा रजोगुण की अपेक्षा तमोगुण की अधिकता हो। फलतः अज्ञानी या अभिमानी।

तमोघ्न—वि० [सं० तमस्√हन् (मारना)+टक्] तम अर्थात् अन्धकार नाश करनेवाला।

पुं० १. सूर्य। २. चंद्रमा। ३. दीपक। दीआ। ४. अग्नि। आग। ५. ज्ञान। ६. विष्णु। ७. शिव। ८. गौतम बुद्ध। ९. बौद्ध धर्म के आचार और नियम।

तमोज्योति(स्)—पुं० [सं० तमस्-ज्योतिस्, ब० स०] जुगनूँ।

तमोदर्शन—पुं० [सं० तमस्-दर्शन ब० स०] वैद्यक में पित्त के प्रकोप से होनेवाला ज्वर।

तमोनुद—पुं० [सं० तमस्√नुद् (प्रेरणा)+क्विप्] १. ईश्वर। २. चन्द्रमा। ३. अग्नि। आग।

तमोऽपह—पुं० [सं० तमस्-अप√हन्+ड] १. सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. दीपक। दीया। ४. अग्नि। आग।

तमोभिद्—वि० [सं० तमस्√भिद् (विदारण)+क्विप्] अंधकार को भेदने अर्थात् उसका नाश करनेवाला।

पुं० जुगनूँ (कीड़ा)।

तमोमणि—पुं० [सं० तमस्—मणि, स० त०] १. जुगनूँ। २. गोमेद नामक मणि।

तमोमय—वि० [सं० तमस्+मयट्] १. अंधकारपूर्ण। २. तमोगुणी। (दे०)

पुं० राहु।

तमोर*—पुं० [सं० ताम्बूल] पान।

तमोरि—पुं० [सं० तमस्-अरि, ष० त०] सूर्य।

तमोरी†—पुं० = तमोली।

तमोल—पुं० [सं० ताम्बूल] १. पान का बीड़ा। २. विवाह के समय, बरात चलने से पहले वर को लगाया जानेवाला टीका या दिया जानेवाला धन। (पश्चिम) ३. इस प्रकार वर को टीका लगाकर धन देने की रीति।

तमोलिन—स्त्री० [हिं० तमोली का स्त्री० रूप] १. तमोली की स्त्री। २. पान बेचनेवाली स्त्री।

तमोलिप्ती—स्त्री० दे० 'ताम्रलिप्त'।

तमोली—पुं० [सं० तांबूलिक] १. एक जाति जो पान पकाने और बेचने का काम करती है। २. वह जो पान बेचता हो।

तमोविकार—पु० [सं० तमस्-विकार, ष० त०] तमोगुण की अधिकता के कारण होनेवाले विकार। जैसे—अज्ञान, क्रोध आदि।

तमोहंत—पुं० [सं०] 'ग्रहण' के दस भेदों में से एक।

वि० १. तम या अन्धकार दूर करनेवाला। २. सांसारिक मोह-माया का नाश करनेवाला।

तमोहर—वि० [सं० तमस्√हृ (हरना)+अच्] १. तम या अंधकार का नाश करनेवाला। २. अज्ञान, अविद्या, मोह, माया आदि का नाश करनेवाला।

पुं० १. सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. अग्नि। आग। ४. ज्ञान।

तमोहरि—पुं० [सं० तमस्-हरि, ष० त०] = तमोहर

तय—वि० = तै।

तयना*—अ० = तपना।

स० = तपाना।

तयनात—वि० = तैनात।

तया†—पुं० = तवा।

तयार—वि० [भाव० तयारी] = तैयार।

तय्यार—वि० [भाव० तय्यारी] = तैयार।

तरंग—स्त्री० [सं०√तॄ(तैरना)+अंगच्] १. पानी की लहर हिलोरं।
क्रि० प्र०—उठना।

२. किसी चीज या बात का ऐसा सामंजस्यपूर्ण उतार-चढ़ाव जो लहरों के समान जान पड़े। जैसे—संगीत में तान की तरंग। ३. उक्त के आधार पर कुछ विशिष्ट प्रकार के बाजों के नाम के साथ लगकर, उत्पन्न की जानेवाली स्वर-लहरी। जैसे—जल-तरंग, तबला तरंग। ४. सहसा मन में उत्पन्न होनेवाली कोई उमंग या भावना। जैसे—जब मन में तरंग आई, तब उठकर चल पड़े। ५. हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी जिसके ऊपर की बनावट लहरियेदार होती है। ६. घोड़े की उछाल या फलाँग। ७. कपड़ा। वस्त्र।

तरंगक—पुं० [सं० तरङ्ग+कन्] [स्त्री० तरंगिका] १. पानी की लहर। हिलोर। २. स्वरलहरी।

तरंगभीरु—पुं० [ष० त०] चौदहवें मनु के एक पुत्र।

तरंगवती—स्त्री० [सं० तरंग+मतुप्+ङीप्] नदी।

तरंगायति—वि० [सं० तरंगित] १. जिसमें तरंग या तरंगें उठ रही हों। २. तरंगों की तरह का। लहरियेदार। लहरदार।

तरंगालि—स्त्री० [सं० तरंग-अलि, ब० स०] नदी।

तरंगिणि—वि० स्त्री० [सं० तरंग+इनि+ङीप्] जिसमें तरंगें या लहरें उठती हों।
स्त्री० नदी। सरिता

तरंगित—वि० [सं० तरंग+इतच्] [स्त्री० तरंगिता] १. (जलाशय) जिसमें तरंगें या लहरें उठ रही हों। २. (हृदय) जो तरंग या उमंग से प्रफुल्लित या मग्न हो रहा हो। ३. जो बार-बार कुछ नीचे गिरकर फिर ऊपर उठता हो।

तरंगी (गिन्)—वि० [सं० तरंग+इनि] [स्त्री० तरंगिणी] १. जिसमें तरंगें या लहरें उठती हों। २. जो मन की तरंग या मौज (आकस्मिक भावावेश या स्फूर्ति) के अनुसार सब काम करता हो। ३. भावुक। रसिक।
पुं० बहुत बड़ी नदी। नद।

तरंड—पुं० [सं० √तॄ (तैरना) +अंडच्] १. नाव। नौका। २. नाव खेने का डाँड। ३. मछलियाँ मारने की बंसी में बँधी हुई वह छोटी लकड़ी जो पानी के ऊपर तैरती रहती है।

तरंडा—स्त्री० [सं० तरंड+टाप्] नौका।

तरंडी—स्त्री० [सं० तरंड+ङीष्] = तरंडा।

तरंत—पुं० [सं०√त+झच्-अन्त] १. समुद्र। २. मंडूक। मेंढक। ३. राक्षस।

तरंती—स्त्री० [सं० तरन्त+ङीष्] नाव। नौका।

तरंबुज—पुं० [सं० तर-अम्बु कर्म० स०, तरंबु√जन्+ड] तरबूज।

तरँहुत—क्रि० वि० [सं० तल या हिं० तले] १. नीचे। २. नीचे की ओर। वि० १. नीचे की ओर का। नीचेवाला। २. नीचा।

तर—वि० [फा०] १. किसी तरल पदार्थ में भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। नम। जैसे—तर कपड़ा, तर जमीन। २. जिसमें यथेष्ट आर्द्रता या नमी हो। जैसे—तर हवा। ३. ठंढा। शीतल। जैसे—तर पानी। ४. जो शरीर में ठंढक पैदा करता हो। जैसे—कोई तर दवा खाओ। ५. चित्त को प्रफुल्लित या प्रसन्न करनेवाला। बहुत अच्छा और बढ़िया। जैसे—तर माल। ६. खूब हरा-भरा। ७. तरह-तरह से भरा-पूरा। यथेष्ठ रूप में वांछनीय गुणों या बातों से युक्त। जैसे—तर असामी=धनवान व्यक्ति।

पुं० [सं० √तॄ (पार करना)+अप्] १. नदी आदि पार करने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. अग्नि। आग। ३. पेड़। वृक्ष। ४. मार्ग। रास्ता। ५. गति। चाल।

प्रत्य० [सं०] एक संस्कृत प्रत्यय जो गुणवाचक विशेषणों में लगकर उनकी विशेषता अपेक्षाकृत कुछ अधिक बढ़ा देता है। जैसे—अधिकतर, गुरुतर, श्रेष्ठतर।

*पुं० [सं० तल] तल।

अव्य० १. तले। नीचे। उदा०—प्रभु तरु तर कपि डार पर।—तुलसी। २. तो। उदा०—नहिं तर होती हाणि।—कबीर।

*पुं० = तरु (वृक्ष)।

तरई†—स्त्री० [सं० तारा] नक्षत्र।

तरक†—पुं० [सं० तर्क] १. सोच-विचार। २. उक्ति। कथन। ३. अड़चन। बाधा। ४. गड़बड़ी। व्यतिक्रम। ५. भूल। चूक। ६. दे० तर्क।

पुं० [हिं० तर=नीचे] लेख आदि का कोई पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे लिखा जानेवाला वह शब्द जिससे बादवाला पृष्ठ आरंभ होता है।

†स्त्री० = तड़क।

तरकना†—अ० [सं० तर्क] १. तर्क करना। २. सोच-विचार करना। ३. बहस या विवाद करना। ४. झगड़ना। ५. अनुमान या कल्पना करना।

अ० [?] उछलना-कूदना।

अ० दे० 'तड़कना'।

†वि० जल्दी चौंकने या भड़कनेवाला (बैल)। उदा०—बैल तरकना टूटी नाव, या काहू दिन दैहैं दांव।—कहा०।

तरकश—पुं० [फा०] कंधे पर लटकाया जानेवाला वह आधान जिसमें तीर रखे जाते हैं। तूणीर।

तरकश-बंद—पुं० [फा०] वह जो तरकश रखता हो।

तरकस—पुं० [स्त्री० अल्पा० तरकशी] =तरकश।

तरका—पुं० [अ० तर्कः] १. वह संपत्ति जो कोई व्यक्ति छोड़कर मरा हो। २. उत्तराधिकारी या वारिस को मिलनेवाली संपत्ति। ३. उत्तराधिकार।

†पुं० =तड़का।

तरकारी—स्त्री० [फा० तरः=सब्जी, शाक+कारी] १. वे हरे और विशेषतः कच्चे फल आदि जिन्हें आग पर भून या पकाकर रोटी आदि

के साथ खाया जाता है। हरी सब्जी। २. आग पर भून या पकाकर खाने के योग्य बनाई हुई सब्जी। ३. पकाया हुआ गोश्त या मांस।

तरकी—स्त्री०[सं० तांडकी] कान में पहनने का एक तरह का गहना।

तरकीब—स्त्री० [अ०] १. मिलान। मेल। २. बनावट। रचना। ३. रचना का प्रकार या शैली। ४. सोच-समझकर निकाला हुआ उपाय या युक्ति।

तरकुल†—पुं०[सं० ताल+कुल] ताड़ का पेड़।

तरकुला—पुं०[हिं०] कान में पहनने की बड़ी तरकी।

तरकुली—स्त्री०=तरकी (कान में पहनने की)।

तरक्की—स्त्री०[अ०] १. शारीरिक अवस्था में होनेवाली अभिवृद्धि तथा सुधार। जैसे—यह पौधा तरक्की कर रहा है। २. किसी कार्य या व्यापार का बराबर उन्नत दशा प्राप्त करना। जैसे—लड़का हिसाब में तरक्की कर रहा है। ३. पदोन्नति। जैसे—पिछले वर्ष उनकी तरक्की हुई थी।

तरक्षु—पुं०[सं० तर√क्षि (हिंसा करना)+डु] एक प्रकार का छोटा बाघ। लकड़बग्घा।

तरखा†—पुं०[सं० तरंग] नदी आदि के पानी का तेज बहाव।

तरखान—पुं०[सं० तक्षण] लकड़ी का काम करनेवाला। बढ़ई। (पश्चिम)

तरगुलिया—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा छिछला पात्र जिसमें अक्षत रखे जाते हैं।

तरचखी—स्त्री०[देश०] सजावट के लिए बगीचों में लगाया जानेवाला एक तरह का पौधा।

तरछट†—स्त्री०=तलछट।

तरछत*—क्रि० वि०[हिं० तर]१. नीचे। तले। २. नीचे की ओर से। नीचे से।

स्त्री०=तलछट।

तरछन†—स्त्री०=तलछट।

तरछा—पुं०[हिं० तर=नीचे] वह स्थान जहाँ गोबर इकट्ठा किया जाता है। (तेली)

तरछाना*—अ०[हिं० तिरछा]१. तिरछी नजर से किसी की ओर देखना। २. आँखों से संकेत करना।

तरज—पुं०=तर्ज।

तरजना—अ०[सं० तर्जन]१. क्रोधपूर्वक या बिगड़ते हुए कोई बात कहना। भला-बुरा कहते हुए डाँटना। २. भविष्य में सचेत रहने के लिए कुछ धमकी देते हुए कोई बात कहना।

तरजनी—स्त्री०[सं० तर्जन] डर। भय।

†स्त्री०=तर्जनी।

तरजीला—वि०[सं० तर्तन] १. तर्जन करनेवाला। २. क्रोधपूर्ण। ३. उग्र। प्रचंड।

तरजीह—स्त्री०[अ०] दे० 'वरीयता'।

तरजुई†—स्त्री०[फा० तराजू] छोटा तराजू।

तरजुमा—पुं०[अ०]१. एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार किया हुआ अनुवाद। उलथा। भाषान्तर।

तरजुमान—पुं० [अ०] अनुवाद करनेवाला व्यक्ति। अनुवादक।

तरजौहाँ*—वि०=तरजीला।

तरण—पुं०[सं०√तॄ (पार करना)+ल्युट्—अन] १. नदी आदि को पार करना। पार जाना। २. जलाशय आदि पार करने का साधन। जैसे—नाव, बेड़ा आदि। ३. छुटकारा। निस्तार। ४. उबारने की क्रिया या भाव। उद्धार। ५. स्वर्ग।

तरणि—पुं०[सं०√तॄ+अनि]१. सूर्य। २. सूर्य की किरण। ३. आक। मदार। ४. ताँबा।

स्त्री०=तरणी।

तरणि-कुमार—पुं०[ष०त०] तरणिसुत। (दे०)

तरणिजा—स्त्री०[सं० तरणि√जन्+ड—टाप्] १. सूर्य की कन्या। यमुना। २. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण और एक गुरु होता है।

तरणि-तनय—पुं०[ष०त०] तरणिसुत। (दे०)

तरणि-तनूजा—स्त्री०[ष०त०] सूर्य की पुत्री, यमुना।

तरणिसुत—पुं०[ष०त०] १. सूर्य का पुत्र। २. यमराज। ३. शनि। ४. कर्ण।

तरणि-सुता—स्त्री०[ष० त०] सूर्य की पुत्री। यमुना।

तरणी—स्त्री०[सं० तरण+ङीप्]१. नाव। नौका। २. घीकुँआर। ३. स्थल-कमलिनी।

तरतराता—वि०[हिं० तरतराना=तड़तड़ाना] तड़ तड़ शब्द करता हुआ।

वि०[हिं० तर] घी में अच्छी तरह डूबा हुआ (पकवान)। जिसमें से घी निकलता या बहता हो (खाद्य पदार्थ)।

तरतराना*—अ०, स०=तड़तड़ाना।

तरतीब—स्त्री०[अ०] विशेष प्रकार से वस्तुएँ रखने या लगाने का क्रम। सिलसिला।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

तरदी—स्त्री०[सं० तर√दो (खंडन करना)+क+ङीष्] एक प्रकार का कँटीला पेड़।

तरदीद—स्त्री०[अ०]१. काटने या रद्द करने की क्रिया। मंसूखी। २. किसी की उक्ति या कथन का किया जानेवाला खंडन।

तरद्दुद—पुं०[अ०]१. किसी काम या बात के सम्बन्ध में होनेवाली चिंता। परेशानी। २. झंझट। बखेड़ा।

तरद्वती—स्त्री० [सं०√तॄ+मतुप्+ङीप्] आटे को घी, दही आदि में सानकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।

तरन*—पुं० १. दे० 'तरण'। २. दे० 'तरौना'।

तरनतार—पुं०[सं० तरण] निस्तार। मोक्ष।

वि०=तरन-तारन।

तरन-तारन—पुं० [सं० तरण; हिं० तरना]१. उद्धार। २. वह जो भवसागर से किसी को पार उतारता हो। ईश्वर।

वि० १. डूबते हुए को तारने या उबारनेवाला। २. भवसागर से पार करनेवाला।

तरना—अ०[सं० तरण]१. पानी के तल के ऊपर ऊपर रहना। 'डूबना' का विपर्याय। जैसे—पानी में तेल का तैरना। २. अंगों के संचालन अथवा किसी अन्य शारीरिक व्यापार के द्वारा जल को चीरते हुए आगे

बढ़ना। तैरना। ३. आवागमन या सांसारिक बंधनों से मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना। ४. व्यापारिक क्षेत्रों में, ऐसी रकम का वसूल होना या वसूल हो सकने के योग्य होना जो प्रायः डूबी हुई समझ ली गई हो। जैसे—वे मुकदमा जीत गये हैं, इसलिए हमारी रकम भी तर गई।

स० नदी आदि को तैरकर या नाव से पार करना।

पुं० माल ढोनेवाले जहाजों का वह अधिकारी जो रास्ते में व्यापारिक कार्यों की देख-रेख और व्यवस्था करता है।

†अ० दे० 'तलना'।

तरनाग—पुं० [देश०] एक तरह की चिड़िया।

तरनाल—पुं० [?] पुरानी चाल के जहाजों में लगा रहनेवाला वह रस्सा जिससे पाल को धरन में बाँधते थे। (लश०)

तरनि—स्त्री० [सं० तरणि] नदी। सरिता।

तरनिजा—स्त्री०=तरणिजा (यमुना)।

तरनी—स्त्री० [सं० तरणी] नाव। नौका।

पुं० [सं० तरणि] सूर्य। उदा०—तेज राशि द्रिग छोर हुए मानों सत तरनी।—रत्ना०।

स्त्री० [हिं० तरे=तले] डमरू के आकार की वह लंबी रचना जिस पर खोमचेवाले अपना थाल रखकर सौदा बेचते हैं।

तरन्नि*—स्त्री०=तरनी (नदी)।

तरप†—स्त्री०=तड़प।

तरपट—वि० [हिं० तिरपट ?] (चारपाई) जिसमें टेढ़ापन हो। जिसमें कनेव पड़ी हो।

पुं० १. टेढ़ापन। २. अंतर। भेद।

तरपत†—पुं० [सं० तृप्ति] १. सुभीता। २. आराम। चैन। सुख।

तरपन†—पुं०=तर्पण।

तरपना†—अ०=तड़पना।

तर-पर—अ० व्य० [हिं० तर=तले+पर=ऊपर] १. एक दूसरे के ऊपर तथा नीचे। जैसे—पहलवान कुश्ती में तर-पर होते ही रहते हैं। २. एक के ऊपर एक-एक करके। जैसे—साड़ियों का तर-पर थाक लगा हुआ था। ३. एक के बाद एक-एक करके। जैसे—ये घटनाएँ तर-पर होती रहीं। ४. बिना क्रम भंग किए हुए। निरंतर। जैसे—वह सवाल-जवाब तर-पर पूछे तथा दिये जाते थे।

तरपरिया†—वि० [हिं० तर-पर] १. क्रम या स्थिति के विचार से ऊपर और नीचे का। २. जो एक के बाद दूसरे के क्रम से हो। जो क्रम के विचार से दूसरे के ठीक बाद पड़ता हो। ३. (बच्चे) जो ठीक आगे-पीछे के क्रम से एक के बाद हुए हों। जैसे—तर-परिया भाई-बहन।

तरपीला—वि० [हिं० तड़प+ईला (प्रत्य०)] तड़पदार। चमकीला।

तरपू—पुं० [देश०] एक तरह का वृक्ष जिसकी लकड़ी कुछ भूरे रंग की होती और इमारत के काम आती है।

तरफ—स्त्री० [अ०] १. ओर। दिशा। जैसे—आप किस तरफ जायँगे। २. दो या अधिक दलों, पक्षों आदि में से हर एक। जैसे—इस तरफ राम थे और उस तरफ रावण। ३. किसी वस्तु के दो या अधिक तलों में से कोई तल। जैसे—पत्र की दूसरी तरफ भी तो देखो। ४. किनारा। तट। (क्व०)

तरफदार—वि० [अ० तरफ़+फा० दार] [भाव० तरफदारी] जो किसी तरफ अर्थात् पक्ष में हो। किसी का पक्ष लेने या समर्थन करनेवाला।

तरफदारी—स्त्री० [अ० तरफ़+फा० दारी] १. तरफदार होने की अवस्था या भाव। २. पक्ष-पात।

तरफराना†—अ०=तड़फड़ाना।

तरब—पुं० [हिं० तरपना, तड़पना] सारंगी में ताँत के नीचे एक विशेष क्रम से लगे हुए तार जो बजने के समय एक प्रकार की गूँज उत्पन्न करते हैं।

तर-बतर—वि० [फा०] जल या किसी तरल पदार्थ से बहुत अधिक भींगा हुआ। जैसे—खून या पसीने से तर-बतर।

तर-बहना—पुं० [हिं० तर=तले+बहना] वह छोटा कटोरा जिसमें छोटी देव-मूर्त्तियों को पूजा के समय स्नान कराया जाता है।

तरबियत—स्त्री० [अ०] १. पालने-पोसने का काम। पालन-पोषण। २. देख-रेख करके जीवित रखने और बढ़ाने का काम। संवर्धन। ३. शिक्षा।

तरबूज—पुं० [फा० तर्बुज] १. एक प्रसिद्ध गोल बड़ा फल जिसका ऊपरी छिलका मोटा, कड़ा तथा गहरे हरे रंग का होता है और जिसमें गुलाबी रंग का गूदा होता है जो खाया जाता है। २. वह लता जिसमें उक्त फल लगता है।

तरबूजई—वि० [हिं० तरबूज+ई (प्रत्य०)] तरबूज की तरह गहरे हरे रंग का।

पुं० गहरा हरा रंग।

तरबूजा—पुं०=तरबूज।

तरबूजिया—वि० [हिं० तरबूज] तरबूजे के छिलके के रंग का गहरा हरा।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

तरबोना—स० [फा० तर+हिं० बोरना] अच्छी तरह तर या गीला करना। भिगोना।

अ० तर होना। भींगना। उदा०—पर-निद्रा रसना के रस में अपने पर तरबोरी।—सूर।

तरमाची—स्त्री० [हिं० तर+माचा] बैलों के जुए में नीचे लगी हुई लकड़ी। मचेरी।

तरमाना†—अ० [?] नाराज होना। बिगड़ना। उदा०—सूर रोम अति लोचन देत्यौ बिधना पर तरमात।—सूर।

स० किसी को क्रुद्ध या नाराज करना।

अ० [फा० तर+हिं० माना (प्रत्य०)] तर होना। तरी से युक्त होना।

स० गीला या तर करना।

तरमानी—स्त्री० [हिं० तरमाना] जोती हुई भूमि में होनेवाली तरी। क्रि० प्र०—आना।

तरमिरा—पुं०=तरामीरा।

तरमीम—स्त्री० [अ०] १. किसी कार्य या बात में किया जानेवाला सुधार। २. प्रस्तावों, लेखों आदि में होनेवाला संशोधन।

तरराना†—अ० [अनु०] ऐंठ या ऐंड़ दिखाना। गर्व-सूचक चेष्टा करना।

स० ऐंठना। मरोड़ना।

तरल—वि० [सं०√तृ+कलच्] [भाव० तरलता] १. तेल, पानी आदि की तरह पतला और बहनेवाला। द्रव। २. हिलता-डोलता हुआ।

चलायमान। ३. अस्थिर। चंचल। ४. जल्दी नष्ट हो जानेवाला। ५. चमकीला । कांतिवान्। ६. खोखला। पोला। ७. अबाध रूप से बराबर चलता रहनेवाला। उदा०—स्मित बन जाती है तरल हँसी।—प्रसाद।

पुं० १. गले में पहनने का हार। २. हार के बीच में लगा हुआ लटकन। लोलक। ३. हीरा । ४. लोहा। ५. तल । पेंदा। ६. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। ७. उक्त देश के निवासी। ८. घोड़ा।

तरलता—स्त्री०[सं० तरल+तल—टाप्]१. तरल होने की अवस्था या भाव। द्रवता। २. चंचलता। चपलता।

तरल-नयन—पुं०[ब०स०] एक तरह का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण होते हैं।

तरल-भाव—पुं०[प० त०]१. तरलता। द्रवता। २. चंचलता।

तरला—स्त्री०[सं० तरल+टाप्]१. जौ का माँड़। यवागू। २. मदिरा। शराब। ३. शहद की मक्खी। मधु-मक्खी। ४. छाजन के नीचे लगे हुए बाँस।

तरलाई*—स्त्री०=तरलता।

तरलायित—वि०[सं० तरल+क्यङ्+क्त] लहर की तरह काँपता या हिलता हुआ।

स्त्री० बड़ी तरंग। हिलोर।

तरलित—भू० कृ० [सं० तरल+णिच्+क्त] १. तरल किया या बनाया हुआ। द्रव रूप में लाया हुआ। २. उदारता, दया, प्रेम आदि से युक्त। जिसका चित्त कोमल हो।

तरवंछा†—स्त्री० दे० 'तरमाची'।

तरवड़ी†—स्त्री० [सं० तुला+ड़ी (प्रत्य०)] १. छोटा तराजू। २. तराजू का पल्ला।

तरवन—पुं०[हिं० तरौना]१. कान में पहनने का तरकी नाम का गहना। २. करन-फूल।

तरवर—पुं०[सं० तरुवर]१. पेड़। वृक्ष। २. एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी छाल से चमड़ा सिझाया जाता है। तरोता।

तरवरा†—पुं०=तिरमिरा। (दे०)

तरवरिया—पुं० [हिं० तरवर] १. वह जो तलवार चलाता हो। २. तलवार से युद्ध करनेवाली एक जाति।

तरवरिहा†—पुं०=तरवरिया।

तरवाँची—स्त्री०=तरमाची।

तरवाँसी†—स्त्री०=तरवाँची (तरमाची)।

तरवा†—पुं०=तलवा।

तरवाई-सिरवाई—स्त्री०[हिं० तर+सिर] १. किसी चीज के ऊपरी और नीचेवाले भाग। २. ऊँची और नीची जमीन। ३. पहाड़ और घाटी।

तरवाना—स०[हिं० तारना का प्रे०] तारने का काम किसी से कराना।

†स०=तलवाना।

अ०[हिं० तलवा] पैर के तलवे का घिसना। विशेषतः बैल का पैरों के तलवों को घिसना।

तरवार†—स्त्री०=तलवार।

पुं०=तरुवर(वृक्ष)।

तरवारि—स्त्री०[सं० तर√वृ+णिच् (रोकना)+इन्]= तलवार।

तरवारी—पुं०=तरवरिया।

तरस्—पुं०[सं०√तॄ (तरना)+असुन्]१. बल। शक्ति। २. तेजी। वेग। ३. बीमारी। रोग। ४. तट। किनारा। ५. वानर। बन्दर।

तरस—पुं०[सं०√त्रस्=डरना]अभागे, दंडित, दुःखी या पीड़ित के प्रति मन में उत्पन्न होनेवाली करुणा या दया।

क्रि० प्र०—आना।

मुहा०—(किसी पर) तरस खाना=किसी के प्रति करुणा या दया दिखलाना और फलतः उसका कष्ट या दुःख दूर करने का प्रयत्न करना।

तरसना—अ०[सं० तर्षण] अभीष्ट तथा प्रिय वस्तु के अभाव के कारण दुःखी या निराश व्यक्ति का उसके दर्शन या प्राप्ति के लिए लालायित या विकल होना। जैसे—(क) किसी को मिलने के लिए अथवा कुछ खाने के लिए मन तरसना (ख) प्रिय को मिलने के लिए आँखें तरसना।

अ० [सं० त्रसन] त्रस्त या पीड़ित होना।

स० त्रस्त या पीड़ित करना।

तरसान—पुं०[सं०] नौका।

तरसाना—स०[हिं० तरसना का प्रे०]१. ऐसा काम करना जिससे कोई तरसे। २. किसी प्रकार के अभाव का अनुभव कराते हुए किसी को ललचाना। आशा दिलाकर या प्रवृत्ति उत्पन्न करके खिन्न या दुःखी करना।

संयो० क्रि० —डालना।—मारना।

तरसौहाँ—वि०[हिं० तरसना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० तरसौंहीं] जो तरस रहा हो। तरसनेवाला। जैसे—तरसौंहें नेत्र।

तरस्वान् (स्वत्)—वि०[सं० तरस्+मतुप्]१. जिसकी गति बहुत अधिक या तीव्र हो। २. वीर। बहादुर। साहसी।

पुं० १. वायु। २. गरुड़। ३. शिव।

तरस्वी (स्विन्)—वि० पुं०[सं० तरस्+विनि]=तरस्वान्।

तरह—स्त्री०[फा०]१. आकार-प्रकार, गुण, धर्म, बनावट, रूप आदि के विचार से वस्तुओं, व्यक्तियों आदि का कोई विशिष्ट और स्वतन्त्र वर्ग। जैसे—(क) इसी तरह का कोई कपड़ा लेना चाहिए। (ख) यहाँ तरह-तरह के आदमी आते रहते हैं। २. ढंग। प्रकार। जैसे—तुम यह भी नहीं जानते कि किस तरह किसी से बात की जाती है।

मुहा०—तरह देना=किसी की त्रुटि, भूल आदि पर ध्यान न देना। जाने देना।

तरहटी—स्त्री०=तलहटी।

तरहदार—वि०[फा०] [भाव० तरहदारी] १. अच्छे ढब या प्रकार का। २. अनोखी और सुन्दर बनावटवाला। ३. सज-धज से युक्त। सजीला।

तरहदारी—स्त्री०[फा०] तरहदार होने की अवस्था या भाव।

तरहर†—क्रि० वि०[हिं० तर+हर (प्रत्य०)] तले। नीचे।

पुं० नीचे का भाग। तला। पेंदा।

वि०१. जो सब के नीचे का हो। २. निकृष्ट। बुरा।

तरहरि—स्त्री०=तलहटी।

तरहा—पुं० [हिं० तर] १. कूँए की खुदाई में एक माप जो प्रायः एक हाथ की होती है। २. वह कपड़ा जिस पर मिट्टी फैलाकर चीजें ढालने के लिए साँचा बनाते हैं।

तरहेल†—वि० [हिं० तर+हर, हल (प्रत्य०)] १. अधीन। निम्नस्थ। २. वश में किया हुआ। ३. हारा या हराया हुआ। पराजित।

तरांधु—पुं० [सं० तर-अंधु, च० त०] एक तरह की चौड़े पेंदेवाली नाव। तरालु।

पुं० [देश०] पटुआ। पटसन। पाट।

तरा†—पुं० १.=तला। २.=तलवा।

तराइन—स्त्री० [सं० तारक] तारों का समूह। तारावली।

तराई—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] १. पहाड़ के नीचे का समतल मैदानी-भू-भाग। २. दे० 'घाटी'। ३. मूँज के वे मुट्ठे जो छाजन में खपरैल के नीचे लगाये जाते हैं।

स्त्री० [हिं० तारा+ई] तारों का समूह। **तारागण।**

तराजू—पुं० [फा०] वस्तुएँ तौलने का एक प्रसिद्ध उपकरण जिसमें दोनों ओर वे दो पल्ले रहते हैं जिनमें से एक पर बटखरा या बाट और दूसरे पर तौली जानेवाली चीज रखी जाती है। तुला।

मुहा०—(किसी से) तराजू होना=किसी की बराबरी या सामना करने अथवा उसके समान बनने के लिए मुकाबले पर या सामने आना।

तरात्यय—पुं० [सं० तर-अत्यय, ष० त०] प्राचीन काल में वह दंड जो बिना आज्ञा के नदी पार करनेवाले पर लगाया जाता था।

तराना—पुं० [फा० तरानः] १. अच्छे ढंग में गाया जानेवाला सुन्दर गीत। २. एक प्रकार का गाना जिसके बोल इस प्रकार के होते हैं—तानूम्, तानूम ता दारा दारा, दिर दिर दारा आदि। (इसमें प्रायः सितार और तबले के बोल मिले हुए होते हैं।)

†स०=तैराना (तैरने में प्रवृत्त करना)।

तराप†—[अनु०] तड़ाक (शब्द)।

तरापा—पुं० [हिं० तरना] पानी में तैरता हुआ वह शहतीर जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। (लश०)

पुं० [हिं० त्राहि से, स्यापा का अनु०] त्राहि त्राहि की पुकार। हाहाकार।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।

तराबोर—वि० [फा० तर+हिं० बोरना] पानी या और किसी तरल पदार्थ में अच्छी तरह डूबा या भींगा हुआ। शराबोर।

तरामल—पुं० [हिं० तर=नीचे] १. मूंज के वे मुट्ठे जो छाजन में खपरैल के नीचे लगे होते हैं। २. बैलों के गले के जूए में की नीचेवाली लकड़ी।

तरामीरा—पुं० [देश० पं० तारामीरा] एक तरह का पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है।

तरायला†—वि० [?] १. तेज। २. चंचल।

तरारा—पुं० [?] १. उछाल। कुलाँच। छलांग।

मुहा०—तरारे भरना या मारना=(क) खूब उछल-कूद करना। (ख) किसी काम में बहुत जल्दी-जल्दी आगे बढ़ते चलना। (ग) बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। खूब डींगें हाँकना।

२. किसी चीज पर गिराई जानेवाली पानी की पतली धार।

क्रि० प्र०—देना।

तरालु—पुं० [सं० तर√अल् (पर्याप्त होना)+उण्] चौड़े पेंदेवाली एक तरह की नाव। तरावु।

तरावट—स्त्री० [फा० तर+आवट (प्रत्य०)] १. तर अर्थात् आर्द्र या नम होने की अवस्था या भाव। तरी। जैसे—वातावरण में आज तरावट है। २. प्रिय और वांछित ठंढक या शीतलता। ३. ऐसा पदार्थ जिसके सेवन से शारीरिक गरमी शांत होती हो और प्रिय और सुखद ठंढक मिलती हो। ४. स्निग्ध भोजन।

तराश—स्त्री० [फा०] १. तराशने अर्थात् धारदार उपकरण से किसी चीज के टुकड़े करने की क्रिया, ढंग या भाव। २. किसी रचना में की वह काट-छाँट या बनावट जिससे उसका रूप प्रस्तुत हुआ हो। ३. ढंग। तर्ज।

तराश खराश—स्त्री० [फा०] किसी प्रकार की रचना में की जानेवाली काट-छाँट।

तराशना—स० [फा०] १. धारदार उपकरण से किसी चीज विशेषतः किसी फल को कई टुकड़ों में विभाजित करना। काटना। जैसे—अमरूद या सेब तराशना। २. कतरना (कपड़े आदि का)।

तरास—पुं०=त्रास।

स्त्री०=तराश।

तरासना*—स० [सं० त्रास+ना (अव्य०)] १. त्रास या कष्ट देना। त्रस्त करना। २. भयभीत करना।

†स०=तराशना।

तरासा†—वि० [सं० तृषित] प्यासा।

स्त्री०=तृषा (प्यास)।

तराहि†—अव्य०=त्राहि।

तराहीं*—क्रि० वि० [हिं० तले] नीचे।

तरिंदा—पुं० [हिं० तरना+इंदा (प्रत्य०)] नदी, समुद्र आदि में तैरता हुआ वह पीपा जो किसी लंगर से बँधा होता है। तरेंदा।

तरि—स्त्री० [सं०√तॄ (तरना)+इ] १. नाव। नौका। २. बड़ी पिटारी। पिटारा। ३. कपड़े का छोर या सिरा।

तरिक—पुं० [सं० तर+ठन्—इक] १. लकड़ियों का वह ढाँचा जो जलाशय पार करने के लिए बनाया जाता है। बेड़ा। २. वह जो नदी आदि पार करने का पारिश्रमिक लेता हो। ३. केवट। मल्लाह।

तरिका—स्त्री० [सं० तरिक+टाप्] नाव। नौका।

*स्त्री० [सं० तडित्] बिजली।

तरिकी (किन्)—पुं० [सं० तरिका+इनि] नदी आदि के पार उतारने वाला। माँझी। मल्लाह।

तरिको—पुं० दे० 'तरौना'।

तरिणी—स्त्री० [सं० तर+इनि—ङीप्]=तरणी।

तरिता—स्त्री० [सं० तर+इतच्—टाप्] १. तर्जनी उँगली। २. भाँग। भंग। ३. गांजा।

†स्त्री०=तड़ित् (बिजली)।

तरित्र—पुं० [सं०√तॄ+ष्ट्रन्] बड़ी नाव। पोत।

तरित्री—स्त्री० [सं० तरित्र+ङीप्] छोटा तरित्र।

तरिया†—पुं० [हिं० तरना] तैराक।

वि० तैरनेवाला।

तरियाना—स० [हिं० तरे=नीचे] १. किसी चीज को तले या नीचे रखना। २. किसी चीज को झुकाकर नीची कर देना। ३. बटुए के पेंदे में इसलिए मिट्टी का लेवा लगाना कि आग पर चढ़ाने से उसका पेंदा जलने न पावे। लेवा लगाना। ४. धन-संपत्ति आदि अथवा और कोई चीज चुपचाप अपने अधिकार में करते जाना या छिपाकर रखते चलना।

†अ० तले या तल में बैठ जाना या जमना।

स० [फा० तर] पानी आदि के छींटे देकर तर या गीला करना। जैसे—चुनाई करने से पहले ईंटें तरियाना।

तरिवन†—पुं०=तरवन (तरौना)।

तरिवर†—पुं०=तरुवर।

तरिहँत—क्रि० वि० [हिं० तर+अंत, हँत (प्रत्य०)] नीचे। तले।

तरी—स्त्री० [सं० तरि+ङीष्] १. नाव। नौका। २. गदा। ३. धूआँ। धूम। ४. कपड़े रखने का पिटारा। ५. कपड़े का छोर या सिरा।

स्त्री० [फा० तर] १. तर होने की अवस्था या भाव। आर्द्रता। गीलापन। २. वातावरण में होनेवाली आर्द्रता। ३. प्रिय और सुखद। ठंढक। शीतलता। ४. तलहटी। तराई। ५. तलछट। तलौंछ। ६. वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा होता हो।

†स्त्री०=तरकी (कान का गहना)।

†स्त्री०=तल्ला (जूते का)। उदा०—जो पहिरी तन त्राण को माणिक तरी बनाय।—केशव।

तरीका—पुं० [अ० तरीकः] १. काम करने का कोई उपयुक्त, मान्य या विशेष ढंग। २. आचार या व्यवहार की चाल-ढाल। ३. उपाय। युक्ति।

तरीनि—स्त्री० [हिं० तर=तले] पहाड़ के नीचे का भाग। तलहटी। (बुंदेल) उदा०—फूटे हैं सुगंध घट श्रवन तरिनि में।—केशव।

तरीष—पुं० [सं०√तॄ (तरना)+ईषन्] १. सूखा गोबर। २. नाव। ३. जलाशय पार करने का बेड़ा। ४. समुद्र। सागर। ५. स्वर्ग। ६. रोजगार। व्यवसाय।

तरीषी—स्त्री० [सं० तरीष+ङीष्] इंद्र की एक कन्या।

तरु—पुं० [सं०√तॄ+उन्] १. पेड़। वृक्ष। २. पूर्वी भारत में होनेवाला एक प्रकार का चीड़ जिससे तारपीन का बढ़िया तेल निकलता है।

तरुआ†—पुं० [हिं० तरना=तलना] उबाले हुए धान का चावल। भुजिया चावल।

पुं०=तलवा (पैर का)।

तरुण—वि० [सं०√तॄ+उनन्] १. जो बाल्यावस्था पार करके सांसारिक जीवन की आरंभिक अवस्था में प्रवेश कर रहा हो। जवान। जैसे—तरुण व्यक्ति। २. जो जीवन की आरंभिक अवस्था में हो। जैसे—तरुण पौधा। ३. जिसमें ओज, नवजीवन या शक्ति हो। जैसे—तरुण हँसी। ४. नया। नवीन।

पुं० १. बड़ा जीरा। २. मोतिया (पौधा और उसका फूल)। ३. रेंड़।

तरुणक—पुं० [सं० तरुण+कन्] अंकुर।

तरुण-ज्वर—पुं० [कर्म० स०] ऐसा ज्वर जो सात दिन पार कर के और आगे चल रहा हो।

तरुण-तरणी—पुं० [कर्म० स०] मध्याह्न का सूर्य।

तरुणता—स्त्री० [सं० तरुण+तल्—टाप्] तरुण होने की अवस्था या भाव।

तरुण-दधि—पुं० [कर्म० स०] पाँच या अधिक दिन से पड़ा हुआ बासी दही जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। (वैद्यक)

तरुण-पीतिका—स्त्री० [कर्म० स०] मैनसिल।

तरुण-सूर्य—पुं० [कर्म० स०] मध्याह्न का सूर्य।

तरुणाई*—स्त्री० [सं० तरुण+हिं० आई (प्रत्य०)] तरुण होने की अवस्था या भाव। जवानी।

तरुणाना—अ० [सं० तरुण+हिं० आना (प्रत्य०)] तरुण होना। जवानी पर आना।

तरुणास्थि—स्त्री० [सं० तरुण—अस्थि, कर्म० स०] पतली लचीली हड्डी।

तरुणिमा (मन्)—स्त्री० [सं० तरुण+इमनिच्] तरुण होने की अवस्था या भाव। तरुणाई।

तरुणी—वि० स्त्री० [सं० तरुण+ङीष्] जवान। युवा।

स्त्री० १. जवान स्त्री। युवती। २. चीड़ नामक वृक्ष। ३. घीकुंआर। ४. जमाल गोटा। दंती। ५. मोतिया नाम का पौधा और उसका फूल। ६. संगीत में, मेघ राग की एक रागिनी।

तरु-तलिका—स्त्री० [सं० मध्य० स०] चमगादर।

तरुन*—वि०, पुं०=तरुण।

तरुनई*—स्त्री०=तरुणाई।

तरुनाई*—स्त्री०=तरुणाई।

तरुनापन*—पुं० [हिं० तरुन+पन (प्रत्य०)] तारुण्य। जवानी।

तरुनापा—पुं० [हिं० तरुन+पा (प्रत्य०)] युवावस्था। जवानी।

तरुबाँहीं*—स्त्री० [सं० तर+हिं० बाँह] वृक्ष की बाँह अर्थात् शाखा।

तरुभुक्—पुं० [सं० तरु√भुज् (खाना)+क्विप्] बाँदा। बंदाक।

तरुभुज—पुं० [सं० तरु√भुज्+क] दे० 'तरुभुक्'।

तरु-राग—पुं० [ब० स०] नया कोमल पत्ता। किशलय।

तरु-राज—पुं० [ष० त०] १. कल्पवृक्ष। २. ताड़ का पेड़।

तरुरुहा—स्त्री० [सं० तरु√रुह् (उगना)+रु—टाप्] बाँदा।

तरु-रोपण—पुं० [ष० त०] २. वृक्ष लगाने की क्रिया। २. वह विद्या जिसमें वृक्ष लगाने, बढ़ाने और उनकी रक्षा करनेकी कला सिखाई जाती है। (आरबोरी कलचर)

तरुरोहिणी—स्त्री० [सं० तरु√रुह्+णिनि—ङीप्] बाँदा।

तरुवर—पुं० [स० त०] १. श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष। २ रहस्य संप्रदाय में, (क) प्राण। (ख) परमात्मा या ब्रह्म।

तरुवरिया†—स्त्री० [हिं० तरवारि] तलवार। उदा०—लिहलन ढाल तरुवरिया; त अवरु कटरिया नु हो।—गीत।

तरु-वल्ली—स्त्री० [स० त०] जतुका लता। पानड़ी।

तरुसार—पुं० [ष० त०] कपूर।

तरुस्था—स्त्री० [सं० तरु√स्था (ठहरना)+क—टाप्] बाँदा।

तरूट—पुं० [सं० तरु—उट, ष० त०] भसींड़। कमल की जड़।

तरेंदा—पुं० [सं० तरंड] जलाशय पार करने का लकड़ियों आदि का ढाँचा। बेड़ा।

तरे†—क्रि० वि०=तले (नीचे)।

तरेट—पुं० [हिं० तर+एट (प्रत्य०)] पेड़ू।

तरेटी—स्त्री०=तलहटी (तराई)।

तरेड़ा—पुं०=तरेख।

तरेरना—स० [सं० तर्ज=डाटना+हिं० हेरना=देखना] रोषपूर्वक या तिरछी आँखों से घूरते हुए किसी की ओर अथवा इधर-उधर देखना।

तरेरा—पुं० [अ० तरारः] १. लगातार डाली जानेवाली पानी की धार। २. जल की लहरों का आघात। थपेड़ा।

पुं० रोष-भरी दृष्टि।

तरैनी—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] हरिस और हल को मिलाने के लिए दिया जानेवाला पच्चर।

तरैया—स्त्री० [हिं० तारा] तारा।

वि० [तरना] १. तरनेवाला। २. तारनेवाला।

तरैला—पुं० [हिं० तरे] [स्त्री० तरैली] १. किसी स्त्री के दूसरे पति का वह पुत्र जो उसकी पहली पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। २. किसी पुरुष की दूसरी स्त्री का वह पुत्र जो उसके पहले पति के वीर्य से उत्पन्न हो।

तरैली†—स्त्री०=तरैनी।

तरोंच—स्त्री० [हिं० तर=नीचे] १. कंघी के नीचे की लकड़ी। २. दे० 'तलौछ'।

तरोंचा†—पुं० [हिं० तर=नीचे] [स्त्री० तरोंची] जूए की निचली लकड़ी।

तरोंडा—पुं० [देश०] फसल का वह अंश जो हलवाहों, मजदूरों आदि को देने के लिए अलग कर दिया जाता है।

तरोई†—स्त्री०=तोरी (तरकारी)।

तरोता—पुं० [सं० तरवट] मध्य तथा दक्षिण भारत में होनेवाला एक तरह का ऊँचा पेड़ जिसकी छाल चमड़ा सिझाने के काम आती है।

तरोबर*—पुं० [सं० तरुवर] श्रेष्ठ वृक्ष।

†वि०=तरोबोर।

तरौंछ—स्त्री०=तलछट।

तरौंछी—स्त्री० [हिं० तर+ओंछी (प्रत्य०)] १. करघे के हत्थे के नीचे लगी हुई लकड़ी। २. बैलगाड़ी के सुजावे के नीचे लगी हुई लकड़ी।

तरौंटा—पुं० [हिं० तर+पाट] नीचेवाला पाट (चक्की आदि का)।

तरौंता—पुं० [हिं० तर+औंता (प्रत्य०)] छाजन में की वह लकड़ी जो ठाट के नीचे रखी या लगाई जाती है।

तरौंस*—पुं० [हिं० तट+औंस (प्रत्य०)] जलाशय का तट। किनारा।

तरौना—पुं० [सं० तालपर्ण, प्रा० तालउन्न] कानों में पहनने का एक आभूषण जो ताड़ के पत्ते की तरह फाँकदार और गोल होता है। तरकी। तरवन।

तर्क—पुं० [सं०√तर्क् (अनुमान)+अच्] १. कोई बात जानने या समझाने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। २. किसी तथ्य, धारणा, विचार, विश्वास आदि की सत्यता जाँचने के लिए अथवा उसके समर्थन या विरोध में कही हुई कोई तथ्यपूर्ण युक्ति-संगत तथा सुविचारित बात। दलील। (आर्ग्यूमेन्ट) ३. कोई चमत्कारक कथन या बात। व्यंग्यपूर्ण बात। ४. ताना। ५. बहस।

पुं० [अ०] छोड़ने या त्यागने की क्रिया या भाव। जैसे—उन्होंने यह ख्याल तर्क दिया है।

तर्कक—वि० [सं०√तर्क्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. तर्क करनेवाला। २. [तर्क√कै (प्रकाश)+क] मांगनेवाला। याचक।

तर्कण—पुं० [सं० √तर्क्+ल्युट्—अन] [वि० तर्कणीय, तर्क्य] तर्क करने की क्रिया या भाव।

तर्कणा—स्त्री० [सं०√तर्क्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. किसी बात या विषय के सब अंगों पर किया जानेवाला विचार। विवेचन। २. किसी पक्ष या विचार के समर्थन में उपस्थित की जानेवाली युक्ति। दलील।

तर्कना—स्त्री०=तर्कणा।

अ०=तरकना।

तर्क-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १. तांत्रिक उपासना में एक प्रकार की शारीरिक मुद्रा।

तर्क-वितर्क—पुं० [द्व० स०] १. यह सोचना कि यह बात होगी या वह। ऊहा-पोह। २. दो पक्षों में परस्पर एक दूसरे द्वारा प्रस्तुत की हुई सुविचारित बातों का किया जानेवाला खंडन या विरोध और अपनी बातों का किया जानेवाला समर्थन। ३. वाद-विवाद। बहस।

तर्कश—पुं०=तरकश।

तर्क-शास्त्र—पुं० [मध्य० स०] १. वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों आदि के खंडन-मंडन करने की पद्धतियों का विवेचन होता है। (लाजिक) २. दे० 'न्याय शास्त्र'।

तर्क-संगत—वि० [तृ० त०] १. (बात) जो तर्क के आधार पर ठीक बैठे या सिद्ध हो। २. (मत) तर्क-वितर्क करने पर उसके परिणाम के रूप में निकलन या ठीक सिद्ध होनेवाला। (लॉजिकल) ३.=युक्ति-युक्त।

तर्कस—पुं० [स्त्री० अल्पा० तर्कसी] =तरकश।

तर्क-सिद्ध—वि० [तृ० त०] जो तर्क की दृष्टि से बिलकुल ठीक या प्रमाणित हो।

तर्काभास—पुं० [तर्क—आभास, ष० त०] ऐसा तर्क जो ऊपर से देखने पर ठीक-सा जान पड़ता हो परन्तु जो वास्तव में ठीक न हो।

तर्कारी—स्त्री० [सं० तर्क√ऋ (गति) +अण्—ङीप्] १. अँगेयू या अरणी का वृक्ष। २. जैंत नामक वृक्ष।

स्त्री०=तरकारी।

तर्किण—पुं० [सं०] चकवँड। पँवार।

तर्कित—वि० [सं०√तर्क्+क्त] (विषय या सिद्धांत) जिस पर तर्क किया गया हो।

तर्किल—पुं० [सं०√तर्क्+इलच्] चकवँड। पँवार।

तर्की (किन्)—पुं० [सं०√तर्क्+णिनि] [स्त्री० तर्किनी] वह जो प्रायः तर्क करता रहता हो।

†स्त्री०=टरकी (पक्षी)।

तर्कीब—स्त्री०=तरकीब।

तर्कु—पुं० [सं०√कृत् (कातना)+उ, नि० सिद्धि] सूत कातने का तकला। टेकुआ।

तर्कुक—वि० [सं० तर्कु+कन्] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

पुं० १. प्रार्थी। २. अभियोग उपस्थित करनेवाला। मुद्दई। वादी।

तर्कुटी—स्त्री० [सं०√तर्क्+डटन्—ङीष्] छोटा तकला।

तर्कु-पिंड—पुं० [मध्य० स०] तकले की फिरकी।

तर्कुल—पुं० [हिं० ताड़+कुल] १. ताड़ का पेड़। २. ताड़ का फल।

तर्क्य—वि० [सं०√तर्क्+ण्यत्] १. जिसके संबंध में तर्क किया जा सके। २. विचारणीय।

तर्क्षु—पुं० [सं०=तरक्षु, पृषो० सिद्धि] लकड़बग्घा।

तर्क्ष्य—पुं० [सं०√तृक्ष् (गति)+ण्यत्, बा० गुण] जवाखार।

तर्ज—पुं० [अ०] १. बनावट या रचना-प्रणाली के विचार से किसी वस्तु का आकार-प्रकार या स्वरूप। किस्म। प्रकार। २. किसी वस्तु को आकार-प्रकार या स्वरूप देने का विशिष्ट ढंग, प्रकार या प्रणाली। तरह।

तर्जन—पुं० [सं०√तर्ज् (भर्त्सना करना)+ल्युट्—अन] १. कोई काम करने से किसी को रोकने के लिए क्रोधपूर्वक कुछ कहना या संकेत करना। २. डराना-धमकाना।

तर्जना*—अ० [हिं० तर्जन] तर्जन करना।

तर्जनी—स्त्री० [सं० तर्जन+ङीप्] अँगूठे के पास की उँगली।

विशेष—इस उँगली को होंठों पर रखकर अथवा खड़ी करके किसी को तर्जित किया जाता है इसी लिए इसका यह नाम पड़ा है।

तर्जनी-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तंत्र की एक मुद्रा जिसमें बाँए हाथ की मुट्ठी बांधकर तर्जनी और मध्यमा को फैलाते हैं।

तर्जिक—पुं० [सं०√तज्+घञ्+ठन्—इक] एक प्राचीन देश।

तर्जित—भू० कृ० [सं०√तर्ज्+क्त] जिसका तर्जन किया गया हो। जिसे डाँटा-डपटा या डराया-धमकाया गया हो।

तर्जुमा—पुं० [अ०] अनुवाद। उलथा। भाषांतर।

तर्ण—पुं० [सं०√तृण् (भक्षण)+अच्] गाय का बछड़ा। बछवा।

तर्णक—पुं० [सं० तर्ण+कन्] १. तुरंत का जनमा गाय का बछड़ा। २. बच्चा। शिशु।

तर्णि—पुं०=तरणि (नाव)।

तर्तरीक—वि० [सं०√तॄ+ईक, नि० सिद्धि] १. पार जानेवाला। २. पार करने या ले जानेवाला।

पुं० नाव। नौका।

तर्पण—पुं० [सं०√तृप् (सतुष्ट करना)+ल्युट्—अन] [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १. तृप्त करने की क्रिया। २. हिंदुओं का वह कर्मकांडी कृत्य जिसमें वे देवताओं, ऋषियों पितरों आदि को तृप्त करने के लिए अंजुली या अरघे में जल भर कर देते हैं।

तर्पणी—वि० [सं० तर्पण+ङीप्] तृप्ति देनेवाली।

स्त्री० १. गंगा नदी। २. खिरनी का पेड़ और फल।

तर्पणीय—वि० [सं०√तृप्+अनीयर्] १. जिसका तर्पण करना आवश्यक या उचित हो। २. जिसका तर्पण किया जा सकता हो। ३. जिसे तृप्त करना आवश्यक हो।

तर्पणेच्छु—वि० [सं० तर्पण-इच्छु, ष० त०] १. जिसे तर्पण करने की इच्छा हो। २. जो अपना तर्पण कराना चाहता हो।

पुं० भीष्म।

तर्पिणी—स्त्री० [सं०√तृप्+णिच्+णिनि—ङीप्] पद्मचारिणी लता। स्थल कमलिनी। स्थलपद्म।

तर्पित—भू० कृ० [सं०√तृप्+णिच्+क्त] १. तृप्त किया हुआ २. जिसका तर्पण हुआ हो।

तर्पी (पिन्)—पुं० [सं०√तृप्+णिच्+णिनि] [स्त्री० तर्पिणी] १. वह जो दूसरों को तृप्त करता हो। २. तर्पण करनेवाला व्यक्ति।

तर्बट—पुं० [सं०] १. चकवँड़। पँवार। २. चांद्र वर्ष।

तर्बूज—पुं०=तरबूज।

तर्यौना*—पुं०=तरौना। (दे०)

तर्रा—पुं० [देश०] चाबुक की डोरी या फीता।

तर्राना—पुं० दे० 'तराना'।

†अ० दे० 'चर्राना'।

तर्री—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

तर्ष—पुं० [सं०√तृप् (तृष्णा)+घञ्] १. अभिलाषा। इच्छा। २. तृष्णा। ३. सूर्य। ४. समुद्र। ५. जलाशय पार करने का बेड़ा।

तर्षण—पुं० [सं०√तृप्+ल्युट्—अन] [वि० तर्षित] १. पिपासा। प्यास। २. अभिलाषा। इच्छा।

तर्षित—वि० [सं० तर्ष+इतच्] १. प्यासा। २. अभिलाषा करनेवाला। इच्छुक।

तर्षुल—वि० [सं०√तृप्+उलच्]=तर्षित। (दे०)

तल—पुं० [सं०√तल् (स्थिर होना)+अच्] १. किसी चीज के बिलकुल नीचे का अंश या भाग। तला। पेंदा। २. जलाशय आदि के बिलकुल नीचे की जमीन जिस पर जल होता है। जैसे—नदी या समुद्र का तल। ३. किसी चीज के नीचेवाला भाग या स्थान। जैसे—तरु-तल। ४. सात पातालों में से पहला पाताल। ५. एक नरक का नाम। ६. किसी चीज की ऊपरी सतह। जैसे—धरातल या समुद्रतल से १००० फुट की ऊँचाई। ७. किसी पदार्थ के किसी पार्श्व का फैलाव या विस्तार। जैसे—चौकोर वस्तु के चारों तल। ८. चमड़े का वह पट्टा जो धनुष की डोरी की रगड़ से बचने के लिए बायीं बाँह पर पहना जाता था। ९. बाएँ हाथ से वीणा बजाने की कला या क्रिया। १०. हाथ की हथेली। ११. कलाई। पहुँचा। १२. बित्ता। बालिश्त। १३. पैर का तलवा। १४. गड्ढा। १५. ताड़ का पेड़ और फल। १६. दस्ता। मुठिया। हत्था। १७. गोह नामक जंतु। १८. आधार। सहारा। १९. चपत। थप्पड़। २०. जंगल। वन। २१. शिव का एक नाम। २२. कारण। मूल। २३. उद्देश्य। २४. स्वभाव।

तलक—पुं० [सं० तल√कै (प्रकाश)+क] ताल। पोखरा।

*अव्य० हिं० 'तक' का पुराना रूप।

तल-कर—पुं० [ष० त०] ताल या तालाब में होनेवाली वस्तुओं पर लगनेवाला कर।

तलकी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड़ जिसकी लकड़ी का रंग ललाई लिये हुए भूरा होता है।

तलकीन—स्त्री० [अ० तल्कीनः] शिक्षा।

तलख—वि० [फा०] १. जिसमें कड़ुआपन हो। २. उग्र। प्रचंड।

तलखी—स्त्री॰ [फा॰ तल्खी] १. कड़ुआपन। कड़ुआहट। २. स्वभाव का चिड़चिड़ापन।

तलगू—स्त्री॰=तेलगू।

तलघरा—पुं॰ [सं॰ तल+हिं॰ घर] तल अर्थात् नीचे का कमरा या घर। तहखाना।

तल-छट—स्त्री॰ [हिं॰ तल+छँटना] १. किसी तरल या द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाद या मैल। तलौंछ। २. तरल पदार्थ में घुली या मिली हुई चीज का वह अंश जो भारी होने के कारण नीचे बैठ जाता है। कल्क। (सेडिमेन्ट)

तलछटी—वि॰ [हिं॰ तल-छट+ई (प्रत्य॰)] १. तल-छट-संबंधी। २. जिसमें तल-छट हो।

तलना—स॰ [सं॰ तरण=तिराना] पिघले हुए गरम स्निग्ध द्रव्य में कोई खाद्य-वस्तु छोड़कर पकाना। जैसे—पापड़, पकौड़े या पूरियाँ तलना।

तलप*—पुं॰=तल्प।

तल-पट—पु॰ [मध्य॰ स॰] आय-व्यय फलक।

वि॰ [हिं॰ तले+पट] चौपट। नष्ट। बरबाद। उदा॰—कहीं न मुफ्त में देखो य माल तलपट हो।—नासिख।

तलपना†—अ॰=तड़पना।

तलफ—वि॰ [अ॰] [भाव॰ तलफी] नष्ट। बर्बाद।

तलफना†—अ॰=तड़पना।

तलफाना†—स॰=तड़पाना।

तलफी—स्त्री॰ [फा॰] १. तलफ अर्थात् नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश। बरबादी। २. नुकसान। हानि।

पद—हक-तलफी। (दे॰)

तलफ्फुज—पुं॰ [अ॰] अक्षरों तथा शब्दों का उच्चारण।

तलब—स्त्री॰ [अ॰] १. खोज। तलाश। २. प्राप्त करने की इच्छा।

मुहा॰—तलब करना=किसी से अधिकारपूर्वक कुछ माँगना।

३. आवश्यकता। ४ बुलाना। बुलाहट। उदा॰—आवै तलब बांधि लै चालै बहुरि न करिहैं फेरा।—कबीर। ५. तनख्वाह। वेतन।

तलबगार—वि॰ [फा॰] १. तलब करने या चाहनेवाला। २ माँगनेवाला।

तलबाना—पुं॰ [फा॰ तल्बानः] १. गवाहों को कचहरी में तलब करने अर्थात् बुलाने के लिए अदालत के अधिकारी के पास जमा किया जानेवाला व्यय। २. वह अर्थदंड जो जमींदार को समय पर मालगुजारी न जमा करने पर भरना पड़ता था।

तलबी—स्त्री॰ [अ॰] १. बुलाहट। २. माँग।

तलबेली—स्त्री॰ [हिं॰ तलफना] १. कुछ प्राप्त करने के लिए मन में होनेवाली व्यग्रता। छटपटी। २. विकलता। बेचैनी।

तल-मल—पुं॰ [मध्य॰ स॰] तल-छट। तलौंछ।

तलमलाना*—अ॰ [भाव॰ तलमलाहट] दे॰ 'तिलमिलाना'।

तलव—पुं॰ [सं॰ तल√वा (गति)+क] गानेवाला। गवैया।

तलव-कार—पुं॰ [ष॰ त॰] १. सामवेद की एक शाखा। २. एक उपनिषद्।

तलवा—पुं॰ [सं॰ तल] पैर के बिलकुल नीचे का वह चिपटा अंश जो खड़े होने और चलने के समय जमीन पर पड़ता है। पद-तल।

मुहा॰—तलवा (या तलवे) खुजलाना=तलवे (या तलवों) में खुजली होना जो लोक में इस बात का सूचक माना जाता है कि शीघ्र ही कोई यात्रा करनी पड़ेगी या कहीं बाहर जाना पड़ेगा। **तलवा (या तलवे) न टिकना**=एक जगह कुछ देर बैठे न रहा जाना। बराबर इधर-उधर आते-जाते या घूमते रहना। **चलते-चलते तलवे चलनी या छलनी होना**=इतनी अधिक दौड़-धूप करना कि पैरों में दम न रह जाय। **(किसी के) तलवे चाटना**=किसी को प्रसन्न करने के लिए उसकी छोटी-से छोटी सेवाएँ करना। **(किसी के) तलवे धो-धो कर पीना**=अत्यंत सेवा-शुश्रूषा करना। अत्यंत प्रेम प्रकट करना। **(किसी के) तलवे सहलाना**=प्रसन्न करने के लिए बहुत ही दीन बनकर सभी तरह की सेवाएँ करना। **(कोई चीज) तलवों तले मेटना**=कुचल कर नष्ट करना। रौंद डालना। (स्त्री॰) **(कोई बात) तलवों तले मेटना**=पूरी तरह से अवज्ञा या उपेक्षा करना। तुच्छ या हेय समझना। **(किसी के) तलवों से आँखें मलना**=दीन भाव से बहुत अधिक आदर-सत्कार और सेवा-शुश्रूषा करना। **(कोई चीज) तलवों से मलना**=पैरों से कुचल या रौंदकर नष्ट करना। **(कोई बात देख या सुनकर) तलवों से लगना, सिर में जाकर बुझना**=इतना अधिक क्रोध चढ़ना कि मानों सारा शरीर जल रहा हो। नीचे से ऊपर तक सारा शरीर जल जाना। (कभी-कभी इस मुहावरे का संक्षिप्त रूप होता है—तलवों से लगना; जैसे—उसकी बातें सुनकर मुझे तो तलवों से (आग) लग गई।)

तलवार—स्त्री॰ [सं॰ तरवारि] लोहे का एक लंबा धारदार प्रसिद्ध हथियार जिसके आघात से प्राणियों के अंग काटकर अलग किये जाते अथवा सिर काटकर उनकी हत्या की जाती है।

मुहा॰—तलवार करना=तलवार की सहायता से युद्ध या वार करना। तलवार चलाना। **तलवार कसना**=तलवार का फल झुकाकर उसके लोहे की उत्तमता की परीक्षा करना। **(किसी को) तलवार का पानी पिलाना**=तलवार से आघात या वार करना। **तलवार की छाँह (या छाहों) में**=ऐसी स्थिति में जहाँ चारों ओर अपने सिर पर नंगी तलवारें ही दिखाई देती हों। **(किसी को) तलवार के घाट उतारना**=तलवार का आघात करके प्राण लेना। **तलवार खींचना**=आघात या वार करने के लिए म्यान से तलवार बाहर निकालना। **तलवार तौलना**=भरपूर वार करने के लिए तलवार ठीक ढंग से ऊपर उठाना। **तलवार पर हाथ रखना (या ले जाना)**=तलवार से वार या आघात करने को उद्यत होना। **तलवार बाँधना**=इस उद्देश्य से तलवार सदा अपनी कमर में लटकाये रखना कि जब आवश्यकता हो, तब उसका उपयोग किया जा सके। **तलवार सौंतना**=तलवार तौलना। (देखें ऊपर)

पद—तलवार का खेत=लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र। **तलवार का छारा**=तलवार के फल पर उभरा हुआ चिह्न या दाग। **तलवार का डोरा**=तलवार की धार या बाढ़ जो डोरे या सूत की तरह जान पड़ती है। **तलवार का पट्टा या पट्ठा**=तलवार का चौड़ा फल। **तलवार का पानी**=तलवार की चमकीली रंगत जो उसके बढ़िया होने की सूचक होती है। **तलवार का फल**=मूठ के आगे का सारा भाग। **तलवार का बल**=तलवार के फल का टेढ़ापन जो काट करने में

सहायक होता है। **तलवार का बाँट**=तलवार में वह स्थान जहाँ से उसका टेढ़ापन आरंभ होता है। **तलवार का मुँह**=तलवार की धार। **तलवार का हाथ**=(क) तलवार का आघात। (ख) तलवार चलाने का ढंग या प्रकार। **तलवार की आँच**=तलवार का आघात या वार। **तलवार की भाला**=तलवार की मूठ और फल का वह जोड़ जो दुंवाले के पास होता है।

तलवारिया—पुं० [हिं० तलवार] वह व्यक्ति जो अच्छी तरह तलवार चलाना जानता हो।

तलवारी—वि० [हिं० तलवार] तलवार-संबंधी। जैसे—तलवारी हाथ।

तलहटी—स्त्री० दे० 'तराई'।

तलहा†—वि० [हिं० ताल] ताल-संबंधी। ताल का या ताल में होनेवाला।

वि० [हिं० तल] तल अर्थात् नीचेवाले भाग में होने या रहनेवाला।

तलांगुलि—स्त्री० [सं० तल–अंगुलि, ष० त०] पैर की उँगली।

तला—पुं० [सं० तल] १=तल (पेंदा)। २. तलवा। ३. जूते के नीचे का वह चमड़ा जो चलते समय जमीन पर पड़ता है।

तलाई—स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया।

स्त्री० [हिं० तलना] तलने की क्रिया, भाव और मजदूरी।

स्त्री० [हिं० तलाना] तलाने का भाव या मजदूरी।

तलाउ†—पुं०=तलाव।

तलाक—पुं० [अ०] १. पति और पत्नी का विधि या नियम के अनुसार वैवाहिक संबंधों का होनेवाला पूर्ण विच्छेद। २. बोल-चाल में, किसी चीज को सदा के लिए छोड़ या त्याग देने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

तलाची—स्त्री० [सं०] चटाई।

तलातल—पुं० [सं० तल-अतल, पं० त०] पुराणनुसार सात पातालों में से एक।

तलाफी—स्त्री० [अ० तलाफ़ी] क्षति-पूर्ति।

तलाब†—पुं०=तालाब।

तलाबेली—स्त्री०=तलबेली (बेचैनी)।

तलामली†—स्त्री०=तलाबेली (तलबेली)।

तलाव—पुं० [हिं० तलना] तलने की क्रिया, ढंग या भाव।

†पुं० [सं० तल्ल] तालाव।

तलाश—स्त्री० [तु०] १. किसी खोई हुई अथवा लुप्त वस्तु, व्यक्ति आदि का पता लगाने का काम। अन्वेषण। खोज। २. किसी नई चीज या बात का पता लगाने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ३. आवश्यकता की पूर्ति के लिए होनेवाली चाह।

तलाशना—स० [फा० तलाश] १. तलाश करना। खोजना। ढूँढ़ना। २. किसी बात या विषय का अनुसंधान करना।

तलाशा—स्त्री० [सं०] एक तरह का पेड़।

तलाशी—स्त्री० [फा०] १. तलाश करने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। २. अवैध रूप से छिपाई गई वस्तु का पता लगाने के लिए किसी संदिग्ध व्यक्ति के शरीर, घर आदि की होनेवाली देख-भाल।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

तलि†—क्रि० वि०, पु० हिं० में तले का एक रूप। उदा०—तलि कर साखा उपरि करि मूल।—कबीर।

तलिका—स्त्री० [सं० तल+ठन्—इक+टाप्] पशुओं विशेषतः घोड़ों के मुँह पर बाँधी जानेवाली वह थैली जिसमें दाना आदि भरा होता है। तोबड़ा।

तलित्—स्त्री० [सं०=तडित्, ड–ल] दे० 'तडित्'।

तलित—भू० कृ० [हिं० तलना से ?] तला हुआ।

तलिन—वि० [सं०√तल्+इनन्] १. दुबला-पतला। २. जीर्ण-शीर्ण। टूटा-फूटा। ३. इधर-उधर छितरा या फैला हुआ। विरल। ४. कम। थोड़ा। ५. साफ। स्वच्छ।

स्त्री० शय्या। सेज।

तलिम—पुं० [सं०√तल्+इमन्] १. छत। पाटन। २. खाट या पलंग। शय्या। ३. चँदोआ। ४. खाँगा। ५. बड़ी छुरी। छुरा। ६. जमीन पर का पक्का फर्श।

तलिया—स्त्री० [सं० तल] समुद्र की थाह। (डिं०)

तली—स्त्री० [सं० तल] १. तल। पेंदा। २. हाथ और पैर का तल। जैसे—हाथ की तली, पैर की तली। ३. पूजन आदि के समय पैर की तली के नीचे रखा जानेवाला पैसा। ४. दे० 'तलछट'।

तलुआ†—पुं०=तालू।

तलुन—पुं० [सं०√तॄ (गति)+उनन्] १. वायु। हवा। २. जवान आदमी। मरद।

तले—क्रि० वि० [सं० तल] १. किसी चीज के तल या नीचेवाले भाग में। २. किसी ऊँची या ऊपर टँगी हुई वस्तु से नीचे।

पद—तले-ऊपर—(क) एक के ऊपर दूसरा। (ख) उलट-पलट किया हुआ। **तले-ऊपर के**=ऐसे दो बच्चे जिनमें एक दूसरे के ठीक बाद उत्पन्न हुए हों। **तले-ऊपर होना**=उलट-पलट हो जाना। विशृंखल होना। **(किसी के साथ) तले-ऊपर होना**=प्रसंग या संभोग करना। **(जी) तले-ऊपर होना**=(क) घबराहट या विकलता होना। (ख) जी मिचलाना। मितली होना।

३. किसी के वश या शासन में। जैसे—इस अधिकारी के तले पाँच आदमी काम करते हैं।

तलेक्षण—पुं० [सं० तल-ईक्षण, ब०स०] सूअर (जन्तु)।

तलेटी—स्त्री० [सं० तल] १.=पेंदी। २.=तलहटी ;(तराई)।

तलैंड—वि० [सं० तल] १. तल में होने या नीचे रहनेवाला। २. तुच्छ। हीन।

तलैंचा—पुं० [हिं० तले] वास्तु शास्त्र में, छत और मेहराब के बीच का भाग या रचना।

तलैया—स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल या तालाब।

तलोदर—वि० [सं० तल-उदर, ब०स०] [स्त्री० तलोदरी] तोंदवाला।

तलोदरी—स्त्री० [सं० तलोदर+ङीष्] स्त्री। भार्या।

वि० 'तलोदर' का स्त्री० रूप।

तलोदा—स्त्री० [सं० तल-उदक, ब०स०, उदादेश] नदी।

तलौंछ—स्त्री० [सं० तल=नीचे] द्रव पदार्थ के पात्र के तल में जमी हुई मैल। तल-छट।

तलौवन—पुं० [अ०] १. मत, विचार, सिद्धांत, स्थिति आदि में होनेवाला परिवर्त्तन। २. किसी बात या विचार पर स्थिर न होने का भाव।

तल्क—पुं० [सं०√तल्+कन्] वन। जंगल।

तल्ख—वि० [फ़ा० तल्ख] [भाव० तल्खी] १. (पदार्थ) कड़ुआ। कटु। २. (स्वभाव) जिसमें कटुता, चिड़चिड़ापन आदि वातें अधिक हों।

तल्प—पुं०[सं०√तल+पक्]१. पलंग। सेज। शय्या। २. बिछौना। बिस्तर। उदा०—दूर्वादल हो तल्प तुम्हारा।—पंत। ३. मकान का ऊपरी खंड। ४. अटारी।

तल्पक—पुं०[सं० तल्प+कन्] १. पलंग। २. पलंग पर बिस्तर करनेवाला सेवक।

तल्प-कीट—पुं०[मध्य०स०] पलंग में रँहनेवाला कीड़ा। खटमल।

तल्पज—पुं०[सं०तल्प√जन् (उत्पन्न होना)+ड] क्षेत्रज पुत्र।

तल्पन—पुं०[सं० तल्प+क्विप्(नाम धातु)+ल्युट्—अन]१. हाथी की पीठ। २. हाथी की पीठ का मांस।

तल्पल—पुं०[सं० तल्प√ला (लेना)+क]हाथी की रीढ़।

तल्ल—पुं०[सं० तत्√ली (लीन होना)+ड]१. बिल। विवर। २. गड्ढा। ३. ताल। तालाब।

तल्लज—वि०[सं० तत्√लज् (कान्ति)+अच्] उत्तम। श्रेष्ठ।

तल्लह—पुं०[सं० तल्ल√हा(त्यागना)+क]कुत्ता।

तल्ला—पुं०[सं० तल]१. तल। पेंदा। २. जूते में चमड़े का वह अंश या भाग जो तलवे के नीचे रहता है और जमीन पर पड़ता है। तला। ३. किसी प्रकार की दोहरी चीज में तले या नीचे की परत या पल्ला। ४. कपड़े में लगाया जानेवाला अस्तर। ५. निकटता। समीपता।

पुं०[सं० तल्प] मकान का कोई खंड या मंजिल। जैसे—तीन तल्ले का मकान।

तल्लिका—स्त्री०[सं० तल्ल+कन्—टाप्, इत्व]ताले की कुंजी। ताली।

तल्ली—स्त्री०[सं० तत्√लस् (शोभित होना)+ड—ङीष्] १. तरुणी। युवती। २. नौका। नाव। ३. वरुण की पत्नी का नाम।

स्त्री०[सं० तल] १. जूते का तल्ला। तला। २. दे० 'तल-छट'।

तल्लीन—वि०[सं०तत्-लीन, स०त०] जो किसी काम या बात के संपादन में दत्तचित्त होकर लगा हो। मग्न।

तल्लुआ—पुं०[देश०]मध्य युग में गाढ़े या सल्लम की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा। तुकरी। महमूदी।

तल्लो†—पुं० [सं० तल] जाँते का नीचेवाला पाट।

तल्वकार—पुं०=तलवकार।

तवँचुर*—पुं०[सं० ताम्रचूड; हिं० तमचुर] मुर्गा।

तव—सर्व०[सं०] तुम्हारा।

तवक्का—स्त्री०[अ० तवक्कुअ] आशा। भरोसा।

तवक्कु—पुं० [अ० तवक्कुफ़] १. देर। बिलंब। २. ढील।

तव-क्षीर—पुं०[सं०√तु(पूर्ति)+अच्, तव-क्षीर, व० स०, फा०तबाशीर] १. तीखुर। २. वंशलोचन।

तवक्षीरी—स्त्री० [सं० तवक्षीर+ङीष्] कनकचूर जिसकी जड़ से एक प्रकार का तीखुर बनता है। अबीर इसी तीखुर का बनता है।

तवज्जह—स्त्री० [अ०]१. कोई कार्य या बात जानने, समझने, सीखने, सुनने आदि के लिए उसकी ओर एकाग्रचित्त होकर दिया जानेवाला ध्यान।

क्रि० प्र०—देना।

२. अनुग्रह या कृपा की दृष्टि और व्यवहार।

तवन*—स्त्री०[सं० तपन] १. तपन। २. गरमी। ताप। ३. अग्नि। आग।

†सर्व०=वह।

तवना—अ० [सं० स्तवन] स्तुति करना। उदा०—स्त्री पति कृण सुमति तूझ गुण जुतवति।—प्रिथीराज।

†अ० [सं० तपन]१. तपना। उदा०—साँसों का पाकर वेग देश की हवा तवी सी जाती है।—दिनकर। २. दुःखी या पीड़ित होना। ३. गुस्से से लाल होना। ४. तेज या प्रताप दिखलाना।

†स०=तपाना।

तवनी—स्त्री० [हिं० तवा] छोटा और हलका तवा। तई।

तवर—पुं०=तोमर (क्षत्रियों का कुल)।

तवरक—पुं०[सं० तुवर] जलाशयों के किनारे होनेवाला एक तरह का पेड़।

तवराज—पुं०[सं०√तु (पूर्ति)+अच्, तव√राज् (शोभित हाना)+अच्] तुरंजबीन। यवास शर्करा।

तवर्ग—पुं० [प०त०] देवनागरी वर्ण-माला के त, थ, द, ध और न इन पाँचों वर्णों का वर्ग या समूह।

तवलची†—पुं०=तबलची।

तवल्ला†—पुं०=तबला।

तवा—पुं०[हिं० तवना=जलना][स्त्री०अल्पा० तई, तवी, तोई, तौनी] १. लोहे की चादर का बना हुआ गोलाकार छोटा टुकड़ा जिस पर रोटी आदि पकाई जाती है।

मुहा०—तवा सिर से बाँधना=(क) बड़े-बड़े आघात या प्रहार सहने के लिए तैयार होना। (ख) अपने को खूब दृढ़ और सुरक्षित करना। **तवे का हंसना**=तवे के नीचे जमी हुई कालिख का तपकर लाल हो जाना और चमकने लगना जो घर में लड़ाई-झगड़ा होने का सूचक समझा जाता है।

पद—तवे की बूंद=(क) इतना अल्प या कम जो तवे पर पड़ी हुई घी, तेल या पानी की बूंद के समान हो और तुरंत समाप्त हो जाय। (ख) बहुत ही अस्थायी और नश्वर। **तवे सा मुंह** =तवे के नीचेवाले भाग की तरह काली और कुरूप आकृति।

२. उक्त आकार-प्रकार का लोहे का बहुत बड़ा गोल टुकड़ा। ३. मिट्टी या खपड़े का गोल ठीकरा जो चिलम में तमाकू के ऊपर और अंगारों या आग के नीचे रखा जाता है।

पुं०[?] एक प्रकार की लाल मिट्टी जो प्रायः हींग में मिलावट करने के काम आती है।

तवाई†—स्त्री०[हिं० ताव=ताप]१. ताप। २. लू।

तवाखीर—पुं०[सं० त्वक्क्षीर या तवक्षीर]१. तवाशीर। तीखुर। २. वंशलोचन।

तवाजा—स्त्री०[अ० तवाजः] आदर-सत्कार। खातिरदारी।

तवाना—वि०[फा०] मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।

†स०[हिं० तवा] ढक्कन चिपकाया ढँकाकर बरतन का मुँह बन्द करना।

†स०=तपाना।

तवायफ—स्त्री० [अ०] गाने-नाचने का पेशा करनेवाली वेश्या।

तवारा—पुं० [सं० ताप; हिं० तावै] १. अत्यधिक गरमी। २. अत्यधिक गर्मी के कारण होनेवाला कष्ट। ३. जलन।

तवारीख—स्त्री० [अ०] इतिहास। (दे०)

तवारीखी—वि० [अ०] ऐतिहासिक।

तवालत—स्त्री० [अ०] १. तवील अर्थात् लंबे होने की अवस्था या भाव। लंबाई। २. किसी काम में होनेवाली ऐसी झंझट या बखेड़ा जिससे उसके संपादन में प्रायः व्यर्थ का विस्तार हो या अधिक समय लगे।

तविष—पुं० [सं०√तु (पूर्ण करना)+टिषच्] १. स्वर्ग। २. समुद्र। सागर। ३. बल। शक्ति। ४. रोजगार। व्यवसाय।
वि० १. पूज्य और बड़ा। वृद्ध। २. महत्त्वपूर्ण या महान्। ३. बलवान। शक्तिशाली।

तविषी—स्त्री० [सं० तविष+ङीष्] १. पृथ्वी। २. शक्ति। ३. नदी। ४. इन्द्र की एक कन्या।

तवी—स्त्री० [हिं० तवा] १. छोटा तवा। २. ऊँचे किनारोंवाली थाली की तरह का लोहे का वह पात्र जिसमें इमरती, जलेबी आदि तली जाती है।

तवीयन—पुं० तबीव (चिकित्सक)।

तवोष—पुं० [सं०=तविष] १. स्वर्ग। २. समुद्र। ३. सोना।

तवेला†—पुं०=तवेला।

तशखीस—स्त्री० [अ०] १. अच्छी तरह की जानेवाली जाँच-पड़ताल या उसके फलस्वरूप होनेवाला निश्चय। २. लक्षण आदि देखकर की जानेवाली रोग की पहचान। निदान।

तशद्दुद—पुं० [अ०] १. आक्रमण। २. किसी के प्रति किया जानेवाला कठोर या कष्टदायक व्यवहार।

तशरीफ—स्त्री० [अ०] १. महत्त्व। वड़प्पन। २. बड़ों के व्यक्तित्व के सम्वन्ध में सम्मानसूचक संज्ञा। जैसे—(क) तशरीफ रखिए या लाइए=पधारिये या विराजिए। (ख) आप भी वहाँ तशरीफ ले गये थे? अर्थात् पधारे थे।

तश्त—पुं० [फा०] १. थाली के आकर का हल्का छिछला बरतन। बड़ी रिकाबी। २. परात। ३. वह पात्र जिसमें मल-त्याग किया जाता है। गमला।

तश्तरी—स्त्री० [फा०] धातु की चादर की वनी हुई छोटी, चिपटी तथा छिछली थाली।

तष्ट—वि० [सं०√तक्ष् (छीलना)+क्त] १. छीला हुआ। २. कूटा, दला या पीसा हुआ। ३. पीटा हुआ।

तष्टा (ष्टृ)—पुं० [सं०√तक्ष्+तृच्] १. छीलनेवाला। २. काट-छाँट कर गढ़नेवाला। २. कूटने, दलने या पीसनेवाला।
पुं० १. विश्वकर्म्मा। २. एक आदित्य या सूर्य का नाम।
पुं० [फा० तश्त] ताँवे की एक प्रकार की छोटी रिकावी जिसमें पूजन की सामग्री रखते अथवा छोटी मूर्तियों को स्नान कराते हैं।

तस—वि० [सं० तादृश; प्रा० तारिस; पु० हिं० तइस] तैसा। वैसा।
पद—जस का तस=ज्यों का त्यों। जैसा [illegible] वैसा ही।

तसकर†—पुं०=तस्कर।

तसकीन—स्त्री० [अ० तस्कीन] ढाढस। सांत्वना।

तसगर—पुं० [देश०] ताने में नौलक्खी के पास की दो लकड़ियों में से एक। (जुलाहे)

तसगीर—स्त्री० [अ० तस्गीर] १. हलका या छोटा रूप देने की क्रिया या भाव। संक्षेपण। २. उक्त प्रकार से दिया हुआ रूप। संक्षेप।

तसदीक—स्त्री० [अ० तस्दीक] १. सच्चे होने की अवस्था या भाव। सचाई। सत्यता। २. इस बात की जाँच और निर्णय कि जो कुछ सामने रखा या लगाया गया है, वह वस्तुतः वही है जो होना चाहिए। जैसे—दस्तावेज या उस पर के दस्तखत की तसदीक। ३. किसी बात की सत्यता के सम्बन्ध में किया जानेवाला समर्थन। ४. गवाही।

तसदीह—स्त्री० [अ० तस्दीअ] १. कष्ट। तकलीफ। २. झंझट। बखेड़ा। ३. परेशानी।

तसद्दुक—पुं० [अ०] १. सदके अर्थात् निछावर करने की क्रिया या भाव। २. सदके या निछावर की हुई चीज। ३. कुरबानी। बलिदान।

तसनीफ—स्त्री० [अ० तस्नीफ] किसी प्रकार की साहित्यिक कृति या रचना।

तसफ़ीया—पुं० [अ० तस्फिय:] १. फैसला। २. समझौता।

तसबी*—स्त्री०=तसबीह।

तसबीह—स्त्री० [अ० तस्बीह] वह जप-माला या सुमिरनी जो मुसलमान लोग ईश्वर का नाम लेने के समय फेरते हैं।
मुहा०—तसबीह फेरना=नाम की माला जपना। जप करना।

तसमा—पुं० [फा० तस्म:] कोई चीज कसकर बाँधने के लिए उसमें लगा या लगाया हुआ चमड़े, सूत आदि का फीता या डोरी। जैसे—जूते का तसमा।
मुहा०—तसमा खींचना=मध्ययुग में तसमा लपेटकर किसी-किसी का गला घोटना और उसकी हत्या करना।

तसला—पुं० [फा० तश्त+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० तसली] खड़ी तथा ऊँची दीवारवाला एक तरह का गोल पात्र जिसमें तरकारी, दाल आदि पकाई जाती है।

तसलीम—स्त्री० [अ० तस्लीम] १. कोई बात मान लेने या कोई आदेश पालन करने की क्रिया या भाव। २. किसी का महत्त्व मानते हुए किया जानेवाला अभिवादन। नमस्कार। सलाम।

तसल्ली—स्त्री० [अ०] ऐसी बात जिससे किसी निराश या हतोत्साह व्यक्ति का धैर्य बँधता हो। ढाढस। सांत्वना।

तसवीर—स्त्री० [अ०] १. वह कलापूर्ण रचना जिससे किसी वस्तु के बाहरी आकार-प्रकार या स्वरूप का ज्ञान होता हो। चित्र। (दे०)
क्रि० प्र०—उतारना।—खींचना।—बनाना।
२. किसी घटना या स्थिति की यथार्थता बतलानेवाला विवरण।
वि० बहुत सुन्दर।

तसी†—स्त्री० [देश०] ऐसा खेत जो बोये जाने से पहले तीन बार जोता गया हो।

तसु—सर्व० [सं० तस्य] उसका। उसके। उदा०—जुआलि नालि तसु गरभ जेंहवी।—प्रिथीराज।

तसू—पुं० [सं० त्रि+शूक=जौ की तरह का एक अन्न] प्रायः सवा इंच के बराबर की एक देशी नाप।

तस्कर—पुं० [सं० तद्√कृ (करना)+अच्, (नि० सुट् द-लोप)] १. दूसरों

की चीजें चुरानेवाला। चोर। २. चोर नामक गन्ध-द्रव्य। ३. सुनने की इन्द्रिय। कान। ४. मदन नाम का वृक्ष। मैनफल। ५. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार के केतु जो बुध ग्रह के पुत्र माने गये हैं और जिनकी संख्या ५१ कही गई है।

तस्करता—स्त्री० [सं० तस्कर+तल्—टाप्] तस्कर का कार्य या भाव। चोरी।

तस्कर-स्नायु—पुं० [ब०स०] काकनासा लता।

तस्करी—स्त्री० [सं० तद्√कृ+ट—ङीप्] १. चोर की स्त्री। २. चोर स्त्री। चोरनी। ३. चोरी।

तस्थु—वि० [सं०√स्था (ठहरना)+कु, द्वि०] एक ही स्थान पर दृढ़तापूर्वक स्थित रहनेवाला। अचल।

तस्नीफ—स्त्री०=तसनीफ।

तस्बीह—स्त्री०=तसबीह।

तस्मा—पुं०=तसमा।

तस्मात्—अव्य० [सं०] इसलिए। अतः।

तस्य—सर्व० [सं०] उसका।

तस्लीम—स्त्री०=तसलीम।

तस्वीर—स्त्री०=तसवीर।

तस्सू—पुं०=तसू।

तहँ—क्रि० वि० [हिं० तहाँ] उस स्थान पर। वहाँ।

तहँवाँ—क्रि० वि०=तहाँ (वहाँ)।

तह—स्त्री० [फा०] १. कागज, कपड़े आदि के बड़े टुकड़े का वह अंश जो मोड़ने पर उसके दूसरे अंश के ऊपर या नीचे पड़ता हो। परत। जैसे—इस कपड़े की चार तहें लगाओ।

क्रि० प्र०—जमाना।—बैठाना।—लगाना।

मुहा०—तह करना=किसी फैली हुई (चद्दर आदि के आकार की) वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़ और एक दूसरे के ऊपर लाकर उस वस्तु को समेटना। चौपरत करना। **तह कर रखना**=छिपा या दबाकर रोक रखना। (व्यंग्य) जैसे—आप अपनी लियाकत तह कर रखिए। **(किसी चीज पर) तह चढ़ाना या देना**=(क) लेप आदि के रूप में ऊपर परत या स्तर चढ़ाना या जमाना। (ख) हलका रंग चढ़ाना।

२. किसी पदार्थ का बिलकुल नीचेवाला भाग या स्तर। जैसे—(क) किसी बात की तह तक पहुँचना। (ख) गिलास की तह में मिट्टी जमना या बैठना।

मुहा०—(किसी बात की) तह तोड़ना=मूल आधार नष्ट करना। जैसे—झगड़े या बखेड़े की तह तोड़ना। **(कूएँ की) तह तोड़ना**=कूआँ साफ करने के लिए या उसकी मरम्मत करने के लिए उसका सारा पानी बाहर निकाल देना। **(किसी चीज की) तह देना**=नीचे का या मूल स्तर प्रस्तुत या स्थापित करना। जैसे—फुलेल में मिट्टी के तेल की तह दी जाती है। **(जानवरों की) तह मिलाना**=संभोग के लिए नर और मादा को एक साथ रखना।

पद—तह का सच्चा=वह कबूतर जो बराबर सीधा अपने छत्ते पर चला आवे, अपना स्थान न भूले। **तह की बात**=(क) अन्दर की, छिपी हुई या रहस्य की बात। (ख) यथार्थ ज्ञान या तत्त्व की बात। ३. पानी के नीचे की जमीन। तल। ४. बहुत पतला या महीन पटल। झिल्ली।

क्रि० प्र०—जमना।—बैठना।

तहकीक—स्त्री० [अ०] १. यथार्थता, वास्तविकता या सत्यता। २. यथार्थता या सत्यता के सम्बन्ध में होनेवाली छान-बीन या जाँच-पड़ताल। ३. जिज्ञासा। पूछ-ताछ।

तहकीकात—स्त्री० [अ० 'तहकीक' का बहु०] यथार्थता या सत्यता का पता लगाने के लिए की जानेवाली छान-बीन या जाँच-पड़ताल।

तहखाना—पुं० [फा०] किसी मकान, महल आदि का वह कमरा जो आस-पास की जमीन या उस मकान की कुरसी के नीचे पड़ता हो।

तहजीब—स्त्री० [अ०] १. किसी चीज को दर्शनीय और सुन्दर बनाने का काम। २. शिष्टाचार। ३. सभ्यता। (देखें)

तहत—पुं० [अ०] १. अधिकार। वश। २. अधीनता। मातहती।

तह-दरब—वि० [फा०] (कपड़ा) या और कोई पदार्थ जिसकी तह अभी तक न खुली हो अर्थात् जिसका उपयोग या व्यवहार न हुआ हो। बिलकुल नया।

तहना†—अ० [हिं० तेह] तेहा दिखाना। क्रुद्ध होना।

तहनिशाँ—पुं० [फा०] १. लोहे पर सोने, चाँदी आदि की की हुई पच्चीकारी। २. उक्त प्रकार से पच्चीकारी करने का काम।

तहपेच—पुं० [फा०] वह कपड़ा जिसे पहले सिर पर लपेटकर उपर से पगड़ी बाँधी जाती है।

तह-बाजारी—स्त्री० [फा०] हाट, बाजार, सट्टी आदि में दुकान लगानेवालों से लिया जानेवाला कर।

तहमत—पुं० [फा० तहबंद या तहमद] कमर में लपेटी जानेवाली लूंगी।

तहम्मुल—पुं० [अ०] बरदाश्त करने या सहने की शक्ति। सहनशीलता।

तहरा—पुं०=ततहँड़ा।

तहरी—स्त्री० [अ० ताहिरी=ताहिर नामक व्यक्ति का?] १. चावलों की वह खिचड़ी जो चने, मटर, पेठे की बरी आदि मिलाकर बनाई जाती है। उदा०—तहरी पाकि लोनि और बरी।—जायसी। २. कालीन बुनने के करघे में की ढरकी।

तहरीक—स्त्री० [अ०] १. ऐसी क्रिया या बात जिससे किसी को बढ़ावा मिलता हो अथवा वह उत्तेजित होता हो। २. प्रस्ताव।

तहरीर—स्त्री० [अ०] १ लिखाई। लिखावट। २. अक्षरों के रूप आदि के विचार से लिखने का ढंग या शैली। ३. लिखी हुई चीज या बात। ४. लिखा हुआ कागज। लेख्य। ५. अदालतों में मुहर्रिरों, मुंशियों आदि को लिखने आदि के बदले में दिया जानेवाला पारिश्रमिक या पुरस्कार। ६. कपड़ों पर होनेवाले गेरू की कच्ची छपाई जो कसीदा काढ़ने के लिए की जाती है। (छीपी) ७. दे० 'खुलाई' (चित्रकला की)।

तहरीरी—वि० [फा०] जो तहरीर या लेख के रूप में हो। लिखा हुआ। लिखित। जैसे—तहरीरी सबूत।

तहलका—पुं० [अ० तहल्कः=हलाक करना या मार डालना]? १. बहुत बड़ा उत्पात या उपद्रव। २. बहुत बड़ी खलबली या हलचल। जैसे—यह खून हो जाने से महल्ले भर में तहलका मच गया है।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।

३. बरबादी। विनाश। (क्व०)

तहवाँ—अव्य०=तहाँ (वहाँ पर)।

तहवील—स्त्री०[अ०]१. किसी के हवाले या सुपुर्द करने की क्रिया या भाव। सपुर्दगी। २. अमानत। धरोहर। ३. वह स्थान जहाँ धन या रोकड़ रखी जाती हो।

तहवीलदार—पुं०[अ० तहवील+फा० दार] वह जिसके पास तहवील रहती हो। खजानची।

तहस-नहस—वि०[अ० नहस] १. पूरी तरह से तोड़ा-फोड़ा या नष्ट किया हुआ। नष्ट-भ्रष्ट। २. ध्वस्त।

तहसील—स्त्री०[अ०]१. लोगों से चीजें या रुपए वसूल करने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार वसूल किया हुआ धन या पदार्थ। ३. आधुनिक भारत में शासन की सुविधा के लिए जिले के विभक्त भागों में से कोई एक जिसका प्रधान अधिकारी तहसीलदार कहलाता है। ४. तहसीलदार का कार्यालय।

तहसीलदार—पुं०[अ० तहसील+फा० दार] १. भूमिकर या लगान तहसीलने अर्थात् वसूल करनेवाला अधिकारी। २. आज-कल किसी तहसील (जिले के विभाग) का प्रधान अधिकारी।

तहसीलदारी—पुं०[अ० तहसील+फा० दार+ई] तहसीलदार का काम, पद या भाव।

तहसीलना—स०[अ० तहसील] (कर, लगान, मालगुजारी, चंदा आदि) वसूल करना। उगाहना।

तहाँ—क्रि० वि०[सं० तत्+स्थान; प्रा० थाण, थान] उस स्थान पर। वहाँ।

तहाना—स०[हिं० तह] कपड़े, कागज आदि के बड़े टुकड़े की तहें या परतें लगाना। तह करना।

तहाशा—पुं०[अ०]१. परवाह। २. डर। भय।

तहियाँ—क्रि० वि०[सं० तदाहि]१. उस समय। तब। २. वहीं।

तहियाना—स०=तहाना।

तहीं†—क्रि० वि०[हिं० तहाँ] उसी जगह। वहीं।

तही—स्त्री०[हिं० तह]१. तह। परत। २. एक के ऊपर एक करके रखी हुई चीजों का थाक।

क्रि० प्र०—लगाना।

३. किसी चीज का जमा हुआ थक्का।

तहोवाला—पुं०[फा०] उलट-पुलट।

ता—प्रत्य०[सं० तल् और टाप् प्रत्य० से निष्पन्न] एक प्रत्यय जिससे विशेषणों और संज्ञाओं के भाववाचक रूप बनाये जाते हैं। जैसे—विशेष से विशेषता; मानव से मानवता।

अव्य०[फा०]तक। पर्यन्त।

*सर्व[सं० तद्] उस।

वि०=उस।

ताँई—क्रि० वि०=ताईं।

ताँकना*अ०, स०=ताकना।

ताँगा—पुं०=टाँगा।

तांडव—पुं०[सं० तंडु+अण्]१. वह बहुत ही उग्र और विकट नृत्य जो शिव जी प्रलय या ऐसे ही दूसरे महत्त्वपूर्ण अवसरों पर करते हैं। २. पुरुषों के द्वारा होनेवाला नृत्य (स्त्रियों के नृत्य या लास्य से भिन्न)। ३. उग्र और उद्धत नृत्य। ४. एक प्रकार का तृण।

तांडवी—पुं०[सं० तांडव+ङीप्] संगीत के १४ तालों में से एक।

तांडि—पुं०[सं० तांड्य+इञ्, यलोप] (तंडि मुनि का निकाला हुआ) नृत्य-शास्त्र।

तांडी (डिन्)—पुं०[सं० तांड्य+इनि, यलोप]१. सामवेद की तांड्य शाखा का अध्ययन करनेवाला। २. यजुर्वेद के एक कल्प सूत्रकार का नाम।

तांड्य—पुं०[सं० तंडि+यञ्]१. तंडि मुनि के वंशज। २. सामवेद के एक ब्राह्मण (भाग) की संज्ञा।

तांण*—पुं०[हिं० तानना] खिचाव।

ताँत—स्त्री०[सं० तंतु]१. पशुओं की अँतड़ियों, नसों आदि से अथवा चमड़े को बटकर बनाई हुई पतली डोरी। २. धनुष की डोरी जो पहले प्रायः उक्त प्रकार की होती थी। ३. डोरी। रस्सी। ४. सारंगी आदि बाजों में लगा हुआ तार। ५. जुलाहों की राछ।

वि० [सं० त-अंत, ब०स०] १. (शब्द) जिसके अंत में त हो।

२. [√तम्(थकावट)+क्त] थका हुआ। श्रांत।

ताँतड़ी—स्त्री०[हिं० ताँत+ड़ी (प्रत्य०)] ताँत।

पद—ताँतड़ी-सा=ताँत की तरह क्षीणकाय और लंबा।

तांतव—वि०[सं० तंतु+अञ्]१. तंतु-संबंधी। २. तंतुओं से बना हुआ। ३. जिससे तंतु या तार निकल अथवा बन सकें।

ताँतवा—पुं०[हिं० आँत] एक रोग जिसमें आँत अंडकोश में उतर आती है। आँत उतरने का रोग।

ताँता—पुं०[सं० तति=श्रेणी]१. किसी काम, चीज या बात का कुछ समय तक लगातार चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—बरसनेवाले पानी का ताँता। २. निरन्तर एक के बाद एक घटना घटित होते चलने का भाव। जैसे—(क) मौतों का ताँता। (ख) बातों का ताँता। ३. जीवों या प्राणियों की कतार। पंक्ति। जैसे—(क) आदमियों का ताँता। (ख) चिड़ियों का ताँता।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

मुहा०—ताँता बाँधना=बहुत से लोगों का एक पंक्ति में खड़ा होना या खड़ा किया जाना।

ताँति†—स्त्री०=ताँत।

पुं०=ताँती।

ताँतिया—वि०[हिं० ताँत]१. ताँत-संबंधी। २. ताँत की तरह क्षीणकाय और लंबा।

ताँती—पुं०[हिं० ताँत]१. कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा। २. जुलाहों की राछ।

स्त्री० [हिं० ताँता] १. कतार। पंक्ति। श्रेणी। २. बाल-बच्चे। औलाद। सन्तान।

तांतुवायि—पुं०[सं० तंतुवाय+इञ्] जुलाहे का लड़का।

तांत्रिक—वि०[सं० तंत्र+ठक्—इक] [स्त्री० तांत्रिकी] १. तंत्र-संबंधी। २. तंत्र-शास्त्र संबंधी।

पुं०१. वह जो तंत्र-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो और तंत्र-मंत्र के प्रयोगों से सब काम सिद्ध करता हो। २. वैद्यक में एक प्रकार का सन्निपात।

ताँदुल†—पुं॰=तंदुल (चावल)।

ताँबई—वि॰ [हिं॰ ताँवा] ताँवे के रंग का।

पुं॰ उक्त प्रकार का रंग।

ताँबा—पुं॰ [सं॰ ताम्र] लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु जो खानों में गंधक, लोहे आदि के साथ मिली हुई मिलती है। इसमें ताप और विद्युत् के प्रवाह का संचार बहुत जल्दी और अधिक होता है। इसी लिए इसका प्रयोग प्रायः इंजनों और बिजली के काम में होता है। भारत में इसके अनेक प्रकार के पात्र भी बनते हैं जो धार्मिक दृष्टि से बहुत पवित्र माने जाते हैं।

पुं॰ [अ॰ तअम:] हिंसक पक्षियों को खिलाये जानेवाले मांस के छोटे-छोटे टुकड़े।

ताँबिया—वि॰ [हिं॰ ताँबा] १. ताँबे का बना हुआ। २. ताँबे के रंग का। ३. ताँबे से संबंध रखनेवाला।

पुं॰ चौड़े मुँह का एक प्रकार का छोटा बरतन।

ताँबी—स्त्री॰ [हिं॰ ताबा] १. ताँबे की बनी हुई एक प्रकार की करछी। २. छोटा ताँबिया।

तांबूल—पुं॰ [सं॰√ तम् (ग्लानि)+उलच्, बुक् आगम, दीर्घ] १.पान का पत्ता। २. पान का लगा हुआ बीड़ा। ३. मुख-शुद्धि के लिए भोजन के बाद खाई जानेवाली कोई सुगंधित चीज। (जैन)

तांबूल-करंक—पुं॰ [ष॰ त॰] १. पान और उसके लगाने की सामग्री का बरतन। पानदान। २. पान के लगे हुए बीड़े रखने की डिबिया। बिलहरा। पन-बट्टा।

तांबूल-नियम—पुं॰ [ष॰त॰] पान, सुपारी, लवंग, इलायची आदि रखने का नियम। (जैन)

तांबूल-पत्र—पुं॰ [ष॰ त॰] १. पान का पत्ता। २. अरुआ या पिंडालू नाम की लता जिसके पत्ते पान के आकार के होते हैं।

तांबूल-बीटिका—स्त्री॰ [ष॰ त॰] लगे हुए पान का बीड़ा।

तांबूल-राग—पुं॰ [मध्य॰ स॰] १. पान की पीक। २. मसूर नामक कदन्न जिसकी दाल बनती है।

तांबूल-वल्ली—स्त्री॰ [ष॰ त॰] पान की बेल। नागवल्ली।

तांबूल-वाहक—पुं॰ [ष॰ त॰] प्राचीन तथा मध्य काल में राजा, नवाबों आदि का वह सेवक जो उनके साथ पानदान लेकर चलता था।

तांबूलिक—पुं॰ [सं॰ तांबूल+ठन्—इक] पान बेचनेवाला व्यक्ति। तमोली।

तांबूली (लिन्)—पुं॰ [सं॰ तांबूल+इनि] तमोली। पनवाड़ी।

स्त्री॰ [सं॰ तांबूल+ङीष्] पान की बेल।

ताँबक[illegible]त्री॰ [हिं॰ ताँबा+फा॰ कारी] एक प्रकार का लाल रंग।

ताँबेल—पुं॰ [?] कच्छप। कछुआ।

ताँवर—पुं॰=ताँवरा।

ताँवरना—अ॰ [हिं॰ ताँवर] १. ताप से युक्त होना। तप्त होना। २. ज्वर के कारण शारीरिक तापमान अधिक होना। बुखार होना। ३. अधिक ताप के कारण मूर्च्छित या बेसुध होना। ४. क्रुद्ध या नाराज होना। बिगड़ना।

ताँवरा—पुं॰ [सं॰ ताप; हिं॰ ताव] १. शरीर का ताप नामक रोग। ज्वर। बुखार। २. जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी। ३. बहुत अधिक गरमी या ताप। ४. गरमी आदि के कारण होनेवाली बेहोशी। मूर्च्छा। उदा॰—रीतौ पर्‌यौ जबैं फल चाख्यो उड़ि गयौ तूल ताँवरो आयो।—सूर।

ताँवरी—स्त्री॰=ताँवरा।

ताँसना†—स॰ [सं॰ त्रास] १. किसी को त्रास देना। डाँट-डपटकर डराना-धमकाना। २. अनुचित व्यवहार करके किसी को बहुत कष्ट देना और दुःखी करना। सताना। जैसे—वह दिन भर अपनी बहू-बेटियों को ताँसती रहती है।

ताईं—अव्य॰ [हिं॰ तईं] १. किसी की ओर या किसी के प्रति। २. किसी के विषय या संबंध में। ३. निमित्त। लिए। वास्ते। उदा॰—कीन्ह सिंगार मिलन के ताईं।—कबीर।

अव्य॰ [सं॰ तावत् या फा॰ ता] १. तक। पर्यंत। २. निकट। पास।

ताई—स्त्री॰ [सं॰ ताप, हिं॰ ताप+ई (प्रत्य॰)] १. ताप। हलका ज्वर। हरारत। २. जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

स्त्री॰ [हिं॰ ताया का स्त्री॰] ताया अर्थात् पिता के बड़े भाई की पत्नी।

†स्त्री॰=तई (छोटा तवा)।

ताईत—पुं॰=तावीज (जन्तर)।

ताईद—स्त्री॰ [अ॰] १. पक्षपात। तरफदारी। २. किसी के कथन, पक्ष, प्रस्ताव आदि का किया जानेवाला समर्थन।

पुं॰ १. किसी के अधीन या साथ रहकर काम सीखनेवाला व्यक्ति। २. किसी मुख्तार या वकील का मुंशी, मुहर्रिर या लेखक।

ताउ†—पुं॰=ताव।

ताउल†—स्त्री॰ [हिं॰ उतावला] उतावली। जल्दी। उदा॰—बहुत ताउल है तो छप्पर से मुँह पोंछ।—खुसरो।

ताऊ—पुं॰ [सं॰ तात] [स्त्री॰ ताई] संबंध के विचार से पिता का बड़ा भाई। ताया।

पद—बछिया का ताऊ=बैल की तरह निरा मूर्ख। गावदी।

ताऊन—पुं॰ [अ॰] एक प्रसिद्ध घातक और संक्रामक रोग जिसमें बुखार के साथ गिलटी निकलती है। प्लेग।

ताऊस—पुं॰ [अ॰] १. मोर। मयूर।

पद—तख्त-ताऊस। (देखें)

२. सारंगी की तरह का एक बाजा जिसके ऊपरी सिरे की आकृति मोर की तरह होती है।

ताऊसी—वि॰ [अ॰] १. मोर-संबंधी। मोर का। २. आकार, रूप आदि में मोर की तरह का। ३. मोर के पर की तरह का ऊदा या बैंगनी।

पुं॰ एक प्रकार का रंग जो मोर के पर की तरह गहरा ऊदा, नीला या बैंगनी होता है। मोर-पंखी।

ताक—स्त्री॰ [हिं॰ ताकना] १. ताकने की क्रिया, ढंग या भाव।

पद—ताक-झाँक। (देखें)

मुहा॰—(किसी पर) ताक रखना=किसी के कामों, व्यवहारों आदि पर दृष्टि, ध्यान या निगाह रखना। देखते रहना कि क्या किया जाता है या क्या होता है।

२. स्थिर दृष्टि। टकटकी।

मुहा०—ताक बाँधना=टकटकी लगाकर या निगाह जमाकर देखते रहना।

३. स्वार्थ-साधन के विचार से आघात, लाभ आदि के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते हुए पूरा ध्यान रखना। घात।

मुहा०—(किसी की) ताक में निकलना=किसी को ढूँढ़ने या पाने के लिए कहीं जाना या निकलना **(किसी की) ताक में रहना**=किसी पर आक्रमण, प्रहार आदि करने के लिए उपयुक्त अवसर, स्थान आदि की प्रतीक्षा करना। **ताक लगाना**=कहीं ठहर या बैठकर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते रहना। **ताक में रहना**=उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करना। अवसर या मौका देखते रहना।

पुं० [अ० ताक] १. दीवार की चुनाई में प्रायः चौकोर गड्ढे की तरह छोड़ा हुआ वह खाली स्थान जो छोटी-छोटी चीजें रखने के काम आता है। आला। ताखा।

मुहा०— ताक पर धरना या रखना=व्यर्थ समझकर पड़ा रहने देना या ध्यान न देना। जैसे—हमारी बातें तो तुम ताक पर रखते चलते हो। **ताक पर रहना या होना**=यों ही पड़ा रहना। किसी काम में न आना। व्यर्थ जाना। जैसे—उनका यह हुकुम ताक पर ही रह जायगा। **ताक भरना**=मुसलमानों का एक धार्मिक कृत्य जिसमें वे किसी मसजिद या दूसरे पवित्र स्थान में जाकर (मन्नत पूरी करने के लिए) वहाँ के ताकों या आलों में मिठाइयाँ, फल आदि रखते हैं और तब उन्हें प्रसाद के रूप में लोगों को बाँटते हैं।

वि० १. जिसके साथ और कोई न हो। अकेला। २. जिसके जोड़ या बराबरी का और कोई न हो। अद्वितीय। निरुपम। बेजोड़। ३. जो संख्या में समान हो अर्थात् जिसे दो से भाग देने पर पूरा एक बच रहे। विषम। जसे—३, ५, ७, ९ आदि ताक हैं, और ४, ६, ८, १० आदि जुफ्त या जूस हैं।

ताकजुफ्त—पुं० [अ० ताक=विषम+फा० जुफ्त=जोड़ा] कौड़ियों से खेला जानेवाला जूस, ताक (देखें) नाम का खेल।

ताक-झाँक—स्त्री० [हिं० ताकना+झाँकना] १. टोह लेने, ढूँढ़ने, पाने आदि के उद्देश्य से रह-रहकर इधर-उधर बराबर ताकते या देखते और झाँकते रहने की क्रिया या भाव। २. छिपकर या औरों की दृष्टि बचाकर बुरे भाव से ताकने की क्रिया या भाव।

ताकत—स्त्री० [अ०] १. कोई काम कर सकने की शक्ति या सामर्थ्य। जैसे—(क) आँखों में इतनी दूरी तक देखने की ताकत नहीं रही। (ख) इस कुरसी में इतनी ताकत नहीं है कि वह तुम्हारा बोझ सह सके। २. शारीरिक या मानसिक बल। जैसे—बच्चे में नदी पार करने की या अँगरेजी बोलने की ताकत कैसे हो सकती है।

ताकतवर—वि० [फा०] जिसमें ताकत हो। शक्तिशाली। जैसे—वह दल इसकी अपेक्षा अधिक ताकतवर है।

ताकना—स० [सं० तर्कण] १. तर्क या बुद्धि के द्वारा कोई बात जानना या समझना। (क्व०) २. देखना। ३. ध्यानपूर्वक या आँख गड़ाकर किसी की ओर देखना। ४. बुरे उद्देश्य या दुष्ट भाव से किसी की ओर देखना। उदा०—जे ताकहिं पर धन पर दारा।—तुलसी। ५. पहले से देखकर कुछ स्थिर करना। ६. अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना। ७. आघात या वार करने के लिए लक्ष्य की ओर ध्यानपूर्वक देखना। उदा०—नावक सर से लाइकै तिलक तरुनिहत ताकि।—बिहारी। ८. देख-रेख या रखवाली करना।

ताकरी—स्त्री०=टाकरा (देश और लिपि)।

ताकि—अव्य० [फा०] इसलिए कि। जिसमें। जैसे—तुम यहाँ बैठे रहो, ताकि यहाँ से कोई चीज गायब न होने पावे।

ताकीद—स्त्री० [अ०] कोई काम करने, न करने आदि के संबंध में जोर देकर या कई बार कही जानेवाली बात। जैसे—नौकर को ताकीद कर दो कि वह सौदा लेकर तुरन्त लौट आवे।

क्रि० प्र०—करना।

ताकोली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा।

ताख—पुं० =ताखा।

वि०=ताक।

ताखड़ा—वि०=तगड़ा। (राज०)

ताखड़ी—स्त्री० [सं० त्रि+हिं० कड़ी] तराजू।

ताखा—पुं० [अ० ताक] १. दीवार में छूटा हुआ वह चौकोर स्थान जिसमें चीजें आदि रखी जाती हैं। आला। ताक। २. गत्ते पर लपेटा हुआ कपड़े का थान।

ताखी—वि० [अ० ताक] (प्राणी) जिसकी एक आँख दूसरी आँख से आकार, रंग, रचना आदि की दृष्टि से कुछ भिन्न हो।

ताग—पुं०=तागा।

तागड़—स्त्री० [देश०] रस्सों आदि की बनी हुई सीढ़ी जिसके सहारे बड़े-बड़े जहाजों से समुद्र में उतरा तथा चढ़ा जाता है। (लश०)

तागड़ी—स्त्री० [हिं० तागा+कड़ी] १. कमर में बाँधने की डोरी। करधनी। २. एक तरह की करधनी जिसमें सोने-चाँदी आदि के घुँघुरू लगे रहते हैं।

तागना—स० [?] १. तागे से सीना या बखिया करना। पिरोना। २. रूईदार कपड़ों को बीच-बीच में इसलिए मोटे डोरों से लंबाई के बल सीना कि रूई इधर-उधर खिसकने न पावे।

ताग-पहनी—स्त्री० [हिं० ताग+पहनाना] करघे में की एक लकड़ी जिससे वय में तागा पहनाया जाता है।

ताग-पाट—पुं० [हिं० तागा+पाट=रेशम] एक प्रकार का गहना जो रेशम के तागे में सोने-चाँदी के टिकड़े आदि पिरोकर बनाया जाता है और जो विवाह के समय पहना जाता है।

क्रि० प्र०—डालना।

विशेष—यह गहना प्रायः वधू का जेठ उसे देता या पहनाता है।

तागा—पुं० [सं० तार्कव; प्रा० तग्गो] १. वह पतला तंतु जो ऊन, रूई, रेशम आदि को तकले आदि पर कातने से तैयार होता है। सूत २. इस प्रकार काते हुए तंतुओं या सूतों को बटकर तैयार किया हुआ वह रूप जिससे कपड़े सीये या मालाएँ आदि गूँथी जाती हैं।

मुहा०—कपड़े में तागा डालना=(क) सीये जानेवाले कपड़े में दूर-दूर पर कच्ची सिलाई करना। (ख) दे० 'तागना'।

३. जनेऊ। यज्ञोपवीत। ४. वह कर जो मध्य-युग में घर के प्रति व्यक्ति के हिसाब से लिया जाता था।

ताछन—पुं० [सं० तक्षण] १. शत्रु का वार बचाने के निमित्त उसके बगल से होकर आगे बढ़ना। कावा। २. घोड़े का कावा काटना।

उदा०--उड़त अमित गति कटि कटि ताछन ।--पद्माकर ।

ताछना*--अ० [हिं० ताछन] वार बचाने के लिए शत्रु के बगल से होकर आगे बढ़ना ।

ताज--पुं० [अ०] बड़े राजाओं या बादशाहों के पहनने का मुकुट । राजमुकुट । २. गंजीफे के पत्तों का एक रंग जिसमें ताज या मुकुट की आकृति बनी रहती हैं । ३. अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ पदार्थ ।

पद--ताज-महल । (देखें)

४. कलगी । तुर्रा । ५. मुरगे, मोर आदि कुछ विशिष्ट पक्षियों के सिर पर के खड़े बाल । कलगी । चोटी । शिखा । ६. मकान के ऊपरी भाग में शोभा के लिए बनाई जानेवाली, छोटे बुर्ज के आकार की रचना । ७. दीवार के ऊपरी भाग में शोभा के लिए बनाई जानेवाली उभारदार रचना । कँगनी । कारनिस । ८. दे० 'ताज महल'।

†पुं०=ताजन (कोड़ा) ।

ताजक--पुं० [फा०] १. एक ईरानी जाति जो तुर्किस्तान के बुखारा प्रदेश से काबुल और बलोचिस्तान तक पाई जाती है । २. ज्योतिष का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो पहले अरबी और फारसी भाषाओं में था और जिसका भारत में संस्कृत में अनुवाद हुआ था । यह यवनाचार्य कृत माना जाता है ।

ताजगी--स्त्री० [फा०] १. 'ताजा' होने की अवस्था, गुण या भाव । ताजापन । २. फूल-पौधों आदि का हरापन । ३. शिथिलता आदि दूर होने पर प्राप्त होनेवाली मन की प्रफुल्लता और स्वस्थता । जैसे--जरा छाँह में बैठकर ठंढी हवा खाओ, अभी थकावट दूर हो जायगी और ताजगी आ जायगी ।

ताजदार--वि० [फा०] १. ताज के ढंग का । २. जिसमें ताज की-सी आकृति या रचना बनी हो । जैसे--ताजदार कँगूरा ।

पुं० ताज पहननेवाला, अर्थात् बादशाह या बहुत बड़ा राजा ।

ताजन--पुं० [फा० ताजियाना] १. कोड़ा । चाबुक । २. दंड । सजा ।

ताजना--पुं०=ताजन ।

ताजपोशी--स्त्री० [फा०] १. नये राजा का पहले-पहल राज-सिंहासन पर बैठने के समय ताज पहनने या राजमुकुट धारण करने का कृत्य या रीति । २. उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह ।

ताजबीबी--स्त्री० [फा० ताज+बीबी] मुगलकालीन भारत सम्राट् शाहजहाँ की पत्नी मुमताजमहल का एक नाम ।

विशेष--इसी की स्मृति में शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया था ।

ताजमहल--पुं० [अ०] उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में यमुना नदी के तट पर संगमरमर का बना हुआ एक भव्य तथा विशाल मकबरा जिसे भारत सम्राट् शाहजहाँ ने अपनी पत्नी ताजबीबी की स्मृति में बनवाया था । (इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सात सुंदर वास्तुओं में होती है ।)

ताजा--वि० [फा० ताजः] [स्त्री० ताजी, भाव० ताजगी] १. (वानस्पतिक पदार्थ) जिसे अभी-अभी चयन किया गया हो । जो अधिक समय से पड़ा या रखा हुआ न हो, फलतः जो हरा-भरा हो तथा जिसके मूल गुण नष्ट न हुए हों । जैसे--ताजा फल या फूल । २. (खाद्य पदार्थ) जो अभी-अभी या आज ही बना हो । जो बासी न हो । जैसे--ताजी रोटी, ताजा दूध । ३. (पदार्थ) जिसे तैयार हुए या बने अधिक समय न बीता हो । जैसे--उनके यहाँ अभी दिसावर से ताजा माल आया है । ४. (पदार्थ) जो अपने उद्गम या मूल स्थान से अभी-अभी निकला हो और जिसमें अभी तक कोई मिश्रण या विकार न हुआ हो । जैसे--ताजा खून, ताजा दूध, ताजा पानी । ५. (बात या विचार) जिसकी अनुभूति या बोध पहले-पहल हो रहा हो । जैसे--ताजी खबर । ६. (बात या विचार) जो फिर से नये रूप में या नये उद्देश्य से सामने लाया गया हो । जैसे--(क) बीता हुआ झगड़ा फिर से ताजा करना । (ख) कोई चीज या बात देखकर किसी की याद ताजी होना । ७. (चीज) जो शुद्ध तथा स्वच्छ हो । जैसे--ताजी हवा । ८. (चीज) जिसकी गंदगी या विकार दूर करके ठीक किया गया हो और जो फिर से काम में आने के योग्य हो गया हो । जैसे--ताजी भरी हुई चिलम, ताजा किया हुआ (पानी बदला हुआ) हुक्का । ९. (व्यक्ति) जिसकी क्लांति या शिथिलता दूर हो चुकी हो और जो प्रफुल्लित या स्वस्थ होकर फिर से अपना पूरा काम ठीक तरह से करने के लिए तैयार हो गया हो । जैसे--कुछ देर तक सुस्ता लेने (अथवा नहा लेने या जलपान कर लेने) पर आदमी ताजा हो जाता है ।

ताजिया--पुं० [अ०] बाँस की कमाचियों पर रंग-बिरंगे कागज, पन्नी आदि चिपका कर बनाया हुआ मकबरे के आकार का वह मंडप जो मुहर्रम के दिनों में मुसलमान लोग हजरत इमाम हुसेन की कब्र के प्रतीक रूप में बनाते हैं; और जिसके आगे बैठकर मातम करते और मासिये पढ़ते हैं । ग्यारहवें दिन जलूस के साथ ले जाकर इसे दफन किया जाता है ।

मुहा०--ताजिया ठंढा करना=मुहर्रम के आरंभिक दस दिन समाप्त हो जाने पर नियत स्थान पर ताजिया गाड़ना । (मंगल-भाषित)

(किसी का) ताजिया ठंढा होना=सारा आवेश, क्रोध या प्रयत्न विफल होने के कारण नष्ट या समाप्त हो जाना । (परिहास और व्यंग्य)

ताजियादारी--स्त्री० [फा०] मुसलमानों में एक प्रथा जिसमें वे मुहर्रम के आरम्भिक दस दिनों तक ताजिया रखकर उसके आगे मातम करते या शोक मनाते हैं ।

ताजियाना--पुं० [फा०] कोड़ा । चाबुक ।

ताजी--वि० [फा०] अरब संबंधी । अरब का । अरबी ।

पुं० १. अरब देश का घोड़ा जो बढ़िया समझा जाता है । २. एक प्रकार का शिकारी कुत्ता ।

स्त्री० अरब देश की भाषा । अरबी ।

स्त्री० हिं० 'ताजा' का स्त्री० ।

ताजीम--स्त्री० [अ०] किसी बड़े के सामने उसके आदर के लिए उठ कर खड़े होना और सम्मान प्रदर्शित करते हुए झुककर अभिवादन करना ।

ताजीमी सरदार--पुं० [फा० ताजीमः+अ० सरदार] वह बड़ा सरदार जिसके दरबार में आने पर राजा या बादशाह सम्मान प्रदर्शित करने के लिए थोड़ा उठकर खड़े हो जाते थे ।

ताजीर--स्त्री० [अ०] दंड । सजा ।

ताजीरात--पुं० [अ०] आपराधिक दंडों से संबंध रखनेवाली विधियों का संग्रह ।

ताजीरी--वि० [अ०] १. दंड या दंड-विधान संबंधी । २. जो किसी को किसी प्रकार का दंड देने के उद्देश्य से हो ।

ताजीरी पुलिस—स्त्री० [हिं०] पुलिस का वह दस्ता या सिपाहियों का दल जो ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ के लोग अधिक या प्रायः उपद्रव करते हों। (ऐसी पुलिस रखने का सारा व्यय उस स्थान के निवासियों से दंड-स्वरूप लिया जाता है।)

ताज्जुब—पुं० =तअज्जुब।

ताटंक—पुं० [सं० ताड–अंक, ब० स०, पृषो० ड—ट] १. एक तरह का करनफूल। २. छप्पय का २४ वाँ भेद। ३. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अंत में एक भगण होता है।

ताटस्थ्य—पुं० [सं० तटस्थ+ष्यञ्] तटस्थ होने की अवस्था या भाव। तटस्थता। (देखें)

ताडंक—पुं० =तॄाटंक (करनफूल)।

ताड़—पुं० [सं० ताल] १. एक प्रकार का बहुत अधिक ऊँचा और लंबा पेड़ जिसमें डालें या शाखाएँ नहीं होतीं; केवल ऊपरी सिरे पर कुछ बड़े और लंबे पत्ते होते हैं। इसी का मादक रस 'ताड़ी' कहलाता है।

पद—**ताड़पत्र**। (देखें)

२. मारना-पीटना या डाँटना-डपटना। ताड़ना। ३. ध्वनि। शब्द। ४. पर्वत। पहाड़। ५. मूर्त्ति का ऊपरी भाग या सिरा। ६. बाँह पर पहनने का टाड़ नाम का गहना। ७. डंठलों आदि का पूला। जुट्टी।

ताड़क—वि० [सं०√तड् (ताड़ना)+णिच्+ण्वुल्—अक] ताड़ना करनेवाला।

पुं० १. वधिक। २. जल्लाद।

ताड़का—स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे रामचंद्रजी ने मारा था।

ताड़का-फल—पुं० [सं० तारका-फल, ब० स०, नि० र—ड] बड़ी इलायची।

ताड़कायन—पुं० [सं० ताडक+फक्—आयन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि—पुं० [सं० ताडका-अरि, ष० त०] (ताड़का के शत्रु) रामचंद्र।

ताड़केय—पुं० [सं० ताडका+ढक्—एय] ताड़का का पुत्र, मारीच।

ताड़घ—पुं० [सं० ताल√हन् (मारना)+टक्, नि० ल—ड] प्राचीन काल में वह राज-पुरुष जो अपराधियों को कोड़े लगाता था।

ताड़घात—पुं० [सं० ताड√हन्+अण्] हथौड़े आदि से चीजें पीटकर काम करनेवाला कारीगर। जैसे—लोहार, सुनार आदि।

ताड़न—पुं० [सं०√तड्+णिच्+ल्युट्—अन] १. आघात या प्रहार करना। मारना-पीटना। २. डाँट-डपट। घुड़की, झिड़की आदि। ३. दंड। सजा। ४. गणित में गुणा करने की क्रिया। गुणन। जरब। ५. तंत्र-शास्त्र का एक विधान जिसमें किसी चीज पर मंत्र के वर्ण लिखकर वह चीज कुछ दूसरे मंत्र पढ़ते हुए किसी पर या कहीं फेंकी या मारी जाती है।

ताड़ना—स्त्री० [सं०√तड्+णिच्+युच्—अन] १. ताड़न करने अर्थात् मारने-पीटने की क्रिया या भाव। २. किसी के कार्य, व्यवहार आदि से असंतुष्ट होकर उसे सचेत करने तथा कर्तव्यपरायण बनाने के उद्देश्य से कही हुई कड़ी बात। ३. प्रहार। मार। ४. दंड। सजा। ५. किसी को दिया जानेवाला कष्ट, दुःख आदि।

स० १. मारना-पीटना। २. किसी के कार्य, व्यवहार आदि से अप्रसन्नता प्रकट करते हुए उस व्यक्ति को सचेत करना और उसका ध्यान कर्त्तव्यपालन की और आकृष्ट करना। ३. दंड या सजा देना।

स० [सं० तर्कण या ताड़न?] कुछ दूरी पर, लोगों की आँखें बचाकर या लुक-छिपकर किये जाते हुए काम को अपने कौशल या बुद्धि-बल से जान या देख लेना।

ताड़नी—स्त्री० [सं० ताडन+ङीप्] कोड़ा। चाबुक।

ताड़नीय—वि० [सं०√तड्+णिच्+अनीयर्] जिसे ताड़ना देना आवश्यक या उचित हो।

ताड़पत्र—पुं० [सं० तालपत्र] ताड़ वृक्ष के पत्ते जिन पर प्राचीन काल में ग्रन्थ, लेख आदि लिखे जाते थे।

ताड़बाज—वि० [हिं० ताड़ना+फा० बाज] जो प्रायः और सहज में कोई बात ताड़ या भाँप लेता हो।

ताड़ित—भू० कृ० [सं०√तड्+णिच्+क्त] १. जिसे ताड़ना दी गई हो या मिली हो। २. जो मारा-पीटा गया हो। ३. जिसे घुड़का या डाँटा गया हो। ४. जिसे दंड या सजा मिली हो। ५. जिसे डाँट-डपट कर या मार-पीट कर कहीं से निकाल, भगा या हटा दिया गया हो।

ताड़ी—स्त्री० [सं० √तड्+णिच्+इन्+ङीष्] १. एक प्रकार का छोटा ताड़ वृक्ष। २. एक प्रकार का गहना। ३. ताड़ के फूलते हुए डंठलों से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मादक द्रव्य के रूप में होता है।

†स्त्री० दे० 'तारी' (अरबी)।

ताडुल—वि० [सं० √तड्+णिच्+उल] ताड़ना करनेवाला।

ताड़ू—वि० [हिं० ताड़ना] (वह) जो हर बात बहुत जल्दी ताड़ या भाँप लेता हो। ताड़ने या भाँपनेवाला।

ताड्य—वि० [सं०√तड्+णिच्+यत्] १. जिसका ताड़न हो सके। ताड़ना का अधिकारी या पात्र। २. जिसे डाँटा-डपटा जा सकता हो या डाँटना-डपटना उचित हो। ३. जिसे दंड दिया जा सकता हो या दिया जाने को हो। दंडनीय।

ताड्यमान—वि० [सं०√तड्+णिच्+शानच् (कर्म में)] १. जो पीटा जाता हो। जिस पर मार पड़ती हो। २. जिसे डाँटा-डपटा जाता हो।

पुं० डंडे से बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल। ढक्का।

तात—पुं० [सं०√तन् (विस्तार)+क्त, दीर्घ, नलोप] १. पिता। बाप। २. पूज्य और बड़ा या माननीय व्यक्ति। ३. आपसदारी के लोगों, इष्ट-मित्रों के लिए आदरसूचक और प्रेमपूर्ण संबोधन।

वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम। तत्ता।

पुं० १. कष्ट। दुःख २. चिन्ता। फिकर। उदा०—तुम्ह जावउ घर आपणोइ म्हारी केही तात।—ढो० मा०।

तातगु—पुं० [सं० तात+गो (वाचक शब्द), ब० स०, ह्रस्व] चाचा।

तातन—पुं० [सं० तात√नृत् (नाचना)+ड] खंजन पक्षी। खँडरिच।

तातरी—स्त्री० [देश०] एक तरह का पेड़।

तातल—पुं० [सं० तात√ला (लाना)+क] १. संबंध में वह पूज्य और बड़ा व्यक्ति जो पिता के समान या उसके स्थान पर हो। २. बीमारी। रोग। ३. पूर्ण या पक्के होने की अवस्था या भाव। पक्कापन। पक्वता। ४. लोहे का काँटा या कील।

+वि०=तत्ता (तप्त या गरम)।

ताता†—वि०[सं० तप्त; प्रा० तत्त] [स्त्री० ताती] तपा या तपाया हुआ। बहुत गरम।

तातायेई—स्त्री०[अनु०]१. नृत्य में विशेष प्रकार से पैर रखने के बोल। २. नाच। नृत्य।

तातार—पुं०[फा०] मध्य एशिया का एक प्रदेश।

तातारी—वि०[फा०] १. तातार प्रदेश में होनेवाला। २. तातार प्रदेश-संबंधी।

पुं० तातार प्रदेश का निवासी।

स्त्री० तातार प्रदेश की भाषा।

ताति—पुं०[सं०√ताय् (पालन करना)+क्तिच्] पुत्र। लड़का।

तातील—स्त्री०[अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक—वि०[सं० तत्काल+ठञ्—इक]१. तत्काल या तुरंत का। २. उस समय का।

तात्त्विक—वि०[सं० तत्त्व+ठक्—इक]१. तत्त्व-संबंधी। २. तत्त्व से युक्त। ३. मूल सिद्धांत-संबंधी। जैसे—तात्त्विक विचार। ४. यथार्थ। वास्तविक।

पुं० वह जो तत्त्व या तत्त्वों का अच्छा ज्ञाता हो।

तात्पर्य—पुं०[सं० तत्पर+ष्यञ्]१. शब्द, पद, वाक्य आदि का मुख्य आशय। २. अभिप्राय। हेतु।

तात्पर्यार्थ—पुं०[सं० तात्पर्य-अर्थ, ष०त०] वाक्यार्थ से और शब्दार्थ से कुछ भिन्न अर्थ जो वक्ता के अभिप्राय या आशय का बोध कराता है।

तात्स्थ्य—पुं०[सं० तत्स्थ+ष्यञ्]१. एक चीज या बात के अन्तर्गत दूसरी चीज या बात रहने की अवस्था या भाव। २. तर्क-शास्त्र और साहित्य में व्यंजनात्मक अर्थ बोध का वह भेद जिसमें किसी चीज के नाम से उस चीज के अन्दर की और सब चीजों, बातों आदि का आशय ग्रहण किया जाता है। जैसे—यदि कहा जाय, 'सारा घर मेला देखने गया है।' तो उसका आशय यही माना जायगा कि घर में रहनेवाले सभी लोग या परिवार के सभी सदस्य मेला देखने गये हैं।

ताथ†—अव्य०[?]तिससे। उससे।

ताथेई—स्त्री०=तातायेई।

तादर्थ्य—पुं०[सं० तदर्थ+ष्यञ्]१. तदर्थी होने की अवस्था या भाव। २. अर्थ की एकरूपता या समानता। ३. उद्देश्य या प्रयोजन की समानता। ४. उद्देश्य। प्रयोजन।

तादात्म्य—पुं०[सं० तदात्मन्+ष्यञ्] ऐसी अवस्था जिसमें कोई एक चीज किसी दूसरी वस्तु के साथ तदात्म हो जाय या उसके साथ मिलकर उसका रूप धारण कर ले। अभेद मिश्रण या संबंध।

तादात्विक—वि० [सं०] (ऐसा राजा) जिसका खजाना खाली रहता हो। (कौ०)

तादाद—स्त्री०[अ० तअदाद] वस्तुओं, व्यक्तियों आदि की कुल इकाइयों का जोड़। संख्या।

तादृश—वि०[सं० तद्√दृश् (देखना)+कञ्] [स्त्री० तादृशी] जो उसी अर्थात् किसी इंगित या उल्लिखित वस्तु, व्यक्ति आदि के समान दिखाई देता हो। उसके समान। वैसा।

ताधा—स्त्री० दे०'तातायेई'।

तान—स्त्री०[सं०√तन् (विस्तार)+घञ्] १. तनने या तानने अथवा किसी ओर खिंचे हुए होने या खींचे जाने की अवस्था या भाव। २. वह चीज जो किसी दूसरी चीज के अंगों को कस या खींचकर आपस में मिलाये रखती हो और उन्हें एक दूसरे से अलग न होने देती हो। जैसे—पलंग, हौदे आदि में अन्दर की ओर मजबूती के लिए लगाये हुए लोहे के छड़ 'तान' कहलाते हैं। ३. नदी या समुद्र की तरंग या लहर जो नावों को किसी एक ओर ले जाती है। ४. कोई ऐसी चीज या बात जिसका ज्ञान इंद्रियों से होता हो।

पद—तान की जान=किसी चीज या बात का मूल तत्त्व या सार।

५. कंबल बुनने के समय उसमें लगनेवाला ताना। (गडेरिए) ६. संगीत में गाने-बजाने का वह अंग जिसमें सौन्दर्य लाने के लिए बीच-बीच में कुछ स्वरों को खींचते हुए अर्थात् अधिक समय तक उतार-चढ़ाव के साथ उच्चारण करते हुए कलात्मक रूप से उनका विस्तार किया जाता है।

विशेष—आज-कल व्यवहारतः गवैयों में दो प्रकार की तानें प्रचलित हैं। एक तो हलक (या गले) की तान जो बहुत ही स्पष्ट रूप में गले से निकाली या ली जाती है और जो विशेष अभ्यास-साध्य होती है। दूसरी जबड़े की तान जिसमें गले पर बहुत थोड़ा जोर पड़ता है और इसी लिए जो निम्न कोटि की मानी जाती है।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—तान उड़ाना=यों ही मन में मौज आने पर कुछ गाने लगना। **तान तोड़ना**=संगीत का अभ्यास न होने पर भी तान लेते हुए गाना। (व्यंग्य) **(किसी पर) तान तोड़ना**=किसी को अपने क्रोध, रोष,व्यंग्य आदि का लक्ष्य बनाना। **तान लगाना या लेना**=कलात्मक ढंग से गाते हुए स्वरों के उतार-चढ़ाव आदि का विस्तार करना।

†पुं०[?]एक प्रकार का पेड़।

तान-तरंग—स्त्री०[ष०त०] संगीत में, कलात्मक रूप से होनेवाला अनेक प्रकार की तानों का उपयोग या प्रयोग।

तानना—स० [सं०√तन् (विस्तृत करना या फैलाना)]१. किसी वस्तु के एक या अनेक सिरों को इस प्रकार उपयुक्त दिशा या दिशाओं में खींचना कि उसमें किसी प्रकार का झोल, बल या सिकुड़न न रह जाय। जैसे—(क) ताना तानना, रस्सी तानना। (ख) छाया आदि के लिए चँदोआ तानना। २. कोई चीज ठीक तरह से खड़ी करने के लिए अथवा खड़ी की हुई वस्तु को गिरने से रोकने के लिए उसे कई ओर से रस्सियों आदि से खींचकर बाँधना। जैसे—(क) खेमा या तंबू तानना। (ख) रामलीला में मेघनाद, रावण आदि के कागजी पुतले तानना। ३. किसी प्रकार का खिंचाव उत्पन्न करनेवाली कोई क्रिया करना। जैसे—भौंहें तानना। ४. आघात, प्रहार आदि करने के लिए कोई चीज ऊपर उठाना। जैसे—डंडा, मुक्का या लाठी तानना। ५. कोई चीज किसी दूसरी चीज के ऊपर फैलाना। जैसे—सोते समय शरीर पर चादर तानना।

मुहा०—तान कर सोना=किसी बात से विलकुल निश्चिन्त हो जाना। किसी प्रकार की आशंका, चिंता या भय से रहित होकर रहना।

६. किसी को हानि पहुँचाने या दंड देने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित या खड़ी करना। ७. बलपूर्वक किसी ओर पहुँचाना, प्रवृत्त

करना या भेजना। जैसे—अदालत ने उन्हें साल भर के लिए तान दिया; अर्थात् जेल भेज दिया। ९. किसी व्यक्ति को ऐसा परामर्श देना कि वह दूसरे की ओर प्रवृत्त न हो या उससे मेल-जोल की बात न करे। जैसे—आप ने ही उन्हें तान दिया; नहीं तो अब तक समझौता हो जाता।

तानपूरा—पुं०[सं० तान+हिं० पूरना] सितार के आकार का पर उससे कुछ बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा जिसका उपयोग बड़े-बड़े गवैये गाने के समय स्वर का सहारा लेने के लिए करते हैं।

तान बाना—पुं०=ताना-बाना।

तानव—पुं०[सं० तनु+अण्] तनु अर्थात् कृश होने की अवस्था या भाव। तनुता।

तानसेन—पुं० मुगल सम्राट् अकबर के दरबार का प्रसिद्ध गवैया त्रिलोचन मिश्र जो संगीतज्ञ स्वामी हरिदास का शिष्य था और जिसे अकबर ने तानसेन की उपाधि से विभूषित किया था; और जो अन्त में मुहम्मद गोंस नामक मुसलमान फकीर से दीक्षित हो मुसलमान हो गया था। मध्य तथा आधुनिक युग में वह भारत का सर्वश्रेष्ठ गायक माना जाता है। उसकी कब्र ग्वालियर में है।

ताना—पुं०[हिं० तानना]१. तानने की क्रिया या भाव। २. तनी या तानी हुई वस्तु। ३. करघे की बुनाई में वे सूत या तागे जो लंबे बल में ताने जाते हैं।

विशेष—जो सूत या तागे चौड़ाई के बल बुने जाते हैं, उन्हें 'बाना' कहते हैं।

क्रि० प्र०—तानना।—फैलाना।—लगाना।

पद—ताना-बाना। (दे०)

३. कालीन, दरी आदि बुनने का करघा।

स०[हिं० ताव+ना (प्रत्य०)]१. आग से अथवा किसी और प्रक्रिया से किसी चीज को खूब गरम करना। तपाना। जैसे—(क) तंदूर ताना। (ख) घी या मक्खन ताना। २. परीक्षा करने के लिए धातुओं आदि को तपाना। ३. किसी को दुःखी या संतप्त करना।

स० [हिं० तवा] गीली मिट्टी या आटे आदि से ढक्कन चिपकाकर किसी बरतन का मुँह बंद करना। मूँदना।

पुं०[अ० तअनऽ] ऐसा कथन जिसमें किसी को उसके द्वारा किए हुए अनुचित या अशोभनीय व्यवहार का उसे स्पष्ट किंतु कटु शब्दों में स्मरण कराकर लज्जित किया जाय।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।

ताना-पाई—स्त्री०[हिं० ताना+पाई=ताने का सूत फैलाने का ढाँचा] १. पाइयों पर ताना तानने या फैलाने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार पाइयों पर फैलाए हुए ताने को बार-बार इधर-उधर आ जा कर कूची आदि से साफ करना तथा सीव में लाना। ३. बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

ताना-बाना—पुं०[हिं० ताना+बाना]बुनाई के समय लंबाई के बल ताने या फैलाये जानेवाले और चौड़ाई के बल बुने जानेवाले सूत।

मुहा०—**ताना-बाना करना**=बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

ताना-रीरी—स्त्री०[हिं० तान+अनु० रीरी]साधारण गाना।

तानाशाह—पुं०[हिं० तनना या तानना+फा० शाह]१. अब्दुल हसन नामक एक स्वेच्छाचारी बादशाह का लोक प्रसिद्ध नाम। २. ऐसा शासक जो मनमाने ढंग से सब काम करता हो और किसी प्रकार के नियम या बंधन न मानता हो। ३. ऐसा व्यक्ति जो अपने अधिकारों का बहुत दुरुपयोग करता हो।

तानाशाही—स्त्री०[हिं० तानाशाह] तानाशाह होने की अवस्था या भाव। मनमाना आचरण या शासन करने की वृत्ति। स्वेच्छाचारी।

तानी—स्त्री०[हिं० ताना] उन सब सूतों, तागों का समूह जो करघे आदि में कपड़ा बुनते समय लंबाई के बल लगाये जाते हैं।

स्त्री०=तनी (बंद)।

तानूर—पुं०[सं० √तन् (विस्तार) + ऊरण्] १. पानी का भँवर। २. वायु का भँवर। चक्रवात। बवंडर।

तानो—पुं०[देश०] ऐसा भूखंड जिसमें कई खेत होते हैं। चक।

तान्व—पुं०[सं० तनु+अव्, गुणाभाव]१. पुत्र। बेटा। २. तनु नामक ऋषि के पुत्र एक प्राचीन ऋषि।

ताप—पुं०[सं०√तप् (तपना)+घञ्]१. एक प्रसिद्ध ऊर्जा या शक्ति जो अग्नि, घर्षण अथवा कुछ रासायनिक क्रियाओं के द्वारा उत्पन्न होती है और जिसके प्रभाव से चीजें गलती, जलती, पिघलती, फैलती अथवा भाप बनकर हवा में उड़ने लगती हैं। (हीट) २. गरमी। तपिश। ३. आँच। आग। ४. ज्वर। बुखार। ५. कोई ऐसा मानसिक या शारीरिक कष्ट जिससे प्राणी दुःखी होता हो।

विशेष—हमारे यहाँ धार्मिक क्षेत्रों में ताप तीन प्रकार के कहे गये हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। (देखें ये तीनों शब्द)

तापक—वि० [सं०√तप्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. ताप या गर्मी उत्पन्न करनेवाला। २. ताप या कष्ट देनेवाला।

पुं०१. रजोगुण। २. ज्वर। ताप। बुखार। ३. एक वैद्युतिक उपकरण जो चीजों या वातावरण को गरम करता है। (हीटर)

तापकी—वि०[सं० तापक] ताप उत्पन्न करनेवाला। उदा०—तापकी तरनि मानौं मरनि करत है।—सेनापति।

ताप-क्रम—पुं०[ष०त०] किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अवस्थाओं में घटता-बढ़ता रहता है।

ताप-क्रम-यंत्र—पुं०[ष०त०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या पदार्थ के तापक्रम के घटने या बढ़ने का पता चलता है। (बैरोमीटर)

ताप-चालक—पुं०[ष०त०]ऐसा पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच जाय।

तापचालकता—स्त्री०[सं० तापचालक+तल्—टाप्] वस्तुओं का वह गुण जिससे वे ताप-चालक होती हैं।

ताप-तरंग—स्त्री०[ष०त०] वातावरण की वह विशिष्ट स्थिति जिसमें कुछ समय के लिए हवा बहुत गरम और तेज हो जाती है और गरमी बहुत बढ़ जाती है। (हीट वेव)

तापतिल्ली—स्त्री०[हिं० ताप+तिल्ली] एक रोग जिसमें पेट के अन्दर की तिल्ली या प्लीहा में सूजन होती है और इसी लिए वह कुछ बड़ी हो जाती है तथा ज्वर उत्पन्न करती है।

तापती—स्त्री०[सं०]१. सूर्य की एक कन्या का नाम। २. ताप्ती नदी जो सतपुड़ा पर्वत से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है।

तापत्य—वि०[सं० तपती+ष्यञ्] तापती-संबंधी

पुं० अर्जुन।

ताप-त्रय—पुं०[ष०त०] भारतीय धार्मिक क्षेत्रों में आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनों ताप।

ताप-दुःख—पुं०[मध्य०स०] पातंजल दर्शन के अनुसार एक तरह का दुःख।

तापन—वि०[सं० √तप् (तपना)+णिच्+ल्यु—अन] १. ताप या गरमी देनेवाला। २. ताप या कष्ट देनेवाला।

पुं० १. तप्त करने या तपाने की क्रिया या भाव। २. सूर्य। ३. सूर्यकांत मणि। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक जो विरही प्रेमी को ताप या कष्ट पहुँचाता है। ५. एक नरक का नाम। ६. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जो शत्रु को ताप या कष्ट पहुँचाने के लिए किया जाता है। ७. आक का पौधा। मदार। ८. ढोल।

तापना—अ०[सं० तापन]१. अधिक सरदी लगने पर आग जलाकर उसके ताप से अपना शरीर या कोई अंग गरम करना। २. तपस्या आदि के प्रसंग में, ताप सहने के लिए आग जलाकर उसके पास या सामने बैठना। जैसे—धूनी तापना, पंचाग्नि तापना।

स०१. आग पर रखकर गरम करना या तपाना। २. जलाना। ३. बहुत बुरी तरह से व्यय करते हुए धन-संपत्ति नष्ट करना। जैसे—दो-तीन बरस के अन्दर ही उन्होंने लाखों रुपए फूँक ताप डाले।

विशेष—ऐसे अवसरों पर मुख्य आशय यही होता है कि जिस प्रकार शीत का कष्ट दूर करने और गरमी का सुख लेने के लिए लकड़ियाँ जलाते हैं उसी प्रकार धन को लकड़ियों की तरह जलाकर उसकी गरमी या ताप का सुख भोगा गया है।

४. दे० 'तपाना'।

तापनिक—वि०[सं० तापन+ठक्—इक]१. तापने या तपाने से संबंध रखनेवाला। २. तापन या तपाने के रूप में होनेवाला।

तापनीय—वि०[सं० तपनीय+अण्] सोनहला।

पुं० एक उपनिषद् का नाम।

ताप-मान—पुं०[ष०त०] शरीर अथवा किसी पदार्थ में की अधिक या कम गरमी की कोई विशिष्ट स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार के उपकरणों से जानी जाती है। (टेम्परेचर)

तापमान-यंत्र—पुं० =तापमापक-यंत्र।

ताप-मापक-यंत्र—पुं०[सं०ताप-मापक,ष०त०, तापमापक-यंत्र,कर्म०स०] वह यंत्र या उपकरण जिससे शरीर, पदार्थ, वातावरण आदि का तापमान जाना जाता है। (थरमामीटर)

तापमापी—पुं० =तापमापक-यंत्र।

तापल—पुं०[सं० ताप] क्रोध। (डिं०)

तापलेखी (खिन्)—पुं०[सं० ताप√लिख् (लिखना)+णिनि] एक प्रकार का तापमापक-यंत्र जिसमें ताप मात्रा के घटने-बढ़ने का क्रम आप से आप अंकित होता रहता है। (थरमोग्राफ)

ताप-व्यंजन—पुं०[मध्य०स०] साधु के वेश में रहनेवाला गुप्तचर।

तापश्चित—पुं०[सं० तपस्-चित्, स०त०, +अण्] एक प्रकार का यज्ञ।

तापस—पुं०[सं० तपस्+ण] [स्त्री० तापसी] १. तपस्या करनेवाला साधु। तपस्वी। २. तमाल। ३. तेजपत्ता। ४. दमनक। दौना। ५. एक प्रकार की ईख। ६. बगला (पक्षी)।

तापसक—पुं०[तापस+कन्] १. छोटा तपस्वी। २. तपस्वी। (व्यंग्य)

तापसज—पुं०[सं० तापस√जन् (उत्पन्न होना)+ड] तेजपत्ता।

तापस-तरु—पुं०[मध्य०स०] इंगुदी या हिंगोट का पेड़।

तापस-द्रुम—पुं० [सं० मध्य स०] इंगुदी का पेड़।

तापस-प्रिय—वि०[ष०त०]१. जो तपस्वियों को प्रिय हो। २. जिसे तपस्वी प्रिय हों।

पुं०१. इंगुदी या हिंगोट का पेड़। २. चिरौंजी का पेड़।

तापस-प्रिया—स्त्री०[ष०त०] १. दाख। अंगूर। २. मुनक्का।

तापस-वृक्ष—पुं०[मध्य०स०] इंगुदी का पेड़।

तापसह*—पुं०[सं० तापस] तपस्वी। उदा०—श्राप दियौ तापसह।—चंदवरदाई।

तापसी—वि०[सं० तापस+ङीप्]१. तापस-संबंधी। २. तपस्या-संबंधी।

स्त्री०१. तपस्विनी। २ तपस्वी की स्त्री।

तापसेक्षु—पुं०[तापस-इक्षु, मध्य०स०] एक प्रकार की ईख।

तापस्य—पुं०[सं० तापस+ष्यञ्]१. तापस धर्म। ३. संन्यास। वैराग्य।

ताप-स्वेद—पुं० [तृ०त०] वैद्यक में उष्णता पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना। जैसे—गरम बालू या गरम कपड़े से सेंककर लाया जानेवाला पसीना।

तापहरी—स्त्री०[सं० ताप√हृ (हरना)+ट+ङीप्] एक तरह का व्यंजन। (भाव प्रकाश)

तापा†—पुं०=टापा।

तापायन—पुं०[सं० ताप+फक्—आयन] वाजसनेयी शाखा का एक भेद।

तापावरोध—पुं०[सं० ताप-अवरोध, ष०त०] किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व जो उसे ताप सहन करने की शक्ति देता है। (रिफ्रैक्टरीनेस)

तापावरोधक—पुं०[सं० ताप-अवरोधक, ष०त०] ताप का प्रभाव रोकने या सहन करनेवाला। (रिफ्रैक्टरी)

तापिंछ—पुं० दे० 'तापिंज'।

तापिंज—पुं०[सं० तापिन्√जि (जीतना)+ड] १. सोनामक्खी। २. श्याम तमाल।

तापिच्छ—पुं० [सं० तापिन्√छद् (ढकना)+ड, पृषो० सिद्धि] १. तमाल का वृक्ष। २. उक्त वृक्ष का फूल।

तापित—भू० कृ०[सं०√तप् (तपना)+णिच्+क्त] जो तपाया गया हो। तप्त। तापयुक्त। २. जिसे कष्ट या दुःख पहुँचाया गया हो।

तापी (पिन्)—वि० [सं०√तप्+णिच्+णिनि] १. ताप देनेवाला। २. [ताप+इनि] जिसमें ताप हो। ताप से युक्त। तप्त।

पुं० बुद्धदेव का एक नाम।

स्त्री०[√तप्+णिच्+अच्—ङीष्] १. सूर्य की एक कन्या। २. तापती या ताप्ती नदी जो सूरत के समीप समुद्र में गिरती है। ३. [illegible]ुना नदी।

तापीज—पुं०[सं० तापी√जन् (पैदा होना)+ड] सोनामाखी। माक्षिक धातु।

तापीय—वि०[सं० ताप+[illegible]—ईय] ताप-संबंधी। ताप का।

तापेंद्र—पुं०[सं० ताप[illegible]द्र, ष०त०] सूर्य।

तापोपचार—पुं०[सं०ताप-उपचार, ष०त०] कोई विशेष प्रकार का प्रभाव

उत्पन्न करने के लिए कोई चीज आग पर चढ़ाना या गरम करना। (हीट ट्रीटमेंट)

ताप्ती—स्त्री०=तापती (नदी)।

ताप्य—पुं०[सं० ताप+यत्] सोना-मक्खी।

ताफ्ता—पुं०[फा० ताफ़्तः] एक तरह का रेशमी कपड़ा जिस पर प्रकाश की किरणें पड़ने से कई रंग झलकते हैं। धूपछाँह।

ताब—स्त्री०[सं० ताप से फा०] १. ताप। गरमी। २. चमक। दीप्ति। जैसे—मोती या हीरे की ताब। ३. शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—अब तो उनमें उठने-बैठने की भी ताब नहीं है। ४. कष्ट, दुःख आदि सहने की शक्ति। ५. विरोध, सामना आदि करने की शक्ति। मजाल। जैसे—किसी की क्या ताब है जो तुम्हारी तरफ़ आँख उठाकर भी देखे।

मुहा०—(किसी काम या बात की) ताब लाना=सहने या सामना करने का साहस करना।

ताबड़-तोड़—अव्य० [हिं० ताब+ तोड़ना] कोई घटना या बात होने पर उसके प्रतिकार, समर्थन आदि के उद्देश्य से, तत्काल। तुरंत।

ताबा—वि०=ताबे।

ताबूत—पुं०[अ०] वह संदूक जिसमें मृत शरीर बंद करके गाड़े जाते हैं।

ताबे—वि०[अ० ताबअ]१. जो किसी के अधीन या वश में हो। मातहत। २. अनुगामी या अनुवर्ती।

ताबेदार—वि०[अ० ताबअ+फा० दार] [भाव० ताबेदारी] सब प्रकार से आज्ञा और वश में रहनेवाला। आज्ञाकारी।

पुं० नौकर। सेवक।

ताबेदारी—स्त्री०. [फा०] १. ताबेदार अर्थात् आज्ञाकारी होने की अवस्था या भाव। २. तुच्छ कामों की नौकरी। चाकरी। ३. टहल। सेवा।

तामंस†—पुं०=तामस।

ताम—पुं० [सं०√तम् (खेद करना) + घञ्] १. दोष। विकार। २. चित्त या मन का विकार। मनोविकार। ३. कष्ट। तकलीफ। ४. क्लेश। व्यथा। ५. ग्लानि।

वि० १. डरावना। भीषण। विकराल। २. दुःखी। पीड़ित। ३ परेशान। व्याकुल।

पुं०[सं० तामस]१. क्रोध। रोष। २. अन्धकार। अँधेरा।

†अव्य०[सं० तु ?] तब। तो।

†वि०[सं० ताम्र] ताँबे की तरह का लाल।

तामजान (म)—पुं०[हिं० थामना+सं० यान=सवारी] एक तरह की खुली पालकी (सवारी) जिसे दो या चार कहार कन्धे पर लेकर चलते हैं।

तामड़ा—वि०[सं० ताम्र, हिं० ताँबा+डा (प्रत्य०)] ताँबे के रंग का। लाली लिये हुए भूरा।

पुं० १. ताँबे के रंग का-सा स्वच्छ आकाश। २. गंजी खोपड़ी जिसका रंग प्रायः ताँबे का-सा होता है।

मुहा०—तामड़ा निकल आना=सिर के बाल झड़ जाने के कारण खोपड़ी गंजी होना।

३. उक्त रंग का एक प्रकार का मोटा देशी क़ागज। ४. भट्ठे में पकी हुई वह ईंट जिसका रंग अधिक ताप लगने के कारण कुछ-कुछ काला पड़ गया हो।

पुं० [सं० ताम्रश्म] ताँबें के रंग का एक प्रकार का रत्न। पद्मराग मणि।

तामना—स०[देश०] खेत जोतने से पहले उसमें की घास आदि खोदकर निकालना ।

तामर—पुं०[सं० ताम√रा (दान)+क]१. पानी। २. घी।

तामरस—पुं०[सं० तामर√सस् (सोना)+ड]१. कमल। २. सोना। स्वर्ण। ३. धतूरा। ४. ताँबा। ५. सारस पक्षी। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो जगण और तब एक यगण होता है।

तामरसी—स्त्री०[सं० तामरस+ङीप्] वह तालाब जिसमें कमल खिले या खिलते हों।

तामलकी—स्त्री०[सं०] भूम्यामलकी। भू-आँवला।

तामलूक—पुं०[सं० ताम्रलिप्त] बंगाल राज्य के मेदिनीपुर जिले के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम।

तामलेट—पुं०[अं० टंबलर] टीन का गिलास जिस पर चमकदार रोगन या लुक लगाया गया हो।

तामलोट—पुं०=तामलेट ।

तामस—वि०[सं० तमस्+अण्]१. जिसमें तमोगुण की अधिकता या प्रधानता हो। जैसे—तामस स्वभाव।

पुं०१. अंधकार। अँधेरा। २. अज्ञान और उससे उत्पन्न होनेवाला मोह। ३. दुष्ट प्रकृति का मनुष्य। खल। ४. क्रोध। गुस्सा। ५. सर्प। साँप। ६. उल्लू। ७. पुराणानुसार चौथे मनु का नाम। ८. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ९. दे० 'तामस-कीलक'।

तामस-कीलक—पुं० [उपमि०स०] एक प्रकार के केतु जो राहु के पुत्र माने और संख्या में ३३ कहे गये हैं, इनका चन्द्रमंडल में दिखाई पड़ना शुभ और सूर्यमंडल में दिखाई पड़ना अशुभ माना जाता है।

तामस-मद्य—पुं०[कर्म० स०] कई बार की खींची हुई शराब जो बहुत तेज हो जाती है।

तामस-वाण—पुं०[कर्म० स०] एक तरह का शस्त्र।

तामसिक—वि० [सं० तमस्+ठञ्—इक] १. अंधकार संबंधी। २. तमोगुण संबंधी।

तामसी—वि० [सं० तामस+ङीप्] तमोगुण संबंधी। तामसिक। जैसे—तामसी प्रकृति।

स्त्री०१. अँधेरी रात। २. महाकाली। ३. जटामासी पौधा। बालछड़। ४. पुराणानुसार माया फैलाने की एक कला या विद्या जो शिव ने मेघनाद के निकुंभिला यज्ञ से प्रसन्न होकर उसे सिखाई थी।

तामस्स—पुं०=तामस।

तामा†—पुं०[सं० ताम्र] ताँबा नामक धातु।

तामिल—पुं०, स्त्री०=तमिल।

तामिस्र—पुं०[सं० तमिस्रा+अण्]१. क्रोध, द्वेष, राग आदि दूषित और तामसिक मनोविकार। २. पुराणानुसार अविद्या का वह रूप जो भोग-विलास की पूर्ति में बाधा पड़ने पर उत्पन्न होता है और जिससे मनुष्य क्रोध, वैर आदि करने लगता है।

ताम्री—स्त्री०[हिं० ताँबा]१. ताँबे का तसला। २. एक प्रकार का बरतन जिससे मध्ययुग में द्रव पदार्थ नापे जाते थे।

तामीर—स्त्री०[अ०] [वि० तामीरी, बहु० तामीरात]१. इमारत या भवन आदि बनाने का काम। निर्माण। २. इमारत। भवन। ३. रचना।

तामील—स्त्री०[?]१. अमल में लाने अर्थात् कार्य रूप में परिणत करने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा, निर्णय आदि का निर्वहण या पालन।

तामेसरी—स्त्री० [देश०] गेरू के मेल से बनाया हुआ एक तरह का तामड़ा रंग।

तामोल†—पुं०१.=तांबूल।२.=तमोल।

ताम्मुल—पुं० [अ० तअम्मुल] १. सोच-विचार। आगा-पीछा। संकोच। २. देर। बिलंब।

ताम्र—पुं०[सं०√तम् (आकांक्षा)+रक, दीर्घ]१. एक प्रसिद्ध धातु। ताँबा। २. एक प्रकार का कुष्ठ रोग या कोढ़।

ताम्रक—पुं०[सं० ताम्र+कन्] ताँबा।

ताम्रकर्णी—स्त्री०[सं० ब०स०, ङीष्] पश्चिम के दिग्गज अंजन की पत्नी का नाम।

ताम्रकार—पुं०[सं० ताम्र√कृ (करना)+अण्] ताँबे के बरतन आदि बनानेवाला कारीगर।

ताम्रकूट—पुं०[ष० त०] तमाकू का पौधा।

ताम्रकृमि—पुं०[मध्य० स०] इन्द्रगोप या बीरबहूटी नामक कीड़ा।

ताम्रगर्भ—पुं०[ब०स०] तूतिया।

ताम्रचूड़—पुं० [ब० स०] १. कुकरौंधा नामक पौधा। २. कुक्कुट। मुरगा।

ताम्र-दुग्धा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] छोटी दुद्धी।

ताम्र-पट्ट—पुं०[मध्य०स०] ताम्र-पत्र।

ताम्र-पत्र—पुं०[ष० त०]१. ताँबे का पत्तर। २. ताँबे का वह पत्तर जिस पर स्थायी रूप से रहने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण बात लिखी गई हो।

विशेष—प्राचीन काल में प्रायः ताँबे के पत्तर पर अक्षर खोदकर दान-पत्र, विजय-पत्र आदि लिखे जाते थे जो अब तक कहीं-कहीं मिलते और ऐतिहासिक शोधों में सहायक होते हैं।

ताम्र-पर्णी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्]१. छोटा पक्का तालाब। बावली। २. दक्षिण भारत की एक छोटी नदी।

ताम्र-पल्लव—पुं०[ब०स०] अशोक वृक्ष।

ताम्रपाकी(किन्)—पुं०[सं०ताम्र-पाक, कर्म०स०,+इनि] पाकर का पेड़।

ताम्र-पादी—स्त्री० [ब०स०, ङीष्] लाल रंग की लज्जालु लता। हंसपदी।

ताम्र-पुष्प—पुं०[ब०स०] लाल फूल का कचनार।

ताम्र-पुष्पिका—स्त्री०[ब०स०, कप्—टाप्,—इत्व] निसोथ।

ताम्र-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] १. धँव का पेड़। धातकी। २. पाढ़र का पेड़। पाटल।

ताम्र-फल—पुं०[ब०स०] अंकोल का वृक्ष। टेरा।

ताम्र-मूला—स्त्री०[ब०स०, टाप्]१. जवासा। धमासा। २. छूई-मूई। लज्जावंती। ३. कौंछ। केवाँच।

ताम्र-युग—पुं०[मध्य०स०] इतिहास का वह आरंभिक युग जब लोग ताँबे के औजार, पात्र आदि काम में लाया करते थे।

विशेष—आधुनिक पुरातत्त्व-विदों के अनुसार यह युग लौह-युग से पहले और पत्थर युग के बाद का है।

ताम्रलिप्त—पुं०[सं०] तमलूक। (दे०)

ताम्र-वर्ण—वि०[ब०स०]१. तामड़ा रंग का। २. लाल रंग का। रक्त-वर्ण का।

पुं०१. पुराणानुसार सिंहल द्वीप का पुराना नाम। २. वैद्यक में, मनुष्य के शरीर पर की चौथी त्वचा।

ताम्र-वर्णा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] गुड़हर का पेड़। अड़हुल।

ताम्र-वल्ली—स्त्री०[कर्म०स०]१. मजीठ। २. चित्रकूट के आस-पास होनेवाली एक प्रकार की लता।

ताम्रबीज—पुं०[ब०स०] कुलथी।

ताम्र-वृंत—पुं०[ब०स०] कुलथी।

ताम्र-वृंता—पुं०[ब०स०, टाप्] कुलथी।

ताम्र-वृक्ष—पुं०[कर्म०स०]१. कुलथी। २. लाल चन्दन का वृक्ष।

ताम्रशिखी(खिन्)—पुं०[सं० ताम्रा, शिखा कर्म०स०,+इनि] मुरगा।

ताम्र-सार—पुं०[ब०स०] लाल चंदन का वृक्ष।

ताम्रसारक—पुं०[सं० ताम्रसार+कन्] १. लाल चंदन का पेड़। २. [ब०स०, कप्] लाल खैर।

ताम्रा—स्त्री०[सं० ताम्र+टाप्]१. सिंहली पीपल। २. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को ब्याही थी और जिसके गर्भ से पाँच कन्याएँ उत्पन्न हुई थीं।

ताम्राक्ष—पुं० [ताम्र-अक्षि, ब० स०, षच् समा०] कोकिल।

वि० लाल आँखोंवाला।

ताम्राभ—पुं० [ताम्रा-आभा, ब० स०] लाल चंदन।

ताम्रार्द्ध—पुं० [ताम्र-अर्घ, ब० स०] काँसा।

ताम्राश्म (न्)—पुं० [ताम्र-अश्मन्, कर्म० स०] पद्मराग मणि।

ताम्रिक—पुं० [सं० ताम्र+ठञ्—इक] वह जो ताँबे के बरतन आदि बनाता हो।

ताम्रिका—स्त्री० [सं० ताम्रिक+टाप्] गुंजा। घुंघची।

ताम्रिमा (मन्)—स्त्री० [सं० ताम्र+इमनिच्] ताँबे का रंग।

ताम्री—स्त्री० [सं० ताम्र+अण्+ङीप्] एक तरह का ताँबे का बाजा।

ताम्रेश्वर—पुं० [ताम्र-ईश्वर, ष० त० ?] ताँबे की भस्म।

ताम्रोपजीवी (विन्)—पुं० [सं० ताम्र+उप√जीव् (जीना)+णिनि] १. वह जिसकी जीविका का साधन ताँबा हो। ताँबे का रोजगारी। २. कसेरा।

तायँ*—अव्य० १. से। २. तक।

ताय*—पुं० १.=ताप। २.=ताव।

सर्व० = ताहि (उसे)।

तायत—स्त्री० [अ० इताअत]१. आज्ञाकारिता। २. चेष्टा। प्रयत्न। (क्व०)

तायदाद†—स्त्री० = तादाद।

तायना†—स०=तानना (तपाना)।

तायनि*—स्त्री० [हिं० तायना=तपाना] १. ताने अर्थात् तपाने की

क्रिया या भाव। २. तपने की अवस्था या भाव। ३. दुःख। व्यथा।

तायफा—पुं० [अ० तायफ़ः=गरोह या दल] नाचने-गाने आदि का व्यवसाय करनेवाले लोगों का संघटित दल। जैसे--भाँड़ों या रंडियों का तायफा।

स्त्री० नाचने-गाने का व्यवसाय करनेवाली वेश्या। तवायफ।

ताया—पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] संबंध के विचार से पिता का बड़ा भाई।

तार—वि० [सं०√तॄ (विस्तार, तरना)+णिच्+अच्] १. जोर का। ऊँचा। जैसे—तार ध्वनि या स्वर। २. चमकता हुआ। प्रकाशमान। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. स्वादिष्ठ। ५. साफ। स्वच्छ। ६. बहुत कम या थोड़ा। अल्प (क्व०) उदा०--काँचा भड़ाँ कसूर पिण, किलाँ कसूर न तार।—बाँकीदास।

पुं० ऊँचाई और नीचाई अथवा कोमलता और तीव्रता के विचार से ध्वनि या स्वर की कोई स्थिति। (पिच)

पुं० [सं० तारा] १. तारा। नक्षत्र। २. आँख की पुतली। ३. ज्योति। प्रकाश। उदा०—तेज कि रतन कि तार कि तारा।—प्रिथीराज। ४. ओंकार। प्रणव। ५. शिव। ६. विष्णु। ७. असल या सच्चा मोती। ८. किनारा। तट। ९. राम की सेना का एक बंदर जो तारा का पिता था और बृहस्पति के अंश से उत्पन्न हुआ था। १०. सांख्य के अनुसार एक प्रकार की गौण सिद्धि जो गुरु से विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन करने पर प्राप्त होती है। ११. अठारह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त। १२. संगीत के तीन सप्तकों (सातों स्वरों के समूहों) में से अंतिम और सब से ऊँचा सप्तक जिसका उच्चारण कंठ से आरंभ होकर कपाल के भीतरी स्थानों तक होता है। इसे 'उच्च' भी कहते हैं।

पुं० [सं० करताल] करताल या मँजीरा नाम का बाजा।

पुं० [सं० ताटंक] कान में पहनने का ताटंक नाम का गहना।

*पुं० [सं० ताड़न] १. डाँट-फटकार। २. डर। भय।

पुं० [फा०] डोरा। तागा। सूत।

मुहा०—तार तार करना=कपड़े आदि के इस प्रकार टुकड़े-टुकड़े करना कि उसके तागे या सूत तक अलग-अलग हो जायँ। धज्जियाँ उड़ाना।

३. किसी धातु से तैयार किया हुआ डोर या लंबे तागेवाला रूप। जैसे—चाँदी या सोने का तार, सारंगी या सितार का तार।

क्रि० प्र०—खींचना।

मुहा०—तार दबकना=गोटा, पट्ठा आदि तैयार करने के लिए चाँदी या सोने का तार पीटकर चिपटा और चौड़ा करना।

४. धातु का वह पतला लंबा खंड जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार आदि भेजे जाते हैं। जैसे—सारे भारत में तारों का जाल फैला हुआ है। ५. उक्त के द्वारा भेजा जानेवाला समाचार अथवा वह कागज जिस पर उक्त समाचार लिखा रहता है। जैसे—उनके लड़के के व्याह का तार आया है।

मुहा०—तार देना=तार के द्वारा किसी के पास कोई समाचार भेजना।

६. सोने-चाँदी के थोड़े से गहने। (तुच्छता-सूचक) जैसे—घर में जो चार तार थे, वे बेचकर लड़की के व्याह में लगा दिये। ७. चाँदी। रूपा। (सुनार) ८. डोरी। रस्सी। (लश०) ९. किसी काम या बात का बराबर कुछ दूरी या समय तक चलता रहनेवाला क्रम। ताँता। सिलसिला। जैसे—आज कई दिनों से पानी का तार लगा है।

क्रि० प्र०—टूटना।—बँधना।—लगना।

१०. किसी प्रकार की उद्देश्य-सिद्धि का सुभीता या सुयोग। जैसे-वहाँ तुम्हारा तार न लगेगा।

पद—तार-घाट। (देखें)

मुहा०—तार जमना, बँधना बैठना या लगना=कार्य-सिद्धि का सुभीता या सुयोग होना।

११. पहनी जानेवाली चीजों का ठीक नाप। जैसे--इस लड़के के तार का एक कुरता ले आओ। १२. भेद। रहस्य। उदा०--जंत्र-मंत्र औ वेद तंत्र में सबै तार कौ तार।—हरिराम व्यास।

तारक—वि० [सं०√तॄ+णिच्+ण्वुल्-अक] तारने या तैरानेवाला। २. भव-सागर से उद्धार करनेवाला। जैसे—तारक मंत्र।

पुं० १. आकाश का तारा। नक्षत्र। २. आँख की पुतली। ३. आँख। ४. राम का छः अक्षरोंवाला यह मंत्र 'ओं रामाय नमः' जिसे सुनने से मनुष्य का मोक्ष होना माना जाता है। ५. इन्द्र का शत्रु एक असुर जिसे नारायण ने नपुंसक का रूप धरकर मारा था। ६. एक असुर जिसे कार्तिकेय ने मारा था और जो तारकसुर के नाम से प्रसिद्ध है। ७. भिलावाँ। ८. नाविक। मल्लाह। ९. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण और एक गुरु वर्ण होता है। १०. एक संकेत या चिह्न जो ग्रन्थ, लेख आदि में किसी शब्द, पद या वाक्य के साथ लगाया जाता है, जिसका पाद-टिप्पणी में विवरण आदि देना होता है। इसका रूप है—*।

तारकजित्—पुं० [सं० तारक √जि (जीतना)+क्विप्] कार्तिकेय।

तारक-टोड़ी—स्त्री० [सं० तारक+हिं० टोड़ी] एक प्रकार की टोड़ी रागिनी जिसमें ऋषभ और कोमल स्वर लगते हैं और पंचम वर्जित होता है। (संगीत रत्नाकर)

तारक-तीर्थ—पुं० [कर्म० स०] गया। (जहाँ पिंडदान करने से पुरखे तर जाते हैं)

तारक-ब्रह्म—पुं० [कर्म० स०] 'ओं रामाय नमः' का मंत्र।

तार-कमानी—स्त्री० [हिं० तार+कमानी] नगीने आदि काटने की धनुष के आकार की कमानी जिसमें डोरी के स्थान पर लोहे का तार लगा रहता है।

तारकश—पुं० [हिं० तार+फा० कश=(खींचनेवाला)] [भाव० तारकशी] वह कारीगर जो धातुओं के तार खींचने या बनाने का काम करता हो।

तारकशी—स्त्री० [हिं० तारकश] तारकश का काम या पेशा।

तारकस—पुं० =तारकश।

तारकांकित—वि० [तारक-अंकित, तृ० त०] (शब्द, पद या वाक्य) जिस पर तारक (*चिह्न) लगा हो।

तारका—स्त्री० [सं० तारक+टाप्] १. तारा। नक्षत्र। २. आँख की

पुतली। कनीनिका। ३. इंद्र वारुणी लता। ४. नाराच छंद का दूसरा नाम। ५. बालि की पत्नी का नाम। ६. दे० 'तारिका'।

*स्त्री० दे० 'ताड़का'।

तारकाक्ष—पुं० [सं० तारक-अक्षि, ब० स०] तारकासुर का बड़ा लड़का।

तारकामय—पुं० [सं० तारका+मयट्] शिव। महादेव।

तारकायण—पुं० [सं० तारक+फक्—आयन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

तारकारि—पुं० [सं० तारक-अरि, ष० त०] कार्तिकेय।

तारकासुर—पुं० [सं० तारक-असुर, कर्म० स०] एक असुर जिसका वध कार्तिकेय ने किया था। (शिव पुराण)

तारकिणी—वि० [सं० तारकिन्+ङीप्] तारों से भरी।

स्त्री० रात।

तारकित—वि० [सं० तारका+इतच्] तारों से भरा हुआ।

तारकी (किन्)—वि० [सं० तारका+इनि] [स्त्री० तारकिणी] =तारकित।

तार-कूट—पुं० [सं० तार =चाँदी+कूट =नकली] चाँदी, पीतल आदि के योग से बननेवाली एक मिश्र धातु।

तारकेश—पुं० [सं० तारका-ईश, ष० त०] चंद्रमा।

तारकेश्वर—पुं० [सं० तारका-ईश्वर, ष० त०] १. शिव। २. शिव की एक विशिष्ट मूर्ति या रूप। ३. वैद्यक में एक प्रकार का रस (औषध)।

तारकोल—पुं० [अं० टार—कोल] अलकतरा। (दे०)

तार-क्षिति—पुं० [सं० ब० स०] पश्चिम दिशा में एक देश जहाँ म्लेच्छों का निवास है। (बृहत्संहिता)

तारख*—पुं० [सं० तार्क्ष्य] गरुड़। (डिं०)

तारखी*—पुं० [सं० तार्क्ष्य] घोड़ा। (डिं०)

तारघर—पुं० [देश०] वह कार्यालय जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते और आये हुए समाचार लोगों के पास भेजे जाते हैं।

तार-घाट—पुं० [हिं० तार+घात] तार लगने अर्थात् कार्य सिद्ध होने की संभावना या घाट अर्थात् संभावित स्थिति। जैसे—हो सके तो वहाँ हमारा भी कुछ तार-घाट लगाओ।

तार-चरबी—पुं० [देश०] मोम चीना का पेड़।

तार-जाली—स्त्री० [हिं०] बहुत ही पतले तारों से बनी हुई जाली जिसका उपयोग यांत्रिक और रासायनिक कार्यों में होता है। (वायर गेज)

तारण—पुं० [सं०√तॄ+णिच्+ल्युट्—अन] १. जलाशय आदि से तारने या पार करने की क्रिया या भाव। २. कठिनता, संकट आदि से उद्धार करने की क्रिया। निस्तार। ३. भव-सागर से पार करके मोक्ष दिलाने की क्रिया या भाव। ४. [√तॄ+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु। ५. साठ संवत्सरों में से एक संवत्सर।

वि० १. तारने या पार करनेवाला। २. उद्धार या निस्तार करनेवाला।

तारणी—स्त्री० [सं० तारण+ङीप्] कश्यप की एक पत्नी जिसके गर्भ से याज और उपयाज उत्पन्न हुए थे।

तार-तंडुल—पुं० [सं० ब० सं०] सफेद ज्वार।

तारतम्य—पुं० [सं० तारतम+ष्यञ्] [वि० तारतम्यिक] १. 'तर' और 'तम' होने की अवस्था या भाव। एक दूसरे की तुलना में घट और बढ़कर होने की अवस्था या भाव। २. उक्त प्रकार की दृष्टि से की जानेवाली तुलना या पारस्परिक मिलान। ३. उक्त प्रकार के विचारों से लगाया जानेवाला क्रम या सिलसिला।

तारतम्य-बोध—पुं० [ष० त०] आपेक्षिक स्थितियों या चीजों के घट-बढ़ होने का ज्ञान। सापेक्ष संबंध का ज्ञान।

तार-तार—पुं० [सं०, प्रकार अर्थ में द्वित्व] सांख्य के अनुसार एक गौण सिद्धि जो आगम या शास्त्र अच्छी तरह समझ-बूझकर पढ़ने से प्राप्त होता है।

वि० [हिं०] १. जो इस प्रकार फटा या फाड़ा गया हो कि उसके तार या सूत अलग-अलग हो गये हो; अर्थात् जिसके बहुत से छोटे-छोटे टुकड़े या धज्जियाँ हो गई हों। २. पूरी तरह से छिन्न-भिन्न।

तार-तोड़—पुं० [हिं० तार+तोड़ना] कपड़ों आदि पर किया हुआ कारचोबी या जरदोजी का काम।

तारदी—स्त्री० [सं० तरदी+अण् (स्वार्थ में)+ङीप्] १. काँटेदार पेड़। २. तरदी वृक्ष।

तारन—पुं० [हिं० तर=नीचे?] १. छत या छाजन की ढाल अर्थात् नीचे की ओर का उतार। २. छाजन के वे बाँस जो कांड़ियों के नीचे रहते हैं।

वि०, पुं० =तारण।

तारना—स० [सं० तारण] १. ऐसा काम या यत्न करना जिससे कोई (नदी, नाला आदि) तर कर उसके पार उतर जाय। पार लगाना। २. डूबते हुए को सहारा देकर किनारे पर पहुँचाना। ३. भव-सागर में जनमने-मरने से मुक्त करना। मोक्ष या सद्गति देना।

तार-पत्र—पुं० [सं०] भारतीय सेना में प्रचलित एक प्रकार का पत्र (चिट्ठी) जो स्वदेश की सीमा के अन्तर्गत एक जगह से दूसरी जगह भेजा जाता है। (पोस्टग्राम)

तारपीन—पुं० [अं० टरपेंटाइन] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ एक तरह का तेल। (टरपेन्टाइन)

तार-पुष्प—पुं० [सं० ब० स०] कुंद का पेड़।

तारबर्की—पुं० [हिं० तार+फा० बर्की=बिजली का] धातु का वह तार जिसके द्वारा बिजली की शक्ति से समाचार दूर तक भेजे जाते हैं।

तार-माक्षिक—पुं० [सं० उपमि० स०] रूपामक्खी नाम की उपधातु।

तारयिता (तृ)—पुं० [सं०√तॄ+णिच्+तृच्] [स्त्री० तारयितृ+ङीप्, तारयित्री] १. तारनेवाला। २. उद्धार करनेवाला। २. मोक्ष देनेवाला।

तारल्य—पुं० [सं० तरल+ष्यञ्] १. तरल होने की अवस्था या भाव। तरलता। २. चंचलता।

तार-विमला—स्त्री० [सं० उपमि० स०] रूपामक्खी नामक उपधातु।

तार-सार—पुं० [सं० ब० स०] एक उपनिषद्।

तारहीन—वि० [हिं० तार+सं० हीन] १. जिसमें तार न हो। २. (सूचना, समाचार आदि) जो बिजली के द्वारा तार-हीन प्रणाली से आवे या जाय। बिना तार की सहायता के भेजा जानेवाला।

पुं० विद्युत् की सहायता से समाचार भेजने की एक प्रणाली या प्रक्रिया जिसमें समाचार, सूचनाएँ आदि भेजनेवाले और पानेवाले स्थानों के बीच में तार का संबंध नहीं रहता। (वायरलेस)

तारा—पुं० [सं० तार+टाप्] १. आकाश में चमकनेवाला नक्षत्र। सितारा।

मुहा०—तारा टूटना=तारे का आकाश से अपनी कक्षा से निकलकर पृथ्वी पर या आकाश में किसी ओर गिरना। **तारा डूबना**=(क) किसी तारे या नक्षत्र का अस्त होना। (ख) शुक्र का अस्त होना। (शुक्रास्त में हिंदुओं के यहाँ मंगल कार्य नहीं किये जाते) **तारा सी आँखें हो जाना**=इतनी ऊँचाई या दूरी पर पहुँच जाना कि तारे की तरह बहुत छोटा जान पड़ने लगे। **तारे खिलना या छिटकना**=आकाश में तारों का चमकते हुए दिखाई देना। **तारे गिनना**=चिंता, विकलता आदि से नींद न आने के कारण कष्टपूर्वक जागकर रात बिताना। **(आकाश के) तारे तोड़ लाना**=कठिन से कठिन अथवा प्रायः असंभव से काम कर दिखाना। **तारे दिखाई देना**=दुर्बलता, रोग आदि के कारण आँखों के सामने रह-रहकर प्रकाश के छोटे-छोटे कण दिखाई देना। **तारे दिखाना**=प्रसूता स्त्री को छठी के दिन बाहर लाकर आकाश की ओर इसलिए तकाना कि भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर हो जाय। (मुसल०)

पद—तारों की छाँह=इतने तड़के या सबेरे कि तारों का धुंधला प्रकाश दिखाई दे।

२. आँख की पुतली। जैसे—यह लड़का हमारी आँखों का तारा है। ३. किस्मत या भाग्य जिसका बनना-बिगड़ना आकाश के तारों या नक्षत्रों की स्थिति का परिणाम या फल माना जाता है। सितारा। (मुहा० के लिए दे० 'सितारा' के मुहा०)

पुं० [?] सिर पर पगड़ी की तरह बाँधा जानेवाला पुरानी चाल का चीरा।

†पुं०=ताला।

स्त्री० [सं०] १. बृहस्पति की स्त्री जिसे चंद्रमा ने अपने पास रख लिया था। २. तांत्रिकों की दस महाविद्याओं में से एक। ३. जैनों के अनुसार एक देवी या शक्ति। ४. वालि नामक बंदर की स्त्री जिसने वालि के मारे जाने पर उसके भाई सुग्रीव के साथ विवाह कर लिया था।

तारा-कूट—पुं० [ष० त०] वर-कन्या के शुभाशुभ फल को सूचित करनेवाला एक कूट जिसका विचार विवाह स्थिर करने से पहले किया जाता है। (फलित ज्योतिष)

ताराक्ष—पुं० [सं० तार-अक्षि, ब० स०] तारकाक्ष दैत्य।

तारा-ग्रह—पुं० [सं० मयू० स०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पांच ग्रहों का समूह। (बृहत्संहिता)

ताराज—पुं० [फा०] १. लूट-पाट। २. ध्वंस। नाश। बरबादी।

तारात्मक-नक्षत्र—पुं० [सं० तारा-आत्मन्, ब० स०, कप्, तारात्मक-नक्षत्र, कर्म० स०] आकाश में क्रांति वृत्त के उत्तर और दक्षिण दिशाओं के तारों का समूह जिनमें अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्र हैं।

ताराधिप—पुं० [तारा-अधिप, ष० त०] १. चंद्रमा। २. शिव। ३. बृहस्पति। ४. तारा के पति वालि और सुग्रीव।

ताराधीश—पुं० [तारा-अधीश, ष० त०]=ताराधिप।

तारा-नाथ—पुं० [ष० त०]=ताराधिप।

तारा-पति—पुं० [ष० त०]=ताराधिप।

तारा-पथ—पुं० [तारा-पथिन्, ष० त०, समा० अच्] आकाश।

तारापीड़—पुं० [तारा-आपीड, ष० त०] १. चंद्रमा। २. अयोध्या के एक प्राचीन राजा।

तारा-पुंज—पुं० [ष० त०] पास-पास और सदा साथ रहनेवाले विशिष्ट तारों का वर्ग या समूह। (एस्टेरिज़्म)

ताराभ—पुं० [तारा-आभा, ब० स०] पारद। पारा।

तारा-भूषा—स्त्री० [ब० स०] रात्रि। रात।

ताराभ्र—पुं० [तार-अभ्र, कर्म० स०] कपूर।

तारा-मंडल—पुं० [ष० त०] १. नक्षत्रों का समूह या घेरा। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का बूटीदार कपड़ा। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें जगह-जगह चमकतें हुए तारें दिखाई पड़ते हैं।

तारा-मंडूर—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का मंडूर जो अनेक द्रव्यों के योग से बनाया जाता है। (वैद्यक)

तारा-मृग—पुं० [मध्य० स०] मृगशिरा नक्षत्र।

तारायण—पुं० [तारा-अयन, ष० त०, णत्व] आकाश।

तारारि—पुं० [तारा-अरि, ष० त०] विटमाक्षिक नाम की उपधातु।

तारावती—स्त्री० [सं० तारा+मतुप्+ङीप्] एक दुर्गा।

तारावली—स्त्री० [तारा-आवली, ष० त०] तारों की पंक्ति।

ताराहर—पुं० [सं० तारा√हृ (हरना)+अच्] १. सूर्य। २. दिन।

तारा-हार—पुं० [ब० स० ?] वह जिसके गले में तारों या नक्षत्रों का हार हो।

तारिक—पुं० [सं० तार+ठन्—इक] १. नाव से नदी पार करने का भाड़ा। २. नदी आर-पार करने का महसूल।

तारिका—स्त्री० [सं० ताडिका, ड—र] ताड़ नामक वृक्ष का रस। ताड़ी।

स्त्री० [सं० तारका] १. आज-कल सिनेमा आदि की प्रसिद्ध और सफल अभिनेत्री। २. दे० 'तारका'।

तारिका-धूलि—स्त्री० [सं०] सारे विश्व में, तारों-तारिकाओं के बीच के अवकाश में सब जगह व्याप्त एक प्रकार की बहुत ही बारीक तथा सूक्ष्म धूल या रज। (स्टार-डस्ट)

तारिणी—वि० स्त्री० [सं०√तृ (तरना)+णिच्+णिनि—ङीप्] तारने या उद्धार करनेवाली।

स्त्री० १. एक प्रकार की बहुत लंबी पुरानी नाव जो ४८ हाथ लंबी, ५. हाथ चौड़ी और ५ हाथ ऊँची होती थी। २. दे० 'तारा' (देवी)।

तारित—वि० [सं०√तृ+णिच्+क्त] १. पार कराया हुआ। २. जिसका उद्धार किया गया हो।

तारी—स्त्री० [देश०] एक चिड़िया।

स्त्री० [फा० तारीक का संक्षि० रूप] १. अंधकार। अँधेरा। २. बेहोशी। मूर्च्छा। ३. किसी प्रकार के ध्यान में मग्न होने के समय की तन्मयता। उदा०—सुन्नि समाधि लागि गै तारी।—जायसी। ४. समाधि। उदा०—हाट बजोर लावै तारी।—कबीर। ५. उत्कट इच्छा। लगन। लौ। उदा०—लागी दरसन की तारी।—मीराँ।

†स्त्री० [सं० तडित्] बिजली। विद्युत्।

†स्त्री० १.=ताली। २.=ताड़ी।

तारीक—वि० [फा०] [भाव० तारीकी] १. काला। स्याह। २. अंधकारपूर्ण । अँधेरा । धुँधला ।

तारीकी—स्त्री० [फा०] १. कालिमा। स्याही । २. अन्धकार। अँधेरा ।

तारीख—स्त्री० [अ०] १. गिनती के हिसाब से पड़नेवाला महीने का दिन जो संख्याओं में सूचित किया जाता है। दिनांक। (डेट) जैसे—(क) अगस्त की १५ वीं तारीख को भारत में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। (ख) मुकदमा ७ तारीख को पेश होगा। २. घटना के घटित होने, लेख्य आदि के लिखे जाने का दिन जो कहीं अंकित होता है। जैसे—इस किताब पर तारीख नहीं लिखी है। ३. दे० 'तवारीख' (इतिहास) ।

तारीखी—वि०=तवारीखी (ऐतिहासिक) ।

तारीफ—स्त्री० [अ०] १. लक्षणों आदि से युक्त परिभाषा। २. उक्त प्रकार की परिभाषा से युक्त वर्णन या विवरण। ३. प्रशंसा। श्लाघा। ४. प्रशंसनीय काम या बात। ५. विशिष्टता। जैसे—यही तो आप में तारीफ है ।

तारीफी†—स्त्री०=तारीफ (प्रशंसा) ।

तारुण—वि० [सं० तरुण+अञ्] जवान । युवा ।

तारुण्य—पुं० [सं० तरुण+ष्यञ्] तरुण होने की अवस्था, गुण या भाव। तरुणता। यौवन ।

तारू—पुं० [हिं० तरना=तैरना] तैरनेवाला। तैराक । उदा०—तारू कवण जु समुद्र तरै। —प्रिथीराज ।

†पुं०=ताल ।

तारेय—पुं० [सं० तारा+ढक्—एय] १. तारा का पुत्र अंगद । २. वृहस्पति (की स्त्री तारा) का पुत्र बुध।

तार्किक—वि० [सं०तर्क+ठक्—इक] तर्क संबंधी। तर्क का।

पुं० १. वह जो तर्क-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। २. तत्त्ववेत्ता । ३. वे नास्तिक(आध्यक्षिक से भिन्न) जो केवल तर्क के आधार पर सब बातें मानते हों। इनके दो भेद हैं—क्षणिकवानी (बौद्ध) और स्याद्वाद्वी (जैन) ।

तार्क्ष—पुं० [सं० तृक्ष+अण्] १. कश्यप। २. कश्यप के पुत्र गरुड़।

तार्क्षज—पुं० [सं० तार्क्ष√जन् (पैदा होना)+ड] रसांजन ।

तार्क्षी—स्त्री० [सं० तार्क्ष+ङीष्] पाताल गारुड़ी लता । छिरेंटी। छिरिहटा

तार्क्ष्य—पुं० [सं० तृक्ष+यञ्] १. तृक्ष मुनि के गोत्रज। २. गरुड़ और उनके बड़े भाई अरुण। ३. घोड़ा। ४. रसांजन। ५. साँप । ६. एक प्रकार का साल वृक्ष। अश्वकर्ण । ७. महादेव । शिव । ८. सोना । स्वर्ण । ९. रथ। १०. एक प्राचीन पर्वत।

तार्क्ष्यज—पुं० [सं० तार्क्ष्य√जन्+ड] रसौंत । रसांजन ।

तार्क्ष्य-प्रसव—पुं० [ब० स०] अश्वकर्ण वृक्ष।

तार्क्ष्य-शैल—पुं० [सं० मध्य० स०+अण्] रसांजन । रसौंत ।

तार्क्ष्यी—स्त्री० [सं० तार्क्ष्य+ङीप्] एक प्रकार की जंगली लता ।

तार्प्य—पुं० [सं० तृपा+ष्यञ्] तृपा नामक लता से बनाया हुआ वस्त्र जिसका व्यवहार वैदिक काल में होता था।

तार्य—वि० [सं० तृ+णिच्+यत्] १. पार करने योग्य। २. विजित करने योग्य ।

पुं० [तर+ष्यञ्] नाव आदि का किराया ।

तालंक—पुं० [सं०=ताडंक (नि० लत्व)] ताटंक ।

ताल—पुं० [सं० तल+अण्] १. हाथ की हथेली । कर-तल । २. [√तड्+णिच्+अच्, ड—ल] हथेलियों के आघात से उत्पन्न होनेवाला शब्द । करतल-ध्वनि। ताली। ३. संगीत में समय का परिमाण ठीक रखने के लिए थोड़े-थोड़े, परन्तु नियत अंतर पर हथेली या और किसी चीज से किया जानेवाला आघात । ४. संगीत में उक्त प्रकार के आघातों का क्रम, मान्, संख्या आदि स्थिर रखने के लिए कुछ निश्चित आघातों का (जिनमें से प्रत्येक 'आघात्', मात्रा कहलाता है) अलग और विशिष्ट वर्ग या समूह। जैसे—तीन मात्राओं का ताल, पाँच मात्राओं का ताल आदि। ५. संगीत में तबले, मृदंग, ढोल आदि बजाने का कोई विशिष्ट प्रकार जो उक्त अनेक तालों के योग से बना और किसी विशिष्ट राग या लय के विचार से स्थिर किया गया हो। जैसे—चौताल, झूमर, रुद्र या रूपक ताल।

मुहा०—ताल देना=गाने-बजाने के समय, कालमान ठीक रखने के लिए राग-रागिनी आदि के अनुरूप विशिष्ट प्रकार के आघात करना । **ताल पूरना (अकर्मक)** =ताल का आकार ठीक समय पर पूरा होना। ताल का क्रम ठीक बैठना। उदा०—इस मनु आगे पूरै ताल।—कबीर। **ताल पूरना (सकर्मक)**=संगीत के समय उक्त प्रकार का आघात करते हुए ताल देना ।

६. झाँझ, मंजीरा आदि बाजे जो उक्त विचार से समय का परिमाण ठीक रखने के लिए बजाये जाते हैं। ७. कुश्ती लड़ने के समय जाँघ या बाँह पर हथेली के आघात से उत्पन्न किया जानेवाला शब्द ।

मुहा०—ताल ठोंकना=उक्त प्रकार का आघात करके या और किसी प्रकार यह सूचित करना कि आओ हम से लड़कर बल-परीक्षा कर लो।

८. ताड़ का पेड़। ९. ताला । १०. ऐनक या चश्मे में लगा हुआ काँच, बिल्लौर आदि का टुकड़ा ।

पुं० [सं० तल्ल] [स्त्री० अल्पा० तलैया] छोटा जलाशय ।

ताल-कंद—पुं० [ब० स०] तालमूली। मुसली।

तालक—पुं० [सं० ताल+कन्] १. हरताल। २. ताला। ३. गोपी चंदन ।

†पुं०=तअल्लुक (संबंध) ।

तालकट—पं० [सं० ताल+कटच्] बृहत्संहिता के अनुसार दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश ।

तालकाभ—वि० [तालक-आभा, ब० स०] हरा।

पुं० हरा रंग।

तालकी—स्त्री० [सं० तालक+अण्+ङीप्] ताड़ वृक्ष का रस। ताड़ी।

तालकूटा—पुं० [हिं० ताल+कूटना] १. ताल देने के लिए झाँझ आदि बजानेवाला। २. वह भजनीक जो गाते समय झाँझ आदि बजाता हो।

ताल-केतु—पुं० [ब० स०] १. केतु जिस पर ताल के पेड़ का चिह्न हो। २. वह जिसकी पताका पर ताड़ के पेड़ का चिह्न हो। ३. भीष्म। ४. बलराम ।

तालकेश्वर—पुं० [सं० दे० तारकेश्वर] एक तरह की ओषधि।

तालक्रोशा—स्त्री० [सं० तालं√क्रुश् (शब्द करना)+अच्—टाप्] एक तरह का पेड़।

ताल-क्षीर—पुं० [मध्य० स०] खजूर या ताड़ के रस को पाग कर बनाई जानेवाली चीनी।

तालचर—पुं० [सं० ताल√चर् (गति)+ट] १. एक प्राचीन देश का नाम। २. उक्त देश का निवासी।

ताल-जंघ—पुं० [ब० स०] १. एक प्राचीन देश का नाम। २. उक्त देश का निवासी। ३. एक यदुवंशी राजा जिसके पुत्रों ने राजा सगर के पिता को राज्य से अलग किया था।

ताल-ध्वज—पुं० [ब० स०] १. दे० 'तालकेतु'। २. एक प्राचीन पर्वत का नाम।

ताल-नवमी—स्त्री० [मध्य० स०] भाद्रपद शुक्ला नवमी।

ताल-पत्र—पुं० [ष० त०] ताड़ के वृक्ष का पत्ता। ताड़-पत्र।

विशेष—प्राचीन काल में ताल-पत्रों पर ही लेख आदि लिखे जाते थे।

तालपत्रिका—स्त्री० [सं० तालपत्री+कन्—टाप्, ह्रस्व] तालमूली। मुसली।

तालपत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] मूसाकर्णी। मूषकपर्णी। मूसाकानी बूटी।

ताल-पर्ण—पुं० [ब० स०] कपूर कचरी।

ताल-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १. सौंफ। २. कपूर कचरी। ३. तालमूली। मुसली। ४. सोआ नाम का साग।

ताल-पुष्पक—पुं० [ब० स०,+कप्] पुंडरिया। प्रपौंडरीकि।

तालबंद—पुं० [सं० तालिक—बंध] वह लेखा जिसमें आमदनी की समस्त मदें दिखलाई गई हों।

तालबेन—स्त्री० [सं० तालवेणु] एक तरह का बाजा।

ताल-बैताल—पुं० [सं० तालवेताल] ताल और बैताल नाम के दो यक्ष जिनके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था और ये बराबर उनकी सेवा में रहते थे।

तालमखाना—पुं० [हिं० ताल+मक्खन] १. गीली जमीन या दलदलों के आस-पास होनेवाला एक पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है। २. दे० 'मखाना'।

तालमतूल—वि० [हिं० ताल?+मतूल (अनु०)] किसी के जोड़ या बराबरी का। एक-सा।

ताल-मूल—पुं० [ब० स०] लकड़ी की बनी हुई ढाल।

तालमूलिका—स्त्री० [सं० तालमूली +कन्—टाप्, ह्रस्व] दे० 'तालमूली'।

ताल-मूली—स्त्री० [न० स०, ङीष्] मुसली।

ताल-मेल—पुं० [हिं० ताल+मेल] १. ताल का सुरों के साथ होनेवाला मेल या संगति। २. किसी के साथ होनेवाली उपयुक्त या ठीक योजना। संगति। उदा०—ताल-मेल सौं मेलि रतन बहु रंग लगाए।—रत्ना०।

क्रि० प्र०—खाना। —बैठना।

३. उपयुक्त अवसर। मौका।

ताल-रंग—पुं० [ब०स०] ताल देने का एक तरह की पुरानी चाल का बाजा।

ताल-रस—पुं० [ष०त०] ताड़ के वृक्ष का रस। ताड़ी।

ताल-लक्षण—पुं० [ब०स०] तालध्वजा। बलराम।

ताल-वन—पुं० [ष०त०] १. ताड़ के पेड़ों का जंगल। २. व्रज में गोवर्धन पर्वत के पास का एक वन जहाँ बलराम ने धेनुक को मारा था।

तालवाही (हिन्)—वि० [सं० ताल√वह् (वहन करना)+णिनि] (बाजा) जिससे ताल दिया जाय।

ताल-वृंत—पुं० [ब०स०] १. ताड़ के पत्ते का बना हुआ पंखा। २. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का सोम (प्राचीन वनस्पति)।

तालव्य—वि० [सं० तालु+यत्] १. तालू संबंधी। २. (ध्वनि, वर्ण या शब्द) जिसका उच्चारण मुख्यतः तालू की सहायता से होता हो। पुं० वह वर्ण जिसका उच्चारण मुख्यतः तालू की सहायता से होता हो। जैसे—इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ् और थ्।

ताल-षष्ठी—स्त्री० [मध्य०स०] भादों के कृष्ण पक्ष की छठ जिस दिन स्त्रियाँ पुत्र की कामना से व्रत करती हैं। ललही छठ।

तालसाँस—पुं० [सं० ताल+बं० साँस=गूदा] ताड़ के फल का गूदा जो प्रायः खाया जाता है।

ताल-स्कंध—पुं० [ब०स०] एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

तालांक—पुं० [ताल-अंक, ब०स०] १, वह जिसका चिह्न ताड़ हो। २. भीष्म। ३. बलराम। ४. आरा। ५. एक प्रकार का साग। ६. शिव। महादेव। ७. किताब। पुस्तक। ८. ऐसा पुरुष जिसमें सामुद्रिक के अनुसार अनेक शुभ लक्षण हों।

तालांकुर—पुं० [ताल-अंकुर, ष०त०] मैनसिल धातु।

ताला—पुं० [तालकः] एक प्रसिद्ध उपकरण जो ढकने, दरवाजे आदि बन्द करने के लिए होता और ताली की सहायता से खुलता और बंद होता है।

क्रि० प्र०—खोलना।—जड़ना।—बंद करना।—लगाना।

मुहा०—(किसी के घर में) ताला लगना=ऐसी अवस्था होना कि घर में कोई रहनेवाला न बच जाय।

२. किसी प्रकार के आने-जाने का मार्ग या मुँह बंद करने का कोई उपकरण या साधन। जैसे—नहर का ताला।

मुहा०—ताला जड़ना=पूरी तरह से रोकना या बंद करना।

३. आवरण के रूप में रहनेवाला वह बाधक तत्त्व जिसे बिना हटाये अन्दर की बात या रहस्य का पता न चल सकता हो। ४. तवे के आकार का लोहे का वह उपकरण जिसे प्राचीन काल में योद्धा छाती पर बाँधते थे।

ताला-कुंजी—स्त्री० [हिं० ताला+कुंजी] १. किवाड़, संदूक, आदि बंद करने का ताला और उसे खोलने-बंद करने की कुंजी या ताली।

मुहा०—(किसी के हाथ में) ताला-कुंजी होना=(क) आय-व्यय आदि का सारा अधिकार होना। (ख) संपत्ति पर पूर्ण अधिकार होना।

२. लड़कों का एक प्रकार का खेल।

तालाख्या—स्त्री० [सं० ताल-आख्या, ब०स०] कपूर कचरी।

ताला-ताली—स्त्री०=ताला-कुंजी।

तालाबंदी—स्त्री० [हिं० ताला+फा० बंदी] १. तालाबंद करने या लगाने की क्रिया, अवस्था या भाव। २. औद्योगिक क्षेत्र में किसी कारखाने का अनिश्चित काल के लिए उसके स्वामी या स्वामियों के द्वारा बन्द किया जाना। (लॉक आउट)

तालाब—पुं०[हिं० ताल+फा० आब] वह छोटा जलाशय जिसके चारों ओर स्नानार्थियों की सुविधा के लिए सीढ़ियाँ आदि बनी होती हैं।

तालि—स्त्री०[?]समय। उदा०—तिणि तालि सखी गलि स्यामा तेही। —प्रिथीराज।

तालिक—पुं०[सं० तल+ठक्—इक]१. फैली या फैलाई हुई हथेली। २. वह डोरा जिससे ताड़-पत्र या उन पर लिखे हुए लेख नत्थी करके एक में बाँधे जाते थे। ३. ताड़पत्रों का पुलिंदा।

तालिका—स्त्री० [सं० ताली+कन्—टाप्, ह्रस्व] १. ताली। कुंजी। २. लिखित ताल-पत्रों, कागज़ों आदि का पृथक् और स्वतन्त्र पुलिंदा। नत्थी। ३. ऐसी सूची जिसमें बहुत-सी वस्तुओं आदि के नामों का उल्लेख हो। फेहरिस्त। सूची। ४. [तलिक+टाप्] चपत। थप्पड़। ५. ताल-मूली। मुसली। ६. मजीठ।

तालिब—वि०[अ०] १.तलब करनेवाला। २.खोजने या ढूंढ़नेवाला। ३. चाहनेवाला।

तालिब इल्म—पुं०[अ०] [भाव० तालिब-इल्मी] १. वह जिसे इल्म अर्थात् विद्या की चाह हो। २. विद्यार्थी।

तालिम*—स्त्री०[सं० तल्प]१. शय्या। २. बिस्तर। (डिं०)

तालियामार—पुं०[हिं० ताली+मारना] जहाज का आगे या सामने का वह निचला अंश जो पानी को काटता है। गलही। (लश०)

तालिश—पुं० [सं०√तल् (प्रतिष्ठा)+इश, णित्—वृद्धि] पर्वत। पहाड़।

ताली—स्त्री० [सं०√तल्+णिच्+अच्—ङीष्] १. एक प्रकार का पहाड़ी ताड़। बजर-बट्टू। २. ताल-मूली। मुसली। ३. भू-आँवला। ४. ताम्रवल्ली लता। ५. अरहर। ६. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ७. मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईंट जो दोनों ओर के पत्थरों या ईंटों को गिरने से रोके रहती है। ८. [ताल+अण्] ताड़ का रस। ताड़ी।

स्त्री०[हिं० ताला]१. ताले के साथ रहनेवाला वह छोटा उपकरण जिसकी सहायता से ताला खोला और बंद किया जाता है। कुंजी। चाबी।

क्रि० प्र०—खोलना।—लगाना।

२. किसी प्रकार का आवागमन या मार्ग खोलने और बंद करने का कोई उपकरण या साधन। जैसे—बिजली के तार में उसका प्रवाह रोकने की ताली। विशेष दे० 'कुंजी'।

स्त्री०[सं० ताल]१. थप थप शब्द उत्पन्न करने के लिए दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। २. उक्त क्रिया से उत्पन्न होनेवाला शब्द जो किसी की प्रशंसा और अपनी प्रसन्नता का सूचक होता है। करतल-ध्वनि। थपोड़ी।

विशेष—कभी-कभी दूसरों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए ऐसा शब्द उत्पन्न किया जाता है।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

मुहा०—ताली पिटना=किसी की दुर्दशा होने पर लोगों में उसका उपहास होना। **ताली पीटना**=कोई अच्छा काम या बात देखकर और उससे प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा और अपना समाधान सूचित करने के लिए हथेलियों से कई बार उक्त प्रकार का शब्द करना।

कहा०—एक हाथ से ताली नहीं बजती=कोई क्रिया या व्यवहार एक पक्ष से तब तक नहीं पूरा होता जब तक दूसरे पक्ष से भी वैसी ही क्रिया या व्यवहार न हो।

पुं० शिव।

स्त्री०[हिं० ताल=जलाशय]छोटा ताल। तलैया। गड़ही।

स्त्री०[?] पैर की बिचली उँगली का अगला भाग।

तालीका—पुं०[अ० तअलीक़:]१. माल-असबाब की कुर्की या जब्ती। २. कुर्क या जब्त किए हुए माल-असबाब की सूची। तालिका।

ताली-पत्र—पुं०[ब०स०] तालीश-पत्र।

तालीम—स्त्री०[अ०]१. निपुण तथा योग्य बनाने के लिए किसी को सिखाई जानेवाली बातें या दिये जानेवाले उपदेश। २. पढ़ना-लिखना सीखने या सिखाने का कार्य या कार्य-प्रणाली। शिक्षा।

तालीश-पत्र—पुं०[ब०स०] १. तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक पेड़ जिसके कई अंगों का उपयोग ओषधि के काम में होता है। २. भू-आँवले की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

तालीश-पत्री—स्त्री०[सं० ब०स०, ङीष्] तालीश-पत्र।

तालु—पुं०[सं०√तॄ (तैरना)+ञुण्, लत्व] [वि० तालव्य] तालू।

तालु-कंटक—पुं० [ब०स०] एक रोग जिसमें तालू में काँटे निकल आते हैं।

तालुक—पुं०[सं० तालु+कन्]१. तालू। २. तालू में होनेवाला एक तरह का रोग।

†पुं०=ताल्लुक (संबंध)।

तालुका—स्त्री०[सं० तालुक+टाप्]तालू के अन्दर की एक नाड़ी।

†पुं०=ताअल्लुका।

तालु-जिह्व—पुं०[ब०स०] घड़ियाल।

तालु-पाक—पुं०[ब०स०] तालू में होनेवाला एक रोग।

तालु-पुप्पुट—पुं०[ब०स०] तालुपाक रोग।

तालुशोष—पुं०[ब०स०] तालू में होनेवाला एक तरह का रोग।

तालू—पुं०[सं० तालू]१. मुँह के अन्दर का वह ऊपरी भाग जो ऊपरवाले दाँतों की पंक्ति और गले के कौए या घंटी तक विस्तृत रहता है तथा जिसके नीचे जीभ रहती है। (पैलेट)

मुहा०—तालू उठाना=तुरन्त के जन्मे हुए बच्चे के तालू को दबाकर कुछ ऊपर और ठीक स्थान पर करना जिसमें मुँह अच्छी तरह खुल सके और उसके अन्दर कुछ अवकाश या जगह निकल आवे। **(किसी के) तालू में दाँत जमना**=किसी का ऐसे बहुत बुरे या विकट काम की ओर प्रवृत्त होना जिससे अंत में स्वयं उसी की बहुत बड़ी हानि हो! **(किसी के) तालू में दाँत निकलना**=दे० 'दाँत' के मुहा० के अंतर्गत। **तालू से जीभ न लगना**=बराबर कुछ न कुछ बकते-बोलते रहना। कभी चुप न रहना।

२. खोपड़ी के अन्दर और मुँह के उक्त अंग के ऊपर का सारा भाग। दिमाग। मस्तिष्क।

मुहा०—तालू चटकना=प्यास, रोग आदि के कारण सिर में बहुत अधिक गरमी जान पड़ना।

३. घोड़ों का एक अशुभ लक्षण जो ऐब या दोष माना जाता है।

तालूफाड़—पुं०[हिं० तालू+फाड़ना]हाथियों के तालू में होनेवाला एक तरह का रोग जिसमें घाव हो जाते हैं।

तालूर—पुं० [सं०√तल् (प्रतिष्ठा करना)+णिच्+ऊर] पानी का भँवर।

तालूषक—पुं० [सं०√तल्+णिच्+ऊषक]=तालु।

तालेवर—वि० [अ० ताला=भाग्य+फा० वर (प्रत्य०)] १. धनाढ्य। धनी। २. भाग्यवान। सौभाग्यशाली।

ताल्लुक—पुं० [अ० तअल्लुक] १. संबंध। २. लगाव।

ताल्लुका—पुं० [अ० तअल्लुकः] आस-पास के कई गाँवों का समूह जो किसी एक ही जमींदार के अधिकार में होता था। इलाका।

ताल्लुकेदार—पुं० [अ० तअल्लुकः+फा० दार] १. किसी ताल्लुके का जमींदार। २. अंगरेज़ी शासन में अवध प्रदेश में वह जमींदार जिसे सरकार से कुछ विशिष्ट अधिकार प्राप्त होते थे।

ताल्वर्बुद—पुं० [सं० तालु-अर्बुद, ष० त०] तालू में उत्पन्न होनेवाला एक तरह का काँटा जिससे बहुत कष्ट होता है।

ताव—पुं० [सं० ताप; प्रा० ताव] १. आँच, धूप आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह गरमी जो वस्तुओं को लगकर तपाती या पकाती और व्यक्तियों को लगकर शारीरिक कष्ट देती है। गरमी। ताप।

क्रि० प्र०—लगना।

मुहा०—(किसी वस्तु में) ताव आना=किसी वस्तु का जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। जैसे—जब तक तवे में ताव न आवे तब तक उस पर रोटी नहीं डालनी चाहिए। **(किसी वस्तु का) ताव खा जाना**=तेज आँच लगने पर आवश्यकता से अधिक गरम होकर जल या बिगड़ जाना अथवा बे-सवाद हो जाना। कुछ या बहुत जल जाना। जैसे—शीरा ताव खा जायगा तो कड़ुआ हो जायगा। **(किसी व्यक्ति का) ताव खाना**=अधिक गरमी या धूप लगने से अस्वस्थ या विकल हो जाना। जैसे—लड़का कल दोपहर में ताव खा गया था; इसी से रात को उसे बुखार आ गया। **(आँच का) ताव बिगड़ना**=आँच का इस प्रकार आवश्यकता से कम या ज्यादा हो जाना कि उस पर पकाई जानेवाली चीज ठीक तरह से न पकने पावे।

२. वह आवेश या मनोवेग का उद्दीप्त रूप जो काम, क्रोध, घमंड आदि दूषित भावों या विचारों के फलस्वरूप अथवा बढ़ावा देने, ललकारने आदि पर उत्पन्न होता और भले-बुरे का ध्यान भुलाकर मनुष्य को किसी काम या बात में वेगपूर्वक अग्रसर या प्रवृत्त करता है।

मुहा०—ताव चढ़ना=मन में उक्त प्रकार का विकार या स्थिति उत्पन्न होना। जैसे—अभी इन्हें ताव चढ़ेगा तो बात की बात में सौ-दो-सौ रुपए खर्च कर डालेंगे। **(किसी को) ताव दिखाना** उक्त प्रकार की स्थिति में आकर अभिमानपूर्वक किसी को दबाने, नीचा दिखाने, हराने आदि की तत्परता प्रकट करना। जैसे—बहुत ताव मत दिखाओ, नहीं तो अभी तुम्हें दुरुस्त कर दूँगा। **ताव-पेंच खाना**=रह-रहकर क्रोध का आवेश दिखाते हुए रुक-रुक जाना। **(किसी व्यक्ति का) ताव में आना**=अभिमान, आवेश, क्रोध, दूषित मनोविकार आदि से युक्त होकर कोई दुस्साहसपूर्ण काम करने पर उतारू होना या किसी और प्रवृत्त होना।

३. कोई काम या बात तुरंत या बहुत जल्दी पूरी करने या होने की प्रबल उत्कंठा या कामना। उतावलेपन से युक्त चाह या वासना।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

पद—ताव पर=प्रबल आवश्यकता, इच्छा, मनोवेग आदि उत्पन्न होने की दशा में अथवा उत्पन्न होते ही तत्काल या तुरंत। जैसे—तुम्हारे ताव पर तो पुस्तक छप नहीं जायगी, उसमें समय लगेगा।

पद—ताव-भाव।

४. पदार्थों आदि की वह स्थिति जिसमें वे कृत्रिम उपायों या स्वाभाविक रूप से कुछ कड़े, खड़े या सीधे रहते हैं और उनमें लचक या लुजलुजाहट या शिथिलता नहीं रहती। जैसे—(क) इस्तरी करने से कपड़ों में ताव आ जाता है। (ख) लाखों रुपए के कर्जदार होने पर भी वे बाजार में बहुत ताव से चलते हैं।

मुहा०—मूँछों पर ताव देना=मूँछें उमेठ या मरोड़कर खड़ी या सीधी करते हुए अपनी ऐंठ, पराक्रम या शान दिखाना।

५. मन को दुःखी या शरीर को पीड़ित करनेवाली कोई बात। कष्ट। तकलीफ। ताप। उदा०—चंद्रावत तज साम ध्रम, विणहीं पड़ियों ताव।—बाँकीदास।

पुं० [फा० ता=संख्या] कागज का चौकोर और बड़ा टुकड़ा जो पूरी इकाई के रूप में बनकर आता और बाजारों में मिलता है। तख्ता। जैसे—दो-तीन ताव कागज भी लेते आना।

विशेष—यद्यपि फरहंग आसफिया के आधार पर हिंदी शब्द-सागर में भी इस अर्थ में 'ताव' शब्द फा० 'ता' से व्युत्पन्न माना गया है, परंन्तु यह व्युत्पत्ति कुछ ठीक नहीं जान पड़ती। हो सकता है कि 'ताव' का कागज के तख्तेवाला यह अर्थ भी 'ताव' के उस चौथे अर्थ का ही विस्तृत रूप हो जो ऊपर 'ताप' से व्युत्पन्न प्रसंग में बतलाया गया है और जिसके अन्तर्गत कपड़े में ताव आने और बाजार में ताव से चलने के उदाहरण दिये गये हैं।

तावत—अव्य० [सं० तद्+डावतु] १. उस अवधि या समय तक। तब तक। २. उस सीमा या हद तक। वहाँ तक। ३. उस परिमाण या मात्रा तक। (यावत् का नित्य-संबंधी या संबंध-पूरक)

तावदार—वि० [हिं० ताव+फा० दार] [भाव० तावदारी] १. (व्यक्ति) जिसमें ताव हो। जो उमंग या जोश में आकर अथवा साहसपूर्वक कोई काम कर सकता हो। २. (पदार्थ) जिसमें कुछ विशेष कड़ापन तथा सौंदर्य हो। जैसे—तावदार कपड़ा या जूता।

तावना*—स० [तपाना] १. गरम करना। जलाना। २. कष्ट या दुःख देना।

तावबंद—पुं० [हिं० ताव+फा० बंद] वह रसायन जिसके चाँदी का खोट उसे तपाने पर भी दृष्टिगत नहीं होता।

ताव-भाव—पुं० [हिं० ताव+भाव] १. वह स्थिति जो किसी काम, बात या व्यक्ति की विशिष्ट प्रवृत्ति या स्वरूप के कारण उत्पन्न होती है और जिससे उसके बल, मान, वेग आदि का अनुमान किया जाता है। जैसे—जरा उनका ताव-भाव तो देख लो; फिर समझौते की बातचीत चलाना। २. किसी काम, चीज या बात का ठीक-ठीक अन्दाज या हिसाब। जैसे—वह तरकारी में बहुत ताव-भाव से मसाले डालता है। ३. ऐंठ। ठसक। शेखी। जैसे—जरा देखिए तो आप कैसे ताव-भाव से चले आ रहे हैं। ४. रंग-ढंग। तौर-तरीका।

तावर†—पुं०=तावरा।

तावरा†—पुं० [सं० ताप] १. गरमी। ताप। २. आँच, धूप आदि के कारण होनेवाली गरमी। ३. गरमी के कारण सिर में आनेवाला चक्कर या होनेवाली बेहोशी।

क्रि० प्र०—आना।

तावरी—स्त्री०[सं० ताप, हिं० ताव+री (प्रत्य०)]१. गरमी। ताप। २. जलन। दाह। ३. घाम। धूप। ४. गरमी लगने पर सिर में आनेवाला घुमटा या चक्कर। ५. ज्वर। बुखार। ६. ईर्ष्या। जलन।

तावरो*—पुं०=तावरा।

तावल—स्त्री०[हिं० ताव] उतावलापन। हड़बड़ी।

तावला—वि०=उतावला।

तावा†—पुं० [हिं० ताव]१. तवा। २. वह कच्चा खपड़ा जिसके किनारे अभी मोड़े न गये हों और इसीलिए जिसका रूप तवे का-सा हो। (कुम्हार)

तावान—पुं०[फा०] आर्थिक क्षति आदि होने पर उसकी पूर्ति के लिए या बदले में दिया अथवा लिया जानेवाला धन। डाँड़।

क्रि० प्र०—देना।—लगना।—लगाना।—लेना।

ताविष—पुं०[सं० √तव् (गति)+टिषच्, णित्त्वात् वृद्धि]=तावीष।

ताविषी—स्त्री०[सं० ताविष+ङीप्] १. देवकन्या। २. नदी। ३. पृथ्वी। भूमि।

तावीज—पुं०[अ० तअवीज़]१. कागज, भोज-पत्र आदि पर लिखा हुआ वह यंत्र-मंत्र जो अपनी रक्षा आदि के विचार से छोटी डिबिया के आकार के संपुट में बन्द करके गले में या बाँह पर पहना अथवा कमर में बाँधा जाता है। रक्षा-कवच।

क्रि० प्र०—पहनना।—बाँधना।

२. चाँदी, सोने आदि का वह गोलाकार या चौकोर छोटा संपुट जो गहने के रूप में गले में या बाँह पर पहना जाता है।

क्रि० प्र०— पहनना।

तावीष—पुं०[सं०=ताविष, पृषो० दीर्घ] १. सोना। स्वर्ण। २. स्वर्ग। ३. समुद्र। सागर।

विशेष—वाचस्पत्य अभिधान में शब्द का यह रूप अशुद्ध और असिद्ध कहा गया है।

तावुरि—पुं०[पूना० टारस] वृष राशि।

ताश—पुं०[अ० तास=तश्य या चौड़ा बरतन]१. एक तरह का चमकीला कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना बादले का होता है। २. गत्ते या दफ्ती के ५२ चौखूँटे पत्तों की गड्डी जिसके पत्तों पर काले और लाल रंगों की बूटियाँ, तसवीरें आदि बनी होती हैं तथा जिससे विभिन्न खेल खेले जाते हैं। ३. उक्त गड्डी में का कोई पत्ता। ४. उक्त पत्तों से खेला जानेवाला खेल। ५. वह छोटी दफ्ती जिस पर कपड़े सीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा—पुं०[फा० तासः] डुग्गी की तरह का परन्तु उससे कुछ बड़ा और चिपटा बाजा जो गले में लटकाकर तीलियों के आघात से बजाया जाता है।

तास*—सर्व० पु० हिं० में 'तिस' या 'उस' का एक रूप। उदा०—जास का सेवक तास कौ पाइहै।—कबीर।

†पुं०=ताश।

तासन, तासों*—सर्व० [हिं० तास] उससे।

तासला—पुं०[देश०] भालू को नचाने के लिए उसके गले में बाँधी जानेवाली रस्सी।

तासा—स्त्री०[सं० त्रय=तिहरा] तीन बार की जोती हुई भूमि।

†पुं०=ताशा (बाजा)।

तासीर—स्त्री०[अ०] किसी वस्तु को उपयोग में लाने अथवा उसका सेवन करने पर उसके तात्त्विक गुण का पड़नेवाला प्रभाव। जैसे—इस दवा की तासीर गरम (या ठंढी) है।

तासु—सर्व० [हिं० ता+सु (प्रत्य०)]१. उसका। २. उसको।

तासूँ†—सर्व०=तासों।

तासों†—सर्व० [हिं० ता+सों (प्रत्य०)]उससे।

तास्कर्य—पुं०[सं० तस्कर+ष्यञ्] तस्कर होने की अवस्था या भाव। तस्करता।

तास्सुब—पुं०=तअस्सुब।

ताहम—अव्य०[फा०] इतना या ऐसा होने पर भी। (प्रायः विरोधी भाव सूचित करने के प्रसंग में) जैसे—ताहम आप तो चले ही जायेंगे।

ताहि†—सर्व० [हिं० ता० हिं० (प्रत्य०)]उसको। उसे।

ताहिरी—स्त्री०[अ०] तहरी नाम की खिचड़ी।

ताहीं†—अव्य० दे० 'ताईं' या 'तईं'।

तिंतिड़—पुं०[सं०=तितिडी, पृषो० सिद्धि] इमली।

तिंतिड़िका—स्त्री०[सं० तिंतिडी+कन्—टाप्, ह्रस्व] इमली।

तिंतिड़ी—स्त्री०[सं०√तिम् (आर्द्र होना)+ईकन्, पृषो० सिद्धि] इमली।

तिंतिड़ीक—पुं०[सं०√तिम्+ईकन्, नि० सिद्धि] इमली।

तिंतिड़ीका—स्त्री०[सं० तिंतिडीक+टाप्] इमली।

तिंतिरांग—पुं०[सं० तितिर-अंग, ब०स०] इसपात। वज्रलोह।

तिंतिलिका—स्त्री०[सं०=तिंतिडिका, ड—ल]=तिंतिड़िका।

तिंतिली—स्त्री०[सं०=तिंतिडी, ड—ल]=तिंतिड़ी।

तिंदिश—पुं०[सं०=ढिंडिश, नि० सिद्धि] टिंडसी नाम की तरकारी। डेंढसी। टिंडा।

तिंदु—पुं० [सं०√तिम्+कु, नि०सिद्धि] तेंदू का पेड़।

तिंदुक—पुं० [स० तिंदु+कन्] १. तेंदू का पेड़। २. [तिंदु√क (प्रतीत होना)+क] एक कर्ष या दो तोले की तौल।

तिंदुकतीर्थ—पुं०[मध्य०स० ?] व्रज मंडल के अन्तर्गत एक तीर्थ।

तिंदुकी—स्त्री०[सं० तिंदुक+ङीप्] तेंदू का पेड़।

तिंदुकिनी—स्त्री०[सं० तिंदुक+इनि—ङीप्] आवर्तकी। भगवत-वल्ली।

तिंदुल—पुं०=[सं० तिंदुक, पृषो० क—ल] तेंदू का पेड़।

ति—सर्व० [सं० तद् या त] वह।

वि० हिं० तीन का संक्षिप्त रूप जो उपसर्ग के रूप में कुछ शब्दों के आरम्भ में लगता है। जैसे—तिआह, तिकोना आदि।

तिआ—स्त्री०=तिय (स्त्री)।

पुं० दे० 'तीया'।

तिआह†—पुं०[हिं० ति+सं० विवाह]१. किसी का (दो बार विधवा या विधुर हो चुकने पर) तीसरी बार होनेवाला विवाह। २. वह व्यक्ति जिसका इस प्रकार तीसरी बार विवाह हुआ हो।

पुं०[सं० त्रि+पक्ष] वह श्राद्ध जो किसी की मृत्यु के पैंतालीसवें दिन अर्थात् तीन पक्ष पूरे होने पर किया जाता है।

तिउरा†—पुं०[देश०] केसारी या खेसारी नामक कदन्न।

स्त्री०[देश०] केसारी। खेसारी।

तिउरी —स्त्री०=त्योरी।

तिउहार।—पं०=त्योहार।

तिकड़म—पुं०[सं० त्रि+क्रम] ऐसी गहरी अनैतिक चाल या तरकीब जिससे कोई कठिन और प्रायः असंभव प्रतीत होनेवाला काम सहज में हो जाय।

तिकड़मी—वि०[हिं० तिकड़म] जो तिकड़म से काम करता हो।

तिकड़ा—पुं०[सं० त्रिक्]१. एक साथ बनी या रहनेवाली तीन चीजों का समूह। २. पहनने की वे धोतियाँ जो तीन एक साथ बुनी गई हों।

विशेष—आज-कल जिस प्रकार धोतियों के जोड़े बनते और बिकते हैं, उसी प्रकार पहले मोटी धोतियों के तिकड़े भी बनते और बिकते थे।

तिकड़ी—स्त्री०[हिं० तीन+कड़ी] १. जिसमें तीन कड़ियाँ हों। २. चारपाई की बुनावट का वह प्रकार या रूप जिसमें तीन-तीन रस्सियाँ एक साथ बुनी जाती हैं।

स्त्री०=तिक्का या तिक्की (ताश का पत्ता)।

तिक तिक—स्त्री० [अनु०] किसी पशु को हाँकते समय मुँह से किया जानेवाला तिक तिक शब्द।

तिकरि—अव्य०[सं० त्वत्कृते] तुम्हारे लिए। उदा०—बाँहाँ तिकरि पसारी वेड़।—प्रिथीराज।

तिकानी—स्त्री०[हिं० तीन+कान] धुरी में लगाई जानेवाली वह तिकोनी लकड़ी जो पहिये को धुरी से बाहर निकलने से रोकती है।

तिकार।—पुं०[सं० त्रि+कार]१. तीसरी बार जोता हुआ खेत। २. तीन बार खेत जोतने का काम।

तिकुरा—पुं०[हिं० तीन+कूरा]उपज का तीसरा अंश या भाग।

तिकोन —पुं०=त्रिकोण।

वि०=तिकोना।

तिकोना—वि०[सं० त्रिकोण][स्त्री० तिकोनी] जिसके या जिसमें तीन कोने हों। जैसे—तिकोना मकान।

पुं०१. समोसा नाम का पकवान। २. धातुओं पर नक्काशी करने की एक प्रकार की छेनी। ३. क्रोध-सूचक या चढ़ी हुई त्योरी।

तिकोनिया।—विं० [हिं० तिकोना] तीन कोनोंवाला।

स्त्री०[हिं० तिकोना] बढ़इयों का लकड़ी का एक तिकोना उपकरण या औजार जिससे कोनों की सीध नापते हैं।

तिक्का—पुं०[सं० त्रिक्]ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं। तिक्की। तिड़ी।

पुं०[फा० तिक्कः] मांस की कटी हुई बोटी।

मुहा०—**तिक्का बोटी करना**=पूरी तरह से काटकर खंड-खंड करना।

तिक्की—स्त्री०[सं० त्रिक्]१. ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं। तिड़ी। २. गंजीफे का उक्त प्रकार का पत्ता।

तिक्ख*—वि०[सं० तीक्ष्ण; प्रा० तिक्ख]१. तीखा। तीक्ष्ण। २. चोखा। तेज। ३. तीव्र बुद्धिवाला। चालाक।

तिक्त—वि०[सं०√तिज् (तीखा करना)+क्त]जो गुरुच, चिरायते आदि के स्वाद की तरह का हो। तीता।

पुं०१. पित्त-पापड़ा। २. कुटज। कुरैया। ३. वरुण वृक्ष। ४. खुशबू। सुगंध।

तिक्तकंदिका—स्त्री०[सं० तिक्त-कंद, मध्य०स०,+कन्—टाप्, इत्व] गंधपत्रा। बनकचूर।

तिक्तक—वि०[सं० तिक्त+कन्] तिक्त।

पुं० १. चिरायता। २. नीम। ३. काला खैर। ४. इंगुदी। हिंगोट। ५. परवल। पटोल। ६. कुटज। कुरैया।

तिक्त-कांड—पुं०[ब० स०] चिरायता।

तिक्तका—स्त्री०[सं० तिक्त√कै (प्रकाशित होना)+क—टाप्] कड़आ कद्दू। तितलौकी।

तिक्त-गंधा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] वराहीकंद।

तिक्तगंधिका—स्त्री०[सं०तिक्तगन्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व,इत्व]वराहीकंद।

तिक्त-गुंजा—स्त्री०[उपमि०स०, परनिपात]कंजा। करंज।

तिक्त-घृत—पुं०] कर्म०स०] वैद्यक में, कुछ विशिष्ट औषधियों के योग से बनाया हुआ घी जो बहुत से रोगों का नाशक माना जाता है।

तिक्त-तंडुला—स्त्री०[ब०स०] पिप्पली। पीपल।

तिक्तता—स्त्री०[सं० तिक्त+तल—टाप्] तिक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। तीतापन।

तिक्त-तुंडी—स्त्री०[सं०=तिक्त-तुंबी, पृषो० सिद्धि] कड़ई तुरई।

तिक्त-तुंबी—स्त्री०[कर्म०स०] कड़आ कद्दू। तितलौकी।

तिक्त-दुग्धा—स्त्री०[ब०स०]१. खिरनी। २. मेढासिंगी।

तिक्त-धातु—स्त्री०[कर्म०स०] शरीर के अंदर का पित्त जो तिक्त या तीता होता है।

तिक्त-पत्र—पुं०[ब०स०] ककोड़ा। खेखसा।

तिक्त-पर्णी—स्त्री०[सं० ब०स०, ङीष्] कचरी। पेंहटा।

तिक्त-पर्वा—पुं०[ब०स०,टाप्]१. दूब। दूर्वा। २. हुलहुल। ३. जेठी मधु। मुलेठी। ४. गिलोय। गुडुच।

तिक्त-पुष्पा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] पाठा।

तिक्त-फल—पुं०[ब०स०] रीठा। निर्मलफल।

तिक्त-फला—स्त्री० [सं० ब०स०,टाप्] १. भटकटैया। २. खरबूजा। ३. कचरी।

तिक्त-भद्रक—पुं०[कर्म०स०] परवल। पटोल।

तिक्त-यवा—स्त्री०[सं० ब०स०, टाप्] शंखिनी।

तिक्तरोहिणिका—स्त्री०[सं० तिक्तरोहिणी+कन्,—टाप्, ह्रस्व]कुटकी।

तिक्तरोहिणी—स्त्री० [सं० तिक्त√रुह् (उगना)+णिनि—ङीप्] कुटकी।

तिक्त-वल्ली—स्त्री०[कर्म०स०] मूर्वालता। मरोड़फली। चुरनहार।

तिक्त-बीजा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] तितलौकी। कड़ुआ कद्दू।

तिक्त-शाक—पुं० [ब० स०] १. खैर का पेड़। २. वरुण वृक्ष। ३. पत्र-सुन्दर नाम का साग।

तिक्त-सार—पुं० [ब० स०] १. रोहिस नाम की घास। २. खैर का पेड़।

तिक्तांगा —स्त्री० [सं० तिक्त-अंग, ब० स०, टाप्] +अच्+टाप्] पाताल गारुड़ी लता। छिरेंटा।

तिक्ता—स्त्री० [सं० तिक्त+अच्—टाप्] १. कुटकी। २. पाठा। पाढ़ा। ३. खरबूजा। ४. नक-छिकनी। ५. यवतिक्ता नाम की लता।

तिक्तावित्त—स्त्री० [सं० तिक्त से] एक प्रकार का वाष्प (गैस) जो

वर्ण-हीन और उग्र गंधवाला होता है। इसके योग से जमे हुए कण प्रायः औषध, खाद आदि के काम आते हैं। (एमोनिया)

तिक्ताख्या—स्त्री॰ [सं॰ तिक्त–आख्या, ब॰ स॰] तितलौकी।

तिक्तिका—स्त्री॰ [सं॰ तिक्ता+कन्—टाप्, इत्व] १. तितलौकी। २. काक-माछी।

तिक्तिरी—स्त्री॰ [?] सँपेरों की बीन। तूमड़ी।

तिक्ष—वि॰ [भाव॰ तिक्षता]=तीक्ष्ण।

तिख—वि॰ [सं॰ त्रि] (खेत) जो बीज बोये जाने से पहले तीन बार जोता गया हो।

तिखटी†-स्त्री॰ =तिकठी।

तिखरा—वि॰ दे॰ 'तिख'।

तिखाई—स्त्री॰ [हिं॰ तीखा] तीखे होने की अवस्था, गुण या भाव। तीखापन।

तिखारना—स॰[सं॰ त्रि+हिं॰ आखर] ताकीद करते हुए किसी से कोई बात तीन अथवा कई बार कहना।

तिखूँटा† —वि॰=तिखूँटा।

तिखूँटा—वि॰ [हिं॰ तीन+खूँट] जिसके तीन खूँट अर्थात् तीन कोने हों। तिकोना।

तिग† —पुं॰ =त्रिक्।

तिगना†—स॰ [देश॰] देखना। (दलाल)

वि॰ दे॰ 'तिगुना'।

तिगला† —पुं॰ [हिं॰ तीन+गली] [स्त्री॰ अल्पा॰ तिगली] वह स्थान जहाँ से तीन गलियों को रास्ते जाते हों। तिरमुहानी।

तिगुना—वि॰ [सं॰ त्रिगुण] [स्त्री॰ तिगुनी] जो किसी मान या मात्रा के अनुपात में तीन गुना हो। जितना होता हो, उतना तथा उससे दूना और।

तिगूचना—स॰=तिगना (देखना)।

तिगून—पुं॰ [हिं॰ तिगुना] १. तिगुने होने की अवस्था या भाव। २. गाने-बजाने में, क्रमशः आगे बढ़ते और तेज होते हुए ऐसी स्थिति में पहुँचना जब कि आरंभवाले मान से तिहाई समय में गाना-बजाना होता है और गति या वेग तिगुना बढ़ जाता है।

तिग्म—वि॰ [सं॰√तिज् (तीखा करना)+मक्] [भाव॰ तिग्मता] तीक्ष्ण। तेज।

पुं॰ १. वज्र। २. पीपल।

तिग्म-कर—पुं॰ [ब॰ स॰] सूर्य।

तिग्म-केतु—पुं॰ [ब॰ स॰] भागवत में वर्णित एक ध्रुववंशीय राजा।

तिगमता—स्त्री॰ [सं॰ तिग्म+तल्—टाप्] तिग्भ अर्थात् तीक्ष्ण होने की अवस्था या भाव।

तिग्म-दीधिति—पुं॰ [ब॰ स॰] सूर्य।

तिग्म-मन्यु—पुं॰ [ब॰ स॰] महादेव। शिव।

तिग्म-रश्मि—पुं॰ [ब॰ स॰] सूर्य।

तिग्मांशु—पुं॰ [तिग्म-अंशु, ब॰ स॰] सूर्य।

तिघरा—पुं॰ [सं॰ त्रिघट] चौड़े मुँहवाला एक तरह का घड़ा या मटका जिसमें दही, दूध आदि रखते हैं।

तिचिया—पुं॰ [?] जहाज पर का वह आदमी जो नक्षत्रों आदि की गति-विधियाँ देखता है।

तिच्छ (न)—वि॰=तीक्ष्ण।

तिजरा—पुं॰ [सं॰ त्रि+ज्वर] हर तीसरे दिन आने, चढ़ने या होनेवाला ज्वर। तिजारी।

तिजवाँसा—पुं॰ [हिं॰ तीजा=तीसरा+मास=महीना] कुछ विशेष जातियों में होनेवाला वह उत्सव जो किसी स्त्री को तीन महीने का गर्भ होने पर मनाया जाता है।

तिजहरिया† —पुं॰=तिजारी (बुखार)।

तिजार†—पुं॰=तिजारी (ज्वर)।

तिजारत—स्त्री॰ [अ॰] [वि॰ तिजारती] १. रोज़गार। व्यापार। व्यवसाय। २. वाणिज्य।

तिजारी—स्त्री॰ [हिं॰ तीन+ज्वर] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर या बुखार जो मलेरिया का एक प्रकार है।

तिजिया†—वि॰ [हिं॰ तीजा=तीसरा] (व्यक्ति) जिसके तीन विवाह हो चुके हों।

तिजिल—पुं॰ [?] १. चंद्रमा। २. राक्षस।

तिजोरी—स्त्री॰[देश॰] लोहे की वह मजबूत छोटी किंतु भारी अलमारी या पेटी जिसमें गहने, नकदी आदि सुरक्षा की दृष्टि से रखी जाती है।

तिड़† —पुं॰ [?] पक्ष। (डिं॰)

तिड़लना—स॰ [?] खींचना। उदा॰—जनि अनुरागे पाछ धरि पेललि कर धरि काम तिड़ली। —विद्यापति।

तिड़ी—स्त्री॰ [सं॰ त्रि=तीन] ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ बनी होती हैं। तिक्की।

वि॰ [सं॰ तिर्यक् ?] (व्यक्ति) जो कहीं से खिसक, टल या हट गया हो। (बाजारू) जैसे—मुझे देखते ही वहाँ वहाँ से तिड़ी हो गया।

तिड़ी-बिड़ी† —वि॰=तितर-बितर। (दे॰)

तिणि—अव्य॰ [सं॰ तेन] इसलिए। उदा॰—तथापि रहे न हूँ सकूँ बकूँ तिणि।—प्रिथीराज।

तित*—क्रि॰ वि॰ [सं॰ तत्र] १. उस स्थान पर। वहाँ। २. उस ओर। उधर।

तितना—वि॰=उतना।

तितर-बितर—वि॰ [हिं॰ तीतर+बटेर=कुछ एक तरह का, कुछ दूसरी तरह का] १. जो अपने क्रम या स्थान से हट-बढ़ कर या अव्यवस्थित रूप से कुछ इधर और उधर हो गया हो। अस्त-व्यस्त। जैसे—भीड़ (या सेना) तितर-बितर हो गई। २. अनियमित रूप से बिखरा हुआ। जैसे—घर का सारा सामान तितर-बितर पड़ा है।

तितरात—पुं॰ [?] एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

तितरोखी—स्त्री॰ [हिं॰ तीतर+रोख] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

तितल†—वि॰=शीतल।

तितली†—स्त्री॰ [सं॰ तित्तरीक] १. एक तरह का उड़नेवाला छोटा कीड़ा जिसके पंख रंग-बिरंगे और बहुत सुंदर होते हैं और जो प्रायः फूलों पर मँड़राता रहता तथा उनका रस चूसता है। २. लाक्षणिक रूप में, सुन्दर बालिका या स्त्री जो बहुत चंचल हो और प्रायः खूब बनी-ठनी रहती हो। ३. वन-गोभी का एक नाम।

तितलौआ—पुं० दे० 'तितलौकी'।

तितलौकी† स्त्री० [देश०] १. एक प्रसिद्ध लता जिसमें कद्दू के आकार-प्रकार के ऐसे फल लगते हैं जो स्वाद में कड़ुवे या तीते होते हैं। २. उक्त लता का फल।

तितारा†—पुं० [सं० त्रि+हिं० तार] १. सितार की तरह का तीन तारोंवाला ताल देने का एक बाजा। २. फसल की तीसरी बार की सिंचाई।

वि० तीन तारोंवाला। जैसे—तितारा डोरा या ताना।

तितिंबा†—पुं०=तितिम्मा।

तितिक्ष—वि० [सं०√तिज् (सहन करना)+सन्+अच्] तितिक्षु।

पुं० एक प्राचीन ऋषि।

तितिक्षा—स्त्री० [सं०√तिज्+सन्+अ—टाप्] सरदी, गरमी आदि सहन करने की शारीरिक शक्ति। २. कष्ट, दुःख आदि झेलने का सामर्थ्य। ३. धैर्यपूर्वक या चुप-चाप कोई आघात, आक्षेप आदि सहन करने का भाव। ४. क्षमाशीलता। ५. दे० 'मर्षण'।

तितिक्षु—वि० [सं०√तिज्+सन्+उ] १. जिसमें तितिक्षा अर्थात् सहन-शक्ति हो। सहनशील। २. क्षमाशील। क्षात।

पुं० एक पुरुवंशी राजा जो महामना का पुत्र था।

तितिभ—पुं० [सं० तिति√भण् (बोलना)+ड] १. बीर बहूटी। २. जुगनूं।

तितिम्मा—पुं० [अ०] १. शेष बचा हुआ अंश। अवशिष्ट अंश। २. पुस्तकों आदि का परिशिष्ट। ३. व्यर्थ का झंझट या विस्तार। ४. व्यर्थ का आडंबर। ढकोसला।

तितिर (तिर्रि)—पुं० [सं०=तित्तिरि, पृषो० सिद्धि] तीतर (पक्षी)।

तितिल—पुं० [सं०√तिल् (चिकना करना)+क, द्वित्व] १. मिट्टी की नाँद। २. ज्योतिष में, तैत्तिल नामक करण।

तितीर्षा—स्त्री० [सं०√तॄ (तैरना)+सन्+अ—टाप्] १. तैरने की इच्छा। २. तरने अर्थात् भव-सागर से पार होने की इच्छा।

तितीर्षु—वि० [सं०√तॄ+सन्+उ] १. जो तैरने अर्थात् पार उतरने का इच्छुक हो। २. मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करनेवाला।

तितुला†—पुं० [देश०] गाड़ी के पहिये का आरा।

तिते*—वि० [सं० तति] उतने। (संख्या वाचक)

तितेक—वि० [हिं० तितो+एक] उस मान या मात्रा का। उतना।

तितै*—क्रि० वि० [हिं० तित+ई (प्रत्य०)] १. उस ओर। उधर। २. उस जगह। वहाँ। ३. वहाँ ही। वहीं।

तितो*—क्रि० वि०=तेता (उतना)।

तित्तह*—अव्य० [सं० तत्र] उस स्थान पर। वहाँ।

तित्तिर—पुं० [सं० तित्ति√रा (दान)+क] [स्त्री० तित्तिरी] १. तीतर नामक पक्षी। २. तितली नाम की घास।

तित्तिरी—पुं० [सं० तित्ति√रु (शब्द करना)+डि] १. तीतर पक्षी। २. यास्क मुनि के एक शिष्य जिन्होंने यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा चलाई थी। ४. यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा।

तिथ—पुं० [सं०√तिज् (तीखा करना)+थक्] १. अग्नि। आग। २. कामदेव। ३. काल। समय। ४. वर्षा। काल। बरसात।

†स्त्री०=तिथि।

तिथि—स्त्री० [सं०√अत् (सतत गमन)+इथिन्] १. चांद्रमास के किसी पक्ष का कोई दिन अथवा उसे सूचित करनेवाली कोई संख्या। मिती।

विशेष—प्रतिपदा से अमावस या पूर्णिमा तक साधारणतः १५ तिथियाँ होती हैं।

२. उक्त के आधार पर पंद्रह की संख्या। ३. श्राद्ध आदि करने के विचार से किसी की मृत्यु की तिथि। ४. दे० 'दिनांक'।

तिथि-क्षय—पुं० [ष०त०] चंद्र गणना के अनुसार पक्ष में किसी तिथि का घटना या मान न होना। तिथिहानि।

तिथित—भू०कृ० [सं० तिथि से] जिस पर तिथि या तारीख डाली गई या पड़ी हुई हो। (डेटेड)

तिथि-पति—पुं० [ष०त०] वह देवता जो किसी तिथि का स्वामी हो।

विशेष—बृहत्संहिता के अनुसार प्रतिपदा के ब्रह्मा, दूज के विधाता, षष्ठी के षडानन आदि आदि देवता माने गये हैं।

तिथि-पत्र—पुं० [ष०त०] पंचांग। पत्रा।

तिथिप्रणी—पुं० [सं० तिथि+प्र√नी (लेजाना)+क्विप्] चंद्रमा।

तिथ्य†—स्त्री०=तिथि।

पुं०=तथ्य।

तिथ्यर्ध—पुं० [तिथि-अर्ध, ष०त०] करण। (ज्योतिष)

तिदरा—वि० [हिं० तीन+फा० दर=दरवाजा] [स्त्री० अल्पा० तिदरी] तीन दरोंवाला।

पुं० तीन दरोंवाला कमरा।

तिदारी—स्त्री० [देश०] बत्तख की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

तिदुआरा—वि०, पुं० [स्त्री० तिदुआरी]=तिदरा।

तिधर†—क्रि० वि० [सं० तत्र] उधर। उस ओर।

तिधारा—पुं० [सं० त्रिधार] एक प्रकार का थूहर (सेंहुड़) जिसमें पत्ते नहीं होते। इसे बज्री या नरसेज भी कहते हैं।

तिधारी कांडवेल—स्त्री० [सं०] हड़जोड़ (पौधा)।

तिन—सर्व० हिं० 'तिस' का अवधी भाषा में बहुवचन रूप।

पुं०=तृण।

मुहा०—***तिन तूरना**=दे० (तिनका के अंतर्गत) 'तिनका तोड़ना।'

तिनउर—पुं० [सं० तृण+हिं० उर या और (प्रत्य०)] तिनकों का ढेर।

तिनकना—अ० [हिं० चिनगारी, चिनगी या अनु०] अपने विरुद्ध कोई बात अप्रत्याशित रूप से या सहसा सुनकर क्रुद्ध हो जाना। तिनगना।

तिनका—पुं० [सं० तृण] सूखी घास या वनस्पति के डंठलों आदि का छोटा टुकड़ा। तृण।

मुहा०—**(अपने सिर से) तिनका उतारना**=नाममात्र को थोड़ा-बहुत काम करके यह जताना कि हमने बड़ा उपकार किया है। बला टालना। **(किसी से) तिनका तोड़ना**=स्थायी रूप से संबंध छोड़ना। कुछ भी लगाव या वास्ता न रखना। जैसे—हमने तो उसी दिन तिनका तोड़ दिया था।

विशेष—हिन्दुओं में मृतक का शवदाह कर चुकने पर उपस्थित मित्र और संबंधी एक साथ बैठकर तिनका तोड़नेकीएक रसम पूरी करते हैं। इसी से यह मुहा० बना है।

मुहा०—**(किसी के सिर से) तिनका तोड़ना**=(क) रूपवान या

सुन्दर व्यक्ति को देखकर उसे नजर लगने से बचाने के लिए स्त्रियों का उसके सिर पर से तिनका उतारकर तोड़ते हुए फेंकना। (ख) उक्त प्रकार से तिनका तोड़ते हुए किसी का कष्ट या संकट अपने ऊपर लेना। बलाएँ लेना। **(दाँतों में) तिनका पकड़ना या लेना**=किसी का अनुग्रह या कृपा प्राप्त करने के लिए उसके आगे उसी प्रकार परम दीन या विनीत बनना जिस प्रकार गौ मुँह में तिनका लेकर दीनतापूर्वक सामने आती है। **तिनके का पहाड़ करना**=जरा-सी या बहुत छोटी बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा देना। **तिनके चुनना**=विरह, शोक आदि के कारण पागलों की तरह और बहुत उदास होकर बिलकुल तुच्छ और निरर्थक काम करते हुए समय बिताना।

पद—तिनके का सहारा=बहुत ही थोड़ा या नाम-मात्र का वैसा ही सहारा जैसा 'डूबते को तिनके का सहारा' वाली कहावत में कहा जाता है। **तिनके की आड़ या ओट**=नियम, मर्यादा आदि के पालन के लिए बीच में रखा जानेवाला नाम-मात्र का परदा या व्यवधान।

कहा०—तिनके की ओट पहाड़=कभी-कभी किसी छोटी-सी बात की आड़ में भी बहुत बड़ी बात होती या हो सकती है।

तिनका-तोड़—पुं०[हिं० तिनका+तोड़ना]पारस्परिक संबंध इस प्रकार टूटना कि फिर स्थापित न हो सके। ('किसी से तिनका तोड़ना' वाले मुहा० के आधार पर)

तिनगना†—अ०= तिनकना।

तिनगरी—स्त्री०[देश०] एक तरह का मीठा पकवान।

तिनतिरिया—स्त्री०[हिं० तीन+तार?]मनुआ नाम की कपास।

तिन-दरी—स्त्री०[हिं० तीन+फा० दर] वह कमरा जिसमें तीन दर या दरवाजे हों।

तिनधरा—स्त्री०[देश०] एक तरह की रेती जो तिकोनी होती है और जिससे आरी के दाँते तेज किये जाते हैं।

तिनपहल—वि०=तिनपहला।

तिनपहला—वि०[हिं० तीन+पहल][स्त्री० तिनपहली] जिसमें तीन परतें, पहलू या पार्श्व हों।

तिनमिना—पुं०[हिं० तीन+मनिया] ऐसी माला जिसके बीच में जड़ाऊ जुगनूँ हो।

तिनवा—पुं०[देश०] एक तरह का बाँस।

तिनषना*—अ०=तिनकना।

तिनस—पुं०[सं० तिनिश] शीशम की तरह का एक पेड़।

तिनसुना—पुं०=तिनस। (दे०)

तिनावा—वि०[हिं०तीन+नाव=खाँचा या गहरी रेखा][स्त्री०तिनावी] (कटार, तलवार आदि का फल) जिसपर तीन नावें (खाँचे या धारियाँ) हों। जैसे—तिनावा तेगा।

तिनाशक—पुं०[सं० तिनिश+कन्, पृषो० आत्व] तिनिश वृक्ष।

तिनास—पुं०=तिनस।

तिनिश—पुं०[सं० अति √निश् (समाधि)+क, पृषो० अलोप] बबूल या खैर की तरह का एक वृक्ष जिसके फल वैद्यक में कफ, पित्त, रुधिर विकार आदि दूर करनेवाले माने जाते हैं।

तिनुअर—वि०[सं० तृण] तिनके के समान पतला-दुबला। क्षीण-काय। उदा०—तन तिनुअर भा झूरौं खरी।—जायसी।

पुं० तिनका या तिनकों का ढेर।

तिनुका†—पुं०=तिनका।

तिनुवर—वि०, पुं०=तिनुअर।

तिनूका†—पुं०=तिनका।

तिन्नक—पुं०[हिं० तनिक]१. तुच्छ वस्तु। २. छोटा बच्चा। उदा०—खसम धतिंगड़, जोड़ू तिन्नक। (कहा०)

तिन्ना—पुं०[सं०]१. तिन्नी नाम का पौधा या उसके चावल। २. रसेदार तरकारी या सालन। ३. सती नामक वर्ण-वृत्त।

तिन्नी—स्त्री०[सं० तृण; हिं० तिन]१. आप से आप जलीय किन्तु बिना जोती-बोई जमीन में होनेवाला धान्य। २. उक्त के बीज जिनकी गिनती फलाहार में होती है। वैद्यक में ये पित्त, कफ और वातनाशक माने जाते हैं।

स्त्री०[देश०] नीवी। फुफुती।

तिन्ह†—सर्व० हिं० 'तिस' का अवधी भाषा में होनेवाला बहुवचन रूप।

तिपड़ा—पुं०[हिं० तीन+पट]कमख्वाब बुननेवालों के करघे की वह लकड़ी जिसमें तागा लपेटा रहता है और जो दोनों बैसरों के बीच में होती है।

तिपति*—स्त्री०=तृप्ति।

तिपल्ला—वि०[हिं० तीन+पल्ला] [स्त्री० तिपल्ली] १. जिसमें तीन पल्ले या परतें हों। तीन पल्लोंवाला। २. तीन तागों या तारोंवाला।

तिपहला—वि०[हिं० तीन+पहल] [स्त्री० तिपहली] तीन पहलों, पार्श्वों या परतोंवाला।

तिपाई—स्त्री०[हिं० तीन+पाय] तीन पायोंवाली एक तरह की बैठने अथवा सामान आदि रखने की ऊँची चौकी।

तिपाड़—पुं०[हिं० तीन+पाड़] १. वह कपड़ा जो तीन पाट जोड़कर बनाया गया हो। जैसे—तिपाड़ चादर, तिपाड़ लहँगा। २. वह कपड़ा जिसमें तीन परतें या पल्ले हों। ३. वह धोती या साड़ी जिसमें तीन पाड़ या चौड़े किनारे हों (दो ऊपर नीचे और एक बीच में)।

तिपारी—स्त्री०[देश०] एक तरह का झाड़ जिसमें रसभरी की तरह के छोटे फल लगते हैं।

तिपैरा†—पुं०[हिं० तीन+पुर] वह बड़ा कूआँ जिसमें तीन चरसे या मोट एक साथ चल सकें।

तिफल—पुं०[अ० तिफ़्ल] [भाव० तिफली] छोटा नन्हा बच्चा।

तिफली—स्त्री० [अ० तिफ़्ली] बचपन।

तिब—स्त्री०[अ० तिब्ब] यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। हकीमी।

तिबधी—स्त्री०[हिं० तीन+बाँध]चारपाई बुनने का एक ढंग जिसमें हर बार तीन-तीन रस्सियाँ साथ खींची जाती हैं।

तिबाई†—स्त्री० [देश०] एक तरह की छिछली थाली जिसमें प्रायः आटा गूंथते हैं।

तिबारा—क्रि० वि०[हिं० तीन+बार] तीसरी बार।

पुं० वह शराब जो तीन बार चुआने पर तैयार की गई हो।

वि०, पुं दे० 'तिदरा'।

तिबासी—वि०[हिं० तीन+बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

तिबी†—स्त्री० [देश०] खेसारी।

तिब्ब—स्त्री०=तिब।

तिब्बत—पुं०[सं० त्रिविष्टप] हिमालय के उत्तर का एक देश जिसकी सीमा भारत से मिली हुई है।

तिब्बती—वि०[तिब्बत देश] तिब्बत-संबंधी। तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न।

पुं० तिब्बत देश का निवासी।

स्त्री० तिब्बत देश की भाषा।

तिमंजिला—वि०[हिं० तीन+अ० मंजिल] [स्त्री० तिमंजिली] (भवन) जिसके तीन खंड या मंजिलें हों।

तिम—पुं०[हिं० डिंडिम] डंका। नगाड़ा। (डिं०)

तिमाना—सं०[देश०] भिगोना।

तिमाशी—स्त्री० [हिं० तीन+माशा] १. तीन माशे की एक तौल। २. उक्त तौल का बटखरा या बाट। ३. पहाड़ी देशों की एक तौल जो ४० जौ की होती है।

तिमिंगिल—पुं०[सं० तिमि√गॄ (लीलना)+क, मुम्] १. समुद्र में रहनेवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा और भारी जंतु जो तिमि नामक बड़े मत्स्य को भी निगल सकता है। बड़ी भारी ह्वेल। २. एक प्राचीन द्वीप का नाम। ३. उक्त द्वीप का निवासी।

तिमिंगिलाशन—पुं० [सं० तिमिंगिल-अशन, ष०त०] १. दक्षिण का एक देश जिसके अंतर्गत लंका आदि हैं और जहाँ के निवासी तिमिंगिल मत्स्य का मांस खाते हैं। (बृहत्संहिता) २. उक्त देश का निवासी।

तिमि—पुं०[सं०√तिम् (गीला होना)+इन्]१. एक तरह की समुद्री बड़ी मछली। २. समुद्र। सागर। ३. आँखों का रतौंधी नामक रोग।

†अव्य०[सं० तर्+इमि] उस प्रकार। वैसे।

तिमिकोश—पुं०[ष०त०] समुद्र।

तिमिज—पुं०[सं० तिमि√जन् (पैदा होना)+ड]तिमि नामक मत्स्य से निकलनेवाला मोती। (बृहत्संहिता)

तिमित—वि० [सं०√तिम्+क्त]१. अचल। निश्चल। स्थिर। २. भींगा हुआ। आर्द्र। गीला।

तिमि-ध्वज—पुं०[ब०स०] शंबर नामक दैत्य जिसे मारकर रामचन्द्र ने ब्रह्मा से दिव्यास्त्र प्राप्त किया था।

तिमिर—पुं०[सं०√तिम्+किरच्] १. अंधकार। अंधेरा। २. आँखों का एक रोग जिसमें चीजें धुंधली, फीके रंग की या रंग-बिरंगी दिखाई देती हैं। वैद्यक में रतौंधी नामक रोग को भी इसी के अन्तर्गत माना है। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

तिमिरनुद्—वि०[सं० तिमिर√नुद् (नष्ट करना)+क्विप्] अंधकार का नाश करनेवाला।

पुं० सूर्य।

तिमिरभिद्—वि०[सं० तिमिर√भिद् (भेदना)+क्विप्] अंधकार को भेदने या नष्ट करनेवाला।

पुं० सूर्य।

तिमिरमय—वि०[सं० तिमिर+मयट्] जिसमें अंधकार हो। अंधकार-पूर्ण। अंधकार से युक्त।

पुं० १. राहु। २. ग्रहण। (सूर्य, चंद्र आदि का)

तिमिर-रिपु—पुं०[ष०त०] अंधकार का शत्रु, सूर्य।

तिमिरहर—वि०[सं० तिमिर√हृ (हरना)+अच्] तिमिर या अंधकार दूर करनेवाला।

पुं० १. सूर्य। २. दीपक। दीया।

तिमिरांत—पुं०[तिमिर-अंत, ष०त०]१. तिमिर याँ अंधेरे का अंत। २. प्रभात। तड़का।

तिमिरारि—पुं०[तिमिर-अरि, ष०त०] अंधकार का शत्रु अर्थात् सूर्य।

तिमिरारी—स्त्री०[सं० तिमिराली] अंधकार। अँधेरा।

तिमिला—स्त्री०[सं०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

तिमिश—पुं० =तिनिश (वृक्ष)।

तिमिष—पुं०[सं०√तिम् (गीला होना)+इसक् (षत्व)] १. ककड़ी। २. सफेद कुम्हड़ा। ३. पेठा। ४. तरबूज।

तिमी—पुं०[सं० तिमि+ङीष्]१. तिमि नाम की मछली। २. दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिससे तिमिंगलों की उत्पत्ति कही गई है।

तिमीर—पुं०[सं० तिमि√ईर् (गति)+अच्] एक तरह का पेड़।

तिमुहानी†—स्त्री०=तिरमुहानी।

तिय—स्त्री०[सं० स्त्री]१. स्त्री। औरत। २. पत्नी। भार्या।

तियतरा—वि०[सं० त्रि-अंतर] तीन पुत्रियों के उपरांत जन्मनेवाला (पुत्र)।

तियला—पुं०[हिं० तिय+ला(प्रत्य०)]१. कपड़ा। २. पहनने के कपड़े। ३. पोशाक।

तिया*—स्त्री०=तिय (स्त्री)।

पुं०=तीया।

तियगाना†—स०=त्यागना।

तियागी*—वि०, पुं०=त्यागी।

तिर—वि०[सं० त्रि] हिं० तीन का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तिरकुटा, तिरपाई, तिरमुहानी।

तिरक—पुं०[सं० त्रिक]१. रीढ़ के नीचे का वह स्थान जहाँ दोनों कूल्हों की हड्डियाँ मिलती हैं। २. दोनों टाँगों के ऊपरवाले जोड़ का स्थान। ३. हाथी के शरीर का वह पिछला भाग जहाँ से दुम निकलती है।

तिरकट—पुं०[?] आगे का पाल। अगला पाल। (लश०)

तिरकट गावा सवाई—पुं०[?] जहाज का आगे का और सबसे ऊपरवाला पाल। (लश०)

तिरकट गावी—पुं०[?] सिरे पर का पाल। (लश०)

तिरकट डोल—पुं० [?] आगे का मस्तूल। (लश०)

तिरकट तवर—पुं०[?] एक तरह का छोटा पाल जो जहाज के सब से ऊँचे मस्तूल पर लगाया जाता है। (लश०)

तिरकट सवर—पुं०[?] जहाज में लगा रहनेवाला सबसे ऊँचा पाल। (लश०)

तिरकट सवाई—पुं०[?] एक तरह का पाल। (लश०)

तिरकना—अ०[अनु०] 'तिर' शब्द करते हुए किसी चीज का टूटना या फटना।

अ०=थिरकना।

तिरकस†—वि० [सं० तिरस्] १. तिरछा। २. टेढ़ा।

तिरकाना—स० [?] रस्सा या और कोई बन्धन ढीला छोड़ना। (ल०)
†अ०=थिरकना।

तिरकुटा—पुं० [सं० त्रिकटु] पीपल, मिर्च और सोंठ ये तीनों एक में मिली हुई कड़ंवी वस्तुएँ।

तिरखा—स्त्री० [सं० तृषा] १. प्यास। उदा०—जाट का मैं लाड़ला तिरखा लगी सरीर।—लोकगीत। २. लोभ।

तिरखावंत—वि०=तृषित।

तिरखित—वि० [सं० तृषित; हिं० तिरखा] १. प्यासा। २. जिसे किसी बात की कामना हो।

तिरखूंटा—वि० [सं० त्रि+हिं० खूंट] [स्त्री० अल्पा० तिरखूंटी] तीन खूंटों या कोनोंवाला। तिकोना।

तिरच्छ—पुं० [?] तिनिश (वृक्ष)।

तिरछई†—स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन।

तिरछा—वि० [सं० तिर्यक् या तिरस] [स्त्री० तिरछी] १. कोई सीधी रेखा या इसी तरह की कोई और चीज जो लंब रूप में तथा क्षितिज के समानान्तर न हो बल्कि कुछ या अधिक ढालुईं हो। २. जिसमें टेढ़ापन या वक्रता हो।

पद—**तिरछी चितवन या नजर**=बिना सिर घुमाये पार्श्व या बगल में कुछ देखने का भाव। **तिरछी बात या वचन**=मन को कष्ट पहुँचानेवाली कटु या अप्रिय बात।

३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जो प्रायः अस्तर के काम में आता है।

तिरछाई†—स्त्री० [हिं० तिरछा+ई (प्रत्य०)] तिरछापन।

तिरछाना—अ० [हिं० तिरछा] तिरछा होना।
स० तिरछा करना।

तिरछापन—पुं० [हिं० तिरछा+पन (प्रत्य०)] 'तिरक्षा' करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तिरछी उड़ी—स्त्री० [हिं० तिरछा+उड़ना] माल खंभ की एक कसरत।

तिरछी बैठक—स्त्री० [हिं० तिरछी+बैठक] माल खंभ की एक कसरत जिसमें दोनों पैरों को कुछ घुमाकर एक दूसरे पर चढ़ाया जाता है।

तिरछे—क्रि० वि० [हिं० तिरछा] १. तिरछेपन की अवस्था में। २. वक्रता से।

तिरछौंहाँ†—वि० [हिं० तिरछा] १. जिसमें कुछ या थोड़ा तिरछापन हो। २. तिरछा।

तिरछौहैं—क्रि० वि० [हिं० तिरछौंहा] १. तिरछापन लिये हुए। २. वक्रता से।

तिरतालीस—वि०=तैंतालिस (४३)।

तिरतिराना†—अ० [अनु०] द्रव पदार्थ का बूंद बूंद करके टपकना।

तिरना—अ० १.=तरना। २=तैरना।

तिरनी—स्त्री० [?] १. वह डोरी जिससे घाघरा आदि कमर में बाँधा जाता है। नीवी। तिन्नी। फुफती। २. घाघरे या धोती का वह भाग जो कमर पर या नाभि के नीचे पड़ता है।

तिरप—स्त्री० [सं० त्रिसम] नृत्य में एक प्रकार का ताल जिसे त्रिसम या तिहाई कहते हैं।
क्रि० प्र०—लेना।

तिरपट†—वि० [देश०] १. (लकड़ी की धरन, पल्ले आदि के संबंध में) जो सूखकर ऐंठ गया हो। २. टेढ़ा-मेढ़ा। तिड़विड़गा। ३. कठिन। मुश्किल।

तिरपटा—वि० [हिं० तिरपट] (व्यक्ति या पशु) जिसकी सामने की ओर ताकते समय पुतलियाँ कोनों में चली जाती हों। ऐंचा-ताना। भेंगा।

तिरपन—वि० [सं० त्रिपंचाशत्; प्रा० तिपण्ण] जो गिनती में पचास से तीन अधिक हो। पचास से तीन ऊपर।
पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५३।

तिरपाई—स्त्री०=तिपाई।

तिरपाल—पुं० [सं० तृण+हिं० पालना=बिछाना] फूस, सरकंडे आदि के लंबे पूले जो खपड़ों आदि के नीचे बिछाये जाते हैं। मुट्ठा।
पुं० [अं० टारपालिन] एक प्रकार का मोटा कपड़ा जिस पर राल या रोगन चढ़ाया गया हो। इसको जल नहीं भेदता।

तिरपित*—वि०=तृप्त।

तिरपौलिया—वि० [सं० त्रि+हिं० पोल=फाटक] (वह बाजार, मकान आदि) जिसमें जाने के तीन बड़े द्वार या रास्ते हों।

तिरफला—स्त्री० =त्रिफला।

तिरबेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

तिरबो—स्त्री० [हिं० तिरवा] एक तरह की नाव। (सिंध)

तिरमिरा—पुं० [सं० तिमिर] १. एक रोग जिसमें अधिक प्रकाश के कारण आँखें चौंधिया जाती हैं और कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देने लगता है। २. चकाचौंध।
पुं० [हिं० तेल+मिलना] घी, तेल या चिकनाई के छींटे जो पानी, दूध या और किसी द्रव पदार्थ के ऊपर तैरते हुए दिखाई पड़ते हैं।

तिरमिराना—अ० [हिं० तिरमिरा] (तिरमिरा के रोगी की) अधिक प्रकाश के कारण आँखें चौंधियाना।
अ०=तिलमिलाना।

तिरमुहानी—स्त्री० [हिं० तीन+फा० मुहाना] १. वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने के तीन मार्ग या रास्ते हों। २. वह स्थान जहाँ तीन ओर से तीन नदियाँ आकर मिलती हों।

तिरनाक—पुं० [अ० तिर्याक़] १. जहर-मोहरा जिससे साँप के विष का प्रभाव नष्ट होता है। २. सब रोगों की रामवाण औषधि।

तिरलोक†—पुं०=त्रिलोक।

तिरलोकी—स्त्री०=त्रिलोक।

तिरवट—पुं० [देश०] तराने (राग) का एक भेद। (संगीत)

तिरवराना—अ० १=तिरमिराना। २=तिलमिलाना।

तिरवाँह—पुं० [सं० तीर+वाह] नदी के तीर की भूमि। किनारा। तट।
क्रि० वि० नदी के किनारे किनारे।

तिरवा—पुं० [फा०] वह दूरी जो उड़ान भरते समय तीर आदि पार करे। मास।

तिरविष्ट—पुं० =त्रिविष्टप (स्वर्ग)।

तिरश्चीन—वि० [सं० तिर्यक्+ख—ईन] १. तिरछा। २. टेढ़ा। वक्र।

तिरश्चीन-गति—पुं० [कर्म० स०] कुश्ती का एक पेंच या पैंतरा।

तिरसठ—वि० [सं० त्रिषष्टि; प्रा० तिसट्ठि] जो गिनती में साठ से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—६३।

तिरसा—पुं० [?] वह पाल जिसका एक सिरा दूसरे सिरे की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता है।

तिरसूल†—पुं०=त्रिशूल।

तिरस्कर—वि० [सं० तिरस्√कृ (करना)+ट] १. जो दूसरे से अधिक अच्छा या बढ़ा-चढ़ा हो। २. ढाँकनेवाला।

तिरस्करिणी—स्त्री० [सं० तिरस्करिन्+ङीप्] १. ओट। आड़। २. आड़ करने का परदा। चिक। चिलमन। ३. एक प्रकार की प्राचीन विद्या जिसकी सहायता से मनुष्य सव की दृष्टि से अदृश्य हो जाता था।

तिरस्करी (रिन्)—पुं० [सं०तिरस्√कृ+णिनि] परदा।

तिरस्कार—पुं० [सं० तिरस्√कृ+घञ्] [वि० तिरस्कृत] १. वह मनोभाव जो किसी को निकृष्ट या हेय समझने के कारण उत्पन्न होता है और उसका अनादर करने को प्रवृत्त करता है। २. वह स्थिति जिसमें उपयुक्त स्वागत, सत्कार आदि न किये जाने के फलस्वरूप अपने को अपमानित समझता हो। ३. डाँट-फटकार। भर्त्सना। ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमे किसी अच्छी चीज में भी कोई दोष दिखलाकर उसका अनादरपूर्वक त्याग तथा उसे तुच्छ सिद्ध किया जाता है।

तिरस्कृत—भू० कृ० [सं० तिरस्√कृ+क्त] १. जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादरपूर्वक त्यागा या दूर किया हुआ। ३. आड़ या परदे में छिपा हुआ।

तिरस्क्रिया—स्त्री० [सं० तिरस्√कृ+श, इयङ्, टाप्] १. तिरस्कार २. ढकने का कपड़ा। आच्छादन। ३. पहनने के कपड़े। पोशाक। वस्त्र।

तिरहा—पुं० [देश०] एक तरह का उड़नेवाला कीड़ा जो धान को क्षति पहुँचाता है।

तिरहुत—पुं० [सं० तीरभुक्ति] [वि० तिरहुतिया] विहार के उस प्रदेश का पुराना नाम जिसमें इस समय मुजफ्फरपुर, दरभंगा आदि नगर हैं।

तिरहुति—स्त्री० [हिं० तिरहुत] तिरहुत में गाया जानेवाला एक तरह का गीत।

तिरहुतिया—वि०, पुं० स्त्री०=तिरहुती।

तिरहुती—वि० [हिं० तिरहुत] तिरहुत देश का। तिरहुत संबंधी।

पुं० तिरहुत का निवासी।

स्त्री० तिरहुत देश की वोली।

तिरहेल—वि० [सं० त्रि] जो गणना में तीसरे स्थान पर हो अथवा तीसरी वार आया या हुआ हो उदा०—जो तिरहेल रहै सौ तिया।—जायसी।

तिरा—पुं० [देश०] १. एक पौधा जिसके वीजों की गिनती तेलहन में होती है। २. उक्त पौधे के वीज।

तिरांठी—स्त्री० [?] निसोत।

तिरानबे—वि० [सं० त्रि+हिं० नव्वे] जो गिनती में नव्वे से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९३।

तिराना—स० [हिं० तिरना] १. तिरने (अर्थात् तरने या तैरने) में प्रवत्त करना। २. दे० 'तारना'।

तिरास†—पुं०=त्रास।

तिरासना—अ० [सं० त्रासन] भयभीत या त्रस्त होना।

स० भयभीत या त्रस्त करना।

तिरासी—वि० [सं० त्र्यशीति; प्रा० तियासिर्स] जो गिनती में अस्सी से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८३।

तिराहा—पुं० [हिं० तीन+फा० राह] वह स्थान जहाँ से तीन ओर रास्ते जाते या आकर मिलते हों। तिरमुहानी।

तिराही—वि० [हिं० तिराह एक प्रदेश] १. तिराह प्रदेश में बनने या होनेवाला। २. तिराह प्रदेश-संबंधी।

स्त्री० उक्त प्रदेश में बननेवाली एक तरह की कटारी।

क्रि० वि० [?] नीचे।

तिरि†—वि० [सं० त्रि] तीन। उदा०—पुनि तिहि ठाउ परी तिरि रेखा।—जायसी।

स्त्री०=तिरिया (स्त्री)।

तिरिगत्त—पुं०=त्रिगर्त्त (देश)।

तिरिच्छ—पुं० [सं तिनिश] दे० 'तिनिश'।

तिरिजिह्विक—पुं० [सं०] एक प्रकार का पेड़।

तिरिदिवस—पुं०=त्रिदिवस (स्वर्ग)।

तिरिनि*—पुं०=तृण।

तिरिम—पुं० [सं०√तॄ (तैरना)+इमक्] एक प्रकार का धान।

तिरिया—स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।

पद—तिरिया चरित्तर=स्त्रियों द्वारा होनेवाला कोई ऐसा चालाकी भरा विलक्षण तथा हेय काम जिसका रहस्य जल्दी सब की समझ में न आता हो।

पुं० [देश०] नैपाल में होनेवाला एक तरह का बाँस।

तिरीछा†—वि०=तिरछा।

तिरीट—पुं० [सं०√तॄ (तैरना)+कीटन्] १. लोध्र। लोध। २. दे० 'किरीट'।

तिरीफल—पुं०=त्रिफला।

तिरी-बिरी—वि०=तिड़ी-बिड़ी।

तिरेंदा—पुं०=तरेंदा।

तिरं—पुं० [अनु०] हाथियों को जल में लेटने के लिए दी जानेवाली आज्ञा का सूचक शब्द या संकेत।

तिरोजनपद—पुं० [सं० तिरस्–जनपद, ब० स०] अन्य राष्ट्र का मनुष्य विदेशी (कौ०)

तिरोधान—पुं० [तिरस्√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. अंतर्धान या लुप्त होने की अवस्था या भाव। २. इस प्रकार किसी चीज का हटाया-बढ़ाया जाना कि वह फिर जल्दी दिखाई न पड़े।

तिरोधायक—वि० [सं० तिरस्√धा+ण्वुल्—अक] कोई चीज आड़ में करने या छिपानेवाला।

तिरोभाव—पुं० [तिरस्√भू (होना)+घञ्] १. आँखों से ओट होकर

अदृश्य हो जाना । अंतर्धान । अदर्शन। २. गोपन। छिपाव। दुराव ।

तिरोभूत—भू० कृ० [सं० तिरस्√भू+क्त] जो अदृश्य या गायब हो गया हो। अंतर्हित ।

तिरोहित—भू०कृ० [सं० तिरस्√धा (धारण करना)+क्त, हि आदेश] १. छिपा हुआ। अंतर्हित। अदृश्य। २. ढका हुआ। आच्छादित

तिरौंछा†—वि०=तिरछा ।

तिरौंदा†—पुं०=तरेंदा।

तिर्यंचानुपूर्वी—स्त्री० [सं० तिर्यंच्-आनुपूर्वी, ब० स०] जैनियों के अनुसार वह अवस्था जिसमें जीव को तिर्यग्योनी में जाने से पहले रहना पड़ता है।

तिर्यंची—स्त्री० [सं० तिर्यंच्+ङीप्] पशु-पक्षियों की मादा ।

तिर्यक् (च्)—वि० [सं० तिरस्√अञ्च् (जाना)+क्विन्] ढालुआँ।

तिर्यक्ता—स्त्री० [सं० तिर्यच्+तल्—टाप्] तिरछापन। आड़ापन।

तिर्यक्त्व—पुं० [सं० तिर्यच्+त्व] तिरछापन। आड़ापन ।

तिर्यक्पाती (तिन्)—वि० [सं० तिर्यक्√पत्(गिरना)+णिनि] आड़ा फैलाया या रखा हुआ। बेंड़ा रखा हुआ।

तिर्यक्-भेद—पुं० [तृ० त०] दो खंभों आदि पर स्थित किसी वस्तु का अधिक दाब के कारण बीच में से टूट जाना ।

तिर्यक्-स्रोतस्—पुं० [ब० स०] १. वह जिसका फैलाव आड़ा हो। २.ऐसा जंतु या जीव जिसके गले में की आहार-नलिका सीधी नहीं, बल्कि टेढ़ी हो और जिसके पेट में आहार टेढ़ा या तिरछा होकर पहुँचता हो।

विशेष—प्रायः सभी पक्षी और पशु इसी वर्ग में आते हैं।

तिर्यगयन—पुं० [तिर्यक्-अयन, कर्म० स०] सूर्य की वार्षिक परिक्रमा ।

तिर्यगीक्ष—वि० [सं०तिर्यक्√ईक्ष् (देखना)+अच्] तिरछे देखनेवाला।

तिर्यग्गति—स्त्री० [कर्म० स०] १. तिरछी या टेढ़ी चाल । २. जीव का पशु योनि में जन्म लेना ।

तिर्यग्गामी (मिन्)—पुं० [सं० तिर्यक्√गम् (जाना)+णिनि] केकड़ा।

तिर्यग्दिक् (श)—स्त्री० [कर्म० स०] उत्तर दिशा।

तिर्यग्दिश्—स्त्री० [कर्म स०] उत्तर दिशा ।

तिर्यग्यान—पुं० [ब० स०] केकड़ा ।

तिर्यग्योनि—स्त्री० [ष० त०] पशु-पक्षियों आदि की योनि। विशेष दे० 'तिर्यक् स्रोतस्' ।

तिर्यच—अव्य=तिर्यक् ।

तिलंगनी—स्त्री० [हिं० तिल+अँगिनी] एक प्रकार की मिठाई जो तिलों को चीनी की चाशनी में पागकर बनाई जाती है।

तिलंगसा—पुं० [देश०] एक तरह का पेड़।

तिलंगा—पुं० [हिं० तिलंगाना, सं० तैलंग] १. तिलंगाने या तैलंग देश का निवासी । २. भारतीय सेना का सिपाही ।

विशेष—पहले-पहले अँगरेजों ने तैलंग देश के आदमियों की ही भारतीय सेना बनाई थी; इसी से यह नाम पड़ा था।

३. एक प्रकार का कन-कौआ या पतंग ।

तिलंगाना—पुं० [सं० तैलंग] तैलंग देश ।

तिलंगी—पुं० [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी । तैलंग ।

स्त्री० तिलंगाने की बोली ।

स्त्री० [हिं० तीन+लंग] एक तरह की गुड्डी या पतंग ।

तिलंतुद—पुं० [सं० तिल√तुद् (पीड़ित करना)+खश्, मुम्] तेली ।

तिल—पुं० [सं०√तिल् (चिकना होना)+क] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी खेती उसके दानों या बीजों के लिए की जाती है। २. उक्त पौधे के दाने या बीज जो काले, सफेद और लाल तीन प्रकार के होते हैं और जिन्हें पेरकर तेल निकाला जाता है। हिंदुओं में यह पवित्र माना जाता है; इसी लिए इसे पापघ्न और पूतधान्य भी कहते हैं। इसें दान करने और इससे तर्पण, होम आदि करने का माहात्म्य है। यह कई प्रकार के पकवानों और मिठाइयों के रूप में खाया भी जाता है। वैद्यक में तिल कफ, पित्त, वातनाशक तथा अग्नि को दीपित करनेवाले माने गये हैं।

पद—तिल तिल करके=बहुत थोड़ा-थोड़ा करके । जैसे—बरसात के शुरू में तिल तिल करके दिन छोटा होने लगता है । **तिल भर**=(क) बहुत ही जरा-सा या थोड़ा। जैसे—तिल भर नमक तो ले आओ। (ख) बहुत थोड़ी देर। क्षण भर। जैसे—तुम तो तिल भर ठहरते नहीं; बात किससे करें।

मुहा०—तिल का ताड़ करना=किसी बहुत छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा देना । बात का बतंगड़ करना या बनाना । **तिल चाटना**=मुसलमानों में एक प्रकार का टोटका जिसमें दूल्हा अपनी दुलहिन के वश में रहना सूचित करने के लिए उसकी हथेली पर रखे हुए तिल चाटकर खाता है। **(किसी के) काले तिल चाबना**=किसी का इस प्रकार बहुत अधिक अनुगृहीत या ऋणी होना कि आगे चलकर उसका कोई बुरा परिणाम भोगना पड़े। जैसे—मैंने तुम्हारे काले तिल चाबे थे, जिसका फल भोग रहा हूँ ।

विशेष—तिल का दान प्रायः लोग शनि ग्रह का अरिष्ट या दोष टालने के लिए करते हैं; इसी आधार पर यह मुहा० बना है ।

मुहा०—(किसी स्थान पर) तिल धरने की भी जगह न होना=जरा सी भी जगह खाली न रहना । पूरा स्थान ठसाठस भरा रहना । जैसे—कमरे में इतने अधिक आदमी थे (या इतना अधिक सामान भरा था) कि कहीं तिल धरने की भी जगह नहीं थी। **(किसी के) तिलों से तिल निकालना**=किसी से बहुत कठिनतापूर्वक अपना कोई काम निकालना या स्वार्थ सिद्ध करना ।

कहा०—तिल की ओट पहाड़=किसी छोटी-सी बात की आड़ में होनेवाली कोई बहुत बड़ी बात। **इन तिलों में तेल नहीं है**=इनसे किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल सकती; अथवा कोई कार्य अथवा स्वार्थ सिद्ध नहीं हो सकता।

२. काले रंग का वह छोटा दाग जो शरीर पर प्राकृतिक रूप से लक्षण आदि के रूप में होता है। जैसे—गाल, ठोढ़ी या बाह पर का तिल । ३. काली बिंदी के आकार का गोदना जो स्त्रियाँ शोभा के लिए गाल, ठोढ़ी आदि पर गोदाती हैं। ४. आँख की पुतली के बीच की गोल बिंदी जिस पर दिखाई पड़नेवाली चीज का छोटा-सा प्रतिबिंब पड़ता है। तारा। ५. किसी प्रकार का छोटा काला, गोल बिंदु। जैसे—कुछ स्त्रियाँ काजल से गालें या ठोढ़ी पर तिल बनाती हैं।

मुहा०—तिल बँधना=सूर्यकांत शीशे से होकर आये हुए सूर्य के प्रकाश का केंद्रीभूत होकर बिंदु के रूप में एक स्थान पर पड़ना ।

६. किसी वस्तु का तुच्छ से तुच्छ या बहुत ही थोड़ा अंश या कोई बहुत छोटी चीज। जैसे—तिल चोर, सो बज्जर चोर।—कहा०। ७. बहुत ही थोड़ा समय, क्षण या पल। उदा०—(क) एहि जीवन कै आस का, जस सपना तिल आधु।—जायसी। (ख) तिल में दिल लेके यूं मुकरते हैं कि गोया इन तिलों में तेल नहीं।—कोई शायर।

तिल-कंठी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] विष्णु काँची। काली कौवा ठोंठी।

तिलक—पुं० [सं० तिल+कन्] १. केसर, चंदन, रोली आदि से ललाट पर लगाई जानेवाली गोल बिंदी। लंबी रेखा आदि के आकार का लगाया जानेवाला चिह्न।

विशेष—ऐसा चिह्न मुख्यतः विशिष्ट धार्मिक संप्रदायों के अनुयायी होने का सूचक होता है; और प्रायः प्रत्येक संप्रदाय का तिलक कुछ अलग आकार-प्रकार का रहता तथा कभी कभी माथे के सिवा छाती, बाहों आदि पर भी लगाया जाता है। परन्तु प्रायः शारीरिक शोभा के लिए भी और कुछ विशिष्ट मांगलिक अवसरों पर प्रथा या रीति के रूप में भी तिलक लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—धारना।—लगाना।—सारना।

२. उक्त प्रकार का वह चिह्न जो नये राजा के अभिषेक अथवा पहले-पहल राज-सिंहासन पर बैठने के समय उसके मस्तक पर लगाया जाता है। राज-तिलक। ३. भावी वर के मस्तक पर लगाया जानेवाला उक्त प्रकार का वह चिह्न जो विवाह-संबंध स्थिर होने का सूचक होता है और जिसके साथ कन्या-पक्ष की ओर से कुछ धन, फल, मिठाइयाँ आदि भी दी जाती हैं। टीका।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।

मुहा०—तिलक देना या भेजना=उक्त अवसर पर धन, मिठाइयाँ आदि देना या भेजना।

४. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका। ५. वह जो अपने वर्ग में सब से श्रेष्ठ हो। शिरोमणि। जैसे—रघुकुल तिलक श्रीरामचंद्र। ६. किसी ग्रंथ के कठिन पदों, वाक्यों आदि की विशद और विस्तृत व्याख्या। टीका। ७. पुन्नाग की जाति का एक पेड़ जिसके पुष्प तिल के पुष्प से मिलते-जुलते होते हैं। इसकी लकड़ी और छाल दवा के काम आती है। ८. मूंज आदि का घूआ या फूल। ९. लोध का पेड़। १०. मरूअक। मरुआ। ११. एक प्रकार का अश्वत्थ। १२. एक प्रकार का घोड़ा। १३. पेट के अन्दर की तिल्ली। क्लोम। १४. साँचर नमक। १५. संगीत में ध्रुवक का एक भेद जिसमें एक-एक चरण पचीस पचीस अक्षरों के होते हैं।

पुं० [तु० तिरलीक़ का संक्षिप्त रूप] १. एक प्रकार का ढीला-ढाला जनाना कुरता जो प्रायः मुसलमान स्त्रियाँ सूथन के साथ पहनती हैं। २. राजा या बादशाह की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाले पहनने के कपड़े। खिलअत। सिरोपाव।

वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. कीर्ति, शोभा आदि बढ़ानेवाला। जैसे—रघुकुल तिलक।

तिलक-कामोद—पुं० [कर्म० स०] ओड़व-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

तिलकट—पुं० [सं० तिल+कटच्] तिल का चूर्ण।

तिलकडिया—पुं० [सं० तिलक] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण और एक गुरु होते हैं। उगाध। यशोदा।

तिलकना—अ० [हिं० तड़कना] गीली मिट्टी का सूखकर स्थान-स्थान पर दरकना या फटना। ताल आदि की मिट्टी का सूखकर दरार के साथ फटना।

†अ० = फिसलना। (पश्चिम)

तिलक-मार्ग—पुं० [सं०] १. माथे पर का वह स्थान जहाँ तिलक लगाया जाता है। २. माथे पर लगा हुआ तिलक या उसका चिह्न।

तिलक-मुद्रा—पुं० [सं० मध्य० स०] धार्मिक क्षेत्र में माथे पर लगा हुआ तिलक और शरीर पर अंकित किए हुए सांप्रदायिक चिह्न।

तिल-कल्क—पुं० [ष० त०] तिल का चूर्ण। तिलकुट।

तिलकहरा†—पुं० दे० 'तिलकहार'।

तिलकहार—पुं० [हिं० तिलक+हार (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो कन्या-पक्ष की ओर से वर को तिलक चढ़ाने के लिए भेजा जाता है।

तिलका—स्त्री० [सं० तिल√कै (शब्द करना)+क+टाप्] १. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण (।।ऽ) होते हैं। इसे 'तिल्ला' 'तिल्लाना' और डिल्ला' भी कहते हैं। २. गले में पहनने का एक गहना।

तिल-कालक—पुं० [उपमि० स०] १. शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न। तिल। २. एक प्रकार का रोग जिसमें पुरुष की लिंगेंद्रिय पक जाती है और उस पर काले दाग पड़ जाते हैं।

तिलकावल—वि० [सं० तिलक+अव√ला (लाना)+क?] १. जिसने अपने शरीर के किसी अंग पर तिल का चिह्न बनाया हो। २. तिल सरीखे चिह्न से युक्त।

तिलकाश्रय—पुं० [सं० तिलक-आश्रय, ष० त०] तिलक लगाने का स्थान। ललाट।

तिल-किट्ट—पुं० [ष० त०] तिल की खली। पीना।

तिलकित—भू० कृ० [सं० तिलक+इतच्] जिस पर या जिसे तिलक लगा हो।

तिलकुट—पुं० [सं० तिलकल्क] १. एक प्रकार की मिठाई जो गुड़, चीनी आदि की चाशनी में तिल पागकर बनाई जाती है। २. [सं० तिलवलि] तिल की खली।

तिलकोड़ा—पुं० [देश०] एक तरह का जंगली कुंदरू जिसकी पत्तियों का साग बनाया जाता है।

तिलखलि—स्त्री० [सं०] तिल की खली।

तिलखा—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तिलचटा—पुं० [हिं० तिल+चाटना] एक तरह का झींगुर। चपड़ा।

तिल-चतुर्थी—स्त्री० [मध्य० स०] माघ कृष्ण चतुर्थी।

तिल-चाँवरा†—वि० = तिल-चावला।

तिल-चावला—वि० [हिं० तिल+चावल] [स्त्री० तिल-चावली] जो तिलों और चावलों के मेल की तरह कुछ काला और कुछ सफेद हो। जैसे—तिल-चावलीदाढ़ी, तिल-चावले बाल।

तिल-चावली—स्त्री० [हिं० तिल+चावल] तिलों और चावलों की खिचड़ी। उदा०—जैसी तरी तिल चावली वैसे मेरे गीत।—कहावत।

तिल-चित्र-पत्रक—पुं० [ब० स०, कप्] तैलकंद।

तिल-चूर्ण—पुं० [ष० त०] तिलकुट।

तिलछना—अ० [अनु०] १. विकल तथा व्यग्र होना। २. छटपटाना।

तिलड़ा—वि० [हिं० तीन लड़] [स्त्री० तिलड़ी] जिसमें तीन लड़ हों। तीन लड़ोंवाला। जैसे—तिलड़ी करधनी, तिलड़ हार।

पुं० [देश०] धातु पर नक्काशी करने की छेनी।

तिलड़ी—स्त्री० [हिं० तीन+लड़] तीन लड़ियों की एक माला जिसके बीच में एक जुगनी लटकती है।

तिल-तंडुलक—पुं० [सं० तिल-तंडुल, ष० त०, √कै (प्रतीत होना)+क] १. गले लगाना। आलिंगन। २. भेंठ। मिलन।

तिल-तैल—पुं० [ष० त०] तिलों को पेरकर निकाला हुआ तेल। तिल का तेल।

तिलदानी—स्त्री० [हिं० तिल्ला+सं० आधान] सूई, तागा, अंगुश्ताना आदि रखने की थैली। (दरजी)

तिल-धेनु—स्त्री० [सं० मध्य० स०] दान करने के लिए तिलों की बनाई हुई गौ की आकृति।

तिलपट्टी—स्त्री० [हिं० तिल+पट्टी] खाँड़ या गुड़ में पगे हुए तिलों का जमा हुआ टुकड़ा।

तिल-पपड़ी—स्त्री० =तिलपट्टी।

तिल-पर्ण—पुं० [सं० ब० स०] १. चंदन। २. साल का गोंद।

तिलर्पणिका—स्त्री० [सं० तिलपर्णी+कन्–टाप्, ह्रस्व]=तिलपर्णी।

तिलपर्णी—स्त्री० [सं० तिलपर्ण+ङीष्] रक्त चंदन।

तिलपिंज—पुं० [सं० तिल+पिंज] तिल का वह पौधा जिसमें बीज आदि न लगें।

तिल-पिच्चट—पुं० [ष० त०] तिलों की पीठी। तिलकुटा

तिलपीड—पुं० [सं० तिल√पीड् (पीड़ित करना)+अच्] तेली जो तिल पेरकर तेल निकालता है।

तिल-पुष्प—पुं० [ष० त०] १. तिल का फूल। २. व्याघ्रनख या बघनखा नामक गन्ध-द्रव्य।

तिल-पुष्पक—पुं० [ब० स०, कप्] १. बहेड़ा। २. नाक जिसकी उपमा तिल के फूल से दी जाती है।

तिलफरा—पुं० [देश०] एक तरह का वृक्ष।

तिलबढ़ा—पुं० [देश०] पशुओं को होनेवाला एक रोग जिसमें उनके गले में सूजन हो जाती है और जिसके कारण उनसे कुछ खाया-पीया नहीं जाता।

तिलबर—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तिलभार—पुं० [ब० स०] एक प्राचीन देश।

तिलभाविनी—स्त्री० [सं० तिल√भू (होना)+णिच्+णिनि–ङीप्] चमेली। मल्लिका।

तिलभुग्गा—पुं० [हिं० तिल+सं० भुक्त] तिल तथा खोये आदि के योग से बननेवाला एक तरह का चूर्ण।

तिल-भृष्ट—वि० [तृ० त०] तिल के साथ भूना या पकाया हुआ। (खाद्य-पदार्थ)

तिल-भेद—पुं० [ष० त०] पोस्ते का दाना।

तिल-मयूर—पुं० [मध्य० स०] एक पक्षी जिसके परों पर तिलों के समान काले-काले चिह्न होते हैं।

तिलमापट्टी—स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत के कुछ प्रदेशों में होनेवाली एक तरह की कपास।

तिलमिल—स्त्री० [हिं० तिरमिर] १. ऐसी अवस्था जिसमें अधिक प्रकाश के कारण अथवा रोग आदि के कारण आँखों के सामने कभी प्रकाश और कभी अँधेरा आ जाता हो। २. चकाचौंध।

तिलमिलाना—अ० [हिं० तिरमिल] [भाव० तिलमिलाहट] १. तिलमिल होना। आँखों के आगे कभी अँधेरा और कभी प्रकाश आना! २. चकाचौंध होना।

अ० [अनु०] [भाव० तिलमिलाहट, तिलमिली] १. पीड़ा के कारण विकल होना। २. पछताना।

तिलमिलाहट—स्त्री० [हिं० तिलमिलाना] तिलमिलाने की अवस्था या भाव। बेचैनी।

तिलमिली—स्त्री० =तिलमिलाहट।

तिल-रस—पुं० [ष० त०] तिलों का तेल।

तिलरा—पुं० [देश०] कसेरों की एक तरह की छेनी।

†पुं० = तिलड़ा।

तिलरिया†—स्त्री० = तिलड़ी।

तिलरी—स्त्री० = तिलड़ी (तीन लड़ोंवाला हार)।

तिलवट—पुं० = तिल-पट्टी।

तिलवन—स्त्री० [देश०] एक तरह का जंगली पौधा जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं।

तिलवा†—पुं० [हिं० तिल] तिलों का लड्डू।

तिलशकरी—स्त्री० [हिं० तिल+शकर] तिलों और शक्कर के योग से बना हुआ एक तरह का पकवान। तिलपपड़ी।

तिल-शिखी (खिन्)—पुं० [मध्य० स०]=तिल-मयूर।

तिल-शैल—पुं० [मध्य० स०] दान करने के लिए तिलों का लगाया हुआ ऊँचा ढेर या राशि।

तिलस्म—पुं० [यू० टेलिस्मा] १. इन्द्रजाल या जादू के जोर से कोई अलौकिक काम कर या करा सकने की शक्ति। २. इस प्रकार किया या कराया हुआ कोई काम। अलौकिक व्यापार।

मुहा०—तिलस्म तोड़ना=ऐसी प्रतिक्रिया करना जिससे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया हुआ तिलस्म या जादू का सारा स्वरूप नष्ट हो जाय।

तिलस्मात—पुं० [यू० टेलिस्मन] १. जादू। २. अद्भुत या अलौकिक कार्य। चमत्कार। करामात।

तिलस्मी—वि० [हिं० तिलस्म] तिलस्म या जादू-संबंधी।

तिलहन—पुं० =तेलहन।

तिलांकित दल—पुं० [सं० तिल-अंकित-दल, ब० स०] तैलकंद।

तिलांजली—स्त्री० [सं० तिल-अंजली, मध्य० स०] १. किसी के मरने पर उसके संबंधियों द्वारा किया जानेवाला एक कृत्य जिसमें वे हाथ में तिल और जल लेकर उसके नाम से छोड़ते हैं। २. सदा के लिए किसी का संग या साथ छोड़ना। जैसे—लड़का घरवालों को तिलांजली देकर चला गया।

क्रि० प्र०—देना।

तिलांबु—पुं० [सं० तिल-अंबु, मध्य० स०] =तिलांजली।

तिला—पुं० [हिं० तेल] एक तरह का तेल जिसे लिंगेंद्रिय पर मलने से पुंसत्व शक्ति बढ़ती है।

†पुं० = तिल्ला।

तिलाक—पुं० = तलाक।

तिलादानी†—स्त्री०= तिलदानी।

तिलान्न—पुं० [सं० तिल-अन्न, मध्य० स०] तिल की खिचड़ी।

तिलापत्या—स्त्री० [सं० तिल-अपत्य, ब० स०, टाप्] काला जीरा।

तिलाम—पुं० [अ० गुलाम का अनु०] गुलाम का गुलाम। दासानुदास।

तिलावा—पुं० [हिं० तीन+लावना, लाना, ?] १. वह बड़ा कूआँ जिस पर एक साथ तीन पुरवट चल सकें। २. नगर-रक्षकों, पुलिस आदि का रात के समय बस्ती में लगनेवाला गश्त।

तिलिंग—पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध देश।

तिलिंगा†—पुं० =तिलंगा (तैलंग देश का निवासी या सिपाही)।

तिलित्स—पुं० [सं० √तिल् (चिकना करना)+इन्, तिलि√त्सर् (कुटिल गति)+उ] गोनस साँप।

तिलिया—पुं० [देश०] सरपत।

†वि०, पुं० = तेलिया

तिलिस्म—पुं० = तिलस्म।

तिलिस्मी—वि० = तिलस्मी।

तिली—स्त्री० १.=तिल्ली। २. =तिल।

तिलेगू—पुं० = तेलगू।

तिलेती—स्त्री० [हिं० तेलहन+एती (प्रत्य०)] तेलहन (तिल, सरसों आदि पौधे) काटने पर खेत में बची रहनेवाली खूँटी।

तिलेदानी—स्त्री० =तिलदानी।

तिलोक—पुं० =त्रिलोक।

तिलोकपति—पुं०=त्रिलोकपति (विष्णु)।

तिलोकी—पुं० [सं० त्रिलोकी] १. इक्कीस मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में लघु और गुरु होता है। २.=त्रैलोक्य। जैसे—त्रिलोकी नाथ।

तिलोचन—पुं० =त्रिलोचन।

तिलोत्तमा—स्त्री० [सं० तिल-उत्तमा, मध्य० स०] एक अप्सरा जिसके संबंध में कहा जाता है कि ब्रह्मा ने संसार के सभी सुन्दरतम पदार्थों से एक-एक तिल भर अंश लेकर इसके शरीर की रचना की थी।

तिलोदक—पुं० [सं० तिल-उदक, मध्य० स०] =तिलांजलि।

तिलोना—वि० =तेलौना (स्निग्ध)।

तिलोरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मैना जिसे तेलिया मैना भी कहते हैं।

†स्त्री० = तिलौरी।

तिलोहरा†—पुं० [देश०] पटसन का रेशा।

तिलौंछ—स्त्री० [हिं० तिल+औंछ (प्रत्य०)] तेल की वह उग्र गंध जो उसमें तली हुई या उससे मिली हुई वस्तुओं में से निकलती है।

तिलौंछना—स० [हिं० तेल+औंछना (प्रत्य०)] १. किसी चीज पर तेल लगाना या रगड़ना। २. चिकना करना।

तिलौंछा—वि० [हिं० तेल+औंछा (प्रत्य०)] १. जिसमें तिलौंछ हो। २. जिसमें तेल की-सी गंध, रंग या स्वाद हो।

तिलौरी—स्त्री० [हिं० तिल+बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिले हुए हों।

स्त्री० = तिलोरी।

तिल्य—वि० [सं० तिल+यत्] (खेत) जिसमें तेलहन की खेती हो सकती हो।

पुं० उक्त प्रकार का खेत।

तिल्लना—पुं० [सं० तिलका] तिलका नाम का वर्ण-वृत्त।

तिल्लर—पुं० [देश०] होबर नामक पक्षी का एक नाम।

तिल्ला—पुं० [अ० तिला = स्वर्ण] १. कलाबत्तू, बादले आदि के तार जो कपड़ों में ताने-बाने के साथ बुने जाते हैं।

पद—**तिल्लेदार**। (देखें)

२. दुपट्टे, पगड़ी, साड़ी आदि का वह आँचल जिसमें उक्त प्रकार का कलाबत्तू या बादले का काम किया हो।

पद—**नखरा-तिल्ला**। (देखें)

३. वह सुंदर पदार्थ जो किसी वस्तु की शोभा बढ़ाने के लिए उसमें जोड़ दिया जाता है। (क्व०)

पुं० तिलका (वर्ण-वृत्त) का दूसरा नाम।

तिल्लाना†—पुं० = तराना।

तिल्ली—स्त्री० [सं० तिलक] १. पेट के भीतर का गुठली के आकार का वह छोटा अवयव जो बाईं ओर की पसलियों के नीचे होता है। २. एक रोग जिसमें उक्त अवयव में सूजन आ जाती है।

स्त्री० [सं० तिल] तिल (बीज)।

स्त्री० [देश०] एक तरह का बाँस।

†स्त्री० = तिली।

तिल्लेदार—वि० [हिं० तिल्ला+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें कलाबत्तू, बादले आदि के तार भी बुने या लगे हों।

जैसे—तिल्लेदार पगड़ी या साड़ी।

तिल्व—पुं० [सं०√तिल् (चिकना करना)+वन्] लोध्र। लोध।

तिल्वक—पुं० [सं० तिल्व+कन्] १. लोध। २. तिनिश वृक्ष।

तिल्हारी†—स्त्री० [?] घोड़े के माथे पर बाँधी जानेवाली झालर। नुकता।

तिवाड़ी—पुं०=तिवारी (त्रिपाठी)।

तिवान—पुं० [?] चिंता। फिक्र।

तिवारी†—पुं०=त्रिपाठी।

तिवास†—पुं० [सं० त्रिवासर] तीन दिन।

तिवासी†—वि०=तिबासी।

तिवी—स्त्री० [देश०] खेसारी।

तिशना—पुं० [फा० तिशनीय] ताना। मेहना।

†स्त्री०=तृष्णा।

तिष्ट*—वि० [हिं० तिष्टना] बनाया हुआ। रचित।

तिष्टना—स० [सं० स्थिति] रचना। बनाना। उदा०—कोउ कहै यह काल उचावत कोई कहै यह ईसुर तिष्टी।—सुन्दर।

तिष्ठद्गु—पुं० [सं० अव्य० स० (नि०)] गोधूली का समय। संध्या।

तिष्ठना—अ० [सं० तिष्ठत्] १. ठहरना। २. बैठना। ३. स्थिर रहना। बने रहना।

तिष्ठा—स्त्री० [?] एक नदी जो हिमालय से निकलकर नवाबगंज के पास गंगा में मिली है।

तिष्य—पुं० [सं०√तुष् (सन्तोष करना)+क्यप्, नि० सिद्धि] १. पुष्य नक्षत्र। २. पौष मास। पूस। ३. कलियुग।

वि० कल्याण या मंगल करनेवाला।

तिष्यक—पुं० [सं० तिष्य+कन्] पौस मास।

तिष्य-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] आमलकी।

तिष्या—स्त्री० [सं० तिष्य+अच्—टाप्] आमलकी।

तिष्षन*—वि०=तीक्षण।

तिस†—सर्व० [सं० तस्मिन्; पा० तिस्स] 'ता' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। 'उस' का पुराना और स्थानिक रूप। जैसे—तिसने, तिसको, तिससे इत्यादि।

पद—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था में भी। जैसे—सौ रुपये तो ले गये; तिस पर अभी तक नाराज ही हैं।

तिसकार—पुं०=तिरस्कार।

तिसखुट†—स्त्री० [हिं० तीसी+खूंटी] तीसी के पौधे की खूंटी।

तिसखुर†—स्त्री०=तिसखुट।

तिसन*—स्त्री०=तृष्णा।

तिसरा†—वि०=तीसरा।

तिसरायके—अव्य० [हिं० तिसरा] तीसरी बार।

तिसरायत—स्त्री० [हिं० तीसरा] तीसरा अर्थात् गैर या पराया होने का भाव।

†पुं०=तिसरैत।

तिसरैत—पुं० [हिं० तीसरा] १. दो विरोधी दलों, पक्षों, व्यक्तियों से भिन्न ऐसा तीसरा व्यक्ति जिसका उनके वैर-विरोध से कोई सम्बन्ध न हो। तटस्थ। जैसे—किसी तिसरैत को बीच में डालकर झगड़ा निबटा लो। २. लाभ, संपत्ति आदि में तीसरे अंश या हिस्से का अधिकारी अथवा मालिक।

तिसा†—वि० [सं० तादृश] [स्त्री० तिसी] तैसा। वैसा।

*स्त्री०=तृषा।

तिसाना†—अ० [सं० तृषा] प्यासा होना। तृषित होना। उदा०—सरवर तटि हंसिनी तिसाई।—कबीर।

तिसार† —पुं०=अतिसार।

तिसूत—पुं० [?] एक प्रकार की ओषधि।

तिसूती—वि० [हिं० तीन+सूत] (कपड़ा) जिसमें तीन-तीन सूत एक साथ ताने और बाने में होते हैं।

स्त्री० उक्त प्रकार से बुना हुआ कपड़ा।

तिसे*—सर्व०=उसे।

तिस्ना—स्त्री०=तृष्णा।

तिस्रा—स्त्री० [?] शंख-पुष्पी।

तिस्स—पुं० [सं० तिष्य] सम्राट् अशोक के एक भाई का नाम।

तिहत्तर—वि० [सं० त्रिसप्तति; पा० तिसत्तति; प्रा० तिहत्तरि] जो गिनती में सत्तर से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७३।

तिहद्दा—पुं० [हिं० तीन+हद्द=सीमा] वह स्थान जहाँ तीन हद्दें मिलती हों।

तिहरा—पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० तिहरी] दही जमाने या दूध दुहने का मिट्टी का बरतन।

†वि०=तेहरा।

तिहराना†—स०=तेहराना।

तिहरी†—स्त्री० [हिं० तीन+हार्] तीन लड़ों की माला।

+वि०='तेहरा' का स्त्री०।

तिहवार†—पुं०=त्योहार।

तिहवारी—स्त्री०=त्योहारी।

तिहा (हन्)—पुं० [सं०√तुह् (पीड़ित करना)+कनिन्, नि० सिद्धि] १. रोग। व्याधि। २. सद्भाव। ३. चावल। ४. धनुष।

तिहाई—स्त्री० [सं० त्रि+हिं० हाई (प्रत्य०)] १. किसी चीज के तीन समान भागों में कोई या हर एक। तीसरा अंश, भाग या हिस्सा। २. खेत की उपज या पैदावार जिसका केवल तीसरा भाग काश्तकारों को मिला करता था और दो-तिहाई जमींदार ले लेता था। ३. दे० 'तिहैया'। ४. उपज। फसल। (पहले खेत की उपज का तृतीयांश काश्तकार लेता था इसी से यह नाम पड़ा।)

मुहा०—तिहाई मारी जाना=फसल का न उपजना या नष्ट हो जाना।

तिहउ†—पुं०=तिहाव (गुस्सा)।

तिहानी—स्त्री० [देश०] चूड़ियाँ बनानेवालों की एक लकड़ी जो तीन बालिश्त लंबी और एक बालिश्त चौड़ी होती है।

तिहायत† पुं० दे० 'तिसरैत'।

तिहारा, तिहारो* —सर्व० [हिं०] तुम्हारा का ब्रज रूप।

तिहाली—स्त्री० [देश०] कपास की बोंड़ी।

तिहाव†—पुं० [हिं० तेह=गुस्सा+ताव] १. क्रोध। गुस्सा। २. आपस की अनबन। बिगाड़।

तिहि—सर्व०=तेहि।

तिहीं†—क्रि० वि० [?] १. उसी में। २. उसी जगह।

तिहूं† —वि० [हिं० तीन+हूँ (प्रत्य०)] तीनों। जैसे—तिहूं लोक।

तिहैया—पुं० [हिं० तिहाई] १. किसी चीज का तीसरा अंश या भाग। तिहाई। २. ढोलक, तबला, पखावज आदि बजाने में कलापूर्ण सौन्दर्य लानेवाली तीन थापें जिनमें से प्रत्येक थाप जो अंतिम या समवाले ताल को तीन भागों में बांटकर प्रत्येक भाग पर दी जाती है और जिसकी अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।

ती—स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री। औरत। उदा०—(क) तीरथ चलत मन ती-रथ चलत है—सेनापति। (ख) औ तैसे यह लच्छन ती के।—रत्नाकर। २. जोरू। पत्नी। ३. नलिनी या मनोहरण छन्द का एक नाम।

तीअन†—स्त्री० [सं० तृणान्न] शाक। भाजी। तरकारी।

तीकरा†—पुं० [देश०] अँखुआ। अंकुर।

तीकुर—पुं० [हिं० तीन+कूरा=अंश] १. दे० 'तिहया'। २. किसी चीज का बहुत छोटा टुकड़ा।

†पुं०=तीखुर।

तीक्षण* —वि०=तीक्ष्ण।

तीक्षन—वि० =तीक्ष्ण।

तीक्ष्ण—वि० [सं०√तिज् (तीखा करना)+क्स्न, दीर्घ] १. (पदार्थ) जिसका स्वाद चरपरा, झालदार या हलकी चुनचुनी उत्पन्न करनेवाला हो। तीखे स्वादवाला। जैसे—प्याज, लहसुन आदि। २. (शस्त्र) जिसकी धार वहुत चोखी या तेज अथवा नोक बहुत पैनी हो। जैसे—तलवार, बरछी आदि। ३. जिसकी गति या वेग बहुत अधिक हो। प्रचंड। जैसे—तीक्ष्ण वायु। ४. जिसका परिणाम या प्रभाव बहुत उग्र या तीव्र हो। जैसे—तीक्ष्ण स्वभाव। ५. जो किसी बात में औरों से वहुत बढ़-चढ़कर हो या अधिक गहराई तक पहुँच सके। जैसे—तीक्ष्ण बुद्धि। ६. (कथन) जो अप्रिय और कटु हो। जैसे—तीक्ष्ण वचन। ७. आत्मत्यागी। ८. जो कभी आलस्य न करता हो। निरालस्य। ९. जिसे सहना कठिन हो। जैसे—तीक्ष्ण ताप या शीत।

पुं० [सं०] १. उत्ताप। गरमी। २. जहर। विष। ३. वत्सनाभ। बछनाग। ४. मृत्यु। मौत। ५. युद्ध। लड़ाई। ६. महामारी। मरी। ७. चव्य। चाब। ८. मुष्यक। मोखा। ९. जवाखार। १०. सफेद कुश। ११. समुद्री नमक। करकच। १२. कुंदरू गोंद। १३. इस्पात। १४. शास्त्र। १५. योगी। १६. ज्योतिष में मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र। १७. पूर्वा और उत्तरा भाद्रपदा, ज्येष्ठा, अश्विनी और रेवती नक्षत्रों में वुध की गति।

तीक्ष्ण-कंटक—पुं० [व० स] १. धतूरे का पेड़। २. बबूल का पेड़। ३. करील का पेड़। ४. इंगुदी या हिंगोट का पेड़।

तीक्ष्ण-कंटक—स्त्री० [सं० तीक्ष्णकंटक+टाप्] एक प्रकार का वृक्ष जिसे कंकारी कहते हैं।

तीक्ष्ण-कंद—पुं० [व० स०] प्याज।

तीक्ष्णक—पुं० [सं० तीक्ष्ण+कन्] १. मोखा वृक्ष। २. सफेद सरसों।

तीक्ष्ण-कल्क—पुं० [ब० स०] तुंवरू का पेड़।

तीक्ष्ण-कांता—स्त्री० [कर्म० स०] पुराणानुसार तारा देवी का एक नाम।

तीक्ष्ण-क्षीरी—स्त्री० [व० स०, ङीष्] बंसलोचन।

तीक्ष्ण-गंध—पुं० [व० स०] १. शोभांजन। सहिंजन। २. लाल तुलसी। ३. सफेद तुलसी। ४. छोटी इलायची। ५. लोबान।

तीक्ष्ण-गंधक—पुं० [सं० तीक्ष्ण-गंध+कन्] सहिंजन।

तीक्ष्णगंधा—स्त्री० [सं० तीक्ष्णगंध+टाप्] १. राई। २. छोटी इलायची। ३. सफेद बच। ४. जींवती। ५. कंथारी का वृक्ष।

तीक्ष्ण-तंडुला—स्त्री० [सं० ब० स०, +टाप्] पिप्पली। पीपल?

तीक्ष्णता—स्त्री० [सं० तीक्ष्ण+तल —टाप्] तीक्ष्ण होने की अवस्था या भाव।

तीक्ष्ण-ताप—पुं० [व० स०] महादेव। शिव।

तीक्ष्ण-तेल—पुं०=तीक्ष्ण-तैल।

तीक्ष्ण-तैल—पुं० [सं० तीक्ष्ण+तैलच्] १. सरसों का तेल। २. सेंहुड़ का दूध। ३. मद्य। शराब। ४. राल।

तीक्ष्ण-दंत—वि० [व० स०] जिसके दाँत बहुत तेज या नुकीले हों।

तीक्ष्ण-दंष्ट्र—वि० [ब० स०] तीखे या तेज दाँतोंवाला।

पुं० वाघ (हिंस्रक जंतु)।

तीक्ष्ण-दृष्टि—वि० [ब० स०] जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण हो। सूक्ष्म दृष्टि-वाला (व्यक्ति)।

तीक्ष्ण-धार—वि० [ब० स०] जिसकी धार बहुत तेज हो।

पुं० खड्ग, तलवार आदि शस्त्र।

तीक्ष्ण-पत्र—वि० [ब० स०] जिसके पत्तों के पार्श्व तेज धारवाले हों।

पुं० १. एक प्रकार का गन्ना। २. धनिया।

तीक्ष्ण-पुष्प—पुं० [सं० ब० स०] लवंग। लौंग।

तीक्ष्ण-पुष्पा—स्त्री० [सं० तीक्ष्णपुष्प+टाप्] केतकी।

तीक्ष्ण-प्रिय—पुं० [कर्म० स० ?] जौ।

तीक्ष्ण-फल—पुं० [ब० स०] तुंबुरू। धनिया।

तीक्ष्ण-फला—स्त्री० [सं० तीक्ष्णफल+टाप्] राई।

तीक्ष्ण-बुद्धि—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसकी बुद्धि प्रखर हो।

तीक्ष्ण-मंजरी—स्त्री० [ब० स०] पान का पौधा।

तीक्ष्ण-मूल—वि० [ब० स०] जिसकी जड़ में से उग्र या तेज गंध आती हो।

पुं० १. कुलंजन। २. सहिंजन।

तीक्ष्ण-रश्मि—वि० [ब० स०] जिसकी किरणें बहुत तेज हों।

पुं० सूर्य।

तीक्ष्ण-रस—पुं० [ब० स०] १. जवाखार। यवक्षार। २. शोरा।

तीक्ष्ण-लौह—पुं० [कर्म० स०] इस्पात।

तीक्ष्ण-शूक—पुं० [ब० स०] यव। जौ।

तीक्ष्ण-सारा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] शीशम का पेड़।

तीक्ष्णांशु—पुं० [तीक्ष्ण-अंशु, ब० स०] सूर्य।

तीक्ष्णा—स्त्री० [सं० तीक्ष्ण+टाप्] १. बच। २. केवांच। कौंछ। ३. बड़ी माल-कंगनी। ४. मिर्च। ५. सर्पकंकाली नामक पौधा। ६. अत्यम्लपर्णी नाम की लता। ७. जोंक। ८. तारा देवी का एक नाम।

तीक्ष्णाग्नि—स्त्री० [तीक्ष्ण-अग्नि, कर्म० स०] १. प्रबल जठराग्नि। २. अजीर्ण या अपच नाम का रोग।

तीक्ष्णाग्र—वि० [तीक्ष्ण-अग्र, ब० स०] (अस्त्र) जिसका अगला भाग नुकीला हो।

तीक्ष्णायस—पुं० [तीक्ष्ण-आयस, कर्म० स०] इस्पात। लोहा।

तीखा†—वि०=तीखा।

तीखन†—वि०=तीक्ष्ण।

तीखर†—पुं०=तीखुर।

तीखल†—पुं०=तीखुर।

तीखा—वि० [सं० तीक्ष्ण] [स्त्री० तीखी] [भाव० तीखापन] १. (शस्त्र) जिसकी धार या नोक बहुत तेज या पैनी हो। चोखा। जैसे—तीखी छुरी। २. (व्यक्ति या उसका व्यवहार) जिसमें किसी प्रकार की उग्रता, तीव्रता या प्रखरता हो। कोमलता, मृदुता, सरलता, आदि से रहित। जैसे—तीखी नजर, तीखा स्वभाव। ३. (पदार्थ) जिसका स्वाद उग्र, चरपरा या तेज हो। जैसे—तरकारी में पड़ा हुआ तीखा मसाला। ४. (कथन या बात) जिसमें अप्रियता या कटुता हो। जैसे—मैं किसी की तीखी बातें नहीं सुनना चाहता। ५. किसी की तुलना में अच्छा या बढ़कर। चोखा। जैसे—यह घी

(या तेल) उससे तीखा पड़ता है। ६. (दृष्टि) तिरछा। तिर्यक्। जैसे—सुंदरी का किसी को तीखी नजर से देखना।

पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

तीखापन—पुं० [हिं० तीखा+पन (प्रत्य०)] तीखे होने की अवस्था या भाव।

तीखी—स्त्री० [हिं० तीखा] एक उपकरण जिससे रेशम फेरा या बटा जाता है।

तीखुर—पुं० [सं० तवक्षीर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ का सार सफेद चूर्ण के रूप में होता और खीर, हलुआ आदि बनाने के काम आता है। अब एक प्रकार का तीखुर विदेशों से भी आता है जिसे आरारूट (देखें) कहते हैं।

तीखुल†—पुं०=तीखुर।

तीछन†—वि०=तीक्ष्ण।

तीछा*—वि०=तीखा।

तीज—स्त्री० [सं० तृतीया] १. प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। तृतीया। २. भादों सुदी तीज जिस दिन सुहागनि स्त्रियाँ निजल व्रत रखती हैं। ३. हरितालिका।

तीजा—वि० [हिं० तीज] तीसरा।

पुं० किसी के मरने के बाद का तीसरा दिन। इस दिन मृतक के संबंधी गरीबों को भोजन बाँटते हैं। (मुसलमान)

तीत*—वि०=तीता। (तिक्त)

तीतर—पुं० [सं० तित्तिरि] मुरगी की जाति का एक पक्षी जिसका मांस खाया जाता है। काले रंग का तीतर काला और चित्रित रंग का तीतर गौर कहलाता है।

कहा०—**आधा तीतर और आधा बटेर**=ऐसी वस्तु जिसके दो विभिन्न अंगों या अंशों का अनुपात या सौंदर्य एक-सा न हो।

विशेष—वैद्यक में तीतर का मांस खाँसी, ज्वर आदि का नाशक माना गया है।

तीता—वि० [सं० तिक्त] १. जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त। जैसे—मिर्च। २. कड़ुआ। कटु।

वि० [?] भींगा हुआ। आर्द्र। तर।

पुं० १. जोती-बोई जानेवाली जमीन की तरी या नमी। २. ऊसर भूमि। ३. ढेंकी और रहट का अगला भाग। ४. ममीरे का पौधा।

तीतुर*—पुं०=तीतर।

तीतुरी†—स्त्री० =तितली।

तीतुल†—पुं०=तीतर।

तीन—वि० [सं० त्रीणि] जो गिनती में दो से एक अधिक हो।

पुं० १. दो और एक के योग की संख्या। २. उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३

मुहा०—**तीन पाँच करना**=घुमाव-फिराव, बहानेबाजी या हुज्जत की बात करना।

३. सरयूपारी ब्राह्मणों में गर्ग, गौतम और शांडिल्य इन तीन विशिष्ट गोत्रों का एक वर्ग।

मुहा०—**तीन तेरह करना**=(क) अनेक प्रकार के वर्ग या विभेद उत्पन्न करना। (ख) इधर-उधर छितराना या बेखेरना। तितर-बितर करना।

कहा०—**न तीन में न तेरह में**=जिसकी कहीं गिनती या पूछ न हो।

† स्त्री०=तिन्नी (धान्य)।

तीन काने—पुं० [हिं०] चौपड़ के खेल में वह दाँव जो तीनों पासों पर एक ही एक बिंदी ऊपर रहने पर माना जाता है। (खेल का सबसे छोटा दाँव)

तीनपान—पुं० [देश०] एक तरह का बहुत मोटा रस्सा। (लश०)

तीनपाम—पुं०=तीनपान।

तीनलड़ी—स्त्री० [हिं० तीन+लड़ी] तीन लड़ियोंवाला गले में पहनने का हार।

तीनि†—वि०, पुं०=तीन।

तीनी—स्त्री० [हिं० तिन्नी] तिन्नी का चावल।

तीपड़ा—पुं० [देश०] रेशमी कपड़ा बुननेवालों का एक उपकरण जिसके नीचे-ऊपर वे दो लकड़ियाँ लगी रहती हैं जिन्हें बेसर कहते हैं।

तीमन—पुं० [?] बनी हुई तरकारी या उसका रसा। (पूरब)

तीमार—पुं० [फा०] १. टहल। सेवा-शुश्रूषा। २. रक्षा।

तीमारदारी—स्त्री० [फा०] रोगी की की जानेवाली सेवा-शुश्रूषा।

तीय—स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री। औरत। नारी। २. पत्नी। जोरू।

तीरंदाज—पुं० [फा०] [भाव० तीरंदाजी] तीर से लक्ष्य-भेद करनेवाला व्यक्ति।

तीरंदाजी—स्त्री० [फा०] तीर से लक्ष्य-भेद करने की क्रिया या भाव।

तीर—पुं० [सं०√तीर् (पार जाना)+अच्] १. नदी का किनारा। तट।

मुहा०—**तीर पकड़ना या लगना**=किनारे पर पहुँचना।

२. किसी चीज का किनारा। ३. निकटता। सामीप्य। ४. सीसा नामक धातु। ५. रांगा।

अव्य० निकट। पास। समीप।

पुं० [फा०] १. धनुष से छोड़ा जानेवाला वाण। शर।

क्रि० प्र०—चलाना। छोड़ना।—फेंकना।—लगाना।

२. लाक्षणिक रूप में, कौशल या चालाकी से भरी हुई तरकीब। चाल।

मुहा०—**तीर चलाना या फेंकना**=ऐसी तरकीब या युक्ति लगाना जिससे काम निकलने की बहुत-कुछ संभावना हो। **तीर लगना**=युक्ति सफल होना। काम बनना।

पुं० [?] जहाज का मस्तूल। (लश०)

तीरगर—पुं० [फा०] तीर बनानेवाला कारीगर।

तीरण—पुं० [सं०√तीर् (पार जाना)+ल्युट्—अन] करंज।

तीरथ—पुं०=तीर्थ।

तीर-भुक्ति—स्त्री० [सं० ब० स०] गंगा, गंडकी और कौशिकी इन तीन नदियों से घिरा हुआ तिरहुत प्रदेश।

तीरवर्त्ती (तिन्)—वि० [सं० तीर√वृत् (रहना)+णिनि] १. तट पर रहनेवाला। २. तीर या तट पर स्थित होनेवाला।

तीरस्थ—पुं० [सं० तीर√स्था (स्थित होना)+क] नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति।

तीरा†—पुं० [?] गुलहजारा नामक फूल।
पुं०=तीर।

तीराट—पुं० [सं० तीर√अट् (घूमना)+अच्] लोध।

तीरित—भू० कृ०[सं०√तीर् (कार्य समाप्त होना)+क्त] निर्णीत।

तीरु—पुं० [सं०√तॄ (तैरना)+क्रु (बा०)] १. शिव। महादेव। २. शिव की स्तुति।

तीर्ण—वि० [सं०√तॄ (पार करना)+क्त] १. जो पार हो गया हो। उत्तीर्ण। २. जिसने सीमा का उल्लंघन किया हो। ३. भींगा हुआ। गीला। तर।

तीर्णपदा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] तालमूल। मूसली।

तीर्णपदी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्]=तीर्णपदा।

तीर्ण—स्त्री० [सं० तीर्ण+टाप्] एक प्रकार का छंद।

तीर्थंकर—पुं० [सं० तीर्थ√ कृ (करना)+ख,]जैनियों के प्रमुख देवता। **विशेष**—कुल ४८ तीर्थंकर माने गये हैं जिनमें से २४ गत उत्सर्पिणी में और २४ वर्त्तमान उत्सर्पिणी में हुए हैं।

तीर्थ—पुं० [सं०√तॄ (पार करना)+थक्] १. जलाशय आदि में उतरने अथवा नाव के यात्रियों के उतरने-चढ़ने के लिए बनी हुई सीढ़ियाँ। घाट। २. मार्ग। रास्ता। ३. वह जिसके द्वारा या सहायता से कोई काम होता या हो सकता हो। कार्य सिद्ध करने का उपाय, युक्ति या साधन। ४. कोई ऐसा स्थान, विशेषतः जलाशय, नदी, समुद्र आदि के पास का स्थान जिसे लोग धार्मिक दृष्टि से पवित्र या मोक्षदायक समझते हों और श्रद्धापूर्वक दर्शन, पूजन आदि के लिए जाते हों। जैसे—काशी हिंदुओं का और मक्का मुसलमानों का बहुत बड़ा तीर्थ है। ५. कोई ऐसा स्थान जिसे लोग अन्य स्थानों से विशिष्ट महत्त्व का या कार्य-सिद्धि में सहायक समझते हों। जैसे—आज-कल के राजनीतिज्ञों का तीर्थ तो बस दिल्ली है। ६. कोई ऐसा महात्मा या महापुरुष जिसे लोग पूज्य और श्रद्धेय समझते हों। जैसे—गुरु, पिता, माता आदि तीर्थ है। ७. धार्मिक गुरु या शिक्षक। उपाध्याय। ८. किसी चीज या बात का मूल कारण या स्रोत अथवा मुख्य साधन। ९. उपयुक्त अथवा योग्य परामर्श या सूचना। १०. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त अवसर या स्थल। ११. धार्मिक ग्रंथ, विज्ञान या शास्त्र। १२. यज्ञ। १३. हथेली और उँगलियों के कुछ विशिष्ट स्थान जिनमें कुछ विशिष्ट देवी-देवताओं का अवस्थान माना जाता है। १४. ईश्वर अथवा उसका कोई अवतार। १५. किसी देवता या देवी का चरणामृत। १६. दर्शन-शास्त्र की कोई शाखा या सिद्धांत। १७. ब्राह्मण। १८.अग्नि। आग। १९. पुण्य-काल। २०. अतिथि। मेहमान। २१. दशनामी संन्यासियों का एक भेद और उनकी उपाधि। २२. योनि। भग। २३. रजस्वला स्त्री का रज। २४. वैरभाव छोड़कर किया जानेवाला सद्व्यवहार या सदाचरण। २५. परामर्श देनेवाला व्यक्ति। मंत्री। २६. प्राचीन भारत में, वे विशिष्ट अठारह अधिकारी जो राष्ट्र की संपत्ति माने जाते थे। यथा—मंत्री-पुरोहित, युवराज, भूपति, द्वारपाल, अंतर्वंशिक, कारागार का अध्यक्ष, द्रव्य या धन एकत्र करनेवाला अधिकारी, कृत्याकृत्य अर्थ का विनियोजक, प्रदेष्टा, नगराध्यक्ष, कार्यनिर्माण कारक, धर्माध्यक्ष, सभाध्यक्ष, दंडपाल, दुर्गपाल, राष्ट्रान्तपाल और अटवीपाल। २७. रोग का निदान या पहचान।
वि० १. तारने या पार उतारनेवाला। २. उद्धार करने या बचानेवाला।

तीर्थंकृत्—पुं० [सं० तीर्थ√कृ (करना)+क्विप्] १. जैनियों के देवता। जिन। देव। २. शास्त्रकार।

तीर्थक—पुं० [सं० तीर्थ√कै (शब्द करना)+क] १. ब्राह्मण। २. तीर्थंकर। ३. तीर्थों की यात्रा करनेवाला व्यक्ति।

तीर्थंकर—पुं० [स० तीर्थ√कृ+ट] १. विष्णु। २. जैनों के विशिष्ट महापुरुष जो संख्या में २४ हैं और जिन कहे जाते हैं।

तीर्थ-काक—पुं० [स० त०] वह जो तीर्थ में रह कर धर्म के नाम पर लोगों से धन ऐंठता हो।

तीर्थ-देव—पुं० [ष० त० वा उपमि० स०] शिव। महादेव।

तीर्थ-पति—पुं [ष० त०]=तीर्थराज।

तीर्थ-पाद्—पुं० [ब० स०] विष्णु।

तीर्थपादीय—पुं० [सं० तीर्थपाद+छ—ईय] वैष्णव।

तीर्थ-पुरोहित—पुं० [स० त०] वह जो किसी विशिष्ट तीर्थ में रहकर आनेवाले यात्रियों का पौरोहित्य करता और उन्हें स्नान, दर्शन आदि कराता हो। पंडा।

तीर्थयात्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तीर्थ-स्थानों के दर्शनार्थ की जानेवाली यात्रा।

तीर्थ-राज—पुं० [ष० त०] प्रयाग।

तीर्थ-राजि—स्त्री० [ब० स०] काशी।

तीर्थ-व्यास—पुं०=तीर्थ-काक।

तीर्थसेनि—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

तीर्थ-सेवी (विन्)—पुं० [सं० तीर्थ√सेव् (सेवन करना)+णिनि] वह जो पुण्य, मोक्ष आदि प्राप्त करने के विचार से और धार्मिक भावनाओं से सदाचारपूर्वक किसी तीर्थ में जाकर रहने लगता हो।

तीर्थाटन—पुं० [सं० तीर्थ-अटन, मध्य० स०] तीर्थ यात्रा।

तीर्थिक—पुं० [सं० तीर्थ+ठन्—इक] १. तीर्थ का ब्राह्मण। पंडा। २. तीर्थंकर। ३. बौद्धों की दृष्टि में वह ब्राह्मण जो बौद्ध-धर्म का द्वेषी हो।

तीर्थिया—पुं० [सं० तीर्थ+हिं० इया (प्रत्य०)] जैनी जो तीर्थंकरों के उपासक होते हैं।

तीर्थोदक—पुं० [सं० तीर्थ-उदक, ष० त०] किसी तीर्थ-स्थल का जल जो पवित्र माना जाता है।

तीर्थ्य—पुं० [सं० तीर्थ+यत्] १. एक रुद्र का नाम। २. सहपाठी।

तीर्न—वि० [सं० तीर्ण] १. उत्तीर्ण। २. भींगा हुआ।

तीलखा—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तीला—पुं० [फा० तीर=बाण] [स्त्री० अल्पा० तीली] तिनका, विशेषतः बड़ा या लंबा तिनका।

तीली—स्त्री० [हिं० तीला] १. वनस्पति आदि का बड़ा तिनका। सींक। २. धातु आदि का पतला कड़ा तार। ३. तीलियों की वह कूँची जिससे जुलाहे करघे पर का सूत साफ करते हैं। ४. जुलाहों की ढरकी में की वह सींक जिसमें नरी पहनाई रहती है।

तीवई*—स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री।

तीवट—पुं० [सं० त्रिवण] १. एक राग जो दोपहर के समय गाया जाता है। २. संगीत में १४ मात्राओं का एक ताल जिसे तेव[illegible] या तेवरा भी कहते हैं।

तीवन—पुं० [सं० तेमन=व्यंजन] १. पकवान। २. रसेदार तरकारी।

तीवर—पुं० [सं०√तॄ (तैरना)+ष्वरच्, नि० सिद्धि] १. समुद्र। सागर। २. [√तीर् (कर्म-समाप्ति)+ष्वरच्] व्याध। शिकारी। ३. मछुआ। ४. पुराणनुसार एक वर्ण-संकर जाति जिसकी उत्पत्ति राजपूत माता और क्षत्रिय पिता से कही गई है।

†वि०=तीव्र।

तीव्र—वि० [सं०√तीव् (मोटा होना)+रक्] १. बहुत अधिक। अतिशय। अत्यंत। २. बहुत अधिक तीक्ष्ण या तीखा। तेज। ३. बहुत गरम। ४. मान, सीमा आदि में बहुत बढ़ा हुआ। वेहद। ५. कड़ुआ। कटु। ६. जो सहा न जा सके। असह्य। ७. उग्र, प्रचंड, या विकट। ८. जिसमें यथेष्ट वेग हो। ९. (संगीत में स्वर) जो अपने मानक या साधारण रूप से कुछ ऊँचा या बढ़ा हुआ हो। 'कोमल' का विपर्याय।

विशेष—ऋषभ गान्धार, मध्यम, धैवत और निषाद ये पांचों स्वर दो प्रकार के होते हैं—कोमल और तीव्र।

पुं० १. लोहा। २. नदी का किनारा या तट। ३. महादेव। शिव।

तीव्र-कंठ—पुं० [ब० स०] सूरन। जमीकंद। ओल।

तीव्र-गंधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अजवायन। यवानी।

तीव्रगंधिका—स्त्री० [सं० तीव्रगन्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] अजवायन।

तीव्र-गति—स्त्री० [ब० स०] वायु। हवा।

तीव्र-ज्वाला—स्त्री० [सं० तीव्र√ज्वल् (जलना)+णिच्+अच्—टाप्] धव का फूल जिसे छूने से लोगों का विश्वास था कि शरीर में घाव हो जाता है।

तीव्रता—स्त्री० [सं० तीव्र+तल्—टाप्] तीव्र होने की अवस्था या भाव। (सभी अर्थों में)

तीव्र-सव—पुं० [कर्म० स०] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

तीव्रा—स्त्री० [सं० तीव्र+टाप्] १. षडज स्वर की चार श्रुतियों में से पहली श्रुति। २. खुरासानी अजवायन। ३. राई। ४. गांडर दूब। गंड-दूर्वा। ५. तुलसी। ६. कुटकी। ७. बड़ी मालकंगनी। ८. तरवी नामक वृक्ष।

तीव्रानन्द—पुं० [तीव्र-आनन्द, ब० स०] शिव। महादेव।

तीव्रानुराग—पुं० [तीव्र-अनुराग, कर्म० स०] १. किसी वस्तु के प्रति होनेवाला अत्यधिक अनुराग। २. उक्त प्रकार का अनुराग जो जैनों में अतिचार माना गया है।

तीस—वि० [सं० त्रिंशति; पा० तीसा] जो गिनती में बीस से दस अधिक हो।

स्त्री० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है–३०।

पद—तीस मार खाँ=बहुत बड़ा बहादुर। (व्यंग्य) **तीसों दिन**=सदा। नित्य।

तीसरा†—स्त्री० [हिं० तीसरा] खेत की तीसरी जुताई।

वि०=तीसरा।

तीसरा—वि० [हिं० तीन+सरा (प्रत्य०)] १. क्रम में तीन के स्थान में पड़नेवाला जो गिनती में दो के उपरांत और चार से पहले हो। २. जिसका प्रस्तुत विषय अथवा दोनों पक्षों में से किसी एक से भी कोई संबंध या लगाव न हो।

तीसवाँ—वि० [हिं० तीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम में तीस के स्थान में पड़नेवाला। तीसवाँ दिन।

तीसी—स्त्री० [सं० अतसी] १. डेढ़ हाथ ऊँचा एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल तथा बीज मटमैले रंग के घुंडीदार गोल होते हैं। २. उक्त बीज जो वैद्यक के अनुसार वात, पित और कफनाशक होते हैं।

स्त्री० [हिं० तीस+ई (प्रत्य०)] वस्तुएँ गिनने का एक मान जिसका सैंकड़ा तीस गाहियों का अर्थात् १५० का होता है।

स्त्री० [?] एक प्रकार की छेनी जिससे लोहे की थालियों आदि पर नक्काशी करते हैं।

तीहा†—पुं० [सं० तुष्टि ?] तसल्ली। आश्वासन।

वि०=तिहाई। जैसे—आधा-तीहा माल।

तुंग—वि० [सं०√तुंज् (हिंसा करना)+घञ्, कुत्व] १. बहुत ऊँचा। २. उग्र। तीव्र। ३. प्रधान। मुख्य।

पुं० १. महादेव। शिव। २. बुध नामक ग्रह। ३. ज्योतिष में ग्रहों के उच्च होने की अवस्था। दे० 'उच्च'। ४. चतुर व्यक्ति। ५. पर्वत। पहाड़। ६. पुन्नाग वृक्ष। ७. नारियल। ८. कमल का केसर। किंजल्क। ९. झुंड। समूह। १०. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और दो गुरु होते हैं। ११. एक प्रकार का झाड़दार छोटा पेड़ जो पश्चिमी हिमालय में होता है। इसे आमी और एरंडी भी कहते हैं।

तुंगक—पुं० [सं० तुंग+कन्] १. पुन्नाग वृक्ष। नागकेसर। २. एक प्राचीन तीर्थ जहाँ सारस्वत मुनि ऋषियों को वेद पढ़ाते थे।

तुंग-नाथ—पुं० [मध्य० स०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

तुंग-नाभ—पुं० [ब० स०] एक तरह का कीड़ा जिसके काट लेने पर शरीर में जलन होती है।

तुंग-बाहु—पुं० [ब० स०] तलवार चलाने का एक पुराना ढंग या प्रकार।

तुंग-बीज—पुं० [ष० त०] पारद। पारा।

तुंग-भद्र—पुं० [कर्म० स०] मतवाला हाथी।

तुंगभद्रा—स्त्री० [सं० तुंग-भद्र+टाप्] दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो सह्याद्रि पर्वत से निकलती है और कृष्णा नदी में मिलती है।

तुंग-मुख—पुं० [ब० स०] गैंडा।

तुंगरस—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का गंध-द्रव्य।

तुंगला—पुं० [देश०] एक तरह की छोटी झाड़ी।

तुंगवेणा—स्त्री० [सं०] तुंगभद्रा नदी का पुराना नाम।

तुंग-शेखर—पुं० [ब० स०] पर्वत। पहाड़।

तुंगा—स्त्री० [सं० तुंग+टाप्] १. वंशलोचन। २. शमी वृक्ष। ३. तुंग नामक वर्णवृत्त।

तुंगारण्य—पुं० [तुंग-अरण्य, कर्म० स०] झाँसी, ओड़छा आदि प्रदेशों के आस-पास के जंगलों का पुराना नाम।

तुंगारन्न*—पुं०=तुंगारण्य।

तुंगारि—पुं॰ [तुंग–अरि, ष॰ तं॰ ?] सफेद क़नेर का पेड़।

तुंगिनी—स्त्री॰ [सं॰ तुंग+इनि—ङीप्] महाशतावरी। बड़ी सतावर।

तुंगिमा (मन्)—स्त्री॰ [सं॰ तुग+इमनिच्] ऊँचाई।

तुंगी (गिन्)—वि॰ [सं॰ तुग+इनि] ऊँचा।

पुं॰ उच्चस्थ ग्रह।

स्त्री॰ [सं॰ तुंग+ङीष्] १. हल्दी। २. रात्रि। रात। ३. बन-तुलसी। ममरी।

तुंगी-नास—पुं॰ [ब॰ स॰] दे॰ 'तुंगनाभ'।

तुंगी-पति—पुं॰ [ष॰ त॰] चंद्रमा।

तुंगीश—पुं॰ [तुंगि-ईश, कर्म॰ स॰] १. शिव। २. सूर्य। ३. कृष्ण।

तुंज—पुं॰ [सं॰√तुज् (हिंसा करना)+अच्] वज्र।

तुंजाल—पुं॰ [सं॰ तुरंग–जाल] घोड़ों की पीठ पर डाली जानेवाली एक तरह की जाली या जालीदार कपड़ा जिससे मक्खियाँ उन्हें तंग नहीं करने पातीं।

तुंजीन—पुं॰ [सं॰तुंज+ख—ईन?] प्राचीन काल के कश्मीरी नरेशों की उपाधि।

तुंड—पुं॰ [सं॰√तुंड् (तोड़ना)+अच्] १. मुख। मुँह। २. चोंच। ३. कुछ बड़ा तथा आगे निकला हुआ मुँह। थूथन। ४. तलवार का अगला भाग। ५. शिव। ६. एक राक्षस।

तुंडकेरिका—स्त्री॰ [सं॰ तुंडकेरी+कन्–टाप्, ह्रस्व] कपास का पौधा।

तुंडकेरी—स्त्री॰ [सं॰ तुंड+कन्√ईर् (प्रेरित करना)+अण्—ङीप्] १. क़पास। २. बिंबाफल। कुंदरू।

तुंडके-शरी—पुं॰ [सं॰ मध्य॰ स॰ ?] वैद्यक के अनुसार तालु में होनेवाली एक तरह की सूजन (रोग)।

तुंडि—स्त्री॰ [सं॰√तुंड्+इन्] १. नाभि। २. बिंबाफल। कुंदरू। ३. दे॰ 'तुंड'।

तुंडिक—वि॰ [सं॰ तुंडि√कै (शब्द करना)+क] जिसका मुँह आगे की ओर निकला हुआ हो। थूथनवाला।

तुंडिका—स्त्री॰ [सं॰ तुंड+कन्—टाप्] १. टोंटी। २. बिंबाफल। कुंदरू। ३. चोंच। ४. गले के अंदर जीभ की जड़ के पास की दो अंडाकार ग्रंथियाँ। कौआ। घंटी। (टांसिल्स)

तुंडिका-शोय—पुं॰ [ष॰ त॰] तुंडिका अर्थात् घंटी में होनेवाली सूजन। (टॉन्सिलाइटिस)

तुंडिकेशी—स्त्री॰ [सं॰ पृषो॰ सिद्धि] कुंदरू।

तुंडिभ—वि॰ [सं॰ तुंडि+भ] जिसकी तोंद या नाभि आगे निकली तथा बढ़ी हुई हो।

तुंडिल—वि॰ [सं॰ तुंडि+लच्] १. तोंद या निकले हुए पेटवाला। तोंदिल। २. जिसकी नाभि मोटी और बाहर निकली हुई हो।

तुंडी (डिन्)—वि॰ [सं॰ तुंड+इनि] १. तुंडवाला। तुंड से युक्त। २. चोंचवाला। ३. थूथनवाला।

पुं॰ गणेश।

स्त्री॰ [सं॰ तुंडि+ङीप्] ढोंढी। नाभि।

तुंडी-गुद-पाक—पुं॰ [सं॰ तुंडी-गुद, द्व॰ स॰, तुंडीगुद+पाक, स॰ त॰] एक रोग जिसमें नाभि और गुदा दोनों में सूजन हो जाती है।

तुंडीर-मंडल—पुं॰ [व॰ स॰] एक प्राचीन देश जो दक्षिण में था।

तुंद—पुं॰ [सं॰√तुद् (व्यथा)+दन्, नुम्] उदर। पेट।

वि॰ [फा॰] तीव्र। तेज। प्रचंड। जैसे—तुंद हवा।

तुंदि—पुं॰ [सं॰√तुंद्+इन्, नुम्] १. नाभि। २. एक गंधर्व का नाम।

तुंदिक—वि॰ [सं॰ तुद+ठन्—इक] जिसकी तोंद निकली या बढ़ी हुई हो। तोंदिल।

तुंदिक-फला—स्त्री॰ [सं॰ ब स॰, टाप्] खीरे की बेल।

तुंदिका—स्त्री॰ [सं॰ तुंदिक+टाप्] नाभि।

तुंदित, तुंदिभ—वि॰ [सं॰ तुंद+इतच्; तुंदि+भ] तुंदिल। (दे॰)

तुँदियाना†—अ॰ [हिं॰ तोंद] तोंद बढ़ना।

स॰ तोंद बढ़ाना।

तुंदिल—वि॰ [सं॰ तुंद+इलच्] जिसकी तोंद निकली या बढ़ी हुई हो।

तुंदिलीकरण—पुं॰ [सं॰ तुंदिल+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ+ल्युट्—अन] १. फुलाना। २. बढ़ाना।

तुंदी—स्त्री॰ [सं॰ तुन्द+ङीप्] नाभि।

तुंदैल† —वि॰=तुंदिल।

तुंदैला†—वि॰=तुंदिल।

तुंब—पुं॰ [सं॰√तुंब् (नष्ट करना)+अच्] १. घीया। लौकी। २. सुखाई हुई लौकी का तूंबा।

तुंबड़ी—स्त्री॰ [देश॰] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी अंदर से सफेद और चिकनी होती तथा मकानों में लगती है।

स्त्री॰=तूंबड़ी।

तुंबर —पुं॰ [सं॰तुंब√रा (लाना)+क] तुंबुरु। (दे॰)

तुंबरी—स्त्री॰ [सं॰ तुम्बर+ङीप्] एक कदन्न।

तुंबवन—पुं॰ [सं॰] दक्षिण दिशा का एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)

तुंबा—पुं॰[सं॰ तुंब+टाप्] [स्त्री॰ अल्पा॰ तुंबी] १. कड़ुआ कद्दू। गोल कड़ुआ घीया। तूंबा। २. सुखाये हुए कड़ुए कद्दू को बीच में से काट कर बनाया हुआ कटोरे के आकार का पात्र। ३. एक प्रकार का जंगली धान जो जलाशयों के किनारे होता है।

तुंबिका—स्त्री॰ [सं॰√तुंब्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व]=तुंबी।

तुंबी—स्त्री॰ [सं॰√तुंब्+इन्—ङीष्] १. छोटा कड़ुवा कद्दू। तितलौकी। २. उक्त को सुखाकर बनाया हुआ पात्र। छोटा तूंबा।

तुंबुक—पुं॰ [सं॰√तुंब् (पीड़ित करना)+उक] कद्दू का फल। घीया।

तुंबुरी—स्त्री॰ [सं॰ तुंब√रा+क—ङीष्, पृषो॰ उत्व] १. धनिया। २. कुतिया।

तुंबुरु—पुं॰[सं॰=तुंबर, पृषो॰ सिद्धि] १. धनिया। २. चैत्र मास में सूर्य के रथ पर रहनेवाला एक गंधर्व जो बहुत बड़ा संगीतज्ञ कहा गया है। ३. धनिये की तरह के एक प्रकार के बीज जो बहुत झालदार या तीखे स्वादवाले होते हैं।

तुअ*—सर्व॰=तव (तुम्हारा)।

तुअना† —अ॰ [हिं॰ चूना, चुवना] १. चूना। टपकना। २. गर्भपात या गर्भस्राव होना। ३. गिर पड़ना। गिरना।

तुअर—पुं॰ [सं॰ तुवरी] अरहर।

तुइ—सर्व॰=तूं।

तुई—स्त्री॰ [?] कपड़े पर बनी हुई एक प्रकार की बेल जो स्त्रियाँ दुपट्टों पर लगाती हैं।
†सर्व॰ १.=तू ही। २.=तू।

तुक—स्त्री॰ [हिं॰ टूक=टुकड़ा] १ कविता, गीत आदि के चरण का वह अंतिम व्यंजन (या स्वरयुक्त व्यंजन), शब्द या पद जिसके अनुप्रास का निर्वाह आगे के चरणों, पदों आदि में करना आवश्यक होता है। अंत्यानुप्रास। अक्षर-मैत्री। काफिया।
पद—**तुक-बंदी**। (देखें)
मुहा॰—**तुक जोड़ना**=कविता, गीत आदि के लिए ऐसे चरण या पद बनाना जिनके अंतिम वर्णों, शब्दों आदि में ध्वनिसाम्य मात्र हो, कौशलपूर्ण या भावमय कवित्वगुण का अभाव हो। जैसे—हम तुक जोड़नेवाले कवियों की बात नहीं कहते।
२. बोल-चाल में आनेवाले किसी शब्द के जोड़ का वह दूसरा शब्द जो उच्चारण या ध्वनि के विचार से उस पहले शब्द के जोड़ या बराबरी का होता है। काफिया। जैसे—'कच्चा' का तुक 'बच्चा' और 'कड़ा' का तुक 'बड़ा' है। ३. दो बातों या कार्यों का पारस्परिक सामंजस्य। ४. ऐसा औचित्य जिसका निर्वाह पूर्वापर संबंध को देखते हुए आवश्यक, उपयुक्त या शोभन हो। जैसे—आप उनके प्रीति-भोज में जो बिना बुलाये चले गये, इसमें क्या तुक था? ५. तीर के अगले भाग में लगी हुई घुंडी।

तुकना—सं॰ हिं॰ 'तकना' का अनु॰।

तुकबंदी—स्त्री॰ [हिं॰ तुक+फा॰ बंदी] ऐसी साधारण कविता करना जिसके चरणों के अंत में एक-सी तुक या अंत्यानुप्रास के सिवा कोई विशेष भाव या रस न हो। भद्दी या साधारण कविता जिसमें भाव या भाषा का कुछ भी सौंदर्य न हो। (व्यंग्य)

तुकमा—पुं॰ [फा॰] वह फंदा जिसमें पहनने के कपड़ों की घुंडी फँसाई जाती है। पाशक। मुद्धी।

तुकांत—स्त्री॰ [हिं॰ तुक+सं॰ अंत] चरणों के अंत में होनेवाला तुक का मेल। अंत्यानुप्रास।

तुका—पुं॰ [फा॰ तुकः] १. बिना गाँसी का तीर। तुक्का। २. ऐसा उपाय या तरकीब जिससे कार्य की सिद्धि होने की संभावना न हो।

तुकार—स्त्री॰ [हिं॰ तू+सं॰ कार] 'तू' कहकर किसी को पुकारने की क्रिया या भाव। (अपमान-सूचक)

तुकारना—स॰ [हिं॰ तुकार] 'तू' कहकर किसी को पुकारना या संबोधित करना।

तुकारी*—स्त्री॰ [हिं॰ तुकारना] तुकारने की क्रिया या भाव। तुकार।

तुक्कड़—पुं॰ [हिं॰ तुक+अक्कड़ (प्रत्य॰)] केवल तुक जोड़नेवाला अर्थात् बहुत ही निम्नकोटि का कवि।

तुक्कल—स्त्री॰ [फा॰ तुका] एक तरह की बड़ी पतंग।

तुक्का—पुं॰ [फा॰ तुकः] १. वह तीर जिसमें गांसी के स्थान पर घुंडी सी बनी होती है। २. नरकट, सरकंडे आदि का वह टुकड़ा जो लड़के खेल में छोटी सी कमान पर इधर-उधर चलाते या फेंकते हैं। जैसे—लगा तो तीर, नहीं तो तुक्का है ही। ३. कोई लंबी और सीधी चीज या उसका टुकड़ा। जैसे—वह अपने दरवाजे पर तुक्का-सा खड़ा था। ४. छोटा टीला। टेकरी।

तुक्खार—पुं॰ [सं॰]=तुखार।

तुख—पुं॰ [सं॰ तुष] १. भूसी। छिलका। २. अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखम—पुं॰ [फा॰ तुख्म] १. बीज। २. वीर्य-कण।

तुखार—पुं॰ [सं॰] १. एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख अथर्ववेद, रामायण, महाभारत आदि में है। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। वि॰ दे॰ 'तुषार'। २. उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश का घोड़ा। ४. घोड़ा।
पुं॰=तुषार।

तुखारा—वि॰ [सं॰ तुषार] [स्त्री॰ तुखारी] तुषार देश-संबंधी।
पुं॰ तुषार देश का घोड़ा।

तुखारी—पुं॰ [हिं॰ तुखार] तुखार देश का घोड़ा।
वि॰ तुखार-संबंधी।

तुख्म—पुं॰ [अ॰ तुख्म] १. फलों, वृक्षों आदि का बीज। २. वीर्य-कण जिससे संतान उत्पन्न होती है।

तुगलक—पुं॰ [अ॰] १. सरदार। २. एक प्राचीन मुसलमान राजवंश जिसने मध्य युग में थोड़े समय के लिए भारत पर शासन किया था। मुहम्मद शाह तुगलक इसी वंश के थे।

तुगा—स्त्री॰ [सं॰√तुज् (हिंसा)+घ—टाप्] वंशलोचन।

तुगाक्षीरी—स्त्री॰ [मयू॰स॰] वंशलोचन।

तुग्र—पुं॰ [सं॰√तुज्+रक्, कुत्व] वैदिक काल के एक राजर्षि जिन्होंने अश्विनीकुमारों की उपासना की थी।

तुग्र्य—पुं॰ [सं॰ तुग्र+यत्] तुग्र का वंशज।
वि॰ तुग्र-संबंधी। तुग्र का।

तुचा†—पुं॰ [सं॰ त्वच्] १. चमड़ा। २. छाल।

तुचा†—स्त्री॰=त्वचा।

तुच्छ—वि॰ [सं॰√तुद् (पीड़ित करना)+क्विप्, तुद्√छो (काटना)+क] [भाव॰ तुच्छता] १. जो अंदर से खाली हो। खोखला। २. जिसमें कोई सत्व या सार न हो। निःसार। ३. जिसका कुछ भी महत्त्व, मान या मूल्य न हो। क्षुद्र। हीन। ४. अल्प। थोड़ा।
पुं॰ १. अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। २. तूतिया। ३. नील का पौधा।

तुच्छक—पुं॰ [सं॰ तुच्छ√कै (मालूम पड़ना)+क] एक तरह का काले और हरे रंग का मरकत जो घटिया माना जाता है।

तुच्छता—स्त्री॰ [सं॰ तुच्छ+तल्—टाप्] तुच्छ होने की अवस्था या भाव।

तुच्छत्व—पुं॰ [सं॰ तुच्छ+त्व] तुच्छता।

तुच्छद्रु—पुं॰ [कर्म॰स॰] रेंड़ का पेड़।

तुच्छधान्यक—पुं॰ [कर्म॰स॰] भूसी। तुस।

तुच्छा—स्त्री॰ [सं॰ तुच्छ+टाप्] १. नील का पौधा। २. छोटी इलायची। ३. नीला थोथा। तूतिया।

तुच्छातितुच्छ—वि॰ [तुच्छ-अतितुच्छ, स॰त॰] तुच्छों में भी तुच्छ। अत्यन्त तुच्छ।

तुच्छार्थक—वि॰ [सं॰ तुच्छ-अर्थ, ब॰स॰, कप्] (शब्द का वह) विकृत रूप जो वस्तु या व्यक्ति के वाचक शब्द की तुलना में तुच्छता सूचित करनेवाला हो। तुच्छता के भाव से युक्त अर्थ देनें या रखनेवाला।

(डिमिन्यूटिव) जैसे—'बात' का तुच्छार्थक 'बतोला', 'घोड़ा' का तुच्छार्थक 'घोड़वा'।

तुछ*—वि०=तुच्छ।

तुंजीह—स्त्री०[हिं०] धनुष।

तुजुक—पुं०[तु०]१. वैभव आदि की शोभा। शान। २. नियम। ३. प्रथा। ४. अभिनंदन। उदा०—भूषण भनत भौंसिला के आय आगे ठाढ़े बाजे भर उमराय तुजुक करन के।—भूषण।

तुझ—सर्व०[सं० तुभ्यम्; पा० तुटह; प्रा० तुज्झ] तू का वह रूप जो उसे द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी और सप्तमी की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तुझको, तुझसे, तुझमें आदि आदि।

तुझे—सर्व०[हिं० तुझ] 'तू' का वह रूप जो उसे द्वितीया और चतुर्थी की विभक्तियाँ लगने पर प्राप्त होता है। तुझको। जैसे—(क) तुझे मारूँगा। (ख) तुझे भी मिलेगा।

तुट*—वि०[सं० त्रुट=टूटना] बहुत थोड़ा।

तुटितुट—पुं०[सं०] शिव।

तुट्ठना*—स०[सं० तुष्ट; प्रा० तुट्ठ] तुष्ट या प्रसन्न करना।

अ० तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुठना—अ०[सं तुष्ट] संतुष्ट होना। उदा०—तुठी सारदा त्रिभुवन-भाई।—नरपति नाल्ह।

स० संतुष्ट करना।

तुड़वाई—स्त्री०[हिं० तुड़वाना] तुड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुड़वाना—स०[हिं० 'तोड़ना' का प्रे०]१. किसी को कोई चीज तोड़ने में प्रवृत्त करना। तुड़ाना। २. बड़े सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे-छोटे सिक्कों में बदलवाना। भुनाना।

तुड़ाई—स्त्री०[हिं० तोड़ना] तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=तुड़वाई।

तुड़ाना—स०[हिं० तोड़ना का प्रे०]१. तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. बन्धन तोड़कर उससे अलग या मुक्त होना। जैसे—गौ रस्सा तुड़ाकर भाग गई। ३. सम्बन्ध-विच्छेद करके अलग करना। जैसे—बच्चे को माँ से तुड़ाना; अर्थात् अलग या दूर करना। ४. बड़े सिक्के को छोटे-छोटे सिक्कों के रूप में परिवर्तित कराना। जैसे—नोट या रुपया तुड़ाना। ५. कुछ खरीदने के समय चीज का दाम कम कराना।

तुडी—स्त्री० [सं०√तुड्(तोड़ना)+इन—ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (कदाचित् आधुनिक टोड़ी)

तुडुम—पुं०[सं० तुरम]तुरही। बिगुल।

तुणि—पुं०[सं०√तुण्(संकोच)+इन्] तुन का पेड़।

तुतरा†—वि०[स्त्री० तुतरी]=तोतला।

तुतराना†—अ०=तुतलाना।

तुतरौहाँ†—वि०=तोतला। उदा०—बोलत है बतियाँ तुतरौहीं चलि चरननि न सकात।—सूर।

तुतला—वि०[स्त्री० तुतली]=तोतला।

तुतलाना—अ०[सं० त्रुट्=टूटना वा अनु० अथवा हिं० तोट]१. कंठ और जीभ में किसी प्रकार का प्राकृतिक विकार होने के कारण कोई शब्द कहने से पहले 'तुत्' 'तुत्' शब्द निकलना। २. बोलने में शब्द का मुँह से रुक-रुक कर तथा अस्पष्ट रूप से निकलना।

तुतुई†—स्त्री०=तुतुही।

तुतुही—स्त्री०[सं० तुंड] मिट्टी की एक तरह की छोटी झारी।

तुत्थ—पुं०[सं०√तुद् (पीड़ित करना)+थक्] तूतिया। नीला थोथा।

तुत्थक—पुं०[सं० तुत्थ+कन्]=तुत्थ।

तुत्थांजन—पुं०[सं० तुत्थ-अंजन, कर्म० स०] तूतिया। नीलाथोथा।

तुत्था—स्त्री०[सं० तुत्थ+टाप्] १. नील का पौधा। २. छोटी इलायची।

तुत्यों—अव्य०=त्यों त्यों। उदा०—तुत्यों गुलाल झुठी मुठी झझकावत पिय जात।—बिहारी।

तुदन—पुं०[सं०√तुद्+ल्युट्—अन्]१. कष्ट या व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २. गड़ाने या चुभाने की क्रिया। ३. कष्ट। ४. पीड़ा।

तुन—पुं०[अनु०] तुन तुन शब्द।

मुहा०—**तुन-फुन करना**=किसी बात में सहमत न होने पर कुछ रोष दिखाते हुए आना-कानी करना।

पुं० तूनी नामक वृक्ष।

तुनक—वि०[फा०] १. दुर्बल। कमजोर। २. नाजुक। कोमल। ३. हलका। सूक्ष्म।

स्त्री०[हिं० तुनकना] १. तुनकने की क्रिया या भाव। २. गुड्डी या पतंग उड़ाते समय डोर या नख को दिया जानेवाला झटका।

तुनकना—अ० [फा० तुनक] छोटी सी बात से अप्रसन्न या रुष्ट होना।

वि० तुनक-मिजाज।

अ० [देश०] उँगली से डोर को झटका देना।

तुनक-मिजाज—वि०[फा०] [भाव० तुनक-मिजाजी] जो बात-बात पर अप्रसन्न या रुष्ट हो जाता हो अथवा बिगड़ या रूठ जाता हो।

तुनकामौज—पुं० [फा० तुनक=छोटा+मौज=लहर] छोटा समुद्र।

तुनकी—स्त्री०[फा०] १. तुनक(अर्थात् कोमल, दुबले या हलके)होने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की खस्ता रोटी।

तुनतुनी—स्त्री० [अनु०] १. एक प्रकार का बाजा जिसमें से तुन तुन शब्द निकलता है। २. सारंगी। (परिहास और व्यंग्य)

तुनना†—स०=धुनना। (पश्चिम)

तुनी—स्त्री०[हिं० तुन] तूनी का पेड़।

तुनीर†—पुं०=तूणीर।

तुनुक—वि० स्त्री०=तुनक।

तुन्न—वि०[सं०√तुद्+क्त] कटा या फटा हुआ।

पुं०१. कपड़े का टुकड़ा। २. तुन नाम का पेड़।

तुन्नवाय—पु०[सं० तुन्न√वे (सीना, बुनना)+अण्] दरजी।

तुपक—स्त्री०[तु० तोप]१. छोटी तोप। २. पुरानी चाल की बन्दूक। कड़ाबीन।

तुपकची—पुं०[हिं० तुपक] वह जो छोटी तोप या बन्दूक चलाता हो।

तुफंग—स्त्री०[तु० तोप, हिं० तुपक]१. प्राचीन काल की वह नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ, लोहे के छोटे टुकड़े आदि भरकर जोर से फूँककर दूसरों पर चलाए या फेंके जाते थे। २. हवाई बन्दूक।

तुफ—पुं०[फा०]१. मुँह की थूक या लार। २. उक्त के आधार पर धिक्कार, लानत। जैसे—तुफ है तुम्हारे मुँह पर; अर्थात् थुड़ी है या तुम इस योग्य हो कि लोग तुम्हारे मुँह पर थूकें।

तुफान†—पुं०=तूफान।

तुफ़ैल—पुं० [अ० तुफ़ैल] किसी के अनुग्रह या कृपा के द्वारा प्राप्त होने वाला साधन। जैसे—मेरी सारी योग्यता (या विद्या) आप के ही तुफ़ैल से है।

तुबक—पुं०=तुपक।

तुभना—अ०[सं० स्तुभ, स्तोभन] स्तब्ध होना।

तुम—सर्व० [सं० त्वम्] 'तू' शब्द का वह बहुवचन रूप जिसका व्यवहार संबोधित व्यक्ति के लिए होता है तथा जो कहनेवाले की तुलना में छोटा या बराबरी का होता है। जैसे—तुम भी साथ चल सकते हो।

तुमड़ी—स्त्री०=तूँबड़ी।

तुमतड़ाक—स्त्री०=तूमतड़ाक।

तुमरा—सर्व०=तुम्हारा।

तुमरी†—स्त्री० = तूँबड़ी।

तुमरू—पुं०=तुँबुरू।

तुमल*—पुं०, वि०=तुमुल।

तुमाना—स०[हिं० 'तूमना' का प्रे०] किसी को कुछ तूमने में प्रवृत्त करना।

तुमारा—सर्व०=तुम्हारा।

तुमुती—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

तुमुर—पुं०[सं० तुमुल, ल—र] क्षत्रियों की एक प्राचीन जाति या वंश।
†वि०, पुं०=तुमुल।

तुमुल—पुं० [सं०√तु (हिंसा करना)+मुलन्] १. सेना का कोलाहल। लड़ाई की हलचल। २. सेना की भिड़ंत। ३. बहेड़े का पेड़।
वि० बहुत उत्कट, तीव्र या विकट। घोर। प्रचंड। जैसे—तुमुल ध्वनि।

तुमुली—स्त्री० [?] पुरातत्त्व में एक दूसरे पर चुने हुए पत्थरों का वह ढेर या स्तूप जो प्रायः किसी स्थान की विशेषता या समाधि-स्थल आदि सूचित करने के लिए बनाया जाता था। (केयर्न)

तुम्ह*—सर्व०=तुम।

तुम्हारा—सर्व० [हिं० तुम] [स्त्री० तुम्हारी] 'तुम' का षष्ठी की विभक्ति लगने पर बननेवाला रूप। जैसे—तुम्हारा भाई।

तुम्हीं*—सर्व०=तुमही।

तुम्हें—सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का वह विभक्तियुक्त रूप जो उसे द्वितीया और चतुर्थी लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तुम्हें पकड़ूँगा या दूँगा।

तुरंग—वि० [सं० तुर√गम् (जाना)+ख, मुम्] जल्दी चलनेवाला।
पुं० १. घोड़ा। २. चित्त या मन जो बहुत जल्दी हर जगह पहुँच सकता है। ३. सात की संख्या।

तुरंगक—पुं० [सं० तुरंग√कै (शब्द करना)+क] बड़ी तोरी (फल)।

तुरंग-गौड़—पुं० [सं० कर्म० स० ?] संगीत में गौड़ राग का एक भेद।

तुरंग-द्वेषिणी—स्त्री० [सं० तुरंग√द्विष् (द्वेष करना)+णिनि=ङीप्] भैंस। महिषी।

तुरंगप्रिय—पुं० [ष० त०] जौ। यव।

तुरंगम—वि०[सं० तुर√गम् (जाना)+खच्, मुम्] जल्दी चलनेवाला।
पुं० १. घोड़ा। २. चित्त। मन। ३. एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और दो गुरु होते हैं।

तुरंगमी (मिन्)—पुं० [सं० तुरङ्गम+इनि] अश्वारोही। घुड़सवार।

तुरंग-वक्त्र—वि०[ब० स०] जिसका मुँह घोड़े के मुँह की तरह लंबा हो।
पुं० किन्नर।

तुरंग-वदन—पुं० [ब० स०] किन्नर।

तुरंग-शाला—स्त्री० [ष० त०] घुड़साल। अस्तबल।

तुरंगारि—पुं० [तुरंग-अरि, ष० त०] १. कनेर। करवीर। २. भैंसा।

तुरंगिका—स्त्री० [सं० तुरंग+ठन्—इक्] देवदाली। घघरबेल।

तुरंगी—स्त्री० [सं० तुरंग+अच्—ङीष्] अश्वगंधा। असगंध।

तुरंज—पुं० [फा० तुरुंज] १. चकोतरा नींबू। २. बिजौरा नींबू। ३. सूई-धागे से कपड़े पर बनाई जानेवाली एक तरह की बूटी।

तुरंजबीन—स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार की चीनी जो खुरासान देश में प्रायः ऊँटकटारे के पौधों पर ओस के साथ जमती है। २. नींबू के रस का शरबत। शिकंजबी।

तुरंत—क्रि० वि० [सं० तुर=वेग, जल्दी] १. ठीक इसी समय। २. जितनी जल्दी हो सके। जल्दी से जल्दी।

तुरंता—पुं० [हिं० तुरंत] गाँजा (जिसका नशा पीते ही तुरंत चढ़ता है)।

तुरंबीन—स्त्री० [?] भवासे की जड़ की शर्करा जो दवा के काम आती है तथा जो वैद्यक में ज्वरहर तथा अग्निप्रदीपक मानी जाती है और पुरानी होने पर दस्तावर होती है।

तुर—अव्य० [सं०√तुर् (जल्दी करना)+क] शीघ्र। जल्द।
वि० बहुत तेज चलनेवाला। वेगवान्। शीघ्रगामी।
पुं० [?] १. करघे की वह मोटी लकड़ी जिस पर बुना हुआ कपड़ा लपेटा जाता है। २. वह बेलन जिस पर बुना हुआ गोटा लपेटा जाता है।

तुरई—स्त्री० [सं० तूर=तुरही बाजा] तोरी नाम की बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है। तोरी।
पद—तुरई के फूल-सा=(क) बहुत ही कोमल और हलका। (ख) जिसका कोई विशेष महत्त्व, मान या मूल्य न हो। जैसे—तुरई के फूल-से इतने रुपए उड़ गये; पर काम कुछ भी न हुआ।
†स्त्री०=तुरही।

तुरक—पुं०=तुर्क।

तुरकटा—पुं० [फा० तुर्क+हिं० टा (प्रत्य०)] मुसलमान। (उपेक्षा तथा घृणा-सूचक)

तुरकान†—पुं० [फा० तुर्क] १. तुर्क देश। २. तुर्कों की बस्ती।

तुरकाना—पुं० [फा० तुर्क] मुसलमान।
वि० तुर्कों का-सा।

तुरकिन—स्त्री० [फा० तुर्क] १. तुर्क जाति की स्त्री। †२. मुसलमान स्त्री।

तुरकिस्तान—पुं०=तुर्की (देश)।

तुरकी—वि० [फा०] तुर्क देश का।
पुं० पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध देश। तुर्की।
स्त्री० उक्त देश की भाषा।

तुरग—वि० [सं० तुर√गम् (जाना)+ड] तेज चलनेवाला।
पुं० १. घोड़ा। २. चित्त। मन।

तुरग-गंधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] अश्वगंधा। असगंध।

तुरग-दानव—पुं० [मध्य० स०] एक दैत्य जो कंस के आदेशानुसार घोड़े का रूप धारण करके कृष्ण को मारने गया था।

तुरग-ब्रह्मचर्य—पुं० [ष० त०] वह ब्रह्मचर्य जो केवल स्त्री की अप्राप्ति के कारण चलता हो।

तुरगारोह—पुं० [सं० तुरग+आ√रुह् (चढ़ना)+अच्] अश्वारोही।

तुरगास्तरण—पुं० [सं० तुरग–आस्तरण, मध्य० स०] घोड़े की पीठ पर बिछाया जानेवाला कपड़ा। पलान।

तुरगी—स्त्री० [सं० तुरग+ङीष्] १. घोड़ी। २. [तुरग+अच्—ङीष्] अश्वगंधा या असगंध नाम की ओषधि।
पुं० [सं० तुरग+इनि] घुड़सवार।

तुरगुला—पुं० [देश०] १. कान में पहनने का झुमका। २. लटकन। लोलक।

तुरगोपचारक—पुं० [सं० तुरग-उपचारक, ष० त०] साईस।

तुरत†—अव्य०=तुरंत।

तुरतुरा—वि० [सं० त्वरा] [स्त्री० तुरतुरी] १. वेगवान्। तेज। २. जल्दबाज। ३. जल्दी-जल्दी या तेज बोलनेवाला।

तुरतुरिया—वि०=तुरतुरा।

तुरपई—स्त्री० [हिं० तुरपना] एक प्रकार की सिलाई। तुरपन।

तुरपन—स्त्री० [हिं० तुरपन] १. तुरपने की क्रिया या भाव। २. सीयन।

तुरपना—स० [हिं० तूर=नीचे+पर=ऊपर+ना (प्रत्य०)] १. सूई-धागे से बड़े बड़े और कच्चे टाँके लगाना। तोपे भरना या लगाना। २. सीना।

तुरपवाना—स० [हिं० 'तुरपना' का प्रे०] तुरपने का काम किसी से कराना।

तुरपाना—स०=तुरपवाना।

तुरबत—स्त्री० [अ० तुर्बत] कब्र।

तुरम—पुं० [सं० तूरम] तुरही।

तुरमती—स्त्री० [तु० तुरमता] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

तुरमनी—स्त्री० [देश०] नारियल की खोपड़ी रेतने की एक तरह की रेती।

तुरय*—पुं० [सं० तुरग] [स्त्री० तुरी] घोड़ा।

तुररा—पुं०=तुर्रा।

तुरसीला—वि० [फा० तुर्श=खट्टा] १. तीखा। २. घायल करनेवाला। उदा०—करधनी सब्द हैं तुरसीले। —नारायण स्वामी।

तुरही—स्त्री० [सं० तूर] फूँककर बजाया जानेवाला एक तरह का लंबा बाजा।

तुरा†—पुं० [सं० तुरग] घोड़ा।
स्त्री० [सं० तूरा] जल्दी। शीघ्रता।
†पुं०=तुर्रा।

तुराई—अव्य० [हिं० तुराना] १. आतुरतापूर्वक। २. जल्दी से।

तुराई—स्त्री० [सं० तूल=रूई, तूलिका=गद्दा] १. रूई भरा हुआ गुदगुदा बिछावन। गद्दा। तोशक। २. ओढ़ने की हलकी रजाई। तुलाई। दुलाई।

तुराट*—पुं० [सं० तुरग] घोड़ा। (डिं०)

तुराना*—अ० [सं० तुर] १. आतुर होना। २. जल्दी मचाना।
†स०=तुड़ाना।

तुरायण—पुं० [सं०√तुर् (शीघ्रता)+क, तुर+फक्—आयन] चैत्र शुक्ल पंचमी और वैशाख शुक्ल पंचमी को होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

तुरावत—वि० [सं० त्वरावत्] [स्त्री० तुरावती] वेगपूर्वक चलनेवाला।

तुरावान—वि०=तुरावत।

तुराषाट्—पुं० [सं० तुर√सह् (सहना)+णिच्+क्विप्, दीर्घ] इंद्र।

तुरास*—पुं० [सं० तुर] वेग।
क्रि० वि० १. वेगपूर्वक। २. जल्दी से।

तुरासाह—पुं०=तुराषाट्।

तुरिया*—वि०, स्त्री०=तुरीय।
स्त्री० दे० 'तोरिया'।

तुरी—स्त्री० [सं० तुरगी] १. घोड़ी। २. घोड़े की लगाम।
पुं० घुड़सवार।
स्त्री० [सं० त्वरा] जल्दबाजी। शीघ्रता।
वि० स्त्री० जल्दी या तेज चलनेवाली।
स्त्री० [अ० तुर्रा] १. फूलों का गुच्छा। २. मोतियों, सूतों आदि का वह झब्बा जो शोभा के लिए पगड़ी आदि में लगाया जाता है। ३. जुलाहों की वह कूँची जिससे वे ताने के सूत बराबर करते हैं।
स्त्री०=तुरही।

तुरी-यंत्र—पुं० [सं०] वह यंत्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।

तुरीय—वि० [सं० चतुर+छ—ईय, चलोप] चतुर्थ। चौथा।
स्त्री० १. वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुँह से उच्चरित होती है। बैखरी। २. प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था जो ब्रह्म में होनेवाली लीनता या मोक्ष है। (वेदान्त)
पुं० निर्गुण ब्रह्म।

तुरीय-वर्ण—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जो चौथे वर्ण का अर्थात् शूद्र हो।
पुं० शूद्र।

तुरुक—पुं०=तुर्क।

तुरुप—पुं० [अं० ट्रंप] कुछ विशिष्ट ताश के खेलों में वह रंग जो प्रधान मान लिया जाता है तथा जिसके छोटे से छोटा पत्ता दूसरे रंग के बड़े से बड़े पत्ते को काट या मार सकता है।
पुं० [अं० ट्रूप=सेना] १. सेना की टुकड़ी या दस्ता। २. घुड़सवारों का रिसाला।

तुरुपना—स०=तुरपना।

तुरुष्क—पुं० [सं० तुरुस्+कन्] १. तुर्किस्तान का रहनेवाला व्यक्ति। २. तुर्क देश में बसनेवाली जाति। तुर्क। ३. तुर्किस्तान या तुर्की देश। ४. उक्त देश का घोड़ा। ५. लोबान जो पहले उक्त देश से आता था।

तुरुष्क गौड़—पुं०=तुरंग गौड़।

तुरुही†—स्त्री०=तुरही।

तुरै—पुं० [सं० तुरंग] घोड़ा। उदा०—जोवन तुरै हाथ हाथ गहि लीजै।—जायसी।

तुरैया—स्त्री०=तोरी।

तुर्क—पुं० [सं० तुरुष्क से तु०] १. तुर्किस्तान का निवासी। २. मुसलमान। ३. सैनिक।

तुर्क-चीन—पुं० [?] सूर्य।

तुर्कमान—पुं० [फा० तुर्क] १. तुर्क जाति का व्यक्ति। २. तुर्की घोड़ा जो बहुत बढ़िया होता है।

तुर्क-सवार—पुं० [फा० तुर्क+फा० सवार] घुड़सवार।

तुर्किन—स्त्री०=तुरकिन।

तुर्किनी—स्त्री०=तुरकिन।

तुर्किस्तान—पुं० [फा०] पश्चिमी एशिया का एक राज्य जहाँ तुर्क जाति रहती है।

तुर्की—वि० [फा०] तुर्किस्तान का। तुर्किस्तान में होनेवाला। जैसे—तुर्की घोड़ा।

पुं० १. तुर्किस्तान देश। २. तुर्किस्तान का घोड़ा।

स्त्री० १. तुर्किस्तान की भाषा। २. तुर्कों की-सी ऐंठ, शान या शेखी। अकड़।

मुहा०—(किसी को) तुर्की-बतुर्की जवाब देना=किसी के उग्र या तीव्र कथन या व्यवहार का वैसा ही उत्तर देना। **(किसी की) तुर्की तमाम होना**=अकड़, ऐंठ या घमंड नष्ट या समाप्त होना।

तुर्की टोपी—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की गोलाकार ऊँची या कुछ लंबी और फूँदनेदार टोपी जो पहले तुर्क लोग पहना करते थे।

तुर्फरी—पुं० [सं०√तृफ् (हिंसा करना)+अरी (बा०)] अंकुश का अगला नुकीला सिरा।

तुर्य—वि० [सं० चतुर+यत्, च का लोप] १. चौथा। २. चौगुना।

तुर्या—स्त्री० [सं० तुर्य+टाप्] प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था जो ब्रह्म में होनेवाली लीनता या मोक्ष है। (वेदांत)

तुर्याश्रम—पुं० [सं० तुर्य-आश्रम, कर्म० स०] चौथा आश्रम। संन्यास।

तुर्रा—पुं० [अ० तुरः] १. घुँघराले बालों की लट जो इधर-उधर या माथे पर लटकती है। काकुल। २. कुछ पक्षियों के सिर पर की परों या बालों की चोटी। कलगी। ३. टोपी, पगड़ी आदि में खोंसा या लगाया जानेवाला पक्षियों का सुंदर पर, फूलों का गुच्छा अथवा बादले, मोतियों आदि का लच्छा। कलगी। गोशवारा। ४. किसी चीज या बात में होनेवाली ऐसी विलक्षण विशेषता जो उस चीज या बात को दूसरी चीजों या बातों से भिन्न और श्रेष्ठ सिद्ध करती हो।

विशेष—परिहास या व्यंग्य में इस शब्द का प्रयोग अनोखी असंबद्धता सूचित करने के लिए होता है। जैसे—जबरदस्ती हमारी किताब भी उठा ले गये; तिस पर तुर्रा यह कि हमें ही चोर (या झूठा) बनाते हैं।

५. किसी चीज में लगाया हुआ सुंदर किनारा या हाशिया। ६. मकान का छज्जा। ७. कोड़ा। चाबुक।

मुहा०—तुर्रा करना=(क) कोड़ा या चाबुक मारना। (ख) उत्तेजित या प्रोत्साहित करना।

८. एक प्रकार की बुलबुल जो जाड़े भर भारतवर्ष के पूर्वीय भागों में रहती है, पर गरमी में चीन और साइबेरिया की ओर चली जाती है। ९. एक प्रकार का बटेर। डुबकी। १०. जटाधारी या मुर्गकेश नाम का पौधा और उसका फूल। गुलतर्रा। ११. मुहाँसे आदि का ऊपरी नुकीला भाग। कील।

वि० [फा०] अनोखा। विलक्षण।

पुं० [?] दूध, भाँग आदि का थोड़ा-थोड़ा करके लिया जानेवाला घूँट। (क्व०)

मुहा०—तुर्रा चढ़ाना या जमाना=खूब ढेर-सी भाँग पीना।

तुर्वसु—पुं० [सं०] राजा ययाति का एक पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और जिसने पिता के माँगने पर उसे अपना यौवन नहीं दिया था।

तुर्श—वि० [फा०] [भाव० तुर्शी] खट्टा।

तुर्शरू—वि० [फा०] तीखे मिजाजवाला। कटु-भाषी।

तुर्शाई†—स्त्री०=तुर्शी।

तुर्शाना—अ० [फा० तुर्श] खट्टा हो जाना।

स० खट्टा करना या बनाना।

तुर्शी—स्त्री० [फा०] १. तुर्श होने की अवस्था या भाव। अम्लता। खट्टापन। २. खटाई।

तुर्शीदंदाँ—स्त्री० [फा०] घोड़ों का एक रोग जिसमें उसके दाँतों पर मैल जमने लगती है।

तुल†—वि०=तुल्य।

तुलक—पुं० [?] राज-मंत्री।

तुलन—पुं० [सं०√तुल् (तौलना)+ल्युट्—अन] तुलने या तौलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तुलना—अ० [हिं० तौलना का अ०] १. काँटे, तराजू आदि पर रखकर तौला जाना। २. भार या मान का हिसाब लगाया जाना या विचार होना। ३. उक्त प्रकार का विचार होने या हिसाब लगने पर किसी की बराबरी का या किसी के समान ठहरना। ४. किसी की बराबरी में होकर या उसके साथ अच्छी तरह मिलकर उसी के समान हो जाना। उदा०—सौकन ने पायजामा पहना है गुल-बदन का। फूलों में तुल रहा है, काँटा मेरे चमन का।—जानसाहब। ५. किसी आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार से बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर झुका न हो। ठीक अंदाज के साथ टिकना। जैसे—बाइसिकल पर तुलकर बैठना। ६. अस्त्र, शस्त्र आदि का इस प्रकार ठीक स्थान पर और ऐसे अन्दाज या हिसाब से स्थित होना कि वह लक्ष्य तक पहुँचकर अपना ठीक और पूरा काम करे। ७. कोई काम करने के लिए पूरी तरह से कटिबद्ध या सन्नद्ध होना। जैसे—किसी के साथ झगड़ा करने पर तुलना।

संयो० क्रि०—जाना।

८. किसी चीज या बात का ठीक-ठीक अनुमान या कल्पना होना। ९. किसी चीज में पूरी तरह से भरा जाना।

अ० [हिं० तूलना का अ०] गाड़ी के पहिए का औंगा जाना या उसमें तेल दिया जाना। तूला जाना।

स्त्री० [सं०√तुल्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. दो या अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरे से घट या बढ़कर होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २. बराबरी। समता। ३. सादृश्य। ४. उपमा। ५. तौल। वजन। ६. गणना। गिनती।

तुलनात्मक—वि० [सं० तुलना-आत्मन्, ब० स०, कप्] जिसमें दो या कई चीजों के गुणों की समानता और असमानता दिखलाई गई हो।

जिसमें किसी के साथ तुलना करते हुए विचार किया गया हो। जैसे—कबीर और नानक का तुलनात्मक अध्ययन।

तुलनी—स्त्री० [सं० तुला] तराजू या काँटे की सूई में का दोनों तरफ का लोहा।

तुलनीय—वि० [सं०√तुल्+अनीयर्] तुलना किये जाने के योग्य। जिसकी या जिससे तुलना की जा सके।

तुलबुली—स्त्री० [अनु०] जल्दबाजी।

तुलवाई—स्त्री० [हिं० तौलवाना, तुलना] १. तौलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० 'तुलाई'। ३. पहियों को औंगने या तूलने (उनमें तेल देने) का पारिश्रमिक या मजदूरी।

तुलवाना—स० [हिं० तौलना का प्रे० रूप] [स्त्री० तुलवाई] १. किसी को कुछ तौलने में प्रवृत्त करना। २. गाड़ी के पहिये की धुरी में तेल दिलाना। औंगवाना।

तुलसारिणी—स्त्री० [सं० तुर√सृ (जाना)+णिनि—ङीप्, र——ल] तूणीर।

तुलसी—स्त्री० [सं० तुला√सो (नष्ट करना)+क—ङीष्, पररूप] १. एक प्रसिद्ध पौधा जो वहुत पवित्र माना गया है और जिसकी पत्तियों में तीक्ष्ण गंध होती है। यह काली और धौली दो प्रकार की होती है। २. उक्त पौधे की पत्ती जो अनेक प्रकार के रोगों की नाशक तथा कफ और पित्त तथा अग्नि प्रदीपक, हृदय को हितकारी, पित्त को बढ़ानेवाली मानी जाती है। ३. उक्त के बीज जो ढ़ाँस को कम करते तथा शुक्र को गाढ़ा करते हैं।

पुं० गोस्वामी तुलसीदास (हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि)।

तुलसीघरा—पुं० [सं० तुलसी+हिं० घर] आँगन के मध्य का वह स्थान जहाँ कुछ हिंदू घरों में तुलसी के पौधे लगे होते हैं।

तुलसी दल—पुं० [ष० त०] तुलसी के पौधे का पत्ता। तुलसी पत्र।

तुलसीदाना—पु० [हिं० तुलसी+फा० दाना] एक तरह का आभूषण।

तुलसीदास—पुं० [सं०] मध्यकाल के एक प्रसिद्ध सगुणोपासक भक्त कवि जिन्होंने रामचरित्मानस, विनय पत्रिका आदि वारह ग्रंथ रचे थे।

तुलसी-द्वेष—स्त्री० [सं० तुलसी√द्विष् (द्वेप करना)+अण्—टाप्] वन-तुलसी। वर्वरी। ममरी।

तुलसी पत्र—पुं० [ष० त०] तुलसी का पत्ता।

तुलसीबास—पुं० [हिं० तुलसी+वास=महक] एक तरह का अगहनी धान जिसका चावल सुगंधित होता है।

तुलसी-वन—पुं० [प० त०] १. वह स्थान जहाँ पर तुलसी के वहुत अधिक पौधे हों। तुलसी का जंगल। २. वृंदावन।

तुला—स्त्री० [सं०√तुल् (तोलना)+अङ्—टाप्] १. सादृश्य का मिलान। तुलना। २. चीजों का भार तौलने का तराजू। काँटा।

पद—तुला-दंड।

३. भार का मान। तौल। ४. अनाज नापने का वरतन। भांड। ५. प्राचीन काल की एक तौल जो १०० पल या लगभग ५ सेर की होती थी। ६. ज्योतिष की वारह राशियों में से सातवीं राशि जिसके तारों की आकृति बहुत-कुछ तराजू की तरह होती है। ७. प्राचीन वास्तु कला में, खंभे का एक विशिष्ट अंश या विभाग। ८. दे० 'तुला-परीक्षा'।

तुलाई—स्त्री० [सं० तूल=रूई] कुछ छोटी, पतली और हलकी रजाई। दुलाई।

स्त्री० [हिं० तौलना] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

स्त्री० [हिं० तूलना या तुलाना] गाड़ी के पहियों को औंगाने या धुरी में चिकना दिलवाने की क्रिया।

तुला-कूट—पुं० [ष० त०] १. इस प्रकार कोई चीज तौलना कि वह तुला पर अपने उचित तौल से कम चढ़े। तौलने में धोखेवाजी या वेईमानी करना। २. इस तरह तौलने में होनेवाली कमी या कसर।

वि० [सं० तुला√कूट् (निन्दा करना)+घञ्] तौल में कमी या कसर करनेवाला। डाँड़ी मारनेवाला।

तुला-कोटि—स्त्री० [ष० त०] १. तराजू की डंडी के दोनों छोर जिनमें पलड़े की रस्सी बँधी रहती है। २. प्राचीन काल की एक प्रकार की तौल या मान। ३. गणित में अर्वुद की संख्या। ४. घुंघरू। नूपुर।

तुला-कोश—पुं० [ष० त०] तुला-परीक्षा। (दे०)

तुला-दंड—पुं० [ष० त०] तराजू की वह डंडी जिसके दोनों सिरों पर पलड़े बँधे रहते हैं।

तुलादान—पुं० [तृ० त०] अपने शरीर के भार के बराबल तौलकर दिया जानेवाला अन्न, वस्त्र आदि का दान।

तुलाधार—पुं० [सं० तुला√धृ (धारण)+अण्] १. तुलाराशि। २. तराजू की वे रस्सियाँ जिनमें पलड़े बँधे रहते हैं। ३. वणिक्। बनिया। ४. एक प्रसिद्ध व्याध जिसने केवल माता-पिता की सेवा के बल पर मुक्ति पाई थी।

वि० तुला धारण करने अर्थात् तराजू से चीजें तौलने का काम करनेवाला।

तुलाना—अ० [हिं० तुलना=तौल में बराबर आना] १. किसी चीज का तौला जाना। २. तुल्य या समान होना। पूरा पड़ना या होना। ३. नष्ट या समाप्त हो जाना। उदा०—नाचहिं राकस आस तुलानी।—जायसी। ४. आ पहुँचना। उदा०—काल समय जब आनि तुलानी।—ध्रुवदास।

स०=तुलवाना।

स० [हिं० तुलना] गाड़ी के पहियों में तेल डलवाना। औंगवाना।

तुला-पत्र—पुं० [ष० त०] वह पत्र जिसमें आय-व्यय तथा लाभ-हानि का लेखा लिखा रहता है। तल-पट। (बैंलेन्स शीट)

तुला-परीक्षा—स्त्री० [तृ० त०] प्राचीन काल में होनेवाली एक तरह की परीक्षा जिससे यह जाना जाता था कि अभियुक्त दोषी है या निर्दोष।

तुला-पुरुष-कृच्छ्र—पुं० [सं० तुला-पुरुष, मध्य० स०, तुला, पुरुष-कृच्छ्र, ष० त०] एक प्रकार का व्रत जिसमें पिण्याक (तिल की खली) भात, मट्ठा, जल और सत्तू में से प्रत्येक क्रमशः तीन-तीन दिन तक खाकर पंद्रह दिनों तक रहना पड़ता है।

तुला-पुरुष-दान—पुं० [सं० तुला-पुरुष, मध्य० स०, तुलापुरुष-दान, ष० त०] तुलादान।

तुला-बीज—पुं० [ष० त०] घुंघची के बीच।

तुलाभवानी—स्त्री० [सं०] शंकर दिग्विजय के अनुसार एक नदी और उसके किनारे बसी हुई नगरी का नाम।

तुला-मान—पुं० [ष० त०] १. वह मान जो तौलकर निश्चित किया

जाय। तौल कर निकाला हुआ भार या वजन । २. तराजू की डाँड़ी। ३. बटखरा । बाट।

तुला-यंत्र—पुं० [ष० त०] तराजू।

तुला-यष्टि—स्त्री० [ष० त०] तुला-दंड ।

तुलावा—पुं० [हिं० तुलना] ठेले आदि के अगले भाग में टेक या सहारे के रूप में लगाई जानेवाली वह लंबी लकड़ी जिससे ठेले का अगला भाग कुछ ऊँचा उठा रहता है और पिछला भाग कुछ नीचे झुक जाता है।

तुला-सूत्र—पुं० [ष०त०] वह मोटी रस्सी जो तराजू की डंडी के बीच पिरोई रहती है और जिसे पकड़कर तराजू उठाते हैं।

तुलि—स्त्री०[सं०√तुर् (शीघ्रता)+इन्, र— ल] १. जुलाहों की कूँची। हत्थी। २. चित्रकारों की कूँची। कलम।

तुलिका—स्त्री०[सं०√तुल् (तोलना)+क्वुन्—अक, टाप्, इत्व] एक तरह की चिड़िया।

तुलित—वि०[सं०√तुल्+क्त] १. तुला हुआ। २. समान। बराबर।

तुलिनी—स्त्री०[सं० तूल+इनि—ङीप्, पृषो० ह्रस्व] शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड़।

तुलि-फला—स्त्री०[सं० व० स०, पृषो० ह्रस्व] सेमर का पेड़।

तुली—स्त्री०[सं० तुलि+ङीप् ?] छोटा तराजू। काँटा।
स्त्री०[?]१. तमाकू। २. सुरती का पत्ता।
स्त्री०=तुलि।

तुलुव—पुं०[?] उत्तर कनाडा का एक प्राचीन नाम।

तुलूली—स्त्री०[अनु० तुलतुल] द्रव पदार्थ की पतली किंतु बँधी हुई धार। जैसे—पेशाब की तुलूली।
क्रि० प्र०—बँधना।

तुल्य—वि०[सं० तुला+यत्]१. जो किसी की तुलना में समान हो। बराबर। २.०अनुरूप। सदृश्य।

तुल्यता—स्त्री०[सं० तुल्य+तल्—टाप्] तुल्य होने की अवस्था या भाव। बराबरी। समता।

तुल्य-पान—पुं० [तृ०त०] छोटे-बड़े सब तरह के लोगों का एक साथ मिलकर मद्य आदि पीना।

तुल्य-प्रधान व्यंग्य—पुं० [सं० तुल्य-प्रधान, ब०स०, तुल्य-प्रधान-व्यंग्य, कर्म० स०] साहित्य में ऐसा व्यंग्य जिसमें वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ बराबर हों। गुणीभूत व्यंग्य का एक भेद।

तुल्ययोगिता—स्त्री०[सं० तुल्ययोगिन्+तल्—टाप्] साहित्य में एक अलंकार जिसमें अप्रस्तुत अथवा प्रस्तुत पदार्थों के किसी एक धर्म से युक्त या सम्बद्ध होने का उल्लेख होता है। जैसे—उस सुन्दरी की कोमलता को देखकर किस तरुण के हृदय में मालती के फूल, चन्द्रमा की कला और केले के पत्ते कठोर नहीं जँचने लगे।

तुल्ययोगी (गिन्)—वि० [सं० तुल्य√युज् (जोड़ना)+णिनि] समान संबंध रखनेवाला।

तुल्ल*—वि०=तुल्य।

तुव—सर्व०=तव (तुम्हारा)।

तुवर—वि०[सं०√तु (नष्ट करना)+ष्वरच्]१. कसैला। २. जिसे दाढ़ी और मूँछ न हो।
पुं०१. कषाय रस। कसैला स्वाद। २. जलाशयों के किनारे होनेवाला एक पेड़ जिसके बीज खाने से मादा पशुओं का दूध बढ़ता है। ३. अरहर।

तुवर-यावनाल—पुं०[सं० कर्म० स०] लाल जोंधरी या ज्वार।

तुवरिका—स्त्री० [सं० तुवर+ठन्—इक, टाप्] १. गोपीचंदन। २. अरहर।

तुवरी—स्त्री० [सं० तुवर+ङीप्] १. तुवरिका। (दे०) २. वैद्यक में एक तरह का तैल जो रक्त, विकार दूर करने तथा चर्म रोगों का नाशक माना जाता है।

तुवरीशिंब—पुं०[सं० ब० स०] चँकवड़ का पेड़। पवाँर।

तुवि—स्त्री०[सं०=तुम्बी, पृषो० सिद्धि] तूँबी।

तुशियार—पुं० [सं० तुष] एक तरह का झाड़ जिसकी छाल को बटकर रस्सियाँ आदि बनाई जाती हैं। पुरुनी।

तुष—पुं० [सं०√तुष्+क] १. अन्न-कण के ऊपर का छिलका। भूसी। २. अंडे के ऊपर का छिलका। ३. बहेड़े का पेड़।

तुषग्रह—पुं०[सं० तुष√ग्रह् (पकड़ना)+अप्] अग्नि । आग।

तुष-धान्य—पुं०[सं० मध्य०स०] ऐसा अन्न जिसके दानों के ऊपर छिलका रहता हो।

तुषसार—पुं०[सं० तुष√सृ (जाना)+अण्] अग्नि। आग।

तुषांबु—पुं० [सं० तुष-अंबु, ष० त०] एक तरह की कांजी। (वैद्यक)
वि० दे० 'तुषोदक'।

तुषाग्नि—स्त्री०[सं० तुष-अग्नि, ष०त०] तुषानल। (दे०)

तुषानल—पुं०[सं० तुष-अनल, ष०त०]१. भूसी की आग। घास-फूस की आग। करसी की आँच। २. उक्त प्रकार की वह आग जिसमें प्रायश्चित्त करने के लिए लोग जल मरते थे।

तुषार—पुं०[सं०√तुष्(प्रसन्न होना)+आरन्] १. हवा में उड़नेवाले वे जलकण जो जम जाने के फलस्वरूप जमीन पर गिर पड़ते हैं। पाला। २. लाक्षणिक रूप में, ऐसी बात जो किसी चीज को नष्ट कर दे। ३. बरफ। हिम। ४. एक प्रकार का कपूर। चीनिया कपूर। ५. हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ६. उक्त प्रदेश में रहनेवाली एक जाति।
वि० बरफ की तरह ठंढा।

तुषार-कर—पुं०[सं० ब०स०] हिमकर। चंद्रमा।

तुषार-गौर—पुं०[सं० उपमि०स०] कपूर।

तुषार-मूर्ति—पुं०[ब०स०] चंद्रमा।

तुषार-पाषाण—पुं०[ष०त०]१. ओला। २. बरफ। हिम।

तुषार-रश्मि—पुं०[ब०स०] चंद्रमा।

तुषार-रेखा—स्त्री० [ष०त०] पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा जिससे ऊपरवाले भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है। (स्नो लाइन)

तुषारर्तु—स्त्री०[तुषार-ऋतु, ष०त०] जाड़े का मौसम। शीतकाल।

तुषारांशु—पुं०[तुषार-अंशु, ब०स०] चंद्रमा।

तुषाराद्रि—पुं०[तुषार-अद्रि, ष०त०] हिमालय पर्वत।

तुषित—पुं०[सं०√तुष् (प्रसन्न होना)+कितच् (बा०)] १. एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में १२ हैं। २. विष्णु। ३. बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग।

तुषोत्थ—पुं० [सं० तुष-उद्√स्था (उठना)+क] तुषोदक। (दे०)

तुषोदक—पुं०[तुष-उदक, ष० तं०]१. छिलके समेत कूटे हुए जौ को पानी में सड़ाकर बनाई हुई काँजी, जो वैद्यक में अग्नि को दीप्त करनेवाली मानी गई है। २. भूसी को सड़ाकर तैयार किया हुआ खट्टा जल।

तुष्ट—भू० कृ० [सं०√तुष्+क्त][भाव० तुष्टता]१. जिसका तोष या तृप्ति हो चुकी हो या कर दी गई हो। तृप्त। २. जो अपना अभीष्ट सिद्ध होने के कारण प्रसन्न हो गया हो।

तुष्टता—स्त्री०[सं० तुष्ट+तल्—टाप्]१. तुष्ट होने की अवस्था या भाव। २. संतोष। प्रसन्नता।

तुष्टना—अ०[सं० तुष्ट] तुष्ट होना।

स० तुष्ट करना।

तुष्टि—स्त्री०[सं०√तुष्+क्तिन्]१. तुष्ट होने की अवस्था या भाव। २. प्रसन्नता। ३. कंस का एक भाई।

तुष्टीकरण—पुं०[सं०तुष्टि+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ(करना)+ल्युट्—अन] किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। (एपीजमेंट)

तुस—पुं०[सं०=तुष, पृषो० सत्व] तुष (भूसी)।

तुसार—पुं०=तुषार।

तुसी—स्त्री०[सं० तुष] भूसी।

तुस्त—स्त्री०[सं० √तुस् (शब्द करना)+क्त]धूल । गर्द।

तुहफा†—पुं०=तोहफा।

तुहमत—स्त्री०=तोहमत।

तुहार—सर्व० हिं०'तुम्हारा' का भोजपुरी रूप।

तुहि—सर्व०[हिं० तू+हि(प्रत्य०)] तुझको। तुझे। (भोजपुरी)

तुहिन—पुं०[सं०√तुह् (पीड़ित करना)+इनन्] १. तुषार। पाला। २. बरफ। हिम। ३. चंद्रमा की चाँदनी। ४. ठंढक। शीतलता। ५. कपूर।

तुहिन-कर—पुं०[ष०त०]१. चंद्रमा। २. कपूर।

तुहिन-किरण—पुं०=तुहिन-कर।

तुहिन-गिरी—पुं०[ष०त०] हिमालय पर्वत।

तुहिन-शर्करा—पुं०[ष०त०] बरफ। हिम।

तुहिन-शैल—पुं०=तुहिन-गिरि।

तुहिनांशु—पुं०[सं० तुहिन-अंशु, ब०स०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

तुहिनाचल—पुं०[तुहिन-अचल, ष०त०] तुहिन-गिरि। (दे०)

तुहिनाद्रि—पुं०[तुहिन-अद्रि, ष० त०] तुहिन-गिरि। (दे०)

तुहें†—सर्व०=तुम्हें। (भोजपुरी)

तूं—सर्व०=तू।

तूंगी†—स्त्री०[देश०]१. पृथ्वी। भूमि। २. नाव। नौका।

तूंबड़ा—पुं०=तूंबा।

तूंबना—स०=तूमना।

तूंबा—पुं०[सं० तुम्बक] [स्त्री० अल्पा० तूंबी]१. कड़ुआ गोल कद्दू। कड़ुई गोल घीया। तितलौकी। २. उक्त का सूखा हुआ वह रूप जिसके सहारे नदी-नाले,आदि पार किये जाते हैं। ३. उक्त को सुखाकर और खोखला करके बनाया हुआ पात्र जो प्रायः साधु-संन्यासी और भिखमंगे अपने पास खाने-पीने की चीज़ें रखने के लिए रखते हैं।

पद—तूँबा पलटी या तूँबा फेरी=इधर की चीजें उठाकर उधर करना या एक की चीजें दूसरों को देना। चोरों, चालबाजों आदि का लक्षण। उदा०—ऐसी तूमा-(तूंबा) पलटी के गुन नेति नेति स्तुति गावैं।—सत्यनारायण।

तूंबी—स्त्री०[हिं० तूंवा] १. छोटा तूंबा। २. उक्त का बना हुआ छोटा तूंबा या पात्र।

मुहा०—तूंबी लगाना=वात से पीड़ित या सूजे हुए स्थान का रक्त या वायु खींचने के लिए तूंबी की विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया करना।

तू—सर्व० [सं० त्वम्] एक सर्वनाम जिसका प्रयोग मध्यम पुरुष एकवचन में ऐसे व्यक्ति के लिए होता है जो अपने से बहुत छोटा, तुच्छ या हीन हो। जैसे—तू चुप रह।

मुहा०—तू तड़ाक या तू तुकार=किसी को तू कहकर उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक संबोधित करना। **तू-तू मैं-मैं करना**=आपस में अशिष्टता पूर्वक कहा-सुनी, तकरार या हुज्जत करना।

विशेष—कुछ अवसरों पर इसका प्रयोग ईश्वर अथवा सर्वशक्तिमान् सत्ता के लिए भी होता है। जैसे—(क) हे ईश्वर, तू हम पर दया कर। (ख) हे राजन् तू यज्ञ कर।

पुं०[अनु०]कुत्तों, कौओं आदि को बुलाने का शब्द। जैसे—तू! तू! आओ।

तूअर—पुं०[सं० तूवरी]१. अरहर का पौधा। २. उक्त पौधे के बीज।

तूखा†—पुं०[सं० तुष=तिनका] दो पत्तों को (दोना या पत्तल बनाते समय) जोड़ने के लिए उनमें लगाई जानेवाली सींक। खरका।

तूखना—अ०[सं० तोषण] तुष्ट होना।

स० तुष्ट करना।

तूझ—सर्व०[सं० तुभ्यम्; प्रा० तुज्झं] तेरा। मेरे। उदा०—स्त्री पति कुण सुमति तूझ गुण जू तवति।—प्रिथीराज।

तूटना†—अ०=टूटना।

तूठाना*—अ०[सं० तुष्ट; प्रा० तुट्ठ]१. तुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। उदा०—मानि कामना सिद्ध जानि तूठे दुखहारी—रत्ना०। २. प्रसन्न होना।

तूण—पुं०[सं०√तूण् (पूरा करना)+ घञ्]१. तीर रखने का चोंगा। तरकश। २. चामर वृत्त का दूसरा नाम।

तूणक—पुं०[सं० तूण+कन्] एक प्रकार का छंद जिसके चरणों में १५-१५ वर्ण होते हैं।

तूण-क्ष्वेड़—पुं०[सं० ब०स०] बाण। तीर।

तूणव—पुं०[सं० तूण+व] बाँसुरी।

तूणि—वि०[सं०√तूण्(पूरा करना)+इन्] तेज या वेगपूर्वक चलने या कोई काम करनेवाला।

पुं० १. मन। २. श्लोक। ३. गर्द। ४. मल।

तूणी (णिन्)—वि०[सं० तूण+इनि] तूण अर्थात् तरकशवाला।

स्त्री०[सं० तूण+ ङीष्]१. तरकश। निषंग। २. नील का पौधा। ३. एक प्रकार का वात-रोग जिसमें मूत्राशय के पास से दर्द उठकर गुदा और पेड़ू तक पहुँचता है।

†पुं०[सं० तूणीक] तूनी (वृक्ष)।

तूणीक—पुं०[सं० तूणी√कै (शब्द करना)+क] तुन का पेड़।

तूणी-धर—पुं०[सं० ष०त०] तूण या तरकश रखनेवाला योद्धा।

तूणीर—पुं०[सं०√तूण+ईरन्] तूण। तरकश। भाथा।

तूत—पुं०[सं० नूद]१. मँझोले आकार का एक प्रकार का पेड़ जिसके पत्ते पान की तरह तथा अनीदार होते हैं। २. उक्त पेड़ की मीठी फलियाँ जो फल के रूप में खाई जाती हैं। शहतूत।

तूतक—पुं०[सं०=तुत्थ, पृषो० सिद्धि] तूतिया। नीलाथोथा।

तूतिया—पुं० [सं० तुत्थ] ताँबे का क्षार या लवण जो कुछ नीले रंग का होता है और जिसे वैद्यक में ताँबे की उप-धातु कहा गया है। यह खानों में प्राकृतिक रूप में भी मिलता है और गंधक के तेजाब और ताँबे के योग से बनाया भी जाता है। नीलाथोथा। वैद्यक में यह वमनकारक और दस्तावर माना जाता है तथा रंगाई के काम में भी आता है।

तूती—स्त्री०[फा०]१. छोटी जाति का एक प्रकार का तोता जिसकी चोंच पीली, गरदन बैंगनी और पर हरे होते हैं। २. कनेरी नाम की छोटी सुन्दर चिड़िया। ३. मटमैले रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। जो बहुत मधुर स्वर में बोलती है। ४. बाँसुरी या शहनाई की तरह का एक प्रकार का पतला लंबा बाजा।

विशेष—उर्दूवाले यह शब्द उक्त अर्थों में प्रायः पुंलिंग बोलते हैं। यथा—जहाँ में है शरारत-पेशा जितने। उन्हीं का आज तूती बोलती है।—कोई शायर।

मुहा०—**(किसी की) तूती बोलना**=किसी की खूब चलती होना। किसी का खूब प्रभाव जमना।

कहा०—**नक्कार खाने में तूती की आवाज कौन सुनता है**=(क)बहुत भीड़-भाड़ या शोरगुल में कही हुई किसी साधारण आदमी की बात कोई नहीं सुनता। (ख) बड़े लोगों के सामने छोटों की कुछ नहीं चलती।

५. मिट्टी की एक प्रकार की छोटी टोंटीदार घरिया या पुरवा जिससे छोटे बच्चे पानी पीते हैं।

तू-तू मैं-मैं—स्त्री०[हिं०] आपस में अशिष्टतापूर्वक होनेवाली कहा-सुनी या झगड़ा।

तूद—पुं०=तूत (शहतूत)।

तूदह—पुं० = तूदा।

तूदा—पुं० [फा० तूदः] १. ढेर। राशि। २. सीमा का चिह्न जो पहले मिट्टी का ढेर खड़ा करके बनाया जाता था। ३. मिट्टी की वह ऊँची और बड़ी राशि या टीला जिस पर तीर, बन्दूक आदि चलाकर निशाना साधने का अभ्यास किया जाता है।

तून—पुं० [सं० तुन्नक] १. तुन का पेड़। दे० 'तुन'। २. तूल नाम का लाल रंग का कपड़ा।

†पुं० = तूण (तूणीर)।

तूना—अ० [हिं० चूना] १. तरल पदार्थ का बूँद-बूँद करके गिरना। चूना। टपकना। उदा०—रति रूप लुनाई तुई सीप रै।—प्रतापशाह। २. खड़ा या स्थिर न रहकर गिर पड़ना। ३. गर्भपात या गर्भ-स्राव होना।

तूनी—पुं० [सं० तूणी] एक तरह का बड़ा पेड़ जिसकी पत्ती नीम के पेड़ की तरह होती है और लकड़ी लाल रंग की और हलकी किंतु मजबूत होती है। तुन।

तूनीर*—पुं० = तूणीर (तरकश)।

तूफाँ—पुं० = तूफान।

तूफान—पुं० [अ०; चीनी ताई फू] १. वह बड़ी बाढ़ जो आस-पास की चीजों या स्थानों को डुबा दे। २. बहुत तेज चलनेवाली, विशेषतः समुद्र-तल पर उठने या चलनेवाली वह आँधी जिसके साथ खूब बादल गरजते और जोरों की वर्षा होती है। ३. ऐसा भीषण या विकट उत्पात या उपद्रव जिसमें या तो बहुत से लोग सम्मिलित हों या जिससे बहुतों की भारी हानि हो। भारी आफत, झंझट या बखेड़ा। जैसे—तुम तो जरा-सी बात में तूफान खड़ा कर देते हो।

क्रि० प्र०—उठाना। —खड़ा करना।

४. ऐसी बहुत अधिक चीख-पुकार या हो-हल्ला जिसे सुनकर आस-पास के लोग घबरा जायँ। ५. किसी पर लगाया जानेवाला झूठा कलंक या दोष। तोहमत।

मुहा०—**तूफान जोड़ना या बाँधना**=किसी पर झूठा आरोप करना या कलंक लगाना।

तूफानी—वि० [फा०] १. तूफान-सम्बन्धी। तूफान का। जैसे—तूफानी रात। २. तूफान की तरह का तेज या प्रबल और चारों ओर वेगपूर्वक फैलने या होनेवाला। जैसे—उन दिनों देश में कई बड़े-बड़े नेताओं के तूफानी दौरे हो रहे थे। ३. तूफान अर्थात् बहुत बड़ा उपद्रव या बखेड़ा खड़ा करनेवाला। जैसे—उसकी बातों में मत आना; वह बहुत बड़ा तूफानी है।

तूबर—पुं० [सं० तूवर] १. ऐसा बैल जिसके सिर पर सींग न हों। २. नपुंसक। हिजड़ा।

तूबरक—पुं० [सं० तूवर+कन्] नपुंसक। हिजड़ा।

तूबरी—स्त्री० [सं० तूवर+ङीष्] १. गोपी चंदन। २. अरहर।

तूमड़ी—स्त्री० [हिं० तूवाँ+ड़ी (प्रत्य०)] १. तूँबी। २. तूँबी से बनाया हुआ एक प्रकार का बाजा जो प्रायः सँपेरे बजाते हैं।

तूम-तड़ाक—स्त्री० [अनु० तूम+तड़क (भड़क)] १. तड़क-भड़क। २. व्यर्थ का दिखौआ आडंबर। ३. ठसक।

तूमना—स० [सं० स्तोम=ढेर+हिं० ना (प्रत्य०)] १. रूई आदि के पहल या रेशे नोचकर अलग-अलग करना। २. किसी चीज को काट-पीट कर उसके बहुत छोटे-छोटे टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। ३. मसलना। ४. अच्छी तरह सारा रहस्य खोलना। ५. बहुत मारना पीटना। ६. गालियाँ आदि देते हुए पूरी दुर्दशा करना। उदा०—तरुन तरुन तन तूमत फिरत है।—देव। ७. इकट्ठा करना। चुनना। उदा०—सजा दे प्रिय पथ पर प्रति बार लजाती रहे स्नेह दल-तूम—निराला।

तूमरा—पुं० [स्त्री० तूमरी] =तूंबा।

तूमा—पुं० = तूंबा।

तूमार—पुं० [अ०] साधारण बात का होनेवाला व्यर्थ का विस्तार। बात का बतंगड़।

क्रि० प्र०—खड़ा करना।—बाँधना।

तूमारिया सूत—पुं० [हिं० तुमना+सूत] ऐसा महीन सूत जो तूमी हुई रूई से काता गया हो।

तूया—स्त्री० [देश०] काली सरसों।

तूरंत—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी।

तूर—पुं० [सं०√तूर् (ताड़न करना)+क] १. एक प्रकार का नगाड़ा। २. तुरही या नरसिंहा नाम का बाजा।

†स्त्री० [सं० तुवरि] १. अरहर का पौधा और उसके बीज। २. अनाज। अन्न। उदा०—पूर्वाषाढ़ा धूल किन उपजै साती तूर।—भड्डरी।

पुं० [अ०] शाम देश का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसके संबंध में कहा जाता है कि हज़रत मूसा को इसी पर अलौकिक प्रकाश दिखाई पड़ा था।

मुहा०—तूर चमकना=ज्ञान का प्रकाश दिखाई पड़ना।

स्त्री० [फा० तूल=लंबाई] १. गज-डेढ़ गज लंबी एक लकड़ी जो जुलाहों के करघे में लगी रहती है और जिसमें तानी लपेटी जाती है। लपेटनी। फनियाला। २. डोली, पालकी आदि पर डाले हुए परदे को यथा स्थान रखने के लिए उसके चारों ओर बाँधी जानेवाली रस्सी। चौबंदी।

स्त्री० [सं० तूल] १. कपास। २. रूई।

तूरज*—पुं० = तूर्य।

तूरण*—अव्य० [सं० तूर्ण] १. चट-पट। तुरंत। २. शीघ्र। जल्दी।

तूरण*—क्रि० वि० [सं० तूर्ण] १. चट-पट। तुरन्त। २. शीघ्र जल्दी।

तूरन*—पुं० = तूर्ण।

क्रि० वि०=तूरण।

तूरना†—पुं० [सं० तूर] तुरही।

†पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

†स० = तोड़ना। (पूरब) उदा०—मन तन वचन तजे तिन तूरी।—तुलसी।

†अ० =टूटना। उदा०—परिहैं तूरि लटी कटि ताकी। —नन्ददास।

तूरा—पुं० [सं० तूर] तुरही नामक बाजा।

तूरान—पुं० [फा०] मध्य एशिया; जो तुर्क, तातारी, मंगोल आदि जातियों का निवास स्थान है।

तूरानी—वि० [फा०] तूरान देश का। तूरान-संबंधी।

पुं० तूरान देश का निवासी।

स्त्री० १. तूरान देश की भाषा। २. उक्त भाषा की लिपि।

तूरी—स्त्री० [सं०√तूर्+अच्+ङीष्] धतूरे का पेड़।

तूर्ण—क्रि० वि० [सं०√त्वर् (शीघ्रता करना)+क्त, नत्व] शीघ्र। जल्दी।

वि० १. जल्दी या शीघ्रता करनेवाला। २. शीघ्रगामी। तेज।

तूर्णक—पुं० [सं० तूर्ण+कन्] सुश्रुत के अनुसार एक तरह का चावल।

तूर्त—अव्य० [सं०√त्वर्+क्त, ऊठ्] १. तुरंत। तत्काल। २. जल्दी। शीघ्र।

तूर्य—पुं० [सं० √तूर् (पूर्ण करना)+ण्यत्] १. तुरही या नरसिंहा नाम का बाजा। २. मृदंग।

तूर्य-खंड—पुं० [ष० त०] एक प्रकार का ढोल।

तूर्व—अव्य० [सं०√तुर्व् (हिंसा करना) +अच्, दीर्घ] तुरंत। शीघ्र।

तूल—पुं० [सं०√तूल् (पूर्ति करना) +क] १. आकाश। २. कपास, मदार, सेमल, आदि के डोडों के अंदर का घूआ जो रूई की तरह होता है। ३. शहतूत का पेड़। ४. धतूरा। ५. तृण की नोक।

पुं० [हिं० तून=एक पेड़ जिसके फूलों से कपड़े रंगे जाते हैं] १. सूती कपड़ा जो चटकीले रंग का होता था और पहले तूल के फूलों के रंग से रंगा जाता था। २. गहरा और चटकीला लाल रंग।

*वि० = तुल्य (समान)।

पुं० [अ०] लंबाई के बल का विस्तार। लंबाई।

पद—तूल व अर्ज= लंबाई और चौड़ाई। **तूल-कलाम**=(क) लंबी-चौड़ी बातें। (ख) कहासुनी। **तूल-तवील**=बहुत लंबा-चौड़ा।

मुहा०—(किसी बात का) तूल खींचना=किसी बात या कार्य का आवश्यकता से बहुत अधिक बढ़ जाना। **तूल देना**=व्यर्थ का विस्तार करना। **तूल पकड़ना**=तूल खींचना। (देखें ऊपर)

तूलक— पुं० [सं० तूल+कन्] रूई।

तूल-कार्मुक—पुं० [च० त०] १. इंद्र-धनुष। २. रूई धुनने की धुनकी।

तूल-चाप—पुं० = तूल-कार्मुक।

तूलत—स्त्री० [हिं० तुलना] जहाज की रेलिंग में लगी हुई एक खूँटी।

तूलता*—स्त्री० = तुल्यता। (समता)

तूलना—स० [सं० तूलन या तुलना] गाड़ी के पहिए निकाल करके उनके भीतरी छेद में तेल डालना। औंगना।

*अ० [सं० तुलना] १. तौला जाना। २. किसी से होड़ लगाना। बराबर होने का प्रयत्न करना। उदा०—रंग न तेरो है कछू सुबरन रंग न तूनि।—दीनदयाल गिरि। ३. किसी के बराबर या समान होना। ४. किसी की बराबरी का या समान बनकर उसके संपर्क में या साथ रहना अथवा विचरण करना। उदा०—मंजुल रसातल की मंजरी के पुंजन में, पाय कै प्रसाद तहाँ गूँज गूँज तूलेहो।—प्रसाद। ५. तुलना करना। उपमा देना।

तूलम-तूल—अव्य० [अ० तूल = लंबा] १. लंबाई के बल। २. आमने सामने।

तूलवती—स्त्री० [सं० तूल+मतुप्—ङीप्] नील का पौधा।

तूल-वृक्ष—पुं० [ष० त०] शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड़।

तूल-शर्करा—स्त्री० [ष० त०] कपास का बीज। बिनौला।

तूल-सेचन—पुं० [ष० त०] रूई से सूत कातने का काम।

तूला—स्त्री० [सं० तूल+टाप्] १. कपास। २. दीए की बत्ती।

* वि० = तुल्य।

तूलि—स्त्री० [सं०√तूल् (पूर्ति करना)+इन्] १. तकिया। २. चित्रकार की कूची। तूलिया।

तूलिका—स्त्री० [सं० तूलि+कन्—टाप्] १. हलकी रजाई। दुलाई। २. चित्र अंकित करने की कूँची।

तूलिनी—स्त्री० [सं० तूल+इनि—ङीष्] १. लक्ष्मण कंद। २. सेमल का पेड़।

तूलि-फला—स्त्री० [सं० ब० स०] सेमर का पेड़।

तूली—स्त्री० [सं० तूलि+ङीष्] १. नील का पौधा। २. चित्रों आदि में रंग भरने की कूँची। उदा०—आज क्षितिज पर जाँच रहा है तूली कौन चितेरा।—महादेवी। ३. जुलाहों की कूंची जिससे वे ताने का फैला हुआ सूत ठीक जगह पर बैठाते हैं।

तूवर—पुं० [सं० तु+वरच्, दीर्घ]=तूवरक।

तूवरक—पुं० [सं० तूवर+कन्] १. बिना सींग का बैल। डूंड़ा।

२. बिना दाढ़ी-मूंछों का आदमी। ३. कषाय रस। ४. कसैला स्वाद। ५. अरहर।

तूवरिका—स्त्री० [सं० तूवरक+टाप्, इत्व] १. अरहर। २. गोपी चंदन।

तूवरी—स्त्री० [सं० तूवर+ङीष्] १. अरहर। २. गोपी चंदन।

तूष—पुं० [सं०√तूष् (सन्तोष करना)+अच्] किनारा (कपड़े का)।

तूष्णी—वि० [सं० तूष्णीम् (अव्य०)] मौन। चुप।

स्त्री० चुप्पी। मौन।

तूष्णीक—वि० [स० तूष्णीम्+कन्, मकार-लोप] मौनावलम्बी। मौन रहनेवाला।

तूष्णीयुद्ध—पुं० [सं० कर्म० स०] वह युद्ध या होड़ जिसमें कौशल, षड़यंत्र आदि के द्वारा शत्रु पक्ष के मुख्य मुख्य लोगों को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया जाय।

तूस—पुं० [तिब्बती थोश] [वि० तूसी] १. एक प्रकार का बहुत बढ़िया और मुलायम ऊन जो काश्मीर से लेकर नैपाल तक की एक तरह की पहाड़ी बकरियों के शरीर पर होता है। पशम। २. उक्त ऊन का जमाया हुआ कंबल या नमदा। ३. उक्त ऊन की बुनी हुई बढ़िया चादर। पशमीना।

† पुं०=तुष (भूसी)।

तूसदान—पुं० [पुर्त० काटूश+दान (प्रत्य०)] कारतूस।

तूसना*—अ० [सं० तुष्ट] १. संतुष्ट होना। २. प्रसन्न होना।

स० १. संतुष्ट करना। २. प्रसन्न करना।

तूसा† —पुं० [सं० तुष] चोकर। भूसी।

तूसी—वि० [सं० तुष] धान के छिलके के रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का रंग। (हस्क)

तूस्त—पुं० [सं०√तुस् (शब्द करना)+तन् (दीर्घ)] १. धूल। रज। रेणु। २. किसी चीज का बहुत छोटा टुकड़ा। कण। ३. जटा। ४. धनुष।

तृक्ष—पुं० [सं०√तृक्ष् (जाना)+अच्] कश्यप ऋषि।

तृक्षाक—पुं० [सं०√तृक्ष्+आकन्] एक प्राचीन ऋषि।

तृख—पुं० [सं०√तृष् (प्यासा होना)+क, पृषो० ष— ख] जातीफल। जायफल।

तृखा* —स्त्री०=तृषा।

तृजग* —वि०=तिर्यक्।

तृण—पुं० [सं०√तृह् (हिंसा करना)+क्न, हकारलोप] १. कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियों की एक जाति या वर्ग जिसके कांड या पेड़ी में काठ या लकड़ीवाला अंश नहीं होता, गूदा ही गूदा होता है। इस वर्ग के पौधों में ऐसी लंबी-लंबी पत्तियाँ होती हैं जिनमें केवल लंबाई के बल नसें होती हैं। जैसे—ऊख, नरकट, सरकंडा आदि। २. घास या उसका डंठल।

मुहा०—(मुंह या दाँतों में) तृण गहना या पकड़ना= उसी प्रकार दीन-हीन बनकर सामने आना जिस प्रकार सीधी-सादी गौ मुंह में घास या उसका डंठल लिये हुए आती है। **तृण गहाना या पकड़ाना**=पूरी तरह से दीन और नम्र बनाकर वशीभूत करना। **तृण तोड़ना**=किसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे बुरी नजर से बचाने के लिए तिनका तोड़ने का टोटका करना। **(किसी से) तृण तोड़ना**= सदा के लिए संबंध तोड़ना। (दे० 'तिनका' के अंतर्गत 'तिनका. तोड़ना' मुहा०)

पद—तृणवत्=अत्यंत तुच्छ।

तृणक—पुं० [सं० तृण+कन्] तृण। घास।

तृण-कर्ण—पुं० [ब० स०] एक ऋषि।

तृणकीया—स्त्री० [सं० तृण+छ—ईय, कुक्, टाप्] ऐसी जमीन जहाँ घास उगी हुई हो।

तृण-कुंकुम—पुं० [मध्य० स०] एक सुगंधित घास। रोहिश घास।

तृणकुटी—स्त्री० [मध्य० स०] घास-फूस की बनी हुई कुटिया या झोंपड़ी।

तृण-कूर्म—पुं० [मध्य स०] गोल कद्दू।

तृण-केतु—पुं० [स० त०] १. बाँस। २. ताड़।

तृणकेतुक—पुं० [सं० तृणकेतु+कन्] तृण-केतु।

तृण-ग्रंथी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] स्वर्ण जीवंती।

तृणा-ग्राही (हिन्)—पुं० [सं० तृण√ग्रह् (पकड़ना)+णिनि] १. नीलम। २. कहरुवा।

तृणचर—वि० [सं० तृण√चर् (गति)+अच्] तृण चरनेवाला।

पुं० १. पशु। २. गोमेदक मणि।

तृण-जलायुका—पुं० [मध्य० स०] तृण-जलौका। (दे०)

तृण-जलौका—पुं० [मध्य० स०] एक तरह की जोंक।

तृण-ज्योतिष—पुं० [स० त०] ज्योतिष्मती लता।

तृण-द्रुम—पुं० [उपमि० स०] १. ताड़ का पेड़। २. सुपारी का पेड़। ३. खजूर का पेड़। ४. नारियल का पेड़। ५. हिंताल। ६. केतकी का पौधा।

तृण-धान्य—पुं० [मध्य० स०] १. तिन्नी या धान का चावल। २. सांवा।

तृण-ध्वज—पुं० [स० त०] १. बाँस। २. ताड़ का पेड़।

तृण-निंब—पुं० [मध्य० स०] चिरायता।

तृणप—पुं० [सं० तृण√पा (रक्षा करना)+क] एक गंधर्व का नाम।

तृण-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] इक्षुदर्भ नामक तृण।

तृण-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्]=तृण-पत्रिका।

तृण-पीड़—पुं० [ब० स०] आपस में होनेवाला गुत्थम-गुत्था या हाथापाई।

तृण-पुष्प—पुं० [ष० त०] १. गठिवन। २. सिन्दूर पुष्पी।

तृण-पूली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] घास-फूस या नरकट की चटाई।

तृण-बीज—पुं० [ब० स०] साँवाँ।

तृण-मणि—पुं० [मध्य० स०] तृण को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला एक तरह के गोंद का डला। कहरुवा। कंपूरमणि।

विशेष—प्राचीन साहित्यकारों ने इसे पत्थर माना था।

तृणमय—वि० [सं० तृण+मयट्] [स्त्री० तृणमयी] घास-फूस का बना हुआ।

तृणवत्—वि० [सं० तृण+वति] जिसका महत्त्व तृण के समान कुछ भी न हो अर्थात् नगण्य। तुच्छ।

तृणराज—पुं० [ष० त०] १. खजूर का पेड़। २. नारियल का पेड़। ३. ताड़ का पेड़।

तृण-वृक्ष—पुं० =तृण-द्रुम ।

तृण-शय्या—स्त्री० [ष० त०] १. घास का बिछौना । २. चटाई ।

तृणशीत—पुं० [स० त०] १. रोहिस घास, जिसमें से नीबू की-सी सुगंध आती है। २. जल-पिप्पली ।

तृण-शून्य—वि० [तृ० त०] जिसमें तृण न हो। तृण से रहित । पुं० १. चमेली । मल्लिका। २. केतकी ।

तृण-शूली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] एक प्रकार की लता ।

तृणशोषक—पुं० [सं० तृण√शुष् (सूखना) +णिच्+ण्वुल्—अक] एक प्रकार का साँप ।

तृण-षट्पद—पुं० [उपमि० स०] बर्रे। भिड़ ।

तृण-संवाह—पुं० [सं० तृण-सम्√वह् (ढोना)+णिच्+अच्] वायु। हवा।

तृण-सारा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] कदली। केला ।

तृण-सिंह—पुं० [स० त०] कुठार । कुल्हाड़ा ।

तृण-स्पर्श-परीषह—पुं० [ष० त०] दर्भादि कठोर तृणों को बिछाकर उन पर सोने का व्रत । (जैन)

तृण-हर्म्य—पुं० [मध्य० स०] कुटिया। झोंपड़ी ।

तृणांजन—पुं० [तृण-अंजन, उपमि० स०] एक तरह का गिरगिट।

तृणाग्नि—स्त्री० [तृण-अग्नि, मध्य० स०] तुषानल। (दे०)

तृणाढ्य—पुं० [तृण-आढ्य, स० त०] एक तरह का तृण जो औषध के काम में आता है। पर्वतृण ।

तृणान्न—पुं० [तृण-अन्न, ष० त०] तिन्नी का जंगली धान।

तृणाम्ल—पुं० [तृण-अम्ल, स० त०] नोनिया नामक घास ।

तृणारणिमणि न्याय—पुं० [तृण-अरणि मणि, द्व० स०, तृणारणिमणि-न्याय, ष० त०] तर्क-शास्त्र में तृण, अरणी और मणि की तरह का स्पष्ट निर्देशन।

विशेष—इन तीनों चीजों से आग जलाई जाती है परन्तु इन तीनों के जलाने के ढंग अलग-अलग हैं।

तृणावर्त्त—पुं० [सं० तृण+आ+वृत् (घूमना)+णिच्+अण्] १. बवंडर। चक्रवात। २. एक दैत्य जिसे कंस ने कृष्ण को मार डालने के लिए गोकुल भेजा था।

तृणेंद्र—पुं० [तृण—इंद्र, उपमि० स०] ताड़ का पेड़।

तृणोत्तम—पुं० [तृण-उत्तम, स० त०] ऊखल तृण। उखर्वल।

तृणोद्भव—पुं० [सं० तृण+उद्√भू (उत्पन्न होना)+अच्] तिन्नी (धान)।

तृणोल्का—स्त्री० [तृण—उल्का, मध्य० स०] घास-फूस की बनी हुई मशाल।

तृणौक (स्)—पुं० [तृण—ओकस्, मध्य० स०] घास-फूस की झोंपड़ी।

तृणौषध—पुं० [तृण-औषध, मध्य० स०] एलुवा।

तृण्या—स्त्री० [सं० तृण+य—टाप्] तृणों अर्थात् घास-पात का ढेर।

तृतीय—वि० [सं० त्रि+तीय (सम्प्रसारण)] जो क्रम संख्या, महत्त्व आदि के विचार से दूसरे के बाद का हो। तीसरा।

तृतीयक—पुं० [सं० तृतीय+कन्] वह ज्वर जो हर तीसरे दिन आता हो। तिजारी ।

तृतीय-प्रकृति—स्त्री० [कर्म० स०] पुंलिंग और स्त्री लिंग से भिन्न और तीसरा अर्थात् नपुंसक । हिजड़ा ।

तृतीय-सवन—पुं० [कर्म० स०] अग्निष्टोम आदि यज्ञों का तीसरा सवन जिसे सांय सवन भी कहते हैं। दे० 'सवन'।

तृतीयांश—पुं० [तृतीय-अंश, कर्म० स०] तीसरा उपंश या भाग। तिहाई।

तृतीया—स्त्री० [सं० तृतीय+टाप्] १. चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २. व्याकरण में, करण कारक या उसकी विभक्ति की संज्ञा।

तृतीया प्रकृति—वि० [सं०] नपुंसक। हिजड़ा।

तृतीयाश्रम—पुं० [तृतीय-आश्रम, कर्म० स०] चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम। वानप्रस्थ ।

तृतीयी (यिन्)—वि० [सं० तृतीय+इनि] तीन बराबर भागों में से एक का हकदार।

तृन†—पुं०=तृण ।

तृपत्—पुं० [सं०√तृप् (प्रसन्न करना)+अति] चंद्रमा।

तृपति†—स्त्री०=तृप्ति ।

तृपल—पुं० [सं०√तृप्+कलच्] १. उपल। २. पत्थर ।

तृपला—स्त्री० [सं० तृपल+टाप्] १. लता। बेल। २. त्रिफला ।

तृपित†—वि०=तृप्त ।

तृपिता*—स्त्री०=तृप्ति।

तृपिताना—अ० [हिं० तृपित, सं० तृप्त] तृप्त होना । स० तृप्त करना ।

तृप्त—वि० [सं०√तृप्+क्त] १. जो अपनी आवश्यकता पूरी हो जाने पर संतुष्ट हो चुका हो। २. अघाया हुआ। ३. प्रसन्न।

तृप्ताना*—अ० [सं० तृप्त] तृप्त होना। स० तृप्त करना ।

तृप्ति—स्त्री० [सं०√तृप्+क्तिन्] आवश्यकता अथवा इच्छा की पूर्ति हो जाने पर होनेवाली मानसिक शान्ति या मिलनेवाला आनंद ।

तृप्र—पुं० [सं०√तृप्+रक्] १. घी। घृत। २. पुरोडाश । वि० तृप्त करनेवाला।

तृफला—स्त्री०=त्रिफला।

तृषा—स्त्री० [सं०√तृष् (लालच करना)+क्विप्—टाप्] [वि० तृषित, तृष्य] १. पानी अथवा कोई तरल पदार्थ पीने की आवश्यकता से उत्पन्न होनेवाली इच्छा। प्यास। २. अभिलाषा। इच्छा। ३. लालच। लोभ। ४. कलिहारी नाम की वनस्पति।

तृषातुर—वि० [तृषा-आतुर] तृषा से आतुर या विकल। बहुत अधिक प्यासा।

तृषा-द्रुम—पुं० [मध्य० स०] वह वृक्ष जिसमें से प्यास बुझाने का साधन अर्थात् जल मिलता हो। जैसे—नारियल, ताड़ आदि।

तृषाभू—स्त्री० [ष० त०] पेट में जल रहने का स्थान । (क्लोम)

तृषालु—वि० [सं०√तृष् (प्यास लगना)+आलुच्] बहुत अधिक प्यासा। तृषित ।

तृषावंत—वि० [सं० तृषावान्] प्यासा।

तृषावान् (वत्)—वि० [सं० तृषा+मतुप्] प्यासा।

तृषा-स्थान—पुं० [ष० त०] पेट के अन्दर का वह स्थान जहाँ जल रहता है। (क्लोम)

तृषाहा—स्त्री० [सं० तृषा√हन् (मारना)+ड—टाप्] सौंफ।

तृषित—वि० [सं० तृषा+इतच्] १. प्यासा। २. विशेष इच्छा या कामना रखनेवाला। ३. घबराया हुआ। विकल। उदा०—कुआर मास तन तृषित घाम से कातिक चहुँदिसि दियरी बराई।—लोक-गीत।

तृषितोत्तरा—स्त्री० [तृषित-उत्तर, ब० स०, टाप्] पटसन।

तृष्णा—स्त्री० [सं०√तृष्+न—टाप्] १. प्यास। तृषा। २. लाक्षणिक अर्थ में, मन में होनेवाली वह प्रबल वासना जो बहुत कुछ विकल रखती हो और जिसकी सहज में तृप्ति न होती हो। ३. प्रायः अधिक समय तक बनी रहनेवाली कामना।

तृष्णारि—पुं० [तृष्णा-अरि, ष० त०] पित्त-पापड़ा जिसके सेवन से रोगी को प्रायः लगनेवाली प्यास बहूत-कुछ कम हो जाती है।

तृष्णालु—वि० [सं० तृष्णा+आलु] १. तृषित। प्यासा। २. लालची। लोभी।

तृष्य—पुं० [सं०√तृष् (लालच करना)+क्यप्] १. लालच। लोभ। २. तृषा। प्यास।

वि० लोभ उत्पन्न करने वाला।

तृसालवाँ† —वि० [सं० तृषालु] प्यासा। तृषित।

तृस्ना—स्त्री०=तृष्णा।

तें*—अव्य० [सं० तस् (प्रत्य०)] १. द्वारा। २. से अधिक या बढ़कर। उदा०—चपला तें चमकत अति फारी, कहा करौगी श्यामहिं।—सूर। ३. किसी समय या स्थान से।

तेंतरा—पुं० [देश०] बैलगाड़ी में फड़ के नीचे की लकड़ी।

तेंतालीस—वि० [सं० त्रिचत्वारिंशत्; प्रा० तिचत्तालीसा] जो गिनती या संख्या में चालिस से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—४३।

तेंतालिसवाँ—वि० [हिं० तेंतालिस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम में तेंतालिस के स्थान पर पड़ने या होनेवाला।

तेंतिस—वि० [सं० त्रयस्त्रिशंत्; पा० तितिंसति; प्रा० तितीसा] जो गिनती में तीस से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—३३।

तेंतिसवाँ—वि० [हिं० तेंतिस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती में तेंतिस के स्थान पर पड़े।

तेंदुआ—पुं० [देश०] चीते की जाति का एक हिंसक पशु।

तेंदुस—पुं० [सं० टिंडिश] डेंडसी नामक पौधा और उसका फल।

तेंदू—पुं० [सं० तिंदुक] १. ऊँचे कद का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पत्ते शीशम की तरह गोल, नोकदार और चिकने होते हैं और लकड़ी काली और बहुत मजबूत होती है। आंबनूस। २. उक्त पेड़ का फल जो नींबू के आकार का होता है और वैद्यक में वातकारक माना गया है। ३. एक तरह का तरबूज। (पश्चिम)

ते—विभ० [हिं०] से।

सर्व०= [सं० तद् का बहु०] वे (वे लोग)।

तेइ*—सर्व० [सं० ते] वे लोग ही।

तेइस—वि०, पुं०=तेईस।

तेइसवाँ—वि०=तेईसवाँ।

तेईस—वि० [सं० त्रिविंशति; पा० तेवीसति; प्रा० तेवीस] गिनती में बीस से तीन अधिक। बीस और तीन।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२३।

तेईसवाँ—वि० [हिं० तेईस+वाँ (प्रत्य०)] गिनती के क्रम में बाईस के बाद तेईस पर स्थान पर पड़नेवाला।

तेखना*—अ० [हिं० तेहा] क्रुद्ध होना।

तेखी—वि०=क्रोधी।

तेग—स्त्री० [अ० तेग़] तलवार।

तेगा—पुं० [अ० तेग़] १. खड्ग या खाँडा नाम का अस्त्र। २. दरवाजे, मेहराब आदि के बीच का खाली स्थान बन्द करने या भरने के लिए उसमें ईंट, पत्थर आदि की जोड़ाई करके भरने की क्रिया। ३. दे० 'कमरतेगा' (कुश्ती का पेंच)।

तेज—पुं० [सं० तेजस्] १. पाँच महाभूतों में से अग्नि या आग नामक महाभूत। २. गरमी। ताप। ३. कोई ऐसी तीव्रता या प्रभावकारक विशेषता जिसके सामने ठहरना या जिसे सहना कठिन हो। जैसे—महात्माओं के चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेज होता है। ४. प्रताप। ५. पराक्रम। बल। ६. कांति। चमक। ७. तत्त्व। सार। ८. वीर्य। ९. पित्त। १०. लज्जा। ११. सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग शरीर। १२. घोड़ों आदि के चलने की तेजी या वेग। १३. सोना। स्वर्ण। १४. नवनीत। मक्खन।

वि० [सं० तेजस् से फा० तेज] १. ऐसा उग्र, प्रबल या विकट जिसे सहना कठिन हो। जैसे—तेज धूप। २. जिसकी गति में बहुत अधिक वेग हो। शीघ्रगामी। जैसे—तेज घोड़ा, तेज हवा। ३. जिसकी धार बहुत चोखी या पैनी हो। जैसे—तेज चाकू। ४. जिसका स्वाद बहुत चरपरा, झालदार या तीखा हो। जैसे—तेज मिर्च। ५. जिसमें कोई काम बहुत अच्छी तरह और जल्दी करने की विशेष बुद्धि, योग्यता या सामर्थ्य हो। जैसे—पढ़ने-लिखने में तेज लड़का। ६. बहुत जल्दी और यथेष्ट प्रभाव उत्पन्न करनेवाला। जैसे—तेज दवा। ७. बहुत अधिक या बढ़-चढ़कर बोलनेवाला। जैसे—उनकी औरत बहुत तेज है। ८. जिसमें चंचलता या चपलता की अधिकता हो। जैसे—यह बच्चा अभी से बहुत तेज है। ९. जिसका दाम या भाव अपेक्षया अधिक हो या पहले से बढ़ गया हो। जैसे—आज-कल अनाज और कपड़ा बहुत तेज हो गया है।

तेजक—पुं० [सं०√तिज् (क्षमा करना)+ण्वुल्—अक] १. मूंज। २. सरपत।

तेजग*—वि०=तेज।

तेजधारी—वि० [सं० तेजोधारिन्] (व्यक्ति) जिसके चेहरे पर तेज हो। तेजस्वी।

तेजन—वि० [सं०√तिज्+णिच्+ल्यु—अन] १. तेज उत्पन्न करनेवाला। २. दीप्त करनेवाला। ३. जल्दी जलने या जलानेवाला।

पुं० १. बाँस। २. सरपत। ३. मूंज।

तेजनक—पुं० [सं० तेजन+कन्] शर। सरपत।

तेजना*—स० [हिं० तजना] छोड़ देना। त्यागना। उदा०—तेजि अहं गुरु-चरन गहु जम से बाचें जीव।—कबीर।

तेजनाख्य—पुं० [सं० तेजन-आख्या, ब० स०] मूंज।

तेजनी—पुं॰ [सं॰ तेजन+ङीष्] १. मूर्वा लता । २. मालकंगनी। ३. चव्य । चाब। ४. तेजबल।

तेजपत्ता—पुं॰[सं॰ तेजपत्र] १. दारचीनी की जाति का एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।

२. उक्त वृक्ष का पत्ता जो वैद्यक में बवासीर, हृदयरोग, पीनस आदि को दूर करनेवाला माना गया है।

तेजपत्र—पुं॰ [सं॰ √ तिज् (सहना) + णिच्+अच्, तेज-पत्र, ब॰ स॰] तेजपत्ता। तेजपात।

तेजपात—पुं॰=तेजपत्ता ।

तेजबल—पुं॰ [सं॰ तेजोवती] १. एक तरह की लता जिसकी छाल लाल रंग की होती है और बीज काली मिरच की तरह के होते हैं जो दवा के काम आते हैं। २. उक्त वृक्ष की छाल और बीज जो सुगंधित होते हैं।

तेजल—पुं॰ [सं॰√तिज् (सहना)+कलच्] चातक । पपीहा ।

तेजवंत—वि॰=तेजवान् ।

तेजवान्—वि॰ [सं॰ तेजोवान्] [स्त्री॰ तेजवती] १. जिसमें तेज हो। तेज से युक्त । तेजस्वी। २. वीर्यवान् । ३. बलवान् । शक्तिशाली। ४. कांतिमान् । चमकीला।

तेजस्—पुं॰ [सं॰√तिज् (सहना)+असुन्] दे॰ 'तेज'।

तेजस्-चिकित्सा—स्त्री॰ [तृ॰ त॰] दे॰ 'रश्मि चिकित्सा'।

तेजसी—वि॰ [हिं॰ तेजस्वी] जिसमें तेज हो। तेजस्वी।

तेजस्कर—वि॰ [सं॰ तेजस्√कृ (करना)+ट] तेज को प्रदीप्त करने या बढ़ानेवाला। तेज उत्पन्न करनेवाला।

तेजस्काम—वि॰ [सं॰ तेजस्√कम् (चाहना)+अण्] शक्ति या प्रताप की कामना करनेवाला।

तेजस्क्रिय—वि॰ [सं॰ ब॰ स॰] (वह पदार्थ) जिसमें से तेज निकलकर दूसरे पदार्थों को प्रभावित करता हो। (रेडियो-एक्टिव)

तेजस्क्रियता—स्त्री॰ [सं॰ तेजस्क्रिय+तल्—टाप्] कुछ विशिष्ट मौलिक तत्त्वों या पदार्थों में निहित वह विद्युत् शक्ति जो विशेष अवस्थाओं में तेज या रश्मि के रूप में बाहर निकलकर दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालती है। (रेडियो एक्टिविटी)

तेजस्वत्—वि॰ [सं॰ तेजस्+मतुप् (वत्व)] तेजस्वी।

तेजस्वान्—वि॰ [सं॰ तेजस्वत्] तेजस्वी।

तेजस्विता—स्त्री॰ [सं॰ तेजस्विन्+तल्—टाप्] तेजस्वी होने की अवस्था, गुण या भाव।

तेजस्विनी—स्त्री॰ [सं॰ तेजस्विन्+ङीप्] मालकंगनी।

तेजस्वी (स्विन्)—वि॰[सं॰ तेजस्+विनि] [स्त्री॰ तेजस्विनी] १. जिसमें यथेष्ट तेज हो। २. जिसके बल, बुद्धि, वैभव आदि का दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता हो। प्रतापी।

पुं॰ इंद्र के एक पुत्र का नाम।

तेजा—पुं॰ [फा॰ तेज़] १. एक प्रकार का काला रंग जिससे कपड़ा रंगनेवाले रंगरेज मोरपंखी रंग बनाते हैं। २. चीजों का दाम तेज या बढ़ा हुआ होने की अवस्था या भाव। तेजी।

तेजाब—पुं॰ [फा॰] [वि॰ तेजाबी] एक तरह के रासायनिक खट्टे तरल पदार्थ जो जल में घुलनशील होते हैं और जो नीले शैवलपत्र को लाल कर देते हैं। अम्ल। (एसिड)

तेजाबी—वि॰ [फा॰] १. तेजाब-संबंधी। २. जिसमें तेजाब मिला हुआ हो। ३. तेजाब की सहायता से तैयार किया, बना या साफ किया हुआ। जैसे—तेजाबी सोना।

तेजाबी सोना—पुं॰ [फा॰ तेजाबी+हिं॰ सोना] वह सोना जो पुराने गहनों को गलाकर और तेजाब की सहायता से अच्छी तरह साफ करके तैयार किया जाता है।

तेजायन—पुं॰ [सं॰ तेज+आयतन] तेज का भंडार। परम तेजस्वी। उदा॰—घोर तेजायतन घोर राशी।—तुलसी।

तेजारत† —स्त्री॰=तिजारत।

तेजारती† —वि॰=तिजारती।

तेजिका—स्त्री॰ [सं॰ तेजक+टाप्, इत्व] मालकंगनी।

तेजित—वि॰ [सं॰√तिज् (सहना)+णिच्+क्त] १. तेज से युक्त किया हुआ। २. उत्तेजित।

तेजिनी—स्त्री॰ [सं॰√तिज्+णिच्+णिनि—ङीष्] तेजबल।

तेजिष्ठ—वि॰ [सं॰ तेजस्विन्+इष्ठन्] तेजस्वी।

तेजी—स्त्री॰ [फा॰ तेज़ी] १. तेज होने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव। २. उग्रता। प्रचंडता। ३. तीव्रता। प्रबलता। ४. गति आदि में होनेवाली शीघ्रता। ५. चीजों की दर या भाव में होनेवाली असाधारण या विशिष्ट वृद्धि। मँहगी। 'मन्दी' का विपर्याय।

तेजोज—पुं॰ [सं॰ तेजस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] रक्त। खून।

तेजोजल—पुं॰ [सं॰ तेजस्-जल, ष॰ त॰] आँख का वह ऊपरी अर्द्ध गोलाकार भाग जो शीशे के ताल की तरह जान पड़ता है। (लेंस)

तेजोन्वेष—पुं॰ [सं॰ तेजस्—अन्वेष, ष॰ त॰] एक प्रकार का बहुत बड़ा वैज्ञानिक यंत्र जिसकी सहायता से परावर्तित ध्वनि-तरंगों के आधार पर यह जाना जाता है कि आकाश अथवा स्थल में किस दिशा में और कितनी दूरी पर शत्रु आकाशयान जल-यान अथवा सैनिक महत्व के संघटन स्थित हैं, अथवा कोई आकाशयान या जलयान किधर से आ रहा है या किधर जा रहा है। (राडार)

तेजोबल—पुं॰ [सं॰ तेजस्—बल, ब॰ स॰] एक तरह का कँटीला जंगली पेड़ जिसका छिलका दवा और मसाले के काम आता है।

तेजोभंग—पुं॰ [सं॰ तेजस्-भंग, ष॰ त॰] अपमान। वेइज्जती।

तेजोभीरु—स्त्री॰ [सं॰ तेजस्-भीरु, पं॰ त॰] छाया।

तेजोमंडल—पुं॰ [सं॰ तेजस्-मंडल, ष॰ त॰] सूर्य, चंद्रमा आदि आकाशीय पिंडों के चारों ओर का मंडल। छटा मंडल। भा-मंडल।

तेजोमंथ—पुं॰ [सं॰ तेजस्√मन्थ् (मथना)+अण्] गनियारी का पेड़।

तेजोमय—वि॰ [सं॰ तेजस्+मयट्] १. तेज से परिपूर्ण। २. शक्ति से परिपूर्ण। ३. तेजस्वी।

तेजोमूर्ति—वि॰ [सं॰ तेजस्-मूर्ति, ब॰ स॰] तेजस्वी।

पुं॰ सूर्य।

तेजोरूप—वि॰ [सं॰ तेजस्-रूप, ब॰स॰] जो अग्नि या तेज के रूप में हो।

पुं॰ ब्रह्म।

तेजोवती—स्त्री॰ [सं॰ तेजस्+मतुप्+ङीप्] १. गजपिप्पली। २. बाच। चव्य। ३. माल-कंगनी। ४. तेजबल।

तेजोवान् (वत्)—वि० [सं० तेजस्+मतुप्] [स्त्री० तेजोवती] तेजवाला। तेजस्वी।

तेजोवृक्ष—पुं० [सं० तेजस्-वृक्ष, मध्य० स०] छोटी अरणी का वृक्ष।

तेजोहत—वि० [सं० तेजस्-हत, ब० स०] जिसका तेज नष्ट हो चुका हो।

तेजोह्व—स्त्री० [सं० तेजस्√ह्वे (स्पर्धा करना)+क] १. तेजबल। २. चाव। चव्य।

तेड़ना†—स०=टेरना (पुकारना)।

तेणि—अव्य० [सं० तेन] से। उदा०—बंदे कहियौ तेणि विसेखि।—प्रिथीराज।

तेतना†—वि०=तितना (उतना)।

तेंतर—वि० [हिं० तोतला] (व्यक्ति) जो तुतला कर बोलता हो।

तेता†—वि० [स्त्री० तेती]=तितना (उतना)।

तेतालिस†— वि०, पुं०=तेंतालिस।

तेतिक†—वि० [हिं० तेता] उस मात्रा या मान का। उतना।

तेती†—वि० स्त्री० हिं० तेता (उतना) का स्त्री रूप।

तेतो* वि०=तेता (उतना)।

तेन—पुं० [सं० ते=गौरी+न=शिव, ब० स०] गीत का आरंभिक स्वर।

तेम—पुं० [सं०√तिम् (गीला होना)+घञ्] आर्द्र होने की अवस्था या भाव। आर्द्रता।

†अव्य०=तिमि (उस प्रकार)।

तेमन—पुं० [सं०√तिम्+ल्युट्—अन्] १. आर्द्रता। २. चटनी। ३. व्यंजन।

तेमनी—स्त्री० [सं० तेमन+ङीप्] चूल्हा।

तेमरू—पुं० [देश०] १. तेंदू का पेड़। आबनूस। २. उक्त पेड़ की लकड़ी।

तेरज—पुं० [देश०] वह लेखा जिसमें आय-व्यय की विभिन्न मदों का उल्लेख हो। खतियौनी का गोशवारा।

तेरवाँ† —वि०=तेरहवाँ।

तेरस—स्त्री० [सं० त्रयोदश] चांद्रमास के किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि या दिन।

तेरह—वि० [सं० त्रयोदस; प्रा० तेद्दह, अर्द्धमा० तेरस] जो गिनती या संख्या में दस से तीन अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या और अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१३।

मुहा०—तीन तेरह होना—दे० 'तीन' के अन्तर्गत मुहा०। **तेरह बाइस करना**=टाल-मटोल या बहानेबाजी करना।

तेरहवाँ—वि० [हिं० तेरह+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या संख्या के विचार से तेरह के स्थान पर पड़ने या होनेवाला।

तेरहीं—स्त्री० [हिं० तेरह+ई (प्रत्य०)] हिंदुओं में, किसी के मरने के दिन से तेरहवाँ दिन।

विशेष—इसी दिन अनेक प्रकार के कृत्य और पिंडदान आदि कराकर मृतक के संबंधी शुद्ध होते हैं।

तेरहुत† —पुं० = तिरहुत।

तेरा†—सर्व० [सं० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एकवचन संबंध कारक अर्थात् षष्ठी का सूचक सर्वनाम। 'तू' का संबंधकारक रूप। जैसे—तेरा नाम क्या है?

मुहा०—तेरा मेरा करना =यह कहना कि यह तुम्हारा और वह हमारा है; अर्थात् दुजायगी या पार्थक्य के भाव से युक्त बातें करना।

तेरुस*—पुं० =त्यौरुस।

स्त्री० = तेरस।

तेरे—सर्व० [हिं० तेरा] १. हिं० 'तेरा' का बहुवचन रूप। जैसे—तेरे बाल-बच्चे। २. हिं० तेरा' की वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—तेरे सिर पर।

†अव्य० [हिं० तें या ते] १. से। २. तुझसे।

तेरो† —सर्व०=तेरा।

तेलंग†—पुं० = तैलंग।

तेल—पुं० [सं० तैल] १. तिल अथवा किसी तेलहन के बीजों अथवा कुछ विशिष्ट वनस्पतियों को पेरकर निकाला हुआ प्रसिद्ध स्निग्ध दह्य तरल पदार्थ जो खाने-पकाने, जलाने, शरीर में मलने अथवा औषध आदि के रूप में काम आता है। चिकना। स्नेह। जैसे—तिल, नीम बदाम या सरसों का तेल।

मुहा०—तेल में हाथ डालना =अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए खौलते हुए तेल में हाथ डालना। (मध्य युग की एक प्रकार की परीक्षा) **आँखों का तेल निकालना**=ऐसा परिश्रम करना जिससे आँखों को बहुत अधिक कष्ट हो।

२. विवाह की एक रीति जो साधारणतः विवाह से दो दिन और कहीं कहीं चार-पाँच दिन पहले भी होती है और जिसमें वर अथवा वधू के शरीर में हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।

मुहा०—तेल उठना या चढ़ना=विवाह से पहले उक्त रीति का सम्पादन होना। **तेल चढ़ाना** = उक्त रीति का संपादन करना।

३. पशुओं के शरीर से निकलनेवाली पतली चरबी जो सहज में जल सकती और दवा, रंगाई आदि के काम में आती है। जैसे—मगर या साँड़े का तेल। ४. कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज द्रव्य पदार्थ जो सहज में जल सकते हैं। जैसे—मिट्टी का तेल।

तेलगू—पुं०, स्त्री० =तेलुगू।

तेलचलाई—स्त्री० [हिं० तेल+चलाना] दे० 'मिड़ाई' (छींट की छपाई की)।

तेलवाई—पुं० [हिं० तेल+वाई (प्रत्य०)] १. शरीर में तेल मलने या लगाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. विवाह की एक रसम जिसमें कन्या-पक्ष की ओर से जनवासे में वर के लगाने के लिए तेल और कुछ रुपए भेजते हैं।

तेलसुर—पुं० [?] एक तरह का लंबा वृक्ष जिसकी लकड़ी नावें आदि बनाने के काम आती है।

तेलहड़ा†—पुं० [हिं० तेल+हंडा] [स्त्री० अल्पा० तेलहँड़ी] १. मिट्टी की वह हाँड़ी जिसमें तेल रखा जाता हो। २. तेल रखने का कोई पात्र।

तेलहन—पुं० [सं० तैल धान्य] कुछ वनस्पतियों के वे बीज जिन्हें पेरने से उनमें से चिकना और तरल पदार्थ (अर्थात् तेल) निकलता हो।

तेलहा—वि० [हिं० तेल] [स्त्री० तेलही] १. जिसमें तेल हो (बीज

या पौधा)। २. तेल के योग से बना या पका हुआ। जैसे—तेल—ही जलेबी। ३. जिस पर तेल गिरा या लगा हो ४. जिसमें तेल की-सी गंध या चिकनाहट हो।

तेला—पुं० [हिं० तीन] वह उपवास जो तीन दिनों तक बराबर चले।

तेलिन—स्त्री० [हिं० तेली की स्त्री०] १. तेली की या तेली जाति की स्त्री। २. एक प्रकार का छोटा बरसाती कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर में जलन होने लगती है।

तेलियर—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसके काले रंग के शरीर पर सफेद रंग की बहुत सी चित्तियाँ होती हैं।

तेलिया—वि० [हिं० तेल] १. जो तेल की तरह चमकीला और चिकना हो। २. तेल की तरह हलके काले रंगवाला। ३. जिसमें तेल होता या रहता हो। तेल से युक्त।

पुं० १. तेल की तरह का काला और चमकीला रंग। २. उक्त रंग का घोड़ा। ३. एक प्रकार का कीकर या बबूल। ४. कोई ऐसा पक्षी या पशु जिसका रंग तेल की तरह काला और चिकना हो। ५. सींगिया नामक विष।

स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।

तेलिया-कंद—पुं० [सं० तैल कंद] एक प्रकार का कंद।

विशेष:—यह कंद जिस भूमि में होता है वह तेल से सींची हुई जान पड़ती है।

तेलिया कत्था—पुं० [हिं० तेलिया+कत्था] एक तरह का कत्था या खैर जो तेल की तरह कुछ कालापन लिये होता है।

तेलिया काकरेजी—पुं० [हिं० तेलिया+काकरेजी] कालापन लिये गहरा ऊदा रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

तेलिया कुमैत—पुं० [हिं० तेलिया+कुमैत] १. घोड़े का एक रंग जो अधिक कालापन लिये लाल या कुमैत होता है। २. उक्त रंग का घोड़ा।

तेलिया गर्जन—पुं० [सं०] =गर्जन।

तेलिया पाखान—पुं० [हिं० तेलिया+पखान] एक तरह का चिकना और मजबूत पत्थर।

तेलिया पानी—पुं० [हिं० तेलिया+पानी] वह जल जिसमें कुछ चिकनाहट हो अथवा जिसका स्वाद तेल जैसा हो।

तेलिया मुनिया—स्त्री० [हिं०] मुनिया पक्षी की एक जाति। इस मुनिया के ऊपर और नीचे के पर बादामी रंग के, सिर, ठोड़ी तथा गला कत्थई रंग का होता है।

तेलिया मैना—स्त्री० [हिं०] एक तरह की मैना। तिलारी।

तेलिया सुरंग—पुं० =तेलिया कुमैत।

तेलिया सुहागा—पुं० [हिं० तेलिया+सुहागा] एक तरह का सुहागा जिसमें कुछ चिकनापन होता है।

तेली—पुं० [हिं० तेल+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० तेलिन] १. वह जो तेलहन पेरकर तेल निकालता और बेचता हो। २. हिन्दुओं में एक जाति जो उक्त काम व्यवसाय के रूप में करती है।

पद—तेली का बैल=वह जो अपना अधिकतर समय बहुत ही तुच्छ और परिश्रम के कामों में लगाता हो।

तेलुगू—पुं० [सं० तैलंग] १. तैलंग देश का आधुनिक नाम। २. उक्त देश का निवासी।

स्त्री० तैलंग देश की भाषा।

तेलौंची—स्त्री० [हिं० तेल+औंची (प्रत्य०)] तेल रखने की प्याली।

तेलौना—वि० [हिं० तेल+औना (प्रत्य०)] [स्त्री० तेलौनी] दे० 'तेलहा'।

तेवई—स्त्री० =तिरिया (स्त्री)।

तेवट—स्त्री० [देश०] संगीत में, सात दीर्घ अथवा चौदह लघु मात्राओं का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली रहता है।

तेवड़ा—पुं० [?] एक तरह का ताल।

तेवन†—पुं० [सं०√तेव् (खेलना)+ल्युट्-अन] १. महल के आगे का एक छोटा बाग। नजरबाग। २. आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा आदि करने का वन। ३. आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

तेवर—पुं० [सं० त्रिकुटी; पुं० हिं० तिउरी] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य या भाव से किसी की ओर फेरी जानेवाली या किसी पर डाली जानेवाली दृष्टि। त्योरी। जैसे—उनके तेवर देखकर ही मैंने उनके मन का भाव समझ लिया था।

मुहा०—तेवर चढ़ना=भौंहों का इस प्रकार ऊपर की ओर खिंचना कि उनसे कुछ-कुछ क्रोध या नाराजगी झलकने लगे। **तेवर बदलना या बिगड़ना**=व्यवहार में क्रोध या रुखाई प्रकट करना।

२. भौंह। भृकुटी।

पुं० [हिं० तीन] स्त्रियों के पहनने के तीन कपड़ों (साड़ी, ओढ़नी और चोली) की सामूहिक संज्ञा।

तेवरसी—स्त्री० [देश०] १. ककड़ी। २. खीरा। ३. फूट।

तेवरा—पुं० [देश०] दून में बजनेवाला रूपक ताल।

तेवराना—अ० [हिं० तेवर+आना (प्रत्य०)] १. तेवर का इस प्रकार ऊपर की ओर खिंचना कि उससे कुछ आश्चर्य, क्रोध या चिन्ता प्रकट हो। २. बेसुध या मूर्च्छित होना।

तेवरी—स्त्री० = त्योरी।

तेवहार—पुं० = त्योहार।

तेवान*—पुं० [देश०] सोच-विचार। चिंता। फिक्र।

तेवाना—अ० [हिं० तेवान] चिंतित होना। फिक्र करना। उदा०—ठाढ़ि तेवानि टेकिकर लंका।—जायसी।

तेह†—पुं० [सं० तस्=तिरस्कृत करना, दूर हटाना] १. क्रोध। गुस्सा। तेहा। २. अभिमान। घमंड। ३. तेजी। तीव्रता। ४. प्रचंडता।

त्रेहर—स्त्री० [सं० त्रि+हिं० हार] तीन लड़ों की करधनी जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं।

तेहरा—वि० [हिं० तीन+हरा] [स्त्री० तेहरी] १. तीन तहों या परतों में लपेटा हुआ। २. जिसमें तीन तहें या परतें हों। ३. जो दो बार हो चुकने के बाद फिर से तीसरी बार करना पड़े या किया गया हो। जैसे—तेहरा काम, तेहरी मेहनत। ४. जो एक साथ तीन हों। ५. तिगुना। (क्व०)

तेहराना—स० [हिं० तेहरा] १. लपेटकर तीन तहों या परतों में करना।

२. कोई काम दो बार कर चुकने के बाद कोर-कसर ठीक करने के लिए फिर से तीसरी बार करना, जाँचना या देखना।

तेहवार†—पुं० = त्योहार।

तेहा—पुं० [सं० तँस्=तिरस्कृत या दूर करना] १. अपने अभिमान, बड़प्पन, महत्त्व आदि की भावना से उत्पन्न होनेवाला ऐसा हलका क्रोध या गुस्सा जो जल्दी उत्पन्न होने पर भी सहसा उग्र या विकट रूप न धारण करता हो। २. क्रोध। गुस्सा। ३. अभिमान। घमंड।

तेहि† —सर्व० [सं० ते] उसे। उसको।

तेही—पुं० [हिं० तेह+ई (प्रत्य०)] १. जिसमें तेहा हो या जो तेहा दिखलाता हो। क्रोधी। २. अभिमानी। घमंडी।

तेहेदार —पुं० = तेही।

तेहेंबाज—पुं० = तेही।

तैं† —सर्व० = तू।

विभ० = ते (से)।

तैंतिडीक—वि० [सं० तिन्तिडीक+अण्] इमली की कांजी से बनाया हुआ।

तैंतिस, तैंतीस—वि०, पुं० =तेंतिस।

तैं†—अव्य० [सं० तत्] उस मात्रा. या मान का। उतना हिं० 'जै' का नित्य-सम्बन्धी। जैसे—जै आदमी कहो, तै आदमी आवें।

† वि० [अ०] १. जो ठीक और पूरा या समाप्त हो चुका हो। जैसे—काम तै करना। २. (झगड़ा) जिसका निपटारा निर्णय या फैसला हो चुका हो। जैसे—आपस का झगड़ा या मुकदमा तै करना। ३. जो निर्णीत या निश्चित हो चुका हो। जैसे—किराया या दाम तै करना।

स्त्री०=तह।

तैकायन—पुं० [सं० तिक+फक्—आयन] तिक ऋषि के वंशज या शिष्य।

तैक्त—पुं० [सं० तिक्त+अण्] तिक्त होने का भाव। तीतापन। चरपराहट।

तैक्ष्ण्य—पुं० [सं० तीक्ष्ण+ष्यञ्] तीक्ष्णता।

तैखाना†—पुं० =तहखाना।

तैजस—वि० [सं० तेजस्+अण्] १. तेज-सम्बन्धी या तेज से युक्त। २. तेज से उत्पन्न।

पुं० १. भारतीय दर्शन में, राजस अवस्था में, उत्पन्न होनेवाला अहंकार जिससे शरीर की ग्यारहों इन्द्रियों और पंच तन्मात्रों का विकास होता है। २. कोई ऐसा पदार्थ जो खूब चमकता हो। जैसे—धातुएँ, रक्त आदि। ३. परमात्मा जो स्वयं प्रकाश है और जिससे सूर्य आदि को प्रकाश प्राप्त होता है। ४. वैद्यक में वह शारीरिक शक्ति जो भोजन को रस के रूप में तथा रस को धातु के रूप में परिवर्त्तित करती है। ५. पराक्रम। पौरुष। बल। ६. घी। घृत। ७. महाभारत के समय का एक प्राचीन तीर्थ। ८. बहुत तेज चलनेवाला घोड़ा।

तैजसावर्तनी—स्त्री० [सं० तैजस-आवर्त्तनी, ष० त०] चाँदी, सोना आदि गलाने की घरिया।

तैजसी—स्त्री० [सं० तैजस+ङीप्] गजपिप्पली।

तैंतालीस—वि०=तेंतालिस।

तैतिक्ष—वि० [सं० तितिक्षा+ण] बरदाश्त या सहन करनेवाला। सहनशील।

तैतिर—पुं० [सं० तैत्तिर=पृषो० सिद्धि] तीतर।

तैतिल—पुं० [सं०] १. फलित ज्योतिष में, ग्यारह करणों में से चौथा करण जिसमें जन्म लेनेवाला कलाकुशल, रूपवान, वक्ता, गुणी और सुशील होता है। २. देवता। ३. गैंडा।

तैतीस—वि० =तेंतिस।

तैत्तिर—पुं०[सं० तित्तिर+अण्] १. तीतर पक्षी। २. तीतरों का समूह। ३. गैंडा (पशु)।

तैत्तिरि—पुं० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक ऋषि का नाम।

तैत्तिरिक—पुं० [सं० तैत्तिर+ठक्—इक] तीतर पकड़नेवाला बहेलिया।

तैत्तिरीय—स्त्री० [सं० तित्तिर+छण्—ईय] १. कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक जो आत्रेय अनुक्रमणिका और पाणिनि के अनुसार तित्तिरि नामक ऋषि प्रोक्त है। २. उक्त शाखा का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

तैत्तिरीयक—पुं० [सं० तैत्तिरीय+कन्] तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी या अध्येता।

तैत्तिल—पुं०=तैतिल।

तैथिक—पुं० [सं०] १५ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

तैना—अ०[सं० तपन] १. तप्त होना। तपना। २. दुःखी होना। स०=ताना (तपाना)।

तैनात—वि० [अ० तअय्युन] [भाव० तैनाती] (वह) जो किसी स्थान की सुरक्षा अथवा किसी विशिष्ट काम के लिए कहीं नियत या नियुक्त हुआ हो। मुकर्रर।

तैनाती—स्त्री० [हिं० तैनात+ई (प्रत्य०)] तैनात करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

तैमिर—पुं० [सं० तिमिर+अण्] तिरमिरा (दे०)।

तैया—पुं० [देश०] छीपियों का रंग घोलने का छोटा प्याला।

तैयार—वि० [अ० तय्यार] १. जो कुछ करने के लिए हर तरह से उद्यत, तत्पर या प्रस्तुत हो चुका हो। जैसे—चलने को तैयार। २. जो हर तरह से उपयुक्त ठीक या दुरुस्त हो चुका हो। जिसमें कोई कोर-कसर न रह गई हो। जैसे—भोजन (या मकान) तैयार होना। ३. सामने आया, रखा या लाया हुआ। उपस्थित, प्रस्तुत, मौजूद। जैसे—जितनी पुस्तकें तैयार हैं, वे सब ले लो। ४. (शरीर) जो हर तरह से स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो। जैसे—इधर कुछ दिनों से उसका बदन खूब तैयार हो रहा था। ५. (काम करने के लिए हाथ) जिसमें यथेष्ट अभ्यास के फलस्वरूप पूरा कौशल या दक्षता आ चुकी हो। जैसे—चित्र बनाने या तबला बजाने में हाथ तैयार होना। ६. (संगीत के क्षेत्र में कंठ या गला) जिससे सब तरह के खटके, तानें, पलटे, मुरकियाँ आदि अनायास या सहज में और बहुत ही मधुर या सुन्दर रूप में निकलती हों। पूर्ण रूप से अभ्यस्त और कुशल। जैसे—इतना तैयार गला बहुत कम देखने में आता है।

तैयारी—स्त्री० [फा० तय्यारी] १. तैयार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. तत्परता। मुस्तैदी। ३. शरीर की अच्छी गठन और पुष्टता तथा स्वस्थता। ४. वैभव, शोभा, सौन्दर्य आदि दिखाने के लिए की जानेवाली धूम-धाम या सजावट। ५. संगीत कला की वह पटुता

जो बहुत अधिक अभ्यास से आती है, जिससे गवैया कठिन-कठिन तानें बहुत सहज में सुनाता है।

तैयो*—क्रि० वि० [सं० तद्यपि] तिस पर भी। तो भी।

तैर—वि० [सं० तीर+अण्] तीर या तट-संबंधी। तट का।

तैरणी—स्त्री० [सं० तीर√नम् (नमस्कार करना) +ड, तीरण+अण्+ङीप्] एक प्रकार का क्षुप जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं।

तैरना—अ० [सं० तरण] १. प्राणियों का अपने हाथ-पैर, पंख या डैने अथवा दुम हिलाते हुए पानी के ऊपरी तल पर इस प्रकार इधर-उधर घूमना या आगे बढ़ना कि वे डूबने से बचे रहें। ऐसी युक्ति से पानी में चलना कि डूब न जायँ। २. मनुष्यों का अपने हाथ-पैर इस प्रकार चलाते या हिलाते हुए आगे बढ़ना कि शरीर पानी के तल में बैठने न पावे। पैरना।

विशेष—प्रायः सभी जीव-जन्तु प्राकृतिक रूप से पानी पर तैरना जानते हैं; परन्तु मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक तैरने की कला सीखनी पड़ती है।
३. पानी से हलकी चीज का पानी अथवा किसी द्रव पदार्थ की ऊपरी तह पर ठहरा रहना, अथवा उसके प्रवाह या बहाव के साथ-साथ आगे बढ़ना। जैसे—लकड़ी का पानी पर तैरना। ४. लाक्षणिक रूप में, किसी प्राणी अथवा वस्तु का इस प्रकार सहज में और सरल गति से इधर-उधर हटना-बढ़ना जिस प्रकार जीव-जन्तु जल के ऊपरी भाग पर तैरते हैं। जैसे—कीटाणुओं अथवा गुड्डी (या पतंग) का हवा में तैरना।

तैराई—स्त्री० [हिं० तैरना+ई (प्रत्य०)] १. तैरने की क्रिया या भाव। २. तैरने या तैराने के बदले में मिलनेवाला पारिश्रमिक।

तैराक—वि० [हिं० तैरना+आक (प्रत्य०)] (वह) जो खूब अच्छी तरह तैरना जानता हो।

तैराकी—स्त्री० [हिं० तैराक+ई (प्रत्य०)] १. तैरने की क्रिया या भाव। २. वह उत्सव या मेला जिसमें तैरने की कलाओं, जल-क्रीड़ाओं आदि का प्रदर्शन या प्रतियोगिता हो।

तैराना—स० [हिं० तैरना का प्रे०] १. दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। तैरने का काम दूसरे से कराना। २. धारदार शस्त्रों के सम्बन्ध में, शरीर के अन्दर अच्छी तरह धँसाना या प्रविष्ट कराना। जैसे—किसी के पेट में कटार तैराना।

तैर्थ—वि० [सं० तीर्थ+अण्] १. तीर्थ-संबंधी। तीर्थ का। २. तीर्थ में होनेवाला।
पुं० वे धार्मिक कृत्य जो किसी तीर्थ में जाने पर करने पड़ते हैं।

तैर्थक—वि० [सं० तीर्थ+वुञ्—अक] १. स्थल-संबंधी। २. तीर्थ-स्थल में बनने, मिलने या होनेवाला।

तैर्थिक—पुं० [सं० तीर्थ+ठञ्—इक] शास्त्रकार।

तैर्यगयनिक—पुं० [सं० तिर्यक—अयन, ष० त०,+ठञ्—इक] एक प्रकार का यज्ञ।

तैलंग—पुं० [सं० त्रिकलिंग] आधुनिक आंध्र प्रदेश का पुराना नाम तैलंग।

तैलंगा—पुं०=तिलंगा।

तैलंगी—वि० [हिं० तैलंग+ई (प्रत्य०)] तैलंग देश का।
पुं० तैलंग देश का निवासी।
स्त्री० तैलंग देश की भाषा। तेलगू।

तैल—वि० [सं० तिल+अञ्] तिल-संबंधी। तिल या तिलों का।
पुं० १. तिल के दानों या बीजों को पेरकर निकाला हुआ तेल। २. दे० 'तेल'।

तैल-कंद—पुं० [मध्य० स०] तेलिया-कंद।

तैलकार—पुं० [सं० तैल√कृ (करना)+अण्) तेल पेरने और बेचनेवाला व्यक्ति। तेली।

तैल-किट्ट—पुं० [ष० त०] खली।

तैल-कीट—पुं० [मध्य० स०] तैलिन नाम का कीड़ा।

तैल-चित्र—पुं० [मध्य० स०] बहुत मोटे कपड़े पर तैल रंगों की सहायता से अंकित किया हुआ चित्र। (आयल पेंटिंग)

तैलत्व—पुं० [सं० तैल+त्व] तेल का भाव या गुण।

तैल-द्रोणी—स्त्री० [मध्य० स०] तेल रखने का एक तरह का बहुत बड़ा पात्र जिसमें कुछ विशिष्ट रोगियों को प्राचीन काल में लेटाया जाता था।

तैल-धान्य—पुं० [मध्य० स०] १. धान्य का एक वर्ग जिसके अंतर्गत तीनों प्रकार की सरसों, दोनों प्रकार की राई, खस और कुसुम के बीज हैं। २. तेलहन।

तैलपक—पुं० [सं० तैल√पा (पीना)+क+कन्] झींगुर नामक कीड़ा।

तैल-पर्णक—पुं० [ब० स०, कप्] गठिवन।

तैलपर्णिक—पुं० [सं० तिलपर्ण+ठन्—इक] सलई का गोंद।

तैलपर्णी—स्त्री० [सं० तिलपर्ण+अण्—ङीष्] १. चन्दन। २. लोबान। ३. तुरुष्क। शिलारस।

तैलपायी (यिन्)—पुं० [सं० तैल√पा (पीना)+णिनि] झींगुर। चपड़ा। (कीड़ा)
वि० तेल पीनेवाला।

तैल-पिष्टक—पुं० [ष० त०] खली।

तैलपिपीलिका—स्त्री० [मध्य० स०] एक तरह की चींटी।

तैल-फल—पुं० [ब० स०] १. इंगुदी। २. बहेड़ा।

तैल-भाविनी—स्त्री० [सं० तैल√भू (होना)+णिच्+णिनि—ङीप्] चमेली का पेड़।

तैलमाली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] तेल की बत्ती।

तैल-यंत्र—पुं० [मध्य० स०] कोल्हू।

तैल-रंग—पुं० [सं०] चित्र कला में, जल रंग से भिन्न वे रंग जो कई तरह के तेलों या साफ किए हुए पेट्रोल में मिलाकर तैयार किये जाते हैं। ऐसे रंग जल-रंग की अपेक्षा अच्छे समझे जाते और अधिक स्थायी होते हैं। (आयल कलर)

तैल-वल्ली—स्त्री० [मध्य० स०] शतावरी। शतमूली।

तैल-साधन—पुं० [सं० तैल√साध् (सिद्ध करना)+णिच्+ल्यु—अन] शीतलचीनी। कबावचीनी।

तैलस्फटिक—पुं० [मध्य० स०] १. अंबर नामक गंध-द्रव्य। २. कहरुबा। तृण-मणि।

तैलस्यंदा—स्त्री० [सं० तैल√स्यन्द् (चूना)+अच्—टाप्] १. गोकर्णी नाम की लता। मुरहटी। २. काकोली।

तैलाक्त—वि० [सं० तैल-अक्त, तृ० त०] जिसमें तेल लगा हो। तेल से सना हुआ।

तैलाख्य—पुं० [सं० तैल-आख्या, ब०स०] शिला रस या तुरुष्क नाम का गंध द्रव्य ।

तैलागुरु—पुं० [सं० तैल-अगुरु, मध्य० स०] अगर की लकड़ी ।

तैलाटी—स्त्री० [सं० तैल√अट्(जाना)+अच्—ङीप्] बर्रे । भिड़ ।

तैलाभ्यंग—पुं० [सं० तैल-अभ्यंग, ष०त०] शरीर में तेल लगाने की क्रिया या भाव ।

तैलिक—वि० [सं० तैल+ठक्—इक] तेल-संबंधी ।
पुं० [तैल+ठन्—इक] तेली ।

तैलिक-यंत्र—पुं० [कर्म० स०] तिल आदि पेरने का यंत्र । कोल्हू ।

तैलिनी—स्त्री० [सं० तैल+इनि—ङीप्] वत्ती ।

तैलि-शाला—स्त्री० [सं० ष०त०] वह घर या स्थान जहाँ कोल्हू चलता हो ।

तैली (लिन्)—पुं० [सं० तैल+इनि] तेली ।

तैलीन—पुं० [सं० तिल+खञ्—ईन] तिल का खेत ।

तैल्वक—वि० [सं० तिल्व+वुञ्—अक] लोध की लकड़ी से बना हुआ ।
पुं० लोध ।

तैश—पुं० [अ०] अत्यधिक क्रुद्ध होने पर चढ़नेवाला आवेश ।
क्रि० प्र०—दिखाना ।
मुहा०—**तैश में आना**=मारे क्रोध के कोई अनुचित बात कहने या काम करने के लिए आवेशपूर्वक प्रस्तुत होना ।

तैष—पुं० [सं० तिष्य+अण्, य-लोप] चांद्र पौष मास ।
विशेष—पौष मास की पूर्णिमा के दिन तिष्य (पुष्य नक्षत्र) होने के कारण यह नाम पड़ा है ।

तैषी—स्त्री० [सं० तैष+ङीप्] पुष्य-नक्षत्र से युक्त पूस की पूर्णिमा ।

तैस—वि०=तैसा ।

तैसा—वि० [सं० तादृश; प्रा० ताइस] उस आकार, प्रकार, रूप, गुण आदि का । उस जैसा । वैसा ।

तैसे—क्रि० वि०=वैसे ।

तों†—क्रि० वि०=त्यों ।

तोंअर†—पुं०=तोमर ।

तोंद—स्त्री० [सं० तुंड] छाती या वक्ष से अधिक फूला तथा बढ़ा हुआ पेट ।
क्रि० प्र०—निकलना ।—बढ़ना ।
मुहा०—**तोंद पचना**=(क) मोटाई कम होना । (ख) घमंड या शेखी दूर होना ।

तोंदरी—स्त्री० [?] एक तरह के बीज जो मसूर से कुछ छोटे होते हैं और सूजे हुए अंग पर बाँधे जाने पर सूजन दूर करते हैं ।

तोंदल—वि० [हिं० तोंद+ल (प्रत्य०)] जिसकी तोंद निकली या बढ़ी हुई हो । तोंदवाला ।

तोंदा—पुं० [देश०] वह मार्ग जिसमें से होकर तालाब का पानी बाहर निकलता है ।
पुं० दे० 'तोदा' ।

तोंदी—स्त्री० [सं० तुंडी] नाभी । ढोंढ़ी ।

तोंदीला—वि०=तोंदल ।

तोंदैल—वि०=तोंदल (तोंदवाला) ।

तोंबा—पुं० [स्त्री० तोंबी]=तूँबा ।

तोंर—पुं०=तोमर ।

तोंहका—सर्व०=तुम्हें ।

तो—अव्य० [सं० तु] एक अव्यय जिसका प्रयोग वाक्य में किसी कथन, पद या संभावित बात पर जोर देने या पार्थक्य, विशिष्टता आदि सूचित करने के लिए अथवा कभी-कभी यों ही किया जाता है । जैसे—(क) जरा दिन तो चढ़ लेने दो । (ख) वे किसी तरह आवें तो सही । (ग) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।—मीराँ । (घ) अब तो बात फैल गई, जानत सब कोई ।—मीराँ ।
अव्य० [सं० तत्] उस अवस्था या दशा में । तब । जैसे—यदि आप चलेंगे तो हम भी आप के साथ हो लेंगे ।
*सर्व० [सं० तव] १. व्रजभाषा में 'तू' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है । जैसे—तोको, तोसों आदि । २. तेरा ।
†अ० [पुं० हिं० हतो=था का संक्षि०] था । (क्व०)

तोअर†—पुं०=तोमर ।

तोइ*—पुं० [सं० तोय] जल । पानी ।

तोई—स्त्री० [देश०] १. अंगे, कुरते आदि में कमर पर लगी हुई गोट या पट्टी । २. चादर आदि की गोट । ३. लहँगे का नेफा ।
† स्त्री० [हिं० तवा] छोटा तवा । तौनी ।

तोईज—अव्य० [हिं०] तभी । तभी तो । उदा०—भला भलो सति तोईज भंजिया ।—प्रिथीराज ।

तोक—पुं० [सं० √तु (वरतना)+क] १. श्रीकृष्णचंद्र के एक सखा । २. बच्चा । शिशु ।

तोकक—पुं० [सं० तोक+कन्] चातक । पपीहा ।

तोकरा—स्त्री० [देश०] एक तरह की लता जो अफीम के पौधों से लिपटती है और उन्हें सुखा डालती है ।

तोक्म—पुं० [सं०√तक् (हँसना)+म, पृषो० सिद्धि] १. अंकुर । २. कच्चा या हरा जौ । ३. हरा रंग । ४. बादल । मेघ । ५. कान की मैल ।

तोख*—पुं०=तोषा ।

तोखार—पुं० १. =तुखार (एक प्रदेश) । २. =तुषार ।

तोखों—सर्व० [सं० तव; हिं० तो+खों (को)] तुझको । उदा०—जननी जनम दियो है तोखों बस आजहि के लानें ।—लोकगीत ।

तोट†—पुं० [सं० त्रुटि या हिं० टूटना] १. टूटने की क्रिया या भाव । २. कमी । त्रुटि । ३. घाटा । ४. दोष । बुराई ।

तोटक—पुं० [सं० त्रोटक] १. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं । २. शंकराचार्य के चार मुख्य शिष्यों में से एक जिनका दूसरा नाम नंदीश्वर भी था ।

तोटका†—पुं०=टोटका ।

तोटकी—स्त्री० [देश०] एक तरह की वनस्पति जो प्रायः घास के साथ होती है ।

तोटना*—अ०=टूटना ।
स०=तोड़ना ।

तोड़—पुं० [हिं० तोड़ना] १. तोड़े या तोड़े जाने की क्रिया, दशा या भाव । २. पानी, हवा आदि का वह तेज बहाव जो सामने पड़नेवाली

चीजों को तोड़-फोड़ डालता हो या तोड़-फोड़ सकता हो। जैसे—(क) इस घाट पर पानी का जबरदस्त तोड़ पड़ता है। (ख) छोटे-मोटे पेड़ हवा का तोड़ नहीं सह सकते। ३. कोई ऐसा काम, चीज या बात जो किसी दूसरे बड़े काम, चीज या बात का प्रभाव नष्ट कर सकता या उसे व्यर्थ कर सकता हो। जैसे—नशे का तोड़ खटाई है। ४. कुश्ती में वह दाँव-पेंच जो विपक्षी का दाँव-पेंच व्यर्थ कर सकता हो। ५. किले की दीवार का वह अंश जो गोलों की मार से टूट-फूट गया हो। ६. दफा। बार। जैसे—उनसे कई तोड़ लड़ाई या मुकदमेबाजी हो चुकी है। ७. दही का पानी (जो उसके छूटने अर्थात् गलने से बनता है)

तोड़क—वि० [सं०√तुड् (तोड़ना)+ण्वुल्—अक] तोड़नेवाला। जैसे—जात-पांत तोड़क मंडल। (असिद्ध रूप)

पुं० [?] स्त्रियों का माँग-टीका नाम का गहना। (पूरब)

तोड़-जोड़—पुं० [हिं० तोड़+जोड़] १. कहीं से कुछ तोड़ने और कहीं कुछ जोड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। उदा०—तोड़ी जो उसने मुझसे जोड़ी रकबी से। इन्शा तू अपने यार के ये तोड़-जोड़ देख।—इन्शा। २. ऐसा उपाय, युक्ति या साधन जो किसी बिगड़ती हुई बात को बना सके अथवा बनी-बनाई बात बिगाड़ सके। जैसे—वह तोड़-जोड़कर जैसे-तैसे अपना काम निकाल ही लेता है।

क्रि० प्र०—करना।—भिड़ना।—मिलाना।—लगाना।

तोड़न—पुं० [सं०√तुड्+ल्युट्—अन] १. तोड़ने की क्रिया या भाव। २. भेदन करना। ३. आघात या चोट पहुँचाना।

तोड़ना—स० [हिं० टूटना] १. किसी चीज पर बराबर आघात करते हुए उसे छोटे-छोटे खंडों में विभक्त करना। जैसे—पत्थर या गिट्टी तोड़ना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई वस्तु खंडित, भग्न या नष्ट-भ्रष्ट हो जाय तथा काम में आने योग्य न रह जाय। जैसे—शीशे का गिलास तोड़ना।

सं० क्रि०—डालना।—देना।

३. किसी वस्तु के कोई अंग अथवा उसमें लगी हुई कोई दूसरी वस्तु काटकर या और किसी प्रकार उससे अलग करना या निकाल लेना। जैसे—वृक्ष से फल या फूल तोड़ना, किताब की जिल्द तोड़ना, जानवर के दाँत तोड़ना। ४. किसी वस्तु का कोई अंग इस प्रकार खंडित या भग्न करना कि वह ठीक तरह से या पूरा काम करने योग्य न रह जाय। जैसे—(क) घड़ी या सिलाई की मशीन तोड़ना। (ख) किसी के हाथ-पैर तोड़ना। ५. नियम, निश्चय आदि का पालन न करके अपनी दृष्टि से उसे निरर्थक या व्यर्थ करना। जैसे—(क) अपनी प्रतिज्ञा (या किसी के साथ किया हुआ समझौता) तोड़ना। (ख) व्रत तोड़ना। ६. किसी चलते या होते हुए काम, व्यवस्था, संघटन आदि का स्थायी रूप से अन्त या नाश करना। जैसे—शासन का कोई पद या विभाग तोड़ना। ७. बल, प्रभाव, महत्त्व, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना। अशक्त, क्षीण या दुर्बल करना। जैसे—(क) बाजार की मन्दी ने बहुत से व्यापारियों को तोड़ दिया। (ख) दमे (या यक्ष्मा) ने उनका शरीर तोड़ दिया। ८. किसी प्रकार नष्ट या विच्छिन्न करके समाप्त कर देना। चलता या बना न रहने देना। जैसे—(क) किसी का घमंड तोड़ना। (ख) किसी से नाता (या संबंध) तोड़ना। किसी की दृढ़ता, बल आदि घटाकर या नष्ट करके उसे उसके पूर्व रूप में स्थित या स्थिर न रहने देना। जैसे—(क) मुकदमे में विपक्षी के गवाह तोड़ना। (ख) कमर या हिम्मत तोड़ना। १०. खरीदने के समय किसी चीज का दाम घटाकर कुछ कम करना। जैसे—तुमने भी तोड़कर दस रुपये कम करा ही लिये। ११. खेत में हल चलाकर उसकी सतह की मिट्टी खंडित करके ढेलों के रूप में लाना। १२. किसी कुमारी के साथ पहले-पहल समागम करना। (बाजारू) १३. चोरी करने के लिए सेंध लगाना। जैसे—चोर ताला तोड़कर सब माल उठा ले गये। १४. बड़े सिक्कों को छोटे-छोटे सिक्कों में बदलवा देना।

विशेष—यह क्रिया अनेक संज्ञाओं के साथ लगकर उन्हें मुहावरों का रूप देती है; और ऐसे अवसरों पर उसके भिन्न प्रकार के अर्थ होते हैं। जैसे—किसी के पैर या मुँह तोड़ना, किसी से तिनका तोड़ना, किसी की रोटी (रोटियों) तोड़ना आदि। ऐसे मुहावरों के लिए सम्बद्ध शब्द या संज्ञाएँ देखनी चाहिएँ।

तोड़-फोड़—स्त्री० [हिं० तोड़ना+फोड़ना] १ तोड़ने और फोड़ने की क्रिया या भाव। २. जान-बूझकर हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किसी भवन या रचना के कुछ अंशों को खंडित करना। ३. दे० 'ध्वंसन'।

तोड़र†—पुं०=तोड़ा।

तोड़वाना—स० [भाव० तुड़वाई] तुड़वाना।

तोड़ा—पुं० [सं० त्रुट्; हिं० तोड़ना] १. टूटने या तोड़ने की क्रिया या भाव। टूट। २. किसी चीज को तोड़कर उसमें से अलग किया या निकाला हुआ अंश या भाग। खंड। टुकड़ा। जैसे—रस्सी या रस्से का तोड़ा। ३. घाटा। टोटा। (देखें)

क्रि० प्र०—आना।—पड़ना।

४. वह मैदान या स्थान जो नदी के तोड़ के कारण कटकर अलग हो गया हो। ५. वह स्थान जो प्रायः नदियों के संगम पर उस बालू और मिट्टी के इकट्ठे होने से बनता है जो नदी अपने साथ मैदानों में से तोड़कर लाती है।

क्रि० प्र०—पड़ना।

६. नदी का किनारा। तट। ७. नाच का उतना टुकड़ा जितना एक बार में नाचा जाता है और जिसमें प्रायः एक ही वर्ग की गतियाँ अथवा एक ही प्रकार के भावों की सूचक अंग-भंगियाँ या मुद्राएँ होती हैं।

क्रि० प्र०—नाचना।

८. चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर या सिकरी जिसका व्यवहार आभूषण की तरह पहनने में होता है। जैसे—गले, पैर या हाथ में पहनने का तोड़ा ९. टाट की वह थैली जिसमें चाँदी के १०००) आते या रखे जाते हों।

मुहा०—(किसी के आगे) तोड़ा उलटना या गिराना=(किसी को) सैंकड़ों, हजारों रुपए देना। बहुत-सा धन देना।

१०. हल के आगे की वह लंबी लकड़ी जिसके अगले सिरे पर जूआ लगा रहता है। हरिस। ११. खूब अच्छी तरह साफ की हुई वह चीनी जिसके दाने या रवे कुछ बड़े होते हैं और जिससे ओला बनता था। कन्द। १२. अभिमान। घमंड।

मुहा०—तोड़ा लगाना=अभिमान या घमंड दिखाना।

पद—नक तोड़। (देखें)

पुं० [सं० तुंड या टोंटा] १. नारियल की जटा की वह रस्सी जिसके ऊपर

सूत बुना रहता था और जिसकी सहायता से पुरानी चाल की तोड़दार बंदूक छोड़ी जाती थी। पलीता।

पद—तोड़दार बंदूक=पुरानी चाल की वह बन्दूक जो तोड़ा दागकर छोड़ी जाती थी।

२. वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है और जिसकी सहायता से तोड़ेदार बन्दूक चलाने का तोड़ा या पलीता सुलगाया जाता था।

तोड़ाई†—स्त्री०=तुड़वाई।

तोतक*—पुं० [हिं० तोता?] पपीहा।

तोतरंगी—स्त्री० [देश०] एक तरह की चिड़िया।

तोतर†—वि०=तोतला।

तोतरा—वि०=तोतला।

तोतराना—अ०=तुतलाना।

तोतला—वि० [हिं० तुतलाना] [स्त्री० तोतली] १. जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। जैसे—तोतला बालक। २. (जवान) जिससे रुक-रुककर और तुतलाकर उच्चारण होता हो। ३. (उच्चारण) जो बच्चों की तरह का अस्पष्ट और रुक-रुककर होता हो।

तोतलाना—अ०=तुतलाना।

तोता—पुं० [फा०] [स्त्री० तोती] १. एक विशिष्ट प्रकार के पक्षियों की प्रसिद्ध जाति या वर्ग जिसमें से कुछ उप-जातियाँ ऐसी होती हैं जिनके तोते मनुष्य की बोली की ठीक-ठीक नकल उतारते हुए बोलना सीख लेते और प्रायः इसी लिए घरों में पाले जाते हैं। कीर। सुग्गा। सूआ।

विशेष—इस जाति के पक्षियों की चोंच अंकुड़ीदार या नीचे की ओर झूमी हुई होती है; पर कई तरह के चमकीले रंगों के होते हैं और पैरों में दो उँगलियाँ आगे की ओर तथा दो पीछे की ओर होती हैं।

मुहा०—तोता पालना=दोष, दुर्व्यसन, रोग को जान-बूझकर अपने साथ लगाये रहना, उससे छूटने का प्रयत्न न करना। **तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना**=बहुत बेमुरौवत होना।

विशेष—कहते हैं कि तोता चाहे कितने दिनों का पालतू क्यों न हो; पर जब एक बार पिंजरे के बाहर निकल जाता है, तब वह फिर अपने पिंजरे या मालिक की तरफ देखता तक नहीं। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है।

मुहा०—तोते की तरह पढ़ना=बिना समझे-बूझे पढ़ते या रटते चलना। **हाथों के तोते उड़ना**=इस प्रकार बहुत घबरा जाना कि समझ में न आवे कि अब क्या करना चाहिए।

पद—तोता-चश्म।

२. बन्दूक का घोड़ा।

तोता-चश्म—वि० [फा०] [भाव० तोता-चश्मी] १. जिसकी आँखों में तोते की तरह लिहाज या संकोच का पूर्ण अभाव हो। २. बे-वफा। बे-मुरौवत।

तोता-चश्मी—स्त्री० [फा० तोताचश्म+ई (प्रत्य०)] तोताचश्म होने की अवस्था, गुण या भाव।

तोतापरी—पुं० [देश०] एक तरह का बढ़िया आम।

तोती—स्त्री० [फा० तोता] १. तोते की मादा। २. रखेली स्त्री। रखनी।

तो-तो—पुं० [अनु०] कुत्तों, कौओं की तरह तिरस्कारपूर्वक किसी व्यक्ति को बुलाने का शब्द।

तोत्र—पुं० [सं०√तुद् (पीड़ित करना)+ष्ट्रन्] पशु हाँकने की चाबुक या छड़ी।

तोत्र-वेत्र—पुं० [कर्म०स०] विष्णु के हाथ का दंड।

तोद—वि० [सं०√तुद्+घञ्] कष्ट या पीड़ा देनेवाला।

पुं० पीड़ा। व्यथा।

तोदन—पुं० [सं०√तुद्+ल्युट्—अन] १. पशुओं को हाँकने का उपकरण। २. पीड़ा। व्यथा। ३. एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल वैद्यक में कसैले, रूखे और कफ तथा वायु नाशक कहे गये हैं।

तोदरी—स्त्री० [फा०] फारस देश में होनेवाला एक तरह का पेड़ और उसका फल।

तोदा—पुं० [फा० तोदः] वह मिट्टी की दीवार या टीला जिस पर तीर या बंदूक चलाने का अभ्यास करने के लिए निशाना लगाते हैं। २. ढेर। राशि।

तोदी—स्त्री० [देश०] संगीत में, एक प्रकार का ख्याल।

तोन*—पुं० [सं० तूण] तूणीर। तरकश।

तोप—स्त्री० [तु०] एक आधुनिक यंत्र जिसकी सहायता से युद्ध के समय शत्रुओं पर गोले, बम आदि बहुत दूर-दूर तक फेंके जाते हैं।

विशेष—आज-कल समुद्री और हवाई जहाजों पर रखने के लिए और हवा में उड़ते हुए हवाई जहाज आदि नष्ट करने के लिए अनेक आकार-प्रकार की तोपें बनती हैं।

क्रि० प्र०—चलाना।—छोड़ना। दागना।—मारना।

मुहा०—तोप कीलना=तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा कसकर ठोंक देना जिसमें वह गोला छोड़ने के योग्य न रह जाय। **तोप की सलामी उतारना**=किसी प्रसिद्ध और बड़े अधिकारी के आने पर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के अवसर पर तोप चलाना जिससे बहुत जोरों का शब्द होता है। **तोप के मुँह पर रखकर उड़ाना**=किसी को तोप की नाली के आगे बाँध, बैठा या रखकर उस पर गोला छोड़ना जिससे उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े हो जाय। **तोप दम करना**=तोप के मुँह पर रखकर उड़ाना।

पद—तोप का ईंधन या चारा=युद्ध-क्षेत्र में वे सैनिक जो जान-बूझकर इसलिए आगे किए जाते हैं कि शत्रुओं की तोपों के गोलों के शिकार बने। (व्यंग्य)

२. आतिशबाजों का लोहे का वह बड़ा नल जिसमें रखकर वे बहुत जोर की आवाज करनेवाले गोले छोड़ते हैं। पाली।

तोपखाना—पुं० [अ० तोप+फा० खाना] १. वह स्थान जहाँ तोपें, गोला, बारूद आदि रहता हो। २. कई तोपों का कोई स्वतन्त्र वर्ग या समूह जो प्रायः एक साथ रहता और एक इकाई के रूप में काम करता है।

तोपची—पुं० [अ० तोप+ची (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो तोप से गोले छोड़ता हो।

तोपड़ा—पुं०[देश०] १. एक प्रकार का कबूतर। २. एक प्रकार की मक्खी।

तोपना—स०[सं० √तुप्][भाव० तोपाई]१. किसी चीज के ऊपर कोई दूसरी चीज इस प्रकार रखना कि नीचेवाली चीज बिलकुल ढक जाय।†२. (गड्ढा आदि) भरना। पाटना।

तोपवाना—स० [हिं० तोपना का प्रे०] तोपने का काम दूसरे से कराना।

तोपा—पुं०[हिं० तुरपना]१. सूई से होनेवाली उतनी सिलाई जितनी एक बार में एक छेद से दूसरे छेद तक की जाती है। सिलाई में का कोई टाँका।

मुहा०—तोपा भरना या लगाना=टाँके लगाते हुए सीना। सीधी सिलाई करना।

तोपाई—स्त्री०[हिं० तोपना] तोपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तोपाना—स०=तोपवाना।

तोपास†—पुं०[देश०] झाड़ू देनेवाला। झाड़ूबरदार।

तोपी†—स्त्री०=टोपी।

तोफगी—स्त्री०=तोहफगी।

तोफा—वि०[अ० तोहफ़ा] बहुत बढ़िया।

पुं०=तोहफा।

तोबड़ा—पुं०[फा० तोबरा या तुबरा]चमड़े, टाट आदि का वह थैला जिसमें चने भरकर घोड़े के खाने के लिए उसके मुँह पर बाँध देते हैं। क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँधना।—लगाना।

मुहा०—(किसी के मुँह) तोबड़ा लगाना=बलपूर्वक किसी को बोलने से रोकना। (बाजारू)

तोबा—स्त्री०[अ० तौबः] १. भविष्य में फिर वैसा काम न करने की प्रतिज्ञा। क्रि० प्र०—करना।—तोड़ना।

मुहा०—तोबा तिल्ला करना या मचाना=रोते-चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए यह कहना कि हम पर दया करो; अब हम ऐसा नहीं करेंगे।

२. किसी बुरे काम से बाज रहने की प्रतिज्ञा। जैसे—ऐसे कामों (या बातों) से तो तोबा ही भली।

मुहा०—तोबा करके (कोई बात) कहना=अभिमान छोड़कर या ईश्वर से डरकर (कोई बात) कहना। **(किसी से) तोबा बुलवाना**=किसी को दबाते या परेशान करते हुए इतना अधिक दीन और विवश बनाना कि फिर कभी वह कोई अनुचित काम या विरोध करने का साहस न कर सके। पूर्ण रूप से परास्त करना।

अव्य० ईश्वर न करे कि फिर ऐसा कभी हो। जैसे—तोबा! भला अब मैं कभी उनसे बात करूँगा। (उपेक्षा तथा घृणा सूचक)

तोम—पुं०[सं० स्तोम] समूह। ढेर।

तोमड़ी—स्त्री०[?] एक प्रकार की आतिशबाजी।

स्त्री०=तूँबड़ी।

तोमर—पुं०[सं० √ तुम्प्(मारना)+अर, पृषो० सिद्धि]१. भाले की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। २. पुराणानुसार एक प्राचीन देश। ३. उक्त देश का निवासी। ४. राजपूतों की एक जाति।

विशेष—इसी जाति ने ८वीं से १२वीं शती तक दिल्ली में शासन किया था। अनंगपाल, जयपाल इसी वंश के राजा थे।

५. बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक गुरु और एक लघु होता है।

तोमरिका—स्त्री०[सं० तोमर+कन्—टाप्, इत्व] १. गोपी चंदन। २. अरहर।

तोमरी*—स्त्री०[हिं० तुमड़ी] तूँबड़ी।

तोय—पुं० [सं०√तु+विच्, तो√या (जाना)+क] १. जल। पानी। २. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

तोयकाम—पुं०[सं० तोय√कम्(चाहना)+अण्] एक प्रकार का बेंत जो जल के पास होता है। वानीर।

तोय-कुंभ—पुं०[ष०त०] सेवार।

तोय-कृच्छ्र—पुं०[तृ०त०] एक प्रकार का व्रत जिसमें जल के सिवा और कुछ ग्रहण नहीं किया जाता।

तोयडिंब—पुं०[ष०त०] ओला। पत्थर। करका।

तोय-डिंभ—पुं०[ष०त०] ओला।

तोयद—पुं०[सं० तोय√दा(देना)+क] १. मेघ। बादल। २. नागर-मोथा। ३. घी। घृत। ४. वह जो किसी को जल देता हो। ५. उत्तराधिकारी जो किसी का तर्पण करता है।

वि० जल देनेवाला।

तोयदागम—पुं० [सं० तोयद-आगम, ष०त०] वर्षाऋतु। बरसात।

तोय-धर—पुं०[ष०त०] १. बादल। मेघ। २. मोथा।

तोय—पुं० [ब० स०]=तोयधर।

तोय-धि—पुं०[सं० तोय√धा(धारण करना)+कि] समुद्र। सागर।

तोयधि-प्रिय—पुं०[ब०स०] लौंग।

तोय-निधि—पुं०[ष०त०] समुद्र। सागर।

तोयनीवी—स्त्री०[ब०स०] पृथ्वी।

तोयपर्णी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] करेला।

तोय-पिप्पली—स्त्री०=जलपिप्पली।

तोय-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] पाटला वृक्ष। पाँढर।

तोय-प्रसादन—पुं०[ष०त०] निर्मली।

तोय-फला—स्त्री०[ब०स०, टाप्] तरबूज या ककड़ी आदि की बेल।

तोय-मल—पुं०[ष०त०] समुद्र-फेन।

तोयमुच—पुं०[सं० तोय√मुच्(छोड़ना)+क्विप्, उप०स०] १.बादल। मेघ। २. मोथा।

तोय-यंत्र—पुं०[मध्य०स०]१. पानी के द्वारा समय बताने का यंत्र। जल-घड़ी। २. फुहारा।

तोय-राज—पुं०[ष०त०] समुद्र। सागर।

तोयराशि—पुं०[ष०त०] १. बड़ा तालाब। झील। २. समुद्र। सागर।

तोयवल्ली—स्त्री०[मध्य०स०] करेले की बेल।

तोय-वृक्ष—पुं०[स०त०] सेवार।

तोय शुक्ति—स्त्री०[मध्य०स०] सीपी।

तोय-शूक—पुं०[ष०त०]=तोय-वृक्ष।

तोय-सर्पिका—स्त्री०[स०त०] मेंढक।

तोय-सूचक—पुं०[ष०त०] १. ज्योतिष का वह योग जिसमें वर्षा होने की संभावना मानी जाती है। २. मेंढक।

तोयाधार—पुं०[तोय-आधार, ष०त०] पुष्करिणी। तालाब।

तोयाधिवसिनी—स्त्री०[सं० तोय-अधि√वस् (रहना)+णिनि—ङीप्, उप०स०] पाटला वृक्ष।

तोयालय—पुं० [तोय-आलय, ष०त०] समुद्र।

तोयालिक—वि०[सं० तोय से]१. तोय या जल से संबंध रखनेवाला। २. तोय या जल के प्रवाह अथवा शक्ति से चलनेवाला।(हाइड्रॉलिक)

तोयालिकी—स्त्री०[सं० तोय से] वह विद्या जिसमें जलाशयों, नदियों, समुद्रों आदि की गहराई और प्रवाह का इस दृष्टि से अध्ययन या विचार किया जाता है कि उनमें जहाज या नावें कब और कैसे चलाई जानी चाहिए। (हाइड्रोग्रैफी)

तोयालेख—पुं०[तोय-आलेख, ष०त] वह आलेख या नकशा जिनमें किसी जलाशय की गहराई, प्रवाहों की दिशाएँ आदि अंकित होती हैं। (हाइड्रोग्राफ)

तोयाशय—पुं०[तोय-आशय, ष०त०]=तोयाधार।

तोयेश—पुं० [तोय-ईश, ष० त०] १. वरुण। २. शतभिषा नक्षत्र। ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

तोयोत्सर्ग—पुं०[तोय-उत्सर्ग, ष०त०] वर्षा।

तोर—पुं०[सं० तुवर] अरहर।

†वि०=तेरा।

†पुं०=तोड़।

तोरई—स्त्री०=तोरी।

तोरण—पुं०[सं० √तुर् (जल्दी करना)+ल्युट्—अन्]१. किसी बड़ी इमारत या नगर का वह बड़ा और बाहरी फाटक जिसका ऊपरी भाग मंडपाकार हो और प्रायः पताकाओं, मालाओं आदि से सजाया जाता हो। २. उक्त फाटक को सजाने के लिए लगाई जानेवाली पताकाएँ, मालाएँ आदि। ३. ऐसी बनावट या वास्तु-रचना जिसका ऊपरी भाग अर्द्ध-गोलाकार और बेल-बूटेदार हो। मेहराब। (आर्च) ४. उक्त फाटक के आकार-प्रकार की कोई अस्थायी रचना जो प्रायः शोभा-सजावट आदि के लिए की जाती है। ५. वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिए खंभों और दीवारों आदि में बाँधकर लटकाई जाती हैं। बंदनवार।

पुं० [सं०√तुल (तौलना)+ल्युट्, ल—र] १. ग्रीवा। गला। २. महादेव। शिव।

तोरण-माल—पुं०[ब०स०] अवंतिकापुरी।

तोरण-स्फटिका—स्त्री०[ब०स०] दुर्योधन की वह सभा जो उसने पांडवों की मयदानव वाली सभा देखकर उसके जोड़ की बनवाई थी।

तोरन*—पुं०=तोरण।

तोरना†—स०=तोड़ना।

तोरश्रवा—पुं०[सं०] अंगिरा ऋषि का एक नाम।

तोरा—पुं०[तु० तोरह]१. भेंट रूप में देने या स्वागत-सत्कार के लिए रखा जानेवाला वह बड़ा थाल जिसमें स्वादिष्ठ पकवान, मांस, मिठाइयाँ आदि रखी जाती हैं। २. विवाह के अवसर पर वर-पक्ष को उक्त प्रकार के थाल भेंट करने या भेजने की रसम। (मुसल०)

†सर्व० दे० 'तेरा'।

†पुं०=तोड़ा।

†पुं०=तुर्रा (कलगी)।

तोराई*—अ०[अव्य० त्वरा] १. वेगपूर्वक। तेजी से। २. जल्दी। शीघ्र।

तोराना*—स०=तुड़ाना।

तोरावान†—वि०[सं० त्वरावत्] [स्त्री० तोरावली] वेगवान्। तेज।

तोरिया—स्त्री०[सं० तूरी] गोटा-किनारी बुननेवालों का वह छोटा बेलन जिस पर वे बुना हुआ गोटा-आदि लपेटते चलते हैं।

स्त्री०[देश०]१. वह गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो और जिसका दूध दूहने के लिए कोई युक्ति करनी पड़ती हो। २. एक प्रकार की सरसों।

तोरी—स्त्री०[सं० तूर] १. एक प्रकार की बेल जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २. उक्त बेल की फली जो प्रायः ननुए की तरह की होती और तरकारी बनाने के काम आती है। ३. काली सरसों।

तोल—पुं०[सं०√तुल्(तौलना)+घञ्] बारह माशे की तौल। तोला।

स्त्री०[हिं०]=तौल।

†वि०=तुल्य (समान)। उदा०—मदने पाओल आपन तोल।—विद्यापति।

†पुं०[देश०] नाव का डाँडा। (लश०)

तोलक—पुं०[सं० तोल+कन्] तोला (तौल)। बारह माशे का वजन।

तोलन—पुं०[सं०√तुल् (तौलना)+ल्युट्—अन]१. तौलने की क्रिया या भाव। २. ऊपर उठाने की क्रिया।

स्त्री० चाँड़। थूनी।

तोलना—स०=तौलना।

तोलवाना—स०=तौलवाना।

तोला—पुं०[सं० तोलक]१. एक तौल जो बारह माशे या छानबे रत्ती की होती है। २. उक्त तौल का बाट।

तोलाना—स०=तौलाना।

तोलिया—पुं० दे० 'तौलिया'।

तोल्य—वि०[सं०√तुल्(तौलना)+ण्यत्] तौले जाने योग्य।

पुं० तौलने की क्रिया या भाव।

तोश—वि०[सं०√तुश्(वध करना)+घञ्] हिंसा करनेवाला। हिंसक।

पुं०१. हिंसा। २. हिंसक पशु या प्राणी।

तोशक—स्त्री०[तु०] दोहरी चादर या खोल में रूई; नारियल की जटा आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशक खाना—पुं० दे०'तोशाखाना'।

तोशदान—पुं०[फा० तोशः दान]१. वह झोला या थैली जिसमें मार्ग के लिए यात्री विशेषतः सैनिक अपना जलपान आदि या दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। २. चमड़े की वह पेटी जिसमें सैनिक कारतूस या गोलियाँ रखते हैं।

तोशल—पुं०=तोषल।

तोशा—पुं० [फा० तोशः]१. वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २. खाने-पीने का सामान। ३. बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

तोशाखाना—पुं०[तु० तोशक+फा० खाना]वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े, गहने आदि रहते हों। वस्त्रों और आभूषणों आदि का भण्डार।

तोष—पुं०[सं०√तुष्(सन्तोष करना)+घञ्]१. अघाने या मन भरने

की क्रिया या भाव। तुष्टि। तृप्ति। २. असंतोष, कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार हो जाने पर मन में होनेवाली तृप्ति। (सोलेस) ३. खुशी। प्रसन्नता। ४. पुराणानुसार स्वायंभुव मनु के एक देवता। ५. श्रीकृष्ण के एक सखा।

अव्य० अल्प। कुछ। थोड़ा।

तोषक—वि०[सं०√तुष्+णिच्+ण्वुल्—अक] तोष देने या तृप्त करनेवाला। सन्तुष्ट करनेवाला

तोषण—पुं०[सं०√तुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १, किसी को तुष्ट या तृप्त करने की क्रिया या भाव। २. [√तुष्+ल्युट्] तृप्ति।

वि०[√तुष्+णिच्+ल्यु—अन] तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। (यौ० पदों के अन्त में)

तोषता*—स्त्री०=तोष (तुष्टि)।

तोषणिक—पुं० [सं० तोषण+ठन्—इक] वह धन जो किसी को तुष्ट करने के उद्देश्य से दिया जाय।

तोषना*—स०[सं० तोष] तृप्त या संतुष्ट करना। तृप्त करना। उदा०—विप्र, पितर, सुर, दान, मान, पूजा सौं तोषे।—रत्नाकर।

अ० तृप्त या सन्तुष्ट होना।

तोष-पत्र—पुं० [मध्य०स०] वह पत्र जिसमें राज्य की ओर से जागीर मिलने का उल्लेख रहता है। बख्शिशनामा।

तोषल—पुं०[सं०]१. कंस का एक असुर मल्ल जिसे धनुर्यज्ञ में श्रीकृष्ण ने मार डाला था। २. मूसल।

तोषार*—पुं०१.=‘तुषार’। २.=तुखार। (देश०)

तोषित—वि०[सं०√तुष्+णिच्+क्त] जिसका तोष हो गया हो, अथवा जिसे तृप्त किया गया हो। तुष्ट। तृप्त।

तोषी (षिन्)—वि०[सं०√तुष्+णिनि] समस्तपदों के अन्त में; (क)संतुष्ट होनेवाला। थोड़ी-सी चीज या बात से तुष्टहोनेवाला। जैसे—अल्प-तोषी। (ख) [√तुष्+णिच्+णिनि] तुष्ट या संतुष्ट करनेवाला। जैसे—सर्व-तोषी=सबको तुष्ट करनेवाला।

तोस*—पुं०=तोष।

तोसक†—स्त्री०=तोशक।

पुं०=तोषक।

तोसल*—पुं०=तोषल।

तोसा*—पुं०=तोशा।

तोसाखाना—पुं०=तोशाखाना।

तोसागार*—पुं० दे०‘तोशाखाना’।

तोहफगी—स्त्री० [अ० तोहफ़ा+फा० गी (प्रत्य०)] तोहफा अर्थात् बढ़िया और विलक्षण होने की अवस्था या भाव।

तोहफा—पुं०[अ० तुहफ़ः] १. अद्भुत और सुन्दर पदार्थ। बढ़िया और विलक्षण चीज। २. उपायन। बैना। सौगात। ३. उपहार। भेंट।

वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

तोहमत—स्त्री०[अ०] किसी पर लगाया जानेवाला झूठा और व्यर्थ का अभियोग या आरोप। झूठा दोषारोपण।

क्रि० प्र०—जोड़ना।—धरना।—लगाना।

तोहमती—वि०[अ० तोहमत+ई (प्रत्य०)]दूसरों पर झूठा अभियोग या तोहमत लगानेवाला। मिथ्या कलंक लगानेवाला।

तोहरा†—सर्व० दे० ‘तुम्हारा’।

तोहार—सर्व० दे० ‘तुम्हारा’।

तोहि†—सर्व०[हिं० तू या तैं] मुझको। तुझे।

तौंकन†—स्त्री०=तौंस।

तौंकना—अ०=तौंसना।

तौंस†—स्त्री०[सं० ताप, हिं० ताव+सं० उष्म; हिं० ऊमस, औंस] वह प्यास जो बहुत अधिक गरमी या धूप लगने से होती है और जल्दी शान्त नहीं होती।

तौंसना—अ०[हिं० तौंस] गरमी से झुलस जाना। गरमी के कारण संतप्त होना।

स० १. गरमी पहुँचाकर विकल या संतप्त करना। २. झुलसना। उदा०—तात ताल तौंसियत झौंसियत झारहिं।—तुलसी।

तौंसा—पुं०[सं० ताप; हिं० ताव+सं० ऊष्म; हिं० ऊमस, औंस] बहुत अधिक ताप। कड़ी गरमी।

तौ—अ०[हिं० हतौ का संक्षि०] था।

क्रि० वि०=तो।

†अव्य० हाँ, ठीक है। ऐसा ही है।

तौक—पुं०[अ०]१.हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक प्रकार का गहना। २. अपराधियों, पागलों आदि के गले में पहनाया जानेवाला लोहे का वह भारी घेरा या मंडल जिसके कारण वे इधर-उधर जा या भाग नहीं सकते। ३. पक्षियों आदि के गले में होनेवाला प्राकृतिक गोलाकार चिह्न या मंडल। ४. कोई गोल घेरा या पदार्थ। ५. गले में लटकाई जानेवाली चपरास या उसका परतला।

तौकीर—स्त्री०[अ०]आदर। सम्मान। प्रतिष्ठा।

तौक्षिक—पुं०[सं०] धनु राशि।

तौचा—पुं०[देश०] एक प्रकार का गहना जो देहाती स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

तौजा—पुं० [अ० तौजीह] १. वह धन जो खेतिहरों को विवाहादि में खर्च करने के लिए पेशगी दिया जाता था। बियाही। २. उधार दिया हुआ धन।

वि० यों ही कुछ समय के लिए उधार दिया या लिया हुआ।

तौतातिक—पुं०[सं० तुतात+ठञ्—इक] कुमारिल भट्ट कृत मीमांसा शास्त्र।

तौतातित—पुं०[सं०] १. जैनियों का एक भेद या वर्ग। २. कुमारिल भट्ट का एक नाम।

तौतिक—पुं०[सं० मुक्ता, नि० सिद्धि]१. मुक्ता। मोती। २. शुक्ति। सीप।

तौन—स्त्री०[देश०] वह रस्सी जिसमें गौ दुहने के समय उसका बछवा उसके अगले पैर से बाँध दिया जाता है।

†सर्व०=तवन (वह)।

†अव्य०=सो।

तौनी—स्त्री०[हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।

वि०, स्त्री०=तौन।

तौफीक़—पुं० [अ०] १. शक्ति। सामर्थ्य। २. हिम्मत। हौसला। ३. ईश्वर के प्रति होनेवाली भक्ति और श्रद्धा।

तौबा—स्त्री० =तोबा।

तौर—पुं० [सं० √तुर्व् (हिंसा करना)+कञ् बा०] एक प्रकार का यज्ञ।

पुं० [अ०] १. ढंग। तरीका।

पद—**तौर-तरीका**। (देखें)

२. चाल-चलन। चाल-ढाल।

मुहा०—**तौर बे-तौर होना**=रंग-ढंग खराब होना। लक्षण बुरे जान पड़ना।

३. अवस्था। दशा। हालत।

†पुं० [देश०] मथानी मथने की रस्सी। नेत्री।

तौर-तरीका—पुं० [अ०] १. चाल-ढाल। २. रंग-ढंग।

तौरश्रवस—पुं० [सं० तोरश्रवस्+अण्] एक प्रकार का साम (गान)।

तौरात—पुं० दे० 'तौरेत'।

तौरायणिक—पुं० [सं० तूरायण+ठञ्—इक] वह जो तूरायण यज्ञ करता हो।

तौरि*—स्त्री० [हिं० ताँवरि] सिर में अनेवाली घुमरी या चक्कर।

तौरीत—पुं० दे० 'तौरेत'।

तौरेत—पुं० [इब्रा०] यहूदियों का प्रधान धर्म-ग्रंथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था। इसमें सृष्टि और आदम की उत्पत्ति आदि का उल्लेख है।

तौर्य—पुं० [सं० तूर्य+अण्] १. ढोल, मँजीरा आदि बाजे। २. उक्त बाजे बजाने की क्रिया।

तौर्य-त्रिक—पुं० [मध्य०स०] नाचना, गाना और बाजे बजाना आदि काम।

तौल—पुं० [सं० तुला+अण्] १. तराजू। २. तुला राशि।

स्त्री० [हिं० तौलना] १. कोई चीज तौलने की क्रिया या भाव। २. किसी पदार्थ का वह भार या मान जो उसे तौलने पर जाना जाता है। वजन। (वेट) ३. बटखरों के अलग-अलग प्रकार के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक। जैसे—कच्ची या पक्की तौल; छोटी या बड़ी तौल। ४. किसी प्रकार की जांच की कसौटी या मानक। सर्व-मान्य परिमाण। ५. गम्भीरता, परिमाणु, महत्त्व आदि का अनुमान। कल्पना या थाह। उदा०—बालपना की प्रीत रमइया जी कदे नहीं आयो थारो तोल (तौल)।—मीराँ।

तौलना—स० [सं० तोलना] १. काँटे, तराजू, बटखरे आदि की सहायता से यह पता लगाना कि अमुक वस्तु का गुरुत्व या भार कितना है। जोखनी। २. कोई चीज हाथ में लेकर या हाथ से उठाकर यह अनुमान करना कि यह तौल, भार या वजन में कितनी होगी।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

३. अस्त्र-शस्त्र आदि चलाने के समय, उसे हाथ में लेकर ऐसी मुद्रा या स्थिति में लाना कि वह ठीक तरह से अपने लक्ष्य पर पहुँचकर पूरा काम कर दिखलावे। साधना। जैसे—डंडा या तलवार तौलना। ४. दो या अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि की परस्पर तुलना करके उनके महत्त्व आदि का विचार करना। तारतम्य जानना। मिलान करना। ५. किसी बात का ठीक महत्त्व, मान, स्वरूप आदि जानने के लिए अथवा किसी व्यक्ति के मन की थाह लेने के लिए उसकी सब बातों, व्यवहारों आदि को अच्छी तरह देखते हुए उसके सम्बन्ध में मन में अनुभव या कल्पना करना। जैसे—किसी का मन (या किसी को) तौलना (या तौलकर देखना)। ६. गाड़ी के पहिये के छेद में इसलिए तेल डालना कि वह बिना रगड़ खांये सहज में घूमता रहे। औंगना।

तौलनिक—वि० =तुलनात्मक।

तौलवाई—स्त्री० =तौलाई।

तौलवाना—स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को तौलने में प्रवृत्त करना। तौलाना।

तौला—पुं० [हिं० तौलना] १. वह जो चीजें तौलने का काम या पेशा करता हो। २. दूध नापने का मिट्टी का बरतन।

पुं० [फा० तवल] [स्त्री० अल्पा० तौली] १. एक प्रकार का बड़ा कटोरा। २. मिट्टी का घड़ा।

पुं० [?] महुए की शराब।

तौलाई—स्त्री० [हिं० तौल+आई (प्रत्य०)] १. तौलने की क्रिया या भाव। २. तौलने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

तौलाना—स० = तौलवाना।

तौलिक, तौलिकिक—पुं० [सं० तूली+ठक्—इक, तूलिका+ठक—इक] चित्रकार।

तौलिया—पुं० [अं० टावेल] एक प्रकार का मोटा अँगोछा जिससे स्नान आदि करने के उपरांत शरीर पोंछते हैं।

तौली—स्त्री० [अ० तवल] १. एक प्रकार की मिट्टी की छोटी प्याली। २. मिट्टी का घड़ा जिसमें अनाज, गुड़ आदि रखते हैं।

तौलैया—पुं० [हिं० तौलना+ऐया (प्रत्य०)] अनाज तौलने का काम करनेवाला व्यक्ति। बया।

तौल्य—पुं० [सं० तुला+ष्यञ्] १. वजन। तौल। २. सादृश्य। समानता।

तौषार—पुं० [सं० तुषार+अण्] तुषार का जल। पाले का पानी।

तौस†—स्त्री० = तौस।

तौसना—अ०, स०=तौंसना।

तौहीद—स्त्री० [अ०] यह मानना कि ईश्वर एक ही है। एकेश्वरवाद।

तौहीन—स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

तौहीनी—स्त्री० = तौहीन।

त्यक्त—भू० कृ० [सं० √त्यज् (त्यागना)+क्त] [स्त्री० त्यक्ता] १. (पदार्थ) जिसका त्याग कर दिया गया हो। छोड़ा या त्यागा हुआ। २. यौ० पदों के आरंभ में, जिसने छोड़ या त्याग दिया हो। जैसे—त्यक्त प्राण = मृत; त्यक्त-लज्ज=निर्लज्ज। ३. यौ० पदों के आरंभ में, जो किसी के द्वारा छोड़ या त्याग दिया गया हो। जैसे—त्यक्त श्री=जिसे श्री या लक्ष्मी ने त्याग दिया हो। अर्थात् अभागा या दरिद्र।

त्यक्तव्य—वि० [सं० √त्यज्+तव्यत्] जो छोड़े जाने के योग्य हो। जिसे त्यागना उचित हो।

त्यक्ता (क्तृ)—वि० [सं० √त्यज्+तृच्] त्यागने वाला। जिसने त्याग किया हो।

त्यक्ताग्नि—वि० [सं० त्यक्त-अग्नि, ब० स०] गृहाग्नि की उपेक्षा करने-वाला। (ब्राह्मण)

त्यक्तात्मा (मन्)—वि० [सं० त्यक्त-आत्मन्, ब० स०] हताश। निराश।

त्यग्नायि—पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप।

त्यजन—पुं० [सं० त्यज्+ल्युट्—अन] [वि० त्यजनीय, त्याज्य; भू० कृ० त्यक्त] छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग।

त्यजित—भू० कृ० दे० 'त्यक्त'।

त्यजनीय—वि० [सं०√त्यज्+अनीयर] जो त्यागे जाने के योग्य हो। त्याज्य।

त्यज्यमान—वि० [सं०√त्यज्+शानच्, यक्] जिसका त्याग कर दिया गया हो। जो छोड़ दिया गया हो।

त्याँह—सर्व० [सं० तेषाम्] उनका या उनके। उदा०—अरि देखे आराण मैं, तृण मुख माँझल त्याँह।—बाँकीदास।

त्याग—पुं० [सं०√त्यज्(त्यागना)+घञ्] १. किसी चीज पर से अपना अधिकार या स्वत्व हटा लेने अथवा उसे सदा के लिए अपने पास से अलग करने की क्रिया। पूरी तरह से छोड़ देना। उत्सर्ग। जैसे—घर-गृहस्थी, संपत्ति या सांसारिक संबंधों का त्याग।

पद—त्याग-पत्र। (देखें)

२. किसी काम, चीज या बात से लगाव या सम्बन्ध हटा लेने अथवा उसे छोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) मोह-माया का त्याग। (ख) दुर्व्यसनों का त्याग। ३. मन में विरक्ति या वैराग्य उत्पन्न होने पर सांसारिक व्यवहार, सम्बन्ध आदि छोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—संन्यास ग्रहण करने से पहले मन में त्याग की भावना उत्पन्न होना आवश्यक है। ४. दूसरों के उपकार या हित के विचार से स्वयं कष्ट उठाने या अपना सुख-सुभीता छोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—लोकमान्य तिलक (या अरविन्द घोष) का त्याग अनुकरणीय है। ५. इस प्रकार सम्बन्ध तोड़ना कि अपने ऊपर कोई उत्तरदायित्व न रह जाय। जैसे—पत्नी या पुत्र को त्याग करके उनसे अलग होना। ६. उदारता पूर्वक किया जानेवाला उत्सर्ग या दान। ७. कन्या-दान। (डिं०)

त्यागना—स० [सं० त्याग] त्याग करना। छोड़ना। तजना।

संयो० क्रि०—देना।

त्याग-पत्र—पुं० [सं० मध्य० स०] १. वह पत्र जिसमें यह लिखा हुआ हो कि हमने अमुक काम, चीज या बात सदा के लिए छोड़ दी है। २. वह पत्र जो कोई कार्यकर्त्ता या सेवक अपने अधिकारी या स्वामी की नौकरी या पद छोड़ने के समय लिखकर देता है और जिसमें यह लिखा रहता है कि अब मैं अपने पद पर नहीं रहूँगा या उसका काम नहीं करूँगा। इस्तीफा। (रेजिग्नेशन)

त्यागवान् (वत्)—वि० [सं० त्याग+मतुप्] जिसने त्याग किया हो अथवा जिसमें त्याग करने की शक्ति हो। त्यागी।

त्यागि (गिन्)—वि० [सं०√त्यज्+घिनुण्] १. त्यागने या छोड़नेवाला। २. संसार की झंझटों से विरक्त होकर वैभव या सुख-भोग के सब साधनों या सामग्री का त्याग करनेवाला। 'संग्रही' का विपर्याय। ३. किसी अच्छे काम के लिए अपने स्वार्थ या हित का त्याग करनेवाला।

त्याजना*—स०=त्यागना।

त्याजित—भू० कृ० [सं० √त्यज्+णिच्+क्त] १. जिससे परित्याग कराया गया हो। २. जिसकी उपेक्षा कराई गयी हो। ३. दे० 'त्यक्त'।

त्याज्य—वि० [सं०√त्यज्+ण्यत्] जिसे त्याग देना उचित हो। छोड़े या त्यागे जाने के योग्य।

त्यार†—वि० दे० 'तैयार'।

त्यारन*—पुं०, वि० = तारण।

त्यारा†—वि० [स्त्री० त्यारी] =तेरा या तुम्हारा।

त्यूं†—क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

त्यूरस—पुं० दे० 'त्योरस'।

त्यों—क्रि० वि० [सं० तत्-एवम्] १. उस प्रकार। उस तरह। २. उसी समय। उसी वक्त।

†अव्य० [सं० तनु] ओर। तरफ। उदा०—(क) हरि त्यों टुक डीठि पसारत ही......।—केशव। (ख) सब ही त्यौं (त्यों) समुहाति छिनु, चलित सवनि दै पीठि।—बिहारी।

त्योनार—पुं० [हिं० तेवर ?] १. ढंग। तर्ज। २. तेवर। (देख)

त्योर*—पुं० दे० 'त्योरी'।

त्योरस—पुं० [हिं० ति(तीन)+बरस] १. गत वर्ष से पहले का अर्थात् वर्त्तमान वर्ष के विचार से बीता हुआ तीसरा वर्ष। २. आनेवाले वर्ष के बाद का अर्थात् वर्त्तमान वर्ष के विचार से तीसरा वर्ष।

त्योरी—स्त्री० [हिं० त्रिकुटी; सं० त्रिकूट (चक्र)] किसी विशिष्ट उद्देश्य से देखनेवाली दृष्टि। निगाह। तेवर।

मुहा०—त्योरी चढ़ना=दृष्टि का ऐसी अवस्था में हो जाना जिससे कुछ असन्तोष या रोष प्रकट हो। आँखें चढ़ना। **त्योरी चढ़ाना या बदलना**=दृष्टि या आकृति से क्रोध के चिह्न प्रकट करना। भौहें चढ़ाना। **त्योरी में बल पड़ना** = त्योरी चढ़ना।

त्योरुस—पुं० = त्योरस।

त्योहार—पुं० [सं० तिथि+वार] १. वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाता हो। पर्व दिन। (फेस्टिवल) जैसे—जन्माष्टमी, दशहरा, दीवाली, होली आदि हिन्दुओं के प्रसिद्ध त्योहार हैं। २. वह दिन या समय जिसमें बहुत से लोग मिलकर उत्सव मनाते हों।

क्रि० प्र०—मनाना।

त्योहारी—स्त्री० [हिं० त्योहार+ई (प्रत्य०)] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष्य में छोटों, लड़कों या नौकरों आदि को दिया जाता है।

त्यौं—क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

त्यौनार—पुं० = त्योनार।

त्यौर—पुं० १. दे० 'त्योरी'। २. दे० 'त्योनार'।

त्यौराना—अ० [हिं० तांवर] सिर में चक्कर आना। सिर घूमना।

त्यौरी—स्त्री० = त्योरी।

त्यौरुस—पुं० दे० 'त्योरस'।

त्यौहार—पुं० दे० 'त्योहार'।

त्यौहारी—स्त्री० = त्योहारी।

त्र—त् और र के योग से बना हुआ एक संयुक्त वर्ण जिसकी गिनती स्वतंत्र वर्ण के रूप में होने लगी है। यह कुछ शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) त्राण या रक्षा करनेवाला। जैसे—अंगुलित्र, आतपत्र। (ख) किसी स्थान पर आया या लाया हुआ; जैसे—अपरत्र, एकत्र, पूर्वत्र, सर्वत्र आदि। और (ग) उपकरण

या यंत्र के रूप में कोई काम करनेवाला। जैसे—चूषित्र, प्रेषित्र, वाष्पित्र आदि।

त्रंग—पुं० [सं०√त्रङ्ग् (जाना)+अच्] राजा हरिश्चंद्र के राज्य की राजधानी।

त्रंबाल†—पुं० [?] नगाड़ा। (राज०) उदा०—गुड़ै धणीचा गाजणा, तो माथे त्रंबाल।—कविराजा सूर्यमल।

त्रपा—स्त्री० [सं०√त्रप् (लज्जा करना)+अङ्-टाप्] [वि० त्रपमान्] १. कीर्ति। यश। २. लज्जा। शरम। ३. छिनाल स्त्री। पुंश्चली। वि० १. कीर्तिमान्। २. लज्जित। शरमिन्दा।

त्रपा-रंडा—स्त्री० [स० त०] १. छिनाल स्त्री। २. रंडी। वेश्या। ३. कीर्ति। यश। ४. कुल। वंश।

त्रापित—भू० कृ० [सं० √त्रप्+क्त] लज्जित।

त्रपु—पुं० [सं०√त्रप्+उन्] १. सीसा। २. रांगा।

त्रपु-कर्कटी—स्त्री० [मध्यं० स० ?] १. खीरा। २. ककड़ी।

त्रपुटी—स्त्री० [सं०√त्रप्+उटक् (बा०)–ङीप्] छोटी इलायची।

त्रपुरी—स्त्री० = त्रपुटी।

त्रपुल—पुं० [सं०√त्रप्+उलच् (बा०)] राँगा।

त्रपुष—पुं० [सं०√त्रप्+उष (बा०)] १. राँगा। २. खीरा, ककड़ी आदि।

त्रपुषी—स्त्री० [सं० त्रपुष+ङीष्] १. ककड़ी। २. खीरा।

त्रपुस—पुं० [सं०√त्रप्+उस (बा०)] १. राँगा। २. खीरा, ककड़ी आदि।

त्रपुसी—स्त्री० [सं० त्रपुस+ङीष्] १. ककड़ी। २. खीरा। ३. बड़ा इन्द्रायन।

त्रप्सा—स्त्री० [सं०√त्रप्+सन्+अङ्-टाप्] जमा हुआ कफ या श्लेष्मा।

त्रप्स्य—पुं० [सं०√त्रप्+सन्+ण्यत्] मठा। लस्सी।

त्रय—वि० [सं० त्रि+अयच्] १. तीन अंगों, अंशों, इकाइयों या रूपों-वाला। २. तीसरा। ३. तीनों। जैसे—ताप-त्रय।

त्रय-ताप—पुं० [मध्य० स०] आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये तीनों प्रकार के ताप।

त्रयारुण—पुं० [सं०] पंद्रहवें द्वापर के एक व्यास का नाम।

त्रयारुणि—पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जो भागवत के अनुसार लोमहर्षण ऋषि के शिष्य थे।

त्रयी—स्त्री० [सं० त्रय+ङीप्] १. तीन विभिन्न इकाइयों का योग, संग्रह या समूह। (ट्रिपलेट) जैसे—वेदत्रयी (अथर्ववेद के अतिरिक्त तीनों वेद), लोकत्रयी (स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक) देवत्रयी (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)। २. इस प्रकार ली जाने वाली तीनों वस्तुएँ। ३. वह विवाहिता स्त्री जिसका पति और बच्चे जीवित हों। ४. दुर्गा। ५. सोमराजी लता।

त्रयी-तनु—पुं० [ब० स०] १. सूर्य। २. शिव।

त्रयी-धर्म—पुं० [मध्य० स०] ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद तीनों में बतलाया हुआ या इन तीनों के अनुसार विहित धर्म।

त्रयीमय—पुं० [सं० त्रयी+मयट्] १. सूर्य। २. परमेश्वर।

त्रयी-मुख—पुं० [ब० स०] ब्राह्मण।

त्रयो-दश (न्)—वि० [सं० त्रि-दशन्, द्व० स०] तेरह।

त्रयोदशी—स्त्री० [सं० त्रयोदशन्+डट्–ङीप्] चांद्र मास के किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

त्रष्टा—पुं० [सं० तष्टा] बढ़ई।

पुं० [फा० तश्त] ताँबे की छिछली और छोटी तश्तरी।

त्रस—वि० [सं०√त्रस् (भय करना)+क] चलनेवाला। चलनशील।

पुं० १. वन। जंगल। २. चलने-फिरनेवाले समस्त जीव। जैसे—पशु, मनुष्य आदि। ३. धूल का वह कण जो प्रकाश-किरणों में उड़ता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है।

त्रसन—पुं० [सं०√त्रस्+ल्युट्-अन] १. किसी के मन में त्रास या भय उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. डर। भय। ३. भयभीत होने की अवस्था या भाव। ४. चिंता। फिक्र। ५. वह आभूषण जो पहनने पर झूलता या हिलता-डुलता रहे।

त्रसना*—अ० [सं० त्रसन] १. भयभीत होना। २. त्रस्त होना।

स० चिंतित या भयभीत करना।

त्रसर—पुं० [सं०√त्रस्+अरन् (बा०)] जुलाहों की ढरकी। तसर।

त्रस-रेणु—पुं० [सं० उपमि० स०] धूल का वह कण जो प्रकाश-रश्मियों में उड़ता तथा चमकता हुआ दिखाई देता है।

स्त्री० सूर्य की एक पत्नी।

त्रसाना—स० [हिं० त्रासना का प्रे० रूप] किसी को किसी दूसरे के द्वारा-त्रस्त या भयभीत कराना।

त्रसित—भू० कृ० [सं० त्रस्त] १. डरा हुआ। २. पीड़ित।

त्रसुर—वि० [सं०√त्रस्+उरच्] १. जो भय से काँप रहा हो। २. डरपोक। भीरु।

त्रस्त—भू०कृ० [सं०√त्रस्+क्त] १. बहुत अधिक डरा हुआ। भयभीत। २. पीड़ित।

त्रस्नु—वि० [सं०√त्रस्+क्नु] जो भय से काँप रहा हो। बहुत अधिक डरा हुआ।

त्रहक्कना†—अ० दे० 'बजना'। (राज०)

त्रागा†—पुं० = तागा। (राज०) उदा०—तितरै हेक दी पवित्र गलित्रागौ। —प्रिथीराज।

त्राटक—पुं० दे० 'त्राटिका'।

त्राटिका—स्त्री० [सं०] योग की एक क्रिया जिसमें दृष्टि तीव्र या प्रखर करने के लिए कुछ समय तक किसी सूक्ष्म बिंदु को एकटक देखना पड़ता है।

त्राण—पुं० [सं०√त्रै (रक्षा करना)+ल्युट्-अन] १. किसी को विपत्ति या संकट से छुटकारा दिलाने तथा उससे सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। २. शरण। ३. सहायता। ४. रक्षा का साधन। बचाने वाली चीज (यौ० के अन्त में)। जैसे—पादत्राण, शिरस्त्राण। ५. कवच। बक्तर। ६. त्रायमाणा लता।

त्राणक—पुं० [सं० त्रायक] त्राण करने या बचानेवाला। रक्षक।

त्राणा—स्त्री० [सं० त्राण+टाप्] बनफशे की जाति की एक लता।

त्रात—भू० कृ० [सं०√त्रै (रक्षा करना)+क्त] जिसे त्राण दिया गया हो। विपत्ति या संकट से बचाया हुआ।

त्रातव्य—वि० [सं०√त्रै+तव्यत्] विपत्ति, संकट आदि से जिसकी रक्षा करना उचित या वांछनीय हो। त्राण पाने का अधिकारी या पात्र।

त्राता (तृ)—वि० [सं०√त्रै (रक्षा करना)+तृच्] त्राण या रक्षा करनेवाला।

पुं० वह जो किसी का त्राण या रक्षा करे।

त्रातार—पुं० = त्राता।

त्रापुष—वि० [सं० त्रपुष+अण्] १. त्रपुष-सम्बन्धी। २. त्रपुष अर्थात् टीन, राँगे आदि का बना हुआ।

त्रायक—वि० [सं०√त्रै (रक्षा करना)+ण्वुल्-अक] त्राण या रक्षा करनेवाला।

त्रायंती—स्त्री० [सं० त्रा√त्रै+क्विप्, त्रा√इ (जाना)+शतृ—ङीप्] त्रायमाण (लता)।

त्रायमाण—वि० [सं०√त्रै +शानच्] त्राता। रक्षक।

पुं० बनफशे की तरह की एक लता।

त्रायमाणा—स्त्री० [सं० त्रायमाण+टाप्] त्रायमाण (लता)।

त्रायमाणिका—स्त्री० [सं० त्रायमाणा+कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व।] =त्रायमाणा।

त्राय-वृंत—पुं० [सं०√त्रै+क, त्राय-वृंत, ब० स०] गंडीर या मुंडिरी नामक साग।

त्रास—स्त्री० [सं०√त्रस् (डरना)+घञ्] १. ऐसा भय जिससे विशेष अनिष्ट, क्षति, हानि आदि की आशंका हो। २. कष्ट। तकलीफ। २. मणि का एक अवगुण या दोष।

त्रासक—वि० [सं०√त्रस्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. त्रास देनेवाला। डरानेवाला। २. दूर करने या हटानेवाला। निवारक।

त्रासन—पुं० [सं०√त्रस्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० त्रासनीय] त्रास देने अर्थात् डराने का कार्य।

वि० =त्रास देने या डरानेवाला। (यौ० के अन्त में)

त्रासना*—स० [सं० त्रासन] किसी को त्रस्त या भयभीत करना। डराना।

त्रासित—भू० कृ० [सं०√त्रस्+णिच्+क्त] १. जिसे त्रास दिया गया हो। डराया-धमकाया हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा या पहुँचाया गया हो।

त्रासी (सिन्)—वि० [सं०√त्रस्+णिच्+णिनि] =त्रासक।

त्राहि—अव्य० [सं०√त्रै+लोट्—हि] इस घोर कष्ट या संकट से त्राण दो। रक्षा करो! बचाओ!

त्रिंश—वि० [सं० त्रिंशत्+डट्] तीसवाँ।

त्रिंशत्—वि० [सं० त्रि-दश, नि० सिद्धि] तीस।

त्रिंशत्पत्र—पुं० [सं० ब० स०] कोई का फूल। कुमुदनी।

त्रिंशांश—पुं० [सं० त्रिंश-अंश, कर्म० स०] १. किसी पदार्थ का तीसवाँ भाग। २. फलित ज्योतिष में, राशि का तीसवाँ अंश या भाग जिसका उपयोग जन्मपत्री बनाने और शुभाशुभ फल निकालने में होता है।

त्रि—वि० [सं०√तॄ (तैरना)+ड्रि] तीन अंगों, अवयवों, इकाइयों, खंडों या रूपोंवाला (यौ० के आरंभ में)। जैसे—त्रिदेव, त्रिदोष, त्रिवर्ग आदि।

त्रि-कंट—पुं० [सं० ब० स०] =त्रिकंटक।

त्रि-कंटक—पुं० [सं० ब० स०, कप्] १. त्रिशूल। २. गोखरू। ३. तिधारा। थूहर। ४. जवासा। ५. टेंगरा नाम की मछली।

त्रिक—वि० [सं० त्रि+कन्] १. तीन अंगों, इकाइयों या रूपोंवाला। २. तीसरी बार होनेवाला। ३. तीन प्रतिशत।

पुं० १. एक ही तरह की तीन चीजों का वर्ग या समूह। २. रीढ़ के नीचे का वह भाग जो कूल्हे की हड्डियों के पास पड़ता है। ३. कटि। कमर। ४. कंधों के बीच का भाग। ५. त्रिकटु। ६. त्रिफला। ७. त्रिमद। । ८. त्रिमुहानी। ९. मनु के अनुसार ३ प्रतिशत होनेवाला लाभ या मिलनेवाला ब्याज।

त्रि-ककुद्—वि० [सं० ब० स०] जिसके तीन शृंग हों।

पुं० १. त्रिकूट पर्वत। २. जंगली सूअर। वाराह। ३. विष्णु जिन्होंने एक बार वाराह का अवतार लिया था। ४. दस दिनों में पूरा होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

त्रि-ककुभ्—पुं० [सं० त्रि-क (जल) √ स्कुम्भ् (रोकना)+क्विप्] १. इंद्र। २. वज्र।

त्रिकट—पुं० [सं० त्रि√कट् (ढकना)+अच्, उप० स०] त्रिकंट। (दे०)

त्रि-कटु—पुं० [सं० द्विगु स०] १. तीन कड़वी वस्तुओं का वर्ग। २. ये तीन कड़वी वस्तुएँ—सोंठ, मिर्च और पीपल। (वैद्यक)

त्रिकटुक—पुं० [सं० त्रिकटु+क (स्वार्थे)] त्रिकटु। (दे०)

त्रिक-त्रय—पुं० [सं० ष० त०] त्रिफला, त्रिकुटा और त्रिमेद अर्थात् हड़, बहेड़ा और आँवला, सोंठ, मिर्च और पीपल तथा मोथा, चीता और वायबिडग इन सब का समूह।

त्रि-कर्मा (र्मन्)—पुं० [सं० ब० स०] ब्राह्मण, जो वेदों का अध्ययन, यज्ञ और दान ये तीन मुख्य कर्म करते हैं।

त्रि-कल—वि० [सं० ब० स०] तीन कलाओं या मात्राओंवाला।

पुं० १. तीन मात्राओं का शब्द। प्लुत। २. दोहे का एक भेद जिसमें ९ गुरु और ३० लघु होते हैं।

त्रिकलिंग—पुं० = तैलंग।

त्रिक-शूल—पुं० [सं० ष० त०] एक तरह का वात रोग जिसमें कमर, पीठ और रीढ़ तीनों में पीड़ा होती है।

त्रि-कांड—वि० [सं० ब० स०] जिसमें तीन कांड हों।

पुं० १. अमरकोश, जिसमें तीन कांड है। २. निरुक्त शास्त्र का एक नाम। ३. वाण तीर।

त्रिकांडी—वि० = त्रिकांडीय।

त्रिकांडीय—वि० [सं० त्रि-कांड, द्विगु स०, +छ—ईय] जिसमें तीन कांड हों। तीन कांडोंवाला।

पुं० वेद, जिनमें कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों की चर्चा या विवेचन है।

त्रिका—स्त्री [सं० त्रि√कै (भासित होना)+क—टाप्] कूएँ में से पानी निकालने के लिए लगी हुई गराड़ी।

त्रि-काय—पुं० [सं० ब० स०] गौतम बुद्ध।

त्रि-कार्षिक—पुं० [सं० कर्ष+ठक्-इक, त्रि-कार्षिक, ष० त०] सोंठ, अतीस और मोथा इन तीनों समूह।

त्रि-काल—पुं० [सं० द्विगु स०] १. भूत, वर्त्तमान और भविष्य ये तीनों काल। २. प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

त्रिकालज्ञ—पुं० [सं० त्रिकाल√ज्ञा (जानना) +क] [भाव० त्रिकालज्ञता] वह जो भूत, वर्त्तमान और भविष्य तीनों कालों में हुई अथवा होनेवाली बातों को जानता हो।

त्रिकालज्ञता—स्त्री० [सं० त्रिकालज्ञ+तल्-टाप्] त्रिकालज्ञ होने की अवस्था, भाव या शक्ति।

त्रिकाल-दर्शक—वि० [सं० ष० त०] त्रिकालज्ञ।

पुं० ऋषि।

त्रिकालदर्शिता—स्त्री० [सं० त्रिकालदर्शिन्+तल्-टाप्] त्रिकालदर्शी होने की अवस्था, गुण, भाव या शक्ति।

त्रिकालदर्शी (र्शिन्)—पुं० [सं० त्रिकाल√दृश् (देखना)+णिनि, उप० स०] वह जिसे भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों कालों में होनेवाली घटनाएँ या बातें दिखाई देती हों।

त्रिकुट—पुं० =त्रिकूट।

त्रिकुटा—पुं० [सं० त्रिकुट] सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीनों वस्तुओं का समूह।

†वि० [सं० त्रिक] [स्त्री० त्रिकुटी] तीसरा। तृतीय। उदा०—इकुटी, बिकुटी, त्रिकुटी संधि।—गोरखनाथ।

त्रिकुटी—स्त्री० [सं० त्रिकूट] दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर का स्थान जिसमें हठ योग के अनुसार त्रिकूट का अवस्थान माना गया है।

त्रि-कूट—पुं० [सं० ब० स०] १. वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २. पुराणानुसार वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी गई है और जो रूप-सुन्दरी नामक देवी का निवास-स्थान कहा गया है। इसकी गिनती पीठ-स्थानों में होती है। ३. क्षीरोद समुद्र में स्थित एक कल्पित पर्वत। ४. हठयोग के अनुसार मस्तक के कुछ चक्रों में पहला चक्र जिसका स्थान दोनों भौंहों के बीच में माना गया है।

त्रिकूट-गढ़—पुं० [सं० त्रिकूट+हिं० गढ़] त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका।

त्रिकूटा—स्त्री० [सं० त्रिकूट+टाप्] तांत्रिकों की एक भैरवी।

त्रि-कूर्चक—पुं० [सं० ब० स०] एक तरह की छुरी जिसमें तीन तरफ धारें होती हैं।

त्रि-कोण—वि० [सं० ब० स०] तीन कोणोंवाला।

पुं० १. तीन कोणों वाली कोई वस्तु। २. भग। योनि। ३. ज्यामिति में ऐसी आकृति या क्षेत्र जिसके तीन कोण हों। जैसे—△। ४. कामरूप के अंतर्गत एक तीर्थ जो सिद्ध-पीठ माना जाता है। ५. जन्म कुंडली में लग्न स्थान से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोण-घंटा—पुं० [कर्म०स०?] लोहे के छड़ का बना हुआ एक प्रकार का तिकोना बाजा जिस पर लोहे के एक दूसरे टुकड़े से आघात करके ताल देते हैं।

त्रिकोण-फल—पुं० [ब० स०] सिंघाड़ा।

त्रिकोण-भवन—पुं० [कर्म० स०] जन्मकुंडली में लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोण-मिति—स्त्री० [सं० ब० स०?] गणित शास्त्र की वह शाखा जिसमें त्रिभुजों के कोण, बाहु, वर्ग, विस्तार आदि का मान निकाला जाता है।

त्रि-क्षार—पुं० [सं० द्विगु स०] जवाखार, सज्जी और सुहागा ये तीनों क्षार अथवा इनका समूह।

त्रि-क्षुर—पुं० [सं० ब० स०] ताल-मखाना।

त्रि-ख—पुं० [सं० ब० स०] खीरा।

त्रिखा†—स्त्री० तृषा।

त्रिखी†—वि० =तृषित।

त्रि-गंग—पुं० [सं० अव्य० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

त्रि-गंधक—पुं० [सं० द्विगु० स०] इलायची, दारचीनी और तेज पत्ता ये तीनों पदार्थ अथवा इनका समूह। त्रिजातक।

त्रि-गंभीर—पुं० [सं० तृ० त०] वह जिसका स्वत्व (आचरण), स्वर और नाभि ये तीनों गंभीर हों। कहते हैं कि ऐसा पुरुष सदा सुखी रहता है।

त्रि-गण—पुं० [सं० ष० त०] त्रिवर्ग। (दे०)

त्रि-गर्त्त—पुं० [सं० ब० स०] १. रावी, ब्यास, और सतलज की घाटियों का अर्थात् आधुनिक काँगड़े और जालंधर के आस-पास के प्रदेश का पुराना नाम। २. उक्त देश का निवासी।

त्रि-गर्त्ता—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] छिनाल स्त्री। पुंश्चली।

त्रिगर्तिक—पुं० =त्रिगर्त।

त्रि-गुण—पुं० [सं० द्विगु स०] सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण।

†वि० [ब० स०] =तिगुना।

त्रि-गुणा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] १. दुर्गा। २. माया। ३. तंत्र में एक प्रकार का बीज।

त्रिगुणात्मक—वि० [सं० त्रिगुण-आत्मन्, ब० स०, कप्] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] १. सत, रज और तम नामक तीनों गुणों से युक्त। जिसमें तीनों गुण हों। २. किसी प्रकार के तीन गुणों से युक्त।

त्रिगुणी—स्त्री० वि० [सं० त्रिगुण] जिसमें तीन गुण हों। त्रिगुणात्मक।

स्त्री० [ब० स०, ङीप्] बेल का पेड़।

त्रि-गूढ़—पुं० [सं० ब० स०] पुरुष का ऐसा नृत्य जो वह स्त्री का वेष धारण करके करता है।

त्रि-घंटा—स्त्री० [सं० ब० स०] एक कल्पित नगरी जो हिमालय की चोटी पर अवस्थित मानी जाती है। कहते हैं यहाँ विद्याधर आदि रहते हैं।

त्रि-चक्र—पुं० [सं० ब० स०] अश्विनीकुमारों का रथ।

त्रि-चक्षु (स्)—पुं० [सं० ब० स०] महादेव।

त्रिचित्—पुं० [सं० त्रि√चि (बटोरना)+क्विप्, उप० स०] गार्हपत्याग्नि।

त्रि-चीवर—पुं० [सं० ब० स०?] एक प्रकार का वस्त्र।

त्रिजगत्—पुं० १. =त्रिलोक। २. =तिर्यक्।

त्रि-जट—पुं० [सं० ब० स०] महादेव। शिव।

वि० [स्त्री० त्रिजटा] तीन जटाओंवाला।

त्रि-जटा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. विभीषण की बहन जो अशोक वाटिका में सीता जी के पास रहा करती थी। २. बेल का पेड़।

त्रिजटी (टिन्)—पुं० [सं० त्रिजटा+इनि] महादेव। शिव।

स्त्री० = त्रिजटा।

त्रि-जड़—पुं० [डिं०] १. कटारी। २. तलवार।

त्रि-जात—पुं० [सं० द्विगु स०] त्रिजातक। (दे०)

त्रिजातक—पुं० [सं० त्रिजात+कन्] इलायची (फल), दारचीनी (छाल) और तेजपत्ता (पत्ता) ये तीनों पदार्थ अथवा इन तीनों का मिश्रण।

त्रिजाम—स्त्री० [सं० त्रियामा] रात। रात्रि।

त्रि-जीवा—स्त्री० [सं० स० त०] तीन राशियों अर्थात् ९० अंशों तक फैले हुए चाप की ज्या।

त्रि-ज्या—स्त्री० [सं० ष० त०?] किसी वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खिंची हुई रेखा जो व्यास की आधी होती है। व्यासार्द्ध। (रेडियस)

त्रिण*—पुं० =तृण।

त्रिण-ता—स्त्री० [सं० स० त०, णत्व] धनुष।

त्रि-णव—पुं० [सं० मध्य० स०, णत्व] सामगान की एक प्रणाली जिसमें एक विशेष प्रकार से उसकी (३+९) सत्ताईस आवृत्तियाँ करते हैं।

त्रि-णाचिकेत—पुं० [सं० ब० स०, णत्व] १. यजुर्वेद का एक विशेष भाग। २. वह जो उक्त भाग का अध्ययन करता हो या उसका अनुयायी हो। ३. परमात्मा।

त्रिण्ह*—वि० = तीन।

त्रि-तंत्री—स्त्री० [सं० मध्य० स०] पुरानी चाल की एक तरह की तीन तारोंवाली वीणा।

त्रित—पुं० [सं०] १. एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते हैं। २. गौतम मुनि के तीन पुत्रों में से एक।

त्रितय—पुं० [सं० त्रि + तयप्] धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का समूह।

त्रि-ताप—पुं० [सं० द्विगु स०] दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनों ताप या कष्ट।

त्रि-दंड—पुं० [सं० द्विगु स०] संन्यासियों का वह पतला लंबा डंडा जिसके ऊपरी सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बँधी होती हैं तथा जिसे वे हाथ में लेकर चलते हैं।

त्रिदंडी (डिन्)—पुं० [सं० त्रिदण्ड+इनि] १. वह संन्यासी जो त्रिदंड लिये रहता हो। २. मन, वचन और कर्म तीनों का दमन करने या इन्हें वश में रखनेवाला व्यक्ति। ३. यज्ञोपवीत। जनेऊ।

त्रि-दल—पुं० [सं० ब० स०] बेल का वृक्ष।

त्रि-दला—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] गोवापदी। हसंपदी।

त्रि-दलिका—स्त्री० [सं० ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] एक प्रकार का थूहर। चर्मकशा। सातला।

त्रि-दश—पुं० [सं० ब० स०] १. वह जो भूत, भविष्य और वर्त्तमान अथवा बचपन, जवानी और बुढ़ापे की तीनों दशाओं में एक-सा बना रहे। २. देवता। ३. जिह्वा। जीभ।

त्रिदश-गुरु—पुं० [ष० त०] देवताओं के गुरु बृहस्पति।

त्रिदश-गोप—पुं० [ब० स०] बीरबहूटी नामक कीड़ा।

त्रिदश-दीर्घिका—स्त्री० [ष० त०] आकाश-गंगा।

त्रिदश-पति—पुं० [ष० त०] इंद्र।

त्रिदश-पुष्प—पुं० [मध्य० स०] लौंग।

त्रिदश-मंजरी—स्त्री० [ब० स०] तुलसी।

त्रिदश-वधू—स्त्री० [ष० त०] अप्सरा।

त्रिदश-सर्षप—पुं० [मध्य० स०] एक तरह की सरसों। देवसर्षप।

त्रिदशांकुश—पुं० [सं० त्रिदश-अंकुश, ष० त०] वज्र।

त्रिदशाचार्य—पुं० [सं० त्रिदश-आचार्य, ष० त०] बृहस्पति।

त्रिदशाधिप—पुं० [सं० त्रिदश-अधिप, ष० त०] इंद्र।

त्रिदशाध्यक्ष—पुं० [सं० त्रिदश-अध्यक्ष, ष० त०] विष्णु।

त्रिदशायन—पुं० [सं० त्रिदश-अयन, ब० स०] विष्णु।

त्रिदशायुध—पुं० [सं० त्रिदश-आयुध, ष० त०] वज्र।

त्रिदशारि—पुं० [सं० त्रिदश-अरि, ष० त०] असुर।

त्रिदशालय—पुं० [सं० त्रिदश-आलय, ष० त०] १. स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।

त्रिदशाहार—पुं० [सं० त्रिदश-आहार, ष० त०] अमृत।

त्रिदशेश्वर—पुं० [सं० त्रिदश-ईश्वर, ष० त०] इंद्र।

त्रिदशेश्वरी—स्त्री० [सं० त्रिदश-ईश्वरी, ष० त०] दुर्गा।

त्रिदिनस्पृश्—पुं० [सं० त्रि-दिन, द्विगु स०, √स्पृश् (छूना)+क्विप] वह तिथि जिसका थोड़ा बहुत अंश या मान तीन दिनों तक रहता हो। एक दिन आरंभ होकर पूरे दूसरे दिन तक बनी रहनेवाली और तीसरे दिन समाप्त होनेवाली तिथि।

त्रि-दिव—पुं० [सं०√दिव् (क्रीड़ा)+क, त्रि-दिव, ब० स०] १. स्वर्ग। २. आकाश। ३. सुख।

त्रिदिवाधीश—पुं० [सं० त्रिदिव-अधीश, ष० त०] इंद्र।

त्रिदिवेश—पुं० [सं० त्रिदिव-ईश, ष० त०] देवता।

त्रिदिवोद्भवा—स्त्री० [सं० त्रिदिव-उद्भव, ब० स०, टाप्] १. गंगा। २. बड़ी इलायची।

त्रि-दृश—पुं० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

त्रि-देव—पुं० [सं० द्विगु स०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता अथवा इन तीनों देवताओं का समूह।

त्रि-दोष—पुं० [सं० द्विगु स०] १. ये तीन दोष या शारीरिक विकार-वात, पित्त और कफ। २. सन्निपात नामक रोग जो इन तीनों के कुपित होने से होता है। ३. काम, क्रोध और लोभ, ये तीनों मानसिक दोष या विकार।

त्रिदोषज—वि० [सं० त्रिदोष√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो त्रिदोष से उत्पन्न हुआ हो।

पुं० सन्निपात नामक रोग।

त्रिदोषना—अ० [सं० त्रिदोष] १. वात, पित्त और कफ इन तीन दोषों या विकारों से पीड़ित होना। २. काम, क्रोध और लोभ नामक तीनों दोषों से युक्त होना।

त्रिधनी—स्त्री० [सं० ?] एक रागिनी का नाम।

त्रि-धन्वा (न्वन्)—पुं० [सं० त्रि-धनुस्, ब० स० (अनङ)] हरिवंश के अनुसार सुधन्वा राजा का एक पुत्र।

त्रि-धर्मा (र्मन्)—पुं० [सं० ब० स०, अनिच्] शंकर। शिव।

त्रिधा—क्रि० वि० [सं० त्रि+धाच्] तीन तरह से। तीन रूपों में।

वि० १. तीन तरह या प्रकार का। २. तीन रूपों वाला।

त्रिधातु—पुं० [सं० द्विगु स०] १. चाँदी, ताँबा और सोना ये तीनों धातुएँ। २. [त्रि√धा (पोषण करना)+तुन्] गणेश का एक नाम।

त्रि-धाम (न्)—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. अग्नि। ३. शिव। ४. स्वर्ग। ५. मृत्यु।

त्रिधा-मूर्ति—पुं० [ब० स०] परमेश्वर जिसके अंतर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों हैं।

त्रि-धारक—पुं० [सं० ब० स०, कप्] १. बड़ा नागरमोथा। गुंदला। २. कसेरू का पौधा।

त्रि-धारा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. तीन धाराओंवाला सेंहुड़। तिधारा। २. गंगा जिसकी स्वर्ग, मृर्त्य और पाताल तीनों में तीन धाराएँ बहती हैं।

त्रिधा-विशेष—पुं० [कर्म० स०] सांख्य के अनुसार सूक्ष्म मातृ, पितृज और महाभूत तीनों प्रकार के रूप धारण करनेवाला शरीर।

त्रिधा-सर्ग—पुं० [कर्म० स०] दैव, तिर्यग् और मानुष ये तीनों सर्ग जिसके अतंर्गत सारी सृष्टि आ जाती है।

त्रिन†—पुं० =तृण।

त्रि-नयन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० त्रिनयना] तीन आँखों या नेत्रोंवाला।

पुं० महादेव। शिव।

त्रि-नयना—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] दुर्गा।

त्रि-नाभ—पुं० [सं० त्रि-नाभि, ब० स०, अच्] विष्णु।

त्रि-नेत्र—वि० [सं० ब० स०] तीन नेत्रोंवाला।

पुं० १. महादेव। शिव। २. सोना। स्वर्ण।

त्रिनेत्र-चूड़ामणि—पुं० [ष० त०] चन्द्रमा।

त्रिनेत्ररस—पुं० [सं० मध्य० स०] (शोधे हुए) पारे, गंधक और फूंके हुए ताँबें के योग से बनाया हुआ एक तरह का रस। (वैद्यक)

त्रिनेत्रा—स्त्री० [सं० त्रिनेत्र+टाप्] बाराही कंद।

त्रि-पटु—पुं० [सं०] काँच। शीशा।

त्रिपत†—वि० = तृप्त।

त्रि-पताक—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा मस्तक जिस पर तीन प्राकृतिक बेड़ी रेखाएँ बनी या बनती हों।

त्रि-पत्र—वि० [सं० ब० स०] जिसमें तीन पत्ते या तीन-तीन पत्तों के समूह हों।

पुं० बेल का वृक्ष।

त्रिपत्रक—पुं० [सं० त्रिपत्र+कन्] १. पलाश या ढाक का पेड़। २. कुंद, तुलसी और बेल, के पत्तों का समूह।

त्रिपत्रा—स्त्री० [सं० त्रिपत्र+टाप्] १. अरहर का पौधा। २. तिपतिया नाम की घास।

त्रि-पथ—पुं० [सं० द्विगु स०, अच्] १. आकाश, पाताल और भूमि ये तीनों मार्ग। २. कर्म, ज्ञान और उपासना जो आत्म-लाभ के तीन मार्ग कहे गये हैं। ३. तिर-मुहानी।

त्रिपथगा—स्त्री० [सं० त्रिपथ√गम् (जाना)+ड–टाप्] गंगा नदी।

विशेष—गंगा नदी के संबंध में कहा गया है कि इसकी तीनों लोकों में एक-एक धारा बहती है।

त्रिपथगामिनी—स्त्री० [सं० त्रिपथ√गम्+णिनि—ङीप्] गंगा।

त्रिपथा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] मथुरा।

त्रिपद—वि० [सं० ब० स०] १. तीन पैरोंवाला। २. तीन पदोंवाला।

पुं० १. यज्ञों की बेदी नापने की एक नाप जो प्रायः तीन कदम या डग की होती थी। २. त्रिभुज। ३. तिपाई। ४. तीन पदों अर्थात् चरणोंवाला छंद।

त्रिपदा—स्त्री० [सं० त्रिपद+टाप्] १. वैदिक छंदों का एक भेद। गायत्री। २. लाल लज्जावंती। हंसपदी।

त्रिपदिका—स्त्री० [सं० त्रिपदा+कन्-टाप्, इत्व] १. शंख आदि रखने के लिए पीतल की बनी हुई छोटी तिपाई। २. तिपाई। ३. संगीत में, संकीर्ण राग का एक भेद।

त्रिपदी—स्त्री० [सं० त्रिपद+ङीप्] १. गायत्री। २. हंसपदी। लाल लज्जावंती। ३. हाथी की पलान बाँधने का रस्सा। ४. तिपाई। ५. तिपाई के आकार का वह चौखटा जिस पर शंख रखा जाता है।

त्रिपन्न—पुं० [सं०] चंद्रमा के दस घोड़ों में से एक।

त्रि-परिक्रांत—पुं० [सं० स० त०] ऐसा ब्राह्मण जो यज्ञ करता हो, वेदों का अध्ययन करता हो और दान देता हो।

त्रिपर्ण—पुं० [सं० ब० स०] पलाश (वृक्ष)।

त्रिपर्णा—स्त्री० [सं० त्रिपर्ण+टाप्] पलाश (वृक्ष)।

त्रिपर्णिका—स्त्री० [सं० त्रिपर्ण+कन्, टाप्-इत्व] १. शालपर्णी। २. बन-कपास। ३. एक प्रकार की पिठवन लता।

त्रिपर्णी—स्त्री० [सं० त्रिपर्ण+ङीष्] १. एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद औषध के काम आता है। २. शालपर्णी।

त्रिपला†—स्त्री० = त्रिफला।

त्रिपाठी (ठिन्)—पुं० [सं० त्रि√पठ्(पढ़ना)+णिनि] १. तीन वेदों का जाननेवाला व्यक्ति। त्रिवेदी। २. ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग। त्रिवेदी। तिवारी।

त्रि-पाण—पुं० [सं० त्रि-पान, ब० स०, णत्व] १. वह सूत जो तीन बार भिगोया गया हो। (कर्मकांड) २. छाल। वल्कल।

त्रि-पाद—वि० [सं० ब० स०] १. तीन पैरोंवाला।

पुं० १. परमेश्वर। २. ज्वर। बुखार।

त्रिपादिका—स्त्री० [सं० त्रिपाद+कन्–टाप्, इत्व] १. तिपाई। २. हंसपदी लता। लाल लज्जालू।

त्रि-पाप—पुं० [सं० ब० स०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिससे किसी मनुष्य के किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जाना जाता है।

त्रि-पिंड—पुं० [सं० द्विगु० स०] पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह और प्रपितामह के निमित्त दिये जानेवाले तीनों पिंड। (कर्मकांड)

त्रि-पिटक—पुं० [सं० ब० स०] बौद्धों का एक धर्म-ग्रंथ जिसके तीन पिटक या खंड हैं और जिसमें गौतम बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है।

त्रिपिताना*—अ० [सं० तृप्त] तृप्त होना।

स० तृप्त करना।

त्रिपिब—पुं० [सं० त्रि√पा (पीना) + क, नि० पिब] वह खसी जिसके दोनों कान पानी पीने के समय पानी से छू जाते हों। ऐसा बकरा मनु के अनुसार पितृकर्म के लिए बहुत उपयुक्त होता है।

त्रि-पिष्टप—पुं० [सं० कर्म० स०] १. स्वर्ग। २. आकाश।

त्रिपुंड—पुं० [सं० त्रिपुंड्र] मस्तक पर लगाया जानेवाला तीन आड़ी रेखाओं का तिलक।

क्रि० प्र०—देना।—रमाना।—लगाना।

त्रिपुंडी—वि० [हि० त्रिपुंड] माथे पर त्रिपुंड लगानेवाला।

त्रि-पुंड्र—पुं० [सं० द्विगु स०]=त्रिपुंड।

त्रि-पुट—पुं० [सं० ब० स०] १. गोखरू का पेड़। २. मटर। ३. खेसारी। ४. तीर। ५. ताला।

त्रिपुटक—पुं० [सं० त्रिपुट+कन्] १. खेसारी। २. फोड़े का एक आकार।

त्रि-पुटा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] १. बेल का वृक्ष। २. छोटी इलायची। ३. बड़ी इलायची। ४. निसोथ। ५. कनफोड़ा बेला। ६. मोतिया। ७. तांत्रिकों की एक अभीष्टदात्री देवी।

त्रि-पुटी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्] १. निसोथ। २. छोटी इलायची। ३. तीन वस्तुओं का समूह। जैसे—ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय।

पुं० [सं० त्रिपुट+इनि] १. रेंड का पेड़। २. खेसारी।

त्रि-पुर—पुं० [सं० द्विगु स०] १. वे तीनों नगरियाँ जो मयदानव ने तारकासुर के तीन पुत्रों के रहने के लिए बनाई थीं और जिन्हें शिव ने एक ही बाण से नष्ट कर दिया था। २. वाणासुर का एक नाम। ३. तीनों लोक। ४. चंदेरी नगर।

त्रिपुरघ्न—पुं० [सं० त्रिपुर√हन् (मारना)+टक्] महादेव जिन्होंने एक ही वाण से तारकासुर के तीनों पुत्रों के तीनों पुर या नगर नष्ट कर दिये थे।

त्रिपुर-दहन—पुं० [ष० त०] महादेव।

त्रिपुर-भैरव—पुं० [उपमि० स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो सन्निपात का नाशक कहा गया है।

त्रिपुर-भैरवी—स्त्री० [त्रिपुरा-भैरवी, कर्म० स०] एक देवी।

त्रिपुर-मल्लिका—स्त्री० [मध्य० स०?] एक तरह की मल्लिका।

त्रिपुरांतक—पुं० [त्रिपुर-अंतक, ष० त०] महादेव। शिव।

त्रिपुरा—स्त्री० [सं० त्रि√पुर् (देना)+क-टाप्] १. कामाख्या देवी की एक मूर्ति। २. भारत के पूर्वी आंचल का एक नगर और उसके आस-पास का प्रदेश।

त्रिपुरारि—पुं० [त्रिपुर-अरि, ष० त०] महादेव। शंकर।

त्रिपुरासुर—पुं० [त्रिपुर-असुर, कर्म० स०] =त्रिपुर।

त्रि-पुरुष—पुं० [सं० द्विगु स०] १. पिता, पितामह और प्रपितामह ये तीनों पुरखे। २. सम्पत्ति का ऐसा भोग जो लगातार तीन पीढ़ियों तक चला हो।

त्रिपुष—पुं० [सं० त्रि√पुष् (पुष्टि करना)+क] १. ककड़ी। २. खीरा। ३. गेहूँ।

त्रिपुषा—स्त्री० [सं० त्रिपुष+टाप्] काली निसोथ।

त्रि-पुष्कर—पुं० [सं० द्विगु स०] फलित ज्योतिष में, एक योग जो पुनर्वसु-उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी पूर्वभाद्रपद और विशाखा नक्षत्रों रवि, मंगल और शनि वारों तथा द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों में से किसी एक नक्षत्र, वार या तिथि के एक साथ पड़ने से होता है। बालक के जन्म के लिए ये यह योग जारज योग समझा जाता है।

त्रि-पृष्ठ—पुं० [सं० ब० स०?] जैनमत के अनुसार प्रथम वासुदेव।

त्रिपौरुष—पुं० [सं० त्रिपुरुष+अण्, उत्तरपदवृद्धि] =त्रिपुरुष।

त्रिपौलिया—पुं० =तिरपौलिया।

त्रि-प्रश्न—पुं० [सं० प० त०] दिशा, देश और काल संबंधी प्रश्न। (फलित ज्योतिष)

त्रि-प्रस्तुत—पुं० [सं० स० त०] वह हाथी जिसके मस्तक, कपोल और नेत्र इन तीनों स्थानों से मद निकलता हो।

त्रि-प्लक्ष—पुं० [सं० ब० स०] वैदिक ग्रंथों में उल्लिखित एक देश।

त्रि-फला—स्त्री० [सं० द्विगु स०, टाप्] आँवले, हड़ और बहेड़े के फल अथवा इन तीनों फलों का मिश्रण जो अनेक प्रकार के रोगों का नाशक माना गया है।

त्रि-बलि—स्त्री० = त्रिबली।

त्रि-बली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] व्यक्ति विशेषतः स्त्री के पेट पर नाभि से कुछ ऊपर पड़ने या बननेवाली तीन रेखाएँ। (सौंदर्य सूचक)

त्रि-बलीक—पुं० [सं० ब० स०, कप्] १. वायु। २. गुदा। ३. मलद्वार।

त्रि-बाहु—पुं० [सं० ब० स०] १. रुद्र का एक अनुचर। २. तलवार चलाने का एक ढंग या हाथ।

वि० जिसकी तीन बाँहें हों।

त्रिबेनी—स्त्री०=त्रिवेणी।

त्रि-भंग—वि० [सं० ब० स०] जिसमें तीन बल पड़े हुए हों।

पुं० खड़े होने की मुद्रा जिसमें टाँग, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता है। यह मुद्रा बाँकपन, सुकुमारता और सौन्दर्य की सूचक मानी गई है।

त्रिभंगी (गिन्)—वि० [सं० त्रि-भंग, द्विगु स०,+इनि] १. जिसमें तीन बल पड़े हुए हों। २. त्रिभंगवाली मुद्रा से जो खड़ा हुआ हो।

पुं० [सं० त्रिभंग+ङीष्] १. ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक जिसमें एक गुरु, एक लघु और एक प्लुत मात्रा होती है। २. शुद्ध राग का एक भेद। ३. ३२ मात्राओं का एक तरह का छंद जिसमें १०, ८, ८, और ६ मात्राओं पर विश्राम होता है। ४. दण्डक का भेद। ५. दे० 'त्रिभंग'।

त्रिभंडी—स्त्री० [सं० त्रि√भंड् (परिहास)+अण्—ङीप्] निसोथ।

त्रिभ—वि० [सं० ब० स०] तीन नक्षत्रोंवाला।

पुं० [सं०] चंत्रमा के हिसाब से रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र युक्त आश्विन मास; शताभिषा पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद नक्षत्रयुक्त भाद्रमास और पूर्वफाल्गुणी उत्तर फाल्गुणी और हस्त नक्षत्र युक्त फाल्गुन मास।

त्रिभ-जीवा—स्त्री० [सं० ष० त०] त्रिज्या। व्यासार्द्ध।

त्रि-भज्या—स्त्री० [सं० ष० त०] =त्रिज्या। व्यासार्द्ध।

त्रि-भद्र—पुं० [सं० ब० स०] स्त्री-प्रसग। संभोग।

त्रि-भुक्ति—पुं० [सं० ब० स०] तिरहुत या मिथिला देश।

त्रि-भुज—पुं० [सं० ब० स०] ज्यामिति, में वह आकृति या क्षेत्र जिसकी तीन भुजाएँ हों।

त्रि-भुवन—पुं० [सं० द्विगु० स०] स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिभुवन-नाथ—पुं० [सं० ष० त०] ईश्वर। परमेश्वर।

त्रिभुवन-सुन्दरी—स्त्री० [सं० स० त०] १. दुर्गा। २. पार्वती।

त्रिभूम—पुं० [सं० त्रि-भूमि, ब० स०,+अच्] वह भवन जिसमें तीन खंड हों।

त्रिभोलग्न—पुं० [सं०] क्षितिज वृत्त पर पड़नेवाले क्रांतिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रि-मंडला—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] मकड़ियों की एक जाति।

त्रि-मद—स्त्री० [सं० द्विगु स०] १. मोथा, चीता और बायविडंग ये तीनों पदार्थ अथवा इनका मिश्रण। २. [मध्य० स०] परिवार, विद्या और धन तीनों के कारण होनेवाला अभिमान या मद।

त्रि-मधु—पुं० [सं० ब० स०] १. ऋग्वेद का एक अंश। २. वह जो विधि-

पूर्वक उक्त अंश पड़ता हो। ३. ऋग्वेद का एक यज्ञ। ४. [द्विगु स०] घी, चीनी और शहद का समूह।

त्रि-मधुर—पुं० [सं० द्विगु स०] घी, मधु और चीनी ये तीनों पदार्थ।

त्रिमात—वि०=त्रिमात्रिक।

त्रि-मात्र—वि० [सं० ब० स०] (स्वर) जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत।

त्रिमात्रिक—वि० [सं० त्रिमात्र+ठन्—इक] (स्वर) जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत।

त्रि-मार्ग-गामिनी—स्त्री० [सं० त्रिमार्ग, द्विगु स०, त्रिमार्ग√गम् (जाना)+णिनि—ङीप्] गंगा।

त्रि-मार्गा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] १. गंगा। २. तिरमुहानी।

त्रिमास—पुं० [सं० द्विगु स०] [वि० त्रैमासिक] १. तीन महीनों का समय। २. वर्ष के तीन महीनों के चार विभागों में कोई एक। (क्वार्टर) जैसे—यह चंदा इस वर्ष के तीसरे त्रिमास का है।

त्रि-मुंड—वि० [सं० ब० स०] जिसके तीन मुंड या सिर हों।

पुं० १. त्रिशिर राक्षस का दूसरा नाम। २. ज्वर। बुखार।

त्रि-मुकुट—वि० [सं० ब० स०] तीन मुकुटोंवाला।

पुं० त्रिकुट।

त्रि-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसके तीन मुख हों। तीन मुँहोंवाला।

पुं० १. गायत्री जपने की चौबीस मुद्राओं में से एक मुद्रा की संज्ञा। २. शाक्य मुनि।

त्रिमुखा—स्त्री० = त्रिमुखी।

त्रिमुखी—स्त्री० [सं० त्रिमुख+ङीष्] बुद्ध की माता। माया देवी।

वि० [सं० त्रिमुखिन्] तीन मुखों या मुँहोंवाला।

त्रि-मुनि—पुं० [सं० द्विगु स०] पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि ये तीनों मुनि।

त्रिमुहानी—स्त्री० = तिरमुहानी।

त्रि-मूर्ति—पुं०[सं० ब० स०] १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता। २. सूर्य।

स्त्री० १. ब्रह्मा की एक शक्ति। २. बौद्धों की एक देवी।

त्रिमृत—पुं० [सं०?] निसोथ।

त्रिमृता—स्त्री० = त्रिमृत।

त्रिय*—स्त्री० = त्रिया।

वि० = त्रय (तीन)।

त्रियना*—अ० = तरना।

त्रि-यव—पुं० [सं० ब० स०] तीन जौ का एक तौल।

त्रि-यष्टि—पुं० [सं० स० त०] पितपापड़ा। शाहतरा।

त्रिया*—स्त्री० [सं० स्त्री] औरत। स्त्री।

त्रि-यान—पुं० [सं० द्विगु स०] महायान, हीनयान और मध्यम यान, बौद्धों के ये तीन सम्प्रदाय।

त्रियामक—पुं० [सं० त्रि√यम् (नियन्त्रण करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] पाप।

त्रि-यामा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] १. रात्रि। २. यमुना देवी। ३. हलदी। ४. नील का पेड़। ५. काला निसोथ।

त्रि-युग—पुं० [सं० द्विगु स०] १. सतयुग, द्वापर और त्रेता ये तीनों युग। २. [ब० स०] वसंत, पावस और शरद ये तीनों ऋतुएँ। ३. विष्णु।

त्रियूह—पुं० [सं०] सफेद रंग का घोड़ा।

त्रि-रत्न—पुं० [सं० द्विगु स०] बौद्ध धर्म में बुद्ध, धर्म और संघ इन तीनों का वर्ग या समूह।

त्रिरश्मि—स्त्री० =त्रिकोण।

त्रि-रसक—पुं० [सं० ब० स०, कप्] वह मदिरा, जिसमें तीन प्रकार के रस या स्वाद हों।

त्रि-रात्रि—पुं० [सं० द्विगु स०] १. तीन रात्रियों (और दिनों) का समय। २. उक्त समय तक चलनेवाला उपवास या व्रत। ३. एक प्रकार का यज्ञ।

त्रि-रूप—पुं० [सं० ब० स०] अश्वमेध यज्ञ के लिए उपयुक्त माना जानेवाला एक प्रकार का घोड़ा।

त्रि-रेख—वि० [सं० ब० स०] जिसमें तीन रेखाएँ हों।

पुं० शंख।

त्रिल—पुं० [सं० ब० स०] नगण, जिसमें तीनों लघु वर्ण होते हैं।

त्रि-लघु—पुं० [सं० ब० स०] १. नगण, जिसमें तीनों वर्ण लघु होते हैं। २. ऐसा व्यक्ति जिसकी गरदन, जाँघ और मूत्रेंद्रिय तीनों छोटी हों। (शुभ)

त्रि-लवण—पुं० [सं० द्विगु स०] सेंधा, साँभर और सोंचर (काला) ये तीनों प्रकार के नमक।

त्रि-लिंग—पुं० [सं० द्विगु स०] १. पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नपुंसक तीनों लिंग। २. तैलंग शब्द का वह रूप जो उसे संस्कृत व्याकरण के अनुसार मिला है।

त्रिलोक—पुं० [सं० द्विगु स०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिलोक-नाथ—पुं० [सं० ष० त०] १. तीनों लोकों का मालिक ईश्वर। २. राम। ३. कृष्ण। ४. विष्णु का कोई अवतार। ५. सूर्य।

त्रिलोक-पति—पुं० [सं० ष० त०] = त्रिलोकनाथ।

त्रिलोकी—स्त्री० [सं० त्रिलोक+ङीप्] =त्रिलोक।

त्रिलोकी-नाथ—पुं० = त्रिलोकनाथ।

त्रिलोकेश—पुं० [सं० त्रिलोक-ईश, ष० त०] १. ईश्वर। २. सूर्य।

त्रिलोचन—पुं० [सं० ब० स०] महादेव। शिव।

त्रि-लोचना—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] = त्रिलोचनी।

त्रि-लोचनी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्] दुर्गा।

त्रिलौह—पुं० [सं० द्विगु स०] सोना, चाँदी और ताँबा ये तीनों धातुएँ।

त्रि-लौही—स्त्री० [सं० त्रिलौह, ब० स०, +ङीप्] प्राचीन काल की वह मुद्रा या सिक्का जो सोने, चाँदी और ताँबे को मिलाकर बनाया जाता था।

त्रिवट—पुं०=त्रिवण।

त्रि-वण—पुं० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग। यह दोपहर के समय गाया जाता है। इसे हिंडोल राग का पुत्र कुछ लोग मानते हैं।

त्रिवणी—स्त्री० [सं० त्रिवण से] शंकराभरण, जयश्री और नरनारायण के मेल से बननेवाली एक संकर रागिनी।

त्रि-वर्ग—पुं० [सं० द्विगु स०] १. तीन चीजों का वर्ग या समूह। २. धर्म, अर्थ और काम जो सांसारिक जीवन के तीन मुख्य उद्देश्य हैं। ३. सत्व,

रज और तम इन तीनों गुणों का समूह। ४. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण। ५. त्रिफला। ६. त्रिकुटा।

त्रि-वर्ण—पुं [सं० द्विगु स०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण।

त्रिवर्गक—पुं [सं० त्रिवर्ण+कन्] १. गोखरू। २. त्रिफला। ३. त्रिकुटा ४. लाल, काला, और पीला रंग। ५. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीनों ज़ातियाँ।

त्रि-वर्णा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] वन कपास।

त्रिवर्त्त—पुं [सं० त्रि√वृत् (रहना)+अण्] एक तरह का मोती, जिसे अपने पास रखने से आदमी दरिद्र हो जाता है।

त्रिवलि—स्त्री०=त्रिबली।

त्रिवलिका—स्त्री०=त्रिबली।

त्रिवली—स्त्री०=त्रिबली।

त्रिवल्य—पुं [सं० त्रिवलि+यत्] पुराने जमाने का एक बाजा, जिसपर चमड़ा मढ़ा होता था। पुरानी चाल का एक तरह का ढोल।

त्रि-वाचा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] कोई बात जोर देने के लिए तीन बार कहने की क्रिया। उदा०—कहहिं प्रतीति प्रीति नीतिहूँ त्रिवाचा बाँधि ऊधौ साँच मनको हिये की अरु जी के हौं।—रत्ना०।

क्रि० प्र०—देना।—बाँधना।

त्रिवार—पुं० [सं०] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

त्रिवाहु—पुं०=त्रिबाहु।

त्रि-विक्रम—पुं [सं० ब० स०] १. वामन अवतार। २. विष्णु।

त्रिविद्—पुं० [सं० त्रि√विद् (जानना)+क्विप्] वह जिसने तीन वेद पढ़े हों। तीन वेदों का ज्ञाता।

त्रि-विध—वि० [सं० ब० स०] तीन तरह का। तीन रूपोंवाला।

क्रि० वि० तीन प्रकार से।

त्रि-विनत—पुं० [सं० स० त०] देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखनेवाला व्यक्ति।

त्रि-विष्टप—पुं० [सं० कर्म० स०] १. स्वर्ग। २. तिब्बत।

त्रि-विस्तीर्ण—पुं० [सं० तृ० त०] एसा व्यक्ति जिसका ललाट, कमर और छाती विस्तीर्ण हों। (शुभ)

त्रि-वीज—पुं० [सं० ब० स०] साँवाँ।

त्रिवृत्—वि० [सं० त्रि√वृ (वरण करना)+क्विप्] जिसके तीन भाग हों।

पुं० १. एक यज्ञ। २. निसोथ।

त्रिवृता—वि०=त्रिवृत्त।

त्रिवृत्करण—पुं० [सं० त्रिवृत्-करण, ष० त०] अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीनों तत्त्वों में से प्रत्येक में शेष दोनों तत्वों का समावेश करके प्रत्येक को अलग-अलग तीन भागों में विभक्त करने की क्रिया। (दर्शन शास्त्र)

त्रि-वृत्त—वि० [सं० तृ० त०] तिगुना।

त्रिवृत्ता—स्त्री० [सं० त्रिवृत्त+टाप्] =त्रिवृत्ति।

त्रिवृत्ति—स्त्री० [सं० ब० स०] निसोथ।

त्रिवृत्पर्णी—स्त्री० [सं० त्रिवृत्-पर्ण, ब० स०, ङीष्] हुरहुर। हिलमोचिका।

त्रिवृद्वेद—पुं० [सं० त्रिवृत्-वेद, कर्म० स०] १. ऋक्, यजुः और साम तीनों वेद। २. प्रणव।

त्रि-वृष—पुं० [सं० ब० स०] ग्यारहवें द्वापर के व्यास का नाम। (पुराण)

त्रि-वेणी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] १. वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ आकर मिलती हों। २. तीन नदियों की संयुक्त धारा। ३. गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम जो प्रयाग में हैं। ४. हठयोग में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का संगम स्थान, जो मस्तक में दोनों भौंहों के बीच माना जाता है। ५. संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

त्रि-वेणु—पुं० [सं० ब० स०] रथ के अगले भाग का एक अंग।

त्रि-वेद—पुं० [सं० द्विगु स०] १. ऋक्, यजुः और साम ये तीनों वेद। २. [त्रि√विद् (जानना) +अण्] इन तीनों वेदों का ज्ञाता या पंडित।

त्रिवेदी (दिन्)—पुं० [सं० त्रिवेद+इनि] १. ऋक्, यजुः और साम इन तीनों वेदों का ज्ञाता। २. ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

*स्त्री० [सं० त्रिपदी] १. तिपाई। २. छोटी चौकी।

त्रिवेनी†—स्त्री०= त्रिवेणी।

त्रि-वेला—स्त्री० [सं० ब० स०] निसोथ।

त्रि-शंकु—पुं० [सं० ब० स०] १. एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जो यज्ञ करके स-शरीर स्वर्ग पहुँचना चाहते थे, परंतु देवताओं के विरोध के कारण वहाँ नहीं पहुँच सके थे। पुराणों की कथा के अनुसार जब विश्वामित्र अपनी तपस्या के बल से इन्हें स्वर्ग भेजने लगे, तब इन्द्र ने इन्हें बीच में ही रोककर लौटना चाहा, जब ये उलटे होकर गिरने लगे, तब विश्वामित्र ने इन्हें मध्यआकाश में ही रोक दिया, जहाँ ये अब तक एक तारे के रूप में स्थित हैं। २. एक प्राचीन पर्वत। ३. पपीहा। ४. बिल्ली। ५. जुगनूं।

त्रिशंकुज—पुं० [सं० त्रिशङ्कु√जन् (पैदा होना)+ड] त्रिशंकु के पुत्र, राजा हरिश्चन्द्र।

त्रिशंकुयाजी (जिन्)—पुं० [सं० त्रिशंकु√यज् (यज्ञ करना)+णिच्+णिनि] त्रिशंकु को यज्ञ करानेवाले, विश्वामित्र ऋषि।

त्रि-शक्ति—स्त्री० [सं० द्विगु स०] १. इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीन ईश्वरीय शक्तियाँ। २. बुद्धितत्त्व या महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक हैं। ३. गायत्री। ४. तांत्रिकों की काली, तारा और त्रिपुरा नाम की तीनों देवियाँ।

त्रिशक्तिधृत्—पुं० [सं० त्रिशक्ति√धृ (धारण करना) +क्विप्] १. परमेश्वर। २. राजा विजिगीषु का दूसरा नाम।

त्रि-शरण—पुं० [सं० ब० स०] १. महात्मा गौतम बुद्ध। २. एक जैन आचार्य।

त्रि-शर्करा—स्त्री० [सं० द्विगु स०] गुड़, शक्कर और मिश्री तीनों का समूह।

त्रि-शला—स्त्री० [सं० त्रि-शाला, ब० स०, पृषो० सिद्धि] वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर की माता का नाम।

त्रि-शाख—वि० [सं० ब० स०] तीन शाखाओंवाला।

त्रिशाख-पत्र—पुं० [सं० ब० स०] बेल का पेड़।

त्रि-शाल—पुं० [सं० ब० स०] वह घर जिसमें तीन बड़े-बड़े कमरे हों।

त्रि-शालक—पुं० [सं० ब० स०, कप्] वह मकान, जिसकी उत्तर दिशा में कोई और मकान बना हुआ न हो।

त्रि-शिख—वि० [सं० ब० स०] तीन शिखाओं या चोटियोंवाला।

पुं० १. त्रिशूल। २. किरीट। ३. रावण का एक पुत्र। बेल का वृक्ष। ४. तामस मन्वन्तर के इन्द्र।

त्रि-शिखर—पुं० [सं० ब्र० स०] १. तीन चोटियोंदाला पहाड़। २. त्रिकूट।

त्रिशिखि-दला—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] मालाकंद लता और उसका कंद।

त्रिशिखी (खिन्)—वि०, पुं० [सं० त्रिशिखा+इनि]=त्रिशिख।

त्रि-शिर (स्)—वि० [सं० ब० स०] तीन सिरोंवाला।

पुं० १. खर-दूषण की सेना का एक राक्षस जिसका वध राम ने दंडकवन में किया था। २. कुबेर। ३. त्वष्टा प्रजापति का एक पुत्र।

त्रिशिरा—स्त्री० = त्रिजटा।

पुं०=त्रिशिर।

त्रिशिरारि—पुं० [सं० त्रिशिर-अरि, ष० त०] त्रिशिर को मारनेवाले रामचन्द्र।

त्रि-शीर्ष—वि० [सं० ब० स०] तीन चोटियोंवाला।

पुं० १. त्रिकूट नामक पर्वत। २. त्वष्टा प्रजापति का एक पुत्र।

त्रि-शीर्षक—पुं० [सं० ब० स०,+कप्] त्रिशूल।

त्रिशुच्—पुं० [सं० ब० स०] १. धर्म, जिसका प्रकाश स्वर्ग, अंतरिक्ष और पृथ्वी तीनों स्थानों में है। २. वह जिसे दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के कष्ट या दुःख हों।

त्रि-शूल—पुं० [सं० ब० स०] १. लोहे का एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन नुकीले फल होते हैं और शिव जी का अस्त्र माना जाता है। २. दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनों ताप या दुःख। त्रिताप। ३. एक मुद्रा, जिसमें अँगूठे को कनिष्ठा उँगली के साथ मिलाकर बाकी तीनों उँगलियों को फैला देते हैं। (तंत्र) ४. हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी जो २३४०४ फुट ऊँची है।

त्रिशूल-घात—पुं० [सं० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ जहाँ स्नान और तर्पण करने से गाणपत्य देह प्राप्त होती है।

त्रिशूलधारी (रिन्)—पुं० [सं० त्रिशूल√धृ (धारण करना)+णिनि] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव।

त्रिशूल-मुद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तंत्र में हाथ की एक मुद्रा।

त्रिशूली (लिन्)—पुं० [सं० त्रिशूल+इनि] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव।

स्त्री० [त्रिशूल+अच्—ङीष्] दुर्गा।

त्रि-शोक—पुं० [सं० ब० स०] १. जीव, जिसे आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये तीन प्रकार के शोक (दुःख) सताते हों। २. कण्व ऋषि के एक पुत्र का नाम।

त्रिशृंग—पुं० [सं० ब० स०] १. त्रिकूट पर्वत जिस पर लंका बसी थी। २. त्रिकोण।

त्रिशृंगी—स्त्री० [सं० त्रिशृंग+ङीष्] एक तरह की मछली जिसके सिर पर तीन काँटे होते हैं। टेंगर।

त्रिश्रुतिमध्यम—पुं० [सं०] एक प्रकार का विकृत स्वर, जो संदीपनी नाम की श्रुति से आरंभ होता है। (संगीत)

त्रि-षवण—पुं० [सं० द्विगु स०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल। त्रिकाल।

त्रिषष्ट—वि० [सं० त्रिषष्टि+ड] तिरसठवाँ।

त्रि-षष्टि—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तिरसठ की संख्या।

त्रिषा—स्त्री० = तृषा।

त्रिषित—वि० = तृषित।

त्रिषुपर्ण—पुं० = त्रिसुपर्ण।

त्रिष्टक—पुं० = त्रीष्टक।

त्रिष्टुप्—पुं० = त्रिष्टुभ्।

त्रिष्टुभ्—पुं० [सं० त्रि√स्तुभ् (रोकना)+क्विप्, षत्व] एक वैदिक छंद, जिसके चरणों में ग्यारह-ग्यारह अक्षर होते हैं।

त्रि-ष्टोम—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ, जो क्षत्रधृति यज्ञ करने से पहले या बाद में किया जाता था।

त्रिष्ठ—पुं० [सं० त्रि√स्था (स्थित होना) +क, षत्व] ऐसी गाड़ी या रथ जिसके तीन पहिये हों।

त्रि-संगम—पुं० [सं० ष० त०] १. तीन नदियों के मिलने का स्थान। त्रिवेणी। २. तीन प्रकार की चीजों का मिश्रण या मेल।

त्रि-संधि—स्त्री० [सं० ब० स०] १. एक वृक्ष, जिसका फूल लाल, सफेद और काले तीन रंगोंवाला होता है। २. उक्त वृक्ष का फूल।

त्रिसंध्य—पुं० [सं० द्विगु स०] दिन के तीन भाग प्रातः, मध्याह्न और सायं। (ये तीनों संधि-काल हैं।)

त्रिसंध्यव्यापिनी—वि० [सं० त्रिसन्ध्य-वि√आप् (व्यप्ति)+णिनि-ङीप्] तिथि, जिसका भोगकाल सूर्योदय के पहले से सूर्यास्त के बाद तक रहे।

त्रि-संध्या—स्त्री० [सं० द्विगु स०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों संध्याएँ, या संधि-काल।

त्रिस*—स्त्री० [सं० तृषा] प्यास। उदा०—त्रिगुण परसतै षुधा त्रिस।—प्रिथीराज।

त्रि-सप्तति—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तिहत्तर की संख्या।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७३।

त्रिसप्तति-तम—वि० [सं० त्रिसप्तति+तमप्] तिहत्तरवाँ।

त्रि-सम—वि० [सं० ब० स०] (क्षेत्र) जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों।

पुं० [द्विगु स०] सोंठ, गुड़ और हर्रे इन तीनों का समूह।

त्रि-सर—पुं० [सं० त्रि√सृ (गति)+अप्] खेसारी।

त्रि-सर्ग—पुं० [सं० ष० त०] सत्व, रज और तम, इन तीनों गुणों का सर्ग या सृष्टि।

त्रि-सामा (मन्)—पुं० [सं० ब० स०] परमेश्वर।

स्त्री० पुराणनुसार एक नदी, जो महेन्द्र पर्वत से निकली है।

त्रि-सिता—स्त्री० = त्रि-शर्करा।

त्रि-सुगंधि—स्त्री० [सं० द्विगु स०] दालचीनी, इलायची और तेजपात इन तीनों सुगंधित मसालों का समूह।

त्रि-सुपर्ण—पुं० [सं० ब० स०] १. ऋग्वेद के तीन विशिष्ट मंत्रों की संज्ञा। २. यजुर्वेद के तीन विशिष्ट मंत्रों की संज्ञा।

त्रिसुपर्णिक—पुं० [सं० त्रिसुपर्ण+ठक्—इक] विसुपर्ण का ज्ञाता।

त्रिसौपर्ण—पुं० [सं० त्रिसुपर्ण+अण्] १. त्रिसुपर्णिक। २. परमेश्वर।

त्रि-स्कंध—पुं० [सं० ब० स०] ज्योतिषशास्त्र, जिसके संहिता, तंत्र और होरा ये तीन स्कंध या विभाग है।

त्रि-स्तनी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] १. गायत्री। २. महाभारत के अनुसार तीन स्तनोंवाली एक राक्षसी।

त्रि-स्तवन—पुं० [सं० मध्य० स०] तीन दिनों तक बराबर चलनेवाला एक तरह का यज्ञ।

त्रि-स्तावा—स्त्री० [सं० मध्य० स०, अच्—टाप्, टिलोप नि०] अश्वमेध यज्ञ की वेदी (जो साधारण वेदी से तिगुनी बड़ी होती थी)।

त्रि-स्थली—स्त्री० [सं० द्विगु स०, ङीप्] ये तीन पवित्र नगरियाँ—काशी, प्रयाग और गया।

त्रि-स्थान—पुं० [सं० द्विगु स०] १. सिर, ग्रीवा और वक्ष इन तीनों का समूह। २. [ब० स०] तीन स्थानों या तीनों लोकों में रहनेवाला व्यक्ति या ईश्वर।

त्रि-स्नान—पुं० [सं० ष० त०] सबेरे, दोपहर और संध्या इन तीन समयों में किये जानेवाले स्नान।

त्रिस्पृशा—स्त्री० [सं० त्रि√स्पृश् (छूना)+क—टाप्] वह एकादशी, जिससे एक ही सायन दिन में उदयकाल के समय थोड़ी-सी एकादशी और रात के अंत में त्रयोदशी होती है।

त्रिस्रोता(तस्)—स्त्री० [सं० ब० स०] १. गंगा। २. उत्तरी बंगाल की एक नदी।

त्रि-हायण—वि० [सं० ब० स०, णत्व] जिसकी अवस्था तीन वर्ष की हो चुकी हो।

त्रि-हायणी—स्त्री० [सं० ब० स०], ङीप् णत्व] द्रौपदी।

त्रिहुँ*—वि० १. = तीन। २. = तीनों।

त्रिहूत†—पुं० = तिरहुत।

त्री*—स्त्री० = स्त्री।

त्रीकम—पुं० [सं० त्रिविक्रम] भगवान् का वामन अवतार। (तीन कदम चलने के कारण उनका यह नाम पड़ा है) उदा०—तिणि ही पार न पायौ त्रीकम।—प्रिथीराज।

त्रीषु—पुं० [सं० त्रि-इषु, ब० स०, +कन् (लुक्)] तीन वाणों की दूरी का स्थान।

त्रीषुक—पुं० [सं० त्रि-इषु, ब० स०, +कप्] वह धनुष जिससे एक साथ तीन वाण छोड़े जा सकें।

त्रीष्टक—पुं० [सं० त्रि-इष्टका, ब० स०] एक प्रकार की अग्नि।

त्रुटि—स्त्री० [सं० √त्रुट् (टूटना)+इन्] १. तोड़ने-फोड़ने आदि की क्रिया या भाव। २. ऐसा अभाव जिसके फलस्वरूप कोई कार्य, बात या वस्तु ठीक, पूर्ण या शुद्ध न मानी जा सकती हो। कमी। (डिफेक्ट) ३. भूल। ४. प्रतिज्ञा या वचन का भंग। ५. संदेह। संशय। ६. कार्तिकेय की एक मातृका। ७. छोटी इलायची। ८. समय का एक मान जो आधे लव के बराबर माना गया है।

त्रुटित—वि० [सं०√त्रुट्+क्त] १. जिसमें कोई त्रुटि (अभाव या कमी) हो। २. त्रुटि-पूर्ण। ३. चोट खाया हुआ। ४. आहत।

त्रुटि-बीज—पुं० [सं० ब० स०] अरवी। घुइयाँ।

त्रुटी—स्त्री० [सं० त्रुटि+ङीष्] =त्रुटि।

त्रूटना—अ० [सं० त्रुट्] टूटना। उदा०—त्रूटै कंध मूल झाड़ त्रूटै।—प्रिथीराज।

त्रेता—पुं० [सं० त्रि—इता, पृषो० सिद्धि] १. तीन चीजों का समूह। २. गार्हपत्य, दक्षिण और आहवनीय ये तीन अग्नियाँ। ३. हिंदुओं के अनुसार चार युगों में से दूसरा युग, जिसका भोगकाल १२९६०० वर्षों का था तथा जिसमें भगवान् राम का अवतार हुआ था। ४. जूए में तीन कौड़ियों का अथवा पासे के उस भाग का चित पड़ना, जिसपर तीन बिंदियाँ हों। तीया।

त्रेताग्नि—स्त्री० [सं० त्रेता-अग्नि, कर्म० स०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय—ये तीन अग्नियाँ।

त्रेतिनी—स्त्री० [सं० त्रेता+इनि—ङीप्] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय तीनों प्रकार की अग्नियों से होनेवाली क्रिया।

त्रेधा—अव्य० [सं० त्रि+एधाच्] तीन प्रकारों या रूपों में।

त्रै—वि० [सं० त्रय] तीन।

त्रैकंटक—वि० [सं० त्रिकंटक+अण्] जिसमें तीन काँटे हों।
पुं० = त्रिकंटक।

त्रैककुद्—पुं० [सं० त्रिककुद्+अण्] १. त्रिकूट पर्वत। २. विष्णु।

त्रैककुभ—पुं० [सं० त्रिककुभ्+अण्] = त्रिककुभ।

त्रैकालज्ञ—पुं० [सं० त्रिकालज्ञ+अण्] = त्रिकालज्ञ।

त्रैकालिक—वि० [सं० त्रिकाल+ठञ्—इक] १. भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में अर्थात् सदा होनेवाला। २. प्रातः, मध्याह्न और संध्या तीनों कालों में होनेवाला।

त्रैकाल्य—पुं० [सं० त्रिकाल+ष्यञ्] १. भूत, वर्तमान और भविष्यत् ये तीनों काल। २. प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल। ३. जीवन की आरंभिक, मध्यम और और अंतिम ये तीनों स्थितियाँ। बचपन, जवानी और बुढ़ापा।

त्रैकूटक—पुं० [सं० त्रिकूटक (त्रिकूट+कन्)+अण्] एक प्राचीन राजवंश।

त्रैकोणिक—वि० [सं० त्रिकोण+ठञ्—इक] १. जिसमें तीन कोण हों। २. जिसके तीन पार्श्व हों। तिपहला।

त्रैगर्त—पुं० [सं० त्रिगर्त+अण्] १. त्रिगर्त्त देश का राजा। २. त्रिगर्त्त देश का निवासी।

त्रैगुणिक—भू० कृ० [सं० त्रिगुण+ठक्—इक] १. तिगुना किया हुआ। २. तीन बार किया हुआ।

त्रैगुण्य—पुं० [सं० त्रिगुण+ष्यञ्] सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणों का भाव या समूह।

त्रैदशिक—पुं० [सं० त्रिदशा+ठञ्—इक] उँगली का अगला भाग जो तीर्थ कहलाता है।

त्रैध—वि० [सं० त्रि+धमुञ्] १. तिगुना। २. तेहरा।
अव्य० तीन प्रकार से।

त्रैधातवी—स्त्री० [सं० त्रिधातु+अण्—ङीप्] एक प्रकार का यज्ञ।

त्रैपिष्टप—वि० पुं० [सं० त्रिपिष्टप+अण्] दे० 'त्रैविष्टप'।

त्रैपुर—पुं० [सं० त्रिपुर+अण्] = त्रिपुर।

त्रैफल—पुं० [सं० त्रिफला +अण्] वैद्यक में त्रिफला के योग से तैयार किया हुआ घी।

त्रैबलि—पुं॰ [सं॰] महाभारत के समय के एक ऋषि।

त्रैमातुर—पुं॰ [सं॰ त्रिमातृ+अण्, उत्व] लक्ष्मण।

त्रैमासिक—वि॰ [सं॰ त्रिमास+ठञ्–इक] हर तीसरे महीने होनेवाला। जैसे—त्रैमासिक पत्रिका।

त्रैमास्य—पुं॰ [सं॰ त्रिमास+ष्यञ्] तीन महीनों का समय।

त्रैयंबक—वि॰ [सं॰ त्र्यम्बक+अण्] त्र्यंबक-संबंधी। त्र्यंबक का।

पुं॰ एक प्रकार का होम।

त्रैयंबिका—स्त्री॰ [सं॰ त्रैयम्बक+टाप्, इत्व] गायत्री।

त्रैराशिक—पुं॰ [सं॰ त्रिराशि+ठञ्–इक] गणित की एक क्रिया, जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का मान निकाला जाता है। (रूल ऑफ थ्री)

त्रैरूप्य—पुं॰ [सं॰ त्रिरूप+ष्यञ्] तीन रूपों का भाव।

त्रैलोक—पुं॰ [सं॰ त्रिलोक+अण्] = त्रैलोक्य।

त्रैलोक्य—पुं॰ [सं॰ त्रिलोकी+ष्यञ्] १. स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोक। २. इक्कीस मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

त्रैलोक्य-चिंतामणि—पुं॰ [सं॰ स॰ त॰] वैद्यक में एक प्रकार का रस, जो (क) सोने, चाँदी और अभ्रक के योग से अथवा (ख) मोती, सोने और हीरे के योग से बनता है।

त्रैलोक्य-विजया—स्त्री॰ [सं॰ ब॰ स॰] भाँग।

त्रैलोक्य-सुंदर—पुं॰ [सं॰ स॰ त॰] पारे, अभ्रक, लोहे, त्रिफला आदि के योग से बननेवाला एक तरह का रस। (वैद्यक)

त्रैलोक्य-सुंदरी—स्त्री॰ [सं॰ स॰ त॰] दुर्गा या देवी का एक रूप।

त्रैवर्गिक—पुं॰ [सं॰ त्रिवर्ग+ठञ्–इक] वह कर्म, जिससे धर्म, अर्थ और काम इन तीनों की साधना हो।

वि॰ १. त्रिवर्ग-संबंधी। तीन वर्गों का। २. तीन वर्गों में होनेवाला।

त्रैवर्ग्य—पुं॰ [सं॰ त्रिवर्ग+ष्यञ्] धर्म, अर्थ, काम ये तीनों वर्ग या जीवन के उद्देश्य अथवा साधन।

त्रैवर्णिक—वि॰ [त्रिवर्ण+ठञ्–इक] जिसका संबंध तीन वर्णों से हो। तीन वर्णोंवाला।

पुं॰ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों जातियों का धर्म।

त्रैवार्षिक—वि॰ [सं॰ त्रिवर्ष+ठञ्–इक] हर तीसरे वर्ष होनेवाला। (ट्रीनियल)

त्रैविक्रम—पुं॰ [सं॰ त्रिविक्रम+अण्] विष्णु।

त्रैविद्य—वि॰ [सं॰ त्रिविद्या+अण्] तीन वेदों का ज्ञाता। २. बहुत बड़ा चालाक। चलता-पुरजा। (व्यंग्य)

त्रैविष्टप—पुं॰ [सं॰ त्रिविष्टप+अण्] स्वर्ग में रहनेवाले अर्थात् देवता।

त्रैशंकव—पुं॰ [सं॰ त्रिशंकु+अण्] त्रिशङ्कु के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र।

त्रैस्वर्य—पुं॰ [सं॰ त्रिस्वर+ष्यञ्] उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीनों प्रकार के स्वर।

त्रैहायण—वि॰ [सं॰ त्रिहायण+अण्] = त्रैवार्षिक।

त्रोटक—पुं॰ [सं॰√त्रुट् (टूटना)+णिच्+ण्वुल्–अक] १. नाटक का एक भेद, जिसका नायक कोई दिव्य पुरुष होता है तथा जिसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं और प्रत्येक अंक में विदूषक रहता है। २. संगीत में एक प्रकार का राग।

त्रोटकी—स्त्री॰ [सं॰ त्रोटक+ङीप्] एक प्रकार की रागिनी। (संगीत)

त्रोटि—स्त्री॰ [सं॰√त्रुट् (छेदन)+णिच्+इ] १. कायफल। २. चोंच।

पुं॰ एक पक्षी।

त्रोण—पुं॰ [सं॰] तरकश।

त्रोतल—वि॰ [सं॰] तोतला।

त्रोत्र—पुं॰ [सं॰√त्रै (रक्षा करना)+उत्र] १. अस्त्र। २. चाबुक। ३. एक रोग।

त्रोन*—पुं॰ = त्रोण।

त्र्यंगर—पुं॰ [सं॰] १. ईश्वर। २. चंद्रमा। ३. छीका। सिकहर।

त्र्यंगुल—वि॰ [सं॰ त्रि-अंगुलि, तद्धितार्थ द्विगु स॰,+द्वयसच् (लुक्)+अच्] जो नाप में तीन उँगलियों की चौड़ाई के बराबर हो।

त्र्यंजन—पुं॰ [सं॰ त्रि-अंजन, द्विगु स॰] कालांजन, रसांजन और पुष्पांजन ये तीनों अंजन। काला सुरमा, रसोत और वे फूल जो अंजनों में मिलाये जाते हैं। जैसे—चमेली, तिल, नीम, लौंग, अगस्त्य इत्यादि।

त्र्यंबक—पुं॰ [सं॰ त्रि-अम्बक, ब॰ स॰] १. महादेव। शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम। ३. संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

वि॰ तीन आँखों या नेत्रोंवाला।

त्र्यंबक-सख—पुं॰ [सं॰ ष॰ त॰, टच् समा॰] कुबेर।

त्र्यंबका—स्त्री॰ [सं॰ त्र्यम्बक+टाप्] दुर्गा, जिसके सोम, सूर्य और अनल ये तीनों नेत्र माने जाते हैं।

त्र्यंबुक—पुं॰ [सं॰] एक तरह की मक्खी।

त्र्यक्ष—वि॰ [सं॰ त्रि-अक्षि, ब॰ स॰, षच् समा॰] तीन आँखोंवाला। जिसके तीन नेत्र हों।

पुं॰ १. महादेव। शिव। २. पुराणानुसार एक दैत्य जिसकी तीन आँखें थीं।

त्र्यक्षक—पुं॰ [सं॰ त्र्यक्ष+क (स्वार्थे)] शिव।

त्र्यक्षर—वि॰ [सं॰ त्रि-अक्षर, ब॰ स॰] त्र्यक्षरक। (दे॰)

त्र्यक्षरक—वि॰ [सं॰ त्र्यक्षर+कन्] जो तीन अक्षरों से मिलकर बना हो।

पुं॰ १. ओंकार या प्रणव। २. एक प्रकार का वैदिक छंद। ३. तंत्र में तीन अक्षरोंवाला मंत्र।

त्र्यक्षी—स्त्री॰ [सं॰ त्र्यक्ष+ङीष्] एक राक्षसी का नाम।

त्र्यधिपति—पुं॰ [सं॰ त्रि-अधिपति, ष॰ त॰] तीनों लोकों के स्वामी, विष्णु।

त्र्यध्वगा—स्त्री॰ [सं॰ त्रि-अध्वन्, द्विगु स॰, त्र्यध्व√गम् (जाना)+ड–टाप्] = त्रिपथगा (गंगा)।

त्र्यमृतयोग—पुं॰ [सं॰ अमृत-योग, उपमि॰ स॰, त्रि-अमृतयोग, ष॰ त॰] एक योग, जो कुछ विशिष्ट वारों, तिथियों और नक्षत्रों के योग्य से होता है। (ज्योतिष)

त्र्यवरा—स्त्री॰ [सं॰ त्रि-अवर, ब॰ स॰, टाप्] तीन सदस्योंवाली परिषद्।

त्र्यशीति—स्त्री॰ [सं॰ त्रि-अशीति, मध्य॰ स॰] अस्सी और तीन की संख्या, तिरासी।

त्र्यस्त—पुं० [सं० त्रि-अस्त, स० त०] त्रिकोण।

त्र्यहस्पर्श—पुं० [सं० त्रि-अहन्, द्विगु स०, त्र्यह√स्पृश् (छूना)+अण्] वह सावन दिन, जो तीन तिथियाँ स्पर्श करता हो।
स्त्री० [सं० त्र्यह√स्पृश्+क्विन्] वह तिथि, जो तीन सावन दिनों को स्पर्श करती हो। ऐसी तिथि विवाह, यात्रा आदि के लिए निषिद्ध मानी जाती है।

त्र्यहिकारि रस—पुं० [सं०] पारा, गंधक, तूतिया और शंख आदि के योग से बनाया जानेवाला रस। (वैद्यक)

त्र्यहीन—पुं० [सं० त्र्यह+ख—ईन] तीन दिनों में होनेवाला एक यज्ञ।

त्र्यहैहिक—वि० [सं० त्र्यह-ऐहिक, ब० स०] जिसके पास तीन दिन तक के निर्वाह के लिए यथेष्ट सामग्री हो।

त्र्यार्षेय—पुं० [सं० त्रि-आर्षेय, ब० स०] १. वह गोत्र जिसके तीन प्रवर हों। त्रिप्रवर गोत्र। २. अंधे, गूंगे और बहरे लोग, जिन्हें यज्ञों में नहीं जाने दिया जाता था।

त्र्याहण—पुं० [सं० त्रि-आ√हन् (मारना)+अच्] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

त्र्याहिक—वि० [सं० त्र्यह+ठञ्—इक] तीन दिनों में होनेवाला।
पुं० हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। तिजारी।

त्र्यूषण—पुं० [सं० त्रि-उषण, द्विगु स०, पृषो० दीर्घ] १. सोंठ, पीपल और मिर्च इन तीनों का समूह या मिश्रण। २. वैद्यक में उक्त तीनों चीजों के योग से बनाया जानेवाला एक प्रकार का घृत।

त्वक्(च्)—पुं० [सं०√त्वच् (ढकना)+क्विप्] १. वृक्ष की छाल। २. फलों आदि का छिलका। ३. शरीर पर की खाल। चमड़ा। त्वचा। ४. पाँच ज्ञानेंद्रियों में से एक जो सारे शरीर के ऊपरी भाग में व्याप्त है। इसके द्वारा स्पर्श होता है। ५. दारचीनी।

त्वक्-क्षीरा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] = त्वक्क्षीरी।

त्वक्-क्षीरी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] बंसलोचन।

त्वक्-छद—पुं० [ब० स०] क्षीरीश का वृक्ष। क्षीरकंचुकी।

त्वक्-पंचक—पुं० [ष० त०] वट, गूलर, अश्वत्थ, सिरिस और पाकर ये पाँचों वृक्ष।

त्वक्-पत्र—पुं० [ब० स०] १. तेजपत्ता। तेजपात। २. दारचीनी।

त्वक्पत्री—स्त्री० [सं० त्वक्पत्र+ङीष्] १. हिंगुपत्री। २. केले का पेड़।

त्वक्-पाक—पुं० [ब० स०] एक रोग, जिसमें पित्त और रक्त के कुपित होने से शरीर में फुंसियाँ निकल आती हैं। (सुश्रुत)

त्वक्-पुष्प—पुं० [ष० त०] एक रोग जिसमें त्वचा पर सफेद रंग की चित्तियाँ निकलने या पड़ने लगती हैं। सेहुआँ रोग। २. शरीर के रोएँ खड़े होने की अवस्था। रोमांच।

त्वक्पुष्पिका—स्त्री० [सं० त्वक्पुष्पी+क (स्वार्थे)–टाप्, ह्रस्व] = त्वक्पुष्प।

त्वक्-पुष्पी—स्त्री० [सं० त्वक्पुष्प+ङीप्] = त्वक्पुष्प।

त्वक्-सार—पुं० [ब० स०] १. बाँस। २. दारचीनी। ३. सन का पेड़।

त्वक्-सारा—स्त्री० [सं० त्वक्सार+अच्-टाप्] बंसलोचन।

त्वक्-सुगंधा—पुं० [ब० स०, टाप्] १. एलुआ। २. छोटी इलायची।

त्वगंकुर—पुं० [सं० त्वच्-अंकुर, ष० त०] रोमांच।

त्वगाक्षीरी—स्त्री० [सं० त्वक्क्षीरी, पृषो० सिद्धि] बंसलोचन।

त्वगिंद्रिय—स्त्री० [सं० त्वच्-इंद्रिय, कर्म० स०] स्पर्शेंद्रिय।

त्वग्गंध—पुं० [सं० त्वच्-गंध, ब० स०] नारंगी का पेड़।

त्वाज—पुं० [सं० त्वच्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १. रोआँ। रोम। २. रक्त। खून।

त्वग्जल—पुं० [सं० त्वच्-जल, ष० त०] पसीना।

त्वग्दोष—पुं० [सं० त्वच्-दोष, ब० स०] कुष्ट। कोढ़।

त्वग्दोषापहा—स्त्री० [सं० त्वग्दोष-अप√हन् (नष्ट करना)+ड—टाप्] बकुची। बावची।

त्वग्दोषारि—पुं० [सं० त्वग्दोष-अरि, ष० त०] हस्तिकंद।

त्वग्दोषी (षिन्)—पुं० [सं० त्वग्दोष+इनि] कोढ़ी।
वि० जिसे कुष्ट या कोढ़ नामक रोग हो।

त्वच—पुं० [सं० त्वच्+अच्] १. दारचीनी। २. तेजपात। ३. त्वचा। चमड़ा।

त्वचकना—अ० [सं० त्वचा] १. वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमड़ा झूलना। २. भीतर की ओर धँसना। ३. पुराना पड़ना।

त्वचा—स्त्री० [सं० त्वच्+टाप्] १. जीव की काया का ऊपरी और प्रायः रोओं से युक्त कोमल आवरण। चमड़ा। २. छाल।

त्वचा-ज्ञान—पुं० [ष० त०] किसी विषय की केवल ऊपरी या बाहरी बातों का स्थूल ज्ञान।

त्वचा-पत्र—पुं० [ब० स०] १. तेजपत्ता। २. दारचीनी।

त्वचि-सार—पुं० [सं० ब० स०, अलुक् समा०] बाँस।

त्वचि-सुगंधा—स्त्री० [सं० ब० स०, अलुक् समा०] छोटी इलायची।

त्वदीय—सर्व० [सं० युष्मद्+छ–ईय, त्वद् आदेश)] तुम्हारा।

त्वन्मय—वि० [सं० त्वच्+मयट्] त्वचा से युक्त।

त्वम्—सर्व० [सं०] तुम।
पुं० जीव।

त्वरण—पुं० [सं० √ त्वर् (वेग)+ल्युट्–अन] [वि० त्वरणीय] १. शीघ्रतापूर्वक कोई काम होने की अवस्था, गुण या भाव। २. अधिक वेग से किसी यंत्र के चलने का भाव। (एक्सलेरेशन)

त्वरा—स्त्री० [सं०√त्वर्+अङ्—टाप्] १. शीघ्रता। जल्दी। २. वेग। तेजी।

त्वरारोह—पुं० [सं० त्वरा-आरोह, ब० स०] कबूतर।

त्वरावान्(वत्)—वि० [सं० त्वरा+मतुप्] १. शीघ्रता करनेवाला। २. वेगपूर्वक चलनेवाला। २. जल्दबाज।

त्वरि—स्त्री० [सं०√त्वर् (शीघ्रता करना)+इन्] =त्वरा।

त्वरित—वि० [सं०√त्वर्+क्त] तेजी से या वेगपूर्वक चलता हुआ।
क्रि० वि० जल्दी या तेजी से।

त्वरितक—पुं० [सं० त्वरित√कै (प्रकाशित होना)+क] एक प्रकार का चावल। तूर्णक। (सुश्रुत)

त्वरित-गति—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, नगण और एक गुरु होता है। इसे अमृतगति भी कहते हैं।

त्वरिता--स्त्री० [सं० त्वरित+टाप्] एक देवी, जिसकी पूजा युद्ध में जल्दी विजय पाने के लिए की जाती है। (तंत्र)

त्वलग--पुं० [सं० पृषो० सिद्धि] पानी में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

त्वष्टा (ष्टृ)--पुं० [सं० √त्वक्ष् (छीलना, पतला करना) +तृच्] १. बढ़ई। विश्वकर्मा। ३. प्रजापति। ४. ग्यारहवें आदित्य, जो आँखों के अधिष्ठाता देव माने गये हैं। ५. वृत्रासुर के पिता का नाम। ६. शिव। ७. पशुओं और मनुष्यों के गर्भ में वीर्य का विभाग करनेवाले एक वैदिक देवता। ८. सूत्रधार नामक प्राचीन जाति। ९. चित्रा नक्षत्र के अधिष्ठाता देवता।

त्वष्टि--पुं० [सं०√त्वक्ष्+क्तिन्] एक संकर जाति। (मनु)

त्वाच--वि० [सं० त्वच्+अण्] त्वचा-संबंधी। त्वचा का।

त्वाष्टी--स्त्री० [सं० तुष्टि, नि० सिद्धि] दुर्गा।

त्वाष्ट्र--पुं० [सं० त्वष्टृ+अण्] १. वज्र नामक अस्त्र, जो विश्वकर्मा ने बनाया था। २. चित्रा नक्षत्र। ३. वृत्रासुर का एक नाम।

त्वाष्ट्री--स्त्री० [सं० त्वाष्ट्र+ङीप्] १. विश्वकर्मा की पुत्री, जो सूर्य की पत्नी तथा अश्विनी कुमारों की माता थी। २. चित्रा नक्षत्र।

त्विषा--स्त्री० [सं० त्विष्+टाप्] चमक। दीप्ति। प्रभा।

त्विषामीश--पुं० [सं० ष० त०, अलुक् समा०] १. सूर्य। २. आक का पेड़।

त्विषि--स्त्री० [सं०√त्विष् (दीप्ति) +इन्] किरण।

त्वेष--वि० [सं०√त्विष्+अच्] १. दीप्त। २. प्रकाशित।

त्सरु--पुं० [सं०√त्सर् (टेढ़ी चाल)+उन्] १. तलवार की मूठ। २. सर्प। साँप।

त्सारुक--पुं० [सं० त्सरु+कन्+अण् (स्वार्थे)] तलवार चलाने में निपुण व्यक्ति।

COMPILED

२II

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय; हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

५१,१५८

STOCK VERIFY
2020
G.K.V. Library

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार ।